

'प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की वानी।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ॥'

प्रथम संस्करण—१९८५-८६ ई०

आकार—१८×२२÷८

पृष्ठसंख्या—१४००

मूल्य— १००·०० रुपया

मुद्रक

वाणी प्रेस

भुवन वाणी ट्रस्ट, मौसम बाग़ (सीतापुर रोड), लखनऊ—२२६०२०

विश्वनागरी लिपि

।। ग्रामे-ग्रामे सभा कार्या, ग्रामे-ग्रामे कथां

सब भारतीय लिपियाँ सम-वैज्ञानिक हैं !

All the Indian Scripts are equally scient

भारतीय लिपियों की विशेषता।

'संसार की लिपियों में नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक है', यह कथन बिलकुल ठीक है। परन्तु यह कहते समय हमें याद रखना चाहिए कि वह सर्वाधिक वैज्ञानिकता, केवल हिन्दी, मराठी, नेपाली लिखी जानेवाली लिपि में नहीं, वरन् समस्त भारतीय लिपियों में मौजूद है। क, च, त, प आदि के रूपों में कोई वैज्ञानिकता नहीं है। वैज्ञानिकता है लिपि का ध्वन्यात्मक होना। स्वरों-व्यंजनों का पृथक् होना। अधिक से अधिक व्यंजनों का होना। सबको एक 'अ' के आधार पर उच्चरित करना। ['अ' अक्षर-स्वर, सकल अक्षरों का उस भाँति मूल आधार। सकल विश्व का जिस प्रकार 'भगवान्' आदि है जगदाधार।] एक अक्षर से केवल एक ध्वनि। एक ध्वनि के लिए केवल एक अक्षर। स्माल्, कैपिटल्, इटैलिक्स के समान अनेकरूपी नहीं; बस एक ही रूप में लिखना, बोलना, छापना और प्रत्येक अक्षर का समान वज़न पर

कन्नड - देवनागरी वर्णमाला

ಅ अ	ಆ आ	ಇ इ	ಈ ई	ಉ उ
क	का	कि	की	कु
ಊ ऊ	ಋ ऋ	ೠ ॠ	ಎ ऎ	ಏ ए
कू	कृ	कॄ	कॆ	के
ಐ ऐ	ಒ ऒ	ಓ ओ	ಔ औ	ಅಂ अं
कै	कॊ	को	कौ	कं
		ಅಃ अः		
		कः		
ಕ क	ಖ ख	ಗ ग	ಘ घ	ಙ ङ
ಚ च	ಛ छ	ಜ ज	ಝ झ	ಞ ञ
ಟ ट	ಠ ठ	ಡ ड	ಢ ढ	ಣ ण
ತ त	ಥ थ	ದ द	ಧ ध	ನ न
ಪ प	ಫ फ	ಬ ब	ಭ भ	ಮ म
ಯ य	ರ र	ಲ ल	ವ व	ಶ श
ಷ ष	ಸ स	ಹ ह	ಕ್ಷ क्ष	ಳ ळ

एकाक्षरी नाम। उच्चारण-संस्थान के अनुसार अक्षरों का कवर्ग, चवर्ग आदि में वर्गीकरण। फिर प्रत्येक वर्ग के अक्षरों का क्रम से एक ही संस्थान में थोड़ा-थोड़ा ऊपर उठते हुए अनुनासिक तक पहुँचना, आदि-आदि ऐसे अनेक गुण हैं जो अभारतीय लिपियों में एकत्र, एकसाथ नही मिलते। किन्तु ये गुण समान रूप से सभी भारतीय लिपियों में मौजूद है, अतः वे सब नागरी के समान ही विश्व की अन्य लिपियों की अपेक्षा 'सर्वाधिक वैज्ञानिक' हैं। सब ब्राह्मी लिपि से उद्भूत है। ताड़पत्र और भोजपत्र की लिखाई तथा देश-काल-पात्र के अन्य प्रभावों के कारण विभिन्न भारतीय लिपियों के अक्षरों के रूप में यत्र-तत्र परिवर्तन, हिन्दी वाली 'नागरी लिपि' को कोई श्रेष्ठता प्रदान नही करता। भारत की मौलिक सब लिपियां 'नागरी लिपि' के समान ही श्रेष्ठ हैं।

नागरी लिपि को 'भी' अपनाना श्रेयस्कर क्यों ?

"नागरी लिपि" की केवल एक विशेषता है कि वह कमोवेश सारे देश में प्रविष्ट है, जबकि अन्य भारतीय लिपियां निजी क्षेत्रों तक सीमित हैं। वहीं यह भी सत्य है कि नागरी लिपि में प्रस्तुत और विशेष रूप से खड़ी बोली का साहित्य, अन्य लिपियों में प्रस्तुत ज्ञानराशि की अपेक्षा कम और नवीनतर है। अतः समस्त भाषाओं की ज्ञानराशि को, सर्वाधिक फैली लिपि "नागरी" में अधिक से अधिक लिप्यन्तरित करके, क्षेत्रीय स्तर से उठाकर सबको सारे राष्ट्र में, यहाँ तक कि विश्व में ले आना परम धर्म है। विश्व की सब भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान (सत्साहित्य) तो है आत्मा, और 'नागरी लिपि' होना चाहिए उसका पर्यटक शरीर।

अन्य लिपियों को बनाये रखना भी कर्तव्य है।

वस्तुतः यह परम धर्म है कि समस्त सदाचार साहित्य को नागरी में तत्परता से प्राचुर्य में लिप्यन्तरित करना। किन्तु साथ ही यह भी परम धर्म है कि देशी-विदेशी अन्य सभी लिपियो को उत्तरोत्तर उन्नति के साथ बरक़रार रखना। यह इसलिए कि सबका सब कभी लिप्यन्तरित नहीं हो सकता। अतः अन्य लिपियों के नष्ट होने और नागरी लिपि मात्र के ही रह जाने से विश्व की समस्त अ-लिप्यन्तरित ज्ञानराशि उसी प्रकार लुप्त-सुप्त होकर रह जायगी जैसे पाली, प्राकृत और अपभ्रंश, सुरयानी आदि का वाङ्मय रह गया। जगत् तो दूर, राष्ट्र का ही प्राचीन आप्तज्ञान विलुप्त हो जायगा।

नागरी लिपि वालों पर उत्तरदायित्व विशेष !

इन दोनों परम धर्मों की पूर्ति का सर्वाधिक भार नागरी लिपि वालों पर है, इसलिए कि उनको 'सम्पर्क लिपि' का श्रेष्ठ आसन प्रदत्त है। मैं कह सकता हूँ कि उन्होंने अपने कर्तव्य का, जैसा चाहिए था, वैसा निर्वाह नहीं किया। परन्तु उसकी प्रतिक्रिया में अन्य लिपि वालों को भी "अपराध के जवाब में अपराध" नहीं करना चाहिए। 'कोयला' विहार का है

अथवा सिंहभूमि का है, इसलिए हम उसको नहीं लेंगे तो वह हमारे ही लिए घातक होगा। कोयले की क्षति नहीं होगी। अपनी लिपियों को समुन्नत रखिए, किन्तु नागरी लिपि को 'भी' अवश्य अपनाइए।

उपर्युक्त परिवेश में नागरी लिपि का पठन और समग्र श्रेष्ठ साहित्य का नागरी में लिप्यन्तरण तो आवश्यक है ही, किन्तु अन्य लिपियाँ भी अपनी लिपि में दूसरी भाषाओं के सत्साहित्य को लिप्यन्तरित तथा अनूदित कर सकती हैं। 'अधिकस्य अधिकं फलम्।' ज्ञान की सीमा नहीं निर्धारित है। 'भुवन बाणी ट्रस्ट' ने भी अवधी के रामचरितमानस को ओड़िआ भाषा में गद्य एवं पद्य अनुवाद-सहित, ओड़िआ लिपि में लिप्यन्तरित किया है। परन्तु सम्पर्क और एकीकरण की दृष्टि से 'नागरी लिपि' अनिवार्य है।

नागरी लिपि की वैज्ञानिकता मानव मात्र की सम्पत्ति है।

अब एक क़दम आगे बढ़िए। भारतीय लिपियों की सर्वाधिक वैज्ञानिकता, युगों की मानव-शृंखला के मस्तिष्क की उपज है। क्या मालूम इस अनादि से चल रहे जगत् में कब, क्या, किसने उत्पन्न किया? भारत संयोग से इस समय इस विज्ञान का कस्टोडियन् है, स्रष्टा नहीं। भारत भी न जाने कब, कहाँ तक और कितना था? अतः हम भारतीयों को नागरी लिपि के स्वामित्व का गर्व नहीं होना चाहिए। वह आज के मानव के पूर्वजों की देन है, सबकी सम्पत्ति है, सकल विश्व उसका समान गौरव से उपयोग कर सकता है। हमारा 'अहम्' उस लिपि की उपयोगिता को रुद्ध कर देगा, जिसके हम सँजोये रखनेवाले मात्र हैं। किन्तु विदेशों में बसनेवाले बन्धुओं को भी नागरी लिपि के गुणों को अपने ही पूर्वजों की उपज मानकर परखना चाहिए। ये गुण इस निबन्ध के प्रथम अनुबन्ध में अधिकांशतः वर्णित हैं। न परखने पर उनकी क्षति है, विश्व की क्षति है। अरब का पेट्रोल हम नहीं लेंगे, तो क्षति किसकी होगी? पेट्रोल की नहीं, हमारी ही।

फिर याद दिला देना ज़रूरी है कि क, प आदि रूपों में वैज्ञानिकता नहीं है। बे, काफ़, पे और के, पी, जैसे ही रूप रख सकते हैं, किन्तु लिपि में 'अनुबन्ध प्रथम' में ऊपर दिये हुए गुणों और क्रम को अवश्य ग्रहण करें। और यदि एक बनी-बनाई चीज़ को ग्रहण करके सार्वभौम सम्पर्क में समानता और सरलता के समर्थक हों, तो 'नागरी लिपि' के क्रम को अपनी पैतृक सम्पत्ति मानकर, ग़ैर न समझकर, मौजूदा रूप में भी ग्रहण कर सकते हैं। वह भारत की बपौती नहीं है। आज के मानव के पूर्वजों की वह सृष्टि है। इससे विश्व के मानव को परस्पर समझने का मार्ग प्रशस्त होगा।

नागरी लिपि में अनुपलब्ध विशिष्ट स्वर-व्यञ्जनों का समावेश।

हर शुभ काम में कजी निकालनेवाले एक दूर की कौड़ी यह भी लाते हैं कि "नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक होते हुए भी अपूर्ण है और अनेक स्वर-व्यंजनों को अपने में नहीं रखती। उनको कहाँ तक और कैसे समाविष्ट

किया जाय ?" यह मात्र तिल का ताड़ है। मौजूदा कर्तव्य को टालना है।

अलबत्ता अन्य भाषाओं में कुछ व्यंजन ऐसे हैं जो नागरी में नहीं हैं— किन्तु अधिक नहीं। भारतीय भाषा उर्दू की क़ ख़ ग़ ज़ फ़, ये पाँच ध्वनियाँ तो बहुत समय से नागरी लिपि में प्रयुक्त हो रही हैं। दुःख है कि आज़ादी के बाद से राष्ट्रभाषा के पक्षधर ही उनको ग़ायब करने पर लगे हैं। इसी प्रकार मराठी ळ है। इनके अतिरिक्त अरबी, इब्रानी आदि के कुछ व्यञ्जन हैं, किन्तु उनको नागरी की दैनिक लिपि में अनिवार्यतः रखना आवश्यक नही। विशिष्ट भाषाई कार्यों में, ज़रूरी मानकर, उन विशिष्ट भाषाई स्वर-व्यंजनों को चिह्न देकर दरसाया जा सकता है।

तदर्थ अरबी लिपि का आदर्श सम्मुख।

और यह कोई नयी बात नही। नितान्त अपरिवर्तनशील कहे जाने वालों की लिपि 'अरबी' मे केवल २७-२८ अक्षर होते हैं। भाषा के मामले में वे भी अति उदार रहे। "इल्म चीन (अर्थात् दूर से दूर) से भी लाओ"— यह पैग़म्बर(स०)का कथन है। जब ईरान मे, फ़ारसी की नई ध्वनियों च, प, ग, आदि से सामना पड़ा तो उन्होंने उनको अरबी-पोशाक— चे, पे, गाफ़ पहना दी। जब हिन्दोस्तान आये तो ट, ड, ड़ आदि से सामना पड़ने पर अरबी ही जामे में टे, डाल, ड़े आदि तैयार कर लिये। यहाँ तक कि सिन्धी में नागरी के सब महाप्राण और अनुनासिक, तथा सिन्धी के विशिष्ट अन्तःस्फुट अक्षरों को भी अरबी का लिबास पहना दिया गया। फिर 'नागरी' वाले तो औदार्य का दावा करते हैं, उनको परेशानी क्या है? और नागरी में भी तो परिवर्तन होते रहे है। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में प्रयुक्त ळ को छोड़ चुके हैं, और ड़, ढ़ आदि को अवर्गीय दशा मे जोड़ चुके हैं। नागरी लिपि में कुछ ही व्यंजनों का अभाव है। उनमें से कुछ को स्थायी तौर पर और कुछ को अस्थायी प्रयोग के लिए गढ़ सकते हैं। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने यह सेवा बड़ी सरलता, सफलता और सुन्दरता से की है।

स्वर और प्रयत्न (लहजा) का अन्तर।

अब रहे स्वर। जान लीजिए कि प्रमुख स्वर तीन ही हैं— अ, इ, उ— उनसे दीर्घ, संयुक्त (डिप्थांग)आदि बनते हैं। अतिदीर्घ, प्लुत, लघु, अतिलघु आदि फिर अनेक हैं जो विश्व में अनेक रूपों में बोले जाते हैं। भारतीय वैदिक एवं संस्कृत व्याकरण में अनेक है। वे स्वतंत्र स्वर नहीं हैं, प्रयत्न हैं, लहजा हैं। वे सब न लिखे जा सकते हैं, न सब सर्वत्र बोले जा सकते हैं। डायाक्रिटिकल मार्क्स कोशों में छाप-छापकर चमत्कार भले ही दिखा दिया जाय, प्रयोग में तो, "एक ही रूप में", अपने निजी शब्द निजी देशों में भी नहीं बोले जाते। स्वर क्या, व्यंजन तक। एक शब्द "पहले" को लीजिए। सब जगह घूम आइए, देखिए उसका उच्चारण किन-किन प्रकार से होता है। एक बिहार प्रदेश को छोड़कर कहीं भी "पहले" का शुद्ध

उच्चारण सुनने को नहीं मिलेगा। पंजाब, बंगाल, मद्रास के अंग्रेजी के उद्भट विद्वान् अंग्रेज़ी में भाषण देते हैं—उनके लहजे (प्रयत्न) बिलकुल भिन्न होते हैं। फिर भी न उनका उपहास होता है, न अंग्रेज़ी भाषा का ह्रास।

शास्त्र पर व्यवहार को वरीयता (तर्जीह)।

शास्त्र और विज्ञान से हमको विरोध नहीं। लिपि की रचना, शोध, परिमार्जन, देश-काल-पात्र के अनुसार करते रहिए, परन्तु व्यवहारिकता को अवरुद्ध मत कीजिए। खाद्यपदार्थ के तत्त्वों का गुण-दोष, परिमाण, संतुलन, न्यूनाधिक्य, और खानेवाले की शक्ति के साथ उनका समन्वय, यह सब स्तुत्य है, कीजिए। किन्तु ऐसा नहीं कि उस शोध-समीक्षा के पूर्ण होने तक कोई भूखा रहकर मर ही जाय। थाली रखी है, उसे भोजन करने दीजिए। आज सबसे जरूरी है राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का एक-दूसरे की ज्ञानराशि को समझने के लिए एक सम्पर्क लिपि की व्यापकता।

'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने स्थायी और मुक़ामी तौर पर अनेक स्वर-व्यंजनों की सृष्टि की है। दक्षिणी वर्णमालाओं में एकार तथा ओकार की ह्रस्व, दीर्घ—दोनों मात्राएँ हैं; हम बोलते हैं, किन्तु पृथक् लिखते नहीं। पढ़ने दीजिए, बढ़ने दीजिए। समस्त भाषाओं के ज्ञान-भण्डार को निजी क्षेत्रों से उठाकर धरातल पर नागरी लिपि के माध्यम से पहुँचाइए। नागरी लिपि मानव के पूर्वज की सृष्टि है, मानव मात्र की है। यहाँ से योरोप तक उसकी पहुँच है। यूरोपियों की लिपि-शैली नागरी थी। अक्षरों के रूप कुछ भी रहे हों। किन्हीं कारणों से सामीकुलों में भटककर अलफ़ा-बीटा के क्रम को थोड़े अन्तर के साथ अपना लिया। फिर पुराने संस्कारों से याद आया, तो स्वर-व्यंजन पृथक् कर दिये। किन्तु उनके क्रम-स्थान जैसे के तैसे मिले-जुले रहे। सामीकुल की भाषाओं ने भी प्रमुख स्वर तीन ही माने हैं, ज़बर-ज़ेर-पेश (अ इ उ)। और ौ का उच्चारण अरबी, संस्कृत, अवधी और अपभ्रंश का एक जैसा है (अई, अऊ)। किन्तु खड़ी बोली हिन्दी-उर्दू के अै, और औ, ऐनक, औरत जैसे। यह स्वरों की भिन्नता नहीं है, वरन् लहजा (प्रयत्न) की भिन्नता है।

पूर्ण वैज्ञानिक कोई वस्तु मनुष्य के पल्ले नहीं पड़ सकती। "पूर्ण विज्ञान" भगवान् का नाम है। सा-रे-ग-म-प-ध-नी, ये सात स्वर; उनमें मध्य, मन्द, तार; कुछ में तीव्र, कोमल—बस इतने में भारतीय संगीत बँधा है। उनमें भी कुछ तो अदा नहीं हो सकते, अनुभूति मात्र हैं। किन्तु क्या इतने ही स्वर हैं? संगीत के स्वरों का इनके ही बीच में अनंत विभाजन हो सकता है। जैसे अणु से परमाणु का, और उसमें भी आगे। किन्तु शास्त्र एक वस्तु है, व्यवहार दूसरी। व्यवहार में उपर्युक्त षडज से निषाद तक को पकड़ में लाकर संगीत क़ायम है, क्या उसको रोककर इनके मध्य के स्वरों को पहले तलाश कर लिया जाय? तब तक संगीत को रोका जाय, क्योंकि वह पूर्ण नहीं है? क्या कभी वह पूर्ण होगा? पूर्ण

तो 'ब्रह्म' ही है। "बेस्ट् इज् द ग्रेटेस्ट् ऐनिमी ऑफ़् गुड् ।" (Best is the greatest enemy of Good) इसलिए शग़ूल और शोब्दों की आड़ न ली जाय। नागरी लिपि पर्याप्त सक्षम है।

विश्व-व्यापकता के संदर्भ में नागरी लिपि के स्वरों का रूप।

लिखने के भेद— यदि नागरी को हिन्दी क्षेत्र की ही लिपि बनाये रखना है तो इ, उ, ए, ऐ, लिखने के अपने पुरानेपन के मोह में मुग्ध रहिए। और यदि उसे राष्ट्रलिपि अथवा विश्व तक से, यहाँ तक कि सामीकुल में भी आसानी से ग्राह्य बनाना चाहते हैं तो गुजराती लिपि की भाँति अि, अु, अे, अै लिखिए। किन्तु कोई मजबूर नहीं करता। विनोबा जी ने भी इसका आग्रह नहीं रखा। आकार और रूप का मोह व्यर्थ है। पुराने ब्राह्मी-शिलालेखों को देखिए। आपके मौजूदा रूप वहाँ जैसे के तैसे कहाँ हैं?

संस्कृत के तिरस्कार से भाषा-विघटन।

मेरा स्पष्ट मत है कि "संस्कृत" को राष्ट्रभाषा होना चाहिए था। वह होने पर, यह भाषा-विवाद ही न उठता। सबको ही (हिन्दी-भाषी को भी) समान श्रम से संस्कृत सीखने पर, स्पर्धा-कटुता का जन्म न होता, संस्कृत का अपार ज्ञान-भण्डार सबको प्रत्यक्ष होता, और हिन्दी की पैठ में भी प्रगति ही होती। उर्दू-हिन्दी की अपेक्षा, अन्य सभी भारतीय भाषाएँ, संस्कृत के अधिक समीप हैं। इसलिए कि प्रायः सभी भारतीय लिपियों में, संस्कृत भाषा उसी प्रकार अबाध गति से लिखी जाती है जिस प्रकार नागरी लिपि में। संस्कृत ही एक भाषा है जिसकी अनेक लिपियाँ अपनी हैं। किन्तु अब वह बात हाथ से बेहाथ है; अब "हिन्दी" ही राष्ट्रभाषा सबको मान्य होना चाहिए। यह इसलिए कि अन्य भारतीय भाषाओं में हिन्दी ही एक भारतीय भाषा है जो देश के हर स्थल में कमोबेश प्रविष्ट है।

आज क्या करना है?

सार यह कि हुज्जत कम, काम होना चाहिए। शास्त्र पर व्यवहार प्रबल है। समय बड़ा बलवान है, वह आवश्यकतानुसार ढलाई कर देता है। हिन्दी-क्षेत्र में ही घूम-घूमकर प्रतिमा-अनावरण, हिन्दी का महिमा-गान, अनुवादों की धूम, अमुक भाषा की हिन्दी को यह देन, अमुक भाषा में हिन्दी की यह छाप— यह सब दिशाविहीनता, क़िलेबन्दी और अभियान त्यागकर, नागरी लिपि में विश्व का साहित्य लाइए। टूटी-फूटी ही सही, हिन्दी बोलना भी— ("ही" नहीं बल्कि "भी") बोलने का अभ्यास कीजिए। लिपि और भाषा की सार्थकता होगी। मानवमात्र का कल्याण होगा। हमारी एकराष्ट्रीयता और विश्वबन्धुत्व चरितार्थ होगा।

—नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ।

पीठिका एवं अनुवादकीय

रामायण-महाभारत महाकाव्यों की रचना

"महाकाव्य की रचना जातीय संस्कृति के किसी महाप्रवाह; सभ्यता के उद्‌गम, संगम, प्रलय —किसी महाचरित्र के विराट् उत्कर्ष अथवा आत्मतत्त्व के किसी चिर अनुभूत रहस्य को प्रदर्शित करने के लिए की जाती है। आर्य सभ्यता के विकास-काल में देव-दानव संस्कृतियों के संघर्षकाल में महर्षि वाल्मीकि ने देवपक्ष (संस्कृति) का विजयघोष करनेवाले रामायण महाकाव्य की रचना की। वेदव्यास ने द्वापर के अंत में कुरुक्षेत्र संग्राम का स्मारक महाभारत ग्रंथ रचा जो कलियुग का अग्रदूत, अत्यंत दुःखान्त सृजन है।" —आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी

रामायण-महाभारत महाकाव्य हैं। काव्य की चमक, दर्शन की महक, धर्म की करुणा, इतिहास की आधारशिला प्राप्त करने का गौरव इन्हें है। इनकी व्याप्ति सर्वकालीन है। महापुरुषार्थों की साधना इनका ध्येय है। इनकी गहराई मानव-जीवन जितनी है; जीवन की आशा, आकांक्षाएं इनके ताने-बाने हैं। इनका उद्‌गम स्थान है:—

'वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान'

निराशा के बादलों के घिर आने पर भी, आशा की बिजली की कौंध से खाली नहीं। शोकरस के महाप्रवाह के मध्य माधुर्य के महाद्वीप विराजमान हैं। नन्ददुलारे वाजपेयी के शब्दों में—

"रामायण-महाभारत हमारे विचार से जगत्तत्त्व के दो विपरीत चक्र हैं— विपरीत होते हुए भी समान, तराजू के तुले हुए पलड़ों की भाँति। ये दोनों चक्र क्रमशः आशा-निराशा, विकास-ह्रास और उत्पत्ति-प्रलय के हैं जो दोनों विपरीत, किन्तु सम हैं। सम न होते तो सृष्टि-चक्र न चलता। रामायण सृष्टि की आशा है, महाभारत निराशा। यदि काल-चक्र के इन दोनों महान रूपकों को काल के ही एक लघु रूपक में प्रकट करें तो कहेंगे कि रामायण आधी रात से लेकर दोपहर दिन तक का बारह घण्टा है और महाभारत दोपहर दिन से लेकर आधी रात तक का बारह घण्टा। दोनों की अवधि एक, उत्कर्ष एक। एक के नायक राम, दूसरे के कृष्ण; दोनों अवतार। दोनों ही बराबर।"

आदिकाव्य रामायण

संसार के साहित्य में एक विशिष्ट स्थान-प्राप्त अमर महाकाव्य है श्रीमद्‌रामायण। यह एक मामूली व्यक्ति के चरित्र से सम्पन्न एक मामूली

काव्य नहीं है। इस महाकाव्य के स्मरण मात्र से कविता-वन-विहारी आदिकवि वाल्मीकि के प्रति श्रद्धावनत वाणी से उक्ति निकल पड़ती है—

कूजन्तम् राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकि कोकिलाम्॥

आदिकवि वाल्मीकि-विरचित यह आदिकाव्य! 'रामचरितामृत सागर' भारतीय साहित्य इतिहास की अनुपम महद्घटना है। त्रेतायुग से आधुनिक युग तक बहुधा आगे चलकर भी भारतीय मनोमंदिर में वसे एक महापुरुष का दिव्य चरित है। आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श भ्राता बने जीवन बितानेवाले एक अवतारी पुरुष के स्थान और मान को प्राप्त करनेवाले राजपुरुष के अमर जीवन को प्रकाशित करनेवाला आदर्श महाकाव्य है। भूतपूर्व काव्यों पर परदा डालकर तव से अब तक के जनमानस को मोह लेनेवाली इस कृति ने 'आदिकाव्य' की जो उपाधि पायी है, बिलकुल स्वाभाविक है। समूचे रामचरित का 'अथ' से 'इति' तक आमूलाग्र साक्षात्कार कर, कथा को मूर्तिमान् बनाए एक प्रत्यक्षदर्शी के रूप में हू-ब-हू वर्णित करते कुश-लव के द्वारा संगीत-सुधा-माध्यम से इस महाकृति को लोकप्रचलित किया। जनजीवन के अंतर्-बाह्य प्रवृत्तियों का सूक्ष्म निरीक्षण करते लोकजीवन से परे बढ़े होकर जगत और जीवियों के जीवन की अन्वीक्षा करते विरागी संयमी महर्षि वाल्मीकि की लोकव्यवहार-सूक्ष्मग्राही प्रतिभा का फल यह महाकाव्य केवल भारतवर्ष के साहित्य की अमूल्य कृति ही नहीं अपितु देश तथा देशवासियों की निजी संपत्ति, उनकी नस-नस को फड़का देनेवाली जीवन-स्फूर्ति, आलोक की नगरी, भारतीय संस्कृति की महान उपज है; वाल्मीकि-प्रदत्त इस परम्परा को कन्नड भाषाभाषियों को प्रदान करनेवाले हैं कुमार वाल्मीकि तथा उनकी इस देन का नाम है 'तोरवे रामायण'। भारतीय साहित्य में रामायण-काव्यों की कोई कमी नहीं है। कन्नड के सुप्रसिद्ध कवि 'कुमार व्यास' कहते है—

"तिणुकिदनु फणिराय रामायणद कविगळ भारदलि।
तिथिणिय रघुवर चरितेयलि कालिडलु तेरपिलु॥"

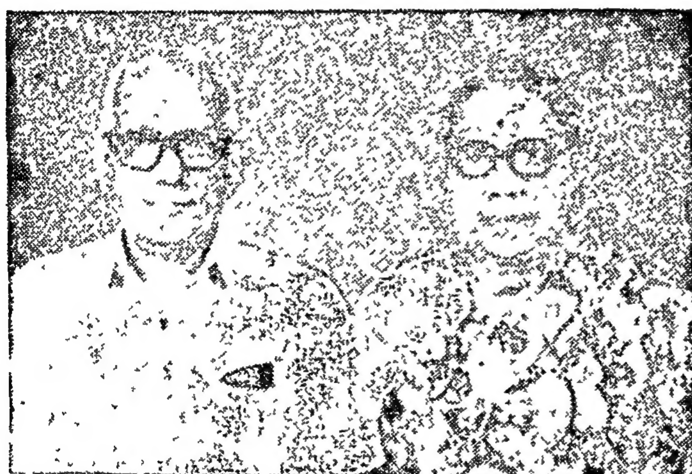
[अर्थात् रामायण के रचयिता कवियों की भीड़ के कारण फणिराज आदिशेष दबने लगा; क्योंकि वह भीड़ इतनी है कि वह किसी को अपना पैर वहाँ— रामचरितनिर्माण मे —रखने का अवकाश ही नहीं देती।] संस्कृत-हिन्दी में ढेर सारी रामायण की पुस्तकें है। कन्नड में भी इस दिशा में कोई कमी नही। इतना ही नहीं श्रीलंका, टिबेट, भूटान, मंगोलिया, सैबिरिया, चीन, लाओस, काम्बोडिया, थाइल्यांड, इण्डोनेशिया, मलेनेशिया,

फिलिफाइन्स, बर्मा वगैर: एशियाई देशों में रामकथा की भरमार है। अत: कुमार व्यास की उल्लिखित उक्ति में कोई अत्युक्ति नहीं।

कन्नड-साहित्य में कुमार व्यासयुग (रूपरेखा)

पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक के अर्थात् आधुनिक युग से पहले तक का सुदीर्घ काल सामान्यतया 'कुमार व्यास' युग कहलाता है। इस युग को पहले वैष्णव युग कहते थे। इसी युग को नवीन इतिहासकारों ने 'कुमार व्यास युग', नाम दिया है।

इस युग में पुरानी काव्यधाराओं के साथ-साथ एक नयी काव्यधारा भी आ मिली तथा जैन, लिंगायत और वैदिक —तीनों मतों के सभी प्रकार के ग्रंथों की रचना इस काल में हुई है। इस युग में षड्पदी, सांगत्य, त्रिपदी आदि छन्द तथा कीर्तनों का आधिक्य है। प्राचीन परम्परागत चम्पू शैली का भी पुनरुदय हुआ है। विजयनगर के राय (राजा) और मैसूर के ओडेयर राजाओं की विशाल छत्र-छाया में तथा और भी बहुत से सामन्तों के आश्रय में इस युग में कन्नड साहित्य खूब फूला फला।



सहधर्मिणी श्रीमती सरस्वती भट सहित, प्रो० श्री एस्० व्ही० भट

सोलहवीं शताब्दी में कृष्णदेव राय भारत भर में प्रख्यात राजा थे। इन्हीं के समय विजयनगर वैभव की पराकाष्ठा पर पहुँचा। उसकी राजधानी को देखकर विदेशी व्यापारियों तथा यात्रियों की आँखें चौंधिया जाती थीं तथा उनके लिखे वर्णन को पढ़कर आज भी हम आश्चर्य-चकित रह जाते हैं। फिर बाहरी शत्रुओं और अंत:कलह के कारण उसकी जड़ खोखली होती गयी और 'रक्कस तंगडी' के युद्ध के छोटे से कारण से वह स्वप्न भंग हो गया। किसी केन्द्रीय शक्ति के अभाव में राजकीय संगठन सुचारु न रहा। छोटे-मोटे राजा आपस में लड़ते रहे। विजयनगर साम्राज्य के छिन्न-भिन्न हो जाने के कुछ समय बाद सुदैव से कर्नाटक के (आज के) दक्षिण भाग में मैसूर को राजधानी बनाए वोडेयर-वंशी राजाओं का राज्य स्थापित हुआ, जिसका शासन वर्तमान शताब्दी तक

रहा। इस वंश के कंठीरव नरस राज, चिक्कदेव राज आदि प्रतापी राजाओं के समय में तथा आश्रय में कन्नड साहित्य की श्रीवृद्धि हुई। बीच-बीच में मुसलमान, मराठा और अंग्रेज़ शक्तियों से मैसूर राज्य को धक्के लगते रहे, किन्तु उन सबको सहकर तत्कालीन इस राज्य ने काफ़ी उन्नति की। कुछ समय तक मैसूर में हैदर और टीपू का शासन रहा, किन्तु उन्होंने कन्नड की विशाल संस्कृति से मेल कर लिया। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में मैसूर राज्य के अलावा (जिसमें केवल दक्षिणी कर्नाटक ही था) कर्नाटक का अन्य विस्तृत भू-प्रदेश अंग्रेज़ों तथा निज़ामशाही, बिदरशाही, कुतुबशाही आदि छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था।

उल्लिखित राजनैतिक परिस्थिति की प्रतिक्रियास्वरूप कर्नाटक के सांस्कृतिक जीवन में सामर्थ्य और दुर्बलता —दोनों ही चरम सीमा तक देखी गयी। १५वीं शताब्दी से पहले के जनजावन के अध्ययन के लिए तो सामग्री बहुत कम मिलती है; केवल शिलालेखों तथा विदेशी व्यापारियों, यात्रियों और मुसलमान लेखकों के लिखे वृत्तांत भी तत्कालीन परिस्थितियों पर काफ़ी प्रकाश डालते हैं। अपने वैभवकाल में विजयनगर साम्राज्य दक्षिण भारत की कन्नड, तमिळ और तेलुगु आदि सभी भाषाओं और शैव, वैष्णव, जैन, मुसलमान आदि सभी मतावलम्बियों का आश्रयस्थान था। यद्यपि विजयनगर के राजा स्वयं वैदिक धर्मानुयायी थे, वे सभी धर्मों और मतों में समन्वय-बुद्धि रखते थे।

पम्प-युग में मार्ग अथवा प्रौढ़ काव्य का प्राचुर्य था। वसव-युग मार्ग से देसी की ओर परिवर्तन का काल था। कुमार व्यास-युग में देसी का प्राधान्य रहा। यों तो इस विस्तृत युग में साहित्य भी मिश्रित रहा और किसी एक नाम से उसका परिचय देना कठिन है। वैसे तो बारहवीं सदी में ही 'हरिहर', 'राघवांक' नामक कवियों ने देसी छंद को प्रयोग में लाकर कन्नड साहित्य के स्वतंत्र युग की स्थापना की ही थी। उनका बोया यह बीज सुचारु वृक्ष के रूप में फलभरित जो हुआ, पन्द्रहवीं सदी में ही। इनके उदय के पहले जो काव्य की उपजाऊ भूमि थी, सांप्रदायिकता के दोष से मुक्त न थी, अतः इस समय 'कुमार व्यास' जैसा अद्भुत कवि जो पैदा हुआ उसने जनता का मौढ्य निवारण करने के लिए देसी छंद को स्थिर किया।

बारहवीं सदी में उदित कन्नड के 'वचन' साहित्य ने जनता के झुंड के झुंड आकर्षित किए। इसी प्रकार के अन्य विधान से लोगों को वैदिक के प्रति आकर्षित करनेवाला जो साहित्य प्रकाश में आता है— वही 'दास साहित्य' है, जो भक्तिभावसंपन्न साहित्य है। यह कार्य ('दास' साहित्य का उदय) तेरहवीं सदी में हुआ। वैदिक पंथियों द्वारा सर्वप्रथम कन्नड को, धार्मिक साहित्य सृष्टि की रचना के लिए, इस प्रकार प्रयुक्त किया जाना,

एक तरह से अद्भुत क्रांति ही समझना चाहिए। वीर शैव धर्म के प्रभाव से अपने जीने-मरने की समस्या का प्रश्न उपस्थित हुआ तो वैदिक मतावलंबियों ने वैष्णवों के साहित्य की श्रीवृद्धि जनभाषा कन्नड में करना शुरू किया। वैदिक काव्य-रचना देसी छन्दों में अत्यधिक मात्रा में प्रकट हुई। वचन साहित्य जैसे 'हरिहर' (कवि) के लिए प्रेरणादायक बना, वैसे ही 'दास साहित्य' कुमार व्यास के लिए स्फूर्ति का संगम रहा।

फलस्वरूप वह युग कुमार व्यास युग कहलाया। इस युग में देसी का प्राधान्य रहा। कुमार व्यास ने कन्नड में महाभारत की रचना करके अन्य कवियों को एक प्रकार से मार्ग-दर्शन ही किया। अन्य अनेक भागवतों और विष्णुभक्तों ने भी उसका अनुसरण करते हुए रामायण, महाभारत, भागवत आदि पुराणों के कन्नड-अनूदित संस्करण रचे। उन्होंने उनमें प्रायः षट्पदी और सांगत्य छन्दों का प्रयोग किया।

कन्नड में राम-काव्य परम्परा

"नाना भाँति राम अवतारा। रामायन सत कोटि अपारा॥" —तुलसी

तुलसी द्वारा कथित इस परमसत्य का दर्शन कन्नड में भी होता है। कन्नड के प्रसिद्ध महाभारत-रचयिता कविवर कुमार व्यास (ई० १४३०) का कथन पढ़ चुके हैं:—

"रामायण के कवियों के भार से शेषनाग डोल उठा। रघुवर-चरितों के स्तोम के बीच पाँव रखने के लिए भी तिल भर जगह नहीं।"

इससे स्पष्ट है कि प्राचीन कन्नड साहित्य में रामायण की एक विस्तृत परम्परा रही है। कुमार व्यास के पूर्व प्राप्त होनेवाली रामायणों की संख्या संक्षेप में यों है:—

(१) पोन्न (ई० ९५०) का भुवनेक रामाभ्युदय बत्तलेश्वर रामायण

(२) कवि नागचन्द्र— (क़रीब क्रि० श० ११४०) पंपरामायण अथवा रामचन्द्र चरित पुराण। इस कवि का नाम 'अभिनव पंप' भी है। यह जैन है; इनका काव्य चंपू काव्य है। रामायण-रचना जैन परम्परा की है। श्रेष्ठ प्रौढ़ काव्य है। जैन रामायणों में यह उत्कृष्ट है। वर्णन सुललित और मनोहर हैं। कन्नड की सर्वप्रथम उपलब्ध कृति है यह रामायण।

(३) कुमुदेन्दु (क़रीब क्रि० श० १२७५) विरचित कुमुदेन्दु रामायण। नागचन्द्र के पर्यावर्ती रामायणियों में कुमुदेन्दु का नाम मुख्य है। यह भी जैन कवि हैं। इसमें षट्पदी छन्द के सभी प्रकार तथा रगले छन्द प्रयुक्त हुआ है। नागचन्द्र का प्रभाव इस पर पर्याप्त मात्रा में पड़ा है। नागचन्द्र के भाव तथा भाषा तक का अनुकरण इसने किया है। ये तीनों रामायणें वैदिक रामायण नहीं हैं। कन्नड में बहुत से रामायण ग्रंथ थे, इस तथ्य का समर्थन कन्नड के आदिकाव्य "कविराज मार्ग" से ही होना है।

कन्नड की अन्य रामायणों के बारे में अंत में चर्चा की जायगी। अब हम प्रस्तुत रचना 'तोरवे रामायण' तथा रचयिता 'कुमार वाल्मीकि' के बारे मे चर्चा करेंगे।

कुमार वाल्मीकि (कवि)

जैसे पंप युग में महाकवि पंप ने महाभारत की कथा (पम्पभारत) कन्नड में लिखी तो उससे प्रेरणा लेकर अभिनव पम्प ने मार्ग शैली में (पुरानी कन्नड में) रामायण का कन्नड संस्करण तैयार किया था। उसी तरह कुमार व्यास युग में कुमार व्यास ने महाभारत लिखा तो उससे प्रेरणा लेकर कुमार वाल्मीकि ने रामायण का देसी (नयी) कन्नड शैली में संस्करण तैयार किया।

तोरवे नरहरिः— (ई० १५००) 'कुमार वाल्मीकि' इसका काव्य नाम है। यह ब्राह्मण घराने का था। यह तोरवे के नरसिंह भगवान का अनन्य उपासक था। स्वामी नरसिंह भी विष्णु का एक अवतार है। श्रीराम भी विष्णु के ही अवतार हैं। अतः अपने आराध्य देवता नरहरि (नृसिंह भगवान) का कृपा-भाजन बनने के उद्देश्य से इसने रामायण की रचना की है। इतना ही प्रत्येक 'संधि' के अंत में तोरवे के नरहरि के 'अंकित' (नामांकन) का निर्देश किया है। इसीलिए इनको 'तोरवे नरहरि' यह लोकप्रिय नाम प्राप्त हुआ होगा। कवि के नाम की तरह इनसे रचित रामायण भी 'तोरवे रामायण' अभिधान से प्रचलित है।

तोरवे

यह कवि का जन्मस्थान है। आज यह एक बड़ा गाँव है। बीजापुर शहर से पश्चिम चार मील दूरी पर है। बीजापुर प्राचीन समय में एक राज्य था। वहाँ बहामनी सुल्तान का राज्याधिकारी शासक था। बहामनी राज्य के टुकड़े हो जाने पर वह स्वतन्त्र हुआ। आदिलशाही घराने ने उसका शासन सँभालना शुरू किया। बीजापुर राजधानी रही। बीजापुर राजधानी के वैभवपूर्ण दिनों में 'तोरवे' बहुत हद तक उसी शहर का एक हिस्सा-जैसा लगता था। बीजापुर शहर भर की पानी की आवश्यकता ध्यान में रखते हुए कई नहर, तालाब, कुओं का निर्माण किया गया। आदिलशाह प्रथम के समय (क्रि० श० १५५७-१५८०) शहापुर में बंधवायी गयी 'चाँद बावड़ी' नामक कुआँ बहुत प्रसिद्ध है। इस कुएँ से नलों के द्वारा शहर भर के लिए पानी के वितरण की व्यवस्था की गयी थी। तोरवे के नजदीक के क़रीब एक मील की दूरी पर के एक बड़े नाले पर बाँध बँधवाकर एक बड़ा तालाब बनाकर वहाँ से 'तोरवी' तक बड़ी नहर द्वारा 'तोरवी' ग्राम

के निचले हिस्से से नहर की खुदाई करके उसी से बहते पानी का संचय एक तालाब में करते हुए नालों के द्वारा वितरित किया-सा लगता है। 'तॉरवि' के पश्चिम-दक्षिण दिशाओं में बहते पहाड़ी झरनों के पानी का संचय करके उसे दो छोटे तालाबों में रूपांतरित करते हुए वहाँ से अफ़ज़लपुर के तालाब को नल के द्वारा पानी वितरित किया हुआ सा लगता है। [बंबई गेजेटियर— १८९३ पृ० ५५७ तथा उसी का पृष्ठ ५२९-३०] 'चाँद बावड़ी' नामक कुएँ को 'तॉरवॆ' के नहर द्वारा पानी वितरित होता था तथा सारे बीजापुर के पानी के वितरण-कार्य में 'तॉरवॆ' का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण था, उसका नाम 'तॉरॆबाय' पड़ा होगा। वही नाम आगे चलकर 'तॉरवि' अथवा 'तॉरवॆ' हुआ होगा। [कन्नड में तॉरॆ —इसका अर्थ है नाला, झरना।]

काल

तॉरवॆ नरहरि ने अपनी संपूर्ण रचना में, अपने समय के बारे में कहीं भी थोड़ा सा भी उल्लेख नहीं किया। अतः इनका समय विवादात्मक है। ये राजाश्रयी या दरबारी कवि नहीं रहे। इन्होंने अपने पूर्व के कवि कुमार व्यास के सिवा अन्य किसी की स्तुति नहीं की है। इस तरह कुमार व्यास के नाम का स्पष्ट उल्लेख होने के कारण नरहरि का समय कुमार व्यास के पश्चात् का है। यह निश्चित है। "कुमार व्यास का समय क़रीब क्रि० श० १४०० का है।" रं० श्री० मुगळी जैसे साहित्याचार्यों की राय यही है।

तत्कालीन राजनैतिक परिस्थिति

उन दिनों बीजापुर एक प्रबल राज्य था। मंत्री महमद गवान (१४८१ में) की हत्या करवाने के कारण बाहमानी राज्य फूट गया। तत्पश्चात् यूसुफ़ आदिलखाँ बीजापुर के शासक नियुक्त हुए। क्रि० श० १४८९ तक जो यह राज्य का शासक रहा, स्वतंत्र हुआ और यूसुफ़ आदिलशाह नाम से राज्य करने लगा। (क्रि० श० १४८९-१५१०) इनके पश्चात् इनके पुत्र इस्माइल आदिलशाह ने (१५१०-१५३४) राज्य किया। तदनंतर अली आदिलशाह प्रथम (१५५७-१५८०), इब्राहीम आदिलशाह द्वितीय (१५८०-१६२६) ने क्रमशः राज्य सँभाला। द्वितीय इब्राहीम आदिलशाह ने 'तॉरवॆ' की अभिवृद्धि की। यह स्वयं चितेरे, कवि तथा गवैये थे। १५६५ में गोलकोंडा, बिरार, अहमदनगर तथा बीजापुर के सुल्तानों के संयुक्त मोर्चों ने 'रक्कसतंगडी' नामक स्थान में विजयनगर के राजाओं से युद्ध किया, रामराय की हत्या करके विजयनगर पर विजय पायी। बीजापुर के सुल्तानों को अहमदनगर, गोलकोंडा तथा विजयनगर के राजाओं से बार-बार टक्कर लेनी पड़ती थी। इस्माइल आदिलशाह के शासन-काल में कृष्णदेवराय ने बीजापुर को अपने आधीन कर लिया

था (१५३४)। यह सब इतिहास का विषय है। बीजापुर के शासकों की संधि-विग्रह की (राजनैतिक) परिस्थितियों का प्रभाव कवि पर पड़ना स्वाभाविक है। कवि ने इन युद्धों को स्वयं देखा होगा या सुनकर जानकारी प्राप्त कर ली होगी। शायद, इसी वजह कवि ने अपने समूचे काव्य का आधे से अधिक भाग युद्ध-वर्णन के लिए निवेदित किया है। (१५६५ में) तालीकोट— रक्कसतंगडगी में भयानक युद्ध जो हुआ था, उसका डरावना प्रभाव जनमानस पर अभी-अभी ताज़ा था। उसी युद्ध की भयानक स्मृतियों का सजीव चित्रण तौरवें रामायण के युद्धकांड में उभर आया है। कवि के जीवन-काल सम्बन्धी विवरणों को पढ़ने से यह अंश दुविधाजनक लगता है। कवि का काल विवादात्मक है। आदिल शाह (१५५७-१५८०) के ज़माने में 'तौरवें' के निर्माण सम्बन्धी ऐतिहासिक आधार के अभाव में कहना पड़ता है— 'तौरवें' ग्राम इस अवधि के पूर्व ही था तथा वहाँ नरसिंह मंदिर भी रहा होगा।

आत्म-प्रशंसा

तौरवें के नरसिंह भगवान पर कुमार वाल्मीकि की प्रगाढ़ श्रद्धा है। फलस्वरूप काव्यारंभ में श्री नृसिंह की स्तुति करते कहते हैं— 'तौरवेंय नरहरि पालिसुगें जगक'— तौरवें के नरसिंह भगवान दुनिया की रक्षा करें। इतना ही नहीं अधिकांश सधियों के अंत में श्रीराम को 'तौरवेंय राय नरहरि' (तौरवें के राजा नरहरि), 'तौरवेंय नरहरि' 'तौरवेंय नरसिंह', 'तौरवेंयाधिपति नरसिंह' —वग़ैरः उपाधियों से प्रशंसा की है। काव्य के प्रारंभ में शिव, ब्रह्मा, आंजनेय, सरस्वती, विनायक आदियों की, क्रम से स्तुति करने के बाद अपने गुरु सार्वभौम मध्वाचार्य जी की स्तुति की है। तत्पश्चात आदिकवि, कविराजहंस महादिवोकस प्रचुर भाषा कविजनोत्तंस [illegible] 'रघुवर कथा विमलोदर्दिदु महामुनि प्राचेतसंवंदे' इस तरह प्रशंसा [illegible] करते वाल्मीकि कवि को कृतज्ञता समर्पित की है। [illegible] अपने पूर्व के कवि कुमार व्यास का स्मरण करते कुमार वाल्मीकि कवि काव्य-प्रशंसा में दत्तचित्त हैं। 'सुन्दरतम कर्नाटक विस्तार रामायण के कर्ता कुमार वाल्मीकि के कथापति तौरवेंयाधिनाथ बीर नरहरि' जो है तो इस सत्कविताविलाससंपन्न, विद्वानों की हृदयाकर्षक कुतूहलभरी कथा को कौन पसंद न करेगा ? —इस प्रकार कवि प्रश्न करते हुए अपने काव्य के बारे में यों प्रशंसा करते हैं:—

"सुकविगळ सुम्मान सूरि प्रकर दमलज्ञान मुनिकर
मुकुर गुणिगलिगें गूढ निधि सुरसरि सुधाशरधि
अकुटिलर मन मेंच्चु सिरि हरि भकुतरुम्मह दच्चु
शिवसेवकर मेंच्चु कुमार वाल्मीकि प्रबन्ध कृति"

[अर्थ है— कुमार वाल्मीकि का यह काव्य सुकवियों का उल्लास है, सुरजनों के लिए अमल ज्ञान है, मुनिजनों का करमुकुर है, गुणियों की गूढ़ निधि है, सहृदयों की सुधारस निधि है, अकुटिलों के मन की प्रिय वस्तु है, हरिभक्तों के लिए प्रियकर वस्तु है, शिव-सेवकों के लिए पारितोषिक है।]

युद्धकांड के अंतिम पदों मे भी कवि अपनी षट्पदियों की तथा कुमार व्यास की प्रशंसा कर लेते हुए कहते है:—

"वर कुमार व्यास ने बंधुरद भारत कृतिगे कर्तनु
निरुत रामायणर्के सुकवि कुमार वाल्मीकि
दोरॆ विचारव देनु पेळदि रॆरडु काव्यर्के मिक्क
शब्दाक्षर दरिद्र बंध बंधुर रस विवर्जितर"

[भाव है— कुमार वाल्मीकि को बड़ा अभिमान है कि कुमार व्यास तथा अपनी बराबरी कौन कर सकता है। काव्यक्षेत्र में केवल वे दोनों समर्थ हैं। अन्य सभी शब्दाक्षर-दरिद्र हैं; छंद-बंध में रस विवर्जित हैं।]

यह अपने मुँह मियाँ मिट्ठू वाली बात थोड़ी सी अखरती है; वह भी ऐसी जनप्रिय कवि के मुँह से। अस्तु।*

रं० श्री० मुगळी कहते हैं— "कुल मिलाकर तोरवे रामायण वाल्मीकि रामायण का संग्रह होने पर भी राम को विष्णु के अवतार के रूप में देखने की भक्तिभावसंपन्न दृष्टि में भागवतीय दृष्टिप्रभाव सुस्पष्ट है।" कथन मननीय है। कुमार वाल्मीकि ने बालकांड से प्रारंभ कर श्रीराम के सिंहासनाभिषिक्त होने तक की युद्धकांड की कथा का निरूपण अपनी मौलिक शैली में किया है। उत्तरकांड की कथा इसमें नहीं है। उमा-महेश्वर-संवाद रूपी अध्यात्म रामायण के अंशों को कवि ने अपने काव्य में संयोजित कर लिया है। श्रीराम की मानवावतारी महिमा तथा विष्णु-महत्तत्त्व की प्रशंसा में अध्यात्म रामायण से कवि ने काफ़ी स्फूर्ति प्राप्त की है।

कथा-निर्वाह की दृष्टि से वाल्मीकि रामायण, तोरवे रामायण में कुछ विशेष फ़र्क़ नहीं है। वाल्मीकि का विस्तृत निरूपण का अभाव थोड़ा बहुत तोरवे के नरहरि में है। वाल्मीकि रामायण में संदर्भानुकूल कुछ पूर्वकथाएँ तथा आख्यानों का विवरण है। नरहरि उनका संक्षेप में निरूपण करता है, या छोड़ देता है। क्योंकि उनसे मूल कथा को कोई लाभ नहीं पहुँचता। बालकांड में विश्वामित्र यज्ञ-रक्षणार्थ राम-लक्ष्मण को लिवा लेने आते हैं; तब वाल्मीकि विश्वामित्र के पूर्व

---

* ऐसा नहीं है, यह एक आत्मविश्वास का पवित्र दर्प है। बंगला में कृत्तिवास कहते हैं— "कृत्तिवास पण्डितेर वाणी विचक्खन (विचक्षण)"। तो यह तेजस्विता है। अभिमान नहीं, विशेषकर जब संस्कृत के विद्वान क्षेत्रीय भाषाओं में रामचरित्र की रचना करने पर उनका उपहास करते थे। —नन्दकुमार अवस्थी

चरित्र का विस्तार के साथ वर्णन करते हैं। तारका-वध, यज्ञरक्षा के उपरान्त विश्वामित्र का राम-लक्ष्मण के साथ मिथिला जाना, जाते वक़्त राम का पथ पर दिखायी पड़नेवाली नदियों के बारे में प्रश्न पूछना, तत्सम्बन्धी पूर्वकथाओं का विश्वामित्र द्वारा निरूपण, कुशनाभ कन्या का आख्यान, सगर-पुत्र की कथा, गंगावतरण, अमृतोत्पत्ति-कथा —वग़ैरः। नरहरि ने इनका विस्तार के साथ वर्णन छोड़ दिया है। बालकांड के ७७ सर्गों में से करीब तीस सर्ग इन कथाओं से भरे हैं। संग्रह-संक्षेप की दृष्टि से नरहरि का निरूपण सुयोग्य ही है।

कथानक में परिवर्तन और परिवर्धन

दशरथ की अतिपुत्रमोह की बातें या विश्वामित्र की क्रोधतप्त वार्तालाप तॊरवॆ रामायण में नहीं हैं। राम की अवतार-महिमा नरहरि कवि विश्वामित्र द्वारा दशरथ को समझाकर अपने कथा-नायक में अतीव भक्ति-भाव पैदा करते हैं। इस भक्ति-भाव का अनंत स्रोत अजस्र धारा में सारे तॊरवॆ रामायण में प्रवाहित है। फलस्वरूप दशरथ विश्वामित्र के कृपापात्र बनकर राम-लक्ष्मण को विदा करता है।

वाल्मीकि रामायण में धनुर्भंग तथा सीता-विवाह का विवरण मात्र है; लेकिन स्वयंवर का वर्णन नहीं है। दशरथ को बुला लिया जाता है। सीता-राम का ब्याह संपन्न होता है।

नरहरि ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए एक भारी स्वयंवर-समारोह की आयोजना तॊरवॆ रामायण में की है। देवताओं और राजाओं का एक-एक करके दिखाने का सन्निवेश, प्रत्यंचा चढ़ाने जाकर राजओं का विफल हो, हँसी-मज़ाक़ का पात्र बनना— यहाँ तक कि रावण भी हँसी-मज़ाक़ का शिकार बन जाता है। प्रत्यंचा चढ़ाते वक़्त धनुष की डोरी के छिटक जाने से रावण जो नीचे गिरता है, उस समय उसकी दशा—

"दॆसॆदॆसॆगॆ सिडिदवु कीरिट प्रसर; हरिदवु हार
वॆदॆयलि वसवळिदु विलुगुळिसितु रुधिरवनु वदनदलि
रसद लम्पट किक्षुवनु खंडिसलु सिलुकिदनालगॆय
गंगसद नरिय बॊलिर्दना बिल्लडिय लसुरॆंद्र"

[मुकुट के टुकड़े-टुकड़े हो चारों ओर छिटक गये। हार टूटकर गिर पड़ा। खून क़ै करने लगा। ईख चूसने जाकर अपनी जीभ छिलवा लेनेवाले सियार की तरह रावण धनुष के नीचे फँस गया है।] तॊरवॆ में यह चित्र अति सुन्दर रीति से प्रस्तुत किया गया है।

वाल्मीकि रामायण में कैकेयी का वर माँगना तथा राम-सीता-लक्ष्मण का वनगमन-प्रसंग अत्यंत दीर्घ तथा हृदयस्पर्शी है। अयोध्याकांड मानो एक सुन्दरतम कौटुम्बिक चित्र है। इस कांड के हृदयस्पर्शी प्रसंग

हैं— सौत का मात्सर्य, दशरथ का पुत्र-मोह, पत्नी को वादा कर छटपटाने की दयनीय स्थिति, राम की लोकप्रियता, उसका निर्मत्सर स्वभाव, शांत मनोभाव, लक्ष्मण का क्रोध, पति के अनुसरणोत्सुक सीता का पातिव्रत्यशील आदि। तोरवे के कवि नरहरि को ये सब प्रसंग विस्तार के साथ वर्णन करने का न तो अवकाश है न व्यवधान।

कैकेयी का राम को वल्कल देते समय की कठोरता वाल्मीकि रामायण में स्पष्टरूपेण चित्रित है।

लेकिन नरहरि चित्रित कैकेयी 'राम का मुँह देखे बिना उनके आभूषण उतारती है' —इसमें कैकेयी को निष्ठुरता प्रकट तो है मगर उतनी कठोर नहीं जितनी वाल्मीकि की। राम-वनगमन के समय मोह-विह्वल दशरथ उसके पीछे-पीछे जाने लगते हैं तो कैकेयी अपने पति को ताने देने में चूकती नहीं। लेकिन नरहरि-चित्रित इस कैकेयी को भरत के साथ चित्रकूट में 'गोमुखी गंगा' के रूप में देखते हैं तो हमारा क्रोध शांत हो जाता है, उसके प्रति घृणा भी कम होती है।

तोरवे रामायण के अरण्यकांड की तृतीय संधि में शंबुकासुर की तपस्या, शिकार आदि के वृत्तांत हैं। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकांड के शंबुक वृत्तांत से इसका कोई सम्बन्ध नहीं। शंबुकासुर से वन को निरापद करने के लिए राम लक्ष्मण को भेज देते है। इसी को सुअवसर जान, श्रीहरि माया-सूकर की सृष्टि कर देते हैं। वह सूकर शंबुकासुर को अपने पीछे करके खड़ा हो जाता है। लक्ष्मण के धनुष से छूटा बाण सूकर को चीरकर बाम्बी मे स्थित शंबुकासुर का वध कर देता है। यह देखकर लक्ष्मण बहुत विचलित होते है। अपने हाथों एक तपस्वी की हत्या होने के कारण प्रायश्चित्त-स्वरूप तलवार से अपने को काट डालना चाहते है। तब वहाँ इन्द्र, नारद प्रकट होकर लक्ष्मण को समझाते है कि यह तपस्वी नहीं, राक्षस है। वाल्मीकि रामायण में इस घटना का उल्लेख नहीं।

हिरन रूपी मारीच के वर्णन में मानो नरहरि अपने होश-हवास खो बैठे हैं। वह हिरन— ग्वालों की बस्ती, शिकारियों के गाँव, मुनियों के आश्रम, नगरोपनगर दौड़ता, सौराष्ट्र, गौळ, अग, कळिंग, गुर्जर, निषध, तुळ, काम्बोज, विदर्भ, द्रविड़, केरळ, सिन्धु, कुन्तल देश-विदेशों विविधघन घोर जंगलों को पार करता श्रीराम को थकाता भागा जा रहा है। कवि को (नरहरि) जरा भी असंभव नहीं लगा कि इतने कम समय में इतने सारे देश कैसे पार किये जा सकते हैं। राम के अद्भुत तेजोराशि से विमोहित मारीच उनके बाण के सम्मुख अपने को समर्पित कर मोक्ष प्राप्त करता है।

इसके पश्चात् आनेवाले किष्किधाकांड, सुन्दरकांड के कथा-निरूपणों में वाल्मीकि और नरहरि में विशेष कुछ अन्तर नहीं है। तोरवे में

हनुमानजी अति उत्साह में लंकानगरी छोड़कर बहुत दूर लाँघ गये हैं। ऐसी हालत में न लंका दिखायी पड़ती है, न समुद्र। समुद्र किनारे के तृणबिन्दु मुनि का आश्रम दृष्टिगोचर होता है। वहाँ मुनि के पास पहुँचकर लंकानगरी का पता पूछते हैं। तब मुनि आदेश देते हैं "हम वयोवृद्ध हैं। अगर हमें उठाकर ऊपर धरें तो हम लंका दिखा दें।" मुनि को उठाने की बात तो दूर की रही। हनुमानजी उन्हें हिला भी नहीं पाते। लेकिन हनुमानजी के लिए शक्ति की कमी कहाँ! घुटनों से भूमि दाबकर मुनि की देह को अपनी भुजाओं में लपेटकर मजबूत पकड़ में ऊपर उठा लेते हैं। तब हनुमानजी के साहस से प्रसन्न हुए मुनि दर्भ के अग्रभाग (नोक) से उत्तर दिशा में स्थिति लंका का निर्देश देते हैं। यह अद्भुत घटना वाल्मीकि रामायण में नहीं।

तोरवे रामायण का युद्धकांड बहुत विस्तृत है। कवि का सामर्थ्य-प्रदर्शन यहाँ पराकाष्ठा को पहुँचा हुआ है।

वाल्मीकि रामायण में राम का मायारचित सिर ला-पटकने की घटना वानर-बल-संख्या-निरूपण के उपरान्त है। तोरवे रामायण में अंगद के संधि (राजी) शर्तों के लिए जाकर आने के बाद होती है। राम से अपने एक बाण से रावण का छत्र काट डालकर उसको अपमानित करने की घटना अंगद के संधिकार्य के लिए जाने के पूर्व तोरवे रामायण में चित्रित है तो वाल्मीकि रामायण में यह घटना है ही नहीं। शायद कवि (नरहरि) ने यह घटना अध्यात्म रामायण से ली हो। रावण से किये गये मारण-यज्ञ-प्रसंग, हनुमान जी का संजीवनी बूटी लाने जाते समय रावण की आज्ञा से जाकर कालनेमी राक्षस का तपस्वी-वेश में प्रतीक्षा करते हनुमान जी को धोखा देने का प्रसंग वाल्मीकि रामायण में दृष्टिगोचर नहीं होते। ये भी अध्यात्म रामायण के हैं। रावण के सिर काट-काटकर गिराते थक जानेवाले राम के पास अगस्त्य का पहुँचकर 'आदित्यहृदय' के उपदेश देने की घटना वाल्मीकि रामायण में है। लेकिन तोरवे रामायण में अगस्त्य जी प्रकट होकर आदेश देते हैं—'हरिहर ब्रह्ममंत्रित बाण का अनुसंधान करो'।

पात्र-चित्रण

तोरवे रामायण में सभी श्रीराम-भक्त हैं। सभी श्रीराम-महिमा का गुणगान करते हुए सीता को श्रीराम को समर्पित करने के लिए रावण से कहते हैं। मारीच, विभीषण, सुमाली, मंदोदरी, कुंभकर्ण आदि सभी रावण को समझाते हैं। राक्षसों में एक-एक भक्ति, श्रद्धा, पराक्रम से युद्ध करते हुए प्राण त्यागते हैं तो 'लक्ष्मीरमण' उच्चारण करते हुए त्यागते हैं। अतिकाय (राक्षस) परम वैष्णवभक्त है। तुलसी की माला गले में

धारण कर अतिकाय युद्धक्षेत्र में प्रवेश करता है और अपने सैनिकों को निम्नांकित बातों से युद्ध का निमंत्रण देता है। "आओ मेरे भाई सैनिको! जरा-मरण-विवर्जित से लड़कर वैकुंठ-वास (श्री विष्णुस्थान) का उपभोग करें; वीरगति तथा मुक्ति पाने का यह सुगम मार्ग है। रावण अपने सम्मुख क्या देखता है! करोड़ों ब्रह्मा, करोड़ों शिव, सुरेश्वर, यम, अग्नि, अष्ट दिक्पालक, चन्द्र, निगमागम श्रीराम के शोभायुक्त शरीर में विराजमान है। समस्त लोक, गिरि-कन्दराएँ, वन-उपवन, समुद्र, विविध द्वीप, अनंत जीवराशि परिपूर्ण-कलित परदेवता का विश्वरूप-दर्शन उस शरीर में व्याप्त है —यह सब रावण ने देखा।

रावण

तॉरवे रामायण में हमें आकर्षित करनेवाला अन्य प्रधान पात्र है— रावण। वह महापराक्रमशाली है। तॉरवे रामायण में काफ़ी परिवर्तन के साथ इस पात्र का निरूपण हुआ है। प्रायः नागचन्द्र जैसे जैन कवियों के प्रभाव के कारण ऐसा हुआ होगा। नरहरि ने उसे एक दुरंत-भक्त नायक के रूप में चित्रित किया है। वाल्मीकि रामायण में जैसे-जैसे रावण के प्रियजन व परिजन मरते जाते हैं वैसे-वैसे उसकी क्रोधाग्नि भी बढ़ती जाती है। किन्तु यहाँ उसके अनुताप और विषाद तीव्र होने लगते है–

"मैंने अपने मामा की बाणी पर ध्यान न दिया। उनका उपदेश अनसुना कर दिया। वासना के कारण भाई विभीषण का उपदेश भी मैंने ठुकरा दिया। प्राणमित्र प्रहस्त से बैर मोल लिया। जननी के उपदेश का भी मैंने तिरस्कार किया।"

"मैं जानता हूँ कि यह रघुनाथ लक्ष्मीवल्लभ हैं और युद्ध में मेरे विरुद्ध लड़नेवाले बन्दर एवं भालू सुरगण हैं। फिर भी मेरा निश्चय सुनो; युद्धभूमि में राम का सामना कर उस (रामतत्व) में विलीन हो जाना ही मेरा दृढ़ संकल्प है।" रामतत्व सुर, नर, दानव, उरग किन्नरादियों को मुक्त कर देता है। अपने आप्तजनों को बुलाकर वह यह आदेश देता है कि यदि युद्ध में वह मारा गया तो वे विभीषण को राजा बनाकर उसकी सेवा करें। इससे रावण के भक्तिपूर्ण उदात्त चरित्र का पता चलता है।

कहीं-कहीं वर्णन दोषपूर्ण होने के कारण पात्र की महत्ता को घटा देते हैं। उदाहरणार्थ युद्ध में हारा रावण मारण महायज्ञ प्रारंभ करता है। तब अंगद वग़ैरः उस यज्ञ को विगाड़ने वहाँ पहुँचते है। अंगद तब 'खल शिरोमणि (रावण)' की अबला का जूड़ा पकड़कर खींचता और उसे निर्वस्त्र करना चाहता है। वह अबला सहायता तथा रक्षा के लिए चिल्लाती है। निस्सन्देह अंगद का उज्ज्वल पात्र इस घटना से कलंकित हुआ है।

भाषा-शैली आदि के बारे में:—

कन्नड तॊरवॆ रामायण कुमार वाल्मीकि विरचित घर-घर आदरित, कर्नाटक में प्रचलित जनप्रिय काव्य है। फिर भी आधुनिक दृष्टिकोण से इस पर थोड़ा विचार किया जायगा।

सामान्य सहृदयी भी जिसे पढ़कर अर्थ समझ सकता है—ऐसी सरल शैली में शोभायमान यह काव्य है। वर्णन-वैविध्य के अभाव में भी हृदयंगम भावराशि के कारण सहृदय वेद्य सत्काव्य कहलाया है। कथावस्तु तो सुप्रसिद्ध तथा स्वारस्यकर होकर शक्तिसंपन्न है। इसकी रचना के समय कन्नड भाषा षट्पदी छन्द के साथ मेल बढ़ाने की ओर अग्रसर थी। जनप्रियता का कारण यह भी एक हो सकता है।

समूची कृति का आधा हिस्सा युद्धकांड ने जो घेर लिया है वह आधुनिक दृष्टि से थोड़ा ज्यादा लगेगा। लेकिन रचनाकाल देखने पर पता चलेगा कि वीरगाथाकाल था। अपने गाँव की रक्षा के लिए, अपने स्वामी के लिए, अपनी बहिनों की मान-रक्षा के लिए, अपनी गोसंपत्ति के बचाव के लिए खुशी-खुशी लड़कर वीर-स्वर्ग पाने की अभिलाषा रखने वालों की उस समय कमी नहीं थी। यदि श्रृंगार विश्वमोहक रस है तो वीर विश्वपोषक रस है। वीर-रस ही ऐसा रस है जिसमें सहृदय का पक्ष और रसों की अपेक्षा अधिक प्रकट होता है। वीररस में कर्म-सौंदर्य का आकर्षण है। अतः उन दिनों युद्ध अनिवार्य था। तॊरवॆ के इस कवि ने तत्कालीन परिस्थिति के अनुसार ही इस काव्य की रचना की है।

संदर्भोचित अलंकारों की योजना मानो सोने में सुहाग है। अधिकांश उपयोग रूपकों का, उत्प्रेक्षा और उपमाओं का हुआ है। कहीं-कहीं कूट (रहस्यात्मक) पदों की छटा भी अनुपम है। कवि की वर्णन-शक्ति सहज रम्य है। इस प्रकार तॊरवॆ रामायण वाल्मीकि रामायण की परछाई होने पर भी सुन्दर वर्णनों तथा अद्भुत पद-योजना के कारण कन्नड जन-मानस का मौलिक प्रतिबिम्ब और कवि की भक्ति-निष्ठा का काव्य है।

कन्नड के अन्य रामायण

(१) पंप रामायण अथवा रामचन्द्र चरित पुराणम्

कवि नागचन्द्र : (क़रीब कि. श. ११४०) ये अभिनव पंप भी कहलाते हैं। यह जैनी है। यह रामायण चम्पू (गद्य-पद्यात्मक) शैली का काव्य है। कथा जैनसंप्रदाय के अनुसार है। श्रेष्ठ प्रौढ़ काव्य है। वर्णन लालित्यपूर्ण सुमनोहर हैं। [पप रामायण (अभिनव नागचंद्र विरचित) का हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ द्वारा प्रकाशित हो चुका है।]

(२) कुमुदेन्दु रामायण

कुमुदेन्दु कवि : (क़रीब क्रि. श. १२७५) यह भी जैनी है। यह काव्य सब प्रकार की षट्पदियों से युक्त है : कथा-निरूपण जैनसंप्रदाय के अनुसार है। सरल वर्णनों से युक्त सामान्य काव्य है। इसने कहीं-कहीं अभिनव पम्प का अनुसरण भी किया है।

(३) रामविजय काव्य

कवि मित्र देवप्प : (क़रीब क्रि. श. १५२५) यह एक जैन कवि है। यह भी जैन रामायण है जो सांगत्य छन्द में लिखा गया है। इसमें राम अपने बच्चों में कनिष्ठ को राज्य देकर जैन दीक्षा लेते हैं।

(४) उत्तर रामायण

नारायण : (क़रीब क्रि. श. १६००)इसने वैदिक रामायण लिखा है। काव्यारंभ में शिव, गणपति, सरस्वती आदिक स्तवन कर वाल्मीकि, व्यास, कालिदास आदि का स्मरण किया गया है। भामिनी षट्पदि में रचित है।

(५) अद्वैत रामायण

निजगुणार्य : (क़रीब क्रि. श. १५६०)लगता है कि यह वीर शैव है। कवि का कहना है कि वह अद्वैतमार्ग में रावण की मोक्षप्राप्ति का वर्णन मंदोदरी-रावण के संवाद द्वारा करेगा। रामायण की अद्वैतपरक व्याख्या इसमें है।

(६) उत्तर रामायण

योगीन्द्र : (क़रीब क्रि. श. १५६०) यह ब्राह्मण कवि है। इस अपनी रामायण में वाल्मीकि रामायण की कथा का निरूपण षट्पदी छन्द में किया है। उत्तरकांड भी पूर्णरूप से वर्णित है। शैली काफ़ी सुन्दर है।

(७) उत्तर रामायण

मैसूर नरेश चामराजने : (क़रीब क्रि. श. १६३७)वाल्मीकि रामायण की एक टीका लिखी है जो 'चामराजोक्ति विलास' नाम से प्रसिद्ध है। इसी समय तिरुमले वैद्य नामक एक ब्राह्मण कवि ने उत्तर रामायण की रचना की है। इसमें कुमार वाल्मीकि से छोड़े गये अंशों का निरूपण किया गया है। इसी समय का और एक कवि है— नरसप्पा। इसने भी उत्तर रामायण की रचना की है जो षट्पदी छन्द में है। इसमें ५१ संधियाँ हैं। यह मध्यम श्रेणी का काव्य है।

(८) मूलक रामायण

लेखक : (?) (समय क़रीब क्रि. श. १६००) इसके लेखक कौन हैं —यह अद्यावधि अनिश्चित है। 'कविचरिते' कार के अनुसार इसका

समय ई० १६०० होगा। कवि ने कहीं भी अपना नाम नहीं दिया है। किसी देवता की स्तुति भी कवि ने नही की है। सीधे तौर पर काव्य का आरम्भ होता है। इसमें मूलकासुर द्वारा लंका पर चढ़ाई करना, विभीषण को परास्त करना, अयोध्या आकर भरत, शत्रुघ्न और राम-लक्ष्मण को हराना और अन्त में कुश के हाथों मारे जाने का वर्णन है।

(९) रामचन्द्र चरित

चन्द्रशेखर कवि : (क़रीब ई० १७००) ने 'रामचन्द्र चरित्र' नामक रामायण लिखी। यह जैन कवि था। अतः जैन सम्प्रदायानुसार यह कृति निर्मित हुई है। इसे अपूर्ण ही छोड़कर कवि स्वर्ग सिधारे। शेष भाग की रचना ई० १७५० में 'पद्मनाभ' नामक कवि ने की। कवि नागचन्द्र का प्रभाव इस पर पड़ा है। कविता साधारण कोटि की है।

(१०) मार्कण्डेय रामायण

तिम्मरस : (क़रीब क्रि. श. १६५०) यह ब्राह्मण कवि है। 'मार्कण्डेय रामायण' की रचना षट्पदी छन्द में की है। युधिष्ठिर को मार्कण्डेय द्वारा प्रोक्त रामायण की कथा इसमें है। ग्रथ के प्रारम्भ में गणेश, नारायण, नृसिंह, ब्रह्मा, सरस्वती, शिव, हनुमान, वाल्मीकि आदि की स्तुति की है। काव्य वाधिक षट्पदी छन्द में है। प्राप्य असमग्र प्रति में ३० संधियाँ तथा क़रीब १५०० पद है। यमक, प्रास, वर्णावृत्तियों का अधिक प्रयोग किया है। किष्किधा पर्वत का वर्णन द्रष्टव्य है :—

"हर के समान यह भी सर्पभूषण है। हर की भाँति संतत शिवा (सियार) शोभितांग है। हर के सदृश यह भी नीलकंठ (पक्षी) से विराजमान है। हर के जैसे यह भी सोम (-लता) धर है। हर के सदृश गुह (गुफा), नंदि (वृक्ष) आदि भूतगणों से सेवित है। हर के सदृश यह भी गंगा-तरगावतंस है। हर के ही जैसे शावर चरित से यह किष्किन्धा गिरि शोभित है।"

(११) बत्तलेश्वर रामायण

बत्तलेश्वर : (क़रीब १७०० ई० में) बत्तलेश्वर ने एक रामायण लिखा। यह सह्याद्रि के नज़दीक के प्रांत का निवासी निःस्वार्थ स्मार्त ब्राह्मण था। भक्तकवि भी था। किसी राजा या दरबार से उसका कोई सरोकार नहीं था। भक्ति-विभोर होकर उसने रामकथा लिखी है। कवि के नाम से ही यह रामायण प्रसिद्ध है। भामिनी षट्पदी छन्द में लिखा ४३ संधियों तथा २६५० छन्दोंवाला यह बत्तलेश्वर रामायण विशालकाय ग्रथ है। प्रथम १३ कांडों में सुन्दरकांड के अंत तक की कथा वर्णित है। शेष भाग अर्थात् काव्य का पौन भाग युद्धवर्णन के लिए

निवेदित है। काव्यारंभ में गणपति और सरस्वती की प्रार्थना है। कवि का कहना है कि वह हरिकथा रूपी परमान्न को भक्त जनों के लिए यहाँ परोस रहा है। [भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा इसका हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण तैयार किया जा रहा है।]

कवि शब्दालंकार प्रेमी है। फिर भी उसके काव्य में मार्मिक स्थलों की कमी नहीं है। वीर, करुणा एवं भक्ति रस के निरूपण में कवि को यथेष्ट सफलता मिली है। उसकी शैली प्रसाद गुण परिपूर्ण है। भक्तकवि के नाते बत्तलेश्वर का नाम कन्नड साहित्य में अविस्मरणीय है।

(१२) शंकर रामायण

रचयिता : (?) (ई० १७२१) इस ग्रंथ के रचयिता का पता अब तक नहीं चला है। भामिनी षट्पदी के इस काव्य में ४७ संधियाँ तथा ३३०० छन्द हैं। शिवजी गिरिजा को रघुवंश की परंपरा सुनाते हैं। जय-विजयों का शाप के कारण भूमि में जन्म लेना, कैलास में शिवजी का दरबार, उसकी महिमा तथा दशरथ का विवाह आदिकांड में वर्णित हैं। इसके उपरान्त बालकांड, क्रीडाकांड, अरण्यकांड, किष्किधाकांड, समुद्रकांड, पट्टाभिरामकांड, निंदाकांड आदि। समुद्रकांड में महिरावण, पट्टाभिरामकांड में राम के राजतिलक, निंदाकांड में रजक की निंदा, सीता-परित्याग, कुश-लव-जनन आदि हैं। कांडों का यह वर्गीकरण बिलकुल नवीन है।

(१३) अध्यात्म रामामण

शंकरनारायण : (काल ?) कवि ने रचित 'अध्यात्म रामायण' की रचना की, जिसका समय निश्चित रूप से मालूम नही। इस षट्पदी ग्रंथ में छः कांड तथा २०५२ छन्द हैं। वाल्मीकि रामायण की कथा का ही आधार है। मूल कथा में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।

(१३) मूलबल रामायण

हरिदास : (क़रीब ई० १७५०) यह माध्व कवि रहा। १३ संधियाँ तथा ७२६ षट्पदियाँ इसमें हैं। इसमें रावण एवं कुम्भकर्ण के मूलबल के राम द्वारा नाश का वर्णन है।

(१४) सीता कल्याण

हॆळवनकट्टे गिरियम्मा : (क़रीब ई० १७५०) कर्नाटक की हरिदास परम्परा में इस कवयित्री का नाम अविस्मरणीय है। भागवत संप्रदाय वाले एक ब्राह्मण के घर में इसका जन्म हुआ। गिरियम्मा मीराबाई की तरह बाल्यकाल से ही दिव्योन्माद में थी। इसने गेय पदों में सीताकल्याण

नामक काव्य लिखा है। इसमें ८० पद है। प्रत्येक पद जय-जय शब्द से समाप्त होता है। जानकी के शृंगार का वर्णन काफ़ी सरस है।

(१५) श्रीमद्रामायण या रामकथाभ्युदय

वेंकमात्य : (क़रीब ई० १७५०) ने वार्धक षट्पदी में इसकी रचना की। यह १७५ सधियों का ९७६५ पदों से युक्त यह एक बृहत् ग्रंथ है। इसका बंध प्रौढ़ है। कथा में वर्णनों की प्रधानता है।

(१६) तिरुमलेश चरिते

यह भी इसी समय की कृति है जिसमें न कवि का नाम है, न तिथि का निर्देश। कथा के आरम्भ में कवि कहता है कि तिरुपति वेंकटेश (बालाजी) विष्णु का अवतार है और वह उसके पूर्व के अवतारों की कथा सुनाएगा। अतः इसका नाम 'तिरुमलेश चरिते' पड़ा। इसमें मधुकैटभ-संहार, कूर्म, नरसिंह, वाराह आदि अवतारों की कहानियाँ हैं। रामायण की कथा ६ संधियो तथा २१०९ छन्दों में वर्णित है।

(१७) वरद विट्ठल रामायण

यह भी क़रीब इसी समय की कृति है। इसके रचयिता ने केवल अपने गाँव का नाम दिया है। इसमें ५६ संधियाँ हैं तथा ३३८२छन्द हैं। इसमें रामायण की कथा भिन्न प्रकार से कही गयी है। वह यों है:—

कोसलदेश के कुशल राजा की वेटी का व्याह दशरथ से निश्चित हुआ था। रावण ने उसका अपहरण कर उसे समुद्र में छिपा रखा था। फिर भी दैवयोग से दशरथ और उसका समागम होता है। रावण का बेटा मूलकासुर नारद से प्रचोदित होकर विभीषण को जीतकर, अयोध्या जाकर राम-लक्ष्मणो को जीतकर श्रीराम-पुत्र कुश से मारा जाता है। यह ब्राह्मण कवि है। 'वालगळ्ळि वरद विट्ठल हमारी रक्षा करे। वह हमें सुमति प्रदान करे' —इस तरह अंकित भर दिखायी देता है।

(१८) श्री रामाभ्युदय कथाकुसुम मंजरी

निम्मामात्य : (ई० १७५०) भामिनी षट्पदि मे लिखे इस ग्रंथ के सात कांड तथा ७८ संधियाँ हैं। कवि श्रीवैष्णव संप्रदाय का था। इस ग्रंथ का दूसरा नाम है, 'आनन्द रामायण'। इसमें अनेक रामायणों का संग्रहीत है। इसके अतिरिक्त बालकांड में ही वराह, नृसिंह आदि अवतार तथा रावण-दिग्विजय की कथा, उत्तरकांड में रामराज्य, दिग्विजय, अश्वमेध का निरूपण, ग्रंथारंभ में विष्णु, ब्रह्मा, शिव, गणपति, सरस्वती, वाल्मीकि तथा हनुमान की स्तुति आदि के वर्णन काफ़ी रोचक है।

(१९) श्रीराम-पट्टाभिषेक

महालक्ष्मी : (ई० १७५०) यह कवियित्री दक्षिण कन्नड के उडुपि क्षेत्र निवासिनी थी। श्रीराम-पट्टाभिषेक में २४१ पद्य हैं। श्रीराम लंका

में विभीषण का राजतिलक कर नन्दीग्राम लौटते हैं और भरत से मिलते हैं। अयोध्या में उनका राजतिलक होता है। यही इसकी कथावस्तु है। शिव, पार्वती, गणपति, सरस्वती, विष्णु, हनुमान आदि का स्तवन किया गया है। कवयित्री का कहना है कि यह कथा हनुमान ने वात्स्यायन को सुनायी थी। इसकी शैली प्रौढ़ है।

(२०) रामकथावतार

देवचन्द्र : (ई० १७७०-१८४१) अठारहवीं-उन्नीसवीं सदी के बीच के संधिकाल के कवि हैं। यह जैनी थे। राम-कथावतार की रचना ई० १७९२ में हुई थी। यह चंपू ग्रंथ है जिसमें १६ आश्वास तथा ६८०० ग्रंथ संख्या भी है। इसमें नागचन्द्र की कथा ही अधिक विस्तार के साथ वर्णित है। कथानक में कोई विशेषता नहीं है। शैली काफ़ी प्रौढ़ है।

(२१) अद्भुत रामायण, (२२) रामाश्वमेध, (२३) श्रीरामपट्टाभिषेक

मुद्दण : (ई० १८७०—१९०१) उल्लिखित तीनों कृतियों का कवि है श्री मुद्दण। यह उन्नीसवीं शताब्दी का अंतिम कवि है तथा कन्नड प्राचीनयुग एवं नवीन युग का संधिकालीन कवि है। इनका पूरा नाम है नंदळिके लक्ष्मीनाराणप्प। 'गद्यं हृदयं पद्यं वध्यं' कहकर गद्य का गरिमामय गुणगान कर नवयुग का शंखनाद करने का श्रेय इसी को मिलना चाहिए। प्रतिभासंपन्न यह महाकवि अकाल में काल-कवलित हुआ। संस्कृत 'अद्भुत रामायण' की कथा इन्होंने गद्य में कन्नड में लिखी। यह ग्रंथ १८९४ में विरचित है। 'रामाश्वमेध' भी प्राचीन कन्नड गद्य में विरचित कृति है। इस ग्रंथ का और एक नाम है 'शेष रामायण'। 'राम पट्टाभिषेक' वार्धिक षट्पदी में लिखा गया है। इसमें राम की प्रतीक्षा करनेवाले भरत की उत्सुकता, प्रेम आदि का मार्मिक चित्रण है। कवि ने अपने काव्य को 'रामनामामृतद बिंदिगे' [राम-नामामृत का घड़ा] जो कहा, सार्थक है।

अद्भुत रामायण शाक्त संप्रदाय की रामायण है। प्राचीन कन्नड गद्य में लिखित इस ग्रंथ में मूल संस्कृत ग्रंथ के अनावश्यक भागों की काट-छाँट की गयी है। इसका प्रतिपाद्य है— मूल प्रकृतिरूपिणी सीता भगवान राम से बड़ी है। दशकंठ रावण को जीतनेवाले राम सहस्रकंठ रावण को पराजित करने में असमर्थ होते है। तब सीता अद्भुत रूप धारण करके, महाकाली के रूप में प्रकट होकर उस दैत्य का संहार करती है। सीता-महिमा वर्णन से यह ग्रंथ सराबोर है। वही आदिमाया है, काली है, लक्ष्मी है —इस प्रकार कवि ने प्रतिपादन किया है।

'रामाश्वमेध' कवि की अक्षय कीर्ति-कौमुदी है। पद्मपुराणांतर्गत

'शेष रामायण' के आधार पर यह ग्रंथ रचित है। मुद्दण तथा उनकी पत्नी मनोरमा के बीच हुए संवाद ही काव्य-सौंदर्य में चार चाँद लगानेवाली कथावस्तु है। इस संवाद में मनोरमा आधुनिक युग चेतना के प्रतिविधि रूप में आती है; और बीच-बीच में आनेवाले ये संवाद काव्य में वैविध्यता लाते हैं। काव्य में सृष्टिक्रम, गुरुस्तुति, कुकवि-निंदा, आत्मस्तुति आदि में किसी को भी स्थान नहीं मिला है। बरसात के वर्णन के साथ एकदम काव्य शुरू होता है। यह ढंग सचमुच क्रांतिकारी है। यह काव्य मानों अनेक कथानकों का स्तोम है। वे कहानियाँ हृद्य हैं। राम के अश्वमेध के घोड़े के साथ-साथ मानों कवि विचरण कर रहे हैं। सीता का शीलनिरूपण बहुत ही मनोवेधक है। सीता-परित्याग के संदर्भ में राम को कवि का समर्थन नहीं मिला है। कवि का कल्पना-वैभव, मौलिक सूझ दृष्टव्य है।

(२४) जिन रामायण

चन्द्रसागर वर्णी : (क़रीब क्रि. शं. १८१०) ये भी जैन कवि हैं। कदंब पुराण, जिन भक्तिसार, जिन मुनि, परशुराम-चरित, जिन रामायण आदि के रचयिता हैं। जिन-रामायण भामिनी षट्पदी में है। इस ग्रंथ में ८६ आश्वास के साथ ५०२१ पद्य है। कहानी निरूपण जैन-परम्परा का है। एक विशालकाय काव्य है।

(२५) अध्यात्म रामायण

मुम्मडि कृष्णराज : (१७९४-१८६८) यह गद्य ग्रंथ है। सात कांड, ६५ सर्ग और ८५०० ग्रंथ संख्या है। ब्रह्मांड-पुराणांतर्गत उमा-महेश्वर-संवाद रूपी कथा का विवरण इस अध्यात्म रामायण में है। यह प्रति देखने को नही मिलती। मगर इसका उल्लेख कन्नड कवि चरितें भाग-३ पृष्ठ १७७ पर अवश्य है।

(२६) कर्नाटक रामायण संग्रह

एच्. लिंगराज अरस : (करीब क्रि. श. १९१९) भामिनी षट्पदी में विरचित रामायण की कथा सुगम शैली में निरूपित है। ग्यारह संधियाँ हैं।

(२७) शेष रामायण

अय्याशास्त्री : (१९२७) मैसूर महाराजा चामराजेन्द्र ऑडेयर के आस्थान (सभा) विद्वान अय्याशास्त्री ने उत्तर रामायण के रामाश्वमेध कथा भाग के आधार पर इसकी रचना की है। यह ग्रंथ वार्धक षट्पदी में है। ३४ संधियाँ तथा १३४० पद हैं।

इस प्रकार 'रामायण' की कथा कन्नड में विविध रीति-प्रकारों से निरूपित है। यह कथा 'चावुंड राय पुराण' जैसे ग्रंथों में प्रासंगिक रूप

से आने पर भी रामायण की कथा ही प्रधान वस्तु के रूप में निरूपित प्रप्रथम उपलब्ध काव्य नागचन्द्र-विरचित रामचन्द्र चरित पुराण अथवा पंप रामायण है। [प्रेमी पाठकों के लिए हमारी सेवापरायण संस्था 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने इसका अनुवाद प्रकाशित करा दिया है।] एक अनुमान यह भी है कि क्रि. श. ९५० के क़रीब स्थित 'शांतिपुराण' के कर्ता पोन्न ने चौदह आश्वासों से युक्त 'भुवनैक रामाभ्युदय' नामक चम्पू ग्रंथ की रचना की हो। मगर वह ग्रंथ आज तक अप्राप्य है।

कन्नड में इतने सारे रामायणों के होते हुए भी यह (आपके सम्मुख) अनूदित होकर प्रस्तुत हो रहा 'तॊरवॆ रामायण' वाल्मीकि रामायण की कथा का निरूपण करते हुए भी कन्नड रामायणों में किसी मत-पंथ के प्रभाव से परे रहकर अपने वैशिष्ट्यपूर्ण स्थान के कारण अधिक जनप्रिय होने की वजह से रामायण प्रेमी पाठकों के सम्मुख इसे उपस्थित कर रहे हैं। आप ही की वस्तु है। राम-स्मरण के साथ आपही को समर्पित।

ग्रंथ-ऋण

"कन्नड साहित्य परिषत् चामराज पेटॆ, बेंगळूर-१८" ने अपनी "हीरक जयंती" के अवसर पर 'कुमार वाल्मीकि' विरचित 'तॊरवॆ रामायण' को दो सम्पुटों में प्रा. के. एस. कृष्णमूर्ति से कन्नड गद्यानुवाद के साथ प्रकाशित किया। [प्रथम मुद्रण—१९७७] इसी का हमने हिन्दी (नागरी) लिप्यंतरण तथा हिन्दी अनुवाद साथ प्रकाशित किया है। हम कन्नड साहित्य परिषद् एवं निम्नांकितों के आभारी हैं:—

१	कुमार वाल्मीकि विरचित तॊरवॆ रामायण—	गद्यानुवादक के. एस्. कृष्णमूर्ति
२	मैसूर विश्वविद्यालय-प्रसारांग से प्रकाशित 'तॊरवॆ रामायण'—	पीठिका-लेखक बि. एस् सण्णय्या
३	हिन्दी एवं कन्नड साहित्य की प्रमुख धाराओं का तुलनात्मक अध्ययन—	डॉ० एस्. एस्. कृष्णमूर्ति. रीडर, हिन्दी विभाग मैसूर विश्वविद्यालय
४	कर्नाटक कविचरिते—भाग १, २, ३,—	रा. नरसिंहाचार्य
५	कन्नड साहित्य चरित्रे—	डॉ० आर्. एस्. मुगली
६	कन्नड साहित्य—	प्रो. के. वेंकटरामप्पा
७	कन्नड कैपिडि भाग—१, २—	मैसूर विश्वविद्यालय
८	कन्नड नाडिन चरित्रे—भाग १, २—	कन्नड साहित्य परिषत्
९	कर्नाटक भारत कथामंजरी—	संस्कृति प्रसार विभाग मैसूर सरकार
१०	हरिदास साहित्य—	आर्. एस्. पंचमुखी
११	मोहन तरंगिणी—	काव्यकला निधि प्रकाशन

अनुवादकीय

"केवल दो शक्तियाँ हैं जो एक साथ मिलकर उस महान और कठिन कार्य को पूरा कर सकती है, जो कि हमारे प्रयास का उद्देश्य है— एक तो है अचल-अटल और अमोघ अभीप्सा जो नीचे से पुकारती है और दूसरी है, वह परम भागवत अनुकंपा जो ऊपर से उत्तर देती है।"

—श्री अरविंद

रामायण महाकाव्य, ब्रह्म और जगत अथवा परमार्थ और प्रपंच की युग्म भावना पर बना हुआ आर्ष ग्रंथ है। नर को नारायण-रूप में देखना और नारायण को नरत्व प्रदान करना भारतीय संस्कार और सभ्यता की मनोहर किन्तु अद्भुत विशेषता है। पूर्णब्रह्म परमात्मा को रामरूप में और राजा राम को पूर्णब्रह्म के रूप में देखकर प्रत्येक भारत संतान का रोम-रोम पुलकित हो उठता है। जिनकी प्रतिभा और कल्पना ने इसकी सृष्टि की और जिनकी तपश्चर्या से उन्मीलित दिव्य दृष्टि ने इस रूप को देखा वे आदिकवि वाल्मीकि धन्य हैं। संसार के साहित्य में असाधारण स्थान प्राप्त करनेवाला यह आदि महाकाव्य श्री रामायण सचमुच अमर काव्य ही है। इस आदिकाव्य का कन्नड में समूचा सुचारु रूपांतर सर्वप्रथम करनेवाले कवि हैं— कुमार वाल्मीकि। १६वीं शती में लिखित, कन्नड साहित्य में 'तोरवे रामायण' प्रसिद्ध है।

नागरी लिप्यंतरण के साथ हिन्दी में इस ग्रंथरत्न का अनुवाद करने का जो प्रयत्न मैंने किया है— वह तो 'उडुपेनैव सागरम्' छोटी नाव में सवार होकर सागर पार करने का एक प्रयास जैसा ही है। अनुवाद तो आखिर अनुवाद ही है। कुमार वाल्मीकि की वाणी की पूर्ण ओजस्विता उसमे कैसे आ सकती है? अकिंचन का एक प्रयत्न मात्र है।

सन् १९७९ की बात है— राजाराम कॉलेज, कोल्हापुर (महाराष्ट्र), के हिन्दी विभाग प्रमुख— डॉ० चन्दूलाल जी दुबे के यहाँ कोल्हापुर में ठहरा था। (डॉ० दुबे जी आजकल कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के अध्यक्ष हैं।) हम वर्षों से घनिष्ट मित्र हैं। वार्त्तालाप के सिलसिले में उन्होने भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ का उल्लेख करते हुए बताया— "डॉ० गजानन साठे जी को आप जानते हैं। उनकी इच्छा है कि भुवन वाणी ट्रस्ट के लिए कन्नड के महाकवि कुमार व्यास लिखित महाभारत (कर्नाटक भारत कथामंजरी) या कुमार वाल्मीकि के 'तोरवे रामायण' का नागरी लिप्यन्तरण सहित हिन्दी अनुवाद हो। आप तो कॉलेज की सेवाओं से अवकाश ग्रहण करने जा रहे हैं; इस जिम्मेदारी को क्यों न उठावें"। सेवा का यह सुअवसर पाकर, मैंने सहर्ष उस कार्य को स्वीकार किया। फिर डॉ० साठे साहब से लिखा-पढ़ी शुरू हुई। उन्हीं के सुचारु मार्गदर्शन के फलस्वरूप परमादरणीय

श्री नन्दकुमार अवस्थी, मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ के साथ संपर्क स्थापित हो सका। श्री अवस्थी जी से आदेश मिला— "भारतीय भाषाओं के जनसमुदाय में सर्वाधिक पाठ्य ग्रन्थ रामायणों का परिचय हिन्दी के माध्यम से विभिन्न भाषा-भाषी पाठकों को सुलभ हो" —इसी उद्देश्य से 'तोरवे रामायण' का कार्य प्रथम प्रारंभ करें।

कार्य का श्रीगणेश तो हुआ। शुभ कार्य में सौ-सौ बाधाएँ सम्मुख उपस्थित होकर मेरी सत्व परीक्षा करने लगीं; स्वास्थ्य गिरने लगा; पारिवारिक समस्याएँ तो थीं ही। मित्रवर साठे जी की सहृदयता, परमादरणीय श्री नन्दकुमार अवस्थी जी का समय-समय पर धैर्य-उत्साह, चेतनावर्धक आत्मीय वाणी में प्रदत्त प्रोत्साहन-परिचर्या के फलस्वरूप कार्य में सफलता मिली। पांडुलिपि भी तैयार हुई। उनको काफ़ी प्रतीक्षा करनी पड़ी। इस दिशा में श्री विनयकुमार अवस्थी जी का सौजन्य अवश्य स्मरण करूँगा। छपाई के मार्ग पर ग्रंथ अग्रसर हुआ। मैं गत वर्ष स्वास्थ्य गिर जाने के कारण टाटा अस्पताल, बंबई में भर्ती हो गया। जाँच-पड़ताल में डॉ० व्यास जी कैंसर के लक्षण ताड़ गये। मैंने ग्रंथ-सम्बन्धी अपनी व्यथा प्रकट की। उन्होंने धीरज बँधाया और बड़े ही परिश्रम से मेरा आपरेशन किया। एक प्रकार से मेरा यह पुनर्जन्म है। मेरे गुरुदेव श्री संस्थान गोकर्ण पर्तगाळी जीवोत्तम मठाधीश श्रीमद्‌विद्याधिराज तीर्थ श्रीपादवडेर स्वामीजी को यह समाचार मिला। उन्होंने मुझ पर अपनी करुणा-कृपा की वर्षा करते हुए श्री संस्थान देवता श्रीरामदेव श्री वीरविट्ठल (जो मेरे पारिवारिक इष्ट देवता भी हैं) से प्रार्थना कर आशीर्वचन शुभकामनाओं के साथ कृपाप्रसाद भेजा। फलस्वरूप इस कृति को प्रकाशित होते हुए देखने के लिए जीवित हूँ। उनके ऋण से मुक्त नहीं हो सकता। इसीलिए, इस अपने निवेदन के प्रारंभ में महर्षि श्री अरविंद की 'अभीप्सा और अनुकम्पा'-सम्बन्धी उक्ति का बड़ी कृतज्ञता से स्मरण कर लिया है।

अभीप्सा और अनुकंपा के फलस्वरूप ही— 'तोरवे रामायण' का नागरी लिप्यंतरण सहित यह हिन्दी अनुवाद जिसे 'ट्रस्ट' के नागरी अक्षयवट की छत्रछाया में पनपकर भाषासुमन पल्लवित करते, 'विश्व-वाङ्मय से निःसृत अगणित भाषाई धारा' में अपना स्थान बनाते रामायण प्रेमी पाठकों के सम्मुख उपस्थित होने का भाग्य पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी जी के कृपा-आशीर्वचनों से प्राप्त हुआ। इस कृति को उजाले में लाने में, जिन-जिन सज्जनों, संस्थाओं, महानुभावों, सहृदय मित्रों का आशीर्वाद प्रोत्साहन, अभयवचन मिला, उनके ऋण से मैं कदापि मुक्त नहीं हो सकता।

भाषा-सेतु निर्माण के हेतु से प्रतिष्ठित 'भुवन वाणी ट्रस्ट', लखनऊ

के प्रकाशन-आयोजन के अन्तर्गत सभी प्रमुख भारतीय एवं कुछ विदेशी भाषाओं तक के लोकप्रिय ग्रंथों के सानुवाद लिप्यंतरणों को देखनेवाला जिज्ञासु विद्या-प्रेमी सचमुच अवाक् ही नहीं, भविष्य के लिए ट्रस्ट से अत्यंत आशावान भी हो जाता है। इस महान योजना का दिग्दर्शन कराते हुए 'वत्तलेश्वर (कौशिक) रामायण' के सम्पादक महोदय कन्नड के मूर्धन्य लेखक महामना तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार-विजेता डॉ० शिवराम जी कारंत के सम्मुख उपस्थित होकर 'कौशिक रामायण' के अनुवाद के लिए अनुमति-आशीर्वाद जब मैंने माँगा, तो इस योजना से भारी प्रभावित होकर उन्होंने कहा— "अवश्य अनुवाद करो। मगर यह भी ध्यान में रखो कि इस दीप्त-दीप की रोशनी घर-घर पहुँचे —इसके लिए प्रयत्नशील रहो। मेरा आशीर्वाद है। सचमुच अनूठी योजना है; पाठकवृन्द जुटाना भी उतना ही आवश्यक है।"

आशा है, भगवान की असीम कृपा से वह दिन भी दूर नहीं है। तिल से ताड़ बनने के अनेक उदाहरण हैं। ट्रस्ट के मुख्यन्यासी पद्मश्री नन्दकुमार जी अवस्थी का अदम्य उत्साह, अटूट प्रेरणा, गहरी आत्मीयता, हार्दिक स्नेहाभिसिक्त वाणी के कारण असंभव भी सहज गति से सम्भव साध्य हो जाता है। उनकी कर्मठता से तथा उनके सुपुत्र ट्रस्ट के उपसचिव श्री विनयकुमार जी अवस्थी की कर्तव्य-तत्परतासंपन्न सौजन्य के कारण ही यह कृति उजाले में आ सकी है। मैं उन दोनों के प्रति तथा डॉ० साठे जी के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हुए भगवान् श्री रघुनाथ जी से प्रार्थना करता हूँ कि ट्रस्ट के उद्देश्यों को पूर्ण करने और मुझ जैसों से संकल्पित कार्य पूर्ण करवाने की सामर्थ्य उन्हें प्रदान करें।

इस अनुवाद की अनेकानेक त्रुटियों के लिए मैं ही उत्तरदायी हूँ। प्रभु रामभक्ति से प्रेरित हो प्रेमी पाठक मेरे दोषों को दिखा दें, तो अगले संस्करण में उनका निराकरण करने का भरसक प्रयत्न करूँगा। इसके लिए कृतज्ञ भी रहूँगा।

कन्नड के १६वीं शती के कविवर 'कुमार वाल्मीकि' द्वारा षट्पदी छन्द में विरचित यह 'तोरवे रामायण' नामक महाकाव्य उन सभी रामायण-रसास्वादन प्रेमी, त्रिविध-ताप-विमुक्तिकामी, सम्पर्क लिपि नागरी और राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से अन्यान्य भाषा-कृतियों के पठनाभिलाषी, साहित्यप्रेमी समस्त देवियों और सज्जनों को सादर समर्पित है।

"त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पितम् !"

बी-२०, 'शीतल' प्लाट० क्र० १०५२, कमानी हाउसिंग सोसाइटी
देवीदयाल क्रास रोड, देवीदयालनगर, मुलुंड (पश्चिम)
बम्बई ४०००८०

विनम्र,
सु० वि० भट
अनुवादक

प्रकाशकीय प्रस्तावना

विषय-प्रवेश

पृष्ठ ३-८ में विश्वनागरी लिपि; भारतीय लिपियों की विशेषता और समान वैज्ञानिकता; उनकी प्रतिनिधिस्वरूपा नागरी लिपि को भी अपनाना किन्तु अन्य लिपियों को बनाये रखना भी कर्तव्य; नागरी लिपि पर उत्तरदायित्व विशेष; नागरी लिपि की वैज्ञानिकता मानव मात्र की सम्पत्ति; नागरी लिपि में अनुपलब्ध विविध भाषाओं के विशिष्ट स्वर-व्यञ्जनों का समावेश; तदर्थ अरबी लिपि का आदर्श सम्मुख; राष्ट्रीय एकीकरण और विश्व-बन्धुत्व के लिए नागरी लिपि की सम्पर्क-सेवा आदि दृष्टिकोणों पर समुचित प्रकाश डाला गया है। अब 'तौरवे रामायण' के नागरी-रूपान्तरकार के व्यक्तित्व पर कुछ पंक्तियाँ निवेदित हैं—

कृतित्व और व्यक्तित्व

तौरवे रामायण के सम्बन्ध में, प्रो० श्री एस० वी० भट ने २४ पृष्ठों की भूमिका में तौरवे रामायण, रचनाकार कुमार वाल्मीकि और देश-काल-पात्र के संदर्भ में तत्कालीन एक विस्तृत झांकी, विशद रूप में प्रस्तुत की है।

विद्वत्वर श्री भट का पूरा नाम है श्री सुब्राय विट्ठल भट। उनका जन्मस्थान रहा भटकल (उत्तर कन्नड ज़िला)। जन्म अक्तूबर, सन् १९१८; मौजूदा पूरा पता है— श्री एस० वी० भट, बी-२०, शीतल प्लाट क्र० १०५३, कमानी हाउसिंग् सोसाइटी, देवीदयाल क्रास रोड, देवीदयालनगर, मुलुंद (पश्चिम), बंबई—४०००८०। योग्यताएँ— एम० ए० (बनारस); साहित्य-रत्न (प्रयाग); राष्ट्रभाषा विशारद (दक्षिण भाषा हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास); एस० टी० सी०, बी० टी० सी० आदि।

अठारह वर्ष की आयु से ही उन्होंने विद्यालयों में शिक्षण-कार्य अपनाया। लगभग सात वर्ष तक प्राथमिक शाला में, अठारह साल तक माध्यमिक शाला में और १९५३ से १९५८ तक माध्यमिक शाला और कालेज दोनों जगहों में हिन्दी पढ़ाते रहे। सरकारी और ग़ैरसरकारी अनेक समितियों के सदस्य रहकर आपने अपनी हिन्दी-सेवा का परिचय दिया।

सन् १९७९ ई० में स्नातकोत्तर विभाग में शिक्षण कार्य से आपने अवकाश लिया। इस बीच हिन्दी-कन्नड बालबोधिनी, राष्ट्रभाषा स्वयं बोधिनी, राजभाषा पाठमाला, नूतन हिन्दी पाठावली, आदर्श हिन्दी-कन्नड सचित्र कोश, हिन्दी कन्नड व्याकरण जैसी मौलिक रचनाएँ और प्रेमचन्द्र हिन्दी से कन्नड में, गद्य-पद्य-मञ्जूषा, काव्यकुसुम आदि मौलिक अथवा अनूदित पुस्तकें उनसे साहित्य-जगत को प्राप्त हुईं।

भुवन वाणी ट्रस्ट का श्री भट से सम्बन्ध

अभिनव पंप नागचन्द्र विरचित 'रामचन्द्र चरित्र पुराणम्' का नागरी संस्करण प्रकाशित हो चुका था। हम कन्नड के किसी दूसरे ग्रन्थरत्न की तलाश में थे। हमारे वरिष्ठ न्यासी भाषासेतु-चक्रवर्तिन् डॉ० गजानन नरसिंह साठे भी इसकी व्यवस्था खोज रहे थे।

सृष्टि-उदय पर, ब्रह्म-व्योम में जगते यथा वेद के मंत्र।
'विश्वनागरी' से खिलते त्यों भुवन-सरस्वति स्वतः स्वतंत्र॥

प्रो० एस० वी० भट जैसे रत्न को उन्होंने ढूंढ़ निकाला। प्रो० एस० वी० भट ने कन्नड के 'तोरवे रामायण' का हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण आरम्भ किया। तीव्र गति से काम, उनका सुस्पष्ट बृहदाक्षरों में सुलेख, व्याख्यायुक्त उनके पत्र सामने आने लगे। मैं उनकी प्रतिभा, निस्पृह भाव और परिश्रम से चकित था।

किन्तु बात यहीं तक नहीं रही। श्री भट, जैसा उन्होंने अपनी भूमिका में लिखा है, अति कठिन रोगग्रस्त तो थे ही, उन पर दो दैवी विपत्तियाँ ऐसी फट पड़ी, जिनके स्मरण मात्र से रोमाञ्च हो आता है। उनके दो अति घनिष्ट आत्मीयों को बड़ी बेदर्दी से काल ने ग्रस लिया। ये दो सांघातिक चोटें, साथ में स्वयं भी रोग-ग्रस्त! इन सकटों के बीच वे इस चौदह सौ पृष्ठ के ग्रन्थ की पाण्डुलिपि को यथासमय भेजने में समर्थ रहे।

मुद्रण आरंभ हुआ। अचानक उनका स्वास्थ्य और बिगड़ा। डॉ० साठे प्रूफ़-संशोधन की अन्य व्यवस्था खोजने लगे। परन्तु धन्य श्री भट! उनके अदम्य साहस ने उनमें लोच नहीं आने दी। हम प्रूफ़ भेजने में पिछड़ जाते थे, डाक-व्यवस्था विश्वासघात करती थी, परन्तु प्रोफ़ेसर भट के यहाँ प्रूफ़ नही रुकने पाया। यह विशाल ग्रन्थ आपके सम्मुख अपेक्षित समय में ही प्रस्तुत हो गया।

प्रकाशकीय को विस्तार देने में लगूँ, अथवा साहस और पुरुषार्थ के इस साकार जगमगाते रूप का ध्यान करूँ, अथवा भुवन वाणी ट्रस्ट के विश्वनागरी अक्षयवट के सौभाग्य की सराहना करूं। पाठको! ध्यान दीजिए कि श्री भट कन्नड के तीसरे पुष्प 'वत्तलेश्वर रामायण' के सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण को साकार करने में पुनः लग गये हैं। भगवान् उनको स्वास्थ्य प्रदान करे। पुरुषार्थ का तो श्री भट स्वयं सर्जन करते हैं।

आभार-प्रदर्शन

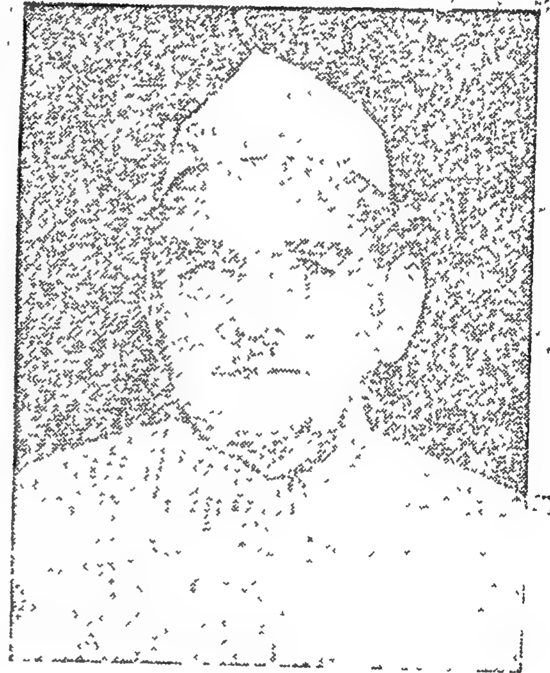
पहला आभार मैं मानता हूँ और मैं नत-मस्तक हूं ज्ञानपीठ-पुरस्कार-विजेता और वत्तलेश्वर (कौशिक रामायण) कन्नड के सम्पादक महामना डॉ० शिवराम जी कारंत का ध्यान कर। उन्होंने निम्न पद्य-पंक्तियों के भाव को समझा, सराहा और प्रो० भट को नागरी लिप्यन्तरण के पुनीत

कार्य को सम्पन्न करने हेतु आशीर्वाद दिया। उनके शब्द हैं— "इसके लिए प्रयत्नशील रहो, सचमुच अनूठी योजना है। मेरा आशीर्वाद है।" डॉ० शिवराम से आशीर्वाद-प्राप्त ट्रस्ट-उद्देश्य की पंक्तियाँ ये हैं:—

विश्ववाङ्मय से निःसृत अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी पट, सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥
अमर भारती सलिल-मञ्जु की पावन 'कन्नड' धारा।
की नागरी-सुमण्डित छबि से अब जगमग जग सारा॥

तत्पश्चात् सदाशय विद्वानों, श्रीमानों और उत्तरप्रदेश शासन (राष्ट्रीय एकीकरण विभाग) के प्रति हम आभारी हैं, जिनकी अनवरत सहायता से 'भाषाई सेतुकरण' के अन्तर्गत अनेक ग्रन्थों का प्रकाशन चलता रहता है।

सौभाग्य की बात है कि भारत सरकार के राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) तथा शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय ने राष्ट्रभाषा हिन्दी-सहित सभी भाषाओं की समृद्धि और व्यापकता के लिए एक जोड़लिपि "नागरी" के प्रसार पर उपयुक्त बल दिया। उनकी उल्लेखनीय सहायता से हमको विशेष बल मिला है और उसी के फल-स्वरूप कन्नड के अनुपम एवं वृहत् ग्रन्थ तोरवे रामायण को इतना शीघ्र प्रकाशन करने में हम समर्थ हुए हैं। प्रतिदान में हम आश्वासन देते हैं कि नागरी लिपि और राष्ट्रभाषा के माध्यम से विश्व की भाषाओं का सेतुकरण, विश्वमञ्च पर नागरी लिपि का प्रस्थापन, राष्ट्रभाषा का भण्डार भरने और सभी भारतीय भाषाओं को सारे राष्ट्र में प्रसारित करने में उत्तरोत्तर हम अपने कर्तव्य का पालन करते रहेंगे। आशा है कि सम्पूर्ण जगत् हमारे इस उपक्रम को "गिलहरी का सेतुबन्धन" मानकर सहकार और अनुग्रह प्रदान करता रहेगा।



नन्दकुमार अवस्थी

नन्दकुमार अवस्थी

प्रतिष्ठाता, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ

विषय-सूची

(विषय-सूची देखिये आगे पृष्ठ १३८९-१३९६)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

* श्रीसीतारामचन्द्राय नमः *

तोरवे रामायण

बालकाण्ड

ओंदनेय संधि

श्रीजनकजारमण विमलसरोजसंभवजनकननुपम
राजशेखरविनुत निखिळामरकिरीटचय
राजितामल ललितपदपंकजनानतजनदयासुर
भूज तोरवेय राय नरहरि पालिसुगे जगव ॥ 1 ॥
परममंगळमूर्ति पावन चरित परमानंदमय पुर-
हर पुरंदरपूजितांघ्रि सरोज शशिमौळि
शरणजन सुरधेनु गंगाधर गजासुरमथन गौरी-
वर त्रियंबक नोलिदु सलहुगे सकल सज्जनर ॥ 2 ॥

प्रथम संधि

श्रीजनकात्मजा के पति, जो निर्मलात्मा ब्रह्म के पिता हैं, अनुपम चन्द्र-मौली स्तोवार्ह हैं, समस्त देवताओं से धारित मुकुट-कांति से प्रकाशमान हैं, शुभ्र मनोहर चरणकमलयुक्त हैं, शरणागतवत्सल, दयासंपन्न, कल्पवृक्ष-सदृश तोरवे के अधिपति नरहरि भगवान समस्त जगत का कल्याण करें। १ परममंगलस्वरूप, पवित्र चरित्र वाले, परमानन्दमय, त्रिपुरासुर-संहारी, इन्द्र से पूजित चरणकमलसंपन्न, गगा को सिर पर धारण करनेवाले, गजासुरसंहारी, गौरीपति, त्रिलोचन शिवजी सकल सज्जनों का पालन करें। २

वनरुहासन विश्वजगती जनक सनकाद्यखिळमुनिजन
विनुत विबुधवरेण्य वाणी-वधु मुखांबोज
दिनपघनचातुर्य चतुरानन रजोगुण लोकविभु भू-
विनुत विमलविरिंचि माळ्केमगखिळ संपदव ॥ 3 ॥
उदधि लंघननवनिजा सम्मुद विवर्धन वैरिमद गज
विदळनोद्धत सिंह लंकानगर निर्दहन
कदन कर्कश भीम रिपुदशवदन दर्पविराम राघव
पदसरोजभ्रमर भुवनप्राणजं वंदे ॥ 4 ॥
सरसिजांघ्रि द्वयद कोमल चरणकांडद घननितंबद
निरुपमांगद निम्ननाभिय निबिडकुचभरद
वरतराभयकरद शोभाकरद नगेमोगदनुपमद बं-
धुरद भारति निलुगे मन्मुखपद्म सद्मदलि ॥ 5 ॥
करचतुष्टय दुदितमदसिंधुर निभानन दमल लंबो-
दरद वरसिंधूरचंदनगंध बंधुरद
ऊरुललाटदि नर्तिसुव कचभरद कमनीय प्रभावि-
स्तर विनायक माडेमगे निर्विघ्नदायकव ॥ 6 ॥
सुरनरोरग वंद्य निगमोत्कर कलापानिद्य विश्वं-
भरपदांबुज भृंग भूनुत मुनि जनोत्तुंग

कमल पर आसीन, ब्रह्मांडादि समस्त लोकपिता, सनक-सनंदनादि मुनिजनों के स्तोत्रार्ह, परमविद्वान्, सरस्वती को अपने मुखकमल में धारण करनेवाले, सूर्य की चतुराई से सम्पन्न, चार मुखों से सुशोभित, रजोगुणयुक्त, लोकस्वामी, भूलोकवासियों से स्तुतित परिशुद्ध ब्रह्म हमें सकल सम्पदा प्रदान करें। ३ समुद्र को पार कर, सीता को सुख प्रदान कर, शत्रु रूपी मदोन्मत्त हाथियों को विदीर्ण कर, उग्र सिंह-रूप धारण कर, सारी लंका नगरी को जलाकर, युद्ध में सम्मुख पड़नेवालों के भीम-भयंकर शत्रु रावण के अहंकार को कुचलकर, श्रीराम-चरण-कमल-भ्रमर जगत-प्राणाधार वायु-पुत्र की वन्दना करता हूँ। ४ कमल-जैसे तलवे, कोमल पैर, निरुपम अंगांग, भाँवरी-जैसी नाभि, सटे स्तनों के भार से युक्त लोकों को अभय प्रदान करनेवाले हाथ, हँसमुख मनोहारिणी सरस्वती मेरे मुखकमल में निवास करे। ५ चार हाथों वाले, मस्त हाथी के मुँह वाले, बड़े पेट वाले, सिन्धूर श्रीगंध-सुगंध-द्रव्ययुक्त चौड़े ललाट पर घुँघुराले बाल जो लहरा रहे हैं—ऐसी मनोहारिणी छवि से शोभायमान गणेशजी हमारे मार्ग के विघ्नों का निवारण करें। ६ सुर, नर, सर्पादियों से वन्दनार्ह, वेदोक्त कर्मों से

शरणजनसुरपालनायत परिधि निरुपम तत्वविद्या
शरधि सलहुगे नम्म मध्वाचार्य गुरुराय ॥ 7 ॥
आदिकवि कविराजहंसन नादिकविकुलकमलमित्र म-
हादिवौकस प्रचुर भाषा कविजनोत्तंस
वेदगर्भ वर प्रसादाह्लादकवि रघुवरकथा विम-
लोदर्दिदु महामुनि प्राचेतसं वंदे ॥ 8 ॥
चारुतर कर्नाटकद विस्तार रामायण के कर्तृ कु-
मार वाल्मीकियें कथापति तोरवेयधिनाथ
वीर नरहरि यॆनलुमॆच्चद रारु सत्कविता विलासद
सूरिगळ हृदयाकरुषण कथाकुतूहलव ॥ 9 ॥
परर बगॆ पररुक्ति पररुत्करुष पररुन्नतिय कृतियप
हरणे पररूपमान पररोड्डवद परुटवद
हरहु होगदग्गळिकॆ पदसंचरणॆयलि लिपि तिरुगि नोडद
बिरिदु बेरॆ कुमार वाल्मीकिय वचोलहरि ॥ 10 ॥
सुकविगळ सुम्मान सूरिप्रकरदमलज्ञान मुनिकर
मुकुर गुणिगळ गूढनिधि सुरसर सुधाशराधि

श्लाघ्य, विष्णु के चरण-कमल-भ्रमर, लोकों से प्रशंसित मुनिजनों में बुजुर्ग, शरणागतों के लिए महसमर्थ देवेन्द्र-समान, वर्णनातीत, दर्शन-विद्यासागर गुरु मध्वाचार्यजी हमारी रक्षा करें। ७ आदिकवि, कवियों में राजहंस, प्राचीन कविगण रूपी कमलों के लिए सूर्य-सरीखे, देवभाषा संस्कृत के कवियों के लिए आभूषण-स्वरूप, वेदों को धारण करनेवाले ब्रह्मा जी के वरदान से सभी को आनन्द प्रदान करनेवाले कवि, रघुवर जी की कथा रूपी विमल जल के लिए चन्द्र-सरीखे बने प्रसिद्ध वाल्मीकि महामुनि को नमस्कार समर्पित करता हूँ। ८ मनमोहक कर्नाटक भाषा (कन्नड) में विस्तार से विरचित रामायण महाकाव्य के एकमात्र रचयिता कुमार वाल्मीकि हैं; रामायण के कथानायक तोरवे के अधिपति वीर नरहरि स्वामि एकमात्र हैं। अर्थात् सुंदर कविता-सौंदर्य-सुशोभित, विद्वानों को आकर्षित करनेवाली, औत्सुक्य बढ़ानेवाली कथा को कौन पसंद नहीं करता? । ९ 'अन्य कवियों की रीति तथा कथन, बड़प्पन, दूसरे कवियों की ऊँची कृतियों की चोरी, अन्य कवियों के उपमान, रचनाक्रम, विस्तार आदियों का प्रयोग मैं नहीं करता', इस बड़प्पन के साथ पदरचना और लिपि का पुनरावलोकन न करने की महानता कुमार वाल्मीकि की काव्य-रचना की विशेषता है। १० सत्कवियों का सन्तोष, विद्वानों का परिशुद्ध ज्ञान,

अकुटिलर मनमेच्चु सिरिहरि भकुतरुम्मह दच्चु शिव से-
वकर मेच्चु कुमार वाल्मीकि प्रवन्धकृति ॥ 11 ॥
प्रियरिगप्रियरिगॆ विवेका श्रयरिगति मूर्खरिगवज्ञा
नियमिरिगॆ जाणरिगॆ जडरिगसूयाभावरिगॆ
नयविदरिग ज्ञरिगॆ हरुषोदयद हेंपु कुमार वल्मी-
किय विलास प्रौढतर कविताचमत्कार ॥ 12 ॥
धरॆ योळग्गद राघवेन्द्रन चरित शतकोटि प्रविस्तर
वरमहाचारित्ररचना सुप्रवधदलि
परम भक्तियॊळाव नॊन्द क्षरव केळ्द नरंगे पातक
हरॆवु देंदु कुमाररिगे वाल्मीकि मुनि नुडिद ॥ 13 ॥
भवभवार्जित दुरित कोटिय तविसुवग्गद नाम सरसिज
भवभवाच्युतर मलपदवियनीव गुणनाम
शिवन नच्चिन नाम गिरिसम्भवॆय नेमद नाम सुरनर
भुवन पावन नाम सीतापतिय सिरिनाम ॥ 14 ॥
ऒदॆवुदघसंहतिय तलेदोरिदडॆ दहिसुवदॆडरनौकिद
डदुहि बिसुडुवुदुन्मद प्रळय प्रपंचकव

ऋषियों का हाथ का आरसा, सद्गुणियों का छिपा रखा धन, रसिकों का अमृतरस-सागर, निष्कपटियों की मनपसन्द श्री महाविष्णु के भक्तों के उत्साह का ढाँचा, शिवाराधकों के लिए प्रियकर है —यह कुमार वाल्मीकि-रचित प्रवन्ध-काव्य-रचना। ११ प्रेमियों और द्वेषियों, विवेकी तथा मूर्खों, उपेक्षकों तथा बुद्धिमानों, जड़बुद्धि तथा जलनेवालों, नीतिवानों तथा अज्ञानियों के लिए कुमार वाल्मीकि की यह प्रौढ़रचना काव्य-चमत्कारों के कारण समान रीति से पसन्द है। १२ 'जगत्श्रेष्ठ राघवेन्द्र-महिमा का वर्णन करनेवाला विस्तृत सौ करोड़ रामायण महा चरित काव्यों में के एक अक्षर मात्र को जो कोई परम भक्तिभाव से सुनता है, उसके सारे पाप निःशेष हो जाते हैं!' —इस तरह वाल्मीकि महर्षि ने कुश-लव कुमारों को रामायण-महिमा समझायी। १३ सीतापति के पावन नाम की महत्ता का क्या वर्णन करें? जन्म-जन्मांतरों से संचित करोड़ों पापसमूह नाश करनेवाला यह नाम, ब्रह्मा-विष्णुओं को भी अपना स्थान प्रदान करनेवाला यह नाम, शिवजी का प्रीतिपात्र यह नाम, पार्वती-व्रत में उच्चारित यह नाम, सुर-नरलोकों को पवित्र बनानेवाला यह राम-नाम है। १४ "राम-नाम पापपुंजों को मार भगाता है, उपस्थित विघ्नों को जलाकर भस्म कर देता है, अहंकारयुक्त विनाश-कार्यों को दबोच देता

मुदव निहदलि कोंडवुदच्युत पदवपरदोळ गीवुदिदु निग-
मद रहस्य पुराण सिद्धविदेंदु मुनि नुडिद ॥ 15 ॥

ऎरडनॆय संधि

सूचनॆ— कुशलवरि गरुहिदनु प्राचेतसनु दिविज मुनींद्रनुपदेशिसिद रामायण सुधामय कथन कौतुकव ।

निगमतति निलुकद गुणत्रय होंगद माया सतिय सोंबगिन
सोंगसु सोंकद सकलसम्यग्ज्ञानिगळ मतिय
बगॆगॆ बारद जनन मरणादिगळु होद्दद तोरि तोरद
जगद देवर देवनिद्दनु रजत शिखरियलि ॥ 1 ॥
परम परमेशान घन तत्पुरुष निर्मल वामदेव
स्फुरित सद्योजात विमलाघोर नामकद
परम तत्वद भित्ति नोळगं कुरगळैदादंतॆ तोरुव
परम तेजोमयनु मॆरॆदनु पंचवक्तृदलि ॥ 2 ॥
शिरद चन्द्रन, भाळलोचन दुरग कुंडलदसित कंठद
वरकराभयकरद शोभाकरद तनुरुचिय

है, इहलोक में सन्तोष, परलोक में विष्णुपद (स्थान) प्रदान करता है। यह वेदों का रहस्य है; पुराणों से प्रतिपादित सिद्धान्त है" —इस तरह वाल्मीकि ने समझाया। १५

द्वितीय संधि

सूचना— देवलोक के नारद महर्षि से उपदेशित अमृत-सदृश कुतुहलपूर्ण रामायण-कथा वाल्मीकिजी कुश-लवों को समझाते हैं।

जो वेदों की पहुँच के परे है, सत्त्व-रज-तमोगुणों से संयुक्त नहीं होते, माया रूपी नारी के सौन्दर्य में नहीं फँसते, पूर्ण ज्ञानियों की बुद्धि के भी परे जो हैं, जन्म-मृत्यु-रहित, साकार रूप से जगत में प्रकट होकर भी निराकार रूप में अप्रकट देव-देवोत्तम शिवजी रजत-शिखर पर विराजमान थे। १ श्रेष्ठ ईशान, महान तत्पुरुष, परिशुद्ध वामदेव, प्रकाशमान सद्योजात, निर्मल अघोर नामक पाँच मुखों से चमकते हुए शिवजी मानों परमतत्त्व के पाँच अंकुरों के सदृश तेजस्वी स्वरूप में प्रकाशित थे। २ जटाजूट पर चन्द्रमा को धारणकर, त्रिनेत्री शिवजी कानों में सर्पकुंडल धारे, नीलकंठ बने, वरद-हस्त अभय हस्तों से युक्त, मंगलमयी देहकांति से शोभायमान वह वेदमयी मूर्ति,

निरुपमागम निगमसमय बंधुरद करि शार्दूल चर्मा-
बरद हरनेंसेदिर्दनगजा सतिय मेळदलि ॥ 3 ॥
सुररु वसुगळु सिद्ध विद्याधररु खेचररु किन्नररु किं-
पुरुषररगरु वर मरुद्गण यक्ष राक्षसरु
गरुड गंधर्वरु दिशाधीश्वररु दिविजमुनींद्र मुख्या-
मर कदंबक विद्दुदोलगदलि महेश्वरन ॥ 4 ॥
श्रुतिगळे कैवारिसुव मागतेयरखिळागम पुराण
प्रततिये पाठकरु निजदणिमादिगळे चररु
स्मृतिगळे कळकळद कंचुकि ततिगळेंन लोप्पिर्दुदा भा-
रतिय होगळिकेयलि सभास्थळवा त्रियंबकन ॥ 5 ॥
आ समयदलि कैमुगिदु बिन्नैसिदळु भाळेक्षणंगा
वासुदेव स्तुतिपरायणे गौरि देवियरु
केशवादि सहस्र नाम विलास दोळगधिनाम धेयद
भासुरानुग्रह रहस्यवनरुह बेकेंदु ॥ 6 ॥
देवि केळादडे समस्त स्थावरद जंगमद
जगती जीवदंतर्यामियह विष्णुविन नामवनु
आवनुपमिस बहुदु होगळिदु ठावुगाणवु श्रुतिगळमम म-
हाविभुविन महत्व तत्वव नरिवारारेंद ॥ 7 ॥

हाथी और बाघ के चमड़ों के कपड़े धारणकर भगवती गिरिजा के साथ विराजमान थे। ३ देवगण, अष्टवसु, सिद्ध, विद्याधर, खेचर, किन्नर, किम्पुरुष, नाग, मरुत्-गण, यक्ष, राक्षस, गरुड़जी, गंधर्व, अष्टदिक्पाल, देवमुनि नारद, अन्य प्रमुख देवतागण, शिवजी के सभाभवन में उपस्थित थे। ४ 'वेद मानों शिवस्तुति के चारण थे; सारे शास्त्र-पुराण मानों भाट थे; अणिमादि सिद्धियाँ मानो सेविकाएँ थीं; धर्मशास्त्र मानों दौड़धूप करनेवाली कंचुकियाँ थीं; सरस्वती स्वयं गुणगान कर रही थी' —यों शिवजी की सभा पूरे सज-धज से शोभायमान थी। ५ उस समय श्रीमन्नारायण की स्तुति में लीन गौरीदेवी हाथ जोड़कर भालनेत्र शिवजी से प्रार्थना करती है, "केशव नाम से प्रारंभित होनेवाले श्रीमन्नारायण के सहस्र नामों में अत्यंत प्रसिद्ध नाम से लभ्य भगवत्कृपारहस्य समझाने की कृपा करें"। ६ "देवी, संसार भर के समस्त जड़चेतन वस्तुओं के अंतर्यामी रहस्यमयी भगवान् विष्णु के नाम की महत्ता सुनो; वह उपमातीत है। वेद भरसक प्रयत्न करने पर भी उसकी गहराई पा नहीं सकते। क्या कहूँ! उस महाप्रभु के महत्तत्त्व को कौन परख सकता है?" इस तरह शिवजी ने कहा। ७ "उस

आ परापर वस्तुविन निज रूपु नामद गाढतर महि
मापयोधिय नेलेयनरिववरारु लोकदलि
आ पुरातन पुरुषनभिधा नोपलक्षण लक्षितगळ क-
ळाप रचनेय कंडेनग्गद रामनामदलि ॥ 8 ॥
गिरिजे केळु सहस्रनामद सरिकणा रघुरामचन्द्रन
परममंगळनाम निरुपम निगम विश्राम
निरुतविदु निजवेंदु बगे निर्धरिसिदेवु निगमार्थदलि निन
गुरुतरानुग्रहद बीजाक्षर विदीगेंद ॥ 9 ॥
हा महादेवेंदु पुळकित रोम हरुषितेयागि दृगुयुग
तामरसवनु मुगिदु रामन नेनेदु कण्देरेदु
आ महात्मन गुणचरित्रोद्दामतेय नाज्ञापिसेंदु सु-
धामरीचिधरंगे बिन्नैसिदळु गिरिजाते ॥ 10 ॥
आदडादरिसेरडनेय युगदादियलि क्रौंचाटवियलिम-
हादुरितात्म व्याधनिद्दनु चोरवृत्तियलि
आ दिवांगणदि भरद्वाजादि मुनिगळु बरलु कंडनु
हादियलि बळिका प्रयागिय बदरिकाश्रमद ॥ 11 ॥
अवरनुग्रहदिंद तप संभविसिता व्याधंगे वारिज
भवन देसेयिदाय्तु परमरुषित्ववातंगे

परात्पर महत्तत्त्व के सत्यस्वरूप को, नामों के गहरे महासागर के अन्तराल को सारे संसार में कौन जान पाता है ? उस आदिपुरुष के नाम के लक्षणों को, अभिधानोपलक्षण-लक्षितों का एकमात्र महान निरीक्षण श्रेष्ठ राम-नाम में पाया" । ८ "देवी गिरिजा ! सुन । रघुरामचन्द्रजी के परम मंगलकारी नाम सहस्रनाम-समान हैं । उपमातीत वेदों के लिए ये आश्रय हैं । मान जा, यह सत्य है, यह सत्य है । वेदार्थ में इसका निश्चय किया गया है । तेरे लिए तो यह आशीर्वादस्वरूप श्रेष्ठ बीजाक्षर है" —इस तरह शिवजी ने समझाया । ९ "हा महादेव" कहते हुए अत्यंत हर्षपुलकित हुई देवी गिरिजा अपने कमल-सदृश नयनों को क्षणमात्र मूंद कर 'राम' स्मरण कर अमृत किरणधारी शिवजी से प्रार्थना करने लगी, "उस महात्मश्रेष्ठ का गुणसंकीर्तन सुनाने की कृपा करें" । १० "जभी तो भक्ति-भाव से, श्रद्धा से सुन । दूसरे युग त्रेतायुग के प्रारम्भ में क्रौंचवन में एक परम नीच शिकारी रहा करता था । डकैती ही उसकी जीबिका थी । भारद्वाजादि ऋषि-महर्षि आकाशमार्ग से उतरकर प्रयाग-बदरिकाश्रम होते हुए उस रास्ते से आते हुओं को उस शिकारी ने देखा । ११ उनकी कृपा से

अवतरिसिदनु बळिक मुनिपुंगवनु वल्मीकदलि
हॆसराय्तवनियलि वाल्मीकि मुनियॆन्दगजे कॆळॆंद ॥ 12 ॥
आ तपोधन बळिक मुनि संजातदलि सेरिदनु सुजन
ख्यात नादनु सुळिदविदिरोळु क्रौंचखग युगळ
आ तपोविय लॊळॆ दुष्ट किरातनव कंडॆसॆय लदरोळ
चेतनंबडॆ दोदरि कॆडॆदुदु विहग पति नॆलकॆ ॥ 13 ॥
अरॆमुगिद लोचनद सम्पुट वरळि चलिसुव चंचुपुट
दुप्परिसदंघ्रिय कॆदरिदरिकॆय बिरित तुप्पळिन
कॊरळ मिडुकिन मसॆय मुखदलि सुरिव नॆत्तर पतिय सुत्तलु
तिरुगि चीरुव विहग सतियनु कंडना मुनिप ॥ 14 ॥
नॊंदु दल्ला क्रौंचपतग पुरंदरनु तानॆनुत मनदलि
नॊंदु नयन दॊळॊसरिसिदनश्रुगळ धारॆगळ
ऒंदु निमिषके विहग पतिबळि कॊन्दिदुदु मरणदलिकेळर-
विंदमुखि हळविसिदना मुनिनाथमरुकदलि ॥ 15 ॥
शोकदलि हळविसलिकदुता श्लोकपद्धति यागलिळिदनु
नाकदिं नारदनु तम्मनिवरन सरिसदलि

तप करने का सुअवसर उस व्याध को मिला। ब्रह्मा जी के वरदान से उसे श्रेष्ठ तपस्वी का स्थान प्राप्त हुआ। वल्मीक में अर्थात् बाँबी में तपस्वी होकर बाहर निकलने के कारण 'वाल्मीकि' नाम से लोकप्रसिद्ध हुए।"—गिरिजा सुन। १२ "वह तपस्वी तदनन्तर ऋषि-मुनियों की पंक्ति में आसीन होकर प्रसिद्ध हुए। सज्जन उनके गुणगान करने लगे। यों दिन बीतने लगे। एक दिन की बात है। उनके सामने से होकर क्रौंच पक्षी का एक जोड़ा गुज़र रहा था। उस तपोवन के एक दुष्टव्याध ने उन पक्षियों पर तीर चलाया। उस क्रौंच-जोड़ी में से नर पक्षी तीर खाकर क्रंदन करता हुआ चटपटाता धरती पर गिरा। १३ अधमुंदी आँखें, खुली हिलती चोंच, पैर ऊपर किये, खुले फैले पंख बाहर निकली आँत हाँफते उस पक्षी के, घाव से बहते रक्तवाले उस नर पक्षी के मादा पक्षी को महर्षि वाल्मीकि ने देखा। १४ 'क्रौंच पक्षिराज को वेदना हुई' —इस तरह मन ही मन दुःखी होते हुए वाल्मीकि की आँखों से अश्रुधारा वह निकली। इतने में, क्षणार्ध में उस क्रौंचपक्षी के प्राण-पखेरू उड़ गये। महर्षिश्रेष्ठ वाल्मीकि वेदना से चटपटाने लगे। कमलमुखी पार्वती, सुनो" इस तरह शिवजी ने कहा। १५ "शोक से प्रलाप करते वाल्मीकि की वाणी श्लोक में रूपांतरित हुई। तब देवलोक से महर्षि नारद उस मुनिश्रेष्ठ के सम्मुख

ई कुतूहल रचनेयनु वाल्मीकि मुनियलि कंडु बळिका
श्लोक सरणिगे शिरवनोलदनु नारदनु नगुत ॥ 16 ॥
अहुदले वाल्मीकि कवितेय वहणि लेसै शोकमुख स-
न्निहित तच्छ्लोक प्रबन्ध सुकाव्य रचनेयलि
वहिसली पद्धति परिश्रुत वहुदु बळिकी लोकदलि निन
गहुदु कीर्ति प्रथम कवियदजन सभेयोळगे ॥ 17 ॥
अंदु निजवनु तोड़िमुनिरघु नन्दनोपाख्यानवनु मुद-
दिद संक्षेपदलनुग्रहवित्तु हंसेयलि
संद नारदनत्तली मुनि कंदेरव माडिदनु केळर
विदमुखि लोकदलि रामायण कथामृतव ॥ 18 ॥
जातरहितनु जनिसिदनु खद्योत कुलदलि रघु दिळीप
ख्यातरोळगग्गळद दशरथ नृपन गर्भदलि
भूतळद दुर्जन वितान विघातिगोसुगवगजे केळ् पुरु-
हूत मुख्यर दूड़िनलि रामाभिधानदलि ॥ 19 ॥
बालतनदलि ताटकिय गोनाळियनुगोरिदनु कदनद
केळियलि कड़ुगलि सुबाहु प्रमुख राक्षसर
सीळिदनु सलहिदनु मुनिकुलपाल कौशिकनध्वरव पद-
धूळियलि दूटिदनहल्यासतिय दुष्कृतव ॥ 20 ॥

प्रकट हुए। इस आश्चर्यकारक घटना को वाल्मीकि महर्षि में देख, श्लोकरचना-क्रम का स्पंदन देखते हुए नारद मुस्कुराते हुए सिर हिलाते अपनी सम्मति प्रकट करने लगे"। १६ ठीक है— वाल्मीकि। ,,काव्य का श्लाघ्य स्पंदन, प्रकटीकरण श्रेयस्कर है। शोक (वेदना) के आवेग में तेरे श्रीमुख से बाहर स्फुरित श्लोक छन्दोमयी श्रेष्ठ काव्य-रचना-पद्धति के रूप में आगे चलकर इस लोक में आदिकवि की प्रसिद्धि प्राप्त करेगा"। १७ इस तरह समझाते हुए महर्षि नारद ने वाल्मीकि को सत्य के दर्शन कराए। रघुपुत्र श्रीराम की कथा आनन्द से संक्षेप में अनुग्रह कर अपने वाहन हंस पर आरोहित हो चले गये। तदुपरान्त वाल्मीकि मुनि ने रामायण कथामृत की रचना कर लोगों की आँखें खोलीं। १८ देवेन्द्र आदियों के दीन होकर सहारा माँगने पर भूलोक के दुष्टों को दंड देने के उद्देश्य से रघु, दिलीप आदियों के जन्म से प्रख्यात हुए सूर्यवंश में श्रेष्ठ दशरथ के यहाँ जन्मरहित भगवान रामाभिधान से पैदा हुए। देवी पार्वती, यह निश्चित जानो। १९ बाल्यकाल में ही ताटकी राक्षसी के गर्दन को काट गिराया। युद्ध के खेल के लिए आह्वानित कर महा-पराक्रमी सुबाहु आदि राक्षसों को

ॲरडनॆय नम्मुग्र चापव नॆरॆद नृपरलि गॆलिदु सीतॆय
वरिसि भार्गवनुरु भुजा दर्पवनु परिहरिसि
गुरुनीरूपव धरिसि वनवनु चरिसि चंडखरादिगळ सं-
हरिसि कडलनु कट्टि गॆलिदनु कलि दशाननन ॥ 21 ॥
भार विळिदुदु बळिकवसुधानारि गॊरगिद गोणु सासिर
नॆरितादुवु फणिपतिय पद्मज पुरंदरर
ऊरॊळगॆ गुडिगट्टिदुवु घन भूरि भुवनजनौघ हरुषद
वारिधिय लोलाडिदुदु दशशिरन मरणदलि ॥ 22 ॥
शरणु हॊक्क विभीषणन पतिकरिसि लंका राज्यवनु सर-
सिरुहभवनायुष्य परियंतित्तु करुणदलि
सुररनॆल्लर सलहि विश्वंभरॆय भारव निळुहि सुजनो-
द्धरण नॆदिदनमलतर साकेतपुरवरव ॥ 23 ॥

बिदीर्ण कर डाला। मुनिकुलरक्षक विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की। अपने चरण-कमलों की धूल से सती अहल्या को पाप से विमुक्त किया। २० हमारे उग्र धनु की प्रत्यंचा चढ़ाकर, राजाओं की सभा में सीता को जीत कर उसके साथ विवाह किया। भार्गव परशुराम के बाहुदर्प को, घमंड को मिट्टी में मिला दिया। पिता की आज्ञा को शिरसा मानकर जंगल में विचरते हुए खर-दूषणादि राक्षसों का विनाश कर समुद्र पर पुल बाँधकर रावण को जीत लिया। २१ दशकंठ रावण की मृत्यु से भू-माता का भार हलका हुआ। भूमि के भार से विचलित आदिशेष सर्पराज के सहस्र फनों को आराम पहुँचाया। ब्रह्मा, इन्द्र आदि देवताओं की राजधानियों का हर्ष उमड़ा। भूलोकवासी आनन्द के पारावार में डूबे। २२ शरण आए विभीषण पर दयादृष्टि कर उसे ब्रह्माजी की उम्र तक की अवधि का लंका का राज्य दया से प्रदान कर, देवताओं की रक्षा कर, भूमि का भार उतार कर सज्जनोद्धारक श्रीराम पावन अयोध्या नगरी पधारे। २३

मूरनेय संधि

सूचने— मनु महीशान्वयद जनपर जननवनु वाल्मीकि सीता तनुजरिगॆ विस्तरिसिदनु कुशलवकुमाररिगॆ ।

ई कथॆयना दिविजमुनि वाल्मीकिगरुहिदना मुनिप नि-
क्ष्वाकुकुल कुशलवरि गॊरॆदनु बहळ रचनॆयलि
आ कथॆय केळॆंदु सतिगॆ पिनाकधर विस्तरिसिदनु बळि-
का ककुत्स्थ जगाद मेलण कथॆय कौतुकव ॥ 1 ॥

गिरिजॆ केळ् पट्टाभिषेकोत्करुषे यादुदु मेलॆ वसुधॆय
नरपतिगळैतंदु कंडरु राघवेश्वरन
करवनवरवरॊड बडिकॆयलि तरिसि कॊंडु समस्त धरणी-
श्वर रि गधिपतियागि मॆरॆदनु राजतेजदलि ॥ 2 ॥

मिगिसिदनु रविराजवंशादिगळ रायर राजधर्मद
सॊगसनमल चरित्रदलि पालनॆयलूर्वरॆय
अगजॆ केळ् कॆलवानु दिवसकॆ चिगुरिदुदु दुर्वार्ति लतॆ निज
नगरदलि लंबिसितु कर्णदोळाककुत्स्थजन ॥ 3 ॥

तृतीय संधि

सूचना— मनुवंशी राजाओं के जन्म सम्बन्धी कथा को, बड़े विस्तार के साथ, सीता-कुमार लव-कुशों को महर्षि वाल्मीकि वर्णन करने लगे ।

देवर्षि नारद ने यह कथा महर्षि वाल्मीकि को सुनायी । उस मुनि ने बहुसंख्यक श्लोकों की रचना करके— उन श्लोकों द्वारा इक्ष्वाकुवंशज कुश-लवों को समझायी । ,'इस कथा को सुनो" —इस तरह आदेश देते हुए ककुत्स्थवंशज श्रीराम की -कुतूहलभरी कथा को पिनाकपाणी शिवजी ने सती देवी पार्वती को विशद किया । १ ,'सुनो गिरिजा ! श्रीराम-राज्याभिषेक-महोत्सव बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ । संसार भर के राजा पधार कर श्रीराम-संदर्शन से हर्षित हुए । राजाओं के योग्यतानुसार उनसे भेंट स्वीकार कर, सभी राजाओं के समाज का अधिपति बन, राजसी तेज से ठाटबाट से राम विराजने लगे" । २ सूर्यवंशी राजाओं के परम्परागत राजधर्म को अपने परिशुद्ध आचरण से तथा सुचारु राज्य-परिपालन से श्रीराम ने दो क़दम आगे बढ़ाया । उसमें चार चाँद लगा दिए ।" सुनो गिरिजा, कुछ दिनों के बाद अयोध्यानगरी में दुर्वार्ता की लता पनपने लगी । उसकी खबर श्रीराम के कानों तक पहुँची । ३ "राम कैसा राजा है !

एत अरसु ककुत्स्थजनु कामातुरदिनसुरेंद्र बनदलि
सीतेयनु कोंडोय्ये बिडलारदे निजान्वयद
ख्यातियनु कोंडिसिदनुयेंबी मातु भद्रकनिंद रघुसं-
जात निदिरलि बिद्दुदग्गद कीर्तिपकदलि ॥ 4 ॥
केळि कडुसिग्गागि सिगुरेद्देळिगेयचिंतेयलि जगद ज-
नाळिगी पद्धति तिरस्करिसुवुदले येनुत
केळिसिदनी नुडियननुजर मेळदलि मैत्रावरुणिजाबालि
गळलि सुमंत्रमुख्य महा प्रधानरलि ॥ 5 ॥
लोक दुर्जनरुगळ रसनानीकदुपहासक्के ठाविदु
लौकिकक्किदु दूष्यवेंदवरु गळनोडबडिसि
लोकवरियलु बिट्टु बा वाल्मीकि भवनदोळेंदु विमले-
क्ष्वाकु कुलसंभवनु सौमित्रिगे निरुपिसिद ॥ 6 ॥
अवनिपन नेमदलि बयकेय नेवदिना पतिभक्तयनु मुनि
भवनदलि बिट्टनु कणा कोंडोय्दु सौमित्रि
युवतियनुतापवनु मुनि संतविसि बळिका पुण्यचरितेय
भुवन मातेयनुपचरिसि कोंडिर्दे नोलविनलि ॥ 7 ॥

कामातुर रावण जंगल से सीता का अपहरण कर, ले भागा। राम इस विरह को सह न सका। फलस्वरूप अपने वंश की कीर्ति बिगाड़ दी।" —इस प्रकार की वार्ता भद्रक नामक दूत के द्वारा रघुवंशज के सम्मुख उपस्थित होने के कारण उसकी कीर्ति कीचड़ में गिरी। ४ (भद्रक की बातें) सुनकर राम अपमानित हुआ। वे बातें उसे खूब चुभी। अपने नगराभि-वृद्धि की योजना में डूबे मुझे संसार के लोगों ने चरित्रहीन समझ ठुकराया न? —इस तरह सोचते दुःखी राम ने अपने भाइयों के साथ वसिष्ठ, जाबाली, सुमंत्र आदि महाप्रधानों तक यह वार्ता पहुँचायी। ५ "संसार के दुष्टों की जीभ उपहास की जड़ बनी है। लोक-व्यवहार में यह अत्यंत जघन्य है।" —इस तरह उनको समझाकर परिशुद्ध इक्ष्वाकुवंशज श्रीराम ने भाई लक्ष्मण को आज्ञा दी, "सारे संसार को जताते हुए (सीता को) महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में छोड़ आ"। ६ पतिपरायणा (गर्भिणी) सीता को उनकी दोहदाकांक्षा सम्पन्न कराने के बहाने, ले जाकर लक्ष्मण वाल्मीकि के आश्रम में छोड़ आया। वाल्मीकि ने दुःखी सीता को सांत्वना देते हुए पुण्यचरिता लोकमाता (सीता) को अपने आश्रम में रखकर परिचर्या की। ७ सीता जब सात महीने की गर्भवती थी, राम से अलग हुई। तत्पश्चात् दो महीने बीते। जनकसुता पूर्ण गर्भवती हुई।

तिगळेळर गर्भदलि रघुपुंगवन नगलिदळु मेलण
तिगळेरडके पूर्णवादुदु गर्भववनिर्जेय
मंगळग्रह तारे शुभलग्नं गळलि मुनि मंदिरदलि कु-
रंग लोचने पडेदळिब्बरु वर कुमारकर ॥ 8 ॥
आ कुमाररिगागळा वाल्मीकि विस्तरिसिदनु वैदिक
लौकिकोक्तिगळिंद निजनामाभिरंजकव
लोकविभु कुशनेंदु मोदलु विवेकिसिद नेरडनेय शिशु शो-
भाकलित लवनेंदु करेदनु कांतॆ केळेंद ॥ 9 ॥
आदवेंटबुदंगळिब्बरिगा दिनके तन्मुनिपनुपनय
नादिकर्मव रचिसि शस्त्राभ्यास शिक्षेयलि
वेद शास्त्रंगळलि तन्नोपादियनु माडिदनु सीता-
ह्लादकर दिनकर कुलद कुशलव कुमारकर ॥ 10 ॥
ओंदु दिन बळिकवरु मुनिगभिवंदनंगैदुचित वचनद
लेंद रेले मुनिनाथ चित्तैसेम्मुवनु पडेद
तंदे यारस्मन्वयवदेनेंदु बिन्नहमाडे मुनि सा-
नंददलि पेळल्के तोडगिदनी महाकथेय ॥ 11 ॥
जनिसिदनु मानस दिन बुजासननपूर्वद सृष्टियलि नू-
तन विरिंचि मरीचि मुनि तन्मुनिपनिं बळिक

मंगलकारी ग्रह-नक्षत्रों से युक्त शुभलग्न में, वाल्मीकि मुनि की कुटिया में मृगनयनी सीता ने दो पुत्ररत्नों को जन्म दिया। ८ "वाल्मीकि ने वैदिक तथा लौकिक विधियों से उन कुमारों का नामकरणोत्सव सम्पन्न किया। पहले, प्रथम पुत्र का नाम लोकविभु कुश रखा' फिर दूसरे का तेजस्वी लव, इस प्रकार नामकरण किया।" —इस तरह शिवजी ने पार्वती को सुनाया। ९ आठवें वर्ष की समाप्ति पर महर्षि ने उन दोनों का उपनयन-सस्कार सम्पन्न कराकर, वेदाध्ययन, शास्त्र, शस्त्राभ्यास की शिक्षा देकर, सूर्यवंश के उन कुश-लव कुमारों को सारी विद्याओं में अपने जैसा परिणत बनाकर सीता को संतोष प्रदान किया। १० तदनंतर, एक दिन की बात है। उन कुमारों ने मुनिवर को प्रणाम करके, पूछा, "हमारे जन्मदाता पिता कौन हैं ? हमारा वंश कौन सा है ?" —इस तरह समुचित विनम्रता के साथ प्रार्थना करने पर महर्षि ने अत्यंत आनंद से उस कथा को सुनाना शुरू किया। ११ 'ब्रह्मसृष्टि के प्रारम्भ में नूतन ब्रह्मा के तौर पर ब्रह्म-मानसपुत्र के रूप में मरीची पैदा हुए। उस मुनि से कश्यप का जन्म हुआ। कश्यप मुनि से इस जगत की सृष्टि हुई।' —इस प्रकार महर्षि ने

जनिसिदनु कश्यपनु कश्यप मुनिय दॆसॆयिंदादुदी मे-
दिनिय विस्तार वॆंदु मुनि नुडिदनु कुमाररिगे ॥ 12 ॥

आ महामुनिवरन बसुरॊलि तामरस सखनुदिसिदनु बळि-
का महोत्पल बांधवंगा मनुमहीपाल
भूमियलि जनिसिदनु निगम स्तोमकादि प्रणव दवॊलु
द्दाम कुक्षि नृपाल जनिसिदना महीपतिगॆ ॥ 13 ॥

केळिदै कुश बळिक कुक्षि नृपाल निंदित्तलु विकुक्षि नृ-
पाल नरसादनु कणा लव केळु, भूतळकॆ
मेलॆ तन्नृप गर्भवरवरुणालयॆ दॊळुद्भविसिदनु भू-
पाल चूडारत्न नमळेक्ष्वाकु नामदलि ॥ 14 ॥

आ परंपरॆयन्वयदलि दिळीपनृप संभविसि सप्त-
द्वीप कधिपतियादनल्लि मेलॆ रघुवॆम्ब
भूप नाळिद नवनियनु राजोपलालित धर्ममार्गद-
ला परंतपगाद नात्मजनज महीपाल ॥ 15 ॥

अज नृपालकनरसुतनभूभुजर मिक्कुदु पूर्वदमळां-
बुजसखान्वयदमृतकर वंशाभि जातकर
भुज पराक्रम चक्रियनु दिगु विजय विक्रम चक्रियनु नृप
सृजिसिदनु निजमहिळॆयलि दशरथ महीपतिय ॥ 16 ॥

उन कुमारों से कहा। १२ उस महर्षि-श्रेष्ठ के यहाँ सूर्य पैदा हुए। तत्पश्चात् उस कमल-मित्र से मनु महाराज (इस संसार में) पैदा हुए। वेदों के लिए आदिप्रणव की तरह मनु से भी उन्नत व्यक्तित्वसंपन्न कुक्षि भूपाल पैदा हुए। १३ "सुना न कुश ! कुक्षि राजा के बाद विकुक्षि नामक राजा भूलोक का स्वामी बना।" लव, तुम भी सुनो, उसके यहाँ इक्ष्वाकु नामक राजकुलश्रेष्ठ ने जन्म लिया। १४ उसी वंश में परम्परानुगत रूप से दिलीप नामक नक्षत्र ने (राजा ने) जन्म धारण कर लिया, जिसने सप्त द्वीपों का स्वामी बनने का भाग्य प्राप्त किया। उसके पश्चात् राजाओं के प्रीतिभाजन धर्ममार्गावलम्बी रघु महाराज ने राज्य सँभाला। उसी का वीर पुत्र है राजा अज। १५ अज महाराज का राजत्वकाल, उनके पूर्व के सूर्य-चन्द्रवंशीय राजाओं के शासन से बढ़कर श्रेष्ठ था। अपने भुजबल-विक्रम से चक्रवर्ती का पद प्राप्त कर प्रसिद्धि-प्राप्त दशरथ राजा अज की पटरानी के गर्भ से जनमे। १६ रे दाशरथि-पुत्र ! सुन; कोसल, मगध, कैकेय राजाओं की पुत्रियों के साथ अपने पुत्र का व्याह

दाशरथिसुत केळु बळिकी कोसलद नृप सुतेय मगध म-
हीशतनुजेय कैकेयक्ष्मापाल नंदनेय
आ सुतंगुपयमव माडि महीष पट्टव कट्टि सार्दनु
वासवन गद्दुगेय नंदिगज महीपाल ॥ 17 ॥
बळिक निदुदु राज्यलक्ष्मिय विलसदभिनव तेज दिगुमं-
डलपरीत पुरंदरन वैभवर्के मिगिलेनिसि
इळेयोळिन्नारधिकरवनिप तिलकरलि षोडश नृपालर
लुळिदवर हेळदिरु निम्मवोलेंदना मुनिप ॥ 18 ॥
शिशुतनदलि समस्तविद्या व्यसनिगळु यौवन दोळनुभव
विषयिगळु मुप्पिनलिमुनि मार्गानुवर्तिगळु
असुपरित्यागदलि योगद बेसुगेगळनुळ्ळवरुकेळै
कुशनें निम्मन्वयद रायरु लवनें केळेंद ॥ 19 ॥
कुलदलधिकरु कीर्तियलि वेग्गळरु धर्मपथंगळलि स-
म्मिळितरंभोराशि परिवृत विजयवल्लभरु
बलविरोधि सहाय शौर्या कलितरि नकुलादवनिपालक
तिलकरवरिंदी महीपति हत्तुमडियेंद ॥ 20 ॥
चरिसुवुदु रथवोंदु वागीश्वरन पुरिगिंद्राग्नियम क-
बुर वरुण वायुव्य धनदीशान्यपुरिगळिगे

कराने के बाद, उनको (दशरथ को) गद्दी प्रदान कर अज महाराज ने (अपनी मृत्यु के अनन्तर स्वर्ग में) महेन्द्रपद प्राप्त किया। १७ देवेन्द्र के वैभव से बढ़कर दशरथ राजा की राज्यलक्ष्मी विनूतन कांति से दसों दिशाओं में व्यापी। इस लोक में, श्रेष्ठ राजाओं में तुमसे बढ़कर श्रेष्ठ कौन हैं? षोडष राजाओं में दशरथ से बढ़कर कौन हो सकते हैं? वाल्मीकि मुनि कहने लगे— अन्यों के बारे में कहना ही क्या है? । १८ तुम्हारे वंशज राजा बाल्यकाल में समस्त विद्याओं के पारंगत होने में, यौवनकाल विषयानंद सुखोपभोग में तथा वृद्धाप्य मुनियों से निर्धारित मार्ग का अनुसरण करने में व्यतीत करते थे। सुनो लव सुनो कुश— वे मरणासन्न भी योगनिरत थे। १९ 'सूर्यवंशीय राजराजेश्वर खानदान की दृष्टि से बढ़कर हैं; कीर्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं; धर्ममार्गानुगामी हैं; समुद्रवलयांकित सारी पृथ्वी को जीतनेवाला राजा हैं। देवेन्द्र राजा इन्द्र की भी सहायता करनेवाले पराक्रमी हैं।' महर्षि ने कहा— आज यह राजा उन सभी अपने पूर्वजों से दस गुना बढ़कर श्रेष्ठ हैं। २० राजा दशरथ के रथ की पहुँच ब्रह्मपुरी तक है। इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर,

उरगराजन नगरिगदर्‍धरॅयॊळगॆ हॆसरादुद भू-
वरशिरोरत्नगॆ दशरथनॆंब गुणनाम ॥ 21 ॥
तॆरुवरीतगॆ कप्पवनु सागरपरीत समस्त पृथ्वी-
श्वररु पुरुहूतादि नाना लोकपालकरु
नरभुजंगम रायरा दशशिरनु तप्पिसि खंडॆयद मै-
सिरियदॆंतुटॊ निम्म दशरथ सार्वभौमंगॆ ॥ 22 ॥
हगलुसंध्याराग दॆसकद बगॆय विश्रांतियलि नीरज
मुगिव वाशाजनित दावज्वालॆयॆंदुळुकि
दिगिभवंजुव वरिनृपरु मैदॆगॆवरुल्कापात भीतिय
बिगुहिनलि बहळ प्रतापवदॆंतो दशरथन ॥ 23 ॥
शरधि परिधावळिय दवनीश्वररर मुकुट मरीचिमंजरि
चरण नख मुकुरंगळलि बिंबिसुववनवरत
अरि विकारदलावनॊर्वन शिरव नॆगहुव निल्लवॆन
च्चरियो महदुदित प्रताप पतंग वंशजन ॥ 24 ॥
जलधि मॊगॆयलि महियलिनमंडलवु बीळलि बिसुडलवनी
तळवनाशादंति धरॆगॊर्गुडिसलमराद्रि

ईषान आदि अष्टदिक्पालों के नगरों तक की यात्रा कर सकता है। सर्पराजा के पाताल लोक तक जा सकता है। इसी कारण उस राजकुल-तिलक का नाम जो लोक में 'दशरथ' नाम से विश्रुत है— सार्थक है। २१ केवल रावण को छोड़कर समुद्रवलयांकित समस्त भूमंडल के राजा, इन्द्रादि लोकपालक, भूलोक, नागलोक आदियों के राजा दशरथ को अपनी भेंट समर्पित कर उसकी आधीनता स्वीकार करते हैं। तुम्हारे दशरथ चक्रवर्ती के हाथ के तलवार की अद्‌भुत शक्ति के बारे में क्या कहें! वह तो वर्णनातीत है। २२ दशरथ के तेजोप्रताप की चकाचौंध से दिन-दहाड़े ही संध्याराग के उदय की भ्रांति से कमल मुरझा जाते है। दश दिशाओं में प्रकाशित दावानल की भ्रांति से दिग्गज घबरा जाते हैं। शत्रुराजा उल्कापात की भीति से आगे क़दम बढ़ाने से हिचकिचाते है। राजा दशरथ के महाप्रताप का क्या वर्णन करें? । २३ समुद्रों तक फैले हुए समस्त भूमिखंडों के राजाओं के मुकुटों की समूची कांति राजा दशरथ के चरण-नखों में सदा सर्वदा प्रतिबिंबित होती है। शत्रुभाव से कोई उनके सम्मुख सिर उठा नहीं सकता। रविकुल के राजा का यह महापराक्रम अत्यंत आश्चर्य-जनक है। २४ चाहे तो समुद्र सूख जाय, चाहे तो सूर्यबिम्ब धरती पर आ गिरे, चाहे तो दिशा रूपी हाथी भूमंडल को नीचे ढकेल दे, सुमेरु पर्वत

हळिवु हॊरदा नृप सुभाषा कलित सत्यकॆ निम्म भास्कर
कुलललामंगारु सरि सुरनरभुजंगरलि ॥ 25 ॥
धनपतिय सिरि वारिधरवाहनन भोग समीरणन बल-
विनन तेज समान वितरण चारुचन्द्रमन
वनधिपन गांभीर्य रविनंदनन नडवळि धरॆय सैरणॆ
यिनितु दशरथ सार्वभौमंगल्ल दिल्लॆंद ॥ 26 ॥
हुसि नुसिळु डॊळ्ळास हिंसा व्यसन दारडि बंदि दळदुळ
वसुरभय दुर्भिक्ष नाना वर्ण सम्मिश्र
हिसुण धर्मद्रोह रुजॆ कै मसकवळिवन्यायवॆंबिव
रॆसक हॊद्ददयोधिपन धरणी तळाग्रदलि ॥ 27 ॥
निंदॆ हॊद्ददु नडॆवळिगळलि कुंदु हॊरदुब्बरदुपप्लव
संधिसदु नृप बाधॆ बाधिसदधिक दुर्भयद
बंदि हॊगदासरु विताळिसि निदिरदु नॆलॆगॊळ्ळदाजन
वृंददलि कट्टासॆ दशरथनृपन राज्यदलि ॥ 28 ॥
मुळिय रितरर सिरिगॆ हरणद लळियरा परमायुविन क-
ट्टळॆ यॊळल्लदॆ नोडरन्यवधू जनावळिय

धरती पर करवट ले, निन्दा की बू तक से परे रह, सच बोलने में (रघुवंशीय समान) सूर्यकुलतिलकों की बराबरी देवता, मानव तथा नागों में कौन कर सकते हैं? । २५ धनदेवता कुबेर की सम्पत्ति, मेघवाहन इन्द्र का भोग, वायु का बल, सूरज का तेज, सुन्दर चन्द्रमा की उदारता, मृगराज सिंह का गांभीर्य, कर्ण का उज्ज्वल चारित्र्य, भूमिमाता की सहिष्णुता —ये सभी उज्ज्वल गुण राजा दशरथ के सिवा और किस राजा में दीखें? । २६ झूठ बोलना, छल-कपट, हिंसा, दुर्व्यसन, डकैती-चोरी, लूट-खसोट, राक्षसों का भय, अकाल, वर्ण-संकर, चुगुलखोरी, धर्मद्रोह, तरह-तरह की बीमारियाँ, विष-प्रयोग, अन्याय, वग़ैरः विषय अयोध्यापति राजा दशरथ के राज्य में प्रवेश नहीं पा सकते । २७ राजा दशरथ के राज्य में निंदा का कहीं नाम तक नहीं; लोगों के आचरण में कहीं कुछ दोष नहीं; बदनसीबी किसी के नज़दीक आती तक नहीं; दुष्ट राजाओं के शासन की पीड़ा से वह राज्य कोसों दूर था; भयावह चोरी-डकैती तो थी नहीं, आलस्य अधिक देर तक टिक नहीं सकता, वहाँ के प्रजाजनों को लालच छू नहीं सकती थी । २८ राजा दशरथ के साम्राज्य के विभिन्न देशों के तथा विभिन्न जाति-पाँति के लोग एक-दूसरे की संपत्ति के लिए ईर्ष्या नहीं करते थे । आयु की पूरी परिसमाप्ति तक विधि की आज्ञा के बिना कोई मर नहीं सकते थे । परायी

कलसरघसंहतिय सुजनर निळिकॆ गाणरसूयॆयलि मन
वॆळसरल्लिय विविधवर्णद विषयदखिळजन ॥ 29 ॥

इळॆयॊळुळ्ळ समस्त देशंगळिगॆ मंगळ तरवले को-
सल महावनि कौसलावति नृपपुरंगळिगॆ
तिलकनल्ला रायरॊळगग्गळनला दशरथ नृपालक
नॆलॆ रघुक्षिति पालसुत केळॆंदु मुनि नुडिद ॥ 30 ॥

सुर नरोरग भुवन लक्ष्मिय सुरुचिरद मुक्ताफलद बं-
धुरद कांची दामदंतिरॆ सकल विभवदलि
अरस दशरथ चक्रवर्तिय धरॆय परिवृत कीर्तिलतॆ वि-
स्फुरिसुतिर्दुदु सकल जनपद जनद कण्मनकॆ ॥ 31 ॥

नाल्कनॆय संधि

सूचनॆ— ललित संतानाभिवृद्धिय वॆळगॆ वळलुव भूपतिगॆ कर्णोक्तिविवनु काम्याध्वरवनु वसिष्ठ मुनिराय ।

केळिदै कुश निम्म मुत्तय नाळुतिर्द नयोधियनु चिर-
काल वॊंदानॊंदु दिन दर्पणद नोटदलि

औरत की तरफ़ आँख उठाकर देखते नहीं थे। पाप को नज़दीक पटकने तक देते न थे। सज्जनों की अवज्ञा न करते थे। ईर्ष्या-द्वेष भाव से कोसों दूर थे। २९ सारी धरती के सभी देशों में कोसल देश अत्यंत मंगलकारी है। समस्त राजधानियों में कौसलावती अत्यंत श्रेष्ठ है। सुनो राघवपुत्र, राजा दशरथ सारे राज-समाज के लिए तिलकप्राय तथा श्रेष्ठ थे। —इस तरह वाल्मीकि मुनि कहने लगे। ३० स्वर्गलोक, मृत्युलोक, नागलोक आदि समस्त लोकों में राजा दशरथ की अयोध्या नगरी मानों लक्ष्मी के चमकते मोतियों के सुन्दर कमर-बन्द की तरह सुन्दर तथा सारे वैभवों से संपन्न थी। दुनिया भर में फैली उसकी कीर्तिलता मानों सभी देशों के निवासियों को मोह लेती थी। ३१

चतुर्थ संधि

सूचना— सत्-संतानाभिवृद्धि के लिए राजा दशरथ चिंतित थे। अतः महर्षि वशिष्ठजी ने उन्हें पुत्र कामेष्टि यज्ञ के लिए मना लिया।

सुनो कुश; तुम्हारे दादा बहुत समय तक अयोध्या का शासन कर रहे थे। एक दिन की बात है। उन्होंने आईने में मुखड़ा देख लिया।

ताळिदनु चिंतेयनु संतति मेलॆ मैगॊडदधिक वार्धिक
काल विकृताकलित पलित जरातिरेकदलि ॥ 1 ॥
व्यर्थ वाय्तकटकट जन्म निरर्थ वाय्तन्वयद सिरि पर-
मार्थ ना पुत्रस्य लोकोस्तीति एंबुदिदु
सार्थ वाय्तॆनगधिक सुगति स्वार्थसिद्धिगॆ सल्लदवनिग
नर्थ भाजन नादॆने तानॆनुत बिसुसुय्दु ॥ 2 ॥
मक्कळिल्लद सकलसिरि शवकिक्किदमळाभरण विभ्रम
मक्कळिल्लद सॊबगु पतिशून्यांगना विभव
मक्कळिल्लद नारियरु नरकक्कॆ सरिवरु साकि देतक्कॆ
यक्कटा कडुगेड कॆट्टॆनु शिवशिवा ऎंद ॥ 3 ॥
एनु गति निजवंश वंध्या मानिनिगॆ पतियादॆने गत
सूनुविवनॆंदॆन्न हॊगिसरु स्वर्गवनु सुररु
एनु माडुवॆनेनु दिक्कॆनगेनु हृदनॆंदळलि बळलुव
हीन हृदयननुपचरिसलु वसिष्ठ नैतंद ॥ 4 ॥
भूमिजासुत केळ् वसिष्ठ महामुनींद्रन कूडॆ बन्दरु
वामदेव मुनीश मुनि जाबालिगळु सहित

विकारग्रस्त बुढ़ापे के कारण पका बाल देखकर भी चिंतित हुए कि अब तक एक भी संतान प्राप्त नहीं है। १ "हाय मेरा जनम व्यर्थ गया। वंश की सम्पदा निरर्थक हुई। 'परमार्थ ना पुत्रस्य लोकोस्तीति—पुत्रविहीन को परलोक नहीं'—वाला कथन मेरे बारे में चरितार्थ हुआ (सच निकला)। मेरे लिए सद्गति-प्राप्ति असंभव हुई। मैं इस लोक (धरती) के लिए निरुपयोगी सिद्ध हुआ न ?" इस तरह दशरथ आहें भरने लगे। २ निस्संस्तान की सारी सम्पत्ति मानों मुर्दे को पहनाये गये चमकते आभूषण जैसी है। संतान-विरहित सौभाग्य (सुन्दरता) मानों पति को खोये (विधवा) स्त्री के वैभव के समान है। संतान-विरहित स्त्रियाँ नरकगामी बनती हैं। बस है, हे प्रभो! हर तरह से मैं बरबाद हुआ। शिव शिव —इस तरह दशरथ विलाप करने लगे। ३ "हे भगवन्! यह क्या मेरी दुर्गति है! मैं मानों वंश रूपी बाँझ का पति बना न ? पुत्रविहीन मुझे, देवता स्वर्ग में प्रवेश नहीं देंगे। क्या करूँ ? यह मेरी दशा क्या है ? मेरे लिए मार्ग क्या है ?" —इस तरह शून्य हृदय से चटपटाते दशरथ की परिचर्या करने मुनिवर वसिष्ठ आ पहुँचे। ४ जानकीपुत्र, सुनो; 'महर्षि वसिष्ठ के साथ-साथ मुनि जाबाली को भी साथ लेते हुए मुनीश्वर वामदेव भी आ पहुँचे।' —ये अपने लिए (अपने भाग के)

व्योमकेश विरिंचि लक्ष्मीधामरिवरॆंनगॆंब भावद
ला महीपति यॆरगिदनु मुनिवरर चरणदलि ॥ 5 ॥
निमिसुतासुत केळु निगम क्रमदला मुनिवंश लक्ष्मी
रमणरनु सत्करिसिदनु सन्मान पूजॆयलि
द्युमणि वंशलताविभिन्न भ्रमॆय भूपन कंडुकरुणद
ममतॆयलि मधुरोक्तियलि नुडिसिदरु नृपवरन ॥ 6 ॥
मॊगद दुगुड विदेनु मनदुव्वॆगविदेननुताप भेद
स्थगित जाड्यद जंजड .विदेनॆंदु बॆसगॊळलु
ऒगुव कंबनि गळलि कंठव बिगिद सॆरॆगळ सेदुवक्कॆय
विगत परितोषितनु पावनतररिगितॆंद ॥ 7 ॥
सुतविहीनरिगिल्ल गड सुरपतिय भद्रासन महाक्रतु
ततिगळॊळ् मिगॆ सल्लरवर्गळु गड सुशास्त्रदलि
गतियदावुदु तनगॆ वंशोन्नतिय हॆच्चुगॆगेनु हदनॆं
दतिशयद शोकदलि कंबनि दुंबिदनु भूप ॥ 8 ॥
बिडदॆ बंदिनकुलद सिरियि दॆडॆ हरिसि तिक्ष्वाकुवंशद
कडलु बऱतुदु बेरु बिट्टुदु रघुकुल द्रुमद
नडवळिय गुणवो पुराकृत दॊडल दुष्कृत फलवो तनगॆ
दडिगडिगॆ मूगक्कॆयलि मरुगिदनु नरनाथ ॥ 9 ॥

शिव, ब्रह्म, नारायण समझते हुए राजा दशरथ उनके चरणों में गिरे। ५ वैदेही के पुत्र, सुनो। वेदोक्त पद्धति से श्रीमन्नारायण स्वरूपी ऋषिकुल का गौरव करते हुए पूजा समर्पित की। सूर्यवंश रूपी लता के टुकड़े होने के भ्रम में पड़े हुए राजा को देख ऋषियों ने करुणा-प्रीति-सांत्वना पुरस्सर बातों से राजा को प्रसन्न करने का प्रयत्न किया। ६ "मुख पर चिंता की रेखाएँ क्यों ? मन की आशंका क्या है ? परिताप से उत्पन्न इस दुःस्थिति का क्या कारण है ?" —वग़ैरः पूछे जाने पर राजा दशरथ की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी; बोलने की कोशिश करने पर भी शब्द गले में अटकने लगे। फफकते हुए राजा कांतिविहीन चेहरे से पुण्यात्मा महर्षियों से यों कहने लगे। ७ 'संततिविहीनों को देवेन्द्र का स्थान प्राप्त नहीं। महायज्ञों में भी उनके लिए कोई स्थान नहीं।' —इस तरह शास्त्रों की घोषणा है। तब तो मेरी गति क्या होगी ? संतानाभिवृद्धि के लिए चारा क्या है ?—इस तरह कहते अत्यंत दुखी होते हुए राजा की आँखें डबडबा आयीं। ८ अबाध गति से, अब तक बढ़ती आयी हुई रविकुल की संपत्ति आज कुंठित हुई। इक्ष्वाकु-वंश रूपी सागर आज सूख गया। रघुवंश रूपी वृक्ष की जड़ उखड़

हॊरॆदॆ नकटा तनुवनिद सूकरन शुनकन वोलु कामा-
तुरनवोलु कंगाणदादॆनु सुगति संपदकॆ
ऎरविगनु तानादॆनिहपर वॆरडरलि जीवावसानकॆ
हरहि कोंबनला कृतांतनॆनुत्त बिसुसुय्दु ॥ 10 ॥
संतविसु राजेन्द्र चित्तद चिंतॆयिदु तानैसले निन
गंतकन भयविल्ल साका मातदंतिरलि
संततिय सौभाग्य सिरिय नितांतकिदॆला निनगॆ सप्त सु-
तंतु निरुपम पुत्रकामेष्टि प्रसिद्धकद ॥ 11 ॥
इष्ट वहुदलॆ नृपति कॆळ् कामेष्टियलि निनगाव नॆनहे
नॆष्टु दॊड्डितु बिडुवृथा चिंतामनोव्यथॆय
कष्ट वृत्तिय नृपनॆ नीसुर विष्टपद सुरपतिय मणिमय
विष्टरद सिरि सेरुवुदु संदेह वेनिदकॆ ॥ 12 ॥
ऎंदु मूवरु मुनिगळजनृप नंदनन दुर्भरद दुगुडद
दंदुगवनपहरिसि बिजयं गैदराश्रमकॆ
कंद केळै बळिक परमानन्दवनु पडॆदा महिपनर-
विंद नाभन भजिसिदनु निजभाव शुद्धियलि ॥ 13 ॥

गयी। क्या यह मेरे आचरण का फल है या मेरे पिछले जन्म के दुष्कार्य का परिणाम है ? —इस तरह बार-बार सोचते हुए मौन रोदन में राजा घुलने लगे। ९ "सुअर-कुत्तों की तरह इस कामातुर देह का पालन-पोषण किया न ? कुछ नहीं सूझता कि भविष्य की सद्गति के लिए क्या किया जाय ? इह-पर दोनों लोकों के लिए ऋणी रह गया। मृत्युदेवता (यम) इन्तिज़ार कर रही है कि मेरा अंत कब होगा ? ।" —यों कहते हुए दीर्घ निःश्वास लेने लगे। १० "राजेन्द्र, धीरज धरो। तुम्हारे मन को केवल चिंता ने आ घेरा है। और कुछ नहीं; यम से डरने की कोई जरूरत नहीं। रहने दो उन बातों को। संतान सौभाग्य संपत्ति को प्राप्त करने के लिए प्रसिद्ध पुत्रकामेष्टि यज्ञ तो है न ? । ११ पुत्र कामेष्टि यज्ञ तेरी मनोभिलाषा पूर्ण करता है। इसमें कौन सी बड़ी बात है ? मन की इस निरर्थक चिंता को त्याग दो। चटपटाहट त्यजो। इसमें क्या शक है कि देवेन्द्र का रत्न-सिंहासन तुझे प्राप्त न हो ! अतः चिंता त्यजो ।" १२ इस प्रकार तीनों महर्षियों ने अज राजा के पुत्र राजा दशरथ के मन की व्यथा दूर करके अपने-अपने आश्रम की यात्रा की। सुनो कुमार ! तत्पश्चात् अत्यंत आनन्द पाते हुए राजा ने शुद्ध भक्ति-भाव पुरस्सर कमलनाभ श्रीविष्णु भगवान की पूजा की। १३

ऐदनॆय संधि

सूचनॆ— राय दशरथ नृपतिगखिळोपाय-कुशल सुमंत्रकनु मुनिरायराजित ऋष्य श्रृंगन कथॆय वर्णिसिद ।

धरणिजासुत केळु दशरथ धरणिपति रविकुलद पारं
परॆय परमाप्त प्रधानर करॆसि मुनिवरर
वर वचोभिप्राय मतविस्तरण वनु सिद्धार्थ मुख्यरि
गॊरॆदु निम्मभिमतवदेनॆंदरस बॆसगॊंड ॥ 1 ॥
क्रतुव कैकॊ जीय सत्यव्रतरलानुडि तप्पुवदॆ मुनि
पति वसिष्ठन वामदेव महातपोधनर
वितत काम्य महाध्वरकॆ दीक्षितनु नी नागखिळराज
प्रततियनु बरिसुवॆवु तरिसुवॆवखिळ वस्तुगळ ॥ 2 ॥
ॲणिकॆ यावुदु जीय धर्मद कणियला नी निन्न भाग्यकॆ
तृणकणा स्वर्गादि भोगद सकल सौभाग्य
गुण गणालंकृतन सुरमुनि गणन तांघ्रिद्वयन नारा-
यणन कृपॆ निनगुंटॆनुत कॊंडाडिदरु नृपन ॥ 3 ॥

पंचम संधि

सूचना— सर्वोपायकुशल सुमंत्र ने ऋष्यश्रृंग मुनि की कथा राजा दशरथ को सुनायी ।

भूमिजाता सीता के पुत्र ! सुनो । राजा दशरथ ने उन निजी मंत्रिमुख्यों को बुला भेजा जो सूर्यवंशी राजाओं के वंशपरम्परागत थे। मुनिश्रेष्ठों से सुनी हुई बातों को सिद्धार्थ आदि प्रमुखों को सुनाकर राजा ने उनसे पूछा— "इस दिशा में तुम लोगों की राय क्या है ?" । १ "महाराज, यज्ञ शुरू करें । सत्यव्रती मुनि महर्षि वसिष्ठ, वामदेवादि की बातें क्या झूठी हो सकती हैं ? अतः पुत्रकामेष्टि महायज्ञ के लिए दीक्षा धारण कर, समस्त राजा-महाराजाओं को निमंत्रण भेजते हैं; तथा आवश्यक सारी वस्तुएँ मँगवाते हैं । २ महाराजा, यह सब क्या आपके लिए बड़ी बात है ? आप तो धर्म की खान हैं । स्वर्ग के सारे भोग-भाग्य आपकी संपत्ति की तुलना में तिनके के समान है । समस्त सद्गुण शोभसंपन्न देवताओं से तथा ऋषियों से वंदित भगवान नारायण की दया आप पर है ।" —इस तरह कहते हुए मंत्रियों ने दशरथ की स्तुति की । ३ मंत्रियों की राय के अनुसार मनुवंश श्रेष्ठ राजा दशरथ ने अत्यंत आनन्द से तथा दृढ़ मनोकामना

बळिकवर मर्तदिद मनुकुल तिलकनति संतोषदलि नि-
श्चलतेयलि कैकोंडना कामित महाध्वरव
कळुहिदनु नयदलि सुमंत्रकनुळियॆ मिक्क महाप्रधाना
वळियनाप्ताळोचनॆयला मंत्रिगितॆंद ॥ 4 ॥
ऎलॆ सुमंत्र सुमंत्रमुखदलि फलिसुवदॆ सुतलाभवन्वय
ललित लतॆ कुडिगॊंबुदे कामेष्टि यज्ञदलि
तॊलगिदॆम्मन्वयद राजावळियाळादुदॆ पुत्र संतति
सुलभवहुदे नमगॆनुत बॆसगॊंडना भूप ॥ 5 ॥
अरस केळु सनत्कुमारनु सरसिरुह संभवन सभॆयलि
सुर मुनीन्द्रर मध्यदलि निम्मन्वयागतद
परिविडिय रघुवंशवनु विस्तरिसिदनु विमळाग्निवर्णन
निरुपमद साम्राज्य परियंतादिकालदलि ॥ 6 ॥
मेलॆ तांडव पितन शाप विशाल वचनद पुत्रलाभ फ-
लाळि दॊरकदॆ माणदिदु ता सुप्रसिद्धवलॆ
केळिबल्लॆ निदल्लदखिळ सुराळिगळ दूरिनलि लक्ष्मी
लोल निन्नुदरदलि जनिसुवॆनॆंदु पूर्वदलि ॥ 7 ॥
अदरिनी रविवंश लक्ष्मी सुदति गर्भिणि यागदिरळॆ
बुदु पुरातन मुनि सुभाषितववु यथार्थ वलॆ

से पुत्रकामेष्टि महायज्ञ का कार्य प्रारंभ किया। सुमंत्र के सिवा अन्य मंत्रियों को बिदा कर राजा उन (सुमंत्र) के साथ खास आलोचना में लीन होते हुए कहने लगे। ४ "महोदय सुमंत्र, क्या श्रेष्ठ मंत्रों द्वारा पुत्र-प्राप्ति की कामना सफल होती है? पुत्रकामेष्टि यज्ञ के प्रभाव से क्या हमारी वंश नामक लता अंकुरित होने लगेगी? इसके पूर्व, क्या हमारे खानदान में किसी राजा को इस प्रकार संतति प्राप्त हुई थी? इस कार्य की सफलता क्या इतनी सुगमता के साथ हो सकती है?" —इस तरह राजा ने कई प्रश्न किये। ५ "सुनिए महाराज; आदिकाल की बात है। ब्रह्माजी की सभा में देवताओं और महर्षियों के बीच रघुवंश का वर्णन करते हुए सनत्कुमार जी ने कुलक्रमागत रघुवंश का विस्तार अग्निवर्ण राजा के साम्राज्य तक विवरण देते हुए वर्णन किया। ६ ताण्डव मुनि के पिता के शापवचन के फलस्वरूप आपको पुत्र-लाभ हुए बिना रह नहीं सकता (अर्थात् पुत्र-लाभ होगा ही) यह तो निर्विवाद सत्य है। इतना ही नहीं, देवताओं की पुकार को मानते हुए लक्ष्मीपति विष्णु भगवान आपके यहाँ पैदा होगा —यह भी मैं सुन चुका हूँ। ७ इसलिए यह सूर्य-

विदित वैदिक लौकिकद संपदद सौरंभातिशयद
भ्युदयदलि निनगारु सरि रविकुलद रायरलि ॥ 8 ॥
अरस केळ् काम्याध्वरकॆ मुनिवर विभांडुकुमारकन नी
करॆसिको तन्मुनिवरननाचार्य भावदलि
वरिसु व्वरपिंड प्रसादोत्करदलहरात्मजरु बळिका
हरिहर ब्रह्मामरेंद्ररु पाडॆ निनगॆंद ॥ 9 ॥
ऎनॆ धराधिप नतुळ हरुषद होनलिनलि हॊदरॆद्दु विकसित
वनरुहासननागि नुडिदनु वर सुमंत्रगॆ
मुनियदारा मुनिय महिमॆय विनुत चारित्रवनु बल्लडॆ
तनगॆ हेळॆंदार्तमानसनागि बॆसगॊंड ॥ 10 ॥
अरस केळादडॆ तपोधनररस कश्यप मुनिय बल्लै
सरसिरुह संभवन मानस पुत्रनॆंबुदनु
धरॆयॊळगॆ बळिका पुनिपग वतरिसिदनु शतधृतिय सदृशो-
त्कर विभांडुमुनींद्र नॆलॆ राजेंद्र केळॆंद ॥ 11 ॥
सुळिदळूर्वशि सुरपतित्वद बळकॆयवरिगसाध्यवॆंबु
ज्वलतॆयलि तन्मुनिपनघमर्षणद समयदलि
कळवळिसिदनु कंडु मनवनु निलिसलारळवरस केळु-
च्चळिसिदुदु वारियलि वीर्य विभांडमुनिवरन ॥ 12 ॥

वंशीय लक्ष्मी गर्भवती हुए बिना नहीं रहती —इस तरह प्राचीन मुनिजनों का सुभाषित कथन सत्यार्थपूर्ण है। वैदिक, लौकिक सम्पत्ति में तथा अत्यधिक उन्नति साधनेवाले सूर्यवंशीय राजाओं में आपकी बराबरी कौन कर सकता है ? । ८ "दशरथ महाराज जी सुनिए। पुत्रकामेष्टि यज्ञ के लिए विभाण्डक मुनीश्वर के पुत्र को बुला लीजिए। आचार्यत्व के लिए उन्हें प्रसन्न कर लीजिए। यज्ञ के प्रसाद-भक्षण से आपके पुत्र उत्पन्न होंगे। तदनंतर आप ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, देवेन्द्र के बराबर हैं।" —इस तरह सुमंत्र ने समझाया। ९ सुमंत्र महोदय की बातों से राजा अत्यंत प्रसन्न पुलकित खिले कमल-सरीखे मुख से बोले— कौन हैं वे मुनीश्वर ? उस महर्षि के महिमामय चरित को अगर आप जानते हैं तो मुझे सुनाने की कृपा करें —इस तरह कातर वाणी से सुमंत्र से कहने लगे। १० "सुनिए महाराज, आप जानते हैं न— महातपस्वी कश्यप महर्षि ब्रह्माजी के मानस-पुत्र हैं। उस कश्यप मुनि का बेटा देवेन्द्र के समान बनकर विभाण्डक मुनि के रूप में धरती में उदित हुए। ११ देवेन्द्र का स्थान उस मुनि को असाध्य बनाने के उद्देश्य से अघमर्षण के समय उर्वशी अपने उज्ज्वल रूप में उस मुनि

जलवनिंद्रियगूडि तृषेगव्वळिसि बन्दु कुरंगि जठर दो-
ळळवडिसिदुदु बेळेदुददरुदरदलि मुनिवीर्यं
इळुहितवनिगे ऋष्यशृंगन नेलें महीपति केळु
मुनिपति सलहिदनु सारंगशृंगाह्वयदिना मुनिय ॥ 13 ॥
धरणिपति केळीचेयलि सुरपुरद सिरियनु बयसि बहळा-
ध्वरव कैकोंडनु कणा रोमांघ्रि भूपाल
हरेदुदी वृत्तांतवमरेश्वरन सभेयलि रोमपादन
सिरिगे कंटकनादनिंद्र नवग्रहंगळलि ॥ 14 ॥
वरुष हन्नेरडबुधि परियंतर निललु भयदिद निदवु
वर महाक्रतुशतगळिगे हन्नेरडु बळिकिनलि
तरणि युरु बेगे धरणि कलपद हरन भाळांबकद शिखि सी-
वरिसिदंताय्तेननेंबे नवग्रहागमव ॥ 15 ॥
होळेगळुरे बत्तिदवु निर्जर जलवडंगिदवरतवगद
कोळनु कूर्मन बेन्निगिळिदवु जलतटाकगळु
अळिदुळिद जनपदद जनकळवळिसि कंगेट्टंगभूपन
बळिगे बंदोदरिदरु दुर्भिक्षद महाभयव ॥ 16 ॥

के सम्मुख प्रकट हुई। उसे देखकर मुनि चटपटाया। ऐसी हालत में कोई भी अपने मन को क़ाबू में कैसे रखे? सुनिए महाराज, उस दशा में विभांडक मुनि का वीर्य पानी में गिरा। १२ उसी समय, उधर से एक प्यासी हिरनी गुज़री। अपनी प्यास बुझाने के लिए वह उस वीर्यमिश्रित पानी को पी गयी। वह (वीर्य) उसके गर्भ में उतरा। ऋषि का वीर्य वहाँ पनपने लगा। हिरनी के गर्भ से ऋष्यशृंग पैदा हुए। सुनिए दशरथ महाराज, सारंग के सींग को धारे उत्पन्न, पुत्र ऋष्यशृंग को विभाण्डकमुनि पालने-पोसने लगे। १३ सुनिए महाराज, इधर अमरावती की संपदा की चाहना से रोमपाद महाराज ने महायज्ञ शुरू किया। यह समाचार देवराज इन्द्र की सभा में फैला। इससे (नाराज़) इन्द्र ने वर्षा-पतिबन्धक खड़ा करके (आतंक फैलाकर) रोमपाद राजा की संपत्ति में रोड़े अटकाए। १४ बारह वर्षों तक समुद्र-पर्यन्त अकाल पड़ा, इस भय के मारे सौ यज्ञों में बारह यज्ञ बचे रहे। प्रलय के वक़्त शिवजी के तृतीय नेत्रों की ज्वाला की तरह सूर्य के प्रखर तेज के कारण भूमि मानों फटने लगी। अनावृष्टि की करुण कहानी का क्या कहना! १५ नदियाँ सूख गयीं; वर्षा रुक गयी। बड़े-बड़े तालाब सूख गये तथा उनका पानी धरती को धारण किए हुए कछुए की पीठ तक उतर गया। बड़े-बड़े पोखरों का क्या कहना? (वे भी पूरी

मन्निसिदनवरु गळनति संपन्नतॆय धन धान्यदलि कर
भिन्न नादनु तत्प्रजाक्षोभ प्रवृत्तियलि
नन्निकारॆर देव केळ् साकिन्नॆनगॆ साम्राज्य सुख सं-
पन्नतॆय सौभाग्यवॆंदु विराग मननाद ॥ 17 ॥

करॆसि मंत्रि-पुरोहितर कू डॊरॆद नेकांतदलि साकॆन
गरसुतन संघटिसिदुदु दुष्कृत पुराकृतद
सुररु मुनिदरॊ धर्मदेवतॆ परिभविसिदळॊ भाग्यवधु मॊग
दिरुहिदळॊ मरॆमातदे कॆंदरस बिसुसुय्दु ॥ 18 ॥

परर सतियननंगरतियलि बॆरसितिल्ल समस्त सुजनर
सिरिग तप्पिदुदिल्ल दॆवद्विजर पूजॆयलि
बरडु मनवनु माडितिल्ला धरणि कुंदिदुदिल्ल गुरुहिरि
यरलि हॊद्दिद पापफल विन्नॆंतुटो अॆंद ॥ 19 ॥

विनुत सत्य सुभाषितकॆ प्रतिमॊनॆय नॊड्डिदुदिल्ल परिपा-
लनॆयलूणय विद्दुदिल्ल मदीय जनपदद

तरह सूख गये)। (मरने से) बचे-खुचे लोग भूख की ज्वाला से चटपटाते अंग देश के राजा रोमपाद के सम्मुख उपस्थित हो अकाल की महापीड़ा की करुणाजनक कहानी रो-रोकर सुनाने लगे। १६ (इस तरह के असहायों की) सहायता करते हुए राजा ने उनको अनाज और संपत्ति देकर मना लिया। अपने राज्य के प्रजाजनों की पीड़ा से राजा अतीव दुखी हुए। 'हे सत्यव्रती भगवन्, सुनो। मैं इस साम्राज्य की सुखसंपत्ति के भाग्य से बाज आया!' —इस तरह प्रार्थना करते-करते राजा विरागी बने। १७ राजा ने मंत्री-पुरोहितों को एकान्त में बुलाकर दीर्घ निःश्वास लेते हुए कहा— "मेरे पूर्व जन्म के दुष्कृत्यों के फलस्वरूप राज्य पर यह विपत्ति आयी है। अतः राज्य-भार सँभालने में अब मेरी कोई रुचि नहीं रही। पता नहीं— मुझ पर देवता नाराज है या धर्मदेवता ने मेरा तिरस्कार किया है या भाग्य-लक्ष्मी ने मुँह मोड़ा है। इसमें अब क्या छिपाऊँ" —यों कहते-कहते राजा बहुत दुःखी हुए। १८ कहने लगे "काम-भाव से पीड़ित हो परस्त्री-संग कभी नहीं किया। किसी सज्जन की संपत्ति कभी नहीं चाही। देव, ब्राह्मणों की पूजा से कभी विमुख नहीं हुआ। गुरुजनों से कभी ग़लत बर्ताव नहीं किया। राज्य को किसी प्रकार दोषभाजन नहीं बनाया। पता नहीं, मेरे किस पापफल के परिणामस्वरूप यह भोगना पड़ रहा है? । १९ सच्चाई के विरुद्ध कभी आचरण नहीं किया। मेरे राज्य-परिपालन में— इतना ध्यान रखा कि कहीं कोई कमी न हो।

जनपधर्मद पद्धतिगॆ बाधनॆय माडिदुदिल्लकट तन-
गॊनॆंदु कॊट्टुदॆ दैवदुष्कृत फलव नी गॆंद ॥ 20 ॥
अंब समयद लिळिदनंचॆयलंबरदिनंबरमणिप्रति-
बिंब वॆनॆ नारदनु नीतिविशारदनु बळिक
अंबरद सलिलद तुषारकदंबकद पतनदलि मुनियप-
दांबुजकॆ चाचिदनु मणिशिरवनु महीपाल ॥ 21 ॥
दुगुड वेकॆ भूप बिडुबाधॆगळु बळिस लिसुववॆ पूर्वद
युगद रायरिगग्गळनला गुण चरित्रदलि
सॊगसदवरनु बल्लॆ निनगॆंदॊगुव करुण रसंगळलि मुनि
नॆगहि नुडिदनु रोमपाद महामहीशंगॆ ॥ 22 ॥
अरस केळै निनगॆ सेरुव सिरिगॆ मुनिदनु शक्र शक्रन
सिरिगॆ नी निलुवंतुटनु निन्नय मनोरथद
परिय केळै ऋष्यश्रृंगन करॆसिको पट्टणकॆ पाडा-
ररस निनगॆनॆ बळिक सुरनर नाग लोकदलि ॥ 23 ॥
हरनु पूर्वदलामहामुनिवरन जननदॊळित्त वरवुं
टरसकेळ् दुर्भिक्ष डामर बाधॆ खेदगळु

राजधर्मानुसरण में कोई च्युति नहीं हुई। हाय मेरे दैव! मेरे दुष्कर्मों का फल तूने पछाड़कर मुझे दिया न?" इस तरह राजा ने प्रलाप किया। २० ठीक इसी वक़्त (राजा के पछताते वक़्त) आकाश के रत्न मानों सूर्य के प्रतिबिम्ब-सदृश हंसवाहन नीतिविशारद नारदजी आकाशमार्ग से उतर आये। देवगंगानदी के पानी के तुषारों से अलंकृत नारद जी के चरणकमलों में रोमपाद ने अपने रत्नखचित शोभायमान मुकुट-विराजित सिर रखा। २१ "महाराज चिंता क्यों करते हैं? अपना दुःख त्याग दें। क्या कष्ट आपका पिंड नहीं छोड़ रहे हैं? सन्तुष्ट और सच्चरित्र में तुम तो अपने पूर्वज राजाओं की अपेक्षा श्रेष्ठ हो। तुम्हारे इस महात्म्य को देखकर जलनेवालों को मैं जानता हूँ।" —इस तरह सांत्वनापूर्ण वाणी में बोलते हुए नारद ने रोमपाद महाराजा का सिर थाम लिया। २२ सुनो राजा, तुम्हारी संपदा देखकर देवराज इन्द्र आगबबूला है। इन्द्र की बराबरी करते हुए संपत्तिशाली होने की युक्ति तो सुन लीजिए। ऋष्यश्रृंग को अपनी राजधानी में बुला लीजिए। तब देवलोक, भूलोक, नागलोक आदि लोकों में तुम्हारी बराबरी कौन कर सकते हैं?। २३ "प्राचीन काल में उस महामुनि के पैदा होने पर शिवजी ने उन्हें एक वरदान दिया था। सुनो राजा। वह महामुनि जहाँ पदार्पण करेंगे (वहाँ की धरती पर) उस प्रदेश में

इरदवॊलु तन्मुनिपनिर्दूर्वरॆ यॊळंतदरिंद नीना
वर विभांडक सुतन नगरिगॆ करॆसिकॊयॆंद ॥ 24 ॥
कळुहु ललनाजनवनामुनि कुल ललाभन बळिगॆ सतियर
बलॆगॆ सिलुकदरारु त्रैमूरुतिगळॊळगागि
नॆलॆयिदीगॆनुता नृपालन तिळुहि तनृपन सत्कृतिय मं-
गळलॆयनु कैकॊंडु हाय्दनु हंसॆयलि मुनिप ॥ 25 ॥
राय कॆळै बळिकलामुनिरायनाज्ञॆयलंग भूमिय
रायनबलाजनव करॆसिद नवनिगुत्तमद
नायकियरनु ननॆय चापशरायुधन मुंगुडिय सेना
नायकियरनु नगरदनुपम वार नारियर ॥ 26 ॥
सुरपुरद सूळॆयर सॊबगिगॆ बिरुदनिक्कुव विगड नळकू-
बर जयंत वसंत मन्मथ चारु चन्द्रमर
मरुळुमाडुव विविध विटरनु हुरुळु गॆडिसुव नव्ययव्वन-
भरद वनितॆयरॊप्पिदरु नरनाथनिदिरिनलि ॥ 27 ॥
सतिसुतर पितृमातृगळ संगतर सद्वंशाभिमानव
नतिगळॆसि मकरध्वजन मायॆयलि नॆलॆगॊळिसि
चतुर पुरुष चतुष्टयद संतत नियामक वृत्ति गॊडरिसु
वतिमनद चपळॆयरु मोहिसितरस निदिरिनलि ॥ 28 ॥

अकाल, अनावृष्टि, सूखा आदि दुःख-दर्द नहीं रहेंगे। इसलिए तुम उस विभांडक मुनि के पुत्र को अपनी नगरी में बुला लो।" इस तरह नारद ने समझाया। २४ (फिर यह भी समझाया) "युवतियों को उस मुनिश्रेष्ठ के नज़दीक भेजो। युवती के मोहजाल में कौन नहीं फँसता! त्रिमूर्ती भी इसके लिए अपवाद नहीं। यही युक्ति ठीक होगी" —यों रोमपाद राजा को समझाकर, उनका आदरातिथ्य स्वीकार कर हंस पर आरूढ़ हो चले गये। २५ तत्पश्चात् नारद की आज्ञा के अनुसार अंगराज रोमपाद ने पुष्पबाणधारी मन्मथ के सम्मुख की पंक्ति की मानों सुन्दरता की सेनानायिकाओं, जगत् भर के लिए श्रेष्ठ अपूर्व लावण्यवती अप्सराओं को नगर से बुला भेजा। २६ देवलोक की वेश्याओं की सुन्दरता से टक्कर लेने की योग्यना वाली शूरवीर नलकूबर, जयंत, वसंत, मन्मथ और चन्द्रमा को पागल वना देने की योग्यता वाली, महान से महान विट पुरुषों के धैर्य-स्थिरता को डगमगा देने की शक्ति महिमाशाली नवयौवनसंपन्न सुन्दरियाँ राजा के सम्मुख अपनी अनुपम शोभा प्रदर्शित करती हुई प्रकट हुईं। २७ जा के सम्मुख ऐसी सुन्दरियाँ आकर विराजमान हुईं जो पुरुषों को अपनी

मरुकदलि मायाविलासद निरिसुगळ नोटदलि नटणेय
तुरुबुगळ तोळुगळ जघनस्थळद चेलुविकेय
मिरुपिनलि तनुरुचियनणदुब्बिरिव होगरिन मुसुकुगळ मे-
ल्सेरुगुगळ मौळिगळ महिळाजन विराजिसितु ॥ 29 ॥
नडेगळलि चेलुविन चदुरिन नुडिगळलि भावदलि भंगिय
कडुहिनलि कैमेयलि माया मोहनंगळलि
तोडचिकोंब समस्तवस्तुव नडकि कोंब विदग्ध मुग्धेय
रुडिगेगळ तोडिगेगळलेसेदरु रायनिदिरिनलि ॥ 30 ॥
नोटदलि माताडि पुर्बिन बेटदलि बेळ्माडि कलेगळ
कूटदलि कीळ्वडिसि सर्वस्ववनु नेरे कवरि
गोटुगोळिसुव बल्मेगळ बल्लाटविक बहुविधद मायेय
बेटकातियरोप्पिदरु नरनाथ निदिरिनलि ॥ 31 ॥
सरस सूरुळु गन्न गरुविके गरगरिके हुसि नुसुळु वैसिक-
मुरुहु मुंदुपचार ठक्कु विनोद बरि मुनिसु

पत्नी, बच्चे, माँ-बाप वग़ैरः का श्रेष्ठ कुलाभिमान-वंशमर्यादा भुलाकर अपने चंचल छलकते-मचलते सौंदर्य से उनको कामपाश में बाँधकर धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष आदि चतुर्विध पुरुषार्थों से विमुख करें। २८ प्रेम का अभिनय करते, अपने मोहक हाव-भाव-भंगिमाओं से विलास प्रदर्शित करते हुए अभिनय के कटाक्षों से आकर्षित करते चमकती नीलकेशराशि, भुजाएँ, लचकते नितंबों को नचाते हुए आकर्षक देहकांति को ओढ़नी से बिखेरते तथा अपने आँचलों की मनोहर छटा से आकर्षण की शक्ति प्रदर्शित करती हुई स्त्रियाँ राजा के सम्मुख उपस्थित हुई। २९ चाल, चलन, रूप, सज्जा, चालाक बातें, अत्यधिक सुन्दरता, चालाकी —इन सबको प्रयोग में लाते अपने मायावी रूप के प्रलोभन का जाल फैलाकर रसिकों को अपने चंगुल में फँसाकर उनकी समस्त वस्तुओं के अपहरण में चालाक प्रौढ़ युवतियाँ वस्त्राभरणालंकृत होकर राजा के सम्मुख उपस्थित हुई। ३० अपनी तिरछी नज़र से ही मानों बोलती हुई, भौंहों को नचाते अपने आकर्षण से उल्लू सीधी करनेवाली, कामकला-केलि से हराकर सर्वस्व लूटनेवाली, अपने इशारे पर नाचने के लिए बाध्य करनेवाली अपने बहुविध हाव-भावयुक्त लावण्य-प्रदर्शन में चतुर, कपटनायकपटु कामातुर-लक्षणसम्पन्न युवतियाँ राजा के सम्मुख उपस्थित होकर उनकी योजना को अपनी मान्यता देने लगीं। ३१ अत्यंत सरस रीति से क़सम खाने में चतुर झूठी घमंडवाली, लावण्यवती, झूठ बोलकर रपटनेवाली, नखरेबाज़, छल-कपट में होशियार, सामने पुरस्कार और पीछे

हुरुडु जाणुमें चळबळिकें चप्परणें वंचनें नेहवेंबी
परिय मायामयद महिळा जन विराजिसितु ॥ 32 ॥
जाणरिदु मनवरिदु सौबगिन त्राणवरिदोलवरिदुकामद
केणवरिदिंबरिदु सर्वस्वाप हारदलि
नाणुगेडिसुव नगेय नुडिगळ जाणेयरु समरति कलास
त्राणेयरु बेडिदरु बेसननु बळिक भूपतिय ॥ 33 ॥
इत्तनवरिगें नेमवनु मुनिपोत्तमन तरहेळि मणिमय
दुत्तमाभरणंगळनु परिपरिय निवसनव
इत्तु पुष्परथंगळलि मणिमुत्त नंदण गळलि हयदलि
मत्तगजगमनेयर बीळ्कोट्टनु महीपाल ॥ 34 ॥
सितगुडाज्य सुलवण कटु मिश्रित रसादिसमस्त रस पू-
रित सुधोपम भक्ष्यफल भोज्यादि वस्तुगळ
कृतक कुशलोपायदलि परिचितद पण्य विलासिनी जन
ततियोडनें कळुहिदनु नृपकेळा महीपाल ॥ 35 ॥
तेरळितिदु हर नेडेगें नडेवा स्मरन पाळेयदंतें नडुगिद
ररसु केळु जितेंद्रियरु मन्मथ विरोधिगळु

तिरस्कार करने में निपुण, हँसी-मजाक़ में चतुर, झूठी नाराज़ी, स्पर्धा, चतुराई, चंचल स्वभाव, उत्साहित करना, धोखा देना, समयोचित प्रेम-प्रदर्शन-नटना में चतुर नारियाँ प्रकट हुईं। ३२ रसिकों (विटपुरुषों का) की चतुराई मन तथा सौंदर्य उपभोग करने में चतुर समर्थ, सुखोपभोग की आशा तथा उसकी मर्यादा अजमाकर हँसते-हँसते, मीठी-मीठी बातें करते उनका सर्वस्व लूटकर निर्लज्ज बनाने मे चतुर, (अगर चाहा तो) समरति (संभोग) में सहयोग देने में सक्षम नारियाँ उपस्थित होकर राजा से पूछने लगीं कि क्या आज्ञा है? । ३३ मुनिश्रेष्ठ ऋष्यश्रृंग को बुला लाने की आज्ञा देते हुए राजा ने उनको उत्कृष्ट गहने तथा तरह-तरह के बढ़िया कपड़े दिए। फूलों का रथ, हीरे-मोतियों से लदी पालकी तथा घोड़ों के साथ उन गजगामिनी स्त्रियों को राजा ने भेजा। ३४ शुद्ध गुड़ तथा घी, नमक, मिर्च वग़ैर: रसों से मिश्रित अमृतोपम तली चीजें तथा तरह-तरह के पक्वान्न-मिष्टान्न बनाने में निष्णात वेश्याओं को उनके साथ रोमपाद राजा ने भेजा। जो छल-कपट के निर्माण की कला में भी बड़ी ही चतुर थीं। ३५ शिवजी के नज़दीक पहुँचने के लिए रवाना होती हुई मन्मथ की सेना (स्त्रियों का समूह) चलने लगी। इसे देखकर जितेन्द्रिय, काम-विरोधी भी काँप गये। ब्रह्मचर्य पालन करते जप-तप में निरत तपस्वी भी भाग निकले। युवतियों

सरकुदॆगॆदुदु बोम्मचरियद बेरळ जपगळ तापसरु तर-
हरिसि निलुववनावनै तरुणी जनंगळलि ॥ 36 ॥
मेदिनीपति केळिदै कमलोदरनु कामिनियनॆदॆ यॊळ
गादरिसिदनु कमलभव जगवरियॆ नंदनॆय
ऐदॆयनु नॆरॆ माडिय रेवॆण्णाद नीश्वर निंद्रगिंद्रर
हादियदु नगॆयित्तणवरनु हेळलेनॆद ॥ 37 ॥
नडॆदुदी कान्ताजनगळुग्गडद पयणद पयण गतियलि
सडगरद सौरंभदलि सन्मोहनंगळलि
अॆडॆय मुनिपन वीथिगळवंगडव कळि कळिदैदिदरु मुनि-
मृड विभांडु कुमारकन कमनीयतर वनव ॥ 38 ॥
भ्रूलतॆय हदविल्लुगळ हॊळॆ वालिगळ हॊदॆ गोलुगळ नळि-
तोळ बडिगोलुगळ सॆळ्ळुगुरॊगॆ गळंटुगळ
जाळवणॆगळ बलॆय ठक्किन ठौळिगळतोहुगळ नगॆगळ
मेलुमुद्दिन बेटेकातिय रैदिदरु वनव ॥ 39 ॥
कर वलॆय कटिसूत्र पदनूपुर निनादद बेटॆवरॆगळ
सरस हास्यद हासकद वहणिगळ वैसिकद

के सम्मुख कौन जपी-तपी अपने को स्थिर रख सकता है ? । ३६ "राजन् सुनिए। कमलनाभी श्रीविष्णु भगवान ने लक्ष्मी को अपने वक्षःस्थल में धारण किया। यह बात जगत् भर में प्रसिद्ध है कि ब्रह्माजी ने अपनी पुत्री सरस्वती को ही भार्या के रूप में स्वीकारा। शिवजी तो अर्धनारीश्वर बने। इन्द्रादि देवता हँसी-मज़ाक़ के कारणीभूत बने। तब यहाँ के (धरती के) लोगों की हस्ती ही क्या है ?" —इस तरह कहा। ३७ ये युवतियाँ बड़ी दिलचस्पी के साथ पड़ाव पर पड़ाव डालते हुए रवाना हुईं। इनके इस प्रकार जाते समय चारों ओर के लोग इन्हें देखकर पागल हो जाते। इनके साज-नाज़ को देख भौंचक्के रह जाते। पास-पड़ोस के तपोवनों की गलियों, मार्गों को पार करती हुई विभाण्डक मुनिपुत्र ऋष्यशृंगजी के अत्यंत मनोहर आश्रम में पहुँचीं। ३८ इन नारियों की भौंहें मानों धनुष्य जैसी, चमकती-थिरकती तिरछी नज़र मानों तीर जैसी, लम्बी भुजाएँ मानों लाठी जैसी, नुकीले नाखून मानों गोंद या रीठे के गुच्छे (पक्षियों को पकड़ने के लिए लाठी पर फैलाए गए) जैसी, माथे पर का शृंगार मानों जाले जैसा, धोखेबाज़ ठुड्डियाँ मानों ओट में छिपे रहकर हिरन को पकड़ने की चतुराई जैसी वे खिलखिलाती नयन-मनोहर कामिनियाँ मानों शिकारिनें बनीं आश्रम में प्रवेश करती हैं। ३९ 'कंगन, करधनी, पायल, पैंजनियों की

सरळिसुव कुक्कुर कदंबद विरचिताडंबरद नवशा
बरियरैदिदररस केळ् मुनिमृगवनांतरव ॥ 40 ॥
लंबिसुव फलभरद रसदाळिम्ब खर्जूराम्र कदळि क-
दंब कुरवक तिलक तेंगु तमाल पुन्नाग
जंबु पनस मधूकतरु निकुरुंबकद सुरनंदन प्रति
बिबवेनॆ बगॆगॊळिसितनुपम मुनितपोविपिन ॥ 41 ॥
नळिन विल्लद कॊळनु नवशाड्वलगळिल्लद नॆलनु हॊस कॊंद
दळिरु दोऽरद मरनु मघमधिसद समीरणनु
फलित विल्लद पुष्पचय मक्कळुगळिल्लद खगमृगावळि
मळॆगळिल्लद मेघविल्ला बनदोळामुनिय ॥ 42 ॥
गिळिय गिडुगन कूट मरिगोगिलॆय साळ्वन सख्य हरिकरि
कळभदुरुबंधुत्व फणिमुंगुलिय नंटुतन
हुलिय हुल्लॆय नेह बिरुगत्तलॆय बॆळगिन मैत्रि मधुरद
हुळिय परिसंबंधविर्दुदु बनदॊळा मुनिय ॥ 43 ॥

आवाज़ें ही मानों शिकारी बाजे है; मधुर खिलखिलाहट ही मानों रस्सियाँ हैं; आडंबर और दिखावा ही जूझकर लपकनेवाले मानों शिकारी कुत्ते हैं' —इस तरह ऋष्यशृंग नामक हिरन के निवासस्थान तपोवन में मानों नये रंग-ढंग की शिकारिने बड़े डील-डौल के साथ प्रवेश करती हैं। ४० रसभरित फलों से लदे अनार, खजूर, आम, केला, कदम्ब, मेंहदी, तिलक, नारियल, करंजा, पुन्नाग, जामुन, कटहल वग़ैर: तरह-तरह के पेड़ों से महामुनि का वह तपोवन देवलोक के नन्दन-वन के प्रतिरूप की तरह शोभायमान लग रहा था। ४१ उस ऋषि के तपोवन में कमल-पुष्प-रहित तालाब नहीं थे; हरियाली से लदी तपोवन की रत्ती-रत्ती भूमि बड़ी ही मनोहर थी। नयी-नयी कोंपलों से रहित एक भी पेड़ नही था। ठंडी-ठंडी हवा खुशबू से लदी सारे आश्रम के कोने-कोने की परिक्रमा कर रही थी। फल-रहित फूलों के गुच्छे एक भी न थे। संतान-रहित एक भी पशु-पक्षी न थे। वर्षा-रहित एक भी बादल न था। ४२ इस ऋष्याश्रम के वन के तोते और बाज़ एक साथ रहते थे। कोयल के बच्चे तथा साळ्व पक्षी एक ही जगह निवासस्थान बनाए हुए थे। शेर और हाथी के शावक बन्धुभाव से (परस्पर) रहा करते थे। साँप और नेवलों में मानों आपसी रिश्ता था। वाघ और हिरन में गहरी प्रीति थी। उजाले और अंधेरे मानों परस्पर सखा थे। मीठा और खट्टा —दोनों की प्रगाढ़ मित्रता थी। ४३ "हिरनों के साथ खेलना, जंगल के फल-कंद-मूलों का

आटवे मृगगण दोंडनें सवियूटवे वनकंदफल क-
ण्बेटवे कंजाक्ष कामारिगळ भजनेंयलि
कूटवे योगांगनें योंळी पाटियिंदिह ऋष्यशृंगन
नाटविक कामिनियरैदिदररस केळेंद ॥ 44 ॥
अरस केळा तरुणियर तनु परिमळद सोंकिनलि सुत्तलु
परिमळिसिदुदु तरु सुतरळापांग रोचियलि
मुरिदुदा मरगत्तलेंय मैसिरि सुगीतामृतद सविग-
च्चरिय रोलैसिदरु वरकांता कदंबदलि ॥ 45 ॥
गतिगें कुणिदवु हंसें संभाषितद मृदुरवकोंदगिदवु पर-
भृतवपांग मरीचि चंद्रिकेगाचकोरिचय
गतपरिश्रमवादवधरामृतफलकें मनदंदवर गिळि
रतिगें सेवक रिल्लवादुदु हेळलेनेंद ॥ 46 ॥
मुनिपनिद्दनु मुग्ध तापस मुनिगणद मध्यदलि सम्मे-
ळनद पुण्यमृगावळिय सोंकिनलुपासनेंय
वनरुहाक्षध्यानदलि केळिनकुलेश्वर तन्मुनीश्वर
ननुवरिदु होंद्दिदरु हरिमेखलेंय दाळियलि ॥ 47 ॥

सुस्वादु भोजन, शिव, विष्णु-भजन में ही प्रेम भरी आँखें, योग नामक कामिनियों से क्रीड़ा —इस प्रकार की दिनचर्या वाले ऋषिवर ऋष्यशृंग के सम्मुख वे चालाक नारियाँ पहुँचीं। सुनिए राजन् !" —इस तरह उसने कहा। ४४ '(उनके वन में प्रवेश करते समय) उन युवतियों की देह की खुशबू से सारा वनप्रांतर प्रदेश, वहाँ के वृक्ष खुशबूदार होकर सुगंध बिखेरने लगे; उनके चंचल नयनों की तिरछी नज़र की कांति से वनप्रदेश के पेड़ों सी बनी छाया छितराने लगी। उनकी संगीत-सुधा से डोलायमान होकर अप्सराएँ (वहाँ उपस्थित हो) उनको मनाने लगीं। ४५ उन (सुन्दरियों) की चाल से होड़ करते हुए हंस नाचने लगे; मधुर सुकोमल वार्तालाप सुनने के लिए कोयल आने लगीं। उनकी तिरछी नज़र की कांति की चाँदनी में चकोर अपनी थकावट दूर कर पाए। उनके होठों को अमृतफल समझकर बड़ी चाह से तोते आए। (हंस, भ्रमर, कोयल, तोते ऋष्यशृंग के आश्रम में आयी सुन्दरियों की सेवा में उपस्थित हो जाने के) फलस्वरूप रति की सेवा करने को कोई न रहा। ४६ ऋष्यशृंग मुग्ध तपस्वियों के बीच, पुण्य-चरित हिरनी के संग में बैठ कमलाक्ष श्रीहरि के ध्यान में लीन थे। सूर्य-वंशीय राजा, सुनिए। उस ऋषिश्रेष्ठ के समय की प्रतीक्षा करते हुए उन सुन्दरियों ने इन्द्रजाल की तरह हमला किया और उनके पास पहुँच

राय केळै तापसांगद नायकियरदरोळगॆ वरकुसु
मायुधन खंडॆयकॆ तॆक्कद मुनिय चरणदलि
यायदभिरंजनॆय रचितोपायदलि गोत्रप्रवर परि-
मायदलि पदकॆरगिदरु पावन तपोधनन ॥ 48 ॥

वंदिसिद मुनि वेषदबलावृंदकति भक्तियलि मगळभि-
वंदनंगैदुचित सत्कारोपचारदलि
कंदमूलफलादि वस्तुगळिंद मन्निसि नम्मॆडॆगॆ नीवु्
बंदकारणवेनॆनुत बॆसगॊंडना मुनिप ॥ 49 ॥

नावले निम्मडिय बहळ कृपावलंबनदिंद काम्यम-
हाविलासाध्वरव कैकॊंडॆवु विनोददलि
नीवु बिजयंगैदडधिकृत पावनरलेयॆंदु कपट क-
लाविदॆयरॊडबडिसिदरु गमनवनु मुनिवरन ॥ 50 ॥

जनप केळ् मुनि वेषद बलाजन तदीय मुनीश्वरन सॊब
गिनलि सोंकिन लॊलुमॆयलि विविधोपचारदलि
विनुत गंधसुमाल्य मणिमडन नवांबरगळलि चित्तव
ननुकोळिसि कैवशकॆ तंदरु दिवसदिवसदलि ॥ 51 ॥

गयीं । ४७ तापस वेशधारी उन वेश्याओं ने पुष्पबाणधारी कामदेव की तलवार से किंचित् भी विचलित न होनेवाले ऋष्यशृंग मुनि के चरणों में अपने हाव-भावयुक्त मायाविलास विस्तार करते हुए, अपने कुल-गोत्र-परम्परा का परिचय देते हुए क्रम से यथोचित रीति से प्रणाम समर्पित किए । ४८ अपने चरणो में गिरी तापस-वेशधारी उन सुन्दरियों को भक्तिभाव से उनके प्रणामों का उत्तर देते हुए (बदले में अपने प्रणाम समर्पित करते) ऋष्यशृंग ने यथोचित रीति से उनका आदरातिथ्य करते कन्द-फल-मूलो से उनका उपचार करते हुए गौरव देते हुए—"हमारे यहाँ किस उद्देश्य से आप आयी है ?" —इस तरह प्रश्न किया । ४९ "आपके चरण-कमलों की कृपा (भरोसे) से अभीष्टसिद्धि नामक यज्ञ का हमने यों ही (मज़े के लिए) बीड़ा उठाया है । अगर आप कृपा कर पधारें तो हमारा जन्म (सार्थक) पवित्र होगा ।" इस तरह निवेदन करते हुए छलने में प्रवीण उन सुन्दरियों ने मुनिश्रेष्ठ को यात्रा के लिए राजी किया । ५० सुनिए राजन् ! तापसवेशधारी उन स्त्रियों ने अपना सौंदर्य, स्पर्श, प्रेम आदि विविध उपचारों से उनको (मुनि को) आकर्षित कर, मनमोहक सुगंध, फूलों की माला, हीरे-जवाहरात के गहने तथा अपने नये कपड़ों से उनको प्रसन्न करने के पश्चात् दिन पर दिन बीतने पर मुनि को अपने वश में करते

सारिदरु बळिकुत्तमद श्रृंगार नारीजन मनोजन
कूरलगिगोंडलोंड्डिसिदरा मुग्ध मुनिवरन
आरु गेंल बहुदरस केळ् कामारिगसदळवबलेंयर क-
ण्णोरेंगळ कालाटकळुकदरुंटें हेळेंद ॥ 52 ॥
बळिकला मुनिवरन नानाफल सुभोजन भक्ष्यदलि सवि-
गोंळिसिदरु सेंळेंदरु मुनींद्रन मनव मायेंयलि
कळवळिसिदवु करणविंद्रियगळु नितंबिनियरलि सिक्किद
नलरुगणेंयण्णन घडावणेंगा विभांडुसुत ॥ 53 ॥
अमृत रसमय विविध काव्य प्रमुख नाटक भरतमदना-
गम रसालंकार रूपक रचित विद्येंयलि
अमित सौख्य कथाविनोदद समतेंयलि भारति कळावि-
भ्रमकें गुरुवेंनलोंलिसि मेंच्चिसिदरु मुनीश्वरन ॥ 54 ॥
बळिक सकलेंद्रियगळुब्बटें बलिद विवरुपचारिदलि हिं-
दुळिदुदुग्र तपःप्रभावद बेंळगु निमिषदलि
अलगनुगिदनु मदनमंदानिलनु हुरिगट्टिदनु कैच-
प्पळेंय लोंदरिदना वसंतनु मुनिप निदिरिनलि ॥ 55 ॥

हुए उन्हें उँगली पर नचाने लगीं। ५१ उन सुन्दरियों ने मोहित मुनि को मन्मथ बाणों से बुरी तरह घायल कर दिया। सुनिए राजन्! कामिनियों के कामपाश से कौन बच सकता है? (कामिनियों को कौन जीत सकता है?) काम को भस्म करनेवाले शिवजी के लिए भी यह असाध्य है! अबलाओं की तिरछी नज़र का शिकार बने, कौन बिना घायल हुए रह सकता है? बताइये। ५२ तरह-तरह के ताज़े फल और व्यंजन परोसकर मुनिवर का जिह्वास्वाद जगाया। माया-मोह-ममता के बल पर मुनि के मन को अपने में कस लिया। (फलस्वरूप) मुनि के पंचेन्द्रिय उन सुन्दरियों के लिए चटपटाने लगे। पुष्पबाणों की मार से विभांडक मुनिपुत्र ऋष्यश्रृंग चटपटाया। ५३ नवरसभरित विविध काव्यों से उत्तम नाटकाभिनय से भरतविद्याप्रावीण्य तथा कामशास्त्र के प्रौढ़ कलाओं से रस-अलंकारादि विविध रीतियों से मनोरंजनकारी प्रहसनादियों से अत्यंत सुखदायी कहानियों से विविध प्रकार के विनोदादियों से मानों सरस्वती कलाप्रवीणागुरु की तरह उन नारियों ने ऋष्यश्रृंग को प्रसन्न करके अपने अनुकूल बना लिया। ५४ युवतियों की इस प्रकार की परिचर्या से मुनि के सर्वेन्द्रिय उद्विग्न हुए। घोर तपस्या की कांतिमान स्थिति क्षण मात्र में पिछड़ गयी। (इसी को सुअवसर जान)

बिद्दनबलाजनद बलॆयॊळगॊद्दुकॊळुत मुनींद्रनंगज
नुद्दुरुट्टुतनकारु सरि सुर नर भुजंगरलि
तिद्दितातन तपसुमायॆय मद्दिनलि मरुळागि मदनन
हॊद्दिददनु हॊडकरिस लरियदॆ वळिकला मुनिप ॥ 56 ॥
मॆच्चि मरुळदा मुनींद्रन नुच्चि तंदरु तरुणियरु वळि-
कच्चरिय केळरस बॆरसिदवभ्रवंबरव
मुच्चि कॊंडवु मुरिदु नेसरुगिच्चिनखिळांबुधिय जलवनु
कच्चि तंदुगुळिदवु रोमांघ्रिपन भूमियलि ॥ 57 ॥
अरळि तरसन वदन वदनद सिरि विषाद दॊळद्द ळमरे-
श्वरन मुनिपन बरविनलि वळिका धराधिपन
धरॆयजन संतोषमयसागरदळद्दुदु हेळलेनद
नरस करसा मुनिय सिद्धिगसाध्य वेनॆंद ॥ 58 ॥
परम हरुषदला मुनींद्रन नुरुतरोत्सवदिंदलापुर
दरस निदिगॊडॊय्दु कॊट्टनु तन्न नंदनॆय

मन्मथ ने अपने बाण चलाये। मंद मारुत प्रोत्साहित हुआ। वसंत ऋषि के सम्मुख प्रकट होकर ताली बजाते हुए हर्षोल्लास की ध्वनियाँ प्रकट करने लगा। ५५ मुनीश्वर अबलाओं के मायाजाल में फँसकर चटपटाने लगे। कामदेव के छल-कपट के सामने देवता, मानव, नागजाति —इनमें कौन टिक सकता है? तपस्या में लीन मुनीश्वर फिसल गये। फलस्वरूप माया की मोहकता के कारण बावला बने प्रतिरोध करने में असमर्थ हुए तथा कामदेव के वशीभूत हुए। ५६ इस तरह अवश बने ऋषि ऋष्यशृंग को वे ललनाएँ वहाँ से खींचकर (राजा रोमपाद के राज्य में) ले आयीं। तदनंतर जो आश्चर्यजनक घटना हुई उसका क्या कहना! राजा, आकाश में बादल घिर आये। सूर्य की उष्णता से सोखे गये समुद्र के सारे जल को बादल राजा रोमपाद के राज्य में उगलने लगे। ५७ "मुनिवर के आगमन से राजा का मुखड़ा खिल उठा। देवराज इन्द्र का मुखड़ा दुःख से काला किट्ट पड़ गया। रोमपाद के राज्य के लोग सुख-संतोष के सागर में डूबने-उतराने लगे। वहाँ के आनन्दोत्सव का क्या वर्णन करें? मुनिजनों की सिद्धि के लिए कौन सी बात असाध्य हो सकती है? इसलिए, राजन्! उस मुनि-श्रेष्ठ को बुलाइए।" —इस तरह सुमंत्र ने सलाह दी थी। ५८ परमानंदभरित राजा ने मुनिवरेण्य का गाजे-बाजे के साथ अमित उत्साह से स्वागत किया। अपनी राजधानी ले जाकर अपनी बेटी का हाथ ब्याह में उसे समर्पित किया। उमा-महेश की तरह मुनिवर

हरनुमादेवियरवोलु मुनिवरनु शांतादेवि सहिता
धरणिपन भवनदलि बेळगिदनधिक तेजदलि ॥ 59 ॥
बरडु हयनहुदुडिद नीरसतरु चिगुर्वेवु बंजें गर्भव
धरिसुवळु धन धान्य गोधन संपदादिगळु
भरितवागिहवा मुनिपनिहधरणियलि नीना मुनींद्रन
करसि क्रतुवनु नदेसिदरें सुतरहरु निनगेंद ॥ 60 ॥

आरनेय संधि

सूचनॆ— भूमिपति दशरथनु सुतकाम्या महाध्वरकॆंडु तंदनु रोमपादनृपाल नळियननखिल विभवदलि ।

धरणिजासुत केळ् सुमंत्रन वरवचोभिप्रायवनु निज
गुरु वसिष्ठंगरुहि तन्मुनिवर ननुज्ञेयलि
परमऋषि वैभांडुकननध्वरकें तहनेमवनु पडेदति
हरुषदलि हरिदश्वकुलनुद्योग मननाद ॥ 1 ॥
नॆगळ्द कार्यस्थितिगें लिखिताळि नुडुगॊगळरें सहित लरसा-
ळुगळ कैयलि कळुहिदनु नृपरोमपादंगें

ऋष्यश्रृंग पत्नी शांतादेवी के साथ राजमहल में कांतिमान होकर विराजे। ५९ "मुनिवर ऋष्यश्रृंग जिस राज्य में विराजते है, वहाँ बाँझ गाय घड़ों दुहने लगती है। टूटे सूखे पेड़ों में कोंपलें फूटती हैं। बाँझ स्त्री भी गर्भ धारण करती है। धन, धान्य तथा गो-संपत्ति समृद्ध रहती है। अत: आप भी उस मुनिश्रेष्ठ को बुलाकर यज्ञ करें तो संतान-प्राप्ति अवश्य होगी" —इस तरह (सुमंत्र ने राजा दशरथ को) समझाया। ६०

षष्ठ संधि

सूचना— दशरथ राजा ने पुत्रकामेष्टि महायज्ञ के लिए रोमपाद राजा के दामाद ऋष्यश्रृंग को अत्यंत वैभव के साथ बुला लिया।

सुनो जानकीपुत्र ! सुमंत्र के अत्यंत महत्त्वपूर्ण राय के बारे में राजा दशरथ ने गुरु वसिष्ठजी से निवेदन किया। उस मुनिश्रेष्ठ की आज्ञानुसार विभाण्डक के पुत्र ऋष्यश्रृंग मुनिश्रेष्ठ को महायज्ञ के लिए निमंत्रित करने के कार्य में दशरथजी अत्यानदपूर्वक निमग्न हुए। १ राजा दशरथ ने प्रारंभित कार्यसिद्धि के लिए तरह-तरह की भेंट के साथ अपने नौकरों के हाथ पत्र के साथ रोमपाद राजा के पास भेजा। उत्तमोत्तम वस्तुएँ,

तॆंगॆसिदनु बळि कुत्तमद तॊडवुगळ दिव्य दुकूलरत्ना
ळिगळननुपम गजहयादि समस्त वस्तुगळ ।। 2 ।।
बारिसिद बलुहॊरॆय बंडिगळोरणिसिदवु पयणदलि क-
र्पूर कस्तूरि कुंकुमद पॆट्टिगॆय सालिनलि
ऊर हॊऽरवळयदलि गुडिगूडार हॊय्दवु शुभमुहूर्तद
वार तिथि नक्षत्रदलि नरनाथ हॊऽरवंट ।। 3 ।।
सुळिदवारति मुंदॆ विप्ररकळकळद मंत्राक्षतॆय कैं-
कॊळुत मंगळ पाठकर बहुवाद्य घोषदलि
घळिगॆ बट्टल जीव कॆंद्र स्थळद शुभलग्नदलि भूपति
हॊळल हॊऽरवंटनु सुमंत्रादिगळ गडणदलि ।। 4 ।।
मणिमयद मुक्ताफलद केवणद कनकद दड्डि विगिदं
दणवनेरिदररसियरु मूवरु महीपतिय
कुणिव कुदुरॆय हण्णिदुरुवारण घटाळिय तेरुगळ तिं-
थिणिय तॆरळिकॆयिद तॆरळिदना महीपाल ।। 5 ।।
तळित पाल्मरनेऽरि पिंगलि बळिदु बाय्गॊंडवुसरागदि
नॊलिदु दम्पति ताऽनित्तवु करिय हक्किगळु
सुळिद वॆडदलि हंग बलदलि वलिय सूचित पुत्रलाभद
फल विशेषित शकुन हिग्गिसितवनिपन मनव ।। 6 ।।

तरह-तरह के रत्न, बहुमूल्य कपड़े, श्रेष्ठ घोड़े-हाथी वग़ैरः समस्त प्रकार की सामग्री निकलवाकर सजायी गयी। २ सामग्री के ढेरों से लदे छकड़े यात्रा के लिए तैयार होकर कतार में खड़े रहे। कर्पूर, कुंकुम तथा कस्तूरी से भरी पेटियाँ सिलसिले मे लगायी गयीं। अयोध्या नगरी के बाहरी प्रदेश में डेरे डाले गये। ठीक दिन, तिथि, नक्षत्रयुक्त शुभ मुहूर्त में राजा दशरथ यात्रा पर निकले। ३ दशरथ की आरती उतारी गयी। ब्राह्मणों के मंत्रपरक अक्षतों को स्वीकार करते चारण-भाटों के उद्घोष तथा विविध गाजे-बाजों की ध्वनियों के साथ घटिकापात्र को देखते, गुरुकेन्द्र-स्थित शुभ लग्न में सुमंत्रादियों के साथ राजा दशरथ ने राजधानी छोड़ यात्रा शुरू की। ४ हीरे-जवाहरातों से सजी, सुनहले परदों से अलंकृत पालकी में विराजमान हो दशरथ की तीनों रानियाँ भी रवाना हुईं। नाचते घोड़े, सजे हाथियों का समूह, रथों की कतारों से युक्त झुंड के साथ राजा दशरथ यात्रा पर निकले। ५ पल्लवित दुधारू वृक्षों को देखकर पिंगली नामक पक्षी चहचहाने लगे। एक प्रकार के काले पक्षी खुशी के मारे चहचहाते शुभसूचक शगुन देने लगे। कलिंग नामक पक्षी बायीं

हरुष पुळकद हरहिनलि हय करि वरूथ पदाति बलसहि
तरिदिशापटमल्ल बंदनु [पयणगतिगळलि
परमहीतळदखिळ जनदुब्बरद दुरुळन काणिकेयननु
करिसुतनुपम विषय वीथिय नोडुतैतंद ॥ 7 ॥
हेळ लेनद नंगधरणीपालनवनिय सिरिय सोंपिन
लीलेंगिदु नेलेवीडेनलु शोभिसितु सोगसिनलि
शैलवे सुरशैल भूरुह जालवे सुरभूज ललित ल-
ताळिये सुरलते सुधेनुगळेदे सुरधेनु ॥ 8 ॥
वर वसंतन बीडो मन्मथ धरणिपन देक्खाळ भूमियो
परिमळित पवमानना डुंबोलनो चन्द्रमन
हरवरियो वनदेवतेय विस्तर विहार विनोदकेळी
निरतिशय निजधरणियेने नेरे मेरेदुदा भूमि ॥ 9 ॥
नगर खर्वड खेडगळ हेम्पुगळ शाखा नगरगळ सों
पुगळ सुग्रामाग्रहारव्रजदलंपुगळ
तेगेद तोरे कालुवेगळुद्यानगळ कळमद्राक्षे धवळे
क्षुगळ वनवीथिगळ नीक्षिसुतरस नैतंद ॥ 10 ॥

तरफ़ उड़ने लगे। वलिय नामक पक्षी दाहिने से होकर उड़ने लगे। इस प्रकार संतान-प्राप्ति के शुभ शकुन दशरथ के मन को हर्षित करने लगे। ६ शत्रुओं को दस दिशाओं में भगा देने की क्षमता रखनेवाला वीर दशरथ अत्यंत प्रसन्नता से रोमांचित होते रथ, हाथी, घोड़े, पैदल, सेना-सहित पड़ाव डालते यात्रा पर निकले। विभिन्न अन्य राजाओं के लोगों को संदर्शन लाभ देते हुए, उनसे भेंट स्वीकारते, उन राज्यों की सड़कों को निहारते जाने लगे। ७ अंगराजा का राज्य मानों संपत्ति के सौंदर्य-वैभव के लिए निवासस्थान जैसा शोभायमान था तथा सब प्रकार के चकाचौंध से युक्त था। वह वर्णनातीत था। वहाँ के पहाड़ सभी देवपर्वत सरीखे थे। सारे वृक्ष कल्पवृक्ष सरीखे थे। सुन्दर लताएँ सुरलताएँ थीं। सभी गायें कामधेनु सरीखी थीं। ८ अंग राज्य मानों इस प्रकार शोभायमान था— वसंत का निवासस्थान, राजा मन्मथ की विलासभूमि, सुगंधित वायु की विहारभूमि, चन्द्र की व्यापकता का आगार, वनदेवता से अपनी विनोद-क्रीड़ा के लिए चुना गया विस्तृत भूमिखंड ही था। ९ नगर,पुर तथा पहाड़ी गाँवों की सुन्दरता, उपनगरों की शोभा, ग्राम और ब्राह्मणों को राजाओं से दी गयी जागीरों की शोभा, नदी-नाले, नहरों से बने उद्यानों तथा धान, अंगूर, सफ़ेद ईखों के खेतों की मनमोहकता का

अररें शिव शिव सकल सिरियलि मेरॆवुदिदुता ऋष्यश्रृंगन
परम महिमॆयला महीतळ वॆनुत नरनाथ
शिरव नॊलॆवुत रोमपादन सिरिय कॊंडाडुत सुमित्रन
पुरकॆ बंदनु केळिदै काकुत्स्थ नृपसूनु ॥ 11 ॥
राय राजशिरोमणियकटकाय बिट्टुदु बळिक कॊट्टिगॆ
लाय गुडि गूडार सहित पुरोपकंठदलि
आ यशः परिपूर्णतेजनमेयननुपम रोमपादन
जेय दशरथ नृपन निदिगॊगॆ डॊय्द नरमनॆगॆ ॥ 12 ॥
हेळलेनद नंदिनुत्सव देळिगॆय वैभववनुभय नृ-
पालकर सौहार्ददनुबंधद सघाडिकॆय
बालॆयर हॊंदळिगॆगळ पसुर्गूळुगळ पसरिकॆय मणिदी-
पाळि सुळिदवु सरसिजप्रिय कुलज निदिरिनलि ॥ 13 ॥
उपचरिसिदनु बळिक राजाधिपन वरराजोपचारद
विपुळ सत्कारदलि निरुपम रोमपादनृप

आस्वाद लेते हुए राजा दशरथ बढ़ रहे थे। १० "हे भगवन्, यह राज्य तो समस्त संपदाओं से शोभायमान है। कारण यह है कि इसे ऋष्यश्रृंग की पूरी तपस्या की शक्ति प्राप्त है। (उसी की तपस्या की महिमा से यह भाग्य प्राप्त है।)" —इस प्रकार के उद्गार निकालते हुए राजा दशरथ मनसा रोमपाद राजा के महदैश्वर्य की प्रशंसा करते अपने मित्र की राजधानी पहुँचे। हे काकुत्स्थ राजपुत्र! सुना न तुमने? ऐसा सम्बोधित करते वाल्मीकि विवरण देने लगे। ११ रोमपाद राजा की राजधानी के बाहरी घेरे (वलय) में राजश्रेष्ठ दशरथ की सेना ने पड़ाव डाला। (घोड़े-हाथियों के लिए) गोठ और तबेले (गजशाला तथा अस्तबल) बनाये गये। सेना के लिए डेरे डाले गये (निर्मित हुए)। कीर्तिशाली, पूर्णतेजस्वी, अनुपम, असामान्य राजा रोमपाद ने अजेय राजा दशरथ की अगुवानी की तथा राजमहल में उन्हें ले गये १२ उन दोनों राजाओं के उस दिन के आनंदातिशय का, उत्साह-वैभवों का, उनके परस्पर स्नेह-सबंधों का किन शब्दों में वर्णन करें? सूर्यवंशी राजा दशरथ के सम्मुख सोने की थालियों में हरे अन्न को भरे उतारा करके (दृष्टि निवारण कर)[1] युवतियों ने रत्नदीपों से आरती उतारी। १३ रोमपाद राजा ने राजोपचारों से राजा दशरथ का आदरातिथ्य किया। (दशरथ के) अपने यहाँ पधारने का कारण

---

१ व्यक्ति के चारों ओर खाने-पीने की सामग्री घुमाकर चौराहे इत्यादि पर रखना, उतारना।

अपरिमित संतोषदलि भूमिपन गमनवनरिदु नृपना
तपनकुलजन कोंडुबंदनु मुनिय मंदिर कॆ ॥ 14 ॥
अरस दशरथना विभांडुक वरकुमारन चरणदलि त-
न्नरसियरु सह दैन्यवृत्तिय भक्तिभावदलि
उरुळुवश्रु कणाळिगळ काहुरतॆयलि मैयिक्किदनु सुत-
विरहितन वंशच्युतननुद्धरिस बेकॆंदु ॥ 15 ॥
वितत सुत कामाध्वरद सत्क्रतुव कैकॊंडॆनु भवत्कृपॆ
यतिशयवु तनगागॆ तानी जगकॆ धन्यनला
सुत विहीननुद्धरिसि संततियकरुणिस बेकॆनुत मुनि
पतिय पदपद्मदलि मगुळिळुहिदनु मणिशिरव ॥ 16 ॥
करुणरस दुब्बरद लरसन शिरव नॆगहि नयोक्तियलि मुनि
हरसि संतानाभिवृद्धिय सारसौख्यतॆय
अरसननु मन्निसि मनः परिसरद खेदव बिडिसि काम्या-
ध्वरकॆ बहॆनॆंदभय वित्तनु ऋष्यश्रृंग मुनि ॥ 17 ॥
वीर केळै निम्म दशरथ धारुणीशंगभिनवद बी-
डार वाय्तरॆदिंगळिर्दनु मेलॆ तत्पुरद

जानकर, अत्यंत प्रसन्नता से ऋष्यश्रृंग मुनि के मंदिर की तरफ़ सूर्यकुलोत्पन्न राजा दशरथ को लिवा ले आये । १४ (उस अवसर पर) राजा दशरथ की आँखें डबडबा आयीं; संतानहीन वंशभ्रष्ट अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करते हुए भक्ति-भावपूर्वक अत्यंत दैन्य धारण किये राजा ने (दशरथ ने) अपनी तीनों रानियों-सहित विभांडक मुनि के पुत्र ऋष्यश्रृंग के चरण पकड़ लिये । १५ 'प्रसिद्ध पुत्रकामेष्टि यज्ञ करने का बीड़ा उठाया है । आपकी अनंत कृपा कहीं मुझे प्राप्त हुई तो मुझ सरीखा धन्यभाग इस दुनिया में और कौन है ? निस्संतान मुझ पर करुणा करते हुए कृपया मेरा उद्धार कीजिए (संतति प्रदान कर)' —इस तरह प्रार्थना करते हुए मुनिश्रेष्ठ के चरण-कमलों में अपने मुकुटधारी सिर को नवाया । १६ ऋष्यश्रृंग मुनि ने अत्यंत करुणा से अपने चरणों में झुके राजा के सिर को उठाते हुए मृदुता भरे वचनों से संतानप्राप्ति का, सुख-सम्पन्नता का आशीर्वाद देते हुए राजा के दुःख को दूर किया । उसके मन की चिंता को निबारण करते हुए पुत्रकामेष्टि यज्ञ में पधारने का आश्वासन मुनि ने राजा को दिया । १७ हे वीर, सुनो । तुम्हारे दशरथ राजा के लिए वहाँ नया निवासस्थान बनाया गया । आधे महीने तक वे वहाँ रहे । तदनंतर तरह-तरह के आभूषण, कपड़े, मदोन्मत्त हाथी, घोड़े, रथ वग़ैरः प्रदान कर

धारुणीशननुचितवचना सारदलि सर्वाभरण मद
वारणाश्व वरूथ वसनगळिंद मन्निसिद ॥ 18 ॥
करसि मंत्रि नियोगि गळना पुरजनंगळ नुडुगॊरॆगळलि
हिरिदु मन्निसिरोमपादमहामहीपतिय
परम सत्कार वनु कैकॊंडरस मुनिपति सहितयोध्या
पुरिगॆ बंदनु बहळ विभवदलखिळ जननलिए ॥ 19 ॥
मुनिपतियनवनीश गुरु भावनॆयले पूजिसिद बळिकर
मनॆय निकट प्रांत्यदलि बीडारवनु रचिसि
मुनिय कळुहिदु करसिदनु वरमुनि वसिष्ठन तन्मुनींद्रन
विनुत वचनानुज्ञॆयलि कैकॊंडनध्वरव ॥ 20 ॥

एळनॆय संधि

सूचनॆ— भुवनजन मुल्लविसॆ निर्जर निवहवति परिणमिसॆ यज्ञ प्रवरदलि पडॆवनु महीपति पुत्र पिंडकव ।

धरणिजासुत केळु दशरथ धरणिपति करिसिदनु नाना
धरणिपर धर्मैकनिष्ठ वसिष्ठनाज्ञॆयलि
वरुष वरुषद वर्तनॆय विस्तरद वस्तूत्करवनवरलि
तरिसिदनु वरपुत्र कामेष्टिय महाध्वरक ॥ 1 ॥

उस नगर के राजा को यथोचित वचनों से गौरव प्रदान किया । १८ दशरथ ने रोमपाद राजा के मंत्रि-नियोगियों को, पुरजन-परिजनों को तरह-तरह के भेंट-तोहफ़ों से प्रसन्न कर लिया । रोमपाद महाराजा के आदरातिथ्य को स्वीकार कर दशरथ ऋष्यश्रृंग मुनि को साथ लेकर सभी को आनंद प्रदान करते हुए बहुत ही वैभव के साथ अयोध्या नगरी लौटे । १९ राजा दशरथ ने ऋष्यश्रृंग मुनि की गुरुभावना से पूजा की । तदुपरांत राजमहल के निकट ही उनके निवासस्थान की व्यवस्था की । फिर मुनि को वहाँ ठहराया । तत्पश्चात् महर्षि वसिष्ठजी को निमन्त्रित कर, उनकी राय लेकर उन्हीं के आज्ञानुसार यज्ञकार्य प्रारंभ किया । २०

सप्तम संधि

सूचना— इस जगत के लोगों के उत्साहित होते तथा देवताओं के प्रसन्नचित्त होने के अवसर पर यज्ञ में दशरथ ने पुत्र-पिंड प्राप्त किया ।

रे सीता-पुत्र! सुन; धर्मनिष्ठ वसिष्ठ मुनि की आज्ञा से राजा दशरथ ने विभिन्न देशों के राजाओं को बुला लिया । विविध देशों मे प्रसिद्ध वस्तुओं

कार्णे निन शशिकुलद राज श्रेणियलि तवदश वरूथ
क्षोणिपंर्गेणयह नृपाल नरखिळ लोकदलि
नाणॅयव तंदित्तरागीर्वाण फणि नरराजरुदित कृ-
र्पाण तेजोविभववेंतुटो निम्म दशरथन ।। 2 ।।
पुरव हॉगिसिदुदिल्लवा सुर नर भुजंगमरित्त कष्टव
वरसुवर्ण सुरत्न कन्यावसन वस्तुगळ
सरयुविन तीरदलि योजनवेरड रळतेय विश्वकर्मो-
द्धरण रम्यागारदलि बिडिसिदनु भूपाल ।। 3 ।।
तॆंगिसिदनु बळिकिनकुलद पीळिगॆय नृपरार्जिसिद नाना
युगयुगंगळ नाणॆयंगळनखिळ वस्तुगळ
नगर दुप कंठदलि कोटॆय बिगिदु बिडिसिदनव्वरकॆ सलु-
वगणिताखिळ वस्तुगळ नॆरहिदनु नरनाथ ।। 4 ।।
वरसुवर्ण सुरत्न सर्वाभरण भवनंगळिगॆ गावुद
वॆरडरलि हवणिसिद निखिळांबर सुवस्तुगळ
इरविगादुदु मूररलि करितुरग कन्याधेनुमुख्या
ध्वरद दानद्रव्यकाय्तेळर समाप्तियलि ।। 5 ।।

को उन-उन देशों से पुत्रकामेष्टि यज्ञ के लिए मँगवा लिया। १ सूर्य तथा चन्द्रवंशीय राजाओं में दशरथ राजा के समान राजा समस्त लोकों में कहीं नहीं दिखायी देते। सारी धरती के राजा, देवता, पाताललोकीय राजा आदियों ने भेंटस्वरूप अशर्फ़ियाँ लाकर राजा दशरथ को दीं। इस तरह वर्णन करते महर्षि वाल्मीकि कहने लगे, उनके तलवार की चमक का वैभव क्या सुनाऊँ ? । २ देवता, मानव, नागलोक के व्यक्तियों से लाकर दिये गये नज़राने, सोना-चाँदी, हीरे-जवाहरात, बहुमूल्य भेंट, वस्त्र, कन्याएँ वग़ैरहों को राजधानी के अन्दर नहीं ले गये। दशरथ ने इन सबको सरयू नदी के किनारे दो योजन (आठ कोस) लम्बे तथा विशाल, विश्वकर्मा से विरचित, सुन्दरगृह में रखवा दिया। ३ रविवंशीय राजाओं की प्रारंभिक पीढ़ियों के राजाओं से संपादित व धरोहर रखे विभिन्न युगों की अशर्फ़ियों तथा वस्तुओं को निकलवाया (यज्ञ के खर्चे के लिए)। अयोध्या नगरी के नज़दीक एक क़िला बँधवाया तथा यज्ञ के लिए आवश्यक सभी वस्तुओं का अंबार (ढेर सारी चीज़ें) लगाया गया। ४ लगभग चौबीस मील विस्तृत प्रदेश में निर्मित भवनों में सोना, हीरे-जवाहरात, आभूषण वग़ैरः संग्रह कर रखा। छत्तीस मील विस्तृत प्रदेश में निर्मित घरों में विविध प्रकार के कपड़े, तथा उत्तम वस्तुएँ संग्रहीत कीं। लगभग चौरासी मील

परिदळितद गणितद नानापरिय धान्य व्रजकॆ गुड श-
र्करॆगॆ संभारक्कॆ तॆरहाय्तॆंटरळतॆयलि
ऒरॆद वज्रद गारॆगळ हॊक्करणॆगळ सालुगळु योजन
वॆरडरलि घृततैलदुग्धादिगळि गॆडॆयाय्तु ॥ 6 ॥
तरुणकेळ् हन्नॆरडुयोजन तरद भोजन शालॆगळु वि-
स्तरिसिदवु बाणसद भवनंगळु सुवीथियलि
परिपरिय हूकायि मेलोगरद मधुराम्रादि लवणो-
त्कर कटुद्रव्यादिगळिगाय्तनितरॊत्ति नलि ॥ 7 ॥
परुटविसिदरु विविध द्रव्यद सरसिगळ संवेशदलि कॊ-
प्परिगॆ यंत्रद्रोणिगळ राटाळ सूत्रगळ
निरतिशय यज्ञोपकरणद परिपरिय संभारचय गो
चरिसिदुदु वरगुरु वसिष्ठ मुनींद्रनाज्ञॆयलि ॥ 8 ॥
बरसिदवु ब्ळिकोलॆ मणिहाऽरिगॆ हेळिकॆयाय्तु शिष्टर
परुटविसि कळुहिदनु पावुड सहित पार्थिवर
पुरगळिगॆ कैकॆय धराधीश्वरगॆ काशीपतिगॆ निमिकुल
दरसगा मगधंगॆ निरुपम रोमपादंगॆ ॥ 9 ॥

विशाल प्रदेश में निर्मित घर, भवन वग़ैरः घोड़े, हाथी, ओसर, कलोर आदि के लिए आरक्षित हुए। ५ छियानवे मील विस्तृत प्रदेश में तरह-तरह के द्विदल धान्य (अनाज) गुड़, शक्कर तथा अन्यान्य वस्तुओं के लिए व्यवस्था की गयी। दो योजन विस्तृत प्रदेश में हीरे के गच से बाँधे गये तालाब (हौद) घी, तेल, दूध आदि के लिए आरक्षित किये गये। ६ सुनो कुश, बारह योजन विस्तृत प्रदेश में रसोईघर तथा भोजनशालाएँ निर्मित करने के लिए गलियों का निर्माण हुआ। इन गलियों के पार्श्व में फूल, फल तथा भोजनावश्यक मीठी इमली, नमक और तीखी वस्तुओं के संग्रहालय बने। ७ विविध वस्तुओं के संग्रह के निमित्त हौदों के निर्माण के नंतर (सँजोये जाने के बाद) कड़ाहियाँ, यंत्रचालित नावें, रहँट के रस्से वग़ैरः अधिक मात्रा में संग्रहीत किये गये। गुरु वसिष्ठ की आज्ञा से यंत्रोपकरणों से संबंधित नाना विध संभारों को अत्यधिक मात्रा में संग्रहीत किया गया। ८ तदनंतर आमंत्रण-पत्रिकाएँ लिखायी गयीं। राजमहल के शासनाधिकारियों को बुलाया गया। विभिन्न राजाओं के यहाँ (राजधानियों को) भेंट-तोहफ़ों के साथ योग्य शासकों-अधिकारियों को —(सभी जगह) भेजा गया। कैकेयराजा, काशीराजा, निमिकुल के विदेह देश के राजा, मगधराजा, रोमपाद राजा —आदियों को निमंत्रणपत्र भेजे गये। ९ चतुःसमुद्रपर्यंत

उळिद चतुरंबुधि वृतावनि तळद भूपालरिगॆ दूतर
कळुहिदनु कैयोडनॆ गार्गेयात्रि मॊदलाद
इळॆयोळुळ्ळ समस्त मुनिसंकुळकॆ सद्विनियाभि नमितां-
जुळिय भयभक्तियलि भूपति विन्नवत्तळॆय ।। 10 ।।
बळिक नॆल शोधिसितु सवन स्थळकॆ सुमुहूर्तदलि वैदिक
विलसदलि विधि विहितदलि सरयुविन तीरदलि
निळयगळु निर्मिसिदवध्वर ललित शालावळिय सौधा-
वळिय सौरंभदलि शशिसूर्य प्रभान्वितद ।। 11 ।।
कॆळिदै कुश बळिक भोजनशालॆ पत्नीशालॆ यॆसॆव वि-
शाल मखशालादि नाना विविध शालॆगळ
सालु मॆरॆदवु सॊगसिदवु संस्थूलतर वेदिगळु विमल वि-
शाल विप्रसदस्सुगळु सभॆगळु धराधिपर ।। 12 ।।
चारुतर मखवॆरडरमळागार मंटप वळयदलि क-
र्पूर धूळिसितिक्केलद मालॆगळ मौक्तिकद
तोरणगळुप्परिसिदवु बिगारि बिगिदवु बहळकदळी
सारदुलि संभ्रमिसिदुवु सौधाळि नाल्दॆसॆय ।। 13 ।।
तळित पल्लव सत्तिगॆय हॊंगळसगळ हॊदरॆद्द झल्लरि
गळ विचित्रांबरद मुत्तिन मेलुकट्टुगळ

व्याप्त समस्त भूमंडल के अन्य राजाओं को समाचार देने सेवक भेजे गये। गार्गेय, अत्रि आदि भूलोक के समस्त ऋषि-मुनियों को विनयपूर्वक वन्दनाओं सहित प्रार्थना-पत्र भेजे गये। १० सरयू नदी के किनारे वैदिक रीति से शास्त्रों में बताये गये नियमों के अनुसार, शुभमुहूर्त में (यज्ञ के निमित्त) भूशोधन का समारोह शुरू हुआ। यज्ञशालाएँ, मंज़िलों वाले महल बड़े संभ्रम से निर्मित हुए तथा सूरज और चाँद की कांति से जगमगाने लगे। ११ कुश ! आगे की कहानी सुनो। तदनंतर भोजनशालाएँ, पत्नीशालाएँ, विशाल यज्ञवेदिकाएँ वग़ैरः विविध प्रकार के निलयों की कतारें शोभायमान हुईं। भारी भरकम यज्ञवेदियाँ, ब्राह्मणों के मंडल (सभाएँ) तथा राजाओं की सभाएँ सुशोभित हुईं। १२ दो यज्ञमंडपों के मनोहर प्रदेश में कपूर की धूल सिंचित थी। दोनों तरफ़ मोती की लड़ियाँ बन्दनवारें फैलायी गयी थीं। सोने के कलश बांधे गये। चारों ओर केले के पौधों से सजाए गये सौध बड़े ही वैभवसंपन्न थे। १३ सभी जगह कोंपलें, छाते, सोने के कलश साफ़ दिखायी देते थे। (जिनका मानो स्पष्ट प्रच्छन्न अस्तित्व था) फूलों के गुच्छे, रंग-बिरंगे कपड़े, मोतियों की झालरें, ओरियों

नॆलॆ नॆलॆय लोवॆंगळ मुक्ता फलद सडकिन सूसकद लं-
बळद लळिगळ लहरियलि रंजिसिदुदनवरत ॥ 14 ॥
सर्वॆद वीपरि सप्ततंतु प्रवरदधिकृत रचित नाना
भवन भूमीदेव भूभुज वैश्य शूद्ररिगॆ
विविध वर्णाश्रमरिगादवु भवन बहिरावरणदलि मख
सवन साधन वस्तुचय सॊगसिदवु निमिषदलि ॥ 15 ॥
कॆळिसितु बळिकखिळ पृथ्वीपाल पंक्तियनश्व मेधवि-
शाल सुतकामेष्टियध्वर वार्तॆ निमिषदलि
मेल मेलुब्बरद गमनद जाळियलि बरुतिर्दुदम्बुधि
मेलॆयंतर्विषयदवनीपाल संदोह ॥ 16 ॥
जनक काशीराज कैकय जनपनंगाधीश मगधा
वनियपति माद्रेश माळव मरुमहीपाल
विनुत गुज्जर गौळ बर्बर जनपदादि समस्त नृपरो-
ग्गिनलि बंदुदु भास्करान्वयनमळ पुरवरकॆ ॥ 17 ॥
लाळ चोळ वराळ यव बंगाळ बाह्लिक बोट वर पां-
चाल पुष्कर पारियात्र करूष कांबोज
गौळवांध्र कळिंग कुरु नेपाळ निषध विदर्भ धरणी
पालतति संदणिसिदुदु साकेतनगरियलि ॥ 18 ॥

से बाहर लटकती हुई ओलतियाँ, झूलते मोती के गुच्छे (झवे), लटकाये गये हार (फूल वग़ैरहों के) आदि अलंकारों से (ये सौध) बड़े ही चित्ताकर्षक थे। १४ इस प्रकार राजा, ब्राह्मण, वैश्य, शूद्रादियों के लिए यथायोग्य विविध प्रकार के भवन यज्ञप्रदेश में अधिकृत रीति से निर्मित हुए। विविध वर्णाश्रमियों के लिए बाहरी प्राकार में घर बनाये गये। यज्ञकार्य के लिए आवश्यक समस्त वस्तुएँ क्षणमात्र में संग्रहीत हुईं। १५ तदनंतर (राजा दशरथ से संकल्पित) अश्वमेध तथा पुत्रकामेष्टि यज्ञों की खबर सभी राजाओं तक क्षण मात्र में पहुँची। समुद्र ही जिन राज्यों की मर्यादा है, उन-उन राज्यों के राजाओं के समूह बड़ी धूम-धाम से यात्रा करते हुए झुंड के झुंड पहुँचने लगे। १६ जनकराज, काशीराज, कैकयराज, अंगराज्याधीश, मगध देश के राजा, माद्रेश, मरुभूपति, गुर्जर, गौळ, बर्बर देशों के राजाओं के समूह झुंड के झुंड, रविकुल-संजात राजा दशरथ की राजधानी में पधारने लगे। १७ लाळ, चोळ, वराल, यव, बंगाल, वाह्लिक, चोट, पांचाल, पुष्कर, पारियात्र, करुष, कांबोज, गौळ, आंध्र, कलिंग, कुरु, नेपाल, निषध, विदर्भ —वग़ैरः अनेकानेक देशों के राजा-महाराजा आकर

कुरुमहीतळदमळ भारत वरुषदनूपम रम्यकद हरि
वरुष विषयदिळावृतद किंपुरुष मंडलद
नरपतिगळैतंदुदेनच्चरियो दशरथ सार्व भौमक
नरसुतनद महा महिमेगिन कुलज केळेंद ॥ 19 ॥
नेरेदुदै बळिकत्रि कण्वांगिरस कश्यप कुशिकसुत सुर-
गुरु तनूभव गार्ग्य गौतम जह्नु जाबालि
हरित मार्कंडेय मैत्रावरुणि मुद्गल मुख्य मुनिसं-
तरुगळा सूर्यान्वयन साकेत नगरियलि ॥ 20 ॥
च्यवन दत्तात्रेय भृगुसंभव सुतीक्षण दीर्घतपगा
लव मतंग सुवत्स जैमिनि कंकनुपमन्यु
रवि पितामह मुनिमृकंडु प्रवर शौनक मुख्य मुनिपुं-
गवरु बंदरु वरतपोधनगणद गडणदलि ॥ 21 ॥
विविध विद्वज्जन सुमांत्रिक निवह गायक कथक नर्तक
कवि विदूषक वादि वाग्मि महेंद्रजालकरु-
नवविनोदि विदग्ध जटि वैष्णव कपालिक बौद्ध शैव
प्रवर दानार्थिगळु नेरेदुदु वाजिमेधदलि ॥ 22 ॥
जगद जनपदर्दार्थिगळु शिल्पिगळु सरस सरिसृपग्रा-
हिगळु वामन बधिर मूकाक्षमरु नोटकरु

साकेत नगरी में इकट्ठे होने लगे । १८ कुरुभूमि, भारतवर्ष, हरिवर्ष देशों, इलावृत किम्पुरुष मंडलों के राजा भी अयोध्या में आकर जमे । इनका पधारना भी अत्यंत ही आश्चर्यजनक है ! हे सूर्यकुलोत्पन्न ! सुनो । दशरथ चक्रवर्ती की महामहिमा ही ऐसी है ।" —इस तरह वाल्मीकि ने समझाया । १९ अत्रि, कण्व, आंगिरस, कश्यप, कौशिक, बृहस्पति के पुत्र भारद्वाज, गार्ग्य, गौतम, जह्नु, जाबाली, हरित, मार्कण्डेय, मैत्रावरुणी, मुद्गल —आदि पूज्य मुनिश्रेष्ठ रविवंशीय राजा की राजधानी साकेत नगरी में जमा हुए । २० च्यवन, दत्तात्रेय, भृगु का पुत्र च्यवन महर्षि, सुतीक्ष्ण, दीर्घतपस्वी गालव, मतंग, सुवत्स, जैमिनी, कंक, उपमन्यु, सूर्य के दादा मरीची, मृकंडु, शौनक आदि महर्षि महातपस्वियों के समूह के साथ पधारे । २१ कई विद्वानों के समूह, मंत्रवादियों के समूह, गायक, कथा-वाचक, नृत्यकलाविद, कवि, मसखरे, तर्कशास्त्री, वाग्मी, यक्षिणीविद्या-प्रवीण (जादूगर), विदूषक, पंडितवर मुनि, वैष्णव, कापालिक, बौद्ध, शैव —आदि कई पंथ वाले तथा दानापेक्षी अश्वमेध यज्ञ समारोह में सम्मिलित होने आ पहुँचे । २२ दुनिया भर के सभी देशों के याचक, शिल्पी, सँपेरे,

हॊगळिकॆय परिपरिय कैवारिगळु नॆरॆदुदु निम्मयोध्या
नगरदधिराजेंद्रचंद्रमनश्वमेधदलि ॥ 23 ॥
तरुणकेळै तुरग मेधाध्वरद मेलारैकॆ नडॆदुदु
परमऋषि जाबालिगवनीश्वरर मान्यतॆय
परुटवणॆ विजयंगॆ सेरितु धरणियमरर दक्षिणॆय वि-
स्तरणदॊडॆतन संदुदध्वरदलि सुमंत्रंगॆ ॥ 24 ॥
करॆ करॆदु भोजनकॆ भूमीसुरर निलिसि सुगंध माल्यां-
बर समर्पणॆ गादुदॊडॆतनवा जयंतंगॆ
नॆरॆद याचक जनर करॆदुपचरिसि मन्निसुवनितु दृष्टिय
परिवशकॆ संदुदु वसिष्ठ मुनींद्रनाज्ञॆयलि ॥ 25 ॥
बयसि बेडिद विविध वस्तुव्रयकॆ भारक नादना कै-
कॆय नृपालक सुतयुधाजितु यज्ञवाटदलि
नियत दधिघृतदुग्ध गुडसंचयकॆ संवारादि रस नि-
र्णयकॆ कट्टधिकार सिद्धार्थंगॆ नॆलॆयाय्तु ॥ 26 ॥
हॆसरॆनिप नाना दिगंतद वसुमतीशरनुचितवृत्तिय
लॊसगॆवडिसुव परुटवणॆ रोमांघ्रि भूवरन

बौने, बहरे, गूंगे, कमज़ोर, दर्शक, तरह-तरह के चारण-भाट तुम्हारी अयोध्या नगरी के राजेन्द्र के अश्वमेध यज्ञ के लिए आकर इकट्ठे हुए। २३ युवक ! सुन। अश्वमेध यज्ञ की देख-रेख और सेवातिथ्य का कार्य महर्षि जाबाली को सौंपा गया। राजाओं को उन-उनकी योग्यता-स्तर के अनुसार देखभाल करने का कार्य विजय को दिया गया। यज्ञ की दान-दक्षिणा-वितरण का कार्य तथा याजमान्यत्व सुमंत्र को मिला। २४ ब्राह्मणों को बुला-बुलाकर, भोजन में बिठाकर उन्हें गंध, पुष्प, वस्त्र आदि समर्पित करने का कार्य जयंत के ज़िम्मे रहा। इकट्ठे हुए भिक्षुक वृन्द को निमंत्रित कर उनकी सेवा-टहल करके उन्हें मनवा लेने की देख-रेख का कार्य महर्षि वसिष्ठ की आज्ञा से दृष्टि नामक व्यक्ति को सौंपा गया। २५ चाहकर माँगी जानेवाली वस्तुओं के वितरण की जिम्मेदारी कैकेय राजा के पुत्र युधाजित पर थी। यज्ञशाला में निश्चित मात्रा में दही, दूध, घी तथा गुड़ संग्रहीत करने की, और शहद-जैसी रसीली वस्तुओं तथा जिंसों के संपादन सम्बन्धी निर्णय लेने का पूर्ण अधिकार सिद्धार्थ को दिया गया। २६ दस दिशाओं के देशों से आये प्रसिद्ध राजाओं का उनकी योग्यता के अनुसार आदरातिथ्य से प्रसन्न करने की व्यवस्था की ज़िम्मेदारी राजा रोमपाद के पल्ले पड़ी। समस्त सेनाओं तथा विविध प्रकार के प्रजाजनों को मान्यता देकर गौरव

वशर्के संदुदु सकलसेना विसर विविध प्रजेंगळनु म-
न्निसुव कट्टधिकार वायितु मगधभूपतिगें ॥ 27 ॥
आदुदुळिदुपमंत्रिगळिगुळिदाद सेवेय परुटवर्णे मे-
लादुदधिवासर नृपालंगागमोक्तदलि
आदिनारायणन श्रुतिसंपाद पारायणन सुजना-
ह्लाद सुखपूरणननोलिदर्चिसिदना भूप ॥ 28 ॥
तरुण केळ् मरुदिनदलमृतोत्कर शुभोदय लग्नदलि वि-
प्रर महामंत्राभिपूरित विविध विभवदलि
अरसयरु सहितुलिव मंगळ तरद तूर्यत्रयदलि भकं-
धरदलैतंदिळिदु होक्कनु यज्ञमंटपव ॥ 29 ॥
करेसिदनु बळिकखिळ पृथ्वीश्वररननुपम तुरग मेधा
ध्वरद शालावरण सौधावळिय वळयदलि
हरुषदलि कुळि्ळर्दे रुरुविष्टरगळलि मणिबंधुरद वि-
स्तरद तत्कालोचितद विनियोगि जनसहित ॥ 30 ॥
संदणिसिदुदु सकल मुनिजन वृंदवा क्रतुकर्मशास्त्रद
छंदसागम परिणतरु परिचारकव्रात
बंदुदाक्षण सवन साधन दिंदला क्रतुशाले सोगसा-
य्तंदिनंबुजगर्भनारंभिसिद मखदंते ॥ 31 ॥

प्रदान करने का कार्य मगध के राजा का था। २७ अब रहे सहे उपमंत्रियों को बची हुई (बाँटने पर) सारी सेवाओं की ज़िम्मेदारी सौंपी गयी। तदुपरांत राजा दशरथ ने यज्ञ शुरू करने के पहले देवता-स्थापन कार्य संपन्न करते हुए वेदार्थ-परिपूर्ण सज्जनानंदकारी भगवान आदिनारायण की पूजा अत्यंत प्रीत्यादर से की। २८ हे युवक! सुन। दूसरे दिन सूर्योदय के समय मंगलकारी अमृतलग्न में ब्राह्मणों के वेदघोष मंत्रोच्चारण के साथ-साथ, मंगल वाद्यों के बीच अपनी रानियों के साथ हाथी पर विराजमान होकर आते हुए यज्ञशाला के नजदीक उतरते हुए यज्ञमंडप में प्रवेश किया। २९ तदनंतर राजा दशरथ ने सभी राजाओं को बुला लिया। अश्वमेध यज्ञशाला के अहाते के सौधों के आँगन में सभी राजा उपस्थित हुए। समयोचित रीति से शासकवर्ग के साथ रत्नजटित सिंहासनों में प्रसन्नता से आसीन हुए। ३० यज्ञकर्म के विधान तथा वेदमंत्रोच्चारण में परिणत तथा विज्ञ सुधी ऋषिवृन्द आकर इकट्ठे हुए। इसी समय सेवकों का समूह यज्ञ के लिए आवश्यक समस्त साधन-सामग्री के साथ उपस्थित हुआ। प्राचीनकाल में जैसे कमलनाभ

केळिदै रघुवंशलक्ष्मी लोलसुत बळिका महाध्वर
शालॆयलि वरवामदेव वसिष्ठरुचितदलि
बाल शशिधर सन्निभन मुनिजाल चंद्रप्रभन शांता
बालकिय वल्लभन मन्निसिदरु नयोक्तियलि ॥ 32 ॥
अॆसॆदुदध्वर वॆरडरभिमुख वसतियभिवळयदलि संपा-
दिसिद सकल द्रव्यवा मुनिवरननुज्ञॆयलि
मिसुप कांचन पात्रॆगळ परिविसर दमळ सुवर्णकुंभ
प्रसरदलि तद्विधि विहित यज्ञोपकरणदलि ॥ 33 ॥
वरकुशस्थंडिल वलूखलचरु पुरोडाशाज्य दर्भा-
कुर सुवर्णद्रोण स्रुक्-स्रुव वरतिल व्रीहि
बरुहियिध्म समित्प्रणीता वरणि घृतपात्रादि मख परि-
करव मेळैसिदरु तत्क्रतुकुंड वळयदलि ॥ 34 ॥
सुळिदु बंदुदु वाजि भूमंडलव ननुपम वैदिकोक्तद
विलसदलि नृपपत्नि जागरदलि महाहयद
बळियलिद्दळु लक्ष्मि लक्ष्मी निळय नमळ ध्यानदलि वर-
विलसिताध्वरयूपतति रंजिसिदविदिरिनलि ॥ 35 ॥

नारायण से प्रारंभित यज्ञ की तरह वह यज्ञशाला शोभायमान हुई। ३१ रघुवंशी लक्ष्मीपति के पुत्र! सुनो। उस महान यज्ञशाला में बालचन्द्रमा-सदृश महर्षि-समूह के लिए चाँदनी-सदृश शांतादेवी के पति (परमपूज्य) ऋष्यश्रृंग महर्षि को वामदेव, वसिष्ठ आदियों ने अत्यंत विनम्र वचनों से गौरव प्रदान किया। ३२ गुरु वसिष्ठ के आज्ञानुसार मँगवाये गये समस्त यज्ञद्रव्यों को आमने-सामने की दोनों यज्ञशालाओ मे चमकते हुए सोने के पात्रों में, बड़े-बड़े सोने के घड़ों में शास्त्रोक्त यज्ञोपकरणों में जो सजाया गया था —वे (यज्ञद्रव्य) चमक रहे थे। ३३ पवित्र दर्भ (कुश), चावल, ओखली, बलि का अन्न, पुरोडाश, घी, दूर्वा (एक प्रकार की हरी घास), सोने का घड़ा, स्रुक्-स्रुव (यज्ञ में आहुतियाँ चढ़ाने के साधन), तिल, धान, बर्हि (अग्नि), इध्म, समिधाएँ, यज्ञाग्नि को पैदा करने में प्रयुक्त दो लकड़ी के लट्ठ, (रगड़कर) घी का पात्र —वग़ैरः यज्ञोपयोगी वस्तुओं को यज्ञकुंड के चारों तरफ़ सजाकर रखा गया। ३४ अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा वेदोक्त रीति से सारे भूमंडल की परिक्रमा कर आया। लक्ष्मी-सरीखी रानी अश्वमेध यज्ञ के घोड़े के नज़दीक (बैठी) श्रीमन्नारायण के पवित्र ध्यान में लीन होकर जाग रही थी। यज्ञपशुओं को बाँधने के निमित्त बनाये गये यूपस्तंभ सामने चमक रहे थे। ३५ यूपस्तंभ से बँधे प्रधान पशु घोड़े के सहित

यूपबंध तुरंग पशु मुख्योपपन्न समस्तपशु शम-
नोपराग पवित्रहुत परमान्न पृषदाज्य
सोपवीतामिक्षें जुहु समिधोपचर्याग्निप्रणीत
स्थापित प्राग्वंशदध्वरशालें चेल्वाय्तु ॥ 36 ॥
बळिक मार्कंडेय कश्यप कलशभव च्यवनांगिरस मुनि
तिलक कौशिक याज्ञवल्क्य प्रमुख मुनिजनर
निलिसिदनु ऋत्विक प्रपूत स्थळद विमलोद्गातृगळ स-
म्मिळित ललित स्थानक दलजसूनु हरुषदलि ॥ 37 ॥
करेंदु मुनि सारंग श्रृंगन निरविसिदना पुत्रकाम्या-
ध्वरद ब्रह्मत्वक्कें तुरगाध्वरकें तानाद
परमयज्ञ विधान विहितोत्कर श्रुति स्मृति संप्रसारणें
गिरिसिदनु पुस्तकवनित्तु मुनीन्द्र निजसुतन ॥ 38 ॥
राजरुषि जनकननु काशीराजननु केकयनृपालर
याजमान्यद मान्यतेंयला यज्ञशालेंयलि
आ जनेश्वर निलिसि मुददलि पूजिसिदनवरुगळ बळिक स-
रोजभव भवनंघ्रियलि चाचिदनु मस्तकव ॥ 39 ॥

बलि के लिए तैनात यज्ञपशुओं (अन्य) का वेदनापूर्ण ढंग से चीखना, वेदी के सम्मुख परिशुद्ध रीति से पकाए खीर-घी-दही-मिश्रित पृषदाज्य वग़ैर: होम करने में प्रयुक्त साधन पात्र, यज्ञसूत्रसमवेत-अमीक्षा, होम में वितरित हवि को स्वीकारते अग्नि से, यज्ञशाला की वेदी का सामने का विभाग अत्यंत मनोहर था। ३६ तदनंतर, राजा दशरथ ने मार्कण्डेय, कश्यप, अगस्त्य, च्यवन, अंगिरस, ऋषिवरेण्य कौशिक, याज्ञवल्क्य आदि प्रमुख ऋषियों को, यज्ञनिर्वाहक ऋत्विकों को, सामवेदगायक उद्गातृओं को यथास्थान (सम्मान के साथ) अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक बिठा दिया। ३७ इस पुत्रकामेष्टि यज्ञ के अवसर पर वसिष्ठजी ने ब्रह्माजी के आसन पर ऋष्यश्रृंग मुनि को आदर के साथ बिठाया। अश्वमेध यज्ञ के ब्रह्मत्व की ज़िम्मेदारी स्वयं उठा ली। यज्ञविधान, वेदशास्त्रोक्त विधि-विधान समझाने के उद्देश्य से मुनीन्द्र (वसिष्ठ) ने अपने पुत्र को पोथी देकर बिठा लिया। ३८ कैकेय राजा के नेतृत्व में राजर्षि महाराज जनक तथा काशीराजा को यज्ञशाला में बिठाकर राजा दशरथ ने बड़ी प्रसन्नता से उनकी पूजा की। तदनंतर वसिष्ठ के चरणों में अपना माथा रख प्रणाम किया। ३९ करुणा की वर्षा करते हुए, मृदुमधुर वचनों से आशीर्वाद देते हुए दशरथ के सिर को ऊपर उठाते हुए मुनि ने (हृत्पूर्वक) कहा—

मुनि सुपुत्रावाप्तिरस्त्वेंदेनुत नेंगहिद नौसर्व करुणद
नन्नेवळय नयसार वचनदलरसनाननव
जनप दीक्षित नादना मुनि विनुतवचनदला हविर्भो-
जनद बर्हिर्मुखरु नेरेदुदु नीरदाध्वदलि ॥ 40 ॥
द्युमणि कुल केळ् चैत्रसितपंचमियलुत्तरपूर्ववेदिय
विमल पुण्याहद महावाचनेय विस्तरिसि
अमलतर श्रुतिघोषदलि भूरमणना ऋतुयाजमाना
क्रमव कैकोंडिसेंदना मुनिवरर मध्यदलि ॥ 41 ॥
होदेद हरिणाजिनद नवनीतद विलेपद ऋष्यश्रृंगन
विदित कळकळदमळसूक्तद संविधानदलि
उदित मंगळ तूर्यरवदभ्युदयदलि वेदोक्त विधिमा-
र्गदलि माडिदरमलमख पुरुष प्रतिष्ठकव ॥ 42 ॥
विरचितागमदिंद दर्भांकुर परिस्तरणादि गंधो-
त्कर सुपुष्पताक्षतेगळिदर्चिसिदरा शिखिय
बरुहियिध्म स्रुवगळि सत्करिसि विधिपूर्वकदि मखबं-
धुरतरेंधन दिंद पट्गोळिसिदरु हुतवहन ॥ 43 ॥
सुत्तलाहवनीय गारुहपत्य दक्षिण वह्निगळ मुनि
पोत्तमरु बळसिदरु तत्क्रतु परिकरांगळलि
अंत्तिदरु हयमेध मख मूलोत्तरद मंत्रगळनु निग-
मोत्तरद तत्पूर्व मीमांसा परिश्रुतद ॥ 44 ॥

'सत्पुत्र की प्राप्ति हो'। उस मुनि की आज्ञा से दशरथ ने यज्ञ-दीक्षा स्वीकार की। हवि को प्राप्त करने के लिए देवता आकाश में जुटे। ४० रविवंशज ! सुन। चैत्र सुदी पंचमी के दिन ईशान्य दिशा की वेदिका को शुद्ध पुण्याह-वाचन विधि समाप्त करके वेदघोषों के मध्य राजा दशरथ यज्ञ का यजमान स्थान स्वीकारते हुए महर्षि श्रेष्ठों के मध्य विराजमान हुए। ४१ हिरन का चमड़ा ओढ़े मक्खन से विलेपित ऋष्यश्रृंग महर्षि के वेदमंत्र-उद्घोष के मध्य तथा मंगल वाद्यों के निनाद के साथ वेदोक्त रीति से यज्ञदेवता (यज्ञपुरुष) की प्रतिष्ठापना (बड़ी धूम-धाम के साथ) की गयी। ४२ शास्त्रोक्त रीति से कुशांकुरों को फैलाकर फूल, गंध तथा अक्षतों से अग्निदेवता की पूजा की गयी। बर्हि, इध्म, स्रुव आदियों से अग्निदेवता का स्वागत-समारोह यथोचित रीति से करते हुए उसमें यज्ञ योग्य लकड़ियाँ डालकर (अग्नि को) प्रज्वलित किया गया। ४३ आह्वनीय, गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि आदि अग्नियों के चारों ओर मुनिवृन्द यज्ञ

इदुवे सिद्ध विदल्ल निश्चयविदु श्रुतिस्मृतिगळलि बिडि सा-
किदुवे सामान्यप्रयोगविदीग शास्त्रदलि
विदित वाक्य परिग्रहण वितिदऱ मेलिल्लेंब मुनित-
कंद घडावणे घाडिसिदुदा यज्ञ मंटपव ॥ 45 ॥
बळिक नडेदुदु मंत्र मंत्रावळिगळलि तत्सामगानद
कळकळद निगमत्रयंगळ निश्चयंगळलि
विलसदुद्गात्रगळ मंत्राकलित होत्रध्वरिय ऋत्विज
रुलुहु तलॆदूगिसितु नभद हविर्भुजावळिय ॥ 46 ॥
क्रतुमुख स्वाहायमाना हुतिय वौषट्कृतिय सर्वा
हुतिय सौरंभातिशय दणिसिदुदु सुरततिय
शतमखादि समस्तदेवप्रतति तेगितु तृप्तियलि भू-
पतिय राजित वाजिमेधदलणुग केळेंद ॥ 47 ॥
बीळुवाहुतिगळनु सविदुरि नालगॆगळुब्बेद्दु कुणिदवु
मेलु हविगव्वळिसि हरहिनलग्नि कुंडदलि
हेळलेनदनश्वमेधद बेळुवेय संभ्रमद धाळा-
धूळियलि तिविदाडिदवु जिह्वेगळु हुतवहन ॥ 48 ॥

सामग्री-सहित बैठ गया। अश्वमेध यज्ञ के मूल मंत्रों का पठन वेदान्त तथा पूर्वमीमांसा में उल्लेखित रीति से किया गया। ४४ 'यह शास्त्रानुसार है', 'यह नहीं है', 'श्रुति-स्मृति से यह निश्चित रीति से अनुमोदित है', बस करो। 'इस वाक्य का अर्थ इस रीति से समझ लेना चाहिए', 'इसके बाद और कुछ भी शेष नहीं रहा', इसे यों समझो —आदि ऋषि-मुनियों के तर्क-वितर्कों के शोरगुल से सारा यज्ञमंडप गूँज उठा। ४५ तदनन्तर मंत्र-पठन प्रारम्भ हुआ। उस मंत्र-पठन के साथ सामवेद के मंत्रों का मधुर गान सम्मिलित हुआ। ऋक्, यजु तथा सामवेदों में निरूपित विधि-विधानों से यज्ञ का प्रारम्भ हुआ। सामवेद-गायक उद्गातृ, यजुर्वेदमंत्र-पाठक अध्वर्यु, तथा ऋग्वेद-वाचक होतृ —इनके मंत्रोच्चारण उद्घोषों से आकाश में उपस्थित देवता प्रसन्न हो सिर हिलाने लगे। ४६ यज्ञमुखेन अग्निदेवता को 'स्वाहा', 'वषट्' मंत्रों द्वारा अत्यधिक संख्या में समर्पित आहुतियों से देवता तृप्त हुए। दशरथ के इस अश्वमेध यज्ञ में इन्द्रादि समस्त देवता-समूह होम द्वारा (यज्ञाहुतियों द्वारा) प्राप्त उपभोग से अत्यंत तृप्त हुए। ४७ अग्निकुंड में गिरती आहुतियों का उपभोग कर और अत्यंत उत्साहित होकर अग्निज्वालाएँ अधिकाधिक प्रज्वलित होकर, ऊपर-ऊपर उठती मानों नाचने लगीं तथा हवि के लिए लालायित होने लगीं। अश्वमेध

सिळिसिळिध्वनि मसगॆ तिल हॆक्कळिसिदवु झुम्मॆंदु समिधा-
वळिगळाब्बरिसिदवु छट छट छट निनाददलि
लुळित घृतसंमिश्र चरु पट्टु गॊळिसिदुदु पशुहविगॆ भुगिलॆं-
दुलिदु नलिदाडिदनु हुतवहनश्वमेधदलि ॥ 49 ॥
तळितुदो परिमळित धूमावळि वियद्भागदलि सुरसभॆ
गळलि सरसिज संभवन पट्टणदला ध्रुवन
निळयदलि लंबिसितु सुधॆयलि होळकॆगट्टितु सुरकुजद हं-
बलनु बिडिसितु सुरपशुवनेळिसितु नाकदलि ॥ 50 ॥
कुशनॆ केळै तणिदुदमर प्रसरवल्लि समस्त भूसुर
विसरविल्लि सुभोजनदलि समस्त दानदलि
कुशननुज केळ् सकलजन हरुषिसितु हयमेधदलि नडॆदुदु
वसुधॆगच्चरियेनलु मख दशरथ महीपतिय ॥ 51 ॥
श्रुतिय पूर्वोत्तर रहस्य स्मृति सुमार्गद तर्कशास्त्रद
वितत विमलध्वान जडिदुदु मुनिसदस्सिनलि

यज्ञ के समय की उस धूमधाम का क्या वर्णन करें ? और कितना करें ? अग्नि की जिह्वाएँ मानों 'मैं-मैं, तू-तू' करते एक-दूसरे से होड़ करते उछल-कूद करने लगीं। ४८ तिल यज्ञाग्नि में गिरते ही चट-चटाहट के साथ छिटकने लगे। समिधाएँ छट-छट शब्द के साथ छटकने लगीं और ज़ोरशोर से जलने लगीं। घी-सम्मिश्रित चरु के चढ़ाने पर ज्वाला अत्यंत भयानक हुई। अश्वमेध यज्ञ में बलि पशु की आहुति देने पर यज्ञेश्वर धधकते हुए (मानों थिरक-थिरककर) नाचने लगे। ४९ सुगंध-भरा यज्ञ का धुआँ आकाश भर में व्याप गया। वहाँ वह देवेन्द्र की सभा, ब्रह्माजी की नगरी, ध्रुव का घर —इस तरह सर्वत्र पसरने लगा। यज्ञ का धुआँ स्वर्ग में मानों अमृतमयी कांति फैलाने लगा। वहाँ के निवासी (इस धुएँ के कारण) कल्पवृक्ष को भूल गये। वह कामधेनु की भी विडंबना करने लगा (लज्जित करने लगा)। ५० सुनो कुश; दशरथ के अश्वमेध यज्ञ से तो उधर देवता प्रसन्न हुए। इधर भूलोक के समस्त ब्राह्मण पेट भर भोजन तथा हाथ भर द्रव्य-दक्षिणा-दान से तृप्त हुए। कुश के भाई ! सुन। सभी लोग (इस यज्ञ से) प्रसन्न हुए। दशरथ महाराजा का यह महायज्ञ मानों सारी दुनिया के लिए आश्चर्यजनक रीति से संपन्न हुआ। ५१ वेदवचनों की गूढ़ार्थों की चर्चा, याज्ञवल्क्य मनु महाराज वग़ैरहों की धर्मशास्त्र सम्बन्धी चर्चा, तर्कशास्त्र सम्बन्धी विवादों का शोरगुल ऋषियों की गोष्ठियों में सुनायी पड़ा। राजाओं की सभा में काव्यालाप, विनोदपूर्ण

कृति सुवाक्य विनोदपदपद्धति सुनर्तन वाद्यगीता
मृतलहरि लळिमसगिताचेयलरसुहंतियलि ॥ 52 ॥
आदुदीपरि सकल सौरंभादि वैभवदिंदला सुकृ-
तोदयन हय सप्ततंतु निरंतरायदलि
आदुदा काम्याध्वरवु बळिका दयांबुधि मुनिविभांडुत-
नूदयन मंत्राभिपूरित विहित सांगदलि ॥ 53 ॥
क्षिति सुतासुत केळु पूर्णाहुतिय समनंतरदला वि-
श्रुत सुतेजोमूर्ति हॊळॆदुदु यज्ञकुंडदलि
शतमुख प्रमुखादि देव प्रततिगळ बिन्नहद लक्ष्मी
पतियवॊलु मैदोरिताहवनीय मध्यदलि ॥ 54 ॥
मिसुप कांचन पात्रयलि पूरिसिद परमान्नवनु बॊम्मद
रसद परिपूर्णवनु सत्वरजस्तमोगुणद
ऎसकदभिगत पूर्णवनु सुमनसरु जय जययॆनलु करयुग
बिसुरुहदिनॊलिदित्तुदा निजमूर्ति दशरथगॆ ॥ 55 ॥
मॊरॆदवमरर भेरि सुमनस तरुणियर कैयिद कुसुमो-
त्कर कदंबक सूसिदवु शिरदलि महीपतिय
सुरमुनिगळाघोषिसिदरुप्परद गुडि नॆगहिदवु नगरां-
तरदलेनु कृतार्थनो दशरथ महीपाल ॥ 56 ॥
अडगिता वरमूर्ति कुंडद नडुवॆ बळिक महीष रोमद
गुडिय पुत्रफलोदयद परितोषदुब्बिनलि

बातें, नृत्य, बाजे, संगीत सुधा के उत्साह की मानों नदी प्रवाहित होने लगी। ५२ इस रीति से पुण्यवान् राजा दशरथ का अश्वमेध यज्ञ बड़ी धूमधाम के साथ निर्विघ्नता से संपन्न हुआ। तत्पश्चात् दयासागर विभांडकपुत्र ऋष्यश्रृंग मुनि ने मंत्रपूर्वक पुत्रकामेष्टि यज्ञ को सुसंपन्न बना दिया। ५३ सीता-पुत्र ! सुन। पूर्णाहुति देने पर यज्ञकुंड से एक तेजोमूर्ति प्रकट हुई। इन्द्रादि मुख्य देवताओं से पूजित लक्ष्मीपति जैसी यह मूर्ति आवाहनीय अग्नि के मध्य प्रत्यक्ष हुई। ५४ चमकते स्वर्णपात्र में भरे, परब्रह्मानंद रस-सदृश, सत्त्व-रज-तमोगुणपरिपूर्ण (उस स्वर्णपात्र में भरी) खीर को देवताओं के जय-जयकार के साथ उस महा महिमामय (तेजो) मूर्ति ने दशरथ को प्रदान किया। ५५ देवताओं के नगाड़े बजने लगे। स्वर्गलोक की सुन्दरियों ने दशरथ पर पुष्पवर्षा की। देव-ऋषियों ने जयघोष किया। राजधानी में उत्तुंग ध्वज फहरने लगे। अहा ! राजा दशरथ कितने (बड़े) धन्य भाग है ! । ५६ वह तेजोमूर्ति

मडदियरु मूवरिगॆ मनुकुल मृड वसिष्ठन नेमदलि वि-
गडिसि कॊट्टनु नृपति परमोदनवनुचितदलि ॥ 57 ॥
तरुण केळै भाग वॆरडरलॆरडु भागंगळु सुमित्रा
तरुणि गादवु सेरिदवु पूर्णांश भागॆगळु
हिरियरसि किरियरसियवरिब्बरिगॆ मूवरिगिन्तु नाल्कर
परिगणित परमान्न संघटिसिदुदु भार्गॆयलि ॥ 58 ॥
नॆनहु निर्विघ्नदलि नडॆदुदु मुनिवसिष्ठन करुणदलि वळि-
कनुपमाध्वरदवभृत स्नानावसानदलि
मुनिगळिगॆ विप्ररिगॆ विद्वज्जनकॆ विविधाचार्य याचक
जनकॆ वेडिद धनवनित्तनु दणियॆ धरणीश ॥ 59 ॥
तणिदुदखिळ सुवर्ण मणिभूषण सुकन्या धेनु हय वा-
रण वराम्बर विविध वस्तुव्रजद दानदलि
तणियदादुदु चित्तवादिन मणिकुलेंद्रंगमम धनवित
रणदशक्तियदॆन्तॊ सीतासूनु केळॆंद ॥ 60 ॥
अरस नखिळ दिगंतदवनीश्वररनवरवरुचित मान्यद
परिविडियलुडुगॊरेगळलि विनयोपचारदलि

अग्निकुंड से अदृश्य हुई। तदनंतर राजा दशरथ संतान-प्राप्ति की हर्षाधिकता से पुलकित हुए। ऋषिवृन्द के लिए शिवस्वरूपी वसिष्ठजी की आज्ञा से (उस यज्ञ की मूर्ति से प्रदत्त) उस खीर को राजा दशरथ ने अपनी तीनों रानियों में बाँट दिया। ५७ सुनो युवक ! उस खीर के दो हिस्से कर दिये। उन दो हिस्सों में से प्रत्येक का एक हिस्सा लेकर कुल दो हिस्से रानी सुमित्रा को दिए। फिर बचे दो पूर्णांश हिस्सों में से एक हिस्सा बड़ी रानी को और दूसरा छोटी रानी को —इस तरह दोनों को दिए। इस प्रकार वह खीर चार हिस्सों में तीनों रानियों में बाँटी गयी। ५८ महर्षि वसिष्ठ की कृपा से, संकल्पित यज्ञ बिना किसी विघ्न-बाधा के (सांग) सफल हुआ। इस यज्ञ के उपरांत अवभृत (याग समाप्ति पर किया जानेवाला) स्नान के बाद राजा ने ऋषियों, ब्राह्मणों, विद्वानों, अन्य आचार्यो, याचकों —आदियों को मुँह माँगा इतना दान दिया कि ये सभी तृप्त हों। ५९ "सोने, हीरे, जवाहरातों के गहने, दुधारू गाएँ, हाथी, घोड़े, दिव्यास्त्र —वग़ैरः विविध प्रकारो की वस्तुओं के दानों से सभी तृप्त हुए। फिर भी उस सूर्यवंश के राजा को (इतना दान करने पर भी) तृप्ति नहीं हुई। ओह ! दशरथ राजा की दान-शक्ति कितनी अद्भुत है ! सुनो सीता-पुत्र —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ६० दिशि-दिशाओं

हिरिदु मन्निसि कळुहिदनु सत्करिसिदनु पुरजनव समनं-
तरद लोकुळियाय्तु दशरथ सार्वभौमंगॆ ॥ 61 ॥
बळिक कन्नडि कळस नृत्यद ललनॆयर मांगल्यवाद्यद
ललितघोषद लाजदधिदूर्वाक्षतादिगळ
विलसदभिनवरवद कंचुकिगळ घडावणॆगळलि राजा-
वळि शिरोमणि हॊक्कननुपम राजमंदिरव ॥ 62 ॥

ऎंटनॆय संधि

सूचनॆ— राजराजाधीशननुपम राजपरमेश्वर मनुक्षिति राज दशरथ राय पडॆदनु सुतचतुष्टयव ।

पिंड बलिदवु बळिक मूवरु हॆंडरिगॆ कुश केळ् निधानव
कंड कडुदारि द्रनुत्सव दंतॆ कोसलद
मंडलेश्वर निरलु बळिकलखंड चिन्मय नादिलक्ष्मिय
गंड नॆसॆदनु केळु लव कौसलॆय गर्भदलि ॥ 1 ॥

से आये हुए राजाओं को उन-उनकी योग्यता, स्तर देखते हुए यथोचित रीति से भेंट-तोहफ़े देकर अत्यंत विनम्रता से उनकी परिचर्या कर गौरव प्रदान करते उनको भिजवा दिया। इसी प्रकार पुरवासियों का भी गौरव किया। फिर मंगल-जल की क्रीडा राजा ने की। ६१ इसके बाद आरसा कलशधारी स्त्रियाँ नाचते-नाचते आगे बढ़ रही थीं। मंगलवाद्य (गाजे-बाजे) का घोष हो रहा था। खील (भुने धान की) दही, दूर्वा, अक्षत स्वीकार करते हुए राजश्रेष्ठ दशरथ चारण-भाटों की स्तुति-प्रशस्ति गान के शोरगुल के बीच यज्ञशाला से निकलकर (अपने) राजमहल में प्रवेश करते हैं। ६२

अष्टम संधि

सूचना— राजराजाधीश्वर, राजपरमेश्वर, मनुवंशीय राजा दशरथ के चार पुत्र पैदा हुए।

रे कुश! सुन। दशरथ की तीनों रानियों के गर्भ बढ़ने लगे। निधि (संपत्ति) प्राप्त करनेवाले अत्यंत दरिद्र की तरह, कोसलाधिपति (राजा दशरथ रानियों के गर्भवती होने के समाचार से) अत्यंत हर्षित,हुए सुनो लव। अखंड चिन्मयस्वरूपी भगवान लक्ष्मीपति कौसल्या के गर्भ में बढ़ने लगे। १

तोऱ्ऱिदवु गर्भंगळु शुक्तिय तोऱ्ऱिकॆय मौक्तिकदवोलु मै-
दोऱ्ऱिदवु चिह्नंगळंगदलंगनात्रयद
हेऱ्ऱिदवु हरुषवनु तनु नगॆदोऱ्ऱिदवु मुखकमल कांतिय
बीऱ्ऱिदवु भुजलतॆगळभिनव गर्भदेळ्गॆयलि ॥ 2 ॥
नडुपोदळ्दवु वरवळित्रय वडगिदवु निजरोमराजिग
ळडऱ्ऱिदवु मैदोऱ्ऱिदवु हृत्तिमिर तवकदलि
पॊडर्व पीन पयोधरद तुदि गडॆयलक्कुडिसिदवु गति बॆ-
ळ्पडसिदवु मुखमडलगळा मानिनीत्रयद ॥ 3 ॥
तुंबिदवु नवमास बळिक नितंबिनियरिगॆ निर्मल प्रति-
बिंब काणिसितादि नारायणन मूरुतिय
अंबुजाननॆ कौसलॆय गर्भांबु निधियलि निखिळ दिविज क-
दंब बंदोलैसुतिर्दुदु दिवस दिवसदलि ॥ 4 ॥
कंतुसन्निभ केळु मूवरु कांतॆयरिगादवु कणा सी-
मंत सौरंभातिशय दुब्बरद विभवदलि
अंतरहितननप्रमेयननंत गुणगण निळय लक्ष्मी-
कांतना नृपगोलिदुदकॆ बॆरगादनबुजभव ॥ 5 ॥

सीप में मोती की तरह रानियाँ गर्भवती हुईं। तीन रानियों की देहों से गर्भधारण की सूचनाएँ मिलने लगीं। रानियों के ये अभिनव गर्भ की वृद्धि होती गयी तथा उनकी देहों से हर्ष प्रकट होने लगा। मुखड़ों पर प्रसन्नता झलकने लगी। उनकी कोमल भुजाएँ कांतिमान हुईं। २ तीनों रानियों के कटि-प्रदेश भरने लगे। पेटों पर की त्रिवलियाँ (त्रिवली पर की रेखाएँ) अदृश्य होने लगीं। पेटों पर की रोमराशी की पंक्तियाँ स्पष्ट होने लगीं। उठते-गिरते स्तनों की कोरों पर मानों हृदय में भरा अंधकार उतावलेपन के साथ बाहर आकर (उन स्तनों की कोरों पर) जम गया। (अर्थात् स्तनों की कोरें काली किट्ट पड़ीं।) रानियों की चाल धीमी बनी। मुखमंडल सफ़ेद पड़ने लगे। ३ (रानियों के) नौ महीने पूरे हुए। भगवान आदिनारायण मूर्ति का निर्मल प्रतिबिंब कौशल्या के गर्भ में दृष्टिगोचर होने लगा। सकल देवता प्रतिदिन आ-आकर (कौशल्या के गर्भ में बढ़ते) भगवान नारायण को प्रसन्न कर लेने लगे। ४ हे मन्मथ-सरीखे कुश ! सुनो। दशरथ से तीनों रानियाँ का बड़े उत्साह के साथ तथा धूमधाम से सीमंत-संस्कार संपन्न बनाया गया। 'सीमातीत, आद्यत-रहित सकल गुणों के निवासस्थान लक्ष्मीपति (भगवान विष्णु) जो दशरथ पर प्रसन्न हुए हैं' —यह देख ब्रह्माजी को भारी अचरज हुआ। ५ रवि जब

तरणियेकादशद दानव गुरु निरीक्षे यलिंदुविन शुभ-
करद दृष्टिय लांगिरस सौम्यर सुकेंद्रदलि
परम चैत्रद शुद्धनवमिय वर पुनर्वसु तारॆयलि हिरि-
यरसि बॆसलादळु भवस्थिति लय विवर्जितन ॥ 6 ॥
मरुदिवस पुष्यदलि कैका तरुणि पडॆदळु विमल विश्वं-
भरन शक्ति त्रय दॊळॊंदनु शुभ मूहूर्तदलि
तरुण केळुळिदंश वॆरडनुनिरतिशय लग्नदलि मगधे-
श्वरन सुतॆ पडॆदळु मघा नक्षत्र दुदयदलि ॥ 7 ॥
भोरनब्बरिसिदवु दिविजर भेरिगळु दिवदवनियर सुग
ळूरॊळगॆ गुडिगट्टिदरु कुडियिट्ट हरुषदलि
वीर दशरथ सार्वभौमन पार संतोषांबुनिधि मिगॆ
मेरॆ दप्पिदुदादि नारायणन जननदलि ॥ 8 ॥
आदुदवरिगॆ बळिक लौकिक वैदिकद वैभव गळलि भ-
द्रोदयद भवकर्मवा भवहर कुमाररिगॆ
मेदिनी सुरमुख्य नाना मेदिनिय याचकरु सिरियनु
साधिसिदरा सार्वभौमन बहळदानदलि ॥ 9 ॥
दिवस हन्नॆरडरलि महदुत्सवद लादवु नामकरण
प्रवरवा नाल्वरिगॆ गुण नामंगळलि बळिक

ग्यारहवें स्थान में रहकर शुक्र ग्रह की निरीक्षा कर रहे थे, चन्द्रमा की मंगलकारी दृष्टि-पथ में बुध-गुरु जब केन्द्र में थे, चैत सुदी नवमी पुनर्वसु नक्षत्र में बडी रानी कौसल्यादेवी ने सृष्टि-स्थिति-लय-रहित (प्रभु) को जन्म दिया। ६ दूसरे दिन पुष्य नक्षत्र में भगवान् श्रीमन्नारायण की शक्ति का तृतीय अंश (एक बटा तीसरा अंश) कैकेयी के गर्भ से शुभ लग्न में शिशुरूप में पैदा हुआ। युवक कुश! सुनो। मगधराजपुत्री सुमित्रा ने मघा नक्षत्र के उदित होते समय उत्तम लग्न में बचे अन्य दो अंशों के फलस्वरूप दो पुत्रों को पाया। ७ देवताओं के नगाड़े जोश-खरोश के साथ बजने लगे। स्वर्गलोक और भूलोक के राजाओं ने अपनी-अपनी राजधानियों में अत्यंत आनंद से अपने ध्वजों को फहराया। आदिनारायण के जन्म-धारण से वीरवर महाराजा दशरथ का संतोष का पारावार अपना ओर-छोर भुला बैठा। ८ उन जन्म-रहित कुमारों को लौकिक तथा वैदिक रीति से मंगलमय जातकर्मोत्सव (शिशु के जन्म समय के संस्कार) वैभव के साथ आचरित हुए। ब्राह्मण तथा दुनिया भर के याचक, राजा दशरथ के (इस अवसर के) अत्यधिक दान के कारण काफ़ी संपत्ति पा गये। ९ (पैदा

अवनिजासुत केळिदै निम्मवनिजा रमणंगॆ रामा-
ख्यवनु विस्तरिसिदरु वैदिक विदित कर्मदलि ॥ 10 ॥

भरत लक्ष्मण देव तदनंतरदि शत्रुघ्नाख्यवनु वि-
स्तरिसिदनु मिक्काद मूवरु राजपुत्ररिगॆ
भरित भोजन दक्षिणॆय लादरिसिदनु गुरुबन्धुजन भू-
सुरर विट शूद्रादिगळनुचितदलि भूपाल ॥ 11 ॥

ऎसॆ मत्तॆनॆलॆ तपो लक्ष्मीश केळी रामना स-
र्वॆशनॆंदे नेमिसिदॆ नमगा महात्मगॆ
ईसु निर्बंधदलि गर्भावासदॊळगिद्दुदिस लेकी
यासरिन भववेकॆनुत नुडिदरु कुमारकरु ॥ 12 ॥

नीवुकेळुव कृत विवेकद ठावु तानदु लेसु जगद म-
हाविभुवला विष्णु विश्वव्याप्त नातंगॆ
ई विशेष व्यवहरणॆ लोकावळिय सुजनरनु सलॆ सं-
भावनोचित दिंद सलहलिकाय्तलेयॆंद ॥ 13 ॥

सुजनरूपहतिगॊड बडनु नाकजर कष्टव सैरिसनु-गो-
द्विज महामख हव्य कव्य द्विपर वर्तनॆय

होने के दिन से) बारहवें दिन उन चारों बच्चों का उनके गुणों के अनुरूप, बड़े उत्साह के साथ, नामकरणोत्सव मनाए गये। सुन रहे हो न सीता के पुत्र ! तुम्हारे जानकी-रमण (पिता) का नाम वैदिक रीति से राम रखा गया। १० अन्य तीनों राजकुमारो के नाम भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न रखे गये। इस अवसर पर गुरुजन, बन्धु तथा बड़े लोग, ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र आदियों को भारी-भरकम भोजन तथा दान-दक्षिणा प्रदान करते हुए सुयोग्य रीति से इन सभी का आदरातिथ्य किया गया। ११ "तपोधन ! आपने (बड़ी कृपा कर) हमको यह समझाया कि यह श्रीराम सर्वेश हैं। ऐसे महात्मा को कई प्रकार के बन्धनों में पड़कर, गर्भावास करते हुए जन्म धारण क्यों करना पड़ा ? इस प्रकार का, परिश्रमी जन्म का, क्या प्रयोजन ?" —इस तरह कुश-लव कुमारों ने (महर्षि वाल्मीकि से) प्रश्न किया। १२ "तुम्हारा यह विवेक सम्मत प्रश्न अत्यंत उपयुक्त ही है। विष्णु भगवान् जगत के महाधिपति हैं। वे सारे विश्व में व्याप्त (महाविभूति) हैं। ऐसे को (मानव-रूप में जन्म धारण करने की) इस अपने विशिष्ट आचरण द्वारा सज्जनों का सुयोग्य रीति से परिपालन करने के उद्देश्य के सिवा (जन्म धारण करने का) और क्या उद्देश्य हो सकता है ?" इस तरह वाल्मीकि ने कहा। १३ "सज्जनों की हिंसा होने नही देते; स्वर्गलोक-

भजिसलीय निदीग गरुडध्वजन बिरुददर्द्रिद दुष्ट-
प्रजेय शिक्षेगे सुळिदनल्लदे जनन विल्लेंद ॥ 14 ॥

ईत सत्व रजस्तमोगुणदात विमलगुणत्रयक्कम-
तीत मायासार मायादूर नोडलिकॆ
ईतन नितिनितेंदु योचनॆ गेतरलि ठाविल्ल सत्त्व गु-
णातिशयवे काणबंदिहुदणुग केळॆंद ॥ 15 ॥

अहुदु मत्तेनिळॆय जन निग्रहवदारवरिंद बळिकी-
महिगॆ बंद विरोधवावुदु हेळ बेकेनलु
विहितवी विज्ञाप्ति निमगेंदहत परितोषदलि मुनिवर
नहिमकर कुलकीर्ति करनंदनरिगितेंद ॥ 16 ॥

टलॆ कुमाररु केळिरै श्रीनिलयनोलगकॆदु मुनिकुल-
तिलक सनक सनत्कुमार सनंद नादिगळु
बळिसलिसॆ बागिललि तडॆदरु बलभरित जयविजयरा नि-
र्मल मनोरंजकर नॊड्डिदद कैय कंबियलि ॥ 17 ॥

वासियों के कष्टों को वे सहते नहीं; गो-ब्राह्मणों के, महायज्ञों के, तथा देव-पितृयज्ञों के शत्रुओं के आचरण उन्हें बिलकुल पसंद नहीं। ये ही गरुड़ध्वज की (विष्णु की) उपाधियाँ हैं। इसलिए दुष्टों को दंड देने के उद्देश्य से वे जन्म धारण करते हैं। अन्यथा वे अजन्मा हैं।" इस तरह वाल्मीकि उन्हें समझाते हैं। १४ "यह सत्त्व-रज-तमोगुणयुक्त हैं। तथापि त्रिगुणातीत हैं। माया-परिवेष्टित दिखायी देने पर भी, सचमुच मायातीत हैं। इसकी 'इदम्, इत्थम्' कहकर बुद्धि निष्कर्ष पर पहुँच नहीं पाती। इसमें सत्त्वगुण का अत्यधिक अंश उतर आया है।" इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। १५ "जी हाँ, यह बात है ? दंड-भाजन अपराधी कौन थे —इस धरती के ? उन्होंने इस जगत का क्या अपराध या किनका विरोध किया था ? कृपाकर बताएँ।" इस तरह उन कुमारों से पूछे जाने पर वाल्मीकि ने अत्यंत आनंद से सूर्यवंश की कीर्ति बढ़ानेवाले उन कुश-लव कुमारों से कहा— तुम्हारा यह निवेदन अत्यंत समीचीन है। १६ कुमार कुश-लव ! सुनो। मुनिकुलश्रेष्ठ सनक, सनत्कुमार, सनंदादि ऋषि लक्ष्मी-आसक्त के आस्थान (भवन) पहुँचे। तो (वैकुंठलोक के द्वारपालक) बलवान जय-विजयों ने अपने हाथ के डंडों से उन परिशुद्ध जीवियों को (अन्दर प्रवेश करने से) रोका। उन मुनिश्रेष्ठों को प्रवेश से इन्कार किया गया। १७ परमहंस, महातेजस्वी, तपस्वी अपना तेजो-वध, अपमान कैसे सहें ? अपने क्रोध को कैसे रोकें ? (असंभव है।) अतः उन्होंने उन दोनों

परम हंसरिगधिक तेजिष्ठरिगॆ तेजोभंग मुखदनु
सरणॆ कॊंबुदॆ कोपदलि बळिकवर बगॆगॊळदॆ
दुरुळरिब्बरिगित्तरति निष्ठुरद शापवनसुर वंशो-
त्करदॊळगॆ संभविसि नीवॆंदधिक रोषदलि ॥ 18 ॥
सरसरिसि बळिका मुनीन्द्ररु सरसिजाक्षन संदरुशनकॆ
बरलु बळियलि बंदु दूऱिदरवरु मुनिवरर
करद सन्नॆय लुभय निज किंकरर खेदव संतविसि मुनि-
वररनुचितद लुपचरिसि जय-विजयरिगॆ नुडिद ॥ 19 ॥
मुनिवचनवदु तप्पदासुर जनन तप्पदु निमगॆ नीवॆ
ळन्नॆय भवदलि बंधु तनदलि नम्मनैदुवदु
अनुमत विदॊंदल्लदिरॆ मूऱन्नॆय भवदल रातिकृत भा-
वन्नॆय लैदुवदॊंदु मतविदॆ हेळि नीवॆंद ॥ 20 ॥
आऱॆ वावॆलॆ देव हत्तकॆ मूऱुळिय लुळिदिर्दॆ जन्म कॆ
मूऱु जन्मवॆ साकु हगॆतनदिंद बेगदलि
सारुवॆवु निम्मडिय सिरिचरणार विंदवनॆंदु विज्ञा-
सार रुदिसिद रसुर वंशदलधिक तेजदलि ॥ 21 ॥

दुष्टों को अत्यंत क्रोध से बड़ा भयानक शाप दिया कि तुम 'राक्षसवंश में पैदा हो जाओ'। १८ दोनों मुनिश्रेष्ठ कमलाक्ष भगवान विष्णु के दर्शन के लिए बे-रोक-टोक बढने लगे तो जय-विजय भी उनके पीछे-पीछे भगवान विष्णु के सम्मुख पहुँचकर अपनी शिकायत भी सुनाने लगे, तो भगवान ने इशारे से अपने दोनों सेवकों को रोककर सांत्वना देते हुए उपस्थित ऋषियों का यथोचित सत्कार आदर किया। तदनंतर जय-विजयों से कहा। १९ "महर्षियों का वचन झूठ नही हो सकता। अतः तुम्हारा राक्षस-जन्म अनिवार्य है। मेरे भक्त बने रहते हुए तुम अपने सातवें जन्म में आकर मुझसे मिलोगे। अगर यह तुम्हें मंजूर नही है तो मेरे शत्रु बने रहते हुए अपने तीसरे जन्म में मुझसे आकर मिलें —यह दूसरा है। इन दो में से तुम्हें कौन सा पसंद है? बोलो" —इस तरह भगवान नारायण ने कहा। २० "तीन कम दस जन्म (अर्थात् सात मित्रत्व के जन्म) हम बिता नहीं पाएँगे भगवन्! अतः हमें शत्रुत्व के तीन जन्म ही काफ़ी है। इससे शीघ्रातिशीघ्र आपके चरण-कमलों में आकर उपस्थित रह सकेंगे।" —इस तरह उन बुद्धिमानों ने प्रार्थना कर तेजस्वी असुर-वंश में जन्म धारण किया। २१ सुनो पुत्र! वे 'हिरण्याक्ष, हिरण्यकासुर' नामों से प्रथम जन्म धारण करते है। शत्रुओं के लिए यमस्वरूपी (मृत्यु रूपी)

कंद केळु हिरण्यलोचननेंदु वीर हिरण्यकासुर
नेंदु जनिसिदरोंदु जन्मदलवर नाजियलि
कोंदनोब्बन सूकरन रूपिदलोब्बन नरहरिय रू-
पिंद लक्ष्मीकांतनहित कृतांत नाजियलि ॥ 22 ॥
ऍरडनेय जन्मदलि जनिसिद परिय केळै हेळुवेनु सर-
सिरुह गर्भन केळि बल्लै श्रुतिगळूहेयलि
परम मुनि पौलस्त्यना सरसिरुह गर्भन मानसदलव-
तरिसिदनु तन्मुपगादनु विश्रवसु बळिक ॥ 23 ॥
आ मुनिगे कुलवधुविनलि कीर्त्या मनोहर राजराज म-
हामहिमनुदिसिदनु सकलैश्वर्य गळु सहित
व्योमकेशन भक्तियलि निस्सीमनादनु विश्रवसु बळि-
कामगनने सलहि कोंडिर्दनु सरागदलि ॥ 24 ॥
तरुण केळीचेयलि लंकापुरद सिरि सेरिर्दुदा शा-
वेरिय परियटन प्रचंड सुमाल्यवंतगे
हरिय वैरदलळिदरबरिब्बरु सहोदररा महापुर
वर हरप्रियगाय्तु विष्णुविनिंद पूर्वदलि ॥ 25 ॥
हदन निदनरि दोडि बदुकिद त्रिदश वैरि सुमाल्य वंतनु
पदव भजिसि पुलस्त्य तनुजगे तन्न नंदनेय

लक्ष्मीपति ने एक का (हिरण्याक्ष का) सूकर अवतार धारण कर नाश किया। दूसरे (हिरण्यकशिपु) का नरसिंह अवतार धारणकर युद्ध में संहार किया। २२ दूसरे जन्म में— जय-विजय किस रूप मे पैदा हुए —इसका वर्णन करता हूं, सुनो। वेद जिनकी स्तुति करते हैं —उन ब्रह्माजी का नाम तुमने सुना होगा न? पौलस्त्य महामुनि उन ब्रह्माजी के मानसपुत्र के रूप में पैदा हुए। (इस) पौलस्त्य का पुत्र ही विश्रवसु मुनि है। २३ उस विश्रवसु मुनि के कुलपत्नी के गर्भ से कीर्तिशाली महामहिम पुत्र कुबेर सकल संपत्ति के साथ पैदा हुए। विश्रवसु मुनि भक्तिभाव से शिवजी की तपस्या में निरत हुए। तत्पश्चात् पुलस्त्य उसी पुत्र का बड़े प्यार से पालन-पोषण कर रहे थे। २४ सुनो युवक। उधर लंका नगरी वीर निशाचर सुमाल्यवंत के आधीन थी। भगवान विष्णु का विरोध करते हुए उसके दो भाई विनष्ट हुए। तत्पश्चात् वह (लंका) नगरी विष्णु की कृपा से उनके परम-भक्त कुबेरजी के आधीन हुई। २५ "अपने भाइयों की दुर्गति देख, (डर के मारे) भाग खड़ा हुआ। फिर असुर सुमाल्यवंत ने पुलस्त्य के पुत्र विश्रवसु

मदुवेयनु माडिदनु वळि का सुदति गादरु सुतरु खळदश
वदन नग्गद कुंभकर्ण निशाटरवनियलि ॥ 26 ॥
अवरु जय विजयरुगळॆरडनॆ यव तरण दवरीग मेलु-
द्भविसिदनु हरिभक्तिभूषण वर विभीषणनु
इवरु मूवर मेलॆ कैकसॆ गवतरिसिदळु मृत्युराक्षस
निवह कग्गद शूर्पणखि यॆंबवळु केळॆंद ॥ 27 ॥
वळिक मॆच्चिसिदरुनपोसम्मिळित सौरंभदलि शंकर
सलिल संभव भवर बहळायास मार्गदलि
इळॆय तम्मद माडिकॊंडप्पळिसिदरु मलतरसुगळ कै-
कॆळिसि कादि कुवेरननु हॊरवडिसिदरु पुरव ॥ 28 ॥
आदुदवरिगॆ लंकॆ दिन-दिनकादु दखिळैश्वर्य भवन
नैदि वदुकिदना धनेश्वर मेलॆ मयनॆंब
आदितेय विरोधिसुतॆ मंडोदरिय तंदित्तना क्र-
व्याध चक्रेशंगॆ हेळुवदेनु बळिकॆंद ॥ 29 ॥
जनिसिदनु वळिकवळ गर्भदलि निमिषेन्द्र विरोधि सेरि दु-
दनुगतद सिरियवन दॆसॆयिंदिद्र वैभवद

आराधना कर उसे अपनी बेटी ब्याह दी। उसके (कैकसी के) गर्भ से अत्यंत दुष्ट दशमुख (रावण) तथा कुंभकर्ण पैदा हुए। ये असुर हुए।" २६ वाल्मीकि ने फिर कहा— जय-विजयों का यह दूसरा जन्म है— जो वे अब रावण और कुंभकर्ण हैं। इन दोनों के जन्म के बाद पैदा होनेवाला ही विष्णुभक्त-विभूषण विभीषण है। इन तीनों बेटों के जन्म के बाद कैकसी के गर्भ से पैदा होनेवाली बेटी ही शूर्पणखा है जो राक्षसवंश के लिए मृत्युस्वरूपिणी हुई। २७ रावणादियों ने अपनी बड़ी कड़ी तपस्या के बल पर शिव-ब्रह्मादियों को प्रसन्न करके वरदान प्राप्त कर लिये। आक्रमण करके कई भूमिखंडों को जीत लिया। धृष्टता करके आए हुए राजाओं को अपने आधीन बनाकर, कुवेर को युद्ध में हराकर लंका नगरी से उनको भगा दिया। २८ "लंका उनके (रावण-कुंभकर्ण के) आधीन हुई। दिन पर दिन सर्वप्रकारों की धन-संपदाओं से उन्नति करने लगी। कुवेरजी शिवजी की शरण जाकर अपने को बचा लेते हैं। मयासुर ने अपनी बेटी मंदोदरी के (ब्याह में) राक्षसों के राजाधिराज के (रावण के) साथ हाथ पीले कर दिये। (इस ब्याह का) कैसे वर्णन करूँ?" —इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। २९ मंदोदरी के गर्भ से देवराज इन्द्र के शत्रु इन्द्रजित् पैदा हुए। उसके कारण इन्द्रवैभव से होड़ करनेवाली संपदा

मनुज दनुजामर महोरगजन तृणपतियाय्तु दश दि-
क्किन पुराधिप रॆडगॆ नडॆदुदु दंडु बळिकॆंद ॥ 30 ॥
कादिदनु मॊदलण्णनलि गतवादुदातन सैन्य सोलद
हादियलि निलिसिदनु धनपनना धनेश्वरन
साधिसिद महदैश्वर्यवनु सेदिकॊंडनु पुष्पकव मे-
ला दुराग्रहि धाळियिट्टनु धूर्जटिय गिरिगॆ ॥ 31 ॥
तडॆदुदा गिरि गरुव भटनुग्गडद दिव्य विमानवनु खळ-
किडिमसगि कित्तॆत्तिदनु मृत्युंजयन गिरिय
मृडनरिदु नगुतॊत्तला गिरि यडियले कैसिक्कियज नड-
नडुग लॊडरिदनवनु वरुष सहस्र परियंत ॥ 32 ॥
बिडिसिदनु बंदजनु मॊम्मनु हडॆद मगनिवनॆंदु वंदिसि-
मृडगॆ बळिकव भजिसिदनु बालेंदु शेखरन
पडॆद नायुष्यवनु तन्नलि कॊंडद महदैश्वर्यवनु बलु
खड्गवनु वरचन्द्रहासक वॆंब नामकद ॥ 33 ॥
धृढतरद वरवाय्तु सिरियाय्तॆडॆवरिय दुब्बरद शौर्यद
कडलु कैवशवाय्तॆदुम्मुहद गर्वदलि

प्राप्त हुई। देव, मानव, नाग, असुर आदि लोग तिनके के बराबर नगण्य हुए। तदनंतर रावण की सेना दस दिशाओं के राजाओं पर आक्रमण करने लगी। ३० सबसे पहले भाई कुबेर के साथ युद्ध किया। उसकी सेना समाप्त हुई। कुबेर को हराने की परिस्थिति में खड़ा किया। उससे सम्पादित अतुल संपत्ति तथा उसका पुष्पक विमान अपने वश में कर लिया (छीन ही लिया)। वहाँ से रवाना हो, उस दुष्टात्मा ने कैलास पर हमला किया। ३१ घमंडी रावण के पुष्पक विमान को कैलास पर्वत ने रोक दिया। इससे क्रोधोन्मत्त रावण की आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं और उसने (इस हालत में) मृत्युंजय शिवजी-सहित उस पर्वत को उखाड़कर ऊपर उठाया। शिवजी ताड़ गये और उनके मुस्कुराते हुए, कैलास को अपने चरण से दबाते ही उस पहाड़ के नीचे दबोचे जाकर रावण हज़ारों वर्षों तक चीख़ते-चिल्लाते रहा जिसे सुनकर ब्रह्माजी भी काँपने लगे। ३२ अपने पोते के बेटे के लिए (स्थिति से चिंतित) ब्रह्माजी शिवजी के पास गये और उन्हें प्रणाम कर रावण के हाथों को छुड़ाया। उसके बाद रावण ने चन्द्रशेखर शिवजी की आराधना शुरू की। फलस्वरूप शिवजी के प्रसन्न होने के कारण आयु, अनश्वर महासंपदा तथा चन्द्रहास नामक श्रेष्ठ तलवार रावण को मिली। ३३ उत्तम वर तो मिला।

उडनें दाळियनिक्किशक्रन तुडुकि तेजव कौंडु वह्निय
नेंडहि काणदें दळवुळिसिदनु धर्मराजंगें ॥ 34 ॥
काळगकें नेरेंदखिळ दूतर धूळिगेंदरि्दु मृत्युविन गो-
नालियलि चाचिदनु चापळ चंद्रहास कव
कालनडुगिद ननितरि्ल दिक्पालतनवनु बिसुटु निरुतिय
मेलें मेलर्ल्लिद नडेंदाकरिसिदनु धनव ॥ 35 ॥
वरुण बळिकी हृदन केळुत शरणु हौक्कनु कायवेहुडु
हरणवनु नीनेंदु कौट्टनु सकल वस्तुगळ
करुणदलि बिट्टातननु मुंदरुण पट परिधान शौर्या
भरण धाळिय निक्क लोडिदननिल भीतियलि ॥ 36 ॥
गेंलिद नाना लोकपालक रौळु धनव नेरॆ्द कवरिकोंडिळि
दिळॆय रायर बाय्गळलि बेरळिडिसि शरधिगळ
वळय दखिळ द्वीपपतिगळ तलॆगळनु हौडॆदलिल तन्न-
ग्गळॆय भृत्यर निरिसि बन्दनु मरुत नृप नेंडॆगें ॥ 37 ॥
आ मरुत्तन यज्ञकैतंदा मरुद्गण मुनिगणंगळ
तोमरद तोटियलि कैंदरि्तु कदनकेळियलि

अनगिनत संपत्ति मिली। 'महोन्नत शौर्य का पारावार तो हाथ लगा'—इस अहंकार के मद में तुरन्त देवलोक पर हमला कर देवराज इन्द्र को बन्दी बनाकर उसका तेज हर लिया। अंतर्धान हुए अग्निदेवता पर आक्रमण करने में विफल हो, यमधर्मराज (मृत्युदेवता) पर जूझ पड़ा। ३४ युद्ध करने आये यमदूतों को धूलि में मिलाकर यह के गले में चन्द्रहास (तलवार) टोक दिया जिससे कालपुरुष थर-थर काँपते लगा। दिशाओं का आधिपत्य निरुति पर छोडकर वहाँ से आगे बढ़ते धन को लूट लिया। ३५ वरुण ने यह समाचार सुना। "कृपा कर मेरे प्राणों की रक्षा कीजिए" —कहते हुए वह रावण की शरण में गया। सभी वस्तुओं को भेंटस्वरूप अर्पित किया। रावण ने वरुण पर दया कर उसे छोड़ दिया। इसके बाद अरुण वस्त्र धारण करनेवाले, पराक्रम ही जिनका आभूषण है—ऐसे रावण ने जब घेरा डाला तो वायुदेवता डर के मारे भाग गये। ३६ अन्यान्य लोकपालकों को जीतकर उनकी सारी संपत्ति रावण ने लूट ली। वहाँ से भूलोक में उतर आया तथा ऐसा आचरण किया कि यहाँ के सभी लोग दाँतों तले अँगुली दबाए। समुद्रों के मध्यवर्ती द्वीपों के स्वामियों की हत्या की तथा वहाँ अपने वफ़ादार सेवकों को रख मरुत् राजा के पास गया। ३७ मरुत् से आयोजित यज्ञ में उपस्थित मरुद्गणों को तथा ऋषिसमूह को

आ महीशन गेलिदु निम्मय तामरससखकुलदयोध्या
भूमिपतियनरण्यनलि तोडगिदनु संगरव ॥ 38 ॥
कादिदनु समपाळियलि हदिनैदु दिनपरियंत सोलवु
मेदिनीशंगागदिरे मायाभियोगदलि
कादि कोंदनु तन्नृपन बळि कादुदग्गद शापवातनि-
ना दशग्रीवंगे राक्षससार्वभौमंगे ॥ 39 ॥
क्षितिसुतासुत केळु राक्षस पति बळिक बरुतिरलु वेदा-
वतिय कंडनु सोतना कामिनिय रूपिगे
सतिगे बळिकदु सेरुवदे रघुपतिय कैयलि रणमुख दलुप-
हति निनगे बरलेनुत होक्कळु हव्यवाहनन ॥ 40 ॥
बंदनल्लि मेले जयमुखदिंद लंकापुरिगे सेरितु
मंदि हिंदण राक्षसेन्द्रर बळिय भटरुगळु
कोंद सुरनरपतिगळबला बृंद षोडश लक्ष भोगके
संदरा दिनका निशाचरसार्वभौमंगे ॥ 41 ॥
गिरिगळंजुव विवन काणुत शरधिगळनव हेळदिरु शं-
कर सरोजासन सुरेंद्रादिगळ कंपनव

(रावण की सेना ने) तोमरों से पीटकर तितर-बितर कर दिया। उस मरुत् राजा को जीतने के बाद तुम्हारे सूर्यवंशी अयोध्या के राजा अनरण्य से युद्ध शुरू किया। ३८ अनरण्य ने रावण के साथ बराबरी में (वीरता में बराबरी प्रदर्शित करते) लगातार पन्द्रह दिनों तक युद्ध किया। 'अनरण्य नहीं हार रहा' —यह देखकर (रावण ने) उसे मायावी युद्ध में (जुटाकर) मार डाला। तब उसने राक्षस-सम्राट् दशकंठ को बड़ा ही भयानक शाप दिया। ३९ हे सीता-पुत्र ! सुनो। असुरों के स्वामी रावण आगे बढ़े जा रहे थे। तभी अत्यंत रूपवती वेदावती को देखकर रावण अपना संयम खो बैठा (मोहित हुआ)। सती वेदावती यह कैसे सह सकती ? "युद्ध में रघुपति के हाथों तुम्हारी मौत हो" —इस तरह उसने रावण को शाप देकर अग्नि-प्रवेश किया। ४० दिशि-दिशाओं को जीतकर रावण लंकानगरी लौटा। उनके (रावण के) पूर्व के राक्षस राजाओं के योद्धा आकर उनसे मिले। युद्ध में मारे गये देवलोक तथा भूलोक के राजाओं की सोलह लाख स्त्रियाँ राक्षस-सम्राट् की, उन दिनों उपभोग की पत्नियाँ बनीं। ४१ रावण को देखकर पहाड़ भी डरते हैं। समुद्रों के बारे में कहना ही क्या ? शिवजी, ब्रह्माजी, देवेन्द्रादि थरथर काँपते हैं। असुरारि विष्णु भगवान का उद्देश्य क्या हो सकता है ? —कह

तरुण हेळुवदेनु दानव हरन हवणेनेंदरिए मि-
क्करिगळी दशमुखन मणिसलु तक्करिल्लेंद ॥ 42 ॥

क्रतुगळडगिद वखिळसुरराहुतिग ळुक्कडिसिदवु कव्य-
स्थिति गळोसरिसिदवु धार्मिक रळ्ळें बाग्रिदरु
क्षितिगें बलुहोरेयाय्तु बदुकुव गतिय काणदें सकलदेव प्र-
तति नेरेदैतंदु कंडुदु कमलसंभवन ॥ 43 ॥

आतना दूग्रिद नमुचि विघातिमुख्य समस्त सुरसं-
जात सहितैदिदनु विबुध विरोधि मर्दनन
भूत पंचक तत्व मयन विधूत दुरितन दुष्टभय जी-
मूतपटल समीरणन दुस्तर महांबुधिय ॥ 44 ॥

अब्बरिसि तेरेमसगि गगनवगब्बरिसि तळमळल मोगेदोडें-
दुब्बरिसि होडकरिसि होय्दु तळवनु भोर्गरेदु
बोब्बुळिय बेळु नोरेगळोट्टिलि नोब्बुळियनुप्परिसु तुरवणि-
गोब्बिनलि मदवेग्रि पाल्गडलेसेदुदिदिरिनलि ॥ 45 ॥

उळिदु देडेयिल्लदें नभोमंडल महादेवीत मुळिदडें
विलयदलि बिच्चुवुदला ब्रह्मांड घट वेनुत

नहीं सकता। वाल्मीकि ने उन युवकों से कहा— "अन्य शत्रुओं में कोई भी रावण को हराने की ताकत नहीं रखता। ४२ असुरों की (हरकत) पीड़ा के कारण यज्ञ-याग आदि रुक गये। देवताओं को समर्पित होती आहुतियाँ मानों कुंठित हो गयी। पितृकार्य पिछड़ गये। धर्मात्माओं के पंख मानों फड़फड़ाने लगे। (दुष्ट) भूमि के लिए अत्यंत भारस्वरूप बने। बचने का, जीने का मार्ग न दिखायी पड़ने से समस्त देवता इकट्ठे हो, ब्रह्माजी के सम्मुख पहुँचे। ४३ देवताओं से शिकायत सुनकर ब्रह्माजी इन्द्रादि समस्त देवताओं के समूह के साथ, पार करने के लिए असाध्य असुरारि के निवासस्थान क्षीरसमुद्र के निकट पहुँचे। असुरारि (विष्णु भगवान) पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश नामक पंचभूत तत्वात्मक हैं; पापों को कँपानेवाले हैं। दुष्टों से प्राप्त होनेवाले भय रूपी बादलों को तितर-बितर करनेवाले वायु-सदृश हैं। ४४ घनघोर गर्जना करती लहरें मानों ऊपर उठकर आकाश को छूने जा रही थीं; माता भूमि पर की अपने नीचे की रेत को छिड़काते, पाताल तक थपेड़ते बुदबुदों तथा सफ़ेद फेन को उछालते लहरें बड़ी भयानक थीं। ऐसी भयानकता से मदोन्मत्त क्षीरसमुद्र अत्यंत उत्साहपूर्ण और वेग परिपूर्ण हो सामने शोभायमान डोलता दीख पड़ा। ४५ 'शून्यस्थान प्राप्त न होने के कारण, हे महादेवजी,

ऒलॆंदु मौळियन बुजभवना जलनिधिगॆ कैमुगिदु बट्टॆय
गॆलिदु बर्हिर्मुखरु सहितॊळ होक्कनंबुधिय ॥ 46 ॥
केळिदैयलॆ राजसूनु फणाळिधरन शरीरशायनन
कालकर्मक्रिये गतागतदूरननुपमन
आलयवु हृदिनारु लक्षद मेलॆ साविर योजनवु बळि-
योलगद संभ्रमव हॊगळुवनेन तानॆंद ॥ 47 ॥
उसुरलेनद कोटिसंख्यॆय विसरुहासन रिद्दुदमर
प्रसरविद्दुदु दिव्यऋषिगण विद्दुदपरिमित
वसुदिशाधिप रुद्रगण सुमनस वधूविकुरुंबविद्दुदु
नॊसल कैगळलादि नारायणन बळसिनलि ॥ 48 ॥
वरसरस्वति शक्ति माहेश्वरि महागायत्रि विश्वं-
भरि कुमारि वराहि वैष्णवि दुर्गि चामुंडी
परमसति सावित्रि संध्या तरुणि मॊदलादखिळ देविय
रिरवु काणिसि तादि लक्ष्मिय सुत्तुवळयदलि ॥ 49 ॥
उळिवुदॊंदे वस्तु कल्पंगळलि कमलभवामरेन्द्रा
वळिगळडगुवुवा महात्मन मनद नॆनहिनलि

यह आकाशमंडल बचा रहा। यह महोदधि अगर क्रोध में आ जाय तो सारा ब्रह्मांड विनष्ट हो जाय !' [ऐसा अवसर नहीं रहा; अतः आकाश बच गया] —इस तरह प्रसन्नता से उद्गार निकालते ब्रह्माजी ने सागर को प्रणाम किया तथा (फलस्वरूप) रास्ता पाकर देवताओं-सहित उन्होंने क्षीरसमुद्र में प्रवेश किया। ४६ सुन रहे हो न राजकुमार ! आदिशेष की शय्या पर शयन करते, काल-कर्म-क्रियान्तर्गत होते हुए भी इनसे परे रहने की महामहिमा प्राप्त भगवान विष्णु का वह मंदिर सोलह लाख एक हज़ार योजन विस्तृत— विशाल था। उसमें जो सभामंडप विराजमान था —उसकी शोभा अनुपमता का किन शब्दों में वर्णन करूँ ! —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ४७ (विष्णु की उस महामहिमा का) क्या और कितना वर्णन करूँ ? करोड़ों की संख्या में ब्रह्म, देवताओं का समूह, दिव्य ऋषियों का झुंड, अनगिनत इकट्ठा हुआ था। अष्टवसु, दिक्पालक, एकादश रुद्र, देवताओं की स्त्रियाँ माथे पर हाथ धरे (हाथ जोड़े) आदिनारायण के चारों ओर घेरे हुए थीं। ४८ सरस्वती, शक्ति, माहेश्वरी, महागायत्री, विश्वंभरी, कुमारी, वराहि, वैष्णवी, दुर्गा, चामुंडी, सती सावित्री, संध्यादेवी वग़ैरः देवियाँ आदिलक्ष्मी के चारों ओर इकट्ठी थीं। ४९ प्रलय की स्थिति में एक मात्र परात्पर वस्तु नारायण ही रह जाता है (बाक़ी सब

तोंलगिदुदकद मेलें मेंल्लने सुळिवरा ब्रह्मादि देवरु
नळिननाभन महिमेंगावुदु सीमें केळेंद ॥ 50 ॥

नारदन संगीत वप्सर नारियर नर्तन श्रुति स्मृति
यारुभटे युग्गडणें पौराण प्रवंधगळ
सारतर सम्मोहनद कैवार केळिसितबुज भव वृं-
दारकरु जय जय जयेंदुदु सकल सुरनिकर ॥ 51 ॥

देव जय जय सकलदेवर देव जय श्रुति कोटिकन्या
श्री वरने जय जय जनार्दन भक्त सुरधेनु
देवरिपुकुलविपिनपटुतर पावकाखिल लोकरक्षक
देव रक्षिसु नम्मनेंनुतड गेंडेंदुदमरगण ॥ 52 ॥

नोंदें वैयलें देव सुरकुल बंदिकारन कैयलकटा
तंदें नी नमगल्लवे निगमागमोक्तियलि
नोंद नोवनु परिहरिसि कृपेंयिंद सलहुव देवरारेंम
गेंदु मेघध्वानदलि मोंरेंयिट्टु दमरगण ॥ 53 ॥

प्रलय में लीन हो जाता है)। ब्रह्म, इन्द्रादि उस परात्पर वस्तु के मन की कल्पना में छिपे रहते हैं। प्रलय के पानी की प्रचंडता-तीव्रता कम होने पर ब्रह्मादि देवता पुनः प्रकट होते हैं। वाल्मीकि ने (कुश-लवों से) पूछा, "कमलनाभ (विष्णु) की महिमा की क्या मर्यादा हो सकती है? ५० (नारायण के उस सभाभवन में) नारद का संगीत, अप्सरा स्त्रियों के नृत्य, वेद-शास्त्रों का घोष, पुराण-काव्य-पठन का शोरगुल ब्रह्माजी के स्तुति-पाठकों के अर्थपूर्ण मोहक प्रशंसात्मक स्तुतियाँ सुन पड़ रही थीं। समस्त देवताओं ने जय-जयकार किया। ५१ 'भगवन् तेरी जय हो, समस्त देवताओं के स्वामी तेरी जय हो, करोड़ों वेद रूपी कन्याओं के स्वामी भगवन् लक्ष्मीपति! तेरी जय हो, हे जनार्दन! भक्तों के कामधेनु! तुम्हारी विजय हो, शत्रुस्वरूपी जंगल के लिए (भस्म करनेवाले) अग्नि रूपी भगवन्! तेरी जय हो; समस्त लोकपालक स्वामिन्! हमारी रक्षा कीजिए।' —इस तरह स्तुति करते हुए देवताओं ने दंडवत् प्रणाम किया। ५२ "देवताओं को पीड़ा पहुँचाते बंधन में डालनेवाले रावण के हाथों से काफ़ी कष्ट भुगत चुके हैं। वेद-शास्त्रों के वर्णनानुसार आप हमारे पिता है न? हमारी इन पीड़ाओं को दूर कर हमारी रक्षा करनेवाले करुणापूर्णहृदयी आपके सिवा हमारे लिए अन्य कौन हैं?" —इस तरह गिड़गिड़ाते हुए देवताओं ने याचना की। ५३ निद्रायोग मुद्रा में स्थित भगवान के सम्मुख शिकायत उपस्थित होने पर उन्होंने आगतों की बातें ध्यान से सुनीं। तब विष्णु

केळिदनु कड्डु दूरुकारर नालगेय रचितोक्तियनु करु-
णाळुगळ बल्लहनु निद्रायोगमुद्रेयलि
आलिगळ नरळिचुत नगेगळ मालेगळ तेरळिचुत करे क-
ट्टळिगद कातरर नेंदनु हरि सुपर्णगे ॥ 54 ॥
बंदना सौपर्ण सुमनस वृंद देडेगा कमलभव सं-
क्रंदनादि समस्त सुरजन मुनिजन व्रजव
तंदु निलिसिदनबुज नाभन मुंदे कसुमांजलिगळलि मुद-
दिद मैयिक्किदरु भयरसभरित भक्तियलि ॥ 55 ॥
जय जय श्रीकांत लोकत्रय कृपाकर भक्तवत्सल
जय जयाच्युत जय सुरार्चित सकल गुण निळय
जय जगद्वल्लभ जगन्मय जय जगद्रक्षक जनार्दन
भयविदूरने देव सलहेनु तिर्दुदसरगण ॥ 56 ॥
देव कारुण्यांबुनिधि भूदेव सुजनजनैकवत्सल
देव देवेश प्रसाद स्निग्ध मुखकमल
देव लक्ष्मीकांत वरराजीवलोचन सुजनजन करु-
णावलंबन काय बेकेंदोदरि तमरगण ॥ 57 ॥
अंद्दु बिन्नैसिदनु कमलद गद्दुगेय परमेष्टि दैत्य वि-
मर्दनने चित्तावधान कृपाब्धियवधान

भगवान ने मुस्कुराते हुए आँखें खोल गरुड़जी से कहा —"कार्यार्थ आगत उन दुःखियों को यहाँ बुलाओ।" ५४ गरुड़जी देवतागणों के सम्मुख पहुँचे। ब्रह्म, देवेन्द्रादि समस्त देवगण, ऋषिगणों को ले जाकर भगवान विष्णु के सम्मुख खड़ा कर दिया। भयभक्तिपूर्वक, आनन्द परवश होते हुए पुष्पांजलि-सहित (देवताओं ने तथा मुनियों ने) विष्णु भगवान को प्रणाम किया। ५५ "जय-जय श्रीकांत, तीनों लोकों के दयालु स्वामिन्, भक्तजन प्रिय प्रभो! स्वामी अच्युतजी! तुम्हारी जय हो। देवपूजित, समस्त गुणों के निवासस्थान भगवन्! तुम्हारी जय हो। लोकपालक, जनार्दन, भयनिवारक स्वामी! हमारी रक्षा करो।" —इस तरह देवताओं ने स्तुति की। ५६ "भगवन्, करुणासागर, लोकों के स्वामी, सज्जन-प्रिय, देवाधिदेवताओं के अधिपति, मनोहर प्रसन्न मुखकमलसंपन्न प्रभो, लक्ष्मीपति, कमलनयन, सज्जनों की दया के आधार (सज्जनों को करुणापूर्ण दृष्टि से देखनेवाले) प्रभो! हमारी रक्षा करो।" —इस तरह ऊँची आवाज़ में पुकार-पुकारकर प्रार्थना करने लगे। ५७ कमलासन ब्रह्माजी उठ खड़े हुए और कहने लगे— "असुरारि भगवन्! ध्यान से सुनिए।

तिद्दिर्देम्मय देसे दशानन नुद्दुरुटु तनगिदद नाव् बं-
दिद्द हदनिदु जीयरक्षिस बेकु नीवेंद ॥ 58 ॥
शिशुविदी जगवी जगत्रय नसिवुतिर्दे बाल्यदलि नेरे र-
क्षिसुव देवर काणेनखिळाम्नाय दृष्टियलि
उसुर लेम्मनु जीय सुररायसवचित्तैसूर्वरेय गं-
गसव नवधरिसेमगे बंदिह विधिय केळेंद ॥ 59 ॥
मरळुतनगिददा दशास्यगे वरवनित्तेनु देवतानद
परिहरिसुवडशक्त भक्ताधीन नी नेंब
बिरिद मेरेवुदु जीय जीवव होरेय लारेवु वैरि दशकं-
धरनुपद्रदलेले कृपांभोनिधिये केळेंद ॥ 60 ॥
बरेय बल्लेनु बरेद बरहव नोरस लरियेनु जगद भाळां-
तरदली सचराचरद तत्कर्मफलविडिदु
बरेदे ध्रुवन ललाटदलि मुळिदोरिसि बिसुटे हिरण्यकन नि-
र्भरद भाळाक्षरद विधिगे विधात्र नी नेंद ॥ 61 ॥

प्रभो ! सुनिए। दशकंठ की धूर्तता के कारण हम दिग्भ्रामित (निराश) हैं। आपकी सेवा में उपस्थित होने का उद्देश्य यही है। प्रभो ! दया कर हमारी रक्षा कीजिए।" —इस तरह ब्रह्माजी गिड़गिड़ाने लगे। ५८ "यह जगत तेरा शिशु है। तीनों लोकों का नाश होने को है। वेदमत के अनुसार अवलोकन करें तो (शिशु रूपी लोकों को) बाल्यकाल में सुरक्षा देनेवाले भगवान् ! आपके सिवा और कोई नहीं है। मैं अधिक कहने में असमर्थ हूँ। देवताओं पर आए हुए संकटों पर ध्यान दीजिए प्रभो ! भूदेवी पर आया संकट तथा हमारी दुर्गति पर ग़ौर कीजिए।" इस तरह निवेदन किया। ५९ "अविवेकी होकर मैंने रावण को वरदान दिया। अब उसके (वरदान) दूर करने (निवारण) में मैं अपने को असमर्थ पाता हूँ। तू तो भक्तों का आश्रयदाता है। वह बड़प्पन अब प्रकाश में लाइए, स्वामी ! हे करुणानिधे, शत्रुदशकंठ-निर्मित पीड़ा असहनीय है। उससे हम बच नहीं पाते" —इस तरह (ब्रह्माजी ने) कहा। ६० उन्होंने फिर कहा— "सचराचरों की ललाटरेखा मैं केवल अंकित कर सकता हूँ। इस प्रकार एक बार अंकित किए (विधि-) लिखित को पोंछ डालने में असमर्थ हूँ। मैंने ध्रुव की तथा हिरण्यकशिपु की ललाटरेखा अंकित की। तूने उसे हर-हमेशा के लिए पोंछ डाला। केवल लिखने भर के लिए मैं ब्रह्म हूँ और उसकी विधि के लिए सही ब्रह्म तू ही है। ६१ "हे लक्ष्मीपति ! सुन ! रावण को प्रतिदिन आशीर्वाद देनेवाला जंगम है यह

सिरियरस चित्तैसु हरसुव गौरवनी शितिकंठनी शचि-
यरस सेवकनी समीरण बंधु बाणसिग
मरळि मातेनी यमनु किंकरनु मिक्किन वरुण दिगधिप
रिरव चित्तैसिदरें परिहासक वलेयेंद ॥ 62 ॥
हुसिय नाडलदेनु गुरुजोयिसनु तुंबुरनारदरु रं-
जिसुव वेणिकरी मनोजवसंतरा खळन
बेंसन माडुव दूतरी रविशशि गळोप्पुव दीवटिग रेंलें
यसुरहर चित्तैसुपाद्यरु नावले येंद ॥ 63 ॥
बिसजगर्भन बिन्नहकें हरिनसुगुत कृपेंयलि कटाक्षद
रसुमेंयनु सूसिदनु सुरर विषाद रजनियलि
नसिदरक्कुडिसिदिरि नोंदिरि बसवळिदिरनुगेंट्टरखिळा
यसकें सदिरि सरिसिदिरिन्नंज बेडेंद ॥ 64 ॥
सरसिजासनें केळुसंदुदु वरववगें निन्निद दनुजा
मर भुजंगम मुख्य नाना देवयोनियलि
मरण भयदिल्लेंदु नोंदिरि हिरिदु नीवदरिंद मुंदणि
गरिवधा समयक्कुपायव केळि नीवेंद ॥ 65 ॥

शिवजी। यह शचीपति (इन्द्र) देवेन्द्र उसका सेवक है। यह अग्नि उसका रसोइया है। अधिक क्या कहूँ ? यह यम उसका चाकर है। और बचे-खुचे युवक वरुणादि दिक्पतियों के बारे में समझाना मानों हास्यास्पद विषय है।" इस तरह ब्रह्मा ने कहा। ६२ मैं झूठ क्यों बोलूं ? (नवग्रहों में से) गुरु (रावण के लिए प्रतिदिन पंचांग-पत्रा सुनानेवाला) ज्योतिषी बना है; तुम्बुरु-नारद वीणा-वादक संगीतकार हैं; मन्मथ-वसंत दुष्ट रावण के आज्ञापालक नौकर-चाकर हैं। सूर्य-चन्द्र मशाल धारण कर मशालची बने हैं। हे राक्षस-संहारी ! हम सब उसको पुराण सुनानेवाले उपाध्याय बने हुए हैं। —इस तरह ब्रह्मा ने कहा। ६३ ब्रह्माजी की विनती सुनकर भगवान विष्णु मुस्कुराते हुए दयापूर्ण दृष्टि बिखेरते हुए उस दृष्टि की रोशनी में देवताओं की चिंता नामक अँधेरा दूर करने लगे। "(रावण की पीड़ा से) तुम दुखी हो, त्रस्त हो, थके हो, मलिन हुए हो, बहुत-बहुत कष्ट उठाकर सहते आए हो। आइन्दा डरने की कोई बात नहीं।" इस तरह सांत्वना देने लगे। ६४ कमलासन ! सुनो। 'राक्षसों की, देवताओं की तथा पाताल-वासियों की कोख से उत्पन्न होनेवालों से तुम्हें कोई डर नहीं' —इस तरह तुमने रावण को वरदान दिया है। इसीलिए तुम्हें कई

नरर रूपिंदावु विश्वं भरेयोळवतरिसुवेवु नीव् वा-
नरर रूपिं दुदिसुवदु धरणी तळाग्रदलि
धुरदोळहित खळोत्तमर दुर्धरद शिरखंडनव नेम्मय
सरळ मोनेयलि तोरिसुवेविद नंबि नीवेंद ॥ 66 ॥

अेंदवर बीळ्कोंडलु चरण द्वंद्व कानतरागि हरुषद
संदणिय सौरंभदलि बीळ्कोंडरा हरियि
कंद केळै जाम्बवर रूपिंद तोरिद नबुजनाभनु पु-
रंदरनु नेलेगोंडनंगदनग शोभेयलि ॥ 67 ॥

तरणि सुग्रीवाभिदानव धरिसि जनिसिदनी चराचर
भरित भुवन प्राणना हनुमंत रूपिनलि
धरणियलि मैदोरिदनु शंकरनु वृषभाकारदलि गो-
चरिसिदनु सुरराज वर्धकि बळिक नळनागि ॥ 68 ॥

पवनबांधव नीलनाम प्रवरदलि जनिसिदनु मैंद-
द्विविद रादरु सुरयमळरग्गळ परेतपति
गवय गज शरभादि पंचप्लवग रूपिंदुदिसिदनु सं-
भविसि धन्वंतरि सुषेणकनाद नवनियलि ॥ 69 ॥

संकटों का सामना करना पड़ रहा है न ? अब (तुम्हारे इस) शत्रु-संहार का उपाय बताता हूँ। सुनो। —इस तरह श्रीहरि ने आज्ञा दी। ६५ "मानव-रूप से मैं धरती पर अवतरित होता हूँ। तुम लोग वानर-रूप से भूलोक में पैदा होकर देखोगे कि दुष्ट शत्रुओं के सिर हमारे तीक्ष्ण बाणों की नोकों से कट रहे हैं। मेरे इस कथन पर विश्वास करो" —इस तरह श्रीहरि ने कहा। ६६ "इस तरह समझा-बुझाकर श्रीहरि ने उनको रवाना किया तो वे उनके चरणों में गिरकर अत्यंत खुशी तथा संभ्रम से हरि की आज्ञा लेकर रवाना हुए।" सुनो बच्चो ! ब्रह्माजी जाम्बवंत के रूप में अवतरित हुए। देवराज इन्द्र (वालीपुत्र) अगद के रूप में पैदा हुए। ६७ सूरज सुग्रीव नाम से पैदा होते हैं। सारे जगत के प्राणाधार वायु हनुमान के रूप में पैदा हुए। शिवजी धरती पर वृषभ-रूप में पैदा हुए। देवराज इन्द्र के बढ़ई (शिल्पी) विश्वकर्मा नल नाम से पैदा हुए। ६८ अग्निदेवता 'नील' नाम से पैदा हुए। देवलोक के जुड़वे अश्विनीकुमार 'मैंद-द्विविद' नाम से पैदा हुए। यम (मृत्युदेवता) गवय, गज, शरभ आदि पंच वानर रूपों में पैदा हुए। देवलोक के वैद्य धन्वंतिर धरती पर सुषेण बनकर पैदा हुए। ६९ अन्य देवतागण विष्णु की आज्ञानुसार अन्यान्य समुद्रों के मध्य द्वीपों में, द्वीपकल्पों में, पर्वतों में, असंख्य वनों में

उळिद सुरसंदोह नाना जलधि मध्यद्वीप कुरुवं
गळलि कुधरावळि गळलि बहुकाननंगळलि
बलिमुखर रूपुगळन वरुऍ तळॆदराळ्दन नेमदलि के-
ळॆलॆ ककुत्स्थजसूनु हरिलीला विनोदवनु ॥ 70 ॥
मायॆ मंथरॆयागि दशरथ राय भवनव सारिदळु फणि-
राय लक्ष्मणनागि जनिसिद निंदिरा वनितॆ
रायजनकन मगळॆनिसि वसुधायु वतियिंदुदिसिदळु ना-
रायणनु रूपिसिद ननुपम राम नामदलि ॥ 71 ॥
इदुकणा जगदीश्वरन जननद जगद् व्यापार जवनिकॆ
युदिसि तोऱिद नॆंबुदिदु मिथ्या प्रपंचवलॆ
तुदि मॊदलु नडुवॆम्ब लयदभ्युदय वॆम्ब विकारगळु सॊं-
कद सनाथ निगाय्तु लीलॆ मनुष्यरूपिनलि ॥ 72 ॥
ऒडलॊळबुज भवांडकोटिय नडगिसिध महामहिमगा
य्तडक तॊट्टिल ललमळ विगमाळिगळु बॆरगागॆ
नुडिगगोचर दमळबॊम्मद कड्डु निद्दु जोगुळदलव
गडॆय देवत्वकॆ शिशुत्व दॊळाय्तु निर्वाह ॥ 73 ॥
ऎत्त होदुदो हसिवु तृषॆ हॊगदुत्तमद महिमातिशय हसि-
दत्तु मॊलॆवालिगॆ मॊगसुवडिदु विचित्रवल

वानर-रूप से पैदा हुए। हे ककुत्स्थ-वंशज ! सुनो। विष्णु भगवान का लीला-विनोद कैसा अद्भुत है ! ७० माया मंथरा के रूप में पैदा होकर दशरथ के राजमहल में प्रवेश करती है। आदिशेष लक्ष्मण नाम से पैदा होते हैं। जनकराजा की पुत्री के रूप में लक्ष्मीदेवी भूमिमाता के गर्भ से प्रकट होती है। श्रीमन्नारायणजी श्रेष्ठ पावन 'राम' नाम धरकर अवतरित हुए। ७१ यह जगत के स्वामी के जन्म धारण करने के कार्य की पृष्ठभूमि है। स्वयं मानव रूप में जन्म धारण कर इस तरह अपने को प्रकट करने का केवल दिखावे का प्रपंच (संसार) है ! आदि, मध्य, अंत्य तथा नाश और सृष्टि नामक विकार जिनको स्पर्श भी नहीं कर सकते —ऐसे सर्वतंत्र स्वतंत्र नारायण का मानवरूप धारण करना लीला मात्र है। ७२ अपने शरीर में करोड़ों ब्रह्मांडों को छिपा लेनेवाला महामहिम भगवान् शिशुरूप में पालने में समाया। यह देखकर वेदों को भी आश्चर्य हुआ। शब्दातीत परिशुद्ध परब्रह्म का अहम् लोरी के लिए सिर झुकाता है। प्रतापाधिक्य से भरे देवत्व को अब शिशु का निर्वाह करना पड़ा। ७३ पता नहीं, भूख कहाँ गयी ? प्यास कहाँ गयी ? भगवन्नारायण की यह महिमा

अंत्तलहिपति गर्वरिगॆ विहभोत्तमंगरिदॆनिसिकॊंवन
नॆत्तिदरु वनितॆयरु बॆपरुगॆ नल्लवॆयॆंद ॥ 74 ॥

जलरुहासन मुख्य दिविजा वळिगळि दोलैसि कॊंब-
ग्गळद विभवद दैव वानर विभुवि नोलगद
कॆळदियर कैसन्नॆगळ मैवळिय मातिगॆळ्व कुळ्ळिरु
वळवडिकॆ बल्लरिगॆ बॆरुगॆनल्लवॆयॆंद ॥ 75 ॥

नॆलननळॆवंदी महादिगु वळयवी कुलपर्वतगळी
जलनिधिगळी गगनवी ब्रह्मांड पवणिसिद
विलसितद विभुविगॆ दट्टडि बळुकुनडॆ मॆल्नडॆ गळॆविवु
तिळिववर मनसिगॆ मरु तानल्लवॆयॆंद ॥ 76 ॥

जगदजीवर यंत्रमय हाहॆगळ नाडिसि तोर्प नाटकि
मगवुतनदलि बालकर कॆळीकलापदलि
सॊगसुवुदु सोजिगवला श्रुति नगुवुदकॆ संदेह वॆनलॆ
मगनॆ कॆळ् मायाचरितकिदु सोबगलॆयॆंद ॥ 77 ॥

विशेष है। (लेकिन मानवीय शिशुरूप में) वे भूख प्रकट करते हैं। छाती का दूध चाहते हैं। —क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है ? (सत्त्वाधिक्य-युक्त) जिनको आदिशेष, भूदेवी, गरुड़जी उठाने में अपने को असमर्थ पाते हैं, उनको स्त्रियाँ (गोद में) उठा लेती हैं —क्या यह अचरज की बात नहीं। ७४ "ब्रह्मादि प्रमुख देवताओं से सेवा पाने का महावैभवसंपन्न देवाधिदेव अब मानवेश्वर की आस्थान दासियों के इशारे की आज्ञा पर उठ बैठ रहे हैं" —वाल्मीकि कहते हैं कि ज्ञानियों को भी यह घटना आश्चर्य में डाल रही है। ७५ वामनावतार में त्रिविक्रम बने दिग्वलयांकित प्रदेश, ये कुलपर्वत, ये सागर, यह आकाश —इतना ही नहीं सारे ब्रह्मांड को अपने पगों से नापनेवाले महाप्रभु अब शिशुरूप धारण कर घुटनों पर चलते, बल खाते, धीमे-धीमे (धीरे-धीरे) पग रख रहे हैं —यह देखकर लगता है कि ज्ञानियों को भी भगवान की माया अभिभूत कर सकती है न ! —इस तरह वाल्मीकि वर्णन करने लगे। ७६ जगत के जीवियों को कठपुतलियों की तरह नचाकर दिखानेवाले नर नाटक सूत्रधारी आज अपनी बाल-क्रीडाओं से स्वयं को आनंदित कर रहे हैं —यह सचमुच आश्चर्य की बात है। इसमें क्या शक है कि वेद यह देखकर हँसने लगे ! सुनो मेरे युवक ! श्रीहरि का यह माया परिपूर्ण चरित अत्यंत आह्लादकारी है —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ७७ 'आदिब्रह्म को शिशुत्व प्राप्त हुआ' —यों कहना (एक प्रकार से) असत्य है; निंदा की बात है—इस तरह ज्ञानी समझते हैं। अज्ञानियों

आदिबोम्मके मगुवुतन संपादिसितु येंबुदु मृषा प्ररि-
वादविदु बल्लवरिगज्ञर मातदंतिरलि
मेदिनिय भारापहरण विनोदविदु मायाप्रपंचिन
हारिगरिगिदु सिद्धवेंदे तोरुतिहुदेंद ॥ 78 ॥

अऱियबंदुदे निमगे मायेय मऱेय मानवनेंदु मगुळि
न्नऱिस लिल्लवले मनस्सिन सशयंगळनु
तेऱहुगोट्टुदे निमगनलु पदकेऱगिदरु बळिकवरु मुनि बळि-
कुरुव रघुराजेंद्रचरितव हेळलनुगेद ॥ 79 ॥

होळे होळेव निडुगंगळिन थळ थळिप कदपिन कोमलाधर
दॆळनगेय बाय्देरॆय मिरुगुव दंत पंक्तिगळ
सुळिगुरुळ सोंपोगेव नीलोत्पल निभांगद मुद्दु मुसुडिन
चलुवदेवर देवनेसेदनु बालकेळियलि ॥ 80 ॥

दिवस दिवसके बालशशि हेच्चुवोलनुजरु सहित लक्ष्मी-
धवनु हेच्चिद निळेय नाडाड़िगळ नररंते
अवनिजासुत केळु महदुत्सवदलुपनयन प्रपंचुग
ळवरिगादवु विदित वैदिक लौकिकंगळलि ॥ 81 ॥

का कहना ही क्या? भूमि का भार उतारने के लिए श्रीहरि का यह लीला-विनोद माया-प्रपंच में पड़ चटपटानेवालों को सत्य ही लगता है —इस तरह वाल्मीकि ने समझाया। ७८ "क्या तुम्हारी समझ में यह आया कि श्रीराम माया से आच्छादित मानव है? (क्या तुम इस प्रकार शक करते हो?) तुम्हारे मन की शंकाओं को दूर करने के लिए और समझाने की ज़रूरत नहीं है न?" —इस प्रकार वाल्मीकि के प्रश्न करने पर कुश-लव कुमारों ने महर्षि के चरण छूकर प्रणाम किया। तदनंतर मुनि वाल्मीकि ने रघु रामचन्द्र की कथा आगे बढ़ायी। ७९ खूब चमकती हुई विशाल आँखें, चमकते हुए गाल, कोमल अधर, मुस्कुराते होंठ, चमकती हुई दंतपंक्तियाँ, घुँघराले बाल, नील-कमल-सरीखे नील-कांतियुक्त देह से शोभायमान मोहक मुखड़े से देव-देवोत्तम बालक राम बाल-क्रीडा से शोभायमान हुए। ८० "भूलोक के सामान्य मानव की तरह लक्ष्मीपति भाई भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न के साथ बालचन्द्र की तरह (चन्द्रमा की तरह) दिन-ब-दिन वृद्धि करते बढ़ने लगे। वैदिक तथा लौकिक रीतियों से बड़े ही वैभव के साथ उनके उपनयन (जनेऊ)-संस्कार संपन्न हुए।" सुनो सीतापुत्र! इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ८१ जनेऊ के बाद वेद-शास्त्रों का अध्ययन करके अत्यधिक वाग्मिता संपादित की। तत्पश्चात् वसिष्ठ महर्षि की कृपा प्राप्त हुई।

मेलॆ निरुपम वेदशास्त्र विशाल वक्तृगळाद रल्लि
मेलनुग्रहवाय्तु मुनिप वसिष्ठॊनि बळिक
नालुवरु नंदनरिगवनी पाल तेजो राजिमिगॆ स-
म्मेळविसिदुदु मॆरॆ दुदवर भ्युदय दिन दिनकॆ ॥ 82 ॥
वरुष हन्नॆरडरलि गजरथ तुरगदेराट दलि गदे मु-
द्गर कृपाण शरासनादि समस्त शस्त्रदलि
सरि सरोरुग नररॊळिल्लॆं बुरुतर प्रौढि गळलुब्बिसि
दरु धुरंधर राजतेजदलखिळ जनमनव ॥ 83 ॥

ऒंबत्तनॆय संधि

सूचनॆ— राय दशरथ नॆडॆगॆ मुनिकुल राय कौशिक बंदु यज्ञव काय लॊडगॊ डॊय्दन तिबल राम-लक्ष्मणर ।

विमलमति कुश केळु सिद्धाश्रमदॊळिद्दनु सकल मुनिकुल
कमलमित्रनु विमल विश्वामित्र नीचॆयलि
अमररिपु मारीच घन विक्रम सुबाहु गळॆंब राक्षस
रमणरा मुनिमखकॆ कंटकराद रडिगडिगॆ ॥ 1 ॥
मुनि बळिक बलुचिंतॆयलि गत दनुवनवरिगॆ काण लरियदॆ
वनजगर्भन सारि बिन्नह माडिदनु हदन

चारों कुमार क्षत्रिय तेज से सुशोभित हुए। दिन-प्रतिदिन उन्नति करते गये। ८२ बारहवीं उम्र में हाथी, रथ, घुड़-दौड़ की स्पर्धा, गदा, मुद्गर, तलवार, धनुष्य आदि सारी शस्त्र-विद्याओं में पारंगत हुए। समस्त विद्या-प्रौढ़ता में मानों इस तरह अनुपम राजतेजस्विता-ओजस्विता प्राप्त की कि देवता, पाताललोक के व्यक्ति तथा मानवों में इनकी बराबरी करनेवाला कोई न हो। इससे सभी लोग उनको देख अत्यंत प्रसन्न हुए। ८३

नवम संधि

सूचना— महर्षि कुलतिलक विश्वामित्र दशरथ राजा के यहां आकर यज्ञ रक्षा के लिए बलवान राम-लक्ष्मणों को बुला ले गये।

सारे ऋषिवृन्द रूपी कमल के पुष्प के लिए मानों सूर्य-सदृश पवित्र विश्वामित्र सिद्धाश्रम में थे। हे निर्मल बुद्धिवाले कुश! सुनो। बलशाली सुबाहु-मारीच नामक राक्षस राजाओं ने (विश्वामित्र के आश्रम में प्रवेश कर) बार-बार यज्ञ में विघ्न उपस्थित करना शुरू किया। १

मुनिप केळिद केकॅ भय गोमिनियपति रुंहरिय भारव
नीनॅय लुदिसिद नहनॅ दशरथ रायभवनदलि ॥ 2 ॥
कोंडु होगा विबुध रिपुवे तंड पंचानननाहव
चंडचटुळ पराक्रमन मायात्रिविक्रमन
कंड बर्गेयिदु बेग होगेनॅ मंडेयनु मणिदिळिदनवनी
मंडलकॅ मुदॅदिद विश्वामित्र मुनिराय ॥ 3 ॥
करॅसि ऋषिवर्गवनु मुनिजन वॆरसि सिद्धाश्रमवनुळिदु-
ब्बरद विविध वनाळिगळ बिषयान्तराळगळ
गिरिसरित्संकुलद कळिकळि दरिविजय दशरथ महीशन
धरणियनु सारिदनु संतोषद सघाडदलि ॥ 4 ॥
बरबरलु तत्कोसलद रुंहरि विराजिसि तमम हर्रहिन
हरिव होळॆगालुवॆय कॆरॆदुंबुगळ नीरुगळ
तॆरळिकॆय तद्ग्राम निकरद सिरिय शालीवनद वनदु-
ब्बरद धवळेक्षुगळननुपमनंद नंगळलि ॥ 5 ॥
हलसु खर्जूराम्रकुल मादलमधूक क्रमुक दाडिम
तिलक कुरवक जंबु जंभीर प्रकीर्णदलि

इससे विश्वामित्र बहुत चिंतित हुए। उनके विनाश के लिए क्या किया जाय ! —समझ न पाए। अतः ब्रह्माजी के पास जाकर वस्तुस्थिति का निवेदन किया। तब ब्रह्माजी ने कहा, "सुनो महर्षि ! इसके लिए इतना डरते क्यों हो ? भूमि का भार उतारने के लिए भगवान लक्ष्मीपति दशरथ राजा के महल में जन्म ले चुके हैं। २ राक्षस रूपी हाथियों के लिए सिंह-सदृश प्रचंड युद्धवीर मायारूपी विष्णु श्रीरामरूप में अवतरित हैं। उन्हें (अपने यज्ञ-रक्षणार्थ) बुला ले जाओ। यही मुझे उचित लगता है। शीघ्रता करो।" —इस तरह का आदेश पाकर विश्वामित्र महर्षि ने ब्रह्माजी के चरणों में गिरकर, वन्दना की, फिर वहाँ से खुशी-खुशी भूलोक में आये। ३ ऋषियों को अपने साथ लेते हुए मुनि विश्वामित्र सिद्धाश्रम से रवाना हुए। विविध प्रकार के वन-उपवन, देश, नदियाँ, पहाड़-पहाड़ियाँ पार करते हुए यात्रा कर शत्रुदमन-समर्थ दशरथ महाराजा के राज्य में प्रवेश किया। ४ आगे बढ़ते-बढ़ते देखा कि वह, कोसल राज्य का भूमिखंड—विस्तृत पात्रों से युक्त नदियों से बहते नहर, लबालब भरे हुए सरोवर, अपने (प्रवाह के) मार्ग में प्राप्त गांवों की संपत्ति तथा उपज बढ़ानेवाले खेत, ईखों की फ़सल, और तरह-तरह के उद्यानों से शोभायमान था। ५ कटहल, खजूर, आम, मातुलिंग-फल, मधूक-फल;

नेलनु काणिसदीक्षिसिद दॆसॆगळलि हूदोटगळ हरहिन
वळयवॆंडबल वीथियलि काणिसिदवा मुनिगॆ ॥ 6 ॥
अंगजांतक नालयद वोलु मंगळान्वित मय हिरण्यक
भंगनंतगृहद वोलु लक्ष्मी विलासमय
तुंगतेजोभरित परमप तुंग मंडलदंतॆ गोकुल
संगमयवॆनलॆसॆदुदग्गद राष्ट्र कोसलद ॥ 7 ॥
बंदना मुनि नोडुतजनृप नंदनन ललितोपवर्तन
वृंदवनु तलॆदूगुतंडिगधिक धिकहरुषदलि
तंदॆ राज्यवनाळने पौरंदरावनिगिनितु सोबगि
ल्लॆंदु सकलग्रामवनु कळिकळिदु नडॆतंद ॥ 8 ॥
परिधिपरिवृत रवियवोलु निज परिधिपरिवृत नगरवॆसॆदुदु
तरुण केळै कंगळिगॆ दूरदलि कौशिकन
मरकतद माणिकद चामी करद चटुळप्रभॆय शाला
वरणदलि मुखशालॆगळ सौधगळ सोंपिनलि ॥ 9 ॥

सुपारी, अनार, तिलक, मेंहदी, जामुन, नींबू, तरु-वृक्षलताओं से तथा रास्ते के दोनों तरफ़ (दाएँ-बाएँ) जहाँ तक दृष्टि दौड़ सकती है वहाँ तक भूमि के दिखायी पड़ने के बदले विस्तृत रूप में फैली फुलवारियों से लदी दिशाएँ विश्वामित्र मुनि ने देखीं। ६ कोसल राष्ट्र शिवशंकरजी के निवास की तरह मंगलमय था। शिवजी के मंदिर में 'मंगला' अर्थात् पार्वती अपनी लीला से प्रसन्न रहती है। कोसल में 'मंगल' अर्थात् 'शुभ' भरा हुआ था। श्रीमहाविष्णु के रंगमहल की तरह (वह राज्य) लक्ष्मी-विलासयुक्त था। लक्ष्मी के विलास से विराजित विष्णुलोक की तरह कोसल राष्ट्र संपद्भरित था। अत्यंत तेजस्वी सूर्यमंडल की तरह गोकुलमय था। [सूर्यमंडल में 'गो' का अर्थ 'किरण' कुल का अर्थ 'समूह'] और कोसल के अर्थ में गोकुल का भाव गो (गायों)-धन से संपन्न था]। ७ राजा अज के पुत्र दशरथ राजा के राज्य के विभिन्न प्रदेशों को देखकर अत्यानन्द से मुनि विश्वामित्र पुनःपुनः मन ही मन 'वाह-वाह' करने लगे। अवतारी पुरुष श्रीराम के पिताजी का ही यह राज्य है न! अतः देवलोक भी ऐसी शोभा से वंचित है। इस तरह सोचते (हर प्रदेश को) पसंद करते, गाँवों को पार करते पहुँचे। ८ परिवेष्टन से परिपूर्ण सूर्य (मंडल) की तरह क़िलों से घिरा हुआ (अयोध्या) नगर दूर से ही विश्वामित्र को दृष्टिगोचर होने लगा। हे तरुण! सुनो। मरकत-माणिक्य तथा सोने के जैसे चमकते-जगमगाते क़िलों की दीवारों के मध्य

मुरिमुरिदु कोंत्तळद कोटॅय तरतरद मुगिलट्टळेय वि-
स्तरद विमल स्फटिकबद्धरदाळुवेरिगळ
परिपरिय मणिकनकमय दुप्परिगॅगळ सालिनलि सुरपन
पुरवनणकिसुतिर्दुदा सत्यवतीनगर ॥ 10 ॥
हॊळलु हॊसरीतियलि मिगॆ कंगॊळिसुतिर्दुदु मुनिपतिगॆ हॊर
वळल रम्योद्यान वॆसॆदुदु चैत्ररथदंतॆ
नलिव किन्नरमिथुननलि मिगॆ गळहुवरगिळि विडिनलि हॆ-
क्कळिप कोगिलॆ गळलि मोरॆबळिकुळद मेळदलि ॥ 11 ॥
हॊरॆद मकरंदद तुषारद परिमळद पसरिक्रॆय कुसुमो-
त्करद नसुविडिगायि कसुगाय् दोरॆगायिगळ
बिरिदोगुव बंबलिन सोनॆय परिय पक्ष फलाळिगळ बं-
धुररसाळ प्रमुख भूजदिनॆसॆदुदुद्यान ॥ 12 ॥
बीगि बॆळॆदॆलॆ वळ्ळिगळ सलॆतूगि तोनॆवडकॆगळ गोनॆयलि
बागि बळुकुव बाळॆगळ फलभरद तॆंगुगळ
सोगॆगळ सुळिवुगळ कपिगळ लागुगळ लंघनॆयलॆसॆदुदु
पूगणॆय नाडुंबोलन वोलु तत्पुरोद्यान ॥ 13 ॥

ऊँची अट्टालिकाओं से युक्त भवन, यज्ञशालाएँ आदि शोभायमान थे। ९ घिर-घिरकर घेरा डाले हुए क़िलों पर के बुर्ज़, क़िलों पर के गोपुर, स्फटिक और हीरे से कढ़ी क़िले के चारों तरफ़ की दीवारें, सोने-हीरे की नक़्क़ाशी से सुशोभित दुमंज़िले मकानों की, राजमहलों की कतारें —वग़ैरहों से सुशोभित सत्यवती नगर मानों देवेन्द्र की राजधानी अमरावती की हँसी उड़ाता था। १० विश्वामित्र की दृष्टि में राजधानी विनूतन रूप में चमकने लगी। आमोद-प्रमोद में लीन किन्नर-दम्पत्ति, सुमधुर कंठ से वार्तालाप करते तोते, कुहूकुहू करती कोयल, गुंजारव करते भौंरों से राजधानी के बाहरी वलय स्थित सुन्दर उद्यान, कुबेर की नगरी के चैत्ररथोद्यान की तरह शोभायमान दीख रहे थे। ११ मकरंद रस की बूँदों से भरे सुगंधित फूल, चारों तरफ़ खुशबू फैला रहे थे। बतिया, कच्चे फल, पकते फल और पूरी तरह पककर रस बरसाते फलों से लदे गुच्छे, मीठे आमों की मानों भीड़ लगे पेड़ों से वह उद्यान मनोहर और शोभायमान दीखा। १२ परिपुष्ट होकर पनपे पान (तांबूल) की लताएँ, झूलते हुए सुपारी के पेड़, घौद (फलों के गुच्छों) के भार से सिर झुकाए केले के पौधे, ठसाठस भरे नारियलों के गुच्छों से लदे पेड़ —वग़ैरहों से सुशोभित उस नगरोद्यान में मोर पंख फैलाए नाच रहे थे; बन्दर डाल-डाल उछल रहे थे।

मरकतद नॆलगट्टुगळ हिम किरण कांतद नॆलॆ नॆलॆय वं-
धुरद घन सोपानगळ केळीमनोहरद
सरसिगळ मणि सौधगळ विस्तरद विवध सुरत्न हेमो-
त्करद कृतकाद्रिगळ लोप्पिदुदा पुरोद्यान ॥ 14 ॥
सरसिगळ पुण्योदकदलघमरुषणंगैदब्ज कुसुमो-
त्कर पराग विलेपनांग दिनळिकदंबकद
वर चतुस्वर दमळ निगमोत्करद तद्वन संचरद परि
सरद पावन परम मुनि यप्पिदनु कौशिकन ॥ 15 ॥
बारिसिद सरणि श्रमोद्भव वारि तनुगत वाद वंग म-
नोरथद लुब्बिदुदु विश्वामित्र मुनिवरन
पौरजन विभहय वरुथद सारथिय पथविडिदु नगर
द्वारवनु सारिदनु सम्मेळदलि मुनिनाथ ॥ 16 ॥
सगररंदु महाध्वराश्वव जगवॆरडरलि नोडिकाणदॆ
बगिदिळॆय तंदिळिद वितळद्वारवो पुरद
अगळॊ रवियॆडॆयार्टकिक्किद गगन सीमॆयो कोटॆयोयॆनु-
तगडु राजमुनींद्र हॊगळुत हॊक्कना पुरव ॥ 17 ॥

सचमुच ऐसा लग रहा था कि यह उद्यान मानों कामदेव की क्रीडा का ही उद्यान है। १३ मरकत के पत्थरों से पटी हुई भूमि, चन्द्रकांत शिला के सुन्दर सोपानों से विनिर्मित मनोहर क्रीडा-सरोवर, रत्ननिर्मित भवन तथा वज्र, वैडूर्य और सोने से अलंकृत कृतक पर्वतों से विनिर्मित वह नगरोद्यान बहुत सुन्दर था। १४ उद्यान के सरोवरों के पवित्र जल में स्नान कर, कमलपुष्पों के पराग रूपी भभूत (भस्म) शरीर भर में संप्रोक्षित कर लेने के बाद, भौंरों का झंकार उदात्त-अनुदात्त आदि चार प्रकार के स्वरों में मानों वेदपठनसंपन्न होने पर उस वन-संचारी पवित्र मुनि ने विश्वामित्र का स्वागत कर आलिंगन कर लिया। १५ जल पीकर यात्रा की थकावट निवारित होने की वजह से देह से चूता हुआ पसीना रुक गया। अपने मन की इच्छा सफल होने के भरोसे के कारण विश्वामित्र फूला न समाया। नगर के लोग, हाथी, घोड़े, रथ के कोचवान —ये सब जिस रास्ते पर से जा रहे थे, उसी रास्ते का अनुसरण करते हुए ऋषिसमूह के साथ अयोध्यानगरी के महाद्वार पर आये। १६ प्राचीन काल में (राजा) सगर के पुत्र महायाग के घोड़े को भूलोक स्वर्गलोक में कहीं न पाकर भूमि खोदने पर दीख पड़नेवाले मानों पाताल का द्वार हो या क़िले के बाहर की खाई हो; अथवा सूर्य के नज़दीक जाकर खेलने के लिए

पळुकि नरॆयलि बिगिद बीदिय नॆलन निळयश्रेणिगळनु
ज्वलिप चन्द्रोपलद घन सोपान पंक्तिगळ
बळि बळिय सौधाळिगळ हॊंगळसगळ हॊदरिन पताका
वळिय पसरदिनॆसॆदुदा पुर मुनिय कण्मनकॆ ॥ 18 ॥
परिपरिय वस्तूत्करद विस्तरद विविध वणिग्वरर बं-
धुरद बह्ळित सूर्यवीथिय सोमवीथिगळ
पुरनितंबिनियर विलासद निरुपमालय वीथिगळ मुनि-
वरनु नोडुत बंदु हॊक्कनु नृपसभास्थळव ॥ 19 ॥
धरणिपति मुनि सार्वभौमन बरव काणुत दिम्मनुरुवि
ष्टरव निळिदिदिर्वंदु विनमित नागि कैगॊट्टु
अरमनॆगॆ तंदर्घ्यपाद्योत्कर विधान दिना मुनियनुप
चरिसि बिजयंगैद हदनेनॆंदु बॆसगॊंड ॥ 20 ॥
बंदॆवाव् केळै स्वकार्यद कुंदु हॆच्चिछन कॊरतॆ गळु नि-
न्निंद नमगॆ सुसूत्रवहवॆंबी विचारदलि
इंदिगी नॆलॆ गावनै निन्निंद तेजिष्ठरु महीशरॊ-
ळॆंदु कॊंडाडिदनु मुनि दशरथ महीपतिय ॥ 21 ॥

निर्मित आकाश प्रदेश हो या क़िला ही हो —इस प्रकार (उस प्रवेश-द्वार का) वर्णन करते हुए विश्वामित्र अयोध्यानगरी में प्रवेश करते हैं। १७ नगर की सड़क स्फटिक शिला-फलकों से पाटी गयी थी। द्वारों के सम्मुख अमृत-शिला से निर्मित सोपान पंक्तियाँ घरों की पाँतियों की शोभा बढ़ा रही थी। आसपास खड़े (निर्मित) मंजिलों से युक्त घरों पर सोने के कलश और ध्वज शोभायमान थे। इस प्रकार सुशोभित नगरी ने विश्वामित्र को पूरी तरह मोह लिया। १८ तरह-तरह की वस्तुओं से भरी-लदी व्यापारियों की दूकानों की कतारों की सूर्यवीथिका-(गली), चन्द्र-वीथिकाएँ, नगर-नारियों की विलास के सुन्दर गृहों से युक्त वीथिकाएँ (गलियाँ) देखते आये हुए विश्वामित्र ने राजा के सभा-मंदिर में प्रवेश किया। १९ दशरथ राजा ने मुनिपति विश्वामित्र का आगमन देखा। तुरंत सिंहासन से उतर पड़े; अगुवानी करते हुए प्रणाम किया। उनका हाथ पकड़कर अपने राजमहल ले गये। अर्घ्य-पाद्यादि समर्पण कर आदरातिथ्य करने के उपरान्त पूछा कि आगमन का कारण क्या है? २० "अपने निजी कामों में जो कुछ अधिक त्रुटियाँ हैं, उनका परिहार बड़ी सुगमता से आप ही से संभव है। इसी विचार से (प्रेरित हो) आपके पास आया हूँ। इस भूमंडल में आपसे बढ़कर तेजस्वी राजा कौन हो

जनप केळै हेळबेकेंबिनितु तानुपचार निन्नय
जनपधर्मद सकलनीतिय सारसंग्रहव
मनु पुरूरव कार्तवीर्यार्जुन हरिश्चन्द्रादिरायर
नेनह नेरे माणिसिदे मातिन्नावु देमगेंद ॥ 22 ॥

हसनु वर्णविभेद पद्धति ससिन वैदिक मार्ग निन्नलि
वसुमतीपति केळु जनपालनेय परिलेसु-
हुसि कवर्ते कळवळिवु कोलॆ कर्कशतॆ मुख्योपद्र विवु मिगॆ
मिसुकलम्मवु नावु हेळुवदेनु निनगेंद ॥ 23 ॥

अरस केळै धर्मनालुकु चरणदलि निंदिदे महीनि-
र्जरर निरुपम हव्यकव्य स्थिति सुरेश्वरन
वरसभामंडल दोळगॆ विस्तरण वागिहुदग्नि होत्रा
चरितकावुदु कोरतॆयॆले नरनाथ केळॆंद ॥ 24 ॥

ईसुदिन नम्मग्नि होत्रकॆ मीसलळियदॆ, नडॆदुदीग वि-
नाशकर वाय्तदरि नादुदु वरवु नमगॆनलु

सकते हैं ?" इस तरह कहते हुए मुनि विश्वामित्र ने राजा की प्रशंसा की। २१ "हे राजा, सुनो। तुम्हारे राजधर्म की समस्त नीति का सारभूत कथन मानों केवल औपचारिकता होगी। तुमने तो (राज्य के कारोबार में) मनु, पुरूरवा, कार्तवीर्यार्जुन, हरिश्चन्द्र आदि राजाओं को हम भूल जायँ —इतना सब कुछ किया है। फिर मेरे लिए (कहने) को कुछ न बचा।" इस प्रकार विश्वामित्र ने कहा। २२ "तुम्हारे राज्य की वर्णाश्रम-पद्धति अत्युत्तम है। लोग सीधे वैदिक-मार्गानुसरण करने में दत्तचित्त हैं। सुनो राजा ! तुम्हारी प्रजापालन-रीति बड़ी ही सुचारु है। झूठ-फ़रेब, डकैती, चोरी, लालच, हत्या, कठोरता, रोगादि (भौतिक) पीड़ाएँ तुम्हारे राज्य में फटक नहीं पाती। इससे बढ़कर मैं क्या कहूँ ?" इस तरह विश्वामित्र ने कहा। २३ "हे दशरथ राजा ! सुनो। तुम्हारे राज्य में धर्म मानों (अपने) वेदरूपी चारों पैरों पर सुदृढ़ खड़ा है। भूसुरों (धरती के देवता-ब्राह्मणों) से किये गये यज्ञ-यागादियों की (धूम्रशिखाओं की) खुशबू देवेन्द्र के सभामंदिर तक व्याप्त है। अग्निहोत्र का आचरण निर्दोष हो, संपन्न हो रहा है।" —इस प्रकार विश्वामित्र ने कहा। २४ "इतने दिनों तक हमारे यज्ञ-यागादि कार्य निर्विघ्नता के साथ संपन्न हुए। अब उनका विनाश हो रहा है। इसी कारण हमको आना पड़ा।" जब विश्वामित्र ने इस प्रकार कहा तब दशरथ ने निवेदन किया— "बस, इतनी सी है न आपकी चिंता। इसमें क्या बड़ी

ऐसले निमगाद चिंतेयिदेसुदोड्डितु बेससि माडुवे-
नीसु मातिल्लेले मुनीश्वर नंबि नीवेंद ।। 25 ।।
पोडविपति केळ् निगम निकर गळेंडहि वाचिसि देडेयु निम्मय-
नुडिगे होद्दुदु हळिवु मनुविडिदिदु परियंत
नुडिदु नोडुवे वावु नम्मय नुडियनी पालिसिदडदु मै
गोडुव भाग्यद बेळसले नमगेंदना मुनिप ।। 26 ।।
नावु बेडुव वस्तुवाहन वावुदद केळरस राघव
देवननु कोडु कडेय मातिदु यज्ञरक्षणेगे
भूवधूवर केळिदै संभावनोचित विनितले म-
त्तावुदके निर्बंधिसुवरल्लेंदना मुनिप ।। 27 ।।
अले कुशने केळ् मुनिपनुत्तरदलगु बेन्नलि मूडिदुदु हेड
तलेगे सार्दुदु जिव्हे कळवळिसिदवु करणचय
ओळगुगवदुदु तापदलि मुम्मिळितनादनु मुंदुगाणदे
हलवनेणिसुत हरुबगेट्टि तेंदना मुनिप ।। 28 ।।
ऐसले मुनिनाथ रामन दैसरव नत्तुंब हरेयद
शैशवन कैयिद सलुहिसि कोंबुदे यजन

बात है ! आप आज्ञा भर कीजिए। मैं प्रतिवाद कदापि न करूँगा। मुनिवर ! मुझ पर विश्वास कीजिए। २५ "हे राजन ! सुनिए। वेद कहीं ग़लत कहें, लेकिन मनु महाराज से लेकर, आज तक की तुम्हारी पीढ़ी में, कोई भी दिए गये वचन से न चूका। अतः हमारे मन में जो कुछ है— एक बार निवेदन कर देखते हैं। अगर आपने वचन पालन किया तो हमारा महद्‌भाग्य है।" इस तरह विश्वामित्र ने कहा। २६ "हम कौन से वस्तु-वाहन को माँग लेनेवाले हैं सुनिए दशरथ ! यज्ञ-रक्षणार्थ हमें राघव को प्रदान करो। उन्हें हमारे साथ भेजो। यही हमारा आखिरी दृढ़वचन है। आपसे मैं जो भेंट-पुरस्कार चाहता हूँ, यही है। इसके सिवा अन्य किसी चीज़-वस्तु के लिए मेरा आग्रह नहीं।" यों विश्वामित्र ने निवेदन किया। २७ अरे कुश ! सुनो बेटा। विश्वामित्र के इस कथन रूपी शस्त्र का फल इतना चुभा कि दशरथ की पीठ में मानों वह दिखायी पड़ा। जीभ ऐंठने लगी। पंचेंद्रियों में व्याकुलता व्यापी। परिताप के कारण दशरथ मानों अन्दर ही अन्दर उबलकर मृतक-से हुए। असमंजस में पड़े, भाँति-भाँति के विचारों में डूबे असंतुष्ट हो दशरथ विश्वामित्र से यों कहने लगे। २८ "महर्षिवर ! इतना ही है न ? राम तो अभी छोटा बच्चा है न। रो-धोकर भोजन करनेवाले उस मासूम बच्चे से आपके

सूसदिरि नीव् नगॆयनिदकॆ नैसले मखपरिकरव मे-
ळैसि मरॆमातेकॆ रक्षिसुवॆन महाध्वरव ॥ 29 ॥
नगॆय सूसुवडावु लोकद हगरणिगरे केळिदै नृप-
मगुवु राघव नॆंदु तप्पिसि नुडिद नुडि निनगॆ
निगरवे रघुनाथ नाडाडिगळ नरने मरुळला नि-
न्नगडु तनवनु बल्लॆनदु कॊळ्ळदु कणायॆंद ॥ 30 ॥
धुरदॊळिंद्रन सदॆवडिदु शंबरन समरव गॆलिदॆ नॆंबी
बिरुद बिडु केळरस दिग्विजयद पराक्रमद
हुरुळु निनगुंटॆबुदद कॆलकिरिसु वीर सुबाहु मारी-
चरु गळारॆंदरियला नरनाथ केळॆंद ॥ 31 ॥
कळुहुवडॆ नृप केळु रामन कळुहु कळुहदॊडॆम्मनीक्षण
कळुहु कावववरुंटु यज्ञवनिळॆयॊळरसुगळु
होळॆदु नुडिवरसल्लवॆंदा नॊळग नरियदॆ बंदॆ नैसिद
कळुक लेतकॆ तूग दिर्दडॆ तॊटियॆ कॆंद ॥ 32 ॥

यज्ञ की रक्षा कैसे संभव मानी आपने। मेरी बातों की हँसी मत उड़ाइए। यह कौन सा महाकार्य है ? यज्ञ की पूरी तैयारी आप कर लें। मैं स्वयं उपस्थित रहकर उस महायज्ञ की रक्षा का भार सँभाल लूँगा।" २९ "राजन! तुम्हारी बातों पर हँसने के लिए क्या तुमने हमको बकवादी समझा? सुनो राजन् ! राम के बचपने की बातें हमसे कहते हुए क्या वचनभ्रष्ट होना चाहते हैं ? इस प्रकार का कथन क्या ठीक है ? श्री रघुराम को क्या आपने सामान्य मनुष्य समझ लिया ? (अगर है) तो यह तुम्हारा भ्रम है। तुम्हारा यह नटखटपन मेरे सामने न चलेगा।" इस तरह विश्वामित्र ने कहा। ३० "युद्ध में इन्द्र को जीतनेवाले शंबर से लड़कर उसे जीतने की तथा दिग्विजय पाने का अपना घमंड त्यागो। तू सत्त्वशाली है, यह बात परे रख दो। हे राजन् ! वीर सुबाहु-मारीच कौन हैं (कितने बलशाली है) —यह तुम क्या जानो ? । ३१ राजन् ! सुनो। (आखिरी) बार कहता हूँ) अगर भेजना चाहते हैं तो राम को भेजो। अगर राम को भेजने की इच्छा नहीं तो इसी घड़ी हमें बिदा कर दो। यज्ञ की रक्षा करनेवाले राजाओं की इस दुनिया में कमी नहीं। 'बहानेबाज़ी वाले तुम नहीं हो सकते' —यों सोचकर तुम्हारे पास आया था। तुम्हारा आंतर्य जानने में हमने भूल की। इसके लिए क्यों डरूँ भला ? काम न बन पड़ने से लड़ाई-झगड़ा क्यों ?" इस तरह विश्वामित्र ने कहा। ३२ "आपकी कृपा से बहुत समय के बाद इन बच्चों का मुखड़ा देखा, मुनिवर !

मुसुड कंडेनु हलवु कालकॆ शिशुगळिवदिर निम्म कृपॆयलि
हसुळॆगळला हरिबवनु नीवॆंद हगॆगळलि.
ऎसग बल्लरॆ कंड रतुनव बिसुडिसलु बेडय्य रक्कस
रसमरण दॊळगुळिय बल्लरॆ तंद हेळॆंद ॥ 33 ॥
उळिय बल्लरॆ रक्कसर कॊळुगुळदॊळगॆ कदनक्कॆ कंदन
कळुह बहुदेनॆंदु करुणव तोरि नुडिदॆयल
उळिवुदी निजवस्तुवी जगदळिविनलि मिक्काद वस्तु ग-
ळळि ववीत निनीतनारॆंदरि यलायॆंद ॥ 34 ॥
मरुळरस केळीत मायानर कणा मगनल्ल निखिळा-
मरर दूरिदीत निम्मा तरणिवंशदलि
धरॆय भारव निळुह लॆंदवतरसिदनु जगदखिळ देवरि-
गरसला निनगकट मगने मरुळॆ होगॆंद ॥ 35 ॥
अजन रूपिंदखिळलोकव सृजिसुवनु सलहुवनु गरुड-
ध्वजन रूपिंदळिव नग्गद रुद्ररूपिनलि
भजिसि नॆरॆयरु नारदाद्यरु निजवनीतननीत निनगा-
त्मजनॆ होगॆलॆ मरुळॆ नीनारीतनारॆंद ॥ 36 ॥

आपसे उल्लिखित शत्रुओं से लड़ने का दम इन मासूम बच्चों में कहाँ ? हाथ आए रत्नों को फिंकवाइए मत गुरुदेव ! राक्षसों के साथ के विषम युद्ध में क्या मेरे पुत्र बच सकते हैं तात !" इस तरह दशरथ ने पूछा । ३३ विश्वामित्र ने राजा से प्रश्न किया— "राक्षसों के साथ के युद्ध में क्या ये बच सकते है, मासूम बच्चों को युद्ध में कैसे भेजूं कहकर गिड़गिड़ाते हो न ? सुनो, जगत्-प्रलय होने पर वह अविनाशी एक मात्र परात्पर वस्तु बची रहती है । इसे छोड़ अन्य सभी (जड़ चेतन) वस्तुओं का विनाश निश्चित है । यह (राम) कौन है— तुम नहीं जानते ? ३४ दशरथ ! तू एक महामूर्ख है । यह केवल एक मायावृत मानव है; सचमुच तेरा पुत्र नहीं है । समस्त देवताओं की पुकार सुनकर भूमि का भार उतारने के उद्देश्य से तुम्हारे इस सूर्यवंश में अवतरित हुआ है । जगत के समस्त देवताओं का स्वामी है । क्या यह तेरा बेटा है ? तू पागल है ।" इस तरह विश्वामित्र ने समझाया । ३५ ब्रह्म-रूप से समस्त लोकों की सृष्टि करनेवाला, गरुड़वाहन विष्णुरूप से रक्षा करनेवाला, रुद्र-रूप से उसका नाश करनेवाला वही एक मात्र है । नारदादि उसकी आराधना जी-जान से करते हैं; फिर भी उसके नैजरूप को देख नहीं पाते । ऐसा महत्तत्त्व क्या तुम्हारा बेटा हो सकता है ? मूर्ख ! जाओ तुम । तुम कहाँ, वह

ई हसुळें हिंदखिळ युगदलि रुहिसिदनुरु मत्स्यकूर्म व-
राह नरहरि वटु परशुधरनागि लीलॆयलि
गाहु वेरिहुदी जगद मैगाहि गोसुग जन्मवेंबिवु
चोह वैसल्लदॆं विचारिसॆ मगनॆ निनगॆंद ॥ 37 ॥
काणवीतन नऱसि निगम श्रेणिगळु सिद्धान्त विदु पर-
माणुगतन महत्ववनु निर्णसि नॆरॆयवल
स्थाणु कमलजरऱिकॆगळ सत्राणवेतऱवरस केळ् सरि-
गाणॆ निनगी दैव वॊलिदुद कॆंदना मुनिप ॥ 38 ॥
तंदॆ नीनहॆंनॆंब हम्मनु तंदुकॊळदिरु निम्मगुरुविन
तंदॆयय्यनु तप्पदॆयॆं बीसु निश्चयव
हिंदुमुंदहॆ केळिको नावॆंद मातनु कुलविडिदु -वळि
संद निम्मय गुरु वसिष्ठन नॆंदना मुनिप ॥ 39 ॥
सॆरॆगळौकिदवा नरेन्द्रन कॊरळना मुनिनाथ नुडिदु-
त्तरकॆ मारुत्तरव काणदॆ मनद मरुकदलि
गुरु मुखांबुजवनु निरीक्षिसॆ वॆरळ सन्नॆयलामुनिप नि-
र्धरिसिदनु निजवॆंदु कळुहिन्नंज वेडॆंद ॥ 40 ॥

कहाँ ? ३६ पूर्व में अन्यान्य युगों में मछली (मत्स्य), कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम आदि विविध रूपों में इस शिशु ने अपनी लीला का विस्तार किया। उसके अवतार का उद्देश्य ही निराला है। सोच-विचार कर देखें तो इस जगत की रक्षा-पालन करने के लिए यह मानवरूप-धारण एक स्वाँग मात्र है। और कुछ नहीं।" इस तरह कहा। ३७ वेद इसका पता लगाने में अपने को असमर्थ पाते हैं। अणुरेणु तृणकाष्ठ के अंतर्गत व्याप्त इसकी महिमा का निर्णय करना अपनी ताक़त के परे है। यह सिद्धांत की बात मैं कह रहा हूँ। शिवजी, ब्रह्माजी में स्थित सत्त्व का मूल कौन सा है— कहो तो दशरथ ! तुम पर श्रीहरि जो प्रसन्न है —इसके समान तुम्हारा भाग्य और क्या हो सकता है ? ३८ 'मैं उनका पिता हूँ' —यह अपना अहंकार छोड़ो। तेरे गुरु वसिष्ठ के पिता, ब्रह्माजी के पिता श्रीमन्नारायण ही ये है —इस तरह दृढ़भावना धारण कर। मेरे इस कथन की सत्यता तुम अपने कुलगुरु वसिष्ठजी से आज या आगे चलकर पूछकर समझ लो।" इस प्रकार विश्वामित्र ने कहा। ३९ दशरथ की घिग्घी बँध गयी। विश्वामित्र महर्षि की बात काटने में अपने को असमर्थ पाकर, शोकाकुल हो गुरु वसिष्ठजी के मुखकमल की तरफ़ देखते हैं। (तब) उँगली के इशारे से गुरु वसिष्ठ ने 'समझाया—

गुरु निरुपवलंघ्य वेंदनु करसि करेदनु मगन नीमुनि
वरन कृप निनगाय्तु पालिसु मुनिप नध्वरव
तरळु नीनेंदेंब वचनांतर दोळोसरिद वश्रुजल नि-
र्भरद बेरगिन धीवश दोळिर्द्दुदु सभास्थान ॥ 41 ॥

नमिसि तंदेगे गुरु वसिष्ठन सुमुखतेय हरकेयनु कैकों-
डमित विक्रम निषुधि चाप कृपणवनु धरिसि
गमिसिदनु मुनियोडने हरुषोद्गमदलातन बेम्बळियला
क्रमदिना सौमित्रि कळुहिसि कोंडना नृपन ॥ 42 ॥

बीळुकोंडनु मुनि बळिक भूपालकन हरुषदलि तनृप
बालकरु सहितल्लि गल्लिग नेरेद पौरजन
जाळिसुव कंबनिगळलि बिरु नाळिगय बैगुळलि मुनियनु
कीळुनुडियलि जरेवुतिर्द्दुदु जरेदु जनपतिय ॥ 43 ॥

पुरव होरवंटा मुनिपना तरणि कुलजरु सहित बंदनु
सरयुवेंब तरंगिणिगे निजभाव शुद्धियलि
परमनिष्ठेयला मुनिपनघ मरुषणादि समस्त कर्मा-
तरव विरचिसि कोट्टनवरिब्बरिगनुग्रहव ॥ 44 ॥

'विश्वामित्र का सारा कथन सत्य है। बच्चों को भेज दो। डरने की कोई आवश्यकता नहीं'। ४० गुरुवरेण्य की आज्ञा का उल्लंघन अनुचित जान दशरथ ने बेटे को बुलाया। "इस महर्षि विश्वामित्र की दया (कृपा) तुझे प्राप्त है। मुनि के यज्ञ की रक्षा कर। उनके साथ रवाना हो जाओ।" इस तरह राम को आज्ञा देते समय उनकी आँखें डबडबा आयीं। सभा में उपस्थित सभी दंग रह गये। ४१ महापराक्रमी राम ने पिताजी को प्रणाम किया। गुरु वसिष्ठजी के शुभाशीर्वाद प्राप्त किये। कमान, तीर, तरकस, तलवार लेते हुए विश्वामित्र के साथ खुशी-खुशी रवाना हुए। इसी तरह लक्ष्मण भी पिताजी से बिदा लेते हुए राम के पीछे-पीछे चले। ४२ दशरथ से बिदा लेते हुए विश्वमित्र दशरथ के पुत्रों को साथ लेकर खुशी-खुशी रवाना हुए। इस घटना की खबर मिलते ही शहरवासी जहाँ-तहाँ झुंड के झुंड इकट्ठे होकर आँसू बहाते हुए, विश्वामित्र को कठोर शब्दों में गालियाँ देते हुए हलके शब्दों में दशरथ की निंदा करने लगे। ४३ अयोध्या नगरी से रवाना हुए विश्वामित्र रविकुल-कुमारों के साथ सरयू नदी के किनारे पहुँचे। वहाँ भावशुद्धि तथा निष्ठा से उन बालकों को पाप-निवारक अघमर्षणादि कर्म संपन्न करते हुए उन दोनों को अनुग्रहीत किया। ४४ आचमनीयादि कराकर शिव, ब्रह्मा,

हरिहर ब्रह्मामरेंन्द्राद्यर हॆसर दिव्यास्त्रमंत्रव
नॊरॆंदनाचमनीय सांगोपांग · मुद्रॆयलि
वरवनित्तनु शस्त्रदुप संहरणवनु तनुरक्षणॆय वि-
स्तरद दिव्यतनुत्र मंत्रवना कुमाररिगॆ ॥ 45 ॥

हत्तनॆय संधि

सूचनॆ— तुंग भुजबल नहित मदमातग कंठीरवनु रामन मंगवलि ताटकिय गॆलिदॊलिसिदनु जयवधुव ।

कंद केळै मुनिबळिक मुदर्दिद सरयुव दाटि दशरथ
नंदनरु सहितैदिदनु घनघोर काननव
दंदशूक महोग्र खगमृग दिंद मिगॆ कप्पगिव कत्तलॆ
यिद बीरितु भयवना रघुराज पुत्ररिगॆ ॥ 1 ॥
मुनिप चित्तैसी भयंकर वन विदारा श्रमवु गमिसुव
डनिमिषरिगळवल्ल हॆसरेनी महावनद
ऎनॆ सुरेंद्रनु पूवृदलि वृत्रन विदारिसॆ वंदुदातगॆ
जनित कल्मष दोषवा दिनकॆंदना मुनिप ॥ 2 ॥

विष्णु, इन्द्रादि नामों के दिव्य अस्त्रों के मंत्रों को सांग, उपांग, मुद्राओं-सहित उपदेशित किया। शस्त्रों को वापस लेने का क्रम, देह की रक्षा में उपयुक्त दिव्य कवच मंत्रों को वरदान के रूप में विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को दिया। ४५

दशम संधि

सूचना— आजानुबाहु बलशाली, शत्रु रूपी मदोन्मत्त हाथियों के लिए मानों सिंह-सदृश श्रीराम ने बड़े धीरज के साथ ताटका को जीतकर विजय-लक्ष्मी को प्रसन्न कर लिया।

सुनो बालक ! तदुपरांत विश्वामित्र मुनि बड़े संतोष के साथ सरयू नदी पार कर दशरथ कुमारों के साथ घनघोर जंगल में प्रवेश करते है। साँपों तथा उग्र मृग-पक्षियों से भरे अंधकार से आवृत वह जंगल राम-लक्ष्मण को भयानक लगा। १ "महर्षिजी ! कृपया सुनें। यह भयानक वन किनका आश्रम है ? देवता भी यहाँ प्रवेश पाने में असमर्थ हैं। इस महाबन का नाम क्या है ?" —इस तरह कुश-लव ने प्रश्न किया। "प्राचीन काल में इन्द्र ने वृत्रासुर की हत्या की। फलस्वरूप वह (इन्द्र) पाप-भाजन बना।" इस तरह मुनिवर समझाने लगे। २ उस पाप-पंकिल के

कलुषवद नपहरिस लाखंडलन बळिगजबंदु गंगा
जलद लभिषेकवनु माडिदना सुरेंद्रगे
बळिकला जल विळियली वनकलुषकाननवाय्तु भारिय्र
खळरिगाश्रयवाय्तु नम्माश्रमकॆ हगॆयाय्तु ॥ 3 ॥
ई वनदोळिह रप्रतिम वीरावताररु कलि सुबाहु वि-
भावरीचर घोर मारीचादि राक्षसरु
ठावु बिड़िसिदु केळिदॆ राजीवलोचन निर्भयांगद
धीवसवु धुरकिरलॆनुत नडॆतंदना मुनिप ॥ 4 ॥
सुळिदुदा कांतार मध्यस्थळदॊळगॆ नरगंध नासा
वळयदलि नॆसाटकुलदाटविकि ताटकिय
सुळिववरु नररॆन्न पुण्यदफलवला मज्ञ भापॆनुत मै-
यॊलहिनलि मनवुब्बि निंदिदळधिक हरुषदलि ॥ 5 ॥
एळलॆद्दुदु शाकिनी जनजाल पायव धारॆनुत विक-
राळमुखि नडॆतंदळद्भुत रौद्ररूपिनलि
मेलॆ सुळिवसुरांगनाजन जाल वाचरिसित्तु बिद्दवु
तोळ गाळिगॆ तरुकदंबकववळ गमनदलि ॥ 6 ॥

निवारणार्थ ब्रह्माजी इन्द्र के यहाँ आए। गंगाजल से इन्द्र का अभिषेक किया। इन्द्र के कलमष का वह पानी उतर आया। इस कलुषित वन का निर्माण उसी पानी से हुआ। यह वन बड़े-बड़े दुष्टों का निवासस्थान हुआ। और हमारे आश्रम के लिए शत्रु बना। (इस तरह विश्वामित्र ने समझाया)। ३ "इस जंगल में महापराक्रमी सुबाहु-मारीच आदियों ने निवासस्थान बना लिया है। यह अत्यंत क्रूर जगह है। हे कमल-नयन! सुना न तुमने? तुम्हारा धीरतापूर्ण साहस युद्ध के लिए आरक्षित रहे।" इस तरह कहते हुए विश्वामित्र मुनि आगे बढ़े। ४ राक्षस-कुलोत्पन्न धूर्त ताटका को इस जंगल के मध्य में से मनुष्यों की बू का पता चला। 'यहाँ से होकर मनुष्य ही तो आ रहे हैं। यह मेरा पुण्य परिपाक है। वाह! वाह!'—इस तरह उद्‌गार निकालते हुए खुशी के मारे फूली न समाकर झूलती और डोलती रही। ५ ताटका जब (हवा में) ऊपर उठने लगी तो राक्षसियों का समूह 'पायवधारु' कहते हुए (अपनी ओर ध्यान आकृष्ट करने के इस शब्द का प्रयोग करते हुए) उसके साथ ही उठे। विकारपूर्ण मुखड़ेवाली ताटका बड़ा भयानक अद्‌भुत रूप धारण किए आयी। उसकी गति के ज़ोर के कारण आकाशगामिनी देवता-स्त्रियाँ चौंक पड़ीं। उसके पंखे की तरह झूलते हाथों के हवा के झोंके

जवनजननियो सेणुलय भैरवन भगिनियो विलयकालद
शिवन सखियो सवतियो संवर्तमृत्युविन
इवळ कॆणकिदु जीवदलि वदुकुव भवब्रह्मामरेंद्रर
ह्वणु हुसियॆंदॆंबवॊलु नडॆतंदळिदिरिनलि ॥ 7 ॥
अदॆ बरवु ताटकिय नोडै कदन कर्कश राम रणद-
भ्युदयलीलारंभविदु भूभारभंजनॆगॆ
हॆदरुदिरु चित्तदलि बाणव हॆदॆगॊळिसु रक्कसिय जीवव
नॊदॆदु हाय्कॆंदॆनलु नगुतिं तॆंदना राम ॥ 8 ॥
हॆंगुसिवळिवळसुव नुच्चुवुदंगवे क्षत्रियरिगॆम्म प-
तंगकुल दरसुगळु नगदिहरे सुरेंद्रनलि
रंगबडिसियॆ विडुवदे भटरंग बॆससदिरि नितनॆनॆ मुनि-
पुंगवनु नसुनगुतला रघुनाथगॆ तॆंद ॥ 9 ॥
अलॆ ककुत्स्थज केळु लोकव हिळिवळिवळंददलि हिंदण-
बलियतंगि बळिक्क दूराय्तवळ दॆसॆयिद
बलविरोधिगॆ कॊळिदै कडुगलिअॆ गॊलिदनु शक्र नवळनु
कॊलॆगॆ कॊक्करिसिदनॆ कालग्रीव मृत्युविन ॥ 10 ॥

से कितने ही पेड़ उखड़कर गिर पड़े। ६ ताटका इस प्रकार सामना करते हुए प्रकट हुई मानो यम की माता हो, प्रलयकाल के भैरव की वहिन हो, प्रलय-रुद्र की सहेली हो, जगत-प्रलयकारी मृत्युदेवता की सौत हो, जिसे चिढ़ाकर हरि-हर-ब्रह्मादियों में से कोई भी मानों जीवित वच नही सकता हो। ७ "हे युद्ध में यमस्वरूपी राम! वह देखो ताटका आ रही है। भूमि-भार उतारने के उद्देश्य से जिन युद्धों को तू करने जा रहा है— तथा विजयलीला जो तेरी है— उसका यह श्रीगणेश है। मन में थोड़ा भी अधैर्य को प्रवेश मत दो। कमान पर तीर चढ़ाओ। राक्षसी के प्राणों को खदेड़ फेंको।" इस तरह विश्वामित्र के कहने पर राम ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। ८ "यह तो स्त्री है। इसके प्राणों का अपहरण क्या क्षत्रियों के लिए उचित है। स्वर्गवासी हमारे पूर्वज सूर्यवंशी राजा इन्द्र के साथ इस दृश्य को देख क्या हँसेंगे नहीं? इसे अपमानित कर भेजना वीरोचित है। कृपया इसे मार डालने की आज्ञा न करें।" —इस तरह कहते राम ने निवेदन किया, तो मुनिवर विश्वामित्र मुस्कुराते राम से कहने लगे। ९ "हे ककुत्स्थ-वंशोत्पन्न श्रीराम! सुनो। प्राचीन काल में राजा वलि की बहिन इसी तरह लोकविनाश करने लगी। तब इन्द्र के सामने शिकायत उपस्थित हुई। सुनो हे वीर; इन्द्र ने उसे जीत लिया। क्या

धरेंगे कंटकरादवर संहरिसुवदे नृपनीति सुजनर
निरतिशय पालिसुवदे क्षत्रियर धर्मकण
निरुतविदु परमार्थदलि संहरिसु सदेहवनु मनदोळ
गिरिसदिरु रक्कसियनेंनें हूडिदनु मार्गणव ॥ 11 ॥
मुट्टविसिबह रक्कसिय नडगट्टि निंदनु मुंदे सेणसुव
बेट्टदिदिरलि सुळिव सिडिलंददलि घर्जिसुत
इट्टणिसि नगुतवळु रामन नोट्टविसि मुंबरिदु मुनिपन
तोट्टु ळिकेयलि चाच्चिदळु चापळचपेटकव ॥ 12 ॥
तोलगु तोत्तिनमगळे मुट्टदिरिळेय विबुधर निन्न गंटल
बळेय बिडिसुव मृत्युविदे नोडित्त तिरुगेनुत
होळेव होंबरहद सुरेखेय तळपदस्त्रलवळ हस्तव
कळचलेच्चनु भूतगण बीरितोडे भीतियलि ॥ 13 ॥
सिडिदु हारिद हस्तदुरु बेगे बुडसहित बलुमर धरातळ
कुडिदु बिद्दवु करगि खंडनदरुणवारियलि
गिडुलताळि वसंतदलि तळिरोडेद शोकेय धात नगलके
पडेदवमर विमानतति केंपादवभ्रदलि ॥ 14 ॥

कालपुरुष उसे स्त्री समझकर उसके प्राणापहरण में आगे-पीछे देखता है? १० भूमि के विपत्कारियों का संहार ही राजनीति है। सज्जन श्रेष्ठों की रक्षा करना ही क्षत्रिय-धर्म है। इसे सत्य मानो। तुम्हारे मन के इस सन्देह को परमार्थिक ज्ञान के द्वारा दूर करो। इस राक्षसी को बचकर भागने मत दो!" —इस प्रकार विश्वामित्र के समझाने पर राम ने धनुष पर बाण चढ़ाया। ११ पहाड़ से जूझने उसके सामने आते हुए बिजली की तरह गरजती हुई अपना सामना करने आती हुई ताटका को उसने (राम ने) रोक रखा। राम की ओर ध्यान न देते ज़ोर-ज़ोर से हँसती हुई आगे बढ़ती हुई विश्वामित्र की हत्या के लिए अपनी हथेली बढ़ाती है। १२ "नौकरानी की बच्ची! निकल जा। ख़बरदार जो ब्राह्मण पर हाथ उठाया। तुम्हारे कंठ के टुकड़े-टुकड़े कर डालनेवाली मृत्यु यह रही। देख इस तरफ़" —कहते हुए राम ने चमकते सुनहले अक्षरों से कटे कांतिमान अस्त्र से इस प्रकार प्रहार किया कि उसके हाथ क़ट जायँ। इसे देख भूत भय के मारे तितर-बितर हो भागे। १३ कटे हाथ के ज़ोर से उड़ने से जो पेड़ों को धक्का लगा वे जड़ से उखड़कर धरती पर धड़ाम से गिरे। उसके हाथ के चू पड़ते रक्त-धारा से वे (पेड़) लाल हो गये। रक्त-सिंचित पेड़-पौधे तथा लताएँ वसंत ऋतु में

तरुण केळै वळिकला खळ तरुणि तवकद लव्वरिसुतु-
ब्बरद कोपदलॆंडद कैयलि झडिवुतायुधव
घरिघरिनॆं हलुदिनुत नोडातरु वलिय साहसव नॆंनुता-
सुरद रोषावेशदलि झडिदिट्टळिनकुलन ॥ 15 ॥
अवळ शूलद शिखियला वन निवह सीकरियाय्तु तारॆंग-
ळवनि गुदुरिदवर्ळि तपिसितु विंबदिनमणिय
अवनि हॊगॆंदुद्दु सकल मुनिवटु निवह शिवशिव यॆंदुदिद नि-
म्मवरु केळुवरे विचित्रव केळिरै यॆंद ॥ 16 ॥
शूलविदुदु नभद लयद कपालहस्तन करदलावॆंय
तोळुकाणिसिता कृतांतन बळियलॆंसुगॆंयलि
हॆळलेनदनवळु मेघद जाळियलि मळॆगरॆंदळरुणज
लाळि हॊनलिडलव्वरिसुतासुर विकारदलि ॥ 17 ॥
अवबलुबिलु जाणतनद महाविचित्र प्रौढियो दिट
देवनल्ला मेलॆं दैत्यंतकनला रणकॆं

पल्लवित अशोक वृक्ष की तरह लालिमायुक्त हुए। आकाशस्थित देवताओं के विमान भी रक्त के छीटों के कारण लाल दीख पड़ने लगे। १४ तरुण कुश! सुनो। तदनंतर वह दुष्ट राक्षसी अधीर हो चीखती-चिल्लाती, घुड़कती, अत्यंत क्रोध से बाएँ हाथ में आयुध लेकर चमकाने लगी। 'कटकट' दाँत कटकटाते हुए ओंठ काटकर 'देख इस अबला का साहस!' कहते हुए अत्यंत क्रोधोन्मत्त होकर उसने राम की तरफ़ शूल फेंका। १५ उसके फेंके शूल की आग से सारा जंगल जलकर ख़ाक हो गया। नक्षत्र जल-भुनकर धरती पर गिरे। सूर्यबिम्ब उबल गया। धरती से धुआँ उठा। समस्त ऋषि, ब्रह्मचारी 'शिव-शिव' कहने लगे। इन बातों की ओर क्या तुम्हारे वे राम-लक्ष्मण ध्यान देंगे? अगला आश्चर्य सुनो। १६ मारने के लिए ताटका से ऊपर उठाया गया शूल मानों नरकपालधारी शिवजी के हाथ में के शूल के समान आकाश में दीख पड़ा। फेंका गया उसका हाथ यम के पास पड़ा था। कटे हुए उसके हाथ से बादलों से बरसते पानी की तरह खून की धारा बह रही थी। इन सभी बातों का क्या और कितना वर्णन करें! वह बड़ी भयानक रीति से चीखती गरज रही थी। १७ कितना महान था वह धनुर्विद्याकौशल! आश्चर्य-भरा महाकौशल्य! आखिर साक्षात् विष्णुजी तो ठहरे! वे तो युद्ध में असुरों के लिए साक्षात् मृत्युस्वरूप हैं न? उनके लिए कौन काम असंभव हो सकता है? देवगण जब प्रशंसा कर रहे थे कि एक ऐसा भयानक बाण

आवुदरिदातंगॆ गगनद देवतति कॊण्डाडॆ तलॆ घन
रावदलि नॆलकुरुळलॆच्चनु घोर ताटकिय ॥ 18 ॥
कॆडॆदुदा तलॆ रकुत मुंडदॊळॊडॆदु हाय्दुदु बळलि नॆलदलि
कॆडॆदुदवळ शरीर हॊरळितु जावपरियंत
हॊडॆदवमरर भेरि हूविन निडुसरद सोनॆगळ दिविजर
मडदियरु सूसिदरु रघुकुल नुत्तमांगदलि ॥ 19 ॥
पुळक चयदुब्बिनलि मुनिकुलतिलक बिगियप्पिदनु नीलो-
त्पल निभांगन निखिळ देवोत्तमन निरुपमन
नळिननाभन मंगळश्री निळय तॊरवॆयरायननु हॆ-
क्कळद हरुषदलुब्बि कुणिदुदु मुनिजनस्तोम ॥ 20 ॥

हन्नॊंदनॆय संधि

सूचनॆ— धुरदॊळसुरसुबाहु मारीचरनु गॆलिदु मुनींद्रनमलाध्वरव रक्षिसि पडॆदनुन्नत कीर्तियनु राम ।

कळिदरिवरॆलॆ केळु कुश तत्कलुषकांतारवनु तन्मुनि-
तिलक हॊक्कनु बळिक्क घनपावन तपोवनव

चलाया कि ताटका का सिर कटकर धड़ाम से धरती पर गिरा । १८ ताटका का सिर कटकर धरती पर गिरा । शिरोरहित धड़ से रक्त का फ़ौवारा छूटा । शक्ति-रहित देह जब धरती पर लुढ़का, एक प्रहर तक लोटते रहा । देवताओं के नगाड़े बजे । देवता-स्त्रियों ने रघुकुल राम पर पुष्पवर्षा की । १९ विश्वामित्र महर्षि ने आनन्द के कारण रोमांचित हो, देवदेवोत्तम, उपमातीत, नीलांबुजश्यामल कोमलांग श्रीराम का आलिंगन कर लिया । कमल को नाभि में धारण करनेवाले, मंगलकारिणी भगवती लक्ष्मी के निवास-स्थान रूपी 'तॊरवॆ' के स्वामी को देखकर ऋषि-मुनिसमूह हर्षातिरेक से नाचने लगा । २०

ग्यारहवी संधि

सूचना— युद्ध में सुबाहु-मारीच राक्षसों को जीतकर मुनिश्रेष्ठ विश्वामित्र को यज्ञ की रक्षा कर श्रीराम की कीर्ति-कौमुदी महोन्नत बनी ।

ये ताटका के उस दूषित वन को छोड़कर बाहर निकले । फिर आगे बढ़ने लगे । तत्पश्चात् विश्वामित्र मुनिवरेण्य ने रमणीय पुण्यशाली वृक्षों, मनोहारिणी लताओं तथा सुवासित पुष्पगुच्छों की सुगंधि को वहन

ललितपुण्य महीजकुलमंजुळलता सौरभ्य कुसुमो-
च्चळित चलित समीरनुत विश्रुत महाश्रमव ॥ 1 ॥
श्रुतिगळुच्चरणेगळ पिकसंततिय सोपन्यासमय वि-
श्रुत शुकाळिय सकल शास्त्रध्वनिय किन्नरर
नुततपोनुष्ठान विधि संस्थित वनेचर चयद शोभा-
न्वित तपोवन कण्गॆ कौतुकवाय्तु रघुपतिय ॥ 2 ॥
केळिदनु रघुवंश लक्ष्मीलोलनी वनवार दॆंदु वि-
शाल विज्ञाविनुत विश्वामित्र मुनिवरन
हेळिदनु बळिकरि विरोधद वेळुवॆय सुरवल्लभन क-
ट्टूळिगद कश्यप मुनींद्रन पूर्वसंगतिय ॥ 3 ॥
राम केळिदर्रिदलदिती भामिनिगॆ जनसिदनु हरि वर
वामना कृतियिंद दैत्य बलींद्र नध्वरद
होमवनु कॆडिसिदनु बळिकी भूमियनु कॊंडागला सु-
त्राम गॊंडरिसिदंदवनु विरचिसिदना मुनिप ॥ 4 ॥
वनविदॆमगाय्तॆंदु कश्यप मुनिय वचन दलॆलॆ महीपति
तनुज केळ् तपवी तपोवन दॊळगॆ सिद्धिपुदु
ऎनुत मुनि हॊक्कनु तपोधन विनुत शालांतरवनाक्षण
मुनिजनव करॆसिदनु वरनाना तपोवनद ॥ 5 ॥

करनेवाले धीरे-धीरे बहती ठंडी हवा से युक्त पवित्र आश्रम में प्रवेश किया। १ वेदोच्चार करनेवाली कोयलें, पुराणों का अर्थ-विवरण देते तोते, समस्त शास्त्रों का कथन करनेवाले किन्नर, तपस्या में लीन, खड़े पेड़ —इन सभी से युक्त अत्यंत सुन्दर तपोवन ने राम की आँखों का कौतूहल जगाया। २ "यह वन किनका है?" —इस तरह रघुवंशीय लक्ष्मीप्रिय श्रीराम ने सर्वज्ञ विश्वामित्र महर्षि से यह प्रश्न किया। इसके उत्तर में विश्वामित्र ने "क्रतुनाश नामक यज्ञ में इन्द्र से सेवा प्राप्त कर रहे कश्यप मुनि का पूर्वेतिहास श्रीराम को समझाया। ३ "हे राम! सुनो। कश्यप-अदिति के पुत्र-रूप में श्रीविष्णु पैदा हुए। वामनावतारी रूप में प्रकट होकर असुर बलि के यज्ञ-होम को विनष्ट किया। तत्पश्चात् उससे भूमि प्राप्त कर इन्द्र को दिया।" इस प्रकार मुनि विश्वामित्र ने राम को विवरणात्मक रीति से समझाया। ४ "कश्यप मुनि के वचनानुसार हमें यह वन प्राप्त हुआ। सुनो राजकुमार। इस तपोवन में किया गया तप सिद्धि को प्राप्त होता है।" —इस तरह कहते हुए तपोसंपत्ति के स्वामी विश्वामित्र पर्णशाला में प्रवेश करते हैं। तुरन्त अन्यान्य आश्रमों से

नेरहिदनु मख साधनद परिपरिय सकलद्रव्यवनु वि-
स्तरणवादवु यज्ञशाला वीथिगळु बळिक
चरु पुरोडाशाज्यदर्भांकुर समित्कुशे तिलगळलि गो-
चरि सिताहवनीय वैदिक लौकिकोक्तियलि ।। 6 ।।
वरिसिदनु मुनिनाथ बळिकध्वरिगळनु ऋत्विजर नध्वर
परम वैभवदिंद नडेदुदु दिन चतुष्टयव
बरिसिदुदु बरुहिर्मुखरनुब्बरद होमद धूमवित्तलु
नेरवुतिर्द्दुदु रक्कसरु बेरोंदु ताणदलि ।। 7 ।।
नडेवुतिर्द्दुदु होमवीयुग्गडद सुरसंदोह तवकिसि
तोडनोडने गुम्मिदुदु गावळि गगन दळतेयलि
तुडुगुणिगळिवदिरु नभोग्रके सिडिदु हविर्गोंबमर निकरद
हेडक बारिसि बाचुतिर्दरु बायतुत्तुगळ ।। 8 ।।
बोब्बेयादुदु बळिक सुमनस रोब्बुळिय चूणियलि मुनिगळु
बेब्बळिसिदरु बिसुट राहुतिगळनु दसेदेसेगे
इब्बरिवरा मुनिगळुपहति युब्बेयनु सैरिसुवरे बिड
देब्बिसिदरंबुगळना राक्षस कदंबदलि ।। 9 ।।

ऋषियों को बुला लिय। ५ यज्ञ के लिए आवश्यक सभी वस्तुओं को विश्वामित्र ने जुटाया। पंक्तियों में यज्ञशालाएँ निर्मित हुईं, चरु पुरोडाश, घी, दर्भ, समिधा, तिल वग़ैरः होम-द्रव्यों को यज्ञवेदिका के नज़दीक रखा गया। वेदोक्त तथा लौकिक रीति से आह्वनीयाग्नि प्रतिष्ठापित की गयी। ६ तदनंतर विश्वामित्र ने अध्वर्यु तथा ऋत्विजों को आमंत्रित कर, उनको निश्चित कर्मों के लिए (कार्य-निर्वाह-निमित्त) नियुक्त कर दिया। यज्ञ बड़े वैभव के साथ चार दिनों तक चलता रहा। यज्ञाग्नि से निकले अत्यधिक धुएँ के कारण देवताओं को आना पड़ा। इधर, और एक तरफ़ राक्षसों का झुंड आकर इकट्ठा हुआ। ७ होम संपन्न होने लगा। हविस् (यज्ञ में समर्पित आहुतियों) के लिए देवता बेचैन हुए। आकाश भर में उनकी भीड़ डटकर इकट्ठी हुई। झूठ-फ़रेब से चोरी करके खानेवाले राक्षस आकाश की तरफ़ उड़कर हविष्यान्न भोजन करते देवताओं के कंधे या गले के पिछले भाग पर मुक्का मारकर उनके मुँह के कौर को छीनकर खाने लगे। ८ देवताओं के समूह के अग्रभाग में शोरगुल शुरू हुआ। घबड़ाहट के मारे मुनियों ने दिशि-दिशाओं में आहुतियाँ (मनमाने) देनी शुरू कीं। ऋषियों के इन विघ्न-बाधाओं को देखकर राम-लक्ष्मण कैसे चुप रह सकते हैं? राक्षसों के झुंड पर बाण बरसाने लगे। ९ "सुनो बेटे! तुम्हारे राम-

अणुग केळै निम्मवर, मार्गणेगळुब्बरिसिदवु गगनां-
गणव गब्बरिसिदवु हरिवरुणादि निर्जरर
उणिसि गडहाय्दसुररट्टय कुणिसिदवु कडिदलेय लमरर
नुणिसिदवु नलिदाडिसिदवा नारदादिगळ ॥ 10 ॥

अॅलॅलॅ कणॆगळिवॆल्लियवो कग्गोलॆय काहुररारो होय् होय्
तलॆयकडि कोल्लॆनुत कविदुदु कूडॆखळनिकर
तलॆगॆदरि तॆगदोडुवमरा वणियनुरॆ सदॆवडिदुसरिसद
लिळिदरब्बर दॆडॆगॆ कडुगद कैय नॆगहिनलि ॥ 11 ॥

कॆदरितधरियादि ऋत्विजरदुभुतद भीतियलि गड्डद
मुदुकरलुगुव तलॆय कैकालुगळ कंपनद
बॆदरिनलि बिसुटाहुतिगळनु गदगदिसि कंगॆट्टु हाय्दरु
होदकॆदंडुकमंडलव बिसुटखिळ दॆसॆदॆसॆगॆ ॥ 12 ॥

खवखविसुतवरिब्बरा मुनिनिवहकभयव कोडुत संधिसि
सवरिदरु सव्यापसव्यद लोकुवतिवलर

लक्ष्मण से छोड़े गये वाण झुंड-के-झुंड मे आकाश भर में व्याप्त हो गये। इन्द्र, वरुणादि देवताओं के होम के कौर को छीनने आड़े आए हुए राक्षसों के सिर काट-काट कर गिराने लगे। कटे सिर गिर-गिरकर उछलने लगे। इसके फलस्वरूप देवताओं के हविष्यान्न के भोजन का मार्ग निरापद हुआ। इससे नारदादि खुशी के मारे उछलने लगे। १० "अरे रे! ये बाण आते कहाँ से हैं? इस तरह खुल्लमखुल्ला हत्या करनेवालों को, मारो, काटो, टुकड़े-टुकड़े कर डालो", इस तरह चिल्लाते राक्षसों की भीड़ जमी। देवताओं को घेर लिया। भागते देवताओं को पीटते नंगी तलवारें हाथ में लिये राक्षस यज्ञशाला में उतर आये। ११ डर के मारे कांपते अध्वर्यु-ऋत्विजादि (होम में लगे लोग) तितर-बितर हो गये। हिलते काँपते हाथ-पैर वाले वृद्ध जो दाढ़ी वाले थे, काँपते हुए हाथों से आहुतियों को इधर-उधर फेंकने लगे। और थरथर कांपते हुए ओढ़े अँगोछे, दंड-कमंडल इधर-उधर फेंककर प्राण मुट्ठी में लिये मनमाने भाग खड़े हुए। १२ राम-लक्ष्मण आतंकित ऋषि-मुनियों के सम्मुख उपस्थित हो उन्हें निर्भयता का अभय ढाढ़स देने लगे। बायीं-दायीं दिशाओं से चढ़ आते हुए राक्षसों को काट-काटकर गिराने लगे। हट्टे-कट्टे राक्षस कट-कटकर गिरने लगे। तुम्हारे राम-लक्ष्मण ने अपनी समूची ज्ञात युद्धकला इस प्रकार प्रदर्शित की कि साक्षात् मृत्युदेवता (यम)

जवनकवर्तयो मेणु लय भैरवन काल्दुळियो येनलु नि-
म्मवरु मेरुदरु कलिकेगळ कौतुकद रणरसव ॥ 13 ॥
शिशुगळेनवरमम माया शिशुगळल्ला केळिदै सले
ससिद तलेगळलडगित भ्रद्योतमंडलव
बसिदु बीळ्व कबंधदलि हेणवसरवादुदु नेलनिर्देल्लिय
विषम वीररो मझयेनुत मारीच बेरगाद ॥ 14 ॥
इवरिदारो शक्र शिखियम पवनधनदीशान्यरोळगी
हवणिनधटर काणें नाहवदंग लेसेनुत
रविय बिंबके लंबिसुव राहुविन वोलु सुबाहु कलि रा-
घवन सरिसदळौकि करेदनु कोल सरिवळेय ॥ 15 ॥
तपन कुलजरु केळिरै रणनिपुणनल्ला रामना को-
णपन कोदंडवनु खंडिसिदनु शराळियलि
कुपित खळ बळिकुब्बि दिविजा धिपसुदत्त महायुधदला
कपटनाटक सूत्रधारननिट्टु बोब्बिरिद ॥ 16 ॥
भुगुभुगिल् भुगिलेंदु भोर्गरदुगुळिदवु बलुगिडियनुरि ना-
लगेय निगुरिनलगुगळु बळिका महायुधव

लूट मचाए हुए हैं या प्रलयकालीन भैरव की भयानक क्रूरता एक साथ प्रकट हुई है। १३ क्या वे मामूली बच्चे हैं ? मायावृत शिशु जो ठहरे ! बालियों से अनाज-कण रौंदने की तरह कटे-कटाए सिरों से आकाश में सूर्यमंडल व्याप्त हो गया। रक्त चू पड़ते रुण्डों (कटे सिरों से) तथा लाशों से सारी धरती पाटी गयी। "ये कहाँ के असामान्य शूर है। वाह ! वाह !।" कहते हुए मारीच अचरज में आ गया। १४ "ये कौन हो सकते हैं ? इन्द्र, अग्नि, मरुत्, ईशान, कुबेर आदियों में ऐसे बलशाली नहीं हो सकते। इनका युद्ध करने का ढंग भी वड़ा सुन्दर है।" —इस तरह सोचते कहते हुए सूर्यमंडल की तरफ़ उड़नेवाले राहु की तरह सुबाहु वीर राघव के सम्मुख खड़े हो बाणों की वर्षा करने लगा। १५ "ऐ सूर्यवंशीय राजकुमारो ! सुनो। राम तो युद्धकलाविशारद है न ! राम ने उस राक्षस के तीर-कमान काट डाले। आगबबूला हुए सुबाहु ने इन्द्र से प्रदत्त महान आयुध से कपटनाटक सूत्रधारी श्रीराम को मारा और गरजने लगा। १६ अग्निवमन करते हुए, (चिनगारियाँ निकलते) उस महायुध के तीक्ष्ण मुखाग्र भाग से धू-धू करके ज्वालाएँ निकलने लगीं और चारों ओर छट्-छटाकर चिनगारियाँ छिड़कने लगीं। क्या तुम्हारे पिताजी इसकी परवाह करेंगे ? हंसी-खेल में पवनास्त्र चलाकर उस

वर्गेवने निम्मय्य नगुताशुग महास्त्वदोळरिय कैदुव
नगलिसुत कोंडडरु तंवरकवन मस्तकव ॥ 17 ॥
दिडुगॅडेदुदु नेलकॅ रक्कसदिंडॅयन्न रौकुळद रकुतद
मुंडवी कौतुकवना मारीच दूरदलि
कंडुतापस वेषवनु कैकोंडु कोलॅगंगॅसि कदनो-
द्दंड रामन वळिगॅ वंदनु दैन्यभावदलि ॥ 18 ॥
कादु कोळ्ळै राजसूनु महादयांवुधि रक्षिसै करु-
णोदयनॅ विप्रप्रियनॅ धार्मिकनॅ गुणयुतनॅ
ई दुरुळ नैशाटरसु गॉळ्ळैदिवरुतिहरॅंदु वह मा-
या दुरात्मन कंडु मुनि काकुत्स्थगितॅंद ॥ 19 ॥
तॊडु महास्त्रव निवगॅ कपटद तोडहदवनिव विप्रनल्लिव
मृड सरोज भवाद्यरनु लॅक्किसुवनल्लकण
कॅडहुवनु मायॅय लॅमिलतुग्गडद वीर रनिवन तलॅयनु
कडिदु हाय्कॅ दोदरिदनु दूरदलि मुनिनाथ ॥ 20 ॥
आदडॅयु व्रह्मवनु मरॅगॊंडैदिदर वधिसुवदु लौकिक
वैदिकद मतवल्ल मनुकुलदवर पथवल्ल

महायुद्ध का निवारण किया। वह महान् अस्त्र उस असुर के सिर को काटकर आसमान में वहुत दूर उड़ा ले गया। १७ शिरोभाग-रहित उस देह से रक्त की धारा टपक रही थी। इस तरह खून गिरा[illegible] वह धरती पर गिरा। इस अचरज भरे दृश्य को मारीच ने दूर से देखा। तपस्वी-वेष धारण किए, हत्या करने के कपट उद्देश्य से मारीच, युद्धवीर राम के सम्मुख वड़ी दीनता दरसाते, नटना करते आया। १८ "हे राजकुमार! दयासागर, करुणालु, व्राह्मण-[illegible] धर्मात्मा, सद्गुणी कृपाकरो! रक्षा कीजिए। ये दुष्ट राक्षस प्र[illegible]हरण करने नज़दीक आ रहे हैं।" —इस तरह कहते हुए राम के न[illegible]क आते हुए उस दुष्ट मायावी मारीच को देख विश्वामित्र राम से [illegible] प्रकार कहने लगे। १९ "तुरन्त इस पर महास्त्र का प्रयोग करो। यह महान धोखेवाज़ है। इस पर भरोसा मत करो। यह व्राह्मण नहीं। शिव, व्रह्मादियों की परवाह यह नहीं करता। घमंडी, अहंकारी वीरों की हत्या यह अपनी माया से कर डालता है। तुरन्त इसका सिर काट डालो।" —इस तरह दूर से विश्वामित्र ने चिल्लाकर कहा। २० "व्राह्मण-रूपाश्रितों की हत्या वैदिक-लौकिक रीतियों के विरुद्ध है। मनुवंशियों की तो वह कदापि नीति नहीं

होद मौयलि होगलेनुत कृपोदयनु नगुतनिल शरदिं
दूदिदनु जलनिधिय तेंकण तीरकाखळन ।। 21 ।।
बळिसरळ संधानदलि बळिकुळिकलिन रक्कसर जवपुर
दोळगें होगसिदनोडनें हव्य सुभोजनक सुरर
निलिसिदनु निर्विघ्नदाल मुनितिलक नध्वर सांगवादुदु
सुलभवाय्तवभृत महोत्सववा मुनींद्रगें ।। 22 ।।
मुनिगळुत्साहिसिदरबुजासन सुरेंद्रादिगळुजयजय
निनददलि सूसिदरु सुम्मानदलि पूमळेय
तनुपुळक दुब्बुगळलालिंगनव माडिद नोलिदु तोरवेय
विनुत वीराग्रणिय विश्वामित्र मुनिराय ।। 23 ।।

हन्नेरडनेय संधि

सूचने— नेरेदु दखिळ दिगंतदवनीश्वररु विश्वामित्र मुनि रघुवररु सहितेतंवर-वनिजेय स्वयंवरकें ।

केळिदै कुशबळिक रघुनृप बालकरिगा कुशिकनंदन
कोलगुरु वादनु कणा केळै कुशानुजनें

रही । जिस देह को धारणकर आया है, उसी देह में वह जाय !" इस तरह मुस्कराते कहते हुए राम ने वायुव्यास्त्र का प्रयोग करके उस राक्षस को समुद्र के दक्षिण किनारे की तरफ़ उड़ा दिया । २१ तदनंतर राम ने बाण चलाकर बचे-खुचे राक्षसों को यमपुर का मार्ग दिखाया । देवताओं को हविष्-सेवनार्थं खड़ा किया । विश्वामित्र का वह यज्ञ निर्विघ्नतापूर्वक संपन्न हुआ । विश्वामित्र मुनि ने यज्ञ-समाप्ति पर अवभृत स्नान किया । सारी क्रियाएँ सांग संपन्न हुईं । २२ ऋषिवृन्द उत्साह के मारे फूले न समाया । ब्रह्मा, देवेन्द्र आदियों ने जयघोष करते खुशी-खुशी पुष्पवर्षा की । मुनि विश्वामित्र ने अत्यंत खुश होते हुए रोमांचित हो, तोरवे के वीर नरहरि के अवतारी श्रीराम को अंक में भर लिया । २३

बारहवीं संधि

सूचना— चारों ओर के, दिशि-दिशाओं के राजे-महाराजे सीता स्वयंवर के लिए आ जुटे । रघुकुल-कुमारों (राम-लक्ष्मण) के साथ मुनि विश्वामित्र भी स्वयंवर में आये ।

दशरथ-कुमार श्रीराम-लक्ष्मण के धनुर्विद्या-गुरु बने कौशिक । सुनो लव और कुश ! साक्षात् शिवजी के तालीमखाने में जितनी शस्त्रास्त्र

भाळनेत्रन वरद गरुडिय चळियेनितुंट नितनिवरलि
मेळविसिदनु मेलें तिंगळु दिवसकामुनिप ॥ 1 ॥
कलितरिवरा मुनिय शिक्षेय सुलभतेयलखिळास्त्र शस्त्रद
विलसदभिरंजनेय नल्लि मेलें मुनिपतिय
बळिगें बंदरु जनकभूपन वळिय मणिहाररु महा मं-
गळेय विमल विवाहपत्रिकेसहित वहिलदलि ॥ 2 ॥
परम हरुषदोळा मुनिपनादरिसि वळिक विदेह भूपन
चरर कळुहिद मनदोळनुवरिसिदनु जानकिय
नर चरित्रद रामभद्रगें परिणयव माळ्पुज्जुगव नि-
र्धरिसि पयणोद्योगमननादनु सरागदलि ॥ 3 ॥
शुभमुहूर्तदोळातपोधनविभु सराग दिनकर्कवंश
प्रभुवरुगळोडगूडि होरडवंटनु निजाश्रमव
इभ शरभ शार्दूल हरि सैरिभ कुरंग वराहसेवित
दभिनवद काननव कळिदैदिदरु कौशिकेय ॥ 4 ॥
आ महानदि मेरेदुदुभयद सीमेगळनोददुरु तरंग
स्तोम दुब्बरदब्बरद सलिल प्रवाहदलि
तामरस कल्हार कैरव कोमल द्रुमषंड गुल्मल
ता मराळ रथांगबककारंड शोभेयलि ॥ 5 ॥

चलाने की रीतियाँ हैं उन सबको विश्वामित्र ने एक महीने की अवधि के अन्दर पढ़ा दिया। १ विश्वामित्र के पढ़ाने की आसान पद्धति के कारण सारे अस्त्र और शस्त्रों का रहस्य भी श्रीराम-लक्ष्मण ने पढ़ लिया, समझ लिया। इसके बाद (कुछ दिन बीतने पर) मंगलमयी सीता के विवाह की निमंत्रण-पत्रिका के साथ जनकराजा के अधिकारी विश्वामित्र के यहाँ शीघ्रता से आये। २ विश्वामित्र ने जनक महाराजा के अनुचरों का अत्यंत आनंद से आदर-सत्कार कर बिदा किया। मन में ही दृढ़ निर्धारण कर लिया कि जानकीदेवी श्रीराम के अनुरूप वधू है। मानव अवतारी रामचन्द्र का विवाह सम्पन्न करने का निश्चय कर मिथिला की यात्रा के लिए तैयार हुए। ३ एक शुभ मुहूर्त में, विश्वामित्र मुनीश्वर रविवंशोद्भवों को साथ लेते हुए, अपने आश्रम से रवाना हुए। हाथी, शेर, शरभ, बाघ, भैंस, हिरन, सूअर, आदि जंगली जानवरों से भरे उस वन को पार कर कौशिका नदी के नज़दीक आए। ४ उसकी लहरें दोनों किनारों पर टपक रहीं थीं। वह महानदी घनघोर आवाज़ करती हुई

केळिदरॆ हेळिदनु मुनिमखपालकंगॆ तदीय नदिया
मूलकूलद संगतिय कुशिकक्षितीश्वरन
स्थूलवंशपरंपरॆय भूपालकर जननवनु तन्न वि-
शाल चरितवना नदियनुत्तरिसिदनु बळिक ॥ 6 ॥

क्षोणिजासुत केळु विपिनश्रेणिगळ कॊळकॊलव कळिद-
क्षीण शौर्यरु सहित बरॆ मुंदॊंदु ताणदलि
स्थाणु निकटजटाकलितगीर्वाण नदिगॆणॆयॆनिप निरुपम
शोणभद्रन कंडु कौशिकमुनिय बॆसगॊंड ॥ 7 ॥

ई विपुळ नद राजनन्वय वावुदॆनॆ कौशिकॆगॆ कंडनु
भाव नॆमगह्नीत सति नदियागॆ नदनाथ
देव राघव केळॆनुत मुनिनावॆयिदुत्तरिसि ह्लवु व-
नावळिय कळिदैदिदरु गंगातरंगिणिय ॥ 8 ॥

श्रुति समाज तरंग मयपूरित सुधोपम सलिवमय सं-
भृत सुमुक्ताफल निभोत्कर सैकताळिमय
कृत जगत्पावनमय प्रच्युत भवाखिल दुरितमय शो-
भितॆय सुमनस्तुतॆय कंडनु रामजाह्नविय ॥ 9 ॥

पानी से भरी-पूरी हो बह रही थी। कमल, कल्हार आदि पुष्पों से, कोमल जल से, पौधे-झाड़ी-लताओं से, हंस, चक्रवाक, वगुले, बतख आदि पक्षियों से आवृत वह नदी बड़ी ही सुन्दर थी। ५ कौशिका नदी के बारे में राम ने जब प्रश्न किया, तब विश्वामित्र ने यज्ञरक्षक राम को उस नदी के बारे में आद्यंत विवरण दिया। कुशिक महाराजा की वंश-परम्परा, उन राजाओं का जन्म सम्बन्धी विवरण, अपने सुविस्तृत चरित आदि का वर्णन किया। तदनंतर नदी पार की। ६ सुनो सीता-पुत्र ! अनेकानेक वन-प्रांतरों को पार करते हुए, स्थायी पराक्रमियों के साथ आने पर आगे चलकर एक स्थान में शिवजी की जटाजूट के गंगा के समान (सुशोभित) शोणभद्र नद देखा। राम ने इस नद के बारे में पूछा। ७ इस महानद के राजा का वंश कौन सा है—इस तरह पूछे जाने पर विश्वामित्र ने कहा—"हे राघवदेव ! सुनो। यह नद कौशिका नदी का पति है। हमारा बहनोई है। पत्नी नदी होने के कारण पति 'नद' कहलाया।" वे शोणभद्र नद पार कर अनेक जंगलों से होते हुए गंगानदी के किनारे आये। ८ कल-कल निनाद करते हुए अनेक तरंगों से सुशोभित अमृत-समान जल से परिपूर्ण गंगा मोती की तरह चमकती रेती से परिपूर्ण थी; शोभायमान थी। जगत को पावन बनाकर इह जन्म के पापों को धोनेवाली

हरिपदाब्ज परागपूरित परिमळालंकृतॆय शशिशे-
खर जटाघट पटलतट संघटित विस्फुटॆय
सुरनरोरग भुवन पावनतर चरित्रॆयनज निजोन्नत
करकमंडल मंडितॆय कंडनु रघुप्रभव ॥ 10 ॥
ऎलॆ मुनीश्वर नदिग ळॊळगग्गळद नदियॆंवंतॆ मति नॆरॆ
निलुकुतिदॆ चित्तदलि मुनि केळी महानदिय
विलसदभिरंजकद जनन स्थल विडिदु बंदाप्रसंगव
तिळुह बेकॆंनॆ बळिक विश्वामित्रनिंतॆंद ॥ 11 ॥
तरुण केळादियलि सगरन सिरिगॆ सेरदॆ शक्र ना क्रतु
तुरगवनु कद्दोय्दु कपिलमुनींद्रनॊत्तिनलि
इरिसिदनु पाताळदलि बळिकरसि कंडरु सगरनंदन
रुरियॊळद्दरु मुनिय धिक्करणॆय विघातिनलि ॥ 12 ॥
धगधगिसिदरुवत्तु साविर सगररनु संस्कार मुखदलि
तॆगॆयलोसुग तपदलिद्दनु कमल गर्भगॆ
मिगॆ भगीरथ निळुहिदनु सुरजगतियिं पाताळकी त्रै
जगकॆ मातॆ कणा हरिस्मर हररु हॊउतागि ॥ 13 ॥

यह देवताओं से स्तुतित, जह्नु की पुत्री जाह्नवी (गंगा) को श्रीराम ने देखा। ९ श्रीहरि-चरण-कमलों के पुष्प-पराग की सुगंधि से अपने को अलंकृत कर लेनेवाली यह गंगा चन्द्रशेखर शिवजी के जटाजूट से बाहर निकली। स्वर्ग, मृत्यु, पाताल —इस तरह तीनों लोकों में (बहती) यह पवित्र चरित्रवाली है। ब्रह्माजी के हाथ के कमंडल-निवासिनी है। ऐसी गंगा के श्रीराम ने दर्शन कर लिये। १० "महर्षिवर,! मुझे लगता है कि यह नदीसभी नदियों में श्रेष्ठ है। इस महान् नदी के उद्गम स्थान से लेकर यहाँ तक आने की कथा मुझे सुनाने की कृपा करें।" —इस प्रकार राम से निवेदन किए जाने पर विश्वामित्र गंगा का चरित यों समझाने लगे। ११ प्राचीन काल की बात है। सगर की संपत्ति से असहिष्णु हुए इन्द्र ने उसके यज्ञाश्व को चुराकर पाताललोक ले जाकर कपिल महर्षि के यहाँ रखा। सगर के पुत्र उस घोड़े को ढूंढ़ते हुए पाताललोक पहुँचे और वहाँ वह घोड़ा पाया। मुनि का तिरस्कार करने के कारण उसकी क्रोधाग्नि से वे सभी भस्म हुए। १२ जलकर राख हुए साठ हजार सगर-पुत्रों को जल-संस्कार (तर्पण) से सद्गति देने के उद्देश्य से भगीरथ ने ब्रह्माजी की तपस्या की तथा गंगा को देवलोक से धरती पर ले आए; पाताल तक ले गये। हरि तथा हर को छोड़ने पर गंगा तीनों लोकों की माता है। १३ "सुनो

राम केळी व्योमनदिय महामहिमें गवधियनु कार्णेनु
सोमधरने बल्लनल्लदें बेरॅमातेनु
कामिसिद फलवहुदु नेंनेंदरिगी मरुत्पथगामिनियनेंनु
ता मुनिप बरॅ सोंगसिदुदु सुमतिय जनस्थान ॥ 14 ॥

नगरविदु तानारदेंदा गगन मणिकुल केळॆ हेळिद
नघविदूरक दरिय मान्वय दरसु श्रृंजयन
नगरविदु ता राम केळी नगरदधिपति दशरथन दा-
यिगनु धरॅयिदु निमगॆ सलुवुदेंनुत्त नडॆतंद ॥ 15 ॥

नोडुता नगरवनु मिगॆ कोंडाडुता राष्ट्रवनु पथिकरु
गूडि बरॅ बरॅ काणिसिदुदाश्रमवु गौतमन
मूडदबुजद सरसियंतिन नाडदंबरदंतॆ जोकॆय
जोडॆय व्रतदंतॆ बनविरॆ कंडु बॆसगोंड ॥ 16 ॥

इदुकणा रघुनाथ केळ् पूर्वदलि गौतमनॆंब मुनिपन
सदनवा मुनिसतिगॆ मनविक्किदनु सुरनाथ
मदननागो ळिळदनु संभोगदलि सिलुकिदनिंद्रनातन
सदॆदुदो मुनिशाप रूपायय्तंगव बलॆयर ॥ 17 ॥

राम ! इस देवनदी गंगा की महिमा अपरंपार है। वह (महिमा) शिवजी ही जानते हैं। अधिक क्या कहूँ ? इस देवगंगानदी का जो स्मरण करते हैं उनकी इष्टार्थ सिद्धि होती है—इसमें शक नहीं। इस तरह समझाते हुए विश्वामित्र जब आगे बढ़े तो सुमति नगर सामने शोभायमान था। १४ रविकुलज राम ने पूछा "यह कौन सा नगर है ?" विश्वामित्र कहते गये— "सूर्यवंश के पुण्यशाली श्रृंजय नामक राजा की नगरी है यह। सुनो राम ! इस नगर के राजा दशरथ के दायाद हैं। यह राज्य तुम्हारे ही स्वामित्व का है। १५ उस नगर को देखते हुए, उस राज्य की प्रशंसा करते हुए यात्रियों के साथ आगे बढ़ते रहने पर (मार्ग में) गौतम का आश्रम दिखाई पड़ा। अनखिले कमलपुष्पों के सरोवर जैसे, सूर्य-विरहित आकाश जैसे, चतुर कुलटा के व्रत जैसे दीख पड़नेवाले गौतमवन को देखकर उस वन के बारे में समाचार राम ने पूछा। १६ "सुनो रघुनाथ। यह पहले महर्षि गौतम का आश्रम था। देवराज इन्द्र गौतम-पत्नी को चाहने लगा। मन्मथ किसका सत्यानाश नहीं करता। अहल्या के साहचर्य में इन्द्र पकड़े गये। गौतम मुनि के शापभाजन तो इन्द्र बने। शाप से इन्द्र का सारा शरीर अबला का शरीर बना। १७ परस्त्री-संग से किसका

परवधू व्यसनदलि कॆडरारस राघव केळु कॆट्टुदु
पुरुष तन विद्रंगहल्यादेवि शिलॆयागि
धरिसिदळु निजतनुवना प्रस्तरविदीगा सतिगॆनुत ह-
त्तिरके बरॆ रामांघ्रिरजवावरिसिता शिलॆय ॥ 18 ॥

गुरुकटाक्ष निरीक्षॆयलि दुस्तर भवांबुधि बरुववॊलु रवि
किरण दवलोकन दॊळडगुव तिमिर लतॆयंतॆ
परमपुरुषन दृष्टिपातदि निरदॆ संचित सकल दुष्कृत
हरॆदुदिसिदळु शिलॆय मध्यदॊळवलॆ गौतमन ॥ 19 ॥

नर विनोद विचित्रलीला चरित विष्णु त्राहिविश्वं-
भरभवारि त्राहि सर्वेश्वर सदानंद
क्षररहित नक्षय ननाहत हरविरिंचात्मर परापर
परमगुणनिधि जय जयॆंदॆरगिदळु चरणदलि ॥ 20 ॥

नॆनॆदरखिळ भवांतरंगळ नॆनॆयबारद घोरपातक
जिनुगुववु तावॆंब श्रुतिमत सिद्धवायितल
नॆनॆहदल्लदॆ निन्नपददरुशनद भाग्यवु तन्नॊळाद्दु
घनमहिम नमोयॆनुत कैमुगिदिर्दळा कांतॆ ॥ 21 ॥

विनाश नहीं हुआ। इन्द्र का पौरुष विनष्ट हुआ। अहल्या का शरीर पाषाण बना। यही वह जगह है जहाँ अहल्या शिला में रूपांतरित हुई। जैसे ही राम आगे बढ़े उनके चरणों की धूल से वह शिला आवृत हुई। १८ गुरुकृपादृष्टि-प्रसाद प्राप्त होते ही अलंघ्य संसार रूपी सागर जैसे सूख जाता है, सूर्य-किरणों के स्पर्श होते ही अँधेरा जैसे अदृश्य होता है, वैसे ही परमपुरुष (श्रीराम) की दृष्टि पड़ते ही अहल्या के भूतपूर्व समस्त पाप विनष्ट हुए। उस शिला के मध्य भाग से गौतम सती अहल्या प्रकट हो, आ खड़ी हुई। १९ "नरनाटकलोला विनोदी विष्णु भगवान्! मेरी रक्षा करो। मानवजन्म-परिहारी जगद्रक्षक! मेरी रक्षा करो। हे सर्वेश्वर, सदा आनन्दस्वरूपी, शाश्वत विभो, नाश-रहित स्वामी, अभेद्य, ब्रह्मन, ईश्वरस्वरूपी गुणनिधि! तेरी जय हो, तेरी जय हो।" इस तरह स्तुति करती अहल्या श्रीराम-चरणों में गिरी। २० 'तेरे नामस्मरण मात्र से, जिनके बारे में सोचना भी असंभव है—ऐसे जन्म-जन्मांतर के भयानक पाप विनष्ट होते हैं"—यह वेदवाणी है। आज वह सत्य प्रतीत हुआ। तेरा स्मरण ही नहीं, आज तेरे (इन पावन) चरणों के दर्शन का भाग्य मुझे मिला। हे महामहिम! अहल्या के ये प्रणाम

ललने याकेयदारेनलु मुनितिलक बळिका ज्ञानमय नि-
र्मळ सदानंदैकरूपंगतुळ हरुषदलि
तिळुहिदनु तत्सतिय शक्रन कलुषकृत संगतियनावुदु
सुलभवागददुंटे निन्न कृपोदय दोळेंद ॥ 22 ॥
बंदना समयदलि गौतम निंदिरेशन मनुजवेषद
संद सम्यज्ञान मुखदलि नमिसे बळिकवर
ओंदुगूडि कृतार्थरिवरिन्नेंदु कौशिक नवरना दळ
मंदिरदले निलिसि बंदरु मिथिळेगोलविनलि ॥ 23 ॥
मुनिय बरवनु केळ्दु मिथुळावनियपति महदुत्सवदला
मुनिय निदिर्गोंडोय्दु सत्करिसिदनु भक्तियलि
तनुजकेळै बळिक गौतम तनुजराजपुरोहितनु त-
ज्जनपगोरेदनु विमलविश्वामित्र संगतिय ॥ 24 ॥
वरवसिष्ठ विवादवनु भूवररुषीश्वर नाद बहळा-
श्चरियदुग्रतपःप्रभाववना त्रिशंकुविगे
सुरपुरव बेरभ्रदलि विस्तरिसिदाख्यानवनु जनकं
गोरेदु कोंडाडिदनु कौशिकननु शतानंद ॥ 25 ॥

स्वीकार करो।" कहते, अहल्या ने राम के सम्मुख हाथ जोड़े। २१ 'यह देवी कौन है ?' —इस तरह राम से पूछे जाने पर मुनि विश्वामित्र ने आनन्द से, निर्मल मूर्ति (जो आनन्दस्वरूपी हैं) राम को समझाया— यह वही अहल्या है, जिसने इन्द्र के सहवास का पाप-कार्य किया। 'तेरी कृपादृष्टि पड़ने पर कौन कार्य सुगम नहीं होता ?'। २२ ठीक इसी अवसर पर महर्षि गौतम वहाँ पहुँचे। अपनी अंतर्दृष्टि से यह जाना कि राम मानव रूपी श्रीहरि हैं। उनको प्रणाम किया। 'गौतम-अहल्या फिर एक हुए तथा कृतार्थ हुए' —इस तरह आशीर्वाद देते हुए उनको आश्रम में ठहराकर विश्वामित्र राम-लक्ष्मण के साथ खुशी-खुशी मिथिला की ओर बढ़े। २३ विश्वामित्र मुनि के आगमन का समाचार सुनकर मिथिला-धिपति जनक ने ऋषि की बड़े उत्साह के साथ अगवानी की तथा आवभगत के साथ ले जाकर बड़ी भक्ति से आदरातिथ्य किया। सुनो कुमार ! जनक राजपुरोहित गौतम के पुत्र ने राजा को विश्वामित्र के बारे में समझाया। २४ वसिष्ठ-विश्वामित्र में हुई अनबन, स्पर्धा, क्षत्रिय गाधेय की उग्र तपस्या और उस तपस्या की साधना से मुनिश्रेष्ठ बनने की आश्चर्यकारक घटना, त्रिशंकु के लिए आकाश में ही एक नया स्वर्ग निर्मित करने की घटना —आदि सारी कहानी राजपुरोहित शतानंदजी ने जनक

मुनिगॆ बीडिकॊयाय्तु मिक्किन मुनिगळैतंदरु समस्ता
वनिय नृपरॊग्गाय्तु वर वैदेह नगरदलि
विनुत मखमंटप विराजिसि तनुपमाध्वर परिकरद सा-
धनव मेळैसिदरु दीक्षित नादना जनक ॥ 26 ॥

कुशनॆ केळै निम्म मुत्तय दशरथनु माडिद महाध्वर
दॆस ककिदु होय् कैयॆनलु माडिदनु सत्क्रतुव
कुशननुज केळ् निम्मपितनश्वशुर नल्लि बळिक जव्वन
दॆसक तलॆ दोऱिदुद कंडनु निम्मजननियलि ॥ 27 ॥

नारदन पूर्वद वचो विस्तारदाभिप्राय वऱिदु कु-
मारिगुचितोद्वाह वैभवद स्वयंवरकॆ
भूरिभुवनद भागधेयर भूरमणरनु बरिसिदनु मिति
मॆरॆ यिल्लद नृपरु नॆरॆदुदु जनकनगरियलि ॥ 28 ॥

अंग मरु कांबोज सिंधु कळिंग बर्बर चीन बोट कु-
रंगमुख खर्पर करुष वराळ नेपाळ
वंग कैकॆय गौळ गुर्जर सिंगळ द्रविळांद्रमुख्य ध-
रांगनावल्लभरु संदणिसिदुद संख्यात ॥ 29 ॥

राजा को सुनायी तथा विश्वामित्र की महिमा का गुणगान किया। २५ विश्वामित्र के लिए निवासस्थान की व्यवस्था हुई। अन्य समस्त ऋषि भी आए। सारी धरती के राजा विदेह नगरी में आ जुटे। यज्ञमंडप मानों आँखों के लिए त्योहार था। यज्ञ-सामग्री और साधन संपादित हुए। जनक राजा ने यज्ञ की दीक्षा ली। २६ सुनो कुश ! तुम्हारे दादा दशरथ ने जो यज्ञ किया— राजा जनक ने भी वैसा ही यज्ञ किया जो तुम्हारे दादा के किये गये यज्ञ से किसी प्रकार कम दर्जे का न था। सुनो लव। तुम्हारे पिता के ससुर ने देखा, तुम्हारी माँ में यौवन के लक्षण दिखायी पड़ने लगे हैं। २७ पूर्व में नारद ने जो राय बतायी थी— उसकी ओर जनक का ध्यान आकृष्ट हुआ। वह बात मन में आते ही सीता-विवाह की तैयारी की। स्वयंवर के लिए भूलोक के श्रेष्ठ राजाओं के पास निमंत्रण गये। असंख्य राजा (न्योता पाकर) जनक की राजधानी में आ जुटे। २८ अंग, मरु, काम्बोज, सिंधु, कळिंग, बर्बर, चीन, बोट, कुरंग, मुख, खर्पर, करुष, वराळ, नेपाल, वंग, कैकेय, गौळ, गुर्जर, सिंहळ, द्रविड़, आंध्र आदि प्रमुख राज्यों से राजे-महाराजे आ-आकर राजा जनक की राजधानी में जुटे। २९ राजे-महाराजे, मुखिए, मंडलाधिपति,

पुरद बहिरावरण सीमांतरद संवेशदलि बीडा-
रतरसु मन्नेय मंडलेश्वर सार्वभौमरिगॆ
दोरॆगळिगॆ दोर्वळरिगवनीसुररिगा विट् शूद्रमोदला
दरिगॆ मिक्किन विविध वर्णाश्रम जनंगळिगॆ ।। 30 ।।
नगर विर्दुदु शरधि सुत्तिद नगद वोलु नाना दिगंतद
बगॆय भारिय बहळ नर सागरद मध्यदलि
सोगसिदुदु बळिकित्त जनकन मगळ विमलोद्वाह वैभव
दोगुमिगॆय सौरंभदतिशयवखिळरचनॆयलि ।। 31 ।।

हदिमूरनॆय संधि

सूचनॆ— विरचिसिदरु द्वाहशोभाकरद लंकारदलि मिथुळापुरव नखिल विचित्र विभवद विविध रचनॆयलि ।

कॆळिदैकुश नॆरॆद पृथ्वीपालरिगॆविप्ररिगॆ मणिमय
दालयंगळु सवदवै गाववुददरळतॆयलि
कॆळु लव तद्वळयदलिपरिपाळियायित्तखिळ भूजन
जालकवरवरुत्तमाधम मध्यमंगळलि ।। 1 ।।

चक्रवर्ती, अन्य राजा, सेनावीर, तथा ब्राह्मण, वैश्य, शूद्रों को भी और विविध अन्यान्य वर्णाश्रम के लोगों को भी नगर के बाहरी वलय के सीमा-प्रदेशों में, निवास-स्थानों की व्यवस्था की गयी थी। ३० समस्त देश-विदेशों से आ जुटे मानव महासागर से आवृत राजधानी समुद्र-वलयांकित पर्वत-सरीखी दीखती थी। यहाँ जनकपुत्री के विवाह की तैयारियाँ बड़ी धूम-धाम के साथ, डौल-डौल से संपन्न हो रही बड़ी ही शोभायमान दीख रही थीं। ३१

तेरहवीं संधि

सूचना— सीता-विवाह के लिए चित्र-विचित्र विविध प्रकार की रचनाओं से मिथिला नगरी इस तरह अलंकृत की जा रही थी मानों बड़ी शोभायमान दीख पड़े।

सुनो कुश, पाँच योजन विस्तृत प्रदेश में स्वयंवर के लिए आए हुए राजाओं तथा ब्राह्मणों के लिए मणिखचित [illegible] ये। सुनो लव, समस्त [illegible] जाओं के लिए [illegible] के स्तर को [illegible] में [illegible]) उत्तम, मध्यम तथा [illegible] स्थानों की

बलिदुदनितर्के कोटॆ परिखावळय रचनॆयलाळुवेरिय
हुलिमुखद मुगिलट्टळॆय सालुगळ सॊगसिनलि
बलुभटर काहिनलि सुररिगॆ निलुकलसदळ वॆंववॊलु कं-
गॊळिसिदुदु बळिका स्वयंवर भद्रमणिभवन ॥ 2 ॥
रचिसिदरु वळिकीचॆयलि मणिखचित दर्पण कलश कुशलो-
पचित विद्रुम विलसितालंकार तोरणद
प्रचुर तरदुप्परिगॆगळ हिमरुचिय वीथिय सूर्यवीथिय
लचल संपद दिक्कॆयॆनॆ मिथिळामहापुरव ॥ 3 ॥
गुडिय पल्लव झल्लरिय बॆळ्गॊडॆय मिळिर्व पताकॆगळ परि-
विडिय मुत्तिन सूसकद सडकुगळ सीगुरिय
इडिद मणिमय कळस दिदॆसॆ वॆडवलद सौधगळ लवनिय
तॊडिगॆयॆनॆ रंजिसितु पुरवा जनकभूपतिय ॥ 4 ॥
हॊरॆद कत्तुरि सारणॆय नव परिमळद पन्नीर चळॆयद
परिसरद कुंकुमद निडुगारणॆय कर्पुरद
परिपरिय कडॆसाल परिविस्तरद धूपद धूम गंधो-
त्कर समुद्रदॊळद्द नॊल्लदॆ पथव पवमान ॥ 5 ॥

व्यवस्था की गयी थी। १ यज्ञ में आए हुए लोगों की व्यवस्था के लिए निर्मित गाँव के चारों तरफ़ खाई, परकोटे, बाघ के मुखड़े के आकार के दरवाज़े, ऊँचे बुर्ज़ वग़ैरहों की क़तारों से सुशोभित क़िलों का निर्माण हुआ। साहसी वीरों के पहरे इतने जबर्दस्त थे कि देवताओं की पहुँच के भी परे थे। (किसी के लिए यहाँ प्रदेश पाना असाध्य था)। इस प्रकार स्वयंवर के लिए निर्मित मणिखचित भवन शोभायमान दीख पड़ा। २ इस तरफ़ (मिथिलानगरी में) रत्न-खचित आईने, कलश तथा कौशल्य के साथ निर्मित मूंगे के बन्दनवारों से अलंकृत विशाल महलों की पंक्तियों के कारण चन्द्रवीथियाँ, सूर्यवीथियाँ मानों घोषित कर रही थीं कि मिथिलानगरी सर्व प्रकार की संपत्ति के लिए आधार भूमि है। —इस रीति से वैभवपूर्ण रचना हो रही थी। ३ ध्वज-पताकाएँ, हरे पत्तों की वन्दनवारें, श्वेत छत्र, फहरते ध्वज, लटकते मोतियों के गुच्छे, व चामर आदियों से अलंकृत हो, रत्नकलशों से चमकते हुए दोनों तरफ़ के महलों से शोभायमान राजा जनक का नगर मानों धरती का गहना सरीखा दीख पड़ रहा था। ४ कस्तूरी जल से लिपे-पोते जाकर, सुगंधित जल का छिड़काव किया गया था। कुंकुम की धारियों से दीवार पर शोभायमान लाल रंग की मोटी रेखाएँ बनायी गयी थीं। अगरु-चन्दन का सुगंधित धुआं चरों

इळिदुदो सुरराजभवन स्थळद सिरि सीता विवाहो-
ज्ज्वल महामंटपद रूपव धरिसि धरे गॆनलु
हॊळॆव हेमस्तंभरचिता कलित रत्न प्रभॆय चन्द्रो-
पलद भित्तियलॆसॆदुदभिनव भद्रमणिभवन ॥ 6 ॥

हेळलेनद मंटपद चौमूलॆ यगलद लामचद ब-
ल्लाळ दड्डिय बहळरत्न वितान दुब्बरद
मेलुकट्टिन मलयजस्थं बाळिगळ मणिपुत्थिकॆय सम
पाळियलि सॊगसिदुदु चप्परवॆरडुयोजनद ॥ 7 ॥

बिगिद बिगारिगळ मिसुनिय जगलिगळ मरकतद सोपा-
नगळ सुत्तण सालभंजिकॆगळ विलासदलि
सॊगसिता मंटप हिमंतन मगळ मदुवॆय मंटपकॆ त-
द्विगुणवॆनॆ तॊळतॊळगि बॆळगुव बहळ तेजदलि ॥ 8 ॥

मघमघिप मलयजद सारद सॊगयिसुव सरसिगळ पन्नी
रुगळ हॊक्करणॆगळ सादु जवाजि कस्तुरिय
झगझगिप हॊबॆसद रंजणिगॆगळ नवकर्पुरद तवला
यिगळ तिंथिणि मरॆदुदल्लिय सुत्तुवळयदलि ॥ 9 ॥

तरफ़ फैला हुआ था। वायु ने अपनी गति रोक दी तथा उसने इस सुगंध सागर में गोता लगाया। ५ चमकते हुए सोने के खंभों तथा उन पर चिपकाए गये रत्नों की कांति से युक्त अमृत शिला से बने दीवारों से निर्मित मंगलकारी रत्नमंदिर सीता-विवाह का रंजित महामंडप का रूप धारण किए मानों ऐसा लग रहा था कि देवराज इन्द्र के राजमहल की संपदा धरती पर उतर आयी हो। ६ चारों कोनों के विस्तार भर में खस की टट्टियाँ बाँधकर, रत्न के चंदोवे लटकाकर, श्रीगंध के खंभों पर हीरे की पुतलियाँ समानान्तर क़तारों में खड़ा करते हुए निर्मित स्वयंवर मंडप दो योजन विस्तृत शोभायमान था। ७ सोने के कलश लटकाए, सोने के चबूतरों को, मरकत की सीढ़ियाँ बनाए, चारों तरफ़ से पुतलियों से सजाया गया सीता का स्वयंवर मंडप हिमवंत राजा की पुत्री गिरिजा के लिए रचित विवाहमंडप से दुगुने तेज और जगमगाहट से चमक रहा था। ८ अत्यंत ख़ुशबूदार श्रीगंध के द्रव से भरे तालाब, सुगंधित पानी की पुष्करिणियाँ, सुगंध, जवाजी, कस्तूरी आदि द्रावकों से (ख़ुशबूदार) भरे सोने की नक़्क़ासी से युक्त इत्रदानियाँ, पच्चकर्पूर भरी काँच की बोतलें तरतीब से सजाकर रखी गयी थीं। ९ जिस वस्तु को चाहिए उस वस्तु

तुडुकि तूळुव सूत्रयंत्रद गडणदलि गतिगौंडु वेडित
कौडुव मणिपुत्रिकॆगळॆसॆदवु विविध रचनॆयलि
अडकि तुंबुव हेमघटदुग्गडद हौंदोणिगळ हंतिय
सडगरद सौरंभवॆसॆदुदु सुत्तुवळयदलि ॥ 10 ॥
ऎसॆदुदनुपम रचनॆयलि मणिविसर खचित विवाह कांचन
वसति बळिकी वार्तॆयनु केळितु सुरव्रात
पशुपति ब्रह्मेंद्र शिखियमनसुर वरुण समीर शिवसख
रौसगॆ वरॆगळ हौय्सी हौद्दिदरंबरस्थळव ॥ 11 ॥
हौय्सिदनु डंगुरव जनकमहीषना नॆरॆदखिळ वसुधा
धीशरर मनॆगळलि वैदेहियनु वरिसुवडॆ
ईशदत्त महोग्रतर बाणासनव तॆगॆदॆडॆसुव वलु
सासिगरु वहुदॆंदु सूर्यास्तमय समयदलि ॥ 12 ॥
केळिसिदुदा विमल मनुकुलमौळिगा डंगुरद दनिमुनि
पालकनना रामनावृत्तांत विवरणव
केळिदरॆ हेळिदनु हरिहर राळुतनदतिशयवना दिवि
जाळियिदजनिंद संघटवाद संगतिय ॥ 13 ॥

को पकड़कर फेंकनेवाले तरह-तरह के सूत्रयंत्र और गति तथा चाल के अनुसार वांछित वस्तु को देनेवाली हीरे की पुतलियां वड़ी मनोहर थीं। सोने के घड़ों में, सोने की निर्मित नावों में भरपूर द्रव पदार्थों को भरने का उत्साह और आतुरता चारों ओर वड़ी दर्शनीय थी। १० सोने से निर्मित, रत्नखचित विवाह-मंडप असदृश कारीगरी से चमक रहा था। यह समाचार देवताओं के कानों में पड़ा। महेश्वर, ब्रह्मा, इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर आदियों ने मंगलमय निनादपूर्ण नगाड़े पिटवाए। वे आकाश में आकर इकट्ठे हुए। ११ सूर्यास्त के समय, जनक महाराजा ने स्वयंवर में आए हुए समस्त राजाओं के राजमहलों तक पहुँचाते हुए यह ढिंढोरा पिटवाया— "जो कोई वैदेही से विवाह करना चाहते हों तो उन्हें चाहिए कि शिवजी से अनुग्रहीत उग्र महाधनु को उठाकर (शर-संधान करने का) अपने महान साहस का प्रमाण दें।" १२ ढिंढोरा मनुवंशतिलक श्रीराम ने सुना। इस धनुष के समाचार का विवरण प्रस्तुत करने के लिए रामचन्द्र ने विश्वामित्र से निवेदन किया तो विश्वामित्र ने समझाया कि शिव तथा नारायण का कैसा वल-विक्रम था तथा वह ब्रह्माजी से तथा देवताओं से कैसे संभव हुआ (जो इस प्रकार

आरु हीनोत्तमरु सरिमिगिलारु सत्वदोळेंदु दिविजर
वीर भटरीक्षिसिदरब्द सहस्रपरियंत
होरिदरु सरिसदलि साहस तीरदिरे बळिक बुजभव वृं-
दार कोत्तमरेरगिदरु हरिहर पदाब्जदलि ।। 14 ।।
मनद संशय वडगितिब्बर विनुत मूर्तियनेकभावद
लनुकरिसिदरु विश्वरूप विरुपलोचनर
धनुवेरडु बळिकिद्दवंदिन दिनदलिब्बर वशदलवु बळि
किनलि सेरिद विब्बरिगे कृतयुगद सीमेयलि ।। 15 ।।
राम केळा शार्ङ्गधरनुद्दाम वैष्णवचापवदु मुनि
राम गादुदु भृगुविडिदु जमदग्निर्यि बळिक
सोमधर कोदंडवदु नृप सोमनिमि मोदलागि बंदुदु
भूमिपति जनकंगे केळ् कार्मुकद संगतिय ।। 16 ।।
ई महाधनु मैगोडुवुदा व्योमकेशंगल्लदिरे ल-
क्ष्मी मुखांबुज तरणि गोलिवुदु मिक्क निर्जरर
कैमे गोदगुवदल्ल दभिनव रामनाहव भीम मंगळ
नाम तोरवेयराय नरहरिगेंदु मुनि नुडिद ।। 17 ।।

है)। १३ एक समय की बात है। 'हरि' तथा 'हर' में कौन श्रेष्ठ है, कौन कनिष्ठ है, कौन महान है, किसकी महिमा कम है —इसकी परीक्षा करने के लिए हज़ारों वर्षों की अवधि की स्पर्धात्मक परीक्षा देवताओं ने आयोजित की। सम-समान रीति से जितना और जैसे भी लड़ने पर भी साहस समाप्त न हुआ। अंत में ब्रह्माजी समस्त देवताओं के साथ हरि-हरों के चरणों में गिरे। १४ देवताओं के मन का संदेह दूर हुआ। विश्वरूपी श्रीमन्नारायण तथा त्रिनेत्री शिवजी के मंगलकारी मूर्तियों को तादात्म्य भाव से भजने लगे। लड़ते समय प्रयुक्त दोनों धनुष हरि तथा हर के हाथ में ही थे। आगे चलकर कृतयुग में वे दोनों (धनुष) अन्य दो के हाथ लगे। १५ सुनो राम, श्रीमन्नारायण का महामहिमामंडित वैष्णव धनुष भृगु से जमदग्नि को, जमदग्नि के हाथ से परशुरामजी के हाथ आया। शिव-धनुष सोम, निमि, वग़ैरहों के हाथों होता हुआ जनक राजा को मिला। ये इन धनुषों का समाचार है। १६ यह महाधनु व्योमकेशी शिवजी पर, उसे छोड़ने पर लक्ष्मीपति श्रीहरि पर प्रसन्न होता है। अन्य देवताओं की पकड़ में यह नहीं आता। तोरवे के नरहरि के अवतारी, युद्धभयंकरस्वरूपी, मंगलमय अभिनव राम के वशवर्ती यह अवश्य होगा। —इस प्रकार विश्वामित्र ने कहा। १७

हदिनाल्कनेय संधि

सूचने—रायजनकनुवग्रहरचापायुधवनोड्डिदनु कमलदळायताक्षिय
निलिसिदनु वरिसिदनु भूभुजर ।

ऎलॆ ककुत्स्थजसूनु केळ् मुनितिलक विश्वामित्रना रघु-
कुल शिरोमणि राघवंगा चापसंगतिय
तिळुहिदनु तीरिदुदु तमदोब्बुळित चन्द्रन तारकिय मै
वॆळगु ममुळिदवळलु तिर्दवु जक्कवक्किगळु ॥ 1 ॥

रजनियॆंब मदोत्कटद दिग्गजद कुंभस्थळके मोहिद
विजित बलनंकुशद तलॆ माणिक विदॆवंतॆ
गजगलिसितिन बिंब मूडलु गजरिदवु वळिकखिळ वाद्य
व्रज विदेह नृपाल नुप्पवडिसिद नोलविन्नलि ॥ 2 ॥

विनुत संध्यावंदनादिय ननुकरिसि विश्वंभरामर
जनवनुरु सन्मान दानंगळलि सत्करिसि
अनुजवीर कुशध्वजनु सहि तनुपमोत्स[illegible]दिद नडॆतं-
दनु स्वयंवर मंटपके मंत्रिगळ गडणदलि ॥ 3 ॥

चौदहवीं संधि

सूचना—जनक राजा ने महाशिवधनु को स्वयंवर में दांव पर लगाते हुए रखा । कमललोचना सीता को मंडप में बुला लिया । राजाओं का स्वागत किया ।

हे राम-पुत्र, सुनो । रघुकुलश्रेष्ठ श्रीराम को उस धनुष के बारे में विश्वामित्र मुनि ने समझाया । इधर रात और अँधेरे की पूँजी समाप्त हुई । फिर धीरे-धीरे चाँदनी और नक्षत्रों की रोशनी फीकी पड़ी । चक्रवाक पक्षी विरह से दुखी हुए । १ रात्रि नामक मदोन्मत्त हाथी के गंडस्थल में वीर महावत से मारे गये अंकुश के मूठ के माणिक्य की तरह सूर्यबिम्ब पूर्व दिशा में प्रकाशित होने लगा । तदनंतर सुप्रभात के मंगलमय वाद्य निनादित होने लगे । विदेह राजा जनक संतोष से जागे । २ संध्यावंदनादि नित्यकर्म समाप्त कर लिया । ब्राह्मणों को गौरव प्रदान करते हुए दान आदियों से उनका सत्कार किया । राजा जनक मंत्रियों-सहित तथा अपने भाई वीर कुशध्वज के साथ बड़े उत्साह में स्वयंवर मंडप में पधारे । ३ सीता-स्वयंवर-मंडप में पूर्वकथित समस्त

करेसिदनु बळिकखिळ पृथ्वीश्वररना कन्यास्वयंवर
परम निळयके पूर्व सूचित सकल भूमिपर
नेरेदुदुदधिपरीत पृथ्वीश्वररु बळिकवरुचित वरिदा-
दरिसि हरिविष्टरगळलि निलिसिदनु भूपाल ॥ 4 ॥

जनपरा कालोचितद परिजन सहित कुळ्ळिदरु सिंहा-
सन गळलि सौहार्द सौख्यद सुप्रमोददलि
तनुज केळा समयदलि रघुतनुजरुगळोडगूडि बंदनु
विनुत विश्वामित्रना पार्थिव सभास्थलके ॥ 5 ॥

साल सौधंगळलि पृथ्वीपाल रिर्दुदु तरणि किरणद
नेळिसुव मणिभूषणंगळ बहळ तेजदलि
बालरवि रोडगूडि मुनिगळ मेळदलि कुळ्ळिदनु विमल वि-
शाल वेदिकेयल्लि विश्वामित्र मुनिराय ॥ 6 ॥

वर सुधामन-कैविडिदु बळिकरस नुग्गडणेय निनादद
लरसु हंतिय नोडुतवरवरुचित वृत्तियलि
करव मुगिवुत विनमितरना दरिसुतवनीसुर कदंबके
शिरव बागुत भद्रपीठके बंदनोलविनलि ॥ 7 ॥

राजाओं को बुलाया। समुद्र पर्यन्त व्याप्त समस्त राज्यों के अधिपति आ इकट्ठे हुए। तदनन्तर राजाओं को उन-उनकी योग्यता तथा स्तर के अनुसार सिंहासनों पर बड़े आदर के साथ बिठाया गया। ४ कालोचित रीति से तथा योग्य रीति से सपरिवार आकर राजे-महाराजे, संतोष और सौहार्द्रता से (नियोजित) सिंहासनों पर विराजमान हुए। बेटे कुश, सुनो। उस समय राजाओं और महाराजाओं से विराजित सभा में विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को साथ लिये हुए आये। ५ सूर्य-किरणों को लजा देनेवाले चमकते रत्नाभरणों को पहने राजे-महाराजे अपनी तेजस्विता प्रकट करते क़तारों में शोभायमान भवनों में विराजित थे। श्रीराम-लक्ष्मण कुमारों से युक्त विश्वामित्र महर्षि अन्य ऋषि-मुनियों के साथ विशाल वेदिका पर विराजमान थे। ६ चारण-भाटों के गुणगान-स्तुति घोषणाओं के मध्य राजा जनक सुधामा के साथ हाथ में हाथ धरे आते हुए, क़तारों में बैठे राजाओं को गौरव-आदरसूचक दृष्टि से निहारते हुए प्रणाम करते हुए आए। अपने को गौरव अर्पित करनेवालों को आदर समर्पण करते आते हुए महाराजा ब्राह्मणसमूह के सम्मुख सिर नवाते अत्यंत हर्ष में अपने भद्रपीठ में विराजमान हुए। ७ राजा जनक की आज्ञा के अनुसार

वसुमतीशन नेमदलि वळिकसमलोचन चापवनु पू-
जिसिदरागम विधि विहित नियमोपचारदलि
पशुपति स्तवदिंद वाद्यद विषम निस्वनदिंद रुधिरा-
मिषरसोदनदिंद कुरिकोणगळ वलिगळलि ॥ 8 ॥

बंदुदा धनुवा स्वयंवर मंदिरकॆ मुरजानकध्वनि
यिंद मदनविरोधि मंत्रोपास्तियलि वळिक
इंधुधर नारायणरिगॆनॆंदु तोर्पुद नरिए विलयद
दंदशूकन मूडिगॆयॊलिर्द्दु नृपालरिगॆ ॥ 9 ॥

जनक नृपबळिकुत्सवदि तन्ननुज वीर कुशध्वजन कर
दनुपम त्रैलोक्य कन्यानून रत्नवनु
वनजभवभव मुख्यसुरमानिनियरधिक विलास विभ्रम
घनयशोरत्नवनु ता होगॆंदु नेमिसिद ॥ 10 ॥

आकुशध्वजनधिक हरुषोद्रेकदलि नडॆतंदना लो-
कैकनाथॆय विश्वमातॆय भुवन पूजितॆय
श्री कमलॆयॆडॆगंतरंगदला कुमारिगॆ नमिसि तोळगळॊ
ळ्ळाकि तॊडॆयलि कुळ्ळिरिसि मानसदॊळिंतॆंद ॥ 11 ॥

शास्त्रों में सूचित विधि-नियमों के अनुसार शिव-धनु की पूजा की गयी। शिवस्तोत्र गान तथा वाद्यघोषों के मध्य रक्त-मांसयुक्त चरु (अन्न) का नैवेद्य अर्पण कर, बकरे और भैंसे की बलि चढ़ाकर पूजाविधि संपन्न हुई। ८ पखावज तथा नगाड़ों के घहराते समय शैवागम (मंत्रों की) सेवा अर्पित करते शिव-धनु स्वयंवर-मंडप के मध्य लाया गया। उसे देखकर हरि-हरों को कैसे लगा, पता नही। लेकिन वहाँ उपस्थित राजाओं को लगा कि यह प्रलयकालीन भयंकर स्वरूपी साँपों का मानों तरकस ही है। ९ राजा जनक ने अपने वीर भाई कुशध्वज को बुलाकर आज्ञा दी—"तीनों लोकों मे स्थित कन्याओं में रत्न-सदृश, ब्रह्मा, महेशादि देवता-स्त्रियों से अधिक सौंदर्य से वैभवयुक्त यशोरत्न रूपी सीता को बुला लाओ।" इस तरह आज्ञा करते समय जनक राजा हर्षचित्त थे। १० तब कुशध्वज लोकों की स्वामिनी, विश्वमाता लोकपूजिता श्रीलक्ष्मीस्वरूपिणी सीता के यहाँ अत्युत्साह के साथ पहुँचा। मन ही मन सीता की वन्दना की। कुमारी सीता को अपनी भुजाओं में उठाकर, गोद में बिठाकर मन ही मनयों विचार करने लगा। ११ 'इसके (भावी) पति लक्ष्मीपति के सिवा और कोई

रमण रिन्नारहरो लक्ष्मी रमणनल्लदे नेरेद पृथ्वी
रमणरी कन्निकेगे सदृशवे शिव महादेव
कमलभव निन्नार नीकेगे सुमुखरनु माडुवनोयेनुतवे
कमल मुखियर करेदु सिंगारिसलु नेमिसिद ॥ 12 ॥
तरिसि होसहसे मणेयोळगे कुळ्ळिरिसि कमलाक्षियरु पूरित
परिमळद तैलवनु मोगदु मनोभवन पितन
अरसियागेंदोसगे वरंगळ सरभसद सौरंभदलि ने-
वरिसिदरु सेळ्ळुगुर्गळलि शशिमुखिय सिरिमुडिय ॥ 13 ॥
धिरुरे पायवधारेनलु सतियर समेळदलबले मणि बं-
धुरद हावुगेयिद बंदळु मज्जनद मनेगे
तरुणियर करकलश सलिलोत्करदि मज्जन माडि विमलां-
बरवनुट्टु तंदळवनिजे मातृमंदिरके ॥ 14 ॥
स्मरन सौभाग्यद यशोमंदिरेय मन्मथ बीजमंत्रा-
क्षरेय मनसिज शास्त्र सारस्वतेय सुललितेय
सुरुचिराभरणंगळि विस्तर सुगंधामोद कुसुमो-
त्करगळिद बलेयरलंकरिसिदरु शशिमुखिय ॥ 15 ॥

कैसे हो सकते हैं ! इतना ही नहीं, यहाँ जमे हुए (इस) भू-लोक के राजे-महाराजे क्या इस कन्या के लिए (बराबरी) योग्य पति हो सकते हैं ? हे शिव-शिव महादेव ! इसकी योग्यता के अनुरूप न जाने ब्रह्मा ने किसकी सृष्टि की है ?' —इस तरह सोच-विचार करते हुए राजमहल की वनिताओं को बुलाकर सीता को श्रृंगारित करने के लिए कहा। १२ राजमहल की कमलनयना रमणियों ने [वधू-वरों को बैठने के निमित्त चौका पूरकर बीच में रखा हुआ] नया पीढ़ा मँगवाया। उस पर सीता को बिठाया। सुवासित तैल (खुशबूदार तेल) हाथ में लेकर आशीर्वाद दिया कि श्रीहरि की रानी बन। तभी मंगलवाद्य निनादित होने लगे। चन्द्रमुखी सीता के संपद्युक्त केशराशि में नखाग्र भागों से तेल सँवारा जाने लगा। १३ 'पायवधारु' [अपनी ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिऐ प्रयुक्त किया जानेवाला शब्द]— 'इस तरफ़ आने की कृपा करें' कहते हुए विलासिनियों ने प्रशंसा करते हुए— रास्ता दिखाया तो सीता रत्नखचित पादुकाएँ पहने स्नानगृह की तरफ़ आयी। तरुणियों ने हाथ के लोटोंसे नहलाया तो स्नान समाप्त कर सीता ने धुले कपड़े पहन अंतःपुर में प्रवेश किया। १४ कामदेव के यशोमंदिर कीर्तिस्वरूपिणी, मन्मथ-मंत्र के मूलाक्षरस्वरूपा, कामशास्त्र-विशारदा, मनोहारिणी सीता को तरह-तरह के चमकते हुए आभूषण

चरणकांतिगळिद नूपुर गुरुनितंबदि कांचि कोमल
करदि कंकण बॆरळि निदुगुरवु कॊरळिद
सरद मुत्तुगळॊलॆ कदपिंदिरदॆ मॆरॆदवु समरकराग्र
स्फुरित चापकळाप शरदभिमान देवतॆय ॥ 16 ॥
हॊळॆ हॊळॆव तनुकांतियलि गजगलिसिदवु हॊंदॊडवुगळु थळ
थळिसिदवु मुत्तुगळु दंतप्रभॆय लहरियलि
सुललिताधर रागदिदु ज्वलिसिदवु माणिक्यचयवा
रळवु हॊगळुव डबुज गंधिय विमल विभ्रमव ॥ 17 ॥
कुशनॆ केळवनिजॆयनभिवर्णिसुवडॆतऽ मतिगळॆम्मवु
रसनॆ सासिर दहिपगरि दुळिदवर पाडॆनु
कुशननुज केळादिवारिज वसतियल्ला मेलॆ निरुपम
कुसुमशर नंबिकॆयला कौतुकव टेनॆंद ॥ 18 ॥
आदिमाया महिमॆयनु क्षीरोदधिय नंदनॆयनग्गद
मेदिनीसंभवॆय नरभामिनिय रूपकद

पहनाए गये; सुगंधित द्रव्यों की उवटन करके सुगंधित पुष्पों को जूड़े में गूँथकर अलंकृत किया गया। १५ मन्मथ के धनुष पर चढ़ाए गये वाणों के अभिमानी देवतास्वरूपी सीता के चरण मानों उससे चरणों मे प्रयुक्त आभूषणों को [अंघड़ा, अनवट] कांति प्रदान करते थे; कमरवन्द की शोभा उसकी लचकती कमर के कारण थी; कंगन उसके कोमल हाथों के कारण शोभा पा रहे थे; उँगलियों के कारण अँगूठी की शोभा थी; कंठ के कारण कंठहार की कांति थी; कपोलों से बालियों की शोभा थी। [इस तरह ही आभूषणों के कारण अंगों की कांति नहीं; लेकिन अंगों की दमक के कारण ही आभूषणों की चमक-दमक थी]। १६ सीता के दमकते अंगों की कांति के कारण उसके सोने के आभूषण चमक रहे थे। दंत-पंक्ति से फूट पड़ते शुभ्र किरणों के कारण (उसके पहने गहनों के) मोती चमक रहे थे। मोहक ओठों के कारण लाल रंग पाए रत्न चमक रहे थे। कमल-पुष्प-गंधयुक्त सीता की शुभ्र सुन्दरता का वर्णन करने में कौन समर्थ है? १७ 'सुनो कुश, सीता का वर्णन करने में हमारी बुद्धि की हस्ती ही क्या है? हजारों जीभवाले आदिशेष के लिए भी यह असंभव है। तब अन्यों की विसात ही क्या? सुनो लव, सीता कमलवासिनी आदिलक्ष्मी तो रही। इससे बढ़कर वह मन्मथ की माता जो ठहरी! उसका, दिव्य-सुन्दरी होना कोई आश्चर्य की वात नहीं।' —इस तरह कहा। १८ आदिमाया की महिमा-संपन्न, क्षीरसमुद्र-कन्या, भूमिपुत्री, मानव-स्त्री-रूपधारिणी आदिशक्ति

आदिशक्तिय जातरहितॆय वेदमातॆय विष्णुवनितॆय
नादरदि नबलॆयरु सिगरिसिदरु हरुषदलि ॥ 19 ॥
ऎत्तिदरु बळिकारतिय हॊसमुत्तुगळ सेसॆयनु परिकॆलि
सुत्त हरसिदरखिळ विप्रसुवासिनी निकर
इत्तरवनी देवमांत्रिक रुत्तमद जंभीरफलवनु
मत्तभद्रमदेभकंधर कडरिदळुसीतॆ ॥ 20 ॥
ऒडने चामर सीगुरिय कन्नडिय काळंजिय सुगंधद
हडपदबलॆयरेरिदिरु बॆंबळिय लागजव
ऎडबलद करितुरग रथवंगडद दंडिगॆगळ विलासद
कडुचॆलुव मुगुदॆयरु बळसिदरवनि नंदनॆय ॥ 21 ॥
नुडिय चदुरिन भ्रूविलासद कुडितॆगंगळ परिमळांगद
पॊडवॆ जघनद कठिणतर पीवर पयोधरद
मुडिय सॊबगिन सण्ण नडुविन बॆडगिनभिनवरसद भावद
कडुहुकातिय रैदिदरु मुंगुडियलवनिजय ॥ 22 ॥
चारुतर मणिमयद मुक्ताहारगळ थळथळिसुव श्रुति
पूरगळ मूगुतिय मुत्तिन बॊट्टु बैतलॆय

जन्म-रहिता, वेदमाता कहलानेवाली विष्णुपत्नी सीता को सभी स्त्रियों ने मिलकर आनन्द से अलंकृत किया। १९ सीता की आरती उतारी गयी। तदनंतर नये मोतियों की अक्षताएँ छिड़काकर समस्त ब्राह्मण-स्त्रियों ने आशीर्वाद दिए। मंत्रज्ञ ब्राह्मणों ने नींबू समर्पित कर आशीर्वाद दिए। सीता मंगलकारी हाथी पर चढ़ बैठी। २० चामर, चँवर, आरसा, गुलाबदानी, तरह-तरह के सुगंध द्रव्य, पान-सुपारी के थैले ढोनेवाली स्त्रियाँ भी हाथी पर चढ़ बैठीं। दायें-बायें में— हाथी, घोड़े, रथ, पालकियाँ आदियों में अनुपम सुन्दरियाँ, सुन्दर मुग्ध स्त्रियाँ, आरूढ़ हो सीता को घेरे चल पड़ीं। २१ चतुरोक्तियाँ बोलती हुई जन्म से ही सुन्दर, बड़ी-बड़ी आँखों वाली, सुवासित देह-संपन्न नखरे और हाव-भाव-प्रदर्शन में चतुर, रसभरे भरे-पूरे अंगकांतियुक्त, हिलते नितंब तथा उभरी छाती (स्तनों के उभार के कारण) से सुन्दर दीख पड़नेवाली, सुन्दर केशों से सुशोभित, पतली कमर वाली सुन्दरियाँ सीता के अग्रभाग में (चलती) आयीं। २२ हीरे, मोती वैडूर्य आदि रत्नों के हार पहने, चमकते कर्णफूल आदि आभरणों से युक्त, मोती का नथ, माथे पर माँग में टीका लगाए, वीरता की सूचक मुद्रिका पहने, हाथ में कड़ा, कंगन पहने, रत्नजटित

वीरमुद्रिकॆ कडक कंकण सारतरमणि कांचि नूपुर
भूरिभूषण　दंगनॆयरैदिदरु　मुंगुडिय ॥ 23 ॥
नोटदलि मदनास्त्र वॆंदॆयलि नाटिदवु विटरुगळ हुब्बिन
बेटदलि　बॆंडादरग्गद　निर्जितॆंद्रियरु
दाट बगॆदवु वीरकळॆ नगॆदाट मन्मथ विरहिगळ मि-
क्काट विकजन मग्नरादरु नडॆय मरुकदलि ॥ 24 ॥
वारिरुह वदनॆयर विभ्रम सारतर सौबगिगॆ सुमनो
नारियरु नाचिदरु नळकूबर जयंतकरु
बारिसिद मोहनगळलि संसारवनु बयसिदरु नरर वि-
कार विभ्रम चेतराय्तुळिदमर संदोह ॥ 25 ॥
संदणिसिती परियनारी वृंदवा जनक क्षितीशन
नंदनॆय बळसिनलि बहळ विशाल विभवदलि
वंदिगळ हॊगळिकॆय सरभसदिंद मुंगुडिगहळॆगळ रव-
दिंद राजकुमारिबंदळु राजबीदियलि ॥ 26 ॥
कुसुमशरनुग्घडणॆ कैवारिसुव चैत्रन हॆंपु कॆलसा-
रिसुव बंधुरगंध मंदानिलन भरवसिकॆ

कमरबन्द, पैरों में भी कड़ों से युक्त, तरह-तरह की बड़े वैभवपूर्ण आभूषणों को पहने तरुणियाँ सीता के अग्रभाग में आयीं। २३ मन को मोह लेनेवाली सुन्दरियों की तिरछी नज़र की मार से कामुकों के हृदय मन्मथ-पीड़ा से घायल हुए। इंद्रियों को जीतनेवाले श्रेष्ठ व्यक्ति भी भौहों के नचाए जाने पर विचलित हुए विना रह न सके। मन्मथ के उद्रेक के वलि हुए विरहियों का उत्कट प्रेम विनोद की सीमा पार कर गया। बचे-खुचे ग्रामीण वलखाते चलती युवतियों की चाल के सौंदर्य में डूब गये। २४ सीता की (हमजोली) सहेलियों के, जो कमलमुखी थीं —सौंदर्य को देख देवता-स्त्रियाँ भी लजा गयीं। उनके सौंदर्य के आकर्षण के अभिभूत होकर नलकूबर, जयंत जैसे (ब्रह्मचारी) भी संसार सुख चाहने लगे। अन्य देवता मानवसहज चित्त-विकार के वशीभूत होकर भ्रांत-चित्त हुए। २५ इस प्रकार स्त्रियों का समूह अत्यंत वैभव के साथ जनक राजा की पुत्री सीता को बीच में करके आया। भाट चारण ज़ोर-ज़ोर से 'भो पराक' कहते आ रहा थे। तब (जुलूस के) अग्रभाग में बजते बाजे-गाजे के शब्दों के साथ सीता सड़कों पर से होते हुए आते जुलूस में आयी। २६ पुष्पवाण-धारी मन्मथ के स्तुतिपरक गुणगान, चैत्र की महिमा की गरिमा, पास-पड़ोस में सुगंध फैलाते मंद-मंद बहते पवन का

ससिय होंगळिकें बिरिदनुच्चारिसुव रतिय विलास मिगें का-
णिसलु नडेतंदिळिदळिभवनु सभेयोळवनिपर ॥ 27 ॥

लवनें केळै जयजयेंदुदु दिविज युवतीजाल बह्ळों-
त्सवद धरसिदळगजे नमिसिदळबुजभवनरसि
अवनिजेय संदरुशनवु संभविसलमररु भक्तिभावद
सवडिगैगळलिदें रानतरागि गगनदलि ॥ 28 ॥

आनेयिंदिळिदादिमाया मानिनिय मंगळेयना जन-
कानुजनु कैगोट्टु तंदनु नृपसभास्थळकें
आ नभद निखिळामरौघ विमानदिंदिळि दोरणिसिदुदु
माननिधि बळिकविनिजेगें तोरिसिद नवरुगळ ॥ 29 ॥

देवि नोडीतनु भवानी देवियरसनु गुहगणप मु-
ख्यावधूत प्रमथ गणविदें नोडु नीनवर
तीविकोंडिदें मुंदें वरराजीव भव सनकादिगळु सुर
देवमुख्य समस्त रिवरनु नोडु नीनेंद ॥ 30 ॥

तरुणि नोडिचेंयलि रम्यक हरिवरुष किंपुरुष भारत
वरुष कुरु वरुषादिनाना धारुणीश्वररर
हरित कश्यप कण्व च्यवनांगिरस कौशिक मुख्य मुनिसं-
तरुगळिदें मिक्काद नररिदें नोडु नीनेंद ॥ 31 ॥

डील-डौल, चन्द्र की स्तुति, रति के (विलास) गुणगान की अति होने पर राजसभा में प्रवेश कर हाथी पर से उतर पड़ी। २७ सुनो लव, तब देवता-स्त्रियों ने जय-जयकार किया। गिरिजा को बहुत ही संतोष हुआ। ब्रह्माजी की रानी ने सीता की वन्दना की। आकाश-स्थित देवताओं ने सीता के दर्शन-लाभ प्राप्त कर वहीं से दोनों हाथ जोड़े सिर नवाए वन्दना की। २८ हाथी से उतरी आदिमायास्वरूपिणी मंगलमयी सीता का हाथ धरे जनकराजा के भाई कुशध्वज राज-सभा-भवन में उसे ले गये। आकाश में जमे देवता अपने-अपने विमानों से उतर आए और पंक्तिबद्ध खडे हो गये। कुशध्वज ने उनका परिचय सीता को कराया। २९ 'देखो देवी, यह पार्वतीपति शंकर हैं। ये कार्तिकेय, गणपति आदि विरक्त प्रमथगण हैं। तुम उन्हें निहारो। ये देखो सामने ब्रह्माजी हैं तथा सनक, सनंदन वग़ैरः महर्षि, देवेन्द्रादि सभी प्रमुख पधारे हैं।' —इस तरह कुशध्वज ने समझाया। ३० 'इस तरफ़ रम्यक, हरिवर्ष, किंपुरुषवर्ष, भारतवर्ष, कुरुवर्ष आदि-आदि कई देशों के राजे-महाराजे हैं। हरित, कश्यप, कण्व,

इवरीळारलि चित्तनिनगुळ्ळवर नंगीकरिसु नोडिदॆ
भुवन मूरररूप सिरि सौभाग्य शौर्यदलि
विविध गुणसंपन्नरिदॆयन लवरवर पंक्तिगळनॊय्यनॆ
नवविलास प्रौढियलि नॊडिदळु नळिनाक्षि ॥ 32 ॥

मगळ गंडनु शिवनु बोम्मनु मगनु मिक्किन सुररु बंटरु
बगॆवडमल ब्रह्मऋषिगळु निर्जितेंद्रियरु
जगदरसुगळु नररु तॊरवॆय नगरदधिपति गंडनॆंदॊगु
मिगॆय हरुषदलबलॆ बंदळु जनक निद्दॆडॆगॆ ॥ 33 ॥

हदिनॆदनॆय संधि

सूचनॆ— भूपति व्रजगर्वसर्वस्वापहर हरधनुवना नररूपिन बुजांबकनु गॆलिदॊलिसिदनु जानकिय ।

तरुण केळा जनकभूपति परमसंतोषदलि सीता
तरुणियनु तॆगॆदप्पि तवगदमेलॆ कुळ्ळिरिसि

च्यवन, अंगीरस, कौशिक आदि महर्षि साधु महात्मा —ये हैं, अन्य मानव इस तरफ़ हैं। तुम देखो।' —इस तरह उसने कहा। ३१ 'तीनों लोकों का रूप, संपदा, सौभाग्य, वीरता आदि प्राप्त करनेवाले अन्यान्य गुणशाली यहाँ पधारे हैं। इनमें से जिस किसी को जो तुम पसंद करो उसी को स्वीकार (भी) करो।' —इस तरह (कुशध्वज के) कहने पर सीता ने क़तार में बैठे उनकी तरफ़ डील-डौल से फिर एक बार देखा। ३२ "शिवजी नारायण की पुत्री के पति हैं; ब्रह्मा पुत्र हैं। अन्य देवता तो सेवक हैं। यों तो विचार कर देखें— पवित्र महर्षिवृन्द इन्द्रियविजेता हैं। इस भूमंडल के राजा तो (केवल) मानव हैं। अतः 'तॊरवॆ' के नरहरि रूपी विष्णु ही मेरे पति हैं" —इस प्रकार निश्चय करते हुए सीता हर्षातिरेक में राजा जनक के पास आयी। ३३

पन्द्रहवीं संधि

सूचना— समस्त राजाओं के अहंकार को छीन लेनेवाले शिवधनु को मानव रूपी कमलाक्ष श्रीराम ने जीतकर जानकी को प्रसन्न कर लिया।

राजा जनक ने खुशी के मारे कुमारी सीता को आलिंगित कर वेदिका पर बिठा लिया। तदनंतर "यहाँ इकट्ठे हुए राजाओं में जो शिवधनु पर बाण चढ़ाता है उसी को तुम वरो।" इस तरह कहते हुए मंदार पुष्पों से

नेरॆद रायरोळावनो शशिधरन चापवनेरिसिद भू-
वरन वरिसॆंदित्तना मंदार मालिकॆया ॥ 1 ॥
बळसिदरु बळिकवनिजॆयनूर्मिळॆ महामांगल्यकन्या
कुल शिरोमणि माळवि श्रुतकीर्तियॆंबवरु
हलवु परिचरियकद सेवा ललनॆयरु परिवेष्टिसिदरु
ज्वल सुकान्ता जनद तिंथिणि काणलाय्तॆंद ॥ 2 ॥
अगिदु हॊळॆवक्षिगळ मरिमीनुगळ विकसितवदनकंजा-
ळिगळ कुंतळ भरद भूरिभ्रमर विभ्रमद
युग पयोधर चक्रवाकद नगॆय लावण्यांबुरसदु-
ब्बुगळ बॊब्बळिकॆगळ कांता सरसि रंजिसितु ॥ 3 ॥
मॊळगिदवु निस्सळतति निमिकुल शिरोमंडनन सन्नॆय
लुलिव कंचुकिगळ घडावणॆयलि नृपालचय
गळद कप्पिन गरुव देवन बलुशरासन विद्दॆडॆगॆ हॆ
क्कळसि हॊद्दिदरु दितमद दुब्बिन विलासदलि ॥ 4 ॥
हारकुंडल कटक मणि कोटीर भारद भूरिवॆळगिन
घोर घोषद खडॆय हीरावळिय सॊगसुगळ
धारुणीश्वर रॊब्बरॊब्बरु होरिदरु बिल्लिनलि बयकॆय
भारणॆय बयलासॆयलि बाहुप्रतापदलि ॥ 5 ॥

बनायी गयी माला उसके हाथ में दी। १ मंगलकारी, श्रेष्ठ कन्यारत्न उर्मिला, माळवि, श्रुतकीर्ति —सीता को घेरे खड़ी रही। सेवाश्रेणी की कई स्त्रियों ने भी सीता को घेर लिया। सीता के आस-पास मानों चमकती-दमकती युवतियों की एक भीड़ ही जमा हुई थी। २ सीता के इर्द-गिर्द घिरी युवतियों का गिरोह मानों एक सरोवर जैसा था। उनकी टिमटिमाती चमकती आँखें मानो मछलियों के बच्चे जैसी थी। उनके खिले चेहरे कमल-सरीखे थे। घुँघराले बाल मानों खूबसूरत भ्रमर-सरीखे थे। जुड़वे स्तन चक्रवाक-दंपति-सदृश थे। खिलखिलाहट मानों सौंदर्यरस की लहर-सी थी। उभरे अंगांग मानों बुदबुदे थे। ३ निमिवंश श्रेष्ठ जनक राजा का इशारा होते ही नगाड़े बजने लगे। अंतःपुरचारी वृद्धों के शोरगुल के बढ़ने पर, घमंड से उन्मत्त राजा अपना डील-डौल प्रदर्शित करते हुए, बड़े उत्साह के साथ शिव-धनु के नज़दीक पहुँचे। ४ उनके चमकते हार, (गले के) कड़े, रत्नरंजित मुकुट, धारण किए पैरों में पादत्राण, हीरे के हार वग़ैरः आभूषणों के झणत्कार में राजाओं में प्रत्येक सीता की वांछा से,

निषधनळ्ळॆगळाडिदवु बारिसितु बळलिकॆ चैद्यनृप गु-
ब्बसवु बलुहाय्तंगपति गॆच्चरिकॆ बडवाय्तु
विषमवीर युधाजितुविना यसवनेवेळुवॆनु मिक्किन
वसुमतीशर पंक्तियलि बलुबिल्ल ववरदलि ॥ 6 ॥

चोळ हिम्मॆट्टिदनु हिदकॆ लाळ सरिदनु हिंगिदनु बं-
गाळ बॆंगॊट्टोडिदनु पांड्यनु पलायनव
ओलगिसदनु बाह्लिकनु पांचाल सिंधु कळिंग मरु ने-
पाळदरसरु सरसकॊळगादरु सखीजनद ॥ 7 ॥

करॆकरॆदु कड्डु चपळॆयरु चप्परिसि नाचिसिदरु नृपात्मजॆ
गरस रागलु बंदवर मोरॆगळ नोडॆनुत
अरॆनगॆय बिरुनगॆय नगॆगळ हॊरळिगळलडबिद्दु कैदा
वरॆय कमलंगळलि तॆवरिद रिट्टु भूभुजर ॥ 8 ॥

कंडु बळिकदनुळिद मन्नॆय मडळिक सावंतरॆळदॆ
दंडसिद रल्लल्लिये बिल्लिगॆ नमोयॆनुत

प्रेरित महदाशा से अपने समस्त भुजवल का प्रयोग करते हुए धनुष को उठाने की कोशिश करने लगे । ५ निषधराजा की छाती डवडबाने लगी । चैद्य राजा ने भारी थकावट महसूस की । अंगराजा हाँफते-हाँफते खड़े रह गये । महावीराधिवीर युधाजित वेहोश हो गया । उस महाधनु से होड़ लगाते-लगाते अन्य राजाओं को कितनी थकावट हुई —इसका क्या वर्णन करें ? ६ चोळ राजा धनु उठाने में अपने को असमर्थ पाकर पीछे हट गये। लाळ भी पीछे सरक गये । वंगाल राजा भी पीछे हटे । पांड्य राजा पीठ के वल भाग खड़े हुए । वाह्लीक राजा अपने पैर सिर पर रखे भाग खड़े हुए । पांचाल, सिंधु, कळिंग, मारवार (मरु) आदि राज्यों के राजा, नेपाल के राजा सीता की सहेलियों के मजाक़ के शिकार बने । ७ "हमारी राजकुमारी के राजा बनने जो आए हैं —इनके मुखड़े तो देखिए ।" इस तरह कहती हुई सीता की हमजोली चंचल स्त्रियों ने ताली पीट-पीटकर हँसना शुरू किया । यह देख धनु उठाने आये हुए राजा शरमा गये । मुस्कुराहट और खिल-खिलाहट से अट्टहास करती हुईं उन स्त्रियों ने अपने हाथ के कमल उन पर फेंककर उकटा दिया । ८ धनुप (प्रत्यंचा) चढ़ाने जाकर अपमानित हुए राजाओं को देखनेवाले मुखिए तथा मातहत राजा जहाँ के तहाँ बैठे रह गये और वहीं से 'शिवधनु' को 'नमोनमः' कहते प्रणाम किया । उस

गंडुगलि रावणनु राक्षस तंडसहिता समयदलि नृप-
मंडळिय बळिगिळिदननुपम वर विमानदलि ॥ 9 ॥
अंद्दु निंदिदु दमरगणवज होंदि्द हरसिद नीशनंघ्रिगे
बिद्दवन नप्पिदनु सार्दरु नृपरु कैलबलके
दोंद्देगरु रक्कसन काणुत कद्दुहाय्दरु जनक चिंतेय
लिद्दनव नडेतंदनुग्घडणेय निनाददलि ॥ 10 ॥
तोडर झणझणरवद सुररुग्घडद बिरुदिन बावुलिय क-
प्पिडिद कायद कुडिवरेव बेळगुगळ दाडेगळ
इडिद मणि मुकुटगळ झळपिन खड्ग हस्तद शोणितांबर
दुडिगेयग्गद रायरक्कस नैदिदनु धनुव ॥ 11 ॥
बेदरिदरु कंडवन रूपनु होदरुदलेगळ होत्त चोहद
मदद गर्वद गाढगमनद भूतवलेयेनुत
सुदतियरु गडगडने नडुगिदरदुरि सिरिमोगवनु महीसुते
हेदरिदळु हेराळ चिंतेयोळिद्दना जनक ॥ 12 ॥
खळनिवनु पूर्वदलि रजता चलवनपगत भीतियलि कर
तळदल जगवपाणि सहितेत्तिदनु जगवरिये

समय महावीर रावण राक्षस परिवार-सहित विमान पर उड़ते हुए आया तथा समाविष्ट राजसभा के नज़दीक उतरा। ९ रावण को आया देख देवता उठ खड़े हुए। ब्रह्माजी रावण के पास गये और उन्हें आशीर्वाद दिया। रावण ने ईश्वर को दंडवत किया तो ईश्वर ने उन्हें उठाकर अपनी भुजाओं में भर लिया। राजे-महाराजे आस-पास सरक गये। लोगों ने राक्षसों को देखा तो आँख बचाकर भाग गये। जनक भारी चिंतित हुए। जयघोष के मध्य रावण ने सभाभवन में प्रवेश किया। १० (रावण के) पहने आभूषण झणत्कार-शब्दपूर्ण थे; देवता उनके गुणगान का उद्घोष कर रहे थे; तभी काले शरीर वाले, शुभ्रता में चमकते धारदार टेढ़े दाढ़वाले, प्रकाशमान किरीट (मुकुट) धारी, लाल कपड़े पहने, हाथ में नंगी तलवार लिये, अनुपम वीर राक्षसराज रावण शिवधनु के नज़दीक पहुँचा। ११ सिरों के समूहों को धारे, स्वाँग भरा वेश धारे, ज़ोर-ज़ोर से पैर पटकते आए रावण का (भयानक) रूप देखकर लोग यह समझे कि भूत ने प्रवेश किया है और वे काँपने लगे; स्त्रियाँ तो थर-थर काँपने लगीं। डर के मारे सीता का सुन्दर मुखड़ा भी काँप उठा; राजा जनक तो बड़ी भारी चिंता में डूब गये। १२ 'पूर्व में, इस दुष्ट ने बे-झिझक शूलपाणी-सहित (शिवयुक्त) कैलास पर्वत जो उठाया था' —यह

अळुक दिरदी धनुविवंगुज्वल निमीश्वरवंश मुकुरकॆ
किलुबुदोऽदले महादेवॆनुत चिंतिसिद ॥ 13 ॥
धनु विदॆल्लियदॆल्लि नारद मुनिय वचनवदॆल्लि मरुळा-
दॆनु महीशर नॆरहि मगुळिन्नेनु गति तनगॆ
वनज वॆत्तलु गरळमय जीवनव दॆत्तलु धेनुवॆत्तलु
जनित कोपद्वीपियॆत्तलु शिव शिवायॆंद ॥ 14 ॥
विपुळमति कुश केळु लंकाधिपनु बंदनु बिल्लॆडॆगॆ नम
गुपकरिसिदुदला महीशर गॆलिद कोदंड
कृपॆयलॆनुतुम्महदीना कोणप कुलाग्रणि बयल मोह
द्विपवनेऽिद नरॆनिमिष वासुर विकारदलि ॥ 15 ॥
निंदिदनु बळिकवनु बिल्लिन मुंदॆ बळिसंद सुरनिकरव
हिंदणिगॆ हिम्मॆट्टिसुत लीक्षिसुतलॆडबलन
मंदहासदिना कराग्रद चंद्रहासव सूतगित्तर
विंद वदनॆय नोडि चापकॆ नीडिदनु करव ॥ 16 ॥
नृप तिरस्कारापहास्यद चपळॆयर नुडि यडगिदवु भू-
मिपर भुजबल मानहानिय कोप कॊंकिदवु

बात जगत्-प्रसिद्ध है। अब यह धनुष इससे हिले बिना न रहेगा। इसके हाथ में पड़ा वह झुके बिना न रहेगा। हे महादेव! निमिवंश तो कलंकित होने जा रहा है!' —इस तरह चिंतित होकर जनक सोचने लगा। १३ "कहाँ यह शिवधनु! कहाँ वह नारद मुनि का वचन! (इन) राजाओं को स्वयंवर के लिए निमंत्रित कर मैं उल्लू बना। अब मेरी गति क्या होगी? कहाँ (वह) कोमल-कमल! कहाँ (यह) विषाक्त सरोवर! कहाँ गाय! कहाँ (भूख से) भड़का बाघ! शिव-शिव!" इस तरह चटपटाते राजा जनक चिंतालीन हुए। १४ हे बुद्धिमान कुश, सुनो! लंकेश्वर धनु के नज़दीक पहुँचा। (सोचने लगा)— "राजाओं को हरानेवाले इस धनु ने तो मेरा उपकार ही किया न!" —इस प्रकार अहंकारी मनोविकार से तथा अत्यधिक उत्साह से राक्षसेश्वर (रावण) ने एक क्षण भर के लिए महत्त्वाकांक्षा रूपी हाथी पर सवारी की। १५ तदनंतर रावण आगे बढ़कर उस धनु के सम्मुख खड़ा हो गया। अपने साथ आए राजाओं को पीछे खड़े रहने को कहकर, दायें-बायें देखते वह एक बार मुस्कुरा दिया। अपने हाथ की चन्द्रहास नामक तलवार सारथी के हवाले की। फिर कमलमुखी सीता की तरफ़ देखते धनुष (शिवधनु) को हाथ लगाया। १६ राजाओं को देख-देखकर हँसी-

विफलवादुदे जनकभूपन तपदफलवेंदिष्ट जन नि-
र्लेपित चिंताभरदलिर्द्दु बेरळ बेरगिनलि ॥ 17 ॥
नोडि बळिका विबुधवंश विभाड कैयिक्किदनु निधियनु
कूडिकोंडिह काळसर्पन तुडुकुवंददली
गाढ मुष्टियोळौकि बिडदल्लाडिसिदना धनुवनदु कै
गूडदिरे कैदेगेदु बाहप्पळिसि बोब्बिरिदि ॥ 18 ॥
बलिदु मुकुटावळिय शोणित प्रळिय रक्कस देशियलि बिगि
दॆळेव हाहेय नोजेगोळिसिक्कलिसि पदयुगव
अळुकदंदु हराद्रियनु कित्तिळेय नगलिसुवंते बाहा-
लुळित बलनेत्तिदनु नेलनोलदाड लॆडबलकॆ ॥ 19 ॥
ऒदद्दु कोंडवु जलधि गरळव नुदुगलिसिदनु फणिप कूर्मन
हृदय बिच्चितु बिगुहु सडिलदवा कुलाद्रिगळ
अदुरितंबर वबुजज्जांडद तुदिय तुट्टिसिती दशास्यन
पदविघातिगे पूतु मज्ञ भापेंदुदमरगण ॥ 20 ॥

मज़ाक करती हुई चंचल स्त्रियों की बातें न जाने अब कहाँ विलीन हो गयीं। शायद राजाओं की वीरश्री का जो अपमान हुआ था, वह क्रोधित हो यों साकार हुआ है। 'जनक राजा की इतनी तपस्या क्या बेकार गयी?' —इस प्रकार सोचते हुए बन्धु-मित्र मूक-विस्मित हो, चिंता-परवश हुए। १७ गुप्तनिधि की रखवाली करते हुए कृष्णसर्प को जैसे पकड़ते है वैसे ही देवकुलविनाशक रावण ने अपनी जबर्दस्त मूठ में उस धनु को पकड़कर, दबोचकर हिलाया। उससे कोई भी परिणाम न हुआ। तब रावण धनुष पर से हाथ बाहर निकाल, भुजाओं को ज़ोर-ज़ोर से पटककर गर्जना करने लगा। १८ मुकुट ठीक तरह सँवारकर बाँध लिया। अपने लाल कपड़े को राक्षसों की पद्धति के अनुसार कछौटा बाँधे कस लिया। स्तुति-फलकों से युक्त जो माला लटक रही थी, उसे ठीक कर लिया। दोनों पैरों को अलग कर खड़े रहे। पूर्व में जैसे कैलास पर्वत बेधड़क भूमि पर से उखाड़ लिया था और ऊपर उठाया था उसी प्रकार अपना महा-विक्रम दर्साते हुए रावण ने जो 'धनु' ऊपर उठाया उसके धक्कों से भूमि दायें-बायें डोलने लगी। १९ रावण के, धरती पर पैर पटकने के धक्के से सागर कोलाहल मचाने लगे। भूमंडल को अपने सिर पर धारण करनेवाला आदिशेष (महासर्प) विष वमन करने लगा। कछुए की छाती विदीर्ण हुई। कुलपर्वत ढीले पड़े। आकाश डुलने लगा। ब्रह्मांड की नोक विदीर्ण हुई। इसे देखकर देवताओं ने 'धन्य-धन्य, भेष-भेष',

मूढ सरोजभवादि सुररुग्घडिसॆ रक्कस रायनॆत्तिद
नॊडनॆ बॊब्बिरिदवुकिदनु मॊळकाललाधनुव
तुडुकि तिरुवनु तीव्रचापद हॆडकॆ गॊय्दनु कूडॆरक्कस
गडण वायॆंदब्बरिसिदुदु हरॆय हॊय्लिनलि ॥ 21 ॥

आगलिव गहळॆंदु जनकन बैगुळिन बाय्गळळि नगॆगळ
लागिनलि लळियॆरितवनीपाल संदोह
तागिदंजिकॆ यिद चिंतासागर दॊळद्दळु विदेहजॆ
यागभूमिय मगळ मरुगितु मानिनीनिवह ॥ 22 ॥

अळुपलारंतरवु जगदग्गळद दैवद सॊम्मिगसुरन
निळिकॆ गॊंडुदु चाप चप्परिसितु चडाळतॆय
कळवळिसिदवु करण कंगळ बळसिदुदु बलुतिमिर करतळ
वलुगिदवु कातरिसिदवु कालगळु दशाननन ॥ 23 ॥

उळिदुदैयॆवॆ मात्रका बलु गॊलॆय तिरुविन कूट मेलकॆ
निलुक दादुदु कॊंडग्गमनद म॰ ॰ परितोष
फलिसलरियद कार्यदलि हंबलिसि कॆडुववनंतॆ कॆडॆदनु
बिलुसहित बर्हिर्मुखर वा॰॰॰ गहगहिसॆ ॥ 24 ॥

आदि उद्गार निकले। २० महेश्वर, ब्रह्मादि देवतागण रावण की प्रशंसा-स्तुति जब घोषित कर रहे थे तब राक्षसेन्द्र ने घनघोर गर्जना करते हुए धनुष को ऊपर उठाकर (इसके एक हिस्से को) घुटनों में दबोचकर पकड़े रहा। उसकी प्रत्यंचा हाथ में लेकर धनुष के पिछले हिस्से को नोक की ओर खींचा। राक्षससमूह नगाड़े बजाते जयघोष करने लगे। २१ उस समय —"सीता के रावण के पल्ले में पड़ने में अब विलंब कहाँ ?" इस तरह जनक को कटूक्तियाँ कहते, ताने-उलाहने देते, ओछी हंसी प्रकट करते राजाओं का समूह मानों प्रोत्साहित हुआ। डर के मारे सीता थर-थर काँपने लगी। स्त्रियों की भीड़ सीता के लिए चिंतित हुई। २२ जगत्-प्रभु के जायदाद का अपहरण करने की शक्ति किसमें है ? धनुष ने रावण को धिक्कारा और धड़ल्ले के साथ धरती से टकराया। रावण तेजोहीन हुआ। उसकी आँखों में अंधेरा छाया। हाथ काँपने लगे। पैर थरथराने लगा। २३ धनुष की डोरी उसकी नोक तक पहुँचाने में रत्ती भर बाक़ी था, जो थोड़ा भी साध्य न हो सका। धनुष को हाथ में उठा लेने का संतोष गायब हो गया। सफलता हाथ लगते-लगते विफल हो जाने के कारण बुरी तरह चटपटानेवाले की तरह रावण धनुष को हाथ में लिये

कंडु किरूनगेगळलि रायर तंडविद्दुदु मंदहासद
मंडेगळ मुरिवुगळ मुसुकिननलिर्दुदमरगण
गंडुगलि रावणगे बिल्लिन दंडेयनु हाय्किदळे निज दो-
र्दंडदंगनेयेनुत गुहिलिक्किकतु सखीनिवह ॥ 25 ॥
देसेदेसेगे सिडिदवु किरीट प्रसर हरिदवु हारवेंदेयलि
बसवळिदु बिल्लुगुळिसितु रुधिरवनु वदनदलि
रसदलंपट किक्षुवनु खंडिसलु सिलुकिद नालगेय गं-
गसद नरियवोलिर्दना बिल्लडिय ळसुरेंद्र ॥ 26 ॥
हायेनुत हरितंदु रक्कस नायकरु हिडिदुगिदरा चा-
पायुधवनंदसुरबल मंदरव नुगिदंते
बाय मिडुकिन बळलु गंगळि नायुविन तेगेबगेय रक्कस
रायननु कोंडोय्दु बीसिदरालवट्टदलि ॥ 27 ॥
नळिन भवशंकररु पूर्वद लोलिदु कोट्टवरंगळिदव
नुळिद नल्लदे बिल्लुबिद्दसु तोलग दवरारु
बळिक केळै कुशने सीतेय कळविनलि कोंडोय्वेनेंदव
नळिद लज्जेयलैदिदनु लंकामहापुरव ॥ 28 ॥

हुए ही धरती पर आ गिरा। इस तरह गिरे रावण को देख, देवता-स्त्रियाँ खिलखिलाकर हँसीं। २४ इसे देखते राजाओं का समूह मुस्कुरा रहा था। देवतागण छिपे-छिपे, मुस्कुराते, सिर हिलाते अपनी प्रसन्नता प्रकट कर रहे थे। 'बाहु' नामक नारी ने वीराधिवीर रावण को धनुष की वरमाला पहनायी न ?'—इस तरह कहती हुई सीता की हमजोली स्त्रियाँ खँकारकर हँसते-हँसते लोटपोट हो गयीं। २५ रावण के किरीट तितर-बितर हो गये। गले के हार छिन्न-विच्छिन्न हो गये। प्रत्यंचा की मार से तथा धनुष उठाने की थकावट से रावण खून कै करने लगा। गन्ने के रस की चाट की लालच से उसे काटने जाकर अपनी जीभ को घायल कर लेनेवाले सियार की दशा रावण की थी। वह धनुष के नीचे पड़ा चटपटा रहा था। २६ हाय-हाय करते हुए राक्षसनायक दौड़े। उसके राक्षसी फ़ौज ने मंदार पर्वत की तरह उस धनुष को उठाकर परे किया और रावण को बाहर निकाला। रावण के होठ फड़क रहे थे। आँखें तरस रही थीं। प्राण नहों में समाए हुए थे। ऐसे रावण को उठा ले जाकर उसके सहयोगी पंखा झलने लगे। २७ ब्रह्माजी तथा शिवजी ने, पूर्व में, प्रसन्न हो रावण को वरदान दिया था। नहीं तो इस दुर्घटना से बच न सकता था। क्योंकि ऐसे महाधनु के ऊपर गिरने से किसके प्राणों की रक्षा

बळिक जनकन नंदनॆय हंबलनु बिट्टरु नॆरॆदिळा मं-
डलद रायरु बैदु भंगिसुता विदेहजन
बलॆय नॊड्डिडद निवनु लुब्धक तिलकन्नो नृपऋषियो साकिव
नॊळगॆ मातेकॆनुत मिगॆ मॊऱॆदॆद्दरल्ललल्लि ॥ 29 ॥
निलिसु रायर नारदन नुडि बळलिकॆय तंदुदॆ महाधनु
सुलभवे साकिन्नु कुळ्ळिरिसिवर नुचितदलि
अॆलॆ कुशध्वज केळुसीतॆय नॊलिसली पार्थिवरु यौवन
कुल विभव विभ्रमद लॆंदनुजंगे नेमिसिद ॥ 30 ॥
धनुपरीक्षॆय गॊडवॆ बेडी जनकजॆय नॊलिसुवदु कुल यौ-
वन विलास विचित्र वैभव दिंद नीवॆंदु
जनपरलि सारिसिदना मतदनुनयव नंगीकरिसि नृप-
जन सरागदिनंतरिसि कुळ्ळिर्दरल्ललल्लि ॥ 31 ॥
अॆलॆ कुशध्वज नदनॆय नंदळवनेरिसि तोरिसी नृप
कुल शिरोमणिगळनु तन्नय मनकॆ हत्तुवर

संभव है ? सुनो कुश ! लज्जित रावण मन में यह कहते हुए लंका लौटा कि सीता को एक दिन चोरी में उठा ले जाऊँगा। २८ स्वयंवर में आकर जुटे हुए भूलोक के राजा, जनक राजा को गालियाँ देते, निन्दा करते जानकी को पाने की आशा त्याग बैठे। "इसने तो धनु रूपी जाला तो फैलाया। क्या यह किरात है या राज-ऋषि है ! बस है। इससे बातें करना भी वेकार है।" इस तरह चीखते-चिल्लाते अपने आसनों से उठे। २९ जनक ने आज्ञा दी— "हे कुशध्वज, सुनो। इन राजाओं को जाने से रोको। नारद की बातों में आकर मैंने यह मुसीबत मोल ली। क्या यह महाधनु सुगम साध्य है ! इनका आदर गौरव करते हुए यथोचित रीति से बिठाओ। ये राजे-महाराजे अपना यौवन, वंश, वैभव आदि को प्रकट करते हुए सीता को प्रसन्न कर लें। ३० "शिवधनु की परीक्षा की परवाह न करें। आप अपना कुलगौरव, यौवन-विलास, विविध वैभवों को प्रकाशित कर सीता को प्रसन्न कर लें" —इस तरह (कुशध्वज ने) राजाओं के मध्य घोषणा की। उस नम्रतापूर्ण वक्तव्य का आशय समझकर, उसे क़बूल करते हुए (जाने की तैयारी में स्थित) राजा खुशी-खुशी अन्दर आकर जहाँ-तहाँ अपने लिए जगह बनाकर बैठ गये। ३१ "भाई कुशध्वज, बेटी को पालकी में बिठाकर इन राज-वंश-श्रेष्ठों को दिखा दो। यह सुअवसर है कि जिसे वह पसंद करे, उसे चुने और शादी करे ! अब विलंब काहे का ?" —इस तरह राजा जनक

तळदु कोंळलिदु कृतसमय विन्नलसिके यिदेकेंदु नुडिवी
कळवळव केळ्ददट मुनिपति रामगितेंद ॥ 32 ॥
एळु सीतेय वरिसुवडे तेगे भाळनेत्रन धनुवबेगने
मेलु मोगदुब्बिनलि निंदिद्दनु सरागदलि
बालने नरनाटकद सिरि लोलनल्ला बेरगदेनु वि-
शालमति कुशकेळु बीळ्कोंडनु मुनीश्वरन ॥ 33 ॥
वर पयोनिधि मध्यदिंदवतरिसुव मृतांशुविन वोलु मुनि-
वरर मध्यदोळेद्दना रघुनाथ नोलविनलि
परम विभवके विभ्रमके सरसिरुह भव मन्मथरु लोकके
दोरेगळवरिगे पितनला पडिगट्टलेनेंद ॥ 34 ॥
चरणनख दीधितिय पीतांबरद दिव्य विभूषणद भा-
सुरशरीरद होंगर होसजव्वनद विभ्रमद
परमतेजोमयनु मायानरनु बंदनु नेरेद पृथ्वी-
श्वर सभामध्यदलि बेरगागिरे समस्तजन ॥ 35 ॥
सुररिगीश्वर नंते धरणीसुररिगमल ब्रह्मदवोलित
ररिगे राजकुमार नंददि निखिळ रायरिगे

से कही गयीं आतंकपूर्ण बातें सुनकर विश्वामित्र ने राम को संबोधित करते हुए यों कहा। ३२ "उठो बेटे; सीता से अगर शादी करना चाहते हो तो तुरंत शिवधनु को उठाओ।" —इस तरह विश्वामित्र के कहने पर प्रफुल्ल-वदन राम सिर ऊँचा किए उठ खड़े हुए। राम क्या बच्चा है? मानवीय लीला-नाटक-विनोद-लक्ष्मीपति ही तो हैं न! इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है? हे बुद्धिमान कुश, सुनो। राम विश्वामित्र की आज्ञा पाकर चल पड़े। ३३ क्षीरसागर के मध्य से उदित होकर निकलते हुए चन्द्रमा की भाँति ऋषिसमूह के मध्य से श्रीरघुनाथजी उठे। ब्रह्माजी तथा मन्मथ (कामदेव) इस जगत के वैभव-विलास के स्वामी हैं। उन ब्रह्माजी तथा मन्मथ के ये तो पिताजी (रघुनाथजी) ठहरे न? तब राम की बराबरी कौन करे! —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ३४ पैर की उँगुलियों से मानों कांति टपक (झलक) रही थी। पीताम्बर को धारे, दिव्याभरणालंकृत हो, दमकती अंग-कांति से चमकते हुए नवयौवन की सुन्दरता से अनुपम तेजस्वी मायावृत मानवरूपधारी श्रीराम को सम्मिलित समस्त राजाओं की सभा के मध्य पधारे देखकर सभी को भारी आश्चर्य हुआ। ३५ (मस्त) हाथी की तरह पग धरते, बड़े डील-डौल के साथ आए हुए राम जिन-जिनकी भावनाएँ जैसी थीं,

धरॆगधीश्वर नागिमानिनियरिगॆ मन्मथ नॆंबवोलु गो-
चरिसिदनु गरुवायियलि गजगतिय गमनदलि ॥ 36 ॥
ईतनहनवनिजॆगॆ वर रूपातिशयदलि हरॆयदलि भा-
वाति रेकदलदटिनलि निजराज तेजदलि
ईत चापव गॆललि गॆलदिरलीतने साकॆंब घनसं-
प्रीति वचनदॊळिदं रवलॆयरधिक हरुपदलि ॥ 37 ॥
ललित रामन मूर्तियनु कंगळलि विगियप्पिदरु सुरता
कलितदनुराग प्रपंचद सकल कलॆगळलि
बळसिदरु भावकिय रंगजनलगि गोड्डिडद मैय्य नॊय्यनॆ
सुळिसिदळु सुम्मानदलि कडॆगंगळनु सीतॆ ॥ 38 ॥
मुसुकितभ्रवनमरतति तापसरु तवकिसि निदिदरु नॆरॆ
मुसुकि कॊंड्डु सकल पृथ्वीपार संदोह
कुसुम मालॆयतिरुहुतॆत्तिद मुसुडिनरॆ नोटदलि लज्जॆय
बॆसुगॆयलि नॆरॆ नॊडुतिर्दळु सी[illegible] रघुपतिय ॥ 39 ॥
बंदु निंदिद नीतना बालेंदुधर नॆरडनॆय बिल्लिन
मुंदॆ मुरिदीक्षिसिद नवनीसुतॆय सिरिमॊगव

उन-उनको उसी रूप में दृष्टिगोचर हुए। —देवताओं को परमेश्वर-सरीखे, ब्राह्मणों को परब्रह्म[illegible], अन्यों को राजकुमार की तरह, आगे चलकर समस्त राजाओं को नृपति-सदृश, स्त्रियों को मन्मथ-सरीखे दीख पड़े। ३६ "बड़ा ही सुन्दर रूप, यौवन, स्वभाव, वीरता, राजतेजसंपन्न यह सीता के लिए योग्य पति है। यह धनुष तोड़े या न तोड़े —यही यथेष्ट है।" इस [illegible] श्रीराम की तरफ़ देखनेवाली स्त्रियों ने आपस में बड़े चाव से बातें करना शुरू किया। ३७ मन्मथ-भाव-संयुक्त, सुख-दायक प्रेम की सा[illegible] कलाओं की कल्पना मन में करते हुए, उन कामिनियों ने राम की [illegible] मूर्ति का आलिंगन आँखों ही आँखों में कर लिया। सुन्दरियों ने कामदेव की तलवार के सम्मुख अपने को अर्पित किया। सीता ने खुशी-खुशी राम की ओर तिरछी नजर से डोरे डाले। ३८ आकाश में देवता इकट्ठे हुए। परिणामोत्सुक ऋषि-मुनि फलितांश की प्रतीक्षा में खड़े रहे। राजाओं की भीड़ चारों ओर से इकट्ठी हुई और राम को घेरे खड़ी [illegible]ही। हाथ की माला (वरमाला) को हिलाती-डुलाती सीता आँखें ऊपर उठाए, लज्जा के मारे सिर झुकाए, अधमूंदी आँखों की कोर से राम-दर्शन में लीन थी। ३९ श्रीराम चन्द्रशेखर (शिवजी) के इस दूसरे धनुष के सामने आकर खड़े हुए। एक बार मुड़कर सीता का सुन्दर

संदणिसिद समस्त सुरनर वृंद कंडुदो काणदो ये-
नंदरियेनेद्रिसिद धनुविद्दुदु कराग्रदलि ॥ 40 ॥
यॆळॆय कब्बिन कोल वनकरि कळभ करदलि मुरिववोलु निरॆ
निळिलु निटिलेंबब्बरणॆ गब्बरिसॆ दिगुतटव
सॆळॆदना कर्णांत पर्यंत लघुबल रघुनाथ निक्कडि
गळॆदुदा बलुबिल्लु बॆदरलु हृदय भार्गवन ॥ 41 ॥
पसरिसिद परितोष दुब्बिन मुसुडकांतिय कांतनंघ्रिय
ससिनदलि ढाळिसुव पांगद पांगिनग्गळद
नसुनगॆय सिरिमॊगद लज्जारसद सॊबगिन सीतॆसुरकुज
कुसुम मालॆय निक्किदळु रघुरामचंद्रंगॆ ॥ 42 ॥
उक्किदुदु हॆरॆगंडकडलिन हॆक्कळद वोलु हरुषरसदळ
विक्किदुदु सत्कुल लतांकुर जनक भूपतिय
ऒक्करंबुजदलर नमरर धक्कडॆयरानकददनि दश
दिक्कनुब्बिसॆ रघुपतिय सिरिमुडिय सरिसदलि ॥ 43 ॥
उगिदडायुध वीर सुभटाळिगळु दशरथ सार्वभौमन
मगन मुसुकिद रंगरक्षणॆगरसनाज्ञॆयलि

मुखड़ा देखा। पता नहीं, वहाँ जमे समस्त देवता तथा मानवों ने देखा या नहीं (राम का सीता की ओर मुड़कर देखना)। दूसरे ही क्षण देखते क्या हैं— उठाया हुआ वह शिवधनु श्रीराम के हाथ में था। (शरासन चढ़े)। ४० जंगली हाथी का बच्चा जैसे सूँड़ से कोमल ईखों का टोकरा तोड़े डालता है ठीक वैसे ही धड़-धड़ाके के साथ के उस (भयानक) शब्द से दिशाओं में कँपकँपी पैदा करते हुए वह महा शिवधनु, अतुलित बलवान रघुनाथजी के कान तक प्रत्यंचा खींचते न खींचते दो टुकड़े होकर गिरा। इससे परशुरामजी का दिल धड़क उठा। ४१ (तब) उमड़ती खुशी से प्रफुल्लित मुखकांतिसंपन्न सीता ने, पति के चरण-कमल प्रदेश को (अपनी) आँख की कोर के प्रकाश से ज्योतिर्मय करते हुए जब उस सुन्दरी के मुखमंडल पर लज्जारुणिमा युक्त मंद मुसकान विराजमान थी —अपने हाथ की मंदार पुष्पमाला श्रीरघुरामचन्द्र के गले में डाली। ४२ चन्द्रोदय से जैसे समुद्र उमड़ता है वैसे ही राजा जनक का संतोष उमड़ पड़ा। जनकराजा की सद्वंश नामक लता पनप उठी। देवताओं ने श्रीराम के श्रीसंपन्न सिर पर कमल-पुष्पों की वर्षा की। बलवान देवताओं से बजाए गये नगाड़ों की ध्वनियों से दसों दिशाएँ गूँज उठीं। ४३ जनकराजा की आज्ञा से खुली तलवारधारी वीर योद्धा

होगुवडेडे यिल्लेनिप हरुषद होगरिनलि होरेयेरिनृपदं
डिगेय लिवरनु कोंडुवंदनु राजमंदिरकें ॥ 44 ॥
हरेदुदाक्षण नेरेद पृथ्वीश्वररु पद्मभवादिदेवरु
सरिदरा समयदलि विश्वामित्र नडेतंदु
अरस केळितगळु भूमीश्वर दशस्यंदनन नंदन
ररिकें यिदु निनगेनुत सरिदनु मुनि निजाश्रमकें ॥ 45 ॥
अहुदु मत्तेनम्म वंशकें मिहिर वंशद कोळु कोडेगे नि-
र्वहिसिते संबंध नरकेसरिय करुणदलि
बहळ भाग्यरु नावलेयेनु तहत परितोपदलि नृप मे-
लह महोत्सव कोडने नेनेदनु बीयगर वरव ॥ 46 ॥

हदिनारनेय संधि

सूचने— राय जनकनु जगदरायर राय रघुनंदनरिगवुजदळाय तांवकियरनु कोट्टनु करेसि दशरथन।

बरेसिदवु बळिकुपयमद विस्तरद पत्रिकेगळु सुधामन
वरशतानंदनन तेरळिसिदनु महीपाल

दशरथ चक्रवर्ती राजा के पुत्रों के रक्षणार्थ (उन्हें) चारों दिशाओं से घेरे खड़े रहे। राजा जनक जब फूले न समा रहे थे— राम-सीता को पालकी में बिठाकर राजमहल बुला लाए। ४४ इकट्ठे हुए राजे-महाराजे तितर-बितर हुए। उपस्थित ब्रह्मादि देवता भी वहाँ से रवाना हो गये। उस समय महर्षि विश्वामित्र राजा जनक के सम्मुख पहुँचे— "सुनो राजन्, ये राजा दशरथ के कुमार हैं। जो समझाना है, तुम्हें समझा दिया है।" —इतना सुनाकर अपने आश्रम की ओर चल पड़े। ४५ "श्रीमन्नारायण की कृपा से हमारे वंश को सूर्यवंश में अपनी कन्या का दान करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। हम कितने भाग्यवान हैं!" —इस तरह मन ही मन खुश होते हुए राजा जनक ने आगे के विवाह-महोत्सव में समधियों को बुला भेजने की योजना बनाने की सोची। ४६

सोलहवीं संधि

सूचना— राजा जनक ने राजा दशरथ को निमंत्रित कर जगत के राजाओं के राजा रघुवंशीय कुमारों को अपनी कमललोचना कन्याओं का दान कर विवाह-कार्य सम्पन्न किया।

राजा जनक ने विवाह-महोत्सव की निमंत्रण-पत्रिकाएँ लिखाकर मंत्री सुधामा तथा पुरोहित शतानंदजी को राजा दशरथ के यहाँ भेजा। युवक

तरुण केळै कुशनें गजरथ तुरग पायदळ सहित योध्या
पुरिगें पयणोद्योगरादरु जनक नाज्ञेयलि ॥ 1 ॥
अरुहिदरु मणिहार रवरिब्बर बरविना स्थितिय नर सं-
गरस नाज्ञेयलेत्तिदवु गुडिपुरदोळगलदलि
धरणिपति योलगद समयवनरिदु नडेतंदा सुधामनु
चरण कानत नागि कोट्टनु बिन्नवत्तळेय ॥ 2 ॥
अरस बळिका जनक मंत्रीश्वरननुचित प्रीतिवचनदि
हिरिदु मन्निसि तन्न निज सिंहासनाग्रदलि
करेदु कुळ्ळिरिसिदनु मिक्किनवर शतानंदादि गळनुप
चरिसि बळिका मंत्रिगिंतेंदनु महीपाल ॥ 3 ॥
कुशलने जनक क्षितीशनु कुशपताकनु हदुळिगनें त-
द्वसुमतीशन बंधुगळु सुक्षेमिगळेयेनलु
कुशलवर्गळु जीय देवरि गोसगेयाद विवाह पत्रिके
येसकवनु चित्तैसियेंन लोदिदरु लेखनव ॥ 4 ॥
स्वस्ति श्रीमद्राज राजसमस्त गुणराजित सहस्र ग-
भस्ति वंशललाम सकलनृपाल मणिमुकुट

कुश ! सुनो। हाथी, घोड़े, रथ, पैदल दल के साथ वे दोनों जनक राजा की आज्ञानुसार अयोध्या की तरफ़ रवाना हुए। १ इन दोनों के आगमन का समाचार राजा दशरथ को राजमहल के अधिकारियों ने दिया। दशरथ की आज्ञा से अयोध्या नगरी भर में ध्वज पताकाएँ उड़ने लगीं। राजा के दरबार के समय की जानकारी प्राप्त करके, सुधामा ने राजा दशरथ को प्रणाम समर्पित करते हुए साथ लाए निवेदन-पत्र को सौंप दिया। २ दशरथ ने जनक राजा के मंत्री का यथायोग्य आदरातिथ्य करते हुए प्रेम-भरे अंतःकरण से ले जाकर अपने सिंहासन पर बिठा लिया। शतानंदादि अन्यों को भी आदर-गौरव प्रदान किया। तदनंतर राजा दशरथ ने मंत्री सुधामा से यों कहा— ३ "राजा जनक का कुशल मंगल है न ? कुशध्वज तो कुशल-मंगलपूर्वक हैं न ? राज-परिवार का भी कुशल-मंगल सुनाइए।" —इस प्रकार दशरथ ने प्रश्न किये। "भगवन् ! वे सभी कुशल-मंगलसंपन्न हैं। आपसे हमारा सानुरोध निवेदन है कि इस शुभ समाचारयुक्त विवाह-निमंत्रण-पत्रिका का अवलोकन करें।" तदनंतर वह निमंत्रण पढ़ा गया। ४ "स्वस्ति श्रीमत् राजाधिराज, समस्त सद्गुण-विराजित, सूर्यवंशतिलक, रत्नखचितकिरीटधारी, अखिल राजाओं के

मस्तकांघ्रिसरोज सूनृत विस्तरण साकेतपुर वि-
न्यस्त वैभवनृपर्गे बिन्नह जनक भूपतिय ॥ 5 ॥
राय चित्तैसखिळ नृपर विडायिगॆंडिसिद चंद्रधर चा-
पायुधव गॆलि दॊलिसिदनु रघुनाथ नवनिजॆय
ईयशेष महोत्सवद सुश्रेयवनु कैकॊंडु बंधुनि
काय सहितै तहुदॆंनुत वाचिसिदुदा लिखित ॥ 6 ॥
एनिदॆंत्तण सुद्दि परम तपोनिधिय मखपालनॆगॆ म-
त्सूनुगळु गमिसिदरु मेलिदु बॆरगलॆयॆंनुत
माननिधि मनदनुगतद सुम्मानदलि कॆळिदनु गौतम
सूनुवनु हॊगळिदनु मुनिमेलण कथांतरव ॥ 7 ॥
मुनिप विश्वामित्र मखपालनॆय गौतममुनिवरन मा-
निनिय शापविमोचनवनर्धॆंदु शेखरन
धनु परिच्छेदव धरानंदनॆय पाणिग्रहण दुज्जुग
दनित पेळ्दॆंच्चरिसदनु मेलण महोत्सवव ॥ 8 ॥
हरुषलतॆ लंबिसलिकवरनु हिरिदु मन्निसि बीडिकॆय मं-
दिरगळिगॆ बीळ्कॊट्टनुचितोक्तियलि मरुदिवस

सिरों से अलंकृत चरणकमलसंपन्न सत्यवान्, अयोध्यानगरी के वैभव-सम्पन्न हे राजा! (आपके श्रीचरणों में) राजा जनक के निवेदन यों हैं— ५ "हे राजन्! कृपया सुनिए। समस्त राजाओं की वीरश्री भंग करनेवाले शिवधनु पर प्रत्यंचा चढ़ाकर उसे तोड़कर (आपके सुपुत्र) रघुनाथ ने सीता को प्राप्त कर लिया। इस महत्तर मंगल मुहूर्त के लिए समस्त बन्धु-बान्धवों, परिजनों-सहित आने की कृपा कीजिए।" —इस प्रकार पत्र प्रणालियुक्त लिखा गया था। ६ "अरे, यह कैसा अद्भुत समाचार है! मेरे पुत्र तो विश्वामित्र महर्षि के यज्ञ-रक्षणार्थ गये थे। और आप जो बता रहे हैं— अत्यंत आश्चर्यकारी है।" इस तरह मन में अत्यंत हर्षित होते हुए स्वाभिमानी दशरथ ने उल्लिखित प्रश्न गौतम-पुत्र शतानंद से किये। शतानंद ने सारी बातें विस्तार के साथ बतायीं। ७ विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा, गौतमसती अहल्या का उद्धार, शिवधनुभंग, भूमिसुता सीता के विवाह-महोत्सव की तैयारियाँ आदि-आदि विचारों के बारे में समझाकर आगे चलकर संपन्न होनेवाले विवाह-महोत्सव के बारे में सचेत कर दिया। ८ दशरथ की संतोष रूपी लता (यह सारी वार्ता सुनकर) पनप उठी। आगतों का विशेष रीति से गौरव-आदर करते हुए, यथोचित बातों से उन्हें प्रसन्न करते हुए (उनके लिए आयोजित) निवास स्थानों

पसुटविसिदरु पयणवनु तत्पुरद हौरवळयदलि गुडियु-
प्परिसिदवु मांगल्य तूर्यत्रयद रभसदलि ॥ 9 ॥
तेगेसिदनु भंडारदलि झगझगिप रत्नाभरण वसना-
दिगळ नखिळ सुगंध कन्या भूषणावळिय
अगणिगतद पेट्टिगेय हौरेयाळुगळ संदणि नूकिदुदु सर-
कुगळ सदळद भंडिगळु बारिसिद विळे झडियें ॥ 10 ॥
गळित हाळित दूळितद निर्दळित नाना धान्य गुड तं-
डुलघृतादि समस्त संभारगळ हेरुगळ
हलवु कोट्टिगे दिट्टिनेलकों बळ्तेयलि नेलेगोंडवंद
दळद सालिट्टणिसिसितंत:पुरपुरंध्रियर ॥ 11 ॥
इरिसि दृष्टि जयंतरनु पुर करस रथवेरिदनु नृत्यद
तरुणियर हरिवाण दारतिगळ विलासदलि
गुरु वसिष्ठ सुमंत्र भरताद्यरु सुहृज्जन पौरजन दु-
ब्बरद सौरंभदलयोध्यापुरव हौरवंट ॥ 12 ॥
मणिमयद दड्डिगळु हौन्नंदणव मुसुकिद वरसियर भा-
रणेय कंबिय कंचुकिग ळुग्घडणें घाडिसलु

को भिजवा दिया। दूसरे दिन यात्रा की तैयारियाँ होने लगीं। अयोध्यानगरी के बाहरी विभाग में यात्रासूचक ध्वज फहरने लगे। मंगल-वाद्य, गान, नृत्य आदि की धूमधाम मची। ९ जगमगाते रत्नाभूषण, वस्त्र, सुगंध-द्रव्य, बहू के लिए सुयोग्य आभूषण, वग़ैरहों को दशरथ ने भांडार-घर से निकलवाया। गहने-आभूषणों से लदी पेटियों को ढोनेवालों की भारी भीड़ की धक्का-मुक्की होने लगी। तरह-तरह की वस्तुओं से भरे छकड़ों के भारी असाध्य बोझ के कारण धरती मानों दबने लगी। १० चलनी चलाकर, नाप-तोलकर, आटा बनाए गये, व तरह-तरह अनाज फोडकर दाल में परिवर्तित अनेक प्रकार के अनाजों तथा गुड़ के, चावल, घी, वग़ैरः पदार्थों से भरे बोझों को ढोनेवाले बैलों की कतारें जहाँ तक दृष्टि दौड़े वहाँ तक फैली हुई थीं। अंत:पुर की स्त्रियों की पालकियों की पंक्तियों की भीड़ जमने लगी। ११ दृष्टि तथा जयंत को अयोध्या की रक्षा के लिए नियुक्त कर दशरथ रथारूढ़ हुए। नर्तकियाँ थालियों में सजायी सुन्दर आरतियाँ उतार रही थीं तो गुरु वसिष्ठ, सुमंत्र, भरत आदि अपने इष्ट मित्रों के साथ प्रजाजनों के धूमधाम के मध्य (तैयार हुए) दशरथ अयोध्या नगरी से रवाना हुए। १२ रानियाँ जिनमें (बैठीं) थीं वे सोने की पालकियाँ मणिमय परदों से ढकी गयी थीं। भारी

कुणिव कुदुरेय हण्णिदुरु वारण वरुथ पदातियलि नि-
ब्बणव होरवंटनु महीपति सकल विभवदलि ॥ 13 ॥
सीतेयणुगरु केळिरै दिगुजात जरियलु ऽडिव वाद्य
व्रातदलि निम्मरस पयणद मेले पयणदलि
चातुरंगद चटुळ चरणोद्धूतरज वुप्परिसला झप-
केतनन चैत्रन वसंत क्रीडेयेने नडेद ॥ 14 ॥
दिवस हदिनैदक्कें सारिदरिवरु जनकन पट्टणवनु-
त्सव मिगलु वळिका विदेह नृपाल दशरथन
युवतियर नर्तनद कहळारवद कन्नडि कलशदभिनव
दविरळोत्सव दिंदिदिगोंडोय्द नोलविनलि ॥ 15 ॥
माडिदरमनें जन्निवासद वीडिकेंगळादवु वळिवकेंडे
याडिदरु परिचारकरु सचिवरु पुरोहितरु
मोडगंडबुधिय हरुपद घाडणेयलि सुत्राम सहभव
गूडिबंदनु जनक दशरथ रायनरमनेगे ॥ 16 ॥
तवक दिंदिरेंद्दु जनकन नवनिपति तवकैसि मह दु-
त्सवदि नातन निलिसिदनु सिंहासनार्थदलि

अधिकार-दंड हाथ में लिये हुए (वस्त्रधारी) कंचुकी (चारण-भाट) स्तुति-पाठ का उद्‌घोष कर रहे थे। नाचते हुए घोड़े शृंगारित हाथी, रथ व पैदल सेना जब साथ दे रही थी तब राजा दशरथ समस्त वैभवों के साथ बरात लेकर निकले। १३ हे सीता-पुत्रो ! सुनो। गाजे-बाजे इतने जोर-शोर से बज रहे थे कि दिशाएँ ढह जायँ। —इस तरह यात्रा करते-करते, पड़ाव पर पड़ाव डाले, तुम्हारे (उस पूर्वज) राजा ने यात्रा की। चतुरंग सेना के पदाघात से उठी धूल आसमान भर में जो व्याप्त हो रही थी—मानों ऐसा लगता था कि मन्मथ और चैत्र की वसंत-क्रीड़ा का उत्सव हो रहा हो —इस रीति से दशरथ की यात्रा हो रही थी। १४ पन्द्रह दिनों पर दशरथ का यह गिरोह मिथिला नगरी पहुँचा। तब विदेहराजा जनक उनका हार्दिक स्वागत करते, युवतियों का नृत्य, शहनाई, आरसी, कलशों के साथ बड़ी धूमधाम से तथा अत्यंत उत्साह से आवभगत करते, राजा दशरथ को बुला ले गये। १५ तैयार रखे राजमहल ही यज्ञ-शालाओं के लिए आवास बने। परिचारक, मंत्री, पुरोहित आदियों की भारी दौड़-धूप शुरू हुई। बादलों को देख जैसे समुद्र हर्षित होता है, वैसे ही राजा जनक भी खुशी के मारे मंत्री सुधामा तथा अन्य भाइयों सहित दशरथ राजा के महल में पहुँचे। १६ तुरन्त राजा दशरथ आसन से

रविकुलजगा नृपति कैमुगिदेमगे बीयग रादिरी भा-
ग्यवनु काणिसिदुदु पुराकृत पुण्यफलवेंद ॥ 17 ॥
ऎनुत धिम्मनॆ निंदु दशरथ जनपनपसव्यदलि सिंहा-
सनदॊळवतरिसिर्द मनुकुलगुरु वसिष्ठंगॆ
तनुपुळक दुब्बिनलि निमिकुल जनपनानतनागि सिक्किन
मुनिजनकॆ कैमुगिदु कुळ्ळिदनधिक हरुषदलि ॥ 18 ॥
राजऋषिगळॊळुत्तमनु निमिराज वंशदॊळधिक नग्गद
राजवर्गदॊळग्गळनु नीनॆनुत कॊंडाडि
आ जगद्वंदित तपोधन राजनॊय्यनॆ नगुत वंश वि-
राजित नॊळी मातनुडिदनु कुलपरिश्रुतव ॥ 19 ॥
मुनिय मातिगा जनकनानव नीक्षिसिदनु शतानंदननना
मुनि बळिक निमिराजेंद्र संततिय .
जनपरूदयव नरुहि मिथुळावनिपनभ्युदयवनु विरचिसि-
दनु विशुद्ध चरित्रवनु बळिका महीपतिय ॥ 20 ॥
वरविदेह नृपालना निमिधरणि पंगु दुभविसिदुद वि-
स्तरिसिदनु बळिका विदेह परंपरॆय नृपर

उठे और अगुवानी करते हुए जनक को बाहुओं में भर लिया। अत्युत्साह में अपने सिंहासन पर आधा स्थान देकर उन्हें बिठा लिया। सूर्य-कुलोत्पन्न राजा दशरथ के सम्मुख हाथ जोड़कर जनक ने कहा— "आप मेरे समधी हुए। मेरे पूर्व जन्म के पुण्य के फलस्वरूप यह सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ।" १७ इतना कहते हुए झट निमिवंशोत्पन्न राजा जनक खड़े हुए तथा दशरथ की दाहिनी तरफ़ सिंहासन पर बैठे मनुवंशीय राजाओं के कुलगुरु वसिष्ठजी को अत्यंत हर्ष से रोमांचित होते हुए उन्होंने प्रणाम किया। फिर अन्य ऋषि-मुनियों को प्रणाम कर जनक बैठ गये। १८ जगद्वंद्य, तपोनिधियों में अग्रगण्य वसिष्ठजी ने प्रशंसा करते हुए, मुस्कुराते हुए यों कहा— "राजर्षियों में तुम श्रेष्ठ हो। निमिवंशीय राजाओं में महान हो। श्रेष्ठ राजाओं में तुम्हारा स्थान महोन्नत है।" —इस तरह उदात्त वंशज जनक की वंश-विख्यात का गुणगान किया। १९ वसिष्ठ महर्षि की बातें सुनकर महाराजा जनक ने शतानंद के मुखड़े की तरफ़ देखा। शतानंद ने निमिराजवंशीय महाराजाओं के उदय का वर्णन करते हुए मिथिला के राजा जनक के परिशुद्ध चरित का विवरण प्रस्तुत किया। २० सबसे पहले, विदेह राजा निमिराजा के पुत्र होकर कैसे पैदा हुए —यह विवरण प्रस्तुत कर[illegible] विदेह[illegible]ओं की वंश-परम्परागत

चरितवनु कोंडाडि जनकन निरतिशय वंश प्रसिद्ध
स्फुरित धार्मिक तनव नोरेंदनु मुनि वसिष्ठंगे ॥ 21 ॥
अहुदु मत्तेनुत्तमोत्तमरहिरले वंशदलि नावी
मिहिरवंशद रायरनु निमगरुह वेहुदले
द्रुहिणनिं कश्यपनु कश्यप गहि मकरनहिमकरनिंदी
महिगे मनुवरसादनातनिनाय्तु मनुवंश ॥ 22 ॥
आतनिं दिक्ष्वाकुवंश ख्यात नादनु जनिसिदनु वळि-
कातनत्वयदलि दिळीपनुदार कुलधुतनु
आतनिं दीर्चेयलि रघुमांधात सगर भगीरथादि म-
हीतळाधिप रोलिदु पालिसिदरु निजान्वयव ॥ 23 ॥
अजनु बळिका संततिय भूभुजर मिक्कनु नडवळियला-
त्मजनु जनिसिदनी दशस्यंदन महीपाल
त्रिजगकतिशय रिवरु सद्वंशजरु बळिकी राम रामा-
नुजरु मक्कळु नाल्वरीतंगेंदना मुनिप ॥ 24 ॥
कुलदलत्युत्तमरु राजावळिय लधिकरु नियतधर्मद
बळकेयलि बल्लिदरु वल्लवरखिल कलेगळलि

कथा की प्रशंसा-प्रशस्ति उपस्थित की। तत्पश्चात् उस सुविख्यात वंश मे (पैदा हुए) राजा जनक की धार्मिक भावना तथा उसकी प्रख्याति का विवरण वसिष्ठ महर्षि को स्पष्ट किया। २१ "हाँ हाँ; यह सब ठीक है। तुम उत्तमोत्तम वंशवाले हो, यह निर्विवाद सत्य है। अब सूर्यवंशीय राजाओं का चरित (हमें तो चाहिए कि) तुम्हें समझावें। ब्रह्माजी से कश्यप, कश्यप से रवि का जन्म हुआ। रवि के पुत्र मनु इस भूमंडल के राजा बने। उसी के कारण यह वंश मनुवंश नाम से प्रसिद्ध हुआ।" —इस तरह वसिष्ठ ने कहा। २२ मनु के बाद इस वंश में इक्ष्वाकु प्रसिद्ध राजा हुए। तदनंतर उसके वंश मे त्यागशील दिलीप जन्मे। उसके पश्चात् रघु, मांधाता, सगर, भगीरथ आदियों ने सूर्यवंश में जन्म लेकर उस वंश की कीर्ति की वृद्धि की। २३ तदनंतर अज ने (पैदा होकर) अपने आचरण से पूर्व के रघुवंशीय राजाओं से (अधिक) आगे बढ़ गये। महाराजा दशरथ अज के पुत्र होकर पैदा हुए। इन्हीं के यहाँ तीनों लोकों के लिए महामहिम श्रेष्ठ जो चार पुत्र रत्न उत्पन्न हुए तथा वे ही है श्रीराम व उनके भाई हैं। २४ "तुम दोनों श्रेष्ठ वंशवाले हो। दुनिया के सर्वश्रेष्ठ राजा हो। धर्माचरण मे सशक्त हो। समस्त कलाओं में प्रवीण हो। तुम दोनों के

कोळु कोंडॆगॆ संदेह वेनॆनॆ बळकॆयवरे नीवॆनुत मुनि-
तिलक नुभय नृपालकर कोंडाडुतितॆंद ॥ 25 ॥
सलहिदनु जनक क्षितीशनु नॆलदॊळुदिसिद मगळनॆंदे
हलबराडुरदरिॆनिं निज तनयळल्लॆंदु
उलुकुवदु चित्तदलि जननद नॆलॆयनरुहिदडॊप्पु गॊंबुद
कलिसिकॊयदेनिद्दुदॆंदनु मुनि विदेहगॆ ॥ 26 ॥
मुनिप चित्तैसहुदु नीवॆंदिनितु पूर्वद राजसूयद
विनुत मखभूमियनु शोधिसलल्लि लांगलद
मॊनॆगॆ सिलुकिद भूगतालय वनरुहाकर विरलुकंडॆनु
कनक कमलद कर्णिका मध्यदलि कोमलॆय ॥ 27 ॥
ई कुतूहलिकॆयनु कंडु महाकुलदि नावंजि मनदलि
साकु नमगी स्थळ वॆंनुत तद्भूमिगर्भितद
श्रीकरालयविदु निसर्ग पुराकृतिय लिरलॆंब समयकॆ
नाक मुनि नडॆतंदु बळिकिंतॆंदु नेमिसिद ॥ 28 ॥
भीति बेडॆलॆ जनक जीवन जातमंदिरॆयीकॆ यीकॆय
नोतु सलहॆंदित्तना मुनिनाथ नॊलविनलि

घरानों में विवाह सम्बन्ध स्थापित होने में कोई बाधा नही। तुम दोनों (एक-दूसरे से) परिचित भी हो।" इस तरह कहते मुनिश्रेष्ठ वसिष्ठ ने दोनों की प्रशंसा करते हुए फिर कहा। २५ "भूमि में प्राप्त इस कन्या को अपनी निजी बेटी समझकर ही पालन-पोषण किया। कइयों को यह कहते सुना है कि उनकी अपनी निजी (औरस) संतान नहीं है। इसी एक शंका से हम तरस रहे हैं। अतः सीता के जन्म के रहस्य के बारे में जानकारी मालूम हो तो इसे (विवाह में) स्वीकारने में, कोई आपत्ति नहीं रहेगी।" —इस तरह वसिष्ठ ने जनक राजा से कहा। २६ "महर्षि जी, आपका कथन सत्य है। पूर्व में, राजसूय यज्ञ निमित्त भूमि का शोध करते वक़्त, हल की नोक भूमि में छिपे घर से टकरायी। वहाँ एक तालाब दिखायी पड़ा। (उस) तालाब में कमल की कणिका के मध्य भाग में एक कोमल शिशु दिखायी पड़ा। २७ इस चमत्कारी घटना से मन-ही-मन भयभीत हुआ। हमारे लिए यह स्थान काफ़ी है। भूमि में छिपा प्रकृति सहज यह सरोवर जैसे के तैसे पूर्ववत् रहने दें। —इस तरह सोच ही रहा था कि नारद महर्षि ने वहाँ प्रकट होकर यों आज्ञा दी। २८ 'राजा जनक, डरो मत। यह कमल-निवासिनी साक्षात् लक्ष्मीजी है। इसका

सीतॆयदे नामकरणव नात माडिसि वळिक वनसं-
प्रीति वचनद लॊरॆद नधिगत कार्य विस्तरव ॥ 29 ॥
मनुज रूपिंदिळॆयॊळी गोमिनियपति वसुमतिय भारव
नॊनॆयलुदिसिदना महात्मंगीकॆ सेरुवडॆ
धनुव नॊड्डि पिनाकपाणिय जनपरनु वरिसा कळंवा
सनव गॆलिदंगीवुदातने विष्णुवीगॆद ॥ 30 ॥
तॆऱनिदीगिदु निमगिदुवॆ मनकुऱिस दिरॆ निम्मडिगॆ नाव् कं-
दॆऱव माडुवॆ वेनुत नॆनॆदनु नृपति नारदन
तुरुगि तूळुव शुभ्रकांतिय निऱिसिनलि नडॆतंदु निंदिर-
लॆऱगिदरु बळिकुभय रायरु नारदन पदॆकॆ ॥ 31 ॥
जनपरिब्बर हरसि विविधार्चनॆय कॆकॊंडुभय रायर
मनदणियॆ कॊंडाडि वंशद्वय विशुद्धतॆय
विनुत चरितकॆ मॆच्चि सीता वनितॆ राघवरिवरु लक्ष्मी-
वनरुहांबकरवतरण वॆंदरुहिदनु मुनिप ॥ 32 ॥

प्रेम से पालन-पोषण करो।' —यों कहते नारद महर्षि ने उस शिशु को उठाकर (मेरे हाथ में) देते समय उस (शिशु का) का नामकरण किया—सीता। फिर आगे चलकर होनेवाली घटनाओं का (भविष्य का) विवरण बड़े चाव से समझाया। २९ "भूमि-भार को घटाने लक्ष्मीपति मानव-रूप में इस धरती पर उतर ...ए हैं। (पैदा हु...ए हैं।) उस महापुरुष के पास यह (सीता) पहुँचा... जाय —इसके लि..., एक उपाय है। तुम्हारे पास जो शिवधनु है, उसे ... पर लगाने ... (धरती के) सारे राजाओं को निमंत्रण भेजो। जो ... उसे ..., को कन्यादान (विवाह) में दे दो। (धनु तोड़नेवाला ही साक्षात्) वही श्रीविष्णु है। इस तरह मुझे नारद ने समझाया था।" यों ...नक राजा ने कहा। ३० "यह सारी हक़ीक़त इस प्रकार है। ...गर आपको मेरी बातों का विश्वास न होता हो तो अभी उसका प्रत्यक्षीकरण करा देता हूँ।" इस तरह कहते हुए जनक नारद का स्मरण करने लगे। (तुरन्त) घनी सफ़ेद कांति के (शुभ्र) मध्य नारद प्रत्यक्ष खड़े हुए। तब दोनों राजाओं ने नारद को दंडवत की। ३१ नारद ने दोनों राजाओं को आशीर्वाद दिए। दोनों से किये गये पूजा-सत्कार स्वीकार ...। (उन) दोनों राजाओं के दोनों वंशों की परिशुद्धता के बारे में मनःपूर्वक भरपूर प्रशंसा की। उनके श्रेष्ठ आचरण से प्रसन्न हुए। फिर समझाया— सीता-राम दोनों लक्ष्मी और विष्णु के अवतार

तिळुहि नृपरित्तंडवनु कैकोळिसिदनु कौळुकोंडेंगें निस्मवौ-
लिळेयोळारै भाग्यवुळ्ळव रेंनुत कोंडाडि
तळर्द नमर मुनींद्रनंबुजदळ सुनेत्रन नाम कीर्तनें
गळ सुवीणानाददलि नळिनजन पुरिगागि ॥ 33 ॥

सुर मुनिय नुडिविडिदु लग्नव परुटविसिदरु बळिकवरु रघु-
वरगें सीता देवियनु सौमित्रि गूर्मिळेय
भरत शत्रुघ्नरिगें जनकावरज वीर कुशध्वजात्मजें
यरनु निर्धरिसिदरु मुनिप वसिष्ठ नाज्ञेयलि ॥ 34 ॥

बीळुकोंडनु जनकनुरु निस्साळ दब्बर गब्बरिसे भू-
पालरर मनेंगळलि नडेंदवु पूर्ववेदिगळु
मेलें नांदी मुखद संभ्रम वेळिसितु शैलजेंय सिरिय वि-
शाल विभवोद्वाह गेहद सकल संभ्रमव ॥ 35 ॥

कुशनें केळ् कल्याण विभवदि नेंसेंदुदा मणिमय विवाहद
वसति मुत्तिन चौकदलि विमलांकुरार्पणद
हसरिकेंय लुज्वल विनूतन वसन दर्पण दीपदलि पू-
जिसिद कांचन दैरणेंयलि शुभोपकरणदलि ॥ 36 ॥

हैं। ३२ दोनों राजाओं की वस्तुस्थिति का परिचय कराके दोनों को इस वैवाहिक सम्बन्ध के लिए राजी कराया। "तुम जैसे भाग्यवान इस धरती पर कौन हैं!" इस तरह प्रशंसा करते हुए कमलनयन नारायण का नाम-संकीर्तन वीणा-निनाद के साथ करते हुए नारद ब्रह्मलोक को तरफ़ रवाना हुए। ३३ देवर्षि नारद के वचनानुसार राजा दशरथ-जनक दोनों ने विवाह की तैयारियाँ शुरू कीं। रघुराम का सीता के साथ, लक्ष्मण का उर्मिला के साथ, भरत-शत्रुघ्न का जनक के भाई वीर कुशध्वज की कन्याओं के साथ विवाह-संपन्न बनाने की, वसिष्ठ जी के आज्ञानुसार ठानी गयी। ३४ राजा जनक दशरथ से बिदा लेते हुए अपने राजमहल आये। बजते नगाड़ों के गर्जना के मध्य दोनों राजाओं के राजमहलों में विवाह के पूर्व की प्रारंभिक विधियाँ मंगल-कार्य आदि शुरू हुए। पार्वती की, संपदा-भरित विवाहगृह की शोभा से भी बढ़कर शोभा नान्दी मंगल उत्सव से संपन्न हुई। ३५ सुनो कुश, मोतियों से चौका लिखकर रचे गये अंकुरार्पण[1], चमकते नये कपड़े, आईना, दीपक, पूजित स्वर्ण सिंधूर (सैंधव) वग़ैरः साधनों से रत्नरंजित विवाह-गृह मंगल

---

१ अंकुरार्पण— उत्सव के अंगस्वरूप सर्वप्रथम अनाज अंकुराने का शुभ कर्म।

कनक पत्रावळिय वरचंदनद कुसुमाक्षतेय गोरो-
जनद लाजेय दधिय दूर्वे सुवर्ण वासिगद
विनुत भद्र दुकूल मणिकांचन विभूषण भक्षफल दु-
ब्बिनलि दशधान्यादि विभवदि नेसेदुदा भवन ॥ 37 ॥

नेरेदुदा मंटपद बहिरावरणदलि विप्ररु विशुद्धो-
त्कररु साहित्यरु कलाविदरखिल कोविदरु
सरस कवि वाग्मिगळु मंत्रज्ञरु महापंडितरु नाना
दरुशनाचारियरु मुख्य समस्त जननिकर ॥ 38 ॥

ताळगतिय मृदंगरवद रसाळगीतद गायकर वैं-
ताळिकर वंदिगळ वीणाजनद नर्तनद
बालेयर बहुविधद मोहन जालदुब्बिन काव्यगीतद
साल सत्सौरंभ रंजिसिता महास्थळव ॥ 39 ॥

तरुणियर शुभगीत धरणीसुरर सूक्त सुमंत्र सांव-
त्सरिक रायतरव वैसेदुदुद्वाह गेहदलि
तरुण केळोचेयलि रघुपति भरत लक्ष्मण देव शत्रु-
घ्नरुगळिभकंधर दोळोप्पिद ररस नाज्ञेयलि ॥ 40 ॥

वाद्यों के धूमधाम से निनादित हुआ। ३६ सोने से निर्मित पत्तल (भोजन के लिए), श्रीगंध, फूल, अक्षत, गोरोजन, खील, दही, दूर्वा, स्वर्ण-निर्मित सिहरा (मुकुट-वधुवरों का) मंगल वस्त्र, वज्रवैडूर्य आदि से निर्मित सोने के गहने, तरह-तरह के भक्ष्य-भोज्य पदार्थ, विविध प्रकार के फल तथा दस प्रकार के धान्य (अनाज) वग़ैरः से विवाहगृह शोभायमान हुआ। ३७ विवाह-मडप के बाह्य आवरण (आहाते) में ब्राह्मण, योगी, साहित्यिक, कलाविद, सभी (प्रकार के) विद्वान, सरस (भाषा) कविगण, वक्ता, मंत्रज्ञ, महापंडित, सांख्य योग आदि के षड्दर्शनाचार्य, प्रजाजनों में प्रमुख व्यक्ति जमा हुए। ३८ ताल के अनुसार निनादित मृदंग शब्द, गवैयों के मधुर गाने, स्तुति-पाठक और चारण-भाटों के उद्घोष, वैणिकों का वीणावादन, नर्तकियों का नृत्य, विविध प्रकार के मोहक काव्य-गान, वग़ैरः से विवाह-गृह शोभायमान था। ३९ स्त्रियों के मंगलगीत, ब्राह्मणों का वेद-मंत्रोच्चार, ज्योतिषियों का 'आयत' नामक— (क़बूल है न?) सम्मति या अनुमति सूचक शब्दोच्चार —इस प्रकार कई प्रकार के शब्दों से विवाह-मंडप शब्द-रंजित था। इस तरफ़ राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न दशरथ की आज्ञा से हाथियों पर सवार हुए। ४० मोतियों की झालरें लटकते

हिडिद मुत्तिन सूसकद बेळुगोडेय चिम्मुव चामरद तर
विडिद सीगुरिगळ विडाइय नोसल बासिगद
जडिव कैदीविगेय सालिन तुडुकुवेळगिन वंदिजन दु-
ग्गडद राजकुमारकरु नडेतंद रोलविनलि ॥ 41 ॥
संदणिसिदवु करितुरग बळिसंदु नूकिदवखिळ नारिय
रंदणगळिट्टिसिदवु दशरथन बंधुजन
मुंदे कंबिय कंचुकियरूलु हिंदे विप्रर मंत्रघोषण
दिंद बंदरु राजपुत्ररु राजबीदियलि ॥ 42 ॥
अणुग केळै नभद तारागण तदीय महोत्सवद नि-
ब्बणके नेरेदुवो पुरदोळेने बेळगिदवु दीपाळि
मणिमुकुरदबलेयर नृत्यद गणिकेयर मांगल्यवाद्यद
कुणिहदलि नेल कुसियॆ होक्करु जनक नरमनेय ॥ 43 ॥
इळिदरानेय नबलेयर होंदळिगेगळ पत्तुगूळ दीपा-
वळिय सालिन सेसेगळ सूसुगळ सोगसिनलि
ओळग बल्लवरूर्ध्वमुख दंजुळिगळलि जयजयेनलु होक्करु
निळयवनु निर्जरर दुंदुभिरवद रभसदलि ॥ 44 ॥

(सुशोभित) श्वेत छत्र, हवा में झूलते नाना विध चामर, प्रकाश बिखेरते हाथ के दीपक तथा मशालों की पंक्तियाँ, चारण-भाटों के स्तुति-पाठों का उद्घोष— वग़ैरः के मध्य स्वर्णमुकुट (सेहरा) धारण किये राम-लक्ष्मणादि राजकुमार जुलूस में आए। ४१ हाथी, घोड़े राजकुमारों के पीछे-पीछे आए। दशरथ के अंतःपुर की स्त्रियाँ पालकी में बैठकर जुलूस में निकलीं। दशरथ के रिश्तेदार झुंड के झुंड साथ-साथ चले। आगे-आगे वेत्रधारी कंचुकी चलते तथा चीखते हुए रास्ता साफ़ कर लेते। ब्राह्मण मंत्रोच्चार करते आ रहे थे। इस प्रकार बड़े वैभव के साथ राजकुमार प्रमुख सड़कों पर से होते हुए आए। ४२ दशरथ कुमारों के इस बारात के जुलूस को देखने मानों आकाश के नक्षत्र झुंड के झुंड आए हों —इस भाँति असंख्य दीपक जगमगा रहे थे। स्त्रियाँ रत्न के आईने धारे आगे-आगे आ रही थीं। मंगलवाद्यों के साथ नाचती आती हुई वेश्याओं के पदाघात से मानों धरती दबती-सी दीखती थी। इस प्रकार जनक के राजमहल में दूल्हों ने प्रवेश किया। ४३ राजकुमारों के हाथी पर से उतरते ही सोने की थालों में हरे अन्न (चावल का) रखकर निवारा (उतारा) गया। फिर पंक्तिबद्ध दीपारती दिखाकर (आरती उतारकर) अक्षत फेंके गये। राम के सत्यस्वरूप को जाननेवालों ने अपनी अंजलियाँ उठा-

ऐननेंबेनु जनक नृपन नवीन भाग्यव नमम जगदभि-
मान दैवद ललितपद कमलाभिषेचनव
श्रीनिवास स्मरणेयनु विज्ञान मुखदलि माडि ताळ्दन
नून तीर्थव शिरदोळेनु कृतार्थनोयेंद ॥ 45 ॥
बळिक मधुपर्कादि वैदिक विलसदभिरंजनेयला
कळकळव माणिसु तित्तरुत्तम गुडव जीरिगेय
निलिसि मेट्टक्कियलि मदवक्कळिगे कन्यावरण वादवु
घळिगेवट्टल लग्नदों पुण्याह रचनेयलि ॥ 46 ॥
इळेयमगळनु राघवंगूर्मिळेयना सौमित्रि
गुळिदरिगुळिदनुजतनुजेयर धारेय नेरेदनाजनक
सुळिदरा दंपति गळुरु मंजुळद मणिवेदिकेगे होमा-
नलन बलवंदेडके सारिदरवर पत्नियरु ॥ 47 ॥
आदुदवर विवाह वैभव वैदिकदलवनीसुररु मोद
लाद याचकवृंद दणिदुद्दु बहळदानदलि

उठाकर जय-जयकार करना शुरू किया; तब देवताओं के नगाड़े बजने लगे। ऐसे अवसर पर राजकुमारों ने विवाह-गृह में प्रवेश किया। ४४ जनक राजा के इस नूतन भाग्य के बारे में क्या कहा जाय ! (समस्त) लोक के प्रियकर स्वामी श्रीरामचन्द्र के चरण-कमलों को, श्रीमन्नारायण के नामस्मरण सहित, शास्त्रोक्त रीति से धोकर उस पवित्र जल को राजा जनक ने सिर पर धारा ! वह कितना भाग्यशाली है ! ४५ फिर वैदिक रीति से मधुपर्क आदि रीति-रिवाज समाप्त कर लोगों का शोरगुल समाप्त कराकर गुड़ और जीरा दिया गया। फिर वधू-वरों को पैरों से कुचले जानेवाले चावलों में खड़ा कर दिया गया। ॐकारपूर्वक पुण्याह-वाचन शुभकर्म के साथ शुभ मुहूर्त में कन्यावरण हुआ (विवाह संपन्न हुआ)। ४६ भूमिसुता सीता राम को, उर्मिला लक्ष्मण को, तथा भरत-शत्रुघ्न को जनक के भाई कुशध्वज की पुत्रियाँ मांडवी और श्रुतकीर्ति को जनक राजा ने कन्यादान करके सौंप दिया। तदनंतर दंपति (पति-पत्नि) होमाग्नि की (सप्तपदी) प्रदक्षिणा कर रत्ननिर्मित मनोहर चबूतरे पर आ गये। पत्नियाँ (वधुएँ) अपने पति (वर) के बायीं तरफ़ आ गयीं (खड़ी रहीं)। ४७ वैदिक रीति से उनका विवाह बड़ी धूम-धाम के साथ संपन्न हुआ। ब्राह्मणादि याचक (राजा के) विपुल दान के कारण तृप्त हुए। दशरथ और जनक दोनों राजाओं ने अपने-अपने राज्यों के सामंत (आधीन) राजाओं को भेंट-तोहफ़े देकर यथोचित

आ दशस्यंदनन जनकन मेदिनिय सेरुवेय रायर
नादरिसिदरु तम्मो ळुडुगोरे युचित वृत्तियलि ॥ 48 ॥
वरशुभोदयदिक्के संपत्करद नेलेवने सिरिय सोंपिन
शरधि सोबगिन सॆज्जे सुम्मानद जनस्थान
निरुपमोत्सव शाले हरुषोत्करद जन्मस्थळ विदॆनला
करुषिसितु जनमनवननुपम परिणयस्थान ॥ 49 ॥
परमसंभ्रमदिंद वरवासर चतुष्टयदिरळु दंपति-
वररु मेरेदरु विभ्रमद सिंधुरद कंधरद
सुरुचिरद रत्नप्रभा पंजरद गद्दुगेगळलि नृपरि-
ब्बरमहावितरणद वैभवदखिळ रचनेयलि ॥ 50 ॥
मरुदिवस मरुवलिय समनंतरदलवभृत दोकुळिय वि-
स्तरण वेसेदुदु विलसितोत्सव विविध विभवदलि
परिमळित पन्नीर नवकर्पुरद कस्तुरि कुंकुमद को-
प्परिगेगळ सालेसेदुदनुपम हेममणिमयद ॥ 51 ॥
ननेय कंचुळिकेगळ हूदुरुबिन हिळिलगळ दंडेगळ मु-
म्मोनेय मुंजेरगुगळ चंद्रिकेपटद चल्लणद
कनकरत्नाभरणकांतिय वनितेयरु बळसिदरु बवरद
मनसिजन मासाळि नंददलुभय भूमिपर ॥ 52 ॥

रीति से आदर-सत्कार किया। ४८ मंगलकारी घर, संपदभ्युदयों का निवास-स्थान, समृद्ध संपत्तियों का सागर, सुन्दरता का आगर, संतोष का वासस्थान, महोत्सव का गृह, हर्ष का जन्म स्थान— वग़ैरः उपमाओं के परे जो वह विवाह-मंडप था— बड़ा ही चित्ताकर्षक था (जिसने जन-मानस को मोह लिया।) ४९ विवाह के चौथे दिन रात को, दंपत्तियों को, भव्य हाथियों की पीठ पर सजाए गये, रत्नकांतियुक्त पीढ़ों पर बिठाए जुलूस निकला। दोनों राजाओं के, ठीकठाक से (युक्त) वैभव-संपन्न व्यवस्था में यह जुलूस बड़ी धूम-धाम से निकला। ५० दूसरे दिन नागवल्ली समारोह (विवाह में वधू-वर को तांबूल देने की एक विधि) संपन्न होने पर अवभृत स्नान, मंगल जल से क्रीड़ा आदि विलास वैभव-पूर्ण रीति से संपन्न हुए। सुवासित गुलाबजल, नया कर्पूर-कस्तूरी-कुंकुम-मिश्रित जल से भरी स्वर्ण-निर्मित कड़ाइयाँ कतार में शोभायमान थीं। ५१ कलियों से शोभित चोलियाँ पहने, पुष्प-मालाएँ जूड़े में खोंसे, (अपने) आँचल को सामने कसकर बाँधे, सफ़ेद कपड़े के कछौटे कसे, कनकरत्नाभरणयुक्त कांतिसंपन्न स्त्रियाँ मानों युद्ध के अखाड़े में खड़ी

कोंडु कुंकुमवारिगळ होन्नंडॆ जलजंत्रंगळलि मुं-
कोंडु नृपरिब्बर वधूनिकुरुंबवा नृपर
मंडळिय तन्नृपकुमारर तंड सौरंभदलि सुररॆळॆ
वॆंडिरुत्साहिसलु होय्दाडिदरु वोकुळिय ॥ 53 ॥

होरदुदिळॆ सौरभ्य शैत्योत्करव नंबर वळयदगलकॆ
परिमळिसिदुदु गंधवाहन नाडिकॆय लवुधि
सुरभिमय वाय्तबुजसख हिमकिरण वामोदैक भारो-
त्कर मरीचिगळाद वनुपम वारिकेळियलि ॥ 54 ॥

आदुदल्लि मेलॆ मामनॆ मेदिनीपति जनकरायं
गा दिवाकर कुलललामंगखिळ विभवदलि
आदरिसिदनु जनक निभरथकैदु रत्नाभरण कांता
मेदिनिय बळुवळिगळि बळिका कुमारकर ॥ 55 ॥

मन्मथ-वीर-योद्धाओं की तरह दोनों राजाओं को घेरे खड़ी थीं। ५२ सोने की नलियों (पिचकारियों) तथा जल-यंत्रों में गुलाव-अबीर का मंगल जल भरे दोनों राजाओं की तरफ़ की स्त्रियाँ तथा दोनों राजे, अन्य राजकुमारों के समूह बड़े उत्साह और डील-डौल के साथ एक-दूसरे पर पानी छिड़ककर (होली या फाग खेलने की तरह) खेलने लगे। इसे देखकर देवकन्याएँ भी उत्साहित हुईं। ५३ इस तरह होली-फाग-रंग खेलने से जलसिंचित धरती ठंडी बनी तथा खुशबूदार बनी। वह खुशबू आकाश तक फैली। सुगंध को (उस स्थान से) वहन करता हुआ मंद मारुत (ठंडी हवा) के बहने के कारण समुद्र भी सुवासित हुआ। जल के एक-दूसरे पर छिड़काव के कारण सूर्य और चन्द्रमा की किरणें भी सुगंधित हुईं। ५४ तदनंतर जनक राजा तथा रविवंशतिलक दशरथ राजा में भेंट-उपहारों का परस्पर आदान-प्रदान शुरू हुआ। जनक ने रथ, हाथी, घोड़े, शस्त्रास्त्र, रत्नाभूषण, परिचारिकाएँ, भूमि आदि समस्त प्रकार की वस्तुएँ (जो पुत्री को ससुराल भेजते समय दी जाती हैं)— दशरथ कुमारों को प्रदान कर उनका गौरव किया गया। ५५

हदिनेळनेय संधि

सूचने— भूमिपरनुरे जरेद भार्गव रामननु गेलिदतुळ बल रघुराम सहितजसूनु बंदनयोधि गोलविनलि ।

धरणिजेय परिणयद समनंतरदला दशरथमहीपति
पुरव होरवंटनु कणा जनक क्षितीश्वरन
तरुण केळै बळिक दशरथनरसियरु नंदनरु नंदन-
ररसियरु गुरुमंत्रिजन सहितखिळ विभवदलि ॥ 1 ॥
कळुहु तैतंदनु निमीश्वर कुल ललामन शेष नृप मं-
डळिय मस्तक मणिय नालुकु पयण परियंत
इळिच कंबनिगळालि कंपितगळद बिक्कुळिनक्केयलि म-
क्कळनु कैवर्तिसि ककुत्स्थान्वयन बीळ्कोंड ॥ 2 ॥
बळिक दशरथ सार्वभौमन दळद संभ्रम दुब्बरद रव
वळुकिसितु सुरनर भुजंगम भुवन वीथिगळ
इळेय पार्थिवरदटु कोंडलिय कोलेगडिक गदु सोगसे सुळिदनु
विलय रुद्रन कुपित रौद्रावेश रोषदलि ॥ 3 ॥
करिघटेगळुप्परिसि जग्गने जरिदु निदवु कुणिव कुदुरेग
ळुरके कब्बिय कुसिदु कुक्करिसिदवु भीतियलि

सत्रहवीं संधि

सूचना— क्षत्रिय राजाओं को धिक्कारनेवाले परशुराम को जीतनेवाले महान पराक्रमी रघुराम के साथ दशरथ खुशी-खुशी अयोध्या लौटे ।

सीता का विवाह होने के बाद रानियाँ, पुत्र, बहुएँ, गुरुजन तथा मंत्रियों के साथ तथा अन्य परिजनों-सहित बड़े वैभव के साथ राजा दशरथ जनक राजा की राजधानी से रवाना हुए । १ निमिवंशतिलक जनक समस्त राजाओं के शिरोमणि दशरथ के साथ चार पड़ावों तक की यात्रा के सहयोगी होने तथा बिदा करने (उनके साथ-साथ) रवाना हुए । अश्रु बहाते, दु:ख के उमड़ने के कारण हिचकियों से काँपते ध्वनि के साथ पुत्रियों को सौंपकर दशरथ से जनक ने विदा ली । २ यात्रा पर स्थित राजा दशरथ की सेना का डील-डौल भरा घनघोर शब्द स्वर्ग, मृत्यु, पाताल लोकों की गलियों को कँपाने लगा । भूलोक के पृथ्वीपति राजाओं को अपने कुल्हाड़े से मार डालनेवाले परशुराम जी इस कोलाहल को सुनकर प्रलयकाल के रुद्र की तरह भयंकर कोपाविष्ट होकर आए । ३

करिस बायलि हाय्दु कळलिद करद कैदुगळरसुगळु वा-
य्देरॆयदे नॆल नॆनुत परवशरादरल्ललिल ॥ 4 ॥
उलुहु दॆग दिंगुव समुद्रद सलिलद वोलाय्तखिळ सेना
जलधि काणॆनु मलॆव महिपर मुनिय मुंविनलि
कळचितरसन मनद धैर्याचलद वैसिकॆ हदननद कं-
डलघुभुजबलराम निदनु मुंदॆ भार्गवन ॥ 5 ॥
निमगिदॆकी क्षत्रियरॊळु भ्रमिततन भूभुजद भुज वि-
क्रमदपयपाडुगळ ' नीवे निम्मचित्तदलि
समतॆयलि सुमुखदलि तिळिदा क्रमिसुवदॆ सुप्रौढि रण सं-
भ्रमवु साकी यॊप्पदलि जारुवुदु लेसॆंद ॥ 6 ॥
कॆलकॆ तॊलगुवुदुचित हिंदण वलुहदंदिगॆ हुलु दॊरॆगळलि
सलुवु दल्लदॆ सल्लदित्तलु शौर्य निम्मडिय
तिळिवडवनीसुररिंगिदग्गळरु शौर्यदल वनिपरु वॆं-
ग्गळरु विप्ररु विधिविहित कर्मदलि नर्मगिद ॥ 7 ॥

तब हाथी झट से दबकर रुक गये। नाचते घोड़े लगामों को छाती से दबोचे भय के मारे (टूटकर) गिर पड़े। राजाओं ने (शरणागति-लक्षण स्वरूप) तिनके (घास के) मुँह में दबा लिये। शस्त्रास्त्रधारी हाथ लटक पड़े। 'धरतीमाता (हमें निगल जा?) अपना मुँह क्यों नहीं खोलती'—इस तरह चिंता करते यों खड़े हैं मानों काटो तो खून नहीं। ४ अपना रव (घनघोर गर्जना) भूले दशरथ की सेना इस तरह स्तब्ध खड़ी रही मानों समुद्र-गर्जना का शब्द कहीं टप से रुक गया हो। परशुराम का सामना करने का साहस (मानो) किसी राजा में नहीं था। दशरथ के धीरज रूपी पहाड़ का टाँका ढीला पड़ गया (छूट गया)। यह परिस्थिति देखकर अतुलित बलधाम श्रीराम परशुराम का सामना करने सामने आये। ५ "क्षत्रियों से वैर मोल लेने का भ्रम तुम्हें क्यों व्यापा? राजाओं के (अपने) बाहुबल प्रदर्शित करते लड़ने की शक्ति का अन्दाज़ा (जब) आप ही शांतचित्त होकर विचारकर देखेंगे और समझ जाएँगे तो तभी उन पर आक्रमण करना ठीक है। इसलिए आपका यह युद्ध करने का डील-डौल जो है काफ़ी है। बस कीजिए। यहाँ से चुपके से चले जाना ही ठीक है।" —इस तरह राम ने कहा। ६ "तुम्हारा लौट जाना ही ठीक है। तुम्हारा, इसके पूर्व का पराक्रम (पराकाष्ठा) उन दिनों के कमज़ोर छोटे-मोटे राजाओं के सम्मुख ठीक रहा। लेकिन यहाँ तुम्हारी वीरता को एक भी नहीं चल सकती।

ध्यान मौन समाधि शौच स्नान जप तप नित्यनेम
ज्ञान षट्कर्म प्रविस्तर देवता भजनें
मौनिगळिगिदु मार्ग शरसंधान समयोचितद शौर्या
नून पार्थिव कर्म निमगिदु योग्यवल्लेंद ॥ 8 ॥
सैंणसुवदु सुव्याकरण परिगणित शास्त्रज्ञरलि समर दों-
ळणकिसुवुदसमानरलि संग्राम सल्लदेनें
कुणिदवा कुडिमीसें बिडदिगणवनुगुळिद नक्षि कल्पद
कणुगिडिय कर्कशकपर्दिय बगेगे मनदंद ॥ 9 ॥
तरणियनु तुषवेंदु तुंडद लरव राहुव तारें तवकिसि
तरुबि निलुव वोलाय्तला क्षत्रियरु तावु गड
धरणियमररु नावु गड सागरव कासर सैंणसुवंता-
य्तद्रिय बहुदिन्नेनुत कोंडलिय झडिदना रामा ॥ 10 ॥
हायितुरि होदरेंद्दु कोंडलिय बाय धारेय लखिळ जग जरि-
दायेनलु सीवरिसि शिखि मोगदुदु मरुत्पथव

विचारकर देखें तो वीरता में क्षत्रिय ब्राह्मणों से कई गुने श्रेष्ठ हैं। हम क्षत्रियों से ब्राह्मण विधिविहित कर्माचरण में अधिक श्रेष्ठ हैं। ७ ध्यान, मौन, समाधि, शौच, स्नान, जप, तप, नित्य-नैमित्तिक व्रत, ज्ञान, षट्कर्म, देवपूजन, भजन आदि कार्यों में मुनिजनों का मार्ग प्रशस्त है। तीर चलाना, समय पाकर साहस प्रकट करना ये क्षत्रिय कर्म हैं। तुम्हारा यह आचरण ठीक नहीं है।" —इस तरह श्रीराम बोले। ८ "व्याकरण के परिपूर्ण पंडितों से आपका जूझना युक्तिसंगत है। युद्ध में चिढ़ाना, असमान व्यक्तियों से युद्ध करना आपके लिए फबता नहीं।" इस तरह राम ने समझाया। यह सुनकर परशुराम के अंग फड़कने लगे। आँखों से चिनगारियाँ निकलीं। प्रलयकाल के अग्निनेत्रधारी उग्र शिवजी की तरह परशुराम का रूप भयोत्पादक बना। ९ "सूरज को कुहरा समझकर उसे अपने दाँतों से चबा डालने की कोशिश करनेवाले राहु को मानों नक्षत्रों ने घेर लिया हो! आप क्षत्रिय हैं न! यह सही है कि हम ब्राह्मण हैं। तालाब मानों समुद्र से लड़ने को सन्नद्ध है। तुम हमसे टक्कर लेते जो खड़े हो, अभी तुमको पता चलेगा कि तुममें कितना पानी है।" —यों कहते (रोषावेश से) परशुराम ने अपना फरसा उछाल फेंका। १० बस! उस फरसे (कुल्हाड़े से) एक भयानक अग्निज्वाला निकली। 'हाय' इस तरह आह भरते सारी दुनिया मानों पीछे सरक गयी। जलती (फरसे से उगली गयी) वह ज्वाला आसमान की तरफ़ बढ़ी। (यह देखकर) वायु, वरुण, कुबेर,

वायु वरुण कुबेर यम वज्रायुधरु हम्मैसिदरु हरु
वायितेमगेंदोडने दशरथ रायनळवळिद ॥ 11 ॥
रामनकटा हसुळें भार्गव रामनग्गद जवन जूबु म-
हा महीशा धीश वंशारण्यवनु तरिद
भीम भुजविक्रमगे जगदभिराम सिलुकिदनिनकुलांबर
सोम कैवश वादने हायेंनुत हरितंद ॥ 12 ॥
कंडनय्यन मनद धैर्यद दंडियनु नीव् बेडिकोळले
कंडलदु कैलसारि सैरिसि निमिष नीवेंनुत
खंडपरशु महोग्रचाप निखंडननु सुळिसिदनु निशित सु-
कांडवनु भृगुसुतन कोडलिय कोरळ सरिसदलि ॥ 13 ॥
उसुरलेनद कल्पदलि सुळिवश निर्गेणे येनिसुव महायुध
वेसेदुदै व्योमदलि रामन तोमराग्रदलि
पशुपति ब्रह्मामररु मानसदोळरिदरु पन्नलटिसि ति-
दसुर हरनवतारवेंदुब्बिदरु हरुषदलि ॥ 14 ॥
घनतर क्रोधाग्नि मिगे संजनिसे भार्गवनुग्रवैष्णव
धनुव नुगि देरिसि दनवनी नाथ रळवळिये

यम, इन्द्रादि देवता मूच्छित हुए। अपनों का अंत नजदीक पाकर दशरथ धीरज खो बैठे। ११ "हाय! राम तो सुकुमार है! परशुराम तो यमराजा का भयंकर भूत है! क्षत्रिय राजाओं रूपी खेतों को काटकर साफ़ कर डालनेवाले इस बड़े भयानक वीर के जबड़े में जगत्मनोहर हमारे राम फँस गये न! सूर्यवंश रूपी आकाश का चन्द्रमा इस (दुष्ट) के हाथ में पड़ गया न!" इस तरह हाय-हाय करते हुए दशरथ राम की तरफ़ भागे-भागे आए। १२ (अपने) पिता के मन की अस्थिरता देख राम कहने लगे— "आप उनके सामने गिड़गिड़ाते क्यों हैं, पिताजी! क्षणमात्र के लिए आप उस तरफ़ खड़े रहिये।" तब महाशिवधनु को तोड़नेवाले श्रीराम ने भार्गव के फरसे के बरावरी के एक पैने बाण को छोड़ा। १३ उसका क्या वर्णन किया जाय! आकाश में छोड़े गये राम के बाण की नोक में फँसकर (परशुराम का) वह महायुध (फरसा) प्रलयकालीन बिजली की तरह चमकने लगा। महेश्वर, ब्रह्मा तथा देवतासमूह "असुरारी (राक्षस-वैरी) श्रीमहाविष्णु का अवतार अब बदल गया।" यों मन ही मन सोचते अत्यंत हर्षित हुए। १४ परशुराम का गुस्सा बहुत बढ़ गया। अपने (पास के) भयानक वैष्णव धनु पर प्रत्यंचा चढ़ायी। यह देख राजा थरथर काँपने लगे। परशुराम के धनुष के 'ठं'कार ध्वनि से सारा

वनज संभूतांड़ वेंड बल कौनेंयें बिलुदनि दौड़ि कोलिन
कौनेंगे कैयिक्किदनु दिव्यामोघमंत्रदलि ॥ 15 ॥
मनदौळगें नसुनगुत निम्मय जनक रथदिंदिळिदु पार्थिव
जनमहांबुधि वडबनेंडें गिदिरागि नडेतंदु
अनिमिषरु कौंडाडे हूडिद धनुव मेंल्वाय्दुगिदुकोंडा
मुनिगें बळिकी मातनेंदनु मधुरवचनदलि ॥ 16 ॥
नीवुविप्ररु विप्रहिंसा व्यावहारिक वेंमगें दूष्यव
ला विशेषज्ञप्ति सूक्तिकरोदि तार्थदलि
नीवु वंद्यरु तमगें निमगिन्नाव जंजड बेड तपद फ-
लावळियें साकिन्नु बिजयंगैयि नीवेंद ॥ 17 ॥
मनुजनल्लीतनु मदीय ध्वनिगें भूभुज वर्गदबला
जनद निर्भर गर्भ कळलुव वेंम्म कोपदलि
जनप रुळिदव रिल्लवी गोमिनिय गंडन गौरवद गा-
ढणेंयला गति पल्लटिसितेंनु तुब्बिदनु राम ॥ 18 ॥
आयितेंम्मवतार वी रामायणद नाटकर्क दीप्ति
न्यायद वोलेंनु तप्पि बळिकक्षय निषंगमद

ब्रह्मांड, दाएँ-बाएँ डोलायमान हुआ। तभी उसने दिव्यास्त्र का अनुसंधान शुरू किया। १५ तुम्हारे पिता श्रीराम, मन ही मन मुस्कुराते रथ से उतर आये। भूमिपतियों के समुद्र के लिए बड़वाग्निस्वरूपी परशुराम के सामने आकर खड़े हुए। फिर परशुराम पर टूट पड़े और उनके हाथ से उस धनुष को झपटकर छीन लिया। यह देख, देवता श्रीराम की स्तुति करने लगे। फिर बड़े ही मीठे शब्दों में राम परशुराम से कहने लगे। १६ "आप ब्राह्मण हैं; ब्राह्मणों की हिंसा एक जघन्य कर्म है। यह शास्त्र अनुमोदित नीति है। आप हमारे वन्दना के पात्र हैं। आप बेकार और किसी तरह की तकलीफ़ न उठाएँ। आपकी तपस्या का फल आपके लिए यथेष्ट है। अब कृपया बिदा लीजिए।" —इस तरह राम ने कहा। १७ "यह तो मानव नहीं हैं। मेरी गर्जना मात्र से राजाओं की पत्नियों के गर्भ विगलित हो जाते हैं। मेरे क्रोध का सामना कर कोई भी राजा अब तक न बचा। इस लक्ष्मीपति की महिमा के कारण आज वह स्थिति बदल गयी।" —इस तरह सोचते परशुराम खुशी के मारे फूले न समाए। १८ 'दीप्ति-न्यायानुसार इस रामायण नाटक के प्रारंभित होने में हमारा अवतार कार्य समाप्त हुआ।' —इस तरह का निश्चय करके राम को परशुराम ने अपने बाँहों में भर लिया। बड़ी प्रसन्नता से अपने

सायकव नीलिदित्तु तापस राय तेरळिद नाश्रमकॆ बळि
कायितधिकोत्सववु दशरथ सार्वभौमंगॆ ॥ 19 ॥
लवनॆ केळै बंदना राघवन बळिगा समयदलि वै-
ष्णव महाचापवनु वेडलु सुरपनाज्ञेयलि
तवकमिगॆ मकरा करेश्वर नविरळद विनयदलि तद्वै-
ष्णव महाकोदंडवनु पडॆदित्त निंद्रंगॆ ॥ 20 ॥
मुंदॆ कारण वुंटॆनुत संक्रदननु बळिका धनुव निज
मंदिर दलिरिसिदनलै वधॆ गरिदशाननन
बंदरलिल मेलॆ सेनावृंद सहित मनोनुरागद
संदणिय सौरंभदलि साकॆत पुरवरकॆ ॥ 21 ॥
कळस कन्नडि तोरणद हॊंदळिगॆ यारतिगळ सुललना
वळिय मंगळ पाठकर नर्तनद नारियर
उलिव वाद्यद लॆड बलद हॆक्कळद नोटक जनदला नृप-
कुल शिरोमणि हॊक्कननुपम राजमंदिरव ॥ 22 ॥

॥ बालकाण्ड समाप्त ॥

अक्षय तरकस के बाणों को (श्रीराम को) समर्पित कर अपने आश्रम के लिए रवाना हुए। तब राजा दशरथ को बड़ी खुशी हुई। १९ सुनो लव। ठीक उसी समय पर देवराज इन्द्र से आज्ञापित हो भगवान वरुण उस वैष्णव धनु को प्राप्त करने के हेतु गड़बड़ी में आकर (राम से) बिनती करने लगे। अत्यंत विनम्र भाव से उस वैष्णव धनु को श्रीराम से प्राप्त करके वरुण ले चले और (उसे) इन्द्र को दे दिया। २० 'शत्रु रावण की हत्या के लिए, आगे चलकर, इसका भारी प्रयोजन है।' —यों सोचते हुए उस वैष्णव धनु को इन्द्र ने अपने राजमहल में रखाया। इसके बाद दशरथ बड़ी धूमधाम से और खुशी-खुशी, अपनी सेना-सहित अयोध्या लौट आए। २१ कलश, आईना, बन्दनवारें, आदियों से, वैभवसंपन्न स्त्रियों ने स्वर्णनिर्मित थालों से आरती उतारी। नर्तकियों ने नृत्य किए। चारणों ने मंगलकारी स्तुतिपाठों का उद्घोष किया। गाजे-बाजों के साथ सड़क के दोनों तरफ़ लोगों की इतनी भीड़ थी मानों तिल रखने को भी जगह न थी। —ऐसे शुभ अवसर पर दशरथ ने राजमहल में प्रवेश किया। २२

॥ बालकाण्ड समाप्त ॥

अयोध्याकाण्ड

ऒंदनॆय संधि

सूचनॆ— राय दशरथनखिळलोकद राय रामंगॊलिदु राज्य श्रीय पट्टव कट्टलॆंदुद्योगमननाद ।

वीर केळै कुशनॆ राजकुमारकरु नाल्वरिगॆ भद्रा-
गार सवदवु विश्वकर्ममयानु मतगळलि
बेरॆ बेरॆरसियरु सहित सुतारॆयलि शुभलग्नदलि वि-
स्तार वैभव दॊसगॆयलि हॊक्करु निजालयव ॥ 1 ॥
आळिदनु रामन विवाहद मेलॆ हन्नॆरडबुद परियं
तोलगिसिकॊंडखिळ रायर नवनिमंडलव
केळिदै कुश निम्म मुत्तय नालयकॆ बळिकॊंदुदिन नृप
बालकनु बंदनु कणा कैकॆय महीपतिय ॥ 2 ॥
आदरिसिदनु बळिक कैकॆय सोदरन सुक्षेम कुशलव
ना दयांबुधि केळिदनु कैकॆय नृपोत्तमन
ऐदु दिन विद्दीत तन्नय सोदरॆाळियंदिरनु निजपुरि
गॊय्द नभ्यासिसलु वरशस्त्रास्त्र कौशलव ॥ 3 ॥

प्रथम संधि

सूचना— सकल लोकों के प्रभु श्रीराम को राज्यश्री पट्टाभिषिक्त करने के विचार से राजा दशरथ हर्षित हुए तथा इस दिशा में कार्य-तत्पर हो, तैयारियाँ करने लगे ।

वीरवर कुश ! सुनो । विश्वकर्म मय से राय लेकर, तदनुसार चारों राजकुमारों के लिए शुभ भवनों का निर्माण कराया गया । चारों राजकुमार अपनी-अपनी रानियों के साथ शुभ नक्षत्र तथा शुभ लग्न में मंगलोत्सव का आचरण करते वैभव के साथ अपने-अपने राजमहलों में प्रविष्ट हुए । १ श्रीराम-विवाह के बाद अखिल राजाओं को प्रसन्न करके राजा दशरथ ने बारह वर्षों तक शासन किया । सुन कुश ! एक दिन की बात है । तुम्हारे दादा (दशरथ) के राजमहल कैकेय राजकुमार आया । २ कैकेयी के भाई का आदर-सत्कार करते हुए दयासागर दशरथ ने कैकेय राजा का कुशल-मंगल पूछा । पाँच दिनों तक अयोध्या में रहकर, कैकेयी के भाई अपने भानजे भरत-शत्रुघ्न को शस्त्रास्त्र-अध्ययन

लवनें केळा भरतना सह भवसहित निजपितन वीळ्कों-
डवनि जेशन कथ्य कळुहिसि कोंडु कैकेयन
भवन कैदिदनत्त लित्तलु दिवस दिवसकें कौसला सं-
भवन सद्वर्तनेगें संतोपिसिदना भूप ॥ 4 ॥
ईतने सिंहासनस्थित नीतने साम्राज्यपति ता
नीतने रघुकुल समुद्रोद्धरण हिमकिरण
ईतने रघुनाथ नेंबी मातुमंत्रि महाप्रधान वि-
नीत विनियोगि गळिगेंच्चरिसिदनु नरनाथ ॥ 5 ॥
तोऱिदुदु जरें नमगें नाविन्नेऱलुळ्ळ वरमर नगरद
नूरु यज्ञद जाण नोलग दमळ विष्टरव
तोऱुतितें चित्तदलि मिक्किन मूरु मक्कळिगिद रामनें
नीऱनी साम्राज्य सतिगदवनिपति नुडिद ॥ 6 ॥
बळिकलनिबर मतदिनातं गोळुदिवसदलि यौवराज्यद
ललित पट्टव कट्टिदनु संभ्रमिसें सकलजन
हलवदेनी रामचंद्रन नेंळलु निर्जर कुजद नेंळला-
ग्तिळेंय जन पुरवर जनंगळि गणुग केळेंद ॥ 7 ॥

के निमित्त अपने साथ कैकेय राजधानी वुला ले गये। ३ भरत शत्रुघ्न के साथ अपने पिता से विदा लेकर रवाना हुए। श्रीराम ने उन्हें भिजवा दिया। उधर कुमार यात्रा करते-करते कैकेय राजा के महल में पहुँचे। यहाँ (अयोध्या नागरी में) कौसल्या के पुत्र (राम) का सदाचरण दिन-व-दिन अभिवृद्धि होते देख दशरथ संतुष्ट हुए। ४ यही तो राजगद्दी का अधिकारी है। यही तो साम्राज्य के स्वामी हैं। यही तो रघुवंश रूपी समुद्र में ज्वार उत्पन्न करनेवाला चन्द्रमा है। यही राघुनाथ है—आदि-आदि बातें दशरथ ने मंत्रियों से, महाप्रधानों से तथा विनय संपन्न अधिकारी शासकों के सम्मुख प्रकट की। ५ "हमें तो बुढ़ापे ने आ घेरा है। अव हम आगे चलकर, सौ यज्ञों के स्वामी इन्द्र के सिंहासन पर आरूढ़ होने जा रहे हैं। साम्राज्यलक्ष्मी के स्वामी होने की योग्यता मेरे अन्य तीनों पुत्रों से बढ़कर श्रीराम ही में अधिक है—इस तरह मेरा मन कह रहा है"—इस प्रकार राजा दशरथ ने कहा। ६ "उन सभी की राय से जनता सहमत होकर आनंद मना रही थी। एक शुभलक्षणसंपन्न दिन देखकर राजा दशरथ ने श्रीराम का युवराज्याभिषेक किया। अधिक क्या कहें! जगत के लोगों को, नगरवासियों को रामचन्द्र की (शासन) छाया मानों कल्पवृक्ष की छाया-सदृश हुई।" सुनो बालक! —इस तरह

मनुमहीश दिलीप मांधातनु पुरुरव कार्तवीर्या-
र्जुन भगीरथ सगर नळ नहुषादि भूभुजर
नेनह मरॢसिद नीत नीतन विनुत विमल चरित्र कबुजा
सन पुरारि पुरंदररु पुळकिसिदरडिगडिगॆ ॥ 8 ॥
बयसुवळु भूवनितॆ विप्रप्रियननुरु धार्मिकन रिपु नि-
र्भयन नियत मति प्रतिज्ञन राघवेश्वरन
बयसुवळु पुरलक्ष्मि जगदाश्रय सुपर्व द्रुमननॆंतुटो
दयॆ समस्तर मेलॆ रघुराजेंद्र चंद्रमन ॥ 9 ॥
पल्लविसिदुदु हरुषलतॆ भूवल्लभंगा जनकतनुजा
वल्लभन नडवळिय नीतिय निर्विकारतॆगॆ
इल्लिगीतनॆ कर्तृ कामित वल्लभगॆ नाव् भर्तृ वादरॆ
बल्लविकॆ लेसॆंदु भूमिपाल मनदंद ॥ 10 ॥
नॆट्टनधिराजेंद्र पट्टव कट्टुवॆनु कमलांबकन पडि-
गट्टिनग्गद रामचंद्रगॆंदु निश्चैसि
इट्टॆडॆय हरुषदलि नृप हॊंगट्टिटगॆय चररिंदला मन
मुट्टिदाप्तर करॆसि बळिकितॆंद नवर्गळिगॆ ॥ 11 ॥

वाल्मीकि ने कहा। ७ पूर्व के चक्रवर्ती मनु, दिलीप, मांधाता, पुरूरवा, कार्तवीर्यार्जुन, भगीरथ, सगर, नळ, नहुष वग़ैरः को (इसने अपने लोकप्रिय शासन से) भुला दिया। श्रीराम का परिशुद्ध आचरण देखकर ब्रह्मा, महेश्वर, देवेन्द्र आदि देवता बार-बार रोमांचित हुए। ८ महाधार्मिक, शत्रुओं से न डरनेवले, निश्चित बुद्धिवाले, दिये गये वचन पर अडिग राघवेश्वर को भूलक्ष्मी खूब पसंद करती है। जगदाधार, कल्पवृक्षस्वरूपी श्रीरामचन्द्र को अयोध्यानगर-लक्ष्मी खूब चाहती है। सारी मानव-जाति पर रघु रामचन्द्र की दया कितनी महान है! (वर्णनातीत है।) ९ 'जानकी-पति का निर्दोष आचरण तथा नीति देखकर दशरथ (हृदय) की संतोष रूपी लता अंकुरित हुई। इस सम्राज्य का एक मात्र सही अधिकारी यही है। समस्त अभिलाषाओं के स्वामी श्रीराम के, केवल मैं पिता हूँ। इससे बढ़कर मेरे लिए और क्या हो सकता है?' —इस तरह दशरथ ने निश्चय किया। १० 'कमलाक्ष विष्णु भगवान सदृश श्रीरामचन्द्र को मैं तुरन्त अधिराजेन्द्र के रूप में सिंहासन प्रदान करता हूँ' —इस तरह दशरथ ने निश्चय किया। अत्यानंद से दशरथ ने स्वर्णवेत्रधारी (शासन-दंडधारी) सेवकों को बुला भेजा तथा उनके द्वारा अपने आत्मीय खास

आसें बीतुदु नमगें राज्य श्री सतिय मेलण मनक्कभि-
लाषें यादुदु मुक्ति वनितेय खेळ मेळदलि
ई सकल साम्राज्य भारव नी सुवाहुध्वंसियलि नि-
र्णैसि दडे निश्चित रावेंदरस नेमिसिद ॥ 12 ॥
वितत विनियोगि प्रधान प्रतति नॅगळ्दा राजकार्य
स्थितिगें परिणमिसिदरु कोंडाडुत नृपालकन
क्षिति सुतासुता केळु वळिकच्युतन मायानरननवनी
पतिय पट्टकें परुठविसिदरु करॅसि जोयिसर ॥ 13 ॥
निवडिसिद वैशाख मासद धवळ पक्षद पंचमिय शुभ
दिवसदभि जिल्लग्नदलि मूर्धाभिषेचनद
विवर वाय्तु विदेहजापति गवनिपन वरुवयकॅयलि मरु
दिवस मत्सरिसित्तु पुरवु पुरंदरन पुरव ॥ 14 ॥
इडिद मुत्तिन सूसकद कन्नडिय कलशद तोरणद वं-
गडद विविध ध्वज निकायद सौध संकुलद
झडिव झल्लरिगळ पताकॅय सडकुगळ मेलकट्टुगळिं परि-
विडिय पसरद लॅसॅदुदा सत्यावती नगर ॥ 15 ॥

व्यक्तियों को बुलवाकर, कहा। ११ "हमारी इस राज्यलक्ष्मी की उपभोग की आशा समाप्त है। (अब) मोक्षरूपी [illegible] का साथ देने की आशा बलवत्तर है। इस समस्त साम्राज्य के उत्तरा[illegible]कार को सुबाहुविजेता श्रीराम को सौंप देने का अगर आप निर्णय क[illegible] [illegible] हम निश्चित हो सकते हैं।" इस तरह अधिकारी वाणी से दशरथ ने कहा। १२ श्रीराम के राज्याभिषेक सम्बन्धी प्रशासकीय विषय की प्रस्तावना करनेवाले दशरथ के निर्णय को मंत्रियों ने, प्रधानों ने पसंद करते हुए उनकी प्रशंसा करने लगे। सुनो सीता-पुत्र ! तदनंतर ज्योतिषियों को बुला भेजा तथा शाश्वत स्वरूपी मायामानव श्रीराम के राज्याभिषेक की तैयारी में दशरथ जुट गये। १३ अगले वैशाख माह के शुक्ल पक्ष के पंचमी की शुभ तिथि पर अभिजित्मुहूर्त में जानकी-पति का राज्याभिषेक निश्चित हुआ। इस प्रकार दशरथ की इच्छा प्रकट होने के दूसरे दिन से अयोध्या नगरी अपने अत्युत्साह के कारण देवेन्द्रनगरी अमरावती को मात कर गयी। १४ मोती के गुच्छे लटकाए, कलश आईनों से युक्त वन्दनवार बाँधे, विविध रंग-बिरंगे ध्वज-[illegible]ाकाओं को फहराते अट्टालिकायुक्त महल शोभायमान होने लगे। लटकते [illegible] गुच्छे, झवे, ध्वज, चँदोवे आदियों से अलंकृत अयोध्या नगरी बड़ी ही शोभायमान दीखी। १५ कस्तूरी-जल तथा चावल-राशि भुनाकर

बीदि बीदिग ळॊळगॆ कत्तुरि सादुगळ सारणॆय परिमळ
मेधिसिद पन्नीर चळॆयद चारुकुंकुमद
शोधिसिद कारणॆय कडवलि गैद पॊस मुत्तुगळ पडिसण
गैद धूपद धूम पवनन लॆसॆददा नगर ॥ 16 ॥

ऎसॆदुदै बळिकखिळ शोभा विसरदलि मूर्धाभिषेचन
वसति वैदिक लौकिकांगद वस्तुकार दलि
मिसुप मिसुनिय पूर्णकलशद पसरिकॆय पुण्योदकद शो-
भिसुव पूर्ण सुवर्ण कुंभद संभ्रमंगळलि ॥ 17 ॥

विनुत धवळच्छत्र सिंहासन मणिध्वज कनक नृपके-
तन फलावळि दूर्वॆ दधि मधु कुंकुमाक्षतॆय
कनक पात्रॆ सुगंध गोरोजन सुपुष्प दुकूल मणिमं-
डन सुलक्षण हय मदेभदि नॆसॆदुदा भवन ॥ 18 ॥

मेलॆ मुददलि कौशिकाध्वर पालकन निज निळयका भू-
पालकनु कळुहिदनु कमलासनन नंदनन
नाळॆ रघुनाथंगॆ राज्य श्रीलतांगिय मदुवॆ मंगळ
देळिगॆय सुव्रतव माडिसलुचित वचनदलि ॥ 19 ॥

बनाए गये सुगंधित काले रंग से गली-गली लीपी-पोती गयी थी। उन पर गुलाब-जल छिड़काया गया था। शोधित कुंकुम से लाल रंग की रेखाएँ बनायी गयी थीं। नये मोतियों की बुकनी से तरह-तरह की आकृतियाँ (रंगवल्लियाँ) बनायी गयी थीं। बहुतायत में डाले गये धूप-अगरु के धुएँ से सारा नगर व्याप्त था (खुशबूदार बना हुआ था)। १६ वैदिक-लौकिक शास्त्रों में सूचित व्यवस्था के अनुसार राज्याभिषेक-भवन समस्त सौंदर्यालंकरणों से सुसज्जित बनाया गया। सोने के चमकते पूर्णकलश तथा पवित्र तीर्थों से भरे स्वर्ण के पूर्ण कुम्भ बड़े डील-डौल के साथ तैयार किए गये। १७ सफ़ेद छत्र, सिंहासन, रत्ननिर्मित ध्वज, स्वर्णराजध्वज, फल, दुर्वा (घास), दही, शहद, कुंकुम, अक्षत आदि से भरे स्वर्ण-थाल सुगंध, गोरोजन, फूल-बूटेदार रेशम का कपड़ा, हीरे-जवाहरात के गहने, श्रेष्ठ लक्षणयुक्त घोड़े, मदोन्मत्त हाथी आदियों से अभिषेक-मंदिर शोभायमान था। १८ "कल श्रीरघुनाथजी का राज्यलक्ष्मी के साथ विवाह है। इस मंगलोत्सव का व्रत कराना चाहिए।" इस समयोचित बातों से (विनम्र) निवेदन करते हुए दशरथ ने विश्वामित्र के यज्ञरक्षक श्रीराम के राजमहल को संतोष से वसिष्ठजी को भेजा। १९ जानकीकुमार,

जनकजासुत केळुरघुनंदनन भवनकें वंद सन्मुनि-
जन मनोरंजकननघभंजकनना राम
विनुत सत्कृति सहित गुरुभावनेंयले पूजिसलु पूजेंय
ननुकरिसि कैगोंळिसिदनु कालोचित व्रतव ॥ 20 ॥

पुरदोंळगें राजेंद्रनंत:पुरदोंळगें तत्कोसलद रुं-
हरियोंळगें राजाधिराजर राजसभेंयोंळगें
हरेंदुदी वृत्तांत विदनादरिसिदळलै पूर्वमाया
तरुणिमंथरें मथिसि मनदलि पूर्वसूचितव ॥ 21 ॥

भूरिभूभारद निशाचर वीरकुल विच्छेदनकें ल-
क्ष्मीरमण नुदिसिद नलें रामाभिधानदलि
आ रमापति याज्ञेंगावुदों दारियेंदा मायें विज्ञा
सारमुखदिंदरिदळागत कार्य कौशलव ॥ 22 ॥

अंदिनुदयदलवळु कैकेंयमंदिरकें नृपसभेंयोंळि द्दै-
तंदळा सैळेंद्रिवेषद मायें वहिलदलि
कंदनिक्कुवें नवनिपन मन संदमोहद मानिनिगें मनु-
नंदनन नेंब्बट्टुवेंनु रावणन वधेंगेंनुत ॥ 23 ॥

सुनो। ऋषियों के मन को आह्लाद पहुँचानेवाले, पापनाशक मुनि वसिष्ठजी का राम ने गुरु-भावना से आदरातिथ्य करते हुए पूजा की। (यह) पूजा स्वीकार करने के वाद गुरु वसिष्ठ ने राज्याभिषेक के समय, किए जानेवाले व्रताचरण के लिए राम को सहमत कर लिया। २० नगर में, राजा के अंत:पुर में, (रनिवास में) कोसल राज्य के सारे प्रदेश में, राजाधिराजाओं के सभा-आस्थानों में अभिषेक की वार्ता फैली। पूर्व की मायातरुणि मंथरा यह समाचार सुनकर, पहले ही सूचित हुए अपने जन्म के (सम्बन्ध में) उद्देश्य को मन ही मन पुनरावलोकन करने लगी। २१ भूमि के लिए भार (बोझ) स्वरूपी बने राक्षसों के वीरवंशों के विनाश के लिए ही श्रीलक्ष्मीरमण रामाभिधान से पैदा हुए हैं न? उस लक्ष्मीपति के आज्ञा-पालन के लिए सफल मार्ग कौन-सा हो सकता है— इस तरह सोचती हुई वह माया ज्ञान पराकाष्ठा से (अपने श्रेष्ठ ज्ञान से) इस निष्कर्ष पर पहुँच गयी कि अब क्या करना चाहिए। २२ रनिवास की दासी सैरंध्रि-वेषधारणी माया उस दिन सुबह राजसभा में उपस्थित रहकर, वहाँ से शीघ्रातिशीघ्र कैकेयी के राजमहल पहुँची। 'राजा की लाडली, मनचाही रानी के मत्थे कलंक मढ़ देती हूँ। रावण-वध निमित्त राम को राज्य से भगा देती हूँ।' यों सोचने लगी। २३

हॊरॆय सखियर मेळदलि नसुहॊरद कोपद हॊगरिनलि सर
सरिसि बंदळु सदनका कैकॆय नृपात्मजेय
अरसियिद्दळु खेळ मेळद तरुणियर सद्गोष्ठियलि सड-
गरिसि सार्दवळॆंदकधिक हितोपभाषितद ॥ 24 ॥
अरसि केळिन्नेन हेळुवॆनरस मनदलि नॆनॆद मंत्रद
परिय नीनदनरितु दिल्लवला महादेव
धरणि गड रामंगॆ भरताद्यरुगळा रघुनंदनगॆ किं-
कररु गडकेळरसि कौतुक नडदुदिंदिनलि ॥ 25 ॥
अरसुतन रामंगॆ नॆलॆगॊळ लरसि केळौ निन्न मगने
नरसनो मेण् विरसनो साम्राज्य सौंदरिगॆ
हॊरयवे बळिकॊडल शुन सूकरगळकटा निन्न भाग्यद
सिरिगॆ सीवट वादने नृपनॆंदळा कांतॆ ॥ 26 ॥
केळि कडुगोपदलि मानिनि मेळद बलॆयरॊडने नुडिदळु
काळु गॆडदपळे ननिवळिवळॆंद मातुगळ
केळियनॆ जर्रॆदवळु नमगिद हेळकारणवेनु हिसुणर
जाळिगर चदुरोक्ति नमगेकॆंदळवरॊडनॆ ॥ 27 ॥

अपने चेहरे से थोड़ा-सा क्रोध भाव टपकाते अपनी सखियों को साथ लिये मंथरा सरपट रानी कैकेयी के राजमहल पहुंची। रानी कैकेयी अपनी सहेलियों की सोहबत में थी। सरपट और अपना डील-डौल दिखाते आयी हुई मंथरा ने हितवाद और बुद्धिवाद —दोनों देना (एकदम) शुरू कर दिया। २४ रानी जी ! सुनिए। दशरथ राजा ने जो मन में सोच रखा है उसके बारे में आपसे क्या कहूँ ? (किस मुँह से कहूँ !) शिव-शिव ! वह तो तुम स्वयं समझ न सकी न ! साम्राज्य राम को ! भरत और उसके भाई राम के सेवक ! ऐसी विचित्र घटना आज कार्यान्वित हुई है। २५ "सुनिए रानी जी, राज्याधिकार अगर राम को दिया जाय तो आपका बेटा साम्राज्यलक्ष्मी का अधिकारी होगा या राम ? तब आपके बेटे का अस्तित्व कहां ? क्या कुत्ते, सूअर पेट नहीं भरते ? हाय-हाय ! क्या कहूँ ? राजा ने तुम्हारे भाग्यलक्ष्मी के मार्ग पर कांटे बो दिये न ?" —इस तरह मंथरा ने कहा। २६ मंथरा की बातें सुनकर कैकेयी आगबबूला हो गयी। "यह क्या सिर चाट रही है ? इसकी बातें तो सुनो। —बे सिर-पैर की।" इस तरह अपनी सहेलियों से वह उलाहना भरे लहजे में बोली। "यह हमसे ये सब क्यों कहती है ? चुगलखोर, धोखेबाजों की ये अतिबुद्धिमत्ता की बातें लेकर हमें क्या करना

भरतनलि रामनलि दायिगरोरसोरसुरनवुंटॆ नम्मि
ब्बरलि सवतियरॆंब मत्सरवुंटॆ पूर्वदलि
तरणि वंश परंपरॆय बंधुरद भद्रासनकॆ राघव
नरस नादडॆ भाग्यवदु नमगॆंदळा कैकॆ ॥ 28 ॥
मरुळु नुडिगळु नम्मविवु नीव् परमनीतिय धर्मशास्त्रद
निरुतरावे कुहक कर्मद कपट कौशलरु
इरलिरलु तोऱिसुवॆ निमगह गुरु लघुत्वद परिय तुदियलि
दोरकुव शुभद वीदिगलवह नॆंदळा कांतॆ ॥ 29 ॥
हिरिदु रक्षिसि दॊडतियॆंदा नऱियदुसुरिदॆ निमगिनितु नि-
ष्ठुरतॆयादॊडॆ नमगिदेकॊ वायिबडिकतन
अरसि कौसलॆयिंद सॆरुव परिभवव नीव् काविरॆनुतव
ळॆरडु कैगळ मुगिदु हॊऱवंटळु निकेतनव ॥ 30 ॥
करॆयवळ म्लबुद्धि दॊत्तिन मरुककर लेसॆनलवळ ह-
त्तिरकॆ तंदरु कॆळदियरु कैमुरुच लॊडॆयवचि

है ?" इस तरह कैकेयी ने उनसे कहा। २७ "क्या भरत और राम में दायाद मात्सर्य भावना की कभी रगड़ रही ? क्या मुझमें और कौसल्या में सौत के नाते जलन कभी रही ? सूर्य-वंश की परम्परा के अनुसार अगर राजगद्दी का वारिसदार राम वने तो इससे बढ़कर महत् भाग्य की वात हमारे लिए क्या हो सकती है।" —इस तरह कैकेयी ने कहा। २८ (इस पर) मंथरा ने जवाव दिया— "हमारी वातें तो नासमझी की वातें हैं! हैं न? आप तो बिलकुल नीतिविशारदा, धर्मशास्त्रपरायणा हैं। हम तो धोखेवाज ठहरी, बड़ी वंचक-ठग है न! अव आपको जो प्राप्त होने जा रहा है— वह वड़प्पन है या छोटापन है, थोड़े ही समय के वाद दिखा दूंगी। अंत में आपको मिलनेवाली (प्राप्त हो जानेवाली) गली की लड़ाई के भी दर्शन करा दूंगी। २९ "मुझे अत्यधिक प्यार से पाल-पोसनेवाली मालकिन आप है —यह जानते हुए भी मैंने इतना वोलकर ज़ियादती की है —ऐसा लगता है। आपको समझाने में असमर्थ रही। इतनी निष्ठुरता के साथ आपसे वरतने पर मेरी वाचालता का क्या उपयोग! कौसल्या रानी से जो आपका अपमान होगा वह आप ही भुगत लेंगी।" इस तरह कहते दोनों हाथ जोड़ प्रणाम करके राजमहल से चलने लगी। ३० "उस वक्रबुद्धि वाली को बुला। उसकी अनुकंपा कुछ अधिक है।" इस तरह कैकेयी ने जब कहा तव मंथरा खिसककर अपने (पकड़नेवालों से) को छुड़ा लेने का प्रयत्न कर रही थी तो सहेलियाँ

इरलिरलु नमगेके हॊद्दुव परिभवव देनेनलु माया
तरुणि माया मोहकदलि तॆंदॆळा सतिगॆ ॥ 31 ॥
धरॆयॊळगॆ वैरिगळु बेरॊब्बरे नितंबिनि केळु साप-
त्नरु कण। कडुवगॆगळुळिदवरल्प वैरिगळु
धरणि रामंगागॆ कौसलॆ सरकु माडुवळॆ समश्री
वॆरसि बदुकिद निन्ननॆंदळु नगुत सैळॆंद्रि ॥ 32 ॥
तॆवरिदरु निन्नय कुमारर नॆवदिनत्तलु राज्य लक्ष्मिगॆ
कवड हाय्किद रित्तली रघुरामचंद्रंगॆ
व्यवहरिसिती कुहकतन निम्मवनि पालन मतदि निमगी
हवणु तिळियदु तिळुहले निनगॆंदळा कांते ॥ 33 ॥
अरसि केळ् पूर्वदलि पिंडव सरिय नित्तनु सकल पृथ्वी-
श्वरर मध्यदला प्रकारद लूवियॊडॆ तनकॆ
सरिकुमारक रिब्बरिदु निम्मरस नलि हुट्टिदु समस्तै-
श्वरिय रामंगागॆ नींवेनहिरि बळिकिनलि ॥ 34 ॥

उसे दबोचकर कैकेयी के पास ले आयीं। "हम अपनी स्थिति गति जानते हुए जी रही हैं तो इसमें मान-अपमान की बात क्या है" इस प्रकार कैकेयी से पूछे जाने पर वह मायायुवती मंथरा अपने नखरे दिखाते मादक मोहक ढंग से बोली। ३१ "इस दुनिया में ग़ैर आदमी सचमुच वैरी ही हैं। सुनिए रानी जी, सौत के बच्चे आस्तीन के साँप हैं। अन्य तो उतने ज़बर्दस्त वैरी (दुश्मन) नहीं हो सकते। अगर राम कहीं राजा बने तो अब तक आपके साथ संपत्ति की समान अधिकारिणी के रूप में जीने वाली कौसल्या क्या तुम्हारी परवाह करेगी ?" इस तरह मुस्कुराते हुए मंथरा ने कहा। ३२ "बड़ी चतुराई से तुम्हारे बच्चों को (ननिहाल) वहाँ भगाकर इस तरफ़ राज्यलक्ष्मी रघुवर रामचन्द्र को प्राप्त करा देने का षड्यंत्र रचा गया। और इस षड्यंत्र की आयोजना जो हुई तुम्हारे पतिराजा की अनुमति से ही। तुम्हें इसका रहस्य मालूम नहीं। क्या तुम्हें सारा किस्सा सुनाऊँ ?" —इस तरह मंथरा ने पूछा। ३३ "ग़ौर कीजिए, रानी जी। पूर्व में समस्त राजाओं के सम्मुख दशरथ ने पिंडप्रसाद का समान हिस्सा तुम दोनों को दिया। तदनुसार राज्य के स्वामित्व के लिए प्रसाद के समानता के आधार पर पैदा होनेवाले दोनों पुत्रों के अधिकार क्या समान नहीं है। अब आपके पति की समस्त संपदा अगर राम को मिले तो तुम्हारी दशा क्या हो जाएगी।" बोलिए। ३४ "क्या आप रिश्तेदार हैं या साम्राज्यलक्ष्मी के ग़ुलाम

नंटरो साम्राज्य लक्ष्मिगॆ बंटरो नीव् नानु बळिदे
नुंटुमाडुव मतिनिंदेनहुदु फलसिद्धि
कंटकरु नावाग लेकिद कॆंटुमडि नयदिंद नोसलिनॊ
ळंटिसुवदातंगॆ पट्टव नॆंदळा कांतॆ ॥ 35 ॥
आरु माडुव देनुभाग्यद नारि नोडिद ळवर नशुभा
कारि निम्म निरीक्षिसिद ळिदु सुप्रसिद्धवले
प्रारबुध फलभोगविद केल सारिसलु निम्मळवॆ मीऱलु
बारदधिकृत पूर्वदत्तव नॆंदळा सतिगॆ ॥ 36 ॥
हुट्टिदुदु बळिकायतिकॆ गरिगट्टि तग्गदसूयॆ मन कव
लिट्टुदा कांक्षॆयलि राज्यश्री नितंविनिय
नॆट्टनेहद लवळु नुडिगॊड बट्टळॆ कुश केळु मायॆय
कट्टि गॊळगागदरदारभवादि देवरलि ॥ 37 ॥
करॆदु बळिकॆकांत कोय्दादरिसि बॆसगॊंडळु नयोक्तिय
लरसुतन भरतं गॆ सेरुवुपाय वेनॆंदु
अरिदिदेनलॆ देवि नृप कोट्टॆरडु वरवुंटादियलि बे-
डरसनन्नु निनगिदुवॆ पथ पडॆवख्ळि संपदकॆ ॥ 38 ॥

हैं ? मेरे इस व्यर्थ की बकवक से क्या प्रयोजन ! हम क्यों आपके मार्ग का काँटा बनें ? इससे बढ़कर अच्छा यह होगा— आठ गुने अधिक विनय से उसके माथे पर (राज्याभिषेक की) सनद चिपकाइए।" —इस तरह मंथरा ने कहा। ३५ "कौन किसका भाग्य कहाँ तक बदल सकता हैं ? भाग्यलक्ष्मी के कृपापात्र वे बने। अमंगलकारी नारी की दृष्टि आप पर पड़ी। यह तो जगत्प्रसिद्ध (तत्व) है। पूर्वजन्मकृत (प्रारब्ध) कर्म-फल भोग (उपभोग) से कौन बच सकता है ? हमारे प्राचीन कर्मों से छुटकारा असंभव है।" —इस तरह उसने कैकेयी को समझाया। ३६ अब कैकेयी को वस्तुस्थिति का थोड़ा-थोड़ा भान होने लगा। परिस्थिति की गंभीरता पर प्रकाश पड़ा। मात्सर्य ने पंख फैलाए। राज्यलक्ष्मी को पाने की अभिलाषा मन में अंकुरित होने लगी। विश्वास और प्रेम के उदय होने पर मंथरा की बातों में आ गयी। सुनो कुश ! शिवजी-सहित ऐसा कौन सा देवता है— जो माया के फन्दे में न फँसा हो ? ३७ तदनंतर कैकेयी मंथरा को एकांत स्थान में बुला ले गयी। मंथरा का गौरव करते हुए बड़े ही मीठे वचनों से पूछने लगी कि भरत के लिए राज्य प्राप्त करने का उपाय क्या है ? "यह क्या बड़ी बात है ! देवी, आपको, पूर्व में दशरथ ने जो दो वरदान दिए है न ? उन्हीं के ज़रिए अब माँग

धरॆय भरतंगवनिजेशं गरवरिसदारण्यवनु बे-
डॆरडु वरविवु सफलवादवु निन्न भाग्यदलि
परम मतविदु पल्लटिस बेडरसि केळैश्वर्य पदविगॆ
परम साधनवॆंदु मंथरॆ नुडिदळा सतिगॆ ॥ 39 ॥

मुसुकिदळु माया विलासद वसनदलि मायानितंबिनि
मिसुक दंतिरॆ केळिदै काकुत्स्थ नृपसूनु
पिसुण रिंदा रैश्वरिय जाळिसदु जगदलसूर्ययधिक
व्यसनदलि मनविक्किदळु मानिनि महीतळकॆ ॥ 40 ॥

सडलिसिदळु दुकूलवनु हॊदॆडवुगळ मलिनांबरवनळ
वडिसिदळु सूसिदळु सौगंधिकद सिरिमुडिय
झडितॆयलि नॆलवासिनलि सैगॆडदु सुय्वुत शून्य हरुषद
तॊडकिनलि तांबूलवनु तॊरॆदिर्दळाकैकॆ ॥ 41 ॥

भावॆयरु बळिसलिसॆ खतियलि सीवरिसुवळु मज्जनकॆ मै
सोवुवळु सॊगसळु सुभोजन गंधमाल्यदलि

लो। सकल संपदा प्राप्त करने का यही एक मार्ग है"। ३८ "किसी बात की परवाह न करते, भरत के लिए राज्य और राम के लिए वनवास माँग लो। तुम्हारे भाग्य से ही ये दो वरदान तुम्हारे पास धरोहर हैं। यही सही मार्ग है। इससे विचलित न होना। सुनिए रानी जी, ऐश्वर्य और उपाधि-प्राप्ति का यही एक श्रेष्ठ साधन है।" —इस प्रकार मंथरा ने कैकेयी को समझाया। ३९ मायास्वरूपिणी मंथरा ने कैकेयी को अपने माया-परिपूर्ण परिधान से इस प्रकार आवृत कर दिया कि कहीं वह हिलने-डुलने न पाए। चुगलखोरों की बातों में आनेवालों का सत्यानाश इस दुनिया में अवश्य हुए बिना न रहा! कैकेयी मात्सर्य की चितागिन में पड़ी चटपटाती साम्राज्य पर आँख गड़ा बैठी। ४० पहने हुए रेशम के कपड़े तथा गहने उतारकर गंदे कपड़े पहन लिये। खुशबूदार तेल से कंघी किए बाँधे जूड़े को खोल दिया। तुरंत उसासें लेती हुई (दीर्घ निःश्वास से) धरती पर पड़ी रही। दुःखतप्त कैकेयी ने ताम्बूल (पान) का परित्याग किया। ४१ (सांत्वना देते) पीछे-पीछे आती हुई सहेलियों को देखकर कैकेयी क्रोध के मारे साँप की तरह फुफकारने लगी। स्नान कराने नहीं देती। भोजन, सुगंधद्रव्य, फूल आदि में उसका मन न रमा। 'तोरवे' के स्वामी नरहरि रूपी श्रीराम को राज्यश्री

देव तीरवेय नरहरिगॆ भूदेवि सेरदुपायवनु ना
ना विचारदि नॆनवु तिदंळु मनदॊळा कैकॆ ॥ 42 ॥

ऎरडनॆय संधि

सूचनॆ— कैकेयनुमत दिंदलाॆ लोकैक वीरनुदारधीर समिकसाहस राम वनवासवनु कैकॊंड ।

केळिदै कुश दशरथक्षिति पालना दिन दिरुळु बंदनु
मेळद बलाजन सहित भरतांबिकॆय बळिगॆ
आळियरु केलसारिदरु भूपालकन बरविनलि नृपशय
नालयव सारिदनु सुम्मानद सघाडदलि ॥ 1 ॥
ललनॆयिद्दळु मलिनमय पुत्तळिय वोलु हेमंतकालद
नळिनियंतॆ निदाघ दॆळलतॆयंतॆ राहुविन
ऎळतटेद शशिलेखे यंतुज्वलतॆ गुंदिद मुखदकातिय
हळ हळिकॆ हळुवाद कैकॆय कंडना भूप ॥ 2 ॥
अरस नुडिद निदेनिदेनच्चरि महामांगल्य मानिनि
गिरवदॆल्लियदादु दशुभाकार निनगॆनुत

(राज्यलक्ष्मी) प्राप्त न हो' इस दृष्टि से तरह-तरह की रीतियों से मन ही मन सोचने लगी । ४२

द्वितीय संधि

सूचना— कैकेयी के इच्छानुसार, उदारता, धैर्य आदि गुणों से संपन्न लोकैक वीर, समरशूर राम ने वनवास लिया ।

सुनो कुश, उस दिन रात को राजा दशरथ मंडली की स्त्रियों के साथ भरत की माँ के यहाँ पधारे । कैकेयी की सहेलियाँ दशरथ को आते देखकर परे सरककर खड़ी हो गयी । खुशी-खुशी में राजा ने शयनकक्ष में प्रवेश किया । १ गंदी गुड़िया की तरह, जाड़े में पाले से मारे गये कमल की तरह, गरमी के दिनों की कोमल लता की तरह राहु के ऐंचातानी में फँसे चन्द्रलेखा की तरह कैकेयी थी । कांति-विहीन मुखड़े की कैकेयी को दशरथ ने देखा कि वह बहुत ही व्याकुल है । २ "अरे रे ! यह तो कितनी आश्चर्यकारक स्थिति है ! महामंगलस्वरूपिणी रानी का यह अमंगलकारी रूप कैसा ?" —इस तरह कहते हुए दशरथ ने कैकेयी के मुखकमल को अपने करकमलों में धारे, अपने निजी मुखड़े की तरफ़

कर सरोजदि नंगनॅयमुख सरसिजव नभिमुखव माडिदु
तरुणि दुगुड विदेनु हेळॅन्नाणॅ हेळॅंद ॥ 3 ॥
आरु मुनिदरु निनगॆ निन्न मनोरथामरकुजकॆ कठिण कु-
ठार रादवरारु नुडि नी नंज बेडॅनुत
सारि मंचव निळॅयॊळॊरगिद नारियनु बरसॆळॆदु नृप ललि-
तोरुविगॆ तंदुगुरिसिद नळिदळक पंक्तिगळ ॥ 4 ॥
मनद बयकॆय देनु हेळद निनगॆ सलिसुवॆनंजिकॆयबिसु
टनुकरिसु निन्निष्टवावुदु कॊट्टॆनद बेडु
तनुज राघव नाणॆयॆनॆ मॆल्लनॆ मुखेंदुव मुरिदु नृप ना
ननव नीक्षिसुतबले नगुतितॆंदळरसंगॆ ॥ 5 ॥
कॊडसमर्थरॆ बेडिदुद नीव् नुडिदु तप्पुव रल्लले बा-
यबडिकियिवळॆंदॆन्निरलॆ नोविल्लले मनकॆ
अॆड बलकॆ मन विक्किरलॆ तानुडिद नुडियनु सलिसुवदु नॆरॆ
दृढवॆ दृढवॆंदित्त नरियदॆ सतिगॆ नंबुगॆय ॥ 6 ॥
हिंदॆ नीवॆनगित्त वरवॆरडं दिनव नीव बल्लिरे सं-
क्रंदनन शंबरन समरद सोल गॆलविनलि

घुमाकर— "हे युवती, तुम्हें किस बात का (इस प्रकार) दुःख है ? मेरी सौगंध। सही-सही कहना।" —इस प्रकार पूछा। ३ "तुमसे कौन नाराज हुआ ? तुम्हारी इच्छा रूपी कल्पवृक्ष की जड़ पर किसने कुल्हाड़ी चलायी ? बेधड़क कहो।" —इस प्रकार पूछते हुए दशरथ पलंग के पास गया; धरती पर सोयी कैकेयी को उठाकर छाती से लगाकर, बिखरे उसके घुँघुराले बालों को उँगलियों से सहलाने लगा। ४ "तुम्हारे मन की अभिलाषा क्या है ? —यह मुझसे कहो। मैं तुम्हारा मनोरथ पूरा कर देता हूँ। भय को त्याग मेरे कथनानुसार करो। 'राम की शपथ' तुम जो भी चाहोगी माँग लो।" —इस तरह दशरथ ने कहा। तब कैकेयी धीरे-धीरे अपना मुखचन्द्र घुमाए दशरथ को देखते-देखते मुस्कुराते यों कहने लगी। ५ "मैं जो माँगूँ उसे देने का सामर्थ्य आप में कहाँ है ? है न सामर्थ्य ? दिए गये वचन से मुकुर तो जायेंगे नहीं न ? मुझे तो 'वाचाल' समझेंगे नहीं न ? वचन देकर आगे-पीछे न करेंगे न ? अभी जो वचन दिया है उसे निश्चित मानूँ ?" इस प्रकार कैकेयी के पूछने पर, उसकी मन की बात न ताड़ते हुए दशरथ ने एक दम कह दिया "निश्चित" और उसमें विश्वास जगाया। ६ "पूर्व में हुए देवेन्द्र तथा शंबर के बीच हुए

अंदडेंदनु बल्लॆ बेडॆन लॊंदु वरदलि धरॆय भरतं
गॊंदरॆलि बेडिदळु रामंगडवि यॊडॆतनव ॥ 7 ॥
वनितॆ युत्तरदलगु नाटितु जनप नुरवनु बगिदु बॆन्नलि
मनद मरुकद लॊरगिदनु हा ऎंनुत हम्मैसि
तनुव तुंबितु ताप तापद घनतॆयलि गरुवाइगॆट्टनु
ननदु नयन जलंगळलि नूकिदनु यामिनिय ॥ 8 ॥
नरचरित्नद राम दशकंधरन बधेगुद्युक्त नह नॆं
बुरुतरोत्सह वरिदु शचि सुरपतिय नेमदलि
इरुळि नग्रदलमळ मणि बंधुरद हॊंदळिगॆय निवाळिय
धरिसिदळो दरहास मिगिलॆन लॆसॆदुदिन बिंब ॥ 9 ॥
हरॆदुदी नृपचक्रवर्तिय हरुष कुंठित वार्तॆ नगरद
लरसि कौसले राम सौमित्रियरु हॊरगागि
हिरिदु मनदलि मरुगि मन्त्रिगळर मनॆगॆ नडॆतंदु मैत्रा-
वरुणियलि माडिदरु मंत्रालोचनॆय हृदन । 10 ॥

युद्ध के हार-जीत के समय आपने मुझे दो वरदानों का वादा किया था। याद है न ?" इस प्रकार कैकेयी के पूछने पर दशरथ ने कहा— 'हाँ अच्छी तरह याद है। जो वर चाहे माँग लो। तब कैकेयी ने एक वरदान से भरत के लिए राज्य माँग लिया तथा दूसरे से राम के लिए वनवास भेजने की आज्ञा माँग ली। ७ कैकेयी के वचन रूपी तलवार दशरथ की छाती में चुभकर आर-पार निकल गयी। उसे रोना आ गया। जब (दुःख इतना उमड़ आया) सहन न हो सका, गश खाकर 'हा' कहते धड़ाम से गिर पड़ा। सारी देह ज्वर-ग्रस्त हो गयी। अपने राजा होने की, गौरव की बात भूलकर अश्रुधारा बरसाते हुए सारी रात बड़ी मुसीबत में काटी। ८ रात बीती। सूरज पूर्व दिशा में उदित हुआ। 'मानवावतारी राम रावण की हत्या के लिए तैयार हो रहा है' —इस भावना से उत्साहित होकर शचीदेवी इन्द्र की आज्ञा से उतर आकर मानों दीठ उतारने नवरत्नखचित सोने की थाल हाथ में लिये मुस्कुराती खड़ी हो —इस प्रकार की शोभा से रात्री के अंत में उदित सूर्यबिंब दिखायी पड़ा। ९ दशरथ चक्रवर्ती की शोकाकुल स्थिति की खबर राम, लक्ष्मण तथा कौसल्या को छोड़ नगर भर में फैल गयी। खबर सुनकर व्यथा प्रकट करते हुए मंत्रिगण राजमहल पहुँचे व वसिष्ठजी से समालोचना करने लगे। १० राजा दशरथ तथा रानी कैकेयी के

धरणिपति कैकेय विवादद भरद सुद्दिय बालदूतरि
नरिदु मरुगिद रिवरु पाणिश्रोत्र बंधदलि
हर महादेवेनुत नयनदि नुरुळु वंबक वारि बिदुव
बेरळ कोनेयलि मिडिदु मिडुकिदरधिक शोकदलि ॥ 11 ॥
ऐनुपायवु निम्म तम्मनु मानवावुदिदक्के योचने
गेनुहदनतु कंडिरेंदव रोब्ब रोब्बरलि
हीनविदु मध्यम विदुत्तम सानुमतविदु साकुनम्मनु
मान विदिर्तेदु निश्चयिसदरु निजमतव ॥ 12 ॥
करेसि रामननी नृपन मुंदिरिसि नोडुवे ववरचित्तद
हरहुगळ बळिकरिवे वेंदुत्साह भेरिगळ
अरमनेय लोदरिसिदरडगिसि पुरजनद वार्तेयनु नेरहिद
ररसुगळ निखिळाप्त सचिव नियोगि परिजनव ॥ 13 ॥
कुशने केळ् पट्टाभिषेकद वसति सिंगारिसितु नेरेदवु
होस परिय नृपलांछनादि समस्त वस्तुचय
ओसगे तत्पुर वरव नवलंबिसितु निमिषदला सुमंत्रन
दशरथन बळिगट्टि रामन बळिगे मुनिबंद ॥ 14 ॥

मध्य हुई चर्चा का वृत्तांत बालदूतों के जरिए जानकर दुखित हुए मंत्री अपने हाथों से कानों को ढाँपने लगे। शिव-शिव, महादेव इस तरह उद्गार निकालते तथा आँखों से झरते अश्रुबिन्दुओं को उँगली की नोक से पोंछते हुए शोकाधिक्य से चटपटा रहे थे। ११ "इसके लिए क्या किया जाय ? इस दिशा में तुम्हारी क्या राय है ? आप क्या कहते हैं ? इस षड्यंत्र के लिए (विफल करने) आपने क्या सोच लिया है ?" इस तरह मंत्रिगण एक-दूसरे से पूछते हुए विचार-विमर्श करने लगे। "यह राय तुच्छ है; यह तो मध्यम दर्जे की है। यह तो श्रेष्ठ है। यह तो बिलकुल ठीक राय है। हमें ऐसा लगता है। बस यह ठीक है।" इस तरह भाँति-भाँति से सोचते एक समझौते पर पहुँचे। १२ "राम को बुलाकर दशरथ के सामने उपस्थित करा के देखें। तब उनमें हर किसी की गहराई का पता लगावें।" इस प्रकार के निष्कर्ष पर पहुँचकर नागरिकों के वार्तालाप की आवाज़ बन्द हो —इस रीति से राजमहल में विजयोत्सव के नगाड़े पटवाए गये। राजाओं का समूह, आप्त सचिव, उन्नत शासक वग़ैरहों की सभा भरायी गयी। १३ सुनो कुश। राज्याभिषेक की तैयारी में भवन अलंकृत किया गया। राजाओं की पहिचान के नृप-लांछनस्वरूप कीर्तिगाथायुक्त बिरुदावलियाँ आदि वस्तुएँ लाकर रखी गयीं। अयोध्या नगरी भर में इस शुभ

बंद मुनिपन भक्तिपूर्वक दिंद सत्करिसिदनलै रघु-
नंदननु विधि विहित गुरुपूजा विधानदलि
अँदना मुनिपतिगॆ कंडॆनिदॊंदु कनसनु कानन दॊळर
विंद मुखि सहितॆंनगॆ संभविसितु परिभ्रमण ।। 15 ।।

कंदॆरॆदॆ ननितरलि मनकिदु चंदवारिदेनु नीवे
नॆंदु कंडिरि राज्य संपददामग स्थितिगॆ
मुंदॆनलु मुनिनाथ मगुळि तॆंदनायस दोरॆ बळिक पु-
रंदरन वैंभवकॆ सिरियहुदु निनगॆंद ।। 16 ।।

निम्म करुण कटाक्ष रक्षणॆ नम्म मेलिरलाव दुर्घट
वॆम्म माडुवुदेनु नाव् निर्दॆवरे यॆनुत
बॊम्म कोटि किरीट मंडित निर्मळांघ्रि नख प्रभाकर
नुम्मह दॊळॆरगिदनु नरर दॊला मुनींद्रगॆ ।। 17 ।।

अरसनागधिराजनागूर्वॆरगॆ पतियगधिक सूनृत
चरितनागरिविजयनागु समस्त सुजनरिगॆ

समाचार का संतोष फैला। सुमंत्र को राजा दशरथ के यहाँ भेजकर वसिष्ठ राम के यहाँ आए। १४ घर आये वसिष्ठजी की शास्त्र-विधि पुरस्सर पूजा कर (गुरु-पूजा) रघुनंदन ने मुनि का आदर-सत्कार किया। राम ने वसिष्ठ से निवेदन किया कि मैंने एक ऐसा सपना देखा है कि कमलमुखी सीता के साथ मैं जंगल में भ्रमण कर रहा हूँ। १५ "इतने में आँख खुली। क्या आपको यह स्वप्न शुभदायक लगता है? आगे चलकर प्राप्त होने जा रही राज्य-संपदा के बारे में आपको कैसे लगता है?" इस तरह राम ने (वसिष्ठजी से) पूछा। तब वसिष्ठ मुनि ने जवाब दिया— "पहले-पहल कष्ट भुगतने पर तदनंतर देवेन्द्र के वैभव-सदृश संपत्ति के अधिकारी बनोगे। १६ "जब आपकी कृपादृष्टि का लाभ हमें प्राप्त है तब आपत्तियाँ-विपत्तियाँ आकर हमारा क्या बिगाड़ेंगी? क्या भाग्य हमारे साथ नहीं है?" इस तरह कहते हुए करोड़ों ब्रह्माओं के मुकुटों से अलंकृत चरण नखाग्र किरणों से चमकते सूर्य-सदृश राम उद्वेग से मानवोचित रीति से वसिष्ठ जी के चरणों में गिरे। [करोड़ों-करोड़ों ब्रह्माओं से पूजित महामहिम श्रीहरि के अवतार होने पर भी राम सामान्य मानव की तरह उद्वेलित हुए —यही आश्चर्य की बात है।]। १७ "तुम राजा बनो; चक्रवर्ती राजा बनो; जगत्प्रभु बनो; सदाचारी बनो; शत्रुमर्दन बनो; समस्त लोगों के लिए कल्पवृक्ष-सदृश बनो; लक्ष्मीपति की तरह

सुरमहीरुहनागु लक्ष्मीवरन वोलु षाड्गुण्य सकलै-
श्वरिययुत नागेंदु मुनि हरसिदनु हरुषदलि ॥ 18 ॥
बिसरुह प्रिय कुलद मुनि मानस सरोवर राजहंसन
नोसेंदु मंगळ मज्जनव माडिसिदना मुनिप
ओसगेवरें भुल्लविसें नूतन वसन विमल विभूषणंगळ
लेसेंदनै मूर्धाभिषेकद राजतेजदलि ॥ 19 ॥
माडिदनु मनदणियें दक्षिणेगूडि कन्याधेनुदानव
नाडलेनद नवनियमरर सिरिय सडगरव
झाडि वेळगिन लारतिगळेंडे याडिदवु कळकळिकें मिगें मुं-
दाडिदवु कंबिगळु कंचुकि जनद कैगळलि ॥ 20 ॥
क्षितिय विबुधर विमल मंत्राक्षतेय कैकोळु तडरिदनु निज
सति सहित होंगददुगेव होंबेसेद रुंचेयद
रतुन लहरिय लळिय भद्रायत मतंगद कंधरव मुनि
पतियनुज्ञेयोळखिळ तूर्यत्रयद रभसदलि ॥ 21 ॥
बळलिसितु नृपालतति हेक्कळिसिदुदु चतुरंगबलवेंड
बलद लुग्घडिसिदरु कैवारिगळु बिरिदुगळ

षड्गुणसंपन्न, सकलैश्वर्यसंपन्न बनो।" इस प्रकार वसिष्ठ मुनि ने श्रीराम को आशीर्वाद दिए। १८ ऋषि-मुनिस्वरूपी मानससरोवर में राजहंस स्वरूप से विहार (विचरण) करनेवाले सूर्यवंशीय राम को वसिष्ठ मुनि ने मंगलस्नान कराया। मंगल-वाद्य बजने लगे। राम ने नये कपड़े पहने। जगमगाते आभूषण धारण किये। (वे) राज्याभिषेक के राजसीय तेजस्विता से शोभायमान हुए। १९ दक्षिणा के साथ तरुण गायों को इतना दान में दिया कि मन अघा जाय। (इन गायों का) दान पाए ब्राह्मणों की संपत्ति तथा डीलडौल का क्या वर्णन करें! प्रदीप्त आरतियाँ लेकर घूमने लगे। वेत्रधारी अधिकार-दंड हाथ में लिये शोर-गुल मचाते दौड़-धूप करने लगे। २० ब्राह्मणों के द्वारा मंत्राक्षत स्वीकारते वसिष्ठ महर्षि की आज्ञा से राम, पत्नी सीता के साथ, शहनाई के निनाद के साथ स्वर्णपीठ वहन किए सोने-कढ़े (नक़्क़ाशीदार) परिधान धारण किए रत्नों की कांति से जगमगाते बढ़े फुर्तीले सुभद्र हाथी पर विराजमान हुए। २१ राजवृन्द (उस) हाथी के साथ-साथ चलने लगा। बाएँ-दाएँ चतुरंग सेना बड़े उत्साह के साथ खड़ी रही। चारण-भाट बिरुदावलियाँ घोषित करने लगे। हर घर के सामने कमलमुखी नारियों ने सामने आकर रत्न-दीपों की आरतियाँ उतारीं। इस प्रकार राम बड़ी धूमधाम के साथ

निळय निळयद नळिन मुखियर हॊळॆव रत्नावळिय दीपा-
वळिय संभ्रमदिंद बंदनु राज वीदियलि ॥ 22 ॥
तळित पल्लव पल्लववनु ज्वलिप मणिहर्म्यालि चित्ता
चलवना रामावळिय शिखि शुक पिक व्रजद
उलुहु विपिन विहंगमद कट्टुलुहु सूचिसु तिर्दुदै वन
विलसदभिनवराज पदविय नवनिजा पतिगॆ ॥ 23 ॥
कदडिदंतःकरणगळ गद्दु गदित कंठद कंबनियलि-
द्दुद्दु समस्त चमूप सचिव नियोगि बंधुजन
इदिरु बंदु सुमंत्र निळॆ गिळुहिदनु मदकरियिंद मुरिविन
मुदद हॊळॆवश्रुगळ संतापदलि रघुपतिय ॥ 24 ॥
तॆवरुदॊद्दॆय हॊगिस बेडुळिदवरनॆं दॊळ हॊगुत नेमव
नवसरद सेवकरिगित्तु वसिष्ठ मुनि सहित
अवनि तनुजा पतिगॆ कैगॊट्टवनिपन वळिगागि कैकॆय
भवन दत्तलु तिरुगिदनु मंत्रीश दुगुडदलि ॥ 25 ॥
युवतियर गुजुगुजिन शून्योत्सवद नृपमंदिरद जाड्यद
जवनिकॆय जंजडव काणुत जुडिद निंतॆंदु

सड़कों पर से होते हुए आए। २२ [illegible]लों से बनायी गयीं वंदनवारें वन के सदृश शोभा बढ़ा रही [illegible] उज्ज्वल रत्ननिर्मित सौध चित्रकूट पर्वत-सदृश थे। राम-राम रटते हुए मोर, तोते, कोयलों की ध्वनि जंगल के पक्षियों की ध्वनियों के सदृश थी। इस प्रकार नगर की शोभा वनप्रांतर शोभा-सदृश विराजते, राम के लिये (प्राप्य होने जा रहे) नयी राजगद्दी की सूचना दे रही थी। २३ सभी सेनापति, सचिव, नियोगी, बन्धुजन मन की व्याकुलता के कारण गला भर आने से अश्रु बहा रहे थे। संतोष-रहित सुमंत्र ने दुःख से रोते हुए राम की अगुवानी करते हुए उसे हाथी से उतार लिया। २४ 'इतनी दूर से आकर जो भीड़ यहाँ जमा हुई है, उनमें से किसी को अन्दर आने मत दो' इस तरह आपत्कालीन सेवकों को आज्ञा देकर सुमंत्र वसिष्ठ मुनि के साथ अंदर प्रवेश करते हैं। दशरथ के नज़दीक पहुँचने के उद्देश्य से सीतारमण का हाथ धरे मंत्रीश्वर बड़े दुःख से कैकेयी के महल की तरफ़ मुड़ते है। २५ कैकेयी के महल की स्त्रियों की फुसफुसाहट तथा उत्साहशून्य वातावरण के कारण जहाँ देखो वहाँ एक जड़ता का आवरण व्याप्त-सा दीखा। इसे देखते हुए रघुपति श्रीराम ने सुमंत्र से पूछा— "हमें राज्याधिकार न मिलने के लक्षण दिखायी पड़ रहे

अविनि नमगस्वाम्यवेंबी व्यवहरणे गोचरिसुतिदे सं-
भविस लुत्तर वेंदना रघुपति सुमित्रंगे ॥ 26 ॥

हृदय कळवळिसिदुदु कंगळ होंदेसिदवु नयनांबु मह्ममा
तुदिसदोय्येनय बागिदनु मंत्रीश मस्तकव
बंदरिदनु रघुपति सुमंत्रन वदन चेष्टेय कंडु तंदेय
हृदनिदेनेनुत रसनिद्देडेगागि नडेतंद ॥ 27 ॥

विततगळिताश्रु प्रकरपूरित निमीलित नेत्रननु नि-
र्गत वचोविह्वलन शोकोद्रेकपरवशन
सतिय कर्कशकलुषवाक् शरहति निरोधित हृदयबाधा-
न्वितन काणुत कैयकदपिनलिर्दना राम ॥ 28 ॥

आ समयदलि मनमरुगि मंत्रीश नोय्यने राजराजा-
धीशननु नुडिसिदनु मधुरवचो विलासदलि
ईसु निर्बंधद निरोध क्लेशवारिंदेनु कारण
वासवादुदु देवरंगद लेंदना मंत्री ॥ 29 ॥

तरणिवंशद सार्वभौमरि गेरवला दुश्चित्त मनुकुल
दरसुगळिगे विषादवदु तानप्रसिद्धवले

हैं। क्या कारण है ? जवाब दो" । २६ सुमंत्र का हृदय व्यथा से भर आया। भर आए अश्रु के कारण आँखें मुँद गयीं। राम को जवाब देने में असमर्थ हो सिर झुकाया। सुमंत्र का यह वर्ताव देखकर राम घबराए। पिता की हालत न जाने क्या हुई यह देखने दशरथ जहाँ थे वहाँ (तुरंत) पहुँचे। २७ आँखें (दशरथ की) अश्रु से भरी हैं; अतः मुँद गयी हैं। दुःख के आवेग के कारण मुँह से बातें तक नहीं निकलतीं। शोकाकुल वे बेहोश हैं। कैकेयी के कठोर वाणी रूपी बाण से घायल हो अत्यंत हृदय-वेदना के वे शिकार हैं। —इस स्थिति में अपने पिता को देख राम अपने गाल पर हाथ धरे रह गये। २८ दुःख से चटपटाते सुमंत्र मीठे वचनों से दशरथ चक्रवर्ती से बातें करने लगे।" इतनी बड़ी मुसीबत में मेरे स्वामी को झोंकनेवाली वह प्रतिबंधक शक्ति कौन सी है ? कहाँ से आयी है ? कारण क्या है। कृपया बतावें" —इस प्रकार सुमंत्र ने पूछा। २९ "सूर्यवंशीय राजाओं के पल्ले पड़ा यह बुरा मन ही एक ऐब है। मनुवंशीय राजाओं को विषाद सामान्यतया आ घेरता नहीं। शत्रुओं पर विजय पानेवाले राजाओं का स्पर्श चिंता नहीं कर पाती। योगनिरत व्यक्तियों को देह की चिंता कैसे सता सकती है ?" —इस प्रकार सुमंत्र ने प्रार्थना

अरिविजय वीररिगॆ चिता स्परुशवुंटे जीय योगो-
त्करुरिगॆ देह व्यर्थेयदेकॆंदु वॆसगॊंड ॥ 30 ॥
आ मधुर वाचोविलासोद्दाम गारुड मंत्र वॆव्विसि
ता महादुष्टांगना रसनाहि दष्टननु
रामने बंदात जगदभिरामने नुडिवात मंगळ
नामने यॆनुतप्पिदनु मगनॆंदु मंत्रियनु ॥ 31 ॥
जीय तानु सुमंत्रकनु रघुराय नभिषेचनद राज्य
श्रीय परिणय कावुदभिमत निम्म चित्तदलि
राय तनदभि मुखद कमलदळायतांबक बंदहनॆ मुनि
राय नॆतंदिहनॆ नेमवदेनु तनगॆंद ॥ 32 ॥
मगनॆ बंदै मनुकुलांवर गगनमणि बंदै मनोरथ
सुगुण बंदै सूनृत वृत बंदै यॆयॆनुत
ऒगुव नयनोदकद लरॆदिट्टिगळ नोटदलप्पि सत्यद
तगहिनवनीनाथना रघुनाथ गिंतॆंद ॥ 33 ॥
कंद केळॆन्नणुग केळानॊंद नॆनॆदरॆ दैव ता वे-
ऱॊंद नॆनॆदुदु दैवगतिगी कैकॆयनु सारि

की । ३० विष उतारने में समर्थ गरुड़-मंत्र की तरह जो सुमंत्र की मीठी बातें थीं —इनसे कैकेयी के जीभ रूपी सर्प के काटने से, विषाक्त वने दशरथ के देह से, थोड़ा सा विष उतर जाने के कारण राजा होश में आए। "आए हुए राम ही हैं न ? बोलनेवाला मेरा जगन्मोहन राम ही है न ?" —इस तरह कहते सुमंत्र को ही अपना वेटा समझकर भ्रम से आलिंगन कर लिया। ३१ "स्वामिन् ! मैं सुमंत्र हूँ। श्री रघुराम के राज्याभिषेक-कार्य संपन्न वनाने में आपकी क्या राय है ? राज्याभिषेक के लिए तैयार होकर कमलनयन (श्रीराम) आए है। मुनीश्वर वसिष्ठ भी उपस्थित हैं। मेरे लिए क्या आज्ञा है ?" —इस तरह सुमंत्र ने पूछा। ३२ "मेरे वेटे तू आया क्या ? आ। मानवकुल रूपी आकाश के सूर्य तू आ गया न ? मेरी अभिलाषाओं के सद्गुणशाली तू ही आया है न ? हे सत्यव्रती तू आया है न ? आ।" इस तरह कहते हुए, आँसू वरसाते हुए, अधमुंदी आँखों से राम को आलिंगित कर सत्य के निर्वंध में फँसे दशरथ ने राम को संबोधन करते हुए यों कहा। ३३ सुनो मेरे बेटे, मेरे प्रियकुमार, सुनो, सुनो मेरे लाडले, मैंने एक सोचा तो विधि ने और ही कुछ सोचा। उस दुर्गति-दुर्दैव के लिए कारणीभूत वनी कैकेयी।" राजा और कुछ कहने के लिए जीभ वाहर निकाल सके, फिर भी वोल न पाने के कारण जीभ अंदर सरक गयी।

अंदु मेलुत्तरकॆ नालिगॆबंदु बंदॊळसरिदु मॆल्लनॆ
निंदु बळिकी मातनॆंदनु कलि सुमंत्रंगॆ ॥ 34 ॥
ईसुदिन परियंत विभवद वास सॊबगिन सॆज्जॆ सुखद सु-
देश सुम्मानद सुधांबुधि सिरिय नॆलॆवीडु
लेसिनागर शुभद बहळित कोश संतसदिक्कॆ सॊपिन
वास वागिद्दुदु निवासविदॆंदना भूप ॥ 35 ॥
अशुभदाडुं बॊलनु कुमुदद हसर चिंतॆय संतॆदुःखद
वसति दुगुडद बीडु दुम्मानद जनस्थान
असुख दारवॆ खेद हुदिदायसद जळिगॆ ज़वन मनॆ र-
क्कसिय मठ वार्यितदु भवनविदॆंदना भूप ॥ 36 ॥
नरपतिगळॊळु भाग्यदलि बाहिररला नाविदु सुकृतदॊ
ळरॆगॆलसिगळु नावले हर हर महादेव
परमहरुष द्रुमद बेरिंगुरियनुरॆ चाचिदॆवलॆ कडु
दुरित कायरु नावले हा अॆंदना भूप ॥ 37 ॥
हेळि फलवे नॆलॆ सुमंत्रक मेलनरियदॆ कॊट्टि नी धा-
ताळिग सुरामरर संग्रामदलि वरवॆरड
बाळ चाचिदळिवळॆनगॆ गोनाळि गोड्डिद बंदियलि तुदि
नालगॆगॆ नरसुक्क निक्किदळिवळु तनगॆंद ॥ 38 ॥

तब धीरे-धीरे, धीमी आवाज़ में सुमंत्र से यों कहने लगे। ३४ "अब तक तो इस राजमहल का वैभवसंपन्न आवास, सुन्दर पलंग-बिछौने, सुख का आगर, संपत्ति का जन्मस्थान, उत्सवों का निवास, शुभ मंगल का जन्मस्थान, हर्ष की आधारभूमि, सुख-सौंदर्य का फसली मौसम रहा।" इस तरह दशरथ ने कहा। ३५ "लेकिन अब तो यह राजमहल अशुभ खेलों का मैदान, असंतोष की दूकान, चिंताओं का मेला, दुःख की निवास-भूमि, असुख का उपवन, दुःख-दर्द भरी थकावट का माया-जाल, यम का घर, राक्षसी का मठ बना हुआ है।" इस तरह राजा ने कहा। ३६ "राजाओं में हम भाग्यहीन ठहरे। पुण्यकार्य से आधे में ही हाथ धो बैठे। शिव-शिव! महादेव! हर्ष रूपी वृक्ष की जड़ में ही मैंने आग लगायी न? हाय! हाय! हम कितने बड़े पापकर्मी हैं!" —इस तरह कहते दशरथ पछताने लगे। ३७ "यह सब, अब कहने से क्या प्रयोजन? देवासुर-युद्ध में, भावी के बारे में बिना सोचे-समझे उस दुष्टा को दो वरदान दिए थे। उन वरदानों में मुझे कसकर मेरे गले पर तलवार तानी

बट्टगुत्तद विद्यविवरिगॆ कॊट्टरुंटॆलॆ मंत्रिकेळ् मन
मुट्टि नुडियलि भाविसदॆ सद्धर्म मार्गदलि
कॊट्ट वर वॆरडुंटु वेडलु कॊट्टरवरिंदीग हॊदकुळि
गुट्टुतिहरिदनरियॆ नी केळॆंदळा कैकॆ ॥ 39 ॥
बंदुदॆमगपकीर्ति राज्यव नॊंदु वरदलि बेडिदॆवु निज
नंदनंगॊंदरलि रामंगडवि यॊंडॆतनव
इंदुमुखियर साक्षियलि मॊदलॊंदिसिद रॆनगी वरव नीव्
बंद बळिकनुमानवागिदॆ निम्म रायरिगॆ ॥ 40 ॥
मनुकुलद रायरलि हुसि संजिनिस दॆंदॊळ गरियदॆन्नय
तनुजगधि राजत्ववनु बेडिदॆनु निम्मवर
इनितु सत्यकॆ मरुळुदलॆयिर लॆनगॆ दॊड्डितॆ साकु रघुनं-
दनगॆ पट्टव कट्टि नीव् नॆरॆदॆंदळा कैकॆ ॥ 41 ॥
ईतनॆनु दधीचि शिबि जीमूतवाहन बलि कपोत
ख्यात रॊळ गग्गळॆनॆ बेडितनी वडवनियलि

गयी है। मेरी जीभ को विवशता के जाल में फँसा दिया है। —इस दुष्टा ने" —इस तरह दशरथ ने कहा। ३८ "इनमें धोखे की टट्टी भरी हुई है। सुनिए मंत्रिवर। अन्य प्रकार से सोच-विचार न करते खुले दिल से ये बोलें। पूर्व में इन्होंने मुझे दो वरदान दिए थे। उन्हें अब माँग लेने के लिए सुअवसर दिया। अब वरदान प्रदान कर चटपटा रहे है। इन्हें आप ही समझाइये।" इस तरह कैकेयी ने कहा। ३९ "एक वरदान से मैंने अपने बेटे के लिए राज्य माँग लिया; दूसरे से राम के लिए जंगल का स्वामित्व माँग लिया। इसी से मुझे यह अपकीर्ति मिली है। यहाँ की स्त्रियाँ गवाह है कि उन्होंने मुझे अभी ये वरदान दिये। अब जब आप आ गये तो आपके राजा को अब इसमें शक पैदा हो गया है। ४० 'मनुवंशीय राजाओं में झूठ-फ़रेब के लिए जगह नहीं है' —इस तथ्य पर भरोसा करके तथा इनके मन में जो है उसे न जानते हुए मैंने अपने बेटे के लिए इनसे अधिराजत्व माँग लिया। बस। इतनी सी बात के लिए सत्य से अगर मुकर जाना चाहते हैं तो जाने दीजिए। अब मेरा जो बड़प्पन है वही मेरे लिए काफ़ी है। आप सब मिलकर रघुराम को ही राज्याधिकार दीजिए। कोई बात नहीं।" इस तरह कैकेयी ने कहा। ४१ "(इस) दुनिया में जो माँगा जाय वह देने के लिए ये क्या दधीचि, शिबि, जीमूतवाहन, बलि चक्रवर्ती, कपोत जैसे महानुभावो से श्रेष्ठ हैं? मंत्री जी! व्यर्थ की बकझक क्यों? हम क्यों राज्य

मात देतकें मंत्रि साकिन्नेतकवनिय बयकें रघु सं-
जातकभिषेकवनु माडलिकेंब्बिसवनिपन ॥ 42 ॥
दोड्डिते क्षत्रियरिगी कडु खड्डतन विरबेकु रामं
गोंड्डिदी कवडोंद तप्पिसि नेंनेंद मति लेसु
बोंड्डि तन गप कीर्ति वधुसलेंदोंड्डिदरु रघुसगर रवरोंळ
गड्डनगें होंगदंतें माडुवुदुचित निमगेंद ॥ 43 ॥
सुत वियोगदलळिय दिरनीं क्षितिप नीविदुग्रपाति-
वृतेंयरोंळ गग्गळरु निमगोंदुवदपख्याति
क्षितिय कुजनर जिह्वें कडुकूरितु तदर्थदिनवनिपाल
च्युतिगें मनवनु माडुवदु निमगुचित वल्लेंद ॥ 44 ॥
इरलि निम्मकुमारनी धरेंयरसुतनदलि राघवेश्वर
निरलि भूनुतनागि राजऋषित्वदलि बळिक
इरद पप्रथें निमगें मेंरेंवुदु धरेंय सिरि मन्वादिरायर
तरुणियरु नगदंतें मडुवदुचित निमगेंद ॥ 45 ॥
बेडिदी वरदिंद नृपतिय कूडिकोंडु वनप्रवासव
माडुवेंनु मरेंयेनु मनदनुमान विन्नेकें

की अभिलाषा करें (व्यर्थ में)। श्रीराम का राज्याभिषेक संपन्न बनाने के लिए (अपने) राजा को जगाइए।" ४२ "क्षत्रियों को धैर्यवान होना चाहिए। यह कौन सी बड़ी बात है? राम को बाध्य की गयी इस वंचना (छल-प्रपंच) को दूर कर, अपकीर्ति रूपी वधू जो दासी है, वह आकर (इस मामले में) हस्तक्षेप न करें, इस प्रकार आपसे सोची गयी बुद्धिमत्ता श्लाघ्य है। पूर्व के चक्रवर्ती राजा रघु, सगर आदि बड़ों के नामों को बट्टा न लगे—इस प्रकार आचरण करना श्रेयस्कर है।" इस तरह सुमंत्र ने समझाया। ४३ "राजा पुत्र-विरह के कारण मृत्यु के ग्रास हुए बिना न रहेंगे। आप तो श्रेष्ठातिश्रेष्ठ पतिव्रता हैं। आपकी बदनामी होगी। दुनियावालों की जीभ क्या है, भयानक तलवार है। अतः राम को राज्याभिषेक से वंचित करना आपको शोभा नहीं देता। सोचकर देखिए।" इस तरह सुमंत्र ने कहा। ४४ "आपका पुत्र कुमार भरत राज्य की बागडोर सँभालें। राम राजर्षि होते हुए, कीर्तिमान बने और यहीं जीवन बिताएँ। इससे आप भी बदनामी से बच सकती हैं; राज्य की संपत्ति भी बढ़ सकती है। इस तरह आपका आचरण हो कि मनुकुल की रानियाँ आपकी हँसी-मजाक़ न उड़ाएँ।" —इस प्रकार सुमंत्र ने कहा। ४५ "आपके पूछे गये वरदान के अनुसार राजा (दशरथ) को साथ लेकर वन

खोडि निमगागद वोली नृपनाडि हुसि होगदंते कीर्तिय
जोडिसुवडिदु समयवेंदु सुमंत्र कैमुगिद ॥ 46 ॥
बिडु सुमंत्र कुमंत्र कृत्यव नडेस वेडेम्मोडने रघुगळ
मडदियरु नगलेम्मनेम्मलियाग्तु दुष्कीर्ति
ओडरिसलि पुनरुक्ति नम्मय नुडिगे होगदाव् वल्लेवी वों-
बडेय तनवनु केलके सारेंदळु सुमंत्रकन ॥ 47 ॥
इदु यथार्थ सुमंत्र नीनाडिद सुभाषितवेम्म नंबिहु
दिदके होरे होगदते नडेसुवेवेंदु मुनि नुडियें
गदिय बेंडिन्नात नाडिद तुदिय कोसरनु निम्मरायन
वदनदलि नुडि हुट्टलेंदळु कैके मुनिपतिगे ॥ 48 ॥
ऐसले नीव् बेडिदुदु तानेसु दोड्डितु तंदेयाडिद
भाषेगिदको भाषेयेनुता जननिगाराम
लेसुमाडिदरनृत वेम्मवनीशरलि होगदंते घटदलि
कासदिरि कलमषवनुगिदन्वय त्रिभूवणव ॥ 49 ॥

की यात्रा करूँगा। इसमें कोई लुका-छिपी नहीं। आप ज़रा भी शंका मत कीजिए। आपके नाम को कलंक न लगे। राजा वचन से मुकर गये —ऐसा भी न हो। इस रीति से बर्ताव करके कीर्ति संपादन करने का यह सुअवसर है।" इस तरह कहते सुमंत्र ने हाथ जोड़े प्रार्थना की। ४६ "हे सुमंत्र, तुम्हारा यह दुर्बोध मुझे नहीं चाहिए। रघुवंश की रानियाँ अगर मुझे देख हँसती है तो उन्हें (भरसक) हँसने दो। अपकीर्ति आती है तो आने दो। एक बार जो बात मुँह से निकल पड़ी उसे कदापि वापस नही ले सकती। मैं तुम्हारे इस शोरगुल का मतलब समझती हूँ। चले जाइए यहाँ से।" इस तरह कैकेयी ने सुमंत्र से कहा। ४७ "सुमंत्र, तुम्हारा यह सदुपदेश बिलकुल ठीक है। हम पर भरोसा करो। हम देख लेते है कि इसमें कोई विघ्न आने न पावे।" —ऐसे वसिष्ठ मुनि के कहने पर कैकेयी ने महर्षि से कहा— "इनके दिये गये इस आखिरी वचन में कोई पसोपेश उपस्थित न करें। आपके राजा अपने मुँह से जो स्पष्ट कहना चाहते है —कह दें।" ४८ "तुमने जो वचन पा लिया है इसमें कौन सी बड़ी बात है! यह लो। पिताजी के दिये वचनानुसार मैं क़सम खाता हूँ। हमारे रघुवंशीय राजाओं में असत्य के लिए गुंजाइश न हो। —इस दृष्टि से जो तुमने किया बिलकुल ठीक ही किया। कलक-रहित हमारे परिशुद्ध वंश रूपी गहने को अग्निपरीक्षा के लिए बाध्य कर पुनश्च पिघलाइए मत। इस प्रकार राम ने माता कैकेयी से

भरतनाळलि राज्यवनु नीव् नरपतिय चरणारविंदद
परम सेवा निरत रागिरि निम्मनुज्ञेयलि
चरिसुवेनु वनवासदलि गोचरिसुवेनु नीव् नुडिद
वरुषद परिगणने परियंत वेंदनु कैकेगा राम ॥ 50 ॥
आ सतियनुपचरिसि पितनायासवनु श्रुति धर्मशास्त्र वि-
लास वचनालाप दिंदनुतापवनु बिडिसि
आ सकल लोकैक लीलावास तोरवेय रायना वन-
वासवनु कैकोंड नमरेंद्रागिळु नलिये ॥ 51 ॥

मूरनेय संधि

सूचने— सुरकदंबक नलियॆ रजनीचरकदंबक कुमुदरवि दशशिरन निधनके निजपुरव होरवंटना राम ।

हरेदुदी वृत्तांतवा नृपनरसि कौसलेगूडिदैनू
अरसियर मनेगळलि मगधात्मजेय निळयदलि
शरनिधिय सलिलवनु मोगदुब्बरिसु वौर्वानिलनवोलु का-
हुरद लंतःपुरद लेद्दुदु बहळ शोकाग्नि ॥ 1 ॥

कहा । ४९ "भरत राज्य करें । आप मेरे पिताजी के चरणकमलों की पवित्र सेवा में दत्तचित्त होवें । आपकी आज्ञा को शिरोधार्य कर मैं वनवास स्वीकार करता हूँ । आपसे आज्ञापित वर्षों की अवधि समाप्त होने पर ही लौट आता हूँ ।" —इस प्रकार राम ने कैकेयी को वचन दिया । ५० राम ने कैकेयी की शुश्रूषा करने के उपरांत अपने पिताजी की थकावट दूर की । वेदों से, धर्मशास्त्रों से उदाहरण दे-देकर राजा के मन की व्यथा दूर कर दी । विश्वलीलाधारी 'तोरवे' के अधिपति श्रीमन्नारायणावतारी प्रभु ने वनवास स्वीकार कर लिया । राम के इस आचरण से देवेन्द्रादि बहुत हर्षित हुए । ५१

तृतीय संधि

सूचना— राक्षससमूह रूपी कुमुद वन के लिए सूर्य-सदृश श्रीराम देवताओं को हर्षित करते हुए रावण-वध संपन्न करने के निमित्त अयोध्या छोड़ चले ।

राम के वनगमन का समाचार दशरथ की रानी कौसल्या-सहित पाँच सौ रानियों के राजमहलों में, मगधराजपुत्री सुमित्रा के भवन में भी फैला । समुद्र के पानी को बाहर खदेड़ते हुए घनघोर गर्जना करनेवाले बड़वाग्नि की तरह उद्वेगपूर्ण अपार दुःख की ज्वाला अंतःपुर में दहकने लगी । १

हिडिद कन्नडि कळसगळ कैल किडुत होंदळिगैय निवाळिय
सोंडर सूसुत बिसुड्तमलाक्षतेय देसॆदेसॆगॆ
मुडियलर कैदरिकॆय केशद सडलिदुन्नतकुचद सॆरगिन
मडदियर मंदॆयलि वंदळु कौसलादेवि ॥ 2 ॥
हरसि हडदॆनॆ मगन नडविय सिरॆय सूरॆगॆ घोर विपिनां
तरद खगमृग राजधानिय राज्य संपदकॆ
गिरिगुहा कटकंगळरमनॆ यरसुतनककटकट हा हा
तरुण हायॆनुतैदिदळु वाय् विडुत वालकन ॥ 3 ॥
अकट कल्पानलन जिह्वा प्रकर दुव्वरदमलतर चं-
द्रिकॆगॆ सोंगसे सिडिलडवि गिरिशिशुविगनुनयवॆ
सकल दुष्ट व्याघ्र सूकर वृक महोरग शरभ सिंह
प्रकरवन वॆन्नणुगगुचितवॆ यॆंदळा कांतॆ ॥ 4 ॥
नॆरॆदुदभ्रदोळगजॆ भारति वरशचीसति मुख्य नाना
सुरवधू निकुरुंव वंवक जलद झाडियलि
करद कदपिन खेददंतःकरण दनुतापद लिरलु सर
सरिसि बंदप्पदळु कोरळनु कांतॆ निजसुतन ॥ 5 ॥

राज्याभिषेक के मंगलपर्व के लिए हाथ में धारण किए [illegible], आईने को परे रखे, दीठ (दृष्टि) उतारने सोने की थाल [illegible] दीपों को फेंककर, पवित्र अक्षतों को जिधर-तिधर फेंककर, फूलों [illegible] भरे अपने जूड़े को खोले, बालों को बिखेरे छाती पर के आँचल के परे सरककर खुल जाने की परवाह न करते हुए अंतःपुर की स्त्रियों के साथ कौसल्या आयी । २ "मैंने क्या बेटे को इसलिए जन्म दिया कि वह जंगल की संपत्ति लूटे ! भयानक जंगल के मृग-पक्षियों की राजधानी की संपदा पाने के उद्देश्य से मैंने क्या पुत्र को जन्म दिया ? पहाड़, पहाड़ियाँ, गुफाएँ वग़ैरहों से युक्त राज्य के राजधानी के राजमहल में राज्य-शासन करने के उद्देश्य से क्या मैंने राम को पाया ? हाय मेरे कुमार !" इस तरह रोती-कलपती कौसल्या अपने पुत्र के पास पहुँची । ३ "हाय, हाय ! प्रलयाग्नि के रक्ताभ जिह्वा की ज्वालाओं के सम्मुख छिटकी चाँदनी का क्या अस्तित्व ! क्या मेरे सुकुमार को बिजली, जंगल, पहाड़ प्रियकर लगेंगे ? बाघ, सुअर, भेड़िया, रीछ, कृष्णसर्प, हाथी, शेर आदियों से भरा जंगल मेरा सुकुमार कैसे सह सकेगा ?" इस तरह कौसल्या कहने लगी । ४ गिरिजा, सरस्वती, इन्द्र की रानी शची, वग़ैरः देवता-स्त्रियाँ आँखों में आँसू भरे आकाश में इकट्ठी हुईं । हाथ को गाल पर टिकाए, मन में वेदना भरी चटपटाती कौसल्या

निंद नेम नुंगुवडे सुळिविन मंदमारुत नुरुहुवडे पू-
र्णेंदु मंडल गरळमय कौमुदिय कारुवडे
कंदकेळै बदुक बहुदे तंदे निनगी नेनह नेनेदरे
हिंदुगळेववरारु हेळेंदप्पिदळु मगन ॥ 6 ॥
कुशने केळीचेयलि रायन वसतियलि रामंगे कैकेय
देसेयलादी वार्ते केळिसि तूर्मिळापतिय
हसिद हुलियो होय्लिनलि गर्जिसुव सिंहवो हेरेगळद नि-
ट्टुसिरिनुरगनो मेण्णनलु सौमित्रि हलुमोरेद ॥ 7 ॥
होगदुदा ननवक्षि किडिगळ नुगुळिदवु होगेसुत्ति कुडिमी-
सेगळु कौग्रिदवंग काहेग्रिदुदु कडुहिनलि
बिगुहुगोंडप्परिसिदवु हुब्बुगळु हरहरहर लयाग्निय
मोगवडव नुगिदंते बहळित रौद्रमयनाद ॥ 8 ॥
बगेयनय्यननिन्नु कष्टव बगेद कैकेय काळुदोत्तिर
जगळदलि होय्युवेनु बायनु भरतनी पुरव
होगलरिय् बहुदिन्नु दिट कैमिगुव परियनु काण बहुदेनु
तगिव हल्लौडिनलि होरवंटनु निजालयव ॥ 9 ॥

सरपट आयी और राम को उसने गले से लगा लिया। ५ "जिस धरती पर हम खड़े हैं, वही अगर हमें निगल जाती है, हितकारी होकर बहती ठंडी हवा अगर हमें जला देती है, पूर्णचन्द्रमंडल अगर विष वमन करने लगे (विषैली चाँदनी फैलावे) तो क्या कोई जी सकेगा बेटा? तुम्हारी इस दयनीय स्थिति को देखते हुए भी तुम्हारा तिरस्कार किससे संभव है?" इस तरह कहते कौसल्या ने राम का आलिंगन कर लिया। ६ सुनो कुश! कैकेयी के कारण राम को वनवास प्राप्त होने की दशरथ के महल की यह खबर लक्ष्मण को मिली। वे मानों भूखे बाघ की तरह, या मार खाकर गरजते शेर की तरह या केंचुली छोड़े फुफकारते काले नाग की तरह गुस्से के मारे काँपने लगे। ७ लक्ष्मण के मुख से मानों धुआँ निकलने लगा। आँखों से चिनगारियाँ निकलीं। धुआँदार मसों से जलने की बू निकली। देह भर का तापमान शीघ्रता से बढ़ने लगा। चढ़ी हुई भौंहें काँपने लगीं। शिव-शिव! प्रलयकालीन अग्नि का मुखौटा मानों भयानक रूप में प्रकट हुआ हो—इस तरह लक्ष्मण ने उग्ररूप धारण कर लिया। ८ अब मैं पिताजी की परवाह न करूँगा। इस दुष्ट कार्य की मंत्रणा करनेवाली कैकेयी की नीच दासियों से झगड़ा कर उनके मुँह पर थप्पड़ जड़ूँगा। देखता हूँ, भरत अयोध्या नगरी में कैसे प्रवेश करता

उक्किरिव कोपाग्नि दळ्ळिसि दिक्कुगळनळ्ळिरियॆ लक्ष्मण
नॆक्क तुळदलि बंदना लयकालदलि जगव
मुक्कि मोदुव मदनहरनवो लिक्कॊलद नॆरविगरु कॊलवल
कॊक्क सरिदरु कैकॆ मरॆयॊक्कळु मुनीश्वरन ॥ 10 ॥
धरणिजेशन मुसुकि कॊंडह नॆरविगर हॊय् हॊय् ऎनुत सर-
सरिसि बंदनु राघवेंद्रन हॊरॆगॆ सौमित्री
मरुळुतन निमगुंटॆ बिडि बॆरॆरसरुंटे धरॆगॆनुत रघु-
वरन जननिय जरॆदु जानकियरसगितॆंद ॥ 11 ॥
अवनिपन मुप्पिनलि मुदुगर ववचितीबॆय तलॆय पित्तद
बवणि बलिदुदु मुनि वसिष्ठ सुमंत्र मंत्रिगळु
नवगॆ हितवरॆयैसॆ मत्तेनवनि गड भरतंगॆ कानन
भवन गड निमगहुदले परिलेसु लेसॆंद ॥ 12 ॥
जरडु मनवेकरस नॊसललि धरिसु पट्टव लग्नविदॆ ह-
त्तिर हराद्यर बरिसुवॆनु मूर्धाभिषेचनकॆ

है। देख लूंगा— विजय किसकी होती है —इस तरह कहते क्रोध के मारे दाँत किटकिटाते लक्ष्मण अपने भवन से निकल पड़े। ९ प्रचंड होते हुए लक्ष्मण की क्रोधाग्नि ने दिशि-दिशाओं में व्याप्त होकर सर्वत्र कँपकँपी पैदा की। प्रलयकाल में सारे जगत को निगलकर समाप्त कर देनेवाले शिवजी की भाँति लक्ष्मण को झंझावात की तरह आते देख दोनों तरफ़ भीड़ में इकट्ठे हुए लोग सर से दाएँ-बाएँ सरक गये। कैकेयी महर्षि वसिष्ठ की ओट में पहुँच गयी। १० दशरथ को घेरकर खड़े हुए लोगों को 'मारो, पीटो' इस तरह चीखते-चिल्लाते झट राम के पास पहुँच गये और कहने लगे— "यह आपका वहम छोड़ दो। (इस) धरती के लिए और राजा है कौन ? और कहाँ ?" इस तरह कैकेयी की निंदा करते हुए जानकीपति श्रीराम से कहने लगे। ११ "बुढ़ापे के कारण राजा सठिया गया है। (इस) कैकेयी को तो पित्त प्रकोप के कारण बुद्धिभ्रम हुआ है। महर्षि वसिष्ठ, मंत्रि महोदय सुमंत्र ये सब हमारी ओर है न ? हमें और क्या चाहिए ? भरत को राज्य और आपको वनवास ! वाह रे नीति ! क्या खूब !" —इस तरह लक्ष्मण ने कहा। १२ 'हे राम राजा ! अपने मन का खोखलापन त्यजिए। यह पट्ट माथे पर धरिए। मंगल मुहूर्त कहीं टलने न पावे ! राज्याभिषेक के लिए शिवजी आदियों को निमंत्रित करता हूँ। स्त्रियाँ आगे वढ़ें। रामजी के मस्तक पर अक्षत डालकर आशीर्वाद करो माताओ ! भरत की महतारी चितारिग्न

तरुणियरु बरलमळसेसेय हरसि हायकेले तायें चिंतेय
नेरवकोडि भरतांबिकेगे बेगेळि नीवेंद ॥ 13 ॥
तम्म सैरिसु सैरिसी मातेम्म वंशके सल्लदासुर
कर्मविदु सत्य प्रतिज्ञरिगुचितवे हेळु
उम्मळिसुवरु सुरर सभेयोळगेम्म रायरु पितन सत्यद
सोम्मनळिदरे बळिक बहुदपकीर्ति नमगेंद ॥ 14 ॥
वेदमतविदु जगके सूनृत वादिये साक्षात शिवनो
पादि सत्य विहीननें ता नरक भाजननु
शोधिसै लेसागि पितृवचनोदयव नेले तम्म निन्न म-
हादुराग्रह तारदिरदपयशव नमगेंद ॥ 15 ॥
कालवावुदु नोडु नेरेदिह मेलणवरारी क्षिसनृतके
सोललहुदे नम्म तंदेय मातनतिगळेदु
मेळे कांबैश्वर्यवदु ता कीळुमाडदे नम्मनी जन
जाल नगुवदु पितननुज्ञेय राज्यपद वेंद ॥ 16 ॥
अेंदु तम्मन धर्मपद्धति यिद चित्तव तिळुहि बळिकि-
तेंद नय्यन सेवेयलि मातृगळ भक्तियलि

में पड़े। आप जल्दी उठिए।' इस तरह लक्ष्मण ने कहा। १३ "अरे भाई जरा सहन करो। थोड़ा-सा सह लो। ऐसी बातें हमारे वंशजों के लिए शोभा नहीं देतीं। ऐसा भयानक आचरण सत्य-वचन पालकों के लिए क्या योग्य है ? ऐसी बातें सुनकर इन्द्रसभा में निवास करनेवाले हमारे पूर्वज दुःखी होंगे। (हमारे) पिताजी के सत्य वाक्-परिपालन स्वत्व का हम अगर नाश करें तो हमें अपकीर्ति प्राप्त होगी।" —इस तरह राम ने समझाया। १४ "सत्यवादी, सत्य पक्षपाती, जगत के लिए साक्षात् शिवस्वरूप है। सत्य से दूर भागनेवाला नरकगामी होता है। यह वेद प्रतिपादित सिद्धांत है। पिताजी की बात रखने की बात पर ग़ौर कर देख। भाई लक्ष्मण ! तुम्हारा यह जिद्दी [हठीला स्वभाव मुझे कुख्याति के कलंक में झोंके बिना न रहेगा।" इस तरह राम ने कहा। १५ "यह समय कैसा है— विचार कर देख। यहाँ इकट्ठे हुए हमारे ये बड़े कौन हैं ? —इस पर भी ध्यान दो। पित्राज्ञा-परिपालन से विमुख हो प्राप्त की जानेवाली संपत्ति हमको कापुरुष बनाए बिना न रहेगी। दुनियावाले हमें देख हँसेंगे। पित्राज्ञा-परिपालन ही सच्ची राज्य-संपदा है।" —इस तरह राम ने कहा। १६ श्रीराम ने धर्म-मार्ग का निरूपण करके, उथल-पुथल मचे भाई (लक्ष्मण) के मन को

संदिहिदु केळणुग भरतनु बंदडातन कूडि कोंडिहु
देंदु कोपव निलिसि संतैसिदनु सहभवन ॥ 17 ॥

ई यथोचित सुतवचोभि प्रायवनु किविगोट्टु केळ्दबु-
जायतांबकि नुडिदळणुगंगाग मोचितव
तायि मोदलाक्रमदि पित तरुवायलाचारियननुज्ञा
दाय दळतेंगे मगने केळु वसिष्ठ मुनिवरन ॥ 18 ॥

क्रम विदीगोले कंद नीनक्रमव माडदे मातृवचनद
समतेयलि सलहुवदु शास्त्र विदीग सर्वरिगे
रमण नागोले राम वसुधा रमणिगेन्न नवज्ञे गैदरे
सुमनसरु नगदिहरे हेळेंदळु निजात्मजन ॥ 19 ॥

उचितवे निमगिदु परीक्षिसि सुचरितागम धर्मशास्त्र
प्रचुरतेय नाडाडियेणिकेय मत्त काशिनिये
विचरितान्वय वेरड नेत्तुव शुचितनवु निमगल्ल दितरर-
लचलतेयदागुटदेंबुद नोडि नीवेंद ॥ 20 ॥

परिशुद्ध बनाया। तत्पश्चात् बोले— "पिताजी की सेवा करते हुए मातृवृन्द पर भक्ति-भाव धारण करो। सुनो भाई! भरत के आने पर उनसे मिले-जुले रहो।" —इस तरह समझाते हुए राम ने भाई के क्रोध तप्त मन को शांत किया। १७ पुत्र की समयोचित इन बातों को ध्यान से सुनकर माता कौसल्या ने शास्त्रानुमोदित निम्नांकित बाते राम से कहीं— "बेटे को चाहिए कि वह माता की आज्ञा का परिपालन सर्वप्रथम करे। फिर पिता का, फिर गुरु का —यह क्रम है। मुनीश्वर वसिष्ठजी से ही चाहे तो पूछकर देख लें।" १८ "यही क्रम ठीक है बेटे। अगर इस क्रम के विरुद्ध आचरण नहीं करना है तो माता की आज्ञा का पालन करो। यह सर्वमान्य शास्त्रसम्मत नियम है। भूलक्ष्मी का (राज्य का) स्वामी बनो, राम। मेरी बातों की अगर उपेक्षा करोगे तो देवता क्या हसेंगे नहीं?" —इस प्रकार कौसल्या ने राम से पूछा। १९ तब राम ने माता को संबोधित कर कहा— "क्या ये बातें तुमको उचित लगती हैं? वेद-शास्त्रों में जो प्रकट है क्या तुमसे छिपा है? अच्छी तरह परख कर देख लो। तुम तो एक मामूली स्त्री जैसी नहीं हो। पैदा होनेवाला तथा जिस वंश में प्रवेश हुआ है —इन दोनों वंशों के उद्धार की शुचिता की ज़िम्मेदारी क्या तुम्हीं पर नहीं है? तुममें जो चित्त की स्थिरता है वह और किसमें है? तुम्हीं विचार कर देखो; माँ।" २० पति की

पतिय वशवर्तनेंगे बारद सतिय नेनेंबरु महा सु-
व्रतेयरा दंपतिगळिच्छेयलिरद पुत्रननु
पतिकरिसुवरे बुधरु मुनि भृगु सुतन चरितव केळि दरियिरे
पतिभजने निमगल्ल दितररिगुंटे हेळेंद ॥ 21 ॥
मनदोळनु मानिसदे नेमव नेनगे करुणिसु ताये तातन
मनके बहुदिदु परमसीमे पतिव्रता गुणके
तनगे पूर्वद दत्त फलविदनोनदु तेगेववरारु चिंता
वनधि बत्तलेनुत्त नेरे नंबिसिद नंबिकेय ॥ 22 ॥
आर्येनुत कोंडाडि तंभो जायताक्षन नभद सुरसमु-
दायसुरवंदिगळु होगळिदरुदधि घोषदलि
वायु निरुतीशाग्नि यम वज्रायुधाद्यरु मनद मुदद न-
वायियलि सूसिदरु सुरनंदनद कुसुमगळ ॥ 23 ॥
मोळेतुदा मनुविं विकुक्षियो ळेळे ससिय नैदितु दिलीप
नोळेले वडेदुदा रघुविनिंपल्लविसि तजनिंद
नळनळसि तजपुत्रनिदुत्कळिके तोरितु रामनिन्नलि
फलिसितग्गद सत्यतरुवेंदनु वसिष्ठमुनि ॥ 24 ॥

आज्ञानुवर्तिनी होकर आचरण न करनेवाली सतियों के बारे में महा-पतिव्रताएं जो कुछ कहती हैं क्या तुम नहीं जानतीं ? माँ-बाप की इच्छा के अनुसार आचरण न करनेवाले बेटे का क्या बुद्धिमान लोग गौरवादर करते है ? भृगु महर्षि के पुत्र की बात क्या तुमसे छिपी है ? पति की सेवा का गौरव तुम्हारे सिवा और किसको प्राप्य है ? —इस तरह राम ने कहा। २१ "मन में किसी प्रकार की शंका के लिए गुंजाइश न रखते हुए मुझे आज्ञा देने की कृपा कीजिए —माँ। पिताजी इससे सहमत हैं; तथा यह परम श्रेष्ठ पतिव्रता धर्म भी है। यह मेरे पूर्वजन्म का कर्म-फल है। इस प्रारब्ध को भोगकर ही समाप्त करना है। तुम्हारा चिंता-सागर सूख जाय।" —इस तरह (माँ को) समझाकर राम ने उसे मनवा लिया। २२ आकाश में उपस्थित— इकट्ठे हुए देवताओं को आश्चर्य हुआ। वे राम की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे। देवलोक के चारणों ने सागर के उद्घोष सरीखी ध्वनि में राम की प्रशंसा की। इन्द्र, अग्नि, वायु, निर्ऋति, ईशान वग़ैरः दिक्पालकों ने खुशी के मारे देवलोक के नंदनवन के पुष्पों की वर्षा की। २३ "सत्य रूपी वृक्ष मनु से अंकुरित हुआ। विकुक्षि व पौधा बना। दिलीप से उसमें पत्ते फूटे। रघु से पल्लवित हुआ। अज से कोमल वृक्ष बना। अज पुत्र राजा दशरथ (के आचरण)

ऐसें मत्तेनेनुत सेनाधीशनंगीकरिसिदनु नेरे
दा सभासदरोलिदु कोंडाडिदरु रघुपतिय
आसें निदुदु नीरजोद्भव वासवाद्यरिगरसि कैकेगें
पंसरिसिदुदु मेले मन दिक्तटद संदेह ॥ 25 ॥
तनुज केळी जगद दुर्जन वनितेयरोळिन्नेनितु पापियों
नेनेदळै निष्ठुरवनवनियोळारु नेनेयदुद
मनव देंतोड बट्टुदो तव जनकननु हत्तिरके करेदा-
ननव नोडदें सडलिसिदळु समस्त भूषणव ॥ 26 ॥
मरुगुतिर्द्दुदु मेले कंबनि योरतेगळ कैगल्लगळ कडु
वेरगुगळ शोकदलि शैलजे मुख्यनारियरु
मरेयदेकेले राम कोळ्ळुडु गोरेयनवुद चतुर्दशद वन-
दुरुव पट्टकेनुत्त कोट्टळु कैके वल्कलव ॥ 27 ॥
नोडलच्चरि चित्तदलि खय खोडि यिल्लदें सकलजन कों-
डाडें कोंडनु कुमति सति तनगित्त वल्कलव

से उसमें कली फूटी। राम (तुम्हारे आचरण) से (सत्य रूपी वृक्ष) फल-संयुक्त हुआ।" —इस तरह मुनि वसिष्ठ ने कहा। २४ "नहीं तो क्या ?" —इस तरह कहते हुए सेनापति ने वसिष्ठ की राय से अपनी सहमति प्रकट की। वहाँ इकट्ठे हुए सभासदों ने रघुपति की प्रशंसा की। ब्रह्म, इन्द्रादियों की आशा सुदृढ़ बनी। रानी कैकेयी के मन का संदेह दूर हुआ। २५ सुनो बेटे; इस जगत की दुष्ट स्त्रियों में कैकेयी न जाने कितनी महान पापिनी है! दुनिया में कोई भी सोच नहीं सकता —ऐसे भयानक निष्ठुर कार्य की उसने सोची। न जाने उसका मन ऐसे (जघन्य) कर्म के लिए कैसे राजी हुआ ? कैकेयी ने तुम्हारे पिताजी को अपने पास बुलाया और उनका मुखड़ा बिना देखते (उनके) पहने हुए सभी आभूषण उतारे। २६ आकाश में उपस्थित, पार्वती आदि देवी-देवताओं ने आँखों में आँसू भरे, आश्चर्य से गालों पर हाथ धरे (कैकेयी की) ये सारी हरकतें देखते दुःख प्रकट किया (चटपटाने लगीं)। "इसमें रहस्य क्या ? चौदह वर्षों के जंगल के राज्याधिकार के लिए यह भेंट स्वीकार करो, राम।" इस तरह कहते हुए कैकेयी ने राम को वल्कल दुकूल प्रदान किए। २७ दुर्बुद्धिपूर्ण कैकेयी ने जो वल्कल थमा दिये है—उन्हें (वल्कल) देखकर जब सभी प्रशंसा कर रहे थे—राम ने उन्हें निष्कपट भाव से स्वीकार किया। यह तो आश्चर्य ही है। यह देखते हुए लक्ष्मणदेव ने सोचा— भैया के, उनके इस वनवासकाल में

नोडि लक्ष्मण देव नण्णन कूडे वनवनु चरिसि सेवेय
माडुवडे तनगिदुवे समयवेनुत्त मनदंद ॥ 28 ॥
देव बिन्नह निम्म पदराजीवदोलग तप्पि जीविप
जीवविदु तानिद्दु फलवेनी धरित्रियलि
देव तन्नय मेलॆ निम्म कृपावलंबन वागलुळिवुदु
जीवविदु वल्कलव नॆनगित्तुळुह बेकेंद ॥ 29 ॥
भरत निल्ली समयदलि दुस्थिरनु तातनु तम्म केळी
मरुळतन बेडधिकृतरु नावैसले वनकॆ
हिरिदु बरबेकादडवनिय भरतगॊप्पिसि पितननुज्ञेय
धरिसि बीळ्को बळिक नम्मॆडॆ गेंदना राम ॥ 30 ॥
दूरवे नाल्केरडु दिवसकॆ बारदिरना भरतनवनी
नारियेंदॆडॆ नलियदवरारी धरित्रियलि
पारमार्थ विदीग तंदॆय भारवन्नबरी सुमंत्रन
सारलेंदा सीरॆयनु सॆळॆदुट्ट नॊलविनलि ॥ 31 ॥
अरसि मनदलि हरुषिसिदळिब्बरिगॆ वनवायॊदु किरुनगॆ
वॆरसि कॊट्टळु मत्तॆ मनुवंशगॆ वल्कलव

साथ रहकर अपनी सेवा समर्पित करने का यही सुअवसर है— और तदनुसार निश्चय भी किया। २८ "भगवन्! आपसे मेरी एक विनम्र प्रार्थना है। आपके चरणकमलों की सेवा से वंचित इस मेरे जीव का इस धरती पर जीवित रहना बेकार है। देव, आपकी कृपादृष्टि पड़ती रहे, तभी यह जीवित रह सकता है। वल्कल मुझे भी दीजिए और मेरी रक्षा कीजिए।" —इस तरह लक्ष्मण ने निवेदन कर लिया। २९ "इस समय भरत भी यहाँ उपस्थित नहीं है। पिताजी तो दुस्थिति में हैं। भाई, मेरी बात मान। यह पागलपन छोड़ दो। वन जाने का एक मात्र अधिकार मेरा है। इतने पर भी अगर वन आना ही चाहते हो तो राज्य को भरत के आधीन करके, पिताजी से आज्ञा लेकर फिर हमारे पास आना।" —इस तरह राम ने कहा। ३० "भरत क्या कहीं कोसों दूर है? चार-आठ दिन में आ ही जायगा। राजगद्दी पाकर इस जगत में कौन हर्षित नहीं होता? यह तो (निर्विवाद) सत्य है। भरत के आने तक पिताजी की जिम्मेदारी सुमंत्र सँभालें।" —इस तरह कहते हुए लक्ष्मण ने खुशी-खुशी राम से वल्कल छीन लिये तथा आनंद से पहन भी लिये। ३१ दो को वनवास प्राप्त होने से कैकेयी मन ही मन खुश हुई। मनुवंश श्रेष्ठ राम को पुनः उसने मुस्कुराते वल्कल प्रदान किए। इतने में

सरसरिसि शशिवदनॆ सभॆयलि भरवसदलॆतॆंदु रामन
चरणदलि चाचिदळु भाळव भक्तिभावदलि ॥ 32 ॥

देव बिन्नह निम्मदेहद मैवळिय नॆळलानला नी-
वे विचारिसि तनगॆ बेऱन्यन्न गतियुंटॆ
हूव सुरभि सुधांशु बिंबव ना विमल रुचि कीर्तिसद्ध-
र्मविळिय बिट्टिरलु बल्लवॆ यॆंदळा सीतॆ ॥ 33 ॥

बेड नी सुकुमारि नम्मॊड नाडुवरॆ कडुविह्सु कानन
वाडुवरु निम्मवरु नम्मनु लोक दुर्जनकॆ
बेडवी मातकट नम्मॊड नाडदिरु कौसलॆय सेवॆय
माडिकॊंडिरु साकु बंदव ळॆंदनवनिजॆय ॥ 34 ॥

हसिदडिल्लमृतान्नचय पवडिसुवडिल्ल मृदुस्तरणदि
दॆसॆव मणिपरियंक विहडलिल्लल मणिभवन
बिसिलु मळॆ चळिगळिगॆ सलॆसैरिसुव देहवॆ निन्नदिदु धी-
वसतनक्कावंजुवॆवु कॆलसारु नीनॆंद ॥ 35 ॥

पतिय सुखदुःखंगळॊळगनु गतॆ यॆनिसदवळावलोकद
गतिय नैदुव ळॆंबुदनु नीवे विचारदलि

सीता सरपट सभा में पहुँची और उसने भक्तिभावपरिपूर्ण हो राम के चरणों में माथा टेक प्रणाम किया। ३२ "स्वामिन्, मेरी विनती पर भी ग़ौर कीजिए। क्या मैं आपकी देहानुगामिनी परछाई नहीं हूँ ? आप ही सोच लीजिए। मेरे लिए अन्य अवलंब क्या हो सकता है ? खुशबू फूल को, चाँदनी चन्द्रबिम्ब को, कीर्ति सद्धर्म को छोड़ (अलग होकर) रह सकते है क्या ?" —इस तरह सीता ने राम से पूछा। ३३ "जानकी, तू सुकुमारी है। दुर्गम जंगलों में तू भी मेरे साथ भटकोगी ? नहीं, नहीं। तू जंगल मत आना। अगर तुझे जंगल ले जाऊँ तो तुम्हारे सगे मुझ पर थूकेंगे; मेरी बदनामी होगी। अतः वह बात ही न उठाना अच्छा है। यहाँ माँ कौसल्या की सेवा में समय लगा। तू साथ आने की बात जो कहती है —यही बहुत कुछ है।" इस तरह राम ने जानकी को समझाया। ३४ "भूख लगती है तो जंगल में अमृतान्न कहाँ प्राप्त हो ? सोने के लिए मुलायम गद्देदार पलंग कहाँ ? निवास के लिए रत्नखचित महल कहाँ ? तुम्हारी यह सुकुमार देह धूप, जाड़ा, बरसात वग़ैरः को कैसे सह सकेगी ? क्या वह इस लायक है ? तुम्हारा साहस देख मुझे डर लग रहा है। बस है। लौट चलो तुम।" इस तरह राम ने कहा। ३५

श्रुतिगे कोरतेय तारदिद्दा स्थितियले करुणिसुवदेंद
च्युतन नोडबडिसिदळु पतिभजनानु भावदलि ॥ 36 ॥
इन्नु नीने बल्ले बळलिकेंगेन्न सम्मतवल्ल मुंदणि
गिन्नु कोयेंदित्तना क्षामांबरव सतिगे
मुन्न दुःखदोळिडिद दुःख विपन्न रोदरिदरश्रुधारा
पन्नवटु परिसर विलासद गाळुमेळिनलि ॥ 37 ॥
हसुळे गाय्ते विपत्तकट समनिसिते सुकुमारिगे वनांतर
वसति संभविसित्ते शिशुविगे वन परिभ्रमण
दशरथन सोसेयागि जनकनबसुरबंदुडदुण्णदीया
यसःटेन्न संदौतायेयेंदळु कौसलादेवी ॥ 38 ॥
करेदु तंगिगे हेळ लागदे गुरु सुमंत्रकरकट नीवे
नेरव बंदिरे तायगळिर सोसेयल्लवे निमगे
अरसियरोळै नूर रोळगोब्बरिगे हुट्टदे करुणवकटा
निरपराधिगे तक्कुदे वनवेंदळा कांते ॥ 39 ॥

"पति के सुख-दुख में सहधर्मिणी न होनेवाली सती साध्वी को किस लोक की गति निर्धारित है? —आप ही सोच-समझकर बताइये। वेद-प्रतिपादित धर्म की च्युति न हो—इस प्रकार की रीति का निरूपण करने की कृपा कीजिए।" —इस तरह कहते हुए पतिभक्तिभावसंपन्ना सीता ने राम को मना लिया। ३६ "अब तो तुम्हीं जानती हो। मैं यह नहीं चाहता कि तुम वनभ्रमण की भयानक यातना मेरे साथ भुगतो। यह लो" —इस तरह कहते हुए वल्कल परिधान राम ने सीता को दिया। यह देखकर, पहले ही जो दुखतप्त थे अब और अधिक दुःख से तपते हुए अश्रुधारा बहाते हुए जमे हुए लोगों के शोरगुल के बीच रोने लगे। ३७ "मेरी बिटिया, तू भी इस विपत्ति का शिकार बनी न! मेरे सुकुमारों को अरण्यवास भुगतना पड़ा न? इस सुकोमल उम्र में जंगल-जंगल भटकना पड़ा न! हाय रे दैव! राजा दशरथ की बहू बनकर, जनक राजा के यहाँ पैदा होकर, खा-पीकर सुखी रहने के बदले इस प्रकार के कष्टों को भुगतने की बारी आयी न मेरी बेटी!" —इस तरह कौसल्या प्रलाप करने लगी। ३८ "बहिन (कैकेयी) को बुलाकर गुरु वसिष्ठ, सुमंत्र उसको क्यों नहीं समझाते? माताओ! क्या तुम बंधक (उधार) में आयी हो? क्या सीता तुम्हारी बहू नहीं? पाँच सौ रानियों में एक को भी करुणा छू नहीं सकती? निरपराधिनी सीता के लिए क्या वनवास ठीक है?" —इस तरह कौसल्या ने पूछा। ३९ कौसल्या आगे बढ़ी; सीता के गले से अपना

कोरळ डोक्कुरवाध्दु हणेयिदोरसि हणेयनु गल्लवनु पिडि
देरडु कैयिंदोलदु मोह्दलोसदु मुंडाडि
मरळि मरळीक्षिसि निजांत करणदतुळव्यथेय सुय्दिलन
शिरद तूगिन तळ्ळवारिनलळलिदळु कांते ॥ 40 ॥
संतविसुतत्तेयनु सतिनिज कांत नित्ता नार सीरेय
नंतरिक्षद सुरवधू निकुरुंब कंबनिय
तुंतुरलि तुळुकाडे वळिकाचंत शून्यन सुखमयन वि-
क्रांतधीरन नोड्डुतुट्टळु कळचदंबरव ॥ 41 ॥
अेद्दु कोपदलबुजभवसुत नेद्दु हरितंदवनिसुते सु-
त्तिदं नूतन नारसीरेय सेळेदु सीळ्दिक्कि
अद्दलिसिदनु कैकेयनु कडुगद्दलवु घनवाय्तला नी-
निद्द हवणिनलिरलश्रियेला येनुत गर्जिसिद ॥ 42 ॥
तरणि वंश परंपरेय भूवररि गवनिय पट्ट ज्येष्ठरि
गुरुवुदल्लदे वेरे सल्लदु तत्कनिष्ठरिगे
हिरिदु नाव् सैरिसिदडंजदे धरणिसुते वल्कलव नुडुवुद-
कुरिसलहुदे येनुत किडिकिडि यादना मुनिप ॥ 43 ॥

गला मिलाया; माथे से माथा रगड़ा; दोनों गालों को अपने हाथों में ले बेहद प्यार से झकझोरने लगी। बार-बार सीता की तरफ़ देखतीं; दुःख उमड़ आता। निःश्वास लेते सिर झूल गया। आँखों से अश्रु की अविरल धारा-प्रवाह मानों बहने लगा। (किसी प्रकार) दुःख सहने की सीमा पार कर गया। ४० सीता सास को सांत्वना देते हुए, अपने पहने वस्त्र बिना उतारे, अन्त-रहित सुखमय महापराक्रमी राम की तरफ़ देखते हुए उसके दिए हुए वल्कल दुकूल उसने धारण कर लिये। इसे देखते हुए देवता स्त्रियों की आँखें डबडबा आयीं। ४१ (इन सब हरकतों को) सह न सकने के कारण क्रोधाविष्ट वसिष्ठ उठकर आए, सीता से लपेट लिये गये नये वल्कल दुकूल खींच डाले तथा उनको उन्होंने फाड़ डाला। कैकेयी को डाँटते-डपटते हुए कहने लगे, "तुम्हारे कोलाहल की हद हो गयी। चुपचाप पड़ी रहना क्या तू जानती नहीं?" —इस तरह वसिष्ठ जी गरजे। ४२ "सूर्यवंशीय राजाओं की परम्परा में राजगद्दी सबसे ज्येष्ठ को प्राप्त होती है; न कि छोटों को। हमारी भी सहनशीलता की एक हद होती है। इसका लाभ उठाकर सीता को वल्कल धरण करने को बाध्य कर हमको जलाना चाहती हो न?" —इस तरह कहते-

तरिसि दिव्य दुकूलवनु परिपरिय दिव्य विभूषणंगळ
सुरकुसुम मोदलाद दिव्य सुगंध सारदलि
तरुणियर कैयिंदरुंधतियरस सतियनलंकरिसि मिगे
हरसि रामन वामभागके कळुहि कुळ्ळिर्द ॥ 44 ॥

मनदोळंजदे मुनिय वचनद मोनेगे तेक्कदे कैयोडने का-
मिनि ककुत्स्थान्वयगे तंदळु मत्ते वल्कलव
वननिवास धराधिपत्यद जनपतन दुडुगोरे यिदीगे-
देनुत मोळे नगेयिंद हरसिदळवनिजेश्वरन ॥ 45 ॥

उट्ट नीतनु बिगिदु सुरगिय कट्टि कटियलि तिरुगि तन्नोड
वुट्टिदन नीक्षिसलु तंदनु चापा मार्गणव
पट्टदरसिगे पोडविपगे पोडमट्टु गुरुपदकभिनमिसि पोर-
मट्टना वैदेहि सहितरमनेयना राम ॥ 46 ॥

अनुजना क्रमदिंद वंदिसि जननियनु बीळ्कोळे सुमित्रा
वनिते नुडिदळु कंद केळै राघवेश्वरन
जनप दशरथनंते काबुदु जनकजेय नेन्नंते काबुदु
वनवायोधियेंदु बगे नडे येंदळा काते ॥ 47 ॥

कहते वसिष्ठजी आगबबूला हो गये। ४३ रेशम के सुन्दर-सुन्दर कपड़े, तरह-तरह के मनोहर आभूषण, देवलोक के पुष्प, दिव्य परिमलयुक्त द्रव्य आदि मँगवाकर अरुन्धती के पति वसिष्ठजी ने स्त्रियों द्वारा सीता को अलंकृत करवाया। फिर खूब आशीर्वाद देते हुए राम के वाम भाग में उसे भिजवाते हुए (अपने आसन पर) बैठ गये। ४४ कैकेयी यत्किंचित् भी नहीं डरी। वसिष्ठ मुनि के पैने वाग्-बाणों से जरा भी अधीर न होते, राम के लिए वल्कल दुकूल खुद ले आयी! 'जंगल के राज्य-भार (शासनाधिकार) को वहन करने के लिए इसे भेंट समझो, कहती हुई मुस्कुराती कैकेयी ने राम को वल्कल देकर आशीर्वाद दिए। ४५ राम ने वल्कल धारण किए। कमर में तलवार बाँध ली। फिर जब लक्ष्मण की ओर देखा तो उसने धनुर्बाण ला दिये। पटरानी कौसल्या तथा दशरथ के चरण छुए। फिर गुरु के चरण छुए। तदनंतर सीता के साथ राम ने राजमहल त्यागा। फिर रवाना हुए। ४६ भाई लक्ष्मण भी बड़े भैया से आचरित क्रम से वन्दना करते हुए, अपनी माँ की आज्ञा प्राप्त करने के लिए सुमित्रादेवी के यहाँ उपस्थित हुए। सुनो बेटे, "रघु राम को राजा दशरथ की तरह और सीता को तेरी माँ मेरी तरह (सदृश) देखो। जंगल को ही

आ सुमित्रा देवि नडेतंदा सरोजांबकन कैयलि
सूसुवश्रुगळिंद कॊट्टळु तन्न नंदनन
दाशरथि केळ् तरळ निवनति रोषगर्वित नीतनलि गुण
दोषवनु भाविसदे सलहेंदित्तळर्भकन ॥ 48 ॥
वळिकबुधि परिवळयदवनी तळद रायर राज वैभव
निळयवनु वैशाख सित पंचमिय दिवसदलि
घळिगे हदिनारॆरलि पुष्यद सुळिविनुच्चग्रहद दृष्टिय
लिळॆय मगळूमिळॆय वल्लभ सहित हॊरवंट ॥ 49 ॥
कूडॆ हॊरवंट्टदु सुमंत्रक गूडि सचिव पसायितरु हॊर
बीड बिट्टुदु मुंदॆ मन्नॆय मंडलेश्वररु
कूडॆ सरकिन बंडि बिडदॆडॆ याडिदवु राजोपकरणद
जोडणॆय पसरिकॆय पाळय तॆरळितगलदलि ॥ 50 ॥
दारिदॆगॆदवु मुंदॆ हूडिद तेरुगळु हण्णिद मनस्तं
भेरमावळि हल्लणिसिद हयाळि मणिमयद
भूरिभूषण वस्त्र शस्त्रद भारणॆय भटरुगळगुडि गू-
डार कॊट्टिगॆ लाय सहित समस्त नृपनिकर ॥ 51 ॥

अयोध्या मानो। चलो।" —इस तरह सुमित्रा ने अपने बेटे को समझाया। ४७ सुमित्रादेवी राम के पास चली आयी। अश्रुधारा बहाते हुए लक्ष्मण के हाथ को कमलाक्ष राम के हाथ में देते हुए बोली— "सुनो दाशरथी, यह अभी बच्चा है शीघ्र क्रोधी स्वभाव के कारण बार-बार उद्वेग का शिकार बनता है। [illegible] गलत-सलत बातों का ध्यान न धरते —इसकी रक्षा कर।" इस तरह कहते हुए बेटे को सौंप दिया। ४८ वैशाख मास शुक्लपक्ष पंचमी तिथि के दिन सोलह घड़ी पुष्य नक्षत्र के रहते उच्च (श्रेष्ठ) ग्रहों की दृष्टि से संयुक्त सुमुहूर्त में भूमिसुता सीता तथा उर्मिला पति लक्ष्मण के साथ राम सागर तक फैले जगत के अधिपति अयोध्या के राजाओं के वैभवसंपन्न राजमहल से रवाना हुए। ४९ सुमंत्र के साथ मंत्रीगण, सामंत राजा, राम के साथ रवाना हुए। सामने नेता तथा मंडलाधिपतियों ने जाकर बाहरी डेरा डाला। साथ में सामान से लदी गाड़ियाँ इकट्ठी होकर चलीं। राजोपकरणों को ढोए बहुत बड़ा पारिवारिक समूह चल पड़ा। ५० सजे हुए रथ, मदोन्मत्त हाथी, पीठ पर जीन कसे घोड़े, आगे की क़तार में यात्रा करने लगे। असंख्य वस्तुएँ, अस्त्र, शस्त्र धारे वीर, डेरे, गोशालाएँ, घुड़साल आदि के साथ समस्त

हरिजगद्रक्षेगे सुधासागरव होरवडुवंतयोध्या
पुरव होरवंटनु दशग्रीवादि राक्षसर
हरण संहरणार्थदलि शंकर विरंचि सुरेंद्ररभ्रद
लरळ मळेगरेदरु जयानक रवद रभसदलि ॥ 52 ॥

तरहरिके कैगूडदवनीश्वरनु कौसले सहित बळलुव
शिरद बिडुमंडेगळ बीळुव नयन वारियलि
तरुणियर हेगलिनलिचाचिद करद कालनडेयिंद कडुका-
हुरद कट्टळलिकेयलैदिदनवनिजा पतिय ॥ 53 ॥

तेरळुतिदे मज्जीव रत्नाभरण तन्न मनोरथद सिरि
सरिवुतिदे रघुराजवंशद बहळ भाग्यनिधि
पुरव होरवडुतिदे मदीय स्फुरित चंद्रम कल्पपादप
पुरुष निर्जर धेनु बिडुतिदे तन्ननकटंद ॥ 54 ॥

अकट सेळेदरो जीर्णदेहांधकन हस्तद यष्टियनु कौ-
ळिकव तोरिदने विधात्रनु पुत्र मोहकद
सुकृत हीनरु नावले वार्धिकदलादुदे सुतवियोग
प्रकट पातक फलवेनुत मोरेयिट्टना भूप ॥ 55 ॥

राजवृन्द रवाना हुए। ५१ जगत्‌रक्षा के लिए भगवान विष्णु जैसे क्षीर-समुद्र छोड़ रवाना होते हैं, उसी प्रकार रावण आदि दुष्ट राक्षस-संहार के हेतु राम अयोध्या छोड़ चले। तब ईश्वर, ब्रह्मा, देवेन्द्र आदि देवताओं ने जय-जयकार करते हुए आकाश से पुष्पवर्षा की। ५२ होश-हवास खोए राजा दशरथ सिर झुकाए, नंगे सिर, आँसू बहाते हुए कौसल्या के साथ रवाना हुए। रानियों के कंधों पर हाथ धरे, पैदल-पैदल दुःख तथा उद्वेग से भरे वे जानकीपति के पास पहुँचे। ५३ "मेरा जीव रूपी रत्न मुझसे (बिलगकर) जा रहा है। रघुवंश की अतुल संपदा अयोध्या त्यजकर जा रही है। मेरी महात्वाकांक्षा का भाग्य मुझे छोड़े जा रहा है। चमकता चांद, कल्पवृक्ष, स्पर्शमणि, कामधेनु जो सब कुछ था —ऐसा मेरा राम आज मुझसे दूर जा रहा है।" —इस तरह दशरथ कई प्रकार से प्रलाप करने लगे। ५४ "बुढ़ापे से अंधे बने मेरे हाथ की लकड़ी छीनी गयी न? क्या विधि ने पुत्र-मोह रूपी माया का जाल फैलाया? हमीं अभागे हैं न जो पुण्यराशि को खो बैठे। इस बुढ़ापे में बच्चों की विरह भुगतनी पड़ रही है न? निश्चित रूप से ये मेरे पापों का फल है। इसमें कोई शक नहीं।" —इस तरह दशरथ गिड़गिड़ाने लगे। ५५

निलिसलागदें तंदेगळिरिभ कळभनन्नु हरिपोतननु मं-
जुळ मनोजातननु मन्मनरत्न मुकुरवनु
निलिसिरै नीवेंनुतला कौसलें कळल्चिद मुडिय कंवनि
दुळुकें कॆलबलकळवळिवु तॊऱलिदळु देसॆदेसॆगॆ ॥ 56 ॥
बिट्टु कळॆदे मगनॆ नम्मनु बट्ट बयलॊळ गिरिसिदै हॊग-
गुट्टिदै काळ्गिच्चिनलि कामेष्टियलि पडॆद
हॊट्टॆ बऱुदॊऱॆ यायिते कंगॆट्टॆ वैयलॆ कंद हायॆ
दॊट्टि वोऱलिदळबलॆ कंवनि दुंबॆ पौरजन ॥ 57 ॥
इरिसि हॊहरॆ कंद जव्वन जरिद जननिय जनकरनु नि-
ष्करितकिदु ता गुणवॆ पितृ सेवा प्रसिद्धरिगॆ
करगदकटा चित्त वॆम्मिब्बरलि बिड वीसुवरॆ हेळै
तरुण नमगिन्नेनु गतियॆंदॊऱलिदळु कांतॆ ॥ 58 ॥
आर नोडिदरवरु लोचन वारिधारा कलित गद्गद
पूरणद कठदलि कर पल्लवद गल्लदलि
ऊर हॊऱवंटरु नरेंद्रन पौरजन बिडलाऱदा रघु
वीरननु विश्रुत सुधार्मिक सार्वभौमकन ॥ 59 ॥

"मदोन्मत्त इस मेरे हाथी के बच्चे को रोकने की ताक़त क्या किसी में नही ? इस मेरे शेर के बच्चे को, मनोहर मन्मथ को (जंगल जाने से) कोई विमुख नहीं कर सकता ? आप सभी मिलकर मेरे मन के इस रत्न मुकुर को रोक रखिए।" —इस तरह कहते, बालों को छितराए अधीर बनी कौसल्या चारों ओर देखती, आँसू बहाती याचना करने लगी। ५६ हमें छोड़ चले गये न मेरे लाडले ! हमें रास्ते का कंगाल बना दिया न मेरे बेटे ? भयानक दावाग्नि में हमें झोंक दिया न ? पुत्रकामेष्टि यज्ञ से जो तुमको पाया —वह सब बेकार हुआ न ? हाय मेरे बेटे ! हमें कंगाल कर दिया न ? इस तरह चीखती-चिल्लाती कौसल्या के करुण-क्रंदन से सारी अयोध्या नगरी आँसू बहाने लगी। ५७ "बूढ़े माँ-बाप को इस तरह छोड़ जाना ठीक है क्या बेटे ! तुझ जैसे समझदार पितृसेवानिरत व्यक्ति को क्या यह शोभा देता है ? हम दोनों को देख तेरा हृदय पिघलता नहीं ? क्या हमें इस तरह मँझधार में छोड़ जाओगे ? हमारे लिए अब अवलंब कहाँ ?" —इस तरह कौसल्या प्रलाप करने लगी। ५८ जिस किसी को देखो, हर एक आँखों में अश्रु भरे, बिलखते, गाल पर हाथ धरे दुःख प्रकट कर रहे थे। सद्धर्मपरिपालक चक्रवर्ती राम को छोड़ने में अपने को

तेरळि तष्टादश महाप्रजे पुरदोळिल्लू ळलिके नाय् पा-
ळ्गरेदुदा पुरवारिगेनोळ्ळिदनो रघुनाथ
तोरवेयधिपति राय नरकेसरिय चरणव सज्जनरु बि-
ट्टिरलु बल्लरे कंद कुश केळेंदु मुनि नुडिद ॥ 60 ॥

नाल्कनेय संधि

सूचने— वीर रघुपति बिमलतर भागीरथियनुत्तरिसि गुहनिं सारिदनु वर चित्रकूट महामहीधरव ।

केळिदै कुश नगरवदु नेरे हाळे निसिदुद नरिदु कडु घा-
ताळि गंडन तडेदु नुडिदळु जडिव रोषदलि
आळलवनिय निन्न मगनु वनाळि येंबुद देके बंदुदु
कौळिकद वरवेनुत कटकिय नुडिदळा कैके ॥ 1 ॥
अरस केळै लोपवादुदु वरवु निन्नय सत्यवचनके
मरळुदले युटेंबुदनु नानरियदादेनल

असमर्थ पाकर पुरजन नगर छोड़कर चलने लगे। ५९ पुरोहित, दंडनाथ, मंत्री, प्रधान आदि अठारह महाप्रधान, राम के साथ चल पड़े। भूँकने के लिए एक कुत्ता भी राजधानी में न रहा। सारी राजधानी मानों खंडहर बनी थी। राम जिस किसी के लिए कितने अच्छे हैं! वाल्मीकि मुनिवर पूछने लगे —बोलो कुश, तोरवे के स्वामी नरसिंहावतारी श्रीराम की चरण-सेवा से कौन सज्जन वंचित रह सकते हैं? ६०

चौथी संधि

सूचना— गुह की सहायता से वीर रघुपति ने पवित्र गंगानदी पार की तथा वे चित्रकूट पर्वत चले गये।

सुनो कुश; अयोध्या नगर खंडहर जैसा लगा। इसे देख, गुस्से में आयी वह चुड़ैल (कैकेयी) दशरथ को रोककर कहने लगी— "तुम्हारा बेटा ही राज्य करे। उसे वन क्यों भेज रहे हो? तुम्हारा यह वरदान धोखे का रहा।" इस तरह ताना देते हुए बोली। १ "राजन्! तुम्हारा वर देना झूठ साबित हुआ। तुम्हारा दिया गया यह सत्यवचन इस तरह बेकार होगा यह मैं जान न सकी। २ [illegible] की [illegible] नाहक मैं फँस गयी। मैं [illegible] इस

धरॆय जन संकुलद जिह्वांकुरद कण्टकॆ सीमॆ यादॆनु
मरुळुतन तनगिद्दुदॆंदळु कॆकॆ कोपदलि ॥ 2 ॥

अरिदना कॆकॆय विवादद तॆरननना रघुनाथ नम्मनु
कॊरतॆ नॆम्मदॆ माणदिर दॆंदाप्त मंत्रिगळ
पुरजनव परिजनवनुचितोत्करद वचनदला सतिय नि-
भॆरद रोषव बिडिसि कॊट्टनु नमिसि विनयदलि ॥ 3 ॥

तिरुगि नीविन्नॆन्न दॆसॆगुब्बरद चिंतॆय ताळदिरि तं-
दिरिसि तत्पुरदाधिपत्यकॆ भरत भूपतिय
गुरु वसिष्ठन कळुहदिरि निम्मरसि कौसल्या सतियनुप-
चरिसि कॊंडिहुदॆंदु तंदॆगॆ नमिसिदनु राम ॥ 4 ॥

कंद केळीरॆळु वरुषवु संद वळिकी नगरविदु नि-
न्निंद पालिसि कॊळलि को मुद्रिकॆय नीनॆंदु
संदणिसुवश्रुगळला निज नंदनन किरु बॆरळिगिट्टं
तॆंदु नुडिदनु वरसुमंत्रंगा महीपाल ॥ 5 ॥

तरिसु नम्मय विमल मणि बंधुर वरूथवनिवर कॊंडॊ-
य्दिरिसि बा कळुहिदरॆ कळुहदिररु समीपदलि

तरह गुस्से में आकर कैकेयी बोली। २ कैकेयी का क्रोधपूर्ण स्वरूप राम पहचान गया। अपने को कलंकित न होना पड़े, इस तरह विचार करते हुए राम ने निजी सचिव, मंत्रिजन, पुरजन, परिजन आदियों को बुलाकर समयोचित बातों से उन्हें समझाकर, मनवाकर, क्रोधतप्त कैकेयी को समझा-बुझाकर विनयपूर्ण रीति से प्रणाम कर भिजवा दिया। ३ "मेरे बारे में फिर आप अधिक सोच-विचार में न पड़ें। राजा भरत को बुलवाकर अयोध्या का आधिपत्य उसे सौंप दें। वसिष्ठ महर्षि को मत भेजिए। (माता) कौसल्या रानी की देखभाल करें।" —इस तरह निवेदन करते हुए राम ने पिताजी के चरणों में माथा नवाया। ४ "बेटे, चौदह वर्ष की अवधि समाप्त होने पर अयोध्या लौट आकर राज्य सँभालो। यह लो राज-मुद्रिका।" इस तरह कहते दशरथ की आँखें डबडबा आयीं। फिर राम को राजमुद्रिका पहनाते सुमंत्र से यों कहने लगे। ५ "हमारा रत्नमय सुन्दर रथ मँगवाओ। उसमें इनको बिठा ले जाओ। अगर तुम्हें वापस आने की अनुमति मिले तो आ जाओ। नहीं तो इन्हीं के साथ रहो। अब तुम वन हो आओ।" इस तरह कहकर आँसुओं की झड़ी बरसाते हुए उनको विदा किया। राम के विरह से

तॆरळि नीवॆंदश्रुकणदुब्बरदलवरनु वीळु कॊट्टनु
मरुगिदुदु जनजाल विरहदला ककुत्स्थजन ॥ 6 ॥
अमॆयलिनॊडनिद्दु तॊलगिद हिमकरनवॊलु रघुकुलांबर
हिमकरण नगलिदनु विपिनवियद्विभागदलि
द्युमणिकुल पार्थिव सरोज द्युमणि दशरथ रायना प-
श्चिमद तरणिय तेजदलि तिरुगिदनु पट्टणकॆ ॥ 7 ॥
बळिक सरयुव दांटि गगनद नळिन मित्रंगर्घ्य वारिय
तुळुकि रथवेरिदनु सीता देवियरु सहित
चळगतिय वाजिगळु कॊंडॊय्दिळुहिदवु तमसॆ यलि नाल्वरु
कळिदरा तीरदलि जलदाहारदलि तमिय ॥ 8 ॥
मरुदिवस वेदावतिय सार्दरु बळिक्कवरल्लि रजनिय
परिहरिसि दांटिदरु नदियनु मूरनॆय दिवस
हरिपदोद्भवॆयनु जगत्रय परम पावनॆयनु पुरत्रय
हरशिरो मंडितॆय नैदिदरस्त मानदलि ॥ 9 ॥
अंदिनिरुळनु कळिदु बळिकरविंदसखनुदय दलमात्यं
गॆंदना रघुनाथनागत कार्यदनुनयव

सारा जनसमुदाय शोकसंतप्त हुआ। ६ अमावास्या के दिन सूर्य के साथ विलीन होकर अदृश्य होनेवाले चन्द्रमा की तरह रघुकुल रूपी आकाश के चन्द्रमा श्रीरामचन्द्र अरण्य रूपी आकाश में अदृश्य हो गये। रविवंशीय राजा रूपी कमलों के लिए सूर्य-सदृश राजा दशरथ पश्चिम दिशा में अस्तंगत सूर्यतेज-सदृश हो अयोध्या लौटे। ७ राम, सीता, लक्ष्मण यात्रा करते हुए सरयू नदी पार करते हैं। भगवान् सूर्य को अर्घ्य प्रदान कर सीतादेवी के साथ रथ पर सवार होते हैं। शीघ्रगामी घोड़े उन्हें तमसा नदी के किनारे उतार देते हैं। वहाँ उन्होंने पानी पीकर पेट भर लिया; फिर उसी तमसा नदी के किनारे रात काटी। ८ दूसरे दिन वे वेदावती नदी किनारे पहुँचे। उस दिन की रात वहाँ बिताकर तीसरे दिन नदी पार की। उस दिन सूरज के डूबते समय शिवजी के जटाजूट को अलंकृत करनेवाली विष्णुपादोद्भवा त्रिलोकपावनी गंगा के नज़दीक पहुँचे। ९ उस दिन की रात वहाँ वितायी। फिर दूसरे दिन सूर्योदय के समय रघुनाथ ने सुमंत्र के साथ भविष्य के राज्य-कार्य-शासन सम्बन्धी चर्चा बड़े ही स्नेहपूर्ण ढंग से की। "न जाने मेरे पिताजी की दशा क्या हुई हो। भरत तो अभी तक पहुँचा न होगा।

तंदेयेनागिह्नों भरतनु बंदुदिल्लाप्तरुगळय्यन
मुंदिररु नडॆ पितन नारॆ होगु नीनॆंद ॥ 10 ॥
तॆरळु ताय्गळ शोकवनु परिह्रिसु कैकॆय पुरिगॆ दूतर
हरिसु भरतन करॆसु कैवर्तिसु महीतळव
वरुष ह्दिनाल्कक्कयोध्यापुरिगॆ बहॆनी ह्दनना भू-
वरगॆ विन्नह माडॆनुत बीळ्कॊट्टना राम ॥ 11 ॥
बिडलरिय दवरुगळ नळललि मिडुकुतिरला मंत्रि मंत्रिय
मुडुह ह्डिदल्लडि मिगॆ बिगियप्पि मस्तकव
बिडुनृपालन जीव शरधिगॆ वडबनो चन्द्रमनॊ सांकि-
न्नडिगडिगॆ हेळुवडॆ नीने नन्नने यॆंद ॥ 12 ॥
आ सुमंत्रन संतविसि बळिका सरित्तीर दल्लि कळुहिद
ना सरोजांबकनु विनयदलधिक तेजदलि
दाशरथि सुत केळ् कपर्दिय मैसिरिय मिक्कनु शिरो वि-
न्यास विलल जटा निबंधद नाटकांगदलि ॥ 13 ॥
बंदु कंडनु गुह्नु चरण द्वंद्वदलि चाचिदनु परमा-
नंद भक्तियलुपचरिसिदनु राघवेश्वरन

निजी हितैषी पिताजी के पास कोई नहीं है, अतः तुम जाओ। पिताजी की देखभाल करो। १० तुम जाकर मेरी माताओं का दुःख दूर करो। कैकेयी के पिता की राजधानी को दूत दौड़ाकर शीघ्रातिशीघ्र भरतजी को बुला लो। उसे राज्याधिकार सौंप दो। चौदह वर्षों की अवधि समाप्त होते ही अयोध्या लौटूंगा। यह मेरा निवेदन राजा दशरथ से कह दो।" —आदि बातें समझाकर सुमंत्र को राम ने भेज दिया। ११ 'श्रीराम-लक्ष्मण को कैसे छोड़ जाऊँ ?' —इस असमंजस में पड़े, चटपटाते सुमंत्र के भुजदंड पकड़ उसे हिलाते हुए राम ने उनका माथा अपनी भुजाओं में कसकर कहा— "बस करो अब अपना दुःख। राजा दशरथ के दुःख सागर के लिए तुम बड़वाग्निस्वरूप बनोगे या चंद्रमा ! बस है ! बार-बार तुम जैसे समझदार को समझाना क्या ठीक है ?" इस तरह राम ने पूछा। १२ राम ने सुमंत्र को काफ़ी सांत्वना दी। फिर उसे गंगा के किनारे से ही विनयपूर्वक बिदा किया। तत्पश्चात् सिर के बालों को सँवारकर जटाजूट (जूड़े) में बाँधकर जटाधारी शिव के तेज से बढ़कर तेजस्विता राम ने पायी। मानव की तरह जूड़ा बाँध लेना अवतारी पुरुष के नर-नाटक-लीला का एक अंग ही है। १३ गुह ने आकर राम के दर्शन कर लिये, फिर चरण छू लिये। अत्यंत आनंद से उसने भक्तिपूर्वक परिचर्या की।

मुंदे जावद मेलॆ नावॆगळिंद नदियनु दाटि बळिक-
ल्लिद तॆरळिद रिवरु मूवरु कालुनडॆगळलि ॥ 14 ॥

कुशनॆ केळु निदाघ समयद बिसिल बेगॆगॆ बॆंदु नेलनू-
ष्णिसितलै कडुगाद कावलियंतॆ कडलुगळु
बिसिगुदिय लुक्किदवु सिडिदवु वसुमतीधर शिखर विवरा
यसवनेवेळुवॆनु बळलिदरा वनांतदलि ॥ 15 ॥

मुसुडुगळु कंदिदवु कुंदिद वॆसॆव तनुकांतिगळु पदसा-
रसद सॊपडगिदवु कदडिदवक्षि कॆंपिनलि
कसरिकॊय कापथद कट्टाथसवु तडॆदुदु निम्मरायन
शशिमुखिय नापत्ति गॊळगागद रदारॆंद ॥ 16 ॥

अडिगॆ निलुवळु कुळ्ळिरुवळडिगडिगॆ सुय्वळु बळलुवळु बा-
य्बिडुवळेळुव ळळुकुवळु बळुकुवळु मॆल्लडिय
इडलरिय दिन्नॆनितु कानन दॆडॆयॆनुत बॆस गॊंबळीपरि
नडॆ नडॆदु नडॆगॆट्टु नॆम्मिद ळात्मवल्लभन ॥ 17 ॥

एक याम (प्रहर) बीतने पर, नावों में (बैठकर) उन्होंने नदी पार की। फिर तीनों पैदल ही आगे की यात्रा करने लगे। १४ सुनो कुश, "वे गरमी के दिन थे। कड़क धूप के कारण चूल्हे पर रखे तवे की भाँति धरती तप गयी। समुद्र का पानी खौलकर उमड़ने लगा। पहाड़ की चोटियाँ छिटक गयीं। कड़ी धूप की लू से जंगल में जो तकलीफ़ और थकावट उनको हुई उसका वर्णन किन शब्दों में करें?" —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। १५ उनके मुखड़े कुम्हला गये। देह की क़ांति विनष्ट हुई। चरण-कमलों की सुन्दरता ग़ायब हुई। आँखें तपकर अंगारे बनीं। धूल भरे, जंगल के कठोर रास्तों पर चलते-चलते जो थकावट हुई इससे त्रस्त होकर तुम्हारे पिता की पत्नी (तुम्हारी माँ सीता) रुककर खड़ी रही। दशरथ जैसे राजा की बहू की यह दुर्गति हो तो विपत्ति किसका पीछा नहीं करती? १६ सीता एक क़दम चलती है फिर (चल न सकने के कारण) रुक जाती है। चल न सकने के कारण बैठ जाती है; लम्बी-लम्बी साँस भरती है। थककर हाँफने लगती है। उठने की कोशिश करते थरथर काँपने लगती है। अपने कोमल चरणों को धरती पर टेक न सकने के कारण पूछ बैठती है— "जंगल का यह बीहड़ रास्ता और कितना लम्बा है?" १७ पत्नी का मुखड़ा देख राम की आँखें डबडबा

तुंबिद्नु कंबनिय नात्मनि तुंबिनिय मोग नोडि मेल्लने
नंबिसिद निद सारे नोडिदें नोडुकांतार
अंबुजाकरवल्लि फलनिकुरुंबवल्लि समग्रवी रवि
बिंबदुग्राटोप रूपिसदरसि केळेंद ॥ 18 ॥

तेगेदु दारिगे हेज्जे हेज्जेगे चिगुरु दोऱिद तळिर पऱि पऱि
दगलदलि पसरिसुत पदकंटकव पंटिसुत
मोगके मुत्तुगदेलेय मऱेविडि दगलि दुम्महदिद जनकन
मगळ नडेसुत तंदरोंदु महा सरोवरके ॥ 19 ॥

अंचे शुक पिक चक्रवाक क्रौंच वक कारंड मंडळि
यिंचरद मऱिदुंबिगळ मेळवद झेंकृतिय
संचरिप शफरिगळ सारस दंचितद कलुहार कैरव
संचयद सौरभ्य पवननिनेसेदुदा सरसि ॥ 20 ॥

सुळिद नोय्यने शैत्य सलिलोच्चलित धूत तुषार भारा
कलितदळित सरोज गंध पराग योगदलि
तिळिगोळनं तडिविडिदु मंदस्खलित मारुतना वनाध्वद
बळलिकेय बिसजप्रियान्वयरंग वीथियलि ॥ 21 ॥

आयीं। "यहीं पास ही में, यह देखो, यही जंगल है।" —इस तरह ढाढस दिलाते हुए— "वह देख, वह सरोवर, फल-समृद्ध वृक्षों से वह घिरा है। वहाँ सूरज की गरमी सता नहीं पाती।" इस तरह राम ने कहा। १८ कोंपलें उखाड़ ला-लाकर सीता के चलते मार्ग पर उन्होंने फैला दिया। पैरों में चुभे काँटों को निकाल फेंकते धूप से आसरा (ओट) देने के उद्देश्य से पलाश-पत्र सीता के मुख के सामने धरे गये। माँ-बाप से बिलगने के दुःख के साथ-साथ जानकी को पैदल चलाते-चलाते एक बड़े सरोवर के नज़दीक लिवा ले गये। १९ सरोवर की तरफ़ से बहती हवा, (अपने साथ) हंस, तोता, कोयल, चक्रवाक, क्रौंच, वक, पानी की चिड़िया आदियों का मधुर स्वर, भ्रमरियों का मधुर झेंकार भर लायी। मछली तथा सारस पक्षियों के आवास के कारण सरोवर रमणीय था। कल्हार, कमल आदि फूलों पर बहते आयी हवा, खुशबू बिखेर रही थी। २० रविवंशीय राम, सीता, लक्ष्मण उन अरण्यप्रदेश के रास्तों पर से होकर आ रहे थे तब पानी के छींटों के कारण भारी बने बहती ठंडी हवा तथा कमलपुष्पपराग से सम्मिलित हो सुगंधित बना मंदमारुत उस स्वच्छ सरोवर के पानी पर से बहते आकर सूर्यवंशीयों के शरीरों को प्रसन्न करने लगा। २१ धूप की

झळद ढगॆ डावरिसॆ होक्करु कॊळन करचरणाननंगळ
तॊळॆदु कुडितॆयलींटिदरु निर्मळ हिमोदकव
कळिद रध्वश्रमवना तिळिगॊळन तीरद तळिरुदोरिद
नळनळिप मामरन नॆळललि मूवरवरॆंद ॥ 22 ॥

मूरुदिन दुप्पयण कुदकाहार वनिबरिगाय्तु कळिदरु
वारिजद कंदललि हसिवनु नाल्कनॆय दिवस
सारिदरु जाह्नविय यमुनॆय भारतिय संगमद मध्यद
पारिकांक्षिप्रवर भारद्वाज नाश्रमव ॥ 23 ॥

परम सत्कारदलि मुनियुप चरिसिदनु बळिकिवर गमनद
परिय नरिदनु परम पुरुषन नाटक स्थितिय
तरुण केळै बळिक निर्जर गुरुतनूभव चित्रकूटद
गिरिगॆ कळुहिदनिवरना मरुदिवस दुदयदलि ॥ 24 ॥

तुंगतरधानु प्रकीर्णद श्रृंगदुरु सानुविन सुरगि ल-
वंग कदळि तमाल चूत प्रमुख तरुलतॆय
संगदलि हरि शरभकुल सारंग सूकर हरिण मदमा-
तंग दॆडॆयाटदलि गिरि कंगॆसॆदुदिदिरिनलि ॥ 25 ॥

ज्वाला से थके वे (तीनों) सरोवर में उतरे; हाथ-मुँह धो लिया। स्वच्छ शीतल जल अंजली भर (पेट भर) पी लिया। रास्ते की थकावट दूर कर लेने के बाद उस साफ़ पानीवाले तालाब के किनारे के आम के पेड़ के नीचे की हरी घास तथा कोंपलों से पटी धरती पर तीनों ने विश्राम किया। २२ पानी पीकर पेट भर लेते हुए तीन दिन की यात्रा समाप्त की। चौथे दिन कमलनाल खाकर भूख मिटायी। तदनंतर गंगा-यमुना-सरस्वती नदियों के संगम के मध्यवर्ती प्रदेश के भारद्वाज मुनि के आश्रम पहुँचे। २३ राम-लक्ष्मणादियों का मुनि ने बहुत गौरव के साथ आदरातिथ्य किया। तदनंतर इनके आने का कारण जान लिया। तब (उनकी बातें जानकर) परमपुरुष भगवान की लीला के बारे में मुनि को आश्चर्य हुआ। युवक कुश ! सुनो। दूसरे दिन सुबह देव-गुरुपुत्र भारद्वाज ने उनको चित्रकूट पर्वत पर भेज दिया। २४ ऊँचे-ऊँचे चट्टानों से तथा चोटियों से और ढलुआनों से शोभायमान चित्रकूट सामने विराजमान था। उस पर सुगंधित फूलोंवाले ओकवृक्ष, लौंग, केले, करंजे, आम आदि के पेड़-पौधे भरे थे। इस प्रकार के उस पहाड़ी जंगल में, शेर, चीते, हाथी, हिरन, सुअर आदि कई प्रकार [illegible] रहे थे। २५

इरवु बलिकॆम्माश्रमदॊळा य्तरस रघुपतिगा महा भू-
धरद मध्यस्थळद ललित पलाश भवनदलि
तॊरवॆ यधिपति वीरनरकॆसरिय कैयलि बीळुकॊंडा
तरणिवंशद सचिवपति तिरुगिदनु पट्टणकॆ ॥ 26 ॥

ऐदनॆय संधि

सूचनॆ— चंडकरकुल कमलवन मार्तांड नस्तमिसिवनु पूर्वद तांडवन पितृशापबलि निजसुत वियोगदलि।

कॆळिदै कुश निम्म रघुभूपालकन कैयिंद गंगा
कूलदलि बीळ्कॊंड सेनानाथ दुगुडदलि
मेलु मुसुकिन मनद मरुकद जाळिसुव कंबनिय सुय्लिन
सूळुगळ संतापदलि तिरुगिदनु पट्टणकॆ ॥ 1 ॥
अगललाऱदॆ मुरिद मोरॆय दुगुडदलि हयवश्रुवारिय
नुगुळि गतिगुंदिदवु गुणभरितन वियोगदलि
मगुळॆ मगुळॆ सुमंत्र मनदुब्बॆगदलुऱॆ बॆंडागि विरहद
ढगॆय डिळ्ळायियलि बंदनु कौसलावतिगॆ ॥ 2 ॥

(उस) चित्रकूट के मध्यस्थित हमारे पलाश-पत्तों की कुटिया (पर्णकुटीर) में राम-लक्ष्मणादियों ने अपना निवासस्थान बना लिया। इधर 'तॊरवॆ' के वीर नरसिंह के अवतारी प्रभु श्रीराम से विदा लेकर रविकुल सचिव सुमंत्र आयोध्या लौट आये। इस तरह वाल्मीकि महर्षि ने 'कुश-लवों' को समझाया। २६

पाँचवी संधि

सूचना— पूर्व में तांडवमुनि के पिताजी के शाप के कारण बच्चों का विरह प्राप्त होने से रविकुल रूपी कमल को खिलाने का सामर्थ्य रखनेवाला प्रभु दशरथ रूपी सूर्य डूब गया।

सुनो कुश, गंगानदी के किनारे तुम्हारे रघु राम से विदा लेनेवाला सेनापति सुमंत्र अत्यंत दुःख से अपना मुँह ढाँपकर मन ही मन रोते, आँसू बहाते, दीर्घ निःश्वास लेते हुए अयोध्या लौट आया। १ सद्गुण-संपन्न राम से अलग होने में असमर्थ, रथ के घोड़े भी अपना मुँह घुमाकर (जिस तरफ़ राम गये हैं उस तरफ़) दुःख से आँसू बहाते, आगे क़दम बढ़ाने में असमर्थ हो, खड़े के खड़े रह गये। (रोकने पर भी) बार-बार छा जाते

तेरोळिवरनु काणदळलितु पौरजन वल्ललिराज-
द्वारवनु होक्कनु सुमंत्रनु शून्य हरुषदलि
वारिज प्रियनस्त शैलव सारॆ सारिदनक्षियुगळद
वारिगळ बीळिकॆय बिसुसुय्लिन महीपतिय ॥ 3 ॥
बिट्टु बंदै नंदनरनिळिविट्टु बंदै राजपुत्रर
नट्टडवियलि निर्जनारण्य प्रदेशदलि
कॆट्टुनुडिदरॆ तन्ननेनॆंदट्टिदरु निन्नवनु तनुविदु
तुट्टिसद मुन्निद्दुदनु हेळय्य तनगॆंद ॥ 4 ॥
जनप केळल्लिद तॆरळिद दिनदोळिद्दरु तमसॆयलि मरु-
दिन दोळिरवाय्तमल वेदावतिय तीरदलि
दिनवॆरडरॆ मेलॆ मंदाकिनियनैदिदरल्लि तन्ननु
जनपगिल्लाप्तरु गळॆंदट्टिदरु दुगुडदलि ॥ 5 ॥
बळिक लवरेनादरॆंबुद तिळिदु दिल्लॆनॆ केळुतवनिप
निळुहिदनु निजकायवनु कौसलॆयवक्षदलि
कळुहिदनु कैसन्नॆयलि निज निळयका मंत्रियनु भूपति
हळविसिद नडिगडिगॆ नॆनॆनॆनॆदा कुमारकर ॥ 6 ॥

हुए संताप के कारण सुमंत्र भी राम के विरह-ताप से जल-भुनकर काँपते-काँपते कौसलावती नगर पहुँचे। २ जिधर-तिधर खड़े पुरजन, नागरिक सुमंत्र के साथ रथ में राम आदियों को न देख बहुत ही दुःखी हुए। सुमंत्र (अपने साथ) दुःख को ढोए राजमहल के महाद्वार में प्रवेश करता है। सूरज डूब गया था। ऐसे समय सुमंत्र रोता हुआ, दीर्घ निःश्वास ले रहे दशरथ के पास पहुँचा। ३ "बच्चों को छोड़ आया न? राजकुमारों को सुनसान, बीहड़ घनघोर जंगल में उतार आये न? क्या मेरे बारे में उन्होने कुछ कुवचन कहे? तुमसे उन्होंने क्या कहला भेजा है? इस देह के गिर जाने से पहले, जो कुछ उन्होंने कहा है, उसे ज्यों के त्यों सुनाओ।" —इस तरह दशरथ ने पूछ लिया। ४ "सुनिए राजन्! यहाँ से जिस दिन निकले उस दिन तमसा नदी के किनारे पर वास किया। दूसरे दिन की रात वेदावती नदी के किनारे पर बितायी। दो दिनों के बाद गंगानदी के पास गये। 'राजा के अपने निजी व्यक्ति (राज्य में) कोई नहीं है' —इस तरह कहते हुए बड़े दुःख से, मुझे वहीं से बिदा किया। ५ 'फिर आगे उनका क्या हुआ? (वे कहाँ गये, कैसे हैं? आदि मैं नही जानता)' —इस तरह सुमंत्र के कहने पर, उसे सुनते हताश-निराश हुए राजा कौसल्या के सीने का आसरा लेते (बोलने में असमर्थ होने के कारण) इशारे से ही

हदुळिसॆलॆ राजेंद्र सत्यास्पदनला नी निन्नकुल सं-
पदद सिरिगाभरण नादनु पुत्रनॆंदॆव
मुदविरलु बेकल्लदीपरि गदगदिस बहुदे दृढव्रत
सदमळद्व सत्पुरुषरॆंदळु कौसलादेवि ॥ 7 ॥
मरॆव मगने मरुळला महिगुरुव सुकुमारकन कानन
कुरुबि संतैसिदडॆ निलुवुदॆ मनवु विधि नमगॆ
करुबनादॆनु कय्यमेलॆच्चरिसितकटा पुत्र विरहद
मरुकदूरुज तापसर वलुशाप तनगॆंद ॥ 8 ॥
युवति केळुन्मत्तयौवनदवतरणदलि तनगॆ नॆरॆ सं-
भविसित पिशाचो नृपोनास्त्यॆंव नाणुडिय
नॆवविदीगुपवर्तनद मृगनिवह शिक्षाव्यसन कॊडॊ-
य्दवचितॆन्ननु विधि पुराकृतवारवशवॆंद ॥ 9 ॥
अंबुजाननॆ केळु तांडवनॆंवमुनि पितृमातृ सेवा-
लंबकनु तॊळलिदनु नाना तीर्थ यात्रॆयलि

उन्होंने सुमंत्र को अपने घर जाने के लिए कहा। फिर बच्चों की याद करते-करते विलाप करने लगे। ६ "राजन! धीरज धरिए। आप सत्यवान हैं न? आपकी कुलसंपदा के लिए आपके पुत्र आभूषण हुए। इससे आपको आनंदित रहना चाहिए। इस के बदले दृढ़व्रती निर्मल चरितवाले आप जैसे सत्पुरुष इस प्रकार शोक करें, यह शोभा देता है?" इस प्रकार कौसल्या ने कहा। ७ "राम जैसे बच्चे को (पुत्र) भूल जाना कभी संभव है? तू है किस भ्रम में? सुकुमार कुलदीपक पुत्र को जंगल ढकेलकर अब जिस किसी प्रकार सांत्वना देने से यह मन कैसे मानेगा? विधि हमसे ईर्ष्या करने लगी। पुत्र-मरण से संतप्त वैश्यमुनि के बलवत्तर शाप ने हाथ पर हाथ धरे मुझे जगाया न?" इस तरह दशरथ ने कहा। ८ "हे कौसल्या, जब मैं मदमाते यौवन में (भारी जवानी के समय) था 'अपिशाचो नृपो नास्ति', (कोई भी राजा जवानी रूपी भूत के शिकार हुए बिना नहीं रहता) —यह कहावत मेरे विषय में सच निकली। देश भर के मृगों के शिकार खेलने की मेरी (तुच्छ) अभिलाषा के कारण मैं दुर्दैव का शिकार बना। प्रारब्ध (कर्म) क्या हमारे आधीन हैं? इस प्रकार दशरथ ने कहा। ९ सुनो (मेरी) रानी, तांडव नामक मुनि अपने माँ-बाप की सेवा में निरत विभिन्न पवित्र क्षेत्रों की यात्रा कर रहा था। लकड़ी के जिस मोटे कुंदे में वह माँ-बाप को ढोए फिरता था, उसे (कुंदे को) एक पेड़ से लटकाए रख, पानी लाने के उद्देश्य से वह चमड़े का घड़ा (कुप्पा) हाथ में लिये पानी ढूंढ़ते-ढूंढ़ते एक नदी पर

अंबुवनु तरलेंदु पितृगळ कंबियनु नेरिरिसि चर्मद
तंबुगेय कोंडरसु तिरुळैदिदनु जीवनव ॥ 10 ॥
तोहिनलि तानिरुळु शरसन्नाह नागिरे तांडवनु त-
द्वाहिनियोळद्दिदनु करवतिगेयनु कैनीडि
मोहिसितु घुळुघुळु निनाद वराह निस्वनदंते मुनियें
बूहे कोळ्ळदे कोंडु हरिदुदु चित्तवघपथके ॥ 11 ॥
आ रव ध्वनि गोडुवुदनु भूदारवेंदे बगेदु हूडिद
कूरलगु बिडे बिद्दुदुरदलि वैश्य मुनिवरन
भूरिबाण व्यथेयना मुनि सैरिसदे शंकर सदाशिव
मारहर हरयेनुत हुम्मैसिदनु मूर्च्छेयलि ॥ 12 ॥
इदु विचित्रवेनुत्त हरिदैदिदेनु निल्लदे बिल्लनल्लिये
बिदिरि बळिकिदिरिनलि कंडेनु केडेद तांडवन
कदडितेन्नय हृदय हृदयव हुदुगितघवघदुरिगे तनु बेंद-
बेंदने बेंदितेंदेना मुनिगरसि केळेंद ॥ 13 ॥
नररु रजनीमुखद सीमाचरितरुत्तर भाग रात्री
चररि गागिहुदिदुवे नी नरनो निशाचरनो

आया। १० धनुर्बाण से सन्नद्ध होकर मैं, मृगों के शिकार के घात में बैठा ओट में छिपा था। तभी तांडव ने वह कुप्पा पानी में डुबोया। कुप्पे में पानी भर जाते समय जो 'बुद-बुद' आवाज़ हुई, वह मुझे सुअर के ध्वनि जैसी लगी और मैं उस ओर आकर्षित हुआ। मुनिकुमार के पानी भरने की कल्पना तक न थी। अतः अज्ञानवश मेरा मन पाप-कार्य में प्रवृत्त हुआ। ११ उस ओर से ध्वनित होते शब्द को सुअर का ही चिल्लाना समझकर धनुष पर (पहले से ही) चढ़ाए पैने बाण को मैंने छोड़ दिया तो वह जाकर उस वैश्य मुनि के हृदय में चुभ गया। बाण के चुभने से घायल वह मुनि वेदना न सह सकने से —'हे सदाशिव, कामारि, हरहर —ऐसा चिल्लाते मूर्च्छित होकर गिरा। १२ "यह कुछ विचित्र घटना हुई है—इस तरह सोचते धनुष वहीं फेंक मैं उसी तरफ़ भागा। देखा तो सामने तांडवमुनि पड़े हैं। मेरे मन में खलबली मची। पाप के भय से थरथराहट शुरू हुई। पाप के ताप से मेरी सारी देह धू-धू करके जलने लगी। सुनो रानी; तब मैंने उस मुनि से इस प्रकार कहा।" —इस तरह दशरथ कहने लगे। १३ "मानव तो संध्या समय तक विचरण करते हैं। रात का दूसरा प्रहर (मध्यरात्रि) राक्षसों के संचार के लिए नियत है। क्या तू मानव है या निशाचर राक्षस है? सच-सच कहना।"

निरुत वावुदु हेळॆनलु नाव् नररु विट तापसरु तीर्था-
चरित रिन्नारादडॆनॆमगाय्तु हरिवॆंद ॥ 14 ॥
हळॆदिनद ताय्तंदॆगळ बिडदलसदवरनु हॊत्तु तॊळलिदॆ
निळॆयुळुळ्ळ समस्त तीर्थक्षेत्र गिरिवनव
उळिदुदॊंदे काशि काशियॊळिळ्ळु हुवदॆ संकल्पवदु ता-
निलुकदादुदु दैवगति बेऱॆद्दुदॆनगॆंद ॥ 15 ॥
अऱिद नॆन्नुवनॆन्न मातिन निरुगॆयलि नृपनॆंदु मेलॆ-
च्चऱिसिदनु तनगात्म विद्या विषय बुद्धिगळ
नॆऱॆवुदारायुष्य वारिं दऱितुको चित्प्रभॆय मायॆय
मऱॆय जवनिकॆयेकॆ नीनदकळुक बेडॆंद ॥ 16 ॥
ऎलॆ महीपति निन्न मनदुष्कलितकलमष विपिनकिदको
ज्वलन सत्कर्म प्रपंचित सार संस्कार
हलवु मातेनॆम्म मातॆय सलहु तातन रक्षिसक्षय
फलद प्रायश्चित्तविदु निनगॆंदु मुनि नुडिद ॥ 17 ॥
नीर नॆऱॆ कॊंडॊय्दु मेलुपचारवेनद माडुगंगा
तीरवनु सारुवडॆ कॊंडॊय्दिळुहु काशियलि

इस प्रकार दशरथ ने पूछा। तब तांडव ने कहा— "हम तपस्वी हैं। (हम) वैश्य मुनि जो हैं तीर्थयात्रा करते आए। अब हम कोई भी हों— हमारी जीवन-यात्रा समाप्त हुई।" इस तरह कहा। १४ "बूढ़े माँ-बाप को छोड़ न सकते हुए, बिना ऊबते, उनको ढोए-ढोए, धरती पर के समस्त तीर्थक्षेत्र तथा गिरि-वनों की यात्रा करते रहा। अब सिर्फ़ काशी जाना बाक़ी था। उनको काशी ले जाने का मेरा सदुद्देश्य सफल न हुआ। दैवेच्छा (तक़दीर) और ही कुछ चाह रही थी। —इस तरह तांडवमुनि ने कहा। १५ "मेरी बातें करने के ढंग से वह मुनि समझ गये कि मैं राजा हूँ। उसके पश्चात् उसने मुझे आत्म-विद्या प्रदान करते हुए कई बातें समझायीं। किसकी आयु को समाप्त करने में कौन (या क्या) कारणीभूत बनता है—इस तत्व को समझ लो। भगवान की सत्यस्वरूपी ज्योति के पीछे छिपे माया का पर्दा हमारी आँखें ढांप देता है। अतः आप डरिये नहीं। इस तरह उसने उपदेश दिया। १६ राजन, तुम्हारे बुरे मन में उदित पापकार्य नामक वन को अपने सत्कर्मों की आग से जला डालो। और अधिक कहने में असमर्थ हूँ। मेरे माँ-बाप की रक्षा करो। यही तुम्हारे पाप-कर्म के लिए प्रायश्चित्त है। इससे तुम्हें अक्षय फल की प्राप्ति होगी। — इस प्रकार तांडवमुनि ने कहा। १७ पानी ले जाकर

भारविडु निनगिदुवें मृत संस्कार परियंतरस केळें
दूरुजवृति सेरळ कीलिसि मुगिदनक्षिगळ ॥ 18 ॥
हरन गंगाधरन गिरिजावरन शशिशेखरन शोभा-
करन सर्वेश्वरन विजितस्मरन शंकरन
परम मूर्तिय हृदय कमलदोळिरिसि संधानदलि जीवव
तेरळिचिद नोडे हाय्दुदात्मज्योति मूर्धिनयलि ॥ 19 ॥
होत्ति होगेवनु तापदलि नीरोत्तिदंबकदिंद बिडदरु-
सुत्त बंदेनु करवतिगे जल सहित तांडवन
हेत्त तायतंदेयर कंडेनु मुत्तु सडलिद चिप्पिनवोलळ-
लुत्त बाय्विडुतिह पुराण शरीर तापसर ॥ 20 ॥
नीरोळगे जारिदनो मेणु ग्रोरगनोळळिवाय्तो दुष्टच
मूरु चप्परिसिदुदो कंडेदनो हळ्ळ कोळ्ळदलि
क्रूर लुब्धकरस्त्रहतियलि तीरिदनो हा कंद हायें-
बूरुज व्रतिगळनु कंडतिमरुक वाय्तेंद ॥ 21 ॥
नोदेना नुडिगेळुतवे पूर्णेदु मुखिकेळ् तांडवन ताय्
तंदेगळ दनिदोरदिळुहिदें निळेगे मरदिंद

उन्हें दीजिए तथा उनकी परिचर्या कीजिए। अगर वे जाना चाहते हैं तो गंगा के किनारे की काशी ले जाकर उन्हें उतराओ तथा आजीवन उनकी सेवा का कर्तव्य सँभालो। इस प्रकार कहकर वैश्यमुनि तांडव ने तीर खींच निकाला तो उनकी प्राण-पक्षी उड़ गयी। १८ गंगा तथा चंद्र को सिर पर धारण करनेवाले गंगाधर शशिशेखर कहलानेवाले, पार्वतीपति कामारि सर्वेश्वर शंकर की मनोहरमूर्ति अपने हृदय-कमल में प्रतिष्ठापित करते, उसी के ध्यान में एक चित्त होकर तांडव मुनि ने प्राण छोड़ दिए। उसकी आत्मज्योति मस्तक चीरकर बाहर निकल गयी। १९ चिता से उबलते हुए, आँखों में आँसू भरकर, पानी से भरी कुप्पी सिर पर ढोए, तांडव ऋषि के माँ-बाप को ढूँढते हुए आया। मोती से वंचित सीप की तरह अपने बेटे को याद करते, चटपटाते, संतप्त हुए उन जराजर्जरित शिथिलदेही तपस्वियों को मैंने देखा। २० "क्या पानी में गिर गिया? या कृष्णसर्प के काटने से मरा? या हिंस्र बाघ का शिकार बना, या कहीं नदी-कंदरा में गिर गया? या कहीं क्रूर शिकारियों के तीर का शिकार बना? हाय मेरे बेटे! हाय, हाय!" इस तरह याद करते चटपटाते वैश्य तपस्वियों को देखकर मेरा कलेजा मुँह को आया।" इस तरह दशरथ ने कहा। २१

इंदिदेनै तडर्दे नीरनु तंदडॆरे तमगेनलु विगता
नंदमानसनागि बळिकॊरॆदनु हिमोदकव ॥ 22 ॥
हॊलसु दोरॆदॆ मगनॆ जलवॆम गलसिदॆयला सेवॆयलि विधि
मुळियदकटा पापिगळिगॆनु तॊक्करा जलव
बळिक तन्निदाद हदनु तिळिय हेळिदु शापवनु कै-
गॊळिसि तनगॆंदवर्गॆ कैगळ मुगिदॆ नानॆंद ॥ 23 ॥
हॊरळिदरु कावडियॊळकटा करुणिसिदनॆ विधात्रनॆमगी
परिय सुतशोकवनु हा हा मगनॆ नम्मुवनु
परकॆ सलिसदॆ मुंदॆ नी नी परिय हॊहरॆ कंदयॆंद
वरुरुळिसि दरश्रुगळ नलुगुव शिरद शोकदलि ॥ 24 ॥
ऎलॆ महापुरुषनॆ पुराकृत फलविदॆमगिन्नादडॆयु ना-
वळिकॆ गैयद मुन्न निन्निदळिद तांडवन
बळिगॆ कॊंडॊय्दिरिसु निजसुत नॊळगॆ मातुंटॆमगॆ कार्यद
कळशविदु निनगॆंदु कैगळमुगिदरॆनगॆंद ॥ 25 ॥

उनकी बातों से मेरा मन बहुत ही व्यथित हुआ। मेरी आवाज़ की टोह उन्हें न लगे, इस रीति से तांडव मुनि के माँ-बाप को पेड़ पर से उतार लिया। "आज क्यों देर कर दी बेटे ? पानी अगर लाए हो तो पीने के लिए दे दो।" —इस तरह उन्होंने पूछा। उत्साह-रहित मैंने उनको ठंडा पानी भरकर (बर्तन में) दिया। २२ क्यों बेटे ? यह पानी तो गंदा है न ? क्या हमारी सेवा से तुम तंग आ गये ? इन पापियों पर विधि को भी दया नहीं आती (जो कि हमें उठा न ले जाती) ! इतना कहते हुए उन्होंने वह पानी फेंक दिया। तब मैंने अपने हाथों (जो अचातुर्य से) अकार्य हुआ उसका विवरण देते हुए मुझे शाप देने के लिए उनसे प्रार्थना की।" —इस तरह दशरथ कौसल्या से कहने लगे। २३ वृद्ध तपस्वी काँवर में ही चटपटाते, रोते-पीटते अत्यंत दुःखी हो 'हाय रे दैव, तूने इस बुढ़ापे में इस रीति से पुत्रशोक की कृपा की न ? हाय ! हाय ! मेरे बेटे ! हमें सद्गति देने के बदले हमारी आँखों के सामने ही इस तरह चल बसना तुझे ठीक लगा। क्या लाडले !' हिलते सिर से आँसू की धारा बहाते प्रलाप करने लगे। २४ "हे महापुरुष, यह हमारे पूर्वजन्म-कृत पाप का फल है। हमसे तुझे धिक्कार मिलने के पहले ही हमें ढोए ले जाकर उस स्थान पर पहुँचाओ जहाँ हमारा तांडव मरा पड़ा है। हमें अपने बेटे से कुछ बातें करनी हैं। यह काम पहले अवश्य पूरा करो।" इस तरह कहते हाथ जोड़े उन्होंने प्रार्थना की। —यह समाचार दशरथ

हॊत्तु कॊंडॊय्दिळुहिदॆंनु नदियॊत्तिनलि तांडवन बळियलि
कुत्तिदंबिन गायवनु तडवरिसि मुड्डुहुगळ
इत्त भाषॆय सलिसिदुर्बेसत्तु बिसुटै नम्म नमगि
न्नॆत्त पथ नमगेनुगति हेळॆंदरवरॆंद ॥ 26 ॥
अळिद मगनोपादि निम्मनु सलहुवॆंनु नंबुवदु नीवॆंन
ललसि बळिकसु विडियलॊल्लदॆ सुत वियोगदलि
अळिवु समलिसलॆंनुत नळिनज निळयकभिमुखरादरनिबरु
जळन संस्कृतियिद माडिदॆंनूर्ध्वदेहिकव ॥ 27 ॥
ऎंनुत बहिरंगद मनस्संजनित भवमाया प्रपंचव
नॊनॆंदु निर्मल सच्चिदानंद स्वरूपकद
विनुत योगज्ञान तत्वद नॆंनहिनलि निजदैक्यतर भा-
वनॆयलिळिविट्टनु कळेवरवनु महीपाल ॥ 28 ॥
मेलणुत्तर विल्लदिरॆ भूपालकन मुखचेष्टॆयनु मुडि
दालिगळनरिदकट कॆट्टॆनु कॆट्टॆनकटॆनुत
बालकरिगिन्नॆनु गति भूपाल हेळै हेळॆनुत निज
बाळवनु भाळद ललंकरिसिदळु भूपतिय ॥ 29 ॥

ने कौसल्या से कहा। २५ उनको काँवर में ढोए ले जाकर नदी किनारे पर पड़े तांडव के देहे के नजदीक उतारा। तीर के आघात से बने घाव पर हाथ फेरते हुए भुजाओं को सहलाने लगे। 'क्यों रे? हमसे तंग आकर जो वचन तूने हमें दिया था उसे निभाए विना हमें छोड़कर जा रहा है? बेटा क्या यह तूने ठीक किया? अब हमारे लिए कौन-सा मार्ग? कौन सी गति? बोल। इस तरह अंधे तपस्वी कहने लगे। २६ "तुम्हारे इस विगत पुत्र की ही भाँति तुम्हारी देखभाल करता हूँ। मुझ पर भरोसा कीजिए।" —इस तरह मेरे आश्वासन देने पर भी वे अपने प्राणों को रोक रखने में असमर्थ हो— या इच्छा न करते हुए शाप देते हैं— "(इसी प्रकार) बेटों के विरह से तुम्हारी मृत्यु हो।" फिर वे ब्रह्म-लोक की यात्रा कर गये। जलसंस्कार द्वारा उनकी अपरक्रिया मैंने संपन्न की।" २७ इस तरह विवरण देते हुए दशरथ ने मन में उपजी वाह्य संसार की माया का परित्याग किया। परिशुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूपी ब्रह्मचिंतन करते, योगज्ञान में लीन हो भगवान में ऐक्यभाव साधा। फिर देह को त्याग वे स्वर्ग सिधार गये। २८ आगे उनके मुँह से बातें निकलते न देख कौसल्या ने दशरथ का मुँह (अपनी ओर) घुमाकर देखा। भौंहें खोलकर दृष्टि की परीक्षा की। "हाय! हाय! मेरा सत्यानाश हुआ।

सुत वियोगद शोकनदि निजपति वियोगद शोकतटिनी
पतिय संगमवादुदद्दळु कौसलादेवी
क्षितिसुता सुत केळु नेरेदुदु सतियरा दशरथन हा हा
कृतिय कलिताक्रंदना ध्वनि तुंबितंबरव ॥ 30 ॥

हरिदु नृपदूतियरु पुरजन वरियदंतिरे बंदु मैत्रा-
वरुणि दृष्टि सुमंत्र मुख्यरिगरुहिदरु हदन
पुरद बागिलिगरमनेगे तत्पुरद केरिगळोळगे कावल
निरिसि होक्करु कंडु मरुगिदरवरु नृपनिरव ॥ 31 ॥

सूळगिव बलुचिंतेयलि भूपाल मरणद मेले मुनिकुल
मौळिदृष्टि सुमंत्र मुख्य समस्त मंत्रिगळु
मेलणभिगत कार्यदवनीपाल पदविगे कैकेयक्षिति
पालकन मोम्मगन करेसलु माडिदरु मनव ॥ 32 ॥

हाय रे दैव ! अब कुमारों की गति क्या होगी ?" (इस तरह चीखती) उसने राजा के माथे पर अपना माथा टेका। २९ पुत्र-विरह से उपजी दुःख रूपी नदी ने अब पति-मृत्यु रूपी शोक-सागर में प्रवेश किया। दुःख-सागर में कौसल्या डूब गयी। सुनो सीता-पुत्र; दशरथ के शरीर को (मृत) रानियों ने आ घेरा। 'हाय-हाय' करती हुई उनकी चीख-पुकार की ध्वनियों से सारा आकाश भर गया। ३० राजमहल की सेविकाएँ—दासियाँ आदि इस प्रकार दौड़ पड़ीं कि नगरवासियों को ज़रा भी खबर (इस विषय की) न लगे। आकर उन्होंने वसिष्ठ, दृष्टि, सुमंत्र आदि प्रमुख व्यक्तियों को इस बात की (दशरथ की मृत्यु की) खबर दी। अयोध्या नगर के प्रमुख द्वार, राजमहल तथा शहर की गली-गली में रखवाले तैनात करके वे (प्रमुख) राजमहल आये तथा राजा की स्थिति देख, शोक-विह्वल हुए। ३१ राजा की मृत्यु से अत्यंत संतप्त शोक-विह्वल महर्षिश्रेष्ठ वसिष्ठ, दृष्टि, सुमंत्र आदि सारा मंत्रिवृन्द इकट्ठा हुआ; तथा भरत को राज्य का शासन सँभाल देने के बारे में आलोचना (मंत्रणा) की। फिर निश्चय किया गया कि कैकेय राजा के पोते भरत को बुला लिया जाय। ३२

आरनेय संधि

सूचने— अरसुतन कोंडबडदे रघुकुल दरसनल्लिगे बंदु नेमव धरिसि मरळिदु भरत नंदिग्राम कलंद ।

रायनायुष्यावसानद रायसव बरेसिदरु कैकेय
रायनगरिगे कळुहिदरु बाळिकाप्त गुप्तिगर
राय दशरथ नसुविसंचित कायवनु नवतप्त तैलद
लाय संबडिसिदरु मेधिसिदरु सुगंधदलि ॥ 1 ॥
वरदुकूलव नुडिसि वसुधास्तरणदलि पट्टरसि जाड्य-
स्परुष नेंदू रोळगे हरहिदरुदय कालदलि
हरिद रित्तलु लेखवाहक रिरिळु हगलेन्नदे गिरिव्रज
पुरव होक्करु कंडरा कैकेय कुमारकन ॥ 2 ॥
इत्तरोलेय नवदिरवदिर हत्तिरके करेदय्यनिरविगे
चित्तदलि शंकिसुत हदनेनेंदु बेसगोळलु
होत्त राज्यश्रीय निम्मडि युत्तमांगदलिरिसि सुरपुर
दत्त सरिदनु राय दशरथ नेंदराचररु ॥ 3 ॥
ऐसे मत्तेनेंदु कलित क्लेशदनुतापदलि होरवं-
टा सुमित्रासूनु सह चतुरंग बलसहित

छठो संधि

सूचना— राज्यशासन सँभालने को क़बूल न करते भरत रघुकुल राजा राम के पास पहुँचे तथा व्रत धारणकर लौटते हुए नन्दीग्राम आए ।

महाराज दशरथ की मृत्युवार्ता का पत्र लिखाकर निजी गुप्तचरों के द्वारा कैकेय राजा की राजधानी भिजवाया गया। प्राणपखेरू उड़े राजा के मृतदेह को खौलाए गये नये तेल में डुबोकर शरीर भर में सुगंधित द्रव्यों का लेप किया गया। १ रेशम का नया कपड़ा पहनाकर दशरथ के देह को धरती पर बिछाए गलीचे पर सुलाया गया। सुबह-सुबह शहर भर में समाचार प्रसारित किया गया कि दशरथ बीमार पड़े हैं। इधर संदेशवाहक हरकारे दिन-रात की परवाह न करते हुए, यात्रा करते हुए, गिरिव्रज नगर में प्रवेश कर भरत के दर्शन कर लेते हैं। २ हरकारों ने भरत के हाथ पत्र दिया। (अपने) पिताजी की परिस्थिति के बारे में मन ही मन शक करते भरत ने उन्हें अपने पास बुलाकर पूछा कि मामला क्या है ? "राज्यशासन-भार आपके कन्धे रखते राजा दशरथ स्वर्गवासी हुए।" —इस तरह हरकारों ने कहा। ३ "हाय रे दैव ! अब और

वासरत्नय कैदिदनु वर कौसला नगरवनु गत भू-
मिश निदिरलि बिद्दु हॊरळिद नधिक शोकदलि ॥ 4 ॥

केळिदनु सुतविरहदवनीपाल मरणवनधिक शोक-
ज्वालॆ दळ्ळिसितग्र जन्मवियोग विश्रुतव
आलियलि किडिगॆदरॆ जननिय मेलॆ मुळिदळिविगॆ झडिदनु
भाळ बळिक वसिष्ठ कंडड हाय्द नायुधकॆ ॥ 5 ॥

जरॆदु भरतन कैय खड्गव नॊरॆगॊळिसि धर्मद रहस्यव
नरुहि बळिक परेत कृत्यद परमवैदिकद
निरुगॆयलि माडिसिदरग्निय लॊरॆगितै नूररसियरु ने-
सरॆ गुलाधिप नॊडनवर्गळिगाय्तु संस्कार ॥ 6 ॥

नदिनदिय तीरदलि गृहसंपद सहित सुक्षेत्रकन्या
विदित विविध सुवर्ण वस्त्राभरण दानदलि
मदुवॆ कॆरॆयरॆवटिगॆ यात्रासदन नानाछत्र संपू-
र्णदलि मिगॆ मॆच्चिसिदना मनुवंशदरसुगळ ॥ 7 ॥

क्या !" इस तरह की मन की उद्विग्नता से (परिपूर्ण) भरत, शत्रुघ्न साथ लिये चतुरंग सेना सहित अयोध्या के लिए रवाना हुए। तीन दिन तक यात्रा करते कौसलावती नगर पहुँचे। अतीव वेदना से, मृत पिता के सामने लोट-लोटकर हाय तौबा मचाने लगे। ४ 'बच्चों की विरह-व्यथा के कारण दशरथ की मृत्यु हुई, तथा बड़े भैया राम वनवासी हुए' —आदि वार्ता सुनने पर भरत को मानों वेदना की आग ने व्याप लिया। आँखों से चिनगारियाँ निकली। माँ पर आगबबूला होते हुए भरत ने उसे समाप्त कर डालने के हेतु म्यान से तलवार निकाली। यह देख वसिष्ठ भरत के हाथ के उस तलवार की आड़ में आए। (उसे रोक लिया)। ५ वसिष्ठ ने भरत को खूब आड़े हाथों लिया। तलवार को म्यान में पहुँचाने के लिए विवश किया। धर्म का रहस्य उसे समझाया। वेदोक्त रीति से शवसंस्कार कराया गया। पाँच सौ रानियाँ दशरथ के साथ सती हुईं। (सहगमन किया।) रविकुल राजा दशरथ के साथ ही उनका भी शव-संस्कार किया गया। ६ पवित्र नदी किनारों पर घर, भूमि, कन्या, वस्त्र, सोना, गहने आदि का दान दिया गया। विवाह कराना, तालाब खुदवाना, पौसर, प्रवासी मंदिर तथा तरह-तरह के छत्र (अतिथिशाला) वग़ैरः धार्मिक कार्यों की आयोजना से भरत ने मनुवंशीय राजाओं को प्रसन्न कर लिया। ७ तेरह दिनों के बाद वसिष्ठ, सुमंत्र ने दशरथ की आज्ञानुसार

दिवस हृदिमूऱरलि कैकाभवन नोंड बडिसिदरु मुनिपुं-
गव सुमंत्रक ररसुतनकें नृपाल मतविडिदु
अवनि ताय् रघुनाथ पितनेंदवर मगुळोंडबडिसि नृपनग-
वनु होऱवंटनु ककुत्स्थान्वयन दरुशनकें ॥ 8 ॥
कूडे होऱवंटुदु सुमंत्रक गूडि सचिव नियोगिगळु होऱ
बीड बिट्टुदु मुंदे मन्नेय मंडलेश्वररु
जोडिसिद करि तुरग रथवेंडे याडिदवु गुडिमंडविगेगळ
हूडिदेंत्तिन बंडिगळु नडेगोंडवगलदलि ॥ 9 ॥
इरिसिदनु पट्टणद रक्षणे गेरडनेय सौमित्रियनु ना-
ल्वरु महामंत्रिगळ नन्वय दाप्त परिजनव
हरसिदनु नाना दिगंतकें चररनखिळारण्य नदि दु-
स्तर महीधर निकरदेंडे गऱसलु निजाग्रजन ॥ 10 ॥
केळि कोळुता भरत नधिक कृपाळुवनु काबुज्जुगद परि-
पाळियिदैदिदनु श्रृंगीवेरपुरवरव
पाळयवनिद काणुता गुह नाळ्कुदुरेय कूडि गमनद
चाळियावुदो तिळिय बेकेंनुतल्लिगैतंद ॥ 11 ॥
अवन मन्नि सि कंडुदुंटे रविकुलेंद्रन रामचंद्रन
भुवनजनवंद्यननिंद्यननखिळ गुणयुतन

भरत को राजा बनने के लिए राजी कर लिया। लेकिन भरत ने "भूमि ही माता है; रघु राम ही पिता हैं" —इस सिद्धांत के लिए उन्हें फिर राजी करा लिया तथा राम दर्शन के लिए राजधानी से रवाना हुए। ८ भरत के साथ सुमंत्र-सहित मंत्रिवृन्द, नियोगी भी रवाना हुए। आगे-आगे नेतागण, मंडलाधिपति भी पड़ाव पर नियुक्त थे। हाथी, घोड़े, रथों की क़तारें निकल पड़ीं। फहराते ध्वज, डेरों से लदे हुए छकड़े झुंड के झुंड में निकले। ९ नगर की रक्षा के लिए शत्रुघ्न, चार प्रधान मंत्री तथा निजी सेवकों को नियुक्त किया। जंगल, दुर्गम घाटियाँ तथा पहाड़ों में भैया राम को ढूंढ़ने के लिए चारों दिशाओं में सेवकों को दौड़ाया। १० करुणाशाली राम को देखने के उद्देश्य से जहाँ-तहाँ पूछते हुए, जिस मार्ग से राम गये हैं, उसकी जानकारी पाते हुए भरत श्रृंगबेरपुर पहुँचे। भरत के पड़ाव को देख, उनकी यात्रा का उद्देश्य जानने के लिए गुह अपने साथ के सवारों तथा घोड़ों के साथ वहाँ आए। ११ भरत ने गुह का आदर किया; फिर पूछा— "रविकुल स्वामी श्रीरामचन्द्र को आपने (कहीं) देखा है

नवरघु क्षितिपालकन नेनलवनु मनदलि वैरबुद्धिय
लिवरु बंदवरल्लवेनु तिळिदेंद नरसंगे ॥ 12 ॥
जनप चित्तैसादडा श्रीस्तन सुकुंकुम पंक दंकित
विनुत वक्षस्थळनु सीता देवियरु सहित
अनुज सहितो विमल मंदाकिनिय दाटि सुरेंद्रगुरु नं-
दनन नंदनकागि गमिसिदररस केळेंद ॥ 13 ॥
बळिय लोलैसुत्तलवरनु कळुहिदेनु सुरगुरु तनूजन
बळिगे नीवामुनिवचोविस्तर विलासकव
तिळिवुदेने बळिका भरत निजबल सहित भागीरथिय हा-
य्दोलवु मिगलैतंदना मुनिनाथ निद्देडेगे ॥ 14 ॥
आ भरद्वाजनु निजोन्नत वैभवदिना भरत मुख्य म-
हाभट स्तोमवनि भाश्व वरुथ वाहकर
शोभिसुव सुरधेनुविं सौख्याभि संतुष्टियलि सुरर सु-
खाभिलाषेय बिडिसिदनु विविधोपचारदलि ॥ 15 ॥
बळिक भारद्वाजमुनि मनुकुलद रायन चित्रकूटा
चलके कळुहिद हदन भरतंगोरेदु बीळ्कोंडलु

क्या ? लोकपूज्य निष्कलंक सद्गुणभरित (श्रीराम) को कहीं देखा ? नये राजा रघुराम को देखा तो है न ?" इन प्रश्नों को सुनकर गुह ने अनुमान लगाया कि यह राम से द्वेष-भावना प्रेरित होकर नहीं आया है। तभी उसने भरत से यों कहा। १२ "सुनिए राजन् ! लक्ष्मी से आलिंगित वक्षस्थलसंपन्न श्रीराम ने सीतादेवी तथा भाई लक्ष्मण के साथ पवित्र गंगानदी पार की। फिर देवगुरुपुत्र भारद्वाज मुनि के आश्रम की ओर पैदल गये।" —इस तरह गुह ने कहा। १३ "मैंने उनका आदरातिथ्य किया, फिर (उन्हें) भारद्वाज मुनि के यहाँ भेज दिया। आप उस मुनि से मिलकर उनसे आगे का समाचार जानिए।" —इस तरह गुह ने कहा। तब भरत ने सेना-सहित गंगा पार की तथा खुशी-खुशी भारद्वाज मुनि के यहाँ आए। १४ भारद्वाज मुनि ने बड़े वैभव के साथ, भरत आदियों को उनके सैनिक हाथी, घुड़सवार आदियों को, रथ हाँकनेवालों को कामधेनु के प्रभाव से देवताओं को जैसे सुख मिले —उसी प्रकार सुख पहुँचाते आदरातिथ्य से उन सभी को संतुष्ट किया। १५ उसके बाद भारद्वाज ने भरत को यह समझाया कि मनुवंशीय राजा राम को उन्होंने चित्रकूट पर्वत पर कैसे भिजवा दिया। भरत ने भारद्वाज मुनि के चरणों की वन्दना की तथा वहाँ से फिर आगे बढ़े। उसकी सेना रूपी समुद्र की

तळर्दनल्लि मेलें मुनिपद नळिन कानत नागि सेना
जलनिधिय निर्घोष निलुकलजांड मंडलव ॥ 16 ॥
कुशनें केळा भरत सेनाविसर पदहतदूतधूळी
विसर विबुध तरंगिणिय निंगिसितु रंगिसितु
बिसरुहासन पुरवनुर्रे कीलिसित जांडव वाद्यरव नेर्रे
केसरु दोर्रलु जगुळे दांटितु भरत परिवार ॥ 17 ॥
बंदु बिट्टुदु सेनेंशैलद हिंदु मुंदिद्र्देसेयला बल
वृंद दद्भुत निनद किवि गोंळिसितु रघुपतिय
बंदवरदारर्रिदु बा होगेंदु नेमिसे बळिक भरत
स्यंदनव कंडर्रिदु लक्ष्मणदेव हलुमोरेद ॥ 18 ॥
आगलदकेनीत वैरोद्योगगति गोंडरिसिद नादोंडे
कागें हद्दिगें हरहुवेंनु कडिदी चतुर्बलव
मेगें बरलप कीर्तियदके नीग लेंणिकेयेंनुत्त करुणा
सागरन बळिगैदि बिन्नह माडिदनु हदन ॥ 19 ॥
भरत बंदव बंद हदने नर्रियबारदु जीय बेसर्सो
दर्रे निमिषदलि निर्णेसि तोरुवेनु निरुपमव

गर्जना सारे ब्रह्मांड तक व्याप गयी। १६ सुनो कुश; भरत की सेना-सागर के पदचाप से उठी धूल आकाश की देवगंगा नदी तक पहुँची। ब्रह्माजी की नगरी को उस (धूल) ने लाल बना दिया। सारा ब्रह्मांड उस धूल से भर गया। गाजे-बाजे के उद्घोष रूपी कीचड़ में फिसलते गिरते भरत का यह परिवार आगे बढ़ रहा था। १७ चित्रकूट पर्वत के आगे-पीछे दोनों पार्श्वभूमियों में भरत की सेना ने पड़ाव डाला। भरत की भारी सेना की गर्जना राम ने सुनी। "(यह) आनेवाले कौन हैं' —पता लगाओ।" —इस प्रकार की राम की आज्ञा पर लक्ष्मण ने आकर जो देखा कि वह भरत का रथ है, तो वह आगबबूला हुआ। १८ "ओह! यह बात है? वैर साधने यह अगर इतना आगे बढ़ गया है तो इसकी चतुरंग सेना को काटकर बोटी-बोटी बनाकर चील-कौओं के आगे फेंक दूँगा। इससे अगर बदनामी होती है तो होने दो। इसके लिए अभी से चिंता किस बात की?" —इस प्रकार सोचते लक्ष्मण करुणासागर राम के पास आकर वस्तुस्थिति का निवेदन करता है। १९ "आनेवाला तो भरत है। उसके आने का उद्देश्य तो मालूम नहीं। स्वामिन्! आज्ञा दीजिए। क्षणार्ध में इस अद्भुत का खातमा कर दिखाता हूँ। राज्य को धोखे से हथिया लिया। तिस पर भी इस प्रकार हम पर आक्रमण

धरॆय दूषिसि कॊंडुदल्लदॆ धुरकॆ बहुदिदु गुणवॆयॆंदु
ब्बरद रोषावेशदलि सौमित्रि गर्जिसिद ॥ 20 ॥
मरुळलायॆलॆ तम्म तप्पिसि तरणितलॆदॊऱॆदरॆ वैरव
धरिस बल्लनॆ भरत नारॆंदरियला नीनु
तरहरिसु कट्टुग्रवनु निष्ठुरतॆ साकिन्नॆंव समनं-
तर दॊळिळिदुदु वरुथदिं मॆयिक्कुतॆतंद ॥ 21 ॥
बळिविडिदु कौसलॆ सुमित्रा ललनॆ कैकॆ सुमंत्ररा मुनि
कुलललाम वसिष्ठ रिवरंदण गळिदिळिदु
नळिन नयनन काब तवकद तळित हरुषद तुरुगि दंगो-
च्चळित पुळकदिनैदिदरु रघुसार्वभौमकन ॥ 22 ॥
देव ताटकियसुविजय जयदेव वीरसुबाहु जयजय
देव मारीच प्रताप प्रकट विजय जय
देव मुनिमख पालनाविर्भावितामल कीर्तिकांता
जीवितेश्वर जय जयॆंदडगॆडॆदना भरत ॥ 23 ॥
देव गौतम वधुविशाप कृपावलंबन कपटनाटक
देव हरकोदंड चंड निखंड वाहुवल

करने आना क्या ठीक है। क्रोधावेश में आकर लक्ष्मण गरजे। २० "भाई लक्ष्मण ! तू किसी भ्रांति के वशीभूत हुआ है। सूर्य पूर्व दिशा में उदित होना भूलकर पश्चिम दिशा में उदित हो भी सकता है, लेकिन भरत कदापि (हमारा) वैरी हो ही नहीं सकता। क्या तू नहीं जानता कि वह कौन है ? तुम्हारे क्रोध को शांत करो। यह कठोर आचरण नहीं चाहिए।" इस तरह राम, लक्ष्मण को समझा ही रहा था। इतने में भरत रथ से उतरे, राम को प्रणाम करते (पैदल) आ पहुँचे। २१ भरत के पीछे-पीछे कौसल्या, सुमित्रा, कैकेयी, सुमंत्र, वसिष्ठ आदि पालकियों से उतरकर आए। वे कमलाक्ष (राम) की दर्शनाभिलाषा की बेचैनी में आनंदित हो, रोमांचित हो, रघुपति के पास आए। २२ "ताटकी-संहारक तथा वीर सुबाहु को जीतनेवाले की जय हो ! मारीच पर अपनी वीरता का प्रभाव डालनेवाले विजयशाली की जय हो ! विश्वामित्र मुनि की यज्ञ-रक्षा करते कीर्ति रूपी वधू के स्वामी जो बने— उनकी (राम की) जय हो ! भगवन् तेरा जय जयकार है !" इस प्रकार जयघोष करते भरत राम-चरणों में गिर पड़ा। २३ गौतमपत्नी अहल्या के शाप-विमोचक हे दयालु, कपटनाटकलोलाविनोदप्रिय प्रभो, कठोर शिवधनु को तोड़ डालने के भुजबलशक्तिसंपन्न, वैदेही से विवाह करनेवाले हे वीर, परशुरामजी

देव वैदेही विवाह महाविभव भृगुजप्रताप ह-
रावतार विनोद वैभव राम नमोयेंद ॥ 24 ॥
अेद्दु बळिकप्पिदनु नेहद होद्दिदगेयलनुजननु तायिग-
ळिद्द हृदननु कंडु कंगळलुगिसिदनु जलव
तिद्दिदते भवदीय कर्णद होद्दिदगेय सौभाग्य विद्रन
गद्दुगेय नडदिदने पितनेनुतेउगिदनु पदके ॥ 25 ॥
अळलिदरु बळिकोब्बरोब्बरु हळविसुत हलवंगदलि नृप
कुलललामगे वीरदशरथ सार्वभौमगे
तिळुहि बळिकनिबरनु सलिलांजलिमृतस्नानादि कर्मा-
वळिय माडिसि मुनिपनुपचरिसिदनु रघुपतिय ॥ 26 ॥
लवने केळा दिनवनादळ भवनदलि नूकिदरु मरुदिन
ववनिपतिगा भरत भयभक्तियलि कैमुगिदु
अवधरिसु राजेंद्र वसुधायुवति गरसागेळु रक्षिसु
भुवन जनवनु बिजय माडेंदेउगिदनु पदके ॥ 27 ॥
तंदेयडगिद बळिक नीने तंदे ताय् नमगवनितायलि
संधिसुवरे मनव मक्कळु मरेय मातेनु

के प्रभाव को भंग करनेवाले (स्वामी), अवतारी पुरुष बनकर विनोद प्रकट करनेवाले हे मेरे राम, तुम्हें अनंत प्रणाम" —इस तरह भरत ने स्तुति की। २४ राम उठकर धाए तथा भाई को आनन्द के मारे गोद में भर लिया। माताओं की स्थिति देख राम की आँखें डबडबा आयीं। "आपका, माँग का सिंदूर लुट गया न ? हाय मेरे दैव ! पिताजी स्वर्ग के राजा बनने चले गये न ?" —इस तरह कहते (अश्रुपूर्ण आँखों से) राम माताओं के चरणों में गिरे। २५ राजश्रेष्ठ वीर दशरथ चक्रवर्ती की मृत्यु के लिए हर एक, कई-कई रीतियों से व्यथा से प्रलाप करने लगे। इस तरह बिलखते हुओं को महर्षि वसिष्ठ ने सांत्वना देते हुए राम को स्नान कराकर सूतक (मृत्यु अशौच) से विमुक्त करा पितरों को तर्पण दिलाकर श्राद्धादि कर्म करवाए। २६ सुनो लव; उन्होंने वह दिन पर्ण-कुटी में बिताया। दूसरे दिन भरत ने भक्तिभाव भरे अंतःकरण से राम के सम्मुख हाथ जोड़े कहा— "सुनिए राजन्, उठिए। मेरे साथ आइये। राज्यलक्ष्मी के स्वामी बनिए। कृपाकर प्रजा का परिपालन कीजिए।" —इस तरह कहते हुए राम के पैर पकड़ लिये। २७ "पिता की मृत्यु के बाद आप ही हमारे माता, पिता सब कुछ हैं। भूमि माता का उपभोग

इंदु नीवरसागदिरॆ तम्मंदिरलि तानॊब्ब निमगि-
ल्लॆंदु चित्तैसॆनुत बिन्नह माडिदनु भरत ॥ 28 ॥
ऒडनॆ भरतन बिन्नहक्कॆ मैगॊडुवुदॆंदु सुमंत्रनंघ्रिय
हिडिदनुचितविदॆंदु कैमुगिदनु वसिष्ठमुनि
बिडिसिदनु बळिकवरवर मन दॊडकननुपम नीतिशास्त्रद
सडगरद सत्य व्रतागमदनुनयोक्तियलि ॥ 29 ॥
बंदु कैका देवि कंबनि यिंद मनदनुताप शिखियलि
बॆंदु बळिकी मात नुडिदळु चित्तशुद्धियलि
हिंदॆ नॆनॆदपकृतव नॆरॆमरॆ दिदु पालिसु धरॆय कॆळॆलॆ
कंदयॆंदप्पिदळु शिरवनु राघवेश्वरन ॥ 30 ॥
निम्म मातनु मीरिदवने नम्मॆ नानॆलॆ तायॆ निजपित
नुम्मळिस दिर नाज्ञॆयनु मीरिदनु मगनॆंदु
नम्म पाडेनादियवनिय हॆम्मॆकाररु सत्यमार्गद
नॆम्मिदवरेनप्रबुद्धरॆ यॆंदना राम ॥ 31 ॥
कळुहिदनु कैमुगिदु मुनिकुल तिलकननु बळिकासुमंत्रन
नॊलिदु मन्निसि बीळुकॊट्टनु नमिसि जननियर

करने का अधिकार बच्चों को कैसे संभव है ? इसमें दुराव-छिपाव कु
भी नहीं। अगर अब आप राजा होना नामंजूर कर दें तो आपके अ
भाइयों में, मैं एक आपके हिस्से में नहीं हूँ —इस तरह समझ लीजिए
—इस प्रकार राम ने भरत से निवेदन किया। २८ सुमंत्र ने राम
चरण पकड़कर प्रार्थना की कि भरत की बिनती तुरन्त मान ली जा
वसिष्ठ महर्षि ने भी हाथ जोड़ कहा कि यह सलाह सुयोग्य है। तब राम
नीतिशास्त्र का रहस्य, सत्यव्रत के नियम अत्यन्त विनम्र बातों में उ
समझाकर हर एक के मन की उलझन सुलझा दी। २९ तदनंतर मन
मन पश्चात्ताप की आग में जलती देवी कैकेयी आँसू बरसाती हुई अ
तथा राम का सिर आलिंगन-पाश में लेती हुई निष्कलंक चित्त से बो
'बेटे, पूर्व में जो कुछ मैंने अकार्य किया उसे भूल जाओ तथा राज्य
रक्षा करो। ३० "क्यों माँ, मैंने आपकी आज्ञा का क्या कभी उल्लंघन कि
है ? अब मैं अगर आपकी बातें मानूं तो अपनी आज्ञा के विरोध के का
मेरे (स्वर्गवासी) पिता क्या दुःखी हुए बिना रह जायेंगे ? हमारी
तो छोड़ ही दीजिए। प्राचीन काल से इस जगत पर राज्य-शासन क
वाले कीर्तिशाली राजा, जिन्होंने सत्यमार्ग का अवलम्बन किया, अनुस
किया क्या वे अज्ञानी थे ?" —इस तरह राम ने कैकेयी से पूछा।

हलवु नयनीतियलि चित्तद कलुषवनु कॅलचाचि नगरकॆ
कळुहिदनु करुणदलि कैकासतिय नंदनन ॥ 32 ॥
आदॆडॆलॆ राजेंद्र निम्मय पादुकॆय चितैसि देवर
पादवॆंदे कंडु सेवॆय माडि कॊंडिहेनु
कादिहॆनु हदिनाल्कु वरुषवु मेदिनिय नीव् बारदिरलु नि-
वेदिसुवॆनी तनुवननलगॆंदना भरत ॥ 33 ॥
ऎनलु भरतन बिन्नहद निज मनद भकुतिगॆ मॆच्चि करुणा-
वनधि शिरवनु तक्कयिसि निजभावशुद्धियलि
घन कृपा सागरनु तन्नय नॆनहु नॆलॆ निलुवंतॆ पादुकॆ-
यनु करुणिसलु शरणु सलहॆंदॆरगिदनु भरत ॥ 34 ॥
ऎंदु बीळ्कॊंडखिळसेना वृंदसहिता भरतनृपनॆ
य्तंदु नगरव हॊगदॆ नदिग्रामदलि बळिक
इंदिरेशन तोरवॆ यरसन संद निजपद भक्ति परमा
नंदरसमयनागि पालिसिदनु धरातळव ॥ 35 ॥

वसिष्ठ महामुनि को प्रणाम कर राम ने उन्हें भिजवा दिया। सुमंत्र को गौरव तथा आदर सहित बिदा किया। माताओं को प्रणाम कर भिजवा दिया। नीतिशास्त्र के कई रहस्य समझाकर मधुर वचनों से भरत के मन की चिंता दूर कर उसे अयोध्या लौटाया। ३२ "राजन्! अगर ऐसी बात है तो कृपा कर अपने खड़ाऊँ प्रदान कीजिए। उन्हीं को आपके चरण समझकर सेवा करते जीवन-यापन करूँगा। चौदह वर्षों तक राज्य-शासन करूँगा। इस अवधि के समाप्त होते ही अगर आप उपस्थित न हों, तो मैं यह अपना शरीर अग्नि में स्वाहा कर दूँगा।" —इस तरह भरत ने राम से कहा। ३३ भरत की बातें सुनकर उसकी श्रद्धापूर्ण भक्ति से प्रसन्न होकर करुणासागर राम ने निर्मल भावना से भरत के माथे का आलिंगन किया। दयासागर राम ने अपनी स्मृति चिरस्थायी करने के उद्देश्य से भरत को अपनी पादुकाएँ, कृपा कर, दे दीं। तब भरत ने "मैं तेरी शरण में हूँ; रक्षा करो।" इस तरह कहते राम के चरणों की वन्दना की। ३४ श्रीराम से बिदा लेकर भरत सारी सेना-सहित लौट आया। राजधानी अयोध्या में प्रवेश न करते नन्दीग्राम जाकर वहाँ रहने लगे। भरत लक्ष्मीपति के चरण-कमलों की भक्ति में लीन रहकर परमानन्दयुक्त हो राज्यशासन करने लगे। ३५

एळनॆय संधि

सूचनॆ— राय रघुपति वनदॊळगॆ वज्रायुधन निजनंदनन तृणसायकदलिट्टॊडनॆ तलॆगायिदनु करुणदलि ।

जनकजासुत केळु कैका तनुज तॆरळिद बळिक तिंगळ
दिनव कळिदरु विपिन विलसित चित्रकूटदलि
वनितॆ सहित तदीय शैलद वनविहारोद्योग केळी
जनित मानसनागि तॊळलिदना महीपाल ॥ 1 ॥
दिविज मुनि गंधर्व किन्नर युवतियर खचरियर नंदन
निवहदलि शबरियर निरुपम सिद्ध चारणर
अवरवर बळिसंदु सॊगसिन विविध चित्र कलाप केळी
भवन बीथिगळॊळगॆ विहरिसिदनु विनोददलि ॥ 2 ॥
बळिक बळलिदु सारिदरु पूगॊळनना चंडांशुविन मै-
झळद झाडिय जोडियध्वश्रमद भारदलि
तिळिगॊळन तंपगिव तॆक्कॆय तॊळलिकॆय तावरॆय तनिपरि
मळद विसरद हसरदलि तीडिदुदु तंगाळि ॥ 3 ॥
परिमळद पद्मद परागदि हॊरॆद निडिदॆरॆयुब्बुगळ सं-
चरिसु वंचॆय रागरथिय रथांगदंपतिय

सातवीं संधि

सूचना— शाप के कारण काकासुर बने, जंगल में रहते देवराज इन्द्र के पुत्र पर श्रीराम ने तृणास्त्र का प्रयोग कर सीता की रक्षा की।

सीता सुत, सुनो ! भरत के लौट जाने पर सुन्दरवन के चित्रकूट पर्वत पर एक महीना विताया। चित्रकूट के जंगलों में विहार करने के उद्देश्य से राम, सीता के साथ उस पर्वत-प्रदेश में भ्रमण करने लगे। १ देवता, ऋषि, गंधर्व, किन्नर-स्त्रियाँ, खेचरियों से भरे वनों में, व्याध-स्त्रियाँ, सिद्ध और चारणों के निवासस्थानों में राम-सीता विचरने लगे। इनके निवासस्थानों पर जा-जाकर उनके चित्र-विचित्र अलंकारों से युक्त शोभायमान क्रीड़ाग्रहों में, गलियों में विचरण करते आमोद-प्रमोद करने लगे। २ धूप की ज्वाला से झुलसे, यात्रा की थकावट से बहुत ही हैरान हुए राम-सीता फुलवारी के एक सरोवर के पास आए। ठंडे जल के उस सरोवर पर से बहती कमलों की सुगंध से लदी ठंडी हवा व्यापक स्वरूप से वहने लगी। ३ उस सरोवर में— कमल-पुष्पों की सुगंध भरी पराग से लदी लहरें जो लुढ़क-लुढ़ककर आतीं और किनारों से टकराती थीं;

मोरेव मर्रिदुंबिगळ सोगसिन सरसिगिळिदरु तम्मोळोब्बो
ब्बर निरीक्षिसि वारिकेळिगे माडिदरु मनव ॥ 4 ॥
चरण जानु कटि प्रमाणांतरदि निळिदरु नीरोळूरे म-
त्सरिसिदरु प्रणय प्रतापवनोब्बरोब्बरलि
अरसियरसन मेले रघुकुलदरसनरसिय मेले हिम शी-
कर कदंबक सूसे सूसिदरा हिमोदकवा ॥ 5 ॥
कुचद मेलोगिसिदनु वारिप्रचयवनु रघुनाथनातन
रुचिकरानन बिंबदलि बीरिदळु सारसव
प्रचुरतर हिमजलवनभ्रद खचरियरु कोंडाडेकेळी
रचनेयिंदोडिसिदळरसन नट्टहासदलि ॥ 6 ॥
सोतररसेनुत्त धरणीजाते तडिगडरिदळु विमल
श्वेत वसनवनुट्टळिट्टळु बोट्टु मणिशिलेय
केतकी प्रमुखादि कुसुमव्रातदाभरणदलि रघुसं-
जात नमंळागदललंकरिसिदनु जानकिय ॥ 7 ॥
बंदरिवराश्रमके लक्ष्मणनिंद बाणसवाद नाना
कंदमूल फलंगळलि कळिदरु महाक्षुधेय

हंस आमोद-प्रमोद कर रहे थे; प्रेमानुबन्ध से मिले चक्रवाक पक्षी के जोड़े विहार कर रहे थे; भ्रमरों के झंकार से (वातावरण) निनादित था। ऐसे मनोहर शोभायमान सरोवर में राम-सीता उतरे। एक-दूसरे का मुँह देखकर जल-क्रीड़ा करने की इच्छा प्रकट की। ४ पहले-पहल पग डूबने भर तक, फिर घुटनों तक, पश्चात् कमर तक पानी में उतरे। अपने भर यौवन की मस्ती एक-दूसरे पर प्रकट करने की स्पर्धात्मक उमंग में एक-दूसरे के सम्मुख खड़े रहे। फिर राम सीता पर, सीता राम पर हिम-शीतल जल छिड़काकर आमोद करने लगे। ५ रघुनाथ ने सीता की छाती पर पानी छिड़काया। बदले में सीता ने राम के सुन्दर मुख पर एक कमल फेंका। फिर हिमजल राम पर छिड़काते-छिड़काते अट्टहास करते-करते राम को दूर भगाया। सीता के क्रीड़ा-वैभव की प्रशंसा आकाश में उपस्थित देवतास्त्रियों ने खूब की। ६ 'राजा मेरे हार गये'—इस तरह कहते हुए सीता किनारे पर आयी और स्वच्छ सफ़ेद साड़ी उसने पहन ली। माथे पर लाल चंदन का टीका (तिलक) लगा लिया। केतकी (केवड़ा) आदि फूलों के आभूषणों से राम ने सीता का अलंकार किया। ७ तत्पश्चात् राम-सीता आश्रम पर पधारे। लक्ष्मण ने कंद-मूल आदि पकाकर, फलों को सँजोकर रसोई तैयार रखी थी। उसका सेवन कर

कंद केळै बळिक समय विदेंदु सारिदनिवर शापद
लोंदि कोंडिद्दा जयंतनु काकरूपिनलि ॥ 8 ॥
अवगॆ शापविमोचनवु राघवन राणिय पदरजद सों-
कवगॆ घटिसलिकॆंबुदिदु ताननिवचनवल
ह्वणनिदनवनरिदु दळ निळयवनु सारिदुमुंदॆ संदिप
ह्वणनरियदॆ होंदिददनु दरुशनकॆ धरणिजॆय ॥ 9 ॥
सारुतिरॆ पदसोंकिगासति क्रूरवायसकंजि पतिय श-
रीरवनु बिगियप्पुताचरिसिदळु भीतियलि
वीरकेळ् वायसद पदनखधारॆ भुजदलि बीळॆ बळिकसु-
रारि कोपिसुतिट्टना खळननु तृणास्त्रदलि ॥ 10 ॥
अदुबळिक भुगिलिडुत बॆंबत्तिदुदु बिडदाकाकननु सा-
रिदुदु सरसिज भवननातनिनगगदिरॆ मुरिदु
मदन मदमर्दनन मरॆयोक्कुदु बळिक्का देवनलि हरियि-
दुद कंडिळितंदु सार्दुदु पाकशासनन ॥ 11 ॥
आवदेवर मरॆय होक्करॆ काव देवर काणॆ राघव
देवनस्त्रद महिमॆ यॆंतुटो शिव महादेव

दोनों ने भूख मिटायी। शापग्रस्त जयंत यही ठीक अवसर जान कौए के रूप में राम-सीता के पास आया। ८ अत्रि मुनि ने कहा था— 'जब राम की पत्नी की चरण-धूली का स्पर्श प्राप्त होगा तभी तू शाप-विमुक्त होगा।' यह जानता हुआ जयंत राम की पर्णकुटी के नज़दीक आया। 'कैसे स्पर्श प्राप्त करूँ?' —इस असमंजस में पड़ा जयन्त सीता के दर्शन प्राप्त करने उसके पास गया। ९ जानकी के पादस्पर्श की अभिलाषा से जब वह क्रूर कौआ सीता के नज़दीक आने लगा तो सीता डर के मारे काँपते अपने पति के देह से कसकर लिपट गयी। सुनो वीर कुश, कौए के पैर के नाखून के खरोंच से सीता की बाँह घायल हुई। यह देख राम ने अत्यंत क्रोधित हो घास के एक तिनके पर मंत्र आह्वानित कर कौए पर उसका प्रयोग किया। १० वह तृणास्त्र आग उगलते, बिना चूके कौए का पीछा करने लगा। कौआ ब्रह्माजी के पास गया। वे उसकी (कौए की) रक्षा न कर सके। वहाँ से वह शिवजी की शरण गया। शिवजी से भी उसकी रक्षा न हो सकी। तब वह वहाँ से उतरकर देवराज इन्द्र के पास गया। ११ "जिस किसी भगवान (देवता) की शरण जाने पर भी कोई भी रक्षा करने में समर्थ न दीख पड़ा। राघव प्रभु की उस अस्त्र की महिमा न जाने कैसी है! हे शिव-शिव! कमलनयन देवताओं में सर्व-

देवरोळ गग्गळनला राजीवनेत्रनु चित्रवेनुत म-
हाविभुविन विनोद विभवके बेरगदेनेंद ॥ 12 ॥
अरिदु बळिकिंद्रनु जयंतन जरेदु कळुहिदनी महास्त्रव
तरुबु ववरुंटे सुरासुर नर भुजंगरलि
बरिदे बळलिदे होगु माया मत्र्य मनुजाकृतिय दैवद
मत्र्य होगु होगेनलु होदिददना ककुत्स्थजन ॥ 13 ॥
शरणु होक्कनु देवदेवर चरणकमलव नस्त्रविद परि-
हरिस लापवरुंटे तीनल्लदे सुरौघदलि
शरणजन रक्षामणिये निज शरणजन वत्सलने
निरुपम शरणदेहिक देव तन्ननु काय बेकेंद ॥ 14 ॥
कावडेयु कोलुवडेयु मिक्किन देव ततिगुंटे स्वतंत्र म-
हा विभुवला नीनु निन गेणेगाणे नुळिदरलि
देव मार्कंडेय ध्रुवदंतावळेंद्र प्रमुख शरणज-
नावळिय सलुहिद वोलेन्ननु सलह बेकेंद ॥ 15 ॥
शरविदेम्मदमोघ मत्र्योक्करनु सलहुव बिरिदु संदिहु
देरडुगुण नमगी धरित्रियोळेंदु रघुनाथ

श्रेष्ठ है न ! यह अत्यंत आश्चर्य की बात है। जगत्पति के लीला-विनोद के लिए क्या असाध्य या असंभव है ?" --इस तरह वाल्मीकि ने कहा। १२ यह विषय जाननेवाले इन्द्र ने जयंत की निंदा करके उसे लौटा दिया। "इस महान अस्त्र के, सामना करने की शक्ति स्वर्ग-मृत्यु-पाताल— तीनों लोकों में किसी की नहीं है। व्यर्थ की थकावट तुमने झेली। जा। माया से मानव-रूप धारण कर विचरण करनेवाले स्वामी की ही शरण में जा।" —इस प्रकार इन्द्र ने जब समझाया तो कौए का रूप धारण करनेवाला जयंत फिर राम के पास ही आया। १३ "प्रभो ! तुम्हारे चरण-कमलों की शरण आया हूँ। तुम्हें छोड़कर अन्य देवताओं में कौन इसका परिहार करने में समर्थ है ? शरणागत रक्षक प्रभो ! भक्तप्रिय भक्तदेही ! मेरी रक्षा करो" —इस प्रकार प्रार्थना की। १४ "रक्षा करने का या विनाश करने का स्वातंत्र्य अन्य देवताओं को कहाँ है ? तुम सर्वोत्तम प्रभु हो न ? तुम्हारी बराबरी करनेवाला अन्यों में कोई नहीं दिखायी देता। मार्कण्डेय, ध्रुव, गजेन्द्र आदि भक्तों की रक्षा जिस प्रकार की उसी प्रकार मेरी भी रक्षा कीजिए।" इस तरह प्रार्थना कर ली। १५ "हमारा अस्त्र व्यर्थ हो नहीं सकता। लेकिन शरणागत की रक्षा की ख्याति (भी) उसकी है। इस जगत में ये दोनों गुण

सरळिगोंदव नक्षियनु कॊंडॆरडुकडॆ,गोंदालियनु वि-
स्तरिसि करुणदला जयंतन काय्दना राम ॥ 16 ॥
बळिक शापविमोचनदलव नळिननाभस्तोत्रदलि मं-
गळ मनोरागदलि मुकुळित करपुटंगळलि
नलिदु नर्तिसुतमर नगरिगॆ तळर्दनमर विमानदलि वळि
किळिदरिवरी चित्रकूट महामहीधरव ॥ 17 ॥

॥ अयोध्याकाण्ड समाप्त ॥

हमारे आधीन है।" इस तरह कहते हुए एक आँख (उस) अस्त्र को प्रदान करने के लिए राम ने कहा। फिर बची एक आँख को दोनों तरफ़ देखने की दृष्टि का विस्तार कर जयंत की रक्षा की। १६ शाप से विमुक्त जयत ने हाथ जोड़कर महान आनंद से प्रभु राम का स्तोत्र किया। फिर खुशी-खुशी देवलोक के विमान पर आरूढ़ हो अमरावती के लिए प्रस्थान किया। इस तरफ़, सीता-राम-लक्ष्मण चित्रकूट पहाड़ से नीचे उतर आए। १७

॥ अयोध्याकाण्ड समाप्त ॥

अरण्यकाण्ड

ओंदनेय संधि

सूचने— तरणि वंशजरत्रि मुनिपुप चरणेयनु कंकोंडु रजनी चर विराधन मुरिदु सार्दरु पंचवटिवनव ।

केळु कुशबळिकिवरु हलवु वनाळिगळ कळिदत्रिमुनिकुल
मौळिमणियाश्रमव सारिदरतुळ हरुषदलि
श्रीलतांगिय रमणनी भूपालनेंदरिदा मुनिप सं-
स्थूल सत्कृतियिंद संभाविसिद नवरुगळ ॥ 1 ॥

आ समयदलि बंदु राम सुवासिनिय बिगियप्पिदळु परि-
तोष रसदुब्बरद झाडियलनसूया देवि
क्लेश गोंडळु कैयोडने वनवास वादुदे यकट बहळा
यास घटिसिते राजनंदनेगेंदु मनसिनलि ॥ 2 ॥

हेळिदळु बळिकवनिजेगे शशिमौळि विष्णु विरंचिगळु निज-
बालकरु तनगाद कथेयनु तन्न नडवळिय
शीलवनु सिगुरेळ दिरलि विशाल पतिभजनेयलि येंदति
लालनेयलुपचरिसिदळु ललना शिरोमणिय ॥ 3 ॥

पहली संधि

सूचना— रविकुल के राम-सीता-लक्ष्मण ने अत्रि महर्षि का आदरातिथ्य स्वीकार कर, विराध नामक राक्षस को मारकर पंचवटी नामक वन-प्रदेश में पहुँचे ।

हे कुश ! सुनो । तदनंतर राम-सीता-लक्ष्मण कई वन-प्रान्तर प्रदेश पार करते हुए महर्षिश्रेष्ठ अत्रि ऋषि के आश्रम में अत्यंत हर्ष से पहुँचे । (अत्रि) मुनि ने यह जानते हुए कि लक्ष्मीपति ही यह राज श्रेष्ठ राम है— उनका आदर सत्कार कर गौरव प्रदान किया । १ इतने में अनसूयादेवी आयी तथा श्रीरामपत्नी सीता को उसने अतिशय आनंद से गले लगा लिया । हाय-हाय इस पर क्या मुसीबत आ पड़ी ! राज-कुमारी को वनवास हुआ ! अनसूया अत्यंत क्लांति से मन ही मन बहुत चटपटायी । २ ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर का अपने पास आकर शिशु-रूप धारण करने की कथा सीता को बताते हुए अपने चरित के बारे में विवरण दिया । "निस्संकोच अपने पति की आराधना में दत्तचित्त रहो । तुम्हारा

सोगसुवी सौंदर्य सागरवगजेंगा रमेंगा सरस्वति
गुगुळु नीरागिदें निरीक्षिसलंगवट्टदलि
अगलदिरु रामननु मायविगळु घन केळेंदु होंदोड
वुगळनित्तुपचरिसि हरसिदळनसूया देवि ॥ 4 ॥
मुनि बळिक बीळ्कोंट्टनी रघुजनपरनु जमदग्नि रामन
बनकें बंदरु बीळुकोंडरु तन्मुनीश्वरन
मुनि मुनिगळाश्रमव होक्कव रेनितु माडिद सत्कृतिय सा-
धनव कैंकोळुतैंदिदरु घनघोर काननव ॥ 5 ॥
हब्बिदाल तमाल तरुगळ मोब्बुगळ हेंम्मेळेय हरहुग
ळुब्बरद शार्दूल सैरिभ शरभ सूकरद
उब्बटेय फूत्कृतिय फणिकुलदब्बरद कांतार दोळगिव
रब्बरिसुतैदिदरु सोहुत सकल मृगकुलव ॥ 6 ॥
ऐनिदच्चरि विपिनविदरलि मानवर संचार विल्ल न-
वीनविदु नररागें पुण्यविदैसलेयेंनुत

आचरण अखंड रहे।" —इस तरह समझाते हुए अनसूया ने अत्यंत प्रीति से सीता की आवभगत की। ३ "लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती देवियाँ अपना रूप (तुम्हारे रूप से तुलना करते हुए) देख लेती हैं तो तुम्हारा अतिशय देह-सौंदर्य मानों उनके गले में अटक-सा जाता है। राम से अलग होकर कभी न रहना। यहाँ मायावी अत्यधिक हैं।" —इस तरह कहते हुए सोने के आभूषण भेंटकर अनसूया देवी ने सीता को आशीर्वाद दिए। ४ अत्रि मुनि से बिदा लेकर राम-लक्ष्मण-सीता परशुरामजी के आश्रम आए। वहाँ से रवाना होकर अन्यान्य ऋषियों के आश्रम पहुँचे। वहाँ जो आदर-सत्कार मिला उसे स्वीकार कर एक भयानक जंगल में उन्होंने प्रवेश किया। ५ घने होकर बढ़े हुए बरगद पेड़, करंजा के पेड़ों की घनी छाया के उस जंगल में भारी-भरकम पेड़-पौधों के झुंड के झुंड फैले हुए थे। शार्दूल, जंगली भैंसे, शरभ, सूअर, वगैरः प्राणी, अपनी भयानक फुसफुसाहट से फुफकारनेवाले साँप आदि से युक्त उस जंगल में इन भयानक प्राणियों को भगाते मार्ग प्रशस्त कर लेते वे आगे बढ़े। ६ "यह कितनी आश्चर्य की बात है! इस जंगल में मानव प्राणी के दर्शन ही नहीं होते। मनुष्यों का यहाँ आना यह एक दम नया ही है। यह मेरे लिए भाग्य की बात है!" इस तरह कहते हुए राक्षस विराध माया-मानव-रूप-धारी राम-लक्ष्मण के पास आया। सीता उस राक्षस का भयानक रूप देख एकदम

आ निशाट विराधना मायानरर बुळिगैदिदनु सी-
ता नितंबिनि बेंदरे बहळित रौद्ररूपिनलि ॥ 7 ॥
मुळुगिसिदुदा खळन मैगत्तलॆ दिवाकर बिंबवनु बिडु-
दलॆय सिडिलंगळद जंगळदक्षियुगळगळ
कुलिश दंष्ट्रद विकृत वक्तृद विलय भैरवनंते मुंदकॆ
सुळिय लाचरिसिदळु कंडु कुमारि कुंभिनिय ॥ 8 ॥
सीतॆयनु कंडा विराधनु सोतनै चित्तदलि लॆक्किस
दीतगळ झंकिसुत झोंपसिदनु विदेहजॆय
आ तुटारन कंडु निम्मय तात सैरिसुवनॆ महोग्र नि-
शात शरदिंदॆच्चु कडिदनु करवना खळन ॥ 9 ॥
मुरिदु मोरॆदवनिपन नुंगुव भरदिनवनैतरलु नृप हॊं-
बरहदस्त्रदलिळुहिदनु रक्कसन मस्तकव
उरवणिसुता मुंड मुंदकॆ बरलु लक्ष्मण देवनदनू-
र्वरॆयॊळडगिस लॆच्चु मॆच्चिसिदनु ककुत्स्थजन ॥ 10 ॥
शाप हतनागिर्दनवनु विशापवाप्तिवरिंद पूर्वद
रूप कैकॊंडॆसॆद तुंबुर नॆंब नामदलि

डर गयी। ७ विराध के शरीर के काले किट्ट अंधेरे ने (काले रंग ने) सूर्यबिंब को भी छिपा दिया। बिखरे बाल, विद्युत् की तरह (आग जैसी) की आँखें, वज्रायुध जैसे लम्बे नुकीले दाँत, भयंकर विकारपूर्ण मुख वाला वह राक्षस प्रलयकालीन भैरव की तरह सामने आया कि नहीं, सीता धरती की ओर देखती काँपने लगी। ८ सीता को देख विराध उसके रूप के कारण (सुन्दरता पर) रीझ गया। राम-लक्ष्मण की परवाह न करते, उनको डाँटते-डपटते सीता के सामने उपस्थित हो गया। उस झगड़ालू की हरकत को देखकर क्या तुम्हारे पिताजी चुप रह सकते हैं? ज़बर्दस्त पैने बाण चलाकर उस (विराध) के हाथ काट डाले। ९ विराध ने मुड़कर देखा तथा गरजते हुए, राम को निगल डालने के हेतु अत्यंत ही वेग से आ ही रहा था कि राम ने सुनहले अक्षर कढ़े बाण से विराध का सिर काट डाला। फिर भी राक्षस का शिरोभाग-रहित देह बड़े भयानक रूप से आगे बढ़ने लगा। यह देखते हुए लक्ष्मण ने एक बाण इस प्रकार चलाया कि (उस) राक्षस का धड़ धरती में गड़ जाय। यह देख राम बहुत प्रसन्न हुए। १० शापग्रस्त विराध का, राम-लक्ष्मण के कारण शाप से विमुक्ति हुई। वह तुम्बुर नाम का अपना पूर्व रूप (मूल रूप) प्राप्त कर कहने लगा— "भगवान्! आप लक्ष्मीपति हैं न? भूमि का

श्रीपतियला नीनु भूभारापहर कारणदि नी नर
रूपु निनगार्य्तेंदु हॊगळुत हाय्दनजपुरिगॆ ॥ 11 ॥
कळिद रिवरु विराध विपिन स्थळव नल्लि मेलॆ नाना
हळुववनु बळसिदरु बंदरु तॆंकमुखवागि
फलित भूजारण्यवनु मंजुळ मही लावण्यवनु कं-
डॊलिदु हॊक्करु दंडकारण्यवनु हरुषदलि ॥ 12 ॥
मुनिगळिद्दरु मुंदॆ नियमासन समाधिध्यानदलि जल-
दनिल दाहारदलि कामक्रोधमोदलाद
जिनुगु जाड्यद जंबडव कॊलकॊनदु निखिळेंद्रियद कळकळ-
वनु निवारिसि केवल ब्रह्मदलि नॆलॆयागि ॥ 13 ॥
कॆलबरुर्ध्व मुखांघ्रियलि कॆल कॆलरु जलमध्यदलि कॆलरा-
ज्वलन पंचक मध्यदलि सूच्यग्रदलि कॆलरु-
कॆलरु जप तप होम नियमंगळलि नीलग्रीव नीरज
दळ विलोचन रमळ भक्तियरिंद रिदिरनलि ॥ 14 ॥
वरपलाशाश्वत्थ वौदुंबर कुश श्वेतार्क शमि खा-
दिरवपामार्गादि होमद समिधॆगळ हॊरॆय

भार उतारने के उद्देश्य से यह नर-रूप धारण किया है न ?" —इस प्रकार राम की स्तुति करते-करते वह ब्रह्मलोक में विलीन हो गया। ११ विराधवन से आगे बढ़कर वे अनेक जंगलों में विचरण करने लगे। तत्पश्चात् दक्षिण दिशा की ओर बढ़कर फल-भार से लदे पेड़ों से भरे घने तथा नयन मनोहर दंडकारण्य को देखकर बड़ी प्रसन्नता से उसमें प्रवेश किया। १२ दंडकारण्य में —यम, नियम, आसन, समाधि, ध्यान वग़ैरः अष्टांग योग में निरत जल तथा वायुसेवन ही आहार बनाए हुए व्रतधारी तथा क्लेशकारी आधिभौतिक तथा आधिदैविक चिंताओं को त्यागे इन्द्रियों की वासना का परित्याग किये ब्रह्मचितन में लीन ऋषि-महर्षि वहाँ थे। १३ (वहाँ) कुछ ऋषि पैर के अँगूठों पर खड़े-खड़े तपस्या कर रहे थे। उनकी दृष्टि आकाश की तरफ़ थी। कुछ पानी के मध्य खड़े रहे, कुछ पंचाग्नि के मध्य खड़े-खड़े, कुछ काँटों पर खड़े होकर तपस्या कर रहे थे। कुछ तो जप, तप, होम में निरत थे। इस प्रकार शिव तथा विष्णु की, भक्ति से आराधना करते हुए तपस्वियों को राम ने देखा। १४ कुछ, ढाक, पीपल, गूलर, दर्भा, सफ़ेद आक, शमी, खदिर, अपामार्ग आदि पेड़-पौधों की समिधाओं के बोझ को ढोते हुए जा रहे थे; कुछ गाय का दूध, दही, शहद, घी के घड़े आदि ढोए जा रहे थे। इनका अनुसरण करते

भरित घट गोक्षीर दधि बंधुरद मधु सितसर्पिगळ मुनि-
वरर बळिविडिदैदिदरु शरभंगनाश्रमव ॥ 15 ॥
आ मुनीश्वर निदिरुगोंडी रामचंद्रन सकल सुगुण
स्तोम सांद्रन नधिक मान्यतेयिद सत्करिसि
ई महात्मनु विष्णुवेंदे सौमनस्यदलरिदु भक्ति
प्रेमदलि कूडिदनु मुनि होमाग्नि मुखदिंद ॥ 16 ॥
आ क्षणदोळा वनवनुळिदु सुतीक्षणननधिगत तपः परि-
रक्षणन दळ निळयवनु सार्दरु संरागदलि
सूक्ष्मु मज्ञानदलि मुनि वनजाक्ष नेंबुदनरिदु मनदा
पेक्षेयलि भजिसिदनु माया मनुज वल्लभन ॥ 17 ॥
आ सुतीक्षण नाश्रमदोळा दाशरथि नूकिदनु तिंगळ
वासरव नल्लिद मेला मुनिय बीळ्कोंडु
आ सुमित्रासूनु जनक महीशनंदनें सहितगस्त्य मु-
नीश नोंड वट्टिदन बळिगैतंद रौलविनलि ॥ 18 ॥
इवरता मुनियुपचरिसिदनु विविध सत्कारदलि तिंगळ
दिवस परियंतिरिसि बळिकिल्वलन संगतिय
अवननुज वातापि येंदेंबवन कथेयनु पेळ्दु घट सं-
भवन भवनकें बीळु कोट्टनु मुनि ककुत्स्थजन ॥ 19 ॥

राम-सीता-लक्ष्मण शरभंग ऋषि के आश्रम में पधारे। १५ शरभंग मुनीश्वर ने आगे बढ़, इनका स्वागत किया। सकल गुणसंपन्न श्रीराम का पूर्ण गौरव से सत्कार किया। मन ही मन यह जानकर कि यह महात्मा साक्षात् विष्णु है— यज्ञाग्नि को गवाह करके भक्ति-प्रेम से (श्रीराम के) दर्शन कर लिये। १६ उस समय शरभंग के आश्रम से रवाना होकर तपोमहिम सुतीक्ष्ण की पर्णकुटी में आए। 'श्रीराम कमलाक्ष विष्णु भगवान हैं'—इस तरह अपने सूक्ष्म ज्ञान से जाननेवाले सुतीक्ष्ण मुनिवर ने मायानर (माया के कारण नररूपधारी) राम की भक्तिभाव से पूजा की। १७ सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम में श्रीराम ने एक महीने तक निवास किया। उसके बाद उस मुनि से बिदा लेकर श्रीराम लक्ष्मण और जानकी के साथ अगस्त्य मुनि के भाई व वसिष्ठजी के यहाँ बड़ी प्रसन्नतापूर्वक आए। १८ उस मुनि ने विविध रीतियों से श्रीराम आदि का आदर-सत्कार किया। एक महीने तक अपने यहाँ (इन्हें) ठहरा लिया। मुनि ने इनको इल्वल तथा उसके भाई वातापि —इन दोनों की कथा समझाकर उन्हें अगस्त्य महर्षि के आश्रम भिजवा दिया। १९ "पूर्व में शिवधनु-

कुशनॆ बल्लै हिंदॆ भार्गवनसम धनुवनु निम्म पितना
शशिमुखिय परिणयद समनंतरद लध्वदलि
विषमतर दोर्दंडसाहस दॆसकदलि सॆळदा महाधनु
वसतियलि मडगिर्दुदनु लवकेळु सुरपतिय ॥ 20 ॥

नारदन सूचनॆयला वृंदारकोत्तमनक्षयद तू-
णीर बाण कृपाण बाणासन समेतदलि
सरिदनु मातळिय रथचीत्कार दब्बर दिद कॊडन कु-
मारंकन बळिगा मुनींद्रंगित्तना धनुव ॥ 21 ॥

ईवुदिव निन्नॆडॆगॆ राघव देववंदरॆ मडॆयदग्गद
रावणासुर निधन कुपकरिसुववले यॆनुत
आ विभाकर वरुण पुत्रंगी विवेकव नरुहि वळिक म-
रावतिय सारिदनु सारिदरिवरु मुनिवरन ॥ 22 ॥

आ महाश्रमवॆसॆदु दिदिरलि होमधूमोद्धूतगंध
स्तोमदलि स्वाहा स्वधाकार प्रणाददलि
सामगानध्वानदलि विश्राम विश्रुत रम्य पूर्णसु
धामदलि कंडिवरु हॊक्करगस्त्य मंदिरव ॥ 23 ॥

भंग कर, स्वयंवर में सीता के साथ विवाह कर तुम्हारे पिताजी जब अयोध्या की यात्रा कर रहे थे तब मार्ग में प्रचंड बाहुबलशाली परशुराम से महाधनु को छीन लेने की घटना तुम्हें याद है न कुश ? वह महाधनु इन्द्र के निवास-स्थान पर रखा गया था।" इस तरह वाल्मीकि ने विवरण दिया। २० नारद की सूचना के अनुसार अक्षय बाणों से भरा तरकस, बाण, तलवार, तथा धनु लेकर देवेन्द्र अगस्त्य के यहाँ उपस्थित हुए। इन्द्र-सारथि मातलि से संचालित रथ बड़ी घरघराहट के साथ तीव्र गति से अगस्त्याश्रम पहुँचा। इन्द्र ने वह (महा) धनु अगस्त्य को समर्पित किया। २१ "वीर रावणासुर के संहार में ये सहायक सिद्ध होंगे। जब राम तुम्हारे पास आएगा बिना भूले इन्हें उनको दे दीजिए।" —इस तरह अगस्त्य को समझाकर इन्द्र अमरावती चले गये। इधर राम-लक्ष्मण-सीता अगस्त्याश्रम के नजदीक पहुँचे। २२ यज्ञ के धुएँ से सुवासित शोभायमान अगस्त्याश्रम सामने दिखायी दे रहा था। वहाँ ऋषि-महर्षियों के यज्ञ करते उच्चारित 'स्वाहा', 'स्वधा' मंत्रों की तथा सामवेद के गानों की ध्वनि (कर्णमधुर) सुनायी पड़रही थी। विश्राम करने योग्य सुमनोहर अगस्त्य की पर्णकुटी देख इन्होंने अन्दर प्रवेश किया। २३ देवेंद्र से दी

शक्रवचनद लीतनंदिन चक्रधरनेंदरिदु रघुकुल
चक्रवर्तियनुपचरिसिदनु सानुरागदलि
शक्रनित्तायुधव नावं शक्रमाचार्यगे राक्षस
विक्रमांबुधि वडब गित्तनगस्त्यमुनि बळिक ॥ 24 ॥
इरिसि कोंडिद्दनु निशाचर करिमृगेंद्रन नोंदु तिंगळु
परम पंचवटी प्रदेशद घनवनांतरके
हरसि कळुहिदनिवरु मूवरु बरुत कंडरु दंडकानन
दिरवना विस्तरवं तोरिदना नृपति सतिगे ॥ 25 ॥
इदु लवंग विळंग कुरवक कदळि कक्के कवुंगु कम्मर
तदिकु तंडसु तडसु तपसि कुरंजि खर्जूर
बदरि बेळलिब्बीडे बिग्गुलि बिदिरु बेळलरुटाळ विवु नो-
डिदिरिनलि बेरिवे महीजगळरसि नोडंद ॥ 26 ॥
मत्ति मोळगर नेल्लिमादल मुत्तु मावु मधूक कुट क-
ल्लत्ति खादिर कडवु शाल्मलि सोवे सुरहोन्ने
बेत्त बेवग्गारणिले मुळु मुत्तुकातरु कणिकारद
मोत्तविदे नोडबले तळिरेलेदळद सोंपिनलि ॥ 27 ॥

गयी (पूर्व) सूचनानुसार सुदर्शन चक्रधारी महाविष्णु का अवतारी पुरुष यही है —समझकर अगस्त्य ने रघुकुल चक्रवर्ती (श्रीराम) का बड़े गौरव से आदर-सत्कार किया। तदनंतर राक्षसों की वीरता रूपी समुद्र के लिए बड़वाग्नि-सदृश रविकुलतिलक श्रीराम को, देवेन्द्र से प्रदत्त दिव्यास्त्रों को सौंप दिया। २४ राक्षस रूपी हाथियों के लिए सिंह-सदृश श्रीराम को महीने भर के लिए अगस्त्य ने अपने आश्रम में ठहरा लिया। फिर अगस्त्य ने श्रीराम को आशीर्वाद देते हुए पंचवटी नामक प्रशस्त वन में भिजवा दिया। अगस्त्याश्रम से रवाना हो, आते समय राम-सीता-लक्ष्मण ने दंडकारण्य देखा। उस अरण्य का विस्तार राम ने सीता को दिखाया। २५ "यह लौंग, यह वायु विडंग, यह गोरंटि, यह केले का पौधा, यह मेंहदी, यह सुपारी, कड़वा नींबू, हाथीबेल, तडसलु तपसि, कुरंजि, खजूर, बेर, बेल (बिल्वपत्र का पेड़), सीसम, बिग्गुलि, बाँस, गोंद आदि कई प्रकार के पेड़ों को देखो। रानी, वह देखो, सामने कई प्रकार के पेड़ खड़े हैं।" इस प्रकार कहते राम ने नाम जताते सीता को वे पेड़ दिखाए। २६ "मत्ति, मोळगर, आँवला, मादल (मातुलिंग) पलाश, आम का पेड़, इप्पे (मधूक), कल्लत्तिगे, कग्गलि (खदिर) कडंब वृक्ष, सेमल, सोवे, पुन्नाग, बेंत, नीम, अग्गारु, हड़, काँटेदार पलाश, जंगली तामरस वग़ैरः पेड़ कोंपल,

आलवंबटॆ तग्गि तुग्गिलु वेल बॊव्बुलि वकुळ शमि कु-
द्दाळ गुग्गुळ हॊन्नॆ चॆन्नगि ताळ हिताळ
जालि जॆनॊड विप्पॆ पिप्पल मालॆयिव नॊडबलॆ लतॆगळ
मेलु हॊदकॆय बंदणिकॆगळ भारि वॊरॆगळलि ॥ 28 ॥
बॆल्लवत्त कपित्थ चिक्कणि चिल्ल गुग्गुळ गॆरु गावटॆ
चॆळ्ळु तिलकवशोकॆ चंपक पूग पुन्नाग
नॆल्लि नॆरिलु नगरॆ कडसिगॆ कल्लरळि कर्पूर कदळिग-
ळिल्लि नॊडिवॆ भूमिसुतॆ भूजात संततिय ॥ 29 ॥
नोडु बेरिवनित्तलिवॆ हरि क्रोड खड्गि कुरंगी चित्रक
नेड कडवम्मावु सैरिभ शरभ सारंग
काड बॆक्कुरिगण्ण जंबुक कोडगवु वृक शशक मरॆमर
गाडिनॊळगिवॆ नोडु सीतॆ समग्रमृगकुलव ॥ 30 ॥
करडि नोडिवु मुसुगळिवु कत्तुरिय मृगविवु चमरियिवु कि-
न्नर कदंबकविवु वनद्विपकळभ निकरविवु
करभविवु काकोदरगळजगरगळिवु हेरणिलॆयिवु मुं-
गुरिगळिवु गौधेयविवु गजगमनॆ नॊडॆंद ॥ 31 ॥

पत्ते, दलों से कितने सुशोभित हैं ! —देखो प्रिये" —इस तरह कहते राम ने सीता को दिखाये। २७ "बरगद, अमडा, तग्गि, तुग्गिलु, वेल, बबूल, मौलसिरी, शमी, कॆंगांचळ, गुग्गुल, पुन्नाग, चेन्नंगि, ताड़वृक्ष, छोटी जाति के ताड़, बबूल, ओडवे पेड़, इप्पे, पीपल आदि पेड़ों को तथा उनसे लिपटी लता बेलों को भी देखो। उन पर फैले हुए अमरबेलों के गुच्छे भी राम ने सीता को दिखाए। २८ "बिल्वपत्र, बेल, (कपित्थ) चिक्कणि, कत्था, गुग्गुल, भिलावाँ, गावरे, चेळ्ळे, तिलकवृक्ष, अशोक वृक्ष, चंपा, सुपारी, पुन्नाग, आँवला, जामुन, नगरा, पीपल, कर्पूर के पेड़ तथा केले के पौधे यहाँ हैं। इन पेड़ों को देखो।" —इस तरह राम ने सीता से कहा। २९ शेर, सूअर, खड्गमृग (गेंडा), हिरन, चीता, जंगली बकरा, बारहसिंगा, जंगली गाय, भैंसा, शरभ, मृग, जंगली बिलाव, जलती आँखों वाला सियार, बन्दर, भेड़िया, खरगोश, कुरंग आदि सभी जंगली प्राणियों को इस भयानक जंगल में देखो। इस तरह सीता से राम ने कहा। ३० "ये रीछ हैं। यहाँ देखो, ये काले मुँह वाले बन्दर ! ये कस्तूरी मृग हैं। ये चमरी मृग हैं। ये किन्नरसमूह है। ये देखो— जंगली हाथियों का झुंड और उनके बच्चे। ये सर्प हैं। ये अजगर हैं। ये देखो गिलहरियाँ कितनी बड़ी हैं। ये नेवले हैं। ये गोधा (गोह) हैं। हे मंदगमनवाली सीता,

अरसि नोडीचेंयलि हुदुगिद हरडे हंग मयूर टिट्टिभ
गौरव गीजग गौजु लाऊगें बुरले बोगार
मरकुटिग चंबोत शुक जागरिग नरळिगनसग साळुव
सरट सार समूह मेळगळित्त लिवेंयेंद ॥ 32 ॥
वलिय भारद्वाज पिक पिंगलि निशाटध्वांक्ष चातकि
चिलिमिलिग जाण्वक्कि चकोरि कळिंग कळविंक
बेंळुव बेंचग बेंक्कु बक मीन्बुलिग मंजुरिगण्ण शिखि मड
गौळलें मुख्य विहंगविदें वैदेहि नोडेंद ॥ 33 ॥
देवि नोडिदें मुंदें कनकग्राव दंतिदें खग विदोंदु म-
हा विचित्र पतत्रियिद नाव् नोड बेकेंनुत
तीविदुत्सवदिंद वरराजीव लोचन नैदिदनु परि-
भाव शुद्धिय मनद तपद पतंग सूतजन ॥ 34 ॥
नीनि दारै पक्षिवेषद दानवनों मानवनों विनता
सूनुवों सुरनो भुजंगमनो महादेव
काननद खगकुलद परियनुमान तोर्पुदु मनकें हेळै
नीनदारेंबुदनु तदगेंदरस बेंसगोंड ॥ 35 ॥

ये सब देख" —कहते हुए राम ने सीता को तरह-तरह के प्राणी दिखाए। ३१ "देख मेरी रानी, इस तरफ़ देख। छिपे हुए एक प्रकार के पानी के पक्षी, सगुन बतानेवाले पक्षी, मोर, टिट्टिभ, बया, मैना, तिकोरी लावा पक्षी, पुरुले (एक जाति की पक्षी) बोगार नामक पक्षी, कठफोड़वा, भारद्वाज पक्षी, तोता, जागरिक नरळिग नामक पक्षी, रजक पक्षी, बाज़ वग़ैरः झुंड के झुंड हैं। इस तरफ़ ये गिरगिट देखो।" —इस तरह कहते राम ने कई पक्षी सीता को दिखाए। ३२ "वैदेही इधर देख। यह वलीमुख नामक पक्षी, भारद्वाज, कोयल, पिंगलवर्णी उल्लू, उल्लू, कौआ, चातक, चिलमिलिया, तोता, चकोर, कलिंग, कलविंक, जंगली कबूतर, बेंचग पक्षी, बिल्ली, बक, मछलियाँ खानेवाला पक्षी (रामचिड़िया), मंजुरिगण्ण नामक पक्षी, मोर, राजहंस आदि ये प्रमुख पक्षी हैं।" —इस तरह राम ने कहा। ३३ "देवी, यह देखो यहाँ। स्वर्णशिला की तरह यह एक पक्षी है। इस विचित्र पक्षी को निहारना चाहिए।" —इस तरह कहते अत्यंत उत्साह से कमलनयन श्रीराम निर्मल मन से ध्यान-मग्न सूर्यपुत्र अरुण के बेटे जटायु के पास आए। ३४ "तू कौन है? पक्षी का रूप धारे कोई राक्षस है? या मानव? या गरुड़? या कोई देवता? या पाताल-निवासी हो? शिव शिव! जंगल के पक्षी-सरीखे न

तेरॆदु कंगळनातनीतन निरिसनीतन हॊगर नीतन
मिरुप तनुविन देवतालांछनद मनदॊळगॆ
अरिदु नीनारॆ नरांगद मरॆय जवनिकॆ निन्नलिदॆ कं-
दॆरॆव माडारॆंबुदनु नीनॆंदनरुण सुत ॥ 36 ॥
आदडॆलॆ विहगेंद्र रविवंशोदयन वसुमतिय सुमनो
पादपन दशरथन बल्लै कॆळि पूर्वदलि
तीद नातनु बळिक भरतंगादुदी धरॆ वन परिभ्रम-
णोदयवु नमगाय्तु पितनाज्ञॆयलि कॆळॆंद ॥ 37 ॥
अकट दशरथ रायनमर प्रकरदलि सेरिदनॆ शिवशिव
सकल विभवालंकृतनु सारिदनॆ सुरपुरव
प्रकट तात्म प्रियन मृतवाचकव कॆळ्दॆवॆ हा ऎनुतल
व्यकुत जलबिंदुगळ बिडदुगुळिसिद नक्षियलि ॥ 38 ॥
नरकुलाधिप नात नीनंवर चराधिपनुभय मंत्र
स्फुरणवादुद हेळवेकॆंदरस कॆमुगियॆ
तरुणिकुल कॆळादडादिय लरसियरु हदिमूवरादरु
वरमरीचि सुतगॆ दक्षमुनींद्र तनुजॆयरु ॥ 39 ॥

दीख पड़नेवाले तुम्हारे बारे में एक प्रकार से शक होता है। तू कौन हैं ? मुझे सच सच बता।" —इस तरह श्रीराम ने पूछा। ३५ जटायु ने आँखें खोलकर देखा— तो उसकी (राम की) रीति, उसका दमकता तेज, चमकते देह में दिखायी पड़नेवाले देवता के लक्षण वग़ैरः पहचानकर उलटे प्रश्न किया— "तू कौन है ? प्रतीत होता है कि मानवीय देह के परदे ने तुझे ढक लिया है। तू अपना निजी स्वरूप मेरे सामने प्रकट कर" —इस तरह अरुण के पुत्र जटायू ने प्रश्न किया। ३६ "सुनो पक्षीराज ! रविकुल में जन्म धारण करनेवाले भूमि के लिए कल्पवृक्षस्वरूपी राजा दशरथ का नाम तो तुमने सुना ही होगा न ? दशरथ राजा के स्वर्गवासी होने पर राज्य-शासन भरत के आधीन हुआ। पिताजी की आज्ञा से यह वन विचरण हमें प्राप्त हुआ।" —इस तरह राम ने जटायु से कहा। ३७ "हाय रे दुर्दैव ! दशरथ राजा स्वर्गवासी हुए ? शिव शिव ! समस्त वैभव-संपन्न अमरावती की आशा कर चल पड़े ? (मेरे) परम मित्र की यह मृत्यु-वार्ता (आज) सुननी पड़ी न ? —इस तरह दुःख प्रकट करते जटायू की आँखों से अश्रुधारा बही। ३८ "दशरथ तो मानवकुल के स्वामी, तो तुम पक्षिकुल के स्वामी हो। तुम दोनों की मित्रता कैसे संभव हुई ? कृपया बताइये।" इस तरह राम ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की। तब जटायु

अदितियिं देवतेगळा दिति सुदतियिं दैत्यरु निकर्षेयिं
ददटबल रक्कसरु खद्रुविनिं भुजंगमरु
उदिसिदरु मिक्काद महिळेय रुदरदलि तोर्पीजगंगळ
विदित विविध चराचरद विस्तार वाय्तेंद ॥ 40 ॥
विनतेयेंबंगनेगे कश्यप मुनिगे नंदनरिब्बरिळेयलि
जनिसिदरु केळरूण गरुडरु बहळ भुजबलरु
इनन सेरिद नोब्ब नोब्बनु वनजनाभन सारिदनु ता-
जनिसिदनु गरुडाग्रजंगेले रामकेळेंद ॥ 41 ॥
आ तमोविध्वंसकन निजसूतनेन्नोड वुट्टिदनु सं-
पाति जनिसिद मोदलु नाविब्बरु सहोदररु
तातनिं बळिकिंद्रनलि विख्यात सेवकरादेवेंदु नि-
वातकवचर देसेयलळिवाय्तमर पुरिगेंद ॥ 42 ॥
बंदनिंद्र सहायकजनृप नंदननु बळिका महीश नो-
ळोंदुगूडि बिडौजनाजियलरि निशाचरर
कोंदेवावदरिंद बळियलि बंदुदै बंधुत्व केळै
वोंदुदरदलि बरलु बेके राम केळेंद ॥ 43 ॥

कहने लगा— हे रविवंश-संभूत, सुनिए। "आदिकाल में दक्षमुनीन्द्र की तेरह पुत्रियाँ मरीचि के पुत्र कश्यप की पत्नियाँ बनीं। ३९ अदिति ने देवताओं को जन्म दिया। दिति ने दानवों को जन्म दिया। निकषा से बलवान राक्षस पैदा हुए। कद्रु से सर्पों का जन्म हुआ। अन्य पत्नियों से (कश्यप के) इस जगत के समस्त चराचर प्राणि-वस्तुएँ पैदा हुईं।" इस प्रकार उसने (जटायु ने) कहा। ४० "कश्यप मुनि के विनतादेवी से दो बलवान पुत्र पैदा हुए जिनका नाम है अरुण तथा गरुड़। अरुण सूर्य का सारथी बना। गरुड़ श्रीविष्णु की सेवा में रहे। मैं तो गरुड़ के बड़े भाई अरुण का बेटा हूँ।" —इस तरह जटायु ने कहा। ४१ अंधकार को दूर करनेवाले भगवान सूर्य के सारथी के पहले मेरा बड़ा भाई संपाति का जन्म हुआ। मैं और संपाति भाई-भाई हैं। पिताजी के बाद हम इन्द्र की सेवा में नियुक्त हुए। निवातकवच नामक असुरों से देवताओं की राजधानी अमरावती का विनाश हुआ। ४२ अज महाराज का पुत्र दशरथ तब देवेन्द्र की सहायता करने आया। मैंने तथा उस राजा ने मिलकर देवेन्द्र के युद्ध में हाथ बँटाकर शत्रु-राक्षसों को मार डाला। इसी कारण से हम दोनों की मित्रता हुई; बन्धुत्व प्राप्त हुआ। सुनो राम, क्या एक ही माँ के गर्भ से जन्म धारण करने से ही बन्धुत्व प्राप्त होता

इरलु बळिकरवत्तु साविर वरुष निम्मय्यंगॆ नमगॊ
दरॆनिमिष वार्धतडसिदवु जरॆवाधिकगळॆमगॆ
परव गळिसुव बगॆय बुद्धियलिरवु बळिकाध्वितव्वरिगॆ वि-
स्तरिसिदॆवु योगदलि मनवनु राम केळॆंद ॥ 44 ॥
अय्यनस्तिरवाद बळिकॆमगय्यनीनाकदलि नॆलॆगॊ
डय्य नीग जटायु नी नमगीग दशरथनु
मुय्य मातल्लिदुवॆ नम्मय कय्यलह सेवॆयनु कॆकॊ
डय्यनागिहुदॆंदु नमिसिद नंघ्रिगरुणजन ॥ 45 ॥
तंदु कंगळलश्रुगळ निमगॊंदिते विपिन प्रवास वि-
दॆंदु दुःखिसि मैदडवि निजभाव शुद्धियलि
अंदवर बीळ्कॊट्ट नायॆडॆगॊंदुयोजनपथव निवरॆ
तंदु कंडरु पंचवटियलि परमगौतमिय ॥ 46 ॥
मॆरॆदुदिदिरलि निखिळ नदिगळ मुरुकवनु मसुळिसुव मसकद
निरिसिनलि नीरुव्वुगळ निर्घोपदव्वरद
बिरुबु तॆरॆगळ सिडिदॊगुव तुंतुरिन तूळुव फेनपिडद
गुरुबिनलि गाडिसितु गोदावरि ककुत्स्थजन ॥ 47 ॥

है ?" —इस तरह जटायु ने प्रश्न किया। ४३ "तुम्हारे पिताजी की उम्र, जो साठ हजार वर्ष की है, वह हमारे लिए आधा निमिष जितनी हुई। बुढ़ापे ने हमें आ घेरा। मोक्षसाधना की इच्छा हम दोनों में जगी। इसलिए हम दोनों ने योग में मन लगाया।" इस तरह जटायु ने राम से कहा। ४४ "हमारे पिता ने जो इहलोक त्याग स्वर्गलोक में रहना शुरू किया, तो जटायु महाराज ! आप ही हमारे पिता है। दशरथ-सदृश (पूज्य) हैं। यह प्रतीकार की बात नहीं हैं। हमसे जितनी हो सके आपकी सेवा करेंगे। इसे स्वीकार करते हुए हमारे पिता बनकर रहिए।" —इस तरह कहते हुए जटायु के चरणों में श्रीराम गिरे। ४५ जटायु की आँखें (इन बातों को सुनकर) डबडबा आयीं। "तुम लोगों को वनवास प्राप्त हुआ न !" इस तरह कहते, वेदना प्रकट करते राम का वदन परिशुद्ध भाव से सहलाने लगे। तदनंतर जटायु ने उनको वहाँ से बिदा किया। वे एक योजन चलते आये; फिर इन्होंने पंचवटी में पवित्र गोदावरी नदी देखी। ४६ सभी नदियों का घमंड चूर करते, इठलाते बहते ऊँची लहरों से छिटकते छींटों से युक्त तथा आगे बढ़ते-बढते तैरकर आते फेन के गोल-मटोल गोलों के कारण वह गोदावरी नदी राम को बड़ी सुन्दर लगी। ४७ गोदावरी नदी देखकर, पापों के लिए दावानल रूपी

आ नदिय कंडघवनौघ कृशानु परितोषदलि नमगी
स्थानवे साकॆंदु निश्चयिसिदनु बीडिकॆय
स्नान पानादिगळिगिदु परमानु गुणवा य्तॆंदु तोरवॆय
श्रीनृसिंहनु बंदु हॊक्कनु पर्णमंदिरव ॥ 48 ॥

ऎरडनॆय संधि

सूचनॆ— अगलिवनुजामात्य गुरु मातृगळ वनवास प्रयासद
दुगुडवनु परिहरिसिदनु जाबालि जनपतिय ।

कॆळिदै कुश निम्म रघुभूपाल निद्दनु गुरतनुजन वि-
शाल वचनदलमळ पंचवटि प्रदेशदलि
काल सवॆदुदु हिंदकबुदद मेलॆ तिंगळु नाल्करॆणिकॆय
मेलॆ बंदुदु कॆळिदै हिम समय सौरंभ ॥ 1 ॥
शरद घन राजेंद्र पदविय बरह तॊडदुदु बलविरोधिय
करुणदलि हिमवंत गादुदु कॆणि भूतळद
हरिदरा हिमचररु ठाणांतर गळिगॆ हिडिदबुज मित्रन
करव कॊंडरु कोळ हिडिदंभोजिनी वधुव ॥ 2 ॥

श्रीराम ने निश्चय किया, "हमारे निवास के लिए यही स्थान यथेष्ट है ।" स्नान-पान के लिए यहीं बड़ी सुविधा है । —इस तरह सोचते 'तोरवॆ' नृसिह अवतारी श्रीराम ने वहाँ पर्णकुटी में प्रवेश किया । ४८

दूसरी संधि

सूचना— अयोध्या में अपने भाई, मंत्री, गुरुजन तथा माताओं से अलग होकर आने के कारण तथा अरण्य-यात्रा की थकावट के कारण राम को जो दुःख हुआ था, मुनिवर जाबाली ने उसे दूर किया ।

सुनो कुश, तुम्हारे रघुपति अगस्त्य मुनि की सलाह के अनुसार पवित्र पंचवटी प्रदेश में निवासस्थान बनाए हुए थे । समय बीतता गया । एक वर्ष समाप्त होकर चार महीने बीतने पर जाड़े की ऋतु शुरू हुई । १ ऋतुराज शरत् का चक्रवर्ति स्थान विनष्ट हुआ । इन्द्र की कृपा से भूलोक का राज्य हेमंत ऋतु को ठेके के रूप में मिला । हेमंत के सेवक विभिन्न स्थानों को हथियाने जगह-जगह दौड़ पड़े । उन्होंने कमलमित्र सूर्य की उष्णता को छीनकर नज़राना वसूल कर लिया । वधू कमलिनी को उन्होंने क़ैद कर लिया । जाड़े के आक्रमण से सूर्य का तेज घटा । हिम के आघात से कमल मुरझा गये । २ जाड़े को सहन न कर सकने के

शिरद गंगॆय तूरि तुहिनाकरननंबर किट्टु हणॆग-
ण्णुरियनॆब्बिसि तनुव नॊडिडद नभव नडुकदलि
हरि पयोधियनुळिदु लक्ष्मिय गुरु पयोधरदिरुविनलि बॆं-
चिरिसिदनु निजमूर्तियनु हेमंतकालदलि ॥ 3 ॥
धातुगुंदि विधात्र नंभोजात निळयवनुळिदु चेतो-
जातॆयनु भोग प्रपंचकॆ माडिदनु मनव
कातरिसि कंगॆट्टु सीतद भीतियलि निललारदोडिद
वीतिहोत्रन मेलॆ रवि मिक्कवर पाडेनु ॥ 4 ॥
कळिदरी चंडांशु वंशोज्वलरु बळिका हिम समयवनु
पुलिदॊगल हरिणाजिनद हासिकॆय हॊदिकॆयलि
तळिर तगडिन मनॆगळलि तळिगळ शिखा सेवॆ यलि नॆनॆदनु
बळिक भरत नृपालना भास्कर कुलोत्तमन ॥ 5 ॥
बिसिलु मळॆ चळिगाल विवु संधिसिदवे रघुपतियनीया-
यसव नोडलिकिद्दॆवे शिव शिव महादेव
असुविदेनिद्देनु फलवॆंदुसुरला जाबालिमुनि जा-
ळिसिदनंतस्तापवनु बळिका नृपालकन ॥ 6 ॥

कारण शिवजी ने अपने सिर पर की गंगा को फेंक दिया; हिम-किरण वाले चन्द्र को आकाश में फेंक दिया; अपने भालनेत्र की आग को प्रज्वलित कर उसकी उष्णता से अपने काँपते शरीर को सेंक लिया। इधर क्षीरसमुद्रनिवासी श्रीमन्नारायण भी जाग, न सह सकने की हालत में समुद्र छोड़कर श्रीलक्ष्मी के उभरे स्तनों के मध्य अपने शरीर को उन्होंने छिपा लिया। ३ ब्रह्माजी ने ऊबकर अपना कमलनिवास त्यागकर सरस्वती के साथ सुख भोगने की इच्छा प्रकट की। परेशानी के कारण 'क्या करना चाहिए' न सूझने से रवि भी जाड़े से डरकर आग की शरण लेने दौड़ पड़े। तब अन्यों के बारे में क्या कहा जाय? ४ तमतमाते सूर्यवंश में पैदा हुए होने पर भी राम-लक्ष्मणादियों ने बाघ का चमड़ा, हिरन का चमड़ा बिछाने-ओढ़ने के लिए प्रयुक्त कर (किसी प्रकार) जाड़े के दिन काटे। उधर (नन्दीग्राम में) कोंपलों से निर्मित कुटीर में रहनेवाले भरत लक्कड़ों के टुकड़ों से प्रज्वलित अग्नि के सम्मुख बैठे जाड़ा तपाते राम का स्मरण करने लगे। ५ "गरमी के दिन, वर्षा के दिन तथा जाड़े के दिनों के थपाड़े में रघुपति राम फँस गये न! उनकी यह यातना देखने हम तो जीवित हैं न? शिव-शिव! महादेव! इन प्राणों का रहना भी बेकार है न?" —इस तरह जब भरत वेदना प्रकट करने लगा

कंडु बहॆनॆलॆ भरत भवकोदंडभग्नन बीडु वृथा गो-
ळुडॆगुट्टदिरॆनुतला भरतननु बीळ्कॊंडु
चंडमुनिपति दक्षिणद भूमंडलद पथविडिदु गिरिवन
षंडवनु कळिदैदिनु काकुत्स्थ भूपतिय ॥ 7 ॥

अरस बळिकीचॆयलि तम्मंदिरनु ताय्गळु मूवरनु मुनि-
वर वसिष्ठन बिट्टु बंदुम्मळद भारदलि
हिरिदु चिंतिसुतिवर वार्तॆय परियनरुहुवरिल्ललायॆं-
दुरुळिसुव कंबनिगळिंदिरॆ बंदना मुनिप ॥ 8 ॥

आलि बिडदानंदजल मुक्ताळिगळनुगुळिदवु मुनि जा-
बालियनु काणुत ककुत्स्थान्वय शिरोमणिय
आ लतांगि समेत मुनिकुल मौळिगानत नागि विहित वि-
शाल वैदिकदिंद सत्करिसिदनु मुनिवरन ॥ 9 ॥

गुरु वसिष्ठन चरणयुग सुस्थिरवॆ कौसल्यादि जननिय
रिरवु कुशलवॆ भरत शत्रुघ्नरु बलान्वितरॆ
वर सुमंत्र प्रमुख मंत्रीश्वररु सुक्षेमिगळॆ पुरजन
दिरवु लेसे मुनिप हेळॆंदरस बॆसगॊंड ॥ 10 ॥

तो जाबाली मुनि ने भरत को समझा-बुझाकर उसके मन का ताप निवारण किया। ६ हे भरत, शिवधनु को तोड़नेवाले राम को मैं देख आता हूँ। इस तरह व्यर्थ चटपटाओ मत।" इस तरह कहते भरत के यहाँ से रवाना हुए जाबाली मुनीश्वर दक्षिण दिशा का अनुसरण करते यात्रा करने लगे। पहाड़-पहाड़ियाँ, जंगल, सरोवर आदि पार करते राम के पास आए। ७ इधर श्रीराम अपने भाइयों से, तीन माताओं से गुरु वसिष्ठ से बिलगने के दुःख से पंचवटी में चिंतित बैठे थे। "इन सबका समाचार देनेवाला कोई न रहा न ?" —इस तरह सोचते आँसू बहा रहे थे। इसी समय जाबाली मुनि वहाँ आए। ८ जाबाली मुनि को देखते ही आनन्दाश्रु के मोती के दाने जैसे (अश्रु) राम की आँखों से गिरने लगे। सीता-सहित मुनिवर के चरणों में दंडवत प्रणाम कर वेदोक्त रीति से राम ने मुनि का आदरातिथ्य किया। ९ "गुरु वसिष्ठजी के श्रीचरण कुशलमंगलसंपन्न हैं न ? कौसल्यादि माताएँ कुशलमंगल-पूर्वक हैं न ? भरत-शत्रुघ्न स्वस्थ हैं न ? सुमंत्रादि मंत्रिगण ठीक हैं न ?" —इस तरह राम ने अयोध्या-वासियों के कुशल-मंगल के बारे में पूछताछ की। १० "सुनिए राजन् !

अवनिजापति केळु नीनेंदवरु हद्दुळद लिहरु वडवव
यवदला भरतांकनेंलें राजेंद्र निन्नेंडॆगॆ
सवदनति चिंतेयलि बळिका हवणरिदु वरवाय्तेनलु सह
भवन विरहद दुःखदलि तुंबिदनु कंबनिय ॥ 11 ॥
अगललिद्दुदॆ तनगॆ भरतादिगळ नय्यन मरणदलि हॆरॆ
तॆगहवादुदॆ जननियंघ्रि सरोज सेवॆयलि
सॊगसदादॆनॆ सीतॆ लक्ष्मणरुगळ वनवास प्रयासकॆ
तॆगॆदुकॊंडॆनॆ तानॆनुत विसुसुय्दना राम ॥ 12 ॥
ऎत रायासविवु जगद्विख्यात नल्ला रायरलि नळ
नातगादापत्त वल्लै केळि पूर्वदलि
आत दायाद्यरिगॆ कपट द्यूतदलि साम्राज्य लक्ष्मिय
सोतु सति सहितयडवि गुरियादनु कणाऎंद ॥ 13 ॥
विसुटनै बळिकडवियॊळगायसव सैरिस लारदा दम-
रुषिय दॆसॆयिदाद दमयंतियनु विपिनदलि
नुसुळिदनु बळिकॊव्वने संधिसिद कर्कोटकन दॆसॆयि-
दसुव नीगदॆ सारिदनु रुतुपर्ण भूपतिय ॥ 14 ॥

तुमने जिन-जिनके बारे में पूछा— वे सभी कुशलमंगल-पूर्वक हैं। (लेकिन) भरत आपके बारे में सोचते दुबला-पतला हो गया है। उसकी इस दुःस्थिति के कारण ही मुझे तुम्हारे पास आना पड़ा।" —इस तरह जाबाली ने कहा। ये बातें सुनकर भाई भरत के विरह से राम की आँखें डबडबा आयीं। ११ "भरतादियों का विरह भोगना पड़ रहा है न! (अपने) पिता की मृत्यु के समय उनके नज़दीक नहीं रह सका न! माताओं के चरण-कमलों की सेवा के भाग्य से वंचित रहा न? सीता-लक्ष्मण को भी वनवास के कष्ट भोगने को मैंने बाध्य किया न?" इस तरह कहते राम निःश्वास भरने लगे। १२ "ये क्या महान कष्ट हैं? तू राजाओं में लोकविख्यात है न? क्या तू नहीं जानता कि प्राचीनकाल में महाराजा नल पर कैसी-कैसी विपदाएँ आ पड़ीं? वह कपट से रचे गये जुएँ में हारकर सारा राज्य खो बैठा तथा पत्नी के साथ उसने जंगल की राह ली।" —इस तरह जाबाली ने कहा। १३ "जंगल की मुसीबतों को सह सकने में असमर्थ हो दमऋषि-पुत्री दमयंती को नल बीच (जंगल) में छोड़ चला गया। वहाँ से छुटकारा पाकर आते समय बीच जंगल में अकेला कर्कोटक (अजगर) के मुँह में फँस, किसी तरह अपने प्राण बचाकर भाग, ऋतुपर्ण की राजधानी पहुँचा। १४ (वहाँ जाकर) उसके यह

नळन मनेयव नेंदडातन सलहिकोंडिद्दनु कणा नृप
तिलक निम्मन्वयद रुतुपर्ण क्षितीपाल
बळिकला दमयंति भारिय बळलिकेय ननुभविसि तंदेय
निळयवनु सारिदळु सीता रमण केळेंद ॥ 15 ॥

अळियननु काणदे विदर्भनु तोळलिसिद ननुचरर नाना
हळुवदलि हळ्ळियलि नगरंगळलि नगकुलद
बळिगळलि बळिकवरु काणदे होळल सार्दरु भीष्मकनु मग
ळुळिव काणदे कंडनोंदनुमान साधनव ॥ 16 ॥

सृजिसिदनु सुद्दियनु नृपभूभुजर नगरंगळलि निषधन
निजवनितेगे पुनः स्वयंवरवेंदु चररिंद
निजवरिय दळियासेयलि बाहुजरु बरुतिदरु कणा के-
ळज कुमार कुमार बळिका कुंडिनी पुरके ॥ 17 ॥

सोकिते कडुनिंदे पुण्यश्लोकरिगे नळ भूपनी नर
लोक दोळगुत्तमनला तत्पत्नि पार्वतिगे
नाकुमडि सिगिलेंब नाण्णुडि काकबळसितेयेंदु निम्मि
क्ष्वाकुकुलदवनिपनु सुय्दनु बैय्दुकमलजन ॥ 18 ॥

कहने पर कि मैं नल के यहाँ था— तुम्हारे वंशज ऋतुपर्ण ने नल को अपने यहाँ ठहरा लिया। तदनंतर दमयंती अनेक प्रकार के कष्टों को भुगतती हुई अपने मायके पहुँची। सुनो राम।" इस तरह जाबाली ने कहा। १५ दामाद को ढूँढ़ निकालने, विदर्भ राजा ने चारों तरफ़, दिशि-दिशाओं में दूतों को दौड़ाया। वे जंगल, गाँव, पहाड़, शहर सब ओर दौड़ पड़े। कहीं भी पता लगाने में असमर्थ हो खाली हाथ लौट पड़े। भीष्मक राजा, अपनी पुत्री के बचने का मार्ग न सूझ पड़ने से अंत में एक निष्कर्ष पर पहुँचे। वह यों है। १६ "निषध राजा की रानी का दूसरा स्वयंवर आयोजित है।" —यह ख़बर दूतों के द्वारा विभिन्न राजाधिराजों की राजधानियों में फैलायी गयी। वस्तुस्थिति न जानने के कारण कई राजे-महाराजे क्षुद्र आशा से कुंडिनीपुर की तरफ़ आने लगे। १७ "पुण्यश्लोकों के नाम कलंक लगा न ? इस जगत में राजा नल तो एक श्रेष्ठ राजा हैं। 'उनकी साध्वी पत्नी तो सतीत्व में पार्वती से भी कई गुने श्रेष्ठ हैं।' —इस तरह की लोकवाणी क्या आज झूठ सिद्ध हुई ?" —इस प्रकार वह वार्ता सुनने पर तुम्हारे इक्ष्वाकु वंश के राजा ऋतुपर्ण सृष्टि-कर्ता ब्रह्मा की निंदा करते दीर्घ निःश्वास लेने लगे। १८ इस तथ्य की

अरिदनिद नाव् नोडवेकेंदरसनुत्तम वाजि हूडलि
वर वरुथक्कॆनलु तंदनु सूतनुरु हयव
अरस केळै नळ महीपति तुरगविवु नाळिनलिकुंडिनि
पुरिगॆ परिगतवागवॆनॆ रुतुपर्ण निर्तॆंद ॥ 19 ॥

नळनु बल्लवनश्व हृदयव निळॆयॊळॆंदु समस्तरा नृप-
तिलकननु कॊंडाडुवरु नीनश्वलक्षणद
हॊलब बल्लै बल्लॆनॆनॆ कंगळिगॆ सॊगसुपकरिस दश्वा
वळिय तंदनु हूडिदनु हॊंदेरिनलि हयव ॥ 20 ॥

ऐरिदनु नृपनारथवनुब्बेऱि नळनब्बरिसॆ कण्णिवॆ
जारॆ जारिदवश्वचय पवमान वेगदलि
तूऱि बिद्दुदु मकुट हिडि हयवेऱदंतिरॆ पथवनॆनॆ नळ
नूरुयोजनव मुंचितॆंदब्बरिसिदनु हयव ॥ 21 ॥

इवनु ता नळनल्लले यॆंदवनि पतियनु मानमुखदि
दिवन नऱियलु बेकॆनुत धुम्मिक्किदनु धरॆगॆ
हवणनिदनऱिदीत कडिवाणवनु सॆळॆ द्रिळॆगिळिदेनै
यवनि गवतरिसिद कथांतरवेनु हेळॆंद ॥ 22 ॥

परीक्षा करने की दृष्टि से राजा ऋतुपर्ण ने श्रेष्ठ दर्जे के घोड़ों को रथ में जोतने के लिए सारथी से कहा। सारथी चुने हुए घोड़े लेकर आ पहुँचा। नल ने ये घोड़े देखकर कहा कि कल तक ये कुंडिनीपुर न पहुँच सकते। तब ऋतुपर्ण ने नल से इस प्रकार पूछा। १९ इस जगत में अन्य सभी राजे-महाराजे राजा नल की इसलिए खूब प्रशंसा करते हैं कि वही (एक मात्र) अश्वहृदय पारखी हैं। क्या तुम अश्व-लक्षण जानते हो ? इस प्रकार प्रश्न पूछे जाने पर नल ने 'हाँ' कहकर उत्तर दिया। फिर नल ने ऐसे घोड़े लाकर उस स्वर्णरथ में जुते जो देखने में बिलकुल आकर्षक न थे। २० ऋतुपर्ण रथ पर आरूढ़ हो यात्रा पर रवाना हुए। नल ने बड़े उत्साह से घोड़ों की पीठ थपथपायी तो आँख मूँदकर खोलने तक की अवधि में हवा से बातें करने लगे। ऋतुपर्ण का मुकुट (इससे) उड़ गया तो उसने नल से रथ को रोकने के लिए कहा। तब तक सौ योजनों का अंतर घोड़े पार कर चुके हैं—इस तरह नल के कहने पर राजा दंग रह गये। फिर नल ने घोड़ों को आवाज लगायी। २१ ऋतुपर्ण राजा को शक हुआ कि कहीं यह सचमुच राजा नल तो नहीं। सत्य का पता लगाने की दृष्टि से वे रथ से नीचे कूद पड़े। यह देखते हुए नल ने तुरन्त लगाम

नळनु नीनहुदेनलु कंगळ झळद झाडियलप्पि तुरगा-
वळिय हृदयव नरिदनातनिनक्ष हृदयवनु
नळतदीय नृपालनिंदरिदोलवु मिगे रथवेरि भूमिप
तिलक रिब्बरु सारिदरु भीष्मकन पट्टवव ॥ 23 ॥
बंद नृपरोळगीतने नळ नेंदरिदु भीष्मकनु तन्नय
नंदनेय नोलिदित्तनै मगुळा महीपतिगे
बंदभूपरु हरेदरीतन तंदु निलिसिदरखिळ संपद
दिंद नैषध नगरदलि नरनाथ केळेंद ॥ 24 ॥
जनपनादायिगन मरुजूजिनलि गेलिदनु धरेय नाळ्दनु
जनपरलि मिगिलेनिसि राज्यव केळु पूर्वदलि
इनकुलद निम्मय हरिश्चंद्रन कथेय केळ्दरियला सुर
पनलि कौशिकमुनि वसिष्ठरिगाय्तु संवाद ॥ 25 ॥
भू वधू वररोळगे सत्यवचोविलासवनु कलि हरिश्चं-
द्रावनिप नेनलवनसत्यद कुलतिलक नेंदु
हेवविब्बरिगा प्रतिज्ञा भावदलि बलुहाय्तु घन
माया विलासतेयिद कौशिक होक्कना नृपन ॥ 26 ॥

खींचकर घोड़ों को रोक दिया तथा पूछा, 'रथ से उतर पड़ने का कारण क्या है ? कहिए।' —इस प्रकार प्रश्न किया। २२ "तू सचमुच ही नल है।" —इस तरह कहते आँखों से खुशी की झलक बरसाते उसे गले लगा लिया। फिर नल से राजा ऋतुपर्ण ने अश्वहृदय विद्या समझ ली। ऋतुपर्ण से नल ने शतरंज की विद्या का रहस्य जान लिया। तदनंतर वे दोनों रथ पर सवार होकर भीष्मक की राजधानी पहुँचे। २३ नगरी में आए हुए राजाओं में अमुक ही (अपना दामाद) नल है —पहिचान कर भीष्मक राजा ने अपनी बेटी दमयन्ती को पुनः नल को बड़ी प्रसन्नता से सौंप दी। स्वयंवर के लिए आए हुए राजा अपने-अपने स्थानों को लौट गये। नल को लिवा लाकर बड़े वैभव के साथ निषध राज्य में सिंहासन पर बिठाया। २४ नल ने दायाद पुष्कर को वापसी जुए में हराया तथा अपना राज्य उससे जीत लिया। राज्य-शासन करते-करते वह प्रसिद्ध राजा कहलाए। सूर्यवंशीय तुम्हारे हरिश्चन्द्र की कथा क्या तुमको मालूम नहीं ? सुनो। एक बार देवेन्द्र-सभा में वसिष्ठ-विश्वामित्र में विवाद उठ खड़ा हुआ। २५ 'भूमंडल के सारे राजाओं में वीर हरिश्चंद्र सत्य हरिश्चन्द्र है।' —इस तरह वसिष्ठ ने जब कहा, तो विश्वामित्र ने उस कथन का विरोध करते हुए कहा— वह झूठ बोलने में

बळसिदना नृपन मृग संकुलद बॆट्टॆय नॆवदिनवनिय
सॆळॆदु कॊंडनु वर सुवर्णाध्वरद दानदलि
हळुव केब्बट्टिदनु विरु नुडिगळलि सतिसुत मंत्रि सहितुरि
यॊळगॆ हॊगिसिद नडवियॊलि कल्पित दवानलन ॥ 27 ॥
विलसदध्वर दक्षिणॆगॆ हॆक्कळव निविकद नॊव्वनिष्ठुर
तिलकननु तगदवनु तरकट गाडि काशियलि
ललनॆ नंदनरनु महीसुर निळयदलि माऱिदनु तानॆ
हॊलॆय गाळागिद्दना पितृवन पतित्वदलि ॥ 28 ॥
कुशिक सुत माया हियनु कलिपसि हरिश्चंद्रन कुमारक
नसुवनुगिदनु मगननरसलु बंद तन्नृपन
शशिमुखिय नूरॊडॆयनि रक्कसिय माडिसि हिडिसि वल्लभ
नसिय धारॆगॆ कॊरळ नडॆयॊड्डिडसिदना मुनिप ॥ 29 ॥
वितत राज्य भ्रष्ट चिंता व्यतिकरव नंत्यजन सेवा
कृतियना सुकुमार मरणवना कुलागनॆय
कृतक वध व्यापार मननादतिशयद वळलिकेयनणु सं-
प्रतिगॆ तारदॆ सलुहिदनु सत्यवनु भूपाल ॥ 30 ॥

सर्वश्रेष्ठ है। दोनों ने परस्पर विद्वेष के कारण प्रतिज्ञा की। विश्वामित्र ने अपने माया के बल पर हरिश्चन्द्र के राज्य में प्रवेश किया। २६ विश्वामित्र ने दुष्ट मृगों का निर्माण कर उनके आक्रमण को रोकने के लिए हरिश्चन्द्र को मृगया (शिकार) में जुटाकर थका दिया। बहुत बड़े सुवर्ण-याग के निमित्त से राज्य को दान में पाकर छीन लिया। तत्पश्चात् कठोर बातों से उसे जंगल-जंगल भटकने को बाध्य किया। पत्नी, पुत्र तथा मंत्री के साथ हरिश्चन्द्र को उस कृत्रिम भयंकर जंगल में प्रवेश करने को मजबूर किया। २७ (हरिश्चन्द्र से) यज्ञ-दक्षिणा वसूल करने के लिए निर्दय तथा संकोच-रहित घमंडी शिष्योत्तम को नियुक्त किया। उसने हरिश्चन्द्र को जब खूब सताया तो अपनी पत्नी और बेटे को हरिश्चन्द्र ने काशी में, एक ब्राह्मण के हाथ बेच दिया। अंत में स्वयं एक चांडाल की सेवा स्वीकार कर श्मशान की रखवाली करने लगे। २८ कौशिक ने माया-सर्प का निर्माण कर हरिश्चन्द्र-कुमार के प्राण छीन लिये। बेटे को ढूँढ़ते आयी राजा हरिश्चन्द्र की पत्नी को काशी राजा से 'राक्षसी' कहलवा, उसको क़ैद करा ला, हरिश्चन्द्र की तलवार से कंठ काट देने को बाध्य किया। २९ अपना राज्य खो लेने की चिंता, या चांडाल की सेवा स्वीकार करने का दुःख, या अपने बेटे की मृत्यु (से विचलित होना) या अपनी पत्नी से काशी राजा के पुत्र की हत्या

बळिकला मुनि मेच्चि पूर्वदि गळिसिदधिक तपः प्रभावद
फलव कोट्टनु हरिहर ब्रह्मेंद्र रिदिरिनलि
इळेय धीश्वरतनके नृपतिय निलिसिदनु केळै महीपति
तिलक बहळायसवननुभविसिद महीभुजर ॥ 31 ॥
अवर नडवळियिंद नीने भुवनभारिय कीर्तियनु नि-
न्नवयदले ताळ्दे निनगिन्नार सरियेंदु
रविकुलद तोरवेय नृकंठीरवन मिगे कोंडाडि भरतन
भवनकभिमुखनादना जाबालि हरुषदलि ॥ 32 ॥

मूरनेय संधि

सूचने— चंडकरकुल कमल वन मार्तांड राघव रायननुजनु दंडकारण्यदलि मुरिदनु शंबुकासुरन ।

सुरपतित्ववबयसि बहळाश्चरिय दुग्रतपः समाधिय
लिरवु घटिसितु शंबुकंगंबुजजन नेमदलि
तरुण केळै केलवु कालांतरदला खळनिंद दूरा-
य्तरियमन देसेयिंद सुरकुल सार्वभौमंगे ॥ 1 ॥

का दोषारोपण से उत्पन्न व्यथा —इन सभी (घटनाओं) से यत्किंचित् भी बुरा न मानते हुए राजा आखिर तक सत्यपालन मार्ग पर अडिग रहे। ३० तत्पश्चात् हरिश्चन्द्र को सत्य-पथ पर अडिग देखकर विश्वामित्र प्रसन्न हुए तथा अपना पूर्वसंचित तपस्या का संपूर्ण फल हरि-हर-ब्रह्मादियों के सम्मुख (हरिश्चन्द्र को) कृष्णार्पण कर दिया। हरिश्चन्द्र को फिर राज-गद्दी पर बिठाया। हे राजन् ! इस दुनिया में अत्यधिक कष्ट भुगतनेवाले राजाओं के बारे में समझ लेने की कोशिश करो। ३१ उनके आचरण के अनुसार आचरण कर इस जगत में तुमने बहुत बड़ी कीर्ति कमायी है। (इस दिशा में) तुम्हारी बराबरी कौन कर सकता है ? —इस प्रकार 'तोरवे' के भगवान नरहरि के अवतारी श्रीराम की स्तुति करते हुए जाबाली मुनि भरत के निवास की तरफ़ खुशी-खुशी प्रस्थान कर गये। ३२

तीसरी संधि

सूचना— रविवंश रूपी कमलवन के लिए सूर्य-सदृश राघव के भाई ने दंडकारण्य में शंबुकासुर का बध किया।

देवेन्द्र-पद की अभिलाषा से शंबुक ने ब्रह्माजी की आज्ञा के अनुसार अत्यंत आश्चर्यकारक कठिन तपस्या की। इसी तपस्या में लीन वह

इदु समयवॆंनु तिद्रना नारद सुराचारियर मतदिं
हृदन कंडनु हरणदंत्यकॆ शंबुकासुरन
त्रिदश रूपवनुळिदु कैरातदलि कंगॊळिसिदनु बळिस लि-
सिदुदु सुरनिकुरुंब वाक्षण राघवाश्रमव ॥ 2 ॥
हीलियुडुगॆय हॆंगलबिलुवडि गोलुगळ संकलॆय ना य्गळ
तॊळगुंजिय दंडॆगळ कटितटद सुरगिगळ
बॊळॆगळ मिट्टॆगळ दीहद साळुवन गळॆयंटुगळ शब-
राळि बंदुदुपर्णशालॆगॆ सूर्यवंशजन ॥ 3 ॥
करिय मुक्ता फलव वनसूकरन दाडॆय हरिणशिशु क-
त्तुरिय मृग शार्दूल चर्मव सिंह दुगुरुगळ
तॆरळि कट्टिटन बिल्लु बॊळॆगळ रंगिळिय कोडगद मारिगळ
नरस रामंगित्तु कंडुदु शबर संदोह ॥ 4 ॥
काणिकॆय कैकॊंडु शबर श्रेणियनु मन्निसिद नुचितद
वाणियलि वैवस्वतान्वयना पुळिंदकर
ऐणनिक्कॆय सौकिक दॆक्कल ताणगळ काडानॆ मरॆ का-
ड्कोण नाडुं बॊलन नृपतिगॆ शबरपति नुडिद ॥ 5 ॥

समाधि में उतरे। सुनो कुश, कुछ समय के बाद (द्वादश आदित्यों में एक) अर्यम ने उस दुष्ट के बारे में देवेन्द्र से शिकायत की। १ इसी को सुअवसर जान इन्द्र ने नारद तथा बृहस्पत्याचार्य से मंत्रणा करते हुए शंबुकासुर की हत्या की योजना बनायी। इन्द्र ने अपना देवता-रूप त्यजकर व्याध का रूप धर लिया। देवताओं का समूह भी इन्द्र का अनुसरण करते हुए राम के आश्रम में आए। २ - वे मयूरपंख के आभूषण पहनकर कंधे पर धनुष तथा लाठी रखे हुए थे। उन्होंने गले में जंजीर जड़े कुत्तों को साथ में लिया था। भुजाओं में गुंजाओं की लड़ियों के आभूषण पहने कमर में तलवार लटका ली थी। एक (विशिष्ट) प्रकार के पैने तीर तथा ढेर के ढेर बाण साथ लिये शिकारी बाजों को साथ में लिये, लैस होकर व्याध के वेष में वह रविवंशीय राम के पर्णशाला में उपस्थित हुआ। ३ हाथी के गंडस्थल के मोती, जंगली सूअर की टेढ़ी दाढ़, हिरन का शावक, कस्तूरी मृग और शार्दूल का चमड़ा, शेर के नाखून, कसकर बाँधा धनुष, कई तीर, सुग्गे, बन्दर का पिल्लू आदि-आदि कई वस्तुओं को उन व्याधों ने राम को भेंट के रूप में दिया। ४ उनकी भेंट स्वीकार करते समयोचित वचनों से मनुवंशीय राम ने (उन) व्याधों का गौरवपूर्वक स्वागत किया। तत्पश्चात् व्याधों के नेता ने राम को हिरन, मदोन्मत्त सूअर, आदियों का

जीय बिन्नह विल्लि हरि कात्यायिनीपति कमलजन पा-
रायणरु परलोक साधनरिंदे तपस्सिनलि
ईयटविनलि दुष्ट मृग समुदायविर्दे नैष्ठिकरनुष्ठा
नायकर कंटकर बेटेगे बिजयमाडेंद ॥ 6 ॥
नियमवेंमगिदु वन निवासाश्रयद तुदि परियंत मृग हिं-
सेयलि माडेवु मनव मतविदु राजरुषितनद
प्रियवु निसगी दुष्ट मृगहिंसेयलि निलुवडे मुनिगळिगे नि-
र्भय माडुवडोय्वुदी लक्ष्मणन नीवेंद ॥ 7 ॥
ईतने साकेंदु शबररजात शत्रुविगेरगि भरत
भ्रातरन नेब्बिसिदरा रघुवरननुज्ञेयलि
आत बळिकळवडिसिदनु शबरातिशयदंगवनु पार्थिव
रीतियनु मरेमाडि कूडिदना पुळिंदकर ॥ 8 ॥
सेरिसिद नमळांग कंगिय पारियद पदकॅक्कडवनो
व्यारिसिद नोरेगोळिसि सुरगिय कटियो ळळवडिसि

का निवासस्थान तथा जंगली हाथी, एक विशिष्ट जाति का हिरन, जंगली भैंसे आदि के विचरण के स्थानों के बारे में वार्ता दी। ५ "स्वामिन्! हमारी बिनती मानिए। ब्रह्मा-विष्णु-महेश की आराधना में व्यस्त कई तपस्वी इस जंगल में निवास करते हैं। मोक्षसाधना में दत्तचित्त कई तपस्वी यहाँ पर बसे हैं। इस जंगल में हिंस्र पशुओं का प्रबल समूह भी है। अतः निष्ठा से तपस्या में लीन व्यक्तियों को बाधा पहुँचानेवाले इन पशुओं के शिकार के लिए, प्रभो, पधारने की कृपा कीजिए।" इस तरह व्याधों के अधिपति ने राम से प्रार्थना की। ६ "वनवास की अवधि समाप्त होने तक प्राणि-हिंसा न करने का व्रत मैं धर चुका हूँ। राजर्षियों के लिए यही सिद्धांत है। अतः अगर आप लोग क़बूल करते हैं तो मेरे भाई लक्ष्मण को ले जाइये जो दुष्ट मृगों का हिंसाकृत्य रोकेगा तथा ऋषियों का भय निवारण करेगा।" इस तरह राम ने कहा। ७ व्याधों ने, 'लक्ष्मण यथेष्ट है' —इस तरह अपनी अनुमति देते हुए अजातशत्रु श्रीराम को प्रणाम किया। राम की आज्ञा के अनुसार लक्ष्मण को अपने साथ जाने के लिए उन्होंने प्रेरित किया। तब लक्ष्मण अपनी क्षत्रियोचित रूपरेखा छिपाकर व्याधों का वेष धारणकर उनके साथ मिल गये। ८ लक्ष्मण ने कबूतर के रंग का कुर्ता पहन लिया। पैरों में जूते पहने। कटार को म्यान में कमर में खोंस लिया। पैने बाणों का समूह तथा भारी ज़बर्दस्त धनुष साथ में लिया। बालों को जूड़े में बाँधकर गले में हार

कूरलगुगळ हॊंदॆय बलु बिलु भारणॆय तलॆविणिल हॊ गरिन
हार निशितांगदलि बीळ्कॊंडनु महीपतिय ॥ 9 ॥
अब्बरिसिदुदु बॆटॆबरॆनॆलगब्बरिसॆ शबरालि बॆरळिन
बॊब्बॆयलि नलवेरि नर्तिसि राघवानुजन
उब्बिसिद रॆंडबलन सरुहिन हब्बुगॆय हरहिनलि तॆगहिन
तॆब्बुगळ संधिसिद सरळिन सन्नॆवातिनलि ॥ 10 ॥
तॊळगुवज्जॆयनुदिर्द तुप्पळ बळिय मलगिदु मॆलुकिरिद नॊरॆ
वळिय नॊणविद्रिदाडि दॊगु नॆत्तरिन बॆवळिय
नॆलन निक्कॆय हक्कॆयाडुंबॊलन मरगाडुगळॊळग क-
ट्टुलहुदॊडॆ हॊक्कुदगलकॆ शबर संदोह ॥ 11 ॥
ऒड्डिदरु दडिवलॆय सिडिवलॆ कड्डिवलॆ कुणिवलॆयनगलकॆ
चड्डणिसिदरु बीसुवलॆ बॆळ्ळार वलॆगळलि
अड्डविसि सोहिदरु कोणन दॊड्डुगळ दंतिगळ मरॆगळ
नॊड्डॊडॆयदवला सुमित्रासुतन सरिसदलि ॥ 12 ॥
मरॆ लुलाय व्याघ्र वृकसूकर शिखरि सारंग केसरि
करिकळभ खड्गि प्रतानद मेहुगाडिनलि

हार धारण किये राम की आज्ञा लेकर निकल पड़े। ९ शिकारी डफले ज़ोर-ज़ोर से बजने लगे। व्याध तालियाँ पीटते शोर मचाते इतने ज़ोर-ज़ोर से नाचने लगे कि धरती में गड्ढे पड़ गये। अपने नृत्य से उन्होंने लक्ष्मण को प्रसन्न कर लिया। धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाए, घने जंगल के दाएँ-बाएँ मृगों की खोज में, इशारे से बातें करते चले। १० जहाँ-तहाँ, मृगों के पैरों के निशान थे, पंख गिरे हुए थे, एक पार्श्व में सोए पगुराते समय मुँह से बाहर निकला झाग पड़ा हुआ था, खून के गिरे स्थान को मक्खी घेरे हुए थे, मृगों के वासस्थानों से युक्त घने पेड़ों के उस जंगल में टोह लेते हुए बिना किसी प्रकार के शब्द किए, इशारों से बातें करते हुए —उन-उन स्थानों में व्याधों ने प्रवेश किया। ११ व्याधों ने छोरवाले जाले, महीन जाले, गाँठ या फंदेवाले जाले आदि कई प्रकार के जाले बिछा दिए। फेंके जानेवाले जाले आदि अन्य कई प्रकार के जाले भी चारों दिशाओं में फैलाए गये। लक्ष्मण के साथ उन शिकारियों ने भैंसे, जंगली भैंसे, हाथी, हिरन, आदियों के झुंडों को तितर-बितर न होने देते, रोकते-रोकते उनका पीछा किया। १२ हिरन, भैंसा, बाघ, भेड़िया, सूअर, बारहसिंगा, हाथी, शेर, गजशावक, गेंडामृग वग़ैरहों के, चरने-विचरने के, जंगल में व्याधों का बेड़ा पहुँचा और उन्होंने शिकारी कुत्तों को खोलकर उकसा दिया। फिर

हरिदु बॅरसितु बेडपडॅ कुक्कुरन हासव नुगिदु सेदिद
सरळ सन्नाहदलि कुबुबिरिदखिळ दॅसॅगळलि ॥ 13 ॥
हुलिय नौडुव विगडदंता वळिगॅ लंघिप सिंहवनु हिडि
दुलिव शरभकॅ मलव मददॅक्कलन कुक्करिप
लुळिय जंघॅय जवगतिय हॅक्कळद गळघर्जनॅय कट्टा
गुळिकॅगळ नाय्तुडिकिदवु तडदखिळ मृगकुलव ॥ 14 ॥
हायिदवु मृगविंडु सरळॅरॅ गायदलि मार्मलॅव मृगगळ
नायिगळु तुडुकिदवु सॅळॅदवु किरुमृगावळिय
बाय बॊब्बॅय बिरुवुगळलड हायिदॊडुव निखिल मृगसमु-
दायवनु संहरिसुतिर्द्दु शबरसंदोह ॥ 15 ॥
नालगॅय नरॅगच्चि कॅडवमृगाळि कॅलवळ्ळॅगळ गायद
जोलुगरुळिन लॊरगुववु कॅलवरॆचि कॊरळुडिदु
बीळुववु कॅलकॅलवु नडुदॊडॅ कालुखंडिसि बसिव नॆत्तर
लाळॅ नॆलदलि मग्गुलिक्किदवखिळ मृगनिकर ॥ 16 ॥
सिलुकिदवु मृगविंडु नाना बलॅगळलि कुळिगळलि बीसिद
बलॅगॆ बिद्दवु गिडुग गीजग गौजु गुब्बिगळु

मृगों पर बाण चलाने के लिए सन्नद्ध होकर खूब शोरगुल मचाया। १३ बड़े फुर्तीले शीघ्रगामी शिकारी कुत्तों ने ज़ोर-शोर से भूँकते, मुँह खोले जो दौड़ लगायी तो बाघों को दाँतों से काटकर, हाथियों के दाढ़ों पर उछलकर, शेर को पकड़े भूँककर, शेरनियों पर आक्रमण कर, मस्त सूअरों को दबाकर बैठाते, (सब प्रकार के मृगों का) पीछा किया तथा उन्हें पकड़ लिया। १४ तीरों के चुभने से अधघायल मृग जिधर-तिधर भागने लगे। सामना करनेवाले मृगों को कुत्तों ने पकड़कर खींच लिया। छोटे-छोटे मृगों को (कुत्तों ने) फाड़कर रख दिया। सामने से भागनेवाले मृगों का पीछा करते शिकारी शोरगुल मचाते उनको मार-मारकर गिराने लगे। १५ कुछ मृग तो अपनी जीभ कटने पर गिरे। पेट की एक तरफ मार पड़ने से आँतड़ियाँ बाहर निकलने के कारण धराशायी होकर कुछ मृग गिरे। कुछ का तो गला कटने से कराहते-कराहते गिरे। बचे हुए कुछ मृगों की तो जंघाएँ कट जाने के कारण या पैर कट जाने के कारण खून बहाते करवट लेते चटपटाते धरती पर गिरे। १६ मृगों के झुंड के झुंड जाले में फँस गये। कुछ तो शिकार के लिए निर्मित गड्ढों में गिरे। बाज़, बया, गौरय्या आदि कई प्रकार के पक्षी व्याधों के फैलाए गये जाले में फँस गये। चिलिमिलिया, भारद्वाज, कौआ आदि कई प्रकार के अनगिनत पक्षी

चिलिमिलिग चंबूत वायस वलिय हुदुगिद हरडे हसुवग
ळळिदुदके किडेयिल्ल वेंटेयोळूमिळा पतिय ॥ 17 ॥
गळे गळंटिगे सिलुकिदवु पिक्कुळिग पिंजर मंजरिग मी-
न्चुलिग लावुगे सरले वुल्लेगळेच्च मिंटेयलि
वळलु गौरळलि वीळुतिर्दवु वेंळुव गिळि कव्वक्कि वक को-
गिले कपोतकळिग कौंचेगळवनियगलदलि ॥ 18 ॥
इदुवे समय वेनुत्त हरि मृजिसिदनु मायासूकरन क-
ट्टिदिरिनलि गर्जिसितु दाडेय मसेदु लक्ष्मणन
कोंदरितो शवराळि सीळ्दिक्किदुदु तुडुकुव नायिगळन-
ट्टिदुदु घुडुघुडिसुत कपट किरात संततिय ॥ 19 ॥
निदनै वळिकीतना हेव्वदि यिदिरलि मेल्ल मेल्लनै
हिंदणडिगळ लंडुगोंडुदु शंवकामुरन
मंदविसि मुसुकिद महीरुह वृंदवनु कुशकेळ सुमित्रा
नंदननु वळिकुगिदु हूडिदनमम मार्गणव ॥ 20 ॥
ऊगिदु किविवरेगागि वाणव नगलिसुत वौव्विरिये शरवि-
व्वगिय माडितु मुंदुवरिदंडिसिद सूकरन

लक्ष्मण से छोड़ गये बाणों के शिकार बने । १७ मछली, शिकारी बक, कोयल, कबूतर, कलिंग, क्रौंच, लवा, कठफोड़वा आदि कई पक्षी बाँस में चिपके गोंद में फँस गये । गोफन से फेंके गये पत्थरों की मार का शिकार बने बक, बटेर, बत्तकी, नीलकंठ, तीतर, गिद्ध, काकातुआ, अबाबील आदि कट-कटकर धरती पर तितर-बितर होकर गिरे और मर गये । १८ इसी समय को सुअवसर समझ, विष्णु ने मायावी सूअर की सृष्टि की । वह लक्ष्मण के सामने प्रकट होकर अपनी दाढ़ रगड़कर तेज बनाते गरजने लगा । सभी व्याध तितर-बितर होकर भागे । सूअर ने, पकड़ने आए हुए शिकारी कुत्तों को फाड़ डाला । हुरकाते हुए उसने उन मायावी व्याधों के झुंड का पीछा कर उनको भगा दिया । १९ उस भयानक सूअर का सामना करते हुए लक्ष्मण डटकर खड़े हो गये । सूअर हौले-हौले पीछे सरकता हुआ शंबुकासुर के नजदीक पहुँच उसकी ओर पीठ किए खड़ा हो गया । घने पेड़ों को काट गिराते लक्ष्मण ने रास्ता साफ़ कर लिया तथा अपने धनुष पर दिव्यास्त्र चढ़ाया । २० प्रत्यंचा को कान तक खींचकर, गरजते हुए लक्ष्मण ने वह दिव्य बाण छोड़ दिया । पीछे सरककर खड़े सूअर को चीरता हुआ वह तीर उस पार पहुँच तपस्या में लीन शंबुकासुर

चिगिदु मुंदकें हाय्दु हुत्तव बगिदु रजनीचरन शिरवनु
नेगहिदुदु नभकागि निर्जरनिवह नलिदाडें ॥ 21 ॥
निल्लदोदरुत बीळ्व मस्तकदल्लिगैदिद नीतनातुदि
गल्लदलि चाचिदनु करतळ गूडि कामुकव
अल्लियदु हेब्बंदि मुनिवधे येल्लि कूडितो योगवेंदेंदे
झल्लेनलु जवगुंदि लक्ष्मणनोलद नवयवव ॥ 22 ॥
ऐसें मत्तेनिदु पुराकृत दोषफलदुद्भववला हें-
ड्डैसि माडुवुदेनु प्रायश्चित्त मुखवेनगें
ई शरीर त्यागवे कृतदोषहरवेनुतुगिदु सुरगिय
ना सुमित्रासूनु मिगें मोहिसिदनुदरदलि ॥ 23 ॥
याति होद्दुदु सैरिसातुम घातकर्कें मनविक्कबेडी
यातुधाननु मुनिपनल्लिव नंबु निश्चयव
ईतननु कोल्ललोसुगर सुरजात नेरेदुदु शबररूपिन
लीतनिंद्रनु नोडु नारदनीग तानेंद ॥ 24 ॥

को आवृत किए जो बाँबी थी उसमें घुस गया तथा उस बाँबी को चीर उसमें बैठे शंबुकासुर के सिर को काट आकाश में (उस तीर ने) उड़ा दिया। असुर के संहार से प्रसन्न हो आकाशस्थित देवता उछलने-कूदने लगे। २१ चीखते-चिल्लाते गिरे हुए उस सिर के नज़दीक पहुँच लक्ष्मण ने धनुष की नोक पर अपना गाल टिकाए आश्चर्य से देखा और देखते ही खड़ा रह गया। "पता नहीं, यह भयानक सूअर कहाँ से आ टपका। (इसके कारण) एक मुनि की हत्या हुई न? यह कैसा दुर्दैव है!" इस प्रकार सोचते लक्ष्मण की छाती धक-धक करने लगी। डर के मारे थर-थर काँपने लगे। २२ "यह मेरे पाप का ही फल है! नहीं तो और क्या? अब व्यर्थ भयभीत होने से क्या प्रयोजन? इसके लिए प्रायश्चित्त ही पाप-विमुक्ति का उपाय है। मुनि की हत्या के दोष-निवारणार्थ देहत्याग ही एक मात्र मार्ग है।" इस तरह सोचते लक्ष्मण ने म्यान से तलवार निकाली और अपने पेट में चुभो लेना चाहा। २३ इसी समय नारद प्रकट होकर कहने लगे, "हाँ, हाँ रुको। इस प्रकार अहित न कर बैठो। सब्र करो। आत्महत्या के लिए उद्यत न हो। यह मुनि नहीं, राक्षस है। इसे सत्य मानो। इसकी हत्या के निमित्त ही देवता किरात-शबरों के रूप में आए हैं। यह इन्द्र हैं, मैं ही नारद हूँ। २४ यह (मृत व्यक्ति) असुर है। राक्षसों में अत्यंत बलवान है। देवेन्द्र के

इवकणा रक्कसनु रक्कस निवहदलि वल्लिदनु वळिकिव
नॆवगॆ सलुव सुरेंद्रपदविगॆ माडिदनु मनव
इवनु नररिंदल्ल दायुष्यवनु बिडनॆंदरिदु वर वा-
र्तॆवगॆ नी नोडॆंदु निजवनु तोरिदनुसुरप ॥ 25 ॥

मरळिदरु वळिकित्तलमररु सरिदनत्तलु रामगी वि-
स्तरव नॆल्लव बिन्नहव माडिदनु सौमित्री
तॊरवॆयधपतिराय नरकेसरि निजांगने सहित भरता-
वरज सहितीरारु वरुपव कळिदरॊलविनलि ॥ 26 ॥

नालकनॆय संधि

सूचनॆ— चलुवतनवनु तोरि रामन नॊलिसलॆविव शूर्पणखियनु कलि सुमित्रा सूनु हिडिदिवळुहिदनु नासिकव ।

कुशनॆ केळै शूर्पणखियॆवसुरॆ वंदळु वनविहार
व्यसनदलि नरमांसबोजन दुज्जुगार्तदलि
असुवळिद शंबुकन वळिगवनुसुरुटॆगहनु कंडु हलुगळ
मसवुतॆदिदळिनकुलेंद्रन पर्णमंदिरव ॥ 1 ॥

सिंहासन को प्राप्त करने की इसकी इच्छा हुई। 'इसके प्राण केवल नर के आधीन हैं।' —इस तरह इसके पाए वरदान को जानकर हमें आना पड़ा" —इस तरह कहते इन्द्र ने अपना निजी रूप प्रकट कर दिया। २५ तब देवता स्वर्ग लौट गये। लक्ष्मण राम के पास पहुँच गये तथा वस्तु-स्थिति का निवेदन किया। 'तॊरवॆ' के नरहरि विष्णु के अवतारी श्रीराम ने सीता तथा लक्ष्मण के साथ बारह वर्षों का वनवास समाप्त किया। २६

चौथी संधि

सूचना— सुन्दर रूप दरसाकर राम को प्रसन्न कर लेने के लिए आयी हुई शूर्पणखा की नाक को लक्ष्मण ने काट लिया।

सुनो कुश ! नरमांसभक्षण की आदत के कारण जंगल-जंगल भटकती शूर्पणखा नामक राक्षसी मृत्युप्राप्त शंबुक के पास आयी। शंबुक के प्राणापहरण से क्रुद्ध हो दाँत किटकिटाती हुई रविवंशीय राम की पर्णशाला के नजदीक पहुँची। १ शूर्पणखा ने देखा कि राम सीता के साथ शतरंज खेल

आ रघुक्षितिनाथना निजनारिसहित द्यूतकेळी
भार दिदिरॆ कंडळवळी राजचंद्रमन
दूरदलि दुम्मिक्किदुदु दृढ वैर दरुशन मात्रदलि कणु
कोरविसिदवु कोमलांगन कायकांतियलि ॥ 2 ॥

भुवन मूररलधिकरॆंबवरु नाल्वरु रूपिनलि वै-
श्रवणसुतनमरेंद्र नंदनरिदु मन्मथरु
अवरुगळ शतकोटि लावण्यवनु मिक्किर्दे नोडली नृप
नवयवदॊळिन्नावनो यॆंदॊलदळवयवव ॥ 3 ॥

नोड नोडलिकंगजन हूमूडिगॆय सरळंग दॊळग-
क्काडिदवु मै मरॆदळॊदॆरडॆंब वस्थॆगळ
जोडणॆय जोकॆगळ झडितॆय झाडणॆय झॊम्मिनलि बळि की-
डाडिदळु विकृतातिशयद निशाटरूपकव ॥ 4 ॥

हॊळॆ हॊळव निडुगंगळिन कोमलद कदपिन हॆरॆ नॊसल प्र-
ज्वलिप दंतावळिय मिरुगुवप्रल्लवाधरद
सॆळॆ नडुविनुत्तुंगकुचमंडलद नळितोळुगळ मानव
विलसितांगद रूप कैकॊंडॆसदळिदिरनलि ॥ 5 ॥

रहे हैं। शूर्पणखा में उफना हुआ वैर-भाव श्रीराम के दर्शन मात्र से, दूर से, हवा हो गया। कोमल शरीरी राम की शरीर-कांति से उसकी आँखें चौंधियाँ गयीं। २ 'स्वर्ग, मर्त्य, पाताल —इन तीनों लोकों में असदृश रूपवान केवल चार हैं; वे हैं— कुबेर, इन्द्र का पुत्र जयंत, चन्द्र और मन्मथ। इनकी तो (राम की) अंगांगों की रूपातिशयता उन चारों से सौ करोड़ गुना अधिक है। पता नहीं, ये कौन हैं?" —इस तरह सोचते शूर्पणखा के अंग फड़कने लगे। ३ देखते न देखते मन्मथ के पुष्प-बाण शूर्पणखा के शरीर में चुभकर अदृश्य हो गये। शूर्पणखा, अभिलाषा तथा चिंता नामक प्रारंभिक प्रथम तथा द्वितीय कामुक अवस्था में अपनी सुध-बुध खो बैठी। चतुर बुद्धिवाली वह अभिलाषा के आधिक्य में विकारपूर्ण राक्षस-रूप त्याग देती है। ४ उसके नयन चमकते हुए दीर्घ नयन बने। गालों ने कोमलता धारण की। दाँत चमकने लगे। कांतिमान कोमल (कोंपल जैसी) ओठोंवाली वह चन्द्रमुखी बन जाती है। इस तरह मानवोचित सौंदर्यपुंज बनकर शूर्पणखा शोभायमान हुई। पतली कमर, उभरे स्तन व कोमल भुजाओं के कारण वह बड़ी सुन्दर तथा आकर्षक दीख पड़ने लगी। ५ घड़ों के सदृश उभरे स्तनों के बोझ से

घट पयोधर भारदलि संघटिसितधिक श्रांति नड्डुत्रिगॆ
कुटिल कुंतळ दुब्बरद धम्मिल्ल द्रुरु भरकॆ
नटणॆयलि बळुकिदुदु कॊरळुत्कट नितंब सघाडतरदु
ब्बटॆगॆ दडदडिसिदवु पदयुगवा नितंविनिय ॥ 6 ॥

अंगवट्टद सुरभि सॆळॆदालिगिसितु गगनदलि सुळिव सु-
रांगनॆयरनु सुत्त परिमळिसित्तु कांतार
अंगजन मोहरद सुभटर मुंगुडिय मुंवरिव मद मा-
तंगवॆनलिभगमनॆ गरुवायियलि गमिसिदळु ॥ 7 ॥

निरिय नॊय्यारिसुत मेलुद निउकु तॆडगैदुदियला मुं-
जॆउग संवरिसुत्त नसुनाचिकॆय भारदलि
तुरुगॆवॆय निड्डुगंगळिन कडॆ सॆउगनमरिसु तॊय्यनॊय्यनॆ
मुरुक मिगॆ काणिसुत बंदळु राम निद्दॆडॆगॆ ॥ 8 ॥

बिद्दुदरसन दृष्टि मोहन गद्दुगॆय मोहिनिय मेलॊड
निद्दुदै नृपगेकपत्नीव्रत परिज्ञान
हॊद्ददादुदु चित्त चित्तज नुद्दुरुटु तनकेनु: दृढतर
बिद्दुदो निम्मय्यगॆलॆ कुश केळिदैयॆंद ॥ 9 ॥

उसकी कमर थकावट से लचकती थी। घुँघराले बालों के सिर के अग्रभाग के (बालों के) बँधे जूड़े के भार से उसका कठ अभिनयात्मक रीति से टेढ़ा बना। परिपुष्ट जघनों के भार के कारण उस सुन्दरी की चाल बल खा रही थी। ६ उसके शरीर की खुशबू ने आकाश में विचरण करनेवाली देवताओं की स्त्रियों को आकर्षित करके घेर लिया। सारा जंगल उस खुशबू से भरा हुआ था। मन्मथ की सेना के अग्रभाग में विचरण करते मदोन्मत्त हाथी की भाँति वह गजगामिनी (शूर्पणखा) नखरे की चाल चलते आयी। ७ बड़े नाज-नखरों से साड़ी के सिकन को झुलाती, आँचल के छोर को बायें हाथ की कोर से सँवारती, लजाते-लजाते (छाती पर के) आगे के आँचल को ठीक करती क़दम बढ़ाने लगी। घने बालों से युक्त पलकोंवाली (शूर्पणखा) विशाललोचना आँचल के छोर को हाथ से मलकर सिकुड़न दूर करती धीरे-धीरे हावभावयुक्त चाल चलती राम के पास पहुँची। ८ मनमोहक शूर्पणखा के सौंदर्य पर राम की दृष्टि पड़ी। साथ ही साथ अपने एक पत्नीव्रतस्थ होने के परिज्ञान से राम विचलित भी न हुए। मन्मथ की चाल में वे फँसे नहीं। सुनो कुश; तुम्हारे पिताजी कितने दृढ़चित्त हैं! —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ९ सीता

देवि नोडिदळॊय्यना मायाविलासद वधुवननुपम
हाव भाव विलास विभ्रम रंजकव कंडु
आवळो तानिवळॆनुत्तभि भावदलि हॆदरिदळु मनदलि
देव राघवनी लतांगिगॆ सोलदिरनॆनुत ॥ 10 ॥
गमनवॆल्लिगॆ मनुजॆयो नीनमरवधुवो वहिसि कॊंडिह
रमणरारी काननकॆ बरवॆनु निनगॆंदु
अमित बलना कपट राक्षस रमणियनु माधुर्यवचनद
ममतॆयलि कॆळिदनु मॆल्लनॆ मंदहासदलि ॥ 11 ॥
रमणरिल्लॆनगानु स्वेच्छा रमणि विमल पुलस्त्य वंशद
रमणरिंदॆनगाय्तु जननवु जलधि परिवृतद
क्षमॆय वल्लभ रॆल्लरलि निर्ममतॆयायितु मनकॆ निन्नलि
रमिसुवीयनुरागवॆनगाय्तॆंद ळिदुमुखि ॥ 12 ॥
एकपत्नीव्रत सुभाषित सोकिहुदु नम्मुवनु निन्न वि-
वेकदनुरागतॆगॆ नम्मय रूपु यौवनकॆ
नाकु मडियह पुरुषनादडॆ साकॆ होगा निळयदलि लो-
कैक वीरनुदार विक्रमनहनॆ नोडॆंद ॥ 13 ॥

ने इसी समय उस मायावी युवती को देख लिया। उसका दमकता हुआ अंगांगों का सौंदर्य, कांति, लावण्य आदि देखकर मन ही मन सोचने लगी— 'न जाने यह कौन है ?' आश्चर्य में पड़ी (सीता) यह भी सोच बैठी— "मेरे स्वामी राघव इस लतांगी पर रीझे बिना न रहेंगे" —यों सोचती वह मन ही मन डरी। १० वीर राम ने बड़ी ही मधुर, प्यार भरी बातों में, मुस्कुराते उस मायावी राक्षस-युवती से पूछा— "कहाँ जा रही हो ? क्या तुम मानव-स्त्री हो या देवलोक की युवती हो ? तुम्हारी जिम्मेदारी उठानेवाले वे पति महोदय कौन है ? इस जंगल में पधारने का कारण क्या है ?" ११ "मेरे तो कोई पति नहीं; मैं स्वतंत्र युवती हूँ। प्रसिद्ध पुलस्त्य वंश में मेरा जन्म हुआ। सागर पर्यंत फैले विस्तृत भूमंडल के राजाओं में मुझसे प्रेम करने लायक (योग्यतावाला) कोई पैदा ही नहीं हुआ। [मैं किसी से प्यार न कर सकी।] लेकिन तुम्हारे साथ सुखोपभोग की अभिलाषा मुझमें जगी है।" इस तरह उसने कहा। १२ "मैं तो एकपत्नीव्रत नीति-नियम से निबद्ध हूँ। रूप-यौवन में मुझसे चार गुने बढ़े-चढ़े तुम्हारी विवेचनायुक्त प्रीति के लिए योग्य पुरुष मिले तो यथेष्ट है न ? देखो, लोकैकवीर पराक्रमशाली उस पर्णकुटी में है, जाकर देखो तो सही।" —इस प्रकार राम ने कहा। १३ "उसकी

औलिसिको नीनातननु,कट्टोलुमेंयवरिल्लात नी हों-
गोलियदिरिनतिशयद निन्नय विभ्रमान्वितकें
ललनें होगेंनुतवळनसितोत्पल निभांगनु कळुहें लक्ष्मण
नेंलेवनेंगें बंदळु नितंबिनि नडेंय मुरुकदलि ॥ 14 ॥
सरळ हिळुकिन होंगरिय तुदिवेंरळलोंय्यारिसुत बाणव
तिरुहि तिद्दुत कूरलगुधारेंय निरीक्षिसुत
इरलु सारिदळिवळु विजितस्मरन सारुव जोडेंय वोलद
सरकुमाडदें तिद्दुतिद्दनु मत्तें मार्गणव ॥ 15 ॥
रूपिनलि सोबगिनलि शौर्याटोपदलि कुंदिल्ल मन्मथ
तापवनु तग्गिसलु तक्कवनहनु नोडलिकें
ई पुरुष नीतननु मधुराळापदलि मातािडसुवेंनें
दा परंतपननुजननु नुडिसिदळु शूर्पणखी ॥ 16 ॥
नेमवार्य्तेनगसित कुमुद श्यामनिं कग्गोलेंय कामन
कैमेंयनु कळलिसु कटाक्षद करुण भावदलि
कामिसिदें ना निनगें सुरतकळा मनोज विलासनागें
दा मगध नंदनेंय नंदन गेंदळिदुमुखी ॥ 17 ॥

प्रियतमा तो यहाँ नहीं है। जाओ, तुम उसे राजी कर लो। तुम्हारे इस अतिशय सौंदर्य-विलास को देखकर वह तुम पर रीझे बिना न रहेगा। तुम उसी के पास जाओ।" इस तरह कमल-श्यामल रंगवाले (देहकांति-युक्त) राम ने उसे भेज दिया। वह युवती बल खाती, लचकती चलती लक्ष्मण की पर्णशाला में आयी। १४ बाणों के अधोभाग के सुनहले पुच्छों पर (पंखों पर) हाथ फेरते, बाणों को घुमा-फिराकर सान धरते उनके नोकों के पैनेपन की परीक्षा करते बैठे लक्ष्मण के पास वह मायावी युवती इस प्रकार पहुँची मानों मन्मथविजयी शिवजी के पास पहुँचती हुई व्यभिचारिणी हो। उसकी ओर ध्यान न देते हुए लक्ष्मण अपने बाणों को सान पर धरने में ही व्यस्त था। १५ "रूप, सौंदर्य, अतिशय वीरता में यह कुछ कम तो नहीं। यह पुरुष मेरी मन्मथ-वेदना (कामोद्दीपन) को संतृप्त करने में सुयोग्य दीख पड़ता है। इसके साथ मधुर वार्तालाप करूँगी।" इस प्रकार सोचते हुए शूर्पणखा रामानुज से बातें करने लगी। १६ इन्दीवरश्याम राम की आज्ञा से आयी हूँ। तुम अपनी कृपादृष्टि प्रदान कर मेरी हत्या पर तुले कामदेव के फंदे से मेरा उद्धार करो। मैं तुम पर मोहित हूँ। मुझे मन्मथ-सुख (संभोग-सुख) प्रदान

तॊडर बिगि मदनंगॆ मदवनु तॊडॆवसंतन मारुतगॆ मरु-
विडिय निक्कु सुधांशुविनं सुम्मानवनु कॆडिसु
नुडिय नडुगिसु कोकिलन गारुडिसु विषयविषाहियनु मे-
लुडिय हाय् हत्तनॆयवस्थांतरद दळवुळकॆ ॥ 18 ॥
अॆंदु नुडिवी सुरतदभिगत सौंदरिय नीक्षिसिद निंद्रिय
बंदिकारनु बळिक मनदॊळगरिदना सतिय
संद माया मोहनद रूपिंद सुळिद निशाटवधुविव
ळॆंदु मॆल्लनॆ नुडिदना राक्षस नितंबिनिगॆ ॥ 19 ॥
कृतकवल्ल मदीयवचन स्थितिगॆ नावे ब्रह्मचर्य
व्रत सुनिष्ठितरी वनांतरवास परियंत
रतिय सॊगसिगॆ सोलवॆम्मय मति मनोभवनस्त्र धारा
हतिगॆ तॆक्कुवरल्ल तॆरळॆंदनु नितंबिनिय ॥ 20 ॥
अॆलवॊ खूळ नराधमरिरा नॊलिदु बंदरॆ निम्म बिरुनुडि
यलगिनलि डावरिसिदिरि डॊळ्ळास विद्यॆयलि
ललनॆ यॊब्बळ व्रतववगॆ गड हळुव दिरविगॆ बॊम्मचरियद
बळकॆ गड निमगॆलॆ नपुंसक रॆंदळा कांतॆ ॥ 21 ॥

करने की कृपा करें।" —इस तरह शूर्पणखा सुमित्रासुत से कहने लगी। १७ "मन्मथ को बन्दी बनाओ। वसंत के घमंड को चूर करो। मंद मारुत को क़ैद करो। चन्द्रमा का सुख-संतोष विनष्ट करो। कोयल की आवाज़ बन्द कराओ। इन्द्रियसुख नामक विषसर्प को सर्प-वशीकरण मंत्र से नवाओ (झुकाओ)। काम की दशमावस्था लूट लेने के लिए मेरे इस शरीर पर तुम अपना आधिपत्य जमाओ।" —इस प्रकार उसने बिनती की। १८ इस प्रकार अपनी कामक्रीड़ा की अभिलाषा प्रकट करनेवाली सुन्दरी को जितेन्द्रिय लक्ष्मण ने देखा। उसका मोहक रूप देखकर मन ही मन अनुमान लगाया कि यह मायावी रूपधारी निशाचरी है। फिर लक्ष्मण धीरे-धीरे यों बोलने लगे। १९ "मैं गढ़कर ये बातें नहीं कह रहा हूँ। वनवास की परिसमाप्ति तक मैंने ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया है। यह सत्य है। रति का सौंदर्य भी मुझे विचलित नहीं कर सकता। मन्मथ के तीरों के मार की परवाह मुझे रत्ती भर भी नहीं। (अतः) यहाँ से चली जाओ।" इस तरह लक्ष्मण ने कहा। २० "नीच मूर्ख मानवो! मैं जो स्वयं रीझकर आयी तो अपने कठोर वचन रूपी तलवार से अपनी कपटविद्या-नाटक दिखा, धमका रहे हो। वह तो एकपत्नीव्रतस्थ है! तुम तो वनवास की अवधि भर

कातरिसि विषयातुररु नॆरॆ बूतुगॆडॆदरॆ गरुवरादव
रातु मारुत्तरव कॊडुवरॆ कॆलकॆ सारॆनुत
आ तमिस्राचरिय नसुराराति यनुजनु जरॆयॆ घनरो-
षा तिशयदलि मत्तॆ बंदळु राम निद्दॆडॆगॆ ॥ 22 ॥

कळुहिदनु ता ब्रह्मचर्यद वळकॆ तनगॆदात निन्नय
बळिगॆ निन्नभिमतवदावुदु हेळुतनगॆनलु
ललनॆ यिवळासुर विकर्मद ललनॆ यहुदॆंदरिदु मॆल्लनॆ
तॊलगनुडि दॊलिदवर नंगीकरिसु होगॆंद ॥ 23 ॥

मनद मददक्करिन विषयद नॆनहु नॆग्गितु सुरत रसवा-
हिनिय हरि बत्तिदुदु बिट्टुदु कोमलतॆ मुखद
घन मनोरथ शिशिर कालद वनजदंताय्तुदिसित वळा
ननदलधिक क्रोध शिखि सिडिदॊगुव किडिगळलि ॥ 24 ॥

तिंबॆ निवदिरनी मनुष्य नितंबिनिय कॊंडॊय्दु सुर निकु-
रुंबदल्लण गीर्वनॆंदनुमान मार्गदलि

ब्रह्मचर्य पालन करनेवाले हो ! तुम सचमुच नपुंसक हो।" —इस तरह शूर्पणखा ने कहा। २१ "कामातुर व्यक्ति अगर अपनी व्याकुलता के कारण गंदी बातें करें तो श्रेष्ठ व्यक्ति उन बातों का प्रत्युत्तर कहीं देते हैं ? हट जा यहाँ से।" —इस तरह असुरारी के भाई लक्ष्मण ने उसे फटकारा। वह तब अत्यंत क्रोधोन्मत्त होकर पुनः राम के पास आयी। २२ "उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर रखा है। अतः उन्होंने मुझे आप ही के पास भेजा है। अब आप अपनी राय मुझे बता दें।" —इस प्रकार शूर्पणखा ने राम से पूछा। "यह तो दुष्ट आचरणवाली स्त्री है।" इस तरह निष्कर्ष पर पहुँचकर, जिस किसी प्रकार बला टले —इस उद्देश्य से राम ने कहा— 'जिस किसी को तुमने पसंद कर लिया है— उसी को स्वीकार करने चली जाओ।" —इस प्रकार राम ने धीरे-धीरे कहा। २३ शूर्पणखा के मन में उपजे प्रेम-विषयोपभोग का मोह कुंठित हुआ। कामक्रीडा की अभिलाषा का प्रवाह सूख गया। मुख पर प्रकट कोमल भाव अदृश्य हुआ। उसकी मनोभिलाषा मानों जाड़े के दिनो में पाला पड़ने से मुरझा जानेवाले कमल की भाँति मुरझा गयी। चिनगारियाँ निकालते हुए उसका मुखड़ा लाल होकर जलने लगा। २४ "इनको अभी खाए डालती हूँ; इस मानव-स्त्री को ले जाकर देवताओं को कँपानेवाले रावण के हवाले कर देती हूँ।" इस तरह विचार करती

अंबुनाक्षन मुडिय सरिसक्के झोंबिसलु झडितेयलि बळिकु
ग्रांबकन होळहिनलि होरकैयिद झाडिसिद ॥ 25 ॥

कळकळविदेनण्ण देवन निळय दोळगेंदूर्मिळापति
चळक दिदैतंदु कंडनु कपट रक्कसिय
सेळदडायुधववळगंटल बळिगे चाचलु कंडु रघुपति
निलिसिदनु कैतप्प माडदिरेंदु लक्ष्मणन ॥ 26 ॥

चलुवतनवनु तोरि निन्नुव नोलिस बंदवळिवळ लोकक्के
चलुव तनवनु माडिबिडु साकी निशाचरिय
कोलुवुदनुचित वेंब नुडियिंदोळगवळ नासिकव नुद्दक्के
बळचिदनु कळचिदनु कर्णद्वयद बेसुगेगळ ॥ 27 ॥

बेदरिदवनी नंदनेय वरवदन वरळिद्दुदा निजेशन
वदन वारिजवनु निरीक्षिसि नगेय नटणेयलि
मदुवेयागलु बहुदु लोकद सुदतियरिगी सोबगु संभवि-
सिदुद काणेनु वरिस बहुदेंदळु निजेशंगे ॥ 28 ॥

निम्म चित्तक्के बारदिरे नीवेम्म मैदुनगादरेयु
नम्मूर्मिळामानिनिगे पडियागिरलु माडुवदु

हुई शूर्पणखा राम के सिर की ऊँचाई तक जब बढ़ी तो राम ने प्रलयनेत्री रुद्र का रूप धारणकर उसे धक्का देकर ढकेल दिया। २५ "भैया के निवास में यह क्या शोरगुल है ?" —इस तरह सोचते लक्ष्मण सरपट दौड़े-दौड़े आए तो देखते क्या हैं— वह छलिया राक्षसी खड़ी है। तुरन्त अपनी तलवार खींचकर उसके गर्दन तक ले गये तो यह देखकर रघुपति ने रोककर कहा— "ऐसी ग़लती मत कर बैठो। २६ अपने सुन्दर रूप से यह तुम्हें लुभाने आयी थी। अतः ऐसा कुछ करो कि इसकी खूबसूरती लोकप्रसिद्ध हो। इस निशाचरी की हत्या करना ठीक नहीं।" —इस प्रकार की राम की आज्ञा का पालन करते हुए लक्ष्मण ने शूर्पणखा के नाक को सीधे में चीर डाला तथा दोनों कानों को काट डाला। २७ डरी हुई सीता का मुख अब हर्ष से खिल उठा। पति के मुखकमल को देखते— "यह विवाह करने योग्य नारी ही है। ऐसा सुन्दर रूप इस लोक की नारियों में देखने को मिलना दुर्लभ है। इसको वर सकते हैं! इस तरह सीता ने हँसी-मज़ाक़ किया। २८ यह तुम्हें अगर पसंद नहीं है तो हमारे देवर को देकर बहिन उर्मिला के लिए एक सहेली जुटा दें। तुम्हारे रूप पर विमोहित इसे इस तरह विरूप करना ठीक नहीं। यह मुझे पसंद नहीं।"

निम्म रूपिगॆ सोतवळ नीव् गुम्मननु माडुवदु गुणव-
ल्लॆम्म मनकिदु बारदॆंदळु नगुतनळिनाक्षि ॥ 29 ॥
नगुत लक्ष्मणदेवनाबॆय हॆगल हदरिनलौकि निन्नय
सोगसिगनुगुणवादवर वरिसॆंदु हॊरवडिसॆ
ऒगुव किविमूगुगळ रकुतद हगरणद हॊसनाटकद हलु
दॆगॆद रक्कसि बंदळॊदरुत खरन पट्टणकॆ ॥ 30 ॥

ऐदनॆय संधि

सूचनॆ— तुंगवल सौमित्रियिंदुरॆ भंगवट्ट महोग्ररजनिचरांगनॆय दूरिंद खरनॆनंदनाहवकॆ ।

राय राघवसूनु केळ् कमलायतांबक ननुजनुरु कौ-
क्षेयकद धाराविभिन्न घ्राणमुखि बळिक
हायिदळु हॊरवडुव नॆत्तर बाय तुपिद्रिवश्रुजल पू-
राग्रदभिमान च्युतिय रोदन निनाददलि ॥ 1 ॥
इवळ काणुत कॆदरिदवु मृग निवह वनदलि तापसरु तव
तवगॆ हाय्दरु हायिक दंड कमंडलावळिय

इस तरह सीता हँसी-मज़ाक़ में कहने लगी । २९ लक्ष्मणजी ने सीता की बातें सुनकर हँसते हुए शूर्पणखा के कंधे को (अपनी) कलाई से दाबते हुए कहा— "अपनी खूबसूरती के लिए जो योग्य है उसे वरो।" —फिर उसको वहाँ से निकाल दिया। कान और नाक से रुधिर बहाती इस नवीन नाटक के अंक (प्रकरण) के लिए कारणीभूत शूर्पणखा बिललाती चीखती-चिल्लाती (असुर) खर के शहर पहुँची । ३०

पाँचवीं संधि

सूचना— महोन्नत बलशाली लक्ष्मण से अत्यंत अपमानित हुई वह भयानक राक्षसी शूर्पणखा की शिकायत सुनकर खर युद्ध के लिए आए ।

हे राघव-पुत्र ! सुनो । कमललोचन राम के भाई लक्ष्मण की तलवार से नाक कटी शूर्पणखा घाव से बहते रक्त को मुँह से वमन करती हुई आँखों में आँसू भरे, अपमानित होने के कारण जोर-जोर से रोती हुई आयी । १ शूर्पणखा को देखकर जंगल के हिरन जिधर-तिधर भाग खड़े हुए । तपस्वी अपने दंड-कमंडलु फेंककर नौ दो ग्यारह हो गये । सुनो लव, "हाय !

लवनें कॆळै बळिक हा हा रवद रवळियला जनस्था-
नवनु हॊक्कळु सारिदळु सभॆयनु खरासुरन ॥ 2 ॥
बिसुट ळॊदरुत शूर्पणखि निवडिसिद कट्टभिमान विलसित
बॆसुगॆगळच्चिद नासिकव निदिरलि खरासुरन
असुर नवनिद काणुती जगदसुवि नळुविन कालरुद्रन
विषमकोपज्वालॆ गिम्मिगिलॆनलु खतिगॊंड ॥ 3 ॥
हेळु हेळभिमानभंग छडाळ वारिदायितॆंबुद
हेळु हेळी नासिकच्युतियार दॆसॆयिद
मेळविसिदुदनरिय मूगनु सीळि निमिषार्धदलि निन्नी
गळितघ्राणदलि बॆसुवॆनु बेग हेळॆंद ॥ 4 ॥
कालनागलि कालगग्गद शूलियागलि मृत्युवागलि
कालभैरव नादडागलि हरिविरंचिगळु
हेळु साकारादडागलि मेलॆ नोडा तन्न कैहद
देळिगॆय कौतुकव नॆनुतुब्बणद झळपिसिद ॥ 5 ॥
खरन करकोपानलन दळ्ळुरिगॆ सीदवु तारॆ सिमि सिमि
गरॆदुदंबर सिंधु सुरपुर हॊगॆदुदगलदलि

हाय !" करती हुई ज़ोर-शोर से चिल्लाती हुई जनस्थान पहुँची तथा उसने फिर खरासुर की सभा में प्रवेश किया। २ शूर्पणखा शोर मचाती, चिल्लाती मानों अपना घमंड ही कटा हो, ऐसे (अपने) नाक के टुकड़े को खरासुर के सम्मुख फेंक देती है। इसे देखता हुआ राक्षस मानों लोक-विनाशक कालरुद्र के भयानक क्रोध-ज्वाला से भी दुगुना हुआ हो —इस रीति से आगबबूला हुआ। ३ "कहो, कहो, यह तो बताओ कि इतना भयानक अपमान किससे हुआ। बता, तुम्हारी नाक को काटनेवाला वह कौन है ? तुम्हारे शत्रु की नाक को चीरकर (काटकर) लाऊँगा तथा इसी क्षण तुम्हारे कटे नाक की जगह उसे चिपका दूंगा। जल्दी कहो (कि वह कौन है ?) इस तरह खर ने कहा। ४ चाहे तो वह (मृत्युदेवता) यम हो, या उससे बढ़ा-चढ़ा शूलपाणिं शिव हो, या साक्षात् मृत्यु हो, या कालभैरव हो, ब्रह्मा विष्णु कोई भी हो —जो कोई भी हो —मेरे हाथों की चालाकी की महिमा तुम देख लोगी।" —इस तरह कहते खर ने ब्योड़ा (थगरी) पकड़कर फेंक दी। ५ खर की क्रोध-ज्वाला में फँसकर नक्षत्रों का प्रकाश टिमटिमाते मंद पड़ा। आकाशगंगा मानों खौलने लगी। अमरावती भर में धुआँ व्याप गया। सुनो कुश, उस निशाचरी शूर्पणखा के अपमान का बदला लेने के लिए खर अनगिनत सेना के साथ युद्ध के

तरुण केळै कुशर्नें राक्षस तरुणिगादभिमान भंगद
भरद बवरकें बहळ बलसहितसुर हॊरवंट ॥ 6 ॥
मॊरॆव वाद्यध्वनिय लुक्किन वरवरूथव नडरिदनु नि-
र्जरर जीवगळडरॆ नॊत्तिगॆ नॆनॆय बारदॆनॆ
धुरकॆ मुंचितु मुंदॆ दूषण दुरुळ दुर्मद दुष्टरण दु-
र्धर खर त्रिशिरादि रक्कसरळुकॆ भुवनचय ॥ 7 ॥
धूळि धट्टिटसलट्ट सुंटरु गाळि बीसितु सूसिदुद्दु शुं-
डालकुल कंबनिय तलॆगॊडहिदवु तेजिगळु
मेळविसिदवु धूमकेतु दिशाळियलि रथ केतुदंडद
मेलॆ हद्दॆरगिदवु कलिखर दूषणादिगळ ॥ 8 ॥
अदिरितिळॆ रुधिरांबु धारॆय नुडुगलिसि ताकाश कावळ
कदुबितिन मंडलवनुदुरिदविळॆगॆ तारॆगळु
मदमुखरलै रक्कसरु तोरिद महोत्पातवनु बगॆयदॆ
कदन कोळाहळरु दळवुळिसिदरु दाळियलि ॥ 9 ॥
मुसुकितभ्रवनसुर सेना विसर पदहत धूत धूळि
प्रसरवडिगडि गळुकिसितु रणवाद्य निर्घोष
बिसजगर्भाडवनु किविगॆळिसितलै निम्मवरनी रा-
क्षसर रणरभसद घडावणॆ पर्णशालॆयलि ॥ 10 ॥

लिए रवाना हुआ। ६ (युद्ध के) बाजे जब गरजने लगे तब खर लोहे के रथ पर सवार हुआ। इसे देखकर देवताओं के प्राण नहों में समाए। दूषण, दुष्ट दुर्मद, खर, त्रिशिर आदि भयानक युद्धवीर युद्ध के लिए रवाना हुए। यह देखकर लोक काँपने लगे। ७ खर-दूषणादियों के रवाना होते ही उत्पातसूचक आँधी के धूल के बादल घिर आए। हाथी अश्रुधारा बहाने लगे। घोड़ों ने सिर पटका दिये। दिशि-दिशाओं में धूमकेतु दिखायी देने लगे। खर-दूषणादि प्रमुख राक्षसों के रथों के ध्वजस्तंभों पर गीध झपटे। ८ भूमि काँपने लगी। आकाश रक्त वमन करने लगा। सूर्य-मंडल को अँधेरे ने आ घेरा। नक्षत्र धरती पर टूटकर गिरे। राक्षस तो मदोन्मत्त हैं ही! अपने को दिखायी देनेवाले अपशकुनों की परवाह न करते हुए, युद्ध के लिए चटपटाते हुए वे राक्षस चढ़ाई करने आगे बढ़े। ९ "राक्षस-सेना के पदाघात से उठी हुई धूल आकाश भर में व्याप्त हो गयी। युद्ध के बाजों की गड़गड़ाहट से ब्रह्मांड पग-पग पर काँपने लगा। राक्षसों के आक्रमण के लिए आते समय हुए कोलाहल

आगदिरदी युब्बरवु किविमूगु मसुळिसिदवळ बवरद
भार्गेकारर बरवु भरतावरज नोडेनलु
आगला सौमित्रि सकल कलागमज्ञन नुडिगे गिरिदुदि
गागि बंदेरिळिदु बिन्नैसिदनु रघुपतिगे ॥ 11 ॥

अरस चित्तैसहुदु नावंदरिद नासिक दवळतेत्तिग
रुरवणिसि बरुतिर्दे निरुपिसु जीय संगरके
सरळसूत्रद लहित वीरर शिरव सूत्रिसि कालकंठन
कोरळ लिक्कुवे नेनुत बिलु दुडुकिदनु सौमित्री ॥ 12 ॥

बेग माडदिरिरिसु सीतेय नी गिरिय शिखरदलि कैमिगि
लागि बंदरिभटर भंजिसु नेम निनगिनितु
भार्गे नमगी रक्कसर रणदागु ता कार्मुकव नेंदु स-
रागदलि साहस पराक्रमि समरकनुवाद ॥ 13 ॥

से पर्णशाला में बैठे तुम्हारे राम-लक्ष्मण सतर्क हो गये।" —इस तरह महर्षि वाल्मीकि ने कुश-लव को समझाया। १० यह तो उन्हीं का कोलाहल तथा शोरगुल है जो नाक-कान कटवानेवाली की तरफ़ से लड़ने आ रहे हैं। लक्ष्मण, जाकर देखो तो सही।" इस प्रकार (राम के) कहने पर सुमित्रा-सुत लक्ष्मण सकल-शास्त्रविशारद राम की आज्ञा से पहाड़ की चोटी पर जाकर, देखकर, उतर आए तथा राम से वस्तुस्थिति का उन्होंने निवेदन किया। ११ "सुनो राजन्, आपका अंदाजा सही है। जिसके हमने नाक-कान काटे थे, उसके रिश्तेदार बड़े वेग से आ रहे हैं। युद्ध के लिए आज्ञा कीजिए, भगवन्! बाणों की रस्सी से शत्रुओं के रुंड की माला बनाकर शिवजी के गले में डाल दूंगा।" —इस तरह कहते लक्ष्मण ने धनुष हाथ में उठा लिया। १२ "सीता को, तुरंत ले जाकर पहाड़ की चोटी पर रखो। वहाँ यदा कदाचित् सैनिक आ घेरे तो उन्हें काट डालो। यह मेरी आज्ञा है। इन राक्षसों के साथ लड़ने की ज़िम्मेदारी मेरी है। वह धनुष दे दो।" इस तरह कहते साहस पराक्रमी राम अत्यंत उत्साह से युद्ध के लिए तैयार हो गये। १३

आरनेय संधि

सूचने— आसुरद संग्रामदलि खरदूषण त्रिशिरादिगळ की नाश नगरिगें फळुहिदनु कडुगलि रघुप्रभव ।

आदुदा रक्कसिय नासाच्छेदवे भूभारतर वि-
च्छेदन प्रारंभवेलें कुश केळिदें बळिक
ऐदिती रघुपतियना क्रव्यादबल वड्डैसिकोंड्डु
कोय्द मूगिन खळसतिय कैसन्नेगाश्रमव ॥ 1 ॥

अदें निशाचर मेघमारुत सदनवसुरान्वय पराक्रम
सुदति यग्गद कर्णनासाच्छेदनन निळय
अदें रणोत्सव सिरिय विटनभ्युदयशालें विशाल वल सं-
पदन भवनविदीगेनुत तोरिदळु शूर्पणखी ॥ 2 ॥

मुत्तिता रिपुसेनें सूर्यकुलोत्तमन दळनिळय वनु दिगु
भित्ति बिरियलु मोरेव भेरि मृदंग मौवरिय
तित्तिरिय तंबटद लग्गेय मत्त वारण हयद रणरथ
पत्तिगळ पडितळद भारिय घोर घोषदलि ॥ 3 ॥

छठी संधि

सूचना— महापराक्रमी राघव ने भयानक युद्ध में खर, दूषण, त्रिशिर नामक राक्षसों को यमनगरी भिजवा दिया।

'शूर्पणखा नामक निशाचरी का नाक काटने से ही भू-भार उतारने के कार्य के लिए श्रीगणेश हुआ। सुनो कुश, इस तरह वाल्मीकि ने कहा। तदनंतर नकटी (जिसकी नाक कटी थी— शूर्पणखा) के इशारे से राक्षस-सेना (पर्णकुटी) आश्रम के नज़दीक पहुँची और उसने रघुपति को घेर लिया। १ "वह देखो, वहाँ दिखायी पड़नेवाली राम की पर्णकुटी ही राक्षससमूह रूपी बादल के लिए वायु-सदृश है। असुरकुल की वीर स्त्री का कान, नाक काटनेवाले का निवासस्थान है। वही युद्ध रूपी वीर श्री के, कामुक का गौरव मंदिर। अतुलनीय शौर्य-संपदा युक्त व्यक्ति का भवन यही है।" —इस तरह कहते हुए शूर्पणखा ने राम की पर्णशाला दिखायी। २ नगाड़े, मृदंग, वीणा, तुरही, डफ आदि रणवाद्यों की घनघोर गर्जना के साथ, मदोन्मत्त हाथी, घोड़े, रथ, पैदल सेनाओं का उत्साह भरे भारी शोर-गुल के साथ असुर-सेना ने रविकुलश्रेष्ठ (राम) की पर्णशाला को घेर लिया। ३ "लक्ष्मण, सीता को लेकर परे हो जाओ। मेरे धनुष,

नडॆ सुमित्रासूनु केळ् केलसिडि सरोजाननॆं सहित सं-
गडिसि कॊडु कोदंड कौक्षेयक कळंबकव
तॊडॆवेनी तोर्प निशाचर पडॆय भाग्यद भाळलिपियनु
नॆडिसुवॆनु नैशाट विजयस्तंब डंबरव ।। 4 ।।

बिगिदु बॆळुवट्टॆय कठारिय तिगकॆ सिगर गॊळिसि हॊन्ना
युगद खड्गवनक्षयद मूडिगॆय दक्षिणद
हॆगलि गेरिसि हरद जडॆगळ जगुळद वॊलॊळ चाचि चापव
तॆगॆदु कॊळुतलॆवनॆय हॊरवंटनु रघुप्रभव ।। 5 ।।

कुशनॆ केळंदा हिरण्यकनसम दैत्य कदंबदलि रू-
हिसिद नरकेसरिय रौद्राटोपदंददलि
मसगि मार्बल दिदिरिनलि मोहिसिदनै लवकेळु हुंकृति
मसगॆ हूडिदनहिपनॆदॆ निरिनिळि लॆनलु धनुव ।। 6 ।।

धनुव नेवरिसिदनु कॊप्पिन कॊनॆय नारैदु भयदलि सिं-
जिनिय दनिदोरिसिदनबुजभवांड घर बिरिये
वनधिगळु तुळुकाडॆ तारकि तनिगॆदरि तळ्ळंकगॊळॆ मे-
दिनि सुराचलवलुगॆ बॊब्बिबरिदुब्बिदनु रघुज ।। 7 ।।

तलवार, बाण, सँजोकर दे दो। इधर, सामने दिखायी पड़नेवाले राक्षस-सेना का विधिलिखित पोंछ डालकर, इन राक्षसों को हराकर विजयस्तंभ गाड़ देता हूँ।" —इस तरह राम ने कहा। ४ राम ने सफ़ेद कमरबन्द बाँध लिया। उसमें पिछली तरफ़ तलवार लटका ली। सोने की मूठ वाला खड्ग भी हाथ में लिया। अक्षय तरकस दाहिनी भुजा में चढ़ा लिया। बिखरे बालों को जूड़े में इस तरह बाँध लिया कि वे सरक न पड़ें। फिर धनुष हाथ में लेकर राघव पर्णशाला से बाहर निकले। ५ सुनो कुश, पूर्व में हिरण्यकशिपु नामक दुष्ट राक्षस के संहार के लिए जैसा भयानक नरसिंह रूप धारण किया था वैसे ही भयानक गंभीर ध्वनिपूर्ण आडंबर से राम क्रुद्ध होकर शत्रुसैन्य पर टूट पड़ा। धनुष पर बाण चढ़ाकर इस प्रकार भयानक हुंकार किया मानों आदिशेष की छाती फट पड़ी हो। ६ राम ने धनुष सीधे पकड़कर उसके दोनों छोरों की परीक्षा कर देखी। धनुष की प्रत्यंचा खींचकर इतने ज़ोर से धनुष्टंकार करते चीखे कि ब्रह्मांड फट जाय; समुद्र उमड़ पड़े। नक्षत्र तितर-बितर होकर छितर गये। भूमि काँपी। मेरुपर्वत थर्राने लगा। ७ नकटी शूर्पणखा से बताए गये गंवार राम का परिचय

अऱिदरा त्रिशिरादिगळु मूकोऱति हेळिद हळ्ळिकाऱन
कुंरुह कविकवियेनुत खो येंदुब्बि बोब्बिऱिदु
हऱॆय होयि्लनलमरगिरि तऱ तऱिसे तूळिदरस्त्र शस्त्रद
होऱिगॆयलि हूळिदरु होगिसिद राने कुदुरॆगळ ॥ 8 ॥
सरळ सरि शल्लॆयद मळॆ मुद्गरद दृष्टि मुसुंडि मुसलद
वरुषधारासार गदॆ सिडिलंबु शक्तिगळ
बिरुबिनग्गद सोने रजनी चरबळाहक पटलदिंद
ब्बरिसि सदॆदुदु राम सुमनोद्दाम शिखरियलि ॥ 9 ॥
बीसिदुदु बिरुगाळि रामशरासनद सरळोटदलि होऱ-
बीसि बिद्दवु बिरुदिनसुरर सालुदलॆ नॆलकॆ
सूसि सिडिदरुणांबु विलाकाशदमर विमानवरळिद
दासणद धातुगळ लिद्दवु कूडॆ गगनदलि ॥ 10 ॥
बीळुवायुधवनु निवारिप कोलदोंदु पदाति हय शुं-
डाल रथकोंदोंदु मेलारॆकॆ गोंदंबु
केळुवदु मूडिगॆयलोंदंबूळिगवनच्चरियला रण
केळु सायकवल्लदिल्लॆ सुगॆयलि रघुपतिय ॥ 11 ॥

त्रिशिरादियों ने समझ लिया। 'घेरो-घेरो', इस तरह चिल्लाते वे ठठाकर हँसने लगे तथा अश्लील रीति से चिल्लाने लगे। शत्रुओं के ढफ आदियों की गर्जना के कारण मेरु पर्वत भी थर-थर काँपने लगा। शस्त्रास्त्रों के ढेर के ढेरों से राम को ढँक दिया। हाथी-घोड़ों को (राम पर) चढ़ाई के लिए प्रेरित किया। ८ राक्षसों के बादल रूपी समूह ने राम नामक सुन्दर प्रचंड पर्वत पर, बाणों की वर्षा, शूलों की वर्षा, मुद्गर, परिघ, मूसलों की लगातार वर्षा, गदा, बिजली जैसे तीर, बर्छी, भाले आदियों की नाना प्रकार की भयानक वर्षा करने लगे। ९ राम के धनुष से निकले तीरों की शीघ्र गति के कारण आँधी उठी। असुर वीरों के सिर कट-कटकर कतारों में गिरने लगे। राक्षसों के कटे सिरों से तथा मुंडों से उछलती रक्त की धारा आकाश तक पहुँचने के कारण— (आकाश में) वहाँ पर जमे हुए देवताओं के विमान खिले लाल रंग के अडहुल फूल के सदृश दिखायी पडने लगे। १० शत्रुओं की तरफ़ से आए हुए आयुधों को रोकने के लिए राम का एक बाण आता था। पैदल सैनिक, घोड़े, हाथी, रथों के लिए एक-एक बाण था। इनकी ऊपरी देख-रेख के लिए और एक बाण निकलता। राम एक बाण जब तरकस से निकालते, तब वहाँ की दूसरा बाण प्रार्थना करता कि सेवा का मौका हमें भी दीजिए। राम की युद्धकला अत्यंत आश्चर्य-

काणें निदिरलि कविवकादुव कौणपर कोळाहळिकेगळ
काणेनै कण्णळतेयलि कुंभिनिय विवरणव
काणिसितु कर्बुरर कदनद शोणितांबुधियगलदलि बिलु
जाणरोळ गिन्नाव वीरनो निम्म पितनेंद ॥ 12 ॥
सीळि बिद्दिद्दवु मदेभघटाळि घोटक निकर नेलदलि
होळुगळे दिर्दवु कळलिच नभोग्रदलि रथद
गालि तिरुने तिरुगुतिर्दवु कोलमोनेयलि भूतगण कर-
ताळदलि कुणिदाडु तिर्दवु पाडि रघुपतिय ॥ 13 ॥
अलेले कवि कवि कोल्लु कोल्लिरि तलेय होय् होय् कालहिडिद-
प्पळिसु नरनोट्टैसुवनु गड रक्कसरनेनुत
बळिय रक्कसरथिकरेसुगेय चळ चमत्कृति यिद दूषण
हळचिदनु हरिदश्वकुल सरसिरुह भास्करन ॥ 14 ॥
उरवणिसिदरु राय रावुत करद खड्गद नेगहिनलि निडु-
वरिय गज तूळिदवु तोळिन बाळ होय्लिनलि

जनक थी। युद्ध के मैदान में जहाँ देखो वहाँ राम के बाण ही बाण थे। ११ "सामने से घिरकर चढ़ाई करके लड़नेवाले असुरों का शोरगुल नहीं दिखायी दिया। जहाँ तक दृष्टि पहुँचती, वहाँ तक एक अंगुल भी धरती नहीं दिखायी पड़ती थी। युद्ध के कारण से मरे राक्षसों के रक्त के गड्ढे के गड्ढे सब ओर दिखायी पड़ रहे थे। धनुर्विद्याकौशल में तुम्हारे पिताजी कितने अद्भुत वीर है!" इस तरह कहते वाल्मीकि ने राम की वीरता की भूरि-भूरि प्रशंसा की। १२ मदोन्मत्त हाथी के झुंड के झुंड कट-कटकर युद्धभूमि में गिरे हुए थे। घोड़ों का समूह चकनाचूर होकर धरती पर बिखरा पड़ा था। रथ के चक्र आकाश-मार्ग में उड़कर बाणों की नोकों पर गरगराहट के साथ घूम रहे थे। भूतों का समूह तालियाँ बजाते हुए राम की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए, नाचते हुए, गाते हुए उछल-कूद रहा था। १३ "अरे रे, घेर लो, घेर लो, काटो-काटो; चुभा दो; सिर फोड़ दो। पैर पकड़कर पटक दो। यह मनुष्य-जाति का प्राणी राक्षसों पर हमला करता है।" —इस तरह शोरगुल मचाते हुए नज़दीक के रथों के वीरों को प्रोत्साहित करते हुए बड़ी कुशलता के साथ बाणों का प्रयोग करता हुआ दूषण ने बड़ी फुर्ती से रविवंश रूपी कमल के लिए सूर्य-सदृश राम पर हमला किया। १४ अश्वारोही वीर अपनी-अपनी तलवार निकालकर आक्रमण कर बैठे। भारी क़दम वाले हाथी आगे घुस पड़े। हाथ की तलवार चलाते, ढाल, खड्ग, कुठार, परिघ आदि आयुधों के प्रयोग में

हरिगॆ खड्ग कठारि कुंतद लिरितकारुरु हॊक्करनिबर
कॊरळॊळाडिदवंबु खळकुल काल भैरवन ॥ 15 ॥
रुंड कुणिदवु कूडॆ नभदलि मुंड हॊरळिदववनियलि कडि
कंड मयवाय्ति भरथाश्व कदंब निमिषदलि
कंड मैयलि करुळ रकुतद जॊंडॆयलि जरिदॆलु गळलि जव
नुंडु कारिद नॆलनवॊलु रणभूमि रंजिसितु ॥ 16 ॥
बणगुमानव केळु कलिदूषण कणा बंदवनु मृत्यु वि-
नणलिगांत शरीरिगुंटॆ पुनर्भवाभ्युदय
तृणकॆ कॊबॆनॆ देवदानवगणवनकट वृथा निशाटर
कॆणकि कॆट्टॆयॆनुत्त कविदॆच्चनु ककुत्स्थजन ॥ 17 ॥
ऎच्च मार्गण गणव नॆडॆयलि कॊच्चिदनु गहगहिसु तॆलवो
कॆच्चु कदळियॊळ्ळडडु ता जगकॆ चित्रवल
उच्चदिरु दोर्वळ तटाकद मुच्चुदूवनु नम्म मुंदॆनु
तॆच्चु गगनकॆ दूटिसिद दूषणन मस्तकव ॥ 18 ॥
दूटॆ मस्तकवभ्र किट्टुदु कूटदलि मुसलदलि गदॆयल
घाटशक्तिय लीटियलि शूलदलि नॆत्तरिन

परिणत राम को घेर लेते हैं। दुष्टों के समूह के लिए कालभैरव-सदृश राम के बाणों ने उन सभी लोगों के सिर काट गिराए। १५ आकाश में राक्षसों के (कटे) सिर साथ-साथ नाचने लगे। सिर कटे मुंड धरती पर लुढ़कने लगे। क्षण मात्र में हाथी, घोड़े, रथ कट-कटकर चकनाचूर हो गये। मांस-खंड दिखायी पड़नेवाले देह, आँतड़ियाँ तथा रक्त-सना कीचड़, बाहर निकले हाड़—इनसे भरपेट भोजन करने के बाद यम ने मानों सारी धरती पर क़ै कर दी है, इस तरह रुंड-मुंडों से युद्ध-भूमि पटी हुई थी। १६ "नीच मानव ! सुनो। तुम्हारे सामने यह जो खड़ा है कलि-दूषण (अर्थात् वीर दूषण नामक राक्षस) है। मृत्यु के जबड़े में फँसे हुए को पुनर्जन्म की उन्नति क्या कभी हो सकती है ? सभी देवता तथा सुरवृन्द मेरे लिए तिनके के समान है। व्यर्थ ही तुम हमें छेड़कर वर्वाद हो रहे हो।" इस तरह कहते दूषण ने राम पर बाणों की वर्षा की। १७ दूषण से छोड़े गये वाणों को राम ने बीच में ही काट दिए। फिर खिल-खिलाकर हँसते हुए कहने लगे— "रे, केले के पौधे का बल-विक्रम तो इस लोक में एक आश्चर्यकारक घटना है। हमारे सामने तुम अपने भुजवल-विक्रम के तालाब की दरार मत खोलो।" इस तरह कहते राम ने वाण छोड़कर दूषण के सिर को आसमान में उड़ा दिया। १८ उस सर

ओट परियंतर कबंधनि शाट रिपुवनु सुररु बेंऽगिड
दाटितल्लि मेलें मेल्लनें जीववा खळन ॥ 19 ॥
नूकिदनु कैयोडनें रथव समीक साहस मल्लना नर
लोकनाथन सरिसदलि सरळेंसुगेयलि त्रिशिर
ओकरिसिदुदों गगनवाशानीक बेंसलादुदो लयाग्नि क-
णाकलित मार्गणवनेंनें मुसुकिदवु शरजाल ॥ 20 ॥
असुर हरने नल्पने साहस दरिद्रनें सुर नरेंद्रर
लसमनयनन नोट किदिरें चराचरद विभव
विषम विक्रम वीर रामन विशिख मुखदलि समरदलि जी-
विसुव नारै त्रिशिर मस्तक वडग्निदुदु नभव ॥ 21 ॥
एन हेळुवें नमम हर चतुराननना खंडलरनऽसिद
वा निशाटन मूरुमस्तक वट्टि सुरबलव
आनेंयिदिळि दोडिदनु सुर सेने सहितमरेंद्रनजगें प्र-
याणवादुदु कार्णनभ्रदोळा त्रियंबकन ॥ 22 ॥
नोडिकंडनु सुरर मुरिगेंड दोडिकेंय कळकळवनसुरवि
भाड नसुनगुतुग्र वैष्णव बाणवनु बेंसर्से

के कटकर आसमान में उड़े जाने पर भी उस राक्षस का धड़ (कबंध) रक्त की धारा बहाता हुआ, दौड़ता हुआ, मुसल, गदा, बर्छी, शूल आदियों से बड़े ज़ोर से राम पर प्रहार कर रहा था। यह देखकर देवताओं को भी आश्चर्य हुआ। तदनंतर कुछ समय बाद दूषण के प्राण देह छोड़कर चले गये। १९ जगत के स्वामी श्रीराम पर बाणों की वर्षा करते हुए युद्धवीर त्रिशिर ने रथ को राम के सम्मुख बढ़ाया। त्रिशिर के छोड़े गये बाणों ने राम को मानों इस तरह आ घेरा कि आकाश ही बाणों की क़ै कर रहा है अथवा दिशाओं ने प्रलयाग्नि की चिनगारियाँ बरसाने के लिए बाणों को जन्म दिया हो। २० वह दानव-विनाशक (राम) क्या अल्प है? देवता तथा मानव नायक सामना करने आए तो क्या वह (राम) साहस-प्रदर्शन में दरिद्र हो सकता है? चराचर सृष्टि, क्या त्रिनेत्री (शिव) की दृष्टि का सामना कर सकती है? असम बलशाली वीर राम के बाणों के सामने, युद्ध में कौन बच सकता है? राम-बाण से त्रिशिर के सिर आकाश की तरफ़ उड़े। २१ त्रिशिर के तीनों सिर आकाश में उपस्थित देवताओं की सेना को भगाकर, शिवजी, ब्रह्माजी तथा देवेन्द्रादियों को ढूंढ़ते चले गये। देवेन्द्र ऐरावत से उतरकर देवसेना-सहित भाग गये। ब्रह्माजी अपना सिर बचाकर भागे। शिवजी आकाश से लापता हो गये। २२

झाडिगिडिगळ झळददळ्ळुरि जोडणेय जवगतियलमरर
बीडिगभयव कॊडुत लडगिसिता शिरत्रयव ॥ 23 ॥
तनुज केळच्चरियना स्यंदनद मेलण मुंड बॊब्बेय
निनद तप्पिसि तप्पदॆसुतिर्दुदु ककुत्स्थजन
नॆनहु दॆंतुटो सर्वॆयॆ सरळुब्बिनलि चक्रदलिट्टु दिट्टुदु
कनलि कैदुगळॆनितनितरलि राघवेश्वरन ॥ 24 ॥
तीरॆकैदुगळिळिदु बॊब्बॆय तोरि कडिगोरळिनलि कोपिसि
तेरिनग्रव हिडिदु तिरुहिट्टुदु कबंधकवु
वैरियनु बळिका कबंधद भारि भुज विक्रवना रघु
वीर कंडच्चरिय ताळ्दनु तूगि मस्तकव ॥ 25 ॥
लेसु लेसॆनुतदर समर विलास विभवकॆ मॆच्चि नगुत श-
रासनदग्रदलिरियॆ बिद्दुदु धरणिगप्पळिसि
सूसु वरुणांबुविन धारॆय भासुरद हरिगॊरळ तॊळिन
बीसिकॆय बिरुसिनलि हॊरळितु मुंडवा खळन ॥ 26 ॥

देवताओं का घबराकर भाग जाने का शोरगुल राम ने देखकर, जान लिया। असुरारि (राम) ने मुस्कुराते हुए वैष्णवास्त्र को आज्ञा दी। चिनगारियों को एक साथ उगलता हुआ, भयानक ज्वालाएँ प्रक्षेपित करता हुआ यम-वेग से निकला वैष्णवास्त्र देवलोक को अभय प्रदान करता हुआ त्रिशिर (राक्षस) के तीनों सिरों को समाप्त कर देता है। २३ एक आश्चर्य की बात सुनो कुश। रथ पर के राक्षस के मुंड (कबंध) ने चीखना-चिल्लाना तो बन्द कर दिया। फिर भी वह (कबंध) लगातार राम पर बाणों की वर्षा कर ही रहा था। हाथ में के बाण समाप्त होते ही उसने (कबंध) चक्रायुध फेंका। तत्पश्चात् रथ में जितने भी शास्त्रास्त्र थे, एक-एक करके राम पर चलाने लगा। २४ सारे शस्त्रास्त्र समाप्त होते ही सिर-विरहित राक्षस की वह देह रथ से उतर पड़ी तथा क्रोध से चीखते-चिल्लाते उसने रथ की नोक पकड़ उसे घुमा-फिराकर राम पर दे मारा। राक्षस के मुंड (कबंध) का यह भयानक पराक्रम देखकर आश्चर्य से श्री रघुवीर ने भी 'साधु-साधु' कहा। २५ 'धन्य-धन्य' कहते हुए, उसके लड़ने के ढंग की सामर्थ्य को तथा सुन्दरता को पसंद करते हुए श्रीराम ने हँसी-हँसी में ही अपने धनुष की नोक से चुभोया तो वह धड़ (कबंध) धड़ से धरती पर गिर पड़ा। खून बहाता हुआ, सिर कटा हुआ वह देह भुजाओं को ज़ोर-जोर से धरती पर पटकता हुआ लुढ़कने लगा। २६ सुनो, जानकी-पुत्र ! त्रिशिर की मौत देखकर खर राक्षस प्रलयकालीन

धरणिजासुत केळु त्रिशिरन मरणवनुकाणुत जगत्सं-
हरण रुद्रन कुपित रौद्रावेश रोषदलि
खरनु नूकिदनद्रिसारद वरवरुथवनोडने करि रथ
तुरग कालाळेऱि मुसुकितु मनुकुलेश्वरन ॥ 27 ॥
आसुरद बोब्बाट हयदुरु हेषित ध्वनि करिय बृंहित
घोष रथ वाजिगळ चीत्कृति भटर सिंहरव
आ समर वाद्यद चडावणे यासुरदि बेंदऱिसितु राम सु-
वासिनिय नळवळिदु नुडिदळु रघुजननुजंगे ॥ 28 ॥
देव रामन रौद्ररणदभिराव कर्णके बीळदिदे भुव-
नावळिय गब्बरिसुतिदे कर्बुरर रणरभस
आव हवणो हरणदलि मज्जीवितेशनु केळिदैयेले
देव नरदेवेश निरवेंतेंदळब्जुजाक्षि ॥ 29 ॥
तंदे लक्ष्मण देव नडे रघुनंदनन बेंबलके रिपुगळ
बंदियनु बिडिसमित मार्गणगणवनुणलिक्कि
तंदे होगै तळुव माडदिरेंदु जानकि नुडियला पू-
र्णेंदुमुखिगी मात नुडिदनु मागधीसूनु ॥ 30 ॥
हलबरुंटे रविगळिडिगत्तलेय मोत्तके घनबळाहक
बळगकेनिबरु मारुतरु मदवेऱिदंबुधिय

रुद्र के रौद्रावेश में आकर अपना लोहे का रथ राम के सम्मुख ले आया। उसकी, हाथी, घोड़े, पदाति (पैदल) आदियों की संयुक्त सेना ने राम को चारों ओर से घेर लिया। २७ घोड़ों का हिनहिनाना, हाथियों का चिंघाड़ना, रथों की घरघराहट, युद्ध वीरों का सिंहनाद, रणवाद्यों की गर्जना वग़ैरहों से उत्पन्न शोरगुल सुनकर सीता घबरायी। इन भयानक आवाज़ों से धीरज खोकर उसने लक्ष्मण से पूछा। २८ "देवर जी, मेरे देवता राम का सिंहनाद सुनायी नहीं पड़ता। राक्षसों की तो धाक चारों ओर जमी हुई है। लक्ष्मण, मैं अपने पति के प्राणों के योगक्षेम के लिए चिंतित हूँ। पता नहीं, वे कैसे क्या हैं?" इस तरह सीता ने कहा। २९ "तात, लक्ष्मण। अपने भैया की सहायता के लिए जाओ। तुम्हारे असंख्य बाणों का शिकार शत्रुओं को (शत्रुओं को आहार) बनाकर राम को शत्रुओं के घेरे से मुक्त करो। देर मत करो।" इस तरह जानकी ने कहा। तब सौमित्री चन्द्रमुखी सीता को संबोधित कर आगे की बातें कहने लगे। ३० अँधेरे के समूह को मार भगाने के लिए कई सूर्यों की आवश्यकता होती है क्या? बादलों को तितर-बितर करने के लिए कितने

सलिल दुब्बरकें निबरौर्वानिळरु हेळौ तायें रामन
कलहकाकैनेरवें कळकळवेकें निमगेंद ॥ 31 ॥
बिजयमाडी कुधरदग्रद कुजद नेंळलिगें कोटि वृषभ
ध्वज पराक्रम पौरुषन रणपदव तोरुवेंनु
भजिसदिरि भीतिय नेंनुत भूमिजेंय भूधरदग्रकेरिसि
विजय विक्रम वीर रामन रणव नोडेंद ॥ 32 ॥
अदें रघुक्षितिपालकन चापद चडाळ ध्वनिय चित्तै-
सिदिरें मुंदिदें समर भैरवनुग्रसिंहरव
अदें शिखाळिय नुगुळ्व सरळिन होंदऱ होरटें नोडि मूरुति
यदें जगत् व्यापकन निलविन निगरदवोलेंद ॥ 33 ॥
हरिय बिडि लोचनव निदिरिन लुरवणिसुतिदें राम बाहु
स्फुरित विक्रमवह्नि विद्विष विपिन वीथियलि
उरुळुतवें गजवरुण जलदलि होंरळुतवें हयवसुर रसुगळु
तेंरळुतवें ताराध्वदलि तरळाक्षि नोडेंद ॥ 34 ॥
कुणिवुतिदें रणभूत रामन कर्णेय भीकृति रवकें नभदलि
मणिवुतिवें मौळिगळु रामन संगरकें सुरर

वायुदेवता चाहिए? उमड़ते सागर की उमड़ रोकने के लिए कितनी बड़वाग्नियों की आवश्यकता है? युद्ध में शत्रुओं को दंडित करने के लिए राम को किसी की क्यों ज़रूरत पड़ेगी?" आप उनके लिए क्यों चिंता करती हैं?" —इस तरह कहा। ३१ "इस पहाड़ की चोटी पर जो पेड़ है— इसकी छाया में आइये। करोड़ों रुद्रों के सदृश पराक्रमी बड़े भाई का युद्ध-कौशल्य दिखाता हूँ। डरिए मत।" इस तरह कहकर लक्ष्मण ने सीता को पहाड़ की चोटी पर चढ़ा ले जाकर वीर विजयी राम का युद्ध करने का ढंग दिखलाया। ३२ "वहाँ देखिए: रघुराम के धनुष की ठेंकार-ध्वनि क्या सुनायी नहीं पड़ी? वहाँ देखिए। वह युद्ध भयानक उग्र सिंहनाद (राम का)। ज्वालाएँ उगलते हुए राम के बाणों के झुंड के झुंड कैसे लड़ रहे हैं, देखिए। मनोहारी क़द के जगत के स्वामी श्रीराम की मूर्ति देखिए। ३३ "सामने के युद्धरंग पर ज़रा ग़ौर करके देखिए। श्रीराम के भुज-पराक्रम की आग निकलकर शत्रुसैन्य रूपी जंगल में पहुँचकर हाहाकार मचा रही है। हाथी लुढ़क रहे हैं। घोड़े खून की नदियों में लोट रहे हैं। राक्षसों के प्राण आकाश की तरफ़ यात्रा कर रहे हैं। देखिए।" इस तरह लक्ष्मण ने कहा। ३४ राम के बाणों के भयानक शब्दों के ताल और लय पर रण-पिशाच नाच

अणिकैयातनें रामनी धारुणिय भारव भंजिसलु का-
रणिकनादनु कमलनाभनु कांतें केळेंद ॥ 35 ॥
ई परिय रणरसवना सतिगा परंतप तोरुतिरला
टोप मसगिदुदित्त संगरवु भयवीररिगें
आ पुलस्तान्वयन चापकलाप शरवीडिरिदु मुसुकिद
वी पतंगान्वय शिरोमंडनन वळयदलि ॥ 36 ॥
मुसुकिदरिशर जालवनु खंडिसि रघुक्षितिनाथ मूगु
ब्बसव माडिद नॅसुगॅयलि बळिका निशाटगें
विशिख हतियलि नोंदु हलुमुरॅदसुर नुगिदनु बत्तळिकॅ यिं-
दसमनयन कळंबवनु कळवळिसॅ सुरनिकर ॥ 37 ॥
ई सुभट नुद्दंडबिल्लि दैसले तप्पेनॅनुत्त म-
हेशदत्त कळंबवनु कार्मुककॅ नॅळॅगोळिसि
आ समस्त नृपाल मध्यदलीश चापव मुरिद वैरद
वासि निनगिन्नरिय बहुदॅनुतॅच्चु बॊब्बिरिद ॥ 38 ॥
अदु महेश्वर मार्गणव दॆंददन नॊम्मिगॆ मन्निसुत चा-
चिदनु चटुळचडाळ चापवना चराचरद

रहे हैं। राम का युद्ध-कौशल देखकर आकाश में इकट्ठे हुए देवता सिर नवा रहे हैं तथा स्तुति कर रहे हैं। राम क्या सामान्य मानव है! धरती के भार को उतारने के लिए श्रीहरि ही कारणीभूत होकर अवतार ले चुके हैं।" इस प्रकार लक्ष्मण ने कहा। ३५ इस रीति से लक्ष्मण जब सीता को राम का युद्ध-विलास दिखा ही रहे थे— उस ओर राम और राक्षस खर में भयानक युद्ध छिड़ गया। पुलस्त्यवंशीय खर के धनुष से निकले बाणों ने रविकुलतिलक (राम) को चारों ओर से घेर लिया। ३६ अपने को घेरे हुए शत्रु-बाणों को प्रति बाण चलाकर (राम ने) काट डाला तथा राक्षसों को मुसीबत में डाल दिया। बाणों की मार से जर्जरित हुए खर ने दाँत-ओंठ चबाते हुए तरकस से शिवास्त्र निकाला। यह देख देवता काँपने लगे तथा हैरान हुए। ३७ 'इस वीर के प्रचंड धनुष से बाणों की वर्षा जो हुई —कोई बात नहीं।' इस तरह मन ही मन कहते महेश्वर के वरदान से प्राप्त उस अस्त्र को (बाण को) धनुष पर चढ़ाया। "समस्त राजसमूह के मध्य शिव-धनुष तोड़ने के तेरे बल-विक्रम की अब परीक्षा है।" इस तरह कहते खर ने बाण प्रयोग किया और चिल्लाया। ३८ उसे महेश्वरास्त्र जानते हुए, उसका गौरव करते हुए समस्त जीवियों के अंतर्यामी श्रीराम ने अपने असाधारण धनुष को उसे (उस अस्त्र को) समर्पित

हृदयदंतरियामि सरळॆत्तिदुदु बळिकर्धवनु कॊंडॊ-
य्दुदुरिसितु सीता सुमित्रा सुतर सरिसदलि ॥ 39 ॥
आर्यॆनुत मुक्कुरूकितसुरनिकाय निशित महोग्रतर निखि-
ळायुधद भटरौकिदरु गजरथ तुरंगमव
बाय बिट्टुदु गगनदलि रघुरायगादुदॆ रणधुरंधर
दायतिकॆ गवसान हार्यॆनुतखिळ सुरनिकर ॥ 40 ॥
बळिकले वॊगळुवॆनु कंचुकिगळद काळोरगन खातिय
कळकळिकॆ मिगलुगिद नॊरॆयिदुग्र खंडॆयव
कळलि रणदलि कॆडॆद रक्कसवलगॆयिरलद कॊंडु मुंगै
गॊळिसि यज्ञद वीरभद्रन रणकॆ गुरुवाद ॥ 41 ॥
अट्टि हॊय्दनु हॊगुव तेरिन थट्ट तूळुव तोळिनानॆय
मॆट्टिदनु तरिदॊट्टिदनु तेजिगळ तितिणिय
अट्टि कुणियलु कुबु बिरिदु तलॆयॊट्टिलनु तूरिदनु कालगॆ
कट्टरवॆ यार्त्तनलु कडिदिक्कदनु खळबलव ॥ 42 ॥
मत्तॆ मुसुकुव करिय शिरदलि मुत्तुगळ मीटिदनु मावुत
रुत्तमांगकॆ हरिव कंडनु हयद रावुतर

किया। उस अस्त्र ने उस धनुष को काटकर आधे को ले जाकर सीता लक्ष्मण जहाँ थे, वहाँ गिरा दिया। ३९ 'हो-हो' करते राक्षससमूह ने राम को घेर लिया। पैने भयानक आयुधों को धारे वीर हाथी, घोड़े, रथों को राम की ओर बढ़ा देते हैं। "हाय-हाय रघुराम का युद्ध-पराक्रम क्या अस्तंगत होने जा रहा है।" इस तरह कहते हुए आकाश में उपस्थित देवता चिंतित हुए। ४० केंचुली त्यागनेवाले कृष्ण सर्प की भाँति क्रोधित हुए खर ने गरजते हुए एक भयानक खड्ग को म्यान से निकाला। तभी युद्धक्षेत्र में गिरे एक राक्षस के ढाल को हाथ में लिये राम दक्षयज्ञ के वीरभद्र की तरह भयानक बने। ४१ रथों को, पीछा करते जाकर पीटा, सूँड़ उठाकर आगे बढ़ते हुए हाथियों को कुचल दिया। घोड़ों के झुंड के झुंड काटकर ढेर बना दिया। हमला करने नाचते आते हुए सिरों को रणोन्माद प्रकट करते धक्के देकर ढकेल दिया। इस प्रकार राम ने शत्रु-सैन्य को गाजर-मूली की तरह काट डाला कि उसका भोजन करते-करते यम को बदहज़मी हो जाय। ४२ फिर-फिर घिर आते हुए हाथियों के गंडस्थल (माथे) को फाड़ डाले, उनमें भरे मोतियों को तितर-बितर कर दिया। हाथियों के संचालन करनेवाले महावतों के सिर काट डाले। घोड़ों पर सवार घुड़सवार सैनिकों के प्राण हर लिये। रथों में

अँत्तिसिदनसुगळनु रथिकर हत्तिसिद नंबरव भीकर
हुत्तनेरिसि हॊळकिदनु हॊळहॊळव खड्गदलि ॥ 43 ॥
नीरॊळॆळॆदसियंते खड्गदधारॆ चतुरंगदलि विहरिसि
तारनुपमिसुवॆनु सुरासुरनरभुजंगरलि
वीर रामगॆ रामने प्रतिवीर केळै मुगिलुगंड म-
यूरनवॊलुब्बिदनु संगररंग मध्यदलि ॥ 44 ॥
पुटनॆगॆदु तॆगॆदसुव खरनुब्बटॆय तेरिन तेजिगळना-
र्भटिसि नूकुव सारथियनाध्वज पताकॆगळ
लटकटिसि लळियेरि तरिदुत्कटव तोरिद नंतकन बॆळॆ
गटमटवु फलिसुवदॆ दैवदलणुग केळॆंद ॥ 45 ॥
अडरिदनु हॊसरथ वनवनद नुडिदु हाय्किद नीतना खळ
पडिरथकॆ धुम्मिक्कलद तरिदनु कृपाणदलि
बिडदॆ नूरॆंभत्तु परियंतडसि सारथिसहित रथवं
गडव विगडिसिदनु संगररंग मध्यदलि ॥ 46 ॥

बैठकर लड़नेवाले वीरों को आकाशमार्ग में उड़ा दिया। राम को देखकर डरे हुए व्यक्ति बाँबियों पर आरूढ़ हो, खड़े हो गये। इस तरह चमचमाती तलवार चमकाते हुए राम युद्धक्षेत्र में विहार करने लगे। ४३ पानी पर चलाए गये खड्ग की तरह राम के चलाए गये खड्ग ने (खड्ग के मुँह ने) चतुरंग सेना में खलबली मचा दी। देवता, असुर तथा मानवों में राम की तुलना किनसे की जाय ! वीर राम के लिए राम ही विपक्षी वीर है। बादल को देख खुशियाँ मनाते हुए मोर की तरह युद्ध-क्षेत्र में राम अपने शत्रुओं को देखकर फूला न समाया। ४४ "उछल-कूदकर बाण प्रहार करते खर के रथ के तेज घोड़ों को, उन्हें उकसाकर आगे-आगे बढ़ाते सारथी को तथा रथ पर लहराते ध्वज को बड़े उत्साह से काट गिराकर राम ने यमदेवता को उत्तम फ़सल दे दी। अवतारी पुरुष के साथ धोखेबाज़ी करने से क्या प्रयोजन ? उसका परिणाम क्या अच्छा हो सकता है ? सुनो लव।" —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ४५ खर नये रथ पर आरूढ़ हो, आया। राम ने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। खर अन्य एक रथ पर उछला; राम ने उसे भी अपने खड्ग से काट डाला। इस प्रकार राम ने सारथी-सहित एक सौ अस्सी रथों पर आक्रमण करते-करते उन सबको छिन्न-विच्छिन्न कर युद्धभूमि के मध्य पहाड़-सदृश ढेर बना दिया। ४६ "यह कितना आश्चर्यकारक है ? यह धनुष का टुकड़ा रविकुलोत्पन्न राम के सिवा और किसका हो सकता है ? यह धनु अपने

एनिदच्चरि धनुशकलविदु भानुकुलजनदागदिरदिद
नीनु कंडैयपजयवनुपकरिसिदलें पतिगें
आ निभृत कोदंड चंडध्वान विल्लकटकट नीनिद
केनुपायव कंडैयेंदळु सीतें मैदुनन ॥ 47 ॥
ऐसले चित्तैसि चित्रकळासवनु नीवेंनुत लक्ष्मण
ना सुरेश्वरदत्त वज्रावर्त कार्मुकव
भासुरास्त्र मुखाग्रदलि मेळैसि मिगें बोळैसि संगर
सासिगन बल्लहन बळिगैदेंदु बीळ्कोंट्ट ॥ 48 ॥
हायेंनुत हरि वरुणशंकर वायु वित्तप विरुत शिखि यम
रायुधद निर्गमकें लघुसंधान कौशलकें
रायराघव निगमजस रघुराय मंदर कूर्म राघव
राय धरणिवराहयेंदुदु कूडें लक्ष्मणन ॥ 49 ॥
सिडिल मरि़ता कार्मुकदोंळुग्घ डिसुवंतिरें ढणढणत्कृति
जडियें जाडिय जोडणेंय बोंबाळ चौरिगळ
होंडकरिसि होंय्देळ्व मिंचिन कुडिवेंळगु देसेंदेसेंगें पसरिसु
तडसि बंदुदु चापवा रघुभूपनिद्देंडेंगें ॥ 50 ॥

स्वामी को हारने की नौबत नहीं लानेवाला है न ? लक्ष्मण, क्या तुमने इसे नहीं देखा ? राम के श्रेष्ठ धनुष की कठोर धनुष्टंकार सुनायी नहीं पड़ रही न ? इस दिशा में (इसके लिए) तुमने क्या सोच रखा है ?" —इस तरह सीता ने लक्ष्मण से पूछा। ४७ "ऐसी बात है ? तब इस आश्चर्य को देखिए।" इस तरह सीता से कहकर लक्ष्मण ने देवेन्द्र से प्राप्त हुए वज्रावर्त नामक धनुष को उस महास्त्र की नोक पर जोड़ दिया। तब उससे प्यार करते हुए लक्ष्मण ने (उससे) कहा, "युद्धवीर श्रीराम के पास चले जा।" —यों उसे भेज दिया। ४८ इन्द्र, वरुण, शिवजी, वायु, कुबेर, निर्ऋति, अग्नि, यम वग़ैरहों ने उस आयुध के रवाना होने की रीति, और उसे जोड़ देने के कौशल्य को देख दाँतों-तले अँगुली दबायी। "राजा राघव, वेदों से प्रशंसित रघुकुलराज, मंदर कूर्म राजा राघव, धरणी-वराह" आदि उपाधियों से लक्ष्मण के साथ उन्होंने रामस्तुति की। ४९ ऐसा लग रहा था मानों बिजली का अर्भक उस धनुष में गरज रहा था तथा वह धनुष 'धन-धन' की आवाज़ करता हुआ समूह में जोड़े प्रकाशमान चाँवरों की तरह दीख पड़ा। चकाचौंध करती, कौंधती बिजली के समान प्रकाश चारों तरफ़ बिखेरता हुआ वह धनुष राम के पास आया। ५० "यह धनुष शत्रुघ्न के भाई लक्ष्मण से प्रेषित है" —इस तरह

अरिदना शत्रुघ्ननग्रज नरुहिदॆबुदना कृपाणव
नॊरॆ गॊळिसि रघुनाथ कैयिक्किदनु कार्मुककॆ
तॆरवॆयादुदु भीतिबलु बॊब्बिरितकसुरन धैर्यकालन
मरॆय हॊक्कुदु हॊरळि यॊडॆदुदु मिक्क रक्कसर ॥ 51 ॥
मरुळला नीनॆलवॊ खळ मूगरिकिगादभिमान भंगकॆ
धुरवनॆसगुवनप्रबुद्धनो मेण् विचक्षणनॊ
शरणुवॊगु पितनाणॆ कावॆनु हरणवनु कॆडबेडकालगॆ
करुणविल्ल वृथा विरोधिसि सायबेडॆंद ॥ 52 ॥
निन्नवॊलु बलुबाहु साहस रिन्नु जनिसरु जग दॊळाजिय
निन्नु कॊडॆसगिदरॆ मूडदु मूगु मानिनिगॆ
हॊन्नबाणवनॆच्चु कॆडिसिदिरॆन्न मातनु कॆळु मातिदु
निन्न चित्तकॆ बारदिरॆ कलियागु बेगॆंद ॥ 53 ॥
रामकेळै कॊंडचलपद कामितव बिडलेनु तनुविदु
तामरस बांधवन बाळिकॆगकट शाश्वतवॆ
ई मरुळुतनवेकॆ बल निर्नामि वाय्तॆंदुब्बि वचिसुव
कैमॆगिदकॊयॆनुत कविदॆच्चनु ककुत्स्थजन ॥ 54 ॥

समझते हुए राम ने हाथ की तलवार को म्यान में डालते हुए उस धनुष को हाथ में ले लिया। तब वे निर्भय बने। राम की गर्जना से खर का धैर्य यम के आसरे में पहुँचा। अन्य राक्षसों का समूह विभाजित हुआ। ५१ "रे राक्षस, तू एक महामूर्ख है। नकटी के अपमान का बदला लेने युद्ध करनेवाले अज्ञानी कहूँ, धूर्त कहूँ, या क्या कहूँ समझ में नहीं आता। अब भी शरणागत हो सकते हो। पिता की क़सम। तुम्हारी रक्षा करूँगा। व्यर्थ बरबाद मत हो। यम निर्दयी है। मेरा विरोध कर व्यर्थ मरो मत।" इस प्रकार राम ने खर को समझाया। ५२ "तुम्हारे जैसे भुजबलशाली वीर इस धरती पर दुर्लभ हैं। (बार-बार पैदा नहीं होते।) तुम्हारे केवल युद्ध करने से तुम्हारी बहिन की नाक पूर्ववत् (पैदा) नहीं हो सकती। तुम्हारे स्वर्ण (पंख वाले) बाण छोड़कर उन्हें व्यर्थ मत खपाओ। मेरी बात मान जाओ। अगर मेरी बातें तुम्हें पसंद नहीं तो तुम अपनी वीरता दिखाने में शीघ्रता करो।" —इस तरह राम ने कहा। ५३ "सुनो राम, शाश्वत मोक्ष पाने की अभिलाषा क्या त्याग ही दूं? सूर्य के अस्तित्व के लिए क्या यह देह स्थिर है? [रविवंशीय तुम्हारा भी जीवन तो शाश्वत नहीं है।] व्यर्थ भ्रम में क्यों पड़ते हो? 'मेरी सारी सेना जो विनष्ट

ऎच्च बाणव तरिदु तॊडचिद नुच्चितोमरदॆंबनमररॊ
ळच्च शौर्यव नऱसि कालन करॆदु नॆलॆगॊळिसि
चुच्चुगॊंडॆय ददटमुनिजडॆ विच्चि नर्तिसॆ राम कुबु विरि
देच्चु कडिदनु शिरवसरळिनला खरासुरन ॥ 55 ॥

नॆगहि कॊंडवु भूत बीळुव विगड रक्कसदलॆय मुंडदॊ
ळॊगुव रकुतकॆ बायनॊड्डिदतु शाकिनी निवह
अगिदु नलिनलि दळिद हॆणगळ बगिदु कॊंडवु चंडि चामुं-
डिगळु चप्परिसिदवु भेरिगळमरकटक दलि ॥ 56 ॥

रणकॆ नमिसि समस्त शाकिनि गणकॆ बॆससि महोग्रचापद
गुणव सडिलिसि बसिव मैवसॆगळनु बळिदिक्कि
प्रणुत सुरमुनिजनद जय जय रणितरव दुव्विनलि रक्कस
रण भयंकर नैदिदनुनिजपर्ण मंदिरव ॥ 57 ॥

सुळिदवारति यमरियर हॊंदळिगॆगळ दीपगळ मुक्ता-
फलद सेसाक्षतॆय मळॆ सिरिमुडिय सरिसदलि

हुई' —इसके लिए जो तुम आनंद मनाते हो —इस तुम्हारे पराक्रम के लिए यह लो (पुरस्कार)।" इस तरह कहते हुए खर ने राम पर बाण बरसाना शुरू किया। ५४ खर के छोड़े गये बाणों को राम ने अपने बाणों से बीच में ही काट डाला। अपने तरकस से बाण को बाहर निकालकर देवताओं में जो शूरवीर हैं—ढूंढ़कर मृत्युदेवता यम को उसमें प्रतिष्ठित किया। तब चुग़ुलखोर नारदजी अपना जूड़ा खोलकर खूब नाचे। राम ने गरजते हुए, अपना (वह मृत्यु प्रतिष्ठित तीर छोड़कर) खर के सिर को काट डाला। ५५ धड़ से गिर रहे उस प्रचंड राक्षस के सिर को भूतों ने सहारा देकर पकड़ लिया। मुंड से गिरती खून की धारा को शाकिनियों के समूह ने (पीने के लिए) मुँह लगाया। चंडी, चामुंडी आदि पिशाच गणों ने खुशी-खुशी शवों को चबा-चबाकर खाना शुरू किया। देवताओं के गिरोह में नगाड़े बजने लगे। ५६ राम ने युद्ध को प्रणाम कर समस्त पिशाची समूह को अपने पेट भर लेने की आज्ञा दी। प्रचंड धनुष की प्रत्यंचा को खोलकर उस पर से चूते चरबी को साफ़ किया (पोंछा)। प्रणाम करते हुए देवता तथा ऋषियों के जयघोष के मध्य राक्षसों के रण-भयंकर राम अपनी पर्णशाला लौटे। ५७ देवांगनाओं ने सोने की थालों में दीप जलाकर राम की आरती उतारी। सिर पर गिरे मोती के अक्षत जगमगाने लगे। इधर सीता ने (हाथ की) हथेली को ही आरती के रूप में

हॊळकिदुदु बळिकित्तली मैथिळिय करकरदंडदारति
बळुवॆगळ हरकॆगळ लॊळ हॊक्कनु दळालयव ॥ 58 ॥

एळनॆय संधि

सूचनॆ— भानुकुल निदाव भंगद मानिनिय मतविडिदु कुमति दशाननु मारीच राक्षस नॆडॆगॆ नडॆतंद ।

कॆळिदै कुश निम्म रघुभूपालकनु रिपुविजय विभवद
लीलॆयलि निजपर्ण भवनकॆ बरलु बळिकित्त
कालगंडग्रजन कायद मेलॆ हॊरळिदु पुदिद शोकद
सूळिनलि सारिदळु लंकापुरव शूर्पणखी ॥ 1 ॥

लवनॆ केळ् सुर नर भुजंगम भुवनदल्लण दशवदननु-
त्सवदि नॊड्डॊलग दॊळिद्दनु बहळ विभवदलि
पवन शिखि यम निरुति हरि वैश्रवण वरुणादिगळु बॆसने
नॆवगॆ तमगॆनुतिर्द रिद्दॆसॆयलि दशाननन ॥ 2 ॥

तुड्डुकि तरणिय नगिव राहुविनॆडबलद कटवाय लॊसरुव
निडिय रसवॆनॆलॆसॆव दाडॆय हुरिय हुब्बुगळ

निवालती हुई (अपने पति के) चिरायु होने की मनौतियाँ मनाते हुए राम के साथ पर्णकुटी में प्रवेश किया । ५८

सातवीं संधि

सूचना— रविकुलतिलक राम से हुए अपमान का समाचार शूर्पणखा से समझकर उसकी राय से बुरे स्वभाववाला रावण मारीच राक्षस के यहाँ आया ।

सुनो कुश, तुम्हारे रघुपति शत्रुओं को जीतकर बड़े वैभव के साथ पर्णशाला में पधारे । इधर युद्ध में मरे बड़े भाई के मृत शरीर पर लुढ़कती, रोती-पीटती शूर्पणखा दुःख के बोझ को ढोए ज़ोर-ज़ोर से प्रलाप करती हुई लंकानगरी आयी । १ सुनो लव, स्वर्ग, मर्त्य लोक और पाताल को कँपानेवाला रावण बड़े वैभव के साथ राजसभा में विराजमान था । वायु, अग्नि, यम, निर्ऋति, इन्द्र, कुबेर, वरुण वग़ैरः उसकी (रावण की) सभा में उपस्थित हो, अपने लिए (रावण की) आज्ञा के इन्तिज़ार में उसके (रावण के) दाएँ-बाएँ खड़े थे । २ सूर्य को ग्रसकर चबाते हुए राहु के मानों मुँह के दोनों तरफ़ से टपकती लार (रस) हो, रावण के

इडिद हॊगरिन जव्वनद कप्पिडिद कायद सुप्रतापद
सडगरद साहसद रक्कसरायनॆसॆदिर्द ॥ 3 ॥
तमन जंभन बलन कैटभ नमुचियंधासुरन घन वि-
क्रम सुबाहु सुपार्श्व सारण शोणितांबकरु
कमलजन माहेशशक्रर समर दॊळगॊळवाल विक्किसि
दमर विजयिगळिर्दॆ रॆड बलदलि दशाननन ॥ 4 ॥
सिडिलु हॊडॆदुच्चळिसिदुरदुग्गडद गायद घनमदद्विप
तुडुकि तिविदॆरुगळ डॊरुगळमरायुधद
पडिमुखद हळॆगलॆय करुळ्गळ नडसि बसुरलि हॊलिद हॊलिगॆय
दडिग रक्कसराय रिद्दुदु कोटिसंख्येयलि ॥ 5 ॥
कलहदलि मृत्युविनगंटलि गलग हूडिद लयकृतांतन
तलॆय नरॆयरॆगॊय्द कडुहिन काल भैरवन
हलुगळॆद हरियिट्ट चक्रद लुळिगॆ पल्लटवागि हत्तिद
तलॆय तामसरिद्दुदद्भुत रौद्ररूपिनलि ॥ 6 ॥
हरिय चक्रवना पिनाकिय वर पिनाकवनमर चक्रे-
श्वरन कुलिशवना चतुर्मुख नुरुसिळी मुखव

वक्रदाढ़ चमक रहे थे। कसे हुए भौंहोंवाले रावण का सारा काला शरीर यौवन की कांति से जगमगा रहा था। इस तरह साहस और शौर्य के तेज से राक्षसराज सभा में विराजमान था। ३ ब्रह्माजी, महेश्वरजी, इन्द्रादि देवताओं को युद्ध में हरानेवाले अमरविजयी तम, जंभासुर, बल, कैटभ, नमुचि, अंधासुर, बलशाली सुबाहु, सुपार्श्व, सारण, शोणितांबक, आदि जो राक्षसवीर थे, वे रावण के दाएँ-बाएँ थे। ४ वज्रायुध की मार से छाती में हुए बड़े घाव के निशानवाले, मदोन्मत्त हाथियों के चुभाने के कारण पड़े मार के निशानवाले, देवताओं के शस्त्रों के आघात से बदन खोखले बन जानेवाले, सामने आनेवालों से पड़ी मार के पुराने घाव के निशानवाले, आँतड़ियाँ बाहर निकल आने पर सीये जानेवाले निचले पेट को दरसानेवाले राक्षस करोड़ों की संख्या में रावण के दरबार में थे। ५ युद्ध में मृत्युदेवता यम के गले पर तलवार धरनेवाले, प्रलयकालीन पुरुष के सिर को आधा अधूरा काटनेवाले, उग्र कालभैरव के दाँत उखाड़नेवाले, श्रीमन्नारायण सुदर्शन चक्र वेग का सामना करके (मार से) अपना सिर चपटा बना लेनेवाले भयंकर रूपधारी राक्षस रावण की उस सभा में जमा हुए थे। ६ श्रीविष्णु का चक्र, शिवजी का पिनाक नामक धनु, देवेन्द्र का वज्रायुध, ब्रह्माजी के बाण, वग़ैरः तथा वरुण, वायु, कुबेर,

वरुण वायु कुबेर रजनीचर यमादिगळस्त्रशस्त्रो-
त्करव सेळेदसमर्थ रिद्ददु मुंदे रावणन ॥ 7 ॥
इदिरडर्द रोमुगळ केंपुगळोदव करगळ कलित कर्कश
वदनगळ केम्मीसेगळ कुडियिडुव दाडेगळ
केंदरु दलेगळ तोर भारद मदद मैयुब्बुगळ भयरस
ददुभुतद खळरिद्दु दिदिरिनला दशाननन ॥ 8 ॥
शुक महोदर वीरदेवांतक नरांतक कुंभ यूपां-
बक निकुंभ त्रिशिर युद्धोन्मत्तनतिकाय
मकर लोचनकलि महापार्श्वक सुमालि सुरेंद्रजितुव-
क्षक विरूपाक्षादि रक्कस रिद्दुदपरिमित ॥ 9 ॥
वीर विद्युज्जिह्व दुर्मद सारणासुर शोणिताक्ष क-
ठोरबल धूम्राक्ष विद्युन्मालिशार्दूल
घोरतर दुर्दरुशनादि कुमारकरु सचिवरु समस्त वि-
शारदाहव मल्लरिद्दुदु मुंदे रावणन ॥ 10 ॥
मणिद मौळिय भयभरित भारणेय हरि शिखि यम निशाटा-
ग्रणि महोदधिनाथ वायु कुबेर मोदलाद
गणनेयिल्लद देवगण संदणिय लिर्दुदु जीय बाळे-
दणकुगळ मै मरेयलपरांगदलि रावणन ॥ 11 ॥

निर्ऋति, यम वग़ैरहों के अस्त्र-शस्त्रास्त्रों को उनसे छीन लेनेवाले बलशाली राक्षस रावण के सामने बैठे हुए थे। ७ झुरमुट बने, बदन पर खड़े (ऊर्ध्वकेशी) बालोंवाले, अंगारे जैसी आँखोंवाले, कर्कश मुखड़ेवाले, लाल मूँछोंवाले, वक्र दाढ़वाले, भारी-भरकम शरीरवाले, फूले हुए बदनवाले राक्षसों के (रावण की सभा के) रूप अद्भुत तथा भयानक रसों की सृष्टि कर रहे थे। ८ शुक, महोदर, वीर देवांतक, नरांतक कुंभ, यूपांबक, निकुंभ, त्रिशिर, युद्धोन्मत्त अतिकाय, मकरलोचन, शूर महापार्श्वक, सुमालि, इन्द्रजित्, अक्षक, विरूपाक्ष, वग़ैरः असंख्य राक्षस नायक (रावण के) सभाभवन में उपस्थित थे। ९ वीर विद्युज्जिह्व, दुर्मद, सारणासुर, शोणिताक्ष अत्यंत बलशाली धूम्राक्ष, विद्युन्माली, शार्दूल, भयानक दुर्दर्शन वग़ैरः (नामाभिधानभूषित) रावण के पुत्र, मंत्री, समस्त युद्धविशारद, भी रावण के उस सभाभवन में उपस्थित थे। १० भयाधिक्य के कारण सिर झुकाए बैठे— इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर वग़ैरः अष्ट दिक्पालक, असंख्य देवता, रावण के पीछे के स्थानों में झुंड के झुंड

अणुग केळा समयदलि नेरॆ हणिद मूगिन हरिद तुटिगळ
जुणगुगिविगळ जुरित हुण्णिन कॊरॆद कदपुगळ
व्रणद दुर्गंधद महाभीषणद रक्कसि बंदळा रा-
वणन रचित सभांतराळक्कॆ मृत्युरूपिनलि ॥ 12 ॥
इदुवॆ कडुवॆरगॆनुतला दशवदन कदपिन कैयलावॆय
वदनवनु नोडिदनु नोडिदुदखिळ खळ निकर
नदुळु नगॆगळ मॊगद मुरुहिन वदन दरॆमुसुकुगळलिद्दुदु
हृदयदलि हॊगॆदॆद्दुदुरि बळिका दशाननन ॥ 13 ॥
अळिवॆनो हदिनाल्कु लोकव हिळिवॆनो हरियज भवाद्यर
तळिवॆनो बाहुप्रतापानलन बलुगिडिय
उळिदडरियलुबहुदु तंगिय वळलिसिद वलुवीर नॆनुतुरि
गॊळुव कडुगोपदलि किडिकिडियोदनसुरेंद्र ॥ 14 ॥
झळपिसुत हिमकिरण हासव निळिदनास नदिद मौळिग
ळॊलहिनलि बीळ्कॊट्ट नसुरामर कदंबकव
हॊळकुवंतस्थापदलि मूगळिद रक्कसि सहित तन्नॊळॆ
निळयवनु हॊक्कनुजॆयनु बॆसगॊंड नसुरेंद्र ॥ 15 ॥

खड़े अत्यंत दीनता भरे स्वर में कह रहे थे, "स्वामिन् जुग-जुग जिएँ ।" ११ सुनो बालक, उसी समय नाक कटी, होंठ फटी, कटे कान वाली, जिसके व्रणों से पीब बह रहा था, जिसके गाल घायल थे, बदबूदार, सड़े व्रण से दुर्गंध फैलाती हुई महा भयानक रूप की राक्षसी शूर्पणखा मृत्यु के साक्षात् रूप की तरह रावण की सभा में प्रत्यक्ष हुई। १२ "यह कितना आश्चर्य-कारक है"। इस तरह कहते हुए रावण ने गाल पर हाथ धरे बहिन का मुखड़ा देखा। सभा में उपस्थित सभी राक्षसों ने शूर्पणखा का विकारग्रस्त मुखड़ा देखा तो घृणा से युक्त हँसी, जो उनके मुखड़ों पर प्रकट हुई, उसको उन्होंने मुँह फिराकर छिपाने का प्रयत्न किया। रावण के हृदय में तो आग धू-धू कर जलने लगी। १३ "क्या चतुर्दश भुवन— चौदहों लोक मिटा दूँ ? ब्रह्माजी, विष्णु तथा महेश्वर को निचोड़कर रख दूँ ? मेरी भुजाओं की वीरता की आग की चिनगारियाँ चारों ओर प्रज्वलित करूँ ? तब भी कोई जीवित बचे जो मेरी बहिन को सतानेवाले हैं —उनकी खबर ले सकता हूँ।" —इस प्रकार सोचते रावण क्रोध से आगबबूला हो गये। १४ चन्द्रहास नामक अपनी तलवार को चमकाते हुए रावण सिंहासन से नीचे उतरा। देवताओं और राक्षसों को सिर हिलाकर इशारे से रवाना किया। फिर खौलते हुए मन से नाक खो बैठी बहिन

एनिदेनी मानभंग विधान वारिंदाय्तु हेळभि-
मान गतविदु नम्मदैसले हेळु बेगेनलु
हानि तन्निं तनगे बंदुदु नेनुवनु पसरिसदे तन्ननु
मान मार्गद मतवने बलिदेंदळी हृदन ॥ 16 ॥
वासि तोरिितु मनकॆ जनक महीश सुते निनगंदु भव बा-
णासनद भारणेय बिगुहिन जगुळु दलेयिद
दाशरथिगा रमणि राणीवासवादळु तन्नृपंगे नि-
वास घटिसितु बळिक पंचवटि प्रदेशदलि ॥ 17 ॥
चलुविकेगे हिमवंत सुतेगग्गळे रमादेविय महामं-
गलते गिम्मडि नाल्कुमडि सोबगिगे सरस्वतिय
उळिद रतिगिति मुख्य सुमनो ललनेयरु पाडल्लवे न-
ग्गळेयो शिव शिव सीते रूपिनोळेंदळसुरगे ॥ 18 ॥
इदे चतुर्दशलक्क संखेय सुदतियरु निनगरुणरस रसद-
गदलि हुदुगिद होळेव गाजिन मणिय सरदंते
सदे गरिवदिरु बेलेगे बारद त्रिदशरत्न विदेंब मति ता-
नुदिसिते नगानरिय दादेनु मेलणेणिकेगळ ॥ 19 ॥

शूर्पणखा के साथ अंतरंग कक्ष में प्रवेश किया। तब अपनी बहिन के विषय में (वहाँ) उससे पूछताछ की। १५ "यह क्या है बहिन, तेरी दुर्दशा ! तुम्हारा अपमान किसने किया; तुम्हारा गौरव ही तो हमारा गौरव है। अतः जल्दी बोलो।" —इस तरह रावण ने प्रश्न किया। अपनी करतूत के कारण ही अपनी नुक़सान कर बैठी शूर्पणखा वह बात छिपाकर अपने कल्पना-लोक से निर्मित राय को ही आगे बढ़ाकर (कपोल-कल्पित घटना का) विवरण शूर्पणखा देने लगी। १६ पूर्व में, भारी शिवधनु के दाँव पर लगने के फलस्वरूप राजा जनक की पुत्री तेरे पल्ले से छूटकर दशरथ के पुत्र राम की रानी बनी। फिर उस राम को पंचवटी में वनवास प्राप्त हुआ है —यह बात मुझे मालूम हुई। १७ "सीता तो सौंदर्य में पार्वती से बढ़कर है। मांगल्य की महत्ता की दृष्टि से लक्ष्मी से दुगुनी है। सुंदरता में सरस्वती से चौगुनी है। बची-खुची रति आदि देवांगनाएँ इसके (सीता के) पैर की धूल बराबर भी नहीं। शिव-शिव ! सीता सौंदर्यातिशयता के कारण कितनी महान है !" इस तरह शूर्पणखा ने रावण से कहा। १८ रक्तिम कांति-रस की रचना में छिपाए चमकते काँच की मणिमाला की तरह चौदह लाख स्त्रियाँ तुम्हारी तो हैं ही। सीता के सम्मुख तो यह (चौदह लाख) उसके पैर की

निनगॆ काणिकॆयागि तहॆना वनितॆयनु तानॆंब मति सं-
जनिसि कैयिक्किदॆनु कपटदला नितंविनिय
जनपननुजनु बंदु किविमूगिनलि कंडनु हरिवनॆन्नलि
हनन बळिकाय्तदरिनी खर दूषणादिगळ ॥ 20 ॥
ऎनुत मुंदिळुहिदळु हॆसिकॆ हॊनलिडुव हंदलॆयनिदु नि-
न्ननुज वीर खरासुरन तलॆ नॊडॆनलु बळिक
मनदॊळगॆ मरुगिदनु तम्मन हननकनुजॆय मानभंगकॆ
नॆनहु बेरॆद्दुदु मनस्सिनलवनिजॆय मेलॆ ॥ 21 ॥
नाटुववु स्मरशरगळावॊळ तोटियलि जानकिय नॆनहिगॆ
नाटुवदु सत्क्रोध हुतवहननुज रळिविगॆ
कोटलॆगळी यॆरड रॊळगव वेटवनॆ बलुविडिदु हूडिद
घोटकद हॊंदेरिनलि हॊरवंटनरमनॆय ॥ 22 ॥
अळिबलरु नररॆंदु सम्मुखदलि समीकवनॆसगदिरु कै-
कॊळिसि कैतवदिंद कमलाननॆय कळुविनलि
सॆळॆवुदी मतदॊळुहु निज मातुळ नॊळरिवुदु होगॆनुत दश
गळन गळितप्राणमुखि कळुहिदळु शूर्पणखि ॥ 23 ॥

धूल हैं। मुझे लगा कि वह अमूल्य, अनुपम देवतारत्न है। अतः मैं भला-बुरा सोचने में असमर्थ रही। १९ "मन में आया कि उस सुंदरी को तुम्हारे लिए भेंट चढ़ाने लाऊँ। अतः उसे माया के बल पर लाने की सोची। तदनुसार कोशिश भी की। तब राम के भाई ने हस्तक्षेप कर मेरे नाक-कान काट लिये। इसी वजह खर-दूषण की हत्या हुई। २० इस प्रकार कहती शूर्पणखा ने ताज़े तथा गरम खून के गिर रहे खर के सिर को (रावण के) सामने रखकर कहा— "देखो, यह तुम्हारे वीर भाई खरासुर का सिर है। देखो न।" भाई की हत्या तथा बहिन पर हुए अत्याचार को देख रावण मन ही मन खूब रोया। लेकिन उसका मन तो सीता पर लुभा हुआ था। २१ जानकी की स्मृति के कारण रावण काम (मन्मथ) बाणों से पीड़ित था। लेकिन भाइयों की हत्या का स्मरण होते ही क्रोध की ज्वाला सुलगने लगती थी। इस तरह उसके मन की डोलायमान स्थिति में, आखिर सीता का मोह ही जीता। वह घोड़े जुते सोने के रथ पर सवार हो राजमहल से रवाना हुआ। २२ "मानवों को अल्प बलशाली समझते हुए उनका सामना करते युद्ध मत करो। धोखे से, छल-प्रवंचना से उस कमलमुखी को अपने वश में लेकर खींच लाओ। मेरी इन बातों का रहस्य तुम अपने मामा मारीच से समझ

बंदु विद्युजिह्व बळिका स्यंदनद घोटक सहस्रद
कंदवनु बोळैसि पक्कद पारिवळ्ळेगळ
मुंदुवरिसिद नभ्रदलि नडेतंदुदा रथ कळिदु कानन
वृंदवनु मायावि मारीचन निजाश्रमक्के ॥ 24 ॥
गरुडनंदंबिकेय नेमद लुरग संतानवनु जठरां-
तर दोळिळुहलु जीर्ण पूर्णोदरद भारदलि
चरणयुगळव नूरिदालद मरन घन शाखोपशाखेय
लिरव कंडनु वालखिल्य महामुनीश्वररर ॥ 25 ॥
बरबरलु मुंदखिल मुनिसंतरुगळिद्दरु कंदमूलां-
कुरद भोजनदुदक दाहारद पलाशनद
निरशनवृतदुरु तपोनिष्ठुरुगळ निबर मध्यदलि क-
र्बुर मुनींद्रन काणुतिळिदनु रथवनसुरेंद्र ॥ 26 ॥
कुशने बल्लै हिंदे हेळिद कुशिक सुतनध्वरदलव ता-
पस शरीरव ताळ्दु जीविसिदंदु मोदलागि
वसुमतिय बलुभारवनु भंजिसि भुजंगमशयन रघुपति
वेसर लुदिसिदनेंब मति गोचरिसितवगेंद ॥ 27 ॥

लो।" —इस तरह उस नकटी ने रावण को समझा-बुझाकर भेजा। २३ सारथी विद्युज्जिह्व ने आकर रथ में जुते सहस्र घोड़ों के पुट्ठे जब थपथपाए तथा (घोड़ों के) पेट के दोनों तरफ़ हथेली से सहलाकर उन्हें (घोड़ों को) उकसाया तो वे आकाशमार्ग से हवा से बातें करते उड़ने लगे। रथ जंगलों को पार करता हुआ मायावी मारीच के आश्रम में पहुँचा। २४ पूर्व में अपनी माता के आज्ञानुसार गरुड़ ने जब सर्पों को पेट में छिपा लिया तो उस पेट के (भारी) वज़न के कारण अपनी जड़ें जमाया हुआ बरगद के पेड़ अपनी अनगिनत शाखा-प्रशाखाओं के कारण शोभायमान दीख पड़ रहा था। उसी (बरगद के पेड़ के) स्थान में रावण ने महामुनि वालखिल्य के दर्शन कर लिये। २५ वहाँ से आगे बढ़ने पर, केवल कंद-मूल आदि पर प्राण धारण करनेवाले, जलाहार तथा फलाहार ही जिनका नियम था —ऐसे उपवासव्रती श्रेष्ठ तपस्वियों को रावण ने देखा। उन तपस्वी मुनियों के मध्य असुर मुनि मारीच को देख रावण अपने रथ से उतर पड़ा। २६ "हे कुश, (जैसे) पहले ही बता चुका हूँ कि विश्वामित्र के यज्ञ में तापस शरीर धारण कर इन्होंने अपने प्राणों की रक्षा की। —यह याद है न ? शेषशायी श्रीमन्नारायण भूमि के बढ़े हुए अधिक भार को उतारने के लिए रघुपति नामाभिधान से अवतरित हुए हैं —यह

योग मुखदलि सर्व संगत्यागवनु माडिदनु निद्दु
भोगि भूषण भक्ति संसारद विरक्तियलि
आ गरुव मारीच मुक्तिश्रीगे नेलेयादनु कणा निग-
माग मोक्तिय मार्ग वेनतिशयवो जगकेंद ॥ 28 ॥
जप समाधि ध्यान मौनद तपदला मारीच निरे दश
लपननें ऽगिदनंघ्रिगा मारीच राक्षसन
विपुळमाया कुशल विद्याचपलनोय्यनें कंदेरेदु को-
णपकुलाग्रेश्वरन हरसिदु वरव वेसगोंड ॥ 29 ॥
हेळिदनु बळिकवगे ता तंदूळिगद पूर्वापरवनद
केळिदनु किवुडिकेय कोसरिन कोनवं कोपदलि
काळनेनेदनें पापि यकट नृपालने रघुनाथ नातन
वाले मनुजांगनेये मारिय तंद निवनेंद ॥ 30 ॥
हरिब हुरिगोळलेंदु मंत्राक्षरवनुपदेशिसिदळी क-
र्वुरगे बळिकवननुजेयदऽिदिवनु कामुकर
हरुहनंगीकरिसि नम्मनु करकरिस लैतंदमति गो-
चरिसुतिदे यिन्नेन माडुवे निवगे तानेंद ॥ 31 ॥

सत्य उसे (मारीच को) उस दिन से दृष्टिगोचर होने लगा।" इस तरह वाल्मीकि ने समझाया। २७ "सर्व संग परित्याग कर मारीच योग में निरत हुआ। सर्प को आभूषण रूप में धारण करनेवाले शिवजी में उसकी भक्ति जगी। सांसारिक विषय में विरक्ति उत्पन्न हुई। वह श्रेष्ठ मारीच मोक्षसंपत्ति का अधिकारी बना। बात यह है— 'वेद-शास्त्रों से निरूपित मार्ग जगत में कितना श्रेष्ठ है!" —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। २८ मारीच तो जप, समाधि, ध्यानयुक्त मौन तपस्या में लीन था। रावण आकर मारीच के चरणों में गिरा। महान मायावी विद्या में चतुर मारीच ने आँखें खोलीं तो देखा कि रावण खड़ा है। उसे आशीर्वाद देते हुए पूछा कि आने का कारण क्या है? २९ अपने आने का कारण, उसका पूर्वापर संदर्भ, सब कुछ रावण ने मारीच को समझा दिया। मारीच ने वह सब कुछ कान बन्द रखे सुना। फलस्वरूप रावण पर उसका क्रोध जगा। "यह पापी बुराई ही सोच रहा है न? क्या राम राजा है! क्या सीता मानवी स्त्री है? यह तो महामारी को निमंत्रित कर रहा न?" —इस तरह मारीच मन ही मन सोचने लगा। ३० "अपनी इच्छा प्रबल बनाने के इरादे से इसकी बहिन ने इसके कान अपने मंत्र से फूंक दिये है (छल-कपट से भर दिये हैं)। अतः यह कामुक (काम-

एनु निन्नंगवर्णे नी पेळ्दी निरोध स्थितिगे,सोगसेम
गेनु तोऽदु तोरुतिदें बलुचिंतें चित्तदलि
हानि निनगुपकरिसदिरदेंबी निबुद्धिगे निन्नमनदनु
मान वावुदु हेळु केळुवेनेंदनसुर मुनि ॥ 32 ॥
कोलेगे कोले गोंडल्ल दोजेगे निललऱियदी मनवु तंगिय
चलुविकेय चैतन्य वुळिदुदकहित नंगनेय
चलुव नंगीकरिसिदल्लदें तोलगलऱियदु चित्त निम्मडि
गळ कटाक्षद कृपेयदेनद बेससि तनगेंद ॥ 33 ॥
अकट मरुळादै निशाट प्रकट वंशारण्यदलि पा-
वकन पसरिसबेड तानी शूर्पणखि निन्न
विकळ गोळिसिदळंगजन मोहक मुद्दिन लादिपुरुषन
सकति साध्यवे साकु कोळ्ळदु निन्न बगेयेंद ॥ 34 ॥
रामनारेंदऱियला सुत्राम मुख्यर दूऱिनलि बळि-
की महीभारवनु भंजिसलेंदु नरनागि

वासनापूर्ण) मार्ग का अनुसरण करते हुए मुझे सताने आया है। —ऐसा लगता है। क्या करूँ इसे ?" —इस प्रकार मारीच सोचने लगा। ३१ "तुम्हारी अभिलाषा क्या है ! तुम्हारे इस बुरे इरादे में मुझे तो कुछ भलाई दिखायी नहीं देती। मैं तो (तुम्हारे इस प्रस्ताव से) अत्यंत ही चिंतित हूँ। तुम्हारे इस अविवेक के कारण तुम्हारा अहित हुए बिना न रहेगा। तुम्हारी मनोकामना क्या है ? सुनाओ। मैं सुनता हूँ।" इस तरह मारीच ने कहा। ३२ "खून का बदला खून से लिए बग़ैर यह मेरा मन स्थिरता नहीं पाता। बहिन का सौंदर्य जिसने विनष्ट किया उसके बदले में उस शत्रु की पत्नी के सौंदर्य को आकृष्ट किए बिना मेरा मन चैन नहीं पाता। आप इस दिशा में मेरी क्या मदद कर सकते हैं ? समझाने की कृपा करें।" —इस तरह रावण ने निवेदन किया। ३३ "हाय्-हाय् तुम तो कहीं पागल तो नहीं हुए हो ? राक्षसकुल रूपी जंगल को (अपनी इस दुर्बुद्धि की) आग मत लगाओ। इस शूर्पणखा ने मन्मथ की मोहक बातों से तेरी बुद्धि प्रचोदित कर भ्रष्ट की है। आदिपुरुष राम की शक्ति का क्या कोई (इस विषय में) सामना कर सकता है ! बस करो ! तुम्हारी यह अभिलाषा सफल नहीं हो सकती। ३४ क्या तुम नहीं जानते कि यह राम कौन है ? इन्द्रादि देवताओं की गिड़गिड़ाहट पर पृथ्वी का भार उतारने के लिए मधुराक्षस-विजयी श्रीहरि मानव-रूप में अवतरित हुए हैं। तुम्हारी बुद्धि तुम्हें धोखा दे चुकी है। क्या अँधेरा सूरज पर

आ मधुद्विषनवतरिसिदनु नी मरुळला सुलभवे रवि-
तामसिगॆ तामसवनंगी करिस वॆडॆंद ॥ 35 ॥
ऎलववे सुरभूजगॊड्डा कळॆ सुपर्व सुधेनु पळुकिन
शिलॆय सुमनोरत्न किरुगल्ले महामेरु
ऎलॆ मरुळॆ नरने नृपालक तिळक नकटा दैवदॊळग-
ग्गळिकॆ कॊंबुदॆ काळ नॆणिसदॆ खूळ हॊगॆंद ॥ 36 ॥
उदक दॊळगिद्दंदु वैरव नॊदगिदा मधुकैटभर मे-
घदलि मुसुकिदनवर्णवव निलिसिदनु मेदिनिय
मॊदलु बिळिकीचॆयलि बहुरूपदलि बंदु तमादिगळ यम
सदन कट्टिदनवरिगिदति बलनॆ नीनॆंद ॥ 37 ॥
आतनीगितनुकणा सत्वातिशयदुब्बरद मदगॊ-
ब्बीतनलि मॆरॆवुदॆ महोत्पलमित्र निदिरिनलि
धातु धवळिस बल्लुदे खद्योत कीटकदाट विकतन
सीतॆयरसनलॆसग बल्लुदॆ कंद कॆळॆंद ॥ 38 ॥
बेडमगने हरि विरोधद लाडि कॆट्टरु कॊलबलदरॊळ
गाडदुळिदरु कॊलरु निनगिदमर संदोह

क़ाबू पा सकता है ? अपना यह तमोगुण त्याग दो।" —इस तरह मारीच ने समझाया। ३५ "कल्पवृक्ष तथा सेमल के पेड़ की बराबरी कहाँ ? देवलोक के कामधेनु तथा बाँझ गाय की क्या समता हो सकती है ? चिंतामणि क्या स्फटिक शिला हो सकती है ? महामेरु पर्वत क्या एक चट्टान हो सकता है ? हाय रे मूरख ! राजाओं के तिलकप्राय रघुराम को तू (मामूली) मानव समझ बैठा है ? देवता के साथ तेरी वीरता टिक सकती है ? दुष्ट ! बुराई से मन हटा तथा चुपके से चले जा" इस तरह मारीच ने कहा। ३६ "विष्णु ने पानी में रहते मछली और कछुए का अवतार धारणकर (रहते समय) मधु-कैटभ से वैर होने पर उनकी हत्या करके समुद्र पर अपने को व्याप्त कर धरती को खड़ा किया। अभी हाल ही में सूअर, नृसिंह आदि अनेक रूप धरकर तम आदियों के लिए यमपुरी का मार्ग प्रशस्त किया (मार डाला), क्या तुम उनसे अधिक बलशाली हो ?" —इस तरह मारीच ने पूछा। ३७ "वही अब श्रीराम के रूप में अवतरित हैं। क्या तुम्हारी वीरता की मस्ती की हस्ती इनके सामने टिक सकती है ? फ़र्श के लाल पत्थर की कांति क्या चन्द्रमा की कांति की बराबरी कर सकती है ? जुगनू का साहस तथा धूर्तता सीतापति राम की बराबरी कर सकती है; ज़रा (ग़ौर करते) सुन।" इस तरह मारीच ने समझाया। ३८

खेड रागिहुदिनितु सुखद सुराडवनु कोंडियर नुडिगें नि-
वाडवनु माडिदरु कूडदिरपजयोगनेंय ॥ 39 ॥
मुरियदिरकट कल्पभूजव निरियदिरकट कामधेनुव
नुरुबदिरकट कामितद रत्नवनु कडलोळगें
ऊरुव मुनि पौलस्त्यवंशद मेरॆव जव्वन जाण वनितेय
तुरुब बोळिस बेडवकटकटीग नीनेंद ॥ 40 ॥
हुळिगलिसिदरे कोडन हालवोलळिवुदे क्षीरांबुनिधि मी-
न्बुलिगनौकिदळडकुवदे मकरेश नीनिदु
मुळिदु मदगोब्बिनलि वैरव बेळसि कॆणकिदोडा नृपालक-
तिलक तेक्कुवने विवेककें मनव माडेंद ॥ 41 ॥
बलुहदारै ताटकिगें वेग्गळरदारु सुबाहुविगें कदु
गलिगळारु विराध गेंम्मी शूर्पणखियिंद
कलहदलि मिगिलावनदु होगलि खरादि निशाट भटर-
ग्गळिकें येनाय्तेंबुदनु लेसागि तिळियेंद ॥ 42 ॥

"बेटा ऐसा (खिलवाड़) मत कर। कुछ तो विष्णु-विरोधी होकर बर्बाद हुए। जो कोई विष्णु-विरोधी नहीं हुए वे अपने को बचा सके। अब देवता (भी) तुमसे डरते हैं। चुग़ुलख़ोरों की बातों में आकर अपने जीवन के आनंद को विनष्ट मत करो। हार नामक स्त्री की संगति (मेल-मिलाप) मत कर, मेरे बेटे।" (इस तरह मारीच ने कहा)। ३९
"अपने वैभव के कल्पवृक्ष को काट मत डालो। कामधेनु की हत्या मत करो। चाह कर (बड़े प्रयत्न से) पाए रत्न को समुद्र में मत फेंको। पुलस्त्य (मुनि) वंश की श्रेष्ठता तथा ज्येष्ठता रूपी युवतियों के बाल काट डालकर, उन्हें विधवा मत बनाओ।" —इस तरह मारीच ने कहा। ४०
एक घड़े भर दूध में खटाई की एक बूँद गिरे तो सारा घड़ा विनष्ट होता है; क्या क्षीरसागर भी इस प्रकार की प्रक्रिया से खराब हो सकता है? मछुआ अगर, मगर को धर दबाए तो क्या वह मगर उससे डर सकता है? (इसी प्रकार) तुम अगर अपनी वीरता की मस्ती के कारण राम के साथ विद्वेष बढ़ाकर उसे छेड़ो तो क्या वे धैर्य खो बैठेंगे? विवेक से ज़रा सोचो। इस तरह मारीच ने कहा। ४१ ताटकी निशाचरी से बढ़कर बलशाली कौन हो सकते हैं? बल-विक्रम में सुबाहु की टक्कर के कौन हैं इस दुनिया में? विराध से बढ़कर वीर कौन हैं? लड़ने में शूर्पणखा की बराबरी कौन कर सकते हैं? जाने दीजिए —इन बातों को। खर-दूषणादि असुर वीरों के ही बाणों पर ग़ौर करो। उनकी वीरता के

हरनधनु ता नेरॆद पृथ्वीश्वररिगळुकितॆ हेळु तारा
गिरियनॆत्तिद भुजबलनला नीनु निनगॆदु
शिरव मणिदुदॆ हेळु निम्मेल्लरनु नासाग्रदलिसीरॆय
सॆरगनॆळॆदवनिजॆय नॊय्दवनारु हेळॆंद ॥ 43 ॥
सिक्कलरियळु सीतॆ सिक्किदडक्कलरियळु सत्यविदु कै-
यिक्कॆ कदनकॆ सोललरियनु रामनिदु सिद्ध
सॊक्कि करि हरियॊडनॆ सॆणसुवदक्कजवला लोककंटक
किन्निकदिरु सारिदॆनु निन्ननुजात्मरानॆंद ॥ 44 ॥
शिव शिवा हसनाय्तु धर्म श्रवण पद्धति मामदीय
श्रवणवनु रागिसिदवै केळ्दमम हॊसकतॆय
अवयवदॊळानंद सुख संभवि सुतिदॆ यॆलॆ सूत केळि-
न्निवनवॊलु नमगाप्तरारॆंदॊलद नवयवव ॥ 45 ॥
ऒसॆदु मुंदण तागु बागिन ससिनवनु हेळिदनु हडॆदडॆ
हॆसरिडलु बेकिवन रामंगंज वॆकिन्नु

बड़प्पन का क्या नतीजा हुआ ? सोचिए।" —इस तरह मारीच ने कहा। ४२ "अव शिवधनु की वात पर ग़ौर करो। स्वयंवर में, इकट्ठे हुए राजाओं में क्या कोई भी उसे झुका सका ? कैलास पर्वत को उठा सकने के भुजबलविक्रमी हो न तुम ? क्या वह (शिवधनु) तेरे सामने झुका ? तुम सबके नाक की नोक को साड़ी के अंचल से छिपाने को वाध्य कर सीता,को जीत लेनेवाला कौन है ? कहो तो सही ?" इस तरह मारीच ने पूछा। ४३ "सीता को तुम पा नहीं सकते। पाने पर भी वह तुम्हारी अपनी नहीं हो सकती (अतः तुम हजम नहीं कर सकते)। यह (कठोर) सत्य है ! अगर तुम राम से युद्ध में गुंथ जाओ तो याद रखो वह (राम) बिलकुल हारनेवाला ही नहीं है। मदोन्मत्त हाथी का शेर से टक्कर लेना क्या आश्चर्य की वात नहीं ? अपने भाई और पुत्रों को यम (मृत्यु) देवता का ग्रास न बनाओ। बार-बार मैं यही कहता हूँ।" —इस तरह मारीच ने समझाया। ४४ "शिव-शिव ! तुम्हारा धर्मोपदेश कितना अद्‌भुत है ! वाह ! वाह ! यह नयी कहानी सुनकर हमारे कान आनंदामृत से लबालब भर गये; अंगांग-फूले न समाए। रे सारथी, सुन ! इनके जैसे हमारे हितैषी रिश्तेदार कौन हो सकते हैं ?" इस तरह कहते (घृणा से) रावण ने अंगांग मोड़े। ४५ "इसने बड़े प्यार से भावी की बनती-बिगड़ती की सारी बातें सच-सच बता दी। आगे चलकर (भविष्य में) पैदा होनेवालों को इसी नाम से पुकारना चाहिए (या इन्हीं के नाम

पशुपतिय मेलार्णे हुसिदडे शिशुवि नार्णेयेनुत्तकॆलबल
कसवळिदु बिरुनगॆय सूसिदना दशग्रीव ॥ 46 ॥

हरहिदनु बॆंदरिकॆय नहुदो हिरियनै नी नात साक्षा-
त्परम पुरुषनु गड भवब्रह्मा मरेश्वररु
हिरिदु दूरलु जनिसिदनुगड हर महादेवी विवेक
स्फुरणॆ निनगल्लदॆ जगत्तिनॊळारिगुटॆंद ॥ 47 ॥

कॊंद गड मधुकैटभर बळिकंदु बारदभववनीतनु
बंद गड गेलिदनु गडाजियलखिळ दानवर
चंदवादुदु कतॆ कुतूहल विदु तोरितु नमगॆ नाव् रघु-
नंदनन परदैववॆंदे काण बेकॆंद ॥ 48 ॥

एनॆलवॊ मारीच मारिय देनु मनॆ दॊत्तल्लवे चतु-
राननादि सुरौघ सेवकरल्लवे तनगॆ
नीनु हॊसबनॆ हॊगळ बहुदे मानवन मारमणनॆंद भि-
धानदलि सैरिसिदॆ निदॆलॆ खूळ केळॆंद ॥ 49 ॥

रखने चाहिए)। सच है, राम से डरना चाहिए। झूठ बोलूँ तो शिवजी की क़सम! हाँ-हाँ अपने बच्चों की कसम!" इस तरह कहते थकावट से दाएँ-बाएँ देखते रावण ठठाकर हँसने लगा। ४६ "वाह! कितना डराया-धमकाया! तुम तो बड़े हो —यह सच है। वह तो साक्षात् परम-पुरुष है। शिव, ब्रह्मा, देवेन्द्र आदियों की शिकायत सुनकर श्रीमन्नारायण ने धरती पर जन्म धारण किया है न? हर-हर महादेव! तुम्हारे जितने बुद्धिमान इस धरती पर और कौन हो सकते है?" इस प्रकार रावण ने व्यंग्य किया। ४७ "उसने मधु-कैटभ को जो मारा —यह सच है। अजन्मा होते हुए जन्म धारण किया —यह भी सही है। युद्ध में तो समस्त राक्षसों को जीत लिया न? कहानी तो बड़ी कुतूहलकारी मनोरंजक है —ऐसा हमें भी लगता है। राघव को तो परात्पर देवता समझ लेना है!" इस तरह कहते रावण ने हँसी-मज़ाक़ उड़ायी। ४८ "रे मारीच, महामारी तो मेरे घर की दासी नही है क्या? ब्रह्मादि देवता क्या मेरे सेवक नहीं है? तू क्या इन बातों को नहीं जानता? मानव का लक्ष्मीपति के रूप में इस प्रकार प्रशंसा करना क्या तेरे लिए शोभा देता है? रे मूरख! अब तक मैंने ये तेरी बातें बर्दाश्त की हैं। समझे?" इस तरह रावण ने कहा। ४९ "उस दिन अगर मैं (उस युद्ध में) होता तो जिन वीरों का नाम तुमने अभी-अभी लिया है क्या वे मौत के घाट

अंदु नानिरलळिवरे नीनेंद वीररु साकदा मा-
तिदु नी बहुदुंटो बारेयो हेळु बेगदलि
बंद डुळुहुवे बारदिर्दडे कोंदु बिसुडुवे निन्न नी गेनु
तिदु हासव नुगिदु नेगहिदनधिक रोषदलि ॥ 50 ॥

असुर निवनासुर विकर्मव नेसगिदल्लदे माणनदरिं
दसुव नसुरारिगे समर्पिसुवेनु समक्षदलि
नसियदिरदिन्न सुरवंशद ससिय बेळसेनु तेरिदनु बे-
वसद बेळंबदलि बेसरु तवन मणिरथव ॥ 51 ॥

उगिद खड्गवनोरेय बसुरलि होगिसिदनु दशवदन वदनद
नगेयलेंदनु माव केळेन्नय दुरुक्तिगळ
बगेय दिरि नीवेंदु कैगळ मुगिदु नयदलि बेडिकोंडनु
चिगिदुदंबर कागि रथ सारथिय सन्नेयलि ॥ 52 ॥

उतरते। जाने दो उन बातों को। अब तू मेरे साथ आनेवाला है कि नहीं? जल्दी बोल। मेरे साथ आओ तो बच जाओ। नहीं तो अभी तुम्हें काटकर फेंक देता हूँ।" इस तरह गुस्से से भरे रावण ने म्यान से चंद्रहास नामक खड्ग खींच लिया और (वार करने के लिए) ऊपर उठाया। ५० "यह राक्षस तो भयानक कार्य किए बिना चुप न रहेगा। इसलिए असुरारी श्रीराम के सम्मुख प्राणार्पण करना ही श्रेयोदायक है। सद्यो भविष्य में असुरकुल रूपी खेती क्षीण हुए बिना न रहेगी।" इस तरह सोचते हुए, चिंता की चिता में जलते हुए अनमने भाव से मारीच रावण के रत्नरथ पर सवार हुआ। ५१ म्यान से खींचे तलवार को म्यान में रखते हुए रावण नकली मुस्कुराहट के साथ मारीच से बोले— "मामा, मेरी (इन) बुरी बातों पर ध्यान मत दीजिए।" इस तरह कहते, रावण ने हाथ जोड़े विनयपूर्वक प्रार्थना की। फिर जो सारथी को इशारा किया तो रथ हवा से बातें करते उड़ने लगा। ५२

ऍंटनॆय संधि

सूचनॆ— मायॆयलि मोहिसिद कांचन कायदॆणन गॊणनतुपम सायकवलॆंत्तिदनु गगनक्कॆ रायं रघुनाथं ।

कुशनॆं कॆळ् मारीच मनदलि घसणि गॊळु तिर्दनु कणा रा-
क्षस कुलाधीश्वरन दुश्चरितद दुराग्रहकॆं
श्वसनगतियलि गगनदलि बळिकसुर रथ बरुतिर्दुदतसी
कुसुम सन्निभ रामचंद्रन वर तपोवनकॆं ॥ 1 ॥
कंडरॆंडॆयलि खरन नगरद हॆंडिरु गळक्कॆंगळ तळुकिन
मंडॆगळ तॊळुगळ बाय्गळ बसुऱ हॊय्लुगळ
कंडॆयै दशकंठ तानिदु खंडितद दुश्शकुन फलविद
नुंडु तॆगुव बॆग नडॆनडॆयॆंदनसुरमुनि ॥ 2 ॥
बर बरलु मुंदुडिद मकुटद हरहुगळ हॊळॆहॊळॆव कैदुग
ळरॆगडिद हसरगळ हरहिन रथद हंतिगळ

आठवीं संधि

सूचना— (अपनी) माया से मन को आकर्षित करनेवाले सोने के हिरन के गले को राम ने अपने दिव्य बाणों से काटकर आकाश में उड़ा दिया ।

राक्षसेश्वर रावण के बुरे, ज़िद्दी स्वभाव के कारण मारीच मन ही मन आतंकित था । रावण का रथ हवा से बातें करता हुआ, आकाश-मार्ग से गमन कर, अतसी पुष्प के समान शोभायमान श्रीराम के आश्रम की ओर बढ़ रहा था । १ जाते-जाते रावण और मारीच ने देखा— 'खर के शहर की स्त्रियाँ चीखती-चिल्लाती, सिर पीट लेती जोर-शोर के साथ क्रंदन कर रही हैं । इस प्रकार की एक ओर की करुणाजनक स्थिति दिखाते हुए मारीच ने कहा— 'यह देख रहे हो न ? रावण ! यह निश्चित रूप से अपशकुन है । इस फल का उपभोग कर जल्दी ही ढेकार ले पाओगे । अत: शीघ्रता करो ।' —इस तरह कहा । २ आगे बढ़ते-बढ़ते (उन्होंने) युद्ध-भूमि देखी, जहाँ मुकुट कट-कटकर गिरे थे; कटे हुए आयुधों के टुकड़े तितर-बितर पड़े चमक रहे थे । रथों की पाँतियाँ कटी पड़ी थीं । शवों की आँतड़ियों को खींच-खींचकर खाते, खुशियाँ मनाते सियार, भेड़िये, बाघ, कौवे आदि इधर-उधर विचरण कर रहे थे । देखो रावण ! इस तरह कहते मारीच ने उस दृश्य की ओर रावण का ध्यान

करुळनुगिव सृगालवृक भीकर तरक्षु ध्वांक्षकुल सं-
चरद संगर भूमियनु कंडसुर नोडेंद ॥ 3 ॥
बुडुबुडिसु वेऱिनलि दुर्व्रण दोंडनॆ सूसुव बसॆय नारुव
मॊडॆवॆणन मिगॆ बीगि बिद्दिर्दिभ घटावळिय
सॊडॆद काल्गळ कुदुरॆगळ बसि दोंडॆव हॆणसालुगळ संदणि
यडवियनु कंडिवरु निन्नवरहरॆ नोडेंद ॥ 4 ॥
अऱत नॆत्तर वीटॆगळनॆलु दॆऱॆद हंजर वॆणन तोगलुगि
दोऱतु सूसिद डोविगॆय हुळुवाडुववयवद
ऒरलॆ गॊंडळ्ळॆगळ नॆत्तर सुऱिदु मरुळ्गळु बिसुट वॆसळिगॆ
गुरुविनॆडॆगळ कंडु कंडै केड नीनेंद ॥ 5 ॥
कळलि बिद्दर्दॆ हत्तुयोजन दळतॆयलि हॆणसालु सोलदॆ
हळचिदतिबलरिवरोळुंटे नोडु लेसागि
ऎलवो निन्नय बाय हर्वणिगळ वडद बलुदुत्तनंगै
गळलि धरिसिदॆ पापि कॊंडिसदॆ कर्बुरान्वय ॥ 6 ॥

आकृष्ट किया । ३ उन्होने जिधर-तिधर यह भी देखा— (शवों के) घावों में से पीब लगातार बह रही है। व्रणों से चर्वी टपक रही है। दुर्गंध से भरे शवों के ढेर सारे तितर-बितर हो जंगल में पड़े हुए हैं। वहाँ पड़े हाथियों के शव फूल गये थे। घोड़ों के कटे पैर ऐंठ गये थे। शवों के ढेर में से पानी चू रहा था, जो बहुत दूर तक फैला पड़ा था। इनकी ओर इशारा करते मारीच ने कहा— 'क्या ये सब अपने नहीं हैं ? ४ खून सूख जाने से फटे हुए पड़े मुर्दे, हड्डियाँ बाहर निकले अस्थि-पंजर जैसे मुर्दे, चमड़ा छिल जाने के कारण, खून बहकर तितर-बितर हो पड़ी हुई खोपड़ियाँ, कीड़े-मकोड़े रेंगते हुए अंगांग, दीमक लगे (उनके) पार्श्व, खून फैलाकर पिशाचों से मांस खींच-खींचकर खाए जाने पर कड़ाई सरीखे बनाए गये मुर्दे —इस प्रकार भयानक युद्धक्षेत्र को देख, मारीच ने पूछा, 'देख रहे हो न रावण' ? ५ "दस योजन विस्तृत प्रदेश में शवों के ढेर पर ढेर छिन्न-विच्छिन्न हो पड़े हैं। यह (राम) तो इतनी बड़ी, विशाल सेना के साथ (अकेले) लड़नेवाले महावीर हैं। ज़रा ग़ौर से यह दृश्य देख। जो भारी कौर मुंह में नहीं समाता, उसे हथेली पर लिये बैठे हो। पापी, तूने असुरकुल का सत्यानाश किया।" —इस तरह मारीच ने डाँटा। ६ "रे, रे पापी ! 'परस्त्रियों के कामियों की पत्नियों के लिए

अंलेले पापि परांगनेगे मनवेळसलेळसुवरवर हेंडिरि-
गिळेय मिंडरु तप्पदिदु ता सुप्रसिद्धवले
अळिवु तनगिम्मडिसि बारदु नेलेयनुसुरिदे हिगु हिदके
सुलभवल्ल सुबाहुहरन विरोध निनगेंद ॥ 7 ॥

मरुळला मारीच मारिय सरस साविगे सोगसे तन्नय
परियनरियो हेंड्डने तानकट नीनितु
जरेदु माताडुवरे वैरव बेरसि बदुकलु बल्लरे सुर-
नर भुजंगमरेन्नोडने नी होसबनेयेंद ॥ 8 ॥

अहुदु मत्तेनार चित्तदलिह पराक्रम पौरुषद नि-
र्वहव नवरे बल्लिरेम्मवु स्वल्प बुद्धिगळु
बहळमतियुत नीनेतुला बहुमुखन मैवळियलेंदिद
नहिमकर कुलनाश्रमवनपराह्न समयदलि ॥ 9 ॥

इळिदरा वनसन्निवेशा चलद शिखरद मरेयलीनृप
रुलुह नालिसि हाय्ववे कग्गोलेय नेंदवनु

इस धरती के जारों (विट पुरुष) का पैदा होना निश्चित है' —यह कथन बहुत प्रसिद्ध है। मौत दो बार नहीं आती। मन की कह चुके हो। अब बस करो तथा लौट चलो। सुबाहु के शत्रु के साथ तुम्हारा शत्रुत्व उचित नहीं; (अतः समय रहते लौट चलो।)" —इस तरह मारीच ने कहा। ७ "न जाने तू किस भ्रम में फँसा है? महा-मारी के साथ मृत्यु का खिलवाड़ कैसा? मेरी रीति क्या तू नहीं जानता? क्या मैं इतना निकम्मा हूँ? या मूरख हूँ? मेरी यों निन्दा करना तुझे शोभा देता है? देवताएँ, या मानव, या पाताललोकवासी कोई भी मेरे साथ दुश्मनी मोल लेकर बचे (जीवित) रह सकते हैं? क्या मेरा-तेरा परिचय यह नया है? इस तरह रावण ने पूछा। ८ "नहीं तो और क्या? अपने-अपने मन की बल-विक्रम-पौरुष की बातें तो व्यक्ति स्वयं ही जानते हैं या जान सकते हैं। हमारी तो मंद बुद्धि है। तुम तो बड़े ही बुद्धिमान हो।" —इस तरह कहते, दशमुख का अनुसरण करते मारीच रविवंश के राम के आश्रम में दुपहर के समय पहुँचे। ९ राम-लक्ष्मण की ध्वनियाँ सुनकर (वे दोनों) राम जिस वन-प्रदेश में निवास करते थे उसी के नजदीक के पहाड़ की चोटी की आड़ में उतरे। 'इसको अभी मार डालता हूँ' कहकर जब रावण आगे बढ़े तो मारीच ने रावण को डाँटकर कहा, "मैं जो तुम्हें बुला लाया हूँ; इसलिए कुछ काल तक तो तुम्हें जीवित

अलॆयला मारीचना दशगळन दट्टिसि कॆलवुदिन नी
नुळिवु पायव माडुवॆनु तंदुदकॆ तानॆंद ॥ 10 ॥
मुसुड गंडडॆ रामशर खंडिसदॆ विडुव्रदॆ नम्मनकटा
मुसुकि कॊंडिदॆ निन्ननुन्मत्त ग्रहावेश
उसुरदिरु·साकिन्नु माया मुसकवनु मऱॆगॊंडु नोडुव
वसुरकर्मद कडॆय काणिसलऱिय दीगॆंद ॥ 11 ॥
कळिद रिब्बरु कत्तलॆय कडुवॆळगिनलि कामातुरद कळ-
वळिगना मारीचगॆंदनु मधुरवचनदलि
नळिन मुखि कैसारुवी मनदॊळुहने निश्चैसि हरणव
नुळुहिको नीनॆनुत बिद्दनु मावनंघ्रियलि ॥ 12 ॥
आदडॆलवो केळु तोपींरैदु तलॆगळ वैतिरिसिन्नलु
गैदुगळ बिसुटडगिसी राक्षस कळेवरव
ऐदु तापस वेषवनु बळिकैदु परवनिता व्यसनिगळि
गाद गतियनु हॊरुव पापकॆ हॊऱगु तानॆंद ॥ 13 ॥
तोऱिदनु ता बळिकवर्गॆ हदिनारु वण्णद पुटद चिन्नकॆ
नूरु मडियॆनॆ हॊळॆ हॊळॆव हॊम्मऱिय रूपकव

रखने की युक्ति सोचता हूँ। १० मुखड़ा देखना ही यथेष्ट है। राम-बाण हमें काटे बिना न रहेगा! समझे? तुम्हें अपने घमंड के पागलपन ने आ घेरा है। अधिक बोलो मत। धोखेबाज़ी तथा षड्यंत्र रचकर जो दुष्कृत्य करने की तुमने ठानी है— उसका परिणाम क्या होगा —यह तुम्हें अब नहीं दिखायी देगा। (भविष्य में मालूम पड़ेगा।)" —इस तरह मारीच ने कहा। ११ दोनों ने रात वितायी। (दूसरे दिन) सुबह होते ही कामातुर चिंताग्रस्त रावण ने— "नलिन (कमल) मुखी सीता मेरे आधीन होने की राय को ही मानते हुए अपने प्राणों को बचा लो।" इस तरह प्रार्थना करते हुए अपने मामा (मारीच) के चरण पकड़ लिये। १२ "ऐसी बात है? तो सुनो रावण! तू अपने दस सिरों को छिपा लो। आयुधों को फेंक दो। इस राक्षस-रूप को भी बदल डालो। तत्पश्चात् तपस्वी वेष धारण कर परस्त्रियों को विमोहित करनेवालों की जो गति होती है— उसी को प्राप्त करो। उस पाप के लिए मैं जिम्मेदार नहीं हूँ।" इस तरह मारीच ने कहा। १३ सोलह रंगों से उज्ज्वल बनाए गये खरे सोने से बढ़कर सौ गुने अधिक कांति से शोभायमान होकर चमकते हुए अपना स्वर्णिम मृग का चमकता हुआ रूप मारीच ने रावण को

बेरु बित्तिन ताय ताणव मीरि तळपट दोळगॆ हारक
हारुवभिनव भावभंगिय बहळ कौतुकव ॥ 14 ॥

हॊळॆ हॊळॆव किरु गॊळगुगळ थळथळिप वदनद तरळ नयनद
मिळिर्व किविगळ मिडुकु वळ्ळॆय मिरुप नासिकद
चळगतिय निर्मास जंघॆय लुळिय लागिन लंघनॆयल
व्वळिप हॊसजव्वनद हॊम्मरि हॊळकि तिदिरिनलि ॥ 15 ॥

मायॆयिदु तानॆंदु हरना रायणरि गरिवॆत्तणदु पा-
नीयजासन सृष्टिगिदु नूतनवलॆयॆंब
मायॆयलि मारीचना वातायुवागिए सुळियला खळ-
राय मा मज्ञ मायॆ मायॆंदॊलॆद नवयवव ॥ 16 ॥

ऎलॆ दशानन कॆळधोगति गिळि ववनु नी निन्नु सुगतिय
सुळिवु तन्नदु भागॆयिदु निनगॆनगॆ नोडॆनुत
सुळिदनव सूचनॆय मुखदलि खळपतिगॆ चिंतिसुत रामन
निळयवनु सारिदनु सूर्योदयद समयदलि ॥ 17 ॥

दिखाया। ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी भूमि त्यागकर, उसने समतल भूमि पर अपने उछलने-कूदने का मनोहर रूप, जो अभिनव हावभावयुक्त था—रावण को प्रदर्शित किया। १४ चमकते उसके छोटे-छोटे खुर, दमकता हुआ उसका मुख, चमकती चंचल आँखें, तीव्र गति से हिलते कान, हाँफने के कारण उठते-गिरते पेट के पार्श्वभाग, चमकती नाक, अत्यंत वेगवान होकर उसका चलना-भागना, परिपुष्ट जंघाओं से युक्त नौजवानी से भरे अंगांगों वाले उस स्वर्णमृग ने अपनी अत्यंत फुर्तीली गति से उछलते-कूदते सामने विचरना शुरू किया। १५ इसे मायावी मृग समझ लेना शिवजी तथा विष्णु के लिए भी अपनी बुद्धि के परे की बात है। ब्रह्म-सृष्टि में इस विनूतन रूप में, अपनी माया के बल पर मारीच का यों अद्भुत रूप (मृग के रूप में) धारण करना देखकर रावण आश्चर्य से विचित्र प्रकार के हाव-भाव से चिल्लाया, वाह वा! माया रे! माया! १६ "हे रावण, अब अधोगति की ओर अग्रसर होना तेरा कार्य है। सद्गति (पुण्यलोक) पाने का भाग्य अब मेरे जिम्मे है। मेरे-तेरे बीच यही बँटवारा रहा।" —इस तरह अपने मुखड़े के हाव-भाव से प्रकट करता हुआ, रावण के (भविष्य के) बारे में मन ही मन चिंतित मारीच सूर्योदय के समय राम के आश्रम के नजदीक पहुँचा। १७ पूर्ण चन्द्रमा में

इळिदुदो चंद्रमन सांद्रोज्वल सुचंद्रिकॅयनु नभोमं-
डल दॊळगॆ कद्दमम पूर्ण सुधांशु मृगवॆनलु
सुळिदुदा मृगपोत परिमळ मिळित तेजोलतॆय तरि तरि
दिळुहुतवनीनंदनॆय पूगॊळन हॊरॆगागि ॥ 18 ॥

वसुमती पति सूनुकेळ् निम्मसुर वैरिय शयन संगद
सासिवदनॆ सुप्रात रोचित नियम निर्णयकॆ
मिसुप चंद्रसुकांत शिलॆ संधिसिद घन सोपान पंक्तिय
विसरुहाकर किळिदळामृग सुळिव समयदलि ॥ 19 ॥

मुगिदवी चंद्राननॆय बरविगॆ सरोरुह षंड विरहद
ढगॆ विताळिसॆ जक्क वक्कि गळॊक्क वश्रुगळ
नगॆय लॆसॆदवु कूडॆ कुमुदाळिगळु करुणभ्रमॆय लिदुव
गगनदलि मृगनोडि मुरिदीक्षिसितु माननिय ॥ 20 ॥

शिवशिवा सरसिरुह भवनुद्भव परंपरॆयिद जनिसिद
युवतियरॊळी रूप दॆल्लियदेनु विस्मयवॊ

विराजमान हिरन मानों समूचे उज्ज्वल चन्द्र-प्रकाश को चुराकर आकाश से धरती पर उतर आने की रीति से वह मृगशावक (मारीच) सुगंध-मिश्रित कांति की लता को टुकड़े-टुकड़े कर प्रक्षेपित करता हुआ (अपनी रूप माधुरी बिखेरता हुआ) सीता के स्नान निमित्त निर्मित, पुष्प-युक्त सरोवर के नज़दीक पहुँचा। १८ भूदेवी (धरतीमाता) के स्वामी श्रीराम के पुत्र, सुनो। असुर-वैरी श्रीराम की सहधर्मिणी सीताजी प्रातःकालीन नित्यविधि संपन्न बनाने चन्द्र-कांत शिलाओं से (शिला के टुकड़ों से) निर्मित सीढ़ियों से आवृत सरोवर में उतरीं। ठीक उसी समय मृग-शावक उस स्थान पर पहुँचा। १९ चन्द्रमुखी (सीता) के आगमन के साथ-साथ सरोवर के कमल मुरझा गए। रात होने के भ्रम में पड़े चक्रवाक पक्षी विरह-वेदना की वृद्धि के कारण आँसू बहाने लगे। चन्द्रमा के उदय (सीता का आगमन) के हर्ष में रात्रि के (नील) कमल खिल उठे। उस माया-मृग ने सीता के मुखकमल को ही भ्रांति से चन्द्रमा समझकर निहारा तो आकाश में (सचमुच का) चन्द्रमा दिखायी दिया। फिर करवट बदलकर उसने सीता को निहारा। २० शिव-शिव! ब्रह्म-सृष्टि में जन्म लेनेवाली युवतियों में ऐसा (अद्भुत) रूप कहाँ? कितना आश्चर्यजनक है यह रूप! इन्द्रिय-विजयियों की इन्द्रिय (ज्ञानेन्द्रिय-कर्मेन्द्रिय) इसे देखते ही पुनश्चेतन प्राप्त करें तो कोई आश्चर्य नहीं।

तविसिर्तिद्रिय निकर मगळुद्भविसुतिर्दे दरुशनदला वै-
श्रवणनळुपर्दे माणनळियर्दे माणनकर्टेद ॥ 21 ॥
मार्ये येम्मदिदल्प वादिय मार्ये यागर्दे माणळी सति
मार्येयलि मतिगेडिसि कोंडिसिदळुदिसि रक्कसर
मायवहुदिन्नसुरकुल निर्माय नुदितद्वेष समरद
सायकद मुम्मोनेयलेंदनु तन्न मनदोळगे ॥ 22 ॥
ईके कर चरणाननाब्जानीळवनु तोळेदंतरंगद
ला ककुत्स्थान्वयन पादसरोजवनु नेनेदु
कोक नयनंगेरगि नोसललि कोकनद कर्णिकेनिट्टु नि-
राकुळदि नोडिदळु नेळलनु नेवरिसि नविर ॥ 23 ॥
कंडळुदकद नेळलिनलि कैकोंड मायामृगद मूर्तिय
दंडिसर दभिनवद शिशुलीला कळापकव
मंडेयनु मुरिर्देत्ति सरसिय दंडेयलि नोडिदळु कार्णदे
मंडिसिद वक्षिगळु तिळि गोळनलि तळोदरिय ॥ 24 ॥
सुळिसुळिदु संभ्रमिसि नासिकदेलर परिमळ पूरभारव
सुळिसिदुदु सरसिरुह गंधिय ललित न्यासदलि

मारीच चिंतित हुआ कि रावण इसे चाहेगा ही और इसे चाहकर ज़रूर विनष्ट होगा। २१ "यह हमारी माया अत्यल्प है। यह सती आदिमाया की शक्ति के सिवा और कुछ नहीं। इसने जन्म धारण कर अपनी माया से असुर की बुद्धि भ्रष्ट कर दी है। मायातीत श्रीराम के साथ वैर धारण करने से उत्पन्न होनेवाले युद्ध में शस्त्रास्त्रों के आघात से राक्षसवंश का नाश अवश्य होगा।" —इस तरह सोचता मारीच अत्यंत चिंताक्रांत हुआ। २२ सीता ने मुँह-हाथ धो लिये। फिर अपने हृदय में ही श्रीराम-चरण-कमलों का ध्यान करते हुए उस कमल-लोचन (श्रीराम) को (मन ही मन) प्रणाम किया। माथे पर लाल कमल के मध्यभाग को धारण किया। तत्पश्चात् जब अपने माथे पर के बालों को सँवार रही थी तो पानी में (उस) हिरन का प्रतिबिंब देखा। २३ अत्यंत मनोहर, अत्यद्भुत, सुनहले मायावी हरिणशावक की परछाई सीता ने सरोवर के पानी में देखी। सिर उठाकर सरोवर के किनारे उसने अपनी अन्वेषणात्मक दृष्टि दौड़ायी। वह कनकमृग वहाँ कहीं भी न दिखायी पड़ने के कारण फिर स्वच्छ जलवाले उस सरोवर की सतह देखी। २४ उस मायावी हिरन ने बड़े डील-डौल के साथ घूमते-फिरते कमलगंधी सीता के नथुनों तक (अपनी) सुगंधित हवा की तरंग पहुँच जाय, इस रीति से

जलद नॆळलिनलॆ वॆंचलिसिदा जलज लोचनॆ नोड्डुतिर्दळु
विलसदभिनव चित्र गतिय कुरंग शावकव ॥ 25 ॥

तोरुवुदु नीरिनलि नोडलु जारुवदु तीरदलि मिगॆ मै-
दोरुवुदु नीरिनलि तीरद लुभय संगदलि
एरु विळि वक्षिगळु बळलिदु वेरॆ बुद्धिय कंडु गंडगॆ
दूरबेकॆनुतडरिदळु सोपान पंक्तिगळ ॥ 26 ॥

गमिसिदवु हंसॆगळु ललित क्रमद सोंकिनलळक ततिगु
भ्रमिसिदवु भ्रमराळि बॆंवळियलि निलंविनिय
अमलतर पानीय रुचियाक्रमिसि सरसिय शशिमुखिय वि-
भ्रम सुलावण्यांबु रुचियलि वॆरसिताक्षणकॆ ॥ 27 ॥

बंदुदी मृग पोत भीतिय मंद गतियलि मृग सुनेत्रॆय
हिंदु गॊंडीक्षिसिद डॊय्यनॆ निलुत निलुकि दॊडॆ
मुंदणिगॆ लंघिसुत मुरिदडॆ संधिसुत सुम्मानरसदु-
वकंदवनु कामिनिगॆ काणिसु तॆदि तडिगडिगॆ ॥ 28 ॥

प्रश्वास प्रक्षेपित किया। पानी की सतह पर दृष्टि रोपे सीता, टकटकी लगाए इस अनुपम मृगशावक की विनूतन विचित्र छटा तथा उसकी चाल निहार रही थी। २५ (वह) मृगशावक पानी में बार-बार अपनी छवि परछाई के रूप में प्रकट करता; सिर उठाकर (सीता) किनारे के ओर-छोर देखती तो वह गायब था। फिर पानी की परछाई में प्रकट होता, फिर कभी किनारे पर, फिर दोनों तरफ़ (पानी तथा किनारे पर) दिखायी देता। पानी तथा किनारे पर दृष्टि दौड़ाते-दौड़ाते सीता की आँखें थक गयीं। एक निष्कर्ष पर पहुँची सीता अपने पति से शिकायत करने सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। २६ सीता के कोमल चरणों का अनुसरण करते हुए (स्पर्श में) हंस चलकर आने लगे। युवती सीता के घुँघराले बालों को भ्रमर समझकर (भ्रम में) भ्रमरों ने उसका अनुसरण किया। (उस) साफ़-सुथरे सरोवर के जल की कांति चन्द्रमुखी (सीता) के रूप-लावण्य-रस की कांति में विलीन हो गयी। २७ वह मायावी स्वर्णमृग अपने को भयभीत-सा दिखाते धीरे-धीरे पग धारे सीता के पीछे-पीछे आया। सीता उसकी ओर निहारती तो वह रुक जाता, और नज़दीक जाती तो उछलकर दूर भाग जाता, घूम जाती तो सामने प्रकट होता —इस तरह उसके इर्द-गिर्द चक्कर काटते उसे आनंद परवश बनाते बार-बार (उसका) चक्कर काटते आ रहा था। २८ उस मायावी हिरन के खुरपुटों के स्पर्श

कोळगु दागिद कल्ल रतुना वळिय माडुत नोरेवनियलु-
ज्ज्वल समुक्त फलव कदरुत विविध तरुलतेय
ललित कायद कांतियलि होंबेळग पसरिसुतोय्य नोय्यने
बळिविडिदु परिवेषद वोलैदितु नितंबिनिय ॥ 29 ॥

उट्ट होस बेळुवट्टे होम्मग्गिमुट्टविसे होंबण्ण वादुदु
तोट्ट रत्नाभरण पल्लटिसिदवु धातुगळु
दिट्ट हरिणन मेले नेहद नट्टु हरिणन मेले हज्जेग-
ळिट्टणिदलैदिदळु नगे मोगदलि निजेश्वरन ॥ 30 ॥

इद्दनरस चमूरु चर्मद गद्दुगेय गरुवायियलि सति
होद्ददळु होम्मरेय नोटद होरेद हरुषदलि
होद्दितिदु बेंबळियली नृपनिद्द मंदिरदग्रभागव
कद्दुदग्गद मनव दरुशनदलि धराधिपन ॥ 31 ॥

देव चित्तैसिदिरिनलि संभाविसिदिरे कनकरुचिय क-
ळेवरद कमनीय कलित कुरंग शावकव

से पत्थर भी हीरों में परिवर्तित हो रहे थे। उसके मुँह से निकलते फेन की बूंदें चमकते मोतियों की तरह धरती पर गिर रहे थे। उसकी कोमल देहकांति के फैलने से पेड़-पौधे तथा लताएँ सुनहली कांति से चमकने लगीं। इस प्रकार हिरन धीरे-धीरे जब सीता के पीछे-पीछे जा रहा था, तब सीता के चारों तरफ़ मानों एक प्रभावलय-सा निर्मित हो गया। २९ वह स्वर्णमृग जब नज़दीक आता था, तब सीता की पहनी नयी सफ़ेद साड़ी का रंग सुनहला हो जाता था। उसके शरीर पर के रत्नाभूषणों का रंग भी बदल जाता था। सीता को दृष्टि हिरन पर, प्रीति हिरन से —इस प्रकार सीता मुस्कुराती, धीरे-धीरे सुन्दर रीति से पग धरती पति के पास आयी। ३० राम बाघ के चमड़े के आसन पर बड़े ही डीलडौल के साथ बैठे थे। स्वर्ण-मृग को देखने के हर्षातिरेक में सीता पति के नज़दीक पहुँची। सीता के पीछे-पीछे आनेवाला (वह) स्वर्णमृग पर्णशाला के अग्रभाग में खड़े होकर राम को निहारने लगा और उसने अपने केवल एक बार के दृष्टिपात से राम के मन को जीत लिया। ३१ "स्वामिन्, आपके सामने दिखायी पड़नेवाले स्वर्णिम कांतियुक्त शरीर वाले इस सुमनोहर मृगशावक को देखिए। इसके देह की जगमगाहट से यह सारा वनप्रदेश विविध प्रकार के प्रकाश से व्याप्त हो गया है। जिस किसी भी प्रकार से क्यों न हो, इसे मुझे ला दीजिए।" —इस प्रकार चन्द्रमुखी सीता ने

तीवि कौंडिदॆ विविधरुचि विपिनावळिय निद तुंदु कॊडवे-
काव परिरियिदादडॆयु तनगॆंद ळिदुमुखि ॥ 32 ॥
सलुहुवॆनु नानिल्लि नम्मय हॊळलि गॊय्ववरण्य वासव
बळसि ददर्ॆ मेलॆ बयकॆय सलिस वेकॆंदु
हलवु परियलि लल्लॆवातिनललदु रामन कोमलांघ्रियॊ
ळिळुहिदळु मूर्धिनयनु मुग्धाभाव भारदलि ॥ 33 ॥
ऐसले वैदेहि नीनिंदीसु निर्बंधदलि दिट वि-
न्नैसलेनिदु दॊड्डिते तनगॆनुत लॆक्कडव
बासणिसि पदतळकॆ पीत सुवासवनु तॊगॆदुट्टुविलु वा-
णासनद कॊळुतॆलॆवनॆय हॊरवंटना राम ॥ 34 ॥
अरसियिच्छेय सलिसलि नकुलदरस हॊरवडलूमिळासति
यरस कंडनु तन्न भवनदलिर्दु भूपतिय
सरसरिसि शरचापवनु संवरिसि कॊळु तॆलॆवनॆय हॊरवं
टरिदिशा पट पटु पराक्रमि यॆडॆगॆ नडॆतंद ॥ 35 ॥
तिरुगि नोडिद नॆण्दॆसॆय नहितरलि भयवनु काणदण्णन
भरवसिकॆ तानॆल्लि गॆंदनुमान मार्गदलि

प्रार्थना की। ३२ मैं इस शावक को यहाँ पालूँगी, पोसूँगी। अरण्यवास की समाप्ति पर इसे अयोध्या ले जाएँगे। अतः मेरी यह अभिलाषा पूर्ण कर दीजिए।" —इस तरह कई प्रकार की चाह भरी बातों से राम को सीता रमाने लगी। फिर मुग्ध-भाव से राम के चरणों में (मृग को ला देने की प्रार्थना पूर्ण कर देने की विनती के साथ) अपना माथा टेका। ३३ "वैदेही, जब तू इतना जोर देकर प्रार्थना कर रही है तो क्या (तेरी विनती) मेरे लिए यह बहुत बड़ा काम है?" इस तरह कहते, (अपने) चरणों में पादत्राण धारे, पीला वस्त्र पहन धनुर्बाण तथा तरकस साथ में लेते हुए राम पर्णशाला से निकल पड़े। ३४ पत्नी की अभिलाषा संपन्न बनाने के लिए रविवंश के स्वामी श्रीराम जब पर्णकुटी से रवाना हुए तो उर्मिलापति (लक्ष्मण) ने देख लिया। सरपट अपने धनुर्बाण लेते हुए (लक्ष्मण) पर्णशाला से रवाना हो शत्रु-भयंकर वीर राम के पास आए। ३५ लक्ष्मण ने आठों दिशाओं में घूम-फिरकर देखा। शत्रुओं से कभी भयभीत न होनेवाला मेरा बड़ा भाई इतना उतावला बनकर कहाँ जा रहा है? —इसकी कल्पना भी न कर सकने के कारण राम के सम्मुख हाथ जोड़े भयभक्ति से लक्ष्मण ने पूछा— "अचानक्यों

हरहुगाणदे कैमुगिदु भयभरित भक्तियलोय्यनी बिलु
सरळ संवरणेय सघाड विदेनु बेससेंद ।। 36 ।।
तम्म नोडी मृगवनबुजज निर्मिसिद सृष्टिगे नवीन वि-
देम्मरसि बेडिदळु बयकेय सलिस वेकेंब
हेम्मे नमगाथितदु नावी होम्मरिय तप्पन्न बरवी
धर्मपत्निय कादुकोंडिरु नेम निनगेंद ।। 37 ।।
रायनाडिद नुडिगे नोडिद नायताक्षनु होम्मरियनिदु
मायेयलि रूपायितेंदे निजव निश्चेसि
जीय बिन्नह कपट विदु कमलायताक्षिय काम्यवाक्यके
वायु वहुदिद रिंद बळलिके बहुदुनमगेंद ।। 38 ।।
तोळल दडवि गळिल्ल तोहिगे सिलुक दिह मृगविल्ल बेटे यो-
ळलगुगाणिसदिर्द मृगविल्लिदुपरियंत
बळकेगिदु बयलेंब बगेमिगे होळकुतिदे हृदयदलि मातिद
निळिके गाणदे मनेगे बिजयंगैयि नीवेंद ।। 39 ।।
ऎनलु केळिदु बंदु सीता वनिते नुडिदळु जरेदु निज मै-
दुनन बयसिदु बेडली होम्मरियलव गुणव

धनुर्बाण धारण करने की क्या आवश्यकता आ पड़ी है ? ३६ "भाई, यह हिरन तो देखो। ब्रह्मसृष्टि में ही यह विनूतन है। हमारी पत्नी इसे चाहते हुए माँगने लगी है। उसकी अभिलाषा पूर्ण करने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है। हमारे इस स्वर्णमृग को लाने तक (समय तक) हमारी धर्मपत्नी की रक्षा की ज़िम्मेदारी तुम्हारी होगी" —इस तरह राम ने कहा। ३७ राम की (ये) बातें सुनकर लक्ष्मण ने स्वर्णमृग को निहारा। उसने निश्चय किया कि यह मायारूपी ही है। फिर राम से उसने निवेदन किया— "स्वामिन्, सुनिए; इसमें मुझे कुछ छल-प्रपंच दृष्टिगोचर होता है। सीता की इस अभिलाषा की बातों से कुछ धोखे की स्थिति नज़र आती है। इससे लगता है कि हमें कष्ट उठाना पड़ेगा।" ३८ "अब तक ऐसा कोई जंगल नहीं जहाँ मैं (शिकार के लिए) न भटका होऊँ। मेरे शिकार के लिए अप्राप्य कोई मृग (बचकर) न रहा। मेरे शस्त्रास्त्रों से घायल हुए बिना कोई प्राणी अब तक न बचा। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह मामूली तौर पर दिखायी पड़नेवाला प्राणी नहीं है। मेरी (इन) बातों की अवहेलना न करते, घर पधारने की कृपा करें।" —इस प्रकार लक्ष्मण ने निवेदन किया। ३९ लक्ष्मण की बातें सुनकर सीता बीच में पड़कर बोलीं— "अपनी एक चाह (प्रियतम से)

अनुवरिसि माताडुवदु निनगनुनयवें साल्तलेने मा-
निनिय झंकिसि कळुहि लक्ष्मणदेव गिर्तेद ॥ 40 ॥
केळिदैयॅलॅ तम्म नम्मय लौल लोचनें गाडिदुक्तिय
नालगॅगे पुनिरुक्तियागॆ पुरंध्रि नगुवळले
मेलॆ नाव् नुडि दॆंडहॆ वॆंबुदु मेलु मातागिहुदु निन्नय
मेलु दागिन मतिगॆ मतियनु केळु नीनॆंद ॥ 41 ॥
दिटकॆ हॊम्मरियादडिद करपुट दॊळडगिसि तहॆनु तानिदु
कुटिल कर्बुरनाद डिळुहुवॆनिदऱ मस्तकव
निटिलदलि विधि वरॆद बरहव नटमटिस लिदऱळवॆ कादिरु
कुटिल कुंतळ भरॆ यनॆनुतडियिट्टना राम ॥ 42 ॥
कंडुदा कडु कपट मृग कोदंड रामन मनद नॆनहिन
दंडिसरवनु दारिदॆगॆदुदु घोर विपिनदलि
कॊंडु होह कुबुद्धिलतॆ कुडि गॊंडुदुदक रसननु कपट क-
रंडमृग कडुचित्र गति यलि चिम्मि तिदिरनलि ॥ 43 ॥

निवेदन करने पर इस कनक-मृग में अवगुण आरोपित कर बोलना क्या उचित है तुम्हें लक्ष्मण ? तुम बीच में टाँग क्यों अड़ाते हो ? निकल जाओ यहाँ से।" इस तरह सीता ने फटकारा। तब राम ने सीता को डाँटते हुए लक्ष्मण से यों कहा— ४० "सुन रहे हो न भाई, मैंने अपनी पत्नी को जो वचन दिया है उस जीभ पर अन्यथा बात पैदा हो (वचन से मुकर जायँ) तो पतिव्रता उसे सुनकर हँसती है। मैंने एक बार वादा करने पर कभी उससे चूकना सीखा ही नहीं। यह तो जगत्प्रसिद्ध है। तुम्हारी इस विचित्र कल्पनात्मक तर्क के लिए (उत्तर में) मेरी राय सुनो। ४१ "अगर यह सचमुच कनक-मृग है तो इसे अपने वश में कर पकड़ लाऊँगा ही। अगर यह धोखेबाज़, राक्षस ठहरा तो इसका सिर काट आऊँगा। विधिलिखित को असत्य सिद्ध करना क्या इसके बूते की बात है ? तुम सीता के पहरेदार बने रहो।" इस तरह कहते हुए राम ने क़दम बढ़ाया। ४२ वह मायावी हिरन कोदंडधारी राम के मनोगत को भाँप गया और उसने तुरन्त घने जंगल की राह ली। उसने (मायामृग ने) यह भी जान लिया था, उसे पकड़कर ले जाने का बेहूदा विचार जो राम में अंकुरित हुआ है— (इसे झूठ सिद्ध करने के लिए) वह माया-मृग विचित्र गतिविधियों से राम के सम्मुख ही उछलने, कूदने, छलाँग भरने लगा। ४३ मारीच के पराक्रम से प्रादुर्भूत वह माया-मृग राम की चाल-चलन देखकर क़दम बढ़ाता है। राम अगर रुक जाय

गतिगे गति मुंचुवुदु निलविन गतिगे निलुवुदु मुरियै मुरिवुदु
प्रति दनिगे दनिदोरुवुदु लंघिसलु लंघिपुदु
यतिगे साधन सदमलज्ञानतेगे निगुर्व वोलोडने निगुरुवु
दतुळमाया महिम मारीच प्रतापमृग ॥ 44 ॥
मुगिद मुंगालुगळ मुंदके होगुव हिंगालुगळ मुरुविन
मोगद बेंदरिन बळिय नोटद नीळ्द कर्णगळ
निगुरोडल मुंबरुव चिम्मुव चिगिव चलनेय चंगुवारिन
मृग मृगी निकुरुंब दोळगड हाय्दुदगलदलि ॥ 45 ॥
इदे यिदेंबंतोडने हिडि हिंगोदगिहुदु बयलासे यलि बिसि
लुदक दवोलडि मुंचुवुदु कैसोंकिगवनिपन
चदुरतनवनु मिक्किहुदु सदु हृदयननु वंचिसुव माया
विदनवोलु मैदोरि तोरदे हाय्दुदडवियलि ॥ 46 ॥
इडुकुरलि कुत्तुरुलि कुहरद तोडकु मेळेगळलद्रिकूटद
लेंड बलद तप्पललि तुरुगिद तरु कदंबदलि

तो वह रुक जाता है। अगर वे घूम जायँ तो स्वयं घूम जाता है। राम की ध्वनि के अनुसरण पर प्रतिध्वनि करता है। जब वे उछल पड़ते हैं तो स्वयं भी उछलकर प्रतिक्रिया प्रकट करता है। संन्यासी जैसे परिशुद्ध ज्ञान को आत्मसात् करने, जैसे सीधे खड़े रहते हैं, वैसे ही सीधे खड़ा रहता है। ४४ आगे के घुटनों पर (पैर को) मोड़कर, आगे बढ़ने के उद्देश्य से पीछे के पैरों को झुकाकर, डरावनी सूरत, पार्श्व की दृष्टि, खड़े कान वगैरः भाव-भंगिमाओं से युक्त (वह) हिरन शरीर को फुलाकर, आगे की ओर दौड़ते, चौकड़ियाँ भरते, उछलते-कूदते, तरह-तरह की रीतियों से, छलाँगें भरते, जंगल के (अन्य) मृगों के मध्य में से विचरता हुआ आगे बढ़ा। ४५ कभी वह इतना निकट दिखायी देता कि राम के चंगुल में फँस ही गया; फिर मृगजल की भाँति झूठी आशा पैदा कर राम के हाथ से फिसलकर आगे की ओर भाग जाता। उस माया-हिरन ने सारी चालाकी प्रदर्शित की। मायावी जैसे सज्जन को धोखा देता है, उसी प्रकार राम के दृष्टिपथ में आकर भी अदृश्य होकर जंगल में (वह) भाग गया। ४६ वह मायावी मृग तंग स्थानों में, झुरमुटों में, गुफाओं के सामने के घनघोर जंगलों के द्वारा होता हुआ, पहाड़ों के पास-पड़ोस के पठारों में गुजरता हुआ, घने पेड़ों के समूह के मध्य छिपता हुआ, पुनः दृष्टिगोचर होता हुआ, कभी प्रकट और कभी छिपता हुआ जा रहा था। राम के हाथ में आते-आते, फँसने से अपने को बचाकर ओछे स्वभाव वाले नीच

अडगि तोरुत्त निलुत निगुरुत्त तोंडहृदळिमन दधम पुरुषन
नुडियवोलु वंचिसुत हाय्दुदु विपिनदलि नृपन ॥ 47 ॥
दारियिदु दरियिदु गुहा कांतार विदु कलुमरनिदद्भुत
घोर दुर्ग विदुग्र कंटक कठिणपथवेंब
आरयिकॆ यिल्लद मृग व्यापार चित्तनुदात्त गुण गं-
भीर गर्वित नॆदिदनु कौळिक कुरंगमव ॥ 48 ॥
भुजद सोंकिगॆ भूरिभुज व्रजवु बुड मेलाद वद्रिग-
ळजिगिजिगळादवु नितांत पद प्रघात दलि
गजद काल्दुळिवाळॆयो भूमिजवो तळपट वाय्तु कानन
वजिन योनिय बळिय रामन पादमार्गदलि ॥ 49 ॥
सरळिसुव सम्मुख दोळडहा य्देरळॆगळ तूळिदनु तूळुव
करिगळनु सीळिदनु सीवरिसुव तरक्षुगळ
सुरगियलि सॆक्किदनु कुक्किद नुरुशराग्रलिदिरलोदगुव
शरभ सिंह लुलायगळ नुब्बरद गमनदलि ॥ 50 ॥
कदळि कडवम्मावुगळ बिलुदुदियलिरिदनु मरॆवराहन
नोंदॆदुकोंदनु करडि खड्ग प्रमुख कोळ्मृगव

पुरुष की बातों की तरह (राम को) धोखे में डालकर जंगल में भाग गया। ४७ हिरन को पकड़ने में मन लगाए राम ने, यह सही रास्ता है, यह दरी है, यह कंदरा है, वग़ैरहों की परवाह न करते, गुफा का कठोर मार्ग, पत्थर-कंकड़ों से भरी राह, घनघोर जंगल तथा भयानक दुर्ग (क़िले वग़ैरः), काँटों से भरी राह —आदियों का किसी प्रकार विचार न करते, उन्नत, गंभीर गुणसंपन्न उन (श्रीराम) ने उस धोखेबाज़ हिरन का पीछा किया। ४८ राम जब (इस प्रकार) उस हिरन का पीछा कर रहे थे, तब उनकी भुजाओं से टकराकर भारी भरकम पेड़ उलट-पलट गये। उनके भारी क़दमों के दबाव में आकर पहाड़ चकनाचूर हुए। हाथी से रौंदे गये कदळी (केले) वन की तरह जहाँ-जहाँ उनके चरण पड़ते, वहाँ के रास्तों के अगल-बगल के पेड़ लुढ़ककर गिर जाने के कारण वह वनप्रदेश मैदानी प्रदेश में रूपांतरित हो गया। ४९ (धनुष पर चढ़े) बाण के सम्मुख आनेवाले मृगों को तितर-बितर कर दिया। जूझकर आनेवाले हाथियों को चीर डाला। गरजनेवाले बाघों को कटार से भोंक दिया। सामने आ पड़नेवाले शरभ, सिंह, भैंसे आदियों को तीरों से मार गिराकर बड़ी ही तीव्र गति से राम आगे-आगे बढ़ते ही गये। ५० हिरन, बारहसिंगा, जंगली गाय आदियों को धनुष

कॆदऱ लॆच्चनु लोचनाग्रव नदऱ मेलिरिसिदनु माया
विद मृग व्यसनदलि मायातीत मरुळाद ॥ 51 ॥
लागु हिंगदॆ कंगळॆवॆ मऱॆयागदा वातायुविन मै-
लागु लंघनॆ गॊडनॆ लंघिसु तंगवणॆ मिगिलु
मेगॆ मेगुब्बेळ्व सुय्लिन तागुवळ्ळॆय तोद बॆमरिन
बागुगळ गिडमरन मऱॆगळलट्टिदनु मृगव ॥ 52 ॥
तुरुगि तूळ्व मुगिल मंडॆय मऱॆविडिदु नडॆगॊब नभदॆळॆ
वॆऱॆयवोलु निगुरिदुदु निबिड निकुंज पुंजदलि
तॆरहु गॊडदी परियला ने सरुगुलाधीशगॆ मायॆय
मऱॆ विडिदु नडॆववर गॆलुववरारु लोकदलि ॥ 53 ॥
सिक्कितिदॆयॆ बासॆ मनदलि मिक्किहुदु तन्मनवनदु हिं-
दिक्किहुदु मिक्किहुदु मनवनु मृगवु रघुपतिय
इक्किदर्थकॆ धातुमैगॊड दक्करिन रसवादिगळ कै-
सिक्किन वोलाळिया सॆयलि बॆंबत्तिदनु राम ॥ 54 ॥

की नोक चुभायी। चितकबरे हिरन, सूअर आदियों को लात मारकर गिरा दिया। रीछ, खड्‌गमृग आदि हिंसक प्राणियों पर तीर बरसाकर तितर-बितर कर दिया। यों तो सारी निगाह कनक-मृग पर ही थी। इस तरह मायामृग को पकड़ने की धुन में मायातीत (राम) भ्रांत हुए जा रहे थे। ५१ चतुराई में उस मायावी हिरन से किसी प्रकार पीछे न पड़ते हुए, टकटकी लगाए, उसी पर आँख गड़ाए हिरन की अति चंचल उछल-कूद के साथ स्वयं भी उछलते-कूदते हुए राम साहस में उससे आगे बढ़ गया। लंबी साँस भरते हुए उस हिरन के पेट के पार्श्व तो धौंकनी की तरह चल रहे थे तथा वह पसीने से तर था। राम उसे पेड़-पौधों की ओट में खदेड़ ले गये। ५२ घने बादलों की चोटी के पीछे गतिमान आकाशगामी बाल चन्द्रमा की तरह वह हिरन घनी झाड़ी के बीच में से होकर भागा। इस प्रकार उस मायावी हिरन ने रविकुलाधिपति (राम) को थोड़ा सा भी सुस्ताने का मौक़ा न दिया। माया के बल पर इस दुनिया में धोखा देनेवालों को कौन जीत सकता है? ५३ 'हा! यह देखो, पकड़ लिया' —यह आशा मन में पनपने के पहले ही वह मायावी हिरन राम के मन की इच्छा के विपरीत भाग खड़ा हुआ। समुचित वस्तुओं के सम्मिश्रण से प्रयत्न करने पर भी उद्दे‌शित लोहा प्राप्त न कर, आशा की अँकड़ी में फँसे रसवादियों की तरह राम उस हिरन को पकड़ने की बलवती आशा से उसका बेतहाशा पीछा कर रहे थे। ५४ जब हिरन आकाश में उछलता तब धरती पर

चिगिय लंबर हॊंबिसिल नॆलकुगुळुवुदु नॆलकिळियलंबर
दगलदलि हॊंबण्ण वहुदा मृगद कांतियलि
ऒगुव निश्वासदलि दशदिक्कुगळु परिमळिसुववु सॊवगिन
सॊगस बीरुत्त बीदि वट्टिदुदु बनदॊळगलदलि ॥ 55 ॥
आसॆ बिडदट्टिदनु मत्तॆ महीश मारुत वेगदलि मा-
यासुरन मृग घन मनोवेगदलि सरळिसितु
गासियादनु भूप बहळ श्वास लहरिय लळिय तालिगॆ
यासरिन सरणिश्रमद भारणॆय बिगुहिनलि ॥ 56 ॥
दरिग ळॊळु दुस्सरणियॊळु डॊंगरगळॊळु गुहॆगळॊळु गिरि नि-
र्जर तरंगिणि वापि कूप तटाक पल्वलद
हॊरॆगळॊळु हॊल मेरॆग ळॊळुव्बरद हुलुवॊदरुगळॊळगलकॆ
हरिदु हॊरटॆ गुट्टिदनु हॊम्मरिय बॆन्निनलि ॥ 57 ॥
गॊल्ल पळ्ळिग ळॊळु गुहांतर बिल्ल पक्कणदॊळु मुनींद्रर
पल्लवालय निकर दॊळु नगरोप कंठदॊळु
हळ्ळवळि यूरुगळ मेरॆगळल्लि नगर ग्राम सीमॆग-
ळल्लि बॆंबत्तिदनु बिडदा कनकमय मृगव ॥ 58 ॥

(उसकी अंगकांति के कारण) सुनहली धूप बिखरती। जब वह धरती पर आता तो आसमान सुनहले प्रकाश से भर जाता। उस (हिरन) के श्वास-प्रश्वास से दसों दिशाएँ सुगंध से भर जाती। इस प्रकार अपना अंग-सौष्ठव बिखेरता हुआ सारे वन-प्रदेश में वह हिरन उछल-कूद रहा था। ५५ राम ने निराश न होते हुए वायुवेग से हिरन का पीछा किया तो वह मायावी हिरन मनोवेग से उड़ा। तब राम की जीभ थकावट के मारे तथा प्यास के कारण सूख गयी। (लम्बे डग भरते, दौड़ते) मार्ग अति-क्रमण करने के कारण थके राम दीर्घ निःश्वास लेने लगे। वे थककर चूर-चूर थे। ५६ दरिकंदराएँ, दुर्गम मार्ग, झरने, प्रपात, पर्वत, गुफाएं, पहाड़ी झरने, नदी, बड़े-बड़े सीढ़ीदार कुएँ, कुएँ, तराई, नद-नालों के नज़दीक, खेतों के द्वारा जंगलों में, घास के झुरमुटों में, वग़ैरः-वग़ैरः स्थानों पर दौड़-धूप करते हुए राम ने उस कनक-मृग का पीछा कर उसे पकड़ने में बहुत परिश्रम किया। ५७ ग्वालों के गाँव, गुफाओं में निवास करनेवाले आखेटकों के गाँव, ऋषियों के पर्णकुटीर, नगर के बाहरी परकोटे, नदी किनारों के जनपद, निवासस्थान नगर तथा ग्रामीण प्रदेश —इस प्रकार सभी स्थलों में, स्थानों में, कांचन मृग का पीछा किया। ५८

तोळलिसितु सौराष्ट्रदवनी तळदोळा गौळावनिय मं-
डल दोळंग कळिंग गुज्जर निषद कांभोज
तुळु विदर्भ द्राविडा वनिगळलि केरळ सिंधू मरु कुं-
तळद विषयंगळलि विविधारण्य वीथियलि ।। 59 ।।
बिसिल बेगेगे कदि कुंदिद मुसुड मसुळिसि दंगरोचिय
मुसुकु कॆंपिन लोचनद निर्द्रवद नालिगॆय
उसिरिनुब्बस दॆडहु वेरळिन कुसिद गमनद गळित साहस
दसम वीरर देव धैर्यविसंचमन नाद ।। 60 ।।
अडिगडिगॆ हसिवोकुवदु नीरडिकॆ निर्बंधिसितु साकिद
रोडनॆ बळलिकॆ येंब बगॆ बलुकरिसितवनिपन
सुडु वृथा पौरुषव नकटा बडकुरंगार्भकन साहस
तडॆदुदे तन्नुवनॆनुत सार्दनु वनस्पतिय ।। 61 ।।
अॆळॆ दळिर सोपिनलि कुसुमद कळिकॆगळ हॆंपि नलि घनपरि-
मळद पसरद कंपिनलि तंबॆलर तंपिनलि
सलिसिता सहकार सॊगसिन सुलभतॆय नरसंगॆ बलु बिलु
गोलॆगॆ गल्लवनूरि निंदिद नीक्षिसुत मृगव ।। 62 ।।

सौराष्ट्र देश में, गौळ मंडल में, अंग-कळिंग, गुर्जर, निषध, कांभोज, तुळु, विदर्भ, द्राविड़, केरल, सिंधु, कच्छ की भूमि, कुंतल राज्य, तरह-तरह के जंगल वन-प्रदेशों के दुर्गम मार्गों पर उस हिरन ने राम को चक्कर लगाने पर बाध्य किया । ५९ गर्मी के दिनों की धूप की प्रखरता के कारण राम का मुखड़ा मुरझाकर सूख गया । देहकांति मलिन पड़ी । आँखें लाल हुईं । जीभ सूख गयी । दीर्घ निःश्वास लेते वह हाँफने लगे । ठोकर खाकर पैर की उँगलियाँ घायल होने के कारण चलना दूभर हो गया । वे हिम्मत हार बैठे । अनुपम वीर राम का धैर्य कुंठित होने के कारण उनका मन चंचल बना । ६० पग-पग पर भूख बढ़ने लगी । प्यास मानों उन्हें बाँधे दे रही थी । साथ-साथ थकावट के कारण राम का भाव 'इतना पर्याप्त है ।' —इस प्रकार सोचने पर बाध्य करने लगा । "मेरे इस व्यर्थ के प्रयत्न को आग लगे । इस नाचीज़ हिरन के शावक ने मेरे साहस को कुंठित कर दिया न ?" —इस प्रकार सोचते चिंतित राम पेड़ की छाया के आसरे में पहुँचे । ६१ मनमोहक कोंपलें, फूलों की कलियों की सुन्दरता, मंद-मंद सुगंध वहाती वायु की तरंगें, मंद मारुत की शीतलता, वगैरहों के सुशोभित (उस) आम के पेड़ ने (जिसके तले राम बैठे थे) उन्हें आराम पहुँचाया । धनुष की नोक पर गाल टिकाए हिरन को

बळलिदनु मारीचना नृपतिलक रामगेंटु मडियलि
बलुमें गति बॆऱगादना राजेंद्र चंद्रमन
छलव बिडनवनीश नीगॆन्नळिव हूडदॆ माणनें दॊळ
गॊळगॆ चिंतिसुतिदिरिनलि निंदिदनु रघुपतिय ॥ 63 ॥
कंगळनु हरहिदनु रामन मंगळ श्रीमूर्तियलि नॆऱॆ
हंग कळिदनु भवभवद दुष्कर्म वासनॆय
संगियादनु सुखमयद मोक्षांगनॆय घनपीनजघन कु-
चंगळिगॆ कैनिलुक लुद्योगिसिद नवबळिक ॥ 64 ॥
मृगविदल्लॆंदॆंबमति मनदॆगह निक्कितु राघवंगा
बगॆयरिदु मोहिसितु मायामृगवु रघुपतिय
चिगिवु दॆड बलकुदिर्दं तरगॆलॆ जगुळॆ बॆदरुवुदवनि जेशन
सॊगडना स्वादिसुवु दंजुवुदनिल दुरुबॆयलि ॥ 65 ॥
नोडुवुदु भव वैरियनु मॆलुकाडुवुदु वागीश्वरज्ञर
नेडिसुव वॊलु सविदु दॆळॆ मॊळॆवुल्ल मॊगॆ मॊगॆदु

निहारते खड़े रहे। ६२ राजश्रेष्ठ राम से आठ गुना बढ़कर मारीच थकावट महसूस करने लगा। रामचन्द्रजी का अद्भुत सामर्थ्य देख वह दंग रह गया। 'कुछ भी हो, राम अपनी जिद पर अड़े रहेंगे और मुझे मारे बिना न रहेंगे'—इस प्रकार सोचते (मन ही मन चिंतित) वह रघुपति के सम्मुख खड़ा रहा। ६३ मारीच ने श्रीराम की मंगलमयी मूर्ति को आँखों में आँखें डालकर देखा। फलस्वरूप कई जन्मों से संग्रहित दुष्कर्मों का परिपाक उसने समाप्त कर लिया (अर्थात् पाप-विमुक्त हुआ)। वह महत् सुखानुभव करने लगा। तत्पश्चात् मोक्ष लक्ष्मी का आलिंगन करने के लिए उसकी ओर हाथ बढ़ाने का प्रयत्न करने लगा। ६४ 'यह वास्तव में हिरन नहीं है। (हिरन के रूप में वंचक है।)' —इस प्रकार राम को भी अनुभव होने लगा। राम के मन में उत्पन्न भावना को ताड़ते हुए उस (वंचक) मायावी हिरन ने अपनी चाल-चलन से राम को आकर्षित करना शुरू किया। उसने दाएँ-बाएँ उछलना, सूखे पत्तों की खड़खड़ाहट सुनकर डरावनी सूरत बना लेना, राम के शरीर की सुगंध आघ्राणित करने के लिए सूंघना, हवा का खड़ाका सुनकर भयभीत होना। ६५ भव-भय-भंजक श्रीराम की ओर प्रसन्नता से देखना, ब्रह्मादि देवताओं का तथा अज्ञानियों का मानों उपहास करते हुए परिहास की मुद्रा में पगुराना, कोमल घास उखाड़-उखाड़कर मुँह में डाले चबाते रहना, आखिर भक्तिरस के अमृत-आगार में मानों डूबा जा रहा हो—इस रीति से

कूडॆ भक्ति रसामृतद लोलाडुवंतिरॆ सुखमयदल
क्काडिदुदु चिन्मय सदानंदैक भावदलि ॥ 66 ॥
इद्दुदामृगवी परिय नॆनहिद्दुदै रघुपतिगॆ राणिय
लिद्द मनदनुभवद भारिय चिंतॆ हॊम्मद्रिय
हॊद्दिददनु रवियपर दिग्वधुविद्द मंचव निन्नु निळॆयव
हॊद्द बेकॆनुतडसि मेल्वायिदनु हॊम्मद्रिय ॥ 67 ॥
लंघिसलु लागद्रिदु मृगवुल्लंघिसितु रघुपतिय नृप निडु
जंघॆयलि निगुरिदडॆ निगुरितु निमिष निमिषदलि
संघटित संदर्भ गतिगळ लंघनॆय संधान दटवी
संगदलि सैवरिदु सैरणॆगुंदिदनु राम ॥ 68 ॥
बळलिदॆनु बलुहागि साकिन्नॆळतटवु तनगॆब बगॆ मुं-
कॊळिसिदुदु मुंबद्रिदुदुग्राटोप कोपशिखि
सॆळॆद निषुधिय लंबतिरुविगॆ तुळुकि कोलनु कोड कैयि-
दळविगॊय्यनॆ निलुकिदनु निगुरिद शरीरदलि ॥ 69 ॥
सारॆ तनगिन्नसुर भवसंसार सुखतरवॆनुत जन्मो-
त्तारकद रमणीय तर रामाभिधानकव

श्रीहरि ध्यान में तन्मय होकर सुख-साम्राज्य में निमग्न हो गया। ६६ इस प्रकार जब वह हिरन ध्यानमग्न होकर तन्मय था तो राम अपनी रानी से वांछित स्वर्णिम हिरन के विचार में निमग्न था। तभी सूर्य पश्चिम दिशा नामक स्त्री के मंच पर आरूढ़ हुआ। सूर्य के डूबने की ओर अग्रसर होने से पर्णशाला पहुँचने का समय हुआ जान, उस हिरन पर टूट पड़े। ६७ सुअवसर देखकर बड़ी चतुराई से राम जब हिरन पर टूट पड़े तो हिरन राम से बढ़कर तुरंत उछल पड़ा। राम जब बड़े-बड़े डग भरते हिरन की ओर बड़ी तत्परता से बढ़े तो हिरन उसके हाथ से छूटकर छलाँग मारकर चला गया। हिरन के चाल-चलन का अन्वीक्षण करते शरसंधान के साथ, बड़ी उछल-कूद के साथ राम जंगल भर में भटके। आखिर उनकी सहनशीलता की हद हो गयी। ६८ "बहुत थक गया हूँ। इस खींचातानी की भी सीमा है।" इस तरह जब राम सोचने लगे तो बड़े कोपाविष्ट हुए। तरकस से तीर खींच धनुष की धन्वा पर चढ़ाया। हिरन की दूरी का अनुमान लगाते हुए झुके हाथ में के तीर से नीशाना ताने अपने शरीर को सीधा करके तैयार खड़े रहे। ६९ अपने असुर जन्म का अंत आया जान प्रसन्न होते हुए मारीच ने जन्म-मरण-बंधन

सारतर जिह्वाग्रदिदुच्चारिसुव रामयदलि रामन
कूरलगु कडिदिळुहिता मारीचमस्तकव ॥ 70 ॥
हा सुमित्रासूनु हा सीता सरोरुहनयनें हा अँ-
बी सगाढध्वनिय लिळॆगॊरगिदनु मारीच
आ सुरारिगॆ सन्नॆयिदु वळिकी सरोजांवकन राणी-
वास केळिदु हा अँनुत हम्मैसिदळु धरॆगॆ ॥ 71 ॥
करव कदपिनलिट्टु रघुकुल दरस शिव शिव महादे-
वरिदला सौमित्रियरिदनॆंनुत्त बॆर्गागि
मरळिदेना नॊंदुपायव नॆरहु तिरलेनागिहरॊ सर-
सिरुह मुखि सौमित्रियॆनुतळवळिदना राम ॥ 72 ॥
मगुळॆ मगुळसुरारि माया मृगवु माडिद मरॆय मरुकद
दुगुडदलि तिरुगिदनु तडवड वोगुतडवियलि
मगनॆ केळै कुशनॆ जनकन मगळिगादापत्तनुळिदी
जगद मनुजर पाडदावुदु लवनॆ केळॆंद ॥ 73 ॥

से मुक्त करनेवाले रमणीय (पावन) राम-नाम जपना शुरू किया। उसी समय राम के (धनुष से छूटे) पैने तीर ने मारीच के सिर को काट गिराया। ७० "हे सुमित्रात्मज, हे सीते, हे कमल-नयने!" इस तरह ऊँची आवाज़ में चीखते मारीच धरती पर लुढ़क गया। उधर (छिपे खड़े) रावण को इस आवाज से (उसके अपने आगे के कार्य के लिए) इशारा मिला। यहाँ पंचवटी में रानी (सीता) ने यह आवाज सुनी, 'हाय रे दैया' कहती मूर्च्छित हो धरती पर गिरी। ७१ अपने गाल पर हाथ धरे राम चटपटाने लगे— "शिव-शिव महादेव! यह तो बड़ा संकट है न! यह लक्ष्मण ने जान लिया न?" इस तरह सोचते बड़े अचम्भे में पड़ गये।" मैं एक कार्य पूर्ण करने यहाँ आया। वहाँ न जाने लक्ष्मण, सीता की दशा क्या हो गयी है।" —इस तरह सोचते राम उतर गये। ७२ मायामृग से निर्मित धोखेबाज़ी के कृत्य का पुन:पुन: (बार-बार) स्मरण करते राम अत्यंत दु:खी हुए। आतंक से आश्रम की तरफ़ लौटे। हे कुश! जनक राजा की पुत्री सीता पर जो विपत्ति आ पड़ी— कहता हूँ, सुनो। तब इस जगत में अन्य (मामूली) व्यक्तियों की क्या दशा हो सकती है? सुनो लव। —इस तरह वाल्मीकि कहने लगे। ७३

ओंबत्तनेय संधि

सूचने— धरगिजेय बिट्टुनुडिगे लक्ष्मण तेरळिदभिसंधियलि सीता तरुणियनु कद्दोयद नडवियला दशग्रीव ।

केळु कुश लव केळु कुशलद कौळिकद मारीचनवनिगे
बीळुतोदरिद बेंदरुदनि रघुपतिय दनियंते
मेलुडिय बिद्दुदु बिदेह नृपालकन कन्निकेय कर्णदो
ळोलगिसिदुदु मनवनपगत राघवाळाप ॥ 1 ॥
ऐके बेडिदेनकट मृगवनदेके बलुहिदेन्न गंडन
नूकिदेनो होस्मरिय बेन्नलि बहळ काननके
ऐके मैदुन नेंद मात निराकरिसिदेनो केट्टेनै विधि
याकरणे गोळगादेने हा ऎंदळिदुमुखी ॥ 2 ॥
केळिदै सौमित्रि मित्र विशाल वंशोद्भवन वचनद
हाळियनु हा सीते हा सौमित्रि येंदुदनु
ओलेगस्थिर वागदेले भूपाल नेनादनो महाग्नि
वाज्ले जठर दोळेळुतिदे तनगेंदळा सीते ॥ 3 ॥

नौवीं संधि

सूचना— सीता के कठोर वचन सुनकर, लक्ष्मण जब उसे छोड़ चला तो रावण ने धोखे से उस जंगल से, सीता का अपहरण किया ।

सुनो कुश, सुनो लव, छल-कपट-कुशल मारीच की गिरते-गिरते चीखी डरावनी ध्वनि, जो रघुपति की ध्वनि जैसी ही सीता को लगी, तो उसकी भावना यही हुई कि प्राण निकलते समय निकली राम की ही वह ध्वनि है। —इस तरह कहते वाल्मीकि ने कथा आगे बढायी । १ "हिरन की अभिलाषा मैंने क्यों की ? उस कनक-मृग के पीछे मैंने जबर्दस्ती अपने पति को घनघोर जंगल में जाने की प्रेरणा क्यों दी ? (व्यर्थ ही मैंने उनको ढकेल दिया ।) देवर की कही बात का मैंने निरादर क्यों किया ? हाय ! मैं विधिवश हो संकट में फँसी न ?" —इस तरह सोचते-सोचते सीता बहुत ही दुःखी हुई । २ "लक्ष्मण, रविकुलतिलक की बातों की रीति (आर्तनाद) तुमने सुना न ? हे सीते, हे सौमित्रि ! इस तरह चिल्लाने का (उनका) आर्तनाद तुम्हारे कानों में पड़ा न ? इसमें मेरे मांगल्य की कोई क्षति तो नहीं है न ? मेरे पेट में एक ज्वाला धू-धू कर रही है ! न जाने मेरे राम की दशा क्या रही होगी !" —इस तरह सीता ने कहा । ३ ये

नडुगिदनु सौमित्रि ताना नुडियं केळिदु चित्तदलि यि-
त्तडके बिद्दुदु बुद्धि बुद्धिगॆ संशयाळाप
तॊडचि कॊंडुदु मनवनुत्तर गॊडलरियदवनिजॆगॆ कंगळ
घुडुघुडिसुवश्रुगळलवनिगॆ बागिदनु शिरव ॥ 4 ॥

अकट लक्ष्मण देव रघुनायकन मरणद नुडि निनगॆ रं-
जकवॆ रागवॆ रहिय रसभावकवॆ रुचिकरवॆ
विकळ गॊंडुदॆ विषय वॆन्नलि युकुतियंतर वेनु साप-
त्नक विवेककॆ सॊगस तंदै यॆंदळिदुमुखि ॥ 5 ॥

तायॆ चित्तैसकट राघव राय नारॆंदरियला वा-
तायुविन मातैसे मतल्लिदु महीपतिय
मायॆयनु मिक्कादि पुरुषन कायवॆंदरियदविवॆक
स्थायि तामसबुद्धि निमगेकॆंदनवनिजॆय ॥ 6 ॥

रामनळिदरॆ कमलभव सुत्राम रुळिवरॆ देवि कैरव
तामरस बांधवरु बॆळगुवरॆ नभस्थळव

बातें सुनकर लक्ष्मण मन ही मन थर-थर काँपने लगा। अंदर ही अंदर उसकी बुद्धि चटपटाती डोलायमान हुई। जंगल से प्रक्षेपित (सुनी) संशयास्पद (संदेहात्मक) बातें (उसकी) बुद्धि में फँस गयीं। सीता के प्रश्नों का जवाब न दे सकने के कारण अश्रुधारा बहाते उसने सिर झुका लिया। ४ "हाय रे लक्ष्मण देव! रघुनाथजी की मृत्यु का समाचार तुम्हें मोहक लगता है? संतोषदायक लगता है? सुन्दर लगता है? रसपूर्ण तथा रुचिकर लगता है? (शायद) तुम मुझे इतना चाहने लगे हो कि तुम्हारी बुद्धि विनष्ट हो गयी है। तुम्हारे इस तंत्र का रहस्य क्या है? क्या तुममें सौतेले बेटे की बुद्धि जगी है? (नहीं तो ऐसा क्यों करते?)" इस तरह सीता ने पूछा। ५ माताजी, इन मेरी बातों पर ग़ौर कीजिए। राघवराज कौन हैं? —इस पर मनन करें तो पता चलेगा कि (अभी जो हमने सुनीं) वे बातें हिरन के सिवा राम की नहीं हो सकतीं। माया को जीतनेवाले (उनकी) आदिपुरुष की देह न समझकर ऐसी अविवेकपूर्ण तामस बुद्धि आप में क्यों जगी है? (यही आश्चर्य की बात है!) —इस तरह लक्ष्मण ने सीता से प्रश्न किया। ६ "राम अगर विनष्ट हुए तो ब्रह्मा, इन्द्रादियों का अस्तित्व कहाँ? क्या सूर्य और चन्द्र आकाश में जगमगा सकते हैं? वायु, अग्नि, सागर, पृथ्वी, आकाश (ये पंचमहाभूत) —इनका अस्तित्व कहाँ? क्या आप भी मानव-

ई मरुत् शिखि शरधि भूमि व्योमविवु काणिसुववे नर
भामिनियरे निम्म नीवु विचारिसुवुदेंद ॥ 7 ॥
कृतक मृगवदु देवि केळाहुतिय कॊट्टनु निशित तोमर
हुत वहंगदु बीळु तोदरिदुदा सुरांगदलि
हति रघुक्षितिनाथगिल्ली स्थितिगॆ नंबुवुदॆन्न नमळा-
च्युतन भुवनस्तुतन रामन तोरिसुवॆनॆंद ॥ 8 ॥
अकट लक्ष्मणदेव प्रत्यक्षकॆ प्रमाणवदेकॆ परमा-
त्मक परापरनॆंदु नॆरॆ बायारलेकॆन्न
युकुतिगिदु मरॆ यल्लवे कौळिकद मातेकॆन्नॊडनॆ सा-
ककट गंडन कॊंडुबा होगॆंदळिदुमुखि ॥ 9 ॥
विषव कॊंबॆनु तारदिरलीवसति गुरियनु चाचि जीवव-
बिसुडुवॆनु बीळुवॆनु घातोदकद कूपदलि
रसनॆयनु कित्तसुव निनगॊप्पिसुवॆनॆंदाक्षेप मुख दु-
ब्बसद रोषावेशदलि गजरिदळु लक्ष्मणन ॥ 10 ॥
बगॆय नरिदॆनु निन्न चित्तव बगॆववळु तनल्लवन्यर
बगॆगॆ सिलुकुवळॆंदु बगॆदॆयला मनस्सिनलि

स्त्री हैं ? अपने आपको पहचानने की कोशिश कीजिए न ?—" इस तरह लक्ष्मण ने कहा। ७ देवि जी, सुनिए। वह मायावी हिरन है। तीक्ष्ण धार वाले (पैने) शस्त्र की आग में राम ने उस हिरन की बलि चढ़ायी है; और उस (मायावी हिरन) ने मरते समय अपने असुर शरीर से इस प्रकार आवाज़ दी है। रघुपति की हत्या असंभव है। इस मामले में मेरी बात पर भरोसा कीजिए। परिशुद्धस्वरूपी अच्युत जगद्वन्द्य राम के दर्शन आपको कराऊँगा —इस प्रकार लक्ष्मण ने सीता से कहा। ८ "हाय लक्ष्मण ! प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण (गवाह) की क्या जरूरत है ? 'परमात्म, परापर' आदि शब्दों का प्रयोग कर —प्रशंसा कर मुझमें आशा जगाने की कोशिश मत कर। युक्ति-पूर्ण बातों से सत्य को छिपाने की कोशिश मत कर। मुझसे यह धोखे की टट्टी क्यों ? बस करो। तुरन्त जाकर मेरे पति को बुला लाओ।" इस तरह सीता ने कहा। ९ "अगर तुम मेरे पति को बुला न लाओगे तो मैं विषप्राशन कर लूँगी। अथवा इस पर्णकुटी को आग लगाकर प्राण त्यागूँगी। अथवा गहरे कुएँ में कूद जाऊँगी। जीभ खींच लेकर ये प्राण तुझे अर्पित करूँगी।" इस तरह कई आक्षेप उठाते हुए सीता ने क्रोधावेश में लक्ष्मण को (कई रीतियों से) डाँटा। १० "तुम्हारे मन की (पाप) भावना ताड़ गयी। तुम्हारी

सोगसु ववळहुदल्ल वेंबुज्जुगव नीने वल्लेयेने कर-
युगळदलि मुच्चिदनु किवियनु राम रामेनुत ॥ 11 ॥
तायें केळरघळिगें मात्रकें रायननु तह तारदिर्दडें
रायनंघ्रिगळाणें पुसिदोडें निम्म पद दाणें
ईयटवियलि तोळलुवसुररु मायेयलि वल्लिदरु बहळो-
पाय कुशलरु बुद्धिवंतिकें निम्मेळिरलेंद ॥ 12 ॥
अण्णनाज्ञाभंगकिदु ता तिण्णवी देवियर नुडि मु-
क्कण्णनुग्राटोप दंतिरें कोपदुरुबेयलि
कण्णळिद कापथनवोलु मन बण्ण बिड्डुतिदें बुद्धिचिंतेय
कण्णियलि ता कट्टुवडेदेने शिव शिवाएंद ॥ 13 ॥
एरडु चिंतेयनुगिदु समविट्टेरडु कैतूकदलि तूगिदु
गुरु लघुव नड़िदिदुवें वलवत्तरवलायेनुत
शर शरासन खड्ग कवचव धरिसि धारिड्डवश्रुकणदु-
ब्बरद चिंताभारदलि होडवंटनाश्रमव ॥ 14 ॥

दुरालोचना में फँसनेवाली नहीं हूँ। दूसरों की दुराशा का (मैं) कभी शिकार नहीं बन सकती। स्वप्न में भी ऐसा मत सोचो। यह चाहकर (प्रेम से) आनेवाली है कि नहीं —यह तुम ही भलीभाँति जानते हो।" —इस प्रकार के सीता के वचन सुनकर लक्ष्मण ने 'राम, राम' उद्गार निकालते अपने कानों को हाथों से ढाँप लिया। ११ "माताजी, सुनिए। आध घड़ी में रघुराम को बुला लाता हूँ। अगर बुलाकर नहीं लाया, राम के चरणों की सौगंद; असत्य बोला —तुम्हारे चरणों की सौगंद। इस जंगल में विचरण करनेवाले असुर मायावी करतबों को दिखाने में बड़े समर्थ हैं। षड्यंत्र रचने में बड़े होशियार हैं। अतः अपनी बुद्धि पर नियंत्रण रखें।" —इस प्रकार लक्ष्मण ने कहा। १२ लक्ष्मण मन ही मन रोने लगे— "त्रिनेत्री के भयानक रुद्र-रूप की भाँति अत्यंत क्रोध में सीताजी के मुँह से निकली बातें भैया की आज्ञा के उल्लंघन से बढ़कर तीव्र परिणामकारी हैं। आँखें खोकर घने जंगल के बीच फँसे व्यक्ति की तरह की मेरी दशा है। दिमाग़ में अँधेरा ही अँधेरा है। क्या करना चाहिए— कुछ सूझता नहीं। चिंता रूपी रस्सी की गाँठ मे फँसा न! हाय-हाय! शिव-शिव! (क्या करूँ!) १३ लक्ष्मण ने मन की इस डोलायमान स्थिति का निवारण किया (भाई की आज्ञा, भाभी की ताड़ना) दोनों को मन में तोलकर देखा। इन दोनों में कौन सी श्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण है, कौन सी कम महत्त्वपूर्ण है —इनकी (हर तरह से) परीक्षा कर देखा।

कादुकोंडिरि सतियनेंदभिवादनंगैदनु महीजल-
वादि भूतंगळिगें दिक्किन देवसंततिगें
मेदीनीश बह्नबर निमगैदुवुदु भरभारवेंदति
खेददलि कालिक्किदनु काननकें संजेयलि ॥ 15 ॥
मनद बह्ळांदोळदलि भामिनिय बिडें बीसिदनु नडेतं-
दनु महारण्यदलि माया मृगद पथविडिदु
तनुज केळीचेंयलि खळसूतनलि संदुदु बेह्र निकषा
तनुजनव यतियादनाक्षण कपटरूपिनलि ॥ 16 ॥
शिरद मुंडन दक्षमालेय करद दंडु कमंडलद बं-
धुरद काषांबरद कौपीनद कळेवरद
जरेय जरुगिद बेन्निनलुगुव शिरदशूलिय सटेय नाम
स्मरणेयलि मैदोरिदनु मायामहीसुतेगें ॥ 17 ॥
इदें दिलीपान्वयन विश्रुत सदन विप्र प्रियन गृहविं
तिदें महाधार्मिकन पुण्याश्रमविदेयेंनुत

आखिर एक निष्कर्ष पर पहुँचे कि कवच धारण किया। हाथ में धनुर्बाण लिया। तलवार लटका ली। यही मार्ग उपयुक्त मानते हुए, आँसू बहाते हुए चिंता का बोझ लादे, दबे-दबे, आश्रम से निकल पड़े। १४ (जाने के पहले) धरती, आप, तेज आदि पंचभूतों से तथा दस दिशाओं के देवताओं से प्रार्थना की, "सती सीता की रक्षा करते रहिए। राम के आने तक इनकी रक्षा की जिम्मेदारी तुम्हारी है।" इस तरह उनको प्रणामकर प्रार्थना करते हुए अत्यंत दुःख से उस दिन संध्या समय लक्ष्मण जंगल की ओर रवाना हुए। १५ 'मैंने जो सीता को (अकेले में) छोड़कर आने का काम किया क्या सही कार्य है?'—इस तरह सोचते चिंता के झूले में झूलते मायामृग से आक्रमित रास्ते का अनुसरण करते लक्ष्मण जंगल में चले जा रहे थे। इधर यह समाचार दुष्ट रावण को उनके सारथी द्वारा मिला। तुरंत रावणासुर ने संन्यासी का छद्मवेषी रूप धारण किया। १६ मुँड़ा हुआ सिर, हाथ में जपमाला, दंड-कमंडल, भगवा कपड़ा, कौपीन आदियों से रावण संन्यासी बना। बुढ़ापे से झुकी कमर, हिलता सिर, मुँह में शिव-नामोच्चारण करता आदिमायास्वरूपिणी सीता के सम्मुख प्रकट हुआ। १७ क्या दिलीपवंशीय का घर यही है? क्या ब्राह्मण-प्रिय का घर यही है? महाधार्मिक व्यक्ति का पुण्याश्रम यही है?—इस तरह (कई प्रकार) पूछते हुए हर्ष की अंतिम अवस्था में दिखायी पड़नेवाली पवित्रता की तरह विराजमान पुण्यवती युवती सीता

मुदद तुदियलि तोरुवधिका स्पददवोलु पुण्यांगनेयनघ
हृदय नैदिद नपर संध्या समयदग्रदलि ॥ 18 ॥
माति दॆल्लिय दॆनुत बागिलला तपोधनवेषदलि का-
मातुरन कपटान्वितन कडु नरक भाजनन
जातकन परियरियदा भूजातॆ यतियॆंदे बगॆदु सं-
प्रीति वचनदलसुर मुनिगिगॆंदळुचितदलि ॥ 19 ॥
अहुदिदीग महीसुर प्रिय गृहवु धार्मिक निळयविदु ता-
नहुदु नीवॆल्लिंद बंदिरि बिजय माडॆनलु
महिळॆ केळ् यजमान निल्लद गृहवु नमगस्वाम्य संध्या
विहित कृत्यकॆ ठावु साकॆमगिदुवॆ सॊगसॆंद ॥ 20 ॥
बिजयमाडि गृहांतराळकॆ भजकराव् निमगॆसॆ भवदा-
त्मजॆयला भाविसलु कुळ्ळिरि लेसुमाडिदिरि
विजयरामननगल्द चिंता रजनिगादुदु निम्म पदपं-
कजपतंगोदयद बॆळगॆंदळु सरोजमुखि ॥ 21 ॥
मनदॊळवनी वनितॆ तनगह नॆनहु नॆलॆगॊळदॆंब दृढयो-
चनॆयने निश्चैसुतॊळहॊक्कनु दळालयव

के नजदीक पापात्मा रावण संध्या के प्रारंभ होते समय पहुँचा । १८ 'ये वचन किसके है ?' —जानने के लिए उत्सुक सीता (आश्रम के) दरवाजे में तपस्वीवेषधारी रावण को देखती है । कामातुर, धोखेबाज, नरक योग्य पापी (रावण के) नैज रूप न जानने के कारण सीता ने उसे परिव्राजक ही समझकर आत्मीयता से उस निशाचर मुनि के साथ वार्तालाप शुरू किया । १९ "हाँ-हाँ, यही ब्राह्मण-प्रिय व्यक्ति का घर है । यही धर्मात्मा का निवासस्थान है । आप कहाँ से आए । पधारिए महाराज !" इसके उत्तर में रावण ने कहा— "सुनिए देवीजी, गृहस्वामि-रहित घर हमारे लिए योग्य (निवास के लिए) नहीं है । संध्याकालीन कर्माचरण के लिए यह स्थान काफ़ी है; सुन्दर है । इस तरह कहा । २० "कृपया घर में पधारिए । हम आपके आराधक हैं । मैं आपकी बेटी के समान हूँ । बैठिए । आपने अच्छा ही किया (जो आ गये) । विजयी राम से अलग होने की चिंता से भयभीत मुझे, आपके आगमन से मानों अँधेरे में आपके चरणकमल रूपी सूर्य के प्रकाश-सदृश (धैर्य देनेवाली) साबित हुई ।" —इस प्रकार कमलमुखी सीता ने कहा । २१ 'इस भूमिसुता को अपने वश मे लाने की जो योजना मैने बनायी है, वह सफल नहीं हो रही है' —इस प्रकार की दृढ़ धारणा करते हुए रावण

जनकसुतॆ भक्तियलि दर्भासनव नित्तुपचरिसि नम्मय
जनक बंदवॊलायितॆंदळु मुगिदु करयुगव ॥ 22 ॥
आवकडॆ निजदेशवासवदावुदमळक्षेत्र तीर्थद
ठावु ता निमगॆल्लि नम्माश्रमकॆ बरवेनु
नीवु वृद्धरु निमगॆ शुश्रूषावलंबन विल्लवॆंदभि
भाव भक्ति यलुप चरिसिदळु कपटतापसन ॥ 23 ॥
वास वॆंमगॆनिद्दुदुत्तम वासना जनदुपचरियदि
दी शरीरव सलहुवॆवु प्रारब्ध फलविडिदु
देशदेशव तॊळलिदॆवु हिंदीसुदिन विन्नॊंदु लंका
देशविदॆ संकल्प सीमॆगॆ कांतॆ केळॆंद ॥ 24 ॥
गमन वल्लिगॆ घटिसिदरॆ नाव् सुमन सरिगिंदधिक केळॆलॆ
कमलमुखि काम्यार्थविदु समनिसॆ कृतार्थरलॆ
श्रमवळिदुदिंदिनलि निम्माश्रमकॆ बंदुदरिंद नीनु-
त्तमॆ यॆला प्रियविद्दुदॆम्मय मेलॆ निनगॆंद ॥ 25 ॥

ने पर्णशाला में प्रवेश किया। जानकी ने भक्तिभाव से दर्भासन दे बिठाया तथा आदर-सत्कार किया। फिर हाथ जोड़कर कहने लगी— "आपका आगमन मानों मेरे पिताजी के आगमन-सदृश ही हुआ। २२ "आप किधर से आए हैं? आप किस देश के रहनेवाले है? किस पवित्र तीर्थक्षेत्र को आपने अपना निवासस्थान बनाया है? हमारे आश्रम में पधारने का क्या कारण है? आप वृद्ध हैं, आपकी सेवा-शुश्रूषा करनेवाले नहीं है।" —इस तरह कहते हुए भक्तिभावसंपन्न हो कपट तपस्वी का आदरातिथ्य सीता ने किया। २३ "हमारा निवासस्थान (स्थायी) कहाँ? जहाँ ठहरें वही हमारा निवासस्थान हो जाता है। उत्तम संस्कार वाले लोगों से प्राप्त आदरातिथ्य के कारण हमारे पूर्वजन्म-कर्मफलानुसार हम अपने देह की रक्षा कर पाते हैं। इतने दिनों से कई देशों का भ्रमण किया। अब हमारे आगे की यात्रा के लिए संकल्पित देश एक है। वही है लंका।" इस तरह रावण ने कहा। २४ "अगर हम वहाँ जाने में सफल हुए तो हम देवताओं से बढ़कर श्रेष्ठ हो जाते हैं। हमारी यह अभिलाषा अगर चरितार्थ हुई तो हम कृतार्थ ही हुए। आज तुम्हारे आश्रम में पधारने के कारण हमारी (सारी) थकावट दूर हुई। तुम एक श्रेष्ठ स्त्री हो। तुम हमको चाहती भी हो।" —इस तरह रावण ने कहा। २५ रावण ने नारी सीता के कोमल अंगांगों पर दृष्टि

ऎनुत कंगळ हरहिदनु कामिनिय कोमल कायदलि तनु-
मनसिजगॆ गुरियाय्तु कळवळिसिदवु करणचय
नॆनहिननुरागतॆ धरित्रीतनुजॆयलि नॆलॆयाय्तु योगद
जिनुगु जारितु जपद जिह्वॆगॆ जाड्य तनवाय्तु ॥ 26 ॥
अडगिताक्षण दंडु मॆल्लनॆ सडिलि हॊयितु करकमंडल
मिडुकु निंदुदु बॆरळ नामस्मरणॆगळु हरन
सिडिदु हारितु जरॆय जाड्यद तॊडहदर्धवयो विलासद
जडॆय तापसियागॆ मनदलि हॆदरिदळु सीतॆ ॥ 27 ॥
मरळि मरळि मनोविकारद हरहु गुंददॆ देवियर सौं-
दरियदंगोपांगदलि हरहिदनु कण्मनव
अररॆ मन्मथनी सतियलव तरिसिदनॊ शिवऎनुत मनदलि
मरुळुगॊंडनु मृत्युवॆंबुदनरियदसुरॆंद्र ॥ 28 ॥
नॆरॆववे कणु नालगॆगळनितरलि शक्रन सर्पराजन
मरॆय मातॆनीसतिय नॊडुवरॆ हॊगळुवरॆ
हॆरॆय हॊत्तन हॊक्कुळलि हुट्टुबिदातन मगळिगळुपिद
मॊरॆयवन हॆंडिरनु बल्लॆनु कडु तानॆंद ॥ 29 ॥

दौड़ायी। उसकी देह काम-विकार की शिकार हुई। इन्द्रियाँ चटपटायीं। रावण के हृदयस्थित अनुराग-भाव सीता में (के लिए) अंकुरित हुआ। योग की धुन अदृश्य हुई। जपती (जपाराधना में लीन) जीभ मानों ऐंठ गयी। २६ तत्क्षण रावण के हाथ का दंड (योग-दंड) अदृश्य हो गया। कमंडल धीरे-धीरे ढीला पड़ गया। शिव-नामस्मरण करती उँगलियों का गिनना भी ठप हो गया। रावण को घिरा बुढ़ापा भी (बुढ़ापे का आवरण भी) एकदम समाप्त हो गया। अधेड़ उम्र के जटा-जूटयुक्त सुन्दर तपस्वी के रूप में उसका (रावण का) परिवर्तित होना देखकर सीता डर गयी। २७ क्षण-क्षण, मनोविकार, जैसे-जैसे बढ़ता गया रावण की आँखें तथा मन पुनःपुनः सीता के सुन्दर शरीर में गड़ते गये। रावण यह न जानते हुए कि यह सीता अपने लिए मृत्यु है— "हे शिव-शिव! मन्मथ ही इस सती के रूप में प्रकट हुए हैं न!" —इस तरह सोचते हुए मन ही मन मोहित हुआ। २८ "इन्द्र की हजार आँखें यह (सीता का सुन्दर रूप) देखने के लिए काफ़ी नहीं हैं; आदिशेष की हज़ार जीभें इसके सौंदर्य की वर्णना करने में असमर्थ हैं। —इसमें कोई आशंका नहीं। चन्द्रशेखर शिवजी की, कमलनाभ विष्णु की, निजी पुत्री को पत्नी के रूप में चाहना करनेवाले ब्रह्माजी की पत्नियाँ

ईसु चॆलुविकॆ हॊत्तुदिल्ल महासति यवर्गळी राणी
वासदभ्यंतरवु मिक्किन सुरवधू निकर
ई सौबगु सौभाग्य विभव विलास विभ्रम हावभाव सु-
रासुरोरग नर वधूजन निकरकिल्लॆंद ॥ 30 ॥
तंगि तप्पदॆ नुडिदळी ललितांगि गॊसुग नासिकद बलु
भंग भारिसि तळिद रदरिं दूषणादिगळु
हिंगदा बळिहुय्यलॆम्मननंगकेळिगॆ तंदुदिदकॆ-
म्मंगवणॆ मुंचिदरॆ मूजगकधिक रावॆंद ॥ 31 ॥
अॆलॆ पयोधर भारॆ शशिमंडल निभाननॆ पीन जघन
स्थळॆ सरोरुह नयनॆ सिंधुर गमनॆ शुकवचनॆ
ललित चंदन गंधि केळीगळु महामारीच नॆंब-
ग्गळद मायामृगद लळिदनु रामनॆंब नृप ॥ 32 ॥
आत निनगेनहनु नी तानातगेनहॆ हॊलबिनिंदवॆ
मातिनिंदवॆ दंपति गळॆंबंतॆ तोरुतिदॆ
ऐतककटा कळुहि कॆंडिसिदॆ शातकुंभकुरंग दॆडॆगि
न्नेतकौ मरु ळाडलदु ता विधियलिपियॆंद ॥ 33 ॥

को देखभाल चुका हूँ।" —इस प्रकार रावण सोचने लगा। २९ "प्रसिद्ध महासतियाँ— पार्वती, लक्ष्मी, सरस्वती में इतना सौंदर्य कहाँ ? अन्य देवता-स्त्रियाँ तो मेरे रनिवास में ही निवास करती हैं। यह सौंदर्य, यह सौभाग्य, यह वैभव, यह विलास, यह मोहकता, हाव-भाव —आदि सुर, असुर, नाग, नर आदियों की नारियों में सर्वथा दुर्लभ है। ३० "बहिन शूर्पणखा का कथन असत्य नहीं है। इस कोमलांगना के लिए अपनी नाक कटाकर वह अपमानित हुई तथा खर-दूषण मृत्यु के ग्रास बने। बहिन से लायी गयी शिकायत कामक्रीडा (मुझमें) प्रेरित कर, मुझे यहाँ तक खीच लायी। अगर हमारी यह अभिलाषा सफल हुई तो हम तीनों लोकों में बढ़कर श्रेष्ठ माने जाते हैं।" इस प्रकार रावण सोचने लगा। ३१ हे उभरे स्तनों वाली, चन्द्रमुखी, मस्त नितंबों से युक्त युवती, तुम्हारी आँखें तो कमल ही हैं। चाल तो हाथी की है; हे शुक-सरीखी मधुर कंठ वाली, शरीर से श्रीगंध की सुगंध बिखेरनेवाली नारी ! सुनो। महामारीच नामक मायावी हिरन से राम नामक एक राजा मारा गया है। ३२ "वह तुम्हारा कौन है ? तुम उनकी कौन हो ? तुम्हारी बातों से अंदाजा लगाकर देखें तो लगता है कि तुम दोनों आपस में (शायद) पति-पत्नी हो। तब तो हाय ! (उस) कनक-मृग के पीछे अपने पति को

होगु तातन वळियलॊव्वनु नीगिदनु निजतनुव निन्नुप-
भोग विन्नेनिद्दुदो शिव शिव महादेव
होगि वहॆवे नावॆनुत्तनुरागदलि निंदिरलु कामुक
नागदिरनिवनॆनुत कळवळिसिदळु कमलाक्षि ॥ 34 ॥
ऐळुतवना भिक्षुवेषव वीळुकॊट्टनु तोरिदनु दश
मौळिगळ मददुब्बुगॊब्बिन वाहुदंडगळ
नील मेघ निभांगदुरुदंष्ट्राळिगळ मणिकांचनद मुकु-
टाळिगळ विविधाभरणदभिनवद रूपकव ॥ 35 ॥
सुरर विरुदिन हाहॆगळ सुरुचिरद शोणांवरद जव्वन
हॊरॆद हॊगरिन वीररस बिडदॊसवॆ मॊगरसद
स्मर विकारद मनद नोटद गरुविकॆयली मात नुडिदनु
तरुणिनोडा तन्न तानारॆंदु कॊळॆंद ॥ 36 ॥
नळिनमुखि केळखिळ भुवना वळिगळॆन्नवु सकल दिविजा-
वळिगळॆन्नय बंटरूर्वशि मुख्य सुरकुलद

भेजकर तूने सत्यानाश कर लिया। (अब) मैं क्यों झूठ बोलने लगा? वह सब विधि-विलास है!" —इस तरह रावण ने कहा। ३३ "उसके पास जानेवाला वह और एक व्यक्ति भी अपने प्राणों से हाथ धो बैठा। तू अब और क्या सुख पाना चाहती है, वह शिवजी ही जानें! शिव-शिव, महादेव! अब हमें आज्ञा दो।" इस तरह कहते प्रेमवश रावण जब खड़ा था तो सीता सिटपिटायी, 'यह अत्यंत कामवासनायुक्त प्राणी है।' —फलस्वरूप वह घबड़ा गयी। ३४ रावण ने उठते-उठते अपना भिक्षुवेष त्याग दिया। दस सिरवाला, हृष्ट-पुष्ट मस्त बाहुओंवाला, नीले बादलों की जैसी अंगकांति वाला रावण अपना असली रूप प्रकट करने लगा। उसकी वक्र दाढ़ें, हीरे-मोती जड़े स्वर्णकिरीट चमकने लगे। विविध प्रकार के आभूषणों से वह अलंकृत था। ३५ रावण देवताओं के ओहदों से युक्त आभूषण पहने हुए था। उसने चमकते हुए लाल वस्त्र पहन लिये थे। यौवन की कांति के साथ-साथ मुखड़े पर वीररस उमड़ रहा था। काम-विकारपूर्ण दृष्टि प्रक्षेपित करते हुए बड़े घमंड के साथ बोला— "देख युवती! मैं कौन हूँ —यह पूछ।" इस तरह (रावण ने) कहा। ३६ सुनो कमलमुखी! समस्त लोक मेरे आधीन हैं। समस्त देवगण मेरे सेवक हैं। उर्वशी आदि देवलोक की युवतियाँ मेरी दासियाँ हैं। देवेन्द्र की राजधानी अमरावती की (गाय) कामधेनु तथा (वृक्ष) कल्पवृक्ष

ललनेयरु तोत्तिरु सुरेंद्रन होळल सुरतरु कामधेनुग
ळोळगुगोट्टिह वेनगे तन्नय हेसरकेळेंद ।। 37 ।।
चंडविक्रम नुरुत्रिलोकी गंड रावणनेंब जगद्दु-
द्दंड वेसरे न्नैश्वरियकज हररु पाडल्ल
कंडेनेन्नदे काणेनेन्नद खंडशौर्यन नोडु निनगा
दंडियुळ्ळवने विवेकके मनव माडेंद ।। 38 ।।
पुरुषरोळगुत्तमनु ता नर तरुणियरोळुत्तुमे कणा नी
सुर नरोरुग लोक दोळगिदु सुप्रसिद्धवल
स्मरकणा ता रतिकणा नी मरळि मातिन्नेकेनडे सं-
करद संशय विन्नदेके लतांगि केळेंद ।। 39 ।।
चेलुवे नीनेंदरिदु बीसिद बलेयिदी गिट्टोलि सुस्थिर
वेले महीसुते केळु तन्निदाव भयबेड
तळिरडि गळिदित्त मेल्लने चलिसुवुदु सुप्रौढियेने नि-
र्मळ पतिव्रते तायि केंडेनुडिदळु सरोषदलि ।। 40 ।।
अलवो पातकि होलेय होरवडु तलेगळिवु निनगुळिय दकट-
ग्गळेय दैवव कोणकि नीरलि नेरेदे होगेनुत

मेरे आधीन हैं। मेरा नाम जानना चाहोगी ? तो सुनो।" —इस तरह रावण ने कहा। ३७ 'प्रचंड पराक्रमी, तीनों लोकों का स्वामी— मैं हूँ जगतप्रसिद्ध रावण। मेरे ऐश्वर्य की बराबरी में शिव, ब्रह्माजी भी नहीं खड़े रह सकते। 'देखा है' —इस तरह कभी न कहते देखा नहीं', इस तरह न कहनेवाला (न भूतो न भविष्यति) —अखंड वीर हूँ मैं। क्या राम हमारी तुलना में तुम्हारे लिए योग्य हो सकता है ? जरा समझदारी से काम लो।" —इस तरह रावण ने समझाया। ३८ "मैं पुरुषों में श्रेष्ठ हूँ। तुम स्त्रियों में श्रेष्ठ हो। यह (तत्व) स्वर्ग, मृत्यु, पाताल तीनों लोकों में सुप्रसिद्ध है। मैं मन्मथ हूँ; तुम रति हो। अधिक बातों से क्या प्रयोजन ? वर्णसंकरता का शक छोड़कर मेरे साथ चलो।" —इस तरह रावण ने कहा। ३९ "तुझे सुन्दरी जान और मानकर मैंने यह जाल फेंका। अब तेरी बाली (मंगलसूत्र) का भाग्य अक्षय और शाश्वत है। मुझसे तुम्हें (अब) किसी प्रकार का भय नहीं है। तुम्हारे कोमल चरणों को यों धीरे-धीरे धरते चलो।" —इस तरह कहते हुए रावण की बातें सुनकर निर्मल पतिव्रता माता सीता क्रोध से लाल बनी उसकी निंदा करने लगी। ४० "रे पापी, नारकी, कीड़े, निकल जा

नळिनमुखि हलवंगदलि बैदोळगु गौडदिरॆ कोपदलि कळ-
वळिग कांतॆय कबरियनु हिडिदॆळॆदनंगळकॆ ॥ 41 ॥

वेड वेडॆंबंतॆ मरनल्लाडुतिर्दवु बनद खगकुल
वीडिरिदु नॆरॆदरिचि हॊय्दवु खळन मस्तकव
नोडदवनपशकुन मुखदलि जोडिसिदनॆळॆदॊय्दु रथदलि
कूडॆ हा हा क्रंदन ध्वनि तुंबितंबरव ॥ 42 ॥

बाय हॊय्गळलबलॆ दिगु समुदाय मार्दनि दोरलॊरलिद
ळाय ताक्षन दुष्टशिक्षन सुजन रक्षकन
रायरामन वैरिगिरि वज्रायुधनुद्दंड तॊरवॆय
रायननु करॆकरॆदु मॊरॆयिडु तिर्दळा सीतॆ ॥ 43 ॥

यहाँ से। तुम्हारे सिर सुरक्षित नहीं रहेंगे। उस परमपुरुष (श्रीराम) को छेड़कर तू मिट्टी में मिल गया। चला जा।" —इस तरह कमल-मुखी सीता के, कई रीतियो से गालियाँ देते हुए रावण के वशीभूत न होने के कारण कामातुर रावण ने सीता का जूड़ा पकड़कर उसे आँगन में खींच लिया। ४१ (उस समय) पेड़ मानों ज़ोर-ज़ोर से हिलते (रावण से) यों कह रहे हों कि ऐसा कुकृत्य मत करो। जंगल भर के सारे पक्षी इकट्ठा होकर चिल्लाते हुए रावणासुर के सिर को (अपना क्रोध प्रकट करते) चोंच मारने लगे। अपशकुन आँखों के सामने प्रकट हो रहे थे। फिर भी इनकी परवाह न करते रावण सीता को रथ की तरफ़ घसीट ले गया। सीता का 'हाहाकार' ज़ोर-शोर से चिल्लाना आकाश भर में व्याप्त हो गया। ४२ मुँह, छाती पीट लेती हुई अबला सीता जब करुण क्रंदन कर रही थीं तब दिशाएँ भी द्रवित होकर अपनी प्रतिध्वनि के ज़रिए रो रही थीं। दुष्टों को दंडित करनेवाले, सज्जनों के रक्षक, शत्रु रूपी पर्वतों के लिए वज्रायुधस्वरूपी 'तॊरवॆ' के अधिपति नरसिंह के अवतारी पुरुष राम का नाम ले-लेकर सीता करुण क्रंदन कर रही थीं, याचना कर रही थीं। ४३

हत्तनेय संधि

सूचने— राय दशरथ परमबंधु जटायुवनु गेलिवदटक्करस राय लंकापुरव होक्कनु जनकसुते सहित ।

कुशने केळंबरवनवलं बिसिदुद सुरवरूथ बार्याल
बसुरिनलि करवाडिदवु कुंभिनिय नंदनेय
देसेदेसेगे बाय्विट्टळमर प्रसरदलि मोरेयिट्टळिनकुल
दसमवीरर करेकरेदु कंगेट्टळबुजाक्षि ॥ 1 ॥
सेळेवुतिदे काळिगच्चु कडुकोमलद लतेयनु कोरळ हिडि
देळे दुलिवुतिदे हेब्बुलि सुधेनुवनकट बलुकरिसि
बळसुतिदे दुष्कीर्ति कीर्तियनेले रघुक्षितिनाथ बिडिसै
खळन कैसेरेयंगनेयनेंदोरलिदळु सीते ॥ 2 ॥
राम बिडिसै खळकुल स्मर भीम बिडिसै राक्षसान्वय
सोमसन्निभ बिडिसु विदळ मृगेंद्र बिडिसकट
तामसन तडेगडिदु भूतस्तोम कुण बडिसै निशाचर
कामुकन कैसेरेय बिडिसेंदोरलिदळु सीते ॥ 3 ॥

दसवीं संधि

सूचना--राजा दशरथ के परममित्र जटायु को जीतकर वीर राक्षसराज (रावण) जानकी के साथ लंकानगर में प्रविष्ट हुए ।

सुनो कुश; रावण का रथ आकाशमार्ग से आगे बढ़ा । चिल्लाती, चीखती, छाती पीट लेती भूमिसुता सीता हर दिशा की तरफ़ मुँह किए क्रंदन कर रही थी । देवताओं से याचना कर रही थी । रविकुल के वीराधिवीरों को पुकार-पुकारकर परेशान हो गयी थी । १ "कोमल लता को दावानल खींचे लिये जा रहा है । बहुत बड़ा बाघ साधु स्वभाववाली गाय का गला पकड़कर दबोच रहा है । सत्कीर्ति दुष्कीर्ति से घेरी गयी है । हे रघुपति ! दुष्ट (रावण) की क़ैद से इस अबला को मुक्त कीजिए ।" —इस तरह सीता विलाप कर रही थी । २ "असुरकुल के लिए भीमस्वरूपी हे राम ! मेरी रक्षा करो । राक्षस-वंश के लिए यमस्वरूपी शत्रुओं को विदीर्ण करने में सिंहस्वरूपी हे प्रभो ! मुझे इस बंधन से मुक्त करो । इस नीच के टुकड़े-टुकड़े कर डालो तथा भूत-पिशाचों को (उन टुकड़ों से) दावत दे दो इस का[illegible] राक्षस के बंधन से मुझे छुड़ा लो ।" इस तरह दुःखी [illegible] । ३ हे रघु-

केळदिहु दुचितवॆ रघुक्षितिपाल निन्नंगनॆय भंगद
मेलु हुय्यल केळि मनुकुलदवरु कुंदुगळ
ताळुवरॆ सैरिसुवरे दुश्शील चरितव नूर्मिळावर
लोल निनगेक्ककट निष्कृपॆ यॆंदळवुजाक्षि ।। 4 ।।
जरॆदु कळुहिदळॆंदु मनदलि करुबुतनवनु माडॆ यॆलॆ दिट
कॊरतॆ बारदॆ निनगॆ कुलदभिमानभंगदलि
उरिस लहुदे कंद रघुकुलदॆरॆयनन्यनॆ निनगॆसीतॆय
सॆरॆय बिडिसै तंदॆयॆंदॊरलिदळु नळिनाक्षि ।। 5 ।।
ऎलॆ वसतनॆ चंद्रमनॆ चापल चकोरियॆ चंद्रिकॆयॆ मां-
दळिरॆ मन्मथने मदाळियॆ मत्तकोकिलनॆ
कुलयुतॆय कुंभिनिय तनुजॆय कलुष रहितॆय खळ कुलाधम
बलुकरिसि कॊंडॊय्द नॆंदु सुरुवदु रामंगॆ ।। 6 ।।
बेडि कॊंडॆनु निम्म नीव् कृपॆ माडलागदॆ मान्यरलि मा-
ताड बारदॆ सकलवनदेवतॆगळिर पतिगॆ
माडितिल्लपराधवनु हरि क्रोढ खड्ग कुरंगिगळिरॆलॆ
नाडॊडॆय रामंगॆ हेळुवुदॆंदळा सीतॆ ।। 7 ।।

भूपति ! तुम्हारी पत्नी की (अपनी) इस संकटकालीन परिस्थिति की ओर (इस प्रकार) अनाकानी करना क्या तुम्हारे लिए शोभा देता है ? मनुवंश के राजा यह (तुम्हारी) गलती देख चुप रहेंगे ? पाखंडी का दुष्ट स्वभाव कैसे सहन कर रहे हो ? हे उर्मिलापति, तुझे क्यों दया नहीं आती मुझ पर ?" इस तरह सीता कह रही थी । ४ "निंदा करके (ताने देकर) भेज देने के कारण तू (लक्ष्मण) मन ही मन जल तो नहीं रहा ? तेरे कुल-गौरव के विनष्ट होने के कारण, तू मुझ पर दोषारोपण तो नहीं कर रहा ? बेटे ! (यह सब) तू कैसे सह सकता है ? रघुकुल-स्वामी क्या तेरे लिए (कोई) गैर हैं ? हे तात ! सीता को (इस असह्य) बन्धन से मुक्त करो न !" इस तरह वह पुकारने लगी । ५ हे वसत, हे चन्द्रमा, हे चकोर, हे चाँदनी, हे आम्रवृक्ष की कोंपलो, हे मन्मथ, हे मदोन्मत्त भ्रमर, हे मस्त कोयल, तुम सभी राम को समझा देना— 'सत्कुलोत्पन्न, निष्कल्मश, भूमि-पुत्री भूमि (सीता) को नीच रावण बलपूर्वक हर ले गया है ।' ६ "हे समस्त वनदेवताओ, तुमसे प्रार्थना करती हूँ; क्या तुम मुझ पर दया नहीं कर सकते ? क्या बड़ों से बातें नहीं करनी चाहिए ? पति का मैंने किसी प्रकार अपराध नहीं किया (या द्रोह किया) । हे शेर, सूअर, खड्गमृग,

दशवरुथ महामहीशन सोसेय जनकन मगळ रामन
शशिमुखिय नप्रतिम लक्ष्मण देवनत्तिगेय
असुर वंशाधमनु दुरित व्यसनि दुष्ट दुरात्म नडविय
लसवळिसि कोंडोय्द नेंदुसुरुवुदु रामंगे ।। 8 ।।
केळिसिदुदा नुडि विहंगमभाळनेन्नन वैरिसमरा
भीळ चंचुपुट प्रहारन पदनखायुधन
काल शत विक्रमन रघुनृप लोलुपन रविसूतजनु बिड-
दालिसिदना ननद नेंगहिनला महाध्वनिय ।। 9 ।।
पदगतिय पल्लटिसि पक्कव केंदरिचंचुव मसेदु नखमु-
ख दुरियलवनिय झडिदु झाडिसि झडितेयलि नेलन
ओदेदु हारिद नबुधिययबुधिय नोंदेये सुमनसशैल शिरवनु
बिदिरे भूतळवदुरे पदहत पक्षघातदलि ।। 10 ।।
आरेलवो जगदंबिकेय नसुरारिपत्निय परमनृप ऋषि
वीर विमळ विदेह तनुजेयनुरूपतिव्रतेय

हिरन आदि सभी प्राणियो ! (मेरे) राजा राम को यह समाचार समझाना ।" —इस प्रकार सीता ने निवेदन किया । ७ "दशरथ महाराजा की बहू, जनक राजा की पुत्री, राम की पत्नी, असमान (पराक्रमी) लक्ष्मण देव की भाभी को पापी, दुष्ट, दुरात्मा रावण धृष्टता से अपहरण कर ले गया— यह समाचार तुम सभी राम से कह देना ।" इस प्रकार सीता ने निवेदन किया । ८ युद्ध में बड़े भयानक, चोंच से शत्रुओं को मार देने में जबर्दस्त, पैर के नाखूनों को ही भयानक शस्त्रों के रूप में प्रयुक्त करनेवाले, सौ यमों (मृत्यु देवताओं के जितने पराक्रमशाली, जो पक्षि महेश्वर जटायु (पास-पड़ोस में कहीं) थे— सीता की बातें (क्रंदन) उनको सुनायी पड़ीं । राम के परममित्र, सूर्य के सारथी अरुण के पुत्र (जटायु) ने अपना मुखड़ा ऊपर उठाकर उस महाध्वनि को ग़ौर से सुना । ९ उन्होंने (सीता का क्रदन सुनकर) करवट बदली, पंख फैलाए, अपनी चोंच की सान धरी (रगड़कर तेज की) नाखून से धरती नोची और छलाँग मारकर वेग से (जटायु) उड़ा । जटायु के लात तथा पंखों (की फड़फड़ाहट) के वेग के कारण समुद्र समुद्र से रगड़ गये तथा मेरु पर्वत का शिखर हिलने लगा; धरती काँप उठी । १० "ओहो; जगन्माता, असुरारि (राम) की पत्नी, विख्यात वीर जनक की पुत्री, परम पतिव्रता सीता को कोई चोरी-चोरी उठा ले जा रहा है । कौन हो तुम ?" —इस तरह गरजते हुए

चोर तनदलि कोंडुहोहव नारु हेंसरेंनेंनुत तागिद
नारुभटेंयलि नभकें लंघिसि रावणासुरन ॥ 11 ॥
कडल सुळियलि सिक्कि तिरुगुव हडगिनंतिरॆंकलि जटायुत्रि-
नेंडबलद पक्षप्रहत पवमाननुरुबेंयलि
बिडदें तिरुगितु तेरु मगुळ्गघडद रोषावेशदलि घुडु-
घुडिसुतेंरगिदना निशाचरपतिय मस्तकव ॥ 12 ॥
चेंल्लिदवु देंसेंदसेंगें गगनद घल्लणेंयलुडुनिकर लयदोळ
गेंल्लोगुव वोलु मणिगणावळि मकुटबद्धरद
तल्लणिसिदनु तरणिवंशजनल्ललेयेंदेंनुतला खग
वल्लभनु बोंब्बिरिदु बळिक दशास्यगिंतेंद ॥ 13 ॥
अेंलवो कूर्मन बेंन्नुगडि ध्रुवनिळयगडि होंक्कल्लि होंक्कोंदें
येंलुव मुरिवेंनु हवणनारेंदरियला तन्न
कलिजटायु कणा निशाचर जलधि वडबानळ कणा रिपु-
नळिनवन मदगज कणायेंनु तेंरगिदनु खळन ॥ 14 ॥
दिटकें नीनेंदेंलवो सीतेंय नटमटिसि कोंडोय्व रक्कस
भटनें होगदिरेंलवो होदरें निन्न तलें हलव

आकाश-मार्ग में उड़े तथा रावण को रोका। ११ वीर जटायु के दोनों (दाएँ-बाएँ) पंखों के तेज़ चलने के कारण उठी आँधी से रावण का रथ समुद्र के भँवर में फँसे तेज़ चक्कर काटते जहाज की तरह चक्कर काटने लगा। गुस्से से भरा जटायु घुड़कते हुए, रावण के सिर पर हमला कर बैठा। १२ प्रलयकाल में जैसे नक्षत्र टूट-टूटकर दिशि-दिशाओं में फेंके जाते हैं, उसी प्रकार रावण के (मस्तक पर के) सुन्दर मुकुट के रत्न तितर-बितर होकर उड़ गये। रावण काँप उठा— 'यह भी सूर्यकुलोत्पन्न है न? पक्षिराज जटायु गरजते हुए रावण से यों बोले। १३ "अरे (इस) भूमि को अपनी पीठ पर धारण किया हुआ कछुआ एक ओर है तो दूसरी ओर है ध्रुवलोक। इन दो छोरों के मध्य तू कहीं भी भाग जाय तो तेरा पीछा करूँगा तथा तेरी छाती की हड्डियाँ चकनाचूर कर दूंगा। मैं कौन हूँ —यह तू जानता नहीं। वीर जटायु हूँ, जटायु। राक्षस-सागर के लिए मैं बड़वाग्नि हूँ, शत्रु रूपी कमलसमूह के लिए मैं मदोन्मत्त हाथी हूँ" —इस तरह कहते जटायु रावण पर टूट पड़ा। १४ "छल-प्रपंच रचकर सीता का अपहरणकर्ता तू क्या सचमुच राक्षस वीर है? आगे मत बढ़। क़दम उठाया तो तेरे कई सिरों को चट कर जाऊँगा।

कुटुक कॊंबॆनु निल्लॆनुतलाभॆंटिसि हॊय्दनु मत्तॆ कुलगिरि
तट दॊळगॆ प्रतिसबुदगॊडॆ पतगेंद्र रिपुरथव ।। 15 ।।
तुंगबल नुरुपक्ष हतिगॆ रथांगवजिगिजि याय्तु रथद तु-
रंग तलॆ कॆळगागि कॆडॆदवु कॊडहुतंघ्रिगळ
जंगु जरिदवत्तिजॆय नॆडद करंगळलि बिडदवचि खेचर
रंगदलि नॆल किळिय लिळिदनु कूडॆ विहगेंद्र ।। 16 ।।
तॊलगु हळचदॆ हळॆय हद्दिगॆ सुलभवे त्रैलोक्यवीरन
कलह वॆनुतिदिरागि चापकॆ तॊडचि तोमरव
तॊलतॊलगु तॊलगॆनुत मैदुप्पुळुगळगलकॆ कॊदरॆ बाणा-
वळिय सुरिदनु सुरिव कडुहिन कारमळॆयंतॆ ।। 17 ।।
तुरुगिदंबिनलॆय्यमृग मैयुरुबॆयलि मुळुगॆदरुवंदद
लुरुबि झाडिसि झडितॆयलि मेल्वाय्दु रिपुशिरव
तरिदु तुंडदलभ्र मंडल कुरुबि मुंडदलेळव तलॆगळ
तरिदु तिरिकल्लाडुतिर्दनु वीरविहगेंद्र ।। 18 ।।
उगिदु बळिकसुरेंद्रमंदरनग निभांगन वज्रमय प-
क्कगळ पडिमुख दॊळगॆ लावणिसिदनु खंडॆयव

ठहर" —इस तरह गरजते हुए पक्षिराज जटायु ने रावण के रथ को धड़ल्ले से धर दबोच लिया। उस आघात के शब्द से चारों ओर के पहाड़ गूँज उठे। १५ महान बलशाली जटायु के डैनों की मार के कारण (रावण के) रथ की धज्जियाँ उड़ीं। रथ के घोड़े उलट-पुलटकर लुढ़क गये तथा पैर पटकने लगे। रावण का पैर फ़िसल गया। उसने बाएँ हाथ से सीता को दबोचकर पकड़ लिया तथा आकाश से नीचे उतर आए। जटायु भी तुरंत धरती पर उतर आया। १६ "आक्रमण को रोक, तुरंत चले जाओ। तीनों लोकों के वीर के साथ वृद्ध गृध्र का युद्ध क्या खेल है?" —इस तरह कहते रावण ने धनुष पर बाण चढ़ाया। "निकल जा, निकल जा", कहते हुए रावण ने घनघोर वर्षाऋतु की वर्षा की तरह जब जटायु पर बाणों की वर्षा शुरू की तो पंखों की ऊन चारों ओर बिखर गयी। १७ रावण के बाण जटायु के शरीर भर में चुभ गये। तब जटायु ने बड़े ज़ोर से अपने शरीर को फुलाकर इस प्रकार झाड़ा मानों काँटेदार शरीर वाला प्राणी— साही अपने शरीर को झाड़कर काँटे छितराता हो —उसी प्रकार जटायु ने समूचे बाण झाड़ दिए। फिर तुरन्त कूदकर रावण के सिरों को अपनी चोंच से मार-मारकर, काटकर ऊपर (गेंद की तरह) उछालकर वीर पक्षिराज आमोद-प्रमोद मनाने लगा। १८ मंदर पर्वत की तरह कठोर

चिगुरुववु तुदिगड्रिगळव कैमगुचुवनु खड्गदलि रण रभ-
सिगर घनरौकुळद रण रंजिसितु रात्रियलि ॥ 19 ॥
मूडुववु तलॆहड्रिदगड्रि हॊड्रबीड बिडुववु सुभटरिव्वर
झाडणॆय खंडॆयद तुंडद तोर तोटियलि
आडलेनदनिंद्र जंभर जोडिगलह विदॆनलु गगनव
घाडिसितु रण रभसवा रणरंग भैरवन ॥ 20 ॥
निकट निभ्रत पटु प्रताप प्रकट शौर्यर पदहतिगॆ वा-
सुकिय हॆडॆ यॊर्गुडिसिदवु चंडिसिद युद्धदलि
भ्रकुटि बद्ध निशाचरन पेच्चकद पीनवियच्चरन सु-
व्यकुत समरप्रौढि पडितळिसितु सुरासुरर ॥ 21 ॥
ऎलवो रावण बेड बिडु मैथिळॆयनन्य वधूव्यसनदलि
सिलुकि सत्तपकीर्ति कमलजनुसु रिहन्नबर
तॊलगलड्रियदु मेलॆ निन्नय बळगघनवद कॊंदु दुर्गति
गिळिय बेडॆनुतॆड्रगिदनु खगपति खळाधमन ॥ 22 ॥

वज्र-सरीखे जटायु के पंखों पर रावण ने सामने से तलवार का वार किया। तब पंखों की कोर पर के पंख जैसे-जैसे कटते गये वैसे-वैसे फिर अंकुरित होते गये। रावण ने बार-बार तलवार से उनको काट डाला। इस प्रकार (दो) युद्ध वीरों का यह भारी-भरकम युद्ध रात भर चलता रहा। १९ जटायु तथा रावण के चोंच और तलवार के इस भयानक युद्ध में रावण के सिर जैसे-जैसे कटते गये, फिर-फिर अंकुरित होते गये। जटायू के पंख काटे जाने पर भी अंकुरित होते जाते थे। इन्द्र तथा जंभासुर के बीच हुए युद्ध की तरह युद्धभूमि के भैरव, रावण के युद्ध की तीव्रता आका भर में व्याप्त हो गयी। २० अपनी-अपनी वीरता प्रकट करते वाले उन दोनों वीर— रावण तथा जटायु के पदाघातों से आदिशेष के फन दबने लगे। भौंहें चढ़ाए हुए रावण तथा कठोर पंखोंवाले जटायु के इस युद्ध-कौशल्य को देखकर देवता तथा राक्षस भी डर के मारे काँपने लगे। २१ "अरे रावण, मैथिली को छोड़ दो। तुम इसे मत ले जाओ। परायी स्त्री की चाह में जो तू मर जाएगा और इससे तेरी जो बदनामी होगी वह तब तक न मिटेगी जब तक ब्रह्माजी साँस ले रहे है। तुम्हारा कुटुंब बहुत बड़ा है। उनकी मृत्यु के लिए कारणीभूत बन, दुर्गति को मत प्राप्त हो।" —इस तरह कहते हुए जटायु ने उस दुष्ट राक्षस पर आक्रमण किया। २२ "हे पक्षिराज! सुनो। हम तो तलवार के बल पर ही (यहाँ) आते है। परायी स्त्री को चाहने पर हम नरकगामी होने

केळिदै खगराज खड्गद मेले बहेवावैसे कलुषित
दालयके नावंजे वळुपिद बळिक परसतिगे
कोळुवोगलि कीर्ति बिडे नी बालकियनिदुसुप्रसिद्ध सु-
रालयवु निनगेनुत खळनेरगिदनु खगपतिय ॥ 23 ॥

सिडिलु सिडिलेरगिदवोलिब्बर खडुग चंचुपुट प्रहतियु
ग्घडिसु तिर्दुदु वीररिब्बर घोर पौरुषव
नडुगिदनु खळनवनि पति मेलुडिय बीळुवेनेंदु मायेय
नडपनोड्डि जटायु विगतेंद नसुरेंद्र ॥ 24 ॥

समबलरु नाविब्बरिब्बर समर नुड्रियदु सोल गेलविवु
समनिसवु कदनदलि धर्मदलेम्म वर्मगळ
क्रमितवचनद लुसुरिदोडे विक्रमद बगे बळिकरियि बहुदेन
लभर रिपुविन नुडिगे नंबुगे विडिदनरुणसुत ॥ 25 ॥

तप्पदे तववचनवेने खळतप्पदेंदनु नंबुगेयनद
नोप्पगोंडु खगेंद्र बळिकितेंद नसुरंगे
उप्पुवी घनपक्ष मूलदोळिप्पुदेन्नसु निन्न जीवद
तप्पुगंडिय तोरिकेय तळुविल्ल दुसुरेंद ॥ 26 ॥

से नहीं डरते। हमारी कीर्ति इससे अगर नष्ट होती है तो होने दो। इस युवती को कदापि नहीं छोड़ूँगा। तुम्हें तो स्वर्ग भिजवाना निश्चित है।" इस तरह कहते हुए रावण ने पक्षिराज पर हमला किया।२३ जैसे बिजली पर बिजली गिरती है वैसे ही (उन) दोनों वीरों के तलवारों के वार तथा चोंच से खरोंचने के वार पर वार जो हो रहे थे, मानों घोषित कर रहे थे कि ये दोनों वीर अद्भुत पौरुषयुक्त वीर पुरुष हैं। 'अगर इस प्रकार देर कर दी तो राम आकर उलटे टूट पड़ेगा तो गज़ब हो जायगा।' —इस तरह सोचकर रावण काँप उठा। वह माया का सहारा लेकर जटायु से यों कहने लगा।२४ "देखो भाई! हम दोनों समान बलशाली हैं। हम दोनों के बीच का यह युद्ध समाप्त ही नहीं होगा। तथा इस युद्ध के हार-जीत का निर्णय होना भी कठिन है। अतः धर्म का नाम लेकर हम दोनों एक-दूसरे के प्राणमय स्थान का पता एक-दूसरे को दे दें तो हमारी वीरता की रीति का पता एक-दूसरे को लगे।" रावण की इन बातों पर अरुणपुत्र जटायु ने विश्वास किया।२५ "क्या तू वादा करके मुकर तो नहीं जायेगा?" इस तरह जटायु के प्रश्न करने पर रावण ने उत्तर दिया "बिलकुल नहीं।" इस विश्वासपूर्ण

परसतिगें मन विक्कु ववदिरु नरक भयकंजुवरें तन्नय
चरण तळदलि परमतर चैतन्य विहुदेंनलु
निरुत वेंदे बगेंदु रजनीचरन चरणकें लागिसलु नि-
र्भरद निस्त्रिंशकद लेंऱगिदनसुरनरुणजन ॥ 27 ॥
कळचि बिद्दवु पक्षविद्रनु कळचि दद्रियपक्षदंतिरें
बळलिदनु बोंबाळिसिद भासुरद रक्तदलि
जलरुहाक्ष जनार्दन श्री निळय नीनेगतियेंनुत बस-
वळिदु बिद्दनु मथनदग्रद पृथुळ गिरियंतें ॥ 28 ॥
हा विहंगम राज दशरथ भूवधूवर बंधु हा हा
माव कॆट्टॆ नेंनुत्त हरितंदरुण नदनन
आ विमुक्त विपक्ष शोणित जीवनदलुरुळ्‌ हॊरळिदळु तन-
गाव हदनै मावमाताडेंनुत मरुकदलि ॥ 29 ॥
हायिदळु कलुमरननगलकें बायबिट्टळलिदळु राघव
रायनभिमानवनु काववरिल्ललायेंनुत
कायवनु कॆंडहिदळु बळिक जटायुविन चरणदलि बिडबे
डायुवनु कॆंडल्लदरसननेंदु शोकदलि ॥ 30 ॥

वचन पर भरोसा करते हुए जटायु ने कहा— "मेरे प्राण मेरे इन पंखों के तले हैं। अब अपने प्राणों के रहस्य स्थान को तुरंत बताओ।" २६ "परायी स्त्री में मन रमानेवाले क्या नरक से डरते हैं ? मेरे प्राण तो मेरे पैरों के तलवों में हैं।" इस तरह कहने पर रावण की इन बातों पर विश्वास करते हुए जटायु ने उसके पैरों पर चोंच से भारी आघात किया। तभी रावण ने तलवार खींच जटायु पर वार किया। २७ जैसे पूर्व में इन्द्र के वज्रायुध की मार से पर्वतों के पंख कट गये थे वैसे ही (रावण की तलवार के वार से) जटायु के पंख कटकर गिरे। जब खून की धारा बह निकली तो जटायु "जलरुहाक्ष (कमलनयन), जनार्दन, लक्ष्मी-निवास, तू ही मेरी गति है।" इस तरह जपते समुद्र-मन्थन के समय जैसे मंदर पर्वत का शिखर टूट गिरा था, वैसे निश्चेष्ट हो धरती पर गिरे। २८ "हे पक्षिराज, दशरथराजबन्धु, हाय मेरे मामा, सर्वनाश हो गया।" इस तरह रोती-रोती दौड़ी आयी सीता अरुणपुत्र के कटे पंखों से बहते खून में लोटती हुई विलाप करती कहती, "अब मेरी गति क्या होगी ? मामा ! बोलो तो सही।" २९ दुःखातिरेक से सीता ने अपना शरीर पेड़-पौधों तथा पत्थरों से मार लिया। "रघुकुलतिलक के अभिमान की रक्षा करने वाला कोई नहीं रहा न ?" —इस तरह कहते प्रलाप करती जटायु के

साकुनडॆ सावनोडनॆ मातेकॆ केळु जटायु निनगॆ स-
मीक सुसरवॆ होगले नाव् नम्मपट्टणकॆ
ईकॆ यरसनु बहुदु हुसि नी नाकनगरिगॆ तॆरळु जंबूक
घूकतति गुड्डुगाडिसद मुन्नॆंदनसुरॆंद्र ॥ 31 ॥
कळवळिसिदनु मेलु हुय्यलु सुळिदुदादडॆ माव हेळिद
होलबु होद्ददॆ माणदॆनुतति शीघ्रगमनदलि
इळॆय तनुजॆय कोंडु नभदलि तळर्दनवन परार्ध रजनिय
लळवळिदु बायॆविट्टळंगनॆ बहळशोकदलि ॥ 32 ॥
गिरि गळिर तरुगळिर वनवल्लरि गळिर मृगगळिर रामन
तरुणियनु रावणनु कळुविनलॊय्दनॆंबुदनु
तरणि कुलजं गरुहुवुदु यॆंदरसि भाळस्थळद कुट्मल
करद करणद लॊदरिदळु दॆसॆदॆसॆगॆ बाय्विडुत ॥ 33 ॥
बरबरलु वरऋष्यमूकद गिरिय तुदियलि कंडळतिबल
हरिकुलेंद्रन तरणिसुत सुग्रीव देवननु
धुर विजय हनुमंत नीलाद्यरु सहित लिरॆ कंडुकारण
पुरुष रिवरहरॆनुत सडिलिसिदळु विभूषणव ॥ 34 ॥

चरणों में गिरी सीता उससे प्रार्थना करने लगी— "मेरे राजा, राम के दर्शन होने के पहले प्राणों को मत त्यागें।" ३० "बस करो; चलो मेरे साथ। मरनेवाले के साथ ये कैसी बातें ?" इस तरह सीता को डाँटते हुए रावण जटायु से यों बोला— "सुन जटायु ! युद्ध क्या तेरे लिए बाएँ हाथ का खेल है ? इसके पति का यहाँ आना असत्य है। सियार, उल्लुओं के तुझे नोचकर खाने के पहले ही स्वर्ग में प्रवेश कर लो।" इस तरह ताना दिया। ३१ "इस अधिक शोरगुल का पता कहीं राम को लग गया तो जैसे मेरे मामा के (मारीच के) कहने के अनुसार अनर्थ हुए बिना न रहेगा।" —इस तरह सोचते रावण घबड़ाया। अतः वह तुरंत सीता को ले आकाश में उड़ा। आधी रात बीत चुकी थी। उस कुसमय में सीता दुःख से खूब रोयी। ३२ "हे पहाड़ो ! पेड़ो ! जंगल की लताओ ! पशुओ ! प्राणियो ! राम की पत्नी को रावण हरकर ले गया —यह समाचार सूर्यकुल के श्रीराम से (अवश्य) कहना।" इस तरह सीता ने माथे पर हाथ धारे प्रणाम करते हुए दिशि-दिशाओं से गिड़गिड़ाते, रोते याचना की। ३३ इस तरह मार्गातिक्रमण होते समय ऋष्यमूक पर्वत की चोटी पर कपिकुल के स्वामी, सूर्यपुत्र सुग्रीव को वीर हनुमान, नील आदि

हार कंकण करवळय केयूर कांचीधाम नूपुर
वीरमुद्रिकॆ मुख्य मणिभूषणव मेलुदिन
सीरॆयग्रव सीळ्दु कट्टि कठोरबल रघुनाथ बर्रलिव
सेरिसुवुदॆंदिट्टळा सुग्रीवनिद्दॆडॆगॆ ॥ 35 ॥

अवनु वैतिरिसिदनु बळिका रविजगा खळनंजि मनदलि
तवकदलि तॆरळिदनु तागदॆ माणरिवरॆनुत
अवर वंचिसि हाय्दनभ्रकॆ सवॆद निशियलि निशितबल सं-
भवन कंडनुदग्रबल संपाति खळपतिय ॥ 36 ॥

बिडु बिडॆलवो परांगनॆय मॊरॆयिड्डुव हुय्यल केळ्दु सैरिसि
नडॆववरु नावल्लवॆनुत सुपार्श्वनड्डैसॆ
तडॆद नातन नीतनव नडनडुगि मायॆय नाश्रयिसि का-
लडिय नुसुळिदु हाय्दनुदधिय दांटि निजपुरिगॆ ॥ 37 ॥

पुरव हॊगलाक्षण दॊळिळॆ बाय्दॆरॆदुदूर शिला प्रतिमॆ बॊ-
ब्बिरिदवंबर कारुतरुणोदकद धारॆगळ

वीरों के साथ बैठे पाया। सीता ने सोचा कि हो सकता है कि ये कोई महान पुरुष हो। अतः उसने अपने शरीर पर के आभूषण उतारे। ३४ अपनी साड़ी की ओढ़नी के पल्ले के हिस्से का एक टुकड़ा फाड़कर निकाला, उसमें गले का हार, हाथ के कंगन, कड़े, बाजूबंद, करधनी, नूपुर, वीर-मुद्रिका आदि रखकर गाँठ बाँधी तथा 'महाबलशाली राम आएँ तो इन्हें दे देना' —इस तरह कहते हुए वह गाँठ सीता ने सुग्रीव की ओर फेंक दी। ३५ सुग्रीव ने उन आभूषणों को छिपाकर रखा। रावण सुग्रीव को देख मन ही मन डरा और सोचने लगा कि ये मुझ पर हमला किये बिना न रहेंगे। अतः उनकी आँख बचाकर, उस अँधेरी घुप रात्रि में आकाश में उड़ा। महापराक्रमी संपाति ने प्रचंड बलशाली राक्षसेश्वर को देखा। ३६ "छोड़ दो उसे। परायी स्त्री की दुहाई की पुकार सुनकर हमसे चुप रहा नहीं जाता।" —इस तरह चिल्लाते संपाती ने रावण को रोका। संपाती से विघ्न उपस्थित होने पर रावण डर के मारे काँपता हुआ उनके पैरों के मध्य घुसकर होता हुआ अपने को (किसी प्रकार) बचाकर, समुद्र पारकर लंकानगरी पहुँचा। ३७ रावण जब लंकानगरी में प्रवेश कर रहा था, तब भूमि ने अपना मुँह खोल दिया। नगरी के पत्थर की मूर्तियाँ चिल्लाने-चीखने लगीं। आकाश से रक्तिम वर्षा होने लगी। मंज़िलवाले महल टूटकर गिरने लगे। आँधी ज़ोर से बहने

मुरिदु बिद्दवु सौध वोसितु बिरुबिनलि बिरुगाळि बागिल
लोरलिदवु नरि हद्दु कागेगळा महापुरद ॥ 38 ॥
आ ततूक्षण मयतनुजे सुविनीतरुगळोडगूडि बंदु-
त्पातमुखवनु कंडु कडुनोंदा दशास्यंगे
धातरिदु मैवळियले नय नीतियलि हेळिदळु धरणी
जातेयनु तहुदुचित वल्लेंदाप्त वचनदलि ॥ 39 ॥
असुर नवनासुर विकर्मद ससिनवनें बलुविडिदु सति कै-
वशकें सिक्किदळेंब संतोषद सघाडदलि
ओसगे मिगिलैतदु होक्कनु वसतियनु वसुमतियसुते रा-
क्षसर वंशकें मृत्युवेंबुद नरियदसुरेंद्र ॥ 40 ॥
उचित विदु निनगल्लवेंदा सचिवपति नयनीति यिदवें-
वचनिसिद नन्याय वेंदनु कलिविभीषणनु
प्रचुर वागियें केडु राक्षस निचयकहुदेंदोरलिदळु ताय्
रचनें कॆडुवुदु नम्मदेंदनु माल्यवंतखळ ॥ 41 ॥
अवर लेक्किसदादनवनुळिदवरु हेळिद मातनुरु वै-
भववना सप्तांग साम्राज्यद सघाडिकेय

लगी। महानगर के द्वार पर सियार, चील, कौए आदि चिल्लाने लगे। ३८ तुरन्त मय राक्षस की पुत्री मंदोदरी सुशिक्षितों के साथ वहाँ पधार, इन अपशकुनों को देखकर बहुत दुःखी हुई। तत्पश्चात् वस्तुस्थिति का पता लगने पर (अपने पति) रावण के पास पहुँच अत्यंत विनयपूर्ण, नीतिसंपन्न वचनों से बड़ी ही आत्मीयता के साथ उसने कहा— "सीता का यों लाना ठीक न हुआ।" ३९ (लेकिन) राक्षसेश्वर ने अपना दुष्ट कार्य ही श्रेष्ठ कार्य तथा सही कार्य समझकर सीता अपने वशीभूत हुई —यों मानते हुए संतोषाधिक्य में अपने राजमहल में प्रवेश किया। बिचारा यह न समझ पाया कि भूमिजाया (सीता) राक्षसकुल के लिए मृत्यु है। ४० प्रधान सचिवों ने, कई प्रकार, विनम्र वचनों से (रावण को) समझाया, यह (सीतापहरण) कार्य ठीक नहीं है। वीर विभीषण ने कहा— 'यह बड़ा अंधेर है।' माँ चटपटायी कि इससे राक्षसकुल के लिए यह बड़ा अनिष्टकारी है। माल्यवंत ने कहा कि इससे हमारा अनुशासन विगड़ जायगा। ४१ रावण ने उनकी बातों पर ध्यान न दिया। अन्यों के समझाने पर भी ध्यान न दिया। अपना वैभव, राज्य, कोश, दुर्ग (क़िला), बल, वग़ैरः सप्तांग संपत्ति सीता को

अत्रनिजॆंगॆ तोऱिसलु नोडदॆ निवसनद मुसुकिनलि चिंता-
र्णव दॊळगॆ मुळुगिर्दळात्मप्रियन नॆनॆहिनलि ॥ 42 ॥
परिपरिय मंत्रिगळ नाना परिय मायाललनॆयर वो-
सरिग वृद्ध स्त्री जनंगळ कैयलवनिजॆय
परियनरियलु मातनाडिसि तिरुहुमुरुहिनलॊडवडिसि नय-
सरव काणदॆ कंगुरुडनंतिर्दनसुरेंद्र ॥ 43 ॥
शाप तनगुंटागि मन्मथ तापकंगवनित्तु वळिकव
ना पतिव्रतॆयनु निशाचर गुरुवचन दिंद
तापवनु हिंगिसुवशोकॆय तोपिनलि सरमॆ त्रिजटॆयर
कापिनिंदिरिसिदनु तॊरवॆय रायनंगनॆय ॥ 44 ॥

हन्नॊंदनॆय संधि

सूचनॆ— आदिमायातीतननुपम वेदसिद्धनु जगद नररोपाधियलि हलुबिदनु हलवंगदलि जानकिय ।

कुशनॆ केळ् मारीच राक्षसनुसुरु हिंगिद वळिक नृप चिं-
तिसुत तिरुगिदननुज नवनी नंदनॆय दॆसॆगॆ

ले जाकर उसने दिखायी। सीता ने वह सब कुछ देखा ही नहीं; अपनी साड़ी के आँचल से मुँह छिपाकर (रोते हुए) राम की स्मृति में चिंता-सागर में डूबी रही। ४२ रावण ने सीता के मन को परखने के लिए अन्यान्य मंत्रियों, तरह-तरह की मायावी युवतियों, छल-प्रपंच-नटना में पटु बूढ़ियों—आदियों को सीता के पास भेजा। उन्होंने घुमा-फिराकर कई युवतियों से सीता को राजी करने की कोशिश की। फिर भी उसे किसी प्रकार राजी होते न देखकर, एक भी मधुरोक्ति उससे सुन न पाने के कारण रावण को कुछ भी सूझा नहीं। ४३ रावण अपने पूर्वजन्म के शाप के कारण कुछ भी न कर सकता था। फलस्वरूप वह मन्मथ-ज्वर का शिकार बना। तत्पश्चात् राक्षसों के गुरु की सलाह से ताप को दूर करने के निमित्त पतिव्रता सीता को सरमा तथा त्रिजटा की देखरेख में, अशोक वन में रखवाया। ४४

ग्यारहवीं संधि

सूचना— आदिमायातीत, वेदों से भूरि-भूरि रीतियों से प्रशंसित श्रीराम साधारण मनुष्य की भाँति सीता के लिए कई रीतियों से बिलाप करने लगे।

सुनो कुश; मारीच राक्षस के प्राण निकल जाने पर चिंताग्रस्त

ससिन वागिरदेनु कणुकंपिसुतलिर्दे वामदलि सलॆ सं-
धिसर्दॆ माणदपाय वॆमगॆनुतरसनैतंद ।। 1 ।।
बरबरलु दुःशकुनचय गोचरिसिदवु सव्यापसव्यद
लरस निश्चयिसिदनु बहळापदद परिसरव
कौरगिदाननदश्रुकणदुब्बरद खेदद वामकर कं-
धरद बिलु बडिगोल तम्मन कंड निदिरिनलि ।। 2 ।।
अकट गंटल कोय्द नबुजांबकियनुळिदेकैदिदनॊ जा-
नकिय जव्वन भरॆय वदनालोकनंगैव
युकुति यिल्लॆ बॆणिकॆ मनदलि मकरिसुत्तिर्दॆ गमन चेष्टा
प्रकरणद लॆंदरस जग्गनॆ जरिद निदिरिनलि ।। 3 ।।
ई गमिसुवी पुरुष निनकुलनाग दिरनॆंदीतमनदलि
रागिसिदना कर्णयदलि कैयॊडनॆ जानकिय
नीगि बंदुम्मळद बॆंदरिन बॆगॆयलि बॆंडागिशिरवनु
बागिदनु बिसुगुदिय कंगळ नीरधारॆयलि ।। 4 ।।
हेळु हेळॆनाय्तु जनक नृपालजॆय हृदनॆनुहवणिन
कीलणिकॆ तानॆनु नुडि नीनंज बॆडॆनलु

राम अपने भाई लक्ष्मण तथा सीता के पास आने के लिए लौट पड़े। वे सोचते आ रहे थे कि बायीं आँख फड़क रही है। परिणाम अच्छा नहीं लग रहा। विपत्ति निश्चित रूप से हमारा इन्तजार कर रही है। १ राम जब लौट रहे थे उनके दाएँ-बाएँ अपशकुन दृष्टिगोचर होने लगे। उन्होने निश्चय किया कि कोई बड़ी विपत्ति उनकी प्रतीक्षा कर रही है। राम ने देखा कि लक्ष्मण मुँह लटकाए, अत्यंत दुःखी दीन मुद्रा में, आँखों में आँसू भरे बायीं भुजा में धनुर्बाण लटकाए सामने आ रहे हैं। २ "हाय-हाय ! (लक्ष्मण) तूने यह क्या किया ! इसने गला ही काट दिया न ? सीता को (अकेली) छोड़कर लक्ष्मण क्यों आया ! इस एक अवसर पर उसे (सीता को) छोड़ जाने के कारण युवती जानकी का मुखड़ा पुनः देखने का कोई मार्ग नहीं है —यही भावना (इस समय) बलवत्तर हो रही है।" —इस तरह सोचते-सोचते राम एक क्षम उतर गये। ३ 'यहाँ जो (सामने) पुरुष आते दीख पड़ रहे हैं वे रविकुलोत्पन्न राम के सिवा और कोई नहीं हो सकते' —इस विचार से लक्ष्मण खुश हुए; फिर भी सीता को (अकेले में) छोड़ आने की स्मृति जाग्रत् होते ही वे पसीने-पसीने हो गये तथा व्याकुलता से अश्रु बहाते उन्होंने सिर झुका लिया। ४ "कहो, कहो भाई, क्या हुआ ? जानकी की स्थिति गति कैसी

हेळिदनु देवियरु कॆरळ्द करालवचनवनदरिं नॆन्ननु
बीळ्कॊंडॆ बरवार्यॆनुत बीळिसिदनश्रुगळ ॥ 5 ॥
कॆडिसिदॆयला तम्म दुर्भय दडवियलि भयभरित वनितॆय
बिड्डुवरे यकटकट बल्लव नॆल्लरिगॆ नीनु
मडदियनु नाविन्नु काबुदु कडॆगॆ हुसि हॊम्मरिय मायॆय
तॊडर्किनि चित्तदलि तोरिदॆ तम्मतनगॆंद ॥ 6 ॥
एनहळॊ वैदेहि देहाधीनॆंगावुदॊ हदनु सीता
मानिनिय मुखसंदरुशनवसाध्य नमगॆनुत
जानकिय ध्यानदलि चित्तग्लानदलि गतिगुंदु तडवियॊ
लून हरुषितनॆदिदनु निजपर्णमंदिरव ॥ 7 ॥
कळॆगळळिद हिमांशु बिंबद हॊळहिनवॊलळि गब्बिगन हॆ-
क्कळद कृतियवॊलुब्बरद जव्वनद जाणुवॆय
सुळिवु सडिलिद सतिय रतियवॊलिळॆय नंदयनॆयिल्लदा दळ
निळयविरॆ कंडिवरु कळवळिसिदरु करणदलि ॥ 8 ॥
ऎलॆ सुमित्रासूनु सीतॆय सुळिवु निळयदॊळिल्लदिदॆ कं-
बॆळगु काणिसदिदॆ मदीय विशाल भवनदलि · · ·

है ? (तुम्हारा आने का) रहस्य क्या है ? डरो मत । सच-सच कहो ।" इस तरह राम ने पूछा । तब लक्ष्मण रोते-रोते कहने लगे कि सीता माता ने क्रोध में आकर जो कठोर वचन कहे; तथा मुझे बिदा किया । इसलिए मुझे मजबूर हो आना पड़ा । ५ "भाई, तूने यह क्या (खराब काम) कर दिया ? क्या इस भयानक वन में डरती सीता को अकेले छोड़कर आये हो ? हाय ! यह तूने, जो अधिक समझदार है —क्या किया ? 'स्वर्णमृग की माया में जो मैं फँस गया —कि अब सीता का दर्शन असंभव है।' —ऐसा मुझे लगता है ?" इस तरह राम ने कहा । ६ "न जाने सीता की क्या दुर्दशा हो गयी है । न जाने उसके (बदन) ऊपर क्या संकट आ पड़ा है ? अब हम सीता का मुखड़ा देख न पाएँगे । इस तरह सीता के बारे में सोचते, व्यथित राम जंगल में, चलने में अपने को असमर्थ पाता हुआ, हर्ष-रहित हो पर्णशाला में लौटा । ७ (अपनी) षोडश कला खो बैठे चंद्रबिंब की तरह, नीच कवि के अहंकार भरे काव्य की तरह, यौवन की सुंदरता खो बैठे रति की तरह सीता-विरहित पर्णकुटी देख राम-लक्ष्मण दोनों चिंतित हुए । ८ "हे लक्ष्मण ! सीता की झलक भी पर्णशाला में नहीं दिखायी पड़ती । मेरी इस विशाल पर्णशाला में आँखों की थोड़ी सी रोशनी भी दिखायी नहीं पड़ती (अँधेरा ही छाया हुआ है ।)

ललित दरहसितानाब्जा कलित नासाश्वासपरिमळ
सुळियदिर्दे सीतेयनु तोरै तम्म तनगेंद ॥ 9 ॥
इल्लदिर्दे सुळिवनुज केळुत्पुल्ल नयनेय नोट घन ध-
म्मिल्ल भुजतंबितेय कोंकिद कुरुळ तरवद
भुल्लवणेय विशाल मुख वेंम्मलि तोरदिदेनु सीतेय
नेल्लिरिसि नी बंदे हेळै तम्म तनगेंद ॥ 10 ॥
तोरदिर्दे कळहंसगमनेय तोरिकेय गति कंगळिगे मै-
दोरदिर्दे लावण्य रुचि हिमरुचिनिभाननेय
बीरदिर्दे सौभाग्य सारद सूरे सोबगिन सिरियिदेनै
मारुमातिल्लेके हेळै तम्म तनगेंद ॥ 11 ॥
हिरिदु मुनिसिल्लव निजेगे निष्ठुरते जन्मदोळिल्ल गर्वद
गरगरिके मुन्निल्ल जडतेय जोके तानिल्ल
हरहुवळु हरुषवनु तन्नय दरुशनदलेले तम्म हेळ-
च्चरिय देनै काणबारळु सीते तनगेंद ॥ 12 ॥
कनक मृगवनु तारेनेंबी मुनिस दोंदिर्दे तम्म तन्नय
मनद संशयवनु निवारिसु होगु गृहांतरव

हंसमुख सीता का कमल जैसा मुख; उसके प्रश्वास से फूट पड़नेवाली सुगंध की लहर भी कहीं प्रकट नहीं है। हे मेरे भाई, मुझे सीता के दर्शन करा दो।" इस तरह राम ने कहा। ९ सीता के खिले आँखों का नयन-मनोहर दृश्य अब यहाँ देखने को नहीं मिल रहा। भुजाओं पर से लटकते (उसके) लम्बे-लम्बे बालों से युक्त तथा घने घुँघराले बालों से आवृत; चमकते हुए सीता के विशाल मुख के दर्शन मुझे नहीं मिल रहे। भाई लक्ष्मण, तुम उसको कहाँ रख आए हो? कहो न!" —इस तरह राम ने पूछा। १० "राजहंस की तरह चलती सीता की वह मोहक चाल अब आँखों को नहीं दिखायी देती। चन्द्रमुखी (सीता) की मुखकांति दृष्टि-गोचर नहीं हो रही। सौंदर्य-संपत्ति से विराजमान सीता का सौभाग्य सर्वस्व दृष्टिगोचर नहीं हो रहा। मेरे भाई, तुम जवाब क्यों नहीं दे रहे?" इस तरह राम ने कहा। ११ "सीता तो अधिक क्रोधी-नहीं; निष्ठुरता तो वह जानती ही नहीं; अहंकार तो उसमें है ही नहीं। आलस्य ने उसे छुआ तक नहीं। उसके दर्शन मात्र से संतोष का वातावरण निर्मित होता है। ऐसी सीता तो दिखायी नहीं दे रही। यह कितने आश्चर्य की बात है? कहो भाई।" —इस तरह राम ने कहा। १२ "स्वर्णमृग न

कनक मृगवनु तंदॆनॆंदे वनितॆगनृतव नुडिदु मडदिय
नॆनगॆ तोऱिसु साकु बळिक कृतार्थ तानॆंद ॥ 13 ॥
भ्रमिसि तीतन मन विवेकद समतॆ सडिलितु सैरणॆयना
क्रमिसिदुदु धृति कळवळिसिदुदु करण वंगदलि
विमुखवाय्तुऱिवकट सीतारमॆ पलायन वागदिरळॆ-
दमरिदनु तापदलि लक्ष्मण हॊक्कनॆलॆवनॆय ॥ 14 ॥
हॊगुतलुत्तर पूर्व पश्चिम दिगुविभागवनोडि काणदॆ
मुगिदुदिन्नॆनॆनुत मुसुकिदमनद मरुकदलि
ऒगुव कंबनिगळलि कायद बॆगडिनलि बॆळविगॆय शोकद
सॆगळिकॆय शशियंतॆ लक्ष्मणदेवनळवळिद ॥ 15 ॥
एननॆंबॆनु राघवंगिन्नेन हेळुवॆ रामचन्द्रं-
गेन माडुवॆनकट रघुकुल सार्वभौमंगॆ
जानकिय होगाडिदव दिट तानला हायॆनुत मरुगिद
ना निकेतन मध्यदलि मागधिय मगबळिक ॥ 16 ॥
आसॆ बिडदळि मनदला सीता सतियना दक्षिणाशा
वासदलि नोडिदनु हरिणाजिनद हासिनलि

लाने की वजह शायद वह नाराज हो गयी होगी। भाई लक्ष्मण! मेरे मन की शंका को दूर करो। पर्णशाला (कुटी) में पहुँचकर झूठ-मूठ कह दो कि स्वर्णमृग लाया हूँ। तभी वह प्रकट होगी। उसे बुला लाकर मुझे दिखा दो। बस इतना तो करो। कृतार्थ हो जाता हूँ।" इस प्रकार राम ने कहा। १३ "राम का मन भ्रमिष्ट हुआ है। विवेकी मन का समतोल वे खो बैठे हैं। सहनशीलता और धैर्य भी कम हो गया है। शरीर तो अत्यंत व्यथित है। समझने की शक्ति में भी व्यत्यय आ गया है। सीता (शायद) कहीं भाग गयी होगी" —इस तरह सोचते-सोचते मन ही मन कुढ़ते लक्ष्मण ने पर्णकुटी में प्रवेश किया। १४ पर्णकुटी में प्रवेश करके (उसके) उत्तर, पूर्व, पश्चिम भागों में सीता को ढूंढ़ने पर न मिलने से 'अब तो मानों सब समाप्त ही हुआ।' इस निष्कर्ष पर पहुँचे लक्ष्मण अत्यंत दुःखी हो आँसू बहाते, काँपते, पाला पड़े चन्द्रमा की तरह चैतन्य-रहित हो काठ की तरह खड़े हो गये। १५ "राम को क्या जवाब दूं? रामचन्द्र से कहने के लिए मेरे पास क्या समाचार धरा है? रघुकुल सार्वभौम का अब क्या करूँ? (कैसे समझाऊँ?) सीता को खो देनेवाला (पापी) मैं ही हूँ न? हाय-हाय!" इस तरह विलाप करता लक्ष्मण पर्णकुटी के मध्य खड़े शोक-विह्वल हुए। १६ इतने पर भी

आ सरोजांबकन राणी वासवनु काणदे मगुळ्दा
वासवनु होरवंटु कैसन्नेगळ लिल्लेंद ॥ 17 ॥
हाह मानिनियेनुत भीतिगे मोहि मौळियनणेदु गेहद
देहळियलप्पळिसि बिद्दनु राम मूर्चेयलि
ई हदन कंडाक्षणदोळु विदेहनेरडनेयळियना वै-
देहियरसन चरणसीमेय लिळुहिदनु तनुव ॥ 18 ॥
घळिगे परियंतर महीपति चलिसदिर्दनु चंडिसिद कळ-
वळद करणद कामताप विलासवचनदलि
तिळुवु मरवेय सुरत सौख्यद कळेय कामातुरदभंगिय
बळकेगळ बेळे सिरिय लिर्दनु भ्रांतियोगदलि ॥ 19 ॥
बयलनप्पुव नोप्पविडुवनु नयनदलि नगेनुडिय चदुरिन
नयव तोरुव नगुवनलिंगिसुव चुंबिसुव
नियत वचनप्रणय परिसंचयद सुरताळाप सुख दभि-
नयव तन्नोळे मरेदनेरडिट्टा महीपाल ॥ 20 ॥
ओदेरडु नाल्केंटरेणिकेगळोदिदा स्मरतापद भ्रमे-
यिद बेंदरिदु कंदेरेदु कामिनिय करेकरेदु

निराश न होते हुए— शायद पर्णकुटी के दक्षिण भाग में होगी —यों सोचते लक्ष्मण ने जाकर वह जगह देखी जहाँ पर सीता मृगचर्म बिछाए सोती थी। वह जगह भी सूनी दीखी। इस तरह (कहीं भी) राम पत्नी को न पाकर बाहर आए तथा हाथ के इशारे से बताया कि सीता कहीं नहीं है। १७ "हाय मेरी सीते!" इस तरह कहते भयान्वित हो सिर पीट लेते हुए जब राम पर्णकुटी में प्रवेश कर रहे थे तो देहरी पर ही मूर्च्छित हो गिर पड़े। राम को मूर्च्छित हो गिरते देख जनक राजा के दूसरे दामाद (लक्ष्मण) भी वैदेही पति के चरण-तले लेट गये। १८ एक घड़ी भर राम निश्चेष्ट (अचेत) हो पड़े रहे। तदनंतर अत्यंत व्यथित हो विरह ताप से चटपटाते हुए, देह की सुध-बुध खो जाने की स्थिति में कामपीड़ित व्यक्तियों की तरह मन्मथ सौख्य (सुरत-शृंगार) की बेचैनी की स्थिति का अनुभव करते हुए उद्भ्रांत स्थिति में लीन रहे। १९ (सीता के भ्रम में) राम शून्य का ही आलिंगन करते हैं। प्यार से टकटकी लगाकर देखते हैं। हँसते हुए बातें करते अपनी चतुराई प्रकट करते हैं, कभी हँसते हैं; कभी लिपट लेते है; कभी प्यार से चुंबन करते हैं। इस प्रकार राम बुद्धि-भ्रमित होने के कारण प्रेम की बातें करते-करते ऐसा अभिनय करते हैं, मानों कामसुख [illegible] द) प्राप्त कर रहे हों। २० प्रथम,

तंदेनिदको होम्मडिय निंदेयेंदु बिल्लनु बिसुटु बागिल
मुंदे करकरदंगलाचिदना महीपाल ॥ 21 ॥
अले सुमित्रासूनु केळी निळयदोळगिल्लवनिसुतें नी
तिळिदुको मनेयल्लविदु नाव् तप्पिबारवले
निळेयविदु ता नम्मदादडे सुळियदिहळे सीतें नीन-
स्खलित मूर्खनला मतिभ्रमेयाय्तु निनगेंद ॥ 22 ॥
अहुदु जीय मदीय पूर्वद गृहवु दिटवे दिटवेनलु निज-
वहुदु सीतेय तोरिदडे नीनेंद नुडिनमगे
सहज नी लक्ष्मणनो कपटद सहभवनो नीनारु सत्यद
लहिमकरकुलदवरवोलु निर्धरिसि हेळेंद ॥ 23 ॥
देवरोड हुट्टिदनु तानहुदाव संशय बिल्लवेने निज-
वे विदेह कुमारियनु नाव् नम्मपुरदिंद
ई विपिन कोंडगोंडु बंदेवो देवियनु नाविरिसि बंदेवो
भूवरन मेलाणे तप्पदे हेळु तनगेंद ॥ 24 ॥

द्वितीय, चतुर्थ, अष्टम, दशमावस्थाओं के मन्मथ-ताप (ज्वर) के भ्रम से भयभीत हो राम ने आँखे फाड़े-फाड़े देखते हुए सीता को ज़ोर-ज़ोर से पुकारा। 'यह देखो स्वर्णमृग लाया हूँ; देखो-देखो यहाँ है' —इस तरह कहते हाथ का धनुष फेंक पर्णकुटी के सामने खड़े हो (दरवाज़े में) सीता को बुला-बुलाकर हाथ जोड विनती करने लगे। २१ "सुनो लक्ष्मण; इस घर में सीता नहीं है। (अतः) यह घर हमारा नहीं है। हम ग़लती से अन्यों के घर तो नहीं आए? अगर यह हमारा घर होता तो क्या सीता हमारी अगुवानी करने नही आती? तू निरा मूर्ख है। तेरी बुद्धि भ्रमित है।" —इस तरह राम ने कहा। २२ "हाँ स्वामिन्" —इस तरह लक्ष्मण के कहने पर "क्या सचमुच यह वह हमारा पूर्व का ही घर है?" —इस तरह राम ने प्रश्न किया। "जी हाँ; सचमुच।" इस तरह लक्ष्मण से उत्तर मिलने पर "सीता को अगर दिखा दो तो तेरी बात सही मानूं; क्या तू सचमुच लक्ष्मण है या कोई नकली (धोखेबाज़) भाई है? तू कौन है? सूर्यवंशियों की तरह सत्य बोलो।" इस तरह राम ने आदेश दिया। २३ "भगवन्! मैं ही आपके साथ-साथ पैदा हुआ हूँ। इसमें शक के लिए किसी प्रकार की गुंजाइश नहीं।" —इस तरह लक्ष्मण ने कहा। "सचमुच? यह बात है? क्या हम विदेह-राजकुमारी को हमारी अयोध्या नगरी से इस वन-प्रान्तर प्रदेश में बुला ले आये थे या वहीं छोड़ आये थे? पिता की सौगंद! सच-सच कहना!" इस तरह राम ने

तंदेवाव् देवियर नादडॆ तंदडॆल्लि विदेहसुतॆ रघु-
नंदननु तानहुदॆ पल्लट वागॆनलॆ नोडु
ऎंदॆनलु कैमुगिदु दिट रघुनंदननु नीनहुदॆनलु नगु-
तॆंदनिदु हुसिमातु मातनिदोंद केळॆंद ॥ 25 ॥
घन मदोत्कट धारॆयिल्लद वनमदद्विपवुंटॆ तीक्षण
विनुत दीधिति यिल्ल दिननुंटॆ जगत्तिनलि
वनज विल्लद कॊळनु वरवाहिनिगळिल्लद वार्धि सीता
वनितॆयिल्लद रामनुंटे भूमियॊळगॆंद ॥ 26 ॥
जीय चित्तैसज्ञरे नर रायतवु निमगेकॆ नी ना-
रायणनला निम्म नीवु विचारिसुवु दॆनलु
मायॆ यभिरंजनॆय नुडि रमणीयवेयॆलॆ तम्म दिट ना-
रायणनु तानादडंगनॆ यिल्लवेयॆंद ॥ 27 ॥
आदॆडॆलॆ रघुनाथ चित्तैसादिलक्ष्मियनवनितनुजॆय
नी दिविजमानव भुजंगम भुवन मूरुरलि

पूछा। २४ "हम देवी सीता को साथ लिवा लाये।" —इस तरह लक्ष्मण के उत्तर देने पर— "तब वैदेही कहाँ है? ज़रा देखो तो सही; मैं सचमुच रघुनंदन हूँ या मुझमें कोई अंतर आ गया है?" —इस प्रकार राम ने पूछा। तब लक्ष्मण ने हाथ जोड़े कहा— "आप ही रघुनंदन हैं।" तब राम ने मुस्कुराते कहा— "यह झूठ है। मेरी यह बात सुनो।" २५ "क्या इस जगत में ऐसा वन्य हाथी है जो मस्ती में आकर मदजल न बहाता हो? प्रखर किरण-विरहित सूर्य का अस्तित्व क्या संभव है? कमल-विरहित सरोवर, समुद्र ऐसा जहाँ नदियाँ आकर नहीं मिलतीं, इस जगत में पाना संभव है क्या? उसी प्रकार सीता से बिछुड़े राम का (जीवित) रहना क्या कभी संभव है?" —इस तरह राम ने पूछा। २६ "सुनो मेरे भैया! क्या आप इतने अज्ञानी हैं? (इस प्रकार) मानवस्थिति को क्यों अपनाते हैं? आप क्या स्वयं नारायणस्वरूपी नहीं है? अपने आपको पहचान कर देखिए।" —इस तरह लक्ष्मण के समझाने पर राम ने उत्तर दिया— "माया-सम्बन्धी ये वचन कितने सुन्दर तथा मनोहर हैं। भाई, तुम्हारे कहे अनुसार अगर मैं सचमुच नारायण हूँ तो (मेरी) लक्ष्मी कहाँ। बोलो तो। २७ "ऐसी बात है तो सुनो रघुनाथजी; आदि-लक्ष्मी भूमिसुता सीता का अन्वेषण देव, मानव, नाग —आदि तीनों लोकों में करता हूँ। अगर सीता का पता कहीं भी न लगा, तो ब्रह्मादि देवताओं को (पकड़) निचोड़ डालता हूँ। नहीं तो, मेरे इस हाथ में आयुध के

शोधिसुवेनिल्लदिरॆ विधि मोदलाद देवर हिंडि हिळिवेनु
कंदुविदु तानिद्दु फलवेनॆंदु घर्जिसिद ॥ 28 ॥
तडॆदरॆंदॆ देवधैर्यंव हिडियलरियदॆ देवियरु न-
ट्टडवियलि नडॆदरुसु तिरुलॆलेदेव नम्मुवनु
तडॆयदावी गुल्म लतॆमर गिडगळिह्रबिन लरुसि नोडुव
नडॆयियॆंदग्रजन निदिरिसिदनु सौमित्रि ॥ 29 ॥
मगुळॆ मनसिन संशयदलॆलॆ दगड होदकॆय मनॆय होक्कव
रगिदु सूरिन शिखिय बॆळकिनलरसिदरुसतिय
सोगस काणदॆ धनुतनुत्रव तॆगॆदुकोंडरु तॆरळिदरु क-
प्पोगुव कत्तलॆयोळगॆ कैगोळ्ळिगळ बॆळकिनलि ॥ 30 ॥
अरुसिदरु ताविद्द ताणद तॆरुपुगळ तरुगुल्म लतिकॆ ग-
ळिह्रबिनलि किन्नरिय राडुंबोलन सीमॆयलि
मरुकोळिसि मत्तोम्मॆ मनॆयोळगरुसि काणदॆ कंबनिय क-
ट्टोरतॆयलि करॆकरॆवुतॆतंदरु वनांतदलि ॥ 31 ॥
विविध गुल्म निकुंजदलि भूविवर वळयंगळलि भूरुह
निवहदलि निर्जर निकुंचित पल्वलंगळलि

(शस्त्रास्त्रों के) रहने से (या रखने से) क्या प्रयोजन ?" —इस तरह लक्ष्मण गरजने लगे। २८ "हमारे आने में देर होने के कारण अधीर बनी सीता (देवीजी) हमें जंगलों के मध्य (विचरती) ढूंढ़ रही होंगी। अब हम देर न करें। ये पेड, पौधे, झुरमुट, लता-गुल्म आदियों के मध्य देवीजी को ढूंढ़ निकालें। चलिए, चलें।" —इस तरह (सांत्वना देते) कहते लक्ष्मण ने भाई को उठाकर खड़ा किया। २९ फिर भी मन में उपजे संदेह के कारण, पत्तों से आच्छादित पर्णकुटी में प्रवेश कर सहमे-सहमे हाथ के मशाल की रोशनी की सहायता से सीता को फिर एक बार ढूंढा। हेतु निष्फल होने पर (प्रयोजन न होने से) धनुर्बाण, कवच आदि साथ लिये, जलती लकडी हाथ में लेकर उसी की रोशनी में पेड़ों के मध्य के अंधेरे में सीता को ढूंढ़ निकालने के लिए निकले। ३० सामान्यतया (प्रथा से) अपने विचरित स्थानों में, पेड़-पौधे-लताओं के झुरमुटों में, अप्सराओं के विहार-स्थानों में भी सीता के लिए अन्वेषण किया। फिर पर्णशाला (कुटी) लौट आए। फिर (अन्दर) ढूंढ़ा। न दीख पड़ने पर, आँसू बहाते, सीता का नाम लेकर पुकारते-पुकारते जंगल के आँचल (कोर-किनारे) की तरफ़ से होकर आगे बढ़े। ३१ कई झाड़ियों में, गुफाओं में, पेड़ों के झुंड में देवताओं के विहार (केलिक्रीड़ा) के सरोवरों में तथा पास-पड़ोस में सीता

पवन निस्वन पर्णरव प्रस्रवण धाराध्वान खगमृग
निवह निनददलऽरसि नोडिदरिवरु जानकिय ॥ 32 ॥
मुनि मुनिगळाश्रमद विमळांगनेयरलि वनवीथियलि कुमु-
दिनि कुशेशयदुरु तटाकंगळ तटंगळलि
ध्वनिगळिद्देडेगळलि तनुसंजनित खेदद घनविषादद
मनद मनुकुल राजसूनुगळऽरसिदरु सतिय ॥ 33 ॥
वनजवनु कंडरस वनजाननेय कंडिरेयेंदु कैरव-
वनु निरीक्षिसि कैरवाक्षिय कंडिरेयेंदु
विनुत कोकव कंडु कोकस्तनेय कंडिरेयेंदु बेसगों-
डनु मदाळिय कंडु केळिदनळिकुळाळकिय ॥ 34 ॥
कंडु हंसेय हंसगमनेय कंडुदुंटेयेंदु कोगिले
गड्ड कोकिल ललित निनदेयकाणिरलेयेंदु
मंडळिय मधुर ध्वनियगिळि विंडिनलि कळकीरवचनद
हेंडतिय नीव् काणिरले येंदरस बेसगोंड ॥ 35 ॥

की तलाश की। हवा के चलने का शब्द, पत्तों की मर्मर ध्वनि, झरनों के शब्द, मृग-पक्षियों की ध्वनियाँ जहाँ कहीं भी सुनायी पड़ीं, वहाँ सब जगह सीता के लिए तलाशी की गयी। ३२ ऋषि-मुनियों के आश्रमों की स्त्रियों के मध्य, जंगल के रास्तों में, रात्रि के कमल तथा लाल कमलों के खिले सरोवरों के किनारे, जहाँ कहीं भी कुछ आहट सुनायी दी वहाँ (पास-पड़ोस में) सब जगह, दैहिक ताप तथा मानसिक क्लेश सहते मनुवंश के राजकुमारों (राम-लक्ष्मण) ने सीता के लिए खोज की। ३३ कमल को देखकर— 'मेरी कमलमुखी को क्या तुमने देखा हैं ?' नील कमल को देखकर, 'क्या तुमने मेरी नील नेत्रों वाली को देखा हैं !' चक्रवाक को देख— 'हे चक्रवाक ! कोकस्तनी (मेरी सीता) को तुमने देखा है ?' भ्रमरों को देखकर, 'क्या तुमने भृंगकुंतला (नील केशी) मेरी सीता को देखा है ?' —इस प्रकार राम ने जिन-जिन सत्य प्राणियों को देखा उन-उनसे गिड़गिड़ाकर पूछा (प्रार्थना करते पूछना शुरू किया)। ३४ 'हे हंस ! तुम्हारी जैसी शोभन चालवाली (सीता) को देखा है ?' 'हे कोयल, तुम्हारी जैसी मधुर कंठवाली को (सीता को) तुमने कहीं देखा है ?' 'हे कीर (सुग्गे) ! तुम्हारी जैसी वाणी में बोलनेवाली (मेरी सीता) को कहीं देखा है ?' —इस तरह मधुरालाप में व्यस्त तोतों के समूह से राम ने पूछ लिया। ३५ "हे हिरन, तुमने मेरी हरिणाक्षी (तुम जैसी आँख वाली)

ऎलॆ हरिण हरिणाक्षियनु करिकळभवे करिकुंभकुच मं-
डलॆयनॆलॆ हरियक्ष बडनडुविन नितंबिनिय
ऒलुमॆ कातिय सातिशय निर्मलॆय संभोगप्रवीणा
कलित कौतूहलॆय कंडडॆ तोऱितनगॆंद ॥ 36 ॥
ऎलॆलॆ मालति जाति केतकिगळिर नीवामोदभारा
कलित ललितस्मित लतांगिय तुंगकुच भरॆय
सुळिव काणिरले सुधारस ललित बिंबाधरॆय वेणी
विलसितॆय विलुळित कटाक्षॆय काणिरलॆयॆंद ॥ 37 ॥
बदरि बिल्व तमाल वट हिंगुद कपित्थवशोक कुरवक
कदळि खर्जूराम्र जम्बुकदम्ब दॆडॆगळलि
चदुरॆयनु चपलाक्षियनु मृगमद सुगंधिय मानगुण सं-
पदॆय सीतॆय कंडुदुंटेयॆंदु बॆसगॊंड ॥ 38 ॥
कॆदऱिनोडिद नुदुरिदॆलॆगळ हॊदऱॊळॆळॆ लतॆयॊवरि गळॊळु
बॆदकि नोडिदनेऱि नोडिदनाम्र पल्लवव

को, हे हाथी के शावक, तुम्हारे गंडस्थल जैसे (उभरे) स्तनों वाली मेरी सीता को, हे सिंह, तुम्हारी जैसी कृशकटि वाली को (पतली कमर वाली मेरी सीता को) कहीं देखा है ? मेरी अत्यंत प्रीतिपात्र, अति परिशुद्ध, सुरत सुख प्रदान करने में अति चतुर, मेरी सीता को दिखाने की कृपा करें।" —इस तरह कई रीतियों से राम प्रार्थना करने लगे। ३६ हे मालती-पुष्प, हे कुंद, हे केवड़े, (केतकी), हर्षोत्फुल्ल, हमेशा हँसमुख, उभरे स्तनों वाली, लतांगी (लता जैसे लचकते अंगोंवाली) मेरी सीता का कहीं तुमको पता है ? अमृत-रस भरे बिम्बा फल जैसे ओठों वाली, सुंदर जूड़े से युक्त, चंचल नेत्रों वाली मेरी सीता को कहीं देखा है ? इस तरह राम ने प्रश्न किए। ३७ बेर, बिल्व, कदम्ब, वट, अर्जुन, ताल, जामुन, कनेर, खजूर, आम, शाल, कुरव आदि वृक्षों के पास गये तथा बकुल, पुन्नाग, चन्दन, केवड़े आदि के वृक्षों, पौधों से याचना करते पूछते फिरे कि मेरी चतुर, चंचल नेत्रों वाली, कस्तूरी सुगंधयुक्त अंगों वाली वरानना श्रीसीता को कहीं भी देखा है ? ३८ पेड़ों से गिरे पत्तों के समूह को राम ने छितरा कर देखा (कि कहीं सीता छिपी पड़ी हो), लताग्रहों के मध्य झाँक-झाँककर देखा (कि कहीं सीता वहाँ बैठी हो। आम के पेड़ों पर चढ़ पल्लवों में परख-परख कर देखा। सीता के विरह से उत्पन्न उन्मत्त अवस्था में राम ने केला, खजूर आदि के वृक्ष, पौधों को हिला-हिलाकर देखा; कमलपत्रों को सरका-सरकाकर देखा तथा (इसी तरह अन्य कई प्रकारों

कदळि खर्जूरादि तरुगळनदुरिनोडिदनबुजदेलेगळ
कंदरिनोडिदनुदित विरह भ्रमेयलवनिजेय ॥ 39 ॥
मिसुप चंद्रोपलद लुडे बिंबिसुव तन्नय रुहने त-
न्नसिय ळेंदे नोडि माताडिसुव नडिगडिगे
शशिमुखियें सारसमुखियें शोभिसुव दर्पणमुखियें मुखदो
ड्रसुविदनु सलहेंदु करुणव तोडिदनु राम ॥ 40 ॥
सीतें सीतें समुद्र सुमनो जातें जानकि जनकनृप सं-
भूतें ओ अेंदेनलु बारदे करुण विल्लवल
ऐतककटा तन्ननीपरि धातुगेंडिसुवदुचितवे सं-
प्रीति वचनद रचनें नम्मोळ गिल्लला अेंद ॥ 41 ॥
हसिद बळलिकें योंदु होम्मडि हुसिद बळलिकेयोंदु कट्टा-
यसद विपिन भ्रमणदग्गद बळलिकेयदोंदु
अेसगदिर्दा सतिय दरुशन देसकदासेयलासेयळिविन
लेसगिदवु कुशकेळु कुसुकिडिदवु ककुत्स्थजन ॥ 42 ॥
कनसु कळवळ बेदरु भ्रमे भावनें विवेक विलास विकळ-
स्तनिततापश्रम गतश्रमचिंतें संतोष

से) सीता की खोज की। ३९ चन्द्रकांत शिला में प्रतिबिंबित अपनी परछाई को सीता ही समझकर पुनःपुनः उस (परछाई) से बातें करने लगते हैं। 'हे शशिमुखी, सारसमुखी, दर्पनमुखी, अपना मुखड़ा दिखाकर मेरे प्राणों की रक्षा कर।' इस तरह (राम) खूब गिड़गिड़ाए। ४० "हे सीते, सीते! समुद्र कमल में उत्पन्न होनेवाली लक्ष्मी, हे जानकी, जनक-राजकुमारी। मेरी पुकार का एक बार तो जवाब दो न? तुझमें रत्ती भर भी करुणा नहीं है न! क्या मुझे इस तरह सताने में तुमको आनंद मिलता है? वह प्रेम भरी बातें मानों हम-तुममें समाप्तप्राय-सी हो गयी हैं न?" इस तरह कई रीतियों से अपना शोक प्रकट करने लगे। ४१ एक ओर भूख के मारे उत्पन्न थकावट! उस पर स्वर्णमृग के झूठ बोलने से उत्पन्न चिंता! इन (कष्टों) के साथ-साथ जंगल में हद से ज्यादा भटकने से उत्पन्न भारी थकावट, इतने पर भी, बहुत-बहुत ढूंढ़ने पर भी सीता के न मिलने के कारण उत्पन्न निराशा आदियों ने मानों राम को चुभो-चुभोकर घायल कर दिया था। ४२ स्वप्न, व्यथा, भय, भ्रम, भावना, विवेक, तलमलाहट के कारण उत्पन्न ताप, मार्ग चलने की थकावट चिंता, संतोष आदि कई भावनाओं के आगर (समूह) राम को देख लक्ष्मण

इनितु संधिसिदवनिपन कंडनुज मनदलि बेंदरि मरुगिद
ननुगतद शोकदलि सूसुव नयनवारियलि ॥ 43 ॥
कुसुमशर विरहाग्नि मिगे विहरिसि तलै बळिकंगदलि भा-
रिसितलै सीता प्रळाप विलाप परिताप
पसरिसुव तंबेलरु सुळिदूण्णिसितलै मग्गुललि नेलनुरि
मसगिदुदलै कंदकेळ् नररंददच्युतन ॥ 44 ॥
ताप बलुहिन्नेन माडुवे नी परंतप पुरुषरविगक-
टा पुरंध्रिय विरहशिखि वेंडुसितेयेनुत
आ पुरातन शेपना नररूपकद नारायणगे शै-
त्योपचारव माडि नोडुवे नेनुत मनदंद ॥ 45 ॥
बाळेगळ मृदुदळद नळिन मृणाळ दडकिलुवासिनलि भू-
पालकन नूकिदनु हिमरुचिकांत दोसरिकंय
कालुवेय तिद्दिदनु कर्पूर वाळेयेलेयलि बीसिदनु बिरु-
गाळि गेद्दुरियंददलि हेच्चिदुदु विरहाग्नि ॥ 46 ॥
सीदवा मग्गुलिन मैयलि नैदिलिन तावरेय कदळिय
नादिकेय नाळंगळुरि नोरेगुदिय सबुददलि

आँसू बहाता हुआ, बड़े भाई की परिस्थिति देख मन ही मन डरकर, दुःख से अत्यंत ही व्यथित हुए। ४३ सीता-विरह से उत्पन्न कामज्वाला राम के सारे शरीर को व्यापने लगी। सीता के बारे में सोचते-सोचते बिलखने के कारण तथा तरह-तरह से बड़बड़ाने के परिणामस्वरूप (राम के) देह का तापमान बढ़ा। बहती ठंडी हवा भी शरीर को (राम को) जलाने लगी। लगता था कि धरती मानों जल रही है। सुनो लव, श्रीहरि के अवतारी श्रीराम सामान्य मनुष्य की तरह पत्नी-विरह के कारण चटपटाने लगे। ४४ शत्रु-संतापदायक इस पुरुष रवि (श्रीराम) का ताप अधिक होता गया। पतिव्रता की विरहाग्नि राम को घेरते देख, चिंतित लक्ष्मण रूपी आदिशेष नर रूपी नारायण का शैत्योपचार कर देख लेने के निश्चय पर पहुँचे (कि उनके कुछ प्रयत्न करने पर राम होश सँभाले)। ४५ कोमल-कोमल केले के पौधों के पत्तों पर कमल के नालों को ला फैलाया तथा इस प्रकार बने बिछौने पर राम को (लक्ष्मण ने) सुलाया। शीतल जल की धारा राम पर रिसने की व्यवस्था की। कर्पूरी केले के पत्तों से व्यजन किया (पंखा झला)। लेकिन राम की विरहाग्नि आँधी से प्रज्वलित होती ज्वाला की तरह अधिक प्रबल होती गयी। ४६ राम के शरीर के पार्श्व में पड़े भीगे कमल, नील कमल, केले

कादुकुदिदुक्किदवु घनशैत्योदकद धारॆगळ् नॊरॆ बें-
डादनुपचरणॆयलि तपन निजान्वयाधिपन ॥ 47 ॥
सीतॆ सीतॆ सरोरुहाननॆ सीतॆ सीतॆ सरोजलोचनॆ
सीतॆ सीतॆ सरोजपरिमळॆयॆंब नालगॆय
मातु मुड्रियद मनद मनुकुलजातनिरॆ मैदोड्रिदुदु पुरु-
हूत दिग्भागदलि मंडलवा हिमांशुविन ॥ 48 ॥
तोरॆ कंगळिगिदु तनु काहेड्रिदुदु कंदर्पनडुणॆ
बीरुगळ बिडुगडॆय बिरुदर मनकॆ रंजकवॆ
तोरदंगज भटन खडॆय देड्रिनवरिगॆ सुखतरवॆ हृदि-
नारु कळॆयण्णन विलोकनवणुग कॆळॆंद ॥ 49 ॥
किरणववु दावानलन दळ्ळुरिय वॊलु मैदोड्रिदवु मॊग
मुरिदु नॊडिदननुजननु घनतरद तापदलि
तरणियुग्रकॆ तनुविदकटा तरहरिसुवदॆ तम्म नी नि-
ष्करुणियै नॆळलिगॆ कॊंडॊय्दॆन्न नुळुहॆंद ॥ 50 ॥
तरणियल्ललॆ जीय शशियव तरण वैसॆनॆ नसुनगुत हिम
किरणगुंटे चटुळतर चंडांशुवॆंदॆनलु

के पत्ते तथा कमल के डंटल वग़ैरः फेन से युक्त हो उबलती ध्वनि के साथ मुरझा गये। बर्फ़ जैसा (बदन काटता) ठंडा जल भी गरम होकर खौलने लगा। रविकुलोत्पन्न राम का शैत्योपचार करते करते लक्ष्मण थककर चूर हो गया। ४७ "हे सीते, सीते, हे कमल-मुखी, सीते, सीते, कमल-लोचने! सीते, सीते, सरोजपरिमळयुक्ते!" आदि ये उद्‌गार दुःखी, मनुवंशोत्पन्न राम की जीभ से लगातार जब प्रकट होने लगे तो पूर्व दिशा में चन्द्रमा का उदय हुआ। ४८ चन्द्रमा के उदित होते ही राम के शरीर की उष्णता बढ़ने लगी। मन्मथ (काम) के आघात (मार) में फँसे व्यक्ति का, भले ही वह वीर हो —क्या चन्द्रमा ऐसों के लिए हितकारी हो सकता है? अदृश्य होकर सतानेवाले मन्मथ वीर (काम) के बाण चुभे हुए व्यक्ति के लिए क्या षोडशकलासंपन्न चन्द्रमा के दर्शन सुखकारी हो सकते है? सुनो लव। —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ४९ चन्द्र की किरणें दावाग्नि की ज्वालाओं की भाँति सताने लगीं। अत्यंत ताप के कारण विह्वल बने राम लक्ष्मण की ओर मुँह करके देखने लगे। "सूर्य की प्रखर उष्णता क्या यह देह सह सकती है? भाई, तू अत्यंत निर्दयी है! मुझे जरा छाया में ले जाकर बचाओ न?" —इस तरह राम ने कहा। ५० "भगवन्! यह सूर्य नही; अभी-अभी चन्द्र का उदय हुआ है।" —इस

तरणिकुल चित्तैसु नुडिगप सरणॆयुंटे तनगॆनलु हिम
किरणनादडॆ कुरुहदेनॆंदरस बॆसगॊंड ॥ 51 ॥
कंगळीक्षिसलमृत करनुत्तुंग बिंबवनदऱ नडुवॆ कु-
रंगवदॆ कुरुही जगत्रयकरस चित्तैसु
हंगिगनॆ हुसियॆनलु नोडि कुरंगवनु कंडरस वाल कु-
रंग लोचनॆ हायॆनुत हम्मैसिदनु भूप ॥ 52 ॥
धरणिपति चित्तैसु साकिन्निरलि चित्तदलरिकॆ सीतॆय
परियनुदयदॊळऱियदिरॆ बॊळकी जगत्रयव
जरुगिसुवॆनु महाजलदलज सुरकुलेंद्र यमादिगळ निड्डु-
गरुळनुच्चुवॆनच्चरिय बीरुवॆनु जगकॆंद ॥ 53 ॥
तोळ बलुहिदॆ जीय दिव्यशराळियिदॆ मृत्युविन बलुगो
नाळिगॊकुव खड्गविदॆ करणदलि खातियिदॆ
नाळिगिननुदयदलि विमल विशाल नेत्रॆय सुद्दियनु किवि-
गॆळिसदिरानॆकॆनुत कार्मुकवनॊदऱिसिद ॥ 54 ॥

तरह मुस्कुराते हुए लक्ष्मण ने उत्तर दिया। तब राम ने पूछा— "शीतल किरणसंपन्न चन्द्रमा को इतनी प्रखर उष्ण किरणे कहाँ से प्राप्त हुईं ?" तब लक्ष्मण ने कहा, "सुनिए रविवंशज, मेरे वचन क्या ग़लत हैं, कहिए।" "अगर वह हिम-शीतल-किरण-संपन्न है तो सबूत प्रस्तुत करो।" —इस तरह राम ने कहा। ५१ "(उस) अमृत-किरणसंपन्न चन्द्रबिंब को (कोई) आँखों से देखें तो उस (बिम्ब) के मध्य हिरन दिखायी देता है। यह निशान ही साबित करता है कि तीनों लोकों के लिए यही चन्द्रमा है।" —इस तरह लक्ष्मण ने कहा। "हँसी-मजाक मत करो। तुम झूठ कह रहे हो।" —इस तरह कहते हुए सिर उठाकर ऊपर देख, चन्द्र-मंडल में (स्थित) हिरन को पहचान "हाय मेरी मृग-शावकनयनी सीता!" कहते राम मूर्च्छित हुए। ५२ हे राजा रामचन्द्रजी, मेरी बातों पर ध्यान दें। इतना (रोना-धोना) बस है। मेरी बिनती पर ग़ौर करें। कल सूर्योदय तक अगर सीता का पता कहीं न लगा तो तीनों लोकों को समुद्र के मध्य डुबोए देता हूँ। इन्द्र, यम आदि दिक्पालकों की आँतड़ियाँ बाहर निकाले देता हूँ। सारी दुनिया के लिए यह आश्चर्य-जनक होगा।" इस तरह लक्ष्मण ने कहा। ५३ "मुझमें बाहुबल की कमी नहीं; मेरे पास दिव्य अस्त्र भी हैं। मृत्यु का गला काटने लायक तलवार भी है; मन में क्रोध भी उमड़ा है। कल प्रातःकाल तक अगर सीता माता की कोई खबर न मिली तो मेरे जीवित रहने से क्या

नडुगितवनीतळ महोदधि यडिमगुचिदुदु मेरु मंडेय
कोंडहि कोंडुदु कळवळिसिदवु नगर निर्जरर
सिडिदुदण्णन सतिय विरहद कडुहु तत्कार्मुकद बिरुदनि
गडि मगुचिदुदु धैर्यतनुविनला ककुत्स्थजन ॥ 55 ॥

इदुकणा जानकिय नोय्दव नेंदेय शूलविदीग सीता
सुदतियनु कद्दोय्दवन गळमंडलाग्र कण
इदु विदेहनृपाल तनुजेय निदिरि गोंडरिभटन नेत्तिय
नोदेव कुंत दुरंत धनुविदेयेनुत बोब्बिरिदि ॥ 56 ॥

जीय जंजडवेकें लोकद तायनी लोकत्रयद रम-
णीय नेत्रन जनन परियंतरसुवेनु बळिक
आयताक्षिय काणदिरे तन्नायतव नोडेनुत तोरवेय
राय नरकेसरिय संतैयिसदनु सौमित्रि ॥ 57 ॥

प्रयोजन ?" —इस तरह कहते लक्ष्मण ने धनुष का टंकार किया। ५४ लक्ष्मण के उभरते क्रोध के कारण धरती काँपी। समुद्र डोलायमान हुआ। मेरुपर्वत का सिर कँपकँपी लेने लगा (डाँवाडोल हुआ)। अमरावती के देवताओं में घबराहट पैदा हुई। लक्ष्मण के धनुष की डोर की टंकार से, राम को घिरी सीता-विरह-वेदना की तीव्रता (आवेग) कम हुई। उनके शरीर में ढाढ़स पैदा हुआ। (राम का ढाढ़स बँधा)। ५५ "यह जनकी के अपहरणकर्ता के हृदय के लिए शूल है; यह जानकी को चोरी-चोरी में ले जानेवाले व्यक्ति के कंधे पर गिरनेवाली तलवार है; यह वैदेही का सामना करनेवाले शत्रु वीर के मस्तक को चकनाचूर करनेवाली बरछी है; और यही उस (शत्रु) को मृत्युदंड देनेवाला धनुष है!" इस तरह (ललकारते) लक्ष्मण गरजने लगे। ५६ "नाथ! चिंता किस बात की? जगज्जननी सीता को, तीनों लोकों की आँख जो सूर्य है —उसके उदय तक, खोज निकालता हूँ। अगर उसके दर्शन न हुए तो मेरी वीरता को तब देखिएगा।" —इस तरह कहते हुए 'तोरवे' के नरसिंह-अवतारी श्रीराम को (उनके भाई) लक्ष्मण ने सांत्वना दी। ५७

हन्नेरडनेय संधि

सूचने— अरुणजन कंडरिकवंधन हरणवनु कोंडधिक सुजनोद्धरण रविवरमळतर पंपासरोवरव ।

कुशनें केळै कळिदरग्गद निशिय निम्मय्यदिरु निम्मय
वसुमती नंदनेय सुद्दिय तन्नसंततिय
बिसरुहांबक राघवंगरुहिसुव तवकदिनवुजवांधव
नेसगिदनु मणिमयवरूथवनुदय शैलदलि ॥ 1 ॥
अॅलॅ कुशानुज केळिदं मनुकुलललामर मुंदॆ सूचिसि
सुळिदवै हरिणाळि सीतॆयनॊय्द पथविडिदु
हॊलबुगाउर हॆज्जॆदॆगहिन चलित चपळद चाळियवॊल-
ग्गळ बलान्वित रैदिदरु वळिकवर वळिविडिदु ॥ 2 ॥
बलनॆडन भागदलि सुद्धिय सुलभतॆय शकुनवनु कैकॊळु-
तिळिदु बरलु दिर्दलर कंडरु सतिय सॊर्मुडिय
हॊलबु दप्पदॆनुत्त मनदलि हलव नॆणिसुत बरवरलु सिडि
दलगु गरिगळ कंडु कडरु कलिजटायुवनु ॥ 3 ॥

बारहवीं संधि

सूचना— अरुण-पुत्र जटायु को देख, कबंध राक्षस की हत्या कर, सज्जनोद्धारक श्रीराम-लक्ष्मण पवित्र पंपा सरोवर के नजदीक आये ।

सुनो कुश, तुम्हारे पिता ने वह रात वितायी । अपने वंशज कमलाक्ष राम को भूमिजाया (सीता) की खबर देने की आतुरता में कमलमित्र सूर्य मणिमय रथ पर आरूढ़ हो उदय पर्वत पर (पूर्व दिशा में) दिखायी दिया । १ सुनो लव, हिरन राम-लक्ष्मण के आगे विचरते हुए— रावण जिस दिशा में सीता को ले गया था, उसी दिशा का निर्देश देते हुए चले गये । पद-चिह्नों को पहचानते उन्हीं निशानों के अनुसरण करते जानेवाले चतुर गुप्तचरों की तरह वे श्रेष्ठ वीर उन्ही (चरणों के) निशानों का अनुसरण करते जाने लगे । २ सीता का समाचार प्राप्त होने का भरोसा देनेवाले शुभ शकुन दाएं-बाएँ दिखायी दिये । जब आगे बढ़े तो सीता के जूड़े से गिरे फूल दिखायी दिये । अब तो ग़लत रास्ते पर नहीं जाएँगे । —इस तरह मन ही मन कई प्रकार से विचार करते हुए आगे बढ़कर देखा कि टूटे पंख तथा हथियारों के फल इधर-उधर बिखरे जो पड़े हैं तो वहीं जटायु दिखायी दिये । ३ अधमुंदी आँखें, लटकता हुआ कंठ,

अर्रमुगिद लोचनद बळलुव कोरळ बिरितेरकॆगळ नभकु-
प्परिसिदंघ्रिय निशित खड्गनिघातवेदनॆय
नरळिकॆय रघुरामनाम स्मरणॆयरुण कुमारकन बळि-
करस कंडनु नॆनॆदु कॊंडनु पूर्वदरुशनव ॥ 4 ॥

तम्म केळीतनु जटायुषि नम्म तातन मित्र बल्लॆ
मॊम्मनीतनु विनतॆगात्मज सूर्य सारथिय
नम्म भरभारवनु हिंदाव् नॆम्मिसिदॆ वीतनलि केडिदु
नम्मदागदॆ साणदॆदुगि सिदनु कंबनिय ॥ 5 ॥

अहुदु जीय मदीय जनकन सहभवनु नावंदु वरुणन
मिहिरपुत्रन बीळुकॊंडॆडॆ वट्टॆयलि कंड
विहगपति संदेह विल्लॆनु तहतबल नडॆतंदु नुडिसिद
नहिमकर सूत जनना सौमित्रि दुगुडदलि ॥ 6 ॥

एनु कारण निनगॆ हरणद हानि यारिंदाय्तु निन्ननु
दानवरॊ दिविजरॊ भुजंगमरो समीकदलि
ई निरोधकॆ तंदवरु हेळै निधानव नावुदशरथ
सूनुगळु निनगावु पुत्ररु हेळु तमगॆंद ॥ 7 ॥

बिखरे हुए पंख, ऊपर उठे हुए पैर वाला अरुण-कुमार जटायु पैनी तलवार की मार के कारण हुए घाव की वेदना से चटपटाते हुए राम ने देखा तथा यह भी देखा कि वह राम-नामस्मरण कर रहा है। राम को लगा कि पहले कहीं इस पक्षी (जटायु) को देखा है। ४ "सुनो भाई, यह जटायु है। हमारे पिताजी के मित्र। विनता देवी के पोते; सूर्य-सारथी अरुण के बेटे। पूर्व में हमने अपनी ज़िम्मेदारी इनको सौंपी थी। (इस स्थिति में) इनको यों देखकर लगता है कि हमें आपत्ति का सामना करना पड़ेगा।" —इस तरह उद्‌गार निकालते राम आँसू बहाने लगे। ५ "जी हाँ, भैया, हमारे पिताजी के साथ इनका जन्म हुआ है। पूर्व में, जब हम मैत्रावरुण के पुत्र (महर्षि) अगस्त्य से बिदा लेकर पंचवटी आ रहे थे, तब रास्ते में जिस पक्षिराज को देखा था— वे यही हैं —इसमें कोई शक नहीं।" —इस तरह कहते हुए बलशाली लक्ष्मण ने अत्यंत दुःख से सूर्य-सारथी के पुत्र से बातें शुरू कीं। ६ "किस कारण से तथा किससे तेरे प्राणों की यों क्षति हुई ? युद्ध में तुझे इस दु.स्थिति में पहुँचानेवाले असुर हैं ? या सुर हैं ? या पातालवासी हैं ? वस्तुस्थिति पर प्रकाश डालो। हम दशरथ-पुत्र हैं। तेरे पुत्र-तुल्य हैं। हमसे (सब कुछ) कहो।" इस तरह लक्ष्मण ने कहा। ७ "कौन हो तुम ? राघव हो ? क्या तुम

आरु नी राघवनों लक्ष्मण वीरनो हेळेनुत श्रमद श-
रीर नोय्यनें निंदु कंदेरेदरिंद निवरुगळ
सोरुवश्रुगळिंद सीता चोरनलि ता तागि तोलगिद
शौरियद संगतिय हेळिदु मुगिद नक्षिगळ ॥ 8 ॥
आदडेलें विहगेंद्र केळु सहोदरनला निनगें दशरथ
मेदिनी पति गरुह्वेडी हृदन नी होगि
आ दितिज रिपु सभेयो ळवलेय नोय्दवन तानरुह लेंदभि-
वाद नगैदरुणजन वीळ्कोट्टना राम ॥ 9 ॥
तंदें मृतवादंदु विपिनकें सदेवै सौमित्रि मित्रनु
तंदेगीतनु पितृसखरु तत्पितृ समानरलें
अेंदु नुडिवरु हिरियरदरिं तंदें नमगीतनु कणा विधि-
यिंद विहित परेत कृत्यव माड वेकेंद ॥ 10 ॥
नियम विधिपूर्वकदलूर्ध्व क्रियेय माडिद रल्लि रिपु नि-
र्णय मनोरागिगळु ताळ्दरु रोषपावकन
लयद भाळांबकनवोलु निर्भय मनोरागिगळु दक्षिण
दयन विडिदैतंदरल्लि मेलें विपिनदलि ॥ 11 ॥

वीर लक्ष्मण हो ? कहो तो सही।" —इस तरह कहते हुए, थके-माँदे शरीर को घसीटकर खड़े होते हुए आँखें खोल उनकी (राम-लक्ष्मण की) तरफ़ देख उन्हें पहचान लिया। सीता को हरकर ले जाते हुए रावण के साथ लड़कर अपने निर्वीर्य होने का समाचार समझाते हुए जटायु ने आँखें बंद कर लीं। ८ "हे पक्षियों के राजा! सुनो। क्या मैं तेरा भाई नहीं हूँ ? तू स्वर्ग जाकर, देवसभा में राजा दशरथ से (मिलकर) सीता के अपहरण-कर्ता का समाचार मत कहना।" —इस तरह निवेदन करते हुए राम ने प्रणाम कर जटायु को बिदा किया। ९ जिस दिन हमारे पिताजी स्वर्गवासी हुए उस दिन हम अरण्यवासी बने। ये हमारे पिताजी के मित्र हैं। अतः बड़ों का कहना है कि ये (हमारे लिए) पिता-समान है। इसलिए ये हमारे पिता ही तो हुए। अतः विधि-पुरस्सर इसके अंत्य-संस्कार करने चाहिए।" —इस तरह राम ने लक्ष्मण से कहा। १० शास्त्र-विधि-पुरस्सर जटायु की अंत्येष्टि क्रियाएँ (शव-संस्कार) की गयीं। शत्रुओं को जीतने की दृढ़ धारणायुक्त राम-लक्ष्मण प्रलयकालीन रुद्र के भालनेत्र की तरह क्रोध प्रकट करने लगे। भय को मन से दूर कर, दक्षिण दिशा की तरफ़ आगे बढ़ते हुए जंगल-जंगल होते यात्रा करने लगे। ११ सुनो.

तनुज केळे कंडरिवरा वनद पथदलधोमुखियनव
ळिन कुलेंद्रन तडेदु निंदळु परिघ हस्तदलि
कनलि लक्ष्मणदेवनाबेय जननि यंदवमाडि मुंदण
वनके गमनिसिदरधिक दुस्तर दुग्र दुर्भयद ॥ 12 ॥

दारिदोऱद विपुळतर कांतार दुब्बर दोळगे घीरें-
बारु भटेगळ कामरन संदणिय सालिनलि
भूरिवृक शार्दूलसूकर सैरिभ द्विपहरि तरक्षु वि-
हार विपिनद लिवरु बरुतिर्दरु सगाढदलि ॥ 13 ॥

तोऱिता वनमध्यदलि सिडिलेऱिकेय मुंगुडिय सिडिलिन
चीऱिकेय चड्डणद रवराधवन किविगळिगे
बेऱे बेऱिक्कलिसि बिलुगळ नेऱिसिदरेडबलदलब्बर
दोऱिसुत नडेतंदरडनियलोंदु योजनव ॥ 14 ॥

मुऱिगेडदु काड्कोण हेम्मरे किरुव चित्रक शिखरि हाय्दवु
मऱिगळनु मुंदिक्कि वनकरि कंड बीदियलि

लव, आगे चलकर, उन्होंने आगे बढ़ते हुए मार्ग पर अधोमुखी (अयोमुखी) को देखा। वह अपना हाथ ऊपर उठाकर, मारने के लिए सन्नद्ध, रविकुल-अधिपति राम को रोककर खड़ी रही। क्रोधित लक्ष्मण ने तलवार लेकर शूर्पणखा की तरह उसके नाक, कान काट दिये। फिर वहाँ से उन दोनों ने घनघोर जंगल में प्रवेश किया। १२ भेड़िए, शार्दूल, सूअर, जंगली भैंसे, लकड़बग्घा, बड़े हिरन, चीते, खड्गमृग, हाथी, शेर, बाघ, वग़ैरः बड़े भयानक जंगली प्राणियों के विचरण के उस जंगल में आगे का रास्ता न सूझता था। एक घनघोर 'घीर्‍र' शब्द सुनायी पड़ रहा था। ऐसे डरावने जंगल में जंगली पेड़ों के झुरमुट में से होते हुए राम-लक्ष्मण चले जा रहे थे। १३ उस घनघोर जंगल के मध्य बिजली की कड़कड़ाहट (गर्जना) का शब्द सुनायी पड़ा। राम-लक्ष्मण दोनों अलग-अलग कतार में खड़े, धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाए गरजते-लरजते एक योजन दूर उस अरण्य में चलते-चलते आए। १४ जंगली भैंसे, लकड़बग्घे, बड़े हिरन, चीते, खड्गमृग आदि राम-लक्ष्मण के सम्मुख होते हुए (पलटकर) जाने लगे। जंगली हाथी अपने शावकों को सामने रखे हुए (सामने) दिखायी पड़ते रास्तों से होते हुए पेड़-पौधों के झुरमुटों में घुसकर डालियों को तोड़ते 'तड़ातड़' शब्द करते हुए, सामने से गुज़रने लगे। राम-लक्ष्मण की घनघोर गर्जना के कारण वह वन-प्रान्तर प्रदेश जंगली प्राणियों के पैर-तले

निरिनिळिलु निर्टिलॆनलु मरगिडु गुरुबिनीळगड हाय्दविवरु-
ब्बिरितका वनवळय काल्दुळियाय्तु मृगकुलद ॥ 15 ॥

आलिसिद नब्बरव नीय्यनॆ तोळुगळ पसरिसुत मुंदकॆ
मेलुडिय बिद्दिभ लुलाय कुरंग करडिगळ
ताळिगॆय तळकिळुहुतगिवुत मेलुमुंडदलखिळ भूतग-
ळोलगद खळनॆंद्दनाचरिसलु सुरव्रात ॥ 16 ॥

वीर रिवरिब्बर समीपकॆ सारिदवु तोळॆरडु कंडरु
भैरवाडंबरद घोर कबंध रक्कसन
सैरिसुवरे बळिकिवरु कै हारदलि कणॆदोट्ट कैकों-
डारु तॆच्चरु कैगळनु कळचलु कबंधकन ॥ 17 ॥

मॊदलु तलॆ तानिल्ल तोळुगळुदुरिवु नॆलकॆरडु योजन
ददुभुतद नीळदलि निल विद्दुदु निशाचरन
ऒडॆद सिडिलिन पदहतिगॆ कळचिद महाकंदरद गिरियवॊ
लिदिर लिद्दनु कंडनुरदक्षियलि राघवन ॥ 18 ॥

अरिदनवनी नरर वेषद निरुगॆयनु चित्तदलि तनगॆ
दरुहि दग्गद दीर्घ शिर मुनिवरन नुडिविडिदु

कुचले जाने लगा। १५ जंगल का (यह) भयानक गर्जन-तर्जन सुनते ही, अपनी भुजाओं को आगे (ऊपर की ओर) बढ़ाते हुए भूतसमूह का प्रमुख राक्षस ऊपर उठ आया (प्रकट हुआ)। उसने पैर लटकाए धरती पर गिरे हाथी, भैंसे, बारहसिंगा, रीछ आदियों का गला दबोच-दबोच कर चबाना शुरू किया। यह देख देवता सहम गये। १६ (ऊपर उठे) वे दोनों हाथ (इन) दो वीरों की तरफ़ दो बार बढ़े। राम-लक्ष्मण ने देखा कि वह (हाथ बढ़ानेवाला) महाभयानक कबंध राक्षस है। क्या ये दोनों इसे सहकर चुप रह सकते हैं! धनुष पर बाण चढ़ाते, गरजते (बाण छोड़कर) कबंध राक्षस के हाथ काट डाले। १७ सिर तो था ही नहीं; (दिखायी नहीं देता था) भुजाएँ तो कटकर नीचे गिरी हैं। दो योजन लम्बा अद्भुत देह! बिजली गिरने से, पहाड़ के ऊपर के समतल प्रदेश का हिस्सा (उपत्यका) जैसे कटकर गिर जाता है वैसे ही कबंध राक्षस का पहाड़ सा भारी देह सामने था। उसकी आँखें छाती में थीं, उन्हीं से वह राम की तरफ़ देख रहा था। १८ पूर्व में दीर्घशिरा मुनि से बतायी गयी बातों का (कबंध राक्षस ने) स्मरण कर लिया तथा इनका (राम का) मानव-वेषधारी रीति को मन ही मन समझ लिया। वेदों की पहुँच

अरसि काणवु वेदतति कंदेरडु काणरु कमलभव भव-
रुरुव दैवद कंडेनदानंद मयनाद ॥ 19 ॥
देव निन्नवतार लीला भावकव नरिदेनु कणा मा-
या विलासतें लेसु तनगिन्नदर मातेनु
देव राक्षसभवद वदुकिगें हेवरिसिदुदु चित्तमुक्ति
श्रीवधुव काणिसुव कृपेयनु माडबेकेंद ॥ 20 ॥
देव नी बंदुदनु बल्लेनु देवियर नोय्दवन बल्लेनु
रावणन साधिसुव मित्रन बल्लें नेन्नुवनु
पावनव माडुव कृपासंभावनोचितवुळ्ळडुपका-
रावलंबन नहेनेनलु रघुनाथ निंतेंद ॥ 21 ॥
दनुज केळाव् माळ्पलेसिन नेनहदावुदु पेळेनलु सं-
हननविदु शिखिमुखदोळल्लदे मुक्तिपडेयदेनें
अनुज लक्ष्मण नैसले येंदेनुत तंदोट्टिदनु बळिकि
धनव नुरिगोळिसिदनु हुतवहनलि निशाचरन ॥ 22 ॥
बंदुदा समयदलि हंसेगळिद हूडिद वरविरंचि
स्यंदनवु स्वायंभुवपुरदिदवन होरेगागि

के परे, शिव-ब्रह्मादियों के लिए अगोचर देवाधिदेव परम प्रभु को देखने से वह (कबंध राक्षस) आनंद-सागर में डूबने लगा। १९ "भगवन्! तुम्हारे अवतार-कार्य की लीला का अस्तित्व मैंने समझ लिया। तुम्हारे माया-विलास को भी पहिचान लिया। उनके बारे में मैं क्या कहूँ! हे भगवन्! मैं इस राक्षस-जन्म से तंग आ गया हूँ। कृपा कर मुझे मोक्ष प्रदान कीजिए।" —इस तरह कबंध ने प्रार्थना की। २० भगवन्! आप (इस प्रदेश में) क्यों पधारे हैं? —यह मैं जानता हूँ। सीता देवीजी के अपहरणकर्ता को भी जानता हूँ। रावण को जीतने में सहायक होने वाले तुम्हारे मित्र को भी जानता हूँ। मेरा उद्धार कर, मेरी रक्षा करने की कृपा करें तो मैं आपका अत्यंत ऋणी रहूँ।" —कवन्ध के इस तरह के निवेदन पर रघुनाथ ने यों कहा। २१ 'हे असुर, यह तो बताओ कि हम तेरा क्या भला कर सकते हैं?" —इस तरह राम ने पूछा। तब कबंध ने कहा— "अग्नि के सिवा मेरे प्राणों के लिए अन्य किसी प्रकार से मोक्ष नहीं।" तब लक्ष्मण ने 'यह बात है!' —कहते हुए लकड़ियाँ जमाकर आग प्रज्वलित कर उसमें राक्षस को जला डाला। २२ उस समय ब्रह्माजी की नगरी से हंसों से जुता ब्रह्मरथ उनके पास आया। वह (कबंध) रथ पर आरूढ़ हो हाथ जोड़े प्रार्थना करने लगा— "हे रघुनाथ, तुम्हारे मन में

निदनव रथदोळगे कैमुगिदेदंनले रघुनाथ नुडि मन
दंदवनु बेगेनलु बळिकव गरस निंतेंद ॥ 23 ॥
धारुणिय नंदनेय नोय्दन नारदेसेयिदरिके नमगनु
सारियहुदा हदन हेळेनलवनु कैमुगिदु
वीर केळादडे सुपम्पातीरदनुपम ऋष्यमूकद
सूरियन सुतनिंद निम्मिष्टार्थवहुदेंद ॥ 24 ॥
तळर्दनवनी मात नुडिदज निळय किवरा विपिनवीथिय
कळिदु बंदरु कुंतळद कमनीय मंडळके
होळेय हरिगालुवेय हरहिन ब्रेळेद नंदनदुब्बुगोब्बिन
कळमे कदळि द्राक्षिधवळेक्षुगळ नीक्षिसुत ॥ 25 ॥
असमबल सुग्रीवदेवव बिसुरुह प्रिय सुतन गिरियनु
बेसगोळुत बट्टेगरनखिळ ग्राम सीमेगळ
पशुगळाडुंबोलन पथविडि देसगिदश्रमभारदलि रा-
क्षस कुलांतक रैदिदरु शबरिय निजाश्रमव ॥ 26 ॥
सोगयिसुव तापस तपोवेदिगळलनुपम पुण्यपुष्कर-
णिगळलध्वरपूत शालावळिय लनुपमद
अगरु चंदन चपकामोदगळ लुलिव शुकाळि पिक के-
किगळिदिरनलेसेदुदाश्रम धर्मचारिणिय ॥ 27 ॥

क्या है, जल्दी कहो।" तब राम ने उससे यों कहा— २३ "भूमिसुता (सीता) का अपहरण करनेवाले का पता हमें किससे मालूम होगा ? —यह तो बताओ।" इस तरह पूछने पर हाथ जोड़कर उसने (कबंध ने) कहा— "सुनो वीर, पंपा सरोवर के किनारे के ऋष्यमूक पर्वत पर निवास करनेवाले सूर्यपुत्र सुग्रीव से तुम्हारी मनोकामना सफल होगी।" २४ इतना कहकर वह ब्रह्मलोक सिधार गया। तत्पश्चात् राम-लक्ष्मण उस जंगल के रास्ते से गुजरते हुए मनोहर कुंतल देश पहुँचे। रास्ते भर वे नदी, नाले पार करते; ऊँचे प्रदेशों में फले-फूले बगीचे, धान के खेत तथा केले, अंगूर व गन्ने के खेतों की शोभा देखते आए। २५ महाबलशाली रविपुत्र सुग्रीव के निवास स्थान— पर्वतीय प्रदेश को राह चलतों से पूछते-पूछते समझकर, अनेक ग्राम-सीमाओं तथा घास-फूस के प्रदेशों से होते हुए राम-लक्ष्मण थके-मांदे, शबरी के आश्रम में पहुँचे। २६ धर्माचरणसंपन्न, शबरी का आश्रम तपस्वियों की यज्ञभूमियों से, पुण्यप्रद सरोवरों से, यज्ञ से पुनीत बने होम-शालाओं से, अगरु, चंदन, श्रीगंध, चंपा के फूलों की सुगंधि से भरा पूरा था। वहाँ तोते बोल रहे थे। कोयल तथा मोरों से अत्यंत शोभायमान

सलहुतिर्दवु हुलिय मरिगळ मोलेयनित्तु कुरंगि वनकरि
कळभ निचयव नोवुतिर्दवु सिंह वहिनिकर
नलिवुतिर्दवु नविलेडेयलरॆ गिळिय वचनोदयद नुडिगळ
कलिवुतिर्दवु कूडॆ वनमार्जाल विदिरिनलि ॥ 28 ॥
कुशनॆ केळै नरॆत मंडेय कुसिद तोलगिन जोल्व हुब्बिन
नसिद नोटद बागिदोडलिन बत्तिदाननद
ससिद हलुगळ कॆत्त किविगळ मसुळिदंगद मुप्पिनलि लं-
बिसिद शबरिय सुप्रसिद्धेय सार्दरोलविनलि ॥ 29 ॥
मुरहरन निजमूर्तियनु हृत्सरसिरुह कर्णिकॆय मध्यद
लिरिसि परमानंद सुखमय भाव शुद्धियलि
इरलु होळकिदुदवनिजेशन परममंगळमूर्ति मनद-
च्चरिय लोय्यनॆ कंदेरॆदु नोडिदळु रघुपतिय ॥ 30 ॥
हरियला साक्षात लक्ष्मीवरनला परिपूर्ण विश्वं-
भरनला जगदंतरंगनला महादेव
अररॆ शिव शिव विष्णुपद संदरुशनवु ता मुन्न माडिद
परम सुकृतवला यॆनुत्तिदि रॆद्दळा शबरि ॥ 31 ॥

था। २७ इस आश्रम में बाघिनों के बच्चों को हिरनें दूध पिलाकर रक्षा कर रही थीं। शेर हाथी के शावकों का पालन-पोषण कर रहे थे। मोरों के साथ साँप खेल रहे थे। जंगली बिलाव तोतों के सम्मुख बैठकर बोलना सीख रहे थे। २८ सुनो कुश; पके बाल, लटकता झूलता चर्म, लटकती भौंहें, मंद दृष्टि, झुकी देह, सूखा मुखड़ा, गिरे दाँत, हिलते कान, कुम्हलायी देहकांति वाली, बुढ़ापे के कारण जीर्ण-शीर्ण बनी शबरी के यहाँ राम-लक्ष्मण बड़े संतोष के साथ पहुँचे। २९ हृदय-कमल-मध्य श्रीहरि की मूर्ति को परिशुद्ध भाव से स्थापित कर शबरी अत्यानंद में निमग्न हुई। उस (भाव-समाधि) अवस्था में श्रीराम की मंगलमूर्ति मन में जब गोचर हुई तो आश्चर्य से उसने (शबरी ने) जो आँखें खोलीं तो रघुपति को प्रत्यक्ष देखा। ३० यही तो श्रीहरि हैं न! यही साक्षात् लक्ष्मीपति हैं! ये परिपूर्ण विश्वरक्षक हैं! जगत् के अंतर्यामी हैं! इस तरह आश्चर्य प्रकट करते हुए— "हे शिव-शिव! महादेव! श्री विष्णु-चरण-दर्शन जो मुझे मिले यह मेरे पूर्वजन्मकृत पुण्य का परिपाक ही है न!" —इस तरह सोचते हुए वह (राम के सम्मुख) आयी। ३१ आदि-पुरुष को देखने के कारण (आनंद में) अत्यंत आदर के साथ नवविध भक्ति

आदि पुरुशन कंडॆनॆनुतत्यादरदिना हरिपदवना
राधिसिदळागमदि नवविध भक्ति भावदलि
आ दयांबुधिगॆंदळॆलॆ दूर्वादळ श्यामळनॆ केळ् नी-
नॆंदिद्दुद ना बल्लॆनरिदॆनु निन्न नाटकव ॥ 32 ॥

खळकबंधनु निमगॆ हेळिद कलिललाट ललामनॆनिप-
ग्गळ कपींद्रन ऋष्यमूक नगॆंद्र दक्षिणद
कॆलदॊळदॆ वर तुंगभद्रा कलित पंपाक्षेत्र सीमा
वळय वदउलि काविरॆंदळु शबरि कैमुगिदु ॥ 33 ॥

मनद बगॆ कैगूडुवदु रिपुहनन नॆउ सिद्धिपुदु निम्मय
वनितॆ निमगहु ळॊलिवळल्लि मेलॆ भूवनितॆ
विनुत कीर्त्यांगनॆ जयांगनॆ जनप चित्तैसॆंदु माया
मनुजननु बीळ्कॊट्टु विजयंगैदळजपुरिगॆ ॥ 34 ॥

शबरियनु बीळ्कॊंडु शौर्य स्तवकरल्लि मेलॆ बंदरु
विबुधरिगॆ दुर्लभद पंपाक्षेत्र मंडलकॆ
प्रबलतर घूर्णितद वहळितसवुदद्ध्विन सुळिगळव्वर
दबुधि भंगद तुंगभद्रॆय कंडरिदिरिनलि ॥ 35 ॥

भाव से शबरी ने श्रीविष्णु-चरणों की पूजा की। दयासागर श्रीराम को संबोधन कर उसने कहा– "हे दूर्वादल-सदृश श्यामल रंग वाले, तुम्हारा आना मैं जान गयी; तुम्हारा नाटक (भी) मैं समझ गयी।" ३२ "कबंधासुर ने जिस वीर-प्रवर-तिलक, कपियों के स्वामी सुग्रीव का निवास स्थान बताया है, वह ऋष्यमूक पर्वत दक्षिण दिशा में है। तुंगभद्रा नदी के किनारे (से लगे) जो पंपाक्षेत्र दिखायी पड़ता है—उसी के सीमा-प्रदेश में उस पर्वत (ऋष्यमूक) को पाओगे।" इस प्रकार शबरी ने कहा। शबरी ने हाथ जोड़े— । ३३ "तुम्हारी अभिलाषा सफल होगी। शत्रुनाश तुम्हारे हाथों अवश्य होगा। तुम्हारी सीता तुम्हे (अवश्य) प्राप्त होगी। उसके बाद तुम्हें राज्यलक्ष्मी, कीर्तिलक्ष्मी, जयलक्ष्मी (बड़ी प्रसन्नता के साथ) प्राप्त होंगी।" —इस तरह कहते शबरी माया-नर श्रीराम को बिदा कर ब्रह्मलोक के लिए रवाना हुई। ३४ शबरी से बिदा लेकर वे महावीर देवताओं के लिए दुर्लभ पंपा क्षेत्र के प्रदेश में आए। उन्होंने सामने तुंगभद्रा नदी को देखा जो भँवरों से युक्त हो, घनघोर गर्जना करते— समुद्र से भी बढ़कर (पराक्रम दिखाते) बह रही थी। ३५ तुंगभद्रा नदी पार कर, पवित्र पंपाक्षेत्र के भगवान श्रीनिवास के दर्शन

आ नदिय नुत्तरिसि पंपा श्रीनिवासन कंडुबरॆ सु-
म्मान मुखदलि सुळिदुदनुपम कुसुममय समय
मौनिगळ नैष्ठिक तपोनुष्ठान शीलर सलॆवियोगि ग-
ळाननद मेलॆळॆवुत सियनुदार तेजदलि ॥ 36 ॥

गिळिगळु ग्वडणॆगळ मरिगोगिलॆय हॊगळिकॆगळ मदाळिय
ललित कहळारवद शिखि संकुलद नर्तनद
अलरुगणॆगळ कब्बुविल्लिन तळित माविन झल्लरिय मं-
डळिय मन्मथराज सुळिदनु रामनिदिरिनलि ॥ 37 ॥

तरुण केळै कुशनॆ कामातुररिगग्गळ विरहिगळिगी
स्मरन काणिकॆ सोक्कॆ सोलरॆ शंबरांतकगॆ
अरसि सीतॆय नॆनॆदु हुट्टिद विरह शिखियुब्बरद तापकॆ
तरहरिकॆ दोरॆदॆ सरोवर दॊळगॆ मंडिसिद ॥ 38 ॥

बिसजवनु मुखवॆंदु मिगॆ चुंबिसुवनु भयकरंगळलि झों-
पिसुवनमळ रथांगगळनुत्तुंग कुचवॆंदु
ऒसॆंदु नोडिदनक्षि यॆंदॆवॆ मिसुक दॆळॆमीनुगळ तळॆगळ
कॊसरुवनु संभोग समयोचित सुभाषितव ॥ 39 ॥

(दोनों ने) कर लिये। तब फूलों को खिलानेवाली वसंत ऋतु संतोष उमड़ाते प्रकट हुई। उसने (वसंत ने) मौनी, तपस्वी तथा विरहियों पर अपनी तेज तलवार चलायी तथा उनके मुखड़ों को श्रीहीन कर दिया। ३६ तोतों का रटना, कोयलों के बच्चों की कूक, मस्त भौंरों के तुरहियों की ध्वनियों के साथ-साथ जब मोर नाच रहे थे, पुष्पबाण तथा ईख का धनुष हाथ में धारे आम्रवृक्ष के कोंपलों के गुच्छों से युक्त मन्मथ राज (कामदेव) राम के समुख प्रकट हुए। ३७ कामपीड़ितों को तथा विरहियों को मन्मथ के इस पुरस्कार के संस्पर्श में आते ही (इस दुनिया में) कौन ऐसा है जो मन्मथ से अपनी हार स्वीकार नहीं करता? पत्नी (सीता के) स्मरण से उत्पन्न विरहाग्नि के ताप को राम सह न सकने के कारण सरोवर में प्रवेश कर बैठे। ३८ (सरोवर में उत्पन्न) कमल को अपनी पत्नी का मुख समझकर चुंबन कर बैठे। चक्रवाक पक्षियों को (अपनी पत्नी के) उभरे स्तन समझकर दोनों हाथों से स्पर्श कर उत्कंठित (उद्विग्न) हुए। कोमल मछलियों को आँखें समझकर प्यार से देखते थे। चिखुरन खींचते हुए रति-क्रीड़ा (सुरति) के समय के प्रेमालाप में निमग्न होने लगे। ३९ "भैया लक्ष्मण, सीता हमें ढूंढ़-ढूंढ़कर, जब हम नहीं मिले

अनुज केळॆम्मरसि नम्मनु वनदॊळगॆ विडदरसि काणदॆ
वनरुहाकरवागळॆलॆ तन्नंतरंगदलि
अनुकॊळिसुतिदॆ सीतॆ यॆंबी नॆनहु निन्नय चित्तदलि सं-
जनिसिदुद हॆळॆंदु सौमित्रियनु वॆसगॊंड ॥ 40 ॥
अकट रघुकुल दरसुगळु कामुकरॆ कातररे विचारिस
विकळ मतिगळॆ विषयिगळॆ ललना जनंगळलि
युकुति विदरॆ निमगिदी भ्रामक परिग्रहवेकॆ नरना-
टकद नटनॆयनन्नबर विडिविजय माडॆंद ॥ 41 ॥
अॆंदु मॆल्लनॆ कॊळन तीरकॆ तंदु तापव विडिसि नयमुख
दिंद लॊय्यनॆ नडॆसि तंदनु तरणिनंदनन
नंदनद गिरिगागि कॆंदळिरॊंदि दॆळॆननॆ दॊडिकॆय मा
कंदवनु सारिदनु तॊरवॆय रायनॊडगूडि ॥ 42 ॥

॥ अरण्यकाण्ड समाप्त ॥

तो यह कमलों का सरोवर तो नहीं बनी ? मुझे तो यह सरोवर सीता ही जँचता है। मेरा मन भी यही कहता है। तुमको कैसा लगता है ? जरा बताओ न ?" —इस तरह राम ने लक्ष्मण से पूछा। ४० तब लक्ष्मण ने कहा— हाय रे दैव ! आप ये कैसी बातें करते हैं ? क्या रघुवंश के राजा कामुक है ? क्या वे (ऐसी छोटी बात के लिए) व्याकुल हो सकते है ? क्या इतने अज्ञानी है कि स्त्री के कामासक्त बुद्धि से प्रेरित हों ? ऐसा भ्रम तुममें क्यों उपजा ? इस मानव-रूप धरने के कारण जो नाटक (आप) कर रहे इसे समाप्त करो। चलो मेरे साथ। ४१ लक्ष्मण धीरे-धीरे राम को सरोवर के किनारे ले आया। शैत्योपचार से उनका ताप निवारण किया। नयपूर्ण बातों से उनको रमाते हुए, अपने साथ ले जाते, पहाड़ की तलहटी के उपवन में जहाँ कोंपलों के मध्य खिले फूल वाले आम के पेड़ की छाया में बुला ले गये। ४२

॥ अरण्यकाण्ड समाप्त ॥

किष्किंधाकाण्ड

आंदनेय संधि

सूचने— चंडकरकुलतिलक तन्ननु कंड पवनिजनिंद काणिसि कोंडु कॆविडि दॊलिवु पालिसिदनु पतंगजन ।

तरुणकेळ् रंजिसितु यौवनदिरवु निम्मय्यंदिरिगॆ कुडि-
वरिव मीसॆय कप्पुदोरुव बवरिगड्डगळ
भंरद भुजबल लोचनद सितदरुण सुरगि कृपाण बलु बिलु-
सरळ हॊंगरिनलॆ सदरिंदु दिनेशरंददलि ॥ 1 ॥
आळुतिर्दनु सकल गोलांगूल साम्राज्यवनु दिविजर
शैलकॆणॆयॆनिपद्रि शिखरद राजधानियलि
नील नळ हनुमंत तार कराळ बलकेसरि रुमाद्यर
मेळदलि कपिविपुळ कालग्रीव सुग्रीव ॥ 2 ॥
कंडनॊड्डोलगदॊळिद्दी चंडकरकुल कमलवन मा-
र्तांडरनु रिपुविजय मायामनुज विग्रहर
खंड परशुपराक्रमर कोदंड कांड कृपाण सुरगि सु-
मंडनर राजसद तेजो विमल विग्रहर ॥ 3 ॥

प्रथम संधि

सूचना— रविकुलतिलक राम ने अपने संदर्शन करनेवाले हनुमान के द्वारा सुग्रीव से भेंट कर उसे (सुग्रीव को) अभय देकर रक्षा की ।

"युवक कुश ! सुनो । तुम्हारे पिता को मानों यौवन प्राप्त हुआ ! (इतना आनंद हुआ ।) मसें (होंटों पर) फूट पड़ीं । काले घुंघराले बालों वाली दाढ़ी प्रकट हुई । भुजाएँ फड़कने लगीं । आँखें सफ़ेदी मिली लाल रंग धारण करने लगीं । तलवार, धनु तथा बाणों की कांति की वृद्धि होने के कारण सूर्य-चंद्र की तरह वे शोभायमान दीखे ।" इस प्रकार कहते वाल्मीकि ने कथा आगे बढ़ायी । १ देवताओं के पर्वत-सदृश जो ऋष्यमूक पर्वत था —उसके शिखर पर (अपनी) राजधानी बनाए कपि महेश्वर सुग्रीव, नील, नल, हनुमान, तार, महाबलवान केसरी, रुम आदियों को अपने साथ लिये समस्त वानर साम्राज्य का शासन कर रहा था। २ सभा (आस्थान) में बैठे सुग्रीव ने (एक दिन) रविकुल रूपी कमलों के लिए सूर्य-सदृश, शत्रुविजयी माया मानवस्वरूपी राम-लक्ष्मण को देखा। वे,

ऐनिदच्चरि नम्म राष्ट्रव मानुषस्थळ विल्लिगॆत्तण
मानवर संचार संघटनवु विचित्रवल
दानवरॊ मेण् दिविजरो हरिसूनुविन गुप्तिगरॊ वरवु न-
वीनवागिर्दे हनुमनोडवरुगळ नीनॆंद ॥ 4 ॥
नोडिबा होगा नरेंद्रर गाढ गमन स्थितिय नरि मा-
ताडु मनदंतरव तिळि हगॆकळॆय कैमनद
मोडियनु निर्धरिसु नी मॊदलाड दिरु मुनिवेषदलि मै-
गूडु नडॆयॆंदट्टिदनु सुग्रीव ननिलजन ॥ 5 ॥
आ कपींद्रन बीळुकॊंडु पिनाकधर विक्रांत नैंद्र
व्याकरण कोविदनु सकल स्मृति कला विदनु
लोक लोचन भीकरनु जगदेकवीरनुदार गुणर-
त्नाकरनु राघवन काण्बुत्सवद लैतंद ॥ 6 ॥
वितत विमळाम्नाय मयविश्रुतद मणिकुंडलद विविध
स्मृति विलास ब्रह्मांडद निर्जितेंद्रियद
नुतकनक कौपीनदागम दतिशयद यज्ञोपवीतद
यतिकुलोत्तमनैदिदनु नररूपिनच्युतन ॥ 7 ॥

वीरता में महेश्वर-समान हो, हाथ में धनु, वाण, तलवार तथा खड्गधारी थे। ३ "हमारा यह देश मानवों की पहुँच के परे हैं। (मगर ये यहाँ कसे ?) कितने आश्चर्य की बात है ! मानवों का, यहाँ विचरण कैसे संभव हुआ ! क्या ये दानव हैं, या देवता हैं; या वाली के ही गुप्तचर है ? इनका यहाँ गोचर होना बिलकुल विनूतन है। (अतः) हनुमान, तुम उनके यहाँ पहुँचकर पता लगाओ (कि वे कौन हैं ?)" इस तरह सुग्रीव ने कहा। ४ "जाओ; देखकर (पता लगाकर) आओ कि ये मानवेन्द्र किस तरफ़ रवाना हो रहे हैं ? जरा इन्हे समझने की कोशिश करो। ये शत्रु हैं या मित्र हैं— उनके मन में क्या है —ये सभी बातें जानने की कोशिश करो। पहले तुम मत बोलो। मुनि-वेष में जाओ।" इस तरह समझा-बुझाकर हनुमानजी को सुग्रीव ने भेजा। ५ रुद्र-पराक्रमी, इन्द्र-रचित व्याकरण के विद्वान्, समस्त पुराण चतुर, जगत् के लोगों के लिए भयानक, जगदेकवीर, उदारगुणसुगर हनुमान ने सुग्रीव से विदा ली, तथा राम को देखने के लिए वे बड़े उत्साह के साथ आए। ६ वेदमय पवित्र रत्नकुंडलों को धारण कर विविध पुराण रूपी ब्रह्मदंड को हाथ में धरे, इंद्रियनिग्रह नामक सोने का कौपीन धारण किए, शास्त्र रूपी यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण कर, यतिश्रेष्ठ के रूप में हनुमानजी मानव रूपी श्रीहरि के पास

काणुती रघुजन सुदरुशन पाणियेंदे माडिदनु परि-
माण वेंतुटो पवन सुतन पारेंगितज्ञतेय
काणवऽसि समस्त निगम श्रेणि तन्नय ताय नुडि ता-
र्काणियाय्तेंदंघ्रिगानत नादना हनुम ॥ 8 ॥
नीवु विप्ररु वीर पार्थिवरावु नमगमि वंदिसुवदिदु
भाविसलु मायाविलासकवेंब बगें मनव
तीवि कोंडिदें तत्त कार्यवदावुदारट्टिदरु नी ता
नावनल्लिगें बंद हृदने नेंदु बेंसगोंड ॥ 9 ॥
आदडेलें राजेंद्र चित्तैसादियलि नीवु बिजयं
गैद बगेंयभिवचन बिन्नह बळिक तन्नदेनें
आ दयांबुधियेंसें मत्तेनादडा धरिसावु बंद वि-
नोद विभवव हेळिदरें हुरुळिल्ल नुडिगेंद ॥ 10 ॥
केळि बल्लै दशरथ क्षिति पालकन नावा नरेंद्रन
बालकरु बरवाय्तु तनृपनाज्ञेयिं बळिक
कालगतियिंदेमगें काननदालयवु समनसितु कष्टद
मेलें कष्टव काब कर्थें नमगाय्तलेयेंद ॥ 11 ॥

आए । ७ राघव को देखते ही हनुमान की दृढ़ धारणा यही हुई कि यह सुदर्शन चक्रधारी श्रीहरि ही हैं । दूसरों के अंतरंग भाव को (आंतर्य को) समझने में सशक्त वायुपुत्र की चतुराई के बारे में क्या कहें ? समस्त वेद इनको ढूंढ़ते हैं, मगर पाते नहीं । अपनी माता ने पूर्व में जो कहा था, अब उसका प्रत्यक्षीकरण हो रहा है —इस तरह समझते हुए हनुमानजी श्रीराम के चरणों में गिरे । ८ "आप ब्राह्मण हैं । हम तो वीरक्षत्रिय हैं । आप जो हमें प्रणाम कर रहे है —यह हमें ऐसा लगता है कि माया-विलास ही है । अब बताइए कि आप किस प्रयोजन से आए हैं ? तुम्हें किसने भेजा ? यहाँ आने का कारण क्या है ?" इस तरह राम ने हनुमान से पूछा । ९ "तब तो सुनिए राजन ! पहले आप बताइए कि आप किस कारण से यहाँ पधारे है ? उसके बाद मैं अपनी बिनती सुनाता हूँ ।" —इस तरह हनुमान ने कहा । राम तो दयानिधि ठहरे ही । "तब तो सुनो । हमारी विनोद भरी घटना समझाने में कोई तथ्य नहीं ।" इस तरह राम ने कहा । १० "क्या तुम राजा दशरथ के बारे में जानते हो ? उस राजा की आज्ञा से हमें यहाँ आना पड़ा । दुर्दैव के कारण हमें यह अरण्यवास प्राप्त हुआ । अनेकानेक संकटों को सहन करने की स्थिति हमें प्राप्त हुई ।" —इस तरह राम ने निवेदन किया । ११ हम जिस अरण्य

सुळिदुदिदिरलि नम्म विपिन स्थळदलॊंदु कुरंगवद कं-
डॆळसि बेडिदळॆम्मवधुनाव् मायॆयॆंब्रुदनु
तिळियलरियदॆ तन्मृगद बॆंबळिय लॆैदिद हिंदॆ रावण
कळविनलि कद्दॊय्द नडवियलॆम्म भामिनिय ॥ 12 ॥

सतिय होगाडिदॆवु मानस्थितिगॆ मैमरॆयाय्तु बंदॆवु
गतिविडिदु दशशिरन मेलण वॆैर बुद्धियलि
दिति तनुज कबंधनिं विश्रुत कपींद्रन काव वर्गया-
य्तु तदीय कपींद्रननु नावरिय बेकॆंद ॥ 13 ॥

बळलिदॆवु नाव् हिंदॆ हॊम्मरियॆळ तटद मायॆयलि माया
विलसितरु रक्कसरु नाव् निष्कपट मानसरु
तिळिय वारदु निन्न वेषद नॆलॆयनॆनॆ कॆमुगिदु कपिकुल
तिलक बिन्नह माडिदनु मनुकुल शिरोमणिगॆ ॥ 14 ॥

जीय नीवीगॆंद वानर राय सचिवरु नाव् नम्मय
तायि तंगि तदीय कपिकुल सार्वभौमंगॆ
वायुवॆन्नय तात तन्नभिदेयवनिलजनॆंदु मिक्किन
मायॆयवरावल्लवॆंदनु हनुमनरसंगॆ ॥ 15 ॥

प्रदेश में निवास कर रहे थे, वहाँ एक हिरन दिखायी दिया। मेरी पत्नी ने उसे देख (मोहित हो) निवेदन किया कि यह (हिरन) हमें ला दीजिए। यह न जानते हुए कि वह मायावी हिरन है, हमने उसका पीछा किया। तब हमारे पीछे-पीछे (छिपे-छिपे) आनेवाले रावण ने उसका (सीता का) अपहरण किया। १२ पत्नी को खो बैठने के कारण हम अत्यंत अपमानित हुए हैं। रावण से वैर मोल लेते हुए उसको ढूँढ़ते हुए हम आये हैं। कबंधासुर के कथनानुसार कपिसमूह के राजा सुग्रीव को देखने की इच्छा हुई है। उस वानर राजा को हमें देखना है। १३ "(उस) स्वर्णमृग के आकर्षण की माया में फँसे उसके पीछे-पीछे दौड़-धूपकर हम थक गये। राक्षस मायावी है, हम कपट-विरहित सरल स्वभाव वाले (मानव) हैं। आपकी इस वेषभूषा के पीछे जो सत्य है (छिपा है), वह हम नहीं जानते।" —इस प्रकार राम के बताने पर कपिकुलश्रेष्ठ हनुमान ने हाथ जोड़े मनुवंशीय श्रेष्ठ से निवेदन कर लिया। १४ "प्रभो, जिस वानर-वंशीय राजा सुग्रीव के बारे मे आपने चर्चा की, उन्हीं के हम सचिव (मंत्री) है। कपिकुल चक्रवर्ती (राजा) की बहिन मेरी माता है। वायुदेव मेरे पिता है। मेरा नाम है वायुपुत्र है। हम मायावी नहीं हैं।"

आत कपि यति नीनसंगतमातु मोदलिदु मनद मनितर्के
कौतुकद कथे तोरुतिदें नीने विचारिसेनें
वातसुत बळिकन्वयद परिजात दभ्युदयवनु बहु रू-
पातिशयवह परिय बिनैसिदनु रघुपतिगे ॥ 16 ॥
ऐसे मत्तेनादडी नुडि मासिकेंगे मैदोरदिदें नी
कीश कुलकुंजरन नीगलें नमगेंकाणिसलु
दोष कृतमुखनल्ल मायेय मैसिरिय मनकेंमग बहुदेन
ला समीर कुमार बळिकितेंद नरसंगे ॥ 17 ॥
देव चित्तैसिन्नु मरेये कावु कपिगळु कामरूपिग
ळावु नम्मंगवनु तोरलु बेकु निमगेंनुत
आ विमल यतिरूपवनु बहिरावरण नभकोत्तिलयदिन
दा विरूपाक्षगे पडियेनें बेळेदना हनुम ॥ 18 ॥
थळ थळिसितिन बिंब नाभी वळयदलि नभदमळ तारकि
तोळगिदवु तुदिमस्तकदोलुत्तान पादजन

आदि-आदि बातें हनुमान ने राम से कहीं। १५ "सुग्रीव तो वानर है, तुम तो यति हो। यह बात तो मेल खाती ही नहीं। सोचने पर ऐसा लगता है कि यह एक अत्यंत कुतूहलजनक कथा है। तुम ही विचार कर देखो।" —इस तरह राम के कहने पर वायुसुत ने रघुपति को संबोधित करते हुए इस प्रकार कहा कि अपना वंश कैसे उत्पन्न होकर वृद्धि करने लगा, अनेक रूप धारण करने का सामर्थ्य कैसे प्राप्त हुआ —आदि का विवरण दिया। १६ कुछ भी कहो, तुम्हारी बातों पर भरोसा नहीं होता। वानरपति सुग्रीव का दर्शन (भेंट) जो अभी कराएगा तो समझूँगा कि तुम ग़लत बातें बोलनेवाले नहीं हो। माया की महिमा जाननेवाले हमें (इस तुम्हारी करनी से) विश्वास होगा। इस तरह राम के कहने पर वायुसुत ने राम से यों कहा। १७ "भगवन्, सुनिए। अब लुका-छिपी से क्या प्रयोजन? हम तो कपि हैं। हम अपनी इच्छा के अनुसार जो चाहें रूप धर सकते हैं —ऐसे क़ामरूपी हैं। अपनी (यह) रीति आपको दिखानी चाहिए।" —इस तरह कहते हुए संन्यासी (यति) का रूप त्यागकर हनुमान ने प्रलयकालीन विरूपाक्ष के समान रूप धर लिया तथा आकाश तक व्यापकर खड़े हो गये। १८ हनुमान के नाभिस्थान के नज़दीक सूर्यबिंब चमकने लगा। सिर के अग्र (चोटी के) स्थान में नक्षत्र टिमटिमाने लगे। ध्रुवनक्षत्र लोक तक

निळयदलि लांगूल लंब्रिसि नील्दुदिळेदिगुवळय वंधद
हौलिगें हडियलु हनुम मेदोरिदनु रघुपतिगें ॥ 19 ॥
साकु साकोंड बट्टवाव् लोकैक वलरहुदुळिद हुलुविपि
नौकसरिगी वलुह देलिलयदल्लदिरे नमगें
आ कबंधनु हेळुवनें नम्माकें वाळतनवकें वैरिस-
मीक जयकृत्तमुखकें सखनेंदबुज सख सुतन ॥ 20 ॥
अॅल्ल विन्नेतकें वनौकस वल्लभन ता होगु संशय
विल्ल नमगेंनें हाय्कि हसादवनु वळिक
सल्ललित हरुषदलि नृपपद पल्लवक्कभिनमिसि रविसुत
नल्लिगैतंदरुहिदनु वरवनु ककुत्स्यजन ॥ 21 ॥
तूळि हरुषदोळुव्वरद रोमाळिगळ हौदरिनलि हरिकुल
मौळिगळ गडणदलि रामन काव तवकदलि
श्रीलतांगिय पतिय बळिगें सलीलेयलि नडेतंदु पदकें फ-
लाळिगळ काणिकेय नित्तॆरगिदनु सुग्रीव ॥ 22 ॥
बरसॆळॆदु तक्कैसि मैत्र स्फुरणॆयलि मनुबुव्वि वानर
ररसननु मन्निसिदनुचित सुभाषितंगळलि

उनकी पूँछ बढ़ गयी। हनुमान के इस भव्य रूप के वजन के कारण धरती काँपने लगी। दिशावलयों का सेतुबंध छूट गया। इस प्रकार के महती रूप में (बृहदाकार में) हनुमान राम को दिखायी पड़े। १९ बस करो, हनुमान; बस है। हम मान गये। सच है; तुम लोकैकवीर हो। अरण्य के अल्प प्राणियों में इतना बल कहाँ से आ सकता है ? अगर ऐसा न होता तो कबंध कैसे कहता कि तुम्हारी शूरता के लिए बराबरीवाला दोस्त सुग्रीव हो सकता है; वैरियों को जीतने में वही सहायक हो सकता है। २० "अब अधिक बातों से क्या प्रयोजन ! जाइए। वानरों के स्वामी सुग्रीव को बुला लाइए। हमारा जो कुछ शक था (वह सब) दूर हो गया।" इस तरह राम के कहने पर हनुमान ने श्रीराम-चरणों में गिरते कहा— "महाप्रसाद है"; तथा वह सुग्रीव के पास आकर कहने लगा कि श्रीराम आ रहे हैं। २१ सुग्रीव (हनुमान से यह सुनकर) हर्ष के मारे रोमांचित हुआ। श्रीराम को देखने की उत्सुकता में (अपने) वानरश्रेष्ठ साथियों के साथ लक्ष्मीपति के नजदीक अत्यंत आनंदनिमग्न हो आया। सुग्रीव ने श्रीराम-चरणों में फलों की भेंट चढ़ाकर प्रणाम किया। २२ श्रीराम ने सुग्रीव को खींचकर आलिंगनपाश में बाँध लिया। मन में स्नेहभाव जो उमड़ आया, उभयकुशलोपरि वार्तालाप में संपन्न हुआ। सुग्रीव का उन्होंने

धुर विजय नळ नील ताराद्यरुगळनुमतदिंद तोरवेय
पुरवराधिप निद्दना वरऋष्य मूकदलि ॥ 23 ॥

ऎरडनॆय संधि

सूचने— ताळतरुवनु मुरिदु समराभीळ दुंदुभि यस्थियनुदिगाल लॊदवर सावनिन तनुजंगे रघुनाथ ।

कुशनॆ केळु कपीशना राक्षस विपक्षिय बंधुकृत्यद
लॊसगॆ वडिसिदनुचित सेवा भावभक्तियलि
नुसुळिदवु दिनवॆरडुबळिका वसुमतीशंगिनज करयुग
विसरुहव मुगिदिल्लिगैदिद हदनदेनॆंद ॥ 1 ॥
तरणिसुत केळादडग्गद तरणिवंशद वीरदशरथ
नरपतिय नी केळि बल्लै तन्नृपोत्तमन
हिरियमग तानीग तन्नंतरदला भरतंगॆ सेरितु
धरणि तत्पित नाज्ञॆयलि वनवाय्तु नमगॆंद ॥ 2 ॥
गुरुवचनवदु सुजन जनका भरणवल्लवॆ हेळु वनवनु
चरिसिदॆवु हन्नॆरडुवरॆ वरुषवनु गौतमिय

बड़े प्रेम से आदर किया । युद्धवीर नल, नील, तार वग़ैरहों की राय के अनुसार 'तोरवे' के अधिपति श्रीराम ने ऋष्यमूक पर्वत पर ही निवास-स्थान बनाया । २३

दूसरी संधि

सूचना— ताड़वृक्षों को काटकर, युद्ध-भयंकर दुंदुभि के अस्थिपंजर को लात मारकर श्रीराम ने सुग्रीव पर अपना आधिपत्य स्थापित किया ।

"सुनो कुश, वानरों के अधिपति सुग्रीव ने श्रीराम को अपने बंधु की तरह देखते हुए भक्तिभाव से सेवा समर्पित कर संतुष्ट कर लिया । दो दिन बीते । तदनंतर सुग्रीव ने श्रीराम के सम्मुख हाथ जोड़े पूछा कि यहाँ तक पधारने का क्या कारण है?" —आदि विषयों पर प्रकाश डालते हुए वाल्मीकि ने कथा आगे बढ़ायी । १ "हे रविसुत (सुग्रीव) ! सुनो । प्रसिद्ध सूर्यकुल के राजा वीर दशरथ के विषय में तुमने सुना होगा न ? उन्हीं का, मैं ज्येष्ठ पुत्र हूँ । मेरे पीछे राज्य भरत को मिला । पिताजी की आज्ञा के अनुसार हमें वनवास प्राप्त हुआ । २ तुम्हीं बताओ न— बड़ों की आज्ञा शिरोधार्य करना सज्जनों के लिए आभूषणप्राय है न ? हम

वरनदिय तीरद समीपद परम पंचवटिप्रदेशद
लिरलु सुळिदुदु मुंदे माया हरिण नोंदुदिन ॥ 3 ॥

आडलेनदना कुरंगव वेडिदळु नम्मरसि नावद
राडिकेय लोळ वीळलत्तलु सतिय शावरद
जोडगेय यतिरूपदलि मऱेमाडि रावण कोंडु होदनु
खोडि बळिकॆमगागॆ बंदेवु निम्म वळिगॆंद ॥ 4 ॥

अऱिद ननितऱ मेलॆ नभदलि मोऱेयिडुत होदनरसि रघु नृप-
नेऱेयळॆंबुद नोय्दवनु दशकंठनॆंबुदनु
मऱुगिदनु मनदोळगॆ विधियनु जऱेदु ध्यानिसियकट कट्टा-
सऱु महारायरिगॆ बंदुदे शिवशिवायॆंद ॥ 5 ॥

तरिसिदनु बळिकवलॆ बिसुटा भरणवनु राजेंद्र कंठा-
भरण चित्तैसेनुत मुंदरिसिदनु रघुपतिय
स्फुरिसिदवु सीताकृतियला भरणवव कंडरस तंदनु
तरहरद लुदकवनु होळ होळवेंव कंगळलि ॥ 6 ॥

साढ़े बारह वर्षों से जंगलों में भ्रमण करते रहे। गौतमी नदी के किनारे के नज़दीक के पंचवटी प्रदेश में रहते समय एक दिन कोई मायावी हिरन हमारे सामने से होकर गुज़रा। ३ "(वह इतना खूबसूरत था कि) किन शब्दों में उसका वर्णन करें! हमारी रानी को (सीता को) अभिलाषा हुई कि किसी प्रकार उस हिरन को प्राप्त करें। हम उस हिरन का पीछा करते-करते आगे बढ़े तो इधर मायावी संन्यासी वेषधारी रावण सीता का अपहरण कर ले गया। इस तरह हमारे साथ बड़ा अन्याय हुआ है। अतः तुम्हारी सहायता चाहते हुए आए हैं।" इस तरह राम ने कहा। ४ सुग्रीव राम के विवरण से समझ गया कि आकाश-मार्ग से अपना दैन्य प्रकट करते जानेवाली राम पत्नी (सीता) ही है तथा उसका अपहरण कर ले जानेवाला रावण ही है। मन ही मन व्यथित, विधि की निंदा करते हुए कहने लगा— "शिव शिव! महाराजा पर ऐसी विपत्ति आ पड़ी न!" इस तरह उद्गार निकालते सुग्रीव चिंताभिग्न हुआ। ५ सीता ने पुष्पक विमान से जो आभूषण गिरा दिये थे उन्हें मँगवाकर सुग्रीव ने कहा— "देखिए राजन्! ये कंठाभरण।" फिर उन्हें राम के सम्मुख धरा। वे आभूषण सीता का आकार-प्रकार प्रकट करते चमकने लगे। उन्हें देख राम काँपने लगे तथा उनकी चमकती आँखें अश्रुपूर्ण हुईं। ६ "सुनिए भगवान्! उस दिन जब रावण सीता देवीजी को लिये

देव चित्तैससुर नंदा देवियर नोय्वंदु बिसुटळु
देव राघव बंदडीवुदेनुत्त नम्मेडेगे
ई विचारव बल्लडव ता जीवदलि जारुवने कलिसु-
ग्रीवने ता बळिक तप्पिद कार्यकेनेंद ॥ 7 ॥
अहुदु मत्तेननुज नोडिवु महिजेयमळाभरणगळु ता-
नहवे नोडेनलोगुव दृगुवारिगळ धारेयलि
अहुदु दिल्लेबेणिके मनदलि वहिस लरियदे नूपुरंगळि
वहुदेनुत केल तेगेदु तलेगुत्तिदनु सौमित्रि ॥ 8 ॥
श्रुतिललाटग्रीव कट विश्रुतकराभरणगळिवु भू-
सुतेय तोडवहुदेन्नदी नूपुरगळहुदेंब
मतियिदेनै तम्म दिट विस्मृतियदेनेने देव नित्य
स्थितिय वंदने यिद बल्लेनु कुरुहनिवनेंद ॥ 9 ॥
अेने दिवाकर सुत शिरः कंपनदलिद्दनु हारविसिदनु
हनुम होगळिदरुळिद नीलादिगळु मन दणिये

उड़ा जा रहा था, तब देवीजी ने यह आभूषण हमारी तरफ़ इस तरह कहते हुए फेंक दिये कि पतिदेव रघुनाथजी यहाँ आएँ तो दे देना। अगर यह विचार रावण को मालूम हो जाय तो क्या वह अपने जीने की आशा रख सकता है? अगर मैं अपने कर्तव्य से विमुख हो जाऊँ तो क्या सुग्रीव कहला सकता हूँ?" इस तरह सुग्रीव ने कहा।७ "ठीक है। भैया लक्ष्मण, देखो तो सही कि क्या ये जानकी के ही आभूषण हैं?" इस तरह लक्ष्मण से कहते राम की आँखें डबडबा आयीं। वे सीता के ही आभूषण हैं कि नहीं —लक्ष्मण निर्णय न कर सकने के कारण (उनमें से) नूपुरों को अलग छाँटते हुए— 'ये तो देवीजी के हैं।' इस तरह कहते हुए उन्हें (लक्ष्मण ने) माथे से लगा लिया। ८ "यह क्या लक्ष्मण? सीता के कान, माथा, कंठ, कमर, हाथ वगैरहों में धारण किये जानेवाले आभूषण न पहिचानते केवल सीता के नूपुरों की पहिचान की बात बता रहे हो। इसका मतलब क्या है? क्या तुम भूल गये हो?" इस तरह राम ने पूछा। तब लक्ष्मण ने उत्तर दिया— "प्रतिदिन उनके चरणों की वन्दना करता था। इसलिए (केवल) नूपुरों को पहिचान सका। ९ लक्ष्मण की बातें सुनकर सूर्यपुत्र सुग्रीव प्रसन्न हुआ। हनुमान को भी वे बातें पसंद आयीं। नील आदि कपिवरों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।" आप मानव तो हैं ही; फिर भी आदिपुरुष के अवतार ही तो हैं न? इस तरह

मनुजरे नी वादि पुरुषन तनुगळल्लायेंदु भास्कर
तनुज तनुपुळकदलि कोंडाडिदनु लक्ष्मणन ।। 10 ।।
बळिक निजवल्लभेय मुक्ताफल सुरत्नाभरण निचयद
नेलेगुरुह नरिदरि विरोधास्पदद बिगुहिनलि
कोळुगुळदोळरिभटन जीवव सेळेदु सीतेय तंदवळिका
ललने गीवुदेनुत्त कोट्टनु मत्ते रविजंगे ।। 11 ।।
तरणितनुज हसाद वेनुता धरणिजेय मैदोडवुगळ बें-
तिरिसिदनु वेळविगेगळादवु वंधुकृत्यदलि
होरे होगदे वळिकरसवानररसगेंदनु रविजनेंबी
दोरेवेसरु बंदंदवावुदु हेळ वेकेंद ।। 12 ।।
रायचित्तै सादडंभोजायताक्षन नाभियलि पा-
नीयजासन नुदिसिदनु लयसलिल दंत्यदलि
आयितातंगरसुतन नारायणन नेमदलि सृष्टिय
कार्यकद कुशलत्व कश्यप मुनियवशवाय्तु ।। 13 ।।
क्षितिप केळा मुनिपतिगे निजसतियरादरु दक्षसुतेयरु
दितियदिति मोदलाद बहुभामिनियर वरोळगे
सति कुशस्थळे येंब पातिव्रतेगे संभविसिदनु वानर
पति पराक्रमि किष्किंयातंगादुदी विपिन ।। 14 ।।

(कहते) रोमांचित हो सुग्रीव ने लक्ष्मण की बहुत-बहुत प्रशंसा की। १० तत्पश्चात् राम अपनी पत्नी के मोती-हीरे जड़े आभूषणों को पहचान गये। तब शत्रु पर का, उनका क्रोध उबल पड़ा। "युद्ध में वीर शत्रु का नाशकर जब सीता को बुला लाऊँगा तब उसे ये दे देना।" इस तरह कहते राम ने उन आभूषणों को, सुग्रीव को लौटाया। ११ "कृपा प्रसाद है" —इस तरह कहते हुए उन आभूषणों को स्वीकार कर सुग्रीव ने सीता के उन आभूषणों को छिपाकर रखा। दोनों (राम-सुग्रीव) में मित्रता बढ़ी। फिर राम ने निष्कपट भाव से सुग्रीव से पूछा— "तुम्हें रविसुत —यह नाम क्योंकर पड़ा? —इसका विवरण दो।" —इस तरह राम ने कहा। १२ राजन्! सुनिए। प्रलय के अंत में श्रीविष्णु के नाभिकमल से ब्रह्माजी की उत्पत्ति हुई। भगवान् नारायण की आज्ञा से उन्हें राज्याधिकार प्राप्त हुआ। सृष्टि-रचना का कौशल्यपूर्ण कार्य कश्यप मुनि के अधिकार में आया। १३ सुनिए, राजन्! दिति, अदिति आदि कई दक्ष-पुत्रियाँ कश्यप मुनि की पत्नियाँ बनीं। उनमें (दक्ष-पुत्रियों में) कुशस्थला नामक

अरसकेळ् किष्किंधेयेंदे करसि कोंड्दु दुर्गविदु कपि-
वरशिरोमणि किष्किंयिं बळिकित्त कपिकुलद
दोरे गळाळिद रिदके सेरिद धरेयनल्लि मेले शक्रन
सरिपराक्रमि ऋक्षराजंगादुदी नगर ॥ 15 ॥
आळिदनु बळिकातनी तरु शैल सम्मर्दनद गोलां-
गूल राष्ट्रवनाय्तु वार्धिकवा कपींद्रंगे
बालकरु तनगिल्लदिरे शशि मौळियलि मनसंदु सार्दनु
शैल राजन तपदलिद्दनु हलवु दिवसदलि ॥ 16 ॥
अरस केळाश्चरियवनु पुष्करणि येरडुंटल्लि मिदनु
सरसियोंदरोळधिक सौंदरियाद नाक्षणके
सुरप कंडनु कंडना सरसिरुह बांधव भोगिसिदरि-
ब्बरु बळिक्कुदुभविसिदरु सुतरिब्बरा सतिगे ॥ 17 ॥
सुरपसुत नम्मग्रजन्मनु तरणिसुत तानीग बळिकिर
लिरलु मिदळु सरसि मत्तोंदरलि सुरवनिते
तरणितन वळियित्तु मुन्निन पुरुष तनवाय्तीश नम्मि-
ब्बरनु कोट्टनु ऋक्षराजगरस केळेंद ॥ 18 ॥

पतिव्रता से, वानर-अधिपति वीर किष्की पुत्र-रूप में पैदा हुआ। यह वन-प्रदेश उसके आधीन हुआ। १४ हे राजश्रेष्ठ, सुनिए। वानरश्रेष्ठ 'किष्की' के कारण ही इस पर्वत का नाम किष्किधा पड़ा। तदनंतर कपिबंशीय राजाओं ने इस प्रदेश के राज्य पर शासन किया। आगे चलकर यह नगर देवेंद्र-सदृश पराक्रमी ऋक्षराज के आधीन हुआ। १५ ऋक्षराज ने ये पेड़-पौधे आदियों से लदे इस वानर राज्य का शासन किया। वह कपींद्र वृद्ध हुआ। उसकी अपनी संतान न होने के कारण, हिमवत् पर्वत पर जाकर उसने शिवजी का नामस्मरण करते एक लंबे समय तक तपस्या की। १६ हे महाभाग, वहाँ जो आश्चर्य हुआ, सुनिए। वहाँ दो पुष्करणियाँ थीं। एक पुष्करिणी में नहाते ही ऋक्षराज सुन्दर स्त्री के रूप में परिवर्तित हुआ। उस (स्त्री-रूप) को इन्द्र और सूर्य दोनों ने देखा। दोनों मोहित हुए। दोनों ने उससे संभोग किया। फलस्वरूप उसके दो पुत्र पैदा हुए। १७ इन्द्र से उत्पन्न होनेवाले है— मेरे बड़े भाई (वाली)। मैं तो सूर्य से उत्पन्न पुत्र हूँ। कुछ समय बीतने पर उस स्त्री (हम दोनों की माँ) ने वहाँ स्थित दूसरी पुष्करणी में स्नान किया। तब उसका स्त्रीत्व अदृश्य हुआ। उसे उसका (अपना) पुरुष-रूप, जो पहले का था, प्राप्त हुआ।

इवरु नंदनरॆंदु तंदॆगॆ विवरिसिद नम्मिब्बरभिधा
नवनु कॊट्टनु कामिसिद रूपव महावरव
युवतियलि पडॆ होगु गिरिसंभवॆगॆ समवॆनिपंजनॆय वै-
ष्णवद महिमॆय मगनु जनिसुवना वधुविगॆंद ॥ 19 ॥
बीळ्कॊंडनु भवनगोलांगूलपतिबळिकंजनॆय निज
बालॆयलि पडॆदित्तना कपिकॆय केसरिगॆ
मेलुजव्वनददटिनलि रति केळियलि गांधर्वरूपनु
तािळरलु मनविक्किदनु पवमाननंजनॆगॆ ॥ 20 ॥
रूपदोरदॆ रमिसिदनु बळिका पतिव्रतॆयनु चतुर्मुख
रूप नुदिसिदनी समीरजनजना सतिगॆ
भूप चित्तैसीत वज्रिय कोपदलि कुरुहळिय लाय्ता
वैपुरुषरि वज्रकायद वरवु बळिकॆंद ॥ 21 ॥
ओदिदनु वळिकीत सासिरवेदवनु सूर्यनलि सुरपन
लोदिदनु सूत्रव सुरेंद्र व्याकरण कृतिय

ईश्वर ने हम दोनों को, उसे (ऋक्षराज को) सौंप दिया। १८ शिवजी ने, ये तेरे ही पुत्र हैं' —इस तरह हमारे पिताजी ऋक्षराज से कहकर हमें उन्हें सौंप दिया तथा उन्हें यह वरदान भी दिया कि इच्छा प्रकट होते ही जो रूप तुम चाहोगे वह तुम्हें (ऋक्षराज को) प्राप्त होगा। जाओ; अपनी पत्नी से गिरिजा के समान (सदृश) अंजना को बेटी के रूप में प्राप्त करो। उसका (अंजना का) पुत्र विष्णु की महिमा से सम्पन्न होगा। —इस तरह शिवजी ने कहा। १९ तत्पश्चात् कपींद्र ऋक्षराज शिवजी से बिदा लेकर आया। उसने अपनी पत्नी से अंजना को बेटी के रूप में प्राप्तकर केसरी नामक कपि-अधिपति से उसकी (अंजना की) शादी कर दी। यौवन की मस्ती में रतिक्रीड़ासक्त वायु ने जब गांधर्व-रूप धारण किया था, तब वे (वायुदेव) अंजना पर लट्टू हो गये। २० अपना रूप बिना प्रकट किए ही वायु ने उस पतिव्रता का संभोग किया। फलस्वरूप चतुर्मुख रूपी यह वायुपुत्र अंजना का बेटा बनकर पैदा हुआ। इन्द्र के क्रोध के कारण इनके रूप में परिवर्तन हुआ। सूर्य, इन्द्र तथा वायुदेव की कृपा के कारण आंजनेय को यह वरदान मिला कि वे वज्रदेही हुए। २१ "हनुमान ने सूर्य के यहाँ (रहकर) हजार वेदों का अध्ययन किया। इन्द्रप्रणीत व्याकरण-सूत्रों का अध्ययन देवेन्द्र के यहाँ जाकर किया। तत्पश्चात् भगवान सूर्य के आदेशानुसार मेरे यहाँ आया। उसके बाद बड़े भाई वाली से मेरी शत्रुता शुरू हुई।" —इस

ऐेदिदनु बळिकेन्ननल्लिदा दिवाकर वचनदलि तंन
गादु दल्लि मेलें हगेतन वण्णनोळगेंद ।। 22 ।।
हगेतनवु निनगेनु कारण चिगुरिदुदु निम्मण्णनिंदेनें
तेगेद ननितऱ मेलें कथेयनु पूर्वपद्धतिय
सगरकुल चित्तैसु यक्षन मगळना मायावियेंबव
नुगिदु कळविनलोय्युतिरें मोरें यिट्टळभ्रदलि ।। 23 ।।
कंडनवननु वालि हायिसि कोंडना कामिनिय बिडें बें-
कोंडु तेवरिदनवन बळिकवना नितंबिनिय
कंडु बिडलारदेविरोधव कोंडु करेदनु काळगकें कै-
कोंडु मनदादियलि कपिकुल सार्वभौमकन ।। 24 ।।
तरुणियर मोहकदलुऱ मत्सरिसदवरारस हेवद
हुरि बलिदु दीतंगें हरिबद सूळें बंटिकेय
धुरकें निंदनु वज्रितनयन करहतिगें कालूऱ लडियदें
तिरुगि मायेय तळेंदु तळकिळिदनु बिलांतरद ।। 25 ।।
हळचिदरु हरि कैटभर बलुगलह कैविडियेनलु नमुचिय
बलविरोधिय बाहुबलकैवत्तु मडियेनलु

तरह सुग्रीव ने विवरण प्रस्तुत किया । २२ राम ने पूछा— "तुम्हारे बड़े भाई के साथ तुम्हारी शत्रुता किस कारण से हुई ?" तब सुग्रीव ने पूर्व-कथा का विवरण दिया । "सगरवंशीय हे राम ! सुनिए । मायावी नामक राक्षस जब यक्ष की पुत्री का अपहरण कर ले जाने लगा— तो आकाश-मार्ग से जाती वह करुण-क्रंदन करती याचना करने लगी । २३ "उसे वाली ने देखा । तुरन्त उसका पीछा किया । यक्ष की पुत्री को विमुक्त कर उस मायावी को पीटा । मायावी उस युवती को छोड़ नहीं सकता था । (उसके मोह में पड़े) मायावी ने द्वेष से वाली को युद्ध के लिए ललकारा । २४ युवती के मोह के कारण कौन नहीं जलता ? किसमें ईर्ष्या-राग-द्वेष पैदा नही होते ? एक-दूसरे से घृणा करने लगे । बदला लेने की भावना बढ़ने लगी । मायावी जीवट का बहादुर था । युद्ध के लिए डट गया । मगर वाली की मार सहन न कर सका । मायावी ने माया की गुफा की शरण ली तथा (उसमें) नीचे उतर गया । २५ वाली और मायावी में इतना भयानक युद्ध छिड़ गया मानों (वह युद्ध) श्रीविष्णु तथा कैटभ के बीच हुए युद्ध से पाँच गुना बड़ा युद्ध हो या इन्द्र और नमूचि के बाहुबल से पचास गुना अधिक बाहुबल हो । युद्ध जब

कलहवति बिरुसागे ता बेंबलके बरे बरबेड नीनी
बिलन बागिल कादिरेनु तोळ होक्कना वालि ।। 26 ।।
बारदिरु बेंबळिय बिलन द्वारवनु कादिरु मगुळ्दव
बारदंतिरे बेहु निनगेंदन्न नल्लिरिसि
होरिदरु हदिनैदु वरुषवु तीरुवन्नबरल्लि विलय
द्वार मुखनादनु वळिक्कवनरस केळेंद ।। 27 ।।
सावुता रक्कसनु हा सुग्रीव हा येंनु तोदऱि रणदलि
जीववनु जाऱिसिदना ध्वनिगेळिसितुकिविय
तीविदति भयदलि महोग्र ग्राव कॆणॆयेनिपद्रियनु कि-
त्ता विवर कुहरदलि कीलनु कोट्टे नानेंद ।। 28 ।।
सारिदेनु नगरवनु कपिसंस्कारवनु माडिदेनु राज्य-
श्री रमणिगरसादे नऱसिद नण्ण ना बिलन
द्वारवनु बळिकल्लि काणदे धारुणिय नोडे तिविदु विलयद
भैरवनवोलु बंदु तन्ननु कोललु मनदंद ।। 29 ।।
अवनिपति चित्तैसु धर्मश्रवणमुखदलि गज गवय जां-
बव सुषेणादिगळु सति सहजात सुतरुगळ

ज़बर्दस्त होने लगा तो मैं वाली की मदद के लिए दौड़ पड़ा। 'तुम मत आओ; इस बिल के द्वार की रक्षा करो' —कहकर वाली बिल के अन्दर घुस गया। २६ "मेरी मदद के लिए मत आना; बिल के द्वार की इस प्रकार रक्षा करते रहो कि वह राक्षस कहीं लौट न पड़े। इतना ही तेरा कार्य है।" —इस तरह कहकर मुझे वहाँ तैनात किया। पन्द्रह वर्षों तक मायावी तथा वाली लड़ते रहे। अंत में राक्षस मारा गया। २७ "मरते-मरते वह राक्षस 'हे सुग्रीव' इस तरह पुकारते-पुकारते मरा। वह आवाज़ मुझे सुनायी पड़ी। मैं अत्यंत भयभीत हुआ। एक बहुत बड़ी चट्टान पहाड़ से उखाड़ लाया। तथा उस बिल के द्वार को बड़ी दृढ़ता से बन्द कर दिया।" इस तरह सुग्रीव ने निवेदन किया। २८ राजधानी लौटकर वाली के अंत्य (मरणोत्तर) संस्कार किए। मैं राज्यलक्ष्मी का अधिपति बना। उधर बड़े भैया (जो जीवित थे) बिल (का द्वार) ढूंढ़ते आए। द्वार न दिखाई पड़ने के कारण धरती पर मुक्के जमा-जमाकर (धरती) फोड़कर बाहर निकले। प्रलयकालीन भैरव की तरह प्रकट होकर उन्होंने मेरी हत्या करनी चाही। २९ "हे राज़ा रामचन्द्र ! सुनिए। नीतिविशारद गज, गवय, जांबव, सुषेण आदियों ने (वाली को) समझाया कि पत्नी, भाई तथा संतान की हत्या करना धर्म-

तविसुवदु ता धर्मवल्लेंदवरु नुडियलु नूकिदनु हर-
णवनु कॊळ्ळदे कोपदिंदवमान मार्गदलि ॥ 30 ॥
ऎलॆ महीपति केळु मेलण कॆलसवनु कर्तव्य वल्लें-
दुलिय लाप्तर मात केळदे तन्न निजसतिय
सॆळॆदु कॊंडनु मानभंग स्थळके नायक नादे नंजिके
बलिदुदल्लि मेलॆ बालिय बलुहि गॆनगॆंद ॥ 31 ॥
सारिदेनु निललरियदय्यन मेरुविन कीलच्चनरिदा
सारसप्रिय सलहि कॊंडिद्दनु करांबुजद
वारिजद मध्यदलि किरणद धारॆदट्टिसदंतॆ वत्सर
तीरिदवु हलवल्लि हृदनिनिताय्तु तनगॆंद ॥ 32 ॥
देव बळिकीचयलि गत मायाविय्यनु मगन कॊंदव
नावनॆंदरियलु सुरेंद्रन बेडिदनु रणव
देवपतियवगंजि शूलिय मावननु तोरिदनु बळिका
ग्रामपति कैमुगिदु कळुहिदनबुधिपन बळिगॆ ॥ 33 ॥
निल लरियदा वरुण तरणिय बळिगॆ कळुहिद नातनीतन
कलह कार्य स्थितिय नरिदनु मान मार्गदलि

नहीं। तब (उनकी बात पर गौर कर) मेरे प्राणों का अपहरण न कर, मुझे अपमानित कर धक्के मारकर निकाल दिया। ३० हे भूमिपति, आगे चलकर जो कुछ हुआ, सुन लीजिए। अपने प्रिय तथा निजी जनों के लाख-लाख समझाने पर भी वाली ने तेरी पत्नी को अपने वश में कर लिया। इस तरह अत्यधिक अपमानित होने पर वाली के पराक्रम के कारण मैं प्रतिदिन भय के मारे घुलने लगा और मेरा वह भय बढ़ता ही गया। ३१ "अब वहाँ रहना असंभव होने के कारण अपने पिताजी का निवासस्थान मेरुपर्वत का सहारा लिया। सूर्य ने मेरा समाचार समझ लिया तथा अपनी हथेली के मध्य के समुद्र में रखकर मेरी रक्षा कर रहे, जिससे उनके प्रखर किरणों से मैं जल न जाऊँ। इस प्रकार कई वर्ष बीते। मेरी स्थिति ऐसी हुई।" —इस तरह सुग्रीव ने बताया। ३२ इधर मारे गये मायावी (राक्षस) के पिता— 'अपने बेटे को किसने मार डाला ?' इस तरह ललकारते देवलोक में इन्द्र के सम्मुख जा डटे। देवेन्द्र ने (उनसे) डरकर, शिवजी के ससुर हिमवंत (हिमालय पर्वत) की ओर इशारा किया। हिमवंत के पास जब वह (मायावी का पिता) पहुँचा तो उसने डरकर हाथ जोड़े तथा वरुण के पास उसे भेज दिया। ३३ मायावी के पिता का सामना करने में असमर्थ हो, वरुण ने उसे सूर्य के पास

ऎलवॊ रक्कस निन्न तनुजन तलॆय तरिदवनॆन्न तनयन
कॊलॆगॆ कॊट्टवनॊब्बने होगवन बळिगॆंद ॥ 34 ॥
अवनले महिषासुरन सहभवनु दुंदुभियब हॆसरव
गवनिपति चित्तैसु हॊगळ्वॆनेननवनदट
शिवन कूडॆ गजासुरनु विष्णुविनॊडनॆ कैटभनु हॊरिद
लवणियलि हॊरिदनु हरिसंभव नॊळवनॆंद ॥ 35 ॥
बरिदुदबुज भवांडविब्बर धुरद हॊरॆगमर संतति
सरकुदॆगॆदुद्दु सिडिदु हारिदवद्रि शिखरचय
जरिदु दंबुधियवनि बिक्कनॆ बिरिदुदॊर्गुडिसिदवु निड्डु ब-
द्दरद भुवनावळि भयंकरवाय्तु रणरभस ॥ 36 ॥
केळु रघुपति पशुपतिय समजोळियल्ला बालि संगर
शूलि सुमनो रत्न राजित हेममयमालि
सूळुमिगॆ संगरद रवदुब्बाळिनलि तिरुहिट्ट नरुणज
लाळि झॊरिदे ऋष्यमूक महा महीधरकॆ ॥ 37 ॥
अंगजारिय सदृशदुग्रमतंग मुनिवर निर्दना गिरि
श्रृंगदलि नैष्ठिकतपोनुष्ठान नियमदलि

भेज दिया। 'यह लड़ने के उद्देश्य से ही आया है' —इस तरह ताड़ जाने पर सूर्य ने उससे कहा— "अरे राक्षस, तुम्हारे बेटे का सिर काट डालनेवाला तथा मेरे बेटे की हत्या को सोचनेवाला एक ही व्यक्ति है। उसके पास चले जाओ। ३४ (मायावी का पिता) वही महिषासुर का भाई है। उसका नाम है दुंदुभि। उसकी वीरता का क्या वर्णन करें? शिवजी से जैसे गजासुर का युद्ध हुआ था, विष्णु से जैसे कैटभासुर की लड़ाई हुई थी उसी भाँति वाली ने दुंदुभि के साथ युद्ध किया। ३५ उन दोनों में छिड़े भयानक युद्ध के जोर के कारण ब्रह्मांड फटने लगा। देवता वहाँ से खिसक गये। पहाड़ की चोटियाँ फटकर उड़ने लगीं। समुद्र में भाटा (उतार) आ गया। भूमि में दरार पड़ गयी। दिशा रूपी हाथियों से ढोए गये लोक सारे ढेर हो गये। उन दोनों के युद्ध की भीकरता बढ़ती ही गयी। ३६ सुनिए, रघुपति। युद्ध में त्रिनेत्री (शिवजी) सरीखे, मनोहर रत्नों से शोभायमान सोने (स्वर्ण) की माला धारण करनेवाले वाली शिवजी के बराबरी वाले हैं न! अवसर पाकर, एक पकड़ में वाली ने घनघोर गर्जना करते हुए, खून से लथपथ हुए दुंदुभि को घरघराहट के साथ घुमा-फिराकर ऋष्यमूक पर्वत पर तानकर फेंक दिया। ३७ उस पहाड़ की चोटी पर शिवजी-सदृश मुनिश्रेष्ठ

हिंगिदसुविन दुंदुभिय मैजंगळद जरिदरुणजल मुनि-
यंगलतेयलि सिडियॆ किडिकिडियोदना मुनिप ॥ 38 ॥

विश्रमस्थळ वॆमगिदे महदाश्रयवु नम्मय तपक्कॆ स-
हस्र नयननसुतन घल्लणॆ घनवलायॆनुत
विश्रुतारुणनयनना बल विश्रुतंगित्तनु मदीय म-
हाश्रमकॆ बरॆ मरण मैगूडलॆंदु शापवनु ॥ 39 ॥

दिनप नदरिंदॆन्न नंदा मुनिय कैयलि कॊट्टनंदि
दॆनगॆ नॆलॆवनॆ यादुदीगिरि सेरिदरु बळिक
हनुम नळनीलादिगळु दिन दिनकॆ बॆळॆदुदु वॆर वण्णं-
गॆनगॆ हॆबळियिद हदनिदु देव केळॆंद ॥ 40 ॥

वासि लेसभिमान मार्गद वासिवाळिकॆ लेसुकंडॆवु
दोषवनु दुर्जनगॆ निनगिन्नाव भयबेड
वासवन नगरदलि वानर वासवन निलिसुवॆनु निन्न सु-
वासिनिय बळुवळिगॆ जयसिरिवधुव निनगॆंद ॥ 41 ॥

मतंग बड़ी निष्ठा से तपस्या कर रहे थे। अपने प्राण खो बैठे दुंदुभि के शरीर से छिटके रक्तकण मुनिवर के शरीर पर पड़े तो वे गुस्से से आगबबूला हुए। ३८ 'यह हमारा विश्रामस्थल है। और यही एक हमारा श्रेष्ठ निवासस्थान है। हमारी तपस्या में इन्द्र का पुत्र वाली भारी विघ्न उपस्थित कर रहा है।' इस तरह सोचते मतंग मुनि की आँखें क्रोध से लाल हुईं। (उस अवस्था में) उन्होंने वाली को शाप दिया— "हमारे आश्रम पधारो तो तुम्हारी मृत्यु हो"। ३९ "तब सूर्यदेव मुझे मतंग मुनि के आश्रम ले आए और वहाँ छोड़कर चले गये। तब से यह पर्वत मेरा निवासस्थान बना। तदनंतर हनुमान, नल, नील, वगैरः यहाँ आकर मेरे साथी बने। स्त्री के कारण मेरा तथा वाली का वैर दिन-प्रतिदिन अधिक होता गया। सुनिए भगवान्; यही वस्तुस्थिति है।" इस तरह सुग्रीव ने राम को विवरण दिया। ४० "तुम्हारी यह स्पर्धा अच्छा है। अभिमान (स्वाभिमान) से भरा तुम्हारा यह जिद्दी जीवन भी श्रेष्ठ है। अब मैं समझ गया कि गलती वाली की ही है। उस दुष्ट से अब किसी प्रकार तुम्हें डरना नहीं चाहिए। वानरेन्द्र वाली को हम सीधे देवेन्द्र नगरी (स्वर्ग) को ही भिजवा देंगे। तुम्हें तुम्हारी अपनी पत्नी के साथ-साथ विजयलक्ष्मी भी भेंट में दे दूंगा।" —इस प्रकार राम ने आश्वासन दिया। ४१ „ अगर मेरा कार्य सफल बना दिया तो तुम्हारे शत्रु रावण

कॆलसविदु संघटिसॆ देवर कलह कॊप्पिसिकॊडुवॆ ना दश-
गळननॆनॆ साकॆंदु सत्यवचोविलासदलि
कलिगळिब्बरु माडिदरु निर्मळ सुभाषा समयवनु कर
तळद नंबुगॆगळलि निर्मिसिदग्नि साक्षियलि ।। 42 ।।
कंद केळै भाषॆ भटरिगॆ संदुदी परि मनवु रविजगॆ
निंदु निललरियदॆ परीक्षॆगॆ माडिदनु मनव
ऒंदु बिन्नह जीय बिद्दिह दुंधुभिय विग्रहवनिद कॆल
कॊंदिसिद भट गॆलुव नण्णननॆंदु कॆमुगिद ।। 43 ।।
ऎसॆ मत्तॆनॆनुतला भूमिश नुंगुट दुदिय लॆलुगळु
सूस लॊदॆदनु नगुत दशयोजन मितावनिगॆ
बीसि बिद्दवु तागदद्रिगळासुरद रभसदलि मनदॊळ
गासॆ बलियदॆ वळिक मर्कटरायनितॆंद ।। 44 ।।
अरस चित्तैसॆळु ताळिवॆ सरिसदलि दैविकद मरनिव
नुरगनंदद दैत्यमुनि धरिसिहनु वितळदलि
सुररिगसदळविवु बळिक्किवनॆरडु कडिमाडिदरॆ कदनद
लरिवधा समयवक्कॆ संप्रति यहुदले यॆंद ।। 45 ।।

को युद्ध के लिए तुम्हें सौंप देता हूँ।" —इस तरह सुग्रीव के कहने पर, "बस, इतना हुआ तो यथेष्ट है।" इस प्रकार राम ने कहा। सत्य-वचननिष्ठ उन दोनों वीरों ने अग्नि को साक्षी बना, हाथ में हाथ लेकर प्रतिज्ञा की। ४२ इस प्रकार दोनो वीरों ने एक-दूसरे को वचन दिया। सुनो लव, सुग्रीव को राम पर पूरा भरोसा था। फिर भी (सुग्रीव) के मन में थोड़ी सी शंका उत्पन्न हुई। (अतः) उसने चाहा कि राम की परीक्षा ली जाय। "एक बिनती है भगवन्, यहाँ पर पड़े दुंदुभि के इस अस्थिपंजर को जो परे फेंक दे तो वही वीर मेरे बड़े भाई पर विजय पा सकता है।" —इस तरह कहते सुग्रीव ने राम को प्रणाम किया। ४३ "बस, इतना ही तो है?" इस तरह कहते राम मुस्कुराए; (अपने) पैर के अँगूठे से दुंदुभि के अस्थिपंजर को यों एक धक्का मारा कि वह दस योजन दूरी पर जाकर गिरे। (तब) उस (अस्थिपंजर) से टकराए पहाड़ जोर से उछल पड़े। इतने पर वानरराज तृप्त न हुआ; उसने राम से फिर कहा—। ४४ "राजराजेश्वर, इस तरफ़ देखिए— एक ही पंक्ति में ये सात तमाल वृक्ष हैं। इन दिव्य पेड़ों की जड़ों को, वितल में निवास करनेवाले सर्पाकार दैत्य मुनि पकड़े हुए हैं। (अतः) देवता भी इनको काट (गिरा) नही सकते। इनको काटकर दो टुकड़े यदि

अहुदु मत्तेनेनुत नृपनिज सहभवन मोगनोडलित्तनु
विहित समयोचित शरासननवनु महीपतिगे
अहियरूपिन दानवन विग्रहव नुंगुट दग्रदलि जडि
दहिमकरसुत नोडेनुत कॆडॆयॆच्चु बोब्बिरिद ॥ 46 ॥
बीळुता मरनोदरिदवु सिडिलेळिगेय सबुददलि सुमनो
पालसुत नॆदॆ वॆदरॆ बॆळदवु मत्ते वेगदलि
एळलीसदे तरिवु तिर्दुदु कोलु कोळाहळिसि कपिकुल
मौळिमणि बॆरगागॆ होगळे समस्त कपिनिकर ॥ 47 ॥
संदणिय मरनोट्टलिरॆ रघुनंदननु बळिकरिदु बॆससलु
कोंदुदा पाताळदलि फणिरूपकद खळन
बंदु होक्कुदु शर सुदरुशन दंददलि मूडिगेयना रवि-
नंदनादिगळॆरगिदरु जय जय निनाददलि ॥ 48 ॥
ऎत्ति कपिमस्तकव निन्नेनोत्ति नोडुवुदुंटे मन ता-
नित्तडिय मॆट्टिरलु बेड पुनः परीक्षेयलि

(आप) कर दें तो वाली की हत्या की प्रतिज्ञा की हमारी संधि (सुलह) में परिपूर्णता आ जायगी।" इस तरह सुग्रीव ने कहा। ४५ "कोई बात नहीं; यह भी हो जाने दो।" इस तरह कहते हुए राम ने लक्ष्मण की तरफ़ देखा तो लक्ष्मण ने उस कार्य के सुयोग्य धनु श्रीराम को दे दिया। सर्परूपधारी राक्षस के शरीर को राम ने अपने पैर के अँगूठे की नोक से दबाकर 'रविपुत्र, देखो।' —इस तरह कहते हुए गरजे तथा वाण इस प्रकार छोड़ा कि (सप्त तमाल) वृक्ष कटकर गिरें। ४६ वे तमाल वृक्ष बिजली गिरने के सदृश कड़कड़ाहट का शब्द करते (कटकर) गिरे। यह देख सुग्रीव के होश उड़ गये। तुरन्त वे पेड़ फिर बढ़कर खड़े हो गये। राम उनको (एक साथ) इस प्रकार काट गिराता कि वे फिर पनपने न पावें। राम की वीरता देख कपिकुल-अधिपति सुग्रीव दंग रह गया। समस्त वानर वीर राम का जय-जयकार करने लगे। ४७ काटकर गिरते पेड़ फिर-फिर इकट्ठे होकर वढ़ते देखकर राम ने अपने वाण को आज्ञा दी तो उसने पाताळ में प्रवेश कर वहाँ के सर्प-रूप-धारी राक्षस की हत्या कर डाली। तत्पश्चात् वह सुदर्शन (चक्र) की भाँति लौट आया तथा राम के तरकस में प्रवेश कर बैठा। जय-जयकार करते हुए सुग्रीवादि (वानर) राम के चरणों में गिरे। ४८ अपने चरणों में नत सुग्रीव के सिर को राम ने उठा लिया— "क्या और कोई परीक्षा बाक़ी है? तुम्हारा मन संदेह (शक) के झूले

चित्त शुद्धियलॆनलु कपि तलॆगुत्ति देवरिगिन्नु ता पडि-
युत्तरकॆ पासटियॆ पतिकरिसॆदु कॆमुगिद ॥ 49 ॥
कॆणकु होगादडॆ विचारव नॆणिसदरि भॆरवन मेलण
रणद भारवु नम्मदंजिकॆ बेड निनगॆनुत
प्रणुतजन सुरधेनु सुमनोगण महाविभु वीर तॊरवॆय
गुणभरित नरसिंहनभयवनित्त निनजंगॆ ॥ 50 ॥

मूरनॆय संधि

सूचनॆ— राय कपि सुग्रीवनमरर रायकुवरन हॊक्कि मॊदु पलायनक्कुरॆ अरॆदु नुडिदनु जानकी-पतिय।

अॆलॆ कुशनॆ केळग्रजन्मन कॊलॆगॊडंबट्ट नसुतन हॆ-
ब्बलद हॆक्कळ जक्कुलिसिदुदु जानकीपतिय
कलुमरन कैदुगळ जंघा कलित गाढद गतिय गर्वद
किल किलायत रवद भटरुब्बिसिदरिन सुतन ॥ 1 ॥

पर झूले —यह मुझे पसंद नहीं। अगर परीक्षा करनी ही है तो परिशुद्ध मन से कहो।" —इस तरह राम ने पूछा। तब सुग्रीव सिर झुकाए— 'भगवन्, आपके इस प्रश्न का प्रत्युत्तर मैं कैसे दूं ? मुझ पर दया कीजिए।" यों कह सुग्रीव ने हाथ जोड़े। ४९ "अब फिर सोच-विचार न करते, जाकर तुम अपने बड़े भाई को छेड़ो। तुम्हारे शत्रु के साथ लड़ने-भिड़ने की जिम्मेदारी अब मेरी रही। तुम डरो मत।" इस तरह शरणागतों के लिए कामधेनु-सदृश, देवताओं के अधिपति, सद्गुणसंपन्न 'तॊरवॆ' के नरसिंह-अवतारी श्रीराम ने सुग्रीव को अभय प्रदान किया। ५०

तीसरी संधि

सूचना— वानरों के राजा सुग्रीव ने इन्द्र-पुत्र वाली का सामना कर मार खायी तथा हारकर दौड़े आकर जानकीपति की निंदा की।

सुनो कुश, बड़े भाई की हत्या के लिए राजी हुआ सुग्रीव वीरता से अकड़ गया था। यह देख राम हर्षित हुए। पत्थर और पेड़ों को (अपने) आयुध बनाकर जंघाओं के बल पर उछलते-कूदते वानर वीर बड़े दर्प से किलकिलाहट की ध्वनि के साथ (किलकारियाँ भरते) सुग्रीव को उकसा कर प्रोत्साहित करने लगे। १ राम से इशारा पाते ही सुग्रीव की

धरणिपन कैसन्नेयलि मोहरिसि नडेदुदु सेनेमुत्तिद
रिरुळ तुदियलि दुर्गवनु दिविजेंद्र नंदनन
पुरदोळाडिद वद्रितरु काहुरदला कळकळिके केळिसि
तरिभयंकरभटन जयतरुणांगना विटन ॥ 2 ॥
हगेगळेमगिन्नारु निर्जर नगर पति नम्मय्य नुळिदर
सुगळ पाडल्लेमगे दिनदलि धरणियलि नृपरु
हेगलु बडिकर हेळदिरु वासुगिगे गरुडरु नावु नम्मोळ
गगडुतनवीहोत्तु तम्मंगल्ल दिल्लेंद ॥ 3 ॥
केणकिदवनीगातनातन कुणिहवनु कुंदिसुवेनिंदिन
रणदोळगे साकेनिसुवेनु संसार तर सुखव
अणदणदु होहवन गगनागणद मार्गिय माडदिरे बलु
कणेय भटने तानेनुत होरवंटनाहवके ॥ 4 ॥
ऊरोळगे बीळुव महाद्रिम महीरुहंगळ कळकळवनु नि-
वारिसुत होरवंटुदोडने सुरेंद्र सुतसेने
आरु निलबहुदवर घाराघारियलि घाडिसुव रविजन
कोरडिय कपिभटरु केदरितु कंड मैगळलि ॥ 5 ॥

सेना तैयार होकर निकली तथा रात बीतते-बीतते वाली के क़िले को उसने घेर लिया। क्रोध में आकर उसने (सेना ने) नगर के अंदर बड़े-बड़े चट्टान तथा पेड़ तोड़-तोड़कर गिराए। विजयलक्ष्मीपति (शूरवीर) शत्रु वीर सुग्रीव की गर्जना वाली को सुनायी पड़ी। २ "हमारे और कौन दुश्मन हो सकते हैं? हमारे पिता, अमरावती के अधिपति को छोड़कर इस लोक में या देवलोक में— जो राजा हैं वे मेरी बराबरी कर ही नहीं सकते। कंधा देनेवालों की बात तो दूर की रही। आदिशेष के लिए भी हम गरुड़-सदृश (भयंकर दुश्मन) हैं। आज मेरे साथ इस प्रकार की धृष्टता मेरे भाई के सिवा और कोई कर ही नहीं सकता। (आश्चर्य है!) ३ "मुझे छेड़नेवाला तो वही है। आज के युद्ध में उसके घमंड को चूर कर देता हूँ। वह अनुभव करे कि सांसारिक सुख यही तक यथेष्ट है। (फिर सुख की आशा ही न करे) मुझे पीटने के लिए आनेवाले को अगर मैं आकाश की तरफ़ उड़ा न दूँ तो (मैं) कैसा युद्धवीर रहा?" इस तरह कहते-कहते वाली युद्ध के लिए रवाना हुआ। ४ शहर में आकर गिरते भारी-भरकम पेड़ तथा चट्टानों के शोरगुल का निवारण करते हुए इन्द्र-पुत्र वाली का सैन्य तुरन्त युद्ध के लिए रवाना हुआ। उस (सैन्य) के ज़बर्दस्त आक्रमण के सम्मुख कौन टिक सकता है? मार-पीटकर हिंसा

बंदु निंदिर्दनिंद्रसुतनिन नंदनन सरिसदलि हॆंवळि
यिंद हॆच्चिद मनद मसकद मत्सरंगळलि
कुंदु हॆच्चिन पाडुपंथद कंदु कसरिन कलिमनद कडु
हिंदकय्दुडुकिदरु कदनकॆ कलिगळाजियलि ॥ 6 ॥
बलवॆरडु हिम्मॆट्टि निंदवु कलिगळिव्वर कैय सन्नॆय
लळिबलर बाहुप्रतापद वहळ तेजदलि
मलतुदो कैलास कनकाचल दॊळॆनॆ रणधीर रिव्वरु
कुलिशदॆदॆ सिगुडॆळॆ सीविरिसिदरु बॊब्बॆयलि ॥ 7 ॥
अडियनरॆदॆगदॊदद्रि भुजवनु हॊडॆयलिव्वगियाय्तु मेरु वि-
नॊडलु बॆरळिन वायबॊब्बॆय विगुहिगवुजजन
मिडुकु कंठदॊळाय्तु मंडिय पडिय पदपद्धतिगॆ फणिपन
हॆडॆ निद्रिलु निटलॆंदु दॆनद्भुतवो रणरभस ॥ 8 ॥
अब्बरिसि बलुमुष्टिगळ नभकॆब्बिसुत कय्दुडुकिदरु सुर-
रुब्बिरियॆ सुळिसिदरु मुष्टिय सूळुपाळिनलि

उत्पन्न करनेवाले सुग्रीव के सैनिक— वानर वीर वाली की सेना देखते ही ज्यों के त्यों, जहाँ के तहाँ, तितर-बितर हो भाग खड़े हुए। ५ इन्द्रपुत्र वाली ने सूर्यपुत्र सुग्रीव का सामना किया। स्त्री के कारण बढ़ा हुआ द्वेष तथा ईर्ष्या के प्रखर क्रोध ने दोनों वीरों को उन्मत्त बना दिया। दोनों का क्रोध उभड़ा। एक-दूसरे पर गंदे ताने कसते हुए, गाली-गलौज करते हुए, ज़िद तथा ईर्ष्याग्नि से सुलगते हुए एक-दूसरे की हाथा-पाई शुरू हुई। दोनों जूझ गये। ६ दोनों वीरों के हाथ के इशारे पाकर दोनों तरफ़ की सेनाएँ पीछे हट गयीं। अत्यधिक भुजबलसंपन्न दोनों तेजस्वी युद्धवीर इस प्रकार एक-दूसरे की टक्कर ले रहे थे मानों कैलासपर्वत मेरुपर्वत से टक्कर ले रहा हो; दोनों ने अपने-अपने वज्रायुध घनघोर गर्जना करते इस प्रकार चलाए मानों वह दृश्य देखनेवालों की छाती फट जाय। दोनों ने लड़ते-लड़ते अपनी प्रखर वीरता प्रकट की। ७ एक पग आधा ऊपर उठाकर, सिंहनाद करते भुजाएँ थोप लेने लगते ही मेरुपर्वत के विदीर्ण होने से दो टुकड़े हो गये। उनके चीखने-चिल्लाने की ध्वनि की प्रचंडता के कारण ब्रह्मा का कंठ कांपने लगा। अकड़ते-अकड़ते पग धरने के वेग के ज़ोर के कारण आदिशेष के फन फटने लगे। वीरों के युद्ध की तीव्रता कितनी प्रचंड और अद्भुत थी! ८ दोनों वीर गरजते हुए, मूठ बाँधे, हाथ ऊपर उठाए एक-दूसरे पर प्रहार करने लगे। अपनी बारी का इन्तिज़ार करते, मौका पाते ही मूठों से, मुक्कों से जब एक-दूसरे को पीटने लगे तो देवता

हब्बुगिडिगळ होदरुदिविगळ गुब्बरद सबुददलि ताय् मळ-
लुब्बुतिर्दुदु शराधियलि ता सोरह लेनेंद ॥ 9 ॥
शिरवु कंठ कपोल भुजकंधर महोरस्थळद लाडिद
वरिभयंकर भटर मुष्टिगळशनिघातदलि
सुरिव किडिगळ तोळनेंगहिन तिरुहुदिविगळ तीव्रतेयल-
ब्बरिसुतिर्दुदजांडमंडल घम्मुघळिलेंनुत ॥ 10 ॥
उसुर कावोगे कल्पमेघद बेसुगेयंतिरे भानुबिबव
मुसुकुतिर्दुदु कंगळिदोगु विगण गळिळेय
बसुरू बेयिसुतिर्दुदद नंदिसुत लिर्दवु भटर मैगळ
लोसर्व बेमरडिगडिगे पडियिडलरियें नानद ॥ 11 ॥
जवन जूबिन कूट लयभैरवन काल्दुळियाट विलयद
शिवन सिट्टिन नोट नरसिंहन भुजास्फोट
प्लवग पतिगळ लिर्दुदै त्रैभुवन कंपिसुतिर्दुदै रण
दवकिगर दक्कडद देखवाळद महाहवके ॥ 12 ॥

यह दृश्य देख फूले न समाए। एक साथ, एक-दूसरे पर घूंसा मारने के कारण निकली चिनगारियाँ आसमान को घेरने लगीं। और इस भयानक क्रिया के कारण हुए भारी शब्द के कारण समुद्र तले की रेत ऊपर उठ आयी। यह वर्णनातीत (दृश्य) था। ९ सिर, कंधा, गला, गाल, चौड़ी छाती आदि पर शत्रुभयंकर कपि वीरों की मुक्कों की मार (एक-दूसरे की) वज्रायुध की तरह पड़ रही थी। भुजाएँ उठाकर एक-दूसरे पर प्रहार के लिए घुमाने लगते ही चिनगारियाँ निकल रही थीं। ब्रह्मांड इससे फटने लगा। १० कपि वीरों के नासाग्र से निकलते तथा दीर्घ लंबी साँस से निकलते काले धुएँ ने मानों प्रलयकालीन बादल की तरह घेरकर सूर्यबिंब को छिपा लिया। आँखों से निकलती चिनगारियों के कारण भूमि का गर्भ मानों दहला गया। (उन) वीरों के शरीर से छूटती पसीने की धारा बार-बार (आँखों से निकली) चिनगारियों को बुझाए देती थी। वाल्मीकि ने वर्णन किया कि यह युद्ध उपमातीत है। ११ यम के भूतों का, दूतों का समूह, प्रलयकालीन भैरव के पैरों तले रौंध जाना, लय-कालीन रुद्र की क्रोध भरी दृष्टि, नरसिंह की भुजाओं का ठोंकना वग़ैर: सभी स्थितियों को उन वानर वीरों के युद्ध में देखा जा सकता था। (उन) युद्धवीरों के भारी वैभवपूर्ण रीति से जूझने पर तीनों लोक काँप उठते थे। १२ वीरों के परस्पर (आपसी) आघात-प्रतिघातों के शब्द

घायगतिय घडावणेगे रघुराय नायेंनु तिर्दनै मज्ञ
मार्ये मार्येनुतिर्द नंगवनोलदु सौमित्रि
वायुसुत नळरीचेंयलि तारेय जांववराचेंयलि सम-
रायतद सौरंभ लेसेंनुतिर्द रिद्देंसेय ॥ 13 ॥
कैटभन कमलांबकन हॊय्लाटवो मेणंधकन शशि
जूटरिव्बर तिविगळो नरहरि हिरण्यकर
आटविक रणरौद्रवो शतकोटि पाणिय वीरजंबन
घाट मुष्टि प्रहरणवो परिकिसुवडरिदेंद ॥ 14 ॥
सोलविल्लदें नडवुतिर्द्दु काळगवु कपिवीररिगें कपि-
जालविर्द्दु रणद सोगसिन सुखद सुग्गियलि
आलि दणियदें मगुळें मगुळें छडाळनोय्द विल्ल तिरुविन
कोल तोहिन राम निर्दनु नोडुताहवव ॥ 15 ॥
धुर चमत्कृति चटुळतर निर्भरव देंतुटों वज्रितनयन
करहतिगें खरदंड सखसुत रणकें योजनव
चरण तळदिंदोदेंद सिडिलिन भरकें त्रिरितुरुळुव कुलोर्वी
धरद बोलु विद्दोदेंदु कोंडनु ऋष्यमूकदलि ॥ 16 ॥

सुन राम आश्चर्य से मुंह वाए खड़े रहे। लक्ष्मण 'धन्य, धन्य!' कहते थिरकने लगे। इधर सुग्रीव की तरफ़ हनुमान, नल तथा उधर उस वाली की तरफ़ के तार, जांबव —दोनों तरफ़ के युद्ध-वैभव को देख 'भेष, वाहवा' कहते हुए भारी प्रशंसा कर रहे थे। १३ वाली-सुग्रीव के बीच जो युद्ध हुआ वह मानों ऐसा लग रहा था कि कैटभासुर-विष्णु के बीच युद्ध हो रहा हो, या अंधकासुर-चन्द्रशेखर (शिवजी) के बीच युद्ध हो रहा हो, या हिरण्यकशिपु-नरसिंह के बीच हो रहा उग्र संग्राम है या जंभकासुर-इन्द्र के बीच मुक्कों से हो रहा युद्ध है। यह किस प्रकार का युद्ध है— परीक्षा करना असंभव था। १४ दो कपिवीरों के बीच हो रही इस लड़ाई में कोई नही हार रहा। अतः यह आगे बढ़ा। कपिसमूह को मानों यह युद्ध आनंदोत्सव का सुख प्रदान कर रहा था। जितना भी यह युद्ध देखें, राम की आँखें अघाती नहीं थीं। अतः आँखे फाड़े, धनुष पर बाण चढ़ाए पेड़ की आड़ में खड़े राम यह युद्ध (वाली-सुग्रीव का) निरखते रहे। १५ वाली के युद्धोन्माद का, कौशल्य का कितना और कैसे वर्णन करें? देवेन्द्र-पुत्र वाली के हाथ के वार से सूर्य-पुत्र सुग्रीव योजन भर दूरी पर जा गिरा। पैर से पड़ी लात की मार से जैसे विजली गिरने से पहाड़ कटकर गिर

घरि घरिनें हलुदिनुतशापद गिरितनकबेन्नट्टि तमदलि
तिरुगिदनु सुरराजसुत नस्तमय समयदलि
शिरव तडवरिसुत महादेवरिय बवरद बोळकोम्मिगें
हरणवुळिदुदें येंनुत रविसुत नेरिदनु गिरिय ।। 17 ।।
नोंदनें सुग्रीव तप्पाय्तंद गेंट्टुदु बल्लविकेंये
नेंदु बगेंवनों चित्तदलि कडुहीन वार्य्तेमगें
अेंदेंनुत दुम्मानदलि मननोंदु लक्ष्मण सहित भास्कर
नंदनन बळिगागि भानुकुलेंद्र नडेंतंद ।। 18 ।।
काणुती रघुपतिय चाप कृपाण बाणवनेरिळिय कडें-
गाणिकेंय लीक्षिसि महादेवरिद कंडेंवल
प्राण सखनेंदित्तु भाषेंय गोण कोय्वी सोंगसु सुभट
श्रेणियलि होगदमम निनगिन्नारु सरियेंद ।। 19 ।।
तत्त कार्यक्कोंदगिदनु बलुतेंत्तिगनु बवरदलि कुंदि-
ल्लित्त भाषेंगें सालदे सामान्यवे मनद

जाता है वैसे ही सुग्रीव नीचे गिरकर (लुढ़ककर) ऋष्यमूक पर्वत की तरफ़ भाग खड़ा हुआ। १६ वाली दाँत-ओठ काटते अपने लिए शापित ऋष्यमूक पर्वत तक सुग्रीव का पीछा करते गया, फिर साँझ की झिल-मिल रोशनी में लौट पड़ा। सुग्रीव अपना माथा सहला लेते हुए उद्गार निकालने लगा, "हे शिव-शिव, शत्रु के साथ हुए इस युद्ध में (तेरी कृपा से) मेरे प्राण तो बचे न !" इस तरह सोचते ऋष्यमूक पहाड़ पर चढ़ने लगा। १७ 'सुग्रीव ने मार खायी; यह तो बहुत बड़ी गलती हुई। हमारी धारणा गलत निकली। न जाने वह मन में क्या कहता होगा। हमारे गौरव के लिए यह (घटना) तो कलंक है।' —इस तरह चिंता-ग्रस्त, मन ही मन दुःखी रविकुल अधिपति श्रीराम लक्ष्मण के साथ सूर्य-पुत्र सुग्रीव के पास आए। १८ राम का धनुष, बाण, खड्ग देखते हुए, उनका आना देखते हुए भी अनदेखे भाव से सुग्रीव ने उनकी ओर (उपेक्षा की दृष्टि से) देखा। "हे महादेव ! ये दिन भी देखने पड़े ! प्राणसखा होने का वादा कर, प्रतिज्ञा कर, इस तरह गला काटने की खूबी वीराधि-वीरों में भी दिखायी नहीं देती। बाप रे बाप ! तुम्हारी बराबरी (इस तरह धोखा देने में) और कौन कर सकता है ?" इस तरह सुग्रीव ने कहा। १९ "मेरे प्रस्तुत कार्य के लिए यह निमित्त बने ! बस और क्या चाहिए ? युद्ध में मेरे मित्र ! वचनबद्ध तो हैं ! इतना क्या कम हैं ? इनके मन का बड़प्पन क्या मामूली है ? ठीक है। यह मेरा विश्वसनीय

उत्तमिकें लेसाप्तनह हगें सत्तनीतन कय्यमक्कळ
हेंत्तरीतन हेंसरिडलु वेकेंदना रविज ।। 20 ।।
हनुम कंडै मरॆय बहुदे जनुम जनुमदली नरेंद्रन
तनुविदनु कैगाय्दुकोंडनु कडॆय मातेनु
जनप माडिद हंग मगुचुवडॆनगॆ तीरुवुदल्ल चतुरा-
ननन परमायुष्प परियंतेंदना रविज ।। 21 ।।
मरन मुड़ियलु बहुदु दैत्यन शिरवनोंदेयलु बहुदु निर्जर
नर भुजंगमरोळगॆ हळचलु बहुदु हरिसुतन
हरणगोंबुदु सूरॆये शंकरगॆ तीरदु निन्न पाडे-
नरस रक्षिसिदात नेंन्ननु विजय माडेंद ।। 22 ।।
नंबुगॆय नुडियिंद रक्षिसि कोंबुदेनगाय्तकट कपियनु
नंबिकॆट्टुदु कार्य निम्मदु द्रोह वेनगाय्तु
हंबलिन्नेकाव् कृतघ्नरु बेंवलक्कानोंदगि तिल्लें
देंब मातिन्नेकें विजयंगेय्यि नीवेंद ।। 23 ।।

मित्र है ! (तभी तो) मेरा शत्रु मर गया। आगे चलकर लोग अपनी संतान को इसी का नाम रखें। (इसी नाम से पुकारें !)" —इस तरह सुग्रीव ने व्यंग्य से (ताने देते) कहा। २० "देखा न तुमने हनुमान ! जन्म-जन्मांतर में क्या हम ऐसे प्रभु को भुला सकते हैं ? इसने मेरे शरीर की रक्षा की। अब फिर क्या बात रह गयी ? इस मानवेन्द्र से हुए उपकार की कृतज्ञता ब्रह्माजी की आयु समाप्त होने तक हम भूला नहीं सकते !" —इस तरह सुग्रीव ने कहा। २१ "पेड़ को काट गिरा सकते हैं; राक्षस के सिर को लात मार सकते हैं, देव, मानव तथा पाताललोक-निवासियों में से किसी से भी युद्ध कर सकते है। लेकिन देवेन्द्र-पुत्र वाली के प्राणापहरण करना कोई मामूली बात नहीं है। शिवजी के लिए भी असाध्य है ! तब तुम किस खेत की मूली हो ? राम ! तुमने मेरी रक्षा तो की ! अब बिदा लीजिए।" इस तरह सुग्रीव ने कहा। २२ "मैंने जो विश्वास से वचन दिया था उसके पालन की ज़िम्मेदारी मेरी रही। बन्दर पर भरोसा करके तुम्हारा काम बिगड़ गया। मुझे तो धोखा हुआ। अब चिंता करने से क्या प्रयोजन ? 'हम कृतघ्न हैं, सहायता के लिए नहीं पहुँचे।' इस तरह तुम्हारी ओर से कथन का अब कोई प्रयोजन नहीं। अतः गौरव के साथ तुम्हारे विदा होने में भलाई है।" —इस तरह सुग्रीव ने कहा। २३ "अपरिचित व्यक्तियों के निजी स्वभाव को

अरियदवरनु नंबि हगेयलि तेरनरिय दोदगुवदु नम्मदु
कुरितनवु कुंदिल्लनिम्मलि निम्मोडने नानु
ऑरलि फलवेनरस बट्टेय तेरहुगोडिरै होगली नृप
रुरुव मैत्रकॆ मरणकुपकृत वागदिरदॆंद ॥ 24 ॥
कोरते नम्मदु नम्मनीतनु जरॆदु नुडियलु बेहुददका
वुरिसिदॆवुनोविल्ल लक्ष्मण नाणॆ चित्तदलि
अरियदादॆनु सुभट रिब्बर कुरुहनदरिदंब हूडदॆ
हॆरु दॆगदनै सल्ल दंजिदु दिल्ल हगॆगॆंद ॥ 25 ॥
धरॆयोळगॆ ता नीति शिष्यर शरणु गतिकर सखर सोलद
धुरव कंडरॆ मेलॆ कैमाडुवदु शास्त्रविदु
गुरुलघुव निम्मिब्बराजिय हरुहिनलि ता कंडुदिल्ल-
च्चरिय कंडॆनु कॆलकॆ सिडिदिद्दुदनु नीनॆंद ॥ 26 ॥
अंब कळुहिदडार हरणव कॊंबुदो नानरियॆनदरि
नंबिदवरनु कॊदॆनॆबहास जगदॊळगॆ

जाने-बूझे बिना शत्रु पर मैंने जो चढ़ाई की वह हमारा बकरापन ही है। इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं। तुमसे अधिक बातें बढ़ाकर मैं अपना कंठ शोषण क्यों कर लूँ। इससे क्या प्रयोजन ? इन्हें जाने के लिए रास्ता दीजिए। इन्हें जाने दीजिए। नहीं तो इनकी यह उत्तम मित्रता एक न एक दिन हमारे प्राणों पर बन आए बिना न रहेगी।" —यों सुग्रीव बोला। २४ "गलती हमारी ही है। ये जो हमारी निंदा कर रहे हैं, स्वाभाविक है। हमने इनको संकट में डाल दिया है। लक्ष्मण की सौगंध। हम तुम्हारी बातों से यत्किंचित भी दुःखी नहीं। दोनों कपिवीरों में कोई फ़र्क़ ही न दीख पड़ने के कारण हमने बाण छोड़ने में आगे-पीछे किया। शत्रु से केवल डरकर ऐसे नहीं किया।" —इस तरह राम ने सफ़ाई दी। २५ यह लोकनीति है कि शिष्य, शरणागत, मित्र जब युद्ध में हारने की स्थिति में देखे जायँ तो तुरंत शत्रु पर हाथ उठाना शास्त्र-सम्मत है। तुम दोनों के इस (द्वन्द्व) युद्ध में कौन बढ़कर है, कौन कम शक्तिशाली है —इस बात का पता लगाने में असमर्थ रहा। जो तू एक तरफ़ जा, लुढ़क गया यही मुझे आश्चर्यजनक लगा। २६ "(तुम दोनों के जूझते समय) बाण छोड़ देता तो वह किसके प्राण लेगा —यह समझने में, मैं असमर्थ रहा। (अगर वह तुमको लग जाता) तो शरणागत की हत्या की बदनामी मुझे मोल लेनी पड़ती। (तुम दोनों के

इंबुगोंबुदु केळिदैप्रतिबिंव विल्लिन्बरिगॆ शौर्या-
डंबरद लाजियलि रूपिनलॆंदना राम ॥ 27 ॥
नोयदिरु चित्तदलि दशरथ रायनाणॆ कपीश निन्नय
दायिगन दिति संभवन दायिगन सभॆयॊळगॆ
रायननु माडुवॆनु मातिदु वायवादडॆ निरयनिळयद
यायिगळ गतियाग लॆंदनु नीडि नंबुगॆय ॥ 28 ॥
अंजबेडिन्नॆंदु निर्भय पंजरव हॊगिसिदनु दुरितवि
भंजननु तॊरवॆय नृकंठीरवनु रविसुतन
अंजदॊदगुव मगन समरद रंजकव नोळ्पुत्सव दिना
कंजसखनडरिदनु नडॆदु दयाद्रि पर्वतव ॥ 29 ॥

नाल्कनॆय संधि

सूचनॆ— पतिकरणॆ पल्लविसॆ शरणागतन रक्षिसि रामनमरावतिगॆ बीळ्कॊट्टनु बलासुर रिपुकुमारकन ।

ऎलॆ कुमाररु केळिरै नृपतिलक रामन नेमदिंदु-
ज्वलिसिदनु रिपुवंश कालग्रीव सुग्रीव

जूझते समय) युद्ध में, रूप में, या वीरता में तुम दोनों एक जैसे, एक-दूसरे के प्रतिबिम्ब-जैसे लग रहे थे।" —इस तरह राम ने कहा। २७ "व्यथित मत होइए— वानरेन्द्र! दशरथ की सौगंध खाकर कहता हूँ— 'तुम्हारे दायाद बड़े भाई वाली को असुरों के दायाद देवेन्द्र की सभा का राजा बनाता हूँ। अगर मैं अपने इस कथन में झूठा सिद्ध होऊँ तो नरकगामी बनूँ।' —इस तरह सुग्रीव को विश्वास दिलाते राम ने कहा। २८ "अब निश्शंक रहो" —इस तरह 'तॊरवॆ' के नरहरि के अवतारी पुरुष पाप-निवारक राम ने सुग्रीव को अभय रक्षा (सुरक्षा का वचन) का वचन दिया। उस दिन, बेधड़क, निश्शंक होकर युद्ध करने जा रहे अपने पुत्र (सुग्रीव) के कौशल्य को देखने के उत्साह में सूर्य उदयपर्वत पर आरोहण करने लगे। २९

चौथी संधि

सूचना— शरणागत को दयापूर्ण रक्षा देकर राम ने बलासुर-वरी, इन्द्र के पुत्र वाली को स्वर्ग भिजवा दिया।

"सुनो लव-कुश, राजश्रेष्ठ राम के निर्णय को सुनकर शत्रुकुल के

नळ समीरज नील तारक रुलिदु कलियेरिसिदराजिगें
निलुव वॊलु कपिसेनॆ कोळा हळिसित गलदलि ॥ 1 ॥
करॆदु रघुपति तम्मननु संगरद कुरुहिगॆ कॊरते बारद
तॆरन माडॆनॆ नळनळिप गजपुष्प मालिकॆय
तिरिदु तुळसिय दळवनघशत हरवनॆडॆगॆडॆ गिरुकि वैरिय
धुरवजयिसॆंदिक्किदनु कॊरळलि कपीश्वरन ॥ 2 ॥
नडॆदुदल्लि मेलॆ बलववगडॆयनळ नीलादि कपिगळ
गडणदलि गिरितरु निकायद नॆगहुगैगळलि
झडिव बॊब्बॆय जानुजंघॆय दृढगतिय दुव्वाळिगरु बं-
दडसि मुत्तिद रिंद्रपुत्रन पुरवनगलदलि ॥ 3 ॥
ऒगॆय दिर्दुदु दुर्गविवरुब्बुगळ लॆक्किस दिर्दनिंद्रन
मगनु बळिकव रट्टिदरु काळगकॆ कपिचरर
नगुत चररुत्तरकॆ निम्मव गगडुतन विनितुंटॆ रणदलि
तॆगॆयनलॆ निर्धरिसि बंदिरॆ हेळि नीवॆंद ॥ 4 ॥

लिए यम-सदृश सुग्रीव अति उत्साह के कारण (उनका मुखड़ा) चमकने लगा। नल, वायुसुत (हनुमान), नील, तारक आदियों ने वीर घोष करते हुए सुग्रीव को युद्ध के लिए उकसाया। कपिसमूह ने भारी शोरगुल मचाया।" इस तरह वर्णन करते हुए महर्षि वाल्मीकि आगे की कथा का निरूपण करने लगे। १ रघुपति ने भाई को बुलाकर आदेश दिया कि युद्ध में (युद्ध होते समय) सुग्रीव को पहचानने लायक कोई व्यवस्था करो; (तो) लक्ष्मण सुन्दर गज-पुष्पों को चुन लाए। बीच-बीच में पाप-परिहारक तुलसीदलों को जुड़ाते गजपुष्पी माला गूँथी तथा 'युद्ध में अपने शत्रु को जीत' इस तरह आशीर्वाद देते हुए वह माला लक्ष्मण ने सुग्रीव के गले में डाल दी। २ साहसी वीर नल, नील वग़ैर: कपियों के साथ सुग्रीव की सेना हाथ में चट्टान, बड़े-बड़े पेड़ उठाए, चल पड़ी। शोरगुल मचाते, उछलते-कूदते स्फूर्ति ले वेग से आगे बढ़कर उस सेना ने वाली के नगर को चारों ओर से घेर लिया। ३ क़िले ने (वाली के दुर्ग ने) इनके अमित उत्साह की ओर ध्यान न दिया। वाली ने भी इनकी उपेक्षा की। तब सुग्रीव की तरफ़ के लोगों ने वाली के पास वानर दूतों को भेजा। दूतों की बातें सुनकर वाली मुस्कुराकर कहने लगे— "क्या तुम्हारे अधिपति में इतनी कांति (दम) है? युद्ध से तो वे पीछे हटेंगे नहीं न? क्या यह उनका दृढ़ निर्धार है? तुम पूछकर आए हो न?" इस तरह

जूजु सोतडॆ सोलुवुदॆ मरुजूजु साकिन्नदर माते
नाजिरंगदलिद्दु निन्नय भट शिरोमणिय
पैजॆगाऱन गॆलिदडह्हुदु विडौज सुत नॆंबग्गळिकॆ नि-
र्व्याज वेकॆनुतुलिद रिदिरलि चररुकपिपतिय ॥ 5 ॥
कडुहु निम्मव गिनितिरलु नावडग वहुदे बहॆ नडॆयि नि-
म्मॊडॆयननु निदिरिसि कॊंडिरि निन्नि नंददलि
नुडि हलवु साकॆंदवर वीळ्कॊडुत भद्रासनव निळिदव
गडॆय कपिराजेंद्र कदनोद्योग मननाद ॥ 6 ॥
तरिसिदनु तनगिंद्रनसुरर धुरदळित्त सजीव रत्न
स्फुरित कांचन मालॆयनु निखिळांगुमालॆयनु
धुरदॊळरिभटनर्ध बलवनु बॆरसिकॊंब बलातिशय बं-
धुरद मालॆय धरिसि तन्नरमनॆय हॊऱवंट ॥ 7 ॥
आ समयदलि तारॆबंदु निजेशनॊडॆनि तॆंदळिनजन
दाशरथि पतिकरिसिदनु गड परम मैत्रियलि
वासि बिद्दुदु गडतदीयमहीशनलि तम्मनलि तोटिय
जैसुवायतिकॆय विचारिसि नॆगळ्वुदु रणव ॥ 8 ॥

वाली ने प्रश्न किये। ४ "एक बार जुए में हारने पर क्या दूसरी बार भी हारना ही चाहिए —ऐसा नियम है क्या ? उन बातों को जाने दीजिए। प्रतिज्ञा कर युद्ध के लिए आनेवाले उस तुम्हारे वीर भाई को अगर इस बार युद्ध में जीत जाओ तो तुम्हारा वह इन्द्र-पुत्र होने का जो बड़प्पन है, निष्कारण (निरर्थक) न होगा।" इस तरह सुग्रीव के दूतों ने वाली से प्रतिवाद किया। ५ "अगर तुम्हारे अधिपति को इतना घमंड है तो हम क्यों पीछे हटें ? कल की तरह तुम्हारे अधिपति को डटे रहने दें। अधिक बातों से क्या प्रयोजन ?" —इस तरह कहते दूतों को विदा कर, सिंहासन से उतरकर वीरवर वानरेन्द्र वाली युद्ध के लिए तैयारियाँ करने में दत्तचित्त हुआ। ६ राक्षसों से युद्ध करते समय इन्द्र से अपने को दिये गये कांतियुत जीवित रत्नों से युक्त स्वर्णहार वाली ने कंठ में धारण करने के लिए मँगवा लिया। युद्ध में शत्रु के आधे बल को (आकर्षित कर) ला देनेवाले इस सुन्दर हार को कंठ में धारणकर राजमहल से निकल पड़ा। ७ उसी समय तारा ने पति का संदर्शन लेते हुए कहा— "दाशरथी ने सुग्रीव को अत्यधिक स्नेह से अनुगृहीत किया है। राम तथा तुम्हारे भाई सुग्रीव परस्पर वचनबद्ध हुए हैं। युद्ध में अपने जीतने की

आ महीपति यंगनेंयनुद्दामबल दशकंठ बनदलि
मैमरिसि कोंडोय्द गड बरवाय्तु गड बळिक
ई महीमंडलकें रुमेयनु कामिसुव कपि कंडु भाषेय
ना महिषनलि कोंडु कोललैतंदनाजियलि ॥ 9 ॥
अनुजनंगने गळुपि वैरव कोनरिसिदेयातनलि तानिदु
निनगे दूषणवल्लवे यिन्नादडेयु रुमेय
इनसुतन करेदित्तु रघुनंदनन कार्य क्कोंदगु लेसिन
नेनहिदी गतिमथन लेसल्लेंदळा तारे ॥ 10 ॥
मरुळलायेले तारे तन्नय परियनरियानीनु धुरदलि
हरिहर ब्रह्मादिगळ ता बगेयनेंबुदनु
तिरुगि रुमेयनु कोट्टु तम्मन करसि कोंबी हेसिकेय निज
शिरदोळानुवनल्लेनुत नडेतंदनाहवकें ॥ 11 ॥
पुरव मुत्तिद वैरिसेनेय शरभ शतबलि गज गवय सं-
गर भयंकर सुमुख दुर्मुख गंधमादनरु

सामर्थ्य पर अच्छी तरह सोच-विचार कर युद्ध कीजिए। ८ अत्यंत बलशाली रावण ने वेष बदलकर, अरण्य में पहुँचकर, राजा राम की पत्नी का अपहरण किया। इसी कारण राम आए हैं। यह राज्य तथा रुमा को चाहनेवाले कपि सुग्रीव ने (इस दिशा में) राम को देखा तथा उनसे वचन लिया। फिर वे तुम्हारी हत्या करने आए हैं। ९ "अपने (छोटे) भाई की पत्नी को तुम चाहने लगे। फलस्वरूप तुमने उसकी दुश्मनी मोल ली। क्या यह तुम्हारी ग़लती नहीं है ? अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। सुग्रीव को बुलाकर रुमा को सौंप दो। राम के कार्य में हाथ बँटाओ। यही अब तुम्हारे लिए उपयुक्त विचार है। युद्ध (के लिए) संघर्ष अब ठीक नहीं है।" —इस तरह तारा ने कहा। १० "हे तारा, कहीं पागल तो नहीं हुई ? मेरी रीति-नीति क्या तू नहीं जानती ? मैं युद्धक्षेत्र में हरि-हर-ब्रह्मादियों की भी परवाह नहीं करता। क्या तू यह नहीं जानती ? यह गंदी बात मैं सोच भी नहीं पाता कि रुमा को लौटाकर, भाई को वश में करके, उसे (भाई को) मना लूँ ?" —इस तरह कहते वाली युद्ध के लिए रवाना हो आया। ११ शरभ, शतबलि, गज, गवय, शत्रु-भयंकर सुमुख, दुर्मुख, गंधमादन आदियों ने नगर को घेरनेवाली शत्रु-सेना को खूब पीटा। अंगद को नगर की रक्षा के लिए नियुक्त कर वाली अपने भाई से लड़ने जांबव, रुम, सुषेण

जरिय गॆंडहिद रंगदन पुरकिरिसि जांबव रुम सुषेणर
नॆरवियलि नडॆतंदु निंदिदननुजनाहवकॆ ॥ 12 ॥
निलुकिदरु भटरिब्बरुभयद कलिगळब्बरणॆयलि बॊब्बॆय
कुलिशरव विळुहिसितु भव ब्रह्मामरेश्वररर
हॊळॆ हॊळव हेम प्रभापरिलुळित दिव्य विमान वाहन
गळलि सकल सुरौघ नॆरॆदुदु नोडलाहववव ॥ 13 ॥
नभदॊळिक्ककट्टाय्तु नाकद विभुगळिब्बर सॆरणॆय सुर
सभॆ समीकद सुभटरिब्बर सोलगॆलवुगळ
अभिनयगळभिवचनदलि दुंदुभिगळब्बरणयलि बॊब्बॆय
रभसदलि लळियॆरि कळिगळ कदन कॆळियलि ॥ 14 ॥
नॆरॆयदादुदु गगनविब्बर विरुविनब्बर बॊब्बॆगळि गसु-
नॆरॆयदादुदु पटुभटर पदहतिगॆ फणिपतिय
अरुचुतिर्दुदजाडविळॆ वाय् दॆरवुतिर्दुदु दिगुविबंधद
हॊरॆगॆ बिडुतिर्दुदु भुजास्फालनॆय रभसदलि ॥ 15 ॥
एननॆंबॆनु सुरपसूर्यर सूनुगळ संगरद समयद
नून साहसवनु सुरासुर निकट वॆरॆगागॆ

के साथ आया। १२ वाली-सुग्रीव एक-दूसरे का सामना करते मैदान में डट गये। दोनों वीरों की मेघ-गर्जना जैसी गर्जना सुनकर हरि, हर, ब्रह्मा, देवेन्द्र आदियों को अपने लोकों से उतर आना पड़ा। सुनहली कांति से जगमगाते दिव्य विमानों में आरूढ़ हो देवता (यह) युद्ध देखने के लिए आकाश में इकट्ठे हुए। १३ आकाश में देवता झुंड के झुंड इकट्ठे हुए। स्वर्ग-लोक के अधिपति सूर्य और इन्द्र अपने पुत्रों के इस युद्ध को हार-जीत देखने की अभिलाषा से आकर जुड़े। दोनों वीरों के इस युद्धलीला के बारे में देवता बड़े अभिनयपूर्ण ढंग से बोलते हुए, दुंदुभियों का निनाद, एक-दूसरे को सिंह-गर्जना भारी उत्साह के साथ निहार तथा सुन रहे थे। १४ वाली तथा सुग्रीव की भारी सिंह-गर्जना के लिए आकाश का शून्य स्थान यथेष्ट न हो पाता था। शूरों के पदचाप से धरती काँपने लगी तथा उसे धारण करनेवाले आदिशेष की साँस उखड़ने लगी। (वे) युद्ध वीर जब अपनी भुजाएँ ठोंक रहे थे तो उस जोर के कारण लगता था कि ब्रह्मांड रोदन कर रहा है; भूमि क्रंदन कर रही है (दरार पड़ रही) तथा दिशाओं का जुड़ाव खुलकर (दिशाएँ अलग-अलग हो) छिन्न-विच्छिन्न हो रहें हों। १५ इन्द्रसुत (वाली) सूर्यसुत (सुग्रीव) इनके दोष-रहित साहस-

सानुगळ सडिलिकेय करसंधानगळ शैलगळ सुभट नि-
धान रिट्टाडिदरु हरिहरिदश्व रब्बरिसे ॥ 16 ॥
सुरपनुरुबेगे सीवरिसे मोहरिसि मुरिदेव महीधर
दुरवणिय तेरनंते तेरयिसिदवु गगनदलि
तरणि केल सारिदनु सुरपति तिरुगिबिट्टनु पाळय वन-
बरद सुरर विमानतति चेल्लिदवु देसेदेसेगे ॥ 17 ॥
हळचिदवु गिरि गिरिगळभ्रद वळयदलि बळिसलिसि बीळुव
कुलमहीधर निकरदलि नेलनदुरि तडिगडिगे
निलुकि निगुरिद गिरिगळबुधियोळिळिय बिद्देब्बिसिदवभ्रके
घुळु घुळुध्वानवनु होगळुवेनेननद्भुतव ॥ 18 ॥
गिरिगिरिय होरटेयोळुब्बिद होरळिगिडि होदरेद्दु दिक्पा-
लर पुरंगळ सरकुदेगसिदवेननुसुरुवेनु
तरुण केळै ब्रह्मनिर्मित परमसृष्टिय लेणिस लिवरि-
ब्बरिगे पडियह समर धीरर काणे नानेंद ॥ 19 ॥

पूर्ण युद्ध का जितना भी वर्णन करें, कम ही है। देवता और राक्षस (यह युद्ध देख) दंग रह गये। पहाड़ की चोटियों के चट्टानों को तोड़कर हाथ में उठाए लड़ने का कौशल्य देख इन्द्र तथा सूर्य भी उत्तेजित हो गरजने लगे। १६ देवेन्द्र की गर्जना से डरकर चीखते-चिल्लाते, एक साथ टूटकर, चकनाचूर हो गिरते पहाड़ों की तरह वीरों से एक-दूसरों पर फेंके गये चट्टान आसमान भर में भरपूर भर गये। यह देख सूरज परे सरके। देवेन्द्र अपना निवासस्थान (शिविर) त्याग लौट गये। आसमान में भरे देवताओं के विमान दिशि-दिशाओं में तितर-बितर हो गये। १७ आकाश की तरफ़ छिटके चट्टान एक-दूसरे से टकराए। एक के बाद एक, जो चट्टानें एक-दूसरे पर गिर रही थीं—इससे धरती बार-बार काँपने लगी। आकाश की तरफ़ छिटकी चट्टान जो समुद्र में जा गिरी तो बड़ी आवाज़ के साथ बुदबुदे उठने लगे। इस अद्भुत दृश्य का वर्णन किन शब्दों में किया जाय? १८ "(युद्ध में प्रयुक्त) चट्टानों से जो चट्टानें टकरायीं—इससे निकली चिनगारियाँ झुंड के झुंड जो ऊपर की तरफ़ छिटकीं और जो दिक्पालकों की तरफ़ (शहरों की तरफ़) बढ़ीं तो उनको अपना स्थान छोड़कर भागने के लिए प्रेरेपित करने लगीं। सुनो लव, ब्रह्मसृष्टि में इन दोनों वीरों की बराबरी करने की योग्यता वाले धीर मैं देख नहीं पाता।" इस तरह वाल्मीकि ने कहा। १९ कपि वीरों को उनके अपने पक्ष

अररॆ पैकगळॆरड रग्गद तरुचररु तंदीव बलु भू-
धर गळैदवदेनु साहसरो महादेव
धुरधुरीण जयांगनॆय निजकरद कंतुकदाटवॆनॆ धरॆ-
गुरुळ्व गगनकॆ नॆगॆव नगगळिगंत्य विल्लॆंद ॥ 20 ॥
तप्पि मैयलि बिद्द गिरिसिडि दुप्परिसि हुडिगॆदरॆदवु मगु-
ळप्पिदुग्रन गाळि होळुगळादवगलदलि
कप्पुदोरॆदु कलिगळिब्बर सुप्रतापकॆ शौर्यकंचुकि
कुप्पळिसिदेनग्गळरो शिव शिव महादेव ॥ 21 ॥
मरॆळि गिरि गिरिशिखरदलि निब्बरद निडुगल्गळलि बलु हा-
सरॆ गळलि घनगंडशैलद गुंडु गल्गळलि
तिरुहु मुरुहिन लौकुवळ्ळॆय भरद बवरद बिन्नणिगर-
च्चरिय समरोचितव मॆरॆदरु सुररु हारैसॆ ॥ 22 ॥
तीरॆ गिरि मुट्टैसॆ भुजदलि बेरुडियॆ बॆळलत्ति कम्मर
गेरळिलॆ हिंताळ ताळ तमाल तडसुगळ
तारॆ तिगररुटाळ चिल्लुर नेरॆलप्रति हुणिसॆ नाना
भूरिभूजगळिंद हॊय्दाडिदरु सरसदलि ॥ 23 ॥

के वानर जो भारी-भरकम चट्टानें ला-लाकर दे रहे थे वे काफ़ी न हो रहीं थीं; वे वीर अद्भुत साहसी तथा प्रचंड थे! ओह! क्या वर्णन करें? युद्ध-चतुरा विजयश्री के हाथ के गेंद के खेल की तरह मानों आकाश में उछलकर वहाँ से धरती पर लुढ़कनेवाली चट्टानें अनगिनत थीं। २० अचानक (उन) कपि वीरों के वदन पर गिरी चट्टानें ऊपर की तरफ़ छिटककर चकनाचूर हुईं। और उनमें से जो चट्टानें पहाड़ों से टकरायीं, वे चकनाचूर हो चारों तरफ़ छिटक गयीं। दोनों वानर वीरों के प्रताप में कोई कमी न दीखी। उनके सामर्थ्य में रत्ती भर भी दोष न दिखायी दिया। हे शिव-शिव महादेव! कैसे प्रबल हैं वे दोनों! २१ चट्टान-चट्टानों से, बड़े-बड़े भारी-भारी पत्थरों से, बड़े-बड़े चपटे पत्थरों से, पर्वतों से तोड़कर लाये गये गोल-मटोल पत्थरों से बार-बार लड़ते, एक-दूसरे पर टूटते, आगे-पीछे घूमते, एक-दूसरे पर प्रहार करते उन युद्ध-विशारदों का भयानक युद्ध बड़ा ही आश्चर्यकारी था। देवताओं ने भी इनकी प्रशंसा की। २२ जब चट्टानें समाप्त हो गयीं तो पेड़ों की बारी शुरू हुई। अपने भुजबलविक्रम दिखाते जड़-सहित बिल्व, गूलर, भिलावाँ, हरड़, श्रीताल, ताड़, करंजा, रीठा, जामुन, इमली, तिलक, बिजौरा, बकुल, लोध्र, लिसोड़े आदि तरह-तरह के पेड़ों को उखाड़कर लाये

वीर केळै बळिकला रघुवीरनंबिनलुडिदु सिडिदि-
द्दोरणद कारणद मरगळ कोंडु मंडियलि
जारु वोय्लडवोय्लु निडुवैलोरे वोय्लुप्परद होय्ल-
ब्बेरु वोयि्लन लोदगिदरु भटरसम समरदलि ॥ 24 ॥
गॆलिद निंद्रजनेंदु सूसुवरल रनमरेंद्रन वधूजन
गॆलिद निनसुतनेंदु मुत्तिन सेसेयनु हरसि
तळिवरिन नंगनेयरिद्देसे गळलि मोरेदवु देवदुंदुभि-
गळु परिग्रहवाहद लुब्बिरिवुदु भयदलि ॥ 25 ॥
प्लवगगति जंघाक्रमण निडुबवरि भंजने लागुलळिलुळि-
त्रिवळि वंचनेयुत्पतन पतन प्रबंधदलि
दिवदरसुगळ सूनुगळु राघव महीपति मागधीसुत
रेवे हळच दीक्षिसलु कादिदरखिळ चित्रदलि ॥ 26 ॥
होक्करिब्बरु बिसुटु मरगळ डोक्करके फणिराजनेंदे नेळि
निक्कनलु तळमेलु तळबल संधि बंधदलि

तथा उनसे लड़ने लगे। २३ हे वीर कुमार! सुनो। राम ने जो (सप्त) तमाल वृक्ष काट गिराए थे उन्हें (दोनों वीर) उठा लाए तथा फिसलन वाली मार, आड़ी मार, लम्बाई में (सीधे) दी जानेवाली मार, वक्रता में दी जानेवाली मार, ऊपर से दी जानेवाली मार, आवेशभरी मार, इस प्रकार कई प्रकार के वारों (मारों) पर वार करते हुए दोनों वीर लड़ने लगे। २४ इन्द्र का पुत्र वाली जीत गया—समझकर देवेन्द्र की पत्नियों ने पुष्पवर्षा की। सूर्य का पुत्र सुग्रीव जीत गया—जान सूर्य की पत्नियाँ सुग्रीव को आशीर्वाद देते मोती के अक्षत बरसाने लगीं। दोनों ओर से देवताओं के नगाड़े (संतोष प्रकट करते) बजने लगे। दोनों तरफ़ की सेनाएँ खुशी के मारे किलकारियाँ भरने लगीं। २५ मेंढक की गति का आक्रमण, जंघा पर आक्रमण, दीर्घ भ्रमण, भंजन, फुर्तीली कूद, (उछाल) शीघ्रगति, त्रिबली, धोखा, ऊपर की तरफ़ उछल, नीचे की तरफ़ गिरना आदि कई प्रकार के छक्के-पंजे सीधे करते हुए, दाँव पर दाँव लगाते देवलोक के अधिपति इन्द्र और सूर्य के पुत्र लड़ रहे थे। राम-लक्ष्मण इस चित्रयुद्ध को टकटकी लगाए देख रहे थे। २६ (अब) पेड़ों को एक तरफ़ फेंककर दोनों वीर मुक्के तान-तानकर लड़ने लगे। दोनों का यह मुष्टि (मूठों का) युद्ध बराबर जारी रहा। कई प्रकार दाँव चलाते, ऊपर-नीचे दाएँ-बाएँ आदि दाँव चलाते लड़ने लगे कि आदिशेष की

धोक्कुधड सब्बुदगळलिळॆ गुम्मिवक्कॆ कूरुमनरिचॆ दिग्गज
धिक्कु धिगिलॆनॆ धैर्य बलरॊदगिदरु सरिसदलि ॥ 27 ॥
कंदकेळै पक्षयुगळगळिदुविन कळॆयंतॆ हॆच्चितु
कुंदितिंद्रजननिसुतगाहवद सीमॆयलि
मंदमतिगळु निललु रघुकुल नंदननु कंडरिदु तिरुविगॆ
संधिसिद नालीढपददलमोघ मार्गणव ॥ 28 ॥
ओरॆ गण्णलि नॊडुनोडुव सूरियन सुतगभयकर सर-
सीरुहव तोरिसुत तॆगॆदाकर्णपरियंत
नारचव नुब्बिरिदु शरणन नारिगळुपिद हीन हृदयन
हेरुरव नॆच्चोडनॆ कॆडॆकॆडॆयॆनुत नडॆतंद ॥ 29 ॥
भू सुता सुत केळु परर सुवासिनियरलि सोतवंगुरॆ
हेसि बिडदिहळे भुजश्री कडॆय मातनु
ईश शंभु गिरीश नमल महेश मृत्युंजय पुरारि स-
दाशिव श्रीकंठ शरणॆनु तॊरगिदनु नॆलकॆ ॥ 30 ॥
चॆल्लिताक्षण नॆरॆद सेना वल्लभरु तनु तमगॆ वाणी
वल्लभन मगनॊब्ब तप्पिसि काणुतिनकुलन

छाती विदीर्ण होने लगी। मुक्के तान-तानकर एक-दूसरे पर दाँव करते समय धक्-धक् की आवाज़ से धरती काँप उठी। भूमिधारी कछुआ क्रंदन करने लगा। दिग्गजों की छाती धक्-धक् करने लगी। २७ सुनो लव, शुक्लपक्ष, कृष्णपक्षों में जैसे चन्द्रमा की कलाएँ वृद्धि करते-करते फिर घटने लगती हैं, उसी प्रकार दोनों वीरों के पक्षों में घटना-बढ़ना दोनों बातें हुईं। दोनों की बुद्धि अब जो मंद पड़ गयी —यह राम ने देखा और समझ लिया। तब उसने (राम ने) अपना दहिना पैर सामने रखा तथा बायाँ घुटना टेककर एक दिव्य बाण धनुष पर चढ़ाया। २८ मार खाकर (थके) सुग्रीव जो तिरछी दृष्टि से देख रहा— राम ने उनको अभय हस्त दिखाया। फिर कान तक प्रत्यंचा खींचकर सिंहनाद करते हुए, शरणागत (सुग्रीव) की पत्नी को चाहने वाले कुविचारी, (वासनाग्रस्त) वाली की विशाल छाती पर बाण चलाते 'गिर जा' कहते राम आगे बढ़े। २९ हे सीता-पुत्र, सुनो। परस्त्री पर आसक्त को वीरश्री (पराक्रम रूपी लक्ष्मी) घृणा से त्यागे बिना रहेगी? "ईश, शंभु, गिरीश, महेश, मृत्युंजय, पुरारि, सदाशिव, श्रीकंठ —तुम्हारे शरणागत हूँ।" इस तरह कहते-कहते वाली धरती पर लुढ़क गया। ३० तुरंत सेना के प्रमुख एक-एक करके वहाँ से खिसकने लगे। देवेन्द्र सुग्रीव

गॆल्लदलि गडियिल्लदप्रतिमल्ल हायॆनुतश्रुगळनुगु-
रल्लि मिडिवुत मूर्छॆयलि मैमरॆद नमरॆंद्र ॥ 31 ॥
राहु तुडुकिद रवियवॊलु बाणाहि तुडुकिद बालि बॆन्नलि
मोहिदलगिन हॆरुरद कंपनद कॆंगरिय
साहसद मुरिदलॆय मुष्टिय मोहकद दिट्टिसिद कंगळ
हाहॆयवॊलॆसॆदिदॆ नाहवरंग मध्यदलि ॥ 32 ॥
नोडिदनु मुरिदवनिपन नल्लाडिदनु तुदिवॆरळनहुदो
खोडियिल्लद खरॆयनहॆ खद्योत वंशदलि
पाड काणॆनु निनगॆ सुरनरगूडि पररॊडिनलि हुसिनडॆ
कूडि कॊंडैतंदु कॊलिसिद तम्मनाणॆंद ॥ 33 ॥
नीनॆ दशरथनॆंब नृपतिय सूनु साम्राज्यक्कॆ सल्लदॆ
कानवन हॊक्कबलॆयनु होगाडिदति बलनु
हीन वृत्तिय बळकॆयल्लद माननिधि नीनहुदु मनदनु-
मानवीपरि तोरुतिदॆ निनगारु सरियॆंद ॥ 34 ॥

की आँख बचाकर वाली को देख— "हाय मेरे लाडले ! हे महाशूर ! तुम्हारी जीत में कभी शक न रहा न !" इस तरह कहते आँसू को उँगली से पोंछते बेहोश हो गये। ३१ राहुग्रसित सूर्य की भाँति बाण नामक सर्प से वाली डसे गये (पड़े) थे। वाली की पीठ में बाण धँसा हुआ था। छाती में चुभे बाण की लाल पूँछ उनकी चौड़ी छाती में काँप रही थी। वीरता को प्रकट करनेवाला उनका सिर एक ओर झुका पड़ा था। मूठ में बँधे हाथवाले, मोहक दृष्टि रोपे हुए वाली युद्ध के मैदान के मध्य एक गुड़िया की तरह दिखायी दे रहे थे। ३२ (अपना) सिर थोड़ा बाँका करके वाली ने राम को देखकर तर्जनी हिलाते उनसे कहा— "हो सकता है कि तू सूर्यवंश में निष्कलंक सत्यवान है। देवता तथा मानवों में, युद्धक्षेत्र में तेरी बराबरी करनेवाला कोई नहीं। अगर मैं झूठ बोलूँ तो (मुझे) सौगंध है उस मेरे भाई की जिसने तुझे यहाँ तक बुला लाकर मेरी हत्या करायी। ३३ क्या तू ही है दशरथ राजा का सुपुत्र ! साम्राज्य से वंचित हो अरण्य में प्रवेश करके (अपनी) पत्नी को खो बैठनेवाला महान वीर तू ही है न ? मुझे इस बात का शक हो रहा है कि तेरा गौरवमय महा-चरित नीचता के आचरण से विमुक्त नहीं। (तेरा चरित निष्कलंक कहाँ ?) तुम्हारी बराबरी कौन कर सकता है ?" इस तरह वाली ने कहा। ३४ बन्दरों पर बाण चलाने की कला का, लगातार कितने

एसुदिन परियंत बिडदभ्यासिसिदॆ यॆलॆयणुगनाणॆ व-
नौकसरॊळॆन्नाणॆ हेळिन्नॆकॆ भय निनगॆ
न्यासवॊळिळतु गुरुविनभिविन्यासवॆंतुटो शिव शिवा का-
ळास तप्पद कळविनॆसुगॆय चित्र लेसॆंद ॥ 35 ॥
धरॆयॊळगॆ मृगमांस भोजन करसुगळु मन माडुवरु दु-
श्चरित वल्लदु शास्त्रदलि निजराज मार्गदलि
परकिसलु कोडगद मांसवु नरपतिगळिगॆ योग्यवे हे-
ळरस हिरिदह हेसिकॆय कैकॊंडॆ नीनॆंद ॥ 36 ॥
रणद मेलभिलाषॆयुळ्ळडॆ कॆणकि नोडिदडरिय वहुदु-
ब्बणशरासन सरळ हॊरिगॆय हॊत कारितन
हणुगि मरॆगॊंडॆसॆव लुब्धक रॆणिकॆयलि कैमाडुवदु भू-
षणवॆ भटरिगॆ केळिरॆ जांबवरॆ नीवॆंद ॥ 37 ॥
तरणिकुलदरसुगळु धार्मिकररु सदा चारिगळु सूनृत
चरित रखिळागम विशुद्धरु विविध गुणयुतु
नरक भीतरु घन कृपा सागररु नीनवरन्वयदलव
तरिस तक्कवनल्ल निन्नन्वयवदॆनॆंद ॥ 38 ॥

दिनों से अभ्यास किया ? बेटे की सौगंध। सच-सच कहो। तुम्हें फिर किस बात का डर है ? तुम्हारा बाण चलाने का ढंग निरुपम है। वह कौन गुरु है जिन्होंने तुम्हें (यह विद्या) पढ़ाया ? हे शिव-शिव ! कैसी आश्चर्यकारक है— यह अचूक चोरी-चोरी बाण प्रयोग की कला ! ३५ "धरती के राजा मृग (प्राणियों का) मांस जो खाने की चाह रखते हैं— यह कुछ गलत नहीं। क्योंकि वह शास्त्रों से अनुमोदित है। इसलिए यह दुराचार नहीं। सोच-विचार देखिए। क्या राजाओं को बंदरों का मांस खाना योग्य है ? यह तूने अत्यंत जघन्य कार्य किया। है कि नहीं ?" इस प्रकार वाली ने कहा। ३६ "अगर युद्ध करने की ही अभिलाषा थी तो मुझे छेड़कर देखते! तो तुम्हें मेरे अपने भारी धनुष से बाण चलाने का कौशल्य देखने का भाग्य प्राप्त होता ! आड़ में (छिपे) बैठकर, शिकारियों की तरह ताक में बैठकर, यों हत्या करना क्या वीरोचित लक्षण है ? हे जांबवान् ! तुम्हीं बताओ ?" इस प्रकार वाली ने प्रश्न किया। ३७ "रविकुलोत्पन्न राजे-महाराजे, बड़े ही धार्मिक, सदाचारी, सत्यवान, सकलशास्त्रपरिशुद्ध, गुणवान, नरक से डरनेवाले, दयासागर है। तू उनके वंश में पैदा होने लायक न था। (तुझे उस वंश में पैदा नहीं होना चाहिए था।) तुम किस

हगेंतनव नेंणिसुवरें रघुपीळिगेय रायर कोंदुदिल्लाव्
मगुळवर सतियरिगें तप्पिदुदिल्ल जग वरियें
मृगकुलेंद्र द्वीपि हय रदनिगळिरलु बळिकाड निक्किद
नगेय नाण्णुडि निन्नोळाय्तेंदुगिसिदनु नगेय ॥ 39 ॥

नेंत्तियलि जडें हर त्रियंबक सुत्तिदुदु वल्कलवु शिवशिव
मैत्तिकोंडिदें भसित मृत्युंजय· महादेव
होंत्त चोहकें चाळि लेसायित्तु निनगुपदेश मंत्रव
नित्तवन वर्तनव देंतुटों नोड बेकेंद ॥ 40 ॥

शिशु महीसुर भूत संतति पशुकुल प्रमुखादि हिंसा
व्यसनिगळिगन्याय विनितिल्ली धरित्रियलि
हेंसर नोडलु निन्न नामद हसरु रमणीयकवु मन क-
र्कशतें यागिदें सल्लदी हेंसरकट ननगेंद ॥ 41 ॥

आगलदके नोंडबडंबहुदागि निनगपराधवेंम्मय
मेगें होंत्तडें होंल्लें हेनळिवेंमगें संस्कार

वंश के हो ?" —इस तरह वाली ने पूछा। ३८ 'हमसे तुम्हारी शत्रुता है।' —इस तरह सोचने के लिए भी कोई गुंजाइश नहीं। क्योंकि रघुवंश के राजाओं में से हमने किसी की हत्या नहीं की! उस (तुम्हारे) कुल की स्त्रियों के साथ भी मेरा दुराचरण नहीं रहा। समस्त लोक यह जानता है। 'शेर, बाघ, हाथी तथा घोड़ों के होते हुए भी बकरी को पालने लगे' —यह कहावत यहाँ सच निकली है जो बड़ी हँसी-मज़ाक वाली कहावत है। इस तरह कहते वाली हँसने लगा। ३९ "सिर पर जटा बँधी है! क्या त्रिनेत्री शिवजी हैं! गेरुवे कपड़े पहने हैं। शिव-शिव! सारे शरीर पर भस्म-भभूत लगायी है। क्या तू मृत्युंजय है! तुम्हारी वेषभूषा तथा आचरण में कोई मेल नहीं। तुम्हें मंत्रोपदेश देनेवाले का आचरण कैसा है? —देख लेना चाहिए।" —इस तरह वाली ने कहा। ४० छोटे बच्चे, ब्राह्मण, पशु-प्राणियों के साथ हिंसा करनेवालों को इस धरती पर कोई अन्याय नहीं हुआ। तुम्हारा नाम तो बड़ा रमणीय है; मगर आचरण बड़ा कठोर है! यह नाम तुम्हारे लिए योग्य नहीं जँचता। नाम बड़े, दर्शन थोड़े! ४१ "जाने दीजिए। कोई बात नहीं। अगर मैं अपराधी हूँ तो कहो। मैं वह अपराध क़बूल करता हूँ। मैने ऐसा कौन सा अपराध किया है कि मुझे मृत्युदंड दिया जावे। जल्दी कहो। अगर मैंने गलत रास्ते पर पदार्पण किया है तो

बेगनुडि कृत दोषकारिगळागि नाव् नडॆदॆडॆगळुळ्ळडॆ
मूगरागिहॆ वॆनुत नॊंदाडिदनु रोषदलि ॥ 42 ॥

इवनु निनगॆ सहायियॆ नीनिवन बलदलि निन्नवैरिय
तविसुवा तप्पल्ल कूडितु दैव विब्बरनु
पवननलि पावकन कूटद ह्वणु संघटिसिदवॊलतिचि
त्रवनु कंडॆवु काल गतियिदरस केळॆंद ॥ 43 ॥

आ गरुव दशमुखन समरोद्योग किवने निलुववनु लय-
सागरवनुत्तरिसुवडॆ हरुगोल हंगु गड
होगि शरधिय दाटि हगॆयनु तागि तलॆयनु हॊय्दु तरुणिय
भोगिसुवदिदु मिगॆ भगीरथयत्न निनगॆंद ॥ 44 ॥

खळनिवनु हगॆयॆंदु सूचिस लॆळदुतरिसॆनॆ तन्न बालव
कळुहिगाळद बलॆगॆ सिलुकिद मीनिनंददलि
बलुभटर जीवाळगळन स्खलित मूर्खरदेन बल्लरु
हलुबि माडुवदेनिदे प्रारब्ध वॆमगॆंद ॥ 45 ॥

चुप्पी साध लेता हूँ।" इस तरह बड़ी व्यथा से वाली ने कहा। ४२ क्या यह सुग्रीव तुम्हारी सहायता करेगा ? तुम इसकी सहायता के भरोसे अपने शत्रु का नाश करोगे ? विधि ने (ही) तुम दोनों की जोड़ी (मित्रता) मिलायी। इसमें कोई दोष नहीं। काल गति से ही हवा के साथ आग का जो संयोग हुआ —यह आश्चर्य मुझे देखने को मिला। सुनो।" इस प्रकार वाली ने कहा। ४३ "उस महान् अहंकारी दस सिर वाले रावण के साथ होने जा रहे युद्ध में यह तुम्हारी मदद करेगा ? क्या प्रलयकालीन समुद्र को पार करने के लिए चमड़े से मढ़ी हुई छोटी किश्ती काम आएगी ? समुद्र को पार करके शत्रु के साथ लड़कर, उनके सिर काट-काटकर, उनकी हत्या करके, अपनी पत्नी को पाना एक भगीरथ प्रयत्न ही है।" —इस तरह वाली ने कहा। ४४ 'यह राक्षस (रावण) तुम्हारा शत्रु है' —इसका इशारा भर मुझे देते, टेढ़ी काँटिया में मछली को जैसे फाँसते है वैसे ही अपनी इस पूँछ को भेजकर (लंका तक पूँछ बढ़ाकर) उसे खिचवा के लाता। किसी भी घृणित कार्य के लिए आकर्षित होनेवाले मूर्ख, सच्चे जीवट के, साहसी शूरवीरों को कहाँ पहचान पाते हैं ? अब पछताने से, रोने से क्या प्रयोजन ! यह हमारा प्रारब्ध है। —इस प्रकार वाली ने कहा। ४५ "अमर्ष के वशीभूत हो इस प्रकार ताने देते हुए बोलना क्या तुम्हें ठीक जँचता है ? दूसरों की सहायता रूपी संपत्तिका सहारा लेकर शत्रु की

अंगवे निनगिदु सरोषद व्यंगियलि नी नुडिवुदाव् दिट-
हंगिगरे हगेगोलेगे परर सहाय संपदद
संग शुद्धरनल्लदाव् दुस्संगिगळ कैविडिववरे पर
रंगनेगे मैगोट्टवर शिक्षिसदे बिडेवेंद ॥ 46 ॥
रायमार्गद पथवकेळ् न्यायवनु कैविडियेवमळा-
म्नाय मार्गवे नम्मविवु ता शिक्षे रक्षणेगे
तायिवने तत्पथविडिदु नडेवायतिकेयवरावु नीन
न्यायियल्लवे हेळु नम्मोळु मरेयदेकेंद ॥ 47 ॥
मेरेय बल्लुदे सिरिजयश्री तुरुब सिंगरिसुवळे भूवधु
होरुवळे गीर्वाणसति सैरिसुवळे सुररु
तेरवरे बागिलनु परसतिगुरिसुवति पातकनु नीने
च्चरितु नडेयदे नम्म नुडिवुदु गुणवे निनगेंद ॥ 48 ॥
नुत तपोनुष्ठान नियमव्रत गुरुद्विज देवताभ्या-
गत सुपूजे समाधि मोनध्यान परसतिय

हत्या चाहने के कारण तुम्हारी निंदा तथा व्यंग्य का मुझे शिकार बनना पड़ा —यह सत्य है। परिशुद्ध चरित वालों के सिवा मैं अन्य किसी प्रकार के दुर्जनों की सहायता नहीं करता। परस्त्री-संग में निरतों को दंड दिये बिना मैं कैसे रह सकता हूँ।" —इस तरह राम ने उत्तर दिया। ४६
"क्षत्रिय राजाओं से संबंधित सन्मार्ग के विचारों के बारे में सुनो। अन्याय का हम कभी साथ नहीं दे सकते। वेदप्रतिपादित मार्गावलंबन हमारा है। (ये वेद) साम, दान, भेद, दंड आदि विषयों की जन्मभूमि (मायका) है। उसी मार्ग का अनुसरण हम बड़ी श्रद्धा के साथ करते हैं। क्या तूने अन्याय नही किया? सच बता। हमसे दुराव-छिपाव से क्या प्रयोजन? ४७ परस्त्री पर आसक्त तू परम पापी है। अतः क्या संपत्ति तेरे यहाँ विराजमान हो निवास कर सकती है? विजयश्री क्या तेरे ललाट पर (विजय) तिलक लगा सकती है? माता भूमि क्या तेरा भार सह सकती है? देवता स्त्री क्या तुझे सह सकती है? देवता क्या तेरे लिए स्वर्ग के द्वार खोल देंगे? तू सावधानी से बरता नहीं; उलटे हमारी निंदा कर रहा है। यह तेरे लिए शोभा देता है?" इस प्रकार राम ने पूछा। ४८ तपस्याचरण, (धर्म) नियम परिपालन, व्रताचरण, गुरु-देवता तथा अतिथियों की पूजा, समाधि, मौन, ध्यान —इनके बदले परस्त्री-सेवन (सुग्रीव की पत्नी का उपभोग) संभोग की अभिलाषा करना क्या ठीक है?

रतिगिवनु गुणवे विवेक स्थितिय नीनरियदुदें केळ् परि-
हृतियला सुकृतक्कें परदाराभिगमवेंद ।। 49 ।।
अॅलॅ कपीश्वर केळु परसतिगळुपि हायिकि कॊंडॆ तम्मन
कॊलॆ गॆळसि हॊरवडिसि हायिकिकॊंडॆ नादिनिय
बळकॆयवु ता दोषकृत सम्मिळित वल्लवॆ नावु निन्ननु
कॊलुवुदेनन्यायवे नी नोडिकॊयॆंद ।। 50 ।।
गुरु निजेश ज्येष्ठरी मूवरुकणा पितृसमरु शिष्या
वरज शरणागतरु पुत्ररु धर्मशास्त्रदलि
सुरपसुत केळिवर सतियरि गुरिसुवव बाहिरनला दु-
श्चरितविरॆ वधॆगरुह नीने नोडिकोयॆंद ।। 51 ।।
इरळुगन्नद कॆलस दिवदाचरणॆ धर्मद विरस तत्परि
सरद नडवळि निन्नॊळिरॆ केळ्दरिदु नाविदनु
इरिस बहुदे हेळु नीनिह परव नोडदॆ नडॆवुदिदु सुज-
नर मनक्कॊडबडुवुदे नी नोडिकोयॆंद ।। 52 ।।
अॆंब राघववचन कर्णदॊळिबुगॊंड्डु कपिपतिय नो-
वं बिसुट्टु नोडिदनु बळिका रामलक्ष्मणर

क्या तू विवेक विचार रहित है ? परस्त्री-संभोग क्या पुण्य-विरोधी कर्म नहीं है ? ४९ "हे वानरेन्द्र, परस्त्री की आशा की। (अपने छोटे) भाई की हत्या करनी चाही तथा उनकी पत्नी (भौजाई) को अपने वशीभूत कर लिया। क्या यह तेरा आचरण दोषपूर्ण नहीं है ? हमने जो तुम्हारी हत्या की —इसमें क्या अपराध हुआ ? तू ही विचार कर देखा।" —इस तरह राम ने समझाया। ५० "गुरु, स्वामी, बड़े भाई —ये तीनों अपने पिता के समान हैं। शिष्य, छोटा भाई, शरणागत —ये (अपने) पुत्र के समान हैं। यह धर्मशास्त्र का आदेश है। हे इन्द्र-पुत्र वाली, सुनो। उल्लिखित व्यक्तियों की पत्नियों को चाहनेवाला (यौन-संबंध रखनेवाला) क्या धर्मविरोधी आचरण नहीं कर रहा ? इस प्रकार का दुराचारी तू क्या हत्या के लिए योग्य नहीं ? तू ही सोच-समझकर देख।" —इस प्रकार राम ने कहा। ५१ "देवलोक का आचरण तथा धर्मविरोधी कार्य —रात के समय सेंध लगाने के जैसे हैं। ऐसा एक आचरण (दुराचार) तुझमें रहा, जिसके बारे में सुनकर जान लिया, तब हम कैसे चुप रह सकते हैं ? इह-पर का विचार किए बिना अपनी चाल-चलन जो रखता है —क्या सज्जन उसका अनुमोदन करेंगे ? तू ही सोच-समझ ले।" —इस रीति से राम ने कहा। ५२ इस प्रकार के

अंबुजाक्ष फणींद्रप्रति बिंबवागिरे कंडु मुक्तिनि-
तंबिनिय निबिड स्तनालिंगनर्के मनदंद ॥ 53 ॥
इदु महीमंडलद भारव नोंदेयलाद विलास विभवा
स्पदवला मनुजांगविदु तानप्रसिद्धवल
सुदति येंबुदु नेवनु तानितिदरु मेली परम दैवद
पदव भजिसलु बेकॆनुत कैमुगिदना वालि ॥ 54 ॥
मुगुळ्ळे मगुळडिगडिगे नोटद बिगुहु बिडदेडेविडदे पुनरपि
मगुळे मगुळे महामहिम माया नरेश्वरन
निगम तत्वात्मकन मंगळ सुगममूर्तिय नोडिकंगळ
मुगिदु परमानंद सुखमय नादना वालि ॥ 55 ॥
देव लक्ष्मीकांत वरराजीव लोचन भव विमोचन
देव संसाराब्धिपाश विनाशनघनाश
देव भक्ताधीन मुक्तिवधू विलासप्रद परापर
देव देवोत्तम कृपानिधि सलहबेकॆंद ॥ 56 ॥
इह परंगळ गतिगे सल्लद महिबहिष्कारन महादु-
स्सहन दुश्शीलन दुराचारन दुराग्रहन

राम के बचनामृत को वाली ने (ध्यान से) सुना। अपनी वेदना को सहन करते-करते उसने राम-लक्ष्मण को देखा। देखा कि श्रीहरि तथा आदिशेष दोनों राम-लक्ष्मण के रूप में हैं (श्रीहरि तथा आदिशेष के प्रतिबिंब के रूप में दिखायी पड़े।) फिर वाली ने मोक्ष-लक्ष्मी के उभरे स्तनों का आलिंगन करने का निश्चय किया। ५३ "यह तो भूमि का बोझ उतारने के लिए धारण किया हुआ लीला-वैभवयुक्त अवतारी रूप है। मानव-रूप नित्य नहीं है। पत्नी तो केवल निमित्त मात्र है। अत: श्री भगवत्-चरणों की आराधना का निश्चय करके वाली ने राम के सम्मुख हाथ जोड़े। ५४ उस महा महिमासंपन्न माया मानवेन्द्र श्रीराम की तरफ़, टकटकी लगाकर, फिर-फिर, लगातार वाली ने देखा। वेद-तत्वात्मक का वह मंगलमय रूप देखकर, आँखें मूंदे (ध्यान करते) वाली परमानंदमय सुख में डूब गये। ५५ "हे भगवन्! लक्ष्मीपति, राजीवलोचन, जन्मांतर-निवारक देवाधिदेव, संसार-बंध-विनाशक, पापपरिहारक, हे भक्ताधीन, मोक्षदायक, देवदेवोत्तम, परापरदेव, कृपानिधे! मुझ पर कृपाकर, मेरी रक्षा कर।" —इस तरह वाली ने प्रार्थना की। ५६ "इह-पर दोनों गतियों के लिए अयोग्य, भूलोक से बहिष्कृत, असहनीय, दुराचारी, यह (मैं) जो दुष्ट हूँ,

कुहक कर्मन कुपित कायन बहळकृत पापानुगत वि-
ग्रहन कैविडिदॆत्त बेकॆलॆ देव नीनॆंद ॥ 57 ॥
उडियवे तरुगाळियलि गिरि कॆडेयवे सिडिलिनलिया कॆडु-
वॊडलु बीळलि कंगलाचिदॆ देव निन्नॊडनॆ
हिडिय दॆन्नपराधवनु कैविडिदु निन्न पदारविंदद
लडगिसुव घन कृपॆयनॆन्नलि बीरॆ बेकॆंद ॥ 58 ॥
तम्म बा शिवनाणॆ निन्नलि नॆम्मिदधिक द्वेषवी पर
बॊम्मदिदिरलि बिट्टुदी रघुरामचंद्रमन
सॊम्मनॊय्दव गॊडलुगॊडु नॆरॆ नॆम्युवुदु सत्कीर्तिलतॆ वळि
कॆम्म वंशद्रुमवनॆंदप्पिदनु सहभवन ॥ 59 ॥
बालनंगदनहित सुतनॆंदॆळिलव माडदिरु मन्निसि
पालिसुवदव निन्नमग मगनल्लवॆनगॆंदु
आलिगळ नीरॊरॆतॆयलि निज बालकन नप्पयिसि रघु भू-
पाल चरणांबोज सेवाश्लाघ्य नागॆंद ॥ 60 ॥

बडा ही आचरणहीन (पापी) हूँ। मैं जो धोखेबाज, अमर्ष से भरा, अनेक पापों का आचरण करनेवाला, बहुत ही गिरा हुआ व्यक्ति हूँ। अतः मुझ पतित को अवलब देकर उद्धार कीजिए— महाप्रभो। ५७ आँधी चलने पर क्या पेड़ टूटकर नही गिर पड़ते? बिजली टूट पड़ने से क्या पहाड़ लुढ़क नहीं जाते? एक न एक दिन मौत के मुँह में गिर जाने वाले इस देह के धराशायी होते ही, मैंने गिड़गिड़ाकर, हाथ जोड़े प्रार्थना की। हे भगवन्! मेरा अपराध क्षमा कर, अपने चरणारविन्दों में आश्रय देने की कृपा करें।" —इस प्रकार वाली ने याचना की। ५८ "(सुग्रीव से) आ मेरे भाई। इस परब्रह्म के पावनदर्शन से, तुम्हारे बारे में अंकुरित मेरा द्वेष विनष्ट हुआ। इस रघु रामचन्द्र की पत्नी के अपहरणकर्ता को दंड देने में इनको सहायता कर। इससे हमारे वंश रूपी वृक्ष पर सत्कीर्ति रूपी लता फैलेगी।" —इस तरह कहते (वाली ने) सुग्रीव को गले लगाया। ५९ "अंगद अभी बालक है। उसे शत्रु का पुत्र मानकर (उसका) तिरस्कार मत करो। वह मेरा बेटा नहीं; तेरा अपना बेटा समझकर उसकी रक्षा कर" —इस तरह कहते, अश्रुधारा बहाते वाली ने अपने बेटे को (सुग्रीव को) सौंप दिया। तथा उसे (बेटे को) आशीर्वाद दिया, "रघुपति की चरण-सेवा से कीर्तिमान बन।" ६०

गवय शतबलि शरभ गज जांबव सुषेण गवाक्ष मैंद
द्विविध दुर्मुख सुमुख दधिमुख गंधमाधनर
इवर पालिसु राजकार्यं क्किवरु निलुवरु बिडदिरी दु-
र्गवनु केळेंनुतित्तनमळ सुवर्ण मालिकेय ॥ 61 ॥
मरळि रघुनंदनन पदपंकरुहवनु कंगळिगें सेरिसि
करपुटां जलियिंद नुडिदनु दैन्य भावदलि
तरळनंगद नीत नीतन तरणिसुत पतिकरिसदिर्दडे
पुरकें कोंडोय्दोलिदु सलहेलें देव नीनेंद ॥ 62 ॥
हिरिदु नंबिदें निन्ननीहद कैरुवु माडदिरेंदु कंगळ
मुरियें मुळुगिर्दबनुगिदनु मनद मरुकदलि
करुळु मरुगदें बिडुवुदेयेलें तरुण केळै कुशनें दोप्पनें
सुरप सुत नंगदलि बिद्दळलिदनु सुग्रीव ॥ 63 ॥
तोडचु रघुपति तोमरवनेन्नोडलिगधिकृत पापकर्म
गोडरिदीयपकीर्ति कमलज नुसुरिहन्नबर
अडगलरियदु देव पूर्वजनोडनें कळुहेंदंघ्रियलि होडें
गेडेदु होरळिदना कपीश्वरना ककुत्स्थजन ॥ 64 ॥

"गवय, शतबलि, शरभ, गज, जांबव, सुषेण, गवाक्ष, मैंद, द्विविध, दुर्मुख, सुमुख, दधिमुख, गंधमादन आदियों का लालन-पालन करो। राजकार्य में ये तेरे सहायक सिद्ध होंगे। इस दुर्ग (क़िले) को मत त्यागो।" —इस तरह कहते हुए वाली ने अपने बेटे को (वह) स्वर्णहार दिया। ६१ वाली ने फिर एक बार राघव के चरण-कमल चूम लिये। फिर हाथ जोड़कर अत्यंत दीनता से— "यह अंगद अभी निरा बालक है। सुग्रीव ने इस पर अगर कृपा न की तो इसे अपने साथ नगर ले जाकर इसकी रक्षा कीजिए।" —इस प्रकार (वाली ने) प्रार्थना की। ६२ "तुम पर मेरा पूरा भरोसा है; ऐसी स्थिति में मुझे मत झोंको।" इस तरह कहते, अपनी दृष्टि अन्यत्र प्रक्षेपित करते, बड़ी ही करुणा से, वाली की छाती के चुभे बाण को खींच बाहर कर दिया। कुछ भी हो। आखिर साथ जन्मे (औरस) भाई तो ठहरे न? अंतःकरण कैसे द्रवित न हो? सुनो कुश, सुग्रीव वाली के शरीर पर गिरकर ढारें मारकर रोने लगा। ६३ "हे राम, तुम अपना तोमर (एक अस्त्र) लेकर मुझे समाप्त कर दो। मैं बड़ा पापी हूं। ब्रह्म की आयु की परिसमाप्ति तक यह अपकीर्ति मेरा पीछा करेगी। हे भगवन्, मुझे अपने बड़े भाई के साथ-साथ स्वर्ग भिजवा

गळिस बह्हुदु कळत्रमित्रावळिय नोंड हुट्टिदरनेंतै
गळिस बहुदेंबुक्ति गकट विरक्त नादेनल
ललनेंगोसुग ताय बसुर्ि दिळिदवन कोंलिसिद दुरात्मन
निळेयोळिरिसुवुदुचितवेयलें देव केळेंद ॥ 65 ॥
कुल विघातन कुपित चित्ताकलित कायन कष्टहृदयन
कलुषकर्मन कापिशायन मदित मानसन
नेलनु होरदेलें देवभूमिय तलेय तिण्णव तिद्दुवीय-
ग्गळद कृत्यवु निन्नदागिहुदागि केळेंद ॥ 66 ॥
मरुळला सुग्रीव पूर्वद चरित दुष्कृत सुकृतविवु जी-
वरिगें जंजड वागिहवु नीनळललेकिदर्के
मरण निन्निदार्यते नाव् संहरिसिदवरे साकु शोकद
सुरुळिदनु सुत्तदें सुसम्यज्ञानि यागेंद ॥ 67 ॥
आव जन्मद सहभवनु तानाव जन्मद लण्ण नोडलि
कावुदै निश्चयवु मुंदण जन्मकेन हिरि

दीजिए।" इस तरह कहते सुग्रीव श्रीराम के चरणों में लोटने लगा। ६४ "पत्नी और मित्रों को प्राप्त कर सकते हैं; लेकिन साथ जन्मे सगे भाई को कैसे प्राप्त कर सकता हूँ? इसी विचार के फलस्वरूप मैं वैराग्य को प्राप्त हो रहा हूँ। अपनी पत्नी के लोभ में पड़कर अपनी माँ के पेट से पैदा हुए सगे भाई की हत्या के लिए कारणीभूत हुआ। ऐसे दुरात्मा को इस धरती पर जीवित छोड़ना क्या उचित है? भगवन! कहिए।" इस तरह सुग्रीव ने कहा। ६५ "कुल का विघातक, क्रोधी, केवल कठिन कार्यों को ही सोचते रहनेवाला, पापकर्मी, मादक वस्तुओं के सेवन से मदोन्मत्त —ऐसे लोगों को वहन करने में भूमि माता असमर्थ है। भगवन्, भू-भार उतारने के निमित्त ही आपका अवतार हुआ है। और यह श्रेष्ठ कार्य आप ही का है। अतः आप मेरी प्रार्थना मान जाइये।" —इस तरह सुग्रीव ने कहा। ६६ "सुग्रीव, तू उद्भ्रांत है। पिछले जन्म के दुष्कर्म तथा सत्कर्म जीवियों के साथ-साथ (लिप्त हो) आते हैं। इसलिए तू क्यों शोक करता है? क्या वाली की मृत्यु तेरे कारण हुई? अथवा क्या मैं वाली को मारनेवाला हूँ? शोक-संताप के भँवर में न फँसकर सुसम्यक ज्ञानी बनकर सोचो।" —इस तरह राम ने सुग्रीव को उपदेश दिया। ६७ "किस जन्म का (सगा) भाई, और किस जन्म का बड़ा भाई —इनमें कौन सी बात निश्चित (ठीक) है? अगले जन्म में क्या होने (होकर पैदा होने) जा रहे हो? यह विवेकपूर्ण तथ्य मन में लाते

ई विवेकद चित्तदलि संभाविसदै सुज्ञान दीप्तिगें
सोव बेडज्ञान तिमिरव नेंदना राम ॥ 68 ॥
साकु सैरणेयिरलि समतेय सोकिगज्ञतें बेड नडेसी
पाक शासनि गौर्ध्व देहिक विहित संस्कृतिय
सोकदपराधियनु नावविवेक मुखदलि कोंदेवेम्मुव
नौकि कोंडिह कार्यकोसुग वेंदना राम ॥ 69 ॥
तिळुहिदनु बळिकातनंत स्खलित चित्तग्लानियनु बळि-
किळुहि कायवनोददुदात्म ज्योति कपिवरन
मोळगिदवु सुरभेरि सुरकुजदलरमळे सूसिदवु कंबनि
दुळुकुतमररचक्रि सरिदनु तन्न पट्टणकें ॥ 70 ॥

ऐदनेय संधि

सूचने– देव राघव नोलिदु तारा देवियनु संतैसि किष्किंधावनिय साम्राज्य पदवियनित्त निनजंगें ।

केळिदै कुश निम्म रघुभूपालकन शरघात दिद सु-
जाळिसिद जिष्णुविन तनुजन मरण वार्तेयनु

हुए सम्यक् ज्ञान के प्रकाश में अज्ञान का अंधकार क्या नहीं भगाना चाहिए ?" इस तरह राम ने पूछा । ६८ "थोड़ा शांति से (सब्र से) काम लो । समता और अज्ञान को (एक-दूसरे से) मत मिलाओ । इस इन्द्रपुत्र वाली के मरणोत्तर संस्कार पहले करो । 'अपने ऊपर लदे हुए कार्य के निमित्त अविवेक से इस अपराधी को मारा ।' यह दोष हमें नहीं चिपकता । इस तरह राम ने समझाया । ६९ मन में उदित अशांति को राम ने दूर किया । तदनंतर वाली के प्राणों ने देह त्यागी । देवताओं ने जयघोष किया । कल्पवृक्ष से फूलों की वर्षा (देवलोक से) हुई । आँसू बहाते देवेन्द्र अपनी नगरी चले गये । ७०

पाँचवीं संधि

सूचना— प्रभु रामचन्द्र ने देवी तारा का दुःख निवारण कर, बड़े आनंद से सुग्रीव को किष्किंधा साम्राज्य का अधिपति बनाया ।

'तुम्हारे प्रभु राघव के बाण के लगने से वाली ने जो प्राण त्याग दिये —यह समाचार तो तुमने सुना ।' —इस तरह कहते महर्षि वाल्मीकि ने आगे की कथा कहना प्रारंभ किया । वाली की मृत्यु का समाचार

केळि तारादेवि तन्नय बलनंगद सहित सतियर
मेळदाक्रंदनद लैदिद ळात्मवल्लभन ॥ 1 ॥
सारिदरु वळिकखिळ वानर नारियरु निजजीवितेशन
नारुभटॅ दट्टिसितु रोधोन्नतद रोदनद
वीर हा सुरराज राजकुमार हा कडुगलियॆ हा रण-
धीर हा हा यॆनुनुत दॊप्पनॆ कॆडॆदळा तारॆ ॥ 2 ॥
ऒऱलिदळु दॆसॆदॆसॆगॆ बाय्बिट्टॊऱलिदळु पतियंगदलि तो-
ळिरुकिनलि तवकैसि तरळापांग लहरियलि
ऎऱॆयनाननवनु निरीक्षिसि मरुकमिगॆ सुरतानुभवदॆ-
च्चरिन नुडिगळ सडगरिसिदळु सॆऱग मऱॆ माडि ॥ 3 ॥
एळु कपिराजेंद्र हिमकर मौळिबंदिहनर्चनॆय कॊड
लॆळु मंत्राक्षतॆय हिडिदिह नॊलिदु कमलभव
ओलगिस लैतंदिहरॆ दिगुपाल रिंद्रनु निन्न संपद
देळिगॆय नोडलिकॆ बंदिहनॆंदळा तारॆ ॥ 4 ॥
एळु कपिराजेंद्र सुरपनमेलॆ दनुजर धाळियाय्तॆं-
दोलॆ बंदिदॆ बागिललि बळियि बलांतकन

सुनकर (वाली-पत्नी) तारादेवी बेटे अंगद को साथ लेकर, अंतःपुर की स्त्रियों के साथ रोती-कलपती पति की देह के नज़दीक पहुंची। १ सभी वानर-स्त्रियाँ अपने पति के पास आयी। वे जो ढारें मारकर रोने लगीं, उसका शोर आकाश में व्याप्त हो गया। "हाय-हाय, दैया रे, वीर राजकुमार, देवेन्द्र-पुत्र, बड़े ही वीर, रणधीर, हाय! हाय!" इस तरह प्रलाप करती तारा 'धम्' से धरती पर गिरी। २ तारा दिशि-दिशाओं की ओर देखते चीखती-चिल्लाती हाय तोबा कर रही थी। पति के मृत देह को उसने भुजाओं में कस लिया। तिरछी नज़र से पति के मुखड़े को देखा। आँचल की ओट में, उमड़ते दुःख में, उसने अपने पति के साथ जो (काम) क्रीड़ाएँ की थीं, उन-उन संदर्भों के वार्तालापों को बड़े उत्साह के साथ स्मरण कर लिया। ३ चन्द्रशेखर पूजा देने आए हैं, उठिए, कपि राजेंद्र। ब्रह्माजी मंत्राक्षत हाथ में धरे खड़े हैं। दिक्पालक, आपको प्रसन्न करने आए हैं। इन्द्र आपकी संपत्ति का उत्कर्ष देखने आए हैं।" इस तरह तारा प्रलाप करने लगी। ४ "हे वानरपति, उठिए। इन्द्र पर राक्षसों के आक्रमण का समाचार उसने जो पत्र द्वारा भेजा है— उस पत्र का (संदेश) वाहक हमारे दरवाज़े पर खड़ा है। (इस) युद्ध में

काळगदलमरेंद्र सोलरे सोलवदु निनगेंबे निन्नय
तोळ तोट्टिय तोरु नडे बेगेंदळा तारे ॥ 5 ॥
प्रातरोचित कर्मकृत संध्या तपोनुष्ठान तर्पण
वीतिहोत्र सुहोत्रवभ्यागत महापूजे
भूत पतियर्चनें धरामरजात तर्पण विनितु काला-
तीत वागदे सुव्रतरिगेळेंदळा तारे ॥ 6 ॥
बंदिहरे कैवारिसुव सुरवंदिगळु सुरसेवकरु नडे-
तंदिहरे सुरमुनिगळाशीर्वचनवनु कोडलु
बंदिहरे सुरगायकरु बळिसंदिहरे सुरनर्तकियरे
ळेंदु गंडन गल्लवनु हिडिदलुगिदळु तारे ॥ 7 ॥
ऎत्त होदुदु मंदराद्रिय कित्तु कडलनु कडद भुजबल
वेत्त सरिदरु वैरिखळकुल कालकेयरनु
मृत्युविन भोजनके बाणसवित्त बलुहकटकट हा हा कपि
मत्त वारण हार्येनुत मोरेयिट्टळा तारे ॥ 8 ॥
अंगदन तोट्टिललि वीरोत्तुंग दशकंधरन कटिटद
तुंगविक्रमवेत्त सरिदुदु सुरकदंबकव

अगर इन्द्र हार गया तो वह आपकी हार होगी। जल्दी उठिए। अपने बाहुबल-विक्रम को तुरंत प्रकट कीजिए।" —इस प्रकार तारा ने कहा। ५ "नियमानुसार प्रतिदिन प्रातःकाल में आचरित होनेवाले कार्य—संध्यावंदन, तपोनुष्ठान, तर्पण, अग्निहोत्र, होम, अतिथि-पूजा, शिवार्चन ब्राह्मण-सत्कार, आदि के लिए समय बीतते जाने के कारण विलंब हो रहा है। अतः जल्द उठिए।" इस प्रकार तारा ने कहा। ६ "देवलोक से आपकी स्तुति-प्रशंसा करने चारण-भाट आ पहुँचे हैं। देवलोक से सेवक भी आए हैं। देव-ऋषि (आपको) आशीर्वाद देने पधारे हैं। स्वर्ग से गायक तथा नर्तकियाँ भी पधारी हैं। जल्दी उठिए।" इस तरह कहती तारा ने पति के गालों पर हाथ फ़ेरते हिलाया। ७ "वानरों में मदोन्मत्त हाथी सरीखे (बलशाली) मेरे स्वामी! मंदार पर्वत को उखाड़कर समुद्र को मथनेवाला, आपका भुजबल वह कहाँ (अदृश्य) हो गया? (हमारे) शत्रु कालकेय राक्षसों को (मारकर) यम के लिए भोजन पकानेवाली आपकी वीरता कहाँ चली गयी? हाय रे दैव!" इस तरह कहते तारा विलाप करने लगी। ८ "वीराधिवीर रावण को पकड़ लाकर अंगद के पालने में (खिलौने के रूप से) लटकानेवाला आपका वह अत्युन्नत

भंगिसिद दुंदुभिय जीवव हिंगिसिद ही हाळितनद भ-
टांगवेनाय्तेंदु दॆसॆदॆसॆगॊऱलिदळु तारॆ ॥ 9 ॥

ऋषि चरित्रन कॊंदरे कल्मष विहीनन कॆडहिदरॆयनु
मिषगवाद्विज हव्यकव्य हितोपलालितन
विषयविल्लदॆ मडुहिदरॆ कपिवृषभननु कांतार मृगकुल
झषपताकननॆंदु मॊऱॆ यिट्टळलिदळु तारॆ ॥ 10 ॥

कडिदरो सुरतरुव नॆलवद मिडिय बयकॆगॆ तॊत्तुवॆटकॆ
हडॆद तायनु तॊऱसिदरॊ मौक्तिकद मणिगणव
कॊडहि बिसुटरॊ दारकोसुग सुडिसिदरॊ कस्तुरिय नरळिगॆ
नुडियिरो मऱॆयेकॆनुत मॊऱॆयिट्टळा तारॆ ॥ 11 ॥

इऱिदरो सुरधेनुवनु नॆऱॆ मुऱिदरो सुरकुजव कडलॊळ
गुरुबिदरॊ कामितद रत्नवनकट कय्यारॆ
हऱिदु बिसुटरॊ तन्न कॊरळलि मॆऱॆव मणिमांगल्य सूत्रव
मॊऱॆयॊ मॊऱॆयॊ विधात्र हायॆंदॊऱलिदळु तारॆ ॥ 12 ॥

पौरुष कहाँ चला गया ? देव-समूह को पीड़ित करनेवाले दुंदुभि राक्षस का प्राणापहरण कर अन्यों को अपमानित करनेवाली आपकी शूरता कहाँ चली गयी ?" इस तरह कहते तारा चारों तरफ़ देखते गिड़गिड़ाने लगी। ९ "ऋषि-सदृश चरित वाले को मार डाला न ? निष्कलंक चरित वाले को इस तरह मार गिराया न ? देवता, गो-ब्राह्मणों को पूजकर, देव तथा पितृ-कार्य आचरण करनेवाले का इस प्रकार वध किया न ? कपियों के राजा को, वन के मृगसमूह के लिए मन्मथ-सदृश को, बिना किसी कारण (यों) हत्या की गयी न ?" इस तरह कहते तारा ढारे मारकर रोने लगी। १० "सेमल के वृक्ष की आशा में कल्पवृक्ष को काट डाला न ? दासी के लिए प्रेम प्रकट करते (दासी-प्रेम से प्रेरेपित हो) माँ का परित्याग किया न ? धागे की आशा में (बहुमूल्य) मोतियों को निकाल फेंक दिया न ? पीपल के लिए कस्तूरी को जलवा दिया न ? (इकट्ठे हुए) लोगो ! बोलो न ? इसमें दुराव-छिपाव काहे का ?" इस तरह तारा प्रलाप करने लगी। ११ "कामधेनु को मार डाला; कल्पवृक्ष को तोड़ दिया, चिंतामणि को अपने हाथ से उठाकर समुद्र में फेंक दिया; हाय-हाय ! मेरे कंठ के मांगल्यसूचक रत्नजटित मंगलसूत्र को निकाल कर फेंक दिया। हाय मेरे दैया रे !" —इस तरह कई प्रकार के उद्गार निकालते तारा विलाप करने लगी। १२ "क्यों सुग्रीव ? अब तो तू

आयिते संतोष राज्य श्रीयननुभविसिन्नु मदनन
बीयगकॆ बिडवाय्तॆ निनगॆलॆ रविज निजपतिय
वायदलि कॊलसिदॆ धराचंद्रायतद कीर्तियनु गळिसिदॆ
दायिगरॊळुत्तमनला नीनॆंदळा तारॆ ॥ 13 ॥
आरु गति नमगिन्नु नाविन्नार सारिदु बदुकुवॆवु नम-
गारॊडॆय राराप्त रारधिकृतरु नमगिन्नु
आरुयिल्लद नन्यगतिकरिगारु बंधुगळॆंदु बळिका
तारॆ कडुशोकदलि कॊरळिगॆ हाय्दळंगदन ॥ 14 ॥
कंद निन्ननदार कैयलि तंदॆ कॊट्टनु बळिक निनगे
नॆंदु हेळिदनकट देसिगरादॆवे नावु
मुंदॆ नमगिन्नेनु गति नाव् नॊंदॆवै नुग्गादॆवैयरॆ
बॆंदॆ कॊरडावादॆवै हायॆंदळा तारॆ ॥ 15 ॥
ऎंदु मूर्छागत परिग्रहदिंद मानिनि मुळुगिदळु रघु-
नंदनन शरदरुणजलधारा सुतीर्थदलि
मुंदुवरिव विलास मंत्रद संद पूजास्तवदलॊय्यनॆ
संदरुशनव माडिदळु माया महीश्वरन ॥ 16 ॥

संतुष्ट हुआ न ? अब (बेखटके) राज्यलक्ष्मी का उपभोग कर। अब कामक्रीड़ा के लिए (तू) निष्कंटक हुआ न ? धोखे से मेरे पति की हत्या करायी ? यावत् भूमि-चंद्रमा का अस्तित्व रहेगा, तावत् तेरी कीर्ति शाश्वत रहेगी। दायादों में तू श्रेष्ठ है न ?" —इस तरह तारा ने कहा। १३ "अब मेरी देखभाल कौन करे ? मैं किसके सहारे जीऊँ ? हमारा अब आश्रयदाता अब कौन रहा ? कौन हैं हमारे निजी जन ? कौन हमारे स्वामी ? शासक ? जिनका कोई नहीं, हम जैसे निर्गतिकों के बन्धु कौन रहे ?" इस तरह अत्यंत वेदना में शोक प्रकट करती हुई तारा-पुत्र अंगद के गले लगी। १४ "बेटे अंगद ! तुम्हारे पिता ने तुम्हें किसके हाथ सौंप दिया ? मरते वक्त उन्होंने तुमसे क्या कहा ? हाय ! हम परदेसी (लावारिस) हुए न ? अब हमारा भविष्य क्या होगा ? हम तो इस तरह दुःखी हुए (कि पूछो मत) हमारा सत्यानाश हो गया। अधजले लक्कड़ जैसी हमारी गति है। हाय-हाय !" करती हुई तारा रोने लगी। १५ इस प्रकार बिलखती हाय तोबा मचाती तारा मूच्छित होकर, राम-बाण से वाली की देह से बाहर छलके हुए रक्त के पवित्र तीर्थ में डूब गयी। उसके (वाली के) सौंदर्य के मंत्रों का पठन करती हुई वह (तारा) स्तुति

अकट रघुकुल दरसुगळु धार्मिकरु कृत भापितरु भाग्या-
धिकरु पुण्य श्लोकरुत्तमरधिक गुण युतरु
अकुटिलरु सन्मार्गशील प्रकटितरु सद्वर्तनरु से-
वकरिगोसुग कोलुवदुचितवे येंदळवनिपन ॥ 17 ॥
दशमुखन मेलणविरोध व्यसनदधिक क्रोध शिखियनु
बिसुडुवरे कोंडेयर नुडिगपराधहीननु
बसिद शूलके सवणननु सेरिसिद गादेय मेरेवरेयप
वशव होत्ते निरर्थ लोकदोळेंदळा तारे ॥ 18 ॥
विल्ल वलुमेयदेन्न गंडनोळल्ल दारिगे हेळु चोपट
मल्लतन मर्कट रोळल्लदे मेरेयदे निनगे
खुल्लरोडनेय कूट सज्जनरल्लि रोगसे खूळरंगव
निल्लि मेरेवरे रामहेळेंदळलिदळु तारे ॥ 19 ॥
मधुविनलि निनगोप्पुवदु रणनिवन निगमांगनेय नवनी
वधुव कद्दोय्दवरोळेसेवुदु कलि हिरण्यकन

रूपी पूजा-स्तोत्रों में निमग्न होकर धीरे-धीरे माया (रूपधारी) मानव राम के उसने दर्शन (भेंट) कर लिये। १६ "रघुवंशीय राजा बड़े ही धार्मिक हैं; वचन-परिपालन में अचूक हैं। अत्यधिक भाग्यशाली हैं; पुण्यात्मा हैं। श्रेष्ठ हैं; सद्गुणी हैं। धोखेबाजी से कोसों दूर हैं। सन्मार्ग पर विचरण करनेवाले वे सदाचारसंपन्न हैं। —ऐसों को— क्या (अपने) सेवकों के निमित्त (इस प्रकार की) हत्या करना शोभा देता है।" —इस प्रकार तारा ने राम से पूछा। १७ दशमुख रावण से तेरी शत्रुता की क्रोधाग्नि के निमित्त चुगुलखोरों की बातों में आकर निरपराध मेरे पति पर इस प्रकार बाण-प्रयोग करना क्या उचित है? यह तो उस कहावत को चरितार्थ करने का जैसा हुआ कि श्रवण (जैन संन्यासी) को बड़ी ही तीक्ष्ण नोकदार शूल पर चढ़ाना (सूली पर लटकाना)। इस तेरे कार्य से, व्यर्थ ही तूने जगत में अपकीर्ति कमायी।" इस प्रकार तारा ने कहा। १८ "तुम्हारा यह धनुर्विद्यासामर्थ्य प्रदर्शन मेरे पति के सिवा और किस पर दरसा सकते हो? तेरी जगत्प्रसिद्ध शक्ति-प्रदर्शन वानरों के सिवा अन्य किन पर चल सकता है? नीचों की संगति क्या सज्जनों की शोभा बढ़ा सकती है? तुम्हारी दुष्टता के दिखावे के लिए क्या यही स्थान तुम्हें ठीक लगा?" इस प्रकार तारा ने पूछा। १९ "मधु नामक असुर का युद्ध तेरे लिए ठीक है। वेदों को चुरानेवाले सोमक, भूमिक, धरती का अपहरण करनेवाले हिरण्याक्ष आदि राक्षसों को मत्स्य-वराह अवतार

वधिसुवंदु विराजिपुदु निन्नधिक भुजबल वकट वानर
वधे निधानिसे रंजकवे निनगेंदळातारे ॥ 20 ॥
अरिकें गणुविन कोडते पतियलि होरदु पिसुणर मातु मन्नसि-
गुरिसितल्लदे देव दय निनगिल्ल वादुदल
अरिचि माडुवदेनु तानिन्नेरय मंचद मुन्न वहिनय
लोरगिसेन्नुवनेन्न पतियोडनेंदळा तारे ॥ 21 ॥
तरळनिवनंगदनु सेरुवुदरिदु सुग्रीवंगे हसुळेय
हरण निन्नदु कंदनिव ता निन्न कैयडेय
करुण विरलिव नल्लि बारै तरुण बारेंदिनकुलेंद्रन
चरणदलि चाचिदळु तनुजननश्रुजल झडिये ॥ 22 ॥
जलविडिद वक्षियलि करुणाजलनिधिगे लव केळु कडुको-
मलवला रघुपतिय चित्त बळिक्क बालकन
तलेदडवि तन्नंघ्रि कमलव निळुहिदनु मूर्धिनयलि तारा-
ललनेयनु संतैयिसिदनु विविधोपचारदलि ॥ 23 ॥
तरुणि केळायुष्प मोदला दुरुतर प्रारब्ध कर्मद
बरहविदु ता प्राणिगळिगंबोज संभवन

धारणकर मारना तेरे लिए योग्य ही रहा। वीर हिरण्यकशिपु के वध में तेरा बाहुबल तो प्रकाशित ही हुआ। सोच-विचार कर देखें तो वानर हत्या से तेरी क्या शोभा बढ़ी ?" इस प्रकार तारा ने प्रश्न किया। २० "वैसे तो (सोच-विचारकर देखें) मेरे पति रत्ती भर भी दोषी (अपराधी) न रहे। चुगुलखोरों की बातों में जो आप आ गये अपना दयालु स्वभाव भूल गये। मेरा, इस प्रकार गला फ़ाड़ लेने से क्या प्रयोजन ? पति को (मृत-संस्कार) वेदिका पर चढ़ाने के पहले मुझको पति के साथ चिता पर चढ़ाइये।" इस तरह तारा ने निवेदन किया। २१ "इस बालक अंगद का सुग्रीव के आश्रय में रहना असाध्य है। इस बालक के प्राण तेरे (आधीन) हैं। यह बालक तेरी रक्षा के आधीन है। इस पर तेरी दया रहे।" इस तरह कहते हुए तारा ने रोते हुए— "आ बेटे, आ।" इस तरह पुकारते हुए अंगद को बुलाया तथा उसे राम के चरणों में गिराया। २२ (इस घटना से) करुणासागर राम की आँखें डबडबा आयीं। रघुपति का स्वभाव अत्यंत कोमल है न ? बालक का माथा सहलाते हुए (अंगद के) उसके माथे को अपने चरणों में जगह दी। फिर तारा का कई रीतियों से उपचार करते हुए उसे सांत्वना दी। २३ "हे युवति ! सुन।

मरणवधिकृत जननविदनादरिस लरियदॆ वयल हम्मिन
हरुहिनलि हॊदकुलिसुवुदु जगवॆंदना राम ॥ 24 ॥

अदरिनज्ञान प्रपंचव नॊदवुदे सुप्रौढि नाव् निज
सुदतियनु होगाड लेकी कपिय कॊललेकॆ
इदुवॆ ता प्रारब्ध फलविदनुदगलिस लारळवु सहगम-
नद विचारवदेकॆ साकिन्नॆंदना राम ॥ 25 ॥

तनुज केळै बळिक हरिनंदनन ललनॆय लोचनद विड्
वनिय नंशुकदग्रदिंदोरसिदनु करुणदलि
अनुज लक्ष्मणनंतॆ निन्नय तनुजनलु पालिसुवॆ नॆंदा
वनितॆयनु संतैसि बळिकितॆंद ननुजंगॆ ॥ 26 ॥

तरणि तनयगॆ राज्य पदविय विरचिसुवदंगदन नॊसललि
धरिसुवदु युवराज पट्टवनॆंदु बॆसवेळ्दु
तॆरळिसिदननुजननु रविजन करॆदु नडॆ नी निन्न पुरकी
वरुषकालव कळिदु कपिबल सहित बायॆंद ॥ 27 ॥

आयुष्य वग़ैरः जो कुछ हैं, हमारे जन्म-जन्मकृत कर्मानुसार ब्रह्माजी से जीवियों के माथे पर लिखा गया ललाट-लेखा (विधि-लिखित) है। पैदा होने पर मृत्यु निश्चित है। इसे जाने बिना जीव तथा लोक अहमहमिका में डूबे संताप का अनुभव करता है।" —इस प्रकार राम ने समझाया। २४ "अतः अज्ञान प्रपंच से दूर रहने में ही बुद्धिमत्ता है। मुझे अपनी पत्नी को क्यों खो बैठना था? इस कपि को व्यर्थ ही क्यों मारना पड़ा? यह पूर्वजन्मकृत कर्म का फल है। इसके विपरीत कौन क्या कर सकता है? सती होने का विचार क्यों कर रही हो? अब बस करो।" इस प्रकार राम ने कहा। २५ सुनो लव, तत्पश्चात् राम ने करुणा से इन्द्रपुत्र वाली की पत्नी के आँसू अपने अँगोछे से पोंछे। फिर वचन दिया— "अपने भाई लक्ष्मण की तरह, तुम्हारे बेटे की, हर तरह रक्षा करूँगा।" —इस तरह तारा को सांत्वना देकर लक्ष्मण से कहा—। २६ "सूर्यपुत्र सुग्रीव के राज्याभिषेक की तैयारियाँ कराओ। अंगद को युवराज बनाओ।" —इस प्रकार आज्ञा देकर लक्ष्मण को भेज दिया। सुग्रीव को बुलाकर कहा— "तुम अपनी राजधानी चले जाओ। इस वर्षाॠतु के बीतने पर अपनी कपिसेना के साथ चले आना।" २७ वहाँ से राम प्रस्रवण पर्वत पर चले गये। तत्पश्चात् यहाँ (किष्किंधा में) शास्त्रोक्त रीति से वाली के मरणोत्तर कर्म आचरित

तिरुगिदनु प्रस्रवणपर्वत करस नल्लि मेलॆ नडॆदुदु
सुरप सूनुविनौर्ध्वदेहिक वागमोक्तदलि
हरिधराधिप पट्ट बळिकाय्तरियमन नंदनगॆ नडॆदुदु
हरिहयन मॊम्मगॆ घनयुव राजदभिषेक ॥ 28 ॥

इनजननु बीळ्कॊंडु मारुत तनुज नळ नीलादिगळ वं-
दनॆय कैकॊळु तूर्मिळापति परम हरुषदलि
मनुजवेषद गौरवद गोमिनिय गंडन गरुवदेवन
विनुत तॊरवॆय राय नरहरि यॆडॆगॆ नडॆतंद ॥ 29 ॥

आरनॆय संधि

सूचने— कळिदु मळॆगालवनु बलिमुख बलसहित वंदिनजना दशगळ विरोधिय कंडु कदनोद्योगमननाद ।

कॆळिदै नृपसूनु निम्म नृपालरा प्रस्रवण शैलद
मेलिरलु मैदोरिदुदु मुंगारु धारुणिगॆ
बीळॆ बुडमेलागि गिरि तरुकीळॆ कडलुप्परिसि गगनकॆ
तूळॆ तवकदि बीसिदुदु बिरुगाळि पश्चिमद ॥ 1 ॥

हुए। फिर सुग्रीव का वानर-राज्याभिषेक तथा अंगद का युवराज्य-अभिषक संपन्न हुआ। २८ लक्ष्मण ने सुग्रीव से बिदा ली तथा हनुमान, नल, नील आदियों के प्रणाम स्वीकार किए। वहाँ से, तॊरवे के नरहरि के अवतारस्वरूपी लक्ष्मीरमण स्वामी मानव-रूप-धारी श्रीराम के पास (लक्ष्मण) पहुँचे। २९

छठी संधि

सूचना— वर्षाऋतु बीती। तत्पश्चात् वानर सेना-सहित सुग्रीव रावणारि श्रीराम के यहाँ पधार कर युद्ध-कार्य में प्रवृत्त हुए।

सुना न राजकुमार। तुम्हारे राजा (राम) जब प्रस्रवण पर्वत पर थे तब वर्षाऋतु शुरू हुई। पश्चिम दिशा से जब आँधी चली तो मानों ऐसा लग रहा था कि उसकी भयानक तीव्रता के कारण (वह) पहाड़ ही आमूलाग्र उखाड़ा जा रहा हो। पेड़ लुढ़ककर गिर पड़ने लगे। समुद्र में उठी उत्ताल ताल तरंगें मानों आकाश को छू रही थीं। १ जल भरे मेघ झुंड के झुंड आकाश में उठने लगे। राजहंस मानससरोवर की तरफ़

मुरिदु नभकेरिदवु मुगिलिन नॆरवि नीर्गळ हेऱॆ हारिद-
वरसुकुलद मराळततति मानस सरोवरकॆ
हरुषिसिदवु बलाक चातकि सुरशरासन मेघलक्ष्मिय
शिरद शिबिरद मेलुदिनवॊलु मॆरॆदुदभ्रदलि ॥ 2 ॥
तॊट्टुदो नभकवचवनु नॆलकट्टि बिगिदरॊ सुररु निरिविडि
दुट्टळो जलदागमश्री नीलमय पटव
मट्ट मरकत शिलॆय नीलिय बॆट्टदिरवॆंबंतॆ जंपळ
विट्टु झडिदुदु कार्मुगिलु कत्तलिसॆ कुंभिनिय ॥ 3 ॥
झडपुगळ झाडणॆय मिंचिन खडुगगळ कडुमुगिल हरिगॆय
गडबडॆय घर्जनॆय घाडिय घनघटावळिय
सिडिल बॊब्बॆय धाळियलि नडनडिसिताग निदाघ भूपन
हिडिदु हॆक्कळिसिदनु मेघागम महीपाल ॥ 4 ॥
दॊरॆमुगिलु तॆरॆमुगिलु निडुमोहरद मुगिलुप्परद मुगिलु-
ब्बरद झाडिय जोडिगळ जंगळद मुगिलिनलि

उड़ान भरने लगे। बगले तथा चातक पक्षी अत्यन्त आनंदित हुए। इन्द्रधनुष मानों इस प्रकार शोभायमान हुआ कि मेघ लक्ष्मी ने अपने सिर पर सुन्दर ओढ़नी ओढ़ ली हो। २ वर्षाऋतु के दृश्य इस प्रकार दिखायी दिये जैसे आकाश ने कवच धारण कर लिया हो; जैसे देवताओं ने भूमि को आकाश के साथ कसकर बाँध दिया हो; जैसे वर्षाऋतु रूपी (नामक) स्त्री ने नीले कपड़े को तह मोड़कर पहन लिया हो तथा मरकत (पन्ना) शिला-सदृश नीले पहाड़ों की तरह घने काले बादलों ने जब धरती को आ घेरा तो सारी पृथ्वी पर अँधेरा छा गया। ३ वर्षा (ऋतु) रूपी राजा हाथ में बिजली की तलवार, जो आँखों में चकाचौंध उत्पन्न करती धारण किए हुए, घने बादलों को ढाल के रूप में प्रयुक्त करते हुए, (युद्ध के लिए) तैयार हो, घनघोर बादलों की गड़गड़ाहट के रूप में गरजते हुए, बिजली गिरने की कड़कड़ाहट के रूप में शोरगुल मचाते हुए ग्रीष्म ऋतु रूपी राजा पर आक्रमण कर, उसे क़ैद कर फूला न समाया। ४ (आद्यंत-रहित) विशालकाय बादल, लहर जैसे बादल, नीले काले झुंड के झुंड घने बादल, ऊँचे-ऊँचे बादल, भारी गड़गड़ाहट के साथ विचरण करनेवाले घने बादल, इस प्रकार कई प्रकार के बादलों ने घेरकर सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, ग्रहों को आँखों से ओझल कर दिया। सारी धरती इस प्रकार जलमय हो गयी मानों सारा आकाश सागर का रूप धारण किए धरती पर टूट पड़ा

तरणिशशि तारागृहंगळ हरवु निंदुदु गगन जलनिधि
जरिदु दिळेगेंबंते जल ओंपिसितु मेदिनिय ॥ 5 ॥
बेसुव मेघद काळिकेय खंडिसुव मिंचिन संचरद सं-
धिसुव सिडिलिन सडिलि नेल कोंगुवालिकल्लुगळ
बेसुगेगळ बिरुवळे बेंदवळे बिसिलुवळे सरिसोने सिडिलिन
घसणिवळेयलि घासियादुदु जगद्जन निकर ॥ 6 ॥
तोरॆगळुब्बर दब्बरद बोब्बिरित दबुधिय सरसिगळ नी-
रोरतॆगळ नेल नवघनोदकदुब्बु निर्जरद
निरिसु निडु जंझासमीरन बिरिसु बेसरनित्तवेने ने-
सरु गुलाधिप सूनु केळ् नवमेघ कालदलि ॥ 7 ॥
लवने केळ् चंडांशु वंशोद्भवरु बळिका पर्वतद बलु
गविय गेहंगळलि जंघानिल निवारणद
विविध पुण्य मृगाजिनंगळ निवसनद नीरेजकंदद
नवफलाहारदलि नूकिद रंबुदागमव ॥ 8 ॥
बंदुदा कैयोडने काळिके गुंदिदभ्रद बेळ्पनुब्बर
मंदवाद समीरणन संभ्रमद सडलिकेय

हो। ५ एक-दूसरे से सटे बादलों की कालिख काटने के लिए मानों विद्युत् (कैंची की तरह) चमक रही थी। विद्युत् के आघात से ढीले पड़े ओले धरती पर बरसने लगे। झड़ीदार वर्षा, भारी वर्षा, धूप के बीच बरसनेवाली वर्षा, धारदार वर्षा, हलकी फुहारों से बरसती वर्षा, बिजली की कड़कड़ाहट के साथ गिरती वर्षा —इस प्रकार कई रीतियों की वर्षाओं में फँसकर जगत के लोग परेशानी उठाने लगे। ६ नदियाँ बाढ़ से फूलकर (मस्त हो) बहने लगीं। समुद्र घनघोर गर्जना करने लगा। सरोवर सराबोर हो बहने लगे। पानी के प्रवाहों ने धरती को घेर लिया। वर्षा के जल से आपूर्ण सोते-झरने पहाड़ों पर से कतार में उतरे। आँधी की प्रचंडता जबर्दस्त हुई। सूर्यवंशोत्पन्न हे कुमार, सुनो। वर्षाऋतु के प्रारम्भ में ही लोग तंग आ गये। ७ सुनो लव; सूर्यवंशीय राम-लक्ष्मण ने पहाड़ की गुफा में अपना निवासस्थान बनाए आँधी के थपेड़ों से रक्षा पायी। कई प्रकार के, पुण्यकर, (पावन) मृग (हिरन) चर्म ओढ़े, कमल के गट्टों को आहार बनाए उन्होंने वर्षाऋतु (बड़े कष्ट से) बितायी। ८ वर्षाऋतु के समाप्त होने पर धरती को आनंद प्रदान करनेवाली शरत्ऋतु ने प्रवेश किया। आकाश की कालिमा गायब

संधिसिद सिडिलाटगळ तरणेंदुगळ तोऱिकॆय बॆळगुग-
ळिद सॊगसनु सूसुतवनिगॆ वरशरत्समय ॥ 9 ॥
मुऱिद वीरन रणदवोलु बॊब्बिरित निंदवु सागरंगळ
हॆऱ तॆगॆद रणखेडन वोलॊळ सऱिदवल्ललि
तोऱॆगळात्मज्ञानि तत्पुरदऱिव काणिसुवंतॆ नभ कं-
दॆऱॆवॆयादुदु काणिसितु जनमनद सुम्मान ॥ 10 ॥
सडगरिसिदुदु शालिशाड्वल दुडिगॆयलि नॆलनखिळ मृग मद
वडॆदवंचॆगळिचरव बीऱिदवु कॊळगळलि
मडुगळक्कुडिसिदवु हावसॆ हिडिद पथ पांथकर पंदहति
गॊडल नित्तवु हॊंगिदवु हॊलदलि विहंगचय ॥ 11 ॥
सरिदुदा शरदवनि पालन सिरि कुशानुज केळ् हिमंतन
बरविनलि बळिकादुदवनिपगरिवधासमय
बरवनल्लि मेलॆ वानररसनलि काणदॆ कपींद्रन
परिय कंडॆयॆंदु मॆल्लनॆ नुडिद ननुजंगॆ ॥ 12 ॥
हिरिदु हवणरियद कृतघ्नरु धरॆयॊळिल्लॆन बेड धरॆयलि
निरतिशय पुरुषार्थ जीविगळिल्ल वॆनबेड

होकर, उसने श्वेतवर्ण (शुभ्रता) धारण किया। वायु मंद-मंद बहने लगी। ज़ोर कम पड़ने के कारण बिजली की अठखेलियाँ रुक गयीं। सूर्य तथा चन्द्रमा का हितकारी प्रकाश शोभायमान हुआ। ९ हारे हुए वीर के युद्ध की भाँति समुद्रों का कोलाहल शांत हुआ। कांतिहीन युद्ध भीरु की तरह नदियाँ उतर गयीं। आत्मज्ञानी को प्राप्त मोक्ष की जानकारी की भाँति आकाश की आँखे खुलीं। लोगों के मन आनंद से परिपूर्ण हुए। १० धान के खेत हरे परिधानों से सुभोभित हुए। धरती पर की समस्त जीवराशि— मृग, पशु, पक्षि आदि खुशी के मारे फूले न समाए। सरोवरों में हंस मधुर ध्वनि करने लगे। पानी के गहरे गड्ढों में से तथा नदी के गहरे स्थानों का पानी (पानी की सतह) नीचे उतरा। काई से भरे मार्ग राह चलतों के लिए, फिर चलने के लिए, मौका देने लगे। खेतों में पक्षी अत्यंत खुश हुए। ११ शरद्ऋतु ने पीछे हटकर हेमंतऋतु के प्रवेश के लिए सुविधा कर दी। सुनो लव; राम के लिए तो (अपने) शत्रु-हत्या का समय नज़दीक दीख पड़ा। वानरराज सुग्रीव की तब तक की अनुपस्थिति देख, राम ने धीरे-धीरे लक्ष्मण से कहा— "सुग्रीव का स्वभाव कैसा है! देखो तो सही।" १२ "सहमत हुए, माने गये नियमों के उल्लंघन करनेवाले कृतघ्नों की कमी इस दुनिया में नहीं है।

सिरिय मददलि नम्मना कपि सरकु माडदे काद नीने
च्चरिसि बा होगेंदु नेववनित्तननुजगे ॥ 13 ॥
एनवनु दोड्डिदनु शरसंधान समयिगळावु नमगा
वानरर मित्रत्व वेंबुदु लोक हास्यवले
ई निभृत कोदंड चंडकृशानुविन होय्लिनलि हगे गों-
डानु ववरारेंदु लक्ष्मणदेव गर्जिसिद ॥ 14 ॥
करेदु नोडोम्मवन बंदरे बरलि बारदडवन राज्यव
तिरुगि नाव् कोंदवन नंदनगित्तु बा बळिक
अरिवधेगे नीनेंदनुडि तात्परिय तुदिगेंदरस नाज्ञा-
धरन धैर्योत्करन कळुहिदना महाद्रियलि ॥ 15 ॥
धरिसि कोंडिद्दग्रजन्मन वर शरासन शरकृपाणव
निरिसि तन्नय धनुतनुत्रव तळेदु रघुपतिय
चरणकानतनागि मनदुब्बरद होगरिन होगेव कोपद
भरद भारणेयिद बीळ्कोंडनु महीपतिय ॥ 16 ॥

लेकिन, उसी तरह, धर्मादि पुरुषार्थों को जाननेवालों की भी कमी इस दुनिया में नहीं है। संपत्ति के घमंड में चूर उस बन्दर ने हमारी ओर (कार्य में) ध्यान न देते हमें प्रतीक्षा करने के लिए लगाया (बाध्य किया)। अतः तुम जाकर उसे सचेत कर आओ।" —इस प्रकार राम ने अपने भाई को आज्ञा दी। १३ "वह किस खेत की मूली है! धनुर्विद्यासमर्थ तो हम हैं। वैसे तो हमारी इन बन्दरों के साथ हुई मित्रता ही हँसी-मज़ाक़ की बात है। हमारे साथ शत्रुता कर हमारे धनुष की प्रचंड अग्नि-ज्वाला का सामना करने की हिम्मत ही किसमें है?" इस तरह लक्ष्मण घुड़कने लगे। १४ "एक बार उसे बुलाकर तो देखो। (निमंत्रण मान) आते हों तो ठीक है; न आने पर हमसे मारे गये वालीपुत्र को राज्याधिकार सौंपकर आओ। तत्पश्चात् शत्रु-वध के लिए तुमसे कथित (प्रकटित) वाणी अंतिम रूप से प्रत्यक्ष रूप धारण कर लेती है। (तब अपने शत्रु की हत्या अनिवार्य हो जाती है।)" इस प्रकार समझाते हुए आज्ञापालक साहसी लक्ष्मण को राम ने उस पहाड़ पर भेज दिया। १५ (अपने) बड़े भाई के जो धनुष, बाण, खड्ग आदि धारण किए थे उनको अलग रखकर लक्ष्मण ने अपना कवच धारण किया। फिर धनुष को उठा लिया तथा राम को प्रणाम किया। क्रोध के मारे जलते, धुआँ उगलते रुद्र-रूप धारण किए लक्ष्मण राम से विदा लेकर निकल पड़ा। १६

आरु निलुवरु लक्ष्मणन घनघोर गर्वानिलन मुंदॆ म-
हीरुहावळि सीदवंगद झळद झाडियलि
भूरिभूधर बिऱिदवमम कठोर सिंहध्वनिगॆ सिंह च-
मूरु करिशरभादि मृग जाऱिदवुदॆ दॆसॆदॆसॆगॆ ॥ 17 ॥
एरिसिद विलु दिरुविनविन तोऱिकॆय तुदिवॆरळुगळ कॆं-
पेऱिदक्षिय कुणिव मीसॆय काहुरद मनद
मूरु लोकद कॊलॆगॆलसकुब्बेऱिद समांवकन वॊलु मै-
दोऱिदनु मिहिरजन दुर्गद भटर कंगळिगॆ ॥ 18 ॥
काणु तीतनना प्लवंगश्रेणि दुर्गवनेऱ गॊडदॆड
दाणदलि तरुबिदरु तरुशैलायुधंगळलि
क्षोणिजासुत कॆळु बळिक क्षीण बलना बलि मुखाळिय
गोणुगळ नॆव्विसुत नडॆदडऱिदनु पर्वतव ॥ 19 ॥
ऎड बलद लौकुव भटाळिय तॊडक तूऱुत मीऱि मिसुकुव
कडुहुका ऱर कालनूऱिगॆ कळुहुतसदळिसि
घुडुघुडिप कोपदलि दुर्गद हॆडकुपरियंतेऱॆ पुर गड-
बडिसि बॆच्चितु बाऱिसितु भयविन तनूजंगॆ ॥ 20 ॥

लक्ष्मण की भयानक शौर्याग्नि का सामना करने की हिम्मत किस माई के लाल में है ! लक्ष्मण के शरीर से निकलती ज्वाला के कारण पेड़ जल कर खाक हो गये; बड़ी-बड़ी चट्टानों में दरारें पड़ीं। उसके कठोर सिंह गर्जना से डरकर शेर, हाथी, बाघ, चीता आदि प्राणी (प्राण लेकर) इधर-उधर भाग खड़े हुए। १७ धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाए, उँगलियों में बाण धारे लक्ष्मण की लाल-लाल आँखें, फड़कती मूँछें, क्रोधोन्मत्त मानसिक स्थिति आदि देखनेवाले सुग्रीव के दुर्गरक्षक सैनिकों को ऐसे लगा कि तीनों लोकों को नाश करने जा रहे भालनेत्री— साक्षात् शिवजी ही हैं। १८ इसे देखनेवाले वानरसमूह ने उसे, बायीं ओर से आकर दुर्ग पर चढ़ने से रोकते हुए चट्टान, पेड़, वगैरहों को आयुध के रूप में प्रयुक्त करते मारना-पीटना शुरू किया। तब अत्यंत बलशाली लक्ष्मण ने (आक्रमणकारी) वानरों के सिर उड़ा दिये तथा पहाड़ पर चढ़कर वे आगे बढ़ने लगे। १९ दाएँ-बाएँ से टूट पड़ते शूरवीरों को धक्का देते, फिर भी (रुकावट को न मान) आगे बढ़ते हुओं के साथ लड़ते हुए उन्हें (लक्ष्मण ने) यमलोक भिजवा दिया। लक्ष्मण क्रोध के मारे गरजते जब दुर्ग के पिछले हिस्से पर आक्रमण कर चढ़ आए तो नगरवासी बड़े भयभीत हुए। सुग्रीव भी

गज बज विदेनेनुत पवनात्मजनु नडेतंदिनकुलेंद्रा
नुजन कंडॆडबलद कळकळवनु निवारिसुत
निजद निर्म्रिगॆय भक्तियलि भूमिजॆय मैदुननमलपद पं-
कजकॆ विनमित नागि तंदनु रविजनरमनॆगॆ ॥ 21 ॥
धरणिजासुत केळु तत्पुरवर विराजिसितमर पुरवर
कॆरडु मडियॆनॆ भद्रभवनावळिय वीथियलि
सुर महीजोद्यानदलि सुरुचिर विभूषणदबलॆयर सौं-
दरद सॊगसिन राजभवनवु मॆरॆदुदिदिरिनलि ॥ 22 ॥
जरॆदु तारादेवि बळिकॆच्चरिसलाक्षण बॆदरि भयमुख
दरिकॆयलि बहुविधद सौरंभातिशयदिंद
ऊरुव तन्नय युवतियर मैमरॆयलैतंदवरु सहितडि-
गॆरगि वैभव दिंदिदिर्गॊडॊय्द नरमनॆगॆ ॥ 23 ॥
परम पूजा विधि गळिंदादरिसि लक्ष्मणदेवननु स-
त्करिसि कंपित कायनॆरगिद नित्तु काणिकॆय
करुणलतॆ कुडिदोरॆ मॆल्लनॆ कर सरोजदिना कपींद्रन
शिरव नॆगहि बळिक्क कुळ्ळिरिसिदनु विनयदलि ॥ 24 ॥

भयग्रस्त हुए। २० 'यह क्या शोरगुल है ?' —देखने हनुमानजी (सर्व-प्रथम) आए। रविवंशज राम के भाई को देखकर उन्होंने (हनुमान ने) आसपास के लोगों के शोरगुल को थमा दिया। परिशुद्ध भक्तिपूर्ण भाव से जानकी के देवर के चरणों में गिरकर उसे सुग्रीव के राजमहल बुला ले आए। २१ हे सीतापुत्र, सुनो। सुग्रीव की नगरी सुन्दर भवनों से शोभायमान सड़कों से संपन्न, अमरावती से दुगुनी सुन्दर थी। चमकते आभूषणों को धारे सुन्दर स्त्रियों से सुशोभित (सुग्रीव का) राजमहल कल्पवृक्षों से घिरे उद्यान के मध्य, सामने विराजमान जो था, लक्ष्मण को दीख पड़ा। २२ देवी तारा ने सुग्रीव को ताने देते सावधान किया। उसी क्षण, भयभीत सुग्रीव डरावनी सूरत बनाए, उठकर धाया तथा बड़ी तत्परता से अपनी रानियों की ओट में आया। अपनी रानियों-सहित लक्ष्मण के चरणों में गिर, बड़ी धूमधाम से उनकी अगवानी करते हुए, उनको अपने राजमहल में ले आया। २३ सुग्रीव ने पूजादि से लक्ष्मण का आदरातिथ्य कर उपहार समर्पित कर, फिर काँपते-काँपते वे उनके चरणों में गिरे। तब लक्ष्मण द्रवित हुए। धीरे-धीरे सुग्रीव का माथा (जो उनके चरणों में था) अपने हाथ से उठाकर विनयपूर्ण हो, उसे बिठा लिया। २४

हरदमरुषणदाननद मैसिरियरिदु कैमुगिदु मॆल्लनॆ
दरहसित मुख नागि कॆळिदनवनिजेश्वरन
सिरि चरण सरसिरुहयुग सुस्थिरवॆ जीय कृपातिशयदं-
तरद परियेनॆन्न मेलेनुतिनज बॆसगॊंड ॥ 25 ॥
नुडिद दिनकव बारनॆंदव गडिसिदलॆ चित्तदलि नन्नलि
तडदुदपराधांशवद विन्नॆसलेकिन्नु
हिडिदॆवडि धृडवागि निम्मडियडिगळनु नावंजलेकि-
न्नॊडॆय तनवनु मॆरॆदु तन्ननु सलुह वेकॆंद ॥ 26 ॥
अरस चित्तै सरिय मान्वय दरस नंघ्रि सरोजसेवॆगॆ
नॆरहिदनु शरनिधिपरीत समस्त कपिवलव
हरिवरुष किंपुरुष भारतवरुष कुरुवरुषादि नाना
धरॆय गिरिवनवासिगळ नाहव विलासिगळ ॥ 27 ॥
शरनिधिय हॊरगॊळगणग्गद तरुचरॆंद्ररनिदु जूटं-
गरियॆमगॆ वरुणंगॆ कालंगग्निदेवरिगॆ
सुरपतिगॆ किन्नरपतिगॆ सरिदॊरॆय सुभटरनॆरहिदॆनु नि-
म्मरस नंघ्रि सरोजसेवॆगॆ जीय तानॆंद ॥ 28 ॥

लक्ष्मण का क्रोध, जो उतर चुका है —यह उसकी मुखकांति देख, ताड़कर, मुस्कुराते हुए सुग्रीव ने हाथ जोड़कर पूछा— "राजा राम के संपद्भरित चरणकमल कुशलमंगलयुक्त है न ? मुझ पर कृपा करने का (यहाँ तक पधारने की कृपा का) क्या कारण है ? २५ "वादे के अनुसार निश्चित दिन पर न आने के कारण मन ही मन मुझे कोस रहे होंगे न ? मैंने विलंब करके अपराध तो किया ही है। अब उसके बारे में विवरण देने से क्या प्रयोजन ? यों तो मैं आपही के भरोसे जी रहा हूँ। अतः मैं अब निर्भय हूँ। अपनी प्रभुता दरसाते मेरी रक्षा कीजिए।" इस प्रकार सुग्रीव ने प्रार्थना की। २६ सुनिए लक्ष्मण, रविवंशीय राजा के (राम के) चरण-सेवा-निमित्त, समुद्र तक पसरी हुई विस्तृत भूमि के हरिवर्ष, किंपुरुषवर्ष, भारतवर्ष आदि विविध प्रदेशों के जंगल-पहाड़ों में, निवास करनेवाले युद्ध वीर समस्त कपिसेना को इकट्ठा किया है। २७ शिवजी, सूर्य, वरुण, अग्नि, यम, इन्द्र, कुबेर आदि की बराबरी की ताकत रखनेवाले कपिनायकों को, जो समुद्र के इस पार के तथा उस पार के हैं— उन सभी को राम के चरण-कमलों की सेवा के निमित्त एकत्र ला चुका हूँ। २८ "वादे के

नुडिद दिवसकॆ बार दिहुदवगडिगतनविदु जीय नम्मी
पडॆय नॆरहलु सरिदववधिगॆ दिवस हन्नॆरडु
नुडियॆ नालगॆयिल्ल निम्मडियॊडनॆ भृत्यन तप्पनॊप्पं
बडॆय बेकॆंदॆरगिदनु मगुळंघ्रिगा रविज ॥ 29 ॥
नॆगहिदनु कपिवरन शिरवनु मुगुळुनगॆ मंदविसॆ तारॆय
मगन तारय रुमॆय नमिताननगळनु बळिक
मिगुव करुणदॊळॆत्ति सौख्यद सॊगसिनलि सौमित्रि तॊरवॆय
नगर दधिपति यॆडॆगॆ बंदनु बहळ बलसहित ॥ 30 ॥

एळनॆय संधि

सूचनॆ— राय रघुकुल सार्वभौमंगायताहवमल्ल ननुपम रायबळवनु तोरि मन्निसि कॊंडना रविज ।

कॆळिदैयॆलॆ राजसूनु दयाळुवल्ला रायरलि सी-
तालतांगिय रमण काणुत कपिकुलोत्तमन
मेलण मरुषमनवनाक्षण बीळुकॊट्टनु दूरदलि दु-
व्वाळिसिद भीतियलि कपि मैयिक्कुतैतंद ॥ 1 ॥

अनुसार नियत दिन पर (मेरा) उपस्थित न रहना बुरा तो है ही। मगर हमारी इस उल्लिखित सेना को इकट्ठा करने में, वचनबद्ध निश्चित तिथि से बारह दिन अधिक बीत गये। अतः यह सब किस मुँह से कहूँ। इस दास का यह अपराध क्षमा करें।" —इस तरह निवेदन करते हुए सुग्रीव ने लक्ष्मण के चरण पकड़ लिये। २९ लक्ष्मण ने सुग्रीव का सिर अपने चरणों पर से ऊपर उठा लिया। अपने चरणों में गिरे अंगद, तारा, रुमा आदियों के माथों को मुस्कुराते हुए करुणापूर्ण भाव से ऊपर उठा लिया। फिर खुशी-खुशी लक्ष्मण उस बड़ी सेना को लेकर तोरवे नगर के अधिपति, नरहरि के अवतारी श्रीराम के पास आए। ३०

सातवीं संधि

सूचना— अनुपम युद्धवीर सुग्रीव ने रघुवंश चक्रवर्ती राम को असाधारण (इकट्ठी की गयी) सेना दिखाकर मान्यता प्राप्त कर ली।

हे राजकुमार! सुनो। सीतापति श्रीराम राजाओं में अत्यंत दयालु राजा हैं न? कपि-कुलोत्तम सुग्रीव को देखते ही उनका क्रोध शांत हो गया। सुग्रीव डरते-डरते, दूर से ही प्रणाम करते-करते राम-

त्राहि नर नाटक विनोद त्राहि भूभारापहरण
त्राहि सर्वेश्वर सनातन सकल गुण निळय
त्राहि सत्व रजस्तमोगुण देहविविध विचित्र लीला
गेह निरुपम महिम मायानर नमोयेंद ॥ 2 ॥
देव देवाधीश रिपुवनदाव दैत्य कदंब विपुळ
ग्राव गर्वित वज्र शरण जनैक सुरधेनु
देव भक्ताधीन भक्तजनावलंबन विमल वैदे-
ही विलोचन विकसितोत्पल चन्द्र नमोयेंद ॥ 3 ॥
करुण रस तुळुकाडॆ कपिकुंजरन कंजदळायताक्षनु
बर सॆळॆदु बिगियप्पिदनु मनदधिक हरुपदलि
करव हिडिदु मृगेंद्र पीठद हॊरॆयलातन निलिसि नयदि-
दरस बळिकी मातनॆंदनु राजकारियव ॥ 4 ॥
केळिदै सुग्रीव हगॆवन मेलणधिक क्रोध दिन दिन
केळि दिटवहुदॆंब नाण्नुडि नम्मॊळादुदल

के पास आया। १ "हे नरनाटकविनोदी ! मेरी रक्षा करो; हे भूभार-निवारक ! मेरा उद्धार करो; हे सर्वेश्वर, शाश्वत, सकल सद्गुण-निलय ! मुझ पर कृपा करो; हे सत्व, रज-तमोगुण-भरित-शरीरी ! मेरी रक्षा करो; हे आश्चर्यकारक विनोदों के निवासस्थान, महामहिम मायामानव, तुझे मेरे अनंत प्रणाम।" इस तरह त्राहि-त्राहि करते सुग्रीव ने श्रीराम की स्तुति की। २ "हे देवाधिदेव, भगवन्, शत्रुवन के लिए दावानलस्वरूपी, असुरसमूह रूपी पहाड़ों को (विदीर्ण करने में) वज्रायुध रूपी, शरणागतों के लिए कामधेनुस्वरूपी, भक्ताधीन, भक्तों के आधारस्तंभ देवी सीता की आँखें रूपी कमलों को खिलाने में चन्द्र-सरीखे प्रभो ! तुम्हें प्रणाम।" इस प्रकार सुग्रीव ने स्तुति की। ३ (इस प्रकार के गुणगान से) करुणा-रस जो (राम मे) उमड़ आया तो कमलनयन श्रीराम ने सुग्रीव को अत्यानंदित होते नज़दीक (अपने) खींच लिया तथा अंक में भर लिया। हाथ में हाथ धरे उसे बुला लाकर अपने सिंहासन के पास ही उसे बिठाकर अत्यंत विनम्रपूर्ण ढंग से उससे राजकार्य सम्बन्धी बातें कीं। ४ "तुमने सुना होगा न सुग्रीव कि जो शत्रु से (हमारा) अत्यंत क्रोध है वह दिन-प्रतिदिन अवहेलना के योग्य बनता जाता है; यह कहावत हम दोनों के मामले में सही साबित हुई। चार महीने तो बीत गये; शत्रु-वध के लिए जो भयानक युद्ध करना पड़ेगा —इसके बारे में तुमने क्या सोचा है ?" —इस

मेलें तिंगळु नाल्करॆणिकॆय काल सवॆंदुदु रिपुवधाविक-
राळ विग्रहकेनु मतियनु कंडॆ नीनॆंद ॥ 5 ॥
मतियदॆनॆलॆ जीय रिपु संततिय संहारिसुव शरणा-
गतर सलहुव सत्वगुण निनगल्ल दिन्नुळिद
इतर दैवद लुंटॆ मुंदाव् स्तुतिस लेकॆलॆ जीय सेवा
कृतिय समयोचितव तन्नलि बॆससबेकॆंद ॥ 6 ॥
धारुणीपति केळु तवतूणिरदंबिन लॊब्ब ता सह-
कारि निमगानॆंबुदिदु राजोपचारवलॆ
कारियव देनरस भरद सभारियाहव किक्कु मिक्क वि-
चार विन्नेकॆंदु कैगळ मुगिदनरसंगॆ ॥ 7 ॥
बा सुरेंद्रज सूनु शोचिष्केशसुत बा नम्म बलवा-
राशियनु राजेंद्र चंद्रम नोडलिदिनलि
ई समीपकॆ बरलॆनलु परिशासनन संज्ञॆयलि बळिका
कीशबल बरुतिर्दुदगणित भूमियगलदलि ॥ 8 ॥
अररॆ जंगम गिरियॊ जवनुब्बरद जात्रॆयॊ विलय वह्निय
नॆरवियो नॆगळिकॆय बलवो कालभैरवन

प्रकार राम ने सुग्रीव से प्रश्न किया। ५ "इस बारे में सोचने में क्या धरा है? शत्रुओं का संहार तथा शरणागतों की रक्षा —यह तुझ जैसे सत्वगुण-संपन्न देवता के सिवा और किस देवता में है? तेरे सामने तेरी स्तुति (मुखस्तुति) हम कैसे करें? आज्ञा देने की कृपा करें कि इस अवसर पर मैं क्या सेवा समर्पित करूँ?" —इस तरह सुग्रीव ने कहा। ६ "सुनिए राजन्! तुम्हारे तरकस का मैं एक तीर हूँ; मैं तुम्हारा सहायक हूँ; —यह सब राजोपचार की (औपचारिक) बातें हुईं। आज्ञा कीजिए कि क्या कार्य मुझे करना है। उस भयानक युद्ध-कार्य के लिए मेरी नियुक्ति करने की कृपा करें। अन्यथा सोचते न बैठें।" इस प्रकार कहते सुग्रीव ने राम के सम्मुख हाथ जोड़े। ७ "हे वालीपुत्र अंगद! तुम आओ; हे अग्निकुमार नील! तुम भी आओ। हमारे सेना-समुद्र को श्रीराम आज देखें। (अतः) सेना नज़दीक आवे।" —इस तरह (उसने) कहा। सुग्रीव का इशारा पाकर अपरिमित वानर-सेना सारी धरती पर फैलकर वहाँ आयी। ८ जब वह सेना आ रही थी तब मानों ऐसा लग रहा था, 'बाप रे बाप! क्या यह चलता-फिरता पहाड़ है? या यम का भारी मेला है? या प्रलयाग्नि की ज्वाला है? या कालभैरव

निरुपमवले हॊगळुवडॆ हॊसपरिय बल बरुतिर्दुदद्रिय
हरहुगळ हॊदरुगळ बलु हॆम्मरन नॆगहिनलि ॥ 9 ॥
झडपुगळ गिरिशिरद नॆगहिन किडिय लंबर तुंबिदुदु बॆ-
रुडिय मरदागु गळ लुदिसिद धूत धूमशिखि
सडिपडॆंबब्बरद निर्भर कॊडॆदुदबुज भवांडवा कपि
पडॆय पदहत धूळिगदुदु सकल भुवनचय ॥ 10 ॥
मॊदलु शतबलियॆंब कपि तोरिदनु कपिवाहिनिय नॆरड-
र्बुदवनद्भुत रौद्र भद्र समुद्र मुद्रितर
मदवदरि भैरवर कर्कश कदन कोळाहळर रण सं-
पद समग्रर जय मुखोग्रर विक्रत विग्रहर ॥ 11 ॥
अवन बळियलि बंदुदग्गद गवय वीर गवाक्ष सेना
निवहवॆरडर्बुद युगांत्यद मेघदाकृतिय
तिविदडिळॆ बिच्चुव सुराचल ववचलडगुव बॊब्बॆगग्रद
ध्रुवन शिर सिगुरेळॆ संगर सुबल संदोह ॥ 12 ॥

की प्रसिद्ध सेना है ? किसी प्रकार उसका वर्णन करना या किसी से उसकी उपमा देना असाध्य था। पहाड़, झाड़ी, बड़े-बड़े पेड़ वग़ैरहों पर से नये ढंग की सेना आ रही थी। ९ पहाड़ों की चोटियों पर उनकी उछल-कूद के कारण जो चिनगारियाँ निकलीं वह आकाश भर में व्याप्त हो गयीं। जड़ से उखड़कर गिरे पेड़ों के घर्षण से आग जो लगी— चारों दिशाएँ धुएँ से भर गयीं। 'सड़ीफड, नामक कपिसेना की घनघोर गर्जना के कारण ब्रह्मांड फटा। कपि सैनिकों की पदाघात से उठी धूल सकल लोकों में फैल गयी। १० सर्वप्रथम 'शतबलि' नामक कपिनायक ने अत्यद्भुत रौद्र तथा भद्र समुद्रों के मध्य प्रदेश की दो अर्बुद (बीस करोड़) की कपि-सेना दिखायी। मदोन्मत्त शत्रुओं के लिए भयंकर, कठिन युद्ध-साहसी, युद्धविद्या-विशारद, विकराल शरीर वाले वे कपिवीर भारी जय-जयकार करते ज़ोर-ज़ोर से चीख रहे थे। ११ शतबली के पश्चात् गवय तथा गवाक्ष नामक वीरों की प्रलयकालीन बृहदाकार मेघ-सदृश, युद्धवीरों की दो अर्बुद सेना सम्मुख आयी। अगर यह खोंच दे तो भूमि में दरार पड़े, घेर दे तो मेरु-सदृश पर्वत भी छिप जाय —इस रीति की वीरता थी उन सेनाओं की। इसके सैनिकों के चीखने-चिल्लाने के शोरगुल से आकाश के ध्रुव-नक्षत्र के सिर पर छाले पड़े। १२ हे बुद्धिमान कुश ! सुनो। दुर्मुख, सुमुख नामक कपियों ने—जो (केवल) एक बार भी शिवजी की परवाह

विमल मति कुश केळु दुर्मुख सुमुखरें बुवरोम्मेंगीशन
समकें तारद सुभट समर श्रीवधू विटर
यमन लेंक्किस दधटरनु निर्गम नियुद्ध मदोत्कटर सं-
क्रमित साहस भटर तोऱिद रेंरडु निर्बुदव ॥ 13 ॥

दनुज मनुजामर कदंबव मनकें तारद जांड मंडल-
वनु विभागिप वीर-वानर-वर-वरूथिनिय
विनुत दधिमुख गंधमाधन पनस शरभ ज्योतिमुख रेंनि-
पनुवरोत्सव भटरु तोऱिदरारु निर्बुदव ॥ 14 ॥

तोऱिदनु कैयोडनें केसरि मूरु निर्बुदवनु नृकेसरि
गारुमडि भुजबलर भुवनक्षोभकृतबलर
तोऱिदनु तरुवाय लुपमेंगें तोऱदतिबल बलिमुखर हॉग
रेऱिकेंय हॉसपरिय मसकद वृषभनर्बुदव ॥ 15 ॥

कुमुदनर्बुद बलव नग्गद रुमनु तानर्बुदव नुरुवि
क्रम रुमण्वक नर्बुदवनर्बुदवना पनस
समर विजयर सुप्रतापर यम शरीरर शौर्यगुण सं-
भ्रमर तोऱिद नमम वानर नरकुलेंद्रगें ॥ 16 ॥

न करनेवाले, रण लक्ष्मी को वरण करनेवाले, यम की परवाह न करनेवाले, द्वन्द्वयुद्ध में विपक्षियों को हराने में सदा चतुर, महान् साहसियों से संपन्न दो अर्बुद (बीस करोड़) सेना के वीर सैनिकों के दर्शन कराए। १३ दधिमुख, गंधमादन, पनस, शरभ, ज्योतिमुख नामक युद्धोत्साही कपिवीरों ने देव-मानव-राक्षसों को अपने सामने कुछ भी न गिनने वाले ब्रह्मांड को चीर डालने की ताक़त रखनेवाले छः अर्बुद (साठ करोड़) वीर वानरों से संयोजित सेना दिखायी। १४ केसरी नामक कपिनायक ने नृसिंह से छः गुने भुजबलशाली, जगत में हाहाकर मचाने के शक्ति-बल-संपन्न तीन अर्बुद (त्यर्बुद) सेना के सैनिकों को दर्साया। तत्पश्चात् वृषभ नामक कपि ने एक अर्बुद कपि सेना इस प्रकार की दिखायी जो अत्यंत नये ढंग की क्रोधी स्वभाव की, अत्यंत शक्तिशाली, उपमातीत थी। १५ कुमुद, श्रेष्ठरुम, अधिक बल-विक्रमशाली रुमण्वक, पनस नामक वानर-नायकों ने युद्ध-विजयी स्वभाव-संपन्न, बल-विक्रमयुक्त, यम जैसे शरीर वाले, शौर्यगुण-संपन्न, एक-एक अर्बुद सैनिकों को वानर तथा मानव के अधिपतियों (सुग्रीव तथा राम) को दिखाया। १६ क्रोधित होने पर प्रलयकालीन रुद्र की सेना को भी चकनाचूर कर देने की ताक़त वाले, मार

कनलिदडॆ कल्पांत रुद्रन मॊनॆगॆ मोहुव मोहिदंतक
ननु नितांत भुज प्रतापद लसुव नस बडिव
घन पराक्रम चक्रिगळ मैंदनु मदांध द्विविध भटरु-
ब्बिनलि तोऱिद रॆरडु निर्बुद कपि वरूथिनिय ॥ 17 ॥
निटिल नयनन नॊसल वह्निय पटुतरव नंदिसुव बॊम्मन
तुटिगॆ हदनिक्किसुव तोटयलादि भैरवन
नटणॆ गॆडिसुव नगद रायर भटर ननुपम समरजय स-
घटरनैदर्बुदवनग्नि कुमार तोऱिसिद ॥ 18 ॥
जलनिधिय नुरॆकुडिव वडबानलन नुंगुव नॆलव निब्बगि
गळव निखिळ कुलाद्रिगळ कित्तभ्र तळकिडुव
जलजबंधु हिमांशुगळ कुंडलव निक्कुत कोटदावा
नळबलान्वित भटर नळनर्बुदव तोऱिसिद ॥ 19 ॥
मेरुवनु कित्तबुज जांडद भूरिभारव नॊडॆव विलयस-
मीरण ननुगिदळुकिसुव वासुगिय बळुकिसुव
तारॆगळ तऱि दगिव गर्वित गौरवर नर्बुदब नंगद
वीर तोऱिसि मॆच्चिसिदनिनवंश वल्लभन ॥ 20 ॥

डालने की ताक़त वाले यम को भी अपने प्रचंड बाहुबल से पीटकर प्राण हर लेने की ताक़त रखनेवाले दो न्यर्बुद कपिसेना के दर्शन श्रेष्ठ पराक्रम चक्रवर्ती मैंद तथा मदांध ने (जो द्विविध वीर थे) बड़े उत्साह के साथ कराए। १७ भालनेत्री के भाल की (कपाल की) उष्णता को बुझा देने की ताक़त रखनेवाले, ब्रह्माजी के होठों पर तेज आयुध (शस्त्र) रखने की ताक़त वाले, युद्ध में आदिभैरव को तहस-नहस करने की शक्ति-संपन्न, असमान युद्धविजयी पहाड़ी राजाओं के सैनिकों को अग्निपुत्र नील ने दिखाया। १८ समुद्र को पी जाने की ताकत रखनेवाले, वड़वाग्नि को निगल जानेवाले, धरती को दो विभागों में चीर डालने की ताक़त रखनेवाले, समस्त कुल-पर्वतों को उखाड़कर आकाश में फेंक देने की शक्ति रखनेवाले, सूर्य तथा चन्द्रमा को अँगूठी के रूप में धारण करने की ताक़त वाले, करोड़ों दावानलों की शक्ति से संपन्न एक अर्बुद सैनिकों के दर्शन नल ने कराए। १९ मेरु पर्वत को उखाड़ ब्रह्मांड के अधिक बोझ को कम करने की ताक़त रखनेवाले, प्रलयकालीन आँधी को खींचकर डराने वाले, वासुकी (धरती को धारण करनेवाला शेषसर्प) को झुकाने की ताक़त से संपन्न, नक्षत्रों को उखाड़कर कँपानेवाले, अत्यंत घमंडी अर्बुद भटों (वीरों) को दिखाकर अंगद ने सूर्यवंशीय राजा को प्रसन्न कर लिया। २०

सिडिलुगळ गर्जनेय विलयद मृढन मुळिसिन ध्वनिय कल्पद
कडल रभसद काल मेघद कडुहिनब्बरद
झडिव जूबिन सिंगळीकद पडेयनै दर्बुदवना कै-
योडर्ने कपिकुलवीर वैद्य सुषेण तोऱिसिद ॥ 21 ॥

काहुरद कल्पांत मेघ व्यूहदंदद पूर्वयज्ञव
राहनंदद यमन सैरिभदंदनुपमद
साहसद सडगरद सिडिलिन काहुरद कडहुगळ करडिय
मोहरव जांबवरु तोऱिदरैदु निर्बुदव ॥ 22 ॥

अणदडबुज भवांड घटवारणिप कुक्किद डुगुरलिळे बि-
ज्जणिप लंघने गुदयगिरि गस्ताद्रि दडदडिप
हणेय जूबिन जूलु गूदल कणुगिडिय कडुका हुरद सिं-
गणिकगळ नर्बुदव नतिबल तार तोऱिसिद ॥ 23 ॥

इवर साहसविवर सडगर विवर विक्रम विवर रूपि-
तिवर रौद्राटोप विवर समान वेंदेंब

बिजली (वज्र) की गर्जना, प्रलयकालीन रुद्र की क्रोधपूर्ण ध्वनि, युग-प्रलयकालीन समुद्र की घनघोर गर्जना, कालमेघ के शौर्य का शोर तथा भूत-पिशाचों की तरह डराने की ताक़त से युक्त काले मुंह वाले बंदरों (सिंगळीक) की पाँच अर्बुद सेना को वानरकुल-वैद्य वीर सुषेण ने दिखाया। २१ कल्पांतकालीन भड़के हुए मेघों के समूह-सदृश, विष्णु के अवतार यज्ञवराह (सूअर) सदृश, तथा यम के भैंसे-जैसे असामान्य साहसी डीलडौल वाले तथा क्रोधित बिजली की गर्जना-सदृश शौर्यसंपन्न रीछों की पाँच अर्बुद सेना के दर्शन जाम्बवन्त ने कराए। २२ पटकने से ब्रह्मांड का शरीर घायल हो जाय, नाख़ून से नोचने पर भूमि लटकने लग जाय, उछलने पर उदयपर्वत से (पूर्व से) लेकर पश्चिमाचल तक धड़ाधड़ काँपने लग जाय, भारी (विशाल) माथे वाले, लम्बे बालों वाले, जिनकी आँखें मानों चिनगारियाँ उगल रही थीं, भारी मस्त काले मुँह वाले (सिंगळीक) बन्दरों की एक अर्बुद सेना बलवान तार ने दिखायी। २३ इनका साहस, इनकी धूमधाम, इनकी वीरता, इनका रूप, इनका रौद्राटोप (रौद्रता-भरा गर्व) वग़ैरहों के लिए बराबरी वाले ये ही हैं —इस तरह समझनेवाले (अपनी बराबरी करनेवाले और कोई नहीं हो सकते, —इस तरह विचार रखनेवाले) ब्रह्म-संभूत अपने भारी वज़न की बराबरी के (हनुमान के वज़न के बराबरी के) सात अर्बुद संख्या के कपि

हृवण नव्रिव सरोजजगॆ संभविसि दग्गद तन्न तूकद
बवरिगर तोऱिसिद ननिलजनेळु निर्वुंदव ॥ 24 ॥

कोटि संख्येय बलव मिक्किन कोटि संख्येय यूथपरु धरॆ
दूट लंबुधि मीटलहिपति कूर्मरग्गळिकॆ
पाटिगॆडॆ तोऱिसिदरी परिपाटियलि फणिपतिगॆ नालगॆ
नाट दॆणिसलु गणनॆ यिल्लद राम सैनिकव ॥ 25 ॥

ऎंतु हॊत्तुदो धरणि दिगग्जवॆंतु ताळ्दवो भारकरलि म-
हांतनॆ भुजगेंद्र कूर्मनु हॊरिगॆ वाळनलॆ
हॊंतकारिगळा कुलाद्रिग ळांतुदकॆ बॆऱगॆंदु हरुष
स्वांतदलि हॊय्सिदनु कमलजनमल भेरिगळ ॥ 26 ॥

हरॆदु दोलगवा समयदलि सुरवधू निकुरुंब सुळिदुदु
करद हॊंदळिगॆगळ रत्नारतिय सॊगसिनलि
तॊरवॆ यधिपति राय नरकेसरिय सरिसदलस्त शैलकॆ
सरिदनिननमराळि हरॆदुदु हरुष भारदलि ॥ 27 ॥

वीरों के दर्शन हनुमान ने कराए। २४ करोड़ संख्यक वानरसेना-नायकों ने करोड़ों-करोड़ों की कपि, रीछ आदियों की सेना राम को दिखायी। इस सेना के अधिक बोझ के कारण धरती ऊपर उठी; समुद्र उमड़ पड़ा; तब (धरती को धारण करनेवाले) आदिशेष तथा कूर्म (महान कछुआ) अपना संतुलन खो बैठे। इस प्रकार झुण्ड के झुण्ड, कतार की कतारों में आ जुटनेवाले असंख्य राम-सैनिकों का नामोच्चारण करना भी हजारों जीभ वाले आदिशेष के लिए असंभव प्रतीत हुआ। २५ 'पता नहीं, इतनी बड़ी भारी सेना के बोझ को धरती कैसे ढो सकी तथा दिग्गज कैसे सह सके! भारी बोझ को ढोने में आदिशेष महान तो है ही। (नाम भी 'शेष' है!) कूर्म (कछुआ) भी भारी बोझ ढोने में (अपनी कड़ी पीठ पर) असदृश वीर तो है ही। इन बलशालियों को कुलपर्वतों ने जो धारण किया अत्यंत आश्चर्यजनक है।' —इस तरह ब्रह्मा ने मन ही मन खुश होकर ढिंढोरा पिटवाया। २६ उस समय सभा विसर्जित हुई। देवता-स्त्रियों के समूह तौरवे के अधिपति नरसिंह अवतारी राम के पास सोने के थालों में रत्न की आरतियाँ सजाए आए। सूर्य पश्चिमी पर्वत में प्रविष्ट हुआ। देवतासमूह अत्यधिक संतोष के साथ विसर्जित हुआ। २७

ऎंटनेय संधि

सूचने— राय रविनंदननु वानर नायकर कळुहिदनु कमलदळायताक्षन नेमदलि नोडलु विदेहजॆय ।

केळिदै कोसलधरित्रीपाल सुत मरुदिवस दुदयद
मेलॆ बंदोलगवनित्तनु राय रघुनाथ
वालिसुत हनुमंत जांबव नील नळतारादिगळ स-
म्मेळदलि मार्तांड सुत नैतंद नोलगकॆ ॥ 1 ॥
हॆगल गिरि शिखराळिगळ कॊंबुगिद मर कंकुळिन नख मुख-
दगडुमॊरॆय हॊगर हॊस जव्वनद भटनिकर
जगदरस रामंग कैगळ मुगिमुगिदु कॆलसारॆ तिर्दुदु
बगॆवॆरसि बलपतिगळॆप्पत्तेळु कोटियॊने ॥ 2 ॥
ईत नग्गळ नीतनतिबल नीतनन्वय नीत साहस
नीत निर्भयनीत शूरनुदार बल नीत
ख्यात रिवरिवरॆंदु रविसंजात तोर्द्रिसुतिर्दना मा-
या तिरोधानंगॆ महिमास्पदद कपि भटर ॥ 3 ॥

आठवीं संधि

सूचना— कमललोचन श्रीराम की आज्ञा से वैदेही का पता लगाने के लिए राजा सुग्रीव ने वानरनायकों को भेजा ।

हे कोसलराजकुमार, सुन रहे हो न ? अगले दिन सुबह होने पर रघुराम ने सभा का संचालन किया। वाली के पुत्र अंगद, हनुमंत (हनुमान), जांबवंत, नील, नल, तार वगैरहों को साथ लेकर रविसुत सुग्रीव उस सभा में पधारे। १ कंधों पर पहाड़ की चोटियों के पत्थरों को उठाए, टहनियाँ काटकर फेंक पेड़ों के खण्डों को काँख में दबाए, पैने नाखून वाले, नटखट मुखड़े वाले, नवयौवन की कांति से युक्त कपिवीर तथा (उनके) विविध दलपति जो कुल मिलाकर सत्ताइस करोड़ के (करीब) थे जगत के स्वामी राम के सम्मुख हाथ जोड़ सिर नवाकर एक ओर चले जाते थे। २ सूर्यसुत सुग्रीव माया से आच्छन्न राम को उनका परिचय इस प्रकार देते कि यह अत्यंत श्रेष्ठ है; यह अत्यधिक बलशाली है; यह आज्ञाधारी अनुचर है; यह साहसी है; यह निर्भीक है; यह बड़ा वीर है; यह अत्यंत शक्तिसंपन्न है; तथा यह सब अमुक-अमुक रीति से प्रसिद्ध तथा महामहिमा-संपन्न कपिवीर है। —इस तरह कहते हर

अरस चित्तैसजतनुज केसरि सुषेणक रिवरु मूवरु
गुरुगळिवरभिवंद्यरु गळग्गळद मंत्रिगळु
धुरविजय हनुमंत नळनीलरु मदीयप्राणसखरुळि
दरि भयंकर भटरिवरु बंधुगळु तनगेंद ॥ 4 ॥
इदे समस्त द्वीप वनदुर्गद कपींद्ररु जीय चित्तै-
सिदड महिमेयनुसुर लॆन्नळवल्ल निम्मडिय
पदद सेवॆगॆ सलुव बलगै यदटरिदे ववरक्कॆ निलुव-
ग्गद बलान्वित भूरिवल विदॆयॆंदना रविज ॥ 5 ॥
मनद मुददुब्बिनलि बळिका जनप वलदलि कुळ्ळिरिसि कॊं-
डनु चतुर्मुख सूनु केसरि कलि सुषेणकर
हनुम नळनीलांगदर तन्ननुज नॆडदलि निलिसि मिक्किन
वनचरा धीश्वररु कैसन्नॆयलि मन्निसिद ॥ 6 ॥
करॆदु तन्नॊत्तिनलि कार्यातुरन कदन धुरंधरन कपि-
वरन कलि सुग्रीव देवन निलिसि हरुषदलि
हिरिदु मन्निसि जांबवाद्यर नुरुतर प्रियभाषणॆयलुप
चरिसि घन संतोष शरधियोळद्दिदनु भटर ॥ 7 ॥

एक को दिखा रहे थे। ३ "हे राजा राम, सुनिए —यह ब्रह्माजी का पुत्र जांबवान, यह केसरी तथा सुषेण —तीनों गुरु हैं अतः ये वंदनार्ह हैं तथा मंत्रिश्रेष्ठ भी हैं। युद्धविजयी हनुमान, नल तथा नील मेरे प्राणसखा हैं। अन्य ये शत्रुभयंकर वीर मेरे बन्धु हैं।" इस प्रकार सुग्रीव ने कहा। ४ "ये समस्त द्वीप, अरण्य तथा दुर्गों के कपिनायक हैं। इनकी महिमा का वर्णन करने में मैं अपने को असमर्थ पाता हूँ। स्वामिन्, आपकी चरण-सेवा में समर्पित होने योग्य ये अत्यंत बलवान् वीर हैं। युद्ध में डटने का सामर्थ्य-संपन्न यह महासेना है।" इस प्रकार सुग्रीव ने निवेदन किया। ५ मन के आनंदातिशय के कारण राम ने जांबवान, केसरि, सुषेण —इनको अपनी दायीं तरफ़ बिठा लिया। हनुमान, नल, नील, अंगद को अपने भाई लक्ष्मण के बायीं तरफ़ खड़ाकर दूसरे वानरनायकों का गौरव (श्रीराम ने) हाथ के इशारे से किया। ६ काम निबाहने में उत्कटेच्छा के (भारी दिलचस्पी लेनेवाले) युद्धनायक, कपिश्रेष्ठ वीर सुग्रीव को बुलाकर राम ने संतोष से अपने पार्श्व में खड़ा कर लिया। जाम्बवान आदियों का विशेष गौरव करते हुए प्रियबचनों से वानरों को अत्यंत आनंदित कर दिया। ७ वानरनायकों के मध्य श्रीराम निर्मल

अरस निद्दनु बळिक विमलांबरद तारागणद मध्यद
हरिण लांछन नंतॆ हरिनायकर मध्यदलि
हरुष विर्द्दु तत्समयदलि तरुण केळुत्तरद भागां-
तर दलिर्द्दु रिपुवधा चिंता मनोव्यसन ॥ 8 ॥
ऎलॆ कपीश्वर केळु सीता ललनॆयनु नावगलि तिंगळु
तिळिय लैदॆडगिदवु सैरणॆ मानभंगदलि
निलुवुदनुचित वॆंब चित्तद नॆलॆय नीने नोडिको नि-
न्नोळगॆ हेळुव मातु मगुळॆ निद्दुदॆमगॆंद ॥ 9 ॥
देव चित्तै सैसले निज सेवकरु नाविरलु दॊड्डित
दावुदबुज भवांड वॆन्नय करतळामळक
देवियर नॊय्दसुर नी भुव नावळिय हॊऱगिरलि मेणॊळ
गावलोक दॊळिरलि तोऱिसि कॊडुवॆ तानॆंद ॥ 10 ॥
बॆससु साकॆलॆ जीय रिपुराक्षसनु रंजितराज मौळिय
वसतियॊ ळडगिरलि मेण् वारिरुह विष्टरन
बसुऱिनलि हॊक्किरलि मिक्किन नुसिगळनु हेळदिरु हेळित
हसनॆनलु माडुवॆनु मरॆमातेनु तनगॆंद ॥ 11 ॥

निरभ्र आकाश के नक्षत्रों के मध्य चन्द्रमा की तरह शोभायमान हुए। उस समय राम संतोष से भरे-पूरे थे। फिर भी मन के एक कक्ष में शत्रुहत्या (रावण की हत्या) की चिंता झाँक रही थी। ८ "हे वानराधिपति, पत्नी सीता से बिछुड़े पाँच महीने बीत गये। (इस) अपमान को सहते चुप रहना ठीक नहीं। हमारे मन की व्यथा पर तुम ही गौर करके देखो। तुमसे अधिक क्या कहूँ!" इस प्रकार राम ने कहा। ९ "हे स्वामिन्, सुनिए। सत्याभिमानी सेवक हम जब तक जिन्दा है कोई भी काम क्या बड़ा (कठिन) काम हो सकता है? सारा ब्रह्मांड हथेली पर के आँवले की तरह सुस्पष्ट है। सीतादेवी को चुरानेवाला राक्षस इन समस्त लोकों के बाहर रहे अथवा अन्य किसी भी लोक में रहे —मैं उसको दिखा दूँगा।" इस प्रकार सुग्रीव ने कहा। १० "भगवन्, आज्ञा तो कीजिए। बस है। शत्रु राक्षस चाहे चन्द्रशेखर के निवासस्थान कैलास में छिपे रहें, चाहे ब्रह्माजी के पेट में घुसकर छिपे रहें; अन्य मच्छड़ों की हस्ती ही क्या? —जो कुछ भी आप आज्ञा दें उसका पालन हम ठीक-ठाक ढंग से कर देते हैं। कहीं कोर-कसर रहने न देंगे। इसमें रत्ती

करेंदु पडुवलु कलिसुषेणन परुटविसिदनु शतबलियनु-
त्तरकॆ मूडलु विनतननु दक्षिण दिशातळकॆ
वर विरंचि कुमार मारुति सुरपसुतसुत मुख्य भटरनु
निरविसिद नडॆदरसि बरलु विदेह नंदनॆय ॥ 12 ॥
देव चित्तैसिद्ददडिहना रावणनु लंकॆयलि शंकॆय
नोवदति बलरिवरु मंत्रज्ञरु महाभटरु
मूवरिवरिवरॊळगॆ जांबव देवनतिशयनात निंदी
पावमानि समर्थ नॆंदुसुरिदनु कर्णदलि ॥ 13 ॥
बळिक कॊंडाडिदनु हनुमन बलुह बाल्यदलिननबिंबकॆ
निलुकि राहुवनट्टि वज्रिय वज्रहतियिंद
कळलि वायुविनिंद कायव तळॆदु त्रैमूरुतिगळिंदु
ज्वलतॆ वडॆद वरंगळनु पडॆदमळ संगतिय ॥ 14 ॥
ईतननु कॊंडहेळि कॊट्टनु सीतॆयरसनु बरलु नीनॆं-
दा तिमिर हर नरुहिदनु बळिकितु बहुकलॆय
आत कॆलसद राजकार्य क्कीतनल्लदॆ काणॆनॆंदभि
जात हरुषंगित्तना पवमान नंदनन ॥ 15 ॥

भर भी दुराव-छिपाव नहीं।" इस तरह सुग्रीव ने कहा। ११ वीर सुषेण को बुलाकर, वैदेही की तलाश करने पश्चिम दिशा में जाने के लिए (उसे) राजी कर लिया। (जिम्मेदारी सौंप दी।) उसी प्रकार शतबली को उत्तर दिशा में, पूर्व दिशा में विनत को, तथा जांबव, हनुमान, अंगद जैसे प्रमुख वीरों को दक्षिण दिशा में जाने को नियुक्त किया। १२ "सुनिए भगवन्. शायद रावण लंका में ही होगा। इसमें कोई शक नहीं। ये तीनों महाबली, तथा आलोचना-चतुर हैं। इनमें तो जांबव सबसे श्रेष्ठ है। उससे बढ़कर यह हनुमान अधिक समर्थ है।" इस तरह सुग्रीव ने राम से कानाफूसी की। १३ तत्पश्चात् सुग्रीव ने हनुमान के सामर्थ्य की प्रशंसा की। बाल्यकाल में हनुमान सूर्यबिंब को हाथ से जो पकड़ने गये तो वहाँ (सूर्यबिंब के पास) से राहु को भगा दिया। तब इन्द्र के वज्रायुध की मार से नीचे गिरे। वायुदेवता से उसने देह जो पायी तथा त्रिमूर्तियों से बड़े-बड़े वरदान जो पाए —आदि समाचार राम को सुग्रीव ने समझाया। १४ "सीतापति जब आएँगे —इसे (हनुमान को) उन्हें सौंप दो" —इस तरह कहते हुए सूर्य ने इसे मुझे सौंप दिया। उसने अनेक कलाएँ इसे पढ़ा दी हैं। प्रस्तुत राजकार्य के लिए इसके

कोट्ट हनुमननसुर वंश घरट्टनुडॆ पतिकरिसॆ प्रवनज
निट्टॆडॆय भक्तियलि भाळव चाचिदनु पदकॆ
अट्टवापत्तिन समुद्रकॆ कट्टॆ नीनॆंदोलुमॆयलि मन
मुट्टि नुडिदित्तनु महामांगल्य मुद्रिकॆय ॥ 16 ॥
अॆसॆदुदा मणिखचित किरण प्रसर मुद्रिकॆ फूत्करिसि लळि
मसगिदहिपन पॆडॆ वणियवॊलु करद लनिलजन
कुसिद मौळिय करतळद संधिसिद वदनद भक्तिभय मुख
रसद हनुमन कर्णदलि काकुत्स्थ निंतॆंद ॥ 17 ॥
अिवुदरि नगरदलि सीतॆय कुरुहनुदित पतिव्रतागुण
मॆरॆदिरलु मगुळीवुदी निजराज मुद्रिकॆय
कुरुहुगळनिव हेळुवुदु यॆंदरुहि कॆलवनु बीळुकॊट्टनु
मरॆय मायानरनु नररवॊलंजना सुतन ॥ 18 ॥
चरणकानतनागि रघुकुल दरसननु बीळ्कॊडलु हनुमन
करॆदु कैवर्तिसिद नंगद जांबवादिगळ

सिवा और किसी को मैं (योग्य) देख नहीं पाता। —इस तरह कहते हुए, हर्षित राम को सुग्रीव ने हनुमान को सौंप दिया। १५ सुग्रीव से सौंपे गये हनुमान को राक्षसकुल के लिए चक्री बने हुए राम ने स्वीकार कर लिया। हनुमान ने भी भक्तिभाव से भरकर श्रीराम के चरणों में माथा रख प्रणाम किया। "पीछा कर रहे कष्ट रूपी समुद्र के लिए तू एक बाँध है।" इस तरह हृदयांतराल से प्रीतिपुरस्सर वचन कहते राम ने हनुमान को मंगलकारी राजमुद्रायुक्त अपनी अँगूठी दी। १६ फुफकारने वाले क्रोधित सर्पराज के माथे के रत्न की तरह प्रकाशमान हीरे-जड़ी वह राजमुद्रांकित अँगूठी हनुमान के हाथ में चमकी। (अपना) सिर झुकाकर हनुमान के माथे पर हाथ धरते भय-भक्तिभाव-संपन्न उसके (हनुमान के) कान में राम ने यों कहा। १७ "श्रेष्ठ पतिव्रता गुणों से संपन्न सुशोभित सीता को शत्रु की राजधानी में पहुँचकर पहिचानो। तत्पश्चात् यह मेरी राजमुद्रांकित अँगूठी उसे दे दो। फिर परिचय के रहस्य सीता से कहो" —इस तरह कहते हुए मायानर राम ने साधारण मानव की तरह पहिचान के कुछ रहस्य हनुमान को समझाकर उसे रवाना किया। १८ (राम के) चरणों में सिर नवाकर रघुराम से बिदा लेकर हनुमान आये। तब सुग्रीव ने उसे बुलाकर अंगद, जांबव को उसके हवाले करते हुए कहा— "एक महीने के अंदर (सीता का पता लगाकर) सफलता

बरवु तिगळिगागदिरॆ नीव् मरणगॆधिक्कतरॆंदु नेमिसि
हरिपति गळनु कळुहिदनु कट्टाज्ञॆयलि रविज ॥ 19 ॥
तॆरळिदुदु कपिसेनॆ सागर हॊरळिदॆगॆवंददलि नाल्दॆसॆ
गरस तॊरवॆय राय नरकेसरिगॆ सुग्रीव
ऒरॆद निन तन्नग ळुहिदंदिन धरॆय विस्तारवनु मेरुव
तिरुगि बंदंदक्षिगत वादखिळ भुवनंगळ ॥ 20 ॥

ऒंबत्तनॆय संधि

सूचनॆ— सूऱ विभिकन लमर वैभव सूऱॆ काऱननरसि काणदॆ वेऱॆ बेऱॆतंदु विन्नैसिदरु रघुपतिगॆ ।

कुशनॆ केळु सुषेण चरितव नुसुरुवॆनु मॊदलिळॆय भारक
रुसुरु तॆगॆ बगॆयागॆ तॆरळितु सेनॆ पश्चिमकॆ
कॆसरु दोऱितु कडलु पांसु प्रसरदलि पदहतिगॆ गिरि हुडि
मसगिदवु हरहिनलि हॊडॆ हुल्लाय्तु वनभूमि ॥ 1 ॥

के साथ नहीं लौटोगे तो तुम्हें मृत्युदंड भोगना पड़ेगा ।" इस तरह कड़ी आज्ञा के साथ कपिनायकों को (सुग्रीव ने) भेज दिया । १९ समुद्र के पीछे हटने के सदृश वानरसेना चारों दिशाओं में रवाना हुई । सूर्य ने जो अपने को उस दिन भूमि का विस्तार, तथा मेरु पर्वत की परिक्रमा करते समय दीख पड़े समस्त लोकों का विवरण जो दिया था उसे सुग्रीव ने तौरवे के अधिपति नरसिंहावतारी राम से निवेदन किया । २०

नौवीं संधि

सूचना— देवताओं के वैभव को लूट लेनेवाले रावण को तीन दिशाओं में ढूंढ़ने पर भी न पाने के कारण उन-उन (निर्धारित) दिशाओं में गये हुए कपिनायकों ने अलग-अलग होकर लौटकर राम से निवेदन किया ।

"सुनो कुश, सबसे पहले सुषेण का समाचार सुनाता हूँ ।" —इस तरह कहते हुए वाल्मीकि ने आगे की कथा का विवरण दिया । धरती को-धारण करनेवालों का दम घुट जाय— इस रीति से कपि सेना पश्चिम दिशा की तरफ रवाना हुई । सैनिकों के पदचाप से उड़ी धूल के कारण समुद्र में कीचड़ दिखायी दिया । उनसे तुड़वाए जाने के कारण पहाड़ चकनाचूर हुए । विस्तृत अरण्य प्रदेश (उनके चरण तले दबे जाकर) घास का मैदान बना । १ वानर सेना ने चलते-चलते विभिन्न राजाओं के राज्यों

हरिदु हरिबलधाळि नाना धरणिपर देशदलि होक्कुदु
धरणिजेय नोय्दवन बेसगोळु तरसु तल्ललिल
उरवणिसिदुदु मुंदे बर्बर मरु यवन कांबोज गुर्जर-
दुरुळ दुर्जन नृपर हिडिदाक्करिसि बेसगोळुत ॥ 2 ॥
क्षितिपरनु करेकरेदु गर्वोद्धत सुषेण कपींद्र सीता
पतिय हेसरलि कोंड ननिबर लाणे भारगळ
क्षितिसुता तस्करन दुर्गति कृतन दुर्नय दुस्सहन दु-
स्थितन नोळ कोंडिरद वोलु लिखितार्थ साधनव ॥ 3 ॥
वारिधिय तडिविडिदु नडेदुदु भूरिबल कोंकणद कोहुग
ळोरणद करविळियला हिमदवनि मंडलव
चेरमानिय बर्बरद दूषारि जोनग विंध्य बोटक
पारशिक सांब्राणि हुरु मंजिगळ बळिविडिदु ॥ 4 ॥
अरसुगळ हिडिहिडिदु केळुत हरिबलद हरिधाळि सुर भू-
धरव बलदलि बिट्टु हाय्दुदु पश्चिमोत्तरद
एरडु मैगळ सहिय चक्रेश्वरर पुरगळ होक्कु होरवडु
तुरवणिसिदुदु मुंदे वायव्यदलि वहिलदलि ॥ 5 ॥

में प्रवेश कर सीता का अपहरण करनेवालों के बारे में जगह-जगह पूछ-ताछ की। बड़े वेग के साथ आगे बढ़ते हुए बर्बर, मरु, यवन, काम्बोज, गुर्जर आदि देशों के दुष्ट राजाओं को पकड़ आक्रमित कर पूछताछ की। २ अपने दर्प से फूले हुए वानर राजा सुषेण ने राजाओं को बुला-बुलाकर सीता के स्वामी राम की सौगंध दिलाकर सही-सही घटना उनसे जानने की कोशिश की। 'बुरा कार्य करनेवाले, असहनीय, दुराचारी, सीता के अपहरण कर्ता दुष्ट रावण को अपने राज्यों में प्रवेश न मिलेगा।' —इस आशय के पत्र उन-उन राजाओं से लिखा लिये। ३ समुद्र किनारे के मार्ग से वह भारी सेना आगे बढ़ती गयी। कोंकण देश के नदी-नालों के मार्ग से होते हुए, समतल प्रदेशों में प्रवेशकर हिम प्रदेशों से नीचे उतरते चेरमानी, बर्बर, अनिद्य, यवन, विंध्य, बोटक, पारसिक, सांब्राणी, हुरमंजी देशों से होते हुए वह सेना आगे बढ़ती गयी। ४ राजाओं को पकड़ कर उनसे प्रश्न करते हुए (पूछताछ करते-करते) मेरु पर्वत को दायीं ओर से रखते हुए, पश्चिमोत्तर के दोनों तरफ के राज्यों के चक्रवर्ती राजाओं के नगरों में प्रवेश कर, वहाँ से रवाना हो, अत्यंत द्रुतगति से वायुव्य दिशा में वह सेना आगे बढ़ी। ५ अनेकानेक राजाओं के राज्यों में सीता के लिए ढूंढ़ने

ऒनितॆनितु देशाधिपर तज्जनपदंगळ लरसिदरु पुर-
वन शिलोच्चय शिखर कटक ग्राम संकुळव
ऒनॆ दॊनॆदु नोडिदरु मुंदण वनधिवळयद वोथि वीथिय
जनपरनु केळिदरु कोळाहळद कडुहिनलि ॥ 6 ॥
काण दल्लिदिळिदु पडुवण कोणॆ विडिदुत्तरिसितल्लि सु-
षेण बल लवणांबुधिय नंबोधमार्गदलि
काणिसिद तद्वीप सिंधु श्रेणिगळ कळिकळिदु कनक
क्षोणि परियंतरसि मुरिदुद वरुण पुरिगागि ॥ 7 ॥
वरुणननु बॆसगॊंडु तत्पुरत्र दॊळगलकॆ बीदिवरिदु-
प्परिसि लोकालोक पर्वतदग्र परियंत
सुर विरोधिय काणदल्लि दुरुतरद पसरदलि पाळॆय
तिरुगि बिट्टुदु कलिसुषेण कपींद्रनाज्ञॆयलि ॥ 8 ॥
तॆरळि तीव्रॆयल प्रतिम वानर वरूथिनि वहिलदिदु-
त्तर दिशा मंडलकॆ कलिशतबलिय सन्नॆयलि
हरिकटक दुरवणॆगॆ गिरिनॆल सरिसवादुदु नदि नदंगळ
हरवु निदवु नॆग्गि नॆलगत वाय्तु वननिचय ॥ 9 ॥

लगे। शहर, जंगल, पहाड़-पहाड़ियाँ, पहाड़ की चोटियाँ, राजधानी, गाँव, आदि कई स्थानों में ढूंढ़ा। आगे के (सम्मुख पड़े) समुद्र किनारों के प्रदेशों के गली-गली के राजाओं के यहाँ भारी शोरगुल करते-करते पहुँचकर (सीता के लिए) पूछताछ की। ६ वहाँ कहीं भी न दिखायी पड़ने के कारण, उस स्थान से उतरकर पश्चिम के कोने की ओर अग्रसर होते-होते, आकाश मार्ग से चलते, सुषेण की सेना ने लवण सागर पार किया। वहाँ दिखायी पड़ रहे द्वीप सागरों को पार करते सुवर्ण-भूमि तक ढूंढ़कर फिर वहाँ से वरुण की राजधानी वह सेना लौट पड़ी। ७ वरुण से पूछताछ करते, उस नगर की गली-गली में घूमकर, वहाँ से उछलते-कूदते लोकालोक पर्वत की चोटी तक जाकर सब जगह ढूंढ़ा। वहाँ कहीं भी असुरों को न देख सकने के कारण वीर सुषेण की आज्ञा से एक विशाल प्रदेश में सेना ने डेरा डाला। ८ इधर वीर शतवली की सलाह से उसकी असाधारण कपि सेना बड़ी शीघ्रता से उत्तर दिशा की तरफ रवाना हुई। कपि सेना के ज़ोर के कारण पहाड़ और समतल भूमि एक जैसे हुए। नदी-नदों का प्रवाह रुक गया। जंगल उजड़कर मिट्टी में मिल गये। ९ अनेकानेक राजाओं को बुला भेजा तथा उनसे पूछताछकर उनको छोड़

आकरिसि बेंसगोंडु बिट्टरनेक नृपरनु बेहु हरिदुदु
नाकुमैयलि तुब्बु काऽरिगित्तु बहुधनव
नूकि नडेदुदु सकल विषयानीकगळ नोडुत्त निम्मि-
क्ष्वाकु वंशद भरत भूमिय हॊक्करुरवणिसि ॥ 10 ॥
हरिकटक दुब्बरकयोध्यापुरवु तलेकॆळगाय्तु हॊक्कुदु
पुरवना बलवीनगर दधिपतिय दारॆनुत
भरतननु संधिसितु शतबलि करॆसिकॊंडु ककुत्स्थ संभव-
नरसियनु कद्दॊय्दु खळननु काणिरलॆयॆंद ॥ 11 ॥
भरतनुऽ बॆऽगागि चिंता भरदलाशतबलिय गमनद
परिय नऽिदा कपिपतिय कळुहिदनु दुगुडदलि
अररॆ राज्यभ्रष्ट विपिनांतर परिभ्रमण प्रयासद
हरहिगिदु हॊऽयादुदे हायॆंदु चिंतिसिद ॥ 12 ॥
तम्म बा शत्रुघ्न नम्मनु नॆम्मितधिक विपत्तुकॆळिदु
सुम्मनिहुदनुचितवला मानापहस्थितिय
ऒम्मुख दॊळाव् हगॆय गलुवुदॆ हम्मु नॆरवु चतुर्बलव नि-
त्रुम्मुळिकॆ यॆकॆंदु रोषावेशमननाद ॥ 13 ॥

दिया। जसूसों को मुँह माँगा धन देकर उनको दिशि दिशाओं मे गुप्तचरों के रूप में भिजवा दिया। आगे बढ़ते, चलते-चलते समस्त राज्यों को देखते हुए इक्ष्वाकु वंशीय भरत भूमि में बड़े वेग से प्रवेश किया। १० कपि सेना के आघात के कारण अयोध्या नगरी डावाँ-डोल होने लगी। 'इस नगरी का राजा कौन है' —इस प्रकार पूछताछ करते हुए सेना ने नगर में प्रवेश किया। भरत से मिलकर शतबली ने उनसे पूछा— "ककुत्स्थ वंशीय राम की पत्नी का अपहरण करनेवाले दुष्ट को क्या आपने देखा है?" ११ भरत को अत्यंत आश्चर्य हुआ। शतबली के आने का कारण समझकर चिंताक्रांत भरत ने उस वानर पति को बिदा किया। "हाय-हाय, राज्य त्याग कर जंगल-जंगल भटकने के अत्यंत कष्टमय जीवन के लिए यह एक और बोझ सिर पर मढ़ गया न? हाय रे दुर्दैव!" —इस तरह सोचते भरत अत्यंत व्याकुल हुए। १२ "भाई शत्रुघ्न, इधर आओ। भारी मुसीबत हम पर आ पड़ी है। 'इस अत्यंत अपमान जनक समाचार को सुनकर चुप रहना ठीक नहीं है। हम सबको सम्मिलित रूप से शत्रु का सामना करना चाहिये। इसी में हमारी प्रतिष्ठा है। चतुरंग सेना को इकट्ठा होने के लिए आज्ञा दो। अब

जनक कैकय मगध सुमतिय जनप मुख्य समस्तदेशद
जनपतिगळोग्गाय्तु कूडितु मत्तॆ चतुरंग
अनुवर प्रस्थान भेरिय निनद निर्जर जगव बॆदरिस
लनितन रिदल्लिद नारद निळिद नभ्रदलि ॥ 14 ॥

मरुळलायॆलॆ कंद दशकंधरन दारॆंदरियला बिडु
तरळतनवनु बायॆनुत कॆलकडॆगॆ कॊंडॊय्दु
वररहस्य दलसुर हरनव तरणवनु वसुमतिय भारो-
त्तरण दभिगत कारणव नरुहिदनु कर्णदलि ॥ 15 ॥

पयण निंदुदु मेलॆ मुनि हंसॆयलि हाय्दनु नभकॆ शतबलि
भयव बीरुत बीदिवरिदनु बहळ बलसहित
नियतमति कुश केळु नरभूमियनु कळिदु हिमंतननु नि-
र्भय दॊळॆरिळिदॊत्ति हाय्दुदु सेनॆ शतबलिय ॥ 16 ॥

भरत खंडद बहळ भारत वरुष सीमॆय दाटि मुंदण
हरिवरुष किंपुरुष रम्यक वरुष वर्तनिय

चिंता से क्या प्रयोजन ? इस तरह कहते भरत क्रोध के मारे जलने लगे। १३ जनक, कैकेय, मगध, सुमति वगैरह समस्त देशों के प्रमुख राजा इकट्ठे हुए। चतुरंग सेना आ जुटी। युद्ध के लिए रवाना होते हुओं की, यात्रा के नगाड़ों के शब्दों से देवलोक भी डरने लगा। इस बात का पता लगते ही नारद आकाश से उतर आए। १४ "मेरे बेटे, यह क्या मूर्खता तू कर रहा है ? क्या तू नहीं जानता कि दशकंठ कौन है ? मन की चंचलता त्यागो। आओ इधर।" —इस तरह कहते हुए, भरत को एक ओर ले जाकर उसके कान में यह समझाते हुए —कि असुरारी का अवतार भूमि का भार उतारने जो हुआ है— और इस निमित्त जो घटना हुई है— वगैरह सब चुपके से बता दिया। १५ नारद के बीच में पड़ने से युद्ध की सारी तैयारियाँ रुक गयीं। नारद फिर आकाश की तरफ उड़ चले। इधर शतबली अपनी भारी भयोत्पादक सेना के साथ आगे बढ़े। सुनो कुश, मानव जगत को पारकर, निर्भय हो, हिम पर्वत पर चढ़, उतरकर शतबली की सेना आगे बढ़ने लगी। १६ भरत खंड के ही विभाग भारत वर्ष की सीमा पारकर, आगे बढ़ते हुए हरिवर्ष, किंपुरुष लोक, रम्यकवर्षों के मार्ग पर शीघ्रति-शीघ्र अग्रसर होते हुए उत्तर दिशा के इलावृतवर्ष के मध्य के मेरु पर्वत के शिखर पर आरूढ़ हो, फिर वहाँ से उतरकर शतबली की सेना बड़ी चुस्ती के साथ आगे बढ़ी। १७

भरदि नडॆदुत्तरदिळावृत वरुष मध्यद मेरु शैलद
शिखनेरॆळिदोत्त बळिसितु सेनॆ शतबलिय ॥ 17 ॥
वर हिरण्मय वरुषवनु हॊक्करसुगळ हिडिहिडिदु दशकं-
धरन केळुत केतुमाला वरुष सीमॆयलि
हरिदु भद्राश्वदलि काणदॆ कुरु महीमंडलकॆ नडदु-
त्तरिसि बिट्टुदु बीडु लवणांबुधिय तीरदलि ॥ 18 ॥
धुरकॆ मोहिद भूमि पर संहरिसुता सागरद तीरद
करवळिय पट्टणव शोधिसुता महोदधिय
भरदि नडॆदुत्तरिसि मिक्किन शरधि शरधिय दाटि मुरिदु-
प्परिसि निंदुदु सेनॆ धनपन राजधानियलि ॥ 19 ॥
इदिरुवंदु कुबेरनधिका स्पदद सौरंभदलि कॊंडॊ-
य्दुदित संतोषदलि सत्करिसिदनु शतबलिय
मुददिनवनी राघवेंद्रन पदकॆनुत नाना सुरत्नद
हॊंदरु वॆळगिन हॊंदॊडवुगळ हॊरिसि बीळ्कॊट्ट ॥ 20 ॥
तिरुगिता शतबलिय बल दश शिरन काणदॆ कंड मैय्यलि
धरणिजासुत केळु मूडलु विनत नाज्ञॆयलि

सर्वोत्तम हिरण्मय वर्ष में प्रवेश कर वहाँ के राजाओं को पकड़ दशकंठ के बारे में पूछते हुए, केतुमाला वर्ष की सीमा में आगे बढ़कर भद्राश्व नामक देश में रावण को देख न पाने से कुरुभूमि में पधार कर, उसे पार करते हुए लवण सागर के किनारे शतबली की सेना ने डेरा डाला। १८ युद्ध के लिए ललकारते हुए आगे बढ़नेवाले राजाओं का संहार करते हुए समुद्री किनारे के नगरों में ढूँढ़ते हुए, अग्रसर होते हुए, महासमुद्र को पारकर तथा उसी प्रकार अन्य नदी-सागरों को पार करते हुए, वहाँ से (निराश) लौटते ऊपर की तरफ़ उछलते-कूदते वह सेना कुबेर की राजधानी में आकर रुक गयी। १९ कुबेर विशेष प्रकार की धूम-धाम के साथ शतबली की अगुवानी करने आए तथा उसे ले जाकर बड़े संतोष के साथ (उसका) आदर-सत्कार किया। अत्यंत हर्ष से, कई प्रकार के सोने के आभूषणों को जो अत्यंत प्रकाशमान थे, राघवेन्द्र के श्रीचरणों में, भेंट में उसके साथ प्रेषित किया। २० शतबली की सेना, रावण को न पाकर, खाली हाथ लौट आयी। सुनो वैदेहीकुमार। विनत की आज्ञा से कपि-सेना पूर्व दिशा में अग्रसर होने लगी। जिन-जिन राज्यों के राजाओं से वह मिली, उनसे पूछताछ करते अत्यंत द्रुतगति से जब वह आगे-आगे

हरिदुदग्गद दाळि धात्री धरणिपर बेंसगोंडु मुंदणि
गुरवणिसिदुदु नडुगलिद्राद्यखिळ देवगण ॥ 21 ॥
कडुमनद कपिबलद धाळिगे नडुगि कंडुदु पूर्वदिक्किन
पोडविपरु सावंत मन्नेय मंडलेश्वररु
पोंडवि तम्मनितऱलि रावण नडगिरदवोलाणे भारद
कडिय कोट्टरु बळिक तम्मय धर्मसाक्षियलि ॥ 22 ॥
बिट्टु हाय्दुदु सेने मुंदणि गोट्टविसे शरनिधिय तीरद
पट्टणव पडितळिसि पारावार दोरणद
बट्टे विडिदेड किक्कि मेरुवि नट्टणिय जनपदद रायर
कट्टिटकेळुत कंडमैयलि हरिदुदगलदलि ॥ 23 ॥
बळिक किन्नरयक्ष गुह्यक रिळेय राक्षस सिद्धरुर्वी
तळद विद्याधरर गंधर्वर महीतळव
बळसि मुंदण किंपुरुषरग्गळद भूमिय होक्कु सारदरु
विलसदभिनवदुत्तरद कैलासपर्वतव ॥ 24 ॥
अदु बळिक लैवत्तु साविर दुदय दूप्पर शैलवदऽ-
भ्युदय रचनाडंबरव नेनेंबे निदिरिनलि

बढ़ रही तो देवेन्द्रादि समस्त देवता-समूह भय के मारे काँपने लगा। २१ अपने दृढ़ निर्धार के साथ वानरसेना को आक्रमण (चढ़ाई) करते देख पूर्व दिशा के राजा, सामंत, नायक, मंडलाधिपति आदियों ने आकर, धर्म की सौगन्द खाकर वचन दिया कि अपने राज्यों में कहीं भी रावण को छिपने के लिए किसी भी हालत में जगह नहीं देंगे। २२ कपिसेना ने वहाँ से डेरा निकाल, इकट्ठे होकर चलते समुद्र-किनारे के शहर को घेर लिया। समुद्र-किनारे के नियमानुसार मार्ग पर अग्रसर होते हुए, इस मार्ग को बायीं ओर लेते, मेरु पर्वत के घने जंगलों के निवासी राजाओं को पकड़ लाकर उनसे विवरण प्राप्त करते वह (वानर) सेना आगे बढ़ी। २३ तत्पश्चात् किन्नर, यक्ष, गुह्यक आदियों के लोकों को, तथा गंधर्व, सिद्ध, विद्याधर, राक्षस आदियों के लोकों को उस सेना ने घेर लिया। वहाँ से आगे बढ़कर किंपुरुषों के राज्यों में प्रवेश कर फिर उत्तर दिशा के विनूतन कैलास पर्वत में प्रवेश किया। २४ वह पचास हज़ार के क़रीब ऊँचा पर्वत था। उसकी ऊँचाई, रचना-वैभव का कैसे वर्णन करें! पूर्ण चंद्रमा की कांति से युक्त घने चमकते उस पहाड़ ने कपिसेना के तन-मन

पुदिद पूर्णशशिप्रभेय कॆलकॊदॆव कॊल्लणिगॆगळ हॊळहिन
हॊदरिनलि रंजिसितु कपिवाहिनिय कण्मनकॆ ॥ 25 ॥
गिरिय नोलैसुत्तलिर्दुदु हरन काणदॆ सिद्ध विद्या-
धर महोरग यक्ष राक्षस गरुड गंधर्व
सुर मुनीश्वररसरजन किंपुरुष किन्नर मानवाप्सर
रॆरडु मैयलि कॆळिदॆ शतकोटि संख्येयलि ॥ 26 ॥
बंदु बंदोलैसि होह पुरंदराद्यर दिव्य पुष्पक
वृंददनुपम किरण कदुबितु कपि भटावळिय
मुंदुवरिवक्षिगळनिदिरलि बंदिरनलॆ दशास्यनॆंदु रि-
पुंदमरु हत्तिदरु हरपर्वतव सरकटिसि ॥ 27 ॥
गिरियिदीशन दिल्लिगसुरेश्वरनु बहनोलगकॆ मातिदु
हरदिहुदु नाविल्लि नोडलु बहुदले यॆनुत
हरिवरूथिनि हत्तिदुदु तद्गिरियनुग्र निदाघदलि सी-
वरिसि शिखि शिखरियनु भोर्गरदडरुवंददलि ॥ 28 ॥
कळकळिकॆ कैलास शिखरद हॊळलॊळगॆ हॊदरॆद्दुदल्लिय
गलभॆ काड़रु कवियॆ गोपुरवंक वीथियलि

को मोह लिया। २५ शिव-दर्शन प्राप्त न कर सकनेवाले सिद्ध, विद्याधर, उरग, यक्ष, राक्षस, गरुड़, गंधर्व, देवमुनि, देवता, किंपुरुष, किन्नर, मानव, अप्सरा वग़ैरः सौ करोड़ संख्या में दोनों तरफ़ इकट्ठे होकर कैलास की प्रार्थना करते थे। २६ आ-आकर, सेवा समर्पित कर जानेवाले देवेन्द्र वग़ैरहों के दिव्य पुष्पकविमानों के चमकते किरणों ने कपिसेना को आवृत किया। सामने की ओर देखते हुए, कहीं रावण तो आया नहीं—इस तरह सोचते हुए शत्रुविजयी कपिवीर सरपट कैलास पर चढ़ गये। २७ 'यह शिवपर्वत है; यहाँ शिवजी की सभा में (उपस्थित होने) राक्षसों के अधिपति आते हैं। —इस प्रकार की बातें चारों तरफ़ हो रही हैं। इसलिए यहीं कहीं ढूँढ़कर देख लेना चाहिए'—इस तरह सोचते कपिसेना कड़ी धूप के दिनों में धू-धू करते पहाड़ की चोटी तक व्याप्त हो जानेवाली आग की तरह पहाड़ पर चढ़ गयी। २८ कैलास पर्वत पर के शिखर के शहर में शोरगुल बढ़ गया। वहाँ के शोरगुल मचाने वाले गुम्बजों के विशाल वीथिकाओं में इकट्ठे हुए; भेरी-नगाड़ों की

हॊळकुवी कपिनायकर गावळिय गुम्मिदरस्त्र शस्त्रा-
वळिय लॊदरुव पणह पटहानकद रभसदलि ॥ 29 ॥
हत्तिदुदु हॊय्दिड्डुव कैदुगळॊत्तवरकळुकदॆ फणींद्रन
नॆत्ति नॆग्गलु नॆगहिदद्रि महीरुहंगळलि
हत्तलीसदॆ हरन गणतलॆयॊत्ति तवकिसॆ तरुचररु नभ
कॆत्ति हाय्कुत कॊटॆयिदॊळ विद्दुदगलदलि ॥ 30 ॥
तरुबि पडितळिसुव भटाळिय नुरुवि बीदियलानुवधटर
हरुब हसरिसि हॊक्करीशन राजमंदिरव
सॆरग हिडिदरु तॊरु सीतॆय सॆरॆय हिडिदव निन्न भक्त रॊ
ळुरुववनु गड तोऱ वेकॆनुता महेश्वरन ॥ 31 ॥
तोऱि कॊडुवॆवु सैरणॆगॆ कालूऱलाग्रहवॆनुत श्रुतिगळु
तोऱ लरियद परपरात्पर वस्तु नसुनगुत
तोऱिदनु बळिकुमॆगॆ रामन दूतुगरु नोडिवर नॆनॆ हॊरॆ
यॆऱि हॊपुळियोदळुमॆ महिमॆगॆ मधुद्विषन ॥ 32 ॥

महाध्वनियों के मध्य जहाँ कहीं भी दिखायी पड़नेवाले कपिनायकों पर अस्त्र-शस्त्रों से वार करने लगे। २९ तरह-तरह के आयुधों के ज़ोरदार मार तथा आक्रमण से वे (कपिनायकों के झुंड) डरे नहीं। प्रतिरोध करते हुए हाथ में चट्टान तथा पेड़ों को उखाड़ लेकर ऊपर की ओर चढ़ते बढ़ने लगे। तब आदिशेष का फन मानों दबने लगा। शिवजी के गणों ने उन्हें चढ़ने का मौका न देते हुए, उनको धर-पकड़कर दबोचना चाहा। तब वानरों ने उन्हें आकाश की तरफ़ उछाल दिया। फिर क़िले के द्वारा भारी संख्या में प्रवेश कर गये। ३० रास्ता रोके आक्रमण करनेवाले वीरगणों को दूर भगा दिया। गलियों में सामना करनेवाले वीरों के प्रवाह को तितर-बितर कर दिया। फिर शिवजी के राजमहल में प्रवेश कर उसका पल्ला पकड़कर पूछने लगे— "सीता को क़ैद कर ले जानेवाला तुम्हारे भक्तों में से एक श्रेष्ठ भक्त है। उसे दिखा दो।" ३१ वेदों के लिए भी अगोचर परात्पर वस्तु शिवजी ने मुस्कुराते हुए कहा— "तुम्हारा क्रोध थोड़ा ठंडा पड़े; तथा सहनशीलता उपजे; तभी मैं (उसे) दिखा देता हूँ। तत्पश्चात् उन्होंने देवी पार्वती को बताया— "ज़रा इनकी तरफ़ देखो; ये राम के अनुचर हैं। मधु राक्षस के वैरी (शत्रु) श्रीविष्णु की महिमा देख पार्वती पुलकित हुई। ३२ "हे विनुत, सीता का अपहरण करनेवाला कहाँ है —इस तरह पूछा न ? हमसे पूछना तुम्हारा कर्तव्य ही

केळिदैयेले विनुत नम्मनु केळलिके कर्तव्यवुंटद
हेळिदरे नी नंबबल्लै नम्म मातुगळ
बालरी गुह गणपराणे विशाल बल हनुमंत काबनु
लोल नयनेय निंदि निरुळेंदवर बीळ्कोट्ट ॥ 33 ॥
तप्पदे सुरलोक काविन्नुप्परिस बेडवे ककुत्स्थज
जनोप्प दिदोडे तोडकु निमगहुदेंदु नंबुगेय
ओप्पदलि कोंडापुरके कैतप्प माडदे तिरुगिदनु नि-
म्मप्प तोरवेय राय नरहरियेंडेगे कलिविनुत ॥ 34 ॥

हत्तनेय संधि

सूचने— वीर मारुति मुख्य वानर वीरराहवधीर रवला चोरननु जनपदव लरसिदरा स्वयं प्रभेय ।

केळिदै सुकुमार रामनृपालननु बीळ्कोंडु बलिमुख
पाळयवु पडितळिसि नडेदुदु तेंकमुखवागि

तो है। उसके बारे में बताऊँ तो विश्वास करोगे क्या ? ये मेरे पुत्र गणपति तथा षण्मुख —इन दोनों की सौगंद खाकर कहता हूँ कि आज रात को महाबलशाली हनुमान सीता को देख पाता है।" इस तरह समझाते हुए शिवजी ने उनको बिदा किया। ३३ "तुम्हारी बात तो असत्य नहीं है न ? अब हमें उछलते-कूदते देवलोक नहीं जाना पड़ेगा न ? राम अगर मानें नहीं तो फिर आपको ही कष्ट उठाना पड़ेगा।" इस तरह कहते शिवजी से आश्वासन प्राप्त कर, शिवनगरी की किसी प्रकार की नुकसान न करते वीर विनुत तुम्हारे पिता जो 'तौरवे' के अधिपति अवतारी श्रीराम हैं —उनके यहाँ लौट आए। इस प्रकार वाल्मीकि ने कुश-लव को समझाया। ३४

दसवीं संधि

सूचना— युद्धवीर मारुति आदि प्रमुख कपिवीरों ने सीता का अपहरण करनेवाले चोर को स्वयंप्रभा के राज्य में ढूँढ़ा।

राजा राम से बिदा लेकर वानर-सेना ने अत्यंत उत्साह से दक्षिण की ओर यात्रा की। आक्रमणकारी लूटमार करते हुए, राज्यों के प्रदेशों से होते हुए, गंगा के किनारे-किनारे आगे बढ़ते हुए गंगा तथा समुद्र के संगम की तरफ़ शीघ्रातिशीघ्र चल पड़े। १ गंगा तथा समुद्र के परिशुद्ध

धाळिकारुरु दळदुळद भूपाल भूमिय होक्कु गंगा
कूलदलि संगमद सागरकागि वहिलदलि ॥ 1 ॥
विमल गंगा सागरद संगमद सैवळिविडिदु वसुधा
रमणियनु पडितळिसि पंचमहा सरित्तुगळ
समनिकेय सौराष्ट्र गुर्जर विमल काश्मीरांध्र गौळ
प्रमुख देशंगळलि नोडुत तिरुगिदुदु सेने ॥ 2 ॥
ऊरुकुगोंडरसुगळ गर्वव मुरिदु मारांतवर पुरगळ
बोरपेगळ हाय्दोत्त वरसितु तिरुगि गौळवके
उरुबि घट्टावळिय पुरगळ लरसि पडुवण कडल नडुवण
कुरुवगळ कैदोळसि तिरुगितु सेने कोंकणके ॥ 3 ॥
मणियदवनी पालकर पट्टणव सूरेय कोळुत कलि से-
वण सुशर्मादिगळ हिडिदाकरिसि वेसगोळ्त
प्रणुतरनु तलेगाय्दु विडुतिट्टणिसि कावेरिय तटाकद
कणेय विडिदैतंदु होक्करु पांड्य मंडलव ॥ 4 ॥
हिडिदु पांड्यन चोळ केरळ पोडविपर वेसगोंडु मूडण
कडल करवळिगळनु शोधिसि घट्ट बेट्टगळ
गडिय मन्नेयरुगळ घातिसि तडिय सिंगण ताम्रपर्णिय
हुडुकि होळे सलिनलि तिरुगितु बलवु वलिमुखर ॥ 5 ॥

संगम के रास्ते का अनुसरण करते हुए, सीधे रास्ते से होते हुए, भूमि को पार करते हुए पंच महानदियों के मैदानी प्रदेश के सौराष्ट्र, गुर्जर, काश्मीर, आंध्र, गौळ वग़ैरः प्रमुख देशों में सीता को ढूंढ़ते हुए सेना ने संचार किया। २ न झुकनेवाले राजाओं का घमंड चूर करते हुए, सामना करने वाले नगरों का साहस विदीर्ण करते हुए सेना फिर एक वार गौळ देश की तरफ़ शीघ्रातिशीघ्र बढ़ने लगी। पर्वतीय प्रदेशों के नगरों में ढूंढ़कर, फिर पश्चिम समुद्र के मध्यस्थित द्वीपों में ढूंढ़ते हुए (वह) सेना कोंकण की तरफ़ मुड़ी। ३ अपने को शरणागत न होनेवाले राजाओं के नगरों को लूटकर वीर सेवण, सुशर्मादियों को पकड़वा लाकर उनसे विवरण माँगा गया। शरणागतों की रक्षा कर उन्हें छोड़ दिया गया। कपि-सैनिकों ने सम्मिलित रूप से कावेरी तीर्थ का मार्गानुसरण करते आगे बढ़, पांड्य देश में प्रवेश किया। ४ पांड्य राजा के साथ-साथ चोल, केरल राज्यों के अधिपतियों से पूछताछ करते पूर्वीय समुद्री किनारों के प्रदेशो में ढूंढ़ा। पहाड़-पहाड़ियों के सीमावर्ती नायकों को पीटकर किनारे के प्रदेश सिंगण

होक्कु सिंहाद्रियनु नालुकु दिक्किनेंडे मन्नेयर वसुधेग-
ळिक्केगळ शोधिसुत नडदुदु मुंदे मरुवनके
इक्केलद तरुगुल्म लतेगळ सिक्कुगळ मध्यदलि धरणिय
होक्कुळिन वोलु होळकिदुदु माया महासरसि ॥ 6 ॥
वसुमतिय विवरणद मध्यद विषयदध्वविदीग मय नि-
र्मिसिद माया सरसियनु कुशकेळु कौतुकव
बिसज गंधोद्धूत सीकर विसर विहरण लघु समीरण
नेसगिदुदु तडॆतडॆदु तत्सरसी तटाग्रदलि ॥ 7 ॥
आ येनुत कपि कटकवा लघुवायुविन वैहाळियलि पा-
नीयवेंदे बगॆदु होक्कुदु कातरिसि कोळन
मायेयलि जल तोरुतडगुत वायुजाद्यर निळुहिदुदु कुह-
रायमानित मय विनिर्मित महिगे वहिलदलि ॥ 8 ॥
बेदरिदवु येणॆवक्कि कोंचेगळोदरि हाय्दवु हंसे तुंडद
तुदिय तावरेगच्चिनलि बेच्चिदवु देसेदेसेगे
गदबदिसि कारंड बक चीरिदवु नलिव सरोवरद सलि
लद समीपदलब्बरिप कपिबलद कळकळके ॥ 9 ॥

तथा ताम्रपर्णी राज्यों में ढूँढ़कर वानर-सेना नदी-नालों की पंक्तियों का अनुसरण करते आगे बढ़ी। ५ सिंहाद्रि में प्रवेश कर, (वहाँ के) चारों दिशाओं के वीरों के जमीन-जायदाद, निवास आदि में ढूँढ़कर कपिवीर अगले दिन मरुवन चले गये। दोनों तरफ़ के वृक्ष गुल्म-लताओं के समूहों के मध्य भूमि के नाभि की तरह माया सरोवर दिखायी दिया। ६ भूमि के मध्य भाग का, यह बिल का द्वार था। हे कुश, सुनो। मय-निर्मित इस माया सरोवर की कुतूहलकारी (आश्चर्यजनक) कहानी सुनाता हूँ। कमल की सुगंध से भरे तुषार-कणों को ढोए ठंडी हवा उस सरोवर के किनारे-किनारे धीरे-धीरे बह रही थी। ७ ठंडी-ठंडी हवा के प्रवाह (बहना) देख, वानर-सेना आश्चर्यचकित होते हुए, जल पीने की अभिलाषा से व्याकुल हो सरोवर में उतरी। माया के कारण पानी जैसा दिखायी देता, तुरन्त ही अ दृश्य होता। मय से निर्मित उस स्थान में जो बिल जैसा दिखायी देता था उसने हनुमान आदि वीरों को अपने विचित्र लोक में उतार लिया। ८ वानर-सेना के शोरगुल के कारण सरोवर के पानी के नज़दीक विहार करते चक्रवाक पक्षी तितर-बितर हो गये। क्रौंच पक्षी चीख़ते उड़ गये। चोंच की नोक से कमल-पुष्प को चबाए हंस डर के

डगॆ विताळिसि खर मरीचिय तगडु विसिलिन तॊरॆगॆ हरिणा-
ळिगळु हरिवंददलि हरिवल हॊक्कुदिन सुतन
मगळ मंजुळ पुंजिरंजित जगतियनु वळिकल्लि कड्डु
नगर खर्वड खेड द्रोण ग्राम संकुळव ।। 10 ।।
अदु कणा मय निर्मितद जनपदवु तज्जनपद पतित्ववु
सुदति गागिहुदा स्वयंप्रभेयॆंब नामकद
अदु सुरेश्वर जनपदद संपदव नांतिहुदा महाजन
पद दॊळगॆ नोडिदरु जनकात्मजॆय तावंदु ।। 11 ।।
अयनविल्ला राष्ट्रकबुज प्रियन दिवरात्रिगळ परिसं-
चयद संचरविल्ल प्रभॆयहुदा स्वयंप्रभॆय
नियत रुचियलि तीरिदवु दिन पयण परि यटणदलि परमे-
ष्टिय पुरंदर सुतन पावक सखननंदनन ।। 12 ।।
नोडनोडलु देशवदु कपि बीडु बिडॆ हॊसतागिहुदु नॆरॆ
नोड नोडलु नदिनदाद्रि निकुंज वल्लल्लि
कूडॆ पल्लट वागिहुदु मरॆमाडि तिरुगिसि तिवरनिवरॆडॆ
याडिकॆयले सरिद विप्पत्तेळु दिनवॆंद ।। 13 ।।

मारे दिशि-दिशाओं में तितर-बितर हो गये। बक तथा सारस डर के मारे कांपते-कांपते चीखने-चिल्लाने लगे। ९ धूप के प्रखर होने पर (सूर्य से) निर्मित मृगजल के पीछे (छलांग मारते) दौड़नेवाले हिरनों की तरह कपि-सेना ने मनोहरता से सौन्दर्य प्राप्त करनेवाली शोभातिशयसंपन्न सूर्यपुत्र की पुत्री स्वयंप्रभा के राज्य में प्रवेश किया। फिर वहाँ उस सेना ने नगर, गाँव, दरिकंदराएँ आदि कई स्थान देखे। १० वह मय-निर्मित राज्य था। उस राज्य का शासन स्वयंप्रभा नामक स्त्री के मातहत था। इन्द्रलोक की संपत्ति वहाँ भरी थी। उस महान राज्य में कपिवीर सीता को ढूंढ़ने लगे। ११ उस राज्य में उत्तरायण, दक्षिणायन नहीं थे। समय का विभाजन दिन तथा रात के रूप में करनेवाले सूर्य का विचरण उस राज्य में नहीं था। वहाँ स्वयंप्रभा से निर्मित कांति ही रोशनी प्रदान करती थी। ब्रह्मपुत्र जाम्बवंत, इन्द्रपुत्र वाली के पुत्र अंगद, वायुपुत्र हनुमान —इनकी यात्रा के सैर-सपाटे में दिन कट गये। १२ कपि-सेना वहाँ पड़ाव डाले जैसे-जैसे देखती जाती, वह देश नया-नया बनता जाता। वहाँ के नदी-नद, पर्वत, लतागृह आदि क्षण-क्षण परिवर्तित होते जाते। इस तरह उनको धोखा देते हुए (वहाँ प्रदेश ने) उनको भटकने के लिए बाध्य किया। इस तरह इनके भटकने में सत्ताईस दिन बीत गये। १३

नगर विर्दवनंत शाखा नगर विर्दवनंत सोगयिसु
वगरु चंदन चूतनंदन विर्दवपरिमित
मघमघिप फलशालि धवळेक्षुगळ तळित सरोज कल्हा-
रगळ सरसिगळिर्द वगणितवा धरित्रियलि ॥ 14 ॥

सुत्ति नोडिदरनितरलि सुर मत्तगज पंचाननन गिरि
योत्तुगळ पक्कणगळलि तुरुगारपळ्ळियलि
कुत्तुरलि कुहरदलि कोळ्ळगळित्तडिगळलि हेरडवि गळ
मोत्तदलि मैमरॆयदरसिदरा निशाचरन ॥ 15 ॥

बळिक कंडर दोंदुशोभा कलित कमनीय प्रभावरि
लुळित विश्रुतदा स्वयंज्योतिय महापुरव
होळल दमरावतिगॆ तोलॆ वॆंगळ वॆनलु रंजिसितु कोटा
वळय कोत्तळ दाळुवेरिय विविध रचनॆयलि ॥ 16 ॥

होक्करोळ बिद्दोंदु निमिषदोळॆक्क तुळदलि दुर्गवनु कै-
सिक्किदवरनु हिडिहिडिदु केळदरु रावणन
मर्कटर दळदुळद दूरिन दक्कडॆयतन बिद्दुदै क-
र्णक्के कमल प्रिय नसुत सावर्णिनंदनॆय ॥ 17 ॥

असंख्य नगर, उपनगर उस राष्ट्र मे थे। वहाँ चंदन, श्रीगंध, आम के वृक्षों के असंख्य उपवन थे। सुगंधयुक्त धान तथा सफ़ेद ईख के खेत, खिले कमल तथा कल्हार पुष्पों से भरे सरोवर मनमाने थे। १४ पहाड़ से सटे प्रदेशों में स्थित गाँवों में निवास करनेवाले शिकारी तथा ग्वालों के यहाँ, गुल्म-लताओं से लदे झुरमुटों में, गुफाओं में, दरिकंदराओं के दोनों पार्श्वों में, घनघोर जंगलों में, देवता रूपी मदोन्मत्त हाथियों के लिए सिंह-सदृश बने रावण को कपिवीरों ने आँखों में तेल डाले अन्वेषण किया। १५ तत्पश्चात् कांति से जगमगाते अत्यन्त मनोहर, विस्तृत, स्वयं ज्योतिसम्पन्न एक महानगरी को उन्होंने देखा। क़िले, बुर्ज, क़िले की चारदीवारी वग़ैरः विविध प्रकार के इमारतों से वह शहर मानों अमरावती से श्रेष्ठ हो, शोभायमान था। १६ अन्दर घुसकर, क्षणार्ध में क़िले में अपने शौर्य से प्रवेशकर, हाथ में आए जिस किसी को पकड़-धकड़कर रावण के बारे में पूछताछ करने लगे। वानर-सेना के इस आक्रमण की शिकायत सूर्यपुत्र सावर्णी की पुत्री स्वयंप्रभा के कानों में पड़ी। १७ स्वयंप्रभा ने वीर कपिनायकों को बुला लिया। उनमें जाम्बवंत को (सबसे) बड़ा मानकर तथा समझकर समुचित रूप से (उनका)

करॆसि कॊंडळु बळिक कलि कपिवररनदरॊळु जांबवंतन
हिरियनॆंदुपचरिसि बॆसगॊंडळुचितदलि
बरवु निमगारिंदली पुरवरकॆ घटिसितु नीवदारॆं-
दुरु तपस्विनि केळिदळु कैमुगिदु विनयदलि ॥ 18 ॥

हेळ बेके निमगॆ रघुनृप नाळुगळु नाव् केळिदॆवु न-
म्माळुदन वल्लभॆय रावणनॆंब रक्कसनु
कौळिकद यतियागि रघुभूपाल निल्लद हिंदॆ संध्या-
कालदलि कद्दॊय्दनारण्य प्रदेशदलि ॥ 19 ॥

अवननरसलु बीळुकॊट्टनु रवितनूभवना धरित्री
धवननुज्ञॆयलॆम्म नित्तलु बरवु नमगाय्तु
अवनिपर पट्टणगळलि नाववननरसिदु काणदिल्लिगॆ
पवन जाद्यर गडणदलि गमिसिदॆवु नावॆंद ॥ 20 ॥

ईतनीग निलजनु वह्निज नीतनीतनु सुरपसुत सुत
नीत नळ नीतनु सुषेण गज गवाक्षकरु
ईतगळ बलवदॆ समुद्रद रीतियलि नगरोपकंठद
लात कॆलस विदीग बल्लरॆ हेळि नीवॆंद ॥ 21 ॥

आदरातिथ्य करते हुए उस श्रेष्ठ तपस्विनी ने हाथ जोड़े नम्रता से पूछा—"किस कारण से आप इस शहर में पधारे हैं ? कौन हो तुम ?" आदि, आदि । १८ "क्या आप हमारे बारे में जानना चाहती हैं ? हम रघुनाथ के सेवक हैं । हमारे स्वामी की पत्नी को रावण नामक राक्षस तपस्वी-जैसा कपट वेश धारणकर, राम की अनुपस्थिति में उनके निवासस्थान वनप्रदेश (पंचवटी) से संध्या समय अपहरण कर चुके हैं ।" —इस तरह हमने सुना है । १९ "उस भूमिपति राम की आज्ञा से सुग्रीव ने रावण की तलाश करने हमें भेज दिया । अतः हम इस तरफ़ आए । अन्यान्य राजाओं के शासित नगरों में हम उसे (रावण को) ढूँढ़कर न पाने के कारण हनुमान आदियों के साथ यहाँ आए ।" इस तरह जाम्बवन्त ने कहा । २० "यही वायुपुत्र हनुमान है । यह अग्नि का पुत्र नील है । यह इन्द्रकुमार वाली का पुत्र अंगद है । यह नल है । ये सुषेण, गज, गवाक्ष है । नगर के बाहर इनकी सेना सागर की तरह खड़ी है । हमारे ज़िम्मे यह कार्य है । अगर आप जानती हैं तो बता दीजिए ।" इस तरह कहा । २१ परिशुद्ध आंतरिक ज्ञान से उसने यह जान लिया कि वह रविवंश में उत्पन्न (अवतरित) विष्णु ही है; मधु राक्षस को मारनेवाले

मनदोळमळ ज्ञान मुखदिं दिन कुलोद्भव विष्णुवेंबुद
ननुवरिसि बेरगादळा मांया मधु द्विषन
विनुत चरितकें बळिक चतुरास्यन कुमारगेंदळेम्मी
जनपददोळवनिल्ल नाव् कंडरियेवा खळन ॥ 22 ॥
इद्दडिहनव लंकेयोळगवनिद्द ठाविगें होहुदल्लिये
तिद्दिदकोंबनु निम्म कार्यद कोंकुकोरतेगळ
इद्द हदनिदु नम्म पुरदोळ गिद्दनादडॆं कमलनाभ क-
पर्दिगळ मेलाणेयेंदळु जांबवंतगें ॥ 23 ॥
ऐसें मत्तेनेंदु तिरुगिदरा सकल बलसहितला मा-
या सुरद मयरचित राष्ट्रद राजमार्गदलि
घासियादरु बंद बट्टेय मैसिरिय पथवरिय दग्गद
बेसरिकेयलि मत्तें बंदरु कंडरा सतिय ॥ 24 ॥
दारिदप्पिदेवरसि राजद्वारवनु हेळौ स्वयंप्रभें
धारुणीशन हगेय नगरकें होग बेकेंदु
वारिजप्रिय सुतन नेम कठोरतरवदरिंद नमगुप-
कारविदु होलबिगर कोडबेकेंदनज सूनु ॥ 25 ॥
हेंगुसुगळाव् बल्लेवे पुरुषांग निम्मदु पौरुषांगद
तुंगबलरिदें निम्म बळियलि लक्क संख्येयलि

(विष्णु के अवतारीस्वरूप) राम-कथा से उसे अत्यन्त आश्चर्य हुआ। फिर उस (स्वयंप्रभा) ने ब्रह्मपुत्र जांबवंत से कहा— "हमारे राज्य में तो वह नहीं; उस (रावण) राक्षस को न हमने देखा है, न हम उसे पहचानते है।" २२ "अगर रावण कहीं है तो लंका में ही होगा। वहीं पर जाइए। वहीं पर वह तुम्हारे कार्य के गुणदोषों को ठीक कर दे। यह वस्तुस्थिति है। ब्रह्माजी, शिवजी की सौगंद! वह हमारे प्रदेश में (राज्य में) नहीं है।" —इस प्रकार स्वयंप्रभा ने जाम्बवंत से कहा। २३ "तो ठीक है"—इस तरह कहते हुए मय-निर्मित उस मायावी राज्य की सड़क पर से होते हुए सारी सेना के साथ लौट पड़े। प्रवेश करते समय के मार्ग का पता न लगने के कारण, तंग आकर, फिर स्वयंप्रभा को मिले। २४ 'महाद्वार ढूंढ़ते-ढूंढ़ते रास्ता भूल गये। देवी स्वयंप्रभाजी, सुग्रीव की आज्ञा बड़ी कठोर है। राम के शत्रु रावण की राजधानी में हमें जाना है। अतः हमें राह दिखाने की कृपा कीजिए।" —इस प्रकार जाम्बवंत ने प्रार्थना की। २५ "हम तो औरत हैं; हमारी

अंगविसुवुदु बंद वट्टॆय संगदलि नीवॆनलु कॆळदु प-
तंग बिंब भयंकरनु भामिनियॊळितॆंद ॥ 26 ॥
पुरुष रहुदाव् पौरुषांगद निरतिशयवनु नोडु नीनॆनु
तुरु पराक्रमि हॆच्चिदनु हॆराळ रोषदलि
उरियॊळबुज भवांड भवनव निरिसलुब्बिबरॆदॆद्दु रुद्रन
परिगॆ नूर्मडियॆनलु निगुरिदनंजना सूनु ॥ 27 ॥
झडिदु मुष्टिय लवनि कुहरव नॊडॆय लुद्योगिसलु मनदलि
नडुगि निंदिर्दा स्वयंप्रभॆ मारुतिय करव
हिडिदु नयदलि वेडिकॊंडळु कॆडिस बेडॆलॆ तंदॆ नम्मी
यॆडॆय नॆंदुदरदलि तलॆयिक्किदळु तरळाक्षि ॥ 28 ॥
पथव तोऱादोडॆ मनुष्यर पृथुविगॆनॆ नडनडुगि गगनद
रथिगॆ लंघिसिदधटगॆदळु मधुर वचनदलि
पृथुळ विक्रमकेळु रण निश्शिथिल निरुपम वीर केळ् सु-
प्रथित साहसमल्ल केळिन्नॊंदु विस्मयव ॥ 29 ॥

ऐसी हस्ती कहाँ ? तुम तो पुरुष हो; तुम्हारे यहाँ तो उन्नत पौरुषसम्पन्न वीराधिवीर लाखों की संख्या में हैं। अतः जिस मार्ग से आये थे, उसी मार्ग से लौट पड़ो।" इस प्रकार स्वयप्रभा के कहने पर सूर्यबिंब-समान प्रखर भयंकर हनुमान ने स्वयंप्रभा को सम्बोधित करते हुए यों कहा—। २६ "यह सत्य है कि हम पुरुष हैं; हमारे पौरुष की सीमा किस हद तक है— देखते जाओ।" —इस तरह कहते महाबलशाली, क्रोधी हनुमान वढ़ते (ऊँचे-ऊँचे) उन्नत होने लगे। ब्रह्मांड को आग में झोंकने जा रहे, घनघोर गर्जना करते रुद्र से मानों सौ गुने बड़े हों—इस रीति से हनुमान ऊँचे-ऊँचे बढ़ते गये। २७ मूठ से मुक्के मार-मारकर उस भूमि गुफा को चकनाचूर करने की कोशिश करनेवाले हनुमान को देख, मन ही मन डरते स्वयंप्रभा ने उसका हाथ पकड़ रोकते हुए कहा— 'हे तात ! हमारे इस स्थान को मत बिगाड़िए।' —अत्यंत विनम्र भाव से उसने दंडवत् प्रणाम किया। २८ "यह बात है ! तो हमें मानव-भूमि का मार्ग बता।" इस तरह (हनुमान के) पूछने पर स्वयप्रभा थर-थर काँपती हुई, आकाशस्थित सूर्यमंडल तक उड़ान लेनेवाले वीर (हनुमान) को मीठी बातों से प्रसन्न करने का प्रयत्न करते हुए बोली— "हे महापराक्रमी ! सुनो। युद्ध में अतुलित बलशाली वीर ! सुनो। हे सुप्रसिद्ध साहसी पहलवान ! और एक आश्चर्यकारी जो बात है, सुनो।"

मुच्चि कॊळ लक्षिगळ निन्न समुच्चयद सुभटाळि नी सहि
तच्चरिय तॊरुवॆनु निमगॆनला क्षणार्धदलि
मुच्चिदरु कंगळनु कैगळ मुच्चळलि नॆगहिदळु रामन
नच्चिनाळ्गळ निळॆगदेनु समर्थॆयो जगकॆ ॥ 30 ॥
कंदॆरॆदु नोडिदरु बळिकिवरंदु विस्मितरागि सूर्यन
नंदनद नंदनॆय महिमॆगॆ जांबवादिगळु
इंदिरेशन कार्यकॊदगुवु दॆंदिवरनुरॆ हरसि कंभद
नंदनन नॆनॆवुत्त काणिसदादळा कांतॆ ॥ 31 ॥

हन्नॊंदनॆय संधि

सूचनॆ— कंडु संपातियनु मुनिप मृकंडुवनु दरुशनव माडियखंड बलरैदिदरु घन गंभीर वारिधिय ।

ऎलॆ कुमारक केळु वानर बल महांबुधि काद कडलिन-
कळकळद काहुरद वॊलु दक्षिणद दॆसॆगागि
निलुकिदुदु निर्मळ नितांत स्थळद निरुपम मुनि मृकंडुवि
नॆलॆवनॆगॆ नडॆतंदु कंडरु तन्मुनीश्वरन ॥ 1 ॥

—इस प्रकार उसने (स्वयंप्रभा ने) कहा २९ "तुम स्वयं अपने को सम्मिलित करते हुए सभी सैनिकों के साथ, एक साथ आँखें बंद कर लो। तुम्हें क्षणार्ध में एक आश्चर्य दिखाती हूँ।" —इस तरह (स्वयंप्रभा के) कहने पर सभी कपिवीरों ने अपनी हथेलियों से आँखें बन्द कर लीं। राम के प्रिय सेवकों को भूमि के ऊपर ले आयी। लोक में स्वयंप्रभा कितनी समर्थ है! ३० कपिवीरों ने आँखें खोलकर (जगत को) देखा। सूर्यपुत्र की पुत्री की महामहिमा देख जाम्बवंत आदि कपिवीरों को अत्याश्चर्य हुआ। 'लक्ष्मीपति के कार्य में हाथ बँटाइए!' —इस तरह कहते कपिवीरों को आशीर्वाद देते खंभे में प्रकट नरसिंहावतारी विष्णु का स्मरण करते स्वयंप्रभा अदृश्य हुई। ३१

ग्यारहवीं संधि

सूचना— संपाती से भेंटकर मृकंडु मुनि के दर्शनलाभ कर असदृश बलसंपन्न कपिवीर गंभीर महासागर के निकट पहुँचे।

हे कुमार! सुनो! तपे समुद्र के घनघोर शोर की तरह वह कपिसेना रूपी महासागर दक्षिण दिशा की ओर बढ़ा। अत्यंत निर्मल स्थान में बने

अरिदु निवरुत्ताळगमनद तॆरननु मुनि विष्णुविन मै-
मरॆय माया नाटकद भूभार भंजनॆय
निरुगॆयनु सत्करिसिदनु तनगॆरगिदज सुत हनुम मॊदला
दुरुव कपिनायकरनति कारुण्य भावदलि ॥ 2 ॥
हेळिदरु बळिकिवरु रामनृपाल सख सुग्रीव नेमिसि
दूळिगद संगतियना मुनि सार्वभौमंगॆ
केळि मार्कंडेय चरितव हेळिदनु बळिक वरिगिवरनु
बीळु कॊट्टनु होरिसि रसपूरित फलावळिय ॥ 3 ॥
बळिक लिवरा मुनिय विपिन स्थळव कळिदॆदिरु घन मं-
जुळ महीजावळिय कुसुमोत्कर लतावळिय
विलसदभिरंजनॆय राजित निळयवनु बळिकल्लिकंडरु
नळिन नयनार्चितन कण्व महामुनीश्वरन ॥ 4 ॥
ईतगळु नडॆतंद कार्यद दात शर्म दमॆयुळ्ळ मुनिसु-
ज्ञात मुखदिदरिदु मन्निसिदनु नयोक्तियलि
भूतळेंद्रन रामचंद्रन राति कळविनलॊय्द धरणी
जातॆयनु नीव् काविरॆंदवरुगळ वीळ्कॊट्ट ॥ 5 ॥

मुनिश्रेष्ठ मृकंडु के पर्णशाला में उस महर्षि के दर्शन कर लिये। १ इनके शीघ्र आगमन की रीति तथा मानवरूप में अवतरित होकर भूमि का भार उतारने की महाविष्णु की माया नाटकलीला-दर्शन उस मुनि ने समझ लिया। अपने को प्रणाम करनेवाले ब्रह्मपुत्र जांबवान तथा हनुमान वग़ैरः कपिसमर्थ नायकों का उस मुनि ने करुणापूर्ण भाव से आदरातिथ्य किया। २ रामसखा सुग्रीव ने आज्ञा देते हुए जिस कार्य के निमित्त अपने को भेजा है उस कार्य का विवरण ऋषिश्रेष्ठ को उन वानरनायकों ने दिया। इसे सुनकर मुनि ने इनको मार्कण्डेय की कथा सुनाते हुए रस-भरे फलों को मँगवाकर इनको दे दिया तथा इन (कपिसैनिकों) को बिदा किया। ३ उसके बाद कपि-सैनिकों ने मृकंडु महर्षि के आश्रम के उस वन को पार कर मनोहर पेड़ तथा फूलों से लदे लताओं के फैले वन में शोभायमान पर्णकुटी को देखा। वहाँ पर यह भी देखा कि कमलाक्ष श्रीहरि के आराधक कण्व महामुनि विराजमान हैं। ४ इन्द्रियविजेता, मनोनिग्रही उस मुनि ने ज्ञान (तपो)-बल से इनके उपस्थित होने के कार्य का रहस्य समझकर कुशलमंगल वार्तालाप करते हुए उनका आदरातिथ्य किया। "जगत् के अधिपति श्रीराम के शत्रु से अपहृत भूसुता सीता को तुम (शीघ्र ही) देख सकोगे" —इस तरह कहकर उनको बिदा किया। ५

बंदरिवरु समग्र सौरभदिंद मेल्लने सुळिव मारुत
निंद शैत्यद सारतर शिलेयिंद संचरिप
संदणिय खगपुण्य मृगकुल दिंद तरुलते गुल्म निर्जर
दिंद मेरेव महातिशय मलयाद्रि मंडलके ॥ 6 ॥
लवने केळा मलय पर्वतदवनियलि बिट्टुदु बलिमुख
निवह वेणिसिद रल्लि तिंगळ दिवस कुळिदिनव
अवनिजेय सुद्दियनु मिक्किन दिवसदलि नावरिवु दरिदे
हवणिगुत्तर वेनेनुत बेसगोंड नजसूनु ॥ 7 ॥
कळुहिदनु कट्टाज्ञेयलि तिंगळिगे बहुदेंदेन्नने कुरि-
तिळेय तनुजेय सुद्दि तोरलसाध्य विदरोळगे
एलेसरोजज सूनु केळ् कोले निलुवुदेन्नलि हगेय मगने-
दुलुक दिरय्यगे मनदोळगेंद नंगदनु ॥ 8 ॥
निरुतविदु केळज्ज सुगतिगे निरतिशयवनशनवु दुर्गति
गरसुतन दुर्मरणविदु ता शास्त्र सिद्धवले
तेरळुवदु नीवरसुवदु निम्मरस नेमिसिदंददलि ता
निरशनव कैकोंडवनु नीव् बिजय माडेंद ॥ 9 ॥

फिर वहाँ से, सुगंधपरिपूर्ण धीरे-धीरे बहते मंद मारुतयुक्त, ठंडे-ठंडे चट्टानों से भरे, विहार करते पुण्यमृग-पक्षिसमूहसंपन्न, पेड़ों पर फैली लताओं के गुल्मों से तथा पहाड़ों से बहते झरनों से शोभायमान मलय पर्वत प्रदेश में वे वानर पधारे। ६ सुनो लव ! मलयपर्वत प्रदेश में कपि-सेना ने डेरा डाला। फिर गिनने लगे कि माह बीतने में कितने दिन बचे हैं। इन बाकी दिनों में सीता का समाचार पाना आसान नहीं है। —इस प्रकार के निष्कर्ष पर पहुँचकर जांबवंत ने पूछा, "ऐसी परिस्थिति के लिए तुम लोगों की राय क्या है ?" ७ "सुग्रीव ने मुझी को संबोधित करते हुए कड़ी आज्ञा दी थी कि एक माह के भीतर (समाचार प्राप्त कर) लौट आना चाहिए। अब इन बचे हुए दिनों में सीता का समाचार पाना असाध्य-सा हो गया है। अतः सुनिए जाम्बवान्। मेरे कारण अब सबकी मृत्यु होगी। 'यह शत्रु का पुत्र है।' इस प्रकार की भावना (भय) चाचा सुग्रीव के मन में उदित हुए बिना न रहेगी।" —इस तरह अंगद ने कहा। ८ "सुनिए तात। उपवास सद्गति पाने का श्रेष्ठ मार्ग है। राजकुमार (अंगद) का दुर्मरण दुर्गति के लिए मार्ग है। यह सत्य शास्त्र से अनुमोदित भी है। तुम्हारे राजा सुग्रीव के आज्ञानुसार तुम लोग जाकर

नॆलन शोधिसि वरकुशस्थंडिल दलंतर्भाव शुद्धिय-
लळवडिसिदनु नियम मौनद लनशनव्रतव
कॊलसविदु लेसागि तोऱितु सिलुकु रामन राज्य कार्यकॆ
निलुकडॆय दॆनॆंदु चिंतिसिदनु विरंचिसुत ॥ 10 ॥

मरुळला तारॆय तानिरुतिरलु निनगुपहति निधानिसॆ
नॆरॆय बल्लुदॆ कंद रघुराजेंद्र चंद्रमन
करुणकलित प्राणपूरित परम मारुतनिरलु निन्ननु
तरणिसुत कॊल बल्लने काळ्तनविदेकॆंद ॥ 11 ॥

काकुतन दॆणिकॆयनु बिडु लोकैक बलरिदॆ नम्म कटकद
लाकॆवाळ्नु नीनु नमगिदज्ञतन निनगॆ
सोकिते सुप्रौढनॆंद व्याकुलतॆ नमगिहुदु मूर्खतॆ
साकु राजकुमार गिदु ता योग्यवल्लॆंद ॥ 12 ॥

हॊगुव दरिनगरवनु हगॆ कैमिगुव हदननु कंडाजिय
लगधरन मॆच्चिसुवुदळिवुदु समर भूमियलि

सीता का अन्वेषण करो। मैं उपवासव्रत धारण करता हूँ। अतः आप लोग बिदा होइए।" —इस प्रकार अंगद ने कहा। ९ "धरती परिशुद्ध बना, लीप-पोत कर, कुशासन पर परिशुद्ध मन से बैठकर, मौन धारण कर, उपवास व्रत को नियमानुसार स्वीकृत किया। यह कार्य श्रेयस्कर है! राम के राजकार्य की उलझन और उलझ गयी। इसका अंत कैसे हो? भावी जिम्मेदारी कैसे सुलझे!" इस तरह सोचते जाम्बवान् चिंतित हुए। १० "बेटे अंगद! मेरे जीते-जी तेरा अकल्याण कैसे हो सकता है? तू कहीं पागल तो नहीं हुआ? रघुकुलशिरोमणि रामचन्द्र की करुणा सुधा से प्राण भरने की शक्ति रखनेवाले श्रेष्ठ वायुसुत (हनुमान) के रहते क्या सूर्यपुत्र सुग्रीव तेरी हत्या कर सकता है? इस तरह मन छोटा न करो।" इस प्रकार जाम्बवंत ने समझाया। ११ "यह ओछी भावना त्यागो। हमारी सेना में लोकैकवीर हैं। उनमें तू महान वीर है। क्या अज्ञान ने तुझे भी घेर लिया? तू अधिक बुद्धिमान है। यों सोच मैं निश्चिंत था। तुम्हारी मूर्खता की तो हद हो गयी। तुझ जैसे राजकुमार के लिए यह शोभा नहीं देता।" —इस प्रकार जाम्बवान ने समझाया। १२ "शत्रु की नगरी में प्रवेश करें। जब यह मालूम हो कि शत्रु हमारी पहुँच के परे हैं तो शिवजी को प्रसन्न कर लें। नहीं तो युद्धभूमि में प्राण त्याग दें। अपना युद्ध सामर्थ्य प्रकट कर प्राण त्यागनेवाले पक्षिराज जटायु

खग कुलेंद्र जटायुविन संयुग समर्थन सावुसुररिगे
सोगसदे संकल्पविदु ता योग्य वल्लेंद ॥ 13 ॥
मातनिद केळिदनु कलिसंपाति किविगोट्टळिदने सह-
जात नकटेनुतंतरंग व्यर्थेय मरुकदलि
ईतगळु तावारो येनुतिन सूत सुत मुरिदेळ लुरुळितु
भीतियलि भटनिकर बीळुव गुंडिनंददलि ॥ 14 ॥
एंद्दुदो गिरियेंनुत नेलदलि बिद्दभट रिब्बरिसे मेल्लने
होद्दिदनु जांबवन केळुत हेसरनरुण सुत
होद्दिदने सुरपुरद सुरपन गद्दुगेयनु जटायुवारि
दिद्दुदो सहजात शोकद नोवु तनगेंद ॥ 15 ॥
अनुजनेनगे जटायु सावेंतनु कोळिसि तारिद लेनलज
तनुज तद्वृत्तांतवनु सूरियन सारथिय
तनय गेल्लव नोरेदु ताव् बंदनितनुसुरलु शोकरसदलि
नेनेदु मरुगिदननुज नळिविगे वीर संपाति ॥ 16 ॥
संतविसिदनु जांबवनु विक्रांत विहगेश्वरन चित्तद
चिंतेयनु बिडिसिदनु नुडिसिदना खगेश्वरन

की मृत्यु से क्या देवता प्रसन्न नहीं होंगे ? तुम्हारा यह निर्धार योग्य नहीं है।" इस प्रकार जाम्बवंत ने कहा। १३ इन बातों को वीर संपाती ने बड़े ध्यान से सुना। वह मन ही मन व्याकुल हो— "हाय मेरे भैया ने प्राण त्यागे !" कहते चटपटाने लगा। "पता नहीं ये कौन हैं ? इस तरह विचार करते सूर्यसारथी का पुत्र संपाती अँगड़ाई लेते उठने लगा तो अपने शरीर पर मानों गोलियाँ गिरीं हों —इस रीति से कपिसैनिक डर के मारे लुढ़कने लगे। १४ 'शरीर पर जैसे पहाड़ ही टूट पड़ा हो' —इस प्रकार से भयभीत, धरती पर लुढ़क पड़े कपिसैनिक चीखते चिल्ला रहे थे तो संपाती— 'तुम्हारा नाम क्या है ?' —इस तरह पूछते-पूछते धीरे-धीरे जाम्बवंत के नज़दीक पहुँचा। "क्या जटायु अमरावती के देवेन्द्र के सिंहासन पर (स्वर्गस्थ) आसीन हुआ ? मेरे सगे भाई की मृत्यु की वेदना मुझे किसके कारण सहनी पड़ रही है ?" इस तरह उसने पूछा। १५ "जटायु मेरा सगा भाई है। उसकी मृत्यु किससे, क्योंकर हुई ?" इस प्रकार (संपाती के) पूछने पर ब्रह्मपुत्र जाम्बवंत ने वह सारा वृत्तांत सूर्य-सारथी के पुत्र संपाती से कहते हुए अपने आने का कारण समझाया। भाई की मृत्यु का समाचार सुनकर वीर संपाती शोक से अत्यंत संतप्त हुआ। १६ पक्षियों के अधिपति वीर संपाती को जाम्बवंत ने सांत्वना दी।

अंतु निनगी पक्षपतन श्रांति समनिसिताव निंदेने
कंतुहर चरणार्चितनु जांबवरिगिंतेंद ॥ 17 ॥
सुरर सभेयलि तन्न तम्मनु गरुडनलि गर्विसि मनो म-
त्सरद हम्मिन सोलगेलविन सुप्रतिज्ञेयलि
तरणि बिंबव तुडुक लभ्रके चरिसिदनु समगैयलनुजन
परिय नरियलु बारदेनु तैदिदनु वेंबळिय ॥ 18 ॥
सरसिजासन सूनुकेळ् तरहरिके गोंबुदे तरणिकिरण
स्फुरणेयलि मरेमाडिदेनु तम्मंगे पक्षगळ
मुरुटिदवु तन्नुभय पार्श्वद निरतिशय पक्षगळु पतनवु
दोरकिदुदु बळिकंदु पारावार तीरदलि ॥ 19 ॥
अरुण नीगेम्मय्य नातन करुणदलि पशुपतिय चरण
स्मरणेयलि साविल्ल दुळिदेनु सलहि सहभवन
मरण तम्मनि गागलंतःकरण मरुगदे बिडुवुदे हरि
शरणजन चूडामणिये केळेंद नरुणसुत ॥ 20 ॥
मूडिदवु गरि बळिक पूर्वद गाडिकेगे गुरुवेनिसि दैत्य वि-
भाडपद सेवकर संदरुशनद सोगसिनलि

उसके मन की व्यथा दूर करते हुए उससे जाम्बवंत ने पूछा— "तुम्हारे पंख कैसे टूट गये ? ये किसने तोड़े ?" तब उत्तर में शिवचरण-कमलाराधक संपाती ने वह सारी घटना जाम्बवंत को सुनायी। १७ एक बार, देवताओं की सभा में मेरा भाई जटायु अपने घमंड के कारण गरुड़ से स्पर्धा करने पर उतारू हो गया। 'स्पर्धा में कौन हारता है ? कौन जीतता है ? देखें।' इस तरह मात्सर्यवश तथा घमंड के कारण प्रतिज्ञा कर बैठा। सूर्यबिंब को धर पकड़ने गरुड़ की बराबरी करते आकाश को उड़ा। भैया के इरादे से अनजान मैं उसके पीछे-पीछे उड़कर उसी का अनुसरण करने लगा। १८ हे ब्रह्मपुत्र जाम्बवंत ! सुनो। 'सूर्यकिरणज्योति को मेरा भाई कैसे सह सकेगा ?' —यों सोच मैंने अपने पंख फैलाकर उसके लिए छाया बनायी। तब मेरे दोनों पंख (उस प्रखर उष्णता के कारण) झुलस गये। मैं (फलस्वरूप) समुद्र किनारे गिरा। १९ अरुण हमारे पिता हैं। उसकी कृपा से तथा शिवध्यान के कारण बिना मरे, जीवित रहकर भाई (जटायु) का पालन-पोषण किया। ऐसे मेरे भाई की मृत्यु का समाचार सुनकर रोए बिना कैसे रहा जा सकता है ? शरण आये वानरों के लिए, हे चूड़ामणि (जूड़े का मणि) स्वरूप ! सुनो। —इस तरह संपाती ने कहा। २० दैत्यारि श्रीराम

ईडिरिद पक्कदलि सेनेय सूडि तंदिळुहिदनु नायक
वाडिगळु सहितुब्बुरिव सागरद तीरदलि ।। 21 ।।
बळिकला संपाति सलिलांजलिमृत स्नानादि कर्मव
जलनिधियले माडि मेलण तागुबागुगळ
तिळुहि लंकापुरद सरणिय होलब तोरिसि बीळुकोंडनु
कलि सुपार्श्व समेत वरमानस सरोवरके ।। 22 ।।

हन्नेरडनेय संधि

सूचने— रायराघवसतिय सरसिरुहायताक्षिय दरुशनके कपिरायकटक पितामहनु कळुहिदनु पवनजन ।

केळिदै काकुत्स्थ धरणी पालसुत रविसूत तनुजन
बीळुकोंड बळिक्क सारिदरिवरु सागरव
मेलुमददुब्बिनलि घनकल्लोलगळ बलुसुळिय सडगर
देळिगेय सीकर कदंबदिने सेदुदंबुनिधि ।। 1 ।।
ओट भरतद भरवसद होय्लाटदुरु लहरिगळ लळिगळ
तोटिगळ पाटीन मकरजलेभ दुब्बिनलि

के चरण-सेवकों के संदर्शन के कारण संपाती के बड़े सुन्दर पंख पहले के जैसे निकल आए। अपने भरे पूरे पंखों में कपिनायकसमूह-सहित वानर-सेना को ढो लेते हुए (उसे) घनघोर गर्जना करते समुद्र किनारे लाकर (संपाती ने) उतार दिया। २१ तदनंतर समुद्र में स्नान कर भाई की मृत्यु के सूतक (अशौच) से मुक्त हुआ। तर्पण आदि कर्मों को संपन्न बनाया। भावी (भविष्य) की होनी अनहोनी बताकर, लंका नगरी का मार्ग निर्देशन देकर, उनसे बिदा लेकर वह वीर अपने सशक्त पंखों के बल पर मानससरोवर की तरफ़ उड़ा। २२

बारहवीं संधि

सूचना— रघुराम की पत्नी कमललोचना सीता के दर्शन कर आने के लिए कपिकुलपितामह जाम्बवंत ने हनुमान को भेजा।

हे ककुत्स्थवंशज राजा राम के पुत्र ! कथा तो सुन रहा है न ? सूर्य-सारथि अरुण के पुत्र संपाती से बिदा लेने के उपरांत कपिनायक समुद्र के नजदीक पहुँचे। बड़ी भारी लहरें, भारी-भरकम भँवर तथा अत्यधिक तुषारों के कारण मदमत्त समुद्र सामने शोभायमान था। १ ज्वार के कारण उमड़ते-घुमड़ते गिरती लहरों की मस्ती, किनारे आकर डपटते तरंगों

दूटि गगनकें चिगिव मुक्ता स्फोटकद गंभीर सबुदद
घाट मुद्रित रौद्रदिंद समुद्र रंजिसितु ॥ 2 ॥
नोडिदनु जांबवनु जलधिय झाडणेय जंगाय्ल रभसद
जोडणेय गगनाव लंबित गतिय गरुविकेय
घाडणेय मा मायेनुत्तल्लाडि मूर्ध्निय मुरिदु सुभटर
नोडि बळिकी मातनेंदनु मधुरवचनदलि ॥ 3 ॥
आवनिद दांटुवनु दांटलु मावधूवल्लभगें तीरदु
रावणासुर नगर तानी कडल मध्यदलि
देव निकरकसाध्य गड नम्मी वनौकस भटरोळगें हो-
क्कावनै मरळुव महात्मनेंनुत्त चिंतिसिद ॥ 4 ॥
जीय चिंतेयिदेकें केळ् चितायकनु नीनिरलु निन्न स-
हायदलि सागरवकुडिव समर्थरिदें नोडु
ईयजांडव नुंगि नोणेवसहाय शौर्य समग्रबल समु-
दायविदें बेससेंदु वालिकुमार कैमुगिद ॥ 5 ॥
केंदरिकोंडरु भटरु कल्पांतद सिडिलुगळ सडगरदवोलु
मदद वीरावेश रोषोच्छलित चापळव

की, लहरों की जोरी तथा मगरमच्छ और पानी के हाथियों के मिलाप का शोरगुल, आकाश की ओर उछलते लहरों से फूट पड़ते मोतियों की शोभा वग़ैरह गंभीर शब्दों के कारण वह समुद्र अपना रौद्ररूप ही प्रकट कर रहा था। २ (उस) समुद्र की उत्ताल ताल-तरंगों का कोलाहल भयानक स्वरूप, आकाश की तरफ़ उछलती भारी-भरकम तरंगमालाएँ, इन सबको देख जाम्बवान ने— "वाप रे बाप" कहते हुए अपनी प्रशंसा प्रकट की। फिर पीछे मुड़कर कपि वीरों की तरफ़ देखते हुए मीठी-मीठी बातों में यों बोले। ३ "कौन इस समुद्र को लाँघ सकता है? लक्ष्मी-पति के लिए भी यह असाध्य है। इस समुद्र के मध्य में विराजमान रावणासुर की नगरी देवताओं की पहुँच के परे है। जाम्बवान चिंतित हुए कि हमारे इन वानरवीरों में लंका पहुँचकर लौटने की शक्ति रखनेवाला महात्मा कौन हो सकता है?" ४ "हे स्वामिन्! चितापरिहारक जब तू है तो चिंता किस बात की? तेरी सहायता से सारे समुद्र को पी जाने की शक्ति रखनेवाले समर्थ तो हैं ही। इस (सारे) ब्रह्मांडमंडल को निगलकर, ऊपर पानी गटगटा जानेवाले असहाय शूरों की समस्त सेना यहाँ है? आज्ञा कीजिए।" इस प्रकार अंगद ने हाथ जोड़ प्रार्थना की। ५ प्रलयकालीन बिजली की गर्जना के सदृश वीरावेश से उकसाये गये उन

उदधियनु हेळदिरु हगॆवन कदनवनु हेळदिरु जांडद
तुदिय लुंटे कॆलस हेळदनॆंदरुब्बिनलि ॥ 6 ॥
हो हॊ सैरिसि निम्मवॊलु बलु साहसिग रारुंटु सुभट
व्यूहदलि भुवनत्रयद सुरनर भुजंगरलि
बेह भटरहुदादडॆयु निर्वाह शक्तिय सॊबगु बेरिहु-
दा हदन कॆळिदडॆ हॆळुवॆनॆंदनजसूनु ॥ 7 ॥
अरुस बेकणुवागि रक्कसररिय दंतिरॆ रात्रियलि मे-
णरितरादडॆ विलयरुद्रन रौद्ररंजनॆय
मॆरॆय बल्लवनाग बेकॊळगरिदु कार्यव काब कुशलद
तॆरन बल्लतिशयद कृतमुख नाग बेकॆंद ॥ 8 ॥
नुडिय बल्लवनाग बेकॊळ गुडिदु विश्वासदलि सीतॆगॆ
पॊडविपन मनदनुभवोचित ललित भाषितव
तॊडकलरिभट पुरवनॊम्मिगॆ सुडलु बल्लवनागबेकिनि
तॆडॆयनरिव समर्थरुंटे हेळि नीवॆंद ॥ 9 ॥

गर्वित कपिवीरों में वीररस उमड़ने लगा— "समुद्र से विनती मत कीजिए। शत्रु से हमारी रक्षा की याचना मत कीजिए। ब्रह्मांड की नोक पर अगर हमारा कार्य हो तो कहिए।" इस तरह कहा। ६ उनका उत्साह उमड़ता ही गया। "ओ हो हो ज़रा सँभल जाओ। देव, मानव, पाताल —तीनों लोकों में तुम्हारे-सदृश असदृश वीर कहाँ हैं ? साहसी कहाँ हैं ? सचमुच तुम बड़े शूरवीर हो। फिर भी इस अवसर पर कार्य-निर्वाहक शक्ति की रीति थोड़ी सी भिन्न है। अगर सुनना चाहो तो बताऊँ।" इस प्रकार जाम्बवान ने कहा। ७ "रात्रि के समय अणुरूप धारण कर सीता का अन्वेषण इस प्रकार करना चाहिए कि राक्षसों को मालूम ही न पड़े। अगर कहीं राक्षसों को मालूम हो जाय तो अन्वेषक को चाहिए कि प्रलय-कालीन रुद्र का भयानक रूप धारण कर विपत्ति का सामना करे। रहस्य को समझकर बड़ी चतुराई से कार्य-निर्वाहक चतुर (उसे) होना चाहिए।" —इस प्रकार जाम्बवान ने कहा। ८ उस चतुर को चाहिए कि गुप्त रीति से अंदर प्रवेश कर, स्वामी श्रीराम के अनुभवसंपन्न सुन्दर सन्देश, सीता को अपने विश्वास में लेते हुए, समझा दें। शत्रुवीर सामना कर बैठे तो एक साँस में शत्रु की राजधानी जला डालने की शक्ति उसमें होना अनिवार्य है। —इन सब बातों को समझनेवाले शक्तिसमर्थ यदि कोई तुममें है तो सामने आए।" इस प्रकार (जाम्बवान) ने पूछा। ९

जीय जवनिकॆ येकॆ नीवॆंदीय शेषगुणंगळा का-
त्यायिनी पतिगुंटु मगुळॆरडनॆय लॆणिसुवरॆ
वायु तनु जंगुंटु मिक्किन नायकर दंतिरलि नम्मी
रायकटक दॊळॆंदु वालिकुमार कैमुगिद ॥ 10 ॥
मनकॆ बंदुदु तन्न चित्तद नॆनहिनतु बंधतॆगॆ मातदु
कॊनॆवॆरळ तुप्परिसि कॊंडाडिदनु वालिजन
ॲनितु चिक्कव नादडॆयु कपि जनप सूनुवला विवेकद
नॆनहु लेसॆंदुळिद वीरर मॊगव नीक्षिसिद ॥ 11 ॥
तप्पदी युवराज नाडिद कप्पुदोरद मातु हनुमं-
गुप्परद भटरुंटॆ नम्मी रायकटकदलि
ऒप्पिदॆवु लेसागि वासिय वॊप्पविन्नॆनॆमगॆ निम्मडि
योप्पिदी मलवॆम्ममतवॆंदुदु भटस्तोम ॥ 12 ॥
लेस नाडिदरॆंदु हॊगळिद ना सुभटरनु वीर हनुमन
शैशवद साहसद शौर्यव नॊरॆद ननिबरिगॆ

तब वाली के पुत्र ने (अंगद ने) हाथ जोड़े प्रार्थना की— "स्वामी, इसमें दुराव-छिपाव से काम कैसे चले ? आपके बताए ये सारे गुण (शक्ति) गिरजापति (शिवजी) में है। उन्हें छोड़ हमारी इस सेना के, सिवा हनुमान के, अन्य किसी में, किसी सेनानायक में भी ये गुण पाना असंभव है। [सिर्फ़ हनुमान ही इन गुणों से तथा शक्तियों से संपन्न हैं——यही भाव है।] १० अपने मन की बात वालीपुत्र के मुँह से सुनकर जाम्बवान अत्यन्त प्रसन्न हुए। उँगली उठाकर वाली-पुत्र अंगद की भारी प्रशंसा की। "कितना ही छोटा (उम्र में) क्यों न हो, आखिर वानरराज का पुत्र ठहरा न ? विवेकपूर्ण बातें उसको शोभती है।" इस तरह कहते हुए जाम्बवान ने अन्य वानर वीरों की तरफ़ देखा। ११ (तब) अन्य वीरों ने कहा— इस युवराज से कथित कलंक-रहित बातों में एक भी ग़लत नहीं है। हमारी इस सेना में हनुमान से बढ़कर उन्नत वीर और कौन है ? हम सभी अंगद की इन बातों से, जो सुचारु हैं, बिलकुल सहमत है। आपके लिए मान्य यह राय हमारे लिए भी संपूर्णतया मान्य है। १२ "तुम लोगों ने सच्चाई की ही पीठ थपथपाई है। धन्य हो तुम लोग।" इस तरह उन वीरों की प्रशंसा करते हुए जाम्बवान ने वीर हनुमान की बाल्यकाल की साहसपूर्ण वीरश्रीसपन्न सभी घटनाओं का परिचय उन वीरों को कराया। "यह वायुपुत्र हमारे हृदयों में निवास करनेवाले मारुत ही हैं। ब्रह्मा-विष्णु-महेश की असंतुलित केवल वाक्य नहीं, यह

ई समीरजनीग हृदयनिवास मारुतनज हरीश्वर
रोसरद बरिमात दल्लिदु वेदमतवेंद ।। 13 ।।
कंद बा कड्ुगलियें बा नावेंद मातनु केळिदै नि-
न्निद मेरेवुदु कीर्तिरामन राजकारियद
संद भटरिदें येतरव नानेंदु नुडियदें गुरुविनाज्ञेयि-
देंदु कैको पयणवागेळेंदनजसूनु ।। 14 ।।
बळिगें करेंदे कांतदलि भुजबलगें नुडिदनु मोदलले मै-
थिळेयनरि कोडु राघवेंद्रन राजमुद्रिकेय
बळिक लंकाधिपन मनदळ बळव तिळि कापेयतनद-
ग्गळिकेयनु नेरे बळस दिल्लिगें बेग बायेंद ।। 15 ।।
दिवस मूरवें मूरु दिनदोळ गवनिजेशन चरण सरसिरु-
हवनु काणलु बेकु सुग्रीवाज्ञेयिदु नमगें
हवण नीने बल्ले नाविद विवरिसलु नीनज्ञनेयें-
दविरळद हरुषदलि हरसिदु कळुहिदनु कपिय ।। 16 ।।
मणिद नंघ्रिगें हनुमना द्रौहिणिय मिक्किन यौथनाथा
ग्रणिगळिगें कैमुगिदु बीळ्कोंडनु सरागदलि

वेद-वाक्य है।" इस प्रकार जाम्बवान ने कहा। १३ "मेरे बेटे! इधर आ; हे वीरवर! इस तरफ़ आ। हमने जो बातें कहीं वे तो सुनी ही होंगी न? तेरे कारण ही राम के राज्यकार्य की कीर्ति-कौमुदी जगमगाएगी। वैसे तो यहाँ अनेक वीर है। "मुझ अकिंचन से क्या हो सकता है?" इस तरह न कहते–– इसे गुरु की आज्ञा मान, स्वीकारते हुए यात्रा की तैयारी कर, उठ खड़े हो जाओ।" इस प्रकार ब्रह्मपुत्र जाम्बवान ने कहा। १४ जाम्बवान ने हनुमान को पास बुलाकर एकांत में लेते हुए उस वीर से यों कहा—"सबसे पहले सीता का अन्वेषण कर राम की राजमुद्रा (अंगूठी) प्रदान करो। उसके बाद लंका के राजा के मन की थाह लगाओ। कपि-सहज उधम, चंचलता प्रकट न करते जहाँ तक हो सके शीघ्रातिशीघ्र लौट आओ।" १५ "केवल तीन दिन की अवधि बाकी है। इन तीन दिनों के अंदर प्रभु (श्रीराम)-चरण-कमलों के दर्शन कर लेने चाहिए। यह सुग्रीव की कठोर आज्ञा है। इसको कैसे सफल बनाना चाहिए —यह तुम्हीं जानते हो। क्या तू इतना नासमझ है कि हम इसे फिर एक बार तुम्हें समझा दें।" इस तरह कहते खुशी-खुशी हनुमान को आशीर्वाद देते भेज दिया। १६ हनुमान ब्रह्मकुमार जाम्बवान के चरणों में नतमस्तक हुए। अन्य सेनानायकों

गुणनिधिय रघुवंश चूडामणिय राक्षस कुलतमोदिन
मणिय नेनेंदडियिट्ट नुरुविक्रांत हनुमंत ॥ 17 ॥
बरुत कंडनखंड बलनंबर विलंबित मेघमार्गा-
तरद शिरद महेंद्रवेंसर महामहीधरन
गिरियिदहुदेंदंघ्रि तळदुव्वरकें तप्पिल्लेंनुत विक्रम
भरितनैंदिदना त्रिविक्रमनंतें झडितेंयलि ॥ 18 ॥
अडिगेंयोजन योजनव मेंल्लडिगें बेंळवुत बंदनिळें कॆळ
कडेंगें योजन योजनव तग्गिदुदु निर्गमकें
कडलु कंपिसुतिर्दुदहिपन हेंडकु बारिसुतिर्दुदद्रिग
ळोडवु तिर्दवु देंसेंगळेंटर धरणिधारणद ॥ 19 ॥
बंदु निंदिदना महाद्रिय मुंदें लयभैरवन भारणें
यंददलि बहळित भयंकर रौद्र तेजदलि
मंदराद्रिगें मिगिलेंनिसुव महेंद्र पर्वतकागि कंड्डुदु
वृंद वृंदारक वधूजन वनिल नंदनन ॥ 20 ॥
वीर धीरोदात्त राजकुमार केळा पर्वताग्रद
चारणरु चदुरेंयरु सिद्धरु मुग्धेंयरु कपिय

को प्रणाम कर उनसे बिदा लेते हुए चल पड़े। गुणनिधि रघुवंश चूड़ामणि (शिरोमणि) राक्षसकुल रूपी अंधकार को मिटाने में सूर्य-सदृश राम का ध्यान मन ही मन करते हुए महाबलशाली हनुमान ने क़दम बढ़ाया। १७ अत्यंत बलशाली हनुमान ने आते-आते देखा कि महेन्द्र महापर्वत मेघों को रोके आकाश तक सिर उठाए खड़ा है। वह सोचने लगा कि 'ठीक ही है, इस पर चरण दाबे खड़े रहकर उड़ान भरने के लिए यह पर्वत अत्युपयुक्त है।' इस प्रकार विचार करते त्रिविक्रम की तरह पराक्रमी हनुमान शीघ्रगति से आये। १८ जैसे-जैसे हनुमान चल रहे थे, उनके एक-एक (चरण) चाप पर योजन-योजन चरण-चिह्न बढ़ने लगे। उनके चरण-तल के भार से धरती योजन-योजन भर धँसकर नीचे गयी। सागर काँपने लगे। आदिशेष का माथा ठनका। धरती के आधारस्तंभ आठ दिशाओं के पहाड़ फूटने लगे। १९ प्रलयकालीन भैरव-सदृश, महा भयानक उग्र तेजस्विता से संपन्न हनुमान उस पहाड़ के सम्मुख आकर खड़े हो गये। मंदार पर्वत से बढ़कर विराजमान उस महेन्द्र पर्वत पर निवास करनेवाले देव-देवतासमूह ने वायु-सुत को देखा। २० हे महान् धैर्यशाली लव! सुनो। उस पहाड़ की चोटी पर निवास करनेवाले चारण, देवता-स्त्रियाँ, सिद्ध तथा मुग्ध स्त्रियों ने इस कपि के भयानक आकार

भैरवाडंबरकॆ बॆदरिदु दारिदॆगॆडुदु सुरपुरकॆ के-
ळीरमण रॊडगूडि गगनद गतिय घाडदलि ॥ 21 ॥
सरिदरा बॆंबळिय गंधर्वर वधुनिकुरुंब केळी
सरसिगळ नुळिदोडितल्लिय किन्नरी निवह
वरलतांत चयापचयदप्सरियरडगिदरखिळ विद्या-
धरियरगलकॆ हाय्दरीक्षिसि पवन नंदनन ॥ 22 ॥
गिरिगॆ कालिक्किदॆडॆ कंपिसितॆरडु मैयलि शैलवद कं-
डरिदॆ हाय्दवु मुरिवडॆदु मदकरिगळगलदलि
करभ कडवम्मावु केसरि शरभ सैरिभ हुलि करडि हॆ-
म्मरॆय हिंडोड दोडिदवु दॆसॆदॆसॆगॆ भीतियलि ॥ 23 ॥
ऒत्ति कालिड लॊडनॆ गिरि तलॆगुत्तु तिर्दुदु तोरमरगळु
कित्तु हारुतलिर्दुवंबर मणिय नणॆदणॆदु
नॆत्तियग्रद तोरगुंडुरु ळुत्तलिर्दवु जलधि यडिमळ
लॆत्तु तिर्दुदु गुम्मिरिदु गुडियिरिदु गुळ्ळॆगळु ॥ 24 ॥
एरिदनु पर्वतव नरॆनलॆ गूरित वनियॊळद्रि वामन
नेरलुदय महाद्रि तग्गिदुदिल्ल पूर्वदलि

से डरकर क्रीड़ा में व्यस्त अपने प्रियतमों के साथ, हड़बड़ाकर देवलोक की तरफ़, आकाशमार्ग से पलायन किया। २१ उनके पीछे-पीछे गंधर्व-स्त्रियाँ भी भाग गयीं। किन्नर-स्त्रियाँ क्रीड़ा सरोवर त्याग भाग खड़ी हुईं। फूलों को चुनती हुई अप्सर-स्त्रियाँ छिपकर बैठ गयीं। समस्त विद्याधर-स्त्रियाँ हनुमान को देख दिशि-दिशाओं में भाग खड़ी हुईं। २२ हनुमानजी ने जब उस पहाड़ पर पग धरा तो पहाड़ के दोनों पक्ष (तरफ़) काँपने लगे। यह देख मदोन्मत्त हाथी तितर-बितर हो जिधर-तिधर भाग खड़े हुए। हाथी के बच्चे, बारहसिंगे, जंगली गाय, शेर, चीता, भैंसा, बाघ, रीछ, बड़े-बड़े हिरन के झुंड के झुंड तितर-बितर होकर मनमाने जिधर-तिधर भाग खड़े हुए। २३ हनुमान ने दबाकर जब अपना चरण धरा तो पर्वत का सिर झुक गया। बड़े बड़े पेड़ जो उखड़ गये तो वे आकाश में उड़कर सूर्य से टकरा गये। पहाड़ की चोटियाँ कट-कटकर नीचे लुढ़कने लगे। बुदबुदे झुंड के झुंड जो उठे समुद्र के तले की रेत ऊपर उठी। २४ "हनुमान जब पहाड़ पर चढ़ने लगे तो वह पहाड़ आधा धरती में धँस गया। पूर्व में जब वामन उदय पर्वत पर चढ़े थे तब पहाड़ धँसा नहीं था। तीनों लोकों में ढूँढने पर हनुमान-सदृश कोई नहीं था। हनुमान से बढ़कर महावीरों को पाना

मूरु लोकदोळॆणिसॆ सरियनु तोऱलप्रति हनुम हनुमन
मीरुवग्गद भटरु हुसि कुश केळिदॆयॆंद ॥ 25 ॥
अंदिळॆय नळॆदा त्रिविक्रम नंद किम्मिगिलॆनलु बॆळॆदनु
कंद केळ् शिरदरुण मणियंतिर्दु दिन विंब
मंदविसि तुरुगिर्द तारावृंद पूजॆय पुष्पगळ परि-
यिंद लिर्दवु हेळलेनद पवन नंदनन ॥ 26 ॥
बाल विर्द्दु विमल सुमनो शैल वळयदल वनिगिळिद सु-
रालयद बांदोऱॆय तॆऱन वॊलजना सुतन
लोल कुंडल चंद्र सूर्यर सोलिसुत लिर्दवु वळिक्के
वेळुवॆनु बलिदंघ्रियनु भुजवॊय्दु वॊब्बिऱिद ॥ 27 ॥
मॊदल बॊब्बॆगॆ विसजसंभव बॆदऱि विद्दनु हनुमनॆरडनॆ
यदट सिंह ध्वनिगॆ शिव विसुटनु गजाजिनव
मुदद मूऱनॆयब्बरकॆ कॆंदरिदवु मेलण जगद जोडिग
ळद्भुत विदेनॆनुत नॆरॆदुदु सकल सुरकटक ॥ 28 ॥
कंडनी पवमानसुत दोर्दंडबल बलवैरि रिपुवे-
तंड कंठीरवन रक्कस राय पुरवरव

असत्य ही है। सुनो कुश।" इस तरह वाल्मीकि ने कहा। २५ पूर्व में विष्णु ने त्रिविक्रम अवतार धारण किया था तो जितना बड़ा रूप उन्होंने धारण किया था उससे दुगुना रूप धारण कर हनुमान ब्रह्मरूप धारण कर खड़े हुए। सूर्यबिंब उनके माथे के लाल रत्न की तरह चमकने लगा। आकाश भर में झुंड के झुंड फैले नक्षत्र मानों हनुमान को पूजित पुष्प की तरह शोभायमान थे। उनका वर्णन किन शब्दो में करें? २६ मेरुपर्वत से धरती पर उतरी देवगंगा नदी की तरह हनुमान की पूंछ शोभायमान थी। उनके कानों की सुन्दर बालियाँ सूर्य और चन्द्रमा की शोभा से बढ़कर थीं। खम ठोंककर खड़े रहकर भुजाओं को ठोंके हनुमान ने जो चीख लगाई— उसका वर्णन किन शब्दों में करें। इस तरह वाल्मीकि ने कहा। २७ हनुमान जब पहली बार चिल्लाये तो ब्रह्माजी चौंक पड़े। दूसरी बार के ज़बर्दस्त सिंहनाद के कारण शिवजी ने अपने पहने गज-चर्म को फेंक दिया। खुशी के मारे तीसरी बार (हनुमान के) चिल्लाने पर ऊपर के (सप्त) लोक डांवाडोल हुए। इस अद्भुत कौतुक को देखने देवतागण इकट्ठे हुए। २८ (अपने) बाहुबल में बलासुर के लिए इन्द्र-सदृश, प्रबल शत्रु रूपी हाथियों के लिए सिंह-सदृश राक्षसराजा की नगरी को हनुमान ने देखा। अपनी (इस) महायात्रा के लिए यह

कंडिदैसले मनदोळाव् कैकोंड गमनकिदल्पवेंनुतरि
गंडभैरव चुबुकिरिदु चप्परिसिदनु भुजव ॥ 29 ॥
दाटुवेंनु कडलेळनवनिय मीटि सप्तरसातळद तुदि
गोटेंगिळिवेंनु मेणु कमल भवांड मंडलद
कोटरव बगिदडरुवेंनु कालाटकिदुवेंय लक्ष्यवेंनुता
स्फोटनेंय लौडगिदु हलुमोरे दोलेंदनवयवव ॥ 30 ॥
अडियिडलु मदवारणद कालडिय कुंबळदंते रक्कस
गडण वजिगिजियागदिरदवनिजेंय काबेंणिकें
कडेंगे निललरियदु निरर्थकें तोडक बहुदेंनगजतनुज नुडि-
दडकवे निजराजकार्यकें राजपथवेंद ॥ 31 ॥
ऎंनुत मुन्निन तन्न निज संहनवनें कैकोंडु कमला-
सन सुरेंद्राद्यखिळ लसुरसंदणिगें कैमुगिदु
मनदोळधिराजेंद्र चंद्रन वनरुहांघ्रिय नेंनेंदु तंदेंगे
विनमितानन नागि गमनोद्योग गमनाद ॥ 32 ॥
कैगळनु तत्पर्वताग्रद मेगें बलिददियूरि तनुवनु
तूगलिळे सेंळेमंचद वोलोलेदुदु निहारदलि

(नगरी) अकिंचन मानते हुए शत्रुवीरों के लिए भैरवस्वरूपी हनुमान ने बड़ी ही स्फूर्ति से अपनी भुजाएँ ठोंकी। २९ "सप्त समुद्रों को पार करूँगा। धरती को चीरकर सप्त-पातालों के शिखर पर उतरूँगा। ब्रह्मांड को चीरकर अन्दर प्रवेश करूँगा? मेरे भ्रमण का, क्या यह लक्ष्य है?" इस तरह सोचते दाँत-ओंठ मींचकर उन्होंने दाँतों को कटकटाते अपनी देह को डोलायमान किया। ३० "मदोन्मत्त हाथी के पैर-तले दबे कद्दू की तरह मेरे चरण-तले दबकर राक्षससमूह चकनाचूर हुए बिना न रहेगा। लेकिन सीता को ढूँढ़ने का मेरा उद्देश्य सफल न होगा। यह महान कार्य निरर्थक सिद्ध होगा। जाम्बवान के आदेश के अनुसार सूक्ष्म रूप धारण कर रहना ही राजकार्य के लिए श्रेयस्कर है।" इस प्रकार हनुमान ने सोचा। ३१ इस तरह सोचकर अपने शरीर को पूर्ववत् परिवर्तित करके, ब्रह्मा-इन्द्रादि देवताओं को हाथ जोड़कर प्रणाम कर, मन ही मन राजाधिराज श्रीरामचन्द्र के चरण-कमलों का ध्यान करते अपने पिताजी को प्रणाम कर रवाना होने के लिए उद्युक्त हुए। ३२ हनुमान ने पहाड़ की चोटी पर हाथ टेके, अपने चरणों को धर दबाया; फिर देह को जब वे झुलाने लगे तो धरती झूले की तरह झूलने लगी। हनुमान

सूगुरिसॆ तुदिवालवमरर तूगुगळ कहळॆगळ हरॆगळ
तागुगळ तनि हरुषदलि हारिदनु हनुमंत ॥ 33 ॥
अद्दुदतळकॆ गिरि समीरज नॊद्दु हारिद पदहतिगॆ सिडि
दॆद्द जलधिय जलदॊळुरॆ मुळगिद्दु सुरकटक
ऒद्दुकॊंडवु धरणियनु हॊत्तिदॆ दंतिगळहिप कूरुम
रुद्दुरुटतन वॆल्लियॆनाय्तरियॆ नानॆंद ॥ 34 ॥
सुगिदु तत्पर्वतद तरुगळु चिगिदु हाय्दवु वळियलबुधिय
नॆगळुगळु मीनुगळु नीरानॆगळु मॊसळॆगळु
बॆगड़ु गॊंडोडिदवु सुरबलवगिदु पूमळॆगरॆदरनिलन
मगन महिमॆगॆ मदनहर नल्लाडिदनु शिरव ॥ 35 ॥
हरसिदरु चतुरास्य नमरर तरुणियरु सूसिदरु सेसॆय
सुरमुनिगळा घोषिसिद रुब्बिदरु दिगधिपरु
तॊरवॆ यधिपति राय नरकेसरिय लीला चरितविदॆला
हरयॆनुत नारदनु नलिदाडिदनु गगनदलि ॥ 36 ॥

॥ किष्किधाकाण्ड समाप्त ॥

की पूंछ की नोक ने आकाश को जब दिग्भ्रम में डाला तो देवताओं ने बाजे तथा डफ बजाना शुरू किया। तब हनुमान ने अत्यंत उत्साह में एक छलाँग मारी। ३३ वायुसुत लात मारकर जो (छलाँग ले) उड़ा तो उस धक्के से पर्वत अधोलोक की तरफ़ धँसा। आकाश में उड़े समुद्र के पानी के छींटों के कारण वहाँ के देवता पानी में डुबकियाँ लेने लगे। धरती को धारण करनेवाले अष्ट (आठों) दिग्गज डर के मारे काँपने लगे। आदिशेष, धरती को पीठ पर धरनेवाला कछुआ— कहने लगे कि यह गड़बड़ कहाँ की है और कैसी है— हम नहीं जानते। ३४ पहाड़ पर के पेड़ टूटे तो दोनों तरफ़ फेंके गये। सागर का मगर, मछली, पानी के हाथी डर के मारे भाग खड़े हुए। देवताओं ने डरकर पुष्पवृष्टि की। वायुपुत्र के पराक्रम को देख शिवजी प्रसन्नता से सिर हिलाने लगे। ३५ ब्रह्मा ने हनुमान को आशीर्वाद दिए। देवता स्त्रियों ने अक्षत फेंके। देव-ऋषियों ने ज़ोर-ज़ोर से मुक्तकंठ से हनुमान की प्रशंसा की। दिक्पालक आनन्द के मारे फूले न समाए। 'तॊरवॆ' के अधिपति भगवान नरसिंह का यह अद्भुत चरित ही तो है न! इस तरह कहते शिव-नामोच्चारण करते नारदजी आकाश में नाचने लगे। ३६

॥ किष्किधाकाण्ड समाप्त ॥

सुन्दरकाण्ड

ऒंदनॆय संधि

सूचनॆ— सागरव नुत्तरिसिदनु भवसागरोत्तारकन करुणासागरन सागरान्वयन करुणदलि कलि हनुम ।

सुरपना पवनजन परियनु परिकिसलु निर्मिसिद नाक्षण
सुरसॆयनु विरसॆयनु मलॆव महातिबल भटर
मरुतजन सरणियनु तडॆहोगिरॆदॆ नीनॆंदवळ कळुहलु
बॆरसिदळु भैरवन तायवॊलंजना सुतन ॥ 1 ॥
ऎल्लिगॆलवो होगदिरु कपि निल्लु बंदवळावळॆंबुद
बल्लविकॆयलि नोडु भक्षणॆगादॆ नीनॆनगॆ
निल्लॆनुत हदरक्कि हॆडकनु घल्लिसलु हॊरकय्यलाबय
हल्लुदुरॆ हॊय्दॆडद मुष्टिय लॆरगिदनु बदिय ॥ 2 ॥
कोटिसिडिलब्बरणॆयलि शतकोटिकायन नुंगलास्यद
कोटरव नगलिसिदळद कंडंजना सूनु

पहली संधि

सूचना— संसार-सागर को पार करने में जो करुणा (दया)-सागर है— जो सगरवंशीय (सगर-कुलोत्पन्न) राम हैं उनकी दया से वीर हनुमान ने समुद्र पार किया ।

हनुमान के आचरण तथा रीति की परीक्षा करने के हेतु देवेन्द्र ने सुरसा नामक स्त्री की रचना (सृष्टि) की जो मदोन्मत्त महाशक्तिशालियों को निस्सत्त्व करने में (बेजान कर डालने में) समर्थ थी । देवेन्द्र ने उससे कहा, "तुम हनुमान के मार्ग को रोके रहो ।" इस तरह कहकर जब उसे भेजा गया तो सुरसा मानों भैरव की माता-सदृश ही हनुमान के सामने (नज़दीक) आयी । १ "हे कपि ! तू कहाँ जा रहा है; रुका रह । सोच-समझकर देख तो सही कि मैं कौन हूँ ? तू मेरा तो भोजन के योग्य है; अतः रुक जा ।" —इस तरह कहते सुरसा ने मणिबंध (कलाई) से पकड़कर हथेली से गले के पिछले भाग पर मारा । हनुमान ने भी बायीं मूठ से इस प्रकार मारा कि उसके दाँत झड़ जायें; फिर परे सरक गया । २ वज्रायुध-सदृश शरीर वाले हनुमान को निगल जाने के लिए, करोड़ों विद्युत-सदृश गरजते सुरसा ने अपना गुफा-सदृश मुँह चौड़ा बनाकर खोल दिया ।

दाटि मरुमुष्टियलि गगनकॆ दूटलॆरगिदनवळ नोकुळि
याटवॆनलरुणांबुविनलुरॆ नॆनॆदुदमरगण ।। 3 ।।
काळ रक्कसि तिरुगि हनुमन मेलॆ हूणिसॆ हनुमनाबॆय
कालॆरड हिडिदभ्रमंडल किट्ट नब्बरिसि
केळिदै नृपसूनु सुमनोपाल नगरद सॊगसिनग्गद
सूळॆगेरिय नडुवॆ बिद्दळु बॆदरॆ पौरजन ।। 4 ।।
हारविसिदरुहनुमनुब्बटॆ गारु सरियल्लॆंदु नभद स-
रोरुहासन मुख्य दिविजरु देव मुनि निकर
सेरुवुदु नमगिन्नु सुख संपूरणद फलवॆनुत सुमनो
भेरिगळ हॊय्सिदरु सुरपुर गळलि सुरनिकर ।। 5 ।।
इन्न साध्यवदावुदी संपन्न शौर्यगॆनुत सरिदनु
तन्न नगरकॆ शक्र हरॆदुदु सकल देवगण
जन्ननूरन नुडिय हॊगळिकॆ कर्णदलि कीलिसॆ कपर्दिय
मन्नणॆय मैदुननु मैदोरिदनु जलधियलि ।। 6 ।।
ईत नीगनिलजनला पुरुहूत हॊगळिद सुभटनीतन
तातनुरॆ सलहिद शरीर विदीगला यॆनुत

यह देख उसे लाँघकर हनुमान ने अपने को बचा लिया। फिर मूठ से मार कर उसने उसे (हनुमान को) आकाश में उड़ा दिया तो हनुमान उस (सुरसा) पर गिर पड़े। होली के फाग-सदृश उछले रक्त (कणों) से देवता भीग गये। ३ फिर उस काल राक्षसी ने हनुमान पर आक्रमण कर इस तरह पीटा कि वे (धरती में) गड़ जायँ। हनुमान ने भारी गर्जना करते हुए उसके दोनों पैर पकड़कर उसे आसमान में उछाल दिया। सुन रहे हो न राजकुमार लव। तब सुरसा देवेन्द्र की राजधानी की सुन्दर वेश्यागली के मध्य जाकर गिरी। वहाँ के नागरिक यह (दृश्य) देख डर गये। ४ ब्रह्मादि प्रमुख देवताओं ने तथा देव-मुनियों ने अपनी प्रसन्नता प्रकट की कि बल-विक्रम में हनुमान की बराबरी कोई नहीं कर सकते। देवताओं ने अपने सुख-संतोष के दिन फिर लौट आने की अभिलाषा के आनंद में, स्वर्ग की नगरियों में नगाड़े बजवाए। ५ 'इस सुसंपन्न बलवान के लिए अब असाध्य क्या हो सकता है?' इस तरह सोचते इन्द्र अपनी राजधानी चले गये। सारे देवता इधर-उधर चले गये। इन्द्र का प्रशंसात्मक वचन कान में पड़ते ही शिवजी के साले (गिरिजा के भाई) मैनाक समुद्र से ऊपर उठकर प्रत्यक्ष हुए। ६ "यह वायुपुत्र हैं न? इन्द्र ने जिनकी

वात सरणिय सरणियलि बह्वातजन निदिर्गो ब सौरं-
भातिशयदलि बॆळॆद नंबरकागि मैनाक ॥ 7 ॥

मत्तिदेनंबुधियॊळगॆ तलॆयॆत्तुतिदॆ बलुबॆट्टविदुता
कृत्रिमवॊ सहजवीर्यॆनुत्तवॆ हिडियॆ संशयव
उत्तर स्थिति यरिदु गिरिराजोत्तमन नंदननु तद्गिरि
युत्तमांगद मेलॆ निजरूपिद रंजिसिद ॥ 8 ॥

हनुम केळॊड हुट्टिदनु नी नॆनगॆ निन्नय तंदॆयिंदी
तनु पुनर्भव वाय्तु सुरपन पूर्व वैरदलि
घन मनोवेगदलि तंदी वनधियलि नूकिदनु निन्नय
जनक नदरिंदॆनगॆ पितनादनु कणायॆंद ॥ 9 ॥

वातसुत केळ् लोकदलि विख्यातरैवरु तंदॆगळु पडॆ-
दात नॊब्बनु स्वामियॊब्बनु होह जीववनु
आतुकॊंडव नॊब्ब रक्षिसिदात नॊब्बनु गुरुवदॊब्बनु
मातदेनुळिद दरिनॆनगग्रजनु नीनॆंद ॥ 10 ॥

प्रशंसा की —वे तो यही हैं। इसी के पिता ने मेरी रक्षा की थी न ?" —इस तरह कहते वायुमार्ग से आते मारुति के दर्शन मार्ग-मध्य में ही करने के उद्देश्य से मैनाक पर्वत आकाश की ऊँचाई भर बढ़ गये। ७ "यह एक नयी मुसीबत आ पड़ी न ! समुद्र के मध्य एक बड़ा पहाड़ सर उठा रहा है न ? यह क्या कृत्रिम है या नैसर्गिक है ?" इस प्रकार की शंका हनुमान के मन में उदित हुई। लेकिन, भावी को समझते हुए (ताड़कर) पर्वत राजा के पुत्र मैनाक अपने निजी रूप में प्रकट हुए। ८ "सुनो हनुमान्, तू मेरा (सगा) भाई है। पूर्व काल में इन्द्र से शत्रुता उत्पन्न होने पर तेरे पिता के कारण मुझे पुनर्जन्म प्राप्त हुआ। तुम्हारे पिता अपने मनोवेग से मुझे घसीटते ले आए तथा मुझे इस समुद्र में ढकेल दिया। इस प्रकार (मेरे प्राण बचानेवाले) तुम्हारे पिता वायुदेव मेरे भी पिता हुए।" —इस तरह मैनाक ने कहा। ९ "सुनो वायुकुमार, इस जगत में पाँच व्यक्ति पितृव्य (पितृ-तुल्य) प्रसिद्ध हैं। जन्म देने वाले, स्वमी, प्राण जाते समय आश्रयदाता बननेवाले, रक्षा करनेवाले तथा गुरु ये पाँचों पिता ही हैं। अधिक क्या कहूँ ? मैं बचकर जो जीवित रहा तेरा बड़ा भाई ही हूँ।" —इस प्रकार मैनाक ने कहा। १० "मेरी दो माताएँ हैं— एक है मेनकी तथा दूसरी है अंजना। मेरे दो पिता हैं— पर्वतराज तथा वायुदेव। अतः हनुमान्, इस कारण मेरा जो

जननि मेनकियोंब्बळॆ नगॆरडनॆय लंजनॆयोंव्वळिव्वरु
जनकरद्रिकुलेंद्र मारुतरिदु निदान कण
हनुम केळातिथ्य पूजॆयननुकरिसि रात्रियनु कळि-
दिन भवॆय संदरुशनकॆ तॆरळुवुदॆंदु कैमुगिद ॥ 11 ॥
इवॆ सुधारस पूरितदफल निवहवमृतोपम हिमोदक
विवॆ सुसौरभकलित कुसुमोत्कर तरुच्छायॆ
इवॆ मदीय प्रियतरोक्तिय नवधरिसि नाळिनलि निमि सं-
जननदन्नि जानकिय काणलु विजय माडॆंद ॥ 12 ॥
ईतननि-ऽ मेलॆ गुणसंप्रीति वचनदलंबिका सह
जातननु सहजात सांद्रस्नेह भावदलि
मातरिश्वंगद्रिराजं गेतऽलि पल्लटवु केळॆं-
दातननु मन्निसिद नुचितद लंजनासूनु ॥ 13 ॥
वरुत निन्नुप चरित पूरित परमपूजॆय कोंडु वळिकॆ-
म्मरसनंघ्रिय कावॆनिनितकॆ चिंतॆ बेडॆनुत
गिरिजॆयनुजन बीळुकोंडुप्परिसिदनु गगनक्कॆ गरुडन
गरुविकॆय गाढणॆय गतियलि वीर हनुमंत ॥ 14 ॥
तरुण केळल्लिद वहवलु भरवसिगननु कंडळा सा-
गरद तीरद तरणिवैरिय तायि तवकदलि

आतिथ्य है उसे स्वीकार कर, रात मेरे यहाँ बिताकर सीता के संदर्शन के लिए जाना।" ऐसा कहते मैनाक ने हाथ जोड़े बिनती की। ११ "सुधारसपरिपूर्ण फल यहाँ धरे हैं। अमृत-सदृश ठंडा जल मेरे यहाँ उपलब्ध है। सुगंध भरे पुष्पों से भरे पेड़ों की ठंडी छाया है। मेरे ये हितकारी वचन सुनकर, कल के दिन निमिवंशोत्पन्न सीता को देखने जाने की कृपा करो।" —इस तरह मैनाक ने कहा। १२ इतना सब कुछ जो (मैनाक से) कहा गया अपने भाई के गाढ़े प्रेम के कारण, तथा अपने पिता वायुदेव और पर्वतराजा में अंतर न होने की बात सोचते हुए हनुमान ने अवसर के अनुकूल योग्य रीति से प्रेम भरे वचनों से गिरिजा के भाई मैनाक की बातें मानीं। १३ "लौटते समय तेरा आदरातिथ्य स्वीकार करने के बाद ही अपने राजा के चरणों का संदर्शन करूँगा। निश्चित रहो।" —इस तरह वचन दे, पार्वती के भाई मैनाक से बिदा लेकर वीर हनुमान अत्यंत वेग से, गरुड़-सदृश, आकाश में उड़े। १४ हे युवक लव, सुनो। वहाँ से, अत्यंत वेग से रवाना हुए हनुमान को समुद्र किनारे

सुर नरोरुग यक्ष राक्षस गरुड गंधर्वादिगळु सं-
चरिस बारदिदावनो यॆनुतडरिदळु नभव ॥ 15 ॥
अहिविरोधिय गाढगतियलि बह बलाग्रेश्वरन छाया-
ग्रहिणि घन छायापतिय नौकुव तमोनिधिय
बहळतॆय भणितॆयलि माऱांत हिमकर कुलचरन घन वि-
ग्रहकॆ गबलिक्किदळु गगनद तरणि कळवळिसॆ ॥ 16 ॥
अवळ बगॆयदॆ हनुम मेलण पवन पथकुप्परिसॆ नसुनगु
तवळु हिडिदळु नॆळलनग्गद वीर मारुतिय
अवळ बलु हिन्नॆंतुटो शिव शिव महादेवीत निद्दनु
सवडि गैयलि सरिव नेणिन नभद पटदंतॆ ॥ 17 ॥
उगिदळीतन नॆळल नवळॊड नगलिसिदळाननव ननिलन
मगन नुंगलु मृत्युविन वॊलु नूऱुयोजनव
बगॆयदवळनु बॆळॆदनात द्विगुणदलि तत्परिसरद सं-
खॆगळ शतसाविरद लंबर वळय दळतॆयलि ॥ 18 ॥
सिक्कुवुदु नृपकार्य नावी रक्कसिय कॊडाडिदडॆ कै-
सिक्क लरियदु कीर्ति नमगॆनुतवळ बायॊळगॆ

निवास करनेवाली राहु की माता सिंहिका ने देखा। देवता, मानव, उरग (साँप-सपोले), यक्ष, राक्षस, गरुड़, गंधर्व आदियों में से कोई भी यहाँ विचरण नहीं करता। पता नहीं यह कौन है? इस तरह सोचते वह आकाश में चढ़ी। १५ परछाई को पकड़ने का सामर्थ्य रखनेवाली सिंहिका, सूर्य को तुड़वानेवाले राहु की तरह चुस्ती से आकर, गरुड़-सदृश अत्यंत वेग से आ रहे रविकुलतिलक राम-सेवक आंजनेय के देह को निगल जाने के लिए आगे बढ़ी। आकाशस्थित सूर्य यह दृश्य देख विचलित हुए। १६ उसकी ओर ध्यान न देते हुए हनुमान ऊपर के वायुमंडल में उछले। तब उसने मुस्कुराते हुए वीर हनुमान की परछाईं पकड़ ली। उसकी शक्ति का पारावार कहाँ! हे शिव-शिव! महादेव! दोनों हाथों से डोरा पकड़कर उड़ाये जानेवाले पतंग की तरह हनुमान की स्थिति थी। १७ सिंहिका ने हनुमान की परछाईं आकर्षित की तथा तुरंत उसे निगल जाने के लिए मृत्यु की तरह सौ योजन मुँह खोला। उसकी ओर ध्यान न देते हनुमान ने आकाश के सारे विस्तार में चारों तरफ़ से सौ हज़ार संख्या की सीमा में—उससे द्विगुणित प्रमाण में अपने को बढ़ा लिया। १८ 'इस राक्षसी के साथ यों खिलवाड़ करते बैठें तो राजकार्य में विलंब होता है; हम कीर्तिभाजन न बन सकते।' —यों सोचकर

हॊक्क नवळनितरलि बलिलद सिक्किदनु तनगॆंदु हरुषद
हॆक्कळद लनिलजन नुगिदळणुग कॆळॆंद ॥ 19 ॥
नुगलॊडनाक्षणदि बॆळदनभंगबल हनुमंत नाबॆय
कंगळॆरॆ तिरुगिदवु कळवळिसिदवू करणचय
उंगुरद महिमॆयलि हरणवु हिंगदनिलजनुळिद नल्लदॆ
नुंगलुळिदवरुंटॆ दनुजामर कदंबदलि ॥ 20 ॥
बलिद मरिपक्कदलि तत्तियनळिदु पॊरमडुवंतॆ वज्रो-
पलद कंबवनॊडॆदु निंदिद मनुज हरियंतॆ
निळि निळिलु निटिलॆंदु बदियॆलु कळचॆ समसीळागि
सीळिदु कलिललाट ललाम मैदोरिदनु झडितॆयलि ॥ 21 ॥
आरि बॊब्बिरि दॊडनॆ कडुहिन वीरना सिंहिकॆय सीळ्द श-
रीरदॊळ गॊडॆडद भागद हॊळ दशशिरन
ऊरिगिट्टनु मिक्क हॊळनु दारबल बलिमुखकुलॆंद्र कु-
मार जांबवदेव निद्दॆडॆ गिट्टु बॊब्बिरिद ॥ 22 ॥
बॆगडु गॊंडुदु लंकॆ भीतियलगिदु नलिदाडिदुदुशाखा
मृगकटक कपिवरन कदनारंभ विदुयॆनुत

हनुमान उसके मुँह में प्रवेश कर जाते हैं। इससे 'यह शूर हमारे चंगुल में फँस गया' —यों सोचकर हर्षित होती हुई वह (सिंहिका) हनुमान को निगल जाती है। १९ सिंहिका ने जब (उनको) निगल लिया तो अखंड बलशाली हनुमान बढ़ते ही गये (अपने शरीर को बढ़ाते ही गये), तो राक्षसी (सिंहिका) की आँखों में अँधेरा छाने लगा। अंगांगों में तिलमिलाहट शुरू हुई। श्रीराम की उस मुद्रिका के प्रभाव से आंजनेय के प्राण तो बचे; क्योंकि उस राक्षसी के निगल जाने पर देवासुर में कौन अपने को जीवित पा सकता है? २० परिपक्व पिल्ला अंडे का आवरण एक ओर से फोड़कर जैसे बाहर निकल आता है, वज्रशिला-निर्मित खंभे को फोड़कर बाहर आ खड़े हुए नरसिंह (भगवान) की तरह, चरमराहट के साथ राक्षसी की पार्श्व की हड्डी जब टूटी तो उसके देह को बीच में से फाड़कर (चीरकर) वीरों के ललाटतिलक हनुमान तुरंत बाहर आ खड़े हुए। २१ भारी गर्जना करते चीख़ते हनुमान ने सिंहिका के (उस) चीरे हुए शरीर के वामभागीय आधे हिस्से को रावण की राजधानी की तरफ़ फेंका तथा दूसरे हिस्से को समर्थ कपिकुल स्वामी के पुत्र अंगद तथा जाम्बवान जहाँ थे, उस तरफ़ फेंका। २२ लंकानिवासी यह (सिंहिका के अर्ध भाग को) देखकर थरथर काँपने लगे; वानरसमूह (अपनी तरफ़

नगरदलि कटकदलि कंपिन मुगिलकडि बिद्दंते रकुतद
चिगिय जोरिनलेसेदवा होळेरडु रक्कसिय ॥ 23 ॥
रक्कसिय कोंदतुळ हरुषद हेक्कळद हरवरियलुरे बो-
ब्बिक्कि बाहुप्पळिसि पुटनेगेदंबर स्थळके
उक्कुवतिशय वीर रसदोळ सोक्किनलि लंकापुरवनेड
किक्कि हाऱिदनत्त मेलेळ्नूरु योजनव ॥ 24 ॥
कंडनल्लि महासमुद्रव कंडुदिल्लरि पुरवनाक्षण
कोंडनल्लि विचारवनु विज्ञा विशेषणव
दंडि लेसाय्तेनुत धरणीमंडलक्कवतरिसु तिदिरलि
कंडना तृण बिंदुवनु सिंधुविन तीरदलि ॥ 25 ॥
सारिदनु सैवळिय नाऱदा पारिकांक्षिप्रवरननु नय
सारदलि बेसगोंडनेले मुनिनाथ रावणन
ऊर बल्लै बल्लडेमगुपकार वहुदु निरुपिसि दडेन-
ला रुषीश्वरनाननव नसुदिरुहु तीक्षिसिद ॥ 26 ॥
एऱिळिय नोडिदनु होस होग रेऱिकेय होदरेद्ददर्पद
तोऱिकेय तनिरसद मोगवनु मूरु बारियलि

पड़े हिस्से को देखकर) खुशी के मारे नाचने लगे कि कपिवीर हनुमान के युद्ध का यह श्रीगणेश है। उस तरफ़ लंका नगरी में तथा यहाँ वानर-समूह के मध्य, पड़े रक्त के फव्वारे गिराते राक्षसी के शरीर के दोनों टुकड़े लाल बादलों के टुकड़ों के सदृश दिखायी दे रहे थे। २३ राक्षसी को मार डालने के अमितानंद में गरजते, हनुमानजी अपनी भुजाओं को ठोंकते, आकाश में जो उछले, (अपने) उमड़ते वीररसाधिक्य में लंका नगरी को बायों ओर रखे सात सौ योजन (का विस्तार) उड़े। २४ वहाँ हनुमानजी ने एक महासमुद्र देखा। शत्रु की नगरी उसे नहीं दिखायी दी। तुरन्त उन्होंने दिमाग़ लड़ाकर सोचना शुरू किया। 'अपनी उड़ान यह जो है ठीक है'—इस तरह विचार करते धरती पर उतरने लगे। तब उन्होंने समुद्र के किनारे तृणबिन्दु नामक मुनि को देखा। २५ सीधे रास्ते को पहिचानकर हनुमान मुनिश्रेष्ठ के सम्मुख पहुँचे तथा विनम्र भाव से प्रार्थना करने लगे—"मुनिनाथ, क्या आप रावण की नगरी को जानते हैं? अगर जानते हों तो समझा दें। बड़ा ही उपकार होगा। तब मुनीश्वर ने थोड़ा इनकी (हनुमान की तरफ़) ओर मुड़कर देखा। २६ नवकांति से दीप्त, मस्ती से दमकते, तेजस्वितासंपन्न मुखड़े को उन्होंने (मुनिवर ने) सिर से पैर तक दो-तीन बार देखकर पूछा—"कौन

आरु नी निनगेकॆ रक्कसरुर चिंतॆ तदीय पुरदॊळ-
गारु नंटरु निनगॆ हेळद केळ्वॆवावॆंद ॥ 27 ॥
मुनिप केळादडॆ ककुत्सज वनितॆयीगॆम्माळ्द नंगनॆ
वनदॊळिरॆ कद्दॊय्दना सतियनु दशग्रीव
मनुकुलेश्वर नॆन्नना भामिनिय नोडलु कळुहलरिपुर
वॆनगॆ कणुदप्पाय्तु बल्लरॆ हेळि नीवॆंद ॥ 28॥
नीनु कोडग हेडिमेलॆ दशाननु त्रैलोक्य वीर नि-
दान वातन नगरवनु हॊगलरिदु पुरहरगॆ
एनु चित्तकॆ बारदिदॆ कपि नीनु नुडिवी मातु नरि सु-
म्मानदलि कटकवनु हॊक्कंतहुदलेयॆंद ॥ 29 ॥
चिंतॆ निमगेकदरु कृत विक्रांत रडिवरु नम्म साहस
दंतरवनदु होगलमर विरोधि पुरविन्नु
अंतु दूरवदाव दॆसॆयॆं बंतुटनु हेळिदरॆ मनबं-
दंतॆमाडुवॆ नॆंदना मुनिपतिगॆ कलि हनुम ॥ 30 ॥

है तू ? राक्षसों की नगरी से तेरा क्या वास्ता ? इस नगरी में तेरे कौन रिश्तेदार हैं ? सुनाओ तो सही।" इस तरह उस मुनि ने पूछा। २७ "सुनिए मुनिवर; हमारे स्वामी ककुत्स्थवंशोत्पन्न श्रीराम की पत्नी जब वन में थी तब रावण उसका अपहरण कर ले गया। मनुवंश के अधिपति श्रीराम ने सीता को देख आने के लिए मुझे भेजा है। शत्रु की नगरी को मैं देख नहीं पा रहा हूँ। अगर जानते हैं तो बताने की कृपा करें।" इस तरह हनुमान ने निवेदन किया। २८ "तू तो कपि है; इतना ही नहीं, भीरु भी है। दशमुख तो तीनों लोकों के वीरों की एक निधि है। त्रिपुरारि शिवजी भी उसकी नगरी में प्रवेश नहीं कर पाते। हे वानर, तेरी बातों पर मेरा विश्वास नहीं जमता। (भरोसा नहीं कर सकता) क्या एक सियार का अमित उत्साह में सेना (में) प्रवेश करने की बात जैसी तो नहीं होगी (तेरी यह करनी)!" —इस तरह तृणबिन्दु मुनि ने कहा। २९ उस विषय को लेकर आप क्यों चिंतित है ? मेरी वीरता की थाह उस कला के मर्मज्ञ ही जान सकते हैं। जाने दीजिए —इन बातों को। इतना तो बता देने की कृपा कीजिए— "राक्षसों की नगरी यहाँ से कितनी दूर है ? वह किस दिशा में है ?" —फिर मैं चाहे जैसे करूँगा। इस प्रकार वीर हनुमान ने ऋषि से कहा। ३० "हे पुत्र, तब तो सुनो। मेरे यौवन के दिन बीत चले। देह की शक्ति भी जवाब दे चुकी है। अधिक चैतन्य भी नहीं। बाल पक गये हैं। देह का चमड़ा भी झुर्रियाँ

मगनें केळादडें वयोवृद्धिगळ दिन तप्पिदवु तनुविन
बिगुहु बिट्टुदु बीतुदग्गद सत्व नेरॆ थॆरॆय
हगरणवु नमगाय्तु नम्मनु नॆगहि तॊऱिदडमर वैरिय
नगरवनु तोरुवॆ नॆनुत तृणबिंदु मुनि नुडिद ॥ 31 ॥
अह्हुदु मत्तॆनॆ नुतला निजवह नितांत बलाढ्यना नि-
स्पृह यतींद्रननॆत्त लिक्किद नुभय करतळव
महिसुता सुत केळु मुनिविग्रहद भारवदॆंतुटो नॆल
नहिवरन निब्बॆरळ नगललु नॆगहिदनु हनुम ॥ 32 ॥
मुनिपनिक्किद तपद पद्मासनद पृथ्विय संघटन सं-
जनिसदिरॆ संवरिसि कॊंडु समीर सुत मुनिय
तनुव तॆक्कॆयॊ ळौकि मॊळ कालि नलि धरणिय नॊत्तुतॆत्तलु
वनज संभूतांड बिडदॊलदाडि तॆंडबलकॆ ॥ 33 ॥
हॊरॆगॆ वाळ रॊळहिप कूरुमरुरुवरी लोकदलि लॊकदॊ-
ळुरुवनवरिम्मडि पवनकुमार निदु सिद्ध
मरॆय माते ननिल बद्दद निऱिसि नलि नीरेज जांडवु
तुरुगिहवु तत्सूनुर्विगॆ यसाध्य वेनॆंद ॥ 34 ॥

खा गया है। बड़े संकट में हूँ। अगर मुझे उठाकर धरो तो मैं राक्षस की नगरी बता दूं।" इस तरह तृणविन्दु मुनि ने उत्तर दिया। ३१
"वैसा ही हो" —इस तरह कहते उस महाबलवान ने आशा-आकांक्षाओं को जीतनेवाले मुनीश्वर को (ऊपर) उठाने के लिए अपनी दोनों भुजाएँ बढ़ायीं। सुनो जानकी-कुमार! उस ऋषि का देह-भार कितना भारी रहा! क्या कहूँ? हनुमान ने भरसक इतना प्रयत्न किया कि कम से कम दो अंगुल उसे धरती से ऊपर उठा लूँ! मगर वह शरीर टस से मस न हुआ। ३२
(वह) ऋषि तपस्या में लीन पद्मासन की मुद्रा में बैठे धरती से इतने चिपके हुए थे कि वे हनुमान की पकड़ में नहीं आ सके। पुनश्च प्रयत्न करते हुए हनुमान ने, सँभलकर ऋषि की देह को अपनी भुजाओं में दबोचकर, घुटने से धरती को दबाए, अपनी पकड़ ज़बर्दस्त करते जो (उस मुनि को) ऊपर उठाने का प्रयत्न किया तो सारा ब्रह्मांड डाँवाडोल हो हिलने लगा। ३३ इस जगत में बोझ ढोने की दृष्टि से आदिशेष तथा कूर्म (कछुआ) विशिष्ट स्थान रखते हैं। तथा यह वायुकुमार इस धरती पर इनसे दुगुना श्रेष्ठ है। यह तो सुप्रसिद्ध है ही। इसमें कोई शक नहीं। सारा ब्रह्मांड वायु की पकड़ के कारण अपने एक सुनिश्चित क्रम

ऍत्तिदनु नभकागि मुनिवंशोत्तमन साकॅनलु मुनिपति
चित्तदलि हारैसि हरसिद नंजनासुतन
ऍत्त लरियदॆ कुंडलव नसुरोत्तमनु तेकिदनु पूर्वद
लॆत्तिदनु कपिकुंडलवु सहितॆन्ननीगॆंद ॥ 35 ॥

हनुम मॆच्चिदॆ निळुहु निन्नय मनद बगॆ हसनाग लरिदॆनु
वनज नाभन लीलॆयनु सुखियागु नीनॆनुत
मुनिवरनु कॊंडाडि दर्भॆय कॊनॆय लातन नॆगहि कंडा
धनप दिग्भागदलि धन दानुजन पुरवरव ॥ 36 ॥

कंडॆ नॆनुतल्लिद रोदो मंडलकॆ पुटनॆगॆदना खर
दंड बांधव बिंब तळवॆळगागॆ तारकिय
तंडगळु तनि गॆदरि बंदन खंड बल निन शशिय रुचिय क-
रंड वॆनिप निशाचरेंद्रन राजपुरवरकॆ ॥ 37 ॥

पुरव काणुत कायवनु संवरिसि कॊंडु समीर सुतना-
सुरभटावळि यरिय दंतिरॆ तप्पुरांतिकद

में खड़ा है। ऐसे वायुपुत्र के लिए इस दुनिया में असाध्य क्या हो सकता है? ३४ मुनिश्रेष्ठ को वायुपुत्र ने, आकाश में इतनी ऊँचाई तक उठाया कि (मुनिवर के) मुँह से निकला कि 'यथेष्ट है'। मुनिपति ने मन ही मन आंजनेय को प्रसन्न हो आशीर्वाद दिया। 'पूर्वकाल में राक्षस-श्रेष्ठ रावण ने मेरे कान के कुंडलों को उठाने का प्रयत्न किया। लेकिन इस कपि ने तो कुंडलाभरण-सहित मुझी को उठाकर धर लिया है।' —इस तरह मुनिवर (मन ही मन) कहने लगे। ३५ "हनुमान्, (तेरे इस पराक्रम के कारण) प्रसन्न हूँ, मुझे उतारो। तेरी मनोकामना सफल हो। कमलनाभ नारायण की लीलाएँ पहिचानीं। तुम सुखी होओ।" इस तरह कहते ऋषिश्रेष्ठ ने हनुमान की प्रशंसा करते हुए दर्भ के अग्र भाग पर उसे बिठाकर ऊपर उठाया तथा पूछा— "उत्तर दिशा में कुबेर के भाई रावण की नगरी क्या दिखायी दे रही है?" ३६ "जी हाँ, दीख पड़ रही है।" —इस तरह कहते हनुमानजी जो आकाश में उड़े, तो उसके इस उड़ान के कारण (धक्के से) सूर्यबिंब भी भयभीत हुआ। नक्षत्रसमूह तितर-बितर हुए। वहाँ से अखंड बलशाली हनुमान सूर्य तथा चंद्र की कांति-सदृश कनस्तर के आकार वाली रावण की राजधानी लंका में उतर पड़े। ३७ लंका नगरी को देखते ही, अपनी देह को, हनुमान ने पूर्व स्थिति में (छोटा) परिवर्तित कर लिया। फिर नगर

सुरपनुद्यानद सुघाडके सरियें निप नंदनद मध्यद
सुर तरुविनलि निंदिदनु लाघवद गमनदलि ॥ 38 ॥
बीरुतिर्दवु नयसरव मदवेरि दंळे गोगिलेंग ळोंळु नुडि
दोरुतिर्दवु राजकीर मयूर नर्तनव
तोरुतिर्दवु तुंबिगळु मोरदेरु तिर्दवु कोळगळलि मै-
दोरु तिर्दवु मदमराळ क्रौंच बक निकर ॥ 39 ॥
सुळिवु तिर्दनु मंद मारुत नेळलतावळिगळलि कृतका-
चलद चमरिय मृग वितान विहार मार्गदलि
नलिवु तिर्दवु गीत रस सम्मिळित सौरंभदलि किन्नर
ललनेयरु लळियेरुतिर्दरु पांथ गृहगळलि ॥ 40 ॥
परिमळित पूगोंचलिन कंपोरेद किसलय वल्लरिय बं-
धुरत बहळित बंध मामर मुख्य भूजगळ
भरित फल भर दुब्बु गोब्बिन पुरवरोद्यानवनु तोरवेय
नरहरिय निजदास कोंडाडिदनु मनदणियें ॥ 41 ॥

के बाहरी वलय में स्थित, देवराज के नंदनवन-सदृश उद्यान के मध्य में विराजमान कल्पवृक्ष पर हल्के-फुल्के होकर उतरे जिससे वहाँ उपस्थित किसी भी राक्षस सैनिक को मालूम न हो। ३८ उस उद्यान वन-प्रदेश में मस्त कोयलियों के बच्चे मधुर स्वर से आलाप रह थे। तोते मधुर कंठ से बोल रहे थे। मोर नाच रहे थे। भ्रमर गुनगुना रहे थे। मस्त हंस, क्रौंच, बक पक्षी वहाँ के सरोवर में विहार कर रहे थे। ३९ कोमल लताओं के सहारे मंद मारुत बह रहा था। चमरी मृग (सुरा गाय) कृतक पर्वतों के विहारार्थ निर्मित मार्गों पर विचर रहे थे। किन्नर-स्त्रियाँ पथिकों की सरायों में गाते हुए बड़े उत्साह को प्रकट कर रही थीं। ४० सुगंध भरे पुष्प-गुच्छों से तथा लाल कोंपलों से युक्त अत्यंत मनोहर होकर शोभायमान फलों से लदे आम के पेड़ वग़ैरहों से तथा फलभरित प्रमुख वृक्षों से भरे पूरे उस मदमस्त उद्यान का वर्णन तोरवे के नरहरि के अवतारी श्रीराम के सेवक हनुमान ने मुक्त कंठ से किया। ४१

ऍरडनॆय संधि

सूचनॆ— राय वैरि घरट्ट नाहव राय भैरव नहित रक्कसराय नगरदॊळरसिदनु निमिराल नंदनॆय ।

वारिजप्रिय कुलद राजकुमार केळ् तत्समयदलि रवि
सारिदनु सागरवनपराह्णदलि पश्चिमद
तीरि तुत्सव कमलिनिगॆं कैसारितुम्मह कुमुदिनिगदिगु
वारुणि यॊळनु रागरस पर्बिदुदु निमिषदलि ॥ 1 ॥

अंडलॆयॆ बलुनिद्रॆ नळिन भवांड भवनद तिमिर रक्कसि
चंडकर दीपवनु मलगिसि महिय मंचदलि
मंडिसिदळॆनॆ तगडु गत्तलॆ चंडिसितु तत्समयदलि को-
दंड दीक्षाचार्य चर निदु समय तनगॆंद ॥ 2 ॥

मुददि नात्मोदयद शकुनव तुदिवॆरळलारॆदु धुम्मि-
क्किद निळातळवदुरॆ मर दुदियि महीतळकॆ
मदवदरि भैरवन कर्कश कदन कॊळाहळन रामन
पदव नॆनॆदडरिदनु दुर्गवना महापुरद ॥ 3 ॥

दूसरी संधि

सूचना— शत्रु राजाओं को (पीसने में) जो चक्की जैसे हैं, युद्ध में शत्रुओं के लिए जो भैरव-स्वरूपी हैं —ऐसे हनुमानने विदेह राजा की पुत्री को राक्षसराजा की नगरी में ढूंढ़ा ।

हे सूर्यकुलोत्पन्न राजकुमारो ! सुनो ! उस समय दुपहर बीत, जब साँझ हुई तब सूरज पश्चिम सागर में डूबा । कमलों का संतोष नष्ट हुआ । नील कमलों (रात्रि के समय उगनेवाले) का संतोष बढ़ा । पश्चिम दिशा के लिए अनुराग (लाली— लाल रंग) बढ़ा । [पश्चिम दिशा में लाली फैली ।] १ गाढ़ी नींद जो लगी तो ऐसा लगता था कि ब्रह्मांड रूपी घर की, अँधेरा नामक राक्षसी सूर्य नामक दीपक को भूमि रूपी चारपाई पर सुलाकर मानों बैठी हो —इस रीति से अँधेरे का आवरण गाढ़ा होते फैलते गया । तब कोदंड (धनुष)-धारी राम के सेवक ने सोचा कि यही उपयुक्त समय है । २ उसने (हनुमान ने) खुशी-खुशी तर्जनी से गिनते हुए (हिसाब करते हुए) अपने विजय के लिए यही सुमुहूर्त समझकर पेड़ के छोर से जो धरती पर छलाँग मारी तो भूमि काँपने लगी । मदोन्मत्त शत्रुओं के लिए भैरवस्वरूपी युद्धभयंकर श्रीराम के चरण-कमलों का

कोटे यिद्दुदु मुंदे शिवन करोटि माला वळयद वोलुरे
पाटिसिद कोत्तळद मुगिलट्टळेय मुरुहि नलि
घोटकद मदकरिय कंडिय दाटुगळ हुलिमुखद वकद
कूट दुरु शाला विलासद विविधरचनेयलि ॥ 4 ॥
अणवु तिर्दुवु गोपुराग्रद मणिमयद कळशाळि तारा
गणवनंजिसु तिर्दवा मुखशालेगळ बळिय
कणु गिडिय बेताळ जट्टिग रणुकु दोरुव बोम्म रक्कस
रण पिशाचि गळरिदु होगगुडवंजना सुतन ॥ 5 ॥
वीरनरवनु कंणक दोय्यने चोरगंडिय लिळिदु होक्कनु
भूरिवेळगिन मोदल वळयद कोटेयनु बळिक
वीर केळै कोटि संख्येय वीररिर्दुदु भवन बोम्मन
वैरवनु बगेयद महोन्नत काय रिदिरिनलि ॥ 6 ॥
अवर वंचिसि मेल्लनीतनु कविव कत्तले योळगे हेज्जेय
सवेसलरिदा समयदलि हरितंदळा पुरव
दिवदलुगुळुव रात्रियलि नुंगुव महाद्भुत घोर रक्कस
युवति लंकिणि येंबुवळु रक्कसिय रोडगूडि ॥ 7 ॥

स्मरण करते हुए हनुमानजी उस महानगरी के क़िले पर चढ़ गये। ३ विशालकाय बनाए गये क़िले के बुर्ज़ तथा टेढ़े-मेढ़े ढंग से रचाए गए—क़िले पर युद्ध-सामग्री जमा करने और पहरेदारों के लिए बँधवाए गए कमरों के कारण क़िले का वह विभाग शिवजी के गले की रुंडमाला-सदृश सामने विराजमान था। घोड़े-हाथियों के आने-जाने के लिए बनाए गए दरार जैसे दरवाज़े, व्याघ्र-मुखाकार के महाद्वार तथा रहस्यपूर्ण स्थानों से युक्त वह क़िला (निर्मित) था। ४ गुंबजों की नोकों पर चमकते रत्न-कलश मानों नक्षत्रों के समूह को छू रहे थे। मुखशालाओं के नज़दीक बनाये गये, आँखों में से चिनगारियाँ निकालते बेताल (वेताळ) पहलवान डरा रहे थे। इतना ही नहीं, टूट पड़नेवाले ब्रह्मराक्षस, रण-पिशाच आदि ने आंजनेय को देखा तथा उसे अन्दर जाने से रोका। ५ वीर मारुति ने उनको बिना छेड़े ही चुपके से चोर दरवाज़े से उतरकर क़िले के प्रकाशमान प्रथम परकोटे में प्रवेश किया। शिव-ब्रह्माओं के विद्वेष की भी परवाह न करनेवाले भारी-भरकम शरीरवाले करोड़ों की संख्या में राक्षस वीर सामने दिखायी दिए। ६ उनसे आँख बचाकर हनुमान घुप अँधेरे में धीरे-धीरे क़दम बढ़ा रहे थे; इसे, लंकिनी नामक अद्भुत भयानक राक्षसी, जो लंका को रात को निगलकर दिन को उगलने

सुरनरोरग देवयोगिगळिरुळु सुळिदडॆ नुंगि नॊणॆव-
च्चरिय रक्कसि यवळले कुश केळु कौतुकव
हरनॊडनॆ कल्पदलि हळचुव दुरुळमृत्यु विगिम्मडिय नि-
ष्ठुरद रक्कसि तडॆद ळीतन जडिव खड्गदलि ॥ 8 ॥
ऎल्लिगॆलवो होगदिरु कपि निल्लिदेतर कॆलस बेहिन
भुल्लवर्णॆ बारिसुत लिदॆ नॆरॆ निन्न मोरॆयलि
निल्ल निल्लॆंदॆनलु चौपट मल्लनद लॆंक्किसदॆ मुंदकॆ
निल्लदडियिडॆ हिडदळीतन हॆंडक हदरिनलि ॥ 9 ॥
हॆंडक हिडिदळो हिडियळो कॆल सिडिदु तिविदनु तीव्र मुष्टिय
लडिमगुचि बिद्दळु पुरद्वारद महासौध
हुडिगॆदरॆ सुळिवसुररसुगळु सडिलॆ रकुतव कारु तॆंड बल
दडबळर सदॆदीत तप्पिसि हाय्द नूरॊळगॆ ॥ 10 ॥
अरॆद ळवळु बळिक्क पुर्वद कुरुहनज निर्मिसिद कालवु
नॆरॆदुदल्ला राम भृत्यनला कपीश्वरनु

वाली थी, जान गई तथा तुरन्त ही वह अन्य राक्षसियों के साथ ठीक इसी समय दौड़े-दौड़े वहाँ (जहाँ हनुमान उतर रहे थे) आ पहुँची । ७ वह (लंकिनी) इतनी भयानक राक्षसी थी कि देवता, मानव, नाग, देवयोगि आदियों के रात के समय कहीं (लंका में) दिखायी पड़ते ही आश्चर्यकारक रीति से निगल जाती थी । हे कुश ! आगे की कौतूहलपूर्ण घटना सुनो । प्रलयकाल में शिवजी से भी लड़ने की ताक़त रखनेवाली दुष्ट मृत्यु से दुगुनी निष्ठुर शक्तिशाली वह राक्षसी अपनी तलवार चमकाती हुई हनुमान का सामना कर बैठी । ८ "रे कपि, कहाँ जा रहा है ? रुक जा । यहाँ तेरा क्या काम है ? तेरे मुखड़े पर गुप्तचर के लक्षण दिखायी देते हैं । ठहर-ठहर ।" इस तरह कहती ही रह गयी तो जगत्वीर हनुमान ने (इन बातों को) अनसुनी करके क़दम आगे बढ़ाया । तुरन्त उस (लंकिनी) ने हनुमान की गर्दन पकड़ ली । ९ 'गर्दन पकड़ी कि नहीं पकड़ी' —हनुमान खिसककर एक तरफ़ हो गये । (उछलकर) तथा बँधा-बँधाया ज़बर्दस्त मुक्का उन्होंने लंकिनी पर जमाया । वह औंधे मुँह गिर पड़ी । नगर के महाद्वार पर स्थित मंज़िलवाला घर चकनाचूर हो गया (लंकिनी के गिरने से) । इसे देख आक्रमण करने आ रहे राक्षसों को हनुमान ने इस प्रकार पीटा कि वे खून क़ै करने लगे । फिर उनसे पिंड छुड़ाकर नगर में खिसक गए । १० लंकिनी को ब्रह्माजी का, पूर्व में कथित वचन का, स्मरण हो आया । और समय भी पहिचान

हरिवु दिव्न सुरेंद्र वनितेय मेरेव मंगलसूत्र नावि-
न्नरिसि कोळबेकजन नेनु तैदिदळु कमलजन ॥ 11 ॥
ईतनोय्यनें बळिक गुरुबिन लातु निलुतल्ललिल रक्कस
वातुगळ नारैवुतेंड वीथिगळ रच्चेगळ
गीत वाद्य सुनृत्य कथन व्रात देंडेगळ लेंड बलद सुनि
केतनद लरसिदनु निमिकुल राजनंदनेय ॥ 12 ॥
अंगडिग ळोत्तिनलि रक्कस रंगणगळलि देवताभव-
नंगळलि कोठारमंटेय संदि गोंदियलि
हिंग दोसर गेळुतवे सीतांगनेय नुडि हुट्टदेयेनु
तंगलाचुत बीदियगलकें नोडुतैतंद ॥ 13 ॥
कळिदु जावद मेले रक्कसरुलुहु निल लणु रुपदलि हों-
क्कळ बळव नरसिदनु विविधालयंगळलि
कळचि कदगळ वायु सरणिय लिळिदु मुद्रिके युंगुरद मणि
वेंळगिनलि नोडिदनु निमिकुल राजनंदनेय ॥ 14 ॥

गयी। यह कपिनायक राम का सेवक है न ? राक्षसराज रावण की पत्नी के सुहाग के लुट जाने में (उसके विधवा होने में) अब देर नहीं। अब हमें ब्रह्मा को ढूँढ़ लेना चाहिए। —इस तरह सोचती लंकिनी ब्रह्माजी के पास चली गयी। ११ तदनंतर हनुमान धीरे-धीरे ओट में छिपकर खड़े रहते, जिधर-तिधर हो रही राक्षसों की बातें आश्चर्य से सुनते, गलियों का शोरगुल, गाने, नृत्य, वाद्य तथा कथावाचकों के समूह के मध्य होते हुए, इन विविध मनोरंजनकारियों के विविध समूहों के दाएँ-बाएँ के घरों में जनकराजपुत्री के लिए अन्वेषण किया। १२ दुकानों के पार्श्वों में, राक्षसों के आँगनों में, मंदिरों में, भांडारघर तथा मठों के गली-कूचों में, पीछे न हटते, ओट में (छिपे) खडे रहकर कान लगाकर सुनते हुए हनुमान टोह ले रहे थे कि कहीं सीता की बातें सुन पड़ें। इस तरह बड़ी ही दीनता के साथ हनुमान हर गली में ढूँढ़ते-ढूँढ़ते आगे बढ़े। १३ एक याम का समय बीत गया। राक्षसों की चहल-पहल समाप्त हुई। तब परिस्थिति समझकर, अणुरूप धारण कर अन्यान्य घरों में प्रवेश कर सीता (के लिए) अन्वेषण शुरू किया। दरवाज़े खोलकर, वायवी मार्ग से उतरकर राजमुद्रांकित अँगूठी की रत्नप्रभा में जानकी को ढूँढ़ा। १४ वार्तालाप तथा आवाज सुनते हुए (राम से बताए गये) चिह्नों को, पहिचानों को (सम्मुख पड़ी) स्त्रियों में ढूँढ़ते हुए, परखने

नुडियनालिसि कुरुहु कूनुगळेंडेयनबलेयरलि परीक्षिसि
सिडिदु नोडिद निळय निळयंगळलि निमिषदलि
तोंडकु वीथिय केरिकेरिग ळेंडेयेडेय मनेमनेय मूडण
कडे विडिदु मुरि मुरिदु कोटेय सुत्त वळयदलि ॥ 15 ॥
मोदल कोटेय सुत्तु वळयद सदन संकुळवनु परीक्षिसि
कददु मन दुब्बरद मरुकद लिळिद नेरडनेय
पुदिद मणिकांचनद लहरिय होंदरुवेळगिन होन्न कोटेय
सदमदद संपदद रक्कस निळयगळ कंड ॥ 16 ॥
तडेद रक्कस तळवरर जव नेडेगे जाळिसुताळुवेरिय
तडिविडिदु शोधिसिद नल्लि सदन संकुलव
अडे विडदे मने मनेय रक्कस मडदियर मरदोरगिदर वं-
गडव शोधिसि दाटिदनु कोटेयनु मूरनेय ॥ 17 ॥
विट विदूषक नागरीकर नटणे गेडिपं गनेयरलि चा-
वटेयरलि चदुरेयरलुप भोग प्रपंचकद
कुटिल कुंतळ भरेयरलि कौलटेयरलि कामुकियरलि घन
घटकुचेयरलि कूडे नोडिदन वनितंदगेय ॥ 18 ॥

का प्रयत्न करते हुए, क्षण भर में उछलकर घर-घर में ढूँढ़ा। क्लिष्ट गलियों, गली-कूचों के बगल के घर-घर की तलाश करते पूर्वदिशा की ओर से क़िले के प्राकार को लाँघकर आए। १५ पहले क़िले की चारदीवारी से सटे फैले घर-घर में परखने की कोशिश कर (बिचारे) हनुमान तंग आ गये। फिर अधिक चिंताकुल होकर दूसरे क़िले में प्रवेश किया। रत्न तथा सोने की कांति से जगमगाते स्वर्ण-निर्मित क़िले में स्थित सर्व-संपदभरित राक्षसों के निवासों को देखा। १६ रुकावट डालनेवाले राक्षस रखवालों को मृत्युनगरी भिजवा दिया। क़िले की दीवार के पिछवाड़े के मार्ग से चारदीवारी पर बने मार्ग से होते हुए वहाँ के पास-पड़ोस के सभी घरों में ढूँढ़ा। लगातार, हर घर में ढूँढ़ते हुए, निद्रा में डूबी राक्षस-स्त्रियों के समूहों में पता लगाने का प्रयत्न करते हुए तीसरे क़िले को भी पार कर गये। १७ विट पुरुष, विदूषक, नागरिकों की चाल-चलन बिगाड़नेवाली स्त्रियाँ, वेश्या स्त्रियाँ, चालाक नारियाँ, भोग-जीवन यापन करनेवाली घुंघराले बालों वाली सुन्दरियाँ, व्यभिचारिणी स्त्रियाँ, कामवासनापरिपूर्ण स्त्रियाँ, उभरी छातीवाली युवतियों आदियों में सीता का अन्वेषण किया। १८ तोतों को पढ़ानेवाली स्त्रियाँ, झूलों

गिळियनोदिसुव वबलेयरलु य्यलेय नाडुव सतियरलि जो-
गुळुव हाडुव गाडियरलुप पति जनालयकॆ
सुळिव सौंदरि यरलि साध्वी ललनेयरलि सुगीत नर्तन
गळ विलासिनियरलि कपि नोडिदनु जानकिय ॥ 19 ॥

चेटियर लॆडॆ गॆलसदवरलि बेटॆ कातियरलिल कडुकं
बेट दंगनेयरलि संकेतन निकेतनद
कूटणि गळलि कुरुहु गॊड दॆडॆ याटदवरलि वेष विधद त्र-
धूटियरलरसिदनु मरॆयदॆ मंदगामिनिय ॥ 20 ॥

अॆळॆय जव्वनेयरलि मुग्धा ललनेयरलि विदग्धेयरला
कलित ललित प्रौढेयरलनुमान मार्गदलि
सुळि सुळिदु सीतेयनु काणदॆ बळलि दुम्मह दिंद मिक्किन
निळय निळयव शोधिसुत सुळिदाडिदनु हनुम ॥ 21 ॥

सुर विरोधि धरामरर तद्दरणिपर तद्वैश्य शूद्रा-
द्यर निकेतन निचयदलि निर्णैसि नाल्कनेय
सुरुचिर प्राकार दभ्यंतरद धनिकर राजपुत्रर
परिपरिय मणिभवन वीथिय लरसिदनु हनुम ॥ 22 ॥

पर झूलती सती-साध्वी स्त्रियाँ, लोरियाँ गाती सुन्दरियाँ, उपपति के घर जाती स्त्रियाँ, (सुन्दरियाँ) पतिव्रता नारियाँ, संगीत-नर्तन आदि में व्यस्त मनोरंजन करनेवाली स्त्रियाँ —इस प्रकार सभी जातियों की स्त्रियों में कपि आंजनेय ने जानकी के लिए तलाश की। १९ दासियाँ, छोटे-मोटे काम करनेवाली स्त्रियाँ, कामवासनापरवश स्त्रियाँ, आँख नचाते प्रेम जतानेवाली स्त्रियाँ, संकेतगृहों की कुट्टनियाँ, अपनी जान-पहिचान किसी को मालूम न हो, इस प्रकार घूमती स्त्रियाँ, विविध वेषधारी युवतियाँ, वग़ैरहों के मध्य अनथक परिश्रम करते सीता को ढूँढ़ा। २० नवोढ़ा स्त्रियाँ, मुग्धा नवयुवतियाँ, अधेड़ उम्र की चतुर स्त्रियाँ, ज्ञानी-मानी परिणत स्त्रियाँ आदियों के मध्य संदेह भरी दृष्टि से, तर्क-वितर्क करते चलते-ढूंढ़ते हनुमान विचरने लगे। कहीं पर सीता को न पाकर, व्याकुल हो बचे-खुचे घरों में ढूंढ़ते विचरने लगे। २१ राक्षस, ब्राह्मण, राक्षस-राजा, वैश्य, शूद्रादियों के घरों में सीता के न होने का निश्चय कर, चौथे सुन्दर क़िले के मध्यस्थित अमीरों, राजपुत्रों के तरह-तरह के रत्नगृहों की गलियों में हनुमान ने सीता को ढूंढ़ा। २२ उस क़िले के आवरण को पार कर असुर-भैरव हनुमान ने रत्नभवनों के मध्यस्थित मंज़िलों

दाटि वळिका परिधियनु नैशाट भैरव नरसिदनु मणि
कूट दुष्परिगॆगळ कॆळीगृहद सतियरलि
नाट दादुदु सुदि्द बुद्धिय कोटलॆय कॊल्लणिगॆयलि मे-
गोटॆयनु हत्तिदनु हदिनाऱनॆय वळिगॆयलि ॥ 23 ॥

हॊळकिदुदु किरणाळि हेमद हळिगळलि संधिसिद कुट्टिम
तळद मणि हर्म्यादिगळ हंतिगळ सॊगसिनलि
निळय निळयद सोम सूर्यर ललित वीथिय भद्र भवना
वळिय कनकद तोरणगळो जॆयलि रंजिसितु ॥ 24 ॥

ईडिऱिद मणिमयद कलशद झाडिवॆळगिन हेमरसदलि
तीडि तॊळगुव सुधॆय सॊपिन सूसकंगळलि
जोडिसिद जांबूनदद परिपाड्गळ पल्लवद फळिय प-
वाडगळ कॆतन निकेतन वॆसद वल्ललि ॥ 25 ॥

नगर तानदु नूऱुयोजन दगलवनितर नाल्कु भागॆय
जगति तानॊळ कोटॆ यदरुन्नतिय वैभवद
हॊगळ लॆन्नळवल्ल हनुमन वगॆय दॆंतुटो सर्वगत नॆं-
बॊगुमॆ हनुमंगल्ल दॆल्लिय दसुर हरगॆद ॥ 26 ॥

वाले गृहों के क्रीड़ागृहों में क्या सीता का पता मिलेगा ? —इस तरह विचारकर वहाँ पर सभी जगह ढूंढ़ा। कहीं पर उसका पता न लगा। वे चिंताकुल हुए। रात्रि की सोलहवीं घड़ी बीतने पर ऊपर के क़िले पर चढ़े। २३ सोने के गच से निर्मित नींव पर सोने की सलाइयों से अलंकृत रत्नभवन पंक्तिबद्ध किरण बिखेरते प्रकाशमान थे। घर-घर के तथा चंद्रगली, सूर्यगलियों के श्रेष्ठ भवनों के सोने की बंदनवारें पंक्तिबद्ध होकर शोभायमान थीं। २४ रत्न-कलशों की भीड़ के सुनहले प्रकाश के प्रवाह से जगमगाते, अमृत-सदृश कांतियुक्त सुन्दर गच्छे, जुड़े-जुड़ाए सुन्दर रत्नालंकार तथा कोंपल जैसे वस्त्रों के ध्वज-पताकाओं से सुशोभित कई महल जहाँ-तहाँ जगमगा रहे थे। २५ "लंका नगरी का विस्तार सौ योजन था। (उस सारे विस्तार का) एक चतुर्थांश भाग अंदर के क़िले से व्याप्त है। उस नगरी की भव्यता तथा वैभव के वर्णन करने में मैं अपने को असमर्थ पाता हूँ। हनुमान की तो रीति ही विचित्र है। हर स्थानों में प्रवेश करने का प्राशस्त्य उस हनुमान के सिवा असुरारि को कहाँ है ?" —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। २६ घर-घर में सोते, सपने में जागे हर एक के दृष्टिपथ पर हनुमान के सिवा, विविध गृहों में— हर

मनॆ मनॆ गळलि पुरजनंगळ कनसिनलि तिळिदॆद्द निद्रॆय
जनद लोचन वीथियलि विविधालयंगळलि
हनुमनय वागिर्दुदै नृप तनुज केळरसिदनु सीता
वनितॆयनु वैचित्र गतिय जवाग्ल जोकॆयलि ॥ 27 ॥
शुकन भवनवना महापार्श्वकन मनॆय महोदरन स-
द्मकव सारणनालयव सदनव नरांतकन
विकट युद्धोन्मत्त देवांतक विरूपाक्ष प्रमुख ना-
यकर निळयंगळलि नोडिदनवनि नंदनॆय ॥ 28 ॥
वीर कुंभ निकुंभ कलिजंभारिजितु धूम्राक्ष दुर्मद
घोरबल मित्रज्ञ विद्युज्जिह्व शार्दूल
शूररिपु मकराक्ष रणजज्जार बल नतिकाय मुख्य कु-
मारवर्गद मनॆगळलि नोडिदनु जानकिय ॥ 29 ॥
त्रिशिर विद्युन्मालि सेना विसर पति सुमति प्रहस्तर
वसतिगळलि विरूपलोचन लोहितांबकर
पिशित भक्षण जंबुमालि गळसुर नायकर मलगेह
प्रसरदलि नोडिदनु परम पतिव्रता सतिय ॥ 30 ॥
केळि बल्लै हिंदॆ बनदलि बोळॆ यंबिनलूर्मिळापति
बोळिसिद किवि मूगिनसुरॆय कथॆयना सतिय

जगह हनुमान के सिवा और कोई दिखाई नहीं देता था। सुनो राजकुमार, हनुमान ने शीघ्रगामी गतिविधियों के हर प्रकार के प्रयोगों की बारीकी से सीता को हर कहीं ढूंढ़ा २७ शुकजी का भवन, महापार्श्वक का घर, महोदर का मकान, सारण का निवास, नरांतक का गृह, हर जगह ढूंढ़ा। फिर प्रचंड युद्धवीर देवांतक, विरूपाक्ष वग़ैरहों के महलों में भी भूमिसुता सीता के लिए हनुमान ने अन्वेषण किया। २८ वीर कुंभ, निकुंभ, महापराक्रमी इन्द्रजित्, धूम्राक्ष, दुर्मद, उग्रबलशाली मित्रज्ञ, विद्युज्जिह्व, शार्दूल, शत्रुवीर मकराक्ष, रणधीर अतिकाय वग़ैरः जो रावण के प्रमुख पुत्र थे—इनके महलों में भी जानकी के लिए अन्वेषण किया। २९ त्रिशिर, विद्युन्मालि, सेनापति सुमति, प्रहस्त आदियों के घर की भी तलाशी ली। फिर विरूपलोचन, लोहितांबक, मांसाहारी जम्बुमाली वग़ैरः राक्षस-नायकों के गृह-समूहों में परम पतिव्रता सीता के लिए ढूंढ़ा गया। ३० इसके पूर्व, वनवास के समय उस वन में (पर्णकुटी में रहते समय) उर्मिलापति लक्ष्मण ने एक प्रकार के पैने तीर को लेकर जो राजसी के नाक-कान काटे थे वह कहानी तो

आलयकॆ बरलवळु कडुकिवि मूळुगळ मूकॊरतियर स-
म्मेळदिं दिर्दळु कराळ प्रमुख शूर्पणखि ।। 31 ।।
हॊक्क नवळालयवना लय रक्कसिय कंडा चरिसि हिं-
दक्कॆ हॆज्जॆय निक्कि हॆदरिदु राम रामॆनुत
बॆक्कसं बॆरगागि भैरव नक्क तानिव ळाग बेकॆनु
तिक्कॆलन नारैवुतंजुत नोडिदनु हनुम ।। 32 ।।
ऊळुहि कॊंडनु राम नीबॆय चॆलुविकॆय होगाडि दिटविव
ळळुक दिर्दडॆ तिन्न दिहळॆ तोरुवी जगव
जलजभव नारॊडल लीबॆय निळुहिदनो हडॆदवळ हॊट्टॆय
वळय वॆंतुटॊ मा अॆनुत बॆरगादना हनुम ।। 33 ।।
इद्दरलिल सहस्रसंख्यॆय मद्दु कुटिलद माय कातिय
रिद्दॆसॆय किवि गॊय्कियरु मूळियरु मुक्कियरु
कद्दवरु कैगडिकॆयरु मॊलॆ बिद्दवरु मुदु गुटणिगळव
ळिद्दॆसॆय कट्टोलगद सॊक्कुगळ सॊगसिनलि ।। 34 ।।

तुमने सुनी ही है, लव। अब हनुमान जब उस राक्षसी के घर आए तो देखते क्या हैं ? —आँख-कान-विरहित, पंगु, अंगविकल राक्षसियों के मध्य वह भयानक आकार-प्रकारवाली शूर्पणखा भी है। ३१ हनुमान ने उसके घर में प्रवेश किया। उस प्रलय-स्वरूपी राक्षसी को देखकर चौंक पड़े तथा "राम-राम" कहते पीछे पग धरकर भयभीत हुए। दाँतों तले अँगुली दबाए उसकी ओर देखते 'शायद यह भैरव की बड़ी बहिन है।' इस तरह सोचते डरते-डरते उसके दोनों पार्श्वों को परीक्षापूर्ण दृष्टि से अवलोका। ३२ "राम ने इसका सौंदर्य विनष्ट कराकर अपने को बचा लिया। अगर वह निर्भीत है तो इस प्रत्यक्ष जगत् को खाए बिना रहेगी ? ब्रह्मा ने इसको किसके गर्भ से धरती पर उतरवाया— पता नहीं। इसे जन्म देनेवाली माँ का, पेट का गढ़ा कितना बड़ा रहा होगा।" वग़ैरः बातों पर विचार करते हनुमान अचरज में डूब गए। ३३ वहाँ हज़ारों की संख्या में, सम्मोहन प्रयोग की ओषधी प्रयुक्त करने में चतुर धोखेबाज़ मायाविनी स्त्रियाँ, दोनों कान खो बैठनेवाली स्त्रियाँ, अंगविकल, मूर्खाएँ, चोरी करनेवाली, ठूँठ जैसे हाथवाली, झूलते-लटकते स्तनोंवाली, बूढ़ी चिड़चिड़े स्वभाववाली, घमंड से इठलाती स्त्रियाँ शूर्पणखा की सभा में दोनों तरफ़ से भरी थीं। ३४ कटे भैंसे तथा बकरों के सिरों का ढेर उनके सामने था। एक ओर गरम रक्त से भरी हाँड़ियाँ धरी थीं। दूसरी ओर आँतडियों के गुच्छे के गुच्छे फूल की लड़ों की तरह लपेटे गये

मॆरॆद विदिरलि कोण कुऱिदलॆ दुऱिग लॊट्टिल दॊंदु कडॆयलि
जुऱित रकुतद रसद रंजणि गॆगळ दॊंदॆसॆय
निऱिगरुळ पूदॊडॆ गळलु क्किऱिव कळु गॊड नॆडॆगळलि कुकि
लिऱिदु कुणि वसुरॆयर कंडुगुळिदनु कलिहनुम ।। 35 ।।
कडिव कॊच्चुव कॊऱॆव कुरुकुव सुडुव ताळिसि तिंबि तेगुव
कुडिव हाडुव हारविसु वसुरॆयर मैमदद
इडिद हॊलसिन नात दुब्बर दॆड बलद तिनि सुगळ मध्यद
हडिकॆ गनॆय कंडु हेसुत हनुम हॊऱवंट ।। 36 ।।
तिरुगिदनु बलकागि हरभूधरवनॆळिप हब्बुगॆय हर
वरिय योजन वैदऱळतॆय कनक मणिमयद
परिपरिय पुत्तळिय चित्रद तरतरद नॆलॆ नॆलॆय मणिमं-
दिरव कंडनु कुंभकर्ण निशाचरेश्वरन ।। 37 ।।
ऎरडु योजन दायतद परिसरद मणिपरियंकदलि त-
न्नॆरडु दॆसॆयलि तन्न तूकद घोर युवतियर
करद तलॆगिं बिनलि निद्रॆय भरदलिर्दनु नील गिरियनु
सरसि जोद्भव कडॆदु कॆडहिद तॊऱद लसुरेंद्र ।। 38 ।।

तथा लबालब भरी शराब की हाँड़ियाँ थीं। इनके चारों ओर केकारव करती नाचती हुई राक्षसियों को देख हनुमान ने (घृणा से) थूक दिया। ३५ काटती हुई, टुकड़े-टुकड़े करती हुई, कुरेदती हुईं, पगुराते खाती हुईं, जलाकर बघारकर खाती हुईं, डकार लेती हुईं, (शराब) पीती हुईं, गाती हुईं, बुभुक्षु मदमस्त राक्षसियों के दुर्गंध के मध्य दोनों ओर ढेर सारी खाद्य-वस्तुओं को लगाए बैठीं उन गंदी क्षुद्र स्त्रियों को देख हनुमान घृणा के मारे वहाँ से (तुरंत) रवाना हुए। ३६ दायीं तरफ़ मुड़ने पर उनको राक्षस-नायक कुंभकर्ण का मणि (रत्न) मय महल दिखायी पड़ा जो कैलास को धिक्कारने का सामर्थ्य रखे हुए, पाँच योजन लम्बा विस्तृत, रत्नों से मढ़े सोने से जड़े विविध प्रकार की गुड़ियों से सुशोभित तरह-तरह के चित्रालंकारों से विभूषित था। ३७ दो योजन भर विस्तृत चौड़े रत्नजटित मंच पर अपने दोनों तरफ़ अपने वज़न की बराबरी की भयानक युवतियों के हाथों को तकिये के तौर पर लिये पड़ा कुंभकर्ण गाढ़ी नींद में सोए पड़ा था। लगता था कि ब्रह्मा ने मथकर नीलपर्वत को नीचे गिरा दिया है। (नीलपर्वत-सदृश कुंभकर्ण की देहकांति थी)। ३८ हनुमान को बहुत ही आश्चर्य

जगद कॊलॆ गॆलसदलि वळलिकॆ बिगिद निद्रॆय भैरवनो रति
यॊगडिकॆय विश्रम सुषुप्तिय लयकृतांतकनो
उगिसि नीरनु बरिसिदु मैदॆगद मुगिलिन मूलमूर्तियो
विगड रक्कसनो महादेवॆ नुत वॆऽरगाद ॥ 39 ॥

लोककिव मुनिदॆद्द नादडॆ वेकु वेडंबवर दारु पि-
नाकि पद्मजरुगळु पडियल्लॆव वगॆ मनव
सोकि कॊंडिदॆ गॆलवु नम्मिक्ष्वाकु कुलजंगहुदु चित्र वि-
लोकनकॆ नॆलॆ गॊळ्ळदिदॆ नेत्रंगळॆनगॆद ॥ 40 ॥

इवनु हिंदुदिसिदडॆ सावरॆ दिविजरिवु मधुकैटभादि ग-
ळवतरिसु वनॆ दैत्यहर नाना युगंगळलि
इवदि राळ् तनकमरतति कंपवनु ताळुव देनरिदु शिव
शिव महादेवॆनुत बॆऽरगि नलिदॆना हनुम ॥ 41 ॥

धरॆय मुळुगिसु तॆळ्व लयसागरद रभसवो हॊत्त विश्वं-
भरॆय बिसुटहि पतिय निडुसुय्लुगळ सूळु गळो

हुआ (उस कुंभकर्ण के स्वरूप को देखकर) 'क्या यह जगत के लयकार्य से थककर सो रहा भैरव है ? या कामक्रीडा से थककर विश्रांति पा रहे गाढ़ी नींद में व्यस्त प्रलयकालीन यम है ? या जल को बरसाकर लौटे बादल का मूल स्वरूप है या भयानक राक्षस है— हे महादेवजी— इसे क्या समझूं ?' इस तरह कहते हनुमान ने आश्चर्य के उद्‌गार निकाले। ३९ "यह क्रोधित हो, उठकर आक्रमण करने आये तो इस जगत में 'हाँ', 'ना' करने की ताक़त किसमें है ? मुझे तो लग रहा है कि शिवजी या ब्रह्माजी इनकी बराबरी नहीं कर सकते। हमारे इक्ष्वाकुकुलोत्पन्न श्रीराम इनसे लड़कर विजय कैसे पाएँगे —यही आश्चर्य की बात है। इसे देखने में ये दो आँखें मुझे यथेष्ट नहीं लग रहीं।" इस तरह हनुमान ने कहा। ४० "अगर यह पूर्वकाल में पैदा हुआ होता तो असुर मधु-कैटभादियों की हत्या संभव होती ? अन्यान्य युगों में राक्षसवैरी विष्णु अवतार धारण करते ? कुंभकर्णादियों की आज्ञा से देवताओं के थरथर काँपने में क्या अतिशयोक्ति है ? शिव-शिव महादेव !" यों कहते हनुमान आश्चर्य में डूबे। ४१ कुंभकर्ण के, खुर्राटें जो ले रहे थे मानों ऐसे लग रहे थे— "प्रलयसागर के भूमि को डुबाकर ऊपर उठा लेते वेग के शब्द की तरह, माथे पर धरे भूमि को उतार फेंककर आदिशेष से ली गयी दीर्घ निःश्वास के शब्द की तरह, फूटते ब्रह्मांड के रंध्र से बड़े वेग से बाहर निकलते हवा के भयंकर शब्द की तरह भयंकर

बिरिप कमल भवांड रंध्रद लुर वणिप बहिरा निलन बलु
मोरहवो कोरहवो महादेवेंदना हनुम ।। 42 ।।
अंनुत मेल्लने मणिखचितकांचनद भित्तिय बळिविडिदु सा-
देनुसुरारिय सुळिव मूगिन सुय्ल सरिसदलि
वनिते सिंहिके सेळेद नेळलिन घनते गिम्मिलागि सेळेदुदु
हनुमननु होय्दोडे मुरिदु निट्टुसुरु रक्कसन ।। 43 ।।
उसुर बिडे होरबीळ्व नोळदेग दुसुरिनलि मुळुगुवनु मूगिन
कसुमळद कावळद कलित श्लेष्म शरधियलि
उसुर गमनागमद सरणिय गसणियलि बेंडागि किडि किडि
मसगि कोपानलन नोकरिसिदनु कलिहनुम ।। 44 ।।
बेळदना नासिकद नाळद कळिय कुहरद कोहिनलि कों-
डेळेदु सूसुव सुय्ल बट्टेगे कील कोट्टंते
बलिदु दुब्बस वखिळ करणद बेळसु बीतुदु बेदुरि सीतनु
प्रळयदलि सिडिलेरगिद वोलळ वळिये पौरजन ।। 45 ।।

शब्द जो हो रहा था कि हनुमान के मुँह से उद्‌गार निकला— 'हे महादेव' ! यह कितना भीषण है ? ४२ हनुमान इस तरह आश्चर्य प्रकट करते हुए धीरे-धीरे रत्नजटित सोने की दीवारों के बग़ल में ही चलते-चलते उस राक्षस (कुंभकर्ण) के नाक से निकालते निःश्वास के सम्मुख उपस्थित हुए। राक्षस के निःश्वास ने हनुमान को पीटकर जो फिर तुरंत आकर्षित कर लिया, वह उनको ऐसा लग रहा था कि सिंहिका ने, जो उनकी परछाईं पकड़कर खींच लिया था, उससे दुगुने वेग से अब मानों पकड़े और जकड़े गये हैं। ४३ कुंभकर्ण जब निःश्वास छोड़ते हैं (रेचक) तो हनुमान बाहर फेंके जाते हैं तथा जब कुंभकर्ण श्वास लेते हैं (पूरक) तब हनुमान भीतर खींचे जाते हैं; फिर उनको नाक की रेंट में, दुर्गंध भरे स्थान में, वहाँ के अँधेरे गढ़े में तरह-तरह की यातना भुगतनी पड़ती है। इस प्रकार श्वासोच्छ्वास के साथ अंदर आने-जाने की क्रिया से तंग आकर हनुमान अत्यंत क्रोधित हुए, तो चिनगारियाँ निकलने लगीं। ४४ (भयानक क्रोधपूर्ण रूप धारण करनेवाले) हनुमान इस प्रकार बढ़े कि नथुने के रंध्र से, जहाँ से श्वास-प्रश्वास निकल रही थी, वहाँ कील-जैसी ठोंकी गयी। कुंभकर्ण की श्वासोच्छ्वास-प्रक्रिया मानों कुंठित पड़ गयी; फलस्वरूप उनकी इन्द्रियाँ भी शिथिल पड गयीं। डर के मारे वह (कुंभकर्ण) जो छींका तो प्रलयकालीन बिजली की आवाज जैसी हुई— इसे सुनकर नगरी के लोग

शीत भरकी हनुमनुल्कापातदंतिरॆ सिडिदु बिद्दनु
कातरिसि मयरचित वज्रस्तंभवनु तागि
ताततनु कर्णाटकद जनजात नोविगॆ नॆनॆव वॊलु नि-
म्मात नॆनॆदनु नॊंदु नेवरिसुत्त नॊसलॆडॆय ॥ 46 ॥
कॊप कॊनरितु मत्तॆ लयशिखि रूपनादनु संक्रमिसिता
टोव वसुरन कॊलॆगॆ तंदनु मनवननिलसुत
कैपरॆय मरळुगळ नरमां सोप हारद सुरर नॆत्तर
लेप दुन्नत शूल विरलद कॊंडु बॊब्बिरिद ॥ 47 ॥
कॊलुवॆ नदद्रि दिवन नॆनुतग्गळ शिलोच्चय सार बाहा
लुळित बल नॆत्तिदनु शूलव शूलियंददलि
अलुग लॊलदुदलै त्रिकूटाचल महादेवा महायुध
दळव दॆतुटॊ सूसिदवु किडि कूडॆ दॆसॆदॆसॆगॆ ॥ 48 ॥
ऒत्ति हूणिसि घरि घरिनॆ हल्लोत्ति हूडिद नॆदॆगॆ यकटा
सत्तडिवनॆ दुदिसुवनु बळिकॆम्म रघुपतिय

घबड़ा गये। ४५ "कुंभकर्ण की ज़ोरदार ज़बर्दस्त छींक के कारण हनुमान उल्कापात की तरह छिटककर बाहर आये तो वहाँ के मयनिर्मित वज्र के खंभे से टकराकर गिर पड़े। दुःख-दर्द में कन्नड प्रदेश की जनता जैसे तुम्हारे पिताजी का नाम स्मरण करती है, वैसे ही हनुमान ने भी 'हाय् हाय् ! हे मेरे तात राम !' कहते हुए अपने माथे को सहलाते हुए उस तुम्हारे आत्मीय ने (हनुमान ने) राम-नाम स्मरण किया।" इस प्रकार वाल्मीकि महर्षि ने कुश-लव से कहा। ४६ हनुमान क्रोध के मारे तमतमाए प्रलयाग्नि-सदृश बने। उनका आटोप बढ़ता ही गया। उन्होंने निश्चय किया कि इस राक्षस को मार डालना चाहिए। पिशाचों से खाये जानेवाले मनुष्य के मांस चिपके, देवताओं के रक्त से सने हुए त्रिशूल को (जो वहाँ पर था) हनुमान ने तालियाँ पीटते उठाया तथा एक बार भयानक रीति से गरजे। ४७ 'इस (त्रिशूल) से अभी इसे समाप्त किए देता हूँ।'—इस तरह कहते महापर्वतोपम सत्त्वशाली बाहुबलसंपन्न हनुमान शूलपाणी शिव-सदृश हो त्रिशूल को ऊपर उठाते हैं। उस शूल के हिलते न हिलते त्रिकूट पर्वत हिलने लगा। हे महादेव ! महायुद्ध का सामर्थ्य कितना भयानक है। दिशि-दिशाओं में चिनगारियाँ फूट पड़ीं। ४८ "किटकिटाकर दाँत-होठ चबाए, सौगंध खाकर त्रिशूल का (कुंभकर्ण की) छाती की तरफ निशाना ताना। "हाय, यह अगर मर जाय तो फिर पैदा हो सकता है ? अगर नहीं हुआ तो रघुपति के उस भयावह युद्ध के

ऒत्त बरदाहवकॆ तनुवनु तॆत्तु निलुववरारु नॆरॆदु-
वृत्त तनविदु नम्मदॆंदंतरिसिदनु हनुम ॥ 49 ॥
बदुकु निद्रॆय लिद्दवन कॊलुवुदु महावीररिगॆ कुंद-
भ्युदय वक्कुडिसुवदु नगुवदु लोक दखिळजन
बदुकु बदुकॆनु तिळुहिदनु बळिकद भुतव शोधिसिद दयस्कां-
तद महाद्भुत भारदुग्र निशाचरायुधव ॥ 50 ॥
तिरुगिवनु बळिकल्लि सीतॆय परिय काणदॆ तन्निकेतन
दॆरडु मैगळ मंदिरव शोधिसुत शीघ्रदलि
परम पुण्य पतिव्रताजन दरसि तनगिन्नॆल्लि नॆरॆ गो-
चरिसूवळॊ हायॆनुत हम्मदवोदना हनुम ॥ 51 ॥
बरबरलु मुंदॆ सॆंदुदग्गद परम वैष्णव चक्रवर्तिय
वर निकेतन मेलुकट्टिन चित्र पत्रगळ
हरहिनलि हॊदरॆद्द कलशोत्कर गळलि कमनीयतर दु-
प्परिगॆगळ लमरॆंद्रनमळागार दंददलि ॥ 52 ॥
आव कडॆयलि नोडिदॊडॆ लक्ष्मी विलासद विमल मंटप
वाव कडॆयलि तिरुगिदडॆ मणिभद्र भवनचय
आव कडॆयलि हॊक्कडनुपम देवपूजा गृहगळिंदवु
श्रीवरन पालगडल मध्यद भवनदंददलि ॥ 53 ॥

लिए देह ताने कौन खड़ा रहे ? यह मेरा आचरण ठीक नहीं जँचता।" इस प्रकार सोच-विचार करते हत्या के विचार को त्याग देते हैं। ४९ "जीवित व्यक्ति का सोते समय मार डालना श्रेष्ठ वीर के लिए कलंक-प्राय है; दुनिया भर के लोग हँसेंगे। "जीते रहो, जीते रहो" —इस तरह कहते हुए चुम्बक के निचोड़ से बनाए गये उस भारी वज़न के भयंकर अद्भुत आयुध को हनुमान ने नीचे उतारा। (प्रयोग नहीं किया।) ५० तत्पश्चात् हनुमान वहाँ से लौटे। (वहाँ) सीता को देख न पाने के कारण उस भवन के दोनों तरफ के घरों में शीघ्रातिशीघ्र ढूँढ़ते 'पुण्य पतिव्रताओं की रानी सीता को कहाँ देख पाऊँगा ? हाय।' —इस तरह कहते व्याकुल हनुमान मूर्च्छित हुए। ५१ आगे बढ़ने पर श्रेष्ठ विष्णुभक्त चक्रवर्ती विभीषण का पवित्र गृह दिखायी दिया। रंग-विरंगे, अलंकृत पत्तों से सजे चौकोर कपड़ों से, कलशों के समूहों से, मनोहर अट्टालिकाओं से (विभीषण का महल) देवेंद्र भवन की तरह जगमगा रहा था। ५२ जहाँ-तहाँ संपद्भरित पवित्र मंटप, जिधर-तिधर मंगलमय रत्न-मंदिर, जहाँ चाहे जाओ, वहाँ देवताओं के पूजागृह वग़ैरहों के कारण क्षीरसागर मध्यस्थित

हरिकथा संगतिय चित्रोत्करद मय भित्तिगळु नोडलु
हरिय नाटक दंगना विभ्रम विलासमय
हरिय गीतद गायकर विस्तरणमय वागिर्दुदे जा-
गरद लिद्दनु वर विभीषण देव हरिदिनद ॥ 54 ॥

ललित हेमद विविध रत्नावळिय हरियवतार दनुपम
विलसित वरसाल भंजिकेगळ विलासदलि
वळयवळयद विविध सौधावळि गळलि वृंदावनवु कं-
गोळिसिदुदु मध्यदलि मणिमय भद्र भवनिकेय ॥ 55 ॥

खळरोळगे सज्जननु हालाहल दोळगे सुधे कामरंगळ
हळुवदलि हरिचंदनवु शिखियोळगे शीतळवु
कलुगळोळु निजपुरुष जनिसुवु दिळेगे चित्रवला येनुत मै-
योलहिनलि नोडिदनु दूरदला विभीषणन ॥ 56 ॥

आदडहनंदिन महा प्रह्लाद निव संदेह विल्ल त-
ळोदरिय तंदव हिरण्यक नहुदु तप्पदिदु
आ दशस्यंदनन नंदन नादि नरकेसरिय वोलु नेरे
वेदिसुत्तिदे मति विवेकव नेंदना हनुम ॥ 57 ॥

लक्ष्मीपति भवन-सदृश वे (विभीषण का महल) शोभायमान थे। ५३ जिधर-तिधर हरि-कथा की घटनाओं को चित्रित करनेवाली मयनिर्मित दीवारें, विष्णु-चरित को नाट्यरूप में अभिनय कर रहीं स्त्रियों के वैभव-विलास, भाव-भंगिमाओं से घिरे, श्रीहरि के स्तोत्रों को गाते गायकों के मध्य विभीषण एकादशी के जागरण में (रतजगा) तन्मय थे। ५४ विष्णु के (विभिन्न) अवतारों को विलोकर खड़े किये गये सोने तथा रत्न के मनोहर पुतलियों की पंक्तियों से शोभायमान, चारों ओर वर्तुलाकार में विनिर्मित विविध सौधों (प्रासादों) के रत्नों से सम्पन्न मंगल महलों के मध्य वृन्दावन शोभायमान था। ५५ 'दुर्जनों में सज्जन का, विष में अमृत का, जंगली पेड़ों से भरे अरण्य में श्रीगंध (चंदन) वृक्ष का, आग में ठंडक का, पत्थरों में स्फटिक शिला का प्रादुर्भाव जगत में आश्चर्यकारक घटना है' —इस प्रकार सोचते दूर खड़े रहे हनुमान ने विभीषण को देखा। ५६ "इसमें शक नहीं कि यह (विभीषण) पूर्वजन्म का महाप्रह्लाद है। सीता का अपहरण कर ले आनेवाला सचमुच पूर्वजन्म का हिरण्यकशिपु ही है। मुझे तो ऐसा ही लगता है कि दशरथ का यह पुत्र (श्रीराम) आदि नरसिंह ही है।" —इस प्रकार हनुमान सोचने लगे कि यही विवेकसम्मत तथ्य

ऎनुत मॆल्लनॆ सूक्ष्मरूपवननु कॊळिसि कालिक्कॆ मणिमय
कनक रचित द्वार दिद्दॆसॆगळलि शुक निकर
हनुम होगदिरु परवधूजन दनुजनर मनॆ यिदुकणा का-
मिनिय नरसुव ठावि दल्लॆनॆ केळिदनु हनुम ॥ 58 ॥
तप्पदिदु शुकवचन वॆनुता वॊप्पदलि तिरुगिदनु जनकजॆ
यिप्प ठाविन्नावुदो यॆनुततुळ चिंतॆयलि
कप्पोगुव कत्तल्यॊ ळॆतं दॊप्पु तांदोळदलि सुरकुल
दर्पदळन दशास्यनरमनॆ गागि नडॆतंद ॥ 59 ॥
मॆरॆदुदै मरकत शिलाबंधुरद कोटावळय कनको-
त्तर निबंधद निखिळ रत्नावळिय विलसितद
तरतरद तनि बॆळगिनबुधिय तॆरॆय तॆनॆगळ तॆक्कॆयलि दश-
शिरन भवनावळिय शालावीथि रंजिसितु ॥ 60 ॥
हॊक्कना मुख शालॆयनु कळिदॆक्कतुळदलि मॆरॆदुदै सभॆ-
हॊक्कुळिन हूदोडविनरसन सभॆय सडगरव
मिक्कु शत साविरद कंबद तॆक्कॆगळ तनि बॆळगिनलि क-
ण्णिक्क लसदळ वॆंबवॊलु तजो विलासदलि ॥ 61 ॥

है। ५७ इस तरह सोचते हुए हनुमान ने धीरे-धीरे सूक्ष्म रूप धारण किया; फिर धीरे-धीरे क़दम बढ़ाया तो रत्नमय स्वर्णद्वारों के दोनों ओर स्थित तोते— "हनुमान आगे मत बढ़िए। अंदर प्रवेश मत कीजिए। परस्त्री सहोदर का यह राजमहल है। सीता की तलाश का यह स्थान नहीं है।" इस तरह कहते हनुमान ने सुना। ५८ 'तोतों की बात झूठ नहीं हो सकती लेकिन जानकी कहाँ है?' —इस बात का पता ही नहीं लग रहा न? हनुमान अब अधिक व्याकुल हुए। वहाँ से गंभीर होकर निकले। गाढ़ अंधकार से भरे मन के अनिश्चित भाव में हनुमान देवताओं का दर्प विदीर्ण करनेवाले दशकंठ के राजमहल में आए। ५९ सब तरह की रत्नों की कांति से संपन्न, स्वर्णनिर्मित मरकत (स्फटिक) शिलाओं से निर्मित क़िलों की सुन्दर पंक्ति दिखायी पड़ी। कई प्रकार की कांतियों के समुद्र-लहरों से प्रकाशित क़िले के भीतरी हिस्से में शोभायमान, रावण के भवनों से सुशोभित साल वृक्षों की वीथिका दिखायी पड़ी। ६० हनुमान, बड़े धैर्य के साथ रावण के राजमहल का बरामदा लाँघ गये। फिर अंदर प्रवेश किया। सौ हज़ार खंभों की पंक्तियों के प्रकाश को दृष्टि सहन न कर पाती थी; इस प्रकार के अतिशय तेज के कारण जगमगाती रावण की सभा (भवन) ब्रह्मनाभ के सभाभवन के वैभव से कई गुना बढ़कर थी। ६१

परिकलिसिदुरु मौक्तिकव संचरिसु वानॆय मत्तमद नि-
र्जरव सुळिवबलॆयर पदतळयुगळ दलतगॆय
हॊरॆद हॆज्जॆय नळिकुळंगळ नॆरवि मल्लिगॆ मृग मदाळिय
सरसिरुह वॆंदॆरगुवसुर सभांगणव कंड ॥ 62 ॥
कळिदु मुंदण विविध मणिमंजुळ मुख द्वार गळ बलिद-
ग्गळव मुरिदॊळ हॊक्कनी परिकणॆय कणॆयदलि
ऎलॆ कुमाररु कॆळिरै कंगॊळिसि तिदिरिनलि कामकॆळी
विलसितन रावणन रंजित राजमणिभवन ॥ 63 ॥
हॊडकरिसुवदु रजनि रजनिय कुडिवुदमळ सुसांद्र चंद्रिकॆ
बिडदॆ चंद्रातपव नपहरिसुवदु हॊंबिसिलु
कडॆद करुवाडद कवाडद कॆडॆ विडिदु हॊबॆसद लुरॆ हॊग-
रिडुव नीलद मौक्तिकद माणिकद लहरियलि ॥ 64 ॥
बडगियरु मय विश्वकर्मरु मृड सरोजजरिवगॆ बॆडिद
कॊडुववरु भंडारि धनपति गुरु मुहूर्तिकनु
गॆडॆग रिंद्रादिगळु सिरियलि बडवने बॆरगॆ नॆनुत कॆल
सिडिदु कालिंदॊदॆदु कदवनु हॊक्कना हनुम ॥ 65 ॥

अत्यधिक संख्या में बिखरे मोती, विचरते हाथियों के मदजल-प्रवाह, विचरती स्त्रियों के चरण-तल के लाक्षांकित चिह्न जो धरती पर अंकित थे —इन चिह्नों को मल्लिका, कस्तूरी, कमल पुष्पों के सरोवर समझकर टूट पड़नेवाले भ्रमरों के समूह से सुशोभित सभांगन को हनुमान ने देखा। ६२ वहाँ से आगे बढ़कर सामने उपस्थित विविध प्रकार के रत्नादियों से अलंकृत सुन्दर प्रवेश-द्वारों की अगरी तोड़कर एक विभाग से दूसरे विभाग में प्रवेश किया। हे लव-कुश कुमारो! सुनो। रतिक्रीडासक्त रावण का चमकता रत्नभवन सामने विराजमान रहा। ६३ बिलोकर सोने की नक़्क़ाशी के काम किये गये मंजिल वाले महल के दरवाज़ों की कांति में नीलमणि (नीलम) तथा मोती-माणिक्य के प्रकाशों को देखने लगें तो पहले अंधकार-सा लगेगा; तदनंतर ऐसा दृष्टिगोचर होगा कि उस अंधकार को गाढ़ी चाँदनी ने घेरा है; फिर उस चाँदनी का अपहरण सुनहली धूप कर रही है। ६४ रावण के बढ़ई तो मय-विश्वकर्मा हैं। ईश्वर और ब्रह्माजी —यह जो माँगे, दे देते हैं। इनके खज़ांची तो कुबेर हैं; ज्योतिषी बृहस्पति हैं; मित्र तो इन्द्रादि देवता हैं। (इतनी सारी) संपदा को देखते हुए यह क्या ग़रीब है? इसमें आश्चर्य क्या है? —इस तरह

ऎंदिददारो यॆंबवरनॊळ गुद्दिनलि निर्णैसि मॆल्लनॆ
हॊद्दिददनु हॊळॆ हॊळॆव मणिमय खचित कांचनद
भद्र भवनावळियनल्ललिलद्दवर नारैदु सीतॆय
कद्द कळ्ळन खळन सॆज्जॆय सदन कैतंद ॥ 66 ॥
बीरुतिर्दुदु दिव्य गंधद सारतर सौरभव नापुर
वैरिमित्रन बनद कंपिन सॊंपनुर्रे जरॆदु
भूरि भवनद गंधि गव्यव हारियॆनिसुव गंधवहन गं-
भीरतर बंधुरद गंधद भरणियंदयलि ॥ 67 ॥
हॊक्कना भवनवनु भरवस दक्कडिन नोटदलि मुरिमुरि
दिक्कॆलन नारैवु तॊय्यनॆ सारिदनु खळन
लक्क संख्यॆय सतिय रिद्दुदु जक्कुलिप जव्वनद मन्मथ
निक्कॆ यंतिरॆ साल मणिपर्यंक पीठदलि ॥ 68 ॥
हॊळॆहॊळॆव किरु दाढॆगळ थळथळिप कदपिन दीर्घनयनद
बलुमॊलॆय बासॆगळ बंबलुगुरुळ हॊसहॊगर
कलित मददुब्बुगळ तोळिन मलतहुब्बिन पुळिनजघन
स्थळद दानव सतिय रिर्द रॊंदु ताणदलि ॥ 69 ॥

सोचते हुए हनुमान एक ओर से उछलकर लात मारकर अन्दर घुस गये। ६५ जागकर 'कौन है ?' कहकर चिल्लानेवाले को मुक्का मारकर उसकी आवाज़ बन्द करके रत्नों के जड़े चमकते स्वर्णभवनों में स्थित सबकी परीक्षा कर देखते हुए आगे बढ़ते-बढ़ते, वहाँ से सीता के अपहरणकर्ता चोर राक्षस के महल में हनुमान ने प्रवेश किया। ६६ त्रिपुरारि (शिवजी) के मित्र कुबेर के उद्यान की सुगंधि की मधुरिमा का उपहास करते, महजगत के समस्त सुगंध द्रव्यों का व्यापार अपने पास रखे हुए वायुदेव के गहरे सुन्दर हूजे की तरह, रावण का निद्रागृह दिव्य सुगंध सत्त्वपूर्ण खुशबू बिखेर रहा था। ६७ उस (निद्रा) मंदिर में प्रवेश कर विश्वस्त प्यार भरी दृष्टि से हर कोने में निरखते-परखते हनुमान धीरे-धीरे रावण के पास सरक आये। मन्मथ के आश्रय स्थान की तरह मानों जो मोहक था —उस स्थान में लाखों की संख्या में मनमोहक यौवनसंपन्न सतियाँ पंक्तिबद्ध रत्नमंचों पर सोयी थीं। ६८ चमकते-दमकते छोटे-छोटे टेढ़े दाँतों वाली, दमकते गालों वाली, लम्बे नेत्रों वाली, मोटे स्तनों से युक्त, नाभि से छाती तक पेट पर फैले त्रिवलीयुक्त, झुरमुट की तरह के घुँघुराले बालों वाली, नवकांति से भरे-पूरे भुजाओं वाली, रेत की तरह

निशित दाडॆय हुरिय हुब्बिन कसरुगंगळ कर्कशांगद
मिसुप दंतावळिय गुंजुरु दलॆय हॆग्गिविय
बसुऱ हॊद्दिद तोर मॊलॆगळ विषम रक्तास्तमय रा-
क्षस वधू निकुरुंब विद्दुद दॊंदु ताणदलि ॥ 70 ॥

तोरकबरिय कुडितॆगंगळ चारु बिंबाधरद ललित
स्मेर वदनद नुण्गॊरळ पीवर पयोधरद
चारु भुज लतिकॆगळ घनगंभीर नाभिय गुरुनितंबद
भूरिभूषणदमरियरु मॆऱॆदिर्दु दॊंदॆसॆय ॥ 71 ॥

अंग सौख्यद नगॆ मॊगद सर्वांग दमळाभरण किरणत
रंगदनुपम हावभाव विलास विभ्रमद
तुंगकुचदुत्तुंग कबरिय सिंगरद सॊळॆनडुविनमळ न-
रांगनॆय रॆसॆ दिर्दरा स्मर भटन बलदंतॆ ॥ 72 ॥

उळिद पन्नग गरुड गुह्यक ललनॆयरु गंधर्व किन्नर
रॊळु नितंबिनियरु महाप्सर यक्षरॊळगाद
हलवु जातद जव्वनद जंगळॆय रिर्दुदु सुरतसौख्यद
सुललित प्रौढॆयरु सकल कला विदग्धॆयरु ॥ 73 ॥

चमकते नितंबों से सम्पन्न, दर्प-भरी भौंहों से सम्पन्न, राक्षस-स्त्रियाँ एक ओर विद्यमान थीं। ६९ पैने टेढ़े दाँत, कसी हुई भौंहें, मल-भरी आँखें, टेढ़े-मेढ़े अंग, चमकते दाँत, बिना कंघी किए बाल, भारी कान, पेट तक लटकते बड़े भारी स्तन, रक्त पीने में आसक्त, आदि विविध रूपों की राक्षस स्त्रियों का समूह और एक स्थान पर विद्यमान था। ७० मोटा जूड़ा, विशाल नेत्र, बिम्बाफल-सदृश मनमोहक ओंठ, मुस्कुराहट भरे सुन्दर मुखड़े, चिकनी ग्रीवा, उभरे स्तन, कोमल लता-सदृश भुजाएँ, गहरी नाभि, भारी चूतड़, अत्यधिक आभूषणों से संपन्न देवता-स्त्रियाँ एक ओर थीं। ७१ सुख से पालित-पोषित अंगांग, हँसमुख, सारे शरीर भर में चमकते आभूषण धारण किए, असामान्य सौंदर्यपरिपूर्ण भावभंगिमा तथा नखरों से युक्त, उन्नत स्तनों से युक्त, ऊपर उठाकर बाँधे जूड़ों को, जो अलंकारयुक्त थे, धारण करनेवाली, पतली कमर वाली मानव-स्त्रियाँ जो वहाँ थीं मानों मन्मथ की सेना ही वहाँ सजी थी। ७२ बची खुची नागकन्याएँ, गरुड़-स्त्रियाँ, गुह्यक-ललनाएँ, गंधर्व-स्त्रियाँ, किन्नरियाँ, अप्सराएँ, यक्षसतियाँ, वग़ैरः विविध जाति की स्त्रियाँ, जो कामक्रीड़ा सुखपरिणत थीं, तथा सकल कला-नैपुण्य प्राप्त कर चुकी थीं—ऐसी नवयुवतियाँ कई संख्या में वहाँ थीं। ७३

वनधि मध्यद हरिय सोबगिन घनतेय वोल सुरेंद्र नुरु यो-
वनद कांतार्णवद मध्यदलिर्द नोलविनलि
मनुज दनुजामर भुजंगम जन पतित्ववु सलुवुदे निन
गेनुत मिगे कोंडाडिदनु कंडा दशाननन ॥ 74 ॥

नीरु दुंबिद मुगिलकांतिय चारुतर तनुरुचिय नगेमोग
दोरणद थळथळिप कदपिन कर्ण कुंडलद
वीरलक्ष्मिय विहरणोन्नत भूरिभुजदंडद निशाचर
वीर मन्मथ निर्द नालिंगनदि मयसुतेय ॥ 75 ॥

हरन हणेगण्णिन महानल नुरिय होय्ललि सायलारदे
पुरुषतनवनु बिसुटु मंडोदरिय रूपकव
धरिसिदनो कंदर्प नेने सिंगरद सारोदयद सोबगिन
शरनिधिय मौक्तिकद वोलु मेरे दिर्दळा कांते ॥ 76 ॥

तडेदु दीतन मनद संशय देडहु करुणेंद्रियद बुद्धिय
कडुहु कैगुंदिदुदु कालूरिदुदु कळवळिके
बिडिसिदनुतापदलि निजवनु हिडियलरियदे पवनसुतनेवे
मिडुक दीक्षिसु तिर्द नोंदरे घळिगे परियंत ॥ 77 ॥

क्षीरसागर मध्य सौंदर्यान्वित (महा) विष्णु की तरह नवयुवतियों से भरे स्त्री-सागर मध्य राक्षसाधिपति (रावण) आनंदविभोर हो, विराजमान थे। हनुमान ऐसे रावण को देख प्रशंसा करने लगे— मानवों, असुरों, अमरों, नागों आदियों पर तेरा प्रभुत्व स्वाभाविक है। ७४ नीर (पानी) भरे मेघवर्णीय देहकांतिसंपन्न, हँसमुख चेहरे से युक्त, सुन्दर गालों पर चमकते मनोहर कर्णकुंडलयुक्त, वीरताश्रीसंपन्न भुजाओं से शोभायमान राक्षस वीर मन्मथ (रावण) मय की पुत्री मंदोदरी के आलिंगनपाश में आबद्ध थे। ७५ शिवजी के भालनेत्र की प्रचंड आग की लपट से भस्म न होने के कारण अपना पुरुषत्व खोकर मन्मथ ने मानों मंदोदरी का रूप धर लिया हो, अथवा श्रृंगार-रस का सारभूततत्व भरा सौंदर्य-सागर का मोती हो, इस (महान) रीति से मंदोदरी (सौंदर्यमंडित) दिखायी देती थी। ७६ मन में उत्पन्न संदेह ने हनुमान को वहीं रोक रखा। उनके पंचेन्द्रियों की ग्रहणशक्ति की तीव्रता मंद पड़ी; वे अत्यंत व्याकुल हुए। मन के चिंताकुल होने के कारण वस्तुस्थिति पहिचानने में असमर्थ हो एकाध घड़ी तक हनुमान टकटकी लगाए उसी की ओर देखते रहे। ७७ "स्वामी श्रीराम से आज्ञापित चिह्न कुछ-कुछ तो यहाँ उभरकर दिखायी पड़ते हैं।

ऒडॆय नाज्ञापिसिद कुरुहिन कडुहु कॊलविदॆ कणिसदॆ कॊल
वडक वागिदॆयॆनमाडुवॆ ननुत मनदॊळगॆ
मिडु कुवनु संतैसुवनु घुडु घुडिसुवनु सॆरिसु वनसुरगॆ
कडॆय कावॆणिकॆयनु नॆनॆवु त्तिर्दना हनुम ॥ 78 ॥
आगलदकॆ नॆंदु रघुवर नागमोक्तिय कुरुहुगळ लॆ-
सागि नॆऱॆ निर्धरिसि नोडुवॆ नी पुंरध्रियलि
मेगॆ मनदलि तोऱिदु दनुद्योगिसुवॆनॆं दॆनुत मॆल्लनॆ
बागि दीप्तिय बॆळगिनलि भामिनिय नीक्षिसिद ॥ 79 ॥
आ ककुत्स्थज पेळ्द कुरुहिन सोक काणदॆ कंडन शुभद
काळरेखॆय नंध्रियलि वैधव्य लक्षणद
नूकिदनु मनदर्धचिंतॆय नाकुलतॆ विडलरियदैंद्र
व्याकरण पंडितनु नोडिदलबलॆ यानतव ॥ 80 ॥
नॊसॊ लॊळिल्ल खरांतकनु नेमिसिद बाल सुधांशुरेखॆय
सिसुप लक्षण विल्लवा भाळ प्रदेशदलि
असित रोमावर्त साकिन्नसुरॆ यिवळॆंदऱिदु मनदलि
गसणि गॊंडनु नरक भाजन नादॆने यॆनुत ॥ 81 ॥

कुछ तो दिखायी नहीं पड़ते। क्या करूँ ?" इस तरह सोचते वे मन ही मन चिंतित हुए। फिर अपने आपको समझा देते हैं। पुनः क्रोध के मारे घुड़कियाँ भरते हैं। तुरंत सँभल जाते हैं। फिर एक बार मन ही मन सोचते हैं कि इस राक्षस रावण को समाप्त कर देना चाहिए। ७८ "जो कुछ भी हो; रघुराम से बताए गये शास्त्रोक्त चिह्नों का, पहले पता लगाना चाहिए। तत्पश्चात् इस रावण-सती की परीक्षा करनी चाहिए। इसके बाद जो उचित लगे करूँगा।" —इस प्रकार सोचते हुए, दिये के मंद प्रकाश में धीरे-धीरे उसकी ओर देखा। ७९ ककुत्स्थ-वंशीय श्रीराम के बताए गये चिह्नों में से एक भी चिह्न वहाँ न पाकर, उसके (मंदोदरी के) तलवे पर विधवालक्षणयुक्त (काक) रेखा देखी। मन की चिंता आधा कम हुई। फिर भी अपनी व्याकुलता को पूरी तरह रोकने में असमर्थ हो ऐन्द्र व्याकरण-पंडित हनुमान ने उसके मुखड़े का अवलोकन किया। ८० 'खर-विनाशक राम की आज्ञा के अनुसार उसके माथे पर बालचन्द्ररेखा के लक्षण नहीं दिखायी दिए। माथे (सिर) पर काले बालों की भँवर भी नहीं थी। हाय! यह तो राक्षसी है! अब तो संदेह के लिए कोई गुंजाइश नहीं रही।' —इस तरह सोचते हुए हनुमान पछताने

बॆरसुवळॆ सुरगंगॆ कादंबरिय कडलनु संशयद सं-
करव संघटिसि दॆनला सिरि राम रामॆनुत
हिरिदु परितापदलि देहव नुरुहि कॊंडु पुरारि शंकर
हर त्रियंबकयॆनुत तलॆगॊडाहिदनु कलिहनुम ॥ 82 ॥
मुरिदनल्लि मेलॆ मुंदकॆ बरलु कंडनु विविध कुसुमो-
त्करद गंधाक्षतॆय पूजा बंधदनुपमद
किरणलहरिय विमळतर विस्तरद विविधायुधद मध्यद
गरळ कंधर दत्त निरुपम चंद्रहासकव ॥ 83 ॥
अरि नरोरग देव समितिय शिरव तरि तरि दिक्कलवरव
रुरु ललाटाक्षरकदंबकविबु गॊंडंतॆ
हॊरळिवॆंळगिन हॊगरधारॆय सुरुचिरद मोहरद मणि बं-
धुरद खंडॆय विरलु कैयिक्किदनु कलि हनुम ॥ 84 ॥
नॆगहि झळपिसि लुळिवडॆयलिळॆ गुगुळिदुदु बलुगिडि गळनु नि-
ड्रॆगळ निबिडस्त नॆयरॆद्दुदु बॆदरुवातिनलि

लगे कि परस्त्री देखने के कारण नरक-भाजन होना पड़ा न ! (नरकगामी होना पड़ेगा न !)। ८१ "हे श्रीराम-राम ! देवगंगानदी क्या मद्य के समुद्र में प्रवेश कर सकती है ? संदेह कर, दोषभाजन बनना पड़ा न !" —इस तरह सोचते अत्यंत व्याकुल हो 'उफ्' करते हुए देह को फुलाकर 'हे पुरारि, शंकर, हर हर, त्र्यंबक !' इस प्रकार नामस्मरण करते हुए (अपना) सिर हिलाने लगे। ८२ वहाँ से लौटकर आगे बढ़ते समय तरह-तरह के पुष्प, गंधाक्षतों से पूजित, किरण बिखेरते हुए असंख्य विविध प्रकार के आयुधों के मध्य विराजमान, विषकंठ शिवजी से अनुग्रहीत असाधारण चन्द्रहास नामक खड्ग को हनुमान ने देखा। ८३ वह चन्द्रहास खड्ग चमकते पैने धारवाले फल से युद्ध का जो सुन्दर खड्ग था मानों इस प्रकार चमक रहा था कि देवलोक, मानवलोक तथा पाताललोक के शत्रुओं की ललाट लिपि (विधिलिखित) को काट डाले जाने पर वह सब (लिपियाँ) उसी में आकर समा गयी हों। ऐसे खड्ग की ओर हनुमान ने हाथ बढ़ाया। ८४ (उसे) उठाकर जब उन्होंने ज़ोर से चलाया तो उस खड्ग से भारी चिनगारियाँ निकलीं। ज्वाला धधकने लगी। फिर उसे चलाना उचित न समझकर, उस भयंकर राक्षस-आयुध को वहीं पर रखा; क्योंकि उसके चलाने से नींद में बेख़बर पड़ीं राक्षसियाँ हड़बड़ाकर उठने लगी थीं। अतः उसको वहीं रखकर हनुमान

धगधगिसितुरि मत्तॆ झळपिसॆ निगर वल्लिदॆनुत्त रक्कस
विगडकैदुव निरिसि कॆलसारिदनु कलिहनुम ॥ 85 ॥
सीतॆ यिल्ली यॆडॆयॊळॆनुत बलातिशय बळिकुळिद वळय नि-
केतनदलरसिदनु मरॆयदॆ मूरु लोकगळ
मातॆयनु मदनारि सख सलॆ सोतु कप्पवतॆत्त भुवन
ख्यात दिव्य विमान विद्दुदु पूर्वभागदलि ॥ 86 ॥
सकल सुरर विमनकदु नायकवले नळिनजन सृष्टि
प्रकरणकॆ परमार्थविदु पद्मजभवामरर
प्रकटिताखिळ भुवन भवन प्रकट परियट नैकपरि रं-
जक वदीगद कंडु हॊक्कनु हनुम हरुषदलि ॥ 87 ॥
सुरपुरद रंभादि लास्यद तरुणियर नेळिसुव विद्या-
धरियरिर्दुदु भरत विद्या विषय परिणतरु
मुरज वावुज वास वाद्यस्फुरित ताळ सुगीत दवलॆय
रिरलु नोडिदनवरॊळा निमिराज नंदनॆय ॥ 88 ॥
हडप सीगुरि चामरद कन्नडिय काळंजिय सुगंधद
मुडियलर हावुगॆय हॊळहिन ताळ वृंतकद

एक ओर सरक गये। ८५ 'इस स्थान में तो सीता को अनुपस्थित देख अतुलित बलशाली हनुमान उस प्रदेश से रवाना हो अन्य घरों में तीनों लोकों की माता सीता को ढूँढ़ने लगे। कामारि शिवजी के मित्र कुबेर ने रावण से युद्ध में हारकर नज़राने के तौर पर जो जगत्प्रसिद्ध पुष्पक विमान (रावण को) दिया था वह पूर्व दिशा में रखा हुआ था। ८६ यह विमान समस्त देवताओं के विमानों का अधिपति (श्रेष्ठ) था। ब्रह्मसृष्टि की सर्वश्रेष्ठ कृति यह विमान था। ब्रह्मा, शिव तथा देवताओं को समस्त लोकसंचार से हृदयानंद उत्पन्न करता था। उसे देख हनुमान भी प्रसन्न होते हुए उस भवन के अंदर प्रवेश करते हैं। ८७ अमरावती की रंभा आदि नर्तकियों का उपहास करती हुई नाट्यविद्यापरिणत विद्याधरियाँ वहाँ थीं। मृदंग, पखावज, वीणा आदि बजाती हुई स्वर-संधान ताल पर करती हुईं, गाती हुई नारियाँ वहाँ थीं। उनके बीच विदेहराजकुमारी (सीता) को ढूँढ़ा। ८८ पान-सुपारी का बोरा (थैला), छत्र, चामर, आईना, पीकदान, परिमल (सुगंधित) द्रव्य, जूड़े के फूल, पादुका, चमकते पंखे हाथ में धरे, हँसते-हँसते बोलते (विनोद) हँसी-मज़ाक़ करते झुंड के झुंड कार्यरत परिचारिकाओं के समूहों के मध्य

नुडिनगॆय परिहासकर वंगडद सेना सखियरलि वि-
गडिसि नोडिदु काणदळवळि दळलिदनु हनुम ॥ 89 ॥
अरॆ निमिष वल्लिर्दु मनदुब्बरद चिंता भारदलि वळि-
करिगृहव हॊरवंटु हयगजशस्त्र शालॆगळ
तिरुगि रत्न सुगंध दिव्यांबर सुवर्ण सुधान्यकोशद
नॆरवियलि निर्णैसि सॆरॆवनॆ गागि नडॆतद ॥ 90 ॥
एन हळुवॆनिद्दु दल्लि महानरेंद्ररु यक्ष सिद्ध वि-
तान किन्नर किंपुरुष गंधर्व गुह्यकरु
मानिनीजन सहित कंडु महानिरोधदलदुरि शिखनु
भानुकुल नरसियनु काणदॆ हनुम हॊरवंट ॥ 91 ॥

मूरनॆय संधि

सूचनॆ— क्षोणिपति सिरि राघवेंद्रन राणियनु बनदॊळगॆ भुवन प्राणसुत कंडित्त ननुपम राजमुद्रिकॆय ।

कंदकॆळॆ कुशनॆ चिंतॆय संदणिय सुय्लुगळ सॊपुरॆ
कंदिदानन दिळिव जल बिंदुगळ लोचनद

अलग-अलग होकर (प्रत्येक समूह में) ढूंढ़ने पर भी सीता को न पाकर हनुमान व्यथित हुए। ८९ चिंता-व्याकुल मन से क्षणार्ध तक वहाँ रहकर शत्रुराज रावण का राजमहल त्याग, हनुमान अश्वशाला, गजशालाओं की, शस्त्रागारों का चक्कर काटने लगे। तरह-तरह के रत्न, सुगंधयुक्त द्रव्य, दिव्य वस्त्र, सोना तथा अनाज-भरी कोठी आदि स्थानों में सीता को ढूंढ़कर, इन स्थानों में उसके न होने के निष्कर्ष पर पहुँचकर कारागृह की तरफ़ आए। ९० वहाँ पर महाराजा, यक्ष, सिद्ध, किन्नर, किंपुरुष, गंधर्व, गुह्यक आदि जातियों के स्त्री-पुरुषों को उपस्थित देखा। बड़े संयम के साथ, माथे पर बल डालते हुए रविवंशीय राम की पत्नी को वहाँ (सब जगह) ढूंढ़ते हुए, उसे न पाकर हनुमान वहाँ से रवाना हुए। ९१

तीसरी संधि

सूचना— सारे जगत के अधिपति श्रीराघवेन्द्र की रानी को अशोक वन में देखकर वायुपुत्र ने राम की अनुपम मुद्रांकित अँगूठी उन्हें दी।

पुत्र कुश! सुनो। चिंता-भार से दीर्घ निःश्वास छोड़ते कांतिहीन मुखड़े के हनुमान अश्रु बहाते हुए खड़े रहकर सोचने लगे— "भूमिसुता सीता का न

निंदिरुत बॆंड्रगागुतवनी नंदनॆयदेनादळो हा-
यॆंदॆनुत हंबलिसि हलुबुत हनुमनैतंद ॥ 1 ॥
बरबरलु तत्पुरदमध्यद परिसरद पडितळद नाना
परिय पल्लवगळ पताका वळिय प्रसरिकॆय
सुरुचिरद कलशाळिगळ बंधुरद बहळित पुत्रिकॆय सं-
चरद सुमनोहरद हर्म्यव कंडनिंदिरिनलि ॥ 2 ॥
ऐड्रिदनु नडॆ दुदय शिखरिय नेरुव मृतांशुविन वॊलु हदि
नारु योजन दुद्द दुप्परिगॆयनु तुदिवरॆगॆ
तोड्रिता समयदलि सीतॆय तोड्रबे कॆंबुत्सवद मै-
दोड्रिकॆय शशिबिंब वंबरका समीरजगॆ ॥ 3 ॥
ऒसरिदुदु शशिकांत शिलॆ धवळिसि दुदंबर वंबुनिधि
लळि मसगिदुदु नगॆदोड्रिदवु नैदिलु चकोरिचय
बिसुट वंतश्रमव तंबॆलरॆसगिदुदु तनिवॆंटदलि ता-
मसि निरंबरॆयागि नलिदप्पिदळु निजपतिय ॥ 4 ॥
चरण लाघव दिंदॆ मॆल्लनॆ तिरु तिरुगि नोडिदनु तत्पुर
वरवना चंद्रमन सांद्रप्रभॆय बॆळगिनलि

जाने क्या हाल हुआ होगा ? हाय ! क्या करूँ ? इस तरह विचार करते चटपटाते आगे बढ़े । १ जब आगे बढ़ रहे थे, उस नगरी के मध्य प्रदेश में जगमगाती तरह-तरह की बंदनवारें, ध्वज-पताकाएँ, प्रकाशमान कलशों की पंक्तियाँ, अत्यंत मनोहर कई प्रकार की पुतलियाँ वग़ैरहों से सजाए गये सुन्दर भवन को हनुमान ने अपने सामने देखा । २ उदयपर्वत के शिखर पर आरोहण करनेवाली ठंडी किरणों से परिपूर्ण चन्द्रमा की तरह सोलह योजन ऊँची मंज़िल की नोक पर हनुमान (अनायास) चढ़ गये । सीता को दिखा देने के (दर्शन दिलाने के) उत्साह में मानों चन्द्रबिंब भी आकाश में आरोहण जो कर रहा था, हनुमान ने देखा । ३ चन्द्रकांत शिला पिघल गयी, सारे आकाश में धवल शुभ्रवर्ण छा गया । सागर उमड़ पड़ा । नीलकमल (रात्रि के समय खिलनेवाले कमल) खिलकर प्रफुल्ल मुख-दर्शन कराने लगे । चकोर ने (अपने) मन की थकान मिटा दी । ठंडी हवा बहने लगी । इस सुन्दर अवसर पर रात्रि नामक सुन्दरी ने अंबर (अपने कपड़े) त्यागकर आकाश को छोड़कर निर्वस्त्र हो अपने पति को आलिंगनपाश में बाँध लिया । ४ चन्द्रमा की घनी चाँदनी के प्रकाश में उस नगरी के परकोटे के गुम्बज पर खड़े हनुमान ने धीरे-धीरे क़दम बढ़ाते

मेरेदु दिल्लिनितरलि देविय रिरवु तन्नय कंगळिगे गो-
चरिसुवुदु दुर्लभवेनुत दुम्मान मननाद ॥ 5 ॥
मरुगि माडुवदेनु साकिन्नरिकें योंदिदें तनगे रघुवर
नरिसि कोळली गिरिय कित्तोय्दिळुहुवेनु मुंदे
तेरन नातनें नोडि कोळलेंच्चरिकें गिदु ता समय विनितकें
कोरते बारदेनुत्त निश्चयिसिदनु निजमतव ॥ 6 ॥
बळलिदेवु हिरिदागि नगरव तोळलि नाविदिनलि बारै
बळि गेलस किन्नारु नीनेंम गल्ल दाप्तरलि
होळल होत्त महा त्रिकूटाचलवनिद नी कीळु बेगें-
दोलुव मन्नणेयिद बालकें बेससिदनु हनुम ॥ 7 ॥
आ हनुमनाज्ञापनेय कट्टूहें विडिदाक्रमिसि सुत्तिदु-
दा हराद्रिय कित्त दैवद्रोहि रक्कसन
बेह नगरद नगव नमरसमूह कंपिसें कमलजांडक
टाह छिळि छिळिलेनें विहारिसि झडिदुदेंड बलकें ॥ 8 ॥
बेंदरिदुदु तत्पौरजन नेंल नदुरिदुदु भूकंपद वोललु
गिदुदु कुलकुधराळि कूगितु गगन निमिषदलि

होले-होले मुड़कर देखा। सीतादेवी का निवासस्थान अब तक दृष्टिपथ में नहीं आया। उसका दिखायी पड़ना असंभव समझकर वे अत्यंत व्यथित हुए। ५ इस तरह चिंता करने से क्या प्रयोजन ? बस है। अब एक ही मार्ग (उपाय) बचा है। इस पर्वत को उखाड़ ले जाकर रघुपति के सम्मुख रख देता हूँ। वे ही सीता को ढूँढ़ लें। आगे का कार्य वे ही निश्चित करें। सावधान रहने के लिए यही सुअवसर है। इसमें कहीं कमी नहीं आनी चाहिए। इस प्रकार हनुमान ने निश्चय किया। ६ "(इस) लंका नगरी में भटक-भटककर बहुत थक गया हूँ। मेरी सेवा के लिए आओ न मेरे भाई। तेरे सिवा मेरा आत्मीय अन्य कौन हो सकता है ? इस नगरी को ढो रहे त्रिकूटाचल को तू शीघ्रातिशीघ्र उखाड़।" —इस तरह अत्यंत प्रीत्यादरयुक्त वचनों से हनुमान ने अपनी पूंछ को आज्ञा दी। ७ वह पूंछ हनुमान की इस आज्ञा का रहस्य समझ गयी। कैलास पर्वत को उखाड़नेवाले, दैवद्रोही (रावण) राक्षस की लंका नगरी जिस पर्वत पर प्रतिष्ठित थी उस पर्वत को उस (पूंछ) ने लपेट लिया। यह देख देवता थरथर काँपने लगे। ब्रह्मांड नामक कड़ाही हिल-डुलकर चलती-सरकती दाएँ-बाएँ डोलायमान होने लगी। ८ नगरी के लोग (निवासी) थरथर काँपने लगे। भूकंप की स्थिति को प्राप्त हुई

कदडि तग्गद कडलु नुडियाय्तदर मेलॆ नभोग्रदलि नी-
निदिरुगो मारुतन मनदिष्टार्थ वहुदॆंदु ।। 9 ।।
ध्वनियनदनालिसलिका निजजनक नोय्यनॆ वनदवनितॆय
विनुत लावण्यांबुविन शीतळद सोंपिनलि
अनुपमानन पद्मगंधद घनतॆयलि वक्षोजयुगदिरु
बिनलि तडॆ तडॆ दॆसगिदनु निजसुतन सरिसदलि ।। 10 ।।
नोडिदनु सौरभ्य शैत्य सघाडतॆय सोंगंध वाहन
नाडिकॆय सरणियनु कडनु गंधवाहसुत
मूडणाशापतिय चैत्रन बीडिकॆय नेळिसुव दिविज वि-
भांडननुपम विलसित क्रीडा महावनव ।। 11 ।।
ससि यिड्डुव नंगज सुधाघन रसव सूसुव निदु मंद
श्वसन सलहुव नोवि कोंडिह निक्षु चाप सख
अॆसॆव कुरवक तिलक पनस प्रसर जंबु रसाल दाडिम
विसर विलसित विविध निरुपम भूजराजिगळ ।। 12 ।।
गाळि योलहिगॆ निलुकुवदु होंबाळॆ खचरी जनद कवरिगॆ
बाळॆ वाय्दॆरॆसुववु विद्रिवण्णिन रसावळिगॆ

ज़मीन थरथर काँपी। कुलपर्वत हिलने-डुलने लगे। उसी क्षण आकाश चिल्ला उठा। महासागर विक्षुब्ध हुए। तब "तू वायुदेव (वायु भगवान जो तेरे पिता हैं) को अपने सम्मुख बुला ले। तेरी अभीष्ट-सिद्धि होगी।" —इस प्रकार अशरीर (आकाश)-वाणी सुनायी दी। ९ यह वाणी सुन ही रहे थे कि हनुमान के पिता धीरे-धीरे, वनरानी के सौंदर्य रूपी जल की ठंडक से अनुपम मुखकमल-सुगंध की अधिकता से युक्त हो स्तनों के मध्य के मार्ग से रुक-रुककर विचरते हुए आकर पुत्र के चारों ओर विचरने लगे। १० वायुपुत्र ने देखा कि वायुदेव (अपने पिता) सुगंधयुक्त हो, अति शीतल हो मंद-मंद विचर रहे हैं। उनके विचरते उस मार्ग को हनुमान ने देखा। चैत्र-निवास को धिक्कारते रावण का सुन्दर क्रीडावन उनकी पूर्व दिशा (पार्श्व) में दिखायी पड़ा। ११ मन्मथ उस वन में पौधे बो रहा है; चन्द्रमा अमृत-रस का सिंचन कर रहा है। मंद मारुत उनका लालन-पालन कर रहा है; मेंहदी, तिलक, कटहल, जामुन, आम, अनार, वग़ैरः तरह-तरह की श्रेष्ठ जाति के वृक्षों की रक्षा मन्मथ का मित्र वसंत (वहाँ) कर रहा था। १२ हवा के झोंकों से हिलते सुनहरे केले के पौधे आकाश में विचरती गंधर्व-स्त्रियों के जूड़ों का स्पर्श

बाल किन्नरियरनु शुक पिक पाळिसिद नखहतिय चूत फ-
लाळि निर्जर निलिसुववुपथिकर पथश्रमव ॥ 13 ॥

नॆनॆमुगुळ् नॆनॆ कुसुमनसुगाय् कनरुगाय् कसुगायि हुळिगाय्
तनिरसद मधुराम्रपूरित माधुरीयकद
तॊनॆदु तूगुव फल भरंगळ घनतरद सहकार सह सुर
वन कदंबक वॆसॆदु दिदिरलि कपि कुलेश्वरन ॥ 14 ॥

वसुमती पति सूनु केळ् बण्णिसलु तीरदु तनगॆ चैत्रन
वसतियो सौगंध मंदानिलन नॆलॆवनॆयो
कुसुम बाणन बीडो सुरवन दॆसॆव जन्म निवासवॆनॆ वन
वॆसॆदुदा सिरि रामचंद्रन चरन कण्मनकॆ ॥ 15 ॥

वनविदॊंदिदॆ गगनदग्रद ध्वनियिदॊंदिदॆ नोळ्पॆनुप व-
तॆनॆय निंदिनली महावनदॊळगॆ बळिकल्लि
वनजवदनॆय पाददरुशन विनितरॊलि संघटिसदिरॆ कं-
डनुव कावॆनॆनुत्त शोकावनकॆ पुटनॆगॆद ॥ 16 ॥

कर रहे हैं। केले के पौधों में पके केलों के रस के लिए (पाने की लालच में) नवोढ़ा किन्नरियाँ लार टपका रही हैं। तोते तथा कोयलों के आ बैठने पर उनके नाखून की खरोंच से फटे आम के रस-प्रवाहों से पथिकों के पथश्रमण की थकावट दूर हो रही थी। १३ अविकसित कली, खिलते फूल, मंजरियाँ, कच्छे फल, वतिया, अधकच्चे फल, खट्टे फल तथा लटक रहे मधुर रस भरे फलों के गुच्छों से भरे-पूरे आम के पेड़ नंदनवन के वृक्षों के साथ जो होड़ कर रहे थे हनुमान ने अपने सम्मुख देखे। १४ "हे राजकुमार, सुनो। उस वन का और अधिक वर्णन करने में मैं अपने को असमर्थ पाता हूँ। वह मानों इस प्रकार शोभायमान था— 'चैत्र ऋतु का निवासस्थान हो, सुगंध-भरा मंद मारुत का निवासस्थान हो, मन्मथ का निकेतन हो, नंदनवन का मायका हो।' —इस तरह शोभित उस वन ने श्री रामदूत का तन-मन हर लिया।" वाल्मीकि मुनि ने इस रीति से उस वन का वर्णन किया। १५ अब तो यह एक वन बचा है; साथ इसके आकाशवाणी भी एक है। आज इस प्रदेश के इस महावन में ढूंढ़ता हूँ। इतने पर भी कमलमुखी सीता के श्रीचरण-दर्शन प्राप्त न हुए तो आगे चलकर जो उचित लगे, तदनुसार करूँगा। इस तरह सोचते हनुमान अशोक वन में कूद पड़े। १६ हनुमान की उछल-कूद के बोझ से, उसके चरण-आघात के प्रयोग से मानों बिजली गिरे पहाड़ की भांति, कड़ाही के

पुटनेंगेद भारदलि कपिपद चटुळहति गुप्परिगे सिडि ला-
भेंटिसि हॊडॆदद्रियवॊलिळॆ गॊऱगितु निहारदलि
कटळ बॆदरितु रक्कसर संघटद सौरंभदलि बळिकी
पटुपराक्रमि हनुम हॊक्कनु ललित नंदनव ॥ 17 ॥
तिळिगॊळन दांटुत लतामंडळिय नुसुळुत कुसुमवल्लिग
ळॊळगॆ विहरिसु तुन्नत द्रुम ततिय लंघिसुत
कॆल बलन नारैवु तॊय्यनॆ निलुकि नोडुत बंदनुरु मं-
जुळ फलान्वित शिशुपादपविद्द हॊरॆगागि ॥ 18 ॥
आ महाद्रुमदडिय कदळि स्तोम मध्यद दळ निळयदलि
राम नामामृत सजीव त्राण धारणद
तामरसदळ नयनॆयनु निस्सीमव्रत चरितॆयनु सी-
ता महालक्ष्मियनु कंडनु वीर हनुमंत ॥ 19 ॥
शरभ सिंह चमूर वदनद करिलुलाय वृकाननद परि
परिय खगमृग सर्प वक्त्रद विकृत दृष्टिगळ
ऎरडु नाल्कैदारु तलॆगळ करद कत्तिय काळ रक्कस
तरुणियर कावलिन सीतॆय कंडना हनुम ॥ 20 ॥
मंदगमनॆय नमलतर पूर्णेंदु वदनॆय पूर्वहरियर
विंदसदनॆय सकल सुर कुल शक्ति देवतॆय

ऊपर से नीचे धरती पर गिरने की आवाज़ की तरह धम से नीचे गिरे। तब राक्षसों के शोरगुल को सुनकर राजधानी के लोग भयभीत हुए। तत्पश्चात् महावीर हनुमान ने उस सुन्दर वन में प्रवेश किया। १७ उज्ज्वल सरोवर को पार कर, लता-मंडपों में से होकर गुज़रते हुए पुष्पित लताओं के मध्य विचरते हुए, ऊँचे पेड़ों को लाँघकर, पास-पड़ोस में (सीता के लिए) निरीक्षण करते हुए, धीरे-धीरे खड़े हो देखते हुए हनुमान सुन्दर-सुन्दर फलों से लदे शिशुप वृक्ष के नजदीक आए। १८ उस महावृक्ष के नीचे के, केले के पौधों के मध्य में राम-नामामृत से प्राण धारे, अत्यंत कठोर व्रत आचरण करती, कमलदलसदृश-लोचना सीता-महालक्ष्मी को वीर हनुमान ने देखा। १९ हनुमान ने (वहाँ) यह भी देखा कि शार्दूल, शेर, बाघ के मुखड़े वाली, हाथी, भैंसे, भेड़िये जैसे मुखों वाली, तरह-तरह के पक्षी, मृग, सर्प के मुखाकृति वाली, विकराल आँखों वाली, दो, चार, पाँच, छः सिर वाली काल राक्षसियाँ हाथ में नंगी तलवार लिये सीता के पहरे पर थीं। २० मंद-गमना, निर्मल पूर्णचन्द्रमुखी, आदिनारायण की कमलवासिनी लक्ष्मी,

इंदु भास्कर कमलभव संक्रंदनादि समस्त सुर मुनि
वंदितॆय वर विश्वमातॆय कंडना हनुम ॥ 21 ॥
एक वेणी धरॆय नश्रुज लाकुळायत लोचनॆ यनु-
द्रेक शोकान्वितॆयनंत स्ताप विह्वलॆय
शोकनिनदॆयनधिक पुण्यश्लोक चरितॆय मलिनपटपरि
धीकृतॆय नविरळ कृशांगिय कंडना हनुम ॥ 22 ॥
बिसजसंभवजनितजननिय कुसुमशर नंबिकॆय भुवन
प्रसर भरितॆय पुण्य चरितॆय नधिक सुव्रतॆय
पशुपति ब्रह्मामरेंद्रर शशिवदनॆयर भाग्य लक्ष्मिय
नसदळद मायाविनोदॆय कंडना हनुम ॥ 23 ॥
हॊगॆयलद पुत्तळिय वॊलु हिमवगिद तावरॆयंतॆ बिच्चदॆ
बिगिद चिप्पिन मुत्तिनंददि राहु लंबिसिद
मृगधरन वॊलु गूढदर्थव तॆगॆय बारद काव्यदवॊलि-
दंगणितामल पुण्य चरितॆय कंडना हनुम ॥ 24 ॥
जननि शिशुवनु सत्कुलीननु विनुत सद्वर्तनॆय सत्पुरु-
षनु सदाचारवनु सज्जन नधिक सद्गुणव
जनपनैश्वर्यवनु धर्मज्ञनु यशोलभ्यवनु सलहुव
नॆनहिनवॊलभिमान रक्षॆय सतिय कपि कंड ॥ 25 ॥

समस्त देवताओं की शक्तिदेवता, चन्द्र-सूर्य-ब्रह्मा-इन्द्रादि समस्त देवताओं से सेवित तथा मुनियों से पूजित लोकमाता सीता को हनुमान ने देखा। २१ एक ही जूड़ा धारण किए, आँखों में अश्रु भरे, अत्यत दुःखी, वेदना से विकल, शोक-संतप्त, आँसू बहाती, पवित्र आचरण वाली, मलिन वस्त्रावृत, कृशशरीरी (सीता) को हनुमान ने देखा। २२ कमलोत्पन्न ब्रह्मा की माता, मन्मथ-माता समस्त लोकों का पोषण करनेवाली, पुण्यचरिता, सद्व्रत-निष्ठ, शिव, ब्रह्मा-देवेन्द्र की रानियों की भाग्यलक्ष्मी, माया को भगानेवाली (सीता) को हनुमान ने देखा। २३ धुएं से आवृत गुड़िया की तरह, हिम से पीटे गये कमल की तरह, बिना दरार के सीप के मोती की तरह, राहु-ग्रस्त चन्द्रमा की तरह, रहस्यार्थ के प्रकटीकरण में असमर्थ काव्य की तरह, परिशुद्ध आचारनिष्ठ सीता को हनुमान ने देखा। २४ माँ जैसे अपने पुत्र की, सद्वंश में उत्पन्न जैसे अपने सदाचार की, सत्पुरुष जैसे अपने सदाचरण की, सत्पुरुष अपने सद्गुण की, राजा अपने ऐश्वर्य की, धर्मज्ञानी अपने कीर्तिलाभ को रक्षा करने की सोचते हैं, उसी प्रकार अपने चरित्र की

आग वेकी जननि जानकि मैगुरुहु तप्पदु महादे-
वीग पातिवृत्य गुण गण निधिय कंडेनल
भागदेयरु नावला नमगागु मुंदके सुलभ वदु स-
रागदलि कैमुगिदु जय जय अँदना हनुम ॥ 26 ॥
अररे शिव शिव सांग वादुदु नरपतिय दूतत्व विन्नी-
श्वरनु पाडल्लेनगेनुत हिग्गिदनु हरुषदलि
बिरुद निक्कुवें निन्नु दशकंधरगें कैमाडिद निशाटर
नरवें नेंदुब्बरद हरुषव ताळ्दना हनुम ॥ 27 ॥
अरसुगळोळधि राजचक्रेश्वरन बसुउलि बंदु लक्ष्मी-
वरन तूकद सार्वभौमन कैविडिदु कडेगे
निरय निळयन निळयदलि कैसेरेगे संदौ तायेयेंदिळे
गुरुळिसिदनश्रुगळना कैयोडनें कलि हनुम ॥ 28 ॥
इरलु मारुति शिशुपावर तरुविनग्रदल वनिजेय सं-
दरुशनद समयक्के सुळिदुदु मूडलिन विव

रक्षा कर रही सती (सीता) को हनुमान ने देखा। २५ "यह देवी, जानकी ही होंगी। इसके सामुद्रिक (शरीर) लक्षणों में कोई दोष नहीं। हे शिवजी! पतिव्रतालक्षणसम्पन्न सद्गुणों का भण्डार ही देखा न! मैं कितना भाग्यशाली हूँ। अब आगे का कार्य सुगम है।" —इस तरह सोचते अत्यंत आनंद से हाथ जोड़कर हनुमान ने 'जय-जय' कार किया। २६ "हे शिव-शिव! वाह वा! राजा का दौत्य कार्य संपूर्ण हुआ। अब शिवजी का सामना क्यों न हो? उसकी चिंता नहीं। इस तरह सोचते हनुमान फूले न समाए। अब दशकंठ को मुँह की खिलाता हूँ। मुझ पर टूट पड़नेवाले राक्षसों को पीसे देता हूँ।" इस तरह उद्गार निकालते हनुमान हर्षित हुए। २७ "राजाधिराजों से श्रेष्ठ चक्रवर्ति (जनकराजा) के यहाँ जन्म लेकर, लक्ष्मीपति के बराबर के चक्रवर्ति के साथ (राम के साथ) विवाह कर, अंत में नरकवासी के घर में तुझे क़ैद होना पड़ा न माता!" इस तरह कहते वीर हनुमान ने अश्रुधारा बहायी। २८ सीता के दर्शनों के सुअवसर की प्रतीक्षा करते हुए शिशुप वृक्ष की शाखा के उन्नत स्थान में रहते हुए जब हनुमान थे, तब पूर्व दिशा की तरफ़ रविबिंब संचरणशील हुआ। (रात्रि के तीसरे पहर का अंतिम समय) नींद से जागकर पहरे पर उपस्थित राक्षस-स्त्रियों ने सीता

मुरिदु निर्द्रेय कापिनसुरर तरुणियरु बळसिदरु बिद्दुदु
तरणिबिंब (?) महांबुनिधियलि नडेंदु पश्चिमद ॥ 29 ॥

एन नेंनदनो मनसिनोंळगें दशाननु मनसिजन शर सं-
धान देंसुगेंय मसेंय मैनोविनलि कळवळिसि
लून वक्षर बगेंय भंगिय मानसद खळ तन्न सेवा
मानिनिय रोंडगूडि हॊरवंटनु निजालयव ॥ 30 ॥

बेंळगिदवु बॊंबाळदीपा वळिगळिद्दें सेंगळलि कंचुकि
गळ घडावर्णेयिद बंदेंरिदनु पुष्पकव
हॊळें हॊळेंव मणिमुकुट बद्दावळिय भटरोंत्तोत्तेंयलि बं-
दिळिदना वन मध्यदवनी सुतेंय सरिसदलि ॥ 31 ॥

सारिदरु कापिन निशाचर नारियरु कॆल बलकें मणिमय
सारतर सिंहासनदला मयनसुतें सहित
चारुतर चामरदलुरें कैवारिगळ कळकळद लरिभट
भैरवनु कुळ्ळिदनु सम्मुखदलि सुधार्मिकेंय ॥ 32 ॥

देवि यिद्दळु बागिदोंडलिन कैवेंरळ हत्तुगेंय कदपिन
जीवनवनुदुगलिप नयनद मणिद मस्तकद

को घेर लिया। चंद्रबिंब पश्चिम की ओर अग्रसर होते हुए सागर में उतरा। २९ दशानन के मन में न जाने क्या भाव जगा? मन्मथ (काम) बाण से पीड़ित वह अत्यंत व्यथित हुआ। भग्नहृदयियों की मनोस्थिति में स्थित वह राक्षस अपनी परिचारिकाओं के संग राजमहल से रवाना हुआ। ३० दीपस्तंभों पर लटकते दीप चारों ओर जगमगाने लगे। वेत्रधारियों के ज़ोर-शोर के स्तुतिपाठ-प्रशंसा के मध्य रावण बाहर आकर पुष्पक विमान पर सवार हुआ। भारी-भारी चमकते रत्न-मुकुटों से सुशोभित वीरों की भीड़ को साथ लेते हुए अशोकवन के मध्य स्थित सीता के निकट आ (पुष्पकविमान से) उतरा। ३१ पहरा दे रहीं राक्षसियाँ अगल-बगल में सरक गयीं। चँवर डुलाए जा रहे थे; चारण-भाटों के प्रशंसा के शोरगुल के मध्य मयसुता मंदोदरी के साथ शत्रुभयंकर वीर रावण सच्चरित्रा सीता के सम्मुख रत्नों से जड़े सिंहासन पर विराजमान हुआ। ३२ झुकी हुई देह, गालों पर धरी उँगलियाँ, वे आँखें-जिनमें से होकर प्राण बाहर निकलने की तैयारियाँ कर रहे थे, झुके सिर से युक्त संतप्त सीता की देह मानों संपूर्ण कांति खो चुकी थी। ऐसी दयनीय अवस्था में सीता अपने पति के चरण-कमलों का ध्यान करते हुए

तीविदुम्मळिकॆ गळ नसिद कळेवरद निजपतिय पद रा-
जीव युगळद नॆनहिनलि नोडुत महीतळव ।। 33 ।।
कळुहिदनु कामिनियरनु मैथिळॆय बळिगॆ बळिक्क सेवा
ललनॆयरु बळसिदरु बहुविविधोपचारदलि
इळुहिदुदु कम्मॆण्णॆ हाय्कितु हॊळॆव मणि मडिवसॆ महामं-
गलव मज्जन कृष्णजल हॊंगॊडदलि ळुहिदवु ।। 34 ।।
वरदुकूलद हावुगॆय बंधुरद गंधद दिव्य मालां-
बरद दिव्याभरण दबलॆयरुब्बु वातिनलि
अरसि केळी वैभववना धरिस बेकॆदुचित वचनद
परिविडिय लबलॆयरु बिन्नैसिदरु जानकिगॆ ।। 35 ।।
मूरुलोकद गंडनीतन मीऱलहुदे देवि दिविजर
नीरॆयरु बयसुवरु बहुविध सुव्रतंगळलि
नूरु जन्मव तिरुतिरुगि बायाऱि बयसिदरीतनंदद
नीऱरुंटे नळिनभव निर्मिसिद सृष्टियलि ।। 36 ।।
इदॆ चतुर्दशभुवन दॊडॆतन विदॆ सकल साम्राज्य संपद
विदॆ विभुत्व समस्त सुरनर यक्षगुह्यकर

अपनी दृष्टि धरती पर गड़ाए बैठी थी। ३३ रावण ने (साथ की) स्त्रियों को सीता के पास भेजा। सेवानिरत स्त्रियों ने सीता को घेरकर तरह-तरह से परिचर्या की। सुगंध तैल लाकर रखा। चमकता हुआ रत्नजटित कालीन बिछाया। (जैसा सुहागरात के दिन बिछाया जाता है।) मंगल स्नान के लिए स्वर्णकलशों में उष्णोदक भर कर ला रखा। ३४ रेशम के कपड़े, पादत्राण, मनोहर सुगंधद्रव्य, दिव्य हार, वस्त्राभूषण वग़ैरः हाथ में धरी स्त्रियों ने सीता से प्रार्थना की— "रानीजी, सुनिए। इन वैभवपूर्ण वस्तुओं को धारण कीजिए।" इस तरह हर्षपूर्ण शब्दों में उनको प्रसन्न करने का प्रयत्न किया। ३५ "ये (रावण) त्रिलोक वीर हैं; इनसे कौन बढ़कर हो सकता है? अनेक प्रकार के व्रताचरण कर देवता-स्त्रियाँ इनको प्राप्त करना चाहती हैं। सौ जन्म धारणकर इनको पाने की अपनी तृष्णा क्या शांत कर सकते हैं? इनके जैसे सुन्दर ब्रह्म-सृष्टि में कहाँ उपलब्ध हैं?" ३६ "चौदह लोकों का आधिपत्य तुम्हारे सम्मुख धरा है। समस्त साम्राज्य-संपदा तुम्हारे चरण चूमना चाहती है। समस्त देवताओं का, मानव, यक्ष तथा गुह्यकों का प्रभुत्व यहाँ है। इसका उपभोग करना छोड़कर इस प्रकार की मूर्खता क्यों कर रही हो

इदनु नीननु भविस लॊल्लदॆ चदुरु गडॆवरॆ देवि हेळॆ-
ददुहि मारुत्तरव काणदॆ कॆलकॆ सारिदरु ॥ 37 ॥
केळवनि बरमातु किविकण्णालिगळु कडॆ गणिस लॆळसवु
साल सौगंधक्कॆ नासिक दुसुरु जानकिय
नालगॆगॆ नुडि होगदु तनु सॊपेळ दिन्नुळिदिंद्रियद स-
म्मेळवेतरदेनु साध्वियॊ सीतॆ भुवनदलि ॥ 38 ॥
हृदय रामध्यान नालगॆदुदि निजेश स्मरणॆ कंगळ
हॊदिसिदॆवॆ यप्पुगॆ गळप्पुगॆ राघवेश्वरन
इदिर बगॆवळॆ सीतॆ मायाविदर मायॆगॆ सिलुकुवळॆ लो-
कद महामाया विनोदॆगॆ चित्रवेनॆंद ॥ 39 ॥
उपचरणॆ कैकॊळ्ळदाखळ चपळॆयरु चंडिसिदरा दश-
लपन निर्दनु सीतॆ सेरुवळल्ल तनगॆनुत
तपन कुलजरु केळिदै लोलुपति बिडलरियदॆ मनोजा
तपकॆ सैरिसदसुर सुरमॆय करॆदु बॆसगॊंड ॥ 40 ॥
एन नॆंबळु सीतॆ मनदॊळगेन हंबलिसुवळु तन्ननु
मानवेनंतस्थ वावुदु जनकनंदनॆय

देवी ! कहो तो सही ।" इस तरह बड़े आवेश भरे शब्दों में संबोधन कर प्रत्युत्तर न पाने के कारण परे सरक गयीं । ३७ सीता ने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया । आँखों ने उन वस्तुओं का तिरस्कार किया । पंक्तिबद्ध रूप से रखी गयी सुगंधित वस्तुओं की, सूँघने की इच्छा नाक ने न की । उसकी जीभ ने बोलना भी पसंद न किया । उनकी बातों से वह प्रसन्न भी न हुई । अन्य इन्द्रियाँ कैसे सहयोग देंगी ? इस जगत में सीता कितनी महान साध्वी हैं ! ३८ हृदय में रामध्यान; जिह्वा की नोक पर सदा पति-नामोच्चारण; आँखों के आवरण भौंहों के बीच (मध्य में) श्रीराघवेश्वर का आलिंगन ! ऐसी स्थिति में सम्मुख जो वस्तुएँ धरी गयी हैं— उनकी ओर ध्यान कैसे दें ? मायावियों की माया में क्या सीता फँस सकती है ? जगत की माया ही सीता के लिए एक प्रकार का विनोद है, तब ये सब आश्चर्यकारक ही है । ३९ राक्षसियों के ज़िद करने पर भी उनकी परिचर्या न चल सकी । सीता मेरे लिए अप्राप्य वस्तु है, इस तरह दशमुख सोचते बैठा था । हे सूर्य-वंशोत्पन्नो ! सुनो । रावण अपनी लालसा त्याग न सका । मन्मथ (काम)-वेदना से वह संतप्त था । अतः उसने सरमा को बुलाकर पूछा । ४० "सीता क्या कहती है ? वह मन ही मन क्या चाहती है ? वह किसको चाहती है ? उसके विचार क्या

मानवेंद्रन मरॆदळे हृदनेनॆनलु हत्तिरकॆ बंदु द-
शानन कर्णदलि मॆल्लनॆ नुडिदळा सरमॆ ॥ 41 ॥

आडलेनद जीय लोकद जोडॆये जानकि जगत्त्रय
गाढ पति भक्ति यरिगी सति मातृ भवनवल
आडिदडॆ जनवेन नॆंबुदो खोडिगळु किरिदुंटु मिक्किन
हाडि हॊगळिसि कॊब जगद पतिव्रता जनकॆ ॥ 42 ॥

कंडु बल्लॆनु हलबरनु भूमंडल दोळी सतिय होलुव
हॆंडिरिल्ला ध्रुव वसिष्ठ महात्रि मुनिवरर
हॆंडिरुगळॊ दोजॆ जगदलखंड सुव्रतॆ सीतॆ हुसिदडॆ
खंड परशुविनाणॆ सत्यविदॆंदळा सरमॆ ॥ 43 ॥

आगुळिकॆयलि सीनिनलि नडॆवाग नुडिवागलसिकॆ गळलि
तागुगळ लॆडहुगळ लॆच्चरिकॆयलि मरवॆयलि
जागरदलि सुषुप्तिगळलि सरागदलि चिंतॆयलि रघुकुल
सागरन नॆनहल्लदिल्लन्यत्नवी सतिगॆ ॥ 44 ॥

हैं ? जानकी के मन की बात क्या है ? क्या वह मानवों के राजा (राम) को भुला नही सकी ? वस्तुस्थिति क्या है ?" इस तरह रावण से पूछे जाने पर सरमा नज़दीक जाकर धीरे-धीरे (कान में) यों फुसफुसाने लगी। ४१ "हे प्रभो, मैं आपसे क्या कहूँ ? क्या आप उसे जगत की वेश्या समझते हैं ? तीनों लोकों की श्रेष्ठ पतिव्रताओं के लिए —यह सती नायका है। (शिरोमणि है।) सच कहूँ तो न जाने दुनियावाले क्या समझ बैठेंगे ? दुनिया की अन्य पतिव्रताओं में अपने बारे में प्रशंसात्मक वार्तालाप सुनने की कुछ न कुछ कसर (दोष) तो है ही। ऐसा दोष इस पतिव्रता (सीता) में रंचमात्र भी नहीं।" ४२ "भूलोक में कई लोग की जान-पहिचान तो है। लेकिन इस सती के बराबर किसी को नहीं देखा। ध्रुव, वसिष्ठ, अत्रि आदि मुनियों की पत्नियों की रीति ही निराली है। लोक भर में परिपूर्ण सुव्रता है सीता। शिवजी की क़सम, झूठ नहीं बोल रही। यह जो कुछ कहा —सत्य है।" इस तरह सरमा ने कहा। ४३ "जँभाई लेते वक़्त, छींकते समय, चलते-फिरते, थके हुए वक़्त पर, जब कुछ लग गया तो उस समय, ठोकर लगे तो तब, सोते-जागते, सुषुप्ति में, संतोष में, या चिंता में —इस तरह हर अवस्था में रघुकुलोत्पन्न की याद के सिवा वह सती और किसी की याद नहीं कर रही। ४४ सीता को हर तरह समझाकर मेरी चतुराई मानों समाप्तप्राय है। अनेक रीतियों

तिळुहि तीरिदवॆस्म बुद्धिय हलवु बगॆ बहुविधद मायॆय
सुळिसि सोतॆवु बळलिसिदॆवु बहुप्रकारदलि
अळुप काणॆवु चित्तवृत्तिय नॆलॆ निजेशन मेलॆ घन कै
दॊळसु कॊळ्ळदु नुडिसि नॊडुवु दॆंदळा सरमॆ ॥ 45 ॥
ऐसॆ मत्तॆनॆनुत खळनभिलाषॆ बिडदितॆंदनकटि-
न्नॆसुदिन बनदॊळगॆ सॆरॆ यी वैमनस्यकद
वासियिन्नारॊळु विवेक विलास वल्पवला निरर्थ ग-
तासुगळ नॆनॆनॆनॆदु बरुदॊरॆवोदॆ नीनॆंद ॥ 46 ॥
मरुळ लायॆले सीतॆ निन्ननु तिरुगितॆगॆववगॆंटुकंगळु
शिरदॊळिरलिन्नीवुददु हुसि हलवु मातेनु
हरिहर ब्रह्मामरेंद्रर सरकु माडुव माडनॆंबुद
धरॆयॊळगॆ नी केळिळो काळाग बेडॆंद ॥ 47 ॥
चदुरतन निनगुळ्ळडीयॊप्पदलि बॆसुवुदु बुद्धि पट्टद
सुदति नीनॆंनिसुवॆनु जगदॊळगाणॆ घोषणॆय

से माया प्रकट करके मैं हार गयी। कई रीतियों से हमने उसको सताया। फिर भी उसमें यत्किंचित् व्यामोह पैदा होते न देखा। उसका मन अपने पति में स्थिर है। उसमें कपट के लिए कोई स्थान नहीं। चाहे तो आप स्वयं बातें करके देखिए।" इस प्रकार सरमा ने कहा। ४५
"ऐसी बात है ?" —कहते हुए, राक्षस ने निराश न होते हुए सीता को संबोधित कर— "हाय-हाय, और कितने दिन इस तरह बन्दी बनी रहोगी इस वन में ? ये द्वेषभरी बातें अब किनसे करोगी ? तुम तो विवेकशून्य हो। व्यर्थ ही मरे हुओं के बारे में सोचते हुए सूखे नाले की तरह निष्प्रयोजक सिद्ध हो रही हो।" —इस प्रकार रावण ने कहा। ४६
"सीता, पता नहीं तुम किस भ्रम में पड़ी हो। तुम्हें पुनः बुला ले जाने, आनेवाले को आठ आँखें होने पर भी तुम्हारी मुक्ति तो यहाँ से होना एक सफ़ेद झूठ है। अधिक क्या कहूँ ? यह जानने की कोशिश करो कि इस संसार में शिव, विष्णु, ब्रह्मा, देवेन्द्रादि इस रावण की गणना में क्या हैं ? व्यर्थ अपना सर्वनाश मत करो।" इस प्रकार (रावण ने) कहा। ४७ "बुद्धिमत्ता इसी बात में है कि तुम अपने मन को राज़ी कर लो। 'तू मेरी पटरानी है।' —इस प्रकार सारे संसार में ढिंढोरा पिटवाऊँगा। यह मेरी राजाज्ञा रहेगी। यह देख, चौदह लाख स्त्रियाँ हैं। यह महान संपदा है। तू इसकी साम्राज्ञी बन। चल उठ;

इर्दे चतुर्दश लक्ष ललनेंयरिंदे महासंपदवु नीनि
तिदकें नायकियागु नडॆ जडमतिय देकॆंद ॥ 48 ॥
सुरप शिखि वरुणादिगळु किंकररु तनगिंदबुजभव शं-
कररु तन्नाश्रितरु नळकूबर जयंतकरु
चरण सेवकरमरमुनि तुंबुररु गायकरिंदु मन्मथ
वर वसंतक रोलिव सतियर दूतरॆनगॆंद ॥ 49 ॥
सुरर गुरु सांवत्सरिक सुर तरुणियरु तोत्तिरु सुरोरुग
नर निशाचर भुवन दॊडॆतन वॆन्नदॆनगिंदु
सरियदारॆले सीतॆ नीनी सिरियननुभविसदे निरर्थकॆ
जरडु मनुजन ध्यनिसुवदिदु योग्यवल्लॆंद ॥ 50 ॥
एकॆ निनगी मरुळतनदविवेक नी नारा नराधम
काकनारुप जीवन प्रारब्ध फलगळलि
सोकिदुद ननु भविसुवदे निर्व्याकुलद सुप्रौढि निनगि-
न्नेकॆ रामन चिंतॆयॆनलुरि मसगितव निजॆगॆ ॥ 51 ॥
कणुगळलि किडिसूसॆ कैयलि तृणवनुरॆ मुरिदिक्कि नुडिदळु
वणगु रक्कस कॊळ्ळॆलवो निनिगिनितु गुणविरलु

अपनी जड़ वुद्धि त्याग दे।" —इस प्रकार (रावण ने) कहा। ४८ "इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि मेरे सेवक हैं। ब्रह्मा, शिव आदि मेरे आधीन हैं। नलकूवर, जयंत मेरे चरण-सेवक हैं। देवर्षि नारद, तुंबर आदि मेरे गवैये (सेवक गवैये) हैं। चन्द्र, मन्मथ, वसंत आदि मुझे चाहनेवाली स्त्रियों के दूत हैं।" इस प्रकार उस (रावण) ने कहा। ४९ "देवताओं के गुरु ब्रहस्पत्याचार्य मेरे यहाँ ज्योतिषी का काम करते हैं; देवता-स्त्रियाँ मेरी दासियाँ हैं। देवताओं के, नागों के, मानवों के, असुरों के लोकों का प्रभुत्व मेरा है। मेरी बराबरी कौन कर सकता है, सीता? तू इस संपदा का उपभोग करने के बदले, व्यर्थ ही ढपोरशंख मानव का जो जप कर रही है— ठीक नहीं है।" इस तरह रावण ने कहा। ५० "इस मोह के अविवेक में व्यर्थ ही तू क्यों फँसी हुई है? तू कहाँ, वह अकिंचन क्षुद्र मानव कहाँ? अन्यों का आश्रय आधार न लेते हुए, दैववशात् जो अपने पल्ले पड़ा है उसके उपभोग करने में ही निश्चित बुद्धिमत्ता है। अब राम की चिंता में क्यों लीन रहती हो? (उसका चिंतन करना छोड़ो)।" इस तरह रावण के कहने पर सीता क्रोध के मारे जल उठी। ५१ सीता की आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं। उसने तिनका (तृण) तोड़

ल्लिणयनन धनुवंद देतकॆ मणिय दादुदु सुडुसुडॆलवो
हॆणदिनहिगळि गुचितवी मातॆंदळा सीतॆ ।। 52 ।।
तंदडतिबलनहुदले रघुनंदनन सम्मुखदॊळॆन्ननु
हंदॆ होगॆलॆ नायॆ निनगेकमर मानवर
दंदशूकर भुवन दॊडॆतन बॆंद मोरॆगॆ बहु विकारद
मंदॆवाळद मातदेकॆंदुरुबिदळु खळन ।। 53 ।।
तनगॆ गड सुमनसरु बंटरु वनजभव भवराश्रितरु गड
मनॆय तॊत्तिरु गड सुरांगनॆयरु विचित्रवल
मनसिजाद्यरु सेवकरु गड मनुज गड रघुनाथ निवना
ननव सीळुव रिल्ल वकटक टॆंदळा सीतॆ ।। 54 ।।
सलुवुदी नुडि पानि गळिगस्खलित मूर्खाधमरिगॆडॆ बॆर
ळळिदवरि गभिमान हीनरिगिदुवॆ सिद्धवल
ऒलवो निन्नॊळु मात निदिरलि गळह बहुदे सुव्रतॆयरॆलॆ
हॊलॆय हॊगॆंदबलॆ मुख दिरुहिदळु खातियलि ।। 55 ।।

डाला। "रे नीच राक्षस ! सुन। अगर तू ऐसा पराक्रमी रहा तो उस दिन शिवधनु तोड़ने में क्यों असमर्थ रहा ? रे मुँहजले, मुर्दा खानेवाले पिशाचों की जिह्वा की शोभा हैं ये तेरी बातें।" इस प्रकार सीता ने कहा। ५२ "राम के देखादेखी अगर तू मुझे हरकर लाता तो मैं तुझे सचमुच वीर कहती। हे भीरु, पामर, चला जा यहाँ से। रे कुत्ते, देवताओं के, मानवों के तथा नागलोक के आधिपत्य से तेरा क्या प्रयोजन ? कई विकारों से ग्रस्त तुझ जैसे मुँहजले के मुँह से निकली ये बातें ज़्यादती की ही हैं।" —इस तरह रावण का सामना करते हुए सीताजी बोलीं। ५३ "देवता इसके सेवक हैं। ब्रह्मा, ईश्वर इसके आश्रित हैं। देवता-स्त्रियाँ इसके घर की दासियाँ हैं। वाह रे वाह ! यह सब बड़ा ही विचित्र है। ऊपर, मन्मथ आदि इसके सेवक हैं; कहता है कि रघुपति मानव मात्र हैं ! इस मुँहजले के मुँह को कोई फाड़ क्यों नहीं डालता।" इस तरह सीता ने कहा। ५४ "ये तेरी बातें पियक्कड़ के मुंह की शोभा है। मूर्ख, नीच, धनुष की प्रत्यंचा खींचने में प्रयुक्त मध्यमा (अँगुली) खो बैठे धनुर्धारी —वग़ैरहों की जीभ की शोभा है —ये तेरी बातें। मानमर्यादा-रहित तुझ जैसे निर्लज्ज के मुँह की शोभा हैं। तुझ जैसे नीच के सम्मुख हम जैसी साध्वियों का मुँह खोलना भी एक महापाप है। रे रे चांडाल ! निकल जा यहाँ से।" इस तरह कहते सीता ने क्रोध से मुँह मोड़ लिया। ५५ "यह तो ऐसी बात हुई कि

वासुगिय नीरोळ्ळे तन्न निवासदलि जरॆवुदु गर्डॆलवो
दाशरथि यनुचरर लॆंकर लॆंकरनुचरर
दासियर लॆंकरिगॆ सरिवर लेसऽवनी नाय कळुहॆं-
दा सरमॆगा सीतॆ कोपिसि नुडिदळितॆंदु ॥ 56 ॥
ललनॆ केळी रक्कसन कडिदलॆय मॆट्टिदु मिंद बळिकी
खळन सतियरु तॊत्तिरहरी सकल संपदवु
सुलभ वहुदिदु सिद्धविदनी हॊलॆयगुत्तर कॊट्टु कळुही
गळह रक्कस नायनॆंदळु सरमॆगा सीतॆ ॥ 57 ॥
घड पतिव्रतॆ तानु गड काळ् गॆडॆदु नुडिववरावु गडदिट
कडिदलॆय ता मॆट्टिमीवळु गड महादेव
ऒडति गड बहु संपदकॆ बाय् बडिक हॆंगुसकॊलुवॆनॆनुत-
ग्गडद कोपद लॊत्तिदनु खंडॆयवनसुरॆंद्र ॥ 58 ॥
अहह रक्कसराय मरुळनॆ विहितवे निनगिदु भुजश्री
महिळॆ नगदिहळे यशोरमॆ नाचि तलॆगॊडहि

पानी का अकिंचन साँप अपने घर में बैठे आदिशेष (सहस्रफनधारी) की निंदा कर रहा हो। दाशरथी के सेवकों के, उन सेवकों के अनुचरों के अनुचरों की गुलाम दासियों के सेवकों की बराबरी करने की भी योग्यता इसमें कहाँ है ? इस कुत्ते को यहाँ से भगा दो।" —इस प्रकार सीता ने सरमा से कहा। ५६ "सुनो सरमा, इस (नीच) राक्षस का सिर काट डालकर फिर उसे कुचलकर स्नान जब कर लूँगी, तभी इस दुष्ट की स्त्रियाँ (पत्नियाँ) मेरी दासियाँ बनेंगी। और तब बड़ी सुगमता से यह सारी संपदा मेरे आधीन होगी। यह सोलहों आने सत्य है। इस चांडाल को यह मेरा उत्तर सुनाकर, इस प्रकार भूंक रहे इस राक्षस कुत्ते को यहाँ से भिजवा दो।" —इस प्रकार सीता ने सरमा को समझाया। ५७ "थू है इस पर; महान पतिव्रता बनने का दावा है। मैं तो (इसके हिसाब से) ओछी बातें करनेवाला ठहरा ! कोई बात नहीं; मेरे कटे सिर को कुचलकर यह स्नान करनेवाली ! शिव-शिव ! तब यह मेरी महा संपदा की अधिकारिणी होनेवाली ! इस वाचाल औरत को अभी समाप्त किए देता हूँ !" इस तरह कहते क्रोध से तमतमाते राक्षसाधिपति ने तलवार उठायी। ५८ "हाय-हाय, क्या राक्षसराज भ्रमिष्ट (विमूढ़) हुए ! क्या यह आचरण तुम्हारी शोभा है ? भुजश्री यह (कार्य) देख हँसेगी नहीं; कीर्तिलक्ष्मी घृणा दिखाते तुम्हारा तिरस्कार किए बिना रहेगी !

बहिकरिस दिहळे धरांगनें गहगहिस दिहळे विचारव
वहिस दळिवरें सतिय नेंदळु मयनसुतें पतिय ।। 59 ।।
झडिदु चिम्मुव खंडेयव कैदुडुकि मंडोदरि निजेशन
कडुह कळलिसि कॅलकें सारिसुवनितरोळें हनुम
किडिगेंदरि गिळिविंडि गेरगुव गिडिगन वोलुब्बेद्दु तोलगिद
खडुगवनु कंडंतरिसिदनु मरन कोंबिनलि ।। 60 ।।
मरुळुतन बेडेळु नडे नर तरुणिये तानीकें साक्षा-
त्परम पुरुषन पुण्य वधुवें बेणिकें तोरुतिदें
स्मर विकारद बुद्धि साकिन्नेरडु गेड बेडेंदु मंडो-
दरि निजेशन नोय्दळरमनें गणुग केळेंद ।। 61 ।।
बळिक दुम्मानदलि खळनिज निळयकभिमुख नाद नित्तलु
हलुबिदळु हरिदश्व कुलवधु राघवेश्वरन
नेलनें बाय्देरॆ बदुक लारेनु खळन बाधेयोळेंदु बाय्वि-
ट्टळलिदळु नेनेनेनेंदु मनुकुल सार्वभौमकन ।। 62 ।।

भूलक्ष्मी खिलखिलाकर हँसेगी नहीं ? बिना सोचे-विचारे कोई सती की हत्या करता है ?" —इस प्रकार मय की पुत्री मंदोदरी ने अपने पति (रावण) को समझाया। ५९ लपलपाती, आगे बढ़ती तलवार को बीच में ही रोककर, हस्तक्षेप करते मंदोदरी ने अपने पति के पराक्रम को ठंडा कर दिया। (वह) तलवार जब धरती पर आ गिरी, तब हनुमान ने चिनगारियाँ उगलते हुए तोतों के झुंड पर टूट पड़नेवाले बाज़ की तरह कूदकर उस तलवार को उठा लिया तथा पेड़ की डाली में छिपाकर रख दिया। ६० "पागलपन छोड़ो; चले जाओ यहाँ से। यह क्या मानव-स्त्री है ? मुझमें तो यही भावना (इसे देख) जगी है कि साक्षात् परम-पुरुष की यह पुण्यसती है। (अतः) काम-विकारपूर्ण बुद्धि बस है। अपने इह-पर दोनों को विनष्ट मत कीजिए।" इस तरह अपने पति को समझाते हुए मंदोदरी उसे राजमहल ले गयी। सुनो कुमार ! इस तरह वाल्मीकि महर्षि ने कहा। ६१ तत्पश्चात् बड़े ही उद्वेग में, प्रक्षुब्ध हो, राक्षसेश्वर अपने महल की तरफ़ लौटे। तब सूर्यकुलोत्पन्न मनुवंश चक्रवर्ती राम का स्मरण करते हुए— "हे भूमिमाता, मुँह खोलो। इस दुष्ट की पीड़ा के कारण मैं बच नहीं पाती।" इस तरह कहते सीता ढारें मारकर रोने लगी। ६२ "हे राम, रघुवंश रूपी सागर को उमड़ानेवाले चंद्र, चन्द्र-सदृश आनंददायक, हे मेरे प्रियकर, अनुपम मनोहर, अति

राम रघुकुल वार्धिवर्धन सोम सोमाह्लादकर निज
राम निरुपम रम्य विग्रह विपुळ विख्यात
राम राघव राक्षसान्वय भीम भार्गव बाहुबल जय
राम तन गिन्नेनु गति हेळेंदळा सीतॆ ॥ 63 ॥
अकट पूर्वदलाव हिरियर टकरि गळॆदॆनदाव दैवद
भकुतियनु कुंदिदॆनो निंदिसिदॆनो गुरुद्विजर
विकळतॆयलि विवेकिसदॆ पातकव नॆनॆदॆनो पतियॊळकटा
प्रकटिसितॆ दुष्कर्म फलवॆनगदळा सीतॆ ॥ 64 ॥
सुळियलेकॆ कुरंग रामन कळुहलेकॆ दुरुक्तियलि नुडि
दलघुबल लक्ष्मणननुरु वलदेकॆ वॆंबळिय
ललनॆ यिवळल्लॆंदु चित्तदॊळलसिदरो मेण् खळर मायॆगॆ
सिलुकिदरो साव् बारदॆनगकटॆंदळा सीतॆ ॥ 65 ॥
एनु हदनागिहरो रघुनृप सूनुगळु सूर्यान्वयद सुर
धेनुगळु सद्वंश सच्चरिताभिमानिगळु
आनरेंद्रर सुद्दियनु संधान गॊळिसुव रिल्लला हा-
हा नरोत्तम हा ऎनुत हम्मैसिदळु सीतॆ ॥ 66 ॥

प्रसिद्ध, राघव राम, हे राक्षस-कुलांतक, परशुराम के भुजबल के विजेता राम —अब मैं क्या करूँ ? तुम्हीं बताओ।" इस तरह कहते सीता प्रलाप करने लगी। ६३ "हाय-हाय, न जाने मैंने पूर्वजन्म में किन बड़ों की उपेक्षा की थी; न जाने मेरी भगवत्-भक्ति में कहाँ त्रुटि हुई थी; कहीं गुरु, ब्राह्मणों की निंदा हुई थी; मन की व्याकुलता के कारण अविवेक के वशीभूत होकर पापाचरण किया था; क्या मेरे पूर्वजन्म के दुष्कर्मों का फल (क्या) अब प्रकट (यों) हुआ ?" इस तरह सीता ने कहा। ६४ हाय मेरे दुर्दैव ! यह हिरन क्योंकर (कुघड़ी में) प्रकट हुआ ! राम को मैंने (व्यर्थ) क्यों भेजा ? महाबलशाली लक्ष्मण को बुरे वचनों से (छेदते) राम के पीछे क्योंकर दौड़ाया ? यह कैसी नारी है —सोचते हुए कितने पछताए होंगे ? या राक्षसों की माया में कहीं फँस तो नहीं गये ? हाय-हाय —मुझे मृत्यु क्यों नहीं आती ?" इस तरह सीता अपना दुखड़ा रोने लगी। ["ललनॆ यिवळल्लॆंदु चित्तदॊळलसिदरो"— सीता कहाँ —इस तरह सोचते न जाने कितने व्याकुल हुए हों —इस प्रकार हो तो अर्थ जुटता है।] ६५ "रविकुल के कामधेनु, सद्वंश-संभूत हो सदाचार के अभिमानी —उन राजकुमारों की दशा न जाने क्या हुई

हा महादेव ममसुकृत स्तोम दधि देवतॅयला सी-
ता महासति विश्रुतद दृष्टानुमानदलि
राम सति गॅणॅयारु जगदभिरामॅ यरिगॅ विभूषणवला
रामणीयक पति भकुति जगकॅदना हनुम ॥ 67 ॥
आ तळोदरि बळिक मॅल्लनॅ चेतरिसि कॉडॅद्दु साविगॅ
शात खड्गकॅ कैदुडुकिदळु कावलसुरॅयर
भूतला नी जगद जीव विघातकियला साकुनमगी
रीति सेरदु सारॅनुत बिडॅ जरॅदळा त्रिजटॅ ॥ 68 ॥
इन्नबर सैरिसद सैरणॅ युन्नति कॅगिद्दु मार्गवे दिन
विन्नु सारॅ दशाननंगॅलॅ तायॅ चित्तैसु
मन्निस दिरविवेकवनु वित्पन्नतॅगॅ कुंदहुदु हब्बुवु-
दिन्नु निम्मभ्युदय लतॅ केळॅदळा त्रिजटॅ ॥ 69 ॥
कनस कंडॅनु निन्निरुळिन कॉनॅयलॅलॅ वैदेहिकेळ् खळ
जनप रावण नरिद तलॅगळ लळुव नारियर

हो ? उन राजाओं के बारे में समाचार कोई भी नहीं दे रहा। हाय (मेरे) मानव-श्रेष्ठ !" इस प्रकार उद्‌गार निकाल सीता मूर्च्छित हुई। ६६ "हे शिव-शिव महादेव ! कानों से सुनते आँखों से प्रत्यक्ष देखते यह परम साध्वी सीता मेरे लिए तो (मेरे) पुण्यकर्मों की अधिदेवता ही है। रामसती की समानता कौन कर सकती है। मनोहर पतिभक्तिसंपन्न सीता लोकनारियों के लिए भूषण (आभूषण)-सदृश है।" —इस प्रकार हनुमान ने सोच लिया। ६७ सीता धीरे-धीरे होश में आयी। मृत्यु के आलिंगन के उद्देश्य से उसने धीरे-धीरे पहरे पर उपस्थित राक्षसियों के हाथ की तलवार की ओर (अपना) हाथ बढ़ाया। तभी "शर्म की बात है; तू जगत के जीवियों के विनाश के लिए कारणीभूत है। बस करो। तेरी यह रीति ठीक नहीं है; चली जा यहाँ से।" इस तरह कहते त्रिजटा ने उसकी (सीता की) निंदा की। ६८ त्रिजटा ने फिर समझाया— "अब तक सहन करते-करते सहनशीलता की पराकाष्ठा का परिचय देने के बाद क्या यह तेरा (आत्महत्या का) मार्ग सही रहा ? सुनो माता; दशकंठ के दिन भर चुके हैं। (अब उसका विनाश सुनिश्चित है।) तुम्हारे ज्ञान में त्रुटि कहीं भी नहीं रहेगी। तेरी उन्नति की बेल पनपना ही चाहती है। वह दिन अब दूर नहीं।" ६९ "सुनो वैदेही ! कल रात के अंतिम प्रहर पर मैंने एक सपना देखा। कटे हुए सिरों के साथ, रोती-पीटती स्त्रियों के शब्दों-सहित यम की दिशा

निनद दिदंतकन दिक्किगॆ तनुज मित्र ज्ञाति बांधव
जनसहित गमिसुवदनॆंदळु सीतॆगा त्रिजटॆ ॥ 70 ॥
धवळदंतिय हॆगलिनलि राघवन कंडॆनु पृथुळसित पुं-
गववनेरिर्दुदनु कंडॆनु राघवानुजन
विविध मुक्ताभरण मंगळ निवसनालंकारदलि नि-
म्मुवनु कंडॆनु तॊडॆय मेलिन वंशवल्लभन ॥ 71 ॥
कंडॆ नुन्नत शैल शिखरद मंडॆयलि मूर्धाभिषेकद
दंडियनु धार्मिक पुलस्त्यान्वय विभीषणन
कंडकनसिदु देवि निम्मय गंडनभ्युदयवनु काविरि
कॊंडु कॊनरदि ररसि चिंतॆयनॆंदळा त्रिजटॆ ॥ 72 ॥
संतविसि देवियर बळिका कांतॆ कापिन नारियरु सहि-
तंतरिसिदळु निद्रॆयनु नीरेजमुखि मनद
चिंतॆयनु बिडलरियदा निजकांतननु हंबलि सुतिरॆ हनु-
मंतना समयदलि नुडिदनु मरन कॊंबिनलि ॥ 73 ॥
देवियरॆ निजपतिय पदराजीववति सुक्षेम लक्ष्मण
देव बल्लिद नधिक बल बलिमुख कुलाधिपन

दक्षिण दिशा की तरफ़ राक्षसराज रावण को अपने पुत्र, संतान, मित्र, बंधु-बांधव-सहित जाते देखा।" इस तरह त्रिजटा ने सीता से कहा। ७० "सफ़ेद हाथी की पीठ पर राघव को देखा। बड़े सफ़ेद साँड़ पर राघव के भाई को देखा। तरह-तरह के मोती के गहने-आभूषण तथा मंगल वस्त्रों से अलंकृत तुम्हें रविकुल के राजा के अंक में आसीन देखा।" इस तरह उसने कहा। ७१ "ऊँचे-ऊँचे पर्वत-शिखरों की नोक पर पुलस्त्य-वंशोत्पन्न धर्मात्मा विभीषण के सिंहासनारोहण की महत्ता देखी। यह सपना मैंने देखा। देवीजी, तुम अपने पति की उन्नति अवश्य देखोगी। चिंता को (अपनी खिन्नता को) बढ़ने मत दीजए।" इस प्रकार त्रिजटा ने समझाया। ७२ सीता को इस प्रकार सांत्वना देकर त्रिजटा पहरे पर नियुक्त स्त्रियों-सहित सो गयी। कमलमुखी जानकी अपनी चिंता को त्यागने में असमर्थ हो, पति के बारे में सोचते जब व्याकुल थीं, तब हनुमान पेड़ की डाली पर से बोले। ७३ "देवीजी, आपके पति के श्रीचरण कुशलमंगलसंपन्न अत्यंत क्षेमपूर्वक हैं। लक्ष्मणदेव बलसंपन्न है। पराक्रमशाली कपियों के अधिपति सुयोग्य सम्मतियुक्त हैं। इन तीनों ने

भाव करले सैन्न निल्लिगॆ मूवरवरट्टिदरु सीता
देवियर नी नोडि बा होगॆंदु गुप्तदलि ॥ 74 ॥
बंदॆ नबुधिय दाटि कंडॆनु संद सुव्रतॆ यंघ्रिकमलव
नॆंदॆनलु मॊग नॆगहि नोडिदळा महीरुहव
हॊंदिकॆय हॊल बल्लवी नुडि यॆंदु सति मॊगदिरुहलॊड निं-
तदना हनूमंत हवणिसिदुचितवचनदलि ॥ 75 ॥
देवियर खळ तंदबळिकॆलॆ देविकेळु जटायुवनु कं-
डा विभाकरकुलज रैतंदिद्र नंदनन
जीववनु कॊंडधिकबल सुग्रीवननु पतिकरिसि सुरवि-
द्रावणन रावणन कॊललैतंदरवरॆंद ॥ 76 ॥
कळुहिदरु बळिकवरु सीतॆय नॆळॆयनरि होगॆनलु बंदॆनु
बळिक कंडॆनु देवियर विमलांघ्रि पंकजव
अॆलॆ जननि चित्तैसॆनुत मंजुळ महीजदि निळिदु पादद
लिळुहिदनु निजशिरवनवनिजॆ बॆदरि भीतियलि ॥ 77 ॥
अंजलेकॆलॆ तायॆ दानव भंजनन भृत्यनु कणा ता
नंजनासुत हनुमनॆंबुदु पॆसरले तनगॆ

मुझे गुप्त रीति से, आपका कुशल-मंगल जानने यहाँ भेजा है। ७४ समुद्र लाँघकर मैं यहाँ आया। पतिव्रता के चरण-कमलों का दर्शन भाग्य मुझे प्राप्त हुआ।" —इस प्रकार जब हनुमानजी बोले सीता ने अपना मुँह उठाकर, ऊपर पेड़ की तरफ़ देखा। "यह वचन तो उचित नहीं जँचते।" इस तरह कहते जब सीता ने मुँह मोड़ लिया तो तुरंत हनुमान ने अपनी पूर्व योजनानुसार तैयार रखे सुयोग्य वचनों से वार्तालाप करना शुरू किया। ७५ "सुनिए देवीजी, दुष्ट रावण जब आपको उठा लाया तो सूर्य-कुलोत्पन्न राम-लक्ष्मण जटायु से भेंटकर आगे बढ़े; फिर इन्द्र के पुत्र वाली के प्राण समाप्त कर अत्यंत बलशाली सुग्रीव पर दया की। तत्पश्चात् वे देवताओं को पराजित कर भगानेवाले रावण की हत्या करने को अग्रसर हुए।" —इस प्रकार हनुमान ने कहा। ७६ "तदनंतर सीता के निवासस्थान का पता लगाने की आज्ञा उनसे पाकर मैं यहाँ आया। फिर देवीजी के (आपके) दिव्य चरण-कमलों के दर्शन संभव हुए। इसे सच मानो माता!" इस तरह कहते उस सुन्दर पेड़ पर से उतर आकर हनुमान ने सीता के चरणों में (अपना) माथा टेका। तब भूमि-सुता डर के मारे काँप उठी। ७७ "माँ, आप भयभीत क्यों हैं? मैं असुरारि का (राम का) सेवक हूँ; अंजनादेवी का पुत्र हूँ; मेरा

अंजबेडासुर विकारद रंजकरु नावल्लवेंनुत ध-
नंजयन सखसूनु बिन्नैसिदनु जानकिगॆ ॥ 78 ॥
नीनु कपि नरनाथना रघुसूनु तानिदु स्वामिभृत्य म-
हानुभव कनुनयवॆ तानिदसंगतद मातु
वानररु वारुधिय दाटुवुदेनिदच्चरियल्लवे मा-
या निबद्धोक्तिगळिगंजुवॆ नॆंदळा सीतॆ ॥ 79 ॥
जननि केळ् निम्मरस ननुपम वनरुहांघ्रिय सेवकरिगी
नॆनहु दॊड्डितॆ नीरधियनुत्तरिसि दंगवनु
जननि चित्तैसॆनुत वरवामन त्रिविक्रम नादवॊलु बॆळॆ-
दनु महीतळवदुरदवॊलंबरद तुदिगागि ॥ 80 ॥
शिवन कायद कांति मैयलि खवखविसिदुदु वदनवुदयद
रवियवॊलु रंजिसितु तारागणद हुरियंतॆ
दिववनणॆदुदु बालबळिका हवण काणुत कांतॆकंगळ
नॆवगळलि मुच्चिदळु रघुपति रामरामॆनुत ॥ 81 ॥
कंडु हॆदरुव ळॆनुत लाहव चंडवल संकोचिसिदनु-
द्दंड मूर्तियनॆसॆद नणुरूपदलि कैयॊडनॆ

नाम हनुमान है। भयानक रूप धारण करनेवाले हम नहीं हैं। अतः डरिए मत।" इस प्रकार अग्नि के मित्र वायु के पुत्र ने जानकी से प्रार्थना की। ७८ "(कुछ भी कहो), तुम तो कपि हो; राघव तो राजा हैं। क्या यह स्वामी-सेवक के संबन्ध की रीति (तौर-तरीक़ा) हो भी कैसे सकती है। बड़ी विचित्र बात है। वानरों का समुद्र-संतरण भी कितना आश्चर्यजनक है! इन मायावी बातों से सचमुच मैं डर जाती हूँ।" इस प्रकार सीता ने कहा। ७९ "सुनिए माताजी, आपके पति के श्रेष्ठ चरण-कमलों की सेवा करनेवाले सेवकों के लिए यह (समुद्रोल्लंघन) कौन सी बड़ी बात है? किस प्रकार के देह को धरकर समुद्र पार किया —उस रूप का अवलोकन कीजिए।" इस तरह कहते हुए वामन ने जैसे त्रिविक्रम रूप धारण किया था वैसे ही हनुमान भूमि को रत्ती भर भी हिलने न देते हुए धरती से आकाश तक बढ़ गये। ८० शिवजी के शरीर की कांति हनुमानजी के शरीर में द्युतिमान हुई। मुखड़ा उदयकालीन सूर्य के समान चमकने लगा। पूँछ नक्षत्रों से बनी रस्सी की तरह आकाश भर में व्याप्त हुई। हनुमान का यह रूप देखकर सीता ने "रघुपति, राम-राम", कहते हुए अपनी आँखें मूँद लीं। ८१ यह रूप देखकर सीता

मंडिळिसिदंबुधियनी कैकोंड रूपिनलुत्तरिसिदेनु-
कंडेनी रूपिनलि निम्मवनेंदना हनुम ॥ 82 ॥
ओंडबडवु दोम्मोम्मे मन मत्तोंडबडदे बेंदरुवुदु निजवनु
हिडियलरियदे हत्तुगेय हस्तद कदंपिनलि
नुडियलम्मदे कांतेयिरे मुंगुडिय किंकर भावदलि कपि
नुडिदनवनीनाथ नेमवनित्त कुरुहुगळ ॥ 83 ॥
ताये चित्तैसिनकुलद रघु रायननुपम चित्रकूट-
स्थायियलि विहरण जलक्रीडा विनोददलि
पायवट्टवना कोळन पानीयदलि कैडिसिदिरि गड निज
वेयिदेंदु समीरसुत कैमुगिदनंबिकेगे ॥ 84 ॥
देविकेळ् निम्मुवनु बेंदरिसिदा विहंगाधमनना नर-
देवनुळुहिद गड शरण्पोगलिदुवे निश्चयवे
देवि बळिका चित्रकूट ग्राववनु कळिदैदिदिरि गड
मूवरधिदेवतेगळय्यन पर्णमंदिरव ॥ 85 ॥
आ मुनींद्रन वनिते विपुळ प्रेमदलि निम्मुवनु निरुपम
हेम रत्नाभरणदि पूजिसिदळल्लि गड

को भयभीत हुई जान, रणपराक्रमी हनुमान ने अपना प्रचंड आकार घटाकर तुरंत अणुरूप धारणकर शोभायमान हुए। "अभी जो रूप धरा था —उससे विस्तृत समुद्र पार किया। फिर इस अणुरूप से आपके दर्शन कर लिये।" इस प्रकार हनुमान ने कहा। ८२ कभी-कभी सीता इन बातों पर भरोसा कर बैठी; कभी-कभी इन बातों पर भरोसा करने में असमर्थ हो भयभीत हुई। इस अवस्था में गाल पर हाथ धरे मौन हो सीता जब बैठी रही तो हनुमान ने आप्तसेवक भाव से, श्रीराम से आज्ञापित पहिचान के लक्षणों को सीता के सम्मुख प्रस्तुत किया। ८३ सुनिए माताजी; रविकुलोत्पन्न राघव, चित्रकूट पर्वत पर निवास करते समय, विहार करते जलक्रीडा करते समय आपने अपने चरणों पर के आभूषणों को पानी में गिरा दिया न ?। —यह सच है न ?" इस तरह हाथ जोड़े वायुसुत ने प्रश्न किया। ८४ देवी, और भी एक बात है। सुनिए। आपको डरानेवाला वह नीच पक्षी कौआ जो शरणागत हुआ तो राम ने उसकी रक्षा की। यह तो सच है न ? तत्पश्चात् चित्रकूट पर्वत त्यागकर, चलते-चलते, ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर के पिता अत्रि महर्षि की पर्ण-शाला में आप लोग पहुँच गये। ८५ "श्रेष्ठ स्वर्ण तथा रत्नाभूषणों से

आ मुनिय बीळ्कोंडु बरुतुद्दामवीर विराधननु नि-
र्नामवनु मडिदनु गड नृपनहुदे कुरुहेंद ॥ 86 ॥
मंगळाननॆ चित्तविसु शरभंगमुनिप सुतीक्षणर भव-
नंगळलि गमिसिदिरि गड घटवारि संभवन
अंगणव सारिदिरि गड रघु पुंगवंगा मुनिप चाप नि-
षंग खड्गवनित्त गड नृपगहुदे कुरुहेंद ॥ 87 ॥
इरलु तिंगळमेलॆ मैत्रावरुणियनु बीळ्कोंडु बरॆ नी
वरुणतनयन कंडु कळुहिसि कोंडु गौतमिय
वरसरीतीरवनु सारलु हरिव्रकोदगिद दूपणाद्यर
शिरव चंडाडिदनु गड नृपनहुदे कुरुहेंद ॥ 88 ॥
मेलॆ होम्मरि सुळियलदरि वेळुवोदिरि गडयनल् क-
णालिगळलुरुळिदवु जलबिंदुगळु जानकिय
हेळिदी कुरुहुगळु तप्पवु केळिदॆ हनुमंत नंबुगॆ
गेळदिदॆ मनवेन माडुवॆनेंदळा सीतॆ ॥ 89 ॥

अत्यंत प्रेमपूर्वक अत्रि महर्षि की पत्नी ने आपकी पूजा की थी न ? उस महर्षि (अत्रि) से विदा लेते, लौटते समय प्रचंड पराक्रमी विराध को राम ने मार डाला न ? यह परिचय जो मैंने दिया —ठीक है न ?" इस प्रकार हनुमान ने पूछा। ८६ "हे कल्याणमयी, सुनिए। आप लोग फिर शरभग मुनि तथा सुतीक्ष्ण के निवासस्थान पर गये। वहाँ से अगस्त्याश्रम में पहुँचे। उस (अगस्त्य) मुनि ने राघव को धनुष, बाण तथा तरकस, तलवार आदि दिये। यह परिचय तो आप मानती हैं न ?" इस प्रकार पूछा। ८७ "एक महीना बीतने पर अगस्त्य से विदा लेकर आगे बढ़ने पर आप लोग अरुण के बेटे जटायु से मिले। वहाँ से गोदावरी नदी के किनारे पहुँचे। 'युद्धम् देहि' कहकर आनेवाले दूपणादि राक्षसों के सिरों को राजा राम ने गाजर-मूली की तरह काट डाला। यह घटना सत्य है न ?" इस तरण हनुमान ने पूछा। ८८ "तत्पश्चात् स्वर्णमृग आपके सामने जब नाचने लगा, तो आप उस पर लट्टू हो गयी।" इस तरह हनुमान ने जब निवेदन किया तो सीताजी की आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे। "हनुमान जो भी तुमने परिचय पहिचान के तौर पर कहा, वह सब सच होते हुए भी मुझमें विश्वास ही पैदा नहीं हो रहा (मुझे विश्वास ही नहीं होता)। मैं क्या करूँ ?" इस तरह सीता ने लाचारी प्रकट की। ८९ "यह बात है ? तब तो आदरपूर्वक सुनिए। राम की दोनों हथेलियों पर तथा चरणों में कमल-रेखाएँ हैं। माथे पर बायीं ओर

आदर्डेलॆ केळ् जननि चित्तैसादरदि करयुगळ तळदलि
पाददलि पद्मंगळॆडदलि मत्ति नॊसलिनलि
नैदिलरसन चिह्नविवु तानैदिहवु गडदेविकेळ् हु सि-
यादडिवु बळिकॆन्न नंबलुबेड नीनॆंद ॥ 90 ॥
मूरुभागद संशयवु कॊलसाऱितवनी सुतॆगॆ नंबुगॆ
दोऱदिरॆ तुदियंशदलि हनुमंतना हृदन
माऱु नुडियिर्दिरलऱिदु मन मीऱुवुदलायॆंदु मणिगण
दोऱिकॆय मुद्रिकॆय नित्तनु रमॆगॆ राघवन ॥ 91 ॥
कमलमुखि सुमुखतॆय घनसंभ्रमद परमानंददलि निज
रमणनॆंदे वंदिसिदळा राम मुद्रिकॆगॆ
तमवनुऱॆ जरॆदुगुळ्व किरणद विमल रत्नद नडुवॆ हॊळॆदुदु
कमलनयनन मूर्ति कंगळिगा पतिव्रतॆय ॥ 92 ॥
तरणिबिंबद तोऱिकॆय तावरॆयवॊलु हॆरॆगंडु हिग्गुव
शरनिधियवॊलु सार्द सिरिय दरिद्रनंददलि
परमतत्वद निलुकडॆय संदरुशनद सुज्ञानिय वॊलु-
ब्बरद हरुषदलबलॆ हॊंपुळियोदळडिगडिगॆ ॥ 93 ॥

चन्द्रमा-सरीखा तिल (का चिह्न) है। यह सब परिचय के चिह्न हैं। सुनिए देवीजी! अगर ये सब कुछ झूठ हैं तो मुझ पर विश्वास न करें।" इस तरह हनुमान ने कहा। ९० सीता का तीन चौथाई शक (संदेह) का निवारण हुआ। फिर भी एक चौथाई अभी बाक़ी था। अतः वह विश्वास न कर सकीं। सीता प्रत्युत्तर नहीं दे रहीं। हनुमान ताड़ गये। 'अब देर करने से मन उचट जायगा।' —यों सोच हनुमान ने राम की रत्नजटित राजमुद्रांकित अँगूठी राघव की रानी (सीता) को दी। ९१ (इससे) कमलमुखी प्रसन्न हुई। प्रेम के उमड़ने पर प्रत्यक्ष पति ही समझकर (राम की) राजमुद्रांकित राम की अँगूठी को प्रणाम किया। अंधेरे को अपमानित कर भगा देनेवाले तेज की किरणों के मध्य उस अँगूठी में कमलनयन श्रीराम की मूर्ति के प्रकाशमय शोभन दर्शनों का भाग्य सीताजी को प्राप्त हुआ। ९२ सूर्यबिंब को देखकर मुखरित होनेवाले कमल की तरह, चन्द्रमा को देखकर उमड़नेवाले समुद्र की तरह, संपदा प्राप्त करनेवाले दरिद्र की तरह, परात्पर तत्व के अंतिम दर्शन करनेवाले ज्ञानी की तरह सीता हर्षाधिक्य से वारंवार (बार-बार) रोमांचित हुईं। ९३ क्षण-क्षण उसका आनंद बढ़ता ही गया; वह रोमांचित हुए

मगुळॆ मगुळॆ सुखातिशय दुब्बुगळ रोमांचनद हरुषा-
श्रुगळला मुद्रिकॆय शिरदलि मिरुप भाळदलि
दृगुगळलि कुचमध्यदलि सोंपगिव संतोषदलि सेरिसि
सोंगसिननुभव रतिय लोलाडिदळु निजपतिय ॥ 94 ॥
संद सुखदतिशयद हरुषद संदणियला सरसिजाननॆ
संद विश्वासदलि सूसुव मधुर वचनदलि
कंद बळलिदॆ जीवविदु निन्निंद सप्राणिसितु हेळै
तंदॆ तन्नय मेलॆ करुणवदॆंतु रघुपतिय ॥ 95 ॥
मनद परियेनॆन्न मेलण नॆनहिनंतरवेनु हेळै
हनुम कठिणवो कोमलवो काकुत्स्थ नंतस्थ
कनलिकॆय मातुगळो ममतॆय विनयवचनवो निन्न कळुहुव
दिनदलिद्द स्थितियने हेळॆंदळा सीतॆ ॥ 96 ॥
अरसि केळध्यात्मविद्या चरित रिनकुलदवरु रामन
परियवर परियल्ल चिंतनॆ देवियर मेलॆ
वरजपानुष्ठान विहितोत्कर समाधि ध्यानदलि सं-
चरण जाग्रत्स्वप्नदलि बेरिल्ल नॆनहॆंद ॥ 97 ॥

आनन्दाश्रु गिराते बार-बार उस राजमुद्रांकित अँगूठी को सिर से, (अपने) चमकते माथे से, आँखों से तथा छाती से अत्यंत आनंद में स्पर्श कराते पति के (प्रत्यक्ष) समागम के सुखानुभव में सीता डूब गयी। ९४ (उस) सुखानुभव से प्राप्त हर्षाधिक्य में कमलमुखी सीता ने विश्वास-भरी मीठी बातों से हनुमान से प्रश्न किया— "हे पुत्र, तू बहुत ही थक गया; तेरे कारण ही मेरे ये कुम्हलाए प्राण पुनश्चेतन प्राप्त कर सके। यह तो बताओ, रघुपति की कृपादृष्टि की भाजन मैं अब भी हूँ कि नहीं?" ९५ "राम की मनोभावना मेरे प्रति कैसी रही? क्या वे मुझे याद करते हैं? (अब) राम का मन मेरे प्रति कठोर है या कोमल? कुछ कहो न हनुमान? उसी स्थिति के बारे में बताओ जो तुम्हें (मेरा पता लगाने) भेजते वक़्त थी।" —इस तरह सीता ने पूछा। ९६ "हे रानी, सुनिए। सूर्य-कुलोत्पन्न व्यक्ति ब्रह्मज्ञान-निरत व्यक्ति हैं। राम की रीति वैसी न रही। वे हमेशा देवीजी के (आपके) ध्यान में निरत हैं। तथा हमेशा आप ही के चिंतन में व्यस्त हैं। जप-तपादि के आचरण के समय, समाधि-ध्यान-स्थिति में, उठते-बैठते, चलते-फिरते, जाग्रत् तथा स्वप्न की अवस्था में भी— राम आपके सिवा अन्य किसी का ध्यान करते ही नहीं।" इस तरह हनुमान ने कहा। ९७ तो पुत्र, बात यहाँ तक बढ़ी-चढ़ी है?

कंदकेळिनितुंटे मनदलि कंदुकसरिकेयिल्लवले नी-
नेंद मातनु नंबले निश्चयवे हेळेनुत
संदणिप लोचन पयःकण दिदमात्ती मातनेंदळु
येंदिगे नगुक्कलवु हेळै तंदे हनुमंत ॥ 98 ॥
एन माडुवे तायें तप्पितु शानले कडुमोसवोदेनु
हीनवादुदु बंटतन विन्नेंदु फलवेनु
ई निशाटन कोंदु निम्मव ना नरेंद्रन बळिगे कोंडो-
य्वी नेनहनेच्चरिस दादेनु बरुत तानेंद ॥ 99 ॥
माणलदु कोंडोय्वेने तवप्राणपति येनेंबनो निम-
गूणयव होरिसुवनो कोरतेय हारयकुवनो तनगे
काणबारदु हगेय विगत प्राणदलि निम्मुवनु तेगवुदु
जाणतनदभियोग रामंगेदंना हनुम ॥ 100 ॥
अळलदिरि नीविन्नु तप्पिद केलसकेनंतिरलि सति के-
ळेलुव निम्मडियरसननु तिंगळिगे तारदिरे

राम के मन में मेरे प्रति किसी प्रकार की कलंक-भावना, या संदेह की दृष्टि तो नहीं है न ? क्या मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास करूँ ? सच-सच कहो।" —इस तरह पूछताछ करते-करते आँखों में आँसू भरे फिर पूछने लगी— "हे हनुमान्, बताओ तो सही, मेरी मुक्ति (यहाँ से) कब होगी ? ९८ "क्या करूँ माताजी ? मैं एक ग़लती कर धोखा खा बैठा। मेरा सेवा-भाव कलंकित हुआ। अब कहने से क्या प्रयोजन ? यहाँ आने के पहले (रवाना होते समय) मुझे चेतावनी देकर आना चाहिए था कि इस राक्षस को मारकर आपको राजा राम के पास बुला ले जाऊँ। इस विषय की चर्चा ही नहीं कर सका। अब पछता रहा हूँ।" —इस तरह हनुमान ने कहा। ९९ "अब भी, उस विषय को टालकर मैं तुम्हें अगर साथ लिवा ले जाऊँ तो पता नहीं कि आपके प्राणपति (श्रीराम) (न जाने) क्या समझ बैठें ? न जाने मुझ पर क्या दोषारोपण थोपेंगे ? न जाने किस प्रकार का कलंक मोल लेना पड़ेगा ? (वे) स्वयं आकर, (अपने) शत्रु को मारकर आपको यहाँ से ले जावें —यही राम के लिए बुद्धिमानी का कार्य लगता है।" इस तरह हनुमान ने कहा। १०० "आप खिन्न (दुःखी) न होवें। जो हो गया सो हो गया। अब किया क्या जा सकता है ? रहने दीजिए इन बातों को। आपके प्रिय पति को एक महीने के अंदर अगर बुला ले न आऊँ तो मैं कैसा सेवक हूँ ? अपनी अपार चिंता त्यागिए। यह दृढ़ समझिए कि

वळिक ता डिगरिगने जंगळद जाड्यव जारबिडि मं-
गळयॆरागि मनोरथकॆ नीवॆंदना हनुम ॥ 101 ॥
बीळुकॊडि निम्मरसरिगॆ ता हेळलेनद हेळि मनदां
दोळवनु बिडि बिसुडि चिंताभरद तलॆहॊरॆय
हेळलेनिद्दिरव कंडै मेलणुत्तरवेनु कंडुद
हेळु हेळुवुदॆनु तानिन्नॆंदळा सीतॆ ॥ 102 ॥
नंबनी नुडिगॆन्ननॆन्ननु नंबुवंतिरॆ किरिदु कुरुहुग
ळॆंबवुळ्ळडॆ कॊडि निरुपव ननितरिॆ मेलॆ
नंबदिरनिदु तथ्यवॆनॆ बळिकंबुजाननॆ तॆगॆदळा मलि-
नांबरद निरिमरॆय निरुपमवर शिखामणिय ॥ 103 ॥
गुणनिधियॆ बा कंद कपिदिन मणियॆ बायॆंदमल चूडा
मणिय नित्तळु तुंबुवंबक जलद झाडियलि
रण भयंकर राघवंगी मणियकॊडु नीनॆंद दिनकरि
गणदिशापट मल्लननु तहुदॆंदळिदुमुखि ॥ 104 ॥

आपकी अभिलाषा मंगलमय सिद्ध होगी।" इस प्रकार हनुमान ने कहा। १०१ "अब मुझे विदा कीजिए। आपके पति से जो समाचार (संदेश) कहना है वह समझा दीजिए। मन की चिंता को त्यागकर सिर पर के दुःख के बोझ को उतार दीजिए।" इस प्रकार हनुमान ने कहा। तब सीता ने उत्तर में यों कहा— "कहना क्या शेष रह गया है? यहाँ की मेरी स्थिति-गति तुमने तो देख ही ली है। अब मैं इससे अधिक क्या कहूँ! जो तुमने देखा है वही बता देना। मेरे कहने में क्या धरा है? १०२ "इन बातों के कहने पर राम मेरा विश्वास न करेंगे। ऐसी कोई छोटी-सी (परिचयात्मक) निशानी हो तो दीजिए जिसे देखकर वे मुझ पर भरोसा कर सकें। इसके अतिरिक्त अपना कोई संदेश भी दीजिए। तब राम विश्वास किए बिना न रहेंगे। यह सत्य है।" इस तरह कहने पर कमलमुखी सीता ने अपने गंदे कपड़े की तह के मध्य स्थित (जो छिपाये रखी थी) श्रेष्ठ चूड़ामणि (जूड़े में धारण की जानेवाली मणि) को बाहर निकाला। १०३ "हे गुणनिधि मेरे पुत्र, इधर आ। कपियों के सूर्य आ जाओ।" —इस प्रकार (हनुमान को) बुलाकर उस पवित्र चूड़ामणि को अश्रुधारा बहाते हुए हनुमान को दिया। "युद्ध-भयंकर राम को यह मणि दे दो। तुम्हारे वचन के अनुसार निश्चित दिन पर शत्रु-विनाशक जगदेकवीर (जगत के श्रेष्ठ वीर) श्रीराम को

मगने केळ् राक्षसरु मायाविगळु मांसाहारिगळु मै-
देगेदु नडे मतिवंतनागियें कंद होगेंदु
अगललारदे पावमानिय मगुळे मगुळुप चरिसि तौरवेय
नगरदोडेयन चरन कळुहिदळश्रुजल झडियें ।। 105 ।।

नाल्कनेय संधि

सूचने— मुरिदु रक्कस वनव बनदलि तरुबि कादिद जंबुमालिय मेरॆसिदनु मिहिर जन नगरदोळंजनासूनु ।

केळिदै कुश निम्म रघु भूपालकन निजदूत नेनेदु-
ब्बाळु तनद यशोविलास विनोद विभ्रमव
मौळहत्तर रक्कसगे तन्नूळिगव नेच्चरिसदिरे हे-
च्चाळुतनक तिकुंदेनुत मनदंदना हनुम ।। 1 ।।
मुरिदु तोटद नेवदिनसुरर तुरिसु तोटिय तेगेवे मेलव
रिरित कंगॆसिदरे तरुवेनेन्न कैगुणव

बुला लाओ।" इस प्रकार सीता ने कहा। १०४ "सुनो मेरे प्यारे बेटे ! राक्षस बड़े मायावी तथा मांसाहारी हैं। अतः अपने को बचाकर बड़ी चतुराई से यहाँ से जाओ मेरे पुत्र।" इस तरह कहते, पवनसुत से बिदा लेने में असमर्थ हो, बार-बार उसका आदरोपचार करते तौरवे के नरहरि के अवतारी श्रीराम-दूत हनुमान को आँसू बहाते उन्होंने बिदा किया। १०५

चौथी संधि

सूचना— रावणासुर के वन का विनाश करनेवाले हनुमान ने वन में अपने को रोकनेवाले तथा लड़नेवाले जंबुमाली को यम की नगरी भिजवा दिया।

सुना कुश ! तुम्हारे राघव के सेवक से सोची गयी वीरता की कीर्ति के विनोदपूर्ण डील-डौल का परिचय तथा दस सिर वाले राक्षस को अपने आगमन के सेवापूर्ण कार्यों का परिचय न देना अपने जैसे वीर के लिए कलंकप्राय है—इस प्रकार हनुमान ने सोचा। १ "बाग-बगीचों को तोड़ डालने के बहाने से राक्षसों को उकसाकर लड़ने के लिए प्रेरित करूँगा। तदनंतर वे युद्ध के लिए उतारू हो जायँ तो एक-एक को एक दो हाथ दिखा दूंगा। अब मेरा यही विचार है।" इस तरह निश्चय कर

अरुहुदी गॆनगॆनुत सीतॆय तॆऱह तप्पिसि तुदिवॆरळ बॊ-
ब्बिरिदितदलि बाहुप्पळिसि बिगुहेऱिदनु हनुम ।। 2 ।।
बळिक लेवेळुवॆनु कल्पद कुलिश कोटिय कळकळिकॆ कै-
लुळियॊळगॆ कालाटदॊळगब्बर दॊळादुदॆनॆ
निळिनिटलु निटलॆंब रव नभदॊळगॆ गाडिसॆ गाढ भुजदलि
तळहुतियलंघ्रियलि नुग्गोत्तिदनु नंदनव ।। 3 ।।
ऒदॆ दॊदॆदु मामरन बुडवनु कॆदऱिदनु कैयिविक सिक्किद
कदळि खर्जूरादि फलभरदवनिजावळिय
हॊदऱ हॊरळिसि नुग्गुनुसि माडिदनशोकावनद घनसं-
पदद सॊगसिन विविध गुल्म लतावितानकव ।। 4 ।।
मट्टॆ दोऱिद तॆंगुगळ सालिट्टु बॆळॆदडकॆगळ बेरि
दिट्टणिसि कडुकात हलसनु हलवु फलभरद
कट्टिदिर कळिवण्णुगळ कडलिट्टु सुरिव सुधारसद हॊं-
गट्टुगळ पलभूजराजिय कित्तना हनुम ।। 5 ।।
जंबुकुरवक तिलक रसदाळिब बदरि तमाल गुग्गुळ
निंबॆयंबटॆ मातुळंग विळंग नारंग

सीता से बिदा लेकर बाहर आते ही गर्जना कर, तर्जनी से भुजाओं को ठोंकते हुए हनुमान ने अपनी देह को फुला दिया । २ तत्पश्चात् की घटना का कैसे वर्णन करूं ? हाथ के वेग से, पैरों की कुचलाहट से हनुमान के भयानक आक्रमणों की प्रक्रिया से जो तड़ाके के शब्द निकले वे मानों प्रलयकालीन विद्युच्छटा के करोड़ों कड़ाकों के साथ आकाश तक व्याप्त होने पर उन्होंने अपनी बलवान भुजाओं के आघातों से तथा पैरों से रौंदते हुए उस उद्यान को तरस-नहस कर कुचल डाला । ३ लातें जमा-जमाकर आम के पेड़ों को उखाड़ धराशायी कर दिया । केले के पौधे, खजूर के पेड़ आदि फलों से लदे पेड़ों को, जो भी हाथ में आए, एक साथ गिरा दिया । अशोक वन के संपद्भरित, मनोहर, विविध प्रकार के पेड़-पौधों तथा लताओं के समूहों को गिराकर चकनाचूर कर दिया । ४ अभी-अभी पत्ते निकले नारियल के पेड़ों को पंक्ति में (उखाड़) सुलाकर, परिपक्व सुपारी के पेड़ों को जड़-सहित उखाड़ ढेर के ढेर बनाकर, कटहल के पेड़ों में भरे कच्चे कटहलों को, तथा पके कटहलों को ढेर के ढेर गिराकर, अमृत-रस चुआते सोने के तारों से कसे फलभरित वृक्षों को, हनुमान ने उखाड़ डाला । ५ जामुन, मेंहदी, तिलक, रसभरा अनार, बेर, करंजा, गुग्गुळ, नींबू, अमड़ा,

अँब दिगु चुंबितद शाखा डंबरद कमनीय तरुनिकु
रुंबवनु निर्णसिदनु निश्शेषर्वेने हनुम ॥ 6 ॥
अगरु चंदन चंपकामळ कगळ बकुळाश्वत्थ पुन्ना-
गगळ घनकर्पूर कदळि कपित्थ कौंगुगळ
बगॅयलुंग विळंगगळ सॉपगिव सकल सुरद्रुमाळिय
नुगिदुगिदु हूळिदनु हरहिनलभ्र मंडलव ॥ 7 ॥
ईळॅ मधुररस द्रवद कित्तोळॅ कंपित फलभरद हे-
रिळॅ हॅपिन कंचि किंशुक शिंशुपादिगळ
हेळिकॅगॅ हॅसरोनिसि दग्गद सालसंदणि मरननगलकॅ
तूळितळपट माडिदनु बनदगलदलि हनुम ॥ 8 ॥
मॉलॅय सोंकिगॅ तरुणियर तंबुलद तॉडहिगॅ तोळ बिगुहिगॅ
बॅळॅद भूज़व्रजव बलुदोळुगळ तॅक्कॅयलि
तळपटव माडिदनु मद वॅग्गळिसि दिभपति हॉक्कबाळॅय
हळुवद वॉलॉदॅदॉदॅदु मुरिदनु बनवना हनुम ॥ 9 ॥
तंदु बीजव बित्ति बॅळॅद परंदरन पुरहरन पद्मज
निंदिरेशोद्यानदव नीरुह वनवरवर

मातुलिंग, विलंग, नारंगी आदि पेड़-पौधे दिशि-दिशाओं को चूमती हुई शाखाओं के कारण बड़े मनोरम दीखते थे। हनुमान ने उन सबका नामो-निशान मिटा दिया। ६ अगरु, श्रीगंध, चम्पा, आँवला, बकुल, पीपल, पुन्नाग, कर्पूर, केला, बेल, सुपारी, मातुलिंग, वायुविलंग, वग़ैरः जाति के पेड़-पौधों को तथा मनोहर देवलोक के वृक्षों को उखाड़-उखाड़कर फेंकते हुए आकाश को उन पेड़ों से हनुमान ने भर दिया। ७ नींबू, मीठे रस-भरे संतरे, फलों से लदे लटकते हुए एक जाति के बड़े-बड़े नींबू, ढाक, अशोक वग़ैरः पेड़ों को, प्रसिद्ध श्रेष्ठ साल वृक्षों के समूहों को काट-काट कर गिराकर चारों ओर फैलाकर हनुमान ने सारे वन का सत्यानाश कर दिया। ८ स्तनों के स्पर्शों से, तरुणियों के ताम्बूल-लेपन से, भुजाओं के आलिंगन से उगाए, बढ़ाए गये पेड़ों को हनुमान ने अपनी बलवान भुजाओं की पकड़ में दबाकर गिरा देकर सारे वन को तहस-नहस कर डाला। ९ देवेन्द्र, शिवजी, ब्रह्मा, विष्णु आदियों के उद्यान वनों से बीज लाकर, रोप बोकर, उगाए गये पेड़ों को सम्बंधित व्यक्तियों के वनों में प्रवेश कर, हँसते-हँसते, गरजते-गरजते उखाड़ कर फेंक दिया। आकाश में इकट्ठे हुए देवताओं ने प्रशंसा करना शुरू कर दिया तो हनुमान उनके प्रीतिभाजन

नंदनकॆ नगॆमॊगदलब्बर दिंद कित्तिट्टवर चित्तकॆ
बंदनै बरुहिर्मुखावळि हॊगळॆ गगनदलि ॥ 10 ॥
अटमटिसि परवधुव तंदुत्कटद पापिगॆ हेसि वनवधु
चिटुक मुरिदपळॆनलु बीळुव भूजराजिगळ
निटिनिळिलु निळिलॆंब रवदिगुतटव तुंबलु सिडिल नाट्यद
नटणॆय वॊलेनॆंबॆ वनभंगद महाद्भुतव ॥ 11 ॥
चिगुळिदुळिदनु बनदॊळॆळॆवळ्ळिगळ नमळद्राक्षॆगळ लति-
कॆगळननुपम माधवी मंजुळ लताळिगळ
हॊगळलेनद पतिय मरणद लगलि बदुकिद सतिय शिरदवॊ
लगलदलि रंजिसितु रम्योद्यान रावणन ॥ 12 ॥
मरुग मालति जातिकेतकि सुरगि संपगॆ मॊल्लॆ मल्लिगॆ
सरसिरुह सेवंति करवीरादि गिडलतॆय
परिपरिय हूदोटगळ हॊय्दॊरसिदनु मुडिवाळबाळद
हरवरिय हरहिदनु लांगूलदलि कलिहनुम ॥ 13 ॥
मुरिदु राटाळगळ नगलकॆ तरिदु कब्बिन तोटगळ कि-
त्तुरुबि कनक द्रोणिगळ नॊदॆ दिदिरिनेतगळ

बने । १० धोखे से, परस्त्री का अपहरण करने के कारण, ऐसे महान पापी (रावण) को देखकर मानों वनलक्ष्मी घृणा से बलैया ले रही हो —इस रीति से वन में गिरते पेड़ चरचराहट के जो शब्द कर रहे थे, (शब्द) दिशि-दिशाओं में व्याप्त हो गये। (हनुमान की) इस कृति का क्या वर्णन करूँ ? ऐसा लग रहा था कि वन-विनाश का यह महान अद्भुत कार्य विद्युत नर्तन का प्रतिरूप ही है। ११ खट्टा, मीठा (इमली, गुड़) मिलाकर बनायी गयी मिठाई की तरह हनुमान ने (उस) वन की कोमल लताओं को, अनार तथा माधवी लताओं को रौंद डाला। उसका कहाँ तक वर्णन करें ? (अपने) पति की मृत्यु के बाद उससे बिलगकर जीवन-यापन करनेवाली बिधवा के सिर की तरह रावण का वह उद्यान गंजा-बूचा दिखायी देने लगा। १२ पुदीना, मालती, कुंदी, मंदार, केवड़ा, पुन्नाग, चंपा, मल्लिका, चमेली, कमल, सेवती, करवीर वग़ैरः तरह-तरह के फूल-पौधों से भरे, विविध प्रकार के बाग-बगीचों का सत्यानाश कर दिया। इतना ही नहीं, वीर हनुमान ने खस तथा लामंच आदियों को जड़-सहित उखाड़ कर फेंक दिया। १३ रहँट को चकनाचूर कर दिया। गन्नों के खेतों को काट डाला। सोने (स्वर्ण) की नावों को उखाड़कर फेंक

हृरिव निडुगालुवेय नगलकें जरुहि रक्कस दोटिगर हो-
य्दोरसि बनदलि बीदिवरिदाडिदनु कलिहनुम ॥ 14 ॥
कुक्कि नेलननु बगिदु नेगहि नभक्के बिसुटनु पळुकिनरे सं-
दिक्कि सवेद सरोवरंगळ सालसंदणिय
तेक्केयलि कृतकाद्रिगळ कौंचिक्किदनु करघातदलि दड-
दोक्केनेलु केडहिदनु केळीसौध संकुळव ॥ 15 ॥
हारिदवु हंसेगळु तुंबिगळेरिदवु मोरेदभ्रदगलके
चीरिदवु कौंचेगळु बक शुक पिक मयूरचय
जारिदवु जंगाय्लदलि कपि कीरिदवु वनमृग निचय मै-
दोरिदवु दूरदलि काल्दुळिगनिलनंदनन ॥ 16 ॥
काम नडगिदना वसंतन सीमे यावुदो मंदमारुत
मै मरेसिदनु सरिदनंबरकिदु भीतियलि
आ महावनलक्ष्मि सीता भामिनिय मरेयोक्कळा नि-
स्सीमबल बलिमुख कुलाग्रेश्वरन कळकळके ॥ 17 ॥

दिया। सम्मुख स्थित चरसों को तहस-नहस कर दिया; लात मार-मारकर गिरा दिया। बहते नालों का बहना बन्द कर दिया। (इस प्रकार) हनुमान ने उद्यान के राक्षस-मालियों को मार डाला तथा वन को मनमाने कुचल डाला। १४ धरती को ठोक-पीटकर, स्फटिक-शिला (संगमरमर) के चट्टानों को जोड़-जाड़कर बनाए गये सरोवरों के साल-वृक्षों की पंक्तियों को उखाड़कर आसमान की तरफ़ फ़ेंक दिया। (वहाँ पर) बनाए गये कृतक पर्वतों को बगल में दाबकर पकड़े रख उनको औंधा गिरा दिया। क्रीड़ागृहों को धड़ाधड़ धड़ल्ले के साथ मुक्के मार-मारकर गिरा दिया। १५ हनुमान से कुचले जाकर हंस उड़ गये। भ्रमर आकाश की तरफ़ उड़कर गुंजारव करने लगे। क्रौंच पक्षी चीख़ने-चिल्लाने लगे। बक पक्षी, तोते, कोयल, मोर आदि अत्यंत शीघ्रता से झपटकर अपने को बचाकर भाग गये। बंदर चीख़ने लगे। जंगली हिरन, दूरी पर बाहर दिखायी पड़ने लगे। १६ असदृश बलवान वानरों के नेता हनुमान का यह शोरगुल सुनकर मन्मथ छिपकर बैठ गया। पता नहीं—वसंत (ऋतु) किस देश का निवासी हुआ; वह वहाँ नहीं रहा। मंद मारुत अपने को छिपाने लगा। चंद्रमा डर के मारे आकाश में प्रविष्ट हो गया। उस वन की देवी, सीता की शरण में गयी। १७ हनुमान की कुचलाहट के भयानक शब्द से भयभीत वन के रक्षक

बॆंदऱि तीतन काल्दुळिय वनदद्भुतध्वानदलि निद्रॆय
कॊंदरिकॆय कापिन निशाचररसुतायुधव
इदॆ रभस वीकडॆय लाचॆयलदॆ महाध्वनि शरवसंधिसि
सदॆयिरॊ यॆनुतुरवणिसि तल्ललिल खळनिकर ॥ 18 ॥
सॊक्किकदिभ वल्ल वलॆयल्ल वनक्कॆ वयसिद भूतवल्ललॆ
हॊक्कुनोडिरो भूतवल्लुणिसिगॆ हसिदिर्द
रक्कसन वलुगवलॆ यल्ललॆ मर्कटवु काणॆलवो कविकवि
हॊक्कुतिवि कॊल्लिरॆयॆनुत कॆणकिदरु कपिवरन ॥ 19 ॥
इट्टरिट्टिय लॆत्तिदरु कैगट्टि कुंतदलुलिदु तिविदरु
मुट्टविसि कक्कडॆ कठारि कृपाण परिघदलि
हॆट्टिदरु शूलदलि कपितलॆ मुट्टिमुरि दौकुव निशाटर
मॆट्टिदनु तरिदॊट्टिदनु खळवॆणन वणबॆगळ ॥ 20 ॥
अॆलॆलॆ कोडग कॊलुतलदॆ कपि वलॆयबीसिरॊ बीळगॆडहिरॊ
तॊलगदिदिरो कवियॆनुत खळनिकरवल्ललिल

राक्षस नींद के उचट जाने से डर के मारे अपने-अपने आयुधों को ढूंढ़ने लगे। उस तरफ़ तो शोरगुल है। इस तरफ़ तो भारी ज़बर्दस्त शोर मचा हुआ है। 'वाण छोड़-छोड़कर पीट डालो' इस तरह कहते हुए राक्षसों के झुंड के झुंड जिधर-तिधर ज़ोर-शोर के साथ जूझ पड़े। १८ "मदोन्मत्त हाथी तो नहीं ? अगर नहीं है तो उद्यान की चाह में आया हुआ भूत तो नहीं ? नज़दीक जाकर देखो न ? भूत भी नहीं। तो भूख के मारे तड़पते आए हुए राक्षस का पसरा हुआ भारी हाथ तो नहीं ? अरे ! वह तो वंदर है। देखते क्या हो ? तुरंत (उस पर) हमला करो। चुभो कर समाप्त कर दो।" इस तरह कहते उस कपिवीर को छेड़ा। १९ राक्षसों ने भालों से पीटा; बरछी से हाथ पर हमला कर, चुभो कर ऊपर उठाया। कटार, कृपाण, तलवार, शूल आदि कई प्रकार के शस्त्रास्त्रों का प्रयोग करते नज़दीक आकर उनसे चुभोया। इस प्रकार ऊपर गिरकर कई प्रकार से हमला करते आए हुए राक्षसों को हनुमान ने धर दबा दिया। उनके टुकड़े-टुकड़े कर डालते हुए ढेर पहाड़ बना दिया। २० "अरे रे— यह वन्दर तो बड़ा हत्यारा रहा। कपि-पिंजरा (जाल) फैलाकर इसे फांस दो न ? नीचे गिरा दो न ? भागो मत। कहाँ भागते हो ? हमला करो, हमला।" इस तरह एक-दूसरे से कहते राक्षसों ने (कपि को) घेरकर 'कुबुबु' इस तरह चिल्लाते शोरगुल करते

तलॆ विलुगळलि तरुबिदरु मंडळिसि कुबुबिऱिदट्टि कहळॆग-
ळुलुहिनलि हॆब्बऱिय हॊय्ललि हरिकुलेश्वरन ॥ 21 ॥
अंबुगळ मळॆगरॆव खळ निकुरुंबवनु बलुहॆम्मरन हॆ-
ग्गॊंबुगळले हॊय्दु हॊऱवंडिसिद नुसुरुगळ
तुंबिदुदु हॆणनॊट्टिटललि नॆलनंबरकॆ जडिदिट्ट नौकुव
डॊंबिगर दवडिगर दक्कड रक्कसर हनुम ॥ 22 ॥
मत्तॆ कविकवि दौकुवसुरर हत्तिसिदनंबरवनसुगळ
कित्तु नडॆसिदनुपवनद वळयदलि पितृपतिय
ऒत्त बरिसुव पडितळद सुभटोत्तमरननिलजनु विलयद
कृत्तिवासनॊ कदन केळियॊळणुगकेळॆंद ॥ 23 ॥
अट्टि सदॆदनु मीऱि घाडिप घट्टियर गर्वलिक्कुवसुरर
मॆट्टि सीळिद नॆडबलद लौकुव निशाचरर
तॊट्टुळिकॆ गळलौकि हदरिनलट्टिसिदनसुगळनु पशुगळ
बट्टॆ यादुदु कालनध्वर शालॆयंददलि ॥ 24 ॥
कनलि कविदब्बरिसि नूकिद वनपतिय पितृपतिय कैयलि
तनुजनिव साकॆंदु कॊट्टनु कॊंडुनंबुगॆय

सींग बाजों के शब्दों के साथ, ढफलों की भारी आवाज़ के साथ कपिकुल-नायक को धनुष ताने रोकने की कोशिश की। २१ बाणों की वर्षा कर रहे राक्षससमूह को बड़े भारी वृक्षों के कांडों से, शाखाओं से, पीट-पीटकर समाप्त कर दिया। राक्षसों के शवों के ढेरों से (वहाँ) की सारी भूमि पट गयी। झुंड के झुंड हमला कर रहे समर्थ दुष्ट राक्षसों को पीट-पीटकर आकाश में फेंक दिया। २२ बार-बार टूट पड़नेवाले राक्षसों के प्राणों का अपहरण कर उनको आकाश-मार्ग में चढ़ा दिया। आक्रमण कर अपना विरोध प्रकट करनेवाले वीरों (राक्षसों) को यम के उद्यान (वन) में भेज दिया। वायुसुत हनुमान मानों युद्ध-कौशल्य प्रकट करने में प्रलयकालीन रुद्र-सदृश दीख पड़ रहे थे।" इस प्रकार वाल्मीकि ने समझाया। २३ हद से बढ़कर, टूट पड़नेवाले बलवानों (राक्षसों) का पीछाकर उनको पीट दिया। निगल डालने आए हुए राक्षसों को पैरों के नीचे दाबकर चीर डाला। बाएँ, दाएँ से आ-आकर हमला करनेवालों को (राक्षसों को) आखिरी दम तक दबोचे धरकर, पीट-पीटकर उनके प्राणों को रवाना कर दिया। राक्षस यम के यज्ञ के बलि-पशुओं के मार्ग पर गये। २४ चिढ़कर, गरजते हुए, टूट पड़ते हुए, आए हुओं को 'उद्यान के यजमान (माली) के इस बेटे को पालो, पोसो।'

तनुजकेळै जंबुमालिगॆ मनॆक्ततांतन पुरदॊळादुदु
नॆनॆदुकॊंडनु काळगकॆ करॆसुवरॆ निजमतव ॥ 25 ॥
बारॆलवो नी होगु नारी चोर निद्दॆडॆ गंजवॆड ख-
रारि दूतागमनवनु विस्तरिसु निम्मवगॆ
वीररुळ्ळरॆ कळुह हेळुपचारवल्ली मातु होगॆं-
दा रणोत्सव नुळुहि कळुहिदना सुमालियनु ॥ 26 ॥

ऐदनॆय संधि

सूचनॆ— रणभयंकर हनुम समरांगणदॊळक्षन मुरिदु मॆरॆदनु गुणदॊळक्षांतक नॆनिप गुणनामधेयकव ।

वीरकेळै कुशनॆ रणजज्जार निद्दनु बदन वागिल
तोरणद तुदिगंबदलि तूकडिसु तडिगडिगॆ
ऊरॊळी कपिवार्तॆ यगलकॆ बेरुवरिदुदु बॆरगु विकद
भारकरु भारिसितु कोटावळय दग्रदलि ॥ 1 ॥

कहते हुए यम के यहाँ भिजवा दिया। सुनो पुत्र; हनुमान ने जम्बुमाली के लिए यम की नगरी में घर बनाकर बसा दिया। अब रावण को ललकारने की युक्ति को हनुमान मन ही मन सोचने लगे। २५ सुमाली को प्राणदान देते हुए युद्धोत्साही हनुमान ने उसे रावण के पास यों कहते हुए भेज दिया— "इधर आ; (उस) स्त्रियों की चोरी करने में जो वीर है— उसके पास जा। डर मत। अपने मालिक से कहना कि खर राक्षस के शत्रु के दूत यहाँ पधारे हैं। यहाँ का सारा समाचार उनसे कह। और यह भी कह कि (उनके यहाँ) कोई वीर हो तो युद्ध के लिए भेजें। यह औपचारिक वचन नहीं। जल्द चला जा। २६

पाँचवीं संधि

सूचना— युद्धभयंकर हनुमान ने युद्धभूमि में अक्ष (राक्षस) को मारकर वे अक्षांतक नामक आन्वर्थक नाम से सुशोभित हुए।

सुनो वीर कुश। अशोकवन के द्वार के बन्दनवार के खंभे की नोक पर हनुमान बैठे-बैठे ऊँघ रहे थे। कपि (हनुमान) का समाचार गाँव भर फैला। आश्चर्य तथा अहंकारपूर्ण राक्षस क़िले के छोर पर इकट्ठे हुए। १ हनुमान खुजलाते हुए, दोनों तरफ़ से आ रहे शब्दों पर ध्यान देते हुए, उसी समय उग रहे बालसूर्य की किरणों की ओर मुखड़ा किए,

तुऱिसि कौळुतिद्र्देसेय बदिगळ हौऱगनालिसु तुदिसिदेळने-
सऱिन रशुमेगे मुसुड तिरुहुत दूरदिंदिडुव
तऱिचुगळ रवगळिगे मिगे हुब्बिऱिदु हणुगुत हरिबदाजिय
हौऱिगेवाळर बरव बयसुत्तिदेना हनुम ॥ 2 ॥
बदुकिते तलेयेनुत बळलुव वदन दुसिरिडु वळ्ळेबारिन
कँदरुमंडेय कलित भयद सुमालि हरितंदु
सदमदद कट्टोलगद दशवदन निदिरलि हाय्किदनु बलु
बेंदऱिकेय रणभैरवन संगरभयंकरव ॥ 3 ॥
जीय बरुतिदे कपियरूपिन बायिदेऱहिन मृत्युनिन्नेडे
गायितदु हरिवसुरवन वनपाल संततिगे
हायदिरदरे घळिगे मात्रके रायनगरिगे दळदुळवनदु
पायमार्गद मनवनुळ्ळडे काणुबेगेद ॥ 4 ॥
तानुगड रघुनाथनेंब महानरेंद्रन दूत गड सी-
ता नितंबिनियऱिके गोसुग बंद तानुगड
ई नुडियने नुडिदु कळुहिद नानिकेय भटरुळ्ळरिऱि तके
जानिसदे कळुहेंदु जरेदनु रावणासुरन ॥ 5 ॥

दूर से फेंके जा रहे असियों (शस्त्रों) की खनखनाहट पर क्रोधित होते हुए, छिपकर बैठे राक्षस सेवकों के, युद्ध के लिए पधारने की बाट जोह रहे थे। २ 'प्राण तो किसी प्रकार बचे न !' इस तरह सोचते, थके चेहरे से, हाँफते-हाँफते, डबडबाते पार्श्वयुक्त, छितरे (सिर के) बालों वाले, डरावनी सूरत बनाए सुमाली दौड़े-दौड़े आकर, अहंकार तथा अभिमान से भरे दशकंठ के दरबार में उपस्थित होकर रणभैरव हनुमान के भयंकर युद्ध के कारण उपस्थित हुई भयानक डरावनी परिस्थिति का वर्णन करने लगे। ३ "हे प्रभो ! मृत्यु, कपि के रूप में मुँह खोले आप ही की तरफ़ पधार रही है। राक्षसों के उपवन के मालियों को वह (कपि) मृत्यु बनकर निगल चुका है। एकाध घड़ी के बाद राजधानी पधार कर (घुसकर) उसे तहस-नहस किए बिना न रहेगा। हो सके तो तुरंत मार्ग ढूंढ़ निकालिए।" —इस प्रकार (भयभीत) सुमाली ने कहा। ४ "वह (मृत्यु रूपी कपि) बार-बार यही दुहरा रहा है कि मैं रघुनाथ नामक महाराजा का दूत हूँ। सीतान्वेषण के निमित्त यहाँ आया हूँ। उसका, सामना करने की हिम्मत अगर किसी में है तो आगे-पीछे किए बिना, लड़ने के लिए तुरन्त रवाना कर देने के लिए तुम्हारे उस रावणासुर से कह

बायहोय् भयवुंटॆ तनगरिरायरलि होगॆलवॆ हरिका-
त्यायिनीपति कमलभवरिंदॆनगॆ पाडल्ल
नाय बगुळदॆ कॆलकॆ सार्सुरॆ कायवनु वेदिसितॆयॆंदस-
हायशूररदेव जरॆदीडाडिदनु चरन ॥ 6 ॥
वनवनदु मुरिदुदु गडळिदुदु वनद कापिनरक्कसरु गड-
कनलि तन्ननु कळुहिदुदु गडकदन कॆम्मुवनु
जनक तनुजॆय नरियलदु रामननु बीळ्कॊंडैदिदुदु गड-
तनगॆ भय गडबाय होय् होय् ऎंदनसुरेंद्र ॥ 7 ॥
जरॆयलेकॆलॆ जीय बायनु हरिय गॊय्सी मातुहुसिदिरॆ
मॊरॆय कॆळूरॊळगॆ सत्तिदॆवर सति सुतर
बरिय बिकद मातनाडदॆ तरुबुवरॆ नडॆयल्लदिरॆ मै
मरिसिको बलमृत्यु बरुतदॆ वेगनिनगॆंद ॥ 8 ॥
मेलॆ मेलीवार्तॆ जडिदुदु सालुगॊंडच्चरि यिदॆनुत क-
राळरोषावेश निळिदनु सिंह विष्टरव

दो।" इस तरह उसने ताने देकर कहा। —सुमाली ने यों निवेदन किया। ५ "उस (कपि) के मुँह पर थप्पड़ जमा दो। शत्रु-राजाओं से मैं क्यों भयभीत बनूँ ? जा-जा। हरि, हर, ब्रह्मा की मेरे सामने अस्तित्व ही क्या है ? क्या कुत्ते भूँकते नहीं ? क्या शराब तेरे सिर चढ़ बोल रही है !" इस प्रकार असहाय वीरों के प्रभु (रावण) ने उस दूत (सुमाली) को अपमानित कर भेज दिया। ६ राक्षसेन्द्र ने फिर कहा— "क्या उस (कपि) ने अशोकवन का सत्यानाश कर दिया ? वन के सारे राक्षस संरक्षक विनष्ट हुए ? चिढ़कर उसने युद्ध के लिए तुझे ललकारा ? फिर तुझे यहाँ भेज दिया ? जानकी का ठौर-ठिकाना जानने क्या वह राम से बिदा लेकर आया है ! और मैं भयभीत हूँ ! है न ? ऐसे बकनेवाले उसके मुँह पर थप्पड़ जमा दो"। ७ "स्वामिन, मैं आपको क्यों ताने देने लगा ? अगर मेरी बात झूठ निकले तो मेरी जीभ को चीर डालिए। ज़रा शहर में घूमेंगे तो पता चलेगा कि मृतकों के बाल-बच्चे, पत्नी वग़ैरः किस प्रकार रो-धो रही हैं। व्यर्थ की इन घमंड-भरी बातों को त्यागकर उस (कपि) को टोकने की हिम्मत हो तो जाइए। नहीं तो कहीं छिपकर अपने को बचा लीजिए। (आपकी) भयानक मृत्यु आपका पीछा कर रही है।" इस तरह सुमाली ने कहा। ८ "बार-बार यही समाचार आ-आकर (पाकर) मुझे भयभीत कर रहा है। यही तो आश्चर्य की बात है।" इस तरह कहते हुए, बहुत भयानक, चिढ़े

बाळ झळपिसि कँपोगुव कण्णालिगळ लसुरेंद्र नडियिड
लाळुगळ हरियक्ष नक्षकुमार निंतेंद ॥ 9 ॥
जीय कोंडु वीळयवना कपिमायदमराधीशनागलि
वायु वरुण कृतांतरागलि मृत्यु मै मरॆसि
मायॆयलि बंदिरलि हरनारायणरु तावागलोंदे
घायदलि हिडितहॆनु हिडिमोलनंतॆ तानॆंद ॥ 10 ॥
ऎंद मातिन मगन पौरुषदंदकति परिणमिसि खळ निज-
वेंदु मनदलि बगॆदु होंबट्टललि वीळॆयव
नंदनंगित्तिभतुरंग स्यंदनारोहक पदातिय
वृंदवनु बॆससिदनु बळियलि बवरकॆनिजन ॥ 11 ॥
वीळॆयव कोंडसुर रायन बीळुकोंडव नाहवद होंग
रेळिगॆय होसमदद यौवन दुब्बिनलि पितन
आलयव होरवंटना खळनेळुनूरु कुमारकर स-
म्मेळदलि झळपिसुव खड्गद नॆगहु गैगळलि ॥ 12 ॥

हुए रावण सिंहासन से उतरे। तलवार को लपलपाते हुए, लाल-लाल आँखें दिखाते जब रावण आगे क़दम बढ़ाने लगे तो शत्रुओं के लिए सिंह-सदृश अक्षयकुमार ने यों कहा। ९ "प्रभो, (इस मामले में) बीड़ा उठाने के लिए मैं तैयार हूँ। कृपया मुझे आज्ञा दीजिए। (वह) कपि चाहे मायावी रूप धारे साक्षात् देवराज इन्द्र हो, या वायु, वरुण, यम ही क्यों न हो, या मृत्यु (स्वयं) माया प्रकट कर रूप बदलकर क्यों न आयी हो या शिव, विष्णु में से कोई क्यों न हो खरगोश को फाँसने की तरह एक ही वार में पकड़कर ले आता हूँ।" —इस तरह अक्षयकुमार ने कहा। १० अपने बेटे की इस प्रकार की वीरतापूर्ण बातों से रावण ने प्रसन्न होकर, उन बातों पर भरोसा करते हुए, सोने की थाल में (अपने बेटे को) बीड़ा दिया। हनुमान के साथ युद्ध करने के लिए बेटे (अक्षयकुमार) की मदद के लिए गज-सेना, अश्व-सेना, रथ-सेना तथा पैदल-सेना साथ कर दी। ११ बीड़ा उठानेवाले अक्षयकुमार ने राक्षस राजा (अपने पिता रावण) से बिदा ली। युद्धोत्साह के नये घमंड में तथा यौवन की मस्ती में अपने पिता के राजमहल से रवाना हुआ। चमकती तलवार को हाथ में धारे उसे ऊपर उठाए चल रहे सात सौ कुमारों के साथ वहाँ से रवाना हुआ। १२ कछौटा कसकर, सिर के बालों को ऊपर की ओर उठाकर (जूड़ा) बाँधे, पाँच दलपतियों के बेटे तथा बड़ी डींग हाँकते हुए पाँच सौ

बळि सलिसितै नूर्वरातन बळिय पंचचमूपसुतरु-
व्बळकॆ वातिन बिगिद कासॆय वलिद तलॆविणिल
कलहविदु तनगॆनगॆनुत मुंकॊळिसिदुदु सेनानि नंदन
रळिव जगदलि सुळिव सिडिलिन गडणदंददलि ॥ 13 ॥
मिड दुंडिगळर्थिकाररु गंडिगरु गर्वितरु रणदु-
द्दंड राहवदुब्बिनुब्बरदंक दतिवलरु
खंडॆयद कलिकॆगळ तरळर तंड कूडितु हूसिकॆय सिरि
खंडनद मणिमंडनद मुडियलर मरुकदलि ॥ 14 ॥
नोटकरु निर्भयरु कॊनविगळाट विकदुरु दुंविगरु कै-
गूटदवरु त्ताळदग्रिग ळाततायिगळु
कूट मुद्गर मुसल तोमर खेटकादि समस्त शस्त्रद
घाटदतिबल खळरु कूडितु कोटि संख्येयलि ॥ 15 ॥
खुरद हॊय्लिनलिळॆ मॊळगॆ मोहरिसि नडॆदवु कुदुरॆगळु नॆल-
हरियॆ हरिदवु तेरुगळु तेरवद तॊळुगळ
ऊरुकृपाणद दंतिगळु डावरिसिदवु कालाळु कूडितु
सुरशिखर सिगुरॆळॆ मॊळगुव वाद्य रभसदलि ॥ 16 ॥

सैनिकों के साथ अक्षयकुमार चल पड़े। मैं-मैं, तू-तू करते, एक-दूसरे से होड़ करते सेनापतियों के वे कुमार दुनिया पर टूट पड़नेवाली विनाशकारी बिजली की तरह युद्ध में कूद पड़े। १३ सुगंधित तैल का आलेपन किए, रत्नालंकारों से विभूषित, फूलों को धारण किए, वीरता का ढोंग प्रकट करनेवाले (चाहनेवाले), पराक्रमी, घमंडी, युद्ध-प्रचंड, अत्यंत युद्धोत्साही स्तुति-प्रशंसा प्रिय तथा तलवार चलाने में चालाक युवक बड़ी डील-डौल के साथ झुंड के झुंड आगे बढ़े। १४ दर्शक, निर्भय व्यक्ति, नटखट, धूर्त, दुष्ट, जुलाहे, (बुननेवाले) तेज़ क़दम वाले, हत्यारे, हथौड़े, गदा, मूसल, तोमर, ढाल वग़ैरः हर तरह के शस्त्रों को धारण करनेवाले अद्भुत बलशाली राक्षस करोड़ों की संख्या में आ जुटे। १५ खुरपुटों के आघात से भूमि काँपने लग जाय —इस प्रकार घोड़ों के समूह चलने लगे। रथ इस प्रकार चलने लगे मानों धरती फट जाय। विजयी सूँड़ तथा तलवारों को वहन करनेवाले हाथी बड़ी धूमधाम के साथ चले। पैदल सैनिक आ जुटे। युद्ध के गाजे-बाजों के साथ मेरुपर्वत काँप उठा। १६ हनुमान ने देखा— लंकाधिपति के प्यारे पुत्र की सेना आ रही है। वर्षाऋतु के काले-काले बादलों की गर्जना सुनकर भी जिस

बरव कंडनु हनुम लंकेश्वरन मोहद मगन सेनेय
वरुषकालद काळमेघद कडुहिनब्बरकें
करदलवनिय नप्पळिसि मोगमुरिदु नभवनु नोळ्प बलुगे-
सरियवोलु हरिनाथ निरलैतंदुदा सेनें ॥ 17 ॥
नाकुमैयलि मुत्तिकोंडुदशोकवनवनु बळिकबलवद
नोकहद मृगराज निद्दनु हाय्कुताननव
तोकिदरु तूरंबबोब्बेय बाकुळिग रोळहोक्कु सरळिन
सोकुगळ सैरणेय लिद्दनु गणिसदरिबलव ॥ 18 ॥
होक्कु कोणकिदरडसि हरेयद सोक्किकदण्णगळ निलसुतनद
लेक्किसदे लळियेरुतिर्दनु हाय्किहुब्बुगळ
कक्कडेय करवाळ हरिगेयदक्कडेय रोत्तंबरिसि बो-
ब्बिक्कि बिरुगुंडुगळ लेब्बिदरंजनासुतन ॥ 19 ॥
कूडे कळकळ बलिदु बल कै गूडि कवियलु कंडनिद हो-
गाड बेकिंदिळिदना तोरणदि निळेगागि
ओडुतदे कपि हिडियिरो हिडि हेडविस दिरियेनुत नगेमोग
गूडिदक्षकुमार संधिसिदनु समीरजन ॥ 20 ॥

मुद्रा में भारी भयानक शेर अविचलित रहता है, उसी मुद्रा (प्रकार) में कपियों के अधिपति (हनुमान) विराजमान थे। तभी वह सेना आ पहुँची। १७ राक्षस-सेना ने चारों ओर से अशोक वन को घेर लिया। उन सबकी ओर आनाकानी करते, तिरस्कार करते भारी पेड़ों में बैठे कपि सिंह-गर्जना कर रहे थे। भारी-भारी शोरगुल को पसंद करनेवाले राक्षस अशोक वन में प्रवेश कर हनुमान पर बाणों की वर्षा करने लगे। उन बाणों के आघात की परवाह न करते बड़ी शांत मुद्रा में सहनशील हनुमान बैठे थे। १८ यौवन के कारण मदोन्मत्त बने राक्षस आगे बढ़कर हनुमान को छेड़ने लगे। वायुसुत उनकी परवाह न करते भौंहें चढ़ाए फूल रहे थे। खड्ग, तलवार, ढाल आदि को धारण करनेवाले बलवान (राक्षस) अत्यन्त शीघ्रता से आकर चीखते-चिल्लाते पत्थर फेंक-फेंककर हनुमान को उकसाने लगे। १९ राक्षसों का शोरगुल जब हद से ज्यादा बढ़ गया तथा अधिकाधिक संख्या में जब सेना आ जुटी व हनुमान को घेरकर खड़ी हुई तो इसके परिहार के लिए वे (हनुमान) बंदनवारों पर से नीचे उतरे। हँसमुख चेहरेवाला अक्षकुमार ने— "अरे बंदर! भागा जा रहा है; पकड़ो, पकड़ो; डरो मत।" इस तरह कहते हुए वायुपुत्र का सामना किया। २०

मुरिदु मारुति गगन लंबित निरुपमद तोरणद कंबव
नेरड निक्कैगोंडु कविदॆडबलद रक्कसर
तिरुहि सदॆदनु कात मेक्कॆय हरवरियोळिभ जारि वरिववॊ
लरॆदुदजिगिजियागि रणरंगदलि चतुरंग ॥ 21 ॥
लटकटिसि होडकरिसि होळकुव भटर कविवानॆगळ तेर्गळ
चटुळ हय संकुळव कालाळुगळ संदणिय
स्फुटवरिय बारदवॊ लरॆदार्भटिसिदनु संहाररुद्रन
नटणॆ गिम्मिगिलॆनलु संयुगदलि समीरसुत ॥ 22 ॥
तुडुकि बीळुव राजपुत्रर हिडिसिदनु सुररॆळॆय हरॆयद
मडदियर कैयिंद मैदोरिद महाभटर
नडसिदनु यमपुरिगॆ कूडिद कड्डुहुकारर रकुतगुड्डुहिग
ळॊडल तुंबिदु तुदिवॆरळ लुब्बिरिदना हनुम ॥ 23 ॥
तरुण केळै राक्षसेंद्रन तरुणनुब्बट्टॆयनु समीको-
द्धरणनल्ला साहसदलिन्नारु सरियवर्गॆ

आकाश को छूनेवाले (उन) वंदनवारों के खंभों को (दो खंभों को) तोड़कर हाथों में हनुमान ने उठा लिया तथा दोनों हाथों से उन खंभों को (बड़ी स्फूर्ति से) घुमाते हुए अपने पर चढ़ आए हुए दाएँ-बाएँ दोनों तरफ़ के राक्षसों को पीट दिया। फलियों से लदी मकई की वेलों पर हाथी के आक्रमण की तरह हनुमान के आक्रमण के कारण राक्षसों की चतुरंग सेना युद्ध के मैदान में तहस-नहस हो गयी। २१ बड़े उद्वेग के साथ युद्ध में सम्मुख आ पड़े वीरों को, घिर आए हाथी और रथों को, धक्का देते आगे वढ़ते हुए घोड़ों तथा पैदल सैनिकों को, हनुमान ने प्रलयकालीन रुद्र के दुगुने वेग के सदृश घनघोर गर्जना करते हुए इस प्रकार पीस डाला कि उनके नामो-निशान पूरी तरह मिट जाएँ। २२ पकड़ने के इरादे से टूट पड़ते हुए राक्षस राजकुमारों को देवलोक की सुंदर युवतियों के हाथों में क़ैद करा दिया (स्वर्गवासी बना दिया)। सामना करते चढ़ आनेवालों (महावीरों) को यमपुरी भिजवा दिया। लड़ने आए महान वीरों को उँगली की नोक से नोंचकर रक्त-पिपासु पिशाचों को भोजन के रूप में दे (उनका) पेट भर दिया। २३ हे लव, राक्षसेश्वर के पुत्र की वीरता की कहानी सुनो। क्या वह अपने युद्ध-कौशल्य में कभी न्यूनता आने देगा? वीरता में उसकी बराबरी कौन कर सकता है? बाणों की वर्षा में उसने हनुमान को डुबो दिया। पानी के भँवरजाल में फँसे हुए

सरळ शरधियोळदिद्दनु सुळितेरेयोळगे तलेयेत्तद वोल-
ब्बरिसि हूळिदनक्षनक्षय शरदलनिजन ॥ 24 ॥
कोंबवे कर्ण कदन विजय त्रियंबकन विक्रांतलक्ष्मिय
चुंबकन चातुर्य समर सरोरुहांबकन
अंबुधिय निडियोडल नुरू बगिदंबरव चुंबिसुव रचना-
डंबरद वडबाग्नियवोलुप्परि सिदनु हनुम ॥ 25 ॥
अॅलवो खळ कालाग्नि मंजिन मळेगे मैदेगेवुदे निदाघद
सुळुविगिन मंडलव तडेवुदे तिमिरलते कडुगि
अळिदवर कंडाविवेकव बळसुवरे मैदेगे दशास्यन
कळुहु मिक्किन भटरु प्रतिभटरल्ल तनगेंद ॥ 26 ॥
तगरुगड तलेयेत्ति तोळन तेगेसि करेवुदु गड मृगेंद्रन
होगळिकोळदिरु नोडुनिमिषके निन्न जठरदलि
तेगवेनळिद निशाटरनु मूजगद देवर हिंडि हिळिवन
मगकणा हिडियेनुतलिट्टनु गदेयलनिलजन ॥ 27 ॥

व्यक्ति का जैसे सिर उठाना मुश्किल है— उसी प्रकार की स्थिति हनुमान की हुई जो अक्षकुमार के ज़बर्दस्त अक्षय बाणों से घिर गये थे। २४ युद्ध-विजय में त्रिनेत्री-सदृश, पराक्रम (विजय) रूपी लक्ष्मी के प्रियकर, युद्ध की चतुराई में विष्णु-सदृश हनुमान को इन बाणों से क्या मतलब ? (वे बाण उनका क्या बिगाड़ सकते हैं ?) समुद्र के पेट को चीरकर बाहर फूट पड़नेवाली आकाश की ओर लपकनेवाली बड़वाग्नि की तरह हनुमान (उस) बाणों के समुद्र से बाहर कूद पड़े। २५ "रे नीच राक्षस ! प्रलयाग्नि क्या कुहरे की वर्षा होने पर बुझ सकती है ? कड़ी धूप (वैशाख) के दिनों की उष्णता को देख अँधेरा घमंड दिखाते क्या सूर्यबिंब को (जाकर) छिपा सकता है ? क्या रोक सकता है ? युद्ध में मरनेवालों को (सम्मुख) देखकर भी वही बुद्धिमत्ता क्या कोई प्रकट कर सकता है ? जा-जा। रावण को भेज दे। अन्य वीर मेरा सामना नहीं कर सकते।" इस प्रकार हनुमान ने कहा। २६ "यह तो ऐसी कहावत हुई कि बकरे ने सिर उठाकर भेड़िये को भगा देकर मृगराज सिंह को ललकारा ! व्यर्थ क्यों अपनी प्रशंसा कर रहा है ? देखते रह। क्षणार्ध में युद्ध में मृत राक्षसों को तेरा पेट चीरकर बाहर निकालता हूँ। अरे वाह ! तीनों लोकों के देवताओं को निचोड़ देनेवाले का बेटा हूँ न मैं ? यह ले (पुरस्कार)।" —कहते हुए अक्षकुमार ने गदा उठाकर हनुमान पर

उडिदु दिक्कडि यागि हनुमन मुडुहिनलि मंडिसिद गदॆतुदि
सिडिदु शरनिधियॊळगॆ बिद्दुदु सुरिवुताजलव
नडुगिदुदु तॊळॆडॆय लक्ष्मिय नुडगि निमिषदलुग्ररोषं
बडॆदु हॊय्दनु तोरणद कंबदलि रक्कसन ॥ 28 ॥
हॊय्द घायव परिघदलि खळकाय्दुकॊंडुप्परिसि हनुमन
हॊय्द डिक्कडियादु दॆदॆयलि बिद्दु बलुगॆदु
ऎय्द दादुदु समतॆ सिडिल निनाददलि पुटनॆगॆदुरणरस
वादि हगॆवन तेर तिरुहिट्टनु नभस्थळकॆ ॥ 29 ॥
तिरुगु तिर्दुदु तेरु सूर्यन सरिसदलि बळिकक्षनुरु सिं-
धुरकॆ लंघिसि नूकि हॊय्दनु शिरव ननिलजन
परिघदिंददनॆणॆदु कपिमदकरिय तिविदनु तिवियॆ रक्कस
तुरगदलि धुम्मिक्कि सॆळॆदनु हॊळॆव खंडॆयव ॥ 30 ॥
दंतियॊड लॊळगद्दुदा हनुमंत देवनमुष्टि नॆगहि न-
भांतरकॆ जडिदिट्ट नंबर चररु खो ऎनलु

फेंकी। २७ हनुमान की भुजा से टकरायी उस गदा के दो टुकड़े हुए। टूटी गदा की नोंक छिटककर समुद्र में जो गिरी तो उससे पानी के छींटे उछले। अपनी भुजाओं में उमड़ती विजयश्री को उन्होंने थोड़ी देर के लिए रोक रखा। अगले ही क्षण हनुमान ने बड़े भारी क्रोध से बंदनवार में लगे खंभे को उखाड़कर अक्ष पर वार किया। २८ परिघायुध को काम में लाते हुए अक्ष ने हनुमान के वार से अपने को बचा लिया तथा उछलकर हनुमान पर प्रहार किया। वह भारी शस्त्र (परिघ) हनुमान की छाती से जो टकराया तो उसके दो टुकड़े हुए। सहनशीलता की जो हद हो गयी तो क्रोध से गरजते हुए बिजली की तरह टूट पड़े तथा शत्रु के रथ को हाथ में उठाकर घुमाते हुए हनुमान ने उसे आकाश में फेंक दिया। २९ सूर्यबिंब के नज़दीक पहुँच वह रथ चक्कर काटने लगा। तब अक्ष उछलकर हाथी की पीठ पर सवार हो, आगे जो बढ़ा तो उसने हनुमान के सिर पार वार किया। परिघायुध का प्रहार करके अक्ष के उस वार को रोककर हनुमान ने उसके (भारी) हाथी को घायल कर दिया। तुरंत अक्ष ने उछलकर घोड़े की पीठ पर सवार हो अपने म्यान से चमकती तलवार बाहर निकाली। ३० हनुमान के खींचने पर उनकी भयानक मूठ के कारण हाथी घायल हुआ। तुरंत उस हाथी को उठाकर, आसमान में जो फेंक दिया तो यह (दृश्य)

अंतकन कर कंतुकवु बीळ्वंतें बिद्दुद्दु रावणन नग-
रांतराळ दोळक्षनेरगिद नसिय लनिलजन ॥ 31 ॥
ऎरगिदसिघातदलि नडुहणें हरियलतिरोषदलि हयदेलु
मुरिय लोदेदनु सिडिदु कलिगळदेव फडयेनुत
ओरेयनुगिदु कठारियलि बोब्बिरिदु तिविदनु लेसु लेसें-
दरुचें विद्याधररु गगनदलंजना सुतन ॥ 32 ॥
तिविदु हिंगुव भटन पवनज नवचि तडें गालिद कॆडहलु
कविदु बीळुत कालडोक्करिसिदनु कपिवरन
अवनिगंघ्रिगें कीलकोट्टंतवनु जडियलु दडदडिसि कलि
पवनसुत तरहरिसि कोळुतेरगिदनु रक्कसन ॥ 33 ॥
ऎरगिदशनी घात मुष्टिय बिरुबिनलि बुडुबुडिसि नेत्तरि
नोरतें हाय्दुदु वदनदलि नासिकद नाळदलि
अरसितक्ष कुमारनसुजव पुरदोळळिद कुमारकर खळ
शिरव कित्तिट्टनु दशास्यन सभेय सरिसदलि ॥ 34 ॥

देख, वहाँ उपस्थित देवता हाहाकार करने लगे। यम के हाथों फेंके गये गेंद की तरह हाथी का शरीर रावण की नगरी के मध्य जा गिरा। तब अक्ष तलवार खींचे हनुमान पर टूट पड़ा। ३१ तलवार की वार से बीच माथे पर जो घाव हुआ, तो वीरों के अधिपति हनुमान ने अत्यधिक क्रोध से धड़ल्ले से उछलकर अक्ष के घोड़े को ऐसी लात मारी कि उसकी रीढ़ की हड्डी टूट गयी। तब नंगी तलवार लेकर अक्ष ने गरजते हुए हनुमान पर वार किया, तब आकाश में उपस्थित विद्याधरों ने 'बहुत ठीक' कहकर अक्ष की प्रशंसा की। ३२ तलवार धँसाकर पीछे हटते अक्षकुमार को अड़ंगा लगाकर हनुमान ने गिरा दिया। नीचे गिरते अक्ष ने कपिश्रेष्ठ के पैर में मुक्का मारा। वह मुक्का ऐसे जमा कि (हनुमान) का पैर मानों धरती में गाड़ दिया गया हो तो हनुमान डावाँडोल होने से अपने को बचाकर उस राक्षस पर टूट पड़े। ३३ बिजली की तरह टूट पड़े हनुमान के मुक्के की मार से अक्षकुमार के नाक तथा मुंह से खून की धारा प्रवाहित होने लगी। अपने पूर्व में मरे कुमारों के प्राणों की तलाश में अक्षकुमार के प्राण यम की नगरी की यात्रा करने लगे। अक्षकुमार के सिर को काटकर वीर हनुमान ने पूरी ताक़त लगाकर दशकंठ की सभा के सम्मुख उसे फेंक दिया। ३४ अक्षकुमार के धड़ को लाकर, द्वार की ऊपर की मंजिल पर के कलश को उखाड़कर, उस

उळिद मुंडव तंदु बागिल बळिय नॆलॆयुप्परिगॆ यग्रद
कळसवनु कित्तल्लि सॆक्कि मनोनुरागदलि
कलहकॊंदगुव भटर बरवनु बलिवुतिर्दनु दैत्य कोला-
हल नृकंठीरवन बंटनु दग्रतेजदलि ॥ 35 ॥

आरनॆय संधि

सूचनॆ— वितत राक्षसराजबल संगतवनुरॆ संहरिसि रावणसुत निनब्रह्म भवास्त्रदलि बिगि वडॆदना हनुम ।

कॆळिदै रघुवंश लक्ष्मीलोल सुत हरिसुतन कैयलि
कालगंड कराळ लंकेश्वरन नंदनन
बाळुदलॆ रावणन सभॆयलि बीळॆ वळिका हृदन नाक्षण
कॆळिबंदळु तवकदलि तलॆयॆडॆगॆ मयतनुजॆ ॥ 1 ॥
आरु कॊंदरु कंद मुनिदवरारु हेळॆलॆ मगनॆ बेटद
बेरुगॊलॆ मित्तादुदे यकटकट तवपितन
वीर हा सुकुमार हा रणधीर हा हा कंदयॆंदु नि-
जोरसिनॊळा तलॆय तक्किसिकॊंडु हॊरळिदळु ॥ 2 ॥

जगह उसे खुशी-खुशी रोप दिया । असुर-संहारी-नरसिंहावतारी राम के सेवक हनुमानजी युद्ध के लिए आनेवाले वीरों की प्रतीक्षा बड़ी ही उमंग में करते फूले न समा रहे थे । ३५

छठी संधि

सूचना— राक्षसराजा के असंख्य सेना-समूह का विनाश करके हनुमान रावण के पुत्र से छोड़े गये ब्रह्मास्त्र के वशीभूत हुए ।

रघुवंश की लक्ष्मी के हे प्रिय पुत्र ! सुनो ! वायुसुत के हाथों मृत्यु प्राप्त करनेवाले प्रचंड लंकेश्वर के पुत्र के, खून से लथपथ सिर के, रावण की सभा में गिरते ही, उस (गिरने के) समाचार को सुनकर मय की पुत्री (रावण की रानी) मंदोदरी अत्यंत व्यथित होती हुई (अपने) पुत्र के (उस) सिर के नज़दीक पहुँची । १ "हाय् मेरे लाड़ले, किसने तेरा वध किया ? तुझसे कौन नाराज़ हुआ था ? बोलो न ? मेरे लाड़ले ! क्या तेरे पिता का (स्त्री) व्यामोह तेरी मृत्यु का, तेरे उन्मूलन का कारण हुआ ? हे वीर, हाय मेरे सुकुमार, रणधीर, हाय-हाय मेरे बेटे !" इस तरह रोदन करती मंदोदरी अपने बेटे के (कटे) सिर को छाती से लगाए

कंडनणुगन तॆलॆय तक्किसि कॊंडु हॊरळुव सतियनुदरद
गुंडिगॆय नॊडॆदुच्चळि सिदुदु कोपशिखिमुखद
मंडळिगळलि मातदेनुद्दंड पुरहर लयदला ब्र-
ह्मांडवनु सुडबगॆव बगॆयनु बगॆद नसुरेंद्र ॥ 3 ॥
बरलि कमलजदत्तरथ संगर भयंकर घोरतर हिम
किरण हासवॆनुत्त रक्कसराय मीसॆगळ
मुरिदु निंदिर्दलिंद्र जितु बलु बिरुबिनुब्बर वातिनलि किडि
सुरियॆ खड्गव झडिदु रक्कसराय गिंतेंद ॥ 4 ॥
निलतु बॆकॊलॆ जीय नी हगॆगलहदलि हरनॊडनॆ मिक्किन
गलभॆकारुरु पाडॆ निन्नॊगिदमर रॊग्गिगनलि
हुलुगपिगॆ नीनेकॆ नेमिसु निलिसुवॆनु हिडितंदु निन्नय
बळियलॆंदिंद्रारि हॊरवंटनु सभास्थळव ॥ 5 ॥
कूडिताक्षण जंबुमालिय कूडणवरक्षकन बळियॊड
नाडिगळु देवांतक प्रमुखादि भटरुगळ
जोडिगरु जीवाळ जोकॆय गडिकारुरु गंडिगरु रण
खेडरंगद हॊंतकारिग ळॊंदु निमिषदलि ॥ 6 ॥

लोटने लगी। २ बेटे के सिर को छाती से चिपकाए लोटते, रोते पत्नी को रावण ने देखा। छाती को चीरकर अंतःकरण से फूट पड़ती क्रोधाग्नि रावण के मुखमंडल से बाहर प्रकट होने लगी। उसका वर्णन किन शब्दों में करें ? प्रलयकाल में ब्रह्मांड को जला डालनेवाले अतुलित बलधाम त्रिपुरारि (शंकर) सदृश रावण दीख पड़े। ३ ब्रह्माजी से प्रदत्त रथ, युद्ध-भयंकर उग्र चन्द्रहास नामक खड्ग ले आने की आज्ञा देते हुए, मूँछों पर ताव देते हुए राक्षसराज जब खड़े थे, तब इन्द्रजित् बड़ी ऊँची आवाज़ से गरजते हुए, चिनगारियाँ उगलते तलवार को चमकाते हुए रावण को संबोधित करते हुए यों बोला। ४ "शिवजी के साथ शत्रुता मोल ले, लड़े जानेवाले युद्ध में तुम्हें उपस्थित रहना चाहिए। देवतासमूह के अन्य दंगई क्या तुम्हारी बराबरी कर सकते हैं ? इस नीच कपि के लिए तुम क्यों लपकते हो ? मुझे आज्ञा दीजिए। उसे पकड़ लाकर तुम्हारे सम्मुख खड़ा करूँगा।" इस तरह कहते हुए (रावण-पुत्र) इन्द्रजित् सभा-भवन से निकल पड़ा। ५ जम्बुमाली के सैनिक, अक्ष के साथी, देवांतक आदि वीरों के साथी, देह की चर्बी बढ़ाए सुन्दर शरीर वाले, बलशाली, युद्धवीर, पराक्रमी, क्षणार्ध में, तुरंत आ जुटे। ६ (उन) वीर सैनिकों का

वीरभटरब्बरणें निगुरुव तेर चीत्कृति गजद बृंहित
वारुवंगळ हेषितध्वनि झडपु हरिगॆगळ
भेरि शंख मृदंग रणकहळारवद रभसदलि मेल्जग
दोरणॆगॆ पैसरिसि नडॆतंदनु सुरेंद्रजितु ॥ 7 ॥
मुत्तिता बल जलधि वडबन मुत्तुवंबुधियंतॆ बळिका
हत्तुगॆय हवणिनलि हरिसुत निर्दनंजिकॆय
हत्तिरकॆ हुगगॊडदॆ शौर्यद सत्तिगॆय नॆळलिनलि समरो-
न्मत्त रोषावेषदलि लॆक्किकसदॆ रिपुबलव ॥ 8 ॥
झळपिसुव कैदुगळ हॊळहिन बॆळगु बॆरसितु बलिद बॊब्बॆय
कळकळिकॆ कलियेरिसितु कडुगलिय नाहवद
मॊळगुवभिनव वाद्यतति हॆक्कळव हुट्टिसितधिक चापळ
छलिग ळॊकुव कैदुगळु कनलिसिदवनिलजन ॥ 9 ॥
ऎल्लि कोडग बनवनरॆ हॊडॆ हुल्लमाडिद मर्कटाधम
नॆल्लि राजकुमारकर नुन्मत्त मार्गदलि
कॊल्लगॊलॆयलि कॊंदवानर नॆल्लि यॆनुतुरवणिसुताहव-
मल्ल हनुमन हॊरॆगॆ हॊळसिदनिंद्रजितु रथव ॥ 10 ॥

कोलाहल, आगे बढ़ते रथों की गड़गड़ाहट, हाथियों का चिंघाड़ना, घोड़ों का हिनहिनाना, ढालों की चमक-दमक, भेरी, शंख, मृदंग आदि युद्ध के बाजों की दिल दहलानेवाली आवाज़ के साथ लोकमर्यादा (पंक्तियों को) त्यागकर इन्द्रजित् आकाश-मार्ग से आ धमका। ७ बड़वाग्नि (समुद्र-गर्भ की आग) को घेरनेवाले सागर की तरह इन्द्रजित् की अपार सेना ने हनुमान को घेर लिया। हनुमानजी को तो भय छू हीं न सकता था। वे पराक्रम रूपी छत्र की छाया में खड़े रहकर, युद्ध के उद्वेग से रोषाविष्ट हो (अत्यंत क्रोधित हो) शत्रु-सेना की परवाह न करते हुए वार करने की तैयारी कर रहे थे। ८ (शत्रु के) चमकते शस्त्रास्त्रों की कांति के कारण हनुमान की कांति द्विगुणित हुई। वीरों की घनघोर गर्जना ने मानों वीर हनुमान को युद्ध के लिए उकसाया। युद्ध के नये गाजे-बाजों के शब्दों के कारण उनका (हनुमान का) उत्साह बढ़ता ही गया। जिद्दी वीरों से प्रयुक्त आयुधों ने हनुमान को चिढ़ाया। ९ "कहाँ है वह बन्दर? अशोकवन का सत्यानाश करनेवाला वह नीच बन्दर कहाँ गया? अपनी मस्ती में राजकुमारों की हत्या करके उन सबको समाप्त कर देनेवाला वह वानर कहाँ है?" इस तरह पूछताछ करते हुए युद्धवीर इन्द्रजित्

ऒडनॆ नूकितु तोकुवंबिन् तडॆवशूलव हॊय्व खड्गद
बिडुवचक्रद बीसुगवणॆय बहळ भटनिकर
अडिमिडुकदा तोरणद तुदि गडॆय लिद्दनु तूळुवद्रिगॆ
सिडिलु समरकॆ संवरिसि कॊंबंतॆ कलिहनुम ॥ 11 ॥
भरद बेसगॆगाल दॊणगिलु मरन विपिन दॊळॆद्द वैश्वा-
नरन वॊलु कोपदलि किडि किडि यॊगि कलिहनुम
धरॆगॆ धुम्मिक्किदनु कॊंडनु गिरिय सारद कोटिहत्तर
भरद भारद तूकदुक्किन लाळविडिगॆय ॥ 12 ॥
हॊक्कुदा समयदलि सुंडिल सॆक्कुगळ खंडॆयद गजदळ
बिक्कलिळॆ बॆरसिदुदु रणरथराजि लौडॆगळ
रक्कसरु नूकिदरु हयगळ दक्कडॆय दूवाळियलि कै-
यिक्किदुदु कालाळु खळफळयॆनलु कैदुगळ ॥ 13 ॥
वीर हेळुवुदेननसुररॊळारु सॆणसिदु बदुकिदवरसु
रारियल्लदॆ पूर्वदलि नाना युगंगळलि

अपना रथ हँकवाकर वहाँ ले गये जहाँ हनुमान (बैठे) थे। १० बाण छोड़ते, शूल से रोकते, तलवार से वार करते, चक्रों को घुमाकर छोडते, गोफन फेंकते, असंख्य सैनिक एक साथ हनुमान पर टूट पड़े। घेरा डालने आनेवाले पर्वत के साथ युद्ध करने के लिए जैसे बिजली तैयार होती है, उसी प्रकार वीर हनुमान बंदनवार के खंभे की नोक पर टस से मस न होते हुए बैठे थे। ११ बड़े भारी गरमी के दिनों में सूखे पेड़ों के जंगल में लगी आग की तरह वीर हनुमान गुस्से से आगबबूला होते हुए धरती पर धमाके के साथ कूद पड़े तथा पहाड़ की वजन से दस करोड़ से अधिक, भारी वजनवाली लोहे की शलाका हाथ में लेकर खड़े हो गये। १२ उस समय सूँड़ में तलवार दबाए हाथियों की सेना वहाँ आ पहुँची। भारी गड़गड़ाहट के साथ चलते युद्ध के रथ इतने वेग से वहाँ आ जुटे कि धरती फटे। लोहे की गदाओं को हाथ में धारे राक्षस बड़े धीरज के साथ घोड़ों को दौड़ाते हुए (वहाँ) आ पहुँचे। पैदल सैनिक चमकते शस्त्रों को हाथ में लिये (वहाँ) आ पहुँचे। १३ हे वीर कुमार लव ! सुनो। (उस समय का) कैसे वर्णन करूँ ? पूर्व में, विभिन्न युगों में असुरारि श्रीहरि के सिवा, राक्षसों से लड़कर कौन जीवित रह सका ? आंजनेय को हम उस लक्ष्मीकांत की पंक्ति में खड़ा कर सकते हैं। हनुमान की हत्या के लिए जो षड्यंत्र रचा गया —वह कहानी सुनो।" —इस तरह वाल्मीकि ने

आ रमाधीशन समानकॆ सॆरॆसलु बहुदनिलजन कॆ-
हारदंगद कॊलॆय कवतॆय हेळु नीनॆंद ॥ 14 ॥
अट्टि सदॆदनु कविव कुंतद पट्टॆयद परिघद पदातिय
थट्टनॊळ हॊगुवानॆ कुदुरॆय तेर तिंथिणिय
थट्टुगॊंडहिद निदिर लॊदगुव घट्टॆयर गर्वितर गगदन
बट्टॆगळ हत्तिसिद नरॆनिमिषदलि कलिहनुम ॥ 15 ॥
हॊरॆदुदिळॆ हनुमंतदेवन धुरद कठिण करोग्रदंडद
भरद बिरुवॊय्लिनलि करिरथ हय पदातिगळ
तॊरळॆ तॊगलॆलु मज्जॆमांसद हॊरळियलि रणभूत दुणिसिगॆ
हरियणव निट्टंतॆ हॊसपरियाय्तु रणभूमि ॥ 16 ॥
हॆळुवरॆ बॆरगनिलजन विकराळ रणदभिनयवनॊंदे
वेळॆयलि कंडुदु दशाक्षोहिणि निशाटबल
बाल केळपवर्ग लक्ष्मी बालकिय सिरिपदव मिक्कसु
राळि काणलिकिद्दु दॆडॆयलि पडॆय दवसरव ॥ 17 ॥
ऒडॆदु जारुव भटर भटरिंदिडुत करिगळ करिगळिंदड
गॊडहुतश्वववनश्व दिदप्पळिसु तॊडहाय्दु

कहा। १४ भाला, बरछी, लोहे की शलाका, आगल वग़ैरः हाथ में लिये टूट पड़नेवाले पैदल सैनिकों का पीछा करते हनुमान ने उनको पीटा। (अशोकवन के) अंदर घुसनेवाले हाथी, घोड़े तथा रथों पर आक्रमण कर उन्हें क़तार में सुला दिया। सामने आ पड़नेवाले (सामना करनेवाले बलवान घमंडियों को क्षणार्ध में स्वर्गवासी बना दिया। १५ युद्ध में, हनुमान के बलवान हाथों की भयानक लाठी की मार से मरे हाथी, रथ, घोड़े, पैदल सैनिकों के गुल्म, चर्म, हड्डियाँ, मज्जा, मांस आदियों से भरी धरती मानों ऐसे दीखती थी कि पिशाचों के लिए सजाकर (भोजन के लिए) रखी गयी, परोसी गयी थाल हों। १६ वर्णन करते जायें तो हनुमान का युद्ध-कौशल बड़ा ही आश्चर्यजनक लगेगा। वायुसुत हनुमान के इस भयानक युद्ध के अभिनय को दस अक्षौहिणी राक्षस-सेना ने एक ही समय एक साथ देखा। सुनो कुमार, बचा हुआ राक्षस-समूह मोक्षलक्ष्मी के संपद्युक्त चरण स्पर्श का सुअवसर न पाकर प्रतीक्षा कर रहा (कि वह अवसर कब मिलेगा।)। १७ सेना से छूटकर अपने को बचाते भागते हुए सैनिकों को, अन्य सैनिकों को पकड़कर उन पर पटकते हुए, हाथियों को हाथियों से धर पटकते हुए, उन पटककर पीटे हुए हाथियों को आड़े

बिडुरथव रथदिंद होय्दुरे हुडिगेंदरु तरेयट्टिट सदेदनु
सुडलि संसारवनेंनलु कणनोळगे कलिहनुम ।। 18 ।।
सिडिसिडिदु होगलेंडेय काणदे पडितळिसि निदसुर रसुगळ
कोंडहि हाय्कुत कोंदनीपरि कोटिसख्येयलि
होडेव हिमदुब्बरके बेसगे यडसिदवोलसुरेंद्र जितु मे-
लुडिय बिद्दनु कर्णय कोळाहळ गळेसुगेयलि ।। 19 ।।
मुत्तिदवु शरजाल जेनिन्न हत्तुगेय नोणदंते बळियं
बेत्तिदवु कोपाग्नियनु महदग्नि सख सुतन
ऐत्ति बाहादंडवनु नभकोत्ति हलुगळ नौडिनलि लय
मित्तु मोगनेरगिदनु मददुब्बिनलि रावणिय ।। 20 ।।
सिडिदु बिद्दनु तेरि निदिळे गडिमगुचि नेलनाळ नडनड
नडुगिदुदु रावणिय तनु करघातकनिलजन
पडितळिसि संतेसि कोळुतव पडिरथके धुम्मिक्कि विलयद
सिडिलवोलु सीवरिसि सुरिदनु सरळ सरिवळेय ।। 21 ।।

में सुलाते, घोड़ों को घोड़ों से (घोड़े उठाकर) पीटते हुए, एक रथ को उठाकर दूसरे रथ पर दे मारकर चकनाचूर करते हुए युद्धभूमि में सैनिकों का पीछा करते जब हनुमान जी हाँफ रहे थे तो शत्रु अपने को गाली दे रहे थे कि इस संसार को आग लगे। १८ अपने को बचाकर भागने में जो असमर्थ हो खड़े थे —ऐसे राक्षसों को, धर-पकड़कर पटक देते हुए हनुमान ने करोड़ों की संख्या में मार डाला। घने कुहासे पर (उसके आक्रमण से पीड़ित हो) जैसे गरमी (उष्णता) आक्रमण करती है, उसी प्रकार इन्द्रजित् तीर छोड़ते शोर मचाते हनुमान पर टूट पड़े। १९ बाणों के समूह ने (आकर) मधुमक्खियों के झुंड की तरह हनुमान को घेर लिया। बाणों के इस तरह पीछा किए जाने पर अग्नि के मित्र वायु के पुत्र की (हनुमान की) क्रोधाग्नि भड़क उठी। आकाश की ओर अपनी भुजाएँ बढ़ाए, दाँत-होंठ चबाते हनुमान प्रलयकालीन रुद्र की तरह बड़े जोश-खरोश के साथ रावण के बेटे (इन्द्रजित्) पर टूट पड़े। २० (तब) इन्द्रजित् रथ से ऐसे गिर पड़े कि रथ के सामने आ पड़े सभी सैनिकों के ऊपर औंधे हो गये। हनुमान के हाथ की मार से इन्द्रजित् की देह थर-थर काँपने लगी। इन्द्रजित् बड़े ही प्रयत्न से सँभलकर और एक रथ पर कूदकर चढ़ गये तथा प्रलयकालीन बिजली की तरह कड़कते हुए (हनुमान पर) बाणों की वर्षा करने लगे। २१ मदोन्मत्त हाथी को जैसे कोमल

नूकिदवु शरजाल हनुमन सोकिनलि मदग जवनॆळॆ मु-
ळ्ळौकुव वॊलंजनॆय सुतनंजुवनॆ शरहतिगॆ
नौक वर्रिचलु बॊब्बिर्रिदु रणदाकॆ वाळर देव दिविजा
नीक हॊगळलु हॊक्कु हॊय्दनु मत्तॆ रावणिय ॥ 22 ॥

हॊय्लि गव नॊळ गाग दाक्षण मैलुळिय लुप्परिसि सोलद
मैलिगॆगॆ मैगॊडदॆ पडिरथकागि पुटनॆगॆदु
कैलुळिय कणॆगळलि तोदनलै लघु प्रकर प्रयोगद
लैल पैलद वीरने विबुधेंद्र जितुवॆंद ॥ 23 ॥

हिंदॆ दिगुविजयदलि सोतु पुरंदराद्यरु कॊट्ट बाण ग-
ळिद हूळिद नुब्बि बॊब्बिर्रि दंजना सुतन
मंदविसि मुसुकुव बळाहक वृंददुपटळ कळ्कुवनॆ रवि
कंद केळ् कौतुकव नॊळ हॊक्करॆगिदनु खळन ॥ 24 ॥

ऎर्रगिदरि भट भैरवननुब्बिर्रिदु गदॆयिदणॆदु बॊब्बॆय
बिरुबिनलि बीसिट्टना लंकाभयंकरन

काँटे चुभ रहे हों —उसी तरह हनुमान को लगे बाण नीचे गिर गये। अंजना देवी के पुत्र का, वे काँटे क्या बिगाड़ कर सकते हैं ? युद्ध वीरों के अधिपति हनुमान ने सबके चीखते वक़्त, गरजते हुए आगे बढ़ देवताओं के प्रशंसात्मक शब्दों के मध्य फिर एक बार रावण के पुत्र पर हमला किया। २२ इन्द्रजित् ने उस हमले से अपने को बचाकर, तुरंत शीघ्रगति से उछलकर अपजय नामक अपवित्रता को मौक़ा न देते हुए वे दूसरे रथ पर सवार हुए। चालाकी से धीरे-धीरे बाणों को चलाते, हनुमान को बाणों की वर्षा में भिगो दिया। देवेन्द्र को जीतनेवाला (इन्द्रजित्) क्या अनाड़ी वीर हो सकता है ! । २३ पूर्व में किये गये दिग्विजय में इन्द्रजित् से हार खाकर देवेन्द्र आदि देवताओं ने जो बाण दिये थे उनका प्रयोग करके उसने (इन्द्रजित् ने) गरजते हुए हनुमान को ढक दिया। एक साथ आकर बादलों ने अगर ढक दिया तो सूरज़ क्या उनसे डरता है ? बेटे लव, आगे की कौतुक-भरी कहानी सुनो। आंजनेय ने उस राक्षस-व्यूह के अन्दर प्रदेश कर उस पर हमला किया। २४ अपने ऊपर हुए इस आक्रमण को रोकते इन्द्रजित् ने हनुमान पर गदा का प्रहार किया। ज़ोर-ज़ोर से गरजते उस गदा को तानकर लंका-भयंकर हनुमान पर दे मारा। वह टूटनेवाली गदा न रही। देवेन्द्र की श्रेष्ठ वज्रायुध की सत्त्वसंपन्न गदा वह थी। वाल्मीकि ने विवरण प्रस्तुत किया कि

मुरिव गदेयल्लदु सुरेश्वर नुरुव वज्रद सारतरवद
तरुबुवरे पवमान नंदन नल्ल दिल्लेंद ॥ 25 ॥
इट्ट भारकें सिडिदु तरणिय तट्टि बिद्दुदु खळन तेरिन
नट्ट नडुवें सुरेंद्रजितु पडिरथकें लंघिसलु
हिट्टु दोरितु तेरु बळिकव निट्ट निट्टि मुसुंडि मुद्गर
पट्टे परिघ परश्वधादि महायुधंगळलि ॥ 26 ॥
बळिक कमलजदत्त रथवनु निलिसलडरि सुरेंद्रजितु कळ-
वळिसे जगवैंद्राग्नि याम्यासुरद वारुणद
हिळुकुगळ संदर्भदलि सरगोळिसि वायु कुबेर हरगिरि
कुलिश सौरादिगळलेच्चनु वज्रविग्रहन ॥ 27 ॥
आव दिव्यास्त्रंगळींतन नोवि गोंदगिदुदिल्ल दसुर श-
रा वळिगळ ळुकिसलु नेरेंदुद कार्णे ननिलजन
देवरिपु किडिमसगि वंर राजीवसंभवशरव हूडिद
ना विबुधरसु जरियें झम्मिडें तनु त्रियंबकन ॥ 28 ॥
ओडिदनु जवराज सरिदनु बोडिकेंगे भवभयद लानेंय
जोड कळचि सुरेंद्र नंकुश विक्किदनु पुरिगें

हनुमान के सिवा और किसी में उसे रोकने की ताक़त नहीं थी। २५ तानकर फेंके गये तेजी के कारण वह ठसककर वेग के साथ छूटकर सूर्यबिंब से टकराकर राक्षस के रथ के मध्य जा गिरी। तब इन्द्रजित् उछलकर दूसरे रथ पर सवार हुआ। इतने में (गदा के गिरने से) रथ चकनाचूर हुआ। उसके बाद उसने भाला, बरछी, मुद्गर, परिघ, कुल्हाड़ा आदि महान आयुधों का प्रयोग करते हनुमान को पीटा। २६ उसके बाद ब्रह्माजी से पाये गये रथ को लाकर खड़ा किया गया। इन्द्रजित् उस पर सवार होकर इन्द्र, अग्नि, यम, वरुण वग़ैरः भयंकर अस्त्रों का प्रयोग अभिमंत्रित कर इस प्रकार कर रहा था कि सारी दुनिया काँप उठे। वायु, कुबेर, शिव, पर्वत, वज्रायुध, सूर्यायुध वग़ैरः शस्त्रों से वज्रदेही (हनुमान पर) उसने प्रहार किया। २७ किसी भी तरह के दिव्यास्त्रों के प्रयोग से न तो हनुमान घायल हुए न व्यथित। इन्द्रजित् के बाण हनुमान को भयभीत करने में असमर्थ रहे। तब देवताओं के शत्रु इन्द्रजित् ने चिढ़कर ब्रह्मास्त्र को धनुष पर चढ़ाया। तब देवताओं के प्राण थर-थर काँप उठे। त्रिनेत्री की देह थरथराने लगी। २८ यमराज डर के मारे भाग खड़े हुए। शिवजी अपने निवास की तरफ़ खिसक गये। भय के मारे देवराज इन्द्र ने ऐरावत के रस्से को ढीला कर दिया तथा अंकुश से उसे

कोडदी शर कट्टिदरॆ कैगूडुवुदु कडु गोपवे ननु
माडुवनो मारुति यॆनुत्तु ळिदमर रडगिदरु ॥ 29 ॥
रणदिळॆय हुगलंजि शाकिनिगण सरिदुदत्तत्त तॊलगिद
हॆणन जीवव नॊय्व कालन दूतरल्ललल्लि
मणिकटिय मरॆमाडि समरांगणद भूमिय सीमॆयलि मै
हणुगि हॊदद्रिनलिर्द रंजिकॆ गनिल नंदनन ॥ 30 ॥
आतुको कपि कपियरूपिन भूतपति नीनागु बॊम्मन
तात नागल्लदडॆ मेणा बॊम्म नीनागु
ई तुठारद तोमरव निर्भीतियलि नी गॆलिदॆ यादडॆ
सोतवनु ना निनगॆनुत कविदॆच्चननिलजन ॥ 31 ॥
सुरिव किडि यडगिदवु कब्बॊगॆ हरॆदुदुरि समनिसितु कॊलुवु-
ब्बरद बगॆ बयलाय्तु कुश केळा महाशरद
अररॆ हनुमन विक्रमाग्निय हरहदॆंतुटॊ हॊद्द लम्मदॆ
तिरुतिरुगि बरुतिर्दु दॊंदरॆ घळिगॆ परियंत ॥ 32 ॥

ठेलते हुए अमरावती की तरफ़ पैदल जाने लगे। 'यह अस्त्र तो डरेगा नहीं; इसे अगर रोकने की कोशिश करें तो वह और अधिक नाराज़ होगा। पता नहीं, अब हनुमान क्या करेंगे?' इस तरह सोचते चिंतित देवता छिपकर बैठ गये। २९ युद्धभूमि में प्रवेश करने से डरकर शाकिनियों का समूह इधर-उधर भाग गया। मृतकों के प्राणों को देह से बिलगाकर ले जाने आए हुए यम के दूत मणिबंध के पीछे मुँह छिपाकर युद्धभूमि के प्रदेश में स्थित झाड़ी में अपनी देह को छिपाए बैठे रहे। ३० "रे कपि, ले इसका सामना कर। कपि-रूप से पिशाचों का अधिपति बन। ब्रह्माजी का दादा बन। या स्वयं ब्रह्मा बन। काट डालनेवाले इस तोमर को अगर धीरज के साथ तूने जीत लिया तो मैं तेरे हाथों (अपनी) हारने की स्थिति क़बूल करता हूँ।" इस तरह कहते हुए इन्द्रजित् ने हनुमान पर आक्रमण कर (उस तोमर से) पीटा। ३१ "फूट पड़ती चिनगारियाँ अदृश्य हुईं। काला धुआँ फैला गया। ज्वाला प्रकट हुई। उस महान अस्त्र की उत्कट मारण इच्छा निष्फल हुई। सुनो कुश, अरे वाह, हनुमान की वीरता के ओज के सामने उसकी हस्ती ही क्या! वह महान् अस्त्र हनुमान को छूने में असमर्थ हो एकाध क्षण के लिए बार-बार जा-जाकर लौट आ रहा था।" —इस प्रकार वालमीकि ने वर्णन किया। ३२ तब ब्रह्माजी आकाश में प्रकट हो, हाथ जोड़ हनुमान से प्रार्थना करने लगे— "हमने जो पूर्व में वरदान दिया था

करव मुगिदंभोज भवनं बरदलीतन बेडिकोंडनु
वरव -कोंडु नीनेंमगें नाव् मुन्नित्त वरदिद
शरविदेंम्मद मोघवेंनें मत्तरिभयंकर हनुमना बलु
सरळ करेंदनु कट्टु वडेंदनु कदनकेळियलि ॥ 33 ॥
ओंदरि़दवु रणवाद्य तति खळ कोंदरि़ कोंडू वरूथदिदिळि
दोददोंदु सेदिदनु कमलज पाशदलि कपिय
बेंदरि़ हाय्दण्ण गळु कैगळ लेंदेय नेवरिसुत्त रण सं-
पदद नरकेसरिय दूतन नैदितोंग्गिनलि ॥ 34 ॥

एळनेय संधि

सूचने— चंड बल रावणन सभेयलि गंडगंडर गंड रणदोवंड मारुति जरेदु मेरेदनु सुप्रतापकव ।

केळिदै कुश मुत्ति कोंडुदु सोलदसुररु विषम राक्षस
काल भैरवननु कनल्दु कठारि कुंतदलि
लाळविडिगें पिंडिवाळ कराळ खड्ग मुसुंडि मुद्गर
शूल पट्टस परिघ परशु गदादि शस्त्रदलि ॥ 1 ॥

तदनुसार हमारी संज्ञा का यह बाण व्यर्थ नहीं हो सकता। अतः तुम अब हमें वरदान दो (कि इस मेरे अस्त्र के वशीभूत हो जाओ), तब शत्रु-भयंकर हनुमान ने उस महान अस्त्र को बुलाया और अपनी इस युद्धलीला में उसके वशवर्ती हुए। ३३ तब युद्ध-वाद्यसमूह घनघोर शब्द करने लगा। राक्षस (इन्द्रजित्) उत्साह से फूले रथ पर से उतर पड़े। कपि को लात मार-मारकर ब्रह्मपाश से खूब कसकर बाँधा। डर के मारे भागे हुए राक्षस छाती कड़ी करके (धैर्य धर के) झुंड के झुंड युद्ध-विजय श्रीस्वरूपी नरसिंह के दूत के नज़दीक आये। ३४

सातवीं संधि

सूचना— प्रचंड बलशाली रावण की सभा में वीराधिवीर युद्धपराक्रमी हनुमान ने रावण की निंदा करते हुए अपने शौर्य को प्रकट किया।

सुनो कुश। अपराजित राक्षसों ने खड्ग, बरछी, अर्गला, भिंडिवाल, उग्रखड्ग, मुसुंडि (एक अस्त्र), मुद्गर, शूल, पट्टिश, परिघ, कुल्हाड़ा (फरसा), गदा, आदि शस्त्रों को धारे दुष्ट असुरों के लिए प्रलयकालीन यमस्वरूपी हनुमान को क्रोध से घेर लिया। १ शूर

हॊडॆदरिरिदरु हॊरळिचिदरड गॆडहिदरु कोळाहळद बलु
गडिय भटरब्बरिसि सदॆदरु मूळु पाळिनलि
हॊडॆयदिरिरो सायदी कपि हॆडगुडिय बिगिदसुर वल्लभ
नॆडॆगॆ हॊरॆ कॊंडॊय्वॆ वॆनॆ हॊत्तुदु खळव्रात ॥ 2 ॥
हॊत्तु हॊत्तॊळॆट्टु सूळलि सत्तुदॆंबत्तॆदु साविर
कित्तु धरयनु धरिसुवतिबल सरिग रक्कसरु
ऒत्तदिरि बलुमिळिय लिवननु सुत्ति सिंधुर घटॆगळॆदॆळॆ
सुत्त कॊंडॊय्यॆनलु हस्मिदरानॆ यलि कपिय ॥ 3 ॥
ऎळसलिभांसिर घटावळि नॆलकॆ दाडॆयनूरि घॊळि
ट्टळिद वनिलज जडिद जवदुग्गडद सत्वदलि
छलविदर कूडॆनुत हरिरिपु हलुमॊरॆदु तरिरिसिदनु वज्रद
हळिय रथवनु कुंभकर्ण निशाचरेश्वरन ॥ 4 ॥
मिळि नॊगनु कीलच्चु कूबर वळॆ मॊळॆय नारैदु हॆरॆयनु
बळिदु हूडिद रिद्दॆसॆय लॆंभत्तु साविरव

सैनिकों ने हनुमान को पीटा; चुभोया; गिराया; लुढ़काया; शोरगुल करते गर्जना करते बारी-बारी से पीटा। "अरे रुक जाओ। पीटो मत। यह कपि तो मरनेवाला नहीं। इसके हाथ-पैर बाँधकर हमारे राक्षसराजा के पास (इसे) ढोकर ले जाएँगे।" —इस तरह कहने पर राक्षस हनुमान को ढोकर ले चलने लगे। २ क्रम से, सात-आठ बार, बारी-बारी से ढोते-ढोते भूमि को उखाड़कर ढो ले जाने की शक्ति रखते हुए पचासी हज़ार महाबलवान राक्षस मौत के घाट (हनुमान के वज़न के कारण) उतरे। "इसे उठाइए नहीं, चमड़े के भारी रस्से से (इसे) बाँध, हाथियों की कतारों से खिंचवाते ले जाइए।" —इस प्रकार की सलाह पाकर कपि को रस्से से हाथी के साथ बाँध दिया। ३ हनुमान ने अपने उत्कट सत्त्वशाली बल का ज़ोर लगाकर तब जो एक झटका दिया तो उसे खींच ले जाने में लगे दो हज़ार हाथी अपनी दाढ़ को धरती से टेके चिंघाड़ते गिर गये। 'इसके साथ खिलवाड़ क्यों करें।' इस तरह इन्द्रजित् ने दाँत-ओठ चबाते कहते हुए कुंभकर्ण असुर के हीरों के खवे जड़े रथ को मँगवा लिया। ४ चमड़े का रस्सा, जुआ, कील, रथ का धुरा, चाक —इन सबकी ठीक तरह परीक्षा कर धुरे में तेल आदि डालकर भूमि को ढोए खड़े दिग्गजों को मात करनेवाले अस्सी हज़ार हाथियों को मँगवाकर दोनों पार्श्वों में उनको (खींचने के लिए) जोता गया। साथ-

इळॆय हॊत्तिभ राजियिदग्गळद करिगळ कूडॆ बनदलि
बॆळगिदवु बॊंबाळ दीविगॆ लक्क संख्येयलि ॥ 5 ॥
सरिग रक्कस किंकररु बॊब्बिरिदु बलुसन्नॆ गळलुक्किन
तुरुबुगळ लॆत्तिदरु तेरिगॆ तग्गल वनितळ
अरुचिदनु फणिराज कूरुम नॊरलिदनु कूगिट्ट विभविळॆ
गॊरगितग्गद मेरुगिरि मारुतिय भारदलि ॥ 6 ॥
ऎत्तलळिदुदु रक्कसरु तरुबॊत्ति हनुमन भारदलि करि
सत्तवनिलज नॊलद मैयलि बगॆय दुरवणिसि
हत्तिसिद रानॆगळ नसुररु सत्तुदै सूळॆंटरलि बे-
सत्तु बळिकमरेंद्रजितु विंतेंद नसुररिगॆ ॥ 7 ॥
सॆडॆय दिदु कयदुगळ कवतॆगॆ नडॆयदिदु करिगळिगॆ खळरिगॆ
मडियदिदु मिक्काद कॊलॆगिद रॊडनॆ होरदिरि
बिडिरॊ सायलु बेड निल्लिद रॊडनॆ बलुमर गिच्चनॊट्टिदु
सुडियॆनुत नेमिसिद निंद्राराति निंजबलकॆ ॥ 8 ॥

साथ पुतलों के हाथों में विराजमान दीपस्तंभ लाखों की संख्या में (उस) अशोक वन में जगमगाने लगे। ५ समान बल के राक्षस चीखते-चिल्लाते शोरगुल मचाते भारी चीज़ उठाने के यंत्र तथा ऊपर उठाने में प्रयुक्त सब्बल के सहारे हनुमान को सवारी के लिए आयोजित रथ पर उठाया। हनुमान के बोझ के कारण धरती धँस गयी। तब (धरती के वाहक) आदि शेष चीख उठे; कछुआ वेदना के कारण चटपटाया; दिग्गज चिल्ला उठे; मेरु पर्वत धरती की ओर झुक गया। ६ हनुमान को रथ के ऊपर (पहुँचाने) उठाते हुए राक्षस उसके बोझ के ढोने में असमर्थ हो दबकर मर गये। हनुमान के करवट बदलने के कारण हाथी (दबकर) मर गये। इसकी परवाह न करते हुए राक्षसों ने ज़ोर लगाकर हाथियों की सहायता से हनुमान को रथ पर उठाया। उस प्रकार सात-आठ बार उसको उठाते-उठाते कई हाथी मर गये। तब तंग आकर इन्द्रजित् ने राक्षसों को संबोधित कर यों कहा— ७ "आयुधों के उपयोग से यह (कपि) झुकने वाला नहीं; हाथियों के बस की भी यह बात नहीं। राक्षसों के हाथ से यह (कपि) मरनेवाला नहीं। अतः इसे मार डालने की कोशिश मत करो। मरो मत। उसे छोड़ दो न? ठहरो। लकड़ियों का ढेर लगाकर उसे आग लगा इस कपि को जला दो।" इस तरह इन्द्रजित् ने सेना को आज्ञा दी। ८ सप्त तमाल वृक्षों की ऊँचाई के बराबर पुराने पेड़ों का ढेर लगा आग प्रज्वलित कर चारों तरफ़ से घेरकर राक्षस ज़ोर-ज़ोर से

ऒट्टिदरु ताळेळह्दद लिट्टणिसि हळेवरवनुरिगळ
लिट्टु बॊब्बिरिदब्बरिसिदरु नाल्कु मैगळलि
पट्टणवनुरि गॊळिस लिदु ता बट्टॆ तनगॆनु तरुचि हलुगिरि
दॊट्ट दिधन गॆदरि बिद्दनु रथद मध्यदलि ॥ 9 ॥
वरु नगॆय लिंद्रारि दळ्ळुरि दुरुगुलिन कॊळ्ळिगळलिद्दॆसॆ
गॊरग दंतिरॆ कट्टिदरु कंभदलि हळविगॆय
किरि किरिनॆ हलु गिरिदु हणुगुत गिरिकु गुट्टुत मिणिकि नोडुत
हरुव नगरकॆ नॆनवु तिर्दनु मनदॊळगॆ हनुम ॥ 10 ॥
नडॆदुदल्लि मेलॆ नॆल दड ददिस लानॆगळंकुशद बॆ-
गॊडतिगळ बलु वॊय्ल बॊब्बॆय बिरुबु गहळॆ गळ
हॊडॆव हरॆगळ कळकळिकॆ कूगिडॆ फणींद्र नगेंद्र चयवॊ
गुडिसॆ बंदुदु तरु तोपिन कडॆय बागिलिगॆ ॥ 11 ॥
बळॆ मॊळॆय नारय्व कम्मर रुलुहुगळ कँवाचि चीलण
दुळिय कॊलसद बडगियर बिरुदनिय कुळि तॊवर
तळपटव माडुव पदाग्रद सलिकॆ गुद्दलि हारॆगळ बलु
गॆलस दॊड्डर कळकळदि बरुतिर्दुदसुर रथ ॥ 12 ॥

शोरगुल करने लगे । 'लंकानगरी को जला डालने के लिए इस कृति ने मेरे लिए रास्ता तै कर दिया' —यों सोचते चीखते दाँत किटकिटाते हनुमान ढेर लगी लकड़ियों को तितर-बितर कर रथ के मध्य जाकर (जान-बूझकर) गिरे । ९ ज़ोर से ठहाका लगाते इन्द्रजित् ने धू-धूकर जलती हुई लकड़ियों को चारों ओर जमाकर हनुमान को ध्वजस्तंभ से इस प्रकार बाँधा (दोनों तरफ़ से) कि वह नीचे न आ गिरे । किटकिटाकर दाँत निपोरते, देह को हलका बनाते, चक्कर काटते, झाँककर देखते हनुमान लंका नगरी के विनाश के बारे में मन ही मन सोचने गुनने लगे । १० हाथी रथ को खींचते-खीचते जब आगे बढ़ने लगे तो धरती थर-थर काँपने लगी । सैनिक हाथियों को चुभोते, हथौड़ों से उनकी पीठ पर ज़ोर-ज़ोर से पीटते ढोल बाजों के शोरगुल के साथ भारी गर्जना करते आए । उस बोझ के कारण आदिशेष, दिग्गज मानों ठोकर खाने लगे । रथ अशोक वन के, आखिरी द्वार तक पहुँचा । ११ रथ के चक्र, वलय, कील आदि की परीक्षा करनेवाले लुहारों की बातें; बसूली, छेनी, राँकी, रुखानी आदि के काम करनेवाले बढ़इयों की बातें; ऊबड़-खाबड़ धरती को कुदाली, फावड़ा आदि लेकर समतल बनानेवालों की बातें; कठिनतर कार्य करनेवाले; मिट्टी, पत्थर आदि खोदकर काम करनेवाले वग़ैरहों के शोरगुल

नट्टगालिय कीळु तरॆगळ कट्टुतच्चिन किच्चि नुरुबॆय
दट्टणॆगॆ धारॆगळ बिड्डुतॆण्णॆगळ पक्कलॆय
थट्टु गॆडुवानॆगळि गानॆय कट्टु तसुररि गसुररनु हॊग
गुट्टु तीपरि नडॆसि तंदरु दृढ पराक्रमन ॥ 13 ॥
कॆडहिदरु मुरि मुरि दुकॆरिय तॊडकु वीथिय मनॆमनॆय नॊड
बडिद रानुव विविध सौध द्वार संकुळव
निडिय बालव बीसि बॊदिगळॆड बलद नॆलॆ युप्परिगॆ गळ
नडिमगुचु तैतंद ननिल जनं जलखिळ जन ॥ 14 ॥
कळकळिकॆ कडुहाय्तु खळपुर दॊळगि दॆत्तण मारियनु हॊळ
लॊळगॆ हॊगिसिदरकट खळरिगॆ कॆडुगालविदु
मॊळवु दिल्लिर बारदॆदळ वळिवु तल्लिय दल्लि बल्लव
रिळिदु दुर्गव नैदिदरु शाखा पुराळिगळ ॥ 15 ॥
ऊर हॊगिसिद ररिदरिदु हॆम्मारियनु कॆडाय्तॆनुत धव-
ळार गोपुर दॆरिकॆय नोटकरु मुरिगॆडदु

के साथ वह राक्षस रथ गड़गड़ाते आ रहा था। १२ धरती में धँसे रथ-चक्रों को ऊपर उठाते ढील पड़े आरे के पैरों को बाँधते हुए, धुरी के रगड़ने से ऊपर उठती ज्वाला को तैल-पात्र से तेल उँड़ेलते हुए झुंड से बाहर निकलते रथ में नये हाथी जोतते हुए तैनात राक्षसों की जगह दूसरे राक्षसों को नियुक्त करते हुए —महान वीर हनुमान के रथ को इस प्रकार कई रीतियों से हाँकते ले आए। १३ इस रथ के मार्ग में आड़े आनेवाले (विघ्न उपस्थित करनेवाले) कई घरों को तोड़-फोड़ दिया; रथ से टकरानेवाले कई भवनों के द्वारों को धराशायी कर दिया। हनुमान ने (अपनी) लंबी पूछ हिला-डुलाकर मार्ग के दोनों तरफ़ के मंजिल वाले मकानों को उलट-पलट दिया। यह देख जब निवासी डर रहे थे तो हनुमान रथ पर सवार आगे बढ़े। १४ रावण की राजधानी का कोलाहल बढ़ा। "इस महामारी को नगरी में क्यों ले आए। हाय-हाय राक्षसों के विनाश का श्रीगणेश हुआ। अब हमें यहाँ रहना नहीं चाहिए।" —इस तरह सोचते अधीर हुए राक्षस क़िले पर से उतर आकर उपनगरी में प्रवेश करने लगे। १५ "जान-बूझकर इस महामारी को नगर में प्रवेश दिया; यह तो बहुत ही बुरा हुआ।" इस तरह कहते धवलागारों (चूना लिपे-पुते भवनों) के बुर्ज पर चढ़े खड़े दर्शक बार-बार झाँकते दूरी पर खड़े थे। तब हनुमान ने अपनी बहुत भारी बड़ी पूँछ

दूरदलि निंदिदरु बळिकव गोरिदनु गुडियिरिदु वालद
गोरॅयलि तळमगुचिदनु तोरणद सालुगळ ॥ 16 ॥
पळुकि नरॆ नॆग्गिदवु वज्रद हळिय हॊय्लिगॆ होद बीदिय
बळिय मणिमय भद्र भवनाळिगळ निलजन
बळलुगॆ सोकिनलि नॆलकप्पळिसि बिद्दवु पुरदॊळगलकॆ
कळ कळिकॆ कडुहागॆ खळवंदित्त नोलगव ॥ 17 ॥
तंदनिंद्राराति रायरिपुंधमन राक्षस मदद्विभ
वृंद कंठीरवन खळकुल काल भैरवन
नंदनव कित्तक्ष मुख्यर कॊंद कोडग विदॆ मनस्सिगॆ
बंद परियनु माडॆनुत कैमुगिद नय्यंगॆ ॥ 18 ॥
ईत निद्दनु बलॆगॆ सिलुकिद कोतियंदद लुसुर दॊडकिन
धातुगुंदिद मुखद मुरुहिन मुच्चु गंगळलि
यातुधान शिरोमणिय दुष्प्रीति वाक्य स्फुरणॆगळ निज
रीति गळ नरॆ नोट दिदीक्षिसुतला हनुम ॥ 19 ॥
कॊल्लु कडि तिवि तिदियनुगि हॊय् हल्ल निरि तरि कॊरॆयॆनुत किडि
यल्लॊगुव कोपदलि खळपति वॆससॆ भटनिकर

रूपी सूप से कई घरों को साफ़ कर दिया। पंक्तिबद्ध वन्दनवारों के खंभों को उलट-पलट दिया। १६ रथ के वज्रस्तंभ से टकराकर स्फटिक शिलाएँ चकनाचूर हुईं। हनुमान के झूलते हाथों के टकराने से रथ के मार्ग में पड़ रहे कई रत्न-भवन तहस-नहस हो धरती पर आ गिरे। जब शहर भर में इस प्रकार शोरगुल बढ़ रहा था तो रावण अपने सभाभवन में पधारे। १७ शत्रु राजाओं को दमन करने में समर्थ, राक्षस रूपी मदोन्मत्त हाथियों के लिए सिंह-सदृश, राक्षस-समूह के लिए कालभैरव स्वरूप हनुमान को इन्द्रजित् रावण के सभाभवन में ले आए। "मनमाने आचरण करते हुए अशोक वन को तहस-नहस कर अक्ष आदि प्रमुख वीरों की हत्या करनेवाला यही वन्दर है।" इस तरह इन्द्रजित् ने हाथ जोड़े पिता से निवेदन किया। १८ जाल में फँसे वन्दर की तरह हनुमान साँस उखड़ते, थके-माँदे अपने मुखड़े को मोड़े, आँखे मूँदे, बैठे थे। फिर भी राक्षस मुखिये की अहितकर अनुचित बातों की रीति अधमूंदी आँखों से निहार रहे थे। (मानों ग़ौर कर रहे हों)। १९ "मार डालो, काट डालो, चुभा दो, फेफड़े बाहर निकालो, दाँत तोड़ दो, चूर-चूर कर दो", आदि शब्दावलियों का प्रयोग करते, क्रोध से चिनगारियाँ उगलते

घल्लिसिद रीतनुनु घाडिय घल्लणेय घायदलि हनुमनु
हुल्ल कड्डिगॆ बगॆय दिर्दनु निखिळ कैदुगळ ॥ 20 ॥
सैरिसिरो होय्यदिरि हो हो विचार वुंटव नॆल्लिय वनिव
गारॊडॆय रॆम्मी पुरक्किव बंद कारियद
कारणव बॆसॆ गॊबॆवॆंदु चमूरमण ननुचरर जरॆदु स-
मीरजन नी नार बंट नॆनुत्त बॆसगॊंड ॥ 21 ॥
नीवु घन माताड बारदु जीव चंचल वागुतिदॆ स-
ज्जीविगळु नावाद रैसलॆ मातु बळिकॆमगॆ
नावु माडिद होल्लॆ वावुदु नीवु नम्मनु कट्टिट कॊलुवुदि
दावरायर राजपद्धति यॆंदना हनुम ॥ 22 ॥
मुगुळु नगॆयलि नगुत हनुमन मॊगद मॆडिय धूर्तवचनद
बगॆय भंगियना प्रहस्त विवेक दिंदरिदु
बिगड भटनिव कुटिल शाखा मृगनिवनु नाडाडिकॆय व्रन-
मृगद परियल्लिवन नुडिसिदु नोडबेकॆंद ॥ 23 ॥

राक्षसों के अधिपति रावण की आज्ञा होते ही सैनिकों ने हनुमान को मार-पीटकर घायल करते तरह-तरह से पीड़ा पहुँचायी। हनुमान ने तो समस्त आयुधों को तिनके बराबर भी न माना। २० "हाँ, हाँ, रुको-रुको, इसे पीटो मत। इसके बारे में सोचना-विचारना है। यह कहाँ का है ? इसके स्वामी कौन हैं ? यह हमारी राजधानी में किस उद्देश्य से आया ? क्या काम है इसे हमारे यहाँ ? वग़ैरः के बारे में पूछताछ करें।" इस तरह कहते सैनिकों को आड़े हाथों लेते हुए वायुसुत से पूछा, "तू किसका दूत है ?" २१ "भारी वेदना हो रही है। अतः बोल भी नहीं पाता हूँ। प्राण निकल रहे हैं। हम तो सज्जन हैं। लेकिन वे बातें फिर होंगी। यह तो पहले बताइए कि हमारा अपराध क्या है ? तुम जो हमें क़ैद करके हमारी हत्या कर रहे हैं—यह कहाँ की राजनीति है ?" इस प्रकार हनुमान ने पूछा। २२ प्रहस्त मुस्कुराते हुए यह ताड़ गया कि हनुमान के मुखड़े पर एक प्रकार की भारी गंभीरता है; साथ ही साथ बातों में वह काफ़ी चंट भी है। यह दूत यद्यपि मामूली है फिर भी बड़ा वीर है। यह धोखेबाज बन्दर साधारण जंगली प्राणियों की तरह नहीं है। इससे बातें करके (वस्तुस्थिति का) पता लगाना चाहिए। —इस तरह मन ही मन सोचने लगा। २३ भुजाओं पर के बन्धन को छोड़कर हाथ, पैर, कमर, जंघा तथा कंठ पर के कालपाश के

तोळ कट्टोंदुळियें मिक्किन कालु कैनडुतोंडें कोरळ्गळ
काळपाशद कट्टु सडलिसि केळें कलिहनुम
हेळबेके निमगें किवि गोंट्टालि सादोंडें निम्म रक्षिसु
वाळुदन तलेंगोळलु बंदन भृत्य तानेंद ॥ 24 ॥
आतनारेंन लहुडु केळुव रीति लेसु पुलस्त्य कुल सं-
भूत भू भारक दशानन नोंब्बनुंटु गड
आत नोंड हुट्टिदद खरादि महातिबल भटरूगळनुग्रप
रेत पुरिगट्टिदननरिया केळि नीनेंद ॥ 25 ॥
मायेंयलि सुळिदसुर नसुवनु सायकद लुगिदवन बल्लै
रायसभेंयलि राजमौळिय चापदलि सिलुकि
बायि गरुहिनला नरेंद्रन दूतरावेंद ॥ 26 ॥
साय बगेंदवननु जेंयभिमानायतव कोंडवन बल्लै
मगुळें मत्ते नुंटु केळुव सोंगसुवा तुगळ्ळ्ळदनें हुसि
होंगद वोंलु पेळिदेंवु नमगिदकंजलेकेंनलु
नगेंय नसुगोपदलि नम्मी नगर केतकें बंदें हुलु गो
डगव कळुहिद नेनु कारण निन्न पतियेंद ॥ 27 ॥

बन्धनों को ढीला कर जब हनुमान से प्रश्न किया तो उसने उत्तर दिया— "क्या उत्तर चाहते हो ? कान खोलकर सुनो —तुम्हारा पालन-पोषण करनेवाले स्वामी के सिर को धड़ से अलग करने के लिए आनेवाले का मैं किंकर हूँ"। २४ प्रहस्त के पूछने पर कि वह कौन है ? तो हनुमान ने प्रश्न के उत्तर में फिर प्रश्न ही किया— "हाँ तुम्हारे पूछने का ढंग बड़ा सुन्दर है। जानते हो न कि पुलस्त्य के वंश में पैदा होकर भूमि के लिए भारस्वरूप (बोझ) बने दशमुख नामक एक राजा है न ? उसके सगे खर-दूषण आदि बन्धुओं को जो महान प्रतापी रहे —उनको यमनगरी पहुँचाने वाले को क्या तुम नहीं जानते ?" २५ माया-मृग का रूप धारणकर चक्कर काट रहे राक्षस के प्राणों को बाण से छेदकर बाहर निकालनेवाले को क्या जानते हो ? जनक राजा की सभा में शिवधनुष के नीचे दबकर जो मरना चाहते थे उसकी बहिन को अपमानित करनेवाले के बारे में कहीं तुमने कुछ भी नहीं सुना है ? उस राजा के हम अनुचर हैं।" इस तरह हनुमान ने कहा। २६ "अब और क्या चाहिए ? पूछे गये सुन्दर प्रश्नों के उत्तर झूठ-मूठ को छोड़े बिना सीधे ढंग से दिये हैं। इससे हमारा क्या बिगड़ सकता है या इसके लिए हम क्यों डरें ?" इस प्रकार के हनुमान के कथन पर प्रहस्त ने मुस्कुराते थोड़े बहुत क्रोधित होते पूछा,

आदडॆलवो केळु शिरवीरॆदरवनी पुरदरसु गड
कादलरियदॆ कळपिनलि कुंभिनिय नंदनॆय
ऒय्द गड नावरियॆवद बळिका दिनेंद्र कुलेंद्र तन्न त-
ळोदरिय नरियॆंदु कळुहलु बंदॆवावॆंद ॥ 28 ॥
ऎलवॊ नीना सतिय कंडा कलह मुंचित कंडॆनल्लदॆ
गलभॆकाररु घासि माडिद रणकसणकदलि
बळिक कै मै सींकिगारदॆ सिलुकि दॆवु सोलदलि बंधन
कॊळगु गॊट्टितु विधि पुराकृत वार वशवॆंद ॥ 29 ॥
बट्टॆ दॆगॆदॆवु निम्म रक्कस घट्टॆयर गाढणॆगॆ सैरिस
दट्टिट हिडिदरु हिडिदु सर्वॆ बडिदॆम्मनी परिय
कट्टिट तंदरु नावु लोगर बट्टॆयवरे दिट विचारिसि
बिट्टरॆयु बिडि बिडदॆ कॊलुवरॆ कॊल्लि नीवॆंद ॥ 30 ॥
आगलिद्दुदु नमगदृष्टद भोगविनितिद नॊल्लॆ वॆंदाव्
नीगखळवे हलुबि माडुवदेनु नाविन्नु

"हमारी इस नगरी में क्यों प्रवेश किया ? तुझ जैसे क्षुद्र बन्दर को तुम्हारे स्वामी ने क्यों भेजा ? २७ "ऐसी बात है ? तो सुनो। इस नगरी के राजा जो दस सिर वाले हैं —युद्ध की कला न जानने के कारण भूमि-सुता सीता का अपहरण कर ले आया। वह तो हम जानते नहीं। लेकिन उस सूर्य-कुलोत्पन्न तथा उस कुल के स्वामी के, अपनी पत्नी के स्थान का पता लगाकर आने के लिए कहने पर हम यहाँ आए।" इस प्रकार हनुमान ने कहा। २८ "रे रे ! क्या तूने उस सती को देख लिया ?" इस तरह पूछे जाने पर, "इस युद्ध के पहले देख लिया। दंगइयों ने मुझे चिढ़ाकर तरह-तरह से सताया। तत्पश्चात् हाथ और शरीर पर पड़े मारों को सह सकने में असमर्थ हो हार कर फँस गये। विधि ने बंधन में जकड़े जाने से लाचार कर दिया। पूर्वजन्मकृत कर्मफल हर एक को भोगना ही पड़ता है न ?" —इस तरह हनुमान ने कहा। २९ "तुम्हारे राक्षस वीरों के दबाव को सह सकने में असमर्थ हो हम पीछे हट गये। पीछा करते आकर, हमें पकड़कर जो हमें मारा-पीटा, फिर यों बाँधकर यहाँ ले आए। हम, लोगों के मार्ग का काँटा क्या बन सकते हैं ? इस तथ्य पर सोच-विचार कर अगर हमें मुक्त करना चाहते हैं तो करें। अगर मार डालना ही चाहते हैं तो वैसा ही करें।" इस प्रकार हनुमान ने कहा। ३० "विधि-नियम के अनुसार जो कुछ भुगतना पड़ता है उसे भुगतना ही चाहिए। हमारे ना कहने पर भी वह (विधि) हमारा पीछा नहीं छोड़ती। अब

आग लदकेनुसुरु बदुकिर्दाग लाळ्दन हगेय हवणिन
मैगुरुह नावरियें वातन तोरि तनगेंद ॥ 31 ॥
तोरबेकें निनगें करुणव तोर बेकादरें यॆनुत्तवें
तोरिसिदना सचिवपति सुरराज दल्लणन
तोरिसलु तलॆदूगि नसुनगें दोरिकॆय नयनाग्रदुग्रद
बोरिकॆयली मात नाडिदना प्रहस्तंगें ॥ 32 ॥
आयताक्षिय तंद रक्कस नायनेतकें काकताळी
न्यायदिंदवें कंडॆवै शिव शिव महादेव
आयसद कत्त लॆगें कंदॆर वयितिन्नाव् धन्यरबुज द-
ळायताक्षन पादसेवॆय लॆंदना हनुम ॥ 33 ॥
ऎलवों रावण तोरुवी जगद ळिवुपरियंतर निरर्थकें
घळिसि कॊंडॆयला महांधतमो निवासकव
कळविनलि काकुत्स्थ भूपन ललनॆयनु तरलहुदें होगॆलें
हॊलॆय सुडुसुडु निन्न मोरॆय नोडुवरॆयॆंद ॥ 34 ॥

पछताने से क्या प्रयोजन ! उसके लिए हम क्या कर सकते हैं ? हमारे स्वामी के शत्रु को तो हम पहचानते नहीं। हमारे जीवित रहते, एक बार उसे हमें दिखाइए।" —इस प्रकार हनुमान ने निवेदन किया। ३१ "तुझे दिखाना चाहिए ? तब तो तुझ पर एक प्रकार से दया का भाव दिखाना चाहिए (दया करनी है)।" —इस तरह कहते प्रहस्त ने देवेन्द्र को कँपा देनेवाले रावण को दिखाया। रावण को दिखाते ही हनुमान ने सिर हिलाते (प्रसन्नता के भाव से) मुस्कुराते तीखी तिरछी नजर से उसकी ओर (रावण की ओर) देखते हुए प्रहस्त से यों कहा। ३२ "विशालाक्षी सीता का अपहरण कर लानेवाले इस राक्षस कुत्ते को काकतालीय न्याय से न जाने क्यों देखना पड़ा ? शिव-शिव महादेव ! हमारा परिश्रम रूपी अँधेरा दूर हुआ। अब हम कमलाक्ष राम की सेवा में अपने को धन्य-भाग समझते हैं।" इस प्रकार हनुमान ने कहा। ३३ "रे रावण, यावत् यह जगत रहेगा, तावत् तूने महांधतमस् नामक नरकवास को व्यर्थ ही मोल लिया न ? ककुत्स्थवंशज राजा राम की पत्नी का अपहरण कर लाना (क्या तेरे लिए) उचित था ? रे चांडाल, तुझ पर 'थू' है। आग लगे तेरे ऐसे जीवन को। तेरा मुखड़ा देखना भी पाप है !" इस तरह हनुमान ने कहा। ३४ "(पापकृत्य को) देखते हुए भी सहते हुए (यों ऐसे को) जीवित छोड़ देना महावीरों के लिए तो सचमुच लज्जा की

कंडु सैरिसि बिडुवुदकटा भंडतन बलु वीररिगे हिडि
खंड गोय्यलु बेकु बल्लडे शास्त्र सिद्धविदु
भंडतन वाय्तेन माडुवे गंडुगलि रामनलि नेमव
कोंडु बारदे कोळ्वोदेनेनुत्त हलु मोरेद ॥ 35 ॥
जळ्ळु रक्कस निवननी हेंगळ्ळननु संतापिसुव रण
गळ्ळननु गति गेडुगननी द्रोहि रक्कसन
अेळ्ळेनितु कडिखंड माडिये होळ्ळु वारिस लूदु वेनु कै
कोळ्ळ दादेनु बरुत नेमवनकट तानेंद ॥ 36 ॥
तोरुवी संदणिय सालिन मोरेगळ मीसेगळ गड्डव
कौरिडलु सुडबेकु बल्लरे कोय्द खंडगळ
बीरु बेककटकट सैरणे दोरुवुदु कडुहीन तनगेनु
तोरिसिद कडुगोपदलि हलु मोरेदना हनुम ॥ 37 ॥
अेलवो निन्नी पुत्र मित्रावळि सहित निन्नी त्रिकूटा-
चल सहित निन गोसेदु सेरिद सकल सिरि सहित
कलकुवेनु कडलोळगे तप्पिद केलस कित्ते नेंदु हलुमोरे
दुलिदु हूंकृतिगेदु किडि किडि योदना हनुम ॥ 38 ॥

बात है। उसे (ऐसे रावण को) पकड़कर काट डालना चाहिए था। क्या करूँ? (यहाँ आने के पहले) इस कार्य के लिए उस महान वीर राम की आज्ञा प्राप्त कर जो न आया—यही बड़ी मूर्खता (मैंने) की है। हाय-हाय! कितनी बड़ी लज्जा की बात है"! इस तरह उद्गार निकालते हनुमान दाँत-ओठ चबाने लगे। ३५ इस ढपोरशंख राक्षस को, स्त्री-चोर को, चिता से जल रहे गतिहीन, धोखेबाज राक्षस को चकनाचूर करके हर्षित हो सकता था। लेकिन क्या करूँ? हाय-हाय, निकलते समय राम की आज्ञा लेकर तो नहीं आया न?—इस प्रकार हनुमान सोच-विचार में पड़ गये। ३६ "मुझे दिखायी पड़नेवाले रावण के इन पंक्तिबद्ध मुखड़ों पर की मूँछें तथा दाढ़ी के बालों को जला डालना चाहिए कि बदबू फैल जाय। मांस-खंडों को लगता है कि काट-काटकर फेंक देना चाहिए। सहनशीलता प्रकट करना मानों मेरा ओछापन ही है।" इस तरह कहते हनुमान क्रोध से दाँत कटकटाने लगे। ३७ "रे! तेरे पुत्र, मित्रों-सहित तेरी इस समस्त संपदा के साथ तेरे इस त्रिकूटाचल को समुद्र में ढकेले देता हूँ। लेकिन कर्तव्य में (राम की आज्ञा लेने में) जो च्युति आ गयी है, उसके लिए अब पछताकर क्या प्रयोजन है?"—इस तरह कहते दाँत किटकिटाते हुंकार भरते हनुमान धधकने लगे। ३८

इवन नुडिसिदडेनु हुरुळिल्लिवन नोय्दु निकुंभिनिय निज-
भवन दिदिरिन शूलदलि सॆळसॆंदु तनुजंगॆ
दिविज रिपुनेमिसलु पुण्य श्रवण वीर विभीषणनु बळि
कविरळ क्रोधंगॆ कैमुगि दॆंदनी हदन ॥ 39 ॥
चररु माडुवु दावु दाळ्दन निरतिशय विक्रांत लक्ष्मिय
सिरिय नग्गद सुप्रतापव हॊगळुवदॆ सहज
अरि विरोधकॆ दूत हिंसा चरणॆ चदुरे रायरिगॆ तरु
चर वधा परिसमय परिहासकवले यॆंद ॥ 40 ॥
आदडी कपिवरन किविगळ कोय्दु बिडि भंगस्फुरद सं-
पादनॆय सूर्यान्वयंगॆच्चरिस लिवनॆनलु
मादुदा कॊलॆ कपि वरन किविगॊय्दु चाचिद खड्ग विक्कडि
यादुदल्लदॆ हरिदु दिल्ल निलजन रोमच्चय ॥ 41 ॥
बॆरगुगॊंडसुरेंद्र मूगिन बॆरळलिरॆ बळिका प्रहस्तनु
किरुनगॆय केवणिसि नुडिदनु रामभृत्यंगॆ
उरुव नम्मी बनवनेतक मुरिदयॆनॆ किविमुच्चि नाविद
नरियॆवी हुलुबालवॆसगिद कॆलसवॆसॆंद ॥ 42 ॥

"इनसे बातें करना बेकार है। इसे ले जाकर निकुंभिला देवता के मंदिर के सामने की सूली पर चढ़ाओ।" —इस प्रकार की आज्ञा रावण ने अपने पुत्र को दी। पुण्यकारी तत्त्वों को ही सुनने की आदत रखनेवाले वीर विभीषण ने क्रोधी संतप्त रावण के सम्मुख हाथ जोड़े यों कहा। ३९
"राजदूत का धर्म क्या है? अपने स्वामी का अतिशय पराक्रम, संपदा, प्रताप आदि की स्तुति करना —यही तो है न? इस प्रकार की स्तुति स्वाभाविक है। अपने शत्रु के द्वेष के कारण उनके दूतों को हिंसा पहुँचाना क्या बुद्धिमत्ता है? आगत वानर दूत की हत्या क्या हँसी-मजाक़ है? (लज्जा की बात है।)" इस प्रकार विभीषण ने समझाया। ४०
"तब इस बन्दर के क़ान काट दो। यह, यहाँ पाये अपने इस स्वरूप-भंग को ले जाकर, रविकुलोत्पन्न को दिखाकर उन्हें चेताए।" इस प्रकार रावण की आज्ञा होने पर हत्या का कार्य तो स्थगित हुआ। कपि के कान में चुभोयी गयी तलवार के दो टुकड़े हुए। हनुमान के कान का एक बाल भी बाँका न बना। ४१ राक्षसराज दंग रह गया। उसने दाँतों-तले उँगली दबायी। तत्पश्चात् प्रहस्त ने मुस्कुराते हुए राम-दूत से पूछा— "हमारे इस श्रेष्ठ अशोकवन को तूने क्यों उजाड़ दिया?" तब हनुमान ने कानों पर उँगली दबाए कहा— "मैं क्या जानूं? मेरी इस

इवन सम्मतवल्ल गडतद् व्यवहरणॆ लांगूलदलि सं-
भविसिदुदु गड कडिय लसदळ वादडग्नियलि
निवसनद लॆण्णॆयलि हरुवनु हवणिसुवुदॆनॆ तप्तदॆंदा
दिविजपतिजितु बिन्नविसिदनु राक्षसेंद्रगॆ ॥ 43 ॥

होर बेडिदरॊडनॆ शस्त्रद गारुडवु गर्विसदु बॆवरदु
भूरि बाधॆगॆ बालवनु सुडुवदॆ सुनीतियॆनॆ
भूरिबल बालदलि हॆणगिदु होरि बळललु बळिकला श-
क्रारि कैदीविगॆ गळिदिरिसिदनु कपिवरन ॥ 44 ॥

चीऱि किऱि किऱिगुट्टु तट्टळ वाऱि बिद्दनु हलुगिरिदु हु-
ब्बेऱिसुत हणुगुत्त हॆदरुत तलॆय चट्टक्कि
तोऱिसिद दीविगॆगॆ करुणव तोरुतित्तनु बालवनु नगॆ
गाऱरिगॆ नाटकव नटिसुत वीरहनुमत ॥ 45 ॥

भाव सिक्किद नॆंदु सभॆय विभावरी चररुब्बि नगॆयलि
पावमानिय मुक्कुऱिक्किदरळ्ळॆ गुक्कि नलि

छोटी-सी पूंछ का वह (उजाड़ने का) काम है। ४२ "तो यह (उद्ध्वस्त करने का) कार्य इसके अनजाने हुआ और जो कुछ हुआ इसकी पूँछ के कारण हुआ। अतः यदि इसकी पूँछ काटना असंभव हो तो कपड़े (लिपटाकर) तथा तेल से (उँड़ेलकर) पूँछ को जला डालो।" —इस तरह रावण की आज्ञा होने पर "आपकी आज्ञा का अवश्य पालन होगा" —इस प्रकार इन्द्रजित् ने राजा से निवेदन किया। ४३ "इससे झंझट मोल लेना बेकार है। आयुधों का जादू इस पर चल नहीं सकता। भारी ज़बर्दस्त वेदना पहुँचाने पर भी यह टस से मस नहीं होता। इसकी पूँछ जलाने में ही हित है।" इस तरह इन्द्रजित् ने कहा। भारी बलवान राक्षस उस पूँछ से लड़कर तंग आ गए तो इन्द्रजित् ने हस्तदीपों से कपिश्रेष्ठ को चुभवाया। ४४ किलकारियाँ भरते, चीखते हनुमान ऊपर की तरफ़ उछले। दाँत निकालकर भौंहें चढ़ाए देह को संकुचित (छोटा) करते, डरते सिर झुकाए, दियों पर दया दरसाते पूँछ को उनके हाथ (में) दिया। वीर हनुमान ने मसखरों के लिए नाटकीय अभिनय दिखाने का मानों नाटक ही खेला। (हनुमान के सारे हाव-भाव इस समय के पूरे-पूरे नाटकीय थे)। ४५ 'शाबाश, बच्चा फँस गया'! इस तरह कहते सभाभवन में उपस्थित राक्षसों ने खुशी के मारे एक-दूसरे को झकझोरते हुए हनुमान को घेर लिया। अत्यधिक क्रोध से रावण ने सभाभवन में

तीविदतिशय रोष दिंदा रावणनु बेससिदनु बळिकसु
रावळिगॆ सुडि कपिय बालवनॆंदु सभॆयॊळग ।। 46 ।।
अडसि बळिकरवत्तु साविर दडिग रक्कस रनिजन बलु
गडिय बालव नुगिदरा लयदहिय नुगिवंतॆ
झडिदु तैलदलद्दि सीरॆय नुडिस लुद्योगिसिदरै जग-
दोडॆय तॊरवॆय राय नरकेसरिय किंकरन ।। 47 ।।

ऎंटनॆय संधि

सूचनॆ— त्रिपुरदहनद भाळलोचननुपमॆ गॆवडियॆनलु मारुति विपुळवह्निय वदनदलि नूकिदनु रिपुपुरव ।

केळिदै कुश कल्पितोग्रकराळ कायद कपिय कर्बुर
राळुगळ् कैमाडि कॆंदीविगॆ गळॊग्गिनलि
बालवनु बरसॆळॆदु धारॆय तैल दद्दुगॆयरु वॆगळलु-
ब्बाळुगळु सुत्तिदरु सूर्यान्वयन किंकरन ।। 1 ।।
सुत्त सुत्तलु बॆळॆवुतिर्दुदु हत्तु नूरिन्नूरु तद्विगु-
णोत्तरद परिविडिय परिवृद्धियलि सीरॆगळ

उपस्थित राक्षसों को आज्ञा दी— "बंदर की पूंछ को जला डालो" । ४६
साठ हज़ार मदोन्मत्त राक्षस हनुमान की उस भारी जबर्दस्त पूंछ को पैर तले दबाकर इस तरह खींचने लगे मानों प्रलय-सर्प को खींच रहे हों। तेल में कपड़े भिगोकर जगत्प्रभु तॊरवॆ के स्वामी नरहरि के सेवक की पूंछ को लपेटने की कोशिश करने लगे। ४७

आठवीं संधि

सूचना— त्रिपुर को जला डालनेवाले भालनेत्री शिवजी की तुलना में मानों पांच गुने अधिक प्रखरता दिखाते मारुति ने शत्रु-नगरी को भयानक अग्नि के मुंह में झोंक दिया ।

सुनते हो न कुश । राक्षस के घमंडी सेवकों ने हस्त-दीपों की पंक्तियों के मध्य भयानक रीति से बढ़े कपि के शरीर पर वार कर, सूर्यकुल के राम के सेवक (हनुमान) की पूंछ को खींच-खींचकर तेल में भिगोए कपड़े लपेटे । १ जैसे-जैसे कपड़ा लपेटते गये, पूंछ बढ़ती ही गयी । दस गुना, सौ गुना, दो सौ गुना —इस तरह दुगुने वेग से कपड़े पूंछ में लपेटते गये । फिर भी क्षण-क्षण पूंछ बढती जा रही थी । इस (चमत्कार को)

सुत्तु तिर्दरु बेळेवु तिर्द्दु होत्तु होत्तिगे नोड नोडलु
तुत्तिद्दु कंगळिगे कौतुक वसुरवल्लभन ॥ 2 ॥
तिद्दि मीसेय मुरुहि रक्कस नेंद्दु निदिद्दनुचरर बिड
दद्दलिसे तंदोट्टिदरु गते जीर्ण वस्त्रगळ
अद्दि तैलद लरुवे गळनुब्बेद्दु सुत्तिदरनिलजन होर
बिद्द ब्रालव नोडेदोदेदु हुरिकटिसि खळनिकर ॥ 3 ॥
तीरतीरलि कोट्टुतिर्दरु भारसंख्येय बण्ण बिळिदिन
सीरे बुद्दणि हाडपक्कले कंबिगळ कोडन
धारेगळ घृत तैल बसेगळ सार कट्टिटतु तोदु सुत्तुव
भूरिरव हिग्गिसितु हनुमन हेळलेनेंद ॥ 4 ॥
तरतरद कोप्परिगेगळु सासिरद संख्येयलि लिळुहिदवु सुरि
सुरिव तैल तटाक जीर्णद वसनवपरिमित
हरिपदाब्जपरागमद मधुकरन महिमोन्नतन बालद
हरहिनलि हिंगिदवु हवणिसदाय्तु लांगूल ॥ 5 ॥
धरणिजा सुत केळु मूर्खर गुरुवला छलपद परिग्रह
दुरुळ दुर्नीतरिगे कर्तृवला दशग्रीव

देखकर राक्षसेश्वर की आँखें कौतूहल (विस्मय) पूर्ण हुई। २ मूँछों पर ताव देते हुए राक्षस खड़े होकर सेवकों को धमकाने लगे। वे पुराने कपड़ों के फटे चीथड़े-लत्ते लाकर ढेर बनाने लगे। धीरज धरे राक्षसों हनुमान की अभी (लिपटे जाने पर भी) बाहर बची पूँछ पर तेल में भिगो-भिगोकर, ठूँस-ठूँसकर बड़ी स्फूर्ति से कपड़े लपेटने लगे। ३ जैसे-जैसे कपड़े समाप्त होते गये, वैसे-वैसे तरह-तरह के रंगों के सफ़ेद कपड़ों के ढेर सारे जमा करते गये। तेल भरे तरह-तरह के पात्र, कुप्पे-कुप्पियाँ, झंडे से लटकते (तेल-भरे) घड़े तथा घी, चरबी, वग़ैरहों का एक सरोवर-सा निर्मित हुआ। उसमें डुबो-डुबोकर पूँछ पर कपड़े लपेटते समय जो भारी शोरगुल कर रहे थे उससे हनुमान और फूले। उसका वर्णन कैसे करें—इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। ४ तरह-तरह के आकार की तेल की कड़ाहियाँ हज़ारों की संख्या में लायी गयीं। अविरल धारा में प्रवाहित हो रहा तेल, जमा किये गये चीथड़े-लत्तों के ढेर अनगिनत थे। श्रीमन्नारायण के चरण-कमलों के (पुष्प) पराग से मदोन्मत्त बनी मधुमक्खियों की अपार महिमा के हनुमान की, पूँछ के विस्तार के सम्मुख कहीं की न रही। पूँछ के छोर का पता तो लगा ही नहीं। (कितनी लंबी है कोई अज़मा न सका।) ५ हे जानकी के पुत्र, सुनो। दशकंठ मूर्खों के गुरु जो ठहरे। हठी-ज़िद्दी,

पुरद हननवु पुरदहननिदोरकुवद लायॆब बुद्धिगॆ
बरडनागि बळिक्क रक्कस रायनितॆंद ।। 6 ।।
ऒडॆयिरो कणजगळ नॆण्णॆय नडकिरो सीरॆगळ दिंडनु
बिडिसिरो तोदुडि सिरो तडवेनु बेगॆनुत
झडियॆ झडितॆगळिद रक्कस रडकि तैलांबरद लीतन
निडिय बालव सुत्तुतिर्दरु लक्क संख्यॆयलि ।। 7 ।।
अॆडॆगॆडॆगॆ हत्तिगळ हॊरॆगळ हॊडचिद रॆळॆय सुत्तिदरु म-
त्तॆडॆ यॆडॆगॆ पुडियरगु सज्ज रसादि धूसरद
हॆडगॆगळ हॊय् हॊय्दु हॊरदॆडॆ यॆडॆगॆ बसॆगळ बळिदु बालव
बिडदॆ सुत्तलु बॆळॆवु तिर्दुदु मत्तॆ लांगूल ।। 8 ।।
तीरिदवु हळॆसीरॆ वस्त्रागार दखिळांबरद हॊरॆगळ
सार सवॆदवु सवॆदवसुरर कणज कॊट्टिगॆय
मेरॆयिल्लद तैल घृत बळि कूर हरदर हारुवर बे
हारिगळ बलु सूरॆयादुदु केरिकेरियलि ।। 9 ।।
दॊरॆ दॊरॆ गळरमनॆय मंत्रीश्वरर मंदिरदरसुमक्कळ
परिसरद निळयंगळाप्त नियोगि परिजनद

दुष्ट, दुराचारियों के तो वे नेता हैं ही। हनुमान के कारण सारी राजधानी जलकर खाक होगी —यह न जानने के कारण मतिहीन हो —राक्षस राजा ने यों आज्ञा दी। ६ "खलिहानों को तोड़ डालो; तेल लाकर जमा करो। कपड़ों के थानों को खोलकर (तेल में) भिगोकर पूँछ में लपेटो। मुँह क्या देखते हो? देर न करो।" —इस प्रकार (रावण ने) जो धमकाया राक्षस झटपट तेल में सराबोर कपड़ों को लदवाकर हनुमान की लंबी पूँछ में लाखों की संख्या में लपेट रहे थे। ७ कपास के गट्ठरों से कपास की परत निकाल-निकालकर बीच-बीच में लपेट रहे थे। बीच-बीच में लाख (लाक्षा) की बुकनी, राल के ढेर फोड़कर पूँछ पर उसकी बुकनी छिड़काकर लेप किया। बीच-बीच में चर्बी थोपकर पूँछ में कपड़े लपेटे जा रहे थे तो पूँछ बढ़ती जा रही थी। ८ पुराने कपड़े समाप्त हुए। कपड़े की दुकानों, कोठियों आदि के सारे कपड़े समाप्त हो गये। राक्षसों के कपड़ों के खत्ते, संग्रहालय तथा घी-तेल के सभी संग्रहालय खाली हो गये। नगर की गली-गली के व्यापारियों के, ब्राह्मणों के, घर सब खाली कर दिये (अर्थात् सभी के पास स्थित तेल आदि मँगाये गये) व्यापारियों की गली की गलियाँ खाली हो गयीं। ९ राजाओं के महलों में, मंत्रियों के मंदिरों में, राजपुत्रों के चारों तरफ़ के

पुरजनद संचितद वस्त्राकरुषणवु बळिकाय्तु लंका-
पुरद गावळि गुडियिरिदु गाडिसिदुदगलदलि ॥ 10 ॥
अंगडिय गाणिगर वणिजगृहंगळू रोळगुळ्ळ कुसुबे क
वुंगु बेववुडलिके हुलिगिलु तारे यगसेगळ
तेंगु सासुवे यिप्पे गेरु विळंग वंकले मुख्य तैलद
संगुडिय संवरणे सर्वेदवु कपिय बालदलि ॥ 11 ॥
होळल धनिकर धार्मिकर मनेगळलि दोरेगळ भवन वसनग
ळुळिदु दिल्लवरवर गृहघृत तैल वेनि तिनितु
बळिदु बंदुदु जीय बालद बेळविगेगे बिडुविल्लवेने खळ
तिलक तरिसिदनंबरव नंतःपुरीजनद ॥ 12 ॥
बेळेवुद मरिद सीरे हिदक्कुळियलद कोरणिसि मुंद-
ग्गळिसिहुदु बळिकनित कोदगिसे मत्ते होडकरिसि
मोळेतिहुदु मुसुकालकनित वेग्गळिसिहुदु मऊसल्कनित मुं-
कोळिसिहुदु बलु बालदंड समीरनंदनन ॥ 13 ॥
काण बरुतिदे बाल बिल्ल प्रमाणि नष्टडगदिदे पुर नि-
र्वाणदलि निलिसिदेवु निन्न कुमारवर्गगळ

निवास स्थानों में, निजी अधिकारी तथा परिचर्या करनेवालों के घरों में, नगरी के प्रजाजनों में संग्रहीत सारे कपड़ों को जबर्दस्ती ले आए। लंका नगरी के लोगों के गिरोह यत्र-तत्र झुंड के झुंड इकट्ठे हुए। १० शहर भर के तेलियों की दूकानों में, बनियों के घरों में प्राप्य कुसुंबा (घमोई), सुपारी, नीम, एरंड, बिनौले (कपास के) तीसी, नारियल, सरसों, जैतून, करंजा, पुन्नाग आदि प्रमुख तथा तरह-तरह के तेलों का सारा संग्रह बन्दर की पूंछ के लिए व्यय हुआ। ११ "नगर के अमीरों के घरों के, धार्मिकों के घरों के, राजाओं के भवनों के कपड़ों में से कुछ भी न बचा (सब प्रयुक्त हुआ)। इनके घरों में तेल, घी जो कुछ भी था सब साफ़ किया गया। राजन्, फिर भी पूंछ बेहद, लगातार बढ़ती ही जा रही है।" —इस प्रकार बताए जाने पर राक्षसश्रेष्ठ रावण ने अंतःपुर की स्त्रियों के कपड़े मँगवाए। १२ जैसे-जैसे पूंछ बढ़ती गयी, लपेटा गया वस्त्र कम पड़ता गया। बढ़ी हुई पूंछ की व्यवस्था हो जाने तक, वह और आगे (अधिक) बढ़ जाती थी। फिर उस बढ़े हुए (पूंछ के लिए) हिस्से के लिए कपड़े की व्यवस्था हुई कि नहीं, पुनः वह स्फुरित हो, बढ़कर (कोंपल की तरह) नीली पड़ जाती। उतने भर को कपड़ों से लिपटने तक वायुसुत की पूंछ का दंड और आगे बढ़ जाता। १३ एक धनुष के माप बराबर

राणियरु सहितिन्नु युक्तिय काणें वेंनलति मूर्खना मुं
गाणदव नीगिदनु तन्नमलांबरव नुरिगें ॥ 14 ॥
पट्टे पट्टा वळिय सुरपति कोंट्ट कै गाणिकेंय धनपति
मुट्टि होंदिसिद चीनि चीनांबरवनज हरसि
कोंट्ट दिव्य दुकूलगळ यम कोंट्ट अंगेंगळ वरुण काणिकें
गोंट्टरुण वसनगळ पेंट्टिगें तीरिदवु वळिक ॥ 15 ॥
रंगु चित्रवसंतरति साळंग गुज्जरि रतुन रवेंय भु-
जंगवल्लरि पल्लवावळि मकर चित्रलतें
भृंग लतिकें सुवर्ण फळिमद नांग लेखें सुराग रचित तु-
रंग विलसित वसन बालकें सेरिदवु कपिय ॥ 16 ॥
हळदि संध्याराग हरिणावळि हयावळि हस्ति हरिमुख
विलसितावळि विविध चित्रलतांत लतिकेंगळ
फळिसुरेख मयूर हंसावळि सुरावळि मेघवण्णिगें
गळ नवीनद निवसन गळोंप्पिदवु वालदलि ॥ 17 ॥

(लंबी) पूंछ अभी तक बची (बाक़ी) दिखायी दे रही है। उसे ढाँप नहीं सके। तुम्हारे बेटों को, उनकी रानियों-सहित सारे नगर को, नंगा करना पड़ा (फिर भी सफलता ना मिली)। अब समझ में नहीं आता कि क्या करें ?" इस प्रकार बताए जने पर महामूर्ख रावण ने परिणाम पर ध्यान न देते हुए अपना श्रेष्ठ वस्त्र भी जलाने के लिए दे दिया। १४ इन्द्र से भेंटस्वरूप प्राप्त रेशम तथा रेशमी साड़ी, कुबेर ने अपने हाथों से उढ़ाया चीनांबर (चीन का रेशम का कपड़ा) ब्रह्माजी से आशीर्वाद के रूप में प्राप्त रेशम का कपड़ा, यम से प्रदत्त (पैर तक का) अचकन, वरुण से भेंटस्वरूप प्राप्त लाल कपड़ा वग़ैरः तरह-तरह के कपड़ों से भरी पेटियाँ (इस कपि कार्य में) खाली हो गयीं। १५ तरह-तरह के रंगों के वसंत तथा रतियों से चित्रित वस्त्र, उसी प्रकार साळंग, गुज्जरि नामक रत्नों के छोटे कंकड़ (टुकड़े), सर्पगुच्छ, कोंपलें, मगर की पंक्तियाँ, भ्रमर की पंक्तियाँ —वग़ैरहों से चित्रित वस्त्र तरह-तरह के घोड़ों के चित्रों से विराजित वस्त्र कपि की पूंछ में लपेटे गये। सोने की जरी के रेशम के कपड़े मदनांग-लेखा से चित्रित वस्त्र भी प्रयुक्त हुए। १६ पीले तथा संध्या-लालिमा के रंगों के, हिरन, घोड़ा, शेर, हाथी के मुखों से तथा विविध प्रकार के बेल-बूटों के रेखा-चित्रों से चित्रित अत्यंत सुन्दर रेशम के कपड़े, मोर, हंस, देवता तथा मेघों के चित्रों से शोभायमान नये कपड़े हनुमान की पूंछ की शोभा बढ़ाने लगे। १७ आम्रवृक्ष की कोंपलें, मांजिष्ठा बेल,

मादळिए मंजटिकॆ माधवि मैदोंडव सावंत सोगसिन
बीदि बिळिदॆळ गावि संपगॆ गावि तॆळुगावि
ऎदॆ देशि सरोजवल्लरि पादपावळिपट्टॆ गळु मॊद-
लाद विविधांबर गळॆसॆदवु कपिय बालदलि ॥ 18 ॥
गौरिगणॆय कुरंजि कुंकुम वार नारि बॆडंगु वरसिं-
धूर मंजरि मन्मथावळि मकर चित्रलतॆ
चारुचपल चतुरतर शृंगार नायकियर नवांबर
मारुतिय बालदलि बॆळॆदवु बिडदॆ बॆबळिय ॥ 19 ॥
बिळिदु बॆबिळि दॆळॆ बिळिदु पॊप्पुळि पॊसुमॆडि पट्टॆ पट्टॆय
पळि सुरंग सुराग बॊबॆय बण्ण मॊदलाद
हळवु देशद देशियद भूतळ भुजंगम भुवनवीथिय
विलसदंबर विबुगॊंडुदु कपिय बालदलि ॥ 20 ॥
उडुव सीरॆगळुळियॆ बंदवु बडवु बिनुगु समर्थरॆन्नदॆ
नुडियलम्मॆवु जीय मॊरॆ बलुहादु दूरॊळगॆ
बिडदु बॆळविगॆ बालदलि निलुकडॆगॆ बुद्धिय काणॆवॆनॆ काळ्-
गॆडॆयदूरनु सुलियि होगॆंदसुर घर्जिसिद ॥ 21 ॥

माधवी लताओं के अलंकारों से युक्त वस्त्र, वैभव की सुषमा से शोभायमान हल्की सफ़ेदी, हल्की लाली (गेरुवा रंग) चंपा की लाली वग़ैरः तरह-तरह के रंग-बिरंगे कपड़े तरह-तरह के वृक्षों के चित्रों से सम्मिश्रित चित्रित देशी कपड़े, धारीदार कपड़े हनुमान की पूँछ में शोभायमान हुए। १८ गोरोचन, सुगंध, कुंकुम आदियों से लिपे-पुते वेश्या-स्त्रियों के जगमगाते कपड़े तथा सिंधूर पुष्पगुच्छ, मन्मथचित्र, मकरिका लता के चित्रों से अलंकृत सुन्दर, मनोहर वेश्या-स्त्रियों की नयी-नयी साड़ियाँ एक के बाद एक-एक करके लगातार हनुमान की पूँछ में लपेटी गयीं। १९ सफ़ेद, गाढ़ा सफ़ेद, हलका सफ़ेद वस्त्र, चौकड़ी कपड़ा, हरा आलवाल, धारीदार रंग-बिरंगे सुन्दर कपड़े, गुड़िया के रंग के, अनेक देशों के तथा स्वदेशी भूलोक के, नागलोक के सुन्दर-सुन्दर कपड़ों ने कपि की पूँछ में जगह पायी। २० "पहनी साड़ियों को छोड़कर अन्य सभी कपड़े आए। शहर के ग़रीब, क्षुद्र, अमीर आदि ऊँच-नीच-भावना भुलाकर सभी की माँग बढ़ती गयी। अब वर्णन करना हमारी शक्ति के बाहर है महाराज! पूँछ का बढ़ना तो रुका नहीं न? इसे समाप्त करने के लिए क्या करना चाहिए? यही समझ में नहीं आता न।" —इस प्रकार कहने पर, "यह बकझक अब बस करो; गाँव भर के लोगों के पहने कपड़े खींच लाओ।" इस तरह रावण गरजा। २१

केळिदनु हनुमंतना कडु खूळ रक्कसनेंद मातनु
केळि किविगळ मुच्चिकोंडनु राम रामेंनुत
खूळनिव तानादडावति खूळ रहुदनु चितवला नाव्
हेळुवेवु बालक्कें बुद्धिय नेंदना हनुम ॥ 22 ॥
भंडनिवनी खळनु लोकद भंडरिगें गुरु नाणु नसिकर
चंडियिवनलें बालवे साकिन्नु बेंळेयदिरु
कंडवरनिव सुलिय दिरनी भंड तन दवरल्ल नाव् कें-
कोंड कॆलसव कडेंय निनगिन्नरुह लेनेंद ॥ 23 ॥
इळॆय ललना जनवॆनगॆ ताय्गळु मरुळ्तन बेंड वरिदे
बेंळॆय दिरु वेंळसदिरु नम गपकीर्ति साधनव
हॊळल पुण्य स्त्रीजनद नाणळिय बंदेंवे वंदकार्यद
नॆलॆय नीने नोडिको येंने निंदुदा बाल ॥ 24 ॥
कट्टिटदी कौपिदनु कमलज कॊट्ट निनितकें पूर्वभवदलि
कॊट्टु हुट्टिटदु दिल्ल वागि, निदानविदु नमगॆ

उस दुष्ट राक्षस का कथन हनुमान ने सुना। सुनकर "राम, राम !" कहते हनुमान ने अपने कान ढाँप लिये। 'यह राक्षस दुष्टता की पराकाष्ठा पर पहुँचा; उस हद तक पहुँचना मेरे लिए उचित नहीं। मैं अपनी पूँछ को उपदेश देता हूँ ! (कि अनुचित रीति से न बढ़े।)' इस तरह हनुमान ने कहा। २२ यह राक्षस निर्लज्ज है। दुनिया भर के लफंगों का गुरु है; और निर्लज्जों में प्रचंड है। अतः री पूँछ, अब बस कर; आगे न बढ़। यह जिस किसी की लूट किये बिना न रहेगा। मैंने तो इसकी तरह लज्जा का परित्याग नहीं किया। मेरे यहाँ आने के कार्य संबंधी उपसंहार क्या तुझे बता देना चाहिए ! इस तरह हनुमान ने कहा। २३ "जगत की नारियाँ मेरी माताएँ हैं। अतः अब पागलपन छोड़ और मत बढ़। हमारी बदनामी मत कर। इस नगर की पुण्यवती स्त्रियों को क्या हम निर्लज्ज बनाने यहाँ आए हैं ? हमारे आने का उद्देश्य तू समझ ले।" इस तरह हनुमान ने जब अपनी पूँछ से कहा तो उसने बढ़ना बन्द किया। २४ "मैंने यह जो लँगोट (कछौटा) बाँधा है, वह ब्रह्मा का दिया हुआ है (इसके सिवा मेरे पास कुछ भी कपड़ा नहीं)। शायद इसका कारण यही है कि पूर्वजन्मकृत दान-पुण्य को लेकर हम जन्मे नहीं है। पता नहीं पूर्वजन्म में न जाने कितना पुण्य किया था। तभी तो इतने कपड़े पहनकर विराज रही हैं। यथेष्ट हैं। अब अपनी वीरता

नॆट्ट नादिय लाव सुक्तव मुट्टि नी माडिदॆया निन्नवॊ
लुट्टु मॆरॆदवरारु साकिन्न धट्टु तनवॆंद ॥ 25 ॥
संतविसिदुदु बाल बळिक सुरांतकन निजचरन नेमदं
लंतरिक्षव नळ्ळिरिदु दुदित प्रतापदलि
तंतु पट साकिन्नु बॆळविगॆगंत वादुदु सुलिय दिरि हो-
संत विसियॆं दॊदरिदवु डगुर गळल्ललि ॥ 26 ॥
कुमति रावणनॆद्दु बळिकु भ्रमि निशाटर करॆदु नेमिसॆ
निमुषदलि हत्तिदरु हॊत्तिक्किदरु हुतवहन
अमरितुरि बालदलि रघु भूरमण ननुचर नरिचि कॆडॆयलु
तमतमगॆ घॊळ्ळॆंदु गुहिलिक्कितु भटस्तोम ॥ 27 ॥
जाणनै शक्रारि वर्मव काणिसिदनी कपिगॆनुत गी-
र्वाण रिपुवड बिद्दु तंबुल सूस लॆडबलकॆ
गोणुगळ नॊरॆगिसुत नगलक्षीण बलनद कंडु मनदलि
माणिसुवॆ नी नगॆय सॆरिसु तवकवेकॆंद ॥ 28 ॥
ऊरॊळीतन मॆरॆसि महिजा नारिगीतन तोरि तडॆयदॆ
वारिधिय हॊरवडिसि बिडि तन्नॊडॆय निद्दॆडॆगॆ

और अधिक मत दिखा।" इस तरह हनुमान ने अपनी पूंछ से कहा। २५ राक्षसारि राम के दूत की आज्ञा से पूँछ शांत होती है। वह अपनी वीरता दिखाते आकाश में लहराने लगी। "अब और कपड़े नही चाहिए। पूँछ ने बढ़ना बन्द कर दिया है। (कपड़ों की) लूट बन्द कर दो। सावधान हो जाओ।" इस तरह ढिंढोरा पीटते सारे गाँव को सचेत कर दिया। २६ तदनंतर दुर्बुद्धि परिपूर्ण रावण ने उठकर भ्रांत राक्षसों को बुलाकर आज्ञा दी तो उन्होंने क्षणार्ध में पूँछ को आग लगा दी। पूँछ में आग लगते ही चीखते-चिल्लाते राम-सेवक हनुमान नीचे गिरे। यह देख, राक्षस सैनिक आपस में ठहाका मारकर हँसने लगे। २७ "इन्द्रजित् कितने बुद्धिमान हैं। इस कपि को क्या ही सुन्दर कवच पहना दिया है।" इस तरह कहते, मुँह चबाते (पान के) बीड़े को बाएँ-दाएँ सरकाते, कंठ टेढ़ा बनाते लोट-पोट हो ठहाका मारे जब रावण हँसने लगे तो हनुमान मन ही मन कहने लगे, "तेरी यह हँसी-मज़ाक़ अभी बन्द कर देता हूँ। इसे झेल ले। उत्कंठा क्यों?" २८ "शहर भर में इसका जुलूस निकालकर भूमिसुता को इसके दर्शन कराकर तुरन्त समुद्र में ढकेल दो। वह अपने स्वामी के पास लौट जाए।" इस तरह नारी-चोर रावण ने आज्ञा दी। तब

दारिदॆंगॆयलि यॆंदु नारी चोर नेमिसॆ बळिक बल्लिद
वीर भट रोत्तागि हॊरवंडिसिदरनिलजन ॥ 29 ॥
हणॆगॆ मसियनु बरॆदु निडुदासणद दंडॆय हाय्कि हग्गद
कुणिकॆ गळ सरिदॆरडु मैगळ लुब्बि बॊब्बिरिदु
कुणिसि कैचप्पळॆ गळलि वोरण कॊळल्कॊंबुगळ सबुदद
लणियरदलनिलजन तंदरु राजबीदियलि ॥ 30 ॥
नॆरॆदुदै नोटकरु नगॆगळ हॊरळिगळ लंगडिय हसरद
हुरिगडलॆ गुड हण्णु हंपलुगळनु हाय्कुतलि
नॆरॆनॆरॆदु कुणिदाडिसुत निजपुरद कडॆगोटॆय कवाटद
हॊरगॆ तंदल्लिद बॊब्बिरि दॆब्बिदरु कपिय ॥ 31 ॥
अधिक बल नसुनगुत लल्लिए विधिय पाशव हरिदु कोपद
कदव कळचिदु कॆक्कळिसि कैयिक्कि परिघदलि
निधन गॊळिसिद नॆडबलद वैबुध विरोधिगळनु बळिक्करि
वधॆगॆ हेसदॆ हनुम तिरुगिद नट्टु तरिबलव ॥ 32 ॥
तिरुहि बालद कॊनॆय वह्निय नुरिगॊळिसि पुटनॆगॆदु निंदनु
सरिसदलि सुर नर भुजंगम भुवनदल्लणन

बलवान राक्षस-समूह ने इकट्ठे होकर हनुमान को वहाँ से हटाया। २९ माथे पर स्याही से लिखकर, अडहुल के फूलों की लंबी माला गले में डाल, रस्से का फंदा बना हनुमान को बाँधे दोनों तरफ़ से पकड़कर खुशी के मारे किलकारियाँ भरते उसे नचाते, तालियाँ पीटते राक्षस चले। जुड़वे डफले, तुरही आदि के गाजे-बाजों के साथ बड़ी धूम-धाम से सड़कों पर बुला लाये। ३० दर्शकों ने क़हक़हे लगाते आ घेरा। दुकानों की क़तारों के सामने (आने पर वहाँ) भूने चने, गुड़, फल आदि (सामने) डालते हुए, जहाँ-तहाँ झुंड में इकट्ठे होकर नचाते हुए लंका नगरी के आखिरी परकोटे के द्वार के बाहर उसे ले आए। वहाँ भारी शोरगुल मचाकर कपि को भगा दिया। ३१ अत्यधिक बलवान हनुमान ने मुस्कुराते हुए, एक झटके में ब्रह्मपाश छिटका दिया (तोड़ डाला) तथा अपने क्रोध के द्वार खोलकर घूरते गुर्राते ब्योंड़ा उठाकर आसपास के राक्षसों को मार डाला। शत्रु-हत्या करने में आगा-पीछा न करते शत्रु-सेना को भगा देकर नगर की ओर मुड़े। ३२ पूँछ को हिलाते, (उसकी) कोर पर लगी आग को प्रज्वलित कर उछल-कूद कर स्वर्ग-मृत्यु-पाताल लोकों को चकनाचूर कर डालने की शक्ति रखनेवाले रावण के सम्मुख हनुमान आ डटे।" यह महामारी लौट

मरळि बंदुदे मारि कोय्दनु कोरळ निद्रारति येनुतु
ब्बरद भीतिय लोडिदुदु देसेदेसेगे पौरजन ॥ 33 ॥
तरणिवंशज केळु पवनज नुरवणेगे सभे बेच्चिदुदु दश-
शिरनु धैर्योत्करनु कोंडनु वीरखंडेयव
हरिब बलु हेमगेले विभीषण तेरळु कैतप्प हुदेनुत कपि-
करद खंडेयदसुरना नन केड़िसिद नुरिय ॥ 34 ॥
बेदड़ि बळिकसुरेंद्र गड्डव नदुरिसुत गगनक्के हाय्दनु
होदकेगळ बिसुटोडितल्लिय दल्लि भटनिकर
तुदिवेरळ लुब्बिबड़िदु कपि कैगुदिगेयलि बेदड़ि टट्टिन्पदु (?)
सदेदु सुळिदनु मत्ते रक्कसराय नरमनेगे ॥ 35 ॥
तुरुकिदनु तुदिवाल दग्निय निड़िसि नुदित शिखाळियनु बो-
ब्बिड़िदु बरुहिर्मुख विरोधिय भद्र भवनदलि
मोड़िय बय्गळ बाय होय्गळ तेड़द मेलुदिनसुरराय न
कुरुहिनरसियररिके यायितु पुरजनंगळिगे ॥ 36 ॥
बालेयर निडुमुडिय नीरोड़ वालिगळ करतळदि जठरव
सूळविप हाहारवद कळकळद कळवळव

पड़ी न ? इन्द्रजित् ने हमारा गला ही काट डाला (धोखा दिया)।" इस तरह कहते भयभीत नगरवासी सिर पर पैर रखकर जिधर-तिधर भागे। ३३ हे सूर्यकुलोत्पन्न ! सुनो। वायुपुत्र की आँधी के कारण सभा काँप उठी। धैर्यशाली रावण ने तलवार उठायी। "मुझे और भी कई कार्य करने हैं। विभीषण गलती से कहीं कुछ हो सकता है। इसलिए तुम तुरन्त चले जाओ।" इस तरह कहते हनुमान ने तलवार-धारी रावण के मुखड़े को आग लगायी। ३४ राक्षसराज काँप उठे; अपनी दाढ़ी-मूंछ रगड़ते-रगड़ते आकाश की ओर उछले। वहाँ उपस्थित राक्षस वीर अपने बदन पर के कपड़े उतार फेंक नंग-धड़ंग ज्यों के त्यों जिधर-तिधर भाग खड़े हुए। हनुमान ने उनको उँगलियों से खरोंचते, हाथ के लट्ठे से डराते-धमकाते, पीछा करते जाकर पीटते, फिर रावण के राजमहल में प्रवेश किया। ३५ हनुमान ने चीखते-भुभुकते (अपनी) पूंछ की कोर से निकलती आग की ज्वालाओं को राक्षसराजा के राजमहल की अट्टालिकाओं में घुसा दिया। नगरवासियों ने अनुभव किया कि राक्षस-राजा रावण की निजी रानियाँ अपनी ओढ़नी उतार फेंक चीखती-चिल्लाती, दीनतापूर्ण क्रन्दन करतीं, गालियाँ बकतीं छाती पीट रही थीं। ३६ बिखरे बालों वाली रानियाँ आँसू बहातीं छाती पीटती हुई

केळि बळिकसुरेंद्रनबला जालवनु पुष्पक दोळिरिसि वि-
शाल बलननिलजन गर्जिसि निंद निदिरिनलि ।। 37 ।।
मसगि मारांतसुर रायन मुसुडुगळ मुंभागदलि जा-
डिसिद नुरिय विमानदग्रदलभ्रमंडलकें
वसति येंनित नितनु महाग्निय वसुरोळगें वैंचिट्टु वोब्बिरि
दसमबल तिरुगिदनु तिरुहुत लाळविडिगेय ।। 38 ।।
गगनदलि बळिकसुरपति धगधगिप किच्चनुकंडु बेंच्चिदु
बेंगडिनलि बेंससिदनु वळिसंदसुर संकुलकें
तेंगेय हेळिदु कुंभकर्णन नगिव वोव्बेंय ळळविगळुकद
विगड रक्कस रेंक्क तुळदलि होंक्क रुरवणिसि ।। 39 ।।
मुरिदु वागिलु गळनु संधिसि सरिग रक्कस किंकररु नेंल
नरिचें हूणिसि होंत्तरसिताचलव होरुवंतें
तोरेंद जीवद हेंणन नगरद होरगें विसुडुव वोलु विसुटरु
मुरिगेंद्दु खळरोडलु पलंकेंयलि रक्कसन ।। 40 ।।

"हाय-हाय ! दैया रे दैया !" इस तरह चीखती-चिल्लातीं जो शोरगुल कर रही हैं—यह देख राक्षसराजा ने उन सभी रानियों को पुष्पक विमान में बिठाया। उसके बाद (वह) अत्यंत बलसंपन्न रावण गरजते हुए हनुमान के सम्मुख आ डटा। ३७ क्रोधोन्मत्त हो पुष्पक विमान की छोर पर डरकर खड़े रहे राक्षसराजा के (दसों) मुखड़ों की ओर प्रक्षेपित (पूंछ की) आग से ज्वालाएँ आकाश-मंडल तक उठीं। जितने सारे घर, महल वहाँ थे उन सबको भयानक आग की लपेट में लिपटा दिया। अर्गला को घुमाते-घुमाते वीर हनुमान गरजते हुए वहाँ से मुड़ पड़े। ३८ राक्षसराजा ने यह देखा कि भयानक अग्निशिखाएँ आकाश तक व्याप्त हो धधक रही हैं—भयभीत हो, अपने चारों तरफ़ के राक्षसों को आज्ञा दी कि कुंभकर्ण को बाहर निकाला जाय। डर के मारे चीखते-चिल्लाते राक्षसों के मध्य निर्भीक हो वे जीवट के राक्षस बड़े धैर्य के साथ तुरन्त घुस पड़े। ३९ दरवाज़े तोड़कर अन्दर घुस पड़े समर्थ राक्षस सेवकों ने धरती पर के लोग जब चीख रहे, चिल्ला रहे थे तो नीचे सहारा दे नील पर्वत उठाकर ढोने के ढंग से कुंभकर्ण को उठा लिया। प्राण-रहित शव को शहर के बाहर फेंकने की भाँति कुंभकर्ण को उठाकर उपलंका नगरी में जब फेंक दिया तो हारे हुओं की भाँति वहाँ के राक्षस नौ दो ग्यारह हुए। ४० जहाँ-तहाँ प्रतिरोध करते रोकने की कोशिश करनेवाले हट्टे-कट्टे राक्षस वीरों का गली-गली में खम ठोंककर पीटते, आक्रमण कर

अडेयडेग मारांतु तरुबिद दडिग रक्कस भटर बीदि यों-
ळडसि सदेवुत सदन सदनोदळनिल बांधवन
बिडिसुतति वेगदलि कोपद किडिय नुगुळुत बंदनिंद्रन
हिडिदुतंद निशाचरन मनेगागि कलिहनुम ॥ 41 ॥
केडहिकट्टिद नेम्मनी मनेयोडेयनी निळयवनु मेल्लने
सुडि समाधानदलि नीवेंदग्नि देवरिगे
नुडिदु कैमुगिदबर नल्लिये बिडिसि मुरिदनु मूगिनुसुरलि
तोडकि ता सिक्किद निशाटन निजनिकेतनके ॥ 42 ॥
ईतनेम्मव तन्न मूगिन मातरिश्वन बिरुबिनलि नेरे
धातु गेडिसिद निवनु जगकति बलनलायेंदु
भीति गोळ्ळदे बेंदर दळुकदे कातरिसिदनु मानिसदे सं-
प्रीतियलि कैकोंबुदेंदोल्ल पोगिसिदनु शिखिय ॥ 43 ॥
बळिक शुक शार्दूल सारण कुलिश दुष्ट सुपार्श्व दुर्मद
खळ शिरोमणि कुंभ देवांतक नरांतकर
निळय निळयद लग्नि देवर बेळविगेगे बेसवेळ्दुबंदनु
कलि ललामनु शूर्पणखिय निकेतनांतरके ॥ 44 ॥
तानिडुव किच्चिल्ल मोदली कैने यिक्किद किच्चु वैर द-
शाननंगिव ळिद बंदुदु पूर्वकृत्यदलि

चकनाचूर करते घर-घर में आग लगाते; क्रोध की चिनगारियाँ उगलते इन्द्र को क़ैद कर लानेवाले राक्षस इन्द्रजित् के घर की तरफ़ वीर हनुमान बड़े वेग से पहुँचे। ४१ "इस घर के मालिक ने हमको गिराकर बाँध दिया। अतः इस घर को आप धीरे-धीरे प्रसन्न चित्त से जलाइए" —इस तरह अग्निदेवता से हाथ जोड़ प्रार्थनाकर, उनको वहीं छोड़, जिसके श्वासोछ्वास में स्वयं जो फँस गये थे उस कुंभकर्ण नामक राक्षस के घर की तरफ़ हनुमान मुड़े। ४२ "इसने अपनी नाक के दीर्घ निःश्वास के धक्के से हमको शक्तिहीन बना दिया। यह जगत भर में महान बलवान है —यों सोचकर न डरते, न कसमसाते, असमंजस में न पड़ते, व्याकुल न होते, निश्शंक हो बड़े प्रेम से इस घर को (कुंभकर्ण के) स्वीकार क़ीजिए, इस तरह कहते अग्निदेवता को अंदर प्रवेश दिलाया। ४३ इसके बाद शुक, शार्दूल, सारण, कुलिश, दंष्ट्र, सुपार्श्व, दुर्मद, राक्षस-श्रेष्ठ कुंभ, देवांतक, नरांतक आदि (नामक) राक्षसों के घर-घर में अभिवृद्धि प्राप्त करने का निवेदन अग्निदेवता से करते, पराक्रमप्रिय हनुमान शूर्पणखा के

ई नरकि रक्कसिय देसेगनु मानिसदे भवदुदर तीव्र कृ-
शानुविगाहुतिय कोंडि नीवेंदु कैमुगिद ॥ 45 ॥
तिरुगि मनेमने गग्निदेवर निरिसुतति काय प्रहस्तर
करेदु होरवडिसुत्त होगिसुत परम पितृ सखन
मुरिदु धूम्राक्षन निकुंभन दुरुळ युद्धोन्मत्त खळ दु-
र्मरुषणर दरुशनव मडिसिदनु धनंजयन ॥ 46 ॥
मिक्कु मुंबरि वरिदु नीडिद निक्कोलद केरिगळ किडि सिडि
दिक्कि बालद शिखिय सीवरिसुव शिखाळिगळ
अर्क केतुवकंपनर सदनक्के लंघिसि गाळुमेळिन
रक्कसर बीडिनलि बिडिसिद नुरिय पाळेयव ॥ 47 ॥
रायकुवर शिरोमणियें केळा यशोसंभृतन संभ्रम
दायतव नेनेबेने शिव शिव महादेव
ईयशेषित भुवन दळिविन वायुबांधव भाळनेत्रन
कायदंतिरे मेरेद नक्षिगे कलिविभीषणन ॥ 48 ॥

घर की तरफ़ बढ़े। ४४ "यह मुझसे लगायी जानेवाली आग नहीं; सर्व-प्रथम इस नीच स्त्री ने जो आग लगायी थी (राम-सीता-लक्ष्मण के विरुद्ध रावण के कान भर के) उसी आग के कारण पूर्वजन्मकृत कर्म-परिपाक से रावण में शत्रुत्व की भावना जगी। इस नारकीय राक्षसी के बारे में शक न करते तुम्हारे पेट की आग (भूख) के लिए जितना चाहिए उतना आहार दीजिए।" इस तरह अग्निदेवता से हाथ जोड़े निवेदन किया। ४५ घर-घर जाकर अग्निदेवता का हर घर में प्रतिष्ठापन कर अतिकाय, प्रहस्त को बुलाकर, उन्हें घर से बाहर निकालकर फिर उनके घरों में आग लगायी। धूम्राक्ष को भंजित कर, निकुंभ, अहंकारी युद्ध-पिपासु दुष्ट-दुर्मर्षण वगैरहों को अग्नि का साक्षात्कार कराया। ४६ आगे-आगे बढ़ते हनुमान ने दोनों तरफ़ की गलियों में पूंछ की आग की चिनगारियाँ छिटकाते धगधगाती ज्वाला का स्पर्श कराया। अर्ककेतु, अकंपन, इनके घरों पर उछल-कूदकर दुष्ट राक्षसों के घरों में अग्निदेवता को अपना डेरा डालने सुअवसर दिया। ४७ हे राजकुमार श्रेष्ठ, सुनो। उस कीर्तिशाली के संभ्रमपूर्ण साहसातिशय का वर्णन किन शब्दों में करूँ? शिव-शिव महादेव! इस समस्त लोक को नाश कर डालने की शक्तिशाली अग्नि भालनेत्री की देह की तरह वीर विभीषण को दिखायी पड़ी। ४८ विष्णु-भक्तों के अधिपति विभीषण के भवन के सामने हनुमान ने रेखा खींची और कहा—

गॆरॆय बरॆदनु कंडु वैष्णव ररसनालय दिदिरिनलि नि-
म्मुरवणॆगॆ ता सीमॆयिदु होगदिरि विभीषणन
अरमनॆगॆ नीवॆंदु वह्निगॆ करव मुगिदल्लिद मुंदकॆ
तिरुगिदनु तुदि वाल दग्निय नुरिगॊळिसि हनुम ॥ 49 ॥
कुणिकुणिदु कैचप्पळॆय कट्टणॆयरलि कुबुबिड्डु कादिद
कणु ·गुरुहिनसुररपचारि सुतुरुबि बालदलि
कणज कम्मट शस्त्रशाला गणव वस्त्र सुरत्नमय भू-
षणद कोशंगळलि होगिसिद ननिलबांधवन ॥ 50 ॥
करि घटॆय शालॆगळ हयमंदिरद वीथिय बालदलि बो-
हरिसिदनु बिड्तोडॆ हय गज बीदि बीदियलि
मुड्डु हरदर हारुवर शूद्रर महाक्षत्रियर कॆरिय
तरवळिकॆयनु तंदॆगित्तोडॆ मुड्दना हनुम ॥ 51 ॥
मसगि मुंदण बडगि कम्मर वसुविभेदक ताम्रमर्दन
मसग मुच्चिग रजक चित्रिक कटिक कलुकुटिक
कुसुममालिक हावडिग रिदॆसॆव हरदर कॆरिगळलु-
ब्बिसिदनुब्बिबड्दिब्बड्सि कपिहव्य वाहनन ॥ 52 ॥
कळकळिकॆ कोळाहळिसॆ कहृळिगदूसिग बूसगंधिग
कॊलप चिप्पिग बच्चरणॆ बळॆगार बोगार

"तुम्हारा जोर-शोर यहीं तक सीमित रहे। विभीषण के राजमहल में प्रवेश मत कीजिए।" इस प्रकार अग्नि से हाथ जोड़, पूँछ की कोर की अग्नि को प्रज्वलित करते हनुमान वहाँ से आगे बढ़े। ४९ उछल-नाचकर तालियाँ पीटते घूमते सुन्दर पुरुषों के सम्मुख भुभकारते ललकारते युद्ध किया। आँख के निशानबाज़ राक्षसों की हँसी-मज़ाक़ उड़ाते पूँछ से उनको उड़ा दिया। खलिहान, टकसाल, शस्त्रागार, कपड़े तथा रत्नों की कोठियाँ वग़ैरहों को आग लगायी। ५० अस्तबल (गजशाला) घुड़साल (अश्वशाला) की गलियों को हनुमान ने पूँछ की आग से साफ़ कर दिया। हाथी-घोड़े डर के मारे गली-गली भागने-दौड़ने लगे। वहाँ से रवाना हो, व्यापारियों के, ब्राह्मणों के, शूद्रों के तथा क्षत्रियों के निवास स्थानों को आग लगाकर उनके परिवार की ज़िम्मेदारी पिता को सौंप देकर हनुमान बाहर आए। ५१ सामने पड़े (रह रहे) बढ़ई, लुहार, सुनार, ठठेरा, धार धरने का काम करनेवाला, चमार, धोबी, चितेरा, क़साई, संग-तराश, फूल बेचनेवाला, सपेरा वग़ैरहों से शोभायमान व्यापारियों की गलियों में क्रोध से गरजते हनुमान ने आग लगायी। ५२ लोगों का शोरगुल बढ़

तिल विघातक काळसिग तंबुलिग जंगम जोगिगळ जं-
गुळिगगेरिगळॊळॆ झाडिसिदनु शिखाळिगळ ॥ 53 ॥
तळवरूर सुंकिगर दंतावळरथाश्वारोहकर मनॆ
गळलमात्य नियोगि सचिव पसाय्त परिजनद
दळपतिगळ सुसंधि विग्रहि गळलि सुप्रौढर निवासं-
गळलि वासव माडिसिद नॊलिदनिलबांधवन ॥ 54 ॥
उळियलॊंदु विभीषणन निज निळयवॆलॆ कुश केळु कोटा-
वळय मध्यद धनिक दॊरॆगळ विनुगु बिच्चटॆय
हलवु जातद वर्णभेदद हॊळल जनद सुमस्त भुवना-
वळिय भरभारवनु हॊरिसिद नग्निदेवरिगॆ ॥ 55 ॥
उरिव मनॆगळ नुरि गॊळद मंदिरकॆ नूकिदनॊदॆदु कॊलवनु
हिरिदु हॆग्गॊळ्ळिगळ लिट्टनु हॊगॆयदालयव
चरिस बारद संदिगॊंदिय तिरिक जातिय जळ्ळु जरगिन
नॆरविगर निळयदलि वालव नीडिदनु हनुम ॥ 56 ॥
उरि चडाळिसॆ बालवॊळगॊळ सरिवुतिर्दुदु हॆच्चि हिंगुव
वर सुधा सूतिय कलावैचित्य्य दंददलि

जाने पर साईस, कपड़े के व्यापारी, वनिया, जुलाहा, दर्जी, हीरे को सान पर धरनेवाले, मनिहार, लुहार, तेली, कसेरा, तमोली, जंगम, जोगी, जादूगर वग़ैरहों की गलियों की तरफ़ आग फैलायी। ५३ पटवारी, चुंगी के अधिकारी, महावत, रथारोही, घुड़सवारों के घर, मंत्रियों के, विशेष-अधिकारियों के, सचिवों के, पोशाक तैयार करनेवालों के, सेवकों के, दलपतियों के, विदेशांग सचिवों के, शिल्पियों के आवासों को अग्निदेव को समर्पित किया। ५४ सुनो कुश, विभीषण का एकमात्र घर छोड़कर क़िले के मध्य में स्थित अमीर उमराओं के, छोटे-बड़ों के, भिक्षुकों के कई जातियों के तथा वर्णवालों के नागरिकों के सारे निवास स्थानों की ज़िम्मेदारी अग्निदेवता के आधीन कर दी। ५५ जलते घरों को अनजले घरों के मध्य लात मार ढकेल दिया। जिन घरों से धुआँ न निकल रहा था, उन घरों में जलती लकड़ी खींचकर फेंकी। चलने में असमर्थ गली-कूचों के भिक्षुकों के सत्वहीन निष्प्रयोजक लोगों की भीड़भाड़ के घरों को हनुमान ने अपनी पूँछ लंबी तानकर आग लगायी। ५६ पूर्णिमा को बढ़कर कृष्ण-पक्ष में क्षीण होते जा रही चन्द्र की आश्चर्यजनक कलाओं की भाँति आग जैसे-जैसे बढ़ती गयी वैसे-वैसे पूँछ को आकर्षित कर अंदर खींच लेते तो हनुमान की (वह) पूँछ संकुचित होती थी। भूमिसुता की अग्निसूक्त

धरणि तनुजेय वह्निन सूक्तद परम महिमेयों मेणु विश्वं-
भरन करुणवों सोकदादुदु शिखि समीरजन ॥ 57 ॥
तंदे मारुत बा तवप्रिय नंदवावुदु नोडु दशमुख
निंद बलिमुख रग्गळरो निग्गळरो चित्तैसु
संधिसदें भीतियनु पुरहर गंदुकैनेरवागि काणिसि
दंदवनु करुणिसलु बेकेंदरगि कैमुगिद ॥ 58 ॥
मगन मातनु सलिस बेकें दोंगुमिगेय हरुषदलि वह्नियय
नेंगहिदनु नीरेजजांड कटाहपरियंत
भुगुभुगिल् भुगिभुगिलु धगधग धगिलु धगि लोंदोंदरि दुरि ना
लिगेगळनु नीडिदुदु निखिळामर पुरंगळिगे ॥ 59 ॥
छिळिछिळिल् छिळिलेंदु चिम्मितु जलजजांडद चिप्पु कुदिदुदु
तळपळने तत्कमल जांडावरण जलराशि
इळिदुदंबुधि काद कडुगावलियोलाय्तिळे वासुगिय हेड
तलेय मणियुरळिदवु होगळुवे नेननद्भुतव ॥ 60 ॥
धाळिगिच्चिगे बेच्चि तेगेदवु गूळयव नल्ललिल सुरनग
राळि नदियेनाय्तो नभदिदिळिद निर्जरर

की मंत्रोच्चारण की पवित्र महिमा के कारण अथवा जगद्रक्षक विष्णु की अनंत करुणा के कारण उस आग की आँच वायुसुत को न लगी। ५७ "हे मेरे पिता वायुदेव ! आओ न। अपने इस प्यारे बेटे की रीति को देख लीजिए। रावण की अपेक्षा वानर श्रेष्ठ हैं या कनिष्ठ हैं —आकर देख लें। पूर्व में त्रिपुरासुर-संहारी शिवजी को निर्भय होकर जो सहायता पहुँचायी थी उसी प्रकार की करुणा का आज मैं उत्तराधिकारी हूँ।" इस तरह वायुदेव की प्रार्थना करते हनुमान ने हाथ जोड़े। ५८ (अपने) पुत्र की इस प्रार्थना को सत्य साबित करने के उद्देश्य से, वायुदेव ने अत्यत आनंद से ब्रह्मांड के गोल तक (वृत्त तक) प्रचंड ज्वाला प्रज्वलित की। धू-धू कर जलती धधकती ज्वाला की शिखाएँ मानों देवताओं की सारी नगरियों की ऊँचाई तक पहुँचकर जलने लगीं। ५९ ज्वाला की अत्यधिक उष्णता के कारण ब्रह्मांड रूपी सीप छट-छटाकर छिटक गयी। ब्रह्मांड को आवृत्त किए सागर एक दम गरम होकर खौलने लगे। समुद्र का पानी उतर गया। भूमि तपे तवे की तरह द्रोखी। आदिशेष के फन पर की मणि आँच लगने से भुने खील की तरह खिली। इस अद्भुत दृश्य का वर्णन किन शब्दों में किया जाय ? ६० आग के आक्रमण के कारण देवताओं की नारियाँ दिशि-दिशाओं में शरणार्थी बन, भागी। आकाश

नालगेय नरॆ गच्चिदवु तुरगाळि तरणिय तिथिणिय ता-
राळि सिड़िदरळिदवु लंकानगर दहनदलि ।। 61 ।।
छिळिछिळिध्वनि छटछटत्कृति घुळुघुळुस्वन घनशिखा स-
म्मिळित धूमध्वान धगधगधगिलु भुगिलॆंब
कळकळिकॆ तलॆ दूगिसितु कपिकुल ललामन भापुरे पित
गॊळुव सख नी नहुदॆनुत कॊंडाडिदनुशिखिय ।। 62 ।।
परमपितृसख केळु गगनांतरद पुरदहनदलि हॊट्टॆगॆ
नॆरॆय दादुदु केळ्दॆ नर्धग्रास वाय्तॆंदु
परिहरिसु मिक्कर्ध हसिवनु हरॆद भीतिय हरुषदलि सु-
स्थिर समाधानदलि हनुमन हरसु बळिकॆंद ।। 63 ।।
परवधू व्यसनिगळ संगवु नरकभाजनवॆंदु नॆरॆ धि-
क्करिसि दशकंधरन नगरांगनॆ विरागदलि
परम प्रायश्चित्त कंगी करिसि हॊगलु द्योगिसिद नि-
र्भरद निडुगिच्चिन वॊलिर्दुदु दहन रिपुपुरद ।। 64 ।।
कुश कुमारक केळु गावळि मसगि तूरॊळु तायगळॊंदॆसॆ
शिशुगळॊंदॆसॆ याय्तु कट्टिद किच्चि नुरुबॆयलि

से उतरती देवगंगा का न जाने क्या हुआ ? लंकानगरी जलने लगी तो सूरज के घोड़ों ने जीभ काट ली । झुंड के झुंड नक्षत्र छिटककर भुने खील जैसे बने । ६१ छट-छिटककर, सर्-फट्-सट्-फर् भयानक शब्द करते, धुएँ से भरी आग से धू-धू कर जलने के कारण जो भयानक शोरगुल हो रहा था —उसे सुनकर कपिश्रेष्ठ ने प्रसन्नता से सिर हिलाया । 'वाह-वाह, मेरे पिता के तुम तो परम स्नेही हो ।" इस तरह कहते अग्निदेवता की भूरि-भूरि प्रशंसा की । ६२ "मेरे पिता के हे परम मित्र, सुनो । पूर्व में आकाशस्थित त्रिपुरासुर की नगरियों को जब तुमने भक्षण किया था तब तुम्हारा पेट न भरा था । आधा पेट ही मिला था —इस तरह सुना है । अब निर्भीत हो, आनंद से, और धीरे-धीरे अपना (वह) बचा हुआ आधा पेट भरकर भूख मिटा लीजिए । उसके बाद हमें आशीर्वाद देना ।" इस तरह हनुमान ने कहा । ६३ परस्त्रियों के लिए आस लगाए बैठे हुओं के साहचर्य में आने पर नरक-प्राप्ति निश्चित है —यों मानकर लंकानगर लक्ष्मी ने दशकंठ का तिरस्कार कर, वैराग्य से प्रायश्चित्त कर लेने के लिए मानों अग्नि-प्रवेश के लिए की गयी भारी तैयारी की अग्नि के सदृश शत्रु नगर की अग्निज्वाला दृष्टिगोचर हो रही थी । ६४ "हे कुश कुमार ! सुनो । शहर में शोरगुल बढ़ा । आग के आक्रमण के कारण माताओं से

सुसरवादरु कॆलरु कॊरळिनलसुव हिडिदरु कॆलरु कॆलरु-
ब्बसद लोडिद रुरिय धाळिगॆ हेळलेनॆंद ॥ 65 ॥
करॆव कूगुव कुबुबिरिव काहुरद रक्कसरॊंदु दॆसॆयलि
मुरुटुगॆ मोरॆगळ कौरिन खळररॊंदॆसॆय
तरुण यौवन वृद्ध पुंस्त्री नॆरविगळ दॊंदॆसॆय विगतां-
बरद भटरॊंदॆसॆय काणिसितनिल नंदनगॆ ॥ 66 ॥
कॊडुवॆने कौपॊंदु तनगुग्गडद धनिकरु नीवु नावे
बडवरिंदिगॆ बलुसमर्थ दशास्यनव तानु
सुडिसिदनु सीरॆगळ मॆल्लनॆ नडॆयि हॆंडिरु मक्कळनु कै-
विडिदु नीवॆंदवर नुपचरिसिदनु कलिहनुम ॥ 67 ॥
उरि छडाळिसि वॆंटणिसिदुदु तिरुगिबरॆ बळिकमम लंका
पुरव नुप्परिसिदुदु गावळि गगनदळतॆयलि
सरक संवरिसुव सुवर्णाभरण वसनादिगळ तॆगॆवति
भरद कळकळ काणिसितु कंगळिगॆ कपिवरन ॥ 68 ॥

बच्चे बिछुड़ गये। कुछ तो बेधड़क आग की ज्वालाएँ पार कर गये। कुछ तो नहों में प्राण धरे खड़े थे। कुछ तो हाँफते-हाँफते भाग खड़े हुए। इन सब बातों का वर्णन किन शब्दों में करूँ?" इस तरह महर्षि वाल्मीकि ने लव-कुश को बताया। ६५ एक ओर चीखते-चिल्लाते, पुकारते हाय तोबा मचाते उद्विग्न राक्षस तो दूसरी ओर अधजले, हाथ-मुँह जलने के कारण दुर्गंध फैलाते खड़े राक्षस थे। तरुण, युवक, वृद्ध, स्त्रियाँ, पुरुष आदियों के झुंड के झुंड एक ओर थे तो दूसरी ओर अपने कपड़े खोये नंगे वीर जो थे हनुमान को दिखायी दिए। ६६ "तुम्हारी दृष्टि में मैं ग़रीब हूँ; तुम तो अमीर हो। तुम्हें देने के लिए मेरे पास अपने एक मात्र कौपीन के सिवा और कपड़ा तो है नहीं। दस मुखड़े वाले रावण तो महान समर्थ हैं। (उसने) तुम्हारे सारे कपड़े जलवा दिए। अपने बाल-बच्चों के, पत्नियों के हाथ धरे धीरे-धीरे जाइए।" इस तरह कहते वीर हनुमान ने लोगों को सांत्वना दी। ६७ हनुमान एक बार लंकानगरी की परिक्रमा कर आए तो देखते क्या है? बाप रे बाप! सारी लंकानगरी को ज्वाला ने व्यापक रूप से घेर लिया था। तब शोरगुल आसमान तक व्याप गया। कपिश्रेष्ठ ने देखा— लोग अपनी चीज़ वस्तुएँ इकट्ठा कर रहे हैं, सोने के गहने तथा बचे-खुचे कपड़े इकट्ठा कर रहे शोरगुल मचा रहे हैं। ६८ बुढ़िया, चल हट, जल्दी कर। इस तरह कहते लात मार-मारकर अपनी

मुदुकि हॊय्‌दवडु हॊय्‌वडॆंदॊदॆ दॊदॆदु ताय् मुत्तब्बॆयर कै-
दुदिगळनु हिडिदॆळॆदु शिशुगळ हॆंडक हिडिदडकि
हदरिनलि हॆंडिरनु जरॆनरॆ पुदिद वृद्ध पिता महर नॆळॆ
वदुभुतद कळकळिकॆ बलिदुदु नगरदगलदलि ।। 69 ।।
तॆगॆ तिलव नौपासनद कॊळविगळ धोत्रव पुस्तकव स-
ज्जिगॆय गुड हप्पळव पुरिसंडिगॆय हूरिगॆय
बगरगॆय सेविगॆयॊरळ बेळॆगळ सालग्रामगळ दो-
सॆगळ कावलिगळ नॆनुत कळवळिसॆ भूसुररु ।। 70 ।।
मगन काणॆवु कंडिरे नीव् मगळ तॆगॆदिरॆ सॊसॆय भंगा-
रगळ तंदिरॆ देवपूजॆय नकट साकिन्नु
हॊगदिरॆर घन मिक्क द्रव्यादिगळ धाड्रॆय नॆरॆयि कक्कुलि
तॆगळु बेडॆंबुलुहु बलुहाय्तवनियमररलि ।। 71 ।।
जरॆय जाड्यद विप्रराखळ नरमनॆय मुखवागि नॆगहिद
करदललगुव शिरद सरणिय लसम रोषदलि
हरसिदरु लेसागलो निश्चरतॆयलि दीर्घायुवागॆ-
दुरिगॆनिल्लदॆ नडॆद रॆडहुत मुग्गुतल्ललि ।। 72 ।।

दादी-नानियों की उँगलियाँ धरे खींचातानी करते बच्चे, ऐसे बच्चों के गला धरे ढकेल रही स्त्रियाँ तथा वृद्धत्व के कारण पके बालों वाले बूढ़े दादा-नानाओं को मणिबंध पकड़कर खींचते-खींचते चिल्लानेवालों के कारण शहर भर का शोरगुल बढ़ता गया। ६९ 'तिल, उपासना की फूंकनी, धोती, पुस्तक, सूजी, गुड़, पापड़, खील की ढबकौरी, पूरण, ढबरी (पात्र) सेवैंया की ओखली, दाल, शालिग्राम (पूजा के) चिल्ला बनाने का तवा वगैरहों को (साथ) ले लो' इस तरह व्याकुल होकर ब्राह्मण चिल्ला रहे थे। ७० "बेटा तो दीखता नहीं; क्या तुमने कहीं देखा है ? क्या बेटी को बचा पाये ? बहू के सोने की चीज़-वस्तुएँ क्या ला सके ? हाय-हाय ! देवपूजा अब बस है। अंदर मत जाओ। ज्वालाएँ भयानक हैं। बची वस्तुएँ अग्निदेवता के लिए 'स्वाहा' होने दो। व्यर्थ की आशा निरर्थक है।" ऐसी बातें ब्राह्मणों में अधिक हुईं। ७१ बुढ़ापे से त्रस्त ब्राह्मण रावणासुर के राजमहल की तरफ़ मुँह किए हाथों को ऊपर उठाए हिलते-डुलते सिर से, अत्यधिक क्रोध से आशीर्वाद दे रहे थे— "भला हो तेरा। दीर्घायु हो इस जगत में।" आग की ज्वाला के सामने खड़े होने में असमर्थ हो ठोकर खाते गिरते पड़ते क़दम बढ़ा रहे थे। ७२

नीर होय् नंदिसु कॅलक्कोदें नारियर होउवडिसु तेंगें को-
मार वगंव बिसुडु सीसळ कवच कैदुगळ
दूर किच्चंजदिरि तेंगें हय तेरुगळ तळ्ळंक बेडें-
बारुभटें बलुहाय्तु बाहुजरालयंगळलि ॥ 7 ॥
तेंगेयि मेंणसिन कंटणेय नरळेगळ हेरनु होरचि बिडियें
त्तुगळ होत्तळेंदलेय चीलद शुंठि सासुवेय
हेंगललैदिसु लाभलोभिसि तोगदि रुप्पनु बळ्ळवो सो-
ल्लगेयो मानवनेंनुत लोउलितु वैश्यसंदोह ॥ 74 ॥
कंडिरे हेंग्गेड बेंदुदु भंड मोंदला दोडवें सालिग
रड लदरिन्नेन कोंडुवेंवु कपिय हावळिय
कोंडु कोनरिद खळन हेंडति रंडे यागलि सिक्किदनि तनु
कोंडु नडेयेंबुलुहु बलिदुदु हरदगेरियलि ॥ 75 ॥
कुडन तेंगें कूरिगेय बिसुडी कडेंगें बिडु दनकरुव गुद्दलि
कोडलि मिणि नोग बंडि बीजद मूडें भत्तगळ

पानी उँड़ेलकर आग बुझाओ। एक ओर लात मारो। स्त्रियों को बाहर निकालो। बच्चों को बचाओ। अँगरखा, कवच, शस्त्रास्त्र फेंक दो। आग! आग!! दूर हटो! भागो! डरो मत। घोड़े और रथ बाहर निकालो। चिंता मत करो। इस प्रकार का शोरगुल क्षत्रियों के घरों से सुनायी दिया। ७३ मिर्च-भरे थैले, बोरे, कपास के ढेरों के बोझ, पहले बाहर निकालो। बैलों की (बँधी) रस्सी खोल दो। पान के बोझ, सोंठ, सरसों आदि के बोरे उठाकर ढोए बाहर लाओ। लाभान्वित होने की आस मरती नहीं। नमक को फेंको मत। नापने का कोई भी पात्र खो न जाय—इसका ध्यान रखो। —इस प्रकार बनियों के झुंड चिल्ला रहे थे। ७४ देखो न यह महान विपत्ति! दूकान की सारी चीज़ें जलकर राख हो गयीं। क़र्ज़दार आकर सताने लगें तो कहाँ से दे देंगे? कपि की इस प्रकार की धाँदली शुरू कराकर फूले न समानेवाले उस राक्षस की पत्नी विधवा हो जाय। हाथ जो लगे उसे लेते चलते बनिए। —आदि-आदि बातें बनियों की गलियों में अधिक हुईं। ७५ झूल निकाल दो। हलका जुआ खोल दो। अकरी उठाकर फेंक दो। मवेशी, गाय बैलों को इस तरफ़ कर दो। कुदाल, फावड़ा, कुल्हाड़, जुआ, रस्सा, छकड़ा, बीज का गट्ठर, धान, फूस, मवेशी बाँधने का रस्सा, तेल का घड़ा, मटके, हँसियाँ—इन सबको ले आकर ढेर बना

हॊडकॆ डावणि हाड जॊत्तिगॆ मडकॆगळु कुडु गोलुगळ तॆग
दडकि यॆंदॊक्कलिन केरियॊळाय्तु बॊब्बाट ।। 76 ।।
तॊत्तॆ बा तॆगॆ हासु मंचव नित्त हायिकु गिळिय गूडनु
नॆत्ति वलगॆय वैसिकद मद्दुगळ भरणिगळ
हॊत्तु कॊळ्ळॆ ळॆळु मूसडि दॊत्तॆ नडॆ मुदिमुंडॆ नीनॆं-
बॊत्तुवल्लिन सबुद वॆसॆदुदु सूळॆ गेरियलि ।। 77 ।।
बिट्ट मंडॆय बीदिवरिगळ कट्टुलुहुगळ तॆगॆद सरकिन
मॊट्टॆगळ कैविडिद मक्कळ गाळु मेळुगळ
इट्टणॆय बीदिगळलुरॆ कंगॆट्टु पुरजनवखिळदॆसॆयलि
पट्टणव हॊरवडुत लिर्दुदु कोटिसंख्यॆयलि ।। 78 ।।
कूडॆ नगरद निखिळ जनतॆगॆ दोडिल्लि यदल्लि दळ्ळुरि
वॆडॆयलि सिलुकिद निशाचररा पुरांतरद
बॆडकुणि हॊक्करणॆगळ लक्काडिदरु लायदलि हय बिरि
तोडिदवु गज बीदि वड्डिदवु केरिकेरियलि ।। 79 ।।
करगि हरिदवु हेमरस हॆद्दॊरॆय वॊलु बहुरत्नचय बिड
दरळिदवु हुरिदरळिनंतिरॆ हॊळलॊळ गलदलि

दो। —इस प्रकार शोरगुल किसानों की गलियों मे हुआ। ७६ ऐ दासी! इधर आ। यह चारपाई (पलंग) हटा। तोते के पिंजरे को इस तरफ़ रख। शतरंज की यह तख्ती, विट्पुरुषों को मोहित (आकर्षित) करने में प्रयुक्त औषध की यह बोतल ढो ले। जल्दी उठ। हे मनहूस दासी, चल आगे बढ; हे राँड़! —इस तरह दाँत-ओठ चबाते बोली जानेवाली गालो-गलोज की बातें वेश्या-वाटिकाओं से सुनाई पड़ रही थीं। ७७ बाल बिखेरे, गलियों में भागते, ज़ोर-ज़ोर से चीखते-चिल्लाते, चीज-वस्तुओं की गठरियों को सिर पर ढोए, बच्चों की उँगली पकड़े, अस्त-व्यस्त रीति में, भीड़-भाड़ की गलियों में दिग्भ्रांत हो, शहर भर के करोड़ों लोग हर कहीं शहर छोड़े भागे जा रहे थे। ७८ लंकानगरी के सारे लोग नगर छोड़कर भाग खड़े हुए। जहाँ-तहाँ दावानल (प्रचंड आग) में फँसे राक्षस नगर के सीमावर्ती बहेलियों के नालों में या नहर-तालाबों में गिरकर समाप्त हो गये। घुड़साल से घोड़े अंधमधुंध घबराए हुए भागे। हाथी गली-कूचों में स्वेच्छा से मनमाने भाग खड़े हुए। ७९ लंकानगरी में (सोना आग की आँच से) पिघलकर पानी की तरह बहा। तरह-तरह हीरे, जवाहरात भुने जा रहे खील की तरह चारों तरफ़ छट्-छिटककर बिखर गये।

मरकतद माणिक्द वज्रद तरतरद भित्तिगळु बिक्कनें
बिरिदवडगेंडेदुरुळिदवु प्रासाद सौधचय ॥ 80 ॥
कळस कुचवन मर्चिकेतन ललित केशाकरुषण दिनु
ज्वलिप विद्रुम तोरणाधार गळनु चुंबिसुत
होळॆव हर्म्य नितंबवनु होय्देळेदु नखदलि घुळुघुळुध्वनि
गळरवदि रमिसिदनु विटन वोलग्नि पुरवधुव ॥ 81 ॥
मंडळिसि मुरिदेळव वह्निय तुंडदलि तळिदोगॆद वंबर
मंडलद वळयदलि विलय शिखाग्नि कणदंतॆ
तुंडु गिडिगळ तूरुगिडिगळ गुंडुगिडिगळ घाडणॆय किडि
चंडियाय्तु चतुर्वदन निर्मित महाभवन ॥ 82 ॥
कुशनॆ केळै यूपवादुदु बिसरुहाक्षन कीर्तितरु रा-
क्षसपुर त्रेताग्नि कुंडगळादव वनिजॆय
विषम विह्वल शोक शिखि शोभिसुव हुतवहनाद नसुररु
पशुगळादरु यज्ञ दीक्षित नादना हनुम ॥ 83 ॥
बंदनीतनु वह्नियनु बलवंदु बळिकुत्तरद गोपुर
किदिरेश पदाभिगत विश्रुत विलासकद

मोती, माणिक्य, मरकत, हीरे, जवाहरात आदियों से निर्मित दीवारों में दरारें पड़ गयीं। मंजिलों वाले महल भवन धड़ल्ले के साथ गिर पड़े। ८० कलश रूपी स्तनों का आलिंगन किए, ध्वज रूपी नयनाभिराम केशों को खींचे, चमकते मूँगों के बन्दनवार रूपी होठों को चूमते, अट्टालिका रूपी जघन को टटोलकर उँगलियों से बजाते धधकने की कंठध्वनि से युक्त अग्नि विट्पुरुष की तरह नगर रूपी युवती का उपभोग (संभोग) करने लगा। ८१ घेर-घेर मज़ा उड़ाते ऊपर की तरफ़ धू-धू करते उठती हुई अग्नि-ज्वालाओं से निकलती चिनगारियाँ मानों प्रलयाग्नि के खलिहान से उड़ती चिनगारियों की तरह आकाश भर में व्याप्त हो गयीं। चिनगारियों के टुकड़े, छिटकती चिनगारियाँ, गोलाकार चिनगारियाँ वग़ैरहों के समूह के कारण चतुर्मुख ब्रह्मा से निर्मित महाभवन रूपी जगत भयानक चिनगारियों से भर गया। ८२ सुनो कुश, कमललोचन विष्णु का कीर्तिवृक्ष यज्ञ में पशु को बाँधने में प्रयुक्त यूपस्तंभ हो गया। रावण की लंका नगरी, दक्षिण गार्हपत्य तथा आह्वनीय नामक तीन अग्नियों का कुण्ड बन गया। सीता के भयानक शोक से उत्पन्न चिता रूपी अग्नि प्रकाशमान अग्नि बनी। राक्षस यज्ञपशु बने। हनुमान ने इस यज्ञ की दीक्षा सँभाली। ८३ हनुमान ने अग्नि की परिक्रमा की। फिर वहाँ से लक्ष्मी-पति की चरण-

इंदिरेशपदाभिजनिता नंद नदि युदकदलि कपि रघु-
नंदनार्पण वेंनुत धारें यनेंरेद ननलंगें ॥ 84 ॥
तरुण केळुरि नालगें गळुब्बर देंसळ्गळु विस्फुलिंगो-
त्कर पराग धूत धूम भ्रमर मालिकेंय
सरभसद सागर सरोवर सरद मध्यद सरसिजदवोलु
सुरकदंबद कण्गें कौतुक बाय्तु पुरदहन ॥ 85 ॥
आह लेसाय्तमम निष्प्रत्यूहदलि नाव् बंद कार्य म-
हाहवव जैसिदेंवु दहिसिदें वहित पुरवरव
ई हदन मेलिन्नु गमनोत्साहवे कर्तव्य वेंदु वि-
देहजावर चरनु घन परितोष मननाद ॥ 86 ॥
बंद केंलस सुसूत्रविलितन केंदु हारैसिदनु कैयोंड
नंद गेंट्टनु नेंनेंदु निमिकुल राजनंदनेंय
इंदुमुखियेनागिहळो तन्निद तोरितु दूरुदुर्भय
संदिसदले ताय नेंनुतळवळिदना हनुम ॥ 87 ॥
अनुचितवु वनभंगवासुर हननवदु ता होंल्ल पुरदा
हनवदीगत्यंत दूतरिगात तायितन

सेवा से अतिशय सुन्दर बने पूर्व दिशा की गुम्बज की तरफ़ आए। लक्ष्मी-पति के चरणारविंद से उदित संतोष नामक नदी के पानी से 'रघुनंदन को अर्पित' इस तरह कहते लंकापुरी को अग्नि को दान कर दिया। ८४ युवक लव! सुनो। अग्नि की ज्वालाएँ ही कमल-दल हैं; चिनगारियाँ फूल पराग-कण हैं; ऊपर उठा भ्रमरों की पाँति है; गरजता समुद्र सरोवर है। इस प्रकार सरोवर के मध्य कमल-सदृश लंकानगरी को प्रज्वलित करती ज्वाला ने देवताओं की आँखों में कौतूहल की ज्योति जगायी। ८५ "बाप रे, मेरा यहाँ आने का कार्य आखिर निरातंक हो सफल हुआ। बहुत बड़ी लड़ाई जीत ली। शत्रु की नगरी जला दी। इतना सब कुछ जब हुआ, तब (यहाँ से) रवाना होने के लिए उत्सुक होना ही मेरा कर्तव्य है।" इस तरह सोचते वैदेही के पति के दूत मन ही मन प्रसन्न हुए। ८६ 'आने का उद्देश्य यहाँ तक तो सफल ही साबित हुआ।' इस तरह सोचते हर्षित हो रहे हनुमान को तत्क्षण श्रीराम-पत्नी की याद आने के कारण एक दम वे विचलित हुए। "चन्द्रमुखी (सीता) का न जाने क्या हुआ है? मेरे कारण उनको कुछ क्षति तो नहीं हुई न? उस माता (सीता) को कहीं भयभीत होना तो नहीं पड़ा न? —इस तरह सोचते हनुमान एक दम उतर गये। ८७ "अशोक वन का सत्यानाश एक

इनकुलेंद्रन चरनु तानेंदरिसुवदु नीति मूर्खर
मनगळिगें ता मान्य नादेनें शिव शिवा अंद ॥ 88 ॥
एनु हदनागिहरो देविय रेन नेनेवरो खळरु तन्नि-
दी निरोध नियुक्त वार्य्तें दळ्ळें बाउरले
मानसद विह्वलव निदना मानिनिय मंडनेय घनमहि-
मानिभृत पददरुशनदल पहरिस बेकेंद ॥ 89 ॥
मगनदेनादनो निशाटर हगेतनव गंटिक्कि कोंडनु
विगडतन वसुररलि सलुवुदे तनगें यकटकट
मगुळें गमिसुवुदरिदु दुष्कृति मिगिलु तनगेंदळ्ळे बारुव
जगदमातेय बळिगें बंदनु वीर हनुमंत ॥ 90 ॥
तंदे बंदे हनुम मारिय तंदे खळरनु कोणकि तानि-
न्नेंदु माडुवदेनु रक्कस उरियद वोलिन्नु
तंदे तेरळेन्नय्य तेरळेले कंद नडेयिन्निर दिरेंदा
नंद भय सम्मिळितें मैदडविदळु मारुतिय ॥ 91 ॥

प्रकार से अनुचित कार्य ही है। राक्षसों की इस प्रकार की यह भारी हत्या निंदनीय ही है। (राज) दूत होकर लंका नगरी को यों जो जला दिया यह हत्याकांड ही है। नीति तो यह होनी चाहिए थी कि मैं रविवंश के स्वामी का केवल दूत हूँ—यों सोचकर (मैं) आचरण करता। उस नीति का (राजनीति का) अनुसरण न करने के कारण मूर्खों से पूजित होने योग्य बना न ? शिव-शिव ! यह मैं क्या कर बैठा ? —इस प्रकार हनुमान ने सोचा। ८८ "पता नहीं (सीता) देवी की स्थिति-गति क्या है ? राक्षसों ने उसे कहीं सताने की तो सोची नहीं न ? मेरे कारण जो यह आतंक हुआ—इससे तो वे काँप न उठेंगी ? मन की इस व्याकुलता को उस (सीता) माता के महिमा मंडित अलंकारयुक्त चरण-कमलों के दर्शन से ही दूर करना चाहिए।" इस प्रकार हनुमान ने विचार किया। ८९ "पता नहीं बेटे (हनुमान) का क्या हुआ ? राक्षसों से बैर मोल लेकर किस आफ़त में फँसा ? राक्षसों के सामने उसकी वीरता की क्या चलेगी ? हाय-हाय ! उसका (सही-सलामत) लौट जाना असंभव है। मुझ अभागिन के पाप-कर्म बड़े हैं।" —इस तरह सोचते व्याकुल हो काँप रही सीता माता के सम्मुख वीर हनुमान उपस्थित हुआ। ९० "आ गये बेटे ? आओ-आओ। राक्षसों को छेड़कर व्यर्थ विपत्ति मोल ली ! अब कहने से क्या प्रयोजन ? हे मेरे तात। लाड़ले बेटे ! यहाँ से चुपचाप चले जाओ कि राक्षसों को मालूम तक न हो। अब देर न करो।

अंजलेकॆल्लॆ तायॆ तवपद कंजदनु कंपोदयद्दलि स-
मंजसनले तानु तप्पिद कॆलस किन्नेनु
अंजिदॆनु बेडलिकॆ दशमुख भंजनॆगॆ नेमवनु रघुकुल
रंजकन राक्षस महार्णव वाडबानळन ॥ 92 ॥
चिंतिस दिरिन्नॆन्नॆडॆगॆ भूकांत नंघ्रि सरोजदरुशन
वॆंतु घटिसुवुदॆंब करणॆंद्रियद कळकळद
भ्रांति साकिन्नॆंदु जननिय संतविसि मुद्रिदक्षि वारिय
तुंतुरिन लडिगॆरॆगि बीळ्कॊंडनु महीसुतॆय ॥ 93 ॥
कॊरळ सॆरॆ बिगिदरसि बिरिबिरि दुरुळुवश्रुगळिद हनुमन
हरसि कळुहिदळुक्कु वक्कॆय बिक्कुळिन बळिय
सुरिव नयनोदकद धारा वरुषदलि नॆनॆदमळ तॊरवॆय
नरहरिय निजदास नैतंदडरिदनु नभव ॥ 94 ॥

क्षण मत्र भी यहाँ मत रहो।" इस प्रकार संतोष तथा भय-मिश्रित भावना से सीता ने हनुमान की पीठ थपथपायी। ९१ "भय किस विषय का माताजी ? आपके श्रीचरणों की कृपा से मैं बिलकुल ठीक हूँ। जो काम ग़लती से छूट गया उसके लिए अब पछताने से क्या प्रयोजन ? रघुवंश के आनंददायक, राक्षस रूपी महासमुद्र के लिए बड़वाग्नि-सदृश श्रीराम से यह आज्ञा प्राप्त करने में थोड़ा सकपकाया कि रावण को मैं ही मार डाले लौटता हूँ।" ९२ "मेरे बारे में अब चिंता मत कीजिए। राजा राम के चरण-कमलों के दर्शन अब कैसे प्राप्त होंगे—इस बात की चिंता और भ्रांति जो है—इसे अब बिलकुल त्यागिए।" इस तरह कहते सीता माता को सांत्वना देते आँसू बहाते सीता के चरणों को प्रणाम कर हनुमान ने उस (भूमिसुता) से बिदा ली। ९३ सीता का कंठ भर आया। लगातार बरस रही अश्रुधारा के कारण घिग्घियाँ बँध जाने से सिसकती हुई राम की रानी ने हनुमान को आशीर्वाद दे बिदा किया। सीता की अश्रुधारा में भीगे तोरवे के नरहरि के सेवक (हनुमान) वहाँ से रवाना हो आकाश में आरोहित हुए। ९४

ओंबत्तनेय संधि

सूचने— रणभयंकर हनुमनादिन मणिकुलेंद्रंगमल चूडामणिय संदित्तनु सुरेंद्रादिगळु नलिदाडे ।

ओडिदनु कपियेंदु मनदलि माडदिरि नावी निजायुध
गूडि निज सैनिकद सम्मेळदलि संगरव
पाडु गैवुदे पंथ विदना वाडि तप्पेवु नम्म रण ज-
ज्जाड जोकेय तोरिसुवे विन्नोम्मे निमगेंद ॥ 1 ॥

अरसदिरि बेरत्तलित्तलु तेरपु दोरुवे नोडि समरव
मेरेवु दुळ्ळडे मैगुडुवु दग्गळिके निमगेनुत
अरिचलळिदुळिदसुरपडे मुक्किरिकि कोंड्दु बेट्टवनु क-
ट्टरुहे कविवंददलि कविदुदु कूडे खळनिकर ॥ 2 ॥

कुशने केळै कुलिश हति नोयिसलु नेरेयद हनुमनुरे कं-
पिसुवने खळ रिरितदलि लव केळु कौतुकव
मुसुकुवति बल रक्कसर कर्कश कराग्र निघात दिंदे-
ब्बिसिदनंतक पुरिगे निमिषदला समीरसुत ॥ 3 ॥

नौवीं संधि

सूचना— युद्धभयानक हनुमान ने सीता की श्रेष्ठ चूड़ामणि लाकर रविकुल के स्वामी को दी। यह देखकर देवेन्द्रादि (देवता) प्रसन्नता से फूल उठे।

"यों मत सोचो कि बन्दर भाग गया। शस्त्रास्त्रों से तैनात हो, सेना-सहित आकर युद्ध ठानना ही हमारी प्रतिज्ञा है। इसका, एक बार कथन कर हम चूकनेवाले नहीं। हमारी युद्ध-वीरता की रीति का परिचय और एक बार तुम्हें कराता हूँ।" १ "जिधर-तिधर मुझे ढूंढ़ने की कोशिश मत करो। तुम्हें और एक सुअवसर देता हूँ। देखो; अगर हिम्मत हो तो युद्धभूमि में अपना कौशल्य दिखाना। तुम्हारे लिए यही एक श्रेष्ठ कार्य है कि अपनी वीरता हमारे सम्मुख प्रकट करें।" इस तरह हनुमान ने ललकार कर जब कहा तो बची-खुची सेना ने उनको आ घेरा; मानों चींटियों ने पहाड़ को घेरा हो। २ सुनो कुश, वज्रायुध जो हनुमान को घायल न कर सका तो वह राक्षसों के खोंचने से क्यों डरे? फिर जो आश्चर्यजनक घटना हुई सो सुनो; लव। वायुपुत्र ने अपने ऊपर टूट पड़ने वाले; महान बलवान राक्षसों को अपनी वज्रसरीखी कठोर मूठ से यों पीटा कि

तिरुगि सदॆदनु कुंभननु नॆल कुरुळिसिदनु निकुंभननु नड्डु
शिरवनॊडॆदना सुरारियना नरांतकन
बरिय नप्पळिसिदनु त्रिशिरन कॊरळ हिडि दीडाडि शुक दु-
र्दरुष सारण वज्रदंष्ट्रादिगळ नोडिसिद ॥ 4 ॥
अडसि कॆणकिद कंपनन मुसुदॊडॆय तिविदु महोदरन हे-
रॊडल नॊदॆदु सुपार्श्व युद्धोन्मत्त रक्कसर
मडदलुरॆ घट्टिटसि समीकव हिडिदु हळचिद शक्रजितुवनु
हुडुकु नीरद्दिदनु नडॆदु समुद्र मध्यदलि ॥ 5 ॥
मिक्कवर सदॆबडॆदु साके सक्कजवु कपियॊडनॆ निमगॆनु
तॆक्कतुळदलि बरलिदिगॊंडनु नगेंद्र सुत
तक्क सन्मानवनु कैकॊंडॆक्क तुळदलि वदनमरर
हॆक्कळद हूमळॆय हॊय्‌लिन पूरदलि हनुम ॥ 6 ॥
अदॆ बरवु पवमानजन जय वदन विकसित विस्तरणद-
भ्युदय मुख वॆमगरुहु तदॆ यॆंदखिळ कपिसेनॆ
तुदिवॆरळ बॊब्बॆगळ तिगगळ तदहदव्वर वडॆयलीतन
निदिरु गॊंडप्पिदरु नमिसिद जाम्बवंतंगॆ ॥ 7 ॥

क्षणार्ध में सभी यमनगरी (मृत्युदेवता के यहाँ) का प्रस्थान कर बैठे। ३ फिर कुंभासुर को पकड़कर पीटा। निकुंभ को धरती पर गिरा दिया। नरांतकासुर का सिर फोड़ दिया। त्रिशिर के पेट पर लात मारी। शुक, दुर्दरुष, सारण, वज्रदंष्ट्र आदियों का गला दबोचकर धक्के दे-देकर भगा दिया। ४ टूट पड़कर छेड़नेवाले अकंपन को घेरकर उसकी जाँघ को चीरकर, महोदर के भारी देह को लात मारकर, सुपार्श्व जैसे मदोन्मत्त राक्षसों को एड़ी से पीटकर, अपने से हमला मोल लेनेवाले (पूर्व में आक्रमण युद्ध करनेवाले) इन्द्रजित् को उठा ले जाकर समुद्र-मध्य के खौलते पानी में भिगो दिया। ५ अन्यों को पछाड़ते पीटकर —एक बन्दर के साथ और कितना प्रेम करोगे ? —इस तरह कहते बड़ी ढिठाई के साथ जब हनुमान लौट रहे थे तो मैनाक (पहाड़) ने उनका स्वागत किया। उनसे योग्य सम्मान-गौरव स्वीकार कर देवताओं से बरसाए गये फूलों की अत्यधिक वर्षा में (प्रवाह में) डूबते-तैरते बड़ी वीरता को दिखा के हनुमान लौट पड़े। ६ "वह देखो हनुमान आ रहे हैं। विजय के कारण खिले उनके मुखड़े से वह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वे कार्य में सफलता प्राप्त कर लौटे हैं।" इस तरह कहते सारी कपि-सेना ने अपनी कमर पर बाँध लिये उपलियों को उँगलियों से पीटना शुरू किया। तथा बड़ी धूमधाम

वीर बंदै स्वामि कार्योद्धार बंदै कीशकुलवन
वारिरुह दिननाथ बंदै तंदै येंदेनुत
सोरु वानंदाश्रु पुळकद पूरणदलें त्तिदनु पवनकु-
मारकन मस्तकव नलिदोलिद भुजभवसूनु ॥ 8 ॥
पवनसुत नीचेंयलि लवणार्णवव दांटिद बळिक रचिसितु
दिविजरिपु पुर विश्वकर्म मयानुमतगळलि
नव विचित्रद मणिखचित भवनवनु होक्कनु बळिक भृगुसं-
भव सुराचारियर नेमदला दशग्रीव ॥ 9 ॥
एन माडिदें येंदु कलि पवमान जनना कमलगर्भन
सूनु बेंसगोंडनु मुगुळ्नगें मुखदोळव तरिसें
एन नेंनगें निरुपिसि दिरद रानिकेंयले होगि कंडेंनु
जानकिय बळिकित्तन वरिगें राममुद्रिकेंय ॥ 10 ॥
तनु बडवु देवियर देवर नेंनहुदल्लदें कार्णेनन्यव
मनवचनकायदलि शिवशिव शिवमहादेव
ऍनितु पातिव्रतेंयों जगदलि तनगें बळिकी रत्नवनु कों-
ट्टिनिय नल्लिगें होगेंनुत बीळ्कोंट्टरवरेंद ॥ 11 ॥

के साथ उनकी अगुवानी करते आलिंगन (हनुमान का) किया। हनुमान ने जाम्बवंत को प्रणाम किया। ७ "आ गये न वीर ? स्वामि-कार्य सफल संपन्न बनाकर आए न ? हे तात, हे कपिकुल-सूर्य ! सकुशल पहुँचे न ?" —इस तरह कहते आनंदाश्रु बहाते रोमांचित होते जाम्बवंत ने अत्यानंद से वायुसुत का माथा चूम लिया। ८ हनुमान लवण समुद्र पारकर इस तरफ़ आए तो उस तरफ़ (लंका में) विश्वकर्मा तथा मयासुर की राय से राक्षस राजा ने लंका की पुनर्रचना की। नवीन सुंदर रत्नखचित राजमहल का निर्माण कर असुर-गुरु भृगुपुत्र शुक्राचार्य की आज्ञा से उसमें प्रवेश किया। ९ "तो फिर क्या किया ?" इस तरह वीर हनुमान से जांबव के पूछे जाने पर हनुमान के मुखड़े पर मुस्कुराहट फूट पड़ी। उसने कहा— "आपने जो आज्ञा दी थी उसे शिरोधार्य कर, लंका जाकर जानकी को देखा। फिर देवीजी को राम की मुद्रांकित अँगूठी दी।" १० "देवीजी सूखकर (दुबली हो) काँटा बन गयी हैं। काया-मनसा-वाचा पति के स्मरण के सिवा और कुछ भी उसमें देखने को नहीं मिला। शिव-शिव महादेव ! इस जगत में वह कैसी महान पतिव्रता है ! फिर उसने यह रत्न मुझे दे दिया तथा पति के पास जाने की आज्ञा देते हुए मुझे रवाना किया।"

मेलॅमाडिद कॅलसवेनद हेळॅनलु तलॅगुत्तिदनु वै-
ताळिकरु हॊगळिदरु मेलमरेंद्र नोलगद
केळु जांबवदेव रिपुवन पालकर सदॆ वडिदु सवरिद-
ना ललितनंदनवनवनॊंदे क्षणदॊळी हनुम ॥ 12 ॥
बवर कैतंद सुररायन कुवररेळ्नूर्वरनु कालन
भवनवनु काणिसिदनक्षाद्यखिळ राक्षसर
कविसि सभॆयलि रावणन परिभविसि पुच्छाग्रदलि सुत्तिद
निवसनद शिखियिंद सीकरिमाडिदनु पुरव ॥ 13 ॥
तागि तरुविद खळर बट्टॆय सागर दॊळद्दिदनु दूतो-
द्योगविदु निम्मात माडिद राजकारियद
मेगॆ हेळुव देनॆनुत दिवकागिनडॆदरु नुडियनिद के-
ळ्दागला कपिसेनॆ कॊंडाडितु समीरजन ॥ 14 ॥
ब्ळिक बीडॆत्तिदुदु हरुषद हॊळहिनलि हॊदरॆद्दुगगनद
जलधरद जवगतिय लद्रिवनोपवर्तनव
कळिदु मार्गशिरासितद शशिनळिनसखसंगमद दिवसद
लिळिय बिद्दरु कोटॆयनु पलभरद मधुवनव ॥ 15 ॥

इस तरह हनुमान ने कहा। ११ "इसके सिवा तुमने और क्या-क्या किया ? बताओ।" इस तरह पूछे जाने पर हनुमान ने सिर झुका लिया। तब, "सुनिए जाम्बव भगवन्, राक्षस के उद्यान (अशोक वन) के रक्षकों को मार डाला। उस सुन्दर नन्दन वन (अशोक वन) को क्षण मात्र में तहस-नहस कर धराशायी कर दिया।" इस तरह आकाश में उपस्थित देवेन्द्र के सभाभवन के स्तुति-पाठकों ने स्तुति की (हनुमान की)। १२ "लड़ने आए हुए राक्षस राजा के सात सौ पुत्रों को यम की नगरी का मार्ग दिखा दिया। अक्ष आदि समस्त राक्षसों को मुँह की खिलायी। सभा में रावण का तिरस्कार कर पूँछ की कोर पर कपड़े लपेटकर लगायी गयी आग से सारी लंकानगरी को भस्म कर दिया। १३ सामना कर चढ़ आनेवालों को पकड़-धकड़कर समुद्र में डुबो दिया। तुम्हारे इस व्यक्ति ने दूत बनकर यह सब कार्य किया। इससे अधिक कहने के लिए कुछ नहीं है।" —इस तरह कहकर देवेन्द्र के चारण-भाट स्वर्ग की तरफ़ चले गये। तब ये बातें सुननेवाली कपि-सेना ने वायुपुत्र की प्रशंसा की। १४ तदनंतर आनंद तथा उल्लास से भरकर महेन्द्र पर्वत पर का डेरा उठाया। पहाड़, जंगल, गाँव वग़ैरहों को आकाश-गामी मेघों की गति से भी शीघ्र गति से (वेग से) पार करते हुए अगहन

कापि नगगद दधिमुखन भटरी पडेय हुग गुडदे तडेयलु
तोप सूरेय कोंडु कोंडहिदरा वनौकसर
आपरे बळिकव दिरिवराटोपकोदगुवडरुणजलद वि-
लाप मुखरैतंदु दूरिद रिन तनूजंगे ॥ 16 ॥
अरिदननितर मेले हुय्यल होरिगेयनु देवियर सुद्दिय
निरुगेयनु बळिकवर संतैसिदनु सुग्रीव
नेरेय दबर विवर गमनद तेरहिगेने तेरय्सि तोडेगळ
हरेय होय्लिनलिळिदरा प्रस्रवण गिरिगागि ॥ 17 ॥
देवनिद्दनु वीरभट सुग्रीव लक्ष्मणरुगळ गडणद
ली वनौकस रिदिरिनलि जयजय निनाददलि
तीविदुत्सव दिंद विमल फलावळिय काणिकेय नित्तभि-
भाव भक्तिय लेरगु तिदेरु पदके रघुपतिय ॥ 18 ॥
नमिसि जांबवदेवनुदधिक्रमन काणिसे रोम हरुषो-
द्गमद लुपचरिसिदनु जनपति जांबवादिगळ
गमनकार्य विसंच वागदे विमुख विल्लदे कंडिरे नी
वमर वैरि दशानन नेंदरस बेसगोंड ॥ 19 ॥

(मार्गशीर्ष मास) के कृष्णपक्ष (बदी) के चन्द्र-सूर्य के संगम (मिलन) के अमावास्या के दिन फलों से लदे मधुवन के क़िले पर चढ़े। १५ वन की रक्षा में नियुक्त वीर दधिमुख के सैनिकों ने इस कपि-सेना को अंदर प्रवेश करते वक़्त जो रोका पहरे पर उपस्थित वानरों को (इन्होंने) पीटकर गिरा दिया तथा समूचे बगीचे को लूट लिया। इनका सामना करते वे कैसे डटे रह सकते हैं? खून बहाते, रोते-कलपते जाकर मधुवन के रक्षकों ने सुग्रीव से शिकायत की। १६ इस घटना से वनपालकों की दीनता-भरी दुहाई तथा सीतान्वेषण सम्बन्धी विवरण सुग्रीव ताड़ गये। तदनंतर मधुवन के रक्षक वानरों को समझा-बुझाकर शांत किया। इतने में मानों जिसको आकाश भी काफ़ी न पड़ता था,—ऐसी वानर-सेना जंघा पर बँधी ढपलियों को बजाते प्रस्रवण पर्वत पर से उतरने लगी। १७ श्रीराम वीर सुग्रीव तथा लक्ष्मण के साथ वहाँ उपस्थित थे। वानर इनके सम्मुख जयघोष करते, उत्साह से फलों की भेंट चढ़ाते उपस्थित हुए तथा भक्ति-भाव-विभोर हो श्रीराम के चरण छूने लगे। १८ जांबवदेव ने प्रणाम कर समुद्र लाँघनेवाले हनुमान की ओर इशारा किया। संतोष से रोमांचित राम ने जाम्बवादि वानरों का आदर किया। फिर पूछा— "तुम जिस कार्य पर गये थे उसमें धोखा न खाते, बिना किसी रुकावट के, असुर रावण

देवरनु बीळ्कोंड नडॆदॆवु देव चित्तैसव निजॆय विवि-
धावनिय हॊक्करसु तिळिदॆवु वितळ कुहरदलि
तावरॆयसखसुतन तनुजॆय ठाव कंडॆवु तॊळलिदॆवु बळि-
का विचित्रद विषय वीथिय नॆंदनजसूनु ॥ 20 ॥
बलुह मॆरॆ दल्लिद हॊरवंटिळॆय सादॆवु मुंदॆ कंडॆवु
कलि जटायुविनग्रजनना विहग पतियिंद
खळन सुद्दियनरिदु सादॆवुजलनिधिय नल्लिद हनुमन
कळुहिदॆवु गुप्तदलि सीतॆय नरिदु बायॆंदु ॥ 21 ॥
ईत बळिक समुद्र मध्यद लात कंटक हलव कळिदु प-
रेतपति शंकर विरंचादिगळि गसदळद
यातुधानन राजधानियला तमिस्रियलरसि कंडनु
मातॆयनु मूलोक दमरनरोरगावळिय ॥ 22 ॥
बडवु गड देवियरु सॆरॆवनॆ गड महोद्यानदलि कावलु
गड महोग्र निशाट सतियरु नृपति चित्तैसु
नॆडॆनुडियललसिकॆगळलि निम्मडिय सिरिचरणारविंदद
दृढ तरद नॆनहल्ल दिल्लव नीश कॆळॆंद ॥ 23 ॥

को देख पाए न ?' १९ "सुनिए राजन्, आपके श्रीचरणों से बिदा लेकर रवाना हुए। समस्त देशों में भूमि-सुता को ढूंढ़ते हुए जाकर वितळ नामक पाताललोक के बिल में प्रविष्ट हुए। वहाँ सूर्यपुत्र की पुत्री स्वयंप्रभा के राज्य को देखा। उस आश्चर्यजनक राज्य की गलियों में भटकते रहे।" इस प्रकार जाम्बवंत ने कहा। २० (अपना) पराक्रम वहाँ प्रकट करते भूमि के पृष्ठ भाग पर पदार्पण किया। तत्पश्चात् वीर जटायु के भाई के दर्शन कर लिये। उस पक्षिराज से राक्षस का समाचार प्राप्त कर समुद्र के पास पहुँचे। वहाँ से हनुमान को यह आदेश देकर भेजा कि रहस्यात्मक रीति से सीता के दर्शन लाभ कर आओ। २१ तदनंतर हनुमान ने सागर-मध्य उपस्थित कई विघ्न-बाधाओं को जीतकर यम, शिवजी, ब्रह्माजी के लिए भी असाध्य राक्षस-राजधानी पहुँचकर रात के समय तीनों लोकों की —स्वर्ग-मर्त्य-पाताल के लोगों की माता सीता के दर्शन कर लिये। २२ "सीतादेवी जी (काफ़ी) क्षीणकाय हुई हैं। बहुत बड़े अशोक वन में वे बन्दी हैं। भयानक राक्षसियों को पहरे पर (रावण ने) नियुक्त किया है। हे राजा राम, सुनिए। आचरण तथा कथन में, तंद्रावस्था में भी केवल आपके श्रीचरणों के स्थिर ध्यान के

कळलि सूसिद केशपाशद मलिन वसनद मसुळिसिद को-
मलतॆ यंगद कोडि वरिवश्रुगळ निर्जरद
बळलिकॆय बाय्दॆरॆय लिद्दळु जलजमुखियॆंदीत हेळलु
सलॆ मरुगि तॆन्नोडलॆनलु तलॆगुत्तिदनु राम ।। 24 ।।
घुडुघुडिसि मागधिय मगनलि जडिदविळॆ गश्रुगळु मनदलि
मिडुकिदनु सुग्रीव ननिबर संतविसि बळिक
नुडिदना जांबवनु हनुमन कडुह केळिदु वनवकित्तु-
ग्गडद कदनद कथॆय लंकानगर दाहनद ।। 25 ।।
अळिदु दनितरू मेलॆ चिंताकुलतॆ रोमांचनद हरुषद
हॊळॆय लीसाडिदरु रघुपति लक्ष्मणादिगळु
बलुसखरु बलुभृत्य रिद्दडॆ बॆळगदे सत्कीर्ति चंद्रिकॆ
कलियॆ बायॆंदप्पिदनु रघुरामननिलजन ।। 26 ।।
पटुतनवु दॊरकिदरॆ शुचितन घटिस लरियदु शुचितनवु सं-
घटिसिदरॆ पटुवागनुभय गुणंगळुळ्ळवगॆ
घटिसदधिक विवेकवी विस्फुट गुणंगळु नम्म भाग्यो-
त्कटदले सेरिदवु निनगॆंदरस हरुषिसिद ।। 27 ।।

सिवा वे कुछ भी नहीं जानतीं।" इस तरह कहा। २३ "झूलते बिखरे बाल, मलिन वस्त्र, कोमलता-विरहित अंगांग, धाराकार वहता अश्रु-प्रवाह, थके-माँदे होंठ, —यह दुःस्थिति है कमलमुखी सीता की। —इस प्रकार हनुमान के समझाने पर मैं अत्यंत व्याकुल हुआ।" इस प्रकार के जाम्बवन्त के कहने पर राम ने सिर झुका लिया। २४ लक्ष्मण की आँखों से धाराकार अश्रु बहने लगे। सुग्रीव मन ही मन दुःखी हुए। जांबव ने हर एक को धैर्य बँधाते सांत्वना दी। हनुमान की वीरता का वर्णन करते अशोकवन को उद्ध्वस्त कर, भयानक युद्ध कर लंका नगरी को जो जला डाला —वह सारी कथा सुनायी। २५ यह सब सुनकर व्याकुलता जाती रही। राम-लक्ष्मणादि हर्षित होकर संतोष की नदी में तैरने लगे। "विश्वसनीय स्नेही शक्तिमान सेवक हों तो सुयश रूपी चंद्रिका शीतलता अवश्य प्रदान करती है —इसमें कोई शक नहीं। आओ मेरे वीर।' इस तरह कहते हुए रघुराम ने हनुमान को अपने बाहुपाश में जकड़ लिया। २६ "जहाँ सामर्थ्य है वहाँ परिशुद्धता (पवित्रता) का अभाव है; जो परिशुद्ध है उसका समर्थ होना संभव नहीं। ये दोनों गुण (परिशुद्धता, दक्षता) जहाँ हैं वहाँ अधिकांश विवेक का अभाव है। ये दोनों गुण साफ़-साफ़ जो तुममें विद्यमान है यही मेरा महत् भाग्य है।"

मुरिदु चरणकें नमिसि विश्वंभरेय सुतेय शिरोमणिय वळि
केरडु कैगुडितेयलि धरिसि मनोनुरागदलि
अरस रामंगीये नगुतादरदिना हनुमंतदेवन
परम करुण कटाक्ष रुचियलि होदेसिदनु राम ॥ 28 ॥
उदधि मथनदोळमळ कौस्तुभदुदय दंतरदल्लि जनिसि
त्तिदु सुरेंद्रं गाय्तु हसुगेयली महामणिय
त्रिदश पति जनकंगे नृपयज्ञदलि कोट्टनु जनकसीतेय
मदुवेयलि तनगित्तनित्तेनु सीतेगानंद ॥ 29 ॥
करुहिद हुदेंदरस नेळेने सद्रिनवोलु रंजिसुव रत्नव
तुरुगि तूळुव हरुष पुळकदि नित्तननुजंगे
नेरेय दीतंगीव वस्तूत्करव दंतिर लेंदु वोस्मन
परम पदविय नित्तु नृप मनदणिये मन्निसिद ॥ 30 ॥
तीरदे ता वेड तन्नय नारियिमळ कटाक्ष दग्रद
धारे सोंकिदडहुदले ब्रह्मेंद्र पदविगळु

इस तरह उद्‌गार निकालते राजा राम प्रसन्न हुए। २७ हनुमान ने सिर नवाकर, श्रीराम-चरणों की वन्दना करते हुए भूजाता सीता से प्रदत्त चूड़ामणि को दोनों हाथ जोड़े अंजली में धरकर, अत्यानंद से राजा राम को दिया। राम ने मुस्कुराते हुए आदर के साथ अपनी परिशुद्ध कृपादृष्टि की कांति से हनुमान को आच्छादित किया। २८ "समुद्र-मंथन के संदर्भ मे परिशुद्ध कौस्तुभ मणि के उपरांत यह (चूड़ामणि) रत्न निकल आया। समुद्र-मंथन से उत्पन्न वस्तुएँ जब बाँटी गयीं तो यह इन्द्रदेव के हाथ लगा। राजसूय यज्ञ में देवेन्द्र ने यह महान मणि जनक राजा को दी। सीता के व्याह में जनकराजा ने इसे मुझे सौंप दिया। मैंने यह सीता को दे दिया।" इस तरह राम ने कहा। २९ "यह सही सच्ची (पहिचान की) निशानी है" —कहते हुए उमड़ पड़ते हुए आनंद के कारण रोमांचित हुए राम ने बालसूर्य-सदृश प्रभासंपन्न उस रत्न को अपने भाई को दिया। "इसे जो कुछ भी भेंटस्वरूप दिया जाय— यथेष्ट नहीं है। रहने दें, कोई बात नहीं।" इस तरह कहते हुए राम ने हनुमान को 'ब्रह्मपद' देकर मनःपूर्वक अनुग्रह किया। ३० "राम से भले ही साध्य न हो; लेकिन उनकी धर्मपत्नी की तिरछी नजर की किरण के स्पर्श मात्र ने 'ब्रह्मपद' (ब्रह्मेन्द्र की उपाधि) ऐसों को लभ्य होता है। यह वेदों का सार सर्वस्व (अर्थ) है। लक्ष्मीपति प्रसन्न हो तो इसमें क्या आश्चर्य! वीर कुमार लव! सुनो —यह कैसी आश्चर्यजनक बात है।"

सारतर निगमार्थ विदु बेंर गारिगा लक्ष्मीश नेलिदरें
वीर केळु विचित्र विद केळेंदना मुनिप ॥ 31 ॥

केळिदनु बळिकमर वैरि विशाल नगरद पथवना दश
मौळि यनुपम दुर्गदुग्राटोपवनु राम
आळु कुदुरे रथाश्व दुब्बर देळिगेयनव नैश्वरियदु-
ब्बाळिसुव ढाळिसुव नगॆ मोगदलि समीरजन ॥ 32 ॥

नूरुयोजन जलधि मेलिन्नूरु योजन पथ महापुर
नूरु योजन दुन्नतद गिरि मूररग्रदलि
तोरुति हुदिन बिंबद वोलद नेरल मररि गसदळवु हदि
नारु योजन दुदित कोटावळय वदकेंद ॥ 33 ॥

अगळु तानैवत्तुयोजन दगल केळगण कोटेयोत्तिन
लगडु रक्कस नैश्वरियवनु होगळु वडे तनगे
मिगदु मति सैनिकद संख्येय पोगळलसदळ वमररायन
बिगुह्नु देवरु मुनिदु नोडिदडे नहुदोयेंद ॥ 34 ॥

हरेदु दोलग वनितरि मेलरस सुग्रीवादि सुभटर
करसरोजदि बीळुकोट्टनु बळिक बीडिकेगे

इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। ३१ तत्पश्चात् राम ने रावणासुर की राजधानी पहुँचने का मार्ग पूछा। दशकंठ के असाधारण दुर्ग की भयानकता के बारे में पूछा। रावण की पैदल-सेना, अश्व-बल, रथों की अधिकता, उसकी संपदा-समृद्धि आदि के बारे में प्रसन्नता से चमकती मुस्कुराहट के साथ हनुमान से पूछा। ३२ सौ योजन विस्तृत सागर, उस पर दो सौ योजन दूरी का मार्ग, फिर सौ योजन विस्तार के तीन पर्वतों पर सूर्यबिंब-सदृश यह महानगरी दिखायी पड़ती है। उस पर आरोहण देवताओं के लिए भी असाध्य है। उसके चारों तरफ़ सोलह योजन विस्तृत दुर्ग है। —इस प्रकार हनुमान ने (लंकानगरी का) वर्णन प्रस्तुत किया। ३३ निचले दुर्ग के नज़दीक की खाई पचास योजन चौड़ी है; उस दुष्ट राक्षस की संपदा के वर्णन में मेरी बुद्धि असमर्थता अनुभव करती है। उसकी सेना की संख्या भी वर्णनातीत है। वह देवराज इन्द्र से भी प्रबल है। प्रभु क्रोध-भरी दृष्टि से देखें तो न जाने क्या होगा!" इस प्रकार हनुमान ने कहा। ३४ इसके बाद सभा विसर्जित हुई। तदनंतर राम ने सुग्रीवादि वीरों का हाथ धारे उनको निवासस्थानों में भिजवा

तॊरवॆयधिपति राय नरकेसरि निजानुज गूडि नूकिद
निश्ळ नहित वधाविरोधद वहळ चिंतॆयलि ॥ 35 ॥

॥ सुंदरकांड समाप्त ॥

दिया। 'तॊरवॆ' के स्वामी नरसिंह-अवतारी राम ने शत्रु-हत्या की गहरी चिंता में भाई के साथ रात बितायी। ३५

॥ सुन्दरकाण्ड समाप्त ॥

युद्धकाण्ड

ऒंदनेय संधि

सूचने— देव राघवनधिकबलखळ रावणन वधॆगॆंदु कलि सुग्रीव बलसहितंदिवनु
निरुपम महार्णवव ।

दाशरथि सुतकेळु बळिक दिनेशनुदयद लरस सलॆ प्र-
त्यूष कर्मव रचिसि नडॆतंदित्त नोलगव
कीशकुल कमलार्क मुख्य महासुभटरैतंदु करवि-
न्यास मस्तकरागि कुळ्ळिर्दरु सरागदलि ॥ 1 ॥
नडॆदुदी परियंत कार्यद कडुहु कुंददॆ मुंदणिन मुं-
गुडिय दायकॆ दारियावदु वीर हेळॆंदु
नुडियलिन सुत कैमुगिदु दळ नडॆयलॆणिकॆगिदेनु दॊडिडतु
कॊडलियेकॆळॆगॊनॆगॆ कार्यद बॆगडदेनॆंद ॥ 2 ॥
जीय नम्मीदळकॆ नीलन नायकन माडिरलि सेवॆगॆ
वायुविननंदननु देवर पादपंकजद
रायकुवरन निलिसि निजबल दायतद रक्षणॆगॆ मेलण
दायदनुभवकजसुतन कैविडिदु कॊळ्ळियॆंद ॥ 3 ॥

पहली संधि

सूचना— राघव देव अधिक बलवान रावणासुर के वध के निमित्त वीर सुग्रीव की सेना को साथ लेकर विशाल समुद्र की ओर आए ।

हे दाशरथी के पुत्र ! सुनो । दूसरे दिन सूर्योदय के समय राम प्रातर्विधि समाप्त कर सभाभवन में आए । कपिवंश रूपी कमल के लिए सूर्य-सदृश सुग्रीव आदि महावीर आकर माथे पर हाथ धरे सुखासन पर विराजमान हुए । १ "यहाँ तक का कार्य बड़ी ही शीघ्र गति से संपन्न हुआ । इसके बाद अब सेना का संचालन करते आगे बढ़ने का मार्ग कौन सा है ? सुनाओ वीर" —इस प्रकार राम के कहने पर सुग्रीव ने हाथ जोड़े निवेदन किया— "सेना कूच करे । यह क्या ऐसा महान कार्य है कि विचार करते बैठें । घौद काटने के लिए कुल्हाड़ा क्यों लें ? इस कार्य के लिए डर किस बात का ?" २ "राजन्, नील को हमारी इस सेना का नायक बनाएँ । आपके श्रीचरणकमलों की सेवा के लिए हनुमान को (अपने पास) रख लें । हमारी इस विशाल सेना की रक्षा के लिए अंगद को

आदुदा मरियादेयलि संपादिसितु सेनाधिपत्यकॆ
वैदिकोक्तद विविध परिकरवग्गिननंदनगॆ
ऐदि तमर कदंब वंवर वैददॆनॆ सुरमुनि गळिळिदरु
मेदिनिगॆ मांगल्य तूर्यत्रयद रभसदलि ॥ 4 ॥
गुरुविनभिमत लग्नदलि सुस्थिर लग्न दॊळाय्तु वॆंग्वा-
नरसुतंगभिषेक कपिसेनाधिपत्यकद
हरसि सेसॆय हाय्किदरु सुर तरुणियरु हूवळॆय हॊनलु-
ब्बरिसिदुदु हॊदरॆद्दुदा प्रस्थान वाद्यरव ॥ 5 ॥
हरिवल्लव नति हरुषदलि सिंगरिसिदनु सुरराजनुचिता
भरण दिव्य सुगंध माल्यांवर समग्रदलि
शिरव मणिदणिमादि सिद्धि गळरस नंघ्रिगॆ वीळु गॊंडनु
सुरगणद सम्मेळदिंदमरावती पुरिगॆ ॥ 6 ॥
बळिक लुत्तर फल्गुणी सम्मिळित विश्रुत मार्गशिरदु
ज्वलित शुद्धाष्टमिय लभ्रद्योत नंवरद
वळय मध्यदलिरलु तारावलद वलदुसुरिनलि नीलो-
त्पल निभांगनु तॆरळिदनु विजयाभियोगदलि ॥ 7 ॥

नियुक्त करें। सेना के आगे-आगे संचालन करने के (कार्य के) लिए अनुभवी जांबव को नियुक्त करें।" —इस तरह कहा। ३ अग्निपुत्र नील के सेनाधिपति के तौर पर नियुक्त करने के मंगल-कार्य के लिए वेदोक्त रीति से तथा शिष्टाचार के अनुसार विविध प्रकार के द्रव्यों का संग्रह किया गया। आकाश में देवताओं की इतनी भीड़ जमी कि जगह कम पड़ने लगी। मंगलमय गान, नृत्य, वाद्यों के निनाद के मध्य देवमुनि धरती पर उतर आए। ४ गुरु ने सम्मति देते जो लग्न सूचित किया था उस स्थिर शुभ लग्न में अग्निपुत्र नील का कपि-सेनापति के तौर पर अभिषेक हुआ। देवता-स्त्रियों ने आशीर्वाद देते अक्षत छिड़काए। फूलों की वर्षा का प्रवाह उमड़ पड़ा। (युद्ध) यात्रा के गाजे-बाजों की ध्वनियों की गूंज से आकाश भर गया। ५ देवेन्द्र ने बहुत ही संतोष से सुयोग्य आभूषणों से तथा दिव्य सुगंध और फूलों के हारों से और अलंकारों से सारी कपि-सेना को सजाया। अणिमादि अष्ट सिद्धियों को प्राप्त करनेवाले राम के चरणों में सिर नवाकर, प्रणामकर, देवेन्द्र अपने देवगणों के साथ उनसे विदा लेकर अमरावती नगरी चले गये। ६ तत्पश्चात् मार्गशीर्ष (अगहन) मास के शुक्लपक्ष (सुदी), अष्टमी के दिन, उत्तर फल्गुनी नक्षत्र के सुयोग से संपन्न सुमुहूर्त पर, सूर्य के गगनमंडल में मध्यवर्ती स्थान में उपस्थित रहते समय तारा-वल

अँद्दुदोंडने समस्त बल लळियेंद्ध लहरिय लुळिय शरधिय
कद्दियलि कुजकुधर दुब्बर दायुधंगळलि
गद्दुगेंयनिळिदबुजभवनवरिद्द बीडिगें बंदु विनमित
मुद्रेयलि मुगिदिर्द ननुपम करपुटांजलिय ॥ 8 ॥
जय जयध्वनि जडियें लंकाजयनुरु स्कंधदलि रिपु नि-
र्भयनु मंडिसिदनु मरुद्गण राजसुतसुतन
नियत निजकंधरद लबुज प्रियकुलानुज नोप्पि रविजा-
ज्ञेयलि नडेदुदु दंडु कदनोद्दंड राघवन ॥ 9 ॥
अररें रघुराजेंद्र सैन्यद सिरियने वण्णिसुवें नग्गद
करडिगळें करिघटेंगळा मुसुगळें तुरंगचय
करिय कपिगळें तेरुगळु तरु चररू पदचर राय्तलै हॊस
परिय चतुरंगद गडावणें घाडिसितु जगव ॥ 10 ॥
तोळुगळ परिघाळि नीडु लांगूलवे सबळंगळुग्र क-
राळनख वसि धनुवु दंष्ट्रगळुरु कृपाण गळु
मेलुगैदुग ळुळिद गिरितरु केळिदै कुश नेंरहिदमृत
फलाळि कोट्टेगेंयेनलु कंगोळि सित्तु कपिसेनें ॥ 11 ॥

प्राप्त करते नील मेघश्याम (राम) ने विजय की अभिलाषा से यात्रा शुरू की। ७ अत्यधिक वेग से ऊपर उछलते समुद्र की लहरों की तरह अमितोत्साह से पेड़, पत्थर आदियों के आयुधों (शस्त्रों) को हाथ में धरे समस्त कपि-सेना सन्नद्ध हुई। आसन से उतरकर जाम्बवंत ने राम-लक्ष्मण के निवासस्थान पर पहुँचकर विनम्र हो, हाथ जोड़े। ८ जय-जय निनाद चारों ओर व्याप्त हो गया। शत्रु-भयंकर राम लंकाविजयी हनुमान के कंधों पर सवार हुए। इन्द्रपुत्र वाली के सुपुत्र अंगद के कंधों पर रविकुल राम के भाई लक्ष्मण सवार हुए। सुग्रीव की आज्ञा से युद्धभयंकर श्रीराम की सेना आगे बढ़ने लगी। ९ बाप रे बाप! रघुराम की सेना संपदा का कैसा वर्णन करें! (जो वर्णनातीत है।) बलवान हाथी और रीछों की सेना; काले मुँह वाले बन्दरों की सेना; अश्व-सेना, काले बन्दर, रथ, वानरों की पैदल-सेना —इस प्रकार विनूतन चतुरंग सेना के शोरगुल ने सारे जगत को व्याप्त कर लिया। १० भुजाओं को ही अर्गलाएँ बनाए, लंबी पूँछों को भालों के रूप में प्रयुक्त करते, भयानक क्रूर नाखूनों को तलवार तथा धनुष बनाए, टेढ़ी दाढ़ों को कृपाण बनाए, चट्टान तथा पेड़ों को प्रबल आयुधों के रूप में प्रयुक्त करते कपि-सेना शोभायमान थी। सुन

नडेदुदै बलबळिक बलिमुख पडॆय पदहतिगॆहिप नसुव-
क्कुडिसॆ कुलगिरि जरियॆ कूरुमनुसुरु कंठदलि
मिडुकॆ मददिगु दतिकुल तलॆगॊडहॆ कमलभवांड मंडल
जडियॆ जरिदुदु धरणि सेनागणद भारदलि ॥ 12 ॥
कीलु कळचिद वमर शैलद मेलु जगवॊर्गुडिसिदवु दिगु
मूलॆ हरियलु बिट्टुदतळद बॆसुगॆ भूतळद
ताळु ववरिन्नारॊ यॆनुतांदोळ मानसनागि बॆबिड
दोलगिसि बरुतिर्दनजनंभोज लोचनन ॥ 13 ॥
हरिचमूचरण प्रहत पददुव्वरद रजदलि मुळुगितग्गद
हरिपदवु हरिबिंब हरिपद हरिजनस्थान
हरिय वॊलु हरि सूनु निर्मित तरतरद भुवनगळ जठरां-
तरदॊळळवडिसित्तु हॊगळुवॆ नेन नद्भुतव ॥ 14 ॥
कटक वीपरि नडॆदु हरगिरि कटकदलि बिट्टुदुकणा गिरि
तट दॊळायितु पयण मरुदिन मेचकाह्वयद
अटवि तळपट वागॆ नडॆदुग्गटद मलॆयाद्रियलि बिट्टुदु
पटुपराक्रमि नीलनाज्ञॆयला महासेनॆ ॥ 15 ॥

रहे हो न कुश; संग्रहीत अमृत-फलों का खलिहान साथ (जा रहा) था। ११ इसके बाद सेना आगे बढ़ी। वानर-सेना की पदचाप के कारण आदिशेष के प्राण नहों में समाए। पहाड़ों का समूह धँस गया। (धरती को धारनेवाले) कछुए को श्वासोच्छ्वास लेने में बड़ी कठिनाई हुई। मदोन्मत्त दिग्गजों के माथे ठनके। ब्रह्मांड काँप उठा। वानर-सेना के बोझ के कारण धरती धँस गयी। १२ मेरुपर्वत की गाँठ ढीली पड़ी। ऊपर के लोक एक-दूसरे पर टूटकर गिर गये। दिशाओं के कोने फट जाने के कारण भूमि तथा पाताललोक के मध्य के टाँके ढील पड़ गये (अर्थात् खुल गये)। "इस स्थिति को कौन रोक सकेगा ?" इस तरह अनिश्चित मन से सोचते ब्रह्माजी कमलाक्ष श्रीहरि की सेवा बड़ी तन्मयता के साथ करते जाते थे। १३ वानर-सेना के पदाघात से उठी धूल के ढेर में आकाश, सूर्यबिंब, आकाशगंगा तथा सत्यलोक डूब गये। ब्रह्मसृष्टि के विविध लोकों के अन्तरतम प्रदेशों में वायु की तरह धूल व्याप्त हो गयी। १४ इस रीति से यात्रा करते वानर-सेना ने कैलास पर्वत की उपत्यका में डेरा डाला। अगले दिन मेचक पर्वत की पठार में से होते हुए वह समरयात्रा आगे बढ़ी। नील की आज्ञा से चलते वानर महासेना

पयण नाल्करके सारिदरु शरधिय तटाकवनमम नॆलना
नियतबल जलराशियलि मुळुगितु क्षणार्धदलि
भयद भारणॆयिंद सीता प्रियन चरणके मौक्तिकद मणि
मयव काणिके गॊडुव वोलु कडलुब्बि तिदिरिनलि ॥ 16 ॥
तॆरॆय गुडिगळ फेन पिंडोत्करद धवच्छत्र दुरुसी
करद चामरदमळ सलिलावर्त नर्तनद
भरित रव घुळुघुळु निनादद मॊरॆव भेरिय लिदिरु गॊंबं
तररॆ मॆरॆदुदु शरधि वसुधाधीश रघुपतिय ॥ 17 ॥
ऒदॆदु वेलाचलवनभ्रद तुदिगॆ लंघिसि मुरिदु वितळव
कदुबि भोरॆदुलिदु दिगुभित्तिगळॊ हॊय्दलॆदु
मददहंकारदलि तनगिल्लि दिरहंप्रतिभटनॆनुत हरु-
षदलि मलदोलदाडुतिर्दुदु जलधि धृतजलधि ॥ 18 ॥
बीडु बिट्टुदु सकल नायक वाडिगळ गुडि हॊय्द वसुर वि-
भाडगॊळॆदळिरुगळ हॊदकॆय राज्यवैभवद
नोडि शरधिगॆ पडिसमुद्रद पाडुमॆरॆदुदु पाळयवु तॆग-
दोडितल्लिय ठाणॆयद खळरसुर पुरवरके ॥ 19 ॥

ने सारे वन-प्रान्तर प्रदेश को युद्ध के मैदान-सदृश बनाते हुए घने मलय पर्वत पर पड़ाव डाला। १५ चार बार पड़ाव डालते हुए, फिर समुद्र किनारे पहुँचे। क्षणार्ध में वहाँ (सागर-तट) की सारी भूमि उस बहुत बड़ी संख्या की सेना-सागर के कारण ढँक गयी। सामने का समुद्र भयाधिक्य के वशीभूत हो सीतापति के चरणों में मुक्तामणियों को समर्पित करने के बहाने (ज्वार में) उमड़ पड़ा। १६ (तब) लहरें ही ध्वजा-सदृश, फेन ही श्वेत छत्र-सदृश, तुषार चामर-सदृश, जल के आवर्त (भँवर) नृत्य-सदृश तथा जल का 'घुल-घुल' शब्द मानों भेरी (स्वागत-वाद्य) सदृश बने, ऐसा लग रहा था कि प्रकाशमान समुद्र राजा राम की अगुवानी कर रहा हो। १७ सागर मानों (अपने) किनारे के पहाड़ को लात मारकर आकाश के छोर तक उछलकर, वहाँ से लौटकर पाताल में कूदकर, घनघोर गर्जना करते दिक् रूपी दीवालों से टकराकर मदोन्मत्त हुए, अपने टक्कर के पराक्रमी को न पाने के कारण फूला न समाते अपनी अपार जलराशि लिये डोलायमान था। १८ सेना के मुखियों के अलग-अलग डेरे बने। कोंपलों के आवरण से आवृत राजवैभव-संपन्न कुटीर असुरारि श्रीराम के लिए निर्मित हुआ। वानर-सेना का यह महान पड़ाव समुद्र के लिए प्रतिद्वन्द्वी के रूप में शोभायमान था। वहाँ डेरा डाले पड़े राक्षस

ॲलॆ रघुक्षिति नाथ सुतकेंळ् खळशिरोमणि सुप्रतापा-
नलन तेजद तीव्र शौर्यद सकल वैभवद
कलित मददुब्बिनलि सुभटावळि सहित लोलगदलिरॆ तं-
दिळुहिदरु भयभरित बीजद हॊय्रॆयना खळरु ॥ 20 ॥
जीय बंदिर्दे बहळ कपिकट कायकल्पित कामरूपिन
कायदतिबलरिंद्र यम वरुणादि निर्जरर
आयतव नणकिसुव कुलशैलायुधरु कण्णिक्कलसदळ
वायितॆमगॆलॆ जीय यॆंदरु खळरु कैमुगिदु ॥ 21 ॥
ॲत्त नोडिदडत्त विलयद लॆत्तिदंबुधियंतॆ बलविर्दॆ
कृत्तिवासंगसुरहर कमलजरि गसदळद
मृत्युमुख दवरर्दॆ महीजव कित्तु नम्मी पुरवनग्नि गॆ-
तुत्तु गॊट्टवनंददवरर्दॆ कोटि संख्येयलि ॥ 22 ॥
देवरंदॆळतंद सीता देवि यरसन दंडुगड सु-
सुग्रीवनॆंब कपींद्रना दळभारकॊडॆय गड

डर के मारे लंकानगरी भाग गये। १९ हे रघुपति भूपालक के पुत्र, सुनो। वीरता की अग्नि के तेज से ओतप्रोत साहसातिशय के वैभव के कारण मदोन्मत्त राक्षसश्रेष्ठ वीरों के मध्य सभाभवन के मंटप में विराजमान था। समुद्र किनारे से (भय के मारे) भाग आए राक्षसों ने अपना भय का बोझ रावण के सम्मुख उतार दिया। २० "हे स्वामिन्, चाहे जो रूप धरने की शक्ति रखनेवाले, महान बलवान देहधारी वानरों की एक बहुत बड़ी सेना (पार) उतर आयी है। इन्द्र, यम, वरुण आदि देवताओं को पीछे डालनेवाले, बड़े भारी चट्टानों को आयुधों के रूप में धारण करनेवाले (उन) वीरों के समूहों को देखते-देखते हमारी आँखें चौंधियाँ गयीं।" इस तरह उन राक्षसों ने हाथ जोड़े निवेदन किया। २१ "जहाँ कहीं भी, जिस किसी तरफ़ दृष्टिपात करें, प्रलयकालीन, उमड़े हुए सागर की तरह सेना फैली है। शिव, विष्णु, ब्रह्मा —इनमें से कोई भी सामना न कर सकें —इस प्रकार की मृत्युमुखी सेना चारों ओर फैली है। अशोक वन के पेड़ों को उखाड़कर हमारी लंकानगरी को आग में झोंकने वाले जैसे बलशाली करोड़ों की संख्या में हैं।" २२ स्वामिन्! लगता है— उस दिन अपहरण कर लायी गयी सीता के स्वामी की वह सेना है। सुग्रीव नामक कपिराज उस भारी सेना के अधिपति हैं। ऐसी दशा में, समुचित राजनीति का मार्ग क्या हो सकता है— आप विचार करें। हम

आवुदभिमत राजकार्यद जीवळवनद देवरे सं-
भाविसुवुदाव् बंद हदनिदुर्येदरा खळरु ॥ 23 ॥
हुलु नृपालन हगेतनद हेक्कळव हेळुव हंदेगळ बा-
य्गळनु होय् होय् येनुत रक्कसररस कोपदलि
इळिदु सिंहसनव परिमित निळयकभि मुख नागि करसिद
नळुकिनलि बळिका प्रहस्त सुरेंद्रजितु खळर ॥ 24 ॥
इंदिनुत्तर देसेय वर्तेय चंदवनु केळिदिरे सीतेय
हिंदणरसनु होळकिदनु गड होरद वैरदलि
अंदुनम्मय पुरव नुरियलि संधिसिद कपि यंददलि भट-
वृंद नेरेदुदु गडयिद .किन्नेनु हदनेंद ॥ 25 ॥
आरियबारदु जीय रिपुनृप रिरितकेम्मोळ गोदगुवदु कडु
वेरगु कदनदलिं दुधरनळुकुवनु देवरिगे
मरदु कोंडिर लेके नावेच्चरुववी समयदलि नम्मनु
कोरते नेम्मिहु दागियेंदा सचिवपति नुडिद ॥ 26 ॥
समनु समनलि बिट्टिहनु विक्रम विहीननु केत्तिहनु सं-
भ्रमिसुवनु सत्वाधिकनु सप्तांग वैभवके

इसी उद्देश्य से आए हैं।" इस प्रकार उन राक्षसों ने कहा। २३ "उस क्षुद्र राजा के विद्वेष की अत्यधिक प्रशंसा करनेवाले इन नृशंसों के मुँह पर थप्पड़ जमाओ —इस तरह कहते राक्षस राजा (रावण) क्रोध से सिंहासन से उतरकर अत्यंत क्षुब्ध हो मंत्रालोचना कक्ष में पहुँच (उन्होंने) प्रहस्त और इन्द्रजित् को बुला लिया। २४ "आज उत्तर दिशा से आया समाचार सुना न? सीता के भूतपूर्व पति विद्वेष प्रकट करते दिखायी पड़े हैं। हमारी राजधानी को आग लगाकर जलानेवाले कपि जैसे वीर कपियों का झुंड इकट्ठे हो आए हैं। इसके लिए क्या किया जाय?" —इस प्रकार रावण ने पूछा। २५ "हे प्रभो, यही तो समझ में नहीं आता कि यह कैसे संभव हुआ! शत्रुराजा हम पर चढ़ आए —यही सबसे बढ़कर आश्चर्य की बात है। युद्ध में साक्षात् शिवजी भी आपका सामना करने में डरते हैं। हममें दोष रहने के कारण, ऐसे समय हमें सतर्क रहना चाहिए।" —इस प्रकार प्रधान सचिव ने समझाया। २६ शक्ति में समानता रखनेवाले (एक-दूसरे की बराबरी कर सकनेवाले) एक-दूसरे से मेलजोल नहीं बढ़ाते। बलवान भी अपने से बलवान से डरता है। लेकिन अधिक शक्तिसंपन्न व्यक्ति —स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोश,

क्रम विदीगॆलॆ जीय वसुधा रमणरिगॆ दंडॆत्ति बहुदिदु
समतॆ गनुनय वर्ऱियबेहुदु राजकारियव ॥ 27 ॥
अदर्ऱिनहितन बलद महिमॆय हृदनना बॆलदॊळु रणोत्सव
दधटरनु रणदधटरॊळु हॆसरुळ्ळ साहसर
विदित साहसरॊळु सुमंत्रास्पदरना मंत्रज्ञ रॊळ ग-
गगद विशुद्ध विरोध विभवरनर्ऱियबेकॆंद ॥ 28 ॥
अर्ऱिदु नॆगळुव राजकार्यकॆ कॊर्ऱतॆ हॊगदॆलॆ जीय लोककॆ
बॆर्ऱगु कोडगविडु कूडुवुदवलि पालरिगॆ
मर्ऱॆयदैसल्लवॆ विचारिसॆ हॊर्ऱदिरदु हगॆपाडु नीतियि-
दुर्ऱिसुवडॆ बल्लिदन बेहिगॆ बॆसस बेकॆंद ॥ 29 ॥
अहुदु नीतियिदॆंदु मनदलि वहिसि खळ बळिका प्रहस्तन
विहित वचनकॆ मॆच्चि कळुहिद नाप्त गुप्तिगर
अहिमकर कुलनॆडॆगॆ मंत्रिय ग्रहकॆ कळुहिदु तंदॆमक्कळु
रहव माडिदरॆलॆ कुमाररु केळिरॆयॆंद ॥ 30 ॥

सैन्य तथा मित्र —इस प्रकार के राज्य के सप्तांग वैभव को पाने के लिए ललकता उत्साह प्रकट करता है। यह तो राजाओं के लिए योग्य मार्ग है। (इस ढंग से) आज जो चढ़ आए हैं —उन पर ग़ौर करें तो यह शत्रु अपनी बराबरी का है —मानते हुए राजकार्य की नीति निर्धारित करनी है। २७ इसलिए शत्रुसेना की महत्ता की पूरी जानकारी, उस सेना में उपस्थित युद्धोत्साही वीरों की महिमा, युद्धवीरों में नामी-गरामी साहसियों का पूरा-पूरा विवरण, प्रसिद्ध साहसी वीरों में दिखायी पड़ने वाले युद्धकलामर्मज्ञ तथा उन मर्मज्ञों में कितने परिशुद्ध विरोधी भाव परिपूर्ण हैं —आदि-आदि बातों की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।" —इस प्रकार प्रहस्त ने सुझाया। २८ पूरी जानकारी प्राप्त कर क़दम उठाए जानेवाले राजकार्य (राजनीति) में दोष नहीं उपस्थित होता। पृथ्वी के राजाओं के साथ कपि-सेना का यह मेल-जोल ही जगत में, अत्यंत आश्चर्यजनक घटना है। ग़ौर कर देखें इसमें काफ़ी धोखा लगता है। शत्रु की स्थिति इसे सहन करने में असमर्थ रहेगी। राजनीति के मार्ग का अनुसरण अगर करना चाहते हैं तो समर्थ गुप्तचरों को आज्ञा दीजिए।" इस प्रकार प्रहस्त ने सुझाया। २९ "हाँ, हाँ, यही ठीक लगता है।" —इस तरह मन ही मन सोचते रावण ने प्रहस्त की समयोचित बातों को पसंद करते अपने निजी (विश्वासू) गुप्तचरों को रविकुल राम के पास भेजा। तत्पश्चात् मंत्री को उनके निवास पर भिजवाकर बाप-बेटे

भूरिभुवनद बहळ भुजबल भारकरु नावी नेलेगे नम-
गारु सरि नावंजलेकी बणगु भूपतिगे
वैरदलि नम्मुवनु गेलिदी नारियनु कोंडोय्व भटन वि-
कारवनु नावरिवॆ वेनुतुब्बिदरु तम्मोळगे ॥ 31 ॥
ऒनदु दनितरु मेले तन्नय मनद संशय बीळुकोट्टनु
मनॆगे मगननु तग्गदिर दिन्नसुरवल्लभन
घनतरद बाहुप्रतापद विनुत दीपक वेनलु बिद्दुदु
वनधियोळगिन बिंबवंबरदिंद पश्चिमद ॥ 32 ॥

ऎरडनॆय संधि

सूचनॆ— हलवु नयनीतियलि रामन । ललनॆयनु बिडहेळलनुजन हॊळल हॊर-
वडिसिदनु कनलिद्दु कलिदशग्रीव ।

केळिदै कोसल धरित्रीपालसुत सुरवंश कुलहृ-
त्कूल नॆदे यलि हुणुबुदोरितुहगॆय हम्मुगॆय

रहस्यात्मक आलोचना में लीन हुए। हे कुमार लव-कुश, सुनो।" इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ३० "हम तो, इस महान लोक के अत्यंत भारी भुजबलशाली जो ठहरे। हमारा सामना कौन कर सकते हैं ? इस मामूली वह भी एक क्षुद्र राजा से हम क्यों डरें ? विद्वेष को मोल लेते हुए, हमको जीतकर, सीता को ले जाने की इस ताक़तवर की हैसियत तो हम जानते ही हैं।" —इस तरह कहते बाप-बेटे अपनी-अपनी ढपली पर अपना-अपना राग बड़े उत्साह के साथ आलापने लगे। ३१ तब कहीं जाकर रावण के मन का संदेह मिटा। बेटे को उसके निवास पर भिजवा दिया। 'अब राक्षस राजा का, भुजबल विक्रम का दीप अधिक समय तक प्रज्वलित नहीं रह सकता' —इसकी अशुभ सूचना देते मानों सूर्यबिंब आकाश से पश्चिमी समुद्र में जा गिरा। ३२

दूसरी संधि

सूचना— राम की पत्नी को भिजवा देने के लिए कई चतुरोक्ति, न्यायपूर्ण उक्तियों से विभीषण ने नीतिपरिपूर्ण जो उपदेश दिया तो उससे चिढ़कर दशकंठ ने भाई (विभीषण) को लंकानगरी से निर्वासित कर दिया।

हे कोसल-राजकुमार, सुन तो रहे हो न ! देवताओं के लिए हृदय-वेदना बने रावण के हृदय में शत्रु की कसक का तीर चुभ गया। रात

एळु तोऱगुत कुळ्ळिरुत चिंता लतांगिय रतिय कूत स-
म्मेळदलि नूकिदनु निशियनु निंद निद्रॆयलि ॥ 1 ॥
कमलिनी विकसित मनोविभ्रम विलोकन नन्यरजनी
रमणिय सितांबर निकरुषणकर चमत्कार
अमरराज दिशांगनारति सुमुख नुप्पडिसिद नति मं-
भ्रमदि नुदय नगेंद्र मणि पर्यंक पीठदलि ॥ 2 ॥
उलिव मंगळपाठकर कळकळिकॆयलि मणिमयद मंचव
निळिदु शुक्राचार्यहर कमलजर हरकॆगळ
तळॆदु तत्कालोचितद सम्मिळित सत्कर्म प्रपंचव
नळ वडिसि खळदेव पूजालयकॆ नडॆतंद ॥ 3 ॥
नवविधद भक्तियलि निरुपम शिवन सर्वेशन भवानी
धवन भर्गन भवन नभवन भाळलोचनन
दिविज कुलवंदितन सामोद्भव सुरारि मदेभ कंठी-
रवन नर्चिसि बळिक नडॆतंदित्त नोलगव ॥ 4 ॥
वीर केळै कुशनॆ राक्षस वीरनोलगकतुळबल जं-
भारिजितु मंत्रिप्रहस्तप्रमुख नायकरु

भर नींद न आने के कारण उठता, बैठता, करवट बदलता (रावण) चिंता रूपी रति के उपभोग करते (उसने) किसी न किसी प्रकार रात काटी। १ कमलिनी (कमलपुष्प) का खिलना सौंदर्यपूर्ण दृष्टि से देखते रात्रि नामक अन्य स्त्री की काली साड़ी को (अपने) किरण रूपी हाथों से बड़े ही चमत्कारपूर्ण ढंग से खींचते पूर्व दिशा रूपी रति की ओर प्रेम भरी दृष्टि से देखते सूर्य उदयपर्वत नामक इन्द्रनील मणि से निर्मित पलंग पर से बड़े ही संभ्रम के साथ उठा। २ सुप्रभात गीतों के सुन्दर आलाप को सुनकर रावण अपने हीरे जड़े पलंग पर से उठकर गुरु शुक्राचार्य तथा शिव और ब्रह्माजी के पास पहुँच, उनके आशीर्वाद प्राप्त कर प्रातःकालीन नित्यकर्म को समाप्त कर पूजागृह में पहुँचा। ३ तदनंतर देववंदित उपमातीत शिवजी की, सर्वेश्वर पार्वतीरमण की, जो भर्ग, भव, अभव, भालनेत्री आदि विभिन्न नामों से संबोधित होते हैं, जो सामगान से उत्पन्न हैं, मदोन्मत्त राक्षसों के लिए जो सिंह-सदृश हैं— ऐसे परमेश्वर की नवधा भक्ति से पूजा की। तत्पश्चात् रावण सभाभवन में पधारे। ४ सुनो वीर कुश ! अत्यंत बलवान इन्द्रजित् मंत्रि प्रहस्त आदि प्रमुख नायक तथा उत्कृष्ट रत्नों की कांति से शोभायमान किरीटधारी (मुकुटधारी) और मल्लयुद्ध वीर

सारतर रत्नप्रभा कोटीरबद्ध नियुद्धबल ज-
ज्जार भटकोटिगळु नडॆतंदुदु सरागदलि ॥ 5 ॥
जडिदु खड्गद तॊडवलगॆगळ मुड्हुगळ झणरवद तॊडरिन
कडॆय हीरावळिय दिव्य सुगंध परिमळद
मुडियलर सुभटावळिय वंगडद वैभव मिगलु नॆलनु-
ग्घडणॆयलि बंदनु विभीषण नण्ण नोलगकॆ ॥ 6 ॥
बंद तम्मन नसुरपति मुदर्दिद मंदस्मित मुखावळि
यिद परमस्नेह रसवचनानुरागदलि
संदणिय कैसन्नॆयलि कॆल कॊंदिसुत बायित्त बारै
यॆंदु कुळ्ळिरिसिदनु कॆलदलि तन्न गद्दुगॆय ॥ 7 ॥
ऎसॆदु दोलगवमररायन यॆसककिं मिगिलॆनलु मिगॆ रं-
जिसुव भटरोग्गिनलि मणिभूषणत्र बॆळगिनलि
कुशनॆ केळा समयदलि राक्षस शिरोमणि मंदहासद
लसमवीरर मॊगवनीक्षिसि नुडिद नितॆंदु ॥ 8 ॥
नावु तंदंगनॆय पतिगति हेव बलिदभिमानदलि सु-
ग्रीव सैन्य समेत नडॆतंदनु गडाहवकॆ

असंख्य योद्धाओं से सुशोभित राक्षस वीर रावण की सभा में (आकर) उपस्थित हुए। ५ नंगी तलवारों को चमकाते, बगल में ढाल धारण किए, हीरों के हार (गले में) पहिने, दिव्य सुगंध तथा परिमल द्रव्य पोंछे हुए (अंगांगों में), जूड़ों में फूलों की माला धारे, अलंकृत विभीषण पैरों के आभूषणों की खनखनाहट के साथ, चारण-भाटों के स्तुतिपाठों के घोष के मध्य वीरों के समूह के साथ अपने बड़े भाई के सभाभवन में पहुँचे। ६ राक्षसराजा ने सभाभवन में पधारे अपने छोटे भाई की ओर देखकर, खुशी से, अपने दसों मुखों से मुस्कुराहट बिखेरी। अत्यंत स्नेह भरे शब्दों से उससे वार्तालाप करते हुए हाथ के इशारे से अपने पार्श्व की ओर आने की सूचना देते 'इस तरफ़ आओ न ?' इस प्रकार कहते अपने सिंहासन के बगल में उसे बिठा लिया। ७ रावण का सभाभवन विविध प्रकार से सुशोभित योद्धाओं से आवृत, उनके पहने विविध प्रकार के रत्नाभूषणों की कांति से देवेन्द्र के सभाभवन के वैभव से बढ़कर अधिक शोभायमान दीख पड़ा। सुनो कुश, उस समय राक्षसश्रेष्ठ रावण ने मुस्कुराते हुए असमान (असदृश) वीरों के मुखड़ों की ओर देखते यों कहा। ८ "हम जिस औरत को ले आए हैं उसके पति में विद्वेष का अंकुर पनपने के कारण

आवुदिदकनुमान रणसंभावनोचित कार्यदेणिकॆगॆ
नीवदेननु कंडिरेंदनु नगुत दशकंठ ॥ 9 ॥
एन बॆससिदॆ जीय मनदनु मान वेकिदकेनु दॊड्डितु
हानियावुदु निमगॆ तॊरिद निमगॆ राजकार्यदलि
वैनतेयन विलग कहिकुल वानलापवॆ जीय हेळदि
री नरेंद्र ननॆनुत कॆदरितु कूडॆ भटनिकर ॥ 10 ॥
तलॆय तरहेळंतकन बाळ्दलॆय तरहेळजननतळकॆ
निलिस हेळमरेंद्र नगरव नुरग वल्लभन
हॊळल कित्तमरेंद्र नगरदॊळिळुह हेळॆलॆ जीय मत्ते
नुळिदडुळ्ळडॆ बॆससॆनुत झळपि सिदरुब्बणव ॥ 11 ॥
असुरपति चित्तैसु कालंगसदळद कल्पांतरुद्रन
विषम नयनज्वालॆ गळुकद वीर भट रॊडनॆ
उसुर बहुदे जीय हुलुमानिसर मृदुरण राजकार्यव
निशित कर्कश रक्कसरॊळॆंदिद्रजितु नुडिद ॥ 12 ॥

(वह) अहंकार-वश, सुग्रीव की सेना को साथ लिये युद्ध करने के विचार से (यहाँ) आये हैं। —ऐसा हम सुनते हैं। इसके लिए क्या उपाय है? युद्ध की दृष्टि से समुचित कार्य-निर्वाह में तुम लोगों की राय क्या है?" इस तरह कहते मुस्कुराते हुए रावण ने पूछा। ९ "यह कैसी आज्ञा है प्रभो! इतना शक आप क्यों करते हैं? यह ऐसी कौन सी बड़ी बात है? आप के सम्मुख उपस्थित इस राजकार्य में कौन सी आपत्ति है? क्या साँप गरुड़ का सामना कर सकते हैं? इस मानव राजा के बारे में आपका कुछ न कहना ही श्रेयस्कर है।" —इस तरह वीरों ने आवाज़ उठायी। १० "यम के सिर को काट लाने की आज्ञा कीजिए। ब्रह्माजी के सिर को सजीव लाने की आज्ञा करें। देवेंद्र की नगरी अमरावती को उखाड़ कर पाताल में रख आने की आज्ञा करें। आदिशेष की नगरी को उठाकर देवेन्द्र की नगरी में रखने की आज्ञा करें। और कुछ हो तो आज्ञा कीजिए प्रभो।" —इस तरह कहते हाथ के दंडों को वे झुलाने लगे। ११ इन्द्रजित् ने कहा— "हे राक्षसाधिपति, सुनिए। जो यम के लिए अपथ्यकारी, प्रलयकालीन रुद्र की भालनेत्र-ज्वाला से न डरनेवाले अत्यंत भयानक कठोर प्रकृतिवाले वीर योद्धा राक्षसों से लड़ने जो क्षुद्र मानव आए हैं —ऐसे युद्धकार्य के लिए आप इतना महत्त्व देते क्यों सोच रहे हैं?" १२ "सुनिए पिताजी; इन वीरों तक क्यों पहुँचे? और क्यों सोचें?

ईतगळु परियंतलेकेले तातकेळ् तवछत्रधर नर
नात नरमृगविड बेंदडिसि बरलि मत्तेनु
सीतें देवरि गोलि वुपायद मातनाडुव दल्लंदी नुडि
येतकीयास्थान दोळ गेंदोगिसिदनु नगेय ।। 13 ।।
अवन हास्यरसोक्ति विमल श्रवण पथदलि बीळें भुगिलें-
दवतरिसिदुदु कोपशिखि मुख मंडलाग्रदलि
खव खविसि नगुता विभीषण नवयववनोलदोलदिदेने
नेवगे तिळियदु तिळिय हेळाव् केळबेकेंद ।। 14 ।।
खरेयनहें मामा पराक्रम भरित नल्ला नीनु निन्नय
परि नमगे नूतनवे नाविदकाणें यिडलेके
दोरेगळिवरे नडियरे कण् गुरुडरे नवमम रिपुनृप
चरन कदनदो ळोदगिदव नीनल्लदारेंद ।। 15 ।।
इवरु परियंतेके सत्तिगेयवनु सालदेयेंब साहस
दव गडेयतन वारिगुंटी नेरेद भटरोळगे
इवदिरे बगुळुवरु होगळुव निवने शिव शिव नरिय गीतेके
किवियनित्तरे मरुळु तलेदूगुव वोलायतेंद ।। 16 ।।

(दोनों वृथा हैं)। आपके छत्रधारी तो मानव हैं। वह इन मानव रूपी मृगों के झुंड का पीछा करके आए ! कोई बात नहीं। सीता आप पर कैसे रीझ जाय —इसी बात की यहाँ चर्चा होनी चाहिए; अन्य बातों की चर्चा यहाँ अनावश्यक है।" इस तरह कहते, सभा में, इन्द्रजित् ने क़हक़हे लगाए। १३ इन्द्रजित् के हास्यरसपरिपूर्ण यह वार्तालाप (अपने) पवित्र कानों में पड़ते ही विभीषण की क्रोधाग्नि भड़क उठी। खिसियाकर हँसते हुए विभीषण ने अपने शरीर को मोड़ते हुए (इधर-उधर करवट लेते) पूछा— "क्या कहा तुमने ? ज़रा साफ़-साफ़ बोलो न ! मैं समझ नहीं पाया कि तुम क्या कह रहे हो। ज़रा समझा दो।" इस तरह उसने टोका। १४ "तू तो महान सत्यव्रती है। बाप रे बाप ! महान बली है न तू ? क्या तेरी रीति हमें नयी है ! हम क्यों सौगंध खाएँ; क्या यह राजा लोग नहीं जानते ? क्या हम आँखें होते हुए अंधे हैं ? शत्रु के दूत के साथ युद्ध मोल लेनेवाला क्या तू नहीं है ?" —इस तरह विभीषण ने कहा। १५ यहाँ इकट्ठे हुए वीरों में ऐसा साहस किनमें है कि इन श्रेष्ठ योद्धाओं के लिए छत्रधारी क्या यथेष्ट नहीं है —इस तरह ताने देने की हिम्मत ! ये ही तो प्रशंसा करनेवाले हैं —ये ही तो भूंकनेवाले हैं। हाय शिव-शिव ! सियार के

तरळतन मेलुब्बु गौब्विन भरद जव्वन सुप्रताप
ज्वरद ताम्रस वदर मेलासुर कुलातिशय
दौरकलिवु बाळकेनु बायिगॆ वरदिहुदॆ ता पाप वगुळवु
दरिदॆ नॆनॆया निन्न रणसंगतिय नीनॆंद ॥ 17 ॥
अक्ष मॊदलादखिळ भुजबल राक्षसर रणरंग दिळॆयलि
कुक्षियनु वगिदसुवनुगिद कपींद्र निदिरिनलि
यक्ष गंधर्वामरेंद्रर शिक्षिसिद वलुहंदिनाश्रय
भक्षणन भॊजनद लेनायतॆंदु वॆसगॊंड ॥ 18 ॥
ई महाबळ कुंभनी निस्सीम देवांतक नरांतक
री महोदर वज्रदंष्ट्र प्रमुख नायकरु
ई महानगरवनु मारुति होम गैवंदेन माडिद
री मदित पानिगळ मातेकरस निनगॆंद ॥ 19 ॥
अण्ण केळीतगळ मातिन बण्णनॆ गळंतिरलि भूमिय
तिण्णवनु तिद्दलिकॆ हरि नरनागि रूहिसिद

गान से परितुष्ट भूत के सिर हिलाने की— कहावत चरितार्थ हुई।" —इस तरह विभीषण ने कहा। १६ "पहले तो बचपना है! तदुपरि यौवन की यह मस्ती। उस पर वीरता के तापमान का तमोगुण! इन सबसे बढ़कर श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होने की खरमस्ती —कुल मिलाकर ये सब जहाँ इकट्ठे हैं— वहाँ उस पापी जीभ को बक-झक की शिक्षा किसी को देने की क्या ज़रूरत? भूँकना कितना आसान है बिचारे को! तूने जो (उस बंदर से) युद्ध किया था उसी को थोड़ा सा अब याद कर ले न?" —इस प्रकार विभीषण ने कहा। १७ "अक्ष आदि महान प्रतापी राक्षस-वीरों को युद्ध के मैदान में पटककर, उनका पेट चीरकर प्राणों को बाहर निकालनेवाले वानरश्रेष्ठ के सम्मुख भयानक आग जब सारी लंका को लील रही थी, तब यक्ष-गंधर्व-देवेंद्र आदियों को दंड देनेवाला तुम्हारे साहस का क्या हुआ था?" इस तरह विभीषण ने पूछा। १८ "यह महा बलशाली कुंभ, ये असमान वीर देवांतक, नरांतक, ये महोदर, वज्रदंष्ट्र आदि आदि प्रमुख नेताओं ने उस दिन मारुति के लंकानगरी के होम करते समय क्या किया? इन मदमत्त पियक्कड़ों की बातों में आप क्यों आते हैं प्रभो!" इस तरह विभीषण ने कहा। १९ "सुनिए बड़े भैया; इनकी रंग-बिरंगी बातों को रहने दीजिए। भूमि का भार उतारने के लिए श्रीहरि मानव-रूप में अवतरित हैं! (इस) स्त्री के बहाने हम सबको मिट्टी में मिलाए बिना न रहेंगे। इस परिस्थिति को भुगतने से अपना सत्यानाश

हेण्ण नेवदलि नम्मनेल्लर मण्ण कूडिस दिरनु नावि-
न्नुण्ण दुरियलु बेड सीतेय बिट्टु कळुहेंद ॥ 20 ॥
एके निनगी भ्रमे विदेहजे सोकु ववळल्लरस केळवि-
वेकीयागदिरी मदोन्मत्तरु गळुब्बिदरे
आ ककुत्स्थज मनुज नल्ल वनौकसरु मृगरल्ल तानिदु
लोककंटक रळनिगोंड्डिडद बीसुवलेयेंद ॥ 21 ॥
अरिय बारदे निनगे निन्ननु जरिद हरकोदंडवनु जग-
वरियें मुरिदवनिजेय परिणयवाद पद्धतिय
किरिय तनदलि ताटकिय तले गुरिय माडिद परियना हों-
म्मरिय रूपिन रक्कसन निक्किदुद नीनेंद ॥ 22 ॥
खरनु सामान्यने खरानुज हुरुळु गेडियेदूषणासुर
धुर दरिद्रने बणगने भुजशौर्यदलि वालि
अरस केळै शूर्पणखि बड तरुणिये तोळसाट विदु गो-
चरिस लरियदु गोमिनी धवनोडने निनगेंद ॥ 23 ॥
कुलदलल्पने नीनु मुनिकुलतिलक पौलस्त्यजनला नड-
वळिय लधमने नीनु शिवपूजा प्रसिद्धनल

न करें। सीता के बंधन को विमुक्त कर भिजवा दें।" —इस तरह विभीषण ने कहा। २० "आप किस भ्रम में हैं मेरे भैया! वैदेही आपका स्पर्श भी न करेगी। सुनिए राजन्! मदमस्त बने, बुद्धि-विभ्रम में ये जो आपको उकसा रहे हैं इससे अविवेकी न बनें। यह राम मानव नहीं है। कपि केवल पशु नहीं है। लोक की दुष्ट शक्ति की परीक्षा करने के लिए फैलाया हुआ यह जाल है।" इस तरह विभीषण ने कहा। २१ "क्या आप भूल गए कि आपको अपमानित करनेवाले शिव-धनु को सारी दुनिया के सामने खुल्लमखुल्ला तोड़कर सीता से ब्याह कर लिया? इस घटना को ऐसे कैसे जल्दी भुला दिया? (उसने) बचपन में ही ताड़का के सिर को धड़ से अलग जो किया, सोने के मृगरूप को धारण करनेवाले मारीच को (राम ने) जो मारा— क्या आप नहीं जानते?" इस तरह विभीषण ने कहा। २२ खर क्या मामूली वीर था? खर का भाई क्या सत्वहीन था; दूषणासुर क्या लड़ने में बल-पौरुषहीन था? बाहुबल में वाली क्या अल्प (क्षुद्र) था? सुनिए रावण। क्या शूर्पणखा कमज़ोर औरत थी? लक्ष्मीपति के साथ आपका युद्ध असंभव है।" इस तरह कहा। २३ "क्या आप एक क्षुद्र कुल में उत्पन्न होनेवाले हैं? मुनि-श्रेष्ठ पुलस्त्य के पुत्र नहीं हैं? आचरण में क्या आप गिरे हुए हैं? आप

तिळिविनलि बऽडनॆ बहुश्रुतिगळु मुखोद्गत निनगॆ यिन्नॆ
किळॆय जारर जोकॆ बिडु जानकिय नीनॆंद ॥ 24 ॥
जारॆये जानकि जगत्रय वीर पातिव्रतॆ कणानर
नारिये वैदेहि नारायणन पत्निकणा
श्रीरमणि चंचलॆ कणा कैसारिदळु निनगॆंब मनद वि-
कार वेकॆलॆ जीय बिडु जानकिय नीनॆंद ॥ 25 ॥
मरुळु हत्तितॆतम्म नॆरॆ निष्ठुरतॆ निनगे किनितु भटरं-
तरव नरियदॆ नुडिवरे गर्वापहारदलि
हिरिदु नम्मोडनंजिकॆय नी हरहि माताडुवदु तानिदु
गरुवरंगवॆ गारुगॆडुहुवुदु गुणवॆ निनगॆंद ॥ 26 ॥
गारु गॆडुववने विवेकद जारुगंडिय जणुगने कलि
येऽरिसियॆ रक्कसरु नुडिदरॆ हितवरे निनगॆ
तोरुवी सचराचरद मैदोऽरिकॆय महिमनु कणा मति
दोऽदकटा निनगॆ नीने नोडिकोयॆंदा ॥ 27 ॥

तो प्रसिद्ध शिवाराधक हैं। ज्ञान में अप्रयोजक तो है नहीं, क्योंकि सारे वेद आपको कंठस्थ हैं। जगत का यह व्यभिचारी आचरण आप क्यों पसंद करते हैं? जानकी को छोड़ दीजिए।" —इस तरह विभीषण ने समझाया। २४ "जानकी क्या दुराचारी स्त्री है? तीनों लोकों में वह पतिव्रता श्रेष्ठ नारी है। क्या वैदेही मानवीय स्त्री है? वह साक्षात् श्री मन्नारायण की पत्नी है न? लक्ष्मी का स्वभाव चंचल है। ऐसा क्यों सोचते हो कि वह तेरी वशवर्तिनी होगी। अतः राजन्! जानकी को भिजवा दीजिए।" इस तरह उसने कहा। २५ "क्यों भाई, तुम पागल तो नहीं हुए? इतने कठोर तुम क्यों बने? वीर योद्धाओं के मन को न जानते अभिमान भंग करने की ऐसी बातें तुम्हारे मुँह से क्यों झड़ती हैं? हममें इस प्रकार भयोत्पादन करते ऐसी बातें करना तुम जैसे स्वाभिमानियों के लिए उचित है? निंदापूर्ण वचन क्या धर्म है?" इस प्रकार रावण ने पूछा। २६ "क्या मेरी बातें निंदापूर्ण हैं? विवेक के झूले पर से क्या मैं फिसलनेवाला हूँ? तुम्हारे पराक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा करते (तुम्हें) उकसाकर अगर राक्षस बोलें तो वे बातें तुम्हें हितकारी हैं न? इस सचराचर जगत में राम की महिमा प्रत्यक्ष है। यह तो तुम्हारी बुद्धि के परे है न? जरा सोच-विचारकर देखें।" —इस प्रकार विभीषण ने कहा। २७ "रघुराम मानव नहीं हैं। आदि

मनुजनल्ल कणा रघुक्षिति जनप नादियली चराचर
वनल मुखदलि तीरलुब्बितु नीरु नीरिनलि
वनरुहांबक निरलु किवियलि जनिसिदरु मधुकैटभरु मद-
जनित गर्वदलळिदर वरॆलॆ यण्ण केळॆंद ॥ 28 ॥
अरिदु नाभीकमलदलि कंदॆरॆद कमलभवंगॆ सेरितु
नॆरॆ चतुर्दश भुवनदुद्भवदाधिपत्यतन
अरिकॆये प्राधान्य हरियॆंदरिदु भजिसद वंदिरूटद
कुरिगळागरॆ मृत्युदेवतॆगरस केळॆंद ॥ 29 ॥
कृतयुगदॊळजनॊडनॆ गर्विसि श्रुतिय कद्दॊय्दवन मत्स्या-
कृतिय लळिदनु तळॆदनंबुधि मथनदलि गिरिय
क्रतुभजर रक्षिसलु कूर्माकृतियलवनिय कद्दुतळकिळि
दतुळबल खळरॆनलु मुरिदनु क्रोड रूपिनलि ॥ 30 ॥
शिशुव सलहिदु सुरनिरोधि यबसुर बगिदॆळॆगरुळनुगुरलि
ससिदु कॊरळलि हाय्किदनु नरहरिय रूपिनलि
वसुधॆ गतिबलनॆंदु मिगॆ गर्विसिद बलियनुबिगिबिगिदु बं-
धिसिद नी रघुराम वामन नागि जगवरियॆ ॥ 31 ॥

में यह सचराचर अग्नि में जब विलीन हुआ तो जल उमड़ पड़ा। इस जलराशि में जब कमलाक्ष थे (विष्णु विराजमान थे) तो उनके कान में मधु-कैटभ नामक राक्षस पैदा हुए। अपने अहंकार के कारण उनका विनाश हुआ। ग़ौर करें भैया।" इस तरह विभीषण ने कहा। २८ "भगवान नारायण के नाभिकमल में स्थित ज्ञानसंपन्न ब्रह्मा ने जब आँख खोली तो उन्हें चतुर्दश लोकों के निर्माण का अधिकार प्राप्त हुआ। ज्ञान ही प्रधान है। ज्ञानरूपी ही श्रीहरि हैं—इस तरह समझकर जो श्रीहरि की आराधना नहीं करते वे मृत्युदेवता के भोजन के बकरे हैं।" इस तरह उन्होंने कहा। २९ कृतयुग में ब्रह्माजी से अकड़कर वेदों का अपहरण करनेवाले का मत्स्य-रूप धारणकर विनाश किया। देवासुरों ने मिलकर जब समुद्र का मंथन किया तो देवताओं की रक्षा के लिए कूर्मावतार धारण कर मंदर-पर्वत को अपनी पीठ पर धारण किया। वराह-रूप धारण कर उसी ने भूमि का अपहरण कर पाताललोक भागनेवाले हिरण्याक्ष नामक असुर का संहार किया। ३० नृसिंह रूप से अवतरित हो शिशु प्रह्लाद की रक्षा कर असुर हिरण्यकशिपु का पेट चीरकर आँतड़ियाँ बाहर निकाल उसके गले में माला के रूप में पहनायीं। सारे लोक में अपने को बलशाली मानते अहंकार करनेवाले बली का रघुराम ने

हॅच्चिदवनी भारकर नुरॅ कोच्चिदनु कोडलियलि विप्रर
हॅच्चिसिद नी राम भार्गव राम नामदलि
मुच्चु मरॅयेकण्ण तिण्णद किच्चु दोरॅदॆ नमगॆ नावि-
न्नॆच्चरुवडिदु समय सीतॆय बिट्टु कळुहॆंद ॥ 32 ॥
निनगॆ नाचिकॆ यादडदके नॆनगॆ नेमिसु जगदमातॆय
निनकुलेंद्रंगित्तु मन्निसि कोंडु बहॆ वळिक
निनगॆ जगदलि कीर्ति कैरव वनज सखरुळ्ळन्नबर दु-
र्जनर गरुडियॊळाड वेडसुरेंद्र केळॆंद ॥ 33 ॥
एनॆलवो निनगिनितु होगळुवडेनहनॊ नीना नरेंद्रन
सूनुवो मॊम्मगनॊ मरि.मगनो विचारिसलु
हानि हिंदण हंदॆ गरिगादी नुडिय नुडिदेम्मनंजिसि
जानकिय नी बिडिसुववने भ्रंष्ट होगॆंद ॥ 34 ॥
बल्लॆवाव् साकिन्नु निन्नय बल्लविकॆ बाय् वडियदिरु रण
मल्ल रिवरिदिरिनलि निन्ननु करॆदु केळिदरॆ

वामन-रूप से अवतरित हो ज़बर्दस्त रीति से बाँध डाला। ३१ "इसी राम ने परशुरामावतार में भूमि का भार जब अधिक हुआ तो इन अधिक भारस्वरूपियों को अपनी कुल्हाड़ी से काट डालकर ब्राह्मणों की संख्या बढ़ायी। इसमें लुकाव-छिपाव काहे का? मेरे भाई! हमें तो भयानक आग दिखायी पड़ी है। हमें इसी से चेत जाना चाहिए। सीता को विमुक्त कर रवाना कर दीजिए।" —इस तरह विभीषण ने कहा। ३२ "अगर आप लज्जा का अनुभव कर रहे हैं तो चिंता काहे की? मुझे आज्ञा दीजिए। जगन्माता सीता को रविकुलेन्द्र राम को समर्पित कर क्षमायाचना कर आता हूँ। तभी यावत् सूर्य-चंद्र उपस्थित रहें, तावत् आपकी कीर्ति जगत में चिरस्थायी रहेगी। दुष्टों का संग त्याग दीजिए। हे राक्षसाधिपति, कृपया मेरी बातों पर ग़ौर करें।" इस तरह विभीषण ने कहा। ३३ "क्यों रे; तू जो उसकी यहाँ तक प्रशंसा करता है तो वह तेरा कौन लगता है? तो क्या तू मानव राजा का बेटा है? या पोता है? या प्रपौत्र है? पूर्वकाल के भीरुओं को जो क्षति पहुँची है— उनका वर्णन करते हमको डरा-धमकाकर जानकी को हमसे बिछुड़वाने की ताक़त क्या तू रखता है? जा-जा। तू भ्रष्ट है।" इस प्रकार रावण ने कहा। ३४ "तुम्हारे ज्ञान की परिसीमा हम जानते हैं। व्यर्थ की बक-बक मत कर। इन युद्धवीरों के सम्मुख तुम्हें बुलाकर सलाह पूछी तो सियार की तरह यों चिल्लाना क्या तुझे शोभा देता है?

बळ्ळु गॆड्डवुदॆ चंद चौपट मल्ल चापळ विद्यविदु न-
म्मल्लि सॊगसदु साकु गळहदॆ कॆलकॆ सारॆंद ॥ 35 ॥
गळहुववने नान मार्गस्थळद तामस निन्न हृदयकॆ
निळयवादुदु नीति गॆडुगरंग निनगाय्तु
नळिननाभन कूडॆ वैरव बॆळसि कॆट्टॆ निरर्थ नीनि-
न्नुळिवुपायव काणॆनिदु सिद्धांत मतवद ॥ 36 ॥
हितव नुडिवरु मुंदॆ हिंदपकृतिय नॆणिसुव रिदुवॆ कुजनर
कृतक बॆडकटकट सारिदॆ बिडु महीसुतॆय
श्रुति मतविदी गज्ञतनदनु चितवनंगीकरिस बॆड-
च्युतन महिमॆय कॆळु कष्टवनॆसग बॆडॆंद ॥ 37 ॥
आदडातन मुखदलमरॆंद्रादि दॆवरु नयनदलि रवि
पाददलि भूदॆवि मनसिनलिंदु किविगळलि
ई दिशावळि नाभियलि नभवादुदु श्वासदलि मारुत
नाद नवतरिसिदवु शिरदलि सुररु जगवॆंद ॥ 38 ॥
शरधि निद्रॆयॊळाय्तु माया तरुणि नगॆयलि जनिसिदळु सर-
सिरुह भवनुदिसिदनु नाभीकमल मध्यदलि

बड़े भले बहादुर बने आए हो। तुम्हारी यह चंचलता हमें रुचती नहीं। बस करो तुम्हारी यह बक-झक! हट जाओ यहाँ से।" इस तरह रावण ने कहा। ३५ मैं बड़बड़ा रहा हूँ? दुर्मार्गी के अज्ञान रूपी अंधकार ने तुम्हारे हृदय में घर किया है। नैतिकता-रहितों की-सी तेरी दशा है। कमलनाभ श्रीहरि से वैर मोल लेकर तुम व्यर्थ ही बर्बाद हुए। तुम्हारे बचाव का मार्ग तो मुझे नहीं दीखता। यह मेरी दृढ़ धारणा है।" इस प्रकार विभीषण ने रावण से कहा। ३६ "सामने प्रियकर वचनों की झड़ी लगा देते हैं। पीठ पीछे बुराई चाहते हैं। अतः दुर्जनों का धोखेबाज़ स्वभाव त्याग दो। हाय-हाय! कैसे समझाऊँ? मैं बार-बार कहता हूँ। छोड़ दो वैदेही को। यह वेद-मार्ग भी है। अज्ञान-भरा यह अनुचित आचरण त्याग दो। अच्युत (श्रीहरि) की महिमा पर ध्यान दो। बुराई मत मोल लो।" इस तरह विभीषण ने कहा। ३७ "उसके मुख में देवेन्द्रादि विराजमान हैं। आँखों में से सूर्य, चरणों में से भूदेवी, मन में से चन्द्रमा, कानों में से आठ दिशाएँ, नाभि में से आकाश, श्वास में से हवा पैदा हुए हैं। उसके माथे में से देवता तथा जगत अवतरित हुए। ३८ उसकी निद्रा में से समुद्र उत्पन्न हुआ। श्रीहरि की मुस्कुराहट से माया पैदा हुई। उसकी नाभि से खिले कमल में

स्परुष रूपरसादि भूतद नेरवि नेनहिनोळाय्तु तोऱिद
वरस केळ् नामक्रिया रूपकवु बळिकेंद ॥ 39 ॥
श्रुतिगळातन मातुविमळ स्मृतिगळातन शिक्षे जीव
प्रततियातन सूत्रदाटद बोंबेयी जगद
स्थिति लयोदयविवु निज भ्रूलते विलास प्रौढि वैर
स्थितिगे ठावनु काणे तामसवेके निनगेंद ॥ 40 ॥
उळिदुदिल्लीतन विरोधद ळळिदु दिल्लोलु मेयलि श्रुतिमत
दुलुहु तानिदु निग्रहानुग्रह महाशकुति
उळिद देवरिगुंटे निन्नळ बळव नी तानऱियॆ कॆड बे-
डिळॆय मगळनु कोट्टु सुखियागेंद नग्रजगे ॥ 41 ॥
ऎलवो नीनीगेंद दैवद तलॆविडिदु पादांत परियं-
तिळिद देवसमूह नंटरो भंटरो तनगे
तिळियली भुवनंग ळोडॆतन कॆलबरदो तन्नदो विवेकिसि
गळहदादे गयाळविद्यवे नम्म कूडेंद ॥ 42 ॥

ब्रह्माजी पैदा हुए। शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध नामक पाँच गुणों से युक्त सभी जीवधारियों का जन्म उसकी स्मृति से हुआ। सुनिए रावण, नाम-क्रिया-रूप आदि बाद में विकसित हुए। ३९ वेद श्रीहरि के वचन हैं। धर्मशास्त्र उसके उपदेश हैं। जीवराशि उसके हाथ की कठपुतली है। इस जगत का सृष्टि-स्थिति-लय कार्य उसके पलकों का नृत्य है। उसके साथ द्वेष करने के लिए मौका ही नहीं। तुम्हारा यह अज्ञान कैसा?" इस तरह विभीषण ने कहा। ४० 'श्रीहरि का विरोध करके विनष्ट हुए बिना कोई न बचा। उसकी भक्ति के कारण किसी का भी अशुभ या विनाश न हुआ।' —यह वेदोक्ति है। दंड देना या रक्षा करने की महाशक्ति इस देवता के सिवा और किसको संभव है? आप अपने सामर्थ्य की सीमा नहीं जानते। व्यर्थ विनष्ट मत होओ। भूमिसुता को श्रीराम को समर्पित कर सुखी होइए। इस प्रकार विभीषण ने अपने भाई को समझाया। ४१ "रे रे, तूने जिन समस्त देवताओं का इसके सिर से पैर तक पैदा होने की बात कही— वे समस्त देवता या तो हमारे रिश्ते के हैं या हमारे सेवक हैं? वैसा देखा जाय तो इन लोकों का स्वामित्व कुछ के जिम्मे है? या मेरे आधीन है? बिना सोचे-समझे यह बक-झक क्यों कर रहा है? हमारे सामने यह भीरुत्व की विद्या क्या चलेगी?" इस तरह रावण ने प्रश्न किया। ४२ "ऐसी बात है तो सुनिए राक्षसराज! खर

आदेडले खळराय केळ् खर सूदनन सूर्यान्वियन सं-
पादकद शरपरशु निन्नय कोरळ हळुवदलि
बीदिवरिवुदु पुत्रमित्र सहोदररु सावरु नृपाल त-
ळोदरिय नी नीयदिरे निश्चय विदीगेंद ॥ 43 ॥
बीळला नुडि कर्णदलि लय भाळनेत्रन भीमरौद्र क-
राळकिं मिगिलेनलु करेदनु कंगळलि किडिय
बीळ होय् होय् बाय बगुळुव नालगेय कोय् काल हिडि देळे
काळ मूळन नेनुत झडिदनु चंद्रहासकव ॥ 44 ॥
कोरळ कडितद लाडुवुदु गड धरणिजेय बिडदिरलु रामन
सरळु सोदर पुत्र मित्र ज्ञाति बांधवर
हरणवनु होगाडुववु गड हर महादेविवन बायनु
हरिय कोय्ववरिल्ललायेनु तौड नोडेयगिद ॥ 45 ॥
कोलु वेने कैकसेय बसुरिं दिळिद नेंबी बिडेय जिह्वेय
निळिय कोय्वेने सैरिसलु अपयशस्थितिगे

की हत्या करने के लिए सूर्यवंश के श्रीराम ने जो बाण रूपी कुल्हाड़ प्राप्त कर ली है, वह तुम्हारे रुंडों के वन में स्वेच्छा से विहार करेगी। तुम्हारे पुत्र, भाई-बन्धुओं की (निर्मम) हत्या होगी। राजा राम की पत्नी को अगर लौटाओगे नहीं, तो यह (हत्या) निश्चित रूप से होगी।" —इस तरह विभीषण ने कहा। ४३ (विभीषण का) यह वाक्य कानों में पड़ते न पड़ते प्रलयकालीन भालनेत्री के प्रचंड भयानकता के दुगुने वेग से रावण की आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं। तभी— "पीट-पीटकर गिरा दो; मुँह पर थप्पड़ जमाओ; भूँकती जीभ को काट दो; इस दुष्ट बुद्धिहीन के पैर खींच डालो।" कहते हुए रावण ने लपलपाती चंद्रहास नामक तलवार म्यान से निकाली। ४४ "सीता को विमुक्त न करने पर राम के बाण मेरे कंठों को काटेंगे न! वे मेरे भाई, बंधु, पुत्र, मित्र, दायाद, रिश्तेदार आदियों के प्राणापहरण करेंगे न! शिव-शिव महादेव! इसका मुंह चीर-फाड़ डालनेवाला कोई न रहा न!" —इस तरह कहते रावण दांत-होठ चबाने लगे। ४५ "इसे मार डालने में संकोच इसी बात का है कि यह कैकसा के गर्भ से संजात (सगा भाई) है। जीभ काट डालने में कुख्याति का डर है। गला दबोचकर इस कुत्ते को हमारी नगरी से बाहर निकाल दो।" —इस तरह इन्द्र के सामर्थ्य को तोड़नेवाले इन्द्रजित् को आज्ञापित करते रावण चिल्लाए— "इसे धक्के मार-मारकर

तलॆय हिडिदी नाय नम्मय हॊळल हॊरवडिसॆंदु हरिहय
नळव मुरिदसुरंगॆ नेमिसि नूकुनूकॆंद ॥ 46 ॥
नूकलेतकॆ नम्म नावे नूकि कॊंबॆ वॆनुत्त सुजनज
नैक चूडामणि महोत्साहदलि मनदॊळगॆ
श्रीकुचाग्र सुकुंकुमांकित सौकुमारोरस्थळनॆ लो-
कैकवंद्यन नॆनॆवुता सभॆयिंद हॊरवंटा ॥ 47 ॥
ऎलवॊनीनी मुनिद कय्यलि कलहका राघवन तारदॆ
तॊलगिदरॆ निन्नंददसुरर हिंदॆ हरिदॆयल
तिळुहि निन्ननु तंदॆनादरॆ बळिक तनगदु सूरुळॆंदॆंड
बलदवर कैवॊय्दु नुडिवन नगॆयलसुरेंद्र ॥ 48 ॥
आगलदकेनॆम्मगॆ निम्मवॊलागदीयायतिकॆ नीव
भ्यागमिकररिगळलि नावे शरणु गतिकरलॆ
मेगॆ बरलदरिंद बंदुदु भोगिसुवॆनॆनु तॊत्तवरद वि-
रागदलि हरिशरण बंदनु ताय मंदिरकॆ ॥ 49 ॥
मगनॆ बंदै कॆळिदॆनु हॆम्मगनु नुडिद दुरुक्तिगळनी
नगर निन्नदु मरॆयॊगुवडिदु समय राघवन

निकाल दो। ४६ "हम क्यों धक्के खाएँ ? खुद ही निकल जाते हैं।" —इस तरह कहते सज्जन श्रेष्ठ विभीषण ने उत्साह से— लक्ष्मी के आलिंगन के कारण उसके स्तनों के कुंकुम की छाप से सुंदर हृदयी हुए जगत्‌वंद्य श्रीहरि का मन ही मन स्मरण करते सभाभवन का त्याग किया। ४७ रे रे, इस तरह नाराज होकर जब जा रहा, तो उस राघव को युद्ध के लिए बुलाकर तू जो न ले आए तुझ जैसे पूर्व के राक्षसों के पीछे जानेवाला (एक मात्र) तू ही है। सौगंध है मुझे जो तुझे सान्त्वना दे बुला लाऊँ।" इस तरह कहते खुशी के मारे फूला न समाते राक्षसराजा (रावण) ने अपने दायें-बायें के राक्षसों से हाथ मिलाए। ४८ "ऐसा ही हो; आपकी जैसी योग्यता मुझमें कहाँ ? आप शत्रु के साथ दुश्मनी मोल ले चुके हैं। मैं तो शत्रु का शरणागत हूँ। अब तो कुछ मुझ पर बीतना चाहती है, बीतने दो। भुगत लूँगा।" इस तरह कहते वैराग्यसंपन्न हो, बड़ी ही उतावली में हरिभक्त विभीषण अपनी माँ के घर आया। ४९ "आओ मेरे बेटे, आ। तेरे बड़े भाई के बुरे वचनों के बारे में सुन ही लिया है। यह नगरी तेरी है। राघव के शरण में जाने का यही सुअवसर है। वह तुम्हें आयु और ऐश्वर्य अवश्य प्रदान करेगा। तू हमें तिलोदक देगा।" इस

अगलदायुवनैश्वरियवनु हॊगिसुवनु निन्नॊळगॆ नीनॆम
गॊगिसु तिलसलिलांजलिय नॆंदप्पिदळु मगन ॥ 50 ॥
हिंद मरॆ नडॆयॆंदु कंबनिदंदु मोहदि मगन बीळ्कॊंडॆ
संदणिसुवश्रुगळ लंघ्रिगॆ नमिसि मणिमयद
स्यंदनन नेरिदनु बळिकरविंद नाभन नॆनॆदु सन्मुद
दिंद नभकुप्परिसिदनु निजभाव शुद्धियलि ॥ 51 ॥
नुडिव विन्नॊम्मॆगॆ करुळ्गळु तॊडकि कॊंडिह वागि तन्नय
नुडिगळवु सरळागॆ बळिकिम्मडिसि नूकनलॆ
कडॆगॆ कमल सुखान्वयन मॆल्लडिगळॆ गतियॆनुत गगनद
नडॆय रथदलि बंदनण्णन सभॆय सरिसदलि ॥ 52 ॥
होग हेळवनेकॆ बंदनु बागिलनु होगलीस दिरियॆनॆ
कैगुदिगॆगळ खळरु तरुबिदरा विभीषणन
नीगलव रसुगळनु गदॆयलि तागिसुत तन्नवगॆ नुडिदनु
कूगि मारिय करॆदुकॊंबुदु कर्णॆयवल्लॆंद ॥ 53 ॥
बिडुवुदॊळ्ळितु सीतॆयनु कैविडिवु दॊळ्ळितु कीर्तिकांतॆय
तॊडुवु दॊळ्ळितु तॊरॆकॆय तनुमनद किल्बिषव

तरह कहते माँ ने बेटे का आलिंगन कर लिया। ५० "जो कुछ (पूर्व में) हो चुका है उसे भुला दे। जा।" इस तरह कहते आँसू भरे हृदय से बड़े प्यार से बेटे को बिदा किया तो विभीषण की आँखें भी डबडबा आयीं। उसने माँ के चरणों में सिर नवाया। फिर अपने रत्नजटित रथ पर सवार हुए। फिर कमलनाभ श्रीहरि का परिशुद्ध भाव से स्मरण करते आनंद से भरे व्योममार्गी हो उड़े। ५१ "और एक (आखिरी) बार बड़े भैया से वार्तालाप कर देखें। सगा भाई जो ठहरा। अगर मेरी बातें तीर की तरह चुभें तो रावण दुगुने धक्के देकर निकालेगा न? आखिर तो श्रीराम के कोमल चरणों की ही गति (सहारा) मेरे लिए है।" —इस तरह सोचते आकाश-मार्ग से रथ का संचालन करते विभीषण भाई की सभा के नज़दीक पहुँचा। ५२ "आने दो उसे। वह आया ही क्यों? उसे अंदर मत आने दो।" इस तरह (रावण के) कहने पर राक्षसों ने हाथ के डंडों से विभीषण को रोका। अपनी गदा चलाते रोकनेवालों को निवारण करते विभीषण भाई के सम्मुख पहुँच, "महामारी को पुकार-पुकार निमंत्रण देना उचित नहीं है।" इस तरह उसने (रावण से) कहा। ५३ "सीता को विमुक्त कर भिजवा देने में ही भलाई है।

नुडियिदीग समस्त निगमद नुडिगळॆंदरॆ बेड कॆड बे-
डिडलु बेडुंगुरव लयकन्निकॆगॆ नीनॆंद ।। 54 ।।
हेळ करॆदॆवॆ तन्न नायवॊल्ळदत्तलॆ होग हेळॆ-
दाळिकाऱर गंड गर्जिस लैसलेयॆनुत
भाळदलि बॆरळिट्टु कर्मफलाळियिदु निनगॆनुत वैष्णव
मौळिमणि मुरिदिळिदना लंकामहापुरव ।। 55 ।।
आ विभीषण नगलिकॆगॆ केळै विभाकर कुलज लंका
श्रीवनितॆ सिपिसिदळुगुरलि तॆगॆदु कंबनिय
रावणन बाहुप्रतापद दीविगॆय कडॆवत्ति सिडिदवो
ला वियद्भागदलि तोऱितु बिंब दिनमणिय ।। 56 ।।

मूरनॆय संधि

सूचनॆ— शरणु हॊक्क विभीषणन पतिकरिसि लंकावनिय जनप दरसुतनवनु कॊट्ट मन्निसिदनु रघुप्रभव ।

केळिदै रघुवंशदवनीपाल सुतभ वगॊटलॆय कै-
गॊळ कळचिद कलिविभीषणदेव निर्गमव

कीर्तिलक्ष्मी को वरण करना ही श्रेयस्कर है। अहंकार से भरे मन के मैल को धो डालने में ही कल्याण है। यह समस्त वेदप्रतिपादित तथ्य है। ग़ौर कीजिए। विनाश से अपने को बचाइए। प्रलय-कन्या को बीड़ा उठाने का मौक़ा मत दीजिए।" इस तरह विभीषण ने कहा। ५४ "क्या इन बातों को सुनने के लिए इसे न्यौता दिया है? (उसे) कुत्ते की तरह भूंकना बंद कर उस तरफ़ निकल जाने के लिए कहो।" —यह कहते कपटियों के स्वामी गरजे। 'यह बात है!' इस तरह कहते भाल पर उँगली रखे "तेरा यह अपने कर्मों का परिपाक है।" इस तरह कहते वैष्णव-भक्त शिरोमणि मुँह मोड़कर लंका को छोड़ रवाना हुए। ५५ सुनो हे सूर्य-वंशज! विभीषण का बिछड़ जाना देख लंकानगर-लक्ष्मी आँसू बहाने लगी। रावण के भुजबल रूपी दीपक की आख़िरी बाती मानों छिटककर आकाश पहुँच गयी हो —इस रीति से सूर्यबिंब दृष्टिगोचर हुआ। ५६

तीसरी संधि

सूचना— अपनी शरण में आए विभीषण को स्वीकारते उसे लंकानगरी का राज्याधिकार देते राघव ने गौरव प्रदान किया।

सुनो हे रघुवंश-राजकुमार, इस संसार के झंझट रूपी हाथ की

केळिबंदरु तन्न पूर्वद नालुवरु मंत्रिगळु बळिविडि
दोलगिप चातुर्विधद पुरुषार्थ दंददलि ॥ 1 ॥
दाटिदनु लवकेळु घोर निशाटबल कलुषांबुधियनुरे
दाटुवंते समुद्रवनु शतयोजनांतरद
पाटियारी तंगे पूर्वद कूटदुत्तम वैष्णव रोळें-
दाटदलि नारदनु नर्तिसिदनुनभोग्रदलि ॥ 2 ॥
हरि बलांबुधि पालगडल मैसिरिय वोलु रघुनाथ लक्ष्मी
वरनवोलु भुजलक्ष्मी लक्ष्मीदेवियंददलि
वर सुमित्रा सूनु शेषन परम वैभवदंते मारुति
गरुडन वोलेसेदिर्द निदिरिनोळा विभीषणन ॥ 3 ॥
वरद सद्योजात घन तत्पुरुष निर्मळ वामदेव
स्फुरदघोर महामहीशान प्रविस्तरद
हरनवोलु नाल्देसेय मंत्रीश्वररु सहित विभीषणनु भा-
सुरते मिगिलेसेदिर्दना कपिबलद कण्मनके ॥ 4 ॥
अवधरिसु नृपसूनु वरवैष्णवद विमलप्रभेगे भुवन दो-
ळवधियावुदु मुसुकिकोंडुदु निम्मवर बलव

बेड़ियों से विमुक्त होकर वीर विभीषणदेव का निकल जाना सुनकर, उसके अनुयायी चार मंत्री, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष नामक चतुर्विध पुरुषार्थों की तरह विभीषण का अनुसरण करते आ पहुँचे। १ हे लव ! सुनो; राक्षस-सेना रूपी महान पाप-सागर पार करने की रीति से (पार करने की तरह) विभीषण सौ योजन विशाल समुद्र को पार कर गया। पूर्व के श्रेष्ठ विष्णु-भक्तों में कौन इनकी बराबरी कर सकता है ? इस तरह कहते आकाश-मार्ग में नारद नाचते अपनी खुशी प्रकट करने लगे। २ कपि-सेना रूपी सागर मानों क्षीरसमुद्र की शोभा की तरह, रघुनाथ लक्ष्मी-पति की तरह, उनकी (रघुनाथ की) भुजलक्ष्मी लक्ष्मीदेवी की तरह, सौमित्रि (लक्ष्मण) आदिशेष के अतुल वैभव की तरह, हनुमान गरुड़ की तरह विभीषण के सामने शोभायमान हुए। ३ वरदान प्रदान करनेवाले सद्योजात, श्रेष्ठ तत्पुरुष, निर्मल वामदेव, कांतिमान अघोर, ईशान नामक पंच ब्रह्मस्वरूपी शिव की तरह चारों दिशाओं में खड़े (अपने) चार मंत्रियों-सहित विभीषण कपि-सेना के तन-मन लुभाने लगा। ४ "सुनो राजकुमार, अत्यधिक वैष्णव कांति के इस जगत का पारावार कहाँ ? सीमा कहाँ ? तुम्हारे लोगों की सेना को विभीषण की वैष्णवी प्रभा ने आवृत किया। आखिरी शिविर में

तवकदलि तुदिपाळॆयद कपिनिवह भोयॆंदॆद्दु मुत्तिद
रवनिजौघद लधिक नारायण परायणन ॥ 5 ॥
शरणुजन सुरधेनु सुदयापर सदार्तजनौघ रक्षा-
कर कृपाकर देव दीनानत जनोद्धरण
शरणु सर्वेश्वर सनातन शरणु सगुण सुधार्मिकश्रुत
शरणु रघुपति शरणु शरणॆंनुतिर्द नसुरेंद्र ॥ 6 ॥
श्रुति शिरोमणि शरणु शरणप्रतिम शरणु समस्त दिविज
प्रतति वंदित शरणु सनकाद्यखिळ मुनिनिकर
नुतवचोविस्तरण शरणागत जनौघ मनोभिवांछित
वितत वरदानंद बंधुवॆ शरणु शरणॆंद ॥ 7 ॥
शरणु शरणॆंदॊदरला हरि शरणनॆंबभिधानवनु वि-
स्तरिसिदरु सनकादिगळु सज्जन शिरोमणिगॆ
सुररु गुडिगट्टिदरु मुत्तिद तरुचररु हिम्मॆट्टिदरु सिरि-
हरिपरायणरेनु जगदलि धन्यरोयॆंद ॥ 8 ॥
ऒसॆंदु हॊगळुव श्रुति ततियनालिसिददै वद कर्णदलि सॊग
यिसितलै शरणन सुधासंभृत वचोलहरि

उपस्थित कपियों ने बड़े दीन-भाव से 'भो' कहकर पुकारते दौड़े-दौड़े आकर श्रीमन्नारायण के स्मरण में लीन विभीषण को वृक्ष-हस्तों से आकर घेरा। ५ विभीषण स्तुति कर रहे थे— "शरणागतों के कामधेनु, दयाशाली, दुखियों के रक्षक, कृपालु, देवाधिदेव दीनों और शरणागतों के उद्धारक, शरण में आया हूँ; सर्वेश्वर प्रभो ! शाश्वत प्रभो ! तेरी शरण में आया हूँ। गुण-परिपूर्ण शरण में हूँ; सद्धर्मज्ञानी शरणागत हूँ। हे रघुपति ! तेरी शरण में आया हूँ। ६ हे वेदश्रेष्ठ ! तेरी शरणागत हूँ; भक्तश्रेष्ठ शरणागत हूँ; समस्त देवताओं की स्तुति-वंदना को स्वीकार करनेवाले प्रभो ! तेरी शरणागत हूँ; सनक-सनंदनादि सकल मुनिजनों से संस्तुत प्रभो ! तेरी शरण में हूँ। शरणागतों की अभिलाषा को पूरा करनेवाले प्रभो ! तेरा शरणागत हूँ। वर प्रदान करनेवाले आनंदस्वरूपी बन्धो ! शरणागत हूँ।" इस प्रकार विभीषण ने स्तुति की। ७ विभीषण 'शरणागत, शरणागत' इस तरह जब उच्चार रहे थे तब सनकादि मुनिश्रेष्ठों ने राम को उनका (विभीषण का) परिचय 'हरिभक्त' के विवरण के साथ कराया। देवता रोमांचित हुए। विभीषण को घेरे वानर पीछे सरके। श्रीहरि की भक्ति में निरत इस जगत में यह कितना धन्य है।" इस प्रकार वाल्मीकि ने वर्णन किया। ८ भगवान की महिमा का प्रेम से स्तोत्र करते हुए

ऐसळु गंगळ नुरुकृपोदय देसकदलि नोडिदनु नूतन
पशुपतिश वोलु मेरेव तेजोमय विभीषणन ॥ 9 ॥
मनद हरुषदलरस बळिकातननु काणिसि कोबेनेंबी
नेनहने निश्चयिसि नोडिदननिलजन मोगव
हनुमनाळ्दन बगेयरिदु हरितनुज सूनु समेत नूतन
वनरुहाक्षन दास निदर्देडेगागि लंघिसिद ॥ 10 ॥
तुंगबल बळिकागला गगनांगणद गमनद निजैक्यन
निगितद लरिदरिदनंदिनपूर्व दरुशनव
होंगिदानंदाश्रुगळला लिंगनंगैदुभय सख सुख
संगदलि संदणिसि नगुतिंतेंद नसुरंगे ॥ 11 ॥
बरविदेनिद्दिदद्दु दशकंधरननुज्ञेयो मेण् विवेक
स्फुरणदुदित भविष्यदनुभवगतिय घाडिकेयो
ऎरडरोळगेनेंदु बेसगोळे विरचिसिदनुभयानुमत वि-
स्तरणवनु बळिका विभीषणननिल तनयंगे ॥ 12 ॥
ऐसे मत्तेनेंदु वीरविभीषणन काहिंगे वानर
वासवन नंदनन नंबक संज्ञेयिदिरिसि

वेदों को कान से सुने हुए भगवान के कानों को भक्त के यह अमृत भरे वचन बड़े प्रेमपूर्ण लगे। कमलदल-सदृश आँखोंवाले श्रीराम ने विनूतन शिव-सदृश शोभायमान महातेजस्वी विभीषण की ओर करुणापूर्ण नेत्रों से देखा। ९ अत्यंत हर्षोत्फुल्ल होकर उसे देखने की अभिलाषा से राम ने आंजनेय की ओर देखा। हनुमान ने (तुरंत) स्वामी का इशारा ताड़ लिया। (अतः) अंगद को साथ लेकर कमलाक्ष के (इस) नये भक्त की ओर लपककर पहुँच गये। १० महाबली हनुमान ने आकाशमार्ग से आ रहे, भक्तिपरवश विभीषण का मुखड़ा देखते ही ताड़ लिया। उस दिन लंका में जिस अपूर्व व्यक्ति को देखा था वह यही है—ऐसा जान, फूले न समाए। आनंद के मारे अश्रु बहाते विभीषण का आलिंगन कर स्नेह-सहवास सुख के कारण रोमांचित हुए। फिर मुस्कुराते हुए, विभीषण से यों बोले। ११ "तुम्हारा, यहाँ आने का क्या उद्देश्य हो सकता है? दशकंठ की आज्ञा है या भावी होनी की कठिनाई की विवेकानुभूति है? इन दोनों में से किस उद्देश्य को लेकर आए हो?" इस प्रकार (हनुमान से) पूछे जाने पर विभीषण ने अपने तथा भाई के बीच पैदा हुई विभिन्न राय के बारे में आंजनेय को सविस्तार समझाया। १२ "अच्छा, यह बात है?" इस तरह कहकर हनुमान ने अंगद को वीर विभीषण की रखवाली

आ शरणजनवत्सलन निजदासवर्गप्रियन मानव
वेषदच्युतनेंडेगे बंदितेंदना हनुम ॥ 13 ॥
जीय बंदवनीग रक्कसरायननुजनु नीतिविदनस
हायशूरनुदार धीर गभीर धार्मिकनु
मार्ये होंगदीतनलि हिंदे सहायवचनदलेन्न बंधन
दायतव बिडिसिदनु तप्पिल्लसुर नोळगेंद ॥ 14 ॥
मनमुनिसु बळिकाय्तु गडखळ जनपनोडनीतंगे देवर
वनितेयनु बिडहेळिदरे विडदी विभीषणन
अनुजनेंदोवदे विरोधिसि कनलि नूकिद गड भवत्पद
वनरुहव नोलेसि बदुकलु बंद गडयेंद ॥ 15 ॥
अहुदु मत्तेनेंदु जांबव मिहिरसुत केसरि सुषेणर
विहित वचनप्रौढिगळ नारैदु निजमतव
सहभवन लद्रिदुळिद घन विग्रह समर्थरिगोरेदु रिपुभय
रहित वोळेयराय वळिकिं तेंदनुचितदलि ॥ 16 ॥
धुरदोळिदिरादवर निद्रिवुदु शरणु होक्कर सलहुवदु पति-
करिसुवदु धर्मव नध्रर्मवनळिवुदवनियलि

के लिए आँख के इशारे से नियुक्त कर भक्तप्रिय किंकरप्रेमी मानव-वेषधारी अच्युतस्वरूपा श्रीराम के यहाँ आकर वस्तुस्थिति का निवेदन (ज्यों का त्यों) किया। १३ "स्वामिन् ! अब जो आए हैं, राक्षसराज रावण के भाई हैं। यह नीतिज्ञ हैं, असहाय शूर हैं, उदार, धीर, अत्यंत धर्मिष्ठ हैं। माया इनको छू नहीं सकती। जब मैं लंका गया था तब इन्हीं महोदय ने मेरे पक्ष में बोलकर, मुझे बंधविमुक्त करवाया था। यह निर्दोष हैं।" इस प्रकार हनुमान ने कहा। १४ "राक्षसराजा तथा इनमें मनमुटाव हुआ। इसने श्रीमान (आपकी) पत्नी को विमुक्त करने के लिए ज़िद की तो उस (सीता को) विमुक्त कर न भेजते, रावण ने चिढ़कर अपने भाई विभीषण की बातों पर ग़ौर किए बिना, इसे धक्के मारकर बाहर निकाल दिया। अब यह आपके चरण-कमलों की सेवा करने पधारे हैं।" इस प्रकार हनुमान ने कहा। १५ "ऐसा है ? और कुछ है ?" इस तरह कहते हुए जांबव, सुग्रीव, केसरी, सुषेण इनकी श्रेष्ठ राय लेते हुए विचार कर देखते हुए, अपने भाई से विचार-विमर्श करते हुए अपनी राय को दृढ़ बनाते हुए अन्य युद्धवीरों को उसे (अपनी दृढ़ धारणा) समझाते हुए देवताओं के स्वामी श्रीराम ने समयोचित बातें यों कहीं। १६ "युद्ध में सामना करनेवालों की हत्या करना, शरणागतों की रक्षा करना,

अरसुगळिगिदु नयविनितु गोचरिसदिरे हगरणद नाटक
दरसरेनिसरे जगदलेंदनु नगुत रघुनाथ ॥ 17 ॥
तोळ बलुहेम गिल्लदिरे भयदोलगवु नमगैसले दिट
कीळु बलरोळ होक्कु माडुवुदेनु नम्मुवनु
मेले मरेयोक्कवर सलहुव शील नम्मदु बंदवनना
वोलयिसि कोंडरिवे वेंदनु धूषणध्वंसि ॥ 18 ॥
इनतनूभव केळु तन्नय तनुव नित्तादरेयु मरेयो-
क्कननु मन्निसुवुदे महाक्षत्रियर धर्मकण
निनगे हेळुवुदेनु नीनज्ञने विचारिसि केळिदरिया
विनुत विमळ कपोत चरितव नेंदना राम ॥ 19 ॥
देव निम्मय मैसिरिय सोबगाव देवरिगुंटु देवर
देवनल्ला नीनु प्राकृत नरने नाटकद
एववेम्मय मतिगळखिळ कलाविशेष नोळेंदु कलि सु-
ग्रीव जांबव हनुम नीलादिगळु होगळिदरु ॥ 20 ॥
करसिदनु बळिकिन सुताद्यर वचोभिप्रायदलि निज
शरणननु शरणागतव्रजबंधु हरुषदलि

जगत में धर्म को स्वीकार करते अधर्म का नाश करना —यह सब राजनीति की बातें हैं। कम से कम इतना तो न करें तो ऐसे लोग इस लोक में, नाटक में अभिनय के तौर पर राजा का वेष धारण करनेवाले (नाम मात्र के) राजा न कहलाएंगे ?" इस तरह मुस्कुराते रघुनाथ ने कहा। १७ "हममें अगर भुजबल की कमी रही तो हमें भय का सहारा लेना पड़ता है। अल्प बलवाले हमसे मिल-जुलकर हमारा क्या बिगाड़ सकते हैं ? हमारे चरित्र की विशेषता यही रही कि शरणागत की रक्षा करें। हमारे यहाँ आनेवाले का सेवाभाव देख पता लगाएँ।" इस प्रकार दूषण के हत्यारे श्रीराम ने कहा। १८ हे सूर्यपुत्र सुग्रीव ! सुनो। निजी देह की ज़रूरत पड़े, तो बलि चढ़ाकर शरणागत की रक्षा करना ही महा-क्षत्रिय का धर्म है। यह तथ्य क्या तुम नहीं जानते। क्या ये बातें कहने की हैं ? कबूतर की वह सुप्रसिद्ध कहानी क्या तुमने सुनी नहीं ?" इस तरह राम ने कहा। १९ "स्वामिन् ! आपकी जैसी देह-सौंदर्य की कांति किस भगवान में है ? आप देवाधिदेव हैं न ? क्या आप नाटक के साधारण मानव हैं ? समस्त कलागुणसंपन्न आप हम जैसों की बुद्धि में कैसे समा सकते हैं ?" इस प्रकार वीर सुग्रीव, जांबव, हनुमान, नील आदियों ने (राम की) प्रशंसा की। २० तत्पश्चात् सुग्रीव आदियों की राय से

तरुण केळै कुशनें गगनद तरणि धरणी मंडलक्कव
तरिसितेंबंतिळिदुदा रथवा विभीषणन ॥ 21 ॥
आयुधव तन्नवरिगित्तु नगायतनु मणिखचित कनकद
सायकव नंघ्रिगें समर्पिसि चाचिदनु शिरव
काय बेकेंलें देव भगवत कायननु भवदीय भक्तनि-
काय करुणास्पदन नेंदड गेंडेंद नंघ्रियलि ॥ 22 ॥
रक्षिसेंन्ननाथ बंधुवें रक्षिसै कारुण्यसिंधुवें
रक्षिसै राक्षस विभूषणननु विभीषणन
अक्षयनें अभवनें जगत्रय रक्षकनें रौरवपरायण
शिक्षकनें शरणागतन सलहेंद नसुरेंद्र ॥ 23 ॥
नील मेघश्याम नीरज लोल लोचन कंबुकंठ वि-
शाल वक्षस्थळ मनोहर वदन वारिरुह
स्थूल कंधर कलित मदशुंडालकर करयुगळ सीता
लोल रक्षिसु रक्षिसै शरणागतन नेंद ॥ 24 ॥
ध्रुवन रक्षिसिदंतें रविसंभवन रक्षिसि दंतें दिति सं-
भव सुरेंद्र मुनींद्र मार्कंडेय नारदर

शरणागत-बन्धु श्रीराम नें खुशी-खुशी अपने भक्त को बुलाया। हे, नवयुवक कुश ! सुनो, विभीषण का रथ मानों धरती पर इस प्रकार उतरा कि आकाश का सूर्य धरती पर उतर रहा हो। २१ अपने आयुध को अपनें पक्षवालों के हाथ दे पर्वत-सदृश विभीषण ने रत्न-जड़ी अपनी सोने की तलवार श्रीराम के चरणों में रखकर सिर नवाकर प्रणाम किया। "भगवन् ! घर छोड़कर आए इस अपने भक्त की करुणामय दशा का आसरा बने मुझे अपनी कृपाछत्रछाया प्रदान कर शरण दे रक्षा करें।" इस तरह कहते (राम के) चरणों में गिरे। २२ "हे अनाथ बंधो ! मेरी रक्षा कीजिए। करुणा-सागर मेरी रक्षा कीजिए। राक्षसों के लिए अलंकारप्राय-सदृश इस विभीषण की रक्षा कीजिए। हे नाश-रहित ! जन्म-विहीन, तीनों लोकों के रक्षक रौरव नरकगामी को सही मार्ग दिखा ठीक करनेवाले प्रभो ! शरण आए मेरी रक्षा कीजिए।" इस प्रकार विभीषण ने विनती कर ली। २३ "हे नील मेघश्याम, कमलनयन, कंबुग्रीव (शंख जैसे कंठवाले) चौड़ी छातीवाले, मनोहर मुखकमलसंपन्न, बलशालीभुजा—संपन्न, मदोन्मत्त हाथियों की सूँड़ की तरह दोनों हाथोंवाले, सीताप्रिय स्वामी मेरी रक्षा कीजिए। शरणागत मेरी रक्षा कीजिए" इस प्रकार विभीषण ने प्रार्थना की। २४ "अन्यान्य रीतियों से कई प्रकार के

विविध विकृतोपद्र कोटिय तविसि रक्षिसिदंतें माया
जवनिकेय मधुकैटभांतक रक्षिसुवुदेंद ॥ 25 ॥
वरगजेंद्रननंबरीशन दुरितशील नजामिळन शुभ-
चरित धर्मांगदन कनकांगदननंगदन
करुणदलि कैविडिद वोलु तव चरणकमलवनेन्न शिरदोळ
गिरिसि वरिसु विलास मुखर्दिदेन्न नीनेंद ॥ 26 ॥
एळु भयबेडेलें विभीषण केळु लक्ष्मणनंतें कांबें नृ-
पाल दशरथ नाणें मनदलि चिंतें बेडेंद
मौळियनु नेगहिदनु सीता बालकिंद नप्पुव सुकोमल
तोळिनलि तेगेदप्पिदनु नगुता विभीषणन ॥ 27 ॥
अरस रामन करुण दळतेय हरुह नरिदिनसूनु जांबव
हरितनुज नळनील मुख्य समस्त नायकरु
बरसेळेदु बिगियप्पि बिडदा दरिसिदरु सुररुब्बि हूविन
सरिय सुरिदरु मोळगुवानकरवद रभसदलि ॥ 28 ॥

अनिष्टों का नाश कर ध्रुव की रक्षा करने की तरह, सुग्रीव की रक्षा करने के सदृश, प्रह्लाद देवेन्द्रों की रक्षा करने की तरह, मुनिश्रेष्ठ मार्कण्डेय की रक्षा जिस प्रकार शिवजी ने की उस प्रकार, नारद की रक्षा करने की तरह, हे मायारूपधारी ! मधु-कैटभ असुर-विनाशक-प्रभो ! मेरी रक्षा कीजिए।" इस प्रकार विभीषण ने प्रार्थना कर ली। २५ "गजेन्द्र, अंबरीष, दुष्ट चरितवाले अजामिल, सन्मार्गी धर्मांगद, रुक्मांगद, अंगद आदियों की जिस करुणापूर्ण रीति से आपने उद्धार किया उसी तरह मेरे शिरस् को अपने चरणों में स्थान देकर (अपने पैर मेरे माथे पर रखकर अनुग्रह कीजिए। प्रसन्नचित्त हो मुझे स्वीकार कीजिए।" इस प्रकार विनती की। २६ "उठो, भय त्यागो। सुनो विभीषण ! दशरथ राजा की सौगंध खाकर कहता हूँ कि भाई लक्ष्मण की तरह तेरी देख-रेख करूँगा। (अपने) मन की चिंता त्याग दो।" इस प्रकार कहते विभीषण का माथा (चरणों में गिरा) उठा लिया। सीता का आलिंगन देने की रीति से अपनी कोमल भुजाओं में विभीषण को मुस्कुराते हुए भर लिया। २७ राजा राम की करुणा की विशालता की मर्यादा जानते हुए सुग्रीव, जांबव, अंगद, नल, नील आदि मुख्य नायकों ने विभीषण को पास बुलाकर (बारी-बारी से) गाढ़ालिगन दे गौरवान्वित किया। देवताओं ने भी अपना आनंद प्रकट करते भेरी बजाकर फूलों की वर्षा की। २८ रघुपति ने विभीषण को पास बुलाकर अपने आसन के

करेंदु रघुपति बळिक निजविष्टरद कॆलदलि निलिसि विकसित
वरवदन सरसिजदि नॊय्यनॆ केळ्द नुचितदलि
पुरजनंगळु सुखिनगळे दशशिरनु हदुळिगने निजाग्रज
विरहवेनु निमित्त संभविसिदुदु निवगॆंद ॥ 29 ॥
जगद वीररॊळग्गळनु संयुग समर्थनु सुरनरोरग
जगति गॊडॆयनु सुप्रसिद्धनु सिरिय सॊंपिनलि
नगसुतावर नॊलुमॆ नॆट्टनॆ सॊगसिहुदु निन्नग्रजगॆ नी
नगलि बहुदिदु चित्रवॆंदनु रामनसुनगुत ॥ 30 ॥
आवदेशद लादडॆयु सतिमाव सुत दौहित्र मित्रज-
नावळिय जोडिसलु बहुदग्रज सहोदरर
आव परियलि गळिसवहुदी भूवळयदलि निन्न बरविन
भाव नमगेनडियबंदिर दॆंदना राम ॥ 31 ॥
देव केळ्वर नादरॆयु हितवावगुंटव बंधु बंधुवि-
गाव नहितनु परनु तानदु सुप्रसिद्धवलॆ
ईवुदे निजहितव तन्न कळेवरद रुजॆयडवियौपध
वीववॊलु राजेंद्र चित्तैसंद नसुरेंद्र ॥ 32 ॥

पार्श्व में बिठाकर प्रसन्न मुख-कमलयुक्त हो पूछा— "क्या लंकापुरवासी सभी सुखी हैं? दशकंठ कुशलमंगलपूर्वक है न? (अपने) बड़े भाई से बिछुड़ने का क्या कारण है?" इस प्रकार यथोचित रीति से कई प्रश्न किये। २९ तुम्हारे बड़े भाई तो जगत के वीरों में श्रेष्ठ हैं। युद्ध में समर्थ हैं। देव, मानव, नागलोक के स्वामी हैं। संपत्ति-समृद्धि की दृष्टि से भी प्रसिद्ध हैं। गिरिजवल्लभ शिवजी में अचल-भक्ति संपन्न हैं। ऐसे बड़े भाई को छोड़कर आना एक आश्चर्य की बात है।" इस तरह मुस्कुराते हुए, राम ने कहा। ३० "पत्नी, ससुर, पुत्र, प्रपौत्र, मित्र आदियों को जिस किसी भी देश में (अपने साथ) मिला सकते हैं। भाई और सगे भाइयों को इस जगत में जिस किसी भी प्रकार से प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन तुम्हारा यों आने का अभिप्राय मैं समझ नहीं पाता।" इस तरह राम ने कहा। ३१ सुनिए स्वामिन्; भले ही बाहर के आदमी हों; जो हितैषी हैं, वही बंधु हैं। वन्धु के लिए जो अहितकारी है वही अन्य (ग़ैर) है। यह उक्ति जगत-प्रसिद्ध है। वन में उत्पन्न ओषधी जो देह के लिए हितकारी है, वही जो देह में उत्पन्न रोग है वह क्या देह को सुखी बना सकता है? सुनिए

देव केळिन्नोंदु जगदलि जीविसुवुदुंटादडडविय
जीवनव कोंडिहुदु मेलुवुदु गड्डेगेणसुगळ
सेविसुवुदु चमूर सिंह मृगावळिय नतिमूर्ख दुष्कृत
जीविगळ बळिविडिदु बदुकुवुदुचित वल्लेंद ॥ 33 ॥
बाळ बेकेंबासे युळ्ळडे कीळुगृह वीथियलि भिक्षद
कूळ तिरिदु तंदुंडु बदुकुवु दधिक सौख्यतर
केळिदै राजेंद्र मूर्खर खेळमेळद सुखदि जीविप
खूळवृत्तिय बदुकु कष्टके कष्टतरवेंद ॥ 34 ॥
अदरिनघसंघातवण्ण नोळुदिसलुळ्ळडे बिडुवुदोळ्ळितो
हुदुगि दुर्गति गिळिवु दोळ्ळितो देव चित्तैसु
विदित वैदिक लौकिकव मीरिदुदु नडवळियण्णगेंबी
हदनरिदु निम्मंघ्रिकमलव सार्दे नानेंद ॥ 35 ॥
ऐसें मत्ते नादडेम्मय भाषेयनु केळेले विभीषण
दोषकारियनळिदु लंकाराज्य दोडेतनव
ई सरोरुह बंधुवी तारेश नीधरे रामकथे ता-
नेसुदिन वुळ्ळन्नबर निनगित्ते नानेंद ॥ 36 ॥

राजन् ! इस प्रकार विभीषण ने कहा । ३२ "सुनिए भगवन् ! अन्य लोक में निवास बनाए रहना अगर संभव है तो अब अरण्य में निवास बनाए, कंद-मूल-फल का सेवन करते बाघ-शेर आदियों की सेवा करते जीना श्रेयस्कर है । दुष्ट कार्यनिरत व्यक्तियों का अनुसरण करते जीना योग्य नहीं है ।" —इस तरह विभीषण ने कहा । ३३ जीने की आस हो तो गये-बीते लोगों की तरह घरों की गलियों मे भीख माँगकर खाते पेट भर लेना अधिक सुखकर है । मूर्खों के साथ हँसी-मज़ाक़ करते सुख से जीने की नीचवृत्ति का जीवन कठिन से कठिनतर है, निकृष्ट है ।" इस प्रकार विभीषण ने कहा । ३४ "अतः पाप-कार्य बड़े भाई के हाथों अगर हो रहे हों तो उससे विलग होना (उसे त्याग देना) ही श्रेयस्कर है या उसके आधीन रह दुर्गति को प्राप्त करना श्रेयस्कर है ? भगवन् ! आप ही कहिए । इसीलिए सभी से जाने-पहचाने वैदिक-लौकिक मार्ग की मर्यादा भाई (रावण) जो तोड़ रहे है यह जानकर ही आपके चरण-कमलों की शरण में आया हूँ ।" —इस तरह विभीषण ने कहा । ३५ "अगर यह बात है तो ठीक ही है, विभीषण ! मेरी प्रतिज्ञा भी सुनो । (उस) पापी रावण की हत्या कर लंका के राजपाट को यावत् यह सूर्य, यह चंद्र, यह रामकथा रहेगी, तावत् तुम्हें सौंप दूँगा ।" —इस तरह राम ने कहा । ३६

बलुह बल्लुदरिंद कपिकुलतिलक नार्येदुब्बिदनु नृप
नोळग बल्लुदरिंद जांबवदेव हिग्गिदनु
उळिद नीलांगद भटाळिग ळोलिदु कोंडाडिदरु लेसें
दोलिदु होगळिद राग तुंबुर नारदादिगळु ॥ 37 ॥
सुररदेनरियरें सुमाया चरितनेंबुद नमर चक्रे-
श्वरनु बळिकिळि तंदनाशाधीश रोग्गिनलि
सुर मुनिगळोगाय्तु सुमनस तरुणियरु संदणिसिदरु परि
परिय वर मूर्धाभिषेकद वस्तुकारदलि ॥ 38 ॥
सर्वेदुदरमनें विश्वकर्मन विविध चित्रोत्करद लानक
निवह बब्बरिसिदवु मंगळ वस्तु कारदलि
दिविज सतियरु संदणिसिदरु निवडिसिद सुमूहूर्तदलि वै-
भवदोळाय्तभिषेकवा राजेंद्र शरणंगें ॥ 39 ॥
सूसिदरु सेसेयनु सुरर सुवासिनिय रारतिय बेळगुरें
बासणिसें सुळिसिदरु बण्णद सोडर सोगसिनलि
वासवादि समस्त सुररु विभीषणन नप्पिदरु जांबव
कीशपति लक्ष्मणरु तक्कैसिदरु तवकदलि ॥ 40 ॥

राम के सामर्थ्य को जाननेवाले कपिकुल-तिलक सुग्रीव 'वाह-वाह' कहते अपना हर्ष प्रकट करते फूले न समाए। राम के अंतःस्वरूप को जानने के कारण जांबव अत्यंत हर्षित हुए। अन्य नील-अंगदादि वीरों ने खुशी के मारे राम की प्रशंसा की। तुंबुरु-नारदादियों ने "बहुत अच्छा हुआ" कहते हुए प्रशंसा करते हुए प्रसन्नता प्रकट की। ३७ देवता यह न जानते हुए कि यह मायारूपधारी है— देवेन्द्र दिक्पतियों के साथ धरती पर आए। देव-ऋषि इकट्ठे हुए। अभिषेक के लिए प्रयुक्त तरह-की वस्तुएँ लेकर देवता-स्त्रियाँ आकर जुट गयी। ३८ विश्वकर्मा ने तरह-तरह के चित्रों से सजाए राजमहल की सृष्टि की। भेरियाँ निनादित होने लगीं। मंगलमय वस्तुएँ ले देवता-स्त्रियाँ आ पहुँची। चुने गये सुमुहूर्त में श्रीराम के भक्त का (विभीषण का) राज्याभिषेक-कार्य संपन्न हुआ। ३९ देवता-स्त्रियों ने विभीषण पर अक्षत फेंकीं। तरह-तरह के रंग-बिरंगे दीपों से आरतियाँ उतारीं। देवेन्द्रादि समस्त देवताओं ने विभीषण का आलिंगन किया। जांबव, वानरराज सुग्रीव, लक्ष्मण आदियों ने भी कौतूहलवश (विभीषण का) आलिंगन किया। ४० "यह श्रेष्ठ विभीषणदेव (आज से) लंकापुरी के राजा है।" इस प्रकार देवेन्द्र

वर विभीषण देवलंकापुरदरसनेंदमरपति डं-
गुरव हॊय्सिदनमर वानर कटक वॆरडऱलि
तरणिवंशद राय तॊरवॆय नरहरिय सिरिपाददलि निज
शिरव मणिदमरेंद्रन मरावतिगॆ बीळ्कॊंड ॥ 41 ॥

नाल्कनॆय संधि

सूचनॆ— तुडुकिदंबिन मॊनॆय लबुधिय कडुह भंगिसि सेतुबंधन कॊंड बडिसिदनु वीर धीरोदात्त रघुनाथ ।

तरणिवंश ललाम सुत केळरिय बळियिं बंद निजपद
शरण गमळाभ्युदय दॊसगॆय मेलॆ रघुनाथ
हॊरद हरुषद लॊय्यनटवी चरकुलेंद्रन मोगवनीक्षिसु
तरिवधा प्रारंभदाहवकेनु हदनॆंद ॥ 1 ॥
अरस चित्तैसैसले संगरद बिडयकॆ बीदियिदॆ सुर
सरणि बॆळवडॆ बेह भटरिदॆ बेडिदंददलि
गिरि तरुगळिवॆ कैदुगळिगुब्बरद तोळिवॆ तोटिगबुधिय
हरुह हेळदिरॊंदु निमुषकॆ हूळिसुवॆनॆंद ॥ 2 ॥

ने देवताओं तथा वानर-सेना-समूह मध्य ढिंढोरा पिटवाया। 'तॊरवे' के नरहरि के अवतार धारण करनेवाले रविकुल के राजा राम के श्रीचरणों में सिर नवाकर देवेन्द्र अमरावती की ओर चल पड़े। ४१

चौथी संधि

सूचना— (धनुष पर) चढ़ाए बाण की नोक से सागर का दर्प विदीर्ण कर सेतुबंधन के निमित्त, उन्नत धैर्यशाली वीर रघुनाथ ने उसे मनवा लिया।

हे सूर्यवंश के लिए भूषणप्राय पुत्र! सुनो। शत्रु की ओर से आए अपने भक्त का मंगलकार्य संपन्न बनाने के बाद रघुनाथ ने हर्षित हो कपिकुल-अधिपति सुग्रीव को निहारते हुए पूछा— "शत्रुवध-निमित्त युद्ध प्रारम्भ करने की भावी योजना के बारे में क्या किया जाय?" १ "सुनिए राजन्! युद्ध-संघर्ष के लिए सुगम मार्ग है। आसमान की ऊँचाई तक बढ़ने के लिए शक्ति-संपन्न वानर वीर हमारे यहाँ यथेष्ट हैं; शस्त्रास्त्रों की कमी तो है ही नहीं; चाहे जितने पेड़-पहाड़ हैं। युद्ध की ताक़त से भरपूर बलशाली भुजाएँ हैं। अब रही इस समुद्र के विस्तार की बात। क्षणार्ध में इसे पाट

तोऱिसुवॆ नहितननु देवर तूऱुगणॆ तुदिगऱिय जीवव
जाऱिसलि मेणुळुहला शरवसम समरदलि
बेऱॆ देवर मतिद मैसिरि तोऱलदना नऱियॆ नी परि
तोऱॆ नुडिदुद कोसरिसिदडॆ भृत्यनल्लॆंद ॥ 3 ॥
ऎलॆ कपीश्वर नुडिद नुडियिदु कलिगळंगवॆ हूळलेकी
जलधियनु तोऱिसलदेकी राघवेंद्रगॆ
हुलुपरिय रक्कसननिदु बडकॊलस केळी बालवंदनॆ
कळुहि हिडितरिसुवॆनॆनुत्त गवाक्ष गर्जिसिद ॥ 4 ॥
कॊलकॆ सार्कट्टाळुतनदग्गळिकॆये रिपुभटन नॊव्वन
नॆळॆदु तहुदिदु पंथवे पौरुषद पद्धतिगॆ
खळनना खळवलवना हगॆ हॊळल निमुषदलिदिरिनलि तं-
दिळुहदिरॆ ता वंटनल्लॆंदॊदऱिदनु गवय ॥ 5 ॥
कडलनुळुहि विरोधियनु खळ पडॆसहित पुरसहित तंदी
तडियलिळिसुवदाव कीर्ति भटगॆ भुवनदलि
कॊडनमगनंददलि जलधिय कुडिदु रिपुरावणन तलॆयनु
हॊडॆदु तंदॊप्पिसुवॆ नॆंदुरिदॆद्दना शरभ ॥ 6 ॥

दिया जायगा।" इस प्रकार सुग्रीव ने कहा। २ "मैं शत्रु को दिखा दूंगा। आपके पास नोक में पुच्छल (पंखोंवाले) प्रक्षेप योग्य बाण जो हैं—इस असाधारण युद्ध में शत्रु के प्राण हरें या जीवित छोड़ दें। आप अन्यथा सोचें यह तो मैं नहीं जानता। इस प्रकार बोलकर मैं अगर पीछे हटूँ तो आपका सेवक नहीं।" —इस तरह सुग्रीव ने कहा। ३ "हे तात वानरराज, तुम्हारी ये बातें वीरोचित है। इस समुद्र को क्यों पार कर देना चाहिए? राघवेन्द्र को नीच राक्षसों को क्यों दिखा दें? यह तो एक छोटा सा काम है। सिर्फ़ इस पूँछ को भेजकर शत्रु को बँधवा लाऊँगा।" —इस तरह कहते गवाक्ष गरजे। ४ "हट जा परे। तेरी ये बातें क्या महान वीरों के लिए शोभादायक है? शत्रु वीर को इस प्रकार खिचवा लाने की प्रतिज्ञा क्या साहसियों की रीति है? उस राक्षस को, राक्षस-सेना को, शत्रु की नगरी को अगर क्षणार्ध में ढोकर यहाँ लाकर नहीं उतार दूँ तो मैं वीर ही नहीं।" —इस तरह गवय गरजा। ५ "सागर को बचाकर, शत्रु को उसकी राक्षस-सेना-सहित, तथा उसकी नगरी के साथ इस सागर के किनारे लाकर उतारना क्या इस लोक में वीर को कीर्ति प्रदान करेगा? अगस्त्य की तरह समुद्र को पीकर शत्रु रावण का

कुडिवुदरिदल्लंबुनिधियनु पोडेवुदरिदल्लरिय तलेयनु
बेडगिदेतरदेले वनौकस ररस चित्तैसु
ओडेवेनी ब्रह्मांड भांडव नडिमगुचुवेनु धरेयनरिभट
नेडेय कैलस विदेनेनुत चुब्रुकिदिदना नील ॥ 7 ॥
अंगवेतरदिदुवे सुभटोत्तुंगरिगे केळेले कपीश्वर
नुंगुवेनु नीरज भवांडवना बहिर्जलव
इंगिसुवे मत्तुळिद कैलसव जंगुळवदेनुंटु हेळे-
दगदनु गर्जिसिदनूर्जित शौर्यदेळ्गेयलि ॥ 8 ॥
केळिदै बळिकुळिद शतबलि वालिसुत गजवृषभ समरा-
भीळ मैंद द्विविध दुर्मुख सुमुखरेंबुवरु
तूळवबुधिय सबुदद वोलुब्बेळु वग्गद गाडिकेय क-
ट्टाळुतनवनु मेरेदरिदिरलि राघवेश्वरन ॥ 9 ॥
भटर होळकेय पंथदुब्बिन पटुपराक्रमदुदित वाक्य-
स्फुट परिग्रहकरस हिग्गिद नधिक हरुषदलि
घटनेयावुदो तम्म नुडिवुत्कट मनःप्रज्ञतेय रणसं-
घटने गेंदवनीश नोडिद ननुज नाननव ॥ 10 ॥

सिर काटकर ला, समर्पित करूँगा।" इस तरह शरभ ने क्रोधोन्मत्त होकर कहा। ६ "समुद्र को पी डालना एक मामूली-सी बात है। शत्रु का सिर काट डालना भी कोई बड़ी बात नहीं है। हे कपीन्द्र! सुनो। ये सब कौन सी बड़ी अचरज की बातें हैं? मैं तो इस सारे ब्रह्मांड रूपी घड़े को फोड़ डालूंगा। इस धरती को पलट दूंगा। शत्रु वीर के लिए यह कौन सी बड़ी बात है?" —इस तरह कहते हुए नील उठ खड़े हुए। ७ "शत्रुवीरों के लिए ये कौन से बड़े साहस के कार्य हैं? सुनिए सुग्रीव। ब्रह्मांड को निगल जाऊँगा। ऊपर के पानी को सुखा दूंगा। इससे बढ़कर अगर कोई कार्य हो तो आज्ञा करें।" इस तरह वीरवर अंगद ने अपनी भारी वीरता प्रकट करते गर्जना की। ८ सुनते हो न कुश। तदनंतर अन्य वीर शतबलि, वालिकुमार, गज, वृषभ, युद्धभयंकर मैंद, द्विविध, दुर्मुख, सुमुख नामक वीरों ने आगे बढ़ आ रहे, घनघोर गर्जना कर रहे समुद्र की तरह अपनी भयानक वीरता का परिचय श्रीराघवेश्वर के सम्मुख प्रकट किया। ९ कपिवीरों से प्रकटित, स्पर्धा से युक्त, उत्साहपूर्ण उत्कट वीरता की प्रतिज्ञाबद्ध स्पष्ट बातें सुनकर अत्यानंद के कारण राम फूले न समाए। "हे लक्ष्मण! अत्यंत बुद्धिमानी के इस युद्धकार्य के लिए भविष्य

अरस चित्तैसेळु शरधिय हौरगिरलि रिपुपुरव जांडद
शिरद मेलिरलल्लि गिल्लिगॆ बाणपंजरव
विरचिसुवॆ नमराद्रियनु कित्तिरिस लणुविगॆ तग्गिदरॆ तव
चरणसेवकनल्ल मेलेनुंटु बॆससॆंद ॥ 11 ॥
अनुजनधिकपराक्रमद नुडि गिन कुलेंद्रनु हिग्गि हनुमन
मनव नोडुवॆ नॆनुत नुडिदनु पवन तनुजंगॆ
निनगॆ तोर्रिद मतिय हदने नॆनॆ समीरजनॆंद्दु कैमुगि
दिनकुलद रायंगॆ बिन्नह माडिदनु बळिक ॥ 12 ॥
एतरवनानी कपींद्र ख्यातरलि बिन्नहव माडुव
मातदावुदु जीय देवर नेमवॆनितनित
ओतु शिरदलि धरिसि नडॆसुवुदे तनगॆ कर्तव्यवॆंदु वि-
धूतरिपु बिन्नैसिदनु भास्करकुलेंद्रगॆ ॥ 13 ॥
मॆच्चिदनु पवनजन बिन्नह दोच्चतकॆ हिरिदागि मनदलि
हॆच्चिदनु हनुमंतदेवन बलद भारणॆगॆ
ऒच्चतद निजसतिय नोय्दन बिच्चि बंदवनलि विशेषव
नुच्चि नोडुवॆ वॆनुत नुडिसिदना विभीषणन ॥ 14 ॥

में क्या कार्य करने चाहिए— बताओ।" इस तरह कहते राम ने भाई के मुखड़े की ओर देखा। १० हे राजा राम, सुनिए। शत्रु नगरी समुद्र के बाहर रहे, चाहे ब्रह्मांड के सिर पर रहे —जहाँ कहीं भी रहे— वहाँ से यहाँ तक बाणों का पिंजरा निर्मित कर दूँगा। सुमेरु पर्वत को उखाड़ रखूँगा। एक अणु से भी डरा तो मैं आपका चरण-सेवक नहीं। इससे बढ़कर क्या कहूँ ?" इस प्रकार लक्ष्मण ने प्रश्न किया। ११ अपने भाई की वीरता भरी बातें सुनकर रविवंश के स्वामी ने फूले न समाते हुए हनुमान के मन को ताड़ने के उद्देश्य से उनसे पूछा— "तुम्हें इस दिशा में क्या कहना है हनुमान ?" तब हनुमानजी ने खड़े होकर हाथ जोड़े सूर्यवंश के राजा राम से यों विनती की। १२ "इन महान-महान कपिनायकों के मध्य मुझ अकिंचन की गिनती ही क्या है ? अतः विनती करने लायक मेरे पास है ही क्या ? स्वामिन्, आपकी जो आज्ञा है उसे शिरोधार्य कर तदनुसार भक्ति-भावयुक्त हो आचरण करना मात्र ही मेरा कर्तव्य है ?" इस तरह भयभीत करनेवालों के शत्रु हनुमान ने रविकुलस्वामी से निवेदन किया। १३ मारुति के इस विनयसंपन्न सत्य से राम प्रसन्न हुए। हनुमान के अतिशय सामर्थ्य के कारण मन ही मन विशेष प्रकार से फूले। अपनी प्रिय पत्नी के अपहरणकर्ता रावण का परित्याग कर आनेवाले

एनु निन्नभिमत महोदधि गेनुपाय दशानन वधें
गेनु बुद्धि विचारवावुदु राजकारियद
नीनु नम्मोळ गैसले संधान समयोचितद कृत्यकि
देनु मनदलि कंडेयेंदनु नगुत रघुनाथ ॥ 15 ॥
देव निम्मय मनद महिमेय नावनै बल्लवनु नी मनु-
जावतारद विष्णुवेंदेनरियदे लोक
आवनै हगेगोंडु निन्नलि जीविसिद जीविगळु जगदोळ
गावनै नी कोंद हगेगळ सलहिदवनेंद ॥ 16 ॥
आदडेयु नरनाटकद संपादनेगे कंडनित देवर
पादकुसुरुवें निदुवें चित्तकें बरलि बरदिरलि
भेद दंडविदीग मेलण हादि मंत्रज्ञरिगे मोदलु वि-
वाद विरहित सामदानगळेंद नसुरेंद्र ॥ 17 ॥
शरधियेतरदी पराक्रम शरधिगळिगेले जीय दशकं-
धरन वधेगेनरिदु देवरु नेनेंद मैसिरिगे

की परीक्षा करने की दृष्टि से विभीषण से वार्तालाप उन्होंने छेड़ा । १४ "तुम्हारी राय क्या है ? इस महासागर के लिए क्या योजना बनाएँ ? दशकंठ की हत्या की युक्ति कौन सी अच्छी लगती है ? इस राजकार्य के सम्बन्ध में तुम्हारे विचार क्या हैं ? तुम अब हमारे आदमी हो न ? समयोचित संधि-कार्य के बारे में तुम्हें क्या सूझती है ?" राम ने मुस्कुराते इस प्रकार पूछा । १५ भगवन् ! तुम्हारे मन की महिमा को कौन जान सकता है ? आपको 'मनुष्यावतारी विष्णु'—समझे बिना आपसे द्वेष साधना करके कौन जीवधारी जीवित रह सकता है ?" तुमसे मारे गये शत्रु की कौन रक्षा कर (कौन उसे बचा) सकता है ?" इस प्रकार विभीषण ने निवेदन किया । १६ "फिर भी नर नाटक की नटना (आचरण) में जितना हम देखें—उसे पसंद करें या न करें—उतना तो श्रीचरणों में निवेदन करूँगा । भेद और दंड नीति भावी मार्ग है । राजनीतिज्ञों के लिए चाहिए कि सर्वप्रथम साम तथा दान का प्रयोग कर देखें ।" इस प्रकार विभीषण ने कहा । १७ "सागर-सदृश पराक्रमियों के लिए यह सागर है क्या चीज़ ? (बिलकुल नाचीज़ है ।) अगर श्रीमान (आप) चाहें तो अपनी बल-संपत्ति का प्रयोग कर रावण को मार डालना क्या असंभव है ? सागर को निमंत्रित कर रास्ता देने के लिए आज्ञापित करें । फिर संधि (समझौते) के लिए लोगों को भेजकर युद्ध की योजना

करॆंदु बट्टॆय बेडुवुदु सागरन संधिगॆ कळुहि कदनद
परिय नडॆवुदु कर्णॆयविदु नमगॆनुत कैमुगिद ॥ 18 ॥
पथवनंबुधि तोऱदिरॆ सुरमथन सीतॆय नीयदिरॆ नि-
श्शिथल वल्ला मेलॆनॆगळुव दाय देवरिगॆ
पृथुळ बलनी निन्न बाण व्यर्थगॆ नरळद नावनॆंदा
प्रथित शरणाभरण बिन्नॆसिदनु रघुपतिगॆ ॥ 19 ॥
मतवहुदु तप्पल्ल शरणागतन सूक्ति नयोक्तियॆंदज
सुत सुषेणक केसरिगळॊप्पिदरु हरुषदलि
मतवनद नोडबट्टना रघुपति वळिक्क महोदधिगॆ सु-
व्रतव कैकॊंडनु महाप्रायोपवेशनद ॥ 20 ॥
शोधिसितु बळिकवनि निरुपम वैदिकोक्तिय लोडनॆ बलिदुदु
वेदि दर्भास्तरण संप्रोक्षण सुसांगदलि
आदि नारायणनु नररोपादियलि कैकॊंडनाग म-
हो दधीशंगधिक तपवनु तरुण केळॆंद ॥ 21 ॥
वरसमाधियलमळ रत्नाकर परिध्यानदलि दृष्टिय
निरिसिदनु नासाग्रदलि नळिसानव बिगिदु

निर्धारित करें। यही न्यायसम्मत है।" इस प्रकार हाथ जोड़े विभीषण ने निवेदन किया। १८ "सागर अगर रास्ता न दें, रावणासुर अगर सीता को समर्पित न करें, तब भावी मार्ग की व्यवस्था कुछ कठिन प्रतीत होगी न ? आप महान बलशाली हैं। आपके बाणों की मार खाकर कौन नहीं चटपटाता ?" —इस प्रकार प्रसिद्ध भक्तश्रेष्ठ ने रघुपति से निवेदन किया। १९ "शरणागत विभीषण की इस राय में कोई गलती नहीं है। उनकी ये सुचारु बातें नीति-वचन हैं।" —इस तरह कहते जांबव, सुषेणक, केसरी आदियों ने खुशी-खुशी उसका अनुमोदन किया। तब, उस राय के बारे में रघुपति ने भी अपनी सम्मति दी। तदनंतर राम ने सागर से उद्देशित महान उपवासव्रत ग्रहण किया। २० तत्पश्चात् भूमि का शोध लगाकर वेदोक्त क्रम से वेदी बनाकर उसपर दर्भ बिछाकर शुद्धि के लिए मंत्र-पूत जल संप्रोक्षित किया गया। मानव की तरह आदि नारायण ने सागर से सम्बन्धित तपस्या शुरू की। २१ राम ने पद्मासन में बैठ समाधि लगा सागर का ध्यान करते नासाग्र में दृष्टि केंद्रित की। प्राणायाम तत्वों के आधार पर पूरक-रेचक-कुंभकादि तीनों क्रमों (श्वास लेना, उसे रोकना तथा बाहर छोड़ने के क्रमों) का अनुसरण करते नाड़ी

भरित पूरक रेचकादि स्फुरित मूलाधार मार्गां-
तरदलिर्दनु निरशनव्रतदलि दिनत्रयव ॥ 22 ॥
कुशनें बल्लै हिंदे शुकनेंबसुर बेहिगे बंदुदनु रा-
क्षस शरीरव मरेसि मर्कट रूप कैकोंडु
हेसरेनिप कपिनायकर साहसवनवरभिधान शौर्यद
पसरिकेय नरिदिर्द नवनरेमास परियंत ॥ 23 ॥
तपवनी रघुनाथ कैकोंडपरदलि गिळियागि सूर्यन
तपवनपहरिसुत्त शुक नुप्परिसिदनु नभकें
कपि बलांबुधि कूडे पक्षद विपुळ तेजदलमळ मरकत
दुपलवर्णव नैदिकोंडिरे कंडना रविज ॥ 24 ॥
अेले विभीषण नोडु पच्चेय कुलशिलोच्चय वेद्दवोलु कं-
गोळिसुतिर्दे मायाविलासविदल्लले खळर
गिळिय रूपिन गुप्तचरनेंदुलुकुतिर्दे चित्तदलि चित्तव
तिळुहेनलु कंडरिदु बेहिन दूतनिवनेंद ॥ 25 ॥
इवनु शुकनेंबसुरनी कटकवनु नोडलु बंदनिदा
विवन हिडियदे बिट्टेवादरे बहुदपख्याति

को मूलाधार चक्र में चढ़ाने की साधना करते उपवास व्रत में तीन दिन बिताए। २२ अपना राक्षसदेह छिपा, कपि-रूप धारण किये शुक नामक राक्षस जो पहले (पूर्व में) गूढ़चर्या (जासूसी) करने आया था— तुम्हें याद है न कुश ? वह प्रसिद्ध कपिनायकों का साहस, उनके नाम तथा वीरता के बारे में विवरण प्राप्त करते आधे माह तक था। २३ रघुनाथजी के तपस्या-व्रत धारण करने के बाद शुक तोते का रूप धारण कर सूर्य की उष्णता का निवारण करते आकाशमार्ग से उछलते-कूदते आया। उस तोते के पंखों की अपार प्रभा के कारण सारी वानर-सेना का रंग हरा जो बना —सुग्रीव ने देख लिया। २४ "देखो विभीषण ! मरकत का कुलपर्वत मानों उठकर दौड़ आया है —ऐसा दिखाई देता है। मन में शंका भी उत्पन्न हो रही है कि यह शुकरूपधारी कोई गुप्तचर है। मुझे वस्तुस्थिति का परिचय कराइये।" —इस तरह सुग्रीव के कहने पर विभीषण ने परिस्थिति पर ग़ौरकर परख लिया और कहा— "यह गुप्तचर ही है।" २५ "यह शुक नामक राक्षस है। इस सेना का अंदाज़ लगाने आया है। इसे अगर पकड़ नहीं लेंगे तो हमारी बदनामी सुनिश्चित है। यह बेरोक-टोक अगर लंकाधिपति को देख लें तो समुद्र का हमारी पकड़-धकड़ में

इवनु सुखमुखदिंद लंका युवतियरसन कंडनादरॆ
भुवननिधि ता कट्टुवडॆवुद साध्य वॆमगॆंद ॥ 26 ॥
तप्पदॆनुतिनसूनु कपिकंदर्पनाननवनु निरीक्षिस
लुप्परिसि मार्जाल लीलागतिय गाडियलि
ऒप्पुवभ्रद शुकन कंठद कप्पिनॆडॆयनु हिडियॆ खळनसु
कुप्पळिसिदुदु कळवळदलि कुमारकेळॆद ॥ 27 ॥
कॊरळ हृदरिनलौकि हिडिदॊडॆ मुरिदु रॆक्कॆय निळुहितंदनु
हरिकुलेंद्रन बळिगॆ हॊदकुळि गुट्टला शुकन
वरविभीषण लवन मेलण करुणदलि कॊललीसदवननु
सॆरॆमनॆगॆ नूकिसिद नभिमत दिंद रविसुतन ॥ 28 ॥
सवदवादिन कुरुतपस्सिन दिवस नालुकु बळिय निम्मय
भुवनपति कंदॆरॆदु नोडिदना महोदधिय
इवनु नम्मनु बगॆयदादनॆ शिवशिवा नावाव सदरवॊ
शिव महादेवॆनुत रौद्रावेश मननाद ॥ 29 ॥
पटुतराग्निय नॊगुव नासापुटद नयनद विस्फुलिंगो-
त्कटद रोमोद्भूत धूमोद्रेक विग्रहद

आना असंभव है।" इस प्रकार विभीषण ने कहा। २६ "इसमें कोई शक नहीं।" इस तरह कहते सुग्रीव ने वानर-मन्मथ अंगद का मुखड़ा देखा (इशारा किया) तो वह आकाशमार्ग से उड़ा। बिल्ली की गति (चाल-चलन) के डोल-डौल से लपककर तोते के कंठ की नीली धारी की जगह को दबोचकर पकड़ लिया। तब चटपटाते राक्षस के प्राण झटके खाने लगे। २७ शुक के गले को मूठ में दबोचकर पंख उखाड़ जब मरोड़ने लगे तो वह चटपटाते व्यथा जो पा रहा था— उसे सुग्रीव के पास ले आ उतारा। विभीषण ने उस पर दया दिखाते, उसे मार डालने का अवसर न देते, सुग्रीव की राय के अनुसार उसे जेलख़ाने में क़ैद करा रखा। २८ राम की उग्र तपस्या का चौथा दिन उस दिन समाप्त हुआ। तब तुम्हारे राजा ने महासागर की ओर आँखें खोल निहारा। "इसने हमारी ओर ग़ौर नहीं किया न? हे शिव! शिव! हम तो इसकी गिनती में कुछ भी न रहे न? शिव! शिव! महादेव!" इस तरह कहते क्रोध के मारे राम ने भयंकर रूप धारण किया। २९ प्रज्वलित ज्वालाएँ उगलते नासापुट (नथुने), चिनगारियाँ निकालती आँखें, रोम-रोम से धुआँ निकालते देह से प्रचंड प्रलयाग्नि प्रक्षेपित करते शिवजी से भी बढ़कर

चटुळ विलयानल शिखा संघटित सत्क्रोध प्रभा धू-
र्जटि विडंबन नेंद्दु बेडिदननुजननु धनुष ॥ 30 ॥
बळिक लेवेळुवेनु धनुकर तळके सारलु सेरिदुदुमै-
वळिय लबुज भवांड गर्भद जीवराशिगळु
उलुकिदुदु सुरचाप मौर्विय लिळुहे शरवनु सप्तसागर
विळिदवाक्षण महिमेयेंतुटो मनुकुलेश्वरन ॥ 31 ॥
हुट्टि तुरि शरमुखदोळेंदुदु तुट्ट तुदियल जांड भांडव
दट्टविसितुरि हरिदु दिगु भित्तिगळ बळिविडिदु
बिट्टरूर्विय नहिप कूरुम रोट्टुगिच्चिन सेंकळियलि तनु
तुट्टिसिदुदनु तापदलि शंकर विरंचिगळ ॥ 32 ॥
उरिय करडिगेयंते शिखि डावरिसितबुज भवांडभवनव
निरदे सचराचरगळडगिदवजन गर्भदलि
धरे महोदक गगनवायुगळिरदे वह्नियोळडगिदवु सं-
हरण तेजोमूर्तिय वोलसुरारि रंजिसिद ॥ 33 ॥
इळिदुदुरि बगिदंबु निधियोड लोळगे तेरे बळिदेरेयोळगे बगि
दिळिदुदुत्कट छट छटत्कृतिगळ छडाळदलि
तुळुकि तूरुव तुंतुरिन किडि हळचिदवु होदरेद्द वडबा
नळन नोडेदुदु रामचंद्रन भीमबागाग्नि ॥ 34 ॥

क्रोधाग्नि से संतप्त राम ने आसन से उठकर अपने भाई को धनुष देने के लिए आज्ञापित किया। ३० आगे की घटना का कैसे वर्णन करूँ? धनुष हाथ में आते ही ब्रह्मांड के गर्भस्थित सभी जीवराशियाँ राम के अधीन हो गयीं। इन्द्रधनुष काँपने लगा। धनुष की प्रत्यंचा पर बाण चढ़ाते ही सप्तसमुद्र उतर गये। मनुकुल के स्वामी श्रीराम की महिमा का क्या वर्णन करें। ३१ बाण के अग्र स्थान में ज्वाला प्रकट हुई; (वह) ज्वाला ब्रह्मांड की कोर तक व्याप्त हुई। यह अग्नि-ज्वाला दिशाओं की आखिरी छोर तक घनी होकर व्याप्त हो गयी। आदिशेष, कूर्म आदियों ने, ढोयी धरती का परित्याग किया। ईश्वर, ब्रह्मादियों के शरीर इस आग की आँच से संतप्त हो शक्तिहीन हुए। ३२ ज्वाला के शीशे की तरह सारा ब्रह्मांड इस आग से व्याप्त हुआ। सचराचर जगत ब्रह्मांड में समा गया। भूमि, सागर, आकाश, वायु सभी आग से ढक गये। प्रलयकालीन तेजोमूर्ति की तरह राम जगमगाए। ३३ समुद्र के गर्भ को चीरकर ज्वाला नीचे उतरी। छटछटाहट के साथ अधिकाधिक

हुरिमळल राशियलि रत्नग ळरळिदवु जलजंतुगळु सी-
करिगळादवु शिखिगॆ पथवादुदु रसातळक्कॆ
वरुण नरमनॆ हनुम दहिसिद पुरव पोल्दुदु कूडॆ दळ्ळुरि
बॆरसिदंतःपुरद सतियर तनुलतावळिय ॥ 35 ॥
कॆसुरिय कब्बॊगॆय शिखिवॆड्डयिसितबुधिय मदद घडिकॆ
घासियादुदु गाळुमॆळुप्परिसि तंवरव
हा सरित्पति यॆनुत मॆलुदिनोसरद विड्डुमुडिय बाय्गळ
बासुळिन वानतॆयरु बॆरसिदरा निजेश्वरन ॥ 36 ॥
पापि हॊरवडु विश्वरूपन कोपदलि गंभीर तनदा-
ळाप कॊंबुदॆ कमलजांडोदरन मुळिसिनलि
रूपुगॆड बेडकट नडॆयनु तापगा वनितॆयरु मानव
रूपिनच्चुत नॆडॆगॆ हिडिदॆळॆ तंदरबुधिय ॥ 37 ॥
यमुनॆ भागीरथि सरस्वति विमल नर्मदॆ सरयु वर गौ-
तमि कवेरि कुमारि कौशिकॆ भद्रॆ वेदवति

शब्द करते एक के पीछे एक होकर आती लहरों को चीरकर, लहरों की श्रेणियों से होती हुई ज्वालाएँ समुद्र के गर्भ में उतरीं। बाहर निकलती तुषारों की चिनगारियाँ एक-दूसरे से टकरायीं। ढेर के ढेर में निकलती बड़वाग्नि को राम के भयंकर बाण ने चकनाचूर कर डाला। ३४ आग की ज्वाला से भूने गये रेत की ढेर के रत्न खील की तरह खिले। जलराशि के जीव-जंतु भुनकर राख हो गये। आग को पाताललोक पहुँचने का मार्ग सुगम हुआ। धगधगाती ज्वाला ने अंत:पुर की कोमल स्त्रियों के शरीर को जब घेर लिया, तब वरुण का राजमहल हनुमान की पूँछ की ज्वाला से जलते लंकापुरी-सदृश दिखायी पड़ा। ३५ लाल ज्वाला तथा काले धुएँ से युक्त आग ने घेर लिया। सागर के सारे घमंड ने बड़ी मार खायी। अव्यवस्था आकाश तक उछली। 'हाय हमारे नदियों के स्वामी!' इस तरह चिल्लातीं, ओढ़नी गिरी हुई, फैले बालों वाली, छिले मुँह वाली, सागर-स्त्रियाँ अपने पति के पास आयीं। ३६ "पापी, निकल आ; विश्व रूपी विष्णु के भयानक क्रोध पर ग़ौर क्यों नहीं किया? उसकी गंभीर वचन पर ध्यान क्यों न दिया? पद्मनाभ के क्रोध से विनष्ट मत होओ। चल हमारे साथ।" —इस तरह कहती सागर-पत्नियाँ मानवरूपधारी अच्युत के सम्मुख सागर को खींच लायीं। ३७ यमुना, भागीरथी, सरस्वती, नर्मदा, सरयू, गौतमी, कावेरी, कुमारी, कौशिका, भद्रा, वेदवती, सुमति, भीमरती, वग़ैरः प्रमुख नदी नारियों ने भ्रांति के

सुमति भीमरति प्रमुख निजरमणियरु निंदिरिसिदरु वि-
भ्रमद नीरस मुखद निजपतियनु सरागदलि ॥ 38 ॥
अेंडद कैयलि कर्णपल्लव हिडिदु बलगैयंगुलिय वा-
य्गडसि बळलुव बाय्दॆरॆय निज दैन्य भावदलि
अडिगॆ चाचिदळनुपमद सोर्मुडियनी सौभाग्य विभवव
नुडुगिसलु बेडॆंदु जाह्नवि जानकीपतिगॆ ॥ 39 ॥
मगळलायॆलॆ देव निनगी यगडुतनवेकय्य तन्नलि
सगर वंशोद्भवॆयला मेणीचॆयलि निनगॆ
मगळु मगळिगॆ तदॆ मुनिदरॆ नगदिहरॆ बल्लवरु करुणा-
ळुगळ देवंगेतकी मुनि सॆंदळय्यगॆ ॥ 40 ॥
ईत लक्ष्यवॆ निनगॆ नीन ख्यातने भूम्यादि पंची-
भूत वारिदुदय वारिदडगुवदु कडॆगॆ
एतकी नरनाटकद मायातिरोधानतॆ यिदार्गॆ नि-
शात शरसंधान समय विदॆंदळय्यंगॆ ॥ 41 ॥
शरणुहॊक्करॆ सलहुवग्गद बिरुदला देवत्वदलि भू-
वर पतित्वदलावनै सरि शरणु गतिकरलि
शरणु वॊग बंदवनॊ मेण् मत्सरिस बंदवनो महोदधि
यिरव नोडॆलॆ देव नीनॆंदळु कृपानिधिगॆ ॥ 42 ॥

शिकार बने निस्तेज मुखड़े वाले पति सागर को (खींच लाकर) राम के सामने खड़ा किया। ३८ बाएँ हाथ में कान का आभूषण धारे दाहिने हाथ की तर्जनी मुँह पर रखे, लटकते ओठों से दैन्य-भाव प्रकट करते जाह्नवी ने "मेरे माँग का सिंदूर मत लूटिए।" इस तरह कहते हुए अपने सुन्दर ढीले पड़े जूड़े को श्रीराम के चरणों में रख प्रार्थना की। ३९ "मैं क्या आपकी बेटी नहीं हूँ स्वामिन्? फिर मेरे साथ यह नटखटपना क्यों? मैं क्या सगर-वंश में उत्पन्न नहीं हूँ? तिस पर मैं आपकी ही बेटी हूँ। बेटी पर बाप नाराज़ हों तो समझदार हँसी-मज़ाक़ नहीं उड़ाएँगे? दयालुओं के स्वामी को यह क्रोध क्या शोभा देता है?" —इस प्रकार अपने पिता राम से जाह्नवी ने बिनती कर ली। ४० "यह तेरी गणना में कहाँ का है? क्या तुम अप्रसिद्ध हो? भूमि, आकाश, अग्नि, जल, वायु —इस पंचभूतात्मक सृष्टि का निर्माण किसने किया? उसका अंत फिर किससे होता है? फिर इस नर-नाटक की माया का बहाना क्यों? इस तीखे बाण के प्रयोग का नियम किस पर लागू कर रहे हैं।" इस प्रकार जाह्नवी ने अपने पिता से पूछ लिया। ४१ शरणागतों की रक्षा करने का

सेंउग नेंलदलि हासि तनतन गोउलिदरु मांगल्यसूत्रव
हरियबेडेले तंदेयेंदु समस्त नारियरु
मरेय मायानरन कृपे कंदेरेदुदै बळिकनितरलिशर
दुरुगलिन शिखि संतविसिदुदु झळद झाडणेय ।। 43 ।।
करुणदळतेय कंडु जांबव तरणिजाद्यरु बेडिकोंडरु
करसरोजव मुगिदु शरधिय सलहु बेकेंदु
तरुण केळै बळिक जलनिधि कोरगिदाननदळिद हम्मिन
करुणभावद लोडल चाचिद नंघ्रियलि नृपन ।। 44 ।।
देवदेव जगन्मयने लक्ष्मीविलास विनोदवैभव
भावचने भक्त प्रियने भागीरथी पितने
देव नर नाटक विनोद कलाविदने कमनीय तर ली-
लावतारने कलुषकायन कायबेकेंद ।। 45 ।।
स्तिमितननु दुश्चरित निगम क्रमितननु विभ्रमण शील
भ्रमितननु क्षुद्रात्मननु ग्रहबद्ध विग्रहन
अमितपंक सुसंभ्रतन संक्रमित दोषाकरन गर्वन
क्षमिस बेकपराध शतवनु मरेदु नीनेंद ।। 46 ।।

बड़ा नाम और नियम है तुम्हारा। शरणागतों की रक्षा करने में चाहे तो देवताओं में, या चाहे धरती पर के राजाओं में तुम्हारी बराबरी कौन कर सकता है ? यह सागर तेरे शरण में आया है या तुमसे द्वेष साधने आया है—कृपया विचार कर देखिए" इस तरह करुणा-सागर राम से गंगाजी ने पूछा। ४२ (अपने) आँचल को धरती पर पसारे सागर की सारी स्त्रियों में से, प्रत्येक ने प्रार्थना की— "हमारी माँग के सिंदूर को पोंछ डालिए मत। हे मेरे पिता ! हमारे मंगल-सूत्र की रक्षा कीजिए !" इस प्रकार प्रार्थना करने पर मानव-रूपधारी हरि की आँखें (करुणा) खुलीं। इतने में उस करुणापूर्ण आँख ने राम-बाण से निकली ज्वाला को आगे बढ़ने से रोककर समाधान किया। ४३ राम की करुणा की गहराई पहिचाने हुए जांबव, सुग्रीव आदियों ने अपने कर-कमल जोड़े उससे प्रार्थना की कि समुद्र की रक्षा करें। हे तात तरुण लव ! सुनो। तदनंतर सूखे मुखड़े तथा टूटे घमंड के सागर ने करुणापूर्ण भाव से श्रीराम के चरणों का सिर नवाकर प्रणाम किया। ४४ "हे देवाधिदेव, जगत्व्यापी, श्रीलक्ष्मी के साथ सरस क्रीड़ासक्त सौंदर्यशाली, भक्तजनप्रिय, भागीरथी के पिता, स्वामिन्, नरनाटक-लीला-पटु, मनोहर अवतार धारने में विनोदप्रिय प्रभो ! मुझ पापी की रक्षा करें।" इस प्रकार सागर ने प्रार्थना की। ४५ "बुरी

प्रणवरूप स्वरूप निर्गुण गुण नितांत प्रकृति पतित
प्रणय माया प्रकृति रहिताद्यंत लयशून्य
अणुमहत परिपूर्ण चंद्रारुण हुताशन तेज रिपु रा-
वण वधा संभूत कारण कायबेकेंद ॥ 47 ॥
अनुपमानंदात्मनद्वय ननघनमित नसाध्यनगणित
ननवसाननजात नव्ययन भवननसूय
घनमहिम घनतेज घनगुण घनतरोद्यत् प्रवलघननि-
र्घन घनायत देव तन्ननु कायबेकेंद ॥ 48 ॥
विश्वतोमुख विश्वलोचन विश्वतो भुज विश्वविग्रह
विश्वविश्रुत विश्वपादप विश्व विश्वपति
विश्वचेतन विश्वभावन विश्वनुत विश्वेष विश्वग
विश्व विश्वात्मक जडात्मन कायबेकेंद ॥ 49 ॥
आवनिंदुदिसिहवु बहुभुवनावळि गळेले देव चित्तै-
सावनि परिरक्षणवु तोर्पी जगत्रयद

आदत में फँसे हुए, वेदों का उल्लंघन करनेवाले, गलत धारणा से आचार-हीन, क्षुद्र आत्मा वाले, ग्रहाचार-पीड़ित, गहरे कीचड़ में फँसे हुए, दोष के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए —इस घमंडी के सौ अपराधों को भुलाकर क्षमा करना चाहिए।" इस प्रकार उसने प्रार्थना की। ४६ "हे ॐकारस्वरूपी, निर्गुण ही गुण जिसके ऐसे प्रभो, समस्त जीवियों को समा लेनेवाले, पापियों में भी प्रीति रखनेवाले, माया निसर्ग स्थितियों से रहित, आदि-अंत्य-लय के परे, अणिमा-महिमादियों से परिपूर्ण, चंद्र, सूर्य, अग्नियों के तेज को धारण करनेवाले, शत्रु रावण के वध के लिए कारणीभूत; कृपा कर रक्षा कीजिए।" इस प्रकार विनती की। ४७ "उपमा-रहित, आनंदात्म, अभेदस्वरूपी, दोष-रहित, सीमातीत, असाध्य, गणनातीत, मृत्यु-रहित, जन्म-रहित, नाश-विरहित, पुनर्जन्म-रहित, असूयारहित, घन-महिमा-संपन्न, घनतेजोमय, घन गुणी, घन पराक्रमी, भारवान होते हुए भी भाररहित हे अत्यंत बलशाली भगवान! मेरी रक्षा कीजिए।" इस तरह प्रार्थना की। ४८ "हे विश्वतोमुखी, हे विश्वलोचनी, हे विश्व-बाहो, समस्त लोक ही जिसका शरीर होने के कारण सुप्रसिद्ध, विश्वविश्रुत, विश्ववृक्षस्वरूपी, समस्त लोकों के प्रभो, विश्व ही जिसकी आत्मा है, विश्वकल्पनासंपन्न, समस्त लोकों से पूजित प्रशंसित, विश्वस्थित, विश्व के स्वामी विश्व-विश्वात्मक देव इस जड़-जीवि पर कृपा करें।" इस प्रकार प्रार्थना की। ४९ "भगवन्! सुनिए; बहुसंख्यक लोकों का निर्माण जिससे

आवनलि लयभूत पंचक वाववाज्ञा मालवद सं-
भाविसदॆ संहरिस बगॆवरॆ देव नीनॆंद ॥ 50 ॥
कोटि कमल भवांड गर्भनॊळाट विकतन सलुवुदे शत
कोटिकाल पराक्रम नॊळुद्दंडवे तनगॆ
कोटिरुद्रर रौद्रदलि मुळिसाटवे संवर्त हुतवह
कोटितेज नॊळिदिरॆ ता तनगेकॆ शरवॆंद ॥ 51 ॥
मेरुवॆत्तणुवॆत्त सिडिल कठोर निस्वनवॆत्त जंबुक
नारुभटॆ तानॆत्त तरणिय किरण दुब्बरद
धारॆयॆत्तलु मिंचुबुळुविनु दारतॆय बॆळगॆत्त विश्वा-
धारने तानॆत्त सरळॆ नगुचितवे यॆंद ॥ 52 ॥
सिडिलि नुरुबॆय नानवल्लुदॆ कॊडॆ लयाग्निय तूरुगिडिगळ
तडॆवुदे तृणवकट कल्पद कडल कडुहिगॆ
कॊडनु कॊंबुदॆ देव नी मुनिदडॆयलाने निनगॆ गुरि नगॆ
गॆडॆय हॊत्त निरर्थ लोकदॊळॆंदना जलधि ॥ 53 ॥

हुआ, इन तीनों लोकों का परिपालन जिनसे हो रहा है, ये जो जिनमें लय को प्राप्त होते हैं, पंचभूतात्मक सृष्टि जिनकी आज्ञा का पालन करती है —इन सभी बातों के बारे में विचार न करते हुए आप जो मेरी हत्या के लिए मन किए हुए हैं, क्या यह ठीक है भगवन ?" इस प्रकार सागर ने कहा। ५० "कोटि ब्रह्मांड जिनमें समाए हुए है —उनके साथ धूर्तता कैसे संभव है ? सौ करोड़ यम-सदृश पराक्रमी के सम्मुख मैं अपना अहंकार कैसे प्रकट करूँ ? करोड़ों रुद्रों के क्रोधसंपन्न महाशक्ति के सम्मुख मेरा क्रोध कैसे टिके ?. करोड़ों प्रलयाग्नियों के तेजोधारी से मैं कैसे विरोध करूँ ? मुझ ग़रीब पर इस बाण का प्रयोग क्यों ?" इस प्रकार सागर ने कहा। ५१ सुमेरु पर्वत के सम्मुख अणु की तुलना कैसे ? बिजली के कठोर शब्द के सम्मुख सियार का चिल्लाना कैसे सुनायी दे ? सूर्य के प्रखर किरणों के साथ जुगनुओं की सहनीय रोशनी की तुलना कैसे हो सकती है ? विश्व के आधारस्वरूप आप कहाँ, अकिंचन मैं कहाँ ? मुझ पर आपका यह बाण-प्रयोग उचित है ?" इस प्रकार कहा। ५२ "बिजली की मार क्या छाता सह सकता है ? प्रलयाग्नि से निकलती चिनगारियों को घास सह सकती है ? प्रलय-सागर के पानी के उफान को क्या घड़ा भर ले सकता है ? स्वामिन् ! अगर आप नाराज़ हों तो मैं अदना-सा कहाँ का रहूँ ? लोक में व्यर्थ ही हँसी-मज़ाक़ का पात्र बना।" इस तरह सागर ने कहा। ५३ "ये समुद्र, ये कुलपर्वत, भूमि, आकाश,

ई समुद्र कुलाद्रि भूम्याकाश चंद्रादित्य वायु हु-
ताशन ग्रह राशि तारेगळार तेजदलि
ई शरीरद रोमकूप निवासिगळलादेव ता निन
गेसरुवनंबेके दाटलु बारदेयेंद ॥ 54 ॥
हनुम दाटिदडेन माडिदे मुनिदेने नानातनलि मुनि
मुनिदु कुडिदंदेन माडिदेना मुनींद्रगे
कनलि भार्गव कोपिसिदडा तनलि संकट गोंडेने
सले हनन कगैसुवदु योग्यवे देव निनगेंद ॥ 55 ॥
तानु जडमुख नादडज्ञने नीनु नीता मुनिय लहुदे
हीननलि हिरिदा प्रयत्न विदेके निनगिनितु
हेन नोरसुवडेके शरसंधान वकटा नगदिहरे वि-
ज्ञान मुखवुळ्ळवरु निनगिदु गुणवे हेळेंद ॥ 56 ॥
अंबुनिधि केळ् निनदेनेंदेंब परि नावपसरणे नुडि
गिबु गोडुववरल्ल जगकन्यायकृतरल्ल
इंबु बेडलि कोसुगवे तपवेंबुदनु कैकोंडेवद नी-
निबु गोंडदिरे बळिक बरिसिदेवैसे नावेंद ॥ 57 ॥

चन्द्रमा, सूर्य, वायु, अग्नि, ग्रह, नक्षत्र जिनके तेज के कारण इस आपके शरीर के रोम रोम में निवास किए हुए हैं वैसे महान आपके सम्मुख मुझ अकिंचन की गिनती ही क्या ? क्या आपको बाण धारना पड़ा ? क्या आप समुद्र को पार नहीं कर सकते ?" —इस प्रकार पूछा। ५४ "हनुमान जो सागर पार कर गये तो मैं क्या कर सका ? क्या मैं नाराज़ हुआ था ? (अपने) अत्यंत क्रोध के कारण अगस्त्य समुद्र को पी गये तो मैं क्या कर सका ? क्रोधोन्मत्त परशुराम जी मुझ पर गरज पड़े तो उसके कारण मैं क्या चटपटाया ? मुझे मार डालने की आपकी यह इच्छा योग्य है ? स्वामिन् !" इस तरह कहा। ५५ "मैं जो ठहरा मंदबुद्धि (पानी ही जिसका मुखड़ा है) तो आप क्या अज्ञानी है ? मुझ जैसे अकिंचन पर तुम्हारा इस प्रकार क्रोध से कठिन होना शोभा देता है ? ऐसा यह महा प्रयत्न किस काम का ? जुओं (जू) को मारने के लिए बाण का प्रयोग ? यह देख विशेष ज्ञानी हसेंगे नहीं ? क्या तेरे लिए यह (अकार्य) उचित है ?" इस तरह समुद्र ने पूछा। ५६ "सुनो सागर, तुम जो कुछ भी कहो। मैं ग़लत बात के लिए अवसर न दूंगा। मैं दुनिया के साथ अन्याय का आचरण करनेवाला नहीं। तुम्हारे यहाँ जगह (मार्ग) पाने के उद्देश्य से मैंने तपस्या शुरू की। तूने मार्ग जो न दिया तो ऐसा करना पड़ा कि तू

देवरावेंदेम्मनुद्दकें नीवु नेंगहिदडावु मर्त्यरु
देवतन नमगुळ्ळडीय श्लाघ्यवे नमगें
नीवु घनगंभीर रेंबुद नावु बल्लेवु पथव करुणिसि
नीवु सुखदलि बिजय माडुवु देंदना राम ॥ 58 ॥
बल्लें निन्नंतरव साकिन्नेंलिल परियंतरवु मरें नम
गल्लवेतकें कट्टुगोंबेंनु नळन कैयिंद
कल्लिनलि नळनीग निर्जर रलिल कृतमुख विश्वकर्मनु
बल्लें नीनी हृदन हेळुवुदेनु तानेंद ॥ 59 ॥
जीय नम्मनु पतिकरिसिदवों लीयगाध समुद्रननु तलें
गाय बेकेंदेरगिदरु तरुचर निशाचररु
रायननितर् मेलें राघव रायनबुधिगें तोंट्ट घनशिखि
सायकाग्रदोंळुगिसिदनु करुणामृतांबुधिय ॥ 60 ॥
नुडिगें तोंडिगेंगें कृपेंगें विक्रम देंडेंगें पल्लटवुंटें निम्मय
पोंडवि पतिगेंलें केळिदै काकुत्स्थ नृपसूनु

ही खुद आ जाय (तभी तुझे लाचार हो आना पड़ा)।" इस तरह राम ने कहा। ५७ "मुझे भगवान कहकर आसमान की ऊँचाई तक उठाते प्रशंसा की; फिर भी मैं मानव ही हूँ। अगर मुझमें देवत्व होता तो इस प्रकार का अनिष्ट मेरा न होता। मैं जानता हूँ कि तुम श्रेष्ठ गंभीर स्वभाव वाले व्यक्ति हो। मुझे मार्ग प्रदान कर सुख से बिदा ले सकते हो"। इस तरह श्रीराम ने कहा। ५८ "आपके अवतारी पुरुष होने का रहस्य मैं जानता हूँ। यह रहस्य कब तक छिपे रह सकता है? अब व्यर्थ की बातों से क्या प्रयोजन? नल के हाथों सेतु-बंधन के लिए मैं अपने-आपको सौंपने के लिए तैयार हूँ। पत्थरों को तराश कर काम करने में यहाँ (धरती पर) नल और देवताओं में विश्वकर्मा कार्य-साधक (कुशल) हैं। यह बात आप जानते है? मेरे कहने में क्या धरा है?" —इस प्रकार सागर ने कहा। ५९ "स्वामिन्! हम पर जैसे दया की वर्षा की उसी प्रकार इस महासागर की भी रक्षा कीजिए।" इस प्रकार वानरों ने विभीषण की तरफ़ के राक्षसों ने श्रीराम के चरणों में गिरते प्रार्थना की। तत्पश्चात् राघवराजा ने समुद्र पर प्रयुक्त करने जो महान अग्नि-बाण चढ़ाया था उसकी नोक को करुणामृत सागर से भिगो दिया। ६० वचन देने में, आभूषण देने में, कृपा करने में, पराक्रम प्रकाशित कर शोभायमान होने में तुम्हारा यह राजा राम व्यत्यय करेंगे? सुनो ककुत्स्थकुल राजकुमार, तदनंतर राम ने समुद्र की ओर करुणा से

कडलिगॆंदनु बळिक करुणद नुडिय लरिभट रुळ्ळरवरि-
द्दॆडॆय हेळसुगॊबॆ नंजदिरिन्नु नीनॆंद ।। 61 ।।
हेळिदनु हगॆगळनु रघुभूपालगंबुधि रामना नुडि
गेळुताक्षण बिट्ट नायॆडॆगा महाशरव
हेळलेनदनळिदु दॆंबत्तेळु कोटि निशाचररु तृण
वेळदवोला द्वीप मरुवन वाय्तु निमिषदलि ।। 62 ।।
सुररु सुम्मानिसिद रबुधिय तरुणियरु रतुनारतिय वि-
स्तरिसिदरु रिपुविजय नागॆंदुगिसि सेनॆयनु
चरणकानतनागि रघुकुलदरस तोरवॆय राय नरके-
सरिय बीळ्कॊंडनु समुद्रनु सकल विभवदलि ।। 63 ।।

ऐदनॆय संधि

सूचनॆ— नळनु रिपुसंहारकाला नळनु कारुण्यदलि बिगिदनु जलनिधिगॆ सेतुवनु सकल सुरौघ नलिदाडॆ ।

अॆलॆ भगीरथ वंश वारुधि नळिन रिपुसुत केळु करुणा
जलधियल्ला काय्द नन्वय नाम धारकन

देखते हुए कहा— "तुम्हारे अगर कोई शत्रु हों तो उनके निवासस्थान बताओ। उनके प्राण निकाल लूँ; अब डरो मत।" ६१ सागर ने अपने शत्रुओं के बारे में राम को बताया। उस बात को सुनने की ही देर, तुरंत राम ने उस शत्रुस्थान पर अपने महास्त्र का (बाण का) प्रयोग किया। उसका किन शब्दों में वर्णन किया जाय ? सत्तासी करोड़ राक्षस उस अस्त्र से विनष्ट हुए। वह द्वीप (टापू) क्षणार्ध में ऐसी मरुभूमि बना कि घास का तिनका भी वहाँ न उगे। ६२ देवताओं को आनंद हुआ। समुद्र की पत्नियों ने रत्न की आरती उतारते हुए "रिपुविजयी भव" कहकर आशीर्वाद देते अक्षत डालीं। तोरवे के अधिपति नरसिंह के अवतार धारण करनेवाले श्रीराम ने समस्त वैभवों के साथ समुद्र से बिदा ली (समुद्र को बिदा किया)। ६३

पाँचवीं संधि

सूचना— शत्रु-संहारक प्रलयाग्निस्वरूप नल ने करुणा-पूर्ण भाव से समुद्र पर सेतु बाँधा। तब समस्त देवताओं ने खुशियाँ मनायीं।

भगीरथ-वंश नामक समुद्र के लिए चन्द्रस्वरूपी बने हे राम के पुत्र ! सुनो। राम करुणासागर हैं न ? वंश-प्रसिद्धि प्राप्त समुद्र की राम ने

इळॆय नरने नोड्ु रघुपति सुलभनल्ला भक्तरिगॆ हॆ-
क्कळव केळै हॆळुवॆडॆ बॆड्गा महोदधिय ॥ 1 ॥
जगद जनन लयंगळॆडॆयाटगळ लडगुववा महात्मन
दृगु निरीक्षॆय लुव्व लद्रिदे निद्दुदंबुनिधि
हगॆगॆ हरिवनु कंड भटरुब्बुगळ वोलुब्बिदनु तॆरॆगळु
गगनवनु गुम्मिदवु झाडिय जलचरंगळलि ॥ 2 ॥
सुळि सुळियलण दाडिदवु घुळुघुळु घुळुध्वनि गुडियिद्रिदु मं-
डळिसि मुगिललि हळचिदवु हॊदद्रिन तुषारदलि
तोलगलॆच्चनु वद्रिदॆ बाणव नॊळगद्रियदकटॆनुत नृप कळ
वळिस लुब्बिदुदबुधि विबुधर लोकपरियंत ॥ 3 ॥
करॆसि नळनिदद्रिवॆ वीतन परिय नातन लागदिरॆ वळि-
कुरिगॆ कुडिनीरॆसले यॆनुततुळबल नळन
बरिसॆ कैमुगिदेनु बॆससॆनॆ हरुहकंडै सागरन सड
गरव कंडै काणिसलि निन्नदट तनवॆंद ॥ 4 ॥

रक्षा की। वे तो इस जगत के मानव ही हैं। लेकिन भक्तों के लिए रघुपति सुगम हैं। महासागर के उत्साह के बारे में सुनो। वह अत्यंत आश्चर्यजनक वर्णन है। १ उस महामहिम श्रीहरि की दृष्टि निक्षेप मात्र से (कृपादृष्टि से) इस जगत के जन्म-मरण सभी विनष्ट हो जाते हैं। (जन्म-मरण-बंधन से विमुक्त होते हैं।) तब सागर के फूलने में कौन सी बड़ी बात है? शत्रुनाश को देख जैसे योद्धा फूले नहीं समाते हैं—उसी प्रकार सागर भी उमड़ पड़ा। समुद्र की लहरें जलचरों-सहित आकाश की ऊँचाई तक उछलीं। २ भँवर भँवरों से टकराने लगे। गरजने की (लहरों की) ध्वनि गाढ़ी होकर ऊपर उठते पानी के तुषारों को साथ लिये आकाश से टकरायी। समुद्र का पारावार स्वर्ग तक उमड़ पड़ा मानों राम को भी पछताना पड़े कि इसके अंतरंग (भाव) को जाने बिना इस पर व्यर्थ ही बाण चलाया न? ३ "नल को बुलाकर उससे इसके आचरण के बारे में जानकारी प्राप्त करूं। उसके लिए (यह जानना) अगर असाध्य हो तो इस समुद्र का सारा पानी अग्नि को पिला दूंगा।" इस तरह सोचते महाबलशाली राम ने नल को बुलवाया। नल द्वारा आकर हाथ जोड़े "क्या आज्ञा है?" इस प्रकार पूछने पर, "समुद्र का यह विस्तार और वैभव देखा न? अब तुम अपनी शक्ति प्रकट करो।" इस प्रकार राम ने आज्ञा दी। ४ राम की इस आज्ञा पर 'प्रभु की कृपा'

ऎन हसादवॆनुत्त लंकॆगॆ हनुम हारिद गिरिगॆ लंघिसि
वनधि कंपिसॆ कित्तुतंदबुधिय नॆत्तियलि
अनिमिषरु भापॆनलु हॊरिसिद ननित कंडसुरारि नसुनगु
तिनतनुज कॆळुत्त राय्नमगंबु निधियॆंद ॥ 5 ॥
ऎसले तानॆंनु वॆंग्गळ वैसरलि नळनॆंदु कित्तनु
वासि पाडिय लद्रियनु दशयोजनांतरद
दाशरथि सुतकॆळु बॊब्बिरिदा समुद्र दॊळिळुहिदनु जल-
राशि जडियलु झडितॆयलि शतबलि सगाढदलि ॥ 6 ॥
इळुहिदद्रिय काणुतॆरॆयि दिळुहि तॊडललि तिमि तिमिंगिल
नळवडिसिदुदु तिमियनुरॆ बळिका तिमिंगिलन
गुळिगॆ गॊंडुदु घन तिमिंगिल नुळियॆ बळिका मीननुदरा
नलगॆ कॊट्टॊडनरसि तॆरॆयनु मकरवबुधियलि ॥ 7 ॥
ऒडनॆ गज गवयादि नायक रॆडसि हाय्किदरद्रिगळनव
नॊड नॊडनॆ नुंगिदवु नॆरॆदवु मत्तॆ मकरचय
कडलु कलकितु नॆगळुगळ बलुगडिय मीनिन बवरदलि जग-
दॊडॆय रघुराजेंद्र चंद्रनु कंडु बॆरगाद ॥ 8 ॥

—इस तरह कहते हुए उसने (नल ने) हनुमान के लंकानगरी जाने के लिए जहाँ (अपना) पैर रोपे उछलकर महेन्द्र पर्वत पहुँचे थे उसी जगह से उछलकर उसी तरह महेन्द्र पर्वत पहुँचे तो सागर काँपने लगा। तभी (एक) पहाड़ उखाड़ लाकर समुद्र पर डाल दिया। इसे देख देवताओं के 'शाबाश' कहने पर राम ने मुस्कुराते कहा, "सुनो सुग्रीव, यह समुद्र हमारी पहुँच के परे है।" ५ "नल की इसमें क्या बस चलता है" —इस तरह सौगंध दिलाते हुए, शतबली दस योजन विस्तृत गात्रवाले पहाड़ को उठा लाये। सुनो हे दाशरथि-सुत! गरजते हुए शतबली ने 'धम्' से जब उस पहाड़ को समुद्र में उतारा तो पानी ने थपेड़े दिये। ६ (इस प्रकार) समुद्र में उतारे गये पहाड़ को अपने लिए प्रक्षेपित आहार समझकर तिमिंगिल ने उसे निगल लिया। उस तिमिंगिल को उससे बड़े तिमिंगिल ने निगल लिया। तदनंतर उस तिमिंगिल को उससे बड़ा तिमिंगिल एक गोली की तरह निगल गया। तत्पश्चात् एक मगर उस तिमिंगिल को पेट की आग में आहुति दे फिर कुछ बड़ी चीज पाने के इरादे से समुद्र में ढूँढ़ने लगा। ७ फिर गज, गवय आदि कपिनायकों ने बड़े-बड़े चट्टान उठाकर समुद्र में डाल दिये। तुरंत उन (सब) को निगलकर और कुछ मगर आ जुटे। मगर तथा कुछ बड़े बलशाली तिमिंगिल जैसी मछलियों

बळिक कपिपति करॆदु सुभटावळिगॆ नुडिदनु निम्म भुजबल
दळव मॆरॆयि दशाननन संग्राम समयदलि
अळवु नळनॊडनेकॆ साकिद रिळिकॆ नम्मदॆनुत्त वासिय
बलुह बिडिसिदु बळिय निंदिदनवुज सखसूनु ॥ 9 ॥
करॆदु नीलांगदर हसुगॆगॆ हरिबलव नॆरडागि सेरिसि
गिरिगळिगॆ बॆससिदनु बंदनु सागरद तडिगॆ
सरसिजासन सुतन मत विस्तरणदलि दशयोजनद परि-
सरद पारावारवनु सूत्रिसिद नगलदलि ॥ 10 ॥
बळिगॆलस दवरिवरु गिरिसंकुलव नीडुव रिवरु कलु सं-
कलॆयवरु संवरणॆयवरिवरॆंदु बलुभटर
हॊळकॆगळ हॊम्मरिदु कॊट्टनु नळन वशके नॆबॆ बॊब्बॆय
कळकळिकॆ कडुहाय्तु काल्दुळियलि कपीश्वरर ॥ 11 ॥
करॆदु राक्षस सार्वभौमन निरिसिदनु प्रत्यूह दशकं-
धरन दॆसॆयिदागदवॊलंबुधिय दक्षिणद
परिसरद वेलाचलद बंधुरद बहिरावरणदलि वा-
नर विशारद भटर परुटव पारुपत्यदलि ॥ 12 ॥

में होते इस छीना-झपटी को राम देखते दंग रह गये। ८ फिर सुग्रीव ने कपिवीरों को बुलाकर "रावण के साथ होने जा रहे युद्ध के लिए तुम लोगों को अपने बाहुबल का सामर्थ्य प्रकट करना चाहिए। नल के साथ तुम अपना यह सामर्थ्य क्यों प्रकट कर रहे हो? बस है। इन चट्टानों को ला उतारने का काम हमारा है।" इस तरह समझाते हुए, उनकी परस्पर स्पर्धा को रोके पार्श्व में खड़े रहे। ९ नील और अंगद को बुलाकर कपि-सेना को दो टुकड़ियों में विभाजित कर उनके आधीन करते हुए चट्टानों को लाने के कार्य पर उन्हें नियुक्त किया। वहाँ से सागर किनारे आकर जांबव की राय के अनुसार समुद्र की दस योजन की चौड़ाई आँककर चिह्नित की। १० इनके साथ ये रहेंगे सहायक कार्य-कर्ता, ये चट्टान देनेवाले, ये पत्थर इकट्ठा करनेवाले, ये तराशकर तैयार करनेवाले —इस तरह दर्साते हुए —इन वीरों का सामर्थ्य अजमाते —उन्हें नल के आधीन किया। कपिनायकों के पदचाप की कुचलाहट के कारण वहाँ भारी शोरगुल हुआ। इसका वर्णन कैसे करूँ? ११ राक्षस चक्रवर्ती विभीषण को बुलाकर, दशकंठ की तरफ़ से किसी प्रकार की विघ्न-बाधा उपस्थित न होने की दिशा में ध्यान देने के लिए कहकर समुद्र के दक्षिणी प्रदेश के किनारे के पहाड़ के बाहरी आवरण में वानरश्रेष्ठों

बळिक लेवेळुवेंनु कपिबल दुलुहि गुडिदद्रिगळ बेर्गळु
कळचि बिद्दवु बीदिवरिगळ बेरळ सोंकिनलि
तळमगुचिदवु तोरगिरि करतळद बिगुहिगॆ कुलमहीधर
कळलिदवु कडुहेंतो कपिराजेंद्र सैनिकद ॥ 13 ॥
सारकट्टितु सागरकॆ वृंदारकाचल विडिदु गिरिगळ
भारकिळॆ कडु तग्गुतिर्दुदु निमिष निमिषदलि
आरु बदुकुववरमस फणिपति कूरुमर कोरळॆडॆगळलि बी-
डारवादुदु हृदयगत सप्राण मारुतन ॥ 14 ॥
बीळु तिर्दवु बॆट्ट कपिगळ तोळ नॆगहिनलद्रिघातद
लेळु तिर्दवु तॆरॆगळॊदॆदंबरद तुदिवरॆगॆ
तूळि तेरॆसुव जलोग्र व्याळ गज पाठीनकुल मक-
राळि मै मरॆसिदवु मदवक्कुडिसि तंबुधिय ॥ 15 ॥
कडल काहुर कळ्ळॆ वोय्लिनलडगु तरुहिसुतिर्दॆ नग्गद
वडबनघ मरुषणदलिर्दनु मेलॆ कमलसख

की विस्तृत देख-रेख में उनको (विभीषण को) नियुक्त किया। १२ तदनंतर की घटना का किन शब्दों में वर्णन करूँ? कपि-सेना की चीख-पुकार के शोरगुल के कारण पहाड़ टूटकर, जड़-सहित उखड़, नीचे गिर पड़े। स्वेच्छा से विचरण करते कपिवीरों की उँगुलियों के स्पर्श के कारण बड़े-बड़े पहाड़ लुढ़क गये। हाथ की ज़बर्दस्त जकड़ के कारण कुल-पर्वत ढह गये। कपिसेना के अधिपति सुग्रीव की (इस) सेना का पराक्रम भारी अद्भुत है। १३ मेरुपर्वत से सागर तक सेतु बाँधा गया। सेतु में जोड़े बड़े भारी चट्टानों के वज़न के कारण क्षण-क्षण भूमि धँस रही थी। इस भारी बोझ से कौन बच सकता है? आदिशेष तथा कूर्म (कच्छप) के प्राण नहों में समाने लगे। श्वास लेना भी उन्हें दूभर लगा। १४ कपियों के भुजाओं के ऊपर उठते ही उस ज़ोर के कारण चट्टान धड़ल्ले से गिर रहे थे। चट्टानों के पानी में गिरने के ज़ोर के कारण (धक्के से) जो लहरें उठ रही थीं, वह आसमान के छोर तक पहुँच जाती थीं। पानी के साथ ऊपर छिटककर नीचे गिर रहे समुद्र के पानी के भयानक साँप, जलहस्ति, मछलियाँ, मगर आदियों ने वहाँ पर उपस्थितों को मूर्च्छित कर दिया। समुद्र का मोटापा घट गया। १५ समुद्र के रौद्र-रूप के कारण बड़वाग्नि (समुद्र तले की आग) परेशान हो छाती पीटते घटकर छिपे बैठे पानी में स्नान कर रही थी। आकाश का सूर्य ठंड के मारे काँप रहा था। समुद्र की रेत आकाश तक उछल रही थी।

नडगुतिर्दनु शीतदलि मेलगडँगॆ मळलुब्बरिसु तिर्दुदु
नुडिवडरिददनणुग केळा सिंधु बंधनव ॥ 16 ॥
तीरिदवु गिरि मरुयवन गांधार गुज्जरं गौळ माळव
पारसिक पांचाल सेवण सिंधु कांबोज
केरळांध्र करूष कुरु हम्मीर वंग कळिंग देशद
भूरि भूधर निकर नळन समुद्र बंधदलि ॥ 17 ॥
हरिदुदल्लि मेलॆ वल मोहरिसि हॊक्कुदु किन्नरर किं-
पुरुष गुह्यक यक्ष विद्याधरर खेचरर
गरुड गंधर्वादि नाना धरणिगळ कुधराळि गळनां
शरधि गडकितु सेनॆ रघुराजेंद्र चंद्रमन ॥ 18 ॥
गिरिगळो गीर्वाणशरधिय सरिगळो संवर्त मेघद
करगळो काकुत्स्थ वंश श्री नितंबिनिय
विरचितालंकृतॆय लास्यद करतळद कंतुक वॊयॆनलु-
प्परिसि कॊप्परिसुत्त लिर्दवु गिरि समुद्रदलि ॥ 19 ॥
गिरिगिरिय होरटॆगॆ जल सीकरगळॆंदवु ध्रुवन भवनद
शिखर मगुळुप्परिसि बीळुव शैल दुरुबॆयलि
जरुहिदवु तॆरॆ दिगुतटव बलुगिरिय लंबुधि गुस्मु तिर्दुदु
सुरर कडहद कडल रभसकॆ कोटिसडियॆनलु ॥ 20 ॥

समुद्र में सेतु बाँधने के इस कार्य का वर्णन करना अपनी शक्ति के परे है। सुनो राजकुमार! इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। १६ मरु, यवन, गांधार, गुर्जर, गौड़, माळव, पारसिक, पांचाल, सेवण, सिंधु, कांबोज, केरल, आंध्र, करुष, कुरु, हम्मीर, बंग, कळिंग आदि देशों के भारी-भरकम पहाड़ों के चट्टान नल से बाँधे जानेवाले सेतु के काम आकर समाप्त हुए। १७ कपि-सेना ने वहाँ से रवाना हो, झुंड के झुंड में— किन्नर, किंपुरुष, गुह्यक, यक्ष, विद्याधर, खेचर, गरुड़, गंधर्व आदि कई देशों में प्रवेश किया। रघुरामचंद्र की इस सेना ने उन देशों के पहाड़ों के ढेर के ढेर समुद्र में ला पटक दिया। १८ वे पहाड़, चट्टान समुद्र में मानों इस तरह गिर रहे थे— देवलोक के समुद्रों की वर्षाएँ हों या प्रलयकालीन मेघों के हाथ हों अथवा काकुत्स्थवंश की लक्ष्मी सर्वालंकृत हो नर्तन करते हाथ से जो गेंद फेंक रही हो अथवा ये सचमुच चट्टान हैं —इस रीति से भ्रम में डालते वे चट्टान एक-दूसरे से टकराते उछल रहे थे। १९ चट्टानों के एक-दूसरे से टकराने के कारण पानी के छींटे उड़े। ध्रुवलोक के छोर तक

इडुव गिरिघातद विघातिय कडल रभसक जांडघटगु-
म्मिडुत लिर्द्दु तूगुतिर्द्दु तनुवनिळॆ बळुकि
सिडिव सीर्वनिदागिनलि सॆडॆ दडसिदुदु मेल्जगकॆ जरुहिद
वडिगिळिद गिरियुरग रायन जगद जोडिगळ ॥ 21 ॥
इट्ट गिरिगळ हिडि हिडिदु नळनॊट्टिदनु मॆट्टिदनु कट्टिद
निट्टणिसि बह गिरियना बळिसलिसि बह गिरिय
कॊट्ट गिरिगळ कॊडुव गिरिगळ कट्टॆयलि कौचिक्कि कोपद
दिट्टियलि गिरिबरलि बॆगॊंडुदु हिदनु भटर ॥ 22 ॥
तनुज केळै केळिदी मातिन गडावणगा वनौकस
जनपनॆद्दनु हॊद्दिदनु बळिकुदय पर्वतव
कनलि कित्तस्ताचलकॆ लंघनॆय कॊंडद कित्तु तंदि-
त्तनु नळंगॆ सुरौघदब्बरवऱॆय बॊब्बॆयलि ॥ 23 ॥
मेलॆ मेलब्बरिसिदवु निस्साळॆतति तळमग चुवगणित
शैल दॆडॆगळ लट्टुगहळॆ गळिट्टणिसि हरिव

उड़कर नीचे गिर रहे पहाड़ों के भारी धक्कों के कारण उठी बड़ी-बड़ी लहरें दिशि-दिशाओं में व्याप्त हो गयीं। भारी चट्टानों के गिरने, टकराने से समुद्र देवासुरों से मथे गये समुद्र से करोड़ों गुना मानों अधिक ही ज़ोरदार हो धक्के देकर आगे बढ़ा। २० वानरों से फेंके गये चट्टानों की टकराहट के कारण समुद्र ने जो भयानक रूप धारण किया —इससे सारा ब्रह्मांड डाँवाँडोल होने लगा। धरती लचककर हिलने-डुलने लगी। उछलते तुषारों की मार के कारण चट्टानें उछलकर ऊपर के लोकों को घेरने लगीं। धरती के नीचे धसकी चट्टानों के कारण पाताल-लोक के सेतु ढहने लगे, खिसकने लगे। २१ वानरों से फेंके गये चट्टानों का सहारा लिये नल ने उन्हें समुद्र में ढेर किए ठीक तरह ठोंक-पीटकर सेतु बाँधा। एक साथ आनेवाले, एक के बाद एक होकर आने वाले, हाथ में दिये गये व दिये जा रहे चट्टानों को चौकोर में औंधे डाले गुस्से से वानर वीरों की ओर देखते हुए "आने दो चट्टानों को" इस तरह कहते उसने धमकाया। २२ सुनो कुमार! नल की बातों में प्रयुक्त धमकी तथा शोरगुल सुन कपियों के स्वामी सुग्रीव उठकर उदयपर्वत पर आये। क्रोधोन्मत्त हो उसे उखाड़, वहाँ से पश्चिमी पर्वत पर कूद उसे भी उखाड़ देवताओं के बड़े-बड़े नगाड़ों के बजते उत्साह-मध्य, उन्हें (उखाड़े पर्वतों को) लाकर नल के वश में दिया। २३ चट्टानों को उलट-पुलटकर गिराते समय नगाड़े बार-बार बजने लगे। कपिवीर एक

धाळिगळ लॊदग्रिदवु गिरिगळ बीळिकॆय लब्बरिसिदवु सं-
बाळिसितु सौरंभ सुररनु सेतुबंधनद ॥ 24 ॥
विनुत कपि शतकूट पर्वतवनु सुषेण सुदर्शनाद्रिय
पनस नग्गद पारियात्र महामहीधरव
घनवृषाधिप वृषभ गोवर्धनव गवय गवाक्ष वळिकं-
जन वनर्धव नुळुहि तंदॊट्टिधरु जलधियलि ॥ 25 ॥
सुमुख दुर्मुख तार दधिमुख कुमुद मैंद द्विविध शतवलि
रुम रुमण्व ज्योतिमुख गजगंधमादनरु
अमरशैलद सागरद मध्यमद गिरिकोटि गळनहिपति
कमठरॊदऱलु कित्तु तंदॊट्टिदरु जलधियलि ॥ 26 ॥
अररॆ शिवशिव हॊगळुवडॆ सासिरगळॆरडऱ नालगॆय सड-
गरद शेषन पाडदॆनै कॆळिदै कुशनॆ
गिरिगळो तिरिकल्गळो वानररो वज्रायुधवो विश्वं-
भरॆयो विगळित जेन हुट्टियो हेळलॆनॆंद ॥ 27 ॥
आर हवणल्लमम वालिकुमार नुब्बटॆ मीऱिदुदु जं-
भारि पौत्रनला पराक्रम चक्रवर्तियल

साथ जब आगे बढ़ रहे थे और जूझ रहे थे तब बाजे लगातार बजने लगे। चट्टानों के गिरते समय वाद्य घोष (गाजे-बाजों का बजना) हुआ। सेतु बाँधने के कार्य को देख देवताओं ने संतोष की साँस ली। २४ कपिनायक ने शतकूट पर्वत को, सुषेण ने सुदर्शन पर्वत को, पनस ने पारियात्र महा पर्वत को, वृषाधिप वृषभों ने गोवर्धन को लाकर ढेर कर दिया। उसके बाद गवय गवाक्षों ने अंजन पर्वत को आधा बचाकर, बचे आधे को लाकर समुद्र में ढेर बना दिया। २५ सुमुख, दुर्मुख, तार, दधिमुख, कुमुद, मैंद, द्विविद, शतबलि, रुम, रुमण्व, ज्योतिमुख, गज, गंधमादन —आदि कपि-नायकों ने मेरु पर्वत के सागर मध्य के करोड़ों चट्टानों को उखाड़ लाकर सागर में ढेर बना दिया। चट्टानों को उखाड़ते समय आदिशेष कच्छप चीखने-चिल्लाने लगे। २६ सुनो कुश, इस कार्य का वर्णन करने के लिए शिव-शिव ! दो सहस्र जिह्वाओं वाले आदिशेष के लिए भी क्या संभव है ! क्या चट्टान हैं या ओले गिरने का खेल है, बानर हैं या वज्रायुध हैं, भूमि है या मधुमक्खी का छत्ता है ? क्या कहूँ ? और किन शब्दों में वर्णन करूँ ? —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। २७ वालिकुमार का वह अत्यंत वीरतापूर्ण कार्य किससे संभव है ? बाप रे ! इन्द्र का पोता जो ठहरा। ाक्रम चक्रवर्ती है न ? हाथ को धरती पर रगड़ते चीखकर जो महा

धारुणिय मेलुद्दि करव निहारदलि बोब्बिरिदु हारिद
नारें सुररनुपम महाकैलास पर्वतकें ॥ 28 ॥
साकिदी गिरियेंनुत तोळ्गळ लैकि झडिदल्लाडला जग-
देकनाथन नगर बेंदरितु नेंनेंदु रावणन
ई कुतूहल वेनिदेंनुत पिनाकि दिव्यज्ञानदिंदरि-
दा कपिय बळिगैदिदनु हरगणद गडणदलि ॥ 29 ॥
अरु नीनी गिरिय कीळलि कार हेळिकें कॆलकें सार् त्रिपु-
रारि केळिदनादडितिदु बरिदें होगदलें
सारेंनलु सारेंब सलुगेय नारु कॊट्टरु निनगेंनुत्तडि
बेरुबिडें कित्तॆत्तिदनु कैलास पर्वतव ॥ 30 ॥
पुरमथन बेंरगागि बळिका हरिसुतात्मज गेंद नी गिरि-
वरवु नम्मदु नावु मित्ररु निम्म रामंगें
निरुतविदु हुसियल्ल नी नादरिसि नोडै नम्म नेंनुता
हरनु मैदोरिदनु पंचब्रह्म वक्तृदलि ॥ 31 ॥
बल्लें निदनानज्ञने सरियिल्ल निनगेंबुदनु दिट नीव्
सल्लिरे रघुपतिगें बिडेंवाव् स्वामि कारियव
ऎल्लवेतकें दूरवे रघुवल्लभनलप्पणें बरल्किद
निल्लि बिसुटाव् बंदगतियलि गमिसदिरेंवेंद ॥ 32 ॥

कैलास पर्वत की ओर उछला तो देवता यह देख (घबराहट के मारे) ज़ोर से चीख उठे। २८ यह पर्वत काफ़ी है —कहते हुए उसको भुजाओं में दबोचकर, खींचकर जो हिलाने लगा तो पूर्व में रावण के कैलास को हिलाने का स्मरण कर ईश्वर की नगरी भयभीत हुई। यह क्या अद्‌भुत है ! इस तरह कहते पिनाकधारी शिवजी ने अपनी दिव्य दृष्टि से वस्तुस्थिति ताड़कर शिवगणों को साथ लिये अंगद के सम्मुख उपस्थित हुए। २९ "कौन है तू ? इस पहाड़ को उखाड़ने के लिए तुझसे किसने कहा ? चला जा यहाँ से ?" इस प्रकार शिवजी ने कहा। तब अंगद ने "यह यों ही नहीं हो सकता। 'यह जा, वह जा' की यह आत्मीयता की बात तुम्हें किसने सिखायी ?" —इस प्रकार कहते कैलास पर्वत को जड़-सहित उखाड़कर उठा लिया। ३० त्रिपुरारि ने आश्चर्य से वालीपुत्र को संबोधित कर, "यह महापर्वत हमारा है। हम तुम्हारे राम के परम मित्र हैं। इसे सच मानो। यह कदापि झूठ नहीं। तू हमें गौरव की दृष्टि से देख।" इस तरह कहते अपने पंच ब्रह्ममुखों को प्रकट करते प्रत्यक्ष हुए। ३१ "यह मैं जानता हूँ; क्या मैं अज्ञानी हूँ ? यह सच है कि तुम्हारी बराबरी

अँनै महेश्वर नगुत मनदुब्बिनलि हरिय महामहिमेंगा
ननव नौलि दीक्षिसिद निदिरिन गुह गणाधिपर
इनकुलेंद्रन मूर्तियनु बळिकनु करिसि करॆदंगदं गें-
दनु मुगुळ्नगॆ मिनुगॆ विनुत वचोविलासदलि ॥ 33 ॥
तनुज केळी विश्वरूपन तनुविगेंनगॆ विभिन्नवे श्रुति
विनुत वाक्यार्थ प्रपंचव नऱिदु दिल्लवल
ऍनलु जीय हसाद वेंमगद रनुभवव देकेंनुत कैलबल
कोनेंयदंतिरॆ हाठ्कि हवणिसि कौंडनुब्बटॆय ॥ 34 ॥
मुऱिदना पर्वतद सुत्तण होऱवळयदुपपर्वतंगळ
निरुकि बळिकी मातनेंदनु मदनरिपुविगॆ
अऱियदा नुद्दंडिसिदुदनु मऱॆवुददॆ गिरि निम्मदॆंदॆ-
च्चऱिसि वहिलदोळॆदि बंदित्तनु महीधरव ॥ 35 ॥
इत्त गिरिगळ नळनु कट्टॆगॆ हत्तिसिदनळ वडिकॆयलि नडॆ-
यित्तु सेतु समुद्रदलि दशयोजनांतरव

कोई नहीं कर सकता। हो सकता है कि आप रघुपति के लिए मान्य (पूज्य) हैं। जो कुछ भी हो। मैं स्वामी-कार्य से विमुख होनेवाला नहीं। इन बातों से क्या प्रयोजन? रघुपति तो दूर थोड़े ही हैं; अगर उनकी आज्ञा हो तो इसे यहीं छोड़कर जैसे आया था वैसे चला जाता हूँ।" —इस तरह अंगद ने कहा। ३२ अंगद की बातें सुनकर महेश्वर मुस्कुराए। हरि की महामहिमा से मन ही मन प्रसन्न होकर सामने उपस्थित गुह (षण्मुख) गणपति की ओर देखा। श्रीराम की मूर्ति (स्वरूप) रूप धारणकर मुस्कुराते हुए मनोरम बातों से अंगद को समझाया। ३३ सुनो पुत्र, यह विश्व रूपी श्रीहरि की देह से मेरी देह कैसे भिन्न हो सकती है? (हम दोनों के स्वरूप में अभेद है) वेद-वचनों का अर्थ-विस्तार तुमने समझ नहीं लिया न।" इस प्रकार शिवजी के कहने पर "भगवन्! यह आपका कृपा-प्रसाद है। मैं इसे जानकर क्या करूँ?" इस प्रकार कहकर अंगद ने कैलास को ज्यों के त्यों, जहाँ का तहाँ अचल रखकर अपने अगले साहसी कार्य की तैयारी कर ली। ३४ कैलास पर्वत के बाहरी वलय (वृत्त) में चारों ओर फैले छोटे-मोटे पहाड़ों को तोड़कर, चाँपकर "अज्ञानवश मैंने जो मर्यादा तोड़, आचरण किया —कृपया इसे भूल जाएँ; यह देखिए आपका पर्वत।" इस तरह शिवजी को सावधान कर वहाँ से अति शीघ्रता से रवाना हो, सेतुबंधन के स्थान में उपस्थित हो, (उन लाये) चट्टानों को नल के आधीन किया। ३५ अंगद के दिए गये चट्टानों को नल ने

भत्तें केळलें कुशनें नीलनु दात्त चरितवनमम हारिद
नुत्तरद मंदर महागिरि गमर रब्बरिसें ॥ 36 ॥

पटुपराक्रमि यल्लवे कपि कटकदलि नीलकलि नारधि
घट वेंनलुगिदु गिरिय निक्कै गोंडु कीळुतिरें
निटिलु निळिलेंदुब्बे रंभाविटन केळिसलिळिदु करसं-
पुटद लीतन नेडिकोंडनु मधुर वचनदलि ॥ 37 ॥

ई महागिरियग्रदलि नानामरावळियिदें निधानिस-
ली महागिरियगलदलि दिव्यौषधंगळिवें
गोमिनीधव सुप्रतिष्ठा रामणीयक शैलविदु सिरि
रामभृत्यरु मुरिियलनु चितवेंद नमरेंद्र ॥ 38 ॥

आरु नीनेंनलिद्र नेंदेन लोरेंगणिनलिद्र नागु पु-
रारि यागजनागेंनुत बगेगोळदें कीळुतिरें
वीर बिडु पर्वतव निदु दैत्यारि संस्थित शैल वेंदा
नारदनु नडेतंदु कैमुगिदेंदनी हृदन ॥ 39 ॥

बाँध में जोड़ा। इससे दस योजन लंबाई के सुभद्र सेतु का निर्माण समुद्र में हुआ। हे कुश, अब नील की, महोन्नत साहस की कहानी सुनो। बाप रे बाप! नील उत्तर दिशा के मंदार महापर्वत की ओर उड़ा। नील का साहस देख देवता ज़ोर-शोर के साथ चीख उठे। ३६ कपि-सेना में वीर नील महापराक्रमी जो ठहरा। समुद्र के घड़े की तरह खींचकर, अपने दोनों हाथों से पहाड़ जब उखाड़ रहे थे तो 'धड़-धड़ल्ले' की आवाज हुई। देवेन्द्र ने जब यह ध्वनि सुनी तो नीचे उतर आकर हाथ जोड़े मधुर शब्दों से नील से प्रार्थना की। ३७ "इस महापर्वत पर कई देवताओं के निवासस्थान हैं। वैसे देखा जाय तो (इस) सारे पर्वत भर में दिव्य जड़ी-बूटियाँ हैं। लक्ष्मीपति के अभिमान का यह सुन्दर पर्वत है। श्रीराम के सेवकों से इसका यों तोड़े जाना उचित नहीं है।" इस प्रकार देवेन्द्र ने समझाया। ३८ "कौन हो तुम?" इस तरह अंगद ने पूछा। तो "मैं इन्द्र हूँ" इस तरह उत्तर पाने पर नील ने आँख की कोर से उसकी ओर देखते हुए, "तुम भले ही इन्द्र होओ, या त्रिपुरारि, या ब्रह्मा ही हो" इस तरह कहते, उनकी परवाह न करते पहाड़ को उखाड़ने लगे। तब नारद जी ने प्रकट होकर कहा— "हे वीर रुको; यह पर्वत असुरारि से स्थापित है।" इस प्रकार नारद ने हाथ जोड़े विनती की। ३९ "मैं

नुडिदु तप्पॆवु नावु निमगॆम गॊडॆयनल्ला राम रामनु
पॊडॆय लरनॆंदरियॆ बारदॆ निनगॆ हरवसवॆ
बिडुबिडॆनला गिरियनल्लियॆ मडगि तदगिरि शिरगळॆंटुव
नुडिदु तंदित्तनु नळंगॆ नरेंद्र बॆरगागॆ ॥ 40 ॥
आत तंदद्रियलि नडॆदुदु सेतु दशयोजन वनज सं-
जात नॆनॆदुद्योगवनु केळै कुमारकनॆ
एतरिवु मिक्कद सुभटव्रात दुब्बटॆ हाय्दुदवनि र-
सातळकॆ मैगुंदॆ विंध्याचलवनुत्तरिसि ॥ 41 ॥
नॆगहि जोलुव जूबुगूदल नगलिसुत नोडिदनुकंडनु
नगकुलेंद्रन शिशिर सांद्रन पार्वती पितन
हॊगवडुत्तर पथकॆ चैतन्यगळु नमगिल्लावु वृद्धरु
नगुववरु नगलॆमगिदे साकॆंदु मंडिसिद ॥ 42 ॥
ऎरडु साविरदगलयोजन वॆरडु साविर उद्दवैव-
त्तॆरडु साविर नीळदद्रियनमररब्बरिसॆ
उरगरायन हॆडॆय नुगुरुप्परिसॆ कुक्किदनदनि बिक्कनॆ
बिरियॆ सागर जरियॆ जांबवदेव झडितॆयलि ॥ 43 ॥

तुमसे झूठ नही बोलता। राम हमारे प्रभु हैं न! राम को कमलनाभ विष्णु जानो। क्यों तुम यह बात नहीं जानते? क्यों होश खो बैठे हैं? छोड़ दो कार्य।" ऐसा नारद के कहने पर नील ने वह पर्वत वहीं रख उसके यह आठ शिखरों को तोड़ लाकर नल को दिया, यह देख राम दंग रह गये। ४० नील के लाये चट्टानों से वह सेतु सौ योजन तक बढ़ा। हे कुमार, ब्रह्म-पुत्र जांबव के सोचे प्रयत्नों के बारे में अब सुनो। अन्य वीरों के प्रयत्न उनके सामने न के बराबर हैं। विंध्य पर्वत को मानों उसने इस प्रकार पार किया कि धरती पाताल में धँस जाय। ४१ अपनी भौहों पर लटकते बालों के गुच्छों को ऊपर उठाते हुए जांबव ने—हिमाच्छादित, पार्वती के पिता, पर्वतों के राजा हिमालय को सामने देखा। अब और उत्तर की दिशा में जाने का सामर्थ्य मुझमें नहीं; मैं तो बूढ़ा हो चला। हँसनेवाले हँसा करें। मेरे लिए तो यही पर्वत काफ़ी है। —इस तरह कहते वहीं बैठ गया। ४२ दो सहस्र योजन विस्तृत (चौड़ा) दो सहस्र योजन लम्बा तथा बावन हज़ार योजन नील पर्वत को जाम्बवदेव ने हाथ से पटक दिया। तब देवता चीख़ उठे। तब आदिशेष के फन में जांबवदेव का नाखून चुभ गया। धरती में दरार पड़ी। सागर पीछे हटा। ४३ हिमालय को जब जांबव ने उठाया तो

अँत्तलॊलॆदुदु मेरु मेनकॆ हत्तिरकॆ नडॆतंदु बाय बि-
डुत्त बिन्नह माडिदळु तद्ब्रह्मपुत्रंगॆ
कृत्तिवासन दास नी ता हॆत्त मंगळुमॆ नोडिको नि-
न्नुत्तमिकॆगपकीर्ति बरदोलॆंदळा कांतॆ ॥ 44 ॥
मुरिदु नोडिदनद्रिराजन तरुणियनु तप्पुवदला शं-
करन चित्तकॆ दूर वहुदनुचित वलायॆनुत
इरिसि गिरियनु तॆरळि नीवॆंदॆरडु कैगळ मुगिदु सुत्तण
गिरिगळनु कित्तॆत्ति हॊत्तनु हॊगळॆ सुरनिकर ॥ 45 ॥
शिरदॊळॆंटद्रियनु निजभुज शिरवॆरडरलि नाल्कुकंकुळ
लॆरडॆरडु करतळदलॊंदॊंदनु निजांघ्रियलि
अॆरडॆरडनुरुळिसुत तंदनु सुररु सर्वॆरगागॆ रघु भू-
वरनु विस्मितनागॆ नळनॆडॆ गबुजभवसूनु ॥ 46 ॥
इदिरुवदतिभक्तिभयभारदलि जांबवतंद गिरिगळ
नदुरद वॊलुप्परिसि धरिसि समुद्र मध्यदलि
हदसरिसि हवणिसिद नॆडॆगॆडॆ गिदिरुकलुगळ बॆणॆगळलि नडॆ-
दुदु निजोन्नत सेतुबंधन हत्तयोजनव ॥ 47 ॥

मेरुपर्वत हिल उठा। तब हिमवंत की पत्नी मैनादेवी जांबव के सम्मुख पहुँच गिड़गिड़ाकर बिनती करने लगी— "तू ईश्वर-भक्त है (शिव-भक्त है)। मेरी पुत्री उमादेवी शिवजी की पत्नी है। अतः देख लो कि तुम्हारी कीर्ति कलंकित न हो।" ४४ "मुड़कर (जाम्बव ने) हिमवंत की रानी को देखा। मैं तो ग़लती कर रहा न? शिवजी का मन उचाटना (शिवजी की दृष्टि में गिर जाना) ठीक नहीं है।" इस तरह सोचते हिमवत्पर्वत को वहीं रख "आप ही आइए" इस तरह दोनों हाथ जोड़कर कहा। तत्पश्चात् हिमालय को घेरे जो पहाड़ थे उनको उखाड़ ढोकर ले गया। तब देवताओं ने जाम्बव की प्रशंसा की। ४५ सिर पर आठ पहाड़ तथा दोनों कंधों पर चार पहाड़ ढोकर और बगलों में (दोनों) दो-दो पहाड़ दबोचकर, एक-एक हाथ में एक-एक पहाड़ धारे, पैरों से दो-दो पहाड़ लुढ़काते हुए जांबव पहाड़ लेकर नल के सम्मुख पहुँचा। यह दृश्य देख देवताओं को अचरज हुआ। राम भी दंग रह गये। ४६ नल ने जांबव की अगुवानी करते हुए अत्यंत भयभक्ति से उनसे लाए गए चट्टानों को यत्किंचित् भी बिना हिलाए-डुलाए उछलकर इन्हें लेकर समुद्र-मध्य ठीक तौर-तरीक़े से रख, बीच-बीच में छोटे-छोटे पत्थरों की कील ठोंककर उनको ठीक तौर पर खड़ा किया। सेतु की लंबाई (इससे) दस योजन

बॆर्ऱग केळै स्वामिकार्यद हॊर्ऱगॆवाळन कॆलसवनु बॊ-
ब्बिरिदु हारिदननिल सुतनमराद्रि यिद्दॆडॆगॆ
हर्ऱॆगळब्बरिसिदवु सुररुब्बिरितदलि सुम्मान मिगॆ कड्डु
निर्ऱिसि निदीक्षिसिदना गिरियग्र परियंत ॥ 48 ॥
लक्षयोजनदुद्द गिरियदु लक्षयोजनदगल दंबुधि
सक्क समवी गिरियनळ वडिसुवॆनु शरधियलि
रक्कसारिय कीर्ति सलिलज नॊक्कतन परियंत कॆलसवि
दॆक्कसर वॆनुतनिलसुत बॆळॆदनु नभांतरकॆ ॥ 49 ॥
अब्बरिसि कैचप्पळॆय वडिदॆब्बिसिदना गिरिय शिखरद
हब्बुगॆय हुतभोज नरनज लोक परियत
तब्बिदनु तद्गिरिय नतिबल नुब्बुगवळव कॊंड बॊलु बलु-
बॊब्बॆयलि वेरुडियॆ अडिदल्लाडिदनु गिरिय ॥ 50 ॥
ऒर्ऱलितंबरव वनितळ वार्य्दॆर्ऱॆदु दवुज भवांड वळिपा-
य्दॆर्ऱगि दंबुजदंतॆ तॊनॆदल्लाडि तॆड बलकॆ
अर्ऱगळलि नळ विगिद कट्टॆय कुर्ऱुहु मुळुगितु मुदुडि विद्दनु
मुरुक दबुजज नॊलॆदु निज सिहासनाग्रदलि ॥ 51 ॥

और बढ़कर तैयार हुई । ४७ हे लव, स्वामि-कार्य में आत्मीय सेवक के कार्य के आश्चर्य को सुनो । हनुमानजी उछलकर, गरजते हुए-मेरुपर्वत पर आ डटे । देवताओं ने हर्षित हो नगाड़े बजाए । अत्यंत आनंद से उसने (हनुमान ने) पहाड़ के छोर तक तीक्ष्ण दृष्टिपात किया । (गौर) किया) । ४८ "वह पहाड़ लाख योजन लंबा है; और यह समुद्र लाख योजन चौड़ा है । बराबर होता है । अतः इस पहाड़ को ठीक तरह जोड़-जाड़कर समुद्र के मध्य रखे देता हूँ । ब्रह्माजी के आमरण-पर्यंत असुरारि राम की कीर्ति अजरामर रहेगी और यह कार्य शाश्वत रूप से (चिरकाल तक) रहेगा ।" —इस तरह सोचते आकाश की ऊँचाई तक हनुमान बढ़ गये । ४९ उस पहाड़ की चोटी पर निवासस्थान बनाए, बिखरे हुए देवताओं को ताली बजाकर, धमकाकर, पीटकर ब्रह्मलोक तक भगाया । अत्यंत बलशाली हनुमान ने उत्तेजक कौर की तरह उस पहाड़ को घेर लिया । बड़े भयानक रूप से गरजते हुए (उस) पहाड़ को इस तरह हिलाया कि उसकी जड़ें उखड़ जायँ । ५० (तब) आकाश फटने लगा; धरती में दरारें पड़ गयी । ब्रह्मांड मानों भ्रमर के उड़कर फिर आकर बैठे कमल-सदृश डाँवाँडोल होने लगा । चट्टानों को जोड़-जाड़कर नल से जकड़े गये चबूतरे के निशान मानों डूब गये । बड़े डीलडौल से

एनिदच्चरि विलयदुरु पवमान नुद्भवदंतें जगदव
सानकेंनुतज नसळ दिव्यज्ञान दिदरिदु
श्रीनिवासन मनुजलीला नूननाटक रचनें गिदला
वानररिगी बलुहदेंल्लिय देंनुत लिळितंद ॥ 52 ॥
कंडनी पवमान तनुजन दंडिसरवनिदे निदेनु-
द्दंड मरुळनों मूर्खनों मर्कटर कटकदलि
चंडकर वंशाधिपन हगें गेंडवनों मेण् सेवकनों कै-
कोंड कॅलस विदेनु हेळद केळ्वें वावेंद ॥ 53 ॥
केळि माडुवुदेनु केळदें हेळि माडुवुदेनु निमगें-
म्मूळिगद तेंरनेकें हिग्गिसि नुडियलेकॅम्म
हेळि निम्मद मात मरेंयदें केळुववरि गेंनुत्त बगेंगोळ
दाळुगळ बल्लहनु बरसेंळें दोंलेंदना गिरिय ॥ 54 ॥
तरळनें नीनकट दिटवी गिरिय कित्तरें कीळदिहुदे
सुरनरोरग जगदं जनगळ जीवजाल लतें

बैठे ब्रह्माजी हिल-डुलकर अपने सिंहासन पर से सिकुड़कर गिर पड़े। ५१ 'अरे बाप रे, लगता है कि जगत के विनाश के लिए मानों प्रलयंकारी आँधी उठ खड़ी हुई है।' इस तरह सोचते हुए ब्रह्माजी ने अपने परिशुद्ध दिव्य ज्ञान से वस्तुस्थिति समझ ली। "श्रीनिवास के मानवीय लीला के श्रेष्ठ नटना की यह तो महिमा ही है। नहीं तो वानरों में इतना बल-विक्रम कहाँ!" इस तरह सोचते-विचारते ब्रह्माजी नीचे उतर आए। ५२ वायु-पुत्र (हनुमान) का नटखटपन उन्होंने देखा। "यह क्या? यह तुम क्या कर रहे हो? वानर सेना (में) का क्या तू पागल है? या मूर्ख है? यह महत्तर कार्यभार किसलिए? सुनाओ; हम सुनना चाहते हैं। क्या तू सूर्यवंशीय राजा का शत्रु है या मित्र है? या सेवक है? बताओ।" इस प्रकार ब्रह्माजी ने कहा। ५३ "सुनकर क्या करेंगे आप? बिना पूछे जाने पर भी हम कहकर क्या करनेवाले हैं? (आपकी इस पूछताछ से कोई प्रयोजन नहीं।) हम किस प्रकार की सेवा समर्पित करने जा रहे हैं—इससे आपका मतलब क्या है? अपनी हद तोड़कर हमसे इस प्रकार क्यों बातें करते हैं? आपके (इन) वचनों के पालन करनेवालों से जाकर ये बातें कहिए।" इस प्रकार कहते, ब्रह्माजी की बातों की ओर ध्यान न देते सेवकों के स्वामी हनुमान पहाड़ को दबोचकर हिलाने लगे। ५४ "यह सत्य है कि तू चंचल स्वभाव का लड़का है। इस पर्वत को अगर तू उखाड़े तो स्वर्ग-मृत्यु-पाताल लोकों की प्राणलता क्या उखड़ न जायगी?

तरतरद भुवनावळिय विस्तरद सूत्रस्तंभविदु नि-
म्मरस नभिवृद्धिय विचारिसदादॆ नीनॆंद ॥ 55 ॥
गिरियिदनु कीळल्कि दॆल्लिय शरधि नी तानॆल्लि,दिट नि-
म्मरसनावॆडॆ लकॆ यॆत्तणदॆल्लि जनकसुतॆ
अरिगळार विचार निन्ननु होरॆदुकॊंडिदॆ मॊदलु गॆट्टिह
हरद काबनॆ लब्धियनु मतिबऱ्ड होगॆंद ॥ 56 ॥
ऐसले निम्मरित निमगॆ विशेषतर विज्ञप्ति युंटॆ
दीसुदिन नाव् माडि कॊंडिद्दॆवु मनस्सिनलि
ई सुराचलदंतॆ वालदली सकल लोकवनु धरिसुवॆ
नीश कंदॆऱ् वन्नॆबर नीनंज बेडॆंद ॥ 57 ॥
बाल विरुतिर लिल्लि रघुभूपाल नोलगकावु निलुवॆवु
मेलणुत्तर वावुदिदकॆंदजन बगॆगॊळदॆ
कीळुतिरॆ कैविडिदु नालुकु मौळिगळ चाचिदनु सीता
लोल भृत्यन जठरदलि कार्पण्य भावदलि ॥ 58 ॥

विविध प्रकार के लोकों को बाँधकर (जुड़ाकर) रखनेवाला यह (पहाड़) मूलाधार स्तंभ है। तू स्वयं अपने स्वामी की उन्नति के बारे में सोचने में असमर्थ हो चला है क्या ?" —इस प्रकार ब्रह्मा ने कहा। ५५ "इस मेरु पर्वत को उखाड़ डालो तो समुद्र कहाँ बचेंगे ? मेरा और तुम्हारा अस्तित्व कहाँ ? तुम्हारे स्वामी, लंका, जानकी —इन सबका अस्तित्व कहाँ ? क्या तुमने सोचा है कि शत्रु कौन है ? मूल धन को ही खो बैठने वाला व्यापारी मुनाफ़े की बात कैसे सोचे ? हे बुद्धिहीन ! चले जाओ यहाँ से।" इस प्रकार ब्रह्माजी ने कहा। ५६ "बस, इतनी ही है तुम्हारी जानकारी ? इतने दिन यही सोच रखा था कि आप विशेष जानकारी रखते हैं। इस मेरु पर्वत की बात ही क्या है ? जाने दीजिए। (इस मेरु पर्वत की तरह) इस मेरी पूँछ से समस्त लोकों को ईश्वर के आँख की झपक तक (खोलकर बन्द करने तक की अवधि में) रोके खड़े रह सकता हूँ। आप डरिये मत।" इस तरह हनुमान ने कहा। ५७ "यहाँ अपनी पूँछ को रोपे वहाँ मैं श्रीरघुराम की सेवा में उपस्थित रह सकता हूँ। इतने पर भी आपको कहना क्या है ?" इस तरह कहते हनुमान ने ब्रह्माजी की परवाह न करते पहाड़ को दबोचकर उखाड़ना शुरू किया तो सीता-राम के सेवक के पेट पर ब्रह्मा ने अत्यंत दीन-भाव धरे अपने चारों किरीटों को रखा। ५८ "सुनो हनुमान, इस युग के प्रकाश के लिए हम

हनुम केली कल्पदभिरंजनेगे कर्तृगळावु मुंदण
नेनहु निन्नदु निन्न राजसतनद लोलिदंते
अनुकरिसु निन्नी प्रतिज्ञेय ननुसरिसु पुरुषार्थविदु नी-
नेनगे माडुव लेसीदीगेनुतप्पिदनु कपिय ॥ 59 ॥
आदडोम्मिगे निम्मनुज्ञेय नादरिसिदेनु बिजयमाडि वि-
वादवे निम्मोडने नीवेंमगय्य नोपादि
कर्देगेदवा विनितुपद्रद हादियव रल्लेनुत नेगहि-
ददा दिवौकस नगव निळुहिदनुरगदंददलि ॥ 60 ॥
तेरळि नीवेंदजन बीळ्कोट्टरिदिशापटमल्ल कित्तनु-
सुरगिरिय शिरदमळ मणिबंधुरद कांचनद
सुरुचिरद शिखरवनु जंगम गिरिय वोलु झडितेयलि नडेतं-
देरडु तडिगळ वडिसिदनु सुररुलिये सागरद ॥ 61 ॥
आ गिरिय बेंबळिय नळकै लागि नलि संधिसिद निम्मै
दागिनलि भटरित्त बलुकुल पर्वतंगळलि
आ गगनदिंदिळिदु सेतुव सागिसिद नळवडिकेयलि शत-
यागवर्धकि विश्वकर्मननेक रचनेयलि ॥ 62 ॥

सृष्टिकर्ता हैं। भविष्य के बारे में सोचना तुम्ही पर छोड़े देता हूँ। तुम्हारे रजोगुण के अनुसार जो तुम्हें उचित जँचे, करो। तुम्हारी प्रतिज्ञा सफल हो। यही पुरुषार्थ है। इस प्रकार तुम मेरी भलाई ही कर रहे हो।" —इस प्रकार कहते ब्रह्माजी ने हनुमान को अपनी भुजाओं में भर लिया। ५९ "अगर यह बात है तो आपकी आज्ञा का, इस बार पालन करता हूँ। कृपा कर पधारिए। आप मेरे लिए पितृतुल्य हैं; अतः आपसे विवाद नहीं करता। यह देखिए; यह कार्य मैं त्यागे देता हूँ। सताना हमारा धर्म नहीं है।" इस तरह कहते हनुमान ने उठाए हुए मेरु पर्वत को जहाँ का तहाँ यों रखा कि वह किसी ओर न झुके। ६० 'आप हो आइए' —इस तरह कहकर ब्रह्माजी को बिदा करते हुए शत्रुओं को तितर-बितर कर भगाने में समर्थ वीर हनुमान ने मेरु पर्वत पर की चोटी के जगमगाते रत्नजटित सोने के शिखर को उखाड़ लिया। चलते-फिरते पहाड़ की तरह अत्यन्त शीघ्रता से आकर समुद्र के दोनों किनारों पर वह शिखर लाकर रख दिया। ६१ हनुमान के लाकर पटके हुए पहाड़ के सहारे के तौर पर अन्य वीरों से लाये गये कुलपर्वतों के चट्टानों को, अत्यंत चतुराई के साथ नल ने दोनों तरफ़ से जोड़-जाड़कर रखा। इन्द्र के बढ़ई आकाश से उतर आए; कई रीतियों से रचना-कौशल्य दिखाते हुए

आडलच्चरि शरधि शिरदलि सूडिदुदु सेतुवनु जगदलि
नाडे बल्लिदरें सगिद सदळ कार्य किदिरेनु
कूडे मुगिदुदु सेतु बळिकेंडे याडुवद्रिय बेड वेंनली
डाडि तल्लियदल्लि वानरराज भटनिकर ॥ 63 ॥
मोळगिदवु निस्साळतति नभदोळगें सुरपन नेमदलि हू-
वळेय होंनलुप्परिसिदवु कपिकटक दगलदलि
सुळिद वारति तोंरवें यरसन बळियलरि विजयाभिवचनद
विलसदमर सुवासिनियरक्षतेंय हरकेंयलि ॥ 64 ॥

आरनेंय संधि

सूचनें— अंकदलि कपिबलसहित निश्शंक रघुपति बंदुबिट्टनु लंकें योत्तिनल- सुरपति नेंरहिदनु निजबलव ।

कुशनें केळै पुष्यशुद्धद दशमियलि दिवमुखदला रं-
भिसितु मुगिदुदु सेतु दिन नाल्कऱ समाप्तियलि
ओंसगें वरें मोळगिदवु देव प्रसरदलि कपि सार्वभौमक
नसुर हरनिद्देंडेंगें बंदनु भटर गडणदलि ॥ 1 ॥

उन्होंने जोड़-जाड़कर सेतु का निर्माण किया। ६२ यह कथन बड़ा ही आश्चर्य जनक है। सागर ने (उस) सेतु को सिर पर धारण किया। इस जगत में, समर्थों से आचरित असाधारण कार्यों का सामना (बराबरी) कौन कर सकता है? तुरन्त सेतु-निर्माण-कार्य संपूर्ण हुआ। इसके बाद लाये गये चट्टानों की आवश्यकता न पड़ने के कारण, सुग्रीव के (इन चट्टानों के) मना करने पर कपिवीरों ने जिधर-तिधर उन्हें फेंक दिया। ६३ आकाश में नगाड़े बजे। इन्द्र की आज्ञा से कपि-सेना पर फूलों की वर्षा हुई। देवता-स्त्रियों ने 'शत्रुजयी भव' कहकर आशीर्वाद देते हुए अक्षत फेंकते हुए 'तोंरवें' के स्वामी की आरती उतारी। ६४

छठी संधि

सूचना— युद्धविजय में निश्शंक रघुपति ने कपि-सेना-सहित लंकानगरी के नज़दीक डेरा डाला। रावण ने भी अपनी सेना इकट्ठी की।

सुनो कुश, पौष्य माह (पूस का महीना) के शुक्ल पक्ष के दशमी के दिन सुबह सेतु बाँधने का कार्य शुरू करके चार दिन के अंदर समाप्त किया गया। देवताओं के समूह के मंगल-वाद्य बजने लगे। वानर चक्रवर्ती

जलधिगादुदु सेतु करुणा जलधि चित्तैसेंदु विक्रम
जलधि जलज प्रियतनूभव माडे बिन्नहव
कलित हरुषद नगेमुखद मंडलदलनुजन कैविडिदु
बळिकिळिदननुपम सिह विष्टरवनु रघुप्रभव ।। 2 ।।
सुररु जयजयवेंनलु सुरमुनिवररु नुतिसलु सकल विद्या-
धररु होगळलु सूतमागध वंदि संदोह
बिरुदनुच्चारिसलु मारुति धिरुरे पायवधारेंनलु बं-
धुरद बहळित सेतु विद्देडे गागि नडेतंद ।। 3 ।।
अरस निदिदिरिनलि तारकि दोरेयवोलु बलुसेतु सागर
नोरेय नुगिदुब्बणदवोलु यादस कुलाधिपन
पुरद पथदवोलरिदशास्यन करेदु मोदुव मृत्यु नीडिद
करदवोल् कण्गे सेंदुदनुपम सेतु सागरद ।। 4 ।।
कीश बलदोर्वल शिला परिशासनवो रघुपतिय कीर्ति
श्री सतिय सीमंतवो शिव शिव महादेव
पाशधर नुदित प्रताप विलास विजय स्तंभवोयेंन-
ला सुराळिगे बेरग बीरिदुदा महासेतु ।। 5 ।।

सुग्रीव सैनिकों के साथ राम के पास आया। १ "करुणा-सागर प्रभो, सूनिए; सागर का, सेतु-बंधन कार्य तो संपन्न हुआ।" इस प्रकार वीरता के सागर सूर्यपुत्र सुग्रीव ने राम से बिनती की। तब राम हर्षित हो, प्रसन्न वदन, अपने भाई का हाथ पकड़े, सिंहासन से उतर कर, आये। २ देवताओं के जय-जयकार के साथ, देव-मुनियों की स्तुतियों के स्तुतिपाठ होते, विद्याधरों के प्रशंसा के साथ, सूत-चारण-भाटों के स्तुति-पाठों का घोष जब हो रहा, हनुमान "सावधान ! वीरो !" —इस प्रकार जब कह रहे थे, राम उस सुन्दर, बहुत बड़े सेतु के नज़दीक पहुँचे। ३ चंद्र की तरह, म्यान से निकाली तलवार की तरह, वरुण की नगरी के मार्ग की तरह, शत्रु रावण की हत्या के लिए मृत्युदेवता के दिये गये हाथ की तरह वह असदृश, असाधारण महासागर का सेतु राम के सम्मुख शोभायमान था। ४ उस महासेतु ने देवताओं को, इस प्रकार आश्चर्य में डाल दिया मानों —वानर-सेना के भुज-पराक्रम की प्रशंसा करनेवाला शिला-शासन हो, या रघुपति की कीर्ति रूपी लक्ष्मी की माँग (सिर के बालों के बीच का प्रदेश) हो, शिव शिव महादेव ! या यम के बल-विक्रम का ध्वजस्तंभ हो ५। विजय राघव के शत्रु-मर्दन के

विजय राघव नहित विजयकॆ बिजय माडुवॆनॆंदुबंदज
रजक रचिसिद मॆल्लडिय मडिवासि नतिशयवॊ
त्रिजगदधिदेवतॆय नंबुधि भजिसि भाळद लिट्ट तिलकवॊ
गजगलिसि तिदिरिनलि सेतु भवाब्धि सेतुविन ॥ 6 ॥
नोडि रघुपति मॆच्चि मिगॆ कॊंडाडुतित्तनु बळिक मुददलि
मूडणाशाधीशपदविय नळ कपीद्रंगॆ
बीडु बळिकॆत्तिदुदु मॊळगुव मोडगंडंबुधिय वॊलु कड्
हाडिदवु नभदॊळगॆ निस्साळदलि निर्जरर ॥ 7 ॥
बलद मुंगुडि नीलनदु पिंगलिय काहु सुषेणनदु त-
द्बलद मेलारैकॆ नळ शतबलि गवाक्षरदु
खळर कुळ्ळॆरुगळ मैगावलु विभीषण देवनदु पडि
बलद तॆरळिकॆ केसरिय वशवाय्तु पयणदलि ॥ 8 ॥
एनु महिमॆयॊ कंद केळ् लक्ष्मी निवासन निरुपमद ली-
ला नटणॆ यनुभवद नररूपकद राजसद
आ नळिनभव शंकरर सुय्दान वाय्ता सकल वानर
सेनॆ गिंद्रादिगळु सेवक राय्तु पयणदलि ॥ 9 ॥

लिए आने के विचार से (प्रभावित हो) ब्रह्मा नामक धोबी ने मानों कोमल पावड़ा बिछाया हो, या समुद्र ने तीनों लोकों की अधिदेवताओं की पूजा करके मानों —माथे पर तिलक लगा लिया हो, इस रीति से तथा संसार रूपी सागर के सेतु की तरह वह महासेतु सामने शोभायमान था । ६ रघुपति को वह सेतु बहुत ही पसंद आया । उसने नल की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उसको पूर्व दिशा के आधिपत्य का सम्मान बहुत ही खुशी में दे दिया । गरजते बादलों को देखनेवाले समुद्र की तरह वानर-सेना ने डेरा उठाया । आकाश में देवताओं के नगाड़े बजने लगे । ७ (युद्ध) यात्रा में वानर-सेना का अग्र भाग नील के आधीन था । सेना के पिछले भाग की रक्षा की जिम्मेदारी सुषेण की थी । उस सारी सेना की ऊपरी देख-रेख नल, शतबली, गवाक्ष के वश में थी। राक्षसों के कपट (मायावी) युद्ध से बचाने की ज़िम्मेदारी विभीषण की थी । पार्श्वसेना को आगे बढ़ाते रहने की ज़िम्मेदारी केसरी के वश में थी । ८ लक्ष्मी-निलय के (श्रीविष्णु) रजोगुण से संयुक्त असाधारण मानव-रूप (राम) के इस नव लीला की नटना की महिमा का वर्णन किन शब्दों में करें ? सुनो लव । ब्रह्माजी तथा शिवजी वानर-सेना के रक्षक बने । यात्रा के अवसर पर, इन्द्रादि देवता समूचे वानर-सेना के सेवक बने । ९

अमल तारॆयलहितजय संक्रमित लग्नद लरसनुदधि
क्रमनुरु स्कंधावलंबन नाद नॊलविर्नलि
अमरपति मॊदलाद दिविज प्रमुख रुग्घडणॆयलि गमनो-
द्यमव माडिदनखिळ कपिनायकर गडणदलि ॥ 10 ॥

पडॆय पदघट्टणॆय दट्टणॆ गडिगडिगॆ संगविसिद बुधिय
हडगिन वॊलॊलॆ दाडु तिर्दुदु कट्टॆ कडलिनलि
नडॆ वरिट्टॆडॆयाडि कदनद कडुगलिगळुब्बॆद्दु लयदलि
घुडुघुडिप मुगिलंतॆ मुंचितु मारुताध्वदलि ॥ 11 ॥

नॆऱय दाय्ताकाश गिरिगळ हॊऱॆगॆ वाळर हॆम्मरंगळ
निरुकिदति मनदतुळ बलरुत्तळ गमनदलि
करद मुडुहिन गिरिगळणहिन गुरुबुगळ कॆकालु मॆट्टिन
तुऱुसु तोटिय भटर धृति गॆंडिसिदुदु मूजगव ॥ 12 ॥

ईसि हाय्दरु कॆलरु बालव बीसि हाय्दरु कॆलरु बॆंगॊ-
ट्टा सुरदि नडॆसिदरु तंतम्मखिळ सैनिकव
एसु बल्लिद भटरॊ हरिय विलास वैचित्रकद घनतॆय
मैसिरियदॆंतुटॊ महादेवॆंदु दमरगण ॥ 13 ॥

शुभ नक्षत्र में, शत्रु-विजयी लग्न रहते, राम ने हनुमान के कंधे पर सवार हो लंका के लिए यात्रा करते समुद्र पार किया। देवेंद्रादि प्रमुख देवता जब गुणगान कर रहे थे तब वानरनायक-वृन्द को साथ ले, राम ने यात्रा की। १० वानर-सेना के पदचाप के आघात से समुद्र पर के जहाज़ की तरह सेतु डाँवाँडोल हो झूलने लगा। सेतु पर यात्रा करनेवालों की तंगी के कारण युद्धवीर बड़े उत्साह के साथ उछलते-कूदते, छलाँग मारते, गरजते प्रलयकालीन बादलों की भाँति आकाश-मार्ग से आगे बढ़े जा रहे थे। ११ चट्टानों को ढोते हुए वीरों के तथा भारी पेड़ों को बगलों में दबोचे उत्साही बलवानों के लिए चुस्त क़दम उठाने के लिए आकाश का मार्ग भी काफ़ी न हुआ। हाथों से पहाड़ों को उठानेवाले, कंधों पर पहाड़ों को ढोनेवाले, चट्टानों को लुढ़कानेवाले, हाथ-पैर पटककर धक्का देनेवाले कपिवीरों के नटखटपन को देख तीनों लोक भयभीत हुए। १२ कुछ एक तैरकर पूँछ पटकाते हुए, कुछ एक पीछे से डराते-धमकाते हुए अपनी-अपनी सेनाओं का संचालन कर रहे थे। ये कितने महान समर्थ वीर है! श्रीहरि की सुन्दर महत्ता की श्री शोभा का वर्णन किन शब्दों में किया

जगद विलयद मुगिल मोह्र देंगेंदवोलु नभवेंदे शाखा
मृगदमय वाय्तणुग केळुव्वरद कपिवलद
नेंगळिकेय गमनदलि कत्तलें बिगिदु विडदिरुतिर्दुदे नर
जगतियनु दिवरात्रि काणिसदाय्तु जगकेंद ॥ 14 ॥
मूरुदिन परियंत हाय्दुदु तारुथट्टिन लंबुधिय मे-
लारुदिन परियंत विट्टुदु बीडु कपिबलद
बेरे सृष्टिय नबुज भव मुख दोऱसिदु दिल्लेंब वोलु मै-
दोऱिदुदु कपिसेनें नेंल नेंनितरगलदलि ॥ 15 ॥
तेंरळि तल्लि मेलें बलमोह्ररिसि मुंगारिन मुगिलगळ
मोंरहदब्बरणेंयलि संवरणेंयलि तरुगिरिय
शरधि विलयद लमर शैलद शिरवनोंदेंदु ब्बेळ्ववोलु नि-
ष्ठुरतेंयलि मुंबरिदु मुंचितु वैरिजनपदव ॥ 16 ॥
तोंलगदेंडें गेंडे गिरुव तलेंगावलिन रक्कस भटर तलेंगळ
तोंलग हाय्कुंत कोणेंकुत्तुऱ कूडें शोधिसुत
अळिबलर तलेंगाय्दु लंकेंगे कळुहु तोत्तं बरिसि जनपद
दोळगे नडेंदुदु रघुवरूथिनि रावणासुरन ॥ 17 ॥

जाय ! महादेव ! —इस प्रकार देवताओं ने उद्गार निकाले । १३ जगत-प्रलय के समय बादलों के घिर आने के सदृश आकाश वानरों से घिर गया । भारी-भरकम कपिसेना के इस प्रसिद्ध यात्रा के कारण अँधेरे ने जगत को हठात् घेर लिया । जगत में अँधेरे-उजाले का अंतर ही मालूम न पड़ा । (दिन-रात जानने में दुनिया असमर्थ रही ।) १४ कपि-सेना ने तितर-बितर होकर तीन दिनों में समुद्र पार किया । तदनंतर छः दिनों में (दिनों तक परिश्रम कर) पड़ाव डाला । ब्रह्माजी मानों अन्य सृष्टि-कार्य के लिए अपना मुखड़ा न दिखाते हुए, बैठे हों इस रीति से धरती की सारी लंबाई-चौड़ाई पूरी तरह कपि-सेना से व्याप्त थी । १५ खरीफ़ की वर्षा के बादलों की गड़गड़ाहट की तरह शोरगुल मचाते, पेड़-पहाड़ों को तैयार रखते कपि-सेना ने वहाँ से आगे की यात्रा शुरू की । प्रलय की दशा में जैसे समुद्र मेरुपर्वत पर अपने थपेड़े जमाता है, उसी प्रकार सेना बड़ी निर्दयता के साथ शत्रुराज्य में घुसकर आगे बढ़ने लगी । १६ जहाँ-तहाँ सुरक्षा पर नियुक्त राक्षस योद्धाओं के सिर काट डालते हुए, हर कोने में ढूँढ़ते हुए, बलहीनों को रक्षा करते हुए उनको लंका भेजते हुए, रावणासुर के राज्य को आक्रमित करते हुए राम की सेना आगे-आगे बढ़ी । १७

उसुरलच्चरि सुरनरोरग विषयवीथिय विमललक्ष्मिय
नोसल माणिकदंतें मेरेदुदु राष्ट्र रावणन
पशुगळे सुरपशु महीज प्रसरवे गीर्वाणकुज घन
रसवें निरुपम सिद्धरसवेनें सकल विभवदलि ।। 18 ।।
कळवेमयवा नेलनु कब्बिन हळुवमयवा होलनु नंदन
वळयमयव वनिचय कृतकाचल महाद्रिचय
होळल मयवा मार्ग मंदानिलनमय दिगुवर्ग सिरियो-
ब्बुळिय मयवा विषय वीथि कुबेर सहभवन ।। 19 ।।
कळियलम्मवु कूडें कुजदलि फलनिचय नीर्देगेय लम्मवु
कोळगळलि हूबीय लम्मवु गिडु लताळियलि
बेळेयलम्मवु कामरनु काडोळगें कामन मित्रनल्लदे
सुळिय लम्मवु रुतुगळा रावणन राज्यदलि ।। 20 ।।
करेदोडो येनुतिहुदु सिरिदश शिरन घनविषयांतराळ दो-
ळरसुतनदग्गळिकें येंतुटो शिव महादेव
दोरेयेनिसिता बलिय राज्यद परम विभवकें मूरुजगदलि
सरियदारै सिरियोळा लंकाधिनाथंगें ।। 21 ।।

इसका वर्णन आश्चर्यकारक है ! देव, मानव, नागलोकों की लक्ष्मी के माथे की मणि के सदृश रावण का देश शोभायमान था। वहाँ की सभी गायें कामधेनु-सदृश थीं; सभी वृक्ष कल्पवृक्ष-सरीखे थे। सत्वयुत सभी रस सिद्ध रस-सदृश थे; समस्त वैभवसंपन्न थे। इस प्रकार रावण की नगरी शोभासंपन्न थी। १८ जहाँ देखो वहाँ सारी धरती धान की फ़सल से लदी थी; सारी धरती पर ईख के खेत दिखायी पड़ रहे थे; सारी भूमि नंदनवन-सदृश सुन्दर थी। महापर्वत सभी क्रीड़ा-पर्वत थे। लंका राज्य की सड़कें नगरियों से भरी हुई थीं। दिशि-दिशाओं से ठंडी हवा बह रही थी। कुबेर के भाई रावण के राज्य की सारी सड़कें सम्पत्ति-समृद्धि से सराबोर थीं। १९ पेड़ों पर लदे फल समाप्त हो जाने का धैर्य नहीं कर सकते; तालाबों को सूख जाने का साहस नहीं हो सकता। पेड़-पौधों पर, लता-गुल्मों पर फूल समाप्त नहीं हो सकते। जंगलों में गंदे पेड़-पौधों को पैदा हो बढ़ने का साहस कहाँ ? रावण के राज्य में मन्मथ (काम) का मित्र वसंत के सिवा अन्य ऋतुओं को प्रवेश करने का धैर्य ही नहीं। २० दशकंठ के राज्य में पुकारते ही संपदा 'ओ आई' कहकर दाद देती है। उसके राज्य-संचालन-व्यवस्था का कहाँ तक और किन शब्दों में वर्णन करें ! शिव शिव महादेव ! राजा बलि के राज्य-वैभव के सदृश

कॆडुवुदे नरिदय्य मार्गदि नडॆव रायर दॆसॆय लंका
पॊडवि तळपट वाय्तु कपिवाहिनिय काल्दुळिगॆ
ऒडॆद वखिळ ग्राम पुर खर्वड मडंब सुखेड वगलकॆ
हुडिय लद्दुदु हरिबलद हरिधाळियलि धरणि ॥ 22 ॥
पयण पयणकॆ निम्म सीताप्रियन बीडिकॆ गरमनॆय हरि
हयन नेमद लमल वर्धकि माडिदनु मनद
भयव नुळिद मरॆंद्रना पाळॆयकॆ कल्पद्रुमद फलसमु
दयव कळुहुत्तिर्दननुचररिंद नंदनद ॥ 23 ॥
दिवस मूरकॆ बंदु बिट्टुदु भुवन गिरियलि पाळयवु पा-
र्थिव महान्वय कुमुद रघुराजेंद्र चंद्रमन
तिविव तीव्र मणिद्युतिय खव खविप हेमप्रभॆयलिननु
गवसणिगॆयिदुगिद वॊल्कण्गॆ सॆदुदरिनगर ॥ 24 ॥
जीय लंकॆयिदोग रक्कस रायनरमनॆ तोरुतिर्दे पू-
र्णायतद निरुपम निशाकर बिंबदंददलि
आयितॊदे पयण समरोद्दायकरु संवरिसि कॊळलस
हायशूरन समरकॆंदसुरेंद्र कैमुगिद ॥ 25 ॥

रावण का राज्य था। श्रीसंपदा में लंकाधिपति की बराबरी तीनों लोकों में कौन कर सकता है ? २१ परम्परागत मार्ग का अनुसरण करनेवाले राजाओं के लंका राज्य का अब विनष्ट होना क्या असंभव है। कपि-सेना से कुचले जाकर अब वह साफ़ हुआ (मैदानी स्वरूप प्राप्त किया)। सारे गाँव, शहर, पुर, ग्राम आदि छिन्न-विच्छिन्न हो गये। कपि-सेना की जबर्दस्त चढ़ाई के कारण सारी धरती व्यापक रूप से धूल में डूब गयी। २२ यात्रा के हर पड़ाव पर, इन्द्र की आज्ञा से देवताओं के बढ़ई विश्वकर्मा ने श्रीराम के लिए महलों का निर्माण किया। देवेन्द्र ने रावण का भय त्यागकर श्रीराम के पड़ावों के लिए कल्पवृक्ष के फल नंदनवन के सेवकों द्वारा भेज दिए। २३ राजाओं के श्रेष्ठ कुल रूपी नीलकमलों के लिए चन्द्र-स्वरूप बने रघुराम के पड़ावों ने तीन दिनों तक यात्रा करते आकर भुवनगिरि पर डेरा डाला। आँखों को चौंधियाँ देनेवाली वज्रकांति से तथा जगमगाते स्वर्णप्रभा से संयुक्त शत्रु की राजधानी आवरण से मुक्त सूर्यबिंब की तरह जगमगायी। २४ "भगवन्, यही लंकानगरी है। पूर्णिमा के पूर्णचंद्रबिंब-सदृश राक्षसराजा का राजमहल जगमगा रहा है। अब यात्रा केवल एक मंज़िल भर रह गयी। इसलिए (हमारे पक्ष के) रणवीर असमवीर रावण से युद्ध

बंदरा समयदलि सनक सनंदनाद्यरु गुप्तदलि रघु-
नंदनंगाम्नाय विधि विजयाभिषेचनव
अंदु विरचिसि हाय्दरवरविंदसंभवसभेगे बळिक-
ल्लिद मेलिन बिब लंबिसितपरजलधियलि ॥ 26 ॥
बीडु बिट्टुदु बळिक सिडिल सगाढ सबुदद निशित गिरिगळ
कोडु गल्गळ खणिखटिल कडुहु गळलिन सुतन
गाडिसिदुदी वार्ते विबुध विभाड सभेयलि सारणन खळ
नोड कळुहलु बंदनव तरुमृगद रूपिनलि ॥ 27 ॥
अंदि निरुळोलग दोळवननु हिंदे सिक्किद शुकननिब्बर
निंदिरिसिदरु हिडिदु बळियलि राघवेश्वरन
इंदु बंदवनिवनु बेहिगे हिंदे बंदव निवनु चित्तै-
सेंदु कपिपति तोरिदनु रघुपतिगे कैमुगिदु ॥ 28 ॥
दूतरहुदेयेंदु रिपुनिर्धूत धूळीपटल रिपुसह
जातननु बेसगोळलु कैमुगिदंजु तहुदेनलु
भूतळाधिप नवरनाग कृपातिशयदलि नुडिसिदनु नी
वेतकिल्लिगे बंदिरेंदभिभाव वचनदलि ॥ 29 ॥

की तैयारी कर लें।" —इस तरह विभीषण ने हाथ जोड़े विनती की। २५ उस समय, वहाँ सनक-सनंदनादि देव-ऋषि गुप्त रीति से प्रकट हुए। राम की रीति-रिवाज के अनुसार विजयाभिषेक संपन्न बनाकर ब्रह्माजी की सभा में चले गये। तत्पश्चात् (भगवान्) सूर्य पश्चिम समुद्र में उतरे (डूबे)। २६ भारी स्फोटक (बिजली की कड़क-सदृश) आवाज़ के साथ पैने चट्टानों तथा शिलाखंडों को हाथ में धारे 'खट्खटल' शब्द के साथ सुग्रीव की सेना ने अपनी वीरता प्रकट करते डेरा डाला। यह समाचार रावणासुर की सभा में प्रसारित हुआ। (इस समाचार की) सत्यता का पता लगाने के लिए रावण ने सारण को भेजा। वह कपि-रूप धारे आया। २७ उस दिन रात को भरी सभा में, उसे (सारण को) तथा पूर्व में गुप्तचर के रूप में आकर फँसे शुक को क़ैद कर लाकर राम के सम्मुख खड़ा किया। "आज आनेवाला यह है। गुप्तचर के रूप में, पूर्व में आनेवाला यह है। देख लें।" इस तरह कहते कपियों के अधिपति सुग्रीव ने हाथ जोड़ राम को दिखाया। २८ शत्रुओं को हराकर चकनाचूर कर देने में समर्थ श्रीराम ने रावण के भाई को संबोधित करते पूछा— "क्या यह सच है कि ये दूत हैं?" हाथ जोड़े डरते-डरते विभीषण ने उत्तर दिया— "जी हाँ।" तब राम ने अत्यन्त करुणापूर्ण लहजे में,

जीय निम्मय बळिगॆ रक्कस रायकळुहिद नॆम्म निम्मबु
जायताक्षिय मनवचन कायदलि कामिसदॆ
कायवनु कैगाव नीतिय दायवनॆ कैविडिदु कपिकट
काय सहितवॆ होग हेळिदनॆंद ररसंगॆ ॥ 30 ॥
हेळुवडॆ नाव् स्वामिसंपद दाळुतनदलि नुडिवरल्ल नृ-
पाल चित्तैसी चतुर्दशभुवन वावंगॆ
आळुवदु तेत्तीस रावंगाळुतन वागिहरु नीविद
रेळिगॆय नरिदरिदु बहरे बवर करिभटन ॥ 31 ॥
हिंदॆ वैरव नॆसगि नॊंद पुरंदराद्यरु बंटकॆलसकॆ
संदरॆंबुद नरिय बेहुदु केळि निम्मॆडॆगॆ
बंद वीर विभीषणा सुर निंद मिक्का दरिभटर तृण
वॆंदु बगॆववनल्ल चित्तै सॆंद ररसंगॆ ॥ 32 ॥
कॊणकि हॆंडिर बिट्टु समरांगण दॊळगॆ शरणॆंदु शूरा-
ग्रणि गळसुवनु सलहि कॊंडरु सुर नरोरगरु
मणिदु बदुकिदरिंद्र यम दिनमणि विरिंचादि गळु निम्मडि
यॆणिकॆ लेसागिरदु चित्तैसॆंदररसंगॆ ॥ 33 ॥

(उन दूतों से) तिरस्कार करते पूछा, "तुम यहाँ क्यों आये ?" २९ "स्वामिन्, राक्षसराजा ने हमें आपके यहाँ भेजा। आपकी कमल-लोचना सीता को काया-वाचा-मनसा न चाहते हुए आप अपने को बचा लेने की व्यवस्था कर कपि-सेना के साथ यहाँ से रवाना होने की आयोजना करने की सोचें —इस प्रकार आप से कहने के लिए हमें आज्ञा हुई है।" —इस तरह उन्होंने राम से कहा। ३० "हम प्रभु (रावण) की संपत्ति के दास होने के कारण आपसे यों जान-बूझकर नहीं कह रहे; ध्यान दें राजन्; ये चतुर्दश भुवन जिसके आधीन है, तैंतीस करोड़ देवता जिसके आधीन हो सेवक बने हुए है, उस (रावण) की महत्ता को जानते-बूझते हुए भी शत्रुत्व मोल ले यों युद्ध के लिए आना क्या उचित है ?" ३१ "पूर्व में, शत्रुता मोल ले युद्ध-व्यथा पानेवाले देवेन्द्रादि देवता रावण के सेवक जो बने, यह बात आपके पास आए विभीषण असुर से जानकर समझ लें। उनसे बढ़े-चढ़े वीरों को (रावण) तिनके के बराबर भी नहीं मानता। ध्यान से सुनें।" —इस तरह शुक-सारण ने राम से कहा। ३२ "रावण को छेड़कर, अपनी पत्नियों को त्याग युद्धभूमि में शरणागत हो देवता, मानव, नागों ने अपने प्राण बचा लिये। हारकर शरणागत हो इन्द्र, यम, सूर्य,

मलेंतु निम्मनरण्य भूपति तलेय तेत्तुद नरियिरे दिट
हळचि हदुळदि होग बल्लिरे हगेय हरिबदलि
बलविदनु तीव् नच्चि रिपुवनु गेल समर्थरे सूसलिन परि-
मळके सिक्किर्दिलिय तेरनहुदेंद ररसंगे ॥ 34 ॥
भ्रमे यिदेकेले जीय नेरेदी द्रुम मृगंगळिगळु कुवरे हर
कमल भवरनु बगेयदति मनदधट रक्कसरु
चमतुकारद चटुळ जंघाक्रमवे कोग्गिय जेन कोनेमर
दमळफल राजिगळे रक्कसरेंदररसंगे ॥ 35 ॥
गिरिय पडेगल्लवके निजमंदिर वणलगळे संबळवु सि-
गरके नाणिन त्राणदुडिगेगे बाल बेटेगर
सरळ कंडरे हलुगिरिदु गिरि गिरिकु गुट्टुव विवर बलदलि
धुरव जयिसुवु दरिदु देवरि गेंदरा चररु ॥ 36 ॥
ऊर कोंडुबुळिय नुंडुप चारणेगे होक्किरव नोब्बने
वीर शत साविरके संधिसिद सम समरदलि
ऊर कोळदुंबळिय नुण्णदे होरि सावरे संगदलि वि-
चार निमगुंटल्लवो हेळेंद ररसंगे ॥ 37 ॥

ब्रह्माजी, आदियों ने अपने प्राण बचा लिये। आपकी (यह युद्ध की) मंत्रणा ठीक नहीं है। सोच-विचार कर देखें।" इस तरह उन्होंने राम से कहा। ३३ घमंड करनेवाले तुम्हारे अनरण्य राजा ने जो सिर समर्पित किया —यह क्या आप नहीं जानते ? युद्ध में शत्रु का सामना कर क्या आप सुरक्षित लौटे जा सकते हैं ? इस वानर-सेना पर भरोसा कर आप क्या शत्रु को जीत सकते हैं ? ऐसा है सामर्थ्य ? तिल-चने की बनी मिठाई की खुशबू से फँसे चूहे की हालत क्या आपकी नहीं होगी ? इस प्रकार शुक-सारण ने राम से कहा। ३४ "स्वामिन्, आप किस फेर में हैं ? ईश्वर, ब्रह्माजी की परवाह न करनेवाले दृढ़निश्चयी वीर राक्षस पेड़ों पर विचरण करनेवाले इन बन्दरों से क्योंकर डरें ? राक्षस क्या चमत्कार भरे उछल-कूद में (इनकी तरह) चंचल हैं ? क्या राक्षस पेड़ों के फल हैं जो झड़ाए जा सकें ?" इस तरह उन्होंने राम से कहा। ३५ "पहाड़ चट्टानों की गुफाएँ इनके घर हैं। दाढ़ का ही संबल है। अलंकृत होने तथा गुप्तांगों को छिपाने के लिए पूँछ ही एक मात्र सहारा है। शिकारियों के तीरों को देखते ही दाँत निपोरकर घुड़कना भर जानते है। ऐसों के भरोसे पर युद्ध जीतना आपके लिए तो असाध्य ही है राजन् !" इस प्रकार उन गुप्तचरों ने कहा। ३६ गाँव को जागीर के तौर पर पाकर, मुफ़्त में उसका

जनप च्चित्तैसिवर दंतिर लनुवरव दंतिरलि रावण-
ननुज निमगति हितवनेंदे मनकॆ तॊरितल
कॊनॆयलड्रिविरि कपटदभिगत घनतरद कार्यवनु नमगे
किनितु कष्टदमातु होगलियेंदरा चररु ॥ 38 ॥
ईतनीगळु निम्म कैयल राति भटरनु कॊलिसि कडॆयलि
कैतवदलॊळ हॊक्कु पायव नॆनॆदु नीवाळ्व
भूतळव नॆम्मात नाळ्व महीतळव नॊंदागि सिक्किद
सीतॆ सहितवॆ सॆळॆव बुद्धिगॆ माडुवनु मनव ॥ 39 ॥
ललनॆगोसुग रणदॊळण्णन कॊलिसिदवनंगनॆय भोगिस
दलगि गॊड लॊड्डुवनॆ हुसियदु देव चित्तैसु
गलभॆयनु गंटिक्कि हगॆवन कॊळुगुळकॆ गुड्रिमाडि मॆल्लनॆ
तॊलगलुळ्ळवनी कपीश्वर नॆंद ररसंगॆ ॥ 40 ॥

उपभोग करते, सम्मुख उपस्थित असाधारण युद्ध में, सेवा मनोभाव से उपस्थित होकर युद्ध करनेवाले वीर तो सौ हज़ार में कोई एक है। गाँव को जागीर के तौर पर न पाते, उसका अमीर उमराव के तौर पर उपभोग न करनेवाले क्या युद्ध में लड़कर अपने प्राणों की आहुति चढ़ाएँगे? क्या आप यह विचार नहीं जानते?" इस तरह गुप्तचरों ने राम से कहा। ३७ "सुनिए राजन्, इन कपिसैनिकों की बातें जाने दीजिए। युद्ध की बात भी रहने दीजिए। रावण का भाई विभीषण आपको अपना बड़ा हितू लग रहा है न? अंत में यह बड़ा धोखेबाज निकलेगा। आप देखते रहिए! हम पहाड़ सिर पर क्यों उठा लें? जाने दीजिए। इन बातों को।" इस प्रकार उन गुप्तचरों ने कहा। ३८ "अब यह (विभीषण) आपके हाथों शत्रु वीरों की हत्या कराकर, अंत में छल-कपट से आपको अपना बनाकर युक्ति निकाल, एक दिन तुम्हारे राज्य को तथा हमारे रावण से संचालित शासन को, सारी धरती को, सीता-सहित हथियाने की योजना बनाए बिना न रहेगा। देखते रहिए। ३९ "स्त्री के पीछे (स्त्री के लिए) युद्ध में बड़े भाई की हत्या करानेवाला उस स्त्री के साथ सुखोपभोग करना छोड़ बेकार अपने को युद्ध में क्यों बलि चढ़ाए? यह सरासर झूठ है। झगड़ा मोल लेकर, शत्रु को युद्ध के लिए लाचार कर, चुपके से खिसक जानेवाले यह कपियों के अधिपति सुग्रीव हैं।" इस तरह उन्होंने राम से कहा। ४० "आश्रय लेते, धीरे-धीरे राजकार्य की रीति निश्चित करते

आतुमॆल्लनॆ राजकार्यद रीतियनु निश्चैसि नॆगळुवु
दातुरद संग्राम सुखवागिरदु निम्मडिगॆ
ईतगळ नंबदिरि सेरुव सीतॆ हुसिकैयिक्कि सिक्किद
कोतिगळ कथॆयहुदु देवरिगॆंदरा चररु ॥ 41 ॥
धरणिपति केळदरि नीय्यनॆ तॆरळुवदु निजपुरिगॆ नृपरनु
नॆरहुवदु नॆलॆगॊळिसुवदु निजराज सैनिकव
अरसि बेकादरॆ महासंगरकॆ निलुवुदु कादि गॆलुवुदु
परम मंत्रविदॆंनलु कपिराजेंद्र कोपिसिद ॥ 42 ॥
बाय हॊय् बगळुव निशाचर नायिगळनॆंद निलजगॆ कपि-
राय नॆमिसॆ कंडु तप्पेनॆंदु रघुनाथ
वायुजन निलिसिदनु दूतर नोयिसु वदपकीर्ति नमगिद
रायतिकॆ येकॆंदु मिगॆ मन्त्रिसिद नवरुगळ ॥ 43 ॥
चररु तम्तम्मरसुगळ भुज सिरिय नाहव दुब्बुगॊब्बिन
हरुहनूर्जित सुप्रतापव नधिक वैभवव
परम कीर्तिय वैरिरायर लॊरॆवुदे भूषणवला नी-
करिसि नुडिवुदु नमगॆ गुणवल्लॆंद निनजंगॆ ॥ 44 ॥

जो युद्धकार्य आपने उतावली में उठाया है, उससे आप कदापि सुखी न होंगे। इन पर भरोसा मत कीजिए। सीता सर्वथा आपको प्राप्य नहीं। हाथ डाले, फँसे हुए बन्दरों की कथा की तरह आपकी दशा (दुःस्थिति) होगी।" इस प्रकार उन गुप्तचरों ने समझाया। ४१ "अतः हे राजा राम! सुनो। तुरंत अपनी राजधानी लौट जाकर राजाओं को इकट्ठा करो। तुम अपने राज्य की सेना को तैयार कर लो। तुम्हारी रानी अगर तुम्हें चाहिए तो, तभी महायुद्ध में डटो। युद्ध में लड़कर जीतो। यही श्रेष्ठ उपाय है।" —इस प्रकार गुप्तचरों से बताए जाने पर वानरराज, सुग्रीव का पारा चढ़ गया। ४२ "इन भूँकनेवाले राक्षस कुत्तों के मुँह पर थपेड़े जमाओ।" —इस तरह सुग्रीव ने हनुमान को आज्ञा दी। यह देख रघुनाथ ने हनुमान को रोकते हुए कहा— "इसमें क्या ग़लती हुई? दूतों (राजदूत) को दुखाना, हमें बदनाम करेगा। ऐसी धृष्टता हम क्यों करें?" —यों रघुनाथ ने दूत को क्षमा कर दिया। ४३ "सेवकों का अपने-अपने प्रभुओं की भुजशक्ति, युद्ध का अतिशय गर्व (घमंड), महान वीरता, अधिक वैभव, अनुपम कीर्ति, यशोगाथा शत्रु राजाओं के सामने वर्णन करना उनका स्वाभाविक धर्म है। उनको धिक्कारना उचित नहीं है।"

शरधि काणिकॆ गॊट्ट रत्नाभरणगळ नवरिगित्तु नुडिदनु
धुरकॆ नीव् निदिरिसि कॊंडिरि निम्म निजपतिय
चररु नीवॆमगीग नम्मय वरव निम्मव गरुहिसुवु दॆ-
दरिदिशापट मल्लनुचितदलवर बीळ्कॊट्ट ।। 45 ।।
नोड लिवरिगॆ तोऱि नम्मय बीडिनतिबल भटरनॆल्लर
नोडलंजदॆ कळुहु बळिकॆंद निल संभवगॆ
खोडि हॊगदपजयवु जिनुगद खेडतन बारिसद नृपवर
नाडि तोऱिसि कळुहॆ कंडरु बंदु रावणन ।। 46 ।।
असुरपति शुक सारणर नीरसद मुख चेष्टॆगळना भय-
रसद बळियिगितव मनदनुमान मार्गदलि
ससिन विरदी राजकार्यद विपयवॆंदऱिदवर माता
डिसदॆ कैसन्नॆयलि कळुहिदनखिळ परिजनव ।। 47 ।।
हरॆदु दोलगवाक्षणदॊळा चररनॊळ मंदिरकॆ रावण
करॆसि कॊंडरि भटर गमनस्थितिय बॆसगॊळलु
हरहिदरु बळिकवदिरद्भुत भरित भयभारणॆय जय सं-
गरद हसरव निदिरिनलि लंकापुराधिपन ।। 48 ।।

इस प्रकार राम ने सुग्रीव से कहा। ४४ समुद्र से भेंट के तौर पर पाये गये रत्नाभूषणों को रावण के गुप्तचरों को देकर, "युद्ध के लिए अपने स्वामी को तैयार होने के लिए कहो। अब तुम हमारी तरफ़ के दूत होकर, हमारे आने का समाचार अपने राजा से कहो।" इस तरह कहते शत्रुओं को तितर-बितर कर भगाने की शक्ति रखनेवाले वीर राम ने उनको समुचित रीति से बिदा किया। ४५ "हमारी सेना के बलशाली वीरों को इन्हें देखने दो। निर्भय हो सबको देखने दो।" इस तरह निर्दोष, पराजय की वेदना-रहित, निर्भीत राजा राम ने आंजनेय से कहा। पड़ाव (राम की सेना) के प्रमुखों को दिखाकर भेज दिए गये शुक-सारण ने आकर रावण को देखा। ४६ राक्षसराजा ने शुक-सारण के उतरे रंग के चेहरे तथा भयभीत मुखड़े देख भय की सूचना का मन ही मन अनुमान लगाते, "ये जिस राजकार्य के निमित्त गये थे —शायद उसका फल कुछ अनपेक्षित-सा लगता है।" —इस निष्कर्ष पर पहुँचे। उनसे कुछ न बोलते हुए हाथ के इशारे से ही वहाँ उपस्थित परिवार के लोगों को परे भेज दिया। ४७ उसी क्षण सभा विसर्जित हुई। उन गुप्तचरों को अपने अंतरंग कक्ष में बुलवाकर शत्रु-सेना के आगमन के बारे में पूछताछ की; स्थिति गति के बारे में पूछा। तदनंतर शुक-सारण ने अद्भुत भयानक विजय

नॆरदु बंदिदॆ जीय जवनुब्बरद लयभैरवन कल्पद
हरन कल्पांतद कठोरद घन कृशानुविन
हरगि नग्गद सेनॆ मंदर सुरशिलोच्चय तारकाद्रिय
सरिस दॆप्पत्तॆळु कोटि कपींद्ररॊग्गिनलि ॥ 49 ॥
आ वनौकस बलकॆ काल ग्रीव गॆणॆ यॆनिपतुळ बल सु-
ग्रीवनॆंब कपींद्रपतिया कपिकुलेंद्रंगॆ
देव राघवनॊडॆय नातन मैवळियलदॆ जीय बाळॆनु
ताविरंचिप्रमुख दिविजगणंगळिदिरिनलि ॥ 50 ॥
सुळियलंजुवरा नृपालन बलदॊळगॆ जवमृत्युगित्युग
ळुलुकलंजवरभव कमल भवामरेश्वररु
बॆळगलंजुव नबुज सखनुरॆ तॊळललंजुव ननिलनेन-
ग्गळनॊ रायरॊळमम राघवराय नवनियलि ॥ 51 ॥
हॊगबहुदु लयपावकन नालगॆग ळिरुबिन नडुव नडुगदॆ
हॊगबहुदु हॊगॆदेळ्व हालाहलद नडुगडल
हॊगबहुदु मृत्युविन बलुताळिगॆ यॊळगॆ हॊगबारदा सं-
युग भयंकर राघवेंद्रन राजसैनिकव ॥ 52 ॥

सेना का (राम की उस सेना का) विस्तार तथा उसका विवरण लंकानगरी के स्वामी को दिया। ४८ मदभरा यम, प्रलयकालीन भैरव, युगप्रलयकारी शिव तथा युगांत्य की भयानक अग्नि-सदृश जो विशाल सेना-सागर है, वह मंदार पर्वत तथा तारकाद्रि-सदृश सतहत्तर करोड़ कपीन्द्रों को साथ लिये आकर इकट्ठा हुआ है। ४९ नीलकठ (शिवजी) समान महाबलशाली सुग्रीव नामक व्यक्ति उस महान कपि-सेना का राजा है। उस कपिकुल राजा के अधिपति है प्रभु राघव देव। उसके सम्मुख उपस्थित हो— "जीते रहो स्वामिन्" इस तरह प्रशंसा करनेवाले ब्रह्मादि प्रमुख देवता उसके आधीन हैं। ५० उस राजा के राज्य में, सेना में यम, मृत्युदेवता आदि प्रवेश करने से डरते हैं। ब्रह्मा, शिव, देवेंद्र वग़ैरः वहाँ चलने-हिलने के लिए भी डरते हैं। सूर्य उस सेना पर अपनी प्रखर रोशनी बिखेरने के लिए भी डरते हैं। वायु भी डर के मारे धीरे-धीरे बहते हैं। बाप रे! जगत के राजाओं में राजा रघुराम कितना महान है! ५१ प्रलयाग्नि की जलती ज्वाला रूपी जिह्वाओं के मध्य होकर जा सकते हैं। धुआँदार विष-भरे समुद्र के मध्य बिना काँपे डूब सकते हैं। मृत्यु के कंठ में प्रवेश कर सकते हैं। लेकिन युद्धभयंकर राघवेन्द्र की राज-सेना में प्रवेश पाना अत्यंत कठिन है। ५२ "हे राक्षसराजा, सुनिए। वह मानवराजा

अॆलॆ निशाचरराय केळगळनु निनगिंदा नराधिप
नलघुबल नीनॆंदु बगॆदिहॆ निन्न चित्तदलि
तिळिवडरि दादुदु नियुद्धकॆ निलकुवदु बॆरगल्लवे जय
दुळुह निन्नलि काणॆनॆंदनु सारणनु नगुत ॥ 53 ॥
साकु गळहदिरत्त सार्निनिकॆ तडॆदॆयॊ शुकयॆनलु लो-
कैक बलचित्तैसु तन्नय विधिय निल्लिद
ई कडलनुत्तरिसि वीर वनौकसर कटकवनु हॊक्कॆनु
कैकसॆय मगनिंद बंधन वाय्तु तनगॆंद ॥ 54 ॥
कट्टिदनु निन्नवगॆ लंकॆय पट्टवनु पतिकरिसि रघुपति
तॊट्ट बाणकॆ बंद शरधिय हूळि शैलदलि
कट्टिदरु सेतुवनु कपिगळु बिट्टरीचॆय तडियलमररु
कट्टिदरु बळिकर मनॆगळनु पयण पयणदलि ॥ 55 ॥
कलिललाट ललाम केळा बलद मेलारैकॆ शूलिय
कॊलसवा बलदंग रक्षणॆ कमल गर्भनदु
निलुकडॆय पाळॆयद शोधनॆ बलिदिहुदु निन्नवगॆ चक्रिय
कलॆ नॆलसि कॊंडिदॆ नृपालंगरस केळॆंद ॥ 56 ॥

आपसे श्रेष्ठ है। आप भरोसा किए बैठे हैं कि मैं ही एक मात्र अत्यंत बलवान राजा हूँ। लेकिन ग़ौर कर देखें तो द्वन्द्वयुद्ध में आप उनकी बराबरी नहीं कर सकते। यही अत्यंत आश्चर्यजनक है। विजयी होने के लक्षण (आपके पक्ष में) दिखायी नही पड़ते।" इस प्रकार सारण ने मुस्कुराते हुए कहा। ५३ "बस करो। यह बकझक बन्द करो। हट जाओ यहाँ से।" इस तरह धमकाकर भेजते हुए—"तुमने इतनी देर (इतने दिनों तक) देर क्यों लगायी ? शुक। इस प्रकार रावण ने शुक से पूछा। तब शुक ने— "हे जगदेकवीर, मेरी दुर्विधि की कहानी सुनिए। यहाँ से रवाना हो, समुद्र पार कर कपिवीरों की सेना में प्रवेश किया। कैकसा के पुत्र विभीषण के कारण मुझे क़ैद होना पड़ा।" इस तरह उसने कहा। ५४ राम ने तुम्हारे भाई पर अनुग्रह करते हुए उसे लंकाधिपत्य प्रदान करते राज्याभिषेक किया है। श्रीरघुपति के शरसंधान (जोड़े गये बाण) से डरकर शरणागत हुए समुद्र पर कपियों ने चट्टानों से ढके सेतु का निर्माण किया है। सेतु पार कर, आकर, इस तरफ़ सेना ने पड़ाव डाला है। उनके आते समय हर पड़ाव पर देवताओं ने उनके लिए राजमहल बँधवा दिये हैं। ५५ "हे वीरों के कुलतिलक, सुनिए। उस कपि-सेना का पोषण का भार शिवजी पर है। उस सेना की अंग रक्षा

हूळितंबुधि कपिबलद काल्दूळियलि नीनाळ्द राज्यव
केळिको येनादुदेंबुदनिंदु नाळिनलि
धूळिगोटेय कोंडुलंकेय हाळुमाडि नरेंद्र तन्नय
बालकिय कोंडोय्यद्रिरनिद नोडिकोयेंद ॥ 57 ॥
नीनु बल्लडे मुंचितागि महानरेंद्रन मान्य मार्गद
मानिनिय कोंडोय्दु कोडु रक्षिसुव निदु सिद्ध
हानि होग दिनितरलि निन्न निजानुजन करेतंदु राज्यव
नीनु सुख दिदाळुवदु कर लेसु लेसेंद ॥ 58 ॥
ऐलवो शुक केळेन्नुदयविडि दिलितनक समबलर काणदे
कलह नेरे भंडारिसिर्दुदु लेस सूचिसदे
ललनेयनु मरळित्तु जीवव सलहि कोंबी हेसिकेय क-
क्कुकलितेयवने काळुगेडेयदे केलके सारेंद ॥ 59 ॥
वीररर सुवरेननग्गद वीररत्नव नैसले सिं-
गार विदु शूररिगे समरस भार केळियलि

की जिम्मेदारी ब्रह्माजी की है। जहाँ-जहाँ वह सेना डेरा डालती है, वहाँ-वहाँ पड़ावों पर सुरक्षा की निगरानी की जिम्मेदारी तुम्हारे भाई की है। उस मानव राजा में चक्रवर्ती के लक्षण भरपूर है।" इस तरह शुक ने कहा। ५६ कपि-सेना के पदचाप से उठी धूल से समुद्र ढक गया। आज-कल जो कुछ हो चुका है, उसके बारे में अपने राज्य की जनता से पूछ लीजिए। आप ही को मालूम हो जायगा। आपके दुर्ग को ध्वंसकर, लंका का सत्यानाश करके राम अपनी पत्नी को लेकर गये बिना न रहेगा। सावधान किए देता हूँ। जो उचित समझें करें।" इस तरह शुक ने कहा। ५७ "अगर आप उचित समझें, तो समय रहते उस महाराजा की पत्नी को गौरवपूर्ण रीति से ले जाकर सौंप दें। वह आपकी रक्षा करेगा। यह सुनिश्चत है। इससे आप अपनी नुक़सान से बचेंगे। अपने भाई को बुला लाकर अपने राज्य का सुख से उपभोग करें। मुझे तो यही समुचित दीख पड़ता है।" इस प्रकार शुक ने कहा। ५८ "रे शुक, सुनो। आज तक मुझे अपनी बराबरी वाला लड़ने (युद्ध करने) के लिए न मिला। इस प्रकार जन्म से लेकर आज तक ऐसे सुअवसर से वंचित रहा। तुमने तो एक अच्छी बात ही सुझायी है। सीता को लौटाकर अपने प्राणों की रक्षा करने का घृणित विचार मैं कर ही कैसे सकता हूँ ? अतः बकना बंद कर निकल जा यहाँ से।" इस तरह रावण ने कहा। ५९ "वीर क्या

भारि भुज कंडुविन तिमिरविकारवनु परिहरिसि कोबेवि-
चारिस लदेकीग निन्ननें मेच्चिसुवनेंद ॥ 60 ॥
अेंदु शुक सारणरनवदिऱ मंदिरकें कळुहिदनु करेसिद
नंदि निरुळिनला प्रहस्तन विनय विस्तरन
बंद गड वनितेयनु बिडिसुवेनेंदु रण किनवंश निदके
नेंदु तोऱिदुदेणिकें मनसिनलेंदनसुरेंद्र ॥ 61 ॥
अेणिकें तप्पितु जीय मावन गुणवचनवनु दांटि धार्मिक
गुणनिधिय मानिनिय मऱयिसि तंद कालदलि
मणिद रीचेय लाप्त सचिवाग्रणिगळुचितोक्तिगळु हनुमन
मणिहदलि कैमऱेवुदित्तलु खूळ तनवेंद ॥ 62 ॥
जडिदु मुंदें विभीषणासुर नुडिद परमहितोक्तियनु नी
नेंडहि कळेंदे विचार विन्नेकरस रिपुभयद
खड्ग मुखदलि निलुवुदे वुग्गडद मतवी होत्तिगेंनें कै-
होडेंदु बळिकी मातनेंदनु कलि प्रहस्तगें ॥ 63 ॥

ढूंढते हैं ? श्रेष्ठ वीररत्न ही तो ढूंढते हैं न ? युद्ध के खेल में शूरों के लिए वीररत्न ही एक श्रेष्ठ अलंकार है। मेरी भुजाओं को युद्ध की खुजली का अँधेरा जो समय से व्याप्त है —अब मानो एक सुअवसर मिल गया है। उसका भरपूर लाभ उठाते हुए तुम्हारी बातों का उत्तर देते हुए प्रसन्न कर दूंगा। छोड़ो उन बातों को।" इस प्रकार रावण ने कहा। ६० इस प्रकार कहते शुक-सारण को उनके अपने निवासस्थान भिजवा दिया। उस दिन रात को विनयसंपन्न प्रहस्त को बुलाकर, "सूर्यकुलोत्पन्न सीता को विमुक्त करने के लिए पधारे हैं। इस दिशा में क्या करें? तुम्हारी राय क्या है ?" —इस तरह राक्षस राजा ने पूछा। ६१ प्रहस्त ने निवेदन किया— "मामा मारीच की नीति-संपन्न बातें ठुकराकर धार्मिक गुणनिधि श्रीराम की पत्नी का अपहरण जो धोखे से किया गया है, लगता है हमारा अंदाज गलत निकला। अब तो हमारे निजी सचिवोत्तम उनके (राम के) शरणागत हुए हैं। हनुमान ने कार्य-भार उठाते दूत के रूप में यहाँ आकर जो हितवचन सुनाए, उनका तिरस्कार कर कठोर नीति का जो अनुसरण किया, वह (शायद) बुरा ही हुआ।" ६२ डाँटते-डपटते विभीषण ने जो अत्यंत कल्याणकारी वचन कहे उनका तिरस्कार कर आप ठोकर खा गये। अब शत्रु से भयभीत हो, सोचना बेकार है। तलवार खींचकर, इस वक्त शत्रु का सामना करने में ही भलाई है। इस अवसर पर यही समुचित लगता

बलिसु दुर्गवनस्त्रशस्त्रा वळिगळनु मेळैसु नॆरह-
ग्गळद रक्कस नायकर निभहय रथावळिय
निलिसु रणमुख किन्नदेकळि जुळुकु होगेंदा प्रहस्तन
कळुहि कळिदनु रात्रियनु कळवळद करणदलि ॥ 64 ॥

एळनॆय संधि

सूचनॆ— नॆरहि निजसैनिकव दुर्गद धुरद कडॆगट्टिन सगाढद सरभसदल सुरेंद्र निर्बनु समरभारदलि ।

वीर धीरोदात्त राजकुमार केळायिरुळि नग्रद
वारिरुह बांधवन तलॆ दोरॆकॆ यलैतंदु
आ रजोगुण भरितना रणधीर लंकानाथनधिक च-
मूरमण नोलगव नित्तनु तन्न निर्णयद ॥ 1 ॥
करॆसि मयननु विश्वकर्मन बरिसि बवरकॆ दुर्गवनु वि-
स्तरिसि हेळिदु नेमवित्तु समस्त भुवनगळ
अरसुगळ बरहेळि योलॆय बरॆसि कळुहिद नतुल बल खळ
चरर करि रथ तुरग पाय्दळ सहित संगरकॆ ॥ 2 ॥

है।" इस प्रकार प्रहस्त के कहने पर रावण प्रहस्त के हाथ में हाथ मिलाकर यों बोले— । ६३ "दुर्ग को सुरक्षा की दृष्टि से सुभद्र बनाओ। अस्त्र-शस्त्रों का संग्रह कराओ। वीर राक्षस नायकों को इकट्ठा करो। हाथी, घोड़े, रथ तैनात करो। अब युद्ध करने में हीनता का भाव धारण कर क्यों पीछे हटें ? जाओ। सब तैयारियाँ कराओ।" इस तरह कह, प्रहस्त को प्रेषित कर, सारी रात (रावण ने) चिन्तापूर्ण आतंक में बितायी । ६४

सातवीं संधि

सूचना— सेना को इकट्ठा करके दुर्ग के युद्ध के ठौर-ठिकानों पर चुस्ती से संचालित करते रावण युद्धोद्यम में (युद्ध की तैयारी में) जुट गया।

हे धीर, उदार तथा वीर राजकुमार लव ! सुनो। उस रात को बिताकर सूर्योदय के समय उपस्थित हो रजोगुण से भरे भारी सेना के लंकाधिपति रणधीर रावण ने अपना दृढ़ निश्चय कार्यगत करने के उद्देश्य से सभा का आयोजन किया । १ मय को बुलाकर, विश्वकर्मा का स्वागत कर युद्ध का दुर्ग निर्मित करने की आज्ञा दी। समस्त लोकों के राजाओं को

बळिकलामय विश्वकर्मरु बलिदरा दुर्गवनु बहुविध
गळ भयानक दुब्बरद कौशलद कौतुकद
कॆलसदलि कंदॆरॆदरमरावळिय कण्णॆवॆ सीव़ वीलु कै-
निलकलज हरिहररि गरिदॆनॆ विविध रचनॆयलि ॥ 3 ॥
निलुकिदवु रविमंडलव नट्टॊळॆय सालु गळॆड यॆडॆगॆ कॊ-
त्तळ गळॊत्तं बरिसिदवु दिगुतटद भित्तिगळ
वळद वळयद वंकगळ बागिलुगळुप्परिगॆगळु चंद्रन
कलश वॆनलॊप्पिदवु नॆलॆ नॆलॆगळ विलासदलि ॥ 4 ॥
ऎसॆदवगळंबोनिधिय नेळिसुव बिकदलतळवनु गा-
डिसुव घनतर दिद योजन हत्तरगलदलि
असदळद पडिगॊटॆ पडियग ळसमरण राटाळसूत्र
प्रसरदलि नॆलगॊटॆ बॆदरिसितमर संततिय ॥ 5 ॥
मेलु दुर्गद कोटॆ कॊत्तलदेळु सुत्तिन कनक बद्धर
दाळु वेरिय विविध रत्नद तॆनॆय तिथिणिय
साल सबळद हरिगॆगळ करवाळुगळ हॆरिट्टिगळ हे-
राळ कैदुगळिद कैगॆदॆसॆदुदा दुर्ग ॥ 6 ॥

अपने हाथी, रथ, घोड़े, पैदल-सेना-सहित युद्ध में पधारने का निमंत्रण-पत्र लिखाकर महा बलशाली राक्षस दूतों के हाथ में दे रावण ने भेज दिया। २ तत्पश्चात् मय तथा विश्वकर्मा ने बड़े भारी भयानक विविध प्रकार के दुर्गों की रचना अत्यंत कौतूहलपूर्ण रीति से कौशल्य पूर्ण ढंग से की। देवताओं की आँखें फट जायँ; ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर की ताक़त के बाहर हो—इस प्रकार के असाध्य शोभायमान दुर्गरचना का कार्य उन्होंने सफलतापूर्वक निभाया। ३ क़िलों के ऊपर बँधी गयी बुर्जों की पाँतें सूर्य-मंडल को छूने लगीं। क़िलों की दीवारों पर बीच-बीच में बँधे बुर्ज मानों दिशि-दिशाओं को छू रहे थे। जहाँ-तहाँ बीच-बीच में मुखड़े के आकार के द्वार निर्मित हुए। ठौर-ठौर निर्मित सुन्दर-सुन्दर मंज़िल चन्द्र के कलश-सदृश शोभायमान थे। ४ समुद्र का परिहास करनेवाली (किले के चारों तरफ़ खोदी गयी) खाई पाताल की गहराई से भी बढ़कर होते हुए दस योजन चौड़ी थी। असाधारण प्रतिरोधक दुर्ग, हर दुर्ग की खाइयाँ, युद्ध के रहँट, रस्से, भूगर्भ में निर्मित दुर्ग देवताओं को भी भयभीत कर रहे थे। ५ सबसे ऊपरी दुर्ग के सात चारदीवारी से युक्त क़िले तथा उसके बुर्ज सोने के हाथी, रास्ते से युक्त प्राकार की दीवार, क़िले के भीतर के ऊपरी हिस्सों की पंक्तियाँ शोभायमान हुईं। पंक्तिबद्ध कर रखे ढाल, बर्छियाँ, तलवारें,

मरुळ्कै डेंकणि शतघ्निगळुरुळु गल्लरे गवणे हुरिमळ
लुरियरगु सिडिलंबु डब्बुक ज़त्तरद्दगळ
सुरगि कक्कडेकुंत धनु मुद्गर मुसुंडि कृपाण पट्टस
परशु परिघ गदादि शस्त्रदि नेसेदुदा दुर्ग ॥ 7 ॥
अरेद सासुवे गोडनु हाविन हरवि कासिद मेणगळ कों-
प्परिगे कादुक्किन कठोरद गुंडु जंत्रगळ
हरहिनलि हरि शरभवृक सूकर महोग्र व्याघ्रकुल दु-
ब्बरद संवरणेयलि संतत बीरिदुदु भयव ॥ 8 ॥
दसिगळलि तलेनेणिनलि विषरसद जीकोळविगळ लडगि
देसेव कंडिय कणेय राशिय कवणे गल्लुगळ
मसेदलगु तेत्तिसिद तोलेगळ बसिदशूलद नूकुगल्लिन
हसरदलि हरगिरिय नेडिसुतिर्दुदा दुर्ग ॥ 9 ॥
इडुव गुंडरे गल्लु गाणद गडिसु वले गंगसद सिलुकिन
दडिवलेय सिडिवलेय गाडिय गणेगळुरुलुगळ

बड़े-बड़े भाले वग़ैर: अनगिनत शस्त्रास्त्रों से अलंकृत दुर्ग जगमगाया। ६ दुर्ग की लड़ाई में प्रयुक्त होनेवाले विशिष्ट प्रकार के आयुध, इसी युद्ध में प्रयुक्त आयुधसंपन्न यंत्र, शतघ्नी, पत्थर-गोफन, भुनी रेत, जलती लाक्षा (लाख), बिजली जैसे तीर, दुर्ग से की जानेवाली लड़ाई में प्रयुक्त तीक्ष्ण-आयुध, इसी युद्ध में प्रयुक्त एक प्रकार का यंत्र, कटार, एक प्रकार की पैनी कटार, भाला, धनुष, मुद्गर, मुसुंडी नामक अस्त्र, खड्ग, नोकदार भाला, कुल्हाड़, परिघ, गदा आदि-आदि तरह-तरह के शस्त्रास्त्रों से वह दुर्ग जगमगाया। ७ पीसे गये सरसों के घड़े, साँपों के घड़े, पिघलाए गए मोम के घड़े, तपाकर लाल-लाल बनाए लोहे के गोले, तरह-तरह के यंत्रों के सिवा शेर, शरभ, भेड़िये, सूअर, बड़े भयानक बाघ वग़ैर: मृग देखनेवालों में आतंक पैदा करते थे। ८ नोकदार खूंटियाँ, फाँसी के रस्से, विषरस भरी पिचकारियाँ, आड़ में छिपे रहकर रंध्रों के द्वारा फेंके जाने वाले बाण, गोफन में प्रयुक्त होनेवाले पत्थरों के ढेर, सान पर धरकर पैने किए गए खड्ग, एक साथ में जोड़े गए धरन, नोकदार शूल, लुढ़काए जानेवाले पत्थर, वग़ैरहों के ढेरों के कारण वह दुर्ग कैलाश पर्वत का परिहास कर रहा। (कैलास इसके सामने नगण्य लगता था।) ९ फेंके जाने योग्य गोले, कूटने-पीसने में प्रयुक्त पत्थर, मोटे तारवाले जाले, गंगस (?); उलझा देनेवाले जाले, फेंकने में प्रयुक्त जाले, छकड़े, मोटे तगड़े बाँस, फाँसियाँ फँसा देने में प्रयुक्त रस्से, पीटने में उपयोगी लाठियाँ,

तोंडकुगळ कण्णिगळ तळुकिन दडिय दाणेय लकुडपाणिय
कडुहुकाररि नॆसॆदुदग्गद दुर्ग दशशिरन ॥ 10 ॥
कडुदुरुविनुब्बरद कॆंजिगॆ गोडन तॊनसॆय हरविगळ बिसि-
यडलिगळ कादॆण्णॆगळ हरविगळ कब्बुनद
बडिगॆगळ नसुगुन्नि तुरुचॆय पुडिय तीविद तित्तिगळ का-
ल्दॊडकुगळ हग्गगळ हरहिनलॆसॆदुदा दुर्ग ॥ 11 ॥
बॆट्टु मॊळॆगळ डाणॆगळ बॆन्नट्टि मोदुव मरुळु तंडद
चट्टिटरिदु चप्परिदु नुंगुव भूत कोटिगळ
नट्ट शूलद सूत्रजंत्रद जट्टिगर बलु बॊम्म रक्कस
रिट्टणियलॆवॆ सीववॊलु संभ्रमिसिता दुर्ग ॥ 12 ॥
लाळॆविडिगॆगळलि बंडिय गालिगळ गाडणॆगळलि निडु
मॆळॆयद बत्तळिकॆगळ बलु बद्धरंगळलि
तोळ सिंह वराह करि शार्दूल घूक ध्वांक्षमुखद क-
राळ रक्कस भटरिगक्कजवादुदा दुर्ग ॥ 13 ॥
तॆनॆतॆनॆय संदियलि मोहिद मॊनॆय सबळद हॊन्नरन्नद
घनतरद सालट्टणॆयलिड्डु वीटि कक्कडॆय
धनु सरळ सकलायुधंगळ तनि वॆळगु गळ हरिगॆ हलगॆय
कनक कवचद सीसकद भटरिंद बारिसितु ॥ 14 ॥

रस्से, बड़े-बड़े लट्ठ— वग़ैरहों को हाथ में धारे वीरों के कारण दशमुख का वह महादुर्ग शोभायमान था। १० बर्रें, तितैयों से भरे घड़े, कुकरमाछी बगई भरे घड़े, गरम कीचड़ तथा खौलते तेलों से भरी कड़ाहियाँ, लोहे के डंडे, खुजलानेवाली खरोंचनेवाली बुकनियों से भरे चमड़े के थैले, पैरों को उलझानेवाले रस्से वग़ैरः उस दुर्ग में अनगिनत थे। ११ ठोंकने की लोहे की कील, बड़े-बड़े लट्ठ, पीछा करके पीटनेवाले पिशाचों के समूह, सुगंधलेपयुक्त, शरीर से लपलपाती जीभ के निगल जाने की ताकत के करोड़ों भूत, पट्टिट, परिश, शूल, सूत्र तथा यंत्र धारे हुए पहलवान, बहुत बड़ा ब्रह्म-राक्षसों का समूह —इन सबको देखकर दंग रह जायें —इस प्रकार के डीलडौल से वह दुर्ग भरा-पूरा था। १२ बड़े-बड़े क्योंड़े, छकड़े के चाकों की कतारें, लंबे-लंबे तरकस लदे साँड़, वग़ैरहों को देख भेड़िये, शेर, सूअर, बाघ, उल्लू, कौए आदि के मुखाकृति के भयानक राक्षसों को आश्चर्य हुआ। १३ क़िले के भीतर के हर ऊपरी हिस्से में, कोने में, नुकीले भाले धारे निशाना ताने बैठे वीर, सोने-हीरों के

तेरगळ तेजिगळ बलुमद वारणंगळ तेरळिकेय रण
चोर गंडिय हुलिमुखद होऱ नुसुळु गंडिगळ
भेरि पटह मृदंग तंबट वीरणानक मुख्य नाना
वीर वऱगळ रभसदलि रंजिसिदुदा दुर्ग ॥ 15 ॥
हत्तु वरिगाकाश मुळिदुऱ मुत्तुवरि गुरिगोटॆ बागिलु
मृत्युविन बायिगळु नंजिन मंजिनुब्बरणॆ
सुत्त कत्तरि वाणि पडियगळुत्तरिसल मराळि गरिदॆनॆ
कोत्तळद हुलिमुखद हरहिनलॆसॆदुदा दुर्ग ॥ 16 ॥
कुणिव पल्लव झल्लरिय डॆंकणिय तलॆ चमरिगळ गगना-
गणव नणॆव पताकॆगळ सडकुगळ सीगुरिय
हणिद कुऱिगळ कोणगळ दासणद बेविन दंडॆगळ भा-
रणॆय बोग्गिन लग्गॆ वऱगळ लॆसॆदुदा दुर्ग ॥ 17 ॥
कादुवरॆ बरहेळु भाळदलॆदु कंगळनुळ्ळवन हदि-
नॆदु मक्कळ होक्कुळलि हॆत्तवन नुळिदवरु

कतारों के चोकों पर रखे कठार, भर्चे (भाले), तीर-तरकसों आदि को धारे हुए जगमगाते आयुधों से युक्त तथा ढाल तख्ती को धारे सोने के जिरह-बख्तरों से लैस योद्धाओं के कारण वह दुर्ग दर्शकों को बरबस कँपाता था। १४ रथ, घोड़े, मदमस्त हाथी आदि के संचारों के कारण, युद्ध के समय प्रयुक्त चोर-दरवाजे, व्याघ्रमुखी महाद्वार तथा बाहर फिसल जाने में प्रयुक्त छेद-दरारों के कारण, नगाड़े, भेरी, मृदंग, डफले, जुड़ुवे डफले तथा कई अन्य प्रकार की भेरियों के कारण, तरह-तरह के वीर-वाद्य-वृन्दों के (गाजे-बाजों के) बजने से वह दुर्ग शोभायमान था। १५ दुर्ग पर चढ़ने की कोशिश करनेवालों के लिए यह (दुर्ग) आकाश-सदृश ही था। चिढ़कर घेरा डालनेवालों के लिए यह ज्वालामय दुर्ग था। इसके द्वार मानों मृत्युद्वार ही थे; या विषैले कुहरे की ज्वाला-सदृश थे; चहारदीवारी के द्वारों का कहीं स्पर्श हुआ तो मानों हाथ काट डालने वाले विषजल-सदृश ही था। देवताओं के लिए भी असाध्य बने क़िले, बुर्ज और व्याघ्रमुख थे।—इस प्रकार वह दुर्ग शोभायमान था। १६ ऊपर-नीचे खेल रहे, झूल रहे कोंपलों के गुच्छों से, क़िले पर के ध्वज-स्तंभ स्थान के चामरों से, आकाश को छूनेवाले ध्वजपताका, मोतियों की झालर तथा चँवरियों से तथा काटे गये बकरे-भैंसों से युक्त अड़हुल के फूलों तथा नीम की पत्तियों के बंदनवारों से सजाया गया वह दुर्ग बड़े-बड़े नगाड़ों की घनघोर गर्जना से शोभायमान था। १७ "युद्ध करना

ऐंदें नंटरु बंटरडविय हादिगर हेळदि रेंनुत्तवें हों-
ग्दुदा दुर्गदलि डंगुरवु डावरिसें नभव ॥ 18 ॥
वीरनल्ला मूरु लोकद वीररलि दशकंठ हेळित
नार माडरु दनुज दिविज भुजंग रोंग्गिनलि
तारकन जंभन निकुंभन तारकाक्षन तमन नमुचिय
सेरुवेंय सुरवैरिगळु बरुतिर्द रगलदलि ॥ 19 ॥
इळेंय मेलुळ्ळखिळ भटरिट्टळिसि बंदुदु हरिहयाद्यर
बळिय भारिय भूरिरक्कस रेंदि तोंग्गिनलि
तळवु मेलण जगद जोडिय हलवु कालद दैत्य दनुजा
वळि निशाचरनिकर बदुदु भूमियगलदलि ॥ 20 ॥
जवन जगदवसान दुरु भैरवन भणितेंय भटर नुच्चै
श्रवब तूकद तेजिगळ तरणिय रथोपमद
नव वरूथावळिय सुरपन धवळदंतिय विगड सामो-
द्भव घटाळिय गरुवसेनेंय काणलाय्तल्लि ॥ 21 ॥
हरिय चक्रद हरन शूलद हरिहयन वज्रद कृतांतन
परिघ दंडद पाशपाणिय नुरु परश्वथद
हरन मित्रन गदेंय वैश्वानरन खड्गद वायुविन बलु
सरळ सरिसद कैदुगळ नेंरे काण लाय्तल्लि ॥ 22 ॥

ही चाहते हैं तो जिनके कपाल पर पाँच आँखें हैं या जिन्होंने पंद्रह बच्चों को जन्म दिया है उन्हें आने के लिए कह दो। अन्य तो शायद सेवक या रिस्तेदार हों; वनवासियों के बारे में कहना व्यर्थ है।" इस तरह आकाशव्यापी स्वर में ढिढोरा पीटा गया। १८ दशकंठ तो तीनों लोकों के वीरों में वीराधिवीर है न? राक्षसों में, देवताओं में, नागों में उनकी आज्ञा का पालन कौन नहीं करते? तारक, जंभ, निकुंभ, तारकाक्ष, तम, नमुची के जैसे बलवान राक्षस झुंड के झुंड आ रहे थे। १९ धरती पर के सभी वीर इकट्ठे हो आए। इन्द्र वग़ैरहों के पास-पड़ोस के वीर राक्षस इकट्ठे हो आए। निम्न लोकों (पाताल वग़ैरहों) के तथा ऊर्ध्व लोकों के कई समय के पुराने दैत्य, दनुज, निशाचर आदि अपरंपार संख्या में आए। २० जगत् के लयकालीन उग्र भैरव के तथा यम के भयानक ध्वनि के वीरों को, इन्द्र के उच्चैश्रवा अश्व-सरीखे घोड़ों को, सूर्य के रथ के बराबरी के नये रथ-पंक्तियों को, इन्द्र के सफ़ेद हाथी ऐरावत सदृश बलवान हाथियों के सैन्य आदियों से संयुक्त श्रेष्ठ सेना वहाँ दीख पड़ी। २१ विष्णु का चक्रायुध, शिवजी का त्रिशूल, इन्द्र का वज्रायुध, यम का

धरॆय नडिम गुचुव दिशासिंधुरद दाडॆय नुगिव फणिपन
कॊरळिगिक्कुव कमलजांड कटाह खर्परव
बिरिय लॊदॆव मृगांक तरणिय तिरिदु कुंडल विक्कु वतिबल
दुरु पराक्रम भटर संख्यॆय काण लाय्तल्लि ॥ 23 ॥
ऎणिकॆ गॆळ्नूराद्दक्षोहिणि दशास्यन मूल बल परि-
गणनॆयंनु नानरियॆ नॆरॆद समस्त रक्कसर
हणॆय लिपियिनि बरॆगॆ तीरितु गुणनिधियॆ कॆळघयुतर सु-
प्रणय संगव देन माडदु लोक दॊळगॆंद ॥ 24 ॥
बळिक शार्दूलननु सुरकुल विलय भैरवं कळुहिदनु रिपु-
नळिन वन वारणन बळिगाहवकॆ बरहॆळि
इळिदनव नवमेघकालद कुलिश दुब्बर दंतॆ गगन
स्थळद गतियलि गगनमणिवंशजन सरिसदलि ॥ 25 ॥
उप्परिसि कपिभटरु कदनद दर्पदब्बर दुब्बरद बलु
चप्परणॆयलि मुसुकिदरु मुष्टिगळ नॆगहिनलि
तप्पदिव काळगकॆ करॆयलु बप्प बलुभट नॆंदरिदु कै-
तप्प माडलु बेडॆनुत रघुराय नेमिसिद ॥ 26 ॥

परिघायुध तथा दंड, वरुण के हाथ का कुल्हाड़ा, कुबेर की गदा, अग्नि का खड्ग, वायु के तीक्ष्ण बाण, —वग़ैरहों के बराबरी के आयुध ही वहाँ दीख पड़े । २२ भूमि को उलट-पलट देने के शक्ति-संपन्न, दिग्गजों के दाँत तोड़ने की शक्ति से युक्त, आदिशेष का गला दबोचने की शक्ति से भरे, ब्रह्मांड रूपी कड़ाही को लात मारकर फाड़ देने की ताक़त रखनेवाले, सूर्य-चंद्रों को तोड़-मरोड़कर फंदे में फाँसने की ताक़त से भरे, महान बलशाली योद्धा अनगिनत संख्या में वहाँ दिखाई पड़े । २३ रावण की निजी सेना ही सात सौ अक्षौहिणी थी । तिस पर वहाँ इकट्ठे हो आए राक्षसों की गिनती मैं नहीं जानता । हे सद्गुणनिधिकुमार ! सुनो । जो भी और जितने भी वहाँ आ जुटे उनकी बिधिलिखित आयु समाप्तप्राय थी । पापियों की संगत में पड़े हुओं को, इस जगत् में कौन बचा सकता है ? —इस तरह वाल्मीकि ने कहा । २४ तदनंतर देवताओं के लिए प्रलय-भैरवस्वरूपी रावण ने युद्ध के लिए आह्वानित शत्रु रूपी कमल-समूह के लिए हाथी-सदृश जो राम थे उनके पास शार्दूल को भेजा । वह वर्षाऋतु के नये मेघों से छूटती बिजली के सदृश आकाश-मार्ग से रवाना हो रविकुलभूषण श्रीराम के सम्मुख उतर पड़ा । २५ कपिवीरों ने उछलकर, युद्ध के उन्माद में चीखते-चिल्लाते, गरजते अपनी मूंठें उठाकर

तंदु निलिसिद रवन नव बळि कंदनॆलॆ राजेंद्ररणदलि
नॊंदु हिंगद मुन्न हंबलिसदॆ महीसुतॆय
मुंदरिदु तॆरळुवदु सुख निमगॆंदु हेळिद निदुवॆ चित्तकॆ
बंदिर दॊडाहवकॆ बरहेळिदनु बेगॆंद ॥ 27 ॥
नगुत राघव रायनॆद्दनु गगन चररुग्घडिसॆ शाखा
मृगकटक कडलुप्परिसिद वॊल सुर पुरिगागि
नग महीरुह दुब्बरद बॊब्बॆ गळलिळॆ कळवळिसॆ नडॆदुदु
जगदरस नैतंदनिन जादिगळ गडणदलि ॥ 28 ॥
अररॆ जंगम गिरिगळो मेण् धरॆयनवलंबिसुव लयजल
धरकदंबवॊ कालदग्रद कडल काहुरवॊ
हरि बल वॊयॆनॆ बंदुदसुरेश्वरन नगरद जनद बायलि
करिसॆ हायलु करण कळवळि सलु दशाननन ॥ 29 ॥
बारिसिद बलु भीतियलि हॊरकेरि हॊक्कुदु दुर्गवनु प्रा-
कार दॊळ मैगळलि हूडिद रखिळ जंत्रगळ

शार्दूल को चारों ओर से घेर लिया। रघुवीर ने ताड़ लिया कि यह युद्ध के लिए निमंत्रित करने आया हुआ वीर है। अतः उन्होंने कपि वीरों को आज्ञा दी कि इनके साथ अत्याचार न होने पावे। ६२ शार्दूल को बुला लाकर, राम के सम्मुख खड़ा किया। तब शार्दूल ने कहा। "हे राजेन्द्र! युद्ध में घायल हो पीछे हटने के पहले ही, सीता की आशा छोड़, भावी पर सोच-विचार करते हुए (यहाँ से) रवाना हो जाना कल्याणकारी है। अगर यह राय तुम्हें पसंद नहीं तो युद्ध के लिए आगे बढ़ने के लिए तुम्हें रावण ने यह निमंत्रण भेजा है।" इस प्रकार कहा। २७ (यह सुनकर) मुस्कुराते हुए जब राम उठे आकाशस्थित देवताओं ने ज़ोर-ज़ोर से हर्षध्वनि की। देवेन्द्र की अमरावती को समुद्र के घेरने के सदृश (उमड़कर) कपि-सेना चट्टानों तथा पेड़ों को लुढ़काते चीखते-चिल्लाते रवाना हुई। इस शोरगुल से धरती सिटपिटाई। राम सुग्रीवादियों के समूह के साथ आए। २८ बाप रे बाप! इस दृश्य का कैसे वर्णन करें? क्या यह चलते-फिरते पहाड़ हैं या प्रलयकालीन बादलों का समूह है या प्रलयसमुद्र की बर्बरता है या कपिसेना है—इस तरह सोचते-समझते रावण की नगरी की जनता लार टपकाते जब बोल रही थी तब कपिसेना (युद्ध के लिए) पधारी। (तब) रावण चिंता से भयभीत हुआ। २९ दुर्ग के बाहरी प्राकार में उपस्थित लोग भयभीत हो दुर्ग के भीतर प्रवेश कर लेते हैं। दुर्ग के भीतर युद्ध के समस्त यंत्रों को तैयार

भेरिगळ होय्दिलनलि खळ परिवार पडितळिसिदुदु केळि कु-
मारकरु सहितसुरपति होर्दवंट नरमनेय ॥ 30 ॥
करेदु वीर महोदरन तत्पुरद तेंकणभाग कवननु
पडुवलु सुरेंद्र विरोधियनु बेसस
हरिहयन देसेगा प्रहस्तन हुरिकोळिसि बळिकुत्तरद गो-
पुरके नडेदंदित्त नोलगवनु दशग्रीव ॥ 31 ॥
बरुतले मुत्तिगेय निक्किद रेरडु मैयलि वीदि वरिदोड
मुरिदु वड्डैसिदरु सुरपर्वतव नंबुधिय
उर वणिसुव वोलेननें बेनु तिरुगिबरे शतयोजनद वि-
स्तरद वळयद लिद्दुदद्भुत रसद लहरियलि ॥ 32 ॥
इरिसिदनु सुग्दान कमरेश्वरन मोम्मन करेदु तेंकलु
हरिसुतन पडुवलु पुरंदर देसेगे पावकन
वरकुमारन निरिसि तानुत्तरन दिक्किगे रायदळ सहि-
तरियमन नंदननु निंदनु समरभारदलि ॥ 33 ॥

रखा गया। नगाड़े जब बजने लगे तो राक्षस-सेना चढ़ाई के लिए तैयार हुई। इसे सुनकर रावण अपनी संतान के साथ राजमहल से रवाना हुए। ३० वीर महोदर को बुलाकर लंकानगरी की दक्षिण दिशा की जिम्मेदारी उसे सौंपी। पश्चिम दिशा पर इन्द्रजित् को नियुक्त किया। पूर्व दिशा के लिए प्रहस्त को प्रोत्साहित किया। उत्तर दिशा की मंज़िल पर आकर दशकंठ ने सभा-संचालन किया। ३१ आगे बढ़ आते ही कपि-सेना ने दोनों ओर से टूट पड़ते हुए, अंधमधुंध मचाते हुए मेरुपर्वत को समुद्र के घेरने के ढंग से चारों ओर से घेर लिया। इसका वर्णन किन शब्दों में करें? सेना ने बड़े ही अद्भुत रीति से सौ योजन विस्तृत प्रदेश को घेर लिया। ३२ इन्द्र के प्रपौत्र (पोते) अंगद को बुलाकर उसे दक्षिण दिशा में नियुक्त किया। वायुसुत को पश्चिम दिशा में, अग्निकुमार नील को पूर्व दिशा में नियुक्त कर सूर्य-पुत्र सुग्रीव ने राज-सेना-सहित उत्तर दिशा का युद्ध-कार्य-भार सँभाला। ३३

ऎंटनॆय संधि

सूचनॆ— राय रघुराजेंद्र सेनानायकर बलसहित रक्कस राय दशकंठंगॆ शुक विस्तरिसि तोरिसिद ।

इत्तनोलगवनु बलारिगॆ हत्तुमडि तेजदलि खळनॆं
बत्तु कोटि किरीट वर्धं नरुगळ गडणदलि
मृत्युजव निवरुगळ बगॆयद चित्त दुन्मन दुब्बरद सं-
पत्तिनलि सुरयुवतियर चामरद चलनॆयलिं ॥ 1 ॥
करॆदु शुकननु केळिदनु मोहरद मॊदलिग नायकरदा
ररसनारी बलकॆ बल्लिद रारु बवरदलि
धुरव जयिसलु बंद बिरुदिन नरपतिय दारॆंबुदनु वि-
स्तरिसि हेळॆनलॆद्दु शुकनितॆंदनरसंगॆ ॥ 2 ॥
अरस नोडादॊडॆ रघुक्षिति त्ररन दळपतियवनु वैश्वा-
नरन मगनव नील नॆंबभिधानवा कपिगॆ
हरिबलद मुंभागदलि संगरकॆ निंदव नम्म नगरव
नॊरॆसि मोदुव मोडि मॊरॆयॊळवन लदॆयॆंद ॥ 3 ॥
निलव नोडव नंजनाद्रिय निलवि गॊम्मॊळ मिगिलु नोडव
नळव दॆंतुटो कय्यलदॆ गिरि हत्तु योजनद

आठवीं संधि

सूचना— राजा राम के सेनानायकों को उनके निजी सेनाओं-सहित शुक ने राक्षसराज रावण को विवरण के साथ दिखाया ।

इन्द्र से दस गुने तेज से अस्सी करोड़ सामन्त राजाओं के मध्य यम तथा मृत्यु देवताओं की परवाह न करते रावण बैठे सभा-संचालन जब कर रहे थे, तो देवताओं की स्त्रियाँ उन्हें चँवर डुला रही थीं । १ "सेना के प्रधान नायक कौन हैं ? इस सेना के अधिपति कौन है ? युद्ध में समर्थ कौन है ? युद्ध को जीतने आए हुओं में प्रसिद्ध राजा कौन है ? वग़ैरः विवरण बताओ ।" इस तरह रावण ने शुक को बुलाकर सारा विवरण पूछा तो उसने सारा विवरण निवेदन किया । २ "तो राजन् देखिए । वह रघुभूपति का दलपति है; वह अग्नि का पुत्र है; उस कपि का नाम है नील । कपि-सेना के सामने युद्ध करने के लिए जो खड़े हैं उसमें हमारी लंकानगरी के सत्यानाश करनेवाले के मुख्य लक्षण हैं ।" इस प्रकार शुक ने कहा । ३ "उसका क़द तो देखो । अंजनाद्रि से

कलहविवनोळु जयिसुवदु हुसि खळशिरोमणि चित्तबिसु हेंड
तलेय मृत्युवो कपियो नीनें नोडिकोयेंद ॥ 4 ॥
कालनळकुव नवगे कल्पकपालि हणुगुवनवगे मिक्किन
तोळु वलरि दुरि नलि निलुवर काणें नाजियलि
आळुतनवुळ्ळवनें नोडेंर डालि नम्मुवु जीय कथेगळ
केळिकेय मातल्ल मर्त्येकरस नोडेंद ॥ 5 ॥
अवन दळवदें नोडु गरळार्णवद गाडिय मोडियलि सा-
किवन बिडु नोडुत्त राक्षसवन दवानळन
भुवननिधि वडबानळन रिपु निवहकालानळन रघु सं-
भवन मेंच्चिन नळन वानररूपिनतिबलन ॥ 6 ॥
हेळलच्चरि यिवन साहसदेळिगेय नंबुधिय नेंत्तिय
मेलें बेंट्टव नोट्टि नडेसिद नवनि पालकन
पाळयवनिदनिवनवोलु कट्टाळ दारै लोकदलि रण
दूळिग दोळिन्नेन नेंनवनो नोडिकोयेंद ॥ 7 ॥

एक हाथ भर ऊँचा है। उसका सामर्थ्य कितना महान है? देखिए। उसके हाथ में दस योजन विस्तृत पहाड़ है। हे राक्षस-श्रेष्ठ! सुनिए। इसे युद्ध में जीतना असाध्य है। यह महान सिर वाला मृत्यु है या कपि है आप ही परख लें।" इस प्रकार शुक ने कहा। ४ "यम उसे देखकर थरथर काँपता है। प्रलयकालीन रुद्र उसे देखकर छिप जाता है। युद्ध में उसका सामना करने खड़े रहने की ताक़त वाले अन्य बलशालियों को मैं देख नहीं पाता। उसकी वीरता तथा पौरुष देखने के लिए क्या हमारी ये दो आँखें काफ़ी है? स्वामिन्! यह कहानी में सुनी बात नहीं है। इसमें दुराव-छिपाव कैसा? आप ही समझ लीजिए।" इस तरह शुक ने कहा। ५ "उसकी सेना विष समुद्र की शोभा-सदृश जो है, देखिए। बस है; इसे छोड़ दो। राक्षस रूपी जंगल के लिए जो दावानल है, (राक्षस) समुद्र के लिए जो बड़वाग्नि-सदृश है, शत्रुसमूह के लिए प्रणयाग्नि-सदृश नल को देखिए। अत्यन्त बलशाली वह वानर रूपी नल राम को बहुत ही प्रियकर है। ६ इसका बड़ा भारी साहस अत्यंत आश्चर्यकारक है। समुद्र के सिर (छाती) पर ढेर सारे पहाड़ों को जोड़कर बँधे गये सेतु के द्वारा इसने राम की सेना इस पार पहुँचायी। इसके जैसे जीवट के कौन हैं— इस जगत में! पता नहीं, युद्ध में, न जाने (अपना) कितना पराक्रम प्रकट करेगा। आप ही देखते रहिए।" इस प्रकार शुक ने कहा। ७ "दो योजन चौड़ा, बारह योजन लंबा पहाड़

ऎरडु योजन दुदितदलि हन्नॆरडु योजन दुद्ददलि गिरि
परिघद वॊलद धरिसि हॆगलॊळॆरडु कंकुळलि
ऎरडु योजन दॊंडु कॆच्चिन मरद बालद लैदु योजन
गिरि सहित तॊर्पात नळनतिबलनु नोडॆंद ॥ 8 ॥
साकिवन नोडदिरु नोडु वनौकसर वल्लभन तनुजन
पाकशासन नंदनन नंदनन नंगदन
ई कुमारन मेलॆ घन लोकैकनाथन मोहविवन स-
मीक कानुव भटर निन्नलि काणॆ नानॆंद ॥ 9 ॥
उगुरु सॊंकिनलबुजजांडद बिगुहु बिडुवुदु तळविघातिगॆ
जगति जरिवुदु जानु हति गडिमगुचुवुदु मेरु
हॊगळले निवनय्य नी त्रयजगकॆ वीरनला विवेकिसु
तॆगॆदु होदभिमानवनु पूर्वदलि नीनॆंद ॥ 10 ॥
रजतशैलदवॊलु कैयलि सृजिसुतिर्दे गिरि संचयंगळ
नजन लोककॆ बाल निलुकुतिदे निरीक्षिसलु
गज तुळिद बाळॆय वोली पुरवजिगिजिय माडुवनु पापव
भजिसि कॆट्टॆयला दशानन नोडु नीनॆंद ॥ 11 ॥

परिघायुध की तरह कधे पर ढोए, दोनों काँखों में दो योजन विस्तृत महान पेड़ों को दबोचे, पूंछ में पाँच योजन विस्तृत पहाड़ को दबोचकर (लपेट कर) जो दिखायी पड़ रहा वह अत्यंत पराक्रमी वीर है नल। वह देखिए।" इस प्रकार शुक ने कहा। ८ "इसकी ओर निहारना काफ़ी है। अब इस तरफ़ देखिए। कपि-सेना के नायक (राजा) सुग्रीव के बड़े भाई वाली का पुत्र (इन्द्र का पोता) अंगद खड़ा है। लोकों के अधिपति श्रीराम अंगद कुमार को खूब चाहते है। इससे मुठभेड़ करने की ताक़त वाले, सामना करने में शक्तिसपन्न आपकी सेना में मुझे कोई नहीं दिखायी देता।" इस तरह उसने कहा। ९ उसके नाखून के स्पर्श मात्र से सारे ब्रह्मांड में दरारें पड़ जायँगी। उसके चरण के आघात से जगत सरक जायेगा। घुटनों से अगर वह खोंचे तो मेरुपर्वत उलट जाय! इसका वर्णन कहाँ तक करूँ? इसके पिता तो त्रिलोकी वीर हैं न? पूर्व में वाली ने जो तुम्हारा घमंड तोड़ा था— स्मरण कर लो न!" इस तरह शुक ने कहा। १० रजताद्रि-सदृश पहाड़ इसके हाथ में शोभायमान है। पूंछ इसकी ब्रह्मलोक को छूती है। हाथी के पैरों से रौंदे गये केले के बगीचे के सदृश यह सारी लंकानगरी को रौंद सकता है। हे दशमुख, आपने पाप-कार्य में मन लगाया न? आप ही सोच-समझकर देख लीजिए।"

उसुरले निवनग्गळद साहसवनिदनी कावें मोहिद
विषम रणदलि हॊगळले नक्करिगने तानु
असुरपति केळिवन बिडुकलि वृषभनॆंब कपीश्वरन नी-
क्षिसु वृषध्वज नंददलि तोर्पवन नीनॆंद ॥ 12 ॥
हरन सभॆयॊळगिवननॆडिसि हुरुडु गॆडिसिदॆ गड बळिक्कव
तरुचरर रूपिनलि कैनॆरवागि बंद गड
मॊरॆवु तहनव निन्न मेलण हरिबदलि जगदळिविनग्रद
हरन वॊलु हगरणद वॊलु बलवव नॊळदॆयॆंद ॥ 13 ॥
चलिस दीक्षिसु मुंदॆ कदनद कलिय कलिगळ छलिय छलिगळ
बलिय बाहादंड चंडमरीचि शतबलिय
ललनॆयनु नी नॊय्द नॆंदऱसलु कुबेरन नगरवनु हॊ-
क्कलसदऱिसिद भुजबलान्वित नीगलवनॆंद ॥ 14 ॥
अवन बिडु नोडित्त सीता युवतियनु नी नॊय्दडऱसलु
भुवनवनु शोधिसुत वर कैलास पर्वतव
गवलिकाररगॆलिदु गोरी धवगॆ मूगुब्बसव माडिद
भुवन मूऱर वीर नीतन नोडु नीनॆंद ॥ 15 ॥

इस तरह शुक ने कहा। ११ "इसके महासाहस का वर्णन मैं कहाँ तक करूँ ? भयानक भावी युद्ध में आप ही इनका युद्ध-कौशल्य देखेंगे। मैं कहाँ इतना बड़ा विद्वान् हूँ कि वर्णन करूँ ? हे राक्षस राजा, इनकी बात रहने दीजिए। उधर शिवजी-सदृश शोभायमान वीर वृषभ नामक कपिनायक देखिए।" इस प्रकार शुक ने कहा। १२ "शिवजी की सभा में (इसकी) निंदा होने के कारण यह निस्सत्व बना है। तदनंतर वह वानर-रूप में सहायक हो आया है। आपसे लड़ने के लिए यह ललक रहा है। लयकारक शिव-सदृश, शिवगण-सदृश उसके आधीन भारी सेना है।" इस तरह शुक ने कहा। १३ "युद्धवीरों में श्रेष्ठ वीर, ज़िद्दियों में परले सिरे का ज़िद्दी, वीरों के बाहुबलों के लिए सूर्य-सदृश तेजस्वी इस शतबली को एकटक देखिए। तुमने सीता का अपहरण किया— उसे जानने के लिए तथा सीता के अन्वेषण के निमित्त कुबेर की नगरी में प्रवेश कर, (अपनी) थकावट की परवाह न करते उसे ढूँढ़नेवाला महाबलशाली यही है।" इस तरह शुक ने कहा। १४ अब उसे छोड़ इस तरफ़ देखिए। सीता का अपहरण तुमसे होने पर दुनिया भर में उसे ढूँढ़ते हुए आकर, कैलास पर्वत भर उसे ढूँढ़कर, यम-दूतों को जीतकर शिवजी को कष्ट पहुँचाने

जवव नी दिग्विजयदलि परिभविसि नोयिसि गॆलिदॆ गड हं-
गवन लिर्दी राघवेंद्रन राज. कारियकॆ
गवयगजनु गवाक्ष शरभ प्रवर रणदलि गंधमादन
रवड्ड रणवाय्तं तकंगवरीग नोडॆंद ॥ 16 ॥
मित्तु तानी रामनुद्भवदत्त जनिसिद ळसुररसुगळ
तुत्त लोसुग सुमुख दुर्मुखरॆंब हॆसरिनलि
हॊत्तुतर्दॆ कोपाग्नि विलयद कृत्तिवासन खतियवॊलु रण-
दुत्तरण निनगहुदु लोककॆ चित्रतरवॆंद ॥ 17 ॥
अरस चित्तैसधिक कोपवधरिस दिरु मनदलि रघुक्षिति
वरन कटकद मातु हुसियो निजवॊ नानरियॆ
धुरदॊळळिद वरिवन करसंस्परुष नदॊळॆळुवरु गड सर
सिरुह भवगिदु तीरुवुदॆ हेळरस नीनॆंद ॥ 18 ॥
वानररलि सुषेण नॆंबभिधान विवगिव पूर्वदलि सुर
सेनॆयनु संजीविनि यॊळॆब्बिसिद वैद्य गड
नीनवन नोडा त्रियंबक नानिकॆय भटनहनॆ मुंदण
सेनॆयलि नोडरिभयंकर कपि पितामहन ॥ 19 ॥

वाला त्रिलोक वीर यही है। ग़ौर से देखिए।" इस तरह शुक ने कहा। १५ "दिग्विजय के समय तुमने यम को कष्ट पहुँचाकर हराकर जीत प्राप्त की थी न? इस राम के राजकार्य के ऋण को उठानेवाले (राम के ऋणी) गवय, गज, गवाक्ष, शरभ, गंधमादन वग़ैरहों ने भी यम के साथ लड़ाई लड़ी है। १६ राम के अवतार धारण करने पर सुमुख तथा दुर्मुख नामाभिधान (नाम धारण करनेवाली) मृत्यु राक्षसो के प्राण हरने के निमित्त पैदा हुई है। प्रलय-रुद्र के क्रोध की तरह क्रोधाग्नि प्रज्वलित होने जा रही है। युद्ध में तुम्हारी जीत किस प्रकार होगी—यही एक आश्चर्यकारक घटना है।" —इस प्रकार शुक ने कहा। १७ "हे राजन्, सुनिए। (इन बातों से) अत्यधिक क्रोध में मत आना। मैं नहीं जानता कि रघुराम की सेना सम्बन्धी ये बातें सत्य है या झूठ। इनके साथ (खड़े हो) युद्ध में मरनेवाले इनके (राम के) हस्तस्पर्श से पुनश्च जीवित होते हैं। ब्रह्माजी के लिए भी (यह कार्य) साध्य (सफल) है कि नहीं, पूछ लीजिए राजन्!" इस प्रकार उसने कहा। १८ "वानरों में यह सुषेण कहलाता है। पूर्व में देवताओं की सेना को इसने संजीवनी बूटी की सहायता से जिलाया। ये (सुषेण) वैद्यराज हैं। तुम उसकी तरफ़ थोड़ा-सा निहार कर देखें। त्रिनेत्री का सामना यह वीर कर सकता

नुडिद मातिगॆ जीय खातिय हिडियदिरु कंडॆणिकॆ यिदुका-
वॆडॆय कार्णनु राम मुनिदरॆ सुप्रसिद्ध विदु
नुडिवुदनुचित वॆनगॆ नोडादडॆ निशाचर राय बॆऱगिन
बॆडग चित्तैसजन चॊच्चिल मगन नीनॆंद ॥ 20 ॥
इवन जननद मेलॆ जनिसिदु दवनिगड बळिकादवी त्रै-
भुवन गड सलॆ जगदॊळीतगॆ हिरियरिल्लगड
शिवन मदुवॆयलीत जव्वनदवनु गड चित्तैसु विलयद
जवन जूजिगॆ सिक्क गड लेसागि नोडॆंद ॥ 21 ॥
तरणियलि मत्सरिसि जव्वन जरियदंदी जांबवनु सुर
गिरिय सुत्तिद नॆरडु बारिय लॊंदु दिवसदलि
तरु मृगंगळिगी बलुह निर्जररिगुंटॆ जीय मृत्युव
सरकु माडद सुभट रहरॆलॆ नोडु नीनॆंद ॥ 22 ॥
तोऱलम्मॆनु रामनोलॆय कारनॊब्बन निनगॆ निन्नॆ-
ळ्नूरु मक्कळनक्ष मॊदलादतुळ रक्कसर
एऱिसिद नंतकन दुर्गव नूऱिसिद नुरियिंद नगरव
नाऱिसिदनवनिजॆय शोकानलनन वनॆंद ॥ 23 ॥

है। आगे की सेना में वानर ब्रह्म जाम्बवन्त है। १९ "मेरी इन बातों से नाराज़ मत होना असुरराज! जो मुझे जँचा, मैंने कह डाला। राम की नाराज़गी पर बचानेवाला कोई नहीं दिखाई देता। यह निर्विवाद सुप्रसिद्ध तत्त्व है। जानता हूँ, मेरा यह वक्तव्य योग्य नहीं है। लेकिन ब्रह्माजी के पहलौठे (ज्येष्ठ पुत्र) की, आश्चर्यकारक घटना सुनिए।" इस तरह कहा। २० "इनके जन्म के बाद धरती का जन्म हुआ। तत्पश्चात् इन तीनों लोकों की सृष्टि हुई। दुनिया में इनसे ज्येष्ठ (बड़े) कोई नहीं है। शिवजी के विवाह के समय यह युवा पुरुष रहे। यह प्रलयकालीन यम के जबड़ों में फँसनेवाले नहीं। सोच-समझकर परख लें।" इस प्रकार कहा। २१ "अभी वह जब युवा ही थे तब इस जांबव ने सूर्य के साथ स्पर्धा करते हुए दो बार मेरुपर्वत का उपयोग किया। कपियों का यह सामर्थ्य क्या देवताओं में दिखायी देता है? ये मृत्यु की परवाह न करनेवाले वीर हैं। आप ही सोच-समझकर देख लें।" इस तरह उसने रावण से कहा। २२ "राम के एक किंकर (सेवक) को आपको दिखाते डर लगता है। इसने अक्ष आदि तुम्हारे सात सौ वीर राक्षस कुमारों को यम के दुर्ग में भि

नॆरॆयदवन पराक्रमद कट्टिटरित कॆम्मी मूल वलवव
नुरुबॆ गानुवरिल्ल वीररु दनुज दिविजरलि
बरॆदॆ मदनन गरुडियॆंबिन गुरिगॆ तुत्तहुदनुचितवु निन
गरुहिसुव रिल्लकट कॆट्टॆ निरर्थ नीनॆंद ॥ 24 ॥
पविकॊंडिदॆ निन्न नगरद दोर्वळर सदॆ वडिदॆ नॆंवी
गर्वलतॆ शिरविडिदु पादांगुष्ठ परियंत
निर्वहिस दिवनिरलु रिपुजय पर्व निनगिदु तथ्य खळ नी
चर्वणन नुडिगॆंदु गुंडितगॊळलु बेडॆंद ॥ 25 ॥
हनुमनॆंबभिधान ववगव ननुवरकॆ शिवनंजुवनु मि-
क्किन सरोजभवामरासुर नर भुजंगमर
मनदॊळारनु हुल्लकड्डिय कॊनॆगॆ लॆक्किसदात नातन
नॆनहि गिम्मिगिलदटरदॆ नोडवर नीनॆंद ॥ 26 ॥
निरुत विदु नोडुवन नग्गद शरभनवनु रुमण्वनव के-
सरियु मैंद द्विविद रंभ रुमादि भटरवरु
अरस नोडव दधिमुखनु दुर्धरुश पनस प्रमुख वानर
ररसरदॆ कोटानुकोटिगळत्त नोडॆंद ॥ 27 ॥

बुझा दी।" इस प्रकार कहा। २३ "उसके वीरतापूर्ण युद्ध के लिए हमारी निजी सेना यथेष्ट न होगी। उसके ज़ोरदार ज़बर्दस्त आक्रमण का, सामना करने की ताक़त रखनेवाले वीर, असुरों में या सुरों में कोई नही है। मन्मथ-वीर के काम-बाण से आहत होकर, व्यर्थ ही अपना सत्यानाश यों करना विहित नहीं है! हाय हाय, व्यर्थ ही तूने यह विपत्ति मोल ली।" इस प्रकार उसने रावण को समझाया। २४ "तुम्हारी नगरी के भुजबल-संपन्न वीरों को ठोंक-पीट देने का अहंकार इसकी चोटी से लेकर एड़ी तक भरा हुआ है। जहाँ यह उपस्थित है वहाँ युद्ध जीतने का गौरव आपको नहीं मिल सकता। हे राक्षसराज, यह मैं सच कहता हूँ। मुझ वाचाल के इन वचनों से आप धैर्य न खो बैठे।" इस प्रकार उसने कहा। २५ इसको हनुमान कहते है। इससे युद्ध करने शिवजी भी डरते है। ब्रह्माजी, देवता, दानव, मानव, नागों मे किन्हीं को भी यह तिनके के बराबर नहीं मानते। इससे दुगुने पराक्रमी वीर भी हैं। उनको आप ही देख लीजिए।" इस तरह कहा। २६ "यह सब मैं सच-सच कह रहा हूँ। यह प्रसिद्ध शरभ है। वह रुमण्व है। वह केसरी है। ये— मैंद, द्विविद, रंभ, रुमादि वीरवर हैं। देखिए राक्षसराज़! वह दधिमुख है। इसका सामना करना असाध्य है। इसी तरह यह पनस है। इसके

मुसुगळवे कालद कपर्दिय नॊसल कण्णिन किडियवॊलुलळि
मसगि कोडगविड्डु काणिसु तिदे लयानलन
रसनॆगळ काहुरद वॊल कण्गॆसॆवुतिवॆ नोडिरिळु मोडद
लसदळिप सिडिलंतॆ सेनॆय सिगळीकगळ ॥ 28 ॥
करडिगळॊ कग्गविय बलु हॆम्मॊरडिगळॊ दनिगॊडुव सिडिलिन
गरुडिगळॊ गति विडिद कल्पद मेघ दॊड्डुगळॊ
हॊरळिगळु हॊसतल्लवॆ संगरकॆ वहुदिदु जीय नोड-
च्चरिय चतुरंगद छडाळ गडावणॆयनॆंद ॥ 29 ॥
करि तुरग रथ पायदळ दुब्बरद हंगिनितुंटॆ सलॆ सं-
वरिसि कॊंडिह कट्टळॆय कैदुगळु बेरुंटॆ
अरस चित्तैसाळ्द निक्कुव धुरद जीवित वुंटॆ रणदु-
ब्बरकॆ हिंगुव हेडितन तानुंटॆ हेळॆंद ॥ 30 ॥
तडॆव रिल्लीत गळनबुजज मृड सुरेंद्रादिगळु फणिपन
पॊडवि विडिदज लोक पर्यिंताव कालदलि
कडुहु निन्नी सावु केडि गॊडलु गॊडुव समर्थरिगॆ तो-
ळॆडॆय पूजिसि कॊंब सुभटरिगुंटॆ हेळॆंद ॥ 31 ॥

सामने कौन डटे ? इस प्रकार करोड़ों वानर नायक हैं। देख लीजिए।" इस प्रकार कहा। २७ "प्रलयकालीन शिवजी के भालनेत्र से निकलती चिनगारियों की तरह ये काले मुँह वाले बन्दर हैं। प्रलयाग्नि की लपलपाती लाल जीभ की तरह (ज्वालारूपी जिह्वा की तरह) उत्साही बन्दरों का यह समूह दिखायी देता है। रात के बादलों की चमकती भारी बिजली (कड़ाके की बिजली) की तरह काले बन्दरों की यह सेना शोभायमान है।" २८ "क्या रीछ हैं, या अँधेरा भरी गुफाओं के चट्टान पहाड़ है या प्रतिध्वनि करते बादलों के बीच की बिजलियों की स्पर्धा है या आगे जूझते प्रलयकालीन बादलों का समूह है! इस सेना का यों युद्ध के लिए रवाना होना क्या विनूतन घटना नहीं है? हे प्रभो, आश्चर्यजनक इस भारी सेना के, चतुरंग सेना के शोरगुल को ध्यान से सुनिए।" इस प्रकार शुक ने कहा। २९ हाथी, घोड़े, पैदल सेना की परवाह इन्हें कहाँ है ? नियमानुसार तैयार तैनात परम्परागत आयुधों की परवाह भी इन्हें कहाँ है ? सुनिए राक्षसराज, अधिपति से दिये जानेवाले सैनिक वेतन की परवाह इन्हें कहाँ है ? कहाँ तक कहें ? अंत में, भारी भयानक युद्ध में पीछे हटने की कायरता इन्हें छू ही नही सकती। ३० पाताललोक से लेकर ब्रह्मलोक तक किसी भी समय ब्रह्माजी, शिवजी, देवेन्द्र आदियों

गिरिगळवें नूऱारु कपिगळ करगळलि बालदलि सुत्तिद
मरगळवें कोटानुकोटिगळसम संगरक्कें
अरस चित्तैसें्म सुभटरु धरिस वल्लरें नोडिवरु दु-
र्धर धुरंधर रहरें नेंऱें लेसागि नोडेंद ॥ 32 ॥
वेऱें नोडसुरेंद्र नेंरददें तोऱिकेंय जव्वनद भटरे-
ळ्नूरु कोटि गळवऱु महिमेंय हेंगळ लऱिदेंनगें
तोरुतिदें वेऱित्त सिडिलुव्वेंऱें नेंरदंददलि सिहद
चीऱिकेंय बेंलु नोडु मऱिगोडगव नीनेंद ॥ 33 ॥
नेंगेंनेंगेंदु नभकुप्परिसि तारेंगळ तिऱिदंबोज मिन्नन
मेंगकें हुव्विक्कुववु जव्विदु जवन नडगट्टि
जगळ वाडुव वमर रायन नगरद वलाजनव नेंडिसि
नगिसुववु निर्जर कदंबव नरस नोडेंद ॥ 34 ॥
दाटुववु कडलेळनवनिय मीटुववु मुळिदडें कपर्दिय
गोटु गेंळिसुव साहसवु कोपिसिदडवुजजन
पाटिसिद खर्पट कटाहव दूटिसुव त्रिक्रमवु निम्म नि-
शाटरलि तोऱिनितु महिमेंय नेंद नसुरेंगें ॥ 35 ॥

में कोई भी इनको रोकनेवाला नहीं। तुम्हारी मौत और बुराई के लिए अपनी देह की बलि चढ़ाने को तैयार, अपनी भुजाओं की पूजा करा लेनेवाले तुम्हारे इन वीरों में इनकी जैसी वीरता है कहाँ?" इस तरह शुक ने पूछा। ३१ "इस भयानक युद्ध में प्रयुक्त करने लायक पहाड़ हाथ में धरे, करोड़ों पेड़ बंदरों की पूँछों में हैं। हे प्रभो! हमारे वीर क्या इनका सामना कर सकते है? जरा देखिए, ये दुर्धर, असाध्य युद्धसमर्थ कपिनायक हैं। जरा ग़ौर कर देखिए।" इस प्रकार उसने कहा। ३२ "हे राक्षसराज, उधर देखिए। बहुत ही प्रसिद्ध, सात सौ करोड़ नौजवान वीर इकट्ठे हो आए हैं। उनकी महिमा का गुणगान मैं नहीं कर सकता। इस तरफ़, यह देखिए— बिजली की तरह बड़े जोर के साथ इकट्ठे हो रहे तथा शेर की तरह गरजते हुए वन्दरों के बच्चे हैं।" इस तरह कहा। ३३ "ये वंदर मानों उछल-कूदकर आकाश के नक्षत्रों को उखाड़कर, सूरज की तरफ़ भौंहें चढ़ाते हैं। यम के साथ टक्कर लेते उनको डरा-धमकाकर झगड़ सकते हैं, लड़ सकते है। देवलोक की स्त्रियों की हँसी-मजाक़ उड़ाते हुए देवताओं को हँसाते है। देखो रावण।" इस तरह शुक ने कहा। ३४ ये बंदर इतने भयानक साहसी हैं कि जरूरत पड़े तो सप्त सागरों को पार कर सकते हैं, भूमि को मिटा सकते हैं, क्रोध अया तो

कुल गिरिगळल्लाडुववु हिडिदोले दडी कपिशिशुगळबुधिय
कलकुववु नीराटदलि हारिकॆय गुत्तिनलि
चलिसुववु उदयास्तमानद कुल शिलोच्चय निन्न दुर्गद
बलुह हेळदिर नितक दट्टुळ्ळवर नोडॆंद ॥ 36 ॥
अरसकेळ् कपि पोतकंगळ नेरवि तानिदे नोडु नरके
सरिगॆ मार्मलेवंतॆ कालन कोणनुलिवंतॆ
भरवसदलिवॆ नोडु हिमवद्गिरिय मेट्टिदु हारुववु सुर-
गिरिय तुदिगुत्तान पादज पुरिगॆ नोडॆंद ॥ 37 ॥
मायॆयिदु तानॆसॆ सिरिनारायणन नाडाडि कोडग
कीयशेष गुणंगळुंटे पूर्वकालदलि
रायनी रक्कसर कुलकस हायशूरनु नीनु निन्नोड
नायतद रणकोदगुवदु बेरुगल्लवे यॆंद ॥ 38 ॥
मुत्तिकॊंडिदे नोडु दुर्गव हॊत्त गिरितरु सहित बिडिसुव
मुत्तिगॆय भटरुंटे नुडियलि तन्न मुंदीग

शिवजी को मुसीबत में डाल सकते है । ब्रह्मसृष्टि की कड़ाई भी ये उलट-पलट सकते हैं । चिढ़ गये तो ये जो चाहे सो कर सकते हैं । ऐसी हिम्मत है किसी तुम्हारे राक्षस वीर में ? दिखा दें तो सही ।" इस तरह उसने कहा । ३५ "ये कपि-शिशु पकड़कर हिलाएँ तो कुलपर्वत हिलने-डुलने लगते हैं । जल-विहार के बहाने समुद्र में उथल-पुथल मचा देते हैं । एक स्थान से दूसरे स्थान में उछलें-कूदें तो पूरब-पश्चिम के कुलपर्वत चल-विचलित होते हैं । तिस पर आप अपने दुर्ग की सामर्थ्य के बारे में कुछ भी न कहें । उतने बलवान समर्थ वीरों को अपने दल-बल में पता लगाएँ ।" इस तरह कहा । ३६ "हे राक्षसराज ! सुनिए, शिशु-बन्दरों के इस झुंड को देखिए । मानों नृसिंह का सामना करते, यम के भैंसे की तरह चीखते-चिल्लाते कितने उत्साह को प्रकट कर रहे हैं ? हिमालय पर्वत पर खम ठोंके खड़े रहकर वहाँ से मेरुपर्वत की चोटी पर तथा वहाँ (मेरुपर्वत के शिखर से) ध्रुव-नगरी की उड़ान के लिए मानों तैयार खड़े हैं । देखिए ।" इस प्रकार शुक ने कहा । ३७ "यह सत्य है (इसमें कोई शक नहीं) कि यह श्रीमन्नारायण की माया है । पूर्व में (प्राचीन समय में) ऐसे मामूली बन्दरों को इतनी ताक़त कहाँ थी ? ऐसे महान गुण कहाँ थे ? राक्षस-समूह के लिए तो आप राजा हैं, असहाय शूर हैं । आप जैसे महान व्यक्ति से यों युद्ध करने के लिए तैयार होना आश्चर्य की बात नहीं है क्या ?" इस प्रकार कहा । ३८ "पहाड़ों को, बड़े-बड़े पेड़ों को द्वारे कपिसेना ने दुर्ग

इत्तु कळॆ सीतॆय निरर्थकॆ सत्तु होगलु वेड नालिगॆ
यॆत्ति नुडिववरिल्ल हितवरु निन्न कूडॆंद ॥ 39 ॥
सूसॆ ननॄतव केळु वैरद वासिकाउन कोश वलवा
राशि मध्यद लहॆनॆ नोडमरॆंद्र गिरियंतॆ
दाशरथिय यशोविलास श्रीसतिय सुग्रीव शोभा
भूषणद मणिगणद नायकरतुननव नॆंद ॥ 40 ॥
रणकॆ नीलग्रीव रिपुमारणकॆ कालग्रीव रामा-
यण महामाला सुरत्नावळिगॆ सुग्रीव
सॆणसु सुखवल्लिव नॊडनॆ मनदॆणिकॆयनु विडु तिद्दिकॊंबुदु
गुणवले गह्वरिय तनुजॆयनित्तु कळॆयॆंद ॥ 41 ॥
इनितरॊळु हरियॆंदु रामन ननुकरिस कवुधि बॆट्टकॆ
तनुव तॆरुवुदॆ वनचररु कैगट्टिट काळगकॆ
अनिमिषांतक रॊडनॆ निलुववॆ मनुज किंकररागि वुद्धिय
निनगॆ हेळलिकाव् समर्थरॆयॆंद नसुरगॆ ॥ 42 ॥

को घेर लिया है। इस घेरे को (आक्रमण को) असमर्थ बनानेवाले वीर अगर आपके यहाँ हैं, अभी आपके सामने आकर कहें। सीता को समर्पित करने में कल्याण दीख पड़ता है। व्यर्थ अपना विनाश मत करें। धैर्य के साथ सच्चाई प्रकट करने के लिए आपके निजी हितू (हितचिंतक) कोई नही है।" इस तरह कहा। ३९ "मैं झूठ नहीं बोलता; शत्रुता मोल लेनेवाला मेरुपर्वत-सदृश वानर-सेना-सागर के मध्य में है— देखो। दाशरथी के कीर्तिलक्ष्मी के कंठ के आभूषणों में स्थित रत्नों के मध्य नायक रत्न की तरह सुग्रीव वहाँ पर विराजमान है। देखिए।" इस प्रकार उसने कहा। ४० "युद्ध के लिए विषकंठ-सदृश (नीलग्रीव) शत्रु-संहार में रुद्रस्वरूपी (कालग्रीव) रामायण नामक अनुपम रत्नहार धारण करने योग्य सुन्दर ग्रीवावाले (सुग्रीव) राम इनसे युद्ध सुखकारी नहीं है। तुम्हारी यह धारणा ग़लत है। इससे विमुख हो जाओ। अब भी कुछ बिगड़ा नहीं। सँभल जाओ। भू-जाता सीता को विदा कर, रवाना कर दो तथा इस बोझ से विमुख हो जाओ।" इस प्रकार कहा। ४१ "श्रीहरि (के अवतार) होने के कारण सभी को राम का अनुसरण करना ही पड़ता है। नहीं तो समुद्र अपने ऊपर सेतु बाँध देने क्या पहाड़ों को सुअवसर प्रदान करेगा? मानव के सेवक होकर वानर राक्षसों से युद्ध करने में क्या कभी कमर कस सकते हैं? आपको समझाने की योग्यता हम में कहाँ?" इस प्रकार शुक ने रावण से पूछा। ४२ "क्यों रे शुक!

एनेलवो शुक नम्मोडने माया निबद्धोक्तिगळे तन्ननु
नी नरियदवने विचारिसि गळह दादेयल
वानरर कापेय कुशल विधानवनु नेरे कलितला बिडु
मानवेंद्रन तोरु सांका मातदेकेंद ।। 43 ।।
आदडीक्षिसु मनद भयद निहादियलि निगम प्रसिद्धन
भूदि वानल सलिल सूर्यात्मकननच्युतन
आदिनारायणन निन्न सहोदरन रक्षिसिदवन दू-
र्वादिळश्यामळन रामन नोडु नीनेंद ।। 44 ।।
ऎडद तोळनु निन्न तम्मन मडुहिगानिसि तन्न तम्मन
खड्ग हस्तद मेले सिरि हस्तवनु संघटिसि
जडिव हेगलिन मूडिगेय कैहोडेय लसुरेश्वरनु हेळुव
नुडिगे किवि गोट्टात नग्गद राति भटनेंद ।। 45 ।।
बेडुतदे बोब्बिरिदु रामन मूडिगेय कवलंबु हगेगळ
तोडि रकुतव सुरिव भरदलि वीर लक्ष्मणन
झाडणेय खंडेयद किडि कुणि दाडुतवे खद्योत मालेय
मोडियलि मरे मातदन सुरेंद्र नोडेंद ।। 46 ।।

हमसे माया-विलास का वार्तालाप कर रहा है न ? क्या तू हमको नहीं जानता ? हमारी योग्यता से अनभिज्ञ है ? बिना सोचे-समझे बोल बैठा न ? वानरों के षड्यंत्र की अति बुद्धिमत्ता की सीख सीख गया न ? जाने दो इन बातों को। मानवेन्द्र को दिखा दो तो यथेष्ठ है।" इस प्रकार रावण ने कहा। ४३ "ऐसी बात है तो मन का भय त्यागकर देखो। वेद-प्रसिद्ध भूमि, आकाश, अग्नि, जल, सूर्य आदि जो स्वयं है उस नाश-रहित को (अविनाशी तत्व को) देखो। तुम्हारे भाई के आश्रयदाता दूर्वादलश्यामल वर्णयुक्त आदिनारायण राम को देखो।" इस प्रकार शुक ने कहा। ४४ अपनी बायीं भुजा को तुम्हारे भाई विभीषण के कंधे पर टेके, तलवारधारी भाई लक्ष्मण पर दायाँ हाथ रखे, तीरों के पुच्छल भाग बाहर दीख पड़नेवाले तरकस को कंधे पर कसे तथा विभीषण से कही जानेवाली बातों पर ध्यान लगाए सुनते जो श्रेष्ठ वीर (वहाँ) खड़ा है— वही राम है। ४५ राम के तरकस का तीक्ष्ण भयानक बाण शत्रुओं की हत्या कर, उनकी देह को खोदकर रक्त उछालने के उत्साह से पुकार-पुकारकर विनती कर रहा है। वीर लक्ष्मण के खड्ग से निकलती चिनगारियाँ जुगनुओं की तरह नाच रही हैं। इसमें लुकाव-छिपाव

कर्तनागिह नमररिगें समवर्ति यागिह नसुररिगें कडु
धूर्त नागिह नणकरिगें निश्चैक शरणरिगें
भर्तृ वागिह नवर वरिगपवर्तिसलु नोडरस नाना
मूर्तियलि तोर्पतनी रघुनाथ नोडेंद ॥ 47 ॥
सावु निनगिल्लजनु नीलग्रीव रित्तायुष्य वुंटें
बी विचारव बिट्टु कळें कमलज भवादिगळ
देवनल्ला दैत्यरिपु मन काव संशय वेड सीता
देवियर नोय्दित्तु मरॆयॊगु राघवेश्वरन ॥ 48 ॥
वीर नी रघुनाथ शौर्योद्धारनी रघुनाथ करुणा-
सार नी रघुनाथ शरणागत जनावळिगें
चारुतर सुरधेनु वेंबी सॆरणेय सिरि मैयलदें क-
ण्णारॆ नोडलें यरस केडुग तनव नुळिदेंद ॥ 49 ॥
चलुव नहने नोडु सीता ललनॆ गग्गळें दाजिरंगकॆ
बलुह नुळ्ळव नहनॆ निनगिदखिळ गुणगळलि
ऒलिवु दग्गद धर्मधर्मद बळिगें कोडग कूडिताजिगें
सलॆ सहोदर बिट्टु होदनु निन्न नीगेंद ॥ 50 ॥

कैसा राक्षसराज !" इस तरह शुक ने कहा। ४६ "वह देवताओं का प्रभु है। राक्षसों के लिए यम-सदृश है। अपने निंदकों के लिए बड़ा भयानक है। वही ध्यान से चिंतन करनेवाले भक्तों के पोषक हैं। इस प्रकार विचार कर देखें तो जिसकी जैसी भावना तिसको तैसे स्वरूप-दर्शन द्वारा रघुनाथ दिखायी पड़ते है।" —इस प्रकार शुक ने कहा। ४७ "ब्रह्माजी के तथा महेशजी के प्रदत्त आयुष्य (उम्र) मुझे भरपूर प्राप्त है। मृत्यु मेरी क्या कर सकती है ?" —यह विचार त्याग दो। (यह राम) असुरारि जो है, ब्रह्माजी तथा महेशजी से बढ़कर भगवान है। इसके बारे मे रत्ती भर भी शंका न करना। सीताजी को ले जाकर सौंपकर उन्ही राघवेश्वर की शरण जाओ।" इस प्रकार कहा। ४८ "यह रघुनाथ बड़े ही वीर हैं। पराक्रम के, पराक्रमी के पक्षपाती हैं। बड़े करुणासागर है; शरणागतों के लिए सुन्दरतम कामधेनु हैं। —इस प्रकार अनूठी तेजसंपदा उनके शरीर में दिखायी देती है। अपनी दृष्टता त्याग एक बार आँखें खोलकर देखिए प्रभो।" इस प्रकार शुक ने कहा। ४९ सीता नारी का यह सुंदर प्रियतम है न ? अपने समस्त गुणों के कारण युद्धरंग में (युद्धभूमि मे) यह आपसे बढ़कर समर्थ है। जहाँ धर्म है वहाँ श्रेष्ठ धर्म झुकता है (लगाव दिखाता है)। कपिसेना युद्ध

परसतियरी रामभद्रंगरस केळोड हुट्टिदरु दु-
श्चरित वीतन लणु दशांशवु होह्दिदु सिद्ध
सुररिगीतनु कल्पतरु भूसुररिगीतनु देवमणि क-
बुंररिगीतनु काल भैरव नहने नोडेंद ॥ 51 ॥
असुररीतन होंद्दि जगदलि हेसरु पडेदव रिल्लवे भा-
विसिदडीयने लोक पालत्ववनु नैरुतिगे
असम बल बलि गीयने हवणिसद पाताळव हिरण्यक
शिशुवि गीयने सार्वभौमत्ववनु वैष्णवद ॥ 52 ॥
सुररिगमृतव नेरेव दिनदलि शरणु होगे सुधेयित्तु शशि सू-
र्यर समानग्रहद पदविय नित्तु मन्निसने
धरेयरियें राहुवनु तोडेयोळ गिरिसि कोळने हिरण्यकन मू-
र्खर मनोद्यम बेड बिडु वैरवनु नीनेंद ॥ 53 ॥
होगलंदिन मातु मलेतव रेगिदरु खर दूषणादिग
ळीग सेरिदु कट्टने सुग्रीव नोडवन
होगु हगे येडे गेंदु नूकलु मैगुरुह कंडरियदन ले-
सागि मन्निसि कोडने लंकेय नरस केळेंद ॥ 54 ॥

के लिए आ डटी है। तुम्हारे सहोदर (भाई) उनसे जा मिले हैं। ५० "इस रामभद्र के लिए परस्त्रियाँ अपनी बहिन-सदृश हैं। इसमें बुराई का एक दशांश, एक अणुमात्र भी प्रविष्ट नहीं हो सकता। यह निश्चित जानो। देवताओं के लिए यह कल्पवृक्ष है। ब्राह्मणों को तो वांछित वस्तु प्रदान करनेवाली चिंतामणि है। राक्षसों के लिए कालभैरव है। विचार कर देखो।" इस प्रकार कहा। ५१ "इनकी शरण जाकर प्रसिद्ध होनेवाले असुर क्या इस जगत् में नहीं हैं? निर्ऋति को इसने (नैर्ऋत्य) दिशा का आधिपत्य नहीं दिया? असाधारण बलशाली बली को इसने पाताललोक क्या दान में नहीं दिया? हिरण्यकशिपु के बेटे प्रह्लाद को वैष्णवलोक का सार्वभौम आधिपत्य नहीं दिया? ५२ "श्रीविष्णु के देवताओं को अमृत बाँटते समय शरण में आए राहु को अमृत देकर सूर्य-चंद्रों की बराबरी का, ग्रह का दर्जा क्या प्रदान नहीं किया तथा उसका गौरव नहीं बढ़ाया? (अपने) नृसिंह-अवतार में हिरण्यकशिपु को अपनी गोद में ज[illegible] हीं दी? अतः मूर्खों के मनोभाव को त्यागो।

मेरॆ यावुदु नोडु वानर वारुधिगॆ दशकंठ जगदल
दारु सरि निनगॆंबॆ सैन्य समाज दॆणिकॆयलि
वीर नीनो राघवनो रणधीर नीनो राघवनॊ शृं-
गार वावुदु तोडु रणसन्नाह संभ्रमव ॥ 55 ॥
निन्न शौर्यद सुप्रतापद विन्नणव कॊंडाडॆ रघुपति
खिन्न नादनॆ खतिय ताळ्दनॆ कांति हिंगिदनॆ
तन्नॊडॆयनन्नु हॊगळुववनत्युन्नतनु नृपदूतरॊळगॆं-
दॆन्न कॊंडाडिदनु तलॆदूगिदनु निनगॆंद ॥ 56 ॥
निद्रॆ गनसिन लळिव कंडव रॆद्दु कुळ्ळिरदिहरॆ निनगा
हॊद्दिदगॆय हवणाय्तु हेळुव हितव रिल्लकट
मद्दु कय्यागिहुदु मॊदलद मॆद्दरडगुवु दुदरवनु हॊ-
द्दिदद रुजॆ मातॆम्मवीपरि यरस कॆळॆंद ॥ 57 ॥
हरियॊडनॆ हगॆतनवु सल्लदु सरस मारिय कूडॆ लेस-
ल्लॆरळॆ तोळन तॆगॆदु जीविपुदे महादेव

पास चले जाओ' कहते धक्का देकर विभीषण को जब तुमने निकाल दिया तो अपरिचित, अनजान विभीषण का गौरव करते हुए राम ने उसे लंकाधिपत्य प्रदान नहीं किया? ग़ौर से सुनिए राक्षसराज"; इस तरह शुक ने कहा। ५४ "(अपरंपार) इस वानर-सेना-सागर का ओर-छोर कहाँ है— पता लगाइए। हिसाब लगाकर देखें तो तुम्हारे पास की सेना क्या उसकी बराबरी कर सकती है? क्या वीर तुम हो या यह राघव है? युद्धवीर क्या तुम हो या यह राघव है? युद्ध की तैयारी की संपन्नता में, धूमधाम में किस तरफ़ की शोभा अधिक है। विचार कर देखो।" इस तरह उसने कहा। ५५ गुप्तचर के रूप में राम के सम्मुख जाकर जब तुम्हारी शूरता-वीरता की प्रशंसा की तो क्या राम चिंतित हुए? नाराज़ हुए? चल-विचलित हुए? कांतिहीन हुए? (कभी नहीं।) अपने प्रभु की प्रशंसा करनेवाले मुझ दूत को राजदूतों में अतिश्रेष्ठ मानकर, मेरी प्रशंसा करते हुए वाह-वाह की तथा तेरी भी वाह-वाह की। ५६ "सोते में, स्वप्न में (अपनी) मृत्यु को देखनेवाले तुरंत उठ बैठे बिना रह सकते है? तुम्हारी चाल-चलन भी इसी प्रकार की हुई। तुम्हें सदुपदेश देनेवाला कोई हितचिंतक नहीं रहा न? दवा खाने में (औषध सेवन में) कड़वी रहती है, लेकिन उसका सेवन करने पर पेट-प्रविष्ट उससे रोग का निवारण होता है। मेरी बातें भी इसी प्रकार की हैं।" इस तरह शुक ने कहा। ५७ "श्रीहरि के साथ इस प्रकार शत्रुत्व ठीक नहीं; महामारी के साथ खिलवाड़ उचित नहीं। क्या हिरन

करुणि रघुराजेंद्र चंद्रन मरॆय होगु कॆड बेड बेडॆं
दॊरॆदु शुक सारणरु बळियलि कलि दशाननन ॥ 58 ॥
एकॆ निनगी मातु मानव काक कोडग विड होगळिद
डाकळिगॆ हुलियंजुवदॆ हवणरिय दाडॆयल
नूकि नोडलि रणद लनिबर नाक निळयर माडदिरॆ लो-
कैक वीर नॆनिप्प बिरिदनु हरिदु बिसुडॆद ॥ 59 ॥
अॆंदु हलु मॊरॆ दसुर हूंकृतियिंद घर्जिस लुदुरिदवु नभ-
दिंद तारकि तळमगुचि तंबुधि सुरालयद
मंदि मुम्मळियायिती कपिवृंद कंपिसि तेनि दद्भुत
वॆंदु तॊरवॆय राय नीक्षिसिदनु विभीषणन ॥ 60 ॥

ऒंबत्तनॆय संधि

सूचनॆ— वीर लंकाधिपन घन विस्तार विमलच्छत्रवनु रघुवीर कडिदनु कॊण क्रिदनु कपिपति दशानन ।

कॆळिदै रघुवंश लक्ष्मी लोल सुत रावणन हूंकृति
कॆळिसितु कपिकटकदलि कैयॊडनॆ दशमुखन

भेड़िये पर टूटकर सुरक्षित रह सकता है ? दयानिधि रघु रामचन्द्र की शरण में जाओ। व्यर्थ अपना सत्यानाश होने से बचो; बुराई पर मत उतरो।" इस प्रकार शुक-सारण ने रावण को समझाया। ५८ "ऐसी बातें क्यों कर रहे हो ? नीच मानव तथा कपियों के झुंड की यों प्रशंसा उचित लगती है ? बाघ क्या गाय से डरे ? मेरा सामर्थ्य तू पहिचान न सका न ? मुझ पर (वह) आक्रमण कर देंगे, तो युद्ध में उन सभी को सीधे स्वर्ग का मार्ग न दिखाऊँ तो लोकैकवीर नामक मेरी उपाधि तो तुम निकाल फेंको (समाप्त कर दो)।" इस प्रकार रावण ने कहा। ५९ इस तरह कहते, दांत-ओंठ चबाते रावण ने हुंकार भरते गर्जना की तो आकाश से तारे टूट पड़े। समुद्र डाँवाँडोल हुआ। देवलोक के कई मृत्यु के आधीन हुए। कपि-समूह थरथर काँपा। "यह क्या अद्भुत है ?" इस तरह पूछते राम ने विभीषण की ओर देखा। ६०

नौवीं संधि

सूचना— लंकेश्वर वीर रावण के श्वेतछत्र को राम ने काट डाला। कपियों के स्वामी सुग्रीव ने दशमुख को छेड़ा।

हे रघुवंशलक्ष्मीपति के पुत्र ! सुनो। रावण का हुंकार कपि-सेना में सुनायी पड़ा। उसके साथ-साथ रावण की तलवार की कांति अष्ट

बाळ बॆळ गळ्ळिळरिदुदखिळ दिशाळियनु बळिका खरांतक
केळिदनु वंदसुर नारॆंदा विभीषणन ॥ 1 ॥
जीय बंदव नीग रक्कस रायनमल पुलस्त्य नॆंब म-
हायतींद्रन पौत्र पुत्रनु विश्व वसुविगॆ
राय चित्तैसिवन विक्रम दायतकॆ सरि सुभटरसुरनि
काय निर्जर नरभुजंगम रॊळगॆ यिल्लॆंद ॥ 2 ॥
इवन खंडॆय कळुकि दिविजर युवतियरु सॆरॆ याय्तु तॆत्तरु
विविध वस्तु प्रचयवनु सुर नर भुजंगमरु
भव विरंचि प्रमुख निर्जररिवन कैवश वाय्तु तारनु
लवकॆ देवरु बंद बवरद भयव मनकॆंद ॥ 3 ॥
अरस चित्तैसिद्र शिखि यम निरुति वरुण समीर हरसुख
सरसिरुह भव सर्पराजन राजलांछनद
सुरुचिरद कांचनद रत्नोत्करद मकुटच्छत्रवदॆ दश-
शिरन शिरदग्रदलि सिरियिनि तारिगुटॆंद ॥ 4 ॥
जनप चित्तैसदॆ महाहव वॆनगॆ तनगॆंदुब्बु वातिन
कॊनर्व कोपद खंडॆयद झडपुगळ झाडणॆय
दिनप तेजव जरॆव मणिमय कनक खचित किरीट वद्धद
घन बलायत सुभटरदॆ सुत्तलु दशानन ॥ 5 ॥

दिशाओं में व्याप्त हुई। तब खर की हत्या करनेवाले राम ने विभीषण से पूछा, "यह राक्षस कौन है?" १ "स्वामिन्! यही राक्षसराज है। पुलस्त्य महामुनि का प्रपौत्र है। विश्रवसु का पुत्र है। सुनिए राजन्, इसकी महान वीरता की बराबरी करनेवाले वीर राक्षस या देवता या मानव या पातालवासियों में कोई नहीं है।" —इस प्रकार विभीषण ने कहा। २ "इसकी तलवार से डरकर देवलोक की स्त्रियाँ क़ैद हुईं। देवता, मानव, नागों ने कई प्रकार की अमूल्य वस्तुएँ इसकी भेंट चढ़ाईं। शिव-ब्रह्मादि देवता इसके आधीन हुए। श्रीमान् के युद्ध में आ डटने का भय इसे यत्किंचित् भी नहीं है।" इस प्रकार विभीषण ने कहा। ३ "राजा राम! देखिए; इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋत, वरुण, वायु, कुबेर, ब्रह्मा, आदिशेष इनके राजमुद्रांकित सोने तथा रत्न के मुकुट और छत्र दशमुख के सिर पर हैं। इतनी सारी संपदा और किसकी हो सकती है?" —इस प्रकार विभीषण ने कहा। ४ देखिए राजा राम, इस महायुद्ध के लिए उतावले होकर मैं-मैं तू-तू करते बोलते हुए, क्रोध से तमतमाते, नंगी तलवार झलकाते हुए, सूरज के तेज से भी बढ़कर तेजस्वी, रत्नाभूषणों

मलॆव मारिय खातियंदद कळिवरिव कडुगोपदुब्बिन
कलित कर्कश काय दरुणच्छविय लोचनद
बॆळगिडुव दाडॆगळ शौर्यद झळद झाडिय मोडियवन-
गगळ पराक्रमि शक्रजितुवॆलॆ देव नोडॆंद ॥ 6 ॥
हॊगॆदॆगॆद हॆब्बुलिय वॊलु झगझगिप तेजद सुप्रतापद
मॊगद कोपद तापकद तनिगिडिय दाडॆगळ
हॊगर हॊस जव्वनद जवगिवरु गळ लॆक्किसददट नीगव
मग नरांतकनसुर रायंगरस कॆळॆंद ॥ 7 ॥
सुरर बिरुदिन बावुलिय सुरुचिरद मणिमंडनद कर्कश
तरद बंडॆय दुप्परद मुप्पुरिय हुब्बुगळ
मुरिद मीसॆय मेचकाद्रिय सरिसदवनवनीग मंडो-
दरिय मगनवनीग देवांतकनु नोडॆंद ॥ 8 ॥
हरि हर ब्रह्मरनु मोहिद धुरदॊळणुविगॆ तार दुन्मद
भरित भीषण दुग्र विक्रम दाननत्रयद
धुरकॆ ता वीळॆयवनॆं दुप्परद करदलि वेडुवव नी
गरिभयंकर भारि वीर त्रिशिर नोडॆंद ॥ 9 ॥

से अलंकृत सोने के मुकुट धारण करनेवाले महान् बलशाली योद्धा रावण को चारों तरफ़ से घेरे हुए हैं। ५ "प्रतिरोधित महामारी के क्रोध की तरह, अत्यंत क्रोधाविष्ट (कोपोद्रिक्त), गोल-मटोल भारी-भरकम देहों में चमकती लाल-लाल आँखों से युक्त, चमकती वक्रदाढ़ों से युक्त, वीरता की गरमी से सुशोभित यह महावीर इन्द्रजित् है। देखिए प्रभो।" इस तरह विभीषण ने कहा। ६ चिढ़े हुए महान बाघ के सदृश जगमगाते तेज से संपन्न तथा जिसके मुखड़े से शूरता-वीरता उमड़ पड़ रही है, जिसके क्रोध-संतप्त वक्रदाढ़ों से चिनगारियाँ निकल रही हैं, यौवन की नवकांति से शोभायमान, यम आदियों की परवाह न करनेवाला महान वीर वह रहा नरकांतक। यह राक्षसराज का पुत्र है। ७ देवताओं की उपाधियों से विभूषित, रत्नाभूषणों से अलंकृत, कठोर खड्ग को (नंगी कर) ऊपर उठाए, कसी भौंहें और मरोड़ी गयी मूँछों से युक्त, काले रंग के पर्वत-सदृश दिखायी पड़नेवाला वह देवांतक है; वह मंदोदरी का पुत्र है। ग़ौर करें। ८ युद्ध में सम्मुख उपस्थित हरि-हर-ब्रह्मादियों को एक अणु से भी निम्नस्तर का जाननेवाला, माननेवाला, मदोन्मत्त भयानक तीन मुखड़ों वाला यह अद्भुत वीर त्रिशिर हाथ ऊपर उठाए, युद्ध के लिए बीड़ा उठाने को ललक रहा है। (बीड़ा देने के लिए) रावण से प्रार्थना कर रहा है।

अरस नोडॆडवंकदलि विस्तरण विमला भरण कांतिय
कर मरीचि प्रभॆय नुगुळुव निशित दाडॆगळ
वरुषकालद कार्मुगिल बंधुरद बण्णद सुप्रतापद
सिरिय नुळ्ळव नीग कोमल काय नतिकाय ॥ 10 ॥
देव नोडु निशाचरेंद्रं गैवरवरीग प्रधानरु
कोविदरु समरदलि कपनु वज्रदंष्ट्रकरु
देवरिपु धूम्राक्ष नय संभावितनु वीर प्रहस्त म-
हा विकृत बल कलि महोदररीगल वरॆंद ॥ 11 ॥
शुकनु कुंभ निकुंभ माया मकर नयन सुपालि यूपां-
बक सुबाहु सुपार्श्व सारण श्रोणितांवकरु
विकट युद्धोन्मत्त माया प्रकट विद्युज्जिह्व खळना
यकर नॆऱविय नोडु नोडॆलॆ जीय नीनॆंद ॥ 12 ॥
अदॆ दुरंधर समरशील प्रद महापाश्र्वादि भटर-
ग्गद वलिष्ठरनु सुरलेनद देव चित्तैसु
तुदिगॆ नम्मी सेनॆ समर दोळॊदगुवदु कडु चित्रविवरॊळु
कदन दभिगत भार बिद्दुदु निम्म मेलॆंद ॥ 13 ॥
इवनलॊंददॆ कॊरतॆ सीता युवतियनु कद्दॊय्दनॆंबी
हवणिनदऱि देनहनॊ नानऱियॆ नुळिदंतॆ

देखिए राजन् ।" इस प्रकार विभीषण ने कहा । ९ श्रीरामजी, देखिए। विविध प्रकार के आभूषणों की कांति से शोभायमान, सूर्य-प्रकाश को मानों बिखेरते वक्रदाढ़ों के, वर्षाकालीन काले-काले बादलों की कांतिवाले शरीर से संयुक्त महाप्रतापी कोमलशरीरी अतिकाय रावण के बाएँ में हैं—देखिए । १० "स्वामिन् ! वहाँ देखिए । वे राक्षसेंद्र के युद्धवीर पाँच मंत्री हैं । वे हैं कंपन तथा वज्रदंष्ट्र । देवताओं के शत्रु धूम्राक्ष, न्यायज्ञ-धीर प्रहस्त, महापराक्रमी महोदर वग़ैरः ये हैं ।" इस प्रकार उसने कहा । ११ "शुक, कुंभ, निकुंभ, मायावि, मकराक्ष, सुमालि, यूपांबक, सुबाहु, सुपार्श्व, सारण, शोणितांबक, युद्धोन्मत्त मायावी विद्युजिह्व आदि आदि राक्षस-नायकों का समूह देखिए प्रभो ।" इस तरह कहते विभीषण ने दिखाया । १२ "वह देखिए । उन युद्धकुशल महापार्श्व आदि वलिष्ठ वीरों के बारे में क्या बताऊँ भगवन् ! यही आश्चर्य है कि हमारी ये सेना युद्ध के लिए हर तरह सन्नद्ध है । इस प्रकार आ जुटे युद्ध की ज़िम्मेदारी आप पर है ।" इस प्रकार विभीषण ने कहा । १३ "सीतापहरण के

इवन गेलुव समर्थ रिल्ली भुवन मूरु ळोळेनलु नसुनगु
तवनिपति नोडिदनु बेडिदननुजननु धनुव ॥ 14 ॥
उगिदु गवसणिगेयनु चापद हेंगलुगळ नारैदु तिरुवनु
नेगहि बेरळिनले ऱिसिदनुद्दंड कार्मुकव
उगिदु बत्तळिकेयलि निशिताशुग सहित नीडिदनु रघुपति
नगे मोगद लोदंब कळुहिद नसुर निद्देडेगे ॥ 15 ॥
कुशने केळै तरुण तरुणिय रसुमेगळ नुगुळुव सुरत्न
प्रसर मुक्ताफल विकीर्ण प्रभेय पल्लवद
मिसुप धवळच्छत्रपंक्तिय पसरिकेय पंटिसितु बेदऱिदु
दसुर बलवल्लल्लि बिरुदिन बलुभटस्तोम ॥ 16 ॥
तेरळि कैयोडनंबु संधिसि तिरुगि बारद मुन्न वानर
ररस लंघिसि होय्दना दशशिरन मस्तकव
ऊरुळिदनु नेलकुप्परिसे जर्ज्झरित वादुदु केदऱिकेदुव
हरहिदरु हरिदश्व तनुजन मेले भटनिकर ॥ 17 ॥

पाप के सिवा इसमें और किसी प्रकार का पाप नहीं है। अतः इसकी क्या दुर्गति होगी, मैं नहीं जानता। अगर यह एक दोष न होता तो तीनों लोकों में इसे जीतनेवाले समर्थ व्यक्ति नहीं है।" इस प्रकार विभीषण के कहने पर राम मुस्कुराए तथा लक्ष्मण की ओर देख अपना धनुष देने का इशारा किया। १४ कोष (थैले) से धनुष बाहर निकाल उसके दोनों नोकों (छोरों) की परीक्षा कर प्रत्यंचा को उँगलियों से उठाकर उस महाधनुष पर चढ़ाया। फिर तरकस से एक पैना तीर निकाल राम के हाथ में दे दिया। रघुपति ने प्रसन्न मुख से वह बाण धनुष पर चढ़ाकर रावण पर छोड़ दिया। १५ सुनो कुश; बालसूर्य-सदृश किरण कांति-युक्त रत्नों से सुशोभित मुक्ता कांति से पल्लवित जगमगाते श्वेत छत्रों की पंक्ति को राम के (उस) बाण ने नीचे गिरा दिया। (इसे देख) राक्षस-सेना तथा प्रसिद्ध वीर जहाँ के तहाँ डर गये। १६ राम के बाण के आघात से रावण के छत्र के कटे जाकर उस बाण के पुनरागमन के पहले ही वानरराज सुग्रीव ने उछलकर रावण के सिर को पीट दिया। (फलस्वरूप) रावण जो धरती पर लुढ़ककर जो उठ खड़ा हुआ तो उसके बाल सब बिखर गये थे। राक्षस-योद्धाओं ने सुग्रीव पर अपने-अपने आयुध फेंके। १७ सुग्रीव ने रावण का गला दबोचकर उसका माथा

ऒत्ति गंटल नसुररायन नॆत्ति नॆग्गलु बॊब्बिरिदु कपि
कित्त ननुपम राज चिह्नद रत्नवद्धरद
हत्तु मुकुटव नॆडवलद सुभटोत्तमर सदॆबडॆदु तंदव
नित्त नंघ्रि सरोज युगळकॆ राघवेश्वरन ॥ 18 ॥
उडिदु गगनकॆ नॆगहि छत्रव कॆडहिट्टु शरविळॆगॆ कपिगळ
गडण नलियलु बंदु बॆसने नॆनुत रघुपतिय
अॆडॆगॆ बरॆ बाणधियॊळह्नभ रडगिरॆंद सुरारि नॆमिसॆ
नुडिदनत्तलु रावणनु नसुभयद बॆरगिनलि ॥ 19 ॥
खोडि यिल्लद वीरनह रणखेड नल्लद शौर्यनह नुडि
दाडबेहुदु गुणव हगॆ यादडॆयु कंडुदनु
रूढिसिद विलु विद्यॆयलि परि पाडु शिवनलि निनगॆनुत कॊं-
डाडिदनु दशशिरनु दशरथ रायनंदनन ॥ 20 ॥
मदवळिदु मनगुंदि चिंतॆय कदडु मनदलि सरिदना खळ
सदन कत्तलु राम नित्तलु कपिपतिय नोडि
तुदि बॆरळ नल्लाडि कॆडिसिदॆ तुदिगॆ नम्मनु राजनीतिय
नोदॆदॆ नावित्तॆंबुदे नॆंदरस कोपिसिद ॥ 21 ॥

धँस जाय इस तरह पीटकर गरजते हुए राज-चिह्नों से सुशोभित हीरे-जवाहरात जड़े उसके (रावण के) दसों मुकुट छीन लिये उसके आस-पास के राक्षस-योद्धाओं को पीटकर, उन मुकुटों को लाकर राघवेश्वर के चरण-कमलों में समर्पित किया। १८ रावण के श्वेतछत्र को काटनेवाला बाण उसे आकाश की ओर उछालकर धरती पर ला पटक देता है। इस दृश्य से कपि-सेना-समूह जब प्रसन्न हो रहा था तो वह (श्वेतछत्र काटनेवाला) बाण रघुपति के पास आ पूछ रहा था कि फिर क्या आज्ञा है; 'ज़रूरत पड़ने पर बताऊँगा; तब तक तरकस में छिपा रह।' इस तरह राम ने उस बाण को आज्ञा दी। उधर रावण थोड़ा-सा भयभीत हो आश्चर्य से इस प्रकार बोला। १९. "अगर दोष-रहित वीर हो, युद्धक्षेत्र में पीठ न दिखानेवाला शूर हो तो, भले ही वह शत्रु हो उसमें जो ये सद्‌गुण हैं— उनकी प्रशंसा करनी ही चाहिए। धनुर्विद्या-परिज्ञान में पूरी तरह तू शिवजी के सदृश ही है।" इस तरह दशरथ राजा के पुत्र की दशकंठ ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। २० घमंड तोड़े जाकर, कुम्हलाए मन से, चिंतायुक्त चल-विचलित मन के साथ रावण अपने राजमहल चला गया। इधर राम ने कपियों के अधिपति सुग्रीव को देखते हुए उँगली की नोक नचाते हुए गुस्से से कहा— "आखिर हमको बदनाम किया। राजनीति

अरसु नीनी बलकें रिपुभट ररसनलि सिक्किदरें निजबल
दरस कट्टिद करुवि नंतहुदेम्म बलबळिक
अरसु नीति यिदल्ल मंत्रज्ञरिगें मार्गविदल्ल कट्टा-
सुरद कर्मव नेनेंदे नाविन्नेंबुदेनेंद ॥ 22 ॥
देवरंघ्रिय करुण वुळ्ळरिगाव भयवेगुववु ता नि-
दैवने चित्तैसिदिरि रणदपजय स्थितिय
ई विघळिगें यॊळुगिदु बिसुडुवें नी विबुध विद्विपन वीर
श्री वधुविनोलेयनु बेससिन्नेकें तडवेंद ॥ 23 ॥
अेंब मातिगें यूथ नाथकदंब कैगै दब्बरिसिदुदु
कोंबुगिद हेम्मर शिलोच्चय शिखरि समितियलि
लंबिसितु लळियेऱिलग्गेय झोंबिसितु मेलेद्दु रिपुनिकु
रुंबदस्त्रावळिय चूणिय चटुळ भटनिकर ॥ 24 ॥
सैरिसन्नबरर सुनीतिय सारविन्नोंदुंटु हगेयलि
सेरि सिक्किद वस्तुविगें संधान कृत समय
नारियनु बेडिसुवनदऱ निवारणेय मुख वरिदु मेलुप
चारणेयलि पंथदलि पडितळिसुवदु नीनेंद ॥ 25 ॥

को बर्बाद किया। मुझे अब कहने के लिए कुछ शेष नहीं रहा।" २१ "तू इस (हमारी) सेना का अधिपति है। शत्रु राजा के हाथ हमारे सेनाधिपति कहीं क़ैद हो गए तो हमारी सेना बँधे बछड़े के सदृश हो जाती। यह राजनीति नहीं; (सेना का) मार्ग-दर्शन करनेवाले का मार्ग यह नहीं। तूने यह कठोर कार्य (न जाने) क्यों अपनाया? अब मैं अधिक क्या कहूँ"; इस तरह राम ने कहा। २२ "श्रीमान् के (आपके) श्रीचरणों की दया, कृपा जब तक मुझ पर है, किसी प्रकार भयभीत क्यों होऊँ? क्या मैं दैवकृपा-रहित हूँ? इस बात की चिंता कदापि न करें कि युद्ध में हार होगी। इस असुर की विजयलक्ष्मी की (कान की) बाली अभी उखाड़ फेंकता हूँ। आज्ञा दीजिए। देर काहे की?" इस प्रकार विभीषण ने कहा। २३ विभीषण की बातें सुनकर सेना-नायक उत्साह से गरजने लगे। शाखाओं-सहित बड़े-बड़े पेड़ों को उखाड़ कर पहाड़ों पर उछलने-उछालने लगे। शत्रुओं के अस्त्रों का सामना करने के लिए (सेना के) अग्रभाग में खड़े चुस्त स्फूर्तियुक्त वीरों ने अमितोत्साह में आक्रमण की चाह प्रकट की। २४ "राजनीति का और एक पहलू है। तब तक सहन करो। शत्रु के पास जो हमारी वस्तु (अपहृत हो) पहुँच गयी है उस वस्तु के लिए और एक बार संधान (वार्तालाप) की व्यवस्था

मनकें निनगदु बहुदें राक्षस जनपनल्लिगें कळुहु संधिगें
विनुत नय चरितज्ञननु पटु भाषितज्ञननु
अनुवर प्रज्ञननु निर्भय मनन शीलज्ञननु नम्मय
मनदलिद्दभिमत विदीगें दसुरहर नुडिद ॥ 26 ॥
लेसु देवरु नेंनेंद रीतिय मैसिरिय परियेंदु जांबवे
केसरिग ळौप्पिदरु तप्पल्लेंद नसुरेंद्र
ईसु दौड्डितु माडलेना भासननु साकेंदु वालि हु-
ताशनर नंदनरु कैंदग्रिदरु रूपराक्रमव ॥ 27 ॥
जीय निम्मय मतवें मतविद रायतिकें नमगेकें नीवें-
दीय शेष गुणंगळंगद नंग शोभेंयलि
स्थायि यागिदें जीयर्येनें रघुराय नहुदें दौप्पिदनु दिन
नायकनु सारिदनु बळिक परांगना सतिय ॥ 28 ॥
वारिजासन नमर मनुज महोरगर नेरेयाळ्व रक्कस
वीर दशकंधरनु पडेंदायुष्य राशिगळ

करना नियमानुसार है। सीता को प्राप्त करने जो युद्ध करना चाहता है वह, युद्ध को रोकने का क्रम भी समझ लें। अतः सर्वप्रथम (चतुरोपायों में एक) सधि (सुलह) के मार्ग का आदर करना तुम्हें प्रयत्न कर समझ लेना चाहिए।" —इस प्रकार राम ने कहा। २५ "अगर यह कथन तुम्हें पसंद है तो राक्षसराजा के यहाँ एक ऐसे व्यक्ति को सुलह के प्रस्ताव के साथ भेजो जो राजनीति-विशारद हो, चतुर वाग्मी हो, युद्ध-शास्त्रज्ञ हो, निर्भयमना हो तथा आचारवान हो (सदाचारी हो)। यह अपने मन की निजी बात है।" —इस प्रकार असुरारि राम ने कहा। २६ "श्रीमन् का आलोचना-क्रम सही है।" इस तरह केसरी-जांबव मान गये। "यह ग़लत नहीं है।" इस तरह विभीषण ने कहा। "इतनी सी बात को इतना बढ़ा-चढ़ाने में क्या धरा है?" इस तरह वाली-पुत्र अंगद ने तथा अग्नि-पुत्र नील ने कहा तथा अपनी-अपनी वीरता दर्शायी। २७ "भगवन्, आपकी राय बिलकुल सही राय है। इसकी व्याख्या करने की योग्यता हममें कहाँ? आपसे कथित वांछित सभी गुण अंगद में चिरस्थायी हैं—इस प्रकार कहने पर रघुराम ने मान लिया। इतने में सूरज पश्चिम दिशा नामक अपनी पत्नी के यहाँ गया (डूब गया)। २८ सूर्य भगवान मानों इस प्रकार शोभित हुए कि सुर, नर तथा उरगों (साँपों) पर शासन करनेवाले राक्षसवीर दशकंठ के आयुष्य राशि को माप-मापकर समाप्त कर ब्रह्माजी से पश्चिमी समुद्र

तीर लळॆंदप रांबु राशिय तीरदलि तंदिळुहि दनुपम
सारतर मणिमयद कॊळगविदॆनलु रवि मॆरॆदद ॥ 29 ॥
सवॆद वीचॆय लरस गरमनॆ तवग सभॆ लक्ष्मण विभीषण
रविसुतादि समस्त सेनाधिपरि गॊत्तिनलि
भवनवा भवनगळ बाह्यॆयलवतरिसिदवु कोटॆ पडियग
ळवनिजा सुतकेळु सुरवर्धकिय कॆलसदलि ॥ 30 ॥
बिजय माडिद नरस ननिलात्मजन कैविडिदमर रायन
गजरु गहळॆय सन्नॆयलि सेनाधिपरु सहित
निज निवासकॆ विश्वकर्मन भजनॆयनु कैकॊंडु बीडिकॆ
गजतनुज सुग्रीव मुख्यर कळुहिदनु बळिक ॥ 31 ॥
तीरितंदिन रजनि रजनी चारियायुविनंतॆ नॆतिसि
ता रघुक्षितिप प्रतापक दंतॆ दिनमणिय
चारुतर तेजोविलास बलारि दिग्भागद महोन्नत
धारुणीधर दग्रदलि देदीप्य मानदलि ॥ 32 ॥

तीर पर रखा गया अनाज को मापने का एक बहुत बड़ा लोहे का बर्तन हो। २९ यहाँ (समुद्र किनारे पर) राम के लिए राजमहल तथा सभाभवन देवताओं के बढ़ई से निर्मित हुए। इतना ही नहीं, लक्ष्मण, विभीषण, सुग्रीव तथा अन्य सभी सेनानायकों के लिए राम के राजमहल के पार्श्व में ही भवन निर्मित हुए। इन भवनों के बाहरी वलय में (बाह्य-पार्श्व में) दुर्ग तथा द्वार, देवताओं के बढ़ई ने निर्मित किए। ३० देवेन्द्र ने जब बाजा बजाकर इशारा किया तो सेनाधिपतियों-सहित राम हनुमान का हाथ अपने हाथ में लिये अपने निवासस्थान पर आये। फिर बिश्वकर्मा की स्तुति-प्रशंसा करते हुए ब्रह्माजी के पुत्र जाम्बवंत, सुग्रीवादि प्रमुख वानर बीरों को उनके अपने (निजी) निवास स्थानों पर भिजवा दिया गया। ३१ उस दिन की रात चोर की आयु की तरह बीती। पूर्व दिशा के अत्युन्नत पर्वतशिखर पर सूर्य का तेज श्रीराम के बलविक्रम के तेज की तरह अत्युज्वल हो प्रकाशित हुआ। ३२

हत्तनॆय संधि

सूचनॆ-- वीर विजय भुज प्रतापनुदार साहसमल्ल वालिकुमार संधिगॆ होगि सवरिद नखिळ राक्षसर ।

केळिदै राजेंद्रसुत दश मौळियिंदी जगदॊळगॆ कडु
खूळरुंटॆं दॆणिस बेडतिशयद मूर्खरिगॆ
केळिकॆय मनछत्र भंगद मेलॆ मुरियदॆ छलपदद परि
पाळियिंदुप्पवडिसिद नुप्परद गर्वदलि ॥ 1 ॥
उदय मुखदलि पूर्व संध्याविदित कर्मव रचिसि भर्गन
पदव भजिसि बृहस्पतिय जोयिसव ननुकरिसि
त्रिदश कैवारिगळ कळकळदद्भुतद नॆलनुग्घडणॆयलि
सदमद दलसुरेंद्र नडॆतंदित्त नोलगव ॥ 2 ॥
बंदुदोलगकसुर सुर मुनि वृंद किन्नर यक्ष राक्षस
दंदशूक पिशाच गुह्यक गरुड गंधर्व
वृंद वायु कुबेर वरुण पुरंदराग्नि महेश यमनर
विदजादि समस्त सुरगणवा दशाननन ॥ 3 ॥

दसवीं संधि

सूचना— प्रचंड बाहुबलसंपन्न, महोन्नत साहसी विजयवीर वालीकुमार अंगद जो सुलह करने गया उसने सारे राक्षसों को मार डाला ।

हे रघुराजेन्द्रकुमार ! सुन रहे हो न ? इस जगत में रावण से बढ़कर दुष्ट हैं —इस तरह मत सोचो । अतिशय मूर्खों का मन करता है कि दूसरों की बातें सुनने के लिए कान खड़ा करें । अपने श्वेतछत्र के टूटने पर, बुरा न मानते हुए अपने हठीले जिद्दी स्वभाव के अनुसार रावण बड़े अहंकार के साथ दूसरे दिन सुबह यथावत् जागा । १ सूर्योदय होते ही प्रातःकालीन शौचादि कर्मों से निवृत्त होकर ईश्वर की पूजा की । उसके बाद ब्रहस्पत्याचार्य के ज्योतिष के अनुसार देवलोक के चारण-भाटों के उपाधि-स्तुति पाठ आदि के शोरगुल के मध्य बड़े अहंकार के साथ सभाभवन पधारकर सभा-संचालन किया । २ असुरमुनि, देवर्षि, किन्नर, यक्ष, राक्षस, सर्प, पिशाच, गुह्यक, गरुड़, गंधर्व, वायु, कुबेर, वरुण, इन्द्र, अग्नि, ईश्वर, यम, ब्रह्माजी आदि समस्त देवता रावण की सभा में पधारे । ३ भुजपराक्रमी, निर्भीत धीर राक्षस राजा के दाहिने

बलदभागद भद्र पीठंगळलि भव भवनज भवादिग
ळोलवु मिगॆ कुळ्ळिदरु सनकादिगळ गडणदलि
ललित शांत रस प्रवाहद सुलभतॆय सुम्मानदलि नि-
श्चलित निर्भय भुजबलान्वित राक्षसेश्वरन ॥ 4 ॥
वामदलि सुरनाथ मुख्य सनाम सुमनसरॊब्बरॊब्बर
मैमरॆय मुसुडुगळ मुकुळित करद कंपनद
कोमलद कॊंकुगळ मुकुटस्तोम दोसरिकॆगळ विगतो-
द्दाम रिर्दरु भूरिभय रसभरित भावदलि ॥ 5 ॥
वीर रावणि कुंभ त्रिशिरनुदार देवांतक निकुंभ न-
रारि खळनतिकाय मुख्य कुमार रिदिरिनलि
चूरिसुव खंडॆयद कडुहिन धारणॆय भारंक रिद्दुदु
भूरि भूषण भरित वीरावेश दुब्बिनलि ॥ 6 ॥
कलि महोदर धुरविजय दोर्बल सुपार्श्वक सुप्रतापा-
नळ महामंत्रि प्रहस्त प्रमुख नायकरु
हॊळॆव दाडॆय हॊगरु मोरॆय तळित रोमद तोळ बिगुहिन
कलिगळिद्दुदु कलित घन रौद्रातिरेकदलि ॥ 7 ॥
मसगिदंबिन लुब्बणद मॊनॆ मिसुकि दॆंडॆयलि सुरगि सुळिदॆ-
ब्बिसिद ताणदलंबु लंबिसॆ हॊक्क हॊदरिनलि

पार्श्व में मंगलमय आसनों पर षण्मुख, ब्रह्माजी, शिवजी, सनक आदि देवताओं के साथ मनोहर शांत-रस के वातावरण का निर्माण किए बैठे हुए थे। वे बड़े आराम से संतोष भरी मुद्रा में बैठे थे। ४ रावण के वाम पार्श्व में देवेन्द्रादि सुप्रसिद्ध देवता एक-दूसरे के पीछे मुँह छिपाये हाथ जोड़े बैठे हुए थे। वे अत्यंत कोमल भाव से देह झुकाए, मुकुट को एक ओर झुकाए अपनी महत्ता खोए अत्यंत भयभीत मुद्रा में बैठे हुए थे। ५ वीर इन्द्रजित्, कुंभ, त्रिशिर, श्रेष्ठ देवांतक, निकुंभ, नरांतक, अतिकाय वगैरः अतिशय वीर भारी जबर्दस्त पैलवान बहुमूल्य आभूषणों को धारे ये रावण के प्रमुख प्रसिद्ध पुत्र तलवार को जगमगाते वीरावेष-युक्त रावण के सम्मुख उपस्थित थे। ६ वीर महोदर, युद्ध जीतने की शक्ति से संपन्न बाहुबली सुपार्श्वक, वीरता की आग से विभूषित महामंत्री प्रहस्त वगैरः भुजबलसंपन्न प्रमुख नायक चमकती वक्रदाढ़ों तथा कांति-युक्त मुखड़ों से शोभायमान रोमांचित हुए वीर-वेष में बैठे थे। ७ क्रुद्ध स्थिति में बाणों को, चमकते स्थानों में तलवार की नोकों को, कटार चुभोकर शत्रु को उकसाए स्थानों में, बाण चुभे शत्रुसमूह के मध्य सर्वत्र

मसॆ मुखदॊळॊं देरि़गॆवडि कुसुरिगळ तोरुव महाद्भुत
रसद रक्कस रायरिर्दुदु कोटिसंख्यॆयलि ॥ 8 ॥
हरिय हळचि गदायुधव नीश्वरन जरदर गजवनिंद्रन
परिभविसि रुजुरोहितव नंतकन सदॆवडिदु
परिघवनु पवमान पावक वरुण निरुति कुबेर रस्त्रव
धरिसि दतिबलरिर्दुदुदित महोग्र तेजदलि ॥ 9 ॥
धनपनपजयदभिनयव सुरपन पलायन नर्तनव रवि
तनय नोटद नाटकव पवनन पराभवव
वनधिपन सोलवपचारिसि तनिनगॆयनुव्विसुव हास्यद
विनुत परिहासकरि नॆसॆदुदु सभॆ दशाननन ॥ 10 ॥
गुरुनितंवद सोगॆ दुरुविन सरस वचनद वदनदुब्बिन
तिरुहुगंगळ हायिकुव हुब्बुगळ हॊसनगॆय
सरिव मेलु दिनंगगळ तुदिवॆरळ मातिन भावभंगिय
सुरर सूळॆय रिर्दरपरांगदलि रावणन ॥ 11 ॥

उपस्थित रहते पैने धारवाले तीरों के एक मार के बदले पाँच गुने काट डालने की अधिक शक्ति रखनेवाले अद्भुत रस के राक्षसराज रावण के उस सभाभवन में करोड़ों की संख्या में थे। ८ विष्णु का सामना कर उसके गदायुध को, शिवजी से टक्कर ले उसके सर्पास्त्र को; यम को पीट कर उसके परिघायुध को, वायु, अग्नि, वरुण, निर्ऋति, कुबेर आदियों के विभिन्न शस्त्रास्त्रों को, छीन लेनेवाले महापराक्रमशाली वीरतासंपन्न उग्र तेज परिपूर्ण महान-महान वीर रावण की सभा में उपस्थित थे। ९ कुबेर की हार का अभिनय करनेवाले, देवेन्द्र के पलायन का नर्तन कर दिखानेवाले, यम का हारकर भागने का दृश्य नाटक-रूप में प्रदर्शित करनेवाले, वायु का अपजय तथा वरुण की हार की विडंबना करते दिखानेवाले मसखरे, जो हास्य की तरंगें अपने अभिनय से करते थे, रावण की सभा की शोभा बढ़ा रहे थे। १० मोटे नितंबों की, मयूर पुच्छ (शिखा) की तरह जूड़े बाँधे देवलोक की वेश्याएँ, प्रसन्न मुख से रसपूर्ण बातें करतीं, आँखें नचाकर इधर-उधर ताकते, भौंहें नचाते, तिरछी नजर चलाते, नये ढंग से हँसते पागल बनानेवाली स्त्रियाँ रावण के पीछे थीं। (अपने) आँचल गिराकर अंगांगों को प्रदर्शित करतीं उँगली नचाकर बातें करती सौंदर्य-मंडित युवतियाँ रावण की सभा की शोभा बढ़ा रही थीं। ११ ऊपर उठी लंबी भुजाओं से युक्त, नुकीले नाखूनों की उँगलियों पर हीरे

हॊगरॊगुव जव्वनद सॊंपिन निगुरिसिद निडुदोळुगळ सॆ-
ळ्ळुगुर मणिमुद्रिकॆय घनश्रृंगार दुब्बुगळ
नगॆय नयनद सन्नॆ वातिन सॊगसिन वलाजनद कॆगळ
लगिव चामर वॆसॆद विद्दॆसॆयलि दशाननन ॥ 12 ॥
करॆसि कारागृहद रायर करुणदलि बिडुतिर्दनग्गद
भरत खंडद रम्यकद जनपद दिळावृतद
हरिवरुष किंपुरुषदेशद कुरु हिरण्मय केतुमाला
धरणिगळ धरणिपरना समयदलि दशकंठ ॥ 13 ॥
सचिव सेनानाथ राप्त प्रचय नियत नियोगि जन परि
रचित सेना संधि विग्रह वाहक व्रात
प्रचुर कविवर वाग्मि वादि प्रचय मुख्य समस्त रिर्दडु
वचिस लेनद नमम नवरस दधिक सॊंपिनलि ॥ 14 ॥
हगॆगळॆतंदंजिकॆय नणुविगॆ मनोवचनदलि तारदॆ
विगड रक्कस रायनिद्दनु केळिदॆ कुशनॆ
सगर वंशजनित्त नॊड्डोल गवनित्तलु विश्वकर्मनु
निगुरिसिद निरुपम नितांत सभांतराळदलि ॥ 15 ॥
ओलगकॆ नडॆतंदरा कपिपाल पद्मजसूनु केसरि
शूलि समबल हनुम हरिसुत सुत सुषेणकरु

की अंगूठियाँ धारण किए हुए, अलंकारों से शोभायमान मुस्कुराती आँखों से इशारे-इशारे में ही आपस में बोलती हुई नवयौवन की कांति छितराती हुई सुन्दरियाँ चामर डुलाती हुई रावण के दोनों तरफ़ शोभायमान थीं। १२ कारा (बन्दीगृहों) के अधिपतियों को बुलाकर भरतखंड के रम्यकदेश इलावृत, हरिवर्ष, किंपुरुष, कुरु, हिरण्मय, केतुमूल राज्यों के राजाओं को उस समय दशकंठ ने करुणा से विमुक्त कराया। १३ मंत्रीगण, सेनाधिपति, विश्वसनीय (निजी) व्यक्ति, सेना-संधि युद्ध-विशारद मंत्रि, प्रसिद्ध कवि, वाग्मी (वक्ता), तर्क विशारद— वग़ैरः प्रमुख व्यक्ति मानों नवरसों की भाँति रावण की सभा में इकट्ठे हुए थे। उनका वर्णन किन शब्दों में करें? १४ सुनो कुश! शत्रु के आगमन से रत्ती भर भी भयभीत न हो, बातों से भी निश्शंक (उच्चारण) होते हुए वीर राक्षसराज निर्भीकमना थे। इधर विश्वकर्मा से निर्मित विस्तृत सुन्दर सभाभवन में सगर-वंशोत्पन्न राम ने सभा का संचालन किया। १५ कपि-कुल स्वामी सुग्रीव, ब्रह्मपुत्र जाम्बव, केसरी, बल में शिवजी-सदृश हनुमान, वाली का पुत्र अंगद, सुषेणक, नील, नल, गज, गवय, कपि व्याघ्र,

नील नळ गज गवय कपिशार्दूल शतबलि शरभ राक्षस
मौळिमणि वैष्णव शिरोमणिगळु महीपतियं ॥ 16 ॥
वीररग्गद शूर राहव धीर रतिबल साररद्रि म-
हीरुहद कैदुगळ कर्कश दुब्बिनुब्बरद
भारिभट यूथादि पति गळुदार तेजो गर्वदलि रघु
वीरनंघ्रिगे कैमुगिदु निंदिर्दरिदिरिनलि ॥ 17 ॥
जवननणुविगें तारदग्गद शिवन लेक्किसदा प्रळय भै-
रवन बगेयद भारिभट रौत्तोत्तें जडिवुतिरें
रविकुलोद्भवना समयदलि रविसुतन मोगनोडि नमगी
हवणि गावुदु मतवु निन्ननुमानवेनेंद ॥ 18 ॥
आ वुदिदकनुमान चित्तदोळावुदनुमत देवरिगें से-
वा विषय संभूत राव् बेरुटें मत नमगें
देवरेंनितनु बेससिदनितनु नावु माडुव रैसेनलु मोद
लावु निनगूहिसद मतवनें माडिनोडेंद ॥ 19 ॥

शतबलि, शरभ, राक्षसश्रेष्ठ विभीषण, विष्णुभक्त, श्रीराम की राजसभा मे उपस्थित हुए। १६ वीर, श्रेष्ठशूर, युद्धवीर महान बलशाली, पहाड़ तथा पेड़ों के आयुध धारण करनेवाले भारी बलवान योद्धाओं की सेनाओं के सेनापति अत्यंत तेजस्वितापूर्ण अहंभाव से युक्त श्रीरघुपति के चरणों में प्रणाम कर हाथ जोड़े इनके सामने खड़े थे। १७ यम की रत्ती भर भी परवाह न करनेवाले, महाशिव की यत्किंचित् भी गणना न करनेवाले, प्रलयभैरव की रत्ती भर भी परवाह न करनेवाले भारी भयानक योद्धा इकट्ठे हो झुंड के झुंड खड़े थे। तब रविकुल के श्रीराम ने सुग्रीव का मुखड़ा देखते "हमारे अब के कार्य के बारे में तुम्हारी क्या राय है? तुम्हारा क्या विचार है?" इस तरह पूछा। १८ "इस दिशा में, आपकी जो राय है, आपका जो विचार है, वही हम सब लोगों की राय है! हम सब लोगों का आपकी सेवा में वही विचार है। इसमें हमारा अन्यथा कोई विचार नहीं है। और हम अन्य रीति से आपकी राय के विरुद्ध सोच भी नहीं सकते। आप जो आज्ञा देंगे उसका हम निश्चित रूप से पालन करेंगे।" इस प्रकार सुग्रीव ने कहा। तब राम ने कहा, मैंने जो पूर्व में राय दी थी तदनुसार आचरण कर देखो। १९ "राक्षसाधिपति के यहाँ सुलह के लिए किसी को दूत के तौर पर भेजो।

कळुहु संधिगे राक्षसेंद्रन बळिगे चित्तदलरिभटनु नम
गळुकुवदु हुसियादडेयु राजोपचार विदु
अँळेदु बिडली मात नम्मय बळिगे बंदरे कावेवल्लद
डळवडिसि कोंडिरलि कदनव नेंबुदवगेंद ॥ 20 ॥
अहुदु मत्तेनेंदु करेदनु मिहिर सुत नंदनन नी हो-
गहित नेडे गितेंदु तुडि निज राजकारियव
महिजेयनु तंदित्तु निज विग्रहव रक्षिसिकोंबु देंबुदु
कुहकिगी मातुरिसदिरे बळिकेंबुदी हदन ॥ 21 ॥
नेरहि कोंडिरु पुत्र मित्राद्यरनु निजबल सहित कालन
पुरिगे पयणव माडिकोंडिर हेळु बेगदलि
शरणुहोगदिरे मातिदेरडनु सुरविरोधिय कूडे नुडिदनु
वरव तोडगदे तिरुगुवदु होगेंदना रविज ॥ 22 ॥
है हसादवेनुत्त कैमुगिदा हरीश्वर सूनु वरवै
देहि यरसन सरसिजांघ्रिद्वयके तलेवागि
मिहिरजंगभिनमिसि बळिकुत्साह मिगे मणिमकुट मुख्यम-
हाहिरण्याभरण भूषित नाद नोलविनलि ॥ 23 ॥

यह झूठ है कि वह शत्रुवीर हमसे डरे। फिर भी राजनीति का यही तकाज़ा है। अगर वह हमारी शरण आए तो हम उसकी रक्षा करेंगे। नहीं तो युद्ध के लिए तैयार रहें —इस तरह निश्चित रूप से उससे कहा जाय।" इस तरह राम ने कहा। २० "जो आज्ञा" इस तरह कहकर सुग्रीव ने वाली के पुत्र अंगद को बुलाया, और कहा— तुम शत्रुराज के यहाँ चले जाओ; सीता को बुला लाकर राम को सौंपकर अपने शरीर की रक्षा करने की राजकार्य की बात उसे समझाओ। उस धोखेबाज़ रावण को तुम्हारी बातें पसंद न आएँ तो आगे की ये बातें उसे समझाओ। २१ "तुम अपने पुत्र-स्नेहियों के साथ इकट्ठे होकर तैयार रहो। तुम अपनी सेना के साथ यमपुरी (मृत्युनगरी) की यात्रा के लिए तैयारियाँ कर रखो।" —इस तरह रावण से कहो। रावण अगर शरणागत होने के लिए तैयार नहीं तो ये दो बातें राक्षसराजा से कहकर तुरंत लौट आओ। वहाँ लड़ाई न ठानना। जाओ।" इस तरह सुग्रीव ने कहा। २२ "जो आज्ञा" इस तरह कहते अंगद ने सीतापति के चरणों में झुककर प्रणाम किया तथा सुग्रीव को भी नमस्कार कर, अत्यंत उत्साह में अपना रत्न-मुकुट धारण कर स्वर्णाभूषणों से अपने को अलंकृत कर लिया। २३ एक योजन विस्तृत पहाड़ के शिखर को कंधे पर रख लिया। आधा

धरिसिदनु योजनद नीळद गिरिशिखव हॆगलिनलि कॊंच्चिन
मरन नौकिद नॆंडद कंकुळलर्ध योजनद
हरिय सिरि चरणवनु नॆनॆदुप्परिसिदनु गगनक्कॆ गरुडन
गरुविकॆय गाढिकॆय गमनद गमक दुब्बिनलि ॥ 24 ॥
कूडॆ वानरकटक बॊब्बॆय गाडिकॆय लुब्बेळु तिर्दुदु
नोडि निर्जर निकर नलविनलिर्दुदभ्रदलि
कूडॆ कळकळ मसगि दिविजविभाडपुर भयरसदॊळिर्दुदु
मोड दिदिळितप्प सिडिल वॊलिळिदना पुरिगॆ ॥ 25 ॥
तोळ गाळिगॆ तूळिदवु सौधाळि सॊगसिन गोपुरंगळु
कालुगुर दागिनलि सिडि लॊडॆ दद्रियंददलि
धूळि गॆदऱिद वमम तोरण दॊळि नॆल कॊऱगिदवु कपि रो-
माळि सॊंकिनलंजि तळवॆळ गाडुदखिळ जन ॥ 26 ॥
निळय निळयद लिक्किदवु मुच्चळ निशाचर सतियरट्टुं
वॊलॆगळनु नंदिसिदर वुचिद रुडुव सीरॆगळ
कॆलरु हॊक्करणॆगळ बाविगळॊळगॆ केडाय्तॆंदु बंदव
सुळिद नेगुववॆनुत संवरिसिदरु सरकुगळ ॥ 27 ॥

योजन विस्तृत मजबूत पेड़ को बायीं काँख में दबा लिया। तत्पश्चात् अंगद ने श्रीहरि के चरणों का स्मरण कर गरुड़ के भयानक चाल का अनुसरण करते बड़े ही डील-डौल से आकाश की ओर उड़ान भरी। २४ यह देख वानर-सेना किलकारियाँ भरते खुशी के मारे फूली न समायी। अंगद की यह आकाश के तरफ़ की उड़ान देख वहाँ उपस्थित देवता अत्यंत हर्षित हुए। लंकानगरी भयभीत हुई। बादलों से छूटती बिजली की तरह अंगद लंकानगरी में उतरा। २५ अंगद की भुजाओं से झले हवा के वेग के कारण लंका नगरी के मंज़िलवाले मकान पीछे की ओर सरके। विद्युत् के आघात से विदलित पहाड़ों की तरह अंगद के पैर के नाखूनों से कुरेदे जाकर गुम्बज (गोपुर) धराशायी हुए। बाप रे! अंगद के रोम-स्पर्श से वंदनवारें धरती पर आ गयीं। लंकानगरी के समस्त पुरजन डर के मारे काँप उठे। २६ घर-घर के द्वार बन्द कर दिए गये। राक्षस-सहधर्मिणियों ने चूल्हे बुझा दिये। 'हाय! यह तो बुरा हुआ' —इस तरह कहते हुए कुछ एक ने अपनी साड़ियाँ तालाबों में, कुओं में छिपा रखीं। "लंकानगरी में प्रविष्ट यह (जो पहले आया था, फिर) आ रहा है। क्या करें?" इस तरह कहते

तडेद बागिलु बागिलुगळु ग्घडद खळरनु हेम्मरन हे-
ब्बुडदलें उगुत होक्क नोल गवनु सरागदलि
अंडबलद खडेयद कदनद कडुहि नसुरर नेरडु भागद
मुड्डुहुगळ लणेवुत्त निंदिद निदिरिनलि खळन ॥ 28 ॥
बेगडु गोंडुदु हनुमनेंदे बगेंदु मनदलि नोंद भटरेंदे
देगेदु केलरु केलरोळ सरिद रल्ललिल
बिगुहिनंकद बिरुदिनतिबल दगडु रक्कस रुच्चिद सिध-
नुगळ लंकरिसिदरु सरिसदलिद्र सुतसुतन ॥ 29 ॥
होहो कळकळवेके कदनोत्साहिगळु नावल्ल रिपु रवि
राहुविन नैशाट कुल काननन हुताशनन
बेह चरराव् जगद दैव द्रोहि रक्कस नोडनें नम्मव
रुहिसिदुदनु हेळि होगलु बंदे वैसेंद ॥ 30 ॥
मदद मोडिय मंदहासद मुदद मनद स्वामि कार्या
स्पदद संपत्तिन सघाडद लसुर निदिरिनलि
हुदिद गर्वद गौरवदि कुळ्ळिदनु कुंडलियंते लांगू-
लदव रासनदलि निरीक्षिसुतरि भटावळिय ॥ 31 ॥

अपनी-अपनी चीज़-वस्तुओं को कुछ एक ने इकट्ठा कर रखा। २७ रावण के राजमहल के द्वार-द्वार पर अपने को रोकनेवाले प्रबल राक्षसों को भारी-भरकम पेड़ों की जड़ों से पीटकर अंगद ने बड़ी आसानी से सभाभवन में प्रवेश किया। दाएँ बाएँ नंगी तलवार हाथ में लिये खड़े घमंडी राक्षसों को अपनी दोनों भुजाओं से खोंचते हुए आकर, रावण के सामने खड़े हुए। २८ पूर्व में वेदना भुगतनेवाले कष्ट उठानेवाले राक्षस वीर यह समझकर कि हनुमान ही लौटे हैं— घबराकर भयभीत होते हुए जहाँ के तहाँ खिसककर अन्दर चले गये। ज़बर्दस्त युद्ध में ख्यातनामा उद्यमी राक्षस अपने ख़ंजर नंगे किये अंगद के पार्श्व में खड़े रहे। २९ "अरे रे! यह शोर-गुल काहे को? हम तो युद्धोत्साह में नहीं पधारे हैं। शत्रु रूपी सूर्य के लिए राहु-सदृश बने, राक्षस वंश रूपी वन के लिए दावाग्निस्वरूप बने राम के प्रिय दूत हैं हम। दुनिया के देवताओं के साथ विद्रोह करनेवाले राक्षस से कहने जो संदेश उन्होंने दिया है— उसी को समझा देने भर के लिए मैं आया हूँ।" इस तरह अंगद ने कहा। ३० रोब में अकड़ते हुए मन ही मन हर्षित होते चारों ओर देख मुस्कुराते स्वामि-कार्यासक्ति से गंभीर रूप धारण किए अपने अहं के गौरव से (मस्ती में) अपनी पूँछ को

मुख चतुष्टयदात नारी मुखगळैदरा महिम नारी
मुखवॆरडु मूरारु नोडलु हत्तु परियंत
मुखगळिवॆ तानिद रॊळगॆ शशिमुखिय मायॆय वळसि रजनी
मुखदॊळगॆ तंद धमरक्कस निवरॊळारॆंद ॥ 32 ॥
हेळलागदॆ बल्लवरु भूपाल हेळिदु कळुहिद नितनु
हेळिहोगलु बंदॆवाव् प्रतिभटरु नावल्ल
लोल नयनॆय तंद रक्कस खूळ निवनी गॆंदु नम्मॊड
नूळ बारदॆ हिरिदु नाचिकॆयेकॆ निमगॆंद ॥ 33 ॥
नगरदहनद कपिय मॊडिय मिगिसुतिदॆ मातिनलि मॊरॆय
हॊगरु हॊस परियागि तोरुतिदे विवेकिसलु
विगड निव नहुदॆंदु मनदलि बगॆयरिदु वळिका प्रहस्तनु
मुगुळु नगॆयलि नुडिदना कंपिराजपुत्रगॆ ॥ 34 ॥
आरु नीनारवनु निन्ननदारु कळुहिद रित्त बरवे
नारॊडॆय रारुंटु निनगी नम्म नगरदलि
आर मग हॆसरेनु बरविगॆ कारण वदे नम्म राज-
द्वारवनु नी हॊक्क हदनॆनॆंदु बॆसगॊंड ॥ 35 ॥

ही लपेटकर आसन बनाए चारों ओर के राक्षस वीरों को निहारते अंगद बैठ गया। ३१ "यह चार मुँह वाला कौन है? पाँच मुँह वाला यह महामहिम कौन है? यहाँ तो दो, तीन, छः तथा दस तक मुँह रखनेवाले (मुखड़े प्राप्त हुए) व्यक्ति हैं। साँझ के समय अपना मायाजाल फैलाकर सीता का अपहरण करनेवाला नीच राक्षस इनमें कौन है?" —इस प्रकार अंगद ने पूछा। ३२ "यहाँ उपस्थित प्राज्ञ-क्या कुछ भी बता नहीं सकते? श्रीराम ने जो कुछ कहला भेजा उसे कहने भर के उद्देश्य से मैं यहाँ आया हूँ। आपका विरोध करने आया वीर मैं नहीं हूँ। चंचल नेत्री सीता का अपहरण कर लानेवाला दुष्ट राक्षस अमुक है इस तरह कोई भी क्यों नहीं बकता? तुम सब लोग इतने लज्जित क्यों हो?" इस प्रकार अंगद ने पूछा। ३३ "लंका नगरी को जलानेवाले कपि के रोब से बढ़कर रोब इस कपि की बातों में है। विचार कर देखें तो मुख की कांति भी नये ढंग की दिखायी पड़ती है। इसमें शक नहीं कि यह भारी धीरज वाला है।" —इस प्रकार मन ही मन सोचते प्रहस्त ने मुस्कुराते हुए वानरराज-कुमार से बातें शुरू कीं। ३४ "तू किसके पक्ष का है? तुझे यहाँ किसने भेजा? किस उद्देश्य के लिए तू यहाँ आया है? हमारी इस नगरी में तेरे प्रिय (तुझे चाहनेवाले) कौन हैं? तू किसका पुत्र है?

लेसु केळ्व कणॅय दभि विन्यास वॊळ्ळितु केळु लंकाधीशनॆंब
निशाचरॆंद्रन निज सहोदरिय
नासिकव कॊय्दवन रणदलि दूषणाद्यर शिरव निळुहिद
दाशरथितनु केळिबल्लै हिंदॆ नीनॆंद ॥ 36 ॥
केळि बल्लै निम्म लंका पालकन मातुळन कॊरळलि
कोल कुणिसिद कदन कर्कश राय राघवन
मेलॆ निम्माळुवन तम्मन पालिसिद परम प्रतापद
बॊळॆयर बल्लह ननातन दूत तानॆंद ॥ 37 ॥
अल्ल सानाववन नोप्पचि बल्लॆवव निन्निद बायलि
बल्लिदनु बाय् बडिक तनदलि बगुळि बालवनु
कॊळ्ळिगिडियलि सुडिसि कॊंडव निल्ल दोडिद नंदिनव नी-
नल्ल हॊसबनु नीनु निन्नय हॆसरदे नॆंद ॥ 38 ॥
हेळलेनदनवन विधियनु केळि तिल्लवला कपींद्रन
पाळॆयव हॊगगॊडदॆ कपि पोतं गळुब्बिबिद्दु
बालसुडुकन तॆवरला कपि यूळिगवु नमगाय्तु नम्मी
बालवनु नीव् कॆणकि नोडिदडरिय बहुदॆंद ॥ 39 ॥

तेरा नाम क्या है ? तेरे आने का कारण क्या है ? हमारी राजधानी के द्वार में तूने क्यों प्रवेश किया (प्रवेश कर यहाँ क्यों आया ?)" —इस प्रकार प्रहस्त ने पूछा। ३५ "तुम्हारा प्रश्न करने का कथाभिनय (विधान) बड़ा ही मनोहर है। राक्षसराज लंकाधिपति की बहिन (शूर्पणखा) की नाक काटकर युद्ध में सम्मुख पड़े खर-दूषणादि राक्षसों को काट डालने वाले दाशरथी के बारे में, पूर्व में, तुमने सुना तो है न ? ३६ "तुम्हारे लंकाधिपति के मामा मारीच के कंठ में बाण प्रविष्ट कराते युद्धभूमि में यम-सदृश आचरण करनेवाले राघवराय का नाम तो सुना है न ? तिस पर भी, तुम्हारे राजा के भाई (शरणागत) को आश्रय देकर रक्षा करने वाले महाप्रतापी देवताओं के राजा (राम) का मैं (राज) दूत हूँ।" इस प्रकार अंगद ने कहा। ३७ "बंद करो बकझक ! एक कुत्ते को हम इसके पहले देख चुके हैं। वह तुमसे ज्यादा बातूनी बहादुर था। मनमाने बकझक करते, अपनी डीलडौल हाँकते अपनी पूँछ को जलती लकड़ी की आग से जलवा लेकर यहाँ से नौ दो ग्यारह हो गया। तू तो वह नहीं रहा। तू तो नया है। तेरा नाम क्या है ?" इस तरह प्रहस्त ने पूछा। ३८ "उसकी बदनसीबी के बारे में क्या कहें ? हाय ! सुना नहीं तुमने ? वानराधिपति के शिविर में उसे प्रवेश नहीं मिला; पूँछ

हॊसब नीनहॆ कंगळिगॆ हर वसवॆ बल्लिदनहुदु कडुक
कॆशतॆयलि कंडरिय बारदॆ हॊगलदकॆनु
हॆसरदे नंगदनु पितनारसुर कॆळादडॆ दशानन
नसुव सलहिद वालियातन तनुज तानॆंद ॥ 40 ॥
अकट कॊंडिसिदॆ पापि तनुघातकनला नी निन्न तंदॆय
सकल जगवन्यायवॆनॆ कॊलिसिद दुरात्मकन
प्रकटिसदॆ कॊंदधम नरनायकन नकटा सेरि कडुहे
सिकॆय हॊत्तॆ निरर्थ निन्ननु नोडुवरॆयॆंद ॥ 41 ॥
हगॆ गळवदिरु निनगॆ नॆवदलि हॊगॆव कॊळ्ळिय हॊरगॆ हाय्किद
रगलिसिदळिविगॆ कॊल्लुववरल्ल नाव् निन्न
तॆगॆदु कॊंबॆवु नीनॆमगॆ दायिगनु निन्नय तंदॆयाळुव
नगरवनु सेरिसुवॆ वंजदिरिन्नु नी नॆंद ॥ 42 ॥
गहगहिसिदनु लेसु माडिदि रहितरे नीव् नमगॆ निमगी
बहळ भुजबल वुळ्ळ रडगिसि रुहं रुंहरिय

जलवा लेनेवाले को (उस कपि को) जब सभी वानर बच्चों ने मिलकर (अपमानित कर) भगा दिया तो उसकी जिम्मेदारी मुझ पर आ पड़ी है। हमारी इस पूँछ से छेड़-छाड़ कर देखोगे तो तुम्हीं को मालूम होगा।" —इस प्रकार अंगद ने कहा। ३९ प्रहस्त— तू तो नया है। अंगद— क्या तेरी आँखें बेहोश हैं ? प्रहस्त— तू तो सूरमा है। अंगद— हट्टे-कट्टे देह को देख क्यों नहीं समझ लेता ? जाने दो। उसमें क्या धरा है ? प्रहस्त— तुम्हारे पिता कौन हैं ? अंगद— सुनो राक्षस ! दशमुख के प्राणों को जीवदान देनेवाले वाली का पुत्र मैं अंगद हूँ। ४० "हाय; यह तो बहुत बुरा हुआ। तू तो हत्यारा साबित हुआ न ? समस्त जनता से 'यह अन्याय है' इस तरह घोषित होने पर भी, तेरे पिता की हत्या करानेवाले पापी का तथा आड़ में (छिपे) बैठकर (तेरे पिता की) हत्या करनेवाले उस नीच मानवाधिपति का साथ देकर तूने यह अत्यन्त घृणित कार्य (व्यर्थ ही) किया है। तुझ जैसे को देखना भी पाप है।" इस तरह प्रहस्त ने कहा। ४१ "सुग्रीव, राम वग़ैरः तेरे शत्रु हैं। इसी बहाने (उन्होंने) जलती लकड़ी (वालि) को बाहर कर दिया। अत्याशा के वशीभूत हो तेरे पिता की हत्या कर डाली। हम तुझे मार नहीं डालते। तुम्हें अपने पक्ष में मिला लेते हैं। तू हमारा दायाद (कुटुंबी) है। तुम्हारे पिता वाली से शासित राज्य तुम्हें दिलाते हैं। तुम डरो मत।" इस तरह प्रहस्त ने कहा। ४२ ये बातें सुनकर अंगद ठहाका मारकर हँसने लगा।

दुहितेयनु कळविनलि वनदलि तहिरे रामन बळिगे निम्मव
बहने भाष्कळ गेडुवु दुचितवे नम्म कूडेंद ।। 43 ।।
तंदे परसतिगोत कारण संदनस्तमयक्कॆ कोरळिगे
बंदिदेयला निम्मवगे नम्मय्य नोपादि
ओंदेरडु दिनदंतरवु नावेंद नुडि केळेलवो सीतेय
तंदवन तोरिदरे नमगदु राज्य पदवेंद ।। 44 ।।
अॆलवो कपि नोडादडीक्षिसु कलिललामन कदन कर्कश
कुलिश कायन वैरि वरयुवतीजन स्मरन
विलसदप्रतिम प्रतापा नलन राक्षस राजमौळिय
मलेव रिपुनृप सूरॆ काउन नोडु नीनेंद ।। 45 ।।
ईतनीग समस्त दिविज व्रात मस्तक मंडलाग्र म-
हाति बलनधिपति जगंगळि गज भवादिगळ
ईत बयसिद सुर नरोरग जातदबलाजनवनोलिसुव
दूति विजयश्री विचारिसि मातनाडेंद ।। 46 ।।

"अच्छा ही कर रहे। तुम कहाँ हमारे शत्रु हो? इतने प्रतापशाली बीर क्या वेश बदलकर पृथ्वी की पुत्री को जनपद (जंगल से) चोरी-चोरी उड़ा लाते हैं? राम के यहाँ तुम्हारा वह (चोर) आ सकता है क्या? हमसे इस प्रकार की असंबद्ध बातें करने से क्या प्रयोजन?" इस तरह अंगद ने कहा। ४३ "मेरे पिताजी तो परस्त्री-व्यामोह के कारण मृत्युवश हुए। मेरे पिताजी की तरह तुम्हारे दशकंठ के कंठ पर (मुसीबत) बन आयी है न? उसके कंठ कट जाने में अब विलंब नहीं। एक-दो दिनों में ही मेरी बात की सत्यता की प्रतीति होगी। अगर तुम हमें सीता के चोर का पता दोगे तो सचमुच हमें (राज्य) सिंहासन मिल गया समझो।" इस तरह अंगद ने कहा। ४४ "रे कपि, ऐसी बात है? तो देख। वीरों का तिलक, युद्ध में साक्षात् यम-सदृश वज्रायुध-शरीरी, शत्रु-स्त्रियों का मन्मथ, असाधारण वीरता की आग, उद्धत, शत्रु राजाओं को दबोचनेवाला—इस प्रकार के विराजमान राक्षस राजाओं में श्रेष्ठ को तू देख।" इस तरह कहते प्रहस्त ने रावण को दिखाया। ४५ "यह समस्त देवताओं के सिर पर विभूषित होनेवाला शक्तिशाली महायुध है; ब्रह्म तथा शिवलोक के स्वामी हैं। इनसे चाही गयी देवता-स्त्रियाँ, मानव-स्त्रियाँ तथा नाग-स्त्रियाँ आदियों को रिझाकर विजयश्री इनके वशीभूत कर देती है। अतः इनसे सोच-समझकर बातें कर।" इस तरह प्रहस्त ने कहा। ४६

तंगियभिमानव निरर्थकॆ भंगवडिसिद हॆवदलि हगॆ-
यंगनॆय तंदातनीतनु सोदरत्रयद
हिंगिद सुविगसु गॊळ्ळलु रणरंगदलि निंदिरुव सुभटो-
त्तुंग नीतनु नीनु बंदुद बगुळि होगॆंद ॥ 47 ॥
कोप निनगे किनितु सैरिस लापॆवे नावी निशाटन
रूपि नवरुंटागॆ कॆळिदॆ वॆसॆ तप्पेनु
आ परंतप बलिय भवनद कैपरॆय नारियर वचना-
लाप हास्यद भिक्षदव नीवल्लले यॆंद ॥ 48 ॥
घन पराक्रमि कार्तवीर्यार्जुन नॊडनॆ मत्सरिसि सलॆ सॆरॆ
वनॆयॊळगॆ सिक्किर्द रक्कस नीत नल्लवलॆ
वनितॆ वेदावतिय शापकॆ तनुव तॆत्तव नीत नल्ललॆ
मनद भय निमगेक तप्पदॆ हेळि नीवॆंद ॥ 49 ॥
तोळदर्पद लुब्बि वालिय बालकन वच्चरणॆ दॊट्टिल
काल दॆसॆयलि कट्टुवडॆदव नीत नल्लवलॆ
शूलियलि गर्विसि महीधर मूलदलि कैसिक्कि नायवॊ
लूळिदव तानीत नल्ललॆ हेळि तनगॆंद ॥ 50 ॥

"बिना वजह अपनी बहिन को अपमानित होते देख, बदले की आग से जलते इन्होंने शत्रु-स्त्री का अपहरण कर, उसे ले आये। (अपने) तीन भाइयों की हत्या का बदला लेने के उद्देश्य से इन महावीर ने युद्ध मोल लिया है। तू जिस उद्देश्य से आया है— वह साफ़-साफ़ बक कर चला जा।" इस प्रकार प्रहस्त ने बताया। ४७ "नाहक इतना गुस्सा क्यों करते हो? क्या इसे मैं सह सकता हूँ? (नहीं।) इस राक्षस जैसे रूप-रंगवाले कई तो यहाँ पर हैं। इसीलिए पूछना पड़ा। इसमें मेरी क्या ग़लती है? उस शत्रु-विजयी वीरबली के अंतःपुर की स्त्रियाँ ताली पीटते हुए हँसी-मज़ाक़ की बातें जो कर रही थी— वही भिखमंगा यही है न?" इस तरह कहा। ४८ "महापराक्रमी कार्तवीर्यार्जुन से वैर मोल लेकर, क़ैदखाने में बंदी होनेवाला वह राक्षस यही है न? वेदावती के शापभाजन बननेवाला यही है न? तुम डरते क्यों हो? सच-सच बता दो।" इस तरह अंगद ने कहा। ४९ "अपने बाहुबल से मदमस्त हो, अहंकारवश बालि के पुत्र के रत्नजटित पालने के पायदान (पैर) की तरफ़ अपने को बँधवानेवाला यही है न! शिवजी पर अपना अहंकार (मस्ती) प्रकट करने जाकर कैलास के नीचे दबकर कुत्ते की तरह सिटपिटाकर रोनेवाला यही है न? क्या बात है? कहो न?" इस

जनकजेय मदुवेयलि शूलिय धनुविनलि नरि सिक्कि सिक्किद
शुनक तानिव नल्लवे शिरिहत्त मैमरॆसि
जनप निल्लद हिंदे जनकन तनुजेयनु कद्दॊय्द कामुक
रनुचररि गॆंडे बंटनल्लले हेळि तनगेंद ॥ 51 ॥
आगलागदे माणलिव नॊड ना गभीर पराक्रमनु पे-
ळ्दागमव मिवगॆव मिक्किन मातदेकॆमगॆ
रोगि गौषधि सॊगसॆ हितकर वागिरवु नम्मुक्ति गळु किवि
दागिसुववावॊम्मॆ केळलि केळदिरलॆंद ॥ 52 ॥
आदडॆलॆ खळ केळु नासा छेद वादवळिद नी मरु-
ळाद कामुक तनदि कंगाणदे विभीषणन
वेदमार्गद मधुर वचनव नादरिसदुरॆ कॆट्टॆ नीनि
न्नादडॆयु रघुपतिय सारिदु बदुकु बायॆंद ॥ 53 ॥
प्रेम घन निन्नवन मेलॆ सनाम नवना बिडॆयदलि निज
भामिनिय बिडॆ बिडुवॆनॆंदुनु तिरुगि पाळॆयव
रामनाडिद नुडियि दीगिदु कामितकॆ कैगूडदिरॆ लय
भामिनिय पाणिग्रहण कनुवागु बेगॆंद ॥ 54 ॥

तरह अंगद ने कहा। ५० "जानकी के स्वयंवर के समय सियार से फँसाए जानेवाले कुत्ते की तरह शिवधनुष के नीचे फँसकर चटपटानेवाला कुत्ता यही है न? हाथ-सिर-पैर छिपाकर राम की अनुपस्थिति में सीता की चोरी कर अपने को कामुकों का सेवक साबित करनेवाला यही है न? कहो न?" —इस तरह अंगद ने कहा। ५१ "हो या न हो, इसके साथ राम की भारी वीरता की चर्चा करते, वर्णन करते इसे समझाने का प्रयत्न करने का बड़प्पन हमें (मुझे) क्यों चाहिए? रोगी को औषधि क्यों पसंद आए? मेरी बातें इन्हें पथ्यकारी न जँचेंगी? फिर भी मैंने जो कुछ कहा, उस पर यह ध्यान दे या न दे —कहना तो मेरा कर्तव्य था। वह मैंने निभाया।" इस तरह अंगद ने कहा। ५२ "हे राक्षस! सुनो। नाक कटवा लेनेवाली के कारण से तूने मूर्ख बनकर, कामुक होकर (कामबाण से पीड़ित हो) युक्तायुक्त विचार न करते विभीषण से कथित वेदमतानुसारी हितकारी वचनों पर ध्यान न देते अपना सत्यानाश कर लिया है। अब भी समय और सुअवसर है। रघुपति की शरण जाकर अपने को बचा ले।" इस प्रकार अंगद ने कहा। ५३ श्रीराम तुम्हारे भाई को खूब चाहते हैं। तू अगर सती सीता को विदा कर भेज दे तो शिविर उठाकर लौट जाने का संदेश महानुभाव श्रीराम ने

ई नुडियने करुण मुखदलि भानुसुत सूचिसिद नी वंच-
नानु गुणवनें निन्न सहभवनाडि तोऱिसिद
एनु निन्नंगवणें मनदनु मानवावुदु होगबेकाव्
मानवेंद्रन बळिगें बेगदि - हेळु नीनेंद ॥ 55 ॥
अॅनॆ घन क्रोधाग्नि मुखदलि मिनुगिदुदु मीसॆगळु कुणिदवु
कनलिदवु कंगळु कळेवर कंपिसितु खळन
तोॅनॆंदु खड्गव नेलवॊ निम्मय जनप राघव रविसुताद्यरु
तनुजरनु हॆसरिट्टडॆय बिडॆं जानकिय नॆंद ॥ 56 ॥
मीऱि नम्मॊड नणक सणकव गारु गडॆदडॆ बाय होय्युवॆं
सारुकॆल सारत्त होगुत्तरद नायवोलु
चीऱि कॊळदेळॆनलु बळिकुब्बेऱि निदनु कोपदलि का-
हेऱि नडॆ काळगर्कॆनुत कैदुडुकिदनु खळन ॥ 57 ॥
तोळुगळ हिडिदॆळॆयॆ खळ करवाळदलि चिम्मिदनु बिद्दवु
मेलॆ खंडॆय वंगरक्षणॆं गसुर नायकरु

करुणा दर्शाते दिया है। यह राम का वचन है। अगर यह (शुभ) संदेश तुम्हें पसंद नहीं तो मरण-लक्ष्मी से विवाह करने के लिए शीघ्रातिशीघ्र तैयार हो जा। इस तरह अंगद ने कहा। ५४ "यही बात करुणापूर्ण रविसुत सुग्रीव ने भी सुझायी है। तुम्हारे भाई ने भी तदनुसार कहला भेजा है। इसके बारे में तुम्हारी राय क्या है? तुम्हारे अपने मन की कहो; शीघ्रातिशीघ्र सुनाओ। मुझे श्रीरामचंद्र के पास जाना है।" इस प्रकार अंगद ने कहा। ५५ अंगद की ये बातें सुनकर रावण का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। उसकी मूँछें नाचने लगीं। आँखें (ज्वाला-सदृश) चिनगारियाँ निकालने लगीं। देह काँपने लगी। नंगी तलवार हवा में झुलाते हुए बोला— "रे-रे तेरा वह राजाराम, सुग्रीवादि अपनी संतान को मेरा ही नाम भले ही रखे; तो भी मैं सीता को विमुक्त करनेवाला नहीं।" ५६ "मेरा हँसी-मज़ाक़ करते हद से ज्यादा बकझक करेगा, धिक्कारेगा तो (तेरे) मुँह पर थप्पड़ जड़वाऊँगा। चला जा यहाँ से। उत्तर के कुत्ते की भाँति निकल जा। यह अपनी चीख़-पुकार बंद कर। उठ।" इस प्रकार कहते ही अंगद अमितोत्साह में खड़ा हो गया; क्रोध से तमतमाते उसने "युद्ध के लिए आ जा" कहते हुए रावण को पकड़ लिया। ५७ अंगद ने रावण की भुजाओं को ज़ोर से पकड़कर जब खींचा तो रावण ने अपनी तलवार अंगद पर चलायी। अन्य राक्षसनायक रक्षा के उद्देश्य से अपनी-अपनी तलवार खींचकर

तूळिदिभ दोड्डिनलि होय्दुब्बेळु वग्गद हरियवोलु गिरि
चूळिकेयले चल्ल बडिदनु चटुळ पटुभटर ।। 58 ।।
केंदरिता सभे कैदुकाररु होदेसिदरु होळेहोळेव होगरिन
होदरु वेळगिन हलवु शस्त्रंगळलि कपिभटन.
सदेद नोळ होक्कवर नुळिदर केदरिदनु मंटपव नोदेदिळे
गुदुरिसिद नर्रेयट्टि सदेदनु सरिग रक्कसर ।। 59 ।।
कूडे कळकळ वाय्तु हयकुल जोडिसिद वानेगळु हण्णिद
वाडलेनद तेरु तेरैसिदवु निमुषदलि
कूडितसुर पदाति लग्गेय माडि मुत्तिद रंगदन मु-
म्मोड मुरिदुप्परिसि तरणिय तुडुकु वंददलि ।। 60 ।।
तुडुकि तूळुव गज घटाळिय निडिकिदनु नभकौकुविदिरिन
कडुमनद कुदुरेगळ कोडहिद नखिळ देसेदेसेगे
अडसिबह तेरुगळ नोदेदनु मडद लजिगिजि यागलसुगळ
सडिलिसिदनिभ हय रथारोहक पदातिगळ ।। 61 ।।

अंगद पर टूट पड़े। आक्रमण करनेवाले हाथियों को पीटकर हर्षित होने वाले महान बाघ की तरह (अपने पर) टूट पड़े राक्षसों को हाथ में धरे पहाड़ की चोटी से ऐसे ठोंका कि वे सारे तितर-बितर हो जायें। ५८ सभा अस्त-व्यस्त हुई। योद्धाओं ने चमकते तेजःपुंज कई प्रकार के शस्त्रास्त्रों से कपिवीर को ढाँप दिया। अंगद ने इनमें से अपनी पहुँच में आए हुओं में से कइयों को पीट दिया। अन्यों को तितर-बितर कर दिया। लात मारकर (सभा-) मंडप को गिरा दिया। (अपने) समान बलशाली राक्षसों का पीछा करते जाकर पीट दिया। ५९ तुरन्त शोर-गुल शुरू हुआ। क्षणार्ध में घोड़े आकर खड़े हो गये। हाथी तैयार हुए। रथ इकट्ठे हुए। राक्षसों की पैदल सेना हाजिर हुई। सभी ने हमला करते हुए अंगद को चारों ओर से घेर लिया। इस दृश्य को देखने पर ऐसा लगता था कि बादल ने उछल-उछलकर सूर्य को पकड़-जकड़ लिया हो। ६० अपने को जकड़ने के लिए आ रहे हाथी के झुंड को अंगद ने पीटकर ठेल दिया। सामने से उछलकर आ रहे आक्रमणशील मस्त घोड़ों को दिशि-दिशाओं में उछाल दिया। धक्का देते आगे बढ़ते रथों को एड़ी से लात मारकर ढकेल दिया। हाथी, घोड़े, रथ के सवारों के तथा पैदल आक्रमणकारियों के प्राणों को (उनकी-उनकी) देहों से बाहर निकलवाकर भगा दिया। ६१ क्रोधित अंगद ने— "हमारा युद्ध बड़ा

कॆरळि होऱवंडिसिद नज शंकरर संगर वॆम्म दतिनि-
ष्ठुरवु निंदिर बेड नोडिरि नडॆयि नीवॆंद
तॆरळिचिद नी विभ्रु दशकंधरन बळिगै तंदि राद्रॆ
करुळनुच्चुवॆ नॆनुतॆ तॆवरिद नुळिद निर्जरर ॥ 62 ॥
मुरिदु नोडिद नॊत्त बरिसुव विरुदि नग्गद भटर बीदिय
लरुणजल होनलॆळॆ हरहिन हॆणन हॊरळियलि
पुरदहन किम्मडिय कडु काहुरव मॆऱॆदनु कदनदलि कै-
नॆरव बयसुव भटन वड्रिकॆदनु चतुर्बलव ॥ 63 ॥
हॆळलेनद वालिजन कट्टाळुतन दग्गळिकॆयनु का-
लाळु तुरग गळांतु करिघटॆ गळिगॆ कॆयिक्कि
कालु विडि विडि दिट्टना दिगुजाल तुंबलु राक्षसेंद्रन
मेळवद चतुरंगबल निमिषदलि बयलागॆ ॥ 64 ॥
बीळुतिर्दवु वालिजन वैहाळियलि नभदिंद रामन
पाळॆयदलिभ हय वरूथ पदाति सरगॊळिसि
काळु माडिर्दवकट संधि विताळिसितु कॆयॆडॆय शिशु रण
कॆळियलि निललरिर्दॆनुत बायारिदनु राम ॥ 65 ॥

भयानक है; यहाँ से भागो। नहीं तो बड़ी मार खानी पड़ेगी।" इस तरह कहकर ब्रह्मा-महेश्वरों को वहाँ से भिजवा दिया। यहाँ से रवाना हुए आप कहीं दशकंठ के पास आते हैं तो आपकी आँतड़ियाँ खींच लूँगा।—इस तरह डाँट-डपटकर अन्य देवताओं को भी वहाँ से भगा दिया। ६२ गली-गली में जहाँ कहीं मुर्दों के ढेर सारे दिखाई पड़ने लगे। रक्त की धारा बह निकली। अत्यंत शीघ्र गति से आकर आक्रमण करते राक्षस वीरों को अंगद ने मुड़कर देखा। लंकादहन के समय के क्रोध के दुगुने क्रोध को प्रकट करते हुए, अंगद ने युद्ध में सहायता चाहनेवाले वीर की समूची चतुरंग सेना का पूरी तरह विनाश किया। ६३ वाली-पुत्र की वीरता का वर्णन कहाँ तक करें? पैदल सैनिक तथा घोड़ों को पकड़कर, हाथियों के पैरों में हाथ डाल पकड़-पकड़कर पटकते हुए जब वे फेंकने लगे तो दिशि-दिशाएँ (उनसे) भर गयीं। राक्षसेश्वर रावण की चतुरंग-सेना का क्षण-मात्र में सत्यानाश हो गया। ६४ वाली के पुत्र अंगद के युद्ध-संचरण से (आवेश तथा आवेग के कारण) हाथी, घोड़े, रथ तथा पैदल सैनिक 'हा-हा' खाते आकाश-मार्ग से जाकर राम के शिबिर में गिरे। "हाय-हाय, यह तो गलती हुई; हमारे हाथ से सुअवसर बीत

मगनदेनादनो मनस्सिन बगेय नरियदे बीळुकोट्टेवु
हगेयडेगे हनुमंत होगुळि दिर्देंडंगदन
तेगेदु ता होगय्य नीनेंने नेगेदु पवन पथांतरद लरि
नगर गभिमुखनागि कंड नखंड बल कपिय ॥ 66 ॥

लेसु लेसै सुभट समरविलास ब्रिडु बदुकलि यमालय
वासिगळ माडदिरु कॆडुवुदु राघवेश्वरन
वासि मुंदके येनलु कोलेगति हेसि हिम्मेट्टिदनु लंका-
धीश निदि रलि निंदु नीरद रवदलितेंद ॥ 67 ॥

एनेलवो दशकंठ रण दनुमान मनसिगे बारदे हद-
नेनु हेळाव् होग बेडवे होत्तु होगुतिदे
एनु निन्नंगवणे हेळु निधानवनु भयवुंटे नुडि नम
गेन हेळुवे हेळु नावद हेळ बेकेंद ॥ 68 ॥

मनके बारदे निनगे मरेयोगुवनुनयवु रघुपतिय नीनिं
दिनलि जीवश्राद्धवनु विधि विहित मार्गदलि

गया। हमारे हाथ सौंपे गये इस शिशु (अंगद) का यह युद्ध खेल अब पूर्णविराम नहीं पाएगा।" यों कहते श्रीराम चिंता से, ज़ोर से चीख उठे। ६५ "पता नहीं, (मेरे) बेटे की क्या गति हुई? उसके मन की दशा न जानते उसे मैंने अपने शत्रु के पास भेज दिया। हे हनुमान! लंका जाकर अगर अंगद जीवित है तो उसे बुला लाओ, तात। जाओ।" इस तरह राम ने (हनुमान को) आज्ञा दी। तब तुरंत आकाश-मार्ग से उड़ान भरकर लंकानगरी की ओर आते हनुमान ने देखा कि अंगद प्रसन्नचित्त है। ६६ "हे वीर, तुम्हारा यह युद्ध का खेल बड़ा मज़ेदार रहा। अब उनको छोड़ दो। उन्हें जीने दो। उन्हें यमलोक का निवासी बनाकर मत भेजो। क्योंकि इससे राघवेश्वर की प्रतिज्ञा विनष्ट होगी।" इस प्रकार हनुमान से बताए जाने पर अंगद ने हत्या के कार्य से घृणा करते हुए, लौट आकर लंकेश्वर के सम्मुख खड़े होकर बादल की तरह गरजते हुए यों कहा: ६७ "रे-रे दशकंठ! क्या (मेरे इस) युद्ध की कल्पना से प्रसन्न हुआ कि नहीं? क्या बात है साफ़ कह दो। हमें तो राम के पास जाना है। देर हो रही है। तुम्हारी इच्छा क्या है? उद्देश्य क्या है? साफ़-साफ़ बता दो। डरो मत। हमसे जो कुछ कहना है— कह डालो। मुझे तो वही (तुम्हारा विचार) राम से जाकर कहना है।" इस तरह कहा। ६८ "रघुपति के शरण जाने का विचार अगर तुम्हें पसंद नहीं है तो नियमानुसार (धार्मिक रीति से) अपने

अनुकरिसि कोंडिरु निजानुज तनुज मित्रजाति बांधव
जन निनगें बळिकिल्ल केळेनुतडरिदनु नभव ॥ 69 ॥
अवनोडनें मातेकें वार्येदवनिजावरनंघ्रिसलि लो-
द्भव पराग भ्रमर नमर कुलेंद्र संभवन
कुवरननु कैविडिदु तेंगेदुत्सवदि बंदनु हगेय कॆडुव
नवनिपन पदकित्तु नमिसिद निंद्रसुत सूनु ॥ 70 ॥
कंद बंदै सुबल लतिका नंद बंदै वीर रसदु-
क्कंद बंदै नम्म पुण्यदलेंदु करुणदलि
कोंद रक्कस भटर रकुतद विंदुगळ मैदेरॆपनतुळा
नंद नयनोदक झडिय तडवरिसिदनु राम ॥ 71 ॥
होगेंदुदधिक क्रोध शिखि बळिकगिव रौद्रावेशदलि भुगु
भुगिसि बलिमुख चक्रि कैवीसिदनु काळगकें
नग महीरुह हस्तरुव्विडि दगलदलि बोयेंदु तोरवेय
नगर दधिपति हारविसें हत्तिदरु लग्गेयलि ॥ 72 ॥

जीवित रहते अपना श्राद्ध कर लो (कर डालो)। क्योंकि तुम्हारे पुत्र, स्नेही, दायाद, रिश्तेदार तेरे साथ-साथ इनमें से कोई न बचेगा। (सब तेरे साथ-साथ मौत के घाट उतरेंगे)" —इतना सब कुछ कह अंगद ने आसमान में उड़ान भरी। ६९ श्रीराम के चरण-कमल के पराग के प्रेमी भ्रमर रूपी हनुमान ने अंगद का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा— "उस कापुरुष से बातें करने से क्या प्रयोजन? आ मेरे साथ आ।" आनन्द के साथ उसे लिवा ले गये। शत्रु के आयुध को श्रीराम के चरण में समर्पित करते हुए वाली के पुत्र अंगद ने प्रणाम किया। ७० "आ गये बेटे! आओ। बलवान बेल-बूटों को आनन्द देनेवाले मेरे बेटे! आ जा। हमारे पुण्य भाग से वीर-रस को उमड़ानेवाला तू लौट आया न? यही तो बड़ी खुशी की बात है।" इस प्रकार करुणापूर्ण भाव से अंगद से (श्रीराम ने) वार्तालाप किया। मारे गये राक्षस वीरों के रक्त-बिन्दुओं से सिक्त अंगद के शरीर को राम ने आनंदाश्रु बहाते सहलाया। ७१ क्रोध की ज्वाला सुलग गयी। महान भयानक क्रोधाग्नि जब धू-धू कर जलने लगी तो वानर सेनापति ने युद्ध के लिए ललकारा। पेड़-पहाड़ों को हाथ में धरे वानर-वीर अत्यंत हर्षित होते हुए, किलकारियाँ भरते हुए, घुड़कते हुए, तोरवे नगर के अधिपति नरहरि के अवतारी श्रीराम की आज्ञा से आक्रमण करने आगे बढ़े। ७२

हन्नोंदनेय संधि

सूचने— अग्गळेय कपिसेने समरद लग्गेयलि लंकापुरद बलुदुर्गवनु कोंडनूकि कोणकिद रसुर वल्लभन ।

हत्तिदुदु बळिकंबुनिधि तलेयोत्ति लयदल जांड भांडद
नेत्ति गडवददलि रिपुदुर्गवनु कपिसेने
अत्त लादुदु बोब्बे कोटेय कोत्तळद कोहिनलि कुंभिनि
कित्तु हारलु होडेव हरे हदिनेंटु कोटियलि ॥ 1 ॥
अलेले कविदरो कपिकदंबक कलह मुंचलि नम्मदेनुत-
ट्टळेय लिट्टिटसिदरु घनशाला सुवीदियलि
निलुकिदरु गोपुरद वंकद हुलिमुखद मुखशाले गळ को-
त्तळगळेडेयलि होळकि होय्दरु हरिवरूथिनिय ॥ 2 ॥
आडिदवु मकरब्बि डेंकणि हूडिदुक्किन गुंडुगळनी
डाडिदवु नेरेकडेद कल्गळनुरु शतग्निगळ
तोडु गवणेय तूरुगल्लिन झाडि झम्मिडिसिदवु गगनव
नाडलेत्तद नमम दुर्गद समरसंभ्रमव ॥ 3 ॥

ग्यारहवीं संधि

सूचना— युद्ध में श्रेष्ठ कपि-सेना ने घेरा डालकर लंकानगरी के मजबूत दुर्ग को गिराकर रावण को छेड़ा ।

प्रलयकाल में जैसे समुद्र ब्रह्मांड रूपी हाँड़े की कोर तक चढ़ जाता है (व्याप्त कर लेता है), वैसे ही सारी कपि-सेना शत्रु दुर्ग पर चढ़ गयी । जब कि अठारह करोड़ की संख्या में ढफले जो बज रहे थे तो लग रहा था कि सारी धरती विदीर्ण हो जाय; ठीक इसी वक़्त दुर्ग के बुर्जों के कोने-कोने में शोरगुल हुआ । १ "अरे रे ! देखो-देखो; कपियों ने घेर लिया; हमारी युद्ध-प्रक्रिया जोरदार हो; आक्रमण जबर्दस्त हो ।" —इस प्रकार कहते राक्षस-दुर्ग के बुर्जों पर, दुर्ग के ऊपर की गलियों में ऊपर के घरों के सामने की गलियों में इकट्ठे हुए । दुर्ग पर के गुंबजों में कोने-कोने में, व्याघ्रमुखी द्वारों में, बरामदों में, बुर्जों में हर कहीं राक्षसों ने कपि-सेना को पीटा । २ क़िले के युद्ध में प्रयुक्त तोपें चलने लगीं; उसी प्रकार दुर्ग के युद्ध में प्रयुक्त एक प्रकार के यन्त्रों ने लोहे के गोले उगलना शुरू किया । सान पर धरे नोकदार पत्थर चलने लगे । एक प्रकार के गुलेलों से फेंके गये पत्थरों से सारा आकाश भर गया, कँपकँपी छूटी । बाप रे बाप ! उस दुर्ग पर से हो रहे युद्ध

हूळिदरु बळिकगळनिवरु सिलाळियलि कुश केळु शरधिय
हूळिदरिगेनरिदु लव केळोंदु निमिषदलि
धूळिगोटेय कोंडरा तरु शैल दोट्टिलु गळलि हत्तितु
मेलुदुर्गद लग्गे गसुर कदंव कळवळिसे ॥ 4 ॥
वीर केळै कपि कदंबकवाऊ लोम्मळ हेच्चुतिर्द्दु
भूरिभवनद भारियंकद दुर्गवंबरके
भैरवायत भटर कैगळ तोरगिरियुप्परके दिगधिप
रूरु गूळेय तेगेद वेनेंबुदनु महाद्भुतव ॥ 5 ॥
कोडु गल्गळ लग्गेगुम्मन तोडुगिरिगळ मेळेयद मै-
गूडिकेय हासरेय निडुवद्धरद वालगळ
झाडणेय निडुडेंकणिय कट्टाडिकेय कपिसेने सरिसद
लीडिरिदु हत्तिदुदु कोत्तळदाळु वेरियलि ॥ 6 ॥
इट्टराडुव डेंकणिय तले मुट्टुगैगळ कळचि जरुहिद
रट्टळेय नोडब्रडिद रुप्परिगे गळ सालुगळ
हेट्टि बडिदरु होन्न रन्नद घट्टिदने गलिवरु चक्रद
लिट्टु सबळदलिरिदु तरुबिदरवरु कपिबलव ॥ 7 ॥

का वर्णन किन शब्दों में करें ? ३ कपियों ने पत्थरों से खाइयाँ (बुर्ज के चारों तरफ़ की) ढांप दी। सुनो कुश ! समुद्र को ही पत्थरों से पाटनेवालों को यह क्या (खाई पाट देना) असंभव है ? सुनो लव ! एक क्षणार्ध में मिट्टी के उस दुर्ग को (कपि-सेना ने) आक्रमित कर लिया। पेड़-पहाड़ों के ढेर सारे इकट्ठे कर उस पर से ऊपर चढ़कर ऊपर के दुर्ग को घेर लिया। तब राक्षस घबरा गये। ४ हे वीर लव ! सुनो। कपि-सेना के उड़ान भरते ही विशाल जगत के भारी भयानक युद्ध का वह दुर्ग एक-एक हाथ आकाश की तरफ़ बढ़ने लगा। भैरव-सदृश पराक्रमी कपि-सैनिकों के हाथों से फेंके जा रहे पहाड़ों से भयभीत हो दिशाओं के अधिपतियों के नगर भाग खड़े हुए। इस महान अद्भुत घटना का वर्णन किन शब्दों में करें ? ५ राक्षसों की सेना में नोकदार चट्टानों को क़िले पर चढ़ने के साधनों को तथा तोड़े पहाड़ों को ढोए चपटे पत्थरों को खींचते लम्बे-लम्बे हाथी जब पूंछ हिला रहे थे, क़िले के युद्ध में प्रयुक्त यंत्रों को चला रहे थे तब सामने से उनको खींचते हुए कपि-सैनिक बुर्ज की ऊँची दीवारों पर चढ़े। ६ कपिवीरों ने ढेंकणि यंत्रों को (शस्त्रागार ढोए यंत्रों को) सिर को तोड़ देनेवाले यंत्र-साधनों को तोड़कर गिरा दिया। ऊँचे मंजिलों को गिरा दिया। बुर्ज

नेगेनेगेदु बीळ्व समवानर विगड वीरर तलेगळभ्रक्के
चिगियलेच्चरु कोच्चिदरु कोटेय नडर्दवर
चिगिदु चिम्मुव कपिभटर निट्टिग ळलिट्टरु चारिवरिव-
णणगळ बलेगळ बीसि सदेदरु दाणे दडिगळलि ॥ 8 ॥
होडकरिसि मगुळोत्त बरिसुव कडुहुकाऽर मेले सासुवे
गोडन कादुरि येण्णे मळलरगुगळ मेणगळ
कोंडहिदरु कैगोळ्ळियलि कौरिडलु सुट्टुरु मोऽगळनिळे
झडिदुदै जरिगेडेद जीवद कपिवेणंगळलि ॥ 9 ॥
परिघदलि मुसलदलि गदेयलि सुरगियलि सबळदलि शक्तिय
लुरु कृपाणद लीटियलि बिट्टेऽनलि होगुव
हरिकदंबव होडेवुतिऽवुत जरिय गेडहिदरगळु हेणनु-
ब्बरद लरुणांबु विनलुप्परिसलु नभस्थळक्के ॥ 10 ॥
एरुवुदु निम्मवर बलवद जाऽगेडहु वरवरु कैयोड
नेरुवरु कळलिसुव रिवरवरोडने हुरिगट्टि

की पंक्तियों को तोड़ डाला। सोने-हीरे के (दुर्ग के) बंदनवारों को तोड़कर, (उनके खम्भों से) चुभो-चुभोकर राक्षसों को मनमाने पीटा। राक्षसों ने चक्रायुध का प्रयोग कर, बर्छियों से चुभो-चुभोकर कपि-सैनिकों को धराशायी कर दिया। ७ उछल-उछलकर टूट पड़नेवाले असमान वानर-वीरों के सिर कट-कटकर आकाश तक उड़ जायें —इस रीति से राक्षसों ने बाणों का प्रयोग किया। क़िले पर चढ़नेवालों को काट-काट कर फेंक दिया। उछलकर टूट पड़नेवाले कपिवीरों को भालों से चुभोया। चालाकी से आगे बढ़नेवालों को जाल फैलाकर मोटे-मोटे लट्ठों से पीटा। ८ फिर, फिर प्रकट होकर आक्रमण करनेवाले वानर-वीरों पर सरसों के घड़े, खौलते तेल की कुप्पियाँ, लाक्षा, रेत, पिघला मोम आदि उँड़ेल दिया गया। जलने की दुर्गंध निकलने पर हाथ की जलती लकड़ियों से पीटकर जलाया। प्राण खोए कपियों के शवों से धरती पट गयी। ९ परिघायुध, मूसल, गदा, कटार, तलवार, शक्त्यायुध, खड्ग, भाला, बर्छी —आदि-आदि शस्त्रास्त्रों का प्रयोग करते, चढ़ आने वाले कपि-समूह को कूटते-पीटते, चुभोते-भोंकते नीचे गिरा दिया। दुर्ग के चारों ओर की खाई लाशों से पट गयी तथा खून आकाश तक उछलने लगा। १० तुम्हारी तरफ़ की सेना का दुर्ग पर चढ़ना, राक्षस-सेना का उनको खिसकाकर गिरा देना, लगे हाथ कपि-योद्धाओं का फिर से चढ़ाई तथा राक्षसों का उन्हें हिला-डुलाकर गिराना, पुनश्च कपि-वीरों का

एरुवरु बळि किवरवर कॊलॆ गेऱि तन्नवनु भय बलद सु-
जाऱिकॆय विरुगाळि बिडदरॆंजाव परियंत ।। 11 ।।
नॆनॆदु दसुरर वानरर वाहिनिय रणदरुणांबुपूरद
हॊनलिनलि गिरि मूरु योजन नूरुरुद्ददलि
अनुवर प्रारंभकद रणवनितॆ गुण बडिसिर्द रुधिरो
दनव बडिसिद बुत्तियंतिरॆ मॆरॆदुदा दुर्ग ।। 12 ।।
बिसिल दॆगहिन लिवर बलमुट्टिसितु पडुवण लग्गॆयलि बळि
कसुर बल बवरदलि बळलितु भारियंकदलि
विषम दुर्गव कॊंडरिवरुब्बसवु बळिकाय्त वरि गमर
द्विषरि गुंटे जयवु जानकियणुग कॆळॆंद ।। 13 ।।
जरुहिदरु बळिकडरि चामीकरद चट्टुळ प्रभॆय कोटिय
नुरुळिसिद रट्टळॆय मुख शालॆगळ सालुगळ
ऊरु शतघ्निय राय चिम्मुव भरद भैरव बद्धरद नडॆ-
सरद डब्बुक डॆंकणिगळनु तूरिदरु नभकॆ ।। 14 ।।
विरुदनिय बॊब्बॆगळ लग्गॆय हरॆयनॊडॆ बडिदेरु वानॆय
गुरुबु गुम्मि घडावणॆय तेरुगळ तिथिणिय

राक्षसों की हत्या के लिए चढ़ आना —इस प्रकार दोनों तरफ़ के सैनिकों के प्राणापहरण की आँधी आधे प्रहर तक आकाश में चलती रही। ११ "राक्षस तथा वानर-सेना के रक्त-प्रवाह से तीन योजन चौड़ा, सौ योजन लम्बा पहाड़ भीग गया। युद्ध के प्रारम्भ में मानों युद्ध रूपी स्त्री को परोसे गये रक्त-सिंचित संवल के अन्न की तरह वह दुर्ग शोभायमान दीखा।" १२ "धूप के उतरने पर (कम होने पर) कपि-सेना ने पश्चिम दिशा से चढ़ाई करते दुर्ग पर आक्रमण किया। उसके बाद राक्षस-सेना युद्ध में थकावट अनुभव करने लगी। उस ज़बर्दस्त युद्ध में कपि-सेना ने (वह) दुर्ग आक्रमित कर लिया। राक्षस थककर चूर-चूर थे। हे जानकी-पुत्र! सुनो। देवताओं के शत्रुओं की जीत कभी संभव हो सकती है?" इस तरह महर्षि वाल्मीकि ने कहा। १३ तदनंतर कपि-सैनिकों ने क़िले पर चढ़कर सोने के सुन्दर कांति से जगमगाते उग्राण को गिरा दिया; युद्ध-सामग्री के गोदामों को तथा बरामदों को गिरा दिया; जोरदार ढंग से गोले उगलनेवाली तोपों को, भयानक हाथियों को, ऊपर चढ़ने के संचलन-साधन, क़िले के युद्ध में प्रयुक्त यंत्र-साधन आदियों को कपिवीरों ने आकाश की ओर उछाल दिया। १४ घनघोर

हरिद्दु तेजिय भट्ट नंबर कुरुबि रक्कस भटर बीदिय
तेरह तप्पिसि चारि वरिदोळ होक्कु दगलदलि ॥ 15 ॥
अरमनेय रणमंडलद मदकरि रथाश्वारोहकर पद-
चरर गिरि कूटंगळलि दाटिसिद रसुरुगळ
नेरविगर होय्होय्येनुत चप्परिसि बिडदोळबिद्दु हिडिहिडि
परसति द्रोहकन नेनु तोळ होक्क ररमनेय ॥ 16 ॥
उसुर लेनद नतुळबल कैकसेय मग केरळिदरे कल्पद
पशुपतिय पाडेनु कोंडनु हलगे खडेयव
मसगि दंदिन वीरभद्रन विषमरण रसकेंटु मडियेने
कुसुरि दरि दोट्टिदनु कनलिदु कविव कपिबलव ॥ 17 ॥
ऎरडु मैयलि रुंड मुंडद हरि कदंबव नोट्टिदनु म-
त्तुरवणिसु वति बलर मेट्टिद नुगिदु सुरगियलि
सरिदु होद जयांगनेय खळ तिरुगिसिद नाक्षणदोळसुररु
नेरेदु दातन बळिय बलुहाय्तसम समरंग ॥ 18 ॥

घोष के साथ बजते आक्रमण की सूचना देते डफलों को चकनाचूर करते कपि-सैनिक दुर्ग पर चढ़ गये। हाथियों की चढ़ाई को चीरकर, घरघराते रथों की पंक्तियों को विदीर्ण कर, घोड़ों के समूह को आकाश की तरफ़ उछालकर (उड़ाकर) राक्षस-योद्धाओं को गली-गली से भगाकर दुर्ग भर में कपि-सैनिक प्रविष्ट कर गये। १५ वानर-योद्धाओं ने राज-महल के नजदीक की युद्धभूमि में प्रवेश कर, मदोन्मत्त हाथी, रथारोही, घुड़सवार तथा पैदल-सेना को पहाड़ों से पीटकर उनका प्राणापहरण किया। मदद के लिए आनेवाले शत्रु-सैनिकों को "पीटो, मारो, काटो" कहकर चिल्लाते, बिन चूके उनके व्यूह में प्रवेश कर "परस्त्री-द्रोही, पापी को पकड़ो-पकड़ो" कहकर पुकारते हुए उन्होंने राजमहल में प्रवेश किया। १६ उस (क्रिया) का वर्णन किन शब्दों में करें? महान बलशाली कैकसा का पुत्र कहीं चिढ़ गया तो प्रलयकालीन रुद्र भी उनका सामना नहीं कर सकता। रावण अपनी ढाल तथा खड्ग लेकर, पूर्व (काल) के क्रोधोन्मत्त वीरभद्र से प्रकटित भयानक रौद्ररस के आठ गुने प्रचंड वेग से आगे बढ़कर, क्रोध से चढ़ आनेवाले कपि-सैनिकों को काट-काटकर ढेर बनाते गये। १७ दाएँ-बाएँ दोनों तरफ़ से काटते हुए रावण ने कपियों के रुंड तथा धड़ों (मुंडों) का ढेर लगा दिया। इतने पर भी ज़ोर से आक्रमण कर आनेवालों को बर्छी चुभो-चुभोकर गिरा दिया। इस प्रकार विमुख हुई जयलक्ष्मी को रावण ने अपनी ओर लौटा लिया। उसी क्षण राक्षस

आनुवरु निम्मवरु निम्मव रानिकॅय निलिसुवरु निलुवुदु
सेनॅ निम्मवरसुर रौकुव रंतरिसि निम्म
सेनॅ पडितळि सुवदु समरद हानि वृद्धिय हॊळकॅ वातिन
काननद कत्तलॅय चरितरु मॆरॆदरा हवव ॥ 19 ॥
राशि वॆणनुब्बरद तॊरॆगळ सूसु वरुणांवुविन गिरिमर
नासुरद कैदुगळ मैदागुगळ भटनिकर
ओसरद पैसरद कदनद वासिगळ वैरगळ समर वि-
लासिगळु सरकटिसि कादिद रळुकॅ भुवनचय ॥ 20 ॥
वीर रावणि मुख्य राजकुमार रॊग्गाय्तिरुळ मॊदललि
तीरितुब्बटॆ निम्मवरिगॊलॆ केळिदै कुशनॅ
चारि वरिदॆड बलदॊ लॊदगुव केरि केरिय कपिभटर सं-
सार साकॆ वन्नवर सदॆदिळुहित सुरवल ॥ 21 ॥
इळुहिदरु दुर्गवनु कोळाहळद कूगिन कॊल्ल कॊलॆयलि
निलिस लीयदॆ निम्म रघुभूपतिय पाळयद
बलिद गॆरॆय दॊत्तुपरियं तॊळ दॊडॆय नणॆदिळिव विशिखद
हलु गिरिकुगळ हळचि दग्गळिकॆ गळ हरिबलव ॥ 22 ॥

रावण के नजदीक आ जुटे। युद्धभूमि ने (अब) भयानक रूप धारण किया। १८ तुम्हारे वानर-सैनिकों ने राक्षस-सैनिकों का सामना कर आगे बढ़ना शुरू किया। तुम्हारे लोगों की चढ़ाई का प्रतिरोध राक्षस सैनिकों ने किया। तब तुम्हारी वानर-सेना (थोड़ी देर) रुकी रही। राक्षस-सेना ने वानर-सेना के मध्य प्रवेश कर जब दबाव डाला तो तुम्हारी सेना ने आक्रमण शुरू किया। इस प्रकार हार-जीत भुगतते, डीलडौल की बातें करते वानर तथा रजनीचरों ने युद्ध-कौशल प्रकट किया। १९ लाशों का ढेर सारा फैलकर रक्तधारा का प्रवाह जब युद्धभूमि में बह रहा था तब दोनों तरफ़ के योद्धा पहाड़, पेड़ तथा भयानक शस्त्रास्त्रों का प्रयोग करते लड़ने लगे। पार्श्व में हटने, पीछे हटने, सौगंध रखने (क़सम खाने) वाले युद्ध-कुशल व्यक्ति शत्रुता से आगे जूझकर जब लड़े तो समस्त लोक भयभीत हुए। २० वीर इन्द्रजित् आदि रावण के प्रमुख राजकुमार रात्रि के प्रारंभ में इकट्ठे हुए। लग रहा था कि तुम्हारी वानर-सेना की वीरता समाप्त होने को है। युक्ति से गली-गली घुसकर आगे बढ़कर दाएँ-बाएँ पार्श्वों से मुकुर पड़नेवालों कपि वीरों को इस प्रकार (राक्षसों ने) पीट-पीटकर गिरा दिया कि वे 'हाय तौबा' कह उठे। २१ राक्षसों ने चीखते-चिल्लाते,

कंडु सैरिसुवने बळिक्करि गंड लक्ष्मण नाक्षणदोळु-
द्दंड राक्षस रट्टे कुणियलु कोल मोनेगळलि
रुंडगळ नेगहिदनु हरिपद मंडलद वलयदलि खळपुर
दंडु परियंतट्टि होगिसिदनूर नति बलर ॥ 23 ॥
तेगेदु दळि दुळिद सुर बलवी विगड बल नुपटळके पाळेय
देगेदुदपरांबुधिगे चंडद्युतिय दीधितिय
नगर कादुदु मेले नीलादिगळ मुत्तिगे बलिदरवरिरु
ळगलदलि जड्डिदाळु वेरिय कोटे कोत्तळद ॥ 24 ॥
मडिदुदाजिय लेरडु निर्बुद पडे पराक्रमि कपिगळसुवनु
सडलिसिदरिन्नूर्रक्षोहिणिय नसुररलि
तुडुकितंजिके बळिक रक्कस रोडेयननु बलुगोप मुखदलि
झडिदुदग्गद वीर तोरवेय राय नरहरिय ॥ 25 ॥

उधम मचाते, कपि-सेना को लट्ठों से पीटते मार गिराते, खड़े रहने का अवसर भी न देते दुर्ग से नीचे उतारते रघुपति के शिबिर के हाते तक भगा दिया। जाँघ के भीतरी भाग तक घुसे तीरों के कारण दाँत निपोरती सत्त्वहीन बनी कपि-सेना पीछे हटी। २२ कपि-सेना का यों पीछे सरकना देख शत्रु-वीर लक्ष्मण कैसे सह सकते हैं ? तुरंत उन्होंने राक्षसों के रुंडों को बाणों की नोक पर नचाना शुरू किया। आकाशमंडल तक उन रुंडों को उड़ा दिया। शत्रु नगरी तक उन राक्षसों का पीछा करते भगा दिया कि वे (राक्षस) गाँव के भीतर भाग खड़े हो जायँ। २३ बची-खुची राक्षस-सेना प्रचंड बलशाली लक्ष्मण की यह मार सह न सकी; फलस्वरूप पीछे हट गयी। सूरज की रोशनी पश्चिम समुद्र की यात्रा के लिए तैयारियाँ करने लगी। तत्पश्चात् नील आदियों ने लंका नगरी को घेर लिया। राक्षसों ने रात भर प्रयत्न करते हुए टूट पड़े परकोटे तथा दुर्ग के गुंबजों को ठीक करते सुदृढ़ बनाया। २४ युद्ध में दो निर्बुद (बीस करोड़) सेना काम आयी। कपि वीरों ने दो सौ अक्षौहिणी राक्षसों के प्राणों का अपहरण किया। राक्षसों का राजा इससे बहुत आतंकित, भयभीत हुए। वीर तोरवे के नरहरि के अवतारी श्रीराम का मुखमंडल क्रोध के मारे तमतमा उठा। २५

हन्नेरडनेय संधि

सूचने— परम पातिव्रतेय पावनतर चरितेय मुंदॆ माया शिरव हायिकि वेदरिसिदनळिमनद लसुरेंद्र ।

कुशनॆ केळा दिनद दुर्गद विषमरण रंजिसितलै कै-
कसॆय नग्गद माल्यवंत निशाचरेश्वरन
कुसिद हरुषद कोरगिदानन दोसवॆ नय नोदकद सुय्लिन
हसरिकॆयलैतंद रिरुळु दशास्य निद्दॆडॆगॆ ॥ 1 ॥
बंद मातामहन मातॆय मंद हरुषवनरिदु धिम्मनॆ
निंदु कैमुगिदेनु वंदिरियॆंदु वॆसगॊळलु
कंद केळै मगनॆ दिनगळु चंदवागिरवेनु चित्तकॆ
वंदिरदु निन्नभिमतवु नमगॆंद रसुरॆंगॆ ॥ 2 ॥
मग विभीषण निनगॆ हेळिद बगॆ वरुत्तिदॆ दुर्गविद कै-
मगुचि कॊंडवरुंटॆ सुर मानव भुजंगरलि
हगलु कत्तलॆ यहुदु कत्तलॆ हगुलहुदु तानिदुवॆ सलॆ सो-
जिगवला नी नोडिको यॆंदरु नयोक्तियलि ॥ 3 ॥

बारहवीं संधि

सूचना— परम पतिव्रता पवित्रशीलसंपन्न सीता के सम्मुख राम का (कटा) मायावी सिर डालकर (फेंककर) रावण ने नीचता बरतते उसे धमकाया ।

सुनो कुश, उस दिन के दुर्ग के भयानक युद्ध के कारण रावण की माँ कैकसा तथा माल्यवंत राक्षस बहुत ही चिंतित हुए । हर्ष खोए, म्लान मुखड़े से अश्रु बहाते, दीर्घ निःश्वास लेते दोनों उस दिन रात को दशकंठ के यहाँ उपस्थित हुए । १ अपने पास आए नाना के तथा माता के म्लान मुखड़े को देखकर रावण ने तत्क्षण खड़े हो, हाथ जोड़े पूछा— "क्यों कर आना हुआ ? बेटे, सुनो मेरे लाल । समय बड़ा खराब है । तुम्हारी राय हमें पसंद नहीं है ।" इस तरह उन दोनों ने रावण से कहा । २ "बेटे मेरे, विभीषण की भविष्यवाणी की सच्चाई दृष्टिगोचर हो रही है । देवताओं में, मानवों में, सर्पो में, किसी में भी इस दुर्ग को अपने वश में कर लेने की ताकत कहाँ है ! दिन अँधेरा (रात) हो रहा है । रात (अँधेरा) दिन हो रहा है । यही आश्चर्यजनक है न ? तू ही विचार कर देख ।" इस प्रकार माल्यवंत तथा कैकसा ने अत्यंत नयपूर्ण

स्मर विकारग्रहद सोंकिगॆ मरुळु गॊळबेडय्य कामनु
करुणियॆ कॊलॆगारॆरिगॆ गुरु वैर वर्गदलि
परसतिगॆ मनविक्कि कालन करकरॆगॆ संदवरु हलबरु
हरहु सौख्य दॊळल्प बळलिकॆ बहळवग्रदलि ॥ 4 ॥
हरिय करि जयिसुवदु गरुडन नुंरग गॆलुवुदु हॆब्बुलियनुरॆ
हरिण मुरिवुदु कप्पॆ काळोरगन नुंगुवदु
नररु राक्षस भटर रणदलि हरणगॊंबुदु बॆरगलायॆलॆ
तरुण केळै लोक मूररॊळॆंदळसुरंगॆ ॥ 5 ॥
तनुज कॆळै सीतॆ नरमानिनियॆ निनगेनरिय बारदॆ
विनुत पातिवृत्य दनुपम सुव्रतत्वदलि
मनुजने रघुनाथ नातन घन चरित्रव नरिय बारदॆ
मनद वैरव बिट्टु सुखियागॆंदळसुरंगॆ ॥ 6 ॥
विषय लंपट तनदि मूर्खर नॊसल भूषणवागि कीर्तिय
हॆसर ळळिदनु पुत्र मित्र ज्ञाति बांधवर
असुवि गंतक नादनी कैकसॆय मुनिपति विश्रवसुविन
बसुरिनलि बरतक्क मगनल्लॆंबुदी लोक ॥ 7 ॥

बातों में समझाया। ३ मन्मथ विकार रूपी ग्रहस्पर्श से भ्रांत मत बनो, मेरे लाल। हत्यारों पर काम (मन्मथ) की करुणा कहाँ हो सकती है, क्योंकर हो सकती है? काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर नामक वैरि षड्वर्ग में एक जो परस्त्री-व्यामोह है— उसके आधीन कइयों को प्राप्त होनेवाला सुख बहुत ही कम है। अंत में कष्ट ही अधिक है। ४ इन तीनों लोकों में हाथी का शेर को जीतना, सर्प का गरुड़ को जीतना, हिरन का महान बाघ को मार डालना, मेंढक का काले सर्प को निगल जाना, मानवों का, युद्ध में राक्षस वीरों का प्राणापहरण करना अत्यंत आश्चर्यजनक घटनाएँ हैं न? सुनो, मेरे बेटे रावण" —इस प्रकार कैकसा ने कहा। ५ "सुनो मेरे लाल। सीता क्या मानवी स्त्री है? पतिव्रता धर्म के अमोघव्रत में वह जो है —इसे तू समझता क्यों नहीं? रघुनाथ क्या केवल मानव हैं? उसकी श्रेष्ठ महत्ता को तू समझता क्यों नहीं। अब भी अपने मन के द्वेष को त्यागकर सुखी बने रहो।" इस तरह उसने अपने बेटे को समझाया। ६ "इन्द्रिय सुखाभिलाषा में कामुक हो, मूर्खों के माथे का शिरोमणि बन, अपनी कीर्ति को बर्बाद कर पुत्र, स्नेहित, दायाद, रिश्तेदार आदि के प्राणों के लिए जो यमसदृश बना है, उसे कैकस तथा विश्रवसु मुनि के यहाँ संतान के रूप में पैदा होने का हक़ नहीं था' इस

अदरिनी जनकजेय कोंडोय्दोंदॆद चरणव हिडिदु करुणव
वदनदलि तोरिसि शरीरव नुळुहि कोंबुदिदु
चदुरतन देवरलि करुणास्पदनु रामनु काव निन्ननु
कदन बेडेंदप्पिदळु रावणन मस्तकव ॥ 8 ॥
अळिदरीतन चक्रहतियलि कळदों ळॆम्मग्रजरु मरॆ यो-
क्कुळिदॆ नॆनगाय्ती महापुर दाधिपत्यतन
कलहदलि कैयिक्कि कैटभकलि तमसुर मुख्य राक्षस
रळिदरॆंदनु माल्यवंतनु राक्षसेंद्रंगॆ ॥ 9 ॥
आदियलि केळ्दरियला प्रह्लाद वदुकिद कथॆय वैरव
साधिसियॆ सत्तनु हिरण्यक नॆंव संगतिय
कैदुडुकु लेसलल खळकुल सूदनन कूडकट जीवव
कादुकों कामुकर चाळिय चलिल कळॆयॆंद ॥ 10 ॥
मनुजनल्ला कार्तवीर्यार्जुननु कपियल्ला सुरेश्वर
तनुज नवरलि बंद भंगव मरॆदु कळदॆयल
अनुवरदोळा कार्तवीर्यार्जुननना कपि सार्वभौमन
तनुव नळिदवरारु नीनिद नोडिकोयॆंद ॥ 11 ॥

तरह यह लोक कहेगा। ७ अतः इस जानकी को ले जाकर लात मारने वाले राम के चरणों को पकड़ो। मुख पर करुणा का भाव लाकर अपनी देह को बचा लो। —यह बुद्धिमानी का लक्षण है। भगवानों में राम अत्यंत दयामय है। वह तुम्हारी (अवश्य) रक्षा करेगा। अतः युद्ध को रोक दो।" इस तरह कहते कैकसा ने रावण के माथे को आलिंगन-पाश में भर लिया। ८ "इसके चक्रायुध की मार से तेरे (बड़े) भाई युद्ध में काम आए। उसकी शरण जाकर बचनेवाले मुझे इस महानगरी का आधिपत्य प्राप्त हुआ। श्रीहरि के साथ युद्ध करके कैटभासुर, तमासुर आदि प्रमुख राक्षस विनष्ट हुए।" इस तरह माल्यवंत ने राक्षस राजा को समझाया। ९ "पूर्व में प्रह्लाद के बचने की कथा तथा हिरण्यकशिपु का श्रीहरि से द्वेष-साधना करते मरने की कथा क्या तूने सुनी-जानी नहीं। राक्षसवंश-विनाशक के साथ आगे-पीछे न सोचते (युक्तायुक्त विवेक-रहित हो) इस तरह युद्ध मोल लेना ठीक नहीं। तू अपने प्राणों की रक्षा की सोच ले। कामुक-विषयानुरागियों की यह राह त्याग दे।" इस तरह माल्यवंत ने कहा। १० "कार्तवीर्यार्जुन क्या मानव नहीं था? इन्द्रसुत बाली क्या कपि नहीं था? उनसे जो तू हारा यह भूल ही गया न? युद्ध में कार्तवीर्यार्जुन को तथा कपि सार्वभौम वाली को मारनेवाला कौन

वरवु निनगजर्निद मिक्किन सुरनरोरग यक्ष राक्षस
गरुड गंधर्वादि नाना देवयोनियलि
मरण विल्लेंदणुग केळ् वानर नरेश्वर ररिगळगियॆ
धुरकॆ निंदरु नीनिदनु लेसागि तिळियेंद ॥ 12 ॥

केळु मातामह पिपीलक दालिगिरदे गोष्पदद की-
लाल विलयांबुविन वोलु निम्मक्षिगा रघुज
स्थूल नॆनगणु मात्रनिद नीव् हेळदिरि कथॆगळनु नाविद
केळि बल्लॆवु साकु बिजयंगॆय्यि नीवॆंद ॥ 13 ॥

ॲणिकॆ निमगिदु विष्णुवीतनु कॆणक बेडीतननु नीनॆं
दणक नोड्डुवि रैसले नावंजॆ वाहवकॆ
रणमुख दोळनु चरिसदरि मार्गणद जयमुख कीर्तियनु पडॆ
वॆणिकॆ नम्मदु निम्म बगॆयनु बगॆवनल्लॆंद ॥ 14 ॥

मरुळुतन बेडॆलॆ मगनॆ दुर्धरवु दैवद कूडॆ सुलभवॆ
हिरियराडिद मातनकटा मन्निसुवु दॆनुत
स्मरन गरुडिय श्रमवु जीवद सरस केळॆलॆ कंद नीननु
सरिसु नम्मय मातनॆंदनु मुगिदु करयुगव ॥ 15 ॥

था ? तू जरा इस पर विचार कर ले।" इस तरह माल्यवंत ने कहा। ११ "अमर, मानव, सर्प, यक्ष, राक्षस, गरुड़, गंधर्व वग़ैरः अन्यान्य देवताओं से तेरी मृत्यु नहीं होगी—इस तरह तुझे ब्रह्माजी ने वरदान दिया है। सुनो पुत्र ! अब यह वानरराज शत्रु बने युद्ध के लिए आ डटे हैं। इस पर खूब ध्यान देकर सोच।" —इस तरह माल्यवंत ने कहा। १२ "सुनो मेरे नाना ! चींटी को, गोष्पद-वारी (गौ के खुरपुटों भर का पानी) क्या प्रलयकालीन पानी जितना नहीं लगता ? तुम्हें तो रघुपति अत्यंत भारी दिखायी देते हैं। मुझे तो वह अणुमात्र लगते हैं। तुम मुझे कहानियाँ मत सुनाओ। वह मेरे लिए नगण्य है। मैंने ये सारी कहानियाँ सुनी हैं। अब और नहीं सुनना चाहता। आप यहाँ से चले जाएँ।" —इस प्रकार रावण ने कहा। १३ "यह तुम्हारी सिर्फ़ भ्रमपूर्ण भावना है कि यह विष्णु है; इसे छेड़ो मत —इस तरह समझाकर मेरी अवहेलना करना चाहते हैं न ? मैं युद्ध से भयभीत नहीं। युद्धक्षेत्र में शत्रु के बाणों को जीतकर कीर्ति-लाभ करने की आलोचना मेरी है। तुम्हारी राय पर ध्यान भी देना नहीं चाहता।" —इस प्रकार रावण ने कहा। १४ "बेटे ! यह मूर्खता त्यागो। भगवान के साथ शत्रुत्व अत्यंत कठिन है। वह इतना आसान नहीं है; बड़ों की बात पर ग़ौर

धरणि तलेकॆळ गागलु गुळलि तरणि बिंबवनभ्रवज शं-
कररु कूगिडलबुधि मुसुकलि मुरियलमराद्रि
तिरुगि सीतॆय बिट्टॆनादरॆ करॆयि पेतुगनेंदु नम्मनु
करकरिस बेडेळियेंदडदिरुहिदनु मुखव ॥ 16 ॥
बळिकवरु बिसु सुय्वुतंबक जलद झाडिय लैदिदरु निज
निळयवनु दशकंठ नित्तलु तन्न मनदॊळगॆ
हलव नॆणिसिद बळिक सीतॆय नॊळगु माडुवुपाय कुशलव
तिळिदु विद्युज्जिह्वननु करॆदॆंदनी हदन ॥ 17 ॥
मायॆयलि रचि सहित राघव रायनंदद शिरवनदनवु
जायताक्षिय मुंदॆ तोरिसि हाय्कि मैवळिय
मायॆयलि माताडि वहळोपाय दिंदॊड वडिसि ता हो-
गय तिकॆय छलोक्ति सरिदरॆ साकुतनगॆंद ॥ 18 ॥
रचिसिदनु बळिकवनु माया रचनॆयलि नृपशिरव साध्विय
गुचिय सीतॆय वळिगॆ तंदवनर्ध रात्रियलि
विचकितास्फालनॆय वाद्य प्रचय दुव्विन बॊब्बॆगळ खळ
निचय सहितैतंदु मुंदिळुहिदनु मस्तकव ॥ 19 ॥

कर। मन्मथ के अखाड़े में साधना करना मानो मृत्यु के साथ खिलवाड़ करने का जैसा है बेटे ! हमारी बात मान जा।" इस तरह कहते, हाथ जोड़े माल्यवंत ने विनती की। १५ चाहे तो धरती पलट जाय, चाहे आकाश सूर्यबिंब उगले, चाहे ब्रह्माजी महेश्वरजी चीख-पुकार उठें, चाहे तो समुद्र का पानी उमड़ आकर घेर लें, चाहे तो मेरुपर्वत टूटकर गिर पड़े—अगर मैंने किसी भी हालत में सीता को लौटा दिया तो मुझे पागल कहकर पुकारो। व्यर्थ ही मुझे सताओ मत। उठो यहाँ से।" इस तरह कहते रावण ने मुँह फेर लिया। १६ तदनंतर कैकसा तथा माल्यवंत लाचार हो आँसू बहाते अपने-अपने घर चले गये। इस तरफ़, दशमुख ने खूब सोच-विचारकर सीता को अपने वश में कर लेने का उपाय सोचकर विद्युज्जिह्व को बुलाकर उस (अपनी सोची) युक्ति का विवरण बताया। १७ "शत्रु राम के सिर के सदृश एक सिर का निर्माण अपनी माया के बल पर रचो। उसे सीता को दिखाते, उस सिर को उसके सम्मुख डाल, मायावी बातों से वार्तालापों से उसे रिझाकर, कई युक्त बातों से प्रसन्न कर उसे बुला ले आ। जा। जिस किसी भी रीति से मेरी यह ज़िद सफल हो।" इस प्रकार विद्युज्जिह्व से रावण ने कहा। १८ उसके बाद विद्युज्जिह्व ने माया के बल पर राम का सिर

तळिरॊडॆद मामरन गिळि कोगिलॆ वसंतन हंसॆ तावरॆ
गॊळन चातकि कारमुगिल चकोरि चंद्रमन
हलुबुवंतॆ निजेशननु हंबलिसुतिह जानकिय मुंदव
निळुहिदनु मस्तकव नुरु मायॆय विलासकद ॥ 20 ॥
नॊसल कीलिसिदंबिनग्रद लॊसर्व रुधिरद ननॆसॊगद डा-
ळिसुव कदपिन कंगळरेमुच्चुगळ किरुजडॆय
हसरिकॆय् हरिगॊरळिनलि जाळिसुव नॆत्तरमस्तकव तॊ-
रिसिद निदको देवि नोडॆंदसुर नासुरद ॥ 21 ॥
इंदिना हवदॊळगॆ नॊंदुदु मंदि नम्मदु देवि केळ् रघु-
नंदनन मुंदारु निंदिर लहुदु बवरदलि
कॊंदन गणित राक्षसर बळिकॊंदु मायारूपिनलि सलॆ
संधिसिदॆ नाजियलि तंदॆनु तलॆय तानॆंद ॥ 22 ॥
रणकॆ निललरियदॆ वनौकस रॊडु हाय्दुदु काणॆ ना ल-
क्ष्मणनदेनादनो विभीषण नाव दिक्किनलि
जुणुगिदनॊ सुग्रीव ननिलज मणिदनव नाहवदॊळाळ्दन
रुणव तिद्दिद नुळिद वीरर काणॆ नानॆंद ॥ 23 ॥

निर्मित कर, आधी रात के वक़्त उसे पतिव्रता परिशुद्धा सीता के यहाँ ले आया। भयोत्पादक बाजे बजाते हुए अत्युत्साह के कारण चीख़ते-पुकारते राक्षस-समूह के साथ आकर उस माया-विरचित सिर को सीता के सम्मुख रखा। १९ कोंपल फूटे आम के पेड़ के लिए जैसे तोते, वसंत ऋतु के लिए जैसे कोयल, कमलों से भरे सरोवर के लिए जैसे हंस, काले बादलों के लिए जैसे चातक पक्षी, चाँदनी के लिए जैसे चकोर चटपटाते हैं, उसी प्रकार अपने पति के लिए चटपटाती जानकी के सम्मुख विद्युज्जिह्व ने राम का माया शिरस् ला रखा। २० भाल पर चुभे तीर के कारण उस सिर पर से खून की बूंदें टपक रही थीं। प्रसन्नमुख चेहरे के गाल, अधमूंदी आँखों से युक्त छोटी जटा कटे रुंड से बहते खून की धारा दिखाते उस भयानक राक्षस ने कहा— "देवीजी, यह देखिए।" २१ "आज के युद्ध में हमारे पक्ष की यथेष्ट क्षति हुई। सुनिए देवी— युद्ध में राम के सम्मुख कौन खड़ा हो सकता है? उनका सामना करने की हिम्मत है किसमें? उसने असंख्य राक्षसों की हत्या की। उसके बाद मायारूप से मैंने राम का सामना कर यह (उनका) सिर काट लिया।" इस प्रकार विद्युज्जिह्व ने कहा। २२ "वानर युद्धक्षेत्र में खड़े न रह सकने के कारण भाग खड़े हुए। पता नहीं —लक्ष्मण का क्या हुआ? विभीषण

वीर खंडॆयविदकॊ धनुतुणीर विदको कवच विदको
वीर रामन कैदुविहवे नोड़ि नीविदनु
आरु सरि लंकाधिनाथं गारु सोलरु सुर नरोरग
नारियरु नीविनितरलि भजिसुवदु लेसॆंद ॥ 24 ॥
बालॆयरु भूसतिय जयमुख देळिगॆय लाळ्दवन धरणी-
पालनव नाहवव नीव् लेसागि चित्तैसि
हेळुवडॆ नीवज्ञरे दुश्शीलरे नीव् माति नॊप्पद
मेलॆ मातनु हेळिकळुहुवु दुचित निमगॆंद ॥ 25 ॥
केळिदै नृपसूनु मिंचिन नालगॆय रक्कसन नुडि किवि
गॆळिसलु कुडियळ्ळॆयनु कोलुगिद तॆरनंतॆ
सालिडुव कंबनिय मरुकद मालॆगिच्चिन चुच्चिनंगद
बालॆ बाय्विडु तीक्षिसिद ळासुरद मस्तकव ॥ 26 ॥
मायदभिरंजनॆय शिरवॆंदायतांबकियेन बल्लळु
हायॆनुत हम्मैसि मूर्छित यागॆ खळबळिक

न जाने किस दिशा से खिसक गया ? सुग्रीव तथा हनुमान युद्ध में हारकर स्वामी के ऋण से उऋण हुए। अन्य बचे-खुचे वीरों को मैं देख न पाया।" इस प्रकार विद्युज्जिह्व ने सुनाया। २३ यह देखिए, राम के हाथ की वीरता की तलवार। यह लीजिए। यह धनुष और तरकस लीजिए। यह लीजिए कवच। ये वीर राम के शस्त्रास्त्र हैं कि नहीं, आप ही परख लीजिए। लंकाधिपति की बराबरी कौन कर सकता है ? देवता-स्त्रियाँ, मानव-स्त्रियाँ, नाग-स्त्रियाँ —इनमें कौन रावण पर मोहित नहीं होतीं ? जहाँ तक हो सके, शीघ्रातिशीघ्र आप भी रावण की सेवा में उपस्थित हों —यही श्रेयस्कर है। इस तरह उसने कहा। २४ "युद्ध-विजयी लंकाधिपति के युद्धकौशल पर आप ही गौर करें। मेरे विवरण देने का क्या प्रयोजन ? क्या आप नासमझ हैं ? अथवा दुराचारी हैं ? अपनी राज़ी-खुशी प्रकट करें यही उचित लगता है। वह संदेश (अपनी राज़ी-खुशी का) मैं रावण को, स्वयं जाकर दे दूँगा।" इस प्रकार विद्युज्जिह्व ने कहा। २५ सुनो राजकुमार ! उस बिजली की जीभ (विद्युज्जिह्व) वाले राक्षस की बातें सुनते ही पार्श्व में लकड़ी चुभने की जैसी वेदना से छटपटाते रोते अश्रु बहाते, वेदना की ज्वाला से छटपटाती देह से संयुक्त सीता ने और अत्यधिक दुखी होते हुए उस भयानक माया सिर को देखा। २६ विशाललोचना सीता को क्या मालूम कि वह माया से जगमगाता सिर है। 'हाय-हाय' करती दुःखविह्वला वह

साय बगॆदळला पतिव्रतॆ तायि तानिहु दुचित वल्लॆनु
तायसद मरुकदलि तिरुगिद नसुर निद्दॆडॆगॆ ॥ 27 ॥
देवराज्ञापिसिद वॊलु मायाविलासद शिरव नॊय्दा
देवियर मुंदिळुहॆ काणुत कायवनु कॊडहि
जीववनु बिड बगॆदळुत्तर वावुदिदकिन्नवर मातिगॆ
ठाव काणदॆ बंदॆनिदु हृदनॆंदु कैमुगिद ॥ 28 ॥
आ लतांगिगॆ बळिक मूर्छा व्याळविष गरुडध्वजन ना
मळिगळ मंत्रदलि बिडॆ कंदॆरॆदु शोकदलि
नीलघन सन्निभन विमल विशालनेत्रन विपुळ वक्षन
साल सार भुजान्वितन नॆनॆदळलिदळु सीतॆ ॥ 29 ॥
नॊसल नॊसलि दॊरिसिदळु चुंबिसिदळु भयकदंपुगळ नि-
ट्टिसिद ळॊलॆदळु मुद्दगैदळु लल्लॆ वातिनलि
ऒसॆदु चैमुंडाडु तालिगिसिदळनुराग प्रपंचद
कॊसरिकॆय कळवळद मैमरॆवॆयलि मस्तकव ॥ 30 ॥
आगदिर नॆन्नरस नॆन्ननुराग समरस भरित मन्मथ
नागदिर नॆन्नय मनोवल्लभ मनोरमण

मूर्च्छित हो गिर पड़ी। "पतिव्रता उस माता ने सोचा कि मरना ही श्रेयस्कर है। मेरा, यहाँ रहना ठीक नहीं।" इस तरह सोचता हुआ विद्युज्जिह्व उसकी (सीता की) दयनीय दशा से भय विह्वल हो रावण के पास लौट आया। २७ "स्वामिन्! आपकी आज्ञा के अनुसार माया-सिर को ले जाकर, उस (सीता) देवी के सम्मुख रखा। उसे देख (भय-विह्वल हो) धरती पर लुढ़ककर सीता प्राण त्यागने में हैं। इसके लिए मैं क्या करूँ? आगे उनसे बातें करने का मौका ही न पाकर भाग आया हूँ। यह है वस्तुस्थिति।" इस-प्रकार विद्युज्जिह्व ने हाथ जोड़े निवेदन किया। २८ मूर्च्छा रूपी सर्प का विष गरुड़ध्वज श्रीराम-नामोच्चार से जब थोड़ा उतरा तो सीता ने वेदना में ही आँखें खोलीं। विशालनेत्री, चौड़े हृदयवाले, सालवृक्ष जैसे भुजाओंवाले नीलमेघ श्याम (श्रीराम) का स्मरण करते, उसने शोक प्रकट किया। २९ सीता ने उस माया-सिर के माथे पर अपना माथा रगड़ा; दोनों गालों को चूम लिया; टकटकी लगाकर देखा; सिटपिटायी; प्यार भरी बातों से अपनी मुहब्बत जतायी; प्यार करते हुए; अत्यंत उमड़ आए प्रेम भरी आशा से विचलित हो, देह-भान भूलकर उस माथे का आलिंगन कर लिया। ३० "अब यह मेरे पति न रहे; मेरे प्रेमरस-भाजन मन्मथ न रहे; मेरे प्रीतिपात्र पति

आगदिरनेंलें सरमें तनगिनिताग लिर्दुदें त्रिजटें केळौ
तागिते तनगकट दुष्कृत वेंदळबुजाक्षि ॥ 31 ॥
नोर्तेने पूर्वदलि वैधव्यतिशय दुष्कृतवनकटा
ख्याति यळिदुदें तन्नघन सौभाग्य लक्षणद
एतकेंन्ननु सृजिसिदनों विधि घातकिय निजपतिवियोगद
पातकिय नकट कटेनुत वय्विट्टळा सीतें ॥ 32 ॥
जरिदुदे मनुपीळिगेंय सुरगिरि दिळीपान्वयद सुरतरु
मुरिदुदे रघुवंश वारिधि बत्तुदें यकट
सरिदुदे काकुत्स्थ कुलदुब्बरद सिरि रघुवंश दग्गद
तरणि मंडल वस्तमिसिदुदें येंदळा सीतें ॥ 33 ॥
हरिवुतिदें यरिसिनद सिरि सीवरिसुतिदें सीमंत दोंळु हं-
तरिसुतिदें काडिगेंय गाडिग तनद सौभाग्य
मुरिवुतिदें मूगुतिय बेंळगोसरिसुतिदें मुत्तैदें तनवेंलें
सरमें कळुहौ बेग पति येंडें गेंदळा सीतें ॥ 34 ॥
जीववनु हिडिदिर्देना राजीवनेत्रन नेंरेंद भरदलि
जीवविदु तानिद्दु फलवेनी जगत्तिनलि
जीवविदनेंलें सरमें केळ् मज्जीवितेशन बळिगें बिडुवेंनु
सावुपायव हेळु तनगेंनुतळलिदळु सीतें ॥ 35 ॥

नहीं हो सकते। हे सरमे! मेरी यह दुर्दशा होनी थी? हे त्रिजटे! किस पाप के कारण मुझे यह दंड मिला?" इस तरह सीता ने कहा। ३१ "न जाने मैंने कौन सा पापकर्म पूर्वजन्म में किया था कि (इस जन्म में) पति को खो बैठूं? हाय-हाय, मेरे दुर्दैव! मेरा सुहाग लुट गया। हाय रे दैव, इस हत्यारिन को, पति की मृत्यु के लिए कारणीभूत इस पापी को, उस ब्रह्मा ने पता नहीं, क्यों जन्म दिया?" यह कहते सीता रो उठी। ३२ मनुवंश का सुमेरु ढहक गया न? दिलीपवंश का कल्पवृक्ष टूट गिरा न? ककुत्स्थवंश संपदा विनष्ट हुई न? हाय-हाय! रघुवंश का सूर्यबिंब डूब गया न?" यों कह सीता पछताने लगी। ३३ "पीले हुए मेरे हाथ आज विनष्ट हो रहे हैं। माँग का सिंदूर तथा उसका सौंदर्य जिगुप्सा की दशा प्राप्त कर रहा है। आँख के काजल का सौंदर्य विनष्ट हो रहा है। नाक के नथ की कांति तेजोहीन हो रही है। मेरा सुहाग लुटा जा रहा है। सरमे, जल्द मुझे अपने पति के पास भेज।" इस तरह सीता ने कहा। ३४ "कमललोचन राम के साहचर्य प्राप्त होने की अभिलाषा में

शिरविद हुदल्लेंबुदनु निर्धरिस लरियदे नट्टबेरगिन
करद कदपिन कंबनिय काहुरद कंपनद
कोरळ बिक्कुळिनळ्ळे गळला सरमे त्रिजटेयरिद्दु बळिकरि
दरु विवर्नव कंडु मायाकृतिय मस्तकव ॥ 36 ॥
बिसुडु बिसुडेले देवि शिरवदु वसुमतीशनदल्ल मुट्टिदि
रसुर कृत्यद कृतकविदु बिसुडेनुत हरितंदु
शशिमुखिय सिरिकरद शिरवनु बिसुडिसिद रळिदळक पंक्तिय
पसरिकेय नेवरिसि निलिसि दरळलनवनिजेय ॥ 37 ॥
मरेय माया शिरविदीगिदु मरुग बेडले तायॆ निन्नय
हॆरेय हल्लिय बैतलेय सौभाग्य कळिवुंटे
अरिय बहुदेम्मवर कपटद करुबुतन वंजदिरेनुत तू
पिरिदु हरसिदरेंदे यागेंदवनि नंदनेय ॥ 38 ॥

अब तक प्राण धारण किए हुए थी। अब इस दुनिया में जीवित रहने का क्या प्रयोजन ? मेरे प्राणों के स्वामी के पास इन (मेरे) प्राणों को भिजवाए देती हूँ। सरमे, मुझे मरने का उपाय बता दें।" इस तरह कहते सीता ने शोक प्रकट किया। ३५ वह सिर, सचमुच क्या राम का सिर है ? या नहीं ? इस दिशा में निश्चित कार्य करने में असमर्थ हो सरमा तथा त्रिजटा आतंकित हो गाल पर हाथ धरे अश्रुधारा बहाती, काँपती, सिसकती रो रही थीं। तत्पश्चात् उन्होंने देखा कि उस सिर का रंग उड़ता जा रहा है। तभी लगा कि यह असली नहीं, मायावी सिर है। ३६ "फेंक दीजिए, देवीजी उस सिर को फेंक दीजिए। वह राम का सिर नहीं, उसका स्पर्श न करें। राक्षसों से निर्मित यह माया है। झट से फेंक दीजिए।" इस तरह कहते हुए दौड़ी हुई आयीं सरमा-त्रिजटा ने सीता के सुन्दर हाथों में स्थित उस सिर को फिकवा दिया। तदनंतर भ्रमरों की तरह चमकते उसके घुँघराले बालों को सँवारते हुए उसके दुख को थमाया। ३७ "यह धोखे से युक्त माया से निर्मित सिर है। अतः दुख मत कीजिए, माँ। तुम्हारे कान की बाली तथा माँग के सिंदूर के लिए कहीं किसी प्रकार कमी हो ही नहीं सकती। (तुम्हारा सौभाग्य अक्षुण्ण है।) हमारे राक्षसों से निर्मित धोखे की टट्टी का अर्थ स्पष्ट है— वह ईर्ष्या से जलते हैं। डरिए मत।" इस तरह कहते मंत्र फूँककर, दृष्टिदोष निवारण करते उन्होंने आशीर्वाद दिया "तेरा सौभाग्य अखंड रहे, अक्षुण्ण रहे।" ३८ देवी, आप क्यों इस भ्रम को अपनाती हैं ?

निमगिदेकॆलॆ देवि चित्तभ्रमॆ रघुक्षितिनाथ मनुजनॆ
कमलनाभ कणा निधानिसॆ नीनु नरसतिय
उमॆय वॊलु सौभाग्यतर सुक्रमिसु हुदने नद्रियदॆ जग
वमलतॆय नप्पुवदॆ कल्मषवॆंदळा त्रिजटॆ ।। 39 ।।
तीरिता समयदलि रजनि विहारिसिदु दॆळॆवॆळगु कपिभट
राउ भटॆ तलॆकॆळगॆ माडितु जगद जोडिगळ
नारिचित्तै सिन्नु तॊरवॆय नारसिंहनु हदुळिगनु मन
दारटॆय बिडियॆंदु संतैसिदरु जानकिय ।। 40 ।।

हदिमूरनॆय संधि

सूचनॆ— वीर वानरबलद बलु जज्झार रक्कस दळद धरधुर दारुभटॆ यंनिसितु देवासुर नरोरगर ।

कॆळिदॆ मनुवंश लक्ष्मी लोल सुत निम्मय निमिक्षिति
पालजॆय बॆंदद्रिसिद शिरवा सरमॆयि बळिक
जाळिसितु जाळिसितु तम तंगाळि तीडितु तडॆतडॆदु ता-
राळि तॊरॆदवु तनुरुचिय तावरॆय नगॆगळलि ।। 1 ।।

क्या रघुपति मानव हैं ? वह क्या कमलनाभ (विष्णु) नहीं हैं। विचार कर देखें तो क्या आप एक मानव की स्त्री हैं ? क्या दुनिया नहीं जानती कि तू भी पार्वती की तरह चिर सौभाग्यवती है ? पाप क्या पवित्रता का आलिंगन कर सकता है ?" इस प्रकार त्रिजटा ने कहा। ३९ यों जब बातें हो रही थीं— रात बीत गयी। सुबह-सुबह की रोशनी फैली। कपिवीरों की गर्जना से दुनिया डाँवाडोल हुई। "देखिए सीताजी; श्रीराम कुशल-मंगलपूर्वक हैं। मन की घबराहट दूर कीजिए।" इस तरह कहते सरमा तथा त्रिजटा ने सीता को तसल्ली दी (धीरज बँधाया)। ४०

तेरहवीं संधि

सूचना— वानर-सेना के महावीरों की तथा राक्षस-सेना के वीरों की भारी भयानक गर्जना से देवता, राक्षस, मानव तथा सर्प बहुत ही भयभीत हुए।

हे मनुवंशीय लक्ष्मीपति के पुत्र ! सुनो। तुम्हारे निमि भूपाल की पुत्री सीता को भयभीत करनेवाला वह मायावी सिर सरमा के प्रयत्न

जलधिशयनन नाभियंबुज दलर शोण परागरुचित
ज्वलव नोडॆ बगिदंबरव बिबिसिदुदॆंबंतॆ
थळ थळिसितिन बिब वाखंडल दिगंतदलब्बरणॆ पडि
तळिसिदुदु पर बलवनी कपिबल महार्णवव ॥ 2 ॥
तलॆकॊळगु माडित्तु सेना जलनिधिय बॊब्बाट खळर
ट्टळॆ गळलि मुरि मुरिदु कॊत्तळ दाळु वेरियलि
निलिसिदरु कैदुगळ करि संकुलव कुदुरॆयतेर सुभटा
वळिग ळॊग्गाय्तूर हॊरवळयदलि निमिषदलि ॥ 3 ॥
इत्त नोलगवनु बळिक्क खळोत्तमनु कळकळद कडुहिन
चित्त चलनॆय चलिसि दंतस्ताप विह्वलद
हॊत्ति हॊगॆव सरोषकद कॆंपोत्ति दक्षिय संतसद रस
बत्तिदानन दसुरनिद्दुनु विषम चिंतॆयलि ॥ 4 ॥
बंदुदोलगका प्रहस्त पुरंदरारि प्रमुख सचिवरु
नंदनरु नायकरु रावुत रथिकरति बलरु
ऒंदुळियॆ शतकोटि मणिगण वृंददमल किरीट वर्धन
रंदिनोलग वॆसॆदुदुग्र समग्र सारदलि ॥ 5 ॥

से अदृश्य हुआ। रात बीती। ठंडी हवा बहने लगी। जैसे-जैसे कमल खिलने और मुस्कुराने लगे, वैसे-वैसे नक्षत्र अपनी देहकांति धीरे-धीरे खोते गये। १ क्षीरसागर में सोये विष्णु के नाभिकमल-पुष्प के लाल पराग से रंजित प्रकाश को मानों इकट्ठा कर, लाकर, आकाश में उदित हुआ हो—इस प्रकार (अपूर्व आभा से) सूर्यबिब पूर्व दिशा में चमकने लगा। (तब) शत्रु-सेना में, कपि-सेना-सागर में मानों एक जबर्दस्त ज्वार प्रकट हुआ। (स्फूर्ति दीखी)। २ लंका के दुर्ग की सीढ़ियों पर सेना-सागर के कारण हुए शोरगुल से राक्षस घबरा गये। दुर्ग के ऊपर के बुर्ज की दीवारों के नजदीक शस्त्रास्त्रों को झुंड के झुंड में इकट्ठा कर (उन्होंने) रखा। हाथी, घोड़े तथा रथों पर सवार वीर नगर के बाहरी वलय में आकर इकट्ठे हुए। ३ तत्पश्चात् राक्षसोत्तम रावण ने राजसभा भरायी (बुलायी)। अंदर ही अंदर व्याकुल संतप्त व्यथित रावण का मन चंचल था। उसका क्रोध तो सुलग रहा था। आँखें लाल अंगारे हुई थीं। हर्षवर्जित मुखड़ा सूख गया था। वह दुस्सह चिंता में मग्न था। ४ प्रहस्त, इन्द्रजित्, प्रमुख मंत्री, रावण के पुत्र, नायक, महा बलशाली घुड़सवार और रथिक हीरे-जवाहरातों से तथा कई प्रकार के

हॊगरॊगुव दाडॆगळ दळ्ळिसु वगडु मोरॆय कॆंपडर्द मी-
सॆगळ कॆंगण्णुगळ मुप्पुरिगॊंड हुब्बुगळ
नॆगॆद रोमावळिय बिगुहिन तगहि नग्गद खॆंडॆयव्करॆ
नॆगहुगळ रक्कसर नीक्षिसि नुडिद नसुरेंद्र ॥ 6 ॥
हिडिदु दुर्गद कूडॆ कदनव नडॆसिदरु भार्गवन खातिगॆ
कडलु मैतॆगॆवंतॆ तॆगॆदुदु नम्म परिवार
सडिलि तॆम्मग्गळिकॆ कोटॆय नोडॆ बडिदरवरिंदि नाजिय
तॊडकिगॆननु कंडिरॆदनु मंद हासदलि ॥ 7 ॥
एतकीयनुमान रिपुगळॊळातु कादुवॆनिदु कदनकॆ
भूत नाथनॆ निललि गॆलुवॆनु चिंतॆ बेडिदकॆ
तात चित्तैसिदु रणदलि सोतु नगरव हॊक्कॆ नादरॆ
मातॆ मंडोदरिगॆ निमगा तनुज नल्लॆंद ॥ 8 ॥
हिडिय लेकजनित्त रणदुग्गडद शरकोदंडवनु कै
विडियलेकी बाहु विक्रम विजय भामिनिय
कडुहदेकिद्रारियॆंबव गडद बिरुदिन सुरर हाहॆय
तॊडर देकॆलॆ जीय बॆससिन्नॆकॆ तडवॆंद ॥ 9 ॥

आभूषणों से अलंकृत निन्यानवे करोड़ राजे-महाराजे रावण की (बुलायी गयी) सभा में उपस्थित हुए। समस्त वीरों का सत्त्व सर्वस्व वहाँ इकट्ठा हुआ था। ५ चमकते टेढ़े-मेढ़े दाढ़वाले, नटखटपन भरे मुँह जले, लाल मूँछोंवाले, लाल-लाल आँखोंवाले, ऐंठन भरी भौंहोंवाले, खड़े रोंगटेवाले राक्षस पंक्तिबद्ध हो, बड़े डील-डौल से खड्ग उठाए जो खड़े थे— रावण ने देखा और उनको संबोधित करते हुए इस प्रकार कहा— ६ "शत्रु-सैनिकों ने दुर्ग को घेरकर युद्ध किया। परशुराम के क्रोध से समुद्र जैसे पीछे की ओर हटा उसी प्रकार हमारी सेना पीछे हटी। हमारी श्रेष्ठता घट गयी। दुर्ग को उन्होंने तहस-नहस कर दिया। आज के युद्ध की समस्या के लिए कौन सा मार्ग तुमने ढूंढ़ निकाला है ?" इस प्रकार (रावण ने) मुस्कुराते पूछा। ७ "यह शंका क्यों ? शत्रु का सामना कर युद्ध करूँगा। आज के युद्ध में भले ही भूतनाथ खड़े हों (हमारे विरोध में) मैं अवश्य जीतूँगा। इसके लिए चिंतित न हों। सुनिए पिताजी ! आज युद्ध में हारकर लंकानगरी में अगर प्रवेश करूँ तो मैं आपका तथा मंदोदरी का बेटा नहीं।" —इस प्रकार इन्द्रजित् ने कहा। ८ "ब्रह्मा के दिए श्रेष्ठ धनुर्बाणों को मेरे धरने में क्या रखा है ? भुजबल रूपी

मुगिल मनुजन हद्दु हंसॆय तगर कोणननॆत्त नॆरळॆय
नॆगळ नेरिद निर्जर बृवरिंदु तनगिदिरॆ
नॆगळिदी नरमृगद मृदुसंयुगव केळदि ररस कॊडु का-
ळगकॆ नेमवनॆंदु शक्राराति निंदिर्द ॥ 10 ॥
उब्बिदनु खळकर्ण सुखमय दुब्बरद नुडिगळिगॆ तनुजन
तब्बिदनु तुळुकाडुवा नंदाश्रुपूरदलि
जब्बॆयागिह हरिब विदु निन्नॊब्बनलि हुरियेरुवदु म-
त्तॊब्बरॆस गुवरुंटॆ निन्नवॊ लाप्तरॆनगॆंद ॥ 11 ॥
तरिसि बळिकाभरण दिव्यांबर विलेपन दिंद मिगॆ वि-
स्तरिसि कॊट्टनु काळगकॆ कर्पुरद वीळॆयव
हरसि कळुहिद नखिळ सेनॆय धुरकॆ हेळिदु सुरनिकर सं-
हरण शक्रारातियनु बळिका दशग्रीव ॥ 12 ॥
आयिदुत्तम तेरुगळ वानायुजंगळ नुन्मदद ष-
ष्ठायिनी दंतिगळ दुर्जय रण धुरंधरर

विजयलक्ष्मी का वरण करनेवाला मैं क्यों रहूँ ? मेरे 'इन्द्रारि' इस महान उपाधि का क्या प्रयोजन ? अब देर काहे को ? देवताओं की उपाधियों से विभूषित हूँ। यह आप जानते ही हैं। अतः राजन् ! तुरन्त आज्ञा कीजिए। इस प्रकार इन्द्रजित् ने पूछ लिया। ९ मेघवाहन इन्द्र, नरवाहन कुबेर, गरुड़वाहन विष्णु, हंसवाहन ब्रह्मा, भेड़े पर बैठे अग्नि, भैंसे पर बैठे यम, वृषभवाहन शिव, हिरन पर बैठे वायु वग़ैरः मेरे लिए किस खेत की मूली है ? अब सम्मुख उपस्थित नर रूपी मृगों के इस मृदु युद्ध के बारे में कहना ही क्या है ? (यह मेरे लिए बाएँ हाथ का खेल है।) युद्ध के लिए आज्ञा दीजिए प्रभो", इस तरह कहते इन्द्रजित् खड़ा हो गया। १० अत्यन्त प्रियकर, उत्साहवर्धक अपने प्रिय पुत्र की बातें सुनकर रावण बहुत ही हर्षित हुआ। आनंदाश्रु बरसाते उसने बेटे को भुजाओं में भर लिया। इस दुर्बल कार्य में, एक मात्र तेरे कारण (मुझे) स्फूर्ति मिली है। तुझ जैसा आत्मीय मेरा अन्य कौन है ?" इस प्रकार रावण ने कहा। ११ उसके बाद रावण ने दिव्य आभूषण, वस्त्र, सुगंध द्रव्य मंगवाकर, इन्द्रजित् को प्रदान कर, युद्ध के लिए कर्पूर-मिश्रित बीड़ा दिया। सारी सेना को युद्ध के लिए आज्ञापित कर देवताओं के संहारक इन्द्रजित् को आशीर्वाद देकर, युद्ध के लिए रवाना कर दिया। १२ श्रेष्ठ रथ, घोड़े, मदोन्मत्त षष्ठायिनी हाथी, जीतने के लिए असाध्य दुर्धर युद्ध-वीरों से युक्त सात सौ अक्षौहिणी चतुरंग सेना को राम से युद्ध करने के लिए इन्द्रजित्

आयतद चतुरंगवनु वज्रायुधांतक नेरहिदनु रघु-
राय रणकेळ् नूऱरक्षोहिणिय सैनिकव ।। 13 ।।
काळकूटद कडलकट्टॆ विताळिसितो शिवयेनलु सतिहोगॆ
वालिगळ होडकरिसु वतिशय विकृत विग्रहद
काळिकॆय कुडिचॆळगुगळ दंष्ट्राळिगळ राक्षस वरूथिनि
काळगकॆ होऱवंटुदळुकॆ समस्त भुवनचय ।। 14 ।।
नळिन जांडद नेत्ति बिरियलु मोळगिदवु रणवाद्य तति दिगु
वळय गुम्मिडॆ गजरिदवु शतकोटि संख्येयलि
दळद मुंभागदलि कहळावळिग ळब्बरणेयलि राक्षस
तिलक शक्राराति होऱवंटनु पुरांतरव ।। 15 ।।
अणॆद वेदॆगळ नंजिकॆ गळो रणददिगुपालकर शशि दिन
मणिय कल्दड दडिसिदवु ध्रुवलोक परियंत
मुणुगिसिदुदु भयांबुनिधि रावणिय गमनकॆ कोटियुग नेऱ
जुणुगिदवु ना काणॆनवरलि सरिय निवगॆद ।। 16 ।।
सुरपनाज्ञेय लोडॆद वखिळामर पुरंगळु कूडॆ बैचि-
ट्टरु सुधा कलशवनु सुरधेनुवनु सुरमणिय
सरक संवरिसिदरु तॆरळिच्चिदरु सरोजजपुरिगॆ सुरसुं-
दरियरनु सुरनायकरु रावणिय गमनदलि ।। 17 ।।

ने इकट्ठा कर जुड़ाया। १३ धुआँ उगलते हुए आँखोंवाले, चमकते काले रंगवाले, बड़े भयानक आकारवाले, नोकदार चमकते टेढ़े दाँतवाले राक्षसों की सेना जब युद्ध के लिए निकल पड़ी तो ऐसा लगा 'कालकूट विष-समुद्र का बाँध टूट गया हो— हे शिव! शिव। समस्त लोक तब भयभीत हुए। १४ ब्रह्मांड का माथा फूट जाय —इस प्रकार सौ करोड़ संख्या में रणवाद्य दिग्-दिगंतों को व्याप्त कर गर्जना करने लगे। तुरहियाँ जब बजने लगीं, तो सेना को पीछे किए, नगर की सीमा पार कर रवाना हुए। १५ "डर के मारे दिक्पालकों के हृदय विदीर्ण हुए। सूर्य-चन्द्र के पैर थर-थर काँपे। समस्त लोक तथा ध्रुवलोक तक (सारा ब्रह्मांड) भय-सागर में डूब गया। इन्द्रजित् के चलते वक्त करोड़ों युग खिसक गये। ऊपरवालों में इन्द्रजित् की बराबरी करनेवालों को मैं देख (ढूँढ़) नहीं पाता।" इस तरह वाल्मीकि ने वर्णन किया। १६ इन्द्रजित् को आते देख, इन्द्र की आज्ञा से देवताओं की समस्त नगरियाँ तितर-बितर हुईं। देवताओं ने अमृत-कलश, कामधेनु तथा चिंता-मणियों को छिपा

तॆगॆदु निंदरु निम्मवरु मुत्तिगॆय निष्पत्तैदु योजन
दगलदवनिय विगडिसि रणरंग मंडलकॆ
नगमहीरुह दॆत्तुगॆयलि गगनविट्टॆडॆयागॆ बलिदरु
बगॆ गॊळिसि बवरक्कॆ गरुडाकारदलि बलव ।। 18 ।।
नळ सुषेण गवाक्ष गज शतबलि गळॆड वंकदलि निंदुदु
बलद दॆसॆयलि सुमुख दुर्मुख गवय दधिमुखरु
बलिद रॊड्डनु मुंदॆ रविसुत कलिहनुम नीलांगदरु बॆं
बळिय मैंद द्विविद रुमरॊड्डिदरु निजबलव ।। 19 ।।
नडुवॆ रघुपति लक्ष्मणरु शर खड्ग कार्मुक कवचगळ कै-
हॊडॆये रणसन्नाह समयिगळाद राक्षणकॆ
ऎडबलद सुग्दानकजसुत दृढ बलान्वित वर विभीषण
रडसि निंदरु संदणिसितरिसेनॆ निमिषदलि ।। 20 ।।
तलॆवरिगॆयलि खड्गिगरु मूकॊळिसि निंदरु मुंदॆ बिल्ला
ळळवि गॊट्टुदु बलिद मंडिय बॆरळ सरळिनलि
निलुकि मोहुव चळगतिय चापळद कुंतद भटरु नडॆदि-
ट्टळिसि निंदरु सरिसदलि रघुराजसैनिकद ।। 21 ।।

कर रखा। अपनी-अपनी चीज़-वस्तुओं को सँभालकर देवताओं के मुखियों ने देवता-स्त्रियों को ब्रह्मलोक भिजवा दिया। १७ पचीस योजन विस्तृत प्रदेश में युद्धक्षेत्र निर्मित कर तुम्हारे लोग तैयार खड़े रहे। पेड़-पहाड़ों को हाथों में उठाए आकाश-मार्ग में संकीर्णता निर्मित करते इकट्ठे हुए। सेना को गरुड़ाकार की व्यूह-रचना कर खड़ा किया। १८ नल, सुषेण, गवाक्ष, गज, शतबलि (इस व्यूह के) बायें पार्श्व में खड़े हुए। दाहिने पार्श्व में सुमुख, दुर्मुख, गवय, दधिमुख ने व्यूह-रचना की। सामने सुग्रीव, वीर हनुमान, नील, अंगद खड़े हुए। मैंद, द्विविद, रुम —इन्होंने सेना को पीछे की ओर से सुरक्षा की दृष्टि से अपनी सेना को खड़ा किया। १९ सेना के बीचोंबीच —तलवार, बाण, धनुष उठाए, कवच को धारण कर राम-लक्ष्मण जो खड़े थे युद्ध के लिए निदश देने को तैयार हुए। दाएँ-बाएँ पार्श्वों की सुरक्षा के लिए जाम्बवन्त तथा बलशाली विभीषण सटकर खड़े रहे। दूसरे ही क्षण शत्रु-सेना आ जुटी। २० राक्षस-सेना के अग्रभाग में सिर की रक्षा करनेवाले ढाल और तलवार उठाए सैनिक खड़े हुए। घुटने टेके खड़े धनुर्धारी बाणों का निशाना ताने (उँगलियों से) सामने तैयार खड़े रहे। पैर के अग्रभाग पर खड़े रह खींचकर फेंकी

मलॆतु निदिदवानॆ नभकव्वळिसिदवु तेजिगळु नॆलनि-
क्कलिसॆ बिरुवरिगळलि तॆरॆसिदवु तेरुगळु
दळवॊ विलयद जवन कॊरळिन कळकळवॊ शिवशिव शिवॆवॆगळु
हळचिदरॆ हवणावुदुपमॆगॆ वैरिवाहिनिय ॥ 22 ॥
मणिमयद जोडुगळ मदवारण रथाश्वारोहकर भा-
रणॆय बिगुहिन हळविगॆय हॊळॆहॊळॆव हॊस हॊगर-
कणॆ कठारि कृपाण बिलु डॆंकणि मुसुंडिप्रसर गदॆयु-
ब्बणद निब्बर किरण कण् मुच्चिसिदव निमिषर ॥ 23 ॥
अररॆ गगन सरोवरदॊळव तरिसिदवॊ तावरॆ गळिगॆ पां-
डुरद शोणच्छविय हेमनिभात पत्रदलि
किरण वडगितु रविय तत्सरसिरुहकंदद बीळलॆनॆ क-
बुरर बलदॊळ गाडिदवु चामर चडाळदलि ॥ 24 ॥
लवनॆ केळ्मोहर दॊळिर्दुदुजवन नुंगुव मृत्युवनु तु-
त्तुव लयाग्निय नंदिसुव भैरवन भंगिसुव
शिवन सीवरिसुव सरोरुह भवन भंगिसुवबुजजांडव
तिविदॊडॆव विकराळ राक्षस वीर भटनिकर ॥ 25 ॥

ज़ानेवाली शीघ्र गति की बर्छियों को हाथ में तैयार धरे राक्षस-सैनिक राम की सेना के सामने झुंड के झुंड खड़े रहे। २१ हाथी मस्त होकर खड़े रहे। घोड़े आकाश की तरफ़ उछल रहे। अत्यंत शीघ्र गति के रथ धरती को कँपाते हुए बड़ी स्फूर्ति से आ जुटे। क्या यह सेना है, या प्रलयकालीन यम का घंटाघोष है, शिव ! शिव ! क्या कहें ? आँखें तो झपकती हैं (पूरी तरह देखने के पूर्व ही) तो शत्रु-सेना का वर्णन किन शब्दों में करें ? २२ रत्न-कवचों से आच्छादित, मदोन्मत्त हाथी, रथ और घोड़ों पर बैठे वीरों के गौरवसूचक ध्वजाओं से युक्त, जगमगाती नयी-नयी कांति से युक्त बाण, खड्ग, तलवार, धनुष, मुसुंडी, गदा, क्योंड़ा आदि आयुधों की प्रकाशमान किरणें अनिमिषों की (आँखें न झपकानेवाले देवताओं की) आँखों को झपकाने लगीं। २३ बाप रे ! गगन सरोवर में मानों खिले कमल-सदृश सफ़ेद, पीले तथा लाल कांति से शोभायमान स्वर्ण-छत्रों में सूरज की किरणें छिप गयीं। उस सरोवर के सुन्दर बरोह (काई) की तरह राक्षस-सेना में चँवर डुल रहे थे। २४ सुनो लव, भैरव को हटानेवाले, शिवजी को धमकानेवाले, ब्रह्माजी को धिक्कारने वाले, ब्रह्मांड को तोड़-फोड़ डालने की ताक़त रखनेवाले भयानक राक्षस

गजघटेय बृंहित तुरंगव्रजद हेषित रथद चीत्कृति
विजय भटरुब्बिरिग्त रणमौवरिय डिंडिमद
गजरु गहळेय कोंबुगळ मौव्रजद पणवानक निनादद
गजरु गुम्मितु गगनदग्रद ध्रुवन मंडलव ॥ 26 ॥
सृजिस लुद्योगिसिद नंबोजजनु मनदोळगंजि नूतन
भुजग राजन कूरुमन ककुभ द्विपाळिय
विजित विबुधोत्तमन सेनाव्रजद होरिगेगे पूर्वदवरसु
गजबजिसिदुद कंडुकुश केळमम कौतुकव ॥ 27 ॥
आतु निंदुदु निम्म सेनाव्रात विदिरलि वैरि बलवद
नातु मलेतिर्दुदु बलीमुख बलवु खातियलि
आतु हळचुव लय समुद्रद रीतियलि बळिकसुरवंश वि-
घात केळिद निवन दारेंदा विभीषणन ॥ 28 ॥
अवधरिसु राजेंद्र रिपुभट रविविधुंतुद राक्षसेंद्रन
कुवर निवनमरेंद्रजितु वेंदेंबु दभिदान
इवन भीतिगे सकल सुमनो निवह सेवक राय्तु तेत्तवु
भुवन विवनंजिकेगे कप्पवनरस केळेंद ॥ 29 ॥

वीर उस सेना में थे जो यम को निगलने की, मृत्यु को चबा डालने की, प्रलयकालीन अग्नि को बुझा डालने की महान शक्ति भी रखे हुए थे। २५ हाथियों की चिंघाड़, घोड़ों की हिनहिनाहट, रथों की गड़गड़ाहट, विजयी वीरों की आनंदपूर्ण गर्जना, तुरई, सींगी, ढोल, मृदंग, नगाड़े वग़ैरः बाजों की चीख़-गरज आदियों के शोरगुल ने आकाश के माथे के मध्य में स्थित ध्रुवलोक में प्रवेश किया। २६ "इन्द्रजित् के वज़न के कारण धरती को धारनेवाले के प्राण चटपटाकर तड़पते देख डरे हुए ब्रह्माजी ने नूतन आदिशेष, नूतन कछुआ, नये दिग्गजों की सृष्टि (निर्माण) करना शुरू किया। बाप रे! इस कौतूहल-भरी घटना को सुनो कुश" —इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। २७ तुम्हारी सेना-समूह के सम्मुख (प्रतिरोध में) राक्षस-सेना डटकर खड़ी रही। प्रतिरोध करते प्रलयसागर की तरह थपेड़ा जमाते वानर-सेना ने उसका सामना किया। वानर-सेना अत्यंत क्रुद्ध थी; तदनंतर राक्षसवंश-विरोधी राम ने विभीषण से पूछा— "यह कौन है?" २८ "सुनिये राजन्! शत्रुवीर रूपी सूर्य को निगल जानेवाला राक्षसेश्वर रावण का यह पुत्र सचमुच राहुस्वरूपी ही है। इन्द्रजित् इसका नाम है। इससे भयभीत हो समस्त देवता इसके सेवक बने। इससे डरकर समस्त लोकों ने इसके चरण तले भेंट चढ़ायी।" —इस

अवें सुरेंद्र कुबेर शिखि यम पवन निरुतीशान्य वरुणर
विविध शस्त्रास्त्रंगळा राक्षसन रथदोंळगें
अवें शराळि शरासनवु शांभवद महिमेंय लवन कैयलि
बवरदलि बदुकुवुदु नमगदु चित्रतरवेंद ।। 30 ।।
नगेंमोंगदलिन सूनु साकें होंगळिकेंय परियेंनुत देवन
मोंगव नीक्षिसि काळगकें कैवीसिदनु भटर
युगद सीमेंय शिखिय वाय्गळ लोंगुव किडिगळ गडणवरि सं-
युगद सीमेंयों ळेंद्दुदेंनें हळचिदुदु कपिसेन ।। 31 ।।
नसिद युगदवसानदलि लळिमसगि लयशिखि शिखियोंळगें लं-
घिसुव वोंलु हळचिदवु बल वेंरडळुकें भुवनचय
निशित शस्त्र शिलोच्चयद सरभसद होंय्लिन खणिखटिल नि-
प्पसर दद्भुत रवद लोंडें वेंरसितु विघातियलि ।। 32 ।।
दाळि हरिदुदु हरहिनलि ताराळि तरणि सुधांशु बिंबव
तूळि तवकद लुभयबल पदहत रजोनृपन
मेलु जगदरसुगळ निज नगराळिगळ कोंळु तोंत्त बरदु-
त्ताळ दिदुत्तानपादज पुरद दळदुळकें ।। 33 ।।

प्रकार विभीषण ने कहा। २९ "(उस) राक्षस के रथ में दिखायी देने वाले वे विविध शस्त्रास्त्र इन्द्र, कुबेर, अग्नि, यम, वायु, निर्ऋति, ईशान, वरुण आदि देवता के हैं। इतना ही नहीं— शिवमहिमासंपन्न धनुर्बाण भी हैं। युद्ध में उससे लड़कर जीवित रहना हमारे लिए आश्चर्यकारी घटना ही है।" इस तरह विभीषण ने कहा। ३० सुग्रीव ने मुस्कुराते हुए कहा— 'प्रशंसा काफ़ी हो चुकी है।' —कहते, राम की ओर देखते वीरो की ओर हाथ झुलाते युद्ध के लिए इशारा किया। प्रलयकालीन आग की चिनगारियाँ मानों झुंड की झुंड निकल रही हों। —इस तरह युद्धक्षेत्र में कपि-सेना बड़ी स्फूर्ति से राक्षसों पर धावा बोल बैठी। ३१ क्षीण हुए युग के अंत में प्रलयाग्नि जैसे आग से मिलकर जैसे अत्यंत द्रुतगति से फैलती है, उसी प्रकार दोनों सेनाएं एक-दूसरे से भिड़ गयीं। यह देख समस्त लोक भयभीत हुए। दोनों तरफ़ के वीरों ने एक-दूसरे पर पैने शस्त्रास्त्रों से वार करते हुए पत्थरबाज़ी बड़े जबर्दस्त ढंग से शुरू की। "खट-खटल" शब्द के साथ सैनिकों की हत्या का कार्य शुरू हुआ। ३२ दोनों तरफ़ की सेना के पगचाप से उठी धूल रूपी राजा के हमले से नक्षत्र तथा सूर्य-चंद्रबिंब भी ढक गये। उनको ढककर वह धूल विस्तृत रूप से आगे बढ़ी। ऊपर के लोकों के राजाओं की नगरियों

करिगळोळु करडिगळु हय मोहर दोळगे मुसुविडु रथदु-
ब्बरद संदणियोळगे कडुहिन सिगळीकचय
चरण चटुळ निशाट रोळु तरुचररु होक्कुदु बिक्कलिळे होडे
करिस लंबुधि हळचितमम महोग्र समरदलि ॥ 34 ॥
खणिखटिलु दडदोक्कुगळ बलुकणेय शस्त्रद कोडुगल्गळ
हणिदगळ हेम्मरन कळेगळ कलह दुब्बरद
रणरभस हुट्टिसित जांडद हणेगे बेनेयनळिद सुभटर
जुणुगुगळ जवराज करणके बार दाय्तेंद ॥ 35 ॥
बेसवु दळिवुदु चाचुवुदु जाळिसुवु दोत्तंबरिसुवदु कै-
हसद मैहसदब्बरद समरंगदुब्बरद
रसवनेवोगळुवेनु सासिर रसने यातंगरिदु श्रोणित
वसन विग्रहि यादळेने रंजिसितु रणभूमि ॥ 36 ॥
करिय करियिंदिट्टु तुरगव तुरगदिंदप्पळिसि रथदिं
दुरु वरूथव नुरुबि रक्कसरिंद रक्कसर
तिरुहिडुव कपिभटर कदनके तेरळिदतिबल रक्कसरु वा-
नरर वानररिंद सदेदरु सूळु पाळिनलि ॥ 37 ॥

को आक्रमित करते वह धूल ऊपर-ऊपर उड़ती-बढ़ती ध्रुवलोक पर आक्रमण करने आगे बढ़ी। ३३ हाथियों के साथ रीछों ने, घोड़ों के साथ काले मुँहवाले बंदरों ने, रथों के झुंडों पर बलवान काले बंदरों ने, शीघ्रगामी राक्षसों के साथ वानरों ने युद्ध किया। उस महा भयानक युद्ध के कारण धरती को दीर्घ श्वास (निःश्वास) लेनी पड़ी। सागर क्षुब्ध हुए। ३४ खट्-खटल्, धड़-धड़, सन-सन की आवाज़ के साथ बाण, शस्त्र तथा नुकीले पत्थरों से युद्ध किया। भारी पेड़ तथा जबर्दस्त तीरों की मार के इस युद्ध की भयानकता ने ब्रह्मांड में (भी) सर-दर्द पैदा किया। मरकर विकृत रूप धारनेवालों का हिसाब यमराज को भी नहीं मिला। ३५ योद्धा जो शत्रु से भिड़ रहे थे, नाश हो रहे थे, आगे बढ़ रहे थे, हैरान हो रहे थे, फिर भी द्रुतगति से आक्रमण कर रहे थे। शत्रुओं को आधीन करने, अपने वश में करने के लिए ज़बर्दस्त हमला करके लड़ रहे उस महत्तर युद्ध का वीर-रस आदि रसों का कैसे वर्णन किया जाय? सहस्र जिह्वा वाले के लिए (यह वर्णन करना) असाध्य रहा। युद्धभूमि मानों ऐसे लग रही थी कि उसने रक्तवर्ण का कपड़ा ओढ़ लिया हो। ३६ हाथी को हाथी से पीटकर, घोड़े को घोड़े से कूटकर, रथ को रथ से टकराकर, राक्षसों को पकड़कर गिरगिराहट के साथ घुमा-फिराकर

गिरिय शिखरद हॊय्लिनलि हॆम्मरन बीसिकॆ गळलि नखमुख
दुरु विघातिय लिड्डुव कैगुंडुगळ चंडियलि
करुळ काळिज मज्जॆ मांसद हॊरळियलि हॊदॆसिदुदु नॆलदु-
प्परद रुधिरदलडगिदुदु नभविवर समरदलि ।। 38 ।।
ऎत्ति वालव नॆरडु पच्चळ दॊत्तिनलि मोहिसिद सुरगिय
नॆत्तियलि तोरिदरु तॊटिगॆ हारुवण्णगळ
कत्तरिसिदरु कणॆगळलि कैगुत्ति दवरनु कडिकडिदु हॆण
गुत्तरिय नॊट्टिदरु कैकॊंडरिगळाजियलि ।। 39 ।।
इवरवर संगरद सेनार्नवद संकुल युद्ध दभिनव
दविरळद रणरंजकव नेनॆवॆ नद्भुतव
जवन हरवरियो महाभैरवन काल्दुळियो कर्पदिय
कवर्तेयो काणॆनु सुरासुर कदन केळियलि ।। 40 ।।
उरुळुतिर्दवु रणदॊळगॆ हॆणनॆरडु सेनॆय लरुण जलवु-
ब्बरिसु तिर्दुदु नॆगहि नालुकु वलद तॆप्पगळ
सरिवु तिर्दवु सुभटरसु सुरपुरिगॆ बॊम्मन राजधानिगॆ
नॆरॆवु तिर्दवु नलिदु रणभूमियलि भूतगण ।। 41 ।।

राक्षसों पर पटक देनेवाले कपिवीरों के साहस के बदले में पीछे न हटने वाले बलशाली राक्षसों ने बंदरों को (पकड़कर) बंदरों से पीटा। ३७ कपिवीरों ने पहाड़ के नुकीले पत्थरों से पीटकर, भारी पेड़ों को गिराकर पीटते, नाखूनों से खरोंचकर घायल करते, हाथगोलों को प्रचंड शक्ति से दे मारते-पीटते शत्रुओं को गिराते, उनकी (शत्रुओं की) आँतड़ियाँ, प्लीहा, मज्जा, मांस निकाल-निकालकर ढेर लगा दिया। धरती से उड़े रक्त के छींटों से आकाश भर गया (ढक गया)। ३८ युद्ध में राक्षस-योद्धाओं ने वानरों की पूंछ ऊपर उठाकर दोनों (उनके) वृषणों में कटार जो चुभोयी, वह देह में घुसकर माथे से बाहर दिखायी दी। हमलाकर लड़ने के लिए उछल पड़नेवाले कपियों को उन्होंने तीरों से काट डाला। हाथों से पीटनेवालों को काट-काटकर (उनके) शवों का ढेर लगा दिया। ३९ वानर तथा राक्षसों के सेना-सागरों के मध्य हुए जबर्दस्त आक्रमणकारी इस समूह युद्ध में जो नये ढंग का युद्ध हुआ उसका अद्भुत वर्णन कहाँ तक करें? देवताओं के तथा राक्षसों के युद्ध में मानों यम का संचार हुआ हो या महाभैरव के चरण रौंद रहे हों या शिवजी ने लूटमार मचायी हो —कहना असंभव-सा लग रहा था। ४० दोनों तरफ़ की सेनाओं में, युद्धक्षेत्र में, मुर्दे लुढ़क रहे थे। रक्त का प्रवाह उमड़कर चतुरंग सेना

करुळिनलि खंडदलि तुरुगिद तोरळेयलि तरि देलुगळलि कडि
गोरळिनलि कत्तरिसिदेदे नडु कालु कैगळलि
हरि निशाटर भटर हेण सरि बेरकेयलि रणरंगदलि ह-
न्नेरडु ताळुच्छेद परियंतिडिदु दंबरव ॥ 42 ॥
जवन कणजवो मेणु लयमृत्युविन बाणसवनेयो हिडिकेयो
विविध भूतावळिय बेळेगैयो खगावळिय
रवुकुळद रणमंडलवो रौरवद रुंहरियो सरौद्रा-
हवद सिरि सिरिराम कथेयोळ गल्ल दिल्लेंद ॥ 43 ॥
मुरिद चूणिय मेले बलुभट रिरितकंगैसिदरु होय्दरु
हरेगळाचेय लडगितारव विवर बोब्बेयलि
ऊरुगलिळे दळवंकुरिसि मुक्कुरिकि तंककें गगनतळ बिड
दोरलितिवर वरद्रिगळ कैदुगळ कदनदलि ॥ 44 ॥
कलह गंटिक्किदवु बळिकग्गळे यरिगे कुशकेळु रावणि
योळगे राघव भृत्यना वीर प्रहस्तनलि

को बेड़े की तरह ऊपर उठाकर तैरा रहा था। वीरों के प्राण स्वर्ग की तथा ब्रह्म की राजधानी की तरफ़ यात्रा कर रहे थे। भूत-पिशाच खुशी-खुशी रण-रंग में विचर रहे थे। ४१ कपियों तथा राक्षसों की आँतड़ियाँ, मांसपेशियाँ, ढेर लगे प्लीह, कटी हड्डियाँ, कटे रुंड, छलनी की गयी छातियाँ, कमर, पैर, हाथ सब समप्रमाण में मिलकर वह ढेर सारा आकाश की तरफ़ इतना ऊँचा उठा कि रणरंग में मानों बारह ताड़ वृक्ष काटकर इकट्ठे जुड़ाए गये हों (इतनी ऊँचाई तक वह ढेर उठा था)। ४२ लग रहा था कि वह युद्धभूमि मानों यम की खलिहान हो, या प्रलय-मृत्यु का रसोईघर हो, या विविध प्रकार के भूतों की छोटी पुस्तक हो, या पक्षी-समूह का अनाज का खेत हो, या भयानक युद्ध-रंगस्थली हो अथवा कोलाहल की भूमि हो ! उस महान युद्ध का महत्त्व श्रीराम-कथा के सिवा अन्यत्र कहीं भी नहीं है। —इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। ४३ तितर-बितर हुए हिरावल (हरौल) पर टूट पड़कर राक्षस-वीरों ने घायल करना चाहा। उन्होंने ढपले बजाए। मगर (ढपले की वह आवाज़) वानरों के शोरगुल में सुनायी नहीं दी। वानर-सेना दल उत्साह के साथ युद्ध के लिए जब मुकुर पड़ा तो धरती एक ओर झुक गयी। दोनों तरफ़ के योद्धाओं की पहाड़ और आयुधों से लड़ी जाती लड़ाई देखकर आकाश लगातार चीखा। ४४ तत्पश्चात् श्रेष्ठ वीर लड़ने लगे। सुनो कुश ! इन्द्रजित् के साथ राम-भक्त हनुमान लड़ने लगे। वीर प्रहस्त

मलॆत नग्गद नीलकुंभन हळचिदनु नळना निकुंभन
कलहदलि कॆमिक्कनतिबल गंधमादननु ॥ 45 ॥
तरुबिदनु धूम्राक्षननु बॊब्बिरिदु जांबवदेव नडहॊ-
क्कुरुबिदनु देवांतकन शतबलि विघातियलि
तॆरहुगुडदॆ नरांतकन बलमुरियॆ दुर्मुख कादिदनु क-
ट्टिटरित दिदिळुकिसिद नतिकायननु सौमित्रि ॥ 46 ॥
कादिदनु कलिवालिपुत्र महोदर नॊळॆकांगदलि बिड
दादि गॊंडट्टिदनु युद्धोन्मत्तननु वृषभ
हादि दॆगॆसिदना सुपार्श्वन ना दिवौकस वैद्यसुत नुळि
दाद भटरलि भटरु बारिसदरु महाहवव ॥ 47 ॥
तॆगव रौकुव रोसरिसुवरु हॊगुव रंतरिसुवरु नूकुव
रगलिसुव रड्डैसुवर तरुबुवरु तॆरॆसि
नग महीरुह दुब्बरद कैदुगळ खणिखाटिलब्बरद बलु
जगळ नडॆदुदु नडुग लिंद्राद्यखिळ देवगण ॥ 48 ॥
सिक्क दिव्य युगंगळलि कैयिक्कि कादिद वीररी रण
दक्कजकॆ सरियॆंदु नुडिदरॆ बायि हुळिवुदलॆ

रप नील टूट पड़ा। नळ ने कुंभ का सामना किया। वीर गंधमादन निकुंभ को युद्ध में पार कर गया। ४५ जाम्बव ने गरजते हुए धूम्राक्ष को रोका (सामना किया)। शतबली ने बीच में जूझकर देवांतक को भगा दिया। नरांतक की सेना को थोड़ा भी अवसर न देते हुए दुर्मुख ने युद्ध कर उसका नाश कर दिया। लक्ष्मण ने भारी मार देते हुए अतिकाय को धमका दिया। ४६ अकेले वाली-पुत्र अंगद ने महोदर से युद्ध किया। युद्धोन्मत्त को पीड़ा पहुँचाते हुए वृषभ ने पीछे भगा दिया। देवताओं के वैद्य-पुत्र सुषेण ने सुपार्श्व को रास्ते से हटा दिया। अन्य राक्षसवीरों के साथ वानरवीरों ने भारी युद्ध किया। ४७ दोनों तरफ़ के सैनिक कभी-कभी पीछे हटते हैं; कभी-कभी आगे बढ़ते है; कभी पार्श्व में सरक जाते हैं; कभी अंदर जूझ पड़ते है; कभी ओट में चले जाते हैं; कभी-कभी धक्का देते हैं; कभी तितर-बितर कर देते हैं; कभी एक-दूसरे को रोकते हैं; कभी पीछे हट रुकावट डालते हैं। पहाड़ और पेड़ों की तथा शस्त्रास्त्रों की खड़खड़ाहट के साथ दोनों तरफ़ की सेनाएँ लड़ीं। तब इन्द्रादि समस्त देवता काँप उठे। ४८ पूर्व के दिव्य युगों में हाथापाई कर लड़नेवाले वीर इस आश्चर्यकारक युद्ध को देखकर यह युद्ध हमारे समय के युद्ध के समान ही युद्ध है—इस तरह कहें तो उनके मुंह में कीड़े

उक्कुतिर्दुदु वीररस रण सोक्कुतिर्दुदु सोल गेलविन
सक्कजर्के संदिल्ल दिर्दुदु कंद केळेंद ॥ 49 ॥
नडेवुतिर्दुदु समरवीचेय कडेयलैवरु रक्कसर खळ
रोडेय कळविन काळगर्के कळुहिदनु पैजेगर
पोडविपन बळिगवरु बंदरु कडेगे कपिरूपिनलि कंडनु
कडुगलिग ळरसनु विभीषणना निशाचरर ॥ 50 ॥
तोऱिदनु मऱेयिऱित दोलेय काऱरि वरेंदा खरारिगे
तूऱिदनु तोमरद तुदियिंदनि बरुसुरुगळ
बेऱे वेऱेवऱवऱ तले नभकेऱिदवु मझ भापेनुत होरे
येऱि होगळिदना विभीषणना खरांतकन ॥ 51 ॥
तरणि शत्रुव दोब्ब वैश्वानर विरोधिय दोब्ब नोब्बनु
सरसिरुह संजात वैरि मखारियव नोब्ब
धुर बलायत रश्मिजितु येंबुरु पराक्रमि योब्बनिनिबरु
सरिद रंतक पुरिगे दैवद्रोहिगळु बळिक ॥ 52 ॥

पड़ेंगे न ? वीर-रस उमड़ रहा था। युद्ध में मस्ती बढ़-चढ़ रही थी। हार-जीत का रिश्ता गाढ़ा था। हे बालक कुश ! सुनो। —इस प्रकार कहते वाल्मीकि ने युद्ध का वर्णन किया। ४९ उधर जब युद्ध ज़ोरों पर था, इधर रावण ने छल-कपट की लड़ाई के लिए पाँच ज़िद्दी धोखेबाज़ राक्षसों को भेजा। वे कपि-रूप धारण किए राम के पास आए। वीरों के अधिपति विभीषण ने उन धोखेबाज़ छद्म-वेषधारी राक्षसों को देखा। ५० खर-संहारक राम को विभीषण ने बताया कि ये राक्षस रावण के दूत जो हैं— छल-प्रपंच रचकर हत्या करने आए हैं। राम ने तोमर (शस्त्र) की नोक चुभोकर उन पाँचों के प्राण हर लिये। उनके कबंध से मस्तक कटकर अलग-अगल आकाश में उड़ गये। "धन्य-धन्य" कहते अत्यंत उत्साह से विभीषण ने राम की प्रशंसा की। ५१ उन (पाँचों) में एक सूर्य का शत्रु था; दूसरा अग्नि का शत्रु था। तीसरा ब्रह्म-विरोधी था; और एक शिव-विरोधी था। एक तो महा पराक्रमशाली युद्धवीर रश्मिजित् था। इन सभी देवता-द्रोहियों ने यमनगरी की यात्रा की। ५२

हदिनाल्कनॆय संधि

सूचनॆ— रामपदयुग कल्पकुजविश्राम वीर विभीषणनु संग्रामदलि सीळ्दिदनु कलि मित्रघ्न राक्षसन ।

कुशनॆ केळै पैकवॆरडर विषम वीरर विग्रहद सरॆ
भसद सौरंभातिशय नडॆदुदु सुरासुरर
असम रण किम्मिगिलॆनलु संदिसिदना समयदलि रणक-
र्कश रघुक्षिति पतियना मित्रघ्न नाजियलि ।। 1 ।।
धुरदॊळा रक्कसगॆ मनुजामर महोरगरिंद सायद
वरवु सत्वदलव दशास्यन बाहुविक्रमकॆ
ऎरडुमडि लव केळिदै संगरकॆ निंदनु निम्मतंदॆय
सरिसदलि रविगव्वळिप राहुविन तॆरनंतॆ ।। 2 ।।
आरिदनव मित्रघ्ननॆंदा शरणजन वत्सलनु रामन
मरॆय हॊक्कसुरेंद्र निवनति बलनलायॆनुत
अरस चित्तैसॆन्नवनु पतिकरिसि दुदकॆन्नल्लि सेवा
परिणतॆय कैकॊळ्ळ बेकॆंदॆरगिदनु पदकॆ ।। 3 ।।

चौदहवीं संधि

सूचना— श्रीराम के चरण रूपी कल्पवृक्ष का आश्रय पाये वीर विभीषण ने वीर मित्रघ्न नामक राक्षस को युद्ध में चीर डाला ।

सुनो कुश, देवताओं और राक्षसों के बीच के असाधारण युद्ध के दुगुने वेग से, दोनों ओर के असाधारण पराक्रमशालियों का यह युद्ध अत्यंत डीलडौल तथा उत्साह के साथ चला । उस समय, युद्ध के लिए यम-सदृश राम पर मित्रघ्न चढ़ आया । १ उस मित्रघ्न राक्षस को ऐसा वरदान प्राप्त था कि युद्ध में उसकी मृत्यु मानवों, देवताओं तथा उरगों (साँपों) से संभव न हो । उस राक्षस का भुजबल रावण (के भुजबल) से दुगुना था । सुनो लव; राहु जैसे सूर्य को आक्रमित करे उसी प्रकार तुम्हारे पिता की बराबरी करते वह युद्ध में डट गया । २ शरणागतों के लिए प्रियकर श्रीराम ने जान लिया कि वह मित्रघ्न है । राम के शरण आये विभीषण ने यह जानकर कि वह (मित्रघ्न) अत्यंत बलशाली है; राम से कहा— "राजन् ! सुनिए; मुझे जो आपने अपनाया उसके बदले में उत्तम सेवा समर्पित करने का जो यह सुअवसर आया है— अतः मुझे अनुमति दीजिए ।" इस तरह कहते श्रीराम के चरणों में वे (विभीषण) गिरे । ३

इवन कूडण कलहवनु नीनवधरिसु बिलुदुडुक बेडिव
नवगडॆय रणवॆन्नोळागलि नोडु कौतुकव
इवगॆ सुर मानव भुजंगम निवहदलि साविल्ल विवनलि
बवर कॆन्ननु बॆससॆनुत बीळ्कॊंड नसुरॆंद्र ॥ 4 ॥
निल्लॆलवो मित्रघ्न शत्रुगळिल्लि निनगारसुररलि कडु
खुल्लनै प्रतिभटरु नवेनल्लवे निनगॆ
निल्लॆनुत तरुबिदनु रिपुरणमल्ल मणिमय गदॆय गाडिय
घल्लणॆय गतियिंद गगनेचररु नलिदाडॆ ॥ 5 ॥
सुडु सुडॆलवो द्रोहि हगॆयनु हिडिदु निजवंशद्रुमाळिगॆ
कॊडलि यादॆयला निरीक्षिस बहुदॆ पातकन
पॊडवी हॊरदी गस्त्र शस्त्रव हिडियॆ सापतिकरिसि कॊंडि
द्दॊडॆयिननु करॆ कॊलॆगरुह नीनल्ल सारॆंद ॥ 6 ॥
बगुळदिरु कॆळॆलवो बल्लडॆ निगम तत्व रहस्यवनु पा-
निगळु पंडितरादडु सुरलु बहुदॆ भाषितव
जगद दैवद कूडॆ समरद सॊगसुगड सिंहदलि सॊळ्नाय्
जगळ कंगॆसुवदॆ कॆळॆलॊ खूळ नीनॆंद ॥ 7 ॥

"इससे युद्ध करने के बारे में जो वस्तुस्थिति है— उस पर आप ध्यान दें। आप इस पर धनुष न उठाएँ। इससे जो भयानक युद्ध करना है, वह मैं करूँगा। उसका रहस्य यह है— 'देवता, मानव तथा उरगों के हाथ इसकी मृत्यु संभव नहीं (ऐसा वरदान है)। अतः इससे मैं लड़ूँगा। मुझे आज्ञा दीजिए।" —इस तरह कहते राम से बिदा लेकर विभीषण (युद्ध के लिए) चल पड़ा।४ "रे मित्रघ्न; रुक जा। यहाँ तेरे शत्रु कौन हैं? राक्षसों में तू अत्यंत नीच है। युद्ध में तेरा सामना करने का, शक्ति-संपन्न वीर मैं ही हूँ। अतः ठहर जा।" इस तरह कहते युद्धवीर विभीषण ने बड़े ही डीलडौल से गदा घुमाते मित्रघ्न का रास्ता रोका।५ "रे विश्वासघातक, आग लगे तुझे। शत्रु-पक्ष में सम्मिलित हो कुल रूपी (कुटुंब रूपी) वृक्ष के लिए तू कुल्हाड़ी बना न? तुझ जैसे पापी का मुँह देखना भी पाप है। तू अगर शस्त्रास्त्र धारण करे तो यह धरती तुझे सहन नहीं कर सकती। तुझे शरण देनेवाले उस तेरे स्वामी को भेज। निकल जा यहाँ से। तू हत्या के लिए उपयुक्त नहीं।" इस तरह मित्रघ्न ने कहा।६ "वेद-रहस्य जानते तो क्या इस तरह बकते? शराबी कहीं पंडित बनें तो क्या उपदेशक हो सकते हैं? जगतपति से क्या यह युद्ध-न्याय सम्मत है? शेर के साथ झगड़ने की चाह क्या शिकारी कुत्ते कर

अणकवे नम्मोडनॆ नीने कॆणकिदवने शिव शिवा रा-
वण तनूभवनॆंव विडॆयकॆ सैरिसिदॆनैसॆ
रणकॆ मॊदलिग नीनॆमगॆ मारण विचित्रव नोडॆनुत तो-
रण गदा दोस्तंभनिळिदनु मुळिदु मुनिरथव ॥ 8 ॥
तनुरुचि स्वर्भानुवनु रणनिनद निर्घातवनु कोपद
घनतॆ जनित लयाग्नियनु विलयादि भैरवन
कनलिकॆय कोळाहळव ताननुकरिसि नडॆतंदनंबर
दनिमिषावळि बॆदरॆ बॆरसिदना विभीषणन ॥ 9 ॥
अंगवमरा चलन कोपवनंग वैरिय नसम संगर
रंगदब्बर दुब्बु गर्वित वीर नरहरिय
अंगवणॆ पवमानजननुत्तुंगवल रघुपतिय विक्रम
दंगवनु मिगला विभीषण हॊक्क नुरवणिसि ॥ 10 ॥
वळिक हेळुवुदेनु कल्पानळन करुविट्टंतॆ निंदिद
रळवियलि हॊगरॊगुव मेरॆय हॊगॆव मीसॆगळ
बलिद हुब्बिन विट्टकंगळ झळद झाडिय नासिकदलु-
च्छळिसुवसिता भास धूम्रश्वास लहरियलि ॥ 11 ॥

सकते हैं ? रे रे, दुष्ट सुन।" —इस प्रकार विभीषण ने कहा। ७ "हमारे साथ यह हँसी-मजाक़ कैसी ? क्या मुझे छेड़नेवाला चिढ़ानेवाला तू ही है ? शिव-शिव ! रावण की संतान होने के दाक्षिण्य के कारण (संकोचवश) अब तक सहन किया। हमसे युद्ध की चाह प्रकट करनेवाला तू ही पहला है। अब तेरे संहार की मजा देख।" यों कहते तोरण-स्तंभ जैसे मोटे हाथों में गदाधारी मित्रघ्न क्रुद्ध हो रथ से उतर आया। ८ राहु की देहकांति, सिंहनादयुक्त बिजली, क्रोध से उत्पन्न प्रलयाग्नि, प्रलय-भैरव के क्रोध की तीव्रता आदि भयानक गुणों को प्रकट करते आकाश-मार्ग से उतर आए हुए मित्रघ्न ने विभीषण पर हमला किया। तब देवता भयभीत हुए। ९ देह में मेरुपर्वत से बढ़कर, क्रोध में कामारि शिव से बढ़कर, साहस में युद्ध की प्रचंड प्रखरता में वीर नरसिंह से, उन्नत बल में मारुति से, पराक्रम में रघुपति से बढ़कर विभीषण ने अत्यंत आवेग के साथ मित्रघ्न का सामना किया। १० और कितना वर्णन करें ! प्रलयाग्नि की कांति के साँचे में ढले मुखड़ों से युक्त, धुआँदार मूँछों से रोबदार, ऐंठी हुई भौंहों वाले, जलती प्रखर आँखों वाले, काले धुएँ जैसे प्रखर प्रश्वास निकालते वीर युद्ध में डटे थे। ११ नये ढंग के युद्धतज्ञ,

कलहदभिनव पाडुपंथद कलित वचनद कायदुब्बिन
होळकैयलि होक्कुप्परिसिदरु बलिद मंडियलि
निलुकि गदेगळ तूगिदरु मैवळियलिळे तूगाडे बाहा-
लुळित बलरोळ होक्कु होय्दरु काय्दु गायगळ ॥ 12 ॥
गदेगदेय होय्लुगळ होरटे युदुरिसितु किडिगळनु खणिखट
लद्भुतद रववणेदु देदेयनु सिडिल बलुवोय्लु
मदमुखर पदघाति गहिपन हृदय कूरुम नोडलु दिक्करि
युदर हातकवारुतिर्दवु हळलेनेंद ॥ 13 ॥
निलिसितव्वरुब्बरद निब्बर गलहवा दिनदुभय समरद
कलिग ळाजियना जगक्षोभ प्रतापकद
खळन निक्कलि सिदरु गगनद गलभेकाररु गावळियनुरे
निलिसि नोटकराय्तु कलिगळ कदन केळियलि ॥ 14 ॥
सुळिवु वंचने संच पैसरलुळि विघात निघात परिमं-
डलनिवारण विहित चरणद चटुळ चूरणद
चळ चमत्कृति चप्परणे चापळ विलंघन लगडि लाघव
लुळिय लागिन चटुळ भटरोदगिदरु सरिसदलि ॥ 15 ॥

सौगंध-प्रतिज्ञा-वचन युक्त तथा मदमत्त देहवाले वीर एक-दूसरे पर टूट पड़े। घुटने टेककर देह को झुलाते हुए एक-दूसरे पर गदाएँ फेंकी गयीं। उनके शरीरों के झोंकों के कारण भूमि जब झूलने लगी, तब प्रचंड भुज-बलशाली वीरों ने एक-दूसरे की वार से अपने आपको बचा लेते (व्यूह में) घुसकर एक-दूसरे को पीटा। १२ गदाओं की टकराहट से चिनगारियाँ निकलीं। खटखटल् अद्भुत शब्द के साथ बिजली की मार जैसी छातियों से टकरायी। मदमत्त वीरों के पैरों से तुड़वाए जाने के कारण आदिशेष का हृदय, कूर्म की देह तथा दिग्गज आपस में टकराए। इन सबका वर्णन किन शब्दों में करें ? इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। १३ विभीषण तथा मित्रघ्न के मध्य हुए (उस दिन के) भारी भयानक युद्ध के कारण दोनों पक्ष के (तरफ़ के) वीरों को उस दिन अपना युद्ध रोक देना पड़ा। दुनिया भर में हलचल मचा देनेवाले प्रतापशाली राक्षस के दोनों पार्श्वों में राक्षस वीरों की पंक्तियाँ कतार में खड़ी रहीं। आकाश में आ जुटे देवताओं ने अपना शोरगुल रोककर (वे) उन दोनों वीरों के युद्ध के प्रेक्षक बने। १४ आगे बढ़ते हुए, छल-प्रपंच रचते हुए कौशल्य से पीछे हटते हुए चतुराई से एक-दूसरे को रोकते हुए, वार करते हुए, चक्राकार घूमकर अपने को बचाते हुए, क्रम-क्रम से क़दम बढ़ाते हुए दाँव रखते हुए दृढ़

झाडि झंकर्णे झडपु खाडा खाडि दृढगति दृष्टिपाता
लीड गोमुत्रिक परिभ्रमण प्रविक्षेप
पाडु पैसर पसर पंथद गाड घल्लर्णे गळलि गर्दे कुणि
दाडिदवु किडि सूसलिव्वर निर्भरांगदलि ॥ 16 ॥
कपि विलंघर्ने कीट नियुद्ध द्विपरण प्रकरण वृपावह
शपरि संचर सर्पगति सव्यापसव्यगळ
चपलतर पयपाडुगळ कडुकुपित कर्कश मानसद रण
निपुण निकषासूनुगळ कादिदरु कडुहिनलि ॥ 17 ॥
आर्येनुत सुरतति विभीषण नायुधद लावणिगे गोगुवरु
वायुपथदलि परिमळद सुरकुजद कुसुमगळ
खोर्येनुत मित्रघ्न खळन गदायुधद गाडिकेगे दैत्य नि-
काय निरुपम निवसनवनु निवाळिसितु रणके ॥ 18 ॥
होय्दनातन नीत नीतन होय्दना खळ वळ्ळि मिंचिन
सोदरद सुळिवुगळो मणिमय गदेय घल्लणेयो

चमत्कार दिखाते हुए, उत्साह से चीख पुकारते हुए उछलकर एक-दूसरे पर वार करते हुए उन्होंने (दोनों ने) कई प्रकार के युद्ध-चातुर्य प्रकट करते हुए अद्भुत युद्ध किया। १५ ताना देते हुए बोलना, एक-दूसरे पर टूट पड़ना, प्रतिस्पर्धा प्रकट करते दृढ़ता से बढ़ना, टकटकी लगाकर देखना, दायाँ पैर आगे रख बायाँ घुटना टेके खड़े रहना, पेशाब करती गाय की पेशाब-धारा-सदृश चलना, थिरकना, पार्श्व में सट जाना, पीछे हटना —इस प्रकार विविध रीतियों से दोनों वीर जोर-जोर से गरजते एक-दूसरे पर जब गदा प्रहार करते तो दोनों की देहों से चिनगारियाँ निकलतीं। १६ बन्दरों का उछलना, कीटों का कलह, हाथियों का युद्ध, साँड़ों का लड़ना, मछलियों की चाल, सर्प-गमन, दाएँ-बाएँ चतुराई से पग रखने की रीति —इस तरह चिढ़े हुए कठिन मन के युद्धकुशल राक्षस नाना विधियों से, रीतियों से लड़ने लगे। १७ विभीषण ने शस्त्रास्त्र उठाए जब शत्रु को घेर लिया तो देवता मुँह बाये आश्चर्यचकित हुए तथा उन्होंने आकाश से कल्पवृक्ष के सुगंध भरे फूलों की वर्षा की। मित्रघ्न ने गदा उठाकर ज़ोरदार प्रहार जब किया तो राक्षस 'खो' कहकर चीखते इस युद्ध की अद्भुत कौशल्य की दीठ उतारने अपने वदन पर के कपड़े उठाकर हवा में हिलाने लगे। १८ विद्युल्लता की भरी-पूरी चालना (गति) सदृश या वज्र की गदाओं की घर्षणा की भाँति विभीषण ने मित्रघ्न पर गदा से जब वार किया तो मित्रघ्न ने भी प्रत्युत्तर में विभीषण को पीटा। इन दोनों महावीरों के चरणाघातों

मेदिनिय हॊरॆकारॆरसु लघुवाद विवरिब्बर महाहव
पादघट्टणॆ गॊलॆवुतिर्दुदु मेरुमस्तकव ॥ 19 ॥
मेलॆ मेलुब्बेळ्व रोषज्वालॆगळ किडिगरॆव बिडुग-
णलिगळ बलिदुप्परिसि दिप्पुरिय हुब्बुगळ
सुय्लुगळ काबॊगॆय मसकद मालॆ गिडिगळ दाडॆगळरण
धूळि युप्परद समभटरॊदगिदरु समरदलि ॥ 20 ॥
तॆगॆव कट्टुव तडॆव तवकिसि हॊगुव हॊंचुव हॊळॆवनॆडदलि
मिगुव नौकुव बलद लॊय्यारगळ बिन्नणद
बगॆय बलुबवरिगरु मेलण जगद जन हारैसि तलॆदू-
गुगळ लिरलिद्दॆसॆय बल मॆरॆदुदु महाहवव ॥ 21 ॥
हरिद मैदॊगलुगळ सीसक मुरिदॊगुव नॆत्तरिन नॆत्तिय
मरवॆगळ पडिबरिसु वॆच्चरिकॆगळ विश्रमद
ऊरुबि नुसुरळ्ळॆगळ मिगॆ तूपिरिव रकुतद रणद नाटक
दरकॆ कादरु ठावुठिय लॊदगिदरु सरिसदलि ॥ 22 ॥
वीर केळै कुशनॆ बळिक पचारिसुत हॊय्दनु विभीषण
वीरननु मित्रघ्न शतधारा प्रहारदलि
ओरॆयिदणॆ दीत रघुकुल वीर शरणॆनु तॆरॆगिदनु को-
टीरवनु शतकोटि शिखरियनॆ ऱगुवंददलि ॥ 23 ॥

से धरती को धारण करनेवालों के प्राण हलके हुए। मेरु पर्वत का शिखर डगमगाकर डुलने लगा। १९ बार-बार उमड़ आते क्रोध की ज्वाला के, आँखें फाड़े उगलती चिनगारियों के, काला धुआँ छोड़ते प्रश्वासों के, अत्यधिक चिनगारियों की पंक्तियाँ प्रक्षेपित करते वदाक्रढ़ों के वे महावीर जब लड़ रहे थे तो उस युद्ध के कारण अधिकाधिक धूल उड़ रही थी। २० पीछे हटते, बँधते, रोकते, अधीर हो टूट पड़ते मौका देखते, वामपार्श्व में दीख पड़ते, दक्षिण पार्श्व में बढ़कर जूझते, कई प्रकार के पकड़ के दाँव चलाते युद्ध करते वे वीर (युद्धभूमि की) शोभा बढ़ा रहे थे। देवलोक वाले तथा दोनों तरफ़ की सेनाएँ इस महायुद्ध को देखते हुए प्रसन्नता प्रकट कर रहे थे। २१ शरीर का चमड़ा नुचकर, शिरस्त्राण टूटकर, माथे से रक्त बहते, बेहोश होते, पुनः होश में आकर बीच में थोड़ी देर विश्रांति लेते, ज़ोर-ज़ोर से दीर्घ निःश्वास लेते, अत्यधिक रक्त क़ै करते, युद्ध रूपी नाटक में तृप्त न होते दोनों वीरों ने बराबर लगातार युद्ध किया। २२ हे वीर कुश! सुनो। तदनंतर वीर

घायवदनव बगॅयदबुजद ळायताक्षन किंकरन मे-
ल्वायि दॅऱगिदनु रवनद नणॆ दीतन। खळन
काय कंपिसॆ कंधरवनु विडायि यिदप्पळिसलव रौ-
द्राय मानित नागि हॊय्दनु कलि विभीषणन ॥ 24 ॥
ऍलवॊ नीनीगसुर रायन तॊलगि वदुकलु वंदॆला क-
ट्टॆळॆदु निन्नय भाग्य तंदुदु दैवगॆरॆ वरॆद
नॆलकॆ निन्ननु निन्न कावग्गळॆय रिल्ल कटॆनुत मुंदकॆ
निलुकि हॊय्दनु गगन घम्मिडॆ कलि विभीषणन ॥ 25 ॥
काव करुणिय काणॆला कणु जीवगॆट्टवॆ निनगॆदिट नि-
दॅवरे निम्मंतॆ नावॆनुलरि गदायुधव
आ विबुध विद्विषन हॊय्गळ नोव लॆक्किस दॆऱगिदनु घन
रावदलि रघुनाथ विजयि यॆनुत्त लसुरेंद्र ॥ 26 ॥
घायदलि कट्टरिय नळुकिस दायुधव दायुधवॆ रणदलि
नोयिसद भुजभुजवॆ मगुळंगविसदव भटनॆ
आयतव नोडॆन्नॊळॆ नुतस हायबल नॆऱगिदनु जलधि वि-
हायसकॆ तुळुकाडॆ मस्तकवनु विभीषणन ॥ 27 ॥

विभीषण पर ताना कसते मित्रघ्न ने वज्रायुध का वार किया। तब विभीषण ने पार्श्व से घुसेड़कर, वार से अपने को बचाते, "रघुकुल वीर शरण में हूँ !" इस प्रकार कहते वज्रायुध पहाड़ पर गिरने के ढंग से मित्रघ्न के मुकुट पर वार किया। २३ मित्रघ्न ने उस वार की परवाह न करते श्रीरामसेवक (विभीषण) पर टूट पड़कर उसकी छाती को ठोंका। तब विभीषण ने ऐसा वार उसके कंधे पर किया कि राक्षस की देह काँप उठे। तो मित्रघ्न ने प्रचंड क्रोध से वीर विभीषण को मारा। २४ "रे रे तू राक्षसराजा को त्यागकर जीने जो आया न ? यह तो मानों भाग्य ने तुझे बाँधकर विधिलिखित लिखी धरती की ओर ही बुला लिया है। हाय-हाय ! अब तेरी रक्षा करनेवाले वीर नहीं।" इस तरह कहते मित्रघ्न ने विभीषण पर ऐसा भयानक वार किया कि आसमान गूंज उठे। २५ "अब तेरी रक्षा करनेवाले करुणाशाली को देख; क्या तू अंधा हो गया है ? तेरी तरह क्या मैं भगवान की दया से विरहित (पामर) हूँ ?" —इस तरह कहते उस मित्रघ्न राक्षस की गदायुध के वार की वेदना की परवाह न करते हुए 'रघुनाथ, की जय !' इस तरह जोर से चीखते-पुकारते विभीषण उस पर टूट पड़े। २६ "वार किए जाने पर शत्रु को पीड़ा न पहुँचानेवाला वह आयुध क्या आयुध है ? युद्ध में शत्रु को वेदना

उडिदु बिद्दुदो मेरुमस्तक पोडविगेने कळकळिकेयलिदड
दडिसि बिद्दनु खोयेनुत खळरार्दु कुणिदाडे
मुडुह होय्दब्बरिसि बोब्बेय सडगरिसि मित्रघ्न मुंदके
नडेदु नुडिदनु रामकटकद राय सुभटरिगे ॥ 28 ॥
बन्निरै नीव् घट्ट बेट्टद चन्निगरु कलुमरन नेम्मय
बेन्निनलि बिसुडेळि बिल्लाळवरु बाणगळ
बिन्नणव तोरेळि साविगे सन्निहित रागेळि येनुतु-
त्पन्नबल खळनरसिदनु संगरके समबलर ॥ 29 ॥
अकट मोसदलेन्न नंबिद भकुतननु रणकिक्कि कडु हे-
सिकेय होत्तेने लोकदलि नगुवंते निखिळजन
प्रकटिसिते दुष्किर्तियेनुत व्यकुत चिंता भारदिंद
बकतटाकद तुंबनुगिदेब्बिसिद नंबुगळ ॥ 30 ॥
तुडुकिदनु सौमित्रि बाणवनोडने नीलांगदरु मुष्टिय
जडिदु निंदरु संदणिसिदरु बेह भटनिकर

न पहुँचानेवाले वे भुजदंड क्या सार्थक हैं ? पुनः शत्रु पर (प्रत्याक्रमण करने) टूट न पड़नेवाला वीर कैसा ? देख मेरी वीरता।" इस तरह कहते असहाय शूर मित्रघ्न विभीषण के माथे पर इस प्रकार टूट पड़े कि समुद्र का पानी आकाश तक उछले। २७ मेरु पर्वत का शिखर मानों भूमि पर टूट कर गिरा हो —इस रीति से विभीषण जो धड़ल्ले से गिरा कि उसके कंठ से घरघराहट की ध्वनि निकलने लगी। यह देख राक्षस अट्टहास कर नाचने लगे। मित्रघ्न जयघोष करते विभीषण की भुजा को ठोंक-पीटकर हर्षोन्मत्त हो राम की सेना के वीर नायकों से यों कहने लगा— २८ बड़े-बड़े मज़बूत पहाड़ों के सुन्दर वीरो ! आओ तो सही। पेड़-पहाड़ों को हमारी पीठ पर दे मारो न ? धनुर्धारियो ! अपनी तीरंदाजी का कौशल दिखाओ न ? उठो-उठो। मरने के लिए कमर कसो।" इस तरह ललकारते वह बलशाली राक्षस अपनी बराबरी के वीरों को युद्ध के लिए तलाश करने लगा। २९ "हाय मेरे दुर्दैव ! मुझ पर विश्वास करते शरण आए भक्त की बलि मैंने युद्ध में देकर बड़ा धोखे का काम किया न ? —यह देखकर दुनिया वाले मुझ पर थूकेंगे —ऐसी गंदगी मुझे ढोनी पड़ी न ? कितनी बड़ी कुख्याति हुई यह ?" इस तरह प्रलाप करते श्रीराम ने अश्रुपूर्ण आवेग में बाण खींचे। ३० लक्ष्मण ने बाणों को तुरंत (झपटकर) छीन लिया। तुरंत नील अंगद मूठ ताने खड़े हो गए। सभी प्रमुख वीर आ जुटे। हे महान वीर कुश, सुनो। जिस डाली का

कडुगलियँ कुश कॆळ् विभीषण हिडिदुदे नळिगॊबॆ करुणद
कडलु नॆगहितु भक्तननु निज भक्तवत्सलन ॥ 31 ॥
चेतरिसिदवु करण विश्वविचेतनन नॆनहिनलि लयशिखि
चेतनव नॊदॆदॆदॄद नवनिय लरसुतरिभटन
पूतु मझरे धीरुरे रण कौतुकद परि लसॆनुत सुर
जात वब्बरिसिदुदु मेलॆ समुद्र घोषदलि ॥ 32 ॥
एनॆलवॊ मित्रघ्न जयसुम्मान वार्यॆतॆदुब्बि करॆदॆय
ला नरेंद्रन नकट नॆलविर्गॆ निलुकलरियदव
भानुबिंबव नुगिव गड मॊदलेन बगुळिदॆ हॊय्यलसुवनु
हानि माडद भटनु भटनल्लॆदॆ लायॆंद ॥ 33 ॥
आदडिदको निन्न नुडि नमगादरिस लेसागि निन्नव
रॆदॆ नोडलि हॊस पचारणॆ बेरॆ नमगिल्ल
कैदुको कलियागु कैनॆरवाद कलिगळ करॆदुको मे
लाद समरप्रौढि येनद बेग मॆरॆयॆंद ॥ 34 ॥
इदकॊ निन्नसुगॊब वैष्णव गदॆ गदाभ्यासदलि बल्लडॆ
कॊदरिको कैगुंददरियलि निन्न विक्रमव

आश्रय विभीषण ने पाया था वह क्या टूटी हुई डाली थी ? भक्तप्रिय श्रीराम के करुणा-समुद्र ने अपने भक्त का उद्धार किया। ३१ विश्व-चेतनात्मक के (श्रीराम के) स्मरण मात्र से विभीषण की इन्द्रियाँ चैतन्य पा जाती हैं। प्रलयाग्नि की शक्ति की स्फूर्ति से शत्रुवीर को युद्धक्षेत्र में ढूँढ़ते हुए उठ खड़े हुए। "वाह-वाह। भेष् ! यह कौतूहलपूर्ण युद्ध की रीति बड़ी ही अनूठी है।" —इस तरह कहते आकाशस्थित देवता समुद्र की तरह गरजते बोल उठे। ३२ "क्यों रे मित्रघ्न; विजय के हर्षोन्माद में राम को युद्ध के लिए ललकार रहा है ? धरती जिसकी पहुँच के बाहर है, वह मानों सूर्यबिंब को पकड़ने की सोच रहा है। पहले तू क्या बका था ? वार करते ही जो शत्रु को समाप्त न कर सके वह वीर वीर नहीं है, इस तरह तूने कहा था न ?" —यों विभीषण ने कहा। ३३ "तब तो यह लो। तेरी बातों का गौरव करना मेरा कर्तव्य है। तुम्हारी तरफ़ के लोग आकर एक बार देख लें। नया अगौरव हमारे लिए दूसरा नहीं है। उठा लो हथियार। दिखाओ बहादुरी। अपनी सहायता के लिए चाहे जिस (वीर को) बुला लो। तुम्हारा अद्भुत युद्ध-कौशल जितना भी, और जो कुछ भी हो, उसे प्रदर्शित कर देना" —इस तरह विभीषण ने कहा। ३४ "यह ले। तेरे प्राण सोखनेवाली यह

इदु कणा दूषण विरोधिय पदद मेच्चिन घायविद नी
नोंदेंदडस्त्रत्याग वेनुतेंरगिदनु रक्कसन ॥ 35 ॥
अच्चरियने नेंबेनै बिडे विच्चितोंडिडद गदेय नोळबि-
द्दुच्चितसुवनु नेत्तियलि मित्रघ्न राक्षसन
मुच्चि बैच्चिट्टंते हेगननु हच्चि तिंदवु भूत नभदिं
दच्च मल्लिगे यरळु सूरिदवु शरण नंगदलि ॥ 36 ॥
मा विभीषण भीषण गदा कोविदनला लेसु वर रा-
जीवनयनन गरुडि यल्लाश्रमवु निनगेनुत
पावमानि सुषेण जांबव देव सुग्रीवादि भटरु नि-
रावसानद होगळिकेय लप्पिदरु हरुषदलि ॥ 37 ॥
हरुषपुळकद हरहिनल्लि निज शरणननु मेदडवि तोरवेय
पुरवराधीश्वरनु शिबिरके तेरळिदनु बळिक
धुरद सोलद दुगुडदलि कर्वुर पताकिनी पुरव होक्कुदु
तरणि मंडल वंडुगोंड्डु पश्चिमाचलव ॥ 38 ॥

वैष्णवी गदा। अगर तू गदा-शस्त्र-विद्या में निपुण है तो हिम्मत से काम लेते, पीछे न हटते, इसका सामना कर। तेरी वीरता सभी देखें और जानें। दूषण-शत्रु श्रीराम के चरणों की मार है यह। इसे तू बेकार बना दे तो मैं अस्त्र-संन्यास स्वीकारता हूँ।" इस तरह कहते विभीषण मित्रघ्न पर टूट पड़ा। ३५ उस समय जो आश्चर्यजनक घटना हुई उसका किन शब्दों में वर्णन करें? मित्रघ्न राक्षस के प्रतिरोध में चलाई गदा को उसके हाथ से गिराकर विभीषण की गदा उस पर टूट जो पड़ी, उससे उसके प्राण मस्तक फोड़कर निकल गये। ढाँपकर छिपा रखे की भाँति भूतों ने उस (मित्रघ्न) के शव को आपस में बाँटकर खाया। विभीषण पर आकाश से पुष्पवृष्टि हुई। ३६ "भले-भले विभीषण! वाह रे वाह! प्रचंड गदा-प्रयोग में तू पंडित है न? कमलाक्ष (श्रीहरि) के अखाड़े में तुमने (इसकी) साधना की है न?" इस तरह कहते हनुमान, सुषेण, ज़ांबव, सुग्रीव आदि वीर लगातार प्रशंसा करते, आनंदातिरेक में विभीषण का आलिंगन कर लेते हैं। ३७ 'तोरवे' के अधिपति के अवतारी पुरुष श्रीराम आनंद से रोमांचित होते हुए अपने भक्त की पीठ थपथपाकर, फिर अपने शिविर में चले गये। तत्पश्चात् युद्ध में हारने के कारण व्यथित राक्षस-सेना ने लंका नगर में प्रवेश किया। सूर्यबिंब ने पश्चिम पर्वत का सहारा लिया। ३८

हदिनैदनेय संधि

सूचनें— वीरविजय भुजप्रतापनुदार वलवैरिजितु घनघोर सर्पास्त्रदलि गेलिदनु सकल कपिवलव ।

केळिदैयॆलॆ राजसुत संस्थूल समरद जयद जोकॆय
मेलुगाळग निम्मवरि गार्य्तंदिनाजियलि
एळु निर्बुद कीश बलवम रांळियलि सेरित्तु कालन
पाळॆयव सारित्तु निर्बुदवॆंदु रिपुगळलि ॥ 1 ॥
तॆगॆद वॆरडंकगळु तोलगिद हगल नीक्षि सुतिरुळु वलुमु-
त्तिगॆय निक्किदरा महादुर्गक्कॆ रजनियलि
जगति जरिदुदु रणद हॆणवॆट्टगळ भारणॆगखिळ भूता-
ळिगळु बोब्बिरि दाडिदवु रणवळय वळयदलि ॥ 2 ॥
कोट्टुबंदॆनु भाषॆयनु हिम्मॆट्टिदुदु गॆलवॆमगॆ रण गरि
गट्टि तरिगळिगाव मोरॆय लसुर वल्लभन
पट्टणव ता होगुवॆ नॆंदनु तट्टिसिद चिंतॆयलि सुरपन
कट्टितंदव कलिय कदनकॆ माडिंदनु मनव ॥ 3 ॥

पन्द्रहवीं संधि

सूचना— विजयवीर, महान भुजबल प्रतापशाली इन्द्रजित् ने सर्पास्त्र का प्रयोग कर सारी कपि-सेना को जीत लिया ।

सुनो राजकुमार ! उस महायुद्ध में तुम्हारे पक्ष के लोग जीत गये । उस दिन विजयश्री तुम लोगों पर प्रसन्न रही । सात निर्बुद कपि-सेना स्वर्ग सिधारी । पाँच निर्बुद शत्रु-सेना यमलोकवासी हुई । १ दिन समाप्त हुआ देख दोनों सेनाएँ पीछे हटीं । राम को लंकानगरी के दुर्ग पर भारी आक्रमण हुआ । युद्ध में लुढ़क रही लाशों के ढेर के वज़न के कारण धरती दबने लगी । युद्ध-रंग-स्थली के अन्यान्य प्रदेशों में भूत चिल्लाते घूम रहे थे । २ "रावणेश्वर को वचन दे आया । हमारी जीत हार में बदल गयी । युद्ध में शत्रुपक्ष के चार चाँद निकल आए (शत्रुपक्ष विजयी हुआ) । मैं किस मुँह से राक्षस राजा की नगरी का प्रवेश करूँ ?" इस तरह अत्यंत चिंताग्रस्त, इन्द्र को बाँध लानेवाला इन्द्रजित् नये, जीवट के युद्ध के बारे में सोचने लगा । ३ दिन बीतने पर

दिववळिय लोड्डिदनु माया जवनिकेय जोडणेय कल्पद
भुवन गर्भीकरद घन गाढिकेय काळिकेय
रवि सहस्र मयूख दिर्रितके तविसदंधत मिश्रियनु रा-
घव पताकिनि पाडुगेडे निज पौरुषांगदलि ॥ 4 ॥
होळकिदुदु बर्ळिकिद्र जितुविन चळचमत्कृति रथवु गगन-
स्थळ दोळच्चिर रुचि प्रकाशदलेन हेळ्ळुबेनु
खळन बोब्बेय सिडिलु सुळिदुदु बलिमुखर बलदोळगे बिलुरव
वळुकिसितु बलवंत सुग्रीवादि नायकर ॥ 5 ॥
अेलेले कविदरो खळरु कवियलि कोलेगे हाय्दरो पाळयदोळेनु
तळवियलि कपिनायकरु तुडुकिदरु गिरि तरुव
वळय वळयद वेंटेयदलोब्बुळिग रब्बरिसिदरु केळा
हळिकेयलि हरिदाडिदरु बेंदकुत निशाचरर ॥ 6 ॥
अर्रिदना हरिशरण नभ्रद निर्रिसि नब्बर विंद्र जितुविन
मर्रेय माया हवविदेंबुद तन्न मनदोळगे
बिर्रिसिनवनी रात्रियलि बलमुर्रियदानुवुदरिदेंनुत मन
मुरुकदलि मार्तांड तनयन बळिगे नडेतंद ॥ 7 ॥

इन्द्रजित् ने माया परदे के सदृश ऐसा घनघोर अंधकार फैलाया जो मानों प्रलयकाल में जगत को ढक देनेवाला जैसा था। उस भयानक अंधकार में जिसका भेदन सूर्य के सहस्र किरणों से भी न हो पाता था, राम की सेना अपना प्रचंड पराक्रम प्रकट करने में असमर्थ हो चटपटाने लगी। ४ इन्द्रजित् का, चमत्कारपूर्ण ढंग से चलता रथ प्रकाशमान हो आकाश में दृष्टिगोचर हुआ। इन्द्रजित् की बिजली की कड़कड़ाहट जैसी आवाज वानर-सेना को सुनाई पड़ी। वीर सुग्रीवादि कई कपि-नायक इन्द्रजित् के धनुष के टंकार से भयभीत हुए। ५ "रे रे, देखो देखो, राक्षसों ने घेरा डाला; अब वे घेरकर हत्या करने शिविर में आ रहे !" इस तरह कहते अधिक संख्यक कपि-नायकों ने पहाड़ और पेड़ों को हाथ में उठा लिया। युद्ध-रंगस्थली के हर प्रदेश को घेरकर जुटे हुए कपिवीरों ने सिंहनाद किया तथा शोरगुल मचाते वे राक्षसों को ढूंढ़ते विचरने लगे। ६ "आकाश में उत्पन्न होते जबर्दस्त तरंगों को सुनकर हरिभक्त विभीषण ताड़ गया कि यह इन्द्रजित् का, अदृश्य रूप से किया जा रहा माया-युद्ध है। इस रात्रियुद्ध में इन्द्रजित् महाप्रचंड है। इसकी शक्ति को विनष्ट किए बिना इसका सामना करना कठिन है।" इस तरह सोचते विभीषण

इरिसु नीलांगदरनवनीश्वरन सुय्दानकें सुषेणर
निरिसु मेलारैकें गजसुतनिरलि बेंबलकें
धुरकें सेरिसु मिक्कनळ केसरि गवाक्ष द्विविध दुर्मुख
शरभ शतबलि हनुम मोदलादवर नीनेंद ॥ 8 ॥
मोळगुववनी गिंद्रजितु कत्तलेय कडुहिंगवनु घनबें-
ग्गळनु कग्गोलेयलि समर्थनु कलिय काळगकें
तिळुहु नीनी हदन रघुकुल तिलकरिगें बेगेनुत तन्नय
बळिय नाल्वरु मंत्रिगळु सहितडरिदनु नभव ॥ 9 ॥
अडरि दसुरेश्वरन बाणद कडलोळगें मुळुगिसिद ना वलु
गडिय नाल्वरु मंत्रिगळ मंत्रिसिद नंबिनलि
तोडकि गेलुवव रारु रणदलि मृड सरोजज मुख्यरेनु
ग्गडद वीरनो कलिय काळगदलि सुरेंद्रजितु ॥ 10 ॥
बीळुतिर्दवु बाणवनि तप्रोळ्ळु कडलनु मोगेदोगुव लय
कालदग्गद पुष्कळावर्तद सगाढदलि
कोशु हेणनोंदागि रणदलि बीळुतिर्दुदु पडेंकृतांतन
धाळियेनें दळवुळिसिदनु रणदलि सुरेंद्रजितु ॥ 11 ॥

मन ही मन चिंतित हो सूर्य-पुत्र सुग्रीव के पास आए। ७ "राम की रक्षा के लिए नील और अंगद को रखो। ऊपरी देख-रेख के लिए सुषेण को नियुक्त करो। मदद के लिए (उनके सहायक के तौर पर) जांबव को रखा जाय। नल, केसरी, गवाक्ष, द्विविद, दुर्मुख, शरभ, शतवली, हनुमान वग़ैरहों को युद्ध के लिए जुटाओ।" इस तरह विभीषण ने कहा। ८ "अब जो गरज रहा है वह इन्द्रजित् है। अँधेरे के युद्ध में वह अत्यंत समर्थ है। इस महायुद्ध में भारी भयानक हत्या करने में वह महान शूर है। यह रहस्य आप रघुकुलतिलक को जल्द समझाइये।" इस तरह कहकर वह (विभीषण) अपने चार मंत्रिजनों के साथ आकाश में आरोहित हुआ। ९ आकाश में चढ़ आए विभीषण तथा उसके सहायक चार वीर मंत्रियों को इन्द्रजित् ने बाणों के समुद्र में डुबो दिया। इन्द्रजित् से अभिमंत्रित कर छोड़े गए बाणों में फँसे हुए ईश्वर, ब्रह्मा आदि प्रमुखों मे कौन जीत सकता है? मायायुद्ध में कितने महान वीर है यह इन्द्रजित्। १० सात समुद्रों को सोखकर प्रलयकाल में एक साथ उस जल की वर्षा करनेवाले पुष्कलावर्त मेघ-सदृश बाणों की वर्षा एक साथ हो रही थी। बाण के साथ-साथ ही मुर्दे गिर रहे थे। यम

निलुकि तोंदेसेयलि महारथ रुलु हुमत्तोंदेसेय लश्वा-
वळिय हल्लणें होळकिदुडु होय्देळ्व कैहोडेय
बिलु रभस मत्तोंदु देसेयलि मोळगिदुदु नभवेनित नितरलि
गलभेयादुदु गाढबल बलवैरिजितु खळन ॥ 12 ॥
मायें याहवदवनवन समरायतद परि बेरें यम व-
ज्रायुधाद्यर गेलिद नवनी परिय समरदलि
राय राघवसूनु केळव नायतद सरळोटगळ रौ-
द्राय मानित रणव होगळुवडरिदु तनगेंद ॥ 13 ॥
लवनेंकेळै बारिसितु बलु बवर ववरलि घायवडेदुदु
गवय गज नळनील मैंद द्विविध मोदलाद
प्लवग पतिगळु बंदु बिद्दुदु पवन तनुजनमेलें रण रा-
घव महीपति गरुहिदनु सुग्रीव नी हदन ॥ 14 ॥
आडिदवु बळिकभ्रदलि बलुगोडु गल्गळु बीसिकोंयलो
लाडिदवु कैदुदिय हेम्मर निवर कदनदलि
कूडें गवसणि सित्तु गगनव नीडिरिदु कपिसेनें सरळिन
गूडिनलि हुगिसिदनु होळकि सुरेंद्रजितु भटर ॥ 15 ॥

के आक्रमण-सदृश इन्द्रजित् ने भारी धूम मचा दी। ११ एक ओर महारथियों की सिंह-गर्जना सुनाई दे रही थी। दूसरी ओर से घोड़ों का हिनहिनाना सुनाई पड़ रहा था। अन्यत्र मणिबंध पर कसे रक्षा-कवच पर धनुष की डोरी के टकराने से टंकार की ध्वनि सुनाई पड़ रही थी। इस तरह महाशक्तिशाली इन्द्रजित् आकाश में जहाँ उपस्थित था, वहाँ काफ़ी शोरगुल व्याप्त हुआ था। १२ "इन्द्रजित् मायायुद्ध निपुण जो ठहरा। उसका युद्धसामर्थ्य की रीति ही बड़ी विचित्र है। यम, इन्द्र वग़ैरहों को वह मायायुद्ध में जीत चुका है। हे रघुरामकुमार! सुनो। उसके भयानक बाणों के उस भयावह युद्ध का वर्णन करने में मैं अपने को असमर्थ पाता हूँ। वह वर्णनातीत है।" इस तरह महर्षि वाल्मीकि ने कहा। १३ सुनो लव। कपि-नायक तथा इन्द्रजित् के मध्य बड़ा भयानक युद्ध हुआ। गवय, गज, नील, मैंद, द्विविद वग़ैरः वानर-नायक घायल हुए। अब युद्ध की ज़िम्मेदारी हनुमान पर थी। सुग्रीव ने इस युद्ध की परिस्थिति के बारे में राम को जानकारी दी। १४ बड़े भारी चट्टानों को वानर-सैनिक आकाश में उछालने लगे। हाथ में धरे पेड़ों से आक्रमण किया। कपि-सेना ने भारी संख्या में जुटकर आकाश को ढाँप दिया। तब इन्द्रजित् ने बाणों के पिंजरे में वानर-वीरों को जकड़

अड्रसिदनु हनुमंतना सरळिरितवनु सैरिसुत गगनद
तोऱॆतनक मैदोऱदव माया विलासदलि
मड्रसि मगुळैतंदु रामन नड्रसि सुरिदनु सरळ सोनॆय
नुरुबिदनु बिलुदुडुकि लक्ष्मणना निशाचरन ॥ 16 ॥
एनु मिगिलो स्वामियॆडॆ गवधान कपि भटरोळॆगॆमरु तन
सूनुविगॆ सुम्मान दॆसुगॆय सुरपजितु खळन
आ निभृत कोदंड चंडध्वान विडिदिळितंदु हॊय्दनु
वैनतेयन घनतरद गाडिकॆयला भटन ॥ 17 ॥
हॊय्द हनुमन घायकाबल भेदिजितुविन रथवु सिडिदुदु
मैदॆगॆदन वर्ननितरलि माया विलासदलि
ऐदु हॊदॆयलि पाशधर शरवैदरलि हनुमंत देवन
हादियनु बिगिदडरिदनु मगुळभ्र · मंडलव ॥ 18 ॥
हॊक्क मैयलि कैगॆ कालिगॆ सिक्कि सॆळॆदवु पाशपाशद
सिक्किनलि सिडि मिडियलौ डॊत्तुगळलनिलसुत
रक्कसांतक नॆडॆगॆ चिंतिसुतक्करिन हंबलिनलिरॆ कै-
यिक्किदनु काळगकॆ कलिरावणि ककुत्स्थजन ॥ 19 ॥

लिया । १५ इन्द्रजित् के बाणों का प्रहार सहते आकाश-गंगा तक पहुँच कर हनुमान ने इन्द्रजित् को ढूंढ़ा । इन्द्रजित् ने अदृश्यरूप से विचरते, माया के बल पर आकर राम का पता लगाकर उस पर बाणों की वर्षा की । लक्ष्मण ने धनुष उठाकर उस राक्षस (आक्रमण) का निवारण किया । १६ कपि-वीरों में वायुसुत की, अपने प्रभु के बारे में जो अत्यधिक भक्ति है उसका किन शब्दों में वर्णन करें ? (अहंकारवश) फूलकर बाण प्रयोग करते इन्द्रजित् राक्षस के अदृश्य धनुष के प्रचंडध्वनि के मार्ग का अनुसरण करते आकर हनुमान ने गरुड़ की तरह झपटकर टूट पड़कर इन्द्रजित् को पीटा । १७ हनुमान के हाथ के थपेड़े के कारण इन्द्रजित् का रथ झटका खा गया । इतने में माया-विलास से इन्द्रजित् सँभल गया । पाँच-पाँच यमास्त्र बाणों के पाँच गुच्छों का प्रयोग कर, हनुमान का रास्ता रोक आकाश-मार्ग में और ऊपर चढ़ा । १८ जहाँ कहीं जाओ, हर कहीं हाथ और पैरों में, पाशों में (हनुमान) जो बँध गये थे खींचे-से जा रहे थे । हनुमान पाश में बँधे जाकर दाँत-ओंठ चबाते क्रोध से तमतमाते असुरारि श्रीराम के बारे में चिंतित हो चटपटा रहे थे । इन्द्रजित् ने राम से युद्ध शुरू किया । १९ इन्द्रजित् ने राम के मस्तक

कणेय करेदनु बळिक रामन हणेय सरिसदलरिभटन मा-
र्गणद पथविडिदेरिसिदना रामनंबुगळ
कणेय कणेयद कणेगळोदेदुडु गणव सरगोळिसिदवु बळियं-
बणदवरि भटनश्व सारथि रथ पताकेगळ ॥ 20 ॥
बळिक बलुहाय्तिब्बरिगे कडुगलह कत्तले वेळगुगळ शर-
वळुकिसिद वंबरव नळिळरिदवु दिशावळिय
हलवु मातेनिवर रणदग्गळद सौरंभाति शयदस
दळके पडियनु कार्णेपूर्वद वीररोळगेंद ॥ 21 ॥
करेद नवनंबुगळ नंबरवोरललवनें सुवस्त्र जालव
तरिदु हत्तिदवी खरारिय कठिण शरजाल
अरुचु तिर्दुद जांडविब्बर गुरुबिनस्त्रध्वनिगे बलु बो-
ब्बिरित किब्बर बोब्बेगेनेंबेनु महाद्भुतव ॥ 22 ॥
एरुविळि विब्बर कणाळिय तोरिकेय किडि तमद राशिय
तूरिदवु तेरैसिदवु नाना दिगंतदलि
तोरिदवु बळिकी खरारिय तूरुगणे रिपुभटन चापद
चीरिकेय सरिसदलि रथ चीत्कृतिय वळयदलि ॥ 23 ॥

पर बाण प्रयोग किया। शत्रु-बाण के मार्ग का अनुसंधान करते राम ने बाणों का प्रयोग किया। एक के पीछे एक होकर छूटे बाणों ने मानों नक्षत्रों को मालाकार में पोह दिया (पिरो दिया)। पीछा करते राम-बाणों ने इन्द्रजित् के घोड़े, सारथि, रथ तथा ध्वजा को चकनाचूर कर दिया। २० इन्द्रजित् तथा राम का यह द्वन्द्व युद्ध जबर्दस्त होने लगा। अँधेरा और उजाले के अस्त्रों ने आकाश को कँपा दिया। दिशाएँ शब्दों से भर गयीं। अधिक क्या कहें? इनके असाधारण युद्ध-संभ्रम की रीति (ऐसी) पूर्व के वीरों में कभी देखी न गयी थी। २१ इन्द्रजित् ने बाणों की वर्षा की तो आकाश चीख उठा। राम के पैने बाणों ने उसके शस्त्रास्त्रों को काट डालते उनका पीछा किया। दोनों के भयानक शस्त्रास्त्र की ध्वनियाँ तथा सिंहनाद के कारण ब्रह्मांड फटने लगा। उन दोनों के अद्भुत कौशल्य का क्या वर्णन करें? कैसे करें। २२ उतरते-चढ़ते दोनों के बाणों से निकली चिनगारियों ने अँधेरे की राशि को तितर-बितर कर दिया। अँधेरे को दिगंतों से भगा दिया। शत्रुवीर के बाण के नजदीक, रथ की घरघराहट के मध्य राम के तीक्ष्ण बाण घुसते देखे गये। २३ राम के बाण इन्द्रजित् के घोड़ों की देहों में जा चुभे जिससे

ऒड़लॊळद्दवु तेजिगळ तेरडि मगुचलॆत्तिदवु बळियं
बॊडॆदु हाय्दवु नॆत्तियलि निर्जर कुलांतकन
उडिदु बिद्दवु सिंध सीगुरि सडकुसत्तिगॆ सुत्तुवळयद
लॆडहि तीतन समर संभ्रम वंतरिक्षदलि ॥ 24 ॥
तूगिदनु मस्तकवना शतयागजितु मामा त्रियंवक
गागदी कोदंड चंड प्रौढि परिकिसलु
नाग नर निर्जर निशाटरॊळी गरुव गाडाय्ल गुण शर-
योगवनु ना काणॆनॆंदडिगडिगॆ बॆऱगाद ॥ 25 ॥
इनितु बलुहिल्लदिरॆ समरावनियॆ लस्तम्रिसुवरॆ सुमनो
जनव बगयद वीर खर दूषण भटाळिगळु
मनुजनल्ली रामनॆंबी नॆनहु निजदलि तोऱुतिदॆयनु
तनिमिषांतक नॊड्डिदनु माया महाशरव ॥ 26 ॥
तोऱिदवु नभदलि शिखाळिग ळॆऱिदवु जीमूत संतति
चीऱिदवु चंचलतॆयलि सिडि लिळॆगॆ कॆंडगळ
काऱितंबर हॊगॆय हॊदऱनु हेऱितंबर भुवन बॆदऱलु
चीऱितंबर बीऱितंबरवखिळ भयरसव ॥ 27 ॥

उन्होंने टाँगें उठाकर रथ को ऊपर उठा दिया। राम के बाण असुर इन्द्रजित् के मस्तक में से आर-पार चले गये। ध्वज, चामर, झालर, छत्र आदि टूट-टूटकर चारों ओर गिर गये। इन्द्रजित् का युद्ध-कौशल अंतरिक्ष में अड़ गया। २४ "बाप रे! इस (राम के) धनुर्विद्या के प्रचंड कौशल्य से (के कारण) त्रिनेत्र भी इनसे युद्ध करने में असमर्थ हैं! इस तरह उद्गार निकालते इन्द्रजित् ने प्रशंसा की। सर्पों, मानवों, अमरों तथा राक्षसों में—इस प्रकार का श्रेष्ठ वेगवान बाणों का प्रयोग—किसी से सम्भव नहीं; ऐसा प्रयोग-प्रवीण मुझे कोई नहीं दिखाई देता।" इस तरह कहते वह अचरज में आ गया। २५ "ऐसा सामर्थ्य न होता तो देवताओं की परवाह न करनेवाले वीर खर-दूषण युद्ध में मौत के घाट उतरते? यह सत्य प्रतीत होता है कि यह राम मानव नहीं है। (मानवोपरि दैवी-शक्तिसम्पन्न है)"—इस तरह कहते इन्द्रजित् ने मायामहास्त्र को धनुष पर चढ़ाया। २६ (तब) आकाश में ज्वालाएँ दीख पड़ीं; बादल ऊपर उठने लगे; बिजली की कड़कड़ाहट सुनायी पड़ी; आकाश धरती की ओर अंगारे उगलने लगा; सारा अंतरिक्ष धुएँ से भर गया; धरती जब भय के मारे काँप उठी तो अंतरिक्ष चीख उठा। आकाश में भय-रस व्याप्त हो गया। २७

सुरिवुदोम्मोम्मरुणजल हेब्बुरि छडाळिसि होय्दुदद्रिग
ळुरुळिदवु सिडिलॆरगिदवु तुरुगुवदु तिमिरचय
शरधि जरिवुदु कारुमळॆ बोर्गरॆदु सुरिवुदु काळरक्कस
नॆरवि नॆरविकॆ गळलि निलुवुदु मायॆयलि खळन ॥ 28 ॥
बिद्दुदगणित सेनॆ जांबव निद्दनंबिन गूडिनलि ह-
ल्लुद्दिदकॆय हनुमंत नघमरुषण । प्रतापदलि
इद्दनहितन काणदिन सुत निद्दनहित विषादवार्धियॊ-
ळिद्द सुभटर शौर्यवेनाय्तरियॆ नानॆंद ॥ 29 ॥
बवर बलिदुदु बळिक रणभैरव रघुक्षिति पतिगॆ रिपुविन
विविध माया प्रौढियनु माया विनिर्मितनु
तविसि तोमर शतकदलि शांभववनॆच्चनु रावणिय जव-
नवरु सुळिदरु नयन वीथियला निशाचरन ॥ 30 ॥
तूरुगणॆगिनिताय्तु ता मैदोरि कादिदडसु शरीरदि
जारिदिहुदे यॆनुत बाणव्यथय बाधनॆग
आरदाय्दनु होदॆय लस्त्रव नेरिसिदना बिलुदिरुविनलि
मूरुकण्ण महेशदत्त महोरगाह्वयद ॥ 31 ॥

राक्षस की माया के कारण कभी-कभी रक्त की धारा बहती है; कभी-कभी ज्वालाएँ अत्यधिक भड़क उठती हैं; पहाड़ लुढ़कते हैं; बिजली कौंधती है; अँधेरा घिर आता है; समुद्र पीछे हट जाता है; वर्षा ऋतु की मुसलाधार वर्षा बरसती है; काले राक्षसों का समूह झुंड के झुंड में जुटा दिखायी देता है। २८ अनगिनत कपि-सेना धराशायी हो गयी। जांबवंत बाणों के पिंजरे में फँस गया। दाँत कटकटाते हनुमानजी अघमर्षण मंत्र के प्रभाव में आ गये। शत्रु के न दीख पड़ने के कारण सुग्रीव चिंता-सागर में डूबे। अन्य वीरों की वीरता का क्या हुआ ? मैं नहीं जानता —इस तरह बाल्मीकि ने कहा। २९ रणभैरव राम का युद्ध उग्र रूप धारण करता गया। माया के निर्माता राम ने शत्रु के विविध प्रकार की माया-विद्या का निवारण किया। सौ तोमरों से युक्त शिवजी के अस्त्र का प्रयोग उन्होंने इन्द्रजित् पर किया। इन्द्रजित् को (तब) यम के सहचर दिखायी पड़ने लगे। ३० "श्रीराम से प्रक्षेपित केवल इस एक बाण से मेरी यह हालत हुई ? जब कहीं प्रत्यक्ष युद्ध में सम्मुख खड़े हो जाऊँ, तो इनसे मेरा प्राणापहरण सुनिश्चित है।" —इस तरह कहते उस आहत बाण की वेदना को सहने में असमर्थ हो इन्द्रजित् ने त्रिनेत्री महेश्वर से प्रदत्त महासर्पास्त्र को तरकस से

कुलगळेंटर राजसर्पविळिगळॊदगिद वंबिनलि बळि
सलिसिदवु पाताळलोकद रौद्र फणिनिकर
घुळुघुळिप निट्टुसिरिनलि दिगुवळय मॊरॆदवुश्वास लहरिय
लळिय गरळद हॊगॆय हॊय्वलि हॊरळिदुदुसेनॆ ॥ 32 ॥
चूरिसुव निडुनालगॆय फूत्काररवदक्षिगळ लुब्बुव
तोर गिडिगळ दाडॆगळ विषदुरिय झाडिगळ
घोरतर पॆडॆवणिय निशित कठोर रसुमॆय रौद्र सर्पा-
कार शरवंजिसितु गारुडभुवन रंजकन ॥ 33 ॥
सरळ हिळुकिन बॆरळ बिगुहिन तिरुविना कर्णांत शौर्यो-
त्करद मददुब्बरद घनमहिमाति रेकदलि
हरन वरवुंटॆंब हम्मिन भरद बलुमॆय लमर कुलसं-
हरण शक्रारातियसुराराति गिंतॆंद ॥ 34 ॥
स्मरिसु गारुड मंत्र बीजाक्षरव बहॆडॆ सुपर्णमणि पं-
जरव हॊगु भू नाग मणि मुद्रिकॆय बॆरळिनलि
धरिसु घोर भुजंगमास्त्रद लरिकॆयुळ्ळॊडॆयॆंदु सर्पा-
स्तरण शयनन सरिस कॆच्चनु घनमहाशरव ॥ 35 ॥

निकालकर धनुष की प्रत्यंचा पर चढ़ाया। ३१ अष्टकुल के सर्पराज उस बाण से प्रकट हुए। पाताललोक के भयानक सर्प एक के पीछे एक होकर आ जुटे। फुसफुसाते (उन) सर्पों के दीर्घ निःश्वास के कारण दिशाएँ गूंजने लगीं। सर्पों के निःश्वास से निकले भयानक विषैले धुएँ के कारण कपि-सेना छटपटाने लगी। ३२ ज्वाला उगलती लंबी जिह्वाओं से फूत्कार करते, आँखों से चिनगारियाँ बरसाते, दाढ़ों से विषैली ज्वालाएँ प्रकट करते, अत्युग्र फन के रत्न कठोर तीक्ष्ण किरणों से युक्त सर्पाकार उस महान अस्त्र ने गरुड़-मंत्र से जगत की रक्षा करते हुए (विराजित) राम को डराया। ३३ बाण के पुच्छल अंश को उँगलियों से मजबूती से पकड़कर, अत्यंत पराक्रम प्रकट करते करते कान तक प्रत्यंचा खींचकर, अत्यंत घमंड से तथा अत्यधिक महिमा से युक्त होकर, शिवजी के वरदान के बल पर फूले असुर इन्द्रजित ने अहंकारवश हो असुरशत्रु राम को संबोधित कर यों कहा— ३४ "अगर जानते हो तो गरुड़-मंत्र बीजाक्षर का स्मरण करो; गरुड़मणि-निर्मित पिंजरे में प्रविष्ट हो जाओ; उग्र सर्पास्त्र की जानकारी अगर रखते हो तो भूनागमणि मुद्रांकित अँगूठी को तुरंत धारण कर लो" —इस प्रकार चेतावनी देते आदिशेष पर शयन करनेवाले श्रीहरि के अवतारी श्रीराम पर इन्द्रजित् ने उस महान अस्त्र का प्रयोग किया। ३५

अरियदा खळनेच्चडंबे नरियदे मुद्रिसितु मार्येयं
मरेय मनुजाकृतिय मरणोदय विवर्जितन
अरुहि नरनाटकद शेषन नोरगिसितु नोयिसदे बेंदरितु
बरिय भीतियलिन सुतादि समस्त भटनिकर ।। 36 ।।
चारिवरिदट्टिदवु हावुगळा रणांगण मध्यदाहव
वीरवर्गव निळेयोळो रगिसि तूदिकेय विषद
मारुतन धाळियलि बळिकिंद्रारि बोब्बिरिदब्बरिसि त-
न्नूरि गभिमुखनाद नोदरुव वाद्य घोषदलि ।। 37 ।।

हदिनारनेय संधि

सूचने— भुजगपाशव रामरामानुजर नरलीला चरित्रव भजनेयिंदेब्बिसिद नमरर होगळे विहगेंद्र ।

तिरुगिदनु बळिकिंद्रजितु जय सिरिय सुम्मानदलि लंका-
पुरिगे समरोत्सवद वार्तेय चररु परितंदु
सुर विरोधि दशननंगेच्चरिस लवदिरिगंग चित्तव
होरिसि नडेतंदित्तनोलगवनु दशग्रीव ।। 1 ।।

इन्द्रजित् ने अज्ञानवश उस महास्त्र का प्रयोग जो किया तो क्या वह अस्त्र भी ज्ञानहीन है ? माया को अपने में छिपाए रखे हुए मानव-रूप के जन्म-मरण-रहित राम को उस अस्त्र ने आ घेरा। नरनाटक-रूपधारी लक्ष्मण को बिना घायल किये उस अस्त्र ने धरती पर सुला दिया। सुग्रीवादि समस्त वीर व्यर्थ ही भयभीत हो काँप उठे। ३६ साँपों ने बड़ी सतर्कता से विचरण करते युद्धरंग के मध्य के युद्धवीरों को एक ओर खदेड़ दिया। विषैली फूत्कार से उन सबको धरती पर लुढ़का दिया। तत्पश्चात् इन्द्रजित् सिंहनाद करते बजते बाजों के साथ लंका लौटा। ३७

सोलहवीं संधि

सूचना— सर्पास्त्र के पाश में बँधे राम-लक्ष्मण की मानवलीला की महिमा की स्तुति करते हुए गरुड़ उन दोनों को होश में लाये। तब देवताओं ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

विजयोत्साह से इन्द्रजित् लंकानगरी को लौटा। युद्ध के शुभ समाचार को दूतों ने आकर जब रावण को बताया तो उसने उन्हें कई प्रकार के पारितोषिक देकर भिजवाया। उसके बाद रावण ने राजसभा

गुडिय कट्टिसु जीय जय दुग्गडद भेरिय हॊय्सु विरुदिन
तॊडर निक्कंजदॆ विरोधिगॆ विषम लोचनन
तडविदेकिन्नॆंब तनुजन नुडिगॆ नलिदिदि रॆद्दु नगॆमॊग
दडपि निदप्पिदनु बयल मनोनुरागदलि ॥ 2 ॥
सुळिदवारति कॆंपुगूळिन बळुवॆगळ सॊगसिनलि वंदिग
ळुलुहु तिविदुदु नभव नॊसगॆय हर्रयदनि जगव
तळवॆळग माडिदुदु गुडिगळु तळितवगलकॆ नगरदॊळगरॆ
घळिगॆयुत्सव वच्चरिय बीरितु दशास्यंगॆ ॥ 3 ॥
तडवरिसिदनु पुळकदुब्बिन गुडिय रोमद हरुषनयनद
बिडुवनिय कामुकनु कॊंडाडिदनु नंदनन
तॊडव तन्नव तॆगॆदु मक्कळ तॊडवॆ बायॆन्नानॆ बायॆं-
दॊडनॊडनॆ हरुषिसुतलंकरिसिदनु रावणिय ॥ 4 ॥
रणवनॊड्डिद परिय रिपुकपि गणद कदनद सिरिय फणि मा-
र्गणद महिमॆय झाडणॆय रणजयद जोडणॆय
क्षणरुचिय संचार दुब्बिन भणितॆयलि विन्नैसि गर्वद
तणविनलि निज निळय किद्रारराति बीळ्कॊंड ॥ 5 ॥

बुलायी । १ "महाराज, ध्वजाएँ फहरवाइए। जयभेरियाँ पिटवाइए। शत्रु से न डरते अब त्रिनेत्री के उपाधियों की जंजीरें बँधवाइए। अब देर काहे की ?" —इस प्रकार की पुत्र की बातें सुनकर खुशी से उठकर आए रावण ने प्रसन्न-मुख हो निरर्थक प्रीतियुक्त हो बेटे का आलिंगन कर लिया। २ रक्तवर्णयुक्त अन्न से दृष्टि निवारकर आरती उतारी गयी। चारण-स्तुति पाठकों की स्तुतियों की ध्वनि आकाश तक गूँजने लगी। मंगल-बाद्यों की ध्वनियों से सारा जगत आश्चर्यान्वित हुआ। नगर भर में ध्वजाएँ फहराने लगीं। आधी घड़ी का यह त्योहार जैसा वातावरण देखकर रावण भी दंग रह गया। ३ कामुक दशकंठ रोमांचित हो आनंदाश्रु बरसाता हुआ पुत्र की पीठ सँवारते उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगा। अपने शरीर पर से आभरण उतारते हुए 'हे पुत्र-रत्नों के आभूषण आ। मेरे लाडले इधर आ।' इस तरह कहते घड़ी-घड़ी प्रसन्न होते इन्द्रजित् को वे (उतारे हुए) आभूषण उसने पहनाये। ४ (अपना) युद्ध आरम्भ करने का ढंग, शत्रु वानर-सेना-समूह का युद्धवैभव, सर्पास्त्र की महिमा; शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त की गयी युद्धविजय की रीति, क्षण काल के क्षण संतोष के प्रकाश के साथ विवरण देते अपनी अहम् की तृप्ति के साथ रावण से विदा

करेसिदनु बळिकसुरपति कडु हरुषदलि जानकिय कावल
सरमेयनु संगरद जय विस्तरवना सतिगे
बरेंदु कोंडोय्दवनिजेगे तन्नरसननु तोरिसि मनोनि-
र्भरद संशयवनु निवारिसिकोंडु बायेंद ॥ 6 ॥
बीळ्कोंडा सरमे समरव केळिकंगळ बिडुवनियला
श्रीलतांगिय बळिगे बंदुसुरिदळु रावणन
हेळिकेय मातुगळना सति केळुताक्रंदनद लळ्ळेय
कोलु गोंडंतोऱगिदळु बसवळिदु भूमियलि ॥ 7 ॥
तायें सैरिसु नम्मवरु कडु मायकाऱरु हुसियो निजवो
नोय बेडन्नबर नडेनोडुवेवु नावेनुत
वायुपथदलि पुष्पकदलबु जायताक्षिय तंदळा रघु-
रायनिर्द रणांगणके रविवंश केळेंद ॥ 8 ॥
विषद लहरिय लळिय नदुळिन हसरिकेय चूरिसुव जिह्वा-
प्रसरदुरु फूत्कार दहिपंजरद मध्यदलि
एसेदनै लवकेळु पूर्वद विषधरेंद्र फणाळियलि बा-
रिसिद निद्रा मुद्रितन वोलु राय रघुनाथ ॥ 9 ॥

लेकर इन्द्रजित् अपने घर चला गया। ५ तत्पश्चात् राक्षसेश्वर ने अत्यंत आनंद से जानकी के रखवालों में से सरमा नामक एक राक्षसी को बुला भेजा। युद्ध में अपने पक्ष के जीत के समाचार को उसे समझाते हुए आज्ञा दी कि सीता को ले जाकर, उसके पति (राम) को दिखाकर उसके मन के संदेह को दूर करके बुला ले आओ। ६ रावण से बिदा हो आयी सरमा ने युद्ध का विवरण देते अश्रु बहाते रावण की बतायी गयी बातें सीता को समझायीं। उन बातों को सुनकर सीता रोती हुई धड़ाम से धरती पर इस प्रकार लेट गयी मानों पार्श्व में बाण लगने पर चटपटाती हुई बेहोश हो गयी हो। ७ "माँ जी, थोड़ा सा धैर्य धरिए। हमारे लोग बड़े मायावी हैं। उनकी कही यह ख़बर सच है या झूठ, कौन जाने? जो कुछ भी हो, वहीं जाकर देख आवें।" —इस प्रकार कहते हुए पुष्पक-विमान में रघुपति के उपस्थित युद्ध-रंगस्थली में सीता को आकाश-मार्ग से सरमा ले आयी। ८ तीव्रतर विष-तरंगों से युक्त, आश्चर्यकारक रीति से विष की ज्वालाएँ उगलती हज़ारों जिह्वावाले, बड़े वेग से फुफकारते सर्पास्त्र से निर्मित पिंजरे के मध्य श्रीराम इस तरह शोभायमान थे मानों आदिशेष के फनों के मध्य

कंडळै कमलाक्षि खळवेतंड पंचाननन नाहव
चंड चटुळ पराक्रमन मायात्रिविक्रमन
कंडुकंबनि दुरुगललि हा चंडबल हा राम हा मा-
र्ताड कुलसंभूत हायेंदोरलिदळु सीतॆ ॥ 10 ॥
मरुळिगॆत्तण मंडनवु तरु चररिगेकॆ विलास दर्पण
दरुशनवु जात्यांध्र गॆत्तलु पतियुपेक्षितॆगॆ
परम सुव्रतवेकॆ पापिगॆ पुरुष भाग्यतॆ सुलभवे हा
नर शिरोमणि हायॆनुत हम्मैसिदळु सीतॆ ॥ 11 ॥
रोगिगॊलिदक्कुवदॆ सुधॆ निर्भागधेयन मुंदॆ सिरि ता
नागि सुळिवुदॆ जातिमूर्खन जाड्य हृदयदलि
योगनॆलॆ गॊंबुदॆ सरमॆ केळौ गुरुद्रोहिगॆ कैव-
ल्यागमवु घटिसुवदॆ हायॆंदोरलिदळु सीतॆ ॥ 12 ॥
धरॆयलुदिसिद लक्ष्मियॆंदॆ करॆवनॆन्नुवनॆन्न गंडन
नरचरित्रद विष्णुवॆंबनु जनक ननवरत
हिरियराडुवरधिक लक्षण भरितॆ यॆंदॆन्नुवनु मातिवु
सुरप चापद चालियादुदॆ यदॊळिदुमुखि ॥ 13 ॥

सोये प्रकाशमान श्रीहरि हों। —इस तरह महर्षि वाल्मीकि ने कहा। ९ राक्षस रूपी हाथियों के लिए सिंह-सदृश, युद्धप्रचंड पराक्रमी, माया-त्रिविक्रम, श्रीराम को (इस हालत में) सीता ने जब देखा तो उसकी आँखें डबडबा आयीं तथा उसने कहा— "हाय रे मेरे देव! उग्र बलशाली, हाय राम, हे मेरे सूर्यवंश-समुद्भव!" —इस प्रकार कहते सीता विलाप करने लगीं। १० "भूत-पिशाचों को आभूषणों से क्या प्रयोजन? कपियों का सौंदर्यालंकरण से क्या मतलब? जन्मांध को आईने से क्या प्रयोजन? पति से अनादृत का श्रेष्ठ व्रत धारणा से क्या फल? क्या पापी को पति का सौभाग्य सुलभ-साध्य है? हाय पुरुषोत्तम!" इस प्रकार प्रलाप करती हुई सीता बेहोश हुई। ११ "रोगी को अमृत पिलाने से क्या लाभ? अभागे के सामने लक्ष्मी (संपत्ति) कैसे प्रकट हो? जन्म से जो मूर्ख है उसके उदासीन हृदय में योग कैसे वास करे? सुनो, हे सरमे! गुरुद्रोही को मोक्षसुख कहाँ? हाय-हाय!" इस तरह कहते सीता प्रलाप करने लगी। १२ मेरे पिता हमेशा कहा करते थे— "बेटी तू भूमि-गर्भ से उत्पन्न लक्ष्मी ही है; तथा तेरे पति मानव-चरित्र-संपन्न विष्णु ही हैं। वड़े कहा करते थे तू अत्यंत सुलक्षणा

बदुकलारेनु सरमे सहगमनदलि सूर्यान्वयन कैगू-
टदलि काबेनु नम्म पूर्वद नृपपुरंध्रियर
तुदिय मातिदु कळुहु तन्ननु हृदयदलि बेऱोंदनेणिसदे
वदनदलि कृपेयिरलि कळुहेंदेऱगिदळु पदके ॥ 14 ॥
कोंदवरु पररल्ल गंडन कोंदवळु तानीग सावे-
न्निद सिद्धिसितबुज सखकुल सार्वभौमंगे
चंदवे तानिन्नु जीविपु दंदवे धरणियलि बदुकुवु
देंदु कैगळ मुगिदु नुडिदळु सरमेगबुजाक्षि ॥ 15 ॥
युवतिय रोळत्यंत मीऱिद युवतियल्ला नीनु सिरि रा-
घवन मरणव निर्धरिसुव नितंबिनियें
अवगे निन्नय मातु कर्णके सविगळागिरवेनुत साकि-
न्नविनय प्रतिबिंबवचन दोळेंदळा सरमे ॥ 16 ॥
सैरिसोंदे क्षण विभीषण वीरगमन दोळरस राघव
नारुभटेयनु लक्ष्मणांकन हूंकृतिय ध्वनिय
तोऱिसुवे नेनुता सरमे नृपनारियनु नळिनाक्षियनु नय
सारदलि नंबिसुत तंदळु सीमेगा रणद ॥ 17 ॥

देवी है। क्या सब प्रशंसा इन्द्रधनु-सदृश न हुई ?" —इस प्रकार चन्द्रमुखी सीता ने कहा। १३ अब मेरे जीवित रहने से क्या प्रयोजन सरमा ? सती होकर सूर्यवंशोत्पन्न मेरे पति के पास जाऊँगी। मेरे पूर्व के राजाओं की पत्नियों ने भी इसी आखिरी मार्ग का अनुसरण किया। अन्यथा न समझते मुझे बिदा कर दो। मुझ पर दयाभाव रहे।" इस तरह कहते सीता ने सरमा के चरणों में प्रणाम किया। १४ "मेरे पति को मार डालनेवाले अन्य कोई नहीं। हाय् ! मैंने स्वयं मार डाला न ? सूर्यवंश के चक्रवर्ती की मृत्यु मेरे कारण हुई। मेरा अब जीवित रहना शोभादायक है ? इस भूमि पर जीवित रहना अब क्या योग्य है ?" इस तरह कहते हाथ जोड़े सीता ने सरमा से कहा। १५ जगत् भर की युवतियों में तू अत्यंत श्रेष्ठ युवती है न ? श्रीराम की मृत्यु निर्धारित करनेवाली नारी है क्या तू ? तुम्हारी ये बातें मुझे रुचती नहीं। अविनय को प्रतिबिंबित करनेवाली अपनी इन बातों को समाप्त करो।" इस प्रकार सरमा ने कहा। १६ "एक क्षण भर के लिए धैर्य धारण करो। वीर विभीषण का आगमन, राजा राम का सिंहनाद, लक्ष्मण का हुंकार अभी तुम्हें सुनायी पड़ेगा, दिखायी देगा।" —इस तरह कहते सरमा कमल-नयन राम की पत्नी सीता को युद्ध की रंगस्थली

लवनें केळै बळिक रघुपुंगवननरसिदळु कलिजां-
बव सुषेण गवाक्ष पवनज रविसुतादिगळु
कविव कंगळ जलद जाड्यद जवनिकेय जोडणेय चित्तद
बवणिगेय भटररसि कंडरु कपट मानुषन ॥ 18 ॥
गरळ दुब्बर दब्बरद पूत्करद चूरिप जिह्वेगळ नि-
र्भरद फणिकुल मध्यदलि फणितल्पनंददलि
अरसनिरे संशयद मनदलि सुरर वैद्यरनंदनन सर-
सिरुह बांधव सूनु करेदितेंद नातंगे ॥ 19 ॥
बा सुषेण कपींद्र नीनभ्यासियल्ला वैद्यशास्त्र दो-
ळा सुरेंद्रन मनेय धन्वंतरिय पुत्रनल
दाशरथियनु नोडु नमगे नासेयुंटे हेळेनलु सं-
भाषणेगे ता ठाव काणेनु हेळलेनेंद ॥ 20 ॥
ऐसे मत्तेनेंदु बेरगिन बासणद कदपुगळ कैगळ
भूषणद लिरला विभीषणदेव नडेतंदु
पैसरिसिदी रणके मनद विलासवावुदु वीरविजय सु-
वासिनिय सौभाग्य दुन्नतिगेनु मतियेंद ॥ 21 ॥

में ले आयी। १७ सुनो लव; तत्पश्चात् जांबव, सुषेण, गवाक्ष, हनुमान, सुग्रीव आदियों ने रात के अंधेरे में राघव को ढूंढ़ा। आँखों में अश्रु भरे, वेदना के आवेग तथा चित्तभ्रमयुक्त कपिवीरों ने लीला-मानव श्रीराम को ढूंढ़-ढूंढ़कर आखिर देख लिया। १८ अत्यंत विष भरे, ज़ोर-ज़ोर से फुफकार रहे, ज्वाला उगलते जीभों से युक्त उग्र सर्पों के मध्य आदिशेष की शय्या पर सोए हुए की भाँति सो रहे श्रीराम को जब देखा तो संदेह भरे मन से देवताओं के वैद्य के पुत्र को बुलाकर सुग्रीव ने उससे यों कहा— १९ "रे वानरनायक सुषेण! इधर आओ। तू वैद्यशास्त्र-विज्ञ है न? उस देवेन्द्र के वैद्य धन्वंतरि का पुत्र है न तू? ज़रा दाशरथी की जाँच कर। बचने की कुछ आशा है यह देखकर बता।" इस प्रकार (सुग्रीव से) पूछे जाने पर सुषेण ने उत्तर दिया— "कुछ कहने में, बिलकुल असमर्थ हूँ। (अर्थात् परिस्थिति निराशाजनक है)।" २० "अरे, ऐसी बात है। इस तरह कहते सुग्रीव जब गाल पर हाथ धरे खड़े थे तो विभीषण ने वहाँ प्रस्तुत (उपस्थित) होकर कहा— "युद्ध में हारकर पीछे हटने के बारे में तुम्हारे विचार क्या हैं? वीरविजयश्री को पाने में —उस विजयश्री के सौभाग्य-संपन्न होने में तुम्हारी राय क्या है।" २१ "हे विभीषण, सुनो! राम अपनी ज़िद को (हठ को) क़भी न

अेले विभीषण केळु रामन छलवे येन्नय छलवु रामन
कलह वेन्नय कलह रामन वचन मद्वचन
कोळुगुळदोळु तवाग्रजन दिगुबलिय नित्तु तदीय राज्यके
निलिसुवेनु निन्नुवनु नोडेंदुब्बिदनु रविज ॥ 22 ॥
अरस राघवनाव लोकदोळिरलि तहेनडुसि निदु-
ब्बरद महिमेय देवतेगळा रादडवरुगळ
शिरव चेंडाडुवेनु सीतेय नेरहुवेनु राघवनोळा रें-
दरियला सुग्रीवदेवननेनुत गर्जिसिद ॥ 23 ॥
आर्यनुत हनुमंत बोब्बेय बाय बिरुदनिदोरिदनु ता-
रेय नुब्बिरिदब्बरिसिदनु होय्द भुजयुगव
वायु सख सुत मुख्य सेनानायकरु हुरिकटिसि रवकस
राय दुर्गद लग्गे गोंडरिसिदरु सरोषदलि ॥ 24 ॥
इनितु कोळाहळव कंडज तनुजनिदु ता पंथवल्लें-
दिनजनुद्रेकवनु नयमुखदिद संतैसि
अनिमिषर वैद्यन कुमारन मनद बगेयंतरव नातन
नेनह नरियलुपाय विदकेनेंदु बेसगोंड ॥ 25 ॥

त्यागेंगे। उनका यह युद्धनिर्णय मेरा अपना भी है। राम का वचन मेरा वचन है। युद्ध में तुम्हारे भाई की बलि चढ़ाकर तुम्हें लंका का राजा बनाना ही मेरा धर्म है। देखते रहिये।" इस तरह बड़े अभिमान के साथ सुग्रीव ने कहा। २२ "राघव जिस किसी लोक में क्यों न पहुँचे ? वहाँ से रोक लगाकर उन्हें बुला लाऊँगा ही। अतिशय महिमा-संपन्न देवता भी सामने आ जाएँ तो उनके सिर काटकर राम को सुरक्षित लाऊँगा ही। सीता को राम के साथ मिला देना ही है। सुग्रीव को आप समझते क्या हैं ?" इस तरह कहते सुग्रीव गरजने लगा। २३ हनुमान ने घनघोर गर्जना की। तारा के पुत्र ने अपने हाथों को मसलते हुए बड़े गर्व के साथ गर्जना की। अग्नि के पुत्र नील आदियों ने तथा अन्य प्रमुख सेनानायकों ने बड़े धैर्य के साथ व क्रोधान्वित हो राक्षसराजा के दुर्ग पर धावा बोल देने का निश्चय किया। २४ कपिनायकों का कोलाहल सुनकर जाम्बवंत ने "यह मार्ग सही नहीं है" इस तरह समझाते हुए सुग्रीव के भावोद्रेक को बड़ी विनम्र बातों में शांत किया। तदनंतर धन्वंतरि के पुत्र सुषेण के मन में क्या है; तथा इस दिशा में उसकी आलोचना क्या है—यह जानने के उद्देश्य से पूछा, "इसके लिए अब उपाय क्या है ?" २५ उस धन्वंतरि के पुत्र ने दयासागर जाम्बवंत

आ दिविज वैद्यन कुमारक ना दयांबुधिगेंद नालुकु
भेद दौषधियुंटु कॆळुत्तरद भागदलि
आ दिविज गिरियिंद मुंदण हादियलि हरिदश्वनामद
मेदिनी धर दमल चंद्रद्रौणि नामकद ॥ 26 ॥
आ गिरिय महदौषधि गळनु बेग तंदरॆ रावणन नी-
वागि कॊंदव ररि निशाचर पडॆय तिदवरु
ईगली लंकॆय विभीषण गागु माडिसिदवरु मेले
नागिनभ्युदय प्रपंचकॆ कर्तरहिरॆंद ॥ 27 ॥
आगलिदु तप्पलल नम्मनु रागकिदु पथवहुदॆनुतशत
याग वज्र जयोत्तरन लंकाभयंकरन
सागरोल्लंघनन नॆनॆवुद्योगदभिसंधियलि दिवदिं-
दा गगनमार्गदलि मैदोऱिदनु विहगेंद्र ॥ 28 ॥
बलद गरि ऋक्साम मुखमंडल यजुर्वामांग निरुपम
विलसदुपनिषदमळगात्र पवित्रनंबरव
बॆळगु तिळिदनु पूर्णशशि मंडलद सॊंपिनलमम हाला-
हल महोग्र व्याळ पाश विनाश रोषदलि ॥ 29 ॥

से कहा— "उत्तर दिशा में मेरुपर्वत के सामने के मार्ग से आगे बढ़ने पर हरिदश्व नामक पर्वत के चंद्रद्रौणी नामक पहाड़ी पर चार प्रकार की ओषधियाँ हैं।" २६ उस पहाड़ की श्रेष्ठ ओषधियों को शीघ्रातिशीघ्र लाया जाय तो —रावण की हत्या करनेवाले स्वयं तुम्हीं होवोगे; शत्रु राक्षस-सेना को समाप्त कर देनेवाले तुम्ही होओगे; इतना ही नहीं, लंका का आधिपत्य विभीषण को देने का तथा उनकी उत्तरोत्तर अभिवृद्धि करनेवाले आप ही अवश्य होंगे।" —इस प्रकार सुषेण ने कहा। २७ "ठीक ही तो है; यह कुछ ग़लत नहीं; हमारा प्रेम प्रकट करने का यह एक सुअवसर है।" —इस प्रकार सोचते हुए इन्द्र के वज्रायुध को जीतकर, समुद्र पार कर रहे, लंकाभयंकर (श्रीराम) के स्मरण के उद्देश्य से, देवलोक से रवाना हो रहे गरुड़ ने आकाश-मार्ग में अपने को प्रकट किया (दिखायी दिए)। २८ उनका (गरुड़ का) दाहिना पार्श्व मानों ऋग्वेद, मुख-मंडल सामवेद, बायाँ पार्श्व यजुर्वेद, सारा शरीर मानों श्रेष्ठ उपनिषत् —इस प्रकार विराजमान गरुड़ ने सारे आकाश को जगमगाते पूर्ण चन्द्रमा की शोभा से संपन्न हो, हालाहल विषयुक्त महाभयानक सर्पास्त्र के विनाश के निमित्त क्रोधोन्मत्त हो धरती पर अवतरण किया। २९ उस सुपर्ण गरुड़ के पंखों की हवा

आ सुपर्णन गरिय गाळिगॆ सूसिदवु सप्तांबुनिधि कै-
लास मंदर मेरु विंध्याद्रिगळु मुग्गिदवु
वासुगिय तक्षक ननंतन मैसिरिग ळुडुगिदवु बणगु बि-
लेश यंगळ काणॆनिदिर नलु रगमर्दनन ॥ 30 ॥
गरिय गाळिय गवलि गसुगळ तॊरॆदु सत्तवु कॆलवु नॆलननु
कॊरॆदु हॊक्कवु कॆलवु कॆलवडसिर्दव बुधियलि
मुरिगडॆदु कॆलवोडिदवु कॆलवरसिदवु हुत्तगळ दृष्टिय
हरुबिनलि सिक्किदवु सीकरियाद वगलदलि ॥ 31 ॥
तायिगोसुग हिंदॆ निर्जर रायननु गॆलिदमृत कलशव
वायुपथदलि तरलु तुळुकिद बिंदुपक्षदलि
स्थायि यागिर्दा सुधाकण कायिदवु कपिबलव रघुकुल
राय नसुनगु तॊय्य नरळिचिदनु विलोचनव ॥ 32 ॥
नरचरित्रद सकल सचराचरद चैतन्यात्मजय वि-
स्तरण विश्वव्याप्त जय महदादि भूतात्म
निरुपमित जयजय जगत्त्रय करण कारणकर्तृ जय नि-
र्मरण जययॆनु तिर्दुदमररु नॊसल कैगळलि ॥ 33 ॥

के धक्के से सप्त-समुद्रों ने अपना पानी बाहर उँड़ेला; कैलास मंदर, मेरु, विंध्य आदि पर्वत धँसने लगे; वासुकि, लक्षक तथा अनंत —इनकी देहकांति मलिन पड़ गयी। सर्पविनाशक के सम्मुख क्षुद्र सर्प कैसे अपने आपको प्रकट करे? ३० गरुड़ के पंखों के पवन के थपेड़ों से (बू के कारण) कई सर्पों ने अपने प्राण त्याग दिये। कुछ सर्प तो ज़मीन खोदकर बिल के अंदर घुस गये। कुछ समुद्र के अंदर छिप गये। कुछ तो प्राण बचाकर भागे। कुछ बाँबी को ढूँढ़ते भागने लगे। गरुड़ के दृष्टि-प्रवाह में जो कुछ भी फँसे सारे के सारे जलकर राख हो गये। ३१ पूर्व में अपनी माता के लिए, देवराज इन्द्र को जीतकर अमृत-कलश जब गरुड़जी आकाश-मार्ग से ला रहे थे तब उससे छलके हुए अमृत-बिन्दु अब तक उसके पंखों में सुरक्षित थे। उन्हीं अमृत-कणों ने अब कपिसेना को बचाया। श्रीराम ने मुस्कुराते धीरे-धीरे आँखें खोलीं। ३२ "हे मानवलीला-विनोदी! समस्त स्थावर, जंगम (जड़-चेतन) रूपी जगत् जीवियों के आत्म-स्वरूपी तेरी विजय हो। विशाल विश्व को आवृत कर रहनेवाले तेरी विजय हो। सर्वजीवियों के मूलाधार तेरी जय हो। उपमातीत, तीनों लोकों के लिए आधारस्वरूप, कारण-कर्ता, सृष्टिकर्ता तेरी जय हो। हे मृत्युंजयी! तेरी जय हो।

आर्येनुत बॊब्बिरिदु कपिसमुदाय सौरंभातिशयद वि-
डायियलि नलिदाडु तुब्बिरि दबुधि घोषदलि
रायकपि सुग्रीव जांबव वायुसुत पौलस्त्य सह कपि
नायकरु मैयिक्किदरु मनुकुल शिरोमणिगॆ ॥ 34 ॥
करॆदरारु सुपर्णननु शंकर सरोज भवाद्यरु गळुप
चरणॆ तानेनुटॆ केळै कुशनॆ कौशलव
हरिकणा साक्षात सर्वेश्वर कणा सुज्ञानमय भा-
सुरतर श्रीमूर्ति यॆंदरि राघवेश्वरन ॥ 35 ॥
दृगु निरीक्षॆयला सुपर्णन मॊगवनीक्षिसि मुगुळु नगॆयलि
नगुत नन्निदादुदॆमगॆ पुनर्भवाभ्युदय
जगदॊळॆनितु महात्मनोयॆनु तगणितद हरुषदलि विनतॆय
मगन नुपचरिसिदनु मधुर वचोविलासदलि ॥ 36 ॥
परनपर भवनभव घन गोचरन गोचर सगुण निर्गुण
चरनचर संस्थूल सूक्ष्मद्वय नसंख्यात
क्षर महाक्षर मितनमित निर्जर ललामनॆ निन्न महदं-
तरव नरिववनावनॆंदु खगेंद्र कैमुगिद ॥ 37 ॥

(मरणातीत तेरी जय हो)।" इस तरह देवताओं ने माथे पर हाथ धारे (हाथ जोड़े) स्तुति की। ३३ घुड़कियाँ भरते ज़ोर-ज़ोर से गरजते समस्त कपि-समूह ने अत्यंत वैभवपूर्ण रीति से मनुवश श्रेष्ठ को प्रणाम किया। उमड़ते समुद्र के उद्घोष की तरह खुशी के मारे चिल्लाते, किलकारियाँ भरते वानरों के राजा सुग्रीव तथा जांबव, हनुमान आदि कपिनायकों ने राम को तथा विभीषण को प्रणाम किया। ३४ 'गरुड़ को किसी ने थोड़े ही बुलाया था। महेश्वर, ब्रह्माजी को गौरवान्वित करते क्या कोई निमंत्रण देने गया था? हे कुश! यहाँ का चमत्कार देखो। यह साक्षात् श्रीहरि हैं; सर्वेश्वर राघवेश्वर को ज्ञाननिधि, प्रकाशमान साक्षात् श्रीमूर्ति ही समझो!' —इस तरह निवेदन करते महर्षि वाल्मीकि श्रीराम की प्रशसा करने लगे। ३५ गरुड का मुख देखते, कृपा-दृष्टि की वर्षा करते, मुस्कुराते "तुम्हारे कारण पुनर्जन्म प्राप्त कर उन्नति करने का महद्भाग्य प्राप्त हुआ। लोक में तेरी महत्ता का क्या वर्णन करें?" इस प्रकार आनंदातिरेक में श्रीराम ने अत्यंत मीठे वचनों से विनता के पुत्र (गरुड़) की प्रशंसा की। ३६ "अतिश्रेष्ठों में श्रेष्ठ, जन्म लेते हुए (अवतार धारते हुए) भी अजन्मा, दृश्यमान होते हुए भी अदृश्य-स्वरूप, सगुण (उपाधियुक्त) होते हुए निर्गुण (निरुपाधिक)

अरियदवरोडनैसे माया मरेय जवनिकें जीय नाचिस
दुरुव भृत्यन बीळुकोडु साकेनुत कैमुगिये
अरियदव रंददलि कृपें कण्णरेय मोगसन्नेयलि निगमद
गरिय गरुडन बीळुकोट्टनु परमहरुषदलिं ॥ 38 ॥
नगुत रामन नरचरित्रद मुगुद तनकें नमोयेनुत पद
युगळ कानतनागि हाय्दनु नभकें विहगेंद्र
युगद सीमेय शरधियुब्बिन बिगुहिनवोलुब्बेद्दु मसगितु
विगड वानरवाधि कोळाहळद रभसदलि ॥ 39 ॥
अदको निन्नय रमण नमळाभ्युदय दुत्सव निनद वाचेय
लदको भरतानुजन भारिय बिल्ल बोब्बाट
कुदुकुळिन कपिसैनिकद बलुगदन दभिनव वीररस मि-
क्कोदवुतदे नोडेंदु सीतेगे तोरिदळु सरमे ॥ 40 ॥
अरसि केळौ हेळ्ने निन्नरर हदुगळिगनेंदु पुष्पक
धरिसदिदु वैधव्य लक्षण दंगनाजनव

गतिशील होते हुए भी निस्पंद (गतिरहित), स्थूल होते हुए सूक्ष्म, एकमेव अद्वितीय, नश्वर होकर भी महाशाश्वत, मर्यादा के आधान होकर भी मर्यादा के परे विस्तृत हो व्याप्त —इस प्रकार द्वन्द्व (जोड़ों) से संपन्न प्रभो, हे देवश्रेष्ठ! तेरे महासामर्थ्य को कौन परखे?" इस तरह स्तुति करते हुए गरुड़ ने हाथ जोड़े। ३७ "माया का यह आवरण-आच्छादन अज्ञानियों के सिवा अन्य किसी के साथ नहीं चल सकता। भगवन्, और अधिक शर्मिन्दा न करते अपने प्रिय सेवक को भिजवा दें; यही यथेष्ट है" —इस तरह कहते गरुड़ ने हाथ जोड़े बिनती की। श्रीराम ने भी अनभिज्ञ की तरह, दया की वर्षा करते, मुस्कुराकर इशारा करते अत्यंत हर्ष के साथ गरुड़ को विदा किया। ३८ मुस्कुराते हुए, "मानवीय आचरण के राम के इस सीधे-सादे स्वभाव को प्रणाम!" इस तरह कहते हुए श्रीराम के चरणों की वंदना कर गरुड़ आकाश-मार्ग से उड़े। युगांत में जैसे समुद्र घनघोर गर्जना करते उमड़ पड़ता है, उसी प्रकार कपिसेना-सागर आनंद के मारे फूला न समाते कोलाहल मचाने लगा। ३९ "वह सुनो; तुम्हारे पति की उन्नति की उत्साहपूर्ण हर्षध्वनि। उस तरफ़, लक्ष्मण के धनुष का भारी ठेंकार सुनायी पड़ रही है। आवेश भरे कपिसेना के भारी युद्ध के कारण नया वीररस उमड़ पड़ रहा है। देख देख।" इस तरह कहते सरमा ने सीता को दिखाया। ४० "सुनो रानी, आपके पति के कुशल-मंगल के बारे में

निरुतविदु मेलबुधि हिमकर मरुत ताराग्रहद हरुषर्तें
हरॅदु दिल्लदर्दिद काणिसितरस नभ्युदय ॥ 41 ॥
ऎंदु तोरिसि तिरुगिसिदळा नंदमिगॆ पुष्पकवनिदु खो-
यॆंदु हत्तितु हुरिकटिसि हरिसुतन नेमदलि
संदणिसि गिरिमरन गर्घरदिंद गगन विलंबितद बा-
लेंदुधर गिरिधरन दुर्गवनी कपिव्रात ॥ 42 ॥

हदिनेळनॆय संधि

सूचनॆ— अमररिपु धूम्राक्ष रणनिर्गम बलान्वित वज्रदंष्ट्रर समरबलि गॆलिदरु समीरज वालिनंदनरु ।

केळिरै कुशलवरु कपिगळ काळगद कडुहंजिसितु दु-
र्व्वाळियलि दुर्जन शिरोमंडनन पट्टणव
केळि रावणनंजि चिंतॆय ताळि रवियंत्यदलि नडॆतं
दोलग वनित्तनु समस्त निशाटगण सहित ॥ 1 ॥

क्या मैंने तुमको (पहले ही) न बताया था ? विधवा लक्षणों से युक्त स्त्रियों को यह पुष्पक विमान बिठला नहीं लेता (बैठने नहीं देता) । यह सत्य है । इतना ही नहीं, सागर, चन्द्र, वायु, नक्षत्र, ग्रह —इनका हर्ष भी विनष्ट नही है । इसी से राम की उन्नति-उत्कर्ष स्पष्ट विदित है । ४१ इस तरह सीता को बताकर, दिखाकर अत्यानंद से पुष्पक विमान को लंकानगरी की तरफ़ मुड़ाया । सुग्रीव की आज्ञा से— 'हो-हो' कर हर्षनाद प्रकट करते, इकट्ठे आकर पेड़-पहाड़ों को उखाड़कर घर्घर शब्द के साथ हर्षोन्माद प्रकट करते कपिसेना ने आकाश की ऊँचाई तक उठे चन्द्रशेखर नामक पहाड़ पर के दुर्ग पर जोश के मारे आक्रमण किया । ४२

सत्रहवीं संधि

सूचना— असुर धूम्राक्ष तथा युद्ध में आगे बढ़ते जानेवाला वीर वज्रदंष्ट्र —इन दोनों को हनुमान तथा अंगद ने युद्ध में जीत लिया ।

हे कुश-लव, सुनो ! कपियों के युद्ध की तीव्रता, वेग, शीघ्रातिशीघ्र बढ़ते ही जाने के कारण दुष्टों के मुखिया रावण की नगरी में आतंक व्याप्त हो गया । यह सुनकर रावण ने डर के मारे चिंतित हो, सूर्यास्त होने पर सभी राक्षसों की एक सभा बुलायी । —इस प्रकार वर्णन करते महर्षि वाल्मीकि ने कथा आगे बढ़ायी (आगे की कथा सुनायी) । १

कनस कंडनु समरतामस जनित जाड्यदलिंद्रजितु रा-
मननु नागास्त्रदलि कॆडहिदॆ नॆंदु सभॆयॊळगॆ
तॊनॆंदु कॊंडनु तन्न बिरुदिन बिनुगु नुडिगळ बहळ गरुवद
घनतॆयलि तावारु रणवारॆंद नसुरेंद्र ॥ 2 ॥
बरलि कमलजदत्त रथ शंकरवरार्चित चापशर हिम
किरण हासाद्यखिळ शस्त्रगळॆंदु दशकंठ
धुरकॆ निलुवुद्योग मुखदलि नॆरहुतिर्दनु बलव नित्तलु
गिरि तरु व्रज हस्तरुब्बटॆ मीरि ताजियलि ॥ 3 ॥
बीळुतिर्दुवु गिरिगळट्टळॆ याळुवेरिय मेलॆ तॆनॆगळ
साल सरिसद सबळ नॆगहुत्तिर्द वरिबलव
हूळिद बुधिय भटर समराभीळ खळरुब्बटॆय धाळा
धूळिमसगितु शस्त्र शैलावळिय समरदलि ॥ 4 ॥
एरुवुदु कपिसेनॆ सेनॆय जारगॆडहुवु दसुर बलरण
देरुगळ रौकुळद रक्तदराशि जलनिधिय
मीरिदुदु जारिदुदु बलुगॊलॆ गार ररिभटरुब्बटॆय कै-
सूरॆयादुदु नगरदलि राक्षस वधूजनद ॥ 5 ॥

युद्ध के अज्ञान से जनित मंदबुद्धि के कारण इन्द्रजित् ने सपना देखा था कि राम को मैंने सर्पास्त्र चलाकर समाप्त कर दिया है। (अतः) उसने बड़े अभिमान के साथ, सभा में भूरि-भूरि आत्मप्रशंसा कर ली। "हम कौन हैं? युद्ध किसे कहते हैं?" इस प्रकार रावण ने (भी) कहा। २ "ब्रह्माजी का दिया रथ आने दो। शिवपूजित धनुर्बाण तथा चन्द्रहास नामक खड्ग आदि शस्त्रास्त्र उपस्थित किये जाँय।" इस प्रकार आज्ञा करते दशकंठ युद्ध के लिए प्रस्थान करने के प्रयत्न में सेना को जुटा रहा था। इधर पेड़-पहाड़ों को धारे वानर युद्ध में मुकुर पड़े। ३ कपियों से फेंके गये चट्टान क़िले के बुर्ज तथा परकोटों पर धनाधन गिर रहे थे। क़िले के भीतरी हिस्सों की कतारों पर से फेंके गये भालों के कारण शत्रु ऊपर ही ऊपर उछाले जा रहे थे। भयानक युद्धचतुर राक्षसों ने वानर-योद्धाओं की लाशों से समुद्र को पाट देते हुए जबर्दस्त हमला किया। इस प्रकार वानर तथा राक्षस-वीरों के मध्य चट्टानों तथा शस्त्रास्त्रों का युद्ध बड़े जोश-खरोश के साथ चला। ४ कपिसेना दुर्ग पर चढ़ी-बढ़ी जा रही थी। राक्षस-सेना धक्के देकर उसे नीचे गिरा देती। घायल सैनिकों के रक्त-प्रवाह ने मानों समुद्र (प्रवाह) को भी मात कर दिया।

कॆंडहि्दरु कोटॆगळ तॆनॆगळ नोडॆ बडिदरट्टणॆगळनु कि-
त्तिडुकिदरु कॆंडिसिदरु कैसूत्रद शतघ्निगळ
पडिमुखद रक्कसर रकुतद मडुवि नोळगद्ददरु गावळि
गुडियिरि्द गुम्मिदुदु हुय्यलु राक्षसेश्वरन ॥ 6 ॥
कोटॆ होदुदु जीय जवनव राटवादुदु नम्मवलदलि
बेट विन्नारॊडनॆ बरुतिदॆ मृत्यु बलुकरिसि
नाटलुत्तर वेगॆनलु किडि नाटिदवु कंगळलि कालक
रोटमाला धरनवोलु मुळिदॆद्द नसुरेंद्र ॥ 7 ॥
ऎद्द रक्कस रायनिदिरिन लॆद्दु कलि धूम्राक्ष राक्षस
नुद्दुरुटु बल वज्रदंष्ट्ररु नुडिद रितॆंदु
मद्ददेकॆलॆ जीय हाविगॆ हद्दिरलु निन्नरि भटर निडु
निद्दॆ गैसदडसुररल्लॆंदोलॆ दरुब्बणव ॥ 8 ॥
हाव हरि कटकदलि हरहिद हावडिगरॆ नावु नम्मभि
भावनॆय बहणित विचित्रव नोडु नीनॆनुत

भारी भयानक हत्यारे (योद्धा) भी रक्त-प्रवाह में फिसल गये। लंका-नगरी में वीर योद्धाओं के कारण राक्षस-स्त्रियाँ लूट की शिकार वनीं। ५ वानर-योद्धाओं ने बुर्जों को, दुर्गों को, गिरा दिया। क़िले के भीतरी हिस्सों को तहस-नहस कर दिया। गुम्बजों को उखाड़-उखाड़कर फेंक दिया। हस्तसूत्र की बन्दूक़ों को विनष्ट कर दिया। सम्मुख पड़े राक्षसों को पकड़कर रक्त-प्रवाह-कुंडों में डुबो दिया। राक्षसेश्वर को संबोधित कर 'हाय-तोबा' मचानेवालों की संख्या हद से बाहर बढ़ गयी। ६ "हे प्रभो! क़िला हमारे हाथ से जा रहा है। हमारी सेना में यमदूतों का खिलवाड़ अधिक हुआ। अब प्रेम किससे? मृत्यु मुँह बाये बढ़ रही है, मानों हमें निगल जाना चाहती है। जल्दी आज्ञा दीजिए।" इस प्रकार राक्षस-दूतों ने जब रावण को खबर दी तो उसकी आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं। रुंडमालाधारी रुद्र की तरह क्रोध-संतप्त रावण उठ खड़े हुए। ७ राक्षसेश्वर को उठते देखकर वीरवर धूम्राक्ष तथा ज़बर्दस्त बलशाली वज्रदंष्ट्र रावण के सम्मुख उपस्थित हो "स्वामिन्, साँप को समाप्त करने के लिए जब बाज़ उपस्थित है, तब अन्य उपाय सोचने में क्या धरा है? आपके शत्रु को चिर निद्रा की गोद में हम न सुलाएँ तो हमारा (इस) राक्षस नाम से क्या प्रयोजन?" इस तरह कहते उन्होंने अपना भारी घमंड दिखाया। ८ "साँप को बन्दरों की सेना पर बिछानेवाले सँपेरे है क्या हम? हम शत्रु को किस ढंग से हराते हैं —यह आश्चर्यकारक घटना

रावणन नुब्बिसिद राह्व जीव मारिगळा निशाट म-
हाविभुव बीळ्कोंडरमराळिगळु कळवळिसॆ ।। 9 ।।
कलकुवॆवु कपि वारुधिय कैदोळसि गोंदगिद रविसुतादिग
ळॆलुव नुग्गोत्तुवॆवु तग्गोत्तुवॆवु निन्नवर
मलॆत रादोडॆ रामलक्ष्मण रळव मुरिवॆवु जीय मातिदु
फलिसदिर्दडॆ पतिकरिस बेडदरसुरंगॆ ।। 10 ।।
खळ बळिक लवरिब्बरिगॆ बट्टललि वीळॆय वित्तु बीळ्कोंडॆ
कलहकनुवागिर्द चातुर्बलद गडणदलि
इळिद रंदा दुर्गवनु दिगुवळय बेसलादंतॆ बोम्मन
निळय नीरलि नॆरॆद रवदवो लाय्तु निर्घोष ।। 11 ।।
गजवो कल्पस्थायियह दिग्गजवो हयवो हरिहयन वा-
रिजकर द्वयदुरु तुरंगमवो भटावळियो
त्रिजग दळिविन यमन सुभट व्रजवो होगळुवॆनेन रुह्रि
रुजॆगॆ सरिदळु धरिसलारदॆ वैरिवाहिनिय ।। 12 ।।

आप देखते रहिए।" —इस तरह कहते हुए युद्ध में अपने प्राणों को बेच देनेवाले उन राक्षसों ने रावण को उकसाया। इससे देवता तिलमिलाने लगे। तब वे राक्षस, राक्षसराजा से बिदा लेकर वहाँ से रवाना हुए। ९ "कपिसेना सागर को मथ डालेंगे। द्वन्द्व-युद्ध के लिए आनेवाले सुग्रीव आदियों की हड्डियाँ चकनाचूर करेंगे। आपके शत्रु को दबोच डालेंगे। अहंकार, दर्प प्रकट करनेवाले राम-लक्ष्मण के पराक्रम को तोड़ डालेंगे। राजन्! अगर हमारा यह वचन झूठा साबित हो तो हमें स्वीकार ही न करें।" इस प्रकार उन्होंने रावण से कहा। १० तदनंतर रावण ने धूम्राक्ष, वज्रदंष्ट्र —उन दोनों को बीड़ा देकर (अनुमति देकर) भेज दिया। युद्ध के लिए सन्नद्ध चतुरंग सेना के साथ क़िले से वे मानों इस प्रकार निकल पड़े कि दिग्वनिताएँ प्रसव-वेदना भुगत रही हों। ब्रह्मलोक जब पानी में डूब जाए तो जो दशा होती है, उसी प्रकार की दशा पैदा करते राक्षस-सेना ने शोरगुल मचाया। ११ क्या वे हाथी हैं या युगांत तक स्थिर रहनेवाले दिग्गज हैं! घोड़े हैं या हाथ में लगाम धारे इन्द्र के देवलोक के घोड़े उच्चैश्रवस हैं! क्या वे सैनिक हैं या तीनों लोकों को मिटाने के लिए निकल पड़े यम के दूत हैं! कैसे वर्णन करें! वैरी सेना का बोझ सह सकने में असमर्थ हो धरती वेदना भुगतने लगी। १२ रणवाद्य जब बजने लगे तो ब्रह्मांड की छाती विदीर्ण हुई। ईश्वर का

ऒदरिदवु रणवाद्य चयवळ्ळॆदॆ गॊळल् ब्रह्मांड वीशन
हृदय हातकवारॆ हम्मदवॊगॆ कमलभव
कदडॆ सप्तसमुद्र शिरवनु बिदिरॆ बहिमुख महीधर
वदुरॆ जगवुत्तानपादज लोक परियंत ॥ 13 ॥
तॆगॆदुनिदुदु सेनॆदुर्गद तगह तौकल माडि तडॆदरु
नगमहीरुह हस्तरुब्बिरि दरिय सैनिकव
जगळ गंटिक्किदुदु तलॆयॊत्तुगळ शरनिधियंतॆ तुंबितु
गगन निमुषदलस्त्रशस्त्राचल महीजदलि ॥ 14 ॥
लवनॆ कॆळॆ माघशुद्धद नवमियलि नागस्त्रदलि नि-
म्मवरु बिगिवडॆ दिर्दरा दिनदिरुळि नंत्यदलि
दिवद मुखदलि दशमियलि बलुबवर तॊडगितु जाववॆरडर
हवणिनलि हरिदश्व तनुजनॊळाय्तु बलुसमर ॥ 15 ॥
हॆणद बॆट्टद मेलॆ बॆट्टगळॆणॆदवंबर दुदिय बहळा
रुण जलांबुधि बॆरसिदुदु लवणांबुराशियनु
ऎणिकॆ यिल्लदॆ तुंबिदवु पट्टण पुरंदर पद्मजाद्यर
गणिकॆ यरनड हाय्द रमरर राजधानियलि ॥ 16 ॥

हृदय डबडबाने लगा। ब्रह्माजी बेहोश हो गये। सातों समुद्र खौल उठे। देवताओं के मुकुट हिल उठे। पर्वत तथा जगत ध्रुवलोक तक काँप उठे। १३ राक्षस-सेना पीछे हटकर खड़ी रही। वानर-सैनिकों ने दुर्ग की रुकावट का नाश कर देते हुए शत्रु-सैनिकों को हाथ के पेड़-पहाड़ों से पीटते शोरगुल मचाते थामकर खड़ा कर दिया। दोनों तरफ़ की सेनाएँ इस तरह भिड़ गयीं मानों एक साथ जुटे आये सिरों का सागर सा दिखायी पड़ने लगा। शस्त्रास्त्रों तथा पेड़-पहाड़ों से सारा आसमान भर गया। १४ सुनो लव! माघ शुद्ध नवमी के दिन रात के अंतिम प्रहर में सभी वानर सर्पास्त्र के बंधन में पड़े थे। दशमी के दिन सुबह होते-होते भारी ज़बर्दस्त युद्ध प्रारम्भ हुआ। दो प्रहर तक सूर्य के पुत्र सुग्रीव के साथ घमासान लड़ाई हुई। १५ शवों के पहाड़ पर पहाड़ जो उठते गये, ढेर पर ढेर जो जमते गये वे आसमान तक पहुँचे। रक्त का एक ज़बर्दस्त समुद्र जो बना वह बढ़कर लवण समुद्र में जा मिला। असंख्य वीर जो मरे इन्द्रलोक या ब्रह्मलोक में जा मिले। देवताओं की राजधानी अमरावती में स्थित वेश्याओं को स्वर्ग आये हुए इन वीरों ने घेर लिया। १६ राक्षसों की अर्गलाओं की मार, कुल्हाड़ों की मार तथा

परिघहतियलि परशुघातद लुरुगदा दंड प्रहारद
लुरुळु तिर्दुदु कपिबलौघ नगौघ नियतदलि
तरुवितान विघातियलि होडें मुरुळु तिर्दुदु रक्कसरु नेल
नरळु तिर्दुदु होडलु नेरेयदे हेणन हसरगळ ॥ 17 ॥
आतु निंदनु कपिबलके बळिका तमिस्राचर वनेचर
दूत धूळीपटल पटु धूम्राक्ष गर्जिसुत
आतनातं गिदिरिनलि रघुदूत समरोद्यूत लंका
वीतिहोत्र रणत्रिनेत्र सुपुत्र मारुतन ॥ 18 ॥
तुडुकिदुदु मारुतियना बलुगडिय खळन कठोरनयनद
किडिय होदरिन होगेय होरळि हरादिगळु बेदरे
तडेदुदा बहळाग्नि कणदुग्गडद धूमाकलित शिखियनु
कडुहि ननिल कुमारकन निट्टुसिरि नाटोप ॥ 19 ॥
अगिय लरिबल वस्त्र शरधिय हुगिसिदनु धूम्राक्षनक्षन
हगेयना हनुमंत नुब्बिबरि देळव वाडबन
बगेय मिक्करि भटन तेरिगे चिगिदु चिम्मिसिदनु वरूथव
नगलि तमर विमानतति तीव्रतेगे मणिरथव ॥ 20 ॥

गदाओं से पीटे जाने के कारण कपिसेना धड़ाधड़ धराशायी हो रही थी। पहाड़ चट्टानों से पेड़ों से कपि-सैनिकों से पीटे जाकर राक्षस करवट के बल गिर रहे थे। शवों का ढेर ढोने में असमर्थ हो धरती चटपटा रही थी। १७ राक्षस व्याधों के दूत तथा शत्रु को धूल में मिला देने में समर्थ धूम्राक्ष गरजते हुए कपिसेना का सामना करने के लिए खड़े हो गये। उसके सम्मुख युद्धक्रीडापटु, लंका की आग, युद्ध में त्रिनेत्री-सदृश वीर रामदूत वायुपुत्र हनुमानजी डट गये। १८ अत्यंत पराक्रमी राक्षस की क्रूर आँखों से निकली चिनगारियों के समूह से युक्त धुएँ की राशि ने हनुमान को छू लिया। यह देख शिवजी आदि भयभीत हुए। ज़बर्दस्त चिनगारियों तथा धुएँ से भरी उस आग को हनुमानजी के दीर्घ निःश्वास ने रोक लिया। १९ कपिसेना भयभीत हो —इस रीति से धूम्राक्ष ने अक्ष के शत्रु हनुमान को बाणों के समुद्र से ढाँप दिया। तब हनुमान ने किलकारियाँ भरते हुए बड़वानल की तरह चल रहे धूम्राक्ष के रथ में कूदकर उसे आकाश की तरफ़ उछाल दिया। उस रथ के धक्के के कारण आकाश में आ जुटे देवताओं के विमान तितर-बितर हो गये। २० धूम्राक्ष का

तेरु नभदोळ गिर्दुदा खळ वीर निर्दनु हलगे खड्गद
भैरवाकार दल दावश्रम चमत्कृतियो
वीर सुग्रीवादि सुभटर चारिवरिदट्टिदनु कोंदनु
कारमुगि लुब्वरद वोब्बिरिदलि कपिवलव ॥ 21 ॥
मुंड होरळिदुदा प्रजंघन रुंड विद्दुदु दधिमुखन दो-
र्दंड नेल कुरुळितु विजंघन वीर दुर्मुखन
दोंडे गरुळगलिदवु पनसन तुंडुगळु तूरिदवु मरुळ्गळ
तंडदलि तरिदोट्टिदनु मिक्काद यूथपर ॥ 22 ॥
तोळि नरेघायदलि नोंदनु नील-नळ गज गवय रुमरु-
व्वाळुतन कनसाय्तु केसरि गंधमादनर
हेळदिरु हेसरेनिसि दण्णग ळोळि मुरिदुदु होक्कनव वळि
काळुगळ देवनु धराधीश्वरन मोहरव ॥ 23 ॥
विद्द रथदोत्तिनलि हगेवन होद्दिदगेय हनुमंत-काणदे
गुद्दि कोंडनु तन्न तानौडुगळ नोडेयगिदु
इद्दनवनीक्षिसलु रघुनृप निद्द दळदलि कंडुहलुगळ
नुद्दि हारुतलेरगिदनु धूम्राक्ष राक्षसन ॥ 24 ॥

रथ आकाश में था। वह खड्ग निकाल ढाल हाथ में लिये भैरवरूप धारण कर आया। उसके शक्ति-चमत्कारों का क्या वर्णन करें? वीर सुग्रीवादि शत्रुवीरों को बड़ी चतुराई से चक्कर काट-काटकर पीट दिया। वर्षाऋतु के मेघ की तरह जोर-जोर से गरजते-तरजते कपिसेना की हत्या की। २१ प्रजंघ का कबंध गिरा। दधिमुख का रुंड लुढ़क गया। विजंघ की भुजाएँ कटकर धरती पर गिरीं। वीर दुर्मुख की आँतड़ियों का पुंज बाहर निकल आया। पनस के शरीर के टुकड़े पिशाचों के मध्य जा गिरे। अन्य दल-नायकों को धूम्राक्ष ने काटकर ढेर बना दिया। २२ नील अधघायल (अपनी) भुजा के कारण चटपटाने लगा। नल, गज, गवय, रुम इनका अहं तो स्वप्न की बात हुई। फिर केसरी, गंधमादन की क्या कहें? प्रसिद्ध वीरों का समूह तितर-बितर हो गया। तत्पश्चात् धूम्राक्ष ने वीरों के स्वामी राम की सेना में प्रवेश किया। २३ गिरे रथ के आसपास शत्रु को न देख सकने से हनुमान ने अपने ही शरीर पर मुक्के जमा लिये। दाँत-ओठ चबाते जब चारों ओर दृष्टि दौड़ायी तो रघुराम के पास-पड़ोस की सेना में धूम्राक्ष को देख दाँत किटकिटाने उछलते-कूदते आकर उस पर टूट पड़े। २४ हनुमान की भयानक मुट्

आरु निलबहु दनिलजन घनघोर मुष्टि निघातदलि शत
धार शतशत चूर्णवहुदुळिदवर पाडेनु
वीर धूम्राक्षन कपाल विदारिसितु समसीळिनलि सुर
नारियरु नगुतवन कोंडोय्दरु सरागदलि ॥ 25 ॥
चागुरें रणचमतुकार सरागरंजितवीर समरो-
द्योग साहसमल्ल भामझपूतु पाय्कॅनुत
आ गगनदमरप्रकर घन सागरध्वनियिंद कंपिन
पूगळलि होंदॅसिदरु हरिसिरि चरण सेवकन ॥ 26 ॥
तॅगॅदु कोंडवु हॅणननल्लिय विगडभूतव्रात खळसुर
नगरिगॅय्दिद ननिलजन कोंडाडु तभ्रदलि
मगनॆ केळै कुशनॆ बलकै मगुचि निंदुदु मत्तॆमरुतन
मगन सरिसदलसुर बलकलि वज्रदंष्ट्रकन ॥ 27 ॥
तिरुगिदनु हनुमंतना कर्बुरन कदनकॆ कंडु मुगिदनु
करवनंगद बॅससबेकी बह निशाचरन
धुरकॆ तन्नुव नॅनलु पोगॅदरि दिशापटनंगदन कै-
नॅरवि गॊत्ताळागि होगिसिद नसुरसैनिकव ॥ 28 ॥

की मार का सामना कौन कर सकता है? वज्रायुध भी (उस मार के कारण) सौ-सौ टुकड़े होकर चकनाचूर होता है; तब अन्यों की क्या कहें? वीर धूम्राक्ष का मस्तक बीच में कटकर बराबर के दो टुकड़ों में विभाजित हुआ। स्वर्गलोक की स्त्रियाँ हर्ष से फूलीं तथा उसको (धूम्राक्ष को) अपने यहाँ ले गयीं। २५ "हे युद्धकुशली! क्या कमाल किया तुमने! निरांतक युद्ध करनेवाले हे वीर! धन्य-धन्य! युद्धकार्य में साहस प्रकट करनेवाले हे महावीर! तू पहलवान है—इसमें कोई शक नहीं। वाह रे वाह! तेरी बराबरी कौन करे?" इस तरह प्रशंसा का पुल बाँधते आकाश में उपस्थित देवताओं ने समुद्रघोष के समान जयध्वनि करते सुगंधित पुष्पों की वर्षा श्रीहरि के चरणसेवक हनुमान पर की। २६ वहाँ के भयानक भूतों ने राक्षस का शव उठा लिया। आकाश-मार्ग से स्वर्ग की राजधानी जाते हुए धूम्राक्ष हनुमान की प्रशंसा करते जा रहे थे। सुनो बेटे कुश! वीर वज्रदंष्ट्र की राक्षस-सेना लौटकर हनुमान का सामना करते खड़ी हो गयी। २७ वज्रदंष्ट्र से युद्ध करने हनुमान मुड़ गये। यह देख अंगद सामने उपस्थित होकर हनुमान से हाथ जोड़े प्रार्थना करने लगे— "अब चढ़ाई कर आनेवाले इस राक्षस से लड़ने का सुअवसर मुझे प्रदान करें।" शत्रु को तितर-बितर करने में समर्थ

आजि बिड्रिसो हॉक्कनो युवराज नॊब्बनॆ रणव जयमुख
दोजॆ यड्रियलु बारदॆलॆ सौमित्रि होगॆनलु
आ जितक्रोधगॆ कैमुगिदा जयाहवशील बळिक वि-
डौज सुतनॆडॆगॆ नडॆदनु धनॆवनॊदड्रिसुत ॥ 29 ॥

अदु बळिक कल्पावसानद लुदिसिदंबुधियंतॆ चतुरंग-
गद चडाळतॆयिंद चूरिसुवस्त्र शस्त्रदलि
हॊदॆसि कॊंड्डु कपिबलव नुरि सदनदॊळगॆद्दंतॆ रिपुगळ
नॊदॆदु भुगुभुगिसित्तु सेनाशिखि भटांगदलि ॥ 30 ॥

बॆरसिदवु बलवॆरडु बलुकर्बुरर वाद्यदवीर कपि सं-
गरद संकुलरव विळॆयनॊदॆद तळ कुच्चळिसॆ
गिरि महीरुह खड्ग खर्पर दुरु रणाद्भुत रभस गगनद
शिरव नॊदॆ दुप्परिसि हळचितु सेनॆ सेनॆयलि ॥ 31 ॥

हिडिदिड्डुव करिघटॆय मेघद झडिव खड्गद मिंचुगळ सिडि
सिडिदु सूसुव मकुट मणिगणदालि कल्लुगळ
गडणिसिद घायगळ लभ्रव तुड्कि तूळुव रकुतवारिय
मडलिरिद मळॆगाल रंजिसितसम समरदलि ॥ 32 ॥

वीर हनुमान ने कहा— "जाओ"। इस प्रकार अनुमति देकर उसकी सुरक्षा के लिए विभीषण की सेना भेजी। २८ "कह नहीं सकता कि यह युद्ध कितना भयानक होगा! क्या अकेला युवराज युद्ध में गया? हार-जीत का निर्णय कठिन है। (अतः) लक्ष्मण, तू भी साथ दे।" इस प्रकार राम के कहने पर क्रोधविजयी राम को प्रणाम कर युद्ध विजयशाली गुणसंपन्न लक्ष्मण अपना धनुष झुलाते हुए वाली के पुत्र अंगद के पास आए। २९ प्रलयकालीन समुद्र की तरह अत्युग्र रूप धारण किए चतुरंग-सेना ने आग उगलते अस्त्र-शस्त्रों से कपिसेना को ढक दिया। घर में आग लगने पर जैसे ज्वालाएँ उठती हैं, उसी प्रकार सैनिकों की वीरता की क्रोधाग्नि शत्रुओं को लात मारती 'धू-धू' कर ऊपर उठी। ३० दोनों सेनाएँ एक-दूसरे से टकरायीं। राक्षसों के बाजों की ध्वनि तथा कपिसेना की घुड़कियों की गर्जना से संयुक्त शोरगुल ने धरती को रौंदकर पाताल पहुँचा दिया। पेड़, पहाड़ तथा खड्ग, परिघ आदि के आघात की तीव्रता ने मानों आकाश को धक्का दिया। एक-दूसरी सेनाएँ एक-दूसरी पर अत्युग्र रीति से चढ़ाई कर बैठीं। ३१ इस तरह जूझी हुई सेनाओं के दृश्य ने मानों वर्षाऋतु का दृश्य पैदा कर दिया। जैसे—

अलरिदुरु पलाश शाखावळिय विपिनवो विपुळतर शा-
ल्मलिय हूदुरुगलिन हॊदरिन बहळ काननवो
तळित कुसुमित किंशुकावन वळयवो निर्दळित रक्तो-
त्पलद कॊळगळो कॊळुगुळवो ता हॊगळ लरिदॆंद ॥ 33 ॥
जाळिसितु जज्झार बलरुब्बाळुतन वॆरडंकदलि कै-
मेळविसिदुदु वज्रदंष्ट्रांगदरिगति मथन
कीळुमद मेल्मदद दिगुशुंडाल तलॆगोट्टंतॆ हळचिद
रोळि जरियलु जगद जडबिडलमर रालिगळ ॥ 34 ॥
हेळलच्चरि वालिजन कैजाळिगॆय बॆट्टगळ बोगरिय
बीळुगळ दंभोळिदंष्ट्रन वुन्नतायुधद
काळ रक्कस नुग्रपरिघद तूळिकॆय तोटिगळ धाळा
धूळितुंबितु कडॆगॆ कमल भवांड मंडलव ॥ 35 ॥
इडुव हॊडॆव महाद्रि परिघद लडसि हुट्टिद धूमदलि मं-
जडसिदंबरदंदवादुदु भुवन विस्तार

कपिसेना पर टूट पड़ी गजसेना मेघ-सदृश थी; चमकती तलवारें बिजली थीं; नायकों के मुकुट से छिटकते मोती-माणिक्य आदि मणियाँ ओलों के सदृश थीं। अनगिनत घायलों के शरीर से उड़ते रक्त के छींटे वर्षा की बूंदें थीं। इस प्रकार वहाँ भयानक वर्षाऋतु थी। ३२ वाल्मीकि ने युद्धरंगस्थली का वर्णन करते हुए यों कहा— "खिले पलाश वन वृक्षों की डालियाँ हैं जो रक्ताभरंजित थीं, या भारी पुष्प-गुच्छों से लदे गूलर के पेड़ों का वन है? अथवा कोंपल तथा फूल जिसके अभी-अभी खिले हैं —ऐसे पलाश-वृक्षों से भरा वन हो या खिले लाल कमलों के सरोवर हों —किस प्रकार इसका वर्णन करूँ! समझ में नहीं आता।" ३३ दोनों सेनाओं में महान बलशालियों की वीरता विराजमान होने लगी। वज्रदंष्ट्र तथा अंगद की बड़ी भयानक लड़ाई छिड़ गयी। निम्नस्तर के तथा उच्चस्तर के दिग्गज जैसे एक-दूसरे के मस्तक से टकरा रहे हों, उस अंदाज़ से वज्रदंष्ट्र तथा अंगद जब एक-दूसरे से टकराए तो धरती की कतारें धसकीं तथा देवताओं का दृष्टि-मांद्य दूर हुआ। ३४ इसका वर्णन आश्चर्यकारक है। अंगद के हाथ तानकर फेंके गये पहाड़ लट्टू की तरह गिर रहे थे तो उस कालराक्षस वज्रदंष्ट्र के श्रेष्ठ आयुधों के तथा परिघायुध से हुई चढ़ाई का शोर सारे ब्रह्मांड भर में व्याप्त हो गया। ३५ अंगद से फेंके जा रहे भारी पहाड़ तथा वज्रदंष्ट्र से पीटे जा रहे परिघायुध इनके घर्षण से उत्पन्न हुए धुएँ से सारा आकाश व्याप्त होकर कुहरे से

किडिय हब्बुगें हॊंदॆसिदवु नभदुड्डु गणौघवनमम कदनद
कडुहु मिक्कुदु वीर जंभन पाकशासनन ॥ 36 ॥
नॆरॆयदंबर वीरतनदब्बरिन रणका रणरसद क-
ट्टॊऱ्‍तॆ सूसितु शैल परिघायुधगळनु बिसुट्टु
तॆऱहु गॊंडु तळायदलि बॊब्बिऱिदु बाहप्पळिसि निंदिद
रऱ्चॆ नॆलकुक्करिसॆ करि कमठाहि नायकरु ॥ 37 ॥
वामकर दंडॆगळ दंडॆय मैमुरुवि नुप्परद मुष्टिय
भीम वाहा भ्रुकुटि वद्धारुण विलोचनद
धूमधूत शिखास्फुलिंग स्तोम दुश्वास प्रपूरद
तामसद तवकिगरु तिविदाडिदरु तीव्रदलि ॥ 38 ॥
अणॆदणॆदु तिवितिविद मुष्टिय जुणुगुगिडि गुडियिऱिदु गगनां-
गणव तुंबिदवा लयानलनुगुळु गिडियंतॆ
फणि विभूषांधासुरर बलुकणिय ववरवनसुरकुल भी-
षण हिरण्यकरदट्टु मिक्कुदु हेळलेनॆंद ॥ 39 ॥

आच्छादित-सा दीख पड़ने लगा। भारी ज़बर्दस्त चिनगारियाँ जो निकलीं, उनसे नक्षत्र ढँक गये। वीर जंभासुर तथा इन्द्र के मध्य हुए युद्ध की तीव्रता से बढ़कर वज्रदंष्ट्र तथा अंगद के बीच युद्ध हुआ। ३६ इनके वीरता भरे युद्ध की उग्रता के लिए आकाश काफ़ी न हुआ। दोनों वीरों के युद्धरस का प्रवाह बड़े वेग से बहने लगा। पहाड़ तथा परिघायुध को फेंककर, समतल प्रदेश में जगह बनाए, भुजाएँ ठोंकते हुए दोनों वीर खड़े हुए। इतने ज़ोर से पैर ठोंककर खड़े रहे कि धरती काँप उठी; धरती को धारे हाथी, कछुआ, आदिशेष दब गये। ३७ बायें हाथ की पकड़ के साथ धड़ को दबाते हुए, बदन को घुमाते हुए, मूठ ऊपर उठाकर, अपने ज़बर्दस्त भुजदण्डों को झपटाते हुए, त्योरियाँ चढ़ाकर, लाल-लाल आँखें दिखाते दीर्घ निःश्वास लेते हुए, धुआँ छोड़ते दीर्घ निःश्वास के साथ चिनगारियाँ निकालते तमोगुण-संपन्न युद्धोत्साही बड़े उन्मत्त होकर लड़े। ३८ खोंच-खोंचकर, मुक्के मार-मारकर लड़ते समय निकली चिनगारियों के, बड़े वेग के साथ प्रकट होने के कारण मानों प्रलयाग्नि ही आकाश भर में व्याप्त हो चिनगारियाँ उगल रही हो ऐसा लग रहा था। अंगद वज्रदंष्ट्र इनके बीच का युद्ध सर्पभूषण शिवजी तथा अंधकासुर के बीच हुए प्रचंड युद्ध को तथा बड़े भयानक राक्षस हिरण्यकशिपु की वीरता को भी मात कर गया। ३९ सिर, कान, गाल, कंधा, कपाल, गला,

शिरवु कर्नकपोल भुजकंधर महोरस्थळद ताणद
सरिसदलि सडगरिसिदवु सिडिलंते मुष्टिगळु
बुरुबुरनॆ बोरॆगळु नॆगॆदोडॆ दरुण जलदेरुगळ लिब्बरु
तरणि शशियवोलॊप्पिदरु कडॆवगल पौर्णमिय ॥ 40 ॥
ऎलवो नीव् रक्कसरु दिविजरिगॆलगणसुगळु नावु कपिगळु-
गलभॆ गंजुवॆ वॆमगॆ भयवहुदसुरदर्शनकॆ
कलह निम्मदु बिड्रिसु कडुकोमलवु नम्मय समरवॆरडर
हळहळिकॆयनु नोडॆनुत तिविदनु निशाचरन ॥ 41 ॥
हारि बिद्दनु नॆलकॆ रकुतव कारिदनु गरिगरिनॆ बॆरॆत श-
रीर दलुगुव कैय कंपिसु वंघ्रियुगळगळ
गूरिडुव जलदरुण वारिय जारिदास्यद रणभयाप
स्मारकद खळनिर्दनूर्ध्वश्वासलहरियलि ॥ 42 ॥
भुजयुगव सूळैसि सत्कुतु भुजरिगब्बर गॊट्टु रक्ष
ध्वजनि गार्यॆदुब्बि मलॊदॊलॆदरि निशाचरन
अजकपालिय बळिय भूतव्रजकॆ कैवर्तिसि खरासुर
विजय गभिवंदिसुत कॆदरिद नुळिद खळबलव ॥ 43 ॥

चौड़ी छाती वग़ैरहों को एकदम आमने-सामने लाकर दोनों वीर अपनी ज़बर्दस्त मूठों की मार एक-दूसरे पर बिजली की तरह गिरा रहे थे। जहाँ-जहाँ मार पड़ी थी, वहाँ-वहाँ धड़ाधड़ मांस-खंड सूझकर, फिर फूटकर जब घावों से रक्त-स्राव होने लगा तो पूर्णिमा के शाम के सूर्य-चंद्र-सदृश अंगद और वज्रदंष्ट्र विभाजित हुए। ४० "रे रे तुम तो राक्षस हो; देवताओं के वैरी हो; प्रतिस्पर्धी हो। हम तो ठहरे बन्दर। शोरग़ुल से घबराते हैं। राक्षसों से तो हम भयभीत होते हैं। तुम्हारा युद्ध तो बड़ा भयानक है। हमारा युद्ध तो अति कोमल है —इन दोनों के डाँवाँडोल स्थिति को देख।" कहते हुए अंगद ने वज्रदंष्ट्र को घूँसा मारा। ४१ वज्रदंष्ट्र उछलकर जो धरती पर गिरा तो खून कै कर बैठा। मार के कारण सारा शरीर वेदना से भर गया। हाथ-पैर काँपने लगे। बह जाते खून के कारण उसका मुखड़ा कांतिहीन बना। युद्ध के भय के मारे वज्रदंष्ट्र मूर्च्छित हो दीर्घ निःश्वास ले रहा था। ४२ अंगद ने अपने भुजदंडों को ठोंकते हुए खुशी के मारे जोर से जो गर्जना की तो देवता सुप्रसन्न हुए। फिर एक बार जोर से घुड़की भरते खुशी के मारे राक्षस-सेना का सामना किया। शत्रु-राक्षस को ब्रह्माजी तथा शिवजी के पास

बळिक तळघातदलि मोळकैगळलि मडदलि मुष्टियलि का-
ल्दुळिय लडवोय्दिलनलि तडॆगालिनलि मुडुहिनलि
कोळ्गुळद भूताळि कैचप्पळॆय लोदगलु नगरदगळिन
वळय परियंतट्टि कोंदनु खळचतुर्बलव ॥ 44 ॥
इळिदु सुरपति तन्न मोम्मन कलहकहति परिणमिसि सुरकुज-
दलर दंडॆय हाय्कि हारांगणद भूषणव
विलसदेकावळिय मणिकुंडलव नित्तु सरागरस दो-
ब्बुळिय पुळकदलप्पि सरिदनु सुरर सभॆगागि ॥ 45 ॥
तिरुगिदनु बळिकंगदनु दिनकर कुलेंद्रन बळिगॆ भटरि-
ब्बरु सुमित्रासूनु सहितैदिदरु नरहरिय
तरणि संध्या समय कर्मातरव निर्वतिसलु पश्चिम
शरधि गिळिदनु शिबिर कभिमुखनादना राम ॥ 46 ॥

के भूतगणों को समर्पित करते हुए खरासुर-विजयी श्रीराम की वंदना करते बची-खुची राक्षस-सेना को तितर-बितर कर दिया । ४३ उसके बाद, अंगद ने पैरों से लातें जमाते, कुहनी से खोंचते, एड़ी तथा मुक्कों से पीटते, पैर तले लेकर रौंदते, आड़े गिराकर, पैर से रुकावट डाल गिराते, भुजदंडों से ठोंकते-पीटते, राक्षस की चतुरंग सेना को खदेड़कर लंकानगरी के प्रवेश-द्वार तक भगाते मार डाला । रण-पिशाच तालियाँ बजाते इस दृश्य को देख रहे थे । ४४ देवराज इन्द्र आकाश से उतर आये । अपने (प्रपौत्र) पोते के युद्ध-कौशल्य से प्रसन्न हो कल्पवृक्ष के फूलों की माला अंगद को पहनायी । फिर हार, अंगों के आभूषण, एकावली माला, कान के हीरे के आभूषण आदि के देते आनंदरस के उमड़ने के कारण रोमांचित हो अंगद को भुजाओं में कस लिया । ४५ तदनंतर अंगद युद्ध-भूमि से लौटकर रविकुल स्वामी श्रीराम के पास आया । हनुमान अंगद दोनों लक्ष्मण को साथ लेकर नरसिंह-अवतारी श्रीराम के पास पहुँचे । संध्याकालीन दिनचर्या से सम्बन्धित कर्तव्य निभाते भगवान सूर्य पश्चिम समुद्र में उतरे (डूबे) । श्रीराम अपने शिविर की ओर लौटे । ४६

हदिनेंटनेय संधि

सूचने— रणभयंकर भटन नसुराग्रणिय कंपन नसम समरांगण दोळगॆ मुरिदनिल-सुत मॆरॆदनु पराक्रमव ।

केळिरै कुशलवरु कपिगळ काळगद जयवार्तॆ सभॆयलि
केळिसितु कडुभयदला कैकसॆयनंदनन
मौळियोलहिन लखिळ मणिगण मौळिगळ बीळ्कोट्टु चिंता
बालकिय बळिविडिदु होक्कनु तन्नमंदिरव ।। 1 ।।
आळु तनवति बलुहु रक्कसगाळगवु कडु बिरिसु समर श-
राळितागदॆ माणदॆंदिन नधिक भीतियलि
ढाळिसुव मणिकवच वज्रद ताळिगळ नळवडिसि किरणद
पाळॆयद सुय्दानदलि बंदडर्द नंबरव ।। 2 ।।
उदयमुखदलि लग्गॆवरॆ मोळगिदवु दुर्गद मेलॆ गज ह-
ण्णिदवु हय हल्लणिसिदवु रथ हूडिदवु रणकॆ
पदचरावळि पाडुपंथद मददहंकारदलि शरधनु-
गदॆ कृपाणद पाशदिदनुवाद रोग्गिनलि ।। 3 ।।

अठारहवीं संधि

सूचना— युद्धभयंकर राक्षसवीर अकंपन को विषमयुद्ध में मारकर हनुमान ने अपना पराक्रम प्रदर्शित किया ।

हे कुश-लव ! सुनो । युद्ध में कपियों की जीत का समाचार पाकर कैकसा के पुत्र रावण की सभा में भय व्याप्त हुआ । सभी नायकों को सिर हिलाकर इशारे से सूचना देकर रवाना कर रावण ने चिंतामग्न हो अपने राजमहल में प्रवेश किया । १ "राक्षसों का पौरुष अत्यंत बलवान है । राक्षसों का युद्ध अत्यंत जबर्दस्त है । युद्ध के बाण लगे बिना नहीं रहते ।" —यों सोचकर अत्यंत भयभीत हो चन्द्रमा ने चमकते रत्न-कवच तथा वज्र के रक्षापदक को धारण कर किरणों की शिबिका में अपने को सुरक्षित कर आकाश में आरूढ़ हुए । २ सूरज के उगते समय दुर्ग पर चढ़ाई के बाजे (युद्ध-वाद्य) बजने लगे । हाथियों को युद्ध के के लिए तैयार किया गया । घोड़ों पर जीन कसी गयी । रथ तैनात किये गये । पैदल सैनिक युद्ध में जीतने की क़सम खाते हुए मदोन्मत्त हो अपनी अहं में गदा, खड्ग, पाश धारणकर झुंड के झुंड आ जुटे युद्ध के लिए तैयार हुए । ३ आयुधों से लैस घुड़सवार, षण्टायिनी मदोन्मत्त

आयुधद संवरणेयलि वानायुजद वाहकरु मदष-
ष्टायिनी दंतावळा रोहकरु होंगळिकेय
राय रथिकरु चटुळ चरण चडायमानित रिळिदु दा खळ
रायदुर्गव मोळगुवगणित वाद्यघोषदलि ॥ 4 ॥

ओलगदोळिद्दसुर रायन बीळुकोंडन कंपनिन्नू
रेळरक्षोहिणिय संख्येयलसम संगरके
आळ मेळापदलि कैदुग ळोळि वेळगिन लमर सेना
जाल सहितमरेंद्र बंदनु नोडलाहवव ॥ 5 ॥

हेळलेनदसुर कैदुग ळोळि वेळगिनलिभ तुरंग भ-
टाळिगळ मणिगणद जोडिन झाडि वेळगिनलि
ढाळिसितु थळथळने ध्रुवनि मेलुभागद जांड खर्पर
हेळदिर रवि शिखि सुधाकररुब्बटेयनेंद ॥ 6 ॥

दळसहित दाळियलि दुर्गव निळिदनवनंबोधि मगुचलु
मळल मणियन लहींद्र मुग्गे नगेंद्रकुलबळुके
कळवळिसे कमरेंद्र नंदिसे बलद भारकिभेंद्रचय भय
बळिसलिसे बहिर्मुखेंद्राद्यखिळ सुरबलव ॥ 7 ॥

हाथियों के महावत, कीर्तिशाली रथारोही, शीघ्रगति के पैदल सैनिक, बजते अनगिनत गाजे-वाजों के साथ रावण के दुर्ग से उतर आये। ४ सभाभवन में, राक्षसराजा से बिदा लेकर अकंप दो सौ अक्षौहिणी सेना के साथ जगमगाते आयुधों की रोशनी के मध्य युद्ध के लिए आया। देवेन्द्र युद्ध का तमाशा देखने अपनी देव-सेना के साथ आया। ५ इन सबका कैसे वर्णन करूँ? राक्षसों के असंख्यात आयुधों का प्रकाश तथा हाथी-घोड़ों पर सवार होकर लड़नेवाले योद्धाओं के शरीर पर के असंख्य रत्नों की अत्यधिक कांति इकट्ठे होकर ध्रुवलोक से ऊपर के ब्रह्मांड के विभाग को जगमगाने लगी। फिर सूर्य, अग्नि, चन्द्रमाओं की अधिकता के बारे में पूछना क्या शेष रहा —इस प्रकार वाल्मीकि ने वर्णन किया। ६ अकंप सेना-सहित शत्रु पर चढ़ाई करने के लिए उतर आया। उस संघर्ष में सागर ने रेत आगे बढ़ा दी। आदिशेष ने फन की मणि झुका दी। कुलपर्वत काँपने लगे। कूर्म (कछुआ) घबराया। सेना के बोझ के कारण दिग्गज थर-थर काँपे। देवेन्द्रादि देवतासमूह भयभीत हुआ। ७ अत्यंत परिशुद्ध मोक्ष-विद्या के सम्मुख जैसे अन्य सामान्य विद्याओं का

अरिबलद गमनवनु कपिकुल दरस काणुत कंडुकाणद
परियवोलु परमाणुविन भावनेय भंगियलि
इरलु संधिसिदधिक निर्मळ परमविद्येय मुंदे विद्येय
नेरवि निलुकुववोलु मोळगुव वाद्यरभसदलि ॥ 8 ॥
कोणकु वन्नबरिवरु बलुसै रणेय लिर्दरु शून्यवादद
कुणिकै गोकुव तत्वमय सिद्धांत दोड्डवद
भणितेयलि वळिकोक्क लिक्कितु कुणिदु कुबुबिरिदाडि भैरव
गण दिनेंद्र कुलेंद्र बलवेले कंदकेळेद ॥ 9 ॥
तोळ तुळुकिन डोक्करद कैकालु मैदळकुगळ मुष्टिय
बाळ हतिगळ बेट्टदिड्डुगळसि महीरुहद
बोळेगळ कैगुंडुगळ बलुगाळगद भारणेय बलुहु भ-
डाळिसुत लिर्दुदु चतुर्दश भुवन वीथिगळ ॥ 10 ॥
औत्तु बरदाहवद सैनिकदत्तणित्तण बोब्बेयब्बर
वेत्तुतिर्दुदु कमलजांड खटाह खर्परव
बित्तरिस लरिदादि वीरर हत्तुगेय हवणुगळ संगर
वेत्तनोडलु कोलेगे मेलदु बलुहदीगेंद ॥ 11 ॥

समूह ठहरता है, उसी प्रकार सुग्रीव ने शत्रु-सेना का आगमन, एक अणु-सदृश समझकर उस ओर ध्यान ही नहीं दिया। युद्ध के बाजे ज़ोर-ज़ोर से बजने लगे। ८ शून्यवाद के फंदे में उलझते हुए तत्त्व-दर्शन के फलितांश की तरह राक्षसों से छेड़े जाने तक ये बड़ी सहनशीलता दिखाते, रहे। तत्पश्चात् शिवगण-सदृश विराजमान राम की सेना ने नाचते, घुड़कियाँ भरते शत्रु-सेना को पीट डाला। ९ भुजदंडों को तानते, मुक्का जमाते, हाथ-पैर शरीर से गुत्थमगुत्थ होते, मूठों से एक-दूसरे को पीटते, तलवार से वार करते, प्रतिरोध में पहाड़-चट्टानों को दे पटकते, खड्ग तथा पेड़ों से पीटते, पैने तीर तथा हाथगोलों से एक-दूसरे पर प्रहार करते हुए उस बड़े भयानक युद्ध की तीव्रता चतुर्दश लोकों की गली-गली तक व्याप्त हो गयी। १० उस भारी भयानक युद्ध में दोनों तरफ़ की सेनाओं के भारी शोरगुल तथा चीख-पुकार के कारण ब्रह्मांड के फटने के कारण उस (ब्रह्मांड) गोलक का आधा हिस्सा ऊपर उठ आया था। यह सब वर्णनातीत है। उन वीरों के मध्य जुटे इस युद्ध को जिस किसी ढंग से, तरफ़ से देखो वह हत्या से बढ़कर भारी प्रबल रूप में दृष्टिगोचर हो रहा था। ११ युद्ध में मरे दोनों तरफ़ के सैनिकों को एक ओर ढेर

अळिदुभय सैनिकव नडकिदु बळलि भूतव्रात बेंवरनु
तोळॆदु कोंडवु हरिव रकुतद होळॆयोळगलदलि
होळलि गसुगळ नोय्व जवनव रळवळिदु बायारि बिडुप-
क्कलॆगळलि तुंबिदरु रकुतव नाजिरंगदलि ॥ 12 ॥
मुरिदुदु भयद चूणि हूणिसि तरुबिदनु तवकदलकंपन
नुरुबु कणॆगळलिभतुरंगम रथ पदातियलि
मुरिदु दिनसुत नोडु मुंदकॆ तॆरहुगॊट्टुदु बट्टॆ बिद्दुदु
हरिब हनुमन मेलॆ बलुगाळग वकंपनन ॥ 13 ॥
तिरुगि मुरिदौकुव गवाक्षन नुरुळलॆच्चनु गंधमादन
नुरदोळॊरतॆय तोडिदनु तुळुकिदनु श्रोणितव
शरभ शतबलि गज गवय केसरि मयिंद रुमादिगळ सं-
गरद भंगव माडि कॆणकिद ननिलनंदनन ॥ 14 ॥
मुळिद रारै निलुववरु मैथिळिय गंडन गरुव किंकर
नोळगॆ कदनद लसुर सुर मानव भुजंगरलि
मलॆतु मोहिद गज़ तुरंगावळि वरूथ पदाति हरिपद
वळयदलि वधिसितु हरिकिंकरन कदनदलि ॥ 15 ॥

बनाए भूत-पिशाचों ने थककर युद्धरंग में प्रवाहित हो रहे रक्त की नदी में नहाकर, अपने शरीर पर के पसीने को साफ़ कर लिया। यम के दूतों ने यमनगरी को मृतकों के प्राण ढोते-ढोते थक जाने के कारण प्यास लगने से पीने के लिए मशक में (पानी भरने के चमड़े के थैले में) बहते रक्त को भर लिया। १२ दोनों तरफ़ की अगाड़ी सेना तितर-बितर हुई। सौगंध खाते अकंपन ने अत्यंत शीघ्रगामी बाण छोड़ते हाथी, घोड़े, रथ तथा पैदल (अपनी) सेना से वानर-सेना को रोककर "देखो सुग्रीव, सेना (तुम्हारी) हार गयी। हमें आगे बढ़ने का मार्ग दे गयी। अनुकंपन के साथ युद्ध करने की ज़िम्मेदारी अब हनुमान पर है।" —इस तरह कहा। १३ पुनः लौट आकर चढ़ाई करनेवाले गवाक्ष पर इस तरह बाण चलाया कि वह लुढ़क जाय; गंधमादन की छाती फोड़कर रक्त का नाला बहाया; शरभ, शतबली, गज, गवय, केसरी, मैंद, रुम वग़ैरहों के युद्ध को विनष्ट कर अकंपन ने मारुति को छेड़ा। १४ मैथिली के पति श्रीराम के सेवक हनुमान अगर क्रोधित हों तो राक्षस, देवता, मानव व सर्पों में कौन उनके सामने खड़े रह सकते हैं। श्रीहरि के सेवक के (उस) युद्ध में मस्ती से चढ़ आनेवाले हाथी, घोड़े, रथ,

मुरिद बल लंकाभयंकर नुरुबे गानुत संधिसितु कै
मरॆदने खळवीरनॆ सुतिर्दनु नभोगणद
तोरॆय जल कॆंपागॆ कपिगळ हरिदलॆय रकुतदलि हनुमन
नरसि हूळिद नसुर नसम शरौघशरधियलि ॥ 16 ॥
अहह हनुमन हवणदेना गिहुदो सैरणॆ गुचित वल्लॆनु
तहिमकर सुत नील नळ जांबव सुषेणकरु
बहळ बलसहितब्बरणॆ मिगॆ महिजकुल कुलपर्वतंगळ
बहळतॆय भारदलि मुक्कुरुकिदरकंपनन ॥ 17 ॥
साल बकुळ करंजि कम्मर बेल बेविब्बडलॆ तेगरु
ठाळ तंडस तडस तुग्गिलु तदिकु तपसिगळ
जाल गेरसॆ नॆल्लि बिल्व तमालतरु मॊदलाद वनभू
जाळियलि हूळिदरकंपननसम रणरथव ॥ 18 ॥
मुरिमुरिदुगिरि दुदिगळलि हासरॆ गळलि हॆग्गुंडिनलि बलु
जरॆगळल्लि बिडु गल्गळलि बॊब्बिरिदु रिपुभटन
तरुबिदरु तरुगिरिय मुरिदुरॆ कॊरॆदु सूसिदु हरिबलव हॆ-
द्दॊरॆयवॊलु हरॆगडिदु हाय्सिदनसुर निजरथव ॥ 19 ॥

पैदल सैनिक वग़ैरः इतने थे कि वे सब आकाश भर में व्याप्त हो गये। १५ तितर-बितर हुई वानर-सेना ने लंकाभयंकर हनुमान की वीरता को सहारा देते हुए राक्षस-सेना का सामना किया। राक्षस-वीर अकंपन हाथ पर हाथ धरे बैठा न रहा। उसने इस प्रकार बाण चलाए कि कपियों के माथे फूट जाने से फौवारे की तरह छिड़कते रक्त से आकाशगंगा का पानी लाल हो जाय। फिर अकंपन ने हनुमान को ढूंढ़कर उसे बाणों के समुद्र में डुबो दिया। १६ "हाय हाय! न जाने हनुमान किस हालत में है? अब सब्र कर बैठे रहना ठीक नहीं"; इस तरह कहते सूर्य-पुत्र सुग्रीव, नील, नल, जांबव, सुषेण आदि बहुत बड़ी सेना के साथ चीखते-चिल्लाते भारी-भरकम पेड़-पहाड़ों को हाथ में उठाए अकंपन को घेर लेते हैं। १७ सालवृक्ष, बकुलवृक्ष, कदंब, लुहारवृक्ष, बेल, तपसि, नीम, सागवान, सीसम, रीठा, हाथीबेल, भिलावाँ, आँवला, बहेड़ा, करंजा वग़ैरः जंगली पेड़ों को हाथ में उठाकर वानरवीरों ने अकंपन के असाधारण रथ को घेर लिया। १८ वानरवीरों ने नुकीले चट्टान, चपटे पत्थर, भारी गोले (गोलाकार पत्थर), बड़े-बड़े चट्टान तथा पहाड़ों के टुकड़े, हाथ में उठाकर, घुमा-फिराकर शत्रु पर फेंकते हुए, भारी गर्जना करते

आतुनिद सुषेण जांबव वीतिहोत्नज बल महाब्धिगॆ
सेतुवनु कट्टिदनु बाणशिला प्रकीर्णदलि
मातदेनुळिदंगदादि महातिबलरनु लयद हुतवह
रेतन वॊलॊडॆ दुळिदु हाय्सिद नसुर मणिरथव ॥ 20 ॥

मुरिय लॆच्चनु मुंचि मुंदण तरुबि दॊड्डनु बलदलौकिद
निर्रिसिनाहव मोहरव मॆदॆ गॆडहिदनु नॆलकॆ
जर्रॆदु कविदिडु वदट कपिगळ नुरुवि गुम्मिद निनकुलेंद्रन
नर्रसि हॊक्कनकंपननुपम राजमोहरव ॥ 21 ॥

इवनदारॆ राक्षसांबर दिवसकर कटकदलि बल्लिद
निवनु कोळाहळिसिदनु कपिबलदॊ ळगलदलि
बवर नोडलु लेसु महदुत्सवव वीर्रिद नॆवगॆ पॆसरे
निवन हेळॆंदरस बॆसगॊंडनु विभीषणन ॥ 22 ॥

जीय समरद सप्तसेना नायकरिगिव मॊदलिगनु ब-
ज्रायुधन गॆलुवंदु जयवाप्तिवन दॆसॆयिद
सायकद कट्टॆसुणॆयलि कात्यायिनीशंगॆणॆ रणांगण
दाय बलुही खळन कंपननॆंब पॆसरॆंद ॥ 23 ॥

हुए शत्रु को आक्रमण से रोका। अकंपन ने इन पेड़-पहाड़ों को तोड़कर, चीरकर फेंकते हुए वानर-सेना को बीच में ही काटकर बड़ी नदी-सदृश मार्ग (रास्ता) बनाए अपने रथ को दौड़ाया। १९ सामना करते खड़े हुए सुषेण, जांबव, नील इनकी सेना रूपी सागर पर बाण रूपी पत्थरों से अकंपन ने सेतु बाँधा। अन्य अंगदादि महावीरों पर प्रलयकालीन रुद्र की तरह राक्षस ने अपना रथ दौड़ाया। २० सामने से आकर रोक रही सेना को अकंपन ने बाण चलाकर तितर-बितर कर दिया। जबर्दस्त व्यूह बनाकर घेरनेवाली सेना को काट डालकर धरती पर ढेर बना दिया। ताने देते हुए, घिर आकर पीटनेवाले बलशाली कपियों को पीट-पीटकर गिरा दिया। तत्पश्चात् अकंपन ने राम को ढूँढ़ते राजसेना में प्रवेश किया। २१ "राक्षस रूपी आकाश में सूरज की तरह विराजमान यह कौन है? यह समर्थ है। कपिसेना में इसने कोलाहल मचा दिया है। इसका युद्ध देखने में बड़ा सुन्दर है। हमें इसने प्रसन्न किया है। बताओ, इसका नाम क्या है?" इस प्रकार राम ने विभीषण से पूछा। २२ "राजन्, युद्ध के लिए तैनात सात सेना-नायकों में यह पहला है। देवेन्द्र के साथ हुए युद्ध में इसके कारण जीत हुई। यह बाण-प्रयोग में शिवजी-सदृश है। इसकी वीरता विशिष्ट प्रकार की है।

अहुदु संशयविल्ल साहसियहनु संगर समयनु नि-
र्वहिस बल्लव बिल्लिनलि बलुबंटनहनेंनुत
सहभवन मोगनोडलमरर कहळेगळ कळकळद लल्लिगे
वहिलदलि विस्मित बलान्वित हनुम हरितंद ॥ 24 ॥
एनेलवो रघुरायरलि सुम्मानवे निनगकट शरसं-
धानवे कोदंडदीक्षाचार्य निदिरिनलि
आ नरेंद्रन सेवेगाळुमानिसरु नावु साकु निनगे-
म्मानिकेय नोडेनुत बोब्बिरिदु देरिगिदनु खळन ॥ 25 ॥
मदिसि मलेताहवद गज हरि पदविघातिगे केडेववोलु केडे
दोदेदु कोंदनकंपननु कंपदलि कळनोळगे
इदरु घोरककंपनेंबगद महाव्ययवेके नाय्गळ
बदुक सुडु सुडेनुत्त लोदेदनु वामपाददलि ॥ 26 ॥
कळचि सिडिदवु नेलके चवुकद हलुगळडिमेलाद वालिग
ळिळिदुदाननदिंद मूगिनलरुण जलधारे
सुळिदरा समयदलि जवनवरळिद हेणननु होत्तुकोंडरु
खळन हसुगेय कापिगरु हरसुत समीरजन ॥ 27 ॥

इसका नाम है— अकंपन।" —इस प्रकार विभीषण ने कहा। २३ "हाँ हाँ, तुम्हारा कहना बिलकुल सच है; यह तो साहसी है ही। युद्ध की जिम्मेदारी के निर्वाह में भी बड़ा समर्थ दीखता है। धनुष चलाने में भी बड़ा चतुर लगता है।" इस तरह कहते अपने भाई की ओर (राम ने) देखा। इतने में देवताओं के बजते बाजों की ध्वनि के साथ हनुमान अत्यंत शीघ्र वहाँ आ पहुँचे। २४ "क्यों रे, रघुवंशीय राजाओं के साथ यह क्या तू तमाशा कर रहा है? धनुर्विद्या गुरु के सम्मुख तू अपना बाण-प्रयोग (कौशल) दिखा रहा है? उस मानवश्रेष्ठ राम के किंकर मानव हैं। हमीं काफ़ी हैं तेरे लिए। हमारा प्रतिरोध कैसा है— ज़रा देखो।" इस तरह कहते हनुमान अकंपन पर टूट पड़ा। २५ मदोन्मत्त युद्ध का हाथी जैसे शेर के पैर की मार से लुढ़ककर धरती पर गिर जाता है, उसी प्रकार अकंपन को लात मारकर सहानुभूतिपूर्ण ढंग से हनुमान ने (उसे) मार डाला। "इतनी सी वीरता के लिए 'अकंपन' इतना बड़ा नाम? (नाम की कैसी विडंबना है।) कुत्ते की इस जिन्दगी को आग लगे।" इस तरह कहते हनुमान ने (अपने) बाएँ पैर से अकपन को लात लारी। २६ राक्षस के चौकोर दाँत टूटकर छिटक गये। आँख की पुतलियाँ उलट

अट्टिदनु बळिकुळिद रक्कस घट्टेयर नेंडगेंड हुतसुरन
पट्टणद पडियगळु परियंतीत नुब्बटेंगे
दिट्टिगळु कोरैसि तन्नुवनट्टदिरनेंदंजि रविकं-
गेंट्टु होक्कनु जलवनुरे बगिदपर जलधियलि ॥ 28 ॥
मुरिदर्नल्लि मेलें मारुति हरुषरस दुव्विनलि तोरवेय
पुरवराधिपनिन तनूजादिगळ गडणदलि
तिरुगिदनु पाळेयकें लंकापुरकें मुत्तिगें यादु दादिन
दिरुळु मुखदलि मुट्टळद कट्टळेय काहिनलि ॥ 29 ॥

हत्तोंबत्तनेय संधि

सूचनें— अप्रतिम रणरंग विजयमुज प्रतापननसुर सेनानि प्रहस्तन कोंडहिबनु समरदलि कलि नील ।

इरुळि नोलगदोळग कंपन मरण वार्तेय नसुर चक्रे-
श्वरन सभेयलि हरहिदरु हरिकारु रैतंदु
हरेंदु दोलग वाक्षणदलुब्बरद चिंतेयला प्रहस्तन
करेंसि कोळुतेकांत भवनकें वंदनसुरेंद्र ॥ 1 ॥

गयीं । मुँह और नाक से रक्त की धारा बह निकली । इतने में यम के दूत वहाँ आ पहुँचे । राक्षस के मुर्दे को बाँट लेने के लिए प्रतीक्षा कर रहे भूतों ने हनुमान की प्रशंसा करते (उस) मुर्दे को उठा लिया । २७ अन्य बचे-खुचे राक्षसवीरों की चाल विफल कर लंकानगरी के महाद्वार तक खदेड़ दिया । महान वीरतापूर्ण (अपनी) दृष्टि के उग्र प्रकाश से, दीप्ति से यह मुझे भगाए विना न रहेगा । यों सोचते भयभीत होते घबराते सूर्य पानी को चीरकर पश्चिम समुद्र में जा डूबे । २८ तत्पश्चात् हनुमान अत्यंत हर्षित होते हुए लौट आए । तोरवे के अधिपति अवतारी पुरुष राम सुग्रीवादियों के साथ शिविर लौटे । उस दिन रात के प्रथम प्रहर में, ज़बर्दस्त पहरे के साथ लंकानगरी पर चढ़ाई की । २९

उन्नीसवीं संधि

सूचना— युद्धविजय में असाधारण पराक्रमशाली राक्षस-सेनाधिपति प्रहस्त की युद्धवीर नील ने हत्या की ।

रात की (रावण की) राजसभा भरी थी । (उस समय) गुप्तचरों ने आकर अकंपन की मृत्यु का समाचार दिया । सभा विसर्जित

रक्कसरु नावेंब भुजबल दुक्कुमुरिदुदु कदनदलि जय
वक्कि तिदी नेलेगे रिपुनृप कपिवरूथिनिगे
ओक्करसुगळ नम्मवरु गुहिलिक्कि नगुवंताय्तु दिविजरि
दक्कुपायवनेन नेणसिदे येंदनसुरेंद्र ॥ 2 ॥
ॲणिके यावुदु जीय जवननु गणिसदतिबल रळिदरी कपि-
गणद रणदलि रामलक्ष्मण राजियिन्नेंतो
रणगलियें चित्तेसु नरनेंबेणिके तोरदु रामनलिनेरु
कॆणकिदेवु मुच्चिर्द कल्पद किच्चें नावेंद ॥ 3 ॥
कट्टिदरु सागरव कलुमर मुट्टिनलि सुर नर भुजंगर
दिट्टिगोळ्ळद दुर्गवनु कॆडहिदरु कदनदलि
इट्टणिसि समरंगदलि सरि पॆट्टिनलि कादिदरु कडॆयलि
कट्टॆयनु कळचिदरु खळसेना महांबुधिय ॥ 4 ॥
इवरु कपिगळॆ जीय सीता युवतियरसनु नरनॆ नीनी
ह्रवणिनलि ह्रवणिसुव बुद्धिगॆ कार्णेनुरुपथव

हुई। उसी क्षण, अत्यंत चिंतित रावण प्रहस्त को साथ लेकर अपने एकांत गृह (गुप्तालोचना के कक्ष) में आया। १ "हमारे राक्षस होने के कारण, अहंकार-भरा जो हमारा भुजबल था वह आज टूट गया। शत्रुराजा की कपिसेना को युद्ध में आज तक विजय मिलती गयी। हमारे राक्षसों ने प्राण खो दिये। इसे देख अब देवता खिलखिलाकर हँसेंगे। इसके लिए तुमने क्या उपाय सोचा है?" —इस तरह रावण ने पूछा। २ "इसमें सोचने की क्या बात है? प्रभो! यम की भी परवाह न करनेवाले हमारी तरफ़ के बलशाली, कपियों के साथ के इस युद्ध में विनष्ट हुए। पता नहीं, राम-लक्ष्मण के साथ का युद्ध अब कैसा रहेगा? हे युद्धवीर! सुनिए। वैसे देखा जाय तो 'राम मानव है' —इस भावना की पुष्टि नहीं मिलती। (वे मानवोपरि कोई दिव्य शक्ति हैं।) लगता है कि हमने छिपी प्रलयाग्नि को छेड़ा है।" इस प्रकार प्रहस्त ने कहा। ३ "पत्थरों, पेड़ों को प्रयुक्त कर समुद्र पर सेतु बाँधा। जिस दुर्ग की ओर देवता, मानव, सर्प आँख भी उठा नहीं सकते, उस दुर्ग को इन्होंने युद्ध में विनष्ट कर दिया। युद्धरंग में इकट्ठे होकर आ जुटकर हमारी बराबरी में खड़े हो युद्ध किया। अंत में राक्षससेना-सागर की मर्यादा तोड़ डाली। ४ राजन्! क्या ये (सामान्य) कपि हैं? सीतापति (मामूली) मनुष्य है? इस तरह सोचती-समझती तुम्हारी बुद्धि के लिए क्या कहा जाय —समझ में नहीं आता। आपको विवेक सम्मत

अवगडिसिदॆ दुरुक्तियलि पेळ्दवर हिंदॆ तवानुजन नुडि
गवकळॆय नॆसगिदॆ विवेकिसदंदु नीनॆंद ॥ 5 ॥
मुऱिदुदरिगळ संधि कडॆयलि कुऱितनवु नाविन्नु काबॆ-
च्चरिकॆ पद्धति नडॆदुदिंदिन दिनकॆ छलपदद
ऊरुव विजयभुज प्रतापव नऱिकिसदॆ सॆणसुवदॆ नयदॆ
च्चरिकॆ ता वीळॆयव नॆनगॆंदसुर कैमुगिद ॥ 6 ॥
ऎसॆ मत्तेनसुविनलि बयलासॆयनु माडुवदु भटरिगॆ
हेसिकॆय हॊऱॆहोगला मातेकॆ नाळिनलि
वासि निनगिरलस्त्र शस्त्र विलासिगळ कूडिक्किको मे-
ळैसिको वारण वरूथ पदाति हयवलव ॥ 7 ॥
धुरकॆ निलुवडॆ नीनु तदनंतरद लिद्रारातिं सुमनं-
तरद लतिवल कुंभकर्णनु नम्म कटकदलि
निरुतविदु निश्चैसिदी नाल्वरिगॆ नॆन हुळ्ळति बलनु नी
हरिब विदुता निन्नदॆंदनु कॊळिसिदनु रणव ॥ 8 ॥

(सहमत) बातों को बतानेवालों को गालियाँ बकते आपने धिक्कार दिया। पूर्व में विवेक-रहित हो, अपने भाई की बातों से नाराज़ हो उसका तेजोवध किया।" इस तरह प्रहस्त ने कहा। ५ शत्रु के साथ की संधि (सुलह) की शर्तें नष्ट कर दी गयीं। आख़िर हम बकरे साबित हुए। अब तो, हमारी ज़िद को बड़ी होशियारी के साथ सँभालना चाहिए। हमारे महान भुजबल को व्यर्थ न होने देते हुए, बड़ी होशियारी के साथ लड़ने की नीति, इस अवसर पर अपनानी चाहिए, मैं बीड़ा उठाने को तैयार हूँ।" इस तरह कहते प्रहस्त ने हाथ जोड़े। ६ "ठीक ही तो है। और क्या कर सकते हैं? वीर अपने प्राणों को बचाना चाहें तो वही उनके लिए एक बोझ है, जिसे वे सह नहीं सकते। जाने दें। व्यर्थ की बातों से क्या प्रयोजन! अगर दाह तुममें हो तो कल के युद्ध के लिए शस्त्रास्त्र-परिणतों, तज्ञों को जुटाओ। हाथी, घोड़े, रथ, पैदल सिपाही आदियों की सेना इकट्ठा करो।" इस प्रकार रावण ने कहा। ७ "युद्धक्षेत्र में डटे रहने में तू हमारी सेना में प्रथम है। तदनंतर इन्द्रजित् का नाम लेना पड़ता है। उसके बाद महाबलशाली कुंभकर्ण का नाम आता है। यह सत्य कह रहा हूँ। इस अनुपात से (क्रमांक से) जिन चारों के बारे में मैंने निर्णय किया है, उनमें तू सुप्रसिद्ध बलशाली है। युद्ध की ज़िम्मेदारी अब तुम्हारी है।" इस तरह कहते रावण ने प्रहस्त को युद्ध की ज़िम्मेदारी सौंपी। ८ "हे राक्षसराज! सुनिए। अपने

अेले निशाचरराय चित्तै सोलिसुवेनु भुजविजय लक्ष्मिय
निलिसुवेनु रिपुविजय कीर्तिस्तंभ डंबरव
कलहविदु भवदीय भाग्यद बेळसु दैवाधीन तन्न-
ग्गळिकेगिदु तप्पलल रणवेनिसुवेनु तानेंद ॥ 9 ॥
अेंदु बीळ्कोंडा प्रहस्तन नंदमिगे तक्कैसि तन्नय
पोंदोडव तोडवित्तु पोंबट्टललि वीळेयव
संद सकल शिरःप्रधान गंदि निरुळि नलित्तु सुरकुल
बंदिकाररनु कळुहिदनु बळिका चमूपतिय ॥ 10 ॥
बरिसिदनु बळिका प्रहस्तनु हर सरोज भवामरेंद्रर
सरकु माडद साहसान्वित सुभट संकुलव
तरिसि निखिळाभरण दिव्यांबरदि मन्निसि कुडितेयलि क-
र्पुरव मोगे मोगेदित्तु बोळैसिदनु निजबलव ॥ 11 ॥
करिघटेय हदिनैदु कोटिय वररथव निप्पत्तु कोटिय
तुरगवनु तोंबत्तु कोटिय नसुर पदचरर
बरह केरडर्बुदवनादिन दिरुळु मेळैसिदनु कूगुव
करेव हूडुव हल्लणिप होदरेद्द रभसदलि ॥ 12 ॥

भुजबल से विजयलक्ष्मी को प्रसन्न कर लूंगा। शत्रु को जीतकर विजय-ध्वज उड़ाऊँगा। यह युद्ध तेरे अदृष्ट तथा विधि के आधीन है। लेकिन मैं तो इस प्रकार लड़ूंगा कि मेरी कीर्ति को कहीं कलंकित न होना पड़े तथा विजयश्री अपमानित न होवे।" इस तरह प्रहस्त ने कहा। ९ इस तरह कहकर, युद्ध के लिए रवाना हो रहे प्रहस्त को अत्यानंद से रावण ने आलिंगित कर लिया। देवताओं को क़ैद करनेवाले राक्षसराज रावण ने अपने उस प्रधानमंत्री (प्रहस्त) को, उस दिन रात को सोने के बहुमूल्य आभूषण भेंट चढ़ाए। उसके बाद सोने की थाल में बीड़ा देकर सेनाधिपति प्रहस्त को बिदा किया। १० तननंतर शिवजी, ब्रह्माजी, देवेन्द्र आदियों की परवाह न करनेवाले साहसी योद्धाओं को प्रहस्त ने बुलवा लिया। समस्त आभूषणों को, दिव्य वस्त्रों को मँगवाकर उन्हें देकर, उनका गौरव बढ़ाते हुए अंजली में कर्पूरमिश्रित गंध दे-देकर अपनी सेना का आदर-गौरव किया। ११ पन्द्रह करोड़ गज-सेना, बीस करोड़ रथ सेना नब्बे करोड़ की अश्व-सेना, दो अर्बुद राक्षसों की पैदल-सेना को, उसी दिन रात को प्रहस्त ने जुटाया। चीख-पुकार करनेवाले, घोड़ों को जोतनेवाले, ज़ीन वग़ैरः डालकर सुसज्जित करनेवालों का शोरगुल

मगन काळग नाळिनदु मैदॆगॆवनो मलॆतानुवनो सं-
युगदॊ ळॆंदळ बळव नसुरर लड्डिय बेकॆंदु
हुगिसिदनो शिखि पुरदॊळगॆ गुप्तिगर नॆनलॆंडॆयाडिदवु दी-
विगॆ गळुरु सन्नाह सेना मुखद मुंबिनलि ॥ 13 ॥
केळिदै कुश वैरि सेना जालदुब्बर समर दुरु नि-
स्साळदब्बर वॆब्बिसितु हरिहय दिशांगनॆय
तॊळमेलॊरगिर्द नळिनीलोल कण्दॆरॆदॆद्दु रक्कस
गाळगवलायॆनुत हरितंदडर्द नंबरव ॥ 14 ॥
उदयमुखदलि वैरि बलविळिदुदु महागिरि दुर्गवनु लय
दॊदवि नग्गद हरन हणॆगण्णिदिळातळकॆ
उदुरुवग्नि कणाळिगळ बलुहॊदरु पाळॆयदंतॆ मॊळगुव
कदनवद्रि हदिनॆंटु कोटिय घोर घोषदलि ॥ 15 ॥
किडिय नुगुळुव दाडॆगळ कॆंपडर्द कण्णालिगळ कर्कश
वडॆद वदनद झडिव कॆम्मीसॆगळ कॆदरिकॆय
बिडुदलॆय नव श्रोणितांबर दुडिगळ घन रौद्रमय दु-
ग्गडद रक्कससेनॆ निंदुदु खळन तोहिनलि ॥ 16 ॥

चारों तरफ़ सुनायी पड़ता था। १२ कल का युद्ध मेरे बेटे का है। वह (नील) युद्ध में पीछे हटता है या ज़िद्द पकड़कर शत्रुओं का सामना करता है। यह जान लेने की इच्छा से मानों अग्निपुर में अग्नि ने अपने गुप्तचरों को भेजा हो—इस रीति से सेना के अग्रभाग में दीपों की पंक्तियाँ चल रही थीं (दीपधारी चल रहे थे)। १३ सुनो कुश! शत्रु-सेनाओं का प्रचंड युद्ध वाद्यों की घनघोर गर्जना सुनकर, इन्द्र-दिशा (पूर्व-दिशा) नामक स्त्री की बाँह को तकिया बनाकर सोये कमल-प्रिय सूर्य ने आँख खोलकर जागते हुए— 'यह तो भयानक युद्ध है' —इस तरह कहते आकाश-मार्ग में, (वे) आरूढ़ हुए। १४ अठारह करोड़ रथ-वाद्यों की घनघोर गर्जना के साथ, शिव के भालनेत्र से धरती पर छिटकती चिनगारियों के समूह-सदृश शत्रुसेना सूर्योदय के समय लंकानगरी के दुर्ग पर से मैदान में उतर आयी। १५ चिनगारियाँ उगलते वक्रदाढ़ों के, अंगारों की तरह जलती आँखों के, क्रूर मुखवाले, भयानक लाल मूंछोंवाले, छितरे बालों से युक्त सिर के, लाल कपड़े धारण किए हुए राक्षसों की बड़ी भारी सेना प्रहस्त के नज़दीक पंक्तिबद्ध हो खड़ी हो गयी। १६ बिजली की तरह छिटकते तीर, दुर्ग के युद्ध में प्रयुक्त शस्त्र, पंखदार बर्छी,

बर्रसिडिलु सिडिलंबु डब्बुक गर्रिदॆळॆद हाय्विट्ट हाय्व-
ब्बरद हुलि हरियक्षकुल मलॆतिर्रिव काड्कोण
ऎर्रगुवग्गद शरभकुल मुर्रि मुर्रिदु मोदुव भूतगणदु-
ब्बिर्रित दॊड्डनु मुंदॆ निलिसिदना चमूरमण ॥ 17 ॥
निलिसिदनु सूनिर्गॆय बंडिय हलव नॊड्डिद नद्रिसारद
तळिय तळुकिक्किदनु रणराटाळ सूत्रगळ
बळिविडिदु बळिकाळु तुरगावळि वरूथ मदेभदॊड्डनु
निलिसि निंदिद नसुर सेनानाथ नाहवकॆ ॥ 18 ॥
अब्बरिसिदवु रणद चूणिय लुब्बुवरॆ शतकोटिसंख्यॆय
लब्बरिन रणरभसिगर मुख सन्निवेशदलि
कर्बुराश्व पदाति रथगज दुब्बरद भारणॆय बिगुहिगॆ
निर्भरद लोलॆ दाडुतिर्दुद जांडवनवरत ॥ 19 ॥
अमम कल्पकरोटि मालॆय समरमुख कुब्बेळ्व काल
क्रमद यमकोटिगळ कोळाहळिकॆ यंददलि
द्युमगितनुजन मुंदॆ निंदिदु दमररिपुबलववनितनुजा
रमण निवनारॆंदु बॆसगॊंडनु विभीषणन ॥ 20 ॥
ईतनारै बंदवनु सहजातनो संभवनो दिविजा
राति दशकंठंगॆ हेळॆंदरस बॆसगॊळलु

गरजते आक्रमण करते शेर तथा बाघ, मदोन्मत्त जंगली भैंसा, टूट पड़ते शरभ तथा बार-बार पीटने में समर्थ भूतों से संयुक्त वार करने में समर्थ सेना को प्रहस्त ने अग्रभाग में खड़ा किया। १७ तलवारों से लदे कई छकड़े खड़े किए गए। लोहे से बने युद्ध में प्रयुक्त रहँट तथा रस्से जोड़-जाड़कर रखे गये। उनके पीछे पैदल सैनिक, घुड़सवारों की सेना, रथ-सेना तथा गज-सेना को खड़ा कर राक्षस सेनापति युद्ध के लिए सन्नद्ध खड़ा रहा। १८ युद्ध के अग्रभाग की पंक्ति में, गरजते हुए, युद्ध के लिए उन्मत्त, उत्सुक सौ करोड़ संख्या के वीरों के सम्मुख बड़े-बड़े ढोल बजने लगे। राक्षस-योद्धा तथा घोड़े, हाथी, रथ आदियों के भारी बोझ के कारण सारा ब्रह्मांड जोर-जोर से डोलायमान हो रहा था। १९ बाप रे! प्रलयकालीन रुंडमाला के युद्ध के लिए घमंड दिखानेवाले सृष्टि के विनाशकालीन करोड़ों यमों के सदृश शोरगुल मचाती राक्षस-सेना सुग्रीव के सम्मुख डट गयी। तब राम ने विभीषण से पूछा— "यह कौन है?" २० "कौन है यह? (युद्ध के लिए) आगत यह रावणासुर का

ईंतनीगलॅ जीय नम्मी यातुधान शिरःप्रधान सु-
नीत निगम निधान सत्व निधान निवनॅद ॥ 21 ॥
इवन दॆसॆयिदाय्तु नाना भुवन दॊडॆतन जीय कॆळॆ-
म्मवर्गॆ सेरितु सकल संपद वमर वल्लभन
इवर्गॆ सेरद मार्गविवना दिवसदलि देवियर तंदं
दिवनु सारिद बिट्टुबा हॊगॆंदु बुद्धियनु ॥ 22 ॥
क्षिप्रहस्तनु समरदलि लोकप्रहस्तनु शौर्यदलि नी-
ति प्रविस्तर निवनु निर्मळ धर्म मार्गदलि
ई प्रहस्तन मातनतिगळॆ दप्रयोजक नाद नात श-
र प्रहारदलण्णदेवनु देवकॆळॆंद ॥ 23 ॥
चित्तविसु काळगवनी सचिवोत्तमन संगरव निवनॊड
नुत्तरिस बल्लवर ववर्कॆ बॆससु वेगॆनलु
ऒत्ति हॊळकुव हास्यगर्वद हत्तुगॆय हवणिसद हम्मिन
चित्त दिनसुत चुबुकिरिवु तंगॆसिदनु रणकॆ ॥ 24 ॥
कॆदरि कॊंड्डु सेनॆ संगर कॊदगिसिद शैलद्रुमंगळ
हॊदरिनलि हॊंचुव निशाटर रणमुखंगळलि

भाई है या बेटा है ?" —इस प्रकार राम ने पूछा। यह हमारे राक्षस-राजा के प्रधानमंत्री हैं। यह नीतिशास्त्रविशारद सत्त्वगुण-संपन्न व्यक्ति हैं। २१ इन्हीं (के वल-पौरुष) के कारण हमारे भाई को कई लोकों का प्रभुत्व प्राप्त हुआ। देवेन्द्र की सारी संपदा वशीभूत हुई। (मेरे भाई) बुरे मार्ग का अनुसरण कर उस दिन जब सीता का अपहरण कर लाये तो इसी ने मेरे भाई को सीता को छोड़ आने का उपदेश दिया, कई प्रकार से समझाया। २२ युद्ध कौशल में इनके हाथ बड़े चालाक हैं। वीरता में यह लोक-प्रसिद्ध है। निर्मल धर्ममार्ग के यह नीतिज्ञ हैं। इस प्रहस्त की बात टाल देने के कारण मेरे भाई (रावण) बाण-संचालन (प्रयोग में) निष्प्रयोजक सिद्ध हुए।" —इस तरह विभीषण ने कहा। २३ "इस मंत्रिश्रेष्ठ की युद्धकला पर ग़ौर करें। इससे बढ़कर जो युद्धकला-पटु है, विशारद है, उसी को इसके साथ लड़ने के लिए नियुक्त करें।" इस तरह विभीषण ने कहा। यह सुनकर सुग्रीव मन ही मन हँसा और उसका अहं उमड़ पड़ा—फिर भी उसे प्रकट होने न देते हुए युद्ध में जाने का अपना उत्साह उसने प्रकट किया। २४ युद्ध का निरीक्षण करते राक्षसों के युद्ध-रंगस्थली के सम्मुख (अग्र भाग में) युद्ध के लिए सजाकर रखे पेड़-पहाड़ों के साथ (हाथ में लिये) बड़े उत्साह

तदिलु धडधुडं धीक्कु धिक्केंदोदरि कलुगैदुगळ कपिबल
केंदरि हौक्कुदु हौक्क मैयलि सदेंवु तरिबलव ॥ 25 ॥
निलुकि नूकुव शरभ सिंहावळियनुरु बिदरट्टि मोदुव
हुलिय नप्पळिसिदरु हौय्व लुलाय दुसुरगळ
कळचिदरु कविदिरिव कल्पित कलित भैरव भूतनिकरव
निलिसिदरु रणदिळेय सीमा सन्निवेषदलि ॥ 26 ॥
हरिदु बिसुटरु हम्मि निलिसिद धुरद रणराटाळसूत्रव
तिरुहि सूनिगें तेंत्तिसिद जत्तरट बंडिगळ
हरहिदरु देसंदेसेगे नेगेदुप्परिसि मरदुदिगळनु हिडिद-
ब्बरिसि बुडदलि बीळगेडहुल हौक्करिबलव ॥ 27 ॥
बेरसि धाळा धूळियलि सीवरिसि भट भटरोडने बलु सं-
गरदलोदगितु कपिचतुर्बल रिपुचतुर्बलव
सरिसदलि संवर्त शिखियुब्बरद हळहळिकेयवोल ळिविन
लुरुळु तिर्दुदु बलवेरडु बवरदलि बलुभटर ॥ 28 ॥

के साथ वानर-सेना युद्ध के लिए निकल पड़ी। धड़-धड़, धिक्-धिक् इस तरह शोरगुल करती चट्टानों के आयुध धरे कपिसेना ने बड़े जोश-खरोश के साथ राक्षससेना में प्रवेश कर शत्रुसेना को पीट-पाटकर खतम करना शुरू किया। २५ वानर योद्धाओं ने अपने को धर दबोचनेवाले शार्दूल, सिंह आदियों को धक्का मारकर भगाया। पीछा कर आनेवाले बाघों को धर पटक दिया। टूट पड़नेवाले भैसों का प्राणापहरण किया। घिरकर खरोंचनेवाले मायावी भूतों को युद्धक्षेत्र की सीमाओं में स्तंभीभूत कर दिया। २६ वानरवीरों ने जोड़कर खड़े किये गये रहँटों के (युद्ध के रहँट) रस्सों को उखाड़ फेंका। चक्राकार गति में जोड़े-जाड़े खड्गों से युक्त दुर्ग-युद्ध के विशिष्ट प्रकार के यंत्र को और उसको ढोनेवाले छकड़ों को चकनाचूर कर तितर-बितर कर दिया। उछल-कूदकर पेड़ों की टहनियों को हाथ में धारे बड़े वेग से खींच-तानकर पीटते हुए, फिर पेड़ों की जड़ों से आक्रमण करते हुए राक्षस-सेना को धराशायी कर दिया। २७ कपि-सेना के वीरों ने तथा शत्रुपक्ष के चतुरंग सेना के वीरों ने एक-दूसरे पर जूझकर, एक-दूसरे को खदेड़ते-घसीटते बड़ा भारी युद्ध किया। युद्ध में दोनों तरफ़ के बलशाली वीर इस प्रकार मर-मरकर गिर पड़ते थे— मानों कहीं पास ही में प्रलयाग्नि भड़क उठी हो। २८ हाथी, अपने दाँतों को धरती में गड़ाए जोर-जोर से चिंघाड़ रहे थे।

ऊऱॆ दाडॆय नॆलकॆ कीलिसि चीऱुतिर्दवु करिघटावळि
काऱुतिर्दुवु रकुतगळनुब्बरद हयनिकर
चीऱिकॆय तेरुगळ तॆक्कॆगळेऱु तिर्दवु नभवनसुगळु
जाऱुतिर्दवु रक्कसरे मर्कटर कदनदलि ॥ 29 ॥
इऱिद घायदलुगिद करुळिन लऱिचु तिर्दवु करडिगळु हॊं-
गऱिय कट्टिद कोलिगट्टळवारि हलुगिरिदु
ऒऱलुतिर्दवु कोडगगळुब्बिऱितदेऱिन नोवुगळलसु
दॊऱॆवु तिर्दवु मुसुग ळसुरर कॊलॆय कवतॆयलि ॥ 30 ॥
अणुगकेळ् रक्कसर रणदलि कॊणकि हरणदलुळिद सुभटा-
ग्रणिगळारी भुवन मूऱऱ वीर भटरॊळगॆ
हणिदु हाय्किद रॊडनॆ कव्विन हणिदद वॊला हण्णुहंपलि
नणल संबळदण्णगळ नाखिळास्त्र शस्त्रदलि ॥ 31 ॥
बळिक बलवॆरडातु दसुरावळि सुरावळि पूर्वयुगदलि
मलॆतु मंडिसिदंतॆ तोटिय तोळ तीटॆयलि
हळचिदुदु हरिदश्व बिंबद हॊळहु हुदुगलु कैदुगळ सं-
कुळ शिलोच्चय शिखर तरु तोमर कदंबदलि ॥ 32 ॥

घोड़े खून कै कर रहे थे। घरघराहट के साथ टकराते रथों के टुकड़े आसमान की ओर उछल रहे थे। राक्षस और वानरों के युद्ध में वीर योद्धा अपने प्राण गँवा रहे थे। २९ चुभो देने के कारण घावों में आँतड़ियाँ बाहर आ जाने के कारण रीछ चीख-पुकार रहे थे। सोने के पंखोंवाले बाणों के आघातों से बन्दर ऊपर की तरफ़ उछलकर दाँत निपोरे चीख रहे थे। राक्षसों से की गयी हत्याओं के शिकार बने काले मुँहवाले बन्दर वेदना से चटपटाते प्राण त्याग रहे थे। ३० सुनो हे कुमार लव ! युद्ध में, राक्षसों को छोड़कर, इन तीनों लोकों के वीर श्रेष्ठ योद्धाओं में कौन जीवित हो बच सकता है ? जबड़ों में फल-कोंपलों का संबल रख लेने में समर्थ वानरों को राक्षसों ने अपने सारे शस्त्रास्त्रों का प्रयोग करते हुए ईख (गन्ने) की तरह काट डाला। ३१ पूर्व युग में असुर और सुर बड़े अहंकार से जैसे (युद्ध में) भिड़ गये थे, उसी प्रकार अपनी भुजाओं की खुजली (युद्ध-लिप्सा) निभाने के लिए दोनों सेनाओं ने एक-दूसरे का सामना किया। राक्षसों के आयुध सूर्यबिंब की-सी कांति से (प्रकाशमान हो) वानरों से फेंके गए चट्टान तथा पेड़ों के तोमरायुधों पर टकराए। ३२ राक्षस-सेना तथा वानर-सेनाओं के बीच युद्ध होते-होते जब भगदड़ मच

खळबलद कपिबलद कदनद चलित चरणोद्धूत धरणी
दळित धूळी विसर मुसुकितजांड मंडलव
बळिसलिसि बळिविडिदु रकुतद होळेग ळेद्दवु कूडे हेणनो
ब्बुळिगळोट्टिल बेट्टगळ नोडे बगिवुतगलदलि ॥ 33 ॥
मडिदु दर्बुद कीशबल नभ कडरितर्बुद वैरिबल बलु
गडिय रणवर्तिसितु रौकुळवागे रणभूमि
नडेदुदल्लिल मेले कपिबल दोडेयरिगे खळयूथ नाथर
गडणदतिरथ वरमहारथरिगे महासमर ॥ 34 ॥
अच्चबल बळिकोदगि भूतळ बिच्चे बिलुजेवडेगळलि कवि
देच्चरै कैकोंडु कविद वनेचरव्रजव
अच्चरियनेनेंबे नूर्वरे मुच्चिदुदु मडिदडविगर रण
रच्चेगर रौकुळद रण रौद्राभि सारदलि ॥ 35 ॥
अट्टि कविदिद्रि वसुर सेनेय कट्टळवियलि खोयेनुत बो-
ब्बिट्टु पडिबलव वुकिदुदु रविसुतन सन्नेयलि
बेट्टदलि बेरुगिद बलुमर मट्टिनलिबिडे बीळुगेडहिद
रिट्टिणिय हेणभारदलि भुजगेंद्र नळवळिये ॥ 36 ॥

गयी, तब पदचाप के कारण उठी हुई धरती की धूल से एक बादल का जो निर्माण हुआ उसने ब्रह्मांड को घेर लिया। शवों का ढेर जो निर्मित हुआ वह पहाड़-सदृश हुआ। युद्धभूमि भर में प्रवाहित हो रही रक्त-धारा उस पहाड़-सदृश शवों के ढेर को कुरेदकर फौवारे के सदृश आकाश की तरफ़ उछलने लगी। ३३ एक अर्बुद वानर-सेना का काम तमाम हुआ। एक अर्बुद राक्षस-सेना स्वर्ग सिधारी। घनघोर (प्रचंड) युद्ध के कारण युद्धभूमि बड़ी भयानक दीख पड़ने लगी। इसके बाद कपि-सेना के नायक तथा राक्षस-सेना के अतिरथी महारथियों में भारी युद्ध हुआ। ३४ मस्त धैर्य भरे राक्षस-सेना ने धरती को फाड़ डालने के वेग से घिर आए वानर-वीरों को धनुष्टंकार के साथ बाणों से घायल किया। उस आश्चर्यकारक युद्ध का किन शब्दों में वर्णन करें? उस भयानक युद्ध में मरे, छल-प्रपंची स्वभाव के जंगली कपियों की देहों के कारण सारी धरती (शवों से) आच्छादित हुई। (सारी धरती बन्दरों के शवों से पट गयी)। ३५ पीछा करते, शस्त्रास्त्र चुभोते घिर आयी हुई राक्षस-सेना पर सुग्रीव के इशारे से 'खो' आवाज़ के साथ चीखते-पुकारते कपिसेना टूट पड़ी। पहाड़ों से जड़-सहित उखाड़ लाये भारी-भरकम

हळचुववु बलवॆरडु ह्रणव कळचुववु बलवॆरडु रण सं-
कुलद सौरभातिशय तलॆदूगिसितु सुरर
अळिदवरनॆरडॊड्डिनलि कट्टळॆय काबवनावनै कॊळु
गुळवॊ कालन कडितवॊ कल्पिसुवडरिदॆंद ॥ 37 ॥
करडि मुसुसिगळिक कोडग करि रथाश्व पदातिचयदु-
ब्बरद नॆणनाषिम कदंबदलस्त्र शैलदलि
हॊरॆदुदिळॆ ताळुद्ददलि ह्न्नॆरडु योजनदगल परियं
तरुण जलनिधि युब्बितनितरु मेलुभागदलि ॥ 38 ॥
कुडिद वरुणांबुवनु मरदुदि गडरि रक्कस वक्किगळु नडु-
गडल हिडिवॆण किक्किदवु हळुगोल भूतगण
नुडिवडच्चरि नागनगरदॊळॊडॆय रनुचररॆरडु पैकद
पडॆय हसुगॆगॆ होरि हॊय्दाडिदरु नम्मॊळगॆ ॥ 39 ॥
तरुण कॆळैदनॆय दिन दुर्धर महाह्व वर्तिसितु क-
र्बुर कपींद्रचमूपरिगॆ चलिसलु चतुर्वदन

पेड़ों से कपियों ने राक्षसों को पीट-पीटकर गिरा दिया। असंख्य शवों के बोझ के कारण आदिशेष का माथा ठनका। ३६ एक-दूसरी सेनाएँ एक-दूसरी पर बड़े ही तीव्रगति से आक्रमण करती हैं। दोनों तरफ़ की सेनाओं के वीर धड़ाधड़ गिरकर प्राण त्याग रहे हैं। राक्षस-वानरों के बीच के इस युद्ध को देखकर देवता भी अपनी प्रसन्नता प्रकट करने लगे। दोनों सेनाओं में मरे हुओं को बारी-बारी से कौन देखभाल करें? यह क्या युद्ध है या यम की काटछाँट है? सोचना भी असंभव है। इस प्रकार वाल्मीकि ने युद्ध का वर्णन किया। ३७ रीछ, काले मुँहवाले बंदर, सिगलीक, लाल मुँहवाले बंदर, हाथी, रथ के घोड़े, पैदल सैनिकों की अत्यधिक चर्बी तथा मांसखंड तथा शस्त्रास्त्र जो धरती पर गिरे थे, उनका ढेर ताड़वृक्ष जितना ऊँचा बढ़कर बारह योजन विस्तृत धरती को घेर चुका था। चर्बी, मांसखंड तथा अस्त्रों के ढेर से निर्मित पहाड़ पर रक्त-प्रवाह उमड़ पड़ा। ३८ राक्षसाकार पक्षी पेड़ों के छोरों पर चढ़कर रक्त पी रहे थे। भूत रक्त-समुद्र के मध्य के मुर्दों को पाने के लिए चमड़े की गोल किश्ती पर सवार होकर चले। यह वर्णन ही आश्चर्यकारक है। तब स्वर्ग नगरी के स्वामी तथा सेवक दोनों तरफ़ की सेना के (मृत) सैनिकों को बाँट लेने के लिए आपस में लड़ने लगे। ३९ हे युवक लव! सुनो। पाँचवें दिन राक्षस-नायकों तथा वानर-नायकों

विरचिताखिल भुवन बेसर बॆरसिदुदु भव कमलभवरिगॆ
शिरकॆ वेदनॆ हुट्टि हॊदकुळि गुट्टितमरगण ॥ 40 ॥
बवर बलिदुदु बळिक कलि जांबवनॊळग्गद वीरकुंभगॆ
पवनसुत कुंभोदरंगा वालिसुतनॊडनॆ
निवडिसित्तु नरांत कंगुत्सवद रणवा द्विविदनलि सं-
भविसि तसुर सुमंतकंगॆ समग्र संग्राम ॥ 41 ॥
सधिसितु संग्रामवग्गद मैंदनॆंब कपींद्रनलि मद
वॊदि दुर्मुख बल महाकलि राक्षसेंद्रंगॆ
हंदॆगरॆ रक्कसर संगरदंद लेसॆनलमर सेना
वृंद बॆरगिडॆ हॊक्कु होरिद रळुकॆ भुवनचय ॥ 42 ॥
सुप्रतापनला महासमर प्रसिद्धनला धरित्रियॊ
ळा प्रहस्तनु केळिदॆ कुश बळिक कौतुकव
क्षिप्र दिदॆरगिदनु रवितनुज प्रभंजनसूनु मुख्यम-
हाप्रचंडर बळिगळलि बिलुरवद रवळियलि ॥ 43 ॥
तोर निवरिड्डु वद्रिकुज दुब्बेरु वॊय्लिगॆ मायॆयलि मै-
दोरुवनु जयमुख दॊळब्बर दुब्बु गवळदलि
तोरि तोरदॆ कॊंदनी परिमूरु निर्बुद बलव बिद्दुदु
दूरु दूषण भीषणन बळियलि निशाचरन ॥ 44 ॥

में घमासान लड़ाई हुई। ब्रह्मनिर्मित सृष्टि के सारे लोक काँपने लगे। शिव-विष्णु भी तंग आ गये। देवता सिर-दर्द के मारे संतप्त हुए। ४० उसके बाद वीर जांबव का वीर कुंभ के साथ युद्ध हुआ। हनुमान तथा कुंभोदर, वालीसुत अंगद तथा नरांतक इनके बीच युद्ध हुआ। द्विविद तथा सुमंतकासुर के बीच भारी भयानक लड़ाई हुई। ४१ श्रेष्ठ वानर-नायक मैंद के साथ अत्यंत पराक्रमी दुर्मुख नामक राक्षस का भारी युद्ध हुआ। क्या असुर कायर है? 'राक्षसों का युद्ध-कौशल्य श्रेष्ठ दर्जे का है।' —इस तरह कहते जब देवता आश्चर्य प्रकट कर रहे थे तो दोनों वीर एक-दूसरे पर टूट पड़ते; जूझकर लड़ रहे थे। यह देख समस्त लोक भयभीत हुए। ४२ प्रहस्त तो 'महान पराक्रमशाली तथा महान युद्धवीर' —इस अभिधान से जगत्प्रसिद्ध है। हे कुश! आगे की कौतूहल-पूर्ण घटना सुनो। प्रहस्त धनुष की प्रत्यंचा खींचते, ठणत्कार करते, बड़ी चुस्ती से सुग्रीव, हनुमान आदि वीरों पर टूट पड़ा। ४३ वानरों से भारी जबर्दस्त मार देते फेंके जानेवाले पेड़-पहाड़ों से अपने को बचाते प्रहस्त ने अदृश्य होकर उनके वार से बचते, अद्भुत मायावी युद्ध से बड़े

आव चित्रवों रथ तुरंगम राववल्ला रणदोळगे बिलु
जेवडेय बिरुबिल्ल सूतन बोब्बे तानिल्ल
आ विबुध विद्विषन समर शरावळिय दनियिल्ल मरणद
गावळिय गतिवंत रिद्दुदु निम्मसेनेयलि ॥ 45 ॥
हनुम नोड्डनु मुरिदु हरिनंदनन निजनंदनन सेना
वनधियनु मोगेदोंटि नळनीलादि नायकर
मोनेय मोहरवनु निवारिसि पनस गवय गवाक्षशतबलि
विनुत वीर सुषेणरनु हरेगडिदु बोब्बिरिदि ॥ 46 ॥
घायवडेदरु मिक्क सेना नायकरु बळिका प्रहस्तन
सायकद बलुगलह सीवरिकेयनु रघुकुलद
रायरलि हुट्टिसितु निंदिद नायुधद होळहिनलि घन रौ-
द्रायमानितना विभीषणनसुर निदिरिनलि ॥ 47 ॥
मरुळनै नीनकट मोलनुब्बर मृगेंद्रन कूडे नीति-
ज्ञरिगे गुरु नीनेसगलहुदे विवेक शून्यतेय

अहं के साथ अपनी जीत साध ली। कपिवीरों की आँखों के सम्मुख होते हुए भी अपने को अदृश्य रख, उसने तीन न्यर्बुद (तीस करोड़) वानर-सेना धराशायी कर दी। तब दूषण को मारनेवाले राम के पास इस घटना की शिकायत पहुँची। ४४ "कितने आश्चर्य की बात है! युद्ध में रथ-घोड़ों की (बिलकुल) आवाज़ नहीं। धनुष के ठेंकार की ध्वनि नहीं, सूत (रथ हाँकनेवाले) का शोरगुल नहीं। उस असुर के सर-सर छूटते बाणों की बिलकुल आवाज़ नहीं। लेकिन आपकी सेना में प्राण खो देनेवालों की हाय-तोबा मची हुई है।" इस तरह राम से शिकायत की गयी। ४५ हनुमान से रचित व्यूह को तोड़कर, अंगद से विरचित सेना-सागर को खोदकर पी डालते, नल-नील आदि वानर-नायकों के सामने की सेना पंक्ति को मार डाल, पनस, गवय, गवाक्ष, शतबलि, वीर सुषेण आदियों को मार डाल, तितर-बितरकर प्रहस्त ने घनघोर गर्जना की। ४६ वानर-सेना के अन्य नायक घायल हुए। तत्पश्चात् प्रहस्त से किये गए भारी भयानक बाणयुद्ध के कारण रघुकुल के राजाओं ने बेचैनी का अनुभव किया। तब विभीषण आयुध धारे प्रहस्त के सम्मुख उग्र रूप धारे खड़ा रहा। (विभीषण ने बड़ी उग्रता से प्रहस्त का सामना किया)। ४७ "तू पागल नहीं तो और क्या है? शेर के सामने खरगोश की क्या चले? तू तो नीति-शास्त्र-विशारदों का गुरु है न? इस प्रकार विवेक खो बैठना ठीक है क्या? रघुपति क्या

नरनें रघुपति कॆलकॆ सार्कबुंररजाळिय मिक्क दिविजर
नॆरविनलि मॆरॆ मॆरॆय दाहव विल्लि निनगॆंद ।। 48 ।।
गदॆ बिरिसु नम्मदु विवेकव नॊडॆंदु रणवनु रामचंद्रन
लॊदगिदरॆ सैरिसुवरल्लाव् सारु नीनॆंनुत
इदिर लैदुव रक्कसन रथ दिदिरनलि निंदा विभीषण
नुदुरिसिद नुरिगिडिय गाडिय गदॆय झाडियलि ।। 49 ।।
बल्लॆवाव् नीनॆंद हम्मिन घल्लणॆय हॆंपिन विवेकव
नॊल्लॆनॆन बहुदे निजस्वामिय निरूपकव
खुल्लनै नी कॆलकॆ सार्निन्नलिल बळसॆनु बाणवनु रण-
मल्ल रामनलॊदगुवद नी नोडु सार्कॆंद ।। 50 ।।
ऎंब नुडियिदॊळगॆ लयदुग्रांबकन लळियंतॆ रोषा-
डंबरद डावरद लग्निकुमार खातियलि
अंबुजाक्षन सरिसदलि रण डॊंबिगन कंडमम विलया-
डंबदाटोपदलि किडिगॆंदर्रिदनु कलि नील ।। 51 ।।
अकट रघुराजेंद्रनलि हायिकिद समरवनिवनु तानी
सकल बल दॊडॆतनव हॊत्तुदु व्यर्थ वार्थॆनुत

केवल मानव मात्र हैं ? हट जा यहाँ से । ब्रह्मादि देवताओं के साथ (झुंड के साथ) किये जानेवाले राक्षसों के युद्ध को जा विराज । तुम्हारी दाल यहाँ न गलने की ।" इस प्रकार विभीषण ने ताने कसे । ४८ मेरी गदा बड़ी गँवार है; अगर तू विवेक-रहित हो, श्रीराम से लड़ने आए तो मैं यत्‌किंचित् भी सह नहीं सकता; निकल जा यहाँ से ।" इस प्रकार कहते विभीषण प्रहस्त के रथ के सम्मुख खड़े हो गदा झुलाते हुए चिनगारियाँ बरसाने लगा ।" ४९ तुम्हारे इस उपदेशपूर्ण विवेक में छिपे तुम्हारे अहं (घमंड) को मैं अच्छी तरह जानता हूँ । स्वामी की आज्ञा का उल्लंघन मैं कैसे कर सकता हूँ ! तू नीच है । हट जा यहाँ से । तुम पर मैं बाण चलाना नहीं चाहता । युद्धवीर राम के साथ जो मैं युद्ध करूँगा । तुम देखते भर रहना । बस ।" इस प्रकार प्रहस्त ने कहा । ५० इतने में क्रोधोन्मत्त अग्निकुमार नील प्रलयकालीन रुद्र की तरह एक झटके में वहाँ आया और श्रीराम के पार्श्व में हो रहे युद्ध के नटों के खेल जैसी स्थिति को (तमाशे को) देखकर प्रलय के आवेग-सदृश आग-बबूला हुआ, उसके दीर्घ निःश्वास से चिनगारियाँ निकलने लगीं । ५१ "धत् तेरे की । रघुराजेन्द्र के साथ यह युद्ध के

भृकुटि बद्ध सरोषदंत प्रकर पीडित कंपिताधर
निकट निर्भर शौर्यनैदिदनसुर दळपतिय ॥ 52 ॥
ईत बरलीतन कठोरद रीतियनु कंडसुर रायन
जात शत्रुविगॆरगि हिन्नरिकॆयलि हॆज्जॆगळ
आतु निलुतैदिदनु बळिकी वीति होत्तन सुतन घन रो-
षातिशय दुब्बरव हॊगळु वॆनॆन तानॆंद ॥ 53 ॥
एनॆलवॊ खळखळर दळपति नीनॆ तानिदनरिदुदिल्ल द-
शाननन सहभवनु सूचिसलादुदरिवॆनगॆ
ई नरेंद्रन कूडॆ कलहव नीनु कैकॊळ्ळ लहुदॆ कपि से-
नानि तानिरॆ तरळतन निनगुचितवॆयॆंद ॥ 54 ॥
अहुदु नी वानर वरूथिनि गहत बल सेनानि रणवि-
न्नहुदु हेळिदु लेसमाडिदॆ मोस हॊगदंतॆ
इह परंगळॊळॆरडरलि सन्निहितवावुदु निनगॆ हेळद
नहुदु माडुवॆवॆनुत हूळिदनंबिनलि कपिय ॥ 55 ॥

लिए आया है। मैंने जो इस समस्त वानर-सेना की ज़िम्मेदारी उठायी है वह व्यर्थ हुई न ?" इस तरह भौंहें चढ़ाए, क्रोध से दाँत किटकिटाते जब होंठ काँप रहे थे (भरे घड़े के जैसे) महान वीर नील राक्षस-दल के अधिनायक (प्रहस्त) के सम्मुख आ डटा। ५२ नील के आते ही उसके कठोर उग्र रूप को देख विभीषण अजातशत्रु राम को प्रणाम करते पीछे क़दम रखते आकर खड़े रहे। तदनंतर, अग्नि-पुत्र नील के भयानक क्रोध के भारी उग्र स्वरूप का मैं क़िन शब्दों में वर्णन करूँ ? इस प्रकार कहते वाल्मीकि ने वर्णन किया। ५३ "क्यों रे दुष्ट ! राक्षसों का दलपति क्या तू ही है ? मैं तो पहिचान नहीं पाया। रावण के भाई के बताने पर मुझे मालूम हुआ। वानर-सेनापति जो मैं जीवित हूँ तो इस राजेंद्र के साथ, राम के साथ तेरा यों युद्ध मोल लेना उचित लगता है ? यह बचपना क्या फबता है ?" —इस प्रकार नील ने पूछा। ५४ "हाँ हाँ, हो सकता है कि तू वानर-सेना का अतुलित बलधाम सेनानी है। अब मुझसे युद्ध मोल ले। बिना धोखा दिये, वस्तुस्थिति से मुझे अवगत कराकर तूने ठीक ही किया। इहलोक तथा परलोक में जो तेरे लिए नज़दीक का है —वह बता दे। उसे मैं सच साबित कर देता हूँ।" —इस तरह कहते प्रहस्त ने नील को बाणों से ढाँप दिया। ५५ "हाय !

अद्दनो दळपति पतत्रिय दद्दळद वारुधियो ळेनुतोळ
बिद्दु होक्कुदु हनुम हरिहयसुत सुतादिगळु
उद्दुरुटु खळनवर समरव तिद्दुवनित ऱोळंबनगलिसु
तेद्दनबुधिय सुरिदु सोक्कुव शिखियवोलुनील ।। 56 ।।
कुलिशकोटिय कूटवीतन बलिद मुष्टिय लेद्दुदो जग-
दळिविनसमांबकन नोसलिन विषमलोचनद
कुळु गिडि गळग्निजन मुष्टिय बळियलवतरिसिदवो पेळेन
लोलेंदु तिविदनु तीव्रहतियलि रिपुचमूपतिय ।। 57 ।।
ओट्टि मुरिदुदु सीसकद रथ नट्टुदिळेयलि रकुतजल होन
लिट्टु हरिदुदु हणेविडिदु पादांत परियंत
इट्टनव बळिकीतननु हेरिट्टियलि हलकिनलि हाय्दुदु
बेट्टगैगळ भटरु हाये दोदऱितिदिरिनलि ।। 58 ।।
उगुळितल गरुणांबुधारेय नगलदलि बळिसलिसि रक्कस
नुगिदु तिविदनु कपिय किग्गट्टिन कठारियलि
जगदोळीनतिबलनो वह्निय मगनु मददलि नोवनोडदे
जगवुघेयेनलेऱगिदनु रक्कसन दळपतिय ।। 59 ।।

हमारे सेनापति (नील) तो बाणों की प्रखरता के समुद्र में डूब तो गये न !" इस तरह कहते हनुमान, वाली का पुत्र अंगद वग़ैर: व्यूह में प्रविष्ट हुए। धूर्त राक्षस जब तक उससे लड़ने न लगे तब तक समुद्र के पानी को खौलाते बाहर उमड़ पड़नेवाले अग्नि के सदृश नील बाण-वृष्टि से मुक्ति पाकर ऊपर उठ आए। ५६ नील ने (तब) शत्रु-सेनापति को (अपना) शरीर झुलाते हुए, मुक्के से इतने ज़ोर से पीटा मानो करोड़ों बिजलियों का समूह इसकी ज़बर्दस्त मूठ से निकल पड़ा हो अथवा प्रलय-रुद्र के भालनेत्र से शलाकावत् चिनगारियाँ अग्निकुमार की मूठ से निकल पड़ी हों। ५७ नील की मूठ की मार से प्रहस्त का शिरस्त्राण का किनारा टूट गया। रथ धरती में धँस गया। मस्तक से पैर तक रक्त की धारा बह चली। तब प्रहस्त ने नील को बड़े बर्छे से पीटा। वह नील के गाल के निचले पार्श्व से होकर चला गया। पहाड़ को हाथ में धरे वानर 'हा' कहकर चिल्लाए। ५८ बर्छे के मुँह (फाल) से रक्त की धारा बह चली। तुरन्त ही राक्षस ने (अपनी) कमर में कसी कटार निकालकर नील पर प्रहार किया। पता नहीं अग्निकुमार इस दुनिया में कितना महान बलशाली है ! युद्ध की मस्ती

कळचि खळना कपिय घायव नोलेंदु परिघदलेऱगलद कपि-
सेंळेंदु बिसुटव्वरिसि तिविदनु हगॅय हेरुरव
मलेंतु मंडिय लसुर नागेंदिळुहिदनु मुसलवनु मस्तक
दलि मरुत्सख सुतन सुम्मानिसॅ खळव्रात ॥ 60 ॥
नोवनोडदॆ जगदवीरर देवनोळ हॊक्किन जनाहव
रावु मञ भापॆनलु तिविदनु वीळलरिभटन
हावु हद्दिन पदहतिगॆ नेऱनोववोलु नेलकोऱगि रक्कस
ना विघातियोळेद्दु डोक्कर वाय्द नग्निजन ॥ 61 ॥
डोक्करिसिदरिभटन बीसि नभक्कॆ विसुटुव्बिऱदु वोव्वॆय
निक्कि वाहप्पळिसि निलॆ निमिषदलि खळ मृळिदु
इक्कलिसि मुगिलिद गिरिशिखरक्कॆ सुळिव महोग्र सिडिलवो
लॊक्कतुळदलि बंदु हळचिदनग्निनंदनन ॥ 62 ॥
बिद्दनग्निज निळॆगॆ बऱसिडि लोद्द गिरियंददलि मथनद-
लिद्द शरधियोळेळ्व मंदरदंतॆ कलि नील
ऎद्दु तिविदनु खळन कालन विद्दिनरु कंगळिगॆ सुळियलु
होद्दि हेरुन्दोळगॆ मंडिसि खळनोळितेंद ॥ 63 ॥

में वेदना की परवाह न करते हुए जब दुनिया उद्गार निकाले उसकी प्रशंसा कर रही थी तो उसने रावण के सेनापति पर आक्रमण किया। ५९ राक्षस, नील के प्रहार से अपने को बचाकर तुरन्त पलटकर, परिघायुध लेकर जब नील पर टूट पड़ा तो उसने (नील ने) उसे छीनकर प्रहस्त की चौड़ी छाती पर (वह परिघायुध) दे मारा। राक्षस ने प्रतिरोध करते 'ओह' कहकर चीखते घुटनों के बल खड़े हो मुसलायुध से नील के सिर को पीट दिया तो राक्षस हर्षित हुए। ६० मुसलायुध के आघात की वेदना की परवाह न करते जगदेकवीर नील ने जूझकर प्रहस्त को पीटकर पटक दिया। सुग्रीव की तरफ़ के वीरों ने यह देख 'वाह-वाह' करते प्रोत्साहित किया। गरुड़जी के पैर की मार से साँप के पीटे जाने की तरह धरती पर गिरने पर भी प्रहस्त ने चटपटाती (अपनी) स्थिति में भी नील को मुक्का मारा। ६१ अपने पर मुक्का जमानेवाले शत्रु को, खींचकर आकाश में फेंक घनघोर गर्जना करते नील खम ठोंककर खड़ा हो गया। दूसरे ही क्षण प्रहस्त ने आग उगलते, बादल को चीरकर पहाड़ की चोटी पर गिरनेवाली भयानक बिजली की तरह बड़े ही धैर्य के साथ आकर अग्निकुमार (नील) को पटक दिया। ६२ गाज गिरे पहाड़-सदृश अग्निकुमार धराशायी हुआ। देवासुरों के समुद्र-मंथन के

बिड़िसि नसुरन दळद भारद होरिगेवाळनु नीनु नम्मनु
होरलु सैरिसदवने साहसवुळ्ळ भटनहुदु
मरेय मातेकेलवो बंदिदे तेरपिनलि बलुमृत्यु बवरदो-
ळरुहु निनगुंटादोडेच्चरु बेग नीनेंद ॥ 64 ॥
अेनुत वदनद मेले मुष्टिय हनुम होगळलु हाय्किदनु क-
ग्गनिय कत्तले कवियें कंगळिगसुर दळपतिय
वनचरर दळपतिय घायविदेनुत मत्तोम्मेरगिदनु ले-
सेने विभीषणदेव देवादिगळु कोंडाडे ॥ 65 ॥
अेलवो रक्कस मारियणलिगे सिलुकि शिशु जीविसुवदे गं-
टलिन गाणद मीनु मिगुवुदे मरणमयभयव
अळिवु निनगिदेम्म कैयलि नेले कणानिनगेनुत बाहा-
लुळित बलनुब्बिबड़िदु निविदनु मत्ते रक्कसन ॥ 66 ॥
तप्पदै नीनेंद नुडियेनु तुप्परिसिदुदु जीव नभदोळ
गप्पिदुदु हेसरेनिसि दग्गद सुर नितंबिनिय

समय, समुद्र से ऊपर उठ आए मंदर पर्वत के सदृश वीर नील सँभलकर उठे तथा प्रहस्त को उन्होंने घूंसा मारकर घायल कर दिया। यम के अतिथि दृग्गोचर हो —इस रीति से नील राक्षस की छाती पर चढ़ बैठा और उससे फिर इस प्रकार कहा। ६३ "वीर रावण की सेना की ज़िम्मेदारी उठानेवाले महान वीर हो न तुम ? हमें उठा लेने का (ढोने का) सामर्थ्य तुममें है न ? सच है, साहसी वीर हो तुम। इसमें दुराव कैसा ? अब बहुत बड़ी मृत्यु तुम्हारे सामने खड़ी है। अगर होश है तो जल्द बोलो।" —इस प्रकार नील ने कहा। ६४ इस तरह बोलते हुए नील ने प्रहस्त के मुखड़े को मुक्कों से पीटा। (यह देख) तब हनुमान नील की प्रशंसा करने लगे। राक्षस-सेनापति की आँखों में अँधेरा छाने लगा। 'यह (देख) वानर-सेनापति का प्रहार है। (देख कितना मज़ेदार है।) —इस तरह कहते फिर उस पर टूट पड़ा। विभीषण और देवताओं ने नील की प्रशंसा की। ६५ "रे राक्षस, महामारी के मुँह फँसा शिशु क्या जीवित रह सकता है ? गले में टेढ़ी कँटिया (अँकड़ी) फँस जाने पर मछली मृत्यु के भय से निश्चित रह सकती है ? आज मेरे हाथों तेरी मृत्यु निश्चित है।" —इस प्रकार कहते उस भुजबलपराक्रमी नील ने बड़े जोश के साथ फिर एक बार प्रहस्त पर वार किया। ६६ "तुम्हारी बात झूठ नहीं हो सकती।" —इस तरह कहते प्रहस्त के प्राण जो आकाश की ओर उछले तो उन्होंने (जाकर) देवलोक के श्रेष्ठ स्त्रियों का

उप्परद हरुषदलि निजसुत निप्पॆंडॆगॆ कळुहिदनु कनकद
कप्पडद शिखि सुरिद रमररु कुसुम वरुपगळ ॥ 67 ॥
तॆगॆद वसुरन हॆणननल्लिय विगड भूतगळकट हगॆगा-
ळगवु निनगेकॆनुत हरसुत हव्यवाहजन
मगनॆ केळै ब्रह्मदेवर मगन वालिय मगन मैंदन
विगडवीर द्विविद रहितरु सारिदरु दिवव ॥ 68 ॥
तुंगबल कलिनील नुरु समरांगणदॊळहित प्रहस्तन
नुंगि नॊणॆदभिगत महोत्सव वार्तॆयनु वळिक
कंगळधिपति तन्न सख वडवंगॆ सूचिसलॆंदु कडल त-
रंगवनु बगिदिळिदनुत्साहदलि पश्चिमद ॥ 69 ॥

इप्पत्तनॆय संधि

सूचनॆ— वीर धीरोद्धतनु रणलय भैरवनु वाहुप्रतापनुदार लंकेश्वरनु रामन समरकनुवाद ।

मगनॆ केळै कुशनॆ कालन नगर कभिमुखनाद मंत्रिय
जगुळिकॆय केळ्दसुरपति कळवळद करणदलि
उगुळिदनु तंवुलवनानॆ हॊगुवॆ नहितन रणकॆनुत हॊगॆ-
नॆगॆव कोपज्वालॆयलि दळ्ळिसिद नडिगडिगॆ ॥ 1 ॥

आलिगन कर लिया । (तब) हर्ष से प्रसन्न अग्नि ने अपने पुत्र के लिए सुनहले वस्त्र भेजे । देवताओं ने पुष्प-वृष्टि की । ६७ 'शत्रुओं के साथ अब तुझे युद्ध करने से क्या प्रयोजन' —इस तरह कहते अग्निकुमार नील को आशीर्वाद देते वहाँ के भयानक भूत प्रहस्त के शव को उठा ले गये । सुनो कुश, ब्रह्म का पुत्र जाम्बवंत के, वाली का पुत्र अंगद के, मैंद के, द्विविद के सभी शत्रु स्वर्गवासी हुए । ६८ उन्नत बलशाली वीर नील के, युद्ध के मैदान में शत्रु प्रहस्त के काम को तमाम करने का, संतोष-भरा समाचार (को) अपने मित्र वड़वाग्नि को बता देने के लिए सूर्य पश्चिमी समुद्र की लहरों को चीरकर नीचे उतरे । ६९

बीसवीं संधि

सूचना— वीर, धीरोद्धत, युद्ध में प्रलयकालीन भैरव-सदृश, भुजबलविक्रमी, उदार लंकेश्वर राम के साथ युद्ध के लिए तैयार हुए ।

बेटे कुश, सुनो । मंत्री (प्रहस्त) के यमनगरी प्रस्थान कर जाने का समाचार सुन राक्षसेंद्र ने घबराकर, (घबराते हुए) चबा रहे पान को थूक

नाळिनलि नरपतिय तनुकीलालवनु कुडिसुवेनु रणभू-
ताळि गनुचरनागि बंद वनौकसाधिपन
कालनण लोळ गडसुवेनु नेरेदाळुतन कोदगिद वनेचर
जालवनु जरुगिसुवे नेंदलुगिदनु खंडेयव ॥ 2 ॥
कळुहिदनु कैसन्नेयलि मंडळिक मन्नेय रक्कसरनति
बलरननुपम रणदघाटि किरीट वर्धनर
हळहळिके हळुगाद मुखमंडलद जयमुख दादियलि दश-
गळनु दंताधरद बिगुहिनलिळिद नासनव ॥ 3 ॥
पितन मनदभ्यंतरव नरिदतुळबल बल वैरिजितु परि-
मित निकेतन कोय्यनोडनैदिदनु बळिसलिसि
मतवु बेरिन्नेनु समर स्थितिगे मिक्किन भटरु रणदा-
यतद लोदगलि तन्न बळियलि निलुवे तानेंद ॥ 4 ॥
होक्कु होडकरिसुवेनु नाळिन लेक्कतुळदलि रणवनौतण
विक्कुवेनु विलयादि देवरिगरि भटावळिय
सुक्कि कोंडिर्द प्रतापद रक्कसाग्निय नाहवदोळु-
ब्बिक्कि सुवेनेंदगलिसि नंतस्त विह्वलव ॥ 5 ॥

दिया। 'शत्रु के साथ मैं स्वयं लड़ने जाऊँगा' इस तरह कहते धुएँ से भरी क्रोधाग्नि को प्रज्वलित किया। १ "कल के दिन मानवेन्द्र के रक्त से रणपिशाचियों की प्यास बुझाऊँगा। उनकी सहायता के लिए खड़े रहने वाले वानराधिपतियों को यम (के मुँह) का कौर बनाऊँगा। योद्धा के रूप में आनेवाले कपिसमूह को ढकेल दूँगा"। इस तरह कहते रावण ने अपनी तलवार हवा में झुलायी। २ मांडलीक, मुखिए, राक्षसवीर, महानबलशाली तथा युद्धवीर सामन्त राजाओं को रावण ने (हाथ के) इशारे से भेजदिया। चिंताग्रस्त रावण अपनी विजय के बारे में सोच-विचार करते दाँत-होंठ चबाए सिंहासन से उतरा। ३ अपने पिता के आंतरिक (मानसिक) रहस्य को जाननेवाले अनुपम बलशाली इन्द्रजित् ने उनके साथ (पिता के-साथ), पीछे-पीछे आते हुए (रावण के) एकांत स्थान तक अनुसरण किया। "युद्ध-विषयिक और राय क्या हो सकती है ? मेरे पार्श्व में खड़े हो वीर सैनिक तैयार हों। मैं युद्ध के लिए बीड़ा उठाता हूँ।" —इस तरह इन्द्रजित् ने कहा। ४ "कल के युद्ध में, (अपनी) जबर्दस्त वीरता प्रकट करते शत्रु पर टूट पड़ूँगा। युद्धकला-प्रवीणता प्रकट करूँगा। प्रलयदेवता को शत्रु वीरों की मेजबानी दूँगा। रण में बुझी राक्षसों की वीरता की आग फिर से प्रज्वलित करूँगा।" इस तरह आश्वासन देते इन्द्रजित् ने रावण की

धुर धुरंदरिकॆयनु ताने धरिसि कळुहिदनिंद्रजितुवनु
नॆरहि कॊंडिरु नाळिनाहवकुरु चतुर्बलव
मरळि मत्तिन्नाव मतवनु स्मरिस वेडॆळॆंदु मंडो-
दरिय मगननु कळुहिदनु निशियलि दशग्रीव ॥ 6 ॥
मेळविसिदनु बलव मणिगण दोळिवॆळगिन ऎरॆचॆ हणिणद
नीलगिरि सन्निभ मदेभव जोदरोजॆयलि
एळु कोटिय हॊन्न रन्नद कीलणद हल्लणद हयहदि
नेळु कोटिय रावुतरु सहितसम संगरकॆ ॥ 7 ॥
कोरविप मणिचक्रगळ चीत्कारगळ पडितळद पच्चॆय
पारियद पल्लव पताकावळिय पळहरद
सूरियन तुरगगळनेरप वारुवगळुप्परद हॊस हॊं-
देरहॊळॆकिदवेळु कोटि महारथरु सहित ॥ 8 ॥
खड्ग खेटक कुंत बिलु कक्कडॆ कठारि मुसुंडि मुद्गर
कडॆय सरपळि हार हीरावळिय कुंडलद
तॊडहदनुलेपनद हूविन मुडिय रक्कस पाददळ वरु-
सिडिल जंगुळियंतॆ कैगॊंदित्तु शतकोटि ॥ 9 ॥

व्याकुलता दूर कर दी। ५ दशकंठ ने युद्ध का अधिनायकत्व (सेनाधिपत्य) स्वयं उठा लिया। इन्द्रजित् को रवाना किया। "कल के युद्ध के लिए चतुरंग सेना को जुटा रखो। अन्य किसी प्रकार की आलोचना मत करो। उठो।" इस प्रकार समझाकर रावण ने मंदोदरी के पुत्र इन्द्रजित् को उस दिन रात को, घर रवाना किया। ६ रत्नकांति से जगमगाते पार्श्व पंख बाँधे तैयार किये गये नीलपर्वत-सदृश दीख पड़ते सात करोड़ मदमस्त हाथियों को महावतों-सहित युद्ध के लिए जुटाया। सोने के नक्शों से कढ़ी, रत्नखचित जीन मढ़े सत्तह करोड़ घोड़ों को घुड़सवारों-सहित जुटाया। ७ आँखों में चकाचौंध पैदा करते (रथ के) रत्न-जड़े चक्र जब घरघरा रहे थे, पन्ने, कबूतर तथा कोंपलों के रंगों के कपड़ों की ध्वज-पताकाएँ जब फहरा रही थीं, सूर्य के रथ के घोड़ों को मात देने वाले घोड़ों के जुते श्रेष्ठ नये सोने से मढ़े सात करोड़ रथ महारथी के साथ दृष्टि-गोचर हो रहे थे। ८ ढाल, खड्ग, बर्छी, धनुष, खंजर, कटार, मुसुंडि (एक अस्त्र), मुद्गर, कड़ा, जंजीर आदि आयुधों को उठाए (हाथ में धारे) हार तथा हीरों की मालाओं से आभूषित होकर, सुगंध द्रव्यों का लेप लगाए, फूलों से समलंकृत एक सौ करोड़ राक्षसों की पैदल-सेना विद्युत्समूह की भाँति आ जुटी। ९ इस प्रकार, उस दिन रात को,

आ दिवस दिरुळी परिय संपादिसिद नाहवक्कें रक्कस
कैदुगळनुब्बरद तळतंत्रवनु बळिकित्त
भूदिववनॊळकॊंड तिमिर महोदधिय बगिदॆद्दनबुधिय
भेदिसुव वडवाग्निय वॊलिननुदय शिखरियलि ॥ 10 ॥

बवरदादियलसुर पतियुप्पवडिसिद निद्दॆसॆय मंगळ
रवद पाठक सूतमागधरुगळ सूक्तियलि
रविगॆ सूसि जलांजलियनज भव निशाचर गुरुगळिगॆ मणि-
दव गडॆय खळरायननुवादनु महाहवक्कॆ ॥ 11 ॥

हरन मकुटगळैदना सरसिरुह भवन किरीट नाल्कनु
वर निकुंभिनिदत्त जीवस्फुरित मणिमयद
सुरुचिरद कोटीरवॊंदनु धरिसिदनु दशमौळियलि शशि
तरणि किरणद कुंडलव निक्किदनु किविगळलि ॥ 12 ॥

सुरप शिखियम निरुति जलधीश्वर समीरण राजराजर
धुरदॊळगॆ गॆद्दवर हॆसरिन हलवु हाहॆगळ
बिरिदुगळ कडॆयवनु काललि धरिसिदनु रविरंगु रंजित
सुरुचिरद पदकवनलंकरिसिदनु कॊरळिनलि ॥ 13 ॥

इन्द्रजित् ने युद्ध के लिए राक्षसायुध तथा अत्यधिक संख्या में पैदल-सेना जुटायी। इधर भूमि-आकाश को व्याप्त किए अँधेरे के सागर को चीरकर समुद्र को चीरकर आनेवाले बलवान के सदृश सूर्य उदयपर्वत पर उदित हुए दिखायी दिये। १० युद्ध प्रारम्भ करने के दिन सुबह दोनों तरफ़ से चारण-भाट जब मंगलस्तुति, गुणगान कर रहे थे तब राक्षसेश्वर बिछौने से उठे। सूर्य को अंजली भर अर्घ्य प्रदान कर, ब्रह्माजी, महेश्वर, असुर (शुक्राचार्य)—इनको प्रणाम किया। उसके बाद वीर रावण महान युद्ध के लिए तैयार हुआ। ११ शिवजी के पाँच मुकुट, ब्रह्माजी के चार मुकुट, निकुंभिनी का दिया जीव कांतियुक्त रत्नखचित मुकुट—इस प्रकार कुल दस मुकुट अपने दस माथों (मस्तकों) पर धारण किए, सूर्य-चंद्र-प्रकाशयुक्त कुंडलों से कानों को अलंकृत कर लिया। १२ इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर आदियों के साथ हुए युद्धों में जिन-जिनको उन्होंने जीता था, उन-उनके ओहदे, उपाधियों से नामांकित (चिह्नांकित) कड़ों को पैरों में पहन लिया। सूर्य-प्रकाश से जगमगाते पदक को रावण ने धारण किया। १३ देव, मानव तथा उरगलोकों के वीरों के कंठों पर

सुर नरोरग जगद वीरर कीरळि गौकिद खंडेयव सिरि
करगळलि संघटिसिदनु निगळगळ ननुवरद
सिरिगॆ सिंगारिसुववोलु बंधुरद शोण सुरागरचितां-
बरव रक्कस देसियलि विगिदुट्ट नसुरेंद्र ॥ 14 ॥
मृगमदद तिलकवनु नोसललि निगुरिसिद नीरैदऱलि मघ-
मधिप नूतन यक्षकर्दमवनु निजांगदलि
उगिसि सुरनंदनद होंगेदगॆय तुरुविनलिऱिकि हूदं-
डॆगळ हारावळि सहित हसरिसिद नसुरेंद्र ॥ 15 ॥
हरनु हरसिदु कोट्ट रणभीकरद होंगरिन चंद्रहासव
करग ळोरैदऱलि झाडिसि झडिदु लुळिवडॆदु
धुरद मैयुब्बिनलि मदमत्सरद मनदायतिकॆयलि दश-
शिरनु निंदिरॆ निंदु जय जयॆंदुदमरगण ॥ 16 ॥
विलयकालद रुद्रनिम्मैदळॆदनो संवर्त भैरव
नळवु दशगुण वाय्तो दशदिग्देवता सकति
वलिदु बिडदोंदाय्तोयॆंनॆ सम्मिळित शौर्यद सुप्रतापद
झळद झाडियला निशाचरराय रंजिसिद ॥ 17 ॥

तानी तलवार तथा युद्ध की साँकल रावण ने हाथ में ले ली। मनोहर तथा लाल रंग के कपड़े को राक्षसी ढंग से इस प्रकार कसकर पहन लिया मानों युद्धलक्ष्मी का अलंकार किया हो। १४ रावणेश्वर ने अपने दसों मस्तकों पर कस्तूरी तिलक लगा लिया। खुशबूदार नूतन कस्तूरी-कर्पूर-युक्त सुगंध द्रव्यों को सारे शरीर में मल लिया। देवलोक के नंदनवन के स्वर्णकेतकी (केवड़े) की पखुड़ियों को अपने सिर के बालों के जूड़ों में खोंस लिया। पुष्प-मालाओं तथा पुष्पहारों से अपने को अलंकृत कर लिया। १५ शिवजी का, आशीर्वचनपूर्वक दिया हुआ चमकता हुआ युद्धभयंकर चन्द्रहास नामक खड्ग को दसों हाथों से उसने झुलाकर चकाचौंध प्रकट की। द्वेष-असूया से परिपक्व मनवाला रावण युद्ध के जोश से उत्साह से जो खड़ा था, देख देवताओं ने भी जय-जयकार किया। १६ तब वह रावण ऐसा दीख पड़ रहा था मानों लयकालीन पंचब्रह्मा रूपी रुद्र ने दो शरीर धारण किये हो, या प्रलयकालीन भैरव की वीरता दस गुनी बढ़ी हो, दसों दिशाओं की देवताओं की शक्तियाँ इकट्ठी होकर प्रकट हुई हों —इस रीतिसे महापराक्रमशाली राक्षसेश्वर अपनी प्रतापाग्नि (वीरता की कांति) से विराज रहा। १७ मुस्कुराते मुखकांति संपन्न, चमक-दमक

ऎत्तिदरु रतुनारतिगळनु हॊत्तहॊस जव्वनद नसुनगॆ
वॆत्त मॊगबिबगळ लंबिसि हॊळॆव नयनगळ
उत्तमद युवतियरु हणॆयलि हत्तिसिदरक्षतॆय भाग्यद
बित्त बळिबळिदडकुव वॊलडकिदरु बळुवॆगळ ॥ 18 ॥
हरसि मुत्तिन वीरसेसॆय तरुणियरु सूसिदरु विद्या-
धररु हाडिदरंक मालॆय नारदादिगळु
सुरप सोंकुव सूळॆयरु सिंगरिसि नर्तिसिदरु नभोग्रद
लररॆ वैभव वॆंतुटो त्रैलोक्य दल्लणन ॥ 19 ॥
हॊडॆय हेळो भेरिगळ पडॆनडॆय हेळो रणकॆनुतलव
गडॆय रक्कसराय हॊरवंटनु निजालयव
ऎडबलद वंदिगळनॆलनुग्गडद पाठकरुगळ रत्नद
दडिय कंचुकिगळ घडावणॆ घाडिसितु नभव ॥ 20 ॥
धिरुरॆ पायवधारु जीयॆनॆ सरकु गट्टितु भुवन भुजगे-
श्वरन कॆलसं बळियॆनॆ हाळाय्तु नरलोक
अररॆ मामञ्ञ मायॆ मेलुप्परवु हळुहळुयॆनलु बॊम्मन
पुरकॆ गूळयदॆगॆदु दग्गद भूरि भुवनचय ॥ 21 ॥

से परिपूर्ण विशाल लोचन नवयौवनसंपन्न श्रेष्ठ स्त्रियों ने रावण की रत्न-दीपों से युक्त आरती उतारी; मस्तक पर अक्षत लगायीं। भाग्यसंपन्न बीजों का मानों ढेर बना रही हों —इस रीति से दीठ उतारकर ढेर बना दिया। १८ युवतियों ने आशीर्वचनयुक्त मोतियों के अक्षत से मंत्राक्षत (रावण पर) फेंके। विद्याधर, नारद आदियों ने रावण के ओहदों का गुणगान किया। देवेन्द्र की वेश्याओं ने सोलह शृंगारों से युक्त हो आकाश में नर्तन किया। वाह रे वाह, तीनों लोकों को कँपानेवाले के वैभव का किन शब्दों में वर्णन करें? १९ "(युद्ध के) नगाड़े बजने दो। सेना युद्ध के लिए कूच करने लगे।" —इस प्रकार वीर राक्षस राजा आज्ञा दे राजमहल से निकल पड़ा। उसके दाएँ-बाएँ वन्दीजन चारण-भाट उनके ओहदे आदि की स्तुतियों द्वारा गुणगान-घोष करते जा रहे थे। रत्नदंड धारे कंचुकी आगे-आगे चले। इनका शोरगुल आकाश भर में व्याप्त हो गया। २० 'हे धीराधिधीर राक्षसराज रावण भो पराक्!' ऐसे कंचुकी के जयघोष करने पर पाताललोक हटा। "सावधान! परे हटो।" —कहने पर भूलोक विनष्ट हुआ। "अरे रे! भले रे भले! वाह रे वाह!" आदि उद्गार निकालने पर सभी श्रेष्ठ लोक ब्रह्मनगरी के शरणागत हुए। २१

मलॆव सुभटर गंड सुरकरि कळभकुल भेरुंड कंपित
कुलिश सदृश महोग्र कौक्षेयक भुजादंड
विलसदभिनव रुद्र रौद्राकलित शौर्य समुद्र मुद्रित
फल सुभोग सुभद्र जीयॆंदॊदरि तमर गण ॥ 22 ॥
सुरपजय शिखिविजय यमकंधर कृपाण निशाट करुणा
कर समुद्राधीश घनहर मरुतगळ पाश
पुरहरप्रिय हृदय शूलोत्तर गुणान्वित हर सरोजज
परम रक्षक यॆंदु हॊगळितु राक्षसव्रात ॥ 23 ॥
कूडिताक्षण रावणन कैगूडिकॊय जीवाळ जोकॆय
जोडु सीसक शर शरासन शस्त्रपाणिगळु
जोडिकॊय चतुरंगबलव ल्लाडलिळॆ विलयाग्नि जिह्वॆय
झाडिकॊय कुडियंतॆ किडि गॆदरिदवु कैदुगळु ॥ 24 ॥
अरसुतन दौदार्य शक्तिय परम वैभव वॆंतुटो दश
शिरनु सूसिद नखिळ सुभटावळिगॆ मन दणियॆ
वर रतुन भंडार वहळित सुरुचिराभरणादिगळ क-
पूर सुगंधाद्यखिळ वस्त्रोत्करवनॊलविनलि ॥ 25 ॥

"अहंकार के पुतले वीरों के वीर ! देवता रूपी हाथी के बच्चों के लिए सिंहशावक-सदृश ! चमकते वज्रायुध सरीखे भयानक खड्गधारी भुजदंड ! अभिनव रुद्र ! भयानक शौर्य-समुद्र ! सुखभोग-प्राप्त पुण्यशाली ! मंगलकारी ! प्रभो !" इस प्रकार देवताओं के समूह ने जोर से उद्घोष किया। २२ "हे इन्द्रविजयी ! हे अग्नि को जीतने वाले ! यम के खड्ग से अपना खड्ग टकरानेवाले, समुद्रों के स्वामी, बलवान मरुद्गणों को पाश से बाँधनेवाले, महेश्वर के सदृश कुवेर के लिए शूल-सरीखे बने महापुरुष, श्रेष्ठ गुणशाली ब्रह्म-महेश्वर रक्षक !" इस प्रकार पवित्र स्तुतियों से राक्षस-समूह ने रावण की प्रशंसा की। २३ रावण की, सिद्धि से प्राप्त जीवरक्षक चतुरंग सेना कवच, शिरस्त्राण, धनुर्वाण तथा विविध प्रकार के शस्त्रास्त्रों को धारे उसी क्षण आ पहुँची (आ जुटी)। तब धरती हिल उठी। प्रलयाग्नि की ज्वाला-शिखि से निकली चिनगारियों की तरह शस्त्रास्त्र चिनगारियाँ उगलने लगे। २४ दशकंठ के कारोबार (शासन) की उदारता के वैभव का वर्णन कहाँ तक करें ? सारे राक्षस-वीरों को भरपूर (मनमाने) श्रेष्ठ-रत्न, भंडार घर से कांतियुक्त आभूषण, सुगंध द्रव्य, कई प्रकार के वस्त्र आदि खुशी

बोळविसिदनु सकल समर भटाळिगळ सन्मानदलि सं-
स्थूल सत्कृतिगळलि रण सुम्मान दुब्बिनलि
केळिदैयेले राजसूनु सुराळि बेंदरलु सकल सेना
जाल होरवडुतिर्दुदा लंका महापुरव ॥ 26 ॥
तुरग शतमित दमळ घंटाखुरके रतुनव सुरिदु बलवं
दरिदिशा पट नेरिदनु होंदेर होगळिकेय
सुरर सूतर मागधर तुंबुरर जयजय रभसदलि शं-
कर विरंचिग ळीव विमल स्वस्ति वचनदलि ॥ 27 ॥
तेर रावण नेरे तरिदरु होरि कुरि कोणगळ बोब्बेय
वीरणद बोग्गुगळ लग्गेय लुभय पार्श्वदलि
आरलुदुरिदविळेगे गगनद तारेगळु बिरिदोडेदुदुद्दके
मेरु कलकितु जलधि रावणनसम संगरके ॥ 28 ॥
वसुमतीपतिसूनु केळ् लयदसम नयनन तोरिकेगे जग-
दसुर तेगे बगे याय्तु नेरेद समस्त देवगण
नसिवुतिर्दुदु तारकाग्रह विसर सनक सनंदनादिग-
ळसुविडिदु रक्षोघ्न सूक्त दोळिर्द रभ्रदलि ॥ 29 ॥

खुशी दे दिये। २५ युद्धोत्साह की खुशी के मारे रावण ने समस्त युद्ध-वीरों को बुलाकर उनका गौरव-सम्मान करते तृप्त किया। सुन रहे हो न राजकुमार! राक्षस-सेना-समूह लंका से इस प्रकार रवाना हुआ कि उनके डील-डौल को देख समस्त देवगण भयभीत हो उठे। २६ घंटियाँ बँधे एक सौ घोड़ों के खुरपुटों पर रत्नों की वर्षा करते, प्रदक्षिणा समर्पित करते देवलोक के स्तुतिपाठक, वन्दीजन, तुंबुर आदि जब जय-जयकार कर रहे थे, शिवजी, ब्रह्माजी स्वस्ति-वाचन कर रहे थे, तभी शत्रुओं को मार भगाने में समर्थ रावण अपने स्वर्णरथ पर सवार हुआ। २७ रावण (जब इस प्रकार) रथ पर सवार हो रहा था तो दोनों पार्श्वों में मंगलकारी जुड़वे डफ, भेरी, पणव आदि जोश-खरोश के साथ बजाते भैंसे, बकरे आदि की बली चढ़ाई जा रही थी। रावण जब (इस) सकाम युद्ध के लिए रवाना हो रहा था तो आकाश के नक्षत्र धरती पर झड़ पड़े। समूचा मेरुपर्वत विदीर्ण हुआ। समुद्र उत्तेजित हुआ। २८ हे राजकुमार कुश! सुनो। प्रलयकालीन त्रिनेत्री (शिवजी)-सदृश दीख पड़नेवाले रावण को देख आकाश में आ जुटे समस्त देवताओं की साँस मानों अवरुद्ध-सी

मूरु लोकद गंड गर्वित सूरें काउर देवनुरें मै
दोरिदनु कपि बलकें कत्तलिसुव तमोनिधिगें
तोरुविन नंददलि तमनुब्बेरें तारकनार्डि जंभनु
चीरि हिंदण वीर रक्कस रायरुब्बिबरियें ॥ 30 ॥
हरिब निन्नदु लेसेंनुत मधु हरसिदनु कैटभनु होगळिद
नररें वीरर देव भार्पेदों लेंद राननव
बेरळतुदियलि लेस नुतला वर हिरण्याक्षनु हिरण्यक
ररें मुसुकिन मरौघ विर्दुदु दिक्कु धिगिलेंनुत ॥ 31 ॥
रथिक रतिरथ रर्ध रथिकरु प्रथुळ रथरु महा रथरु सु-
प्रथित सामोद्भव हयारोहकरु पदचररु
पृथुवि नेंग्गलु मुग्ग लहिपति शिथिल वागल जांड मन्मथ
मथन बेंदरलु काळगकें कैगैदु दरिसेनें ॥ 32 ॥
ईदुदो नभवमम धरें बेसलादुदो दिगुचक्र नेरें रू-
पादुदो लंकेश्वरन चतुरंग सैनिकद

हुई। ग्रह-नक्षत्र दुबले-पतले पड़ गये। आकाश में सनक-सनन्दनादियों के प्राण मानो सूख-से गये। वे राक्षसों के विनाश के लिए रक्षोघ्न-सूक्त पठन करने लगे। २९ अपनी वीरता से गर्विष्ठ बने तीनों लोको के वीरों का घमंड लूट लेनेवाला वीराग्रणी रावण काले किट्ट घने अँधेरे को सूर्य के दर्शन (दिखायी देने) की तरह कपिसेना को दिखायी पड़ा। तब तम नामक राक्षस फूला न समाया; तारक गरजने लगा, जंभ चीखा, गतकाल के वीर राक्षस राजा फूले न समाये। ३० 'तेरा यह कार्य अत्यंत श्रेयस्कर है।' —इस तरह कहते मधु राक्षस ने रावण को आशीर्वाद दिया। कैटभासुर ने प्रशंसा की— 'अरे रे वीरों के स्वामी, तू धन्य है।' 'बहुत ठीक किया' —इस तरह कहते हिरण्याक्ष-हिरण्यकशिपुओं ने उँगली उठाकर प्रसन्नता प्रकट की। तब देवताओं का समूह अपने मुखड़े को आधा छिपाए हुए 'अत्यन्त आश्चर्यकारक है' इस तरह कहते भयभीत स्थिति में था। ३१ राक्षसों की सेना में रथी, अतिरथी, अर्धरथी, सेवानुभवीरथी, महारथी, सुप्रसिद्ध हाथी-घोड़ों के आरोही, पैदल सैनिक आदि युद्ध के लिए तैयार हुए। उनके पदचाप से धरती धँस गयी। आदिशेष का माथा ठनका; ब्रह्मांड ढीला पड़ा; शिवजी भी काँप उठे। ३२ मानों ऐसा लग रहा (था) कि कहीं आकाश बच्चे जन रहा था; धरती का प्रसव हुआ; दिक्मंडल रूप धारे आया हो —इस प्रकार रावण की चतुरंग-सेना (कई रीतियों से) दृष्टि-

कैदुगळ कुडिवॆळगु तरणिय हॊय्द हॊळकिदुदखिळ वाद्य नि-
नाद नळिन भवांड भांडव नॊडॆदु दगलदलि ॥ 33 ॥
हूळितंबर रत्नमय कलशाळि सत्तिगॆ गळलि मिगॆ पद
धूळियलि जलनिधि रजोनिधि याय्तु निमिषदलि
तूळु विभहय रथ पदातिय मेळ दुब्बर दब्बरदलि दि-
शाळि बधिरतॆ याय्तु हॊगळुवॆ नेन नद्भुतव ॥ 34 ॥
निंदुर्देडदलि बलद लसुरन हिंदुमुंदण भागदलि बळि
संद भास्कर मंडलद परिवेषदंददलि
नंदनरु सेनानिगळु मणिवृंद खचित किरीट धररे
नॆंदु हॊगळुवॆ नारु सरि सिरियलि दशाननगॆ ॥ 35 ॥
वीर कुंभ निकुंभ रणजज्झार देवांतक नरांतक
घोर बल मकराक्ष विद्युज्जिह्व नतिकाय
सारणासुर शुक महोदर वीर युद्धोन्मत्त समरो
द्धार रिद्दुदु तवकदलि तम्तम्म बलसहित ॥ 36 ॥
हुलिय नेरिद रावुतरु हरिकुलव हूडिद रथिकरग्गद
बलु शरभ सैरिभव नडरिद जोधरपरिमित

गोचर हुई। सेना से प्रयुक्त आयुधों का प्रकाश सूर्य-प्रकाश से बढ़कर रहा। समस्त (रण-) वाद्यों के शब्द मानों ब्रह्मांड रूपी हाँडे को फोड़ रहे हों, ऐसा लग रहा था। ३३ रत्न-कलशसंपन्न छत्रों के कारण आकाश ढक गया। चरणों से रौंदे जाने के कारण उठी हुई धूल के कारण जलनिधि समुद्र क्षणार्ध में धूलि-धूसरित हो मटियाला हो गया। आगे जूझते हाथी, घोड़े, रथ तथा पैदल-सेना के अत्यधिक तीव्रता के शब्दों के कारण दिशाएँ बहरी बनी। इस अद्भुत स्थिति का वर्णन किन शब्दों में करें! इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि ने कहा। ३४ सूर्य-मंडल के चारों ओर के प्रभाबलय-सदृश रावण के आगे-पीछे, दाएँ-बाएँ में रावण के पुत्र, सेनापति रत्न-जटित मुकुट धारण किए खड़े रहे। श्रीसंपदा में रावण की बराबरी कौन कर सकता है; उसका वर्णन करने के लिए शब्द (संपत्ति) कहाँ से लाऊँ? इस तरह महर्षि वाल्मीकि ने कहा। ३५ वीरवर कुंभ, निकुंभ, रणधीर देवांतक, नरांतक, उग्रबलशाली मकराक्ष, विद्युज्जिह्व, अतिकाय, सारणासुर, शुक, महोदर, वग़ैरः जो युद्ध में मदमत्त समर (युद्ध)-शूर थे, अपनी-अपनी सेनाओं के साथ युद्धोत्साह से परिपूर्ण थे। ३६ बाघ पर सवार योद्धा, सिंह को (रथों में) जोड़े रथिक,

हलवु मृगगळ मोरॆगळ मंडळिय पदचरनिकरदिभ सं-
कुलद सौरंभद महाभट रिर्दुदगलदलि ॥ 37 ॥
तॆगॆदु निदुदु रावणन मै सॊगळिकॆगॆ निम्मवर वल कै-
मिगुव मीऱ्व वीर रंतरिसिदरु दूरदलि
जगद नयनसुतादिगळ तनुदिगिलु दिक्कॆनुतिर्दुदसुरन
सॊगडि गर्हितन हॊगर परिकिसु तिर्दना रघुज ॥ 38 ॥
इळिदु वळिकसुरेंद्रना कॊळुगुळद मध्यदलन्वयागत
दॊलुमॆ गाति निकुंभिळिय नाह्वानवनु माडि
विलसितासुर पूजॆयलि कैगॊळिसिदनु विविधोपचारा
वळिगळनु बॊब्बिरिव वहुविध वाद्यरभसदलि ॥ 39 ॥
इरिसि कैदुव वीजमंत्राक्षरव सांगोपांग मुद्रॆय
निरतिशय निगमागमद पूजा विधानदलि
नररुधिर मांसोपहारद परिविडिय परिभाव शुद्धिय
परम भक्तिय लॊलिसिदनु शस्त्राधि देवतॆय ॥ 40 ॥

भयानक शरभ तथा भैंसे पर आरोहित अनगिनत योद्धा, कई मृग-पशुओं के मुखौटों से शोभित पैदल सेनानी तथा हाथियों के झुंडों के साथ (अपनी) भारी डॉल-डौल दिखाते महान वीर उस उस युद्धभूमि में उपस्थित थे। ३७ रावण के शरीर से निकल रही उष्णता के कारण तुम्हारी तरफ़ की सेना पीछे हटकर खड़ी रही; आगे बढ़कर लड़ने की ताक़त रखनेवाले वीर दूरी पर ओट में खड़े रहे। रावण के शरीर की गंध के कारण सूर्य-पुत्र सुग्रीव का शरीर 'हाय-तोवा' करने लगा। शत्रु राजा के (इस) अहंकार-भरी कान्ति की, श्रीराम परीक्षा कर रहे थे। इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। ३८ तदनंतर रावण युद्धभूमि के मध्य उतर पड़ा; अपनी वंशपरम्परा के देवता निकुंभिला का आह्वाहन (निमंत्रित) किया; तव कई प्रकार के वाजे वजने लगे। विविध उपचारों से (उस) असुर का पूजन किया (अर्थात् निकुंभिला का पूजन किया)। ३९ आयुधों को रखकर वीज-मंत्राक्षरों का उच्चारण करते अंग-उपांगों-सहित विविध मुद्राओं को प्रदर्शित करते शास्त्रोक्त रीति से पूजा की। मानव-रक्त तथा मांस की बली चढ़ाकर शुद्ध मन से अत्यंत भक्तिपुरस्सर शस्त्राधिदेवताओं को रावण ने प्रसन्न कर लिया। ४० जो कुछ भी क्यों न करे? उससे क्या प्रयोजन? सद्धर्माचारयुक्त

एन माडिदडेनु सद्धर्मानुभावरि गैसले दै-
वानु कूलतॆं धर्महीनरि गसुर कर्मरिगॆं
आन नवनदरुवदु निगम विधान विदु केळै नरेश्वर
सूनु सुम्मानिसिद नावहकसुरपति बळिक ॥ 41 ॥
मणिदु मनॆंदेवतॆंगॆं नाना मणिखचित मौळिगळ नुरु मा-
र्गणद रौद्राकार दायुध निकरवनु धरिसि
रणद भूमिगॆं नमिसि रिपु कपि गणव नीक्षिसुतॆंद्रिदनु सुर-
गण भयंकर नबुज संभवदत्त मणिरथव ॥ 42 ॥
हत्तु साविर धनुव नॆंरडै वत्तु साविर दिव्य बाणद
बत्तळिकॆंगळ तुंबिसिद नॆंडबलद तेरिनलि
कृत्तिवासनु कमलजनु तनगित्त दिव्यायुधगळनु त-
न्नॊत्तिनलि संवरिसि कॊंडनु वाद नाहवकॆं ॥ 43 ॥
मॊरॆंदवगणित भेरि जलनिधि जरियॆं जवनॆंदॆं बिरियॆं मॊळगिद
वररॆं निस्साळगळु कमल भवांड कळवळिसॆं
मुरज तंबट पणह रणमौ वरिगळब्बरिसिदवु तारकि
सुरियॆं सूळैसिदवु चंबक कॊंबु कहळॆंगळु ॥ 44 ॥

(सन्मार्गी) व्यक्तियों को ही विधि अनुकूल बनती है। अधर्मियों को, उग्रकर्मियों को देख वह (विधि) मुँह फेर लेती है। (विधि उनकी सहायता नहीं करती)। यह निर्विवाद शास्त्रसम्मत तत्त्व है (शास्त्र-सिद्ध है)। राजकुमार कुश! सुनो। उसके बाद राक्षसेश्वर युद्ध के लिए उत्साहित हुआ। ४१ (अपने) रत्न-मुकुट धारे मस्तकों को, घर के देवता के सम्मुख नवाकर शिरसा प्रणिपात करते रावण ने बाण तथा भयानक आयुध उठा लिये। फिर युद्धभूमि को प्रणाम कर शत्रु वानरों की सेना को देखते देवताओं के लिए भी भयानक रावण ब्रह्माजी के दिए गये रथ पर सवार हुए। ४२ दस हजार धनुष तथा एक लाख दिव्य बाणों से भरे तरकसों को अपने दोनों पार्श्वों के रथों में भरवाया। महेश्वर से तथा ब्रह्माजी से (अपने को) दिये गये दिव्य आयुधों को अपने पास ही तैयार रख रावण युद्ध के लिए सन्नद्ध (तैयार) हुआ। ४३ अनगिनत भेरियाँ (युद्ध के बाजे) जब बजने लगीं (गरजने लगीं) तब समुद्र पीछे सरक गये; यम की छाती फटी। नगाड़े इतने ज़ोर-शोर से बजे कि सारा ब्रह्मांड घबरा गया। शंख, भेरी, पणव आदि युद्ध के बाजे ज़ोर-शोर से बजने लगे। सींगी, चंबक आदि जब बजने लगे तो नक्षत्र झड़ने लगे। ४४ डफ और डमरू जब ज़ोर-ज़ोर से बजने लगे तो आकाश

डक्कॆ डमरुग मॊळगिदवु कुंभिक्कि नभकुणि दाडलिळॆ बॊ-
ब्बिबक्किदवु बॊंबुळिग ळाशाबंध वॆसुगॆ विडॆ
रक्कसर रणवड्रॆग ळॊदरिद वॆक्कतुळ दल जांडमंडल
बिक्कुतिर्दुदु विरिवु तिर्दुदु हेळलॆनॆंद ॥ 45 ॥
आनॆयलि तुरगदलि रथसंतान दलि पदचरर नॆणिसलि
केन हेळुवॆ नादुदष्टादश महाक्षोणि
आ निभृत रणवड्रॆय रक्कस सेनॆगळ संख्यॆगळ नुसुरुव
डाननद सासिरद शेषं गरिदले यॆंद ॥ 46 ॥
राय रिपुसंहार निर्जर राय मस्तक शूल मानव
राय कोळाहळ भुजंगम राय रिपु गरुड
राय रायर राय रघुकुल राय रणभैरव निशाचर
राय जयजययॆंदु हॊगळितु वंदिसंदोह ॥ 47 ॥
आरु सरि निनगॆंदु नभदलि नारदनु कॊंडाडिदनु वृं-
दारकरु हॊगळिदरु पूमळॆ गरॆवु तभ्रदलि
वीर शेषाक्षतॆय नमरर नारियरु सूसिदरु जयवि-
स्तार जय जययॆंनुत सलॆ कॊंडाडितमरगण ॥ 48 ॥

झुका; तथा धरती नाच उठी। ढोल मानों ऐसे बजे कि दिशाओं को जोड़ती टाकियाँ छूट जायँ। युद्ध के डफले (राक्षसों के) जोर-शोर से बज उठे। (फलस्वरूप) ब्रह्मांड हाँफने तथा फटने लगा। इस परिस्थिति का किन शब्दों में वर्णन करूँ? इस तरह वाल्मीकि ने उद्‌गार निकाले। ४५ हाथी, घोड़े, रथों के दल तथा पैदल सैनिकों का समूह गिने जाने पर कुल अठारह अक्षौहिणी सेना वहाँ थी। उसका कैसे वर्णन करूँ? वहाँ की भीड़-भाड़ में जो युद्ध के डफले तथा राक्षस-सेना उपस्थित थी उसकी गिनती हज़ारों जिह्वाओंवाले आदिशेष के लिए भी असंभव थी। इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ४६ "हे राजा! शत्रु-संहारी! देवेन्द्र के मस्तक के लिए त्रिशूलस्वरूपी! मानव राजाओं के लिए आतंककारी! पाताल के राजाओं के लिए शत्रु रूपी गरुड़! हे राजाधिराज! रघुवंशीय राजाओं के लिए युद्ध में भैरवस्वरूपी! हे राक्षस राजा! तेरी जय हो।" —इस तरह वन्दीजनों ने रावण की भूरि-भूरि स्तुति की। ४७ 'तेरी बराबरी कौन करे!' इस तरह पुकारते आकाशगामी नारद ने स्तुति की। देवताओं ने आकाश-मार्ग से पुष्प-वर्षा करते रावण की स्तुति की। देवता-स्त्रियों ने वीर मंत्राक्षताएँ रावण पर फेंकीं। "जय-विस्तार!

बळिक मैयुब्बुगळ रोमावळिय बिगुह्नि भैरवांगद
विलसिताननद प्रतापद शिखिय निगुरिकॆय
झळद झाडिय जोडियलि कपिबलकॆ मैदोर्‍रिदनु बॊब्बॆय
बिलुदनिय बरॆ सिडिल लबुज भवांडघट बिरियॆ ॥ 49 ॥
लग्गॆ मसगितु कूडॆ रक्कस मॊग्गरद मुंबिनलि बवरद
बॊग्गि नब्बर वरॆग ऒडॆद वर्जांड मंडलव
हिग्ग लळॊ गळंबुराशिय बग्गलिळॆ दिगुतटद बंधद
हग्ग हरियलु हळचलनुगैदुदु निशाट बल ॥ 50 ॥
कुणिद वसुरन रथद हयदिन मणिय दिव्य वरूथ वाजिय
हणॆगॆ हॊंचुव खुरद चळबळकॆय छडाळदलि
अणुग केळ् मुंगार गगनांगणद नाट्यकॆ निद मिंचिन
भणितॆय वॊलसुरेंद्ररथ हॊळकिदुदु कणनॊळगॆ ॥ 51 ॥
हॊगुव कपिसेना समुद्रकॆ बिगिद कट्टॆ यिदॆ नलु बलिदुदु
बगॆ वडीशं गोसरिस दॆबंतॆ रिपुसेनॆ
मॊगस दादवु नोडलमरर दृगुगळसुरर सुप्रतापद
सॆगळिकॆय शिखियुब्बरद संताप लहरियलि ॥ 52 ॥

जय-जय !" कहते अमरों ने स्तुति की। ४८ उसके बाद रोमांचित होते, फूले न समाते अत्यंत बलवान भयानक अंगांगोंवाले, चमकते मुखड़ोंवाले रावण ने अपनी वीरता रूपी अग्नि की उष्णता बिखेरते घनघोर गर्जना की। उसके बाद कौंधते विद्युत की तरह धनुष्टंकार करते वे जब वानर-सेना के सम्मुख प्रकट हुए तो लगा कि ब्रह्मांड रूपी घड़ा फटा। ४९ राक्षस-सेना के अग्रभाग में शोरगुल मचा। युद्ध के बाजों के जोर-शोर से ब्रह्मांड-मंडल फटा; समुद्र का पार्श्व फूल उठा; धरती झुकी; दिशाओं को जोड़नेवाला रस्सा टूटने लगा तो राक्षस-सेना शत्रुओं पर टूट पड़ने को तैयार खड़ी रही। ५० सूर्य के दिव्य रथ में जुते घोड़ों की तरह वेगवान गति से आगे बढ़ने के लिए उत्सुक राक्षस, रथ में जुते घोड़े (अपने) खुरपुटों पर तीव्र गति से नाच उठे। सुनो कुमार! आरंभ की वर्षा मे कौंधती बिजली की तरह राक्षसराजा का रथ युद्धरंग में दृष्टिगोचर हुआ। ५१ राक्षस-सेना इस प्रकार खड़ी (डटी) रही मानों आगे बढ़ती वानर-सेना के लिए चबूतरा हो और हो सके तो शिवजी के सम्मुख भी छेपी न हटें (मानों शिवजी से भी लड़ने के लिए तैयार हो)। राक्षसों की वीरता की इस आग की ज्वाला को देखने में असमर्थ हो देवताओं की

ऐनि दद्भुत विंदि नाहव दानिकॅय रिपुबलद संभ्रम
वीनिसुत्तिर्दॆ कंगळलि काहुरव कौतुकव
नीनु बल्लै बंदभटनभिधानवनु युवराज नो
सेनानियो शत्रुवो विंभीषण हेळु तनगॆंद ॥ 53 ॥
हेळलम्मॆनु जीय हेळिद डालिसु विरो मेणु किवुडिन
केळिकॆय ननु करिसुविरो तनगरिय बारदॆनॆ
हेळु साकंजर्दॆ विरोधिगळाळु तन दुब्बटॆय रणदलि
केळुवुदु भूषणवले नमगॆंदना राम ॥ 54 ॥
हेळबेके जीय किविगळु केळलादडॆ कमलवदनॆय
खूळ तनदलि तंद यव्वनदॆसक मसुळिसिद
बालतन वृद्धत्व होद्द सोल लयसंक्रमिसदभिनव
शूलि समरकपालि खळ दशमौळि यिवनॆंद ॥ 55 ॥
देव नोडी संभ्रमवु तानाव रायर लुंटु सेना
राववितु लय सागरद लुंटे निधानिसलु

आँखें चटपटाने लगीं। ५२ "यह क्या अद्भुत चामत्कारिक दृश्य है ! आज दिन हमारा सामना करने के लिए (चढ़ाई के लिए) आयी इस सेना का डील-डौल देख दंग रह जाना पड़ रहा है। इस दृश्य से मेरी आँखों में कौतूहल नाच रहा है। क्या तुम इस वीर का नाम जानते हो ? क्या यह युवराज है ? सेनापति है ? या हमारा शत्रु है ? हे विभीषण ! मुझे बता दे, यह कौन है।" इस प्रकार राम ने पूछा। ५३ "हे प्रभो ! मैं यह बताने में असमर्थ हूँ। क्योंकि कहने पर आप या तो ध्यान न देंगे या ध्यान देने का बहाना करेंगे। मैं नही जानता।" इस प्रकार विभीषण के कहने पर "ठीक है; डरो मत; निर्भीक होकर कहो। युद्ध में जब जुटे हैं, तब शत्रु की वीरता-सामर्थ्य के बारे में सुनना भी हमारे लिए एक भूषण है न ?" इस प्रकार राम ने कहा। ५४ "तो कहना ही चाहिए न स्वामिन् ! तब जो कुछ मैं कहूँ आप ध्यान देकर सुनें। कमलमुखी सीता को (अपनी) मूर्खतावश अपहरण कर लाने वाला, अटूट यौवन-कांति-सपन्न जिसके नजदीक बाल्य तथा बुढ़ापा आने से डरते हैं, वह कभी पराजय का नाम तक नहीं जानता, जो अभिनव शूली (शिवजी) है जो युद्ध कपाली है —यह दशकंठासुर ही है।" इस तरह बिभीषण ने कहा। ५५ "देखिए भगवन्, ऐसा उत्साह किसी राजा में देखने को मिलता है ? इस सेना की यह गर्जना क्या प्रलय-समुद्र में दिखायी देती है ? सोच-विचारकर देखें तो देवताओं के, असुरों के, मानव

देव दनुज नरोरगर सुभटावळियों ळिवनंतें धैर्यद
दीवसिगळुंटे विचारिस लेंदनसुरेंद्र ॥ 56 ॥
अरस चित्तैसदें लयाब्धिय तरेंय तेंक्कय तेंरळिकें यवेंलु
तुरगदळ रथवदें समुद्रद सुळिग ळंददलि
सुरपतिगें माऽांत कुलभूधरंद दळवेंनें तोरुतदें सि-
धुर घटावळि सिधुवो रिपुसैन्यवोयेंद ॥ 57 ॥
अदें पदाति कृतांत नोंड्डिन होंदऽ होंळहिन लस्त्र शस्त्रद
लुदुर्व किडि सुडुतदें सुरेंद्रादिगळ षट्टणव
कॆंदऽि कोंबी समरसेनेंय तुदिय मुंदलें गहळें गळ रव-
सदवुतदें सुरबलद बेंऽगे नल्लवेयेंद ॥ 58 ॥
हेळुवडें कथेंयल्ल गर्जिसि सीळुतदें सिडिलोंडल रण नि-
स्साळ तति नीरज भवांडावरण मंडलव
हेळ्तवें भेरिगळु भीमकराळरव वाद्यद गडावणें
हूळुतिदें दिगुभामिनी जन कर्नकोटरव ॥ 59 ॥

तथा- उरगों के वीरों में इसका जैसा धीर साहसी कहीं देखने को मिलेगा ?" इस तरह विभीषण ने कहा। ५६ "राजन् ! सुनिए। प्रलयकालीन सागर की लहरों के समूह के चाल-चलन (गति) की तरह (इनकी) अश्व-सेना-समूह है; उस सागर के भँवर की तरह रथों का समूह है; देवेन्द्र से प्रतिरोधित कुलपर्वतों के समूह की तरह गज-सेना दिखायी पड़ रही है। यह सागर है या शत्रु-सेना है !" (पता लगाना मुश्किल है) इस प्रकार विभीषण ने कहा। ५७ "वह देखिए, यम देवता की सेना की तरह यह पैदल सेना दिखायी पड़ रही है। चमकते-दमकते शस्त्रास्त्रों से जो चिनगारियाँ निकल रही हैं, देवेन्द्रादियों की नगरियों को जला रही हैं। बड़े ही विस्तृत रूप में खड़ी इस युद्ध-सेना के अग्रभाग में बज रहे युद्ध के गाजे-बाजों के शब्दों से देवसेना भी आतंकित है। यह अत्यंत आश्चर्यजनक है न ?" इस प्रकार विभीषण ने कहा। ५८ मैं कथा-कहानी नहीं बांच रहा। युद्ध के डफले जो बज रहे हैं— गर्जते कड़कते बिजलियों को मानों चीर रहे हैं। भेरियाँ मानों ब्रह्मांडमंडल के आवरण को आज्ञा दे रही हैं। कठोर शब्द के साथ बजते भयानक युद्ध-वाद्यों के शोरगुल से दिशा रूपी स्त्रियों के कानों के पर्दे फटे जा रहे हैं। ५९ "श्रीविष्णु के चक्रायुध की मार से अधकटे गले के वीर (युद्धवीर) इस

हरिय चक्र विघातियलि कौरळरॆ हरिद रणवीररदॆ नर
हरिय निशित नखाग्र हतियलि सीळिदी डलुगळ
करुळ हॊलिगॆय वीररदॆ सूकरन दाडॆग ळद्रित दंगद
बरिय बादणदलॆय भटरदॆ देव नोडॆंद ॥ 60 ॥
ऒदॆदु सिडिलुच्चळिसि दंगगळॆदॆय डॊद्रिन डावरद खळ-
रदॆ सुरेश विदारिसिद हळॆगलॆय हत्तुगॆय
कदन कर्कश रदॆ कृतांतन गदॆय घायदलरॆ जरिद सिर
दधट रक्कसरायरदॆ राजेंद्र नोडॆंद ॥ 61 ॥
हरन शूलद हतिय हुतवहनुरु शिळीमुख विहरणद कि-
न्नर पतिय कौक्षेयकद कट्टॆद्रि नारिकॆय
भरित बलरदॆ जीय युगशत तिरुगि वरॆ साविल्लदसुरे-
श्वर कदं बकवदॆ कटाक्षिसु देव नीनॆंद ॥ 62 ॥
अवनि हुट्टिद कालदलि संभविसि दग्गद वीर भटरदॆ
जवनु जनिसिद मुन्न जनिसिद पूर्व देवरदॆ
शिव सरोजासनर सरियलि सवॆय दायुविन सुररदॆ न-
म्मवन बळियलि बयल मातल्लरस नोडॆंद ॥ 63 ॥

सेना में हैं। नरसिंहजी के तीखे नाखूनों की कोर से पेट फाड़े जाने पर आँतड़ियाँ सीकर ठीक कर दिये गए वीर इसमें हैं। वराह के वक्र दाढ़ों से चुभोए जाने पर जिनके शरीर के पार्श्व फटे हैं तथा माथे में छिद्र हुए हैं—ऐसे वीर इस सेना में हैं प्रभो! देखिए। ६० "बिजली टूटने पर अंग छिन्न-विच्छिन्न हुए, जिनके हृदय में खोखले हैं—ऐसे भयानक राक्षस यहाँ हैं। इन्द्र से चीरे जाने पर जिनके मुखड़े घावों से भरे हैं—ऐसे युद्ध कर्कश (कठोर) राक्षस इस सेना में है। यमदेवता के गदा-प्रहार के कारण अधकटे सिरों वाले राक्षसराज यहाँ है। देखिए राजेन्द्र।" इस प्रकार विभीषण ने कहा। ६१ "शिवजी के त्रिशूल से आहत, अग्नि के बाण से पीड़ित, कुबेर के खड्ग की मार से भारी घायल हुए शक्तिसामर्थ्य-संपन्न (राक्षस) यहाँ हैं। स्वामिन्! सौ युगों के लौटने पर भी अमर रहनेवाला राक्षस राजाओं का समूह यहाँ पर है। आप ही देख लीजिए।" —इस प्रकार विभीषण ने कहा। ६२ "हमारे रावण के यहाँ धरती के प्रारंभ में उत्पन्न (पैदा हुए) श्रेष्ठा योद्धा हैं। यम के पैदा होने के पहले ही जन्मे देवता हैं; शिव, ब्रह्माजी की तरह जिनका आयुष्य क्षीण नहीं होता है—ऐसे राक्षस भी हैं। ये मेरी बातें व्यर्थ (निरर्थक) बकवास नहीं है। हे राम, आप ही विचार कर देखें।" इस तरह

गरळमय सागरव नंजिन गिरिय कडे गोलिनल घोरद
शिरद विलय तमोगुणादि समस्त भूतगण
भरित विषदहिवरन तेगहिन तेरळिकेय लुदिसिद तमो नि-
र्भर शरीरद सुभटरदे नरनाथ नोडेंद ॥ 64 ॥
दळविदर हिंदेसेय नीलाचलद निभ दिभदग्रदलि होळे
होळेव मुकुटद हार हीरावळिय कुंडलद
खळ महोदर नेंबवन नोडिळेय लयदलि मलेव कालन
कलितनद कडुहव नलदे लेसागि नोडेंद ॥ 65 ॥
अदे कृतांतन कोटि साहस दधट रवरौत्तिनलि मूरु-
र्बुद महाबलवा महोदर नेडद भागदलि
त्रिदशरायन हयद हवणिन कुदरेय नवनीग नरलो-
कद नृपालर गंडवीर नरांतकनु देव ॥ 66 ॥
गेलिद नवनंतकन नाजिय लिळेय हरेयदला नरारिय
बळिय भटरदे नोडु भैरव कोटि बलयुतर
तले हरिद रट्टेयलि कादुव कलिग ळर्बुद वीररदे त-
द्बलद बळियलि भारिभटरदे देव नोडेंद ॥ 67 ॥

विभीषण ने कहा। ६३ "विष भरे सागर को मथने के लिए विषैले पहाड़ की मथनी बनाए, अत्यंत भयानक मस्तकों (फनों) वाले प्रलयकालीन तमोगुण आदि समस्त भूतगण विषभरे आदिशेष को रस्सा बनाए जब मथा गया उस खींचातानी में पैदा हुए अँधेरा (काला रंग) भरे शरीर के वीर हैं। हे मानवेन्द्र, आप देखें।" इस तरह विभीषण ने कहा। ६४ "इसके पीछे के सैनिक दल में नील पर्वत-सदृश हाथी पर चमक-दमक-परिपूर्ण मुकुट, हार, रत्नों की माला, कुंडल आदि धारण किए बैठे हुए महोदर नामक असुर को देखिए। जगत्प्रलय के समय जो अभिमान मृत्युदेवता यम में प्रकट होता हो वह उसमें विराजमान है। देखिए तो सही। वह बड़ा भयानक वीर है।" इस तरह विभीषण ने कहा। ६५ वे यम से बढ़कर करोड़ गुने साहसी वीर हैं। उसके पार्श्व में, महोदर के बाएँ पार्श्व में तीन अर्बुद महासेना है। देवेन्द्र के घोड़ों की बराबरी करनेवाले घोड़े पर बैठा हुआ वीर भूलोक के राजाओं के अधिपति वीर नरांतक हैं। ६६ "नरांतक ने अपनी जवानी के प्रारंभिक दिनों में ही युद्ध में यम को जीत लिया था। उसके आधीन करोड़ों भैरवों की शक्ति (से संपन्न) की बराबरी करनेवाले वीर हैं। ज़रा गौर कीजिए। सिर

मातु हुसियल्लरस केळ् पुरुहूतपुरवनु दळदुळव हों-
क्कीत सूरेय कोंड नूर्वसि रंभे मोदलाद
ख्यातरनु सुरपतिय मोरेय लील नेरगिद डोरु गळेयदे
भूतळाधिप नोडु देवांतक निशाचरन ॥ 68 ॥
इवन रथ चरिसुवदु नानाभुवनवनु भुवनैक बल नें-
दिवन कोंडाडुवरु कमलभवामरेश्वररु
अवनदंतिर लाचेयलि नोडवन धनपन पुरवनातन
नवनिधिगळनु सूरेगोंडति कायनेंबवनु ॥ 69 ॥
पडियिडलु पूर्वद त्रिविक्रम नेंडेगे वेग्गळना युगांतद
मृडगें मिगिलु कृतांत कोटिगळिवगें पाडल्ल
पोडविपति केळोंदु गुणविव नोडनिहुदु दुश्चरित विवनलि
भिडुक लम्मवु मिसुकलाऱद धर्मकृतवेंद ॥ 70 ॥
कुंभनवनाचेयलि नोडु निकुंभननु कुंभश्रुतन तनु
संभवर संभविस लरियदसाध्य गेलवेंमगे

कट जाने पर भी (शिरो-रहित) केवल कवंध को प्रयुक्त करते लड़नेवाले अर्बुद संख्या के शूरवीर है। उस सेना में बड़े ज़बर्दस्त वीर हैं। प्रभो, कृपया ग़ौर कर देखें।" इस तरह विभीषण ने निवेदन किया। ६७ सुनो राजन्, मैं झूठ नहीं बोल रहा। यह इन्द्र की नगरी को खूब लूट लेने गया तो वहाँ की सुप्रसिद्ध रंभा-उर्वशियों को लूट लिया। फिर इन्द्र पर जो टूट पड़ा, उसे घायल बनाकर ही छोड़ा। इन्द्र के मुखड़े पर इसकी खरोंच के छिद्र आज दिन भी दिखायी देते हैं। यह देवांतक है। इसे देखिए भगवन्। ६८ इसका रथ सभी देशों में विचरण करता है। ब्रह्मा, देवेन्द्र इसकी 'लोकैकवीर' कहकर तारीफ़ करते हैं। जाने दीजिए इन वातों को। कुबेर की नगरी की लूट मारकर नवनिधियों को लूटने वाले अतिकाय को देखिए। वहाँ खड़ा है। ६९ "तुलना कर देखें तो पूर्व में अवतार धारण करनेवाले त्रिविक्रम से भी यह बढ़कर है; युगांत के प्रलयकारी शिवजी से अधिक (शक्तिशाली) है। करोड़ों यम भी इसकी बराबरी नहीं कर सकते। (यही अधिक है।) हे राजा राम, सुनिए। इसका एक सद्गुण भी है। बुरी आदत इसे छू नहीं पाती। धार्मिक वृत्तियाँ इसी पर अवलंबित हैं।" इस तरह विभीषण ने कहा। ७० वह कुंभ है; उसके उस तरफ़ निकुंभ है। उन पर ज़रा ग़ौर कीजिए। कुंभकर्ण के इन पुत्रों को जीतना असाध्य है। इन्द्र, अग्नि, वरुण, यम, वायु, कुबेर आदियों से ये जो लड़े उनको (विपक्षियों को) 'हाय तोबा'

जंभरिपु शिखि यम निशाटमहांभसाधिप वायु धनपर
नंबे येनिसिद राजियलि दिग्विजय दोळगेंद ॥ 71 ॥
चित्तविसु राजेंद्र युद्धोन्मत्तनेंब निशाचरनु बें-
बत्ति सदेदनु कैदु गोंडदिरे कमलसंभवन
इत्त नवनुपटळके तेत्तु महोत्तमद दिव्यायुधव नेरे
होत्तुतदे कोपाग्नि कदनके कपि वरूथिनिय ॥ 72 ॥
आरु निल बहुदिवनोडने त्रिपुरारि गसदळदवनु बेरे कु-
माररदे रणगलि विरूपाक्षादि भटनिकर
कारिरुळ तिरुळंते गरळद वारिधिय तेरेयंते कल्पद
क्रूर भैरव नंते राहुविनंते नोडेंद ॥ 73 ॥
आ कुमारर मध्यदलि लोकैकबल बलवैरिजितुवह
नेक मेवाद्वय पराक्रमनेंब हम्मिनलि
आ कदन कर्कशन कांडद शोक निम्मडि कंडितग्गद
कोक नद संभवन शरवव गल्ल दिल्लेंद ॥ 74 ॥
मिक्क दिव्यास्त्रंगळिव नलि सिक्कि कोंडिहु देनरिद्दु हु-
ब्बिक्किदरे शंकर सरोज भवामरेश्वररु

मचानी पड़ी। ये हमारे लिए दुर्धर्ष हैं राजन्। ७१ इस तरफ़ देखिए राजेन्द्र! इस युद्धोन्मत्त नामक राक्षस ने ब्रह्माजी के आयुध के निराकरण पर उस (ब्रह्माजी) का पीछा कर पीटा। इसकी असह्य पीड़ा से लाचार हो ब्रह्माजी ने अपना दिव्यायुध इसे दिया। वानर-सेना के साथ युद्ध करने के लिए उत्सुक इसकी क्रोधाग्नि सुलग रही है। ७२ "युद्ध में, इसका सामना कौन कर सकता है? यह त्रिनेत्री के लिए भी असाध्य है। इतना ही नहीं, अँधेरी रात के सारस्वरूप, विष-समुद्र के लहर की तरह, प्रलयकालीन क्रूर भैरव की तरह, राहु-सदृश युद्धोन्मत्त विरूपाक्षादि रावण के ये अन्य पुत्र भी यहाँ खड़े है। कृपया देख लें।" इस प्रकार विभीषण निवेदन किया। ७३ "इन रावण-कुमारों के मध्य लोकैक बलशाली इन्द्रजित् असामान्य पराक्रमी (अपने) अहंकार का प्रदर्शन करते खड़ा है— देखिए। श्रीचरणों ने (आपने) अनुभव किया ही है कि युद्ध में यम-सदृश उसके वाणों की वेदना कितनी भयानक है। श्रेष्ठ ब्रह्मास्त्र उसके सिवा और किसी के पास नहीं।" इस तरह विभीषण ने कहा। ७४ "अन्य दिव्यास्त्र भी इसके हाथ में फँस गये हैं। यह कुछ असाध्य घटना नहीं। इसकी भौंहों पर बल पड़ते ही शिवजी, ब्रह्माजी तथा देवेन्द्र इसके सामने आकर, मुरझाए हुए से होकर पूछने लगते हैं—

सिक्कि जीय हसादवेंदे सुक्कि कोंडिह रिवगें होंगळुव
डक्करिग तानल्ल निजवहु मातिदोगेंद ॥ 75 ॥
आ निशाटन बिट्टु कळॆ रघु भूनितंबिनि यरस केळॆ
कोन शतकोटि प्रसिद्ध किरीट वर्धनर
मानवामर भुजग भटरसु सोनॆगाररं समरजय सु-
म्मान साररं नोडु होंगळुवेनेन तानॆंद ॥ 76 ॥
केळिदॆवु कंडॆवु निदानवु हेळिदुदु नी नहुदि दल्लॆं
बेळि लगळिनितिल्लोडं बट्टॆवु मनस्सिनलि
केळिदै येलॆ कलि विभीषण काळ गदोळाव् हॆदरि हिगदॆ
सोल दिहुदरि दादडॆयु तोऱरिय नमगॆंद ॥ 77 ॥
आदडीक्षिसु जीय विलय महोदधिय वोलु तोरुवी क्र-
व्याद सेनामध्यदलि वडवाग्नियंददलि
कैदुगळ बॆळगिनलि घन निर्ह्रद दव्वरणॆयलि वलु चल
वादिगळ विरुदंक नहनॆलॆ देव नोडॆंद ॥ 78 ॥

'क्या आज्ञा है'। इस प्रकार वर्णन करने में समर्थ मैं कोई विद्वान नहीं हूँ। जो कुछ मैंने निवेदन किया— वह सब सच है।" इस तरह विभीषण ने कहा। ७५ "इस राक्षस की बात जाने दीजिए। हे रघुराम, सुनिए। 'मानवलोक, अमरलोक, पाताललोक के वीरों के लिए कसाई के सदृश बने, युद्धविजयोत्साही निन्यानवे करोड़ प्रसिद्ध मुकुटधारी इन राजाओं को देखो। इनका मैं किन शब्दों में वर्णन करूँ?" —इस तरह विभीषण ने कहा। ७६ "तुमने जो कुछ सुनाया, हमने सुना, देखा भी। तुमने जो कुछ कहा वह तो वस्तुस्थिति है; जो ठीक भी है। हममें रत्ती भर भी (इस दिशा में) घृणा नहीं रही। यह सब कुछ बिलकुल ठीक है। मन ही मन तुम्हारी बातें मान भी लेते हैं। सुनिए हे वीर विभीषण! युद्ध में निर्भीक हो, बिना पीछे हटते हमारा हारना भले ही निश्चित हो —इसके लिए हम चिंतित नहीं। हमारे निजी शत्रु के दर्शन हमें कराओ।" इस तरह राम ने कहा। ७७ "यह (ऐसी) बात है तो देखिए प्रभो, प्रलयकालीन महासागर-सदृश दिखायी पड़नेवाले इस राक्षस-सेना के मध्य में वड़वाग्नि-सदृश आयुधों की चकाचौंध (प्रकाश) में डूबे घनघोर रोर के साथ ज़बर्दस्त जिद्दियों की उपाधियों को धारण करनेवाला एक वीर है।" —इस प्रकार विभीषण ने निवेदन किया। ७८ "उसका क्रोध तो कालाग्नि रुद्र-सदृश है! वीरता

कोपवदें कालाग्नि रुद्रन कोपद वों लग्गळद शौर्या-
टोपवदें संवर्त भैरव गेंटु मडियंतें
भूप चित्तै सात नीग महापतिव्रतेयनु विहारक-
ळापदलि कोंडोय्दु रक्कसराय नवनेंद ॥ 79 ॥
होगळुतदें सुरराज नोड्डोलग दोळगें सुरवंदिजन कै-
नेगहि कैवारिसुत लर्दे बेड्भ्रदलि सुरर
हगेगळह हैरण्य पुरदर सुगळ मागधेयरु सारासुर
जगदवीरन बिरुदकिविगोट्टालि सिदनेंद ॥ 80 ॥
कालदळिविगें मोगसि निदक पालिगिं मिगिलेन बहुदु लय
काल भैरवनिगें शताधिक सुबलनेन बहुदु
केळु रघुपति मिक्क वीर भटाळिगळ हेळदिरु दिविजर
कालुगळ कंपनव नित्तलु नोडु नीनेंद ॥ 81 ॥
आरिगजन पुरोहितत्वद सेरु पडियुंटरस जगदोळ
गारिगीशन हरकें दिन दिनकुंटु रायरलि
आरिगुंटोलगवु तुंबुर नारदरु निर्जररु सेवक
रारिगावन कालदलि नीव् बल्लिरे येंद ॥ 82 ॥

की अहमहमिका (घमंड) में प्रलय-भैरव से आठ गुना अधिक है ! हे राजा राम, उस तरफ़ देखिए। यह वही हैं जिसने वन-विहार के बहाने आकर महापतिव्रता सीता का अपहरण किया। यह वही राक्षसराज (रावण) हैं" —इस प्रकार विभीषण ने निवेदन किया। ७९ "देवलोक के बन्दीजन (चारण-भाट) देवेन्द्र की सभा में रावण का स्तुतिगान कर रहे हैं। देवताओं के शत्रु हैरण्यपुर के राजाओं की स्तुतिगान करनेवाली स्त्रियाँ देवलोक, राक्षसलोकों के वीर रावण के ओहदे-उपाधियों को (वड़प्पन को) हाथ ऊपर उठाए आकाश में गा रही हैं— ध्यान देकर सुनिए राजन्।" इस प्रकार विभीषण ने कहा। ८० "कह सकते हैं कि यह रावण काल के विनाश के लिए प्रयत्न करनेवाले शिवजी से भी अधिक है। यह भी कह सकते हैं कि प्रलय के कालभैरव से सौ गुना अधिक बलशाली है। सुनिए रघुपति, अन्य वीर योद्धाओं के बारे में कहने के लिए कुछ बाकी न रहा। यहाँ देखिए— देवताओं के पैर थरथर काँप रहे हैं।" इस प्रकार विभीषण ने निवेदन किया। ८१ "हे राजा राम, ब्रह्माजी का पौरोहित्य कौन सँभालता है ? जगत के राजाओं में शिवजी के आशीर्वाद प्रतिदिन किसको मिलते हैं ? इस प्रकार का आस्थान (राज) वैभव किसको प्राप्त

मारि मुळिदुद काणें कालन नारु बल्लरु विधियलिपिय वि-
कार विवनलि होंद्द दोंड बडद शुभ दारैकें
वारिजासन विष्णु रुद्रर वीररेंदिव नेंणिस मिक्किन
भूरिभुवनद बणगु भटरनु बगॆव नल्लेंद ॥ 83 ॥
मरळि मातेनरस दशकंधरन विजयश्रीगॆ निज मं-
दिरवला ब्रह्मांड करवोनगळला भुवन
धरणि मंच वितान वंबर तरणि दीप्ति सुधांशु दर्पण
सुरसतिय रोळियरु सुर रनुचरर लेयॆंद ॥ 84 ॥
अंजुवॆनु बिन्नहकें जीय समंजसनु समरदलि सावि-
गंजुववनल्लरिय बारदु देव विलुगोलॆगॆ
सिंजिनिय समतळिसु संगर कंजदंवुगळिरलि निजकर
कंजदलि कडुहिरलि कायदोळेंद नसुरेंद्र ॥ 85 ॥
अरस चित्तैसिवन मैयलि कोरतॆ योंदिदॆ यदरि नपजय
दोरकुवदो नानरियॆनुळिदंती दशास्यंगॆ
सरियदारी लोकदलि शंकर सरोजभवामरेंद्रर
सरकु माडुव नल्ल मरॆ मातेकें तनगेंद ॥ 86 ॥

है ? तुंबुर, नारद, देवता किनके सेवक हैं ? क्या आप जानते हैं ?" इस प्रकार बिभीषण ने पूछा । ८२ इस पर, महामारी का इससे नाराज होना मैंने देखा भी नहीं । यम की कौन क्या कहें ? विधि-लेखा के कष्ट इसके पास पटकने भी नहीं पाते । अशुभ की आशंका से यह कभी त्रस्त नहीं हुआ । ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर —इनको वीर मानने के लिए यह तैयार है ही नहीं । बचे-खुचे विस्तृत जगत के अल्प वीरों की गणना इसके लिए नगण्य है ।" इस प्रकार विभीषण ने निवेदन किया । ८३ "अधिक क्या कहूँ राजन् ? दशकंठ की विजयश्री (लक्ष्मी) के लिए ब्रह्मांड ही अपना घर है, समस्त लोक ही उसके जलपात्र हैं, धरती ही चारपाई है, चँदोवा ही वस्त्र है, सूर्य ही दीपक है, चन्द्रमा ही आइना है, देवलोक की स्त्रियाँ सहेलियाँ हैं, देवता सेवक हैं" । इस तरह उसने कहा । ८४ "आपसे निवेदन करते डर लगता है स्वामिन् ! युद्ध में रावण बड़ा ही विश्वासपात्र (ईमानदार) है; मृत्यु से भयभीत होनेवाला नहीं; उसको समझ पाना ही मुश्किल है । धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर तैयार रहो । (इस) युद्ध में निर्भीक बाण आपके पास ही रहें । देह में चैतन्य, उत्साह-भरा रहे ।" इस प्रकार असुरस्वामी विभीषण ने कहा । ८५ "सुनिए राजन् ! इसमें एक मात्र ऐब (कमी) है ही । उसके कारण उसकी हार सुनिश्चित है कि नहीं—यह भी मैं नहीं जानता । उस

नगेय नसुगोपदलि लक्ष्मण मोगवनोय्यनें तिरुहिदनु मन-
वोगदु नमगी मातेनुत मिहिरजनु चुबुकिरिद
अगिदु दंतद लौड ननिलन मगनु हूंकरिसिदनु हगेयनु
होगळि कॅडिसिदयेंदु किडिगेंदरितु भटस्तोम ॥ 87 ॥
होहो कळकळवेकॆ त्रिजगद साहसियला दश वदननु-
त्साह वीगल देकॆ तोरिसि तुदिय लाहवकॆ
बेह बुद्धियनी विभीषण नूहिसिदु देनहितवे नि-
म्माहवद भुजशौर्य विदिन लरिय बहुदेंद ॥ 88 ॥
केळुती मातिनलि सिडिलिन पाळयवु पडिमुखद गिरि गळ
मेलॆ मुरिदेळुव वोलॆद्दुदु गगनलंबितद
शैल ताळ तमाल तरुगळ ताळिकॆय तोळुगळ नॆगहिन
लाळिकारर देव तोरवेय राय नाज्ञेयलि ॥ 89 ॥

एक (कमी) को गिनती में न लें तो इस दशमुख की बराबरी इस लोक में कौन कर सकता है ? शंकरजी, ब्रह्माजी, देवेन्द्र आदियों की परवाह भी इसे नहीं; इन बातों को कैसे छिपाऊँ ?" इस तरह विभीषण ने कहा। ८६ मुस्कुराहट-भरे क्रोधित मुद्रा में लक्ष्मण ने तत्क्षण मुँह फेर लिया। सुग्रीव ने बड़े आवेश के साथ कहा— 'ये तुम्हारी बातें मुझको बिलकुल पसंद नहीं'; वायुपुत्र आंजनेय ने दाँत-होठ चबाते हुंकार किया। 'शत्रु की प्रशंसा कर हमारा सत्यानाश किया', इस तरह कहते वीर-समूह आगबबूला हुआ। ८७ "हाँ हाँ, रुको-रुको। अभी से इतना शोरगुल क्यों ? दशानन त्रिलोकी वीर जो ठहरा। अभी उतावलेपन से क्या प्रयोजन ? आगे (भविष्य में) अपने उत्साह को प्रकट करें। युद्ध के लिए आवश्यक विवेक के बारे में विभीषण ने जो अग्रिम चेतावनी दी —यही क्या उसकी ग़लती है ? आज के युद्ध में अपना बाहुबल, पौरुष प्रकट करें। तभी तो मालूम हो।" इस प्रकार राम ने कहा। ८८ इतनी बातें सुनते ही वानर वीर आकाश की ओर उछलकर खड़े हो गये मानों सामने के पहाड़ों पर बिजलियाँ टूट पड़ी हों। हठी-जिद्दियों के स्वामी 'तोरवे' के नरहरि के अवतारी श्रीराम की आज्ञा से पहाड़ों को, ताड़-वृक्षों को, तमाल-वृक्षों को हाथ में धरे वानर उन हाथों को ऊपर उछाले खड़े रहे। ८९

इप्पत्तोंदनेय संधि

सूचने— राघवन नग्गद जगत्रय रावणन दिविजेंद्र बल विद्रावणन समरदलि नोंदनु राय सुग्रीव ।

लवने केळसुरेंद्र सेनार्णवद मुंगुडि दाणदलि रा-
घवन काणुत जरेदु मूदलिसिदवु कहळेगळु
बवर बेडरिराय रणभैरव नोळाहव बेड रिपुरण
युवति यभिनव रतिविलास नोळेंदु बिरुबिनलि ॥ 1 ॥
तोट बेड भवाद्रि मूलोत्पाटि यग्गद वहळ बाहा
स्फोटना कंपित सरोज भवांड मंडलन
नोट नयनकसाध्य बयकेय कूट दुर्घट दवनिजेय तेगे
दोटवे सुख समर बेडें दोदरिदवु कहळे ॥ 2 ॥
लोकपालर गेलिदवन मूलोक गळ नाळ्दवन ना जग
देक वीरन विश्रुतन रणरंग भैरवन
एकमेवाद्वयन छलपद दार्के वाळन तोट बेडें-
दोकिदवु कहळेगळु कदनोद्दंड रावणन ॥ 3 ॥

इक्कीसवीं संधि

सूचना— तीनों लोकों को सुनायी पड़े, इस तरह चीखे, देवेन्द्र के बल को विद्रावित करनेवाले रावण के युद्ध में वानरराज सुग्रीव बहुत ही व्यथित हुए ।

सुनो लव, राक्षसेश्वर के सेना-सागर के सम्मुख राघव को देखकर, "हे शत्रुराज, रणभैरव के साथ युद्ध मत मोल लो । वैरियों की वीरश्री (लक्ष्मी) के साथ, नूतन रतिक्रीड़ा करनेवाले के साथ युद्ध मत करो ।" —इस प्रकार राक्षस-सेना के बाजे जोर-शोर से बजते मानों ताने देने लगे । १ "कैलास पर्वत को जड़-सहित उखाड़, भुजदंडों को पटकते सारे ब्रह्मांड को कँपानेवाले के साथ युद्ध मत करो; तुम्हारी दृष्टि के लिए भी रावण एक असाध्य वस्तु है; तुम्हारी आशा का सफल होना भी असाध्य है । सीता को छोड़कर भाग जाने में ही तुम्हारा कल्याण है । रावण के साथ युद्ध मत करो"; इस प्रकार सींग के बाजे चिल्लाए (पुकार-पुकारकर कहने लगे) । २ "लोकपालकों को जीतनेवाले के साथ, तीन लोकों का शासन करनेवाले के साथ, जगदेकवीर के साथ, सुप्रसिद्ध रणरंग भैरव के साथ, उस अनुपम असमान व्यक्ति के साथ, घमंडी वीर उस रावण के साथ युद्ध मोल लेना उचित नहीं ।" इस प्रकार युद्धप्रचंड रावण

कोणके रक्कसगहळे केळ्दद नेणिके गोंबरे कपिगळु रिपो:

ट्टणव नोडिदंददलि होक्कुदु होरळि गोळलबुधि
रणद मुंगुडि गहळेगळ संदणिय सूळगि वखिळ लग्गेय
रणवद्रेय नोडे बडिदु बेरसिदररि वरूथिनिय ॥ 4 ॥

अेवे हळचुवनित उ्रोळे हळचितु हवणिसिद कपिसेने कळचितु
बवरदलि भटरसुवने नेबेनु क्षणार्धिदलि
जवन नगरिय दारिगर मै बेवरुग ळोळ डगिदुदु सेना
निहव वेरडरु चटुळ चरणोद्धूत रणधूळि ॥ 5 ॥

हळचिदवु बलवेरडु किडिकिडि हळचुवंतिरे होक्क मैयलि
कळचिदवु कपिखळ कदंबद कायदसुरगळ
बळचिदवु भवभवद दुष्कृतिगळु बळिक्का कैयोडने दळ
दुळिसिदुदु दिविजेंद्र नगरद सूरेगुभयबल ॥ 6 ॥

हेणनमय रणभूमि गिरि मार्गणद मयवंबर शिखा सं-
दणिय मय सुभटावळिय सत्क्रोध शिखिमुखदं
कुणित्र भूत व्रातमय दिगुगण दिवांगणवमम परि रं-
भणद मयवळिदमर पदविय वीर रमरियर ॥ 7 ॥

के सींग के बाजे चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे। ३ राक्षस के इन सींगों के बाजों की इस छेड़छाड़ से कपि क्या चुप रहनेवाले ? आग की पुड़िया के फूटने की नाई कपि-सेना जो राक्षस-सेना पर हमला कर बैठी तो उस ज़ोर-ज़बर्दस्ती के कारण समुद्र का पानी मटमैला हुआ। सेना के अग्रभाग में उपस्थित सींगियों के समूह को तथा जोर-ज़ोर से बज रही रणभेरियों को चकनाचूर कर डालते वानर-योद्धा शत्रु-सेना पर टूट पड़े। ४ युद्ध में जुटी कपि-सेना ने पलक मूंदने तक की अवधि के भीतर (क्षणार्ध में) शत्रुओं पर भारी ज़बर्दस्त हमला किया। क्षणार्ध के इस युद्ध में शत्रु-योद्धाओं के प्राणापहरण हुए। दोनों तरफ़ की सेनाओं के चुस्त पदचापों के आघातों से उठी धूल यमनगरी की यात्रा कर रहे पथिकों के पसीने से घुल-मिल गयी। ५ चिनगारियाँ जैसे चिनगारियों से टकराती हैं, उसी प्रकार दोनों सेनाएँ एक-दूसरे पर टूट पड़ीं। ऊपर टूट पड़ते राक्षसों के शरीरों से उनके प्राण पीट-पीटकर कपिवीरों ने बाहर भगा दिये; उनके जन्म-जन्मांतर के दुष्कर्म कट गये। उसके बाद दोनों तरफ़ की सेनाओं के मृत वीरों ने देवेन्द्र की नगरी पर धावा बोल दिया। ६ युद्धभूमि लाशों से पट गयी। आकाश चट्टानों तथा बाणों से भर गया। युद्धवीरों

मॊरॆव वाद्यध्वनिय बलु जज्झरिगॆ जडवाय्तबुज जांडद
शिर शिरोव्यथॆ बारिसिदुदुत्तान पादजन
करि रथाश्व पदाति बलदुब्बरद बॊब्बॆगॆ विरिदु दतळद
तरतरद भुवनाळि बण्णिपॆ नेन दद्भुतव ॥ 8 ॥
तरुण केळवरॊत्त बरदुब्बरद वाद्य ध्वनियना वल
दुरु निनाददलिवर तॊडॆ वरॆगळ महारभस
बॆरळुगळ बॊब्बाट विडदब्बरिसॆ रिपुवल हम्मयिसिदुदु
बॆरगु बारिसॆ बॆदऱिदनु मनदलि दशग्रीव ॥ 9 ॥
नूऱु योजन विवरवऱ रण देऱि नंगण दंग डदलु-
ब्बेऱि हॊक्कुदु हॊडकरिसलिळॆ वीर रुभयदलि
काऱुगिडिगळ कैदुगळ बलु चीऱिकॆय कुल शैल समितिय
बीऱुगळ बलुरभस बॆदऱिसि तखिळ भुवनगळ ॥ 10 ॥
सबळदलि तिविदॆत्ति भूतकॆ कबळवनु कॊडुतट्टि चक्रदि
कुबु बिऱिदु कवि दिडुत करॆवुत कोल हॆम्मळॆय

की भभकती क्रोधाग्नि के कारण सारी दिशाएँ अग्निमय हो गयीं। दिशि-दिशाओं में भूत-पिशाच नाचने लगे। बाप रे! मृत वीर स्वर्ग-प्राप्त वीरों तथा अप्सराओं के आलिंगनों से सारा आकाशमंडल भर गया। ७ लगातार बज रहे रणवाद्यों की घनघोर गर्जना से ब्रह्मांड का माथा ठनका। ध्रुव का माथा भी दर्द करने लगा। हाथी, घोड़े, रथ, पैदला सेना के भारी शोरगुल के कारण पाताल के विभिन्न लोकों में दरारें पड़ गयीं। इस अद्भुत का वर्णन हम किन शब्दों में करें? इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ८ हे नवयुवक कुश! सुनो। राक्षस-सेना के भारी शोरगुल के साथ-साथ वेगवान रणवाद्यों की ध्वनि मिली-जुली थी। इधर वानरों ने बड़े-बड़े नगाड़े जब बजाना शुरू किया, जोर-शोर के साथ-साथ चीखने-पुकारने लगे तो इन भयानक ध्वनियों से भयभीत-हो शत्रुसेना मूर्च्छित हुई। इस महाध्वनि से आश्चर्यचकित हुए रावण घबराये। ९ सौ योजन विस्तृत उस युद्धरंगस्थली के दोनों तरफ़ के हर क्षेत्र में दोनों तरफ़ के वीर आवेश से प्रवेशकर एक-दूसरे से भिड़कर जब युद्ध करने लगे तो आयुधों से चिनगारियाँ निकलने लगीं, वीर जोर-शोर से चीखने-चिल्लाने लगे, वानर पहाड़ों को खींच-तानकर फेंकने लगे तो युद्ध की इस तीव्रता के कारण समस्त लोक भयभीत हुए। १० राक्षसों ने बर्छे खोंच-खोंचकर वानरों की वलि भूतों को देना शुरू किया। भुभुकारते-चिल्लाते पीछा करते जाकर चक्रायुध से पीटा। बाणों की भारी वर्षा कर

सबुद भोरेने नभके नेत्तरि नबुधि लंबिसे हलवु मुखदलि
विबुध रिपुगळु कोंदरगणित कपि वरूथिनिय ॥ 11 ॥
शिरद चिप्पु गळरळे होय्वुत परिघदलि पारुबळेगळलि
करु नुच्चुत सुरगियलि तिवुवुत कृपाणदलि
अेरडेरडु तुंडुगळ तोरुत कोरळुगळ कत्तरिसुतंबिन
सरिगळलि संहरिसुतिर्दरु खळरु कपिबलव ॥ 12 ॥
नूकि कुदुरेय रावुतरु कविदोकु वतिबल वानरर तलॆ
नाककडरलु घन शरौघदि नेसुत खड्गदलि
नूकि तेरळिस लोत्ति लौडिय सोकिनलि सरकटिसि सकल व-
नौकसर सेनेयनु सवरिदरसम समरदलि ॥ 13 ॥
तूळि दाडेयलिरिसि मेट्टिसि कालुगोलेयलि सुंडिलल‍ि सम
सीळ तोरिसि हारि होंचुव वीर वानरर
नाळियंबिन लडगेडहुतुत्ताळदलि जोदरुगळतक
नालयव होगिसिदरु कपिकोटानुकोटिगळ ॥ 14 ॥
तेरुगळ सूटासूटिगळलि चरिवरिसुत होक्क मैयलि
कारमळे कविवंते रक्कस रथिकररंवणिसि

दी। युद्धवीरों के सिंहनाद के साथ-साथ रक्त का समुद्र मानों आकाश तक छलकने लगा। इस प्रकार कई रीतियों से असुरों ने असंख्यात वानर-सेना की हत्या की। ११ परिघायुध से इस प्रकार पीटते कि खोपड़ियाँ फट पड़ें; चक्रायुध खोंच-खोंचकर आँतड़ियाँ बाहर निकाल देते; कटार चुभोते; खड्ग से दो टुकड़े कर डालते; रुंड काटकर गिराते, बाणों की वर्षा से संहार करते राक्षस वानरों की हत्या कर रहे थे। १२ घुड़सवार आगे बढ़ आते वानरों को तलवारों से काटते उनके रुंडों को आकाश तक उड़ा देते। वानर टूट पड़कर राक्षसों को जब खदेड़ देते तो वे लौटकर दुगुने वेग से टूट पड़ते, लट्ठों से पीटते इस असम तथा असामान्य युद्ध में कपिसेना को काटे डाल रहे थे। १३ वानरों पर आक्रमण कर उन्हें हाथी की दाढ़ों में फँसाते, (हाथी के) पैर-तले कुचलवाकर मार डालते सूँड़ों से चिरवा डालते, उछलकर कूद पड़ते आक्रमणकारी वानरों को गोलाकार के बाणों से मारकर नीचे गिराते, शीघ्र गति से संचरणशील हो राक्षसवीरों ने करोड़ों-करोड़ों की संख्या में वानरों को यमलोक भिजवा दिया। १४ राक्षस रथिकों ने बड़ी कुशलतापूर्वक रथों को वेग-पूर्ण रीति से संचालित करते, बरसात के मौसम की वर्षा के घिरने के सदृश बड़े स्फूर्ति से आगे बढ़कर सिंहनाद करते पैनी तलवारों को चला-चलाकर

कूरलगु ळ सुरिदु कॆडहिद रारिडुत कपिसेनॆयनु हॆ-
म्मारि होक्कंददलि हॆणमग्ग्वाय्तु रणभूमि ॥ 15 ॥
हुरिकटिसि युथाधिनाथरु नॆरॆदु सिडिलप्पळिसुवंदद
लुरवणिसि गिरिकूटदलि बलुगंड शैलदलि
मरगळलि मुंबरिव खळपद चररु खळरावुतर खळॆजो-
दर तदीय महारथर सदॆबडिद रगलदलि ॥ ॥
रुहरिय बारदवॊल सुरस मूहव जिगिजि याय्तु वारण
वाह वखिळ वरूथवे नादवॊ समीकदलि
काहुरद कारणद रक्तद वाहिनिगळुप्परिसि हरिदवु
काहुदॆगॆ दंतकन कॊलॆगॆलसदवो लाय्तॆंद ॥ 17 ॥
द्रोणि दुर्गिगळॆंब भूतश्रेणि हिडिदवु होहकपिगळ
कोणपर कोटानुकोटियनखिल खगजाल
श्रोणितव नींटिदवु तडिगळ ताणगळ मरनेरिघन गी-
र्वाण वसन जपाकुसुगदंताद्दु दभ्रदलि ॥ 18 ॥
मडिदुदुभयद चूणिकदनव हिडिद रग्गद यूथनाथर
गडण गर्वित वीररक्कसरॆरडु पैकदलि
नडॆवु तिर्दुदु समर सुररुग्घडिसॆ सुरवैरिगळु हरॆगळ
होडॆसॆ सरिपॆट्टिनलि संगर रंगभूमियलि ॥ 19 ॥

कपिसेना को मूली की तरह काट-काटकर गिरा दिया। महामारी के प्रवेश की तरह सारी युद्धभूमि लाशों से पट गयी। १५ वानर-सेना-नायक अत्यंत स्फूर्ति में आकर बिजली गिरने के सदृश पहाड़ों को, चट्टानों को तथा भारी-भरकम पेड़ों को जब (राक्षस-सेना पर) गिराने लगे, आगे बढ़ने की कोशिश करनेवाले राक्षसों की तरफ़ के पैदल सैनिक, राक्षस घुड़सवार, राक्षस योद्धा तथा राक्षस महारथी चकनाचूर होने लगे। १६ राक्षस-सेना इस प्रकार चकनाचूर हुई कि उसका नामोनिशान तक मिट गया। पता नहीं हाथियों की, समस्त रथों की युद्ध में क्या दुर्दशा हुई। रक्त के परनाले प्रचंड वेग से बहने लगे। युद्ध रंग मानों ऐसा दीख पड़ता था कि पहरा उठाये जाने पर यम का भारी हत्याकांड प्रकट हुआ हो। १७ द्रोणि, दुर्गि नामक पिशाचों ने काम तमाम हो रहे करोड़ों-करोड़ों की संख्या में वानरों तथा राक्षसों को पकड़ लिया। असंख्यात पक्षी रक्त पीकर आसपास के पेड़ों पर चढ़ बैठे। आकाश मानों देवताओं के कपड़ों के लाल अड़हुल के फूलों-सदृश दृष्टिगोचर हुआ। १८ दोनों तरफ़ ... ओं के अग्रस्थान में उपस्थित सैनिक-दल इस युद्ध में मा... गये।

रायनिर्दनु निम्म बलदसहायशूरर मुंदेमुंदरि
रायदळवुळकार लक्ष्मण निर्दनंतरद
आयतद रणभूमियलि कपिराय निर्दनु मुंदे वानर
नायकर सेनानियिर्दनु सकल बलसहित ॥ 20 ॥
मुंदे गवय गवाक्ष दुर्मुख मैंद पनस द्विविद नर्वरि
मुंदे विनत सुषेण जांबव गंध मादनरु
संदणिय संगरद सेनावृंद सहितिदिराय्तु मोहर
दंदविदु तरुबिदनु हनुमन पडुवलिंद्रजितु ॥ 21 ॥
हिडिद रंगदनोडने समरव तुडुकि देवांतक नरांतक
रोडने नूकितु मिक्क कुंभ निकुंभ मोदलाद
कडुगलि गळिवरंकदलि मुरिवडेदरै बळिकवरु भरितद
कडलु कडेवंददलि तेगेदंडिसितु रावणिय ॥ 22 ॥
तरुबि हळचुव तेरेय तेक्कॆय भरवसव नोडे बगिदु मुंदणि
गुरवणिप बलु भैत्रद वोलंतखिळ कपिबलद
होरॆळियनु हरॆगडिवुते सुगॆय सरळसारदलमररॆदे ज-
ज्झरितवागलु झडितेयलि होक्कनु दशग्रीव ॥ 23 ॥

श्रेष्ठ वानर-नायकों के तथा घमंड भरे वीर राक्षसों के दोनों तरफ़ वालों ने युद्ध अपनी मुट्ठी में कर लिया। देवता बिरुदावली बखान रहे, तो राक्षस डफले पीट रहे थे; युद्धक्षेत्र में वानर-राक्षसों का यह युद्ध बराबरी में हो रहा था। (कौन अधिक, कौन कम इस तरह निर्णय देना मुश्किल था)। १९ तुम्हारी वानर-सेना के असहाय वीरों के अग्रभाग में राजा राम थे। उनके सामने शत्रु राजाओं के लुटेरे लक्ष्मण विराजमान थे। बीच की विस्तृत रणभूमि में वानरराज सुग्रीव थे। उनके सामने समस्त सेना के साथ वानरनायकों के सेनापति थे। २० अग्रस्थान में गवय, गवाक्ष, दुर्मुख, मैंद, पनस, द्विविद आदि थे। इनसे आगे जो थे, विनत, सुषेण, जांबव, गंधमादन आदियों ने सेना-समूहों के साथ राक्षसों का सामना किया। यह युद्ध का सिलसिला है। पश्चिम दिशा में इन्द्रजित् ने हनुमान का सामना किया। २१ देवांतक-नरांतक ने अंगद से युद्ध मोल लिया। तुरन्त अन्य कुम्भ-निकुंभ आदि महावीरों ने आकर घेरा डाला। ये युद्ध में पीछे हट गये। उसके बाद भरे समुद्र को जैसे मथा गया था, वैसे राक्षस आकर इन्द्रजित् के पास जुट गये। २२ रुक-रुककर थोपनेवाली लहरों के समूह की तीव्रता को चीरकर आगे ही आगे बढ़नेवाले

विशिख सदॆदवु हत्तुतोळुगळॆसुगॆगळ लॊदॊंदु सरळिन
ससिनदलि शतसाविरद लक्षोपलक्षगळ
त्रिषम वानर भटर कॊरळिन बॆसुगॆ बिट्टवु बिडु दलॆयबिलु-
वसरवादवु लयकृतातन संतॆयंददलि ॥ 24 ॥
नॆगहिदद्रिय निडुव तोळुगळगलु तिर्दवु नभकॆलंघिसि
चिगिव तॊडॆ कडिदिडिकि लादवु कपिकदंबकद
ऒगुव रक्तदलट्टॆ गगनव सॊगॆवु तिर्दवु कॊलॆगॆ हिदण
युगद वीररॊळिवनवॊलु साहसिग सरॆंद ॥ 25 ॥
आतु मुरिदनु सुमुख दुर्मुख सोतु हिंगिदनळिदनदट
ज्योतिमुख दधिमुखन बल्लवरारु समरदलि
बीतुदसुकुमुदॆगॆ मैंदन मातुमुरिदुदुनळ सुषेणरु
हूत मुत्तुगदंतॆ हिंगिदरॆरू नोविनलि ॥ 26 ॥
तागिनॊंदनु गवयगजनुरॆ कूगिदनु कलि विनुतनसु तुदि
मूगिनलि सडलिदुदु तॆरळिद नरळुतज सूनु
होगलॆंदु सुरगळ नगलकॆ नीगिदरु हॆसरुळ्ळ साहस
सागररु सम्मुखदॊळांतवरिल्ल सुभटरलि ॥ 27 ॥

भारी जहाज़ की तरह समस्त कपिसेना-समूह को बाणों की वर्षा से तितर-बितर कर काटते हुए दशकंठ बड़ी स्फूर्ति से आ धमका। यह देख देवता सहम गये। २३ रावण ने (अपनी) दसों भुजाओं को प्रयुक्त करते बाण-प्रयोग किया। एक-एक बाण के निशाने में सौ हज़ार, लाखों वानर वीरों के सिर धड़ से अलग हुए। प्रलयकालीन यम के बाज़ार की तरह सिरों की (कटे, रुंड की) दूकानें सज गयीं। २४ पहाड़ों को उछाल फेंकने के लिए ऊपर उठे वानरों के हाथ कट-कटकर आकाश की ओर उछल रहे थे। उछलते कपियोद्धाओं की जंघाएँ कटकर ढेर हो गयीं। रक्त बाहर उछल रहे शिरोभाग-रहित वानरों के कबंधों से सारा आकाश पटा जा रहा था। युद्ध में, हत्याकांड मचाने में पूर्व के युगों के वीरों में इस (रावण) का जैसा कौन साहसी वीर था ? —इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। २५ सुमुख सामना कर विफल होकर लौट चला। दुर्मुख हारकर पीछे हटा। वीर ज्योतिमुख का काम तमाम हुआ। दधिमुख को युद्ध में किसने देखा। कुमुद ने प्राण त्यागे। मैंद का वचन भंग हुआ। सारे शरीर भर में घाव होने के कारण खिले पलाश की तरह दीख पड़नेवाले नल तथा सुषेण वेदना से चटपटाते पीछे हटे। २६ रावण का सामना कर गवय ने मार खायी; गज ज़ोर से चीख उठा; वीर

ऒदॆदु कॊंदनु शरभ कपि सरळॊदॆद घायकॆ गंधमादन
नॆंदॆय लॊऱतुदु रक्तजल जाऱिदनु कलिवृषभ
मदवदरि भैरवन कालाटद धरित्रियॊ कालरुद्रन
कदनवॊ कडॆयावुदळिविंगिवर सेनॆयलि ॥ 28 ॥
आकॆवाळन दावनॆ लोकैक वीरन विषम विशिख स-
मीक दिदिरिनलमम निर्जर नर भुजंगरलि
नाक तुंबितु मृत्यु तृप्तिय लोकरिसिदळु कालगंड व-
नौकसर नेनॆंबॆ नाहववनु दशाननन ॥ 29 ॥
तूळिदडविय दळ्ळुरिय दॆक्काळदलि थट्टैसि निंदु-
ब्बळु दॊरॆयंददलि बगॆयदॆ मुंदणॊड्डिनलि
मौळिहत्तर रक्कसन रणदूळिगव तऱुबिदनु गोलां-
गूलपति गुडियिऱिद कोपाटोप दुब्बिनलि ॥ 30 ॥
आनुवॆनु मॊदलॊम्मॆ महिजा मानिनीशन मुंदॆखळकुल
हीनननु हुगगॊडदॆ तऱुबुवॆ निवन नॆंदॆनुत
एनिदॆल्लिगॆ भरवसद सुम्मान समरवॊ शरणुगत सं-
धानवो राजेंद्रचंद्रनॊळॆंदना रविज ॥ 31 ॥

विनुत के प्राण नासिकाग्र से निकल गये। जाम्बवंत चटपटाते लौट पड़ा। प्रसिद्ध साहसियों ने जान पर खेलकर प्राण त्याग दिए। प्रसिद्ध वीरों में कोई भी रावण का सीधे मुँह सामना न कर सका। २७ बाण के आघात से चोट खाकर शरभ दूर जाकर गिरा। गंधमादन की छाती से खून बहने लगा। कलि वृषभ खिसककर भाग गया। क्या यह मदमत्त शत्रु भैरव के नृत्य की धरती है या कालरुद्र की युद्धस्थली है! (इतना भयानक दृश्य था।) वानर-सेना की हत्या का अंत कब और कहाँ? २८ लोकैकवीर रावण के प्रचंड (भयानक) बाण-युद्ध के सम्मुख (उनके बाणों का सामना करने) देव, मानव, पातालवासियों में खड़े रहने की ताकत किनमें है? मरे वीरों से स्वर्गलोक भर गया। मृत्यु खा-पीकर तृप्त हुई। रावण के युद्ध का किन शब्दों में वर्णन करें? २९ जंगल भर में व्याप्त अत्यंत भयानक दावानल में अपनी सेना-सहित, बड़े उत्साह के साथ खड़े रहनेवाले वीर राजा की तरह वानरराज सुग्रीव ने क्रोध से भड़ककर दस सिर वाले उस राक्षस के सम्मुख की सेना को ठोंककर रोका। ३० सीता के स्वामी के सम्मुख एक बार उस (नीच) राक्षस का सामना कर, 'उसे आगे बढ़ने से रोकूँगा।' इस तरह सोचते हुए— "क्यों, क्या बात

समरवल्लदॆ शरणुवोगु विभ्रमॆयिदॆतकॆ वाहुबल वि-
क्रमद चेष्टालाप तानिदु नम्मॊडनॆ सॊगसॆ
कमल जन्म कपर्दिगळनाक्रमिसिदवु भुजविवु नराधम
रॆमगॆ पाडे पथव बिडु बेडॆनुत तॆगॆदॆच्च ॥ 32 ॥
ऎच्च वाणकॆ बाहुदंडद मुच्चळनु मऱॆमाडि सुरकुल
बॆच्चॆ बॊब्बिरिदॆऱगिदनु भूधरद शिखरदलि
अच्चु वळॆ कूबर युगंधर नुच्चु नुरियादवु दशानन
नॆच्चरिकॆयलि पडिरथकॆ हाय्दुब्बि बॊब्बिरिदि ॥ 33 ॥
ऒडनॆ लंघिसि बाहुदंडद कडुहिनि दॆऱगिदनु मकुटद
गडणदनुपम रत्नचय चल्लिदवु दॆसॆदॆसॆगॆ
कडुगलियॆ केळ् कांचनाद्रिय सिडिल संगरदंतॆ दिविजर
पडॆगॆ काणिसितमम कडुहॆंतुटॊ कपीश्वरन ॥ 34 ॥
ऎलवॊ बल्ला तन्न भुजबल दळव पूर्वद मकुटभंगद
लुळुहिदुदनकटावु तरुमृगवे विचारिसदॆ

है ? इस डीलडौल के साथ कहाँ जा रहे हो ? क्या रामचन्द्रजी से युद्ध करने या उनको शरण जाने की तैयारी है ?" —इस प्रकार सुग्रीव ने रावण से पूछा। ३१ "शरणागति का प्रश्न केवल भ्रम है। युद्ध ही एक मात्र सत्य है। (अपने) भुजबल-विक्रम की आप प्रशंसा कर लेने की तुम्हारी ये बातें, यह बचपना हमारे साथ शोभा नहीं पाता। ये मेरे भुजदंड शिव, ब्रह्माजी के आक्रमण करनेवाले भुजदंड हैं। हे नराधम ! तू क्या मेरी बराबरी कर सकता है ? रास्ता मत रोक।" इस तरह कहते रावण ने बाण छोड़ा। ३२ रावण के बाण से अपने भुजदंड से अपनी रक्षा करते, देवताओं को भी भयभीत करनेवाले अपने सिंहनाद से सुग्रीव ने पर्वत की चोटी उठाकर रावण पर आक्रमण किया। इससे रावण के रथ का मध्य-स्तंभ, कड़ा, कूबर, युगंधर आदि रथ के विभाग चकनाचूर हो गये। रावण तुरंत अपने को बचाकर दूसरे रथ पर कूदकर पहुँचा तथा उसने ज़ोर से सिंहनाद किया। ३३ सुग्रीव फुर्ती से उछलकर अपने भुजबल-विक्रम दिखाते रावण पर टूट पड़ा। सुग्रीव की मार से रावण के मुकुट के रत्न तितर-बितर हो बिखर पड़े। हे वीरवर कुश ! सुनो। मेरु पर्वत तथा बिजलियों के युद्ध की तरह सुग्रीव तथा रावण का युद्ध देवताओं को दीख पड़ा। वानराधिपति का पराक्रम कितना अद्भुत है ! इस प्रकार वाल्मीकि वर्णन करने लगे। ३४ "रे मेरे भुजबल-विक्रम से तू अपरिचित

गळहुवुदु निनगुचितवे सुरकुलवें सोलुव रारेनुत हलु
गळच होय्दनु हलुमोरॆदु हरिराजना खळन ॥ 35 ॥
हारि बिद्दनु रथदिनिळॆगुब्बेरिदुदु कपिसेनॆ बोब्बय
चीरुगळ चळगतिय चटुळ चडाळ चाळियलि
मूरु हॆज्जॆय हिन्नॆलॆगॆ होरॆ हारि हिम्मॆट्टिदनु रामगॆ
मारिदव नीनकट तप्पाय्तॆनुत सुग्रीव ॥ 36 ॥
अनितरॊळॆ सारथि निजस्यंदनव निंदिरिसिदनु खळशर
धनुव संवरिसुत्त शरसत्क्रोधमयनागि
वनजभव मंत्रदलि बाणद मोनॆय मंत्रिसि बोब्बिरिदु सिं-
जिनिय रववनु तोरि कुबुबिरिदॆच्चनिनसुतन ॥ 37 ॥
कोंड कोलिन कोहिगिनसुत डॆंडणिसि बसवळियॆ बलिमुख
तंड तडसिगॆ बीटॆ बेवरुटाळ हिताळ
दिंड तेगु तमालदलि कैगुंडिनलि हूळिदरु दिनमणि
मंडलद मुत्तिगॆय मुगिलवोलरि दशाननन ॥ 38 ॥

है ? पूर्व में (तेरा) मुकुट भंग होने से जो तुझे बचाया था तू भूल गया ? हाय ! हम सिर्फ़ पेड़ों पर उछलनेवाले मृग जो ठहरे ! (तेरी दृष्टि में) बिना सोचे-विचारे बकना तुझे शोभा देता है ! तुम्हारे हाथों से हारनेवाले हम क्या देवता है ? यहाँ हारनेवाला कौन ?" इस तरह कहते सुग्रीव ने दाँत-होठ चबाकर रावण को ऐसे पीटा कि उसके दाँत उखड़ जायँ। ३५ (इससे) रावण रथ से जो उछला तो धरती पर आ गिरा। कपि-सेना चीखती-चिल्लाती चुस्त क़दमों पर थिरकते-थिरकते खूब खुश हुई। सुग्रीव ने तीन कदम पीछे उछलकर, डटकर खड़े रह— "राम से युद्ध करने के लिए तुझे निश्चित किया है। यह मेरी ग़लती रही।" —इस प्रकार कहा। ३६ इतने में रावण के सारथि ने रथ लाकर खड़ा किया। रावण ने रथ पर आरूढ़ हो धनुष हाथ में ले, क्रोध से उन्मत्त हो, ब्रह्ममंत्र से बाण की नोक को अभिमंत्रित कर, सिंहनाद करते धनुष की प्रत्यंचा खींचते, ठेंकार करते, 'कुबूबू' इस तरह भयानक शब्द करते बाण छोड़ दिया। ३७ रावण के छोड़े गये बाण के आघात से सुग्रीव काँपते हुए जब लुढ़कने लगा तो वानरसमूह ने सीसम, नीम, गोंद, सागवान, करंजा आदि कई प्रकार के पेड़ों से तथा हाथ मे धारे गोल-मटोल पत्थरों से रावण को इस तरह ढँक दिया मानों बादलों के समूह ने सूर्यमंडल को घेर दिया हो। ३८ रावणासुर ने उन सबको छिन्न-विच्छिन्न कर दिया। फिर

तऱिद नमर विरोधि बळियलि तुरुगुववु तरुशैल शैलद
हॊऱॆय हॊदऱलि हॊळकि हॊंचुव हॊंतकाऱिगळ
हरुब हसरिसि हरिकुलेंद्रन नऱसि तागिदु मुंदणॊड्डनु
मुऱियॆसुत मुंचिदनु नीलन दळद सरिसदलि ॥ 39 ॥
अरॆ नॆलॆय हवणिनलि हिंगिद धरॆय तुदियलि निलुव वैश्वा-
नरनवॊलु वानरर सेनानाथ कोपदलि
बरलि बरलिवनसुवनुच्चुवॆ हिरिदु हगॆयनु कॊंदनॆंद-
ब्बरिसि मुळिदडॆ मुळियलाळ्दनॆनुत्त गर्जिसिद ॥ 40 ॥

इप्पत्तॆरडनॆय संधि

सूचनॆ— वीरधीरोद्धत निशाचर वीर नति मथनदलि वह्निकुमार हळचिदु हम्मयिसिदनु फवन केळियलि ।

कुश कुमारक केळिदै कैकसॆय नंदन नंदवनु कं-
डसमबल कलिनील विलयदकाल नंददलि
दशन पीडित कंपिताधर नसम वीरावेश रोषद
मसकदलि मदवेऱि महिजा चोर गिंतॆंद ॥ 1 ॥

वानरों की बड़ी-बड़ी चट्टानों ने रावण को घेर दिया। ढेर सारे पहाड़ों के पीछे, ताक में बैठे चतुर वीरों के काम तमाम करके सूर्यकुल के स्वामी राम को ढूँढ़ते आकर, रावण चढ़ाई कर सामने के सेनाव्यूह को तोड़कर बाण छोड़ते नील की सेना के नज़दीक पहुँचे। ३९ आधे स्थान में, पीछे हटे धरती की नोक पर डटे रहनेवाले अग्नि की नाईं वानर-सेनाधिपति नील क्रोधित हो, "आने दो उसे, आने दो; इसके प्राणापहरण करके ही छोड़ूँगा। भारी शत्रुओं को मार गिरानेवाला है न यह ?" इस तरह कहते घुड़कते हुए नील ने उद्गार निकाले— "स्वामी (राम) नाराज़ होते हैं तो होवें; कोई बात नहीं।" यों नील ने सिंहनाद किया। ४०

बाईसवीं संधि

सूचना— वीर तथा धीरोद्धत राक्षस वीर रावण के साथ हुए महायुद्ध में अग्नि-पुत्र नील जो भयानक रीति से लड़ा, युद्ध के मैदान में मूर्च्छित हुआ।

हे कुश कुमार ! सुनो। कैकसा-पुत्र की रीति को देख असमान बलशाली वीर नील प्रलय के यम की नाईं दाँत-होठ चबाते काँपते होठों से मस्त हो सीता के अपहरणकर्ता को सम्बोधित कर यों बोला। १ "धोखा

ऎल्लि गॆलवो गतिय गाडिय घल्लणॆय गरुवायि बवरद
भुल्लवणॆय विलास वैभववार कूडॆनुत
निल्लु निंदवरारु नोडिदिरल्लि नम्मनु नम्म बवरद
बल्लविकॆयनु नोडि बळिके नादडागॆंद ॥ 2 ॥
विशिख दंगुलियॊलहि नरॆनगॆ मुसुड मडलिरिदमरुष दला
श्वसन बांधव नंद नंगितदनव बळिक
विषम बलनहॆ बंद विपिनौकसरॊळंजिदॆ वावु नमगु-
ब्बसव माडदॆ माणॆ मनदलि तोरुतिदॆ यॆंद ॥ 3 ॥
खूळ मर्कट केळु मदशुंडाल जीर्णिसिदवरु होतिगॆ
कालनूरिसि कॊंडुदुटॆ पूर्वकालदलि
कालकलितग्रीव सदृश विशालवल सुग्रीव नारलि
कालगंडनु नोडु नोडळिदवर नीनॆंद ॥ 4 ॥
होरि बदुकिदरिल्ल नम्मय वैरदलि विबुधासुरोरुग
वीररलि मिक्किन मनुष्य मृगंगळॆन गिदरॆ
दारिदिगॆ निन्नवरॊडनॆ बलुवीरतन निनगुळ्ळॊडॆ सॆळॆ
गोरिगलगळलॆम्म तडॆ सोजिगवदॆनॆंद ॥ 5 ॥

देकर इतनी डीलडौल के साथ कहाँ जा रहा है ? तेरी मूर्खता का यह युद्ध-वैभव किसके साथ दिखाने जा रहा है ? रुक जा। देख तेरे सामने कौन खड़ा है ? हमें तथा हमारे युद्धकौशल को ज़रा देख। उसके बाद तू जो चाहे बन।" इस प्रकार नील ने कहा। २ बाण धारे उँगली को घुमाते, आधी मुस्कुराहट के साथ क्रोधित रावण अग्निपुत्र नील को सम्बोधित कर— "अपने को तू असामान्य बलशाली समझता है न ? युद्ध में सम्मुख पड़े कपियों से हम डर जो गये हैं; लगता है— तू हमें सताए बिना न रहेगा।" इस प्रकार व्यंग्योक्तियाँ करते तमाशा करने लगा। ३ "रे दुष्ट बंदर ! सुन। पूर्व में मदमत्त बने हाथी को जीतनेवाले आज बकरे से अपना पैर क्यों तुड़वाएँ ? विषकंठ के समान विशाल बलशाली सुग्रीव किसके हाथों युद्ध में मारा गया देख। युद्ध में मरे हुओं के प्रति ध्यान दे।" इस तरह रावण ने कहा। ४ देवता, असुर तथा उरग वीरों में कोई भी हमसे युद्ध कर हमको जीत न सका। अब मनुष्य और अन्य मृग हमारा सामाना करने की हिम्मत कैसे कर सकते है ? तेरी तरफ़वालों के साथ लगने का मेरा मार्ग मत रोक। अगर तुझमें वीरता है तो शिलाओं के टुकडों का प्रयोग कर हमें सुला दे तो देखें! इसमें आश्चर्य क्या है? इस प्रकार रावण ने कहा। ५ "चोरों की दर्प भरी बातें क्या कोतवालों की गली में

चोररंगद मातु तळवऱ् गेरियलि भूषणवें देहवि-
काररात्मस्तुत्य वेम्मॊळु धर्मवे निनगॆ
वारिजाक्षन भृत्यरिगॆ भयसारुवद वायवडिकतन नि-
न्नूरवर कूडॆसॆ नम्मॊळु सॊरह वेडॆंद ॥ 6 ॥
कॊलवु कळवक्किदडॆ कडॆयलि निलुवुदॆंदॆयलि शूलकळ्ळर
कॊलस विदु केळॆलवो निनगंतकन नगरियलि
निलवु निनगिन्नेकॆ जयदग्गळिकॆ निल्लॆ नुतुब्बुवबुधिय
जलव झाडिप वडवनवॊलुब्बिऱ्दिदना नील ॥ 7 ॥
बऱिय वीरद मातिलॆम्मनु जऱॆदु नुडिवडॆ नीनॆ नोडा
बॆऱगनॆन तुब्बिऱ्दु बॊब्बिऱ्दिॆच्च नग्निजन
इऱितदिंधनकग्नि नोवदुऱिसुवदॆ लवकेळु मेल्वा-
य्दॆऱगिदनु मझ भार्पॆनलु सुररा दशाननन ॥ 8 ॥
वळिक बळिदुदु बवरविब्बरिगळवियलि नंदीश्वरंग-
ग्गळद विद्युन्मालिगंदा त्रिपुरदहनदलि
बलिद बवरकॆ नूऱुमडियॆनॆ कलुमरन कर्णगळ कठोरद
हळचिकॆगळुग्घडिसु तिर्दवु वीरराहवद ॥ 9 ॥

शोभा पाती हैं ? देहविकारयुक्त मेरे सामने अपनी आत्मप्रशंसा जो कर रहे हैं— यह कहाँ तक न्यायसम्मत है ? धर्म है ? कमलनयन (विष्णु) के सेवक किसी से क्योंकर डरें ? तू अपने गाँव वालों के साथ चाहे जितना टें टें कर। मेरे सम्मुख अपने घमंड को मत बघार।" इस तरह नील ने उत्तर दिया। ६ "प्रप्रथम कई चोरियों में उन्नति होने पर भी अंत में एक दिन चोर के दिल में शूल चुभेगा ही। तुम्हारा तो चोरों का-सा कार्य है। तुम्हारा निवासस्थान यम की नगरी में होना निश्चित है। अब जीतने का घमंड क्यों प्रकट कर रहा है ? ठहर जा।" इस तरह कहते, उमड़ते समुद्र के पानी को बाहर फेंक देनेवाले वड़वाग्नि की तरह नील ने फूले न समाते सिंहनाद किया। ७ "केवल (अपनी) वीरता की बातों से ही हमें हेय करके बोले। अब उसका (इस प्रकार निंदा करने का) आश्चर्यकारी परिणाम भुगत ले।" इस तरह कहते उत्साह से सिंहनाद कर रावण ने नील पर कई बाण छोड़े। आगमें लकड़ी डालते जाने पर वह (लकड़ी) वेदना सहती ही है न ? सुनो लव। देवता जब 'धन्य-धन्य' कहकर प्रशंसा कर रहे थे, तब नील ने आगे बढ़कर रावण पर चढ़ाई की। इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ८ पूर्व में त्रिपुर-दहन के

सॆळॆदिडुव गिरिगळ महिजावळियलंबर तुंबितॆसुगॆय
चळ शिळीमुख जालदलि जडिदुदु दिशानीक
अळवियट्टिटसॆ नॆगॆदु गिडुगनु गिळिगॆ हाय्वंददलि नॆगॆद-
प्पळिसि बिगिदनु नीलबालदला दशाननन ॥ 10 ॥
बॆळॆद नबर कागि सुमनो ललनॆयर सुम्मानदलि जो
गुळकॆ करॆदनु तूगिदनु तुदिवालदलि खळन
अळदिरॆन्नय कंद जोमक्कळ महामाणिकवॆ जो मू-
गळिदवळ कडुमुद्दॆ सितगर शिशुवॆ जोयॆंद ॥ 11 ॥
होरि जो जो हरिहयन बडि होरि जो जो बलिय विमला
गारदबलाजनद जोळिगॆयरस जोयॆनुत
चारु मेनकि मुख्य सुमनो नारियरु स्वरवॆत्ति तूगिद
रा रणांगण मध्यदलि लंका पुराधिपन ॥ 12 ॥
इळुहिदनु बळिकवन मणिरथ दॊळगॆ बालदला वरूथद
हळविगॆय कंबदलि बिगिदिं तॆंद नसुरंगॆ
ॲलवॊ रक्कस नावु रणकति बलरॊ दुर्बलरॊ कुठारदि
निळिकॆ गंडॆयला मृगाधमरॆंदु नी नम्म ॥ 13 ॥

समय नंदीश्वर तथा विद्युन्माली में हुए युद्ध के सौ गुने बढ़कर नील तथा रावण में बड़ा भयानक युद्ध हुआ। उन वीरों के युद्ध में पत्थर, पेड़ तथा बाण एक-दूसरे से बढ़कर एक-दूसरे से जो टकरा रहे थे— उसकी बड़ी भयानक ध्वनि सुनायी पड़ी। ९ तानकर फेंके मारे जानेवाले पेड़-पहाड़ों के कारण आकाश भर गया। वेगवान बाणोंके समूह के कारण दिशि-दिशाएँ व्याप्त हो गयीं। बड़े सामर्थ्य के साथ पकड़ लेने के लिए जैसे बाज़ तोते पर झपटता है, उसी प्रकार नील ने उछलकर झपटते हुए पूंछ से दशमुख को दबोच लिया। १० आकाश तक बढ़े हुए नील ने देवता-स्त्रियों को खुशी के मारे लोरियाँ गाने के लिए कहते पूंछ में लपेटे रावण को पालने में रखे झुलाने की तरह झुलाया। "रो मत मेरे बेटे, जो जो। बच्चों में माणिक्य-सरीखे लाल मेरे, जो जो। नकटी के लाडले दुष्टों के बच्चे जो जो।" इस तरह नील लोरियाँ गाने लगा। ११ 'हे अँडुए जो जो। इन्द्र के अँडुए जो जो। बली के घर की स्त्रियों की झोली के राजा जो जो।" इस प्रकार लोरियाँ गाते मेनका जैसी प्रमुख देवता-स्त्रियों की तरह ऊँची ध्वनि में गाते लंका नगरी के अधिपति को उस युद्धभूमि के मध्य झुलाया। १२ उसके बाद नील ने रावण को अपनी पूंछ के द्वारा उसके रत्नमय रथ में उतारकर ध्वजस्तंभ से बाँध दिया। "रे

एनु नाव् तरुमृगवें रक्कस नीनें हेळा नाचबेड वि-
मान दमररु काणरिन्नू नम्म कॆलसगळ
जानकिय कपटदलि कळविन कैनॆगहिनलि कॊंडुहोद सु-
मान वॆल्लि यॆनुत्त मत्तॆरगिदनु रक्कसन ॥ 14 ॥
अॆरगला खळराय नुगिदुव्विरिदु हॊय्दनु चंद्रहासद
लुरुगि तप्पिसि कॊंडु तिविदनु मत्तॆ रक्कसन
मुरिद वणलिन हल्लु हलुमॊरॆ दिरिदनव सुरगियलि सुरगिय
नुरुवि तिविदनु मत्तॆ मध्यद शिरवना खळन ॥ 15 ॥
ऒट्टि मुरिदुदु सीसकद तलॆ यट्टॆ गांतुदु वगॆवने जग
जट्टि रक्कस राय चीलायदलि शिखिसुतन
हॊट्टॆयनु तिविदिळॆ बिरियॆ वॊब्बिट्टना कैयॊडनॆ कपि बलु
बॆट्टवनु सिडि लॆरगुव वॊलॆरगिदनु रक्कसन ॥ 16 ॥
ऒलॆवु तिट्टिय लिट्ट नवनद नॊलॆदु तप्पिसि कॊंडु कॊंडनु
कळचॆ कदपिन चिप्पु कपिगळदेव कलिनील
कुलिशबंध गदायुधदलत्र नळुक लप्पळिसिदनु कपियद
कळचि कर्णांतवनु तिविदनु तीव्र मुष्टियलि ॥ 17 ॥

राक्षस हम युद्ध में अत्यंत बलशाली हैं या दुर्बल हैं? हमको मृगाधम कहते हुए कठोर अवहेलना की न? अब बोल।" —इस तरह नील ने रावण से कहा। १३ "क्यों, हम पेड़ पर विचरते मृग हैं न? जानवर हैं न? हे राक्षस! तू ही बता, शर्मिंदा मत बन। आकाश के विमान के देवता अभी तक हमारे कार्य नहीं देख पाए। जानकी को धोखे से अपहरण कर, हाथों में उठाए ले भागने का यह जोश अब कहाँ चला गया?" इस तरह पूछते नील ने फिर एक बार रावण पर आक्रमण किया। १४ नील के इस प्रकार के आक्रमण से (क्रुद्ध हो) राक्षसराजा ने चन्द्रहास नामक तलवार खींचकर, ज़ोर से वार किया। नील ने झुककर उस वार से अपने को बचाकर रावण पर फिर प्रहार किया। नील के इस प्रहार से रावण के जबड़े टूट गये। तब दाँत-होंठ चबाते रावण ने कटार से वार किया। उससे अपने को बचाकर नील ने रावण के सिरोमध्य भाग में प्रहार किया। १५ रावण के शिरस्त्राण का किनारा टूट गया। सिर धड़ में धँस गया। लेकिन दुनिया के वीर राक्षसराजा इस (स्थिति) की परवाह क्योंकर करें? खंजर से नील के पेट को उसने चीरकर इतने जोर से सिंहनाद किया मानों धरती में दरार पड़े। तिस पर भी नील सँभलकर, रावण पर बिजली की तरह टूट पड़ा। १६ एक ओर झुककर रावण ने नील पर वर्छी

तिविद कैयोंड नसुरपति मरु दिविगुळिगें कैगूडदं तिरें
तिविद नपसव्यद सगाढद मुष्टियलि कपिय
तिविद घायकें सिडिद शिखरिगें सवडियेंनिसिद ननिलसख सं-
भवनु सिडि दल्लिद हरितंदेरगिदनु खळन ॥ 18 ॥
चटुळबल मत्तोंडनें गगनकें पुटनेगेंदु पौलस्त्यजन के-
वटिय नप्पळिसिदनु चप्परिसिदनु भुजयुगव
लटकटिसि खळराय कपि चावटेंय चवळकें नम्मोंडनें वि-
स्फुटवें वीरन परिय नोडेंनु तोंदेंद नग्निजन ॥ 19 ॥
ओंदेंद पदहति गीतनसु कदबदिसि नोंदुदु नोंदवेळेंय
लोंदगिदनु रथकागि सारथि चाचिदनु रथव
अदरु हदननु कंडु तुदिवालदलि बळसिदु बीदि वरिगळ
कुदुरेगळ काल्गळिगें बालव हाय्किदनु नील ॥ 20 ॥
मुग्गि कोंडेंयलु कुदुरे सूतन बग्गिसिद नसुरेंद्र नवना
हग्गगळ हम्मुगेंय सडिलिसि हयव नब्बरिसें
हिग्ग देगेंदुदु बाल हिंदकें तग्गि नोडिद नसुर कंडिळि
दग्गळद खडुगदलि होय्दनु हव्यवाहजन ॥ 21 ॥

से वार किया। वीर नील ने देह को झुकाकर इस वार से अपने को बचाकर बर्छी को इस प्रकार छीन लिया कि गाल का चमड़ा छिल जाए। वज्रायुध से बाँधे गये गदायुध से रावण ने नील को पीटा। उस वार से अपने को बचाकर नील ने अपनी मूठ से रावण की कनपटी के निचले हिस्से में पीटा। १७ नील से इस तरह खोंचे जाने पर तुरंत रावण ने उसे फिर ऐसा करने का मौका न देते हुए, दाहिने हाथ की बँधी मूठ से पीटा। रावण की इस जबर्दस्त मार के कारण नील फटे पहाड़ की तरह दूर जाकर गिरा। वहाँ से कूद आकर उसने फिर रावण पर चढ़ाई की। १८ शीघ्रगामी बलशाली नील जो उछलकर आसमान से रावण पर गिरा तो उसकी भुजाओं को ठोंक-पीट दिया। उद्विग्न रावण—'इस उद्धत कपि की चपलता हमारे साथ? वीर की रीति देखो' कहते हुए उसने नील पर लात जमायी। १९ रावण के लात के कारण नील के प्राण चटपटाने लगे। वह बहुत ही वेदनाग्रस्त हुआ। यही सुअवसर पा रावण रथ पर जो सवार हुआ तो सारथी ने रथ हाँका और आगे बढ़ने लगा। यह देख नील ने अपनी पूंछ बढ़ाई तथा (उसकी कोर से) घोड़ों के पैरों में पूंछ लपेट दी। २० दौड़ते घोड़े इससे ठोकर खाकर जो गिर पड़ने लगे तो राक्षसेश्वर ने सारथी को डाँट दिया। सारथी ने लगाम ढीली छोड़ घोड़ों को धमकाया। लेकिन (नील की)

उगिदु बालव नसुर रायन हॆंगलि गुप्परिसिदनु मकुटव
नुगिदु विसुटनु बीदिवरिदनु वहुशिरंगळलि
नॆगॆदु कूबर तुदिगॆ कुदुरॆय नॊगन सडिलिसि सारथियनं-
घ्रिगळ लॊदॆदंबुगळ कंबुगॊयिद बरिकैदु ॥ 22 ॥
हिडिद शस्त्रव नुगिदु कॆलवल किडिकि कीलच्चुगळ कळॆकळॆ
दडि मगुचिदनु तेर तवकिसुवसुरवल्लभन
मुडुहु मुसुडॆडॆ कॊरळु कंकुळु हॆडकुगळ वारिसि भयानक
वडसॆ गरु वायॆगॆडसि गॊंगल गॊळिसिदनु नील ॥ 23 ॥
ऎलवॊ नीने राघवेंद्रन कलह कॊदगुव भटनु विटतन
दल वरिकॆयलि विषय लपट तनद तवकदलि
इळॆय खूळर खूळ हॊगॆदुलिदु भुजवनु नॆगहि नमितां-
गुलिगळनु हाय्किदनु नडु नॆत्तियलि दशशिरन ॥ 24 ॥
गॊळ्ळॆनुत सुरवार नारिय रळ्ळॆगळ हिडिदुब्बु नगॆयलि
गुळ्ळिळरिदु गुहिलिक्किदरु परिलेसुनॆसॆनुत
बळ्ळिळ तलॆगळ मेलॆ कपि कै सॊळ्ळॆगळ सडगरिसि हॆंगुसु
गळ्ळ हॊगॆनु तॊदॆदनंघ्रियला दशाननन ॥ 25 ॥

पूँछ ने रुकावट डाली। रावण ने पीछे मुड़कर झुककर, झाँका। पूँछ को देख जो रावण उतर आया तो उसने नील पर खड्ग का वार किया। २१ घोड़े के पैरों से पूँछ को समेटकर नील रावण के कंधे पर उछला। उसके मुकुट को निकाल फेंक रावण के दसों सिरों पर उछल-कूद करते चलने लगा। वहाँ से रथ के अग्र भाग पर उछलते-कूदते आकर घोड़ों का जुआ खोलकर, सारथी को लातें जमाते रथ के चारों ओर के कटघरे में से बाणों को बाहर फेंक रथ को खाली कर दिया। २२ रावण के धरे शस्त्रास्त्रों को आस-पास जोर से निकालकर फेंकते, रथ के कील तथा धुरी को उखाड़ रथ को लुढ़का दिया। (अपने) रथ के लिए व्याकुल रावण के भुज, मुख, गला, काँख, कंधे के पिछले हिस्से पर पीटते, उसे भयभीत करते उसके गौरव को कलंकित करते नील ने उसकी फ़जीहत कर दी। २३ कामुकतापूर्ण महती आशा से, इन्द्रिय-भोगासक्ति से व्याकुल एक मात्र तू ही राघवेन्द्र के साथ युद्ध करनेवाला वीर है न ? जगत के दुष्टों के, नीचों के शिरोमणि हट जा यहाँ से।" इस तरह कहते (नील ने) रावण की भुजा को ऊपर उठा, उँगलियों को नवाकर रावण के बीच मस्तक में धरा दिया। २४ "वाह; क्या ही अजीब ढंग है ! बिलकुल ठीक है !" इस तरह कहते देवलोक की

नाणुगेडिग रसुररुं कट्टणि नीनवरोळगे लोक
प्राणजन पुरुषप्रतापद पाडुपंथगळ
पाणियलि पंटिसिद हलुगळ काणु तद्रितद्रि ताहवद नि-
त्राणदलि कादुवनु भंडनो भटनो नीनेंद ॥ 26 ॥
सुडु सुडेलवो खूळ हाविन हेडे वणियला सीतेकूरित
खड्ग धारेय मधुवला हरिगळद घंटयल
सिडिल किवि कुंडलवला लयमृडन पर्णगण्णुरियला खळ
रडवि गिक्किय किच्च कामिसि केट्टे नीनेंद ॥ 27 ॥
बिट्टे नेलवो निन्न नाचिके गेट्टवने होगसुर वंशघ
रट्टिनलि होगा नृपालन रणके गुरि नीनु
उट्टुकट्टलि कस्त्र शस्त्रव कोट्टलं करिसेलवो निन्ननु
मुट्टे नंजदिरेनुत बोळैसिदनु सारथिय ॥ 28 ॥
बळिकलवनी मातकेळुत कळलि दसुर वरूथवनु पडि
तळिसि सिंगारिसिद नाळ्दन रथवने द्रिसिद

वेश्याएँ खिलखिलाकर हँसते-हँसते लोटपोट हो गयीं। रावण के दसों सिरों की पंक्ति पर अपनी उँगलियाँ नचाते-नचाते 'हे स्त्री-अपहरणकारी, जा-जा। इस तरह कहते नील ने रावण को लातों से पीटा। २५ "राक्षस तो निर्लज्ज हैं ही। उन निर्लज्जों में तू अतिश्रेष्ठ है। जगत के लिए प्राणार्पण करनेवाले पौरुषसंपन्न जिद्दी वीरों से दाँत खट्टे कराना देख तथा समझकर भी अपनी कमज़ोरी के कारण युद्ध करते खड़ा रहनेवाला तू निर्लज्ज है या वीर है? पता नहीं।" इस प्रकार नील ने कहा। २६ "रे नीच; आग लगे (तेरे इस आचरण को) सीता तो नाग के फन पर का रत्न है; पैनी तलवार पर लगाया गया शहद है; शेर के गले की घंटी है; बिजली का कर्णभूषण (कान में का आभूषण) है। प्रलयरुद्र के भाल (कपाल) की आँख है; राक्षस रूपी जंगल के लिए लगायी गयी दावानल है। ऐसी सीता को चाह से तूने अपना सत्यानाश कर लिया।" इस तरह नील ने कहा। २७ "रे निर्लज्ज! तुझे छोड़ देता हूँ; जा अपना मुँह काला कर! हट जा यहाँ से। राक्षस-वंश के लिए जो चक्की बने पधारे हैं, उन राम का शिकार है तू। अतः चला जा।" इस तरह कहते नील ने रावण को युद्ध करने के लिए शस्त्रास्त्र देते कहा— "जा, अपने रथ की शोभा बढ़ा। मैं तुझे छूता भी नहीं; डरो मत।" इस तरह कहते उसके सारथी को सांत्वना दी। २८ उसके बाद सारथी ने नील की इन बातों को सुनकर, धँसे हुए रथ को उठाकर उसे अलंकृत किया। फिर रावण को

कळचि गवसणिगॆयनु चापव कॊळिसि कणॆगळनित्तु तुरगा-
वळिय चप्परिसिदनु विद्युज्जिह्व नाहवकॆ ॥ 29 ॥
अळलु गिडिर्यिदुगिदनव बत्तळिकॆ यिदाग्नॆय बाणव
निळुहि तिरुवि नॊळार्दु हिंगिदु हॊह समयदलि
कळविनलि कमलास नाद्यरु खळननल्लॆं दॊदरुतिरॆ कळ
वळिगनद कैकॊळ्ळ दॆच्चनु वह्नि नंदनन ॥ 30 ॥
ओसरिसि कॆलसार्द पदवित्ता समीर सखात्मजन वॆं-
ड्डॆसि कॊंड्डु बाणवा गीर्वाणदल्लणन
पैसरिसि पाडळिदु बळलिदु भूशयन कॊडलित्त नरिभट
नासुरद लब्बरिसि मुंदकॆ नूंकिदनु रथव ॥ 31 ॥
बिद्दनो दळपतियॆनुत हॊदरॆद्द हॆम्मर गिरिकदंबद
लद्दिदरु याथाधिनाथरु बहळ बॊब्बॆयलि
हॊद्दिती नुडि कडल दांटिद कद्दिकारन कोपशिखि मुद्रि
दॆद्दुदालिसि नोडिदनु नाल्दॆसॆयला हनुम ॥ 32 ॥
अहुदु रावणनिवनु नाविन्निहुदु मतवल्लॆनुत तरु बिद
बहुमुखद रक्कसनॊंदे मुष्टिघातदलि

रथ पर चढ़ाया। आवरण निकाल, धनुष को हाथ में दे, बाणों को भी (रावण के) हाथों में थमाकर सारथी विद्युज्जिह्व ने घोड़ों की पीठ थपथपायी तथा युद्ध के मार्ग पर उन्हें उकसाया। २९ (आत्म) ग्लानि से जलते रावण ने (अपने) तरकस से आग्नेयास्त्र निकाला। धनुष की प्रत्यंचा पर उसका संधान करते हुए उसने सिंहनाद किया। उसके धनुष से छूटने के पूर्व ब्रह्मादियों ने अव्यक्त रूप (अन्य किसी को दीख न पड़े इस रीति) से वहाँ प्रकट हो, 'इसे मत छोड़ो' इस तरह आदेश देने पर भी चिंता से व्याकुल रावण ने उस ओर ध्यान न देते नील पर अस्त्र का प्रयोग किया। ३० रावण का यह अस्त्र सहमते-सहमते पार्श्व में से होकर आते, (नील को) सहारा देते, घेर लेता है। नील पीछे हटते स्थितिहीन हो, थककर धरती पर लेट जाता है। शत्रुवीर रावण भयानक सिंहनाद करते अपने रथ को आगे बढ़ा ले जाता है। ३१ "अरे रे; हमारे दलपति तो हमें छोड़ चले गये!" इस तरह कहते वानरनायक चीखते-चिल्लाते भारी पेड़-पहाड़ों को उठाकर उछालते रावण को ढंक देते हैं। यह बात समुद्रोल्लंघन करनेवाले (हनुमान) को सुनायी पड़ती है। क्रोध के मारे आगबबूला होते हनुमान ने चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर देखा। ३२ "हाँ हाँ,

महिगें बीळिसि बळिसलिसि कविदहितरसुगळ कोळुत तोरवेय
बहळबल नरहरिय दूतनु तरुबिदनु खळन ।। 33 ।।

इप्पत्तमूरनेय संधि

सूचने— तिविद तिविगुळनांतु पुनरपि तिविद तिविगुळ नानलारदे पवनजन मरवेयलि हाय्दनु रणदोळसुरेंद्र ।

गाय बिद्रिसो बिद्दनो कपिराय कपिसेनाधिनायक
नायुविन हवणरिय बारदु बवर दोळगेंब
बाय बोब्बेय भटर बिरुबिन सायकद हति वायुपुत्रन
नोयिसितु निगुरिसितु निशित क्रोधमय शिखिय ।। 1 ।।
कोरते बंदरे बरलि रघुपति तोरेयलेन्ननु सुप्रतिज्ञेय
मुरिदनेंदु भ्रमित निवनेंदु लियली लोक
मुरिवेनी खळनेलुव रकुतव सुरिसुवेनु शाकिनियरिगे रण-
मुरुक निवनिन्नरिय बहुदे दुब्बिदनु हनुम ।। 2 ।।

यह तो रावण है । अब हमारा चुप रहना ठीक नहीं ।" इस तरह कहते उसे (रावण को) रोककर जो एक ज़बर्दस्त मूठ जमायी तो एक ही मार से रावण धराशायी हुआ । रावण के पीछे-पीछे आकर घेर लेनेवाले राक्षसों के प्राणापहरण करते अतुलित बलधाम, 'तोरवे' के नरहरि के दूत (हनुमान) ने रावण का रास्ता रोक लिया । ३३

तेईसवीं संधि

सूचना— हनुमान के खोंचने-खरोंचने की मार को सहते हुए प्रतिरोध में रावण से खोंचे, पीटे गये आघात को सह सकने में असमर्थ हो जब हनुमान मूर्च्छित हुआ, तब रावण अपनी जान बचाकर आगे भाग खड़ा हुआ ।

"क्या वार ज़बर्दस्त हुआ, या युद्ध में वानरराज गिरे— जो कुछ भी हो, वानर-सेनापति की अवस्था के बारे में कहना मुश्किल है ।" —इस प्रकार शोरगुल मचाते, चीखते-चिल्लाते वानर वीरों की चीख-पुकार रूपी बाण से वायुपुत्र व्यथित हुए । उनमें (फलस्वरूप) क्रोधाग्नि प्रज्वलित हुई । १ "मुझे अगर दोषभाजन बन जाना पड़े तो भी उसकी परवाह नहीं; अपनी प्रतिज्ञा इसने तोड़ी —यों सोच रघुपति चाहें तो मुझे त्याग दें । यह भ्रम के आधीन हुआ —इस प्रकार चाहे सारी दुनिया घोषित करे । इस राक्षस की हड्डियाँ तोड़ना निश्चित है । इसका रक्त

दॊद्दॆगर सदॆबडॆदु शक्रन गॆद्द सुभटन नूऱुयोजन
कॊद्दु मरळिदु मारुताध्वक्कॆ नॆगॆदु लळि मसगि
हद्दु हाविगॆ हॊंचुव वॊलुब्बॆद्दु मारुति निदिदिनु मे-
लिद्द सुरगण हॊगळॆ रक्कसराय निदिरिनलि ॥ 3 ॥
एनॆलवॊ दशकंठ रण सुम्मान रंजक वारॊडनॆ सं-
धानवो संगरवो समुचित वावु दुद्यमद
भानुकुलजन काणबेकॆंबी नॆनहु निनगुंटॆ पेळनु
मानवावुदु सुम्मनिर बेडॆंदना हनुम ॥ 4 ॥
बॆऱगदे कॆम्मुवनु नी ता नऱिय बेहुदु पुरव सुलितं
दरुवॆ यंचटॆ गळलि सुत्ति समीर बांधवन
तुरुकि तरुवलि रक्कसर रणवऱॆय हॊय्लिन लॆम्मनूरॊळु
मॆऱॆसिदुद नी मऱॆवुदुचितवॆ यॆंदना हनुम ॥ 5 ॥
अऱिवडॆलवो नीनु नॆत्तिय हऱॆयवनो मेण् बॊम्मनो सुर
रॆऱॆयनो शिखियम निशाचर वरुण वायुगळ
नॆऱ वणिगॆयवनो विचारिसॆ तऱिचु गॆडॆवुद बल्लॆ नी हुलु
पऱॆय कपि नी कॆणकि सायदॆ कॆलकॆ सारॆंद ॥ 6 ॥

आज शाकिनियों को पिलाऊँगा। युद्धभूमि के अपशकुनकारी इसे आज देख लूँगा।" इस तरह कहते हनुमान उद्वेग से भर गये। २ झुंड के राक्षसों को पीटकर, इन्द्र को जीतनेवाले वीर को लात मारकर सौ योजन दूरी पर गिराकर फिर आकाश में उछल जैसे गरुड़ साँप की ताक में रहता है— उसी प्रकार उत्साह से हनुमान खड़े हो गए। आकाश में उपस्थित देवताओं ने रावण के सम्मुख ही हनुमान की भूरि-भूरि प्रशंसा की। ३ "क्यों रे दशकंठ; युद्ध का तेरा यह खिलवाड़ किसके साथ दिखा रहा? युद्ध या संधि? —कौन सा कार्य ठीक रहेगा? क्या सूर्यकुलोत्पन्न को देखने की तेरी इच्छा है? निश्शंक होकर कह। चुप क्यों खड़ा है?" इस प्रकार हनुमान ने रावण से पूछा। ४ "इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है? मुझको तो तू जानता ही है। सारी लंका नगरी को लूटकर जो कपड़े-लत्ते लाये गये —उन सबको मेरी पूँछ में लपेटकर, आग लगवाकर, विचारे निरपराध राक्षसों से डफले पिटवाते सारे शहर भर में मेरा जो जुलूस निकलवाया था, उसे (इतनी जल्द) भूल जाना क्या सही है?" इस प्रकार हनुमान ने कहा। ५ "विचार कर देखें— तू चन्द्रशेखर है अथवा ब्रह्मा है, अथवा देवेन्द्र है? अग्नि, यम, वरुण या वायु-सदृश

आदडरु हिसबेकु बलुभट नार्देला नीनिग कालद
हादि ता विपरीत मरॆवरु मधुप रदकेनु
कादि नोडुव जयमुखवु निन गादडी मातुचितवॆंदु वि-
नोददलि कॆडहिदनु तेरिंदसुर वल्लभन ॥ 7 ॥
ऎलवो सारथि निन्नोडॆय नी कलहवनु जयिसिदडॆ कोडु को-
ब़ळिक बवरकॆ तेर नॆंदव नित्तु कैदुगळ
कळचि हाय्किद नदनॆडॆगॆ निन्नळव तोरॆ नमगॆनुत दश-
गळन किवियलि बॊब्बिरिदनॆंदे बिरियॆ कलिहनुम ॥ 8 ॥
सॆळॆदु कैदुव बिसुट नॆंदळ वळियदिरु नीनाव मैयलि
बळसॆ बळसुवॆयिक्कदंगद लंजबेड नुडि
हॊळकॆ गाररु नावु नम्मग्गळिकॆयनु सुर रीक्षिसलि नुडि-
तळुव माडदे हेळॆनुत हनुमत गर्जिसिद ॥ 9 ॥
ऎले गॊनॆय चिवुटु वॊडॆ कॊडलिय तळिसुवरॆ केळॆलवो कपि नि-
न्नोळगॆ कादुवडॆकॆ कैदुग ळस्त्र हीननलि

है ? पूरी तरह गप्पे हाँकना तू अच्छी तरह जानता है। तू तो नीच दुर्बल कपि है। व्यर्थ ही मुझे छेड़कर अपनी मौत मत बुला। निकल जा यहाँ से।" —इस प्रकार रावण ने कहा। ६ "तब तो मुझे समझाना पड़ेगा। तू तो बलवीर है न ? समय का मार्ग तो काफ़ी लम्बा हुआ। पियक्कड़ पूर्व की बातें भुला बैठते हैं। (अतः) अब भी समय है। युद्ध करके एक हाथ देख लें। अगर तू जीता तो तेरी बातें समुचित हैं। इसमें कोई शक नहीं।" इस तरह हनुमान ने हँसी-मज़ाक़ उड़ाते रावण को रथ से नीचे गिरा दिया। ७ "रे सारथी, तेरा (यह) स्वामी अगर युद्ध जीते, तभी तो युद्ध के लिए रथ (उन्हें) दे दो। अब इसे ले जा।" इस तरह कहते, रथ देकर आयुधों को उनके पास फेंक दिया। "अब अपनी वीरता मेरे सम्मुख प्रकट कर।" इस तरह वीर हनुमान ने रावण के कानों में इतने ज़ोर से चिल्लाकर कहा कि उसके कान के परदे फट जायँ। ८ "आयुधों को छीनकर फेंक देने के कारण नाराज़ मत होना। भले ही मैं आयुधों का प्रयोग करना चाहूँ— उनके वार का प्रयोजन न होनेवाले तेरे अंगों पर उनका प्रयोग कैसे कर पाऊँगा। निर्भीक होकर कहो। हम तो अदृश्य होकर लड़नेवाले नहीं, हमारी गौरव-गरिमा देवता देखें। अतः शीघ्र बता।" इस तरह कहते हनुमान गरजे। ९ "कोमल घौद (फलों के गुच्छे को) कचोट देने के लिए कुल्हाड़ का प्रयोग कहाँ करते हैं। सुन रे कपि, अस्त्रहीन तेरे साथ युद्ध करने के लिए मुझे आयुध क्यों चाहिए ?

तळविघातिय कैदुवेनॆ कळकळिसि नक्कनु हनुम नहुदो-
खळ रौळगद वीरनहॆ मॆच्चिदॆनु निनगॆंद ॥ 10 ॥
धुरद खाडाखाडि नम्मिब्बरिगॆ बेडॊंदॊंदु गुद्दिन
गुरु लघु त्वद घाय मूरर गणनॆ परियंत
परिविडिगळागिरलि गॆलविन परिय कंडॆ सोतवरु किं-
करुरु कैको मॊदलु नीनॆंदनिलसुत नुडिद ॥ 11 ॥
तिवि मॊदलु नीनॆलवो कपिमरु दिविगळॆन्नदु नोडु नीनॆनॆ
तिविद घायव मरॆदला वनभंगदलि निन्न
कुवर्रॆळ्नूररनु कॊंदुदु तिविगळल्लवॆ यॆनलु जठरदॊ
ळवतरिसिदुदु कोपशिखि बळिका - दशाननन ॥ 12 ॥
असुरना नुडिगेळि मिगॆ गर्जिसुत कण्गिडिगॆदरॆ कैगळ
हॊसॆयलु दुर्दवु किडिगळुब्बुव कब्बॊगॆय नणॆदु
वसुधॆयदुरलु तीडि बलिदागसकॆ मुष्टिय नॆगहि सिडिलिन
बसुरु बिच्चलु बॊब्बिरिदु तिविदनु समीरजन ॥ 13 ॥

हाथ की मार ही आयुध है।" इस प्रकार रावण के कहने पर खिलखिलाकर हँसते हुए हनुमान ने कहा— "ऐसी बात है, असुरों में श्रेष्ठ वीर तू है ही। मैं तुझसे प्रसन्न हूँ।" १० "हम दोनों के बीच घमासान लड़ाई का कोई प्रयोजन नहीं। एक-एक करके घूँसे जमाते, तीन तक गिनते क्रमशः एक-दूसरे पर तीन बार घूँसे जमाएँ। हारनेवाला जीतने वाले का दास बने। यही शर्त रही। पहला घूँसा तू जमा।" इस तरह हनुमान ने कहा। ११ "रे कपि, पहले घूँसे तू मार। उसके बाद के, एक-एक करके मेरे घूँसे।" —इस प्रकार रावण के कहने पर हनुमान ने उत्तर दिया— "तेरा अशोकवन तोड़ने पर मेरी जो मार उस दिन खायी थी— भूल गया न ? तेरे सात सौ बेटों को समाप्त कर देनेवाली वह मेरी ही मार थी न ?" यह सुनकर दशमुख के आंतर्य में ज्वाला सुलग उठी। १२ इन बातों को सुनते-सुनते रावण की आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं। वह सिंहनाद कर उठा। हथेलियों को मलते, काला धुआँ छोड़ते, चिनगारियों की वर्षा (क्रोध) करने लगा। उसने भुजदंडों को इस प्रकार झुलाया कि धरती काँप उठे। मूठ (घूँसे) को आकाश की ओर उठाए, बिजली का पेट चीरते सिंहनाद करते हनुमान पर वह (मूठ) जमायी। १३ भारी ज़बर्दस्त बिजली की मार से जैसे कुलपर्वत

भरद भारदलोंदेद सिडिलिन चरणहतिगें कुलाद्रि कंपिसें
धरॆगॆ दडदडिपंतॆ तरतरिसुत्त कलिहनुम
तरहरिसि कोंडहुदो तिविगुळ भरवु बॆट्टिटतु नम्म घायद
परिय नोडॆनु तुद्ददनु करतळव नवनियलि ॥ 14 ॥
ऒलॆदुदिळॆयळिपाय पदहतिगॊलॆव तावरॆयंतॆ तूगितु
जलज संभूतांड सूसितु कूडॆ जलराशि
बलिद मुष्टिय नॆत्ति नॆत्तिय तॊलगिसिदनिव नमरगण वॆड
बलकॆ चलितु चलिसिदवु जगवमर संततिय ॥ 15 ॥
आतुको घायवनु नी निर्भीत रणरंगदोळु वीरर
जातियलि जीवाळवुळ्ळव नॆंबुदी लोक
कोति गुलदव रावु कदनद रीति नम्मवु स्वल्प निन्नोळ
गातु निलुवुदु दॊड्डितॆनु तॆरगिदनु रक्कसन ॥ 16 ॥
हाऱिबिद्दनु नॆलकॆ रकुतव काऱिकाऱिदु नॆलन कण्णॆवॆ
जाऱिदवु करणेंद्रियद कळकळद झोम्मिनलि
गूरु मसगितु शशकसर्पन तोऱिकॆय रुजॆयंतॆ चलिसिद
वेऱिळिव जीवदलि कैकालसुरवल्लभन ॥ 17 ॥

काँपकर धड़ाधड़ धराशायी होते हैं, उसी प्रकार हनुमान धड़ल्ले से गिरे; फिर होश सँभालकर उठे— "ठीक ही है; तुम्हारा (यह) घूंसा भारी ज़बर्दस्त है। अब हमारे घूंसे का मजा चख।" इस तरह कहते हनुमान धरती पर हथेली रगड़ने लगे। १४ हनुमान के पगचाप से धरती की जड़ें हिल उठीं। ब्रह्मांड कमल-पुष्प-सदृश डगमगाया। समुद्र उमड़ पड़ा। ज़बर्दस्त मूठ (घूंसे) को उन्होंने मस्तक के ऊपर जब झुलाया तो आकाश के देवता दाएँ-बाएँ फेंके गये। देवलोक अपने स्थान से विचलित हुआ। १५ "इस वार को सह ले। युद्धक्षेत्र का तू निर्भीत वीर है न ? दुनिया तेरी प्रशंसा करती है कि तू वीरों में बड़ा जीवट का आदमी है। हम तो ठहरे बन्दर की जाति के। हमारी युद्ध की नीति भी अकिंचन है। तुम्हारे सामने हिम्मत करके खड़े होना ही एक बड़ी बात है।" इस तरह कहते हनुमान रावण पर टूट पड़ा। १६ रावण (ऊपर की ओर) उछलकर नीचे धरती पर गिर पड़ा। लगातार रक्त वमन करने लगा। चटपटाते अंगांगों के साथ बेहोश हो गया। पलकें धीरे-धीरे बंद हुईं। रोगग्रस्त अजगर की तरह हाँफने लगा। दीर्घ निःश्वास लेते रावण के हाथ-पैर चटपटाने लगे। १७ "धन्य-धन्य, रणधीर ! वीररससागर ! प्रलयशंकर-स्वरूप ! अपर ब्रह्म ! अच्युत (श्रीहरि)-चरणारविन्द

भापुरे रणधीर वीरर सापगापति विलय शंकर
रूपनपरब्रह्म नच्युत पदकमल भृंग
गोप मुख्य समस्त सुर मुकुटोप लालित चरण करुणा-
लाप विजितेंद्रिय नमो यॆंदमर मुनि नुडिद ॥ 18 ॥
सुररुधॆयॆंदुब्बि हिग्गिद रॆरड् मैयलि पाडिदरु तुं-
बुररु नर्तिसि नलिदरा रंभादि नारियरु
धरधुरदि नडुगिदनु मारुति तरहरिसि कोपवनु कदपिन
करदलसुरन नोडुतिर्दनु विगिद वॆंड्रगिनलि ॥ 19 ॥
अरॆ गळिगॆ गसुरेंद्र नसु चेतरिसि तोय्यनॆ राघवेंद्रन
शरहतियलुपहतिय वगद्दु मुन्नि ना देश
तरुण केळदद्रिद हगॆवन हरण सप्राणिसितु मॆल्लनॆ
शिरव नॆगहिद नीक्षिसिद नॆवॆदॆद्दु पवनजन ॥ 20 ॥
अंजिदॆवु नाव् निनगॆ मरणद मंजु मुसुकिदुदॆंदु समर स-
मंजसद सत्राणियहॆ सासान्यने नीनु
अंजदॆळॆनु तुब्बु वातिन लंजना सुतना विवेकवि-
भंजनन नॆब्बिसिद नुव्वुव रोम हरुषदलि ॥ 21 ॥

भ्रमर ! देवेन्द्रादि समस्त देवताओं के मुकुटों से प्यार किए जाने योग्य चरणसंपन्न ! दयापूर्णवागदेवीकृपापूर्ण ! हे जितेंद्रिय ! बार-बार तुम्हें प्रणाम है।" इस प्रकार महर्षि नारद ने आंजनेय (हनुमान) की स्तुति की। १८ देवताओं ने 'वाह-वाह, भेष-भेष' कहते भूरि-भूरि प्रशंसा की। तुंबुर दोनों पार्श्वों में खड़े हो (गान) गाने लगे। रंभादि देवलोक की अप्सराओं ने खुशी-खुशी नृत्य किया। हनुमान काँप उठे। क्रोध को सँभाल गाल पर हाथ धरे आश्चर्यभरी मुद्रा में रावण को देख रहे थे। १९ क्षणार्ध में राक्षसेन्द्र चेत गया। राघवेन्द्र के बाण से रावण के लिए खतरा है—यह भविष्य का निर्देश है। हे युवा लव ! सुनो। उसी कारण शत्रु (रावण) के प्राण लौट आए। रावण ने धीरे-धीरे आँखें खोलीं तथा मारुति को देखा। २० "मैं डर गया था कि कहीं मृत्यु के कुहासे ने तुझे घेर लिया है। युद्ध मे तो तू अधिक शक्तिशाली है। क्या तू मामूली आदमी है ? निर्भीक होकर स्पष्ट कहो।" इस तरह कहते विवेकहीन रावण को प्रशंसात्मक बातों से फुला-फुलाकर आंजनेय ने उसे जगाया तथा स्वयं रोमांचित हुए। २१ समुद्र में डूबा पर्वत जैसे ऊपर उठ

अंद्द नवनंदंबु निधियोळ गद्द गिरि नेगेवंते बायोळ
गिद्द रणधूळियनु थूयेंदुगुळु तेडबलके
इद्देसेय नारैदु कैगळ तुद्दि हायिकि मस्तकके मुरि
देद्दु मंडिय कोंडु कुबुबिरि दाल्द नसुरेंद्र ॥ 22 ॥
सरिसदव रिल्लिदु परियंतर पुरातन सुभटरलि सं-
गरके साहसमल्ल नीनहे गुणके मत्सरवे
करहतिय निदनोम्मे नी तरहरिसिदडे भटनहे येनुत्त-
ब्बरिसि बलुगैहत्त बलिदेतिदनु दशकंठ ॥ 23 ॥
केडिसि माताडिदेयेला निन्नोडने कादिदेनेंदु सरियें
दडहि वाचिस लहुदे बदुकिदेनेंव गर्वदलि
तुडुकु नीनिन्नोम्मे मेलुग्गडिसदेन्नय हतिगे निन्नसु
सडिल दिरे संन्यास निन्नोळु समर वेनगेंद ॥ 24 ॥
घाय विदरोळु बदुकिदरे समरायतद संन्यास वैसले
वायुविन वैहाळि गेडेगुडु निन्न वचनवनु
काय कळलद मुन्न मुक्तिय दायकर दारुंटु नेनेयेनु
ताय ताहवमल्ल तिविदनु वज्रविग्रहन ॥ 25 ॥

आता है, उसी प्रकार मुँह की धूल दोनों पार्श्वों में थूकते हुए रावण उठ खड़ा हुआ। दोनों तरफ़ निरखकर परखकर हथेलियों को मलते हुए माथे को छूकर अंगड़ाई लेते हुए सिर उठाकर ज़ोर से उसने एक बार सिंहनाद किया। २२ "मैं देख रहा हूँ कि अब तक जितने वीरों का सामना किया, वे मेरे बराबरी के न रहे। लेकिन तू तो सचमुच युद्धवीर है। गुण के लिए मत्सर कहाँ? (सद्गुण की प्रशंसा होनी ही चाहिए।) इस एक बार मेरे हाथ की वार तू सह ले तो सचमुच तू वीर है।" इस तरह कहते सिंहनाद करते रावण ने अपने मज़बूत हाथ को ऊपर उठाया। २३ "ग़लत बातें की न? तुम्हारे साथ मैंने युद्ध किया। तुम्हारी बराबर का वीर होने के कारण मैं जो बच गया—इस तरह कहना कहाँ तक ठीक है? और एक बार चीखे-चिल्लाए बिना मेरा वार सह ले। मेरे इस वार से तेरे प्राण न निकले तो मैं तेरे सम्मुख युद्ध-संन्यास स्वीकार करूँगा।" —इस तरह हनुमान ने कहा। २४ "इस मेरी वार से तू बचकर निकला, भविष्य में हमेशा-हमेशा के लिए युद्ध से संन्यास स्वीकारता हूँ। अपनी (ये) बातें हवा में उड़ा दो। तेरी देह के गिरने के पहले तुझे मोक्ष प्रदान करनेवाले जो कोई भी हो—उनका एक बार स्मरण कर लो।" इस तरह

कुक्करिसिदुदु गोणु गोणिनळोक्कु दरुण जलौघ जडिदुदु
मिक्कुकंठदलरिवु मरुवेय जीव चंचलद
सोक्कु बलिदुदु श्रमद सोंकिन सक्कजवु बलुहाय्तु मिगॆ मुं-
दिक्कि कोंडुदु मूर्छॆ मरुवॆगॆ संदना हनुम ॥ 26 ॥
केळिदै कुश कुलिश कायन मेलॆ बिद्द दशाननन कर
जाल कंपिसुतिर्द वळुकिन वळ्कु बेरळिनलि
सीळुवुदु करघातदलि कुलशैल सिडिदोडेवुदु महा दे-
वाळु तनविव गेंटुटो येनुतसुर बेरगाद ॥ 27 ॥
बिद्द भटनिव संवरिसि कोंडॆद्द नार्दोडॆ सूत केळै
तिद्दि तेम्मय देसॆ वरूथव हूडु बेगदलि
गुद्दु बिडिसिव नुळिवु दरिदेम गिद्द हदनिदु बेगमाडेनु
तद्दिदलिसॆ चाचिदनु रथवनु सूतनसुरगॆ ॥ 28 ॥
सरिवुदे पाडॆनुत सूसिद शर शूरासन शस्त्रवनु सं-
वरिसि कोळु तडरिदनु तन्नय तेर तवकदलि
तोरवॆ यधिपतिराय नरकेसरिय भृत्यन नसुरपति
तिरुतिरुगि नोडुत सूटियलि हरिसिदनु निजरथव ॥ 29 ॥

कहते प्रचंड युद्धवीर रावण ने वज्रदेही मारुति (हनुमान) को खोंच दिया। २५ हनुमान का कंठ बैठ गया। गले में रक्त-प्रवाह बह निकला। होश खो बैठने के कारण कंठ में अस्थिरता पैदा हुई। थकावट अधिक हुई। होश सँभल न सकने के कारण वे मूच्छित हुए। २६ सुनो कुश, वज्रदेही हनुमान की देह से टकरायी दशकंठ की हथेलियाँ तथा हाथ लटकती उँगलियों-सहित थरथर काँप रहे थे। वार से हाथ का फटना, कुलपर्वत का फटकर चूर होना! हे महादेव! इसका पौरुष कितना महान है!" इस प्रकार उद्गार निकालते रावण हैरान रह गया। २७ "नीचे गिरा यह वीर चेतकर युद्ध के लिए खड़ा हो जाए तो हमें छठी का दूध याद दिलायेगा। इसलिए, हे सारथी, तुरन्त रथ को जोतो। हमारा घूँसा ज़बर्दस्त है। इसका जीवित होना असाध्य है। हमारे लिए, (भाग जाना ही) एक मात्र रास्ता है। जल्दी करो।" कहते हुए रावण ने डाँटा तो सारथी जल्द रथ ले आया। २८ "यहाँ से निकल जाने में भलाई है।" इस तरह कहते अपने तितर-बितर हुए धनुर्बाण तथा शस्त्रास्त्रों को इकट्ठे कर रावण हड़बड़ाकर रथ पर सवार हुए। 'तोरवॆ' के अधिपति नृसिंह-अवतारी श्रीराम के भृत्य को राक्षसेंद्र मुड़-मुड़कर देखते चुस्त हो रथ को दौड़ा ले गये। २९

इप्पत्तुनाल्कनेय संधि

सूचने– वीर रक्कसराय रिपुजज्झार नाहवधीर रघुकुल वीर लक्ष्मण नोडने इळिविदु गेलिदनसुरेंद्र ।

केळिदै कुश निम्म रघु भूपालकन मनदच्चु मेच्चिन
पालनेय निजभृत्यननु वंचिसि दशग्रीव
कोल कोळाहळिकेयलि कविवाळ कॆडहुत कदनमुख दु-
ब्बाळिनलि रघु सार्वभौमन नऱसु तैतंद ।। 1 ।।
हरिण नुप्पर गमन कडगिद्दुरवणिप हुलियंते मदसिं-
धुरद सरगेळ्दव्वळिसि होय्देळ्व हरियंते
दुरित दुब्बर दुम्महद मैसिरिगे मेलुडि बोळ्व विष्णु
स्मरणे यंतिदिराद नसुरेंद्रंगे सौमित्रि ।। 2 ।।
अेत्तलेलवो हरिवु हगेगळु मत्तेनम्मी बलद बाहुब-
लोत्तमर लारुंटु हेळवरेम्म भृत्यरले
तत्त कडुहगे काऱरिल्ली होत्ति गेम्मोळु रणव जैसिदु
मत्ते मुंदके गमिसेनुत सौमित्रि माऱांत ।। 3 ।।

चौबीसवीं संधि

सूचना– शत्रुशूर रणधीर राक्षसराज रावण रघुकुल वीर लक्ष्मण के साथ युद्ध कर, उसे जीत गया ।

सुनो कुश, तुम्हारे रघुराम के अत्यंत प्रिय सेवक (हनुमान) को धोखा देकर दशकंठ शोरगुल मचाते घिर आने वाले, चढ़ आनेवाले वीरों को गिराते युद्ध की मस्ती में, उमंग में, रघुवंशीय चक्रवर्ती को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते आगे बढ़ आया । १ छिपकर बैठा बाघ जैसे हिरन पर आक्रमण करता है, मदोन्मत्त हाथी की चिघाड़ सुनकर उछलकर जैसे शेर उस पर आक्रमण करता है, अत्यंत पापकर्मों से कमायी संपत्ति को विष्णु नामस्मरण जैसे समाप्त कर देता है, उसी प्रकार उछलते, भागते युद्धक्षेत्र में कोलाहल मचाते रावण का सामना लक्ष्मण ने किया । २ "कहाँ भाग रहे हो ? हमारी इस सेना के महावीरों में, तुम्हारा शत्रु कौन है बता । वे सब हमारे सेवक हैं । इस वक्त हमारे शत्रु इनमें कोई नहीं है । मुझसे युद्ध कर, मुझे जीत, आगे बढ़ ।" इस प्रकार आह्वान देते लक्ष्मण ने रावण का रास्ता रोका । ३ "रुको-रुको, यों भागे-भागे कहाँ जा रहे हो ? हम

होगदिरु निल्लॆलवॊ नाद् शतयाग नूरवरल्ल निलु न-
म्मागमद बगॆ बेरॆ बंटतनक्कॆ बेरॆयदिरु
कैगणॆय कळुहित्त कदनद मेगॆ नी ता नॆल्लिगादरॆ
होगॆनुत निजधनुव दनि दोऱिसुत बॊब्बिरिद ॥ 4 ॥
बिरिदुदिळॆ बिलुदनिगॆ रिपुतनु जरिय दिहुदे सूतनसु ज-
ज्जरित वादुदु अडितॆयलि जवगॆट्ट वश्वचय
भरद भीतियलसुर पति मै गरॆदु मोनध्यानदलि निज
शिख नॊलॆ दोलॆ दहुदो वीरर देव नीनॆंद ॥ 5 ॥
सुरर रणकिंदी महावानरर रणमिगि लादुदी वा-
नरर रणकिंदी नरेंद्रन कदन कडुहाय्तु
अररॆ चक्राकृतिय नंगीकरिसि कॊंडिदॆ रिपु नृपालर
धुर विभीषण नुडिद नुडि सडगरिसु तिदॆयॆंद ॥ 6 ॥
बिल्ल तुदियिंदिरिदु बंडिय चल्लिसिद युगदंतकन,कडु
तल्लणद तेजिगळ बोळैसिदनु हस्तदलि
बल्लिदनु नीन्हुदले नररल्लि नम्मय हगॆगॆ नी ता
नॊल्ल दळियनॊ मगनॊ हुसियदॆ हेळु नीनॆंद ॥ 7 ॥

देवेन्द्र की नगरी के नहीं है। रुक जा। हमारी विद्या की रीति ही निराली है। सेवकवर्ग में अपना प्रवेश क्यों करा रहे हो? तुम्हारे हाथ के बाणों को इस तरफ़ आने का आदेश दो। युद्धसमाप्त होने पर चाहे जहाँ जाना।" इस तरह सूचना देते लक्ष्मण ने धनुष्टकार किया तथा सिंहनाद किया। ४ लक्ष्मण के धनुष्टंकार से धरती में दरार पड़ गयी। तब शत्रुओं के शरीर का क्या कहना? सारथी के प्राण थरथर काँपने लगे। तभी, रावण के रथ में जुड़े घोड़ों की गति एकदम ठप हो गयी। भारी भय से राक्षसेन्द्र अपने-आपको बचाने मौन हो सोच-विचार में डूबे (मन ही मन) वाहवाह करते "सही है, वीरों के तुम स्वामी हो, इसमें रत्ती भर शंका नहीं।" इस प्रकार कह उठे। ५ देवताओं के साथ हुए युद्ध से बढ़कर (युद्ध की अपेक्षा) यह वानरों के साथ का युद्ध हुआ है। इन वानरों के साथ हुए युद्ध की अपेक्षा मानवेश्वर के साथ हुआ युद्ध (हो रहा युद्ध) तीव्रतर लगता है। शत्रु राजाओं के साथ का यह युद्ध चक्राकार दिखायी पड़ता है। विभीषण की बातें (नसीहत) अब ठीक जँच रही हैं। (ठीक हो रही लग रही हैं)। ६ धनुष की नोक चुभोकर रथ को प्रचोदित किया। प्रलय रुद्र को भी कँपानेवाले घोड़ों की पीठ थपथपायी। "मानवों में तू बुद्धिमान है—यह सच है। मगर

अळिय मगनेंबी विचारद बळकॆ निन गॆकॆलवो मलॆतर
नळिवॆवाव् मरॆ योक्कवर मगनेंदु मन्निपॆवु
अळिववनो नी निन्न तम्मन बळिय जीविसुववनो पेळॆ
बळकॆ यिल्लदॆ साव बदुकुव बगॆय नीनेंद ॥ 8 ॥
अरिवधुव नॆळॆतंदु रिपुविन शरहतिगॆ गुरियागि मत्तद
परिहरिसि जीविसुव भटने बणगॆ होगॆनुत
सरळ सारद लरि नृपाला वरजननु मुसुकिदनु मोडद
तरणियंतिरॆ तोरिदनु सुरबलकॆ सौमित्रि ॥ 9 ॥
धुरदोळा लक्ष्मणनु लक्षिसि सरळ तॊट्टडॆ निलुवनावनु
सुर नरोरग लोकदोळगेनॆबॆ नद्भुतव
अरिशरौघव काणॆ काणॆनु सुरर सरणिय चापदीक्षा
गुरुगळल्ला राम लक्ष्मण रॆंदु मुनि नुडिद ॥ 10 ॥
सरळमय दिग्वळय भींकृति शरदमयवंबर धरातळ
होरळिमय होस तळपगळ तागुगळ तनिगिडिय

सच-सच यह बता कि तू हमारे शत्रु का दामाद है, जिसने अपने ससुर की मुहब्बत खोयी है, या बेटा है जो पिता के प्यार से वंचित है।" इस प्रकार रावण ने पूछा। ७ "दामाद है या बेटा है—इस सम्बन्ध को लेकर तू क्या करनेवाला है? हमारे प्रतिरोधकों (विरोधकों) को हम मारने वाले हैं। शरणागतों की पुत्रवत् रक्षा करेंगे। तू मृत्यु चाहता है, अथवा अपने भाई के आश्रय में जीना चाहता है—यह साफ़-साफ़ बता दे। जीने-मरने के सम्बन्धी अपने विचार बता दे।" —इस प्रकार लक्ष्मण ने पूछा। ८ "शत्रु की पत्नी का बलात् अपहरण कर, फलस्वरूप उसके बाण का निशाना बनकर, पश्चात् (उस निशाने से) उससे अपनी रक्षा कर (उस बाण का निवारण कर) जीनेवाला वीर ही मैं हूँ। रे नीच, हट जा यहाँ से।" —इस तरह कहते रावण ने बाणों की वर्षा कर शत्रु राजा के भाई लक्ष्मण को ढँक दिया। आकाश से देख रहे देवताओं को लक्ष्मण बादलों से घिरे सूर्य-सदृश दीख पड़े। ९ लक्ष्मण अगर युद्ध में निशाना लगाकर बाणप्रयोग करें तो देवलोक, मृत्युलोक, पाताललोक में—किसकी हिम्मत है कि उसका सामना करे? अब जो आश्चर्यजनक घटना हुई उसका वर्णन कैसे करूँ? शत्रु के बाण न जाने कहाँ लापता हो गये। आकाशस्थित देवता न जाने कहाँ भाग गये? राम-लक्ष्मण धनुर्विद्या के आचार्य हैं न? —इस तरह कहते महर्षि वाल्मीकि वर्णन करने लगे। १० दिशि-दिशाएँ बाणों से व्याप्त हो गयीं। सारा आकाश ठेंकार से भरा

अररॆ नरकेसरि हिरण्यक रुरुतरद संगरकॆ शतसा
विरद मडियॆनॆ मॆऱॆदुदाजि नरेंद्र रावणर ॥ 11 ॥
ऎसुव भटरिब्बर शराळिय वॆसुगॆयलि बलु तिमिर लतॆ लं-
बिसिदुदवनी तळव जवनालयद तमदंतॆ
मसॆगळिब्बर मैगळलि संधिसिदुदनु ना काणॆकलिकॆय
विशिख विद्यद गरुडियॊब्ब नॊळल्ल दिल्लॆंद ॥ 12 ॥
सुररु मॆच्चिदरीत नॆसुगॆय करचमत्कृति गॊडनॆ रजनी
चररु हारैसिदरु सरळोटकॆ दशाननन
शरनिधिय तॆरॆ मालॆगळ मोहरदवॊलु वळिकिब्बरॆसुगॆय
सरळ संगर नडॆदु दॊंदरॆ जाव परियंत ॥ 13 ॥
कोप कॊनरिदु दिब्बरिगॆ शिखि रूपरादरु वळिक विलय वि-
रूपनयनन भाळलोचन दग्नि कणदंतॆ
तापिसिदवु जगत्रयव नुरि तापदलि तळ्ळंकिसितु मे-
ला पुरंदर धनद यम वरुणादि निर्जरर ॥ 14 ॥
एकॆ नावंदिवनुपद्रकॆ नाकजर नॆरहिदु पयोनिधि
गेकॆ नडॆ तंदसुर धूळिपटगॆ दूरिदॆवु

बाणों से व्याप्त दीखा। नूतन कांति की धर्षणा के कारण बाहर निकल रहीं चिनगारियों से सारी धरती प्रकाशमय हुई। बाप रे! नरसिंह तथा हिरण्यकशिपु के बीच हुए भयानक युद्ध की अपेक्षा सौ हज़ार गुने प्रखरतर गति से रावण-लक्ष्मण का युद्ध प्रतिभासित हुआ। ११ दोनों वीरों से छूटे बाण एक-दूसरे में प्रविष्ट हो, टकराते हुए यमलोक की तरह अँधेरा पैदा करते धरती पर अंधेरा पैदा कर गये। दोनों में किसी एक को भी घायल न पाया गया। बाणविद्या का अध्ययन एक-दूसरे में किसी प्रकार अधिक या न्यून नहीं था। दोनों में नैपुण्य भारी भरपूर था। १२ लक्ष्मण के बाण-प्रयोग का कौशल्य हस्तलाघव देख देवता अत्यंत प्रसन्न हुए। असुरों ने रावण के बाणों की प्रखरता की प्रशंसा की। समुद्र की लहरें एक-दूसरे पर पंक्तिबद्ध हो आक्रमण करती टकराती है— उसी प्रकार उन दोनों के बाणों का वह भयानक युद्ध एक-आध प्रहर तक चलता रहा। १३ लक्ष्मण-रावण दोनों क्रोधोन्मत्त हुए। प्रलयरुद्र के भालनेत्र की आग की चिनगारियों-सदृश दोनों अग्निस्वरूप बने। वह ज्वाला (क्रोध की) तीनों लोकों को जलाने लगी। देवेन्द्र, कुबेर, यम, वरुण वग़ैरः उस ज्वाला के कारण भयभीत हुए। १४ पूर्व में रावण से सताए गये देवता उस

सोकुतिर्दे शरदग्नितापसमीक विदऱलि मनवु मरणव
कै कोंळिसुतिर्दे कॆट्टॆवॆंदजसुर परोऱलिदरु ॥ 15 ॥
सुरर कट्टॊऱलिकॆयनद कॆळ्दरि भयंकर लक्ष्मणनु लघु-
तरद शरसंधानदलि लंकापुराधिपन
करद कार्मुक हत्त शत साविरद कडियलि कडिदु वक्षद
होरॆय होम्मिन वर्मवनु हऱियॆच्चु बोब्बिऱिद ॥ 16 ॥
कुशिक सुतना लक्ष्मणगॆ करुणिसिद पूर्वदमोघ भासुर
विशिखवनु कीलिसितु कीलालवनुरस्थळव
विषव कोंडवनंतॆ तनुकंपिसितु कळवळिकॆयलि कंगळ
रसुमॆ यडगिद्दंग बारिसॆ नॆम्मिदनु मलग ॥ 17 ॥
बॆदऱि सारथि समर मुखदाळुदन नॆसुगॆय काणदकटा
कदन कुंटिसि तेनु गति तन्नसुवि गॆंदॆनुत
बॆदरु मोऱॆय बॆब्बळदि कद बदि सुतिरॆ तप्पायितॆंदा
कदनदलि सौमित्रि संधिसिदनु सुरांतकन ॥ 18 ॥

असह्य वेदना से भयभीत हो झुंड के झुंड में विष्णु के पास पहुँच उलाहना करने लगे। अब पछता रहे थे कि हमने शिकायत क्यों की ? बाणों की ज्वाला असह्य हो रही है। यह युद्ध हमें मृत्युमुख में झोंक रहा है। हाय ! मर गये। —इस तरह कहते ब्रह्माजी, इन्द्र आदि चीख-पुकार कर उठे। १५ देवताओं की घबराहट भरी चीख सुनकर शत्रुभयंकर लक्ष्मण ने एक हल्के बाणप्रयोग से लंकेश्वर के, हाथ में के, दसों धनुषों को हज़ार टुकड़ों में काट डालकर, रावण के हृदय को आवृत किए हुए कवच को भी फाड़ डाले भारी सिंहनाद किया। १६ विश्वामित्र ने अनुग्रह कर लक्ष्मण को जो अमोघ बाण दिया था, वह बाण (प्रयुक्त होकर) रावण के हृदय के रक्तकोष तक पहुँच गया। विष-प्राशन करनेवाले की तरह रावण की देह काँपने लगी। चटपटाते रावण की आँखों में अँधेरा छा गया। देह भारी हो जाने के कारण असह्य पीड़ा से रावण ने (रथ में) तकिए का सहारा लिया। १७ भयभीत सारथि ने अनुभव किया कि बाण-प्रयोग करते हुए स्वामी (रावण) कहीं भी दिखायी न पड़ रहे तो वह चीख उठा— "हाय ! युद्ध तो पलट गया। अब मेरा क्या होगा !" इस तरह सोचते घबराहट से जब लड़खड़ा रहा था तो लक्ष्मण यह देखने कि क्या ग़लती हुई— रावण के पास आ पहुँचा। १८ धनुष पर चढ़ाए बाण को

हूडिदा बळियंब मॆल्लनॆ मूडिगॆ यॊळिळुहिद्दनु मनदलि
कॊडिदनु काकुत्स्थ नंकित शासन स्थितिगॆ
नोडिदनु बळिकेऴ्ळिय लुसु राडिकॆय वडतनद वळिय स-
गाढवनु कंडीत कृपॆयलि सूतगिंतॆंद ॥ 19 ॥
बारॆलवॊ सारथि समीपवो दूरवो निन्नवर्गॆ साव वि-
कार देह दॊळिल्ल वलॆ नोडुसुर नारैदु
नीर नॆऱॆ यौषधि गळुळ्ळडॆ सेरि सेऱिन मेल मार्गद
दारिय वरावल्ल वेगुपचरिसु नीनॆंद ॥ 20 ॥
अॆद्दु बळिकव नसुर नक्षिगॆ तिद्ददनु हॊंगलश वारिय
नुद्ददनु घायदलि शुक्राचार्य नौषधिय
दॊद्दॆ वायनॊ खळनॊ हॊय्यडॆ विद्द नॆंदॆंबवर कथॆ निन
गिद्दु देळॆं दॆव्बिसिनुव्बिऴ्दु दशमुखन ॥ 21 ॥
एळुतव परमेश दत्त कराळ शक्तिय नॆगहुतिट्टनु
कॆळिदै कुश कॊंडु विद्दुदु राघवानुजन
मेलु जगवनु मुसुकिदुदु धूमाळि वक्षवनुगिदु मॊनॆं पा-
ताळदलि लंबिसितु चुंबिसितुरि रसातळव ॥ 22 ॥

लक्ष्मण ने धीरे-धीरे उतारकर तरकस में रखा। श्रीराम से दी गयी आज्ञा का स्मरण कर वह हिचकिचाया। रावण की साँस (दम) उखड़ते देख, करुणापूर्ण रीति से सारथी से उसने यों कहा— १९ "आओ सारथी; देखो, तुम्हारे स्वामी कहीं मृत्यु के मुँह में जा रहे हों या नहीं; ज़रा श्वासोच्छ्वास की परीक्षा कर देख कि लक्षण मृत्यु के हैं? जल्दी पानी छिड़काओ; ओषधियाँ हों तो घावों पर मलो। जल्दी शैत्योपचार (रावण को बचाने के लिए) शुरू करो। अन्याय के मार्ग पर विचरना हम नहीं जानते।" इस तरह लक्ष्मण ने कहा। २० तब सारथी उठा। स्वर्ण-पात्र के जल को रावण की आँखों पर छिड़काया। शुक्राचार्य द्वारा प्रदत्त ओषधि को रावण के घावों पर उसने मला। "हिसाब में न आनेवाले एक अकिंचन की मार से धरती पर गिरा —इस तरह कहनेवालों का कथन चरितार्थ न करो" —कहते हुए सारथी ने बड़े उत्साह के साथ रावण को जगाया। २१ रावण ने होश में आते ही परमेश्वर-प्रदत्त प्रचंड शक्ति आयुध को लक्ष्मण पर तानकर प्रयुक्त किया। सुनो कुश। वह शक्त्यायुध राम के भाई लक्ष्मण पर जो टूटा उसने उसे धराशायी कर दिया। तब ऊपरी लोक धुएँ से व्याप्त हो गया। आयुध जो लक्ष्मण की छाती में चुभा तो उसकी नोक (लक्ष्मण के पीठ पीछे से होकर)

बिद्दनो हर्गेयेनुत बेन्नागिद्द बल खोयेंदु दमररु
तिद्दितिन्ने नेंदु नोंदरु मनद मरुकदलि
उद्दुरुट्टु खळनिळिदु रथवनु होंद्ददनु लक्ष्मणन सीतेय
कद्दु कोंडोय्दंते कोंडोय्यलिके मनदंद ॥ 23 ॥
ओय्दिवन निवनग्रजन कोंडोय्दु तोरुवे नेन्न नोल्लद
मेदिनी नंदनेगे कुंदुव दनितरळि मनव
नेय्दु कोंडिह पतिय देसेयनु वादवेन्न मनोरथद रस-
वाद सिद्धिपुदेंदु बिड दौकिदनु लक्ष्मणन ॥ 24 ॥
औक लवुकिद वळ्ळे दळ्ळिसि नूकितुरि निट्टुसिरिनलि बिड
दोकरिसिदुदु वदन हलाहल महाविषव
कैकरण तळ्ळंकदलि बलुलोक गर्भधारकन जग-
देक वीरन नेंगहि नेंगहदे निंद नसुरेंद्र ॥ 25 ॥
हिरिदु बेरगिट्टसुर पति निज शिरव तूगुत लाग लदके
नरिदिवन मस्तकव नोय्वे नेनुत्त खंडेयव
कोरळिगानिसुवनितरोळु बेज्जरद रोगिय मुंदेसेय निं-
दिरुव मृत्युविनंते निंदिद नोदरि कलि हनुम ॥ 26 ॥

पाताल तक चली गयी। वहाँ (पाताल में) ज्वालाएँ उसकी धधकने लगीं। २२ रावण के पीछे छिपी सेना चिल्लायी, 'शत्रु गिरा!' 'अब तो सब समाप्त हो गया' यों सोच देवता मन ही मन दुःखी हुए। मदोद्धत रावण रथ से उतरकर लक्ष्मण के पास आए तथा सीता के अपहरण के समान ही लक्ष्मण को उठा ले भागने का निश्चय किया। २३ इसे तथा इसके भाई को ले जाकर मुझे अस्वीकार करनेवाली सीता को दिखा दूंगा। इससे अपने पति का अनुसरण करने की, अनुगामी बनने की उसकी इच्छा मुरझा जायगी तथा सीता हताश होगी। 'मेरी महत्त्वाकांक्षा की (उस पाने की) बेल तभी लहलहायेगी। इस तरह सोच (वह) लक्ष्मण को उठाने गया। २४ रावण लक्ष्मण को उठाने के प्रयत्न में असफल हो हाँफने लगा। धू-धू कर उसकी दीर्घ निःश्वास निकलने लगी। मुँह से हालाहल महाविष वह वमन करने लगा। हाथ और अपने इन्द्रियों की चिंता से ग्रस्त राक्षसेश्वर समस्त लोकों को (अपने) गर्भ में धारण करनेवाले जगदेकवीर (लक्ष्मण) को उठाकर भी उठा न सकने के कारण ज्यों का त्यों खड़ा रहा। २५ अत्यंत आश्चर्य से भरा राक्षसेश्वर सिर हिलाते— 'जो भी हो, जैसे भी हो, इसका सिर काटकर ले जाऊँगा' इस तरह कहते अपनी नंगी तलवार खींचे लक्ष्मण के कंठ पर वार करनेवाला

एनॆलवो दशकंठ कृत समरानुभाषित वॆल्लि रणदप
यान शस्त्राभ्यास वारिदरिकॆ निनगाय्तु
ई निशित निस्त्रिशकवु तानेन दारिगॆ होग लदकि
देनु नम्मय कॊडुव सालव कॊट्टु होगॆंद ॥ 27 ॥
नॆत्ति गेड्रितु जीववनिलज नुत्तरकॆ कैगुंदि खंडॆय
कित्तु बिद्दुदु बॆदरिदनु कैकालु कंपदलि
मित्तु मगुळैतंदु दडगलु हॆत्त तायॊडलल्प विदकि-
न्नुत्तरव दॆनॆंदु तळवॆळ गाद नसुरेंद्र ॥ 28 ॥
कॊडदॆ घायव नॆम्म कळनलि कॆडहि वंचिसि बहुदि दुचितवॆ
पॊडवि नगदे निन्न नॆलवो निन्न चित्तवनु
पडॆयदिरॆ ता हनुमने यॆंदॊडॆयल धरव नगिदु मुष्टिय
जडिदु जगदुद्दंड बल नितॆंद नसुरंगॆ ॥ 29 ॥
करॆदुको बॊम्मननु भृगुजन बरिसु मृतसंजीवनिय नरॆ
दिरिसु सायदुपाय वॆनितुंट नितननु कॊळिसु
निरुतविदु कॆळॆलवो नावनु सरिसुवव रल्लिदको रघु भू-
वरन मॆच्चिन घाय वॆनुतॆरगिदनु रक्कसन ॥ 30 ॥

ही था— 'भ्रमिष्ट रोगी के सम्मुख खड़े मृत्यु की तरह' वीर हनुमान ने सामने प्रकट होकर सिंहनाद किया। २६ "क्यों रे दशकंठ, तुम्हारे युद्ध की चाटुकारिता कहाँ गयी ? युद्धभूमि से पलायन करने का शस्त्राभ्यास (अध्ययन) तूने कहाँ से पढ़ा ? यह पैनी तलवार किस पर प्रयुक्त करने जा रहा है ? जाने दो इन बातों को।' जो क़र्जा हमारा चुकाना है उसे चुकाकर आगे बढ़।" इस प्रकार हनुमान ने कहा। २७ हनुमान की (ये) बातें सुनकर रावण की साँस बँध गयी। हाथ ढीले पड़ने के कारण धरी तलवार नीचे गिरी। डर के मारे हाथ-पैर काँपने लगे। 'अरे यह मृत्यु फिर से आ गयी। छिपना चाहूँ तो जन्मदात्री माता का गर्भ काफ़ी नहीं होता !" —इस प्रकार सोचते राक्षसेश्वर खूब घबराया। २८ "वार किये बिना हमें छोड़, धोखा दे युद्धभूमि से भाग आना क्या श्रेयस्कर है ? तुझे देख यह धरती हँसेगी नहीं ? तुम्हारी थाह को न पाऊँ तो मेरा यह नाम 'हनुमान' व्यर्थ है।" इस तरह कहते दाँत-होठ चबाते प्रचंड बलशाली हनुमान ने अपनी बँधी ज़बर्दस्त मूठ को दिखाते— मूठ की ओर उसका ध्यान खींचते रावण से कहा। २९ "ब्रह्माजी को बुला ला; शुक्राचार्य को निमंत्रण दे भेज। मरे हुओं को जीवित करने की संजीवनी ओषधी पिसवा ले। अपने को अमर बनाए रखने की जितनी भी युक्तियाँ हैं

देसेदेसेगे चल्लिदवु करुळिन कुसुरि कोडहिद चीलद वोलेलु
ससिदु बिद्दवु बेरसि चिम्मितु रुधिर निर्जरर
मुसुडेडेगे मदवेरि दिभपति कुसुकि देळ गुंजळदवोलु र-
क्कसन निजदाकार विकारवाय्तु निमिषदलि ॥ 31 ॥
अडगि तीतन कोपवसु सिडि दोडलि नसुरन काणु तेडेयलि
मिडुकि नंशांश प्रमित दसु वरिके गुडदंते
मृड सरोजज रित्त वरदुग्गडद बलु हिदिद्दुदवनु-
ग्गडद विकळालाप लेपिसितनिल नंदनन ॥ 32 ॥
अकट स्वामि द्रोहिकेय पातकके पक्कादेने महानर
कक्के नायक नादेने शिव शिव महादेव
प्रकटिसि देने मूर्खतेयन व्यकुत राम सुभाषितद सु-
प्रकट सूर्यातपके तम तानाद नेयेंद ॥ 33 ॥
राय रघुराजेंद्र मनदलि नोयदिर निन्नकटकट रा-
मायणद हेसरंतरिसि तेंदधिक चिंतेयलि

—उन सबको संजो ले। यह सच कह रहा हूँ। हम अनुसरण करनेवाले नहीं; यह लो, यह राघव की ओर से प्यारा वार।" इस तरह कहते हनुमान रावण पर टूट पड़े। ३० आँतड़ियाँ बाहर निकल जाने से उसके टुकड़े-टुकड़े दिशि-दिशाओं में बिखर गये। पटके बोरे से तितर-बितर हो पड़ीं वस्तुओं की तरह हड्डियाँ चारों ओर बिखर पड़ीं। साथ ही खून के छींटे जो उड़े देवताओं के मुखड़ों तक पहुँच गये। मदोन्मत्त हाथी जैसे कुम्हड़े को रौंद डालता है, उसी प्रकार रावण के शरीर का आकार क्षणमात्र में विकारग्रस्त हो गया। (उसकी छलनी देह बड़ी भयानक दीखी)। ३१ छितरे देह के रावण को देखते-देखते हनुमान की क्रोधाग्नि शांत हुई। अगोचर रीति से क्षीण होते अंशतः चटपटाते रावण के प्राण शिवजी तथा ब्रह्माजी के वरदान के फलस्वरूप अभी बचे हुए थे। व्यथा से जो रावण कराह रहे थे— हनुमान को सुनायी पड़ा। ३२ "हाय-हाय, स्वामी-द्रोह रूपी पाप का भाजन बना! क्या मैं (इस प्रकार) महानरक का अधिकारी बना? हे शिव-शिव महादेव, मैंने बड़ी मूर्खता का (यह) कार्य किया न? राम की प्रतिज्ञा रूपी रोशनी (धूप) के लिए मैंने (यह) अंधेरा पैदा कर दिया न? (क्योंकि रावण की हत्या राम के हाथों ही होनी चाहिए)" इस तरह हनुमान प्रलाप करने लगे। (मन ही मन मसोसने लगे)। ३३ "हाय-हाय, श्री रघु रामचन्द्र मन ही मन दुःखी हुए बिना न रहेंगे! यह मैंने क्या किया! रामायण का नाम बदलना पड़ेगा न?"

न्याय वल्लॆंदमर मनुजनिकाय बय्यदे माणदॆन्ननु
पायविदकिन्नॆनॆनुत मरुगिदनु मददॊळगॆ ॥ 34 ॥
ऐसॆ मत्तॆनॆम्म दुष्कृत दोषविदॆला मीरु लारळ
वेसु मरुगिदडेनु नोडुवॆ नॊम्मिमगी खळन
नासिकांतर्गत कळाप्राणाशुगन तत्प्राणगत पर
माशुगनु हिंगिदडॆ हॊगुवॆनु हव्य वाहनन ॥ 35 ॥
अॆंदु मनदलि निर्धरिसि शत्रुंदमनु सुरवैरियॆडॆगै
तंदु नोडिद नसुर नॆदॆयलि मिड्डुक नारॆदु
संधिसिदनवनवयमंगळ नंदमिगॆ पुरुषाकृतियन-
ल्लिद मेलॊदॆदनु कणा मडदलि महीतळव ॥ 36 ॥
धरणिजा सुतकेळु हनुमन चरण हतिगळॆ विरिय लुदिसितु
सुरतरंगिणि गॆणॆयॆनिप नदि तन्महानदिय
परमपावन जलव मॊगॆदव नुरदलवनक्षिगळला दश
शिरन वदन दुलगिसि कैमुगिदॆद नय्यंगॆ ॥ 37 ॥
तरळ तनदलि तानु नडॆदी दुरुळतॆय दूटिक्कि निम्मय
हिरिय तनवनु मॆरॆवुदी राक्षस कुलाधमन

इस तरह सोचते हनुमान वहुत ही व्याकुल हुए। 'हनुमान ने यह ठीक नहीं किया' इस तरह देवता तथा मानव मुझ पर दोषारोपण करेंगे ही। इसके लिए क्या उपाय करूँ ?" —यों सोचते हनुमान चितामग्न हुए। ३४ "बस, यह मेरे पापकर्मों का परिपाक ही है। नहीं तो ऐसे कैसे हो सकता है ? व्यर्थ विलाप करने से क्या प्रयोजन ! होनी होकर ही रही। देखूँ— इस राक्षस के नथुनों से प्राणवायु संचारित हो रही है कि नहीं। अगर श्वासोच्छ्वास ठप हो गया है तो अग्नि-प्रवेश करूँगा। ३५ इस प्रकार दृढ़ भावना धारण कर शत्रुजयी हनुमान राक्षस (रावण) के पास आकर उसकी साँस की परीक्षा करने लगे तो उसके (रावण के) हृदय में स्पंदन देखा। रावण के अवयवों को ठीक तरह जोड़-जाड़कर पुरुषाकृति वनायी। फिर एड़ी से धरती को लात मारी। ३६ सुनो सीता-पुत्र! हनुमान की एड़ी की मार से (चोट से) वहाँ की भूमि (धरती) फटी तो देवगंगा-सदृश नदी पैदा हुई। उस महानदी के परम पवित्र जल को लेकर हनुमान ने रावण की छाती, आँखें, मुख आदि पर जो छींटे दिए तथा हाथ जोड़े (अपने) पिता वायुदेव से यों निवेदन किया। ३७ "बचपना प्रकट करते (नटखटपन से) यह जो दुष्ट कार्य मैंने किया है— उस दोष का परिहार कर तुम

अरिय दसुविगॆ मृत्युवादॆनु मरॆय माते कॆन्न नाळ्दन
चरणसेवॆगॆ सलिसु वंतुद्धरिस बेकॆंद ।। 38 ।।
मगन मातिगॆ मरवॆ यसुरन नॆगिहिदनु मारुतनु मॆल्लनॆ
मुगिदॆवॆय कण्ण रळिदवु सत्राण सुगतियलि
जगद जीवकुमार नय्यन हॊगळि तलॆ दूगिदनु नाटिद
नगॆय नयनद हरुष वारियॊळसुर गिंतॆंद ।। 39 ।।
एरॆलवो खळ रथव नवयव देरिनलि तॊडॆ यौषधियनु-
ब्बेरु कदनकॆ करणदलि नीनंजबेडिन्नु
बेरॆ मातिल्लॆमगॆ नाव् कैमीरुववरल्लिन्नु मनदळ
लारि तॆम गाहवकॆ रामनॊळॊदगु हॊगॆंद ।। 40 ।।
होगु कादॆनु निन्नॊडनॆ खळनागकुल हरियक्षनाणॆ वि-
रागिगळु नाव् रणकॆ तप्पॆवु नुडिद भाषितकॆ
जोगु वोगदिरॆळु कॊल्लॆनु होगु कादुवडसुर रिपुवनु
तागु तोटिय फलव तुदियलि काबॆ नीनॆंद ।। 41 ।।

अपना बड़प्पन प्रकट करो। अनजान में मैं इस राक्षसकुलाधम की मृत्यु के लिए कारणीभूत बना। तुम मेरे पिता हो। तुमसे दुराव-छिपाव कैसा ? मेरे स्वामी (राम) की चरण-सेवा के लिए मुझे उपयुक्त बनाते मेरा उद्धार करो।" इस प्रकार हनुमान ने प्रार्थना की। ३८ पुत्र की बातें (निवेदन) सुनकर बेहोश हुए रावण में वायुदेव ने चेतना का संचार कराया। धीरे-धीरे (खोए) प्राणों के लौटने के कारण रावण की मुंदी आँखें खुलने लगीं। जगत-प्राण के पुत्र हनुमान अपने पिता की प्रशंसा करते प्रसन्न हुए। हँसते-हँसते जब आनंदाश्रु उमड़ पड़े तो हनुमान ने रावण से कहा। ३९ "रे राक्षस, रथ पर आरूढ़ हो जा; देर न कर; अवयवों के घावों पर मरहम पट्टी करा ले। युद्ध के लिए उत्साह भर ले। अब डरने की कोई ज़रूरत नहीं। मेरी बातों पर विश्वास कर। अब हम तुम पर हाथ नहीं उठाते। मेरी ईर्ष्या उतर गयी। अब राम से युद्ध करने चला जा।" इस तरह हनुमान ने कहा। ४० "जा-जा, अब मैं तुमसे युद्ध नहीं करता। राक्षस रूपी हाथियों के लिए सिंह-सदृश असुरारि की सौगंध खाकर कहता हूँ। युद्ध के लिए अब हम निरासक्त हैं। वचन से चूकनेवाले नहीं। यों जड़ता में बैठे मत रहो; उठो। तुम्हें मार नहीं डालता। जाओ। अगर तुम युद्ध करना ही चाहते हो तो असुरारि राम से लड़ो। युद्ध का फल अन्त में भुगतोगे।" इस प्रकार हनुमान ने कहा। ४१ हनुमान ने अपने वचन के अनुसार आचरण

अंदु मारुति तुडिद मातुगळंददलि माडिदनु मेलें प-
रंदराद्यरु बैदरी पवमान नंदनन
कोंदु हगेयनु मरळि जीववतंदु कोंडिसिद नकट खळनिव-
नेंदिगळिवनेंनुत्त तळवेंळगाय्तु सुरकटक ॥ 42 ॥
कळुहिदनु रक्कसन बळिकूमिळेयगडन वळिगेवंदनु
बळलिदंगद भटन नीक्षिसि नयनवारिगळु
तुळुकगळ तुदिमूगि नक्कंय बळिय भारिय दुगुड दिदोलें
दोलेंदु नट्टालिगळ वेंडगिनोळिदंवा हनुम ॥ 43 ॥
सारिते यकटकट राजकुमारकरिगापत्तु राज्य
श्रीरमणि हगेयादळे शिव शिव महादेव
घोरगहन परिभ्रमण विस्तारवाद नितल्ल दहितन
कूर लगिगोड लोड्डिदिरें हायेंनुत शोकिसिद ॥ 44 ॥
मरुगि माडुवुदेनु मुंदण तेंडन कावुदें पौरुषांगद
होडगें येंनुतनु मानिसिदनज हर कृतांतकर
ऊरुव जीववनुगिदु तंदी तोंडेंद जीवद लक्ष्मणन क-
ण्देंडेसुवेंनु कथेयेकेंनुत वोल्विदिदना हनुम ॥ 45 ॥

किया। आकाश से देवेन्द्र आदियों ने वायुसुत हनुमान को गालियाँ दीं। शत्रु को मार डाले जो भला किया था; उसमें फिर प्राण भरकर सत्यानाश किया। पता नहीं यह राक्षस कब मरेगा।" —इस तरह कहते देवता चिंता से व्याकुल हुए। ४२ रावण को भिजवाकर हनुमान लक्ष्मण के पास आए। थके-माँदे शरीर के वीर लक्ष्मण को देखकर अश्रु बहाते, सिसकियाँ भरते खड़े रहे। बहुत ही दुखी हो, डोलायमान हो किंकर्तव्य-विमूढ़ हो टकटकी लगाए हनुमान ने लक्ष्मण को देखा। ४३ हाय-हाय ! राजकुमार कैसी विपत्ति में फँसे ! हे शिव-शिव महादेव ! राज्यलक्ष्मी (की चाह) इनकी शत्रु बनी न ! घनघोर जंगलों में भटकने के बावजूद शत्रु के वैसे आयुध को अपनी देह समर्पित करनी पड़ी न ! कैसा दुर्दैव ?" इस प्रकार सोचते हनुमान बहुत ही चिंतित हुए। ४४ "व्यर्थ व्याकुल होने से क्या प्रयोजन ? भावी का मार्ग ढूँढ़ निकालना (आगे की सोचना) ही वीर की ज़िम्मेदारी है !" इस प्रकार हनुमान ने सोचा। "ब्रह्माजी, शिवजी, यम —इनके प्राणों को खींचे लाकर प्राणों को त्यागनेवाले लक्ष्मण के शरीर में (उन प्राणों का) प्रवेश कराता हूँ। इस प्रकार इन्हें जीवित करना है। कहकर बैठने से क्या प्रयोजन ?" इस प्रकार सोच हनुमान

कमलभव नंजिदनु गिरिजारमण नडुगिदनंतकन तनु
बेमरिदुदु कलि पवनसुत कैकोंड कॅलसदलि
समतेयनु कैको दुराग्रहदमरुषव बिडु हनुम लय सं-
क्रमिस बल्लुदे लक्ष्मणंगेदुदु नभोनिनद ॥ 46 ॥
श्वसन सुतना नुडिय ननुवर्तिसुतला लक्ष्मणन नाडिग-
ळसुवि नारैकेयलि कंडनु जीव मारुतन
शिशुवना ताय् सोगिलिगे सेरिसुववोलु तक्कैसि तंदनु
वसुमतीशन बळिगे बळिका वीर हनुमंत ॥ 47 ॥
तोरिसिद नाचेयलि तेरिन चीत्रिकेय चीत्कृतिय लसुरन
तोरिसिद नीचेयलि ता तं दूमिळा पतिय
ऐत्रिसनुपम धनुव शरमुख केत्रिसहितन बळिक घायव
नात्रिसनुजन मनुजरंगद बळके बेडेंद ॥ 48 ॥
एनु हदनै हनुमनमगे ऋणानुबंधन वुंटे तम्मन
हानि नंबुगे गागदले परियाय दंबिकेय
एनु मनदनुमान मनवु दशाननन रणकोदगदिदे दु-
म्मानवनु बिडिसय्य हेळेन्नाणे हेळेंद ॥ 49 ॥

(एक बार) गरजे। ४५ वीर हनुमान से उठायी गयी साहसी कार्य की जिम्मेदारी देख ब्रह्माजी डरे; ईश्वर काँप उठे। यम का शरीर पसीना-पसीना हो गया। इतने में (अशरीर) आकाशवाणी हुई— "सावधान हनुमान! होश सँभालो। अपना हठीला क्रोध त्यागो। लक्ष्मण मर कैसे सकते हैं!" ४६ वायुपुत्र ने इन (आकाशवाणी की) बातों का अनुसरण करते लक्ष्मण की नाड़ी पकड़कर परीक्षा की तो देखा, प्राणवायु संचालित हो रही है। जैसे माँ बच्चे को अपनी गोद में भर लेती है, उसी प्रकार वीर हनुमान लक्ष्मण को आलिंगनपाश में बाँधे श्रीराम के पास ले गये। ४७ (उस तरफ़) रथ-चक्र के घरघराहट के साथ जा रहे रावण को, हनुमान ने राम को दिखाया। इस तरफ़ अपने साथ बुला लाये लक्ष्मण को दिखाया। फिर हनुमान ने कहा— "अपने अमोघ धनुष को उठाइये; बाणों से शत्रु का संहार करें। उसके बाद अपने भाई के घावों की शुश्रूषा की ओर ध्यान दें। अब मानवोचित आचरण त्याग दें।" ४८ "क्या बात है हनुमान? भाई का ऋणानुबंध अभी शेष है न? भाई को खोकर छोटी माँ का विश्वासपात्र बना रह सकूँगा? तुम्हारी क्या राय है? रावण से युद्ध करने (को) मेरा जी नहीं चाहता। मेरा दुःख दूर

देवरलि मरॆमातॆ विन्नह कावसंशय वेड लक्ष्मण
देवनपगत नादडॆन्नलि समतॆ समनिपुदॆ
देव रिपुविन कॊलॆगॆ कॊंकिन भाववनॆ कैविडियदवनी
देव देवोद्धार नागॆंदनु निजेशंगॆ ॥ 50 ॥
ऎत्तिदनु वळिकमम वज्रावर्त कार्मुक दंडवनु हगॆ
यत्त मॊगदिरुहिदनु हूडिद सरळ सौर्ञॆयलि
कृत्तिवास विरिंचि दिविज कुलोत्तमरु हारैसॆ राजकु-
लोत्तमन धरधुरद दरुशनकतुळ हरुषदलि ॥ 51 ॥
बंदुदै वळिकहित रथवॆनॆंदु हॆळुवॆनसुर रायं-
गॊंदि दतिशय तपद महिमॆयदॆनु विस्मयवॊ
नॊंद नॊवॆनाय्तो शिगुतन दिदुविन कळॆयंतॆ हॆच्चितु
कंद केळसरेंद्र नुव्वटॆ रामनिदिरिनलि ॥ 52 ॥

करो । सौगंध है तुम्हें । जल्दी कहो; क्या करूँ ?" इस प्रकार राम ने कहा । ४९ "आपसे निवेदन करने में दुराव-छिपाव कैसा ? लक्ष्मणदेव का काम अगर तमाम हुआ तो मुझमें संतोष-समाधान कहाँ रहेगा ! शत्रु की हत्या से मुँह मोड़ लेने की (अपनी) भावना से अपने को बचाते देवताओं की रक्षा के लिए तुरंत धनुष उठाइए ।" इस प्रकार अपने स्वामी से हनुमान ने कहा । ५० तब राम ने (अपना) वज्रावर्त धनुष उठाया । (उस) धनुष पर बाण चढ़ाए शत्रु की ओर मुड़े । ईश्वर, ब्रह्मा जी तथा देवतागण हर्ष से राम के इस अद्भुत युद्ध-कौशल्य को देखने आ जुटे । ५१ उसके बाद रावण का रथ आया । क्या कहें ! राक्षस राजा की तपोमहिमा कितनी आश्चर्यकारक है ! उसने जो मार खायी थी— उसकी वेदना का क्या हुआ । सुनो बेटे लव ! बाल चंद्रमा की कलाओं की तरह रावण की वीरता राम के सम्मुख बढ़ती ही गयी । —इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा । ५२

इप्पत्तैदनेय संधि

सूचने— खेचररु कोंडाडे सकल चराचरात्मक नसुर रायन नाचिकेय कोंडुळुहि कळुहिद नसम समरदलि ।

कुशने केळच्चिर यकरॆदवु रसव नेरडक्षिगळु लक्ष्मण
दशमुखर मेलिदु सूर्यर शांत रौद्रकद
कुशननुज केळ् करुण वेंडदलि विषम रोषज्वाल बलदलि
बेसुगे बिडदवधानदलि निंदनु महाहवके ।। 1 ।।

जीय बिन्नह वैरिभटन विडायियनु चित्तैसिदिरे वा-
नायुजंगळ भरव कंडिरे सूत नुब्बटेय
बाय बिरिसनु केळिदिरे सरिरायने निमगवनु पदचर
रायतद रणरंजकवे निमगेंदना हनुम ।। 2 ।।

रथद मेलव देवरिगे पदरथद रणवसमान मुंदण
कथेगे नाचिके नमगे नाविद्देनु फल निमगे
रथवहेनु देवरिगे देवरु रथिकारादडे जगदोळगे सु-
प्रथित तानहेनेंदु तलेवागिदनु कलिहनुम ।। 3 ।।

पचीसवीं संधि

सूचना— गंधर्वों के गुणगान के मध्य समस्त जड़-चेतन जगत के स्वामी श्रीराम ने असम युद्ध में राक्षसेश्वर को अपमानित कर भेज दिया (प्राणों का अपहरण नहीं किया)।

आश्चर्य की बात सुनो कुश। राम की दोनों आँखों ने लक्ष्मण तथा दशमुख दोनों पर चन्द्र-सूर्य दोनों के शांत और रौद्र-रस की वर्षा की। सुनो लव! बायीं आँख में करुणा तथा दाहिनी आँख में क्रोध की ज्वालाएँ धारण किए हुए राम उस महायुद्ध के लिए तन्मयता से तैनात हो खड़े रहे। १ "भगवन्! निवेदन है— शत्रुवीर की शक्ति को आपने देखा है न? घोड़ों का शीघ्रगामी स्वभाव आपने देखा है न? सारथी के वीरतापूर्ण शब्दों का जोश और ज़ोर आपने सुना है न? क्या वह (रावण) आपकी बराबरी का राजा है? उसके साथ एक मामूली पैदल सैनिक की भाँति युद्ध करना आपके लिए शोभा देता है?" इस तरह हनुमान ने निवेदन किया। २ वह रथ पर और उसके साथ आप अपने पैर के रथ पर खड़े हो जो युद्ध करते हैं, यह असमान युद्ध है। आगे की घटनाएँ हमारे लिए बिलकुल लज्जाजनक हैं। आपके साथ हमारे रहते हुए भी

आदडागलियॆनुत नृपनद नादरिसॆ जात्यश्व वक्षिग-
ळादवंघ्रिगळसम रणरथ चलित चक्रगळु
आदुदग्गद मनवु सारथि यादुदुन्नतवाल केतन
वादुदसुरांतक महारथनादनाहवकॆ ।। 4 ।।
विषमगति वैचित्र्यगति निष्पसर निर्गम सूट चळगति
यसम समसंचारदलि सॊबगॆनिसि रिपुरथव
ससिनदलि तोरिदनु कपि रथ कुशलवनु कंडा
वृषाकपि वृषभनाननवनु निरीक्षिसि तूगिदनु शिरव ।। 5 ।।
भृत्यरॊळगी पवनसुत निंदत्यधिक राएंटदॆं कृत
कृत्यनो सेवॆयलि सॆरॆ विडिदनु सनातनन
नित्य शुद्धन निर्विकल्पन मृत्यु रहितननॆंदु नारद
नृत्यदलि नलिदाडि हॊगळिदनंजनासुतन ।। 6 ।।
हरिण नुप्परगमन किदिरॆंद्दुरवणिप हुलियंतॆ मदसि-
धुरद सम्मुख कुब्बरिसि हॊय्देळ्व हरियंतॆ
दुरित दुम्मह दुब्बरद मैसिरिगॆ मेलॊडॆ वीळ्व विष्णु
स्मरणॆ यंतिदिरादना खळ निदिरिनलि राम ।। 7 ।।

क्या प्रयोजन ? (इसलिए) भगवान के लिए मैं रथ बन जाता हूँ। आप अगर रथिक बनें तो मेरी ख्याति जगत भर में होगी !" इस तरह हनुमान ने सिर नवाकर निवेदन किया। ३ "ऐसा ही हो।" इस तरह कहते राम मान गये। हनुमान की आँखें नस्ली घोड़े बनीं। उसके चरण युद्ध-रथ के चलते चक्र (चाक) बने। उसका मन सारथी बना। उसकी लंबी पूँछ ध्वजा बनी। असुरारि राम हनुमान के कंधे पर सवार हो बैठे। वे युद्ध के लिए महारथी बने। ४ असम गति, विचित्र चाल, कठोर गति, चुस्त गति, दृढ़ गति, असम-सम संचार —वग़ैरः गतियों से सुचारु रूप से संचरण-शील होते शत्रु-रथ को सीधे ले जाकर दिखाया। हनुमान की संचरण-शील क्रिया में रथ का कौशल्य देख शिव ने अपने वाहन वृषभ का मुँह देखते प्रसन्नता से सिर हिलाया। ५ "सेवकों में मारुति से बढ़कर अधिक श्रेष्ठ कौन हैं ? हनुमान सेवा-समर्पण करने में कितने भाग्यवान और कृतकृत्य हैं ! पुराणपुरुष, नित्यशुद्ध, परिवर्तन-रहित, मृत्यु-रहित श्रीहरि को उसने अपने वश में कर लिया है" —इस तरह कहते नारद ने नाच-नाचकर आंजनेय की स्तुति की। ६ हिरन का उछलना देख तीव्रगति से आक्रमण करनेवाले बाघ की तरह, मदोन्मत्त हाथी के सम्मुख गरजकर वार

अवनिजा सुत केळु बळिका भुवनवीरर खतिय हुतवह
गवदु गर्भीकरिसि तबुज भवांड मंडलव
अवयवद निगुरुगळ कडॆगण्ण विरळद नोटगळ सेदिद
कवलु गोलिन लॊत्त जरिसिद रळवियलि नॆलन ॥ 8 ॥
मलॆतु सिहर्कॆ सिहकुलिशर्कॆ कुलिश कदनर्कॆ निलुव वॊलुरण-
गलि मनद मन मुनिसुगळ छलपदद बॆंबळिय
कलह लंपट रायॆनुत कट्टळवियलि कैकॊंडु कणॆगळ
तुळुकिदरु तुंबलु जगत्रय किडिय गडणदलि ॥ 9 ॥
झम्मॆंनुत शिखिमुखद कणॆगळु चिम्मिदवु चापगळ नॊंदॆदुरॆ
घुम्म घुळिलॆंबब्बरणॆ गब्बरिसॆ दिगुतटव
निम्म तंदॆय बाण वहितन नॆम्मिदवु हगॆयंबु रामन
हम्मिदवु नॆलॆगॆडिसिदवु निमिषदलि निर्जरर ॥ 10 ॥
इब्बरॆसुगॆय विशिख वज्रव हब्बिदवु हॊंबिसिलु काळद
मॊब्बु कविदुदु संजॆगॆपादुदु दिशावळय
तब्बिदलगिन बॆळगिनलि कणॆयुब्बरद कत्तलॆय लागरि
युब्बुगळ कॆंपिनलि बिडदरॆंजाव परियंत ॥ 11 ॥

करने के लिए कूद पड़नेवाले, छलांग मारनेवाले शेर की तरह, अधिक पाप-राशि पर आक्रमण कर उसे विदीर्ण कर देनेवाले विष्णु-नाम-स्मरण की तरह राम, रावण के सामने चढ़ाई करने के लिए तैयार खड़े रहे । ७ हे सीता के पुत्र, सुनो ! उसके बाद उस जगदेक वीरों की कोपाग्नि ने धधककर सारे ब्रह्मांड-मंडल को आवृत किया । वे अपने शरीर को सीधे करके खड़े हो डाली जैसे बाणों को धनुष पर चढ़ाकर खींचकर, उसमें दृष्टि रोपकर निशाना ताने धरती को दबाए खड़े रहे । ८ अहंकारी सिंह सिंह का, विद्युत् विद्युत् का, जैसे युद्ध के लिए आह्वान देते हैं, उसी प्रकार युद्ध में मन लगाए, कोपाविष्ट, जिद्दी, युद्धासक्त 'हो' कहकर चीखते-पुकारते कान तक प्रत्यंचा खींचकर बाण-वर्षा करने लगे तो तीनों लोक चिनगारियों के समूह से भर गये । ९ झल्लाहट के साथ-साथ आग उगलते बाण धनुष से छूटकर बाहर की ओर (निशाने पर) छूटने लगे । घड़घड़ाहट की ध्वनि चारों ओर व्याप्त हो गयी । तुम्हारे पिता के धनुष से छूटे बाण शत्रु से टकराए । शत्रु के बाणों ने राम को घेर लिया । दोनों वीरों की बाणवर्षा के कारण क्षणार्ध में देवता अपने-अपने स्थानों से क्षणमात्र में विचलित हो गये । १० दोनों (वीरों) से छूटे बाणों से आकाश घेरा गया । बाणों के कोरों की

मुळुगिसुव बंबुगळु सुरकुल जलधि वडवानलन नॆसुगॆय
ललघुबल राघवन वर राजीव लोचनन
तळितु मुत्तुववसुर नॆसुगॆय चलसिळीमुख निकर रणनि-
श्चलित साहस शस्त्र सार विचित्रतरवॆंद ॥ 12 ॥
हनुम नुब्बर वैरि सूतन निनद रामन बॊब्बॆ दशकं-
ठन महा कंठीरवध्वनि राघवेश्वरन
धनुवि नब्बर रावणन विलुदनि भटद्वय बाण भींकृति
वनजभव कल्पांत शरधिय रवकॆ गुरुवाय्तु ॥ 13 ॥
ऎसुगॆगळ सव्यापसव्यद विशिख गमनद गरिय हिळुकिन
बॆसुगॆगळ बॆरळुगळ सॆदुव बिडुव विन्नणद
कुसिदु निगुरुव मैयमिगॆ दिट्टिसुव दृष्टिय हूंकृतिय रण-
रसिकरॆच्चाडिदरु नॆरॆ मॆच्चलु सुरव्रात ॥ 14 ॥
खळफळनॆ कणॆकणॆ विघातिसॆ हळचुतिदॆंव खंडितास्त्रद
हिळुकु गरिगणॆयलगु हॊदॆसिद ववनिमंडलव

रोशनी, असंख्य बाणों के कारण व्याप्त अँधेरा तथा बाणों के अधोभाग के पंखों की लालिमा —ये तीनों रंग मिलकर आधे याम तक सुनहली धूप तथा अँधेरे का झुटपुटा —इन दोनों के मिलन के कारण दिशाओं में मानों साँझ खिली, ऐसा आभास हुआ। ११ महाबलशाली राघव के बाण देवताओं के सागर के लिए वड़वानल-सदृश बने रावण को मानों डुबो दे रहे थे। रावण से छूटे दृढ़ बाणों का समूह कमललोचन श्रीराम को घेर लेते थे। दोनों वीरों के इस युद्ध में साहसी शस्त्रास्त्रों की स्पर्धा बिलकुल आश्चर्य-कारक थी। —इस तरह वाल्मीकि ने वर्णन किया। १२ हनुमान का सिंह-नाद, शत्रुसारथी की चीख-पुकार, राम की गर्जना, दशकंठ का महासिंहनाद, राघवेन्द्र के धनु का टंकार, रावण के धनुष की ध्वनि, राम-रावण के छूटे बाणों की सनसनाहट —इस प्रकार कई शब्दों के सम्मिलन से लगता था कि ब्रह्मसृष्टि के युगांत के प्रलयसागर के रोर से बढ़कर यह रोर है। १३ दाएँ-बाएँ से बाण छोड़ रहे, निशाने पर लगाए गए बाणों के पुच्छल भागों को उँगुलियों से मजबूती से पकड़े हुए, कुशलतापूर्वक (चतुराई से) बाणों को खींच छोड़ते हुए, बदन को झुकाकर फिर सीधे खड़े होते हुए, दृष्टि गड़ाए देखते हुए, हुंकार भरते हुए युद्ध-प्रेमियों ने देवताओं की प्रसन्नता के मध्य बाणों का युद्ध किया। १४ बड़ी सनसनाहट के साथ बाण एक-दूसरे से भयानक रीति से टकरा रहे थे। अनटूटे बाणों के पंख, पुच्छ तथा फालों से भूमंडल सारा व्याप्त हो गया। एक के पीछे एक होकर आ रहे बाणों

बळिसरळ बिरुगाळिगंबुधि तुळुकुतिर्दुदु मेलॆ मेलु-
च्चळिप बाणकॆ बॆदरि बाय्बिडु तिर्दुदमरगण ।। 15 ।।
वॆरिसूतन कायदलि हॊंदेरिनलि हयदॊडलिनलि रिपु
वीर नंगोपांगदलि हळविगॆय कंबदलि
वीर हनुमन देहदलि रणधीर रघुराजेंद्र नमल श-
रीरदलि शरमयव दल्लदॆ काणॆ नानॆंद ।। 16 ।।
शरविघातिगॆ रक्कसरु मोगदिरुहि निदरु हिन्नॆलॆग रिपु-
शर विघातिगॆ सरिदु निंदुदु सेनॆ वानरर
सरळदनि बिलुमंडलाकृति बॆरळ बॊब्बॆगळिब्बरलि बिड-
दॆरडु जावद मेलॆ नडॆदुदु हेळलेनॆंद ।। 17 ।।
हॊगळ लॆणॆगाणॆनु पुरातनयुगद वीररॊळिवर सरिसकॆ-
मगनॆ कॆळैलवनॆ लवणिय लागु बेड्रिवर
गगन गगनकॆ जलधि जलधिगॆ मगुळ्दवे प्रति राम रावण-
रिगॆ रघुक्षिति नाथ रावणरल्लदिल्लॆंद ।। 18 ।।
वीररिब्बर रणकॆ बेसरु बारिसिदु दमररिगॆ शरदलि
बारिसितु भुवनाळि बळलिकॆ दोड्रदिब्बरिगॆ

की आँधी के कारण समुद्र उमड़ पड़े। उन्मुक्त दिशाओं में, (ऊपर-ऊपर) ऊर्ध्व प्रदेश में छूटते बाणों को देखकर देवता (उनको अपनी ओर आते देख) हाहाकार कर उठे। १५ शत्रुसारथी की देह में, शत्रु के स्वर्णरथ में, घोड़ों की देह में, शत्रु वीर के अंगांगों में, ध्वज-स्तंभ में, वीर हनुमान के शरीर में, रणधीर रघुराजेन्द्र के शरीर पर जहाँ देखो तहाँ बाणों के सिवा और कुछ भी दिखायी न पड़ा। —इस प्रकार वाल्मीकि ने वर्णन किया। १६ राम के बाणों की मार देख राक्षस पीछे की ओर मुँह किये खड़े हो गये। रावण के बाणों की मार से वानर-सेना पीछे हटकर खड़ी हो गयी। बाणों की सनसनाहट तथा धनुष को झुकाकर खींचने से उत्पन्न होनेवाले उँगलियों के शब्दों के साथ दो वीरों के मध्य हो रही यह लड़ाई एक प्रहर से अधिक समय तक चली। १७ सुनो, बेटे लव! इसके पूर्व के युग के वीरों में इनके बराबर के वीरों को मैंने नहीं देखा। इनकी चाल-चलन का, अंगविन्यास का कौशल्य ही निराला है। आकाश के बराबर आकाश, समुद्र के बराबर समुद्र। इसी प्रकार राम-रावण के बराबर राम-रावण ही हो सकते हैं, अन्य कदापि नहीं। इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। १८ दोनों वीरों के दीर्घकालीन युद्ध से देवता तंग आ गये। लोक इनके बाण-प्रयोग के कारण

सूरियन गति पश्चिमाब्दिय मॆरॆगांतुदु हदननिद कं-
डा रघुक्षितिनाथ मारुतसुत नॊळितॆंद ॥ 19 ॥
हलबरलि कैगट्टि कादिदु बळलिदवननु कॊलुवुदॆन
गळिकॆ रामनदॆंदु नगुवुदु जगद जननिकर
ऎलॆ हनुम कॆळिदिगिवननु कळुहुवॆनु कैगाय्दु कोपिसि
कळॆयलॆ नी नम्म निन्नभिमतव दॆनॆंद ॥ 20 ॥
कलिगळंगविदीग तप्पदु कॊलुवुदनुचित विदिगॆनॆ कपि-
कुल ललामन बिन्नहकॆ कडुमॆच्चि करुणदलि
कळुहिदनु कृतशरवनदु कैलुळिय बाणद नडुवॆ मिगॆ खं-
डळिसिदनु कैहत्तरॆसुगॆय हत्तु बिल्लुगळ ॥ 21 ॥
मुळिदु कैयॊड नसुरपति कैलुळियलॆत्तिद परिघ पारुं-
बळॆ परशु वर मुसल मुद्गर शूल शक्तिगळ
तॊलग गडिदुब्बिबरिदु कालानलनवॊलु धगधगिसि बाह-
प्पळिसि बळिकी मातनॆंदनु तन्न सारथिगॆ ॥ 22 ॥
हुलिय गंटल बळिय हुल्लॆय नलुगि तॆगॆयलु बंद हरिणन
बलुह नोडॆ सूतयॆनुतुच्चिदनु खंडॆयव

काँपने लगे। फिर भी राम-रावण थके ही नहीं। सूर्य पश्चिम दिशा की ओर चला गया। यह देख राम ने हनुमान से इस प्रकार कहा। १९ "कइयों के साथ लगातार लड़कर थके हुए इसको मारने में राम का क्या बड़प्पन है? इस तरह कहते दुनियावाले हसेंगे। हे हनुमान! सुनो। आज इसे बचाकर (जीवदान देकर) भेजूँ या चिढ़कर मार डालूँ? इसके बारे में तुम्हारी राय क्या है?" इस तरह राम ने पूछा। २० "इसमें शक नहीं कि यह वीरोचित आचरण है। आज (इस) शत्रु को मारना अनुचित है।" इस प्रकार हनुमान ने कहा। कपिकुलतिलक की इन बातों से प्रसन्न होकर राम ने करुणा दरसाते तैयार रखे बाण को ऐसे छोड़ दिया कि रावण अपने दसों हाथों में धारे जिन धनुषों पर बाण चढ़ाये चतुराई से छोड़ रहा था, उन्हीं (दसों) धनुषों को राम के इस बाण ने एक साथ काट डाला। २१ रावण ने तुरन्त क्रोधोन्मत्त हो राम पर आक्रमण करने के लिए जो अर्गला, चक्रायुध, कुल्हाड़, गदा, मुद्गर, शूल, शक्त्यायुध उठाए तो राम के बाण ने उनको काट गिराया। गरजते हुए, प्रलयाग्नि-सदृश धधकते हुए, अपनी भुजाओं को थपेड़ते हुए रावणने अपने सारथी से इस प्रकार कहा। २२ "बाघ के मुँह में के हिरन को झकझोर कर निकालने की कोशिश करने

अॅलॅ हनुम मृगराजवनितॅय मॉलनु कद्दॉय्दुळिवुदे जग-
दॉळगॅनुत बॉब्बिरिवुत सुरन नॅच्चना राम ॥ 23 ॥
अॅच्च शरवसुरेंद्र नसियनु कच्चि हारितु तिरुपि मकुटव
बिच्चि बिसुडुत बंदु बॅसनेनॅंदुद वनिपन
मॅच्चि निन्नय मनकॅ बंदुद निच्चटदली हगॅय बिगुहिगॅ
बॅच्चि बॅदरदॅ माडु होगॅंदरस नेमिसिद ॥ 24 ॥
अरियदे शरवाळ्द नभ्यंतर मनोधर्मवनु तिरुगितु
तरिदु हाय्कितु हार मणि केयूर कुंडलव
तरुण कैळै कौतुकव कत्तरियवॉलु कर्बुरन कटितट
दरुण पटवनु कत्तरिसि तमरियरु गहगहिसॅ ॥ 25 ॥
ऑडनॅ तेरिन तेजिगळ तलॅ सिडियलुच्चळिसिदुदु मकुटव
कडिदु हाय्कितु सारथियना रथद गालिगळ
उडिदु बिसुटुदु केतुदंडव नडिमगुचि तरिभटन नै तं-
दडगितल्लि मेलॅ मूडिगॅयलि महीपतिय ॥ 26 ॥

आए हुए इस हिरन की वीरता तो देखो न हे सारथी !" इस तरह कहते रावण ने तलवार खींच ली। तब राम, "हे हनुमान ! सिंहिनी को खरगोश चुराकर ले जाकर दुनिया में जीवित कैसे रह सकता है ?" इस तरह गर्जते रावण पर बाण-प्रयोग करते हैं। २३ राम के धनुष से छूटा बाण रावण की तलवार को उड़ा ले गया; रावण के बहुमूल्य किरीट को उड़ाकर उसने गिरा दिया। फिर वह बाण लौट आकर राम से पूछता है— "क्या आज्ञा है ?" राम ने प्रसन्न हो, उस बाण को आज्ञा दी— "शत्रु के गर्व-अभिमान से भयभीत न होते हुए, तुमको जो उचित लगे वही करो।" २४ अपने स्वामी के मन की बात वह बाण क्यों न ताड़ जाय ? वह राम के पास से लौट आया तथा उसने रावण का हार, रत्न, भुजबंद तथा कान के आभूषणों को चीर-फाड़ डाला। हे युवक लव, आगे की कुतूहल-भरी कहानी सुनो। रावण की कमर में लिपटे लाल कपड़े को कैंची से काटने की रीति से काट डाला। यह (दृश्य) देख देवता-स्त्रियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं। २५ तुरन्त उस बाण ने रथ के घोड़ों के सिर काटकर उड़ा दिये। फिर उछलकर रावण के किरीट को उड़ा दिया। सारथी को तथा रथ के चक्रों को काट डाला। ध्वजस्तंभ को तोड़कर फेंक दिया। शत्रुवीर को औंधे गिरा दिया। इतना सब कुछ कर जो लौट आया— राम के तरकस में वह प्रविष्ट हो गया। २६ संसार-सागर को पार कर आधिदैविक, आधिभौतिक तथा

हॊरॆद संसारांबुधियनुत्तरिसि तापत्रयद बेगॆय
हरवरियनुरॆदांटि मदमत्सरव नुरॆ जरॆदु
स्मरन गाडिय गॆलिद हिंसा परम धर्मवॆ यॆंब जिन रुषि
वरन वॊलु दिगंबरद लॆसॆदिर्द नसुरेंद्र ॥ 27 ॥

शचि सरस्वति मुख्य नाना प्रचार सुरनारियरु नाचिदु
रचिसिदरु मेलुदनु मुसुडिगॆ मंदहासदलि
खचर किन्नर यक्ष निर्जर निचय बिरुनगॆगळलि राघव-
नुचित दॆसुगॆगॆ हारविसिदरु हॊय्द करतळव ॥ 28 ॥

कायिदॆवु हॊगिदिर्गॆलवॊ निरायुधन लज्जितननज्ञन
नायुविदिन दिनकॆ निन्नदु मेलॆ नम्मदलॆ
हायि वेगदि होगु हॊगॆलॆ नायॆ निंदिर बेड नडॆनडॆ
नोय दॊजॆयलिदु हॊगॆलॆ हॆलॆय हॊगॆद ॥ 29 ॥

नाचि तिरुगिद नसुरन। मारीच वैरिय नुडिगॆ गुरुव-
ल्ला चतुर्दश जगद जनभंडरिगॆ दशकंठ
कूचि माडितु मेलॆ सासिर लोचनन कटकदलि संध्या
सूचनॆय लॆरडंक तॆगॆदवु तमद मुंबिनलि ॥ 30 ॥

आध्यात्मिक —इन तीनों प्रकारों के कष्टों से मुक्त हो मद, मत्सर (अहंकार तथा जलना) को त्यागकर, मन्मथ की माया जीतकर 'अहिंसा परमो धर्मः' इस तत्त्व पर विश्वास करनेवाले जैन यति की तरह रावण (युद्धभूमि में) नंगा हो खड़ा रहा। २७ शची, सरस्वती आदि श्रेष्ठ देवता-स्त्रियों ने लज्जित हो, मुस्कुराते हुए आँचल से अपना मुँह छिपा लिया। गंधर्व, किन्नर, यक्ष आदि देवता ताली पीट-पीटकर ज़ोर-ज़ोर से लोटपोट हो हँसते राम के समुचित वाण-प्रयोग को देख बहुत प्रसन्न हुए। २८ "निरायुध को, लज्जित को, अज्ञ को जीवित छोड़ दिया। अब यहाँ से तुरन्त भाग जाओ। आज जो बच गया सो बच गया फिर कुछ नहीं कह सकते। अतः भाग जा तुरन्त। रे कुत्ते! अब रुको मत। यहाँ खड़े मत रहो। निकल जाओ। तेरा बाल बाँका किए बिना आज के दिन छोड़ दिया। अब अपने प्राणों को बचाकर भाग जा कुलांगार। नीच चांडाल जा।" इस प्रकार राम ने कहा। २९ मारीच-शत्रु राम की बातों से लज्जित हो रावण लौट पड़ा। चौदह लोकों के दुष्ट नीचों के गुरु तो दशकंठ ही है न? देवता देवेन्द्र की राजधानी की ओर रवाना हुए। संध्या के लक्षण देख दोनों तरफ़ की सेनाएँ अंधेरा

कपि वरूथव निळिदु राघव नृपति चिंताभारदलि रण
दपगतर नारैवु ततिवेगदलि बरबरलु
तपन तनुजन कंडु मनदलि तपिसि तंदनु कंगळिगें तन-
गपयशवु संभविसि तेयेंदश्रु वारिगळ ॥ 31 ॥
कोंड जीवित विल्ल नम्मिदुंड हंगिनितिल्ल बनदलि
कंड बिडयकें तनुव तत्ततंदे सुग्रीव
हेंडतिय हरिबदलि लोगर हिंडि हिळिदनु रामनेंबी
भंडतन कोळगादेने हायेंदु शोकिसिद ॥ 32 ॥
मरेय माया मनुजनेंबुद नरियदे जगवणुगकेळ् कं-
देरेदनै कमलांबकन करुगोदयांबुदद
बिरुवळेय बरविनलि बिसिलिगें बरत हळ्ळद मेलें तंपिन
तोरे तुळुकि हरिवंतें हरिराजेंद्र निमिषदलि ॥ 33 ॥
नमिसिदनु बळिकेंद्दु विश्वक्रमन विमल पदार विंदकें
सुमुखतेय सुम्मान सुमनोलतिकें कुडिगोंडु
अमरिदुदु कपिबलवना कपिरमण सहितसुरारि बंदनु
ममतेयतिशयद रकेयलि लक्ष्मणन होरगागि ॥ 34 ॥

होने के पहले शिविर को लौट पड़ीं। ३० वानर-रथस्वरूपी हनुमान के कंधे से उतरकर राम चिताक्रांत हो, युद्ध में मरे पड़े हुओं को देखते-देखते शीघ्रगति से लौट रहे थे तो युद्धभूमि में पड़े सुग्रीव को देख व्याकुल होते आँखों में अश्रु-भरे सोचने लगे— 'क्या यह मेरी अपकीर्ति नहीं है?' ३१ "किसी के आधीन हो कभी जीवन नहीं विताया। हमसे सुखी होने की रत्ती भर भी परवाह नहीं है। जंगल में हमें देख, दाक्षिण्यवश हो, हमारे लिए यों वलिदान किया न हे सुग्रीव! (अपनी) 'पत्नी-कार्य-निमित्त राम ने जिस किसी के प्राणों को निचोड़ डाला' —इस कथन का निर्लज्ज हो शिकार बनना पड़ा न" —इस तरह सोचते राम व्याकुल हुए। ३२ वेटे कुश, सुनो। यह माया से आबृत मनुष्य मात्र है —इस तरह दुनिया नही जानती? कमलाक्ष के करुणा भरे मेघों की वर्षा जब होवे— धूप से सूखे नाले में ठंडे जल का प्रवाह जैसे बहता है, उसी प्रकार सुग्रीव क्षणार्ध में आँखें खोल देता है। ३३ सुग्रीव ने उठकर विश्वपाद (विश्वचरण) के चरण-कमलों में प्रणाम किया। संतोषाधिक्य के उल्लास में कपिसेना (का मन) ओतप्रोत हुआ। वानराधिपति सुग्रीव को साथ लिये अत्यधिक प्रेम के लिए प्यासे वने राम लक्ष्मण के पास आये। ३४ रघुराज श्रीराम ने धन्वंतरि के पुत्र सुषेण को

करेंदु राघव राय धन्वंतरिय तनुजगेंदननुजन
परियदेनु परीक्षिसै पवननन‍ु परिगतद
हरिपतिय नारै परीक्षिसि दुरुपरापरवस्तुविन नर
चरितदंगव बिट्टु नीने नोडु साकेंद ॥ 35 ॥

ऎनुत नाडिय जीय पवमानन परीक्षिसि लक्ष्मणन मुख
वनरुहद लोंगिसिदनु मारुत मंत्रमय जलव
तनुव मुरिवुत मगध तनुजा तनुजनेंद्दनु मेलॆ नीलन
तनुविनलि तुंबिदनु मुख्य प्राण मारुतन ॥ 36 ॥

बळिक बवरद लळिद सुभटावळिय नॆब्बिसि हब्बिसिदनु
ज्वल मनोरथ लतॆय मनुकुल राजशेखरन
जलधि कल्पदलब्बरिसि भूतळव लंबिसुवंते सेना
जलधि लळियेरिदुदु तोरवॆय रायनिदिरिनलि ॥ 37 ॥

बुलाकर कहा— "देखो, भाई (लक्ष्मण) की हालचाल कैसी है ? क्या साँस चल रही है ? ज़रा परखकर बताओ। वानर-सेनापति की भी परीक्षा करो।" तब सुषेण ने कहा— "परात्पर वस्तुस्वरूपी तुम ही मानवीय माया का आवरण त्याग परीक्षा करो, यथेष्ट है।" ३५ इस तरह कहकर सुषेण ने नाड़ी पकड़कर, श्वास की परीक्षा करते लक्ष्मण के मुखकमल पर वायुमंत्र से अभिमंत्रित जल छिड़काया। तब लक्ष्मण अँगड़ाई लेते उठ बैठे। उसके बाद नील की देह में मुख्य (प्रमुख) प्राणवायु का संचार कराया। ३६ उसके पश्चात्, युद्ध में मृत वीरों को जगाकर सुषेण ने मनुवंश राजशेखर राम के मन की इच्छा के वेल को फैलने का सुअवसर प्राप्त करा दिया। कल्पांत में सागर जैसे घनघोर शब्द करता भूमि को घेर लेता है, उसी प्रकार वानर-सेना-सागर ने 'तोरवॆ' के अधिपति के सम्मुख अपने में उत्साह भर लिया। ३७

इप्पत्तारनेय संधि

सूचने— रणव नयिसुबेलॆव छलपद देंणिकॆ यिदेब्बिसिदना सुरगणभयंकर कुंभकर्णनना दशग्रीव ।

भूतळाधिप सूनुकेळ् रिपुजात जयजनिताभ्युदय रा-
गातिशय संपूरणद सौरंभ सागरद
पोत वणिजरु तिरुगिदरु लाभातिशयदलि विश्वकर्म वि-
नूतनद सुरुचिरद शिबिरद राजमंदिरकॆ ॥ 1 ॥
इक्किदरु मुत्तिगॆय निवरा रक्कसन पट्टणकॆ पडितळ
विक्कि परिगतवाद लज्जॆय सुय्ल सूळिनलि
बॆक्कसं बडुतसुरपति तन्निक्कॆलद करतळद मुसुकिन
दुक्कडिय दुम्मानदलि हॊक्कनु पुरांतरव ॥ 2 ॥
अहुदु रावणनॆंदु बागिल बहळ भटरिगॆ कुरुहुदोरुत
महिय नोटद नडॆय नरदुब्बुगळ कॊरळुगळ
प्रहस वाळिदाननद लज्जा विहरणद विह्वलद भूत-
ग्रह विकारनु बंदनळुकुत राज बीदियलि ॥ 3 ॥

छब्बीसवीं संधि

सूचना— युद्ध में जय प्राप्त करने के स्थिर संकल्प से दशकंठ ने देवता भयंकर कुंभकर्ण को जगाया ।

सुनो राजकुमार, शत्रुओं को जीतने के कारण संतोष से उमड़े संभ्रम (धूमधाम) रूपी सागर पर तैर आयी नाव के वणिक् राम-लक्ष्मण अधिक लाभ प्राप्त कर विश्वकर्मा-रचित सुन्दर शिविर के महल में लौट आये। इस प्रकार वर्णन करते वाल्मीकि ने कथा आगे बढ़ायी। १ वानर-सेना ने रावणासुर की नगरी को बड़े उत्साह के साथ घेर लिया। निर्लज्ज हो, दीर्घ निःश्वास लेते, आश्चर्यान्वित हुए राक्षसेश्वर ने अपने दोनों हाथों से मुंह को छिपाए दुगुने दुःख से लंका में प्रवेश किया। २ 'ठीक ही, मैं रावण ही हूँ' इस तरह अपना परिचय लंकापुरी के द्वाररक्षकों को देते हुए अपनी दृष्टि धरती पर गड़ाए चल आया। रावण के कंठ की शिराएँ (नसें) कसी हुई थीं। मुखड़ा कांतिहीन था। निर्लज्जता तथा व्याकुलता का भूतग्रस्त रावण सहमते-सहमते राजगली में (सड़क पर) आया। ३ "कृतकर्म पुण्य-पापों का फल भोगे बिना नहीं टलता।" इस

माडिदग्गद पुण्यपापग ळूडिदल्लदें माणवेंदुरे
झाडिगळ जक्कुलिन नगेगळ मुसुकुदलेगळलि
बीड सुलिसिद फल विदीगेंदाडि तल्लिय दल्लि जन के-
डाडिगळु मुसुकिक्कि कोंडोय्दरु निजालयकें ॥ 4 ॥
निदवल्लि यदल्लि सतियर होंदळिगें यार्रति गळिदिरिन
वंदिजन दुग्गडणें कंचुकिजनद कळकळिकें
संधिसिद सुम्मागियंबरदंदवादुदुधुरद सोलद
कुंदुगळ कळवळिग होक्कनु तन्न मंदिरव ॥ 5 ॥
मिक्कवर हुगगोडदें कंबिगळिक्कलद लाडिदवु कदगळ
निक्कि बागिलु बागिललि बळिका दशग्रीव
उक्कुवळलिन मुख्रिवडेंद मनदक्कजद मद मुरिद मोनद
होक्कळद लोडगिदनु सूसुव सुय्लिनलि मलग ॥ 6 ॥
हलुगळचिदहियतें भरिकेंगळद मदकरियंतें कळनोळ
गलगुडिद कलियंतें धनपति सुलिगें वडेंदतें
बळलु तळलुत बसवळिवुतोलें दोलेंदु सुय्वुत्तेळुतोडगुत
हलव हंबलि सुत्त हेंपळिदिर्द नसुरेंद्र ॥ 7 ॥

तरह कहते विकट अट्टहास करते मुखड़े पर परदा डाले— "घर लूटने का फल अब भुगतना पड़ रहा है —ऐसा लग रहा है" इस तरह कहते उपद्रवी दुष्ट आड़ में बातें करते-करते अपने-अपने घर गये। ४ स्वर्ण-थालों में लायी गयीं स्त्रियों की आरतियाँ ज्यों की त्यों धरी रह गयीं। सम्मुख हो रहे (होनेवाले) चारण-भाटों के जयघोष स्तब्ध रह गये। जाड़े के दिनों के (शुरू होने के) पहले का जो वातावरण रहता है, दृष्टिगोचर होने लगा। युद्ध की पराजय से व्यथित रावण ने अपने महल में प्रवेश किया। ५ अन्य किसी को अंदर जाने न देते हुए दरवाज़े बन्द कर द्वारपालक (पहरेदार) दंड हाथ में धरे द्वार के दोनों तरफ़ खड़े रहे। तत्पश्चात् दशकंठ उमड़ते दुःख से, असूयापूर्ण मन के टूट जाने पर, घमंड चूर-चूर होने के कारण मौन धारण किए दीर्घ निःश्वास छोड़ते बिछौने पर पड़े। ६ दाँत तोड़े सर्प की भाँति; सूँड़ काटे मदोन्मत्त हाथी की भाँति, युद्ध करते समय तलवार टूटे वीर की भाँति, लूटे गये अमीर की तरह रावण व्याकुल होते, चटपटाते, थके-माँदे, करवट ले दीर्घ निःश्वास छोड़ते, उठते-बैठते सोते, कई रीतियों से सोच-विचार करते निस्तेज हुए। ७ "मैंने दुर्गुणों को मोल लिया। बलवान शत्रु के साथ शत्रुता

माडिकोंडेनु दुर्गुणव हर्गपाडु बिद्दुदु बल्लिदनेनलु
गाडि भाग्यव कॆडिसिकोंडेनु विषय लंपटदि
बेडवेने मावननु मरणक्के जोडिसिदे हितवागि हेळिद
रोडिसिदे तम्मननु कामुकतनदलकटेंद ॥ 8 ॥
जननि जननिय जनकरनुचितवेनलु जरॆदेनुजनकजापति
जनपनेंदे नोडि माडिदे नप्रबुद्धिकॆय
दिनदिनक्के कडुगेडु कैयोंड नोंनदु कोंडुतिदे कामुकत्वद
नेनहु नेग्गदे माणदेंद सुरेंद्रनळवळिद ॥ 9 ॥
ऒणिसिदनु हलवंगदलि खळ नणेंदणेंदु रणमुखद मार्गद
गुणितदलि रिपुजयव काणदे काननांतरव
कणुगुरुड होक्कंते चिंतॆय बेणॆय बिगुहिन लिर्दुकंडनु
गुण निधियॆ केळोंदुपायवना दशग्रीव ॥ 10 ॥
ऎब्बिसुवे ननुजननु मनुजन जब्बदुळिसुवे नुळिद भूतक्के
हब्बविक्कुवेनुक्कि सोक्किद मर्कट व्रजद
उब्बरद संगरद सोलद मब्बिगिदु बॆळगेंदु चित्तव
नोब्बुळिय लैतंदु बळिकितेंद नसुरेंद्र ॥ 11 ॥

हुई। इन्द्रियाभिलाषा से मेरी संपदा सौंदर्य को विनष्ट कर लिया। मामा मारीच के मना करने पर भी उसको मृत्यु के मुँह में झोंक दिया। हाय-हाय ! हितकारी वचन बोलनेवाले भाई का कामुकतावश तिरस्कार किया।" —इस तरह सोच-विचार करते रावण व्यथित हुए। ८ "माँ तथा नाना के 'यह ठीक नहीं है' कहने पर उनकी मैंने निंदा की। जानकीपति को केवल मानवराजा समझकर मैंने अनुचित आचरण किया। दिन-प्रतिदिन आपदाएँ जहाँ-तहाँ बढ़ती ही जा रही हैं। मेरी कामुकता की यह आलोचना, ये विचार चकनाचूर हुए बिना न रहेंगे।" इस तरह सोचते रावण उतर गया। ९ रावण ने कई रीतियों से सोच-विचार कर देखा। युद्ध जीतने के मार्ग के बारे में कई रीतियों से गुमने-गिनने पर भी शत्रु विजय की रीति हाथ न लगने के कारण अन्धे के वन-प्रवेश की तरह, चिन्ता रूपी खूंटे से मानों बँधा हुआ जैसा था। गुणनिधि लव, सुनो। तब दशकंठ को एक उपाय सूझा। १० 'भाई को जगाता हूँ; इस मानव राम को कुचलवाकर पीसे डालता हूँ। मदोन्मत्त हो, अहंकारयुक्त हो चढ़ आनेवाले वानरसमूहों की बलि भूतों को देकर त्योहार मनवाता हूँ। इस भयानक युद्ध के अँधेरे में यही एकमात्र रोशनी

दैववेंदरिदरिदु मूर्खर मैवळिय ननुसरिसि समरद
सैवळियले सावुदे कर्तव्य सहभवन
कैवशकें गॆलवागदिरॆ बळिकैवडिय हगॆतनदि होगुवॆनु
बैववरु बैयलि समीकव नॆंदनसुरेंद्र ॥ 12 ॥
ऎंदु तन्नॊळु तानॆ तॊडहकॆ तंदुकॊंडनु मनवनल्लिगॆ
बंदनय्यन नोवनुपचरिसलु सुरेंद्रजितु
मंदण हिताहवद कार्यकॆ निदिरुव बुद्धियलि बळिकि
तॆंदननुवरिदा दशास्यंगा सुरेंद्रजितु ॥ 13 ॥
हगॆय नाचिकॆ होदु ददॆरि मिगिलॆ निनगॆलॆ जीय जाड्यद
जगुळु दलॆगिदेला जयाभिमुख प्रतापशिखि
तगरु तिरुगिदरेनु मरुसन्नॆगळ समरव जयिसदे त्रै-
जगकॆ बॆरगॆनिसुवॆनु बॆसननु कॊट्टु कळुहंद ॥ 14 ॥
नॆरॆद शाखामृग समूहव नरवॆ नंकणियागि बिकद
नरपतियनु परेत पतिय पुरांतरांळदलि
दॊरॆयॆनिसुवॆनु काम्यसिद्धि स्फुरणवी त्रैलोक्यदलि क-
र्बुर कुलेंद्रगलल्लदिल्लॆ निसुवॆनु तानॆंद ॥ 15 ॥

है।" इस तरह सोचते मन को स्थिरता प्रदान कर रावण ने सोचना शुरू किया। ११ "राम के परमात्मस्वरूप को जानते हुए जान-बूझकर मूर्खों के मार्ग का अनुसरण करते हुए युद्ध के सीधे मार्ग पर अग्रसर हो मरना ही मेरा कर्तव्य है। भाई के (कुम्भकर्ण के) युद्ध से अगर जीत न होगी तो पाँच गुने द्वेष से युद्ध के लिए जाऊँगा। गाली देनेवाले भले ही गाली दें।" —इस प्रकार रावण ने सोचा। १२ इस तरह सोचते रावण अपने मन को काबू में लाया। इतने में पिता की वेदना में सहभागी होने के लिए इन्द्रजित् वहाँ आ पहुँचा। आगे चलकर शत्रु से लड़ने के कार्य-सम्बन्धी आयोजना बनाते, दिमाग़ लड़ाते समयोचित रीति से इन्द्रजित् ने दशमुख से यों कहा। १३ "शत्रु की इज्जत तो लुट गयी। उसके सामने तुम्हारी (इज्जत) कौन सी बड़ी बात है। चिंता से विमुक्त होने के लिए तुम्हारे पास विजयलालसा की वीरता की आग अभी शेष है न? जूझते वक्त भेड़ा भले ही मुड़ पड़े; फिर आक्रमण कर क्या वह जीतता नहीं? मुझे आज्ञापित कर भेजिए। (इस बार) तीनों लोकों को अचरज में डाल दूंगा।" इस प्रकार इन्द्रजित् ने कहा। १४ "युद्ध में जुटे वानर-समूह को पूरी तरह पीस डालूंगा। अहंकार से विचरते मानवराजा को

मगन मातिगे मंदहासव नुगिसिदनु हृदयदलि शांतद
लगुळियनु मुरिदधिक चिंता भार दुब्बरद
मगने केळी कर्णयदलि संयुगद भारके कुंभकर्णन
होगिसि नोडुव मनदलिद्दभि मतवीदीगेंद ॥ 16 ॥
नोडुवेनु तम्मनलि तम्मन पाडु तप्पिद बळिक पंथद
पाडु पाडिन मेले पौरुषदुरु परिग्रहद
मोडि मुरियदे मनद खाडा खाडियलि होय्दाडि कीर्तिय
जोडिसुवदे जाणतन दभियोग तनगेंद ॥ 17 ॥
अेंदु कळुहिदना कुमारन मंदिरके मनदादियलि मिगे
कोंदु कूगिदु दिरुळिनग्र समग्र मूरुखन
कंदिदवु तारेगळु तामसि यंदगेट्टुदु तामरस नगे
यिंद नल वेरिदवु नेरेदवु जक्क वक्किगळु ॥ 18 ॥
कुंभकर्णन नेंब्बिसुव सौरंभवनु सले नोडलेंदा
जंभ भेदि दिशांगना सुरतोप चारकद
रंभणद रमणीयतर दोस्तंभगळ नगलिसुत तिमिरवि-
जृंभणनु मणिखचित रथदिंददर्द नंबरव ॥ 19 ॥

यमनगरी का राजा बना दूंगा। 'तीनों लोकों में मनोरथ सिद्धि राक्षस कुलेन्द्र के सिवा अन्य किसी की नहीं हो सकती।' यह साबित कर दूंगा।" इस प्रकार इन्द्रजित् ने कहा। १५ बेटे की बातें सुनकर रावण मुस्कुराए। अपने मन की व्याकुलता की तीव्रता को थोड़ा सा थामकर शांत भाव से— "सुनो मेरे पुत्र; इस बार युद्ध की ज़िम्मेदारी कुंभकर्ण को सौंपकर —क्या होता है— यह देखने को जी चाहता है।" इस प्रकार रावण ने कहा। १६ "देखना चाहता हूँ कि भाई के युद्ध का परिणाम क्या होता है ? भाई की हालत समाप्त होने पर मेरी ज़िद्द जोर पकड़ेगी। तभी मेरे लिए सुअवसर है। जब मेरी बारी आयेगी तो इस प्रकार लड़ूँगा कि युद्ध-कौशल्य की मेरी सुन्दरता में कोई न्यूनता न आने पावे। स्पर्धा से लड़कर कीर्ति कमाने में ही बुद्धिमानी है।" —इस प्रकार रावण ने इन्द्रजित् को समझाया। १७ इस तरह कहकर रावण ने बेटे को घर भेज दिया। पूरी तरह मूर्ख बने चितामग्न रावण को रात्रि के अंतिम प्रहर ने खोंचकर जगाया। नक्षत्र कांतिहीन हुए। रात्रि का आह्लाद विनष्ट हुआ। खिले कमल प्रसन्न दीख पड़े। चक्रवाक पक्षि के जोड़ों का पुनर्मिलन हुआ। १८ रतिक्रीड़ासक्त हो, पूर्व दिशा रूपी स्त्री के

तोलगि दाहव दपजयद मुम्मळिय मनदाकुळद वेंगॆय
बॆंळसि नसुराधीश निंदिरॆ सुप्रतापकद
कळकळद कैवारिगळ कट्टुलुह केळदॆ नित्य नियमा
वळिय निर्वर्तिसि महेशन नॊलिदु पूजिसिद ॥ 20 ॥
ऒलिवने शिवनशुभ कर्माकलित कलुषात्मरिगॆ पूजॆय
तळॆदु कॊळ्ळदॆ कॊडहिदनु मौळियनु मदनारि
ऎलॆ कुमारक केळु लोकावळियलुळ्ळ समस्त मूर्खर
तिलक नल्ला रावणनु रणमुखक्कॆ मनदंद ॥ 21 ॥
सभॆगॆ बारदॆ नाचि बळिकॊळ सभॆयॊ ळोलगवित्तु मंत्रि
प्रभुगळनु करॆसिदनु केळिद नवर मनदनुव
उभय मत देकार्थदलि वळिकभय पूर्णन कुंभकर्णन
त्रिभुवन क्षोभितन रणक्कॆब्बिसलु नेमिसिद ॥ 22 ॥
तुळिसुवदु गजघटॆ गळिदिक्कुळ गळिदॊडॆ मुरिदु जडिद-
प्पळिसुवदु कव्बुनद कॊडति गळिद मूगिनलि
हलवु कुरिकोणगळ हॊगिसवु दुलिव हॆव्वरॆगळनु किविगळ
बळिय बॊब्बिडिसुवदु हॊसॆवुदु तलॆय ललगुगळ ॥ 23 ॥

आलिगनपाश में आबद्ध रमणीय भुजाओं को (अपने) ढीले करते हुए सूर्य ने कुंभकर्ण को जगाने में जो ढील-ढील बरता जायगा —देखने की अपेक्षा से रत्न-जड़े रथ पर आरूढ़ हो आकाश मे अपने को प्रकट किया। १९ युद्ध में हार भुगतकर आने के कारण मसले हुए मन से कुढ़ते, खीझते राक्षसेश्वर ने अपने पराक्रम के गुणगान गाते हुए चारण-भाटों के शब्दों पर ध्यान न देते, दैनंदिन कार्यो को संपन्न कर शिवजी की पूजा बड़ी भक्ति से की। २० अशुभ कर्मासक्त पापात्माओं पर शिवजी कैसे प्रसन्न हों? शिवजी ने रावण की पूजा अस्वीकार कर सिर हिला दिया। रे कुमार! सुनो। समस्त लोकों के मूर्खो का नायक है न रावण! उसने युद्ध करने की ही ठानी। —इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि ने कहा। २१ लज्जित होने के कारण सभाभवन में प्रवेश न करते रावण ने भीतरी सभाभवन में ही दरबार भराया। फिर प्रमुख मन्त्रियों को बुलाकर रावण ने उनकी राय पूछी। (सभी का एक मत) सहमत प्राप्त कर तीनों लोकों में उधम मचाने की ताकत रखनेवाले निर्भीत कुंभकर्ण को नींद से जगाने की रावण ने आज्ञा दी। २२ कुंभकर्ण को हाथियों से तुड़वाकर, चिमटे से कचोटकर, हथौड़े से ठोंक-पीटकर, नथुनों में बकरे-भैंसो को घुसेड़कर, कान

अंजदे नुळ्ळनितु पायव नंजनाचल समन समर स-
मंजसन सुप्तिय समाप्तिय माडि नम्मेडॆगॆ
अंजदिल्लिगॆ कॊंडु बहुदु रिपुंजयननॆंदसुर बेससॆ क-
रांजुळियलि महाप्रधानिगळैदिदरु खळन ॥ 24 ॥
मेळविसिद मददुब्बि नग्गद भीळ रक्कस भटर पॊगिसिद
रेळु लक्षद लॆक्कदद्भुत घोर विग्रहद
केळिदै रघुवंश लक्ष्मी लोल सुत ललियेरि दुब्बिन
तोळु बल रौकिदरु तंद्रिय तामसीचरन ॥ 25 ॥
मुरज डिंडिम पटह कौसळ करडॆ चंबक कॊंबु रणमौ-
वरि मृदंगम भेरि कहळारवद रभसदलि
बिरिय लवुज भवांड वंबुधि जरियॆ दिगुबंधगळ बैसिकॆ
सरियलुक्किन दाणॆदडियलि हॊय्दरा खळन ॥ 26 ॥
तोरि दिरलव गॆच्चरिकॆ कर्मारुरुक्किन चम्मटिगॆगळ
लेरि हॊय्दरु होल्व गिरिगळ सिडिल कॊंडतियलि
चीरिकॊय लप्पळिसिदरु दळवेरिदुदु दक्कडॆय रक्कस
नूरिकॊय बलुनिद्रॆ तॊडॆयनु तट्टिदंददलि ॥ 27 ॥

के नज़दीक डफ-ढोल बजाकर शोरगुल कर, माथे पर तलवार रगड़कर" जगाने की आज्ञा रावण ने दी। २३ "निडर होकर, हर तरह की युक्तियों से अंजनाचल-सदृश युद्धवीर कुंभकर्ण की नींद समाप्त कर उस शत्रुविजयी वीर को हमारे पास बुला लाओ।" इस प्रकार रावण से आज्ञापित हो हाथ जोड़े हुए प्रमुख मंत्री कुंभकर्ण के पास आए। २४ भारी भयानक देहों वाले मदोन्मत्त सात लाख उग्र राक्षस योद्धाओं को ला जुटाया। सुनो हे रघुवंशीय लक्ष्मी-पुत्र ! महान भुजबलसंपन्न आवेश भरे वीरों ने कुंभकर्ण पर (उसे नींद से जगाने के लिए) ज़ोर डालना शुरू किया। २५ झाँझ, मुरज, डफ, ढोलक, तुरही, नगाड़ा, मशक बाजा, चंबक, मृदंग, भेरी, वग़ैरः तरह-तरह के बाजे जब ज़ोर-शोर से बजने लगे तो ब्रह्मांड में दरार पड़ी; समुद्र पीछे सरक गया, दिशाओं के टाँके छूट गये। तब वीरों ने लोहे की छड़ों से कुंभकर्ण को पीटा। २६ इनमें से किसी से भी कोई परिणाम न निकला। (कुंभकर्ण नहीं जगा।) तब वीरों ने लुहारों से प्रयुक्त होनेवाले लोहे के हथौड़ों से कुंभकर्ण पर सवार होकर पीटना शुरू किया। पहाड़ों पर टूट पड़नेवाली बिजली के सदृश छेनियों से, चीख़ते-पुकारते पीटा। उस भयानक राक्षस के लिए यह सब जंघा थपथपाने का जैसा लगने के कारण उसकी नींद और भी गाढ़ी होती

ऒडॆमुरिद रिक्कुळगळलि कैगॊडति गळ लप्पळिसिदरु हर-
दॊडॆय हॊय्दरु सरळुगळ नुगुरुगळ संदियलि
बिडदॆ बॆट्टिद रलगु गळनुग्गडद मुरियाणगळ मिणियलि
जडिद रिरिदरु वळिय सबळद लळ्ळॆगुक्किनलि ।। 28 ।।

कॊडुगल्लुगळिद वदनद दाडॆगळनुद्दिदरु हॊगॆदुदु
कूडॆ कावॊगॆ गिच्चु नरकेसरिय मसकदलि
झाडिसुव शिखियिंद कंगॆट्टोडितल्लिय खळरु निद्रॆय
मोडि मुरियदॆ मॊरॆवु तिर्दनु कडल मॊरॆह दलि ।। 29 ।।

हुरिकटिसि रक्कसरु हॊक्करु नॆरॆद मंत्रिगळब्बरणॆगळ
लरिदिशापट मल्ल निदिरिन लुलिव बॊब्बॆयलि
नॊरजुगळु नॆणगॊब्बिनलि कुलगिरिय गुडु गाडिसुव वॊलु मु-
द्गर मुसल परिघंगळलि नडॆदडरिदरु खळन ।। 30 ।।

सूळगिव निट्टुसुर निडुवैहाळियलि तरगॆलॆय वॊलु हॊ-
क्काळु हारितु लक्षसंख्यॆय लभ्रमंडलकॆ
बीळुतसुगळ नीगिदरु कैकालु निगुरिन लळिद रक्कस
जाल कॆणिकॆय कार्णॆनॆंतुटॊ निद्रॆ रक्कसन ।। 31 ।।

गयी । २७ संसियाँ (चिमटे) डालकर दबोचा गया । हथौड़ों से ठोंका गया । मोटी जाँघों में तीर चुभाए गए । उस्तुरे नाखूनों के जोड़ों के बीच डालकर ठोंके गये कि वे नीचे उतर पड़े । बटे हुए मोटे चमड़े के रस्से से पीटा । बर्छियों से पार्श्वों में चुभोया गया । २८ चोटी के पत्थरों से जब कुंभकर्ण की वक्र दाढ़ें रगड़ी गयीं तो नरसिंह की तीव्रता स्वरूप (सदृश) काले धुएँ के साथ-साथ ज्वाला धधक उठी । फैलती आग को देख वहाँ उपस्थित राक्षस हड़बड़ाकर भाग गये । इतना सब कुछ किए जाने पर भी नींद की खुमारी न टूटने के कारण कुंभकर्ण समुद्र के गर्जन की तरह खुर्राटें ले रहा था । २९ वहाँ पर उपस्थित मन्त्रियों के रोब-दाब के साथ राक्षस वीरों ने उनके शोरगुल के साथ अपना शोरगुल मिलाते शत्रुवीर के सम्मुख अपने को प्रस्तुत किया । छोटे-छोटे मच्छर जैसे अपनी मस्ती प्रकट करते बड़े-बड़े पहाड़ों के सम्मुख गुनगुनाते है— उसी प्रकार मुद्गर, मुसल तथा परिघायुध धारे राक्षस कुंभकर्ण के भारी शरीर पर चढ़े । ३० कुंभकर्ण के गरजते-लरजते श्वास-प्रश्वास में फँसकर राक्षस लाखों की संख्या में सूखे पत्तों की तरह आकाश में फेके गये । वहाँ से हाथ-पैर फैलाए नीचे गिरकर प्राण खो बैठे । इस प्रकार अनगिनत

जडिद रिक्कुळ गळलि किविगळ कॊडकॆगळ कदडुगळ बलुहॆ-
ग्गॊडगळनु हाय्किदरु कण्णलि सुण्ण सासुवॆय
हॆडगॆ हॆडगॆय लरॆंद मॆणसिन पुडिय हॊय्दरु मूगिनलि का-
दडलिगळ चल्लिदरु चल्लण दडियला खळन ॥ 32 ॥
एऱ्रि तुसुरिनलरॆंद मॆणसिनकार नॆत्तिगॆ सीनु सिडिला
कारदलि हॊऱ्रवंट्टु हॊडॆदुदु पुरद नॆरविगळ
मारिरक्कस नॆद्दडिन्नीयूर तिन्नदॆ माणनॆंदा
पौरजन सरकुगळ संवरिसिदरु भीतियलि ॥ 33 ॥
बिगिद निद्रॆय वदन दागुळिकॆगळ सुंटुरु गाळि नगरदॊ
ळगलदलि बीसिदुदु पवनोत्पात दंददलि
हॊगिसिदरु कुऱ्रि कोणगळ हिंडुगळ मूगिन नाळदलि शिखि
तॆगॆदु कॊंडुदु कुंभकर्णन बसुऱ्र बगरगॆय ॥ 34 ॥
अनितऱ्रि मेलुक्कि सॊक्किद घन मतंगजघटॆ गळलि गा-
ढणॆय बॊब्बॆगळुब्बिनलि तुळिसिदरु रक्कसन
तनुजकेळ् तलॆ गूदललि काननद काडानॆगळ वॊलु पथ-
दनुव काणदॆ हॊलबुगॆट्टवु हेळलॆनॆंद ॥ 35 ॥

राक्षस मरे। कैसी महान् है वह कुंभकर्ण की नींद! कैसी अद्भुत! ३१ कुंभकर्ण के कान चिमटे से पकड़कर दबा दिये गये; चूना तथा सरसों मिलाए गये पानी को बड़े-बड़े घड़ों में भरकर आँखों पर उँड़ेला गया। पीसी गयी मिर्च की बुकनी को टोकरों में भर-भरकर लाकर, नथूनों में भरा गया। खौलते कीचड़ को कुंभकर्ण की जाँघों में मला गया। ३२ नाक में उँड़ेली गयी मिर्च की बुकनी का तीखापन मस्तक तक चढ़ा। बिजली की तरह निकली छींक ने बाहर आकर लंकानगरी के लोगों को थपेड़ दिया। 'यह महामारीस्वरूप राक्षस यदि जाग गया तो इस सारे शहर को निगल ही जायगा।' —इस तरह सोचते नगरवासियों ने बोरे-बिस्तर बाँधना शुरू किया। तथा सभी चीज-वस्तुओं को इकट्ठा कर रखा। ३३ गाढ़ी नींद में जब कुंभकर्ण ने जँभाई ली तो उसके मुँह से निकले चक्रवात ने आँधी की तरह बहकर सारी लंका नगरी में उधम मचा दी। बकरे, भैंसों के झुंड के झुंड कुंभकर्ण के नथुनों में घुसेड़े गये। तब कुंभकर्ण के पेट के गढ़े में मानो आग-सी धधकी। ३४ इसके बाद भारी शोरगुल मचाते मदोन्मत्त हाथियों द्वारा कुंभकर्ण को कुचलवाया गया। सुनो बेटे लव, कुंभकर्ण के बालों के गुल्फों में फँसे हाथी, जंगल में विचरते जंगली हाथी

ऍंडह्हि रोमावळिय कुळियलि कॊंडॆद विभकुल कॆलवु सीनिलि
सिडिद सिवुळि नॊळगॆ सिक्किद दंति श्लेष्मगळ
अडिय लडगिद नॊणगळवॊलडि मिडुक दिर्दवु कॆलव सत्यद
नुडिय दॆन्नदिरॆलॆ ककुत्स्थज सूनु केळॆंद ।। 36 ।।
बॆट्टिदरु सबळगळ किविगळ लिट्टणिसि हद्दुगळ गरिगळ
कट्टिट सॆळॆ गड्डियलि किविगळ कॊग्गि दॆगॆदंतॆ
नॆट्ट वाय्तसुरंगॆ सुख हॆब्बॆट्टगळ लिडॆ खळन मै कर
घट्टणॆय मर्दनद वॊलु सुखिसिदनु निद्रॆयलि ।। 37 ।।
हॊगिसिदरु काडॆम्मॆ काड्कोणगळ हुलि करडिगळ नम्मा-
वुगळ तोळन हिंडुगळ हॆम्मरॆय दॊड्डॆगळ
विगड रक्कस भटन मूगिन हुगिलिनलि हॊरवंटु दिल्लवु
बगॆय दॆंतुटॊ खळन निद्रॆय सुखद संभ्रमवु ।। 38 ।।
भरद निद्रॆय लागुळिसि मय्मुरिदु कंकालुगळ निगुरिसॆ
हरणगळु हारिदवु वाय्दॆरॆ दसुर घाळियलि
नरक कुंडदॊळिळिव पापात्मर वॊलिळिदुदु कूडॆ रक्कस
नॆरवि सत्तुदु निद्रॆगलह दॊळा निशाचरन ।। 39 ।।

जैसे रास्ता भूल जाते हैं, वैसे ही रास्ता भूल आगे बढ़ने में असमर्थ हो गये। ३५ कुंभकर्ण के घुँघराले बालों में ठोकर खाकर कुछ हाथी गिर पड़े। छींक के कारण निकले रेंट (नाक के मैल) में फँसे कुछ हाथी लार में फँसे मक्खियों की भाँति पैरों के फँस जाने के कारण क़दम उठाने में असमर्थ हो ज्यों के त्यों खड़े रह गये। काकुत्स्थवंशज हे रामपुत्र! सुनो! यह असत्य कथन नहीं है। —इस तरह महर्षि वाल्मीकि ने कहा। ३६ कुंभकर्ण के कानों में भालों को दबोचकर चुभाया गया। तब गीध के पंख बँधे सलाकों से कान के मैल (कान की खूँट) निकालने का-सा सुख कुंभकर्ण को (उस चुभोने से) हुआ। बड़े-बड़े चट्टानों से जब वह पीसा गया तो हाथ के मुक्कों से पीट-पीटकर मालिस करने का-सा सुख कुंभकर्ण नींद में ही अनुभव करने लगा। ३७ जंगली भैंस, जगली भैंसा, बाघ, रीछ, जंगली गाय, भेड़ियों के झुंड तथा बड़े-बड़े हिरनों के झुंड उस भयावने राक्षस के नथुनों के नीचे प्रविष्ट कराए गए जो फिर बाहर न निकले। इस राक्षस के निद्रा-सुख का किन शब्दों में वर्णन करें? (निश्चय ही सुख पुरुष है!) ३८ गाढ़ी नींद में जम्हाई लेते हुए अँगड़ाई लेते करवट जो बदली तो कई राक्षसों के प्राणपक्षी उड़ गये।

कडेय लोंदे लग्गेयलि हरे होडेदव गणित बोब्बेयब्बर
जडिय लुक्किन दाणेदडि कोडतिगळ होय्लुगळ
निडुरभस नीरधिय पन्नग नोडल निद्रेय हरिय नेब्बिसि
तडिसि तग्गद बेदरु बर्हिमुख पुरंगळिगे ॥ 40 ॥

एळदव निद्रांगनेय सम्मेळनद सुख सुरतदिदिर
लूळिगद मंत्रिगळु बंदरु बळिगे दशमुखन
केळु जीय तवानुजन निद्रालतांगिय कदनदलि क-
ट्टाळु मडिदुदु मरळि मातिल्लेंद रसुरंगे ॥ 41 ॥

करेयिरो बोम्मननु तम्मगे वरव कोट्टव तानु ताने
परिहरिस लनुजात जाड्य समग्र सुप्तिकव
करेयि बेगने हरिदु राक्षसचररु चतुर चतुर्मुखन तं-
दरि भयंकर बाहुबल निदिरिनलि निलिसिदरु ॥ 42 ॥

गदगदने नडुगुत युगद्वय वदन कैमुगि देन्न बरिसिद
हदनदेनेने हरवसवे नी नम्म बेसगोव

नरककुंड में गिरनेवाले पापी जीवों की भाँति कुंभकर्ण के खुले मुँह के थपेड़े में आकर (फँसकर) कई राक्षसों ने प्राण त्यागे। कुंभकर्ण की इस नींद के साथ हुई लड़ाई में एक राक्षससमूह का काम ही तमाम हुआ। ३९ अंत में एक बार, एक साथ लोहे के बड़े-बड़े लट्ठ तथा हथौड़ो को भारी भयंकर शोरगुल के साथ पीटते सभी ढोल-मँजीरे एक साथ इकट्ठे कर जब बजाया गया तो उनके घोर रोर ने (भयंकर आवाज़ ने) क्षीरसागर में आदिशेष की शय्या पर पड़े सो रहे विष्णु को जगाया, तो देवताओं की नगरी में खलबली मच गयी। ४० (फिर भी) कुंभकर्ण बिना जागे निद्रांगना के आलिंगनपाश में सुख-काम क्रीडासक्त था। तब रावण की सेवा में नियुक्त मंत्रियों ने आकर निवेदन किया— "राजन्! ध्यान दें! आपके भाई के साथ हुए निद्रायुद्ध (भाई के नींद रूपी युद्ध) में अनेक वीर राक्षसों का काम तमाम हुआ। फिर भी वह टस से मस न हुए। हूँ, हाँ तक नहीं।" ४१ तो ब्रह्माजी को बुला लाओ न? भाई को (यह निद्रा का) वरदान देनेवाले वे ही भाई की इस पूर्ण निद्रा की जड़ता का निवारण कर सकते हैं। जाओ, जल्दी बुला लाओ।" —इस प्रकार रावण से आज्ञापित होने पर राक्षस-दूतों ने दौड़े-दौड़े जाकर ब्रह्मा को बुला लाकर शत्रु भयंकर बलवान दशकंठ के सम्मुख उपस्थित किया। ४२ चतुर्मुख ब्रह्माजी ने थर-थर काँपते हुए हाथ जोड़े खड़े हो पूछा, "मुझे किस उद्देश्य

हदनु बेरे नॆंब्बि सनुजन तुदिय मातिदु होगु वेगॆन
लॆंदॆय कैयलि नेवरिसु तैतंद नवनॆंडॆगॆ ॥ 43 ॥
बिसजभवना कुंभकर्णन मुसुड मुंदकॆ सुळियलम्मदॆ
कुसिद मौळिय भयद भारिय लपर भागदलि
नसुनगॆय लैतंदु सुर विद्विषन शब्द ग्रहणदलि मं-
त्रिसिद वारिय नॆरॆसिदननुपम करकमंडलद ॥ 44 ॥
ऒदरु तॆद्द निदारु निद्रॆय नॊदॆद पापिगळॆनुत पुरजन
कॆदरि हाय्दुदु कंडकडॆयलि कोटिसंख्यॆयलि
अदुरि खळ कण्दॆरॆयॆ कंगळ लुदुरिदवु किडि कूडॆ लय का-
लद महाभैरवन वॊलु मुळिदॆद्दुनिदिर्दॆ ॥ 45 ॥
एळलॊलॆदुदु कंठसासिर मौळिगळ वासुगिय करिगळ
कालु कुप्पळिसिदवु ककुभावळिय कूरुमन
आलि तळमगुचिदवु बलुकुल शैलववनिन्नारु बल्लरु-
हेळदिरु हदिनाल्कु लोकद भयवनदनॆंद ॥ 46 ॥

से बुलवाया गया है ?" तब रावण ने कहा— "क्या तू इतना बेखबर है कि हमसे यह पूछने की हिम्मत करता है कि क्यों बुलाया गया। और कुछ नहीं; जाकर भाई को जगा और कोई बात नहीं; जल्दी कर।" तब ब्रह्माजी अपनी छाती को सहलाते हुए कुंभकर्ण के पास आए। ४३ ब्रह्माजी कुंभकर्ण के सम्मुख आने का धैर्य न रखते थे। इसलिए डरते-डरते सिर नीचा किये, मुस्कुराते (कुंभकर्ण के) पीछे की ओर खड़े रहकर, उस राक्षस के शब्द आकर्षित करते हुए अपने हाथ के कमंडलु से जल अभिमंत्रित कर प्रोक्षण किया (छिड़काया)। ४४ "मेरी नींद को उचाटनेवाला पापी कौन है वह !" इस प्रकार घुड़कते कुंभकर्ण जाग उठा। लंकानगरी की जनता करोड़ों की संख्या में तितर-बितर हो जिधर-तिधर भागी। कुंभकर्ण ने करवट लेते हुए जब आँख खोली तो चिनगारियाँ निकलने लगीं। प्रलयकालीन महाभैरव की तरह वह (कुंभकर्ण) क्रोध-संतप्त हो खड़ा रहा। ४५ कुंभकर्ण के उठ खड़े होते ही हजारों फनवाले आदिशेष के तथा दिग्गजों के पैर फिसल गये। दिशाओं को धारे खड़े रहे कूर्म (कछुए) की आँखें नीली-पीली हुईं। बड़े भारी पहाड़ उलट-पलट गये। चतुर्दश लोक जो भयपूर्ण स्थिति से ग्रस्त हुए —उनका क्या कहना। ४६ "ब्रह्मांड को निगल जाऊँ या सप्त सागरों को अभी गटगटा

तिर्बेनो ब्रह्मांडवनु सप्तांबुधियनीट्टुर्वेनो तानी
गेंब हासिविर्गे तृर्षेगे कडेंगट्टिर्द विदिरिनलि
अंबरव नळ्ळिऱिव मांसकदंब दरुणज लोदन गळ ब-
णंबे बेंट्टगळिर्द विट्टेंडेयागि भक्ष्यगळ ।। 47 ।।
तुरुगि दद्रिगळिर्द विदिरलि तऱिद कुऱि कोणगळ गिरिगळु
हऱिद हक्किय राशियिद्दवु कोटिसंख्येयलि
इऱिद करुळुब्बुगळ मरॆमैमरॆद जीवद मृगकदंबद
तुरुगळिर्दवु निनिसि गिदिरिनला निशाचरन ।। 48 ।।
तऱिद मीनिन ताळिसिद बग्गरणेगळ पडि एडबलद हें-
ग्गिरिग ळिर्दवु सासुवेंय शिखरणेय षड्रसद
परिपरिय परिमळद सण्णॆरॆगरुळ हर्विगळिर्द वगणित
सरसिगळ सालिर्दवाज्य क्षीरमद्दुदधिय ।। 49 ।।
ताळ तेंगीचलु सुधान्यर साळगुड शर्करॆ समेत प
नाल रससंमिश्र दरुण सुराभिरंजकद
साल सरसिगळिर्द वखिळ फलाळिगळ हेराशि कुदिसिद
कूळुगळ गुग्गुरिय हेंग्गिरि मेरॆदविदिरिनलि ।। 50 ।।

खाऊँ !" —इस प्रकार की भूख-प्यास से व्याकुल कुंभकर्ण ने देखा कि सामने आकाश की ऊँचाई तक पहुँचनेवाली मांसराशि तथा रक्तमिश्रित अन्न, कई प्रकार के भक्ष्य भोज्य पदार्थों के ढेर के ढेर पहाड़ से जुटाए हुए हैं। ४७ कुंभकर्ण के भोजन के लिए सामने कटे भेड़, बकरी, भैंसों के पहाड़-सरीखे ढेर लगे थे। कटे पक्षियों के करोड़ों की संख्या में ढेर सजाए गये थे। चुभोकर मार डालने के कारण आँतड़ियाँ बाहर निकले हिरन, बेहोश कराए गए सजीव मृग तथा चौपाए सामने थे। ४८ काटकर, भूनकर बघारी गयी मछलियो के ढेर के ढेर दाएँ-बाएँ कतारों में थे। सरसों के आमरस के षड्रसयुक्त विविध प्रकार के खुशबूदार; कोमल-कोमल आँतड़ियों के थाल परोसे रखे गये थे। घी, दूध, दही तथा शहद के अनगिनत हांड़े भरे धरे कतार में रखे गये थे। ४९ ताल, नारियल, खजूर, अच्छे-अच्छे अनाज, रस भरे ईख, गुड़, शक्कर, दूर्वा आदि के रसों को मिलाकर तैयार किये गये तरह-तरह के लाल शराब के सरोवर सामने भरे-पूरे धरे थे। समस्त प्रकार के फलों के ढेर, पकाये गये तरह-तरह के अन्न तथा गुंछने के ढेरों के पहाड़ सामने विराजमान थे। ५०

वचिस लच्चरि यमम लोकप्रचुरनल्ला सिरियोळजभव
शचियरस मुख्यरु गळे बेसकैव सेवकरु
अचल संपदगरिदे नेरदुदु वचनमात्रके बहुपदार्थद
रुचिकर द्रव्यंगळा रोगणेगे रक्कसन ॥ 51 ॥
नोडिदनु मनदणियॆ कडुविरि तोडिबरवक्षिगळ मिगॆ कों-
डाडु तण्णन नंगविसिदनु तिनिसि गसुरेंद्र
जोडिसिद रुधिरोदनद गिरिकूडे पंचप्राण वायुग-
ळूडिकॆयले सवॆद विन्नुणि सॆंतॊ रक्कसन ॥ 52 ॥
काणॆना मांसद महेंद्र श्रेणिगळ रुधिरद रसाळ
द्रोणिगळना भक्षगळ पक्षिगळ मृगगणव
प्राणहिंसॆय कोळि कुरिगळ कोणगळ कुडिगरळुगळ तॆंगॆ
दाणगळ मधुराम्रफल भोज्यादि वस्तुगळ ॥ 53 ॥
आदुदर्धग्रास खळ संपादिसिद परिकरदलॆद्दुदु
बीदिगिच्चुदरदलि बळिकरॆयट्ट रक्कसर
हादिगरि गंगविसॆ रणदलि तीद जीवद तरुचरर क्र-
व्याद सुभटर हॆणन बणबॆय नॊट्टिदरु मुंदॆ ॥ 54 ॥

वर्णन करने में ही एक आश्चर्य है। बाप रे बाप ! रावण की संपदा लोकप्रसिद्ध है। ब्रह्माजी, शिवजी, देवेन्द्रादि प्रमुख देवता रावण की सेवा में कटिबद्ध हैं। अतुल संपत्शालियों के लिए क्या असम्भव है ? मुंह खुलते ही कई जायकेदार वस्तुओं से बनाई रसोई कुंभकर्ण के भोजन के लिए तैयार हुई। ५१ कुंभकर्ण ने जाकर भोज्य वस्तुओं को इस प्रकार देखा कि मन तृप्त हो तथा आँखों की भूख मिटे। बड़े भाई की प्रशंसा करते नाना प्रकार के उन भोज्य (भक्ष्य) वस्तुओं को खाना चाहा। ढेर लगे रक्त-मिश्रित अन्न के पहाड़ों को खिलाने में ही उन राक्षसों के पंच प्राण मानों समाप्तप्राय थे। पता नहीं, कुंभकर्ण के भोजन की क्या दशा है ! ५२ मांस के पहाड़ों की पंक्तियां, रक्तमय गन्नों के रस के हौद (पीपे), भुने हुए तरह-तरह के भक्ष्य पक्षी, भैंसे, ताज़ी आँतड़ियाँ वग़ैरहों के अलग-अलग पक्वान्न, मीठे आम— और तरह-तरह के खाद्य पदार्थ न जाने कैसे ठप हो गये। ५३ रावण से जुटायी गयी भोजन-सामग्री से कुंभकर्ण का आधा पेट भरा। इससे पेट में मानों आग-सी लगी। राक्षस योद्धाओं को भगाकर रास्ते पर जानेवाले पथिकों को उसने खाना चाहा। तब युद्ध में मरे वानर तथा राक्षस वीरों के मुर्दों के ढेर कुंभकर्ण के सम्मुख लगाए गये। ५४ कुंभकर्ण वह सब चट कर गया। तिस पर

तिद नवनॆल्लवनु किच्चुरे नंददिरॆ बळिकणुग केळ् हिडि
हंदिगळ नूरॊळगणगलद हरद हारुवर
मंदिरद लुळ्ळॆत्तु कत्तॆय संदणिय नूकिदरु नायिग
ळॊंदनुळुहदे तिंदनव लय मृत्यु रूपदलि ॥ 55 ॥
सॆरॆवनॆय सिक्किर्द कळ्ळर निरिदिरिदु नूकिदरु लायद
लरसि वृद्धमदेभ हय रुजॆयश्व गजघटॆय
अरसि पुरदलि सत्तहॆणगळ तुरुगिदरु तिनिसिगॆ हसिविगॆ
नॆरॆयदादुदु नॆनॆदनव पुरजनद भक्षणव ॥ 56 ॥
जगदॊळाहार दलि वडबनु मिगिलु मिगिला वडबनिंदलि
मगनु कॊडनातंगॆ मिगिली कुंभकर्णखळ
मगनॆ केळनितरलि गूळय दॆगॆदुदा पट्टणद जनवॊ
लगदॊळगॆ दूरायितु राक्षस सार्वभौमंगॆ ॥ 57 ॥
करॆसिदनु बळिकसुर दैत्यर गुरुव बंदनु बॆसनदॆनॆनॆ
परिहरिसु पवनप्रियन पटुतनव सहभवन
ऊरुतरद जठरांतरव होगिरदॆ बेगनॆ बंदु तृप्तिय
भरित मंत्रद सिद्ध गुळिगॆय नित्तनसुरंगॆ ॥ 58 ॥

भी उसकी भूख की आग बुझी नहीं। बेटे कुश, सुनो। तब शहर भर के सूअर, वणिक् तथा ब्राह्मणों के घरों के गधे, बैल वग़ैरहों के झुंड के झुंड लाकर कुंभकर्ण के सामने पटके गये। कुत्तों को भी न छोड़ा गया। प्रलय-कालीन मृत्यु की तरह कुंभकर्ण सब कुछ चट कर गये। ५५ जेलखाने में बंद हुए क़ैदियों को काट-काटकर कुंभकर्ण के सामने फेंका गया। बूढ़े हाथी, रोगग्रस्त घोड़े-हाथी, बूढ़े घोड़े आदियों को अस्तबल, घुड़साल से ढूंढ़-ढूंढ़कर लाया गया तथा कुंभकर्ण के सम्मुख धरा गया। शहर भर में मरे हुओं का पता लगाकर उनके शव कुंभकर्ण के भोजन के लिए ढेर लगाये गये। इतना होने पर भी कुंभकर्ण की भूख जब न मिटी, तब उसने नागरिकों को चट कर जाना चाहा। ५६ आहार-सेवन में, इस जगत में, बड़वाग्नि सबको हरा देता है। बड़वाग्नि से बढ़कर अगस्त्य है। अगस्त्य से बढ़कर कुंभकर्णासुर है। सुनो पुत्र, इस कुंभकर्ण से डरे हुए पुरवासी लंकानगरी त्याग अन्यत्र भागने लगे। इसकी शिकायत राजभवन में उपस्थित रावणासुर तक पहुँची। ५७ तब रावण ने असुर गुरु शुक्राचार्य को बुला भेजा। शुक्राचार्य ने आकर बुला भेजने का कारण पूछा, तो "भाई के जठराग्नि की तीव्रता का निवारण कीजिए। जल्दी कीजिए।" इस प्रकार रावण ने कहा। शुक्राचार्य कुंभकर्ण

तेगिदनु डरॅने धरातळ कूगिडलु घुम्मेंदु बोम्मन
मेगणंबर दनिगोंडलु खळनधिक तृप्तियलि
कैगळनु तोळॅदमर नदियलि तूगिदनु मस्तकव गुरु नम
गीग नीने तप्पदेंदुरॆ होगळि भार्गवन ॥ 59 ॥
पूसिदरु सेवकरु परिमळ वासिसुव सिरिगंधवनु मे-
ळॅसि दुत्तम पूगळलि पोदिसिदरु रक्कसन
वासवन पुरवरद दिव्य सुवासगळ नुडलित्त रडकॆय
राशिगळ नूकिदरु हलवनु खळन वदनदलि ॥ 60 ॥
बिळियॆलॆय हॆरुगळ बलुहोत्तळवना रजनीचरन बा-
यॆळगॆ सुरिदरु लक्क लॆक्कदलरॆद सुण्णगळ
हलवु मुद्देय हाय्किदरुपरिमळद पच्चॆय हेरु मूलॆय
कळचि सुरिदरु सुळिसिदरु नारियरु आरतिय ॥ 61 ॥
सारिदरु मंत्रिगळु बळिकरि भैरवन रणकॆब्बिसिद वि-
स्तारवॆल्लव नरुहिदरु सीता महासतिय
चोरतनदलि तंद लंका नारियरसन रणपलायन
दारुभटॆ परियंतवा कलिकुंभकर्णगॆ ॥ 62 ॥

के पास पहुँचे तथा उन्होंने उसे मंत्र-संपुटित सिद्ध गुटिका भूख मिटाने के लिए दी। ५८ कुंभकर्ण ने उस गुटिका से पूर्ण तृप्त होकर डकार ली तो (उस शब्द के कारण) सारा भूमंडल चीख उठा। ब्रह्माजी के ऊपर का आकाश गड़गड़ाहट के कारण गूंज उठा। उसने आकाशगंगा में हाथ धोकर "हमारे लिए तो आप ही अब गुरु हैं; यह सच है।" इस तरह शुक्राचार्य की, प्रसन्नता से प्रशंसा की। ५९ सेवकों ने सुगंधयुक्त चंदन का लेप कुंभकर्ण के शरीर को किया। श्रेष्ठ फूलों का हार उसके गले में डाला। देवेन्द्र की राजधानी की दिव्य वस्तुएँ उसको पहनने के लिए दी गयीं। सुपारी के ढेर उसके मुंह में भरे गये। ६० खाने के सफ़ेद पानों के बड़े-बड़े गट्ठे कुंभकर्ण के मुंह में दबोचे गये। पीसे हुए चूने के लाखों लोंदे उसके मुंह में डाले गये। सुगंधयुक्त हरे पत्तों के ढेर के ढेर उलीचकर उस पर बरसाये गये। स्त्रियों ने आरती उतारी। ६१ तत्पश्चात् मंत्री महोदय शत्रुभयंकर वीर कुंभकर्ण के पास पहुँच गये और उन्होंने युद्ध के निमित्त उनको जगाने का समाचार उसे दिया। रावण के सीता सती के अपहरण से लेकर उसका (रावण का) युद्ध में परजित होकर भाग आने तक का सारा विवरण उसे समझाया गया। ६२ "हाय-हाय! परस्त्री-

अकट कॅडिसिद नन्य वनिता सकतियलि मनविक्कि महिमा
प्रकरणद पौलस्त्य वंशद विमल वैभवद
मकरकेतन नस्त्र निर्बाधकवॆ यकट कटॆंहिकामु-
ष्मिकक्कॆ सल्लद मतिय मनदलि नॆनॆंदनॆयॆंद ॥ 63 ॥
ऐसॆं मत्तॆनॆंदु गत संतोषितनु नडॆतंद निन्नु वि-
नाश तप्पदु तनगॆनुत सभॆंगा दशाननन
भासुरद संभ्रमदला लंकेशनिदिर्व दप्पि निजभ-
द्रासनार्ध दॊळनुजननु निलिसिदनु हरुषदलि ॥ 64 ॥
बळिक शूर्पनखा सुनासा दळित कदनस्थळ विडिदु मा-
तुळन मरणव जनक जाता हरण विस्तरव
तिळुहि मेलॆ समुद्र बंधन दळवनहितर लह्रुहि समरद
लळिद मानस्थितियनुसुरिद ननुजगसुरेंद्र ॥ 65 ॥
कॆळिदॆवु नावाग लॊसगॆय हेळलेनद साकुकेळुव
खूळतन विन्नॆम्म दैसलॆ होगलामातु
कॆळिदॆ यॆलॆयण्ण परवॆण्णूळिगद लिंद्रादि देवरु
कॊळुबोदरु कामनार्गतिहितव नकटॆंद ॥ 66 ॥

व्यामोह के कारण रावण ने महिमायुक्त पौलस्त्य-वंश का परिशुद्ध वैभव में मिट्टी मिला दिया। मन्मथ के बाणों से कौन पीड़ित नहीं होता ! हाय रे दुर्दैव ! इह-पर दोनों के लिए अनुचित्त आलोचना (विचार) की न ?" —इस प्रकार कुंभकर्ण ने कहा। ६३ "ठीक है, अब किया क्या जा सकता है; मेरा विनाश तो अब सुनिश्चित है।" इस तरह कहते संतोष खोए कुंभकर्ण दशमुख की सभा में आ पहुँचे। रावण ने अत्यंत गौरव-संभ्रम से स्वागत करते हुए कुंभकर्ण का आलिंगन कर लिया। उसके बाद हर्षातिरेक से अपने भाई (कुंभकर्ण) को अपने सिंहासन के आधे भाग में बिठा लिया। ६४ तत्पश्चात् शूर्पणखा के नाक काटने की घटना से प्रारंभ कर, खर-दूषण के युद्ध का समाचार देते हुए, मामामारीच के मृत्यु की तथा जानकी के अपहरण की घटना-सहित सारी बातों का विवरण रावण ने अपने भाई को दिया। उसके बाद समुद्र पर सेतुबंधन करनेवाले शत्रु के सामर्थ्य का परिचय और युद्ध में अपने अपमानित होने की स्थिति का परिचय भाई को दिया। ६५ "इस मंगलकारी वार्ता को तभी सुन चुके हैं; फिर एक बार क्यों सुनें ? सुनने की नीचता मेरे पल्ले पड़ी है न ? जाने दो उस वार्ता को। क्यों मेरे भैया, परस्त्री को प्राप्त करने के प्रयत्न में इन्द्रादि देवता भी लुट गये हैं —क्या यह बात आपसे परे है। काम ने

वीर केळाचार मुखदलि सारिहुदु सद्धर्म धर्मव
सारिहुदु सत्कीर्ति कीर्त्यगनेय वैवळिय
बेरवरिदिहुदधिक सिरि सिंगारिसिहळा सिरिविडिदु जय
नारिनमगा मार्ग दुर्घट वाय्तलेयेंद ॥ 67 ॥
केळदा मारीच नुचितव बीळुकोंडुवदु नम्मदग्गद
खूळतनवनुजन नयोक्तिय नीतिगळवडद
खूळरोळगण खूळतन मेलूळिगद कपिवरन कदनद
हाळियलि मतिगेडुवुदग्गद खूळतनवेंद ॥ 68 ॥
आदरेयु केळण्ण रणदलि होदवरु होगलि विवेकव
नादरिस बल्लडे महायुवनधिक संपदव
साधिसुव दुळ्ळडे नृपाल तळोदरिय नोलिदीवुदिदु नय
दादि मत निन्ननुमतवदे नेंदनग्रजन ॥ 69 ॥
मरुळलायेले तम्म मदनन गरुडियलि गुडियादवरु नाव्
मरणकंजिद रखिळजत्त नगदिहुदे नाव् मोदलु
हरण दासेय नोडदंगी करिसिदुदु मतवैसले सं-
गरवे साधन वेमगे नीनिद कळुक बेडेंद ॥ 70 ॥

(मन्मथ ने) किसका कितना बड़ा भला किया है ?" इस तरह कुंभकर्ण ने कहा। ६६ "(मेरे भाई) वीर रावण ! सुनिए तो सही। सदाचार सद्धर्म का साथी है। उस (सत्य) धर्म की अनुगामिनी है सत्कीर्ति; सत्कीर्ति रूपी नारी की शाश्वत सहचारिणी लक्ष्मी; लक्ष्मी विजयलक्ष्मी के आधीन है। हमारे लिए यह मार्ग अब (तो) असाध्य हो गया न ?" इस तरह कुंभकर्ण ने कहा। ६७ "मारीच के सुरुचिपूर्ण नीतिवचनों का हमने जो तिरस्कार किया —यह हमारी नीचता है; तिस पर भी भाई के नीतिवचनों पर ध्यान न देना नीचातिनीच (अत्यंत नीच) आचरण है। इतना ही नहीं, दूत बन आये कपिवीर की युद्ध की रीति देखते हुए भी, आँख न खुलना नीचता की पराकाष्ठा है।" इस तरह कुंभकर्ण ने कहा। ६८ "फिर भी सुनिए मेरे भाई ! युद्ध में जिनका काम तमाम हुआ— जाने दीजिए; उनके बारे में सोचना व्यर्थ है। अब भी कुछ बिगड़ा नहीं, तू अगर विवेक को अपनाता है दीर्घायु (लंबी उम्र) प्राप्त करोगे; तथा अधिक संपत्ति का स्वामी होना अगर चाहते हैं तो उस मानव राजा की पत्नी को स्वप्रेरणा से ले जाकर सौंप दो। इसके बारे में तुम्हारे विचार क्या हैं ?" इस प्रकार बड़े भाई से पूछा। ६९ "भाई ! तू किसी भ्रांति के आधीन है; मन्मथ के बाणों से पीड़ित मैं रहा। अब मृत्यु से डरें

करियनिट्टवुडलद गिडुविन मरॆय होगुवरॆ तम्मकॆ मै
वॆरसि खाडा खाडियलि कलिगळिगॆ गुरुवॆनिसि
धुरदॊळळिवुदॆ कीर्तियिद निर्धरिसि कॊंडिहॆवावु नडॆ नी
नरवरिस दॆदित्त ननुजंगसुर वीळॆयव ।। 71 ।।
तप्पदॆंदग्रजन वचनव नॊप्पु गॊंडितॆंदनॆन्नय
दर्पवनु कॆळदडॆलॆ लंकेश राघवन
ऒप्पुवग्गद सैन्य सागर दर्पवनु नॆरॆकुडिदु हिडितं
दॊप्पिसुवॆना कीशराजन निनगॆ तानॆंद ।। 72 ।।
हळचुवॆनु रघुरामचंद्रमनॊळु जगत्रय मॆच्चॆ मेलण
कॆलस दैवाधीन निश्चय भाग्यदंतरव
कळुहु काळगकॆनुत नीलाचल निभांगनु निंदिदनु नॆरॆ
मॊळगिदवु भेरिगळु रणयात्रा परिग्रहद ।। 73 ।।
तरिसि बळिक सुरत्न खचिता भरणगळ तॊडिसिदनु तरणिय
किरण लहरिय लळिय लग्गॆय ललित कांचनद

तो क्या सारी दुनिया मुझ पर थूकेगी नहीं ? (अतः) प्राणों का मोह त्याग कर युद्ध का बीड़ा तो उठा ही लिया है। इसलिए युद्ध ही हमारा ध्येय है। तू अब आगे-पीछे न कर, न "हिचकिचा" इस प्रकार रावण ने कहा। ७० हाथी को अपने पास रखते हुए एरंड के पौधे का सहारा कोई क्यों ले ? भाई, वीरों का गुरु कहलाते हुए, हाथ-पैर-शरीर का उपयोग करते हुए, जबर्दस्त युद्ध करते हुए प्राणार्पण करने में ही हमारी कीर्ति ज्वलंत रहेगी। यह निर्धार (निश्चय) तो मैं कर ही चुका हूँ। अब (तू) अन्य प्रकार के सोच-विचार में न पड़ते हुए युद्ध के मोर्चे पर रवाना हो जा।" इस तरह कहते रावण ने अपने भाई को युद्ध का बीड़ा उठाने का आदेश दिया। ७१ 'भाई के निर्धार में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता।' —यों सोचकर राज़ी होते हुए— "लंकेश ! अगर यह बात है तो मेरी वीरता के बारे में भी जो कहता हूँ, सुनें। राम के सेना-सागर के घमंड को चूर-चूर कर वानरराजा को क़ैद कर लाऊँगा तथा तुम्हारे आधीन कर दूंगा।" इस प्रकार कुंभकर्ण ने कहा। ७२ "रघु रामचन्द्र से इस प्रकार लड़ूंगा कि तीनों लोक यह देखकर वाह वाह करें। तिस पर तुम्हारा अदृष्ट विधि के आधीन है। मुझे युद्ध के लिए भेजिए।" इस प्रकार कहते नीलपर्बत-सदृश देहधारी कुंभकर्ण खड़ा हो गया। तब युद्ध के लिए रवाना होने की सूचना देनेवाली भेरियाँ बजने लगीं। ७३ सूर्य-किरण-सदृश प्रकाशमान चमकते रत्न-जड़े स्वर्णाभूषणों को मँगवाकर

धरिसितो मंदरव नंजन गिरियेंनलु कलिकुंभकर्णन
शिरदलोप्पितु मकुट निकट दिशांत झगझगिसॆ ॥ 74 ॥
हॊरद कप्पिन मुगिल मुखदलि सुरपधनु वॆंद्दंतॆ मॆरॆदुदु
कॊरळॊळनुपम पदक पच्चॆय पद्मरागगळ
सुरगिरिय पूर्वापरद विस्तरद जननास्तमय समयद
तरणि शशिमंडल गळॊलु कुंडल गळॊप्पिदवु ॥ 75 ॥
खडॆय मॆरॆदुदु मौक्तिकद निडियॊडल वासुगि सुत्ति दबुधिय
कडद गिरियंददलि चरणदला निशाचरन
उडियलॊप्पितु शोणपट कॆंपडर्द संध्यामेघदवॊलु
ग्घडिसु तिर्दुदु बिरुद नमरर वंदिसंदोह ॥ 76 ॥
सरियिडलु कलिकुंभकर्णगॆरडु युगदलि कार्णेनमरा
सुरनरोरग भटरॊ ळिन्नुळिदिर्द युगगळलि
भरित भटरुगळॆतऱवरॆलॆ तरुणकेळ् कलिकुंभकर्ण
गररॆ तत्कलि कुंभकर्णनॆ निजवी दीगॆंद ॥ 77 ॥
काल नडुगिदना निशाचर काळगद करदंडवनु कॊळॆ
शूलि मैमरॆसिदनु शूलव धरिसॆ खंडॆयव

रावण ने कुंभकर्ण को पहनाया। अंजनाद्रि के शिखर ने मानों मंदार पर्वत को धारण किया, तद्वत् वीर कुंभकर्ण के माथे पर मुकुट शोभायमान हुआ। मुकुट के प्रकाश से दिशाएँ जगमगायीं। पास-पड़ोस में रोशनी फैल गयी। ७४ काले मेघों के मध्य इन्द्रधनुष की कांति के सदृश कुंभकर्ण के कंठ की माला के (हार के) हरे रत्न (मरकत) तथा पद्मरागमणि से युक्त पदक शोभायमान हुए। मेरुपर्वत की पूर्व दिशा में स्थित उदयकालीन तथा पश्चिम दिशा के अस्तकालीन सूर्य-चन्द्र के बिंबों के सदृश कुंभकर्ण के दोनों कानों के कुंडल जगमगाए। ७५ मोती की तरह चमकते वासुकी के लम्बी देह को लपेटकर समुद्र-मथंन में प्रयुक्त मंदार पर्वत की तरह कुंभकर्ण के पैरों की शोभा उनके पहने कड़ों ने बढ़ायी। कुंभकर्ण के कमर में लाल वस्त्र का कमरबंद लालिमा से विराजित संध्याकालीन मेघ-सदृश था। देवलोक के स्तुति-पाठक जोर-ज़ोर से कुंभकर्ण की उपाधियों का गुणगान कर रहे थे। ७६ "कृतयुग, त्रेतायुग के देवता, मानव, उरगों में कुंभकर्ण की बराबरी के वीर दिखायी नहीं पड़ते। अन्य दो युगों के वीरों की गणना किस काम की ? हे युवक लव, सुनो। बाप रे! वीर कुंभकर्ण के बराबर यदि कोई वीर है तो वह यह कुंभकर्ण ही है।" इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ७७ कुंभकर्ण

मेळविसॆ मुसुकिक्किदनु सुरपाल सुरगिय कट्टॆ बिट्टनु
पाळॆयव पद्मजनु पडिमूत्रिसितु सुरकटक ॥ 78 ॥
बीळुकॊंडनु करवनॊंदनु मौळिगानिसि मारुताध्वद
साल संदणि यमररोटव पेळलेनदनु
कालभैरव गॆंटुमडिय कराळतेजो गर्वदलि रा-
जालयव हॊरवंटु बंदनु राज बीदियलि ॥ 79 ॥

इप्पत्तॆळनॆय संधि

सूचनॆ— सकल सेनॆय जडिदु कपिनायकर रणदलि हिडिदु मॆरॆदनु शक्तियनु कलिकुंभकर्ण नुदार शौर्यदलि ।

कॆळिदै कुश कुंभकर्णनु वीळयव कॊंडुग्रतर कर-
वाळ कैयिद प्रजंगभिनमिसि काळगर्कॆ
बीळुकॊंडनु भीमबल दशमौळियनु बलु बिरिदुगळ सं-
भाळिसुत संदणिय बहुविध वाद्य रभसदलि ॥ 1 ॥

ने युद्ध के लिए अपने हाथ का काल-दंड जब उठाया तो यमदेवता काँपने लगे। शूल को जब उठाया तो शूलपाणी शिवजी ने अपने को छिपा लिया। खड्ग को जब उठाया तो इन्द्र परदे में छिप गये। तलवार जब बाँधी तो ब्रह्माजी अपना निवासस्थान त्यागकर भाग गये। देवतासमूह ने मूत्र विसर्जन कर लिया। ७८ (अपने) किरीट पर एक हाथ धारे एक हाथ से मुकुट सँभाले कुंभकर्ण रावण से बिदा ले चला गया। तब आकाश में पंक्तिबद्ध हो आ जुटे देवताओं की भगदड़ के बारे में क्या कहूँ? कालभैरव के आठ गुने भयंकर तेज से तथा बड़े भारी अहं के साथ कुंभकर्ण राजमहल से बिदा हो सड़क पर आया। ७९

सत्ताईसवीं सन्धि

सूचना— सारी सेना को पीटकर कपिनायकों को युद्ध में क़ैद कर कुंभकर्ण ने अपनी महान शक्ति तथा वीरता प्रकट की।

सुनो कुश; कुंभकर्ण ने बीड़ा उठाया। अपना भयानक खड्ग हाथ में धारे बड़े भाई को प्रणाम किया। महान बलशाली दशमुख से बिदा लेकर, चारण-भाटों के स्तुति (गुणगान) के गीतों को सुनते हुए विविध प्रकार के युद्ध-वाद्यों की गर्जना के साथ युद्ध के लिए रवाना हुआ। १ कुंभकर्ण के युद्ध के उग्र पराक्रम का किन शब्दों में वर्णन किया जाय! अहंकार

उसुर बारदु रक्कसन कर्कशद कदनद कडुहनेलका
गसकॆ तूगिट्टादि भैरव गॆंटुमडियॆनलु
पशुपति ब्रह्मा मराळि प्रसर पैसरिसलु फणेश्वर
नुसुरु तॆगॆ बगॆयागॆ बंदनु राजबीदियलि ।। 2 ।।
आचरिसिदरु काणुता रजनीचरन पुरवधुगळभ्रद
खेचरियरिन नडुगि घनरक्षोघ्न सूक्तकव
वाचिसिद नंबुधिय हरुषद वीचि निदवु निमिषदलि सं-
कोचिसिदवु मुखारविंद दिगंगनाजनद ।। 3 ।।
दाटिदनु पुरदॆळु सुत्तिन कोटॆगळनों दॊंदु हॆज्जॆय
लोट किक्कितु कंडु निम्म नरेंद्र परिवार
दूटलिळॆ ताय् मळल नभ्रकॆ मीटलंबुधि ध्रुवनकर्णद
कोटरंगळु किवुडु गॊळॆ कुबुविरिवु तैतंद ।। 4 ।।
नॆरॆदु दाक्षण बॊम्म रक्कसरॆरडु कोटि महातिशय भी-
कर कराळ प्रळय शाकिनि डाकिनी निवह
धीररॆ पायवधारु रक्कस ररस हळु हळुजीय बाळॆं-
दॆरडु मैलिगळ लुग्घडिस लैतंद नसुरेंद्र ।। 5 ।।

से ढंका आकाश तथा धरती पर पग भरते हुए कालभैरव के आठ गुने अधिक शक्ति दरसाते हुए जब वह सड़क पार कर रहा था तब शिव, ब्रह्मादि देवताओं का समूह (डरकर) पीछे हटा। आदिशेष का दम घुटने लगा। २ कुंभकर्ण को देखकर शहर की स्त्रियाँ तथा खेचरियाँ चौंक पड़ीं; सूर्य डर के मारे काँपते हुए रक्षोघ्न मंत्र जपने लगा; समुद्र की संतोष की तरंगें गतिमान होने में असमर्थ हुईं; दिशानारियों के मुखकमल क्षणार्ध में मुरझा गये। ३ लंकानगरी के किले को घेरे जो सात परकोटे थे, एक-एक पग भर कर उसने पार किए। यह भयानक स्वरूप देखकर तुम्हारे राजा के परिवार में भगदड़ मच गयी। धरती के नीचे की रेत (उन पगचापों के कारण) आकाश तक उछली, समुद्र जब उमड़ पड़े, ध्रुवलोक के कान के परदे फटे तो कुंभकर्ण भारी शोरगुल मचाता हुआ (युद्धभूमि में) आया। ४ उसी क्षण दो करोड़ ब्रह्मराक्षस आये। महाभयकर प्रलयोग्र डाकिनी-शाकिनियों का समूह आ जुटा। 'हो हो, वीराधिवीर, राक्षसराज पधार रहे हैं! सावधान! पधारिए महाराज! जुग जुग जिएँ!' इस प्रकार कुंभकर्ण की प्रशंसा की ध्वनियाँ दो मील तक सुनायी पड़ रही थीं। इस डीलडौल के साथ कुंभकर्ण आया। ५ कुंभकर्ण के झलकाए अपने हाथ के

झळपिसुव निजकरद खड्गद बेळगु बेदरि सितिनन दाडेय
होळहु होदरेंददंजिसितु कल्पांत भैरवन
कलित कायद काळिकेय कत्तलेयोळद्दुदु धरणि धुरद-
ग्गळद गमनके करिगळडेगेडेदवु धराधरद ॥ 6 ॥
अंजिदनु सुग्रीव पवन धनंजयर सुतरळवळिदरा
कंजसंभव भव सुषेण गवाक्ष मोदलाद
अंजदति बलरान नाब्जके मंजु मुसुकितु मिक्क समर स-
मंजसर पेळदिरु पेळुवेनेन नद्भुतव ॥ 7 ॥
नोडिदनु रक्कसन मरळिदु नोडिदनु निजबलव नगुत-
ल्लाडिदनु मस्तकव धीरोदात्त रघुनाथ
कोडिसिद कडेगण्णिनलि नृपनोडिदनु निज शरणननु रण-
खेड रक्कसराय निवनारेंदु बेसगोंड ॥ 8 ॥
तम्म नहनेले जीय चित्तैसेम्म पूर्वजनिव पुलस्त्यन
मोम्मनिव मग विश्रवसुविगसुरे कैकसेगे
बोम्म रक्कस निवनु जवगिव गम्मववनल्लरस नोडिव
नुम्महवनिवनिरव निवनायतव नीनेंद ॥ 9 ॥

खड्ग के चकाचौंध से सूरज डर गया। उसके वक्र दाढ़ों की झलक की राशि के कारण प्रलयभैरव डर गया। उसके शरीर के काले रंग के अँधेरे ने सारी धरती-को व्याप लिया। कुंभकर्ण के युद्ध में उपस्थित होने के लिए आने के वेग के कारण धरती को धारे हुए हाथी आड़े में लेट गये (गिर गये)। ६ सुग्रीव भयभीत हुआ। हनुमान तथा अग्निकुमार नील ने शक्तिहीनता का अनुभव किया। वे जाम्बवंत, सुषेण, गवाक्ष आदि न डरनेवाले महाबल शालियों के मुख-कमल हिमावृत हुए। अन्य युद्धवीरों के विषय में क्या कहें? इस अभूतपूर्व घटना का किन शब्दों में वर्णन करूँ? —इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। ७ (उस) राक्षस को देखा; इस ओर अपनी सेना को निहारा। धीरोदात्त रघुनाथ जी ने मुस्कुराते सिर हिलाया। अपने भक्त विभीषण की ओर झुकी तिरछी दृष्टि से देखते हुए— "यह युद्धभीरु राक्षस नायक कौन है; (अर्थात् इतना भयानक राक्षस यह कौन है?)" इस प्रकार पूछा। ८ "यह रावण का भाई है। सुनिये महाराज! यह मेरा बड़ा भाई है; पुलस्त्य का पोता है। विश्रवसु तथा राक्षसी कैकसा का यह पुत्र है। यह ब्रह्मराक्षस है। यह यमादियों की परवाह न करनेवाला है। स्वमिन्! इसका उत्साह, इसकी क़द, इसका पराक्रम आप ही देखेंगे"। इस तरह विभीषण ने कहा। ९ क्या यम इतना भयानक उग्र हो सकता है?

बेंबलकॆ हनुमंत शिखिसुत जांबव प्रमुख प्रबल कुपि
तांबकरु संवरिसि कोंडरु सकल गिरितरुव ॥ 17 ॥
ऒत्तिदद्रिकुजौघदलि नॆलकत्तलिस लब्बरकॆ दिक्तट
कित्तुहाऱलु काल्दुळिय धूळि ध्रुवालयव
नॆत्तिगेऱलु हळचिदुदु बलु मित्तुवनु कॆणकुववोलुग्र नि-
मित्त मैदोऱिदवु निखिळ दिगंतराळदलि ॥ 18 ॥
असदळिसि मार्मलॆतु मुत्तिद विषम वीररनद्रिकुज सहि-
तुसुर गाळियलूदि हाऱिसिदनु दिगंतरकॆ
बॆसुगॆ गळचिद शाल्मलिय भूरसदवोलु बयलाय्तु बल नि-
प्पसरदलि बॊब्बिडलु बिरिदुदु गिरि सुरेश्वरन ॥ 19 ॥
आरलर्बुद कपिभटावळि तीरुतिर्दुद जांड खर्पर
वोरणिसु तिर्दुदु धरातळवतळ परियंत
दारि गॊंडुतिर्दुदु महोदधि मेरॆगळ मीऱिदुदु रक्कस
नारुभटॆगी कदन कडुहुळॆ तुटोयॆंद ॥ 20 ॥

मुख्य नायक उसकी मदद के लिए, क्रोधोन्मत्त हो सारे पेड़-पहाड़ों को उखाड़े तैनात हो अगल-बगल में खड़े रहे। १७ वानरों के, हाथ में उठाकर धरे पेड़ों के समूह के कारण धरती पर अँधेरा व्याप गया। वानरों के भारी वेग के कारण दिशाओं के मूल फटकर उड़े। (जड़ें उखड़ गयीं।) वानर वीरों के पगचाप से उठी धूल ध्रुवलोक के माथे तक पहुँच गयी। भारी मृत्य के छेड़ने की तरह वानर-सेना (मृत्युस्वरूपी बनकर) राक्षसों पर टूट पड़ी। समस्त दिशाओं में भारी उत्पातसूचक शगुन दिखायी पड़ने लगे। १८ जबर्दस्त रीति से प्रतिरोध करते; घिरे असमान शूरवीरों को उनके (धरे) पेड़-पहाड़ों-सहित कुंभकर्ण ने अपने प्रश्वास की आँधी से दिशि-दिशाओं में उड़ा दिया (फूंक दिया)। जड़-सहित उखड़कर गिरे सेमल (शाल्मली) वृक्ष की तरह भूरस (?) की तरह वानर-सेना (मैदान) खाली कर गयी। कुंभकर्ण जब अत्यन्त प्रचंड वेग से गरजा तो मेरु पर्वत फट गया (उसमें दरार पड़ी)। १९ कुंभकर्ण जब गर्जने लगता तब दस करोड़ कपि वीरों का नाश होता था। ब्रह्मांड रूपी कड़ाई परे सरकती थी। राक्षस की गर्जना के वेग के कारण भूमंडल के विदीर्ण होने के कारण पाताललोक तक (दो भागों में विदीर्ण होने से) मार्ग बन जाता। महासागर की सीमाएँ टूट जातीं। इस युद्ध की तीव्रता वर्णनातीत है। —इस तरह वाल्मीकि ने वर्णन किया। २० (कुंभकर्ण) जहाँ-जहाँ जाते करोड़ों की संख्या में कपियों को पकड़-पकड़कर

हौक्क मैयलि कोटि संख्येय निक्किदनु नालगेय निगुरलि
नेक्किदनु शतकोटि संख्येय नोरिसि कैगळलि
मुक्किदनु निर्बुद महार्बुद लेक्कदतिबल वानरर बि-
द्दिक्कि दवोलाय्तमम विलयद मृत्युदेवतेगे ।। 21 ।।
गजन मोहर मुरिदु दंभोज जनसुत नोड्डोडेदुदनिला
त्मजन बलनुग्गाय्तु नेलगत वाय्तुवालिजन
निजपताकिनि पवन मित्रात्मजन पडे पडलिट्टुदुळिदव
रजिगिजिय रणनाटकद बण्णिसु वडरिदेंद ।। 22 ।।
जवन कोलेगेलसवो महाभैरवन कालाटवो कपर्दिय
कवतेयो कलिकुंभकर्णन समर संभ्रमवो
दिविजपुरि तुंबितु सरोरुह भवन पुरि होरकेरि गट्टितु
जवननगरद दारिकेत्तुदु हेळलेनेंद ।। 23 ।।
सायला सुग्रीव तन्नय दायिगन कोंदित्त राज्य
श्रीय बिडयके बिडलि हरणव राम निजसतिय
मायेयतिशय पाशबंधके सायलेम गेनिद्दु देनुतवे
हायितल्लिय दिल्लि मिक्किन मर्कटव्रात ।। 24 ।।

पछाड़ देते। लम्बी जीभ निकालकर करोड़ों वानरों को चट कर गये। निर्बुद महार्बुद संख्या में अत्यंत बलशाली वानरों को हाथों से मसलकर चट कर गये। प्रलय के मृत्युदेवता को मानों भरपूर भोजन मिला! २१ गज की सेना टूट गयी। ब्रह्मपुत्र जांबव का व्यूह तितर-बितर हो गया। हनुमान की सेना चकनाचूर हुई। अंगद की सेना धराशायी हुई। अग्निकुमार नील का दल (सेना) तितर-बितर हो गया। बचे हुए जो जीर्ण (बुकनी) हुए तो इस युद्ध रूपी नाटक का वर्णन करने में मैं असमर्थ हूँ। —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। २२ यम का यह हत्याकांड है या महाभैरव की रौंदने की लीला है! ईश्वर की लूटमार है या वीर कुंभकर्ण का युद्धोन्माद है! देवेन्द्रनगरी वीर स्वर्गवासियों के कारण लबालब भर गयी। ब्रह्मलोक-निवास की बाहरी सीमा में इनके लिए शहर निर्मित हुआ। यमनगरी का मार्ग कंपायमान हुआ। इन सभी स्थितियों का वर्णन मैं कैसे करूँ? इस तरह वाल्मीकि ने कहा। २३ "मरने दो इस सुग्रीव को। उसके दायाद को (बड़े भाई वाली को) द्वन्द्व-युद्ध में मारकर (सुग्रीव को) राज्यलक्ष्मी सौंपनेवाले राम चाहे तो प्राण त्याग दें। अपनी पत्नी के मायापाश में बँधा वह चाहे मर जाय; हमें इन सब बातों से क्या मतलब?" —इस तरह कहते हुए कपिसमूह वहाँ से नौ दो ग्यारह

हॆसरॆनिसि दग्गद महाभट रसुर कैयलि हिडिदु हॊक्करु
वसुमती वल्लभन मरॆयनु मरॆय मातेनु
श्वसनसुत सुग्रीव विपिनौकसर सेनानाथ वालिज
रसदळिसिदरु निजपतिय सेवाभिमानदलि ॥ 25 ॥
बळिस लसितायतिकॆयलि गज नळ सुषेण गवाक्ष रुम शत-
बलि रुमण्व ज्योतिमुख दधिमुख भटादिगळु
कलुमरद कोळाहळद कैचळक गाररु कविदु हळचिद
रिळॆ बळुकॆ कलिकुंभकर्ण निशाचरेश्वरन ॥ 26 ॥
सिलुकिदवु रक्कसन रोमावळिगळलि तरुशैलदाडॆय
बळिय बिद्द महाद्रि हुडिगॆदरिदवु दॆसॆदॆसॆग
लुळिय परिघद लर्णव शैलावळिय लुदिसिद किच्चु गगन-
स्थळव चुंबिसु तिर्दुद दुभुतवाय्तु रणरभस ॥ 27 ॥
सिडिलु हॊडॆदडॆ सिगुरु दोरद कडु हिनग्गद शैलनुग्गिय
दडिगॆ दळिळसुवदॆ विवेक विहीन रैयॆनुत
कॊडहिदनु परिघदलि गदॆयलि खड्गदलि कविवणल संबळ
कॊडॆयरादर कारिसिद नरुणांबु वाहिनिय ॥ 28 ॥

हुआ । २४ प्रसिद्ध महावीर प्राणों को हथेली में धारे राजा राम के पीछे छिप गये । इसमें किसी बात को क्यों छिपाऊँ ? हनुमान, सुग्रीव, वानर सेनापति नील, अंगद आदि वीर अपने स्वामी पर रखे हुए सेवाभिमान के कारण बड़े उत्साह के साथ वहाँ आ जुटे । २५ गज, नळ, सुषेण, गवाक्ष, रुम, शतबलि, रुमण्व, ज्योतिमुख, दधिमुख, वग़ैरः वीर पराक्रम प्रकट करते सहायता के लिए दौड़े । पेड़-पत्थरों को आयुध के रूप में प्रयुक्त करनेवाले ये चतुर वीर कुंभकर्ण को घेरकर दबाने लगे तो धरती डाँवाँडोल हुई । २६ वानर वीरों से फेंके गये पेड़ तथा चट्टान कुंभकर्ण के बालों में फँस गये । कुंभकर्ण के वक्र दाढ़ों पर गिरे महापर्वत चकनाचूर हो दिशि-दिशाओं में उड़े । अपनी ओर आनेवाले पहाड़ों को कुंभकर्ण ने बड़ी तत्परता के साथ परिघायुध से वार जब किया तब जो आग की ज्वाला निकली वह आकाश को छूने लगी । इस प्रकार युद्ध का वेग बड़ी अद्भुत रीति से बढ़ा । २७ बिजली गिरने पर भी चूर-चूर न होनेवाला पहाड़ क्या शलग़म के पेड़ की डाली से पीटे जाने पर कहीं चूर-चूर हो सकता है ? तुम अविवेकी हो ।" इस तरह कहते कुंभकर्ण ने परिघायुध, गदा, खड्ग आदियों को प्रयुक्त करके वानरों को झाड़ दिया । दाढ़ों में जिन

मत्तॆ मुरिदुदु सेनॆ रवितलॆ योत्तॆ मुरिव तमौघदंतिर
लॊत्तबरिसिदनसुर नरसुत राघवेश्वरन
उत्तमनला बंधुकृत्यद हत्तुगॆयलि नसूनु तरुबिद
नित्त तिरुगॆलॆ खूळखळयॆनुतुग्ररोषदलि ॥ 29 ॥
अळुक दिरिरो स्वर्ग विब्बॆर ळळतॆगिदॆ कैसोंकिगिवॆ सुर
ललनॆयर कडुकठिण पीनपयोधराळिगळु
बळियलिवॆ सुरकुज सुधारस कलशवैहिक दिद परवति
सुलभ सावॆगॆ सॆडॆदरिह परविल्ल निमगॆंद ॥ 30 ॥
ऎंब जांबव वचन कॊडनॊड निबुगॊंडुदु सेनॆ विजयनि
तंबिनिय निळयव नुभय भारणॆय बिडॆ बिसुटु
अंबुनिधि लळिमसगि लयदॊळ गंबरव नडर्वतॆ कपि निकु-
रंब हळचितु मत्तॆ तरुगिरि गळलि रक्कसन ॥ 31 ॥
बेरॆ मातेनद्रि गुंगुरि नूरिकॆगॆ मैयळकुवदॆ मं-
जेरिदरॆ नडुगुवदॆ नडुवगले रिदिन बिब

वानरों को संबल के तौर पर फंसाया —उनका रक्तप्रवाह बहाया। २८ सूर्य के उग आने पर भाग खड़े होनेवाले अंधकार की राशि की तरह वानर-सेना तितर-बितर हुई। तत्पश्चात् कुंभकर्ण राघवेश्वर को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते बड़े वेग से बढ़ा। सूर्यसुत सुग्रीव मित्रकार्य सम्बन्ध में श्रेष्ठ ठहरता है न ? "इस ओर मुड़ो रे दुष्ट राक्षस !" इस तरह कहते उसने अत्यंत क्रुद्ध हो कुंभकर्ण का सामना किया। २९ "अरे ओ, डरो मत। स्वर्ग हमारे लिए केवल दो अंगुल भर ही तो है (बिलकुल नजदीक है)। (वहाँ पहुँचने पर) देवलोक की युवतियों के उभरे स्तनों पर हमारे हाथ (लगेंगे) खेलेंगे। (वही) पार्श्व में ही कल्पवृक्ष है; अमृत भरे पात्र हैं। इहलोक की अपेक्षा परलोक आसानी से हमारे हाथ लगेगा। मृत्यु से (डरकर) पीछे हटेंगे तो न इहलोक है, न परलोक।" ३० इस प्रकार कहनेवाले जाम्बव की बातों में आकर वानर-सेना ने इह-पर दोनों की जिम्मेदारी त्यागे, विजयलक्ष्मी का निवासस्थान त्यागे, उनकी बातें मान लीं। प्रलयकाल में, जैसे समुद्र, अपने पूरे वेग के साथ उछलकर आकाश को छूता है उसी प्रकार कपिसेना-समूह ने पुनश्च पेड़-पहाड़ों को हाथ में ले कुंभकर्ण पर आक्रमण किया। ३१ भयानक मच्छड़ के काटने पर पहाड़ को क्या क्षति होगी ? अधिक क्या कहें ! कुहासे से घिर जाने पर भरी दुपहरी का सूर्य क्योंकर डरे ? बलवान् वानर-सैनिकों को कुंभकर्ण ने पछाड़ दिया; भगा दिया; रौंदकर डाल दिया; उछाल दिया; पटक दिया;

तूऱिदनु तूळिदनु तुळिदनु बीऱिदनु बिसुटनु सुरावनि
गेऱिसिद नतिबल वनौकस राजसैनिकव ॥ 32 ॥
अळवि गळुकदे कविव कपिगळ कळवलिय माडिदनु मीऱिदु
हळचि होंचुव होंतकारि वनौकसाधिपर
बळिदु बायोळ गडिसिदनु कलुवळेय कोळाहळद कपिगळ
तळपटव माडिदनु मददलि कुंभकर्णखळ ॥ 33 ॥
मोगेमोगेदु मुक्किद सगाढद विगडवानर भटर किविमू
गुगळ रंध्रगळलि गुदद्वारदलि वदनदलि
चिगिचिगिदु होऱवडुत लिर्दुदु मोगेदोगुव राटाळदुदकद
वगेयवोलु बण्णिसुवडे नद्भुतवो रणरभस ॥ 34 ॥
अडसि खळनुंगिद भटाळिगे कडेय दावुदु रक्कसन ह-
ल्लडियलजि गिजियाद कपिगळि गावुदो सीम
मडबु मोळकालंघ्रि मोळकै मुडुहु मुष्टि प्रहरणदलड
गेडेद वानरगणद गणनेयनरिव रारेंद ॥ 35 ॥
चल्लिदनु मोगेमोगेदु चौपट मल्लरनु महदंबुधिगे मिगे
बल्लिदर बिसुटनु वलांतकन गरदुपवनके
घल्लिसिदनु उब्बिऱिदु तब्बिद तेल्लटेय तवकिगर तोटिय
तल्लणिग नऱेयट्टि सदेदनु सकल वानरर ॥ 36 ॥

सीधे स्वर्ग पहुंचा दिया। ३२ (युद्ध से) न डरते घिर आनेवाले कपियों की युद्ध में बलि चढ़ायी। तिस पर भी चढ़ आनेवाले, ताक में बैठ सुअवसर देखनेवाले बुद्धिमान वानरनायकों को पकड़-धकड़कर मुंह में दबोच लिया। पत्थरों की वर्षा करते शोरगुल तथा उधम मचानेवाले वानरों को कुंभकर्ण ने धराशायी बना दिया। ३३ पकड़-धकड़कर निगले गये महान बलशाली वानर-योद्धाओं के नाक तथा कानों से, मल-द्वारों से, मुँह से बहता हुआ रक्त, कुएँ में से रहँट द्वारा पानी खींचने के सदृश छिड़क रहा था। वाह ! कुंभकर्ण का यह युद्ध कितना अद्भुत है ! ३४ (उस) राक्षस से मुंह में दबोचकर निगले गये वानरों की गिनती कहां हो सकती है ? कुंभकर्ण के जबड़ों में फँसकर लहूलुहान तथा बुकनी-चटनी हुए वानरों की सीमा कहाँ ? एड़ी, टखना, पैर, हाथ, भुजाएँ, मूठ, वगैरहों के वार से लुढ़ककर गिरे हुए वानरों की गिनती कौन, कैसे करें ? —इस तरह वर्णन करते लव-कुश से कहा। ३५ जगत के पहलवान वानरों को बुहारकर, इकट्ठे कर समुद्र में फेंक दिया। महान् बलशालियों (वानरों) को देवेन्द्र नगरी के उद्यान में फेंक दिया। बहुमूल्य आभूषणों

हेळलेनद कुरिय हिंडिन तोळनो करिघटेय कदनक
राळसिहवो शिखरिगळ हिंडगळ हेब्बुलियो
मेळविसि दहिकुलद कोलेगुब्बळिसिद खगपतियो तानेने
तूळिदनु रक्कसनु मर्कटराज सैनिकव ॥ 37 ॥
अरसिदनु मार्मलेव कपिगळ नुरुबि मनुकुलसार्वभौमन
नरसिदनु होक्कोक्क लिक्कुव भटरनुरे मुरिदु
ऒरेयळनु होगाडि बवरद बरिय लंबासेयलि कपिगळ
तरुबि तोटिगे तवकिसिद नरनाथनारेनुत ॥ 38 ॥
मुट्टविसिदनु रामननु जगजट्टि रक्कस राजकारिय
केट्टु दकटेंदळ्ळॆ वारुव सुरर कळवळव
तोट्ट ननिलज केळि कोपद किडिट्टियलि किडिगेदरि हरितं-
दिट्टणिसि बोब्बिरिदु तिविदनु तिणकलसुरेंद्र ॥ 39 ॥
प्रळयकालद कुलिश हतियलि तलेगोडहुवमराद्रिय वोलोले
दोलेदु कण्णिगे कविव कत्तलेयिद कळवळिसि

को धारण करनेवाले उत्साही वानरों को खुशी से मस्त हो खोंच-खोंचकर मार डाला। इस तरह युद्ध-भीति निर्माण करनेवाले कुंभकर्ण ने समस्त वानरों को पछाड़ दिया। ३६ उसका वर्णन किन शब्दों में करूँ ? बकरों के झुंड में घुसे भेड़िये की तरह, हाथियों की सेना से भिड़नेवाले भयानक सिंह की तरह, हिरन के झुंड पर टूट पड़नेवाले बाघ की तरह, एक साथ इकट्ठे हो आनेवाले सर्पसमूह को मार डालने, बड़ी उद्दंडता से टूट पड़नेवाले गरुड़ के सदृश कुंभकर्ण ने वानरराज की सेना को पीछे खदेड़ दिया। ३७ प्रतिरोध करनेवाले कपियों को फूंक मारकर उड़ा देते राम को ढूंढ़ने लगा। चढ़ आकर पीटनेवाले वानरों को, वानर वीरों को काट डालते मनुकुल चक्रवर्ती राम को ढूंढ़ने लगा। पत्नी को खोकर, व्यर्थ ही युद्ध को चाहते हुए, बन्दरों को आगे कर युद्ध के लिए व्याकुल वह मानव राजा कौन है ? इस तरह पूछते हुए कुंभकर्ण आया। ३८ जगत का वह पहलवान राक्षस कुंभकर्ण राम के नज़दीक पहुँचा। "हाय ! राजकार्य विनष्ट हुआ।" इस तरह कहते डबडबाती छाती वाले देवताओं का शोरगुल सुनकर, तुरंत हनुमान क्रोधपूर्ण आँखों से चिनगारियाँ बरसाते दौड़े-दौड़े आकर चीखकर खोंच दिया तो कुंभकर्ण ने आक्रमण कर दिया। ३९ प्रलयकाल की बिजली के आघात से विचलित न होनेवाले मेरुपर्वत-सदृश कुंभकर्ण एक ओर अपने शरीर को झुका देता है। फिर भी उसकी आँखों में अँधेरा छा गया। तब वह व्याकुल हुआ। फिर

चलिसि चटुळक्रमनु विक्रम तिलकननु निजशूलदग्रद
लोलेंदु तिविदनु होगळे बळिय समस्त भूतगण ॥ 40 ॥
अणेंदु शूलव ननिलसुत सुरगणवु मज्झभापेनलु खळडें-
डणिसलेंरगिदनुरुगें गोणुरें रकुतवदनदलि
गणिसुवनें कपिकर हतियनाक्षण निशाचररायनुरें डें-
डळिस लप्पळिसिदनु परिघदलंजना सुतन ॥ 41 ॥
ऎद्दु कडुगोपदलि कैगळ नुद्दि कुंभश्रवणनळ्ळॆय
गुद्ददनु घुम्मेनलु नभ नलियलु सुरव्रात
अद्दि तुप्पदलुंड कूळिन मुद्देगळु होरहोय्दु नेलदलि
बिद्दवै बायिद बर्हिर्मुख कुलांतकन ॥ 42 ॥
मुरिदु नोडिदनहुदो कपिगळ नेरविगग्गळ नहे सुरेंद्रन
हिरिय मगगेणेयहे पराक्रम पौरुषांगदलि
तिरुगि नीनिन्नोम्मे नम्मय धुरकें नितरें वीर नहें यें-
दरिभयंकर भटन तिविदनु बुडदलायुधव ॥ 43 ॥

संभलकर आगे बढ़कर वेगशाली कुंभकर्ण ने पराक्रमश्रेष्ठ हनुमान को शूल की नोक से जब खोंचा तो पास-पड़ोस में उपस्थित भूतगणों ने कुंभकर्ण की प्रशंसा की। ४० हनुमान ने (उस) शूल को एक ओर जब झटक दिया तो देवताओं के 'धन्य-धन्य' पुकार को सुनते हुए, अत्यंत क्रोध में आकर हाथ मसलते हुए मूठ बाँधकर पेट के पार्श्व पर घूंसा जड़ दिया। इस वार से राक्षस तिलमिला उठा; मुंह से खून कै कर बैठा; गला एक ओर झुक गया। राक्षस ने कपि के हाथ की मार की परवाह न करते हुए आंजनेय को परिघायुध से ऐसे पीटा कि वह तिलमिला उठे। ४१ हनुमान ने उठकर खड़े होते हुए, हथेलियों को मलते हुए, भारी क्रोध से कसकर मूठ बाँधकर पेट के पार्श्व पर घूंसा जमाया। उस आघात की भयानक आवाज़ आकाश में गूंज उठी। देवता फूले न समाए। घी में डुबो-डुबो कुंभकर्ण से खाए गये अन्न (भक्ष्य) के लोंदे मुँह से बाहर आकर धरती पर गिरे। ४२ कुंभकर्ण तुरन्त मुड़कर उसकी ओर देखते— "सचमुच तू कपियों के समूह में श्रेष्ठ है। पराक्रम-पौरुष में देवेन्द्र के बड़े बेटे के समान है। और एक बार मेरा तू सामना कर सके तो मानूंगा कि तू सचमुच श्रेष्ठ वीर है।" —इस तरह कहते हुए उसने युद्धभयंकर हनुमान को आयुध की मूंठ से खोंच दिया। ४३ (इस आघात से)

हारिबिद्दनु हनुम रणकै नूरु कोलळतेयलि कैयोंड
नेरि तिविदनु तीव्रदलि तारेय नुब्बिरिदु
मीरि घायद लुब्बिरिदु कैयारि कैयोंडनेद्दु बवरव
सूरे गोंडव नेंडेगे खळतिविदुब्बि बोब्बिरिद ॥ 44 ॥
फडफडेनुताभंटिसि भुजवनु होडेदु होदरेद्द मरुषदलु-
ग्घडद मुष्टियलेरगिदनु कैयोडने कलिनील
बुडुबुडिसि बिसिरकुत मूगिदोडेदु हाय्दुदु घायवद कै
विडिय दवरिब्बर समीपके कळुहिदनु कपिय ॥ 45 ॥
कोणकि नोडुवेनेनुत जांबव रणल हलुगळ मसेदु हूंकृति
रणितदलि रणवीर नुरुवनु तिविदुकेल सिडिये
तृणके लेक्किस दसुर नवननु सोणलु मुरियलु तिविद नायुध
दणसिनलि सरियादुद वराहवद सौरंभ ॥ 46 ॥
मोगव तिरुहुत मेल्ल मेल्लने जगुळिदरु जांबवरु मिक्किन
विगडवीर सुषेण मैंद द्विविध दधिमुखरु
तेगेदु निंदरु तागि सूर्यन मगन मेलाय्ताजि बळिका
ळुगळ देवर देवनोदगिद नसम समरदलि ॥ 47 ॥

हनुमान पाँच सौ गज की दूरी पर जा गिरे। (यह देख) तुरन्त, सिंहनाद करते हुए अंगद ने चढ़ आकर कुंभकर्ण को खींच दिया। कुंभकर्ण वह वार सहते हुए संभलकर, गरजते हुए उठ आया और अपने दोनों हाथों को जुड़ाकर जो उसने (अंगद को) खींचा तो इसके पहले युद्ध जीतने के लिए आनेवाले के पास वह (अंगद) पहुँच गया। यह देख कुंभकर्ण जोर से गरजा। ४४ 'घड्-घड्' शब्द करते गरजते, भुजाओं को फड़फड़ाते वीर नील ने क्रोधोन्मत्त होकर, अपनी ज़बर्दस्त मूठ (मुक्के) से कुंभकर्ण पर प्रहार किया। तब कुंभकर्ण की नाक से छलछलाकर गरम रक्त बहने लगा। उस मार की परवाह न करते हुए कुंभकर्ण ने जहाँ हनुमान तथा अंगद को उछाल दिया था वहीं इनको भी पहुँचा दिया। ४५ इसको छेड़कर देखने के उद्देश्य से जाम्बवंत अपनी दाढ़ को सान देते हुए हुंकारते गरजते आया तथा कुंभकर्ण की छाती पर ज़बर्दस्त मूठ जमाकर परे उछल गया। जाम्बवन्त की मार तृण-सदृश अनुभव करनेवाले कुंभकर्ण ने आयुध की मूठ से ऐसे खींचा कि उसकी थुथनी टूट जाय। उन दोनों का युद्ध बराबर वालों का युद्ध था। ४६ मुखड़ा फेरकर जाम्ववन्त वहाँ से धीरे-धीरे खिसक गया। वानर वीर सुषेण, मैंद, द्विविद, दधिमुख आदि कुंभकर्ण का सामना कर पीछे हटे। अब युद्ध की जिम्मेदारी सूर्य-पुत्र

बॆळॆदनवनंददलि गिरि गिरि हळचुवंतिरॆ परिघ गिरिशर
गळलि हॊय्दाडिदरु हॊगळॆ सुरासुरव्रात
बलदॊळग्गद बालि बालिय बळिद बंद भटाग्रणियला
कलह दतिशयदंग लॆसॆंदॊलॆदना राम ॥ 48 ॥
कॆळॆलॆवॊ कपिराज नॆंबुद कॆळितिल्लवला महाहव
कॆळियलि कैगुंदि सोलुव भटनॆ तानॆनुत
तोळ नॆगहिन मुष्टियलि दंभोळि रवदलि झडिदु तिविदनु
बीळॆनुत बॊब्बिरिदु वर्हिर्मुख कुलांतकन ॥ 49 ॥
हारि बिद्दनु नॆलक खळ तलॆ यूरि तळक दिद्दुदु नॆलनि
न्नूरुवरॆ पुरुष प्रमाणवना रसातळकॆ
बेरॆ मातेनणुगकेळ् खतियेरि दंदिन कालरुद्रन
नूरुमडियॆनॆ वीर रक्कसराय हलुमॊरॆद ॥ 50 ॥
एळु तॆत्तिदनुग्र विकृत कराळ शक्तिय नुरि चडाळिसि
तूळितंबर तळव भुगु भुगु भुगु निनाददलि
मालॆगिडिगळ गडणदलि धूमाळिनॆनॆदुदु सुरविमानग
ळॊळि मुरिदुदु सुरिदुदकवनभ्र वाहिनिय ॥ 51 ॥

सुग्रीव पर आ पड़ी। उसके बाद देवाधिदेव राम के विषम युद्ध के लिए सिद्ध हुआ (कुंभकर्ण)। ४७ सुग्रीव कुंभकर्ण बराबर बढ़ (ऊँचा) गया। पहाड़ों के पहाड़ों से टकराने के सदृश, एक-दूसरे से टकराते हुए परिघायुध, पहाड़, बाणों का प्रयोग करते कुंभकर्ण-सुग्रीव की भारी ज़बर्दस्त लड़ाई हुई। "शक्ति में वाली सुप्रसिद्ध है; यह उसी वाली के वंश का महावीर है न? इसके युद्ध का ढंग श्रेष्ठ है।" इस तरह कहते राम अपनी प्रसन्नता जताने लगे। ४८ "अरे, ओ, सुन; क्या तूने नहीं सुना कि मैं कपियों का राजा हूँ! इस भारी युद्ध रूपी खेल में मैं क्या थककर हारने वाला वीर हूँ? इस तरह कहते सुग्रीव ने अपना भुजदंड उठाकर 'गिर जा' इस तरह बिजली की कड़क की तरह घुड़कते, गर्जते कुंभकर्ण को ज़ोरदार मुक्के से पीटा। ४९ कुंभकर्ण सिर के बल धरती पर गिर पड़ा। उसके गिरने के ज़ोर के कारण ढाई सौ गज भर धरती नीचे पाताल की ओर धँस गयी। अधिक क्या कहूँ? सुनो बेटे लव। क्रोधोन्मत्त प्रलय रुद्र के सौ गुने वेग से वीर राक्षस कुंभकर्ण ने क्रोध से दाँत-ओंठ चबाए। ५० कुंभकर्ण ने धरती पर से उठकर, प्रचंड भयानक शक्त्यायुध को उठाया। उस आयुध से निकली धू-धू करती ज्वालाएँ 'छट् छटल्' शब्द करती आकाश की ओर लपकीं। लगातार उससे चिनगारियाँ छूटने लगीं।

येलवो कपिकेळी महायुध दलगि गळियदे जीवदलि नी
नुळिदु होदरे मूगुहोदवनैसे तानेनुत
निलुकि लागिसु तिट्टनिट्टिय बलुगिडिय कट्टेरु किब्बदि
योळगे गब्बरिसिद वोलिन हायेनुत बसवळिद ॥ 52 ॥
एन देच्चरिकेयो समीरन सूनुविन सुय्दानवेंतुटो
हानि होगदंतिनतनूजगे बह महायुधव
आनेकट्टिन कोलकरदिदानुवंतिरे पुटनेगेदु हिडि
दा निशाटननिडलु हूणिसिदनु सरोषदलि ॥ 53 ॥
हरिशरण हरितंदु हनुमन करव हिडिदितेंद निदरलि
मरळि मगुळी रक्कसन निट्टवन तले नेलके
जरिदु बीळुवुदेंबुदिदु तावरविवंगेले हनुमकेळेने
तिरुहि मोळकालिनलि मुरिदिट्टनु महोदधिगे ॥ 54 ॥
हारविसि हनुमंत देवगे वारिजप्रिय कळुहिदनु श्रुति
पूरमय समनोहरद मणिखचित कुंडलव

साथ-साथ धुआँ भी उठा। आकाश में उपस्थित देवताओं के बिमान तितर-बितर हुए। आकाशगंगा से पानी की धारा बहने लगी। ५१ "रे रे कपि सुन। इस महायुध का शिकार बन जाने पर भी तू अगर बच गया तो मैं मानूंगा कि मैं हार गया हूँ।" इस तरह कहते कुंभकर्ण ने तानकर बर्छी दे मारी। सूर्य 'हाय' कहकर उतर गया मानों उस बर्छी से निकलीं चिनगारियाँ उसके पार्श्व को चीरकर चली गयी हों। ५२ हनुमान की सावधानी का क्या कहें! उसकी सुरक्षा (रक्षणा क्रम) पद्धति भी बड़ी ही अद्भुत है! उसने निश्चय किया कि सुग्रीव की सुरक्षा के हेतु हाथी बाँधने के स्तंभ को ढाल की तरह प्रयुक्त करते उसे बचाऊँ। अतः क्रोधसंतप्त उसने यह भी निश्चय किया कि उसी (वेग से आते) बर्छी को पकड़कर उसी से कुंभकर्ण को उलटा कर पीटूँ। ५३ उसी क्षण विभीषण वहाँ दौड़े-दौड़े आया और हनुमान का हाथ थामे बोला, "इसी (कुंभकर्ण से प्रयुक्त) आयुध से उसी (कुंभकर्ण) को अगर पीटोगे तो पीटनेवाले का ही सिर धड़ से अलग होकर गिरेगा। ऐसा वरदान उसे प्राप्त है हनुमान्; सुनो तो सही।" तब हनुमान ने उस आयुध को घुटनों के बल पर रखकर, उसे तोड़ डाल उलटकर समुद्र में फेंक दिया। ५४ भगवान हनुमान की बुद्धिमानी से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने वेदनादसंपन्न सुन्दर रत्न-जटित कर्णाभूषण (कुंडल) भिजवा दिए। "वह महायुध विनष्ट हुआ न! कपि वीर बच गया न!" इस तरह कहते रणभयंकर कुंभकर्ण दौड़े-दौड़े

तीरिते महदायुधवु कपिवीर नुळिदनें येनुत हरितं-
दा रणांगण भीम हिडिदनु भानुनंदनन ॥ 55 ॥
इवनले कपिराय निर्वनिदिवरु बवरकें बंदराविं-
दिवन कोल्लदें कोंडुहोदरें होगुदी नेरेंद
प्लवगबल बळिकुळिव रिब्बरु सवरि हाय्किद वडिगेयंती
हवणु तप्पदेंनुत्त कंकुळलौकिदनु कपिय ॥ 56 ॥
अहह वानरवंशवारिज मिहिर सिक्किदने तमोवि-
ग्रहिगें हायेंनुतरस नीक्षिसिदनु समीरजन
सहभवननव रिब्बराहव विहित शरसंधान मुष्टि
प्रहरणदले संधिसिदरा रावणानुजन ॥ 57 ॥
बेऱॆ बवरद बलुमॆगळ कैदोऱिदिरि विजयांगनॆगॆ ता
नीऱ निंदिन दिनकॆ सिक्किदनॆंदु बगॆयदिरि
तोऱिसुवॆ नरॆ घळिगॆयलि नगॆ गाऱरिगॆ हगरणव सन्नॆय
साऱिकॆ यिदीगॆंदु संतैसिदनु सुग्रीव ॥ 58 ॥
गॆलिदॆ निंदिन रणव हिडिदॆनु वलिमुखाधीश्वरन मेलण
कॆलस नाळिनदॆनुत हॊक्कनु हॊळलवहिलदलि

आया तथा उसने सुग्रीव को पकड़ लिया। ५५ "यही तो कपियों का राजा है न; इसी के निमित्त यह सब युद्ध के लिए पधारे हैं। आज मैं इसकी हत्या किए बिना इसे उठाकर ले जाऊँ तो यहाँ आकर जुटी कपि-सेना रवाना हो जाएगी। तत्पश्चात् ये राम-लक्ष्मण दोनों छोटी-छोटी डालियाँ काटे (पेड़ के) तने की तरह रह जाते हैं। इस योजना से मुकर नहीं जाऊँगा।" इस तरह सोचकर कुंभकर्ण ने सुग्रीव को काँख में दबोच लिया। ५६ "हाय-हाय! वानर वंश रूपी कमलों का सूर्य काले शरीरधारी कुंभकर्ण रूपी अँधेरे में फँस गया न!" इस तरह कहते राम ने हनुमान तथा अपने भाई की ओर देखा। तब उन दोनों ने क्रमशः मुक्कों की मार से तथा बाण-प्रयोग करते हुए रावण के भाई का सामना किया! ५७ "अन्य प्रकार का युद्धशौर्य-प्रकाशन मत करो। ऐसा भी मत सोचो कि विजयलक्ष्मी को आज दिन यह प्रियतम मिल गया है। आधी घड़ी के अन्दर हँसनेवालों को एक अद्भुत चमत्कार कर दिखलाऊँगा। यह एक रहस्यमय विज्ञापन है।" इस प्रकार सुग्रीव ने हनुमान तथा लक्ष्मण का समाधान किया। ५८ "आज का यह युद्ध मैं जीत गया; वानरेन्द्र को पकड़ लिया। अन्य कार्य कल निबट लूँगा।" इस तरह कहते कुंभकर्ण शीघ्रातिशीघ्र लंकानगरी में प्रवेश कर गया। लंकानगरी में

मौळगिदवु निस्साळ गुडिगळु तळित वगलकें कलश कन्नडि
गळविडायिय वामनयनेयरैदि तोंग्गिनलि ॥ 59 ॥
इदिरुगोंडरु बहळ सौरंभदलि सुरभिलतांत जालव
कॆदरिदरु गंधोदकद पूर्णाभिषेकदलि
मददरुण वारुणिय रसपानद सुखावस्थॆयलि मरॆदनु
कदनगलि कपिसार्वभौमन कुंभकर्णखळ ॥ 60 ॥
सडिलवादुदु कंकुळिनकैयॊडॆ कपींद्रगीय्यनसुरन
हॆडकिनलि कैयूरि कुळिळदनॊत्ति नॆत्तियलि
कौडगिविय नॆरडॆरडु कैयलि हिडिदु नासवनास्यदंतद
लडसि हारिदनभ्रतळ कंभोदनाददलि ॥ 61 ॥
बॆदरिता कलिकुंभकर्णन निदिरुगोंबबलॆयरु पुर कद
बदिसिद्दुदु हनुमंतनॆंदे बगॆदु भीतियलि
नदुळु नगॆगळलिवरु मूवरु पुदिद परितोषदलि रामन
पदपयोजव सारिदरु कपिकटक नलिदाडॆ ॥ 62 ॥

विजय के बाजे बजने लगे। नगर भर में ध्वजाएँ फहरनेलगीं। कलश तथा दर्पणधारी स्त्रियाँ झुंड के झुंड डीलडौल के साथ उपस्थित हुई। ५९ युवतियों ने बड़ी धूमधाम के साथ कुंभकर्ण का स्वागत किया (अगुवानी की)। सुगंध भरे फूलों को फेंकते बिखेरते सुवासित जल छिड़काया। मादकता पैदा करनेवाली लाल शराब को पीकर सुख की मादकता स्थिति में रणवीर कुंभकर्ण राक्षस, काँख में दबाए कपि चक्रवर्ती सुग्रीव को भूल बैठा। ६० कुंभकर्ण की काँख की पकड़ ढीली पड़ी। तब सुग्रीव कुंभकर्ण के कंठ के पिछले भाग पर हाथ टेके उछलकर सिर पर जा चढ़ा। उसके घड़े के जैसे दोनों कर्णों (कानों) को दोनों हाथों से पकड़कर उसकी नाक को उसी के मुँह में के दाँतों के छिद्रों के मध्य घुसाकर बादलों की तरह गरजते आकाश की ओर उसने छलाँग मारी। ६१ कुंभकर्ण की अगुवानी करने आयी हुई स्त्रियाँ डर के मारे काँप उठीं। इसको हनुमान ही समझकर नगरवासी लोग डर के मारे व्याकुल हुए। विस्मय से हँसता हुआ सुग्रीव हनुमान तथा लक्ष्मण के साथ आनन्दविभोर हो श्रीराम के चरणकमलों के सम्मुख पहुँचा। तब सारी कपि-सेना आनंद के मारे नाच उठी। ६२

इप्पत्तेंटनेय संधि

सूचने— शयरिपु जज्जार निर्जर राय गजहर्यक्ष राक्षसराय मुनबल कुंभकर्णन गॆलिदना राम ।

केळिरै काकुत्स्थ धरणीपाल पुत्ररु पुण्यवीथिय
गाळुमेळंतरिसिदुदु बळिका दशाननन
ओलगकॆ सरसरिसि जयदुब्बाळिगनु नडॆतंदु गोलां-
गूल रायन तंदॆनॆनु तॆत्तिदनु भुजयुगव ॥ 1 ॥
काणदा कपि राजवंशद जाणननु बॆरगिट्टु गळित
घ्राणदलि मोहिदनु मुम्मळियलि करांगुलिय
श्रोणितद बिरुवनियनरिदा क्षीण परितोषितनु सडलिद
नाणियलि तिरुगिदनु घर्नॆ घनविशाददलि ॥ 2 ॥
तडॆदु गॆद्दवरिल्ल नाचिकॆ गॆडिसिदवरिल्ली नॆलॆगॆ कै
विडिदु दिल्लप जय नितंविनि नम्म नाजियलि
सुडु बदुक साकिन्नु हरणव हिडिवुदनुचितवॆंदु कदनद
कडुहिनलि कलिकुंभकर्णनु बंदनाहवकॆ ॥ 3 ॥

अट्ठाईसवीं संधि

सूचना— शत्रु राजाओं को चूर-चूर कर डालने की शक्ति से विराजमान, देवेन्द्र रूपी हाथी के लिए सिंहस्वरूपी, बलशाली राक्षस नायक को राम ने जीत लिया ।

हे काकुत्स्थ राजकुमार कुश-लव, सुनो। लंकानगर की गलियों का संभ्रम बढ़ा । विजयोत्साही कुंभकर्ण सरपट रावण के सभाभवन में चला आया । 'वानरराज को पकड़ लाया हूँ' —इस तरह कहते उसने अपनी भुजाएँ ऊपर उठायीं । १ कपिराज-वंश के बुद्धिमान को (वहाँ) न देखने के कारण वह हैरान रह गया । पता न लगे इस रीति से काटी गयी नाक पर उँगली ले जाकर टटोला । वहाँ से खून गिर रहा देख संतोष-विहीन कुंभकर्ण दुःखी होकर लज्जा के मारे वहाँ से झट लौट पड़ा । २ मेरा सामना करके (इस दुनिया में) जीतनेवाला कोई नहीं । युद्धक्षेत्र में, आज तक अपजयलक्ष्मी ने मेरा हाथ नहीं धरा (कभी पराजित नहीं हुआ) । आग लगे मेरे इस जीने को । यथेष्ट हुआ । अब जीवित रहने में क्या धरा है ? इस तरह सोचते युद्धोन्माद से पागल हो कुंभकर्ण रणभूमि में पधारा । ३ आँखों में आश्चर्य के भाव भरे

नाचिदनु लंकाधिनाथ विलोचनाळिय बेंरगिनलि बळि-
का चटुळ भटकोटि कंठगतादि विस्मितद
वीचिगळ विहरणद भयसंकोच दिंदिरलित्त मूगिन
मोचिकॅय भट खतिय भरदलि बंदनाहवकॅ ॥ 4 ॥
करॅदु तंदरु कुंभकर्णन धुरद जयवनु केळि निद्रा
भरद भारिय शूर्पणखियनु धूर्तवटु निकर
सरसरिस नडॅतंदु कंडळु सरिसदलि सहभवन नकटी
परिय माडितॅ विधियॅनुत तिरुगिदळु खेददलि ॥ 5 ॥
नगॅय नदुळिन ललिलगल्लिगॅ नगर दॊळगिन नोटकरु
मूगुगळ मोचिन रक्कसन रक्कसिय नीक्षिसुत
मुगिदु दिंतिव रिब्बरिगॅ संयुगदॊळिन्नवरण्ण गेननु
बगॅवरो बळिमुखरॅनुत गुहिलिक्कि तखिळजन ॥ 6 ॥
अंगविसिदनु बळिक रिपुगळ नुंगुवतिमनदायतदलुरि
गंगळलि नडॅतंद नधरव नगिवुताहवकॅ
संगडकॅ बळिकसुर पति चतुरंगवनु मेळैसि सहजा
तंगॅ कळुहिद नॆरडुनूरक्षोहिणी बलव ॥ 7 ॥
कळुहिदनु मय विश्वकर्मर कॅलसदलि कैगॆद रथवनु
बळिक बलुगैदुगळ भंडिय कोटि संख्यॅयलि

लंकेश्वर शर्मिन्दा हुआ। तदनन्तर (वे) करोड़ों योद्धा आश्चर्य भरे उद्‌गार निकालते हुए भय तथा संकोचपूर्ण स्थिति में जब खड़े थे, तभी नकटा (नाककटा) वीर कुंभकर्ण क्रोधोन्मत्त हो युद्ध के लिए आया। ४ कुंभकर्ण के, युद्ध में जीतने का समाचार पाकर कुछ दुष्ट बालक गाढ़ी निद्रा में पड़ी शूर्पणखा को जगाकर बुला लाये। सरपट दौड़ी आई शूर्पणखा ने सामने सहोदर कुंभकर्ण को देख— 'हाय, दुर्दैव ने यह क्या कर दिया?' इस तरह कहती शोकसंतप्त हो वह लौट पडी। ५ आश्चर्य की मुस्कुराहट के साथ जिधर-तिधर खड़े लंकानगरी के दर्शकों ने नकटे-नकटी राक्षस-राक्षसी की ओर देखा। 'इन दोनों की तो यह दुर्गति हुई। ये वानर, न जाने, इनके भाई का क्या कर डालेंगे।' इस तरह आपस में बातें करते समस्त नागरिक खिलखिलाकर हँस पड़े। ६ कुंभकर्ण शत्रु को निगल जाने की उतावली में आँखों से चिनगारियाँ वमन करते दाँत-होंठ चबाए युद्ध के लिए आया। कुंभकर्ण की सहायता के लिए रावण ने दो सौ अक्षोहिणी चतुरंग सेना को जुटाकर भेज दिया। ७ मय विश्वकर्माओं

इळिदनव दुर्गवनु भर्गन बळिय भाळद किच्चिनवोला
बळिय वलुगिडियंते बलविळि तंदुदोग्गिनलि ॥ 8 ॥
तेरनेरिद नसुर नुक्किन नूरुघालिय सुरपदंतिय
भारणेय गजघटेगळरु नूरर गढावणेय
आरि बोब्बिडु वेंड वलद रणभैरवन भुल्लवणेयलि मुं-
गार मुगि लुब्बरदवोलु नडेतंद नाहवके ॥ 9 ॥
बंदरि हाय्दुदु घोर रक्कस नद्भुताकारद महाभय
कधट भटरसु धुम्मु घुळुकेनुतिर्दु दोडलोळगे
वदन विकसित वाय्तु रोमद होदरु हुरियेरिदवु विजया-
भ्युदय तलेदोरिदुदु रामंगरिय वरविनलि ॥ 10 ॥
बेरगिदेनै सोदलु बंदव्वरद रक्कसनंते नोटके
तोरपु गोडुतिदै चित्त विवनव नल्लवले नोडु
हरुकु मूगिदिवनवोलु मूकोरेयरुंटे निम्म रावण
नुरुव बलदलि भारिभट निवनारु हेळेंद ॥ 11 ॥
अेनलु किरुनगेयिंद रविनंदनन कोलस विदेंदु मारुत
तनुज कर पल्लवद सन्नेय लरुहिदनु नृपगे

से परिश्रम से सजाए गये रथ को, आयुधों से लदे करोड़ों छकड़ों को रावण ने भिजवा दिया। कुंभकर्ण शिवजी के भालनेत्र की आग की तरह लंका दुर्ग से उतर आए। शिवजी के भालनेत्र-ज्वाला की चिनगारियों-सदृश राक्षस-सेना झुंड के झुंड में उसका अनुसरण करते उतर आयी। ८ लोहे के सौ चक्र जुड़े, ऐरावत-सदृश छः सौ भारी हाथियों से खींचे जा रहे रथ पर कुंभकर्ण आरूढ़ हुआ। सिंहनाद करते हुए, दाएँ-बाएँ के रणभैरव की घनघोर गर्जना से मानों वर्षा ऋतु के घटाटोप-सदृश कुंभकर्ण युद्ध के लिए आया। ९ (उस) भयानक 'राक्षस का विकार-पूर्ण अद्भुत रूप देखकर सैनिक डर के मारे भाग खड़े हुए। उसके महाभय के कारण वीरों की साँस (दम) अन्दर ही अन्दर घुटने लगी। शत्रु को आया देख राम प्रफुल्ल वदन हुए; रोमांचित हुए। साथ ही साथ जीत का उत्साह भी खिल उठा १० "यह क्या विचित्र-विचित्र लगता है ? ग़ौर कर देखने पर पहले आया हुआ भारी राक्षस जैसा ही लगता है। नाक कटा यह नकटा वही तो है कि नहीं ? इसके जैसे नकटे तुम्हारे रावण के श्रेष्ठ सैन्य में कोई और तो है क्या ? यह ज़बर्दस्त वीर कौन है ? कहो तो सही।" इस तरह राम ने विभीषण से पूछा। ११ तब

अनुज लक्ष्मणदेव बेरळिन कोनेयलीपरि तप्पदेंदने
मनदोळगे नाचिदनु मर्ड्रयोक्कसुरपति बळिक ॥ 12 ॥
शरणनाळ्दन नुडिगे मारुत्तरव नुडियदे नाचि शिरवनु
धरेगे बागलु भावकर सर्वज्ञनद नरिद्दु
धुरके निंदनु लक्ष्मणांकन करेदु कैसन्नेयलि करुणा-
करनु बळिकी मात नुडिदनु मधुर वचनदलि ॥ 13 ॥
तम्म बा बल बेदरुतदे बलुगुम्म निवननु कंडुरणविदु
नम्म भागके बरलि बळलिस बेड कपिभटर
चिम्मु केल कडे गरिभटन रणवेम्म दरि वाहिनिय कदनद
नेम्मुगेय कडुहीग निन्नदु होगु बेगेंद ॥ 14 ॥
हनुम बा नी होगु लक्ष्मण ननुवरद बेंबलके रवि नं-
दन विभीषण रिरलि नम्मी यंगरक्षणेगे
अनुज नाजिय लेसु होल्लेह नेनहु निन्नदेनुत्त निज भृ-
त्यननु बीळ्कोट्टरिभटन संगरके निंदिर्द ॥ 15 ॥

हनुमान ने मुस्कुराते हुए इशारे से राम को यह बताया कि यह (नाक काटने का काम) सुग्रीव की करामात है। उँगली के इशारे से लक्ष्मण ने भी सूचित किया कि यह झूठ नहीं है। तब विभीषण मन ही मन लज्जित हुआ। १२ राम के शरणागत विभीषण ने स्वामी (श्रीराम) के उपरोक्त प्रश्न के उत्तर देने में असमर्थ हो लज्जा के मारे सिर झुका लिया। भक्तहृदय-सर्वस्व-ज्ञाता श्रीराम ने (वस्तुस्थिति) समझकर युद्ध के लिए तैयार खड़े रहे। लक्ष्मण को हाथ के इशारे से (नजदीक) बुलाकर अत्यंत मधुर वचनों से निम्नांकित प्रकार बोले। १३ "इधर आ भाई; इस भारी भूत को देखकर (हमारी) सेना भयभीत है। यह युद्ध मेरे ज़िम्मे छोड़ दो। कपिवीरों को थकाने की जरूरत नहीं; तू मेरे पार्श्व में खड़े हो जा। इस शत्रुवीर के साथ युद्ध हमारा होगा। शत्रु-सेना के साथ लड़ने की अधिक ज़िम्मेदारी भी मेरी रहे। जल्दी करो।" इस तरह राम ने कहा। १४ "हनुमान! तू इधर आ; तू लक्ष्मण के युद्ध करते समय उसकी सहायता कर। सुग्रीव-विभीषण हमारे अंगरक्षक बने रहे। भाई के लड़ाई की बुराई-भलाई की ज़िम्मेदारी का सोच-विचार तेरा रहा।" इस प्रकार कहकर अपने हितचिंतक निजी सेवक को भिजवाकर राम शत्रुवीर से युद्ध के लिए तैयार हुए। १५ राम ने पीत वस्त्र से

अळ वडिकॆयलि पीतपट सम्मिळित बद्दुगॆदारवनु बलि-
दलॆव जडॆगळ नॊब्बुळिसि बिगुहिक्कि बाणधिय
हिळु कुगळ नारैदु धनुवनु निलिसि मॊळ कालिद बागिसि
बिलुदिरुव बलुगॊलॆगॆ संधिसि निंद निदिरिनलि ॥ 16 ॥
बॆरळ तुदियलि भारिचापद तिरुव लुळिवडॆदुभय भागव
करतळदि नेवरिसि निजदालीढ गतिगळलि
बरसॆळॆदु तिरुवनु सरोजजपुरकॆ निड्डुदनिदॊरॆ जेवडॆ
वरसनुरॆ बॊब्बिरिदु करॆदनु सरळ लरिभटन ॥ 17 ॥
पॊडविपन बिलुदनिगॆ विलयद सिडिलु हॊडॆदंताय्तु रक्कस
नॊडलु मामा राम रणगलि भीम बापॆनुत
सिडिद किवि मूगुगळ भटनुग्घडद रथवनु नूकि बाणव
तुडुकि बाणासनकॆ संधिसि रामगॆंतॆंद ॥ 18 ॥
रामने नीनिग बनदलि भामिनिय होगाडिदातनु
भीम बलनहॆ लेसु मनदायतिकॆ छलपदव
सीमॆ यॊळ्ळितु जगदॊळधिक समाननहॆ कट्टाभिमानकॆ
मै मरॆसि बाळ्दवर बळियवनल्ल नीनॆंद ॥ 19 ॥

बैठाए पट्टीदार धागे को सिद्ध कर, अपने बिखरे उड़ते हुए बालों को इकट्ठे लाकर कसकर बाँधकर, तरकस को कसकर बाणों के पुच्छों की (पंखों की) परीक्षा की। उसके बाद धनुष को खड़ा कर, घुटने से उसे झुका कर, प्रत्यंचा को और एक सिरे पर मिलाकर (जोड़कर) कुंभकर्ण का सामना करते खड़े रहे। १६ उस भारी धनुष की प्रत्यंचा को उँगली की कोर से खींचकर दोनों हिस्सों को हाथों से खींचकर युद्ध करते समय खड़े होने की अलीढ गति में, रीति में, राम खड़े रहे। धनुष की प्रत्यंचा खींचकर 'ठणत्कार' (ठेंकार) जब उन्होंने किया तो वह शब्द सारी ब्रह्मनगरी में प्रतिध्वनित हुआ। राम ने सिंहनाद करते हुए शत्रुवीर पर बाण छोड़ा। १७ राम के धनुष्टंकार के कारण मानों प्रलयकालीन बिजली जैसी कड़ाके की ध्वनि हुई। कुंभकर्ण के पेट में 'मामा राम, युद्धवीर भीम, धन्य-धन्य' जैसे शब्द हुए। कान-नाक खोए वीर कुंभकर्ण ने (अपने) रथ को आगे बढ़ाते, बाण को खींचकर धनुष पर चढ़ाते राम से यों कहा। १८ "क्या तू ही राम है? अरण्य में पत्नी को खो बैठनेवाला तू ही है? भारी बलवान लगते हो। तुम्हारे मन की दृढ़ता प्रशंसनीय है। लेकिन तेरी जिद्द की एक मर्यादा (सीमा) होती तो अच्छा होता। लोक में तू प्रसिद्ध है ही। आत्मगौरव छिपाए रख जीनेवालों

बवर मुखदलि सोतु भोगद युवतियर नम्मसुर वंशो-
द्भवर्क कोट्टु सुरक्षणेय सुरनर भुजंगमरु
नवसहस्र वदंतिरलि साकवर मातिकेम्म रणदु-
त्सवद रचनागमव नोडेंदसुर गर्जिसिद ॥ 20 ॥
नीवु रक्कसराय गुलदव रावु रक्कसरल्ल निमगा
देवकुल वंजुवदु देवरिगंजुवेवु नावु
आवु दभ्यंतरवु निमगेम गावुदाहवर चनेयद सं-
भाविसै नीनेनुत हूडिदनसम मार्गणव ॥ 21 ॥
हूडलस्त्रव नस्त्र विदिरलि मूडिमंचद मुन्न बाणद
जोड तोडिसिद नसुर नसुर विभाड राघवन
आडलेना राघवन कैगाडिकेय कर्ण कत्तलेय क-
ट्टाडिकेय खळनवयवव बगिदुगिदुदगलदलि ॥ 22 ॥
देवरोळ गग्गळनला राजीवनयननु यातुधानकु-
लावळियोळतिबलनला मध्यम पुलस्त्य सुत
आव गुरुलघु चित्रदस्त्रकलाविदरो कदनैक विश्रुत
कोविदरो कोदंड महिमेय लणुग केळेंद ॥ 23 ॥

की जाति का तू नहीं है।" इस प्रकार कुंभकर्ण ने कहा।" १९ "युद्ध में हारकर भोग की स्त्रियों को हमारे राक्षस-वंश में उदित हुए व्यक्ति को देकर सुरक्षा पानेवाले देवता, मनुष्य, उरग आदियों की संख्या नौ हजार है ! जाने दीजिए इन बातों को। उनकी बातों से हमारा क्या मतलब ? अब मेरी युद्ध-कौशल्य की रीति देख।" —इस तरह कहते कुंभकर्ण गरजा। २० "तुम राक्षसराजवंश वाले हो। हम तो राक्षस नहीं हैं। देवतासमूह तुमसे डरता है। लेकिन हम देवताओं से डरते हैं। हमारा-तुम्हारा क्या वास्ता ? जो युद्धकार्य हमारे-तुम्हारे सामने है, उसी पर तू गौर कर।" —ऐसा कहते राम ने एक असाधारण, अद्भुत बाण धनुष पर चढ़ाया। २१ बाण चढ़ाने पर, उसके सामने आकर आगे बढ़ने के पहले ही कुम्भकर्ण ने असुरारी राम पर बाण बरसाकर मानों कवच सा पहना दिया था। उसका वर्णन किन शब्दों में किया जाय ? राघव के हस्तकौशल के कारण (राम से) छूटे बाणों ने, अँधेरे के सदृश काले शरीरधारी राक्षस के देह भर में (उन बाणों ने) चुभकर फाड़ दिया। २२ देवताओं में कमल-नयन राम श्रेष्ठ हैं। राक्षस-कुलोत्पन्न पुलस्त्य का मँझला पुत्र कुंभकर्ण महान बलशाली है। गुरु-लघु गतियों से चमत्कारपूर्ण अस्त्र-प्रयोगों में दोनों न जाने कितने बुद्धिमान हैं, कितने चतुर हैं। धनुर्विद्या में कितने

बिडुव हूडुव सरळिसुव शरदंडदेरहिं गिल्लवंधि सुभटर
तडेव तवकिसुवंबि नंबुधि गावुदो सीमे
कडुमनद कोपगळ बलि दिट्टडिय दृष्टिय मुष्टिवाळद
सडिपडद सौरंभरेच्चाडिदरु सरिसदलि ॥ 24 ॥

धनुगळो सुरधनुगळो निडुदनिगळो निर्घात निनदवो
तनुगळो तुंबिद महोदक दभ्रकांतिगळो
घन शरौघ निपातगळो घनजनित वरुषासारगळो ता-
नेने भटद्वयदाहवाकृति मोहिसितु जगव ॥ 25 ॥

हायिवस्त्रद बिरु बिगमरनिकाय कंपिसुतिर्दु दब्बर
दायतिके गब्बरिसुतिर्दु दजांड बिलुरवके
बायि बिडुतिर्दुदु धरातळ वायिती कदनदलि त्रिभुवन
दायुविगे निर्वाहवेनुतिर्दनु सरोजभव ॥ 26 ॥

अंब तिरुविनलोदेव गतिगार्येबनमरर गुरु महादे-
वंब नसुराचार्यनमरासुरर मुंबिनलि
अंब गर्भिणि यादळो जगदंबिका सतियेनलु भुवनक
दंब बाणदलडगिदुदु भटरिब्बरेसुगेयलि ॥ 27 ॥

अद्भुत युद्धकलाविशारद हैं। सुनो वत्स; इस तरह वाल्मीकि ने कहा। २३ छोड़ते, संधान करते, उछालते बाणों के मध्य कोई अंतर ही नहीं रह जाता था। (लगातार बाणों की वर्षा हो रही थी।) (बाणों को) रोकने की, उत्साह बढ़ानेवाले वीरों के बाण-समूहों की सीमा ही न रही। स्थिर चित्त से चिढ़कर, दृढ़तापूर्वक पग धरते खड़े हो, दृष्टि एक-दूसरे पर रोपे, मूठ बाँधे; 'सडफड' करते डीलडौल के साथ दोनों वीर आमने-सामने हो, बाणों की वर्षा करते लड़ने लगे। २४ (वे) धनुष थे या इन्द्रधनुष थे! चीखना था या बिजली की कड़कड़ाहट थी! देह थे या जलकण भरे मेघों की कांति थी! अधिक संख्या में छूटते बाण थे या बादलों से गिर रही (लगातार) वर्षा की झड़ी थी! —इस प्रकार दोनों वीरों की उस भयानक लड़ाई ने सारा जगत का मन मोह लिया। २५ एक-दूसरे से टकरा रहे अस्त्रों के वेग के कारण देवता काँप रहे थे। वीरों की घनघोर गर्जना के कारण ब्रह्मांड मानों फटा जा रहा था। उनके धनुष ठंकार के कारण भूमंडल में दरारें पड़ रही थीं। इस युद्ध में तीनों लोकों की आयु मानों समाप्त हो जायगी —इस तरह ब्रह्माजी कह रहे थे। २६ धनुष की प्रत्यंचा को झटका देकर जब बाण छूट रहे थे,

बिडु सरळ मंडळिय खंडल गिडिय लंबुधि बत्त बगेदुदु
सिडिव किडिगळे होत्ति होगेदुदु होरळि गिडिगळलि
होडकरिसि होदरेद्दु झळदलि झडिदुदाशा भित्ति बवरव
नडुगिसि दुर्दिन नृसिंह हिरण्यकासुरर ॥ 28 ॥
कादिदरु कैगुंद दिट्टेडे मैदेगेय दळदियलि हळमेय
केदुकारर कदनकुशलके कोटि मडियेनलु
आदरिसिदनु बळिकला क्रव्याद सुभटन कृपेयला दू-
र्वादळ श्यामळनु हूडिद कोल तोहिनलि ॥ 29 ॥
असुर केळु कठोर बलरोळु हेसरेनिसि दग्गळद भट नी
जसदलतिबल नी जगत्त्रयकधिक वीरनहे
विशिख वेम्मदमोघ मेलनुवशनु निन्न सहोदरनु नम
गसु हृदय नीनल्ल कोल्लेनु होगु नीनेंद ॥ 30 ॥

उस वेग को देख मुँह बाए खड़े रह जाते अमरों के सम्मुख उपस्थित देवताओं के गुरु बृहस्पत्याचार्य; राक्षसों के सम्मुख उपस्थित शुक्राचार्य 'हे महादेव' कहकर उद्गार निकालते। जगदंबिका ने मानों बाणों को गर्भ में धारण किया हो, इस रीति से दोनों वीरों के बाण-प्रयोगों से समस्त लोक बाणों की वर्षा में छिप गये। २७ बाणों के समूह से उठी चिनगारियों के टुकड़ों के कारण समुद्र की सूख जाने की नौबत आयी। बाणों से छूटी चिनगारियाँ गोलमटोल पिंडाकार में जलते धुआँ पैदा करने लगीं। चिनगारियों से निकलती ज्वालाओं के कारण चारों दिशाओं की उष्णता बढ़ने लगी। पूर्व में हुए नरसिंह-हिरण्यकशिपु के युद्ध को थर्रानेवाला युद्ध यह था। इन दोनों वीरों की लड़ाई अत्यन्त भयावह थी। २८ पूर्वकाल में हुए वीरों के युद्ध-कौशल से करोड़ों गुना अधिकता से हुए इस युद्ध में, कोई भी हार न मानते हुए, पीछे न हटते हुए, एक-दूसरे के सामने खम ठोंककर खड़े रहकर राम और कुम्भकर्ण ने युद्ध किया। दूर्वादल-सदृश श्यामल वर्ण से सुशोभित राम ने अपने हाथों हुए शरसंधान की पंक्ति से कुम्भकर्ण का बड़ी करुणा से आदर किया। २९ "सुनो राक्षस; कठोर बलशाली योद्धाओं में तू प्रसिद्ध ही है। महाशक्तिशाली के रूप में तू कीर्तिमान भी है। तीनों लोकों में अद्वितीय वीर है। हमारा यह बाण अमोघ, अचूक है। तुम्हारे भाई मेरे बाण के शिकार होने के अधिकारी हैं। तू मेरा शत्रु नहीं; अतः तेरी हत्या नहीं करता। चला जा।" इस तरह राम ने कहा। ३० "तुम्हारे बड़े भाई को युद्ध करने

कळुहु निन्नग्रजन विग्रह दोळगॆ निन्नव नुळियॆ नी ता
नुळिदवनु रिपुवळिद रॊड हुट्टिद विभीषणन
वळिय बदुकुवु दिदुवॆ नीतियनॆल्लॆ निरर्थकॆ सत्तु काव-
ग्गळद स्वर्गवदेकॆ मनवनु तिळिदुकॊयॆंद ॥ 31 ॥
तिळिद डाव् तामसरु तंद्रिय बळियवरु मेलसुर कर्मद
ब्ळकॆ नमगुंटळॆय मूर्खरु शिष्य जनवॆमगॆ
तलॆ हरिद रट्टॆयलि कादुव कलिगळॆंबुद केळिदरिया
कलु हृदयतनविरलि करुणद मातदेकॆंद ॥ 32 ॥
नोडु नम्मय सरळ समय सगाढतर संग्रामवनु खय-
खोडि यिल्लदॆ बल्लिदनु खळनॆंदु लेसागि
नोडॆनुत सबळद समानद जोडणॆय जवगतिय सरळलि
जोडिसिद नुब्बिरिदु रघुकुल सार्वभौमकन ॥ 33 ॥
मुनिप कौशिकदत्तमंत्रद घनतनुत्रद महिमॆयलि गो-
मिनिय पति तानागि वदुकिदनल्ल दुळिदंतॆ
तनुज केळा कुंभकर्णन कनलिकॆय कदनगळ कर्णगळ
मोनॆय लुळिवव रारु मर्त्यामर कदंबदलि ॥ 34 ॥

के लिए भेजो। युद्ध में अगर तुम्हारे भाई बच गये तो तू भी सुरक्षित है। (मेरा) शत्रु (रावण) अगर मर जाय तो तू अपने भाई विभीषण का आश्रय पाकर जीवित रह। यही जीने की नीति है। व्यर्थ ही मरकर पाए जानेवाले स्वर्ग से क्या प्रयोजन? अपने मन ही मन सोच-विचार कर देख।" इस तरह राम ने कहा। ३१ "सोचकर देखा जाय तो हम तमोगुणसंपन्न हैं; नींद में डूबे रहनेवाले; तिस पर हम राक्षसकर्मी हैं। दुनिया के मूर्ख ही हमारे शिष्य हैं। सिर कटकर गिर जाय; तो भी धड़ (कबंध) से लड़नेवाले वीर हैं। क्या तुमने यह सारी हक़ीक़त सुनी नहीं? कठोर हृदय अपने पास ही रखें। हमसे इस करुणापूर्ण वार्तालाप से क्या प्रयोजन?" इस प्रकार कुम्भकर्ण ने कहा। ३२ "हमारे बाण चलाने के भयंकर युद्ध को निर्भय होकर देखो। यह भी देख लो कि यह राक्षस कितना समर्थ है।" इस तरह कहते कुम्भकर्ण ने वर्छी के समान वेगवान बाण, गरजते हुए रघुकुल चक्रवर्ती पर चलाया। ३३ "विश्वामित्र महर्षि से दिये गये मंत्र तथा श्रेष्ठ कवचों की महिमा से लक्ष्मीपति राम बच गये। सुनो कुमार! नहीं तो, क्रोधसंतप्त हो कुंभकर्ण से छोड़े गये बाणों के निशान में आकर देवताओं में तथा मानवों में कौन

लाघव दोळवनेंच्च निशित शरौघवनु तरिदोट्ट राक्षस
मेघमारुत निदिरिनलि मदवेरि बोब्बिरिदु
आ घनोन्नत नुग्रधनुवनमोघ शरदिंदेसलु सकल सु-
रौघ वायें दुलियें किडि नेगेदवु नभोंतरक्के ॥ 35 ॥

नेगहिदनु बळिकवनु कमलद मगनु पूर्वदलित्तशक्तिय
धगधगिल्दगिलेंदु दळ्ळुरि दट्टिसितु नभव
जगुळ्ळु गिडिगळ गडण देसेगुगुळिदुदु दिगु भित्तिगळ का-
बोगे विघातिसे काड कूडिदुदमर संदोह ॥ 36 ॥

इदुकणा हरियज भवाद्यर हृदय कंपन शक्ति नोडि-
तिदु जगत्संहरण कारण घोरतर शक्ति
इदनु नीनुत्तरिसिदडे दशवदन तंदंगनेय सुंदण
मदुवे निन्नदु निनगे सरियह सुभटरिल्लेंद ॥ 37 ॥

नडुगिदनु मनदलि विभीषण नडुगिते महिमातिशयदु-
ग्गडद रघुनृपकीर्ति रामायणद नाटकद
तडवरारी प्रळयशक्तिय कडुहनकटा मुकुति मानिनि
हिडिदळे हरिदश्ववंशव नेनुत हरितंद ॥ 38 ॥

अपने को बचा सकता है?" इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। ३४ कुम्भकर्ण से छोड़े गये पैने कौशल्य-पूर्ण बाणों को राम ने काट-काटकर ढेर बना दिया। राक्षस रूपी बादलों को तितर-बितर करने में सशक्त (समर्थ) श्रीराम ने मस्त होकर सिंहनाद करते हुए उस वीर के प्रचंड धनुष को अपने अमोघ अचूक बाण से जब काट डाला तो निकली चिनगारियाँ आकाश तक पहुँच गयीं। तब समस्त देवता 'हा हा'कार कर उठे। ३५ तब पूर्व में ब्रह्माजी से प्रदत्त शक्त्यायुध को कुम्भकर्ण के उठाते ही उसमें निकल रही धू-धू करती ज्वालाएँ आकाश को धमकाने लगीं; (उन) चिनगारियों के ढेर सारे दिशाओं में छिटकने लगे; काले धुएँ से दिग्दिगंतर को चीरने लगीं। देवता जंगलों की ओर भाग खड़े हुए। ३६ "ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर के हृदय को दहलानेवाली वह शक्ति (शक्त्यायुध) थी। देखो; समूचे जगत का नाश करनेवाली यह शक्ति है। इतनी भयंकर! इसको अगर तू जीत गया तो दशमुख से अपहृत स्त्री के साथ तेरा नूतन ब्याह रचूँगा। तभी तो मानूँगा कि तेरी बराबरी करनेवाले कोई वीर इस जगत में नहीं हैं।" —इस तरह कुम्भकर्ण ने कहा। ३७ विभीषण मन ही मन काँप उठा। "रामायण नाटक के

एनु बल्लविकेंयो विभीषण नेन हेळलुबंदनदरोळ
गा नरांगद निगम चूडामणि सरोजजन
ध्यान दभि मंत्रकद शरसंधानदलि बोब्बिरिवुतेंच्चन
नूनबल कलि कुंभकर्णन करतळायुधव ॥ 39 ॥
नेंगहितरिशक्तियनु शरवागगन गंगेय कुडिदुदल्लिय
होगेय होरळिय लुदकवनु हसिवडगदिरे बळिक
नगकुलांतक मुख्य दिविजाळिगळ नेरेयट्टिदुदु सुट्टुदु
नगरगळ निर्जरर निंदुदु पुरदोळबुजजन ॥ 40 ॥
कंदु कैमीरिदुद कंडु महादुराग्रहि रक्कसनु बलु
गैदु विदेलायेंनुत परिघदलिट्टनिननुलन
ऐदितदु किडिगेदरु तंबरवैदे दळ्ळुरि मसगे मसगो
लैदरलि शतचूर्णवागलु कडिदना राम ॥ 41 ॥
परिघ वळिदुद कंडु बाहा परिघनिट्टनु कोटिभारद
गिरिय सारद गदेयला गंभीर विक्रमन

रघुवंशीय राजा की महिमापूर्ण कीर्ति को क्या बट्टा लगेगा ? इस प्रलय शक्ति की उग्रता का सामना कौन कर सकता है ? हाय ! मोक्षलक्ष्मी क्या रविवंशीय राम का हाथ धरना (प्रेम करना) चाहती है ?" इस तरह सोचते विभीषण दौड़े-दौड़े आया। ३८ राम का ज्ञान कितना अपार है ! जिस विषय की जानकारी देने विभीषण आ ही रहा था, तो उतने में नरावतारी वेद परमपुरुष श्रीराम ने ब्रह्म का ध्यान करते हुए, सिंहनाद करते हुए, कुंभकर्ण के हाथ के आयुध पर बाण चलाया। ३९ राम के अस्त्र के आघात से कुम्भकर्ण के हाथ का शक्त्यायुध आकाश की तरफ़ उड़ा। तदनंतर धुएँ की राशि के मध्य वह (शक्त्यायुध) आकाश-गंगा का पानी पी गया। तिस पर भी, भूख न मिटने के कारण देवेन्द्रादि देवताओं का पीछा करते जाकर उसने देवताओं की नगरी को जला डाला। फिर वह ब्रह्मपुरी जाकर टिक गया। ४० हाथ से यों निरर्थक होकर शक्त्यायुध के चले जाने पर दुरात्मा कुम्भकर्ण ने 'यह महायुध है न' इस तरह कहते हुए परिघायुध को राम पर दे मारा। उसकी ज्वालाएँ आकाश की तरफ़ उठने लगीं; वह चिनगारियाँ वमन करते राम की तरफ़ आया। राम ने पैंने पाँच बाण चलाकर उस परिघायुध के सौ-सौ टुकड़े कर डाले। ४१ परिघायुध को विनष्ट हुए देखकर लोहे के जैसे भुजदंड वाले कुम्भकर्ण ने करोड़ों पर्वतों जितनी वजन वाली (अपनी) गदा उठाकर महान पराक्रमी राम पर चलायी। बड़े वेग से

भरदि तिरुगुत बह गदा निर्भरद सुळिगाळियलि पुष्पक
तिरुगुतिर्दुदु कूडे कमलभवादि सुरगणद ॥ 42 ॥
जगव बेंदरिसुतैदि बरुतिह विगड रक्कस गदेय काणुत
जगद जाणरदेव झडितेय लाशु गास्त्रदलि
जगुळ लेच्चनु बिद्दुददु रिपु नगर मध्यदलिद्द रक्कस
रुगुळिदरु जीवगळ जवपुरवाय्तु रिपुनगर ॥ 43 ॥
इट्टनव कक्कडेय लसुरधरट्टनन‌ु बळिसलिसि रघुपति
तोट्टबाणद लेच्चु तुंडिसि तूरलसुरेंद्र
इट्टि तोमर मुसल मुद्गर पट्टपरशु मुसुंडिगळ मोगे-
दिट्ट नंबरवैदे कैदुकदंब मयवागे ॥ 44 ॥
तरिदना हेरिट्ट तोमर निरिसि नग्गद मुसल मुद्गर
मिरिप पट्टेय परशु निशित मुसुंडि मोदलाद
तुरुगि बह बलुगैदुगळनेडे देरहुदोरदे चापतंत्रद
नेर वणिगेगळ देवदेव कदंब बेरगागे ॥ 45 ॥
आरि बोब्बिरिदसुर नळविगे तेर नूकलु नाक केच्चनु
वारुवंगळ तलेय तरिदोट्टिदनु सारथिय

चक्कर काटते आती हुई गदा के बवंडर में फँसकर ब्रह्मादि देवताओं के पुष्पक विमान चक्कर काटने लगे। ४२ सारी दुनिया को भयभीत करते आ रही उस भयंकर गदा को देखते हुए, जगत् भर के ज्ञानियों के देवाधिदेव राम ने झट वायुव्यास्त्र का प्रयोग करते हुए उसे काट गिराया। वह गदा जाकर लंकानगरी के मध्य में गिरी। वहाँ उपस्थित राक्षसों का गदा के नीचे दब जाने के कारण प्राणपखेरू उड़ गये। शत्रुनगरी यम-देवता की नगरी बनी। ४३ राक्षसों के लिए चक्कीस्वरूप बने राम को कुंभकर्ण ने कटार से मारा। तुरन्त राम ने धनुष में संधानित (चढ़ाए) बाण से उसकी कटार काटकर उड़ा दिया। बर्छी, तोमर, मूसल, मुद्गर, पट्टा, कुल्हाड़, मुसुंडी आदि शस्त्रास्त्रों को तान-तानकर जब कुंभकर्ण ने चलाया तो सारा आकाश आयुधमय बन गया। ४४ धनुर्विद्या-विशारद राम ने अपने ऊपर (कुंभकर्ण से) प्रयुक्त बड़ा भारी बर्छा, तोमर, मूसल, मुद्गर, पट्टा (पट्टिश), कुल्हाड़, पैनी मुसुंडि आदि आयुधों को, जो लगातार उसकी ओर आ रहे थे, (अचूक) एक-एक करके काट डाले तो देवता यह देख दंग रह गये। ४५ गरजकर, सिंहनाद कर, कुंभकर्ण ने राम के नज़दीक अपने रथ को बढ़ाया। तब राम ने (उस) रथ के घोड़ों के सिर काटकर आकाश की ओर उड़ा दिये। सारथी के टुकड़े-टुकड़े

वीर रक्कस बळिकलामदनारि गदगंपिसलु तिगद क-
ठारियनु तॆगॆदॊत्त बरिसिद नळुकॆ भुवनचय ॥ 46 ॥
चरण तळदुप्परकॆ फणिपन शिरकॆ नोवेद्रिदुदु दंडॆय
धुरद मंडिय लागु लंघनॆ गॊलॆदुदवनितळ
तिरुगॆ तिरुगितु मैय गाळिगॆ तरणिमंडल बीसॆ सुरगिय-
गरळवट्टितु गगन पथिकर हेळलेनॆंद ॥ 47 ॥
चारियनु चारिगळ पयगति योरॆ पोरॆय बवरिगळ सं-
चारणॆय लब्बरिसि तिविदु राघवेश्वरन
वीर मझरे भापुरे रणधीर मूजग जट्टियॆनुतसु
रारि हॊळॆवॆळॆवॆरॆय बाणदि नॆच्चु बॊब्बिद्रिद ॥ 48 ॥
दंडॆगॊड्डिद करतळवनुद्दंड सुरगिय मोहळव कै
कॊंड हस्तव कत्तरिसिदुदु कर्ण कृतांतकन
दंडिसरद वसंत दोकुळियंडॆमॆनॆ मोटॆरडॆलि हॊर-
वंड्डु वरुण जलौघ हॊरॆदुदु दिक्तटावळिय ॥ 49 ॥

कर डाले। उसके बाद कुंभकर्ण राक्षस तीन फलवाली भारी कटार लेकर राम की ओर दौड़ पड़ा तो यह देख शिवजी काँप उठे। यह देख तीनों लोक काँपे। ४६ कुम्भकर्ण के पैर उठाकर धरती पर धरे पग के कारण आदिशेष का माथा ठनका। घुटने टेककर जो फुर्ती से उछाला तो धरती डाँवाँडोल हुई। कुंभकर्ण के मुड़ने पर उसकी देह के धक्के से उठी हवा के झोंके के कारण सूर्यबिंब चक्कर काट गया। उसके हाथ झुलाते ही हाथ की कटार के विष ने आकाश में उपस्थितों का पीछा किया। ४७ युक्ति से आगे-पीछे मुड़ते, टेढ़ी-मेढ़ी चाल चलते, आगे बढ़ते, चक्कर काटते, कई प्रकार पैंतरे बदलते सिंहनाद करते कुंभकर्ण ने राम पर अपनी मूठ से प्रहार किया। "धन्य-धन्य, वीर! भेष! रणधीर! तीनों लोकों के पहलवान!" —इस तरह कहते राम ने चमकते, दूज के चंद्रमा के समान फालवाले (मुँह वाले) पैने बाणों से सिंहनाद करते कुंभकर्ण को आहत किया। ४८ अपनी ओर बढ़े कुंभकर्ण के हाथ को तथा उग्र कटार लेकर युद्ध करने के लिए उद्युक्त हाथ को राम के बाण ने काट गिराया। यम देवता के, मानों वसंत (होली) खेलने में प्रयुक्त रंग-भरी पिचकारी के सदृश कुंभकर्ण के कटे दोनों हाथों के ठूँठों से छिड़क रहा रक्त आकाश भर में व्याप्त हो गया। ४९ कुम्भकर्ण के कटे हाथ में उपस्थित कटार ने

बिट्ट करवु कठारिर्यि दुर्र्येयट्टि तिविदुदु तीविदर्डविय
बट्टॆगरना दंडॆगॊड्डिद कैय कडुहिनलि
हॊटॆटॆयलि करुळॊक्क कपिगळ बॆट्टवगणित वादवा नॊरॆ
गट्टि सुरिवरणांबुनदि हलवाद वगलदलि ।। 50 ।।
तॊडकु गरुळिन तॊगलिन हॊरवडुव नॆत्तर बादणद बळॆ-
बिडुव कंगळिनरळिकॆय लरॆदॆरॆद बायिगळ
गिडि गिरिद हलुगिरुकुगळ हॊडगॆडॆदु हॊरळुव हॆणन राशिय
लिडिदु दिळॆ कलिकुंभकर्णन करद कदनदलि ।। 51 ।।
मॊटिनलि बळिकसुर बाहा स्फोटनगॆदॊडनॆ हॊय्दनु
ताटकी मर्दनन सिडिलप्पळिसिदंददलि
दूटि कॆल कॊलॆदसुररिपु केल मीटिसिद नंबुगळलंबर
दाटविक रक्कसन घनदोर्दंड मंडलव ।। 52 ।।
बीळु तप्पळिसिदवु गोलांगूल सेनॆय नॆरडु भुजवा
कालना कल्पांतदलि करदंडदलि जगव
बीळगॆडहुववोलु कॊलॆयनु हेळलेनदनॆटु कोटिय
मेलॆ मूवत्तैदु लक्षव कॊंदवगलदलि ।। 53 ।।

(कटारधारी कटे हस्त ने) जंगल की राह में विचरण कर रहे कई कपियों का पीछा कर उनका काम तमाम कर दिया। पास-पड़ोस में उपस्थित कपियों से वह कटारधारी हस्त जब टकराया तो पेट से आँतड़ियाँ बाहर निकल आने के कारण मर पड़े कपियों के ढेरों के पहाड़ अनगिनत थे। फेन भरी रक्त की नदियाँ चारों ओर दिखायी दी। ५० कुंभकर्ण के कटे हाथों के वार से उलझी आँतड़ियों के, घाव के छिद्रों से बहते रक्त के, बाहर निकली आँखों के, फटे अधखुले मुँह के, दाँतों से कटी जीभ के, गिरकर लुढ़कते चटपटाते शवों के ढेर सारों के कारण धरती लबालब भर गयी। (जिधर देखो तिधर, इस प्रकार छिन्न-विच्छिन्न कपियों के शव दृष्टि-गोचर हो रहे थे।) ५१ कुम्भकर्ण ने कटे बाहुओं के मूल (ठूँठों) के भुजदंडों से थपेड़ते ललकारते बिजली टूटने के सदृश ताटकी-मर्दन राम को पीटा। राम झटके में एक ओर हट गये तथा आकाश में उठे कुम्भकर्ण के भारी भुजदंडों को बाण चलाकर उन्होंने काट गिराए। ५२ कुंभकर्ण के कटे दोनों भुजदण्ड वानर-सेना को पटकते हुए जो गिरे तो भयानक उत्पात मचा। कालपुरुष कल्पांत में, प्रलय के समय अपने हस्त दण्ड से (काल-दण्ड से) पीट-पीटकर जैसे हत्या करते जाता है, उसी प्रकार कुम्भकर्ण के बाहुओं से जो हत्याकांड मचा उसका किन शब्दों से वर्णन किया जाय?

उरिद जगदलजांड रंध्रद लुरवणिप शिखियंते रकुतग
ळेरडु भुजगळ बादणद लुच्चळिसि कपिबलद
हरण गॊळुतिरॆ कंडु रघुपति बॆरळ लसुरन हॊगळुतिरॆ धरॆ-
बिरियॆ बाय्दॆरॆदब्बरिसि नुंगलकॆ हरितंद ॥ 54 ॥
बॆदरि बिद्दनु खळन कर्कश वदनदब्बर किंद्र वह्निय
हृदय नडुगितु सिडिलु हॊडॆदंताय्तु कालंगॆ
अॆदॆ बिरिदु दसुरंगॆ नडुगिदनुदधिपति बॆच्चिदनु शिखिसख
नोदवि तंजिकॆ धनपतिगॆ भयवायितभवंगॆ ॥ 55 ॥
आरु बॆदरिदरेनु रघुकुल वीर बॆदरुव भटगॆ मृत्युश-
रीर नुदित शिरोधरवनुरु वैष्णवास्त्रदलि
वारिज प्रिय बिंबदत्तलु सार लॆच्चनु कॊरळ रक्तद
धारॆ तारामंडलव नणॆदिळिदु दिळॆगागि ॥ 56 ॥
विस्तरिसलॆ नमम राहुग्रस्तवादंदलि चंडन
भस्ति मंडल विळॆगॆ काणिस दाय्तु रक्कसन

आठ करोड़ पेंतीस लाख कपियों की हत्या कुंभकर्ण के उन बाहुओं ने की। ५३ दुनिया को आग (प्रलयकालीन अग्नि) लगने पर जैसे ब्रह्मांड के रन्ध्र से ज्वालाएँ निकलती हैं उसी प्रकार कुंभकर्ण के दोनों बाहुओं के रन्ध्रों में से रक्त उछल-उछलकर कपिसेना का प्राणापहरण करने लगा तो यह देखते रघुपति ने उँगली के इशारे से उसकी प्रशंसा की। तभी कुंभकर्ण इतने जोर से गरजते हुए कि धरती फट जाय, मुँह बाए राम को निगल जाने के लिए आगे बढ़ा। ५४ राक्षस के कठोर मुँह की जबर्दस्त गरज के कारण इन्द्र चौंक पड़ा; अग्नि का हृदय थर्राया; यम देवता पर मानों बिजली गिरी; निर्ऋति की छाती फटी; वरुण देवता काँप उठे; वायु देवता चौंक पड़े; कुबेर अत्यन्त भयभीत हुआ; शिवजी भी भयभीत हुए। ५५ जो कोई डर खाए तो इससे क्या मतलब? रघुकुल वीर तो किसी से क्योंकर डरें? मर्त्य शरीरधारी कुम्भकर्ण के सिर को वैष्णवास्त्र से (श्रीराम ने) काटकर इस तरह उड़ा दिया कि वह सूर्यबिंब तक पहुँच जाय! राक्षस के कंठ से फूटा रक्तप्रवाह आकाश को स्पर्श कर वहाँ से धरती पर प्रवाहित होने लगा। ५६ बाप रे! इसका वर्णन किन शब्दों में किया जाय! राक्षस का सिर आड़ में आने से सूर्य-बिंब मानों राहुग्रस्त (ग्रहणकालीन-सा) होकर धरती को दिखायी न पड़ा। (अँधेरा छा गया)। सूर्य ने अपने हाथ में धरे कमल को फेंक दिया; अपने शत्रु मंदेह राक्षस को जीतने (कुंभकर्ण वंड से लड़ने) में प्रयुक्त वीर

मस्तकद महिमेंयलि रविनिज हस्तदबुजव बिसुटु सॆळॆदनु
दुस्तरद मंदेह विजयद वीर खंडॆयव ॥ 57 ॥
ऒडॆदु दमरर नगर नगसुतॆ मृडन नप्पिदळाचरिसि हिं-
डॊडॆदु हाय्दरु कंड मैयलि कमल जादिगळु
पडिभविसि रवि सोतु शरधिय तडिगॆ हाय्दनु कादुवग्गद
कडुहुकारर काणदिळितरु तिर्दुदभ्रदलि ॥ 58 ॥
तॊलगु तॊलगॆलॆ राम कैदुव तॊलग बिसुटरॆ बिडुवुदल्लदॆ
तलॆ बिडदु बवरिगरनॆंदु बिभीषणनु नुडियॆ
तॊलगदाहव भीमनग्गद कलिललाम धनुर्धरायुत
विलसितोत्सव राम निलिसिद नस्त्र सारदलि ॥ 59 ॥
इद्दुदा तलॆ शूल दग्रद कद्दकळ्ळन तलॆयवॊलु बळि-
कॊद्दु नडॆदुदु मुंडकवि दौकुव कपिव्रजव
अद्दलिसिदुदु तलॆ रघूत्तम निद्द ठावनु हेळॆनुत कपि
दॊद्दॆ गर नॆरॆयट्टि कॊलु टिट्टिणिसि तिदिरिनलि ॥ 60 ॥
कालु गॊलॆयलि कॊंदु दर्बुद वॆळनॆळर्बुदव तुळिदुदु
माल गरुळुप्परिसि रुधिरद नदिगळव तरिसॆ

तलवार खींच ली। ५७ कुम्भकर्ण के सिर के टकराने से देवताओं की नगरी फट गयी। पार्वती डर के मारे काँपती शिवजी से लिपट गयी; ब्रह्मादि देवता तितर-बितर हो जिधर-तिधर जैसे के तैसे नौ दो ग्यारह हो गये। सूर्य प्रतिरोध करते हारकर समुद्र के किनारे चला गया। अपने साथ युद्ध करने की ताकत रखनेवालों को न पाकर, वीरों के अभाव को देख वह सिर आकाश से उतरने लगा। ५८ "राम, हट जाओ उस तरफ। अगर अपने हाथ का आयुध फेंक दोगे तभी तो यह सिर युद्ध करनेवाले के सिर को सही सलामत छोड़ देगा; अन्यथा नहीं।" इस तरह विभीषण ने कहा। लेकिन युद्धभयंकर, श्रेष्ठ वीर तिलक धनुर्विद्या-प्रयोग में अत्यंत उत्साही राम ने लगातार बाण-वर्षा कर उस सिर को वहीं का वहीं बाँध दिया। ५९ सूली पर चढ़ाए गये चोर के सिर की तरह बाणों के सिरे पर कुम्भकर्ण का सिर दिखायी दिया। कटे सिर का वह धड़ धक्का पाए सदृश आगे बढ़ता हुआ घिरकर चढ़ आनेवाले कपिसमूह को धमकाता हुआ 'रघूत्तम कहाँ है' इस तरह पूछता हुआ कपियों के समूह का पीछा करते विजृंभित (शोभायमान) हुआ। ६० कुंभकर्ण के धड़ के नीचे दबकर सात अर्बुद कपि मारे गये। उस धड़ ने सात अर्बुद कपियों

मेलें मेला खळन कडिगळ काळगवु कडुहाय्तु हूडिद
कोलिनलि कडिदिळुहिदनु जानु जंघेगळ ॥ 61 ॥
शरधि मथनदि मंदराचल धरॆगॆ बीळ्वंददलि बिद्दुदु
बिरियॆ नॆल बिडु रकुत धारॆय सूसुतल्ललिल
सुर विरोधिय मुंडकॊंदुदु हॊरळि कपिगळ हॊरळियनु बल
वरद हूरण दंतॆ यजिगिजियादुद गलदलि ॥ 62 ॥
नॆगॆनॆगॆदु तॊडॆ जानु जंघेगळगलदलि बॆन्नट्टि शाखा
मृगगणव कॊलुतिरलु बळिक नरेंद्र बॆरगागि
मॊगव नोडिदना पुलस्त्यन मगन पुत्रानुजन तम्मनु
मुगिद कैयलि बिन्नहव माडिदनु रघुपतिगॆ ॥ 63 ॥
देव नम्मी कुंभकर्णगा विरंचि महासुषुप्तिय
नीवकालदलित्तनी खळ बेडलनुपमद
जीवरत्नव नदर दॆसॆयिं सावु समनिस दिवगॆ केळॆलॆ
देव कळुहु खळोत्तमन मस्तकद मणिगद ॥ 64 ॥

की आँतड़ियाँ बाहर निकालते उनको रौंद डाला, जिससे रक्त की नदियाँ बह निकलीं। उस राक्षस के कटे देह के हिस्सों का युद्ध वेगवान होने लगा। तब राम ने बाण चलाकर राक्षस के कबंध (धड़) से जंघाएँ, टखने आदि काट-काटकर गिरा दिये। ६१ समुद्र-मंथन के समय मंदार पर्वत धरती पर जैसे गिरा था, उसी प्रकार जिधर-तिधर रक्त की धारा गिराते कुंभकर्ण की देह धरती पर इस प्रकार गिरी कि वह (धरती) फट जाय। राक्षस का वह धड़ धरती पर जब लुढ़क रहा था तो कपि-समूह उसके नीचे दबकर मर गया। पीस डाले गये पूरण की तरह कई बन्दर सारी युद्धभूमि में बुकनी हुए पड़े थे। ६२ राक्षस की जंघाएँ, घुटने, टखने आदि उछल-उछलकर सारी युद्धस्थली में कपियों का पीछा कर हत्या करने लगे। राम दंग रहकर (पुलस्त्य के पुत्र विश्रवसु के पुत्र रावण के भाई) विभीषण का मुँह देखने लगे। विभीषण ने हाथ जोड़कर रघुपति से निवेदन किया। ६३ "भगवन्! ब्रह्माजी ने हमारे इस कुंभकर्ण को महान गाढ़ी नींद का वरदान दिया तभी इसकी प्रार्थना सुनकर अनुपम जीव-रत्न भी इसे प्रदान किया। इसीलिए मृत्यु इसे छू नहीं सकती। राक्षसश्रेष्ठ (कुंभकर्ण) के माथे पर जो मणि है— उस पर बाण चलाइये।" —इस प्रकार विभीषण ने निवेदन किया। ६४ "उसके

अर्दे शिरो मध्यदलि विगडिसिदरें विगडिसुवदु वैरिय
हृदय गतदसु सुसर संगर बळिक निमर्गेनलु
तुदिवेरळ तोमरद नारिय लोंदेस लभ्रद बाण सारद
तुदिय रक्कस दलेय रतुनवनुगिदु दाक्षणकें ॥ 65 ॥
सरळोंदेद तीव्रतगे बिद्दुदु सुरुचिरद मणिमुकुट सिगण
दरसु भूमियलिळे रसातळ काळे रक्कसन
शिर कडेदुदा कोलुव कडिगळ हरहु निंदुदु कोंडुबंदुदु
बरुत बाण तदीय रत्नवनरस निद्देडेगे ॥ 66 ॥
अरस बळिका रतुनवनु निज शरणनुरु शोकाग्नियनु परि-
हरिसि कोट्टनु कुस्तरिसि करुणामृतव सुरिदु
सुरिदवाक्षण सुरर जव्वन तरुणियर कैयिद सेसेग
ळरसनंग दोळोगुव परिमळदलर होनलिनलि ॥ 67 ॥
हिंगिदुदु भयवर्धवमररि गिगिदुदु संतोष रसदु-
त्तुंगबल लंकाधिनाथंगिन सुतादिगळ
अंगलते कुडिगोंडु दपरदि गंगनेय सारिदनु रवि रघु
पुंगवनु नेनेदनु निजानुज नाहवद हदन ॥ 68 ॥

माथे का मध्य भाग चीर डाला जाय तो शत्रु कुम्भकर्ण के हृदय-मध्य स्थित प्राणपक्षी उड़ जाय। तदनंतर युद्ध आसान होगा।" इस तरह विभीषण ने निवेदन किया। तब राम ने तर्जनी से धनुष की प्रत्यंचा पर तोमर का संधान कर खींचकर जो छोड़ दिया तो उसने आकाश के मध्य बाणों के मचान पर विराजमान कुम्भकर्णासुर के सिर के रत्न को उखाड़ लिया। ६५ बाण-प्रहार की तीव्रता के कारण, जगत का मुकुट-सदृश सिंहल की सुन्दर राजभूमि में कुम्भकर्ण का सिर जा गिरा। जोर से उसके गिरने के कारण धरती पाताल की ओर धंस गयी। तब कुम्भकर्ण के शरीर के कटे अंगों से मच रहा हत्याकांड थम गया। लौटता हुआ, राम का चलाया हुआ बाण कुम्भकर्ण के माथे के रत्न को राम के पास ले आया। ६६ तब राम ने अपने प्रियभक्त विभीषण का दुःख दूर कर करुणामृत की वर्षा करते हुए वह रत्न उसे दे दिया। तभी राम पर सुगंध भरे फूलों की वर्षा हुई तथा देवता-युवतियों ने अक्षताएँ फेंकी (छिड़कायीं)। ६७ देवताओं का आधा भय कम हुआ। उन्नत बलशाली लंकेश्वर का संतोष रस का प्रवाह सूख गया। सुग्रीवादि हर्ष से रोमांचित हुए। सूर्य पश्चिम दिशा रूपी स्त्री के पास चला गया। तत्पश्चात् रघुपति राम ने अपने भाई से किए जा रहे युद्ध के प्रति ध्यान दिया कि

धुरवदत्याश्चर्य हनुमन करविघातिय लुर्मिळेशन
शरविघातिय लॆरडनूरक्षोहिणी सेनॆ
पुरव कट्टिट्टु बेरॆ संयम पुरद मुंभागदलि जयदु
ब्बरद भटरैतंदरवनीनाथ निद्दॆडॆगॆ ॥ 69 ॥
तिरुगिदनु बळिकमल तॊरवॆय पुरवराधीश्वरनु जयदु
ब्बरद हरुषद लनुज सुग्रीवादिगळु सहित
सुरुचिरद शिबिरांतरकॆ शंकर सरोज भवामरेंद्रर
नॆरॆवि हरॆदुदु हॊगळुतिनकुल सार्वभौमकन ॥ 70 ॥

इप्पत्तॊंबत्तनॆय संधि

सुचनॆ— वीर देवांतक नरांतक घोर त्रिशिर महोदरासुर वीर युद्धोन्मत्तरु कॊळिसिदरु संगरव ।

तिरुगितीबल वित्तलत्तलु सरिदरळि युळिदसुर रिक्कितु
पुरकॆ मुत्तिगॆ मुसुकि कॊंडुदु निशि महीतळव
इरिसि बंदिरॆ निर्जरस्मर हरणरुद्रननधिक सत्वो
त्करसमुद्रननॆंदु खळ तुंबिदनु कंबनिय ॥ 1 ॥

उसका फलितांश क्या है ? ६८ वह युद्ध अत्यन्त आश्चर्यकारक था। हनुमान के हाथों की मार से (वारों से) तथा लक्ष्मण के छोड़े गये बाणों के प्रहारों से राक्षसों की दो सौ अक्षौहिणी सेना यमदेवता की नगरी पहुँचकर (वहाँ स्थानाभाव के कारण) सम्मुख नया नगर का निर्माण कर निवास करने लगी। अद्भुत विजयश्रीसंपन्न वीर (लक्ष्मणादि) राम के पास आये। ६९ तत्पश्चात् अपने भाई लक्ष्मण तथा सुग्रीवादियों के साथ अत्यधिक विजयश्री प्राप्त करने के हर्षाधिक्य में 'तॊरवॆ' पुर के अधिपति युद्ध-भूमि से अपने शिबिर की ओर लौट पड़े। शिव, ब्रह्मा, देवेन्द्रादि देवताओं ने सूर्यवंशीय चक्रवर्ति (श्रीराम) की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए प्रस्थान किया। ७०

उन्तीसवीं संधि

सूचना— वीर देवांतक, नरांतक, उग्रत्रिशिर, महोदर आदि युद्ध-मद-मत्त वीर (इस बार) युद्ध के लिए सन्नद्ध हुए।

इधर वानर-सेना शिबिर की ओर लौट पड़ी। उधर बचे-खुचे राक्षस अपने शिबिर की ओर चले गये। अँधेरे ने लंकानगरी को घेरकर,

बीळुदोळायतोंदु हरिदुदु तोळु मत्तोंदुळिदुदेम्मु
ब्बाळु तनविदकट तनगेकाकि तनवाय्तु
केळदोब्बन नूकिदेनु रणकेळिगोब्बन चाचिदेनु सुर
राळि गोंबतार्य्ते बदुकेंदसुर नळवळिद ॥ 2 ॥
तंदननुजन शोकदलि जलबिंदुगळ नक्षियलि मरुगिद
नंदिनिरुळलि करुळुगळ तोळलिकेय तापदलि
कुंदिते कुडिदीप गर्वद मंदवादुदे मददहंकृति
येंदु हम्मैसिदनु मूर्छेयला दशग्रीव ॥ 3 ॥
होरळिदनु सहजात शोक ज्वरद जाड्यद जिनुगिनलि रघु
वरन नेनहिन घन समग्र स्मरन विकळदलि
तरुण केळा राक्षसेंद्र गिरुळु शतयुगवादुदा दिन
तरणि तोरद मुन्न नडेतंदित्त नोलगव ॥ 4 ॥
गेलुवनो गेलदिहनो रक्कसगलहवनु निजपौत्र निंदिन
कोळुगुळदोळेंदमर चक्रेश्वरनु तवकदलि

सारे भूमंडल को आवृत कर लिया। "देवता रूपी मन्मथ को जलाने में समर्थ रुद्रस्वरूपी अत्यत पराक्रमशाली को, युद्ध में बलि चढ़ाकर आ गये हो न ?" इस प्रकार उद्‌गार निकालते रावण की आँखें डबडबा आयीं (अश्रुपूर्ण हुईं)। १ "मेरा एक हाथ तो निस्सार हुआ; दूसरा तो कटकर गिर गया। मेरा अहंकार केवल रह गया। हाय ! मैं अकेला हो गया। (उसका) उपदेश न मानकर एक भाई (विभीषण) को घर से निकाल दिया। दूसरे भाई को युद्ध रंग में लगाया। हाय ! अब देवता भी मेरा अपमान करेंगे न ! धिक्कार है ऐसी जिंदगी को" —इस तरह सोचते रावण व्याकुल हुआ। २ भाई की मृत्यु पर अत्यंत दुःखी हो रावण ने आँसू बहाए। रात भर छटपटाते व्यथा में ही वह रात (किसी प्रकार) बितायी। 'घमंड का दीपक क्या कांतिहीन हुआ ? मस्ती भरा अहंकार क्या धीमा पड़ा ?' इस तरह सोचते, कलपते रावण मूर्च्छित हो गया। ३ भाई की मृत्यु-शोक से ज्वर-पीड़ित-सा हो बड़बड़ाते, राम की आलोचना रूपी मन्मथ से पीड़ित व्यथित हो रावण ने करवटें बदलते सारी रात बितायी। हे युवा कुश, सुनो। उस राक्षसेंद्र को वह रात सौ युगों-सदृश (लम्बी) लगी। सूर्योदय के पूर्व ही उठकर उसने सभा संचालित की। ४ "अपना पोता अंगद आज के दिन होनेवाले राक्षसों के साथ के युद्ध में जीतेगा कि नहीं" —यह देखने की आतुरता में देवेन्द्र तड़के ही उठकर (जागकर) पूर्वपर्वत की ओर

बॆळगु जावद लॆद्दु पूर्वाचलकॆ बरॆ मुंगुडियॊळॆत्तिद
तळित दीपप्रभॆ यॆनलु तलॆदोरितिन बिंब ॥ 5 ॥
नॆरॆदु दोलग दॊळगॆ नाना परिय रक्कसवीरभटरु
प्परद खंडॆय दरुणमणि क्रोटीर भारगळ
हरन गणिसद मृत्युगित्युव सरकु माडद मायॆयतिशय
दुरु भयंकर वीर रौद्राद्भुत विलासदुलि ॥ 6 ॥
गॆलवु लघुतरवाय्तु हगॆयग्गळिकॆ गुरुतरवाय्तु नमगति
बलरु मडिदरु नम्मॊळगॆ धूम्राक्ष मॊदलाद
उळुकलिन भटरुळिदवरु हगॆहळिसि तॆम्मलि प्रडिकॆ तळसि
निलुकुववरिल्लॆनुत रक्कसराय चिंतिसिद ॥ 7 ॥
चिंतॆयेकॆलॆ जीयपोदवरंतिरलि पॊस रणरसदि नि-
म्मंतरंगद शोक वह्निनय नंदिसुवॆ वॆनुत
अंत रहित पराक्रमद देवांतक त्रिशिर प्रसिद्ध न-
रांतक महोदरनु युद्धोन्मत्तरुलुकिदरु ॥ 8 ॥
कळुहि नोडॆलॆ जीय बरियब्बळिकॆ यवरावल्ल हिंदण
कॊळगुळुक्किदु कोटिमडि गुणवॆनिसि तोरुवॆवु

जब आया तो सामने धरी दीप-कांति की तरह (मानों मार्ग-रोशनी डाल कोई मार्ग दिखा रहा हो —इस भाँति) सूर्यबिंब उदित हुआ। ५ तलवार को ऊपर उठाए, रत्नखचित किरीट सिर पर धारे, मृत्यु को भी नगण्य समझनेवाले, अतिशय माया से युक्त, अन्यान्य प्रकार के राक्षस वीर भयानक, वीर, रौद्र, अद्भुत रसों को प्रकाशित करते रावण की सभा में आ जुटे। ६ 'युद्ध में हमारी जीत कुछ हलकी (शंकास्पद) सी लगती है; शत्रु की श्रेष्ठता महत्तर हुई-सी दिखायी देती है। हमारी ओर के अधिकांश बलशाली मानों तमाम हो गये (मर गये), अब हमारे यहाँ धूम्राक्ष जैसे इने-गिने वीर ही बचे हैं। हमारा द्वेष भी (अब) बासी पड़ता जा रहा है। शत्रु पर आक्रमण करनेवाले शक्तिसम्पन्न वीरों का अभाव है!' इस तरह कहते रावण व्याकुलचित्त हुए। ७ "चिंता काहे की प्रभो! युद्ध में जो काम आए उनकी बात —जाने दीजिए। अब हम नूतन रणोत्साह रूपी प्रवाह बहाकर आपके चित्त की चिंता को (वेदना को) बुझा देते हैं" —इस तरह कहते सीमा-विरहित वीरता से युद्धोन्मत्त देवांतक, त्रिशिर, नरांतक महोदर आदियों ने बड़े धैर्य के साथ कहा। ८ "नाथ, हमें युद्ध में भेज दीजिए। हम केवल (निरे) घमंडी नहीं हैं; पूर्व के युद्धों की अपेक्षा हमारा यह युद्ध करोड़ों गुना यशस्वी सिद्ध

बळिक देवर सुप्रतापद बॆळसु दैवाधीनवॆनुतरि
गळरणारंभक्कॆ बेडिदरवरु वीळॆयव ॥ 9 ॥
तरिसि हॊंबट्टललि खळ कर्पूरद विळयवित्तुघन स
गरकॆ कळुहिदनसुरवल्लभना निशाचरर
धुरकॆ बलु सन्नाह सेनॆय नॆरहिदरु निमिषार्धदलिनॆल
बिरियॆ मॊळगुव विविध वाद्यद घोरघोषदलि ॥ 10 ॥
तुरग बंदुदु तळुवदाक्षण निरतिशय निर्मांस चळबळ
चरण कांडद निशित घंटाखुरद खॊप्परद
ऊरुललाटद नीळमॊगदुप्परद तित्तिरि नासिकद नि-
ष्ठुर निनाददलमरवैरि नरांत कासुरगे ॥ 11 ॥
तडि सुखासन सुगति पॊंबावुडे जनारिव लगामु मॊगग
न्नडि ललाट निबंधिय विलण कब्बि कडियणद
मुडिचवरि काल्गॆज्जॆ कनकद सडकु मणिलंबळदहय मिगॆ
गुडियिरिदु मॊगवॆत्ति नर्तिसि तसुर निदिरिनॆलि ॥ 12 ॥

कर देंगे। इतने पर भी कहना तो यही है कि श्रीमान (आप) के पराक्रम की उन्नति दैवाधीन (विधि लेखा के अनुसार) है।" इस तरह कहकर युद्ध प्रारम्भ करने के लिए बीड़ा देने की (बीड़ा उठाने की अनुमति देने की) प्रार्थना की। ९ राक्षसेश्वर रावण ने बीड़ा मँगवाया; सोने की थालमें उसे रख, कर्पूरमिश्रित तांबूल दे उन राक्षसवीरों को युद्ध के लिए भेजा। विविध प्रकार के युद्धवाद्य इतने जोर-शोर से बज रहे थे कि धरती फट जाय। तभी बड़े संभ्रम के साथ क्षणार्ध में युद्ध की भारी तैयारी के साथ उन्होंने सेना को जुटाया। १० उसी क्षण, बिना देर लगाए कठोर रीति से हिनहिनाते हुए नरांतकासुर का घोड़ा उपस्थित हुआ। मांस भरे, मस्ती से बढ़े, उस घोड़े के बड़े चुस्त पैर थे; घंटा-सदृश पैने खुरपुटों से युक्त उसके घुटने थे; चौड़ा माथा, लम्बी ग्रीवा, ऊपर उठे प्रफुल्ल नथुने उसके थे। ११ घोड़े की पीठ पर जीन कसकर, सुखासन सँजोकर, उस पर सुनहरे रंग का आवरण डाला गया था। फिर लगाम का पट्टा कसकर उसके माथे पर आइना बाँधकर लोहे का लगाम मुँह में दे कसा गया था। सिर पर (उसके) चँवरी बाँधे, पैरों में घुँघरू सजाये बाँधे थे। सुनहरे फुँदने तथा गले में रत्न-हारों से उस घोड़े को सजाया गया था। घोड़ा खुशी के मारे नरान्तक के सम्मुख नर्तन करने लगा। १२ जूड़े में मोतियों की लड़ लपेटकर, मणि-खचित वज्रकवच

हिणिल मुत्तिन जूळॆयद मणिगणद वज्रांगिगॆय ठौळिय
मणिकटिय सरपळिय सरमोच्चॆयद सुत्तणिय
पणॆय कस्तुरि तिलक दसियुब्बणद सॆल्लॆह बल्लॆयदबलु
गणॆय बिरुदिन भटनरांतकनेरिदनु हयव ॥ 13 ॥
अरिगडग कडियणद कब्बिय घुरुघुरु स्वनघणघण ध्वनि
गुरुवॆनिसिदुदु गाढघनगर्जनॆय गौरवकॆ
खुरद लवनिय नणॆयलहिपन शिरकॆ वेदनॆ याय्तु नभकु
प्परिस लळुकिद वश्ववा हरिदश्व मंडलव ॥ 14 ॥
इळिदुदा हयवा त्रिकुटा चलद दुर्गवना हयद बॆं
बळिय बॆरसिद वखिळदेशद निखिळ करवळिय
हलवु वर्णद हलवु जातिय हलवु समराभ्यास शिक्षा
विलसिताश्वनिकाय निरुपम राव्तरॊग्गिनलि ॥ 15 ॥
मीनचिप्पिन लोहबद्धद जीनगॆलसद मृगनखद परि
धानकद पारियद पच्चॆय पळि सुवर्णगळ
स्थानकद कार्पास कवचद कैनॆगहिनुब्बणद चूरित
मान कक्कस दसुर राव्तरु बळसिदरु खळन ॥ 16 ॥

पहन, सिर पर शिरस्त्राण बाँधे, मणिबंध पर जंजीरें बाँधे पैर में पाद-त्राण बाँधकर ललाट पर कस्तूरी तिलक धारण किए, तलवार, भाला, प्रास, बर्छी, धनुर्बाण आदि आयुध धारे नरांतक घोड़े पर आरूढ़ हुआ। १३ घोड़े के मुँह में बाँधे लोहे के कड़े तथा उसके मुँह में दिये लोहे की लगाम की कड़ियों को जब वह (घोड़ा) चबा रहा था तो जो 'घुर्-घुर्, घन्-घन्' की ध्वनि जो होती वह बादलों की गड़गड़ाहट को मात कर देती। जब उसने खुरपुटों से धरती को ठोंका तो आदिशेष का माथा ठनका। जब वह आकाश की ओर उछला तो सूर्यमंडल के घोड़े डर गये। १४ नरांतकासुर का घोड़ा त्रिकूटाचल के दुर्ग से उतरा। समस्त देशों के, सारे समुद्र किनारों के, कई रंगों के, कई नस्लों के, अनेकानेक रीतियों के युद्ध शिक्षा-प्राप्त घोड़ों का समूह घुड़सवारों के समूह-सहित इस (नरांतकासुर के) घोड़े का अनुसरण करने लगे। १५ मछली के छिलके मिलाकर, लोहे से बाँधे, चमड़े के काम किए हुए, (चमड़े से मढ़े), मृग के नाखूनों को जोड़ अलंकृत किए गये आवरण से आवृत तथा परेवा रंग के, मरकत के रंग के तथा सुनहरे रंग के रेशम के कपड़े धारण किए हुए, स्वदेशी कपास के कवच को पहन, अर्गला, धूरा तथा तमान नामक आयुध को धारे —इस प्रकार कई रीतियों से सजे क्रूर राक्षस घुड़सवारों ने नरांतक को घेर

बाळ झळपिन बॆळगु दिनकर नालिगळ कदुकिरियॆ रावुत
रोळि सहितिळिदनु त्रिकूट महामहीधरव
मेलॆबंदुदु सुरपतिय गुंडाल दुन्नत शौर्यवर्गद
नॆळिसुव मददंति वीर महोदरा सुरगॆ ॥ 17 ॥
अररॆ दिग्गजनिकरवी मदकरिगॆ जनिसिदवो गजासुर
मरळि रुहिसिदनो चतुर्मुखनंजना चलव
करुगोळिसि कडदसु गोळिसि कर्बुरगॆ कॊट्टनोयॆंबवोलु ह-
न्नॆरडु योजनदिभ विराजिसितसुर निदिरिनलि ॥ 18 ॥
होरजॆ होम्मिळि निगळ निडियग्गरणॆ जोत्तगॆ जानु वंकणॆ
तिरिचॆ तोडरुर घंटॆगळ बद्धरद ऱंचॆगळ
तरतरद मणिखचित चित्रोत्करद हेमद पक्कघंटॆय
करद होगरंबद विलासदिनॆसॆदुदा दंति ॥ 19 ॥
कालुगाहिन कुदुरॆगळ कडॆगोल सिलुकिन रक्कसर पडि
ताळ विभसंकुलद डौडॆय मोरॆव जेगटॆय
तूळिसुव बॆंगोडतिगळ सिट्टॆळिसुवनिशितांकुशद विक-
राळ मदकरि मॆरॆवुतिर्दुदु रणद सोबगिनलि ॥ 20 ॥

लिया। १६ घुड़सवारों के तलवार के घुमाने से प्रकट प्रकाश से सूरज की आँखों में चुभन पैदा हुई (वह उस प्रकाश को सह न सके)। ऐसे घुड़सवारों के समूह को साथ लिये नरांतक त्रिकूट पर्वत से उतर आया। उसके पीछे-पीछे देवेन्द्र के हाथी ऐरावत को मात करने में समर्थ, भारी शक्तिशाली हाथी वीर महोदरासुर के सम्मुख जा पहुँचा। १७ "बाप रे! दिग्गज मानों इस मदोन्मत्त हाथी से पैदा हुए हों, या गजासुर ही फिर जन्म धारण कर आया हो, या ब्रह्माजी अंजना पर्वत को साँचे में ढालकर, मथकर, प्राण भरकर राक्षस को प्रदान किया हो—इस रीति से वह बारह योजन विस्तृत देहधारी हाथी महोदरासुर के सम्मुख विराजमान हुआ। (आकर उपस्थित हुआ)। १८ मोटे रस्से, धार लगाकर बनाए चमड़े के रस्से, पैरों में जड़ी सांकल, लम्बे रस्से, कंधे पर बंधा चमड़े का रस्सा, घुटनों पर रकाब, बटाव, आभूषण, छाती पर घंटिकाएँ, पार्श्व के पंख, हीरों से जड़े विविध प्रकार के चित्र, स्वर्ण-निर्मित पार्श्व की घंटिकाएँ, मुखौटा— आदियों से सुसज्जित (वह) हाथी शोभायमान रहा। (युद्धस्थली के मध्य विराज रहा)। १९ हाथी के पीछे सुरक्षा की दृष्टि से घोड़े आ रहे थे।

तरणि बिंबवनणॆव मददुब्बरद कदलिकॆगळ विडायिय
करद नॆगहिन खंडॆयद तॆत्तिसिद सूनिगॆय
चरणदंडद कत्तिगळ परिपरिय कॊलॆगळ कैदुगळ नि-
ब्बरद निरुपम दंति बॊद्रितु भयवनमररिगॆ ॥ 21 ॥
आसुरद रणगलि महोदर ना सुदर्शन नॆंब दंतिय
नासुरद जयजय निनादद कुसुम वर्षदलि
प्रास पट्टिस परिघ बाणश रासनादि समस्तशास्त्र वि-
लास विभवदलेऱिदनु रणवाद्य रभसदलि ॥ 22 ॥
इळिदना दुर्गवनु बळियलि बळसिदवु बलुदंति घटॆकळ-
वळिसि कादिदरप्रति प्रमुखावनी धररु
हॊळकदुत्तर पॊगळ्वडिभ संकुलद संख्यॆय नमम कनकद
गुळद गुविंन दंतिगळु दळ दुळिसिदवु रणकॆ ॥ 23 ॥
एन हॆळुवॆनमम वीरमहा निशाटन गमनकुपगम
नानु रागिगळैदिदरु शतकोटि संख्यॆयलि

राक्षसों ने मथनियाँ हाथ में ली थीं। बड़े उत्साह के साथ, हाथियों का झुण्ड साथ ही साथ चल रहा था। डुगडुगियाँ तथा घंटे जोरशोर के साथ बज रहे थे। महावत हाथियों को हथौड़े से पीट-पीटकर भगा रहे थे। पैंना अंकुश चलाकर (चुभोकर) हाथियों को चला रहे थे। इस प्रकार वह भयानक हाथी युद्ध के डील-डौल से राजित था (विराजमान था)। २० वह हाथी इस प्रकार मदोन्मत्त होकर विचर रहा था कि मानों सूर्यबिम्ब को छूना चाहता हो, कटार छूरे बाँधे सूँड़ को (आकाश की ओर) उठाते, कटार बाँधे पैरों से धरती पर धड्-धड् करते ऊपर डग भरते, हत्या के लिए अनुकूल हो इस रीति से विविध आयुध से युक्त उस भारी जबर्दस्त हाथी ने देवताओं को भी भयभीत किया। २१ ज़ोर-जोर के जय-जयकार के साथ जब पुष्पवृद्धि हो रही थी तब भयंकर युद्धवीर महोदर प्रास, पट्टिश, परिघ, धनुष बाण वग़ैरः समस्त प्रकार के शस्त्रास्त्रों के साथ रणवाद्यों के घनघोर गर्जना के मध्य उस सुदर्शन नामक हाथी पर सवार हुआ। २२ महोदर दुर्ग से नीचे उतर आया। उसके साथ-साथ बड़े-बड़े हाथियों की सेना उसे घेरकर चली। असमान वीर प्रमुख नायकों ने हाथी पर सवार होकर युद्ध किया। हाथियों के समूह को गिनने में शब्द कम पड़ते है (वर्णनातीत है!) बाप रे! सोने के चादर उढ़ाए हाथी जो बड़े भयानक थे, युद्ध की जीत लूट लेने आगे बढ़े। २३ बाप रे! क्या कहूँ, किन शब्दों में कहूँ? वह वीर राक्षस युद्ध के लिए

हानि कपिबल कागदिरदेंबी नुडिय सडगर नभोवै
मानिकर संदणिय लादुदु काणुती बलव ॥ 24 ॥
अरुणमय मणिखचित चामीकरद चक्रयुगंधरद कू-
बरद कुणिवश्वगळ कनकध्वज पताकेगळ
शरशरासन मुख्य शस्त्रोत्करद कवचद सीसकद सं-
गर वरूथव नेरिदनु देवांतकनु नगुत ॥ 25 ॥
इळिदुदातन तेरु त्रिशिरन चळबळद होंदेरु रथिका
वळिगळोग्गिनलावहक्के शतकोटि संख्येयलि
खळरोळतिबल कुंभकर्णन केळगे मिगिलेंबग्गळद खळ
तिलक युद्धोन्मत्तननुवादनु महाहवक्के ॥ 26 ॥
तिगुरिदनु कायवनु कुंकुमदगरु कस्तुरि सादिनलि मघ-
मघिप चंदन गंधदलि लेपिसिद नवयवव
बिगिद कासेय तलेविणिल मोने देगेद हूमोग्गेगळ होंदिन
होगर होस देसियलि युद्धोन्मत्त ननुवाद ॥ 27 ॥

जब रवाना हुआ तो उसके साथ स्वयंप्रेरणा से, प्रीति से जानेवालों की संख्या सौ करोड़ वीरों की थी। इस सेना को देखकर आकाश में उपस्थित (विमान में) देवताओं ने आपस में बातचीत की कि कपि-सेना की नुकसान हुए बिना न रहेगी'। २४ लाल रत्नों मे जड़े सुनहरे (स्वर्ण-निर्मित) रथ के चक्रों से युक्त, अनुकर्ष और कूबर* से सुन्दरतासंपन्न, नाचते घोड़ों से तथा स्वर्ण-ध्वजाओं से सुशोभित रथ पर प्रमुख शस्त्रास्त्रों को साथ लिये कवच शिरस्त्राण धारण कर, देवांतक सवार हुआ। २५ देवांतक का रथ तथा त्रिशिर का वेगवान् स्वर्णरथ दुर्ग से उतरकर नीचे (मैदान में) आए। उनके साथ सौ करोड़ की संख्या में रथिक इकट्ठे हो, युद्ध के लिए आए। राक्षसों में महाबलशाली कुंभकर्ण की अपेक्षा अधिक बलशाली राक्षसश्रेष्ठ युद्धोन्मत्त जबरदस्त युद्ध के लिए तैयार हुआ। २६ युद्धोन्मत्त ने अपने शरीर पर कुंकुम, अगरु, कस्तूरी आदि सुगंध द्रव्य मल लिये। अत्यंत सुगंधयुक्त श्रीगंध को सारे अवयवों पर लेपित किया। कछौटा बाँधकर सिर के बालों को ऊपर की ओर किये कसकर जूड़ा बाँध फूलों की कलियों की माला उस पर लपेट ली। इस प्रकार विनूतन शोभासंपन्न युद्धोन्मत्त युद्ध के लिए सिद्ध

* रथ के धुरे पर कूबर के आधार रूप से स्थापित काष्ठ विशेष को 'अनुकर्ष' कहते है। 'कूबर' उस काष्ठ को कहते हैं जिस पर जुआ रखा जाता है। गाड़ी के हरसों को भी प्राचीन काल में 'कूबर' कहा जाता था।

कडॆय हीरावळिय कांतिय निडुसरद सरपळिय किरुवं-
कुडिय घोर वराह दाढॆय कटिनिबंधकद
तॊडर तोळिन मणियमुत्तिन कडुकुगळ रण चोर गतिया
कडुहिनतिबल निळिदना दुर्गवनु शीघ्रदलि ॥ 28 ॥
नडॆदुदवनपरांगदलि कॆंपिडिद मीसॆय रौद्रमुख दिदि
रडर्द रोमद बिट्टकंगळ बिगिद पुर्बुगळ
कुडिवरिव दाडॆगळ हॊस हॊगरिडुव मैयुब्बुगळ रक्कस
गडणवैदितु संगरकॆ शतकोटि संख्यॆयलि ॥ 29 ॥
कणन गॆलिदुदु नाल्कुबल बडगण दिशा भागदलि भोरॆं
दर्णदु दंबर दुदिय नानावाद्य निर्घोष
कुणिदवश्व निकाय बीदिय कॆंणकिदवु मददानॆ रथवि-
ट्टणिसिदवु कालाळु कैगॆदुदु महाहवकॆ ॥ 30 ॥
तुरग दळदलि निंदनग्गद नरकुलांतक निभघाटाळिय
नॆरवियलि मैदोरिदनु वळिका महोदरनु
सुरविरोधि त्रिशिर नॊप्पिद नुरु वरूथानीकदलि पद-
चरर पडिमुखदॊळगॆ युद्धोन्मत्त रंजिसिद ॥ 31 ॥

(तैयार) हुआ। २७ कड़ा तथा हीरों से शोभायमान लम्बी मालाएँ पहने, साँकल तथा टेढ़ी कटार हाथ में लिये सूअर के दाढ़ों को उसने कमर में बाँध लिया। रत्न जड़े बाजूबन्द, मोती जड़े कान के आभूषण पहन लिये। इस प्रकार सुशोभित हो, युद्ध में चालबाजी दिखाने में अत्यन्त बलशाली युद्धोन्मत्त अत्यन्त वेग से (शीघ्र गति से) दुर्ग से उतरकर आया। २८ लाल-लाल मूँछोंवाला, रुद्रभयंकर मुखाकृतिवाले, उठे (खड़े) ऊर्ध्वमुखी रोमवाले, खुली आँखोंवाले, चढ़ी भौंहोंवाले, चमकते वक्र दाढ़ों से युक्त, विनूतन कांति से उभरे देहसंपन्न सौ करोड़ संख्यक राक्षस-समूह युद्धोन्मत्त के साथ-साथ युद्ध के लिए आया। २९ युद्ध-क्षेत्र की उत्तर दिशा में यह चारों सेनाएँ खड़ी रहीं। विविध प्रकार के युद्ध-वाद्यों की तरंगें आकाश के छोर तक पहुँच गयीं। घोड़े नाच उठे; हिनहिनाए। मदोन्मत्त हाथी जिस किसी पर टूटकर चिढ़ाने लगे। रथ व्यूहरचना कर खड़े रहे। पैदल सेना युद्ध के लिए तैयार हो खड़ी रही। ३० घोड़ों के दलबल के साथ नरकुलांतक खड़ा रहा। हाथियों की सेना से लैस होकर महोदर तैयार हुआ। त्रिशिरासुर रथों के समूह के साथ विराजमान हुआ। पैदल सेना के सम्मुख युद्धोन्मत्त शोभायमान हुआ। (इस प्रकार वे युद्ध के लिए उद्यत हुए)। ३१ कुमार लव,

अॅलॅ कुमारक केळु कदनद कलिग ळॊडि्डन कैदुगळ कुडि
वॆळगु कदुकितु कंगळनु कपिराज सैनिकद
कळकळिसि कडुहेऱि ताजिगॆ कलिललामरु मुंदॆकैगळ
कलुमरन कदनदलि कॊणकिदररि पताकिनिय ॥ 32 ॥
आतुदा बलबीबलकॆ हगॆवातिनंकद बवरदलि बलु
खातियलि कैदॊळसु काऱरु हॊक्करुरवणिसि
एतऱवु रणहिंदणवु हॊस रीतियिदु पॊगळिकॆगॆ तॊरवॆय
नाथ श्रीमूरुतियॆ ताने बल्लनिदनॆंद ॥ 33 ॥

मूवत्तनॆय संधि

सूचनॆ— वीररिपु जज्जार नाहव धीर वालिकुमार नाजियॊळारु भटॆयलि गॊलिदनगद कलि नरांतकन ।

ऍरडु बलदुब्बरद बलुसंगर सरोषदलुगुळु गिडिगळ
हॊरळियलि नॆलहॊत्ति हॊगॆ दुप्परिसितॆंबंतॆ
चरण निहतोद्धूत धूळी भरवु नडॆदुदु घन समीरन
सरणि सिंधुव दांटि सरसिज भवन पट्टणकॆ ॥ 1 ॥

सुनो ! युद्धवीर राक्षसों के आयुध का प्रकाश वानर-सैनिकों की आँखों को चौंधियाने लगा। युद्धोत्साह से मदमत्त वानर वीरों ने शिलाएँ और पेड़ उठाकर राक्षस-सेना को खूब छेड़ा। ३२ बिरुदावलियाँ बखानते, द्वेष-रोषपूर्ण वातों से एक-दूसरे को छेड़ते दोनों तरफ़ की सेनाओं ने एक-दूसरे का सामना किया। मुष्टि-प्रहारों से लड़नेवाले ज़ोर-शोर से एक-दूसरे से टकराये; जूझ पड़े। पूर्व में हुए युद्ध, इस युद्ध के साथ तुलना करने पर नगण्य लगते हैं। यह विनूतन युद्ध था। वाल्मीकि ने विवरण दिया कि इस युद्ध के वर्णन करने में 'तॊरवॆ' के अधिपति श्री मूर्ति ही एकमात्र समर्थ-शक्ति है। (अन्यों के लिए असंभव है)। ३३

तीसवीं संधि

सूचना— शत्रुशूर, युद्धवीर वालीकुमार अंगद ने युद्ध में, बड़ी द्रुतगति से आक्रमण कर वीर नरांतक को जीत लिया।

दोनों ओर की सेनाओं में हुए बड़े भयानक युद्ध के क्रोधोन्मत्तता के फलस्वरूप छिटकी चिनगारियों का ढेर सारा धरती पर गिर जाने से मानों जो आग-सी लगी, तो धुआँ चारों ओर फ़ैल गया। उसी प्रकार

चळचमत्कृति चटुळ खरपुट दळित धूळिबिंब चुंबित
विलसदभिनव दश्व गॆलिदुदु नॆलन निमिषदलि ॥ 9 ॥
तॊडॆय बिगुहिन लगिदु नर्तिसि तडिगडिगॆ गमकगळगतिगळ
कडुहिनलि नसुकुसिद पच्चळ दुप्परद मुखद
दृढगतिय दृष्टिगळ कोपदि सिडिव किविगळ निट्टुसुर नॊरॆ
गडियणद हयवंजिसितु हरिहय तुरंगमव ॥ 10 ॥
शूरवाहक सुभट समरक्रूरवाहक निपुण रिपुसं-
हार वाहक कुशल चम्मट चपल रेवंत
चारणत्रय चमतुकार निहारनिस्त्रिंशक निबद्ध वि-
शारदाहवमल्ल मज्ञ भपॊंदु दमरगण ॥ 11 ॥
पूतुवेडॆनॆ डंगुवाहळु दातुदोहळु बंधगति पुरु-
हूत दृढगति द्रुहिण शीघ्रगति प्रसिद्धबल
भूतनाथ लयत्रय प्रख्यात नारायण सुपर्वा
राति रावुतु रावुतॆंदुदु वंदिसंदोह ॥ 12 ॥
एऱिदुदु हयवमम गरुडन हारिकॆय हवणिनलि तॆरॆमुरि
देरु वंबुधियंतॆ तुरगद थट्टु बळिसलिसॆ

से शीघ्र गति से चलते समय खुरपुटों से उठी धूल के बिम्ब का स्पर्श करते उस विनूतन घोड़े ने क्षणार्ध में दूरी को पार किया। ९ नरांतक के घोड़े ने अपने पुट्ठों को कसकर रखे, झूलते हुए कदम-कदम पर डीलडौल से पग धरते ताल पर नाचना शुरू किया। पीठ (पृष्ठभाग) को थोड़ा ही झुकाकर मुखड़े को ऊपर उठाकर बड़े ही धैर्य भरी चाल चलते क्रोध भरी दृष्टि चारों ओर डालते कानों को खड़ा किए दीर्घ निःश्वास लेते लगाम लगे मुँह में फेन भरे उस घोड़े ने इन्द्र के घोड़े को हराया.। १० यह देख देवता प्रशंसा करने लगे— 'शूर सवार! युद्धवीर! शत्रु-संहारक घुड़सवार! भाला चलाने में चतुर! सुन्दर रूप! तीनों लोकों के संचार में समर्थ! युद्धकुशल! खड्ग युद्धविशारद! धन्य धन्य!' ११ 'अद्भुत! वाह क्या कहना! कुश्ती के दाँव के पटु! बगल में दबोचने (कुश्ती) में सिद्धहस्त! बंधगति आदि चालबाजी के जादूगर (ज्ञाता)! देवेन्द्र सरीखे गतिमान! समर्थ! ब्रह्माजी के समान शीघ्रगतिसंपन्न! प्रसिद्ध बलशाली! त्रिलोक-प्रलयंकारी भूतनाथ! प्रख्यात नारायण! देवताओं के शत्रु, हे श्रेष्ठ घुड़सवार!' इस प्रकार स्तुति-पाठकों ने राक्षस को भूरि-भूरि प्रशंसा की। १२ नरांतक के घोड़े ने गरुड़-सदृश उड़ान भरी।

एरग्रिदवु पडिमुखदॊळुब्बिद कारुगिडिगळ खंडेयद कै-
दोरग्रिकॆय लगलदलि नॆल कडिखंड मयवागॆ ॥ 13 ॥
बॆरसि हॊय्दरु हरहिनलि हॊडकरिसि मारांतरिबलद मो-
हरवु मुक्कडियाय्तु मुंबिगॆ बिद्द भटनिकर
नॊरॆय नुब्बिसु तेळ्व रणदुब्बरद रकुतद हॊनलु हॊळकितु
हॊरळिदवु हेराळ हॆणदुंडुगळु कपिबलद ॥ 14 ॥
आर नोडिदडरि कृपाणद धारॆ गिक्कडि यादवरु मुरि
दार नोडलु कूडॆ लौडियलुरुळ्व तलॆयवरु
आर नोडिदडमम गदॆगळ धारॆ तागिद तळित मिदुळिन
मारणद भटरल्ल दिल्ला कपिकदंबदलि ॥ 15 ॥
असुररुरु बल्लॆहद तिविगुळ बसुर बादण दुर्चुगुरुळिन
विशिख विहरण दळितगळ दॊर्दंड मंडलद
मुसुकरडि सिंगळिक कोडग वसरगर संदणिय संभ्रम
वॆसॆदुदै लवकेळु कालन संतॆयंददलि ॥ 16 ॥

लहरों के थपेड़े देते उभरते सागर की तरह घोड़ों (घुड़सवारों) का दल उसका अनुसरण करने लगा। शत्रु-सेना के सन्मुख चिनगारियाँ उगलती तलवारों को झलकते हुए युद्धभूमि भर फैलकर अश्वदल जब आ रहा था तो धरती में दरार पड़ गयी। १३ प्रतिरोध करनेवाली शत्रु-सेना को देखते हुए राक्षसों ने चारों ओर से आगे बढ़कर पीटना शुरू किया। सामने की पंक्ति में उपस्थित कपिवीर चकनाचूर हुए। झाग भरे प्रवाहित होते रक्त के धारा-प्रवाह में कपि-सेना के अनगिनत शव के टुकड़े लुढ़कने लगे। १४ जिस किसी को देखो शत्रु की तलवार की वार में आकर दो टुकड़े होनेवाले ही दीख पड़े। फिर जिस किसी को देखो तो पता चलेगा कि लोहे के डंडे से पीटे जाकर सिर गिरे हुए ही पाएँगे। बाप रे! जिस किसी की ओर दृष्टि दौड़ाओ तो पाओगे कि गदा की मार से (वार के कारण) मस्तक फटकर मरे हुए योद्धा सर्वत्र पड़े हैं। कपिसेना में ऐसों के सिवा और कोई नज़र न आता था। १५ सुनो लव, राक्षसों ने भालों-बर्छों से जब खोंचना शुरू किया पेट में छेद होने के (रंध्र पड़ने के) कारण आंतड़ियाँ बाहर निकले हुए तथा बाण की मार से कटे रुंड तथा बाहुओं वाले काले मुखड़े के बन्दर, रीछ, सींगळीक, लाल मुँहवाले बन्दर आदियों का समूह मानों यमदेवता के मेले की तरह सर्वत्र दिखायी पड़ने लगा। १६ पूर्व युग के महान् बलशाली राक्षस इनके सामने किस खेत की मूली हैं?

एतरुब्बटे पूर्वयुगद महातिबल खळरी नरारिय
रीतिगेणेयिडे पडिय काणेनु कदन केळियलि
कौतुकवले निम्म सेना व्रातवनु नडुविक्कि तिरुविड
लातचक्रद चूणियलि हयवा नरांतकन ॥ 17 ॥

आरु लक्षिस बहुदु हूणिसि दारुभटॆगळ भटरकैगळ
भूरिभूधर भूजतति वॆरॆगिट्ट वाजियलि
सारॆ बीळुवु दरिदु मिक्किन वीर रिडुवद्रिगळ विश्ववि-
हार दश्वव्रात मयवागिर्दु दगलदलि ॥ 18 ॥

नीरॊळॆळ दसियंतॆ रक्कसवीरनुग्र कराग्रवंधद
वीरखंडॆय विहरिसितु वानर समुद्रदलि
धारॆ गाणिसदॊलॆद मैयलि धारुणिगॆ कडि बीळ्व कपिभट
रोरणद सालिर्दुदा रणरंगमध्यदलि ॥ 19 ॥

कटककॆडॆयाडुव कृतांतन भटर पथदुरुबुगळलिट्टर
वटिगयॊ रणभूतदॆंजलु कैगॆकवि दॆरॆव
घटद वारियॊ वीर खळनुत्कटद खड्गद तुदियलुदिसिद
तटिनियॊ तानॆनलु करॆदुदु खड्ग शोणितव ॥ 20 ॥

इस नरांतक के साथ तुलना करेंगे तो इसकी बराबरी कौन कर सकता है ? युद्ध तो इनके लिए एक प्रकार का खेल है । अत्यंत आश्चर्यकारक घटना है । नरांतक के घोड़े ने तुम्हारी कपि-सेना के मध्य में घुसकर जो कोई मिले उसे उठाकर वह चक्र के बीच में आ जाय — इस प्रकार फेंक रहा था । १७ वीरों के सौगंध प्रतिज्ञाओं की ओर, गर्जन-तर्जन की तरफ़ कौन ग़ौर कर सकता है ? वानर वीरों से हाथ में धरे भारी-भरकम पेड़-पहाड़ों के इस युद्ध को देखना ही एक आश्चर्यकारक घटना थी । भयानक वीरों से फेंके गये पेड़-पहाड़ों का नज़दीक आकर गिरना भी असाध्य था । क्योंकि नरांतक का वह अश्व हवा से बातें करते हुए युद्ध-भूमि में सर्वत्र दिखायी पड़ रहा था । १८ पानी पर चलाए खड्ग की तरह राक्षस वीर के हाथ का वह वीर खड्ग वानर-समुद्र में निरातंक हो विहार कर रहा था । खड्ग के फल का दृष्टिगोचर होना दुर्लभ था । राक्षस वीर जिस ओर मुड़ पड़ता उस ओर कपि वीरों का, युद्धस्थली में, पंक्ति की पंक्तियों में गिरते जाना दृष्टिगोचर हो रहा था । १९ सेना के मध्य विचरण करते यमदूतों के मार्गों पर ठौर-ठौर पर रखे हुए मानों पौसरे हों, या युद्ध-पिशाचों के जूठे हाथों को धोने रखे हुए घड़े का पानी हो, या वीर नरांतकासुर के (उस) भयानक खड्ग की

रणदि बिद्दनु रंभरुमनसु जुणुगिदुदु जांबवन तनुडॆं-
डणिसितॆरॆनलग्निसुत गजगंधमादनरु
मुणुगिदरु रकुतदलि रविजन कुणिह निंदुदु सुमुख दुर्मुख
रणॆंदु चिम्मिदरट्टियाडिद रनिबरनुचररर ॥ 21 ॥
बिद्दनळ हॊरळिदनु घायकॆ मद्दनरसिदना सुषेणक
नॊंद्दुकॊंडनु शरभ शतबलिगेरु बलुहाय्तु
इद्द मिक्किन वीरवानर रुद्दुरुट्टुतनवार ठाविनॊ
ळिद्दुदॊ नानरियॆ हॊगळुवॆ नेनरणरसव ॥ 22 ॥
आरिवनु शिव शिव विभीषण वीररॊळगग्गळनु रणज-
ज्जारनिवनहनमम जननिय जठरदिंदिवनु
वारुवनु सहितुदिसिदनॊ सम सेरुवॆयलिवसहित पडॆदुदॊ
धारुणिगॆ दिविजेंद्र पशुवॆंदरस बॆसगॊंड ॥ 23 ॥
देवचित्तैसी महाहय देवपशुविगुदिसि सेरितु
रावणंगिदु मॊदल कल्पद लमर वल्लभन
ई विगड हयविवन कलिकॆय मैवळिय वशवाय्तु मगनिव
ना विबुधरिपु रावणंगॆलॆ राय कॆळॆंद ॥ 24 ॥

कोर से निकली रक्त की नदी हो —इस प्रकार (भ्रम में डालते) राक्षस के खड्ग ने रक्त बहाया। २० युद्ध में रंभ गिरा। रुम ने प्राण खो दिये। जाम्बव की देह थरथर काँपी। घायल हुए अग्निकुमार नील, गज, गंधमादन आदि रक्त की धारा में डूबे। सुग्रीव का नाचना, थिरकना समाप्त हो गया। सुमुख, दुर्मुख चुभोये जाकर (घायल हो) दूर जा गिरे। राक्षसों ने अन्य वानर सहायकों का पीछा कर उनकी हत्या की। २१ युद्ध में धरती पर गिरे नल ने चटपटाते हुए औषध पिसवायी। सुषेण वेदना से चटपटाया। शरभ शतबलि काफ़ी घायल हुए। अन्य बचे-खुचे वीर वानरों की वीरता का पता न जाने कहाँ लुप्त हो गयी? इस वीररस का मैं कहाँ तक वर्णन करूँ? इस तरह वाल्मीकि ने वर्णन किया। २२ "शिव शिव! कौन है यह, विभीषण? वीरों में श्रेष्ठ तथा रणधीर है। बाप रे! लगता है कि माँ के गर्भ से पैदा होते समय यह (इस) घोड़े के साथ पैदा हुआ है अथवा देवेन्द्र का घोड़ा उच्चैश्रवस तथा यह दोनों साथ-साथ होते हुए एक साथ धरती पर उतर आए?" —इस प्रकार राम ने विभीषण से पूछा। २३ "सुनिए भगवन्! यह महान अश्व देवेन्द्र के (वाहन) उच्चैश्रवस से (घोड़े के वीर्य से) उत्पन्न प्रथम कल्प में रावण के आधीन हुआ। घुड़सवारी सीखने के

ऎंवमातेनिव नरांतकनॆंव रक्कस निवनले प्रति-
विवविल्ली नॆलॆगॆ सुरनरनाग लोकदलि
नंवुगॆय भटनिवनु युगळद शांवकंगॆलॆ जीयसमरा
डंवरद संभ्रमव चित्तैसॆंद नसुरेंद्र ॥ 25 ॥
ऎंदु नुडिवनितरॊळॆ हयवैतंदुदा नृपमोहरकॆ रघु-
नंदनन सम्मुखकॆ नूकिदनव तुरंगमव
निंदु निव्वगियागि रविजन मंदि बळिका समयदलि सिडि-
लंददलि सीवरिसु तंगदनॆऱगिदनु खळन ॥ 26 ॥
दुटि विद्दुदु शिरद सीसक कूटदमळानर्घ्य रत्नकि
रीटवंवर दिदिळातळकुळुकि बीळ्वंतॆ
दाटिमुट्टुमुष्टियलि मुरुमुष्टियलि रक्कस घोटकद कटवायनधिक
स्फोट दिदॆऱगिदनु बॆऱगिडॆ सकलसुर निकर ॥ 27 ॥
भापु वीरर देवदेव स्थापना चारियन मगन
ल्ला पुरंदर पौत्रनल्ला लेसुलेसॆनुत
आ पुरांतक पॊगळिदनु गिरिजा पुरंध्रिगॆ तोऱिखळनिव
कोपदलि किडिगॆदरॆ जडिदॆत्तिदनु खंडॆयव ॥ 28 ॥

लिए यह अब इसके आधीन हुआ। यह रावणासुर का पुत्र है।" इस प्रकार विभीषण ने कहा। २४ "अधिक क्या कहूँ? नरांतक नामक राक्षस ही यह है। देव, मानव, नागलोकों में कोई भी इसकी बराबरी नहीं कर सकता। बीस आँखोंवाले के (रावण के) यह विश्वासपात्र वीर हैं। इसके युद्ध-कौशल्य के संभ्रम पर गौर कीजिए।" —इस प्रकार विभीषण ने कहा। २५ इस प्रकार विभीषण जब बोल रहा था तब वह घोड़ा राम की सेना के नजदीक आ गया। नरांतक ने रघुनंदन की ओर अपना घोड़ा बढ़ाया। सुग्रीव की सेना (यह देख) अधिक भयभीत हो सन्न रह गयी। उसी समय अंगद गरजते हुए बिजली की तरह नरांतक पर टूट पड़ा। २६ राक्षस के सिर पर के शिरस्त्राण में स्थित (शिरस्त्राण के साथ मिला हुआ) अमूल्य रत्नकिरीट हिलकर धरती पर गिर पड़ा। अंगद ने आगे बढ़कर उस राक्षस के घोड़े के मुखड़े पर भारी शब्द के साथ मूठ से प्रहार किया। यह देख समस्त देवताओं को आश्चर्य हुआ। २७ "धन्य धन्य, हे वीरों के मुकुटमणि! क्षीर-समुद्र के मंथन के समय देवताओं की प्रतिष्ठापना करनेवाले का पुत्र है न तू? देवेन्द्र का प्रपौत्र (पोता) जो ठहरा! ठीक किया; बिलकुल ठीक" —इस तरह कहते शिवजी ने गिरिजा को अंगद का पराक्रम दिखाते उसकी प्रशंसा की।

कडियणव कौडहुव तुरंगव मडद लौकिदु तिरुहि हाय्कुत
होंडेंदनवनीतन नडायुधदलि निहारदलि
सिडिदु बौब्बिबरि दुब्बिकंगळ किडिय कोपद लसुरहय नेल
कडिमगुचलेंद्रगिदनु वालिजनुग्र मुष्टियलि ॥ 29 ॥
तुरगदेरााटिकेय भटरिगें गुरुवला जगदलि नरांतक
नुरुळिदश्ववनुप्परिसि चप्परिसिदार्येनुत
करद बल्लेय दिंदवालिय वरकुमारन तिवियें हलकिन
सरिसदलि मोनेंदोरितुगुळुव रकुत धारेयलि ॥ 30 ॥
मनदमरवेय जोम्मिनलि कपितनुव संतेसुव रणश्रम
दनितरोळें नूकिदनु तुरगव तरणिवंशजन
मोनेंय मोहरकोनेंदु सूसिद वनचररु पडितळिसि तरुबिद
रिनकुलेंद्रन मुंदे मंडोदरिय नंदनन ॥ 31 ॥
कॆरळि बळिकव नस्त्र शस्त्रव सरगोळिसि सव्यावसव्यद
लुरुळु गेंडहिद नूकुवतिबल वीर वानरर
गिरतरुग ळिरितवनु बगेंयदें परिहरिसिदनु हरिहयन प्रति
तुरगवनु निलिसिदनु रघुराय निदिरिनलि ॥ 32 ॥

नरांतक ने क्रोध से तमतमाते हुए खड्ग का वार करने के लिए उसे तानकर ऊपर उठाया । २८ नरांतक ने लगाम को पटक देने की कोशिश करनेवाले घोड़े को एड़ी से दाबकर उसे इस ओर मुड़ाकर युद्ध करते-करते अंगद पर आयुध से प्रहार किया । तब अंगद ने उछलकर सिंह-गर्जना करते हुए, क्रोध-संतप्त आँखों से चिनगारियाँ उगलते नरांतक के घोड़े पर ऐसा प्रबल प्रहार किया कि वह औंधे मुँह गिर जाय । २९ नरांतक तो घुड़सवारी के कला-प्रवीण वीरों के गुरु भाई रहे न ! उसने गिरे हुए घोड़े को उठाते हुए उसकी पीठ थपथपाकर उकसाते हुए 'हा' कहकर चीखते (सिंहनाद करते) हाथ में के भाले से वालीकुमार को खरोंचा । (वह) भाला अंगद के गाल के निचले हिस्से में जो लगा, तो उससे खून टपक पड़ा । ३० बदहवास अंगद होश सँभालते हुए देह को संतुलित संतुष्ट स्थिति में रखते युद्ध की थकावट को दूर कर ही रहा था तो नरांतक ने राम की सेना के अग्र भाग की तरफ़ अपने घोड़े को बढ़ाया । इसके पूर्व जो वानर तितर-बितर हुए थे अब वे जोश-खरोश के साथ राम के सम्मुख उपस्थित हो, नरांतक की चढ़ाई को उन्होंने रोका । ३१ चिढ़े हुए नरांतक ने दायें-बायें विचरण करते हुए अपने ऊपर आक्रमण कर रहे बलशाली वीर वानरों पर शस्त्रास्त्रों का प्रयोग कर उनको धराशायी कर दिया । वानरों से किए

अरळ्व नासापुटद पवनन घुरु घुरुस्वनदविलणद किरु
नीरॆय कव्बिय घणघणत्कारद गढावणॆय
सुरिव बॆमरिन बायलोळॆय परिसरद पच्चळद फेनद
खुरद कुणिहद कुदुरॆ बीऴितु भयवनहितरिगॆ ।। 33 ।।
अॆलॆलॆ रायन पडिमुखदॊळिट्टिळिसितॊ हयबदुकिनासॆय
बळिय बिडिरो स्वामि कार्यकॆ विसुडिरो तनुव
उळिदरळिवुदु कीर्ति रणदॊळ गळिदरळिवुदु जन्म जन्मा
वळिय कल्मषवॆंदु कपिराजेंद्र गर्जिसिद ।। 34 ।।
कॊणकिदुदु कट्टळवियलि बलुकणिय बवरद भटन बलु भा-
रणॆय बॆट्टगळिद बल्लिद बलिमुखव्रात
अणॆद नवना शैलगळ संदणिय संधिसुवति बलर कडि-
वॆणवनुब्बिसि बॊब्बिरिदु नूकिदनु निजहयव ।। 35 ।।
इदिर लौकुव पनस विनतर हॊदऱ मुऱिदनु मीऱि वामद
लॊदगिदग्गद कुमुद मैंद द्विविद दधिमुखर

जा रहे पेड़-शिलाओं के प्रहारों की परवाह न करते, उनसे अपने आपको बचाते इन्द्र के उच्चैश्श्रवस अश्व के सदृश जो था, ऐसे अपने घोड़े को राघव राम के सम्मुख ला खड़ा किया। ३२ नथुनों को फुलाकर दीर्घ निःश्वास लेते वह घोड़ा (क्रोधोन्मत्त हो) ज़ोर-ज़ोर से हिनहिनाने लगा। उसके लगाम में फेन चिपका टपक रहा था। लोहे का (लगाम का) छड़ा जो मुँह में था उसे चबाते बार-बार 'घुर्-घुर्' कर रहा था। उसके शरीर से पसीना टपक रहा था। मुँह से लार टपक रही थी। फेनयुक्त हो हिलते जबड़ों से खुरपुटों पर खड़े नाच रहे उस घोड़े ने शत्रुओं को भयभीत किया। ३३ "अरे रे! राजा के सम्मुख पहुँचकर उसे घोड़े ने घेर लिया न? अब (तुम लोग) जीने की आशा छोड़ दो; स्वामि-कार्य के लिए देह त्यागने को तैयार हो जाओ। प्राणों के मोह से अपने-आपको बचा लोगे तो तुम्हारी कीर्ति विनष्ट होगी। युद्ध में प्राणार्पण करोगे तो जन्म-जन्मांतर का पाप कट जायेगा।" इस तरह घोषणा करते सुग्रीव गरजा। ३४ वीर वानरों ने बड़े-बड़े पहाड़ उठाकर युद्धवीर नरांतक को छेड़ा। राक्षस ने उन पहाड़ों को ठोकर मारकर, अपने ऊपर टूट पड़नेवाले वानर वीरों को काट डालकर मुर्दों के ढेर के ढेर बनाकर घनघोर गर्जना करते घोड़े को आगे बढ़ाया। ३५ नरांतक ने सामने से आकर टूट पड़नेवाले पनस तथा विनतर वानर वीरों के झुंड को तितर-बितर किया; बायें से आक्रमण करनेवाले कुमुद, मैंद, द्विविद, दधिमुख आदियों पर इस प्रकार बाण

कोंदरलॆच्चनु बलद लौकुव कुदुकुळिग कपिभट समूहव
कदळिदरिदनु कोंदनपरद लौकुवतिबलर ॥ 36 ॥
तिरुहि तेजिय मत्तॆमुसुकुव शरभ शतबलि गज गवाक्षर
नॆरवियनु निंदिरिसिदनु सेतुविन मध्यदलि
धुरद हंबल बिडिसि लंकापुर भयंकर नोडनॆ बलु सं-
गरव संघटिसिदनु होगळॆ समस्त सुरनिकर ॥ 37 ॥
तिळिद मूर्छॆयलिंद्र सुतसुत नळविगभिमुखनागि कादिद
खळन काणदॆ कॆरळिदनु रघुनाथ नोड्डिनलि
कळकळद काळगवनिद कैगोळिसिदनला रामचंद्रन
बळियलॆनु तोडगिदु हलुमॊरॆदुब्बि बोब्बिरिदि ॥ 38 ॥
कूडिदुदु कडुगोप बळिकद नाडलेनद विलयरुद्रन
पाडॆनलु फणिराज कूरु मरसुगळक्कुडिसॆ
तीडिनॆलदळु करवनब्बरगूडि पुटनॆगॆदवनि मंडल
बीड बिडलैतंदु तिविदनु कलि नरांतकन ॥ 39 ॥
ऎरगिदशनीघात मुष्टियॊ ळॊरगिदनु कॆलकसुर कैयोड
नॆरगिदनु मत्तॆळ्ववन नुब्बिरिदु बोब्बिरिदु

चलाया कि वे भाग खड़े हों; दायें से टूट पड़नेवाले अत्युत्साही कपि वीरों के समूह को केले के वन की तरह काट डाला; पीछे की ओर से आक्रमण करनेवाले बलशालियों की हत्या कर डाली। ३६ नरांतक ने घोड़े को मुड़ा कर पुनश्च आक्रमण करनेवाले शरभ, शतबलि, गज, गवाक्ष आदियों की सेना-व्यूह पर आक्रमण कर उन्हें सेतुमध्य फेंक दिया। उन्हें युद्ध जीतने की आशा से विमुक्त कराते लंकापुर भयंकर के साथ उसने भारी जबर्दस्त युद्ध किया। तब समस्त देवताओं ने नरांतक की खूब प्रशंसा की। ३७ मूर्च्छितावस्था से होश में आए अंगद ने देखा कि उसके सामने लड़ रहा राक्षस लापता है, वह चिढ़ गया। फिर देखा कि रघुनाथ के नजदीक की सेना के साथ युद्ध करते शोरगुल मचा रहा है। यह देख क्रोध के मारे वह दाँत-ओंठ चबाने लगा। फिर उसने घनघोर गर्जना की। ३८ प्रलयरुद्र-सदृश अंगद का क्रोध प्रचंड रूप धारण करता है। उसका वर्णन किन शब्दों में करें? आदिशेष तथा कूर्मदेवता के प्राण नहीं में समाये। अंगद ने अपने हाथ धरती पर मसले; फिर गरजते हुए, धरती पर से उछलकर नरांतक पर जबर्दस्त घूँसा जमाया। ३९ अंगद की बिजली जैसी मूठ की मार के कारण नरांतक एक ओर लुढ़क गया। फिर जब वह राक्षस उठने लगा तो अंगद ने सिंहनाद करते उस पर टूट पड़कर

मरुकौळिसि मत्तेळ्ववन गोणुरुगें तिविदनु पडिबरिसि निलु-
वरिकॆगन निक्किदनु मगुळॆ मडप्रहारदलि ॥ 40 ॥
एळलेळलु तिविदनंगद बीळबीळलु खळननिप्प-
त्तेळु सूळिन मेलॆ शरणनु सन्नॆयनु माडॆ
मेलॆ सुररुब्बिरिर्यॆ वालिजनाळिबळिक तुरंगमद हि-
गाल हिडिदॆरगिदनु वीर नरांतकासुरन ॥ 41 ॥
ऎरगिदाक्षण हयसहित नॆलकॊरगिदनु हरिसहित हॊक्कनु
मॆरॆसि कॊळुतूरॊळु नरांतकना कृतांतकन
ऊरुव घनसंतोषदलि हॆब्बरॆय हॊय्सिदनिंद्र सेसॆय
करॆदु दमर वधूत कदंबक हरसुतंगदन ॥ 42 ॥
रणगलियॆ मझ भापु वीराग्रणियॆ बळलिदॆयॆंदु मॊम्मन
हणॆय मेलॊगिसिदनु पन्नीरिनलि वेदिसिद
कणलिगॆय कुसुमगळ नमराग्रणि शची देवियरु मणि भू-
षणव कळुहिद रंगदंग मळांगदाह्वयद ॥ 43 ॥
कॆदरिदनु बळिकट्टि मुट्टद कुदुकुळिग रावुतर रणदॊळु
मॆदॆगॆडहिदनु बाहुदंड पदाभिघातदलि

अपने हाथों में उसे उठाकर पटक दिया। फिर उठने की कोशिश करनेवाले उस राक्षस का गला दबोचकर ठोंक दिया। तिस पर भी उठ खड़े हो जाने-वाले उस पर एड़ी से लात जमा दी। ४० नरांतक जब-जब उठ खड़ा हुआ तब-तब अंगद ने उसको पटक-पटककर गिरा दिया। इस प्रकार सत्ताइस बार गिरा दिया तथा पीट दिया। तब विभीषण के इशारे पर (सूचना के अनुसार) अंगद ने गरजते हुए घोड़े की पिछली टाँग खींचकर नरांतक पर जब आक्रमण किया तो देवताओं ने "धन्य-धन्य" की पुकार की। ४१ अंगद के टूट पड़ते ही नरांतक घोड़े के साथ धरती पर लुढ़क गया। फिर नरांतक घोड़े के साथ-साथ बड़े वैभव से यमदेवता की नगरी में प्रवेश कर गया। तब इन्द्र ने अत्यंत आनंद से बड़ा नगाड़ा पिटवाया। देवता-स्त्रियों ने अंगद को आशीर्वाद देते हुए उस पर अक्षतों की वर्षा की। ४२ 'हे अदम्य युद्धवीर! धन्य धन्य! हे वीराग्रणी, थक गया न!' इस तरह कहते इन्द्र ने अपने पोते के माथे पर सुगंधयुक्त ठंडे जल में भिगोए करवीर पुष्पों की वर्षा की। शचीदेवी ने 'अंगद' नामक परिशुद्ध रत्न को अंगद के लिए भिजवा दिया। ४३ तत्पश्चात् अंगद ने अपने ऊपर चढ़ आये, बचे-खुचे उत्साही घुड़सवारों को हाथ-पैरों से पटक-पटककर मार डालते ढेर लगा दिया। पुरुषामृग के सम्मुख खड़े हो अन्य मृग

इदिर मृगवेनानुववें केरळिदरें पुरुषामृगद गावळि
गिदिर दारैं तोरवेयरसन कृपेय किंकरगें ॥ 44 ॥

मूवत्तोंदनेय संधि

सूचनें— रणदिशापट मल्ल मलेवरि गणभयंकर हनुमना रावण तनूज त्रिशिर देवांतकर मर्दिसिद ।

कुशकुमारक केळु बलिका त्रिशिर देवांतकरु सलें सै-
रिसुवरे संगर दोळळिद नरांतकन कंडु
मसगि दग्गद कोपशिखि दळ्ळिसें दिवाकर सुतन रणदलि
देसेय देवकदंब कंपिसें नूकिदरु रथव ॥ 1 ॥
बळलिसिदुदु वीर रिब्बर बळिय लतिरथ वाजिरजिग
ळळुकि वारिज सखन वारिजबंधु कळवळिसें
तोलग दिहने सूर्यसुतना बळियवर बलु हेनु समरकें
मलेतनोब्बनें वीरनाहवधीर कलिहनुम ॥ 2 ॥

उसका सामना करें भी कैसे ? 'तोरवें' के अधिपति की जिस पर कृपा है, उस (अंगद) सेवक की, सामना करने की हिम्मत किसी में कैसे हो सकती है ? ४४

इकतीसवीं संधि

सूचना— शत्रुओं को दिशि-दिशाओं में भगाकर तितर-बितर करने में मल्ल-युद्ध-विशारद भयंकर हनुमान ने रावण के पुत्र त्रिशिर तथा देवांतक को हत्या कर डाली ।

कुमार कुश ! सुनो। युद्ध में नरांतक की जो हत्या हुई उसे देखते हुए त्रिशिर-देवांतक कैसे सह सकते हैं ? चुप भी (वे) कैसे रहें ? उनकी प्रचंड क्रोधाग्नि जब प्रज्वलित हुई तो वे सुग्रीव पर धावा बोल देने के लिए उसकी तरफ़ अपने रथों को आगे बढ़ाकर धाये। यह देख देवता थरथर काँप उठे। १ अतिरथी तथा घुड़सवारों के दल ने उन दोनों राक्षस वीरों का अनुसरण किया। सुग्रीव की मृत्यु क्या सुनिश्चित नहीं है ? उनके साथियों का सामर्थ्य ही कितना है ? (इस दिशा में) युद्ध करने में समर्थ रणधीर एक मात्र वीर हनुमान ही हैं ! —इस प्रकार सोचते सूर्य खूब घबराये। २ बची-खुची वानर-सेना डरकर जब भाग

उळिदबल बिरि तोडॆ रामन वळिय निंदु निंदिदनुको-
लळवियलि कपिनाथ नाथन बळिय कलिनील
हॊळकिदनु हुतवहज नोत्तिन लळविगॊट्टनु बॆट्टगळबलु
गलह विद्रन सुतनसुत सुम्मान दुब्बिनलि ॥ 3 ॥
आतनॆडवंकदलि पंकजजात जनितनु निंदिदनु मे
लातु निदनु बळदला धन्वतरिय सूनु
ईतनुब्बटॆ मिक्कुदीचॆयला तमिश्री चरन सरिसद
लातु हळचिदर वदिरा लंकाभयंकरन ॥ 4 ॥
हॊक्कनटवी सघदलि मॊगविक्कु वब्बर गिच्चिन वॊला
रक्कसन रथ राजियलि रौद्रातिरेकदलि
मुक्कुरुकु वतिरथर रथव नभक्कॆ विसुटनु वीदिवरिदडॆ
यॊक्कॆ रथिकर रथवनंबुधिगिट्टु बॊब्बिरिदि ॥ 5 ॥
तुळिद नॆडबल चारियलि संकुलद रथिकर तूडिदनु नभ
कळविगॊडे सुवति रथर बाचिदनु वळिरथर
अळिव जगकुब्बॆद्द रुद्रन कॊलॆगॆलस कॆणॆयॆनलु रथिकर
तळपटरव माडिदनु निमिषार्धदलि कळिहनुम ॥ 6 ॥

गयी तब शत्रु राम के सम्मुख उपस्थित हुए। एक वाण की दूरी पर सुग्रीव खड़ा था। उसी के बगल में अग्निकुमार नील दिखायी दिया। उसी के पार्श्व में वाली का पुत्र अंगद अत्युत्साह के साथ शिलाओं को उठाए युद्ध के लिए तैयार हो, खड़ा रहा। ३ उसके वाम पार्श्व में जाम्बवंत खड़ा रहा। उसके दक्षिण पार्श्व में धन्वंतरि का पुत्र सुषेण सटकर खड़ा रहा। राक्षसों को सम्मुख देख लंकाभयंकर हनुमान का साहस उमड़ पड़ा। शत्रुओं ने हनुमान पर धावा बोल दिया। ४ जंगल में फैलते दावानल-सदृश हनुमान रौद्रातिरेक के साथ राक्षसों के रथों के मध्य घुस गया। अपने को घेरनेवाले अतिरथों के रथों को उठाकर आकाश में फेंक दिया। स्वेच्छा से विचरते बीच में आ पड़े, या निशाने में मिले, रथिकों के रथों को समुद्र में फेंककर गर्जना कर उठे। ५ हनुमान ने दाएँ-बाएँ विचरण करते हुए रथिकों के समूहों को रौंद डाला। बड़ी वीरता के साथ बाण-प्रयोग करते हुए अतिरथों को आकाश में उड़ा दिया। नज़दीक पड़े रथिकों को दबोच डाला। जगतप्रलय के लिए क्रोध-संतप्त रुद्र के हत्याकांड के सदृश वीर हनुमान ने क्षणार्ध में, रथिकों का एक साथ काम तमाम कर दिया। ६ भय से भाग खड़ी हुई वानर-सेना,

भयदलोडिद सेनॆ हनुमन जयमुखद लॊदगिदुड्डु रिपुनि-
र्भय मनोरागिगळु तरुशैलायुधंगळलि
नियत रणकृतमुखरु परिसंचय पराक्रमसखरु रिपुनि-
र्भय निशाटोन्मुखरु हळचिदरसम समरदलि ॥ 7 ॥
बळिकला खळरिब्बरुब्बिद हळुवरय कपिभटर मोहर
दॊळगॆ मोहरिसिदरु मार्गणगण महांबुधिय
कलुमरन कोळाहळद कैचळक दिदलॆ कॊंदरगणित
बलिमुखर बर्हिर्मुखावळि बॆदरॆ गगनदलि ॥ 8 ॥
नॆगहि हरिदवु हॆणन बणबॆय नगलदलि नॆत्तरिन हॊळॆ सा-
लुगळ संदणियाय्तु रणरंगदलि भूतगळ
हगलिरुळि नॊत्तंबरद काळगद वॊलु खळ कपिकदंबद
विगड रणरंजिसितु घन रौद्राभिसारदलि ॥ 9 ॥
धुरधुरंधर भटरॊळग्रेसरनला त्रिशिरनु सुरांतक
रॆरडु मध्यलि मसुकुवतिबल वीर वानरर
शिरद तोरण दोरणवनं बरदॊळगॆ विरचिसुत विश्वं-
भरन करुणद किंकरन कॆणकिदरु खातियलि ॥ 10 ॥

हनुमान के (इस) विजय को देख पहाड़-पेड़ों को हाथ में धारण कर शत्रु के सम्मुख बड़ी ढिठाई के साथ आ डटी। युद्ध करने के निर्धारण से संपन्न, वीरश्री को सँजोए हुए, शत्रुओं से भयभीत न होनेवाले वानर वीरों ने राक्षसों का सामना कर उस विषम युद्ध में भारी वीरता प्रकट का। ७ उसके बाद त्रिशिर-देवांतकासुरों ने अत्युत्साही वानर वीरों की सेना पर मानों बाणों का समूह ही (समुद्र ही) बरसा दिया। (यह देख) आकाशस्थित देवता जब भयभीत हो रहे थे, तभी शिलाएँ और पत्थर धारे शोरगुल मचाते अनगिनत वानरों की चतुराई से हत्या कर डाली। ८ युद्धक्षेत्र में गिरे शवों के ढेरों को डुबाकर रक्त की नदियाँ बहीं। युद्धरंगस्थली में भूत पंक्तिबद्ध हो इकट्ठे हुए। दिन-रात के भयानक युद्धसदृश राक्षस और कपियों के झुंड के झुंड भयानक युद्ध से विराजमान हुए (जुड़ गये)। ९ युद्ध की ज़िम्मेदारी उठाने में (वीरों में) त्रिशिर अग्रणी है न ? त्रिशिर-देवांतकों ने अपने पर दोनों ओर से आक्रमण करनेवाले वानर वीरों के सिरों के बन्दनवारों को आकाश में खूबसूरती के साथ सजाया। उसके बाद परमात्मा की असीम कृपा प्राप्त हनुमान पर चिढ़कर उसे छेड़ा। १० त्रिशिर-देवांतकों के

सरळ सारद संदणिय लंबर दिशावळि तुंबितिब्बर
कर चमत्कृति चाप विपुल कळाप मुक्तकद
धरिसितो गिरि मेणु विपिनोत्कर तनुत्रव नेंबवोलु नि-
र्भर शरौघ शरीर नागिर्दनु समीरसुत ॥ 11 ॥
अॅलॅले रक्कस वीर रिब्बर कलह बलुहो हनुमनुब्बर
गलह हवणिस दॅनुत नळ नीलांगदादिगळु
कलुमरन काहुरद कोळाहळदला रिपुरथिक रिब्बर
सॅळॅदु समरवनित्तु कादिद रखिळ बलसहित ॥ 12 ॥
आतु कादुव कपिमहाब्दिगॅ सेतुवनु कट्टिदरु शर सं-
घात दलि सरियिल्ल संगरवॅंब साहसद
मात मॅरॅदरु केळिरै रघुजातरिर जाळिसिद सेना-
व्रातकवधिय काणॆ नतिरथ सम समरदलि ॥ 13 ॥
कोंद रॅरडर्बुदव ननिबरु संदरै कोलॅ गाजियलि रघु-
नंदनन करुणदलि रविनंदनन पटु भटरु
मुंदणोड्डिननॊ ळाय्तु दशरथ नदनर नीगाग तागुव
रॅंदु बलु बॊब्बाटवद केळिदनु कलिहनुम ॥ 14 ॥

चमत्कारपूर्ण ढंग से छोड़े गये (बरसाए गये) बाणों से सारा आकाश तथा आठों दिशाएँ व्याप्त हो गयीं। पर्वत ने मानों जंगल रूपी कवच धारण किया हो —इस रीति से हनुमान का सारा शरीर बाणों से भर गया। ११ अरे रे ! इन दोनों राक्षस वीरों का यह युद्ध इतना ज़ोरदार है ? हनुमान का प्रबल युद्ध-शक्ति के परे है ? इस तरह कहते नल, नील, अंगद वग़ैरः कपि वीर पत्थर, पेड़, वग़ैरहों का प्रवाहरस बहाते (उनसे वार करते) दोनों शत्रु रथिकों को अपनी ओर आकर्षित करते उन्होंने अपनी सारी सेना-सहित युद्ध किया। १२ सामना करके युद्ध करनेवाले उस वनार-सेना रूपी महासागर पर उन राक्षसवीरों ने बाणों का सेतु बाँध दिया। बाण-प्रयोग के युद्ध में इनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता —इस प्रशंसात्मक तथ्य को इन्होंने (अपनी करनी से) सिद्ध कर दिया। हे रघुकुमारो ! सुनो। अतिरथ राक्षस वीरों के विषम युद्ध में वानर-सेना की जो अपार हत्या हुई —वह कहाँ तक हुई इसका वर्णन करने में असमर्थ हूँ। इस तरह वाल्मीकि ने कहा। १३ राक्षसों ने दो अर्बुद वानरों की हत्या की। करुणा से सुग्रीव के बलवीर उतनी भारी संख्या में युद्ध में आहत हुए। ऐसा लग रहा था कि

केळिदाक्षण मुसुकि कोंडिह कोलुगळनुरे कॆदरि घनदं-
ष्ट्राळियिदवुडगिदु नोडिदना खरांतकन
मेलॆ कविदॆसुबिब्ब रसुरर कोलकोळाहळव काणुत
वेळॆ सेवॆगॆ साकि दॊडॆयॆगॆनुत पुटनॆगॆद ॥ 15 ॥
निंदिदनु निम्मय्य निदिरलि संधिसुव रणगलिगळुग्र
स्यंदनद मुंभागदलि मुंबरिव हॆछॊरॆय
मुंदॆ निलुव महाद्रियवॊलायॆंदु बॊब्बिरिदुब्बि दशरथ
नंदनर नीक्षिसुत नलवेरिदनु कलिहनुम ॥ 16 ॥
तीरिसुवॆनी रक्कसर रणहॊरटॆय नॆनु तिब्बर सुरर
तेर निक्कै गॊंडु तिरुहिट्टनु नभस्थळकॆ
ऊरु सुडकन कदन कौतुक सारवनु चित्तैसॆनुत रघु-
वीर निदिरलि भुजव हॊय्दुब्बिरिसिदनु हनुम ॥ 17 ॥
आव समराभ्यासिगळो सुभटावळिय लसुररलि रथ गग-
नावलंबित वागॆ विद्याधरर करुणदलि

इस युद्धकार्य के आगे बढ़ने पर (प्रगति होने पर) आशंका इस बात की हुई कि दशरथ-कुमार (राम-लक्ष्मण) न जाने कब घेरे जायँ। —इस प्रकार का आक्रंदन हनुमान ने सुना (कि राम-लक्ष्मण कभी भी घेरे जायँ)। १४ यह शोरगुल सुनते ही हनुमान ने अपने बदन पर चुभे बाणों को झटककर झाड़ दिया तथा दाँत-ओठ चबाते राम की ओर गौर से देखा। राम को घेरकर बाण छोड़ रहे दोनों राक्षसों की गर्जना सुनकर 'पाले-पोसे मालिक की सेवा के लिए यही सुअवसर जानकर' वहाँ से छलाँग मारकर आगे बढ़ गये। १५ आगे बढ़ती नदी के प्रवाह को रोकने के लिए खड़े रहनेवाले महापर्वत-सदृश तुम्हारे पिताजी के सम्मुख खड़े हो लड़ने आए (उन) युद्ध वीरों के उग्र रथ के सम्मुख वीर हनुमान आकर डट गये! उसने गर्जना करते, दशरथ-कुमार राम-लक्ष्मण की ओर देखा तो उसके हर्ष का पारावार न रहा। १६ 'इन राक्षसों को युद्ध का मज़ा चखाता हूँ।' इसतरह कहते उन दोनों राक्षसों से आरोहित रथ को दोनों हाथों से ऊपर उठाकर लट्टू की तरह घुमाकर आकाश की ओर फेंक दिया। 'लंकानगरी को जलानेवाले का, युद्ध के इस खेल-तमाशे का सार सर्वस्वपर ग़ौर करो।' इस तरह कहते रघुवीर राम के सम्मुख अपने भुजदंडों को ठोंकते हनुमान ने घनघोर गर्जना की। १७ राक्षस वीरों में त्रिशिर-देवांतक कितने महान युद्धकलाप्रवीण हैं! रथ जब

आ विबुध रिपुवा त्रिशिरखळरा विमानद सुररु बॆरगिडॆ
पावमानीय मुंदॆ निंदरु हलगॆ खड्गदलि ॥ 18 ॥
विगडनै पवमानसुत नसुनगॆय लिवरॊडनिवर वॊलु का-
ळगव तॊरुवॆनी ककुत्स्थज नृपनकंगिळिगॆ
सॊगस सलिसुवॆनॆनुत नॊडुव गगनवळयद वीरभद्रन
लुगिद खड्गव खेटकव कॊंडुब्बि बॊब्बिरिद ॥ 19 ॥
चाचिदरु खंडॆयव नुभय निशाचररु पयपड्डु पाडिन
कै चळक दड्डणद हॊय्लिन लधिक चित्रदलि
ई चटुळ विक्रम घनक्षण रोचियतिरॆ हॊळॆव खड्गव
ना चराचर विभु निरीक्षिसॆ मॆरॆदना हनुम ॥ 20 ॥
अणॆद नॆडदलि बलदलातग ळणॆद खड्गव खड्गदलि क-
ड्डणिसि कैमै लुळिय लिब्बरि गॊब्बनुर वणिसि
रणरहस्यद रसिक तन दुब्बणद विद्या प्रौढियलि सुर
गण हॊगळॆ हॊय्दाडिदरु खणिखटिल सबुददलि ॥ 21 ॥

आकाश की तरफ़ उछाल दिया गया तो विद्याधरों की दया से (उस) रथ से निकलकर उन देवांतक-त्रिशिरासुरों ने ढाल-तलवार निकालकर, हाथ में धरे हनुमान के सम्मुख जा खड़े हो गये जिसे देखकर आकाश में विमान में उपस्थित देवता आश्चर्यचकित रह गये। १८ मारुति (हनुमान) भी महान साहसी जो ठहरे। मुस्कुराते हुए— इन राक्षसों के सिरों को इन्हीं के सिर पर दे मारता हूँ (ऐसी चाल चलता हूँ कि यह दंग रह जायँ) और राम को आनंदविभोर बना देता हूँ —इस तरह कहते हुए आकाश में खड़े रह युद्ध देख रहे वीरभद्र से तलवार-ढाल छीनकर बड़े अभिमान से हनुमान जी गरज उठे। १९ दोनों राक्षसों ने विविध गतियों में पैंतरे बदलते हुए बड़ी खूबी से ढाल पकड़कर अत्यंत चतुराई से तलवार के वार किए। चराचर प्रभु राम के देखादेखी इस महावीर बजरंगबली हनुमान ने बिजली की तरह कलाबाज़ी दिखायी। २० हनुमान ने दाएँ-बाएँ खड्ग चलाते त्रिशिर-देवांतकों के वार से भरपूर खड्गों को खड्गों से काटते हुए हाथों तथा शरीर की चतुर गति प्रकट करते उन दोनों का एक ही ने सामना किया। तलवार की लड़ाई की चालबाज़ियों को, रहस्य को करतलामलक बनाए हनुमान ने जो उसके जैसे उन दोनों वीरों से बड़ी खनखनाहट के साथ युद्ध किया तो देवताओं ने (उन सबकी) भूरि-भूरि प्रशंसा की। २१ ज़ोर-ज़ोर से गरजते, बिजली की कौंध की तरह

खळपळद कट्टु लुहिनुरु झळतळपगळ पडितळद मंडिय
होळहुगळ होय्लुगळ खडुगद किडिय तुंडुगळ
लुळिय षय पाडुगळ बवरिय सुळिवुगळ लंघनेय लाघव
दोळु विचित्नद वीररोप्पिद रसम समरदलि ॥ 22 ॥

आटविक रक्कसर हनुमन घाट गलहद खड्गगळ हो-
य्लाट विद्दुदु हरहिनमरावळिय कण्मनके
पाटसिद सिगरद समरव धूटियर कमनीयतर का
लाटद वोले नेंबेना संग्राम संभ्रमद ॥ 23 ॥

अवधरिसु राजेंद्र नोडेले रविज लक्ष्मण चित्तविपुदभि
नवद रणकौतुकद कौक्षेयकद कौशलव
बवरकिदु कडे नोडि नीवेनु तविरळद पदचित्र गतिगळ
लवणियलि लागिसुत होय्दनु हनुमना खळन ॥ 24 ॥

उसुरलच्चरि पवनपुत्नन निशित खंडेयवा निशाट
त्रिशिर नुरदलि बिद्दुदिळिदुदु कलि सुरांतकन
वसनलंबित कटियलेवण्णिसुवेनेनवकुंभवनु भा-
गिसिद सूत्नद सोगमु मेरेदुदु कुंभकारुकन ॥ 25 ॥

चमकती कांतियुक्त तलवार को झलकाते घुटनों से एक-दूसरे पर आक्रमण करते, चमकती तलवारें चलाते चिनगारियाँ निकालते, चुस्त दुरुस्त पग धरते, पैंतरे बदलते, (गोलाकार) चक्कर काटते, इधर से उधर, उधर से इधर चलते-उछलते तलवार चलाने की कलाबाज़ियाँ उन वीरों ने प्रकट कीं। २२ धूर्त राक्षसों के तथा हनुमान के बीच में हुआ यह अद्भुत खड्गयुद्ध, मनोहर रीति से अलंकार कर लिये (अलंकृत हुए) युद्ध युवतियों के सुन्दरतर नृत्य-सदृश, आकाश में उपस्थित देवताओं के तन-मन को लुभाने लगा। उस युद्ध के संभ्रम का किन शब्दों में कैसे वर्णन करें? —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। २३ राजेंद्र राम! ध्यान देकर देखें। सुग्रीव! लक्ष्मण कुतूहलकारी इस विनूतन खड्गप्रयोग को देखें! यह युद्ध अब समाप्तप्राय है। इसे तुम देखो।" —इस तरह कहते लगातार चतुराई की चाल चलते आगे-पीछे सुन्दर ढंग से थिरकते, उछलते, कूदते हनुमान ने राक्षस को पीटा। २४ कितनी अद्भुत अश्चर्यकारक घटना है! हनुमान की पैनी तलवार त्रिशिरासुर के पेट में घुसकर वहाँ से कपड़े से वेष्टित (लिपटे) देवांतक की कमर में चुभ गयी। यह घटना वर्णनातीत है। वह ऐसा लग रहा था

झळपिनुब्बण दोड्डणद पडि तळद पाडुगळिदल निलज
नोलेय लोलेदेर् गिदवु मेलण तुंडु गळु खळर
गळद कप्पिन देव मौळियलुगिदनु हारैसि हूविन
मळेय करेसिद रनिलजन सिरिमुडिय सरिसदलि ॥ 26 ॥

भापुरे बलवंत बलिमुख रूपिनपरब्रह्म समरवि-
रूपलोचन विमळ लंकानगर निर्दहन
गोपमंडल मंडितोग्रकलाप भैरव दशवदन ग-
र्वापहर जय जयर्येनुत कोंडाडि तमरगण ॥ 27 ॥

इत्तलै बळिकसुररसुगळ नुत्तरिसिदा खंडेयवनु वि-
यत्तळद विस्मयद नोटद वीरभद्रंगे
होत्त हरुषद हरिहयादि सुरोत्तमन तोरवेय नृसिहन
चित्तवनु हिडिदडिसि नडेदनु मुंदणाहवक्के ॥ 28 ॥

मानों कुम्हार ने नये मटके को धागे से काट दिया हो। २५ हनुमान ने चमकती तलवार उठाकर तानकर, झुलाते जो वार किया राक्षसों की देहों के कटे ऊर्ध्व भाग हिलकर नीचे गिरते गये। नीलकंठ शिवजी ने यह देख 'वाहवाह' किया। प्रसन्नता से डोल उठे। देवताओं ने हनुमान पर पुष्पवृष्टि की। २६ "धन्य-धन्य हे वीर! तू वानर रूपी दूसरा ब्रह्म ही है। युद्ध त्रिनेत्री है। हे लंकानगरी को भस्म कर डालने- वाले! सूर्यमंडलालंकृत उग्र भैरव! युद्धप्रचंड महावीर! दशानन गर्वापहारी महामहिमामय! तेरी जय हो!" इस तरह देवताओं ने हनुमान की प्रशंसा की। २७ त्रिशिर-देवांतकासुरों के प्राणापहरण करनेवाले खड्ग को आकाश में उपस्थित हो आश्चर्य से देख रहे वीरभद्र को हनुमान ने लौटा दिया। प्रफुल्ल-चित्त देवेन्द्रादि देवताओं के तथा 'तोरवे' के अधिपति नरसिंहावतारी श्रीराम के मन को प्रसन्नता से भरते हुए हनुमान भावी युद्ध के लिए अग्रसर हुए। २८

मूवत्तेरडनेय संधि

सूचने— गजवळयनोरसिदनु पवनात्मजनु परसैन्यद सुदर्शन गजव मुरिदु महोदरन कोंडहिदनु कलिनील ।

दशरथात्मज सूनुकेळ् सुररोसगेवर्रै मोळगिदवु हनुमन
होसपरिगे परबलदोळुब्बरिसिदवु पटहचय
कोसरु गहेळय सबुद सदेदेब्बिसिदविवरनु तरुशिलोच्चय
विसर पाणिगळोरणिसि मोहिदरु संगरके ।। 1 ।।
तवकदलि तरुशैल संगद बवरिगर बलदोळगे सामो-
द्भव घटावळि कविदुदा घनघटेय कडुहिनलि
स्रविसुवग्गद गंडमदजल दविरळदलिळे ननेये बरि कै-
यवतरणद जलौघमुळुगिसे सुरर संदणिय ।। 2 ।।
आरु निलबह्वुदमम राक्षस वारणद वैहाळियलि मद
नारियलि मारांत मदगर्वित गजासुरन
वीरतन शतकोटि मुखदलि सेरितो शुंडालकुलकेन
लारुभटेगळ जोदरोजेय लेद्रितुरवणिसि ।। 3 ।।

बत्तीसवीं संधि

सूचना— हनुमान ने गज-सेना को समाप्त कर दिया । शत्रु-सेना के सुदर्शन नामक हाथी को मार डाले नील ने महोदर के प्राण हर लिये ।

दशरथ-पुत्र के कुमार, सुनो । हनुमान की नयी रीति देखकर देवताओं के मंगलवाद्य बजे । राक्षसों की सेना में नगाड़े बजे । शत्रुओं के घनघोर रोर से भरे तुरई के शब्द से वानर जाग पड़े । शिलाएँ तथा पेड़ों को हाथ में धारे, तैयार हो वानर-सेना युद्ध में गुँथी । १ शैल-पहाड़ों के धारे युद्ध के लिए बेचैन कपि वीरों के भारी भयानक मेघों के टूट पड़ने के सदृश गज-सेना घुस पड़ी । हाथियों के गंडस्थलों से (कपालों से) लगातार धारावाही हो मदजल जो गिरा उससे धरती गीली पड़ी । हाथियों ने सूँड़ ऊपर उठाकर जो जल प्रवाहित किया उसमें बिचारे देवता डूब गए । २ राक्षसों के हाथियों के जूझने की क्रिया की टक्कर कौन ले सकते हैं ? किसमें है इतना साहस ! शिवजी की टक्कर लेनेवाले मदोन्मत्त गजासुर के प्रताप के सौ करोड़ गुने प्रताप मानों इन हाथियों में प्रविष्ट हुआ हो, इस रीति से शोरगुल करते योद्धा क्रमशः इन (मदोन्मत्त गजासुर सरीखे) हाथियों पर सवार हुए । ३ गज-सेना के पैरों तले रौंदे जाकर

गजघटॆय काल्दुळिगॆ हॆडॆयजिगिजिगिळादवु वासुगिय का-
ळिजव नोकरिसिदवु ककुभमदेभ कूरुमन
भजिसितग्गद मूर्छॆ कंपिसि तजन नगरद मेलुगडॆ पद
रजदॊळिद्दुदु भुवनवॆनलुरवणिसितिभसेनॆ ॥ 4 ॥
इड्डुव गिरिगळ नणॆवुतौकुव गिडुमरन सॆळॆसॆळॆदु बिसुडुत
बिडुवरिय बीदिगळ लट्टद वखिळ कॊलॆगळलि
कडुगि कुधरकुलंगळिद्रन पडॆय पडलिडॆ कॊलुववॊलु कपि
पडॆय कॊंदवु कोटिसंख्यॆयला मदेभचय ॥ 5 ॥
कित्तुहाय्किद वट्टिमॆट्टि वियत्तळकॆ तरुमृगद तलॆगळ
कत्तरिसिदवु खंडॆयद काहुरद हॊय्लिनलि
तॆत्तिसिद सूनगियलिरिदिरॆ दत्तलित्तलु कॆदरिपदनख
दॊत्तुगळलुगुळिसिद वसुगळनसम कपिभटर ॥ 6 ॥
तूळिमॊल्वाय्दिड्डुव कपिगळ सीळिदवु संधिसुव सुभटर
वीळलॊदॆदवु बॆंबळिय लौकुव वनेचरर
बालदलि बीसिदवु विरुदिन तोळुवलरनु मुरि मुरिदु हि-
गाल हिडिदिड्डुकिदवु गगनकॆ कोटि संख्यॆयलि ॥ 7 ॥

आदिशेष के फन चूर्ण क्षत-विक्षत हुए; दिग्गजों ने पित्थरस क्ै कर लिया; कूर्म मूर्च्छित हुए; ब्रह्मनगरी का ऊर्ध्व भाग काँप उठा; पैरों की धूल के कारण सारा जगत आच्छन्न हो गया। ४ मदोन्मत्त हाथी, वानरों से फेंके जा रहे पहाड़ों को ठोकर मार फेंकते हुए, पेड़-शिलाओं को उखाड़कर फेंकते हुए, बड़ी सीधी गलियों में सड़कों में घुसकर सभी पर आक्रमण करते, हत्या करते आगे बढ़ने लगे। पर्वतों का समूह जैसे अपनी मर्यादा त्याग इन्द्र की सेना पर टूटकर हत्या कर रहा था तद्वत् उन मदोन्मत्त हाथियों ने करोड़ों की संख्या में कपि-सेना की हत्या की। ५ राक्षसों के हाथियों ने कपियों का पीछा कर, उनको रौंदकर आकाश में उछाल दिया। (उखाड़कर फेंक दिया); सूंड़ों में बँधी तलवारों को अत्यंत वेग से चलाकर वानरों के सिरों को काट लिया। पैरों में, सूंड़ों में बँधे छूरों से चुभो-चुभोकर वानरों को काट-काटकर इधर-उधर फेंक दिया। पैरों के नाखून चुभोकर कितने ही कपिवीरों के प्राण हर लिये। ६ राक्षसों के हाथियों ने आगे बढ़कर अपने पर आक्रमण करनेवाले कपियों को चीर डाला; कपि वीरों को लात मारकर नीचे गिरा दिया। पीछे से आकर आक्रमण करनेवाले वानरों को पूंछ हिलाकर पटक दिया। बड़े-बड़े ओहदे

अँसुव जोदर नाळियंबिगॆ कुसिकिड़िदु गिरिगुट्टि हलुगळ
हसरिसिद वल्ललिल बल्लिद भल्लुकव्रात
मुसल मुद्गर परिघ गदॆगळ गसणिवॊय्लिगॆ बिद्द कोडग
मुसुगळिगॆ कडॆयावुदॆंबुदनरियॆ तानॆंद ॥ 8 ॥
तुरुगि तूळुवमत्त वारण दुरुबॆगाउदॆ वीर हनुमन
मरॆय हॊक्कुदु भूरिवानर सेनॆ पैसरिसि
मॊरॆन बडितकॆ सिडिलु भयदलि बिड़ितु हाय्वुदॆ हॊक्कनाक्षण
कुड़ियहिंडिन तोळनवॊलुब्बाळु कलि हनुम ॥ 9 ॥
आवुदानुवुदै कनल्दा पावमानीय कॊलॆगॆ रिपुगळ
जीवहिंसॆगॆ हेसदवनॊब्बनॆ कणाजगकॆ
देवतति बॆरगागॆ मददंतावळिय बॆरसिदनु गजरिपु
रावदलि रजनीबलव रवि बरसुवंददलि ॥ 10 ॥
जडिदु जोदरु सहित करिगळ हिडिकॆयलि नुग्गॊत्तिदनु नॆल
कडसि तीडिद मत्तॆशतसाबिर मदेभगळ

वाले महान बलशाली वानरों को तोड़-मरोड़कर पीछे के पैर पकड़ पटकारते हुए करोड़ों की संख्या में (गेंद की तरह) आकाश में उछाल दिया। ७ बाण छोड़ रहे राक्षस-योद्धाओं के वृत्ताकार बाणों के शिकार बनकर बलशाली रीछों का समूह लुढककर गिरते हुए दाँत बाहर निपोरे (निकाले) तितर-बितर हो (कट-कटकर) गिर पड़े। मूसल, मुद्गर, परिघ, गदा वग़ैरः कठोर आयुधों के प्रहार से कटकर मर पड़े लाल तथा काले मुँहवाले बन्दरों का हिसाब लगाना असंभव है—इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ८ घिर-घिरकर आनेवाले आक्रमण करनेवाले मदोन्मत्त हाथियों के आवेग को सहने में असमर्थ हो वानर-सेना पीछे हटकर वीर हनुमान की शरण में आयी। पेड़ की लताड़ से क्या बिजली डरकर भाग खड़ी होगी? बकरियों के झुंड के मध्य के भेड़िये की तरह अत्युत्साही वीर हनुमान उस गज-सेना के मध्य घुस गये। ९ मारुति (हनुमान) अगर हत्याकांड मचाए तो कौन उनका सामना कर सकता है? इस जगत में जीव-हिंसा से बाज न आनेवाले वे ही एकमात्र हैं! देवता (यह दृश्य देख) आश्चर्यचकित हो ही रहे थे कि अँधेरे की राशि में सूर्य के प्रवेश की तरह हनुमान सिंहनाद करते हुए उन मद-भरे हाथियों की सेना के मध्य प्रवेश कर गये। १० हनुमान ने महावतों-सहित हाथियों को खींचकर, पकड़-धकड़कर धरती पर पटक दिया। फिर सौ हज़ार मद-भरे हाथियों को पकड़कर धरती पर डाले मसल दिया। एड़ी की मार से लाख

मडद होय्दललि लक्क संख्येय नोडबडिद नुब्बिरिदु बालद
तोडकिनलि तूरिदनु करिकोटानुकोटिगळ ॥ 11 ॥
बीसि बिसुट मदेभमारुत पाशदलि सिलुकिदवु केलवु सु
रेशनानेय नैदिदवु केलकेलवु दिगधिपर
देशवनु सारिदवु घनवा राशिगळु बिद्दिदभकुलंगळु
भूसुता सुतकेळु गजगतवादवगलदलि ॥ 12 ॥
होदवागज मुगिलमुत्तिगे होद शिशिरांबरदवोलु नेल
नादुदरेनिमिषदलि कय्गायदलि पवनजन
बीदियल्लदे बवरकानुव कैदुकाररु काणे बळिक म-
होदरन गजतडेदुदीशन कडुहिनुब्बटेय ॥ 13 ॥
एनदके सुरपतिय दंतिसमानवेंबडदल्प दिक्कुग
ळानेगळपडिगट्टि तूगलु तूककवु किरिदु
आ निशाटंगा दिशाधिप रानिकेगे कडुहीगलनिलज
नानुवदु कडुचित्रवेंदुदु मेले सुरकटक ॥ 14 ॥

हाथियों को एक साथ पीटकर ढेर लगा दिया। खुशी से गरजते हुए करोड़ों-करोड़ों की संख्या में हाथियों को पूँछ में लपेटकर पछोर दिया। ११ हनुमान से खींचकर फेंके गये मदोन्मत्त हाथियों में से कई आँधी के आवर्त में फँस गये; और कई देवेन्द्र के (वाहन) ऐरावत के नजदीक जा गिरे; अन्य कई, दिशाओं के अधिपतियों के देश में पहुँच गये। हे जानकी-पुत्र, सुनो। सागर में गिरे हाथियों के कारण सागर गजसागर हो गया। १२ बादलों के घिर आने का कार्य समाप्त होने पर दिखायी पड़नेवाले शरद्‌ऋतु के आकाश की तरह हाथी समाप्तप्राय हुए। हनुमान की मार से घायल हुए हाथियों से सारी धरती पट गयी। युद्धरंगस्थली खाली हो गयी। युद्ध करनेवाले योद्धा सामने दिखायी न पड़े। तब महोदर के हाथी ने आकर हनुमान के पराक्रम से उत्पन्न उधम को रोका। १३ महोदर की हाथी का देवेन्द्र की हाथी से (ऐरावत से) उपमा देने का प्रयत्न करें तो न्यूनतर का दोष आता है। दिग्गजों को एक पलड़े में तथा महोदर के हाथी को दूसरे में डालकर तौला जाय तो दिग्गजों का कुल वज़न कम ही ठहरेगा। उस महोदर का सामना करना मानों दिक्-पतियों के सामना करने से भी कठिन है, कठोरतर है। हनुमान उसका सामना कर रहे हैं —यही तो आश्चर्य की बात है! इस तरह आकाश-स्थित देवता आपस मे बोलने लगे। १४ महोदर का हाथी आगे बढ़ने

तवकिसिदुदा दतिदंतिय जवगतिगॆ जवगुंदिदरु बलु
भुवन कोशद होरॆय होरॆगॆय होतकारॆगळु
बवरदग्गद गजद पदहति गवनि मुंदकॆ तग्गुतिर्दुदु
भुवननिधि तुळुकाडुतिर्दुदु हेळलेनॆंद ॥ 15 ॥

करिय निशितांकुशदि नवनुरॆ कॆरळियुत नूकिदनु हनुमन
सरिसदलि बळिका सुदर्शन भद्रमददंति
भरद बरिकैयिंद पवनजनुरवनॆरॆगलुप्रति सबुद सुर-
गिरियॊळादुदु नॊंदननिलज नॆनॆदु दशशिरन ॥ 16 ॥

तरहरिसि कॊंडनिल सुतना करिगॆ कैयिक्किदनु दूर्जटि
करिवॆसर बलुरक्कसगॆ कैयिक्कुवंददलि
हरुहनदना खळनरितु बलु वरुणपाशदलीतननु बिगि-
दुरुळिसिदनट्टिदनु मुंदण थट्टिनतिबलर ॥ 17 ॥

मसगिदुदु बळिकी महांकुश निशित धाराहतिगॆ रणदलि
घसणि गॊंडॆयट्ट बॊसितु करद खंडॆयव
मुसुकि बिद्द महाद्रिगळ हुडिमसगॆ दाडॆयलणॆदु तलॆगळ
ससिदुहाय्कितु जारिवरदिभ कळनॊळगलदलि ॥ 18 ॥

(जूझने) के लिए चटपटाने लगा। यमदेवतास्वरूणी हाथी के डग भरने से भूमि को धारण करनेवालों को (जिम्मेदारों को) शक्तिमान होने पर भी बलहीनता का अनुभव होने लगा। उस युद्ध के हाथी के पदचाप से रौंदे जाकर धरती आगे की ओर झुकती थी; समुद्र छलक रहा था। —उसका वर्णन किन शब्दों में करूँ? इस तरह वाल्मीकि ने कहा। १५ महोदर ने (अपने) हाथी को पैने अंकुश से खोंचकर, चिढ़ाकर हनुमान के सामने उसे बढ़ा दिया। तदनंतर वह सुदर्शन नामक बलवान हाथी ने सूँड़ से अत्यंत तीव्रता से हनुमान की छाती पर जब आघात किया तो उसका शब्द सुमेरु पर्वत में प्रतिध्वनित हुआ। रावण का स्मरण कर हनुमान व्याकुल हुए। १६ हनुमान ने सँभलकर, शिवजी ने जैसे गजासुर को पकड़ लिया था उसी भाँति उस सुदर्शन नामक हाथी को हथिया लिया। उसकी यह युक्ति (चतुराई) तुरंत ताड़कर महोदर ने वरुणपाश से उसे बाँधकर लुढ़का दिया। फिर अग्रभाग में उपस्थित सेना के कपि वीरों को भगा दिया। १७ उस महान अंकुश की पैनी नोक से चुभोए जाने पर हाथी चिढ़ गया। परेशानी से चटपटाते उस हाथी ने कपियों का पीछा करते जाकर, सूँड़ में बँधी कगर को (चारों ओर) झुलाया। कपियों से

मेंट्टिट सीळितु मसकिदाडेयोळट्टिट तिविदुदु हेणन बणवेय
नोट्टिदुदु कट्टिदुदु रुधिरांबुधिगे सेतुवनु
जट्टिगर रणभैरवरनुरे यट्टिदुदु यमकिंकररने-
ब्बट्टिदुदु कॆक्कळिसिदुदु मलेतिभके सुरपतिय ॥ 19 ॥
आरु निलबहुदममदंतिय भारणेय बलुगोलेगे होक्कुदु
वारिज प्रियनंदनन सेना सरोवरव
चूरिसुव खंडेयद सुंडिल हारदलि बहुविधद कोलेयलि
कारगल सिदुदखिळ कपिवारिज कदंबकव ॥ 20 ॥
नेगहि हाय्कितु शतबलिय करुळुगिये मेंट्टितु दुर्मुखन तले
चिगिय लोदेदुदु वीर गोलांगूल प्रतिभटर
अगिदु दणललि धूम्रवक्त्रन नुगुळिसितुरुधिरवनु मैंदन
चिगुळिदुळिदुदु मिक्कुहळचुव मर्कटव्रजव ॥ 21 ॥
कपिबलवो कूष्मांडवल्लिय विपुळ फलवनवो महोग्र
द्विपद पदहति गरेदुदर्बुदसेने निमिषदलि

फेंके गये बड़े-बड़े पहाड़ों को अपने दाँतों से कूट-कूटकर चकनाचूर करते, युद्ध-रंग में चतुराई से विचरनेवाले कपियों के सिरों को काट डालते ढेर लगा दिया । १९ सुदर्शन हाथी ने चिढ़कर वानरों को कुचलकर पीस डाला । दाँत (दाढ़) निकालकर पीछा करते जाकर खोंचते हुए मार डाला; मुर्दों का ढेर सारा बनाकर (वहाँ पर बने) रक्त-समुद्र पर मानों सेतु-सा बाँध दिया । पहलवान रणभयंकरों को मार भगा दिया । मरे हुओं के प्राणापहरण करने आये हुए यमदूतों का पीछा कर उसने उसे भगा दिया । सुदर्शन ने देवेन्द्र के हाथी को (ऐरावत को) क्रोध से गुर्राते देखा । १९ उस हाथी से मचाए जा रहे भयानक हत्याकांड का कौन सामना कर सकता है ? (उस) हाथी ने सूर्यपुत्र सुग्रीव के सेना-सागर में प्रवेश किया ! विनाशकारी सूंड़ के खड्ग के प्रहार से अनेक रीतियों से हत्या करते हुए कपिकुलसमूह का विध्वंस मचा दिया । २० हाथी ने शतबली को उठाकर फेंक दिया । दुर्मुख को इस तरह पीसा कि उसकी आँतड़ियाँ बाहर निकल पड़े । उसने इस प्रकार लात चलायी कि वीर वानर योद्धाओं के सिर उड़ जायँ । धूम्रवक्त्र को दाढ़ों में ले चबा डाला । मैंद को रक्त-वमन करने में लगाया । तिस पर भी प्रतिरोध करनेवाले वीरों को, वानर वीरों को गुड़-तेल मिलाकर बनाए लड्डुओं को तुड़वाने के सदृश कुचल डाला । २१ यह कपि-सेना कुम्हड़ों से लदी कुम्हड़े की बेलों का बगीचा है ! भयानक हाथियों के पैरों में फँसकर क्षणार्ध में एक अर्बुद वानर-सेना

उपकरिसिदुदु मृत्युविगॆ कडुकृपॆय माडितु मांसभोजन
दपरिमित भूतकॆ सुदर्शन भद्रमददंति ॥ 22 ॥
मत्तॆ कविदरु नळसुषेणरु मत्तदंतिय मेलॆ हॆम्मर
मॊत्तगळ हॆग्गिरिय बिरुबिन घोरघोषदलि
सत्त सावनु लॆक्किसदॆ तलॆयॊत्तिदरु मुंभागदलि दिगु
भित्ति बिरियलु सुमुख दुर्मुख रखिळ बलसहित ॥ 23 ॥
औकिदरु मैंदादि सुभटरु नाकुमैयलि गजगवाक्षक
पाकशासन पौत्ररॊंदॆसॆयलि गजानुजरु
नूकिदरु मत्तॊंदु दॆसॆयल नोकहद कुलपर्वतौघा
नीकगळ शब्ददलि समर सुदरुशन द्विपव ॥ 24 ॥
कणॆगळाडिदवनितरलि बलुगणॆ महोदरनॆसुगॆगळ मा-
र्गणॆ गळंबुधियॊळगॆ निम्मय वलद पटुभटरु
मुणुगिदरु हरहिनलि हृदयद हुणुगुदागद यूथनाथा
ग्रणिगळनु ना काणॆना रक्कसन कदनदलि ॥ 25 ॥
कोल खुरपुट करिय कदनकराळ वट्टणॆ कूडॆ साविन
सूळुपाळिन भटरु मुरिदरु मत्तॆ सोलदलि

चकनाचूर हुई। सुदर्शन नामक मदोन्मत्त हाथी ने मृत्युदेवता का बहुत बड़ा उपकार किया तथा असंख्यात भूतों को मांस का भोजन प्रदान किया। २२ भारी पेड़ों को भारी पहाड़ों को धारे ज़ोर-ज़ोर से कोलाहल मचाते नल तथा सुषेण ने उस मदमत्त हाथी को फिर से घेर लिया। कपि-सेना की मौत की परवाह न करते हुए सुमुख तथा दुर्मुखों ने समस्त सेना के साथ सामने की ओर से आक्रमण कर हाथी के माथे पर इतने ज़ोर से पीटा कि दिशाएँ दहल उठें। २३ युद्ध के हाथी सुदर्शन को मैंद आदि वीरों ने चारों ओर से घेर लिया। गज, गवाक्ष, इन्द्र के पोते अंगद ने एक ओर से तथा गज के सहोदरों ने दूसरी ओर से पेड़ और पर्वतों के शब्दों के साथ (उस) हाथी पर आक्रमण किया। २४ घिर आए उन सभी कपि-नायकों पर चारों ओर से बाणों की वर्षा हुई। बाण-प्रयोग चतुर महोदर से प्रयुक्त बाणों के समुद्र में तुम्हारी सेना के वीर डूब गये। महोदर राक्षस के युद्ध में दिल न दहला देनेवाले प्रमुख सेनानायकों को मैं नहीं देख पाता। २५ बाणों का ठीक-ठीक निशाना बैठने के साथ-साथ हाथी के युद्ध की भयंकर मार से मौत के मुँह में बारी-बारी से गिर रहे वीरों को देख कई वीर पीछे हटे। हाथी ने पीछा कर कई पूंछ वाले कपियों पर

तूळितिभवर्रेयट्टि सिक्किद बालदभिरंजकर नंजदे
सोळि हाय्कुत बीदिवरिदुदु वलदोळगलदलि ॥ 26 ॥
नेलेयरिदु दांटिदुदु नेत्तर होळेगळनु हेणनोट्टलिन गिरि
गळनडर्दिळिदु बलीमुख विपिन वीथियलि
होळकिदुदु होसमदद गंडस्थळद गंधक्के कविवतुंबिगे
तलेय कोडहुत कदनकेळियलिभ महोदरन ॥ 27 ॥
अररे रणसिंधुरवु रणपुष्करणियलि पुष्करक्के निज पु-
ष्करद मुखदलि चल्लिदुदु नवरुधिर पुष्करव
करुळनाळ मृणाळगळनुरे धरिसिदुदु दाडेगळोळिन कुल
दरस नेडेगव्वळिसु तिर्दुदु समर केळियलि ॥ 28 ॥
करि बिरिसु कादुवरे कपिगळ हरहु निंदुदु जीथ हनुमन
परियनरियलु बारदळुकितु नम्म परिवार
उरवणिसुतिदे मुंदकिभविदु सुररिगसदळवेंब हिडि ये-
दरसगा हरिशरण नुडियलु केळिदनु नील ॥ 29 ॥
एनु कोपवो मनदि कनलिदना नृसिहन रौद्ररोष
स्वानुभव संघटिसिदंते नरेंद्र निदिरिनलि

आक्रमण किया; फिर निर्भय होकर उसने युद्धरंग में कपियों को चीर डालते स्वेच्छा से विचरण किया। २६ हाथी ने स्थान की रीति का अंदाजा लगाते रक्त की नदियों को पार किया; मुर्दों के ढेर के पहाड़ों पर से होकर वह नीचे उतरा। महोदर के हाथी के मस्तक से बहता सुगंधित नूतन मदजलधारा (मस्ती की धारा) पर मुकुर पड़ते भ्रमरों को उड़ा देने से (वह) सिर हिलाते युद्ध-क्रीड़ा में आसक्त हो, वानर रूपी जंगल में से होता हुआ (वह) मार्ग पर दिखायी दिया। २७ अरे बाप रे! इस युद्ध के हाथी ने युद्ध रूपी सरोवर से विनूतन रक्त रूपी जल को अपनी सूँड़ की नोक से आकाश की ओर उछाल दिया। आँतड़ियों के नाल को कमल-नाल की भाँति दाँतों में धारण किया। युद्धक्रीड़ासक्त वह रविकुल के स्वामी राम की ओर बढ़ रहा था। २८ "यह हाथी बड़ा ही भयानक है। उसके साथ युद्ध करने में कपिसमूह समर्थ नहीं है। भगवन्! हनुमान की स्थिति गति का पता नहीं लग रहा। हमारी सेना भयभीत है। वह हाथी द्रुत गति से आगे बढ़ रहा है। उसे रोकना देवताओं के लिए असंभव है। कृपया शरसंधान कीजिए।" —इस तरह विभीषण ने राम से जब कहा, तब यह कथन नील ने सुना। २९ न जाने नील का पारा कैसे चढ़ गया। नरसिंह भगवान के रौद्रारोष से अनुभवित-सा हो चिढ़कर राम के देखादेखी

ई निशाटननी मदेभन नी निमिषदोळगंतकन परि-
धानकीयदडॆलॆ विभीषण नीलनल्लॆंद ॥ 30 ॥
ऎंनुत मदगजदत्त बॊब्बॆय निनददलि तिरुगिदनु बळियलि
विनत दधिमुख कलि सुषेणक गजगवादिगळु
कनलि कविदरु कोटिसंख्यॆय वनचरर मेळदलि गिरिगळ
घनतरद गाढिकॆगळलि गुम्मव शिलाळियलि ॥ 31 ॥
कॆदरितिभ मुरिमुरिदु गिरिगळ नुदुरुगुट्टुत बीदियलि बी-
सिदुदु बिरुदिन भटर हिंगालुगळ हिडिहिडिदु
कदळियलि कालिक्किद वोलुरे मेदॆ गॆडहिदनु मत्तॆमत्तद
रिदिरिनलि कलिनील निंदब्बरिसि बॊब्बिरिद ॥ 32 ॥
कालनुरवणॆगांतु निंदकपालियंतिरॆ निशितकोप
ज्वालॆयलि तज्ज्वलनसुत निंदनु सुदर्शनद
तूळिकॆय सरिसदलि बाहा स्फालनंगैदुब्बि शत शा-
र्दूल घर्जनॆयलि खळाधम खूळ कॆळॆंद ॥ 33 ॥
जळ्ळुगर जाळुगर कूटद कोळ्ळॆगर कोंदुब्बुगिच्चिन
कोळ्ळिगिदॆला कल्पदंभोराशि कॆळॆलवो
तुळ्ळिसानॆय नित्त मेरॆ निनगुळ्ळ कदनद कडहुगळ हॆं-
गळ्ळ साकिद साहसव नीनॆनुत मेल्वाय्दु ॥ 34 ॥

विभीषण से कहा—"इस राक्षस को इसी क्षण इसके इस मदोन्मत्त हाथी के साथ यमदेवता के आधीन न करूँ तो विभीषण ! मेरा नाम नील नहीं है।" ३० इस तरह कहते नील गरजते हुए उस मदोन्मत्त हाथी की ओर बढ़ा। उसके साथ-साथ विनत, दधिमुख, सुषेणक, गज, गवय वग़ैरहों ने क्रोधसंतप्त हो करोड़ संख्यक वानरों को साथ लिये भारी-भारी चट्टान पहाड़ों को जोर-जोर से फेंकते हुए शत्रु को घेर लिया। ३१ हाथी ने वानरों से फेंके गये पहाड़ों को चकनाचूर कर फेंक दिया। नामी-गरामी वानर वीरों के पिछले पैरों को पकड़-पकड़कर घुमा-फिराकर फेंक दिया। केले के उपवन को कुचलने की रीति से वानर वीरों को कुचल-कुचलकर ढेर लगा दिया। बार-बार वीर नील ने हाथी का सामना कर गर्जना की। ३२ यमदेवता की ज्यादती का, सामना करते खड़े रहनेवाले कापाली शिवजी-सदृश भयानक क्रोधज्वालायुक्त अग्निपुत्र नील ने सुदर्शन नामक (उस) हाथी के सम्मुख भुजाएँ ठोंकते खड़े रहकर सौ बाघों की तरह गरजकर "रे नीच राक्षस, दुष्ट ! सुनो।" इस तरह कहा। ३३ "सत्वहीनों की, डपोरशंखों की टोली बाँधे लूट मचानेवालों की हत्या

वणगु कपिकेळॅलवॊ रणकल गणसला हनुमंत नातन
कुणिहवेनार्य्तॆंबुदनु नोडुळिद कपिभटर
अॅणिसिक्को.नीनवर हंतिय हणिद कॊंदगद हेडिगुरिवा
रणद परियनु नोडु नीनॆनुतुरुबिदनु गजव ॥ 35 ॥
तोळ नॆगहिनलट्टि हॊय्दुदु नीलननु नीलाद्रियनु दं-
भोळिदट्टिसिदंतॆ नॊंदनु हॊय्ललिभपतिय
काल निदिरे कॆरळिदरॆ कलिनील गमम महोग्र मदशुं-
डाल दॆंडद कपालभागव तिविदु बॊव्बिरिद ॥ 36 ॥
एनहेळुवॆ नमम नीलन नून शौर्यवनिळॆय तळॆदि-
दर्नॆ घीळिडॆ गगन सार्दनि दोरॆ मणिमयद
सानु सडिलॆ सुदर्शन प्रतिमानवनु मत्तॆरगिदनु मद
दानॆ तिरुगितु हिन्नॆलॆगॆ हदिनॆंटु हॆज्जॆयनु ॥ 37 ॥

करनेवाले तेरे घमंड की आग से जलती लकड़ी के लिए, रे सुन, यह प्रलय-सागर है। तेरे उस हाथी को इस ओर मोड़ दे। (अब) तेरी युद्ध वीरता का प्रदर्शन कर। बस करो, यह तेरा साहस।" —इस तरह कहते नील (उस) हाथी पर टूट पड़ा। ३४ रे क्षुद्र कपि! सुन। हनुमान तो युद्ध में तलवार की परे के वीर हैं। (मेरे वार के कारण) उनके उछल-कूद की क्या दुर्दशा हुई है; ज़रा देख। युद्ध में आहत अन्य कपि वीरों के बारे में ज़रा सोच तो सही। मेरी वार से उनकी (अन्य वीरों की) बराबरी भी न कर सकनेवाला डरपोक बकरा है। मेरे हाथी की मस्ती को ज़रा चखकर देख। इस तरह कहते उस (महोदर) ने हाथी को आगे बढ़ा दिया। ३५ वज्रायुध जैसे नील पर्वत पर टूट पड़ता है —उसी भाँति हाथी ने सूँड़ उठाकर जाकर नील का पीछा करते हुए उसे पीटा। हाथी की मार से नील व्यथित हुए। वीर नील अगर चिढ़ जाय तो मृत्यूदेवता उसके सामने किस खेत की मूली है? तुरंत ही उसने उस भयंकर मदोन्मत्त हाथी के बाएँ गाल पर थप्पड़ मार भारी गर्जना की। ३६ नील की निर्दोष वीरता का किन शब्दों में वर्णन करें? धरती को धारण करनेवाला हाथी चिंघाड़, आकाश से प्रतिध्वनि गुंजारित हो, रत्नजटित शिखर शिथिल पड़े, इस रीति से उस सुदर्शन नामक हाथी के दाँतों के मध्य प्रदेश में नील ने वार किया। तब वह मदमत्त हाथी (उस वार के कारण) अठारह क़दम पीछे हटा। ३७ लालिमा से युक्त लाल

बिरिद बिडुवनि रुधिरजाजिन गिरिय निर्जरदंतें मद करि
करद लोंसरितु बिदुरि कोंडुदु शिरवनेंडबलकें
हरनु नेनेंदनु तन्नकदनद करहतिय लळुकिद गजासुर
निरवनहुदोयेंदु होगळिद नग्निनंदनन ॥ 38 ॥
तिरुहिदनु बळिकसुरनानेय शिरवनंकुशदिंद होय्द-
ब्बरिसि भरिभरियेंनुत बहळित रौद्ररोषदलि
केरळि गजवा वह्नि तनुजन कोरळडोक्करवाय्दु तोळलि
मुरुहि बरसळे दिळेगे कुसुकिदुदसुरबल नलियें ॥ 39 ॥
सिक्किदग्निज गजदसुंडिल डोक्करिसिघन सिंहनादद
लिक्केलकें बरसेळेये सेळेदीडाडिदुदु नभकें
केक्कणिसि कुडिदाडेगळ गगनक्कें लंघिसि मरळि बहवलु
मर्कटर नांतिट्टु दोडनुद्रेक रोषदलि ॥ 40 ॥
पडिबरिसि संवरिसि कोळतुग्गडद भटनुब्बेद्दु दाडेय
हिडिदु तिविदनु तीव्रकर हतिगाने घीळिडलु
मडद लोदेदु महोदरनु मुरिवडेद गजवनु तिरुहि नीलन
हिडियलंकुश हतियलोकिदना महागजव ॥ 41 ॥

पहाड़ से बहते हुए पहाड़ की तरह घाव से रक्त की बूँदें टपकाते हाथी सूँड़ से रक्त बहाने लगा। हाथी ने अपना सिर दाएँ-बाएँ ढीला छोड़ दिया। तभी शिवजी ने अपने हाथों गजासुर का व्यथित होने की दशा का स्मरण कर 'वाह रे नील!' इस तरह पुकारते नील की प्रशंसा की। ३८ तब महोदर राक्षस ने अंकुश से खोंचकर अत्यंत क्रोध से पीटकर डाँटते-डपटते, गरजते हाथी को मुड़ाया। राक्षस-सेना को हर्षित करते वह हाथी चिढ़कर, नील पर टूट पड़कर, आगे जूझकर, सूँड़ से (नील को) लिपटकर खींचकर उसने धरती पर उसे पटक दिया। ३९ सूँड़ में फँसे नील ने उस हाथी की सूँड़ को जब पीटा और सिंहनाद करते दोनों ओर खींचातानी की तो हाथी ने नील को खींचकर आसमान में उछाल दिया। अपने तीक्ष्ण दंष्ट्रों को सीधे करते हुए उस हाथी ने आकाश में उछाले गये धरती की ओर लौटते हुए वानर वीरों को क्रोधोन्मत्त हो खींचकर धरती पर पटक दिया। ४० अपने को सँभालकर लौटते हुए, उछलकर ऊपर उठते उस प्रतापशाली ने (नील ने) हाथी के दाँतों को पकड़कर मुरेड़ दिया; फिर खोंच दिया। इस जबर्दस्त मार से हाथी जोर से चिंघाड़ा। तब महोदर ने पीछे की ओर मुड़ हाथी को एड़ी से लात जमाकर आगे की ओर मुड़ाकर अंकुश से इस प्रकार पीटा कि वह आगे बढ़कर नील को पकड़

बीळ लप्पळिसिदुदु निगुरिद तोळिनलि बिद्दवन करि मुं-
गालिनलि मेट्टिदुदु मुरिदुदु शिरव हस्तदलि
बालदलि बरिकैयना कलिनील बिगियलु निट्टुसुर वै-
हाळि निदुब्बसदि निदिदुदा महादंति ॥ 42 ॥
एळुतेंडगै तुदियलानेय तोळनेगहुत मेट्टिटसरनें
सीळिदनु सीवरिसि करियिंदा महोदरनु
शैलकेरगुव सिडिलवोलुब्बाळि निदेरगिदनु रणदलि
नीलननु निशितांकुशद लमराळि कळवळिसे ॥ 43 ॥
ऎरगिदसुरन शिरदमुष्टिय लेरगिदनु प्रतिशब्द नभदोळ
गोरले निर्जर निकर बेदरे महोग्र रोषदलि
तरतरिसुतव तवकदलि कैमरेय दोळ होक्कग्निजननु-
ब्बिरिदु डोक्कर वाय्दु कॆडहिदनवनितळ कुसियॆ ॥ 44 ॥
तळवु मेलडि मेलु तळकाल्दुळकु मुष्टि निघात बाहा-
गळ निबद्ध नियुद्ध जानुस्फुटद पदघात
तळनिहत पतनप्रहारा कलित दंतादंतियल नि-
र्गळित केशा केशियलि कादिदरु कडहिनलि ॥ 45 ॥

ले। ४१ (तव) हाथी ने सूँड़ बढ़ाकर नील को पकड़कर धरती पर पटक दिया। नीचे गिरे नील को हाथी ने अपने सामने की टाँग से दबोचकर सूँड़ और पूँछ से मरोड़ दिया। नील ने हाथी की सूँड़ को अपनी ज़बर्दस्त पकड़ में जकड़कर इस तरह दबोच रखा कि उसकी साँस रुक जाय। (साँस न ले सके।) हाथी की गतिविधियाँ जो रुक गयीं तो वह हाँफने लगा। (हाथी) टस से मस न हो सका। ४२ नील ने सँवार कर उठते हुए बाएँ हाथ की कोर से हाथी की सूँड़ ऊपर उठाते, पैर तले उसे डाल दबोचते सिंहनाद करते एक झपाटे में उस हाथी को चीर डाला। तब महोदर पहाड़ पर गिरनेवाली बिजली के सदृश हाथी पर से उछलकर, अपना पैना अंकुश हाथ में ले नील पर टूट पड़ा। इस दृश्य को देख देवता व्याकुल हुए। ४३ अपने पर टूट पड़नेवाले महोदर के सिर पर नील ने ज़ोर से जो मूठ जमायी, उसकी भयानक आवाज़ आकाश में गूंज उठी। देवता डर के मारे काँप उठे। (तब) महोदर ने घबराकर भयंकर क्रोधसंतप्त हो, अपना हस्त-कौशल्य न खोते हुए गरजकर नील पर घूँसा जमाकर उसे धरती पर गिराया तो धरती धँस गयी। ४४ एक बार ऊपर-नीचे होते हुए, फिर एक बार नीचे-ऊपर होते हुए, एक-दूसरे से गुंथकर, पैरों को एक-दूसरों के पैरों में गुँथाते हुए, मुष्टि-प्रहारों से,

होरिदरु हरिजंभ रिब्बर होरटेगॆ हदिनेंटु मडियॆने
वीर केळॆबळिक वैश्वानरकुमारकन
घोर मुष्टि निघातदलि हॆरसारितसु रक्कसन निर्जर
रारि सुरिदरु सुरमहीरुह दलर सरिवळॆय ॥ 46 ॥

कोपदलि कौसरिडुव मनदनु तापदलि तिरुगिदनु तातन
रुपिनलि कलि नीलनीचॆय लंजनासूनु
रूपुदोऱिद नौडनॆ समराटोपदलि रिपुबलकॆ कलिनि-
र्वापणनु कलिवृषभ बेडिदना महाहवव ॥ 47 ॥

हनुम केळी काळगव नीनॆनगॆ कॊडु कॊडुवॆनु कृतांतक
ननुचररिगरिभटन तोरवॆयराय नरहरिय
वनरुहांघ्रिय सेवॆ तन्निदनुभववनॆदिदडॆ जगदलि
घनकृतार्थनु तानॆनुत माऱांत नाहवकॆ ॥ 48 ॥

गर्दन भुजाओं की पकड़-धकड़ से, घुटने उठाकर लातें जमाते हुए, हथेलियों से एक-दूसरे को पीटते हुए, गिरना, लातें जमाना आदि मल्लयुद्ध (द्वन्द्वयुद्ध) के कई गत (कलाबाज़ियाँ) दिखाते हुए नील तथा महोदर कुश्ती लड़ते हुए, दाँत-होंठ चबाते, झूल रहे लटक रहे एक-दूसरों के बालों को पकड़कर बड़ी जिद्द से लड़े। ४५ विष्णु तथा जम्भासुरों के मध्य (पूर्व में) हुई लड़ाई के अठारह गुने से भी अधिक (बढ़कर) शक्तिसंपन्न हो नील तथा महोदर दोनों वीर लड़े। हे वीर कुमार, कुश! सुनो। तत्पश्चात् अग्निकुमार नील के उग्र मुष्ठि-प्रहार से महोदरासुर के प्राण निकल गये। देवताओं ने अपना हर्ष प्रकट करते हुए कल्पवृक्ष के पुष्पों की वर्षा की। ४६ क्रोध की वृद्धि जैसे-जैसे होती गयी, मन के संताप के कारण अपने पिता के सदृश अग्निस्वरूप धारण करते (आगबबूला होते हुए) नील लौट पड़ा। इधर से हनुमान भी प्रकट हुए। तुरन्त ही शत्रुसैन्य-विनाशक वीर वृषभ ने युद्ध के अहंकार से भर सामने आकर भविष्य के महायुद्ध के लिए बीड़ा (अपने को) देने के लिए प्रार्थना की। ४७ "सुनो हनुमान! इस भावी युद्ध का सुअवसर मुझे दीजिए। यम के दूतों को शत्रु वीरों की हत्या कर न्योता देने का (भोजन समर्पण करने का) भाग्य मुझे दीजिए। 'तोरवे' के स्वामी नरहरिरूपी राम के चरण-कमलों की सेवा करने का भाग्य अगर मुझे मिले तो इस जगत में मैं सचमुच ही कृतकृत्य हूँ, धन्य भाग हूँ।" इस तरह कहते वृषभ शत्रुओं का सामना करने के लिए तैयार हुआ। ४८

मूवत्तमूरनॆय संधि

सूचनॆ— तुंग भुजबल सहित मदमातंग केसरि वृषभ नाहव रंगदलि कॊंदहिदनु युद्धोन्मत्त रक्कसन ।

कुशनॆ केळु महोदरनु जाळिसिद जीवद मेलॆ नडॆदुदु
विषम विग्रह वीर युद्धोन्मत रक्कसन
दसॆगळॆंटर बिगुहुगळ बलुबॆसुगॆ बिडॆबिरु दनिय वाद्य
प्रसर मॊरॆदवु मोहिदवु मोहरु गळुभयदलि ॥ 1 ॥
कैटभन कलितमन महिष निशाट जंभन बलन नमुचिय
पाटगिम्मिलॆंब कलिगळ कोटि संख्येयलि
मीटि तलॆ मंडलदलि कादुव घाटवल मसाळुगळु नडॆ
गोटॆकाररु कॊणकिदरु कपिराज सैनिकव ॥ 2 ॥
बलिदु दनितर मेलॆ रणकडु गलिगळिव्वरिगॊडनॆ पडिबल
निळुकितिति नंदनन सन्नॆय सूचनॆय बळिय
कुलशिलोच्चय कुजवितानद कलिमनद कपिसेनॆ संधिसि
हळचिदुदु हरहिनलि हरनयनाग्नि कणदंतॆ ॥ 3 ॥

तेंतीसवीं संधि

सूचना— मदोन्मत्त हाथी के लिए जो सिंह-सदृश था, जिसका भुजबल महान था, ऐसे वृषभ ने युद्धभूमि में युद्धोन्मत्त राक्षस को मार डाला ।

सुनो कुश, महोदर के मारे जाने पर युद्धोन्मत्त राक्षस के साथ भारी लड़ाई हुई । रणवाद्य इतने जोर-शोर से बजे कि आठों दिशाओं के जोड़ ढीले पड़ गये । दोनों तरफ़ की सेनाओं ने लड़ना शुरू किया । १ कैटभ, तम, महिषासुर, जंभासुर, बलासुर, नमुचि आदि असुर वीरों की अपेक्षा मानों बलविक्रम में दुगुने हों —इस रीति से करोड़ों-करोड़ों वीरों के साथ समूचे शरीर से लड़ते अद्भुत बलशाली चलते-फिरते किले के सदृश राक्षस वीरों ने कपिसेना को छेड़ा । २ तत्पश्चात् दो वीरों के बीच महान युद्ध छिड़ा । शत्रु-सेना नजदीक आयी । सुग्रीव ने इशारे से युद्ध के लिए जो सूचना दी तो चट्टान तथा पेड़ों को तथा चट्टानों को धारे, धीर मनोधर्म की कपि-सेना ने शिवजी के भालनेत्र से निकलती चिनगारियों के सदृश विशालता में फैलकर शत्रु-सेना को घेर लिया । ३ आयुधों के टकराने से, बड़े-बड़े बर्छे

तिविव शस्त्र शिलोच्चयद बलु दिविगुळिन देखाळ दिंदुदु
भविसि दुब्बर दोळु कमलभवांड मंडलव
तवकदलि तत्क्षणदि नभ्रकें नवरुधिर मब्बेंद्दु सुरसै-
न्यवनु तेवरिसि तेन नेंबेंनु समरसंभ्रमव ॥ 4 ॥
आव वीररी रक्कसरु रण दीवसिग कपिभटर बलदलि
साविगळु कदे कादिदरु सरकटिसि सरिसदलि
सावु सरियाय्तुभयदलि नेंल तीविदुदु तितिणिय विपिनवि-
भावरी चरर गलदसुविन हेंणन राशियलि ॥ 5 ॥
मत्तनल्ला वीर युद्धोन्मत्त खळ कलि कुंभकर्णन
हत्तुमडि साहसव मेंरेदनु समर केळियलि
हत्तु नूरिन्नूरु साविर हत्तुसाविर लक्ष लेक्कद
हत्तुगेय हवणिनलि होळाकसि नुगिदनु भटर ॥ 6 ॥
अगिद नणललि लक्कसंख्येय विगड कपिनायकर सदेंसदें
दुगुळिदनु सम्मुखकें संधिसि दधिक यूथपर
जगळदाटद भैरवन भणि तेंगळलिर्दनु भयरसद सो-
नेंगळ सूसुत निम्म रघुराजेंद्र सेनेंयलि ॥ 7 ॥

भालों के चुभोये जाने पर जो शोरगुल मचा वह ब्रह्मांड भर में व्याप्त हो गया। (परिमाणस्वरूप) जो नया रक्त तुरन्त फूट पड़ा उसने आकाश तक उछल कर उत्साह में (वहाँ) उपस्थित देवताओं की सेना को भयभीत कर दिया। उस युद्धसंभ्रम का किन शब्दों में बर्णन करें! —इस प्रकार वालमीकि ने उद्‌गार निकाले (आश्चर्य प्रकट किया।) ४ राक्षस कैसे भयानक वोर है! ज़ोर के साथ आगे जूझकर, युद्ध-साहसी वानर-सेना के साथ मृत्यु की परवाह न करते हुए बराबर लड़े। दोनों सेनाओं की मृतकों की सख्या बराबर हुई। निष्प्राण वानरों तथा राक्षसों के शवों की राशि से, ढेर के ढेरों से सारी युद्धभूमि पट गयी। ५ वीर युद्धोन्मत्तासुर महान घमंडी है न? (इस) युद्ध को खेल समझते हुए उसने कुंभकर्ण से दस गुना बढ़कर साहस प्रकट किया। दस, सौ, दो सौ, हज़ार, दस हज़ार, लाखों की संख्या में प्रत्यक्ष रूप से वह कपिवीरों को निगल गया। ६ लाखों की संख्या में, वह साहसी कपिनायकों को चबा गया। सामना करते टक्कर लेनेवाले अधिक संख्यक दलपतियों को उसने पीट-पीटकर उगल दिया। युद्ध क्रीडासक्त भैरव की तरह गरजते हुए, तुम्हारे रघुराम की सेना में उसने भयानक रस की वर्षा की। ७ उस अद्‌भुत घटना का वर्णन किन शब्दों

हेळलद्भुत ववन बळियलि काळरक्कस भटरु कविदरु
काळकूटद कडलु कविवंददलि कपिबलव
मेलॆ मोळगुव तंबटद निस्साळ दब्बर दुव्वु गहळॆय
धाळियलि धरॆ बिरियॆ धृतिगॆडॆ ध्रुवन पॊरजन ॥ 8 ॥
मलॆतुदा खळ पायदळवग्गळद कपिभटरॊडनॆ संधिसि
हळचि कळचिदरसु गळनु वलवॆरडु ववरदलि
कलुमरन कैदुगळ कणॆगळ कलह मॆरॆदुदु सिडिल शिखरद
कळकळद कट्टुलुहिन वॊलॆरडंकदग्रदलि ॥ 9 ॥
तरहरिस लड्रियदॆ तरुस्थळ दरसु नायक रोडिकॆय कं-
डरि दिशापट पटुपराक्रमि वृषभ नडहाय्दु
धुरकॆ मुंचुव रक्कसर रथ दुरवणॆय तडॆदवनिमंडल
बिरियॆ बॊब्बिरि दुब्बि बाहप्पळि सिदनु वृषभ ॥ 10 ॥
देवि नोडंदॆम्म सभॆयलि रावणासुर नेडिसलु कडु
हेवदलि कपिरूपि निंदुदिसिद वृषाधिपन
ई विगड कपिवरन कैयलि साव निवनी घळिगॆयलि ने-
डा विचित्रव नॆंदु पुरहर नुमॆगॆ तोरिसिद ॥ 11 ॥

में करें ? उसके साथी कालराक्षस योद्धाओं ने हालाहल विष समुद्र की भाँति कपिसेना को घेर लिया। तिस पर युद्ध के डफों की गर्जना, युद्धवाद्यों का शोर, सींग के बाजों की भयानक ध्वनि के कारण धरती में दरार पड़ी। ध्रुवलोक के लोग धैर्य खो बैठे। ८ राक्षसों की पैदल सेना ने बड़े घमंड से कपियोद्धाओं की टक्कर लेते उनके प्राण हर लिये। दोनों तरफ़ की सेनाओं के सम्मुख, पर्वत शिखर पर टूटते बिजली के कड़कहाहट के भारी शब्द के सदृश ज़ोर-ज़ोर से पत्थर, पेड़, आयुध, तथा बाणों के चलने के कारण भारी भयंकर शोरगुल मचा। ९ राक्षस वीरों के आक्रमण को सह सकने में असमर्थ हो, वानरों का प्राणत्याग करना तथा वानरों का भाग जाना देखकर शत्रुवीर महापराक्रमी वृषभ ने रुकावट डालते हुए युद्ध के लिए आगे बढ़ रहे राक्षसों के रथों की तीव्रता को रोककर अपनी भुजाओं को इस प्रकार ठोंका कि सारी धरती दहला उठे। १० "देखिए देवीजी; उस दिन हमारी सभा में रावणासुर से अपमानित होकर, तिरस्कृत होकर कपिरूप से पैदा हुए (हमारे) इस वृषभ को देखो। इस प्रचंड कपिश्रेष्ठ के हाथों, इसी क्षण इस राक्षस की हत्या होगी। यह आश्चर्य अभी तुम देखोगी।" इस प्रकार कहते हुए शिवजी ने पार्वती को वृषभ

मलेंतु तल मट्टुब्बि कॆंगल गॆलदु हूंकृति गैदु दट्टिसि
नॆलन नंघ्रिय लणॆदु नॆगहिद निडिय बालदलि
सलग सलगनॊ ळुब्बि हळचुव हळहळिकॆयलि तागिदरु तळ
वॆळगु गळॆ तळदिळॆय भार करु सुरु निमिषदलि ॥ 12 ॥
विषम युद्धोन्मत्तनॆंबी पॆसरवंगॊप्पुवुदले ग-
र्जिसिदनवनिळॆ बिरियॆ भुजवनु हॊय्द हॊरॆयेऱि
असम सम पय पाडिनलि बारिसिद मुष्टिय दृष्टिवाळद
कॊसरिकॆय कोपदलि कैकॊंडनु महाहवकॆ ॥ 13 ॥
मलॆतरिभ चाळियलि चंडिसि चलिस दॊब्बरि गॊब्बरुब्बर
दळव मॆऱॆदरु दंडॆगळ दंडिगळ मडियलि
तलॆय तग्गित बग्गिदुरदव्वळिप चरणालीढ गाडिय
कुलिश मुष्टिय कलिग ळुप्परिसिदरु कलहदलि ॥ 14 ॥
ऊऱि निंदवु रोमतति काहेऱिदवु तनु तोर गिडिगळ
काऱिदवु कण्णुगळु कब्बॊगॆ हाय्दुदुसुरिनलि
तोऱिदवु दाडॆगळ मुसकद तूरुगिडि गुडियिऱिदु कोपद
मोऱॆगळ मदमुखरु तिविदाडिदरु तवकदलि ॥ 15 ॥

दिखाया। ११ वृषभ अपना पूरा गर्वीलापन प्रकट करते सिर से सिर टकराने की जिद्द से फूलकर, फूत्कारते, हुंकार भरते, धमकाते, धरती को रौंदकर पूँछ को ऊपर उठाकर खड़ा रहा। हाथी हाथी से जैसे भिड़ जाता है वैसे ही दोनों वीर इस प्रकार भिड़ गये कि धरती को धारण करनेवालों को साँस लेने में कठिनाई के कारण क्षण मात्र के लिए कसमसाना पड़ा, वे (धरती को धारण करनेवाले) चटपटाने लगे। १२ युद्धोन्मत्त यह नाम उस राक्षस के लिए सचमुच ही बड़ा सार्थक था; क्योंकि युद्ध के नाम मात्र से मदोन्मत्त हो जाता; युद्ध में उसकी मस्ती बढ जाती। धरती में दरार पड़ जाय इस प्रकार गर्जते, भुजाओं को ठोंकते, उत्साहपूर्ण हो सम-विषम डग भरते मूठ बाँधकर, दृष्टि रोपकर अत्यंत क्रोधित हो उसने भयानक युद्ध छेड़ा। १३ मस्ती से भरे शत्रुवीर खम ठोंककर खड़े रहे, न झुकते हुए घुटने टेके दृढ़ गति से खड़े रहकर युद्ध करते हुए एक दूसरे पर अपना सामर्थ्य प्रकट करने लगे। सिर झुकाकर छाती नवाकर पैरों का आक्रमण करने सिद्ध हो, वज्रमुष्ठि के ये वीर लड़ाई में गुँथ गये। १४ रोंगटे खड़े हुए, देह की उष्णता बढ़ी; आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगी; श्वास प्रश्वास के समय काला धुआँ निकलने लगा; वक्र दाढ़ों को सान देते समय

सिडिल कुडियो विलय हर नुग्घडद रभसवो कल्पदलि बिरि-
दोडेद जांडद फळफळ स्वनवो महादेव
कडुगलिगळुब्बरद तिविगुळ नुडियो शिवशिव गगगतळ गु-
म्मिडितु लिर्दुदु कुणिव मुष्टि निघातदलि भटर ॥ 16 ॥
बीळु तिर्दुवु मुष्टिमुष्टिग ळेळिगेय सिडिलंते जाजिन
शैलदग्रद लोसर्व निर्जरदंते रुधिरजल
जाळिसिद विब्बरलि कर्णकपोल कंधरगळलि तिविगुळ
साल सबुददलबुधि तुळुकुत लिर्दुदनवरत ॥ 17 ॥
लवने केळा खळनु पूर्वद भवद लंधासुरनु वृषभनु
शिवनु संघटिवदे सोलवु कालकंधरगे
तिविद नुन्नत शक्तियलि राघवन मेच्चिन घाय वेनुतलि
कविदु बिद्दनु बीळे दिगु शुंडाल तवकदलि ॥ 18 ॥
मंडिसिद नव नेंदेयला दोर्दडबल कलिवृषभनंदिन
खंड परशुविनंते नेगहिद मुष्टि किडिगेदरि
तंड तंडद हरगणंगळु तांडवद तोडेवरेय बाहा-
दंडदब्बर दुब्बरंगळ लेसेद रभ्रदलि ॥ 19 ॥

चिनगारियाँ निकली; इस प्रकार क्रोध्र-संतप्त मुखड़ेवाले गर्वीले (दोनों) वीर बड़ी स्फूर्ति से लड़े। १५ बिजली के नोक के सदृश, प्रलयशिव के उत्कट आवेग-सदृश, प्रलयकाल में फटे ब्रह्मांड के धड़-धड़ाहट के शब्द की तरह, हे महादेव! महावीरों के अत्यंत भारी मार से खोंचने पर गिरे टुकड़ों की तरह! हे शिव-शिव! वीरों की मूठों की प्रहारों से आकाश प्रतिध्वनित हो रहा था। १६ लगातार गिर रही बिजली के सदृश मूठ पर मूठों की. मुक्कों की मार पड़ रही थी। लाल पहाड़ के शिखर पर से प्रवाहित हो रहे लाल रंग के पानी की धाराप्रवाह की भाँति दोनों वीरों के कान, गाल, तथा भजाओं से रक्त की धारा बह पड़ी। घूँसों से लगातार पीटे जाने पर हो रहे भयानक शब्दों के कारण समुद्र भी तरंगित होने लगा। १७ सुनो लव; पूर्वजन्म में वह युद्धोन्मत्त राक्षस अंधकासुर था; वृषभ शिवजी थे। नीलकंठ शिवजी की हार कभी संभव है? तभी वृषभ ने— "यह राघव को प्रियकर लगनेवाला घात्र है!" —इस तरह कहते जोर से घूँसा जमाकर उस पर टूट पड़े। वृषभ के घूँसे के वार से दिग्गज व्याकुल हो नीचे गिर पड़ा। १८ प्रचंड भुजबलशाली वीर वृषभ के पूर्वजन्म के शिवजी-सदृश उठाये उस घूँसे से जब चिनगारियाँ निकलने लगी तो वह (वृषभ) युद्धोन्मत्त की छाती पर चढ़ बैठा।

ऑत्ति गंटल नेंदनेलवो सत्वशुद्धरु नीवु निमगी
उत्तमद हेसरेके हेसरिदु नम्मकटकदलि
हत्तुवदु केळेलवो युद्धोन्मत्तनेंबभिदान खळरो
कत्तेगळो नीवेनुत मगुळेऽगिदनु रक्कसन ॥ 20 ॥
वारि कल्लिनोळुदिसे शिखि ताधारुणिगे कडुचित्रवल्ला
वीरतन निम्मगुळ्ळरेम्मी कपिगळाजियलि
तीरिसुविरे हरणगळ नीव् तारतम्यवनरिदु मगुळे वि-
चार विल्लदे कादुवुदु कडु भंडतनवेंद ॥ 21 ॥
फड नरांतक नेंबनोब्बनु गडसुरांतकनेंब नोब्बनु
गड शिखि ब्रह्मा माराऱिगळेंब पसरुगड
कडु भयंकर वेसरु बुस्सटे कडेगे रक्कसरिव दिरुऱे कळु
गुडुहिगळलायेनुत तिविदनु मत्ते रक्कसन ॥ 22 ॥
तप्पदै नीनेंद नुडियनु तुप्परिसिदुदु खळनहृदय दो-
ळिप्प मारुत मारुताध्वके निमिषमात्रदलि

(यह देख) आकाश में उपस्थित शिवजी के गण जंघाएँ ठोंकते हुए भुजाएँ पटकते हुए, हर्षोल्लास से चीखते-पुकारते तांडव नृत्य करते नाचने लगे। १९ वृषभ ने युद्धोन्मत्त का गला धर दबोचकर, "रे रे, तुम सत्वशुद्ध हो (तामसी हो) यह तुम्हारा श्रेष्ठ नाम एक विडंबना मात्र है। इस नाम से तुम्हारा क्या प्रयोजन ? यह 'युद्धोन्मत्त' नाम हमारी सेना के लिए फबता है। तुम या तो राक्षस हो, या गधे हो !" इस तरह कहते हुए उस पर फिर एक बार उसने आक्रमण किया। २० "जल-पाषाण में अगर आग पैदा हो तो जगत के लिए वह एक आश्चर्यकारी घटना है। अगर तुममें सचमुच वीरता हो, तारतम्य ज्ञान का प्रयोग करते, क्या हमारे इन कपियों के प्राणों को हर लेंगे ? विवेक-रहित हो, युद्ध करना, तो वल छल षड्यंत्र है; नीचता की पराकाष्ठा है। "इस प्रकार वृषभ ने कहा। २१ "छिः, एक तो देवांतक रहा ! दूसरा तो नरांतक रहा ! धत् तेरे की ! (नाम की विडंबना है !) इनके नाम बड़े विचित्र हैं ! अग्नि, ब्रह्मा आदि देवताओं के शत्रुओं के रूप में उपाधियों से विभूषित नाम ! बाप रे ! कितने बड़े भयानक नाम ! आखिर ये हैं किस खेत की मूली ! फुफकारनेवाले ये राक्षस केवल शराबी हैं।" इस तरह उलाहना देते वृषभ ने उस राक्षस पर फिर एक बार घूंसा जमाया। २२ "तुम्हारा कथन झूठ नहीं है" —इस तरह कहते-कहते युद्धोन्मत्त के प्राण क्षणार्ध में आकाश की ओर यात्रा कर गये। तव मदोन्मत्त वृषभ ने

दर्पमुख नुप्परिसि भुजवनु चप्परिसि बोब्बिरिदु होक्कनु
निप्पसरदलि निगुरि बळिकुळुकलिन सेययलि ॥ 23 ॥
हेळलेनुद्दंड चंडकराळ कर्कश कदन कौतुक
देळिगॆय कैकोंडु कैमाडुव निशाचरर
तूळिदनु तूरिदनु तुळिदनु सीळिदनु सदॆदिक्कि होळकिदु
हूळिदनु होय्दोरसि हरहिदनमररब्बरिसॆ ॥ 24 ॥
चल्ल बडिदनु मिक्कुमीरुव वल्लिदरनलिवलर रणदलि
हुल्ल कच्चिसि हुत्तनेरिसि होगिसि सागरव
विल्ल विसुडिसि विरुद हरियिसि हल्ल किरियिसि मगुळ्द नप्रति
मल्लनुब्बिद मैयलरसन होरॆगॆ हरुषदलि ॥ 25 ॥

मूवत्तुनाल्कनॆय संधि

सूचनॆ— राय राक्षसविजय रायर राय लक्ष्मण नाहव दोळति कायननु
गॆलि दोलिसिदनु भुजविजय श्रामिनिय ।

केळिदै रघुवंश लक्ष्मी लोल सुत निम्मवर वीरभ-
टाळि बलिदुदु मुत्तिगॆय नसुरेंद्र पुरवरकॆ

किलकारियाँ भरते हुए अपनी भुजाओं को ठोंकते हुए, बड़ा ही उग्र रूप धारण कर राक्षस-सेना में प्रवेश किया । २३ आगे की घटना का किन शब्दों में वर्णन करूँ ? वृषभ ने भारी उत्पात मचाते प्रचंड युद्ध करते हुए अपने पर टूट पड़नेवाले राक्षसों को पीट-पीटकर भगा दिया; हवा में उड़ादिया, पैर तले रौंद दिया; चीर डाला; खोदकर गाड़ दिया, पीटकर रगड़कर फैला दिया, विदीर्ण कर दिया । यह देख देवता हर्ष से किलकारियाँ भरने लगे । २४ राक्षसों को इस प्रकार पीटा कि वे दिशि-दिशाओं में भाग खड़े हों । अनगिनत संख्या में चढ़ आनेवाले वीरों को, बलशालियों को दाँत निपोरकर मिट्टी खाकर धरती चूमने में लगाया । कइयों को समुद्र में फेंक दिया । कइयों को धनुष फेंक देने को बाध्य किया । कइयों के दाँत बाहर निकल आये । तभी वह असदृश वीर फूला न समाता राम के पास आया । २५

चौंतीसवीं संधि

सूचना— राक्षसविजयी राजाधिराज लक्ष्मण ने युद्ध में अतिकाय को जीतकर भुजलक्ष्मी, विजयलक्ष्मी —दोनों को प्रसन्न कर लिया ।

हे रघुवंशलक्ष्मी-प्रियकर के सुकुमार पुत्र, सुनो ! तुम्हारी तरफ

केळिसितु कदनदलि जीवव जाळिसिद राक्षसरवार्ता
भीळ भीषण वचनवचळित खळकुलोत्तमन ॥ 1 ॥
अँद्द नोलगदिंद ह्रुषव कद्द कदडिन हृदयदलि रवि
येँद्दनपरांबुधिय मध्यदलोँडनेँ निमिषदलि
अँद्दना पूर्वाब्धि सलिलव नोँद्दुमनदादियलि रावण
होँद्दिददनु सिंहासनव सावंतरोँग्गिनलि ॥ 2 ॥
होँगेय होँरळिय नुगिदुदळ्ळुरि धगधगिसुवंददलि दुःखद
दुगुडवनु दूब्बिक दळ्ळिसि तधिक रोषाग्नि
हगेगेँ जयविंदिनलि जयसयुगवु तनगिंदिनलि रणवनु
होँगुवेँ हळ्चुवेँनेँनुत वीरावेशमननाद ॥ 3 ॥
अबलनेँदे तंदेँने मुन्नबलेँयनु किरिदसुर रळिदी
सबुदमात्रकेँ सरिवुदे साहसद सिरि तनगेँ
अबुधिगबुधंजुवदेँ संगर लुबुदने तानांतकनकर
कबळ नरिभट नेँनिसदिरेँ दशकंठ नल्लेँद ॥ 4 ॥

के वीर योद्धाओं ने लंकानगरी को घेर लिया। युद्ध में प्राणार्पण करनेवाले भयंकर राक्षसयोद्धाओं की वार्ता धीर राक्षसकुलश्रेष्ठ रावण के कानों तक पहुँची। —इस तरह कहते वाल्मीकि ने कथा-वार्ता आगे बढ़ायी। १ हर्ष खोकर, व्यथित भारी हृदय से रावण सभाभवन से बाहर निकल पड़ा। तुरन्त ही कुछ ही क्षणों में सूर्य पश्चिम सागर में डूब गया। फिर सुबह पूर्व सागर के पानी में से निकल आया। तब मन ही मन चिंतित रावण सभाभवन में आकर सामन्तों के साथ सिंहासन पर विराजमान हुआ। २ धुआँ उगलते प्रज्वलित होते दावानल-सदृश रावण ने अपने मन से दुःख को बाहर निकाल दिया। (दुःख रूपी धुआँ उसने उगल दिया।) तब उसमें क्रोधाग्नि प्रज्वलित हुई। "शत्रु की जीत तो (अब तक) हुई; आज मेरी जीत की बारी है। आज मैं युद्ध में (स्वयं) जाकर शत्रु पर आक्रमण करूँगा।" —इस तरह बड़े वीरावेश के साथ बोला। ३ "अबला सीता को क्या मैं अपनी बलहीनता प्रकट करने बुला लाया? कुछ राक्षसों के मरने के समाचार के शोरगुल के कारण मेरी साहस रूपी सम्पदा क्यों विनष्ट हो? समुद्र बादलों से क्यों डरे? मैं तो युद्धलोभी हूँ ही। यमदेवता को अपने हाथ के कौर से खिलानेवाले शत्रुवीर न कहलाऊँ तो मैं दशकंठ ही नहीं।" इस तरह रावण ने कहा। ४ "आज के युद्ध में राम को गिराए बिना अगर पीछे

इंदु रामन रणदिकेंडहदे हिंदु मुंदानादे नादरे
तंदे मुनिपति विश्रवसु कैकसेगळुदटदलि
बंदवने तानेनुत हूंकृतियिद गर्जिसे नगुत वळि कि-
तेंद नय्यंगोय्य नगकुल कायनतिकाय ॥ 5 ॥
अले निशाचरराय तामस तिळियदिन्नू निनगे नीने
कोलुववने लय जनन रहितनु निन्नगंटललि
इळिववने रघुनाथ नारेंदोळग नरियेयला निशाचर
कुलकुलाचल वज्रवडन नकट नीनेंद ॥ 6 ॥
नूकलरियदु जयवु निनगिक्ष्वाकु कुलपालकनोळी जग-
देकनाथनोळकट नरने राम नोडलिके
एके निनगी मरुळतन मै सोकु सल्लदे सीतेयलि परि-
पाक चित्तदोळिल्ल वकटकटेंद नतिकाय ॥ 7 ॥
मीरिकादिदडीतनलि जयवेरुवदे निनगकट जय वधु
बेरे बडवरिगुंटे तोत्तुकणा खरांतकन
सारिदनु बेडकटफलवनु कूरुगोळदिरु केळुहेळुवे
तोरुवी दैवद महत्ववनेंद नतिकाय ॥ 8 ॥

हटूँ तो अपने पिता विश्रवसु तथा कैकसा के गर्भ से संजात मैं हूँ ही नहीं। (मेरा जन्म माँ-बाप के लिए अपमानकारी है)।" —इस तरह कहते जब रावण ने हुंकार भरा तथा गर्जना की तो पर्वत-सदृश देहधारी अतिकाय ने मुस्कुराते हुए अपने पिता से यों कहा। ५ राक्षस चक्रवर्ती, तुम अभी तक नादान ही ठहरे; कुछ भी समझ नहीं पाये। क्या मारनेवाला (हत्या करनेवाला) तू ही है? जन्म-मरण-विरहित रघुनाथ तेरे गले में उतर सकते हैं? वह कौन है—यह (रहस्यमय) सत्य तू अभी तक जान नहीं पाया न? क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि राक्षस वंश रूपी पर्वत के लिए वह वज्रायुध ही है?" इस तरह अतिकाय ने कहा। ६ "जगत्प्रभु इक्ष्वाकुवंश के स्वामी के साथ लड़कर जीत पाना असाध्य है। विचारकर देखो तो क्या राम मानव है? व्यर्थ भ्रम में क्यों पड़े हो? सीता का बाल भी तुम बाँका नहीं कर सकते। हाय! हाय! तुम्हारा मन अभी तक परिपक्व नहीं हुआ न!" इस तरह अतिकाय ने समझाया। ७ "इन बातों पर ध्यान न देते अगर राम के साथ लड़ोगे यो क्या जीत तुम्हारी हो सकती है? क्या जयलक्ष्मी ने कभी गरीबों का साथ दिया? वह खरांतक राम की दासी है। यह मैं डंके की चोट पर कहता हूँ। इस विचार को त्याग दीजिए। इसके परिणाम (फल) का मोह छोड़

भुवनवीतन देहवी दिगुनिवह नीतन किविगळी शशि-
रविगळीतन कंगळी पवमाननुसुरुकण
भुवननिधि तानीमहात्मन बेंवरु कमठनु पादमस्तक
दविरळद केशाग्रवीयाकाश तुदियेंद ॥ 9 ॥
नॅलॅयनरिव महानु गळिगंगुलव हत्तनु मिक्किहनु मन
निलुकि तॅंबरिवुळ्ळरिगॆ मैदोर दिहनुकण
सुलभवॆंब महानुभवरिगॆ जलद लिपियंतिहनु योगिग-
ळीलुमॆ गॊलिदॊलियद वॊलिहनी रामनॊडॆंद ॥ 10 ॥
आरॊडनॆ कैसोंकु कदनवदार कूडपचारणॆय बिरि
दार हत्तिर मूदलॆय मातार सरिसदलि
आरिदिरलतिमथन केळशरीरनॊळु गोचरविहीन नॊ
ळारुभटॆ निनगॆंतु मॆरॆदवु तंदॆ हेळॆंद ॥ 11 ॥
इरित कंबरवळुकुवदॆ नॊरजुरुबलग्निगॆ नोवहुदॆ क-
ट्टिरुहॆ कच्चिद रळकुवदॆ सुरगिरि निधानिसलु

दीजिए। हमें दिखायी पड़ रहे इस भगवन् (राम) की महत्ता समझाता हूँ। समझने का प्रयत्न कीजिए।" इस तरह अतिकाय ने कहा। ८ "जगत् इसकी देह है; ये दिशाएँ इसके कान हैं; यह सूर्य-चन्द्रमा इसकी आँखें हैं; वायु इसका श्वासोच्छ्वास है; समुद्र इस महात्मा का पसीना है; कूर्म इसके चरण हैं। आकाश का छोर इसके बालों का छोर है।" इस तरह अतिकाय ने वर्णन किया। ९ "इस परमपुरुष की थाह को जानने वाले महात्माओं के लिए भी यह दस अंगुल अतिरिक्त हो जाते हैं (परे हैं)। 'अपना मन उन तक पहुँचा' —इस प्रकार समझनेवाले ज्ञानियों के के लिए भी वह प्रत्यक्ष नहीं होते। यह हमारी पहुँच के परे नहीं हैं, इस तरह समझनेवाले महात्माओं के लिए (ये) पानी पर लिखित अक्षर सदृश हैं। ये राम योगियों की भक्ति के लिए प्रसन्न दिखायी देते हुए भी अप्रसन्न ही है। तुम्हीं विचारकर देखो।" इस तरह अतिकाय ने कहा। १० "किसका, तू हाथ से स्पर्श कर रहा है? किससे तू युद्ध कर रहा है? किसके साथ तेरा यह अगौरवयुक्त आचार की यह तेरी उपाधि? किसके साथ निंदाव्यंजक वार्तालाप? किसके सम्मुख यह तेरा भारी युद्ध? अशरीरि, अदृश्य के साथ यह तेरी गर्जना क्योंकर शोभा पाती है? कहिए तो सही पिताजी।" इस तरह अतिकाय ने कहा। ११ "तलवार की वार से आकाश को किस बात का डर? मच्छरों की फूंक (की हवा) से आग का क्या बिगड़ सकता है? सोचकर देखें— काली

ऊरुवु गॊंडॆळॆगुब्बि कुडिदरॆ वऱवुदॆ जलराशि रामनॊ-
ळिऱित कॊंबुदॆ निनगॆ हेळॆलॆ तंदॆतनगॆंद ॥ 12 ॥
तरणि शत संकाशनलि शंकर सहस्रा बलाढ्यनलि सर-
सिरुह संभव कोटि राजसगुण समग्रनलि
अरसकेळ् ब्रह्मांडमय विस्तर शरीर नॊळॆंतु घटिसुवु
दरिविजय परिहासकरिगॊळगागवेडॆंद ॥ 13 ॥
जगदुदरनलि जगवुमयनलि जगद चैतन्यात्मनलि त-
ज्जगद लीलाचरितनलि जगदंतरात्मनलि
जगद जनन स्थिति लयदमैसॊगसुकारु नॊळॆंतु गॆलविन
बगॆयु संघटिसुवदु हेळै तंदॆ तनगॆंद ॥ 14 ॥
दिट विचारिसलीतननु नीनटमटिसलळकुवनॆ सीतॆगॆ
विटतनव माळ्पवनॆ मायाप्रकृति पुरुषनलि
घटिसुवदॆ दुर्नयवु मृण्मय घटवजांडव कॊणकुवदॆ चा-
वटिय तनविदु जीय जाणर मतविदल्लॆंद ॥ 15 ॥

चींटी ने मेरुपर्वत को काटा तो उसका क्या बिगाड़ हो सकता है ? गौरैया के बच्चे का पानी पीने पर क्या सागर सूख जायगा ? राम के क्या तेरे हाथों घायल होगा ? (असंभव है।) पिताजी, जवाब दीजिए न ?" इस प्रकार अतिकाय ने कहा। १२ "सौ सूर्यों के समान प्रकाशवाले से, हज़ार शंकरों की ताक़त रखनेवाले से, करोड़ों ब्रह्माओं के रजोगुणसम्पन्न से, ब्रह्मांड-शरीरी से शत्रुत्व साधकर जीत किसकी हुई है, हो सकती है ? (कोरा वैरत्व साधकर) व्यर्थ अपहास्य के पात्र मत बनो।" इस तरह अतिकाय ने समझाया। १३ जगत् को जिसने अपने पेट में धारण किया है, जो स्वयं जगत्-स्वरूपी है, जगत् चेतनात्मक के साथ, जगत् की लीला ही जिसका चरित्र है, जो जगत् का आत्मस्वरूप है, अंतरात्मा है —जगत् की सृष्टि-स्थिति-विनाश के लिए जो कारणीभूत हैं —ऐसे लीलाविनोदी के साथ लड़कर जीतना कैसे संभव है पिताजी ? —ज़रा मुझे समझाइए।" इस तरह अतिकाय ने कहा। १४ सत्य यह है कि यह छल-प्रपंच से विचलित होनेवाले नहीं। सीता के साथ (तेरा) कामुक व्यवहार किस प्रकार समर्थनीय है ? माया प्रकृति-पुरुष के साथ (सत्त्व, रज, तम गुणत्रयस्वरूपी मायापुरुष के साथ) दुराचार कैसे हो सकता है ? माटी का मटका क्या ब्रह्मांड को छेड़ सकता है ? (माटी के मटके के सदृश मानवशरीरी जो तुम हो ब्रह्मांड को अपने में समा लेनेवाले परमात्मा को छेड़ सकोगे ?) स्वामिन् ! यह आपकी धृष्टता है। बुद्धिमान का यह विचार नहीं है।" इस तरह अतिकाय ने

ईत मुळिदहितरनु रक्षिसि दातगळु मुन्नुंटे पूर्वद-
लीत रक्षिसिदवर कोंदवरुंटे जगदोळगे
एतककटा भ्रांतु भूसंजातेयनु कोंडोय्दुकोडु सह
जातननु करेतंदु सुखदलि राज्यवाळेंद ॥ 16 ॥
निन्न हवणे नीतनलि रणगन्नवनु सवेदवरु सेणसिद
मुन्निवरोळ गेकदेशके बहेयो बरदिहेयो
नन्नियिदु मधुकैटभादिगळुन्नतिके येनाय्तु श्रुति भू-
कन्नेयनु कद्दवर कडुहेनाय्तु हेळेंद ॥ 17 ॥
देवनीतनु सकलदेवर देवनीतनु बंधुवीतनु
भावकर कुलदैववीतनु भक्त लोलुपनु
सावु तप्पिदु दीतनि दंतावळेंद्रंगंबरीश म-
हाविभु प्रह्लाद देवंगरस केळेंद ॥ 18 ॥
अंबुनिधि बडबडवरिगे तेगेदंबिगोड लोड्डु वदे कपिगळ
डोंबिगीवुदे बेन्न बेट्टके कथेय मातल्ल
अंबुजासन मुख्य सुर निकुरुंब कळुकद खळर जीवव
कोंबरे नररद्रिय बारदे तंदे निनगेंद ॥ 19 ॥

कहा । १५ "अपने शत्रु पर इनके क्रोधित हो जाने पर उनकी रक्षा इसके पूर्व कोई कर सका है ? इस जगत में इनसे रक्षित किसी की हत्या कोई कर सका है ? व्यर्थ की भ्रांति में क्यों पड़े हो ? जानकी को ले जाकर राम को सौंप देने में ही भलाई है । अपने भाई (विभीषण) को बुला लाकर सुखपूर्वक कारोबार (राज्य शासन) करो ।" अतिकाय ने कहा । १६ "इसके सामर्थ्य के सम्मुख तेरी वीरता किस खेत की मूली. है ? इसके पूर्व इनसे जिन्होंने युद्ध किया और उनकी (परिणामस्वरूप) जो दुर्गति हुई, वही (दुर्गति) तेरी भी होगी —यह निश्चित है । मधु-कैटभादि असुरों के साहस को क्या हुई ? वेद तथाभूमि को चुरानेवाले सोमकासुर-हिरण्याक्षों की वीरता की (असफलता की) कहानी तुम जानते ही हो । तब कहो— क्या सोचा है ?" इस तरह अतिकाय ने पूछा । १७ यह साक्षात् परमात्मा हैं; समस्त देवताओं के अधिपति हैं; उनके बन्धु हैं; हितचिंतक कुलदेवता हैं; भक्तप्रिय गजेन्द्र, अंबरीष, प्रह्लादों की इनके कारण मृत्यु न हो पायी । (इन्हीं के कारण उन भक्तों की रक्षा हुई ।) १८ "समुद्र बलहीनों से डरकर बाण को अपनी देह समर्पित करता है ? (समुद्र जान गया रघुवीर समर्थ हैं ।) कपियों का आडंबर देख पर्वत अपनी पीठ समर्पित

खर विराध सुबाहु मारीचरु गळेनादरु बलान्वित
सुरप सुतने नाद नित्तलु निन्न सेनॆयलि
करव पूजिसिकॊंब सुभटर नॆरवि तानेनाय्तु रक्कस
ररस नल्ला कुंभकर्णन दॆल्लि तोरॆंद ॥ 20 ॥
मरॆय बेकिन्नादॊडॆयु बिडु सॆरॆय सीतॆय हॆच्चुकुंदिन
कॊरतॆ बारदु भाविसी नुडि वेदमतवॆंदु.
हॊरदिरपकीर्तियनु पातक कुरिसिदिरु दुर्जनरुबळसुव
कॆरॆगॆ कल्लिन कट्टॆयागदिरॆंद नतिकाय ॥ 21 ॥
ऎलदॊ कॆळतिकाय मतिगळु निलुक लरियनु तुदिगॆ निन्नय
निलुकडॆगळवु वेरॆ मारीचन विभीषणन
बळिय कॆकसॆ माल्यवंतर तिळुहुगळतुदि निन्नदॆसलॆ
कलह कंजुवडत्त साकॆळ्गॊडॆय वेडॆंद ॥ 22 ॥
कथॆयनिदना केळिदॆनु कडु शिथिल वादवु हिंदकिवु रिपु-
मथनवुंटे हेळु बॊम्मद मातदंतिरलि

करता है? यह सब कथा-कहानी की बातें नहीं। ब्रह्मादि प्रमुख (मुख्य) देवताओं से न डरनेवाले राक्षसों की हत्या मानवों से संभव है? आप यह सब बातें समझते क्यों नहीं पिताजी?" इस प्रकार अतिकाय ने निवेदन किया। १९ "खर, विराध, सुबाहु, मारीच आदि महान् बलशालियों की हस्ती कैसे मिट गयी? इंद्रपुत्र बलशाली वाली की क्योंकर दुर्गति हुई? इधर हमारी राक्षस-सेना में अपने भुजबल के पुजारियों की क्या दुर्दशा हुई? कुंभकर्ण तो राक्षसराजा था न? वह अब कहाँ है?—दिखाइये सही।" —इस तरह अतिकाय ने पूछा। २० "कम से कम अब तो शत्रुत्व भूल जाना चाहिए। सीता को क़ैद से मुक्त कर दो। इससे आप अधिक दोषभाजन होने से बच पाएँगे। इस मेरी बात को वेदवचन समझिए। कुख्याति का बोझ उतार दीजिए। पापभाजन मत बनिए। दुर्जनों से प्रयुक्त सरोवर के घाट का पत्थर मत बनिए।" इस तरह अतिकाय ने समझाया। २१ रे अतिकाय, तेरी बातें मैं समझ पाने में असमर्थ हूँ। तेरी राय ही विचित्र और निराली है। तेरी बातों का अंदाजा मारीच, विभीषण तथा कैकसा, माल्यवंत जैसों का है। (तू उन्ही की तरह बोल रहा है।) युद्ध से अगर डरता है तो निकल जा यहाँ से। व्यर्थ की यह तेरी बकझक् बन्द कर। मेरा माथा मत खा।" इस तरह रावण ने डाँटा। २२ तुम्हारे ये सारे कथन सुने जो निस्सत्त्व हैं, बेकार हैं। इसके पूर्व, शत्रु के साथ, ऐसा युद्ध

मिथुळजेय बिडॆ बिडॆ छलवनति मथनवनु बिडॆ रामनलिपुर
मथन कूगिट्टॆडॆयु कडॆयण मातिदीगॆद ।। 23 ।।
अहुदु मत्तेनार चित्तद लिहुदनवरे बल्लरिदु ता
विहितवे निनगादडी वीळॆयव तनगॆनलु
विहित विदु नमगॆनुतला दुस्सहनु बळिका निर्भयन नि-
स्पृहन कळुहिद नित्तु वीळॆयवनु महाहवकॆ ।। 24 ।।
तरिसि तुळसिय दंडॆगळ निज शिरकलंक रिसिदनु कॊरळिन
लिरिसिदनु कोमलद विविधाभरणगळु सहित
वर ललाटदलूर्ध्व तिलकव धरिसि तायिगॆ नमिसि वैष्णव
ररस नडॆदनु जन मनोहर कायनतिकाय ।। 25 ।।
बहडॆ बन्नि भवाब्दि पोतन बहळ पदविय बयसुवडॆ नीव्
बहडॆ बन्नि जरामरण वर्जितन नॆदुवडॆ
बहुदु मत वैकुंठ वासिय गृहद भक्तर खेळ मेळद
लिहुदु निमगुंटादडॆंदनु भटरिगतिकाय ।। 26 ।।

कभी हुआ है ? कहो तो सही । विधि की बात जाने दो । मैथिली को मुक्त नहीं करूँगा । अपनी जिद्द भी नहीं छोड़ूँगा । त्रिपुरारि शिवजी के कहने पर भी, चिल्ला-चिल्लाकर ताकीद करने पर भी, इस भारी भयानक युद्ध से विमुख न होऊँगा, यह मेरा आखिरी निर्णय है ।" इस प्रकार रावण ने कहा । २३ "तब ठीक है । मैं क्या कह सकता हूँ ? किसी के मन की बात अन्य कैसे ताड़ सकते हैं ? वही जाने जो जैसे सोचते हैं । यही तुम्हें ठीक लगता है न ? तब युद्ध के लिए मुझे अनुमति दीजिए । मैं बीड़ा उठाने को तैयार हूँ ।" इस तरह अतिकाय के कहने पर, "यह हमारे कुलगौरव के अनुसार— समुचित है" —इस तरह रावण ने कहा । तदनंतर उसने उस निर्भय, निःस्वार्थ अतिकाय को बीड़ा देकर युद्ध के लिए रवाना कर दिया । २४ अतिकाय ने तुलसी की मालाएँ मँगवाकर जूड़े में पहन ली । गले में सुन्दर आभूषण पहन लिये । माथे पर लंबा तिलक धारण किया । फिर माता को प्रणाम किया । तत्पश्चात् विष्णु-भक्तों के अधिपति मनोहर शरीरधारी अतिकाय युद्ध के लिए रवाना हुआ । २५ "संसार रूपी सागर को पार पहुँचानेवाले नौकर रूपी परमात्मा का साहचर्य चाहनेवाले चाहें तो आवें; जरा-मरण-रहित (चिन्मय) को पाने के इच्छुक चाहें तो आवें; वैकुंठवासी भक्तों की विनोद-चर्चा में जो भाग लेने के भाग्यशाली होना चाहते हैं, (चाहें तो) साथ दे सकते हैं ।" इस तरह कहते योद्धाओं को अतिकाय ने आह्वानित

इल्लिगिंद सहस्रमडिनिमगल्लि सुखसाम्राज्य पद वि-
तिल्लिगिंदवें कोटिगुण वयकेय फलप्राप्ति
इल्लिगिंदतिशय मनोहर वल्लि पुसियेंनवेड लक्ष्मी-
वल्लभन पददाणें वहुदतिलेसु निमगेंद ॥ 27 ॥
ईशनहुदुंटादडंबो जासहन रूपहडें दिविजा-
धीश नहडें चतुर्विधोदय फलव वयसुवडें
केशवन कूडुवडें तपदभिलाषें यिल्लदें तीर्थयात्रा
यास विल्लदें वहुदेंनुत होय्सिदनु डंगुरव ॥ 28 ॥
मनेंगे मनवारतेंगें धनविगें वनितेंयरि गभिलापें माडुव
मन बरड रिरि जीवदासेंगें जवन केंवशद
अनुवरद भयभरितरिरि हिंदनु विचारिसदंजदोंदे
मनद वीररु बन्नि तन्नोडनेंद नतिकाय ॥ 29 ॥
अकट केंडवेडिदुवें परमार्थकद नुडि परब्रोम्म विदिरलि
प्रकटिसुत्तिदें मरळि बयसिदडिल्ल गति निमगें
सकल तीर्थ स्नानदा नाधिक तपोयज्ञादि फलविवु
मुकुति पद्धतियल्ल बल्लर बहुदु लेसेंद ॥ 30 ॥

किया। २६ "यहाँ से सौ गुना अधिक सुख का साम्राज्य तुमको वहाँ मिलेगा। यहाँ से करोड़ गुने अधिक तुम्हारे मनोरथ वहाँ पूर्ण होंगे। यहाँ से अत्यधिक बढ़कर है वहाँ की मनोहर झांकी। इसे झूठ मत समझो। लक्ष्मीकांत के चरणों की सौगंध खाकर कहता हूँ। तुम लोगों का इस युद्ध में भाग लेना अत्यंत श्रेयस्कर है।" —इस तरह अतिकाय ने कहा। २७ "अगर तुम ईश्वरस्वरूप होना चाहते हो, ब्रह्मरूप पाना चाहते हो, देवेन्द्र होने की इच्छा रखते हो, चतुर्विध पुण्यफलों की अपेक्षा रखते हो, केशव की प्राप्ति की चाह अगर तुममें हो, तो तपस्या की आशा त्यागकर, बिना तीर्थयात्रा के परिश्रम के (मेरे साथ) चले आना।" इस प्रकार घोषित करते अतिकाय ने ढिंढोरा पिटवाया। २८ "चाहे तुम घर-बार, धन-दौलत, स्त्री आदि के लिए आशा करनेवाले ही क्यों न हों, अधीर मन वाले ही क्यों न हों, चाहे प्राणों के मोहवश हो यम के हाथों में पड़ जाने के भय से युद्ध में पधारने में भले ही भयभीत हों, तुम अपने पूर्व जीवन की (इन) कमजोरियों पर ध्यान न देते हुए जो निर्भय हों, ऐसे वीर अन्यथा सोच-विचार न करते दृढ़ निर्धार के साथ, मेरे साथ आयें।" इस तरह अतिकाय ने कहा। २९ हाय! तुम लोग अपना सत्यानाश मत करो। यह परम (श्रेष्ठ) सत्यवचन है। सम्मुख ही परब्रह्म प्रत्यक्ष प्रकट हुए हैं। फिर

अरियि बेडाध्यात्म विद्येय नरिदेनेंदन बेड बोम्मन
नरिदु भजिसलु बेड भक्तिय लकट कर्मदलि
कुरिगळागलु बेड बेगेच्चरु वडिदु तासमयविदुनुळि
दरसिदरे बळिकिल्ल कल्पसहस्र परियंत ॥ 31 ॥
आव सुकृतव माडिनोडिदडीव फल विनितिल्ल नोडिद
डाव सिद्धांतदलि नाना दर्शनंगळलि
ई विशेषव काणेनिदु मत्तावमार्गदोळिल्ल बहु मा-
या विलासद बलेगे बीळदे बहुदुलेसेंद ॥ 32 ॥
आदि पुरुषनप्रमेयन वेदसिद्धन विश्वपूज्यन
भूदिवानल सलिल सूर्यात्मकननच्युतन
ऐदु ववरैतन्नि हरिसिरिपाद भजकरु बन्नि परतर
वाद वस्तुविदल्ल दिल्लेंदेत्तिदनु करव ॥ 33 ॥
मुत्तु नीरिनलाद बळिकदु मत्ते नीरहुदे सुवर्णक
वेत्तकब्बुन मत्तेकब्बुनवहुदे रसतागि

एक बार चाहोगे तो ऐसा भाग्य प्राप्त नहीं होगा। समस्त पुण्यतीर्थ-क्षेत्रों में स्नान, दान, श्रेष्ठ तपस्या, यज्ञ वग़ैरः मुक्ति के साधन नहीं हैं। यह समझकर अगर आना चाहते हों तो आवें। यह उत्तम मार्ग है।" इस तरह अतिकाय ने कहा। ३० "अध्यात्म विद्या समझते नहीं तो कोई बात नहीं; ब्रह्म को समझ लेने के तथ्य से भी प्रयोजन नहीं; भक्ति से पूजा करने की भी ज़रूरत नहीं; कर्माचरण में बकरे मत बनो। शीघ्रातिशीघ्र जाग्रत् होने का यही सुअवसर है। इस मौक़े से हाथ धोकर अन्वेषण में (ब्रह्म के) सहस्र कल्पों तक लगे रहो तो भी ऐसा सुअवसर कभी नहीं मिलेगा। ३१ जिस किसी भी प्रकार के पुण्याचरण से इतना फल नहीं मिलेगा। जिस किसी तत्त्व में या विभिन्न दर्शनों में यह विशेषता नहीं दिखाई देती। यह अन्य किसी मार्ग से प्राप्त नहीं हो सकती। अतः मायाविलास के आधीन न होते हुए अब आना (युद्ध के लिए मेरे साथ चले आना) श्रेयस्कर है।" इस प्रकार अतिकाय ने कहा। ३२ आदिपुरुष, नाप-तोल के परे जो हैं, वेद-सिद्ध, विश्वपूज्य तथा भूमि, आकाश, अग्नि, जल, सूर्यस्वरूपी जो स्वयं हैं—ऐसे अच्युत (नाश-रहित) को पा लेने के लिए आएँ। आगे क़दम रखें। जो इनको पूजना चाहते हैं—साथ चलें। इनको छोड़कर अनन्य मोक्ष-वस्तु अन्य कोई है ही नहीं। इस तरह अपना हाथ उठाकर अतिकाय ने कहा। ३३ "पानी से मोती उत्पन्न हो, वह मोती फिर पानी कभी बन

सत्तु हुट्टुव हुट्टिट होंदुव सुत्तुदोंडकिन तोंडक नोंल्लद
चित्त शुद्धिय सुभट रैतहुदेंद नतिकाय ।। 34 ।।
बळसि बंदुदु बळिक तत्वद तिळिविनसुररु रामने निज
वळियदमल ब्रह्मवेंदें भक्ति भावदलि
कलिग ळैदिदरश्व दंतावळि वरूथ पदातियलि नि-
र्मल मनोरंजकन नघशत कोटि भंजकन ।। 35 ।।
मोंळगिदवु दिगुबंध दवनिय होंलिगें हडियलु वाद्यतति नभ
दोंळगें गुडिविडि दाडिदनु नारदनु नलविनलि
ओंलिदु सनकादिगळु हूविन मळेंय करेंदरु परम वैष्णव
तिलक नंगदलज भवामर निकर नलिदाडें ।। 36 ।।
होंळल होंडवंटनु सरागदिनोंळु भटावळि सहित कहळा
वळिय बिरुदिन पाठकर कळकळद रभसदलि
नेंलन नळेंद त्रिविक्रमन मैयळतेंयलि मैदोरिदनु कपि-
बलकें बलविद कंडुकळवळिसित्तु भीतियलि ।। 37 ।।

सकता है ? रससिद्धि से लोहा जो सोना बनता है, फिर रस से संपर्क स्थापित कर वह कभी लोहा बन सकता है ? पैदा होकर मरना फिर पैदा होना —इस जनन-मरण के चक्र से जो मुक्ति पाना चाहते हैं, ऐसे शुद्ध चित्त के वीर आयें ।" ऐसा अतिकाय ने कहा । ३४ राम ही सत्य-स्वरूपी परब्रह्म है —इस तत्व को भक्तिभाव से आत्मसात् करनेवाले राक्षस अतिकाय के साथ-साथ आये । घोड़े, हाथी, रथ के सैनिक, पैदल वीर, मन को आनन्द प्रदान करनेवाले, सौ करोड़ पापों का विनाश कर डालनेवाले श्रीराम के पास आए । ३५ इस प्रकार रणवाद्य (युद्ध के नगाड़े) बजे कि दिशाएँ तथा धरती को जोड़नेवाले टाँके फट जायँ । आकाश में नारद खुशी के मारे नाच उठे । सनकादिकों ने अत्यंत हर्षित होते हुए परम विष्णुभक्त (अतिकाय) पर फूलों की वर्षा की । ब्रह्मा, शिव तथा देवतागण नाच उठे । ३६ तुरइयों की ध्वनि, चारण-भाटों की स्तुतियों के मध्य अतिकाय श्रेष्ठ वीरों के साथ चलते हुए लंका नगरी से शीघ्रातिशीघ्र रवाना हो युद्धभूमि में आया । भूमि और आकाश को अपने पगों से नापनेवाले अद्भुत आकार के त्रिविक्रम-सदृश अतिकाय कपि-सेना को दिखायी दिया । राक्षसों की इस सेना को देख कपि-सेना भय के कारण व्याकुल हुई । ३७ "यह महामारी फिर से न जाने कहाँ से टपक पड़ी । महान भयानक

मारि बंदुदु मत्तॆ बंदन घोररक्कस कुंभकर्णनु
वीर राघवनवन कॊंदुदु पुसियॊ मेण् दिटवॊ
आरु कादुवरिवरॊडनॆ मदनारि मलॆवडसाध्य साकु ख-
रारि ताने कादिकॊळलॆनुतोडित गलदलि ॥ 38 ॥
मॊग्गरद मॊदलिगर तप्पिसि नुग्ग निदिरलि कार्णनसुरन
निग्गरकॆ तनुदिक्कु दिगिलॆनु तिर्दुदिनसुतन
तग्गुतिर्दुदु धरणि दिग्गज मुग्गुतिर्दुवुकंडु रघुपति
हिग्गिदनु हेराळ नगॆयलि नोडि लक्ष्मणन ॥ 39 ॥
इवनदारै सत्त कुंभश्रवण मत्तुदयिसनले भा-
रविसुतिदॆ बॆरगॆमगॆ कडुकौतुकद भटनिवनु
इवन रूपिन रक्कसरु निम्मवन कटकदलॆनिबरॆंबुद
नॆवगॆ हेळॆंदरस बॆसगॊंडनु विभीषणन ॥ 40 ॥
ईतनीगलॆ जीय बाहुबलातिशय नाहवकॆ हाविन
ला तमिस्त्रियलॆम्म बलवनु बॆदरिसिद भटन
मातॆगिव मगनिवनवन सहजातनिवनु कुमाररलि वि-
ख्यात निवनति कायनॆंबुदु हॆसरलॆयॆंद ॥ 41 ॥

वह कुंभकर्ण राक्षस फिर से आया। उसकी हत्या जो वीर राम ने की थी वह झूठ है या सच ? इसके साथ कौन युद्ध कर सकता है ? साक्षात् शिवजी के लिए भी इसका सामना करना असम्भव लगता है। खर-शत्रु राम ही चाहें तो युद्ध करें।" इस तरह कहते कपिसेना जिधर-तिधर भाग खड़ी हुई। ३८ यह राक्षस सेना के सम्मुख आ पड़नेवालों से बचकर आगे नहीं बढ़ता। इस राक्षस की पीड़ा सहनातीत है। इसे देख, सुग्रीव की देह थरथर काँप उठी। अतिकाय के आते वक़्त धरती धँस रही थी। दिग्गज डाँवाडोल हुए। अतिकाय को देखकर रघुपति ज़ोर-ज़ोर से हँसते लक्ष्मण को देखकर फूले न समाए। ३९ "यह कौन है ? मरा कुंभकर्ण फिर से तो पैदा नहीं हुआ न ? इस कौतूहलपूर्ण (संपन्न) वीर को देखकर हमको आश्चर्य हो रहा है। इसी प्रकार के रूपधारी राक्षस तुम्हारे रावण की सेना में और कितने हैं ? —यह हमको बताओ।" —इस प्रकार राम ने विभीषण से पूछा। ४० "प्रभो, यह युद्ध में महान् प्रतापशाली है। उस दिन रात को सर्पास्त्र का प्रयोग करके हमारी सेना को भयभीत बनानेवाले वीर इन्द्रजित् की माँ के यह पुत्र हैं। इन्द्रजित् का यह भाई है। रावण के पुत्रों में यह बहुत प्रसिद्ध है। इसका नाम अतिकाय है।" इस प्रकार विभीषण ने

अवनु कडुपातकनु पुण्यश्रवण निवनॆलॆ जीय जगदॊळ
गवनु दैवद्रोहियिवनु सदैव नसुररलि
इवगवन पडिगट्ट बहुदाहवद वैचित्रतॆगॆ मिक्कं
तिवर्गॆ सरियह सुभट रिल्लॆलॆ देवकेळॆंद ॥ 42 ॥
इनित केळिदनसूनु जांबव हनुम नळनीलांग दाद्यरु
मनद भीतिय बिसुट्टु मनुकुल सार्वभौमकन
मनव मॆच्चिसलिदु समयवॆंस गॆनुत तनुगळ नोव दॊंदे
मनदलरिभट निदिरिनलि माड्रांतराहवकॆ ॥ 43 ॥
हदननिद कंडंतरिसि निंदिदरु गवयगवाक्ष दुर्मुख
रदऱ हवणरिदा शरभशतबलि सुषेणकरु
अंदॆवॊयलिनंजिकॆ गळनु कॊलकॊंदॆदु निंदरु मिक्कवरु दू-
रदॆलि थरथरगट्टि कदनकॆ माडिदरु मनव ॥ 44 ॥
हिडिद गिरि तरुगळलि बलवंगडद विगड गळलि कल्पद
सिडिल सडगरदंतॆ बलनॆडकोड कैगळलि
पडिमुख दॊळाहवदुपक्रम कॊंडरिसिद नतिकाय रक्कस
पडॆय गडणदलेऱिदनु बहुवाद्य रभसदलि ॥ 45 ॥

कहा ।४१ वह महापापी है; यह पुण्यशाली है। जगत में वह भगवत्-द्रोही है; यह भगवत्-भक्त है। राक्षसों में ही यह श्रेष्ठ भगवत्-भक्त है। युद्धकला-नैपुण्य में इसकी उसके साथ तुलना कर सकते हैं। अन्य विचारों में इनकी बराबरी करनेवाला वीर दुर्लभ है, स्वामिन्!" इस तरह विभीषण ने कहा।४२ विभीषण से यह सारी बातें सुनने वाले सुग्रीव, जांबव, हनुमान, नल, नील, अंगद आदियों ने अपने भयपूर्ण विचारों को त्याग, मनुकुल चक्रवर्ती राम को प्रसन्न करने के लिए यही सुअवसर है—इस तरह समझते हुए, अपनी देह की ममता त्यागकर, मन की एकाग्रता से शत्रुवीर का सामना करते हुए युद्ध करने के लिए तैयार हुए।४३ इस वस्तुस्थिति को पहचान कर गवय, गवाक्ष, दुर्मुख आकर डट गये। इसे जानते हुए शरभ, शतबली, सुषेणकों ने हृदय दहलानेवाले भय को लात मारकर युद्ध के लिए तैयार हो गये। अन्य जो थे दूरी पर खड़े रहे थरथर काँपते हुए भी, युद्ध में भाग लेने का उन्होंने निश्चय किया।४४ पेड़-पहाड़ों को हाथ में धारे झुंड के झुंड दाहिनी ओर खड़े रहे, प्रलय-कालीन विद्युत् के संभ्रम-सदृश बायीं ओर पर्वत-शिखरों को उठाए खड़े रहे कपिसेना के सम्मुख अतिकाय युद्धारंभ-कार्य में लीन हुआ। तरह-तरह के युद्ध के बाजे जब बजने लगे तो अपनी राक्षससेना-समूह के साथ अतिकाय

हरिगॆ खड्ग कठारिकुंतद चरण चररुप्परद कुदुरॆय
करद खड्गद रावुतर रणमदद रदनिगळ
शिरद निशितांकुशद जोदरवर वरूथारोहकर मो-
हरद मेळदलब्बरिसु तॊळहॊक्कनतिकाय ॥ 46 ॥
एन हेळुवॆ कुंभकर्ण महानिशाचर गिम्मिगिल रण-
दानिकॆय रक्कसन रणरंजकद रौरवद
सूनॆ गारनॆ कॊलॆयलमरर मानिनिय रप्पुगॆय लडरुव
वानररने काणलाय्तंबरद वळयदलि ॥ 47 ॥
हरणदासॆय नोडदीबल बॆरसिता बलदॊळगॆकैमै
मुरियदोसर पैसरगळॊळ हॊगद हरहिनलि
सरिबॆसन संगरव मॆरॆदरु सुरकदंबक मॆच्चॆ हेणनु-
प्परिसॆ रुधिरांबु प्रवाहद लणुग कॆळॆंद ॥ 48 ॥
चुटळ भटरुभयदलि मॆरॆदरु पटुतनवनपवर्ग सर्ग
स्फुट निकेतन वीथिगळलंभोज भवपुरद
घटिसितल्लि मेलॆ कपिपटु भटरॊळाहववा निशापरि
यटन रथ हय वारणारोहकर सेनॆयलि ॥ 49 ॥

कपिसेना पर चढ़ आया। ४५ ढाल, तलवार, कटार, बरछी, वग़ैरः उठानेवाले पैदल सिपाही, हाथ में खड्ग धारण करनेवाले ऊँचे घोड़ों पर आरूढ़ घुड़सवार, पैने अंकुश धारे मदमस्त हाथियों पर बैठे योद्धा, रथ पर सवार वीर —इनकी सेना के साथ गरजते हुए अतिकाय ने वानर-सेना में प्रवेश किया। ४६ युद्ध में, सामना करने में, आक्रमण करने में (वह) मानों कुंभकर्ण महाराक्षस के दुगुने वेग से युक्त भयंकर युद्धप्रिय अतिकाय राक्षस ने कैसे भयानक युद्ध किया —इसका वर्णन किन शब्दों में करें? हत्या करने में बिलकुल (वह) क़साई था! आकाश में सर्वत्र देवलोक की नारियों के आलिंगन के हेतु दौड़ रहे कपि ही कपि दिखायी दिए। ४७ प्राणों पर का मोह त्याग वानर-सेना न झिझकते, देह को पीछे की ओर न मुड़ाते, पीछे न हटते राक्षस-सेना पर टूट पड़ी। दोनों सेनाओं के सम-विषम युद्ध को देखकर देवता भी प्रसन्न हुए। (बहते) रक्त-प्रवाह में मुर्दों के ढेर के ढेर खड़े (पड़े) दिखायी दिये। सुनो पुत्र, इस तरह वाल्मीकि ने कहा! ४८ दोनों तरफ़ के क्रियाशील वीर मोक्ष स्वर्ग-प्राप्त करनेवालों के लिए बंधे महलों से युक्त ब्रह्माजी की नगरी की गलियों में फुर्ती से विचरण करने लगे। उसके बाद अतिकाय के रथिक, घुड़सवार तथा हाथी

सीळि हाय्किदरानॆगळनु नखाळियलि बिगिदुगिदु करुळ्गळ
मालॆगळ मरुळुगळ कॊरळ्गळॊळिक्किदरु हयव
तुळुवर्तिरथ राजिगळ गिरिचूळिकॆयले चल्लबडिदम
राळिहॊगळलु कादिदरु नीलांगदादिगळु ॥ 50 ॥
बळिक लेवेळ्वॆनु कुधरावळिय काळगदॊळॆगॆ वज्रिय
कुलिश कॊळाहळिसुववॊलतिकाय नुरवणिसि
हळचिदनु हरिदश्व तनुजन नळन नीलन जांबवन शत-
बलि सुषेण गवाक्ष मैंद द्विविद पटुभटर ॥ 51 ॥
कॊलिगॊब्बॊब्बर समीकद लीलॆयनु संतैसि मिक्किन
बालदण्णगळसुव नुगिदनु हॊक्क मैगळलि
कालनुरवणॆयो कपर्दिय कोलुगॊलॆयो भैरवन रण-
केळियॊ नानरियॆनतिकायन रणोत्सवव ॥ 52 ॥
अॆत्त नोडिदडत्ततलॆगळु कत्तरिसि बिद्दिर्द कपिवॆण
नॆत्तनॊडिदडत्त कैकालुडिद कपिसेनॆ
अॆत्त नोडिदडत्त हॆणगळ नॆत्तिनभकुप्परिसि निगुरुव
नॆत्तरिन मयवल्ल दिल्ला कळनॊळगलदलि ॥ 53 ॥

पर आरूढ़ योद्धाओं की सेना में समर्थ वानर वीरों का युद्ध शुरू हुआ। ४९ राक्षस-दल के हाथियों को उन्होंने चीर डाला; नाखूनों से फाड़कर अंतड़ियों की माला को बाहर निकाल (उन्हें) रण-पिशाचों को पहनाया। घोड़ों को, आगे बढ़नेवाली रथों की पंक्तियों को पहाड़ की चोटियों से इस प्रकार पीटा कि वे तितर-बितर हो जायं तथा इस (कौशल्य) को देख देवता भी वाहवाह करें —इस रीति से नील-अंगदादियों ने युद्ध किया। ५० उसके बाद की घटना का किन शब्दों में वर्णन करें? पहाड़ पर इन्द्र के वज्र गिरने के सदृश हुए (उस) युद्ध में अतिकाय बड़े वेग से आकर सूर्यपुत्र सुग्रीव, नल, नील, जांबव, शतबलि, सुषेण, गवाक्ष, मैंद, द्विविद आदि प्रमुख वीरों पर टूट पड़ा। ५१ अतिकाय ने एक-एक बाण चलाकर एक-एक की खबर लेकर उनके युद्ध के खेल को ठंडा कर दिया। फिर जहाँ-जहाँ गया, वहाँ पूंछवाले इन भाइयों के प्राण हर लिये। यमदेवता की चढ़ाई है या शिवजी के बाणों का तमाशा है या भैरव का भीषण संहार-सत्र है! अतिकाय के युद्ध के अद्भुत चमत्कार का किन शब्दों में वर्णन करूँ! वर्णन करने में असमर्थ हूँ! ५२ युद्धभूमि में जहाँ कहीं देखो कटकर गिरे कपियों के शव ही शव थे; जिधर-तिधर हाथ-पैर कटे कपियों की सेना के शव; जहाँ देखो वहाँ मुर्दों को बहाकर

मुट्टि कादलु बंद हनुमन कट्टिदनु कमलज भवास्त्रद
लिट्टणिसु वतिबलर हेरोडलुगळलंबुगळ
ऒट्टिदनु तन्नोडनॆ बवरद बट्टॆयनु बारदवोलसुरघ
रट्टनिदिरलि हॊळकिदनु हॊंदेरनतिकाय ॥ 54 ॥
अहुदॆ जीय समग्र साहस नहनॆ मॊदले देवरिगॆ बि-
न्नहव माडिद मातिगनृतवु हॊद्दलॆतनगॆ
अहत बलनिव निवनघन विग्रहवनानुवुदरिदॆनलु गह-
गहिकॆयलि तूष्णीकरिसि सौमित्रि मान्नांत ॥ 55 ॥
राय चित्तैसिवन गॆलुव रणायतद रंजकवनॆनुतस
हायशूरनु हॊक्कनेकांगदलि संगरव
सायकद बिगुहिनलि कंडतिकाय निगितदिद सिरि ना-
रायणांशीभूत नॆंदरिदंतरिसि निद ॥ 56 ॥
एन हेळुवॆ बळिकला रघुसूनुविन सहभवन चाप
ध्वानवनु सडगरिसुता लंकापुराधिपन

ले जाते आकाश की ओर फूट पड़े रक्त के फव्वारे ही दिखायी पड़ रहे थे। (इसके सिवा वहाँ और कुछ नहीं दिखायी दे रहा था)। ५३ (अतिकाय ने) अपने से युद्ध करने के लिए नज़दीक आनेवाले हनुमान को ब्रह्मास्त्र से बाँध डाला। अपने को घेरने आए बलशालियों के बड़े-बड़े शरीरों को बाणों से इस प्रकार भर दिया कि वे फिर युद्ध करने के लिए सामने न आवें। उसके बाद असुरारि राम के सम्मुख अतिकाय ने अपना स्वर्णमय रथ आगे बढ़ाया। ५४ "स्वामिन, यह महान साहसी है —यह बात सत्य प्रतीत नहीं होती! पहले ही मैंने जो सेवा में निवेदन किया है —यह बात झूठ सिद्ध होने का अपवाद (बदनामी) मुझ पर सिद्ध न होगा न? यह असमान बलशाली है। इसके शरीर का सामना करना असाध्य है।" इस प्रकार विभीषण के कहने पर लक्ष्मण खिलखिलाकर हँसते हुए विभीषण का मुँह बन्द करके उन्होंने अतिकाय का सामना किया। ५५ "हे राजा, इसे युद्ध में किस प्रकार जीतता हूँ —उस मनोहरता को देखते रहो।" —इस तरह कहते असहाय शूर लक्ष्मण ने अकेले ही युद्ध में प्रवेश किया। लक्ष्मण के आयुधों पर की पकड़ देखकर अतिकाय ताड़ गया कि यह श्रीमन्नारायण के अंश से संभूत (उत्पन्न) महानुभाव है। (फिर) उसने लक्ष्मण का सामना किया। ५६ तदनंतर राम के भाई ने जो धनुष का ठेंकार किया —उसका वर्णन किन शब्दों में करें? मदोन्मत्त हाथी पर टूट पढ़नेवाले क्रोधोन्मत्त सिंह की भाँति लक्ष्मण

सूनुविन सरिसदलि सिंहध्वानदलि निलुकिदनु मदमुख
दानॆयलि मुळिदॆद्द मृगराजेंद्रनंददलि ॥ 57 ॥
बंद भरदॊळगात नीतन नॆंदनळवियॊळुब्बिऱिदु रघु-
नंदननॊ लक्ष्मणनॊ नी नारॆंदु सरिसदलि
निंदु केळलु केळि लक्ष्मण नॆंदनॆलवो निन्न मनकॆ
नॆंदु तोऱितु तोऱिदनितनॆ बगॆंदुकोयॆंद ॥ 58 ॥
रणकॆ नमगारादरेनद रॆणिकॆ नमगिल्लावु समरां-
गणदॊळात्मनिवेदकरु सचराचरात्मंगॆ
रणकुतूहल रचनॆयनु सुरगणवु मॆच्चलु तोऱुवॆनु भा-
रणॆय भट नीनादरनुवागदु बॊब्बिऱिद ॥ 59 ॥
जरिदवमर वधूजनद निर्भरद गर्भद पिंडगळु धरॆ
गुरुळि बिद्दवुकैय कैदुगळजसुरादिगळ
हरन शिरद सुधांशुमंडल जरिदुदर्धकॆ राघवेंद्रन
करण कळवळिसिदुदु बॊब्बिऱितकॆ निशाचरन ॥ 60 ॥
मोहिदरु बळिकिब्बरळविय लाहवद संकेत समयद
साहसद सौरंभदुब्बिन बॊब्बॆगळ बळिय

ने सिंहनाद करते लंका के राजपुत्र (अतिकाय) का सामना किया। ५७ लक्ष्मण को ज़ोरदार आक्रमण के लिए आते देखकर अतिकाय ने ज़ोर से गरजते हुए— "तू रघुनंदन है या लक्ष्मण है ? कौन है तू ?" इस तरह सामना करते हुए पूछा। यह सुनकर लक्ष्मण ने— "रे रे, तुम्हें जो ठीक लगता है —वही समझ ले कि मैं जो भी हूँ।" —इस प्रकार कहा। ५८ "युद्ध के लिए जो कोई भी आवे, हम उसकी परवाह नहीं करते। हम युद्धरंग में चराचरात्मा को (अपने को) समर्पण कर लेते हैं। कौतूहलपूर्ण युद्धरचना इस प्रकार हम दिखाएँगे कि उसे दिखकर देवता भी प्रसन्न हों। अगर सामना करने की हिम्मत रखनेवाला वीर है तो युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।" इस तरह कहते अतिकाय गरज उठा। ५९ अतिकाय की गर्जना सुनकर देवता-स्त्रियों के (पूर्ण) नव मास भरे गर्भपिंड विचलित हो, गिर पड़े; ब्रह्मादि देवताओं के हाथ के आयुध (शस्त्रास्त्र) फिसलकर धरती पर गिरे; शिवजी के सिर पर का चन्द्रमंडल आधा गिर गया; राम विचलित हुए। ६० युद्ध के नियमों के अनुसार साहस के संभ्रम से युक्त हो फूलकर चीखते-चिल्लाते हुए दोनों ने एक-दूसरे पर वार किया। मनुष्य-कुल का

काहुरद कर्णगळलि रणसन्नाह रेच्चाडिदरु सुररु-
त्साहिसलु नरराक्षसान्वय राजिरंगदलि ॥ 61 ॥
अँसुगॆगळ कैचळकगळ बिबिसिद बिलुगळ चंडकांड
प्रसर दुब्बर दब्बरद बॊब्बॆगळ भटरुगळ
विषम रणरंजनॆगॆ देव प्रसरविद्दुदु नट्टदृष्टिय
मुसुडि नॊलहिन बिगिद बॆरगिन सुखद सुग्गियलि ॥ 62 ॥
बिसिबिसिय बोळॆगळ तळपद रसुमॆगळ कवलंबुगळ डा-
ळिसुव हॊगरिन कंडळद कणलिगॆय कोलुगळ
विशिखगळ घनविस्फुलिंग प्रसरगळ नानाशरावळि
मुसुकिदवु मुंबरिदु भूम्याकाशमंडलव ॥ 63 ॥
बळिक लेवेळुवॆनु बाहालुळित बलनतिकायनॆसुगॆय
चळचमत्कृति चटुळ निशित महोग्र बाणगळ
हिळुक हॊदॆसिद वगजॆयनुजन जलधि बैचिट्टंतॆ निमिषदॊ
कळवळिद नतिकाय नाहवदॆसुगॆ गसुरारि ॥ 64 ॥
बिच्चिदनु बळिकीत नसुरन निच्चटद शरपंजरव मगु
ळॆच्चु बाणव कडिदु नोयिसिदनु निशाचरन

लक्ष्मण और राक्षस-कुल का अतिकाय —दोनों ने एक-दूसरे पर बाणों की वर्षा करते युद्ध किया कि यह देख देवताओं का उत्साह भी बढ़ गया। ६१ दोनों वीरों ने सिंहनाद करते हुए, उग्र बाणों को धनुष पर चढ़ाते हुए, कौशल्यपूर्ण बाण-प्रयोग करते समय हो रहे शब्दसमूहों के साथ-साथ हो रहे इस असमान युद्ध को टकटकी लगाकर देखते हुए, मुखड़ों को मोड़ते हुए आश्चर्यपूर्ण भावों से भरे देवता युद्ध के इस विनूतन दृश्य के मौसम से आनंद-पुलकित हुए। ६२ गरमागरम सीधे बाण, चमकते-दमकते टेढ़े बाण, कांति बिखेर रहे शाखायुक्त बाण, गाँठ वाले बाण, आग उगलते बाणों के विविध प्रकार के बाण एक-दूसरे के धनुष से छूटकर भूमि तथा आकाश को ढाँप लेते हैं। ६३ बलशाली भुजाओं से युक्त शक्तिमान अतिकाय से चमत्कार-पूर्ण ढंग से छूट रहे उग्र बाणों के पंखों से पार्वती के भाई मैनाक को जैसे समुद्र ने छिपा रखा था, उसी प्रकार लक्ष्मण (उन बाणों से) छिपाये गये थे (उन बाणों के पंखों से ढाँपे गये थे); इसका वर्णन किन शब्दों में करें। अतिकाय के बाणों के प्रहार के कारण लक्ष्मण क्षणार्ध में थक गया। ६४ फिर लक्ष्मण ने राक्षस-निर्मित बाणों की जकड़ के पिंजरे को खोल दिया; पुनश्च बाण छोड़ रहे अतिकाय के बाणों

चुच्चुवस्त्र व्यर्थेय सैरिसु तेंच्चनव नीतननु कवचव
नुच्चि मुळुगिदवंबु लक्ष्मणदेवनंगदलि ॥ 65 ॥
संधिसिद सरळिऱितदलि मिगॆ नोंदु लक्ष्मणदेव नहुदो
संद भटरोळगग्गळनु मामा प्रसिद्धनल
अंद लेसॆसुगॆगळ हगॆगळलोंदॆरडु गुणविरलसूयॆय
तंदरितररु नगुवरॆनु तितॆंदनसुरंगॆ ॥ 66 ॥
बल्लिदरु नीव् निम्मसाहस किल्ल सरिसुर नर भुजंगम
रल्लि नाना सुरनरोरग भुवनदवरॆसॆ
कल्लुमरनवरुळिदवरु बिडु बिल्लिनवरा विब्बरदरॊळु
बल्लिदनु तानल्ल तन्नय परियनोडॆंद ॥ 67 ॥
ऎनुत शरवैदऱलि दशमुख तनुज नुरुवक्षवनु कीलिसि-
दनु सुमित्रासूनु सुम्मानिसॆ सुरव्रात
धनु सडिलि कालनडुगि कंपिसि तनुवळलि कैगुंदि कडुहिन
मोनॆ मुऱिदु मै मरॆदु सोलकॆ संदनतिकाय ॥ 68 ॥

को बीच में ही काटे डालकर उसको (घातक बनाकर) वेदना पहुँचायी। अपने शरीर में चुभे बाणों की वेदना को सहते हुए अतिकाय ने जब बाण-प्रयोग किया तब वे बाण लक्ष्मण के कवच को विदीर्ण कर उसकी देह में चुभ गये। ६५ अपने पर हुए बाणों की वर्षा से पीड़ित हुए लक्ष्मण ने— "ठीक, (अब तक के) आए वीरों में तू श्रेष्ठ है। वाह-वाह, तू प्रसिद्ध है। तेरे बाण-प्रयोगों की रीति बड़ी ही सुन्दर है। शत्रुओं के एक दो अच्छे गुणों को देख डाह करें तो बुद्धिमान (लोग) हँसेंगे।" इस प्रकार अतिकाय से कहा। ६६ "तुम तो समर्थ हो; देव, मानव, नागों में तुम्हारे साहस की बराबरी कोई नहीं कर सकता। हम तो देव, मानव, नागलोकों से सम्बन्धित हैं। हम सब लोगों के शस्त्रास्त्र तो पेड़-पहाड़ हैं। धनुर्धारी तो हम दो ही हैं। उन दोनों में मैं तो समर्थ हूँ ही नहीं। फिर भी मेरी रीति तो देखो।" —इस प्रकार लक्ष्मण ने कहा। ६७ इस तरह कहते लक्ष्मण ने पांच बाण इस प्रकार चलाए कि वे रावण के पुत्र की छाती में जा चुभे। यह देख देवता हर्षित हुए। अतिकाय का धनुष उसके हाथ में ढीला पड़ गया, पैर कांपे; देह थर्रायी, थकावट के कारण हाथ काम न कर सके, उसकी वीरता की तीव्रता मंद पड़ी। मूर्च्छित हो अतिकाय हारने की स्थिति प्राप्त कर गया। ६८ धीरे-धीरे होश में आते अतिकाय ने सीतापति का स्मरण करते हाथ से

मेल्लनेच्चरिकेयलि सीता वल्लभन नेनहिनलि सडलिद
बिल्ल बलुविडिदुगिदु मूडिगे येंबनतिकाय
केल्लयिसि तिरुविनलि भारिय भुल्लवर्णेयलि मुक्तिवधु ध-
म्मिल्ल हस्तन्यस्त निदिरादनु सरागदलि ॥ 69 ॥

नीवु जगदधिदैव वेंबुद नावु बल्लेवु निजकुल स्वा-
भाव विद नाव् बिडलहुदे पूर्वपद्धतिय
नावु माडुव समरमुख संभावनोचित सरळभक्तिय
नीवु कैकोळ नेकेनुत तेगेदेच्चनतिकाय ॥ 70 ॥

केळु कुश निम्मय्यननुजन भाळदलि बिद्दुगिद केंगरि
गोलु नूकिदवरुण जलधारेगळनिद्देसेगे
केळिदै लव कोपिसिद लयकालदुग्रांबकन नयन
ज्वालेयंतिरे तोरिदनु सुरबलदकण् मनके ॥ 71 ॥

लेसु लेसै चापतंत्र विलासवोळ्ळितु वीरनहे मा
मा समग्र प्रबलनहे रघुपतिय पददाणे
ईसुदिन कादिद निशाटमहासुभट राहवके मिगि लें-
दा सुमित्रासुत सुरारिय नेच्चु बोब्बिरिद ॥ 72 ॥

खिसकते धनुष को मजबूती से पकड़ लिया। चिढ़कर तरकस से बाण खींचकर धनुष की डोरी पर चढ़ाते, मोक्षलक्ष्मी के जूड़े में हाथ डाले राक्षस अतिकाय लक्ष्मण के सम्मुख उपस्थित हुआ। ६९ "यह मैं जानता हूँ कि तुम जगत के अधिदेवता हो। परम्परागत हमारे कुल के स्वभाव (आचार) को हम कैसे त्याग सकते हैं? (अतः) मैं युद्ध के द्वारा गौरवयुक्त हो जो सरल (बाण) भक्ति से तुम्हारी पूजा जो करना चाहता हूँ, (कृपया) स्वीकार करें।" इस तरह कहते अतिकाय ने बाण छोड़ दिया। ७० सुनो कुश, तुम्हारे चाचा के माथे पर चुभे लाल पंखों वाले बाणों के दोनों पार्श्वों से रक्त के प्रवाह फूट पड़े। सुनो लव; देवताओं को लक्ष्मण मानों ऐसे दीखे कि क्रोध-संतप्त प्रलयकालीन रुद्र के भालनेत्र की आग की ज्वाला हो। —इस प्रकार बाल्मीकि ने कहा ७१ "वाह-वाह! भेष! तुम्हारा धनुर्विद्या-कौशल बहुत सुन्दर है। सचमुच तू वीर है। बाप रे! तू हर तरह से समर्थ है। रघुपति के चरणों की सौगंध। इतने दिन जो राक्षस महावीरों से लड़ाई लड़ी —उससे यह कई गुना बढ़िया है।" इस तरह कहते लक्ष्मण ने राक्षस पर बाण छोड़ सिंहनाद किया। ७२ अतिकाय की देह काँप

काय कंपिसितुरदोळद्दिद सायकद घातियलि नोंदनु
घायदलि मर्षिसुव मूर्छेय बळिय मरुकदलि
आयितकटा तंदे रावण नायुविगें कडेयेंनुत सिरि ना-
रायण ध्यानदलि मुक्तिगें माडिदनु मनव ॥ 73 ॥
नररिगी बलुहेंल्लियदु वानररिगी कडुहेंल्लियदु नर
हरिय लीला चरितविदु नाविन्नु कादुवदु
मरुळुतनवेंनु तंतरंगद सरसिजद कर्णिकेय मध्यद
लिरिसि रामन मूर्तियनु सौमित्रिगिंतेंद ॥ 74 ॥
कलहकाव् वेंग्गळरु लोकावळिय वीररोळरिदेंवाव् नीव्
जलरुहाक्षन बिंबवेंबुदु मरेय मातल्ल
तिळियलिदु तुदिगालवेंनुता कलित शरसंधानदलि कै
लुळिय लेंच्चनु वीरवैष्णव नूर्मिळापतिय ॥ 75 ॥
बाणवद कडिदब्बरिसि गीर्वाणपति होंगळलु चतुर्मुख
बाणदलि नेंगहिदनु मस्तकवनु निशाचरन
प्राणतोलगद मुन्नजिह्वाणदलि हरिविष्णु लक्ष्मी
प्राणनाथायेंनुत शिरवडरितु नभस्थळकें ॥ 76 ॥

उठी। छाती में चुभे (लक्ष्मण के) बाण से अत्यंत व्याकुल हुए। घाव की वेदना सहते, मूर्च्छा से चैतन्य प्राप्त करने पर दुःख से "हाय-हाय, पिता रावण की आयु परिसमाप्ति पर है !" इस तरह कहते (बिलखते) उसने श्रीमन्नारायण के ध्यान में लीन होकर मुक्ति पानी चाही। ७३ "मानवों का इतना सामर्थ्य (साहस) कैसे संभव है ? वानरों में इतनी वीरता कैसी संभव है ? यह नरहरि का ही लीला-विनोद है। इतने पर भी युद्ध करूँ तो मूर्खता ही कहलाएगी।" इस तरह कहते हृदय-कमल-मध्यस्थित श्रीराम की मूर्ति का ध्यान धरते लक्ष्मण से अतिकाय ने इस प्रकार कहा। ७४ "दुनिया के वीरों से युद्ध करने में हम तो श्रेष्ठ ठहरते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि तुम कमलाक्ष (श्रीहरि) के बिम्ब हो। वैसे सोचकर देखा जाय तो ये मेरे जीवन की अंतिम घड़ियाँ हैं।" —इस तरह कहते बड़े ही नैपुण्य के साथ वीर विष्णुभक्त अतिकाय ने लक्ष्मण पर बाण छोड़ा। ७५ लक्ष्मण ने अतिकाय के बाण को जब बीच में ही काट डाला तो देवेन्द्र प्रशंसा करने लगे; तभी (लक्ष्मण ने) ब्रह्मास्त्र चलाकर अतिकाय के सिर को उड़ा दिया। प्राण निकल जाने के पहले पूरी ताकत लगाकर उसकी जीभ 'हरि ! विष्णु ! लक्ष्मीकांत !' —इस तरह जब जप रही थी तब अतिकाय का सिर आकाश

अडरें मस्तक नभव हरिपद कडरितात्म ज्योति मिगें बॆळ
गिडुत लुच्चळिसिदुदु रविमंडलद मध्यदलि
जडिव परमानंदरस दुग्गडदलिरें बॊम्मादिगळु बॆर
गिडॆ बहुश्रुति हारविसॆ सनकादि मुनिनिकर ।। 77 ।।
मिसुप मणिमय कुंडलद डाळिसुव कदपिन मुगुळुनगॆ लं-
बिसिद वदनद वीररसदभिनवद लोचनद
असुरपति लंकेश्वरन मॊगरसद सिरिकॊल सिडिव वॊलु तलॆ
विशिखि मुखदलि कॆडॆदु दिळॆ गतिकाय रक्कसन ।। 78 ।।
हॊरळिदनु बळिकवन सारथि सुरिव कंबनिगळलि मिडिदनु
बॆरळलश्रु जलंगळनु लंकेशनॆरडनॆय
हरिपरायण नस्तमिसिदनॆ हरमहादेवॆनुत दुगुडद
लरियमनु हम्मैसि बिद्दनु पडुवणबुधियलि ।। 79 ।।
उळिद बलवी लक्ष्मणांकन हळचि हरिदुदु हरिपदद पद
दॊळगॆ हॊनलॆद्दुदु सुरावळि सुरियॆ हूमळॆय
मॊळगिदवु दुंदुभिगळमरर हॊळलॊळगॆ हरिसेनॆ माया-
बलॆय बिडुगडॆयिद बॊब्बिरि दाडि तगलदलि ।। 80 ।।

में आरोहण करने लगा। ७६ अतिकाय का सिर जब आकाशगामी हुआ, तो उसकी आत्मज्योति श्रीविष्णु-चरणों में प्रवेश कर वहाँ से फूटकर (बिखरकर) सूर्यमंडल में जा बिराजी। ब्रह्मादि देवता भारी आनन्द-रस-सागर में निमग्न हुए। वेदों को आश्चर्य हुआ। सनकादि मुनियों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। ७७ चमकते वज्रादि कुंडलों के कारण दमकते गाल, मुस्कुराता मुखड़ा, वीररस के कारण उमड़ती आँखें —इस प्रकार से संपन्न अतिकाय का सिर बाण की नोक पर से इस प्रकार धरती पर गिरा मानों रावण के मुखड़े की कान्ति ही टूटकर गिरी हो। ७८ अतिकाय का सारथी अश्रुधारा बहाते, उंगुलियों से अश्रुकणों को थामे लोट पड़ा। 'लंकाधिपति का दूसरा विष्णुभक्त भी अस्तंगत हुआ न ! हर-हर महादेव !' —इस प्रकार भगवान सूर्य भी स्मरण करते-करते पश्चिम दिशा के समुद्र में डूब गया। ७९ अतिकाय की बची-खुची सेना लक्ष्मण का सामना कर प्राणों को त्याग श्रीहरि-चरणों में विलीन हुई। देवताओं ने फूलों की वर्षा की। देवताओं की राजधानी में दुंदुभियाँ बजने लगीं। कपिसेना माया के जाल से विमुक्त होने के कारण हर्षरव (हर्षनिनाद) करते उछलने-कूदने लगी। ८० अतिकाय

रथव तिरुगिसिकोंडु रिपुसारथि पुरांतरकैदिदनु,बल
मथन हॊगळलु हरुषदुब्बिनलनुज नॊडगूडि
पृथुळ बल तॊरवॆय हिरण्यक मथन तिरुगिद नित्त लधिक
प्रथित विजयाभ्युदय दॆळॆगॆयिद पाळयकॆ ॥ 81 ॥

मूवत्तैदनॆय संधि

सूचनॆ— राय बैरिघरट्ट नमरर रायदल्लणनिन्न जितुवज सायकब समरदलि गॆलिदनु सकल कपिबलव ।

कॆळिदै कुश निम्म रघुभूपाल ननुजनु समरमुखद स-
लीलॆयलि सायुज्य पडॆदतिकाय रक्कसन
काळगद वार्तॆयनु बळिकॊड्डो लगदॊळिद्दसुरपति कॆ-
ळ्दालिगळ बिडुवनिय लिळिदनु सिंहविष्ठरव ॥ 1 ॥
कळुहि रक्कस नायकर नॊळ निळय कैतरॆ धान्यमालिनि
यळलिदळु सुतशोकदलि हळविसुत नंदनन
बळिक शक्रारोति तंदॆय बळिगॆ बंदा जननि जनकर
तिळुहि तन्न पराक्रमव पसरिसिद नय्यंगॆ ॥ 2 ॥

का सारथी रथ को लौटाए लंका नगरी की ओर चल पड़ा। इन्द्र की प्रशंसा के मध्य महान बलशाली "तौरवॆ" के नृसिंह के अवतार-स्वरूपी श्रीराम जीत की उन्नति के कारण हर्षित होते भाई के साथ पड़ाव की ओर लौट पड़े। ८१

पैंतीसवीं संधि

सूचना— देवेन्द्र के अहंकार को क्षत-विक्षत करनेवाले शत्रुओं के लिए चक्की-सदृश बने इन्द्रजित् ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर, युद्ध में सारी कपि-सेना को जीत लिया।

सुनो कुश, तुम्हारे रघुवंश भूपति के भाई से हुए युद्ध में मोक्ष को प्राप्त करनेवाले अतिकाय नामक राक्षस के युद्ध के समाचार को, सभाभवन में उपस्थित रावण सुनकर आँसू बहाते-बहाते सिंहासन से नीचे उतरे। १ राक्षसनायकों से बिदा लेकर जब रावण अंतःपुर में आया तो अतिकाय की माँ धान्यमालिनी अपने बेटे की मृत्यु पर विलाप करने लगी। तत्पश्चात् इन्द्रजित् पिता के पास आकर अपने माँ-बाप को धीरज बँधाते, उनके सम्मुख अपनी वीरता की प्रशंसा करने लगा। २ "सुनिए पिताजी, कल सुबह

जनक चित्तसुदय मुखदलि मनुज मर्कट मांसदलि शा-
किनिज नौघव साकदिरें मंडोदरिगें निनगें
जनिसिदवनल्ली प्रतिज्ञेगें जिनुगिदरें जारुवेंनु शिखियोळु
मनद दुगुडव बिट्टु बयसु मनोरथव नेंद ।। 3 ।।
ऍणिस बेडन्यवनु कदनद कर्णेयकिदु कडेयेंनुत कलि रा-
वणि दशग्रीवंगें भाषेयनित्तु रोषदलि
मणिरथव नेरिदनु रिपुमारणद मंत्रद राक्षस द्विज
गणसहित बंदनु निकुंभिळियेडेगें रजनियलि ।। 4 ।।
बिसरुहासननिंद वरवव गोसेंदु दासुर होमदलि रिपु
विशसन ब्रह्मास्त्र सेरुवुदा निशाटंगें
निशियोळदुता सिद्धवागिहुदसुर विप्रर मुखदि नारं-
भिसिद नध्वरवनु महामारणमखाह्वयद ।। 5 ।।
उरिय नुदरव बगिदुगिदु विस्तरिसिदनु कुंडदलि मांसद
चरुविनरुणज लाज्य धारेय नरद दर्भेगळ
बेरळ समिधेय लाभिचाराध्वरव निर्वर्तिसिद नै नडु
विरुळु निर्विघ्नदलि वरवाय्तबुज संभवन ।। 6 ।।

होते ही मानव-मर्कट (बंदरों) के मांसपेशियों से शाकिनियों को संतुष्ट न करूं तो मंदोदरी से उत्पन्न मैं आपका बेटा नहीं। इस प्रतिज्ञा से कहीं मुकर जाऊं तो अग्नि-प्रवेश कर प्राण त्यागूं। अतः चिंता त्यागकर अपने मन की बात कहिए।" —इस प्रकार इन्द्रजित् ने कहा। ३ "अन्य प्रकार का सोच-विचार त्याग दीजिए। युद्ध के इस सुअवसर पर यह अंतिम प्रयत्न है।" —इस तरह कहते क्रोधी वीर इन्द्रजित् रावण को वचन देकर रत्न रथ पर आरूढ़ हुआ। शत्रुसंहार-मंत्रज्ञ राक्षस ब्राह्मणों को साथ लेकर इन्द्रजित् ने रात को निकुंभिला देवता के मंदिर में प्रवेश किया। ४ 'प्रचंड, भयानक यज्ञ करने पर शत्रु-विनाशक ब्रह्मास्त्र उसके हाथ लग जाएगा' —इस प्रकार का वरदान ब्रह्माजी से उसे प्राप्त हुआ था। रात को उसकी सिद्धि होने वाली थी। (अतः) इन्द्रजित् ने राक्षस-ब्राह्मणों द्वारा (सहायता से) 'महामारण होम' नामक यज्ञ शुरू किया। ५ अपने पेट को चीरकर जठराग्नि को बाहर निकाल अग्नि को प्रज्वलित किया। उस अग्निकुंड में मांस का हविस् अर्पित कर रक्त रूपी घी ओतकर नर-नाड़ियों के दर्भाओं से युक्त अंगुलियों में समिधाओं को लेकर उस मायावी (आभिचारिक) होम को संपन्न कर समाप्त किया। रात्रि के मध्य भाग में ब्रह्माजी का वरदान बिना विघ्न-बाधा के संपन्न हुआ (प्राप्त हुआ)। ६ शिवजी, विष्णु तथा यम यह

मुरिदनव पुरवरकॆ पुरहर हरि यमादिगळ्ळुकॆ तंदॆय
भरद दुगुडव बिडिसि तोड्रिसिदनु सरोजजन
वरद लॊदगिद दिव्य रथ हय शर शरासन गळनु हरुषो-
त्करुषवनु बगॆगॊळिसि वळिकितॆंद नय्यंगॆ ॥ 7 ॥
असुरपति केळ् निन्न सोलद ससिय कित्तिक्कुवॆनु रामन
बसुरिनॊळ् बॆळसुवॆनु लक्ष्मण नरुण वारियलि
ऒसॆदु सुग्रीवादि विपि नौकसरु तत्कुजफलगळनुभुं-
जिसवॊलु माडुवॆनु ता वीळॆयव तनगॆंद ॥ 8 ॥
अळिद धूम्राक्षादि सुभटावळिय निन्नोलगद सभॆयलि
सुळिसुवॆनु कॊडदिरॆ कृतांतन कुक्षियनु बगिदु
कलुमरन तुंबुवॆनु हिंदण गलभॆगलहद गावळियरळु
जुळुकि नाहवदवनॆ तानॆंदुब्बणव जडिद ॥ 9 ॥
इंद्रजितु वितॆंदु बळिक सुरॆंद्रनानन कुमुददलि मुद
चंद्रिकॆय हरहिदनु कळुहिसि कॊंडनाहवकॆ
इंद्र निनकुल चक्रिगुदयन गॆंद्रनलि निंदिर्दु तोरुव
सांद्र मणिमुकुरद वॊलुदिसितु बिंब दिनमणिय ॥ 10 ॥

देखकर जब डरे तो इन्द्रजित् नगर को लौटा। पिताजी के दुःख-भार को उतारकर, ब्रह्माजी के वरदान से प्राप्त दिव्य रथ, घोड़े, धनुर्बाण को (पिताजी को) दिखाते उनके मन को संतोष पहुँचाते इन्द्रजित् ने अपने पिताजी से यों कहा। ७ "हे राक्षसेश्वर, सुनिए। आपकी हार के पौधे को उखाड़कर (उसे) राम के पेट में रखकर (रोपकर) लक्ष्मण के रक्त से उसका पालन-पोषण करूँगा। और यों भी करूँगा कि सुग्रीवादि वानर उस पौधे के फलों का उपभोग करें। मुझे इस कार्य के लिए बीड़ा उठाने का सुअवसर दीजिए।" इस प्रकार इन्द्रजित् ने प्रार्थना की। ८ "ऐसा करूँगा कि मृत्युमुख में पड़े धूम्राक्षादि वीर आपके सभाभवन में लौट आयें। उनको अगर न लौटाएँ तो यम के पेट को चीरकर उसमें पेड़-पत्थरों को भर दूंगा। इसके लिए, पूर्व के युद्ध के झुंड के झुंड राक्षसों की तरह क्या मैं भयभीत होनेवाला हूँ? या फिसल जानेवाला हूँ?" —इस तरह कहते इन्द्रजित् ने अपनी तलवार चमकायी। ९ इस तरह बोलकर इन्द्रजित् ने रावण के मुखरूप-रूपी कमल (रात का कमल) पर संतोष की चाँदनी फैला दी। फिर युद्ध के लिए रवाना हुआ। तभी सूर्य मानों इस प्रकार उदित हुआ

शरधि मुम्मळॆ गालदलि भोर्गरॆव वोलु भोरॆंदु हरॆय
ब्बरिसिदवु कूगिडॆ कुलाचल कोटिसंख्यॆयलि
तुरग तलॆदोऱिदवु मदसिंधुरद मोहर मॆरॆदु दतिरथ
रुरवणिसिदरु पायदळ दळवुळिसि तिदिरिनलि ॥ 11 ॥
निम्मवरु बळिकरिबलद भर दुम्महव नीक्षिसुत हॊसगिरि
हॆम्मरण ळुब्बरदलब्बर मिगलु मोहरद
सम्मुख दॊळॊड्डिदरु नॆरॆदरु बॊम्म मॊदलादवरु जलनिधि
गुम्मि गुळ्ळॆगळॆळॆ रणदब्बरिन बॊब्बॆयलि ॥ 12 ॥
अॆलॆ रघुक्षितिनाथसुत केळळवि गॊट्टॆरडॊड्डु जलनिधि
जलनिधिगॆ माऱांतवोलु माऱांत विदिरिनलि
बळिक महदुत्पात कपिबल दॊळगॆ मैदोऱिदुदु बलुकळ
वळिकॆ कालूऱिदुदु कंदिदु दभ्रमणिबिंब ॥ 13 ॥
शैल जरिदवु कपिकदंबद तोळतुदिर्यिदिळॆगॆ सुंटरु
गाळियॆद्दुदु बीसिदुदु बल बॆंदरॆ दॆसॆदॆसॆगॆ
जाळिसिदु दिळॆगभ्रतळ ताराळिगळ तळमगुचितंबुधि
मालॆ गिडिगळ नुगुळितंबर वरुणजल सहित ॥ 14 ॥

कि इन्द्र रविवंशीय चक्रवर्ती को उदयपर्वत पर उपस्थित हो हीरे का आइना दिखा रहा हो। १० वर्षाऋतु के प्रारंभ में गरजते समुद्र की तरह जब डफले बजने लगे तो कुलपर्वत गूँज उठा। करोड़ों की संख्या में घोड़े आये। मदमत्त हाथियों की सेना पधारी। अतिरथ सन्नद्ध हुए। पैदल-सेना आगे बढ़ी। ११ तुम्हारी तरफ़ वालों ने जब शत्रु-सेना की उत्साह की अधिकता देखी तो नये पहाड़ों तथा पेड़ों को हाथों से उठाए घनघोर गर्जना करते वे सभी राक्षस-सेना के सम्मुख खम ठोंककर खड़े हो गये। युद्ध का तमाशा देखने ब्रह्मादि देवता झुंड के झुंड आ जुटे। युद्ध के ज़ोर-ज़बर्दस्ती के शोरगुल के भारी आवाज़ के कारण समुद्र के उमड़ने से बुदबुदे उठे। १२ हे रघु भूपाल पुत्र, सुनो। युद्ध में डटी दोनों तरफ़ की सेनाओं ने एक-दूसरे का सामना इस प्रकार किया मानों दो समुद्र एक-दूसरे से जूझकर खड़े हुए हों; टक्कर ले रहे हों। तत्पश्चात् कपि-सेना में भारी उत्पात मचे। बहुत बड़ी खलबली मची। फलस्वरूप सूर्यबिम्ब कांतिहीन हुआ। १३ कपि वीरों के हाथों से पहाड़ खिसककर नीचे गिरे। अंधड़ मचने से (भारी आँधी के कारण) दिशि-दिशाएँ व्याप्त होने से (कपियों की) सेना काँप उठी; आकाश से

उक्किकदवु नदि धूमकेतु विदिक्किनलि तोऱिदवु नॆल बॊ-
ब्बिरिक्किदुदु नॆगॆदवु नगंगळलुरि चडाळदलि
मुक्कुरुकि सिडिलॊदरिदवु रणरक्कसिय रब्बरिसिदरु का-
लिक्किदुदु कडुभीति कपिराजेंद्र सेनॆयलि ॥ 15 ॥
एनिदुत्पात प्रभूत भयानकवु तानॆनुत दशरथ
सूनु बॆसगॊंडनु सरोजासनन नंदनन
एननॆन बहुदिंदि नाहववेनु लेसागिरदु हरणद
हानि तप्पदु जीय नम्मी राजबलकॆंद ॥ 16 ॥
अॆंदु जांबव देव भास्कर नंदनन नेकांतदलि करॆ
दॆंद निंदिन रणमदीय बलक्कॆ मारणव
तंदुकॊंड दिरदी भगीरथ नंदनर सुय्दान निन्नदु
मुंद नऱिदाहवव नॆसगुवु दणुग केळॆंद ॥ 17 ॥
इरिसिदनु बळिकवनिपन हत्तिरॆ समीरनसुत सुषेणर
धुरद मूडणभागॆयलि शतबलि विभीषणर
परुटविसि पडुवलु गवाक्षन शरभमैंद द्विविदरनुनि-
दिरिसि नीलांगनरु सहितिदिराद नाहवकॆ ॥ 18 ॥

तारे टूट-टूटकर धरती पर गिरे; समुद्र डाँवाडोल हुए; आकाश से जो रक्त की वर्षा हुई तो चिनगारियाँ उसने (आकाश ने) उगलना शुरू किया। १४ नदियाँ उमड़कर बहने लगीं; ईशान्य तथा वायव्य दिशाओं के मध्य भाग में धूमकेतु दिखाई पड़ने लगे, धरती काँप उठी, पहाड़ों में आग भभक उठी; बिजली कड़कने लगी, रणपिशाचों ने गरजना शुरू किया; सुग्रीव की सेना में आतंक छा गया। १५ "ऐसे अपशकुनकारी उत्पात क्यों मचा रहे हैं? ये तो बड़े भयानक हैं।" —इस प्रकार जाम्बवंत से श्रीराम ने पूछा। "क्या कहूँ? लगता है कि आज का यह युद्ध शुभप्रद नहीं होगा। भगवान्! हमारी सेना के प्राणों का विनाश भी भारी पैमाने पर होगा।" —इस प्रकार जाम्बवंत ने उत्तर दिया। १६ तत्पश्चात जाम्बवंत ने सुग्रीव को एकान्त में बुलाकर कहा— "आज का यह युद्ध हमारी सेना का विनाश किए बिना न रहेगा। अतः राम-लक्ष्मण की रक्षा की ज़िम्मेदारी तुम्हारी रही। भविष्य को सोचते हुए युद्ध का संचालन करो। १७ उसके बाद सुग्रीव ने राम के पास हनुमान और सुषेण को खड़ा किया। युद्धभूमि की पूर्वदिशा में शतबली-विभीषण को तैनात किया। पश्चिम दिशा में गवाक्ष, शरभ, मैंद, द्विविद को रखा। नील तथा अंगद को साथ लेकर युद्ध के लिए स्वयं सुग्रीव तैयार हुआ। १८ सूर्योदय के पश्चात् आधा

उदय वादरॆ जावदलि मोहिदवु बलवेरडुदधियुदधिय
नोदॆववोलु हळचिदवु होळॆ होळॆवस्त्र शैलगळ
होदरि होदिसॆ दिगंतवनु हरिपदव पद्मभवामरेंद्रर
हृदय हातकवारॆ मोळगुव वाद्य रभसदलि ॥ 19 ॥
हरिबलद हरिवैरिबलदुब्बरद चूणिय चटुळतर सं-
गरद सौरंभातिशय सुरनर भुजंगमर
सरकु दॆगॆसितु शस्त्रशैलद सरभसद संग्राम कुब्बिद
होरळिगिडि होगाडितबुधिय नीर निर्भरव ॥ 20 ॥
अररॆ यमलय भैरवर विस्तर वसंत क्रीडॆयो सं-
गरद शाकिनि डाकिनिय रुद्वाह दोकुळियो
तरुचरर रजनीचरर संचरद चरणोद्धूत धूळि वि-
सरवो शरगिरिघात रुधिरोद्धूतवोयॆंद ॥ 21 ॥
मडिदु दुभयद चूणिशोणित गुडुहिगळ कॆबॆळॆदुदिवरनु
हिडिय बगॆदळु जयवधूटि निशाट सैनिकव
बिड बगॆदळा समयदलि मुडि विडिदनै मंडोदरिय मग
नुडिवडच्चरि कंद कॆळिद्रारियुब्बटॆय ॥ 22 ॥

याम बीतने पर दोनों ओर की सेनाएँ युद्ध में जुट गयीं। इस प्रकार लड़ने में लग गयीं मानों समुद्र समुद्र से टकराया हो। शस्त्रास्त्रों से तथा पहाड़ों के कारण दिशि-दिशाएँ तथा आकाश ढँक गया। युद्धवाद्यों के ज़ोर-ज़ोर से बजने के कारण ब्रह्माजी तथा देवेंद्र की छातियाँ डबडबाने लगीं। १९ वानर-सेना तथा राक्षस-सेना के सामने के दलों में हुए भयानक युद्ध के आवेग के कारण देवताओं, मानवों तथा नागों को (अपने-अपने स्थानों से) भाग जाना पड़ा। शस्त्रों के तथा पहाड़ों के ज़ोर-ज़ोर से टकराने से उठी चिनगारियों के कारण समुद्रों में भरा पानी मानों सोखा गया। २० बाप रे बाप! क्या यह यम और प्रलयकालीन भैरवों की वसंत-क्रीड़ा है! युद्धरंगस्थली की डाकिनी-शाकिनियों की वैवाहिक फाग का खेल है! या होली का फाग है! वानर तथा राक्षस-योद्धाओं के रौंदने के कारण उठी हुई धूल के बादल हैं! या तीर पहाड़ों के टकराने से छलकते रक्त के छींटे हैं! किस रीति से वर्णन करें! इस तरह वाल्मीकि ने कहा। २१ "दोनों ओर की सेनाओं के अग्रभाग के सैनिक मर पड़े। खून पीनेवालों की मानों जीत हुई। विजयलक्ष्मी मानों वानर पक्ष में पहुँचना चाहती थी। वह राक्षस-सेना को त्यागना चाहती थी। तभी मंदोदरी के पुत्र ने जयलक्ष्मी का जूड़ा पकड़ लिया। इन्द्रजित् की वीरता का वर्णन

मायॆयलि शंबरनु दिविजर रायनलि कादिदनु हिंदॆ स-
हाय विल्लदॆ गॆलिदना मारीच दिगधिपर
तायिवनॆं यिवरिव्वरिगॆ वज्रायुदाधि समस्तसेनॆय
नोयिसिद निर्णयव कुश केळॆंदु मुनि नुडिद ॥ 23 ॥
विलय कालदलखिळ भुवनावळिय कॊलॆगॆलसक्कॆ हॊक्क-
ग्गळद भाळांबकनवॊलु बलिमुख वरूथिनिय
बलदॊळगॆ मैदोरॆ मायॆय बळसि बहुरूपिनलि बहुकॊलॆ
गळलि कॊंदनु कडुहि नग्गद कपिभटावळिय ॥ 24 ॥
कणॆगळलि करगसगळलि खर्पणगळलि डब्बुक गळलि डॊं-
कणिगळलि परिघदलि परशुगळलि मुसुंडियलि
मणिगदायुधदलि महामार्गणगळलि चक्रदलि बलु भा-
रणॆय कॆंदुर्गळिंद कॆडहिद नखिळ कपिबलव ॥ 25 ॥
उरवणिसि कैयॊडनॆ भूजदलुरु कृपाणद लीटियलि भी-
करद सॆल्लॆह बल्लॆयदलुग्राहि कुंतदलि
सुरगियलि शूलदलि गदॆ मुद्गर महामंत्रास्त्र शस्त्रो-
त्करगळलि संहरिसिदनु संगरद कपिभटर ॥ 26 ॥

करना ही एक आश्चर्यजनक कार्य है ! सुनो पुत्रो !" इस तरह वाल्मीकि ने कुश-लव को समझाया। २२ "पूर्व में शंबासुर ने माया के बल पर देवेन्द्र से युद्ध किया था। मारीच ने विना किसी की सहायता से दिक्पतियों को जीत लिया था। इन्द्रजित् मानों इन दोनों के लिए मायके के (सदृश) हैं। हे कुश ! सुनो। इन्द्रजित् ने अपनी वीरता से किस प्रकार वानर-सेना को घायल किया— सुनाता हूँ।" इस प्रकार मुनि वाल्मीकि ने कहा। २३ प्रलयकाल में समस्त लोकों के विनाशार्थ प्रविष्ट श्रेष्ठ त्रिनेत्री (शिवजी) की तरह इन्द्रजित् वानर-सेना में जो दिखायी दिया; उसने कई प्रकार के मायावी रूप धारणकर साहसी कपि वीरों की कई रीतियों से हत्या शुरू कर दी। २४ बाण, आरा, खर्पण, तोमर, मुसल, परिघ, फरसा, मुसुण्डी, वज्रोपम गदा, महान अस्त्र, चक्र, वग़ैरः भारी भयानक आयुधों का, शस्त्रों का प्रयोग करते-करते इन्द्रजित् ने सारी कपि-सेना को धराशायी कर दिया। २५ बड़े वेग के साथ आगे बढ़कर पेड़, कृपाण, भाला, बर्छी, शूल, उग्र सर्पकुंत, तलवार, कटार, गदा, मुद्गर तथा मंत्रास्त्र-शस्त्रों का प्रयोग करते हुए इन्द्रजित् ने कपि वीरों का संहार किया। २६ "इस राक्षस के हाथ से हो रही यह हत्या अत्यंत

कोलें बिडिसु रक्कसन कैयलि तलेय होऱदिरि हेडितनद
गगळव मैद्रोयिद्रो वीरतनद यशोविलासकव
तलेय नोडेयगे कोडुवडिदु रणगलिगळिगे ता समयवेनु तरि
बलभयंकर भानुसुत बोब्बिऱिद नगलदलि ॥ 27 ॥
बीळें कर्णदलिनसुतन नुडिगेळि कविदुदु कदनकेप्प-
त्तेळुकोटि कपीशरणु विंगवन बगेगोळदे
शैलतरु संघदलि हगेयनु हूळिदरु बळिकसुर मायेय
मेळविसि मैदोऱदीपरि कोंदनतिबलर ॥ 28 ॥
तागिदनु तगरागि कब्बोगे यागि कविदनु होय्दना हरि
यागि होरळिद नद्रियागि समुद्र रूपिनलि
मेगे कविदनु कालभैरवनागि जट्टिगनागि विषदुरि
यागि बेच्चिचसि बेदरिसिद नतिबल वनेचरर ॥ 29 ॥
ॲरगिदनु सिडिलागि शिखियागुरुबिदनु भेरुंडनागिये
तुरुगिदनु सीळिदनु सैरिभनागि फलियागि
मुरिदनहिया गौडिदनु हिडि दिरुकिदनु ग्रहवागि रणदेडे
देरह काणेनु कोंदनीपरि कोटिसंखेगळ ॥ 30 ॥

कठोर है। अपने सिर को नृशंस बनकर समर्पित न करो। अपनी वीरता को प्रदर्शित करते श्रेष्ठ कीर्ति को प्राप्त करो। अपने स्वामी को अपना सिर समर्पित करने के इस सुअवसर से हाथ मत धोओ।" —इस तरह कहते शत्रु-सेना भयंकर सुग्रीव ने सारी सेना में घूम-घूमकर चिल्ला-चिल्लाकर कहा। २७ सुग्रीव की बातें सुनते ही सत्ताइस करोड़ कपि-नायक युद्ध के लिए आगे बढ़े। इन्द्रजित् को तिनके के बराबर मानते हुए उन्होंने उसे पेड़-पहाड़ों से ढाँप दिया। तब इन्द्रजित् ने माया के बल पर अपने को छिपाते हुए महावीरों को जो उसने मार डाला उसका वर्णन इस प्रकार है: २८ इन्द्रजित् बकरे का रूप (माया के बल पर) धारण कर टूट पड़ा; काले धुएँ का रूप धरकर उसने घेर लिया; शेर का रूप धरकर उसने पीटा; पहाड़ बनकर लुढ़कने लगा; समुद्र का रूप धारे बढ़ आया; काल-भैरव बनकर, पहलवान बनकर, विष की ज्वाला बनकर बलशाली वानरों को उसने डरा-धमका दिया। २९ इन्द्रजित् बिजली बनकर वानरों पर टूट पड़ा, ज्वाला बनकर उसने उन्हें जलाया; भेरुंड पक्षी का रूप धारणकर दबोच लिया; भैंसा और बाघ का रूप धारणकर काट डाला; साँप बनकर डस लिया, ग्रह बनकर दबोच दिया। —इस प्रकार करोड़ों की संख्या में उसने वानरों को मार डाला। युद्धभूमि में ऐसी कोई

अवन मायासमर कॊंडॆदुदु रविसुतादिगळॊड्डु निल्लदॆ
रविकुलेंद्रन मऱॆय हॊक्कुदु मरळि मातेनु
बवर बलिदुदु बळिकलग्गद भुवन पतिगमरेंद्रजितु विं-
गविर ळाहव दब्बरणॆ गब्बरिसॆ दिक्तटव ॥ 31 ॥
कऱॆदनवनिप निदिरिनलि हॊंगऱॆय हॊसहॊगरुगळ तळपद
मिरुगुवस्त्रासारवनु कार्मुगिल मळॆयंतॆ
तॆऱह गुणदिव ताकुवस्त्रव तऱॆदु तूऱिदनंबुगळनॆड
दॆऱह कार्णेनु काळगकॆ रावणि नरोत्तमर ॥ 32 ॥
कविदुदा समयदलि कपिभट निवह निडुगल्लुगळ लऱॆगळ
लवनिजौघगळिद हॊळकुव रथद सरिसदलि
अवन रणरंजकद परियभिनववलै मैदोऱदौकुव
पवन जाड्यर पाडुगॆडिसिद नस्त्र सारदलि ॥ 33 ॥
कपिबलव मुऱियॆच्चु रघुभूमिपन संगर कॊंदगिदनु मगु
ळपरिमित शरसमितियनु सुरिवुत सरोषदलि
तपनकुलदव रल्परे रणनिपुण रल्ला निशित विशिखद
लपजयकॆ निलिसिदनु नैरुतराज संभवन ॥ 34 ॥

जगह नहीं थी जहाँ वह नहीं दिखायी दिया हो। ३० इन्द्रजित् के उस मायावी युद्ध के कारण सुग्रीवादियों का सेनाव्यूह तितर-बितर हुआ। वानर-सेना राम के शरण गयी। उसके बाद का क्या कहना? राम और इन्द्रजित् भिड़ गये। एक-दूसरे पर टूट पड़े। लगातार हो रही गर्जनाओं के कारण दिशाएँ व्याप्त हो गयीं। ३१ काले बादलों से बरस रही वर्षा-सदृश इन्द्रजित् ने राम पर सुनहले पंखों से राराजित, नयी कांति से युक्त बाणों की वर्षा की। लगातार बरस रहे उन अस्त्रों को बीच में ही काट डालते राम ने बाण छोड़े। इन्द्रजित् तथा राम के बाणों की वर्षा (युद्ध) लगातार चली। ३२ उसी समय कपि वीरों के समूह ने, लम्बे-लम्बे पत्थर, चट्टान तथा पेड़ों को उठाए चमकते (इन्द्रजित् के) रथ को घेर लिया। इन्द्रजित् के युद्ध की रीति ही निराली है। अदृश्य हो खड़े रहकर, इन्द्रजित् ने अपने पर टूट पड़नेवाले हनुमान आदियों को, बाण चला-चलाकर घायल बना दिया। ३३ कपि-सेना पर बाण छोड़कर तितर-बितरकर इन्द्रजित् क्रोध से तमतमाता अनगिनत बाणों की वर्षा करता राम से युद्ध करने आया। सूर्यवंशीय क्या अकिंचन हैं! वे युद्ध-कुशली तो हैं ही। राम ने राक्षसराजा के पुत्र पर पैने बाणों की वर्षा करते हारने की स्थिति को पहुँचा दिया। ३४ उस समय रथ, हाथी,

औत्तबरिसिदुदा समयदलि पत्ति रथ हय गज घटावळि
कुत्तुवंबिन तरिव खड्गद होडेव परिघदलि
चित्तवेंतुटो रणदलिन वंशोत्तमन कविवरि बलांबुधि
बत्तिदुदु बाणाग्नियलि भास्कर कुलाधिपन ॥ 35 ॥
औकुवुदु बलवैदुवुदु सुरलोकवनु रामास्त्रदलिहदि-
नाल्कु सूळलि सुळिदु सुररलि संदुदरिसेनें
साकु समर प्रौढियेंनुत समीक कोडरिसुतिंद्रजितु नेरे
नूकिदनु दिववनु दिनेंद्र कुलेंद्र नाजियलि ॥ 36 ॥
वीरनव बळिकिरुळु गाळग कारवन मुंदिदरु माया
सारदलि निर्मिसिदनै विलयांधकारवनु
बारिसितु बलुतिमिर घोराकारदलि शतकोटि राहु श-
रीरदुरु काळिकॆयवोलु कुप्पळिसि तुर्वरॆय ॥ 37 ॥
विस्तरिसलेनदनु निम्म समस्तबल नयनेंदु राहु
ग्रस्त वादुदु काणरोब्बरनोब्ब राजियलि
हस्तगळ सोकुगळ कुरुहिन कुस्तरणेगळ भयद करवि-
न्यस्त गिरितरुगळ सगाढदलिद्दुदा सेनॆ ॥ 38 ॥

घोड़े तथा पैदल सेना बाणों से छेदते, तलवार से काटते, परिघायुध से पीटते बड़े वेग से आगे बढ़ी। युद्धरंगस्थली में रविकुलश्रेष्ठ का मन न जाने कैसा रहा हो! उसके बाण की ज्वाला के कारण (घिरने से) शत्रु-सेना-सागर मानों सूख गया। ३५ राक्षस-सेना राम पर टूट पड़ती है तथा तुरन्त राम के अस्त्रों के कारण देवलोक की यात्रा कर जाती है। इस प्रकार चौदह बार राक्षस-सेना ने आगे बढ़ आकर देवताओं के साथ मेल बढ़ा लिया। 'इतना युद्धकौशल्य काफ़ी है' —इस तरह कहते इन्द्रजित् ने सीधे युद्ध करते हुए, रविकुल के स्वामी के साथ के युद्ध में दिन बिताया। ३६ इन्द्रजित् तो ठहरा वीर; रात के युद्ध में उसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता। माया से उसने प्रलय का गाढ़ा अंधकार निर्मित किया। भारी अँधेरे ने अत्यन्त वेग से आकर घेर लिया। सौ करोड़ राहुओं के बराबरी के काले किट्ट अन्धकार ने धरती को घेर लिया। ३७ उसका वर्णन किन शब्दों में करें! तुम्हारी समस्त सेना की आँखें रूपी चन्द्रमाओं को राहु ने ग्रस लिया। एक-दूसरे को दिखायी न पड़े। एक-दूसरे ने एक-दूसरे को हाथ से टटोलकर पहचानते, हिलाते, डर के मारे हाथों में पेड़ धरे वानर-सेना खड़ी थी। ३८ चमत्कारपूर्ण रीति से चलता हुआ इन्द्रजित् का रथ आकाश में चमका।

हॉळॆंदुदै बळिकिंद्रजितुविन चळ चमत्कृति रथन भोमं-
डल दॊळब्बर वाय्तु कमलजदत्त कार्मुकद
प्रळय दिवसद सिडिल जंगुळिगळ भयंकररवद कोळा-
हळद हॊंदरुऱॆ तीवितबुज भवांड मंडलव ॥ 39 ॥
बॆंदरॆ बिद्‌दुदु वलुरभसतागिद वनेचर निचयवंबुधि
यॊदॆदु कोंडुदु बिदिरि कोंडुदु मेरुमस्तकव
बिदुविगंकुश विक्कि वॊम्मन सदनकभिमुखनाद नग्गद
त्रिदश पति बॆंच्चिदवु पट्टणवा दिशाधिपर ॥ 40 ॥
सरिदनंतक नग्नि हाय्दनु वरुण नोडिद नडगिदनु कि-
न्नर कुलाधिपननिल मऱॆयॊक्कनु पलायनद
तरुण केळीश्वरन दृश्याकरण नादनु निरुतियसुरन
मऱॆय हॊक्कनु हरिविरोधिय समर केळियलि ॥ 41 ॥
कट्टिदनु कमलज भवास्त्रद लिट्टणिसुव विभीषणननॆ-
ब्बट्टिदनु यमलोक कातन बळिय मंत्रिगळ
मुट्टविसिदनु मत्तॆ यसुरघरट्ट निदिरलि सुरर गमनद
बट्टॆयलि बहुविधद मायॆयलिंद्रजितु बळिक ॥ 42 ॥
विलय मेघद मेचकवॊ दशगळन तनुजन कायकांतियॊ
मॊळगुणळॊ मुरिमुरिदु चरिसुव रथदचीत्कृतियॊ

ब्रह्माजी के दिए हुए धनुष का ठेंकार प्रलयकालीन बिजलियों की कड़कड़ाहट के भयानक शब्द की तरह कोलाहल मचाता हुआ सारे ब्रह्मांड में भर गया। ३९ धनुष के वेग से टकराया गया वानर-समूह चौंक पड़ा; समुद्र टकराया; मेरुपर्वत का शिखर डोलायमान हुआ। देवेन्द्र ने अपने वाहन (सवारी) हाथी के गंडस्थल में अंकुश चुभोकर उसे ब्रह्मलोक की तरफ़ मुड़ाया। दिक्पतियों की नगरियाँ काँप उठीं। ४० हरि-विरोधी इन्द्रजित् की युद्ध-क्रीड़ा को देख यम खिसक गए; अग्निदेवता ने पैरों से सलाह ली; वरुण देवता भाग खड़े हुए; कुवेर छिप के रह गये; वायु ने पलायन किया; हे युवक लव ! सुनो। ईश्वर अदृश्य हुए; निर्ऋति असुर की शरण गये। ४१ आक्रमणकारी विभीषण को ब्रह्मास्त्र से बाँध दिया; उसके मंत्रियों को यमलोक की तरफ़ भगा दिया। फिर इन्द्रजित् माया के बल पर आकाश-मार्ग से गमन करता हुआ राम के नज़दीक पहुँचा। ४२ तब इन्द्रजित् इस प्रकार राराजित हो रहा मानों— प्रलयकालीन मेघों की नीलिमा हो या दशकंठ के पुत्र की देहकांति हो ! गड़गड़ाहट है या घूम-

हॊळॆव मिंचिन संचरवो हॊंबॆळकुगळ हरहुगळो सिडिलिन
सुळिवो सरळब्बरवो तानॆनॆ मॆरॆद निंद्रारि ।। 43 ।।
भोरॆनुत मुंगार मुखदलि वारिधारा सार विळॆगॆ वि-
हारिसुववोलु बाणवृष्टिय काणलाय्तलिल
आरु हवणिसबहुदु शिव शिव मारि मुळिदंताय्तु नॆत्तर
हूरदलि होह प्लवंगक्कवधियिल्लॆंद ।। 44 ।।
हॆणगळनु बगिबगिदु कपिगळु हणुगिदरु कॆलरद्रिकुल सं-
दणि गळॊळु हुदुगिदरु हरिवरुणांबुनदिगळलि
मुणुगिदरु मुंबरिदॆसुव मार्गणद हतिगॆनॆंबॆ नसुरन
कणॆय कोळाहळिकॆयॆंतुटो हेळलॆनॆंद ।। 45 ।।
बॆट्टवनु कॊडॆविडिदु मरदिंदिट्टु पुरनॆगॆदं बरदॊळुरॆ
चिट्टु मुरियाडुव नीळाद्रि प्रमुख पटुभटर
हॊट्टॆयॊळु तुंबिदनु तलॆगळ नॊट्टिदनु बाणवरणांगण
दिट्टॆडॆय नॆनॆंबॆनसु कळलिद कपिव्रजव ।। 46 ।।
हरिदलॆय तोळुगळ बादण गोरद बसुरुगळुच्चुगरुळिन
मुरिद मूळॆय लुडिद नडुतॊडॆ जानुजंघॆगळ

फिरकर चलते रथों की घरघराहट है ! चमकते बिजलियों का कौंधना है या स्वर्णकांति का विस्तार है ! बिजलियों का गिरना है या टूटते बाणों की भयानक ध्वनि है ! ४३ 'धो धो' कर बरसती आषाढ़ की वर्षा की धारा की तरह बाणों की वर्षा होने लगी। इसका सामना कौन करे ! शिव शिव ! महामारी क्रुद्ध हुई हो ! रक्त के धारा-प्रवाह में न जाने कितने वानर बह गये ! ४४ मुर्दों को उखाड़-उखाड़कर कपि उनके नीचे अपने को छिपाने लगे। कुछ वानरों ने तो अपने को पेड़-पहाड़ों के मध्य छिपा लिया। कुछ कपि तो बहते रक्त-प्रवाह में डूब गये। आगे बढ़कर चलाए गए बाणों की मार का किन शब्दों में वर्णन करें ? इन्द्रजित् के चलाए गए बाणों के शोरगुल का वर्णन किन शब्दों में किया जाय ! इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। ४५ पहाड़ों को छत्र (छतरी) की तरह धारे, पेड़ों से थपेड़ा देते, उछलकर आकाश में पहुँच लुकाछिपी खेलते प्रधान वीरों के पेटों को बाणों से भर दिया। बाणों से सिरों को काटकर ढेर लगा दिया। युद्धरंगस्थली के कोने-कोने में प्राण खोये भरे पड़े कपियों का किन शब्दों में वर्णन करूँ ? ४६ कटे सिर और भुजाएँ, कटे पेटों के रंध्रों से बाहर निकल पड़ी आँतड़ियाँ, कटी हड्डियों के कारण

गिरिकिरिद हलुगिरिकुगळ नॆगॆदरिचि बीळुव कपिवॆणंगळ
हरिबिनलि रौकुळद मयवाय्तवनि रणमदद ॥ 47 ॥
आडलेनद निंद्रजितुविन मोडिबेरॊ सरिसि दिनदिन
कोडि हिंगिद जयवधुव तिरुहिदनु निमिषदलि
तोडि नॆत्तियनुगिदु पददलि मूडिदंबिन कपिगळिद
क्काडितिळॊ होदरॆद्द हॊनलिन हरिव रकुतदलि ॥ 48 ॥
कोलु हॆणनॊदागि बीळुव बाल यव्वन वृद्ध मर्कट
जाल दॆणिकॆगॆ कडॆय काणॆनु कदन केळियलि
केळिदै कुश कूडिदॆप्पत्तेळु कोटि प्लवगनायक
राळु सहितॊरगिदरु मिक्किन मातदेनॆंद ॥ 49 ॥
हनुमननु कट्टिदनु बिगिदनु वनरुहासन नंदनन तुळि
दिन सुतादि समस्त सेनॆयना रणांगनॆय
स्तनद मेलॊरगिसदना योजनद शतविस्तरद रणकुं-
भिनिय मंचद मेलॆ मेलण कथॆय केळॆंद ॥ 50 ॥
मडदिगोसुग हंगकॊळ्ळद कॊडद कपिगळनिक्कि हॊत्तनु
कडॆयलपकीर्तियनु कमलजकल्प परियंत

टूटी हुए कमर, जंघाएँ, टखने, घुटने, बाहर निपोरे दाँत, उछलकर चीखते नीचे गिर रही कपियों की लाशें— वग़ैरः के कारण भरे-पूरे मृत्युदृश्य से युद्ध की वह रंग-भूमि बड़ी अद्भुत दीख पड़ी। ४७ उसका वर्णन कैसे करें? इंद्रजित् ने अपनी मायाशक्ति के बल पर दिन-दिन भागती पीछे हटती जयलक्ष्मी को क्षणार्ध में लौटा लिया। माथे को चीरकर पैरों के तलवों से निकले बाणों के (बाणों से युक्त कपियों के) कपि-समूह के रक्तप्रवाह से सारी धरती पूरी तरह भीग गयी। ४८ इन्द्रजित् से मचाए गए इस युद्ध रूपी खेल में बाण तथा लाशें जो एक साथ गिर रही थीं— उनमें बच्चे, नौजवान तथा बूढ़े कपियों को गिनते जायँ तो हिसाब ही न लगे। (अनगिनत लाशों तथा बाणों के कारण धरती पट गयी थी) सुनो कुश! सत्ताईस करोड़ वानरनायक अपनी सेना के साथ मौत के घाट उतर गये। इससे बढ़कर क्या कहूँ? —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ४९ हनुमान को बाँध दिया; जाम्बवंत को जकड़ दिया। सौ योजन विस्तृत युद्धभूमि रूपी चारपाई पर उपस्थित युद्ध-नारियों के स्तनों पर सुग्रीवादि समस्त वानर-सेना को (इन्द्रजित् ने) सुला दिया। ५० "(अपनी) पत्नी के लिए दाक्षिण्य में न पड़ने वाले कपियों की, युद्ध में बलि चढ़ाकर राम ने ब्रह्म कल्प तक अपकीर्ति

सुडुसुडातन मातदेकेंदडिगडिगें जनवॆन्न नी परि
नुडिय दिरदेंदंगलाचिदनरस नाजियलि ।। 51 ।।
मुट्टिविसिदवु सरळु तन्नॊड हुट्टिदन मेलॊडनॆ तन्ननु
कट्टिदवु काहुरद कट्टॆसुगॆयलि शरजाल
कट्टिदरिशर जालवनु तरिदॊट्टिदनु बहबाणगळतलॆ
मुट्टु संधिसुवंब संहरिसिदनु रघुनाथ ।। 52 ।।
इळिद कर्णगळ नेरुगणॆ मुक्कळिसिदवु बीळ्वंब नडवॆ
बुलिदु सीळ्ववु बहशरौघव होह शरजाल
तॊलग गडिदवु हेळलेनद निळॆय गगनद हरुकु सरळिन
हॊलिगॆयलि हुदुगिदवु रावणि रामरॆसुगॆयलि ।। 53 ।।
तरणि बिबव सिडिल जंत्रगॆयॊरळ लॊत्तिदनो लयाग्निय
हुरियनुगिदनो होदरु वॆळगिन होळॆव मिचुगळ
सरिगॆ दॆगॆदनो नभदिनिळॆगॆनॆ सरळु सुरिदवु सार्वभौमन
सरिसदलि सरगॊळिसि सुरकुल राजदल्लणन ।। 54 ।।
खचरियर हूमुडिगॆ सुरपन शचिय मुखसारसकॆ रुद्रन
कचद गंगांबुविगॆ सरसिज भवन गद्दुगॆगॆ
प्रचुर दिग्वनिताब्ज कुट्मळ कुचगळिगॆ मॊगसुव शिळीमुख
निचय वॆनलडरिदवु रामन शिळीमुखव्रात ।। 55 ।।

(बदनामी) मोल ली। आग लगे! उसकी बातों से हमारा क्या प्रयोजन! —इस तरह कहते लोग आपस में बातें करते मेरी निन्दा करते रहेंगे!" —यों कहते राम युद्ध-भूमि में बड़े ही दीन हुए। ५१ इन्द्रजित् के बाण लक्ष्मण पर टूटे। वेग से छोड़े गये बाणों के कारण राम बँध गये। रघुनाथ ने अपने को बाँधनेवाले बाणों को काट-काटकर ढेर लगा दिया। सिर के नजदीक आनेवाले बाणों को विनष्ट कर दिया। ५२ ऊपर चढ़ते बाणों ने नीचे उतरते बाणों को निगल दिया; गिरते बाणों को ऊपर चढ़ते बाणों ने शब्द करते हुए चीर डाला; आनेवाले बाणों को (आक्रमण करने) जानेवाले बाणों ने पीछा कर काट डाला। इन्द्रजित् तथा राम के बीच हो रहे युद्ध में भूमि तथा आकाश के जुड़ने के स्थान के थिगली को बाणों ने (सीकर) ढाँप दिया। ५३ इंद्रजित् के बाण मालाओं के आकर में आकर राम के सम्मुख इस प्रकार गिर रहे थे मानों सूर्यबिंब को बिजलियों की ओखली में दाब दिया हो; या प्रलयाग्नि की ऐंठन खोल दी गयी हो; या चमचमाती बिजलियों से आकाश से जर के धागे निकाल दिए गए हों! ५४ राम के बाण इस प्रकार आक्रमण कर रहे थे मानों

जाणरॊळ गिब्बरॆ जवाय्लत्ताण तोमर विद्येयलि गी-
र्वाणरिपु मत्तिन कुलेंद्रन सरळ सरिसदलि
बाणवाणद बवरकभ्रक्षोणि वेसऱनैदिदवु बर्गॆ
गार्णॆ निब्बर निर्भरद निर्भयद रणकेंद ॥ 56 ॥
हुगगॊडदॆ कर्णकर्णय कर्णगाळगगळिब्बरिगाय्तु संधिसि
हॊगुव सरळिगॆ लक्ष्यनादनु नभदॊळिंद्रजितु
उगिदनै बळिकाभिचारद विगड मुखदुदित मंत्रा-
शुगवनाशुग सरणियलि मैदोरदिंद्रारि ॥ 57 ॥
मातुदोऱदॆ रथद शब्दव सूतनिदरुहिसदॆ मेघ
व्रातवनु मऱॆगॊंडु मायासुर विचारदलि
घातकनु रणचोर विद्या पातकनु बळिकॆच्चनै मा-
यातिरोधानद मनुक्षिति राजवल्लभन ॥ 58 ॥
ऒडनॆ लक्ष्मणननु शरौघद हुडिकेयलि हुगिसिदनु घल्लिसि
गिडिकिऱिद बंबुगळु रघुराजेंद्र चंद्रमन
मडिद मंडिय किविगडिय बॆरळॆडॆय हिळुकिन मानुषांगद
तॊडहदमल पुराणपुरुषरु मॆऱॆदराजियलि ॥ 59 ॥

देवता-स्त्रियों के फूलों से भरे जूड़ों को, देवेन्द्र-शचि के मुखकमलों को, शिवजी की जटा में स्थित गंगाजल को, ब्रह्माजी के आसन को, दिग्वनिताओं के कमल जैसे स्तनों को छूने की इच्छा रखनेवाले बाण हों। ५५ चुस्ती तथा शक्ति की तोमर-विद्या में इन्द्रजित् और धनुर्विद्या (बाण चलाने) में राम —ये दोनों ही चतुर हैं। तीरों के युद्ध के कारण आकाश तथा भूमि तंग आ गये। वाल्मीकि ने कहा— 'बड़े फुर्तीले दोनों के निर्भयतापूर्ण इस युद्ध में दोनों की बराबरी के अन्य कोई भी दिखायी नहीं देते।' ५६ राम और इन्द्रजित् के बीच ऐसा बाण-युद्ध हुआ कि चलाए गए तीर एक-दूसरे को रोककर एक-दूसरे को किसी प्रकार आगे बढ़ने नहीं देते थे। अन्दर घुस पड़नेवाले बाणों का शिकार आकाशगामी इन्द्रजित् हुआ। तब मायावी आभिचारिक भयानक यज्ञ से प्राप्त मंत्रास्त्र को आकाश-मार्ग में अदृश्य रूप से स्थित इन्द्रजित् ने बाहर निकाला। ५७ इन्द्रजित् ने बिना बोले, ध्वनि-रहित स्थिति में रथ-संचालन करने का आदेश सारथी को देते हुए बादलों के पीछे छिपकर उस मायासुर, हत्यारे, चोर, युद्धविशारद पापी (इन्द्रजित्) ने मायानाशक मनुवंश भूपाल राम पर मंत्रास्त्र छोड़ दिया। ५८ फिर तुरन्त ही, लक्ष्मण को इन्द्रजित् ने बाणों के पिंजरे में क़ैद कर दिया। इन्द्रजित् के चलाए बाणों ने रामचन्द्र के शरीर में चुभकर,

आर्येनुत कविदब्बरिसि मज्ञमार्ये देविनिकुंभिळियें वर-
दायकियें नमोयेंनुत नूकिदनवनु निजरथव
वायु मेघगळिल्लदंबर दायतव पर्डेदिदुदा रघु
राय सेना जलधि बळिकेंलें कंदकेळेंद ॥ 60 ॥
इळिदु रथवनु कैमुगिदु रणललनें गभिनंदिसि ललाटकें
तिलकवनु रचिसिदनु संतोषदलि श्रोणितद
हॊळलि गभिमुखनादनव हॆक्कळद हरुषदलित्त रघुकुल
तिलकनभ्युदयप्रपंचव केळिरॆयेंद ॥ 61 ॥

मूवत्तारनॆय संधि

सूचनॆ— रणदॊळळिद समस्त वानरगणव नपर ब्रह्म मरुजेवणिय तंदॆब्बिसिद नभवादिगळु नलिदाडॆ ।

कुशनॆ केळिंद्रारि तंदॆय वसतियनु सारिदनु हॊय्सिद
नॊसगॆवरॆगळनॆत्तिसिद नूरॊळगॆ तोरणव

चारों ओर से घेरकर जकड़ लिया। मुड़ा हुआ घुटना, कान की नोकों, अँगुलियों के जोड़ों में चुभे मानव-शरीर में प्रविष्ट बाणों के पंख जब शोभायमान हो दीख पड़ रहे थे तो दोनों पुराणपुरुष राम-लक्ष्मण युद्ध-रंगभूमि में शोभायमान हो विराज रहे थे। ५९ तब इन्द्रजित् "होय कहकर गर्जता, धन्य-धन्य ! माये ! निकुंभिला देवी ! वरदायनी। प्रणाम है तुझे !" इस तरह पुकारते रथ को आगे बढ़ाता है। तब रघु राम का सेना-समुद्र मानों पवनमेघ-विरहित आकाश के विस्तार-सदृश दिखायी पड़ रहा था। सुनो बेटे कुश ! इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ६० इन्द्रजित् खुशी-खुशी रथ से उतर पड़ा। तथा उसने (अपने) माथे पर रक्ततिलक लगाकर युद्धभूमि को प्रणाम किया। फिर अत्यानन्द से लंकानगरी की ओर रवाना हुआ। अब तुम रघुकुलतिलक की उन्नति की आगे की कथा सुनो। हे लव-कुश। —इस तरह सम्बोधित करते वाल्मीकि ने उन कुमारों को आगे की कथा सुनायी। ६१

छत्तीसवीं संधि

सूचना— अपर (दूसरे) ब्रह्मस्वरूपी हनुमान ने युद्ध में मरे पड़े समस्त वानरों को संजीवनी बूटी लाकर जिलाया; तब शिवजी आदि समस्त देवता खुशी से नाच उठे।

सुनो कुश; इन्द्रजित् अपने पिता के घर गया; मंगल-वाद्य बजवाए; शहर भर में बन्दनवारें लगीं। सुनो लव; राक्षसराज रावण

कुशननुज केळ् दुर्जनगॆ संधिसिद सिरियवॊलुब्बिदनु र-
क्कस रायनु राजसभॆयलि रागरस वॊसरॆ ॥ 1 ॥
मगनॆ तन्नय हानि हरिबकॆ नगॆगॆडॆय माडदॆ छलोक्तिय
नॆगहिकॊंडॆ नरोरगामर जगद जनरुगळ
बिगुह विडिसिदॆ मन्मनोरथ दगुळिवनॆ नी नादॆला यॆं-
दॊगुमिगॆय हरुषदलि हॊगळिदनिंद्रजितु खळन ॥ 2 ॥
कळुहिदनु बळिकुचितदुदुगॊरॆ गळलि मन्निसि मनॆगॆ मगननु
तळित रोमांचनद तनुपुळकांबु कैमिगिलु
खळपतिगॆ बळिकीचॆयलि निश्चलित रणवनु कंडु कंगळ-
लिळुहिदनु कंबनिय नंविद भक्तराघवन ॥ 3 ॥
मरुगिदनु मनदॊळगॆ मोसद मऱॆय रक्कस गदनक्कटा
बऱतुदे बलिमुख बलांबुधि रामचंद्रमन
तॆऱन दावुदॊ जीवकळॆयनु तॊऱियरलॆ सुग्रीव जांबव
रुरुव पवमानज सुषेणकरॆनुत नडॆतंद ॥ 4 ॥
सुरिव कंबनि धारॆगळ मुखदिरुहि दुम्मह दाननाब्जद
हरहु मग्गिद मतियमनद स्वामिकारियद
हुरिय हम्मुगॆ हऱिदचिंतॆय भरवसिग बरुतिर्दनै सं-
गर महीरंगदलि नोडुत राघवेश्वरन ॥ 5 ॥

राजसभा में खुशी के मारे इतना फूल गया मानों दुष्ट को अतुल सम्पदा मिली हो। —इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि ने कहा। १ बेटे, मेरे शत्रुनाश के कार्य को हँसी-मजाक़ का पात्र न बनाते हुए तूने अपनी वीरता की बातें सार्थक कर दिखायीं। भूलोक, पाताललोक, देवलोक के लोगों के घमंड को चकनाचूर कर दिया। मेरे मन की इच्छा की अर्गला के घर को (रक्षा-घर को) बचानेवाला तू साबित हुआ न?" इस तरह कहते रावण ने हर्षाधिक्य में इन्द्रजित् की प्रशंसा की। २ समुचित उपहारों से गौरवान्वित कर रावण ने बेटे को घर भिजवा दिया। रोमांचित हो अत्यधिक हर्ष में जब रावण था तो इधर विभीषण युद्ध को तटस्थ (स्थगित) देख अश्रु बहाने लगे। ३ धोखे से तथा लुकाछिपी से किए गए (राक्षस के) युद्ध को देखकर विभीषण बड़े दुःखी हुए। 'हाय, रामचन्द्रजी का वानर-सेना-सागर सूख गया न! इसके लिए क्या किया जाय? सुग्रीव, जांबव, हनुमान, सुषेणक प्राण त्यागेंगे न!' इस तरह कहते वहाँ से रवाना हुआ। ४ अश्रुधारा बहाते, मुखड़ा घुमाए, सिर नीचे किए, चिंताग्रस्त चेहरे से, बुद्धि तथा मन से व्यग्र; स्वामिकार्य की

मोरेवु तिर्दवु हेणनु रणदोळगुरगबलवसुरिक्कुववोलु-
ब्बरद रकुतद हूरगळ होरळिगळ हरिदलेय
करितुरंगम रक्कसरवन चरर काळिज कावणद दु-
स्तर रणांगण दोळगे नडेतरु तिर्दनसुरेंद्र ॥ 6 ॥
चिगिदु नेत्तर मडुगळनु पुटनेगेवु तोट्टितुवेणन नगलके
मगुचि नोडुत दनिय नालिसुतिदिरु बलनेडन
होगुव रणवेताळगळ हुब्बुगळलेब्बुत शक्रजितुविन
सोगड नालिसु तोय्यनतिरुतिर्द नसुरेंद्र ॥ 7 ॥
वीररनु कोंडोय्व निर्जर नारियर हिडिहिडिदु रघुकुल
वीरननु कोंडोय्वरले नीवेंदु शोधिसुत
भूरि भूतद हेगल हेणगळ तोऱिसिये कोळुतेदिदनु रण
धीररनु वीररनु हृदय समीररनु नृपर ॥ 8 ॥
होरि होदकुळि गुट्टुतोय्वुत भारिभुजवनु पसरिसुत पं-
केरुहासन पाशबाणद कलहदनुपमद
वीरननु कंडी कपीश्वर नारो नोडुवे नेनुत सरिसके
सारिदनु हरिभक्ति सांतोषांग नाननु ॥ 9 ॥

ली लगी भावना की रस्सी टूटने से अत्यंत व्याकुल चित्तवाला विभीषण युद्धभूमि में राम को ढूंढ़ते हुए आया। ५ सांपों के समूह के फुसफुसाहट की तरह युद्ध में गिरे शव हाँफ रहे थे। उमड़कर बहते रक्तप्रवाह में हाथी, घोड़े, राक्षस तथा वानरों के कटे सिरों तथा बाहर निकले पित्थाशय के बन्दनवारों के मध्य, उस असाध्य रणरंग में विभीषण चले आ रहे थे। ६ रक्त के पोखरों को पारकर मुर्दों के ढेर को खरोंचकर देखते, राम की आवाज़ पर गौर करते अपने सामने तथा दाएँ-बाएँ आ रहे रण-पिशाचों की भौंहें टेढ़ी करके धमकाकर भगाते, इन्द्रजित् के शरीर की बू का अन्दाज़ा लगाते विभीषण धीरे-धीरे युद्धभूमि में विचरते आ रहे थे। ७ युद्ध में मरकर वीर स्वर्ग पानेवाले वीरों को अपने साथ ले जा रहीं देवता-स्त्रियों को बीच में ही रोककर 'क्या रघुकुल वीरों को अपने साथ लिवा ले जा रही हो?'—इस तरह पूछते हुए विभीषण ने उनके बीच राम-लक्ष्मण का पता लगाने की कोशिश की। भारी भूतों के कंधों पर लटकते शवों की परीक्षा करते रणधीर, हृदयप्राणस्वरूप वीर राम-लक्ष्मण को ढूंढ़ते हुए विभीषण आए। ८ अपने को बंधनमुक्त कराने में चटपटाते वेदना भुगतते अपनी लम्बी भुजाओं को ब्रह्मास्त्र की जकड़ से विमुक्त करने के लिए लड़ रहे वीरों को देख— "यह कपीश्वर कौन

हनुम नेंदरि़दीत हरुषाननद हरहिनलुब्बि नुडिदनु
नेंनें पुरातन वरवनज हरिहर सुरेश्वरर
हनुम निनगिदु गहनवे बेगेंनलु बेंळेंदनु बिच्चि बिसुटनु
वनजसंभव शरव शरणननप्पिदनु हनुम ॥ 10 ॥
इब्बरादरु नोडलिकें जगदोंब्ब वीरन नरसिदरु कडु
मब्बनलि कैदोंळसि कोंडेंदिभ हयवरूथदलि
ओंब्बुळिय रकुतदलि नोडुत निब्बरद नडेंगळलि बरेंबरें
युब्बिदटवी चरकुलेंद्रन कंडु मरुगिदरु ॥ 11 ॥
अळलिदरु हिरिदागि कय्गळोंळवडिसिदरु बिट्टरा कपि-
कुल ललामन कंडरेंडेंयलि वालिनंदनन
होंळकि दश्रुकणाळिगळनंगुलिय तुदिगळलुरुबि मुंदकें
निलुकि कंडरु नीलनळ गजगंध मादनर ॥ 12 ॥
हिरिदु संकटगोंडु मुंदकें बरबरलु चैतन्यवडगिद
शरभ शतबलि सुमुख दुर्मुख दधिमुखादिगळ
इरव कंडकटेंदु चिंताभरद भारद लळिव सुभटर
नेंरविगळ कळेंदिवरु नोडुत नडेंद रिंदिरिनलि ॥ 13 ॥

है ? भला देखूं ?" —इस तरह कहते विष्णुभक्त विभीषण उनके नज़दीक आया। ९ विभीषण जब पहिचान गए कि वे हनुमान हैं तो हर्षातिरेक से हनुमान से बोले— "ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, देवेन्द्र आदियों ने जो वरदान तुम्हें दिये थे —अभी स्मरण कर लीजिए। हनुमान् ! क्या तुम्हारे लिए यह असाध्य है ? जल्दी आचरण में लाइए। देर मत करें। तब हनुमान ने अपने शरीर को जब बढ़ा दिया तो ब्रह्मास्त्र की जकड़ से मुक्त हो हरिभक्त (विभीषण) को आलिंगनपाश में बाँध लिया। १० अब युद्धभूमि में (राम-लक्ष्मण को) ढूँढ़ने के लिए एक के बदले दो हुए। युद्धभूमि की धुंध में जगदेकवीर को ढूँढ़ने लगे। धरती पर गिरे हाथी, घोड़े, रथ वग़ैरहों को खींच डाले, रक्तप्रवाह को देखते-देखते, वेग से डग भरते जब वे आ रहे थे तो बीच मार्ग पर वानरेन्द्र सुग्रीव को देखकर बहुत ही व्यथित हुए। ११ विभीषण हनुमान ने बहुत ही व्यथित होते हुए हाथ जोड़कर कपिकुलश्रेष्ठ को प्रणाम कर, वहीं छोड़ आगे बढ़े। रास्ते पर वाली के पुत्र अंगद को देखा। आँखों से ढलते अश्रु-बिंदुओं को (अपनी) अँगुलियों से पोंछकर आगे बढ़ते नील, नल, गज, गंधमादन आदियों को देखा। १२ बड़े ही व्यथित होकर जब वे आगे बढ़ रहे थे तो चैतन्य खोये शरभ, शतबलि, सुमुख, दुर्मुख, दधिमुख आदियों की स्थिति को देखकर 'हाय-हाय'

पनसननु कुमुदननु कडुगलि विनतननु केसरिय नग्गद
घनबलायुत वृषभननु कंडसुर नवरुगळ
तनुगळनु तडवरिसि काणदे मनद मरुकद मुसुड दुगुडद
मोने मुरिद मतिवंतरैदिदरिदिर कोळुगुळद ॥ 14 ॥
कंडरडगिद जीवगळ रणगंडुगलिगळनुग्रबाहा
दंडबल मैंद द्विविद मोदलाद यूथपर
कंडु मरुगुवुदावु दिन्नेनु तंडलेव चिंतेयलि बरेबरे
कंडरा कपिराय कटकद वैद्य वल्लभन ॥ 15 ॥
ईत नी परियादने यिन्नेतरऴवु नम्मभ्युदयवेनु
तातननु तळमगुचि मूगिनलुसुरनारैदु
पातकनला विधियेनुत निम्मातगळु बिडेबैदु मिक्कव
धूतजीवर बिडुत बरे केळिदरु किरुदनिय ॥ 16 ॥
हवणिसिदरा येडेयलति खेदवनु किविगोट्टोय्य नोय्योने
तवकिसदे तडेतडेदु तोरुव दनियनालिसुत
इवरु बरे बरे राम कवचस्तवद रामध्यान पर जां-
बवन जगदधिजनक तनुजन कंडरिदिरिनलि ॥ 17 ॥

करते विनष्ट हुए वीरों के समूह को देखते हुए दुःख-भार से व्यथित उन्होंने क़दम आगे बढ़ाए। १३ पनस, कुमुद, महावीर विनत, केसरि, महान बलशाली वृषभ —इनको देखकर विभीषण ने उनके शरीर सहलाए। उनमें जीवित रहने के निशान न देखकर दुःखसंतप्त चित्त से, चिंताग्रस्त चेहरे से उत्साहहीन हो बुद्धिशाली विभीषण हनुमान सामने की रणभूमि (युद्धभूमि) की ओर बढ़े। १४ प्राण खो बैठे युद्धवीरों को, भारी बलशाली मैंद, द्विविद वग़ैरः दलपतियों को देखकर, "अब पछताने से क्या प्रयोजन ?" इस तरह कहते चिंताक्लेशयुक्त होकर जब आ रहे थे तब वानर-सेना के वैद्यश्रेष्ठ सुषेण के दर्शन हुए। १५ 'इसकी भी यह हालत हुई न ? अब हमारी उन्नति कहाँ ?' इस तरह कहते उसे (सुषेण को) सीदा करते परीक्षा की कि श्वासोच्छ्वास चल रहा है कि नहीं; 'विधि बड़ा पापी है" इस तरह कहते अपने-आपको गाली देते तुम्हारी तरफ़ के आदमी अन्यों को, जो युद्ध में मरे थे —छोड़कर जब आ रहे थे तो उन्हें एक क्षीण दुर्बल ध्वनि सुनायी पड़ी। १६ विभीषण, हनुमान अत्यंत व्याकुल हो उस क्षीण ध्वनि की ओर कान लगाए आए; तब उन्होंने ब्रह्मा के पुत्र जाम्बवान को सामने देखा, जो रामरक्षामंत्र पढ़ते

अरि़दरॆल्लि मेलॆ विद्येय तुरुबि तत्वज्ञानदलि क-
ण्दॆरॆद निर्मल परमहंसन हरहिनंददलि
तोरॆद जीवद कपिकदंबद हॊरॆ़गॆवाळनु सिक्किदनु नम
गरि़वु दिन्नभ्युदयवॆंदुब्बिदरु तम्मॊळगॆ ॥ 18 ॥
सरसरिसि सारिदरु बळिका शरणना शरणैकजन वि-
स्तरणवनु सुळिव वरिदारै मारुतात्मजनॆ
तरणवंश ललामसेवा परिणतनॆ पौरंदर व्या-
करण विद्यापंडितनॆ नी नारु हेळॆंद ॥ 19 ॥
जीय नानु विभीषणनु बरवायितरसलु निम्म डियना
वायुसुत तानल्ल निमगेकातनॆंदॆनलु
नोयदै तंदैमगनॆ वज्रायुधारिय रणदला रघु
राय पदपद्मानुभृंगन काणॆयलॆ यॆंद ॥ 20 ॥
देवरातननेकॆ बॆसगॊंवी विचारण वीरराघव
देव लक्ष्मण रिरलु कपिकुल सार्वभौमनिरॆ
पावकात्मज मुख्य बहळ भटावळि गळिरलंजना सुत
नेवनिवरिर लॆंदु बिन्नह माडिदनु नगुत ॥ 21 ॥

रामध्यान में डूबे हुए थे। १७ विद्या को त्याग दर्शन में जिनके ज्ञान-चक्षु खुले थे ऐसे परिशुद्ध परमहंस (श्रेष्ठ संन्यासी) की तरह जाम्बवान दिखायी पड़े। प्राण खोए कपिसमूह की ज़िम्मेदारी उठानेवाले के दर्शन हुए। अब हमारी तरक्की अवश्य होगी! —इस तरह सोचते हनुमान, विभीषण अपने आप में फूले न समाए। १८ हनुमान तथा विभीषण सरपट दौड़े-दौड़े भक्तश्रेष्ठ जाम्बवान के नज़दीक आए। "आनेवाले कौन हैं? वायुपुत्र तो नहीं? सूर्यवंशभूषण के किंकर तो नहीं न? ऐन्द्र व्याकरण-पंडित हैं न? कौन हो तुम?" इस प्रकार जाम्बवन्त ने पूछा। १९ "स्वामिन्! मैं विभीषण हूँ; तुमको ढूँढते हुए आया। मैं वायुसुत नहीं हूँ। उसकी तुम्हें क्यों ज़रूरत है?" इस प्रकार विभीषण ने पूछा। "इन्द्रजित् के युद्ध में बिना घायल हुए लौटे हो न? श्री रघुराम के चरण-कमलों के भ्रमर (हनुमान) को कहीं देखा तो नहीं?" इस तरह जाम्बवन्त ने प्रश्न किया। २० "वीर राघवदेव लक्ष्मण के होते हुए, कपिकुलसार्वभौम सुग्रीव के रहते आप हनुमान के बारे में क्यों पूछताछ कर रहे हैं? अग्निकुमार आदि प्रमुख वीर तो हैं। लेकिन इन सबके होते हुए वह आंजनेय आपको इतना प्रमुख क्यों लग रहे हैं?" इस तरह हँसते हुए विभीषण ने बड़े ही विनम्र होकर पूछा। २१ "बेटे, ऐसी बात

मगने केळादरे समीरन मगन मुख्य प्राणमारुत
नगल दिर्दडे यिद्दुदेंदरि राम मौदलाद
तेगेंदसुर कपिसेनें हनुमनु विगत विग्रहनादडसु बि-
द्दगलि तेंदरि मरळि मातिन्नेके निनगेंद ॥ 22 ॥
तोरिकोंडु सार्किर्दडातन तोरुवेनु मेलोलिव लेसिन
तोरिकेय कर्णयवनु निन्न समक्ष दिर्देनलु
तोरितुत्सव रोमदुब्बिन तोरिकेय हरुषाश्रुवारिय
तोरिकेयला कलिविभीषण नोलेंद नव्ययवव ॥ 23 ॥
रामनेंबुदु विमल लक्ष्मीधामनिदु ता सिद्धनातं
गीमरुत्सुतनेनु वेग्गळनो गुणंगळलि
सोमधरने बल्ल शिवशिव नामधारक रेनु बल्लिद
रो महादेवेनुत कोंडाडिदनु पवनजन ॥ 24 ॥
हनुम निदनेले जीय हनुमन कोनरि कोंडाडिदिरि नीवी-
तनिगे नृपनभ्युदयवेनद बेससि बेगवेनें
हनुम बंदे तदे रघुनंदनन भाग्यद कणिये बंदै
वनचरांबुधि सोम बंदैयेंदनजसूनु ॥ 25 ॥

है तो सुनो। (कि मैं क्यों उसके बारे में पूछ रहा हूँ।) वायुपुत्र की प्रमुख प्राणवायु ठप नहीं हुई है तथा वह अगर कहीं जीवित है तो प्राण खोए राम-लक्ष्मण तथा तथा सारी कपि-सेना बच गयी समझो। हनुमानजी कहीं मर गये तो अन्य सभी को समाप्त (मरे हुए) ही समझो। अधिक बातों से तेरा क्या प्रयोजन है?" इस तरह जाम्बवन्त ने कहा। २२ "अगर वे (हनुमान) जीवित हैं तो, बस, दिखा दो। तुम्हारी आँखों के सामने ही भावी मंगलमय प्रसंग (घटना) दिखा दूँगा।" इस प्रकार जाम्बवन्त के कहने पर विभीषण का उत्साह उमड़ आया। रोमांचित होते खुशी की अश्रुधारा बहाते वीर विभीषण ने अपने अंग-प्रत्यग से खुशी जाहिर की। २३ "श्रीराम लक्ष्मीनिलय हैं—यह निर्विवाद परमसत्य है। यह वायुपुत्र अपने गुणों से उससे भी परे न जाने कितने श्रेष्ठ हैं! यह चन्द्रशेखर ही जानते हैं! शिव शिव! विष्णुभक्त न जाने कितने समर्थ हैं! महादेव।" इस तरह कहते विभीषण हनुमान की प्रशंसा करने लगे। २४ "भगवान्, हनुमान ये रहे। हनुमान की आपने विशेष प्रशंसा की। श्रीराम की उन्नति के बारे में इसे शीघ्र आज्ञा कीजिए।" इस प्रकार विभीषण ने कहा। तब— "हे हनुमान, तुम आ गये न! श्रीरघुनंदन के भाग्य की खान तुम आ गये हो न? हे कपिकुल-सागर के

चरणकॆरगिद पावमानिय शिरव सिरि हस्ताब्जदलि तड
वरिसि तक्कैसिदनु परमानंद मयनागि
सुरर भाग्यत चलुव दिन्नूर्वरय हर्षतॆलेसु लंकॆय
सिरि विभीषणगिन्नु निश्चय वाय्तलॆयॆंद ।। 26 ।।
बन्निरै नीव् तरणिवंशोत्पन्नननु कंडरिदु कॊंडो-
य्दॆन्न नीवन्लिरिसि वेगनॆ बळिक वहिलदलि
जॊन्नविल्लद रजनियलि संपन्न वलरैतंदु जनकन
कन्निकॆय गंडननु कंडरु कणन मध्यदलि ।। 27 ।।
धुरदमंडिय मंडलाग्रद शरधिकक्षद बॆंगडॆय तॆगॆ
सरळना कर्णांत मुष्टिय मुगिय दक्षिगळ
मुरिद हलुगळ लौकिदसळाधरद गरिदॊरिकॆयसरळिन
नरशरीरद निर्विकारन कंडरिदिरिनलि ।। 28 ।।
देवदेवन सकल देवर देव चक्रेश्वरन नाना
जीवनाटक सूत्रधार चराचरात्मकन
पावकानिल पृथ्विपुष्कर जीवनाखिल तत्वमय मा-
या विनोदन कंडुमैयिक्किदरु भक्तियलि ।। 29 ।।

चन्द्रमा ! इधर आओ।" इस तरह कहते जाम्बव ने हनुमान को बुलाया। २५ अपने चरणों में गिरे हनुमान के शरीर को अपने श्रीहस्तों से सहलाते हुए आनंद परवश हो जाम्बवन्त ने हनुमान का आलिंगन कर लिया। "देवताओं का भाग्य सुन्दर है; भूमि माता का आनन्द बहुत ही अच्छा है। लंका की संपदा विभीषण के लिए अब सुनिश्चित समझो।" इस प्रकार जाम्बवन्त ने कहा। २६ "तुम भी आओ; रविकुलद्भव को ढूँढ़कर देखो; मुझे उठा ले जाकर उसके पास उतारो।" इस तरह जाम्बवन्त ने कहा। फिर चाँदनी-विरहित उस रात में बलशाली विभीषण हनुमान जी ने शीघ्रातिशीघ्र ढूँढ़ते हुए आकर जानकीपति को युद्धभूमि के बीच देखा। २७ हिलते सिर, अड़े हुए आयुधयुक्त, पीठ पीछे बँधे तरकस के, पीठ की ओर से खीचे बाण के, कान तक खीचे प्रत्यंचा को मूठ में धारे, खुली आँखों के, दाँत-ओठ मींचे, चबाए, देह के चुभे बाण का पंखा (पूंछ) ऊपर की ओर दिखायी पड़ रहे मानव-शरीर रूपधारी निर्विकारस्वरूपी राम सामने दिखायी पड़ रहे थे। २८ देवाधिदेव, समस्त देवताओं के स्वामी हो, चक्रवर्ती तथा नाना प्रकार के जीवियों के जीवन-नाटक के सूत्रधार कहलानेवाले, जो स्वयं चराचर-स्वरूपी हैं तथा अग्नि, वायु, पृथ्वी, आकाश के लिए आधारस्वरूपी हैं, तत्व (दर्शन)

जनन मरणविहीनननु मुनिजनमनोगम्यननु कमला-
सन सुरेंद्रशरण्यननु सर्वेश्वरेश्वरन
अनघ नव्ययननु निरीक्षिसि तनुपुळकदुब्बुगळ रोमां-
चनद बिगुहिनलेंड्रगि जयजययेंद रिदिरिनलि ॥ 30 ॥
करसरोजव नुत्तमांगदोळिरिसि विनमितरागि बल बं-
दुरु पराक्रमभटरु बळिकैदिदरु जांबवर
इरव बिन्नह् माडि कोंडोय्दरु सरागदला चराचर
भरित बहळ ब्रह्मदंडेगेले कंदकेळेंद ॥ 31 ॥
काणिसिद रोळ्ळितु मदीय सुषेणननु नीवेंब जांबव
नाणतिगे तंदिळुहिदरु मुंदा सुषेणकन
माणलदके निन्नु भुवन प्राणसुत बा सुभटरोळु क-
ट्टाणि बारै तंदे बायेन्नाने बायेंद ॥ 32 ॥
मनदोळितनु तिर्दना हनुमनुभव ब्रह्मामरेंद्रर
निनकुलेंद्रन बळिगे तरहेळलि यमादिगळ
तनुगत प्राणंगळनु तरलेनलि तहे नी घळिगेयलि ता-
नेनुत तुदिगालु गळलिर्दनु वीर हनुमंत ॥ 33 ॥

मय हो माया में विनोद प्राप्त करनेवाले हैं —ऐसे राम को देखकर विभीषण तथा आंजनेय ने प्रणाम किया। २९ जन्म-मरण-विरहित, मुनिजनों के मनोगोचर, ब्रह्मा-देवेन्द्रों के रक्षक, विश्व के एकमात्र प्रभु, पाप-रहित नाश-रहित जो राम हैं —उनको देखकर आनंद से फूले रोमांचित हो प्रणाम करते जय-जयकार करते स्तुति की। ३० हाथों को सिर पर जोड़े प्रणाम कर प्रदक्षिणा करते महावीर विभीषण आंजनेय जांबव के नज़दीक आए। उनसे राम-लक्ष्मण की स्थिति गति का निवेदन किया। फिर चराचरात्मक परमात्मा के पास जाम्बव को बुला ले आए। (मेरे) पुत्रो; यह कथा सुनो। इस तरह कहते वाल्मीकि ने कुश-लव को कथा सुनायी। ३१ 'हमारे सुषेण को तुम दिखा देते तो अच्छा होता' —इस प्रकार जाम्बव की आज्ञा होने पर विभीषण-आंजनेय जांम्बव को सुषेण के पास बुला लाये। "अब तो बात ठीक हो गयी; हे वायु-पुत्र ! इधर आओ। महाबलशालियों के शिरोमणि ! आओ। आओ मेरे हाथी !" इस तरह पुकारते जांबव ने हनुमान को बुला लिया। ३२ ये मुझे ईश्वर, ब्रह्म, देवेन्द्रादियों को लाने की आज्ञा दें; यमादियों के प्राणों को लाने की आज्ञा करेंगे —इसी क्षण ले आऊँगा। —इस प्रकार मन ही मन सोचते हनुमान एक पैर पर (तुरन्त जाने की तैयारी में) खड़े थे। ३३

आत बळिकेनुवनु हेळदें मातनाडिद्दनोंद बारै
वातसुत कंडै रघुप्रभवादि भटरुगळ
तात नीनी जगकॆ वॊम्मन तातमुख्य समस्त सेना
व्रातदसु ता निन्न वशवदु केळिदैयॆंद ॥ 34 ॥
ई सुषेणनु हिंदॆ पन्नग पाशदलि राघवन रणदलि
वासवांतक बिगिद दिन मरुजेवणिगळॆंब
औषधव हेळिदनु ता होगी समयदलि तत्तकॆलस वि-
दैसले यॆंदॆन्नदीक्षणतॆरळु नीनॆंद ॥ 35 ॥
दारि निनगुत्तरदनाना धारुणियनुरॆदांटि हिमव-
त्पारियात्रक नील निषध महेंद्र पर्वतद
मेरुदुदियलि निंदडत्तलु गौरियरसन गिरिय नीक्षिसु
सारु बळिकीशान्य मुखवनु कंदकेळॆंद ॥ 36 ॥
काण बरुतिहवल्लि चंद्रद्रोणि मॊदला दैदुगिरि गी-
र्वाण बलकादिहुदु कदनवनॆसगदवरॊडनॆ
काणिसिद नाल्कौषधिगळनु जाणतनदलि कित्तु रिपुगळु
काणदवॊलैतहुदु होगॆन्नय्य होगॆंद ॥ 37 ॥

जाम्बवन्त ने और कुछ भी न कहते इतना ही कहा— "हे वायुपुत्र, रघुवीरादि वीरों को तुमने देखा ही होगा न! इस जगत के ब्रह्म के पितादियों के प्राण, समस्त सेना के प्राण तुम्हारे हाथ में हैं— आधीन हैं। जानते हो न ?" —इस तरह कहते एक बात कह दी। ३४ "पूर्व में इन्द्रजित् के नागपाश ने युद्ध में जब राम को बाँध डाला था तो इस सुषेण ने संजीवनी जड़ी-बूटी की बात कही थी। इस समय तुम जाओ। यह एक काम करना पड़ा न! इस तरह न सोचते इसी क्षण तुम रवाना हो जाओ"। इस प्रकार जाम्बवंत ने कहा। ३५ "उत्तर दिशा की राह का अनुसरण करते अनेक देशों को पार करते हिमवत् पर्वत, पारियात्रक, नील, निषध, महेंद्र पर्वतों को पार कर आगे बढ़ो। तत्पश्चात् मेरु पर्वत की नोक पर (शिखर पर) खड़े हो जाओ तो शिवजी का कैलास पर्वत दिखायी देता है। उसके बाद ईशान्य दिशा में जाना।" इस तरह जाम्बवान ने कहा। ३६ वहाँ चन्द्रद्रोणि आदि पाँच पर्वत दिखाई देते है। देवताओं की सेना वहाँ पहरेदार है। वहाँ उनसे लड़ने में समय न लागना, चुपके से किसी को कानोंकान पता न लगे, इस प्रकार बड़ी चतुराई से (चार ओषधियाँ) संजीवनी बूटी उखाड़ कर ले आ। जाओ मेरे बेटे; इस तरह जाम्बव ने कहा। ३७ सूर्योदय होने में अभी केवल दो घड़ी बाक़ी

उदयवेरडे घळिगेयिदे नीनदरोळगे बरबेड पश्चिम
दुदधिगिन सारिदरे सारुवु दिरुळु नम्मुवनु
पदुळदिं तहुदेनलु पदकेरगिद कपींद्रन हरसि हरुषद
होदर होगिनलोलिदु कळुहिदना स्वयंभुसुत ॥ 38 ॥
करव मुगिदा हनुम हृत्सर सिरुहदनिलगे नमिसि रामन
चरणकानतनागि बीळ्कोंडनु विभीषणन
इरवु वायुस्कंददलि गोचरिसितेले कुशकेळु हनुमनु
परमपुरुषन जीवमारुतनेंदु बगेयेंद ॥ 39 ॥
कंडनै बळिकातनी भूमंडलद विस्तारवनु मा-
र्तांडपथदलि शैल सप्तद्वीप शरधिगळ
खंडितोर्वी भेदगळना खंड लक्ष्माधरद रतुनद
मंडेयलि कालूरि बळिकीक्षिसिद नुत्तरव ॥ 40 ॥
उदयकालके चंद्रशैलद तुदियसार्दनु केळिदै दश-
वदन बळिकित्तलु कुबेरविमानवनु धरिसि
कदन भूमिगे बंदनै हुसियदले रणवंदिनवोलेंदु-
न्मदित मानसनोडिदनु संग्राम मंडलव ॥ 41 ॥

हैं, इतने में मत आना।' पश्चिम दिशा के समुद्र में सूर्य उतर जायगा तभी रात होगी। तभी बिना किसी प्रकार के रोकटोक के औषधी को ले आ।" इस प्रकार जाम्बवंत के कहने पर उसके चरणों में दंडवत प्रणाम किए हनुमान को आशीर्वाद दिए खुशी-खुशी बिदा किया। ३८ "हनुमान अपने हृदयकमल स्थित वायु को हाथ जोड़ प्रणाम कर, राम के चरणों में झुककर प्रणाम कर, विभीषण से विदा लेकर रवाना हुए। हनुमान जी जब वायुवेग से उड़े तो तभी आकाश में दिखाई पडे। सुनो कुश, हनुमान को तो परमपुरुष राम के प्राणों के प्राण समझो।" इस प्रकार वाल्मीकि ने समझाया। ३९ उसके बाद हनुमान ने सूर्यपथ से (जाते हुए) भूमंडल का विस्तार तथा सप्तद्वीप, पर्वत, सागरों को बिलगानेवाले भूमि के अलग-अलग खंडों को देखा। मेरुपर्वत के रत्नशिखर पर खड़े हो उत्तर दिशा की ओर देखा। ४० हनुमान सूर्योदय के समय चन्द्रद्रोणि पर्वतशिखर पर पहुँच गये। इधर दशमुख कुबेर के बिमान में बैठकर युद्धभूमि में उतरा। उसने बड़े ही घमंड के साथ युद्धभूमि का निरीक्षण करते अनुभव किया कि उस दिन का युद्ध बेकार नहीं गया। ४१ चर्बी, उमड़ता रक्त, हड्डियाँ, मांसखंड, भेजाओं (मस्तिष्क) के लौंदों से

मॊरॆवु तिर्दवु रणसमुद्रद तॆरॆय; बलुरवदंतॆ नॆणनु
ब्बरद नॆत्तरिनस्थि मांसद मिदुळदॊडॆगळ
शिरद मुंडद कालुकैनडु हरिद कपिगळ खळकदंबद
सरिबॆरकॆयलि सप्त ताळोत्सेध दुद्ददलि ॥ 42 ॥
कालनिक्किद कडितवो लयशूलि सुळिदिळॆयो नृसिहन
कालुदुळिय रणांगणवो मृत्युविन बाणसद
शालॆयो समरांगणवोयॆनॆ काळरक्कस रायनक्षिग-
ळोळिगतिशय रसव बीरिदुदणुग केळॆंद ॥ 43 ॥
मुट्टि निलुववरारु मगमनमुट्टि कादलु मगनॆ सरियह
घट्टिवाळरदारु सुरनर नागलोकदलि
तुट्टिसिद रणवधुविगॊलॆय निट्टनेमग रागरसवनु
हुट्टिसिदनॆंदुब्बि कॊंडाडिदनु नंदनन ॥ 44 ॥
तिरुगि बरॆ नोडिदनु निजसचिवरिगॆ तोरिसुता महा सं-
गरमहीरंगवनु पॊगळुतला विमानदलि
तरतरद हॆणवट्टिगळ निर्भरद निडुरकुतगळ कडु भी-
करदि रणरंजिसितु कंगळिगा दशाननन ॥ 45 ॥

सम्मिलित सिर, धड़, पैर, हाथ, कमर वग़ैरहों के टूटने से एक-दूसरे से मिले-घुले कपियों के तथा राक्षसों के समूह सप्त तमाल वृक्षों की ऊँचाई की बराबरी करते ढेर सारे होकर पड़े हुए वह रणभूमि मानों युद्ध-समुद्र के लहरों के गरजन-तरजन से (भरी-पूरी) विराजमान-सी लग रही थी। ४२ वह दृश्य ऐसा लग रहा था मानों यम से काटे जाकर बने हुए ढेर हों, या प्रलयरुद्र के संचालन की भूमि हो, नृसिंह भगवान के पैरों तले रौंदा गया युद्धक्षेत्र हो या मृत्युदेवता का रसोईघर हो या यह युद्ध की भयानक भूमि हो! युद्धरंग का यह दृश्य राक्षसेश्वर की आँखों को बड़ा ही अद्भुत लग रहा था। ४३ "मेरा बेटा मन लगाकर युद्ध करें तो उसका सामना कौन कर सकता है! मेरे बेटे की बराबरी में खड़े रहने की ताकतवाले, या बलशाली देव, मानव, नागलोक में कौन हैं? थकी-माँदी युद्धलक्ष्मी को मेरे बेटे ने बालियाँ पहनायीं न! सचमुच उसने मुझे प्रसन्न कर लिया।" इस तरह कहते रावण ने अपने पुत्र की खूब प्रशंसा की। ४४ अपने मंत्रियों को दिखाते, युद्धरंग की प्रशंसा करते रावण विमान द्वारा दौरा कर लौट आया। विविध प्रकार के शवों के पहाड़ों से, उमड़कर बहते रक्त-प्रवाहों से यह युद्धभूमि राम की आँखों को बड़ी भयानक लगी। ४५ बड़े बलशाली भूत कड़ाहियों में रक्त

हिडिदु पक्कलेगळलि रकुतव नडकुतिर्दरु जट्टिगरु कडि
कडिदु कुनिकिललोट्टु तिर्दवु रणपिशाचिगळु
मडके गळलेळे गरुळताळिसि हिडिदु बोनव मिदुळदंडेय
मुडिदु नेरेदर्चिसुत लिर्दरु रणवनसुरेयरु ॥ 46 ॥
हेणगळनु बाय्गडिसि कैपरेयणियरदलोले दोलेदु रागिसि
कुणिवुतिर्दवु मरुळुगळु मदिरा विकारदलि
क्षणिसि कोंडक्षतेय गंधव हणेगे हत्तिसि हंतियारो
गणेयलेसेदरु बोम्मरक्कसरोंदु ताणदलि ॥ 47 ॥
तोगल हंदरविक्कि तलेयलि जगतिगळ विस्तरिसि निडु गरु-
ळुगळ तोरणगट्टि रणवर्रगळ निनाददलि
होगळिकेय तेल्लटेगळलि बीयगरु तम्मोळगागि कोडगू-
सुगळ मदुवेय माडुतिर्दरदोंदु ताणदलि ॥ 48 ॥
हेणन जोंपद निट्टेलुविनुब्बणद तोगलु गरुळदंडेय
हणेय बासिग दुडिद मकुटद हरिगे हलगेगळ
कुणिहगळ कुबुबिरितगळ मंदणिय रणभेताळ भैरव
गणवु रचनेय लाडुतिर्दुददोंदु ताणदलि ॥ 49 ॥

भर-भरकर एक के ऊपर एक रख रहे थे; युद्ध पिशाच मांस काट-काट कर पेशियों को थैलों में भरकर ढेर लगा रहे थे। भेजाओं की मालाएँ पहनी राक्षसियाँ ताज़ी कोमल आँतड़ियों को, मटकों में पकाकर भोग लगाते, नैवेद्य चढ़ाते, युद्ध की पूजा कर रही थी। ४६ मुर्दों को मुँह में दबाए बड़े डीलडौल से तालियाँ पीटते भूत मादकता चढ़े शराबियों की तरह आनंद की मस्ती में नाच रहे थे। न्योता पाकर आये ब्रह्मराक्षस माथे पर गंधाक्षताएँ लगाए पंक्तिबद्ध हो भोजन में बैठे एक ओर दिखाई पड़ रहे थे। ४७ और एक स्थान में चमड़े का शामियाना बनाए, (कटे) सिरों को जोड़कर बरामदा बनाकर, लम्बी-लम्बी आँतड़ियों की बन्दनवारें लटकाकर, रणवाद्यों के शोरगुल के मध्य एक दूसरों की प्रशंसा करते समधी तोहफ़े आपस में बाँटते हुए अपनी कन्याओं के ब्याह रच रहे थे। ४८ शवों के झुरमुटों के मध्य, लम्बी हड्डियों को तलवार की तरह धारे आँतड़ियों के गुच्छों को माला की तरह जूड़ों में खोंस (पहन) कर कटे मुकुटों को मोर की तरह माथे पर धारे ढालों को हाथ में धारे 'खो खो' कर चिल्लाते नाचते बैताल तथा भैरवों का समूह अन्यत्र खेलकूद में मस्त था। ४९ और एक जगह, रथ के खंभों से टूटे मोतियों के लड़ों को

तेर तुंबिनोळुडिद मुत्तिन हारगळ हरिदिक्कि बिद्दह
वारणद दंतंगळोनकेय लेळेय रक्कसर
नारियरु सरवेत्ति सुव्विसुरारि रावणि सुव्वि जयवि-
स्तारि सुव्वियेनुत्त पाडिदरोंदु ताणदलि ॥ 50 ॥

आलिगळ नुगिदुगिदु कुटुकनु ताळिगेगे नूकिदवु बलि भु-
ग्जाल वेळेदवु नरगळनु नरिगळु निशाचरर
तोळु तोडे नडुगळनु वृकशार्दूलगळ मुरिदाडुतिर्दवु
काळगद कडेनेलन सीमा सन्निवेशदलि ॥ 51 ॥

नगुत नोडुत रणके मेच्चुत मगन कोंडाडुत्त बरे सं-
युगद मध्यदोळिर्द रघुराजेंद्र चंद्रमन
जगदुदरन जनार्दनन घनसगुण निर्गुण निरुपमन स-
र्वगन विमल सुदर्शन प्रभे बेदरिसितु खळन ॥ 52 ॥

तरणिशतदीधितियला निर्भरणन श्रीयंग रक्षेगे
तिरुगि बरुतिर्दुदु कणा कालाग्नि तेजदलि
धुरद महदुत्पात भीषणकर विदेनुतसुरेंद्रभयदलि
तिरुगिदनु पट्टणके पडुवण जलधिगिन निळिद ॥ 53 ॥

खींचकर ढेर बनाए मरे पड़े हाथियों के दाँतों को मूसल बनाए कूटती हुई राक्षस-युवतियाँ 'इन्द्रजित् धन्य-धन्य, रावणपुत्र धन्य-धन्य' कहती हुई ऊँची आवाज़ में मंगलगीत गा रही थीं। ५० कौए मुर्दों की आँख की पुतलियों को खोंच-खोंचकर निकाल-निकालकर कौर भर रहे थे; सियारों ने नर-नाड़ियों को खींच डाला; राक्षसों के भुजदंड, गोद, कमर वग़ैरहों को तोड़-तोड़कर भेड़िये तथा बाघ युद्धरंगस्थली के परे के आँचल के प्रदेश में खिलवाड़ मचा रहे थे। ५१ युद्धरंगस्थली देखते मुस्कुराते, प्रसन्नता प्रकट करते, बेटे की प्रशंसा करते रावण आ रहा था। तभी रणरंग के मध्य, जगत ही जिसका उदर है, जो जनार्दन हैं, सगुण-निर्गुण परब्रह्म जो हैं, सर्वांतर्यामि श्री रघुरामचन्द्र के लकलकाते सुदर्शन चक्र के प्रकाश ने रावण को भयभीत बनाया। ५२ सौ सूर्यों के प्रकाश से प्रज्वलित प्रलयाग्नि की कांति से विराजमान सुदर्शन चक्र मृत्यु-रहित की देह-रक्षा के लिए राम के चारों ओर मँड़रा रहा था। यह युद्ध का भारी अपशकुनकारी लक्षण मानते राक्षसेश्वर लंकानगरी को लौट आया। इधर सूर्य पश्चिम दिशा में उतरा। ५३ हे कुश, अब हनुमान की कार्य-

अेलॆ कुशनॆ केळित्त हनुमन कॆलसवनु बळिकिरुळ मुखदलि
सुळिदनै संजीवनिय शैलकॆ सरागदलि
हॊळकि तल्लिय कावलिन सुररळवियलि हुगलीसदीतन
कलहवनु कैगट्टि कॊणकिदरा समीरजन ॥ 54 ॥
पवन तनुजन कॊणकि जीविसिदवरु लोकदॊळुंटॆ केळै
लवनॆ तोळन तोट सदरवॆ तगर जंगुळिगॆ
दिविजपुरि परियंत सदॆबडि दवरुगळ नॆऽबट्टि मरळिदु
तवकिसिद नौषधिगॆ झडितॆयलंजना सूनु ॥ 55 ॥
केळदादॆनु जांबवर जीवाळदम ळौषधिय नाल्करु
मूलिकॆय संधान शल्य विशल्य करणिगळ
खूळनादॆनु तानॆनुत कट्टाळु बॆऱगिनॊळिर्दु मगुळु
ब्बाळु तनदलि कंडनॊंदनुमान साधनव ॥ 56 ॥
ऐसले बॆऱगेकॆ कीळुवॆ नी शिलोच्चयवनु सरोज म-
हासनन सुतनऱसि कॊळलौषधिय निदऱॊळगॆ
ओसरिसले किदकॆनुत भुजपाशदलि पर्वतव बिगिदा
काश कॆत्तिनॊदऱ लंबरवदुर लवनितळ ॥ 57 ॥

प्रणाली के बारे में सुनो। साँझ होते-होते हनुमान संजीवनी पर्वत की ओर बेरोक-टोक चला आया। वहाँ पहरे पर उपस्थित देवताओं ने हनुमान को प्रवेश का मौका न देते, अपनी वीरता दिखाते युद्ध के लिए तैयार हो उसे छेड़ा। ५४ मारुति को छेड़कर इहलोक में कौन जीवित रह सकता है? सुनो लव, भेड़ों का झुंड क्या भेड़िए से लड़ सकता है? पहरे पर उपस्थित देवताओं को पीटकर उन्हें अमरावती की तरफ़ भगा दिया। लौट आकर, शीघ्रातिशीघ्र संजीवनी बूटी पाने के लिए वह बेचैन हुए। ५५ "जीवन प्रदान करनेवाली संजीवनी बूटी की संधानकरणी (कटे अंगों को जोड़नेवाली जड़ी-बूटी) शल्य-विशल्यकरणी (शरीर में टूटे बाणों को निकाल देनेवाली जड़ी-बूटी) वग़ैरः प्राण प्रदान करनेवाली चार प्रकार की बूटियों के बारे में जाम्बव से पूछताछ कर मैंने जो जानकारी प्राप्त न की वह बड़ी मूर्खता की।" —इस प्रकार सोचते हनुमान चिंता-ग्रस्त हुए। तब अपनी वीरता प्रकट कर (इन) जड़ी-बूटियों को प्राप्त करने का मार्ग उसने कल्पना कर निश्चय कर लिया। ५६ "इसके लिए क्यों आतंकित होऊँ, इस पहाड़ को उखाड़कर उठा ले जाऊँगा; ब्रह्माजी के पुत्र जांबव इसमें से (प्राणदायिनी) बूटियों को ढूँढ़ लें; इसके लिए अब पीछे क्यों हटूँ?" —इस प्रकार कहते उस पहाड़ को अपनी भुजाओं में

धरिसि गिरियनु होद पथदलि तिरुगिदनु निशियलि निशाकर
निरविनवोलोप्पिदुदु तद्गिरि करदोळनिजन
शरण नडदेच्चरिसि नुडिदनु हिरयनी संगरद भूमिय
मरुतजन होगलीय दिरु होरगिरिसि बायेंद ॥ 58 ॥
आत नडेदनु वायुपथदलि वातजन निलिसिदनु जलधिय
सेतुविन दक्षिणदे दसेयलि तिरुगि नडेतंदु
मातनुसुरिद नोय्यनंबुज जातजंगेले जीयबंदन
भीतनौषध सहित बंसिसिन्नुत्तरवनेंद ॥ 59 ॥
आदडेन्ननु कोंडुनडे लवणोदधिक्रम नेडेगेनलु हरि
पाद पद्माराधकनु कोंडोय्द नजसुतन
ऐदिदमल ब्रह्म विद्यावादिगळ सुखमयन परमा-
ह्लाद किम्मिगिलेनलु पौगिदना विरिंचिसुत ॥ 60 ॥
मगन बंदै ब्रह्मवैभव सुगम बंदै कंदै बंदै
जगद जीवकुमार बंदै तंदै हनुमंत
गगन मणिकुल वनधिवर्धन मृगधरनेबंदै महीरुह
मृगकदंब प्राण मारुत बदेयैयेंद ॥ 61 ॥

कसकर लपेटकर ऊपर आकाश की तरफ़ उठाया; तब आसमान चीख उठा। भूमि काँप उठी। ५७ संजीवनी पहाड़ को उठाकर उसी रास्ते से लौट आए जिस रास्ते से वह गये थे। हनुमान के हाथ का (हाथ पर धरा) वह पहाड़ रात्रि में चमकते चन्द्रमा के समान शोभायमान दीख पड़ा। विभीषण ने हनुमान का लौटना जानकर चेतावनी दी। तब बुज़ुर्ग जाम्बवंत ने कहा, "हनुमान को इस युद्धभूमि में प्रवेश करने से रोको तथा उन्हें बाहर ही खड़ा कर आओ। ५८ विभीषण आकाशमार्ग से उड़े तथा समुद्र पर बँधे सेतु के दक्षिण पार्श्व में हनुमान को रोक, खड़ा किया। लौट आकर विभीषण ने जाम्बव से बड़ी धीमी आवाज़ में पूछा— "निर्भीक (निडर) हनुमान औषधियों को ले आया है। अब आपकी आज्ञा क्या है ?" ५९ "तब तो मुझे उस सागर लाँघनेवाले के पास ले चलो।" —इस प्रकार आदेश देने पर श्रीविष्णु-चरण-कमल-पूजक (बिभीषण) जाम्बव को हनुमान के पास ले चला। परमात्मा के दर्शन प्राप्त करनेवाले ब्रह्मविद्यावादियों के परम संतोष के दुगुने संतोष तथा उत्साह से जाम्बव फूले न समाये। ६० "हे मेरे पुत्र ! तुम सकुशल लौटे हो न; ब्रह्म-पद (स्थान) के सुगम साध्य मेरे पुत्र आ गये न; जगत के चैतन्यदायक मेरे प्यारे हनुमान आखिर तुम आ गये। सूर्यकुल रूपी समुद्र

मद्द नाव् तरहेळिदरे कित्तद्रियनु तंदी विवेकद
मुद्दुतनवनु नोडिदै लंकापुराधिपने
इद्दडी हनुमंतनीबल वेद्दुदेंदाव निनगे मोदललि
होदिद्दसिद नुडि गूणयवु नमगिल्ललेयेंद ॥ 62 ॥
ईतननु पोगळुवरे जिह्वेग ळेतरवु नम्मवु चराचर
चेतनन चैतन्य वायु कणा निदानिसलु
ईत निदधिकरु निदानिसे भूत निकरदो ळिल्लविदु सा-
क्षात पौराण प्रसिद्ध रहस्य केळेंद ॥ 63 ॥
अेले विभीषण देव कादिरु दळदुळव हायदवोलसुररु
बळलिदै हनुमंत कडुगुणवंत बलवंत
अलसदेन्नय मात मन्निसि सलिसिदैयेले तंदेयेनुतु
ज्वलिसुवौषधि नाल्क कित्तिळिदनु महीधरव ॥ 64 ॥
सरसरिसि नडेतंदु सचराचरपतिय न्यासदलि बेरळि
दोरिसि हिंडिद नमल संजीवनिय मूलिकेय

के लिए हे चन्द्रस्वरूपी हनुमान तुम्हारा स्वागत है। तुम वानरों के प्राणों के प्राणस्वरूप ही हो लौटे हो" —इस प्रकार जाम्बव ने कहा। ६१ "औषधियों को लाने के लिए कहा तो पहाड़ को उठा लाने का इस विवेकी का लाडलापन तो देख रहे हो न विभीषण। मैंने तो पहले ही कहा था कि यह हनुमान जीवित रहा तो सारी वानर-सेना बच गयी समझो। —यह मेरा कथन दोषपूर्ण तो साबित नहीं हुआ न।" इस प्रकार जाम्बवंत ने कहा। ६२ "इसकी योग्यता की प्रशंसा करने की ताकत हमारी जीभ में कहाँ है? वैसा देखा जाय तो यह चराचर प्राणियों के चैतन्य-दायक विष्णु के प्राणों के प्राण हैं। समस्त प्राणियों में इनसे श्रेष्ठ कोई नहीं हैं। यह सारे पुराणों का सुप्रसिद्ध रहस्य है।" इस प्रकार जाम्बवंत ने कहा। ६३ "हे विभीषण, राक्षस युद्धभूमि में पधारकर लूट-खसोट न करें —इस प्रकार का कड़ा पहरा तू रख।" —इस तरह कहा। उसके बाद— "महान परिश्रम कर थके हुए हो; हे हनुमान! तुम बड़े गुणवान्, बलवान हो। मेरी आज्ञा की ओर आनाकानी या उदासीनता प्रकट न करते उसका पालन करनेवाले महान वीर हो तुम।" इस तरह कहते (जाम्बवंत) पहाड़ पर चमकती चार जड़ी-बूटियों को उखाड़कर पहाड़ से उतरकर आये। ६४ सचराचराधिपति श्रीराम के पास सरपट आकर जाम्बव ने राम के मुँह में पवित्र संजीवनी बूटी को अपनी उंगलियों से निचोड़ दिया। मानव-अवतारधारी लीलाविनोदी तोरवे

नरचरितद राम तोरवेय नरहरिय निखिळाभ्युदय वि-
स्तरद रचनेय बण्णिसलु गोचरवे तनगेंद ॥ 65 ॥
हरुष मिगला सृष्टिकर्तन हिरिय मगनेत्तिदनु समनं-
तरदलादि फणींद्रननु मनुजेंद्र लक्ष्मणन
शरधि सम्मानिसितु सुरकुलदरसु मोदलादखिळ लोके-
श्वररु होय्सिद रोसगे वरेगळ निजपुरंगळलि ॥ 66 ॥
जाणनल्ला जांबवनु गीर्वाण धन्वंतरिय मगना
घ्राणदलि हिंडिदनु कोट्टनु कैयलौषधिय
कौणपरु नटिसदवोला कपि भ्रूणमोदलादखिळ सुभट
त्राणवनु पडेदेत्तिदनु रणदोळु सुषेणकनु ॥ 67 ॥
अद्दवर कैयिंद रणदोळ गिद्द रक्कस वेणननेळदेळ
दद्दिदसिद नब्धियोळु वारण वाजि कुलसहित
होद्दिददनु बळि कोय्यनोय्यने तिद्दुडिकेयरि दनिलसुत कि-
त्तुद्दि सिदनै बालदलि रणदोळु महौषधिय ॥ 68 ॥
केळिदै बळिकेंद्दु देप्पत्तेळु कोटि प्लवगनायक
राळुसहितोदे क्षणार्धदोळेनु, विस्मयवो

के नरहरि के अवतारी राम के उत्कर्ष की कथा का वर्णन करना मेरी शक्ति के परे है —इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि ने कहा। ६५ सृष्टिकर्ता के बड़े बेटे जाम्बवंत ने बड़ी प्रसन्नता से राम को बचाया। तत्पश्चात् आदिशेष के अवतारी लक्ष्मण को बचाया। तब समुद्र फूल उठा। देवेन्द्र आदि दिक्पालकों ने अपनी-अपनी नगरियों में मंगल-वाद्य पिटवाए। ६६ जाम्बवंत बुद्धिमान है न। धन्वंतरि के पुत्र सुषेण के नासापुटों में औषधी निचोड़कर उसे बचाकर उसके हाथ वह औषधी दी। राक्षस नकली वेष में इसका फ़ायदा न उठावें —इस प्रकार सावधानी बरतते मरे कपियों के भ्रूण-सहित समस्त कपि वीरों को सुषेण ने जीवित किया। ६७ औषध के प्रभाव से जीवित हो उठनेवालों की सहायता से युद्ध-रंग मे मरे पड़े राक्षसों के शवों को खिचवा-खिचवाकर हाथी-घोड़ों-सहित समुद्र में डुबवा दिया। उसके बाद धीरे-धीरे नज़दीक जाकर सधरी पोषाक (?) से पहचानकर हनुमान ने अपनी पूंछ से जड़ियों को उखाड़कर युद्धरंग में पड़े वानरों पर उनको रगड़ा। ६८ सुनो कुश, उसके बाद सतहत्तर करोड़ वानरनायक अपनी-अपनी सेना-सहित क्षणार्ध में जीवित होकर आ जुटे। इस आश्चर्य का वर्णन किन शब्दों में करें ? वानर-सेना हाथों में पहाड़ उठाए

शैल संकुल सहित रघुभूपालकननोलैसुतिर्दुदु
काळेग दोळळि वायितेंबुदनरियि दाय्तेंद ॥ 69 ॥
अेले मुनीश्वर हेळिदी कथे नेलेगोळदु चित्तदलि लक्ष्मी
निळयनेंदे नुडिदे रघुराजेंद्र चंद्रमन
अळिव तोरिदि रक्षयंगोड नुळिद तोरिदिरनुचररिगिद
रोळग नरुहिस बेकेनुत नुडिदरु कुमारकरु ॥ 70 ॥
इदु कणा नाटकद नररूपद विनोद विदीगला दश
वदन नुळिदमरा सुरोरग भटर कैयिंद
उदुगलिस दायुष्यवनु केळदरिनच्युत नच्चरिय बी-
रिदनु बाधेगळुंटे बोम्मके बेरगदेनेंद ॥ 71 ॥
धरणिजेय सुद्दियनु तंदंदरस राघवनित्त वरदिं
दिरवु घटिसितु मारुतिगे नैरुतिय नुरे जरेदु
शरणुवोगलु विभीषणंगाय्तिरवु बोम्मन वरदिनजसुत
हरण हिंगदे बदुकिदनु बाणदलि कमलजन ॥ 72 ॥

रघुपति को प्रसन्न कर रही थी। वानर-सेना का युद्ध में विनाश को प्राप्त करने का नामोनिशान तक मिट गया था। ६९ "हे मुनीश्वर महाराज! आपकी बतायी इस कथा के मर्म को समझने में हम असमर्थ हैं। आपने समझाया कि रघुराजेन्द्रचन्द्र लक्ष्मीनिलय हैं। अभी आपने यह भी बताया कि नाश-रहित इस राम की मृत्यु हुई तथा वह फिर जीवित कैसे हुए—इन बातों का वर्णन किया। आपके चरणसेवक हमें इसका रहस्य समझा दीजिए।" इस प्रकार कुश-लव ने निवेदन कर लिया। ७० "मानवरूपधारी विष्णु की सारी लीला है यह। रावण ही नहीं, देवताओं, असुरों तथा उरग वीरों से जिसका नाश नहीं होता है—वह है आयुष्य। इसलिए अच्युत का आश्चर्यकर चरित तो सुनो। परब्रह्म वस्तु का कभी विनाश संभव है? इसमें आश्चर्य की क्या बात है?" —इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि ने कहा। ७१ सीता की खबर जो ले आए तो राघव के दिए वरदान से मारुति (हनुमान) बच गये। (जीवित रह सके।) राक्षस रावण की निंदा करने के कारण श्रीराम की शरण आये। तो विभीषण बच गये। ब्रह्माजी के वरदान के फलस्वरूप ब्रह्माजी का पुत्र जाम्बवंत ब्रह्मास्त्र के प्रयोग से प्राण बिना खोए बच गये। ७२ इन्हीं कारणों से उक्त वर्णित तीन व्यक्ति ब्रह्मास्त्र से अपने को बचा पाए। ये राम के अत्यधिक प्रिय

उळिद रदरिं दिवरु मूवरु तिळिय लधिकरु देवरिगॆ वॆ-
ग्गळद भक्तरु जनन मरण विहीनरहरवरु
नळिननाभन भजकरेनग्गळरॊ जगदॊळु दृष्टविदु कॆ-
ळॆलॆ कुशानुज केळु कुश नीनॆंदु मुनि नुडिद ॥ 73 ॥
वायुजन कंडसुररिपु पुळकाय मानित नागि सासिर
बाय शेषन हॊगळिकॆय हॊगळिद नलॆ वळिक
आयिदौषधि गळनु कटकद राय वैद्यनु संहरिसिदनु
मायवादुदु शैल हनुमन हस्तदलि बळिक ॥ 74 ॥
कपिगळुब्बरदब्बरणॆ काश्यपिय कुंभिक्किसिदवनिमिष
रपरिमित संतोषदलि सुरलतॆय कुसुमगळ
तपनवंशद तॊरवॆ यरसन विपुळ बलदलि सूसिदरु रण-
कुपितबल लळि मसगि तल्लि मेलॆ रजनियलि ॥ 75 ॥

भक्त हैं। इसीलिए ये (तीनों) जन्म-मृत्यु-विरहित (अमर) चिरंजीवि हुए हैं। सुनो लव-कुश; विष्णुभक्त कितने महान हैं! सारा जगत इसका अनुभव पा चुका है। —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ७३ मारुति (हनुमान) को देखकर राम रोमांचित हुए तथा सहस्र फनवाले आदिशेष की तरह उसका गुणगान करने लगे। वानर-सेना के राजवैद्य सुषेण ने चुनकर लायी गयी औषधियों को पीछे फेंक दिया। तत्पश्चात् हनुमान के हाथ का संजीवनी पर्वत अदृश्य हुआ। ७४ वानरों के ज़ोरदार दबाव से धरती धँसने लगी। देवताओं ने अत्यंत आनंद से कल्पवृक्ष फूलों की वर्षा रविवंशीय राम की अनगिनत सेना पर की। चिढ़ी हुई वानर-सेना ने वह रात खुशी-खुशी तथा अत्यंत उत्साह से बितायी। ७५

मूवत्तेळनेय संधि

सूचन— देव रामन कटक मृतसंजीविनियलसु वडेद वळिक विभावरि योळंदाय्तु लंकापुर पुनर्दहन ।

कुशने केळै निर्भयद निगुरिसिद हरुषद निस्सपत्नदि-
नसुरकुल विद्दुदु सुनिद्रा भरद भारदलि
कुशननुज केळिवरु माडिद होसपरिय कनलिकेय कॆणकिन
विषम विग्रहदभिनव प्रारंभ संभ्रमव ॥ 1 ॥

रचिसिदरु शरमुखदलुग्र प्रचुर पावकननु सरोषद
लचल साहस मल्लरा रघुनाथ लक्ष्मणरु
वचिसलेनद नखिळ सुभट प्रचय नीरस निर्गळित तरु
निचयदलि नेलेगोळिसिदरु पवमान बांधवन ॥ 2 ॥

रण महीमंडलद भैरव गणद दीपावळियो महेशन
हणेय हुतवहनट्ट हासवो शिव महादेव
सेणसि ज्योतिर्लोकवी रावणन पट्टणकैत्ति कदनव
कॆणक लैदिद दंडो कैगोळ्ळिगळो कपिबलद ॥ 3 ॥

सैंतीसवीं संधि

सूचना— राम की सेना ने मरे हुओं को बचानेवाली संजीवनी औषध से फिर प्राण प्राप्त कर लेने के बाद उस दिन रात को दूसरी बार लंकानगरी का दहन हुआ ।

सुनो कुश, शत्रु-रहित हुए राक्षस हर्षाधिक्य से निर्भीत हो घोड़े बेचकर सो गये । हे लव, वानर वीरों ने चिढ़कर जो नये ढंग से भयानक युद्ध का प्रारंभ किया उसके संभ्रम का समाचार सुनो । इस तरह कहते वाल्मीकि ने कथा आगे बढ़ायी । १ साहस मल्ल राम-लक्ष्मण ने बाणाग्र से बड़ी भयानक अग्नि उत्पन्न की । इसके आगे की घटना का किन शब्दों में वर्णन करूँ ? समस्त वानर वीरों ने सूखे पड़े सारे पेड़ों को इकट्ठा कर उस आग को सुलगाया । २ (तब) युद्धभूमि ऐसी लगी मानों भैरव-समूह के दीपों की पंक्ति हो, या शिवजी के भालनेत्र की अठखेली हो । शिव शिव महादेव ! दुश्मनी के कारण रावण की नगरी को घेरने आये हुए नक्षत्रों का समूह हो (सेना हो) या वानरों के हाथों की मशालें हों ! ३ थोड़ी सी भी आहट किए बिना चुपचाप वानर वीर उड़ रही चिनगारियों

एरिदरु दुर्गवनु बॊब्बॆय तॊऱिसदॆ तुदिवरॆगॆ किडिगळ
हार्रिसिद रूढिकॆय लॊळबिद्दाळु वेरियलि
मूरुसुत्तिन वलयदलि कालूरि निंदुदु निदमैयलि
तॊऱिता कपिसेनॆ परिवेषद वॊलर्यमन ॥ 4 ॥
रण परिश्रम निर्गमद भारणॆय निद्रांगनॆय निबिड
प्रणय पटुभटरिर्दरबला जनद तॊळिनलि
मणिद मॊरॆय तूकडिकॆगळ कणुगळरॆ मुच्चुगळ हय वा-
रण कदंबक विर्दुदुरुशाला सुवीथियलि ॥ 5 ॥
बळिक बॊब्बिरि दब्बरिसि,कंदॊळसुकारु हॊक्कु हॊय्दरु
तॊळलिकॆय तळवरर तरुगॊल्ळिगळ कडुहिनलि
बॆळगिसिद रुरिगळनु मणिमय निळयनिळयदलूरॊळगॆ गा-
वळिय मार्डिदरु रवणिगरॊळ हॊक्करगलदलि ॥ 6 ॥
बॆदरि कैदुवनरसु तॆळुव मदमुखरनुरि गॊल्ळिगळले
सदॆदु संहरिसिदरु बागिलुगळलि मनॆमनॆय
कुदुरॆगळ हल्लणिसुवर मदरदनिगळ हण्णुवर नुरियलि
हुदुगि हरिदाडुवर हॊगिसिद रंतकन पुरव ॥ 7 ॥

के सदृश दुर्ग के आखिरी छोर तक (विना रोक-टोक) चढ़ गये। किले के भीतर जाकर वहाँ के संचार मार्ग में तीन व्यूहों में वानर-सेना खम ठोंककर खड़ी रही। मशालें हाथ में लेकर चारों ओर किले में खड़े रहे वानर सैनिक सूर्य के चारों ओर के प्रभावलय-सदृश दीख रहे थे। ४ इधर लंकानगरी में राक्षस वीर युद्ध से हुई थकावट दूर करते अपनी पत्नियों के बाहुपाश में आबद्ध हो गाढ़ी नींद में बेख़बर सोए पड़े थे। घुड़साल, गजशालाओं में घोड़े-हाथी मुँह नीचे किए ऊँघते हुए अपनी आँखें आधी मूँदे हुए थे। ५ उसके बाद वानर लड़ाकू चीखते, शोर मचाते हुए इधर-उधर घुस पड़नेवाले पहरेदारों को मशालों से पीट रहे थे। रत्नमय भवनों को आग लगाकर सुलगा दी। वे उत्सुक वानर शहर भर में धाँधली मचाते नगर के आंतरिक प्रदेश में चारों ओर से प्रवेश कर गये। ६ अपने-अपने आयुधों को ढूँढ़ते हुए घबराहट में उठते हुए मदमत्त राक्षसों को उनके अपने घर के दरवाज़ों पर ही जलती लकड़ी से पीटकर वानरों ने मार डाला। घोड़ों पर जीन कसनेवालों को, हाथियों को सजानेवालों को, दौड़-धूप करनेवालों को आग में डालकर सीधे यमनगरी का रास्ता बता दिया। ७ घबराहट के मारे, यह हनुमान है,

कळवळ दलिव हनुमनिवनग्गळ सुषेण गवाक्ष गजनिव
नळ सुरेंद्रजसूनु विवनिव नीलनेंदेनुत
बळिसलिसि बलिदंकदलि तम्मोळगे तावेरडिट्टु पुर रौ-
कुळद रकुतदोळाळे होय्दाडिदरु हरहिनलि ॥ 8 ॥
बोब्बे बलिदुदु नगरदलि बळिकुब्बिदुरि दिवदंत परि यं-
तेब्बिदुदु कत्तलेय कलपद किच्चिच नंददलि
अब्बिसितु कळिकळिके मूजगदोब्ब वीरनु कंडबेरगिन
बेब्बळद लेरिदनु मणिमय दिव्यपुष्पकव ॥ 9 ॥
मारि मत्तैतंदु दकटंद्रारि हरिमेखलेय हरहिद
नूरोळगे करे मगन नेनुतुत्तरद गोपुरव
सारि संधिसिदधिक भीतिय भारणेय लिरलुरि छडाळिसि
भोरेनुत हब्बिदुदु हनुमन ।किच्चिनंददलि ॥ 10 ॥
कूडिदुदु बळिकुगिदु निद्रेय जोड जोडिसितिभ वरूथद
गाडिकेय संगटद समरद सेने चळकदलि
तोडुगैदुगळुब्बरद होम्मूडिगेय होदरुगळ बिरुदिन
बीडुकाररु बीदिवरिदट्टिदरु बलिमुखर ॥ 11 ॥

यह श्रेष्ठ सुषेण है, यह गवाक्ष है, यह गज है, यह नल है, यह अंगद है, यह नील है —इस तरह कहते पीछा करते आकर आपस में दो विभागों में विभक्त हो इस प्रकार खूब लड़े कि सारी नगरी रक्त के प्रवाह में डूब जाय। ८ लंकानगरी में चारों ओर हाहाकार मचा। प्रलयाग्नि के वेग से उठी ज्वालाएँ आकाश तक फैलीं; फलस्वरूप अँधेरा भाग गया। शहर का यह शोरगुल सुनकर जागा हुआ त्रिलोक वीर रावण ज्वालाएँ देख विस्मित होते हुए घबराहट में अपने रत्ननिर्मित दिव्य पुष्पक विमान में आरूढ़ हुआ। ९ "हाय, यह महामारी फिर आयी न! शहर भर में आग फैलायी है। बेटे को बुलाओ" —इस तरह कहते हुए रावण उत्तर दिशा की गुम्बज की तरफ़ जाकर अत्यंत भयभीत हो खड़ा रहा। पूर्व में हनुमान से लंका को लगायी आग की तरह यह आग भी धू-धू करती हुई ज्वालाएँ उगलती प्रज्वलित हुई। १० नींद को झाड़कर (त्यागकर) युद्ध की सारी आपत्कालीन राक्षस-सेना हाथियों को साथ लिये रथों से युक्त तुरन्त आ जुटी। आयुधों से सुसज्जित तरकसों को धारे बड़े ओहदों वाले पड़ाव के वीरों ने स्वेच्छा से मनमाने विचरण करते हुए वानरों को भगा दिया। ११ एक ओर से कुंभ, दूसरी ओर युद्ध भयंकर निकुंभ —इन

कुंभ नॊंदॆसॆयलि रणोग्र निकुंभ नॊंदॆसयलि महाग्नि
स्तंभनॆय खळरॊग्गिनलि तग्गिसिद रिवरधट
जंभरिपुजितु बॆऱगुगॊंडु निकुंभिळॆय सम्मुख मुखस्वा-
यंभुशर कनसाय्तॆनुत हॊऱवंट नरमनॆय ॥ 12 ॥
बॆरसितातन बळियलंदिन खरन मग मकराक्ष रजनी-
चर सुपार्श्वक श्रोणिताक्ष प्रमुख भटनिकर
सरळ सारद लट्टॆगळ निळॆगिरिसि नभक्कॆव्विसिदरहितर
शिरवनुरिगॊळ्ळिगळ बॆळगंतरिसॆ नगरदलि ॥ 13 ॥
जऱॆदु जोडिसि कॆरिकॆरियॊ ळिऱितकाऱर निक्किदरु मु-
क्कुऱुकि मुंवरिवर्तिवलर सॆक्किदरु सवळदलि
तऱुबि कादुव कलिगळॆलुगळ मुऱिदु रकुतव हिंडिनॆत्तर
तॊऱॆय हरिसिदरुरॊळगलद लसुरभट निकर ॥ 14 ॥
अल्लिगल्लिगॆ तऱुबिकादुव कल्लुमरदण्णगळनग लक्कॆ
कॊल्लुगॊलॆयलि कॊंदु कॊंडहिदरुसुर हसरगळ
हल्लु गिऱुकिन हुणुबुदलॆगळ तल्लणद तळमॆलुगळ कै
गल्लगळ हरिसॆनॆ सैगडॆ दिर्दुदगलदलि ॥ 15 ॥

दोनों ने आग को रोकने में प्रयत्नशील राक्षससमूह के साथ मिलकर वानरों की वीरता को घटा दिया, धक्का दिया। यह देखकर इन्द्रजित् निकुंभिला देवी के सम्मुख ब्रह्मास्त्र स्वप्निल वस्तु सी हुई न —इस तरह कहते राजमहल से निकल पड़ा। १२ खर का पुत्र मकराक्ष, असुर सुपार्श्वक तथा श्रोणिताक्ष, वगैरः प्रमुख वीर इन्द्रजित् से आ मिले। इन्होंने बाणों की वर्षा कर वानरों के कटे सिरों को आकाश की ओर उड़ा दिया तथा देहों को धराशायी कर दिया। तभी नगर के जलते मशालों की आग बुझ गयी। १३ धमकाते हुए एक साथ मिलकर राक्षस वीरों ने गली-गली के वानर सैनिकों को मार डाला; आगे बढ़कर चढ़ आते हुए बलशालियों को भाले-बर्छों का शिकार बना दिया; घेरकर लड़ने वाले वीरों की हड्डियाँ तोड़कर, रक्त को निचोड़कर नगर के चारों ओर रक्त की नदी बहा दी। १४ जिधर-तिधर रुकावट पैदा करते पेड़-पत्थरों को आयुध बनाए लड़ते वानर वीरों की हत्या करते हुए उनके प्राणों को राक्षसों ने फटकार दिया। दाँत निपोरे, बाण चुभे सिरों वाले, घबराहट के मारे गालों पर हाथ धरे वानर-सेना उलट-पलटकर दंडवत हुए सारी धरती पर इधर-उधर बिखरी युद्ध में पड़ी दृष्टिगोचर होती थी। १५

बळिक नळनीलादि सुभटावळिग ळॊत्तंबरिसि रक्कस
दळव नानुत निलुत तागुत तॆगॆवुत वुकुतलि
कलहवनु कैकट्टि कॊंडॊड निळिदरा दुर्गवनु भयदलि
नळिन सखवेद्रिदनु दुर्गवनिंद्र दिक्तटव ॥ 16 ॥
मोहरिसिदवु कळनॊळगॆ सन्नाहदलि बलवॆरडु बळिकु-
त्साह रणभेरिगळु मॊळगिदवसुर सेनॆयलि
वाहवारण वरवरूथव्यूह वीर पदातिचयववु
गाहिसितु काळॆगकॆ कपिसेना कदंबदलि ॥ 17 ॥

मूवत्तॆंटनॆय संधि

सूचनॆ— वैरिविजय स्तंभननु जज्जार बल सोरंभनमु रणवीररस कुंभननु कॆडहिद नाजियलि रविज ।

ऎलॆ धराधिपसूनु केळ् बल बलकॆ तलॆ मुट्टाय्तु दिविजा
वळियॊळंदु निशाट बल मलॆ तांतु निंदतॆ
कलुमरन कैदुगळ नॆगहिन कळकळद बॊब्बॆगळ कोळा-
हळद कैमनदुभय बल मोहिदुदु मुंबिनलि ॥ 1 ॥

इसके बाद नल-नीलादि वानर वीरों ने घेर-घार कर राक्षसदल का सामना करते उन पर टूट पड़कर दबाव डालकर युद्ध करते भय के मारे वे किले से उतरकर आयें। तभी पूर्व दिशा में सूर्योदय हुआ। १६ युद्धस्थली में वानर-राक्षस दोनों तरफ़ की सेनाएँ युद्ध के लिए तैयार हुईं। राक्षस-सेना में युद्ध के बाजे बजने लगे। घोड़े-हाथी तथा रथों के व्यूह के साथ राक्षसों की पैदल-सेना कपि-सेना पर टूट पड़ी। १७

अड़तीसवीं संधि

सूचना— शत्रुओं को जीतकर विजयस्तंभ गड़वा देनेवाले वीरसेना संचालक रण-वीर कुंभ को सुग्रीव ने युद्ध में गिरा दिया।

रे राजकुमार ! सुनो। राक्षस-सेना प्रतिरोध कर जब खड़ी रही तो देवताओं की सेनाओं के मध्य सिर से सिर टकराते उद्यम मची। पेड़ तथा शिलाखंडों को व आयुधों को उठाकर शोरगुल मचाते कोलाहल करते अत्यंत उत्साही वानर तथा राक्षस-सेनाएँ आमने-सामने हो लड़ीं। १ सिर से सिर टकराते लड़नेवाले लड़ाकू भेड़ों की तरह महासेना को

तॆगॆदु तलॆयॊत्तुव नियुद्धद तगरिनंततिबलव हळचिद
रग महीजायुधदलिवर वरस्त्र सारदलि
गगनवनु हूळिदरु हॊदॆसितु जगगळनु पद धूळि धूळिय
नॆगहि नॆत्तरु गड लॊळद्दळवॆद्दुदगलदलि ॥ 2 ॥
बॆरसि धाळा धूळियलि खॊप्परिसि खाडा खाडियलि मो-
हरिसि मोडा मोडियलि मुष्टिप्रहारदलि
गिरि गदाघातदलि खंडॆय तरुवि घातिय लंबुकलुगळ
कर चमत्कृति यिद कादितु सेनॆ सेनॆयलि ॥ 3 ॥
चूणि बिद्दुदु जवनदूत श्रेणि यॆद्दुदु भूतयूथद
जाणगति यलि कैयॊडनॆ कुंभन करयुतद
बाणवृष्टिय बहळतॆय सरिगाणि सितु कपियूथ नाथर
ताणदलि तळवॆळगुगॊळॆ तरणिज समीरजरु ॥ 4 ॥
तागिदनु झाडिसिदु रणगलियागि पवनज पतंगज पडि
लागि नलि पावकन पंकेज जन नंदनर
तागि गवयन गज गवाक्षर कूगिडिसि परिभविसि रविजन
मॆगॆ बिद्दनु कुंभसहित विजृंभनुर वणिसि ॥ 5 ॥

घेर लिया। वानरों ने पेड़-पहाड़ों से और असुरों ने अस्त्रों से आकाश को ढाँप दिया। पदचापों के दबाव से उठी धूल ने समस्त लोकों को आवृत कर लिया। धूल से ऊपर उठे रक्त के पोखरों में शोरगुल ही शोरगुल सुनायी पड़ रहा था। २ धूल उड़ाते एक-दूसरे पर टूट पड़ते, छेदते आमने-सामने ही बड़ा भयानक युद्ध करते, चुभते-चुभोते, खींचते-खरोंचते, युद्ध के जादू का नशा दिखाते हस्तकौशल्य प्रदर्शित कर मूठों पर मूठें, मुक्कों पर मुक्के जमाते, पहाड़ तथा गदाओं से आक्रमण करते, खड्ग तथा पेड़ों से पीटते, पत्थर तथा बाणों का चमत्कारपूर्ण ढंग से प्रयोग करते दोनों तरफ़ की सेनाएँ आपस में खूब गुंथ गयीं। ३ सेना के अग्रभाग टूटकर गिरे। यम के दूतों की पंक्तियाँ दौड़ पड़ीं (उन पर टूट पड़ीं)। भूत-गणों के चालाकी से क़दम रखने के अनुरूप कुंभ के तने हुए हाथों से निकली बाणों की वर्षा कपि-सेनानायकों पर होने लगी। यह देख सुग्रीव तथा हनुमान दिग्भ्रांत हुए। क्या करना चाहिए, उनकी समझ में नहीं आ रहा था। ४ कुंभ सुग्रीव-हनुमान पर वार करते हुए उछलकर टूट पड़ा। नील, जाम्बवंत पर आक्रमण करते गवय, गज, गवाक्षों को "हाय तोबा" मचाने लगाकर हराकर, कुंभ के साथ विजृंभ ने भी बड़े आवेग के साथ सुग्रीव पर वार किया। ५ तब सुग्रीव ने कहा—

मूकोरॆयरॆ रक्कसरु निमगेकॆलवो रणवकट तंदॆय
कोय्कतनवनु काणु तगॆसुवरॆ संगरकॆ
काक बल नव नोब्ब संजॆय सोकिनलि सुळिववनु कळविन
कैकरणॆयवनोब्ब भंडरु जगकॆ खळरॆंद ॥ 6 ॥
ऎष्टु साहस गॊंडॆयु निम्मिष्ट कैवश वागदिदु पर-
मेष्टि लिखित तदीय लिखितव मीरॆ लारळवु
भ्रष्ट तनदलि नडॆदु लोककॆ कष्ट रादिर लायॆनुत बलु
मुष्टियनु बलिदॆरॆगिदनु कलिकुंभननु रविज ॥ 7 ॥
अणॆदु गदॆयलि रविसुतन बलु कणिय मुष्टिय लसुरना दिगु
गणवु मार्दनिदोरॆ लायें दरॆगिदनु कपिय
कणु गळलि दीविगॆय बॆळ गोरणिसॆ बिद्दनु नॆलकॆ बिद्दा
क्षण दॊळॆद्दब्बरिसि तुडुकिदनरिभटन रथव ॥ 8 ॥
ऎद्द भरदॊळगीत रिपुरथ दुद्दिदगॆय हिडिदिट्टना रथ
बिद्दुदंबर नदियॊळंबर चररु कॊंडाडॆ
हद्दु हाविगॆरॆ गुव वॊलव नद्दलिसु तैतंदु रविजन
गुद्दिदनु गुडियिद्रिव कोपदल वनि दनिदोरॆ ॥ 9 ॥

"राक्षस जो कुछ करे, निर्लज्ज प्राणी हैं। तुम्हारा युद्ध से क्या मतलब? हाय हाय! पिता की नीचता देखकर भी युद्ध के लिए कोई आशा करते हैं क्या? वह एक नीच बलवाला आदमी है; रात में भटकनेवाला चोर जैसा चालबाज़ इनमें कोई एक है। इस जगत के सारे राक्षस भाँड़ हैं।" ६ "जितना भी साहस प्रकट करो, तुम्हारी इच्छा पूर्ण न होगी। यह विधिलिखित है। ब्रह्माजी का लिखित कौन मिटा सकता है? दुराचारी हो, मनमाने आचरण से लोककंटक बने हुए हो न? तुम्हारी उन्नति कभी न होगी।" इस तरह कहते जबर्दस्त मूठ बाँधकर सुग्रीव कुंभ पर टूट पड़ा। ७ सुग्रीव को गदा से पीटकर, कुंभ ने दिशाओं को प्रतिध्वनित करते घनघोर गर्जना करते बँधी मूठ से सुग्रीव पर टूट पड़ा। ज़बर्दस्त रोशनी का सामना करने में असमर्थ हो जैसे आँखें सफ़ेद होती हैं वैसे आँखें सफ़ेद होकर सुग्रीव धरती पर गिर पड़ा। तुरन्त ही सम्हलकर उठा तथा गरजते हुए शत्रुवीर के रथ को पकड़ लिया। ८ उठते हुए ज़ोरदार आवेग में सुग्रीव ने शत्रु-रथ के अग्रभाग के इस युद्ध को अपनी मुठ्ठी में लेते (काबू करते हुए) शत्रु के रथ को उठाकर आकाश में फेंक दिया। वह रथ जाकर आकाशगंगा में

रावणन करघातदलि कलि पावमानि महाव्यथॆय गत
रावदलि रण मुरिदु नॊंद वॊलिनजनुरॆ नॊंदु
तीवि दतिशय कोपदलि मगुळा विबुध विद्विषन विपुळ
ग्रीववनु तिविदायॆनुत भुज वॊय्दु बॊब्बिरिद ॥ 10 ॥
दॊप्पनवना घायदलि नॆल कप्पळिसॆ कंडनिल सुतनॆ
घप्प बायॆन्नय्य मामा लेसु लेसॆनुत
उप्परिसि कुणिदाडि कुबुबिरि दप्पिदनु युवराजननु मे-
लिप्प सुररिगॆ तोरि कॊंडाडिदनु कपिवरन ॥ 11 ॥
ऎद्दन वनिन नंदनन बलुगुद्द बगॆयदॆ बरसिडिलु मुळि
दॆद्दु मंदरगिरिय मंडॆयनॆरगु वंददलि
अद्दलिसु तॆरगिदनु कंगळु कद्दवै कत्तलॆय निरुळिन
मद्दनॆनॆंदनु नॊंदु कलिगळदेव सुग्रीव ॥ 12 ॥
तरहरिसि कॊंडॊडन रविसुत नुरुतर क्रोधदलि कुंभन
शिरव तिविदनु तिविद घायव गणिस दब्बरिसि
गिरि गुहा वळयदलि बलुनिष्ठुरद मुष्टिय सबुद सुळियलु
मरळि तिविदनु निम्म रघुराजेंद्र बांधवन ॥ 13 ॥

गिरा। यह देख देवताओं ने सुग्रीव की खूब प्रशंसा की। बाज के कांप पर टूट पड़ने के ढंग से कुंभासुर ने अत्यंत क्रोधसंतप्त हो अपनी गर्जना से धरती को प्रतिध्वनित करते आकर सुग्रीव को मुक्कों से पीटा। ९ रावण से पीटे जाने के कारण हनुमान का स्वर काँप गया; उत्साह का भंग हुआ; उसी प्रकार सुग्रीव भी पीटे जाने के कारण अत्यंत क्रोधसंतप्त हो राक्षस के भारी कंधे पर वार करते गरजते अपनी भुजाओं से उसे ठोंका। १० कुंभ सुग्रीव के जबर्दस्त वार के कारण धड़ से धरती पर गिरा। यह देख हनुमान ने "भेष-भेष! दादा, यह बहुत बड़ा भला किया!" इस तरह कहते उछलते-कूदते हर्षध्वनि करते उसने सुग्रीव का आलिंगन कर लिया। युवराज (सुग्रीव) को आकाश-स्थित देवताओं को दिखाते हुए हनुमान ने कपिश्रेष्ठ सुग्रीव की भूरि-भूरि प्रशंसा की। ११ सुग्रीव के इस भारी मुक्के की परवाह न करते कुंभ उठ खड़ा हुआ; तथा भारी वज्रायुध के क्रोधोन्मत्त हो मंदर पर्वत के शिखर पर गिरने की भांति घनघोर गर्जना करते सुग्रीव पर टूट पड़ा। सुग्रीव की आँखों में अंधेरा छा गया। वह अंधेरे की दवा का स्मरण करते व्याकुल हुआ। १२ तुरन्त, संभलकर सुग्रीव ने उग्र क्रोध से कुंभ के मस्तक पर मूठ जमायी। सुग्रीव के इस मूठ की परवाह न करते हुए, बंधी मूठ का कठोर शब्द

तिविद घायव नणेंदु मुष्टिय लवणियिंदेऽगिदनु कुंभ
श्रवणजन कुंभांबु वेनलंबुधियु तुळुकाडे
कविदु बिद्दनु नेलके नेल भारविसितहिपन शिरके शिरदलि
नवरुधिर होऽवंटवा बिऽसिगे दिशा गजद ॥ 14 ॥
बिद्द कुंभव काल हिडिदु ब्बेद्दु नभदलि तिरुहि कलहद
खद्दि कारर देवदेवादिगळु घेयेनलु
अद्दिदसिद निट्ट बुधियोळगव नेद्दु हरितंदिनतनूजन
गद्दवनु हिडि दिऽकि कोपदोळेऽगि बोब्बिऽद ॥ 15 ॥
मुळिदु मर्कटराय पुनरपि मुळुगिसिद निट्टंबुधि योळव
सुळिदु तिविदनु तरणिजनना तरणिसुत खळन
जलधि गिट्टनु मत्ते मत्तव हळचिदनु हरिदश्व तनुजन
घळिगे नडेदुदु समर वीपरि सुमनसरु पोगळे ॥ 16 ॥
सायनवनी परियलेंदसहाय शूरं गेच्चऽसिदनु
माय होगद निजैक करणनु बेरळ सन्नेयलि

पहाड़ की गुफाओं से प्रतिध्वनित हो—इस रीति से कुंभ ने फिर एक बार सुग्रीव को खोंचा। १३ कुंभासुर से हुई इस खोंचने की वेदना को सहते हुए सुग्रीव ने अपनी मूठ को चमत्कारपूर्ण ढंग से घुमा-फिराकर कुंभकर्ण के बेटे पर टूट पड़ते वार किया। घड़े के पानी की तरह जब समुद्र छलका तो कुंभ धराशायी हुआ। उसके यों गिरने से आदिशेष के माथे के लिए भूमि भारस्वरूप हुई; दिग्गजों के माथे से गरम खून बहने लगा। १४ धरती पर गिरे कुंभासुर के पैर को, युद्धोत्साहियों के स्वामी सुग्रीव ने उत्साह से ऊपर उठाकर आकाश में घुमाकर देवताओं के 'उघे-उघे' (धन्य-धन्य) प्रशंसात्मक ध्वनि के मध्य (उस कुंभ को) हिंसा पहुँचाते समुद्र में फेंक दिया। वह वहाँ से उठकर धाया तथा सुग्रीव की मूठ को दबोचकर पकड़ चिढ़कर आक्रमण करते गरज उठा। १५ वानरेश्वर सुग्रीव ने क्रोध से फिर कुंभ को समुद्र में फेंक डुबो दिया। वह (कुंभ) उठकर आया तथा उसने सुग्रीव को मूठ से पिटा। सुग्रीव ने कुंभ को फिर एक बार समुद्र में फेंक दिया। तभी फिर कुंभ उठकर आया तथा सुग्रीव पर टूट पड़ा। देवताओं की प्रशंसा के मध्य उन दोनों के बीच इस प्रकार का युद्ध एक घड़ी तक होता रहा। १६ 'वह इस प्रकार मरनेवाला नहीं'—यह रहस्य असहाय शूर सुग्रीव को मायातीत राम के भक्त विभीषण ने उँगली के इशारे से बता दिया। रघु राम का मित्र सुग्रीव वीरों के स्वामी जो ठहरे।

रायनल्ला वीररिगॆ रघुराय बांधव बळिकवन बलु
कायवनु सीळिदनु होळॆरडागि निमिषदलि ॥ 17 ॥
इट्ट नदरॊळगॊंदु होळनु पट्टणकॆ पौलोमियरसन
पट्टणकॆ मगुळॊंद कळुहिदना कृतांतकन
इट्ट हारव हरसि मुगिलिन वट्टॆगर कैयिंद कळुहिद
निट्टॆडॆय हरुषदलि निज नंदनगॆ दिननाथ ॥ 18 ॥
सुररु बळिकुब्बिरिदु हूविन सरिय सुरिदरु सूत मागध
रॆरडु मैयलि हॊगळिदरु कॊंडाडि कपिवरन
सरिय दारै निनगॆ नंबुगॆ गॆरव तारदॆ स्वामिकार्यद
धुर धुरीणर्तॆ निन्नॊळाय्तॆंदमर मुनि नुडिद ॥ 19 ॥
कॊलस मुगिदुदु कुंभनें बग्गळॆय सुभटन रण दॊळित्तण
कॊलसवनु केळै कुशानुज केळु कुश बळिक
सुलभ मूरुति तॊरवॆ यधिपति कलिनृसिंहन किंकरन कडु
गलि निकुंभासुरन घन संग्राम संभ्रमव ॥ 20 ॥

तभी उसने कुंभ के भारी देह को क्षणार्ध में इस प्रकार चीर डाला कि उसके दो विभाग हों। १७ उसमें से एक टुकड़े को लंका नगरी में फेंक दिया। दूसरे टुकड़े को शचीपति की नगरी (अमरावती) में फेंक दिया। यमदेवता से दिये गये (पुष्प) हार को सूर्य भगवान ने आनंद से आशीर्वादपूर्वक देवताओं के द्वारा अपने बेटे सुग्रीव के लिए भिजवा दिया। १८ देवताओं ने आनंद से फूलों की वर्षा की। चारण-भाटों ने कपिवीरों की विशेष प्रशंसा की। "तुम्हारी बराबरी कौन कर सकता है? तुम पर जो विश्वास रखा गया था, उसमें न्यूनता के लिए अवसर न देकर स्वामी के युद्धकार्य भार को सफलता से तुमने निभाया।" —इस प्रकार नारद ने कहा। १९ युद्ध में कुंभ नामक श्रेष्ठ वीर का काम तमाम हुआ। हे कुश-लव सुनो, इधर जो युद्ध हुआ उसका समाचार तो सुनो। भक्तों के लिए सुगमता से साध्य तॊरवॆ के स्वामी नृसिंह-अवतारी राम के भक्त हनुमान तथा निकुंभासुर के मध्य हुए युद्धवैभव की कथा सुनो। २०

मूवत्तोंबत्तनॆय संधि

सूचनॆ— कलि निकुंभननिलसुत गॆलिदॊलिसिदनु जय वधुव मॆरॆदनु बल्लुह नागव श्रोणिताक्षन कॆडहिदनु नील ।

कॆणकिदा कुंभननु गगनद गणिकॆयरु कॊंडॊय्यॆ कपि वा-
रण नना बळियलि निकुंभनुदार शौर्यदलि
रणभयंकर हनुमनद सैरणॆगॆ तहने तरुण केळा
क्षण विरूक्षण तीक्षण तनदलि तॊटिगनुवाद ॥ 1 ॥
कॆलकॆ कपिकुल सार्वभौमन तॊलग हेळि महोग्र कोपदि
कॊलॆ गडिग निंदिरादना कुंभानुजन रणकॆ
ऎलॆ कुमाररु केळिकुंभन बळिय भारिय भूरि बलवॆडॆ
गलिसि कॊंडुद खंड चंड पराक्रमान्वितन ॥ 2 ॥
ऒत्त बरिसुव भानु बिंबव कुत्ति तूळुव काळमेघद
मॊत्तद वॊलुरॆ मसगि मुसुकिद रस्त्र सारदलि
मृत्यु वल्ला रक्कस रिगॆ मरुत्तनूभव विलय मारुत
नॊत्त बरद वॊलरिभटांबुधि बलव बरिकैद ॥ 3 ॥

उनतालीसवीं संधि

सूचना— वीर निकुंभ को जीतकर, हनुमान ने विजयलक्ष्मी को प्रसन्न कर अपनी अद्भुत वीरता प्रकट की । वीर श्रोणिताक्ष को नील ने समाप्त कर दिया ।

युद्ध में, शत्रुओं को छेड़कर मरे कुंभ को देवलोक की वेश्याएँ अपने साथ बुला ले गयीं । कपि वीर सुग्रीव के साथ निकुंभ ने अपनी प्रचंड वीरता प्रकट की तो युद्धभयंकर हनुमान उसे कैसे सह सकते हैं ? वे उग्र विरूपाक्ष (शिवजी) की तरह युद्ध के लिए सन्नद्ध हुए । १ कपिकुल चक्रवर्ती सुग्रीव को परे हटने के लिए कहकर अत्यंत क्रोध से हत्यारे बने हनुमान ने कुंभ के भाई का सामना किया । हे कुमारो ! सुनो । कुंभ की जो भारी सेना थी, उसने प्रचंड पराक्रमी हनुमान को चारों ओर से घेर लिया । २ अत्यंत वेगवान हो संचरण करते सूर्यबिम्ब को आ घेरनेवाले काल मेघ के समूह की तरह क्रोधसंतप्त हो राक्षस-सेना ने हनुमान को घेर लिया । हनुमान तो राक्षसों के लिए मृत्यु ही है न ? उसने प्रलय मारुत के आवेग उद्वेग से शत्रु योद्धाओं के सेना-सागर को सुखा दिया । ३ अपने मन के इष्टार्थ को सफल बना लेनेवाले हनुमान

रथिकरनु नुग्गॊत्ति गगनद पथिकरनु माडिदनु बळियलि
पृथुळ बल रावुतर नडॆसिद नवर बॆंबळिय
प्रथित नागारोहकर बल मथन नगरिगॆ कळुहि सुमनो
रथनु कळुहिद नवर बळियलि बहळ पदचरर ।। 4 ।।
काणलादुदु बंद सुभट श्रेणि निरुपम देवलोकद
जाणॆयर जव्वनद ललना जनद मेळदलि
भ्रूण हत्याद्यखिळ पापश्रेणि हरिपद भक्ति युक्तर
काणु तडगुव वोलु निमिपदॊ ळडगि तरि सेनॆ ।। 5 ।।
पडॆ मडियॆ फडयॆनुत कलिगळ कडुहिन धट निकुंभ थरथर
दडिकिलिन जगवदुरॆ वाहुप्पळिसि वॊब्बिरिद
अडसि हरितंदनिल तनयन हॆडक नप्पळिसिदनु नभ गु-
म्मिडलु निर्भर कालदंड समान दंडदलि ।। 6 ।।
नॊंदना करदंड हतियलि तंदयनु नॆनॆवुत्त करतळ
दिद तडवरिसिदनु शिरवनु विरिय दॆलॆयॆनुत
मंदनॆय मददुब्बु गॊब्बिन छंद सालंकारदलि हरि
नंदननु हलुदिनुत हरि तंदॊदॆद नतिरथन ।। 7 ।।

ने रथिकों को चकनाचूर कर आकाश के यात्री बना दिया। तत्पश्चात् उनके पीछे-पीछे बलशाली घुड़सवारों (अश्वारोहियों) को खदेड़ दिया। प्रसिद्ध गजारोही वीरों को देवेन्द्र की नगरी की तरफ़ खदेड़ दिया। उनके पीछे-पीछे अनगिनत पैदल सैनिकों को भिजवा दिया। ४ स्वर्ग में पहुँचे राक्षसवीरों ने देवलोक की जो नवयुवतियाँ थीं, चतुर युवतियाँ थीं, उनके साथ रहना शुरू किया। श्रीहरि के भक्तों को देखते ही भ्रूण हत्यादि समस्त पाप अदृश्य हो जाते हैं, उसी प्रकार राक्षस-सेना क्षणार्ध में अदृश्य हो गयी। ५ अपनी तरफ़ की सेना को मरते देखकर वीरों के वीर निकुंभ ने अपने भुजदंड फटकारते जो घनघोर गर्जना की उससे एक के ऊपर एक अवस्थित हो (आधार-भूत) त्रिविध लोक काँप उठे। आगे बढ़कर निकुंभ ने अपने यमदंड-सदृश डंडे से मार जो हनुमान के कंधे पर किया उसकी प्रतिध्वनि आकाश में हो उठी। ६ निकुंभ के हाथ के डंडे की इस मार से मारुति तड़प उठे। पिता की याद करते हुए, माथा तो फटा नहीं न! ऐसा सोचते उन्होंने (हनुमान ने) सँवार लिया। मदोन्मत्त हाथी की भाँति भारी मस्ती से दाँत-ओठ चबाते से आए तथा निकुंभ के रथ को एक जबर्दस्त लात मार दी। ७

मुन्न हनुमन पादघातिगें भिन्न वागददेनु रथ शत
चूर्ण वादुदु कोंडुगदेय निकुंभ निनकुलन
मन्नणेय मनमच्चु गाउन बेंन्न नप्पळि सिदनु निट्टेलु
भिन्न वागदें माणदिर देंदमरगण नुडियें ॥ 8 ॥
होय्द घायकें बेंन्न नित्तु महोदधि क्रमना खळन मे-
ल्वाय्दु तिविदनु तिविद घायद लवन तलें कोरळ
हादियलि नडेदोंड लोळद्दुदु सेदिदरु बळिकुसुर शनिय स-
होदरन किंकरनु शंकिसदा निशाचरन ॥ 9 ॥
ओडनें पादाग्रदलि हगेवन नडिसगुचि नोडिदनु नेरे वि-
गडिसि दसुविन मेलें यम किंकररिगितेंद
तडेंदनिवनें दीतननु संगडिय मनदलि माडदंतिरें
तोंडचि बिडि नीवेंनुत तिरुगिद निनज निद्देंडेगे ॥ 10 ॥
तिरुगुवातन कंडु पडिमोहरद पटुभट श्रोणितांबक
तिरुहिदनु पवनजननद कंडनिल सख सूनु
करव मुगिदिं तेंदनलि करविघातिय कदनवनु नीव्
परकिसलु बेकेंदु बिन्नह माडिदनु नील ॥ 11 ॥

हनुमान की लताड़ से पहले पहल रथ ही चकनाचूर हो गया। तब निकुंभ ने राम के प्रीतिपात्र हनुमान की पीठ पर ठोंक दिया। देवता आपस में कहने लगे कि हनुमान की रीढ़ की हड्डी टूटे बिना न रहेगी। ८ निकुंभ के वार के लिए अपनी पीठ देनेवाले सागर-संतरण करनेवाले हनुमान ने उस पर टूट पड़कर उसको खूब खोंचा। उस खोंचने से उस (निकुंभासुर) का सिर गले के मार्ग से दबोचे जाकर देह में गड़ गया। शनि के भाई यम के दूत बिना संदेह किए (बेशक) राक्षस के प्राण खींच ले गये। ९ तुरन्त हनुमान ने शत्रु को पैर के अँगूठे से पकड़कर उलट-पलट कर देखा तो पाया— उसके प्राण निकल चुके हैं। तभी ऊपर यम के दूतों को देखकर कहा— "यह निश्चेतन हो पड़ा है; —इस प्रकार शंका न करते इसके प्राण फिर इसमें लौट न आएँ —इसका ध्यान रखते इसे उठा ले जाओ।" तब मारुति सुग्रीव के पास चले आए। १० लौट पड़ते हनुमान को देखकर प्रति सेना (शत्रुपक्ष) के शत्रु वीर श्रोणिताक्ष ने उसको लौटा लिया। उसको देख नील ने मारुति को प्रणाम कर, "इस असुर के साथ मेरे बाहुयुद्ध का चमत्कार आप देखें तथा परीक्षा करें।" —इस प्रकार बिनती की। ११ करोड़ों की संख्या में नये रथों, घोड़ों,

अवन बळियलि कोटि संख्येय नववरूथ तुरंग सामो-
द्भव घटाळि पदाति बंदुदु बवर कग्नि जन
पवन सखनुपटळकॆ पर्वतद वनिजौघ तृणौघ मारां-
तवगडिसुववॆ हॊक्कु हळचिदना चतुर्बलव ॥ 12 ॥
आव मैयलि हॊक्कनो कॊलॆ गाव रीति यलंगविसिदनो
पावमानिगॆ पाडॆनलु परबलव निमिषदलि
देवलोक दॊळिरिसिदनु घनरावदलि कलि श्रोणिताक्षन
डावरिसि डॊक्करकॆ हॊय्दनु हॊय्दु भुजयुगव ॥ 13 ॥
ऎत्ति रथ दिंदॆळॆगॆ नॆगॆदु वियत्तळकॆ लंघिसलु कुसुकि म-
रुत्तन यगितॆंद नहुदे समर सौरंभ
चित्तकॊदगितॆ निम्मडिय नीवित्त रणदुपदेश विदुवॆयॆ
नुत्तला कलिनील बळिका खळनॊळितॆंद ॥ 14 ॥
दोषि रावणनॊब्बने निर्दोषिगळु नीव् कुंभकर्ण वि-
भीषणर संतानविरलजनिरवु परियंत
दोषकृत दशमुखन जीवन शोषणवॆ ता मुख्यविदको
भाषॆ निन्नदु बदुकिसुवॆ नडॆ रामनॆडॆगॆंद ॥ 15 ॥

हाथियों तथा पैदल सैनिकों से तैनात असुर-सेना नील से युद्ध करने के लिए श्रोणिताक्ष को प्रोत्साहित करते उसके पीछे-पीछे चली। अग्नि के क्रोध को पहाड़ पर के पेड़ तथा घास कैसे सामना कर हरा सकें ? अग्निकुमार (नील) अन्दर प्रवेश कर शत्रुओं की चतुरंग सेना पर टूट पड़ा। १२ पता ही नहीं लगता कि वह कहाँ से प्रविष्ट हुआ, कहाँ से तथा किस प्रकार हत्या का साहस किया; हनुमान के सदृश (बराबरी करते) नील ने क्षणार्ध में शत्रु-सेना को देवलोक पहुँचा दिया। भारी गर्जना करते हुए भुजदंडों को फड़फड़ाते वीरवर श्रोणिताक्ष पर जबर्दस्त घूँसे उसने जड़ दिए। १३ नील श्रोणिताक्ष को रथ से उठा ले धरती पर कूद पड़ा। वहाँ से जब वह आकाश की ओर उछला तो नील ने उस पर मुक्के जमाए। फिर मारुति को सम्बोधित करते, "क्या मेरा युद्धवैभव आपको पसंद आया ? इस युद्धकला के, आप ही मेरे गुरु हैं।" इस तरह कहते हुए वीर नील ने श्रोणिताक्ष से इस प्रकार कहा। १४ "एकमात्र रावण अपराधी है; कुंभकर्ण विभीषण के पुत्र (जो तुम हो) निरपराध हो। विधि-(ब्रह्मा) लिखित आयुष्य जो तुममें शेष है—तब तक जीवित रहो। पापी रावण के प्राण हर लेना ही मुख्य कार्य है। यह देखो; मैं वचन देता हूँ। राम के पक्ष में चले आओ। तुम्हारे प्राण बच जायेंगे।" इस प्रकार

अळुकि साविगॆ सहभवन रण कुळुहि हगॆवन हॊक्करिय तं-
बुलकॆ कैयांतधम रक्कसनॆंदु बगॆदॆयॆल
छल परिग्रह रामकीर्तिय मौलॆय मेलण मौक्तिकद परि-
लुळित निर्मल हाररावॆ् रणकंजलेकॆंद ॥ 16 ॥
ऎंनुत डॊक्करिसिदनु शिखिनंदनन काल्दॊडकि नलि कॆडहिद
ननुवरवु सरिसाटियॆनॆ नोटकर कण्मनकॆ
घन बलायत रॊदगिदरु बळिकनिल बांधव सूनु रिपुविन
तनुव तळुकिन कालगळलि बिगिदॆंदनी हदन ॥ 17 ॥
नोडॆलवॊ खळ कपिय कदनद पाडुपंथव निन्नु निन्नुसु
रोडदिरॆ हॊगॆनी रणांगणवनु प्रतिज्ञॆयिदु
बेडिकॊ निन्निष्टदैवव खेडनागदॆ बेगॆनुत्त स-
गाढ बल नॆऱगिदनु शिरवनु श्रोणितांबकन ॥ 18 ॥
बिरिदु दॆरडिट्टिवन शिरवद रॆरडवॊळगॊंदनु समीपद
नॆरॆद भूत गणंगळॊडॆ यंगॊंद भैरवगॆ
करॆदु कॊट्टुळि वॆणन कालन चरर कैवर्तिसि जयश्री
सुरत लंपट मरळिदनु मारुतिय हॊरॆगागि ॥ 19 ॥

नील ने कहा। १५ "क्या तूने, मृत्यु से डरकर, सहोदर भाई को युद्ध में झोंककर, शत्रु की शरण जा, उसके जूठन के लिए हाथ पसारनेवाला नीच राक्षस मुझे समझ रखा है? हम दृढ़ संकल्प वाले हैं। कीर्तिलक्ष्मी के हृदय पर डोलायमान परिशुद्ध मोतियों के हार जैसे हम हैं। हम युद्ध से क्यों डरें?" १६ इस तरह कहते श्रोणिताक्ष ने नील पर मुक्का जमा कर, अड़ंगा लगाकर गिरा दिया। दोनों का युद्ध जब बराबर का चल रहा तो बलशाली श्रोणिताक्ष तथा नील ने दर्शकों के आँख और मन मोह लिये; तत्पश्चात् नील ने असुर के शरीर को पैरों से कसकर बाँधकर इस प्रकार कहा। १७ '(इस) कपि के युद्ध के जिद्दी ढंग को देखो न राक्षस! अब तेरे प्राण अगर नहीं निकले तो मैं फिर कभी (इस) युद्ध रंग में प्रवेश ही नहीं करूँगा। यह मेरी प्रतिज्ञा है। डरपोक न बनते तुरन्त अपनी इष्ट देवता का स्मरण कर लो।" —इस प्रकार कहते महाबलशाली नील ने श्रोणिताक्ष के सिर पर ठोंक दिया। १८ नील के वार से श्रोणिताक्ष का सिर दो टुकड़ों में चीरा गया। टुकड़े हुए सिर के एक हिस्से को जमे हुए भूतगणों के मालिक को तथा दूसरे को भैरव को बुलाकर देते हुए, बचे मुर्दे को यमदूतों के वश में देते हुए विजयलक्ष्मी के कामुक

उळिद बल हुरिकटिसि हॊक्कुदु दळवनी कपिनायकर कै-
गॊळिसिताहव मत्तॆ मॊळगुव वाद्य रभसदलि
अळव मॆरॆदनु हिंदणसुरर कलह कॆणॆयॆनॆ हॊक्क मैयलि
कलकिदनु कपिबल महा जलधियनु यूपाक्ष ॥ 20 ॥
आतु बळिका द्विविदनॆंब महातिबल कपिनायकनु रण
रीति लेसॆंबंतॆ हळचिदना निशाचरन
चातुरंगवनुरु चपेट निघातदलि निर्णॆसि यमन नि-
केतनकॆ कळुहिदनु कलियूपाक्ष राक्षसन ॥ 21 ॥
पडि बरिसि बळिकुळु कलिन खळ पडॆ सहित हॊगॆदॆगॆद वह्निय
कडुहिनलि कदन प्रजंघ निशाट नॆंबवनु
कडुमुळिदु तागिदनु कदनद कुडुहु तप्पल्लॆनलु कपिबल
सिडियॆ सीवरिसुत्त मददलि मैंद माऱांत ॥ 22 ॥
ऒब्बरद ऱॊळ गुळिय दंतिरॆ जब्बुदुळिदनु जोहविक्किद
हब्ब दभिनयदंतॆ हरुषव नंदलमरगण
उब्बि रणदेवतॆगॆ मिक्किव कर्बुरर तोऱि सलिकसुरन
तुब्बु गॊट्टनु तोटि निद्दुदु तामसी चरन ॥ 23 ॥

नील मारुति के नज़दीक लौट आए। १९ अब बचा हुआ असुरदल बड़े उत्साह के साथ वानर-सेना पर टूट पड़ा। ज़ोर-ज़ोर से जब युद्धवाद्य बजने लगे तो फिर कपिनायक युद्ध के लिए निबद्ध हुए। पूर्व में हुए असुरों के युद्ध के समान यूपाक्ष ने युद्ध में अपना बल प्रदर्शित किया। टूट पड़ते ही उसने कपिसेना-सागर को खोखला दिया। २० तत्पश्चात् द्विविद नामक महान बलशाली कपिनायक ने अपना युद्ध का ढंग प्रचंड है, यह सिद्ध करते हुए यूपाक्ष का सामना किया तथा उस पर टूट पड़े। द्विविद की चौड़ी हथेली की मार से राक्षसों की चतुरंग सेना समाप्त हुई; तभी द्विविद ने वीर यूपाक्ष को यमनगरी की ओर भिजवा दिया (मार डाला)। २१ उसके बाद बची-खुची असुर-सेना के साथ निर्धूम अग्नि की तरह भड़ककर कदनप्रजंघ नामक असुर ने प्रतिरोध करते हुए, अपनी वीरता में किसी प्रकार की कमी या दोष नहीं —यह प्रकट करते हुए वानर-सेना पर टूट पड़ा। वानर-सेना चीखते-चिल्लाते भागने लगी तो मैंद ने गरजते हुए राक्षस का सामना किया। २२ मैंद ने राक्षस-सेना के किसी को ज़िंदा न छोड़ते हुए दबोच-दबोचकर रौंद डाला। वेश-भूषा धारण कर उत्सव में हर्षित होनेवालों की तरह देवता हर्षित हुए। अन्य राक्षसों को मिसाल बताते हुए कदनप्रजंघ को रणदेवता के हवाले कर दिया।

सालदे संग्राम सिरि कण्णालि दणिदवु नोडि नोड्डव
नाळे मिक्किन रणव नेंदिन नधिक हरुषदलि
श्री लतांगिय रमण ननुपम लीलॆ गुत्साहिसुत वर वरु-
णालयव सारिदनु वरुण दिशांगना रतिगॆ ।। 24 ।।
मुत्तिगॆय पुरकिक्कि तिरुगिदरित्तली तोरवॆय नृसिंहन
हत्तिरकॆ सुग्रीव मुख्य समस्त नायकरु
चित्त दुम्मह दुब्बरद विजयोत्तरद सुम्मानदलि दे-
वोत्तमनु बीडिकॆगॆ बिजयंगैद नीलविनलि ।। 25 ।।

नलवत्तनॆय संधि

सूचनॆ— राम तुरु कोदंड दीक्षा रामनसुर कुलौघ रणजय भीमगॆलिदनु कदनदलि मकराक्ष राक्षसन ।

कॆळिरै यमळरु रणांगण कॆळियलि निम्मवरु गॆलिदरु
मेलॆ मुत्तिगॆयाय्तु दुर्गकॆ दुष्ट रावणन
ओलगदोळसुरेंद्रननुजर बालकर मरणवनु कॆळुत
कौळुडॆय नॆम्मिनलि चिम्मिदनुगुर लश्रुगळ ।। 1 ।।

उस राक्षस का लड़ना रुक गया (काम समाप्त हुआ)। २३ युद्धवैभव क्या इतना यथेष्ट नहीं हैं ! युद्ध को देखते-देखते आँखें थक गयीं। बचे-खुचे युद्ध को कल के लिए छोड़ दें (देखें)।" इस तरह सोचते अत्यानन्द से लक्ष्मीरमण की लीलाओं से उत्साहित हुए सूर्य ने पश्चिम दिशा रूपी रमणी के संग की आशा करते हुए पश्चिमी समुद्र में प्रवेश किया। २४ इस तरफ़ सुग्रीवादि प्रमुख वानर नायकों ने लंकानगरी को घेरकर तोरवे के नरसिंह-अवतारी पुरुष श्रीराम के पास लौट आये। उत्साही मन से विजय के अत्यानंद से श्रीराम अपने पड़ाव की तरफ़ लौटे। २५

चालीसवीं संधि

सूचना— कोदंडधारी राम, राक्षस-रणविजय भयंकर राम ने मकराक्ष राक्षस को युद्ध में जीत लिया।

सुनो, हे लव-कुश ! इस युद्ध-क्रीड़ा में तुम्हारी तरफ़ वालों की जीत हुई। उसके बाद दुष्ट रावण का वह दुर्ग घेरा गया। सभा-भवन में उपस्थित रावण ने अपने भाइयों के पुत्रों की मृत्यु की वार्ता सुनकर

मोळगिनब्बर वळिद गगन स्थळवो मेण्मुंगार मेवद
सुळिवु निंदंबुधियो विविधेंद्रियगळुपटळद
कळकळिकॆ तग्गिद महात्मन निलवो दशकंठन सभा मं-
डलवो हेळुवुदेनु मोनदोळिर्दुदास्थान ॥ 2 ॥
दुगुड भारद हत्तुमुसुडिन बॆगडुदोरिद मनद नॆनहिन
तगहु कैगल्लगळ चिंताभरद भारदलि
दृगु विहीननु कत्तलॆय मोगॆ मोगॆदु कडॆगाणदवोलरि सं-
युगकॆ सरणिय काणदुसुरिडुतिर्द नसुरेंद्र ॥ 3 ॥
जीय दुगुडविदेकॆ कमलज सायकदलळिदुळिदरी नर
रायरॆंबुम्मळव बिसुडिन्नोंदु कर्णॆयदलि
आयसव बिडिसुवॆनु निन्न निरायसदोळरिभटन कालन
बायोळडसदॊडिंद्रजितु वॆंबसुर नल्लॆंद ॥ 4 ॥
सेविसलि सुधॆयनु महामरु जेवणियलॆब्बिसलि पडॆयलि
सावु तमगिल्लॆंदु वरवनु हरसरोजजर
देवरिपु चित्तैसु मेलिन्नावु दतिशयवाडि कॆडिसॆनु
रावणासुरनल्ल दिल्लॆसुवॆनु जगकॆंद ॥ 5 ॥

तकिए पर अपने को टिकाते हुए हथेली के नाखून से (उंगली के नाखून से) छलछलाते अश्रुओं को पोंछ लिया। १ मेघगर्जना स्तब्ध होने पर दीख पड़नेवाले आकाश-सदृश; प्रारंभिक वर्षा के बादलों की गति रुकने पर दिखाई पड़नेवाले सागर-सदृश, दशकंठ के सभाभवन के मंडप-सदृश ! पंचेंद्रियों की पीड़ा चिंता से विमुक्त महात्मा की स्थिति (मनोदशा) सदृश रावण की सभा मौन में डूब गयी। २ चिताग्रस्त भाव धारे दस मुँह, आश्चर्यान्वित आलोचना के तनाव से युक्त, चिंता के भार से दबे गाल पर हाथ धरे बैठे रावण अन्धे के सामने व्याप्त अंधेरे के सदृश (जो अंधेरा कभी समाप्त न होनेवाला था) शत्रु से लड़ने का मार्ग (युक्ति) समझ में न आने के कारण दीर्घ निःश्वास लेते बैठा था। ३ "स्वामिन्, दुःख काहे का कर रहे हैं? यह मानव राजा ब्रह्मास्त्र के प्रयोग करने पर भी बच निकलनेवाले है—इस चिंता को त्यागिए। यदि और एक बाण चलाकर आपको (इस) चिंता से विमुक्त न करूँ तो, बड़ी सुगमता के साथ इन शत्रु वीरों को यमदेवता के मुंह में न झोंक दूं तो मैं इन्द्रजित् नामक असुर नहीं हूँ, समझे"। ४ "चाहे शत्रु अमृत-पान कर चुके हों, चाहे महासंजीवनी औषध से वे बचाये जायं। (फिर भी इस मौक़े पर) स्मरण कर लें कि सेना में ईश्वर तथा ब्रह्मा

अंब मातनु केळिकलि मकरांबकनु कैमुगिदु हरिजितु
वेंब मातिदु तुदियलागलि नाळिनाजियलि
तिंबे नग्गद कदन कीशकदंबवनु रिपुनृपर जीवव
कोंबे ता वीळयव तनगेंदसुर गर्जिसिद ॥ 6 ॥
अंदु वनदलि तन्न तंदेय कोंद बळिवर्ग कोलेगे कोलेयनु
निंदिरिसुवेनु निलिसुवेनु चित्तके मनोरथव
हिंदे हिंगिद भटर सोलद संद संधिसि बेसुवेनतिशय
दिद राक्षस राजतेजद सुप्रतापकव ॥ 7 ॥
तरिसि बळिकवगसुरपति कर्पुरद वीळेयवित्तु नाना
भरणवनु तोडलित्तु नेमिसिदनु महाहवके
हरेदुदोलग वंदिनिरुळिन भरवु बीतुदु सूतनिननें
च्चरिसे नूकिदनरुण मूडणगिरिगे मणिरथव ॥ 8 ॥
आहवके मकराक्ष नूरक्षोहिणिय बलसहित मह दु-
त्साहदलि होरवंटना लंकामहापुरव

से दिये गये वरदान के कारण आपकी मौत असंभव है। इससे बढ़कर और क्या बात हो सकती है? व्यर्थ बकझक से क्या प्रयोजन? ऐसा कार्य करूँगा कि इस जगत में रावणासुर का सामना करनेवाला समर्थ अन्य कोई नहीं हो सकता। यह उक्ति चरितार्थ करूँगा।" इस प्रकार इन्द्रजित् ने कहा। ५ यह बात सुनकर वीर मकराक्ष ने हाथ जोड़कर— "इन्द्रजित् ने जो बात कही उसके लिए मौक़ा अन्त में दिया जाय। कल के युद्ध में सम्मुख आनेवाले श्रेष्ठ वानरसमूह को मैं खा डालूँगा। शत्रु राजाओं के प्राण सोख लूँगा। मुझे बीड़ा उठाने का मौक़ा दीजिए।" इस तरह कहकर गरजे। ६ पूर्व में, वन में मेरे पिता खरासुर को मार डालनेवाले उस वंश के शत्रु को (प्रतिरोध लेते) मार डालकर (बदला लेने की) मेरी आशा को तृप्त कर लूं; उस समय के युद्ध में प्राण त्यागनेवाले वीरों के पराजय से उत्पन्न दरार को पूरा कर राक्षसों की कीर्ति रूपी वीरता की पराकाष्ठा के टाँकें लगा दूं। ७ राक्षसेश्वर ने कर्पूरमिश्रित बीड़ा लाकर मकराक्ष को देकर, धारण करने के लिए विविध प्रकार की वस्तुओं को देकर आभूषणों को पहनाकर युद्ध में जाने के लिए नियुक्त किया। तत्पश्चात् रावण की सभा विसर्जित हुई। इधर रात ढलने लगी। सूर्य ने सारथी को जगाया तो अरुण ने रथ को पूर्वाचल की ओर बढ़ाया। ८ मकराक्ष सौ अक्षौहिणी सेना के साथ लंका नगरी से अत्यंत उत्साह के साथ युद्ध के लिए रवाना हुआ। इस तरफ़, युद्धस्थल में

मोहरिसितीचॆयलि रणसन्नाहदलि सुग्रीव वलवव
गाहिसितु मकराक्ष सैनिक सर्वलग्गॆयलि ॥ 9 ॥
हेळिदरॆ हॆदरुवदु मनवा भीळ रक्कस वलवनॆलॆ कुश
कॆळु गरळांबुधिय तॆरॆगळो तुरग दॊड्डुगळो
व्याळदंतियो कालयमन कराळ सैरिभ दॊड्डो रक्कस
नाळो रणभैरवरो बण्णिस लरिदु तनगॆंद ॥ 10 ॥
उळिदु दॆडॆयिल्लदॆ नभोमंडल महादेवमम वदुकिद
नॆलुगळॊळगिल्लदॆ समीरणनखिळ जलराशि
नॆलॆ गळिल्लदॆ जीविसिदनिननुळिद दूरदलिर्दु सैरिसि
तिळॆ कलाद्रिगळिंद रिपुसेना निनाददलि ॥ 11 ॥
इंबुदोरिदु दिल्ल केतुकदंबदलि नभवमम तरणिय
बिबवेनादुदो चतुर्बल चरण धूळियलि
चुंबिसुव चूरिसुव शस्त्राडंबरद डावरकॆ कपिगळ
डॊंबिनुब्बरवॆत्त हॊदुदो हेळलॆनॆंद ॥ 12 ॥
निदना निजसकल सेनॆय मुंदुगडॆयलि तारकाग्रह
वृंद मध्यद रवियवोलु मकराक्ष रथदॊळगॆ

सुग्रीव की सेना युद्ध के लिए तैयार खड़ी थी। दूसरी ओर मकराक्ष की सेना आक्रमण करने के लिए चारों ओर से घुस पड़ी। ९ उस भयंकर राक्षस-सेना के वर्णन करने में मन थरथर काँपने लगता है। हे कुश सुनो, "विष-सागर की लहरें हैं या घोड़ों की फ़ौज है! मदमत्त हाथियों का झुंड है या काल रूपी यमदेवता के भयंकर भैंसो का समूह है! राक्षसों का वल है या यह रणभैरव हैं! मैं वर्णन करने में असमर्थ हूँ!" —इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। १० शत्रु-सेना की गर्जना आकाश में इतनी व्याप्त हो गयी कि तिल रखने को जगह न बची; हे महादेव! अपने अन्दर हड्डियाँ न रहने से पवन बच सके; समस्त सागर आधार-रहित हो बच गये; सूरज दूरी के कारण अपने को बचा पाए; कुलपर्वतों के आधार के कारण धरती सँभल सकी। ११ "देवताओं के विमानों पर फहराते ध्वजसमूहों से आकाश में तिल धरने की जगह न थी। चतुरंग सेना के रौंदने से उठी धूल से सूर्यबिंब का न जाने क्या हुआ! बाप रे बाप! चमचमाते शस्त्रों की वेदना के कारण वानरों का भारी शोरगुल न जाने कहाँ गायब हो गया! —इसका वर्णन किन शब्दों में करूँ?" —इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। १२ अपनी सेना की व्यूह-रचना के सम्मुख ग्रह-नक्षत्रों के मध्य सूर्य के समान मकराक्ष रथ में विराजमान था। पूर्व के महान बलशाली राक्षसों के ग्यारह गुने अधिक

हिंदणतिबल खळरिगिव हन्नोंदु मडितेजदलि दशरथ
नंदनन कंगळिगे कौतुकवेनलु काणिसिद ॥ 13 ॥
इवनु कैटभनो महादेविवनु जंभनो तमनो तानि
तिव हिरण्याक्षनो जगक्षोभांधकासुरनो
इवनदारै बंदराक्षस निवहदलि हेळेंदु सिरिरा-
घव नरेश्वर केळिदनु बळिका विभीषणन ॥ 14 ॥
जीय चित्तैसिवनु रणयुवती यशश्रुतिपूर निवनति
कायनि बल्लिदनु बल्लिद निंद्रजितु विगे
राय केळंदडवियलि समरायतदोळुब्बेद्दु निम्मय
सायकद सरि गोंदगिदतिबल खरन मगनेंद ॥ 15 ॥
आदडिव बल्लिदनु तप्पल्लैदलुळ्ळुव नम्म रणसं-
वादकिव नय्यन पराक्रमकारु सरि जगद
आदि वीररलेम्म बलु बिलुगैदुवनु मुरियेच्चु मूव
त्तेदु हेज्जेय हिन्नेलेगे हिंगिसिद नवनेंद ॥ 16 ॥
हगेगळावीगिवगे नम्मोळु जगळवनु गंटिक्कि कोंबु-
ज्जुगवु तप्पदु बरिदे सेनेयनिवन कैयिद
गगन पथिकर माडिसुवदिदु निगरवल्लेमगेनुत करुणा
ळुगळ देवनु कोंडनग्गद चाप मार्गणव ॥ 17 ॥

तेजस्विता के साथ विराजमान मकराक्ष राम की आँखों में अत्यन्त कौतुक-जनक (कुतूहलकारी हो) दिखायी पड़ रहा था। १३ "शिव शिव! यह क्या कैटभ है! या यह जम्भासुर है! तम है या हिरण्याक्ष है! जगत्-पीड़क अंधकासुर तो नहीं! राक्षसों के झुंड के साथ आनेवाला यह कौन है—बता तो सही।" —इस तरह राघवेन्द्र ने विभीषण से प्रश्न किया। १४ "भगवन्! सुनिए। युद्ध रूपी युवती के कीर्ति का कर्णाभूषण है यह। यह अतिकाय से भी बलवान है। इन्द्रजित् से अधिक पराक्रमी है। उस दिन युद्ध की मस्ती से फूलकर, जंगल में आपकी तलवार के शिकार बने बलवान खर का यह पुत्र है।" इस प्रकार विभीषण ने कहा। १५ "तब तो इसके वीर होने में कोई शक नहीं; हमसे लड़ने में यह योग्य श्रेष्ठ प्रतिस्पर्धी है। जगत के पूर्व के वीरों में इसके पिताजी की बराबरी में कौन साहस कर सकता है? इसके पिताजी ने हमारे धनुष को तोड़कर (बाण-प्रयोग करते) हमें पैंतीस क़दम पीछे हटने को बाध्य किया।" इस प्रकार राम ने कहा। १६ "अब हम इसके शत्रु हैं। इसके साथ लड़ाई

निलुकितवन वरूथ कालानळन निडुनालगेयवोलु कळ
कळद कलिगळ तेरु तेरैसिदवु तवकदलि
सेळेद खडुगदलेरिदरु वेगगळद राव्तरु मुंचिदवु सुं-
डिललि सेक्किद पट्टेयद नेगहुगळलिभ निकर ॥ 18 ॥
कित्त सुरगिय किविवरेगे तेगेदत्तुगणेगळ तोडवलगे गळ
कत्तिगळ झळपुगळ मोहिद सवळदुव्वरद
पत्तिचय दुव्वरद लोळ होक्कोत्त वरिसितु सर्वलग्गेय
लेत्तिदद्रिकुजायुधर नोडेवगिदु सरिसदलि ॥ 19 ॥
ऎलवो सारथि केळु रामन बळिगे बिडु निजरथव बलिमुख
बलदोळगे बळिसलिसदिरु विलु दुडुके निवदिरिगे
कलह रामन कूडॆ गेलुविन बलुहु रामन कूडॆ तंदेय
कोलेगे कोलेयनु कोवेनल्लिगे रथवनेसगेंद ॥ 20 ॥
तुरगवनु चप्परिसि सारथि हरिसिदनु होदेर नहितन
भरद भारिय बवर वेम्मोळ गहुदलेयेनुत
अरिवरूथव तरुवु वतिबलपरि चमूपर कैय सन्नेय
लेरडु भागव माडि बिलुदनि दोरिदनु राम ॥ 21 ॥

मोल लेने के कार्य से हम विमुख नहीं हो सकते। व्यर्थ ही हमारी सेना इसके हाथों आकाश (स्वर्ग) के यात्री बने, यह मुझे अच्छा नहीं लगता।" इस तरह कहते दीनबन्धु, दीनों के नाथ श्रीराम ने अपने धनुर्बाणों को हाथ में उठा लिया। १७ प्रलयकालीन कालाग्नि की लम्बी जिह्वा की तरह मकराक्ष का रथ आगे लपका। अन्य वीरों के रथ शोरगुल मचाते तुरन्त ही पीछे हटकर उसे राह देते हैं। तलवार खींचे अश्वारोही अपने-अपने घोड़ों पर सवार हुए। हाथी अपनी सूंड़ में बंधी तलवार को ऊपर उठाए आगे बढ़े। १८ कटार खींचे, कानों तक ऊँचे उठाए, उठे बाण-समूहों के, झलकती तलवारों के, वार के लिए सिद्ध बर्छियों के राक्षसों की अधिक संख्या की पैदल सेना बड़े वेग के साथ चारों ओर से घुस आकर, पेड़-चट्टानों को आयुधों के रूप में प्रयुक्त करने को तैयार वानरों की पंक्तियों को तितर-बितर कर गयी। १९ "हे सारथी, राम के सम्मुख मेरे रथ को खड़ा करो; कपि-सेना के मध्य से होते हुए रथ-संचालन मत करो। इन पर मैं धनुष नहीं चढ़ाता। मेरा युद्ध तो राम के साथ है; मेरी वीरता का प्रदर्शन सिर्फ़ राम से है। (अपने) पिता की हत्या का बदला मुझे इससे लेना है। अतः रथ वहाँ ले जा।" इस प्रकार मकराक्ष ने कहा। २० सारथी ने घोड़े की पीठ थपथपाकर

रसिक नल्ला रामरण साहसिकरलि सिंजिनिय सबुदकें
ससिदु बिद्दवु तारेगळु तळमगुचि तंबुनिधि
उसुर लेनदना कपर्दिय विषम कार्मुक विद्यदळतेगे
हसनु हरुकोदंड खंडन बाणगतियेंद ।। 22 ।।
ईत नीगाजियलि नम्मय तातननु हगेगोंड हगेकेळ्
सूत नोडेनुतुब्बि बोब्बिरिदस्त्र सारदलि
भूतळवदावुदु दिशा संघात वावुदु नभवदावुद
राति सेनेयदावुदेने मुसुकिदनु मकराक्ष ।। 23 ।।
गब्बरिसि गबलिक्कि मुसुकुव हब्बुगणेगळ निदिरु गणेयि-
देब्बिसिद नुब्बिसिद नेसुगेय लमर संततिय
बोब्बिरिदु मूरंबुगळलुरे येब्बिसिदना खळतनूजन
हेब्बलद रथ हय मदेभ पदाति संततिय ।। 24 ।।
बाणवोंदे कोलुत लिर्दुदु चूणियलि संधिसुव सुभट
श्रेणियनु बळिसलिसि बवरके निलुव पडिबलव

(उस) स्वर्णिम (सुनहले) रथ को आगे दौड़ाया। शत्रु के साथ ज़बर्दस्त द्वन्द्व हमारे हिस्से का है —इस तरह कहते शत्रु के रथ को घेरने के प्रयत्न में लगे वानर-दलपतियों को हाथ के इशारे से समझाकर सेना को दो विभागों में विभाजित कर राम ने धनुष्टंकार किया। २१ युद्ध साहसियों में राम तो रसिक है न ? राम के धनुष्टंकार शब्द से आहत हो नक्षत्र तितर-बितर हो झड़ पड़े; समुद्र डाँवाँडोल हुआ। शिव-धनुष तोड़नेवाले राम के बाण-प्रयोग का कौशल शिवजी के उग्र धनुर्विद्या-कौशल के बराबर है। उसका वर्णन किन शब्दों में करें ? —इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। २२ "सुनो सारथी ! युद्ध में मेरे पिताजी से बैर मोल लेनेवाले ये मेरे शत्रु हैं। अब तमाशा देखो।" इस तरह कहते अकड़कर गरजते हुए मकराक्ष ने बाणों की वर्षा की। उसके बाणों की वर्षा इतनी अद्भुत थी कि धरती कहाँ, आकाश कहाँ, धरती-आकाश का संधिस्थान कहाँ, शत्रु-सेना कौन सी —यह कुछ भी मालूम न पड़ता था। (बाणों की वर्षा में) सब कुछ मानों छिप-सा गया था। २३ घेरकर शत्रुओं को निगलते व्यापक रीति से फैलते राक्षस के बाणों के लिए प्रत्युत्तर देते हुए राम ने उनको बेकार कर दिया। राम ने अपने बाणों के प्रयोग से देवताओं को प्रसन्न कर लिया। गर्जना करते हुए, तीन बाणों से राम ने मकराक्ष की भारी सेना के रथ, घोड़े, हाथी तथा पैदल सेना को तितर-बितर कर दिया। २४ राम के बाण-प्रयोग

केणिगौंडौंदंबु करिगळ गोण कुदुरॆय कौरण सुभट
प्राणगळ नॆब्बिसुत लिर्दुदु रामनॆसुगॆयलि ॥ 25 ॥
अरिद तलॆ नभकडरॆ भरदलि सुरिव रक्तांबुगळलंबिन
लुरवणिप बिरुगाळि सूसितु सुरर मैगळलि
अरुणलोकदवोलु गगनांतर विराजिसि तवनि रक्तां-
बरवनुट्टंतॆसॆदुदॊगु नॆत्तरिन हूरदलि ॥ 26 ॥
बेऱॆ मत्तॆंदबु सम्मुख केरुवरिभट नंबुगळ कॆल
जाऱगडि वुत्तिर्दु दौंदंबखिळ भूतगळ
साऱि करॆकरॆ दसुरसेनॆय सूऱॆगौडुतिर्दुदु विचित्रद
तोऱिकॆयले राघवेंद्रन सरळ सौरंभ ॥ 27 ॥
चिगिद रक्कसभटर तलॆ कुदुरॆगळ कौरळलि बॆच्चवाकुदु
रॆगळ तलॆ कुळ्ळिदवु कुंजर द्रुडिद कौरळिनलि
अगलि दिभद शिरंगळा भटरुगळ मुंडदलडसि बौब्बिऱि
तगळ लौदगितु मत्तॆ बलवळ्ळरिव वाद्यदलि ॥ 28 ॥

की चालाकी के कारण सामने पड़कर पंक्तिबद्ध हो भिर आनेवाले सैनिकों को एक ही बाण समाप्त कर देता था। और पीछे से आकर युद्ध में शामिल होनेवाले सहायक सैनिक-समूह को वश में कर लेता था। एक ही बाण से हाथी-घोड़ों के कंठ काटे जाकर योद्धाओं के प्राण बाहर निकल जाते थे। २५ कटे सिर जब आकाश की ओर उछले तो उनसे छलछलाकर चू पड़ते रक्त से बाणों के सरपट संचालन के वेग से उठी आँधी ने देवताओं को नहला दिया। आकाशमंडल रक्ताभलोक (लाल रंग वाला लोक) जैसा प्रकाशित हुआ। बाहर फूट पड़ते रक्तप्रवाह के कारण ऐसा लगा मानों धरती ने लाल रंग की साड़ी पहन ली है। २६ सामने से आ रहे शत्रु वीर मकराक्ष के बाणों को राम से प्रयुक्त बाण ने काटकर ढेर लगा दिया। एक बाण चिल्ला-चिल्लाकर समस्त भूतगणों को पुकारते-पुकारते शत्रु-सेना को लूट रहा था (तमाम कर रहा था)। यह बिलकुल स्वाभाविक था कि राघवेन्द्र के बाणों का सामर्थ्य अत्यंत आश्चर्यजनक दीख पड़े। २७ काटे जाने से उछले हुए राक्षसों के सिर कटे घोड़ों के सिरों से जुड़कर अजीब से लगते थे, उसी तरह घोड़ों के सिर कटे हाथियों के सिरों पर जड़ गये। कटे हाथियों के सिरों ने कटे वीरों के धड़ों को मुँह में चबा लिया (चिपक गये)। राक्षस-सेना युद्ध के गाजे-बाजों की गर्जना के साथ फिर आ जुटी। २८ पैर कटे वीर मुंडों (धड़ों) के कंधों पर सवार हो

कडिद कालगळ भटरु मुंडद हॆडकुगळ चिगिदॆद्रु हॊय्दरु
खड्ग खर्पर परशु परिघ मुसुंडि मुसलदलि
सिडिद तलॆगळ कॆलवु मुंडगळडसि शिरदलि बॊब्बिरिदु नडॆ
नडदु तिविदवु सुरगि कुंत कठारि सबळदलि ॥ 29 ॥
उडिद तेरॆगळलिट्टरिट्टरु मडिद मदकरिगळलि कालगळ
हिडिदु हयदिदप्पळिसिदरु तॆगॆतॆगॆदु हॆणन
तुडुकिदॆत्तूरिदरिदिरकपिगळ हुडुकुनीरद्दिदरु रकुतद
मडुगळलि मकराक्ष राक्षसनसम भटनिकर ॥ 30 ॥
आव युगदलि कंडुदिल्लिती विगुर्बणॆयनु महाहव
कोविदरॊळॆंतुटॊ निशाचरभटर वीरतन
जाव कादितु कडिदलॆय सज्जीवदासुरसेनॆ राघव
देवनॊळु देवाळि बॆरगिडॆ बहळ चित्रदलि ॥ 31 ॥
जलनिधिय जल जारिदंदुरिगॊळुव महदग्निय वॊलानन
वळयदलि कुडियिट्ट कोपज्वालॆ भुगु भुगिसॆ
हॊळॆहॊळॆव हॊस हॊगर तळपद तळित किडिगळ दिव्यबाणा
वळिगळनु मकराक्ष करॆदनु मेलॆ राघवन ॥ 32 ॥

खड्ग, खर्पर, परशु, परिघायुध, मुसुंडी (एक प्रकार का अस्त्र), मूसल आदि आयुधों का प्रयोग करते वानरों को पीटने लगे। सिर कटे मुंड अन्य सिरों से जुड़कर चीखते-चिल्लाते कटार, कुंतायुध, तलवार, बर्छे आदि का प्रयोग करते वानरों को खोंचने लगे। २९ मकराक्ष राक्षस के असमान वीरों ने टूटे रथों से वानरों को पीटा; मरे मस्त हाथियों से ठोंका; घोड़ों के पैर पकड़कर उछालकर पछाड़ दिया; मुर्दों को उठाकर दे मारा; सामने आए कपियों को पकड़कर रक्त के पोखरों में डाल गरम पानी डाला। ३० अत्यंत युद्धविशारदों में, किसी भी युग में, ऐसी भयानकता न देखी गयी। राक्षस वीरों की वह वीरता कितनी महान थी! सिर काटे जाने पर भी जीवित हुई वह भयानक राक्षस-सेना राम के साथ बड़ी विचित्र रीति से एक प्रहर तक लड़ी। यह देख देवताओं को आश्चर्य हुआ। ३१ सागर के पानी के सूख जाने पर प्रज्वलित होनेवाले प्रचंड अग्नि की भाँति मुख में प्रकट क्रोधाग्नि जब धू-धू करने लगी तो मकराक्ष ने चिनगारियाँ उगलते चमचमाते नयी कांति के दिव्य बाणों की वर्षा राम पर की। ३२ अपने को घेरनेवाले शत्रु के बाण-समूहों को राघव काटे जा

मुसुकुवरिशर वीधियनु खंडिसुवनी रघुनाथनव नि-
प्पसरदलि हूळुवनु होऱबीळुवनु रघुनाथ
अंसुगें नडॆदुदु मेलॆ मेलालसिकॊ दोऱदॆ तोमरदला
गस धरातळ तुंबॆ मकर सरोज नयनर्रलि ॥ 33 ॥
हळचुवलगलगुगळ खळपळदुलुहु कर्णकर्णं तागुगळ कं-
डॆळॆगळब्बर गऱियगाळिय बॊब्बॆ बवरिगर
बलुरभस भींकृतिय सरळिन सुळिविनब्बर रभसविनितऱ
कलहदलि किवि किवुडुगॊंडुदजांड मंडलद ॥ 34 ॥
बळिवगॆय बलुगोपदलि बळिकळवि नतिबल खळतनूभव
निळॆय नाडाडिय नराधिप नैललेयॆंब
बळकॆयलि बॊब्बिवऱिदु बाणद हिळुकनंतक मंत्रदलि नॆलॆ
गॊळिसि निडुदनि दोऱलॆच्चनु राघवेश्वरन ॥ 35 ॥
कंजलोचन नगुतला मृत्युंजयास्त्रदि नंतकास्त्रव
भंजिसलु खरसूनु कविसिद नग्निमार्गणव
अंजलिसि तुरि जगवनॆंबव रंजिकॆयना वारणास्त्र स-
मंजस दिनपहरिसि हदुळिसिदनु जगत्रयव ॥ 36 ॥

रहे हैं; तब मकराक्ष बड़ी निष्ठुरता के साथ बाणों से राम को ढाँप रहे हैं; राम उनके समूह से बाहर निकल रहे है। इस प्रकार मकराक्ष तथा कमलाक्ष राम—दोनों ज़रा भी थकावट प्रकट न करते बार-बार एक-दूसरे पर बाण-प्रयोग करते युद्ध किए जा रहे हैं। इससे भूम्याकाश दोनों आयुधों से ढँक गये। ३३ पैने-पैने तीरों के पैने-पैने तीरों से टकराते वक्त हो रही खनखनाहट, बाणों का बाणों से टकराकर टूटने की आवाज़, बाणों के पुच्छल पंखों के कारण वायुमंडल में हो रही सनसनाहट, लड़ रहे धनुषों का ठेंकार-निनाद, वेग से चल रहे बाणों का भींकार शब्द—इस प्रकार युद्ध के विविध प्रकार के शब्दों के संगम के कारण ब्रह्मांड के कान मानों फट से गये। ३४ कुलद्वेष के उग्र क्रोध से संतप्त महावीर खर-कुमार मकराक्ष ने (राम को)— "यह तो, धरती पर के मानवों, साधारण मानवों का ही राजा है न" इस तरह समझते हुए, गर्जना करते हुए, बाण के पृष्ठ भाग में (पूछ में) यमदेवता का मंत्र प्रतिष्ठित कर सनसनाहट की ध्वनि के साथ उस बाण का प्रयोग राम पर किया। ३५ कमललोचन राम ने मुस्कुराते हुए मृत्युंजयास्त्र का प्रयोग करते हुए उस यमास्त्र को विनष्ट कर दिया। तब मकराक्ष ने अग्निबाण का प्रयोग किया; फलस्वरूप जगत भर में अग्नि व्याप्त हुई। इस अग्निज्वाला

राम को रणदासुराह्वय भीम बाणव मरॆयदेतकॆ
कामहर कमलासनादिगळिदरु विलगदलि
मैमरॆसि बदुकिदरु बदुकिन सीमॆ निनगिदु कोयॆनुत सु-
त्रामबल बिरितोडॆ बॊब्बिरॆ दॆच्च निनकुलन ॥ 37॥
ईदुदासुर बाण घनशस्त्रोदधिय नीडितु जगत्रय
कॆदुगळ कालाटदलि कविदिदॆव रक्कसर
बीदि वरिगळ लडगॆडॆदु दिद्रादि देवकदंब कपिबल
साधिसितु कैवल्यवनु कमलाक्ष निदिरिनलि ॥ 38 ॥
तरुबिदनु नानास्त्र मुखदलि मरॆय दसुराराति लॆक्किस
दुरुबितदु कट्टिदिरिनलि हरिशरणनी हदन
अरिदु नारायणन नामव नॊरॆलि मज्ञभापॆनलु हूडिद
नुरुव नारायण महास्त्रवना खरध्वंसि ॥ 39 ॥
उळुहि कॊंडरु हरणवनु हर नळिनभव शक्राद्यरिदिरलि
सुळियरॆंदे बगुळिदॆयला निन्नसायककॆ

के कारण सभी जब भयभीत हुए तो राम ने वरुणास्त्र चलाकर उनके भय का निवारण किया तथा तीनों लोकों का कल्याण किया। ३६ "हे राम, यह देख, यह असुर नामक भयानक अस्त्र है। इसे स्वीकार करो। तुमसे कुछ भी मैं छिपाता नहीं; शिवजी, ब्रह्माजी इसकी पीड़ा सहने में असमर्थ हो अपने को छिपाते रहे तथा बच गये। समझो कि यह तेरे जीवन का अंत है। लो, इसे स्वीकार करो।" —इस तरह मकराक्ष ने सिंह-गर्जना करते राम पर अस्त्र प्रयोग किया तो देवेन्द्र की सेना (आकाश में उपस्थित) यह देख भाग खड़ी हुई। ३७ मकराक्ष से प्रयुक्त उस असुरास्त्र ने भारी भयानक शस्त्रास्त्रों को जन्म दिया मानों शस्त्रास्त्रों का एक समुद्र ही पैदा हुआ। इतना ही नहीं, तीनों लोकों को घेरकर, चढ़ाई कर मार डालने की ताकत से युक्त राक्षसों का निर्माण किया। ऐसों के स्वेच्छा विचरण के फलस्वरूप इन्द्रादि देवता दाएँ-बाएँ लुढ़क गये। कमलाक्ष राम के सम्मुख उन असुरों के धावे के कारण कपिसेना मोक्ष को प्राप्त हुई। ३८ कई प्रकार के अस्त्रों से राम ने उस अस्त्र को रोकने की कोशिश की तो वह उसके सम्मुख उग्र होता गया। (इस) परिस्थिति को ताड़कर विभीषण ने "धन्य-धन्य" कहते नारायण का नाम जपना शुरू किया तो खर की हत्या करनेवाले श्री राम ने (इससे इशारा पाकर) नारायण महास्त्र का संधान (धनुष पर) किया। ३९ "ईश्वर, ब्रह्मा, इन्द्रादियों ने प्राण बचा लिये; तुम्हारे इस

तॊलगुववरावल्ल हगॆगळ तॊलगिसुवॆवॆ सल्लदिदको
गॆलवदुळ्ळडॆ कळुहु कणॆगळनॆनुत तॆगॆदॆच्च ॥ 40 ॥
वरसुदर्शन दुग्ररूपव धरिसि तंदमलास्त्रवासुर
शरमुखदिनुदिसुव महा रौद्रासुरावळिय
उरुनिशित धाराग्नियलि हुरिकरिय माडितु हरहि तगलकॆ
नॆरॆद नानायुध कदंबव नुडिदु झडितॆयलि ॥ 41 ॥
मरळि लघुसंधान दॆसुगॆय भरवसद विन्नणिगननु लघु-
तॆरदलॆच्चनु वीर मकराक्षन शरासनव
करद लिद्दुदु चापचापद तिरुतिरोधानवनु सार्दुदु
सरळु सैवॆरगागि कैयॊळगिर्दुदा खळन ॥ 42 ॥
भापुरे बिलुजाणनॆनुता टॊपदलि मकराक्षनाक्षण
वा पुरांतक दत्त बाणासनव दनिमाडि
कोपकॊनरिडॆ कुबुबिरिदु पूर्वापरिस्थिति जननलय दू-
रोपमातीतनु मुंबरिदॆच्चु बॊब्बिरिद ॥ 43 ॥

अस्त्र के सम्मुख वे आ ही नहीं सके —इस तरह बक रहा था न ! तुम्हारे इस अस्त्र से डरकर मैं भागनेवाला नहीं; मैं शत्रु-संहारक हूँ। इसे सहन कर लो; अगर जीतने की अभिलाषा है तो इसकी बराबरी करनेवाले बाणों को प्रेषित कर।" इस तरह कहते राम ने अस्त्र छोड़ दिया। ४० बिष्णु (के हाथ) के सुदर्शन चक्र के सदृश उग्र रूप धारण किए आए राम के उस श्रेष्ठ अस्त्र ने अपने पैने फल से मकराक्ष के असुर शस्त्रों से निर्मित हो रहे महाभयानक राक्षसों को जलाकर खाक कर दिया तथा उसी क्षण (उसने) असुरास्त्र से उत्पन्न विविध प्रकार के आयुधसमूहों को, समूचे ढंग से विनष्ट कर दिया। ४१ लघु संधान से पुनः बाण प्रयोग करनेवाले उस धनुर्विद्याचतुर पर लघुतर बाणों का प्रयोग करते राम ने (बड़ी चालाकी से) मकराक्ष के धनुष पर तीर मारा। मकराक्ष के हाथ का धनुष ज्यों का त्यों था; लेकिन धनुष की डोरी गायब थी। दंग रह गये उस राक्षस के हाथ में केवल बाण रह गया था। ४२ "धन्य-धन्य तू सचमुच धनुर्विद्याचतुर है।" —इस तरह कहते मकराक्ष ने त्रिपुरारि शिवजी से दिए गये धनुष को उठाकर प्रत्यंचा खींचकर ठेंकार किया। फिर क्रोध से घनघोर गर्जना करते, आद्यंत-रहित, जन्म-मरण-रहित, उपमातीत महामना राम पर बाण-प्रयोग किया। ४३ मकराक्ष का बाण असुरारि के शरीर पर से होता हुआ चला गया। राम ने प्रलयकालीन शिव की क्रोधाग्नि मानों तुरंत आगे बढ़ी आ

दाटिदुदु बलुबाण नडॆदु निशाटहर नंगदलि विलयक
रोटिमालिय कोपशिखि लंबिसिदु दॆबॆंतॆ
नोटदलि वरविश्वकर्मन घाट वाणदलरिभटन का-
लाट वक्कुडवागॆ कैयॊडनॆच्चना राम ॥ 44 ॥
निटिलदलि कॊंडबु पश्चिमतटदॊळगॆ तलॆदोरिदुदु सं-
घटिसिदवु मकराक्ष नक्षिय पक्ष पैसरिसॆ
तटकुवनि नॆत्तरिन लयसंघटद चंचल जीव दिदव
घटॆय खळनॆम्मिदनु बळलिकॆयिद हळविगॆय ॥ 45 ॥
ऎलवो सारथि निस्म रथिकन बळलु मोरॆय मेलॆ तळिस
ग्गळॆय सलिलव सरळ कीळॆरिनलि मद्दुगळ
गुळिगॆगळ हिडि हॆदरदिरु नीनुळुहिको निम्मव नॊंदरॆ
घळिगॆ परियंतॊंदु मातुंटवनॊळॆमगॆंद ॥ 46 ॥
ऎद्दु सारथि बळिकभाळदॊळद्द बाणवनुगिदु घायकॆ
मद्दकैयलि तीडि कलशोदकद धारॆगळ
तिद्दिदनु कंगळिगॆ कॆलसिडि दिद्द कार्मुक वित्तु कुबु बिरि
दद्दलिसिदनु नगलुमेलॆ समस्त सुरनिकर ॥ 47 ॥
अनुजॆ गोसुग हिंदॆ निम्मय जनक नम्मॊळु कादि जीवव
जिनुगिसिद दिवसदलि जारितु जातिवैरतन

रही हो, क्रोधपूर्ण ढंग से देखते हुए शत्रुवीर के संचार में रुकावट पहुँचाते हुए ब्रह्मबाण का प्रयोग किया। ४४ मकराक्ष के माथे में चुभा हुआ बाण पीछे से निकल आया; उसकी आँखों की पलकें मुंद गयीं। रक्त की धारा जब बहने लगी तो मरणासन्न चंचल जीव मकराक्ष ने थकावट के मारे ध्वजस्तंभ पर अपने को टिका दिया। ४५ "रे सारथी, तुम्हारे रथिक के थके मुखड़े पर पानी के छींटे छिड़काओ; बाण को निकालकर औषध की टिकियाँ डालो; डरो मत। एकाध घड़ी के लिए अपने स्वामी को बचा लो। उससे मुझे एक बात कहनी है।" इस प्रकार राम ने कहा। ४६ तब सारथी ने उठकर मकराक्ष के माथे में चुभे बाण को निकालकर अपने हाथ से घाव पर औषध लगाकर पात्र में के जल को आँखों पर छिड़काया। पार्श्व में पड़े धनुष को उसके हाथ में दे, उसे होश में लाने के लिए वह ज़ोर से चिल्लाकर आवाज़ देने लगा। यह देख ऊपर उपस्थित सभी देवता खिलखिलाकर हँसे। ४७ तब राम ने मकराक्ष से पूछा— "अपनी बहन के कारण तुम्हारे पिता खरासुर ने मुझसे युद्ध कर जिस दिन अपने प्राण खोये उसी दिन से मेरा जाति वैर

तनय गड नीनवगॅ निन्नय हनन कॊडबडदॆन्न मन सं-
जनिसुतिदॆ कृपॆ निन्नमनदनु मानवॆनॆंद ॥ 48 ॥
मंदमतिगळु नररु मुन्नॆतंदु हॆच्चिन किविगळॆ बळि
संदकॊडति कूरितॆंबुद नरियदादॆयल
संद वैरद किच्चु निन्नलि नंदिदरॆ नंदुवदॆनमगॆनु
तंदगॆडदनुगतद कोपदलॆच्चु बॊब्बिरिद ॥ 49 ॥
मुंचिते निन्नॆसुगॆ सरळिन संचवनु नोडादडॆनुत वि-
रंचिपितनॊदंबिनलि रिपुभटन सारथिय
वंचिसिदना तुरग नाल्कर मिच कॆडिसिदना ध्वजव हरि-
हंचमाडि मदांधनॆसुगॆय धनुव खंडिसिद ॥ 50 ॥
एरितधिक क्रोधशिखि किडि हारिदवुगंगळलि तनुका-
हेरिदुदु कब्बॊगॆ विताळिसितुसुर चाणियलि
मारुगॊंडनु विलय रुद्रन तोरिकॆय तमदुब्बरवनॆनॆ
तूरुगिडिगळ दिव्यशूलवनॆत्ति बॊब्बिरिद ॥ 51 ॥
हेळलेनद हरन हस्तद शूलवनु जरॆदुरु बितुरिगळ
मालॆगळ मंडळिसि करॆदुदु किडिय गडणगळ

(तुम लोगों से वैर) समाप्त हुआ। तुम उसके बेटे हो। तुम्हारी हत्या करने को मेरा मन नहीं करता (मैं नहीं चाहता कि तुम्हारी हत्या करूँ)। तुम पर दया उपज रही है। बोलो; तुम क्या चाहते हो ?" ४८ "मानव बुद्धिहीन हैं; मंदमति हैं। पहले पैदा होकर बढ़नेवाले कानों की अपेक्षा तदनंतर पैदा होकर बढ़नेवाले सींग अधिक पैने होते हैं—यह तत्त्व तुम समझ नहीं पाये न ! द्वेष की आग भले ही तुममें बुझ गयी हो; क्या वह मुझमें बुझ सकती है ?" इस तरह कहते क्रोधसंतप्त मकराक्ष बाण चलाकर गरज उठा। ४९ "तो फिर तूने बाण चलाना शुरू किया। तभी मेरे नैपुण्यपूर्ण बाणों की मजा चखोगे।" इस तरह कहते राम ने एक बाण चलाकर शत्रुवीर के सारथी का भविष्य बिगाड़कर, रथ के चारों घोड़ों की गति मंद कर, ध्वज को चकनाचूर कर मकराक्ष के धनुष को काट डाला। ५० मकराक्ष की क्रोध की ज्वाला भड़क उठी। आँखों से चिंनगारियाँ निकलने लगीं; उसके दीर्घ निःश्वास के साथ मानों काला धुआँ-सा निकलने लगा। लगता था मानो उसने प्रलयकालीन रुद्र-सदृश तीव्रतापूर्ण तमोगुण पाया हो; उस दशा में उसने चिनगारियाँ उगलते शूल को ऊपर उठाकर गर्जना की। ५१ शिवजी के हाथ के त्रिशूल को

मेलु जग बॅंदरिदवु तारामालॅ हरिदुरुळिदवु नॅल धू-
माळि मसगिदुदुक्कितंबुधि निमिष मात्रदलि ॥ 52 ॥
हा रघुक्षितिनाथ हा रघुवीर हायॅंबुब्बरणॅ कपि
वीररलि निडिदाय्तु निगुरितु निर्जराळियलि
आरि गरिविरदिरलु विज्ञासारनल्ला शिवनु जरॅदनु
गौरि देवियरंजुतिरॅ मृत्युंजयनु नगुत ॥ 53 ॥
आदडिदकोयॅनुतला खरसूदनन खरसूनुघन नि-
र्ह्लाददलि बोब्बिरिदु जडिदिट्टनु महायुधव
आदि नारायणनु नगुतल नादरद लंबोजभव बा-
णोदरक्काहुतिय नित्तुळुहिदनु मूजगव ॥ 54 ॥
काणॅना महदायुधवनज बाणमुखदलि खळन शिर हरि
वाणदारतियंतॅ नॅत्तर रहियलभ्रदलि
स्थाळु मुख्य समस्तदेव श्रेणियिदिरलि सुळिदुदा श-
र्वाणि संतोषदलि बिगियप्पिदळु शंकरन ॥ 55 ॥

मात देता हुआ मकराक्ष के हाथ के त्रिशूल ने अग्नि की ज्वालाएं फैलायीं। उनसे निकली हुई चिनगारियों का वर्तुलाकार में उड़ना शुरू हुआ। यह देख ऊपर के लोक भयभीत हुए। नक्षत्रों की पंक्तियाँ टूटकर गिरीं। धरती धुएँ से घिर गयी। क्षणार्ध में समुद्र उमड़ा। ५२ "हाय हाय रघु भूपाल! हाय रघुवीर!" इस तरह कपिवीर दीर्घ निःस्वर से चीखने-पुकारने लगे। देवता सीधे होकर बैठ गये। भले ही सभी नासमझ हों, शिवजी तो ज्ञानी ही ठहरे न! गौरीदेवी थरथर काँपने लगी तो मृत्युंजय ने उसकी खिल्ली उड़ायी। ५३ 'ऐसी बात है? तो इसे सँभाल।" कहते हुए खर के पुत्र मकराक्ष ने मेघ के सदृश गरजते उस महायुध को खर-संहारक पर जोर से दे मारा। आदिनारायण के अवतारस्वरूपी श्रीराम ने मुस्कुराते हुए उस महान आयुध को ब्रह्मास्त्र के पेट के लिए आहुतिस्वरूप समर्पण करते तीनों लोकों की रक्षा की। ५४ असुर का वह महास्त्र अदृश्य हो गया। ब्रह्मास्त्र की नोक पर अटका मकराक्ष का सिर थाल में की आरती-सदृश रक्त से शोभायमान होते हुए शिवजी आदि समस्त देवताओं के समूह के सम्मुख दृष्टिगोचर हुआ। तब पार्वती ने आनन्द से सराबोर हो शिवजी का कसकर आलिंगन कर लिया। ५५ आकाश में उपस्थित देवताओं ने उस अस्त्र को अपनी भेंट चढ़ाकर हाथ जोड़े। तोरवे के नरहरि रूपी श्रीराम के चरण-कमलों

शरकॆ काणिकॆयित्तु नभदलि करव मुगिदरुसुररु सुमनो
वरुषवनु सूसिदरु तॊरॆय राय नरहरिय
चरण कमलदॊ ळय्यना नरहरिय बळिगॆ तंदु हॊक्कुदु
सरळु हॊम्माडिगॆ यॊळगॆ नारदनु नलिदाडॆ ॥ 56 ॥

नलवत्तॊंदनॆय संधि

सूचनॆ— वातजन संग्रामदलि पुरहूत जितु मदवळिदु माया सीतॆयनु कडिदंजिसिद निनवंशवल्लभन ।

कॆळिदैयॆलॆ राजसूनु सुरालयद सुरयुवतियर स-
म्मेळदलि मकराक्ष हाय्दनु सुरर पट्टणकॆ
मेलॆ रणदुळुकलिन रक्कस रोलगव मुट्टिसि दड्डुगुळ्दनु
वीळॆयव नुप्परद हुब्बिन लॊलॆद नवयवव ॥ 1 ॥
मडिदने मकराक्ष गॆलविन गुडियनॆत्तिदरे विरोधिग
ळॊडॆदुदे राक्षस चमूपर वीररसकुंभ
झडिदु हत्तिदळॆ जयश्री तॊडॆय नहित नरेश्वरन नाव्
हिडिद छल कनसादुदे यॆंदसुरनळ वळिद ॥ 2 ॥

में श्रद्धा से पुष्पवर्षा की। तत्पश्चात् वह तीर (ब्रह्मास्त्र) लौट कर राम के आसपास आया तथा उनके स्वर्णमय तरकस में शामिल हो गया। नारद खुशी के मारे नाच उठे। ५६

इकतालीसवीं संधि

सूचना— मारुति के साथ हुए युद्ध में अपना घमंड खोए इन्द्रजित् ने माया से विरचित सीता की हत्या करके राम को भयभीत किया।

सुनो राजकुमार! देवलोक की स्त्रियों के साथ रहनेवाले मकराक्ष ने देवेन्द्रनगरी के लिए यात्रा की। युद्ध में रहे-सहे राक्षसों ने, रावण के सभाभवन में पहुँचकर मकराक्ष की मृत्युवार्ता जब सुनायी तो रावण ने मुँह के चबाते पान-सुपारी को थूककर भौंहें चढ़ाकर देह को एक ओर झुकाया। १ "आँ! क्या मकराक्ष की मृत्यु हुई? शत्रुओं ने (अपना) विजयध्वज फहराया? राक्षस-सेनापतियों का वीररस भरा घड़ा यों फूट गया? जयलक्ष्मी डर के मारे शत्रु राजा की गोद में चढ़ बैठी? हमारी जिद्द क्या स्वप्निल रह गयी?" —इस तरह उद्‌गार निकालते रावण व्यथित हुआ। २ "सर्पपाश बेकार गया। ब्रह्मास्त्र व्यर्थ गया।

वाय वाय्तहिपाश पद्मज सायकवु सद्रियाय्तु सदेस-
ट्टायितनुजन बिण्णु बीतुदु गुम्मतन भटर
आयुधद हेम्मॆगळलरिबल सायदिर्दे संग्राम विजयो-
पाय कंडेयनु काणॆनेंदसुरेंद्र चिंतिसिद ॥ 3 ॥
चिंतॆयेकॆलॆ जीय रिपुबल कंतकनु ता निरलु निन्न मु-
खांतरद लहुदेंनिसि कोंबेनु कडेय मातेनु
कंतुहर कमलाक्ष कमलज रंतकिदको बाणवीनृप
रंतर वदेनॆनुत गर्जिसि नुडिदनिंद्रारि ॥ 4 ॥
केळिदैयलॆ तात मन ही हाळिगॆडदिरु मेणदुरगन
हेळिगॆगे हेदरदिरु हेडैसदिरु धैर्यदलि
नाळिनलि नरमृगव मारिय ताळिगॆय तळकिळुहदिरॆ नि-
न्नालयव होग गॊडदिरॆंदिंद्रारि गर्जिसिद ॥ 5 ॥
बीळु कोंळुतय्यननु जनित कराळ रोषदलिळिद नसुर स-
भालयव नुब्बणव झळपिसुत सुररोंग्गिनलि
काल खडॆयद झणरवद रणदेळिगॆय मैयुब्बरद रो-
माळिगळ होगरिनलि होरवंटनु पुरांतरव ॥ 6 ॥

भाई का घमंड चकनाचूर हुआ। योद्धाओं का लड़ना भी निष्फल हुआ। जिन आयुधों पर हमारा भरोसा था, उनसे शत्रु विनष्ट न हुआ। युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए क्या उपाय करना चाहिए? क्या योजना बनानी चाहिए? — समझ में नहीं आता।" —ऐसा सोचते रावण चिंताग्रस्त हुआ। ३ "प्रभो, शत्रुओं के लिए यमस्वरूपी मृत्यु-सदृश मैं जब तक ज़िंदा हूँ, आप चिंता क्यों करते हैं? आपकी जिह्वा से वाहवाही लिये बिना न रहूँगा। और कहाँ तक कहूँ? शिव, विष्णु तथा ब्रह्माजी की हत्या के लिए जब तक यह बाण (मेरे पास) है, तब तक यह मानवराजा किस खेत की मूली है?" इस तरह कहते इन्द्रजित् गरजा। ४ "मेरी बात सुन रहे हैं न पिताजी! अपने मन का यह जिगुप्साभाव त्यागिए। मोम के साँप के पिटारे से मत डरिए। (अपनी) बेचैनी दूर कीजिए। कल के दिन बड़े धीरज के साथ इस मानव मृग को महामारी में गले से न उतार दूँ (झोंक दूँ) तो मुझे अपने घर में शामिल मत कीजिए" —इस तरह कहते इन्द्रजित् गरज उठा। ५ पिताजी से बिदा लेकर इन्द्रजित् अत्यंत क्रोध से अपनी नुकीली तलवार चमकाते हुए राक्षसों के झुंड के साथ सभाभवन से बाहर निकला। उसके पैरों के कड़े झनझना रहे थे तो युद्ध की मस्ती से रोमांचित हुआ इन्द्रजित् लंकानगरी से रवाना हुआ। ६

जोडिसिद हॊंदेरिनलि काल् नीडु तॆरगिद नश्वनिकरकॆ
नीडि निगुरिदवा तुरंगम वभ्रमंडलकॆ
कूडॆ रक्कस रथद गडबडॆ गाढिसितु गगनदलि नॆरॆ कॆ-
गूडिदुदु बल बल विरोधिय हगॆय बॆंबळिय ॥ 7 ॥
केळुतिव निंद्रारि यॆंदे मेळविसिदुदु सेनॆ गोलां-
गूल रायन नेमदलि लंकामहापुरद
मूलॆ नाल्कर हॊरव ळयदलि शैल पणिगळिरलु समरा
भीळ बलनदनरिदु वल नाल्कागि हॊरवंट ॥ 8 ॥
पडुव लनिलज गाय्तु रण रणनडॆदु दंगद गाय्तु तॆंकण
कडॆयॊळिद्र दिशा विभाग दॊळाय्तु नीलंगॆ
कडुगलहवा बडग दिक्किन तॊडरिसितु सुग्रीव रघुकुल
दॊडॆयरलि विग्रह विचित्र महेंद्र दल्लणन ॥ 9 ॥
स्मरिसिदनु राहुवनु राहुविनुरु जठरमध्यदलि तरणिय
निरिसिदनु नॆरहिदनु लय जीमूत कोटिगळ
हरहिदनु नॆलदगलदलि निर्भरद निविड महांध कारद
हॊरळियनु हॊदिसिदनु कत्तलॆयलि जगत्रयव ॥ 10 ॥

जोतकर तैयार रखे गये स्वर्णरथ पर आरूढ़ हो इन्द्रजित् ने जब घोड़ों को पैरों से खींचा तो वे घोड़े हवा से बातें करते उड़ने लगे। तुरंत राक्षस का रथ चल पड़ा। उसकी गड़गड़ाहट आकाश भर में व्याप्त हो गयी। साथ ही साथ इन्द्रजित् की सेना शत्रु-सेना का पीछा करते आ गयी। ७ आवाज़ सुनकर कपि-सेना 'यह इन्द्रजित् है' यों ताड़कर ही तुरन्त आ जुटी। वानर राजा की आज्ञा से लंकानगरी के बाहरी परिघ (वलय) में चारों नुक्कड़ों (कोनों) पर पहाड़ों को हाथ में उठाए जब कपिसेना खड़ी थी तो युद्धभयंकर बलवान इन्द्रजित् यह सब देख अपनी सेना को चार विभागों में विभक्त कर किले से बाहर निकला। ८ पश्चिम दिशा के युद्ध के लिए मारुति को नियुक्त किया गया; दक्षिण दिशा की युद्ध की ज़िम्मेदारी अंगद को दी गयी; पूर्व दिशा का युद्ध नील के ज़िम्मे आया। उत्तर दिशा में सुग्रीव तथा राम-लक्ष्मण के साथ इन्द्रजित् का आश्चर्यजनक युद्ध प्रारंभ हुआ। ९ इन्द्रजित् ने राहु का स्मरण कर उसके पेट के मध्य के सूर्य को रख लिया; प्रलय-कालीन मेघसमूह को इकट्ठा कर लिया; गाढ़ महांधकार को धरती भर में फैला दिया; तीनों लोकों को अँधेरे से व्याप दिया। १० कपिवीरों के हाथ में धरे पहाड़ों को गरजते हुए, बिजलियों

नेरॆदु होय्दवु सिडिलुगळु मोरॆ दुरवणिसि कपिभटर कैगळ
गिरिगळनु गब लिक्किदवु मुंबरिदु मुगिलु गळु
भरद होय्लिन होदरिनलि कदुकिरिदवै कंगळनु मिचु ग-
ळररॆ मेघध्वान नाहव बॆदरिसितु जगव ।। 11 ।।
उसुर लेच्चरिय नसुरन विशिखवी कपिभटर नॆत्तिय
लसदळिसि मूडिदवु पच्चळ वॆरड रंतरद
ससिनदलि चिगि चिगिदु नॆलदलि बसवळिदु बाय्दॆरॆदु जीवव
बिसुडु तिर्दवु किरिद हलुगळ करद मग्गुललि ।। 12 ।।
अरिचि बीळुव कपिभटर कट्टोरलिकॆय केळ्दसुर मर्दन
मरुगिदनु निर्लक्ष लक्षणदा चराधमन
कुरुहु गाणदॆ संधिसिद होंगरिय हिळुकिनसरळ संज्ञॆय
लरसिदनु मुरिमुरिदु मेघध्वान दब्बरव ।। 13 ।।
मोळगुवतिरथ रथद सरिसकॆ कळुहिदनु कवलंब कडिदिळॆ
गिळुहिदुदु कुदुरॆगळ नुडिदुदु सरळु सारथिय
निलुकिदुदु मेलणिगॆ वैरिय तलॆगॆ तप्पिसि कोंडु रावणि
बळिरथकॆ कालिक्कि करॆदनु मत्तॆ मार्गणव ।। 14 ।।

ने कड़कते हुए ज़ोर से पटक दिया; बादलों ने घिर आकर ज़ोर से लपककर निगल लिया; विद्युत् ने कपियों की आँखें चौंधियाँ दीं। बाप रे! क्या कहें! मेघनाद (इन्द्रजित्) के युद्ध ने दुनिया को कँपा दिया। ११ इस आश्चर्य का कहाँ तक वर्णन करूँ? इन्द्रजित् का बाण कपिवीरों के माथे में ज़ोर से घुभकर नीचे उतर, दो पिंडलियों के मध्य से होकर सीधे बाहर निकल आये। वानर उछल-उछलकर शक्तिहीन हो गिरकर पार्श्व में हथेली टेके या आधार लिये बैठकर दाँत भींचे मुँह बाये प्राण त्याग रहे थे। १२ चीख-पुकारकर लुढ़ककर गिरते कपि सैनिकों की 'हाय तोबा' सुनकर असुरारि राम बहुत ही व्यथित हुए। निशाने में न आते हुए अदृश्य रहकर संचरण-विचरण करते उस नीच राक्षस के स्थान की पहिचान या थाह न पाकर बादलों की गड़गड़ाहट के ज़ोर और शोर को सुन उसी ओर सुनहले पंखों वाले बाण चलाकर बादलों को तितर-बितर करने से जो इशारा मिले उसी के द्वारा इन्द्रजित् के स्थान का निशाना राम ने लगाना शुरू किया। १३ अतिरथ इन्द्रजित् के रथ से निकल रही गड़गड़ाहट के नज़दीक जाकर राम ने जुड़वे बाण चलाए। उसी बाण ने रथ के घोड़ों को काटकर धरती पर सुला दिया; सारथी की हत्या कर डाली; उसके बाद इनके परे जो शत्रु था उसके सिर को वह ढूँढ़ने लगा। तब इन्द्रजित् ने अपना सर

देव राघव नहिल निशित शरावळिय तरिदोट्टि मोळगिन
ठाविनलि तडविल्लदश्व वरूथ सारथिय
साविरद नूरेंट्टु सूळिनोळोव दोड नोडनेच्चु मुरिदनु
रावणिय रथदुब्बरव नंबरद वळयदलि ॥ 15 ॥
सूत नागलि मेणु तुरग व्रातवागलिं नभदोळसुर नि-
शात शरसंधान वागलि सबुद दोरिदोडॆ
यातुधान ध्वंसकन सरळा ततुक्षण तरिवु तिर्दुदु
भीतियलि बिरि तसुर तेगॆदोडिदनु हिन्नॆलॆगॆ ॥ 16 ॥
नेनॆदु कोंडनुपाय कौशलवनु महामाया विनोदद
जनकजॆय निर्मिसुवॆ नंजिसुवॆनु नृपालकन
वनचरर काळगवनी होत्तिनलि तॆगॆसुवॆ निंदिनिरुळलि
वनजगर्भन मॆच्चिसुवॆ नॆंदवनु मनदंद ॥ 17 ॥
ऎंदु हनुमन रणकॆ समर स्यंदनव नूकिदनु कपिगळ
कोंदन गणितवनु महामाया वियोगदलि
नोंदु काळणकान लारदॆ हिंदु मुंदाय्तुळिद बल रघु
नंदनन निजभृत्यनोब्बनॆ मलॆत नाहवकॆ ॥ 18 ॥

बचाकर दूसरे रथ पर चढ़ फिर बाणों की वर्षा की। १४ भगवान राम ने शत्रु के पैने बाणों की कतार को काट डालकर ढेर बना गड़गड़ाहट की ध्वनि जहाँ से आ रही थी उसी ओर बाण चलाकर घोड़ों को, रथ के सारथी को एक सौ आठ बार लगातार वार करते आकाश में के इन्द्रजित् के रथ के आवेग को, उद्वेग को समाप्तप्राय कर दिया। १५ चाहे इन्द्रजित् का सारथी हो या घोड़े हों, या आकाश में असुर के बाण-प्रयोग हों —कहीं से थोड़ी-सी भी आहट मिले तो बस है। असुरारि राम के बाण तुरंत जाकर उन सबको काट डालते थे। तब इन्द्रजित् भय के मारे विमूढ़ हो पिछली तरफ़ भाग खड़ा हुआ। १६ इन्द्रजित् ने एक युक्ति-कौशल्य की आलोचना की। विनोदपूर्ण मायावी सीता का निर्माण कर श्रीराम को भयभीत करूँगा। इन वानरों के युद्ध की तभी परिसमाप्ति होगी। तथा आज रात ब्रह्माजी को प्रसन्न कर लूंगा। —इस प्रकार इन्द्रजित् ने निश्चय किया। १७ इस प्रकार निश्चय करनेवाले इन्द्रजित् ने हनुमान के साथ युद्ध करने के लिए अपना रथ आगे बढ़ाया; इन्द्रजित् ने महामाया को त्याग अनगिनत कपिवीरों की हत्या की। बची कपिसेना मार खाकर, आहत हो युद्ध में सामना करने में

कादिदनु बेंट्टदलि मुष्टिय लादुकोंडट्टिदनु खळ बय
लाद ठाविन लय़सिदनु किवि गोट्टु किडि मसगि
आ दुरात्मनोळी परियलपरोदधिगे तरणिय तुरंगम
मैदु वन्नब रोदगि कदनव मेऱेदना हनुम ॥ 19 ॥
मऱे मऱेयल वनिंद्र वारुण हर सखानिल वह्नि पितृपति
निरुति नीरज भव भवास्त्रंगळलि मारुतिय
सरिसदलि सैगऱेदु गेलविन परिय काणदे पाडळिदु पै-
सरिसि माया सीतेयनु निर्मिषदलि निर्मिसिद ॥ 20 ॥
मायॆ येंदऱिवडे विधात्रनु पायवेतर दिंद्रजितुविन
मायॆ येंतुटो शिवशिवा माया महीसुतेय
वायुजन सम्मुखदोळा वज्रायुधांतकनेत्ति तोऱिसे
बाय बिट्टळु हनुम केट्टेनु केट्टे नकटेनुत ॥ 21 ॥
कंडना हनुमंत वनदलि कंडसीतेय रूपिनबलेय
खंडेयद बाय्धारॆ गौकिद कोरळ कळकळद
चंडिसिद कोपाग्नि बळिकुद्दंड हनुमंगेद्दुदुरद
गुंडिगेय घन शोकरस कुदिदुक्के नयनदलि ॥ 22 ॥

असमर्थ हो आगे-पीछे हो गयी। राम-सेवक केवल हनुमान ही इन्द्रजित् के साथ युद्ध करने में अपना गौरव समझने लगे। १८ हनुमान ने पहाड़ उठाए युद्ध किया; मूठ में चुन-चुनकर राक्षसों को पीट-पीटकर खदेड़ दिया। इन्द्रजित् ने चिनगारियाँ उगलते हुए अपनी तरफ़ के लोगों के गिरने से खाली बने मैदान में आहट पाने की कोशिश करते हनुमान को ढूँढ़ा। सूर्य के रथ के घोड़ों के पश्चिम सागर पहुँचने तक उस दुरात्मा इन्द्रजित् के साथ इस प्रकार हनुमान ने युद्ध करते अपना कौशल्य प्रकट किया। १९ ओट में (छिपे) रहकर इन्द्रजित् ने इन्द्र, वरुण, कुबेर, वायु, अग्नि, यम, निर्ऋति, ब्रह्म, ईश्वरास्त्र आदि अस्त्रों के प्रयोग मारुति पर किए; शायद इन अस्त्रों की वर्षा ही की। फिर भी जीत का मार्ग न सूझने के कारण धैर्य को पीछे हटकर क्षणार्ध में माया-सीता का निर्माण किया। २० माया को समझने में ब्रह्मोपाय से क्या प्रयोजन! हे शिव शिव! इन्द्रजित् की माया न जाने कितनी अद्भुत है; माया-सीता का निर्माण कर उस मायावी ने हनुमान के सम्मुख उसे ऊपर उठाए धरे बताया। वह मायावी सीता (माया से विनिर्मित सीता) 'हनुमान, हाय हाय! मेरा सत्यानाश हुआ।' इस तरह कहती रो उठी। २१ हनुमान ने (पूर्व में) जो अबला-रूप सीता का अशोक वन में देखा था अब वही

बॆरळ बायॊळ गडसि भयसंकरद सलॆ जीवाभिलाषॆय
भरद बायारिकॆय वळलुव कॊरळ कॊंकिनलि
अरिस रघुराजेंद्र चंद्रम नरसियल्लवॆ हनुम करुणव
निरिस लागदॆ तन्न मेलॊं दॊरलिता मायॆ ॥ 23 ॥
आरिगोसुग समरविदु तानारिगीयभिमान लज्जा
दारुणवु निमगिन्नु केळै तंदॆ हनुमंत
क्रूरकर्मद खळन कैयलि तीरु वंताय्तकटकट क-
ण्णारॆ कंडॆ तन्न पापव नॆंदुद मायॆ ॥ 24 ॥
आव रायन बसुरिनलि बंदाव रायन मगन कैविडि-
दी विधियनुणलिद्दुदे नोडय्य हनुमंत
आव पूर्वद फलवॊ बळिविडि दावरिसि तॆन्नुवनु कंडॆ
काव करुणिगळिल्लदिदॆ नोडॆंदुदा मायॆ ॥ 25 ॥
गंड बेडॆनॆ बंदॆनत्तॆय नंडॆलॆदॆ नी होग वेडॆनॆ
कंडवर कनलिदॆनु कळु हदडॆन्न पति यॊडनॆ

देखा; कंठ पर जो तलवार धरी थी वह चिंता से व्याकुल दीख पड़ती थी। उसके पेट में खौलता तीव्र शोक रस आँखों के द्वारा उमड़ पड़ते देख वीर हनुमान में क्रोध की प्रचण्ड ज्वाला सुलग उठी। २२ मुँह में अंगुली दबाए, भयविह्वल हो, जीने की आशा से थकी-प्यासी, कंठ को ठंडा किए हुए वह मायावी सीता "राजाधिराज रघुराम की मैं राजरानी (पटरानी) हूँ न? हे हनुमान! मुझ पर दया क्यों नहीं बरसाते?"—इस तरह कहते वह गिड़गिड़ाने लगी। २३ "किसके लिए यह युद्ध? किसके लिए यह घमंड? यह तुम लोगों के लिए बिलकुल लज्जा की बात है। सुन रे हनुमान! ज़रा सोच। इस दुष्ट राक्षस के हाथों यह मेरी मौत! हाय हाय! मेरा पाप प्रत्यक्ष देख रहे हो न?" इस तरह उस मायासीता ने कहा। २४ "किस राजा के यहाँ (पुत्री हो) पैदा होकर, किस राजपुत्र का (भार्या के रूप में) हाथ धरकर, आज मुझे यह दुर्विधि भुगतनी पड़ रही है! तुम्हीं देखो न हनुमान! न जाने किस पूर्व जन्म का यह फल है जो मुझे भुगतना पड़ रहा है (जो मेरा पीछा कर रहा है)। देख रहे हो न मेरी दुरवस्था? मेरी रक्षा करनेवाला कोई नहीं है न? ऐसा दयालू तुम्हारे यहाँ कोई नहीं रहा न?" इस तरह उस माया ने कहा। २५ पति के मना करने पर भी उनके साथ जंगल चली आयी; तू जंगल मत जा—इस तरह कहते सास के मना करने पर भी मैं मानी नहीं; उनसे गिड़गिड़ाकर अनुमति

उंडेनापत्तनु समग्रद खंडित दलेले हनुम केडनु
कंडये कडेगाद कॆलसव नेंदुदा माये ॥ 26 ॥
मुडिविडिदु करवाळ तट्टिटन लडिगडिगे होय् होय्दु कुबुबिरि
देंडबलके बरसेळेदु बेंदरिसुतळिसु तोंद रिसुत
खड्गवनु मगुळेत्ति झळपिसि होडेयलनु गैदनिलजन कं-
गेडिसिदनु कडु हेरि खळ मायाविकारदलि ॥ 27 ॥
पवनसुत नोडेन्न प्रारब्धवनु निल्लदे होगहेळि-
न्नव निपन मज्जीवितेशन मनुकुलाधिपन
युवतियासेय बिट्टयोध्येगे रवितनू भव सह सुमित्रा
भवनु सहितवे होगहेळें दोदरिता माये ॥ 28 ॥
तोरु कोंडोय्दवनि पंगसु जारि तेन्नुव मातनिद नी
मीरदिरु कोंडोय् ककुत्स्थान्वय शिरोमणिय
बेरे बुद्धिय बळसदिरु कोलेगाररिवदिरु हरिव कंडरु
सारिदेनु निनगय्य होगें दोदरिता माये ॥ 29 ॥

ली। मेरे पति के साथ मुझे न भेजने वालों पर नाराज हुई। (फलस्वरूप) लगातार विपदाएँ झेलनीं। हे हनुमान, जो हुआ वह तो देख ही रहे हो न ?" —इस प्रकार माया ने कहा। २६ उस मायासीता के बाल पकड़कर तलवार के चपटे हिस्से से बार-बार पीटते हुए, चीखते-चिल्लाते दाएँ-बाएँ घसीटते-डराते-धमकाते, रुलाते, कँपाते, फिर तलवार उठाकर झलकाते हत्या को तैयार —(इस प्रकार) माया से हनुमान को (इन्द्रजित् ने) विचलित कर दिया। २७ "हे हनुमान, तू मेरी दुर्विधि देख ! अब मैं अपने प्राणों के स्वामी को, मनुवंश के अधिपति को देख न पाऊँगी; अतः उनसे कहो तुरन्त यहाँ से चले जाएं। पत्नी के लिए जो आशा थी उसे त्यागे रविवंश-प्रभु लक्ष्मण के साथ तुरन्त अयोध्या लौट चलें। इस तरह तुम उनसे कहना।" —इस प्रकार माया ने कहा। २८ यहाँ से राम को ले जाकर उन्हें मेरे प्राण निकल जाने की वार्ता बता दो। मेरी इस आज्ञा का उल्लंघन न करना; काकुत्स्थश्रेष्ठ को बुला ले जाओ। अन्य (किसी) प्रकार से सोच-विचार मत करो। ये हत्यारे मुझे समाप्त किए बिना न छोड़ेंगे। मैं तुझे बताए देती हूँ। जाओ तुम।" इस तरह कहकर माया चिल्लायी। २९ "हाय ! अब और क्या कहूँ ? यह

ऐसें मत्तेनकट दुष्कृत दोषविदु ता मीऱ लारळ-
वी सतिय सौभाग्य वनितेय मरण दरुशनकें
मीसलिर्दवें कंगळेंदुऱ घासि यादनु चित्तदलि सं-
तैसि कोंडी मात नुडिदनु मेघ नादगें ॥ 30 ॥
त्रिजग वर्रियें पुलस्त्य मुनिवंश जनला निम्मय्यनीश्वर
भजकनल्ला श्रुति सदागमगळ लभिज्ञनल
भजिस नवन न्यायवनु गज बजिस निन्नू सीतेयलि कडु
वृजिन कोदगिर्दे नोडवगें मगनल्ल नीनेंद ॥ 31 ॥
वीररोळ गग्गळनु नी जंभारि जितुवेंबी प्रसिद्धिय
भारणेय हेसरुळ्ळवनु हरेयदलि तिळिदवनु
नारियसुवनु कोंडनेंबप कीर्तियनु कय्विडिदु कॆडदिरु
सैरणेय को कोलेगें मनवनु माडबेडेंद ॥ 32 ॥
बिडु दुरात्मर बुद्धियनु कैविडियदिरु दुष्कीर्तियनु सं-
गडिग नागदि रसुर केळपजय नितंबिनिय
कडेगें नी नी सतिय कडिदडें कडिदु बिसुडदें माणनिन कुल
दोडेय निम्मन्वयद विपिनव नेंदना हनुम ॥ 33 ॥

मेरे दुष्कर्मों का ही विपाक है। विधि को कौन टाल सकता है? इस सुहागन सती की इस मृत्यु को देखना ही इन (मेरी) आँखों ने दुर्भाग्य पाया है न?" इस तरह सोचते हनुमान मन ही मन भयभीत हुए। फिर (भी) धीरज धरते हुए हनुमान ने मेघनाद से निम्नांकित रीति से (सम्बोधित कर) कहा। ३० "तुम्हारे पिता, जो पुलस्त्यमुनि-वंश में पैदा हुए हैं, यह तो तीनों लोकों में प्रसिद्ध ही है। वे ईश्वराराधक तथा वेद-शास्त्रज्ञानसंपन्न हैं; वह अन्याय के मार्ग का अनुमोदन कभी न करेंगे। अब तक उसने सीता के साथ बलात्कार का आचरण नहीं किया। तू तो उसे पापपंक में घसीटने को पैदा हुआ; अतः तू उसका बेटा नहीं।" इस तरह हनुमान ने कहा। ३१ तू तो वीरों में श्रेष्ठ है, इन्द्र को जीतने के कारण 'इन्द्रजित्' इस तरह की प्रसिद्धि तथा बड़ा नाम तूने पाया है। युवावस्था के तुम समझदार भी हो। एक अबला के प्राण हरने की बदनामी मत मोल लेना। जरा संभल जा। इस हत्या के पाप से पीछे हट।" —इस तरह हनुमान ने कहा। ३२ दुरात्मा की यह बुद्धि त्याग दे। अपकीर्ति, कुख्याति का शिकार मत बन। पराजय नामक स्त्री का साथी न बन। सुन असुर! तूने इस स्त्री को अगर काट डाला तो रवि-कुल के राजा तेरे खानदान रूपी जंगल को काट डाले बिना न रहेंगे।"

बरलिदर दॆसॆयिद पप्रथॆ दोरकलिद ऱिदपजयवु जरॆ
दुरियॊ ळद्दलि जगद जनवद कंजुवव नल्ल
मरुत सुत केळसुर रावासुर विकर्मवॆ धर्मपथवॆम
गरिदु बिसुडुवॆ निवळ नॆनु तॆत्तिदनु खंडॆयव ॥ 34 ॥
नोडु नोडॆलॆ हनुम सीतॆय नोडु कंडा काणॆ नॆन्नदॆ
नोडॆनुत बॊब्बिरिदु रथदग्रदलि खंडॆयव
नीडि झळपिसॆ हा समीरज केड कंडैयॆब मायॆय
जोडणॆय जानकिय कडि दिळुहिदनु धरणियलि ॥ 35 ॥
कडिदु बीळद मुन्न कोपद किडिसहित पुटनॆगॆदु तिविदनु
झडितॆयलि जज्जरित वागलु तेरु रावणिय
अडगिदनु बळिकवनु मायॆय नडपनोडि्ड समीर सुत कडु
हडगि मुरिदनु बळिक माया सीतॆयिद्दॆडॆगॆ ॥ 36 ॥
नडुगुवंघ्रिद्वयद बाय्दॆरॆ मिडुकु वमल मुखेंदुविन तडॆ
तडॆदु मुच्चुव तॆरॆव कंगळ कॆत्तुवंगुळिन
बिडुव जीवद बयल सीतॆय कडियॆरड ऱलि सुरिव नॆत्तर
निडु वॊनल नीक्षिसुत मूर्छित नादना हनुम ॥ 37 ॥

इस प्रकार हनुमान ने समझाया। ३३ "इस कारण से भले ही (मेरी) बदनामी हो; इससे भले ही हार जाऊँ; दुनियावाले मेरी निंदा करके भले ही आग में डालें; —इन सभी बातों से मैं तो डरनेवाला नहीं। सुनो मारुति ! हम असुर हैं, भयानक कार्य करना ही हमारे लिए धर्ममार्ग है। इसको काट ही डालता हूँ।" इस तरह कहते इन्द्रजित् ने खड्ग उठाया। ३४ "देख हनुमान ! देख; सीता को देख। फिर न कहना कि देखा नहीं। अच्छी तरह देख ! देखा न ?" इस तरह कहते गरजते इन्द्रजित् ने रथ पर से तलवार उठाकर झुलायी (चमकायी)। तब— "हाय वायु-सुत ! यह अनर्थ तो देख रहे हो न ?" इस तरह चिल्ला रही माया रूपी सीता को इन्द्रजित् ने काटकर धरती पर गिरा दिया। ३५ माया-सीता के कटकर गिरने के पहले ही क्रोध से चिनगारियाँ उगलते हनुमान ने उछलकर जो धक्का मारा इससे इन्द्रजित् का रथ टूट गया। तब इन्द्रजित् माया का आधार ले छिप गया। हनुमान अपनी वीरता-दर्शन में म्लान हो माया-सीता के स्थान की ओर लौट आए। ३६ काँपते पैर, होंठ, कंपायमान मुखकमल, रह-रहकर खुली ढँकती आँखें, कंपायमान अंगांग —इस प्रकार की स्थिति में लगता था कि प्राण त्यागने में अधिक

निंदु दब्बर वभ्रदुब्बर निंद गगन स्थळद वौलु कै-
गुंदिदरु गज गवय शतबलि मुख्य नायकरु
तंदरक्षिगें जलव नकटकटेंदु सुरनारियरु सूचनें
संदुदर संगनिलजन निश्शब्द दाहवद ॥ 38 ॥
हनुम नोड्डिड नोळिल्ल सिंहध्वनि सुरेंद्र विरोधियुपटळ
घनवदे नादरो हुताशन वालि नंदनरु
अनुज नी होगं गदन बळि गनिलजन नारय्यलिकें नीव्
मगन माडिरें जांबवरें येंदवर बीळ्कोट्ट ॥ 39 ॥
बा विभीषणदेव नीना पावकन सुतनेंडेगें नडें तिळि
दी विघळिगेंगें बहुदु नीवेंदनि बरनु कळुहि
आ विराध विरोधिचिंतेय नोवि कोंडिरें हनुमनेंडेगा
तावरेय नंदनन नंदन नंजु तैतंद ॥ 40 ॥
बरुत कंड नखंड बलनुब्बरद करहतियिंद कैडेदिह
करि घटाळिय पादघातिय लळिद पयदळव
मरद होय्ललि मुग्गिदश्वव वररथाळिय संदणिय सं-
गरद भूमिय हा महादेवेंनुत नडेतंद ॥ 41 ॥

समय न लगेगा। हनुमान ने इस स्थिति की माया-सीता के कटे अंगों से, देह के दोनों भागों से धारा में बहते रक्तप्रवाह को जब देखा तो वे मूर्च्छित हो गये। ३७ मेघगर्जना-सदृश हो रहा आकाश का शोरगुल रुका। गज, गवय, शतबली आदि मुख्य वानरनायक शक्तिहीन हुए। देव युवतियों ने "हाय रे देव" कहते हुए आँखों में अश्रु भर लिये। हनुमान के युद्ध में निस्तब्धता व्यापने की सूचना राम को मिली। ३८ "हनुमान के युद्ध में सिंहनाद सुनायी न पड़ रहा था। इन्द्रजित् की हिंसा तो अत्यधिक हो रही है। नील-अंगद की दशा न जाने क्या हुई ? भाई लक्ष्मण, तुम अंगद के पास जाओ। हे जाम्बवान ! हनुमान के बारे में पूछताछ करने को तुम सोचो।" इस तरह कहकर राम ने उनको भिजवा दिया। ३९ "हे विभीषण, तुम यहाँ आओ। तुम अग्निकुमार नील के पास जाओ।" वहाँ का समाचार जानकर तुम्हें इतने विघटियों (समय) पर यहाँ आ जाना चाहिए —इस तरह समझाकर भिजवा दिया। इस प्रकार राम की चिंता जब बढ रही थी तो ब्रह्मपुत्र जाम्बवान डरते-डरते हनुमान के पास आया। ४० अखंड बलशाली जाम्बवान रास्ते पर से होकर आते समय सारी युद्धभूमि में बलवान हाथों की मार से मरे पड़े हाथियों का दल, लातों की मार खाकर मर पड़े पैदल सैनिकों का दल, पेड़ों के थपेड़ों से मरे

हत्तिरकॆ बरलंजि हनुमन सुत्ति दूरदॊळिह मरुळ्गळ
मॊत्तवनु बगिदॆरगुत खिळ विहंगम व्रजव
हत्तुगॆय कर ताळदलि कॆदरुत्त बरॆ बरॆ दूरदलि दू-
हत्तियलि कडिवडॆद सीतॆय कंडनजसूनु ॥ 42 ॥
दृगु जलगळॊरतॆगळ तोळ्पुगॆय विगतोत्सवद समरद
नग महीरुह मुक्त हस्तर नोडु तैतरलु
तॆगॆद हरुषदलूर्वॆरॆगॆ मैदॆगह निक्किद राम भृत्यन
जगद जीव कुमारकन कंडंजि निंदिर्दं ॥ 43 ॥
कंडनी कौतुकव मुम्मळि गॊंडु मनदलि पवनजन दो-
र्दंडवनु पिडिदॆत्ति करुण रसातिरेकदलि
अंडॆलव शोकदलि सरव निगॊंडॊगुव कंबनिगळलि बॆस-
गॊंडने नाय्तॆंदु जांबव नंजनासुतन ॥ 44 ॥
चित्तविसदिरॆ जांबवरॆ जनपोत्तमन ललितांगियनु मुगि
यित्तुकंडिरॆ राजकारिय राघवेश्वरन
कत्तलॆगॆ ठावाय्तु बॆळ गडगित्तु हगॆ ताविन्नु रणदलि
सत्तरेनिद्देनु केडिरॆ केड नीवॆंद ॥ 45 ॥

पड़े घोड़ों के तथा रथों के समूहों को देखकर "हाय, महादेव ! इस प्रकार उद्‌गार निकालता है । ४१ जाम्ववान हनुमान के नज़दीक सीधे आने से डरकर जब चक्कर काटते तो दूरी पर स्थित पिशाचों के समूह को चीरकर जा उड़ रहे गीदड़ों के समूह जब उस पर टूट रहे थे तो हाथों से उनका निवारण करता हुआ, उनको भगाता हुआ आ रहा था तो दूरी पर तलवार से दो टुकड़ों में कटकर गिरी हुई सीता को देखता है । ४२ अश्रु बहाते, हाथ पर हाथ धरे उत्साहहीन हो पेड़-पहाड़ों को फेंककर खाली हाथों खड़े हुए वानरों को देखते जब आया तो हर्ष खोकर धरती पर गिरे जगत भर के लिए प्राणदायक राम-किंकर (हनुमान) को देख जाम्बव भयभीत हो खड़ा हो गया । ४३ अत्यंत खिन्न हुए जाम्बव ने इस आश्चर्य को देखा । फिर जाम्बवंत ने हनुमान की भुजा पकड़कर उठाकर करुणाधिक्य से अत्यंत शोकसंतप्त हो अश्रु बहाते 'क्या हुआ ?' इस प्रकार हनुमान से प्रश्न किया । ४४ "हे जाम्बवानजी, राजश्रेष्ठ राम की सती की यह गति देखें तो लगता है कि राघवेश्वर का राजकार्य समाप्त ही हुआ; देख रहे हो न ? अंधेरा फैला । उजाला छिप गया । शत्रु अब युद्ध में मरे या जीवित रहे —इससे क्या होगा ? यह अनर्थ तो आपने देख ही लिया न ?" इस प्रकार हनुमान ने कहा । ४५ "यह युद्ध का

कलहकिदु कडेयेंदु सीतेय नॊळेट्टु तंदनु सरिसकाखं-
डल विरोधि विभाडिसिद नवनिजेय तनुलतेय
गॆलवु सिद्धिस दाय्तु हॊत्तवु कॊलॆ हॊलॆ गळॆन्नुवनु द्रोहक
कलश वादेनु रामने नॆंदेंब नॊयेंद ॥ 46 ॥
अनुवरदॊ ळरिभटन जीवव जिनुगिसदॆ जानकिय कॊलि सुवु
दनु नयवॆ निनगेंदु रघुराजेंद्र नॆन्नॊडनॆ
मुनिय दिरनन्याय हॊगॆं दिनज मोरॆय तिरुहदिरनि-
ञॆनगॆ गतियेनेंदु मरुगिद नंजनासूनु ॥ 47 ॥
मरुगदिरु हनुमंत निन्नलि कॊरतेयुंटे मगनॆ जीवव
तॊरॆदवर नॆब्बिसुव दिव्यौपधिग नीनल्ल
मरॆय मायासुरर कपटद निरुगॆयो निजवो विचारदि
नरिव तॆगॆदिद कॊंडु नडॆ मनगुंद वेडॆंद ॥ 48 ॥
बळिक माया रूपकद मैथिळॆय खंडित तनुवॆरड तं-
दिळुहिदनु माया नरेंद्रन बळियला हनुम
ऎलॆ हनुम केळॆम्म हुय्यल कॆलसवे तानिदुवॆ यॆंदळ
वळिदु मॆल्लनॆ महिगॆ मैयिक्किदनु मूर्छॆयलि ॥ 49 ॥

मंत है। इस तरह कहते हुए सीता को मेरे सामने खींच लाकर मार डाला। हम जीत के श्रेयोभागी न हुए। हत्या का छूत उसका पाप मेरे पल्ले पड़ा। मैं यों द्रोही बना। न जाने राम क्या कहेंगे ?" इस प्रकार हनुमान ने कहा। ४६ "इस प्रकार युद्ध में शत्रुवीर का प्राणापहरण करना छोड़, जानकी की हत्या कराना क्या यह नीति है ?" इस तरह कहते मुझसे रघुराम नाराज़ हुए विना न रहेंगे। 'तूने बड़ा अन्याय किया' इस तरह कहते सुग्रीव मुंह मोड़े विना न रहेंगे। अब मेरी क्या गति होगी ? इस प्रकार कहते आंजनेय बहुत ही व्यथित हुए। ४७ "हे हनुमान, दुखी मत हो। बेटे, इसमें तुम्हारा क्या दोष है ? प्राण गँवा बैठे हुओं को दिव्य औषध दे जिलानेवाला तू ही है न ? राक्षसों की माया की धोखेबाज़ी की रीति ही यह है कि नहीं, इस पर विचार कर (पूछताछ कर) जानने की कोशिश करें। अब इस देह को लेकर चलो। दुखी मत हो।" इस प्रकार जाम्बवंत ने कहा। ४८ उसके बाद हनुमान ने माया से निर्मित सीता (रूप धारी) देह के दो कटे टुकड़े लाकर, माया-मानवेश्वर राम के पास ला रखा। "हाय हनुमान ! सुनो। हमारे युद्ध के कारण ऐसा अनर्थ हुआ न ?" इस तरह कहते राम शक्तिहीन हो गश

तुरुगिदश्रु गळिद मम्मल मरुगिदनु सुग्रीव नंबक
दोरतेगळ बेरळुगळ लिर्दुदु बेह भटनिकर
अरसि तहॆं नौषधिय नेतकॆ मरुक वरसंगॆब गमनद
होरिगॆयलि हनुमंत निर्दनु कंद केळॆंद ॥ 50 ॥
ऎच्चरिकॆ तन्निमिषदलि मनदोच्चतद वल्लभॆय नॆनॆयिसि
बिच्चिसुदु देवॆगळनु सीतॆय गुणवु नालगॆगॆ
उच्चरणॆ गोडरिसितु देहदमच्चु मकरिसितरिवना नृप
निच्चटदि हलुबिदनु हलवंगदलि जानकिय ॥ 51 ॥
राजवंश दोळधिक नृपऋषि राजपरमेश्वरन निमिकुल
राज राजाधीश्वरन सुकुमारि गकटकट
ई जिगुप्सॆय मरणवनु विधियोजिसिदने सीतॆ हा निमि
राजनंदनॆ हायॆनुत होरळिदनु रघुनाथ ॥ 52 ॥
तॆगॆदु तक्कैसिदनु गुरुकुचयुगद तुंडनु नोडिदनु नय
नगळ लवलविकॆगळ लाननवनु नितंबिनिय
मगुळॆ मगुळडि गडिगॆ तॆळुगदपुगळ नमळाधरव चुंबिसि
नगॆनुडिय नोडरि चुत करॆकरॆ दळलिदनु राम ॥ 53 ॥

खाकर धीरे-धीरे धरती पर लेट जाता है। ४९ आँखों में अश्रु भरकर सुग्रीव खूब पछताते हुए रोए। दुलार भरे कपिवीर उँगलियों से अश्रु पोंछते खड़े थे। "इसके लिए इतनी चिंता क्यों करें ? औषध ढूंढ़ लाता हूँ" —इस तरह कहकर रवाना होने की तैयारी में हनुमान थे। सुनो कुमार, इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ५० अपनी प्यारी पत्नी की याद ने तुरन्त राम को जगाया (वे होश में आये); उन्होंने आँखें खोलीं। राम की जिह्वा सीता का गुणगान करने लगी। देह पर के मोह के कारण विवेक ठप हो गया। राम बिना दुराव-छिपाव के, विविध रीतियों से सीता का गुणगान करते विलाप करने लगे। ५१ "राजवंशश्रेष्ठ होकर राजर्षि कहलानेवाले राजाधिराज निमिकुल चक्रवर्ती की कोमल कुमारी को यह असह्य मृत्युयंत्रणा विधि ने सोची न ! हाय सीते ! हाय निमिराजकुमारी !" इस प्रकार कराहते, शोक करते, रघुनाथ धरती पर लोटने लगे। ५२ स्तनों से युक्त (सीता की) देह के भाग को राम ने उठाकर आलिंगन कर लिया। सीता के मुखड़े को उत्साहपूर्ण आँखों से टकटकी लगाकर देखा। कोमल गालों तथा खूबसूरत होठों पर बार-बार चुंबन की वर्षा की। हँसी-मसखरे की बातों से बार-बार सीता का

सीतॆ सीतॆ विदेह सुतॆ भूजातॆ भुवन ख्यातॆ कॆळि-
न्नेतकॆन्नॊळु नुडियॆ वल्लॆनु निन्न मनमुनिस
शातकुंभद मृगव तारद खातियॊ तप्पुंटु तन्नलि
मातु हुसिदुदु कैमुगिदॆवाविन्नु नुडियॆंद ॥ 54 ॥
हगॆय कॊल्ललरियदॆ छलोक्तिय नगलिसिदनॆंदव मनसिन
बिगुह बिडु नंबुगॆय को कॊलुवॆनु दशाननन
नगॆमुसुड माडिन्नु नुडिमातुगळु हॊरवडलॆन्न कूडिनि
तगडुतन वेककट कृपॆ निनगिल्लवेयॆंद ॥ 55 ॥
एक पत्निव्रतद निष्ठॆय नूकिदॆनॆ नडवळियनमलि
क्ष्वाकुकुलजर कीर्तियॆनु कॆडिसिदॆनॆ दुष्कृतिगॆ
सोकिदॆनॆ श्रुतिमतकॆ सल्लद काकरनु कूडिदॆनॆ तन्नॊड
नेकॆ नी माताडॆ निनगिदु गुणवॆ हेळॆंद ॥ 56 ॥
कापुरुषननु कैविडिदु निनगीपरियलुण लिर्दुदे ही
नोपननु हिडिदडवि गय्दुवुदादुदे यकट
पापकर्मन पलित शौर्यन कापथन कारुण्यहीनन
वैपरीत्यन वरिसिदुद किनितायॆतॆ निनगॆंद ॥ 57 ॥

नाम लेकर पुकार-पुकारकर (राम ने) वेदना व्यक्त की। ५३ "हाय सीते! सीते। वैदेही! हे भूमिपुत्री! त्रिभुवनप्रसिद्धसुंदरी! मुझसे (अब) बोलती क्यों नहीं? मैं जानता हूँ कि तुम क्यों नाराज़ हो। स्वर्णमृग न ला देने का यह क्रोध है न? मुझसे गलती हुई। मेरा वादा झूठा निकला। क्षमा करो। हाथ जोड़ता हूँ। बोलो तो सही।" इस तरह राम ने कहा। ५४ शत्रु को मारने की रीति न समझकर प्रतिज्ञा से मुकर गया। अतः तुम यों कठोर बनी हो न? यह कठोरता त्यागो। मैं विश्वास दिलाता हूँ। यह देख—दशमुख की हत्या अवश्य करूँगा। अब तो हँसो। कुछ मीठी बातें तो करो। कम से कम कुछ तो बोलो। मुझसे इतनी ज़िद क्यों? क्या मुझ पर दया नहीं आती? —इस प्रकार राम ने कहा। ५५ मैंने अपना एकपत्नीव्रत तो कहीं त्याग देने का आचरण तो किया नहीं न? पवित्र इक्ष्वाकु वंश के नाम को बट्टा तो लगाया नहीं न? मैंने कहीं वेद-विरोधी दुष्कार्य तो किया क्या? दुष्टों की संगत में पहुँचा तो नहीं न? मुझसे बोलती क्यों नहीं? क्या तेरे लिए यह ठीक लगता है? कहो तो सही। इस तरह राम ने कहा। ५६ मुझ जैसे अकिंचन के हाथ धरने के कारण (विवाह करने के कारण) तुझे

वनकॆ बरबेडॆंदु नुडिदडॆ मनकॆ तारदॆ बंद निन्नय
जनक केळिदडेन हेळुवॆ मतियदेननग
जननियरि गेनॆंबॆ भरतंगनुज शत्रुघ्नरिगॆ सीतॆय
ननुवरद रणबलिगॆ चाचिदॆनॆंबॆनेयॆंद ॥ 58 ॥

इन्नु हगॆयनु कॊंदु काब महोन्नतिकॆ यॆनगावुदक टॆन
गिन्नु निन्नय मरणदलि मरळिन्नु जीविसुव
मन्नणॆय बदुकावुदॆलॆ संपन्न सौबगिन कणियॆ कामन
कन्नडियॆ रतिपतिय मुंगैगिणियॆ हेळॆंद ॥ 59 ॥

सेवॆयलि तॊत्तागियिहॆ विज्ञान विशेषकॆ मंत्रियागिहॆ
भाविसलु सख माळ्प परमस्नेहवनु माळ्पॆ
तीविदतिशय रतिगॆ विविध कलाविचित्रद कुशलॆ यागिहॆ
भूवधुविनंतॆमगॆ तोरुवॆ सैरणॆ यॊळॆंद ॥ 60 ॥

इस प्रकार के कष्ट भुगतने पड़े न ? मुझ जैसे अधम का साथ देने के कारण तुझे (मेरे साथ) जंगल में भटकना पड़ा न ? हाय इस पापकर्मी को, वीरता खोए बूढ़े बने दुर्मार्गी को, इस करुणाहीन को (कठोर को), बेमेल व्यक्ति को, जिसके (मेरे) साथ तूने ब्याह किया —तो इतना सब कुछ भोगना पड़ा न ? (ऐसे अयोग्य के साथ ब्याह करने का फल तो भुगतना पड़ा न ?) इस तरह कहते राम पछताने लगे। ५७ "जंगल आने से मना करने पर भी तूने नहीं माना; साथ आ गयी। अब तुम्हारे पिताजी पूछेंगे तो क्या जवाब दूं; मेरी समझ में नहीं आता। माताओं को क्या जवाब दूं ? कैसे समझाऊँ ? 'युद्ध में सीता की बलि चढ़ायी' —इस तरह भरत-शत्रुघ्न से कहूं ?" —इस प्रकार राम ने विलाप किया। ५८ "अब शत्रु को मारकर प्राप्त किया जानेवाला महोन्नत स्थान तो क्या रहा ? तुम्हारे (यों) मर जाने पर, मेरे जीवित रहकर प्राप्त किया जाने वाला वह गौरवपूर्ण जीवन ही क्या है ? मेरे प्यार-दुलार की रानी, सौंदर्य की खान, कामदेव के हाथ की आरती, कामदेव के हाथों पर नाचने वाली सारिका ! बोलो तो सही !" इस प्रकार राम ने कहा। ५९ "सेवा समर्पित करने में तू दासी-सदृश रही; विशेष ज्ञान में मंत्री-सदृश रही; एक स्नेही सहृदय-सदृश अत्यंत स्नेहपूर्ण आचरण मेरे साथ करती रही; अतिशय मन्मथ-क्रीड़ा में विविध प्रकार की कला कुशलता तेरी रही; धरती-सदृश सहनशीलता तूने दिखायी।" इस प्रकार राम ने कहा। ६० "मैं तुझ जैसी को कैसे भूलूं ? ऐसे गुणों का कोई अभाव मैंने तुझमें नहीं

मर्रेवें नानिन्नाव परियलि मर्रेव तेरदलि गुणव निन्नलि
तेरह नेळ्ळ नितुवनु काणेनु सीतें हेळेनुत
मरुगिदनु मनदलि मनोरथ दुरुव कल्प महीजवकटा
मर्रेयितें यिदिनलि तनगेनुतळलिदनु राम ॥ 61 ॥
रूप नेनेनेने दोम्मे सुरता ळापदभिनयकोम्मे पतिसे-
वा परिष्कृति गोम्मे सच्चरितानुरंजनेय
नैपुणतें गोम्मोम्मे सकल कला परिग्रह कोम्मे निर्जित
कोपमुख कोम्मोम्मे नेने नेनेदळलिदनु राम ॥ 62 ॥
बंदना समयदलि मानव रंददलि हळविसुव हरियेंडे
गिंदुधरन समाननघदूषण विभीषणनु
निंदु नोडिदनुभयनाटक दंदवनु सर्वज्ञनल्ला
कंदकेळा शरणजनदाभरण निंतेंद ॥ 63 ॥
देव नी दिट नरने सीतादेवि तामानिनियें दिट मा-
या विलासकें मरुगुवरें सर्वज्ञ रादवरु
हावुगळ हेज्जेयनु बल्लवु हावुनम्मीयासु रांगव
नावु बल्लेवु बिडुवृथा नाटकव नीनेंद ॥ 64 ॥

देखा कि तुझे भूल जाने की ग़लती करूँ! हे सीते, तुम्हीं बताओ।" इस तरह कहते राम पछताने लगे। "मेरा मनोरथ रूपी कल्पवृक्ष आज टूट पड़ा न!" इस तरह कहते राम अत्यंत व्याकुल हुए। ६१ कभी सीता के रूप का स्मरण कर लेते, कभी रतिक्रीडा-समय की बातचीत तथा हावभाव का स्मरण कर लेते, तो कभी पति-सेवा की रहस्यमय गुत्थियों का स्मरण कर लेते तो तुरन्त ही अपने सदाचार से तृप्ति देने की सीता की निपुणता का स्मरण कर लेते, तो कभी समस्त कला-कार्य-चतुरता का स्मरण करते तो कभी क्रोध त्यागे उसके मुख-सौंदर्य का स्मरण करते राम अत्यंत शोकविह्वल हुए। ६२ उसी समय, एक सामान्य (साधारण) मनुष्य की भाँति शोकसंतप्त विष्णु के सम्मुख चन्द्रशेखर-सदृश पापरहित विभीषण आ पहुँचे। फिर वहाँ खड़े हो उसने दोनों तरफ़ हो रहे इस नाटक पर दृष्टिपात किया। सुनो कुश! वह तो सर्वज्ञ रहा न! भक्त विभीषण ने यों कहा। ६३ "भगवान, क्या आप सचमुच मानव है (जो इस तरह विलाप कर रहें हैं)? सीता देवीजी क्या मानव-स्त्री हैं? आप जैसे सर्वज्ञ माया-विलास पर, इस प्रकार दु:खी होते हैं? साँप के क़दम साँप ही जानते हैं। हमारी राक्षस-जाति की यह कार्यरीति हम भलीभाँति जानते हैं। यह निरर्थक नाटकीय

इदुकणा मायाविगळु माडिद महाशांबरद कॆलसद
सुदति सुळिदरॆ बल्लॆवाव् नम्मवर मायॆगळ
इदकॆ चिंतिसबेड मेलण हदकॆ कार्यव नॆनॆवुदे ता-
विदित विप्रालापविदु ताव्यर्थ निमगॆंद ॥ 65 ॥
कळुहु हनुमन नॆन्नॊळॊब्बन कळुहुवॆनु नीव् नंबदिरॆ मं-
गलॆय मनुकुल राजपत्निय परम सुव्रतॆय
कुलयुतॆय कलमष विहीनॆय कलिमल प्रध्वंसिनिय नि-
र्मलॆय नीक्षण नोडि बरलॆलॆ देव केळॆंद ॥ 66 ॥
अल्लि सीता देवियरु बळिकिल्लदिरॆ निम्मंघ्रिसेवॆगॆ
सल्लदव नानॆसले बिडु मनद संशयव
कॆल्लॆगौकि विलापवनु हुसियिल्ल तन्नलि कळुहियॆनॆ कर
पल्लवद संज्ञॆयलि कळुहिद नरसननिलजन ॥ 67 ॥
सचळनल्ला हनुम शरणन सचिव सह नडॆतंदनिंद्रिय
शुचिय शोकावनदि कंडनु लोक पावनॆय
प्रचुर पुण्यांगनॆय जय जय वचनदलि कैमुगिदु तिरुगिद
नचल धीरोदात्त नॆडॆगपराह्ण समयदलि ॥ 68 ॥

आचरण त्यागिए।" इस तरह विभीषण ने कहा। ६४ यह तो मायावियों से संपन्न हुआ इन्द्रजाल कार्य है। उसी (ऐन्द्रजाल) से उत्पन्न यह माया-स्त्री है। देखते ही मैं ताड़ गया कि हमारे (जाति की) यहाँ की माया की करतूत है। इसके लिए व्यर्थ चिंता न करें। भावी सफलता के बारे में सोचना ही श्रेयस्कर है। आपका यह प्रलाप कोई मतलब नहीं रखता; व्यर्थ है।" इस प्रकार विभीषण ने कहा। ६५ "भगवन्! अगर आपको मेरी बातों पर विश्वास न होता हो तो हनुमान को भेजिए; हममें से किसी को उनके साथ भेजता हूँ। वे वहाँ पहुँचकर मंगलकारिणी, परम सुव्रता, पवित्रतापूर्ण, कलंक-रहित, पाप-निवारक, निर्मल चरित वाली, मनुकुलराजपत्नी सीता को इसी क्षण देख आवें।" इस प्रकार विभीषण ने कहा। ६६ अगर वहाँ, देवी सीता के दर्शन पा न सकें तो मैं आपके चरण-सेवक के स्थान से पदच्युत हो जाऊँ। मन की शंका त्याग दीजिए। आपकी यह व्याकुलता त्याग दें। मुझमें झूठ-फ़रेब के लिए जगह नहीं; अतः भेज दीजिए।" इस प्रकार विभीषण के कहने पर राम ने हाथ के इशारे से हनुमान को भेज दिया। ६७ हनुमान तो बड़े तेज़ ठहरे! विभीषण के मंत्री के साथ आकर अत्यंत पवित्र अशोकवन में अपने इन्द्रियों के पावित्र्य की रक्षा

देवियरु देवर गुणस्तव सेवॆयलि सज्जीविगळु मा-
यावियॊड्डिद मायॆयिदु निजशरणनॆंदंतॆ
आव संशयविल्ल हॊल्लॆह कोवदिरियनॆ वरविभीषण
देवननु कॊंडाडिदरु कमलज सुतादिगळु ॥ 69 ॥
मुट्टला हरिशरण नाक्षण बट्टबयलाय्तिंद्रजितु करु
विट्ट मायारूपु रामाद्यखिळ कपिबलद
दिट्ट गहगहिसिद गुडिगळ कट्टिदुदु सुरसेनॆ दिविजर
पट्टणदलॊदरिदवु बहुविध वाद्य संदोह ॥ 70 ॥
पॊडविपन सहभवन हरुषद हडगु तिरुगितु रघुपतिय कै
यॆडॆय शिशु हॊंगिदनु हॊंपुळियोदना नील
अडगिदुदु बळिकभ्रदि नडुगडलॊळगॆ रविबिंब रघुकुल
दॆडिय तॊरवॆय राय हॊक्कनु तन्न पाळयव ॥ 71 ॥

करनेवाली, लोकपावन पुण्यमयी सीता के दर्शन पा लेते हैं। हनुमान जय-जयकार करते हुए सीता को हाथ जोड़ प्रणाम कर दृढ़ चित्त उदात्त वीर राम के यहाँ दुपहर के समय ही लौटकर आए। ६८ भगवान (राम के) गुणगान करते हुए उन्होंने कहा— "देवी सीताजी जीवित हैं; आपके भक्त विभीषण के कथन के अनुसार यह मायावी राक्षस से विरचित माया की करनी है; इसमें कोई शक नहीं; अतः किसी प्रकार के अनुचित कार्य में मन मत लगाइए।" इस प्रकार जब हनुमान ने कहा तो जांबवन्त आदियों ने विभीषण की प्रशंसा की। ६९ विष्णुभक्त विभीषण के स्पर्श होते ही इंद्रजित् से साँचे में ढाले जाकर विनिर्मित (सीता का) माया-रूप का, राम तथा उनकी समस्त सेना के सम्मुख (अपने मूल रूप में) रंग खुल गया। खिलखिलाकर हँसते, देवताओं की सेना रोमांचित हुई। देवनगरी में विविध प्रकार के गाजे-बाजे बजने लगे। ७० राम के भाई लक्ष्मण के हर्ष की नौका लौट पड़ी; रघुपति के लाड़ले अंगद हर्ष से फूल गये; नील रोमांचित हुए। तदनंतर आकाश के सूर्यबिंब पश्चिम समुद्र के मध्य डूबा। तौरवें के अधिपति के अवतारी रघुकुलपति ने अपने खेमे में प्रवेश किया। ७१

नलवत्तॆरडनॆय संधि

सूचनॆ— राय रघुजानुजनु रक्कस राय दळवनु मुरिदु निर्भर रायजितुविन क्रतुव कॆडिसिद नंदिनिरुळिनलि ।

केळिरै काकुत्स्थ वंश विशालररिर बलभंजनारि म-
ही लतांगिय मगळ रूपिन कपट कामिनिय
बाळिनलि बड़िकैदु बवरकॆ ताळलारदॆ हनुमनलि से-
नाळि सहितो सरिसि निंदनु पुरद बाहॆयलि ॥ 1 ॥
सोल मुखदलि पुरव होगलच्चाळुतन कूणयवु तन्नय
मेलॆ बीळदॆ माणदय्यंगित्त भाषितकॆ
सूळनहॆ नॆंदिद्रजितु ही हाळियलि तम्मन्वयागत
देळिगॆय मनॆदेवतॆय नोलैसलैतंद ॥ 2 ॥
दळव मेळैसिदनु तत्कुंभिळिय शैलद तप्पललि नॆलॆ
गोळिसिदनु सैनिकव सप्तव्यूहरचनॆयलि
बळिक मारण होमदुज्जुग दळवडिकॆयलि राक्षस द्विज
कुलसहित होक्कनु निकुंभिळियमळ मंटपव ॥ 3 ॥

बयालीसवीं संधि

सूचना— राजाराम के भाई लक्ष्मण ने उस दिन रात को राक्षसेश्वर की सेना को तोड़कर इन्द्रजित् से किये जा रहे यज्ञ को ध्वंस किया ।

हे काकुत्स्थवंश श्रेष्ठ कुमार लव-कुश, सुनो । इन्द्रजित् ने भूसुता (सीता) रूपी माया-स्त्री की हत्या की । फिर वह हनुमान के साथ लड़ न सका; अपनी सेना-सहित लंकानगरी के बाहरी वलय में आकर उसने डेरा डाला । —इस प्रकार कहते वाल्मीकि ने कथा आगे बढ़ायी (आगे की कथा शुरू की) । १ हारे मुखड़े को लेकर नगर में प्रवेश करना मानों अपनी वीरता की धीरता को कलंकित करना है; इतना ही नहीं, पिताजी को जो वचन दिया था उससे मुकर जाने के कारण मूर्ख कहलाऊंगा । तथा मैं निंदा-भाजन बनूंगा —इस तरह सोचते हुए इन्द्रजित् ने अपनी वंशपरम्परा की उन्नति के लिए कारणीभूत कुलदेवता को प्रसन्न कर लेना चाहा । तथा उसी उद्देश्य से वह आया । २ अपनी सेना को इन्द्रजित् ने इकट्ठा किया तथा कुंभिलि पर्वत के पठार में सप्त व्यूह रचना कर उसे खड़ा किया । तदनंतर मारण यज्ञ करने के उद्देश्य से राक्षस जाति के ब्राह्मणों को साथ लेकर निकुंभिला देवी के मंदिर के पवित्र मंडप में उसने प्रवेश किया । ३ कुंभिलि पर्वत के नज़दीक

एळु सुत्तिन लोड्डुमॆरॆदुदु शैलदोत्तिन लाजियिन्नू
रेळ रक्षोहिणिय संख्येय सकल सैनिकव
भाळनेत्र सरोजगर्भरि गॆळुयुग परियंत कावलु
कोळुवोगद परियवोलु पसरिसितु रात्रियलि ॥ 4 ॥
हॊक्कना क्रममंटपवनव नॆक्कतुळदलि नवविधदला
रक्कसन मनॆदेवतॆय नग्गळ निकुंभिळिय
एक्कसरदलि पूजिसिद नुणलिक्किदनु नरमांसवनु य-
ज्ञक्कॆ दीक्षित नाद नल्लिल मेलॆ शक्रजितु ॥ 5 ॥
वीर बाहु सुबाहु दुर्मद घोर बल दुर्जय दुरास
क्रूरदंष्ट्र कराळ दीर्घविकर्ण शशकर्ण
सारमेयानन वृकानन सैरिभानन मुख्यरनु सुर
वैरि तन्निदिरिनलि निलिसिद नंगरक्षणॆगॆ ॥ 6 ॥
अरुण सलिलाज्यगळ नरुणांवरव नरुण सुगंध सारव
नरुण पुष्पाक्षतॆय नायस्कांत पात्रॆगळ
करिय मॆक्कॆय काळसर्पन तरिसि तारॆय समितॆगळ सं-
वरिसि दीक्षित नादना खळ मारणाध्वरकॆ ॥ 7 ॥

सात वर्तुलाकार में सेना सुसज्जित हो खड़ी रही। सात अक्षोहिणी सेना उस दिन रात को इस प्रकार सज-धजकर खड़ी रही कि त्रिनेत्री शिवजी तथा ब्रह्माजी सात युगों तक लड़ें तो भी (उनके) वशवर्तिनी न होगी। ४ इन्द्रजित् ने बड़े धैर्य के साथ यज्ञमंडप में प्रवेश किया। अपने कुलदेवता (घर की देवता) की नवविधि अर्चना लगातार विधि-पुरस्सर की। मनुष्य-मांस का भोग चढ़ाया। फिर इन्द्रजित् यज्ञ के लिए कंकणबद्ध हुए। (यज्ञ-व्रतानुष्ठान उसने शुरू किया।) ५ वीरबाहु, सुबाहु, दुर्मद, घोरबल, दुर्जय, दुरास, क्रूरदंष्ट्र, कराळ, दीर्घ विकर्ण, शशकर्ण (खरगोश-सरीखे कानवाले), सारमेयानन (कुत्ते-जैसे मुखड़ेवाले), वृकानन (भेड़िये-जैसे मुखड़ेवाले), सैरिभानन (भैंसे-जैसे मुखड़ेवाले) वग़ैरः प्रमुख राक्षसवीरों को अपने अंगरक्षकों के रूप में खड़ा किया। ६ रक्त का घी, लाल कपड़ा, लाल सुगंध द्रव्य, लाल फूल तथा अक्षत, लोहचुंबकपात्र, काले रंग की फैलनेवाली एक प्रकार की बेल, कालसर्प आदियों को मँगवाकर, तारि के पेड़ की समिधाएँ तैयार कर मारण यज्ञ के लिए इन्द्रजित् तैयार हुआ तथा उसने यज्ञ की दीक्षा ली। ७ पेट को चीरकर अंदर की जठराग्नि को बाहर निकाला; हड्डियों

बसुर्र बगिदनु तेगॆदनुदरद विषम वह्निनय नसुर नॆलुबिन
हसरगळ समितॆयलि कोणत्नयद कुंडदलि
असुर विप्रावळियथर्वण दॆसॆव मंत्नागमदि संस्था
पिसिद नस्त्रावळि परिस्तरणदलि हुतवहन ॥ 8 ॥
आगलासुर कर्म विधिविहिता गमदलु दरामिषदला
छागगळ सलिलदलि कृष्णोरगन मांसदलि
मेगॆ तिर्यग्जातिगळ संयोगगळ नॆणगळलि नॆत्तरि
नोगरद चरुविनलि पुटगॊळिसिदनु हुतहवन ॥ 9 ॥
बेळिदनु बळिका हुतिगळ विताळिसितु होमाग्नि धूम
ज्वालॆयलि पसरिसितु पशुमांसद महागंध
गाळि नॆगहिदुदभ्रदमरर पाळयकॆ बॆदर्र्यितु रघु भू-
पालबलदलि हॊगॆय हॊरळिय हॊदर्र हॊय्लिनलि ॥ 10 ॥
कडलु कुदिदुक्किदुदु तारकि सिडिदववनिगॆ धरणि कंपिसि
नडगुतिर्दुदु सुरर नगरावळिय लखिळजन
मिडुकुतिर्दुदु तापदलि सॆखॆ हॊडॆवु तिर्दुदु दॆसॆगळलि मन
नडुगि रघुराजेंद्र बॆसगॊंडनु विभीषणन ॥ 11 ॥

को समिधाओं के तौर पर जुटाया। तीन कोनों के मध्य यज्ञकुंड (यज्ञ के लिए वेदी) का निर्माण किया। असुर जाति के ब्राह्मण अथर्वण वेद के मंत्रों का उच्चारण करने लगे। अस्त्रों को यज्ञकुंड के चारों तरफ़ दर्भाओं की तरह फैलाकर इन्द्रजित् ने यज्ञकुंड में अग्नि की स्थापना की। ८ तब अत्यंत भयानक कर्मों द्वारा शास्त्रोक्त रीति से पेट का मांस, रक्त का हविष्यान्न वग़ैरहों से अग्नि को प्रज्वलित किया तथा बकरों का रक्त, कृष्णसर्प का मांस, पशु-पक्षियों की चर्बियाँ, अन्य प्राणियों की चर्बियाँ आदि की आहुतियों से अग्नि को तेजस्वी बनाया। ९ उसके बाद इन्द्रजित् ने आहुतियाँ चढ़ा-चढ़ाकर होम किया। होमाग्नि की ज्वाला भड़क उठी। धुएँ के समूह के साथ मृगमांस की सुगंध हवा के कारण चारों ओर फैल गयी तथा वहाँ से आकाशस्थित देवताओं के पड़ाव तक पहुँची। गाढ़े धुएँ का यों फैलना देखकर रघुराम की सेना में आतंक छा गया। १० समुद्र खौलकर उमड़ उठा। नक्षत्र छट-छिटककर धरती पर गिरे। धरती काँप उठी। देवताओं की नगरियों में सभी संतप्त हो चटपटा उठे। दिशि-दिशाओं में ऊष्मा बढ़ी। मन ही मन काँपते हुए रघुराजेन्द्र ने विभीषण से इसका कारण पूछा। ११ "कितना

एनिदद्भुत ताप शिखि जठरानुगत वागिर्दे निशाचर
रेन नेनॆंदरो नमगॆ दुष्कृतिकार साधनव
नीनु बल्ल निन्न मनदनु मानवावुदु हेळु नमगॆन
ला नरेंद्रंगा विभीषण देव निंतॆंद ॥ 12 ॥
राम चित्तैसाभिचारद होमविदु रावणिय दिंदिन
तामसिय निव कळिदनादडॆ हरिवु बळिकॆमगॆ
आ महेंद्र विरोधि यॆंडॆगॆ सनामरनु वीळ्कॊंडु तदीय म-
हामदद्विष नळियॆ बळिकिदिरारु निमगॆंद ॥ 13 ॥
निन्न सेनॆयलुंटॆ वत्सर हन्नॆरडरूपवासदवरु वि-
भिन्न निद्रावशरु वनिता संगवर्जितरु
उन्नताहव वीररुळ्ळडॆ तन्न बळियलि कळुहु तडवे
किन्नु बेग विचारिसॆंदु विभीषणनु नुडिद ॥ 14 ॥
करव मुगिदिदिरागि निंदिर्दरि दिशापट वीर लक्ष्मण
नरसगॆंदनु भटर बेरिन्नरिसलेकॆनुत
निरवि सहितन वधॆगॆ वैरिय शिरव तंदिळुहुवॆनु देवर
चरण दडियलि चिंतॆ बेडिदर्किदु कैमुगिद ॥ 15 ॥

भयंकर है यह ताप! लगता है कि आग पेट में प्रविष्ट है। राक्षस हमारी बुराई चाहते हुए कोई करतूत तो नहीं कर रहे? क्या तुम जानते हो? तुम्हारी क्या राय है? मुझसे (स्पष्ट) कहो। इस तरह विभीषण से पूछने पर उसने राम से इस प्रकार कहा। १२ "सुनिए रामचन्द्र जी! वह इन्द्रजित् से आचरित मारण होम है। (कूटतंत्रयुक्त यज्ञ है।) आज की यह रात अगर यह बिता दे (वह यज्ञ में सफल बने) तो हमारा विनाश सुनिश्चित है। अतः इन्द्रजित् से लड़ने के लिए प्रसिद्ध वीर को भेजिए। उस अहमक शत्रु का अगर विनाश हो तो फिर आपका सामना कौन कर सकता है?" इस तरह विभीपण ने कहा। १३ "बारह वर्षों तक उपवास करनेवाले, न सोनेवाले, स्त्री-संग-विरहित क्या कोई आपकी सेना में है? ऐसा (संयमी तपस्वी) कोई श्रेष्ठ युद्धवीर अगर हो तो उसे मेरे साथ भेजिए। अब देर काहे की? शीघ्रातिशीघ्र पूछताछ कीजिए।" इस तरह विभीषण ने कहा। १४ सम्मुख आ पड़नेवाले वीरों को दिशि-दिशाओं में तितर-बितर कर देने में समर्थ वीर लक्ष्मण ने हाथ जोड़े प्रभु श्रीरामचन्द्र से निवेदन किया— "अन्य वीरों को ढूंढ़ने की तकलीफ आप क्यों उठा रहे हैं? शत्रुहत्या के लिए आज्ञा कीजिए। वैरी के सिर को लाकर श्रीचरणों में समर्पित करूँगा। इसके लिए चिंता मत कीजिए।" १५

निनगिनितु गुणवुंटेंयेन लॊंडननिमिषारिय गॆलिद गॆल विन
कॊनॆयलुसुवॆनीग बॆससॆनगॆनुत निंदिर्द
धनुतनुत्र शरावळिय कॊंडनुवरकॆ होऱवंटना या
मिनियॊळाहव धीर शौर्योदार सौमित्रि ॥ 16 ॥
कळुहिदनु बॆंबळिय तम्मन कॊळ्गुळद हदकंजुता खं-
डलन मॊम्मन नंजना नंदनन नग्निजन
बळिकवर संरक्षणॆगॆ कैगॊळिसिदनु जांबवर हरिदुद्दु
बलिमुखर बलुधाळि निर्बुद खर्व संख्ययलि ॥ 17 ॥
मुत्तिदरु बळिका शिलोच्चय कॊत्तलिक्किद बलद बॊब्बॆगॆ
कित्तु हाऱिदवद्रि निर्द्रुम वागलभ्रदलि
हत्तिदुद्दु कॆंधूळि सलॆतव रॊत्तिदरु बलु गडितदलि नॊरॆ
नॆत्तरोकुळियाय्तु शाकिनि डाकिनी जनकॆ ॥ 18 ॥
नाकुमैयलि निंदुकपिबल वौकि हॊक्कुदु हॊय्व मरदलि
नूकु वॆट्टॆंगळ करोग्र समग्र घातदलि
आ कपिगळुब्बटय कॊलॆय समीक दंगद रिंगणद लो-
कैक वीरर मुंड कुणिदवु कोटि संख्यॆयलि ॥ 19 ॥

"विभीषण के बताए गये आदर्श गुण क्या तुममें हैं ?" इस तरह पूछे जाने पर, "इन्द्रजित् को जीतने के वाद इसके बारे में बताऊँ; अब मुझे आज्ञा दीजिए।" इस तरह कहते लक्ष्मण खड़े रहे। धनुष-बाण, कवच आदि को लेकर, उस दिन रात को वह युद्धवीर महान पराक्रमी लक्ष्मण युद्ध के लिए रवाना हुआ। १६ फिर युद्ध में क्या गति होगी —यों सोचकर चिंतित हो राम ने भाई की सहायता के लिए अंगद, आंजनेय, नील आदियों को रक्षक के तौर पर भेजा। फिर उनकी रक्षा के लिए जांबव को तैनात किया। निर्बुद खर्व संख्या में वानर-सेना चढ़ाई करने के लिए आगे बढ़ी। १७ वानरों ने असुरों को घेर लिया। पहाड़ों से पीटते परे हटाते जो चीखे तो पहाड़ उखड़कर टूट-टूटकर उड़ गये। उन पर के पेड़ टूटकर धराशायी हुए। आकाश भर में लाल धूल भर गयी। मदमत्त राक्षस भारी हत्याकांड मचाए इन पर टूट पड़े। तब शकिनि-डाकिनयों को गरम रक्त की फाग, होली का भाग्य मिला। १८ हाथ में के पेड़ों से पहाड़ों से भारी भयानक वार करते चारों ओर से कपिसेना घेरकर राक्षसों पर टूट पड़ी। इन कपिवीरों से मचाये गये भारी हत्याकांड के शिकार बने राक्षस वीरों के मुंड करोड़ों की संख्या में उधम मचाते युद्धभूमि में नाचने लगे। १९ उस कुंभिलि पर्वत पर

एरुवरु तद्गिरिय निवरव रेउगोंड दिळेगेडहुवरु मगु
ळेद्रि हत्तुवरिवरु तलेमुट्टवरु होंडकरिसि
जारुगुट्टुवरी परियलि न्नूरुकर्णयद कदनदलि कलि
येद्रि कादितु सेने सेनेयळणुग केळेंद ॥ 20 ॥
अंतुटो सुग्रीवनाज्ञा मंत्रशक्ति महाधनव सा-
र्वते देशवनित्तु मन्नणेयलि महाभटर
संतविट्टव रोंदगुवदु तानितु दुर्लभ वखिळदेसेय व-
नांतरद स्वेच्छा विहारिग ळोंदगि ताजियलि ॥ 21 ॥
पडि बरिसि तलेयोत्तिकरिगळ कोंडहिदरु कुदुरेगळ जीवव
कोंडहिदरु कविदेसुव रथिकर रथदजोडणेय
हुडिबडिदरोळहोगुव पदचर पडेय पद्मजपुरवरद होद्र
कडेय होस पाळेयद तुदियलि काणलेतंद ॥ 22 ॥
हद्रियदीपरि कोंदडेयु नेसद्रिन जननके जावदर्धद
तेद्रहिनंतरविर्ददध्वर नडेदुदा खळन
तेद्रनिदल्लवु सुम्मनिर्ददे हद्रियदेनुत विभीषणनु रण
कुरुवघन भीषण गदा दंडवनु गल्लिसिद ॥ 23 ॥

वानरों के आक्रमण होते ही राक्षस उनको रोकते हुए धरती पर गिरा देते; फिर वानर उसकी चोटी तक चढ़ जाते; वानरों के बुर्ज की चोटी तक दिखायी देते ही उनको फिसलाकर राक्षस कूटे डाल रहे थे। इस प्रकार दो सौ बार वानर तथा राक्षस-सेनाएँ अत्यंत पराक्रम के साथ लड़ीं। २० सुग्रीव की आज्ञा में न जाने क्या जादू है! बहुत धन हाथ लगे, तथा बड़ी-बड़ी जागीरें पुरस्कार के तौर पर देकर गौरवान्वित करें—इस रीति से कई प्रकार महावीरों को प्रसन्न करें—तो भी इन वानरों की तरह जान पर खेलकर लड़नेवालों का मिलना दुर्लभ है, अत्यंत कठिन है। समस्त दिशि-दिशाओं के वन-उपवनों में स्वेच्छा से विचरण करनेवाले ये वानर—इस प्रकार युद्ध में जो आ जुटे हैं—यही एक आश्चर्यकारक घटना है। २१ वानर वीरों ने सामना कर, सिर दबोच कर कई हाथियों को गिरा दिया; घोड़ों के प्राणों को पटक दिया; घिर आकर बाण छोड़ रहे रथिकों के रथों को चकनाचूर कर दिया; अन्दर प्रवेश कर लड़नेवाली पैदल सेना को ब्रह्माजी की नगरी के बाहरी वलय में डेरा डालकर रहने को बाध्य किया। २२ "इस प्रकार हत्याकांड युद्धभूमि में चलते रहे तो कोई प्रयोजन नहीं; सूर्योदय होने में केवल आधा प्रहर बचा है। इन्द्रजित् का यज्ञ बेरोक-टोक चल रहा है। यह सही नहीं है; इस तरह निष्क्रिय

बट्टयनु सवरुवेंनु बेन्ननु मेट्टिबा सौमित्रि कविवि
त्तट्टि नसुरर नेंसुत हारदे बेंबलद भटर
मुट्टवि सिद्दु होत्तुरथवनु कोट्टुकळुहदे माणवज जय
तट्टिदैसद्र मेलेंवुत नडेगोंड नसुरेंद्र ॥ 24 ॥
आरि बोब्बिरिद्र दसुरपति रणभारदलि नडेगोंडु तेगेदनु
दारियनु सौमित्रि बरुवासुर चतुर्बलव
सेरिसिद नंबिनलि हिंदे समीर सुतनौकुव निशाटर
तीरबडिदनु होक्करी मुवरु मखालयव ॥ 25 ॥
ईत नी गमरेंद्रजितु मायातिशय कौशलनु माया
सीतेयवु कडिदंजिसिद कर्कश निशाचरनु
ईत नी गनुसारि तन्नय तातगव निदवनु बल्लिद
सीतेयनु बिडदिह छलोक्तियनेंदन सुरेंद्र ॥ 26 ॥
इत्त नोडतिकाय वैरि वियत्तळदोळैतह सरोजज
दत्त दिव्य वरूथवनु दिव्याश्ववनु सरळ

रहने से कोई प्रयोजन नहीं।" इस तरह कहते विभीषण अपनी भारी गदा उठाए युद्ध के मैदान में कूद पड़ा तथा उसने आक्रमण करना शुरू किया। २३ "सामने पड़े शत्रुओं की हत्या कर बीच में राह बनाता हूं; हे लक्ष्मण ! तुम सहायक मददगार कपि-योद्धाओं की प्रतीक्षा न करते (तुम पर) टूट पड़नेवाले इस तरफ़ के राक्षसों पर बाण-प्रयोग करते मेरे पीछे-पीछे आ जाना। समय नज़दीक आ रहा है। ब्रह्माजी शत्रु को रथ भेजे बिना न रहेंगे। तब (रथ प्राप्त हो जाने पर) हमारी विजय अनिश्चित है।" इस तरह कहते विभीषण आगे बढ़ता गया। २४ विभीषण ने गरजते, शोर मचाते, लड़ते आगे बढ़कर शत्रु-सेना के मध्य रास्ता बनाया। अपने पर चढ़ आनेवाली राक्षसों की चतुरंग सेना पर लक्ष्मण ने बाण चलाकर उसे तमाम कर दिया (हत्या कर डाली) ! पीछे से आकर टूट पड़नेवाले राक्षसों का काम हनुमान ने तमाम कर दिया। इस प्रकार विभीषण, लक्ष्मण तथा हनुमान —इन तीनों ने यज्ञमंडप में प्रवेश किया। २५ "यही है वह इन्द्रजित् जो मायावी विद्या में अत्यंत चतुर है। यही है वह क्रूर राक्षस जिसने मायासीता को काटकर हमको भयभीत किया था। यह अपने पिता का मददगार है। इसीलिए इसके पिता रावण सीता-विमोचन न करने की जिद्द पकड़े हुए है।" इस तरह विभीषण ने कहा। २६ "हे अतिकाय को मारनेवाले लक्ष्मण, इधर देखो; आकाशमार्ग से ब्रह्माजी का दिया दिव्य रथ, दिव्य अश्व, बाण,

बत्तळिकॆयनु बवरकिवु कैवर्तिसलु कडॆगाल वॆमगि-
न्नुत्तरव देनिदकुपायव काणबेकॆंद ॥ 27 ॥
कोपकिडियिडॆ समर मुखदाटोप कुडियिडॆ वीररसदा-
ळाप कडलिडॆ कलिमनद कदन प्रतापकद
रूपु रंजिसॆ रामदूताळाप रागिसलॊदॆद नैबळि-
का पुरंदरजितुविनाहुति सिडियॆ सौमित्रि ॥ 28 ॥
तिरुगितज कळुहिद महारथ मरळि मारुत मार्गदलि क-
ण्दॆरॆदु नोडिदनवनिवरु नुक्किकरॆव रोषदलि
धुरकॆ बारलॊ खूळ मरणा ध्वरद हंबल बिसुडॆनुत निज
चरण दिंदॆब्बिसिदनाहव कमर दल्लणन ॥ 29 ॥
एळु दैवद्रोहि भूदिविजाळि निंदक निंदिरसुरर
कालकर्मद मृत्यु बंदिदॆ नोडु कण्दॆरॆदु
काळगव कॊडु हिडि निजायुध बेळुवॆय बेळंब साकि-
न्नेळॆनुत कटवाय नॊदॆदनु मत्तॆ रावणिय ॥ 30 ॥

तरकस —ये सब आ रहे है। युद्ध के लिए (सहायक हो) आ रहे ये अगर इन्द्रजित् के हाथ लगे तो हमारी अंतिम घड़ियाँ सुनिश्चित समझो। इसके बारे में तुम्हारी राय क्या है? इसके लिए कुछ उपाय करना ही चाहिए।" इस तरह विभीषण ने कहा। २७ क्रोध जब धू-धू कर प्रज्वलित हुआ, युद्ध का आवेश जब बढ़ा, वीररस-पूर्ण वचन जो उमड़ पड़े, वीरतापूर्ण मन के युद्धपराक्रम ने जब पराकाष्ठा की उग्रता धारण की, रामदूत हनुमान ने खुशी से जब खूब प्रशंसा की तो लक्ष्मण ने इन्द्रजित् पर ऐसी लात जड़ी कि उसके हाथ की आहुति छिटककर दूर जा पड़ी। २८ ब्रह्माजी का भेजा हुआ दिव्यरथ आकाश-मार्ग से लौट पड़ा। उफनते महान क्रोध से उसने (इन्द्रजित् ने) आंखें खोल इनकी ओर देखा। "रे नीच, युद्ध के लिए तैयार हो जा; मारण-होम की आशा त्याग।" इस तरह कहते लक्ष्मण ने देवताओं को चीरने वाले इन्द्रजित् को पैर से खींचकर युद्ध के लिए उकसाया। २९ "रे देव-द्रोही, उठ। रे रे ब्राह्मण-निंदक! उठ खड़ा हो जा; राक्षसों की मृत्यु की मृत्यु तेरे सम्मुख खड़ी है; आँख खोलकर देख; लड़ने के लिए आ जा; ले ले अपना आयुध; यज्ञ की आशा (अब) त्याग। बस है; उठ।" इस तरह कहते लक्ष्मण ने इन्द्रजित् के मुँह के कोर पर लात जमायी। ३० परस्त्री-द्रोह के लिए सहायक होनेवाले को नरकगामी होना ही पड़ता है

परसति द्रोहानुकूलतॆ नरक कॊय्यदॆ बिडुवदे सुज
नर मनःखेदाग्नि सुडदिहुदे खळाटविय
हरण रक्ष निमित्त मरणाध्वरद कृतकव नोडि्डदरॆ हित
करवहुदॆ बिडु बेग कलियागेळु रणकॆंद ॥ 31 ॥
ऎंद्दनव कॆंदरि्द बणबॆयॊळॆद्द काळ्गिच्चिन वॊलुरॆ हॊद-
रॆद्दकंगळ किडिय नासापुटद कब्बॊगॆय
ऎंद्दरोषदि मूरुलोकवनुद्दि नुंगुव हरन खतियनु
कद्दनॆनॆ कालिक्किदनु निजरथदॊळिद्रजितु ॥ 32 ॥
कॊडुबंदनॆ निन्न नी मूसुंडिरक्कस निवन रक्तव
हिंडि निन्न पराक्रमाग्निय कॆडिसि कपिबलद
इडॆ गरुळनु तिंबॆ हिडि कोदंडवनु बिडु बाणवनु भय
गॊंडु हिंगुव वीरने तानॆनुत तॆगॆदॆच्च ॥ 33 ॥
ऎच्च बाणव नीतनॆडॆयलि कॊच्चि कणॆगळ लभ्रतळवनु
बॆच्चनै बॆळगादुदनु जगवरि्यदादुदॆनॆ
ऎच्चनातन नीत नीतन नॆच्चनवनुभयास्त्र दॆसॆगळु
मुच्चिदवु चुंबिसिद वंबरदमर संततिय ॥ 34 ॥

न ? सज्जनों के मन में प्रज्वलित दुःख की आग राक्षस रूपी अरण्य (जंगल) को जलाए बिना कैसे बुझे ? प्राण-रक्षा के उद्देश्य से मारण-होम (यज्ञ) का षड्यंत्र रचे तो उससे भला कैसे होगा ? तुरंत इस यज्ञ को रोको। युद्ध के लिए धैर्य धरकर उठो।" इस प्रकार लक्ष्मण ने कहा। ३१ पुआल के ढेर से लपके दावानल की तरह आँखों से चिनगारियों का ढेर बरसाते, नथुनों से काला धुआँ बरसाते (फैलाते) इन्द्रजित् उठा। क्रोध से उन्मत्त हो, मानों तीनों लोकों को निगलकर चबा जानेवाले शिवजी के क्रोध को चुरा लाये हों—इस प्रकार भयानक रीति से चिढ़कर इन्द्रजित् रथ पर सवार हुआ। ३२ "यह कलमुँहा राक्षस तुझे ले आया न ? इसके खून को निचोड़कर, तेरी वीरता की आग को बुझाकर, कपिसेना की अंतड़ियों की माला को खाए डालता हूँ। ले लो अपना धनुष। छोड़ दो बाण। क्या मैं डर के मारे पीछे हटनेवाला वीर हूँ ?" इस तरह कहते इन्द्रजित् ने तीर छोड़ा। ३३ इन्द्रजित् से छोड़े गये बाण को बीच में ही काट डालकर, अपने बाणों से लक्ष्मण ने आकाश को मानों टाँकों से जोड़ दिया; आकाश के यों ढाँपे जाने से सुबह होने की दशा जगत को मालूम ही न हुई। इन्द्रजित् ने लक्ष्मण पर बाण छोड़े;

कूडितसुरन बळिय नायक वाडिगळु बळिसलिसि कपिबल
जोडिसितु जाह्नविय तंदॆय तम्मनॊत्तिनलि
आडलेनद नसम समरस गाढवनु बळिकिब्बरलि किडि
याडिदवु कर्णकर्णॆय हॊय्लिनलभ्रदळतॆयलि ॥ 35 ॥
खणखणत्खण खणिलु खणिलॆंदर्णदवंबुगळलिब्बर
कर्णॆय कडितदलॆद्द किडियडरिदवु मेल्जगव
ऎणिसला युगवी युगद सुरगणद रक्कसगणद सुभटर
लॆणॆय कार्णनु लक्ष्मणंगमरेंद्र जितुविगॆ ॥ 36 ॥
मॊळगिदवु रणवाद्यवाचॆय लॊलिदु दब्बर वीचॆयलि कै-
लुळिय शरसंधान दॆसुगॆय चळचमत्कृतिय
हिळुकु हिळुकिन संदणिय सरगॊळिसिदस्त्रानीक दुब्बिन
विलसदब्बर तुंबिदुदु संग्राम भूमियलि ॥ 37 ॥
कडिद कर्णविडुगळ लूर्वरॆ झडिदुदाशा भित्ति कर्णॆयि
दिडिदुदंबर तुंबिदुदु बाणांबुराशियलि

लक्ष्मण ने इन्द्रजित् पर बाण छोड़े। इन दोनों वीरों से छोड़े गये बाणों से दिशाएँ ढँक गयीं; उन्होंने (बाणों ने) जाकर देवताओं को भी चूम लिया। ३४ इन्द्रजित् की सेना के मुखिए उसका अनुसरण करते आकर उससे मिले। कपिसेना भी गंगाजी के पिता, जो विष्णु हैं, उनके अवतारी राम के भाई लक्ष्मण के नजदीक आ, खड़ी रही। इन्द्रजित् तथा लक्ष्मण के मध्य हुए भयानक युद्ध का वर्णन किन शब्दों में किया जाय ? दोनों से प्रयुक्त बाण आकाश में एक-दूसरे से टकराकर चिनगारियों की वर्षा करने लगे। ३५ इन्द्रजित् तथा लक्ष्मण से छूटे बाण एक-दूसरे से टकराकर 'खन', 'खन'; 'सन', 'सन' का शब्द करने लगे। एक-दूसरे के बाणों की भयानक टकराहट से निकली चिनगारियाँ ऊर्ध्वलोक की ओर उड़ीं। वैसे तो विचार कर देखें तो पूर्व युग के देवता तथा राक्षस लक्ष्मण तथा इन्द्रजित् की होड़ कर नहीं सकते (दोनों का तुलना हो ही नहीं सकती)। ३६ उधर राक्षस-सेना में युद्ध के गाजे-बाजे बजने लगे; उसी वक्त यहाँ तो धनुर्विद्या-कौशल्य के साथ-साथ बाण छूटने की गूँज उठी। पंखों से युक्त (पुच्छल) बाण धनुष पर चढ़ाकर लगातार अस्त्रों के छूटने की ध्वनि (शोरगुल) सारी युद्धभूमि गूँजने लगी। ३७ कटे बाणों के ढेर से सारी धरती पट गयी (भर गयी)। दिशि-दिशाओं में बाण ही बाण दिखायी पड़ रहे थे। बाण-समूह ने सारे आकाश को आच्छादित कर दिया। राक्षस-सेना ने अपने ढाल ऊपर उठाकर उसके नीचे आश्रय ले गिरते बाणों

हिडिद हरिगॆयनॊड्डि तलॆगळ मडगिदुदु रक्कसर बलमरॆ
विडिदु गिरिगळ नॊड्डि निंदुदुसेनॆ वानरर ॥ 38 ॥
एऱिसिद हुब्बुगळ मिगॆकॆंपेऱि कॆंदऱिद दृष्टिगळ नल
वेऱि निलुकद कायगळ कर्णांत मुष्टिगळ
तूऱु गर्णॆगळ तोऱिकॆय सरळेऱ बाय्गळलॊगुव नॆत्तर
जोरुगळ जोडणॆय भटरॊदगिदरु सरिसदलि ॥ 39 ॥
अॆसुगॆयलि सौमित्रि कौतुकदॆसुगॆयनु सुरसैनिककॆतो-
ऱिसिद नॊंदॆ सरळिनलि रिपुहय चतुष्टयव
दॆसॆचतुष्टयकॆच्चु सूतन नुसुरुगॊंडिसि वरूथचक्रव
वसुधॆ गॊऱगिसि पदचरन माडिदनु प्रतिभटन ॥ 40 ॥
अॆलवॊ रावणि मादुदेकत्तलॆय कटकवनॊड्डि गगन
स्थळदॊळगॆ मैदोऱ दॆसुवुब्बळुतनविदु
कलिगळिगॆ गुणविदु कणा दुर्बलद रणगळ्ळरिगिदेगुण
वळिदडॆयु जीविसि दडॆयु रणनिंदॆयल्लॆंद ॥ 41 ॥
कायवनु बॆचिडदॆ बिडुनिज सायकव समगलहवीगिदु
मायॆयनु मरॆगॊंबुदनुचित जगद वीररिगॆ

से अपने सिर को बचा लिया। वानरों ने पहाड़ों को अपने सिर पर छत्र की भाँति धरकर गिरते बाणों से अपनी रक्षा कर ली। ३८ भौंहें चढ़ाए, जलती दृष्टि (लाल आँखें) रोपे, उत्साह से सीधे खड़े हो, पछोड़ते बाणों को मूठ में धर, कानों तक (प्रत्यंचा) खींचे, बाणों के चुभने से हुए घावों से ज़ोर से बहते रक्त में सने वीर एक-दूसरे की बराबरी करते भयानक रीति से लड़े। ३९ लक्ष्मण ने अपने बाण-प्रयोग से देवताओं के सैनिकों को भी अचरज में डाल दिया; एक बाण से शत्रु (रथ) के चार घोड़ों को चार दिशाओं में उड़ाकर सारथी को मार डाल, रथचक्र को धरती पर लुढ़काकर इन्द्रजित् को धरती पर खड़ा होने के लिए बाध्य किया। ४० "रे रे रावण के बेटे, घनघोर अंधेरा फैलाकर अदृश्य हो खड़े हो, आकाश-मार्ग से बाण चलाने की चालाकी का घमंड तो समाप्त हुआ होगा न ? मरें या जिएँ; वीरों की शोभा इस तरह युद्ध करने में ही है; लेकिन तुम जैसों की शोभा तो, जो युद्धचोर हैं, कमज़ोर हैं, इसी में है। यह युद्ध निंदा नहीं।" —इस प्रकार लक्ष्मण ने कहा। ४१ "(अब) अपनी देह को छिपाए विना (अदृश्य हुए बिना) अपने अस्त्रों का प्रयोग करो। (तभी) यह बराबरी का युद्ध होगा। माया का आश्रय लेना जगत के वीरों को शोभा नहीं देता। तुम्हारे पिता की सेना के वीर तथा देवता तुम्हारी वीरश्री देखें।"

रायकटकद भटरु रणकट्टायतिकॅयनु नोडलमरनि
कायवॅनु तॉदंबिनलि कडिदिळुहिदनु धनुव ॥ 42 ॥
पूतुरे बिल्लाळुमामा भूतनाथंगिल्लवी वि-
द्यातिशय मज्झभापु लेसॅंदॊलॅ नवयवव
वातसुतनाहव जगद्विख्यातनै रामंगॅ सरिय
दात हॊगळिदना विभीषणना नृपानुजन ॥ 43 ॥
कॊल्लॆ नस्त्राळिगळु कैगळ लिल्लदन गतरथन बवरकॆ
बिल्लको हॊसरथव नी निजवागि मेळैसु
कुळ्ळिरिसु कूबरद मणॅयलि बल्लसूतन नूतनद रण
मल्लनागॆंदभयवित्तनु नगुत सौमित्रि ॥ 44 ॥
आ निमिषदलि चाचितसम नवीन रथ हाय्दडरु तंबिन
सोनॅयनु सैगरॆदना कार्मुगिल मळॆयंतॆ
एन हेळुवॆ नीत नहितन नूनशिरसंततिय सवरि स-
मान रचनॅय रणव मॆरॆदुब्बिबरॆद निदिरिनलि ॥ 45 ॥
अॅच्च निद्राराति मायॅय मुच्चिकॅय निदिरॊड्डि लक्ष्मण
नॅच्चना माया विकारिय बाण पंजरव
मुच्चुमरॆयलि हद्दु हावुगळॆच्चरॆसॆ नीवुळिदॆनॆंदे
नच्चिदिरिलायॆनुत बॊब्बिबरॆदॆच्च निद्रारि ॥ 46 ॥

इस तरह कहते लक्ष्मण ने एक बाण चलाकर इन्द्रजित् के धनुष को काट डाला। ४२ "शाबाश! हे धनुर्विद्यावीर, धन्य धन्य! भूतनाथ शिवजी को भी धनुर्विद्या की इतनी चतुराई नहीं। धन्य धन्य! वाह वाह!" इस तरह कहते मारुति ने अपने अंगांग नचाए। "धनुर्विद्या में तू सचमुच जगत्प्रसिद्ध है। राम की बराबरी कर सकता है!" इस तरह कहते विभीषण ने लक्ष्मण की प्रशंसा की। ४३ "जिनके हाथ में अस्त्र नहीं है और जो रथविहीन है, उनकी मैं हत्या नहीं करता। युद्ध के लिए धनुष उठाओ। नये रथ को तैयार कर लो। अनुभवी सारथी को रथ के अग्रभाग में (जुए पर) बिठाओ। नये सिरे से युद्धवीर बनो।" इस तरह मुस्कुराते हुए कहते लक्ष्मण ने इन्द्रजित् को अभयहस्त प्रदान किया। ४४ उसी समय एक विनूतन अद्भुत नया रथ आकर इन्द्रजित् के नज़दीक खड़ा हुआ। इन्द्रजित् ने उस रथ पर सवार हो काले बादलों की वर्षा-सदृश बाणों की वर्षा की। लक्ष्मण ने शत्रु के अमोघ बाणसमूह को काट डालते उसको बराबरी के युद्ध का मौक़ा देते घनघोर गर्जना की। ४५ इन्द्रजित् ने अपने सामने माया के परदे का निर्माण कर लक्ष्मण पर बाण

आरु बल्ला बॊम्म हरसुव हारुवनु जवकिंकरनु का-
मारि भिक्षुकनॆमगॆ तॊत्तिरु मृत्यु मसणिगळु
हारविसदिरु हिंदणवदिरु तीरिदरु रणकॆंदु कदनक-
ठोर गति बेरिदॆयॆनुत बॊब्बिरिद निंद्रारि ॥ 47 ॥
मत्तॆ माणिरि मूगुहोदरॆ हत्तिसिदने कमलभव नि-
म्मत्तॆगळिदसुररनु जवतंदित्तने निमगॆ
मृत्युवनु गॆद्दात जीवव नॆत्तिदनॆ निम्मय्यननुजन
कत्तॆयो रक्कसनॊ नीनॆनुतॆच्चना खळन ॥ 48 ॥
सरळनव कत्तरिसि रघुजा वरजगॆदनु मुंदगाजिय
हरुह नोडा तोरिदडॆ तरिदिळुहुवॆनु तलॆय
मरुळुगळु नररकट नॆरॆकॆट्टरि विभीषणनॆंब बलु बो-
सरिगननु नॆरॆनंबि नम्म विरोधदलियॆंद ॥ 49 ॥
कॊलिसि नम्मनु निम्मकैयलि गॆलव तोरिसि निमगॆ तुदियलि
कॊलुव निम्मनु कॊबनॆम्मय निम्मधरणिगळ

चलाए। लक्ष्मण ने उस मायावी के बाणों के पिंजरे पर बाण चलाए। "लुकाछिपी में बाज साँपों ने तुमको जो सावधान किया—इससे तुम बच गये—इस तरह के भरोसे पर हो न ?"—इस तरह कहते सिंहनाद करते इन्द्रजित् ने बाण छोड़ा। ४६ "जानते हो कि हम कौन हैं ? ब्रह्माजी प्रतिनित्य आकर हमें आशीर्वाद देनेवाला ब्राह्मण है; यम हमारे सेवक हैं; शिवजी हमारे यहाँ आकर भीख माँगते हैं, मरघट की योगिनियाँ हमारी दासियाँ हैं; इस आस-भरोसे पर न बैठो कि इसके पूर्व में (पहले) हमारी तरफ़ के वीर तुम लोगों के हाथों मरे। भविष्य का युद्धक्रम ही अत्यंत कठोर है।" इस तरह कहते इन्द्रजित् गरज उठा। ४७ "फिर भी तुम अपनी चाल (आदत) छोड़ते नहीं; तुम्हारी फूफी शूर्पणखा की कटी नाक को क्या ब्रह्माजी ने आकर चिपका दिया ? उसके लिए लड़नेवाले खर-दूषण आदियों को क्या यमदेवता ने जिलाकर तुम्हें वापस ला दिया ? मृत्युंजय शिवजी ने क्या तुम्हारे बाप के भाई (कुंभकर्ण) के प्राण बचाए ? तू क्या गधा है या राक्षस है ?" इस तरह ताने देते हुए लक्ष्मण ने इन्द्रजित् पर बाण छोड़ा। ४८ इन्द्रजित् ने लक्ष्मण के बाण को काटते हुए कहा—"भावी युद्ध का विस्तार देखो। दिखा दें तो बस ! (दिखा देने की ही देर में) सिर को काटकर गिरा दूंगा। मनुष्य मूढ़मति हैं। विभीषण जैसे भारी धोखेबाज़ का भरोसा करके हमसे द्वेष मोल लेकर अपने को विनष्ट कर लिया।" ४९ "विभीषण तुम्हारे हाथों

इळॆय मगळिगॆ मनव माडिदु तॊळसि तंदकुमंत्रविदु निम-
गॊळगु तिळियदॆ कॆट्टरकटकटॆंद निंद्रारि ॥ 50 ॥
आव परियलि हॊक्कनिवनॆंबी विचारवनरियदादिरि
देवनिव विश्वासघातक कुटिलकुहकरिगॆ
हावु मॊक्कॆय हण्णिनंदद जीवियिव मित्रत्व हद्दिदगॆ
हाविगुंटे तुदिय निम्मय विधिय नॊडॆंद ॥ 51 ॥
ऎलवॊ सुभटाधमनॆ कदनदॊळळवडद मायॆयनु मातिन
बळकॆयलि बॆदरिसलु बॆदरुवरॆंदु बगॆदॆयॆल
कलुमशद चिप्पिनलि मुक्ताफलवु हुट्टलु कॊरतॆये नि-
र्मल विभीषणनॆंबुदनु नावरियॆवेयॆंद ॥ 52 ॥
साकु बगुळदिरिन्नु हयवनु नूकुकणॆगळ कळुहु माया
व्याकरण पांडित्यवनु नम्मॊडनॆ मॆरॆयदिरु
सोकिदी पातकवु निम्मनु साकुबल्लुदॆ बेगमाडु स-
मीकविदु निन्नसुविगंतवॆनुत्त तॆगॆदॆच्च ॥ 53 ॥

हमारी हत्या करा के तुम्हें जीत की लालच दिखाते आखिर तुम्हारी भी हत्या करके तुम्हें और तुम्हारे राज्य को अपने वश में कर लेगा। सीता के लिए मन करते हुए (सीता को पाने की लालच से) उत्पन्न हुई यह सारी गड़बड़ है; षड्यंत्र है। हाय रे दैव! अन्दरूनी रहस्य बिना जाने तुमने अपना सत्यानाश कर लिया।" इस प्रकार इन्द्रजित् ने कहा। ५० "वह किस तरह छल-कपट रचकर तुम्हारे शरण आया —बिचारे तुम क्या जानो! यह विभीषण-देव कपटियों तथा वंचकों से बढ़कर परले दर्जे का विश्वासघाती है। यह आस्तीन का साँप है। बाज़ और साँप की मित्रता कभी संभव है? आखिर तुम्हारी गति क्या होगी देखते रहो।" इस प्रकार इन्द्रजित् ने कहा। ५१ "रे नीच वीर! युद्ध में जिस माया के द्वारा तुम जीत साध न सके उसे इन मोहक बातों के विस्तार से डरा-धमकाकर साधना चाहते हो? क्या तूने यह समझ लिया कि इन घुड़कियों से डर जायेंगे? गंदे सीप में मोती पैदा हो तो इसमें ग़लती क्या है? क्या तू समझता है कि हम यह नहीं जानते कि विभीषण कितना परिशुद्ध है।" इस तरह लक्ष्मण ने कहा। ५२ "इतना जो कहा यथेष्ट है; अब अधिक मत बको। घोड़े को आगे बढ़ाओ; छोड़ दो (चलाओ) अपने बाणों को। हमारे सम्मुख अपना माया-व्याकरण-पांडित्य-प्रदर्शन जो कर रहे हो वह अब बन्द करो। तुम पर पाप का पहाड़ जो है वह क्या तुम्हारी रक्षा कर सकेगा? अब जल्दी कर। यह युद्ध तुम्हारे प्राणों

मुसुकिदंबिन बंबलनु निप्पसरदलि तरिदोट्टि रावणि
मुसुकिदनु मागधिय मगननु मार्गणंगळलि
अंसुव कळचुव कणय कदनद कोसर तोटियलवनितळ बा-
रिसितु तोरवेयराय चिंतिसुतिर्दननुजंगे ॥ 54 ॥

नलवत्तमूरनेय संधि

सूचने– अमम वीर हिरण्यकन विक्रम नृकंठीरवन रण संभ्रमकं शतगुणवेनलु कादिद रुभय पटु भटरु ।

वसुमती पति सूनु केळ् रक्कसन रणरंजकव नावे
नसुर सुर मानव भुजंग रोळिल्ल हेळुवडे
हेसरु गोळ लंबोजभव निर्मिसिद सृष्टिय लादि मध्यद
विषम वीररोळिंद्रजितु विगारु सरियेंद ॥ 1 ॥
बहळ बल बलरिपु विरोधिय वहणे बेरसुगेयलि तोरिद
नहित नंगद लेळु साविर बाण वोंदरलि

का समाप्तिगीत गायेगा।" इस तरह कहते लक्ष्मण ने बाण चलाया। ५३ घिरे आए बाणों के आवरण को बड़ी निष्ठुरता के साथ काटते हुए, ढेर बनाते हुए इन्द्रजित् ने लक्ष्मण को अपने तीरों से ढँक दिया। बाण छोड़ना तथा छोड़े बाण को काट डालना –इस प्रकारकी क्रिया-प्रतिक्रिया के स्वरूप टकराते बाणों के आधिक्य के कारण धरती काँपने लगी। श्रीराम अपने भाई के लिए चिंतित थे। ५४

तैंतालीसवीं संधि

सूचना– बाप रे! वीर हिरण्यकशिपु तथा पराक्रमी नरसिंह के बीच हुए युद्ध-वैभव से सौ गुने बढ़कर यह युद्ध हो रहा है –इस प्रकार भावना पैदा करते दोनों वीर– इन्द्रजित् तथा लक्ष्मण लड़े।

हे राजकुमार, इन्द्रजित् राक्षस के युद्ध की शोभा-सौंदर्य का वर्णन पहले सुनो। राक्षस, देवता, मनुष्य तथा नागों में किसी का नाम बताना चाहूँ तो इन्द्रजित् की बराबरी करनेवाला उनमें कोई नहीं दिखायी देता। ब्रह्म-सृष्टि के आदि तथा मध्यकाल में वीर इन्द्रजित् की बराबरी कौन कर सकता है? –यह महर्षि वाल्मीकि ने राजकुमार कुश-लव को समझाया। १ अत्यंत बलशाली इन्द्रजित् का युद्ध-विलास (लड़ने का ढंग) ही निराला है; देखते-देखते एक बाण की जगह सात हज़ार बाणों की

ग्रहिसु वंदिद्रारियोळु विग्रहके निदमरेंद्र नुरु वि-
ग्रहद कोपद कंगळवोलति काय हरनेसेद ॥ 2 ॥
मगुळे सरळोंदरलि हृदयव हुगिलु गोरॆदनु नैरु तास्त्रद
लगुळिदॆरॆ दरुणांबुवनु कुंभिनिय मैननेये
तॆगॆदेसुव कैलुळिय बलुहिन विगुहु बिट्टुदु बळलिकॆय मै-
दॆगहि नोडियन कंडुकविदुदु कपिभटव्रात ॥ 3 ॥
कविद नीलन निक्किदनु मुंचुव मरुद्गण राजपुत्रन
पवडिसलु सॆक्किदनु सरिसद लोदगुव बुजजन
भवन बीळलु कुक्किदनु रिपु बवर कंगॆसिद गवाक्षन
गविय हरणव हिक्किदनु सोक्किदनु समरदलि ॥ 4 ॥
नळन नळिसिदना सुषेणन हलुगिरिसिदनु गजन गवयन
नॆलके बीळिसि तीरिसिद नवरवर सैनिकव
मलॆत हनुमन हूळिदनु होंबॆळकुगळ होस सरळिनलि कै-
लुळिय तोरिद नय्य ननु जंगार्दु शक्रजितु ॥ 5 ॥

बर्षा शत्रु पर हो इस अद्भुत रीति से उसने बाण-प्रयोग किया। इस कारण, जैसे पूर्व में इन्द्रजित् से युद्ध करते-करते इन्द्र संतप्त हुआ था उसी रीति से अब अतिकाय की हत्या करनेवाला लक्ष्मण चिढ़ गया (क्रोधसंतप्त हुआ)। २ फिर इन्द्रजित् ने एक बाण चलाकर लक्ष्मण की छाती में छेद कुरेद दिया। नैरुतास्त्र बाण लक्ष्मण की छाती में चुभ गया। उसको निकाल देते ही इतना रक्त चू पड़ा कि धरती भीग गयी। बाण छोड़नेवाले लक्ष्मण के हाथों की चालाक कसावट ढीली पड़ गयी; थकावट के मारे चुपचाप खड़े लक्ष्मण को देख कपिवीरों के समूह ने इन्द्रजित् को घेर लिया। ३ अपने पर चढ़ आनेवाले नील को गिरा दिया; आगे बढ़नेवाले वाली-कुमार अंगद पर बाण चलाकर उसे धरती में ऐसे गाड़ दिया कि वहीं वह सो जाय; युद्ध चाहते आए गवाक्ष को ऐसे ठोंका कि उस धक्के से ब्रह्माजी का छत्र टूटकर गिरे; गवि (?) के प्राण हर लिये। इस तरह लड़ते-लड़ते इन्द्रजित् अकड़ गया। ४ इन्द्रजित् ने नल को जला दिया; सुषेण को दाँत निपोरने को बाध्य किया; गज तथा गवय को धराशायी कर, उनके सैनिकों की हत्या कर डाली; मस्त होकर आए हनुमान को गाड़ दिया; अपने पिता के भाई विभीषण पर सुनहली रोशनी के नये-नये बाणों का प्रयोग करते सिंहनाद कर अपना हस्त-कौशल्य प्रकट किया। ५ कौशल्यपूर्ण ढंग से आगे बढ़ते हुए इन्द्रजित् ने युद्ध के लिए

जारि वरिवरि दॆंच्च नॊंदगिद वीर कपि नायकर मरळिदु
मारुतिय नोयिसिद मुंदण मागधी सुतन
कूरलगिनलि मुसुकि बॊब्बिरिदारि तेरनु तिरुहि निदु प-
चारिसुत कैयिक्किदनु कदनक्कॆ विभीषणन ॥ 6 ॥
बगॆवने बवरवनु मुळिदडॆ मिग विभीषण देव देवा
दिगळु भोयॆनॆ कॊंडनग्गद विग्रहद गदॆय
नॆगॆदु हॊय्दनु रावणिय रथदगडुतन नुग्गागॆ नॆल बा
य्दॆगॆय लूळॆ फणींद्र बीळॆ दिशेभ संदोह ॥ 7 ॥
गदॆय हिडिदाक्षण वरुथव नॊंदॆदु चिम्मिद नसुर नय्यन
कडॆनदति भीषणव बल्लव नागि बळिरथक्कॆ
सदकिदनु बळिकात रणकॊंदगिद महारथ मंडळिय मद-
रदनिगळ मावुतर राव्तर हयव कालाळ ॥ 8 ॥
अनितरॊळु संतैसि राघव ननुज नग्गद चाप मौर्वी
निनदवनु नॆगहिदनु नळिन भवांड गुम्मिडलु
हनुम नुब्बिरि दिरिय तेरिन तनि वरिय तडॆदारिदनु सं-
जनिसिदुदु समराभि मानिगळुभय वीररिगॆ ॥ 9 ॥

वह आनेवाले कपिनायकों पर बाण चलाया; हनुमान को फिर घायल किया, और सामने उपस्थित लक्ष्मण को पैने बाणों से ढांपकर सिंहनाद किया। रथ को पलटाकर खड़े हो ताने देते हुए विभीषण से युद्ध करने लगा। ६ संतप्त विभीषण युद्ध की परवाह क्यों करें? (युद्ध से कैसे मुंह मोड़ें?) देवता 'हाय तोबा' मचाने लगे तो विभीषण ने अपनी युद्ध की भारी गदा उठाकर इन्द्रजित् के रथ पर दे मारी। मर्यादा तोड़ आगे बढ़ते समय वह रथ इस गदा के भारी आघात से चकनाचूर हो गया तथा उस (गदा के) आघात से धरती में दरार पड़ गयी। आदिशेष चीख पड़े। दिग्गज धरती पर गिर पड़े। ७ अपने चाचा की युद्धभयानकता जानने वाले इन्द्रजित् ने विभीषण के, हाथ में गदा उठाते ही अपने रथ को लात मारी तथा उछलकर वह दूसरे रथ में चला गया। तब विभीषण ने युद्ध में उपस्थित महारथिकों, मदोन्मत्त हाथियों पर बैठे महावतों तथा घुड़सवारों, घोड़ों तथा पैदल सैनिकों पर वार किया। ८ इतने में लक्ष्मण चेत गये; उन्होंने प्रत्यंचा खींचकर धनुष्टंकार किया; वह शब्द ब्रह्मांड भर में व्याप्त हो गया। हनुमान ने जोश में आकर शत्रुरथ का आगे बढ़ना रोकते सिंहनाद किया। दोनों वीरों में युद्ध करने का अहंकार जाग

मलॆंतरिव्वरु मत्त मदकरि मलॆव वोलु मदद्रुब्बुगॊब्बिन
कलितनद कैमॆगळ मॆरॆदरु कणॆय कडुहिनलि
खळि पुळिलु खणिखटिलु गर्गरगळ महा मार्गणगणं गळ
बलुसबुद सडगरिसलॆ च्चाडिदरु सरिसदलि ।। 10 ।।
हळचिदवु कणॆ कणॆगळनु खंडळिसिदवु कणॆ कणॆगळनु सी-
ळ्दुळिदु हाय्दवु कणॆकणॆय कणॆ कणॆगळॆ सुगॆयलि
कुळुगिडिय कावॊगॆय बलु मंडळिय वीरिद वभ्रदलि शिखि
सुळिदु सुर लोकवनु सुड बगॆदुदु निहारदलि ।। 11 ।।
बळिक लघुसंधानदॆसुगॆय लुळिय मॆरॆदरु चित्रगतिगळ
चळ बळिकॆ गळ चपळ चाप विमुक्त मार्गणव
बळिसलिसि दंबुगळु पाय्दु च्चळिसिदवु भटरंगदलि हॆ-
क्कळिसिदवु बळियंबु बॆंबळियंबु संदणिसि ।। 12 ।।
जोडु नॆनॆदवु जोरुनॆत्तर झाडियलि सिक्किदवु घायद
बीडॆगळु बळिसरळ संदणि निंद विव्वरलि
पाडु पंथद समर समयद मोडि मुरिदवु मरवॆयलि मै-
गूडु गॊडंतरिसिदरु बळलिकॆय भारदलि ।। 13 ।।

अर्थ । ९ मदोन्मत्त हाथी जैसे एक-दूसरे को टक्कर लेते हैं उसी भाँति दोनों वीरों ने सिंह-गर्जना करते एक-दूसरे का सामना करते, उग्र बाणों का प्रयोग करते अपना-अपना भारी पौरुष प्रकट किया। खनखनाहट तथा सनसनाहट के शब्दों से भरे महान बाणों का प्रयोग एक-दूसरे पर करते दोनों ने एक-दूसरे की कसकर टक्कर ली; बराबरी का युद्ध किया। १० दोनों वीरों के बाण एक-दूसरे से टकराए; एक-दूसरे को काटने लगे; चीरकर आगे बढ़ गये। उन बाणों ने चिनगारियाँ जो उगलीं तथा काला किट्ट धुआँ जो फैलाया वह आकाश तक व्याप्त हो गया। आग जो निकली उसने आकाश के देवताओं को जला डालना चाहा। ११ उन दोनों वीरों ने चमत्कारपूर्ण क़दम (पग) रखते विविध गतियों से युक्त हो, अपने-अपने धनुषों पर बाण चढ़ाए लघु (क्षिप्र) संधान करते बाण-प्रयोग की अपनी-अपनी चतुराई प्रकट की। लगातार छूटे बाण छट-छिटककर छूट निकले; बाण एक से एक सटकर लगातार मालाकार में निकलते झुंड के झुंड जाकर शत्रु को घेर लेते हैं। १२ दोनों वीरों के शरीरों में चुभे बाणों से हुए घावों से बहती रक्तधारा ने उनके कवचों को भिगो दिया। दोनों का पंक्तिबद्ध बाणों का प्रयोग रुक गया; उनके सौगन्ध खाते किये जानेवाले युद्ध-कौशल्य का भंग हुआ (रुक गया)।

तेगेद रिब्बर निब्बराप्तरु तगह बिडिसिदरंगमूर्छेय
रगुतगळ तोळेदंबनुगिदेरुगळ लौषधिय
बगे गोळिसि बेळु वट्टेगळनुट्टिटगरु कुंकुम गंधदनु ले
पगळ लेसेदरु कर्पुरद हळुकुगळ कवळदलि ॥ 14 ॥
बोब्बिरिदु बळिकुब्बि बिलुगळ तेब्बुगळ नारेदु लुळि विडे
देब्बिसिद रंबुगळ लंबर तुंबलगलदलि
मब्बिडुव निडुमुगिल मोहरकुब्बु वंबुधियंते कदनद
कोब्बिनलि कलियेरि बळिकितेंद निंद्रारि ॥ 15 ॥
करेसि को निम्मण्ण देवन निरलि हत्तिरे भरत शत्रु-
घ्नरिगे बरसोलेगळ बदुकिदरिल्लिये निम्म
शरणु होक्कुन कळुहु देशांतरके लक्ष्मण केळु मुंदण
परके नेने निन्निष्ट दैवव नेनुत तेगदेच्च ॥ 16 ॥
करेसुवेनु नम्मण्णननु दशशिरन वधे गोलेयनयोधिगे
बरेसुवेनु रिपुविजय वार्ता विमळ संगतिगे
शरणु होक्क विभीषणन तंदिरिसुवेनु लंका महापुर
दरसुतनकेले खूळ केळेनु तेच्चना खळन ॥ 17 ॥

शरीर के शिथिल हो जाने से तथा थकावट के मारे दोनों मूर्च्छित हुए। १३ लक्ष्मण तथा इन्द्रजित् को उनके अपने प्रिय जन उठा ले गये; सेवा-शुश्रूषा कर उनकी देह को व्याप्त मूर्च्छा का निवारण (दूर) किया; उनको होश में लाये; खून धोकर चुभे बाणों को निकाल, घावों में औषधी भर दी। तब दोनों वीरों ने नूतन शुभ्र वस्त्र धारणकर अगरु, कुंकुम, श्रीगंध (चन्दन) आदि का लेप कर पच्चकर्पूरयुक्त पान का सेवन किया। १४ सिंहनाद करते, उत्साह से अपने-अपने धनुष की डोरी का परीक्षण कर, बड़े तेज बाण जो उन्होंने छोड़े तो सारा आकाश बाणों से भर गया। अत्यन्त विस्तृत काले बादलों के समूह को देख उमड़ पड़नेवाले सागर की भाँति युद्ध के आवेश उन्माद से स्फूर्ति पाकर इन्द्रजित् लक्ष्मण को सम्बोधित कर यों बोला। १५ अपने (बड़े) भाई को बुला लो; वह तुम्हारे पास रहे। भरत-शत्रुघ्न को पत्र लिखाओ। जिन्दा रहे तो यहीं पर तुम्हारी शरण आनेवाले विभीषण को देशांतर के लिए (अन्य देश) भेज दो। हे लक्ष्मण! (इस) परलोक की अपनी यात्रा के पूर्व अपने इष्टदेवत का एक बार स्मरण कर लो।" इस तरह कहते इन्द्रजित् ने बाण छोड़ा। १६ "दशकंठ की हत्या के लिए अपने भाई (बड़े भैया) को बुला लूंगा। शत्रुओं को जीतने का समाचार देने के लिए अयोध्या को पत्र लिखाऊंगा।

ऍच्च बाणव नसुर नॆडॆयलि कॊच्चि करॆदनु कालमेघद
मुच्चुळवनु तॆगॆदंतॆ सरळिन वृष्टि सरगॊळिसॆ
अच्चरियला लक्ष्मणनकै नच्चि नंबिन चित्र गतिरथ
दच्च रथिकन बिल्ल नुडिदुप्परिसि तंबरकॆ ॥ 18 ॥
ऍलवॊ रावणि केळु राक्षस कुलद तलॆ चंडाडुवंबिन
बलुह कंडा कॊल्लॆ नंजदिरॆ हॊसरथव
बिलु दुडुकु बाणगळ करॆ कैलुळिय नोडुव बळिकॆनुत बगॆ-
गळ लॆच्चनु कॊरळुगळ तेजिगळ सारथिय ॥ 19 ॥
कळुहिदनु मय नाक्षण दॊळग्गद रथ सारथिय तुरगा
वळिय निशिताक्षय शरंगळनुग्र कार्मुकव
तळॆदु कॊळुता चापमार्गण गळनु रथदॊळु निदु बॊब्बिरि
दळवि गॊंडी मातनॆंदनु मागधी सुतगॆ ॥ 20 ॥
केळु लक्ष्मण वत्सरगळी रेळ रूपवासद सुनिद्रा
लोल नग्गद भामिनिय संभोग वर्जितन
मेलुगैयह वीर नादडॆ कोल कळुहल्लदडॆ हिदकॆ
बीळुको बयलिगॆ दावति गॊळलु बेडॆंद ॥ 21 ॥

शरण आए विभीषण को लंकानगरी का राजा बनाऊँगा। सुन रहे हो न दुष्ट ?" इस तरह कहते लक्ष्मण ने इन्द्रजित् पर बाण चलाया। १७ इन्द्रजित् ने लक्ष्मण के बाण को बीच में ही काट डाल, प्रलयकालीन बादल के ढक्कन खुलने की रीति से लगातार बाणों की वर्षा की झड़ी लगा दी। लक्ष्मण का हस्तलाघव (हाथ की चालाकी) भी बड़ा अद्भुत था। फलस्वरूप उसका (लक्ष्मण का) चलाया बाण इन्द्रजित् के रथ के धुरे को तथा धनुष को तोड़ डाल आकाश की ओर उछला। १८ "रे रे रावण-कुमार ! सुन। राक्षसकुल के सिरों को काट डालनेवाले बाण का सामर्थ्य तो देखा न ? तेरी (निश्शस्त्र की) हत्या नहीं करता। डरो मत। नये रथ पर आरूढ़ हो जा। धनुष को ले ले। बाण छोड़। देखें तेरा हस्तकौशल कितना है ?" इस तरह कहते लक्ष्मण ने इन्द्रजित् को अधीर बनाते हुए बाण-प्रयोग कर रथ के घोड़ों के गले काट डाले। १९ उसी क्षण मय दानव ने इन्द्रजित् को श्रेष्ठ रथ, सारथी, घोड़े, पैने अक्षय बाण तथा उग्र धनुष आदि भिजवा दिया। इन्द्रजित् ने उस धनुष तथा उन बाणों को लेकर, रथ पर सवार हो, खड़े होकर सिंहनाद करते आत्मविश्वास के साथ इस प्रकार कहा। २० "सुनो लक्ष्मण, चौदह बरसों तक उपवास करते, निद्रारहित हो, स्त्री-संग-विरहित होकर जीवनयापन करनेवाले

इदको बरुतिर्दे बाणविद मध्यदलि सडिलिप शक्तियुळ्ळडॆ
तुदि गॊळिसु तोमरव तिरुविनॊळॆनुत शक्रारि
त्रिदशपति हिडिवंब नारिय लॊदसि बॊब्बिरिदारि शक्रा-
स्त्रदलि संतैसिदनु सुरमार्गणदि सौमित्रि ॥ 22 ॥

मातु निनगिन्नेकॆलवॊ वर मैथिळेशन वचनमार्गद
वीथियवरावॆनॆ मातॆरडिल्ल नमगॆनुत
पाथ दुद्भव भूत सुमनो नाथ मुख्यरु हॊगळॆ हगॆय व-
रूथवनु हदिनारु योजनकॆच्चु बॊब्बिरिद ॥ 23 ॥

आ महामार्गण सुविद्या व्योम केशगॆणॆयॆनलु बहु-
दै महादेवॆनुत पॊगळिदु तिरुगि निजरथव
भीम बल नसुरास्त्रदलि निस्सीम बल लक्ष्मणन घन सं-
ग्राम कृत लक्ष्मणन वक्षव नॆच्चु बॊब्बिरिद ॥ 24 ॥

उगिदु हाय्दुदु बाणवॆदॆयनु बगिदु भीम ध्वान गानद
लुगुळु तरुणांबुवनु बळिकद बगॆय दब्बरिसि
मगध चक्रेश्वरन मोहद मगळ मगनम ळास्त्रदलि सुर
रगियॆ सुरवैरिय ललाटवनॆच्चु बॊब्बिरिद ॥ 25 ॥

श्रेष्ठ वीर अगर हो तो बाणों को चलाओ। अगर नहीं तो चुपके से लौट जाओ। व्यर्थ परिश्रम मत करो।" इस प्रकार इन्द्रजित् ने कहा। २१ "यह देख, अब जिस बाण को चला रहा हूँ, उसे बीच में ही दुर्बल बनाने की शक्ति अगर तुममें हो तो तोमर को अपने धनुष की प्रत्यंचा पर चढ़ा।" —इस तरह कहते इन्द्रजित् ने देवेन्द्र-बाण को धनुष पर चढ़ाकर इस प्रकार झटका देकर खींच-तानकर छोड़ा कि वह धनुष की डोरी को (लक्ष्मण के) काट डाले; लक्ष्मण ने सिंहनाद करते तुरन्त ऐन्द्रास्त्र का प्रयोग कर उसे शांत कर दिया। २२ "अब बातें क्यों बनाता है? टें टें करता है? हम तो मैथिलीपति की आज्ञा का अनुसरण करनेवाले हैं। हम दूसरा मार्ग या बातें नहीं जानते।" इस तरह कहते लक्ष्मण ने शत्रु-रथ को सोलह योजन दूरी पर उड़ाते सिंहनाद किया। तब ब्रह्माजी, शिवजी तथा देवेन्द्र आदियों ने लक्ष्मण की प्रशंसा की। २३ "शिव शिव! वह महास्त्र विद्या एक मात्र शिवजी जानते हैं!" इस प्रकार प्रशंसा करते अपने रथ को लौटा लाकर उस भयंकर बलवान इन्द्रजित् राक्षस ने असुरास्त्र से उस महान युद्धविशारद लक्ष्मण की छाती पर बाण छोड़कर सिंह-गर्जना की। २४ भयानक निनाद करते इन्द्रजित् के बाण ने लक्ष्मण की छाती में घुसकर रक्त टपका दिया। लक्ष्मण ने

सरळु समगर्णे यागि रकुतव नेरडु भागद लुगुळिदुदुर्येवे
मुरिदवंग निहारदलि बारिसिद झोम्मिनलि
करद बिलु कळचिदुदु कंगळु तिरुग वर्गेदवु तेरिनोळगं-
क्षरिसु तंतरिसुत्त खळ नेम्मिदनु हळविगेंद ॥ 26 ॥
हा त्रिविष्टप रायजितु हा हा त्रिलोकी गंड चंड वि-
धात्र बाण सुपाणि हा हा येनुत नर्भदिद
धात्रि गिळिदनु मयनु निज दौहित्र मोहद लमळतर
पात्र जल दभिमंत्र दिर्देब्बिसिदना खळन ॥ 27 ॥
तेगेदु तन्नय दिव्य कवचव मगळ मगनंगदलि तोडिसिदु
नेगहि निदिरि सिदनु कोट्टनु तनगे पूर्वदलि
जगद पित नित्तुग्र निशिताशुगवनुग्र शरासनर कै-
मुगिद मोम्मन हरसि हाय्दनु मयनु मायेयलि ॥ 28 ॥
आत बळिकुब्बरिदु कोंडनु मानृपित नित्तंबनदु लय
वीति होत्तनु गुळुतिर्दुदु वाप यंत्रदलि

उसकी ओर ध्यान न देते मगध चक्रवर्ती राजा के दुलारी पुत्री सुमित्रा के उस पुत्र ने (लक्ष्मण ने) इन्द्रजित् के ठीक माथे पर बाण चलाते सिंहनाद किया। इसे देख देवता भी डर के मारे काँप उठे। २५ लक्ष्मण के बाण ने ठीक (माथे के) बीच में होते हुए दोनों तरफ़ घाव बनाते खून टपकाया। इन्द्रजित् की पलकें मुँद गयीं। चक्कर आने के कारण बेहोश हुए इन्द्रजित् के हाथ से धनुष छूट पड़ा; आँखों में अँधेरा छा गया; अश्रु उमड़ पड़े; रथ में ही टटोलते-टटोलते इन्द्रजित् ध्वजस्तम्भ का आसरा लेकर लेट गया। २६ 'हाय रे! देवेन्द्र को जीतनेवाले! तीनों लोकों के वीरों के लिए क्रूर विधि (दुर्दैवस्वरूपी), बाण-प्रयोग में चतुर! हाय हाय! यह क्या हुआ! कहते मयासुर आकाश से धरती पर उतर आया। पुत्री के पुत्र होने के कारण मोहवश (उसने) अपने कमंडलु के पानी को अभिमंत्रित कर, छींटे देकर इन्द्रजित् को मय होश में लाये। २७ मय ने अपना दिव्य कवच उतारकर अपनी पुत्री के पुत्र इन्द्रजित् को पहनाकर उसे उठाकर खड़ा किया। पूर्व में अपने को ब्रह्माजी से दिये गये पैने बाण तथा उग्र धनुष उसने इन्द्रजित् को दिया। अपने को प्रणाम करनेवाले नाती को आशीर्वाद देते मय (असुर) माया की आड़ लेकर अदृश्य हुए। २८ तत्पश्चात् अपने नाना (माँ के पिता) से पाये बाण को इन्द्रजित् ने अत्यन्त आनन्द से ग्रहण किया। वह बाण-यन्त्र प्रलयाग्नि उगलनेवाला बाण था। इस (अनिरीक्षित) आश्चर्य को देख रामचरण-

कौतुकविदेनेनुत रघुसंजात चरणाराधकनु बळि-
कीत गेच्चरिसिदनु मायामयन कृत्रिमव ॥ 29 ॥
बेग तोडु पैता महास्त्रव नीग गेलुवडे समरदलि शत
यागजितु तोडुवस्त्र भंगके मरेय मातेनु
तूगदव मुंचिदडे कमलज कूगिदडे केळुग्र निद्रा
योग वहुदेम गंदिन वोलेंदसुर पति नुडिद ॥ 30 ॥
आ वचनवी भटन कर्णव नावरिसे तडि दिळुहिदनु कलि
रावणिय कोदंड चंड सुकांडसिजिनिय
देवतति खोयेंदु दुंदुभि रावदलि नलवेरे बळिय श-
रावधान दलरिय मुकुटव नेच्चु बोब्बिरिद ॥ 31 ॥
कैडिसिद नला द्रोहि वर्मव नुडिदु नम्मुवनलल दिटडे
बिडुवरे जीववनु जीवाळद महाभटरु
तोडेवे निवन ललाट लिखितव तडेय दीक्षण बळिक मृत्युवि
नोडल होगिसुवे हगेय नेनुतो डगिद निद्रारि ॥ 32 ॥
येत्तिदनु किरि यय्यगा मय नित्त शक्तियनेम्म वंशक
मृत्यु वादसु राधमने नी नोडिको येनुत

आराधक विभीषण ने मायाविद मयासुर के षड्यन्त्र (कपट) के बारे में लक्ष्मण को सचेत कर दिया। २९ "इन्द्रजित् से छोड़े (संधानित) अस्त्र को तोड़कर अब युद्ध में अगर जीतना है तो तुरन्त ब्रह्मास्त्र का संधान करो, धनुष पर चढ़ाओ; इसमें आगे-पीछे करने से प्रयोजन नहीं; वह (कहीं) अगर पहले ही कहीं प्रयोग कर बैठे तो हमारी कुछ भी न चलेगी। उस (इन्द्रजित् के हाथ के) अस्त्र से ब्रह्माजी कहीं चीख उठें तो उस दिन की तरह हम सभी गाढ़ी निद्रा के वशीभूत हो जायँगे।" इस तरह बिभीषण ने लक्ष्मण से कहा। ३० बिभीषण की बात कानों में पड़ने की ही देर! वीर रावण के पुत्र से धनुष पर संधाने गये भयंकर बाण के (धनुष की) डोर को लक्ष्मण ने काट गिरा दिया। तब देवताओं ने 'वाहवाह' करते दुंदुभि बजायी। वे बहुत प्रसन्न हुए। लक्ष्मण ने फिर तीर चलाकर शत्रु के मुकुट को आघात पहुँचाकर खुशी मनाते सिंहनाद किया। ३१ "इस विश्वासघाती ने रहस्य बताकर मेरा सत्यानाश किया; नहीं तो सत्वशाली वीर शत्रु के प्राणों को यों ही कहीं छोड़ सकते हैं? अतः इसी क्षण इस बिभीषण का विधिलिखित मिटाये देता हूँ, फिर शत्रु को मृत्युगर्भ में पहुँचाता हूँ।" इस तरह कहते इन्द्रजित् ने दाँत-ओंठ काटे। ३२ मय से प्रदत्त उस महास्त्र को इन्द्रजित् ने अपने चाचा

औत्त बरदुद्रेक दिंदिडे सत्तनकटा शरणनें दोद
रुत्तलिरे कालाग्नि तेजद लैदितिदिरिनलि ॥ 33 ॥
हॆदरिदनु हनुमंत जांबव नुदर कळवळिसित्तु नळनं-
गद सुषेण गवाक्ष नीलाद्यखिळ कपिभटर
हृदय हातक वारिदवु मरुगिदुद मर्कटसेनॆ हायॆं-
दॊदरिदरु नभदिंदला प्रह्लाद नारदरु ॥ 34 ॥
ऐनु दैवंगळलि भक्ताधीनरो रघुनाथ लक्ष्मण
रा निमिष दॊळगिद्दु दिक्कडियागि गगनदलि
आ निशाट महाशकुति संधान विशिखव कंडुदिल्ल वि-
मानिकरु विस्मयवदॆन लॆसुगॆयलि लक्ष्मणन ॥ 35 ॥
गुडिविडिदु गुहिलिरिदु नारद मृडरु कॊंडाडिदरु वैष्णव
गडणवा नंदाब्दि यॊळगोलाडि तभ्रदलि
बिडुमुगुळ मल्लिगॆय मळॆ हॊनलिडलु हरिदुदु राय तॊरवॆय
कडुकृपा सागरन तम्मन शिरद सीमॆयलि ॥ 36 ॥

पर चलाया। "हमारे (वंश रूपी वृक्ष के लिए) वंश के लिए कुल्हाड़ (मृत्यु) बने राक्षस, रे अधम, नीच राक्षस! तू देख ले।" इस तरह कहते अत्यन्त उद्रेक से संतुष्ट हो उस अस्त्र को (उसने) चलाया। 'हाय हाय, श्रीराम-भक्त मरा!' इस तरह जब सब चिल्ला रहे थे तब वह अस्त्र प्रलय-अग्नि के तेज के साथ विभीषण के सम्मुख आया। ३३ हनुमान घबराए; जाम्बवन्त का कलेजा मुँह को आ गया; नल, अंगद, सुषेण, गवाक्ष, नील आदि समस्त वानर वीरों की, नायकों की छाती डबडबाने लगी; वानर-सेना व्याकुल हुई; आकाश में से प्रह्लाद-नारद चीख उठे। ३४ भगवान रघुनाथ, लक्ष्मण न जाने कितने (अपने) भक्ताधीन हैं! (बहुत ही अपने भक्तों के आधीन हैं!) उस अस्त्र के उसी क्षण आकाश में दो टुकड़े हुए। उस राक्षस के उस महास्त्र पर ताना गया निशाना अर्थात् निशाना साधकर चलाया गया बाण आँखों को दिखायी नहीं पड़ा। लक्ष्मण का अस्त्र-विद्या-कौशल्य जो बड़ा ही अद्भुत ठहरा। आकाश में विमान में आकर उपस्थित देवताओं ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। ३५ नारद तथा शिवजी ने (यह देख) रोमांचित होते हुए किलकारियाँ भरते लक्ष्मण की प्रशंसा की। विष्णु-भक्तों का समूह आनंद-सागर में निमग्न हुआ। करुणा-सागर 'तॊरवॆ' के नरहरि के अवतारी श्रीराम के भाई के सिर (लक्ष्मण) पर मल्लिका (चमेली) कलियों की वर्षा आकाश से बरसी। ३६

नलवत्तुनाल्कनेय संधि

सूचने— वीर विजयाहववुवार गभीर बल सौमित्रि गोत्र हरारियनु गॆलि बॊलिसिदनु भुज विजय भामिनिय ।

नडॆदु दीपरि नाल्कुदिन बिडदडसि संगर विब्बरिगॆ कपि
पडॆगॆ खळ बल किरुळुहगलॆन्नदॆ निरंतदलि
कडॆय दिन कलि गळिगॆ काळग नडॆद परियनु केळिरैयु
गडद राजकुमाररिर चित्ताव धानदलि ॥ 1 ॥
शरणननु तलॆ गाय्दु भरता वरज बळिकिं तॆंदनॆलवॊ
धुर परिष्कृत नल्ल सार् सुडु निन्न साहसव
अरिभटरु नाविरलु नम्मनु शरणु हॊक्करि गुपहतियना
चरिस बहुदे खूळ नी नी दनुज रॊळगॆंद ॥ 2 ॥
अॆनॆलवॊ रावणि रणागम हीनने नीनकट नाविरॆ
मानिसरि गुपहतिय बगॆवरॆ बदुक सुडु निन्न
नीनितु पातकद पयणकॆ मानसव माडुवरॆ नॆरॆ कै
बागि रक्कस रंगकंगैसुवरॆ नीनॆंद ॥ 3 ॥

चौवालीसवीं संधि

सूचना— युद्धविजयी महान बलशाली वीर लक्ष्मण ने इन्द्रजित् को जीतकर बाहुविजय लक्ष्मी को प्रसन्न कर लिया ।

इस तरह दिन-रात की परवाह न करते लगातार चार दिन तक दोनों वीरों तथा वानर-राक्षस-सेनाओं के मध्य भारी युद्ध हुआ । श्रेष्ठ राजकुमार लव-कुशो ! अंतिम दिन दोनों वीरों के मध्य जो भयानक युद्ध हुआ, उस युद्ध की रीति, गतिविधि के बारे में ध्यान देकर सुनो । —इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा । १ भक्त विभीषण के सिर को बचाकर लक्ष्मण ने इन्द्रजित् से यों कहा— "रे रे, तू युद्ध में तो परिपूर्ण है ही नहीं; हट जा । आग लगे तेरे साहस को । शत्रुवीर मैं जो तुम्हारे सामने खड़ा हूँ, मेरे होते हुए शरणागत को इस प्रकार धक्का पहुँचाना, उस पर आफ़त ढाना क्या तुझे शोभा देता है ? राक्षसों में तू परले दर्जे का नीच है ।" २ "रे रावण-कुमार, युद्धनीति से तू अनभिज्ञ तो नहीं; मेरे रहते अन्यों को सताना, इस प्रकार तेरा धर्म है क्या ? आग लगे तेरी जिन्दगी को । इस प्रकार के पाप-मार्ग का अनुसरण करने का मन तुझे क्योंकर हुआ ? स्वयं राक्षस होते हुए राक्षस पर ही हाथ उठाना क्या उचित है ?" इस तरह लक्ष्मण ने

संतविसि को कोपवनु नम्मं तरंगद लसुविरलु सा
वेंतु संघटिसुवदु हरिपद भक्ति युक्तरिगॆ
भ्रांत देकिन्नॆलवो सारॆ कृतांत पुर निनगिन्नु रणवि-
क्रांत विजयांगनॆय लभयव पडॆदु बायॆंद ॥ 4 ॥
मनव बलुहिडि वीर लक्ष्मिय मनव मॆच्चिसु लोक हास्यकॆ
तनुव तॆरदिरु तिद्दिको भव भवद किल्बिषव
जनन मरण गळुळ्ळ वॆल्लरि गिनितु निजव न्याय मार्गव
नॆनॆय देको भावदलि कादॆम्म कूडॆंद ॥ 5 ॥
बल्लॆवाव् हेळदिरु निन्नय बल्लविकॆ साकॆम्म परियनु
गॆल्लदलि तोरिसुवॆ तडवेकॊंदु निमिषदलि
बिल्ल बलुमॆय नीक्षिसॆनु तवॆ बल्लिदन सहभवन करॆसि
न्नॆल्ल वेत कॆयॆनुत हूळिदनंबिनवुधियलि ॥ 6 ॥
कॆणकिदरॆ कणॆ निलुववे लक्ष्मणन शरसमॆय प्रकृत ल-
क्ष्मणन नूतन कौतुकाहव रंग रूक्षणन
अणॆदु चल्लिद वरिभटन मार्गणव मगुळॆतह शराळिय
हणिदु हम्मिदवमम भूम्याकाश मंडलव ॥ 7 ॥

कहा। ३ "अपने क्रोध को जरा शांत करो। हमारे हृदय में जब भक्तों के प्राण सुरक्षित हैं, तब हरिभक्तों की मृत्यु कैसे संभव हो सकती है ? यम-नगरी के यात्री तुझे यह व्यर्थ की भ्रांति क्यों ? युद्धवीरतासंपन्न विजय-लक्ष्मी से अभयहस्त प्राप्त करके आ।" —इस प्रकार लक्ष्मण ने कहा। ४ "मन पर संतुलन रख। वीर लक्ष्मी की प्रसन्नता को प्राप्त कर। जगत भर के लोगों की हँसी-मज़ाक़ का पात्र न बन। जन्म-जन्मांतर के अपने पाप का स्मरण कर तथा उसका निवारण कर। 'जातस्य मरणं ध्रुवम्' यह तथ्य और सत्य पहिचान ले। अन्याय-मार्ग का अनुसरण न करते मन लगाकर मुझसे युद्ध कर।" इस प्रकार लक्ष्मण ने कहा। ५ यह सब मैं जानता हूँ; कहने की जरूरत नहीं; तुम्हारा ज्ञानोपदेश भी यथेष्ट हुआ। अब देर काहे की ? क्षणार्ध में, हमारी रीति-नीति को जीतकर साबित करूँगा। मेरे धनुष का सामर्थ्य देखो। अपने उस बलवान भैया को बुला लो। अन्य बातों में क्या धरा है ?" इस तरह कहते इन्द्रजित् ने बाणों के समुद्र में लक्ष्मण को डुबो दिया। ६ छेड़ने पर बाण-प्रयोग विधि में जो शुभलक्षणी हैं, युद्ध में नये-नये कौतूहलपूर्ण काठिन्य-भरे लक्ष्मण के बाण क्या ऐसे अवसर पर चुप रह सकते हैं ? लक्ष्मण-बाणों ने शत्रु वीर के बाणों को काटकर गिरा दिया। फिर-फिर

अँसुव गतिगा येंद्रु कस्तुरि रसदोळद्दिद हूगळनु सु-
मनसरु सूसुव रब्बरिसुतति काय मर्दनन
ससिनवलि सुरवैरिगळु वासिसुव बॆळुवट्टॆय निवाळिसि
बिसुडुवरु बॊब्बिरिदु कर्बुर भटन सरिसदलि ॥ 8 ॥
बिसिबिसिय बोळॆगळ तळपद रसुमॆगळ कवलंबुगळ डा-
ळिसुव कणलिगॆयलगुगळ कुप्पिगॆय कोलुगळ
अँसळलगु कवलंबु कत्तरि वॆसर कर्णॆगळ दाळिगळु द-
ट्टिसिद वॆरडंकद नरासुर वीररॆसुगॆयलि ॥ 9 ॥
अळवियलि रथिपद रथिय कट्टळॆय कर्णे कर्णॆगळलि चित्रद
चळ चमत्कृतियभिनयद पाडुगळ सोगसुगळ
लुळिय मॆरॆदरु नोटकर कंगळिगॆ कौतुक वागॆ रावणि
बळिक राम सहोदरन मूदलिसुतिं तॆंद ॥ 10 ॥
हिडि रणदोळतिकाय वीरन कॊंडहिद्दुत्सव दर्प सिरिगिदॆ
सिडिलु शूर्पनखाभिमानच्युतिय साहसद
सॊडरिगिदॆ बिरुगाळि पिसुणर नुडिय कॆळिदु कुणिव कडुद-
क्कडॆय तनकिदको कृतांत निवासवॆनु तॆच्च ॥ 11 ॥

आनेवाले बाणों को ठोंकते हुए धरती तथा आकाश भर दिया। ७ लक्ष्मण के बाण चलाने के कौशल्य को देख धन्य-धन्य कहते हुए, कस्तूरि-जल में फूलों को डुबो-डुबोकर देवता अपना ज़ोर-शोर प्रकट करते लक्ष्मण पर उनकी (फूलों की) वर्षा करने लगे। राक्षस सुगंधित सफ़ेद कपड़े को चारों ओर निवारकर (घुमाकर) राक्षस वीर की तरफ़ फेंकने लगे। ८ गरमागरम तीर, जो विचित्र थे, तथा चिनगारियों से युक्त डालीदार तीर, पंखुड़ी जैसे तीर, अर्धचन्द्रकार बाण, कैंची जैसे बाण वग़ैरः तरह-तरह के प्रकार के बाणों का घेरना लक्ष्मण-इन्द्रजित् के इस बाणयुद्ध की विशेषता जो थी इससे दोनों तरफ़ के सैनिक काफ़ी घबरा गये। ९ सामर्थ्यसंपन्न रथ पर आरूढ़ इन्द्रजित् तथा अपने पैरों को ही रथ बनाए खड़े लक्ष्मण —इन दोनों से छोड़े गये बाणों में आश्चर्यकारक चमत्कार, अभिनय, प्रतिज्ञा, सौंदर्य, तीव्रता वग़ैरः जो गुण थे दर्शकों में कौतूहल उत्पन्न कर रहे थे। दोनों वीरों का यह बाणों का युद्ध बड़ा ही दर्शनीय था। उस वक़्त इन्द्रजित् लक्ष्मण पर ताने कसते हुए यों बोला। १० "युद्ध में अतिकाय वीर को मारकर उत्साहित हुए घमंड को यह मानों वज्राघात है; शूर्पणखा के अभिमान को विदीर्ण करनवाले साहस के दीप को यह मानों आंधी है; चुग़लखोरों की बातें सुनकर नाचने

आ सुरेंद्र विरोधियॆंच्च महा शरौघव तरिदु लघुवि-
न्यास वैभव बाणविद्या प्रौढ नसुनगुत
वासितन दभिमान गतिय विलास वहुदोयॆनुत निशित श-
रासनद संधानदस्त्रद लॆंदनसुरंगॆ ॥ 12 ॥
हिग्गि हिंदॆम्मुवनु हाविन हग्गदलि हॆडगुडियकट्टिद
बग्गडॆय तनकिदकॊ बहुमाया विलासकद
कग्गनिय कत्तलॆयॊळॆम्मनु मग्गिसिद फलकिदको साविन
सुग्गि निन गॆनुतॆंच्च निद्रारियनु सौमित्रि ॥ 13 ॥
अॆच्च लक्ष्मण नंबना खळ नॆच्चु मगुळॆ महास्त्रदलि बिड
दॆच्च नॆच्च विरोधि यंबिन हॊदर सौमित्रि
बिच्चि बिसुटंबोधि नाददि नॆच्चरु वडरि दॆंबवॊलु तॆगॆ
दॆच्चनुग्रामोघ बाणद लुलियॆ कपिसेनॆ ॥ 14 ॥
नूकि हाय्दवु लक्ष्मणन सरळोकरिसुतरुणांबुवनु जित
पाकशासन नुरव बगिदारॆळु योजनव
सोकि दाज्याहुतिय शिखियुद्रेकदवॊ रिद्रारि कोपदॊ-
ळी ककुत्स्थान्वयन तम्मन नॆच्चु बॊब्बिरिद ॥ 15 ॥

वाली धीरता के लिए यह देखो —यह यम के घर का रास्ता बताने वाला है; यह लो; इसे सँभालो।" इस तरह कहते इन्द्रजित् ने बाण चलाया। ११ इन्द्रजित् से छोड़े गये महान बाणों को काट डाल, चमत्कारपूर्ण बाण-प्रयोग-विद्या में अत्यंत चतुर लक्ष्मण ने मुस्कुराते हुए, "तुम्हारी घमंड भरी बातें कितनी सुंदर हैं!" इस तरह कहते हुए पैने बाणों को धनुष पर अनुसंधानित कर इन्द्रजित् पर चलाया। १२ "पूर्व में, मस्ती में हम पर सर्पास्त्र चलाकर, हमें निश्चेत कर बंधन में फाँसकर दिमाग़ चाटनेवाले तेरे लिए यह है; ले ले। माया की बहुलता से तुझसे निर्मित घनघोर अँधेरे की आड़ में हमें सताने के पुरस्कार-स्वरूप, यह ले तेरे लिए मौत की फ़सली मौसम" —इस तरह कहते लक्ष्मण ने इन्द्रजित् पर बाण चलाए। १३ लक्ष्मण के बाण को प्रतिबाण चलाकर काट डालते हुए पुनः इन्द्रजित् ने महास्त्र का प्रयोग किया। शत्रु के बाणसमूह को बेकार बनाते हुए, बादल की तरह गरजकर लक्ष्मण ने इन्द्रजित् पर ऐसा महान अस्त्र का वार किया कि इससे उसका बच निकलना असंभव है। तब कपि-सेना अपनी खुशी प्रकट करते किलकारियाँ भरने लगी। १४ लक्ष्मण के बाण इन्द्रजित् की छाती को चीरकर रक्त-वमन करते पाँच-छः योजन की दूरी पार कर गये। घी

सरगोळिसि बळिकीत नातन सरळ सारद लात नीतन
तिरुगि कट्टॆ सुगॆगळली सौमित्रि रावणिय
हरि विरोधि विराध हिंसा वरजननु सरिमिगिलॆनलु सं-
गरज यांगनॆ मॆच्चलॆच्चाडिदरु सरिसदलि ॥ 16 ॥
बाण विद्याभ्यासदलि कट्टाणि गळला त्रेतॆयलि कडु
जाण रल्ला जडतॆ हुगदाहव विचित्रदलि
स्थाणु शैलोद्धरण सुतना स्थाणु चाप निखंड नानुज
रुणॆ होग दॆच्चाडिदरु मॆच्चलु सुरव्रात ॥ 17 ॥
तॆगॆदु बळिकळवियलि निंदुदु निगुरि निलुकुव रोष वह्निय
नुगुळिसिद रंबंबुगळ नंबुगॆय बिलुगळलि
बगॆय भारिय बाणतति रोमगळु काणिसदंतॆ तनुगळ
हुगिलिरिदु हम्मिदवु बळलिकॆ दोरॆ भटरुगळ ॥ 18 ॥
दारिदॆगॆदवु रोष बॆसुगॆय भारणॆय बलु हंतरिसिदवु
वीरतन दाळाप कुब्बस वादुदिब्बरिगॆ

की आहुतियाँ पड़ते ही धू-धू कर प्रज्वलित होनेवाली ज्वालाओं की तरह वे ऊपर उठ, उड़ते बाण ऐसे दीख पड़ने लगे मानों ज्वालाओं के पुंज हों। तब इन्द्रजित् ने गर्जना करते क्रोधसंतप्त हो लक्ष्मण पर बाण चलाए। १५ लक्ष्मण ने इन्द्रजित् पर बाणों की माला चलायी तो इन्द्रजित् ने प्रत्युत्तर-स्वरूप बाणों की एक ज़ंजीर ही लक्ष्मण पर निशाना तानकर छोड़ी। फिर लक्ष्मण ने इन्द्रजित् पर बाण चलाए। तब रावणकुमार ने विराध के हत्यारे राम के भाई पर बाणों की वर्षा की। इस प्रकार युद्ध-विजयलक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए दोनों वीरों ने बराबरी का, एक जैसा युद्ध, बाण चलाकर किया। १६ त्रेतायुग के ये दोनों वीर धनुर्विद्याध्ययन में श्रेष्ठ जो ठहरे! उत्साहपूर्ण युद्ध करने में चतुर थे ही! शिवजी के कैलास को उठानेवाले रावण का पुत्र तथा शिव-धनुष को तोड़नेवाले राम के भाई इन दोनों ने देवताओं को प्रसन्न करते दोषरहित बाण-युद्ध में अपनी-अपनी कलाबाजी प्रदर्शित की। १७ क्रोधाग्नि को भड़काते दोनों वीर बराबरी की दूरी पर खड़े रहे; अपने विश्वास के धनुषों से बाणों की वर्षा करते रहे। जबर्दस्त बाणों के, दोनों वीरों के शरीरों में चुभने के कारण देह पर रोंगटे (उन बाणों के मध्य) दिखायी ही न पड़े। अब दोनों वीर थकावट का अनुभव करने लगे। १८ दोनों का क्रोध ठंडा पड़ा। उनसे फूट पड़ती वीरता गायब हुई; वीरतापूर्ण प्रखर बातों में रुकावट पड़ी। दोनों काफ़ी थक गये थे। दोनों ने इतनी वेदना भुगती

सेरि तधिकश्रमवु मुक्त शरीर रागलु बगॆदरिद कं-
डोरणिसि बलवॆरडु निंदवु बिसुटु बवरगळ ॥ 19 ॥
कंड रिवरिब्बर रणागमवंडिसिद मार्गांतरव मा-
र्तांड पथदलि मोह वळिय सुरासुरव्रात
कंडु कळुहिद रुभय गुरुगळु गुंडिगॆय सुधॆयौषधिगळनु
चंड भुजबल भटरु बळि किळि तंदरा क्षणकॆ ॥ 20 ॥
इब्बरिब्बर नौषधिगळि दॆब्बिसिद राहवकॆ हिंदण
हब्बुगॆय हगॆपाडिगिम्मिगि लॆनलु संगरकॆ
उब्बरिसि बिलुदनिगळलि बलु बॊब्बॆयलि लळियॆद्रि निंदिर
लिब्बलिब्बरि गित्त रुत्तम दिव्य कवचगळ ॥ 21 ॥
इत्तरा कैयॊडनॆ सुभटरि गुत्तमद मंत्रास्त्रवनु दिव
दत्त हाय्दरु हाय्व बाणद हॊदद्रिगुरॆ बॆदरि
कित्तडद लमरेंद्र निनवंशोत्तमन सहभवन गॆलविन
हत्तुगॆय हंबलिसुतिर्दनु हरकॆगळ बळॆय ॥ 22 ॥
हुडिदनु बळिकसुर नसम सगाढ शांभव शरव नाक्षण
हूडिदनु सौमित्रि नारायण महाशरव

कि वे चाहने लगे कि अब प्राण त्यागने में ही कल्याण है। यह देख दोनों तरफ़ की सेनाएँ युद्ध त्यागकर अनुशासनसम्पन्न स्थिति में (ज्यों की त्यों) खड़ी रहीं। १९ थकावट के मारे उत्पन्न दोनों वीरों की परिवर्तित परिस्थिति को आकाश में उपस्थित देवताओं ने देखा। देवताओं के गुरु तथा असुर के गुरु दोनों ने अपने-अपने कमंडलु की दिव्य औषधियों को भिजवा दिया। उन ओषधियों को लिये दो महान बलशाली तुरन्त आकाश से उतर (धरती पर) आए। २० ऊपर से आनेवाले उन दोनों ने लक्ष्मण-इन्द्रजित् दोनों को ओषधियाँ देते हुए युद्ध के लिए चेताया। पूर्व के वैर के दुगुने वैरत्व को जगाते, दुगुने वेग से युद्ध में खड़े होते, धनुष का टंकार करते गरजते बड़ी स्फूर्ति से दोनों वीर उठ खड़े हुए। तब गुरुओं की तरफ़ से आनेवाले दोनों ने दोनों वीरों को दिव्य कवच प्रदान किए। २१ उसके साथ-साथ उन वीरों को श्रेष्ठ मंत्रास्त्र देकर वे दोनों वेग से उड़ रहे बाणसमूह से डरकर आकाश की ओर उछलकर चले गये। देवेन्द्र ध्यान में निमग्न हो लक्ष्मण की विजय के लिए प्रार्थना करते मनौती के कंगन को फेरने लगे। २२ तदनंतर इन्द्रजित् ने अव्यर्थ (अमोघ) शांभवास्त्र को धनुष पर संधाना (चढ़ाया)। तुरन्त ही लक्ष्मण ने नारायण-महास्त्र अपने धनुष पर चढ़ाया। 'अब क्या ! सारे जगत का विनाश

हूडि तळविगें जगवॆनुत हेडाडिदनु चित्तदलि जगवनु
माडिद जनुळिद मरर ळ्ळॆदॆयो दरभ्रदलि ॥ 23 ॥
बिट्टरिब्बरु बाणगळ तलॆ पट्टु निदवु गगनदलि सरि-
गट्टि हळचिद वॆरडु शर सुरलोक तल्लणिसॆ
तुट्ट तुदियिदु दैव धर्मद बट्टॆगर कडॆ धर्महीनर
बिट्टु कळॆवुदु केळिदै नृपसूनु नीनॆंद ॥ 24 ॥
अडगिता वैष्णव दॊळग्गद मृड कळंबक वनि तऱलि खळ
नडुगिदनु कडॆगाल तनगिन्नाग दिदॆनुत
मुडुह चप्परिसिदनुरु भेरिय हॊडॆसि सुररसुरौघ कोपद
किडियलिर्दुदु कदन तॊडगितु मत्तॆ कलि गळिगॆं ॥ 25 ॥
आ यतिकॆ बलिदसुर नस्त्र निकायवनु कॆदऱिदनु दिगु समु-
दाय शरमय वागॆ तूळुव वाद्य रभसदलि
आयतास्त्र विचित्र राघव रायननु जनु तऱिदना व-
ज्रायुधारिय बाण पंजर पुंजदुब्बरव ॥ 26 ॥
मसगिता कैयॊडनॆ कदनद विषम विग्रह विब्भरिगॆ नि-
ष्पसर दॆसुगॆय निशित बाणावळिय बॆबळिय

सुनिश्चित है।' इस तरह सोचते स्रष्टा ब्रह्माजी भयभीत हुए। आकाश के अन्य देवताओं के हृदय कांप उठे। २३ लक्ष्मण-इन्द्रजित् इन दोनों ने अपने-अपने अस्त्र छोड़ दिए। दोनों बाण आकाश में सिर से सिर टकरा कर खड़े हो बराबरी में एक-दूसरे से टकराते लड़े। तब देवलोक कांप उठा। यह तो पराकाष्ठा है। दैव तथा धर्म के मार्ग का अनुसरण करनेवालों की यह तरफ़दारी है; अधर्मियों का विनाश सुनिश्चित है। सुनो हे राजकुमार लव, हे राजकुमार कुश! इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि बोले। २४ उस वैष्णवास्त्र में श्रेष्ठ शांभवास्त्र विलीन हो गया। 'अब मेरा अन्त सुनिश्चित है।' यों सोचकर इन्द्रजित् कांप उठा। देवताओं ने नगाड़े पिटवाते अपनी भुजाएँ फड़फड़ायीं। राक्षस क्रोधोन्मत्त हो चिनगारियाँ उगलने लगे। फिर, उन दोनों वीरों में युद्ध प्रारंभ हुआ। २५ भयंकर युद्धवाद्यों के निनाद के मध्य साहस के मारे ऐंठे इन्द्रजित् ने अपने अस्त्रों को (बाणों को) चारों ओर सभी दिशाओं में चलाया। तब सभी दिशाएँ बाणमय हो गयीं। भारी अस्त्रसंपन्न लक्ष्मण ने इन्द्रजित् से निर्मित बाणों के पिंजरों के समूह को काट डाला। २६ उसके साथ-साथ बड़ी तीव्रता के बाणप्रयोग तथा उनका पीछा करनेवाले पैने-पैने बाणों की टकराहट से होनेवाले युद्ध की प्रचंड

बिसिलु दोरद बॆळगुगळ हॊंबॆसन हिळुकिन नविल गरिगळ
गॆह सरणॆय हग्मु गयलिम्मिगि लाय्तु रणरभस ॥ 27 ॥
सोल गॆलवनु काणदिब्बर कोल कदनदॊळमर तति रण
दालसिकॆ तोरिदुदु भटरिब्बरिगॆ भारणॆय
तोळु बळलिद वॆडबलद संभाळिगळ सबुद गळुनिदवु
बाल यौवन वडगि तोरितु मुप्पु दिन मणिगॆ ॥ 28 ॥
बळिक बिलुदिरु गळनु हॊय्दडगलिसि निंदळविगळ कॊंड-
ग्गळद वीराळापदलि मदवेरि बॊब्बिरिदु
गॆलवुगळ नभिनैसि सुरसंकुलकॆ कैगळ नॆगहि बिरुदा
वळिय भट्टर नीक्षिसुत हूडिदरु मार्गणव ॥ 29 ॥
हिंदणॆ सुगॆय कणॆय कौतुकदिद शतगुणवॆनलु सरळिन
संदणिय तोरिदरु तोरिद मॊदल मोडदलि
मंदविसि बॊब्बिरिद शरनिधि यंददलि शरसबुद वॆसॆदुदु
कंद केळुत्तान पादतनूज मंडलव ॥ 30 ॥

आग ने दोनों को भड़का दिया। धूप की तेजस्विता को पीछे डाल देनेवाले प्रकाशयुक्त, सोने की मूठ के तथा मोरपंखों के समूह के बाणों की टकराहट के कारण युद्ध की तीव्रता, भयानकता दुगुनी (होकर) बढ़ गयीं। २७ लक्ष्मण इन्द्रजित् के बाणों के इस युद्ध में हार या जीत किसी की न होते देख युद्धनिरीक्षण में रत देववृन्द बेचैन हो (निहार-निहार कर) थक गया। दोनों वीर युद्ध के परिश्रम से काफ़ी थक गये। (भुजाएँ थकावट के मारे लटक गयीं।) दाएं-वाएँ उपस्थित हो प्रोत्साहनपूर्ण हो गूंज उठनेवाले शब्द रुक गये। बाल्य तथा यौवन को सूर्य ने वृद्धत्व का अनुभव किया। २८ उसके बाद धनुष की डोर खींचकर टंकार करते एक-दूसरे का मुक़ाबला करते दोनों वीर खड़े हुए। वीरतापूर्ण वीरालाप से मस्त हो दोनों वीर सिंहगर्जना करते अपनी सुनिश्चित जीत का अभिनय करते देवताओं को प्रणाम कर, स्तुतिपाठकों को निहारते हुए दोनों ने (इन्द्रजित् और लक्ष्मण ने) अपने-अपने धनुषों पर बाण चढ़ाए। २९ पूर्व में प्रकट हुए बाण-प्रयोग के कौशल की अपेक्षा सौ गुने अधिक कौशल्य प्रकट करते हुए (उन) वीरों ने बाणसमूह चलाकर अपना हस्त-लाघव प्रदर्शित किया। वर्षाऋतु के प्रारंभिक मेघ को देख हर्षित होनेवाले तथा गर्जन करनेवाले समुद्र की भाँति दोनों के बाण चलाने की तीव्रता ध्रुव-मंडल तक व्यापी। ३० नोक टूटे बाण, पंख कटे बाणों के पिछले हिस्सों के

मुरिद मोग वायलगुगळ गरिहरिद हिळु कुगळुडिदु चिम्मिद
मिरुगुवण सिनलरें गडिद सम गणेय सीळुगळ
बिरुगणेय बिरुबिनलि कार्णेनु तेरहनिळेगेनलद्भुतद रण
नेरवणिगें युळ्ळवरो रावणि राघवानुजरु ॥ 31 ॥
केरळि बळिकि द्रारि यम शिखि निरुति मेघ तमोघ दर्वी
कर महाद्रि समुद्र मोदलादस्त्र संकुलव
सुरिद नतितकें लक्ष्मणनु हर वरुण हरिपवमान भास्कर
गरुड वज्राग्नेय शरदलि गेलिदु बोब्बिरिद ॥ 32 ॥
अेलेले लक्ष्मण दिव्य बाणावळिय जयिसिदे नेंदु दिट हे-
क्कळिस दिरु हितकारिगळु नमगमर रल्लागि
तलेय बरहव तोडेवेनै कुंभिळिसुदत्त महासुरास्त्रद
बलु मेयनु नोडेनुत हूडिदना महाशरव ॥ 33 ॥
प्राण विरलिकें नोडिको गीर्वाण निकरद कोरळ कत्तरि
वाणि मानव मीनकुलगळ गाणवहिकुलद
प्राणहिंसा समय समर त्राणविदको निन्न जठरद
श्रोणितव सुरिवस्त्रविदें नोडेनुत बोब्बिरिद ॥ 34 ॥

टुकड़े, टूटकर बिखरे हुए चमकते बाणों के भग्नावशेष, अध टूटे समान बाणों के चीरे हुए टुकड़े कठोर बाण वगैरहों के कारण धरती इतनी पट गयी थी कि तिल रखने को जगह न दीखती थी ! इससे पता चलता है कि इन्द्रजित् तथा लक्ष्मण धनुर्विद्या के कितने परिपूर्णता संपन्न व्यक्ति हैं । ३१ उसके बाद इन्द्रजित् ने चिढ़कर यम, अग्नि, निर्ऋति, मेघ, तम (अँधेरा), सर्प, पर्वत, समुद्र आदि अस्त्रों का प्रयोग किया । लक्ष्मण ने उन सबको हर, वरुण, हरि, वायु, सूर्य, गरुड़, वज्र, आग्नेय आदि प्रत्यस्त्र चलाकर उनको जीतकर सिंहनाद किया । ३२ "रे रे लक्ष्मण, देवता हमारे हितकारी नहीं हैं; अतः उनके नाम के दिव्यास्त्रों को जीतने का घमंड न करो। तुम्हारे विधिलिखित को पोंछे (मिटाये देता) डालता हूँ । कुंभिलि देवी के वरदानस्वरूप प्राप्त इस महान भयानक अस्त्र के सामर्थ्य को देख ।" इस तरह कहते उसने उस महान अस्त्र को धनुष पर चढ़ाया । ३३ "अभी तेरे प्राण रहते देख ले; यह अस्त्र देवताओं के कंठ को स्पर्श करे तो उन्हें काट डालनेवाला विषोदक है । मानव रूपी मछलियों के लिए तो अँकड़ी या टेढ़ी कँटिया ही समझो; सर्पों के प्राण निचोड़नेवाला मंत्र है; यह युद्ध-समर्थ है; तुम्हारे पेट के खून को प्रवाहित करनेवाला यह अस्त्र है ।" इस तरह कहते इन्द्रजित् गरज उठा । ३४ "फिर एक बार अभी देख

मत्तें नोडुरें काणेंनेन बेडुत्तर स्थिति बिरुसु तोऱिसु
हत्तरिद्द विभीषणांगद हनुम मोदलाद
उत्तमद भटरीक्षिसलि भयसुत्तिकोळ्ळद मुन्न शरविद
नुत्तरिसलापरें विभीषण मतवनऱियेंद ॥ 35 ॥
काणेंनेनबेडेंनुत लासुर बाणवनु बोब्बिबिऱिदु सीता
प्राणनाथ प्रिय सहोदर नेंडेंगें बिडें बळिक
क्षोणियगलकें नेंरहिद्दुदु परिमाणगेंट्टिद्रारिगळना
क्षीणबल भटरुगळनिभ हय रथ पदातिगळ ॥ 36 ॥
अेंत्तनोडिद रिंद्रजितुविन मोत्तविर्दद्दु कविदेंसुव खळ
पत्तिरावुत रथिक रिर्द्दुदु कोटिसंख्येंयलि
सुत्तवेंडेंयविक्कि होळकुव होत्तगिरिगळ हेंम्मरनसुभ-
टोत्तमर संहरिसुतिर्द्दुदु सेनें रावणिय ॥ 37 ॥
इऱिव करगसवेंत्ति सीळुव तऱिव तिविवौकुव तेंरळुव
कोऱेंव कोच्चुव कोलुव चुच्चुव काळरक्कसर
बिरुबुगाळग कुरुळुतिर्द्दुदु गिरुकु गुट्टुत चीऱि हलुगिरि
दऱिचि बीळुव बालदण्णगळवनियगेंलदलि ॥ 38 ॥

लो; इसके वाद न कहना कि मैंने देखा ही न था। इसके बाद (अर्थात् चलाने के बाद) की स्थिति बड़ी भयानक होगी। उस भयानक स्थिति के व्यापने के पहले ही अपने नजदीक खड़े विभीषण, अंगद, हनुमान वग़ैर: एक बार इसे देख लें; उनको दिखा दो। इस अस्त्र को कौन जीत सकते हैं? इसके बारे में विभीषण की राय भी पूछ लो।" इस तरह इन्द्रजित् ने कहा। ३५ "फिर, देखा नहीं; इस तरह न कहना।" इस प्रकार सम्बोधित करते हुए उस भयानक अस्त्र को इन्द्रजित् ने गरजते हुए लक्ष्मण पर निशाना साधते हुए छोड़ दिया। उसके यों छूटते ही सारी धरती पर असंख्यात इन्द्रजित्, बलवान वीर ही वीर भर गये। तथा सर्वत्र हाथी, घोड़े, रथ, पैदल सैनिक फैल गये। ३६ जहाँ देखो वहाँ, जिधर-तिधर इन्द्रजित् ही (असंख्य) दिखायी पड़ने लगे। घिरकर बाण छोड़नेवाले राक्षसों की पैदल सेना घुड़सवार, तथा रथिक करोड़ों की संख्या में थे। पेड़-पहाड़ों को उठाए आक्रमण करने आए वानर वीरों का संहार इन्द्रजित् की यह सेना कर रही थी। ३७ चुभोनेवाले, आरे से चीरनेवाले, काटने वाले, खोंचनेवाले, धर दबोचनेवाले, पीछे भगानेवाले, कतरनेवाले, टुकड़े-टुकड़े कर डालनेवाले, मार डालनेवाले, चुभोनेवाले कराल (भयानक) राक्षसों से युद्ध में मचाए गये उत्पात के कारण पूंछ के मालिक

मेलें बीळुव मुसल मुद्गर शूल सेल्लेह सबळचक्र क-
राळ परिघ प्रास खड्ग प्रमुख कैदुगळ
तूळली हवणाय्तु हगेंवन कीलणिगें गर्ड़िविल्लदाय्तु-
ब्बाळु तनकवसानवाय्ततिकाय रिपुविगें ॥ 39 ॥
मोरेद वगणित सिडिलु सुळिसुळिदुरि चडाळिसितुब्बिदवु के-
सुरिगळासुर मसगि मुसुकिदवखिळ भूतचय
गिरिगळेंडे याडिदवु सूसिदुदरुणमय जलधारें नेरेंदवु
हरि शरभ शार्दूल सैरिभ विदिरिनलि भटन ॥ 40 ॥
होदुदिन्नेनकट रामसहोदरन शौर्यातिशयवें-
दादिवौकसरोऽलु तिर्दरु तरणिमार्गदलि
ऐदितधिक भयानकदलज नादरदिनुरु वैष्णवद सं-
पाददस्त्रवनित्तु कळुहिदना समीरणन ॥ 41 ॥
इळिद नंभोजजन बळियिदिळेंगें भुवन प्राणनग्गद
कलिललाट ललाम लघुसंधान लक्ष्मणन
ललित वैष्णव मुद्रितास्त्रव तिळुहि कोट्टाकाशमार्गके
निलुकिदनु पवमान पवन कुमार नुब्बिऱियें ॥ 42 ॥

वानर चक्कर काटते, चीखकर दाँत बाहर निकाले, चिल्लाते सारी धरती पर इधर-उधर लुढ़क-लुढ़ककर गिर रहे थे। ३८ ऊपर से मुसल, मुद्गर, शूल, बर्छी, खड्ग, भाला, चक्र, परिघायुध, प्रास, तलवार, कटार वग़ैरः प्रमुख आयुधों की मार से जो आक्रमण हुआ तो (उल्लिखित) यह दुर्गति हुई; शत्रु के तंत्र को समझना दूभर हुआ। लगता था कि लक्ष्मण के शौर्य का अंत नज़दीक है। ३९ अनगिनत बिजलियाँ कड़कीं; ज्वालाएँ सर्वत्र फैलीं; लाल लाल ज्वालाएँ उठकर धधकने लगीं; समस्त भूतसमूह ने भयानक रीति से चिढ़कर वानर वीरों को घेर लिया। पहाड़ वानर-सेना पर आक्रमण करने लगे; लाल रक्त का प्रवाह फूट पड़ा; शेर, शरभ, शेरनी, (जंगली) भैंसे आदि लक्ष्मण के सम्मुख उपस्थित हुए। ४० "ऐसा लगता है कि राम-सहोदर का शौर्यातिशय समाप्तप्राय है" —इस तरह कहते आकाश के देवता क्रंदन कर उठे। इन्द्रजित् का (छोड़ा) अस्त्र भयानक रूप धारे आ रहा था। तभी ब्रह्माजी ने आत्मीयता के साथ वायु देवता द्वारा वैष्णवास्त्र भिजवा दिया। ४१ बाण-प्रयोग में तन्मय, वीरकुलतिलक, लक्ष्मण के यहाँ (नज़दीक) ब्रह्माजी से भेजे गये वायु देवता पहुँचे। (ब्रह्मप्रदत्त) वैष्णवास्त्र को देकर उसके संधान के विधि-विधान लक्ष्मण को समझाकर वायु आकाश की ओर उड़े। यह देख वायु-

कॊट्ट बाणव् नीत तिरुविगॆ तॊट्टु कुबुबिड्रिदब्बरिसि बॊ-
ब्बिट्टु बिडॆ बॆरसितु महामायासुरास्त्रदलि
हुट्टि दिंद्रजितु प्रमुखरणघट्टणॆय चतुरंगबलवनु
बट्ट बयलनु माडि झाडिसितखिळ भूतगळ ॥ 43 ॥
उळिद नॊब्बनॆ शक्रजितु बॆरळिळुहि मूगिन मेलॆ मूर्धिनय
नॊलॆदु मामझ बापु विधि बल्लिदनलायॆनुत
उळिवु तंदॆगसाध्य पापद बळियफल तप्पुवदॆ तानि
न्नळलि माड्डुवुदेनु सावुदॆ समय तनगॆंद ॥ 44 ॥
ईतगळु नररल्ल नॆरॆदिह कोति कोडगवल्ल नम्मय
तात बयसिद वनितॆ मानवियल्लविदु सिद्ध
सोतडॆयु सुखदॆवदलि धैर्यातिशयदलि कादि कीर्तिय
वैतलॆय नप्पुवदॆ भावज्ञरिगॆ गुणवॆंद ॥ 45 ॥
अॆनुत मेघध्वान कोटिय निनददलि नैरुतव धनुसि-
जनियलुरॆ सडगरिसि सकल दिगंत दनिदॊरॆ
वनधि तलॆकॆळगागॆ नॆल विक्कनॆ बिरियॆ चंद्रार्क बिंबद
घनपदद पथ पल्लटिसॆ तॆगॆदॆच्च निंद्रारि ॥ 46 ॥

कुमार हनुमान फूले न समाए। ४२ तब लक्ष्मण ने वायु द्वारा दिया गया वह वैष्णवास्त्र धनुष की प्रत्यंचा पर चढ़ाकर वीरोद्गार निकालते, गरजते जब उसको (इन्द्रजित् पर) चलाया तो उस अस्त्र ने आगे बढ़कर इन्द्रजित् से प्रेषित माया के अस्त्र को आत्मसात् कर लिया (निगल लिया)। उसके बाद उस अस्त्र ने युद्धभूमि में उधम मचाते असंख्य इन्द्रजित् को तथा उसकी चतुरंग सेना को पूरी तरह साफ़ कर (समाप्त करते) भूतगणों को भगा दिया। ४३ इन्द्रजित् अकेला होकर रह गया; नाक पर उँगली धरे प्रसन्नता प्रकट करते, "धन्य धन्य! विधि ही बलवती ठहरी!" इस तरह कहते सोचने लगा— "अब पिताजी का बचना असाध्य है। पापकर्म का फल भुगतना ही पड़ता है; अब दुःख प्रकट करते बैठने से क्या प्रयोजन? मृत्यु ही मेरे लिए एक मात्र मार्ग है।" ४४ 'ये तो मानव नहीं हैं; यहाँ आकर जुटे बंदर वानर नहीं हैं; जिस स्त्री से पिता विमोहित हुए वह भी मानवी नहीं है।' —इसमें कोई शक नहीं। हारने पर भी भगवत-रूप से धैर्य के साथ लड़कर कीर्तिलक्ष्मी की माँग चूम लेने में ही ज्ञानी की भलाई है।' इस प्रकार इन्द्रजित् ने सोचा। ४५ इस प्रकार निश्चय कर इन्द्रजित् ने करोड़ों मेघों के गड़गड़ाहट के सदृश अपना दर्प प्रकट करते धनुष की मोड़ पर नैर्ऋतास्त्र संधान किया तो सारी दिशाएँ गूंज उठीं, समुद्र डाँवाँडोल

एनु बल्लविकेयो निधानिसे मानवन सौमित्रि शरसं-
धान समयोचितदोळधिकनला जगत्तिनलि
आ निरुति मंत्रास्त्र मुखके महानिशित सिरिकंठ शरव वि-
मानिकरु तलेदूगे कडिदिळुहिदनु रिपुशरव ॥ 47 ॥
ऎत्तिदनु बळिकबु जभव तनगित्त पूर्वद दिव्यशक्तिय
नॆत्तलुरि भुगुभुगिसि कमल भवांड खर्परव
होत्तिदवु जगविदनरिदु रघुजोत्तमन निजशरणनाक्षण
हत्तिरके नडेतंदु लक्ष्मणदेवगिंतेंद ॥ 48 ॥
हूडु तिरुविनलजमहास्त्रव नाडलिके तेरहिल्ल हिळुकिन
कोडिनलि कुळ्ळिरिसु कालन मंत्र मुखदिंद
हेडिगोळुतदे सुरर शीघ्रव माडु सुरवल्लभन निलिसु नी
रुढिसिद शरमुखदोळरिभट विजय नागेंद ॥ 49 ॥
ईतनाक्षण हूडिदनु जलजात भवबाणवनु लयनि-
र्घाततति बोब्बिरिदवा शरमुखद मुंबिनलि
घातिसिद नॆण्डॆसेय मेघव्रातगळ मिंचुगळु हिग्गितु
वातजन तनु तवकिसिदु दतिरथन सरिसदलि ॥ 50 ॥

हुआ; धरती में दरार पड़ गयी, सूर्य-चन्द्रमा के संचार में व्यत्यय पड़ गया; तभी उसने (लक्ष्मण पर) अस्त्र छोड़ दिया। ४६ सोच-विचार कर देखें तो मालूम पड़े कि लक्ष्मण भी विलक्षण ज्ञानी है ! संदर्भोचित बाण-प्रयोग मे जगत में ही वह श्रेष्ठ है न ! उस नैर्ऋतास्त्र का प्रतिरोध करते हुए उसने श्रीकंठास्त्र प्रेषित कर उसे काट गिराया, लक्ष्मण की तीर चलाने की यह कला देख देवताओं ने वाह वाह किया।४७ उसके बाद इन्द्रजित् ने पूर्व में अपने को ब्रह्माजी से दी गयी दिव्य शक्ति उठायी। उसके उस दिव्य शक्ति के उठाते ही चारों ओर धू-धू करती ज्वाला ब्रह्मांड भर में व्याप्त हो गयी। लोक प्रज्वलित हो जलने लगे। इस रहस्य को समझनेवाले रघूत्तम के शरणागत विभीषण ने तुरंत लक्ष्मण के पास पहुँचकर यों कहा। ४८ "धनुष की प्रत्यंचा पर तुरन्त ब्रह्मास्त्र जोड़ो; अब बोलने के लिए भी समय नहीं है; बाण के निचले छोर पर यमदेवता को मंत्र से प्रतिष्ठित करो। इन्द्रजित् का (यह) अस्त्र देवताओं को भयभीत कर रहा है; शीघ्रता बरतो। बाण के मुँह पर देवेन्द्र को प्रतिष्ठापित करो; शत्रुवीर को जीतने का यश प्राप्त करो।" ऐसे विभीषण ने कहा। ४९ तुरन्त ही लक्ष्मण ने ब्रह्मास्त्र को धनुष पर चढ़ाया। उस बाण की नोक पर प्रलयकालीन बिजलियाँ फड़कने लगीं; आठ दिशाओं के

नॆनॆदना रामांघ्रिपंकजवनु मनो भावदलि कौशिक
मुनिगॆ शरणॆंदभ्रदमररि गक्षियलि नमिसि
धनुव वामद करतळद बिगुहिनलि बलिदाकर्ण शरसि
जिनिय संधानदलि लक्ष्मणदेवर्नितॆंद ॥ 51 ॥
सुरमहीसुर हव्य कव्याध्वर विघातरि गिदकॊ दुर्जन
चरित धर्मद्रोह निरतरिगिदकॊ परसतिय
परधनद सॊगसिगॆ मनवनु बॆरसुवधमरि गिदकॊ शिक्षा
परम प्रायश्चित्त विधियॆनुतॆच्चु बॊब्बिरिद ॥ 52 ॥
अब्बरिसि बरॆ सरळुनभदलि बॊब्बिरिदुदमराळि हॊडॆदवु
रॆब्बहॆगळल्ललिल मातळि भुजवनॊदरिसिद
उब्बुडॆगॆ दिव्रारि कैयिदॆब्बिसिद शक्तियनु खंडिसु
तुब्बिनलि नडॆतंदु नॆगहितु नभकॆ रिपुशिरव ॥ 53 ॥
तूकिरिद नंतकनु बॊब्बॆय तोकिदनु शिखि हरुषदिंद पि-
नाकि हारय्सिदनु हॊय्सिद नखिळ भेरिगळ

मेघसमूहों को मानों एक ही वार में पीटने को उद्यत बिजलियाँ कौंधीं; अतिरथ राम के साथ-साथ हनुमान भी उत्कंठित हुए। ५० लक्ष्मण ने श्रीराम के चरण-कमलों का ध्यान कर शुद्ध चेतना (मन) से विश्वामित्र को मन ही मन शरणागति समर्पित की। आकाशस्थित देवताओं को आँखों से ही (निहारकर) प्रणाम कर बाएँ हाथ से धनुष को जकड़कर पकड़ते दाहिने हाथ से धनुष का चिल्ला (डोरी) कान तक खींचकर लक्ष्मण ने इस प्रकार कहा। ५१ देव ब्राह्मण, यज्ञ-यागादियों के विनाशकर्ता के लिए यह है; अपने दुराचरण से धर्म को धोखा देनेवालों के लिए यह है; अन्यों की स्त्री तथा धन के लिए आस लगाए बैठनेवाले नीचों के लिए यह है; पाप के लिए दंड-विधान के रूप में यही एक प्रायश्चित्त की विधि है। इसे स्वीकार करो।" इस तरह कहते सिंहनाद करते लक्ष्मण ने अस्त्र चलाया। ५२ लक्ष्मण से प्रेषित अस्त्र जब गरजते आने लगा तो आकाश में उपस्थित देवता शोर मचाने लगे। जिधर-तिधर डफ तथा नगाड़े बजने लगे। देवेन्द्र का सारथि मातली अपनी भुजाएँ फड़काने लगा; बड़े रोब के साथ लक्ष्मण के हाथ से छूटे दिव्यास्त्र ने इन्द्रजित् की (उस) दिव्य शक्ति को काट डाला तथा उत्साह के साथ आगे बढ़कर (उसने) इन्द्रजित् के सिर को काट आकाश में उड़ा दिया। ५३ इन्द्रजित् को मरा देख यम देवता खुशी के मारे नाच उठे। अग्नि ने शोर मचाया। पिनाकधर शिवजी ने आनन्द से भूरि-भूरि प्रशंसा की। स्वर्ग के राजा देवेन्द्र ने ढिंढोरा

नॆनॆंदना रामांघ्रिपंकजवनु मनो भावदलि कौशिक
मुनिगॆ शरणॆंदभ्रदमररि गक्षियलि नमिसि
धनुव वामद करतळद बिगुहिनलि बलिदाकर्ण शरसॆ
जिनिय संधानदलि लक्ष्मणदेवनिंतॆंद ॥ 51 ॥

सुरमहीसुर हव्य कव्याध्वर विघातरि गिदकॊ दुर्जन
चरित धर्मद्रोह निरतरिगिदकॊ परसतिय
परधनद सॊगसिगॆ मनवनु बॆरसुवधमरि गिदकॊ शिक्षा
परम प्रायश्चित्त विधियॆनुतॆच्चु बॊब्बिरिद ॥ 52 ॥

अब्बरिसि बरॆ सरळुनभदलि बॊब्बिरिदुदमराळि हॊडॆदवु
रॆब्बहॆगळल्ललिल मातळि भुजवनॊदरिसिद
उब्बुडॆगॆ दिव्यारि कैयिंदॆब्बिसिद शक्तियनु खंडिसु
तुब्बिनलि नडॆतंदु नॆगहितु नभकॆ रिपुशिरव ॥ 53 ॥

तूकिरिद नंतकनु बॊब्बॆय तोकिदनु शिखि हरुषदिंद पि-
नाकि हारय्सिदनु हॊय्सिद नखिळ भेरिगळ

मेघसमूहों को मानों एक ही वार में पीटने को उद्यत बिजलियाँ कौंधीं; अतिरथ राम के साथ-साथ हनुमान भी उत्कंठित हुए। ५० लक्ष्मण ने श्रीराम के चरण-कमलों का ध्यान कर शुद्ध चेतना (मन) से विश्वामित्र को मन ही मन शरणागति समर्पित की। आकाशस्थित देवताओं को आँखों से ही (निहारकर) प्रणाम कर बाएँ हाथ से धनुष को जकड़कर पकड़ते दाहिने हाथ से धनुष का चिल्ला (डोरी) कान तक खींचकर लक्ष्मण ने इस प्रकार कहा। ५१ देव ब्राह्मण, यज्ञ-यागादियों के विनाशकर्ता के लिए यह है; अपने दुराचरण से धर्म को धोखा देनेवालों के लिए यह है; अन्यों की स्त्री तथा धन के लिए आस लगाए बैठनेवाले नीचों के लिए यह है; पाप के लिए दंड-विधान के रूप में यही एक प्रायश्चित्त की विधि है। इसे स्वीकार करो।" इस तरह कहते सिंहनाद करते लक्ष्मण ने अस्त्र चलाया। ५२ लक्ष्मण से प्रेषित अस्त्र जब गरजते आने लगा तो आकाश में उपस्थित देवता शोर मचाने लगे। जिधर-तिधर डफ तथा नगाड़े बजने लगे। देवेन्द्र का सारथि मातली अपनी भुजाएँ फड़काने लगा; बड़े रोब के साथ लक्ष्मण के हाथ से छूटे दिव्यास्त्र ने इन्द्रजित् की (उस) दिव्य शक्ति को काट डाला तथा उत्साह के साथ आगे बढ़कर (उसने) इन्द्रजित् के सिर को काट आकाश में उड़ा दिया। ५३ इन्द्रजित् को मरा देख यम देवता खुशी के मारे नाच उठे। अग्नि ने शोर मचाया। पिनाकधर शिवजी ने आनन्द से भूरि-भूरि प्रशंसा की। स्वर्ग के राजा देवेन्द्र ने ढिंढोरा

नाकपति नलिदाडिदनु मकराकरेश्वर ननिल धनदर
नेक सुररब्बिरिसिदरु रावणिय मरणदलि ॥ 54 ॥
हार्येनुत हम्मैसितसुर निकाय वभ्रद यक्ष राक्षस
रायुधव बिसुटुगुरलुगिसिद रश्रुवारिगळ
बाय हौय्लिन शोक शिखिय चढायमानद मरुकदुब्बिन
कायदुप लंकेश निळॆगोरगिदनु मूर्छॆयलि ॥ 55 ॥
चिगिद तलॆ कोंडाडॆ बवरद बिगुहु बळचदॆ बाणधिय बा-
णगळु सर्ववन्नबरलॆच्चुदु मुंड रावणिय
मगुळॆ किग्गट्टिन कठारिय नुगिदु दंडॆयनोड्डिड तिविदुदु
गगनवनु हळुवायियलि हर्वणिसुत रथदोळगॆ ॥ 56 ॥
हेळलच्चरि वीरलंका पालकन भुजविजय लक्ष्मिय
तोळ कन्नडि कळचि बीळ्वंददलि नभदिंद
ढाळिसुव दाडॆगळ होगरोगु वालिगळ नगॆमोगद कर्णवि-
लोलकुंडल दसुरशिर कॆडॆदुदु महीतळकॆ ॥ 57 ॥
कॊडॆद तलॆयनु तक्कविसि मोगदडवि मक्कळ माणिकवॆक-
न्नडिय कलिगळ कंद हार्येनुता विभीषणनु

पिटवाया। वरुण नाच उठे। वायु, कुबेर आदि देवता ज़ोर-ज़ोर से (आनन्द के मारे) शोर मचाने लगे। ५४ राक्षस-समूह हाय तोबा मचाने लगा। आकाश के यक्ष-राक्षस अपने शस्त्रास्त्र फेंककर उँगली पर के नाखूनों से अपने अश्रु पोंछने लगे। विभीषण शोकाग्नि से संतप्त होते दुःख से विह्वल होते गाल पीटते-पीटते मूर्च्छित हो धरती पर लुढ़क गये। ५५ कटकर आकाश की ओर उछल रहा इन्द्रजित् का सिर राम-लक्ष्मण की प्रशंसा करते जा रहा था तो इधर उसका मुंड युद्ध की गरमी ठंडी न पड़ने के कारण तरकस से तीर समाप्त होने तक (तीर) चलाते जा रहा था। फिर उस मुंड (धड़) ने हाथ से कमर में लटकती तलवार खींच ली। रथ में ही अपने को सँवारते हुए ज़ोर-शोर से चीखते हुए हाथ (आगे) बढ़ाकर शून्य में उसने तलवार चलायी। ५६ वह (कार्य) तो वर्णनातीत है। वीर लंकाधिपति के भुजविजयलक्ष्मी के हाथ का आरसा टूट पड़ने के सदृश, चमकते वक्रदाढ़ों के, कांतियुक्त आँखों के, हँसते मुखड़े के, कानों में चमकते बालियों के इन्द्रजित् का सिर आकाश से धरती पर धड़ से गिरा। ५७ "नीचे गिरे इन्द्रजित् के सिर को गोद में ले चूमते हुए सहलाते हुए, "हाय मेरे बेटे, बालकों में रत्न-सदृश, मेरे आईने, वीरों के सुपुत्र ! हाय हाय ! अपने पिता के मोह के जिद्द के शिकार हुए न मेरे

मडिदेयेयेले मगदे तंदेय तोडकुवेटद तोटियलि नगे
गेडेगे संदिरेयेंदु तंदनु कंगळलि जलव ॥ 58 ॥
आर मातनु केळदकटा होरिकॊट्टिटरे मक्कळिर क-
ण्णारे कंडेगे पुत्रमित्र भ्रातृवर्धेगळनु
वीर हा वैचित्र कदनकठोर हा कमनीय सौंदर
हार हाहा कंद हायेंदसुर शोकिसिद ॥ 59 ॥
संतविसिदनु बळिकला विक्रांतबल सौमित्रि कलिहनु
मंत हुतवहसूनु जांबव मुख्य भटनिकर
चिंतेयनु बिडिसिदरु माया भ्रांति बेडेंदमल लक्ष्मी
कांत तोरवेय राय नरकेसरिय किंकरन ॥ 60 ॥

नलवत्तैदनेय संधि

सूचने— काळगद मुखदलिल शुक शार्दूल सारणरसुन सलहि सुरालयके कळुहिदनु रघुपति कलि सुपार्श्वकन ।

कुश कुमारक केळु नेलेगाणिसिद रक्कस जलधि नेलेगा
णिसितलै कलिकुंभकर्णासुरन मरणदलि

बेटे ! दुनियाँ हमें देख हँसी-मज़ाक़ उड़ाएगी ।" इस तरह प्रलाप करते विभीषण की आँखें डबडबा आयीं । ५८ "किसी की बात पर (मना करने पर भी) ध्यान न देते युद्ध में गुँथकर अपनी आहुति चढ़ायी न ? (यों व्यर्थ प्राण त्यागे न !) बेटा, स्नेही जन तथा सहोदर भाइयों की हत्या इन अभागी आँखों के सामने ही हुई न ! विचित्र युद्ध के हे महान योद्धा, मनोहर सुन्दर कण्ठहार, हाय मेरे पुत्र !" इस तरह कहते विभीषण अत्यंत व्याकुल हुए । ५९ अनुपम बलशाली लक्ष्मण ने विभीषण को साम्त्वना देते धीरज बँधाया । हनुमान, नील, जाम्बव आदि प्रमुख वानर नायकों ने मायाभ्रांति त्यागने के लिए कहते हुए 'तोरवे' के नरहरि के अवतारी लक्ष्मीकांत के भक्त की चिंता दूर की । ६०

पैंतालीसवीं संधि

सूचना— युद्ध में शुक, शार्दूल तथा सारणों के प्राणों की रक्षा करते हुए राघव ने सुपार्श्वक को स्वर्ग का मार्ग दिखाया ।

हे कुमार कुश ! सुनो । अपनी तलहटी (सतह) दिखानेवाले राक्षस-सागर ने वीर कुम्भकर्णासुर की मृत्यु में अपनी गहराई भी दिखायी । हे

कुश सहोदरकेळु शक्रद्विषन मरणदलुगुळु नीरा-
यतसुररिगे सुरनिकर काय्ती परिय भयजलधि ॥ 1 ॥
सारिदुदु रविबिंब पडुवण वारिधिय धारुणिय ललित
स्मेर बिंबाधरद रुचि पर्बिदुदु दिक्तटव
बारिसिद समरश्रमद संपूरणदलि वरिरुळु मुखदलि
सारिदरु पदपद्मवनु पंकरुहलोचनन ॥ 2 ॥
अंद्दु तम्मननप्पिदनु होदरेंद्द हरुषदलनुज केळ्नी
निद्दकारण कीर्तिकैवश वादुदभिगतद
होद्दिददभिमानांगनेगे नेरे बिद्दिनरु नावागदंतिरे
गेद्द हगेवननेंदु होपुळियोदनाराम ॥ 3 ॥
बळलिदनुजन मैयरक्तव बळिदु घायदोळद्द शरमुख
दलगुगळ नुगिदुगिदु कंगळ लुगिसिदनु जलव
इळेयोळेन्नंददलि बेर्रिन्नोळरे दुःखिगळेंदु मिक्किन
बलयुतरनुपचरिसिदनु कारुण्य भावदलि ॥ 4 ॥
अनुज केळीराहु वरुषदलनशनव्रतवेंतु घटिसितु
निनग निद्राभंगवेतर्रिनाय्तु हेळेनलु

कुश-सहोदर लव ! सुनो। इन्द्रजित् की मृत्यु से वह थूक का पानी जैसा हुआ। इस प्रकार वह देवताओं के लिए अभय सागर-सदृश हुआ। १ सूर्यबिंब पश्चिम सागर में उतरा। मुस्कुराहट से भरी बिम्बफल-सदृश भू-लक्ष्मी के सुन्दर लाल-लाल ओंठों की लालिमा दिशि-दिशाओं में फैली। युद्ध के परिश्रम से थके लक्ष्मण, विभीषण वग़ैरहों ने कमलनयन श्रीराम के चरण-कमलों के दर्शन प्राप्त कर लिये। २ राम ने आनंदातिरेक में उठकर भाई लक्ष्मण का आलिंगन कर लिया। "भाई, तेरे कारण ही हमारे हाथ से छूट रही कीर्तिलक्ष्मी हमारे वश में आयी। शत्रुओं से मिली अभिमानश्री का अतिथि हमें न होना पड़े इस रीति से विजय प्राप्त की न ?" इस तरह कहते राम रोमांचित हुए। ३ राम ने थके-मांदे अपने भाई के शरीर के रक्त को पोंछ निकाल, घावों में चुभे बैठे बाणों के टुकड़ों (नोकों) को निकालते अश्रुधारा बहायी। इस दुनिया में मुझसे अधिक दुःखी क्या और कोई हो सकता है ? इस तरह सोच व्याकुल होते हुए करुणापूर्ण हो अन्य बलशाली नायकों की सेवा-शुश्रूषा की। ४ "भैया मेरे; बारह वर्षों का निराहार व्रत तुझे क्योंकर प्राप्त हुआ ? बारह वर्षों तक बिना नींद के तुम कैसे रह सके ? और क्यों कर रहे ? कहो तो सही।" इस तरह राम ने प्रश्न किया। "जंगल से रोज़ फलों को लाकर

वनफलँगळ तंदु ना दिन दिनकॅ देवरिगीवॅ देवर
नॅनहु संधिसदिरलु निरशनवादुदॅनगॅंद ॥ 5 ॥
इरुळु दुष्टमृगौघ रजनीचरर बाधॅगॅ तॊरॅदु निद्रॅय
गरवरिगॅ वरुतिहॅनु निम्मडियंगरक्षणॅगॅ
तरुणियर संभोगवॆंतू दॊरकदॆंबुद देवरभ्यं
तरद चित्तवॆ बल्लदॅनॆ मरुगिदनु रघुनाथ ॥ 6 ॥
अरियदादॅनु कंद कानन दुरुव कंदफलाळिगळ नी
मरॆयदुदराग्निगॆ निवेदिपॆयॆंदु बगॆदिहॆनु
ऒरगदिहॆ निद्रॆयलियॆंदा नरियदिहॆयॆलॆ तम्मनदु
क्किरिव शोकदलंबुगळ नंबककॆ सेरिसिद ॥ 7 ॥
अरसकेळुपवासगळु जागरगळमल ब्रह्मचरियद
निरतिशय सुव्रतवु दॊरकितु दैवसूत्रदलि
धुरदलज शंकर सुरॆंद्राद्यरिगॆ सोलद भटनु मत्तॊ-
ब्बरिगॆ मणिवनॆयॆंदु बिन्नैसिदनु सुग्रीव ॥ 8 ॥
ऎंद रविनंदननहुदॆयॆंदु जांबव हॊगळि बळिकर
विंद नयननुपचरिसि परिहरिसिदनु मनद

भगवन् ! आपको मैं दे देता। लेकिन आप जब मेरे बारे में न सोचते तो मुझे निराहार (उपवास) रहना पड़ता था।" इस तरह लक्ष्मण ने कहा। ५ रात्रि के समय दुष्ट मृगों से तथा राक्षसों से होनेवाले उत्पातों के निवारणार्थ (बचाने के लिए) रात भर जागते तुम्हारा अंगरक्षक हो चारों ओर गश्त लगाते रहता। अब रही स्त्री के साथ संग या मेल-मिलाप की बात। वह तो बिलकुल न रहा —यह सत्य, भगवन, आप जानते ही हैं।" इस प्रकार लक्ष्मण के कहने पर राघव अत्यंत व्याकुल हुए। ६ "मैं यह सब जान ही न पाया। बेटे, जंगल के कन्द-मूल बिना भूले तुम भी अपनी जठराग्नि को समर्पण कर तृप्त हो रहे हो —इसी तरह समझते रहा। यह भी न जान पाया कि तुमने नींद को कभी अपने पास न आने दिया। भैया मेरे।" इस तरह कहते राम की आँखें भर आयीं। (वे आगे बोल न पाए)। ७ "हे राजा राम, सुनिए। उपवास, जागरण तथा ब्रह्मचर्य-व्रत-पालन —ये लक्ष्मण को विधि के नियम के अनुसार प्राप्त हुए हैं। युद्ध में ब्रह्माजी, शिवजी तथा देवेन्द्र से हार न माननेवाला वीर अन्यों के सामने कैसे झुके ?" इस प्रकार सुग्रीव ने निवेदन किया। ८ सुग्रीव के कथन की प्रशंसा तथा समर्थन करते जाम्बवंत ने राम को सांत्वना देते उसके मन की व्याकुलता को दूर किया। उसके बाद राम ने आँख के

संदणिय शोकव्यथॆयनलिद मेलसुरारि नयन
स्पंददलि बीडिकॆंग बीळ्कॊट्टनु भटावळिय ॥ 9 ॥
केळि रैयलॆ नृपकुवर शार्दूलरिर धरॆगिळिदना सुर-
पालजितुविन सूतनत्तलु शोकदलि रथव
आलि मरळिद मुसुड मुसुकिनदूळुगॆदरिद तलॆय तेरिन
मेलॆ तंदिळुहिदनु रथवनु तिरुहिदनु पुरकॆ ॥ 10 ॥
इळुहिदनु दशकंठनोलग दॊळगॆ सारथि शक्रजितुविन
तलॆय नॊसगॆय हरॆय हॊय्सॆळिदिनाहवद
गॆलविदॆंबी कूरितद नुडियलगु नाटितु बॆन्निनलि कळ-
वळिसि हा युवराज हायॆनु तॊरगिदनु नॆलकॆ ॥ 11 ॥
तन्न दॆसॆयिदाद बाधित भिन्न हृदयनु कनसु कळवळ
गन्नदलि तलॆ सिक्कि सिडिमिडियोद नडिगडिगॆ
चन्न हा चतुरास्यवर संपन्न हा विबुधेंद्र दर्पवि
भिन्न हा हा कंद गतियिन्नेवु तनगॆंद ॥ 12 ॥
मगनॆ निन्निंदा त्रिविष्टप नगरि कैदशवाय्तु हॆसरा
ग्तघ विरोधि प्रमुख दिविजर गंडनॆंदॆंब
बगॆय बिरुदिन कीर्तिलतॆ मूजगव पर्बितु निन्नदॆसयिं
मगनॆ केळ् नी नगलल गलिदवॆल्ल तनगॆंद ॥ 13 ॥

इशारे से वीरों को उनके अपने निवासस्थानों में भिजवा दिया। ९ शार्दूल-सदृश राजकुमार कुश-लवो, सुनो। इन्द्रजित् के सारथी ने दुःखभार से रथ को धरती पर उतारा। दीठ घुमाये मुखड़ा तथा धूल भरे बिखरे बालोंवाले इन्द्रजित् के सिर को आवरण से ढाँपकर रथ पर लाकर रखते, (उस) रथ को लंकानगरी की ओर ले चले। १० सारथी ने रावण के सभाभवन में इन्द्रजित् के उस सिर को लाकर रखा। "मंगलवाद्य बजने दो। आज के युद्ध की यह विजय है।" इस तरह के पैने वचन रूपी खड्ग की नोक मानों रावण की पीठ में चुभी। 'हाय युवराज' हाय हाय!' इस प्रकार कहते रावण धड़ाम से धरती पर गिरा। ११ "मेरे कारण, यों मेरे बेटे की व्यर्थ हत्या हुई न?" —इस वेदना के कारण भग्न-हृदयी रावण स्वप्न तथा व्याकुलता के बवंडर में फँसा वार-बार पछताता रहा था। "मेरे लड़के, ब्रह्माजी से वरदान प्राप्त धीमान, देवेन्द्र की मस्ती को चकनाचूर करनेवाले मेरे प्यारे बेटे! हाय! अब मेरा क्या होगा!" इस तरह कहते रावण विलाप करने लगा। १२ "बेटे, तेरे ही कारण

सिरियिदेकिन्नी जगत्त्रयदरसुतन विन्नेकॆ कामिनि
यर कटाक्षकलाप केळी व्यसन विन्नेकॆ
तरुण केळ्‌नी निल्लदेकी हरणवॆलॆ सुकुमार नुडियॆ
किरणविल्लद शशियवॊलु नानादॆनेयॆंद ॥ 14 ॥
हेळु बुद्धिय मगनॆ मुंदकॆ बाळलो बीळलो महालय
बालकिय बलु जव्वनद नॆलॆ मॊलॆय नॆम्मिनलि
काळ कविदिदॆ बॆळकिगॆ केळिदॆयॆलॆ कंद तन्नय
नालगॆगॆ मुळुमुरिदुदुत्तर बावुदॆनगॆंद ॥ 15 ॥
रतिकला सुप्रौढॆयल्लद सतिगॆ रूपिद्देनुफल स-
न्नुत गुणाधिक नल्लदबनाकारवेनु फल
नुत रसालंकार विल्लद कृतियदेनिद्देनुफल निज
सुत विहीनन बदुकु लोकदॊळॆनु फलवॆंद ॥ 16 ॥
तानभाग्यनु कंदनिन्निदेनु कॊरतॆ महाहवदॊळुरॆ
हानि हॊद्ददॆ हगॆय जयिसिदॆ जिह्म गास्त्रदलि

अमरावती हमारे आधीन हुई; साथ-साथ कीर्ति भी प्राप्त हुई। तेरे ही कारण 'विष्णु आदि प्रमुख देवताओं का वीर!' इस प्रकार कई उपाधियों की मेरी कीर्तिलता तीनों लोकों तक फैली। जब तू ही चला गया तो समझो ये सब उपाधियाँ मुझे छोड़ जायँगी।" इस प्रकार रावण ने कहा। १३ "अब इस संपदा से क्या प्रयोजन! इन तीनों लोकों के आधिपत्य में अब क्या धरा है! युवतियों की तिरछी नजर में अब कहाँ का आकर्षण! उनके संग अठखेलियों से क्या प्रयोजन! उनके प्रति क्यों आकर्षित होऊँ? सुनो हे युवक! तुम्हारे बिना इन प्राणों को क्यों धारण करूँ? हे मेरे सुकुमार, बोलो तो सही। बिना किरणों वाला चन्द्रमा-सरीखा मैं हो गया हूँ।" इस प्रकार रावण ने प्रलाप किया। १४ "मुझे समझा दो मेरे बेटे; भविष्य के लिए मैं जिंदा रहूँ अथवा विनाश नामक युवती की छाती पर लेट जाऊँ? मेरी आँखों में अँधेरा छा गया है। सुनो मेरे लाड़ले, मेरी जीभ में काँटे चुभ गये हैं। मेरे लिए तुम्हारा क्या प्रत्युत्तर है? १५ रतिकला (सुरति-सुख देने में) नैपुण्य-रहित स्त्री के रूप को लेकर क्या करना है? उत्तम सद्गुण-रहित सुन्दर शरीर से क्या प्रयोजन? रस तथा अलंकार-रहित काव्य से क्या प्रयोजन? इस जगत में खुद की संतान (और सुपुत्र) से विरहित हो जीने में क्या धरा है?" इस प्रकार रावण ने कहा। १६ मैं ही अभागा हूँ, मेरे पुत्र! तेरा इसमें कोई दोष नहीं। बड़े भारी युद्ध में बाल बाँका हुए

आनिसिदें संवर्त मृत्युविनाननकें बळिकिम्मिनलि चतु
राननास्त्रदलल्प पुण्यरु नावलेयेंद ॥ 17 ॥
खेडनागदे रोमदलि खयखोडियिल्लदे मगने खाडा
खाडियलि नेरे कादिकोंडे यशोविलासकव
आडनालिगेयिल्ल विषयदलाडि मक्कळु मरिगळनु हो-
गाडिदनु खळनेन्नदिर दिन्नेनु गतियेंद ॥ 18 ॥
केळिबंदळु बळिक सोसेयर मेळदलि मोरेयिडुत वदनव
सूळविसि कोळुतसुररायन राणि मगनेडेगे
बाल हा बर्हिर्मुखर हृच्छूल हा रणभामिनीरति
लोल हायेले कंद हायेंदोरगिदळु धरेगे ॥ 19 ॥
असवळिदु बसवळिदु सडलिद वसन दुदर लतांतलंबित
लसित केशद कोंदरिकेय कंकण झणत्कृतिय
बसुर होय्लिन कांते कांता त्रिसरदक्कैयलुक्किकरिव कडु
रसद शोकोद्रेकदलि होरळिदळु हुडियोळगे ॥ 20 ॥
बळलि बळिकेंद्दबले गंडन बळिय राक्षस राजमंडळि
योळगे मोरेयिट्टळलिदळु बहुविध विलापदलि

बिना (बिना नुकसान उठाए) सर्पास्त्र की सहायता से शत्रुओं को जीत गये। ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर शत्रुओं को प्रलयकालीन मृत्यु के मुँह में झोंक दिया। हम अल्प पुण्यशाली हैं। (हम केवल अभागे है।) १७ "रत्ती भर भी न डरते, हर तरह से दोष-रहित हो तू बड़ा रोमांचकारी युद्ध कर अमर कीर्ति का अधिकारी बना। यह सब वर्णन में मेरी जीभ असमर्थ है। दुनिया यह आरोप (इल्जाम) लगाए बिना न रहेगी कि रावण ने इन्द्रिय-सुख के पीछे पड़कर अपने बाल-बच्चों का होम कर दिया। अब मेरी क्या गति होगी?" इस तरह कहते रावण अत्यंत व्याकुल हुआ। १८ पुत्र की मृत्युवार्ता सुनकर रावण की रानी अपनी बहुओं के साथ 'हाय तोबा' मचाते बेटे के नजदीक (मृत शरीर के पास) पहुँची। "हाय मेरे बेटे, देवताओं के हृदय-शूल, युद्ध लक्ष्मी के साथ सुरति-क्रीडासक्त, हाय हाय मेरे लाडले?" इस प्रकार शोक प्रकट करती मंदोदरी धड़ाम से गिर पड़ी। १९ थकावट के मारे क्लांत, शरीर पर के कपड़े ढीले पड़े, बिखरे फूल, चमकते बिखरे बालों से युक्त, कंगनों के झणत्कार (झनझनाहट के साथ) पेट पीटती हुई मंदोदरी स्त्रियों के रोदन के साथ उमड़कर बहते अश्रुप्रवाह-युक्त शोकरस में डूबी धूल में लोटने लगी। २० राक्षसराज गोष्ठी में (मंडली में) कई रीतियों से प्रलाप करते हुए— "मेरे रत्नकलश को

सॆळॆदु कॊंडरॊ तन्न रन्नद कलशवनु तन्नय मनोरथ
विलसवनु मांगल्य बाळद मौक्तिकद मणिय ॥ 21 ॥
ऒन्न सॊबगिन नोटदुत्तम कन्नडियनॊडॆ बडिदरो हा
यॆन्न चिंतामणिय कद्दरॊ काणुतकटकट
ऒन्न भाग्यद निधिगॆ सवॆदरॊ कन्नवनु मॊरॆयिडुव मातनु
मन्निसुव रिल्ला विचारिसलॆंदळा कांतॆ ॥ 22 ॥
कळुहि बंदिरॆ मगन हगॆगळ कॊलॆगॆ गुरिमाडिदरॆ बवरकॆ
बलिय कॊट्टरॆ बायिगडिसिदिरे लयांगनॆय
चलुवननु चन्निगन चदुरनछलवमॆरॆदिरॆ केडुतनगॊ-
ब्बळिगॆ बंदुदलायॆनुत बाय्बिट्टळा कांतॆ ॥ 23 ॥
आसॆगॊडुवव रिल्लवकटा देसिगिति तानादॆने नॆरॆ
दोषविल्लवॆ निमगॆकंदन कॊंदवरु नीवॆ
लेसु माडिदिराळ्द नित्तादेशवनु नीव् पालिसलु वे-
ळॆसलेयॆंदबलॆ मॊरॆयिट्टळु भटावळिगॆ ॥ 24 ॥

खींच लिया न ! मेरा जीवनसौंदर्य मुझसे छीन लिया गया न ! मेरे सुहाग की मोतियों की माला की मणि (रत्न) मुझसे छीना गया रे !" इस तरह विलाप करती गिड़गिड़ायी। २१ "मेरे सौंदर्यसंपन्न दृश्य के श्रेष्ठ मुकुर को तोड़कर चकनाचूर कर दिया न ! हाय हाय ! मेरे कौस्तुभ रत्न की चोरी न जाने किसने की ? मेरे भाग्यसंपत्ति को, हे मेरे दैव ! लूट लिया न ! मैं जितना भी रो-धोकर छाती पीट लूँ —सुननेवाला, मेरे आँसू पोंछनेवाला कोई न रहा न !" —इस प्रकार मंदोदरी ने विलाप किया। २२ "बेटे को भिजवाकर आए न ! शत्रु के हाथों हत्या करायी न ! युद्ध (यज्ञ) में बलि चढ़ायी न ! अत्यंत सुन्दर कोमल चतुर को प्रलय रूपी स्त्री (मारी) के मुँह में दबोच दिया न ! तुमने अपनी जिद पूरी कर ली न ! हाय हाय ! मुझ अकेली को यह (वेदना) भुगतना है न !" इस तरह कहती मंदोदरी रोने-धोने लगी। २३ मुझे सांत्वना देनेवाला कोई न रहा न ! हाय मेरे दैव ! मैं परदेसी बनी न ! क्या इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं ? मेरे लाड़ले की हत्या करनेवाला तू ही है। बहुत बड़ा (अच्छा) काम किया ! स्वामी की आज्ञा का पालन तुम्हारा धर्म है न (कर्तव्य है न)! इस प्रकार दीन दुःखी बनी मंदोदरी वीरों से पूछने लगी। २४ वृद्धि पाकर परिपक्व बने परस्त्रीव्यामोह के जाल में बेटे को फँसाकर, चकनाचूर

बेळेद बेटके मगन तोत्तळदुळिसि तावनुभविसलेसा
फलवु दूरवे दिनगळकटा तन्न कंगळिगे
तोळलुतिर्दव होदनुरे निर्मळवु निमगिन्नागलेंदा
ललने कांतन कटकियलि नुडिदळु सरोषदलि ॥ 25 ॥
मृत्युवादळे मगने सोदरदत्ते तम्मण्णननु बोधिसि
कित्तुबिसुटळे बेरनेन्नय पुत्रसंततिय
हेत्तोडलु हाळाय्तु कंडिरे येत्ति सलहिद तोळु नेरेमुरि
यित्तला हायेनुत कोरळिगे हाय्दळबलेयर ॥ 26 ॥
अरिद शिरवनु तेगेदु मुंडद कोरळिनलि सैतिरिसि मुद्दिसि
मरळिचैमुंडाडि दिट्टिसि लल्लेवातिनलि
करे करेदरोयेन्नेयेकै तरुण ताय् निनगल्लवे ता
करगवे करणगळु तन्नलियेंदळा कांते ॥ 27 ॥
तलेय तक्किसि कोंडु मेलुद केलकडेगे मरेमाडि मुद्दिसि
मोलेगोळिसि तूपिरिदु मलगेलेकंद मलगेनुत
नेलन मेलिळुहिदळु करेदळु केळदियर जोगुळके दशमुख
नोळगु तापिसे कोसरिदळु नंदनन निजगुणव ॥ 28 ॥

करा तुड़वाकर स्वयं सुखोपभोग की आकांक्षा बरें तो उसका फल कितने दिन टिक सकता है ? वे दुर्दिन अब दूर नहीं; मेरी आँखों का तारा तो चला गया। अब तुम बेखटके जीवन बिताओ; चैन की बाँसुरी बजाओ। इस तरह क्रोधसंतप्त मंदोदरी ने पति को ताने देते कहा। २५ "मेरे लाडले, तेरी फूफी ही तेरे लिए मृत्युस्वरूप बनी न ! अपने बड़े भाई से चुगली खाकर मेरे पुत्र-संतान की जड़ें ही उसने उखाड़ दीं न ! मेरे गर्भ को ही आग लगी है ! (पेट में ज्वाला उठ रही है !) मेरे दुलारे को उठाकर खेलानेवाली भुजाएँ मानों टूट गयीं न !" इस तरह कहते बिलखते अपने नजदीक की स्त्रियों के कंधों का आसरा लिये लेट गयी। २६ मंदोदरी ने बेटे के कटे सिर को धड़ से जोड़कर प्यार जताया। फिर उसका माथा सहलाते लाड़-प्यार करते दृष्टि रोपकर देखते, लाड़-भरी बातों से बोलते, "हे मेरे कुमार, इतना मैं पुकार रही हूँ; जवाब क्यों नहीं देते ? क्या मैं तेरी माँ नहीं हूँ ? क्या मेरी यह दयनीय स्थिति देख तेरा दिल क्योंकर नहीं पिघलता ?" इस तरह उसने पूछा। २७ मंदोदरी ने अपने बेटे के सिर को अंक भर लेते हुए आँचल की आड़ में उसे छिपाते प्यार कर छाती उसके मुँह में देते उफ की फूंक मार दीठ निवालते, सो जा, सो जा मेरे लाड़ले इस तरह कहते लोरियाँ गाते उसे (सिर को) धरती पर रखा। फिर

सतियपुत्र विलापदभ्र प्रततियब्बरकुब्बिदुदु खळ-
पतिय करुणावळिय नॊंदॆदुरॆ शोकरस जलधि
खतिय हिडिदव बळिकला रघुपतिय पुण्यस्त्रीय कॊलुवा
यतदलैदिदनवनु बनवनु जनक नंदनॆय ॥ 29 ॥
असुर नधिक क्रोध वह्निय रसुमॆयलि ननॆ मुरुटिदवु सा-
रसद सरसिय सलिल कुदि दुक्किदुदु बनदॊळगॆ
दॆसॆदॆसॆगॆ हारिदवु नृपसारस मदाळि शुकाळि सीदवु
किसलयगळाम्रगळ शोकॆगळणुग कॆळॆंद ॥ 30 ॥
कॆलकॆ सार्दरु कामिनिय कावलिन कांतॆयरंजिकॆयला
गळु निरीक्षिसिदळु लतांगिकटाक्षदलि खळन
कॊललु बंदनलायॆनुत तळवॆळगिनलि तलॆमुसुकिनलि रघु-
कुल शिरोमणि राम रामॆनुतिर्दळबुजाक्षि ॥ 31 ॥
सतिय काणुत खडॆयवनुगिदति मदद रक्कसनु ललना
हति गॊडंबट्टॆरगु वनितरॊळवन मंत्रिगळु
मतविदल्लॆंदड्डविसि दूहतिय हस्तव हिडिदु रणनि-
ष्कृतिगॆ रंजक वावुदिनितरॊळॆंद रवरंदु ॥ 32 ॥

सखियों से लोरियाँ गाने को कहते अपने लाड़ले का खूब गुणगान (उसने) किया। यह सब देखता हुआ रावण मन ही मन रोया। २८ अपने पुत्र की मृत्यु से शोकविह्वल पत्नी के रोने-धोने के बादलों की घनघोर गर्जना से राक्षसेश्वर का मन जो फूट पड़ा तो शोक-सागर ही उमड़ पड़ा। क्रोध-संतप्त रावण रघुपति की पत्नी की हत्या के लिए उतावला हो एक दम अशोकवन की ओर चला आया। २९ रावण की अत्यंत भयानक क्रोधाग्नि की उष्णता के कारण अशोकवन की कलियाँ मुरझा गयी; कमल सरोवर का पानी खौलकर उमड़ते अशोक वन में बहने लगा। राजहंस, भ्रमर, शुक दिशि-दिशाओं में उड़ गये। आम तथा अशोक वृक्ष की कोंपलें जल गयीं। सुनो कुमारो!" इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि ने वर्णन किया। ३० सीता की रखवाली में नियोजित राक्षसियाँ परे सरक गयीं; वक्रदृष्टि से सीता ने रावण की ओर देखा। "मेरी हत्या के लिए आया है न?" इस तरह कहते घबराहट के मारे सिर को आँचल से छिपाकर "हे रघुकुलशिरोमणि! राम राम!" इस तरह पुकारते राम-नाम स्मरण किया। ३१ सीता को देख, उन्मत्त हुआ रावण तलवार खींचकर उसकी हत्या करनेवाला ही था कि इतने में उसके मंत्री 'यह नीति नहीं', कहते बीच में आ गये। तलवार उठाए रावण के दोनों हाथों को पकड़कर, "इतना और अब तक जो युद्ध

इवळ देसेयिंदसले नमवरु नॆम्मिद रंतकन निज
भवन भित्तिय निवळ तलॆयनु हॊडॆदु बळिकिनलि
इवळ बिडिसलु बंदमृग मानव भटाळिय कॊंदनॆंदव
तवकिसलु तग्गॊत्ति बळिक सुपार्श्वनिंतॆंद ॥ 33 ॥
कॊळुगळ दॊळरिभटन बवरदॊळळिदरधिक स्वर्गदल्लिय
ललनॆयरु निन्नवरला नीनिंद्र चंद्ररिगॆ
सलॆमिगिलु कॆळरिय गॆलिदरॆ बळिक तोऱा सीतॆयनु नगॆ
गॊळगहरॆ नडॆकष्ट वृत्तियनॆणिसि बेडॆंद ॥ 34 ॥
कीर्तियहुदरिभटन समरदॊ ळार्तरलि कादिदरॆ सेरदु
धूर्तजन नगदिहुदॆ रावणनधिक बलनॆंदु
वार्तॆ मुंदण युगगळलि संपूर्तियहुददरिंद नीनप
कीर्तियनु कैविडियदाजिगॆ मनव माडॆंद ॥ 35 ॥
लोकदूषण वन्य नारिय सोकु तागिदु हगॆय जयिसिदु
सोकिदबलॆगॆ मनव माडुवुदोजॆ रायरिगॆ

किया इसका सारा मजा किरकिरा हो जायगा न !" इस तरह उन्होंने पूछा। ३२ "इसी (सीता) के कारण हमारे यहाँ के कई वीरों को मृत्यु-लोक (यमलोक) की दीवार का आसरा लेना पड़ा न ! पहले इसी का सिर काटकर फिर (उसके बाद) इसे मुक्त कराने आए हुए उन पशुओं की तथा मानव वीरों की हत्या करूँगा।" इस तरह कहते जब वह सीता की हत्या के लिए उद्यत हुआ तो उसके मन्त्रियों ने उसे (ऐसा करने से) रोका। तभी सुपार्श्व ने रावण से इस प्रकार कहा। ३३ युद्ध के मैदान में शत्रुवीर के साथ लड़कर मरें तो श्रेष्ठ स्वर्ग की प्राप्ति होती है; स्वर्ग की स्त्रियाँ तब आपकी होती हैं, तभी आप इन्द्र-चन्द्र को भी मात कर सकते हैं (उनसे आगे बढ़ सकते हैं)। शत्रु को जीतने के बाद सीता को बताइये। अभी क्यों विडम्बना के पात्र बनते हैं ? ऐसे क्रूर (निषिद्ध) कर्म के बारे में मत सोचिए। चलिए हमारे साथ। इस प्रकार सुपार्श्व ने कहा। ३४ शत्रु वीर के साथ युद्ध करने से यशोलाभ होता है; मुसीबत में फँसे हुओं के साथ युद्ध करने से कीर्ति के बदले नाम की विडम्बना होती है। यह देख दुष्टों को हँसी-मजाक़ उड़ाने का सुअवसर मिले। वीरता के साथ लड़े तो रावण के अत्यधिक बलशाली होने का समाचार भावी युग के लिए जीवित रहेगा। अतः आप अपकीर्ति मोल न लेते युद्धकार्य में मन लगाइये। इस तरह उसने कहा। ३५ "अन्य स्त्री (परस्त्री) स्पर्श से लोकनिंदा होती है। युद्ध कर शत्रु को जीतकर अपनी मनपसंद स्त्री को चाहना (आशा करना)

साकु तिरुगी धैर्य धर्मव साकिको कडुखूळरिरविग
नोकहद नॆळलागदिरु नडॆ रणकॆ नीनॆंद ॥ 36 ॥
चाचु नम्मनु नम्म जीवविमोचनद मेलरिय कॊरळिगॆ
चाचु चपल चपेटकव चूरिसुव खंडॆयव
आ चटुळबल निन्न बलुहनु चाचिदरॆ बळिकरिदुको सच-
राचरात्मकनॆंदु सत्यविदॆम्म नुडियद ॥ 37 ॥
तिरुहिदनु बळिकसुर रायन हॊरद कोपद तापशिखियनु
वरवचो विन्यास नयविस्तरद नीतियलि
परिहरिसि कैविडिदु तंदाभरित सुतशोकाग्निदाहद
तरुणि मंडोदरियनुप चरिसिदनु विनयदलि ॥ 38 ॥
अळलदिरु केळबलॆ रणदॊळगळिद निन्नकुमार मुख्यर
निलिसुवनु निन्निदिरिनलि निरेज भवहरर
गळकॆ खडुगव निक्कि मुन्निन हळविगिम्मिगिलागि सुखमय
दॊळुह निन्न मनोरथकॆ माडुवॆनु तानॆंद ॥ 39 ॥
बळिक वरना सचिव पति निज निळयदॊळयिकॆ कळुहि कडुग-
त्तलॆ यॊळगॆ कैदीविगॆय पाळॆयद पसरदलि

राजाओं के लिए योग्य क्रम (मार्ग) है। यह धैर्य इतना ही काफ़ी है। लौट चलो। धर्म की रक्षा करो। दुष्टों के आश्रय देनेवाली पेड़ की छाया मत बनो। युद्ध के लिए चल पड़ो।" इस प्रकार उसने कहा। ३६ "हमें युद्ध करने के लिए भेज दो। हमारे प्राण जब निकल जाएँगे तब शस्त्र चलानेवाले हाथों को हथेलियों को चूर-चूर करनेवाले खड्ग को लेकर शत्रु का गला काट डालो। तब भी वह बलशाली शत्रु तुम्हारी सामर्थ्य से बढ़कर निकले तो समझ लेना कि वह सचराचरात्मक (परमतत्त्व) है। मेरा कथन बिलकुल सत्य है।" इस तरह सुपार्श्व ने कहा। ३७ राक्षसेश्वर के बढ़े-चढ़े क्रोध के पारे को नीतियुक्त, युक्तिपूर्ण वचनों से समझा-बुझाकर सुपार्श्व बुला ले गये। पुत्र की मृत्यु से चटपटा रही मंदोदरी को सुपार्श्व ने सांत्वनापूर्ण विनयसंपन्न बातों से समझा-बुझाकर शांत किया। ३८ "देवी, आप दुखी मत हों; ब्रह्माजी तथा शिवजी के कंठ पर तलवार चलाकर युद्ध में मरे आपके पुत्रों को बुला लाकर आपके सम्मुख खड़ा करूँगा। आपके (इसके) पूर्व के वैभव की अपेक्षा दुगुना वैभव तथा सुख-संतोष आपको पहुँचाऊँगा। यह निश्चित है।" इस प्रकार सुपार्श्व ने सांत्वना दी। ३९ उसके बाद उस सचिवश्रेष्ठ सुपार्श्व ने रावण तथा मंदोदरी को उनके निजी निवासस्थानों में भिजवा दिया। उस घनघोर

ओळु भटरनोळुदंतिगळनग्गळद तेजिय तितिणिय ते-
गळनु मेळैसिदनु कूडिक्किदनु कैदुगळ ॥ 40 ॥
ओडेदु भंडारवनु मोगे मोगे दिडुकिदनु मनदणियै मणिमय
दोडवुगळ नीडिदनु कर्पुरवळकुगळ मोगेदु
कुडितेयलि चाचिदनु रक्कस पडेगे नाळिन समर मुखदलि
मड मूरिदरिह परके बाहिर रहिरि नीवेंद ॥ 41 ॥
वीर कंकण विक्कुवुदु निज नारियर मक्कळ गृहालं-
कारगळ बीळ् कोंबु दोंदे चित्त शुद्धियलि
सार संपद वित्त स्वामिय कारियके प्राणवनु कोडुवुदु
दारियिदु सुगतिगे निदानविदेंदु सारिसिद ॥ 42 ॥
मणियलागदु वीर सुभटाग्रणिगळिदिर नलिदिदु मेरेवुदु
हणेगळलि तोरुवुदु कंगळनाजिरंगदलि
जुणुगिदाहव सिरिय हारद कुणिकेयनु सेक्कुवुदु स्वामिय
ऋणव तिद्दुवुदेंदु वीर सुपार्श्व सारिदनु ॥ 43 ॥

अँधेरी रात में कुप्पियों से (तेल से जलते दीपकों से) जगमगा रहे शिबिर में आकर सुपार्श्व ने श्रेष्ठ योद्धा तथा श्रेष्ठ हाथी, घोड़े व रथों को इकट्ठा किया और विविध प्रकार के आयुधों को जुटाया। ४० कोषागार (भंडारघर) को खोलकर ढेर सारे आभूषणों को निकाल-निकालकर उन रत्नाभूषणों को वीरों में इस प्रकार बाँटा कि उन्हें पाकर वे तृप्त हो जायँ। कर्पूर की बट्टियों के ढेर लगाकर उन्हें अंजली भर-भरकर राक्षस सैनिकों में बाँट दिया। "कल के युद्ध में अगर तुम लोग पीछे हट गये तो इहलोक तथा परलोक दोनों से बहिष्कृत हो जाओगे।" इस तरह समझाते सुपार्श्व ने उन्हें युद्ध के लिए उकसाया। ४१ "वीर कंकण धारण कर, बाल-बच्चों से तथा घर-बार वालों से परिशुद्ध मन से बिदा लो। तुम्हारी संपदासमृद्धि के लिए कारणीभूत स्वामिकार्य के लिए प्राण-समर्पण करना सही मार्ग है। यही सद्गति साधन भी है।" —इस तरह सुपार्श्व ने ढिंढोरा पिटवाया। ४२ "महान वीरों के सम्मुख वीरों को अपना सर नहीं झुकाना चाहिए। युद्ध के मैदान में आमने-सामने खड़े हो लड़ते हुए शत्रु पर वार कर उनके माथे पर आँखें उगवानी चाहिए। युद्धलक्ष्मी के हाथ से जो बचकर भागना चाहते हैं तो ऐसों के गले में हार का फंदा कसकर स्वामी का ऋण चुकाना चाहिए!" इस प्रकार सुपार्श्व ने घोषणा की। ४३ सूर्य कमल को आश्वासन देते हुए रथ

अडरिदनु रविरथवना कैहिडिदु कमलव हार्थ्कि वज्रद
खड्गवनु मणिमयद हरिगेय कोंडु रक्कसर
लोंडकु तोटिय विलग तन्ननु तोडचि कोंबुदोयेंब संशय
देंडहिनलि मैदोरिदनु पूर्वाचलाग्रदलि ॥ 44 ॥
इनन जननदोळा सुपार्श्वकननुवरके मेळैसिदनु वा-
हिनिय होरवडिसिदनु होरिगेय राजकार्यदलि
कनक रत्नाभरणदनुले पनदिनोप्पंबडेदु खळनर
मनेगे बंदाहवके वीळयगोंडु बीळ्कोंड ॥ 45 ॥
वीर शुक शार्दूल दुर्मद सारणर गडणदलि पयणद
भेरिगळ बिरुदनिय लिळिदनु दुर्गवनु खळन
कोरविप मणिमुकुट निकरद भूरिवेळ गळ्ळरियें सुमनो
नारियर निडुगंगळनु नडेतंदनाहवके ॥ 46 ॥
तेजिगळ तेरे मालेगळ रथराजिगळ नेगळुगळनागस-
माज ततियद्रिगळ सले पदचरर जलचरर
राजिसुव नानायुधंगळ तेजदौर्वानिळन बगेयलि
राज राजानुजन बलजलराशि रंजिसितु ॥ 47 ॥

पर आरूढ़ हुए; हीरे का खड्ग उठाया; रत्नजटित ढाल हाथ में ली ! राक्षसों का हिंसापूर्ण यह युद्ध कहीं अपने को फाँस न ले (या कहीं मुझे फँसना न पड़े) इस आशंका से पसीपेश में पड़े सूर्य धीरे-धीरे उदय पर्वत के शिखर पर चढ़ने लगे। ४४ सूर्योदय के समय सुपार्श्व ने अपनी सेना को युद्ध के लिए जुटाया। स्वामि-कार्य को निभाने के लिए युद्ध में सेना के साथ निकले। सोने तथा रत्नों के आभूषण पहन, शरीर पर सुगंध-द्रव्य का लेप करके ठीकठाक हो, राक्षसेश्वर के राजमहल पर पधारे। युद्ध का बीड़ा उठाकर सुपार्श्व रावण से बिदा लेकर आए। ४५ वीरवर शुक, शार्दूल, दुर्मद, सारण आदियों के साथ युद्धभूमि में आगमन करते युद्ध के गाजे-बाजों के साथ सुपार्श्व दुर्ग से उतर आया। उसके माथे पर धरे वज्रवैदूर्य-युक्त मुकुट के प्रकाश के कारण देवलोक की युवतियों की आँखों में चकाचौंध पैदा हुई। इस तरह डीलडौल दिखाते सुपार्श्व ने युद्धभूमि में प्रवेश किया। ४६ कुबेर के भाई रावण का सेना-सागर (सैन्य रूपी समुद्र) इस प्रकार शोभायमान था मानों घोड़े ही उस (समुद्र) की तरंगें हैं; रथ ही मगर है; हाथियों के समूह ही (समुद्र-मध्य के) पहाड़ हैं; पैदल सैनिक ही जलचर हैं; कई प्रकार के आयुधों की, शस्त्रास्त्रों की तेजोराशि (तेज का समूह) ही बड़वानल का प्रकाश है। ४७ हे कुमार कुश,

दशशिरन देसेगंजि नालुकु मुसुडिनवनी सेनेयनु नि-
र्मिसि कोडुतिरनले महांभोराशि मध्यदलि
असेव बुद्बुददंते सेना विसर बरुतिदे वंदसुभटन
हसरदे नंदरस बेसगोंडनु विभीषणन ॥ 52 ॥
इवर बल्लिरे जीय बेहिंगिवरुबाररे हिंदे शुकनें-
बवनु सारणनेंबवनु शार्दूलनेंबवनु
इवरु मूवर् हिंदेसेय तोर्पव सुपार्श्वक नवन बळियलि
बवरिगरु हदिनेंटु निर्बुद वीररदेयेंद ॥ 53 ॥
अदे समुद्रद तेरेयवोलु दुर्मदन बल दीर्घोदरन पडे
पुदिद बलुगेंदुगळ भारिय भूरिवेळगिनलि
अदेय केच्चिन वीररवरिवरदु भुताहवमल्लरिवरा
वदन हत्तर् रक्कसन मन्नणेय भटरेंद ॥ 54 ॥
जीय चित्तैसिदुवे रक्कसराय कटकद मूलवलवि-
न्नायितैसर् मेलॆ कोटिगॆ तेरपु दिनदिनकॆ
बीयवादुदकगळ बाविय बायदंडेय बेळेय बगॆयवो
लायितुळिदिहुदेत वोंदे देवकेळेंद ॥ 55 ॥

हो, चतुर्मुख ब्रह्माजी कहीं महासागर के मध्य से इस सेना का निर्माण तो नहीं कर रहे ? पानी के बुदबुदों की तरह सेना पर सेना आ रही है। अब आनेवाले का नाम क्या है ?" इस तरह राम ने विभीषण से पूछा। ५२ "इनको क्या आप नहीं जानते भगवन ? पूर्व में ये ही तो गूढ़चर (गुप्तचर) होकर आये थे न ? ये तीनों— शुक, सारण, शार्दूल हैं। इन तीनों के पीछे जो दिखायी दे रहे हैं —वे ही सुपार्श्व हैं। उसके साथ युद्ध के लिए सन्नद्ध अठारह न्यर्बुद वीर सैनिक हैं।" इस प्रकार विभीषण ने कहा। ५३ "वह देखिए; वहाँ जो समुद्र के लहरों की भाँति बड़ी सेना है, वह दुर्मद की सेना है। भारी आयुधों की चकाचौंध से भरी-पूरी सेना दीर्घोदर की सेना है। ये जीवट के वीर हैं। अद्भुत युद्धविद्या-प्रवीण है। उस दस सिर वाले के ये विश्वासी प्यारे वीर हैं।" —इस तरह विभीषण ने कहा। ५४ "सुनिए भगवन ! राक्षसेश्वर का मूल (आधारस्तंभ) बल यही है। अब तो वह सब समाप्त होने को है। प्रतिदिन एक-एक करोड़ के हिसाब से उसकी सेना समाप्त होते आयी है। जल समाप्त हुए कुएँ के नज़दीक के सस्य की भाँति उसकी सेना की दशा हुई है। अब जो बचा है —सिर्फ़ (यह) मोट है।" इस प्रकार विभीषण ने कहा। ५५ "ऐसी बात है तो उनसे एक बार लड़कर

आद डिवरोळगोस्मॆ समरव नैदिनोडुवॆवॆनुत सुग्रो-
वादि सुभटर सारिसुत कैसन्नेयलि कॊलकॊ
कोद कॊरळिन तिरुवॆरडनारैदु हिडिवंबुगळ मडलिऱि
दादि नरकेसरियवॊलु हॊक्कनु रणांगणव ॥ 56 ।'

हॊक्क मैयलि कोलुकोलिगॆ लक्कसंख्यॆय करिघटॆय का-
लिक्कुवति जवदश्व कोटिय कोटिसंख्यॆगळ
मिक्कु नूकुव तेरुगळ कैयिक्कि कादुव खळपदातिय
मुक्कुडिय माडिदनु रणमददुब्बिनलि राम ॥ 57 ॥

तोळ पूजिसिकॊंब बलु मासाळु तॊलगद कंबवॆंबु
ब्बाळु बिरुदिन हगलु कैदीविगॆय हॆच्चाळ
दूळुदोऱितु कार्णॆनॆ बॆच्चाळु नडॆसंकलॆय बिंकद
काळगद कलियाळ कारमगलसिदनु राम ॥ 58 ॥

परिभविसि कविवाळु कुदुरॆय नुरवणिप तेरुगळ तवकिसि
तरुगु विभ संकुलद संकुलवागॆ सरकटिसि
सरगॊळिसिदनु सरळ सारद शरधियलि संग्राम चौपट
ररस रिपुबल विजयवनितानाथ नाजियलि ॥ 59 ॥

आजमाऊँ।" इस तरह कहते राम ने सुग्रीवादि वीरों को हाथ के इशारे से परे सरका दिया। उसके बाद यह देख लिया कि धनुष की प्रत्यंचा (डोरी) के फंदे दोनों छोरों पर ठीक तरह जुड़े हैं कि नहीं। फिर तरकस को बाणों से भरकर आदि नृसिंह की तरह युद्ध के मैदान में श्रीराम ने प्रवेश किया। ५६ राम ने ज्यों ही मैदान में प्रवेश किया, एक-एक बाण के लक्ष्य में (निशाने में) लाखों हाथी, टूट पड़नेवाले द्रुत गति के करोड़ों घोड़े, चढ़ आनेवाले करोड़ों संख्या के रथ, राक्षसों की पैदल सेना आदि को आवेश भरे युद्ध से तहस-नहस कर दिया। ५७ अपने भुजदंडों की पूजा में डूबे वीर, अविचलित खंभे की उपमा के उत्साही शूर, दिन में दीप धरानेवाले ओहदे के महावीर, उठी धूल की परवाह न करनेवाले धीर सैनिक, चलती साँकल के घमंड वाले अकड़े युद्ध वीर आदियों को काट-काटकर राम ने उन्हें बादलों के लोक में प्रवेश दिलाया। ५८ युद्ध के मल्लों (पहलवानों) से भरी शत्रु-सेना को जीतकर विजयलक्ष्मी के स्वामी (अधिपति, राजा) बनने की योग्यता से संपन्न श्रीराम ने उनकी हँसी मज़ाक़ उड़ाते हुए घिर आनेवाले घुड़सवार सैनिकों को, आगे बढ़नेवाले रथों को, अचंचल गति से आगे बढ़नेवाले हाथियों के समूह को, बाणों की वर्षा करते एक साथ पोहकर हार (पुष्पहार जैसा) बना दिया। ५९

हृरिद्दु बीळुव तोळुगळ मळॆ गरॆदुदै रणदगलदलि नभ
कुरुबि बीळुव तलॆय तळितॊगुवालि कलगळलि
तूरुगितिळॆ नडुदॊडॆय तुंडिन गुरुबिनलि गुम्मिक्किदुद्दु नभ
वरि़चुतिर्दुदजांड बॊब्बॆगॆ रामनॆसुगॆयलि ॥ 60 ॥
करुळ कुप्पळि काळिजद हॆम्मॊरडि कॆन्नॆत्तरिन मडु निड्डु
दॊरळॆगळ हेरासि हॆग्गिरि नुग्गिदस्थिगळ
सरिबॆरकॆयलि भूतकोटिय नॆरविगुण बडिसिद वॊलिर्दुदु
खर विरोधिय कदन कर्कश बाणपर्वदलि ॥ 61 ॥
ऒप्पॆसर खळरळियॆ कोटिगॆ चप्पळॆय कैगळलि कुणिवुदु
तप्पदॊदे मुंड रणदलि कॆळिदै कुशनॆ
तप्पिनुडिदनु मुनियॆनलु बेडप्पगळमेलाणॆ कुणिदवु
तप्पुदलॆगळ मुंडगळु शतकोटि संख्यॆयलि ॥ 62 ॥
वहिगळिळुहृदववरॆ संगर महिय सीमावळयदलि तह
बहकृतांतन दूतरॆणिकॆय कॊळलु पितृपतिय
मिहिर वंशोद्भवन रिपुवन दहन दावानळन संगर
महिळॆयभिनव नाटकव कग्गॊलॆय कवर्तयलि ॥ 63 ॥

सारी युद्धभूमि कटकर उड़े हाथों की वर्षा से भीग गयी। कटकर आकाश की ओर उड़े सिर ओलों की तरह धरती पर धड़ाधड़ गिरे। कटे आधी जंघाओं के टुकड़ों के भर जाने के कारण आकाश बड़ा भयंकर दीख पड़ने लगा। बाण छोड़ते-छोड़ते राम जी सिंहनाद कर रहे थे, उस ध्वनि से ब्रह्मांड फटने लगा। ६० बड़े पहाड़ों से कूटे गये हड्डियों के टुकड़ों को अपने में पूरी तरह मिलाए हुए आँतडियों के ढेर, पित्याशय के बड़े-बड़े पहाड़ (ढेर), रक्त के प्रवाह, लम्बे प्लीहों के ढेर वग़ैरहों को देखने पर लगता था कि राम-बाणों की तीव्रता के इस युद्ध रूपी त्योहार में भूतगणों को भरपेट भोजन मानों परोसा गया हो। ६१ प्रमुख-प्रमुख राक्षस वीर युद्ध में जब काम आए, तब उनमें से प्रत्येक का मुंड करोड़ों हाथों की तालियाँ पीटते-पीटते नाचने लगा। ऐसा मत कहना कि यह महर्षि कुछ झूठ ही बोल रहा है। सुनो कुश! तुम्हारे पिताजी की सौगंध। किसी-किसी के सिर किसी-किसी के मुंड (धड़) पर बैठकर (जुड़कर) करोड़ों की संख्या में नाचे। ६२ शत्रु-वन को जला डालने में दावानल बने, रणलक्ष्मी से (द्वारा) चिरंतन विनूतन नाटक खेलानेवाले (सूत्रधार) सूर्यवंशज राम के इस बहुत बड़े हत्याकांड के उत्पात में (लूट में) युद्ध के मैदान में आकर प्राणों को उड़ा ले जानेवाले यमदूतों के लिए हिसाब रखने और लिखने

एनु वीररी रक्कसरु कडिदानॆगळ मस्तकद मुंडद
लनिसिदरुडि दश्व निकरद तलॆय तलॆ हरिदि
आनॆगळ मुंडदलि सौक्किकदरा निशाटाश्वगळ मुंडद
लून तलॆगळ तॊडिसिदराहवकॆ बलव ॥ 64 ॥
पल्लटिसि कॆलकॆलर मुंडगळलिल तलॆगळ कडिदलॆगळलि
सॆल्लॆहगळ गदायुध दलसि मुद्गरंगळलि
बल्लॆहदलिडु गुंडिनलि किरुगल्लुगळ कवणॆयलि बाणद
घल्लणॆय लुब्बिरिव हॆब्बरॆगळलि हळचिदरु ॥ 65 ॥
कडिद काल्गळ करुळ मुंडद हॆडकुगळ चिगिदेरि चिम्मिद
रॆडबलद लब्बरिसि रामन मेलॆ खंडॆयव
तडवरिसि बिद्दिदर्द तलॆगळ तॊडिसि करुळनु कॆलवमुंडद
लडसि हवणिसि तॆगॆदु सुरगियलिट्टरिनकुलन ॥ 66 ॥
अब्बरिसिदुदु वीररस रणदुब्बरद रौद्राद्भुतद नॆण
गॊब्बिनलि कलिरक्कसर सेना समुद्रदलि
औब्बने बळिकरिब लाब्दिय नुब्बलीसर्दॆ सरळ वडबन
हब्बदलि निरिसिदनु धीरोदात्त रघुनाथ ॥ 67 ॥

के लिए यम के हिसाब के बहीखाते को युद्ध के मैदान में ही लाकर रखा गया था। ६३ राक्षस भी पराकाष्ठा के वीर जो रहे! सिर कटे हाथियों के मुंडों के गर्दनों पर घोड़ों के सिरों को चढ़ाया; घोड़ों के मुंडों पर (कटे) हाथियों के सिरों को चिपकाया। राक्षस तथा घोड़ों के मुंडों में हाथ में जो आए—उसे कटे सिर को चिपकाया। इस प्रकार अपनी सेना को युद्ध के लिए आगे बढ़ाया (संचालित किया)। ६४ राक्षसों ने कइयों के मुंडों में अन्यों के (विजातीय) सिरों को ला-लाकर चिपकाया। कटे सिरों में शूल फँसा दिए; कटी गदाओं की नोकों पर तलवार, मुदगरों पर भाले व चलाए गोलों पर छोटे पत्थर तथा गुलेलों पर बाणों को जोड़कर बड़े-बड़े डफों के घोर रोर के साथ (रणवाद्य के मध्य) वानर-सेना पर हमला किया। ६५ राक्षस काटे गये पैरों के, आँतड़ियों के, मुंडों के, गर्दनों के ढेरों पर उछलकर चढ़ जाते तथा (वहाँ) खड़े हो गर्जन-तर्जन करते बायें-दायें दोनों पार्श्वों से श्रीराम पर तलवार चलाने लगे। हाथ से टटोल-मटोलकर धरती पर पड़े सिर तथा आँतड़ियों को ढूँढ़ निकालकर कुछ मुंडों पर उन्हें जकड़कर उन्हीं को कटारों में फाँसकर राम पर दे मारा। ६६ वीर राक्षसों के सेना-सागर में भयंकर युद्ध के खरमस्ती की तीव्रता की तरंगों से मानों वीररस ही (स्वयं प्रकट हो) भयानक

एनु बाणाभ्यासियो रघुसूनु मैमसें तोरि तिल्लरि
सेनें सूसिद सकल शस्त्रास्त्र प्रहारदलि
भानुमंडल दिदिरिनलि तेजोनिधियें ताराळि नोडलु
मानवनें महदादि मायामहिम हरियेंद ॥ 68 ॥
तरुण केळच्चरिय नप्सर तरुणियर काळगव किन्निगळु
हरियें कैयिक्किदरु हिडिदरु हाय्दु मुंदलेय
बरसेळेदु मेलुदनु बाय्गळ करतळद लप्पळिसि बोजगर
बरसेळेदु विगियप्पुतिर्दरु बीदिगलहदलि ॥ 69 ॥
ईतनेन्नव नीत तन्नव नीतननु वरिसिदेनु मोदलिव
ळेतरवळु शिखंडि तोत्तिवळाद हेण्णिवळु
बूतें होगेलें लज्जेगेडिगें मातुतनगेकेनुत वल्लिद
रीत गळनेळेदोय्वुतिर्दरु वीर भटरुगळ ॥ 70 ॥
अळियें सेनें सुपार्श्व दुर्मद रळविगोट्टरु शुकनु समरकें
निलुकिदनु सारणनु सैरणेयंबिनेंसुगेयलि

गर्जना करने लगा। शत्रु-सेना के प्रवाह को उमड़ने न देते हुए (अवसर न देते हुए) धीरोदात्त अकेले राघव ने बाणों की बड़वाग्नि प्रज्वलित कर उसे रोक दिया। शत्रु-सेना की तीव्रतर होती गति रोक दी। ६७ बाण-विद्या में राम के कौशल्य के बारे में किन शब्दों में वर्णन करें। शत्रु-सेना से बरसाए गये समस्त अस्त्रों के शस्त्रों के प्रयोग तथा वार के कारण राम रत्ती भर भी घायल नहीं हुए। सूर्यबिंब के सामने नक्षत्रों का तेज कैसे टिक सकता है। विचार कर (ध्यान देकर) देखें तो राम क्या मानव हैं? वह आदिमाया महिमासंपन्न श्रीहरि हैं। इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। ६८ (स्वर्ग पहुँचे) वीरों के लिए "मैं मैं, तू तू" करते आश्चर्यकारक रीति से गली-गली में लड़ रहीं अप्सराओं का हाल, हे युवा कुश! सुनो। कान खींचकर ऐसे अपनी ओर खींच लिया कि कान उखड़ जायँ। आगे बढ़कर सिर के बाल पकड़ लिये। आँचल पकड़ खींचते हुए एक-दूसरे के मुँह पर थपेड़े जमाए। इस तरह आपस में लड़-झगड़कर अप्सराओं ने अपने मनपसंद विट को खींच ले बाँहों में कस लिया। ६९ 'यह मेरा है; यह अपना है, इसको मैंने वर लिया है। वह पहली तो ऐसी रही मानो शिखंडी की दासी है। यह कैसी औरत है! साक्षात् पिशाचिनी है; हट जा। निगोडी निर्लज्ज के साथ कैसे बातें करूँ?" इस प्रकार ताना देते समर्थ अप्सराएँ अपने मनपसंद वीर योद्धाओं को खींचकर बुला लिये जा रही थी। ७० असुर-सेना के विनाश (होने)

हळचिदनु शार्दूल गर्जिसि सुळिदरिदिरलि करॆंद रॆबिन
मळॆय निवरा राम सुसनोद्दाम शिखरियलि ॥ 71 ॥
अनिबरॊळु रणगलि सुपार्श्वक ननिमिषरु बॆरगागॆ मकरा-
क्षन महाकलि कुंभकर्णन कदन कौतुकद
घनतॆगिम्मिगिलॆनिसि कादिदु कनस कंडनु सुरपुरद बी-
डिनलि मलगिदु मारणद लंकापुराधिपन ॥ 72 ॥
हत्तिता तलॆ कॆयॊडनॆ नभदत्त दुर्मदनॆंबुवनु नडॆ
दॆत्त होदुदॊ जीववा दीर्घोदरा सुरन
हत्तिसिद हिळुकुगळ हॊदॆगळलॊत्त बरिसिदरिदिरिनलि नगु
तुत्तरिसिदनु रामना मूवर शरासनव ॥ 73 ॥
अंदु नम्मव नरिय लोसुग बंद बॆहिन भटरला नी-
वॆंदरहुदॆनॆ कृपॆय नोटदला निशाटरिगॆ
ऎंदु नमगिल्लॆरडु नुडितानॊंदॆ तप्पिसि कादुकळुहिदॆ
वंदु होगिन्नॆकॆ काळगवॆनुत बीळ्कॊट्ट ॥ 74 ॥

पर सुपार्श्व तथा दुर्मद युद्ध के मैदान में उतरे। शुक युद्ध करने आ डटा। सारण ने संयम से बाण चलाए। शार्दूल गरजते हुए राम से भिड़े। सामने आकर डटे हुए इन असुर वीरों ने जो देवदेवोत्तम राम रूपी पर्वतशिखर है—उस पर बाणों की वर्षा की। ७१ समस्त असुरों में जीवट के वीर सुपार्श्व ने देवताओं को अचरज में डालते हुए लड़ मकराक्ष, महावीर कुंभकर्ण—वग़ैरहों के महान युद्ध के दुगुने तेज से लड़कर अमरावती के घर में जा सोते मारे गये लंकेश्वर के सपने को देखा। ७२ सुपार्श्व का सर कटकर आकाश की ओर उड़ा। उसके पीछे-पीछे दुर्मद भी चल पड़ा। पता नहीं—दीर्घोदरासुर के प्राण कहाँ लुप्त हो गये! सम्मुख शुक, सारण, शार्दूल—इन्होंने बाण धनुष पर चढ़ाकर चढ़ाई की (राम को घेर लिया)। राम ने मुस्कुराते हुए उन तीनों के धनुष काट डाले। ७३ इसके पहले, हमारे बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए गुप्तचर बनकर तुम्हीं आए थे न? इस प्रकार राम ने पूछा। उनके 'हाँ' कहने पर उन राक्षसों को करुणापूर्ण दृष्टि से निहारते हुए, "मैं दो दो बातें करना नहीं जानता। एक ही बोलता हूँ, और वह सत्य बोलता हूँ। उस दिन तुम्हारी रक्षा करते प्राणदान कर भेज दिया। अब भी तुम चले जाओ। बेकार युद्ध से क्या प्रयोजन।" इस तरह कहते राम ने उनको भिजवा दिया। ७४ सिर पर हाथ धरे शार्दूल, शुक, सारण

मौळियलि संघटित करगळ ताळि मेल्लने सरिदरा शा-
र्दूल शुक सारणरु होगळुत राघवेश्वरन
मेले केळै कुशने लंकापाल नोव्व निशाचरन भू-
पालननु कोललेंदु कळुहिद नस्त मानदलि ॥ 75 ॥
अडगि मरॆगोंडा निशाचर नडुगुदिनहिगळोळगे मिंचिन
मिडुकिनवोलोळ होक्कु बरुतिरॆकंडु हनुमंत
घुडुघुडिसि कोपदलि कोनॆयनु हिडिदु हॆम्मरनिंद होय्दनु
हॆडकनवनिगॆ बीळॆ विद्युत केशियॆंबवन ॥ 76 ॥
घायवोंदरला निशाटन वाय वागिलदांटि हरणवु
होयितंतक पुरिगॆ होंपुळियोगॆ सुरकटक
राय तोरवॆय वीर नरहरि वायुजन कैविडिदु वानर
राय सैन्य समेत शिबिरकॆ बंद नोलविनलि ॥ 77 ॥

राक्षसेश्वर की गौरवगाथा गाते हुए धीरे-धीरे वहाँ से रवाना हो गये। हे कुश, उसके बाद जो कुछ हुआ, सुनो। लंकाधिपति ने राम की हत्या करने के लिए एक राक्षस को सूरज के डूबते समय पर भिजवा दिया। ७५ वह राक्षस रणपिशाचों के मध्य से होते हुए, अपने सर को बचाते हुए बिजली की कौंध (चमक) की तरह अन्दर घुसकर आ रहा था। उसको देखते ही क्रोधोन्मत्त हुए हनुमान ने घुड़कते हुए दाँत किटकिटाते हुए, डाल को पकड़े एक भारी पेड़ से (पेड़ को उठाकर) जब उसके गरदन पर वार किया तो विद्युत्केशी नामक वह असुर (जो आ रहा था) धराशायी हुआ। ७६ हनुमान के एक ही वार से उस राक्षस के प्राण मुँह के द्वार से यमनगरी की यात्रा पर रवाना हुए। देवताओं के रोंगटे खड़े होगये। 'तोरवे' के वीर नरसिंह के अवतारी श्रीराम हनुमान के हाथ को अपने हाथ में लिये वानरराज सुग्रीव की सेना के साथ आनन्द मनाते हुए शिबिर मे पधारे। ७७

नलवत्तारनेय संधि

सूचने— सतिय मातनु केळदवनी पतिय कलहके बंदु मोहद सुत विरूपाक्षननु रणक्किदिरुदनु दशकंठ ।

होगि हेळिदरिवरु मूवरु तागि तावुळिदुदनु कालन
मार्गणेगे संदतुळबल दुर्मद सुपार्श्वकर
आ गली बलवळिदुदनु जय दागु रामं गुळिदु दनु ले-
सागि विस्तरिसिदरु खळकुल सार्वभौमंगे ॥ 1 ॥
बेरगु बारिसि करद कदपिन होरिगेयलि हेपळिद हेम्मेय
निरिगेयलि निजसिंह पीठवनिळिदु दुगुडदलि
हरिहरिदु किरिदागि साविगे तेरपुगोंडिह खळर करदिं
दुरुबि मंडोदरिय भवनके बंद नसुरेंद्र ॥ 2 ॥
बाडिदानन दळवळिदुयेंडे याडि बळलुव मनद मातिगे
तोड निक्किद नालगेय निडु सुय्ल लसुरेंद्र
नीडिदनु निजतनुव मलगिन मूडेयलि बळिकंजु तंजुत
कोडु तळुकुत बंद ळसुरन बळिगे मयतनुजे ॥ 3 ॥

छियालीसवीं संधि

सूचना— अपनी पत्नी की सलाह पर ध्यान न देते राम के साथ युद्ध करने आया हुआ रावण अपने प्यारे पुत्र विरूपाक्ष की बली चढ़ा देता है।

शार्दूल, शुक, सारण —इन तीनों ने रावण के पास जाकर, अपने जीवित (जिन्दा हो) लौटने का तथा रामबाण से अनगिनत सेना का, दुर्मद-सुपार्श्व दोनों के मृत्युदेवता के मेहमान होने का समाचार बता दिया। असुर-सेना के विनष्ट होने की रीति तथा राम को विजय प्राप्त होने का विवरण उन्होंने रावण को दिया। १ दिग्भ्रांत रावण गाल पर हाथ धरे महत्ता खोए, घमंड से (तेजोहीन होने पर भी अकड़ते हुए) सिंहासन से उतर आया। नाश को प्राप्त होते (विनाश के कगार पर खड़े) दिन-प्रतिदिन क्षीण होते मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे राक्षसों को परे सरकाकर मंदोदरी के अंतःपुर (रनिवास) में राक्षसाधिपति रावण पधारे। २ निस्तेज मुखड़े तथा थके-माँदे मन के कारण (मानसिक दशा के कारण) अपनी जिह्वा पर संयम रखते हुए रावण थकावट के मारे झूलते हुए (डाँवाँडोल होते) दीर्घ निःश्वास लेते आ, पलंग पर लेट गया। तब डरते, सहमते, थरथर काँपते व्याकुल

बरलु कैसन्नेयलि मंडोदरिय नेंडदलि निलिसि मूगिन
बेंरळ बिगुहिन मुगिय देवेंगळ कंगळि दिरलु
अरसननुवर्‌रि दोय्य नोय्यनें धुरद मुंदण कार्यकेनु
त्तरणवनु नीव् कंडिरेंदळु राणि रावणन ॥ 4 ॥
उत्तरणवे निन्नु मरुगेंनु सत्त सेनेंगें तन्न साविगें
हेंत्त मक्कळोळधिक नल्ला मग सुरेंद्रजितु
बत्तिगेंण्णेंगें कूडि सरियायित्तेंनिप बलु बेगें घन बे
सत्तु दिल्लाहवर्के मन मरुगुवदु मगगेंद ॥ 5 ॥
हगेंय गेंद्दे निन्नु सीतेंय सोंगसु संदे निन्नु सुर नर
जगति सार्देनिन्नु तन्नय जीवविद्देनु
मगनळिद बळिकबलें केळ्‌संयुगव देकिन्नेंदु चिंतेंय
मोंगवडद मरुकदलि मरुगिदना दशग्रीव ॥ 6 ॥
मरुगलेकिन्नरस केळ्‌रिदर्‌रिदु परवधुविनलि पातक
कुर्‌रिसि मारिय करेंदुकोंड बळिक्क मातेनु
अर्‌रिदु मोंदललि माव हेळिद तेंर्‌रन कोंडिसिदें तम्म नुचितव
नर्‌रियदार्दे तरळ्तनव माडिदें निरर्थदलि ॥ 7 ॥

होते मयपुत्री मंदोदरी रावण के नजदीक पहुँची। ३ रावण ने मंदोदरी को हाथ के इशारे से अपने बाएँ पार्श्व में खड़े रहने का आदेश देते, नाक को उँगली से दाबे पलकें मूँदे जो थे, परिस्थिति पहचानकर मंदोदरी ने धीरे-धीरे सहमे-सहमे यह पूछा— "युद्ध में विजय पाने के लिए भावी योजना के बारे में क्या सोचा है?" ४ "अब कैसी विजय? कैसी योजना? युद्ध में मरी हुई सेना के बारे में या निज की मृत्यु के लिए चिंतित नहीं हूँ। अपनी संतान में इन्द्रजित् श्रेष्ठ थे न? तेल और बाती दोनों बराबर हुई। इसी से संतप्त हूँ। युद्ध से कभी तंग नहीं हूँ। जो रोना-धोना है, अपने इस हीरे (बेटे) के लिए।" इस प्रकार रावण ने कहा। ५ "शत्रु को जीतने से अब क्या लाभ होगा? सीता के सौंदर्य के हाथ लगने से अब क्या प्रयोजन? देव-मानव-लोक वश में भले ही आ जायँ तो (अब) इससे क्या होगा? मेरे जीवित रहने में अब क्या धरा है? पुत्र के मरने पर अब युद्ध क्योंकर (किसके लिए) करूँ?" —इस प्रकार चिंताग्रस्त रावण ने अपनी तीव्र व्याकुलता प्रकट की। ६ "सुनिए राजन्; अब घुलने से, पिघलने से क्या प्रयोजन? परस्त्री से पाप-कार्य की आकांक्षा रखते महामारी को जब घर में निमंत्रित किया तो अब उसके लिए पछताकर क्या होगा? पूर्व में मामा मारीच ने

तायमातिन नीति कर्णके सायकद मोनेयाय्तु निन्नय
तायितंदेय वचन वचलित बोधे बोसरद
वायुविन तेरनाय्तु तंगिय मायकातिय मातुकर्णर
सायनवु निनगाय्तु साकिन्नेके परिताप ।। 8 ।।
हेळलम्मेनु हेळिदरे नी केळुवेयो केळेयो महा मु-
ट्टाळ वागिदे निन्न महदैश्वर्यदायुषके
हेळ दिहुदनुचितवु मातनु केळु केळदे माणु रामन
काल हिडिबिडु जानकिय निहपरव बयसुवडे ।। 9 ।।
अक्षयद फल वोलिव डंभोजाक्षियनु बिडु मगनिव विरू-
पाक्ष नोब्बने साकु करेसु विभीषणन मरळि
रक्षिसी पट्टणवना कमलाक्षनति करुणाळु नम्मनु
पेक्षिसनु बळिकिनितरलि केळेंदळा कांते ।। 10 ।।
राम नी जगदय्य नेंबुदु भूमियलि ता सुप्रसिद्ध म-
हा महीसुते लक्ष्मियेंबुदु सकल जन जनित

जो समझा-बुझाकर बताया था —उस पर भी ग़ौर नहीं किया। भाई विभीषण की बतायी गयी सुयोग्य विचारधारा आपको पसंद न आयी। व्यर्थ का यह बचपना।" इस तरह मंदोदरी ने कहा। ७ "माताजी से उपदेशित नीतिपरक बातें आपके कानों के लिए खूब खटकीं। आपकी माता के पिताजी का बुद्धिवाद अपथ्यकारक जँचा। उस मायाविनी चुड़ैल (अपनी) बहन शूर्पणखा की बातें मानों आपके लिए कर्णरसायन (मधुर) लगीं। बस है; अब यों घुलना बेकार है न?" इस तरह मंदोदरी ने कहा। ८ "कह नहीं सकती; कहने पर आप मानेंगे कि नहीं —इसमें भी शक है। आपकी यह महासंपदा तथा आयु पिघल जाने की घड़ी आयी है। न कहना भी ठीक नहीं जँचता। मानें या न मानें जो कुछ मुझे कहना है— कहना पड़ेगा। (कहना ही धर्म है।) (अब भी) अपने इह-पर दोनों को सुरक्षित करना चाहते हैं तो जाकर राम के पैर पकड़िए; जानकी को छोड़ दिजिए। ९ "अक्षय फल (कीर्ति) अगर चाहते है तो जानकी (सीता) को मुक्त कर दीजिए। अब जो एक मात्र पुत्र विरूपाक्ष है (जो बचा है), उसी पर संतोष कर लेंगे। विभीषण को वापस बुला लीजिए। इस नगरी की रक्षा कीजिए (बचा लीजिए)। कमलाक्ष राम बड़े ही दयालु हैं। वह हमारी उपेक्षा नहीं करेंगे।" इस प्रकार मंदोदरी ने समझाया। १० यह भूलोक में सुप्रसिद्ध है कि राम इस सारे जगत के पिता हैं। यह

आ मगध तनुजातनूभव ना महाशेषनु कणा रिपु
भीम बल मर्कटरु सुररेंदरि मनस्सिनलि ॥ 11 ॥
अदरि नी हद नरिदु मरॆ यॊगुवदॆ महा सुप्रौढि नी बदु
किदडॆ नॆरॆयदॆ पुत्र मित्र कळत्र संदोह
हदुळ विरदे निन्न भाग्यद विदित वैभव वेडमूर्खर
मदद मुंदणि गरस नागदिरॆंदळा कांतॆ ॥ 12 ॥
हरन बिल्लनु मुरिदु सीतॆय वरिसि दंदे नरियि बारदॆ
धुरविजय मारीच वीर सुबाहु यॆंबवर
हरण गॊंडंदरियि बारदॆ खर विराध त्रिशिर दूषण
ररिद शिरगळ कंडु कॆणकुवुदुचितवे निनगॆ ॥ 13 ॥
सुररि गल गण सल्लवे नी नरसकेळ् निन्नुवनु बालद
हुरिय नेणलि गोण बिगिदा बालियनु सुरर
तरुणियर तोळिनलि मॆरॆसिद परिय नरिया कामुकत्वद
गरवु गाडिसि तकट निन्नुव नॆंदळा कांतॆ ॥ 14 ॥

समाचार तो समस्त जगत में व्याप्त है कि भूमिजा (सीता) साक्षात् लक्ष्मी है। मगध राजकुमारी सुमित्रा का वह पुत्र लक्ष्मण आदिशेष है; यह भी मन ही मन जानिए (समझ लीजिए) कि शत्रुभयंकर बलशाली वानर (विभिन्न) देवता हैं। ११ "अतः इस वस्तुस्थिति (यथार्थ) को पहचानकर शरणागत होने में ही बुद्धिमानी है। अगर आप जीवित रहें तो आपकी पत्नी, बाल-बच्चे, स्नेही सभी आपके कृपाछत्र में सहारा पाएँगे। तभी आपके भाग्य का वैभव सुचारु रूप से जीवित रहेगा। मदोन्मत्त मूर्खों के नेता बनने में क्या धरा है?" इस तरह मंदोदरी ने कहा। १२ उसी दिन मालूम होना चाहिए था, जिस दिन शिव-धनुष को तोड़कर सीता को वर लिया। कम से कम उस समय क्यों समझ में नहीं आया, जब युद्धविजयी मारीच तथा सुबाहु के प्राण (उसने) हर लिये? खर, विराध, त्रिशिर, दूषण आदियों के कटे सिर देखने पर भी यह क्यों नहीं सोचते कि राम को छेड़ना उचित है या अनुचित है? (तब भी क्यों नहीं समझ पाए कि छेड़ना कितना भयानक है।) १३ "राजन्, क्या आप देवताओं के लिए तलवार की वार नहीं बने थे? अपनी पूंछ की रस्सी से आपके कंठ को जकड़नेवाले उस वाली को देव-लोक की युवतियों के बाहुपाश के लिए प्रेषित करनेवाले को आप क्यों नहीं जान पाए हैं? हाय मेरे दैव! मैं करूँ! कामुकता (वासना) के ग्रह ने आपको धर दबोचा है।" इस प्रकार मंदोदरी ने

शरनिधिय मुन्नाव कालद लरसुगळु कट्टिदरु मुन्निन
धरणिपर कदनक्कॆ कैगूटक्कॆ कोडगद
नॆरवि कूडिदुदाव मन्वंतरद लळिदव रॆद्दु लंकॆय
नुरिगॊळिसिदवरुंटॆ लोकदॊळॆंदळा कांतॆ ॥ 15 ॥
सावनॆ कलि कुंभकर्णन दाव वीरर कैय कॊलुवव
नाव नमररॊळिंद्र जितुवनु मिक्कि नतिबलर
जीव वारिगॆ साध्य केळु कलाविदनु नीनॆंबॆ निन्ननु
तीवि कॊंडिदॆ तीव्र तामस वॆंद ळरसंगॆ ॥ 16 ॥
जगद रक्षणॆ गागि हरि युग युगदॊळव तरिसुवनु कॊलुवनु
जगकॆ कंटक रादवर निदु वेदमार्गकण
मॊगस दिरु मूर्खतॆय मारिय मॊगकॆ निलदिरु मूरु दिवसद
हगरणकॆ हरिसदिरु गड्डवनॆंदळा कांतॆ ॥ 17 ॥
मरळि दैवगळुंटु जगकॆंदरिस दिरु चित्तवनु चित्ता-
करुषणनु भक्तरिगॆ भाग्योदयद बॆळसु कण
शरणजन संततिगॆ सौख्यद शरधि दुर्जन दुर्वि दग्धरि
गरिव मूगिन कत्ति केळॆंदळु निजेशंगॆ ॥ 18 ॥

बताया। १४ पूर्व में, किस समय राजाओं ने समुद्र को सेतुबंधन से बाँध दिया था ? पूर्व में किस मनुयुग में राजाओं के युद्ध में सहायता के लिए बन्दरों के झुंड आकर जुटे थे ? इसके पहले क्या कभी मरे हुए जीवित हो उठे थे ? इस जगत में लंका को आग लगानेवाला कोई कभी था क्या ?" इस प्रकार मंदोदरी ने पूछा। १५ वीर कुंभकर्ण क्या कभी मर सकता था ? देवताओं के लिए वीर जो इन्द्रजित् था वह किसके हाथ से मर सकता था ? अन्य महान बलशालियों के प्राणापहरण की ताकत किन में हो सकती है ? आप बुद्धिमान हैं। फिर भी अज्ञान के अँधेरे ने आपको घेर रखा है न ! १६ "जगत्-रक्षा के लिए विष्णु युग-युग में अवतार लेते हैं; जगत के लिए जो काँटा बने हैं —उनको समाप्त कर देते हैं। यह वेदमार्ग है। मूर्खता मत बरतिए। मारी (महामारी सीता) के मुँह मत लगिए। तीन दिन के नाटक के लिए अपनी दाढ़ी मत मुँड़वाइए"। इस प्रकार मंदोदरी ने निवेदन किया। १७ इस भावना में मत रहिए कि जगत में अन्य भगवान भी हैं। भक्तों के मन को आकर्षित करनेवाले, भक्तों के भाग्योदय की उपज एक मात्र वही हैं। भक्तसमूह के लिए वह सुख-संपदा का सागर हैं। मूर्खों और दुष्टों की नाक काटनेवाला छूरा भी वही है।" इस प्रकार मंदोदरी ने अपने

वलिगॆ बल्लिद रारु तमनिदळव मॆरॆदव रारु मधुविन
कलहदलि कैमिगुवरारी वर्तमानदलि
कलि हिरण्याक्षक हिरण्यकरॊळगॆ सॆणसुव रारु जीवद
लुळिदरे हगॆगॊंडु हरियॊड नॆंदळा कांतॆ ॥ 19 ॥
कॊंदवर तोऱा हिरण्यक नंदनन मरॆयॊक्क ध्रुवन पु-
रंदरन पौत्रन गजेंद्रन कलि विभीषणन
इंदु नी हगॆतनव साधिसि निंदिरलु सामर्थ्यवॆ विडु
मंदमति यनुभववं मरॆयॊगु राघवेश्वरन ॥ 20 ॥
केळु मंडोदरि विचारिसि खूळननु माडॆन्न जन्मग
ळेळ नॊल्लदॆ बंदॆवाव् जन्मत्रयंगळलि
हेळिकॆय लिन्नॊंदु जन्मद पाळयवु नमगुंटु कळिदरॆ
मेलॆ जगदॊळ गुत्तमद जय विजयरावॆंद ॥ 21 ॥
बल्लॆ नी रघुनाथ लक्ष्मी वल्लभनु तानॆंबुदनु ना-
बल्लॆ नरनिजॆ लक्ष्मियॆंबुद नाहवकॆ नॆरॆद
भल्लुकरु मर्कटरु सुररॆल्ल वेतकॆ केळु रणमुख
दलिल रामन कूडुवुदु संकल्प तनगॆंद ॥ 22 ॥

पति से कहा। १८ "बलि चक्रवर्ती से बलवान समर्थ इस दुनिया में कौन था? तमासुर से बढ़कर बलवान होकर कौन इस धरती पर विचरण कर सका था? मधु राक्षस को युद्ध में हरा देनेवाला क्या कोई था—इस युग में? हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु से कौन लड़ने की हिम्मत कर सकता था? ये (ही) सब विष्णु से द्वेष मोल लेकर जीवित रह सके?" इस प्रकार मंदोदरी ने पूछा। १९ "हिरण्यकशिपु के पुत्र प्रह्लाद, शरणागत ध्रुव, इन्द्र के प्रपौत्र (पोते) अर्जुन, गजेन्द्र, विभीषण—इनको क्या किसी ने मारा? दिखाइए तो सही। अब आप यों वैर साधकर डटे रहें—क्या आप में इतनी शक्ति है कि विजय प्राप्त करें? (अपनी) मंद बुद्धि को त्यागकर राघवेश्वर की शरण जाइए।" इस प्रकार मंदोदरी ने समझाया। २० "हे मंदोदरी, इस प्रकार के विचार प्रयुक्त कर मुझे मूर्ख मत बनाओ। हरिभक्तिसंपन्न सात जन्मों का (वरदान) न चाहते हुए हमने हरिविरोधी तीन जन्म ही (वरदानस्वरूप) माँग लिये तथा पाए। तीन जन्मों में अभी एक जन्म की बारी बाक़ी है (यही बचा है)। इस जन्म के बिता देने पर हम वही पूर्ववत् जगत-श्रेष्ठ जय-विजय बन जायेंगे।" इस प्रकार रावण ने बताया। २१ "भलीभाँति जानता हूँ कि यह रघुनाथ लक्ष्मीपति हैं; यह भी जानता

कडेय मातिदु नीनु बेद्रिन्नीड बडिस बेडेन्न हिंदके
नडेद कैलसविदेन्न हिप्पेय माडि हिडदिरु
तडेय बेडिन्नेनुत तरुणिय मुडिय नुगुरलि तिद्दि द कण्णलि
जडिव नीर्गळ नोरसि नंबिसि कळेदना दिनव ।। 23 ।।
उदय दिदोळ गेद्दु शूलिय पदव नेकाग्रद मनोभा-
वदलि भजिसि रणोत्सवद सुम्मान दुब्बिनलि
पदक कुंडल मुकुट कटकांगद कडेय पेंडेयद हारद
सदमळा भरणदलि शोभिसिदनु दशग्रीव ।। 24 ।।
धूपिसिद दिव्यांबरवननु लेप नादिय परिमळिप मा-
ला परिग्रहनागि कैयलि वीर कंकणव
स्थापनंगैदमर वंदिज नोपचारद बिरिदुगळ स-
ल्लापदलि सभेगागि बंदनु सुभटजन सहित ।। 25 ।।

हूँ कि सीता साक्षात् लक्ष्मी हैं। युद्ध में जुटे ये सब रीछ-वानर आदि देवता हैं —यह भी जानता हूँ। इन सब बातों में क्या धरा है? सुनो मंदोदरी, युद्ध के द्वारा (माध्यम से) श्रीराम में विलीन हो जाना चाहता हूँ। यह मेरा निश्चय है। (इस धारणा में मैं अटल हूँ।)" इस तरह रावण ने कहा। २२ "यही मेरा आखिरी निर्णय है। अन्य किसी प्रकार के निष्कर्ष के लिए मुझे बाध्य मत करो; जोर मत डालो। यह सब पूर्व में ही संपन्न हो चुके कार्य हैं। इसके लिए मेरी हिंसा न करो (मुझे अपने मार्ग पर चलने दो)। मुझे रोको मत।" इस तरह कहते रावण ने मंदोदरी के बाल सँवारते सहलाते, आँखों से बह रहे अश्रु पोंछते, उसमें आत्मविश्वास जगाते वह दिन बिताया। २३ सूर्योदय होने के पहले ही जागकर रावण ने शिव-चरणों की अर्चना तदेक ध्यान से, परिशुद्ध भक्तिभाव से की। उसके बाद युद्ध में जाने के उत्साह के आनंद के कारण रावण ने —पदक, कुंडल, मुकुर, कड़े, भुजवंद, पैरों के कड़े, ओहदों से भरे कंगन आदि आभूषणों से अपने को अलंकृत कर लिया। २४ सुगंध भरे दिव्य वस्त्र पहन, सुगंध द्रव्यों का शरीर भर में लेप कर, सुगंधयुक्त फूलों का हार पहन रावण ने अपने हाथ में वीरकंकण बाँध लिया। देवलोक के चारण-भाटों से गाए जा रहे स्तुतिपाठ जो ओहदों से भरे पूरे थे, उन्हें स्वीकार करते, साथ वालों के साथ सरस मधुर वार्तालाप करते, वीर योद्धाओं की सभा में उसने पदार्पण (आगमन) किया। २५ रावण ने खजांचियों को बुला भेजा। देवेन्द्र, अग्नि, यम,

करॆसिदनु भंडारिगळना हरि हुताशन यम निशाचर
वरुण वायु कुबेर शंकररित्त कप्पगळ
हिरिदु कालद हळॆय टंकद परिपरिय नाणयव नॆल्लव
तरिसि सूसिद नखिळ याचक जनद संदणिगॆ ॥ 26 ॥
हॊरिसि सुभटर सति सुतर मंदिर गळिगॆ कळुहिदनु नगरद
हरद हारुव बिनुगु बिच्चटॆ बडवॆ बग्गुगळ
करॆ करॆदु कैहारदलि मनवॆरसि सूरॆय बिट्ट तॆरिगॆय
बरहगळ नॆरॆ तॊडिसि संतस वडिसिदनु जनव ॥ 27 ॥
सॆरॆवनॆ यॊळिर्दखिळ दानव सुर नरोरग जनव मन्निसि
हॊरवडिसिदनु पुरवनाप्तर बंधु वर्गगळ
करॆदु रणदॊळ गळिदॆ नादरॆ वर विभीषण देवननु परि-
चरिय दिदुपचरिसि कॊडिहुदॆंदु नेमिसिद ॥ 28 ॥
बळिक तन्नय बळिय बह रणगलिगळनु विंगडिसिदनु कॊळु
गुळकॆ निलुव मतंगजवनुत्तमद तेजिगळ
हॊळॆव हॊदॆरुगळ रथिकावळिय राव्तर जोदरनु बगॆ
गॊळिसि बलु गैदुगळ ननि बरिसित्तु मन्निसिद ॥ 29 ॥

वरुण, वायु, कुबेर, नैर्ऋति, शंकर आदियों वे भेंटस्वरूप दिये उपहारों को, तथा अत्यंत प्राचीन काल से संग्रहीत पुरानी मुद्राओं से युक्त अशर्फ़ियों को खज़ाने से मँगवाकर भिक्षुक समाज मे लुटा दिया। २६ योद्धाओं की पत्नियों तथा बाल-बच्चों के घर दिव्याभूषणों से लदी पेटियाँ आदि रावण ने भिजवा दीं। नगर के व्यापारी, ब्राह्मण, निम्नस्तर के व्यक्ति, भिक्षुक, दरिद्र आदियों को बुला-बुलाकर उदारमना रावण ने उनको जितना चाहिए उतना बटोर लेने की आज्ञा देते हुए, उनको राजस्व से मुक्त करने की लिखित आज्ञाएँ देते हुए संतुष्ट कर लिया। २७ जेलखानों में कैद में पड़े सारे राक्षस देवता, मानव तथा नागों को मनाते हुए उन्हें बन्धन से मुक्त कर नगर से भिजवा दिया। रिश्तेदारों तथा बन्धु-बान्धवों को बुलाकर "युद्ध में कहीं अगर मैं मारा गया तो विभीषण देव को गौरव के साथ बुला ले उनकी सेवा में मन लगाना।" इस तरह रावण ने आज्ञा दी। २८ उसके बाद रावण ने अपने साथ आने के लिए सन्नद्ध वीरों को छाँट लिया। युद्ध में डटनेवाले हाथी, श्रेष्ठ घोड़े तथा चमकते सुनहले रथ, रथिक, घुड़सवार तथा योद्धाओं को परखते उनको श्रेष्ठ आयुध देते सभी को मनवा लिया। २९ हे स्थिरबुद्धि के कुश, सुनो।

नियत मति कुश केळु रणदीक्षेयनु कैकोंडसर रिपु नि-
र्भय मनोभावदलि वंदेरिदनु मणिरथव
नयविदनें लव केळु बंदळु मयनसुतॆ मणिभूषणद कॆळ
दियर कर्पूर दारतिय कॆंजोडर सॊंपिनलि ॥ 30 ॥
हरसि मुत्तिन सेसॆयनु दशशिरन शिरदलि तळॆदु हर्णॆयलि
धुरव जयि सॆंदिट्टळक्षतॆयनु सकुंकुमद
तिरुहि कर्पुर दारतिय नुप्परद बळुवॆय बिसुटु दुगुडत्र
धरिसि मुरिदळु मंदिरकॆ मानिनिय रॊग्गिनलि ॥ 31 ॥
वसुमतीपति सूनु केळळि दसुर रल्लदॆ कूडिदुदु ले-
क्किसलि कष्टादश महाक्षोहिणिय बल वळिक
कॊसरु गहळॆय कॊंबु चंबक दुसुरिनुब्बर कबुज जांडद
बसुरु बिरियलु बंदु हॊक्करु काळगद कळन ॥ 32 ॥
सारिदवु कहळॆगळु सुरकुल सूरॆ कारन सुप्रतापन
मूरु लोकद गंड नाहव चंड विक्रमन
मारु मलॆ वरि भटर जीवव तूरि बिसुडुव भीमत्रल कॊलॆ
गार रक्कस राय वीरन तोट बेडॆनुत ॥ 33 ॥

युद्ध-दीक्षा लेनेवाले रावण ने निर्भीत भाव से रत्न जड़े रथ पर आरोहण किया। हे नीतिवान लव, सुनो। कर्पूर की आरतियाँ तथा दीप धरे दिव्याभूषण-विभूषित सहेलियों के साथ (घिरे) मय की पुत्री मंदोदरी आयी। ३० मंदोदरी ने आशीर्वचन याचनापरक मोतियों के अक्षत रावण के सिर पर डाले; 'युद्ध में जीत हो' इस तरह आशय प्रकट करते कुंकुममिश्रित अक्षत रावण के माथे पर डालीं। कर्पूर जलाकर आरती उतारते दीठ उतारकर दूर फेंकते दुःख-भार से लदी मंदोदरी सहेलियों से घिरी अपने राजमहल में लौटी। ३१ हे राजकुमार, सुनो। युद्ध में विनष्ट हुए राक्षस सैनिकों को छोड़ देने पर भी (जो बची थी) अठारह अक्षौहिणी सेना आकर जुटी। गर्जन-तर्जन करती तुरही, सींग के बाजे, विषाण आदियों के निनाद से ब्रह्मांड जो फटने लगा —रावण ने तभी अपनी सेना के साथ युद्धस्थली में प्रवेश किया। ३२ 'सुर (देव) कुल को लूट लेनेवाले, सुप्रतापी, तीनों लोकों के वीर, (त्रिलोक वीराग्रणी) युद्धप्रचंड, प्रतिरोध करनेवाले शत्रु योद्धाओं के प्राणों को हवा में फूंक देनेवाले भयानक बलवान हत्यारे इस राक्षस राजा के साथ युद्ध करना बेकार है।' इस प्रकार मानो विषाण (बाजे) पुकार-पुकारकर कह रहे थे। ३३ "देवेन्द्र के प्राणों को कँपानेवाले, अग्नि के

सुरप नसुदल्लणन वैश्वानरन हृच्छूलन कृतांतन
शिरविदळन गदादिघातन निरूति निर्भयन
वरुणखंडन मंडलाग्रन मरुतचोरन धनप नखिळै-
श्वरिय सर्वस्त्रापहारन तोट बेडेंनुत ॥ 34 ॥
कैटभारिय सतिय तंदन तोट सुख वल्लमम हिमकर
जूट नद्रिय कित्तवन जज्जार लेसल्ल
नाटिसुव जगदवन नणुविगॆ पाटमाडद सुप्रसिद्धन
घाटरण सुखवल्लॆंनुत लॊदरिदवु कहळॆगळु ॥ 35 ॥
ऒदरु तिर्दवु कहळॆगळु तृणकदनु तारदॆ तरणिसुत रण-
कधटरनु निदिरिसिदनु तुदि वाल दॊम्मॊळकॆ
त्रिदश लोककॆ बिडॆय वॆनला त्रिदश शैल समानरनु कै-
दुदिय गिरिकूटगळ गर्वित वीर भटरुगळ ॥ 36 ॥
बंद नाहवका दशानन नॆंदु केळिदु करुण दुब्बिन
मंद हासद रणद लवलविकॆय महोत्सवद
संदणिय सौरंभदमररिपुंदमनु जांबव विभीषण
रिंद हॊगळिसि कॊळुत हॊक्कनु हगॆय रणकागि ॥ 37 ॥

हृदय को शूल सरीखे बने, यम के माथे को चीरनेवाले, निर्भय निर्ऋति को गदा से ठोंकनेवाले, वरुण को तलवार से काटनेवाले, मरुत तथा कुवेर के समस्त ऐश्वर्य का अपहरणकर्ता रावण के साथ युद्ध मत करो' —इस प्रकार बाजे घोषणा कर रहे थे। ३४ विष्णु-सती के अपहरणकर्ता के साथ युद्ध करना सुखकारी नहीं; चन्द्रशेखर (शिवजी) के कैलास को उखाड़ने वाले के साथ युद्ध ठीक नही; जगत् के निर्माणकर्ता को अणु के बराबर भी न माननेवाले इस सुप्रसिद्ध के तथा अद्भुत युद्ध हितकारी नहीं —इस तरह कहते बाजे जोर-जोर के शोर के साथ पुकार-पुकारकर कहने लगे। ३५ राक्षस-सेना के बाजों के इस प्रकार गरजते रहने पर भी उसकी रत्ती भर भी परवाह न करते हुए सुग्रीव ने पूँछ की छोर के एक हाथ की दूरी पर युद्ध के लिए अपनी तरफ़ के वीरों को खड़ा किया। देवलोक के साथ मानों स्पर्धा करते हुए मेरुपर्वत-सदृश हाथों में पहाड़ उठाए धरे अकड़ते वीर योद्धाओं को खड़ा किया। ३६ दशकंठ के युद्ध में पधारने का समाचार पाकर मुस्कुराते हुए, युद्ध करने के लिए उत्साहपूर्ण अभिलाषा लिये हुए असुरारि राम ने जाम्बव, विभीषण आदियों के प्रशंसा-सूचक ध्वनियों के मध्य शत्रु से लड़ने के लिए युद्ध-भूमि में प्रवेश किया। ३७ उस तरफ़ क्रोधसंतप्त हो हाथ ऊपर उठाए गरजते सिंहध्वज जब फड़फड़ा

अत्तला सुरवैरि मुत्तिन सत्तिगॆय नॆळलिनलि कैगळ
नॆत्ति गर्जिप कुपित कंठीरवन हळविगॆय
नर्तिसुव रथवाजिगळ लसुरोत्तमन रथ निंदुदा नडु
हॊत्तिनंबर मणियवॊलु चुंबिसुव तेजदलि ॥ 38 ॥
अंजिदनु सुरराजनॊडनॆ धनंजयनु नडुगिदनु भयदि-
दंजना नंदनन पित साड्रिदनु कॆल कडॆगॆ
मुंजॆरग संवरिसिदनु यम नंजुळिय करकंपदलि मन-
दंजिकॆय लंतरिसि निंदिद रुळिद धिगधिपरु ॥ 39 ॥
बड बडकरनु हेळदिरु मन नडुगु तिर्दुदु मदन हरनॆदॆ
मिडुकु तिर्दुदु मरळि मातेनंबु जासनन
हिडिद वीणॆयलंक मलॆय नुडिसुतिर्दनु नारदनु खळ
नॆडॆगॆ मॆल्लनॆ देवगुरु बिडदं जुतैतंद ॥ 40 ॥
सुलभ विदिन दिवस ताराबलद परिकर लेसु चंद्रम
नॊलुमॆ मिगिलुळिद ग्रहंगळु सुप्रसन्नरलॆ
गॆलवु निमगहुदॆडद योगिणि बलद लग्गद काळ राहुग
ळॊलवु देवर मेलॆ मेलण कार्य लेसॆंद ॥ 41 ॥

रहा था, रथ के घोड़े (उत्सुक हो) नाच रहे थे तो दुपहर के सूर्य की भाँति तेजस्विता बरसाते रावण का रथ आ खड़ा हुआ। मोतियों के झालरों से सुशोभित छत्र के नीचे रावण (रथ में) विराजमान था। ३८ (यह देख) देवेन्द्र घबराए; अग्नि थर-थर काँप उठे, भयभीत हो वायु परे सरक गये; यमदेव ने कछोटा कसकर बाँध लिया; अन्य दिक्पालक हाथ जोड़े थरथर काँपते मन ही मन भयभीत हुए ओट में (छिपे) खड़े रहे। ३९ अन्य दुबले-पतलों के बारे में क्या कहें? शिवजी का मन काँप रहा था, ब्रह्माजी की छाती धड़क रही थी। नारद अपनी वीणा पर रावण की उपाधियों को गा रहे थे। देवगुरु बृहस्पति डरते-डरते धीरे-धीरे रावण के पास आये। ४० "आज का दिन आपके लिए शोभनप्रद (शुभकारी) है। तारा-बल अनुकूल है; चन्द्र का मित्रभाव अधिक है; अन्य ग्रह भी आज सुप्रसन्न हैं। आपकी जीत आज सुनिश्चित है। वाम पार्श्व में योगिनी तथा दक्षिण पार्श्व में कालराहु, —इन दोनों की प्रीति आप पर (भरपूर) है। भावी कार्य श्रेष्ठ फलदायक है।" इस तरह गुरु (बृहस्पति) ने कहा। ४१ "राजन्! एक विनम्र निवेदन है; समस्त देवता-समूह आगे आने से डर रहे हैं। आपका युद्धवैभव वे देखना

जीय बिन्नह सकल सुर समुदायवदें बरलांजियभयव
नीय बेक्कीक्षिसलु भवदाजिय महोत्सवव
जीयदेंने बरलेंदु रक्कस राय नेमिसें नेंरेंदु दमररु
वायु पथदलि वरविमानंगळ विलासदलि ॥ 42 ॥
वीर रावण नंबरद वृंदारकर नीक्षिसुत नूकिद
नारु भटेंयलि रथव नेंड बल दसुर बल सहित
भेरिगळु मॊळगिदवु तंबट वारु भटिसिद वट्टु गह्ळॆग
ळोरणद लॊदरिदवु दिक्कुगळॊदरे चूणियलि ॥ 43 ॥
बिरिय लरिभट गर्वगिरि युब्बरिसिती बलवमम लयदिन
दुरिगळॆरडिट्टवुकुव वॊलौकिदवु बलवॆरडु
वरुष कालद मिचु मिचि नॊळुरवणिसु वंददलि किडियु-
प्परद मालॆगळुप्परिसि हॊय्दाडितुभय वल ॥ 44 ॥
ऎंद्दुदंबर दुदिगॆ रजवदनद्दिसितु रक्तांबुनिधि वलु
हॆद्दॊरॆय हॊय्लूर नणॆंदवु रावणासुरन
बिद्द बल सुप्रळय दिवसदॊळॆद्द गाळिय तॆरदवॊलु मुळि
दॆद्दु नडॆदुदु नळिन गर्भन राज मंदिरकॆ ॥ 45 ॥

चाहते हैं; कृपया अनुमति प्रदान कीजिए।" इस प्रकार देवगुरु ने विनती की। राक्षसराजा ने जब आने की अनुमति प्रदान की तो देवता अपने-अपने विमान में बैठ आकाश में आ, इकट्ठे हुए। ४२ आकाश स्थित देवताओं को देखते वीर रावण सिंहनाद करते दाएँ-बाएँ आ रही अपनी राक्षस-सेना के साथ रथ को आगे बढ़ाते आये; भेरियाँ बजने लगीं, डफ गरजने लगे; दिशि-दिशाएँ इन ध्वनियों से गूँजने लगीं तो सेना के सामने की पंक्ति के आगे बढ़ने की सूचना देने वाले बाजे बजते हुए एक कतार में खड़े हुए ध्वनि करने लगे। ४३ शत्रुवीरों के घमंड की पहाड़ी फट जाय, इस रीति से वानर-सेना ने अपना दर्प प्रकट किया। प्रलयकालीन दो ज्वालाएँ एक-दूसरे से जूझने की भाँति राक्षस तथा वानर-सेनाएँ भिड़ गयीं। वर्षाऋतु में जैसे बिजली बिजली पर टूट पड़ती है, वैसे ही आयुध से निकली चिनगारियाँ छिटकने लगीं तो दोनों सेनाएँ उछलते-कूदते लड़ने लगीं। ४४ आकाश के अंतिम छोर तक (उड़ी) धूल पहुँची। रक्त के समुद्र ने उस धूल को गीला कर दिया (भिगो दिया)। रक्त की बड़ी-बड़ी प्रवाहपूर्ण लहरें रावण की नगरी को थपेड़ने लगीं। युद्ध में मर पड़ी सेना प्रलय के समय उठी आँधी की भाँति विष्णु के राजभवन तक उठकर धायी (दौड़ पड़ी)। ४५ वानरों की

औत्त बरिसितु बळिक वानरपत्ति वानर यूथ नाथर
मोत्त वानर वीर सेनाधीश रॊंग्गिनलि
कुत्तुदलॆंगळ हॆम्मरद हॊय्लॆत्तुगळ बॆट्टगळ बिरुबिन
हत्तुगॆय लॊळहॊक्कु सदॆदरु सकल रिपुबलव ॥ 46 ॥
आव वीरनॊ वीर वर्गद देवदेवाधीश दल्लण
रावणन मगना विरूपाक्षनु विचित्रदलि
तीवि तॆगॆदंबिनलि सिंह विरावदलि तरिदॊट्टिदनु सु-
ग्रीव सैन्यव सकल सुरकुल वॆल्ल बॆरगागॆ ॥ 47 ॥
मीरिदनु सुरराज जितुविन तारु तट्टिन कदनवनु कै-
मीरिदनु कलिकुंभकर्णन कदन कौतुकव
नूरु मडियादनु नरांतक नेरि दिरितद रणकॆ मनवनु
सारु गॊंडनु चंडबल लंकापुराधिपन ॥ 48 ॥
ओडिदंबिन मॊनॆगळलि कुडियाडिदवु कपिवलद कणॆयॆडॆ
याडिदॆडॆयलि तॆक्कॆ वॆण नॊट्टिदवु तेरैसि
हूडु वलगॆसु वलगु गळलॆडॆ याडुतिर्दवु जीव दिविजर
बीडिनलि बरिकैद नीपरि कपि भटावळिय ॥ 49 ॥

पैदल सेना, वानर दलपतियों का समूह तथा वानर-सेना के वीर सेनानायक (दलपति) सबने एक साथ इकट्ठे हो राक्षस-सेना पर चढ़ायी की। वानर योद्धाओं ने भारी पहाड़ों से इस प्रकार पीटा कि सिर टूट पड़े तथा इस प्रकार चट्टान फेंके कि शत्रु सेना दब जाय। इस तरह ज़बर्दस्त हमला करते शत्रु-सेना के भीतर घुसकर मारपीट शुरू की। ४६ देवाधिपतियों को कँपा देनेवाला रावण का पुत्र विरूपाक्ष न जाने कैसा भयानक वीर है! सिंहनाद करते, समस्त देवताओं को आश्चर्य में डालते अत्यंत अद्भुत बाणों से (बाण चलाकर) सुग्रीव की सेना को मूली की भाँति काट डालते उसने ढेर बना दिया। ४७ शत्रुओं को तितर-बितर कर देनेवाले इन्द्रजित् के युद्धकौशल्य से बढ़कर कौशल्य विरूपाक्ष ने दिखलाया। वीर कुंभकर्ण के कौतूहलपूर्ण युद्ध से भी बढ़कर चमत्कार उसने दिखलाया। नरांतक के भयानक हत्याकांड को भी सौ गुने वेग के कारण इसने मात कर दिया। इस प्रकार भयानक युद्ध करते विरूपाक्ष ने लंकेश्वर के मन को मोह लिया, जीत लिया। ४८ विरूपाक्ष से चलाए गये बाणों की नोकों के युद्धभूमि में भ्रमण के कारण कपि-सेना कट-कटकर गिरी; बाणों के संचारित स्थानों में जिधर-तिधर शवों के पहाड़ ही पहाड़ नज़र आए। निशाने पर चलाए बाण,

आवनव नॊंड नांपवनु सुग्रीव नल्लदॆं विलयकाल
ग्रीवनवॊ लर्भटिसु तड गट्टिदनु रक्कसन
साववंगिनितेकॆ हुल्लुरि डावरद डॊंबिगॆ नीरहु
दे विचारिस लुक्कि सॊक्कदिरॆलवॊ नीनॆंद ॥ 50 ॥
हिडिद हॆंगिरि दुदिय लग्गद मिडुकु वसुरन तेरु तेजिय
नडिमगुच लप्पळिस लाचॆगॆ जिगिद नवबळिक
तुडुकि कुंतदला वसौकस रॊडॆयनुरु वक्ष प्रदेशव
नॊडॆ तिविदु कॆडॆयॆनुत वॊब्बिबरिदनु विरूपाक्ष ॥ 51 ॥
तिविद कुंतव नुरुबि मदकरि कविदु वीळलु मुष्टियलि हॊय्-
दिवि गळिदप्पळिसिदनु मेल्वाय्दु रक्कसन
नवरुधिर जल धारॆ रावणि यवयवदि नुप्परिसि निमिषदि
जवनवरु नगुतवन कॊंडॊय्दरु सरागदलि ॥ 52 ॥
असमबल दीर्घोदरनु किडिमसगि कोपिसु तेरिदनु रा-
क्षस विरोधिय राजकार्यकॆ निंद रविसुतन

वर्षा के रूप में चलाए बाण— विरूपाक्ष के, जहाँ-जहाँ पहुँचे, वहाँ-वहाँ कपियों के प्राण देवताओं की नगरी की ओर प्रस्थान (यात्रा) कर गये। इस प्रकार विरूपाक्ष ने युद्ध का मैदान कपियों से खाली कर दिया (साफ़ कर दिया)। ४९ सुग्रीव के सिवा विरूपाक्ष का सामना कौन कर सकता था? सुग्रीव ने प्रलयकालीन रुद्र की भाँति विरूपाक्ष का सामना करते उसे (आगे बढ़ने से) रोका। "अरे! मरनेवाले की इतनी अकड़-धकड़ से क्या होगा? जलती घास ज्वाला (आँच) की मस्ती देख क्या डर के मारे पानी-पानी हो जायेगी? व्यर्थ अत्युत्साह के मारे घमंड मत दिखाओ।" इस तरह सुग्रीव ने कहा। ५० सुग्रीव ने अपने हाथ में के बड़े पहाड़ के शिखर की नोक से संचरण कर रहे विरूपाक्ष के रथ और घोड़ों पर इस प्रकार प्रहार किया कि वह औंधे मुँह गिरे। विरूपाक्ष रथ से बाहर कूद कुंत (बरछी) हाथ में लिये वानरराज सुग्रीव की छाती में खोंचकर 'गिर जा!' इस तरह कहते जोर से गरजा। ५१ विरूपाक्ष से चलायी बरछी को अपने फूंक से उड़ा देकर मदोन्मत्त हाथी के टूट पड़ने के ढंग से सुग्रीव राक्षस पर टूट पड़ा तथा उसने उसे घूंसे (मुक्के) मार-मारकर धराशायी कर दिया। विरूपाक्ष के शरीर से गरम रक्त की धारा फव्वारे की तरह फूटी। तुरन्त ही यम के दूत घटनास्थल पर पहुँचे तथा खुशी-खुशी विरूपाक्ष के प्राण लेकर चले गये। ५२ (यह देख) क्रोधसंतप्त हो चिनगारियाँ उगलते असमान बलशाली दीर्घोदर ने राम

मुसुकुतंबिन मळेय लौकुव विषम कपिनायकर वानर
रसुवु नुच्चुत मुट्टविसिदनु मर्कटाधिपन ॥ 53 ॥
ऐदि दग्गद विग्रहद दीर्घोदरन रथ कॆडॆय लॊदॆदनु
पाददलि परिभविसि कॊंडनु खळन किब्बदिय
ऊदलु दुरिद तृणद वोलु हरिपाद हतियलि बिद्द खळ मे-
ल्वाय्दु डॊक्करिसिदनु तॆक्कॆय लर्क संभवन ॥ 54 ॥
होरिदरु हणॆयॊत्तुगळ कैहारगळ तळ्कुगळ बलनॆड
नोरॆगळ नूकुगळ तरतरिकॆगळ तरहरद
वीररिब्बरु हॆणगि कॆडॆदरु धारुणिगॆ धरॆ बिरियॆ समरद
सॆरणॆ गळडिमेलु मेलडियागि कणनॊळगॆ ॥ 55 ॥
अडसि दंता दंतियलि कैदुडुकि केशकेशियलि जव
गॆडदॆ जानुप्रहरणद पादाभिघातदलि
बिडदॆ दॆख्खा दॆख्खियलि धृति गॆडदॆ धाळा धूळियलि बलु
गडिय खाडा खाडियलि कादिदरु कडुहिनलि ॥ 56 ॥

के राजकार्य में सहायक हो खड़े सुग्रीव पर आक्रमण किया। अपने पर चढ़ाई करनेवाले कपिनायकों को बाणों की वर्षा से ढाँपते, रुकावट डालनेवाले वानरों का प्राणापहरण करते दीर्घोदर सुग्रीव के नज़दीक पहुँच गया। ५३ नज़दीक आए, भारी-भरकम देह के दीर्घोदर के रथ पर ऐसी लात (सुग्रीव ने) जमायी कि वह रथ के नीचे आ जाय; उस असुर के पार्श्व को पैरों से रौंदकर उसे अपमानित कर दिया। तिनका जैसे फूंक से उड़ जाता है, उसी प्रकार सुग्रीव की लात खाकर नीचे गिरा दीर्घोदर आगे बढ़कर सुग्रीव को दबोचकर घूंसे जमाने लगा। ५४ माथे से माथा टकराते, हाथापाई करते, गुत्थमगुत्था हो बाएँ-दाएँ पार्श्वों से एक-दूसरे को ढकेलते, बीच-बीच में सँभलते, साँस लेते दीर्घोदर-सुग्रीव दोनों खूब लड़े। दोनों वीर लड़ते-लड़ते इस प्रकार धरती पर गिरे कि उसमें दरार पड़ जाय! धरती पर एक-दूसरे से ऐसे गुँथ गये कि कभी एक ऊपर की तरफ़ तो कभी दूसरे ऊपर की तरफ़, उसी प्रकार कभी एक नीचे तो दूसरा नीचे की तरफ़ होते आपस में खूब लड़े। ५५ दोनों वीर एक-दूसरे पर टूट पड़कर दाँतों से एक-दूसरे को काटते हुए, एक-दूसरे का बाल पकड़ खींचते हुए, घुटने तथा लातों से एक-दूसरे को पीटते हुए, चुस्त वार करते हुए लड़े। एक-दूसरे पर दृष्टियुद्ध करते तथा बिना धैर्य खोए एक-दूसरे पर ऐसे टूट पड़े कि धूल उड़ी। और उन दोनों में कड़क युद्ध हुआ। ५६ इन्द्र-जंभासुर; षण्मुख-तारकासुर; नरसिंह-हिरण्यकशिपु; शिव-गजासुर;

सुरप जंभन गुहन तारकनुरु नृसिंह हिरण्यकर शं-
कर गजासुर नादि नारायणन कैटभन
परशुरामन कार्तवीर्यन हरिसुतन रावण रणदं
तरकें नाल्मडि येनलु कादिद रसम समरदलि ॥ 57 ॥
वीर हनुमन होगळिकेयलि कठोर साहसमल्ल बिगिदनु
भारि भुज पाशदलि दीर्घोधर शिरोधरव
चारुतर मुखवेषदुसुरिन दारियनु बिगिदंतें रक्कस
वीरनसु तानाव रंध्रदि नुसुळितोयेंद ॥ 58 ॥
तेंक्कें सडलिद तोळ बिगुहिन रक्कसन मुखचेष्टेयनु कं-
डक्कटा कडुगेड दायितें रावणगेंनुत
मक्कळनु मनें नेंटरनु मोम्मक्कळनु परमानिनिगें मन
विक्कि कोलिसिदु नेंनुत तिरुगिदनबुज सखसूनु ॥ 59 ॥
आरिदुदु कपिसेनें सूर्यकुमार नधिक पराक्रमकें वृं-
दारकरु भुल्लविसिदरु रवितनुज गुत्तमद
हारवनु कळुहिदरु कंडिद सैरिसुवने भुवन मूरर
वीर रक्कस रायनेंलें नृपसूनु केळेंद ॥ 60 ॥

नारायण-कैटभासुर; परशुराम-कार्तवीर्य; वाली-रावण; इनके बीच हुए युद्ध के समान चौगुने वेग से सुग्रीव-दीर्घोदर विषम युद्ध खूब लड़े। ५७ वीर हनुमान के प्रशंसात्मक शब्दों से प्रोत्साहित किए जाने पर महावीर सुग्रीव ने दीर्घोदर के सिर के नीचे मुखड़े को भुजाओं में कसकर दबोच दिया। ऐसा करने से मुखड़े में का श्वास-मार्ग कट गया। तब पता नहीं —दीर्घोदर के प्राण किस रन्ध्र से होकर निकल गये ? कौन जाने ? इस तरह कहते इस आश्चर्यकारी घटना का वर्णन कुश-लव कुमारों को वाल्मीकि ने सुनाया। ५८ सुग्रीव ने अपनी भुजाओं की कसावट थोड़ी ढीली करते राक्षस के मुखलक्षण देखे— "हाय ! यह तो रावण का सत्यानाश है। परस्त्री पर आस लगाये बैठकर बाल-बच्चे, घरेलू रिश्तेदार, बन्धु-बान्धव, पोते आदियों की (इस प्रकार) हत्या करायी !" इस तरह कहते सुग्रीव पीछे हट गया। ५९ सुग्रीव की इस महान वीरता को देख कपिसेना ने जी भरकर हर्षनाद किया। देवताओं ने फूले न समाते, अपनी प्रसन्नता द्योतक श्रेष्ठ पुष्पहार सुग्रीव के लिए भिजवाया। (अपने अंतिम) बेटे की मृत्यु देखकर त्रिलोक वीर राक्षस वीर राक्षसेश्वर कैसे सँभले ? सुनो राजकुमार कुश ! —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ६० पुत्र मृत्यु की ज्वाला भड़क उठी;

हब्बिदुदु सुत शोक शिखि मुरिदुब्बरिसिदुदु रोष पावक
नुब्बटेय बाहु प्रतापानलन नालगेय
अब्बरिन किच्चोंदु हुरिगोंडेब्बिसिदु दुद्रेकवनु जग-
दोब्ब वीरनु नूकिदनु बळिकवर मोहरकॆ ॥ 61 ॥

ओब्ब रावण हत्तु बिल्लि देब्बिसुव बाणदलि बीळद
रोब्बरनु ना काणॆ कोलळवियलि कपिभटर
कब्बुदोटद करिय काल् दुळि यब्बरवो ना नरियॆ नरियॆनु
तब्बिद मरीजनद तोळिन भटर तितिणिय ॥ 62 ॥

होक्कनव नॆड बलद कपिगळ हिक्कि हिंडुत हरि कुलेंद्रन
होक्किरिव तवकदलि तळ्ळंकिसॆ कपिव्रात
सिक्कदिरनी खळगॆ कपिकुल चक्रि तडॆयलु बेकॆनुत रिपु-
रक्कसन रथ दिदिरिनलि सौमित्रि माऱांत ॥ 63 ॥

क्रोधाग्नि जिह्वा निकाल लपलपाने लगी। भुजपराक्रम की आग की जिह्वा की भारी ज्वाला के कारण रावण अत्यंत विचलित हो उठा। इस प्रकार चिढ़े जगदेकवीराग्रणी रावण सुग्रीव से लड़ने दौड़ पड़े। ६१ "एक रावण के दस धनुषों से एक साथ छोड़े जा रहे बाणों के कारण उन बाणों की परिधि में आनेवाले कपियोद्धाओं में एक को भी वचकर जाते मैं नहीं देख पाया। गन्नों के खेत को पैर तले रौंद डालनेवाले हाथी के सदृश क्या यह युद्ध है —यह भी कहने में असमर्थ हूँ। देवलोक की अप्सराओं के आलिंगनपाश में आबद्ध कपिवीरों की गिनती देने में भी मैं असमर्थ हूँ।" इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ६२ रावण ने (व्यूह के) अन्दर घुसकर दाएँ-बाएँ आ पड़नेवाले कपिसमूह को पीस डालकर, निचोड़ते हुए सुग्रीव को घेरकर काट डालने का विचार किया। यह देख सभी वानर घबरा गये। तभी 'कपिकुल चक्रवर्ती का इस राक्षस के हाथ फंस जाना निश्चित है। इसे जिस किसी भी प्रकार से रोकना चाहिए।' यों कहते हुए लक्ष्मण रावण के रथ के सम्मुख आया। ६३

नलवत्तेळनेय संधि

सूचने— अंतविल्लद नरर खपिन नंतननुक्तत समर जय विक्रांतननु रावणनु गेलिदनु घोर शक्तियलि ।

मोहरिसि तळिदुळिद बलवा साहसन सुरलोक दल्लण
नाहवकॆ पडियागि लक्ष्मणदेव निदिरिनलि
काहुरव देकॆलवॊ माणॆयला हराद्यर वगॆ गॊळद न-
म्मी हरीश्वर नॊडनॆ हळचूव चावटॆय तनव ॥ 1 ॥
निनगॆ दॊड्डितु निन्न हरिपति मनुज पतिगळु तृण कणा के-
ळॆनगॆ नी ता सहित सवॆंदुदु सकल बलवॆंदु
मनकॆ तोर्‍इतला क्षणार्ध दॊळनल नाडिद वेसगॆय तृण
वनद वॊलु निम्मुवनु गॆलदिरलसुर नल्लॆंद ॥ 2 ॥
अर्‍इय बहुदिद रुब्बुगॊब्बिन तॆर्‍अहिनंतर वेगवॆंमगे
कर्‍इकॆ युळ्ळडॆ तोरु रणदागम परिश्रमव
कर्‍ऎ कणाळिय नॆनुत बॊव्वॆय बिरुविनलि बिलुदनियनहितगॆ
हॊर्‍इसु तॊत्तबरिसिदनु किविगुगिद कोलिनलि ॥ 3 ॥

सैंतालीसवीं संधि

सूचना— युद्धविजय में पराक्रमशाली, नाशरहित मानव रूपी आदिशेष लक्ष्मण को भयानक शक्त्यायुध चलाकर रावण ने जीत लिया ।

शेष रही वानर-सेना साहसी रावण के साथ युद्धपिपासु लक्ष्मणदेव के सम्मुख आ जुटी । "अरे ! इतनी बेचैनी क्यों ? उतावले मत बनो । शिवजी आदि की परवाह न करनेवाले इस हरीश्वर के साथ डाह करने का, युद्ध करने का उद्दत स्वभाव त्यागेंगे नहीं ? क्यों भला ?" इस प्रकार लक्ष्मण ने रावण से पूछा । १ "तेरे हरिपति, मानवपति आदि तेरे लिए बड़े हैं । तू और वह दोनों मेरे लिए तिनके के बराबर हैं । समझे ? क्या तू यही समझता होगा कि हमारी सारी सेना विनष्ट हुई । आग लगे ग्रीष्म ऋतु के घास के मैदान के समान क्षणार्ध में अगर तुम्हें न जीतूं तो मैं असुर नहीं ।" इस प्रकार रावण ने लक्ष्मण के प्रश्न का उत्तर दिया । २ "तेरी इन भारी घमंड भरी बातों की सामर्थ्य का अभी पता चलेगा । उन बातों से हमारा क्या मतलब ? अपना युद्ध-कौशल प्रकट करते जवाब दो । बाण चलाओ ।" इस तरह कहते सिंहनाद करते धनुष्टंकार करते कान तक (प्रत्यंचा) खींच बाण छोड़ते लक्ष्मण ने

हसुळें होक्कनु हगेय समर व्यसनकेलें हनुमंत नडे कै-
कसेय कडेमग होगु होळकु सुषेण पडिबलकें
ससिन वागिरदेनु मनकति विषम नवनेलें जांबवरें नी
वेसगि तम्मन हानि हरिबकें बेग नीवेंद। 4 ॥
ईतनदरिं दोळगें शरसंघातदलि रावणन तनुवनु
तूतु गोरिं दुगुळिसिदनरुणांबुवनु तेरिनलि
सूतननु सुरजात दबला जातदलि निदिरिसि कडिदनु
केतु दंडव नुळुहिदनु रावणन रामंगें ॥ 5 ॥
तोलग गडिदनु हत्तु बिलुगळ निळयलेच्चनु हत्तु मकुटव
तलेगें तोट्टी मातनेंदनु मधुर वचनदलि
अेलें दशानन केळु रामं गोलुमें घन निन्नवन मेला
बळिय लनुसरिसुवदु चित्तकें तोरु तिदेयेंद ॥ 6 ॥
बेड चलपद विन्नु कैगळु बेडिकोळलि भवाब्दिपोतन
नाडि केडदें यशोविलासन बायदंबुलव
कूडि कोंडिरु पेक्षिसदें सिरिगाडि कातियनुज सह गति-
गेडुगर नगरियलि नायक नाग बेडेंद ॥ 7 ॥

रावण को घेर लिया। ३ शत्रु के साथ लड़ने मेरा मुग्ध भाई गया है। इसलिए हनुमान ! तुम जाओ। कैकसा का यह आखिरी बेटा रावण बड़ा साहसी है। हे सुषेण ! तुम भी अपनी सेना के साथ सहायता करने जाओ। यह युद्ध कल्याणकारी नहीं दीखता। रावण महान भयंकर है। जाम्बवानजी, आड़े समय के लिए भाई की मदद के लिए आप भी जाइए।" इस प्रकार राम ने कहा। ४ इतने में लक्ष्मण ने वाण चलाकर रावण के देह को कुरेदकर (छेद बनाकर) खून को (उसके) रथ भर में छिटका दिया था। रथ के सारथी की हत्या करके उसे देवलोक की युवतियों के यहाँ भिजवा दिया था। (रावण के) ध्वजदंड को काट डाला। राम के लिए रावण को जिन्दा छोड़ दिया। ५ लक्ष्मण ने रावण के दसों धनुषों को काट गिराया। उनके दसों मुकुट लक्ष्मण ने बाण चलाकर उड़ा दिये। फिर उनके माथे पर बाण का निशाना तानकर मधुर वचनों से रावण को संबोधित करते— "रे दशानन, सुन। राम तुमको बहुत चाहते हैं। मुझे तो ऐसा लग रहा है कि तू उसी का अनुसरण कर।" इस प्रकार कहा। ६ "तेरा यह जिद्दी स्वभाव छोड़ दो। राम संसार रूपी सागर को तारनेवाली नौका है। हाथ जोड़कर उसकी प्रार्थना कर। निंदा करके बरबाद होने की अपेक्षा कीर्तिशाली उसकी

ऑल्लॆया मनकॆम्म मातिदु सल्लदिरॆ करॆ सारथिय हिडि
बिल्ल नडसु वरूथवनु हळविगय कैमाडु
कॊल्लॆवाव् निन्नुवनु नीवॆम्मलिल मॆरॆ निनगुळ्ळ शक्तिय
कल्लु मरनव रौक रन्न बरॆंज बॆडॆंद ॥ 8 ॥
असुर नवनासुर विकर्मद विषम काळनु नुडिगळिव सै-
रिसुवने बळिकवनु कॊंडनु कमल भवनित्त
हॊसमसॆय हॊगरलगुगळु तॆत्तिसिद शकुति यलुरि छडाळिसि
मुसुकॆ मारुत पथव नमरव्रात कळवळिसॆ ॥ 9 ॥
जडिव शक्तिय किच्चु वानर पडॆयनट्टलु कंडु बंदनु
झडितॆयलि जाह्नविय तंदॆय पादपंकजव
हिडिदु बदुकिद शरण लक्ष्मण नॆडॆगॆ तूगुत गदॆयनद कं-
डिडिद नंबिनलसुर मिक्किन कैगळॆसुगॆयलि ॥ 10 ॥
नसिदु दातन वर्म कर्मव नुसुर्व बलु गॊंडॆय तनवु नि-
प्पसरदलि जडिदिट्ट नीतन नातु कॊयॆनुत

सेवा करते जीवन-यापन करो। चंचल सुंदर लक्ष्मी की उपेक्षा न कर भाई के साथ (उसका उपभोग करते) जीवित रहो। गतिहीनों की, दरिद्रों की नगरी के नायक मत बनो।" इस प्रकार लक्ष्मण ने कहा। ७ "तू यह मानता नहीं? तो ठीक है; ये बातें अगर पसन्द नहीं तो सारथी को बुलाओ। धनुष को उठाओ। रथ का संचालन करो। पताका से इशारा दे दो। हम (मैं) तुम्हारी हत्या नहीं करते। तुम्हारी जो सामर्थ्य तथा शक्ति है वह हम पर प्रकट कर। तब तक पेड़-चट्टान उठानेवाले ये वानर योद्धा तुम्हें नहीं घेरते। डरो मत।" इस प्रकार लक्ष्मण ने कहा। ८ वह भयानक दुष्कर्मी राक्षस इन बातों को कैसे सह सकता है? ब्रह्माजी से दिया गया अभी-अभी सान पर धरकर पैना बनाया गया चमकते काँटोंदार शक्त्यायुध को रावण ने (अपने) हाथ में उठाया। उस शक्त्यायुध से निकल रहीं ज्वालाएँ आकाश को छूने लगीं तो देवता घबरा गये। ९ शक्त्यायुध से निकल रही ज्वाला वानरों को भयभीत करते जो खदेड़ने लगी तो यह देख गंगा के पिता विष्णु के चरण-कमलों का आश्रय ग्रहण कर जी रहे विभीषण अत्यंत द्रुतग गति से अपनी गदा को झुलाते हुए, (घुमाते हुए) लक्ष्मण के पास आए। उसे देखते ही रावण ने अन्य हाथों से विभीषण पर बाणों की वर्षा की। १० इससे रहस्य प्रकट करनेवाली विभीषण की चुगलखोरी विनष्ट हुई। तब जबर्दस्त गर्जना करते हुए, "सँभल जा" इस तरह

वसुधे मोळगिदुदऱिचितंबर देसेदेसेगळोदऱिदवु कुदिदु-
ब्बसद लुक्कितु शरधि बिक्किदनळुकि फणिराय ।। 11 ।।
घण घणत्कृति गोंडुव घंटारणितरवदुब्बरद बेळगिन
मणि निबंधक दणसिनुरु बोंबाळ चौरिगळ
सेणसिनायुधवैदि तसुराग्रणिय बोब्बेय हब्बुगेयलुरि
गणभयंकर भीमबल शत्रुघ्ननग्रजन ।। 12 ।।
मान निधि कुश केळ्सुमित्रा सूनुविन सिंजिनिय शरसं-
धान देसुगेय सरळ बगेयदे बंदु वक्षदलि
भानुबिंबव नुंगुव स्वर्भानुमंडलदंते मंडिस
लाने हरिकर पतिगे कॆडेदवोलोऱगिदनु धरेगे ।। 13 ।।
सुरप नंकुश विविकदनु मदकरिगे करहत्तळद लश्वद
बरियनण दोडिदनु धनपति मऱेय मेघदलि
सरिदना मकरेश मारुतनिरव हेळदिरंतकन बायॣ
करिस सुत्तलु सुळिव कार्णेनु निरुति हुतवहर ।। 14 ।।

कहते हुए रावण ने शक्त्यायुध का प्रयोग किया। तब धरती काँप उठी; आकाश चीख उठा; दिशि-दिशाएं पुकार-पुकार चिल्ला उठीं; समुद्र खौलकर हाँफते-हाँफते उमड़ पड़ा; आदिशेष डर के मारे सिसकने लगा। ११ बाणों मे बँधी घंटिकाएँ घनघना रही थी, पुंखो में जड़े हीरे जगमगा रहे थे, तो प्रकाशमान गुच्छों से सजे सामने पड़नेवालो को विदीर्ण कर देनेवाला वह शक्त्यायुध राक्षसेश्वर की घनघोर गर्जना के साथ आगे बढ़कर शत्रुभयकर भीमबली लक्ष्मण तक पहुँच ही गया। १२ हे माननिधि (गौरव महिमामय) कुश ! सुनो। लक्ष्मण के धनुष से निकले बाणों की परवाह न करते हुए वह शक्त्यायुध सूर्यबिंब को निगल जानेवाले राहु के सदृश लक्ष्मण की छाती में घुस बैठा। शेर के पंजे की मार के साथ हाथी जैसे गिर पड़ता है, वैसे ही लक्ष्मण धरती पर लुढ़क गया। १३ देवराज इन्द्र अपने ऐरावत हाथी पर अंकुश चलाकर वहाँ से नौ दो ग्यारह हुए। घोड़े पर एड़ी जमाते कुबेर वहाँ से भाग खड़े हुए। वरुण बादलों की ओर में छिप गये। वायुदेव की दुःस्थिति के बारे में क्या कहे ? (कहने के लिए कुछ बचा ही नहीं।) यमदेवता के मुँह से झाग निकलने लगा। नैर्ऋति तथा अग्नि देवता पास-पड़ोस में कहीं न दीखे। १४ शिवजी काँप उठे। ब्रह्माजी

ईश नडुगिदनंचेंयिदबु जासननु निंदल्लि निल्लदें
बासरद विडुमंडेयलि हायिदनु निजपुरिगें
लेसु नमगिन्निल्ल वेंनुतभिलाषेंयनु विट्टखिळ मुनिजन
पैसरिसि तंबर वळय हाळाय्तु निमिषदलि ॥ 15 ॥
अकट लक्ष्मणदेव नरिभट शकुतियलि सैगेंडेंदने रण
दुकुति तप्पितलायेंनुत सुग्रीव पवनजरु
भ्रुकुटिबद्ध सरोषदलि गिरि निकरदलि हूळिदरु कपि ना-
यकरु कैयोंडनेरि कविसिदरद्रि कुजततिय ॥ 16 ॥
चाच्चिदनु हॊसतेरनाग निशाचरेंद्रगा रणदॊळु वि-
रोचनन कुलदसुर विद्युन्मालियेंबवनु
नाचि बेंरसिद जयसिरिगें खळना चटुळरथवेरि कविव व-
नेचरर बिडदेंसुत बिट्टनु रथव सूटियलि ॥ 17 ॥
हरिसि रथवनु हरितनूजन हरण हिंगलु कॆंडहि मुंदण
हरिचमूपति नील नळ गज गंधमादनर
कॊरळ बळॆंगळ कळचि कपिकेसरि गवाक्ष द्विविद मैंदर
हॊरळ लॆंच्चसुगॊंडु कॊंदनु कोटिसंख्येंयलि ॥ 18 ॥

(अपने) हंस पर एक ही स्थान पर टिके न रह सकने के कारण नंगे, सिर चिल्लाते शहर की तरफ़ भाग खड़े हुए। 'अब हम श्रेयोभागी नहीं हो सकते। इस तरह सोचते निराश हो समस्त ऋषि मुनि पीछे हटे। सारा आकाश (गगनमंडल) क्षणार्ध में खंडहर रह गया। १५ "हाय हाय! यह तो अनर्थ हुआ। लक्ष्मणदेव शत्रु वीर के शक्त्यायुध के कारण गिर गये न? युद्ध का (परिणाम) अन्दाज़ा ग़लत निकला न?" इस तरह कहते भौंहें चढ़ाए सुग्रीव-हनुमान ने महान क्रोध से भरकर पहाड़ों को फेंक-फेंककर शत्रु को ढाँप दिया। साथ-साथ वानरनायक भी जूझ पड़ते हुए पेड़-पहाड़ों को उठा-उठाकर फेंकते आक्रमण करने लगे। १६ विरोचन के वंश में उत्पन्न विद्युन्माली नामक असुर रावण के लिए युद्धभूमि में (राक्षसेश्वर के लिए) नया रथ ले आए। अपनी (इस प्रकार की) जीत के लिए लज्जित होते रावण अत्यंत वेग से चल रहे उस रथ पर चढ़कर अपने ऊपर चढ़ आनेवाले वानरों पर बाण चलाते रथ को द्रुत गति से आगे बढ़ा ले गये। १७ रावण ने रथ को आगे दौड़ाकर सुग्रीव को इतना पीटा कि उसके प्राण सूख जायँ तथा उसे नीचे गिरा कर, कपि केसरी, गवाक्ष, द्विविद, मैंद आदि पर बाण चलाकर उन्हें पीछे खदेड़कर, वानर सेनानायक नल, नील, गज, गंधमादन आदियों के टेंटुवे खींचकर करोड़ों की संख्या में कपिसेना की

तिरुहि रथवनु जांबवंगज पुरदपथवनु तोरि हनुमन
सरळ शरधियोळद्दि कनकांगदन नंगदन
सुरपुरक पयणवनु माडिसि परमवैद्य सुषेणकननु
त्तरिस लीसदे कळुहि कोणकिदना खरांतकन ॥ 19 ॥
खूळनैनी रणदोळगे कडुखूळ रसुररोळारु मिगे रण
केळियारदु गेलुव तोरा निन्न परिजनद
काळगद कामिनि विचारिसे सूळेयो साध्वियो समीकद
सोलविदिन लारदेंबुद नोडिकोयेंद ॥ 20 ॥
नोडिदेवु लेसागि नाव् नी नोडिको साकाग्रदलि दिट
जोडेयो जात्यंगनेयो जयवनिते येम्मेडेगे
नाडनाडदे कणेगळलि माताडु गरुवरिगंगविदु गति
गेडुगर बरिजोकेगंजुव भटने तानेंद ॥ 21 ॥
काकतनवनु वरुण यम शिखि पाकशासन रोळगे मेरेवुदु
कोय्करलि हेंगळ्ळरलि कळुगुडुहि कट्टेयलि
मूकोरेयरलि निन्न महिमेयनाकुमडियलि बगुळुवदु निन
गेके सात्विक समरशौर्यद सुभटतनवेंद ॥ 22 ॥

हत्या करते वह आगे बढ़ा। १८ रावण ने रथ को घुमाकर जाम्बवन्त को ब्रह्माजी की नगरी का रास्ता बताया; हनुमानजी को बाणों के सागर में डुबोकर, स्वर्णशरीरी अंगद को देवलोक की यात्रा के लिए बाध्य कर, वैद्य सुषेण को जवाब देने का मौक़ा भी न देते, भेजकर राम को छेड़ा। १९ तब राम ने कहा— "युद्ध में तू मूर्ख ही ठहरा। राक्षसों में महामूर्ख कौन है ? युद्ध यह एक खेल जो है, वह किसके पक्ष में रहा ? तुम्हारे परिवार की (पक्ष की) जीत तो दिखा सही। विचार कर देखो तो युद्ध रूपी नारी जो है वह सती साध्वी है या वेश्या है ? आज के युद्ध में हार किसकी है ? परख लो।" २० रावण ने यों जवाब दिया— "हमने तो खूब देखा। आखिर हमारे पास विराजमान विजयलक्ष्मी व्यभिचारिणी (जार) स्त्री है या कुलस्त्री है —यह देखने का उत्तरदायित्व तुम पर छोड़ देता हूँ। यह मनमानी बकझक बन्द कर बाणों के द्वारा उत्तर दो। यही वीरों का लक्षण है। दरिद्रों के इस तथ्यहीन नाटक से डरनेवाला योद्धा मैं थोड़े ही हूँ। २१ "तुम्हारा यह ढोल बजाना (बेकार घमंड) वरुण, अग्नि, यम, इन्द्र इनके सामने प्रकट करो। धोखेबाज़ों, स्त्री-चोरों, पियक्कड़ों के अड्डों, नकटों आदियों के मध्य अपनी महिमा को नमक-मिर्च

आरु तरबहुदकट हेंगुसचोर चिद्येयलनृत मुखदिं
दारु गेलबहुदै निदानिसलरुण नंदनन
आरु संपातिय तनूभव नुरुविन संधियलि नुसुळुव
वीरतन निनगल्ल दारिगे सुलभ वहुदेंद ॥ 23 ॥
आलिगळु कंडरिय दिर्दडे केळिदरियवे किविगळुरे क-
ट्टाळु नीनेंबुदनु नाविद कार्णे यिडलेके
काळगद कौतुकद कुशलद चाळियुळ्ळडे चाचुकर्णगळ
काळनाडदे बेगेनुत विलुदुडुकिदनु राम ॥ 24 ॥
आदडिद कोळ्ळेनुत धिगुधरणी दिशांगणवेदे बाणम-
होदधिय लोळ बिद्दुदेने कत्रिदेच्चनिनकुलन
आदिनारायणनला विलयोदधिय तेरे सोकदिद्दो
पादियलि हगेयंबु चुंबिस दिर्दुदा नृपन ॥ 25 ॥
तुरुगितारकि तामसियो ळोडेदेरहुदोरदे बेळगला ने-
सरिन तलेदोरिकेयलुंटे तमद महिमेगळु
मेरेवबे रघुनाथ निदिरिन लिरितकारन चापविद्येय
नेरवणिगे नेळलंचेय वोलाय्तरिय शरजाल ॥ 26 ॥

लगाकर बको। इस सात्विक युद्ध की वीरता से तेरा क्या प्रयोजन होने वाला है ?" इस प्रकार राम ने कहा। २२ "चोरी-चोरी कौन परायी स्त्री को उड़ा ले आने का साहस कर सकता है ? झूठ बोलकर जटायु को कौन जीत सकता है ? संपाती के बेटे की जाँघ के जोड़ (संधि) में घुसने की वीरता तुझ जैसे के सिवा अन्य किसको संभव हो सकती है?" इस तरह रामने कहा २३ "तू कितना वड़ा वीर है—यह भले ही प्रत्यक्ष न देखा हो; फिर भी (उसके बारे में) इन कानों ने जो सुना है क्या वह झूठ हो सकता है ? इसके लिए हम व्यर्थ की सौगंध क्यों खाएँ ? युद्ध में अपना कौशल्य दिखाने की अगर जिद् है तो व्यर्थ की यह बकझक बन्द कर तुरन्त वाण छोड़ो तो सही।" इस प्रकार कहते राम ने धनुष उठा लिया। २४ "यह बात है ! तो यह लो।" इस तरह कहते रावण ने दिशाएँ, भूमि, आकाश ये सभी मानों बाणों के पारावार में डूब जायँ इस ढंग से (स्फूर्ति से) राम पर बाणों की वर्षा की। श्रीराम आदिनारायण जो ठहरे ! प्रलयकालीन सागर को लहरें जैसे उनका स्पर्श न कर सकी, उसी प्रकार रावण के (चलाए) बाण राम का स्पर्श न कर सके। २५ तारामंडल रात भर लगातार जगमगाते रात की शोभा बढ़ाता है। लेकिन सूरज के उगने पर रात की वह महिमा

अररॆ रामन बाणवॊंदे तिरुवनॊदवागंतरदलु
बरद तॆरहनु काणॆ काणॆनु कदनदरिभटन
सरळखंडिसुवल्लि गणनॆय गुरुलघुत्वदमोघतर सं-
गरद धारापातदलि नृपगारु सरियॆंद ॥ 27 ॥
ऎलॆ कुमारक केळु रामन बलुमॆगव सरियॆनलु बहुदा
कलिगळिब्बरि गिब्बरे प्रतिकणॆय कुशलदलि
हिळुकु हिळुकिन ललगलगिनलि मलॆतु कणॆकणॆगळलि गरिगरि
गळलि घातिसि गढबलरॊदगिदरु सरिसदलि ॥ 28 ॥
कादिदरु मधुकैटभरु मॊदलादि नारायणनॊळित्तलु
कादिदरु तमना हिरण्याक्षक हिरण्यकरु
आदिमत्स्य वराह नरहरियादि विष्णुवि नॊडनॆ होलिस
लॆंदुववु हॊगळवडॆ शेषंगरिदलेयॆंद ॥ 29 ॥
नडॆदु दग्गद समर सरळिन कडितदलि कुंभिनिय कॊरळिन
हॆडकुबारिसि तिब्बरॆसुगॆगॆ काणॆनवधिगळ
कडुगलिगळंगदलि कणॆगळु तुडुकि तिल्लॆसुगॆगळलेनु
ग्गडद वीररॊ बाणतंत्रद बहळ विद्यॆयलि ॥ 30 ॥

कैसे टिक सकती है। रघुनाथ के सम्मुख रावण की धनुर्विद्या परिपूर्णता किस खेत की मूली है? शत्रु का बाणसमूह हंस की परछाईं की भाँति रहा। २६ बाप रे बाप! राम का एक बाण जब धनुष की प्रत्यंचा से छिटककर छूटा तो बीच आकाश में रिक्त स्थान ही दिखायी नहीं देता था। शत्रु वीर के बाणों को काट देने का वह हिसाब कौन रखे? कैसे रखे? गुरु लघुत्व के अमोघ (अचूक) शरसंधान (बाण चलाने) से युद्धक्षेत्र में बाणों की वर्षा करने में राम की बराबरी कौन कर सकता है? —इस तरह कहते वाल्मीकि ने राम के धनुर्विद्या-कौशल्य का वर्णन किया। २७ हे कुमार कुश! सुनो। 'राम की सामर्थ्य की बराबरी रावण ही कर सकता है।' इस तरह कह सकते है। बाण के लिए (एक-दूसरे के) प्रत्युत्तर देने के कौशल्य में राम-रावण की बराबरी करनेवाले राम-रावण ही हैं। बाण के पुंख को पुंख से, पैनी नोक को पैनी नोक से, बाण को बाण से, पंख को पंख से काट डालते हुए वे दोनों महान बलशाली बराबरी का युद्ध बराबर करते रहे। २८ पूर्व में मधु-कैटभासुर आदि नारायण से लड़े। तदनंतर तमासुर, हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु क्रम से आदिमत्स्य, वराह, नरसिंह वग़ैरः जो विष्णु के अवतार है उनसे लड़े। उन युद्धों से रावण राम की इस युद्ध की तुलना कर सकते है। इनके इस युद्ध के वर्णन

आदडॆयु मिगिलादुदे खरसूदनन कट्टॆसुगॆ मॊदलं-
दाद रणनाटकव बल्लै जानकी सुतनॆ
आदुदा विधि रावणंगॊंदादुदिल्ल दिगंबरत्व वि-
नोद विभवनला विकर्तन वंशदरसॆंद ॥ 31 ॥
रथ रथाश्व ध्वजकुलव सारथि शरासन बाणकनसिन
कथॆयवॊलु तोऱिदवु राक्षस सार्वभौमंगॆ
शिथिल वाय्तुद्रेक रणदति मथनमैलिगॆयाय्तु चित्त
व्यर्थयलिर्दनु मणिद मौळिय नट्ट बॆऱगिनलि ॥ 32 ॥
एनॆलवॊ दुम्मान रणसुम्मान वॆल्लिगॆ हॊय्तु शरस-
धान वॆम्मदु कॊरळ कॊट्टा नम्म मार्गणकॆ
मानसदॊळंजदिरु शस्त्र विहीनननु विरथननु रघुकुल
माननिधिगळु कॊल्लरंजिकॆ बेड निनगॆंद ॥ 33 ॥
बिडॆय घनवॆसगीचॆयलि निन्नॊडनॆ हुट्टिद कलि विभीषण
नोडलु मऱुगुवुदिदु कॊंदरॆ मूऱुबारियलि

करने में हज़ार फनों को धारण करनेवाला आदिशेष भी अपने को असमर्थ पाता है। —इस तरह महर्षि वाल्मीकि ने कहा। २९ राम-रावणों के मध्य बाणों को बाणों से काटे जानेवाला अमोघ (अचूक) युद्ध चलने लगा। बाणों की मार के कारण धरती के कंठ के पिछले भाग में वेदना पैदा हुई। दोनों के बाण प्रयोगों का अंत भी दिखायी न पड़ता था। लेकिन उन दो महान वीरों के शरीरों को बाण स्पर्श ही न कर पाए। बाणविद्याचातुर्य में वे दोनों श्रेष्ठ वीर राम-रावण न जाने कितने अद्भुत हैं। ३० फिर भी राम का द्रुतगति का, चालाकी का बाण-प्रयोग अधिक श्रेष्ठ ही ठहरा। उस दिन जो युद्ध-नाटक हुआ उसका चमत्कार जानते हो जानकी-सुत ? पूर्व में (इसके पहले) रावण की जो दुर्गति हुई थी वह तो जानते हो न ? नंगा होना भर (रावण का) बाकी रहा। सूर्यवंश के राजा रामचन्द्रजी विनोद-प्रेमी हैं —यही सिद्ध हुआ। ३१ राम के बाणों से विनष्ट हुए रथ, रथ के घोड़े, ध्वज, सारथी, बाण आदि राक्षस चक्रवर्ती के लिए स्वप्न-सदृश रह गये। उसका उन्माद (आवेश) उतर गया; युद्ध करने की जिद्द मलिन हुई। रावण सिर झुकाए चिंतामग्न हुआ। ३२ "तुम्हारे मन की यह दुविधा क्यों है ? तुम्हारा युद्धोत्साह कहाँ चला गया ? मैं तो बाण चलानेवाला ही हूँ। क्या मेरे बाण का शिकार बनोगे ? यों डरो मत। शस्त्र-विहीन, रथ खोए हुए की, हम रघुवंशाभिमानी हत्या नहीं करते। इसलिए तुम भयभीत मत हो।" इस तरह राम ने कहा। ३३ मेरी

तडिगॆ चाचुवदबुधियदु नाण्णुडि जगत्तिनॊळिदु निन्ननु
कॊडॆ कृतांतगॆ हॊगॆनुत तॆगॆदॆच्चनाराम ।। 34 ।।
कॊंडु हॊदुदु बाणवा रणभंड रक्कस रायननु पुर
कंडुदॆंबॊंदरिकॆयनु हुट्टिसिदॆ मार्गदलि
हिंडुगळ मुसुकिनलि पट्टद हॆंडतिय निळयदलि हाय्कितु
कंडुदैतंदस्त्र शिक्षाचार्य राघवन ।। 35 ।।
आर्यॆनुत नूकिदनु तुरग निकायवनु गरुडाग्रजनु रघु-
राय मज्ञ भार्पॆनुत पडुवण कडल तडिगागि
आयतांबक नंबकद पानीय पतनदलैदि बंदनु
वायुजन कैहिडिदु लक्ष्मणदेव निद्दॆडॆगॆ ।। 36 ।।
हासि हरहिद तोळुगळ हॊरसूसिदंबिन करतळद बिड
बीसिदंगद जीवपवनन पथव नासिकद
आ सरोजज शक्तिमुखदलि बासणिसु वरुणांबुविन बिडु
गेश दनुजनकंडु दॊप्पनॆ कॆडॆदनवनियलि ।। 37 ।।

तरफ़दारी करनेवालों के कारण मैं थोड़ा संकोचवश हिचकिचा रहा हूँ। तुम्हारे सहोदर विभीषण की छाती पिघल उठेगी। आज अगर मैं तुम्हारी हत्या करूँ तो उसकी (विभीषण की) क्या दशा होगी ? कहावत प्रसिद्ध है कि डूबनेवाले को (डूबकर जो मर रहा है) तीन वार समुद्र-किनारे ढकेल देना चाहिए। (अर्थात बचाने का प्रयत्न करना चाहिए।) आज़ तुम्हें मृत्युदेवता के हवाले नहीं करता, जा। इस तरह कहते राम ने रावण पर बाण चला दिया। ३४ वह बाण रावण को उठा ले गया। उस बाण ने रास्ते पर लंका नगरी दीख पड़ने का भान रावण को दिलाते हुए, बाणसमूहों की आड़ में उसे ले उड़ते हुए रावण को उसकी पटरानी के महल में उतार देते वहीं पर डाल दिया। फिर वह बाण अस्त्रविद्याविशारद राम के पास लौट आया तथा उनके सम्मुख प्रकट हुआ। ३५ "हे रघुकुल-शिरोमणि ! धन्य-धन्य" इस तरह कहते विस्मित सूर्य पश्चिम समुद्र के किनारे अपने रथ को हाँक ले गये। विशाललोचन राम आँखों से आँसू गिराते हनुमान का हाथ धरे लक्ष्मण के पास आए। ३६ धरती पर फैली हुई भुजाएँ, हथेली से बाहर निकला बाण, धरती पर चित्त पड़ी देह, नथों से श्वासोच्छ्वासित हो रही प्राणवायु (दम जो घुट रहा था), ब्रह्माजी के शक्त्यायुध को व्याप्त रक्त, बिखरे बाल —इस (हृदय-विदारक) स्थिति में पड़े भाई को देख राम धड़ से धरती पर गिर गये। ३७

उक्किदुदु कडुशोकरस कालिक्कि तग्गद मऱवें मऱवेंय
नोक्कु हलवंगदलि हळवळिसिद निजानुजन
अक्कते दुष्कीर्ति तम्मन निक्किदेंनला रणकें मायेंय
ठक्किनबलेंय मोहकदलेंदरस नळवळिद ॥ 38 ॥
अडवि सल्लदु निनगें बेडेंदडचि बिद्देंनला विपत्तु ग-
ळेंडेंय नेंणिसदें सेवेंगलसदें तन्नबेंबळिय
बिडदें बंदै तम्म निरशनकोंडल नित्तै ताय् तनगेंकै-
येंडेंय शिशुवेंदित्तळोंन्ने नेंबुदानेंद ॥ 39 ॥
सुळिद मायामृगव तरलेंदेंळसुवेंन्नोंळु बेड बेडें
दोंळ गऱिदु नुडिदुदनु केळदें नडेंदें नडवियलि
खळनु सीतेंयनोंय्यें निन्नोंळु मुळिदेंनति निष्ठुरतेंयलि कै-
कोंळदें कष्टवबिट्टु होदै तम्म नीनेंद ॥ 40 ॥
पितन मरणव ननुज रिब्बर वितत विरहवनुरु सु माता
त्रितयदधिक वियोगवनु कानन परिभ्रमद

"राम अत्यंत व्याकुल हुए; वे अपने को सँभाल न सके। अपना देह भान भूल गये। बेहोशी से चेतकर अपने भाई के बारे में कई प्रकार अपना शोक प्रकट करने लगे। "दुष्कीर्ति ने हमको धर-दबोच दिया न ? धोखेबाज़ मायावी स्त्री के भ्रमजाल में फँसकर, युद्ध में, यों अपने भाई की बलि चढ़ा दी न ? ३८ "जंगल आने के लिए तैयार तुझे मना किया; फिर भी जिद्द करके आए न ? विपदाओं की परवाह न करते हुए, लगातार परछाई की तरह पीछे-पीछे चलते, अथक सेवा करते आये न मेरे भाई ! उपवास करते देह का होम किया न ! 'मेरे बेटे को तेरे रक्षाकवच में समर्पित कर देती हूँ।' —इस तरह कहते मेरे हवाले कर देनेवाली उस तेरी माँ को क्या मुँह दिखाऊँ ?" इस तरह कहते राम अत्यंत व्याकुल हुए। ३९ "सामने थिरक रहे मायामृग को लाने की इच्छा रखनेवाले मुझे 'नहीं-नहीं' करते अन्दरूनी रहस्य को जाननेवाले तेरे मना करने पर भी तेरी बात न मानते हुए उस मृग को पकड़ लाने मैं वन में चला गया। दुष्ट रावण जब सीता को चुरा ले गया व्यर्थ ही मैंने तुमसे नाराज़ होकर निष्ठुर बातें कहीं। असंख्य कष्टों की परवाह न करते सीता का पता लगाने तुम निकल पड़े।" इस प्रकार राम ने कहा। ४० "पिता की मृत्यु, दो भाइयों से बिलगना, तीन माताओं का वियोग तथा जंगल भर में भटकते रहना —इन सभी कष्टों को तुम्हारी श्रद्धा-सामर्थ्य के भरे साथ के (सहवास के कारण) मैं भुला

अतिशयद दुःखवनु निन्नायतिकॅयलि मरॆदिदॆनकटा
गतियदारॆ तनगॆ हेळॆंदरसनळवळिद ॥ 41 ॥
ऎंबॆनेननु तम्म तन्ननु नंबिनिन्ननु कळुहिदॆरडनॆ
यंबिकॆगॆ मगनॆल्लि तोरिदॆन्न बॆसगॊळलु
ऎंब मातिन्नाकदै सतियॆंबवळि गोसुगवॆ मडहिदॆ
नॆंबॆने मतियेनु हेळै तम्म तनगॆंद ॥ 42 ॥
जनक नंददलॆन्न रक्षिसि मनव हिडिदैतंदॆ गुरुभा-
वनॆय भक्तियलेन हेळित माडिदै कंद
अनुवरदॊळग्गळद भुजवॆनगॆनिसि मरॆदैयणुग तन्नय
तनुविगिन्नाराप्त रॆंदळलिदनु रघुनाथ ॥ 43 ॥
रावणन कॊंदेनुफल सीतावनितॆ यिदेनुफल सु-
ग्रीव देव विभीषणर मित्रत्ववेनु फल
जीवविदु तानिद्दु फलवेनै वरानुजनिल्लदकटा
हा विधात्र विधात्रयॆंदळलिदनु रघुनाथ ॥ 44 ॥
जीय साकिन्नॆकॆ मानव मायॆबिडु शोकवनु हिंदण
पायकिंतिदु घनवॆ बॆससंजनॆय तनुजंगॆ

बैठा था। हाय मेरे दैव ! अब मुझ निर्गतिक की गति मति कौन रह गया? मेरा आसरा कौन है ?" —इस तरह विलाप करते राम गिर पड़े। ४१ "मुझ पर भरोसा करके तुम्हें मेरे साथ भेजनेवाली मेरी दूसरी माँ जब 'मेरा पुत्र कहाँ है ? दिखा तो सही।' —इस तरह पूछेगी तो मैं क्या कहूँ भाई ? बता तो सही। यही कहूँ कि अपनी पत्नी को पाने के मोह में तेरे प्राणों की बली चढ़ाई है। मेरे लिए मार्ग (युक्ति) तो बताओ न ? भाई।" इस तरह कहते राम विलाप करने लगे। ४२ "मुझे अपना पिता समझते, मेरी रक्षा करते संयम के साथ मेरे साथ आए। (मुझ पर रखे) अपने गुरु-भक्ति-भाव के कारण मैंने जो कुछ कहा वह सब (एक आज्ञाधार की तरह) किया। हे मेरे बेटे, युद्ध में मेरी दाहिनी भुजा बनकर विराजते रहे। अब मेरे अपने निजी सम्बधी कौन रहे ?" इस तरह कहते रघुनाथ व्याकुल हुए। ४३ "मेरा प्यारा भाई ही जब मुझे छोड़ चला, तब रावण की हत्या में क्या धरा है ? सीता को प्राप्त करने से क्या प्रयोजन ? सुग्रीव, विभीषण के स्नेह से क्या वास्ता ? मेरे प्राणों को जीवित रखने से क्या फल मिलनेवाला है ? हाय रे मेरे दुर्दैव !" इस तरह कहते राम व्यथित हुए। ४४

वायुसुत निम्मंतरंग स्थायियल्ला दिट विचारिसि
लायसंबड वेडेनुत जांबवनु कैमुगिद ॥ 45 ॥
मुरिदु बिडुगंबनिगळलि दशशिरन दर्पध्वंसकन वन-
चर कटक रक्षकन नीक्षिसिदनु रघुप्रभव
इरवकंडै नम्म तम्मन परियकंडै हनुम नम्मि-
ब्बर गतप्राणाभिमानवु निन्नदलेयेंद ॥ 46 ॥
रामनाडिद मातिगिं मुन्ना महाबल नुमहनेंद्दनु
नेमगोंडलौषधिय तहेनेंदेव शीघ्रदलि
रामवचनानुग्रहवु विश्रामिसलु कर्णदलि नृपपद
तामरस कभिनमिसि बीळ्कोंडनु सरागदलि ॥ 47 ॥
करेदु जांबव कलि सुषेणक रोरेंदरीतंगंदिनंददि
गिरिय तरबेडौषधिय नी वल्ल मूलिकय
तिरिदु ता होगेंब नुडियिदिरवु वायुस्कंददलि गो-
चरिसि तडिदिह वट्टेयोळु धाळिट्टना गिरिगे ॥ 48 ॥

"भगवन् ! मानव-जन्म (अवतार) की इस माया को, तत्संबंधी इस विलाप को अब रोक दें। यथेष्ट हुआ। अब अपना दुःख थाम दें। पूर्व में हुए अपाय (हानि) से क्या यह बढ़कर है? आंजनेय को आज्ञा दीजिए। वायुपुत्र (यह हनुमान) आपके हृदय में निवास करते हैं न? सोच-विचारकर देखें। व्यर्थ ही यों घुलकर-पिघलकर थकिए मत।" इस तरह (कहते) जाम्बवंत ने हाथ जोड़े राम से निवेदन किया। ४५ दशकंठ के दर्प (घमंड) को विदीर्ण कर देनेवाले वानरसेना-रक्षक हनुमान की ओर मुड़कर राम ने उसे अश्रुपूर्ण आँखों से निहारा। "मेरे भाई की यह दुःस्थिति तथा (उसकी धरती पर पड़ी) रीति देख ही तो रहे हो न हनुमान! हम दोनों के प्राणों की गौरव-रक्षा का उत्तरदायित्व तुम्हारे वश की बात है।" इस प्रकार कहा। ४६ राम की बातें समाप्त होने के पूर्व ही हनुमान— 'आज्ञा हो तो ओषधियाँ ले जाऊँ' इस आतुरता में, उतावलेपन में उठ खड़े हुए। राम के अनुकंपायुक्त वचनों ने हनुमान के कान भर दिए। तुरन्त ही रामचरण-कमलों की वन्दना कर, आज्ञा शिरोधार्य कर (सिर पर धारे) खुशी-खुशी चल पड़े। ४७ जाम्बव, सुषेण उन्होंने हनुमान को बुलाकर "उस दिन की तरह पहाड़ को उठाकर मत लाना, तुम्हें तो मालूम ही है कि किन जड़ी-बूटियों से काम चलेगा। उन्हीं को चुनकर ले आओ। जाओ।" इस तरह कह ही रहे थे कि हनुमान की देह वायुमार्ग से तैरते जा रही दिखायी दी। हनुमान ने

तडॆद नॆडॆयलि मेरुविन मुंगडॆयली सुद्दियनु कॆळ्दा
दडिग रक्कसराय कळुहिद कालनेमि खळ
मृडन वेषदलभ्रदलि बगॆवडॆद कृतक सरोवरद कॆल
कडॆयलिद्दॆल्लि गमनोद्यमवॆंदु कपिवरन ।। 49 ।।
कॆळिदै नृपसूनु बळिका कालनेमियॆनिप्प नसगिद
कालकंटक कृतक सरसियना निशाचरन
काललिळॆ गॊंदॆदनु नभोग्रद मेलुवचनवनरिदुनजयिसिदु
लीलॆयलि शैलवनु सार्दनु चंद्र नामकद ।। 50 ।।
अंदिनग्गद वीर मत्तैतंदनॆंदा गिरिय कापिन
मंदि तमतमगरिसि कित्तित्तरु महौषधिय
अंदु बालदलग्निदेवर निदिरिसिद वॊलौषधिप हॊरॆ
यिंद हॊळॆहॊळॆवुत्त बंदनु रामनिद्दॆडॆगॆ ।। 51 ।।
अरसि नाल्कौषधिय कॊनॆगळ तिरिदु तीडि सुषेण मूगिन
लॊरॆदु निलिसिदना सुमित्रासुत विभीषणर

सुपरिचित मार्ग से जा संजीवनी पहाड़ पर धावा बोल दिया। ४८
हनुमान मेरुगिरि के अग्रभाग में थोड़ी देर के लिए रुके। हनुमान के संजीवनी पर्वत की ओर उड़ान भरने का समाचार सुनकर राक्षसराज रावण ने कालनेमि नामक राक्षस को वहाँ भेज दिया। वह तपस्वी-सरीखे शिवजी की वेषभूषा धारण कर आकाशमार्ग में सुन्दर माया-सरोवर रचकर उसी के किनारे बैठा रहा। उसने हनुमान से पूछा, "तुम्हारा उद्देशित कार्य क्या है?" ४९ हे राजकुमारो, कालनेमि नामक राक्षस से विरचित मृत्युकारक माया-सरोवर की बात (घटना) तो सुनी न? आकाशवाणी से इस रहस्य को जाननेवाले हनुमान ने उस सरोवर को लात मार उसे धरती पर गिरा दिया। फिर आसानी से विजय प्राप्त कर चन्द्र नामक पर्वत पर आया। ५० 'उस दिन आनेवाला श्रेष्ठ वीर आज फिर आया है'; इस तरह कहते उस पर्वत के रखवाले (पहरेदार) स्वयं उस महान औषध को ढूंढ़ लाकर हनुमान को दे देते हैं। पूर्व में लंका-दहन के समय उनकी पूँछ की नोक में जैसे अग्निदेव चमक रहे थे, आज उसी भाँति हनुमान ने अपने पूँछ की कोर में चमचमाती उस महान औषध को धारण किया तथा उसे ढो ले आए। ५१ सुषेण ने उनमें से आवश्यक चार अनमोल ओषधियों को ढूंढ़ निकाला और उनको रगड़ कर (पीसते) निचोड़कर रस की बूंदें विभीषण तथा लक्ष्मण की नाक में छोड़ते उनको होश में लाये। सुग्रीवादि वीरों को ढूंढ़ निकाल उसने उनकी

अत्तिसि सुग्रीवादि सुभटर मॆय्वॆंगळ माणिसिद नंबुधि
थुरुबिन वॊलुब्बरिसि तॆद्दुदु कूडॆ कपिसेनॆ ॥ 52 ॥
उक्किदुदु हरुषाब्दि मायॆय ठक्किनिंदी वरदळाक्ष
शक्कजद बॆरगिनलि बर्हिर्मुखरु गगनदलि
ऒक्करंबुज दलर नप्पिद नॆक्कतुळदलि भूमिपति मुं-
दक्कॆ कमलजनह सुमित्रासुतन रक्षकन ॥ 53 ॥
आदुदिल्ला दिवसदलि संवाद वित्तंडदलि तरणिगॆ
होदमनदनुराग हब्बिदु दिरुळिनग्रदलि
आ दयांबुधि राम बळिकाह्लाददलि सुग्रीव सहित स-
होदरन कैविडिदु हॊक्कनु तन्न पाळयव ॥ 54 ॥

नलवत्तॆंटनॆय संधि

सूचनॆ— रणपराजित नागि कलि रावणनु रण वायतिकॆयलि मारण महायज्ञ-
वनुपक्रमिसिदनु रजनियलि ।

वसुमतिपति सूनु केळा दशशिरनु मुख भंगदलि तलॆ
मुसुकिनलि सारिदनु सज्जा गृहव निरुळिनलि

मूर्च्छा भी दूर की (उनको भी होश में लाये)। औषध के प्रभाव से समुद्र के ज्वार की तरह सारी कपिसेना होश में उमड़ पड़ी। ५२ माया के वशीभूत नटवर कमलाक्ष आनंद-सागर में विनिमज्जित हुए। विस्मित देवताओं ने आकाश से कमलपुष्पों की वर्षा की। लक्ष्मण के प्राण बचाने वाले भविष्य में ब्रह्मपद प्राप्त करने जा रहे हनुमान को श्रीराम ने अत्यंत उत्साह से अंक में भर लिया। ५३ उस दिन दोनों सेनाओं के मध्य किसी प्रकार की लड़ाई न छिड़ी। संध्या होते-होते उत्साहहीन हुए सूर्य फिर हर्ष के मारे फूले न समाए। तदनंतर करुणासागर श्रीराम उत्साह से अपने भाई का हाथ, हाथ में लिये सुग्रीवादियों के साथ शिबिर मे पहुँचे। ५४

अड़तालीसवीं संधि

सूचना— युद्ध में हार भुगतने की स्थिति आ पड़ने के कारण वीर रावण ने भावी युद्ध के लिए अपना सामर्थ्य बढ़ाने की दृष्टि से उस दिन रात को मारण महायज्ञ शुरू किया।

हे राजकुमारो ! सुनो। अपमानित हुए दशकंठ ने सिर को परदे से ढाँपकर छिपाते रात को शय्यागृह में प्रवेश किया। व्याकुलता तथा

बिसुगुदिय बिसुय्ल सूळिन मसुळिदानन मंडलद बे-
वसद करणेंद्रियद खळनोऱगिदनु मंचदलि ॥ 1 ॥
माणदादॆनु मावनाडिद वाणियनु कामुक तनदि ता-
काणदादॆनु कलि विभीषण नुचित भाषितव
प्राण मित्रनला प्रहस्तन लूणयव ताळिदॆनु जननिय
जाणिकॆय जात्युत्तरव नति गळॆदॆ नकटॆंद ॥ 2 ॥
एनुपायवु तन्न कट्टभिमानभंग स्थितिगॆ हरणव
ना नरेश्वर नित्त निंदिगॆ मूऱु बारियलि
हीनतन वाय्तकट जगदॊळ नून कीर्तिगॆ मरळि काळग
वे निदानिसॆ राघवेंद्र नॊळॆंद नसुरेंद्र ॥ 3 ॥
तलॆय बोळिसि कोंडु भवगोटलॆय कॊंडहि समस्त भूमं-
डलव तॊळलुवुदॊंदु मतविन्नॊंदु मत बेऱॆ
उळिद बयकॆय बिसुटु हालाहलव नंगीकरिसुवदु हगॆ
गलह विन्नकटकट कष्टद कडॆय मातॆंद ॥ 4 ॥
मनदॊळीपरि हलुबुता खळ नॆनॆदुकॊंडनु मॆच्चिसुवॆना
वनज पीठन निगम जूटन कोटि होमदलि

परिताप के कारण दीर्घ निःश्वास लेते हुए मुरझाये मुखड़े का रावण चिंताग्रस्त हो पलंग पर लेट गया। १ "मामा मारीच की बात मैंने नहीं मानी। वीर विभीषण की संदर्भोचित वाणी का अर्थ कामुकतावश मैं नहीं कर पाया। प्राणसखा प्रहस्त पर मैंने दोषारोपण लगाया। माता के बुद्धिवाद का मैंने निराकरण (आनाकानी) किया।" इस तरह सोचते रावण चिंताग्रस्त हुआ। २ मेरे आत्मगौरव ने जो धक्का खाया उसके लिए क्या किया जाय ? उस दिन तीन बार का मौक़ा देकर मेरे प्राणों को बचा देनेवाला वह मानव राजा ! हाय-हाय अनर्थ हुआ ! इस जगत में निष्कलंक कीर्ति प्राप्त करना चाहूँ तो राघवेन्द्र के साथ फिर एक बार युद्ध करने के सिवा अन्य मार्ग तो नहीं रहा।" इस प्रकार रावण ने सोचा। ३ एक मार्ग तो यह है कि सिर मुँड़वाकर संसार के सारे झंझटों से मुक्त होकर सारे भूमंडल की परिक्रमा करूँ ! दूसरा रास्ता है— सारी अभिलाषाएँ त्याग विष प्राशन करूँ। अंतिम मार्ग तो यही है कि शत्रु के साथ हर कठिनाई का सामना न करते लड़ूँ।" इस प्रकार रावण ने सोचा। ४ इस प्रकार मन ही मन सोचते रावण इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कोटि (करोड़) यज्ञाचरण कर वेद रूपी सिरों को धारण करनेवाले ब्रह्माजी को प्रसन्न कर लूँगा; मुझसे भी बढ़कर सौ

तनगें नूर्मडि विक्रमद हेंपिन महाभट कोटि रावण-
रनु महाक्रतु कुंडदलि होरवडिसुवेंनुयेंद ॥ 5 ॥
अळिद धूम्राक्षादि सुभटावळिय नेंब्बिसुवेंनु जयाहव
ललनेंयनु सेंरेविडिवें गडणकें गह्वरी सुतेंय
हलुबि माडुव देंनेंनुत निजललनें मंडोदरिय करेंद
ग्गळद यज्ञारंभवनु कैकोंड नसुरेंद्र ॥ 6 ॥
करेंसि खळविप्ररनु मखपरिकरव संपादिसिदु मूढर
गुरु निजांगनें सहित बंदेरिदनु पुष्पकव
धुरद कट्टादियलि लंकापुरव होरवंटसुर विप्रर
नेंरवि सहित निकुंभिळिय निळयकें नडेंतंद ॥ 7 ॥
इळिदु धनप विमानवनु निजकुलद मनेंदेवतेंय नेंकुं-
भिळिय निळयव होक्क नोंदरुव वाद्यघोषदलि
हलवु पूजा विधदि देंविय नोंलिसि होक्कनु मयविनिर्मित
बिलमुखद वितळ प्रदेंशद यज्ञमंटपव ॥ 8 ॥
अरिगळै तरदंतें कावल निरिसिदनु बेताळ जट्टिग
निरुति भैरव भूतनाथ प्रमुख भुजबलर
करद कत्ति कपाल पात्रेंय शिरद मालेंय काळमेघद
होरद कांतिय भूतगण बळसिदुदु मंटपव ॥ 9 ॥

गुने पराक्रमशाली करोड़ों महान रावणों को उस महायज्ञ के अग्निकुंड से निकलवाऊँ। ५ "मृत धूम्राक्षादि वीरों को (जिलाकर) जगाऊँगा। युद्ध में विजयलक्ष्मी को क़ैद कर भूमिजाया सीता के साथ बिठा दूँगा। अब चिंता करते घुलना बेकार है।" इस प्रकार रावण ने निश्चय किया। फिर रानी मंदोदरी को बुलाकर उस विशेष प्रकार के यज्ञ का प्रारंभ किया। ६ रावण ने ब्राह्मणों को निमंत्रित कर उनके द्वारा यज्ञ की सामग्री जुटायी। मूर्खों के गुरु रावण अपनी पत्नी के साथ पुष्पक विमान पर आरूढ हुए। भारी युद्ध प्रारंभ करने से पूर्व रावण लंकानगरी से रवाना हो असुर ब्राह्मणों को साथ लिये निकुंभिला देवी के मंदिर आये। ७ पुष्पक विमान से उतरकर रावण ने गाजे-बाजे के गर्जन-तर्जन के साथ अपने कुल की (जाति की) घरेलू देवता निकुंभिला देवी के मंदिर में प्रवेश किया। कई प्रकार के पूजा-विधानों से देवी को प्रसन्न कर वितल नामक अधोलोक में मय से निर्मित बिल के द्वार के यज्ञमंडप में रावण ने प्रवेश किया। ८ बैताल पहलवान, राक्षस, भैरव तथा भूतनाथ आदि प्रमुख वीरों को पहरे पर रखा ताकि शत्रु प्रवेश पा न सकें। हाथ में नंगी तलवार

काळि दुर्गि वराहि भैरवि शूलपाणिनि चंडिचंडक-
राळि कापालिनि महोदरि मुक्तकेशिगळु
काळरात्रि ज्वलनमुखि घंटाळि शाकंबरि तपस्विनि
खीळ दंष्ट्र प्रभृति यिद्दुदु करद कत्तियलि ॥ 10 ॥
मारि मालिनि दंडपाणिनि वारुणेश्वरि धूम्रमुखि कौ-
बेरि शाकिनि डाकिनि प्रळयिनि महेंद्राणि
घोर पूतिनि रौद्रमुखि कौमारि वैष्णवि मुख्य बहणित
घोर शक्तिय रिर्दरॆत्तिद शूलहस्तदलि ॥ 11 ॥
करॆसिदनु मयननु निशाचर गुरुव नवरनु मतदिनध्वर
विरचिसिदु दासुर विकर्म महाभिचारदलि
तरुण केळै कोटि होमद परिकर द्रव्यंगळलि क-
बुर महीसुर निकर बळसितु कुंडवनु मखद ॥ 12 ॥
करिय चर्मद होदकॆगळ निडु गरुळ सव्य पवित्रसूत्रद
नररुधिर दनु लेपनद दासणद दंडॆगळ
शिरद बिडुगूदलिन दक्षिण करद कत्तिय लाभिचारा
ध्वरद दीक्षित तनव कैकॊंडनु दशग्रीव ॥ 13 ॥

लिये, माथे में (मस्तक पर) खप्परों की माला धारण किये कालमेघ के शरीर कांति के भूतगण मंडप (यज्ञमंडप) के चारों तरफ़ पहरे पर खड़े हुए। ९ काली, दुर्गा, वराही, भैरवी, शूलपाणिनी, चंडी, चंडकराली, कापालिनी, महोदरी, मुक्तकेशी, कालरात्रि, ज्वालामुखी (ज्वलनमुखी), शाकंबरी, तपस्विनी, खीलदंष्ट्रा आदि प्रमुख शक्तियाँ (देवियाँ) हाथ में नंगी तलवार उठाये खड़ी रही। १० मारी, मालिनी, दंडपाणिनी, वारुणेश्वरी, धूम्रमुखी, कौबेरी, शाकिनी, डाकिनी, प्रलयिनी, महेन्द्राणी, घोरपूतिनी, रौद्रमुखी, कौमारी, वैष्णवी वग़ैरः प्रमुख भयानक शक्ति देवियाँ शूल उठाये खड़ी रहीं। ११ रावण ने (अपने ससुर) मय को तथा राक्षस गुरु शुक्राचार्य को बुलाकर उनकी राय लेकर महान भयानक अभिचार कर्मयुक्त यज्ञ शुरू किया। हे युवक कुश! सुनो। करोड़ यज्ञों के लिए आवश्यक सामग्री तथा तैयारी के साथ राक्षस ब्राह्मण यज्ञकुंड के चारों तरफ़ आ जुटे। १२ काला चमड़ा ओढ़कर, लम्बी आँतड़ी के जनेऊ को बायीं ओर से धारण करके, मानव रक्त को शरीर भर में लगाकर, अड़हुल (लाल) की माला को धारण किया हुआ रावण अपने बालों को खुले छोड़कर (बिना चोटी बाँधे) दाहिने हाथ में खड्ग धारण करते उसने अभिचार यज्ञ की दीक्षा ली। १३ रावण ने अपना सिर काटकर उसमें

अरिदु तन्नय तलॆय मिदुळनु करॆदु स्रुकसुव मुख्य नाना
परिय पात्रॆय माडि मांसद चरुव नळवडिसि
नीरॆ मिदुळ परमान्नवनु विस्तरिसि श्रोणित दाज्य पात्रो-
त्करव संपादिसिदनाहवनीय वळयदलि ।। 14 ।।
बगिदु जठराग्निय नथर्वण निगम मंत्रंगळलि निलिसिद-
नुगिदु बदियस्थिगळ शुष्कंगळलि पुटगॊळिसि
अगलिसिद तोळ्गळ परिस्तरणगळ विरचिसिनरद दर्भॆय
बिगिदु बॆरळलि बॆडिकॊंडनु हव्यवाहनन ।। 15 ।।
अरुण गंधाक्षतॆय पुष्पोत्कटदला हुतवहननर्चिसि
सरसिरुह संभवन नाह्वानिसि महेश्वरन
स्मरिसि भार्गव मंत्र मुखदुच्चरणॆयलि कडिकडिदु चिगुरुव
शिरवनाहुतियागि कॊडुतिर्दनु दशग्रीव ।। 16 ।।
मेलॆ मेलॆ तिलाज्य चरु समिधाळि मांसाहुतिगळलि जि-
ह्वाळिगळु निलुकिदवु निगुरिदवा धनंजयन
तूळिदुद्दु दुर्गंधदुरु धूमाळि दिग्मंडलव तुर्रॆ पा-
ताळगवदुदु थळथळनॆ कुदिदुक्कितंबुनिधि ।। 17 ।।

से दिमाग़ (मस्तिष्क) निकाल, खप्पर को स्रुक्, स्रुवा आदि विविध प्रकार के बर्तनों में परिवर्तित कर यज्ञ के लिए उपयुक्त पात्र तैयार कर लिया। खप्पर के उस बर्तन में मांस की चरु (हविष्यान्न) डालकर ताज़े भेजे (मस्तिष्क) का अन्न तैयार कर रक्त के घृतपात्र को आह्वनीयाग्नि के नज़दीक़ तैयार कर रख लिया। १४ जठराग्नि को फाड़कर बाहर निकाल, बगल की हड्डियों को सूखे लकड़ी की तरह जलाकर अथर्वण वेद मंत्रों से अग्नि को प्रज्वलित किया। भुजाओं को काटकर यज्ञकुंड के चारों तरफ़ परिस्तरण तैयार कर नाड़ी के निर्मित दर्भों की उँगली में (पवित्री के रूप में) बाँधे रावण ने अग्नि से प्रार्थना की। १५ लाल चंदन, अक्षत तथा पुष्पों से अग्नि की पूजा कर ब्रह्मा को आह्वानित कर (निमंत्रित) महेश्वर का स्मरण करते शुक्राचार्य जब मंत्रोच्चारण करने लगे तो रावण ने कोंपलों की तरह फिर-फिर (पुनश्च) फूट रहे (निकल रहे) सिरों को काट-काटकर यज्ञ करना शुरू किया। १६ पुनःपुनः होम किये जा रहे तिल, घी, चरु, समिधाएँ (तथा मांस-खंडों को) आहुतियों से अग्नि की प्रज्वलित जिह्वाएँ लपलपाने लगीं। दुर्गंध का धुआँ दिशि-दिशाओं में व्याप्त हुआ। पाताल तक पहुँच गया। यज्ञाग्नि के कारण समुद्र खौलने लगे तथा उमड़ पड़ने लगे। १७

चीरितिळें ताराळि नभदलि कारिडलु कुलशैल दळ्ळुरि
दोरिदवु धगधगिसिदवु दिक्कुगळु सुरभुवन
ओरुगुडि सिदुदमरतति बायारिदुदु मरुकदलि कपिबल
तारु थट्टाय्तमम कोटि दशास्य रुदयर्दलि ॥ 18 ॥
एनिदीयुत्पातजनित कृशानुकल्प व्याप्तियो लं-
का नगर दधिनाथनुद्यमदाभिचारकवो
नीनु बल्लै हदननेनें मणिदान नवनेंले देव तप्पदु
मानुषारिय कोटि होमविदेंद नसुरेंद्र ॥ 19 ॥
अरसकेळं दिंद्रजितु विस्तरिसि दध्वर कुंडदलि क-
र्बुरकुलेंद्रन कोटि होमवु नडॆवुतिदॆ बेग
हरिसु हरिनंदनन नग्गद हरितनूभव नंदननना
हरिसखन नंदनननेंदसुरेंद्र कैमुगिद ॥ 20 ॥
बल्लरिवरा स्थळव नीतगळल्लदारिगॆ नूकदॆनॆ रण
मल्लरॆंददरु बेग बॆससॆनुतद्रिकुज सहित
ऎल्लवेकिन्नॆम्म हरिबदगॆल्ल निम्मदु मेलॆ नीवे
बल्लिरॆनॆ धाळिट्टरबुंद कीशबल सहित ॥ 21 ॥

बाप रे बाप ! करोड़ों रावणों का उस यज्ञाग्नि से पैदा होना देख धरती चीख-पुकार उठी। आकाश नक्षत्रों को क़ै कर बैठा। कुलपर्वतों से ज्वालामुखियाँ दहकने लगीं। दिशाएँ प्रज्वलित हो उठीं। देवलोक डाँवाँडोल होने लगा। देवताओं को प्यास लगी (वे प्यास से तड़पने लगे)। व्याकुल हो कपि-सेना तितर-बितर हो गयी। १८ "अरे यह क्या है ! बदशगुन घोषित करते यह आग फैली है। यह प्रलय तो नहीं ! लंका नगरेश्वर से प्रारंभित अभिचार-क्रिया तो नहीं ? क्या तुम जानते हो कि यह क्या है ?" इस तरह राम से पूछे जाने पर विभीषण ने सिर नीचा किया तथा कहा— "भगवन् ! आपका कहा सही है। रावण का यह कोटि (करोड़ होने का) यज्ञ है।" १९ "हे राम ! सुनिए। पूर्व में इन्द्रजित् से बनाए गये कुंड में (यज्ञकुंड में) राक्षसेश्वर का यह कोटि-होम (करोड़ बनने का यज्ञ) संपन्न हो रहा है। सुग्रीव, अंगद, नील —इनको तुरन्त भेज दीजिए।" इस तरह कहते विभीषण ने हाथ जोड़ा। २० "ये उस यज्ञ-शाला को जानते हैं; इनके सिवा वहाँ और कोई भी पहुँच नहीं सकता।" इस प्रकार विभीषण से कहे जाने पर, तुरन्त ही "आज्ञा दीजिए" इस तरह कहते (वे) युद्धवीर पेड़-पहाड़ों को उठाए (हाथ में धरे) उठ खड़े हुए। "अब और कहना ही क्या है ? हमारे इस कार्य को सफल बनाने की

मुट्टविसिदुदु धाळिधाळिय दिट्टरनु भूताळि हॊगगॊड
दट्टि हॊय्दवु होडॆदु कॆडहिदवखिळ दॆसॆगळलि
अट्टुगाऽनला जगंगळ पट्टणद लंजनॆय सुतना
जट्टिगर जंगुळिय नॊरसिदनॊंदु निमिषदलि ॥ 22 ॥
अऽिसिदनु दशशिरननागिरिशिरद शक्ति निकुंभिळिय मं-
दिरद मुंभागदलि काणदॆ कलित रोषदलि
धरॆ बिऽियलुरि नॆगॆय लॊद्दॆदनु चरणदलि बळिकल्लि कंडनु
सुरविरोधिय होमदॆडॆयनु हॊक्कनुरवणिसि ॥ 23 ॥
ऐसु कावल भूतगणवद रैसुरूपिन लॊब्बरदऽॊळु
सूसि सिडिदोगदवॊलुरियलि बिसुट नवरुगळ
ईशनिगॆ कैमुगिदु भृगुमाया सुरर हॊऽवडिसि दशमुख
नासुरक्रतु मुखद पूर्णाहुतिय नॆलकॊदॆद ॥ 24 ॥
तुळिद ननितऽल निलसुत हॊळहॊळकि रूपादसुरकॊटिय
नुळुहदा महदग्निकुंडदॊळिद्रसुत सूनु

ज़िम्मेदारी तो तुम्हारी है ही। यह तो तुम जानते ही हो। उसके बाद क्या करना है—यह भी जानते हो।" इस प्रकार राम के कहने पर कपिवीर एक अर्बुद वानर-सेना के साथ हमला कर बैठे। २१ कपि-सेना ने यज्ञप्रदेश को घेर लिया। इस तरह घेरनेवाले वीरों को आगे बढ़ने का मौक़ा न देते हुए भूतगणों ने उन्हें पीटा। चारों तरफ़ के वानरों को मार गिराया। दुनिया भर के शहरों में आंजनेय मारकर भगा देने में पटु वीर है न? उन भूतगणों के झुंड को क्षणार्ध में उसने समाप्त कर दिया। २२ उस पहाड़ की चोटी पर स्थित निकुंभिला देवी मंदिर के अग्र प्रदेश में (सामने के विभाग में) रावण को ढूंढ़ा। वहाँ रावण को न पाकर क्रोधित हो पैर से जब धरती पर लात मारी तो वहाँ दरार जो पड़ी तो ज्वाला धधक उठी (ज्वाला की शिखा ऊपर दिखाई दी)! तब वहाँ रावण की जो यज्ञवेदी दिखाई दी (हनुमान) उसी तरफ़ जोश से लपक पड़े। २३ पहरे पर उपस्थित सभी प्रकार के आकार-प्रकार के रूप-रंगों के भूतों को पकड़-पकड़कर अग्निकुंड की ज्वाला में इस प्रकार फेंका कि कोई भी बचकर भागने न पाये। ईश्वर को (शिवजी को) प्रणामकर शुक्राचार्य तथा मयासुर को वहाँ से भगाकर रावण के उस उग्र याग की पूर्णाहुति की सामग्री को धरती पर पटककर कुचल दिया। २४ इतने में जो भी राक्षससमूह दिखाई दिया उसे अग्निकुंड में झोंकते हुए तहस-नहस कर दिया। अंगद ने राक्षसाधिपति की पत्नी मंदोदरी (रानी) के

खळ शिरोमणियंगनेय मुंदलेय हिडिदेळदुट्टट सीरेय
सेळेय लोदद्रिदळबले हा हा रवद लसुरंगे ॥ 25 ॥
अकट लोगर हेंडतियन प्रकटदलि नी तंदेलोक
प्रकटदलि निन्नंगनेय निन्नय समक्षदलि
चिकुर कलिता करुषणद विटनिकर वेळदोय्वुत्त लिदें नी-
शकुत नादडे सलहु लज्जेय लेंदळाकांते ॥ 26 ॥
अेंबनुडि रक्कसन कर्णदोळिबुगोळे सक्रोध शिखिमुख
दंबकत्रय नित्त हिमकर हासवनु सेळेदु
डोंबि माडुव वालितनुजन संबरिसि हनुमंतदेवगे
झोंबिसलु मुरिदिक्किदनु सेळेदा महायुधव ॥ 27 ॥
केळेलवो दशमुख विकर्मद बेळुवेय बेळंब बूदियो
ळाळुवदु कक्कुलिते साकिन्नेके जयमुखद
काळगदोळणु चरिस दोदगिदडेळवुदु कडिदुडिद कीर्ति ल-
ताळि कवलोडेदजन लयतनकेंदना हनुम ॥ 28 ॥

ललाट के बाल पकड़ खींचते हुए उसकी साड़ी जो खींची तो वह 'हाय तोबा' मचाती हुई चीखती रावण को पुकारने लगी। २५ "हाय हाय! पर-स्त्री को छल-प्रपंच रचकर चोरी-चोरी उड़ा ले आए। अब तुम्हारी स्त्री को इस जगत के समक्ष तुम्हारे आमने-सामने ही सिर के बाल पकड़ खींचे ले जा रहा है, यह कामवासना भरा झुंड! (मैं कामुकों की शिकार बनी हूँ।) अगर तुम समर्थ हो तो अपनी स्त्री की इज्जत की रक्षा करो।" इस प्रकार मंदोदरी कहने लगी। २६ मंदोदरी की चीख-पुकार सुनते ही रावण की क्रोधाग्नि भड़क उठी। वह त्रिनेत्री (भालनेत्री) शिवजी-सदृश चंद्रहास नामक अपनी तलवार को नंगा किए शोरगुल मचा रहे अंगद की हत्या करने के लिए लपका तो हनुमान ने उस महान आयुध को रावण के हाथ से छीनकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। २७ "हे दशकंठ! सुनो! दुराचार के इस यज्ञ की आहुति राख में मिल जायेगी। अब तुम्हारी जीत के बारे में जो तुम्हारा मोह है—यथेष्ट हुआ। अब उसे त्याग दो। अब किंचित् भी (थोड़ा भी) पीछे न हटते अगर तू युद्ध में जुट गया तो तेरी कीर्ति अजरामर हो आचंद्रार्क बिराजेगी। (अमर होकर रहेगी।)" इस तरह हनुमान ने कहा। २८ "तुम्हारा यह कथन असत्य नहीं है।" इस तरह कहते रावण ने हनुमान

तप्पदी नुडियँनुत हनुमन नॊप्पविट्ट सुरेंद्रनाहव
दर्पदलि कालिक्किदनु कमलज वरूथदलि
चप्परिसिदनु हयवनद निम्मप्प नॆंडॆगी हनुम नंगद
निर्प्पॆणन कॊंडग्निसुत सहितैदिदनु नृपन ॥ 29 ॥
तंदुमुंदिळुहिदनु तारानंदनन कडियॆरडनरसं-
गॆंदनीतन दॆसॆयलळिदुदु होम रावणन
ऎंदॆनलु मन मरुगि कंन्ननिदंदु कॊंडिसिदॆ यकट कैयॆडॆ
कंदननु हगॆगिक्कि माडिदॆ नगॆय नमगॆंद ॥ 30 ॥
ऎनलु जांबवदेव कैमुगिदिनकुलेंद्रगॆंद निदकॆ
निनितु चिंतॆ महौषधिगळिदॆला सुषेणनलि
मनुजने नी निन्नकृपॆ संजनिस लॆळुवुदरिदॆ कॊरतॆय
हनुमनलि हायिकलिकावुदसाध्य निमगॆंद ॥ 31 ॥
बा सुपेण हसाद निम्मय वासवन मॊम्मॊगन नॆंदॆ म-
हौषधिळुंटाद डॆव्विसु जीययॆंदॆनलु
आ सुमित्रा सुतन नॆव्विसि दौषधार्धदलॆत्तिदनु सं-
तोष दिदप्पिदनु राघवराय नंगदन ॥ 32 ॥

को योग्य स्थान में रखते हुए अपने युद्धोन्माद में ब्रह्मरथ पर आरूढ़ हो घोड़े की पीठ थपथपाते तुम्हारे पिता राम के पास चले गये। (उस रथ को ले गये।) इधर हनुमान अंगद की देह उठाए अग्निकुमार नील के साथ राम के पास आये। २९ अंगद की देह के दो टुकड़ों को राम के सामने रखते हुए— "इसके साहस के कारण ही रावण का यज्ञ विनष्ट हुआ।" इस तरह हनुमान ने कहा। वह बात सुनकर राम मन ही मन दुखी हुए। रोते हुए वे बोले, "हाय हाय, यह तो अनर्थ हुआ न? हमारे सुपुर्द किए गये इस बालक को शत्रु के लिए बलि चढ़ाकर हमें इस दुनिया में मुँह दिखाने लायक नहीं रखा न? ३० तब जाम्बवदेव हाथ जोड़कर रघुवंश के राजा से— "इसके लिए आप इतनी चिंता क्यों करते हैं? सुपेण के पास क्या महान ओषधियाँ नहीं हैं? क्या तू सामान्य मानव है? तेरी दया हो तो इसे बचाना क्या असाध्य है? हनुमान पर दोषारोपण क्यों करते हैं? आप के लिए इस जगत में असाध्य क्या है?" इस प्रकार बोले। ३१ "हे सुपेण! इस तरफ़ आओ। इन्द्र के प्रपौत्र (पोते) अंगद पर अनुग्रह करो। महोषधियाँ अगर तुम्हारे पास बची हैं तो इसको बचाओ।" —इस तरह (जांबव के) कहने पर, लक्ष्मण को जीव (प्राण) दान देने पर, उन महोषधियों, जो

अॅले समीरज दुगुडवेकग्गळ बलान्वित भटरिगॆम्मी
बलवनॆत्तिद वीररारॆम्मय सहोदरन
उळुहिदवरारेनसाध्यवु सलॆ विचारिसॆ निनगॆ निन्नि-
दॊळरॆ जगदॊळु वीररॆंदुपचरिसिदनु राम ॥ 33 ॥
अवधरिसु राजेंद्र लोकव्यवहरणॆयिदु सेवॆयॆंबुदु
भुवनदलि करकष्ट देवरिगॊंद मातल्ल
जवन गॆलबहुदा लयाग्निय तविस बहुदा प्रलय रुद्रन
बवर कानलु बहुदु सेविस बारदकटॆंद ॥ 34 ॥
गरळवनु कुडिदक्किसलु बहुदुरियनुंगलु बहुदु मारिय
सरस वाडलु बहुदु चुंबिस बहुदु फणिमुखव
हरिय नप्पलु बहुदु सीळुव करगसकॆ कॊरळॊड्डबहुदु-
त्तरिस बारदु सेवॆयॆंबुद नॆंदना हनुम ॥ 35 ॥
सेवॆ साविन संगडद मनॆ सेवॆ दुष्टाचार दागर
सेवॆ सत्यव नॊत्तियाळुव सत्यदागरवु
सेवॆ यपमानक्कॆ चावडि सेवॆ पापद पुंजविदु दिट
सेवॆ यिदति कष्ट विन्नॊंदिल्ल रघुनाथ ॥ 36 ॥

आधा बची थीं, उनसे अंगद को बचाया। राघव राजा ने खुशी के मारे अंगद को आलिंगित कर लिया। ३२ "हे मेरे प्यारे मारुति! तुम क्यों दुखी होते हो? तू तो हमारे वीरों में महान बलशाली वीर है। हमारी सेना को बचानेवाला वीर कौन है? मेरे भाई को बचाने वाला कौन है? वैसे तो सोच-विचारकर देखें तो तेरे लिए असाध्य क्या है? इस दुनिया में क्या कोई तुझसे बढ़कर वीर है?" इस तरह कहते राम ने हनुमान की आवभगत की। ३३ "हे राजन! सुनिए। यह इस जगत की चाल-चलन है। इस जगत में सेवाव्रत अत्यत कष्टकारक है। स्वामियों (मालिकों) के लिए यह नियम लागू नहीं है। यम को जीत सकते हैं; प्रलयाग्नि को बुझा सकते हैं। प्रलयरुद्र से युद्ध कर सकते हैं। लेकिन सेवाकार्य कभी नहीं स्वीकारना चाहिए।" इस प्रकार हनुमान ने उत्तर दिया। ३४ विष को पीकर जीर्ण कर सकते हैं। आग को निगल सकते हैं। महामारी के साथ खिलवाड़ कर सकते है। साँप के मुँह को चूम सकते हैं। शेर का आलिंगन कर सकते हैं। चीरनेवाले आरे को अपना कंठ दे सकते हैं। लेकिन सेवा का निर्वाह अत्यंत कष्टकारी है। ३५ "सेवा मृत्यु का पड़ोसी घर है; सेवा दुराचार का निवासस्थान है; सेवा सत्य का गला दबोचकर राज्य करनेवाले असत्य का निवासस्थान

मानभंगव माडुवदु नॆरॆ हीनवृत्तिगॆ निलिसुवदु दु-
र्म्मान दागरवॆनिसुवदु तनुविरलु मृतमुखद
ज्ञान गॊळिसुव दितऱ जगदभिमानगॆडुग नॆनिसुवदु रघु-
सूनु चित्तैसरसु सेवॆगळॆंदना हनुम ॥ 37 ॥
सावुदे सुख सेवॆयिदवॆ जीववनु सलहुवदरिंदॆन-
ला विभाकर कुलज नतिकरुणदलि कैनीडि
पावमानिय बरसॆळॆदु संभावनोक्तिगळिद जांबव
देव हॊगळलु तॆगॆदु बिगियप्पिदनु नेहदलि ॥ 38 ॥
मगनॆ नी सेवकनॆ सेवॆय सॊगसुगॊंबवरावॆ मातिदु
निगर निनगल्लॆम्म हृद्गत मरुत नी नीग
जगदॊळगॆ निन्निंद पूज्यरु बगॆयलुंटे कंदकेळॆ-
दगल दधिक स्नेहदलि मैदडविदनु राम ॥ 39 ॥
तॆगॆद लज्जॆय लसुरपति निज नगर कभिमुखनाद नत्तलु
गगनदमरियरॊलिदु संतोषदलि संपिगॆय

है; सेवा अपमान का आश्रयस्थान है; सेवा पाप का ढेर है —यह सत्य है। सेवा से बढ़कर कष्टकारी विषय अन्य कोई नहीं है; हे रघुनाथ।" (इस तरह हनुमान ने कहा।) ३६ "राजाओं की सेवा करते अपमान भुगतने पड़ते हैं; इनसे नीच धंधों में उतरना पड़ता है; ये दुःख के निवासस्थान हैं। देह से जीवित रहने पर भी मृतक की-सी भावना के लिए ये सेवाएँ बाध्य करती है। जगत में आत्मगौरव खोकर (सेवकों को) जीना पड़ता है। सुनिए रघुनाथ जी।" इस तरह हनुमान ने कहा। ३७ "सेवा करते-करते जीवन बिताने की अपेक्षा कहीं मर जाने में ही सुख है।" —इस तरह हनुमान के कहने पर रविवंशज राम ने करुणा से (करुणापूर्ण भाव से) हाथ पसारकर मारुति को खींचकर अपनी भुजाओं में कस लिया। (आलिंगनपाश में आबद्ध कर लिया।) जाम्बवत ने हामी भरी तथा हनुमान की प्रशंसा की। ३८ "क्यों मेरे बेटे, तू हमारा सेवक है? सेवा की रुचि (अभिरुचि) रखनेवाले (चाहनेवाले) इस तरह हमको समझ लिया है? तुम्हारी यह बात अत्यंत मनोहर है। लेकिन (तुम्हारे ये कथन) तुम्हारे लिए ये लागू नहीं होते। तू तो मेरा हृदयनिवासी है। इस जगत में तुमसे बढ़कर पूजनीय और कौन हो सकता है? सुन मेरे बेटे! यह बात सच है।" इस तरह कहते राम ने अत्यंत प्रीति से हनुमान को खूब सहलाया। ३९ इस तरफ़ अपमानित राक्षसेश्वर लंका नगरी लौट

मुगुळ सुरिदरु मोरॆव सुरभेरिगळ रवदलि राय तोरवॆय
नगरदधिपति वीर नरकेसरिय कटकदलि ॥ 40 ॥

नलवत्तॊंबत्तनॆय संधि

सूचने— राय रघराजेंद्र निर्जर राय रथदलि हळचिदनु खळराय रावणवोडनॆ सकल सुरौघ नलिदाडॆ ।

ऎलॆकुशानुजकेळु कुश केळळिद लज्जॆयलसुरपति निज
ललनॆयनु बोळैसि रिपु विजय प्रतापकद
छलपदोक्तियनुसुरि रजनिय कळॆदु रणदीक्षॆयनु कैकॊं-
डळिदुळिद बलसहित नडॆतंदुनु रणांगणकॆ ॥ 1 ॥
बिरुदिनुब्बर गहळॆ जरॆदवु नरपतिय नब्बरिसिदवु का
हुरॆयलि कदनवनु कॊणकुव भूरि भेरिगळु
तुरगकुणिदवु कुबुबिरिदनिळॆ बिरियॆ सारथि बिल्ल बॊब्बॆय
सरळ सौरंभदलि खळ हॊक्कनु रणांगणव ॥ 2 ॥

पड़ा । उस तरफ़ आकाशस्थित देवता-स्त्रियों ने देवताओं के नगाड़ों के शब्दों के मध्य (साथ-साथ) 'तोरवे' के अधिपति वीर नरहरी के अवतारी श्रीराम की सेना पर खुशी के साथ चंपा की कलियों की वर्षा की । ४०

उनचासवी संधि

सूचना— राघव राय (श्रीरामचन्द्र) देवेन्द्र के रथ पर आरूढ़ हो समस्त देवताओं को हर्षित करते राक्षसराज रावण के साथ लड़े ।

हे लव ! सुनो; हे कुश ! (तुम भी) सुनो । अपमानित राक्षसेश्वर ने अपनी पत्नी को प्रसन्न करने के लिए शत्रु को जीतने की अपनी वीरता की आत्मप्रशंसा की बातें करते-करते रात बितायी । दूसरे दिन रावण ने युद्धदीक्षा लेकर अपनी बची-खुची सेना को जुटाकर (संजोकर) युद्ध-रंग में प्रवेश किया । —इस तरह कहते वाल्मीकि ने कथा आगे बढ़ायी । १ ओहदों की बड़ी-बड़ी शहनाइयों ने राम की निंदा की; युद्ध के लिए ललकारनेवाले बड़े-बड़े नगाड़ों ने छेड़-छाड़ करते भारी धूम मचायी; घोड़े नाच उठे; सारथी ने ऐसी भयानक ललकार भरी कि धरती में दरार पड़े; धनुष से ठेंकार करते बड़ी डीलडौल के साथ रावण ने युद्धभूमि में प्रवेश किया । २ शत्रुवीर को प्रवेश करते देखते युद्धवीर

अरिय बरवनु काणुतुरु संगर धुरीण धनुर्धरनु रण
कुरवणिप कपिभटर कैसन्नैयलि संतैसि
धुरकॆ नाविन्नुत्तर स्थिति गररुला दशशिरनु धर्मद
निरुतरावैसिन्नु गावळि वेड निमगॆंद ॥ 3 ॥
ऎंदु पीत पटाग्रवनु रणकंद मिगॆ बिगिदुट्टु कटियलि
संधिसुत सुरगियनु निशिताक्षयद बाणधिय
कंधकेरिसि हरॆद जडॆगळ नॊंदुगूडि निजोग्रनारि
द्वंद्व दिष्टासनव दनिदोरिदनु रघुनाथ ॥ 4 ॥
बिसुटु भयवनु बळिक देव प्रसर दिव्य विमान वीथिय
लॆसॆदुदै गगनदलि शक्ति शरासनंगळलि
निशित शस्त्रंगळलि रणकर्कश परिग्रह निकरदलि यम
पशुपति ब्रह्मा मरेंद्राद्यखिळ सुरनिकर ॥ 5 ॥
सनक नारद भृगु पराशर मुनि भरद्वाजात्रि वर जै-
मिनि मरीचि मतंग मैत्रावरुणि मॊदलाद
मुनिगळभ्रव तीविदुदु निमिमनु पुरूरव मुख्यषोडश
जनपरैदिद रीक्षिसलु नृपराक्षसर रणव ॥ 6 ॥

धनुर्धारी श्रीराम ने युद्ध के लिए उतावले बने कपि वीरों को हाथ के इशारे से रोककर समाधान करते— "यह युद्ध हमारे जिम्मे रहे; दशकंठ भावी होनी-अनहोनी के लिए जिम्मेदार है। मैं तो धर्म में श्रद्धा रखने वाला हूँ। अब तुम तकलीफ़ मत उठाओ।" इस तरह कहा। ३ इस तरह कहकर श्रीराम ने पीले वस्त्र को इस तरह कसकर पहन लिया कि युद्ध के लिए सुविधा हो; तलवार को कमर में कस लिया; अक्षय तूणीर (तरकस) को कंधे में चढ़ा लिया; बिखरे बालों को जूड़े में बाँध लिया। तत्पश्चात् दो प्रत्यंचावाले (डोरी वाले) उग्र धनुष का ठेंकार किया। ४ देवता भय त्यागे, आकाश में दिव्य विमानों में बैठे आ जुटे। शक्त्यायुध, धनुष तथा पैने शस्त्रों को सँजोये युद्धशाहसी परिवार के साथ यम, शिव, ब्रह्मा, देवेन्द्रादि देवता समूह विराजमान हुआ। ५ सनक, भृगु, नारद, पराशर, भरद्वाज, अत्रि, जैमिनि, मरीचि, मतंग, मैत्रावरुणि आदि ऋषि-महर्षि आकाश में इकट्ठे हुए। निमि, मनु, पुरूरव, वग़ैरः सोलह राजा राम-रावण का युद्ध देखने आए। ६ निकषा के बेटे तथा दिति के पुत्र दैत्य व मरुत, नायक देवताओं के सामने

निकर्षे दितितनु सूनुगळु नायकरु नाकज रिदुरिनलि पु-
ष्पक रथाश्व सुवाहनंगळलेसेंद रभ्रदलि
प्रकटिसितु बळिकित्त समरोद्युकुत साहस रब्बरणे नो-
टकर कळकळ घडगिसितु मेलुदधि घोषदलि ॥ 7 ॥

खुरद कुणिहद कुस्निद पच्चळ दरळ्द नासापुटद नलिदु
प्परिसिदाननदोसर्व नोरेयलि घणघण स्वनद
तुरग तुदिगालिनलि मिगे खोप्परिसि नेलननु निगुरि रामन
सरिसदलि सडगरिसि गेलिदवु कडुहिनलि खळन ॥ 8 ॥

घुडुघुडिसि हनुमंत नधरवनोडेयगिदु मलेतिर्दना गड
बडेय तेरिन तुरग दिदिरलि नील वालिजरु
तडेव तवकदलिद्द रेडेयलि कडिदु बिसुडुव रथवनेंदव
गडेय लक्ष्मण निद्दनंबनु हूडि बिल्लिनलि ॥ 9 ॥

कंडनिवरनुमान चेष्टेय दंडियनु साकुभ्रमिसदिरि
कंडडैश्वर्यक्के परिणमिसुवदु चित्तदलि
खंडित क्ष्मापालवैभव मंडनरु नावी हुतिगे पद
पंडितत्ववे साकु समरव नोडि नीवेंद ॥ 10 ॥

पुष्पक, रथ, घोड़े आदि वाहनों-सवारियों में बैठे आकाश में दृष्टिगोचर हुए। इधर युद्ध में गुंथे दो साहसी वीरों की गर्जना समुद्र की लहरों की भाँति जो गूंजी तो प्रेक्षकों का शोरगुल गायब हो गया। ७ नाच उठते खुरपुट, धँसे नितंब, फूले फुसफुसाते नथुने, ऊपर उठे मुखड़े, मुँह से टपकते फेन भरे घोड़े 'घणघण' ध्वनि करते एड़ी से धरती को खुरेदते राम के सामने सीधे खड़े हो अपनी वीरता के प्रदर्शन से रावण को प्रसन्न कर रहे थे। ८ क्रोधोन्मत्त हो घुड़कियाँ भर रहे हनुमान के ओठों को मस्ती भरे रावण के रथ के घोड़े ने काट दिया। तभी नील, अंगद रोकने के उतावलेपन के साथ सामने उपस्थित हुए थे; रथ को काट फेंकने के लिए लक्ष्मण धनुष पर बाण चढ़ाए उग्र रूप धारण किए खड़े रहे। ९ इनके उद्देशित कार्य की तैयारी देख, राम ने, "बस करो; व्यर्थ भ्रांति में मत पड़ो। संपत्ति को देखकर मन का हर्षित होना स्वाभाविक है। शत्रु के विरोध को प्राप्त किए राजवैभव से संपन्न मैं यहाँ खड़ा हूँ। इस शत्रु के यज्ञ के (होम करने के दृश्य के) केवल दर्शक हो खड़े रहो। यही यथेष्ट है। इस युद्ध को देखते भर रहो।" इस तरह राम ने कहा। १० आदिनारायण श्रीराम इस नामाभिधान से

अरियरे देवतेगळा नेसरिन वंशदलादि पुरुषनु
मेरेद नंबुदनंजिकेय देकिन्नु नमगेंदु
होरिसि करसंपुटव नोसलिनोळोरल दोय्यने मधुरवचनदि
नुडिसुव वोलिदरंगे बिन्नह माडितमरगण ॥ 11 ॥
देव बिन्नह सकल देवर देव निरवनु नोडु पदरा
जीववे संचरिसुतवे रवकुळद मध्यदलि
रावणन नोडुरु वरूथ सराव समर प्रौढियनु निम-
गावुदुचित प्रीयवी हुतिगेंदुदमरगण ॥ 12 ॥
केळिदनु बळिकिंद्र नोय्यने मौळियनु मणिदबुज संभव
शूलि गळिगवरनुम तानुज्ञेयलि निजरथव
मेळविसि मातळिय करेदु नृपाल चूडामणिगे रणजय
शील शूराग्रणिगे सारथियागु होगेंद ॥ 13 ॥
इदको शाङ्‌र्ग महाशरासवविदनु कोडु कोळ्ळ मृतकलशव
कुदुरे गळिगेरे नोंददेंदमरेंद्र मातळिय
कदन कर्कश भैरवन रिपु हृदय विदळव भैरवन दश
वदन रणभैरव वळिगागिंद्र बीळ्कोट्ट ॥ 14 ॥

सूर्यवंश में जो पैदा हुए —यह क्या देवता नहीं जानते ? अब हम किस बात से डरें ? इस तरह कहते माथे पर हाथ धरे बिना चिल्लाए मधुर वचनों से मन को लगे —इस प्रकार देवताओं ने इन्द्र से बिनती की । ११ भगवन, सेवा में निवेदन है । समस्त देवाधिदेव की स्थिति पर ग़ौर करें । शोरगुल भरे रणभूमि के मध्य राम भगवान निजी चरण-कमलों से विचर रहे हैं । रावण गर्जना करता हुआ रथ में खड़े अपने युद्ध-कौशल्य के साथ जो विराजमान है —कृपया देखें । इस युद्ध में तुम्हें कौन सा (पक्ष) यथोचित लग रहा है ?" इस प्रकार देवताओं ने बिनती की । १२ देवताओं की बातों पर ग़ौर करते इन्द्र ने सिर नवाकर प्रणाम करते ब्रह्माजी तथा शिवजी की अनुज्ञा (अनुमति) प्राप्त कर अपने रथ को सन्नद्ध कर मातलि (सारथी) को बुला— "युद्धविजयी रणधीर राजश्रेष्ठ राम का सारथी बनो । जाओ ।" इस प्रकार कहा । १३ "यह शार्ङ्ग नामक विष्णुधनुष है; इसे राम को दे दो । यह अमृतकलश ले लो; घोड़े अगर घायल हों तो उन्हें पिलाओ ।" इस तरह कहते देवेन्द्र ने शत्रुओं के हृदय को विदीर्ण कर डालनेवाले, युद्ध में कर्णकठोर भैरव-सदृश, रावण के लिए युद्धभैरव रूपी मातलि को राम के पास भिजवा दिया । १४ घंटाओं के शब्दों से युक्त, उत्साह से फहरते ध्वज से

फळ हरद घंटारवद पडितळद कदळिकेंगळ सुमुक्ता
फलद पल्लव सत्तिगेय मणिखचित कांचनद
होळेव चक्रद चीत्कृतिव चापळद तेजिय हेषितद हें-
क्कळद दिव्य वरूथ होळेहोळे दिळिदु दिळेगागि ॥ 15 ॥
निगुरि दश्वद खुरपुटदलुरे नेगेव धूळिय शक्रसूतन
होगळिकेय चप्परणे यब्बरदश्व रघुपतिय
मोगद मुंभागदलि नर्तिसि हगेय हरिबद कणनगोलिदवु
तेगेदु निदुदु तेरु नसुभयदलि दशाननन ॥ 16 ॥
अणेदु चम्मटिगेयलि तुरगव कुणिसि सूताभ्यास रचनेय
रणिय मेरेदिळिदवनि गसुराराति यंघ्रियलि
मणिदु मौळिय नमर वंशाग्रणिय सेवेय चित्तविसु सुर
गणद बिन्नह विदु वरूथके बिजय माडेंद ॥ 17 ॥
इंदु परियंतरवु समर स्यंदनद सत्वदलि रिपुगळ
कोंदुदिल्ली नेलेगे हंगेकमर वल्लभन
बंदुदेले सुरसूत केळु पुरंदरन पुरुषार्थवा सं-
क्रंदनन मेच्चिसुवे नाजियलंघ्रिचलनेयलि ॥ 18 ॥

संपन्न, मोती तथा हीरे-जवाहरातों के जड़े छत्र से शोभायमान अत्यंत सुंदर दीखता वह दिव्य रथ हीरे-जड़े चक्रों की घरघराहट के साथ तथा घोड़ों की हिनहिनाहट से चमकते-दमकते धरती पर आ उतरा। १५ उछल रहे घोड़ों के खुरपुटों की नोकों से जब धूल उड़ रही थी तो इन्द्र-सारथी मातलि ने (इन घोड़ों की) प्रशंसा करते पीठ थपथपाकर जो उनको उकसाया तो वे दिव्य रथाश्वों ने रघुपति के सम्मुख नृत्य करते हुए, शत्रु को जीतने के लिए सुसज्जित रणरंग की शोभा बढ़ायी। तत्पश्चात् रथ दशकंठ के डर के मारे थोड़ा-सा पीछे हटकर खड़ा हो गया। १६ मातलि ने चाबुक से खोंचते हुए घोड़ों को नचाते सारथी के युद्धचमत्कार को प्रकट करते धरती पर (उस) रथ को उतारा। तदनंतर सारथी ने असुर के शत्रु श्रीराम-चरणों में सिर नवाते हुए—"देवेन्द्र की सेवा, प्रभु, स्वीकार करें। यह देवताओं की विनम्र प्रार्थना है। कृपया रथ पर सवार होवें।" इस प्रकार उसने कहा। १७ अब तक तो (यहाँ तक) मैंने शत्रु-संहार रथ के सहारे के बल पर नहीं किया। इस वक्त देवेन्द्र की सहायता स्वीकार कर उसके उपकृत क्यों होऊँ? हे देवताओं के सारथी! सुनो। इससे देवराज का पुरुषार्थ सफल हुआ। मैं अपने पैरों पर ही खड़े होकर युद्ध करके देवराज इन्द्र को

तिरुगु नीनल्लदडॆ कॆलसादिरु मदीय महारणव वि-
स्तरिसु बळिकमररिगॆ हेळॆलॆ सूत नीनॆनुत
तिरुव नुद्दकॆ नीवि कॊप्पिन कॊरळनारै दिषुधियलि वलु
सरळ कीळुव समयदलि नारदनु नडॆतंद ॥ 19 ॥
ऎलॆ नृपोत्तम चित्तविसु हर नळिन भव हरि शिखि यमा द्यरु
बळिगॆ बीळ्कॊट्टरु बलात्कारदलि निम्मडिय
कळुहिदी स्यंदनदलतिरथ नळव मॆरॆदरॆ नोडुवॆवु हगॆ
यळिवनल्लदडॊल्लॆ वॆंदरु हृदनदॆनॆंद ॥ 20 ॥
नोडि माड्डुवुदेनु नोडदॆ माडुवपकृतवेनु गॆलविन
पाडुनम्मनु नॆम्मुवुदु कर्तव्यवल्लॆ निमगॆ
काडदिरि नीवॆनॆ विभीषण बेडिकॊंडनु चरणयुगळकॆ
नीडिदरु मस्तकवनिनसुत जांबवादिगळु ॥ 21 ॥
ऐसॆ मत्तॆनॆमगॆ परबल दासॆयलि गॆलवादडागलि
वासियेकॆनु तेरिदनु सुररुलियॆ घनरथव
आ समीरजनुब्बि वॊब्बिरिदा सुरस्यंदनद रत्न वि-
लासदमलध्वजद हलगय मेलॆ मंडिसिद ॥ 22 ॥

प्रसन्न कर लूंगा।" इस प्रकार राम ने कहा। १८ "(अतः) तुम लौट चलो; नहीं तो परे सरककर खड़े हो जाओ। तत्पश्चात् जाकर देवताओं को मेरे युद्ध के बारे में विवरण दे दो, मातलि।" इस प्रकार कहते धनुष की डोरी को हाथ से खींचकर, धनुष की नोक पर की डोरी के फंदे की परीक्षा कर, तरकस से महान बाणों को राम खींच ही रहे थे कि ठीक उसी वक्त नारदजी वहाँ पहुँच गये। १९ "हे राजश्रेष्ठ, सुनिए। शिव, ब्रह्मा, इन्द्र, अग्नि, यम आदियों ने जान-बूझकर आपके पास यह रथ भेजा है। आपकी सेवा के लिए प्रेषित इस रथ में बैठकर अतिरथी राम अपनी वीरता का प्रदर्शन करें तो शत्रु की मृत्यु देखें। नहीं तो नहीं। यही तो वस्तुस्थिति है।" इस तरह नारद ने कहा। २० "तुम्हारे देखने न देखने से क्या होता है ? न देखने पर क्या पहाड़ टूट पड़ेगा ? जीतने की स्थिति तो हमारी है। हम पर भरोसा करना तुम्हारा कर्तव्य है। यों मुझे व्यर्थ ही मत छेड़ो।" इस तरह राम के कहने पर विभीषण ने रथ पर सवार होने की प्रार्थना की। सुग्रीव, जाम्बव आदियों ने श्रीराम-चरणों में माथा नवाकर बिनती की। २१ "ओ हो ! ऐसी बात है ? अन्यों की सहायता से जीतना ही बदा है तो वैसे ही होने दो। व्यर्थ की बकवास से क्या

खुरकॆ नमिसि रघुक्षितीशन चरणकानत नागि रथ कु-
प्परिसि वाघॆय कॊंडु हयकंधरव बॊळैसि
अरिय सूतन मूदलिसि चप्परिसिदनु वाजिगळ मातळि
सुररु कुसुमांजलिगॆदरॆ कॆदरिदवु हयनिकर ॥ 23 ॥
मॊळगिदवु निस्साळततति दिगुवळय गुम्मिडल भ्रदमरर
लिळॆ बिरिय लॊदरिदवु भेरिगळसुर सेनॆयलि
खळ नृपोत्तम सारथिगळिक्कलिसॆ नॆलनायॆंदु तुरगा
वळिय बिट्टरु पडिमुखकॆ राघव दशाननरु ॥ 24 ॥
मनद मत्सर रोषदुब्बिन मॊनॆयॊळुदुरुव किडिय कडुहिन
कॊनरुवायतिकॆगळ वीराळाप दुब्बुगळ
घन पराक्रम दभिनयद संजनित वैरदलुब्बि बॊब्बिरि
दनिमिषासुर निकर हॊगळलु कॆदरिदरु कणॆय ॥ 25 ॥
रण गलिगळिब्बर महामार्गण कदंबद नॆय्गॆयलि धा-
रुणिगॆ जडिदुदु तिमिर शरभींकृतिय सबुददलि
हणॆगॆ बेसरुदोरॆ राजस गुणद विभुकर्णदलि बॆरळिन
बॆणॆय निक्किदनॊदरिदवु प्रतिशब्द कर्बुदिगळु ॥ 26 ॥

प्रयोजन ?" इस तरह कहते देवताओं की हर्षध्वनियों के मध्य राम (उस) दिव्य रथ पर सवार हुए। मारुति हर्ष के मारे किलकारियाँ भरते हुए उस देवरथ के रथध्वज के तख्तो पर चढ़ बैठे। २२ घोड़ों के खुरपुटों को प्रणाम कर, राम के श्रीचरणों में माथा रख मातलि रथ पर सवार हुए (उछलकर बैठ गये)। फिर लगाम हाथ में ले शत्रुरथ के सारथी का तिरस्कार करते (अपने रथ के) घोड़ों की पीठ थपथपायी। घोड़े उत्साह के साथ आगे बढ़े। देवताओं ने अंजली भरकर पुष्पवर्षा की। २३ आकाश में बजे देवताओं के नगाड़ों के शब्द दिशि-दिशाओं में गूंज उठे। राक्षस-सेना की भेरियाँ इस प्रकार बज उठीं कि धरती फट जाय। रावण और राम के सारथियों ने राम और रावण के सम्मुख अपने घोड़ों को दौड़ाया। इसके वेग के कारण धरती के दो टुकड़े हुए। २४ मन ही मन द्वेषाग्नि के भड़कने से क्रोधोन्मत्त हो चिनगारियाँ उगलते शूरता की, वीरता की, लाली जब ललक उठी तो वीरतापूर्ण बातें करते, पराक्रम प्रदर्शन करते, गरजते महाद्वेष के कारण उकसाए गये राम-रावण ने जब बाण छोड़े तो देव-राक्षससमूहों ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। २५ दोनों वीरों के चलाए गये बाणो से (कारण) ताने-बाने की तरह आकाश को बुन देने के कारण सारी धरती पर अंधेरा

चंड बलरिब्बर महाकोदंड विद्दवु खरमरीचिय
मंडलाकारदलि शरकिरणंगळंददलि
चंडिसिर्दवु बागिदॊडलिन मंडिगळ विड्डुदिट्टिगळ हरि
गॊंड हॊस हॊगरुगळ सुभटरु समरकेळियलि ॥ 27 ॥
आर्येनुत सुररुब्बुवरु रघुरायनॆसुगॆगॆ पूतुरेमज्ञ
मार्ये यॆंदुब्बड्रिसुवरु खळनॆसुगॆ गसुरगण
होयितीपरि दिवसवॊंदु चडाय वादुदु मरुदिवस बलु
सायकद संग्राम हॊगळॆ सुरासुर व्रात ॥ 28 ॥
मूरनॆय दिवसदलि तरणिय तोऱ्ऱकॆयलि भटोत्तमरुकण
नेऱ्ऱि कादिद रडगॆ सूर्यन बिंबवबुदियलि
तोऱलऱियद तामसिय कालूऱिकॆय काणिकॆय लॊदगिद
लाऱलुष्ण द्वादशात्मन पथ परिश्रमद ॥ 29 ॥
कुशनॆ केळॆदनॆय दिन बाऱिसितु बिंकद ववर किडि किडि
मसगॆ कणॆकणॆगळलि नॆऱॆ कीलिसिदरंबरव
विशिख विहरण दुब्बरकॆ दिगुविसर हॊगॆदवु हरिहया दिग
ळसुर पथ पल्लटकॆ निंदवु लवनॆ केळॆंद ॥ 30 ॥

फैल गया। बाणों के भयानक शब्द के कारण आदिशेष के माथे में दर्द हुआ। रजोगुण के स्वामी ब्रह्मा ने कानों में उंगलियाँ डाल लीं। प्रतिध्वनियों के कारण समुद्र गरजने लगे। २६ प्रचंड बलशाली राम और रावण के भारी धनुष सूर्यबिंब-सदृश वर्तुलाकार में चमकने लगे; बाण सूर्यकिरणों-सदृश प्रखर थे। देह तथा घुटने झुकाकर दृष्टि रोपकर देखते हुए उत्साह भरे दोनों वीर नित्यनूतन कांति बिखेरते रण (युद्ध) क्रीड़ा में निरत (व्यस्त) हुए। २७ श्री रघुराम के बाण-कौशल्य को देख "वाह" कहते देवता प्रसन्न हो रहे थे। रावण के बाण छोड़ने की कला देख राक्षससमूह, 'भेप, धन्य धन्य' कहता पुकार उठा। इस प्रकार एक दिन बीता। दूसरे दिन महाबाणों के इस युद्ध ने अत्यंत भयानक रूप धारण किया। राम और रावण के बाण-युद्ध को देखकर देवताओं ने तथा राक्षसों ने (दोनों ने भी) खूब प्रशंसा की। २८ तीसरे दिन सूर्योदय होने पर राम और रावण युद्धक्षेत्र में पधारकर सूर्य के अस्तंगत होने तक उन्होंने युद्ध किया। राम और रावण के युद्ध के कारण ऐसा अँधेरा व्यापा कि कुछ भी नहीं दिखायी देता था। चौथे दिन सूर्य के संचार की थकावट दूर हुई। २९ सुनो कुश, पाँचवें दिन गौरव-गरिमामय युद्ध प्रारंभ हुआ। चिनगारियाँ उगलते बाणसमूह के कारण आकाश

रणभयंकररमित बल मार्गणद शिखिमुखकानलरियदें
मुणुगिदनु बिसुटंबरव नंबुधिय मध्यदलि
तणिदु सलिलद शैत्यदलि मैमणिदु मूडण कडल वडबन
हणॆय मेलॊप्पिदनु रवियारनॆय दिवसदलि ।। 31 ।।
नडॆदुदा दिवसदलि सिडिलॊळु सिडिलु सीवरिसुव वॊलॆसुगॆय
लिडियलबुज भवांड मंडल युद्धकांडदलि
मृडन वीर भटांधकन बलुगडिय बवरकॆ कुशनॆकेळि
म्मडियॆनलु संग्राम तलॆदूगिसितु सुरगणव ।। 32 ।।
वीर रामन बाण वर्षा सारदलि ननॆदसुरपति कै-
हार वक्कुडवागॆ कैयॊड नुब्बि बॊब्बिरिद
भूरि भुजदंडदलि नॆगहिद नारुभटॆयलि सुररु बॆदरॆ पु-
रारिदत्त महोग्रशक्तिय लधिक रोषदलि ।। 33 ।।
मरुजगदति बलरोळॊलॆय कारनल्ला दशमुखनु हॊरॆ
येरि हॊस हॊगरॊगुव तळपद हॊदर हॊळहुगळ
मूरलगु तॆत्तिसिद शूलव नारुसाविर सूर्य किरणद
तोरिकॆय कैदुवनु कैयलि नॆगहि बॊब्बिरिद ।। 34 ।।

ढंप गया। बाणों के वेगपूर्ण संचार के कारण आकाश धुआँदार बना। सुनो लव, इन्द्र आदियों का दम घुटने लगा। ३० युद्धभयंकर राम और रावण के अपरिमित सामर्थ्य के बाणों से निकली (पैदा हुई) उष्णता को न सह सकने के कारण सूर्य आकाश को त्याग समुद्र-मध्य डूब गया। पानी ठंडक से तृप्त हुआ। सूर्य छठे दिन सुबह अपनी देह को झुकाए पूर्व समुद्र के बड़वाग्नि के माथे पर शोभायमान हो प्रकट हुआ। ३१ बिजली पर बिजली टूट पड़ने के तथा कड़कने के सदृश छठे दिन हुए बाणों के युद्ध के कारण ब्रह्मांड फट पड़ा। शिवजी तथा अंधकासुर के मध्य हुए भयानक युद्ध के दुगुने वेग से (प्रचंडता के साथ) राम-रावण के बीच हुए युद्ध ने देवताओं को भी प्रसन्न कर लिया। ३२ वीर राम के बाणों की भयानक वर्षा में भीगी राक्षसेश्वर की तलवार जब सत्त्वहीन हुई तो वह एक दम गर्जना कर बैठा। रावण ने घनघोर गर्जना करते अत्यंत क्रोधोन्मत्त हो, शिवजी का दिया हुआ महान तथा भयानक शक्त्यायुध को अपनी भुजाओं में ऊपर उठाया तो देवता यह देख भयभीत हुए। ३३ तीनों लोकों के महान बलशालियों का दशमुख जो भूषणप्राय ठहरा! नयी कांति बिखेरते चमचमाते छः हजार सूर्यकिरणों की कांति से

मेरॅदु दसुरन हस्तदलि हूदुरुगलिन गंधाक्षतॅयवलु
सरिय रक्तद्रवद तळपद हॊंदरॆ हॊळहुगळ
जरॅदु कल्पानलन नालगॆ युरुबुगळ गुम्मुव कणंगळ
गुरुबिनलि भोर्गरॆव शूल महोग्र तेजदलि ।। 35 ।।
राम केळी मूरुमखवज सोमशेखर विष्णुगळ लय
नाम निर्णयदवु कणा गुणमत्तॆ बेरॆट्टु
ई मनुष्य महोर गामर भूमि भंजनदुवु कणा हॊरॆ
गोमदीय महासुभाषित कॊळगॊ नीनॆंद ।। 36 ।।
इदु कणा होमाग्नि मध्यद लुदिसि दायुध मखद शिखि तव
हृदयदामिष हविगॆ हदिरिक्कुवद नोडॆनुत
हॊदरुगैगळलॆत्ति लावणिसिदनु सीतॆगॆ हेळुहेळुवॆ
नुदिसिदरॆ मातुगळ भयबेडॆंद नसुरेंद्र ।। 37 ।।
शूलवनु नभकिट्टु वाहा स्फालनंगैदॊदरि तिरुगुव
शूलवनु हिडिदब्बरिसि मगुळभ्रमंडलकॆ

संपन्न तीन फालों वाले शूल को बड़े उत्साह के साथ हाथ में उठाए रावण ज़ोर-ज़ोर से गरजा। ३४ फूलों के गुच्छों से युक्त, गंधाक्षतों से पूजित रक्त से रंजित कांति से शोभायमान वह शूल राक्षसेश्वर के हाथ में विराजमान था। प्रलयाग्नि की लपलपाती जीभ को लजाता हुआ (उससे बढ़कर कांतियुक्त) चिनगारियों के समूह को उगलता हुआ वह भयानक तेजस्वितासंपन्न शूल रावण के हाथ में विराजमान हुआ। ३५ "हे राम, सुनो। (इस) शूल के तीन फाल ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश (इन) तीनों नामों से युक्त हो अत्यन्त विनाशकारी हैं; इतना ही नहीं, इस आयुध की महिमा ही निराली है। यह मानव, उरग (साँप), अमर (देवता) तथा भूलोकवासियों को तोड़ डालने के (विनाशकारी) सत्व से युक्त है। तू मेरी (यह) बात माननेवाला है या नहीं?" इस तरह रावण ने कहा। ३६ "यह होमाग्नि के मध्य पैदा हुआ आयुध रूपी अग्नि है। तेरे हृदय के मांस-खंडों की आहुति ले लेने के लिए यह अपनी जीभ जो लपलपा रहा है। देखो तो सही।" इस तरह कहते हुए अपने हाथों के समूह को ऊपर उठाकर आयुधों को एक साथ घुमाया। "अगर बोलने की ताक़त हो सीता से जो कुछ कहना है, कह डालो। वह मैं उसे सुना दूंगा। डरो मत।" इस तरह रावण ने कहा। ३७ रावण ने शूल घुमाकर ऊपर की ओर फेंक भुजाएँ ठोकते गर्जना की। आकाश में घूम रहे शूल को पकड़कर गरजते हुए फिर उसे आकाश की ओर फेंका तो

ज्वालें दळ्ळिसलिट्टु बॊब्बॆय ताळि पुनरपि पिडिदु मगुळॆ सु-
राळि बॆदरलिकिट्टु बलगै हत्त पसरिसिद ॥ 38 ॥
ऎलॆलॆ राघव केळु सोलद सुलभ निमगिंदिनलि मुंदण
गॆलुव नोडुवरिल्ल नीनिन्नी समस्तबल
उळिवुदॆंबुद साध्य वॆन्नय बलुहनारलि मॆरॆवॆनॆंबु
म्मळिकॆ तोरिदॆ बिडलॊ बेडवॊ हेळु नीनॆंद ॥ 39 ॥
कायलापवरिल्ल बॊम्मनु बायदॆगॆयलि नुडियलीसॆनु
नायिगळ हेळदिरु हेडिगळुळिद सुरनिकर
कायबल्लव नॊब्बने तानायुवनु नीगाडदिरु नि-
र्दायदलि नुडिबेग भयबेडॆंद नसुरेंद्र ॥ 40 ॥
खळरॊळगॆ बाय् बडिकनहॆ तलॆगळलि नालगॆ हत्तला दिट
गळहुवडॆ बल्लिदनु नमगी परिय मातुगळु
सुळिय लरियवु नालगॆगॆ वॆग्गळ बलान्वितरॊळगॆ दुर्बल
रळकुवरु कक्कुलितॆ नमगिल्लॆसगु बेगॆंद ॥ 41 ॥

धक् से उस शूल से ज्वाला प्रकट हुई। फिर गरजते उस शूल को ग्रहण करके पकड़कर देवताओं को डराते ऊपर की ओर फिर एक बार फेंक दसों हाथों को एक साथ ऊपर उठाया। ३८ "रे रे रे राघव, सुनो। आज तुम्हारी हार निश्चित है। फिर कभी (तुम्हारी) जीत असंभव है। तुम और तुम्हारी सेना का (समस्त सेना का) बचकर निकल जाना असाध्य है। फिर अपना सामर्थ्य मैं किस पर प्रकट करूँ —इसी चिंता में पड़ा हूँ; बोलो इस शूल का प्रयोग करूँ या न करूँ ?" —इस तरह रावण ने कहा। ३९ "तुम्हारी रक्षा तो कोई नहीं कर सकता। ब्रह्माजी मुंह कैसे खोलते हैं ? देख लेता हूँ; उन्हें मुँह खोलने का मौक़ा ही न दूंगा। अन्य तो कुत्ते हैं; उनके बारे में कुछ कहना बेकार है। देवता तो कायर हैं। (अब तुम्हें) बचानेवाला मैं अकेला हूँ। तुम अपनी आयु इस प्रकार पूरी तरह समाप्त मत करो। जल्दी कहो। डरो मत।" इस प्रकार रावण ने कहा। ४० "राक्षसों में तू बड़ा वाचाल है।, तुम्हारे सिर में (मस्तकों में) दस जीभें हैं; हाँ-हाँ; बकवास में, बक-झक करने में तू बड़ा वीर है। मेरी जीभ तो इस प्रकार बोलना जानती ही नहीं। अधिक बलशालियों को देख बलहीन डरते हैं। मैं तो इस चिंता से विमुक्त हूँ। (अतः) तुम्हारे शूल का प्रयोग शीघ्रातिशीघ्र हो।" इस प्रकार राम ने कहा। ४१ "तब तो यह रहा।" इस तरह कहते उस यमायुध

आदडिदकोर्येनुत कर्कश गेंदुवनु कुवुविड्दु हवणिस
ला दिवाकर सूनु नीलांगद नळादिगळु
कैदुडुकलनवाय्तु लक्ष्मण सेदिदंविनोळिर्दना क्र-
व्याद वैष्णवरायनाळ्दं गेंदनी हृदन ॥ 42 ॥
ई महायुध कंब तोंडुपैतामहद वैष्णवद शैवद
तोमरत्रय कल्लदिदु निर्नाम वागदेंने
रामनदर्रि मुन्न हूडिद ना महास्त्रंगळनु जगद म-
हामहिमनेनर्रियने संगरद जयसिरिय ॥ 43 ॥
ऎंडदलनुजन नयनदलि कॊल कडॆंगॆ सारिसि वलद दॆसॆयलि
जडिदु हुब्बिनलि नसुताद्यर नसुरवल्लभन
कडुहिनायुध दत्तलॆंवॆंगळ मिडुकिसदॆ संधिसिद सरळिन
सडगरद संग्राम लोलुप निर्द निदिर्रिनलि ॥ 44 ॥
इट्टनव बळिकुब्बि बॊब्बिर्रि दट्टितुरि वैमानिकर भुगि
लिट्टुदंबर वमम चंडमरीचि मंडलव
कट्टितुरि कपिसेनॆयलि कालिट्टुदुरि सैरिसुव नेमन
मुट्टि मनुकुल सार्वभौमनु मगनॆ केळॆंद ॥ 45 ॥

का प्रयोग करने रावण सिंहनाद करते तैयार हुआ। तभी सुग्रीव, नील, अंगद, नल आदि आगे बढ़ने तैयार हुए। लक्ष्मण बाण ताने तैयार हो खड़े रहे। तभी विष्णुभक्त विभीषण ने श्रीराम से ये आगे की बातें कहीं। ४२ "ब्रह्मा, विष्णु, शिवास्त्रों का अनुसंधान कर इस महायुध पर प्रयोग करो। इन तीनों के अस्त्रों के प्रयोग के बिना इस शूल का नाश असंभव है।" इस प्रकार विभीषण के कहने के पूर्व ही राम ने उन महास्त्रों का प्रयोग किया। जगत भर के महामहिम क्या युद्ध की विजय-लक्ष्मी को नहीं पहिचानता ? । ४३ राम ने आँखों के इशारे से ही बाएँ (पार्श्व) में उपस्थित लक्ष्मण को परे सरकाकर दाएँ (पार्श्व) में उपस्थित सुग्रीव आदियों को धमकाकर चुप किया। राक्षसेश्वर के उस उग्र आयुध को टकटकी लगाकर देखते हुए अस्त्र को धनुष पर संधानित कर युद्ध करने की आसक्ति से पूर्ण हो राम रावण के सामने खड़े थे। ४४ रावण ने अमितोत्साह से सिंहनाद करते उस शूल का प्रयोग किया। शूल से उठी ज्वाला के कारण आकाश में वायुयान में उपस्थित सभी भाग खड़े हुए। उस ज्वाला ने धगधगाते सारे आकाश को ग्रस लिया। सूर्यमंडली ज्वाला को उसने स्तंभित कर दिया। सहनशीलता की पराकाष्ठा तक पहुँचते वह ज्वाला कपिसेना में घुस पड़ी। हे मनुकुल सार्वभौम राजा के पुत्र !

आव चित्र शरप्रयोगवदाव हस्त चमत्कृतियों ता
नाव कोदंड प्रचंड प्रौढि पौरुषवों
देव रामन बाण मुखदलि मूवरवतरिसिदुद कंडेनु
रावणन कैदुवनु काणॆनदेनु बेऱगॆद ॥ 46 ॥
अडगिता महदायुधद बॆळगॊडनॆ तरणिय बिब पडुवण
कडलॊळगॆ मुळुगिदुदु नॆगॆदुदु मूडण बुदियलि
कडुबॆऱगिन सुरेंद्र बवरव हिडिदु होरिद निनकुलेंद्रन
बिड्सरळ संगरदॊळॊंबत्तनॆय दिवसदलि ॥ 47 ॥
हत्तनॆय दिन हरि हिरण्यकरॊत्त बरदाहवकॆ नूऱै
वत्तुमडियॆनॆ कादिदरु कळनेऱि कडुहिनलि
कत्तलॆय बॆळगुगळ बलुदलॆयॊत्तुगळ दिनवैदु मुंदणि
गॊत्तिदवु बलुहाय्तु हदिनाऱनॆय दिवसदलि ॥ 48 ॥

सुनो— इस तरह कहते वाल्मीकि ने वर्णन किया। ४५ राम का अस्त्र-प्रयोग न जाने कैसा अद्भुत है ! पता नहीं उनके हाथों में न जाने क्या जादू भरा है ? वह कितना महान धनुर्विद्या-प्रवीण है ! श्रीराम के बाण की नोक पर त्रिमूर्तियों को अवतरित होते देखा। रावण का अस्त्र दिखाई ही न पड़ा ! न जाने यह कैसी आश्चर्यकारक घटना है ! —इस तरह महर्षि वाल्मीकि ने कहा। ४६ रावण के उस महान आयुध का प्रकाश न जाने कहाँ गायब हो गया। तुरन्त ही सूर्यबिंब पश्चिमी समुद्र में डूबकर वहाँ से पूर्वी समुद्र पर से ऊपर उठ आया। भौचक्का हुआ रावण नवम दिन के युद्ध में राम के अलग-अलग हो छूट रहे बाणों के युद्ध में जिद्द करके लड़ने लगा। ४७ विष्णु के अवतारी नरसिंह तथा हिरण्यकशिपु के बीच हुए युद्ध के एक सौ पचास गुने अधिक तीव्रता के साथ, दसवें दिन राम-रावण अपनी भयानक वीरता प्रकट करते लड़े। रात-दिन एक-एक करते लगातार पाँच दिन युद्ध होता रहा। फिर सोलहवें दिन का युद्ध तो बड़ा ही भयानक रहा। ४८

ऐवत्तनेय संधि

सूचने– सकल जगवल्लाडॆ दिविज प्रकर कंपिसॆ कादिदरु सायकव सौरंभदलि
राघण राम राजियलि ।

मत्तॆ मोहिद वॆरडु रथ कॆंपोत्तिदिन नुदयदलि सूतर
हत्तळद हॊय्लिनलि हॊळकिदवश्ववॆड वलकॆ
ऒत्त वरिसितु सुरकदंब वियुत्तळद वळयदलि वीर भ-
टोत्तमर संगरव नोडलु कुशनॆ केळॆंद ॥ 1 ॥
लवनॆ केळै हनुमनब्बर दिविज सूतन बॊब्बॆ रघुसं-
भवन चापध्वानवा दशकंठनब्बरणॆ
अवन रथ हयसूतनुब्बिन रवदरवळिगळॊड वॆरसि सुर
भुवनवनु बॆदरिसिदवा ध्रुवलोक परियंत ॥ 2 ॥
कुणिद विब्बर कुदुरॆ समरांगणद सौरंभद सगाढद
सॆणसुगाडर सूतरोजॆय लाजिरंगदलि
कर्णदुडुकि कुबुबिरिदु कलिरावण पचारिसुतॆच्चना दिन
मणिकुलॆंद्रनमम शरमयवागॆ दिगुजाल ॥ 3 ॥

पचासवीं संधि

सूचना–– अपने-अपने वैभव का विस्तार करते जब राम-रावण बाणों का युद्ध कर रहे थे तो सारे जगत कांप उठे, देवता भी थर-थर कांपने लगे।

सूर्योदय के समय अरुण कांति चारों ओर जब फैली राम-रावण के रथों ने पुनश्च आक्रमण शुरू किया। सारथियों ने जब हाथों से थपेड़ा तो घोड़े दाएँ-बाएँ चमकने लगे। दोनों महावीरों के युद्ध को देखने के लिए देवता-समूह आकाश में बड़ी उतावली में आकर जुटा। सुनो कुश, इस तरह कहते वाल्मीकि ने वर्णन किया। १ सुनो लव, हनुमान का कोलाहल, देवताओं के सारथि मातलि का गर्जन, राघव का धनुष्टंकार, दशकंठ की गर्जना, रावण का रथ, घोड़े व सारथियों के उत्साह-पूर्ण शोरगुल के शब्दों के कारण ध्रुवलोक से देवलोक तक सारा विश्व भयभीत हुआ। २ युद्ध संभ्रम से भरे-पूरे दोनों योद्धाओं के सारथियों के आधीन रहे दोनों पक्षों के घोड़े युद्ध रंगस्थली में नाच उठे। वीर रावण ने सिंहनाद करते हुए शत्रु का मजाक उड़ाते हुए सूर्यवंश के राम पर बाणों की वर्षा की। बाप रे बाप ! सारी दिशाएं बाणमय हो गयीं ! ३ यह बाण है, या

सरळो संवर्तद तमौघद तिरुळो हेळुवेनेन निळेगा-
ग्तिरुळु रक्कस रायनच्च शरांधकारदलि
होरळियोडेदुदु सुररु घायद लुरुळिदुदु वानरवरूथिनि
नरळिदरु नोविनलि राघव रावणानुजरु ।। 4 ।।
हेणेदु कोंडवु गगन दिगुधारुणिगळनु दट्टयिसिं रिपुमा-
र्गण विताळिसि मुसुकिदुदु रघुनंदनन रथव
तृणदुरिय तीव्रते लयाग्निय सेणसुवदे समरदलि बळिका
क्षणदोळरि मार्गण कदंबव केदरिदनु राम ।। 5 ।।
बळिक हेळुवुदेन निब्बर चळ चमत्कृति चापदिदु
च्चळिसु वस्त्रानीक मुसुकितु लोक हदिनाल्कु
हळचु वंबंबुगळलुदिसुव खळपळद कट्टुलुहु मूर्छा-
कुळवनित्तवु तरुणकेळ् तेत्तीस देवरिगे ।। 6 ।।
हळचिदलगलगुगळ धारेय कुळु गिडिगळुब्बेद्दु तारा-
वळिय नणेदवु तळितविन मंडलद वळयदलि
बळिसलिसि बगिदोगुव कार्बोगे बळसितबुज भवांड खर्पर
दोळकडेयने नेबेनिब्बर समर संभ्रमव ।। 7 ।।

प्रलयकालीन अन्धकार का सत्व है —किन शब्दों में वर्णन करें ! राक्षस राजा के छोड़े गये बाण के अन्धकार के कारण धरती भर में अँधेरा छा गया। देवता तितर-बितर हुए। वानर-सेना घायल हो धराशायी हुई। राघव, विभीषण वेदना के मारे चटपटाए। ४ शत्रुबाण आकाश, दिशाएँ तथा सारी धरती पर (घने होकर) छा गये। उन बाणों ने राम के रथ को भी खूब ढाँप दिया। पुआल (पूस) की आग कितनी ही भयानक क्यों न हो— क्या प्रलयाग्नि के साथ होड़ कर सकती है ? उसी क्षण राम के हाथ से छूटे बाणों ने शत्रु के बाणसमूह को तितर-बितर कर दिया। ५ उसके बाद जो कुछ हुआ उसका वर्णन किन शब्दों में करें ! दोनों वीरों ने अत्यंत चमत्कारपूर्ण रीति से छिटकाए (प्रक्षेपित किये) जा रहे अस्त्रों ने चौदह लोकों को घेर लिया। अत्यंत वेग से एक-दूसरे से टकराते बाणों से निकल रही 'खटखटिल' की तीव्रतर ध्वनि के कारण तेंतीस कोटि देवता मूर्च्छित होते व्याकुल हुए। ६ बाणों की नोकें एक-दूसरे से टकराने के कारण नोकों से निकल रहीं जलती चिनगारियाँ जाकर नक्षत्रों से टकरायीं तथा सूर्यमंडल भर में व्याप्त हो गयीं। ज्वाला का अनुसरण करते पीछे-पीछे आ रहे काले धुएँ ने ब्रह्मांड के भीतरी भाग को घेर लिया। दोनों वीरों के युद्धसंभ्रम का किन शब्दों में वर्णन करें ! ७ समस्त लोक तीरों

बाणमय वाय्तखिळ भुवन श्रेणि भूम्यंबरद विवरव
काणेनंबुधि हूळितंबिनलेन नुसुरुवेनु
स्थाळु कमलभव प्रमुख गीर्वाण रग्गद दिव्यगात्न
त्राणगळ धरिसिदरु नभदलि हुसियलेनंद ॥ 8 ॥
इब्बरेसुगेय बाणकंबर वब्बरिसु तिर्दुदु धरातळ
गब्बरिसु तिर्दुदु सुराचलवलुगितेडबलक्के
गब्ब कलकिद वमरियर जगदुब्बसवु बलुहाय्तु वळलिके
येब्बिसितु निर्जर पुरंगळनजन पट्टणक्के ॥ 9 ॥
हत्तदेनी बलुहु भारि भटोत्तमरला समर धीरो-
दात्तरल्ला हिंदु मुंदणयुगद वीररिगे
अेत्त बहुदे बेरळनेंदु वियत्तळदला देवमुनि पोग
ळुत्त लिर्दनु होरद हरुषद हेंपिनुब्बिनलि ॥ 10 ॥
होगलदु केळुभय सुभटर मेगणाहववनु शरावळि
तागि तम्मोळु हिंगि बिन्नैसिदवु वीररिगे
आगमोक्तद दिव्यमंत्रद मेगेमेरेवुदु बरिदै बिडबे
डाग नोलिवडे नीवेनुत बोब्बिरिद विद्देसेय ॥ 11 ॥

से भर गये। धरती तथा आकाश में अंतर ही नहीं दिखायी पड़ता था। समुद्र भी बाणों से भर गया। इस सारी स्थिति का वर्णन कैसे करूं? आकाश में उपस्थित शिव-ब्रह्मादि प्रमुख देवताओं ने दिव्य देह में (अपने) प्राणों को रखकर सुरक्षित कर लिया। झूठ क्यों कहूँ? —इस प्रकार वाल्मीकि ने वर्णन किया। ८ दोनों वीरों के बाणों की टकराहट से आकाश चीख-पुकार उठा; धरती में दरार पड़ी, मेरु पर्वत दाएँ-बाएँ डाँवाडोल हुआ, देव-युवतियों के गर्भ विचलित हुए, जगत ने ज़ोर-ज़ोर से लंबी साँस ली, देव-नगरियाँ व्याकुल हुईं, वे ब्रह्मलोक की ओर अग्रसर हुईं (भाग गयीं)। ९ इनका सामर्थ्य क्या कम है? दोनों जो ज़बर्दस्त वीर ठहरे! पूर्व में हुए तथा भविष्य में होने जा रहे वीरों से बढ़कर भारी जीवट के वीर जो ये थे! इनकी ओर कौन उँगली उठा सकता है?" इस तरह आकाश में उपस्थित हो रहे नारद मुनि हर्षाधिक्य से फूले गुणगान कर रहे थे। १० वह तो जाने दीजिए। अब इन वीरों की आगे की युद्धवार्ता सुनो। बाणों के आकर टकराने के कारण दोनों तरफ़ वीर पीछे हटकर, "श्रेष्ठ फलितांश अगर चाहते हों तो शास्त्रोक्त रीति से दिव्य मंत्रों के अस्त्रों का प्रयोग करो; व्यर्थ के अस्त्र-प्रयोगों से बचो।" इस प्रकार चिल्लाकर कहने लगे। ११ इन बातों को सुनकर

केळुतिब्बरु बळिक मंत्र शराळिगळ निषुधिगळ लुगिदुरॆ
बोळविसि बिरिदुगळ संभाविसुव वंदिगळ
सूळुवातिन हॆंबळिय हीहाळिकॆय हेवगळ मनदु
ब्बाळि निर्दॆच्चाडिदरु मॆच्चलु सुरव्रात ॥ 12 ॥

दिविज रिपुकेळॆलवो सरसिजभव भवाद्यर बगॆय नॆंबी
हवण नंगीकरिसिदॆयला खूळरंददलि
ध्रुववु निनगायुष्यवॆंबुत्सवदि नम्मनु कॆणकि लय मृ-
त्युविन कैवश वादॆ नीनॆंदसुर हर नुडिद ॥ 13 ॥

ऎलवो केळिन्नादडॆयु बिडु छलव मरॆयोगु कावॆ निन्नय
तलॆय तरणि हिमांशु तारॆगळिरवु परियंत
तॊलगुवदु निनगपयशवु निर्मलनु नीनहॆ लोकदलि नि-
न्नळ बळवदॆनॆलवो बेगदलुसुरु तनगॆंद ॥ 14 ॥

एकॆ निनगी मातु मरॆ निनगेकॆ बल्लॆनु निन्न परियनु
काकने तानच्चु मॆच्चिन मातदंतिरलि
नूकु कणॆगळ कदन मुखवे साकु साविगळुकुवॆनॆ लो-
कैक वीरकणा कृपोदयवेकॆ निनगॆंद ॥ 15 ॥

राम-रावण ने तरकसों से मंत्रास्त्रों को हाथ में उठा लिया तथा सँभलकर खड़े हो गये। चारण-भाटों से प्रशंसा की झड़ी जो लगी तो दोनों वीरों ने उत्तर-प्रत्युत्तर द्वारा एक-दूसरे पर तानाकसी करते शत्रुत्व की डाह से अस्त्र चला-चलाकर जो लड़े —इसे देख देवता भी प्रसन्न हो गये। १२ "हे राक्षस, सुनो! मूर्ख की तरह ब्रह्माजी तथा शिवजी की भी परवाह न करने की जो तूने ठानी है, बड़ी ही आश्चर्यकारक बात है! अपने को अमर समझकर जो तुमने घमंड से हमको छेड़ा मानों प्रलयदेवता के गाल में तुमने अपना गला दे दिया। (तू अज्ञान के कारण मृत्यु के वशवर्ती हुआ।) १३ "रे रे! कम से कम अपनी जिद्द त्यागकर अब तो शरण में आ जा। तेरे सिर को रखूँगा, बाल बाँका न होने दूँगा। यावत् सूर्य-चन्द्रमा रहेंगे, तावत् तेरी कुख्याति दूर हो; तू लोक-निष्कलंक कहलाएगा। तू चाहता क्या है? जल्दी बोल।" इस तरह राम ने कहा। १४ "ऐसी (तेरी) बातों में क्या धरा है? भूल जा इन बातों को। तेरी रीति मैं जानता हूँ। क्या मैं दुष्ट हूँ? अपनी ये चिकनी-चुपड़ी बातें रहने दो। बाण छोड़ो। मुझे युद्ध ही चाहिए। मैं क्या मृत्यु से भयभीत हूँ? (कभी नहीं) लोकैकवीर जो ठहरा। तू मुझ पर यों दया

इन्नु निन्न शुभाशुभवु सलें मन्निसिद शरणानु मतवें-
दॆन्न दिहुदी लोक वदॆन्रिदुळुहवेकॆंदु
नन्नियलि नाव् नुडिदॆवदु तानिन्न चित्तकॆ वारदिरॆ रण
सन्निहित नागॆनुत तॆगॆदॆच्चनु दशाननन ॥ 16 ॥
अॆच्च वाणव नमर रिपु मुरियॆच्चु हूडिदनॊडनॆ लयस-
प्तार्चि वाणव बॊव्बिरिदु विरितॊडॆ सुरनिकर
किच्चु निलुकितु नभकॆ रविरथ दच्चुपरियंतमर रुट्टुद
नुच्चि विसुटरु वीळ्व बंबलु गिडिय धाळियलि ॥ 17 ॥
उरि छडाळिसि दिगुगणव खॊप्पॆरिसिदुदु कव्वॊगॆ विताळिसि
हॊरदुदब्रुज भवांडमंडल कठिण कर्परव
शरधि कूळ्गुदिगुदिदु दटवीचरर वलवारु हॊगॆदुदु
धरॆ धराधिप नंजिदनु दळ्ळुरिय धाळियलि ॥ 18 ॥
वीर केळॆ बळिक रावण वीर बॊव्बिरि दॆचवना रघु
वीरननु वीररिगॆ वीरनला रघुप्रभव
नीरमय वार्यितळॆ दिगंत समीर पथ निम्मय्य नॆसुगॆय
वारुणास्त्रकॆ सेडुगॊंडुदु सकल सुरनिकर ॥ 19 ॥

का बोझ क्यों लादना चाहता है ?" इस तरह रावण ने जवाब दिया। १५ "तो तेरी भलाई या बुराई जो कुछ भी हो, मेरे माने हुए भक्त की इच्छा पर निर्भर है —इस तरह दुनिया कहे बिना न रहेगी। अतः तुझे बचा लेने के उद्देश्य से सच्चाई की बात मैंने कही। उसे तुम पसंद नहीं कर रहे। अतः युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।" इस तरह कहते हुए राम ने रावण पर बाण चलाया। १६ राम के बाणों का प्रत्युत्तर देते उन्हें काट डालते हुए रावण ने तुरन्त प्रलयाग्नि रूपी अस्त्र को संधाना। यह देख भयभीत हो देवता भाग खड़े हुए। सूर्य के रथ के जुए तक आग आकाश में फैल गयी। ढेर सारी चिनगारियाँ जो छिटकने लगी तो देवताओं ने अपने पहने कपड़े उतारकर फेंक दिए। १७ ज्वालाएँ दिशि-दिशाओं में धधक उठीं; काला धुआँ मर्यादा भूल ब्रह्मांड तक व्याप गया। समुद्र खौलने लगा। (तब) वानरों का क्या हुआ, कौन जाने ? धरती धुएँ से भर गयी। इस भयानक आग के हमले के कारण राम भी काँप उठे। १८ सुनो, वीर कुमारो, वीर रावण ने सिंहनाद करते हुए आग्नेयास्त्र का प्रयोग किया। रघुवीर जो वीरों के वीर ठहरे। तुम्हारे पिताजी से तब जो वरुणास्त्र का प्रयोग हुआ तो धरती, अम्बर तथा दिशाएँ जलमय हो गयी। समस्त देवताओं ने भयभीत हो इस जल से

ओडन हूडिद नसुरपति कंगॆडॆ जगत्रय कल्पतम दु-
रगडद बाणव बारिसितु कत्तलॆय लवनितळ
मृड सरोजजरंजि हुट्टिस लॊडरिसिदरंबोज मित्रन
नडुगि मातळि धातुगॆट्टनु काणदरिभटन ॥ 20 ॥
सॆळॆदु मूडिगॆयिद रविकुल तिलक हुडिदनुष्ण किरणा
कलित रविमार्गणद नॆरॆदवु बिंब दिनमणिय
तलॆविलु गळिदिब्बरॊंदे चळकदलि सरळुगळ बिडॆवलु
गलह नडॆदुदु हगलिरुळु होरटॆगळ भ्रदलि ॥ 21 ॥
प्रास पट्टस परिघ मुद्गर पाश खेटक खड्गगळ बा-
णासनादि समस्त कैदुगळिद बॊब्बिरिदु
वासवाद्यर बॆदरिसलु भूमीश बळिकाक्षणदिनुग्र म-
हेश शरसंधानदलि बॊब्बिरिद निदिरिनलि ॥ 22 ॥
तरणिवंशजनंबु रजनी चरकदंबव गॆललु छलिगळु
गरुव गाढ भुजप्रताप कळापकैयॊडन
तिरुविनलि नॆलॆगॊळिसिदनु भीकर यमास्त्रवनमम निमिषकॆ
नॆरॆदु दंतक कोटि हॊगरिडुवधिक रोषदलि ॥ 23 ॥

बचने के लिए अपनी देह को सिकोड़ लिया। १९ तुरन्त राक्षसेश्वर ने प्रलयकालीन अँधेरा उत्पन्न करनेवाले अस्त्र को चलाया। वह देख तीनों लोक हैरान रह गये। सारे धरती को अँधेरे ने घेर लिया। शिवजी तथा ब्रह्माजी ने डरकर, ऐसी कोशिश की कि सूर्य किसी प्रकार उगे। देवेन्द्र का सारथी मातली शत्रुवीर को देख न पाने के कारण बहुत ही व्याकुल हुआ। २० रविकुलतिलक श्रीराम ने तरकस से खींचकर उष्ण किरणों से भरे सूर्यास्त्र को धनुप पर चढ़ाया। उस अस्त्र से सूरज की किरणों से युक्त असंख्य सूर्यबिम्ब पैदा हुए। दोनों वीरों ने दिमाग़ लड़ाकर धनुषों से एक ही प्रकार का हस्तकौशल प्रकट करते वाण जो चलाए, उससे दिन-रात आकाश भर में भारी युद्ध चला। २१ प्रास, पट्टिश, परिघायुध, मुद्गर, पाश, ढाल, धनुष आदि सभी प्रकार के आयुधों का प्रयोग करते रावण ने जब आक्रमण किया तो इन्द्रादि देवता घबरा गये। उसी क्षण राम ने उग्र महेश्वरास्त्र का प्रयोग करते हुए सिंहनाद किया। २२ रविकुल के राम के उस वाण ने समूचे राक्षससमूह को जीत लिया। तब दृढ़ चित्त वाले रावण ने अपने भुजबल की चतुराई दिखाते हुए भयानक यमास्त्र को धनुष पर चढ़ाया ही था तो उस अस्त्र से क्षणार्ध में भयानक क्रोध को प्रकट करनेवाले करोड़ों यमदेवता आ (युद्धस्थल में) जुटे। २३

अँच्चनवना कैयोडनॆ तॆगॆदॆच्चनवनिपनेन हेळ्वॆ
नच्चरियनद नॆरॆदु मॊऱॆव कृतांतकोटिगळ
विच्चि विसुट्टदु भाळनेत्रन निच्चटद निगितास्त्र वळिकॆदॆ
गिच्चिनसुरकुलेंद्र हूडिदनद्रि मार्गणव ।। 24 ।।
आरि बॊब्बिरिदॆच्चना रघुवीरननु मुसुकिदवु रस वृं-
दारका धीश्वरन मुसुकिद शैलकुलदंतॆ
भारि भुजबल नसुनगुत शतधार शरदलि धूळिगॆदरिद
नारॆ कपिबल बमरतति कोंडाडॆ गगनदलि ।। 25 ।।
वासि बिडदसुरेंद्र जयदभिलाषॆयलि भुजगास्त्रवनु बा-
णासनकॆ बरिसिदनु बहिर्मुखरु कळवळिसॆ
कीश पडॆ पडलिडॆ बळिक्कव नासुरदि बॊब्बिरिदु सर्पा-
धीशशयनन सम्मुखकॆ सुळिसिदनु मार्गणव ।। 26 ।।
नॆरॆदुदंब रबळयदलि रविगुरवणिप राहुविन बॊलु फू-
त्कारॆ फणाळिय कॆंदरिकॆय चूरिसुव नालगॆय
उरिय नुगुळुव घोरविषदुब्बरद हावुगळौकिदवु नि-
म्मरसननु भुजगेंद्र भूपण मुख्यसुरबलव ।। 27 ।।

रावण के धनुष से यमास्त्र छूटनेवाला ही था कि इतने में उसका प्रतिरोध करते हुए राम ने महेश्वरास्त्र का प्रयोग कर दिया। इस आश्चर्यकारक घटना का किन शब्दों में वर्णन करें? यमास्त्र से करोड़ों यम निकल आए तथा राम के महेश्वरास्त्र ने उन सभी यमदेवताओं का काम तमाम कर दिया। तब राक्षसेश्वर ने पर्वतास्त्र को धनुष पर चढ़ाया। २४ रावण ने घनघोर गर्जना करते राम पर पर्वतास्त्र चलाया। इन्द्र को घेर लेने वाले पर्वतों की भाँति उस अस्त्र ने राम को घेर लिया। भारी-भरकम भुजपराक्रमी रघुवीर ने मुस्कुराते हुए वज्रास्त्र चलाकर उस पर्वतास्त्र को चकनाचूर कर दिया। तब वानरसेना हर्ष के मारे किलकारियाँ भरने लगी। आकाशस्थित देवताओं ने राम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। २५ स्पर्धा से बाज न आते हुए राक्षसेश्वर ने विजय की अभिलाषा से सर्पास्त्र को धनुष पर चढ़ाया। यह देख देवता व्याकुल हुए। वानरसेना तितर-बितर हुई। तब उसने घनघोर गर्जना करते हुए उस सर्पास्त्र को सर्पों के अधिपति आदिशेष पर शयन करनेवाले श्रीराम पर चलाया। २६ तभी, सूर्यबिंब को निगल जाने के लिए जूझ पड़नेवाले राहु-सदृश फूत्कार करते फन उठाए जीभ निकाले चिनगारियाँ उगलते घोर विषसर्पों की भीड़ आकाश भर में जम गयी। तदनंतर सांपों ने तुम्हारे राजा राम तथा

गजबजिसुवर्न राम गरुड ध्वजनला स्मरिसिदनु विनता-
त्मजन नंबिन मोनॆयलुग्रिवरिर्दॆच्च नरिशरव
भुजगततियॆ नाडुदोहर भुजद हाविगॆ होंचिहोळकिदु
दजन कैसन्नॆयलि तिरुगितु मूडिगॆगॆ नृपन ॥ 28 ॥
सरळ हूडिदनसुरपति जलधरद मोळगिन मोहरदोळ-
ब्बरिसिदवु गब्बरिसिदवु सिडिलभ्र मंडलव
बॆरसिदवु मिंचुगळु सुरिदुदु वरुषधारा सारवगलकॆ
शिर गळॆनितनितरलि बोब्बिरिर्दॆच्चनवनिपन ॥ 29 ॥
लंबिसिद संवर्तमेघाडंबरद डोंबिगॆ समीरक
ळंबवनु कळुहिदनु कलिगळदेव नॆसुगॆयलि
अॆंबॆनेननु बीसिदुदु बळिकंबरद वळयदलि भुवन क-
दंबकंपित कलित कल्पाभीळ पवमान ॥ 30 ॥
मुरिद मुरुहिन मेलॆ हेवद होरिगॆ वाळर देव हूडिद
नोरहुमिगॆ मारीचनित्त महासुदरशनव
मरॆयदेनज हरर चित्तकॆ बॆरग बीरितु बळिक खळ बो-
ब्बिरिदु नॆनॆदनु तन्न मुन्निन सकल सैनिकव ॥ 31 ॥

सर्प-भूषणादि विविध देवताओं पर आक्रमण किया। २७ राम क्या घबराने वाले जीव हैं ? वह तो गरुड़ध्वज है न ? गरुड़ का स्मरण करते उसे बाण की नोक पर आह्वानित कर शत्रु के सर्पास्त्र के प्रतिरोध में गरुड़ास्त्र चलाया। पता नहीं सर्पास्त्र के साँपों की क्या दुर्गति हुई ? गरुड़ास्त्र ने अनजाने ही शिवजी की भुजा पर विराजित साँप पर जो आक्रमण करना चाहा तो यह देख ब्रह्माजी ने इशारे से जो समझाया तो गरुड़ास्त्र वहाँ से रवाना हो राम के तरकस में आ विराजा। २८ राक्षसराज ने मेघास्त्र का संधान किया। तभी बादल घिर आकर गड़गड़ाने लगे; बिजलियों ने आकाश को घेर लिया। सारी वानरसेना पर धाराकार वर्षा हुई। तभी रावण ने गरजकर वह मेघास्त्र राम पर चला दिया। २९ विस्तार के साथ फैलकर अपनी गड़गड़ाहट के डील-डौल को प्रकट कर रहे मेघों पर राम ने वायुवीय अस्त्र का प्रयोग किया। उस अस्त्र की महिमा का क्या वर्णन करें ? नभमंडल में लोकों को कँपा देनेवाली प्रलय-भयंकर प्रचंड हवा बही (झंझावात प्रवाहित हुआ)। ३० घमंड तोड़े जाने के कारण विद्वेष के बोझ को लादे, रावण ने मारीच से प्राप्त सत्वयुत महासुदर्शनास्त्र का अनुसंधान किया। यह देख ब्रह्माजी तथा शिवजी

वीर केळै कुशनें नेरॆदुदु भूरिबल धूम्राक्ष कुंभ न-
रारि युद्धोन्मत्त विद्युजिह्व नतिकाय
घोरबल मकराक्ष कलिजंभारिजितु मित्रघ्नमुख्य म-
हारथरु संदणिसिदरु शरसन्निवेशदलि ॥ 32 ॥
कलि निकुंभ त्रिशिर दुर्मद कुलिशदंष्ट्र सुपार्श्व खळ दो-
र्वळ महोदर वीर देवांतक विरूपाक्ष
प्रळयमुख दशमुख सहोदर रळविगॊंडब्बरिसि चा-
र्बल सहित वेडॆसि कॊंडुदु राघवेश्वरन ॥ 33 ॥
करिकरडि काड्कोण सूकर हरिशरभ शार्दूल वृक भी-
कर महोरग कदळि खड्ग प्रमुख कोळ्मृगद
नेरविगळ वाहनद रजनीचर कदंबक कोटिसंख्येय
लुरवणिसि कॆंदरिदुदु कैकॊंडट्टि कपिबलव ॥ 34 ॥
परिघ मुसल मुसुंडि मुद्गर परशु पट्टिस पिंडिवाळद
लुरवणिसि तॊडॆयलसि सॆल्लॆहद बल्लॆयद
शर गदा चक्राभिघातद सुरविरोधिगळॊदॆसॆय मो-
हरिसि मुसुकिदुदब्बरिसु वव्बरद हरॆगळलि ॥ 35 ॥

विस्मित हुए। तभी राक्षस ने गरजकर अपने पूर्व की (इसके पहले युद्ध में काम आयी) समस्त सेना का स्मरण कर लिया। ३१ हे वीर कुश, सुनो। महान बलशाली धूम्राक्ष, कुंभ, नरांतक, युद्धोन्मत्त, विद्युज्जिह्वा भयानक अतिकाय, बलवान मकरध्वज, वीर इन्द्रजित्, मित्रघ्न आदि प्रमुख महारथी उस अस्त्र के प्रदेश में (स्मरण करते ही) आकर जुटे (इकट्ठे हुए।) ३२ (उसी प्रकार) वीर निकुंभ, त्रिशिर, दुर्मद, वज्रदंष्ट्र, सुपार्श्व, महान बाहुबलशाली महोदर, वीर देवांतक, विरूपाक्ष, प्रलयमुख, रावण का भाई कुंभकर्ण, वग़ैरहों ने अपनी वीरता प्रकट करते गरजते हुए चतुरंग सेनासहित राघवेश्वर को घेर लिया। ३३ हाथी, रीछ, जंगली भैंसा, सूअर, शेर, शरभ, शेरनी, भेड़िया, भयानक कालसर्प, कदळि नामक हाथी, खड्गमृग, वग़ैरः हिंसक खूँखवार मृगों को अपना वाहन बनाए राक्षस-समूह ने करोड़ों की संख्या में आकर कपिसेना को पीटकर तितर-बितर कर दिया। ३४ परिघायुध, मूसल, मुसुंडी नामक अस्त्र, मुद्गर, फरसा, पट्टिश, भाला, बर्छा आदि धरे हुए राक्षसों ने एक ओर से आक्रमण किया। तलवार, त्रिशूल, भाला, बाण, गदा आदियों से पीटनेवाले राक्षसों ने डफ वग़ैर: ज़ोर-जोर से बजाते दूसरी ओर से जाकर घेर लिया। ३५ (युद्धभूमि में) जिस किसी भी तरह देखो रावण का रथ ही दिखायी पड़ता था।

आव मुखदलि नोडिद्धारे कलि रावणन रथविर्दुदवन स-
राव रोषावेश विर्दुदु रणदोळगलदलि
देव राघव कंडु शंका भावभारदला विभीषण
देव नाननवनु निरीक्षिसि शरणगितेंद ॥ 36 ॥

एनिदद्भुत हिंदे होंदिद सेने नेरेदिदे हुसियो नम्मी
वानररु कोंदुदु दशास्यन कोटि होमवनु
ई निशितबल हनुमनळि दुदुतान तथ्यवो मेणु हर चतु-
राननर वरवो विभीषण हेळु नमगेंद ॥ 37 ॥

अल्ले जगन्मय निन्न माया विलसकिदु वेग्गळवे केळुव
कोलसवेनिद्दुदु महामाया विनोदंगे
बळके नरर खलेकेनलु रघुतिलक वैष्णवमंत्र मुखद
ग्गळद बाणव हूडिदनु कोंडाडे देवगण ॥ 38 ॥

एन्नेनेंबेनु वैष्णवद महिमा निसर्ग प्रभेय शंख
ध्वान जडिदुदु जडितेयलि होळकिदवु चक्रचय
भानुतेजद लसिग दादि महानिशित शस्त्रास्त्रवा मा-
या निशाट कदंबकव कोंदरिदवु कडितदलि ॥ 39 ॥

युद्ध-रंगस्थली में सर्वत्र रोषवेष-परिपूर्ण रावण की गर्जना ही गर्जना सुनायी पड़ रही थी। यह सब देख संदेह-(शंका) भरे राघव देव ने विभीषण देव का मुखड़ा देखते अपने (उस) भक्त से इस प्रकार कहा। ३६ "यह चमत्कार (अद्भुत घटना) कैसे संभव हुआ ? इसके पहले मरी सारी सेना आ जुटी है। क्या यह झूठ है कि हमारी वानरसेना ने जो उनकी हत्या की ? दशकंठ के उस कोटि नामक मारण यज्ञ का हनुमान ने जो विध्वंस किया —इस महान बलशाली हनुमान का वह विध्वंसक कृत्य भी झूठ है ? अथवा शिवजी, ब्रह्माजी के वरदान का यह परिपाक है ? हे विभीषण, सचसच कहो।" इस प्रकार राम ने कहा। ३७ "हे जगद्व्यापी भगवन्, तुम्हारे माया-व्यापार (विलास) के लिए यह कौन सी बड़ी बात है ? माया-विनोदी जो आप ठहरे, इस प्रकार के प्रश्न करने की परिस्थिति में क्यों पड़े ? एक साधारण मनुष्य की तरह यह आचरण क्यों कर रहे है ?" इस प्रकार विभीषण के कहने पर रघुकुलश्रेष्ठ ने अत्यंत भयानक वैष्णवी मंत्र से संपन्न अस्त्र को धनुष पर चढ़ाया। यह देख देवताओं ने राम की बहुत-बहुत प्रशंसा की। ३८ वैष्णवमहिमा-सपन्न उस स्वाभाविक तेजो-राशि का किन शब्दों में वर्णन करूँ ? शंख बजने लगे; उसी क्षण सूर्य के प्रकाश से जगमगा रहे असंख्यात चक्र दृष्टिगोचर हुए। खड्ग, गदा आदि

तरुण केळ्लिलद मेलवनुरुतर क्रोधाग्नियलि सी-
वरिसि सॆळॆदनु सरसिजासन तनगॆ पूर्वदलि
शिरवनरिदरिदग्निगित्तासुरद वरदलि कॊट्टमोघद
शरव हूडिदनाडलॆनिंद्रादिगळु बॆदऱॆ ॥ 40 ॥
इळिदनजनद कंडुतदॆय बळिगॆ विप्राकारदलि के
ळॆलॆ पितामहपितनॆ पैतामह महाशरव
कळुहु तहनवनदऱ हृदयानलन नंदिसुवरॆ चराचर
चलिस लऱियदु चतुरतॆय चापदलि मॆऱॆयॆंद ॥ 41 ॥
सारि नीव् कॆलकॆनुत रिपुभट नारि बॊब्बिऱिदॆसुव मुष्टिय
पारमेष्ठि शराभि मुखकॆब्बिसिद नुरुशरव
घोर तर बाणासनद बलु नारियनु कडिदडिसि तोळ्गळ
तारॆगळ पथकॆत्ति तिरुगितु मत्तॆ मूडिगॆगॆ ॥ 42 ॥
मूडिदवु भुजभुजग हुत्तिनॊळीडिऱिदु पॊऱमडुववोलु स-
गाढबलनहॆ समर समयोचितवु तप्पल्ल

असुरों के पैने, महान शस्त्रास्त्रों को तथा मायावी राक्षस समूह को उस वैष्णवास्त्र ने काटकर गिरा दिया। ३९ हे युवा कुश, सुनो। तदनंतर रावण ने भयानक क्रोधाग्निस्वरूप धारण कर गरजते हुए, अपने हाथों अपना सिर काट जब यज्ञाग्नि में होम किया था तब ब्रह्माजी ने प्रसन्न होकर वरदानस्वरूप जो अमोघ अस्त्र दिया था उसे धनुष पर चढ़ाया। वह देख इन्द्रादि देवता भौचक्के रह गये। ४० यह देख ब्रह्माजी ब्राह्मण-रूप धारण कर अपने पिता विष्णु के अवतारी श्रीराम के यहाँ आकर "हे ब्रह्माजी के पिता सुनिए; रावण ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करना चाहता है; उस अस्त्र के हृदय में विराजमान अग्नि का उपशमन करना विश्व के जड़-चेतन, चराचर के लिए असाध्य है। किसी से संभव नहीं हो सकता। इसलिए उसके (रावण) के धनुष पर तेरी चतुराई (चालाकी) का प्रदर्शन कर।" इस प्रकार कहा। ४१ "तुम परे हट जाओ।" इस तरह कहते सिंहनाद करते, मूठ से खींचे, ताने ब्रह्मास्त्र के सम्मुख राम ने बाण चलाया। उस राम-बाण ने भयानक रावण के धनुष की डोरी को काट डालते, उसकी भुजाओं को आकाश में उड़ा देते पुनश्च वह बाण लौटकर राम के तरकस में प्रविष्ट हुआ। ४२ जैसे साँप बाँबी से बाहर निकलता है उसी प्रकार रावण की कटी भुजाएँ फिर निकल आयीं (पैदा हुईं)। "सचमुच तू बड़ा अद्भुत बलशाली है। तेरा यह समयोचित युद्ध ग़लत नहीं है। दोषारोपण बिना लगाए इसकी प्रशंसा कर सकते हैं।" इस

खोडिगाणिस दीतवनु कोंडाड बहुदेनुत सुरवंश वि-
भाड हॊगळलु हॊक्कनपरांबुधियनिन बळिक ।। 43 ।।
तीरिदवु हदिनेळु दिन जज्जार नडॆदुदु बिडदॆ कत्तलॆ
तीरिता दिनमणिय जननदोळॊडनॆ मरुदिवस
वीर तोरवॆय नरहरिगॆ रणधीर लंकापतिगॆ नडॆदुदु
भारि याहव बण्णिसलु तनगरिदलेयॆंद ।। 44 ।।

ऐवत्तॊंदनॆय संधि

सूचनॆ— राय रायरराय राघवराय रणरंगदलि रक्कस रायननु गॆलिदॊलिसि सलहिद नखिळ भुवनगळ ।

केळिदै कुश निम्म रघु भूपालकन सडगरद समर स-
लीलॆयनु रणकेळियनु लंकापुराधिपन
मेळविसिदवु रथवॆरडु निस्साळ दब्बरवमररसुरर
पाळयदलॊदरिदवु परुटव वाय्तु काळगद ।। 1 ।।
रथिक रिब्बर बॊब्बॆ बलु सारथि गळिब्बर चप्परणॆ सु-
प्रथित बलरुद्दंड कार्मुक दंड दब्बरणॆ

तरह राक्षसकुल-विनाशकारी राम जब कि (रावण की) प्रशंसा कर रहे थे तभी सूर्य पश्चिमी समुद्र में डूबा । ४३ राम-रावण के बीच के युद्ध (होते-होते) के सत्रह दिन बीते । रात के बीत जाने पर सूरज निकला । दूसरे (अगले) दिन वीर तोरवे के नरसिंह के अवतारी श्रीराम तथा रणधीर लंकेश्वर के बीच भारी भयानक युद्ध छिड़ा । उसका वर्णन असाध्य ही है । —इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा । ४४

इक्यावनवीं संधि

सूचना— राजाधिराज राघव राजा ने युद्ध की रंगस्थली में राक्षसराज रावण को जीतकर सभी को प्रसन्न करते हुए समस्त लोकों की रक्षा की ।

तुम्हारे रघुराम के संभ्रम (गौरव गरिमामयी) युद्धलीला तथा लंकेश्वर के युद्ध के तमाशे की वार्ता तो सुन ही रहे हो न, हे कुश ! दोनों वीरों के रथ युद्ध के लिए तैयार हो (आमने-सामने) आ डटे । देवताओं के तथा राक्षसों के युद्ध-शिविरों में भेरियाँ ज़ोर-ज़ोर से बजीं । राम-रावणों का यह युद्ध गतिशील हो आगे बढ़ फिर शुरू हुआ) । १ रथ प

रथ वेरड ठुत्ताळ गमनद पृथुळ चीत्कृति रभस तुंबितु
मथनद बुदिय सबुद किम्मिगिलेने जगत्त्रयव ॥ 2 ॥
मलेतु निंदवु तेरु तेजिय चळ चमत्कृति खुरद होय्लग
ळोळगे किडि खोप्परिसिदवु हळविगेय हरिगळिगे
कलहगळु कडुहागे कदनके निलुकि निंदरु रावणन मू-
दलिसिदनु मूलोक दल्लण नुग्र रोषदलि ॥ 3 ॥
राम केळिन्नेके सीतेय कामितवु कडु मरुळला सु-
त्राम कळुहिद तेर बलु हुंटेदु वेग्रतेयल
व्योमकेश विरिंचि मुख्य महामहिम सुरकोटिगळु सं-
ग्राम कभिमुखराद रणुविगे वगेव नल्लेंद ॥ 4 ॥
अेलवो रावण केळु शंकर सलिल जोद्भव मुख्य दिविजर
बलद भटने तान दारेंदरिदु दिल्लवल
हलवु तलेगळ होत्त कोरळिन ललग चाचिदु नासि कंगळ
निळुहि सीतेय तेगेव परियनु नोडु नीनेंद ॥ 5 ॥

आरूढ़ राम-रावणों की गर्जना, दोनों (तरफ़ के) साथियों की अपने-अपने घोड़ों की पीठ थपथपाने की ध्वनियाँ, सुप्रसिद्ध (पराकाष्ठा के) वीरों के प्रचंड धनुषों से निकल रहा टंकार शब्द, दोनो रथों के शीघ्र गति से दौड़ते समय हो रहे गड़गड़ाहट शब्द, —ये सारी ध्वनियाँ तथा शब्द समुद्र-मंथन के समय हो रहे शब्दों के दुगुने वेग से होते इनके कारण तीनों लोक भर गये। २ रथ प्रतिरोध करते डट गये; घोड़ों के खुरपुटों के रगड़ने के कारण चिनगारियाँ फूट निकलीं। ध्वज पर विराजमान कपियों तथा शेरों का भयानक कलह हुआ जो तीव्रतर होता गया। राम-रावण युद्ध के लिए बेचैन हो खड़े रहे। तीनों लोकों को भयभीत करनेवाले रावण ने क्रोध के मारे पागल होते राम को ताने पर ताने दिए। ३ "सुनो राम; अब क्यों सीता की आस लगाए बैठे हो? तू कहीं पागल तो नहीं हुआ? देवेन्द्र से भेजे गये रथ की सहायता के कारण इस तरह अपना दर्प दिखा रहे हो। शिवजी, ब्रह्माजी जैसे महामहिमामय व्यक्ति अर्थात् देवता मुझसे लड़ने की हिम्मत अगर करें तो मैं उनको तिनके के बराबर मानूँ।" इस तरह रावण ने राम पर ताने कसे। ४ "रे रावण क्या तू समझता है कि मैं शिवजी, ब्रह्माजी आदि प्रमुख देवताओं के बल के बूते पर खड़ा होनेवाला वीर हूँ? तूने अब तक यह समझने की कोशिश न की कि मैं कौन हूँ। अनेक सिरों को ढोनेवाले इस तेरे कंठ पर तलवार चलाकर तेरी नाकों को काटकर सीता को पाने के मेरे ढंग को देखते रहिए।" इस

बल्ले नोंप्पचि केळि हेंगुसि नल्लि माडिद बलुह हळेहुलु
विल्ल मुरि दुद नट्टि बड हारुवन वट्टेयलि
बिल्ल सेळेदुद ननुज नूकलु खुल्ल रोळ गाडिदुदु कागेय
हुल्लिनिंदंजिसिद बिरुदिन बिलुह तानेंद ॥ 6 ॥
आरु निन्नवो लॅळेय हरिणन नारचदलॅच्चु वरु नच्चिन
नारियनु नीगाडि हक्किय नुडिगॆ नडॆदिवर
सारि बड कोडगन कोंदी वीरतन वागुट्टु नगरद
कारिगॆय बंधिसिद बलुमॆय दारिगुटॆंद ॥ 7 ॥
हदॆ रावणियोब्ब निद्रॆगॆ संद खळन वनोब्ब नॆरॆ का-
मंदि मिक्किन वीररवरु भ्रमिग ळुळिदवरु
मुंदरियदवरळिदरा बगॆयिद नोनुब्बिदॆयला त-
न्निद बेरनुवागॆनुत तॆगॆदॆच्चनसुरेंद्र ॥ 8 ॥
अॅच्च शरवनु सवरि शिव शिव मुच्चु मरॆ येकि दकॆ नी जग-
दच्चरिय भटनल्लवे बलुहे तरदु नमगॆ

तरह कहते ताना देते हुए राम ने रावण के ताने का उत्तर दिया । ५ "मैं तुम्हारे बारे में कुछ-कुछ सुन चुका हूँ । स्त्री (ताड़का) पर अपनी वीरता अजमाने की, पुराना अकिंचन धनुष तोड़ने की, ग़रीब ब्राह्मण परशुराम का रास्ता रोक उसके धनुष को छीन लेने की, भाई भरत को जंगल में ढकेलने दुष्टों का साथ देने की, कौए पर तिनका चलाकर धमकाने की —वग़ैरह तुम्हारी वीरता के बड़प्पन की बातें मैं जानता हूँ।" इस तरह रावण ने कहा । ६ "कोमल हिरन पर बाण चलाने की तथा उसकी हत्या करने की वीरता तेरे सिवा और कौन दिखा सकता है ? प्राणप्यारी पत्नी को खोकर, पक्षी (जटायु) की बात सुनकर इन (सुग्रीवादियों) के पास जाकर, ग़रीब वानर (बाली) को मारकर वीरता प्रकट करने का पौरुष किसमें (तेरे सिवा) हो सकता है ? लंकानगरी की खाई (समुद्र) पर पुल बँधने की वीरता (तेरे सिवा) और किसमें हो सकती है ?" इस प्रकार रावण ने ताने कसे । ७ "रावणी (इन्द्रजित्) तो ठहरा एक डरपोक ! तिस पर वह नींद में अलसाया और एक राक्षस (कुंभकर्ण) ! अन्य वीर जो ठहरे निकम्मे । बचे-खुचे वीर सनकी तो थे ही । आगे की न जानते वे प्राण गँवा बैठे । यह सब देख तुम फूल गये हो न ? मेरी रीति ही निराली है । युद्ध के लिए तैयार हो जा ।" इस तरह कहते रावण ने बाण चलाया । ८ रावण के बाण को काट डालते हुए राम ने "शिव-शिव लुका-छिपी क्यों करें ! इसके लिए तो तुम त्रिलोकवीर जो ठहरे ! मुझमें

अच्च कैगं कणकॅ मणिमय दच्च गन्नडि येकॅ नम्मय
मच्चु गणॅगळ कलहवनु नी नोडु साकॅंद ॥ 9 ॥
अळुकिदनला कार्तवीर्यनु कलहदलि निनगंजि बालव
बॅळस लम्मदॆ बालि बदुकिद नमम पुरहरन
उळुहिदॆयला रजतशैलद तलॆ कॆळगु माडिदॆ विदेहन
कुलव सलहिदॆ बिलु दॆगॆयदति सुभट नहॆयॆंद ॥ 10 ॥
आदडॆयु तॊडकुवुदु तोटिय नॆंदॆ नगॆगॆडॆ नमगॆ निन्नॊ
पादि यवरा वल्ल वागि दशास्य कॆळॆलवो
आदियलि नी नॆम्म रघुवंशोदयद पार्थिव कुलेंद्रन
कादि कॊंदुदरिंद सॆणसिदॆ वैसॆ नावॆंद ॥ 11 ॥
अदरिनी नॆमगुरु विरोधस्पदनुना वा बळिय बवरद
लॊदगिदॆवु निन्नॊडनॆ समरोद्योग कॆळियलि
इदनु नी कैकॊंबुदॆनुतग्गद महा महोघास्त्रदलि तलॆ
युदुर लॆच्चनु बॊब्बिरिदु रघुपति दशाननन ॥ 12 ॥
दिविजा रायॆंदुब्बिदरु राघवन महिमॆगॆ कमल भव भव
रविरणा नंदैक सुख मयराद रभ्रदलि

इतना सामर्थ्य कहाँ ? हाथ के रत्न-जड़े कड़े को परखने को आइने की क्या ज़रूरत ? हमारे प्यारे-प्यारे बाणों की रुचि तो चख; बस है।" इस तरह कहा। ९ "कार्तवीर्यार्जुन युद्ध में तुम्हारे सामने आते ही डर के मारे काँप गया था न ? तुमसे भय खाता हुआ तुम्हारे सामने अपनी पूँछ बढ़ाने में असमर्थ हो वाली भाग गया; बापरे ! तूने तो शिवजी को जीवदान दिया था न ! कैलास को औंधा कर दिया। धनुष को न उठाकर विदेहकुल की लाज बचायी। सचमुच तू बड़ा बहादुर है।" इस तरह कहते राम ने रावण पर ताने कसे। १० "मुझमें तो यह सब तेरी जैसी वीरता-पौरुष आदि जो नहीं है। अतः तेरा मेरे साथ लड़ना (मेरे लिए) लज्जा की बात है। सुनो हे दशमुख; पूर्व में हमारे रघुवंश में उत्पन्न अनरण्य राजा की हत्या तूने युद्ध में की है; अतः मुझे तुझसे लड़ना पड़ रहा है।" इस प्रकार राम ने कहा। ११ "उक्त कारण से ही तेरी हमारी जानी दुश्मनी हो गयी। और इसी दुश्मनी के कारण ही मैं तुमसे युद्ध करने मजबूर हुआ हूँ तथा लड़ रहा हूँ। अतः यह लो" इस तरह कहते राघव ने सिंहनाद करते हुए अपना अमोघास्त्र इस प्रकार चलाया कि उसके सभी सिर कट पड़े। १२ राघव की महिमा देख देवता 'हो' कहकर हर्षोद्गार

अवतरिसिदवु मत्ते तलेगळु खव खविसु तट्टॆयलि कलि रा-
घव महीपति कंडु कैगल्लदलि बेरगाद ॥ 13 ॥
कद बदिसिदनु सुरप तलॆमत्तुदिसिदुद कंडकट मुंदरि
यदे वरूथव कळुहि कॆट्टॆवु कलह कवनिपन
तुदिगॆ गॆलुवी राघवंगिल्लदिरॆ कैहार दलि नम्मनु
सदॆयदिर नॆदळ्ळॆ वारितु सकल सुरनिकर ॥ 14 ॥
बॊब्बिरिदु तलॆ मत्ते रामन नब्बरिसिदवु कैगळस्त्रव
नॊब्बिसिद वंबोज संभूतांड मंडलव
हब्बिसिद वंबुगळु रक्तगळुब्बिदंगद घायविल्लद
रॊब्बरिल्लॆनॆ काणिसितु कंगळिगॆ नाकजर ॥ 15 ॥
अॆसुगॆ बलुहॆलॆ देव धुरदा लसिकॆ रघुकुल वीर रलि रं-
जिसुवदे तॊडु बाणवनु कडि खळन मस्तकव
विशिख वॆडॆ याडलि कॊरळ्गळ हसरदलि कैगुंद बेडें
दॆसगि मातळि दायॆनुत नूकिदनु तेजिगळ ॥ 16 ॥

कर बैठे। ब्रह्माजी तथा शिवजी अत्यंत प्रसन्न हुए। रावण के सिर फूटते कोंपलों की तरह फिर धड़ (मुंड) पर फूट पड़े (पैदा हुए) यह देख, वीर राघव राजा ने आश्चर्य से दाँतों तले अँगुली दबायी। १३ सिरों का इस प्रकार प्रकट होते देख देवेन्द्र व्याकुल हुए। "हाय, हाय ! भावी को न जानते राम के इस युद्ध में सहायता पहुँचाने (अपने) रथ को भेज दिया। अंत में अगर राम की विजय न हो तो यह रावण अपनी तलवार से मेरा सिर धड़ से अलग कर देगा। यह तो निश्चित है।" इस तरह सोचते सभी देवता घबराए। १४ पनपे हुए रावण के सिरों ने फिर गर्जना करते हुए राम को धमकाते ललकारा। उसके हाथों ने अस्त्र चलाए। सारे ब्रह्मांड भर में उसके बाण भर गये। वानरसेना में रक्त चू पड़ते घावों से विरहित देह वाले एक भी वानर देवताओं की नज़र में न आए (हर एक वानर के शरीर से रक्त चू पड़ रहा था)। १५ "रावण का बाण-प्रयोग ज़बर्दस्त है भगवन् ! युद्ध में थक जाना क्या रघुकुल के वीरों को शोभा देता है ? बाण चलाइये। असुर के सिरों को काटिए। रावण के सिरों की पंक्ति में आपके बाणों को सरपट दौड़ने दीजिए। हताश न हों।" इस तरह कह, चेताते हुए मातली ने घोड़ों को उकसाकर आगे बढ़ाया। १६ चिढ़े मातली के कथन के कारण राम के बाण सीधे जाकर राक्षसेश्वर के कंठ में

मसगि मातळि नुडियें शर संधिसिद वसुरेश्वरन कोरळिन
ससिनदलि बळिकसम संगर रंग नर्तनद
शशिमुखिय करतळद कंतुक विसर वेने कुणिदाडुतिर्दवु
पशुपति ब्रह्मामररु बेरगागे तले खळन ॥ 17 ॥
ओंदेरडु मूरेरडु मूरूरो ळोंदि देरडारेळु परिविडि
यिद लेंटोंबत्त रेणिकेय [हत्तु हन्नोंदु]
संदणिस लेंटेळु योळरो ळोंदुळियला रैदु नाल्क-
ल्लिद मूरॆरडोंदु शिरदलि शरके गुरियाद ॥ 18 ॥
कडित विक्किद विनकुलेंद्रन कडुनिशित शरवरिय कंधर
दडवियलि तले बीळुतिर्दवु कोटिसंख्येयलि
केंडेव तले खद्योत सरणिगे सिडिव तले मार्गणद मुखदिं
दुडिव तले गेंडदेरह काणॆनु कंद केळेंद ॥ 19 ॥
कोल मळे गरॆ वसुर रायन तोळु गळि गोम्मोम्मे मुंडद
लेळुव गणित तले गडित कोम्मोम्मे मार्गणव
बीळु गोंडु तिर्दनु महोग्रकराळ मस्तक हस्त चाप श-
राळि सहितुदुभविसु तिर्दवु कायदलि खळन ॥ 20 ॥

चुभ गये। (इस) असम युद्ध-रंगस्थली में नृत्य कर रही नर्तकी के हाथ के गेंदों की तरह रावण के (कटे) सिर मानों नृत्य कर रहे थे। इस विचित्रता को देखकर शिवजी, ब्रह्माजी आदि देवता दंग रह गये। १७ एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह —इस क्रम से (एक के बाद ग्यारह बार) रावण के सिर राम के चलाए बाणों के शिकार हुए। उसी प्रकार आठ, सात, छः, पाँच, चार, तीन, दो, एक —इस प्रकार अवरोहण-क्रम से रावण के सिरों को राम-बाण ने काट गिराया। १८ रविवंश के अधिपति के पैने बाण (रावण के) सिरों को काट गिराते गये। शत्रु के कंठ रूपी जंगल में करोड़ों की संख्या में कटे सिर आ-आकर गिरते जा रहे थे। नीचे गिर रहे सिर, सूर्यपथ में कटकर उड़ रहे सिर, बाण की नोक से छिन्न-विच्छिन्न हो रहे सिर —अबाध निरंतर गति से कट रहे देखे गये तथा लगातार कटते गये। सुनो कुश! इस तरह कहते वाल्मीकि ने वर्णन किया। १९ कभी-कभी बाणों की वर्षा कर रहे राक्षसेश्वर की भुजाओं को काटने, फिर कभी रावण के धड़ (मुंड) पर पनप रहे, पैदा हो रहे असंख्यात सिरों को काटने के लिए राम (लगातार) बाणों की झड़ी लगा देते थे। वे महान भयानक सिर तथा धनुर्बाण-सहित कटकर गिरे हाथ रावण के

गमनदलि हिंदिक्कि पुनरागमनदलि तिरिदिक्कि बाणवु
भ्रमिसिदवु काणदे शिरःखंडनव रक्कसन
समर साकिन्नेके लंकारमण नायुष्यावसानके
समय विल्लें दोदरिदवु किवियलि ककुत्स्थजन ॥ 21 ॥
तुंबिदवु कडिदलें गळलि ककुभांबरावनि चिगिदु सिडिदरु-
णांबुविन लुरे ननेंदु कॅपाय्तबुज जांडघट
अँबॆ नेननु बेसरिकें बळिकंबु गळिगंभोज नेत्तं
गिबु गॊंडुदु काणें मदिसुव तलॆगळिगॆ कडेय ॥ 22 ॥
बॊब्बिरिद वरिदलॆगळभ्रद हब्बुगॆय सुर कटकदलि कडि
दुब्बुदलें नुंगिदवु तरणिय तारकावळिय
ऒब्बिसिद बलु वलॆगळवु बंदुब्बरिसिदवु साकुसंगर
वुब्बदिरु नी नारु रण वारॆंदु राघवन ॥ 23 ॥
ऐसें मत्तेनेंदु रघुभूमिश बारिसि दधिकर्चिंतय
ला शरासन कंब हूडदें रिपु भटोत्तमन
आसुरद महदुग्र तपदायास मुखदलि पडॆद वरद वि-
लास कच्चरि वट्टु बॆरगागिदॆ निदिरिनलि ॥ 24 ॥

शरीर में पुनरपि पैदा हो पनपते ही जा रहे थे। २० राम के बाण चलते हुए रावण के सिर को काट डाले लौटते वक़्त भी उसी जगह फिर पनपे सिरों को काट डालते, फिर काट डालने के लिए रावण के सिरों को न पाकर इधर-उधर भटकने लगे। "अब यह युद्ध बन्द करो; लंकेश्वर की आयु-समाप्ति का समय यह नहीं" इस तरह चिल्ला-चिल्लाकर वे बाण राम के कान फूंक रहे थे। २१ दिशाएँ, आकाश, धरती आदि हर कहीं, कटे सिरों से पट गये। छिटके खून के छींटों के कारण सारा ब्रह्मांडमंडल लाल पड़ गया (हो गया)। आगे की घटना की वर्णना करने को शब्द कहाँ मिले ? राम तथा उनके बाण दोनों तंग आ गए। पुनःपुनः (बार-बार) उद्भव होनेवाले रावण के सिरों का अंत ही नहीं दीखता। २२ आकाश में आ जुटे देवतासमूह में राक्षस के कटे सिर जो गिरे थे वे शोर मचा रहे थे। फूले हुए सिरों ने सूरज तथा नक्षत्रों को निगल लिया। काटकर उड़ाए गये बड़े सिर मानों आकर राम को धमकाने लगे— "युद्ध यथेष्ट हुआ; अब बन्द करो। फूलो मत। तेरा और इस तेरे युद्ध का क्या प्रयोजन ! (तू कहाँ, तेरा यह युद्ध कहाँ ? दोनों का मेल है ही नहीं)।" २३ "हाय ! अब क्या करूँ ?" इस तरह सोचते रघुराम

घळिगॆ गळु हदिनारु नडॆदवु जलजसख नभ्युदय विडिद
ग्गळॆय रामन कदन काय्तवसान वसुररिपु
इळुहिदनु कोदंडवनु रथदॊळगॆ केतुस्तंभ मध्यव
बळलि नॆम्मिदु करॆदु नुडिदनु शक्र सारथिगॆ ॥ 25 ॥
मुरिदु नोडिद निंद्र सारथि सरळगमनव काणदॆलॆ रघु-
वरनॆ चित्तसहित वधॆगेककट कृपॆ निनगॆ
उरवणिसुतिवॆ तेजिगळु मुंबरिदु बरुतिदॆ बाणतति कॊ-
क्करिसुववनल्लिवनु कॊलॆ गॆलॆदेव केळॆंद ॥ 26 ॥
साकु मातळि मातु नावु समीक बाहिरररि शिरंगळ
नूकि बेसत्तवु शरंगळु सोल वॆमगाय्तु
ओकरिसिदळु मृत्युवी लोकैकवीरन नमगॆ तानि
न्नेकॆ जयदभिलाषॆ तिरुगिसु तेर कॊलकॆंद ॥ 27 ॥
तॆरळु नी निन्नेन माड्वॆ हिरिदु बळलिदॆ सारथित्वद
हरहिनलि रिपु विजय निष्कृतिगाव भाग्यरलॆ
वर विभीषण देव बा नमगॆरडु नालगॆ यादु दॆम्मनु
शरणु वॊक्करि गादु दपयश वॆंदना राम ॥ 28 ॥

अधिक चिंताग्रस्त हो, धनुष पर बाण चढ़ाना भूल, शत्रु वीर की भारी तपस्या से, परिश्रम कर पाए वरदान की महिमा देख आश्चर्य से दंग रह गये। २४ सूर्योदय हुए सोलह घटिकाएँ (घड़ियाँ) बीतीं। राम का श्रेष्ठ युद्ध मानों समाप्त-सा हुआ। रथ में धनुष रख दिया। थकावट के मारे ध्वजस्तंभ का सहारा लेते इन्द्र के सारथी मातलि को बुलाकर इस प्रकार कहा। २५ मातलि ने पीछे मुड़कर देखा कि राम के बाण छूट नहीं रहे हैं; तभी उसने कहा, "रघुवर! सुनिए। शत्रु की हत्या करने की जगह अनुकंपा क्योंकर पैदा हुई? (ये देखिए) घोड़े तो बड़े ही अधीर हैं; रावण के बाण आगे बढ़े आ रहे है। तुम्हारी हत्या करने से यह हिचकिचाएगा नहीं।" इस तरह कहा। २६ "बातें बन्द करो। मातलि! मैं युद्ध से बाज आया; मेरे बाण शत्रु के सिरों को काट-काटकर तंग आ गए। हमारी पराजय हुई। मृत्यु भी इस लोकैकवीर से घृणा कर उसे त्याग, चली गयी। अब विजय की (व्यर्थ) आशा से क्या प्रयोजन? रथ को पीछे मोड़ लो।" इस तरह राम ने कहा। २७ "मातलि! बस हो गया। तुम अब कर ही क्या सकते हो? सारथी का काम करते-करते काफ़ी थके भी हो। मैं तो ऐसा अभागा रहा कि शत्रुविजय को रोकने में असमर्थ रहा।

शरणु वॊगु निम्मण्ण देवन मरळि नम्मॊडनाडि कॆडबे
डॆरडु कडॆयलि कष्ट तरवॆम गाय्तु लोकदलि
हिरिदु बळलिदॆ होगॆनुत निजकरव मुगिदु दिनेंद्र तनुजन
करॆदु नुडिदनु मनद दुगुडद मधुरवचनदलि ॥ 29 ॥
वनदॊळाडिद भाषॆ नमगिंदिनलि निलु कडॆयाय्तु कॊलिसिदॆ
ननुवर दॊळळियासयलि निन्नय सहोदरन
मनदॊळॆम्मनु बरयदग्रज तनुज सहित समस्त कपि वा-
हिनि सहित किष्किंधॆ गभिमुखनागु होगॆंद ॥ 30 ॥
सेवॆयलि निन्निद बिट्टिन्नावनै हनुमंत मंत्रक-
ला विशेषज्ञरलि जगदॊळगारु सरि निनगॆ
भाविसिदिरे जांबवरॆ सद्भावदलि नीवुत्तरायिग
ळावु दैवविहीन रादॆवु तॆरळि नीवॆंद ॥ 31 ॥
तम्म बा जगवरिय लूणय नॆम्मितॆम्मन दाव मॊर्रॆय
लॆम्म मातृ त्रयद मुसुडनु गुरुग ळाननव

हे विभीषणदेव, इधर आइए। मेरी तो दो जीभें साबित हुईं। (दिये वचन से मुकर गया।) मेरे शरण में आनेवाले की कुख्याति हुई।" इस तरह राम ने (अपनी वेदना प्रकट करते हुए) कहा। २८ "अपने बड़े भाई की शरण जाइए। अब भी (ऐसी हालत में) मेरी संगत चाहते हुए न इधर के न उधर के होकर अपने को विनष्ट मत करो। इन लोक में हमारे लिए बहुत परिश्रम तुमने किया है। फलस्वरूप काफ़ी थके भी हो। अब जाइए।" इस तरह कहते राम ने विभीषण के हाथ जोड़े। फिर सुग्रीव को बुलाकर मधुर वचनों में अपनी मनो-वेदना को (श्रीराम ने) प्रकट किया। २९ "उस दिन जंगल में जो वचन मैंने दिया था आज वह यहाँ (इस तरह) निबट गया। (अपनी) क्षुद्र आशा के वशीभूत हो अपने भाई की हत्या करायी। अतः हमें गाली न देते हुए अपने भाई के बेटे को साथ ले, कपिसेना के साथ किष्किंधा लौट चलो।" इस प्रकार (राम ने) कहा। ३० "सेवा समर्पण करने में तुमसे बढ़कर कौन हो सकता है हनुमान ? श्रेष्ठ दर्जे की मंत्रालोचना के साथ सलाह देने में तुमसे बढ़कर बुद्धिमान है ही कहाँ ? हाँ, जाम्बवान्, सद्भावना के एकमेव अधिकारी आप ही हैं। हमीं तो अभागे जो रहे। अब आप लोग जाइए।" –इस तरह राम ने कहा। ३१ "भाई लक्ष्मण, हमारी न्यूनता दुनिया भर को मालूम हो गयी। अब किस मुँह से (क्या मुँह लेकर) हमारी तीन माताओं,

तम्मदिर वदनवनु काबॆंतु तम्म केळै तॆरळु नी नि-
न्नॆम्मॊडनॆ बळलिकॆय बळसदॆ पुरकॆ तॆरळॆंद ॥ 32 ॥
सीतॆयनु होगाडि नृपन ज्ञातवादनु काणॆनॆंबी
मात हेळिदु कूडि कॊंडिहु दग्रजानुजर
तात हॊगॆन्नय्य तन्नॊळु मातनाडदॆ तॆरळॆनलु सुर
सूत नगुतितॆंद नसुराराति गुचितदलि ॥ 33 ॥
देव नीनीत गळॊडनॆ माया विलासोक्तिगळ नुडिवी
भावकवु तन्नॊडनॆ कॊळ्ळदु कपटवेकिन्नु
आ विरंचि प्रमुख सकल सुरावळिग ळॊड गूडि पौलो
मीवरवनु बिन्नैसिदुद ना नरियॆ यॆनेयॆंद ॥ 34 ॥
हॊसब नीनिवर्गळिगॆ दिट नी हॊसबने तनगिनितुमिगॆ मा-
नुष चरित्र विधातृ पितनॆंदरिऽयॆनॆ तानु
बिसुट चापव तळॆदु को संधिसु शराळिय निनितऽॊळगी
यसुर नुळिदरॆ हॊगुवॆनग्नियनॆंदु गर्जिसिद ॥ 35 ॥

गुरुजनों तथा भाइयों से मिलें ? अतः, भाई मेरे, अब मेरा साथ देकर अधिक कष्ट न भुगतते सीधे अयोध्या चले जाओ।" इस तरह राम ने कहा। ३२ "सीता को खोकर, राम न जाने कहाँ लापता हो गये; वह किसी को दिखायी नही दिए। —इस तरह अपने भाइयों से कहते उनसे मेल-मिलाप बढ़ाकर सुख से जियो। जाओ, मेरे लाड़ले भाई अब चूँचाँ न करते चुपके से चले जाओ।" इस प्रकार (लक्ष्मण से) राम के कहने पर मातलि ने मुस्कुराते हुए राम से समयोचित कुछ वचन इस प्रकार कहे। ३३ भगवन्, ये जो आप मायाविलासपरिपूर्ण पांडित्य (चतुराई) की बातें इनसे कर रहे हैं वे हमारे सामने बेकार हैं। (उनका प्रभाव मुझ पर न होगा।) इसमें छल-प्रपंच क्यों ? पूर्व में उन ब्रह्मादि समस्त देवताओं को साथ लिये आकर देवेन्द्र ने आपसे जो प्रार्थना की थी —क्या वह (घटना) मैं भूल सकता हूँ। ३४ "सच है, आपका इनका परिचय नया है; लेकिन मैं तो नया नहीं हूँ। क्या मैं यह नहीं जानता कि आप मानव-रूप में अवतरित ब्रह्मा के जनक हैं ? फेंके हुए धनुष को हाथ में उठाइए; उस पर बाण चढ़ावें। तिस पर भी यह राक्षस जीवित बच जाय (निकल जाय) तो अग्नि-प्रवेश करूँगा" —इस तरह कहते मातलि सिंहनाद कर उठा। ३५ "हे देवेन्द्र के सारथी, न जाने तू किस भ्रमजाल में फँसा है। अगर मैं

मरुळला सुरसूत वाणीश्वरन पित तानादडिवनी
परिय जीविसुवर्न विवेक विचार विनितिल्ल
नररु नाव् साकिन्नु नम्मनु हिरिदु हॊगळलु बेडवॆनुतू-
र्वरॆगॆ दुम्मिक्किदनु दुगुडव हिडियलखिळजन ॥ 36 ॥
मनदॊळंजदिरॆलॆ रघुक्षितिजनप तॊडॆनस्त्रवनु बाणा-
सन महास्त्र विमुक्त हस्तर कूडॆ निन्नवर
अनुवरव ननुसरिसु बळिकॆम्मनुवरकॆ कलियागि निलु निलु-
वॆनु सुरावळि मॆच्चॆ निन्नॊडनॆंदनसुरेंद्र ॥ 37 ॥
इळॆगॆ रथदिदिळिद रघुकुल तिलकननु काणुत्त दिवदिं
दिळिदना समयदलि सरसिज भवननुज्ञॆयलि
कळशभवना मनुकुलेंद्रन बळिगॆ नरनाटकद नटणॆय
कॆलस कर लेसायितॆंदनु मंद हासदलि ॥ 38 ॥
बल्लॆवाव् निन्नवनु साकिन्नॆल्लि परियंतर सुराळिय
नळ्ळॆ बाद्रिसबेड बिडु नर नाटक स्थितिय
सल्ललित सलिलदलि कोपद पल्लवव तॊळॆयागमोक्तद
बल्लविकॆ यिदाचमन विधिविहित नागॆंद ॥ 39 ॥

ब्रह्माजी का पिता होऊँ तो क्या यह इस प्रकार जीवित रह जावे ! तुम्हारे ये वचन विवेकसम्मत नहीं हैं। हम केवल मनुष्य हैं। अब बस करो। व्यर्थ ही हमारी अत्यधिक प्रशंसा यों मत करो।" इस तरह कहते राम जो रथ से कूद पड़े, यह देख सभी दुखी हुए। ३६ "हे रघुराम, डरिए मत। जिनके हाथ में धनुर्बाण नहीं (निहत्थों), उन पर मैं अस्त्र प्रयोग नहीं करता। सबसे पहले अपनी तरफ़ के लोगों के झगड़े को निपट लो। उसके बाद वीर बनो तथा हमसे युद्ध मोल लो। तभी मैं आपसे इस प्रकार युद्ध करूँगा कि देवता भी वाहवाह करें।" इस प्रकार रावण ने कहा। ३७ रथ पर से धरती पर उतरे रघुकुलतिलक को देखते, ब्रह्माजी की आज्ञा से अगस्त्य महर्षि आकाश से उतरते मनुकुलेंद्र श्रीराम के पास आए। "यह मानवरूपधारी तुम्हारे इस नाटक का अभिनय बड़ा ही मनोहर है !" इस तरह कहते मुस्कुराते अगस्त्य ने कहा। ३८ "हम तुम्हें अच्छी तरह पहचानते हैं; यह अभिनय कब तक करते रहेंगे ? अब बस कीजिए। कहीं ऐसा न हो कि देवता थरथर काँपते रह जायँ। यह मानवीय लीला (मानुष)-विनोद यथेष्ट हुआ। अब इसे रोक दीजिए। परिशुद्ध जल से क्रोध रूपी चरण-कमल को धो डालिए। शास्त्रों के परिज्ञान से आचमन करके (युद्ध के लिए) कटिबद्ध हों।" इस प्रकार अगस्त्य ने

नेंनें हरिब्रह्मा महेश्वररनु सदानंदात्मकन नेंनें
नेंनेंदना त्रिगुणात्मकन निजभावशुद्धियलि
तनुज केळिळितंदना रवि मनुकुलेंद्रन बळिगें कोट्टनु
वनज भवभव विष्णु मंत्रित दिव्य मार्गणव ॥ 40 ॥
सरिदनिननंबरकें मुनिपति तिरुगिदनु दिवदत्त दिविजे-
श्वरन सारथि शाङ्र्गवनु बळिकित्त नरसंगें
सुररुघेयेंनें दिव्यरथ कुप्परिसिदनु चप्परिसि भुजवनु
हरिकटक हनुमंतदेवन बेंरळ बोंब्बयलि ॥ 41 ॥
लवनें केळै बलद भुजदलि भवनु वामद भुजदलंबुज
भवनु मुखदलि शिखि कृतांतनु कोपदुरु बेंयलि
पवननुच्छ्वासदलि शौर्योत्सवदलाद्याशक्ति मिक्किन
दिविजरंगोपांगदलि नेंलसिदरु राघवन ॥ 42 ॥
बळिक शाङ्र्गमहाधनुज्वलित मौर्विय नीवि बेंरळलि
लुळिवडद्दु बरसेंळेंदु हूडिदना महाशरव
अलगिनलि लयरुद्रनंबिन वळयदलि परमेष्टि बाणद
हिळुकिनलि हरिगरियलेंसेंदरु यम समीरणरु ॥ 43 ॥

कहा। ३९ "ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरस्वरूपी सदानंदस्वरूपी का स्मरण करें।" इस तरह कहे जाने पर राम ने परिशुद्ध भाव से त्रिगुणात्मक का स्मरण कर लिया। सुनो कुश ! तभी भगवान सूर्य मनुवंश के स्वामी के पास उतर आए तथा उन्होंने ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर-मंत्र से अभिमंत्रित दिव्यास्त्र प्रदान किया। ४० सूर्य-अस्त्र प्रदान कर आकाश को लौट चले। अगस्त्य मुनि भी आकाश की ओर रवाना हुए। देवेन्द्र के सारथी मातलि ने राम को 'शाङ्र्ग' नामक दिव्य धनुष दिया। देवता जय-जयकार करने लगे। वानर-सेना-सहित हनुमान तालियाँ पीटने लगे। तभी राम अपनी भुजाओं को फड़काते हुए दिव्य रथ पर आरूढ़ हुए। (उछलकर चढ़ गये।) ४१ सुनो लव ! राघव की दाहिनी भुजा में शिवजी; बायीं भुजा में ब्रह्मा; मुख में अग्नि; क्रोधावेग में यम (मृत्यु) देवता; उच्छ्वास में वायु; वीरोत्साह में आदिशक्ति तथा रहे-सहे देवता अन्य विभिन्न (राम के) अंगांगों में आ विराजमान हुए। ४२ तत्पश्चात् राम ने शाङ्र्ग नामक धनुष हाथ में उठा लिया तथा उसकी प्रज्वलित प्रत्यंचा (धनुष की डोरी) को खींचकर बड़ी चुस्ती के साथ बाण को उँगलियों में धरते हुए (खींचकर) उस दिव्यास्त्र का अनुसंधान (अभिमंत्रण) किया। उस महान अस्त्र के फाल में प्रलयकालीन रुद्र,

विश्वतो सुखनाद नमल सुविश्वलोचन नादनग्गद
विश्वतो भुजनाद नीक्षिसि नोडलिदिरिनलि
विश्वतक्रम नादनादनु विश्वमूरुति गगन शिखि पृष-
दश्वजल तत्वात्मनागिरे कंडनसुरेंद्र ॥ 44 ॥
कमलभव कोटिगळु गिरिजारमण कोटिगळिन सुरेश्वर
यम हुताशन वरुण वायुकुबेर कोटिगळु
हिमकिरण कोटिगळु निगमानिकर कोटिगळु देवो-
त्तमन सिरियंगदलि नेलसिरे कंडनसुरेंद्र ॥ 45 ॥
लोकगळु जनपद सुरौघा नीकगळु गिरितरु समुद्रव
नेक विविध द्वीप नाना जीव राशिगळु
सोकि कोंडिर्दमल परिपूर्णाकलित परदेवतेय मा-
याकृतिय विग्रहव निदिरिनलि कंडनसुरेंद्र ॥ 46 ॥
पड्डुविकार विहीननु सले षड्डुविवर्ग नितांतननु नड्डु-
कडेगळिल्लद जनन मरणादिगळु संधिसिद
नुडिगे निल्लद निगम निकरगळेडहि काणद तत्वमयदु-
ग्गडद दैवव कंडनिदिरिनला दशग्रीव ॥ 47 ॥

मध्य भाग में ब्रह्माजी, बाण की जड़ में विष्णु, पंखों में यम और वायु आ बसे। ४३ राम को सामने से देखने पर उसे सभी ओर से मुँह, आँखें, भुजाएँ, पैरों का होना दृग्गोचर होने के कारण वह (राम) विश्वतोमुख, विश्वलोचन, विश्वतोभुज, विश्वतोचरणसंपन्न होकर दिखायी पड़े। (राम का विश्वरूप प्रकट हुआ।) वह विश्वमूर्ति हो धरती, जल, अग्नि, वायु, आकाश नामक पंचभूतात्मक हो रावण को दिखायी पड़े। ४४ करोड़ों ब्रह्माजी, करोड़ों शिवजी, करोड़ों सूर्य, करोड़-करोड़ इन्द्र, यम, अग्नि, वरुण, वायु, कुबेर, करोड़ चंद्रमा, करोड़ वेद-शास्त्र उस देवोत्तम श्रीराम के संपदा भरे शरीर में निवास कर रहे हैं—ऐसी झांकी रावण ने देखी। ४५ लोक, देश, देवगण, पहाड़, पेड़, समुद्र, अन्यान्य द्वीप, कई प्रकार की जीव-राशियाँ आदियों से स्पर्शित परिशुद्ध परिपूर्ण श्रेष्ठातिश्रेष्ठ देवमाया से संपन्न मानव रूपी देह को रावण ने अपने सामने (राम में) देखा। ४६ षड्भावों के विकार-रहित, काम-क्रोधादि षड्वैरियों से दूर, मध्य-अंत्य-रहित, जन्म-मरणातीत, वर्णनातीत, वेदों की पहुँच के परे, तत्वात्मक उत्कट परमात्म स्वरूप को रावण ने (राम के रूप में) अपने सामने देखा। ४७ आनंददायक, सुखमय, परिशुद्ध ज्ञानस्वरूपी, देवताओं के सिर पर के मुकुटों के रत्नों की कांति से चमकते चरणों की नखप्रभा से

सुखमयन चिन्मयन वर्हिर्मुख किरीट मणिप्रभांचित
नखन परमेशन परापरपर परात्परन
शिखि सुधाकर सलिल संभव सखमयूख सहस्र तेजो
मुखन रघुराजेंद्रचंद्रन कंडनसुरेंद्र ॥ 48 ॥
निरुपमन निर्मत्सरन निर्मरणननु निश्चिंतननु नि-
र्धरिस बारद निगम तत्व रहस्य पंडितन
निरतिशयन निजोन्नतोन्नत भरित बहळ ब्रह्ममयनी-
श्वर घन स्वातंत्र्यदैवव कंडनसुरेंद्र ॥ 49 ॥
ईत नी गलि जनन मरणातीत मायामहिम सगुण स-
नातननु संदेह तानिन्नेकें पूर्वदलि
ईतनोडनें विरोधवेंम गभिजातवाद्दु जन्म मूरुरों
ळेतकंजिकें मुंदें मुक्तिय सूरें तनगेंद ॥ 50 ॥
घोरतर नानामुखंगळ सैरणेय योनिगळलुदिसिद्दु
तीरदिह भवभवद दुःख परंपरावृतद
पारविल्लद कष्टतर संसार शरधिय दांटिसुव घन-
तारक ब्रह्मवनु मनदलि नेनेंदनसुरेंद्र ॥ 51 ॥

संपन्न परम प्रभु, श्रेष्ठों में अत्यन्त श्रेष्ठ, जिनसे उन्नत और कुछ भी हो ही नहीं सकता, हज़ारों अग्नि-चन्द्रमा-सूर्यों की कांति-किरणों से अधिक तेजस्वी मुखड़े से दमकते-चमकते रघुराजेन्द्रचन्द्र श्रीराम को राक्षसेश्वर ने देखा। ४८ उपमातीत, द्वेष-रहित, मृत्युरहित, निश्चित (चिंता-रहित), साधारण व्यक्तियों से निर्धारित होने मे असमर्थ रहस्यमय वेदों की निचोड़ को (तत्वों को) जानने में समर्थ ज्ञानी, उत्कटता-विरहित एवं उत्तमोत्तम (अत्यंत श्रेष्ठ) ब्रह्ममय, ईश्वरस्वरूपी होते हुए भी जो सर्वतंत्र स्वतन्त्र भगवत्-स्वरूपी हैं —ऐसे परब्रह्मस्वरूपी भगवान (राम) को रावण ने देखा। ४९ (इस प्रकार के परमब्रह्मस्वरूपी राम को देख) रावण ने सोचा— "यह महामहिमामय विभूति (श्रीराम) तो जन्म-मृत्यु-विरहित है; उत्तम श्रेष्ठ गुणों से संपन्न सनातन पुरुष है; इसमें अब कोई शंका न रही। पूर्व में इसके साथ वैरत्व होने के कारण (शत्रु-रूप में) तीन जन्म बिताने पड़े। अब आशंका किस बात की ? भविष्य में, मेरे लिए मोक्ष-सुख प्रतीक्षा कर रहा है। ५० अत्यंत भयानक, वेदना-परिपूर्ण, अन्यान्य रूपों की स्त्रियों के गर्भो से जन्मधारण कर, कभी समाप्त न होनेवाले दुःख-परम्पराओं से परिपूर्ण जन्म-मरण के फंदे में फँसकर, किनारा ही दिखायी न पड़नेवाले संसार रूपी सागर के पार जो पहुँचानेवाले मोक्षदायक

तानदेत्तलु जनक तनुजा मानिनिय देत्तलु चतुर्मुख
सूनु सनकादिगळनुज्ञेय फल विदीगवल
श्रीनृसिंह नृसिंहमाया मानुषव्यापारसार कृ-
पानिधियें शरणेनुत बिलुदनिदोरि बोब्बिरिद ॥ 52 ॥
नोडिदनु रावणननुचितव कूडिकोंडु नयोक्तियलि मा-
ताडिदनु केळेले दशानन मूरुलोकदलि
रूढिसिद भटनीन कामुक राडिकेय बिडु निन्नतम्मन
कूडि बदुकभयप्रदवु निनगेंदना राम ॥ 53 ॥
कोंडेय कडि दंदोम्मे नाचिके गोंडिसि दाजिय लोम्मे नगरव
कंडेय लेच्चंदोम्मे काय्देनु मूरु बारियलि
पोडवि मेच्चलु नम्म शरणन बिडेय कोसुग छलद बलुहनु
बिडु वृथा यमनाकरणे गोळगाग बेडेंद ॥ 54 ॥
शरणुवोगु साकेत पुरवर दरसुतन निनगुत्तरद कुरु
धरणि परियंतुळियें लंकाराज्य दरसुतन

परमात्मस्वरूप है, उसका रावण मन ही मन चिंतन करने लगा। ५१
"मैं कहाँ, वह जानकी कहाँ? (अजगजांतर है— उसकी बराबरी मैं कर ही नहीं सकता।) ब्रह्म (मानस)-पुत्र सनकादि महर्षियों की आज्ञा (शाप) अब फलप्रद होने लगी है। —ऐसा लग रहा है। श्रीनृसिंह के रूप में अवतार धारण कर मायापरिपूर्ण मानव-चरित के अनुकरण करनेवाले हे करुणानिधि भगवन्! यह लो तुम्हारी शरण में आया हूँ।" इस तरह कहते रावण ने धनुष की डोरी खींचते सिंहनाद किया। ५२
रावण के औचित्य-रहित आचरण को देख राम ने सौजन्यपूर्ण शब्दों में कहा— "हे दशानन, सुनो तो सही। तुम तीनों लोकों में प्रसिद्ध वीर जो ठहरे। यह कामवासनापरिपूर्ण स्वैर जीवन त्याग दो। अपने भाई (विभीषण) के साथ सुखी जीवन बिताओ। मैं तुम्हें अभय (हस्त) प्रदान करता हूँ।" —इस प्रकार राम ने कहा। ५३ "एक बार तुम्हारा छत्र कटने पर, दूसरी बार युद्ध में निर्लज्ज बनाए जाने पर, फिर तीसरी बार इस प्रकार बाण चलाकर कि तुम सीधे लंका नगरी में जा गिरो —इस तरह अपने भक्त पर के दाक्षिण्य के कारण इस जगत को प्रसन्न करने के लिए तीन बार तुम्हें प्राणदान दिया। तुम्हारी यह जिद्द जो है, त्याग दो। व्यर्थ ही मृत्यु मुख की पुकार का शिकार न बनो।" इस प्रकार राम ने कहा। ५४ "तुम मेरी शरण आओ। उत्तर कुरुभूमि तक का अयोध्या का राज्याधिकार छोड़, बचे समूचे लंका राज्याधिकार को

अॆरडु मातॆमगिल्ल संधिगॆ हरियमॊम्मन कळुहिदावु-
त्तरवु तप्पदु रक्षिसुवॆनजनळिवु परियंत ॥ 55 ॥
शरणु वॊगुवव नल्ल मुंदण सिरिय वयसुवनल्ल सीतॆय
तिरुगि बिडुववनल्ल मति वेर्रिल्ल मानसद
करुण निनगिन्नेकॆ निन्नय परिय बल्लॆनु विडु महास्त्रव
मरण कॊरळिनॊळादडीश्वर भजकनल्लॆंद ॥ 56 ॥
अॆलॆ विभीषणदेव मूर्खर तिलकनिव निन्नंतरंगद
नॆलॆय हेळै कॊललॊ कॊल वेडवॊ तवाग्रजन
तिळियलिब्बरि गॊब्बळॆ ताय् सलॆ करुळगळु मरुगि दिरदळ
बळव हेळॆन्नाणॆ विडॆयव नुडिय बेडॆंद ॥ 57 ॥
मरळि मरळिन्नॆल्लि परियंतर विचारवु जीय छलदु-
ब्बरद पौरुष वण्णनदु नम्मण्णनॆंदॆब
करुण बेडग्रजरु पितृगळु गुरुगळागियॆ देवराव् डि-
गरिगरनु सरणॆयनु हिडियदॆ वेग माडॆंद ॥ 58 ॥

तुम्हारे हवाले कर देता हूँ। मैं बात का धनी हूँ, कभी वचन भ्रष्ट नहीं हुआ। तुम्हारे यहाँ संधि की शर्तें लेकर आनेवाले अंगद के द्वारा जो बातें मैंने कहला भेजी थीं, उनका पूरी तरह पालन करूँगा। ब्रह्म के अंत्य तक तुम्हारी रक्षा की जिम्मेदारी मेरी रही। इस तरह राम ने कहा। ५५ तुम्हारी शरण (में) कभी नहीं आऊँगा; भावी की भव्य संपदा की चाह भी मुझे नहीं; सीता को विमुक्त भी न करूँगा। मैं दूसरा विचार जानता ही नहीं। व्यर्थ ही तुम मुझ पर यों द्रवित हो दया प्रकट कर रहे हो। मैं तुम्हारी रीत भलीभाँति जानता हूँ। अपने महान अस्त्र का प्रयोग करो। मेरे कंठ में अगर मृत्यु धावा करे तो मैं ईश्वर (शिवजी) भक्त ही नहीं। समझे ?" इस तरह रावण ने कहा। ५६ "हे विभीषणदेव, यह तुम्हारा भाई मूर्खों का सिरमौर रहा। अब तुम्हीं बताओ —इसकी हत्या करूँ या प्राणदान दूँ ? सोच-विचार कर देखें तो तुम दोनों एक माँ की संतान हो। इसकी हत्या से वह देवी चटपटाए (व्याकुल हुए) बिना न रहेगी। सौगंध मेरी। इस तुम्हारे भाई (बड़े भाई) की हत्या करूँ या नहीं। बिन संकोच के कह दो।" इस प्रकार राम ने विभीषण से पूछा। ५७ "बार-बार कहाँ तक सोच-विचार करते रहोगे— भगवन। मेरे भाई का पौरुष तो भारी जिद्द का पौरुष है। 'मेरा भाई है' —यों सोचकर दया बरतने की जरूरत नहीं। भाई, पितृवृन्द —ये गुरु गौरवपूर्ण हैं— फिर भी

अँनलु शरणन नंबुगेय निज मनद मति गति परिणमिसियि-
न्निनगॆ दोषवु बारदलॆ सुमनसर साक्षियलि
अँनुत चरणालीढदलि सिंजिनिगॆ सरळनु तॊडिसि बरसॆळॆ
दनिमिषांतक निदिरिनलि बॊब्बिरिदना राम ॥ 59 ॥
आव भटनॆंदरियला मूदेवरॊळ गादखिळ लयदधि
देवरुगळॊत्तागि बरलिरलखिळ मंत्रास्त्र
तीवि तॊट्टॆसॆ कल्प परियंताव भयबेडॆंब वचनव
ना विभीषण देव नरिदिर्तॆंद नरसंगॆ ॥ 60 ॥
अरस चित्तैसंबिका पति यरस नोलग दॊळगॆ नंदी-
श्वरन नणकिसुतिट्टनिव जंभीर फलदिंद
उरव तागलु शापवित्तनु मरण वक्षस्थळदलुरॆ गो-
चरिस लॆंददरिंद बाणव नुरकॆ बॆससॆंद ॥ 61 ॥
अँब शरणन नुडिगॆ हूडिद नंबनुरकरि भटन रवि शशि
बिंब हॊक्कळिसिदवु सुळिदनु मेलॆ पवमान

हम (मैं) भगवन के (आपके) सेवक हैं। अतः मुझसे पूछने में क्या धरा है? आप अपना कार्य शीघ्र करें।" इस तरह विभीषण ने कहा। ५८ विभीषण की बात सुनकर, अपने प्रिय भक्त के मन की दृढ़ भावना को ताड़कर राम को अत्यंत हर्ष हुआ। "अब दोषभाजन मैं न रहा; इसके लिए देवता ही साक्षी (गवाह) हैं।" इस तरह कहते दाहिना पैर सामने रोपकर, बाँया घुटना टेककर खड़े हो धनुष की डोरी पर अस्त्र चढ़ाकर उसे खींचते हुए राक्षसेश्वर के सम्मुख सिंहनाद किया। ५९ तभी विभीषणदेव ने राम को सम्बोधित करते हुए यों कहा— रावण कितना भयानक परले सिरे का वीर है—इस पर सोचें तो मालूम होगा। वे ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर—एक साथ इकट्ठे हों, प्रलय के अभिमानी देवता बन एक साथ आक्रमण करें तथा समस्त मंत्रास्त्रों का प्रयोग करें तो भी एक कल्पान्त तक उनसे डरने की ज़रूरत नहीं—इस प्रकार का वरदान उसे प्राप्त है। ६० "हे राजन, ध्यान देकर सुनें। पार्वतीरमण (शिवजी) की सभा में (एक बार) रावण ने नंदीश्वर की हँसी-मजाक़ उड़ाते हुए नींबू उठाकर दे मारा। वह उसकी छाती में जाकर टकराया तो उसने क्रुद्ध हो उसे शाप दिया कि 'तेरी मृत्यु हृदय में'। इसलिए आप अपने महान बाण को उसके हृदय का निशाना बनाकर छोड़ें।" इस प्रकार विभीषण ने कहा। ६१ भक्त की बातों में आकर राम ने शत्रुवीर के हृदय (छाती) को निशाना बनाकर अस्त्र को (धनुष पर) चढ़ाया। सूर्य तथा चन्द्र के बिंब फूल गये; तिन पर वायु का

अंबुनिधि लळिमसगि तमरनितंबिनिय रारतियनमरक-
दंब कुसुमांजलिय लिर्दुदु गगन मार्गदलि ॥ 62 ॥
अरिद ननुजनु राघवंगॆच्चरिसि नुडिदिदिगितव तप्पदु
हरिवु तनगॆनुतिर्दनात्म ज्ञानदुदयदलि
मरॆय माया मनुजननु कट्टॆरक दिदॆवॆ यिक्कदच्युत
नरिकॆयि दशकंठ नीक्षिसु तिर्द निदिरिनलि ॥ 63 ॥
हळुवरद मंडियलि वासुगि यळुकदवोलाशा गजंगळु
बळुकद वोलिळॆ नोयदवोलंबुधिय तळमळलु
तुळुकद वोलस्त्रवनु कॆन्नॆगॆ सॆळॆदु मत्ती मातनॆंदनु
कॊलॆ गॊडंबट्टॆ विचारिसु मनव नीनॆंद ॥ 64 ॥
मनव नॆरॆ निर्धरिसिदॆनु नी मनुजनल्लॆंबुद विवेकद
नॆनहिनिंदा नरिदॆनंजॆनु तनुपरिच्युतिगॆ
निनगॆ दयॆ बेडिन्नु दिटरंजनॆय नुडि साकॆनलु तप्पदॆ
जनवरियॆ हॊरगावु पापकॆ तप्पदेयॆंद ॥ 65 ॥

संचार (ज़ोरदार) हुआ; समुद्र भी वेग से फूल उठा। आकाशस्थित देवता-स्त्रियाँ आरती का थाल धरे खड़ी रहीं। देवता अंजलि में फूल भरे धरे इन्तिज़ार में (मौक़े के) खड़े रहे। ६२ अपने भाई विभीषण से राघव की दी गयी चेतावनी का अर्थ (मतलब) रावण ताड़ गया। अब मृत्यु अनिवार्य है —इस प्रकार के ज्ञानोदय के कारण रावण सब कुछ समझ गये। माया से अभिभूत मानवरूपी परमात्मा को रावण अत्यंत प्रीति से टकटकी लगाए देखते ही जा रहे थे कि यही अच्युत हैं। इस प्रकार ज्ञानोदय से रावण निहारते जा रहे थे। ६३ राम ने उस (महान) अस्त्र को कान तक खींचते हुए धरती पर हल्के ढंग से ऐसे पैर रोपा कि वासुकि को कष्ट न हो, दिग्गजों को डाँवाँडोल न होना पड़े, धरती को किसी प्रकार वेदना न उठानी पड़े, समुद्रतल की रेत ऊपर की ओर न उछले, फिर एक वार रावण से पूछा— "रावण मृत्यु स्वीकार है न ? अच्छी तरह सोच-विचार कर कहो।" ६४ "मैंने मन में निर्धार कर लिया है। तू मानव नहीं यह भी मैंने विवेक से समझ लिया है। इस देह के परित्याग में मुझे किसी प्रकार का आतंक नहीं। अब मुझ पर (तुम्हारी) रत्ती भर भी दया की आवश्यकता नहीं। यह विनोद की वार्ता बन्द कीजिए।" इस प्रकार रावण के कहने पर "यह सच है न ? लोग जानते हैं कि मैं पाप-भाजन नहीं हूँ। अब तो मेरी कोई ग़लती तो नहीं न ?" इस तरह राम ने कहा। ६५ "बिलकुल ठीक है; बाण छोड़ दें; व्यर्थ के वार्तालाप से

तप्पदेसु मातेके निनगिन्नोप्पिसदे छलपदव नी दिट
तप्पुवातने कळुहु नम्मेडे गम्मुवरे शरव
ओप्पवनु बळिकिट्टु कोयेने निप्पसरदलि बोब्बिरिदु बिडे
चप्परिसिदुदु देवगणतति हरुषदुब्बिनलि ॥ 66 ॥
सरळ गमनक जांड मंडल मोरेवु तिर्दुदु सकल सुरमुनि
वर कदंबक जय जयेनुतिर्दुदु नभोग्रदलि
नर चरित्रद विष्णु विश्वंभर नमोयेनु तिर्दरमररु
तरु चररु बोब्बिरिवु तिर्दरु हरुष दुब्बिनलि ॥ 67 ॥
उरवणिसुव महास्त्र कंबिन सरिय सुरिदनु मुट्टविसि बरे
बेरसि होय्दनु खड्ग खर्पर परशु परिघदलि
उरके मोहलु मुष्टियिदब्बरिसि तिविदनु सुरनरोरग
धरणियलि दशशिरनवोलु धुर धीर रारेंद ॥ 68 ॥
तडेववे तारेगळु तरणिय नडसि नुंगुव राहुवनु कडि
दुडिदु हाय्कितु सरळु रस्थळवनु दशाननन
होडेद वमरर भेरि रामन मुडिय लोक्कवु कुसुम वमरर
मडदियरु सुळिदेत्तिदरु जय मंगळारतिय ॥ 69 ॥

क्या प्रयोजन ? मेरा दृढ़ निर्धार तुम्हें सौंप ही दिया है। तुम कभी ग़लत मार्ग अपना नहीं सकते। सामर्थ्य हो तो अपना बाण चलाओ। तब उसके बाद स्वीकृति प्राप्त करो।" इस तरह कहने पर जोर से सिंहनाद करते हुए बाण छोड़ दिया। तब देवतासमूह हर्ष के मारे फूले न समाते चहचहाने लगा। ६६ राम-बाण के छूटते ही सारा ब्रह्मांड निनाद कर उठा। सारे देवमुनि-समूह ने आकाश में जुटकर जय-जयकार किया। "हे मानव-चरित के विष्णु, जगद्रक्षक, तुम्हें प्रणाम है।" इस तरह देवता कह रहे थे। वानर खुशी के मारे किलकारियाँ भर रहे थे। ६७ अपनी ओर अत्यंत वेग से आ रहे उस महान् अस्त्र पर रावण ने बाणों की वर्षा की। उस वर्षा की परवाह न करते वह (अस्त्र) जब नज़दीक आया तो खड्ग, खर्पर, फरसा तथा परिघायुध से उस पर आघात किया। तभी वह अस्त्र जब रावण की छाती पर वार कर बैठा तो रावण ने उसे मुक्कों से पीटा। देव, मानव तथा उरगों में रावण-सदृश युद्धवीर कहाँ मिले ? —इस तरह वाल्मीकि ने वर्णन किया। ६८ टूट पड़कर आक्रमण करनेवाले राहु को क्या नक्षत्र रोक सकते हैं ? (उस) अस्त्र ने रावण की छाती को विदीर्ण कर डाला। तभी देवताओं ने नगाड़े बजाए; राम के सिर पर फूलों की वर्षा की; देवता-स्त्रियों ने आकर

हरिगें विश्वंभरगें सर्वेश्वरगें सनकाद्यखिळ मुनि हृ-
त्सरसिरुह पीठगें सदानंदैक रूपंगें
परम मंगळ मूर्ति गानत सुर किरीट भृतांघ्रिकमलगें
सुरसतियरोलिर्देत्तिदरु जय मंगळारतिय ॥ 70 ॥
जय जगत्पति जय जनार्दन जय जगद्रक्षक जयाच्युत
जय जयासुरवंश मदमातंग पंचास्य
जय जगत्रय सुर नरोरग भयविभंजनयनुत सुर ना-
रियरु सुळिसिदरिदिरिनलि जयमंगळारतिय ॥ 71 ॥
पाडिदरु गंधर्व युवतिय राडिदरु जंभारि दिविजर
गाडिकातिय रुदित तूर्यत्रय निनाददलि
कूडॆ सुरमागदॆयरुरॆ कॊंडाडिदरु कडॆगंगळलि जल
मूडिदवु रामंगॆ रामन शरणुगतिकंगॆ ॥ 72 ॥
बिसुटळवनी देवि नॆरॆ बारिसिद नॆत्तिय हॊरॆयनुसुर्गळु
पसरिसिद वहिराय कूरम दिग्गजावळिय
वसु मरुद्गण रुद्रगण मुनिविसर मुख्य समस्त दिविज
प्रसर विद्दुदु नॊसलकैगळ जयनिनाददलि ॥ 73 ॥

राम के विजय की मंगलारती उतारी। ६९ श्रीहरि की, जगद्रक्षक की, सर्वेश्वर की, समस्त मुनिजनों के हृदयकमलनिवासी की, सदा आनंद-स्वरूपी की, परम मंगलमूर्ति की, प्रणाम करनेवाले देवताओं के मुकुटों को अपने चरणकमलों में धारण करनेवाले की विजय हो —इस तरह गुणगान करते देवता-स्त्रियों ने मंगलारती उतारी। ७० 'हे जगत्पति! तेरी जय हो; हे जनार्दन! तेरी जय हो; हे जगद्रक्षक! तेरी जय हो; हे अच्युत! तेरी जय हो; राक्षसवंश रूपी मदमत्त हाथी के लिए सिंह रूपी (हे राम!) तेरी जय हो; स्वर्ग-मर्त्य-पाताल—तीनों लोकों के हे भयनिबारक! तेरी जय हो।' —इस प्रकार देवलोक की नारियों ने राम का जय-जयकार करते मंगलारती उतारी। ७१ गंधर्व-स्त्रियों से गाने गाये गये, देवेन्द्र की सुर-सुन्दरियों ने गान, नृत्य तथा वाद्यों के समूह के साथ नृत्याभिनय भी किया। साथ ही साथ देवलोक की स्तुति-पाठकियों ने राम का गुणगान किया। राम तथा उसके शरणागत विभीषण की आँखों की कोर में अश्रु उमड़ पड़े। ७२ भूदेवी ने अपने माथे पर के अधिक हुए बोझ को उतार दिया। आदिशेष, कूर्म (कछुआ) तथा दिग्गजों ने मुक्ति का निःश्वास भरा। (लंबी साँस ली।) अष्टवसु, मरुद्गण, एकादश रुद्र, मुनिजन—इन सभी के साथ समस्त देवताओं ने (सिर पर) हाथ जोड़े जय-जयकार

देव जयजय सकल देवर देव जयजय देवरक्षक
देव जयजय जय जनार्दन जय जगन्नाथ
देव लक्ष्मीकांत वर राजीवलोचन राघवेश्वर
रावणांतक राम जय जय येंदुदमरगण ॥ 74 ॥
कुशनें केळै मुगुळुनगॆ लंबिसिद वदनद हॊगरु जगुळद
नसुमुगिद लोचनद थळथळिसुव कदंपुगळ
पसरिसिद तोळुगळ वक्त्रदलॊसर्व श्रोणितलिप्त कायद
लसुरपति रंजिसिदना रणरंगमध्यदलि ॥ 75 ॥
सुरर बिरुदिन हाहॆगळ सुरुचिरद मणिव्याकीर्ण चामी
करद चरणाभरण शोभॆय पादपल्लवद
सुरगि संभृत शोण पटबंधुरद कटितट दर्धतनु गो-
चरिसि तोलॆसुव मरुळ्गळु सुत्तु वळयदलि ॥ 76 ॥
लवनॆं केळै भ्रातृमोहद लवलविकॆ यॊंदॆसॆय लाळ्दन
हवणनरियद भयद बगॆयंजिकॆय दॊंदॆसॆय
कवलु गॊंडिरॆ चित्तदलि राघव महीपतियरिदु करप-
ल्लवद संज्ञॆय माडॆ मूर्छित नाद नसुरेंद्र ॥ 77 ॥

किया। ७३ हे देव ! तेरी जय हो; समस्त देवाधिदेवों के देव ! तेरी जय हो। देवताओं की रक्षा करनेवाले देव ! तेरी जय हो। हे जनार्दन ! तेरी जय हो। हे जगन्नाथ ! तेरी जय हो। हे देव लक्ष्मीकांत, राजीव-लोचन, राघवेश्वर, रावणांतक, हे राम ! तेरी जय हो। —इस तरह कहते देवताओं ने श्रीराम का जयघोष किया। ७४ सुनो कुश, मुस्कुराते हुए मुख की कांति न खोए, अधमूंदी आँखोंवाले, चमकते गालोंवाले, मुंह से टपकते खून के रक्त-रंजित शरीर के रावण भुजाएँ फैलाए जो युद्धरंगस्थली-मध्य पड़े थे —बड़े ही शोभायमान दीखते थे। ७५ देवताओं से दिये गये ओहदों की पुतलियों से सजे, हीरे-जड़े पैरों के कड़ों से शोभायमान सुन्दर चरणों के, कटार को कमर में कसे लाल कपड़े में खोंसे (पड़े) रावण के शरीर के आधे हिस्से को भूतगण घेरे सांत्वना दे रहे थे। ७६ सुनो लव ! सहोदर प्रेम से भरे उत्साह में पगे भाव से युक्त तथा प्रभु राम के मन की भावना को ताड़ने में असमर्थ भयपूर्ण भाव के कारण विभीषण का मन दुविधा से डाँवाँडोल था। इस स्थिति को पहचानकर रघुराय ने (श्रीराम ने) हाथ से जो इशारा किया तो विभीषण मूर्च्छित हो गिर पड़े। ७७ होश में आने पर विभीषण बाण से कटे भाई के देह से वह रहे रक्तजल

चेतरिसि कोंडॆद्दु ज्येष्ठ भ्रातृविन शरभिन्नतनु सं-
भूत शोणित वारियॊळु हॊरळिदनु बाय्बिडुत
भूत नाथ वरप्रसाद ख्यात हा चतुरास्य नित्य वि-
नूतनाशीर्वचन रचनोत्तुंग हायॆंद ॥ 78 ॥
वितत समर भुजप्रतापोन्नत सदागति सखन झळवड
गिर्ते विरूक्षण तीक्ष्ण तेजस्फूर्ति मुद्रिसितॆ
क्षिति पतित्वद वैभवालंकृतियु नॆग्गितॆ निज जयश्री
सतिय बॆतलॆ होयिते हायॆंदनसुरेंद्र ॥ 79 ॥
अण्ण नुडियै समरजय मुक्कण्ण नुडियै सकल सुररॆळॆ
वॆण्णुगळ केकर विलासप्रथित माताडै
हॆण्णि कॆट्टॆ हगॆतनव परवॆण्णिगोसुग भगिनि बित्तिद
बण्णिगॆय बॆळवदलि हायॆंद नसुरेंद्र ॥ 80 ॥
कुलकॆ कंटक नादॆनवनी तळकॆ भारकनादॆ नरकद
कुळिगॆ नायक नादॆ जगद जनाप्र वादकद
ज्वलनकधिकृत नादॆ हॊत्तॆनु जलजसंभव कल्प परियं-
तलस दपकीर्तियनु गतियॆनगेनु हेळॆंद ॥ 81 ॥

में रोते-बिलखते लोटने, लुढ़कने लगे। "हे परमेश्वर के वरदान से अनुगृहीत मेरे भाई, प्रतिदिन, ब्रह्मा से आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हे उन्नत पुरुष ! हाय, हाय ! यह क्या हुआ ?" इस तरह कहते विलाप करने लगे। ७८ "अपने प्रचंड भुजबल की महान वीरता युद्ध में प्रभावी ढंग से जो प्रकट कर रहे थे —ऐसी प्रखर-सूर्य-तेजस्विता हर हमेशा के लिए बुझ गयी ? उग्र तीक्ष्ण तेज से दमकते प्रकाश को धरती के स्वामित्व वैभवालंकार ने हर-हमेशा के लिए ग्रस लिया ? मेरे बड़े भैया की विजयलक्ष्मी की माँग का सिंदूर हर-हमेशा के लिए गायब हो गया ? हाय हाय ! यह कैसा अनर्थ हुआ !" इस तरह कहते विभीषण व्याकुल हुए। ७९ "मेरे (बड़े) भैया, बोलो न ! हे युद्धविजयी त्रिनेत्री चुप क्यों हो ? बोलो तो सही। समस्त देव-युवतियों की तिरछी नजर से आकर्षित होनेवाले हे प्रसिद्ध वीर! उत्तर दो न ? परस्त्री के लिए बहन की चिकनी-चुपड़ी बातों में आकर कामना-वशीभूत हो वैर को मोल लेकर अपना सत्यानाश कर लिया न ?" इस प्रकार विभीषण ने कहा। ८० "मैं तो कुल का काँटा बना; धरती के लिए बोझ बना; नरक के गर्त मे गिरने में प्रमुख रहा; जगत के लोगों के लोकापवाद रूपी अग्नि का ग्रास बना; ब्रह्माजी की आयु तक बुरा नाम मोल लेनेवाला बना। (मेरी कुख्याति ब्रह्माजी तक पहुँची)। अब

सिरिय मेलण लोलु पतियलि धुरद मुख्रदिदग्रजन सं-
हरणवनु माडिसिदनेंबी बगॆ ककुत्स्थजन
करणदलि लेसागि नॆलॆगॊळ दिरदु कॆट्टॆनु कॆट्टॆ निहपर
वॆरडरलि गतियावुदॆनगॆलॆयण्ण हेळॆंद ॥ 82 ॥
मरुळुतन निनगुंटॆ केळॆवर विभीषणदेव जननकॆ
मरण निज सौख्यक्कॆ दुःख विदोग लनुसारि
तरुणतन वार्धिकक्कॆ महदैश्वरिय विषदाश्रयकॆ नीनिद
करुहनागरि विगॆनुत संतैसिदनु राम ॥ 83 ॥
आरु नी नावारु नम्मय नारियॆत्तलु विपिनवॆत्त कु-
बेर सहभवनॆत्त हॊम्मृगवॆत्त वानरर
सेरुपडि ता नॆत्त दैव प्रेरणयदै सल्लदिदु ना
वारु माडुवदल्ल वंगीकरण बेकॆंद ॥ 84 ॥
बिडु वृथा शोकाग्नि दाहदॊ ळॊडल बीळिसबेड नम्मी
नुडियननुवर्तिसु चिदात्म विवेक बुद्धियलि

मेरी क्या गति होगी ?" इस तरह कहते विभीषण प्रलाप करने लगा। ८१ "संपत्ति के मोह के कारण (अपने) भैया की युद्ध में हत्या करायी —इस प्रकार की भावना राम के मन में घर किए बिना न रहेगी। हाय, मैं बरबाद हुआ। हे मेरे भैया ! इह तथा पर दोनों लोकों में मेरा स्थान कहाँ ? कहो तो सही।" इस तरह विभीषण ने कहा। ८२ "न जाने तू किस (प्रकार की) भ्रांति में है विभीषण ! मैं जो कुछ कहता हूँ सुनो। जातस्य मरणं ध्रुवम् (पैदा होना जितना सत्य है उतना ही सत्य मृत्यु भी) सुख के पीछे दुःख सुनिश्चित है। यौवन बुढ़ापे का मार्ग है। अनगिनत संपदा विपत्ति के लिए निमंत्रण है। इस ज्ञान को प्राप्त करने की योग्यता प्राप्त करो विभीषण !" इस तरह समझाते राम ने विभीषण को सांत्वना दी। ८३ "तू कौन, मैं कौन ? (तेरा-मेरा कहाँ का रिश्ता ?) मेरी पत्नी कहाँ ? वह जंगल कहाँ ? (क्या वह वनवास के योग्य थी ?) यह रावण कहाँ ? वह स्वर्ण-मृग कहाँ ? वानरों से स्नेह-सम्बन्ध कैसा ? (मानव-वानर कैसे सम्बन्धी हैं ?) यह सब विधि की लीला के सिवा और कुछ नहीं। हम करता-धरता यह सब झूठ है। तब—यह मेरा है —यह मुझसे (मेरे कारण) हुआ —इस प्रकार के तथ्य को क्यों स्वीकार करें ?" इस प्रकार राम ने कहा। ८४ "व्यर्थ ही इस प्रकार दुःख की आग में अपने शरीर को मत जलाओ विभीषण ! मेरे कथन के अनुसार आत्मज्ञान की विवेक-बुद्धि का अनुसरण करते हुए आचरण करो। अब

नडसु साकिन्नुत्तर क्रियॆ विडिव कृत्यवनॆंदु कंबनि
दॊरॆदु संतैसिदनु शरणागतननाा राम ॥ 85 ॥
कॆळिरै कोसल धरित्री पालकन तनुजरिर पुरदॊळु
गाळु मॆळाय्तिक्किकदवु हॊंगदगळरमनॆय
लाळविडिगॆ हाय्किदवु पुरदॆळु सुत्तिन कोटॆगळ मुख
शालॆयलि बॆदराय्तु नगरद कॆरि कॆरियलि ॥ 86 ॥
अरुहिदरु दूतरु दशास्यन मरणवनु मंडोदरिगॆ का-
हुरतॆ कोळाहळिसि तंतःपुर दॊळगलदलि
सुर नरोरग दनुज रजनीचर युवतियरु लक्कसंख्यॆय
नॆरवियलि रणमंडलकॆ नडॆतंदळाकांतॆ ॥ 87 ॥
आवघन संपदद लधिकनो रावणनु नॆरॆदिर्दुदहि नर
देव नारियरॆणिसॆ षोडश लक्क संख्यॆयलि
साविगॊसुग सॆरितॊ कॆळै विभाकरकुलज बंदुदु
तीवि नॆलनगलदलि मंडोदरिय बळसिनलि ॥ 88 ॥
बिडुमुडिय हाहारवद बॆळगिडुव कंगळलुगुव वारिय
निडुसरद रोदनद मिडुकुव पल्लवाधरद
ऎंडबलकॆ बळुकुव कॊडळ्गळ पॊडर्व पीन पयोधरद कॊल
सिडिद मॆलुदिनखिळ युवतियरैदिदरु रणव ॥ 89 ॥

जाकर अपने इस बड़े भाई का उत्तर-क्रिया-कर्म (मरणोत्तर पिंड प्रदान) आदि करो।" इस तरह कहते विभीषण के आँसू पोंछते राम ने अपने भक्त को सांत्वना दी। ८५ हे कोसलराजा के पुत्र, सुनो। लंकानगरी में अस्त-व्यस्तता का पदार्पण हुआ। राजमहल के सोने (स्वर्ण) के दरवाजों को बन्द कर दिया गया। लंकानगरी के सात परिघों (प्राकारों) से युक्त (निर्मित) किलों के महाद्वारों को अर्गलाओं से जकड़ दिया गया। नगर की गली-गली में घबराहट फैल गयी। ८६ दूतों ने जाकर रावण की मृत्युवार्ता मंदोदरी को दी। तभी अंतःपुर (रनिवास) में हर कही उद्वेगपूर्ण कोलाहल मच गया। लाखों की संख्या में देव, मानव, उरग, दैत्य, राक्षस युवतियों को साथ लिये मंदोदरी युद्धरंगस्थली में पधारीं। ८७ रावण कितना बड़ा भाग्यशाली है! सोलह लाख की संख्या में नाग, मानव तथा देवता-स्त्रियाँ आ जुटीं। 'मृत्यु के लिए आयीं हों' इस रीति से मंदोदरी को घेरकर वे स्त्रियाँ चारों ओर फैली हुई (बीच में मंदोदरी को लिये) आ पहुँची। ८८ सिर के जूड़े खोले, बिखरे बालों की वे स्त्रियाँ 'हाय तोबा' मचाती हुई, चीखती-चिल्लाती हुई,

झणरवद नूपुरद मणिकंकणद हारद कदपनर्णवा
मणिय मुत्तिन तिलक बैतलॅगळ विलासगळ
कुणिकॅगळ मुरिदिडुत वीरर कणियें हा सौभाग्य चूडा
मणियें हायें दीदरुतै दिद रात्मवल्लभन ॥ 90 ॥
बिसिलु तागद गाळि सोंकद घसणिकॅय काल्नडॅगळिल्लद
शशिमुखिय रैदिदरु गाडिय गाळु मेळिनलि
बसुरु बाय्गळ हॅाय् गुळिन निस्पसरदाक्रंदनद नारी
बिसर बळसितु वीर धीरोद्धत दशाननन ॥ 91 ॥
सुरपजितु कलि कुंभकर्णा सुर नरांतक कुंभदीर्घो-
दर महोदर धूम्रनयन निकुंभ राक्षसर
तरुणियरु मित्रज्ञ नंगनॅयरु विरूपाक्ष प्रमुख कुव-
रर वधूजन बळसिदुदु तम्तम्म वल्लभर ॥ 92 ॥
हरिदु हारव कर्णपूरव नुरुबि कंकण मुद्रिकॅय मुडि
वॅरॅय मुत्तिन बैतलॅय मूगुतिय नीडाडि
अरसिदरु हरि हरिदु तम्तम्मॅरॅयरनु नडॅतंदु तनुविन
हरुक संधिसि मयतनुजॅ तॅागॅदप्पिदळु पतिय ॥ 93 ॥

कांतिमान आँखों से अश्रुधारा बहाती हुई, शोर मचाती रोती हुई, काँपते होठों वाली, दाएँ-बाएँ लचकते कंठोंवाली, चढ़ाव-उतार से युक्त उभरी छातीवाली, आँचल परे सरकी हुई (रावण की) सभी युवतियाँ युद्धस्थली में आ पहुँचीं। ८९ पैंजनियों के झणत्कार से युक्त, हीरे के कंगन, हार, बिंदियाँ, मोती के तिलक तथा माँग के आभूषणों से शोभायमान, चंचल (तिरछी) कटाक्षों के कारण शोभा पा रहीं युवतियाँ —"हाय हाय! वीरों के रत्न! हाय! हमारे सौभाग्य चूड़ामणि (जूड़े की मणि)!" इस तरह विलाप करती वे युवतियाँ अपने पति के पास पहुँचीं। ९० हवा के झोंके और धूप ने जिनका कभी स्पर्श ही नही किया, कठोर धरती पर जिनके चरण कभी पड़े ही नहीं—ऐसी चन्द्रमुखी नाज़-नखरों से युक्त सुन्दर युवतियाँ अपना पेट पीटती, गाल पीटती जोर-शोर से रोती हुई वीर धीर बड़े गर्वीले रावण के नजदीक आ पहुँचीं। ९१ इन्द्रजित्, वीर कुंभकर्ण, नरांतक, कुंभ, दीर्घोदर, महोदर, धूम्रनयन, निकुंभ आदि राक्षसों की पत्नियाँ, मित्रज्ञ की पत्नियाँ तथा विरूपाक्ष आदि रावण के पुत्रों की रानियाँ अपने-अपने पतियों के शरीरों को घेरकर खड़ी हो गयीं। ९२ हारों को उखाड़कर फेंक डालते, कानों के आभूषणों को खींचकर फेंकते, हाथ के कंगन, अँगूठी, जूड़े के चन्द्राभरण, मोती के माँग के आभूषण,

तोळुगळु निजपतिय बन्निन मेलॆ सेरिसि वामदंगद
मेलॆ कुळ्ळिदु दिट्टिसिदळाननव निजपतिय
ढाळिसुव गंडस्थळद रण धूळियनु तॊडॆ तॊडॆदु संगर
केळियॆनाय्तॆंदु बॆसगॊंडळु निजेश्वरन ॥ 94 ॥
वीर नुडियै विबुध कुलसंहार नुडियै जयवधूमणि
हार नुडियै हरिधनंजय यम निशाचरर
वारिधीश्वर वायु धनद पुरारि मुख्य सुपर्वराज्य
श्रीरमण नुडियॆंदु मुंडाडिदळु निजपतिय ॥ 95 ॥
कडॆगणिसि नोडजन निदिरलि मृडननीक्षिसु मुनिय वीणॆय
नुडिय नालिसु नोडु लास्यव नूर्वशि सतिय
ऒडबलद शक्रादि देवर जडिव कंचुकिगळ निवारिसु
कॊडुधनव हॊगळिकॆयवरिगॆंदबलॆ हलुबिदळु ॥ 96 ॥
कळुहु वीळयवित्तु ताराबलव हेळिद सुरगुरुवनं
जुळियलसुराचार्यननु मन्निसु सुधाकरन
ललित करदर्पणव नीक्षिसु मलयपवनन कैय हॊंब-
ट्टलिन गंधव धरिसु नॊसलिनॊळॆंदळा कांतॆ ॥ 97 ॥

बिंदियाँ तथा नाक के मोती को निकाल फेंकते उन युवतियों ने दौड़-धूपकर अपने-अपने पतियों को (शवों को) ढूंढ़ना शुरू किया। मंदोदरी दौड़ती हाँफती आकर अपने पति के छिन्न-विच्छिन्न टुकड़ों को जोड़कर उनसे लिपट गयी। ९३ पति की पीठ से अपनी भुजाओं को लपेटकर, बायीं गोद में बैठी मंदोदरी पति के मुख को निहारने लगी। चमकते गालों-कपोलों पर लिपटी धूल को झाड़-पोंछकर "युद्धक्रीड़ा का क्या हुआ ?" इस तरह मंदोदरी पति से पूछ बैठी। ९४ "हे वीर, बोलो न ! देवताओं के संहारक स्वामी ! जवाब दीजिए न ! विजयलक्ष्मी के रत्नहार बोलो तो सही। इन्द्र, अग्नि, यम, नैर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईश्वर आदि देवताओं के राज्यलक्ष्मी के अधिपति हे मेरे स्वामी ! जवाब दीजिए न !" इस तरह कहती मंदोदरी पति को पुचकारने लगी। ९५ "ब्रह्माजी को उपेक्षा की दृष्टि से देखो। सामने शिवजी हैं —उन्हें देखो। नारदजी की वीणा की ध्वनि की ओर ध्यान दो। उर्वशी का लास्य नृत्य देखो। दायें-बायें में उपस्थित देवताओं को भयभीत करनेवाले कंचुकियों को रोक दो। चारण-भाटों को पुरस्कार दे दो।" इस प्रकार कहते मंदोदरी प्रलाप करने लगी। ९६ "तुम्हारे तारावल को बतानेवाले देवगुरु ब्रहस्पत्याचार्य को भिजवा दो। असुरगुरु शुक्राचार्य को हाथ

कुसुमबाणन काव्यदभिनव रसव नालिसु वर वसंतन
कुसुमवनु मुडि रतिय नयनभ्रूविलासवनु
ओसेंदु नोडुकटाक्ष दिदीक्षिसु जयंतन धनपतनयन
सिसुप रूप कळाप रचनेगे माडु मानसव ॥ 98 ॥
ओलगकें धूम्राक्ष कुंभ कराळ देवांतक सुपार्श्वक
मेलें विद्युन्मालि विद्युज्जिह्व मकराक्ष
कालरिपु कलिकुंभकर्ण विशाल बलनतिकाय मुख्य वि-
लोल कुंडल भटरु बंदिहरीक्षिसेंडबलन ॥ 99 ॥
बंदहनें नोडरस मोहद कंदनिद्राराति केळ् नडें
तंदिहनें नेच्चिन नरांतक कलि विरूपाक्ष
इंदिवर नुपचरिसु बवरकें बंद भटराहवकें बेंसने
नेंदु नुडि तन्नोडनें मातनु येंदु हलुबिदळु ॥ 100 ॥
अेंदु गंडन नबलें बहुविधदिंद हलुबिद बळिक मूर्छेगे
संदु मैमरेदिर्दे ळोंदरेघळिगे परियंत
कंद केळै कलि विभीषण निंदु निललारदे विलोचन
दिंद सुरिवश्रुगळ लोउगिद निळेगे मूर्छेयलि ॥ 101 ॥

जोड़कर प्रणाम करो। चन्द्र के हाथों में के सुन्दर आईने में अपने मुख को देख लीजिए। मलय मारुत के हाथ में के सोने के थाल में धरे चंदन से माथे पर तिलक धारण करें।" इस प्रकार मंदोदरी ने कहा। ९७ मन्मथ से विरचित नूतन काव्य के रस-निष्पत्ति पर ग़ौर करो। वसंत ऋतु से प्रेषित फूलों को जूड़े में गूंथ लो। रतिदेवी की आँखों तथा भौंहों की सुषमा बड़े प्यार से निहार लो। इन्द्र के पुत्र जयंत तथा कुबेर का पुत्र नलकूबर—इन पर अपनी तिरछी नज़र दौड़ाओ। अपने सुन्दर रूप की सजावट पर ध्यान दो। ९८ आपकी राजसभा में धूम्राक्ष, कुंभ, भयानक देवांतक, सुपार्श्व, विद्युन्माली, विद्युज्जिह्व, मकराक्ष, यमदेवता के शत्रु वीर कुंभकर्ण, महान बलशाली अतिकाय—आदि अधिकारी लक्षणों के द्योतक कर्णकुंडलों को धारण करनेवाले वीराधिवीर पधारे हैं। दाएँ-बाएँ पार्श्व में खड़े उनको ओर निहार भर लीजिए। ९९ देखो राजन्, तुम्हारे प्यारे बेटे इन्द्रजित् पधारे हैं। तुम्हारे प्यारे बेटे नरान्तक, विरूपाक्ष भी (वह देखो) पधारे है। युद्ध में उपस्थित होने आए हुए वीर आपको आज्ञा की प्रतीक्षा में खड़े हैं। उनका आदरातिथ्य करो। मुझसे बातें करो।" —इस तरह कहते मंदोदरी रोने-पीटने लगी। १०० इस प्रकार पति को सम्बोधित कर रोने-कलपने के बाद मंदोदरी एकाध घड़ी तक

सतियनॆवदलि देव नी वसुमतिय भारव कळॆदु शरणा-
गतन सलहिदॆ संदुददु सुलभदलि निनगॆनगॆ
गतिय दावुदु देव हेळॆंदतिशयद शोकदलि सीता
पतिय सिरि चरणारविंदकॆ चाचिदळु हणॆय ॥ 102 ॥
ऎत्ति मंडोदरिय हणॆयनुदात्त करुणासिंधु नुडिदनु
हॊत्तुकॊंडनु भारवनु निन्नातनपशयद
सत्त नन्यायदलि नीनदकत्तु माडुवुदेनु बिडु नॆल
कॊत्ति कळॆचिंतॆयनु चित्तदॊळॆंदना राम ॥ 103 ॥
निनगॆ हेळुवुदेनु निन्नय नॆनहु तानज्ञानमोहक
दनुभवकॆ बल्लबलॆ यॆंबुदु तोरुतिदॆ मनकॆ
तनु परिच्युति तनकली मैदुनन नी मुंदिट्टु कॊंडिरु
मनद मरुकव बिट्टुकळॆ नीनॆंदना राम ॥ 104 ॥
संतविट्टनु बळिक सीता कांतनधिक विलाप शोकद
कांतॆयनु करुणोदयद माधुर्य वचनदलि

मूर्च्छित अवस्था में रही। सुनो, बेटे कुश, वीर विभीषण यह दृश्य देखने में असमर्थ हो आँखों से अश्रुधारा बरसाते हुए मूर्च्छित हो धरती पर लुढ़क गया। १०१ "(अपनी) पत्नी के बहाने तूने धरती का बोझ हल्का कर शरणागत की रक्षा तो की। यह तेरे लिए आसानी से (सफलता) हाथ लगी। भगवन्! अब मेरी क्या गति (अवस्था) है —बताने की कृपा करें।" इस प्रकार अत्यंत दुःखी हो सीतापति श्रीरामचन्द्र के चरण-कमलों में माथा धारे मंदोदरी ने प्रार्थना की। १०२ मंदोदरी के मस्तक को ऊपर उठाते हुए अपार करुणा सागर श्रीराम ने कुख्याति के बोझ को अपने सिर पर उठा लिया। "रावण दुराचार के कारण मर गया। उसके लिए तेरे रोने से क्या प्रयोजन? तुम अपने मन के दुःख को त्याग दो।" इस प्रकार राम ने मंदोदरी से कहा। १०३ तुझे समझाने की क्या आवश्यकता है? मुझे तो यही लग रहा है कि अज्ञान के कारण मोह के वशीभूत हुई अबला तू है। (अपने) शरीर के गिर जाने तक (मृत्यु तक) इस देवर को सामने रख (आधीन रहकर) जीवन बिताओ। मन की व्याकुलता त्याग दो।" इस प्रकार राम ने कहा। १०४ इसके पश्चात् सीतापति ने अत्यंत दुःखी होकर रो रही मंदोदरी को करुणापूर्ण मधुर वचनों से सांत्वना दी। "अब अपनी यह भ्रांति त्याग दो।" इस तरह कहते भक्त विभीषण को सांत्वना देते हुए

भ्रांति बेडिन्नेंदु शरणन संतविसि सौरंभमिगे भू-
कांत तोरवेय राय होक्कनु तन्न पाळेयव ॥ 105 ॥

ऐवत्तेरडनेय संधि

सूचने— पुरके हनुमन कळुहि बेदरिद पुरजनव संतैसि शरणन सुर विरोधिय संस्कृतिगे नेमिसिदना राम ।

हनुम होगूरोळगे गावळि मिनुग दंतिरे संतविसूपुर
जनव शिक्षिसु गजबजद गर्वित निशाचरर
बनद सीतेय धातनरि होग ने हसादव हाय्कि वानर
जन सहित बीळ्कोंडु लंकानगरि गैतंद ॥ 1 ॥
पुरजनव संतैसि लंकापुर दरसु सिहासनके भू-
वर विभीषणदेव नेंदे होय्सि डंगुरव
इरिसि कावल केरि केरिगे हरि चमूपर नैदिदनु बं-
धुरद शोकावनद देविय कंडना हनुम ॥ 2 ॥
चरणकानत नागि केलसार्दरि भयंकरनुभय करसर
सिरुहवनु मुगिदोय्यनोसगेय वार्तेयनु बळिक

बड़े वैभव के साथ तोरवे के नरहरि के अवतारी श्रीराम अपने डेरे पर (निवासस्थान पर) पहुँच गये । १०५

बावनवीं संधि

सूचना— हनुमान को लंकानगरी भेजकर डरे-सहमे हुए पुरजनों को सांत्वना देकर रावण की अंत्येष्टि-क्रिया करने के लिए अपने भक्त विभीषण को राम ने आज्ञा दी ।

"हे हनुमान, लंकानगरी पहुँचकर पुरजनों को इस प्रकार सांत्वना दो कि कहीं कुछ शोरगुल न होने पावे । उधम मचानेवाले घमंडी राक्षसों को दंड दो । अशोक वन में स्थित सीता का समाचार (खबर) प्राप्त कर (जल्दी) आओ । अभी जाओ तुम ।" इस प्रकार राम से आज्ञापित होने पर "जो आज्ञा" इस तरह कहते हनुमान प्रणाम कर वानरों के साथ लंकानगरी पहुँचे । १ हनुमान ने लंकानगरी के लोगों को सांत्वना देते ढिंढोरा पिटवाया कि विभीषण देव लंकानगरी के राजा हैं । वानरदल-पतियों को गली-गली भिजवाकर वहाँ की सुरक्षा उन्हें सौंपकर, सुन्दर अशोकवन में पधार, सीतादेवी के दर्शन कर लिये । २ सीता के चरणों

विरचिसिदना वीर दशकंधर शिरः कंतुक विनोदद
धर धुरंधर दुष्टयोर्दंड प्रतापकव ॥ 3 ॥
लोककंटक कुंभकर्णन ना कठोर खरात्मजन भू-
लोक दल्लण रावणासुर मुख्य राक्षसर
नूकिदनु यमपुरिगॆ रणदॊळगेक पत्नीव्रतनु समर
व्याकरण पंडितनु हरकोदंड खंडितनु ॥ 4 ॥
सायकद मुखदल्लि बळिकति कायननु मायाप्रबल व-
ज्रायुधांतक मुख्यवीरर नसम समरदलि
वायुपथकेऴिसिदना रघुरायननुजनु मिक्ककपिभट
नायकरु कॊंदरु समस्त निशाट नायकर ॥ 5 ॥
ऎनॆ मनोद्गमवाद हरुषाननद हॊंपुळियोद हॆंपिन
तनुवनुळिदुम्मळद लानंदाश्रु पूरदलि
इनियनधिक पराक्रमद भावनॆय नंगीकरिसि हनुमन
सनकॆ बह मातुगळ नुडिदळु मधुर वचनदलि ॥ 6 ॥
श्रीकरिसिदुदु कीर्ति सत्कुल शाखॆतळिदुदु सुप्रताप म-
यूख मालॆय मॆरॆसिदुदु केळ् हनुम निन्निद

में सिर नवाकर, पार्श्व में खड़े हो शत्रुभयंकर हनुमान ने दोनों हाथ जोड़ प्रणाम कर शुभ समाचार सुनाया। वीर दशकंठ के सिरों को काट गिरानेवाले युद्धप्रवीण राम के भुजबल-विक्रम की विनोदपूर्ण घटनाओं का सीता के सम्मुख वर्णन किया। ३ "एकपत्नीव्रतस्थ, युद्धव्याकरणविशारद, शिव-धनुष-भंजक श्रीराम ने लोककंटक कुंभकर्ण, कठोर खर के पुत्र मकराक्ष, लोकों को कँपा देनेवाले रावणासुर-सहित प्रमुख राक्षसों की हत्या कर उनके लिए यमनगरी का रास्ता साफ़ कर दिया। ४ अतिकाय, महान बलशाली इन्द्रजित्, वग़ैरः प्रमुख वीरों को भयानक युद्ध में रघुराम के भाई लक्ष्मण ने आकाश की ओर उड़ा दिया। अन्य वीर वानर-नायकों ने समस्त राक्षस-नायकों की हत्या की।" —इस प्रकार हनुमान ने सीता को विवरण सुनाया। ५ रावण की मृत्युवार्ता हनुमान से सुनकर अपना आनंद प्रकट करते रोमांचित्त हुई सीता का दुःख का सोता मानों सूख ही गया। उनकी आँखों से आनंदाश्रु टपटप गिरने लगे। (अपने) पति के अत्यद्भुत साहस को मन ही मन गुनती हुई, प्रसन्न होती हुई सीता हनुमान से प्रियकर वचनों में (निम्नांकित प्रकार) बोलीं। ६ "कीर्ति की उन्नति हुई। सत्कुल रूपी शाखा (टहनी) पल्लवित हुई। (उसमें कोपलें फूटीं) वीरता के प्रकाश की लहर लहराई। सुनो हनुमान, खर के हत्यारे

आ खरारिगे विजय विभववु लेखवादुदु येंदु सिंधु स-
मेख लालंकृतेय सुते कोंडाडिदळु कपिय ॥ 7 ॥
इदुवे निम्म पतिव्रता संपदद गुणवल्लदडे कल्लिन
लुदधि कट्टिटसि कोंबुदे कपिगळु निशाचरर
कदनदलि जयिसुवरे कलिदशवदन नळिवने ताये येंदा
मदनमद मुखवैरि महिजादेविगितेंद ॥ 8 ॥
बिडुवु दिन्नुम्मळव नायस सडिललिनकुलदवनिपगे नि-
म्मॆडेयलक्करु घनसन स्नेह प्रपंचकद
जडतेयिल्लेने हरुष होरेदुग्गडद कंबनियिद जानकि
नुडिद ळरसन मनसु बिरिसिलॆ हनुम तन्नेडेगे ॥ 9 ॥
कळुहिदेनु कांचनद हरिणन बळिय बयकेय भरदलरसन
कळुहिदेनु कॊडॆ नुडिदु कांतारदलि मैदुनन
खळन कैवशवादे निदु घातळिके यल्लवे हेंगुसिगेमन-
दोळगे रघुपतियेन बगेवनो येंदळबुजाक्षि ॥ 10 ॥

(श्रीराम) का सारा विजयवैभव चिरस्थाई जो हुआ —यह सब तेरे कारण ही हुआ।" इस तरह कहते समुद्र को करधनी बनाए अलंकृत हुई भूमि-पुत्री सीता ने हनुमान की खूब प्रशंसा की। ७ "यह सब कुछ आपकी पतिव्रता रूपी संपत्ति सँजोने का ही प्रभाव है। नही तो, क्या समुद्र अपने ऊपर पत्थरों से सेतुबंधन की सुविधा देगा ? युद्ध में बन्दर राक्षसों को जीत सकते हैं ? बोलिए माताजी, क्या वीर दशमुख की मृत्यु संभव थी ? (यह सब पातिव्रत्य का ही प्रभाव है)।" इस प्रकार देवी सीता से हनुमान ने निवेदन किया। ८ "अब चिंता त्यागिए। युद्धजन्य थकावट कम होने पर रविकुल के राजा को आप देखेंगी कि उनमें आपके बारे में जो मन ही मन प्यार तथा आपकी संगति के बारे में यत्किंचित् भी अनासक्ति नहीं है।" इस तरह हनुमान के कहने पर सीता की आँखों से संतोष के अश्रु उमड़ पड़े तथा वह कहने लगी— "हनुमान, मेरे बारे में राजा (रविकुल राजा राम) का मन कठोरता से परिपूर्ण है। (यह तुम जानते नहीं।)" ९ स्वर्णमृग पाने की उत्कट अभिलाषा से मैंने (अपने) राजा (राम) को भेजा। देवर की निंदा कर उसे जंगल में भगा दिया। फिर राक्षस के चंगुल में फँस गयी। यह सब क्या एक स्त्री की धृष्टता नहीं है ? न जाने रघुपति (इन सब विषयों के बारे में) क्या सोच रहे हों।" इस प्रकार सीता ने कहा। १० "इन सब (घटनाओं) के बारे में श्रीराम मुझसे पूछ-ताछ करें तो मैं क्या जवाब दूं ? कैसे जवाब दूं ? अगर वे मुझसे बोलें ही

मातनाडिसि केळिदडॆ नानेतॆंद्रदि नुत्तरव कॊडुवॆनु
मातनाडदडवनिपन नेनॆंदु नुडिसुवॆनु
ओतडॆन्नय भाग्य वॊलियद डॆतङ्वु बळिकुळिवु हॊगुवॆनु
वीतिहोत्रन नॆंदु कंबनि दुंबिदळु सीतॆ ॥ 11 ॥
विहितवल्ली नुडि निमगॆ निस्पृहतॆ युळ्ळडॆ हगॆय कॊललै
तहनॆ निम्मय जीवितेशनु निम्म नॆनहिनलि
इह मनव ना बल्लॆ नीवुम्महद चिंतॆय बिसुडि नेमवॆ
महिप नॆडॆगॆनॆ बीळु कॊट्टळु पवन नंदनन ॥ 12 ॥
नमिसि निमिकुल वार्धिवर्धन कुमुद बांधवनंगॆनॆगॆ वि-
क्रम महार्णव नॆदिदनु रघुरामचंद्रमन
नमिसिदनु नर नाटकद मारमणनंघ्रि सरोरुहकॆ सं-
भ्रम विदेनै हनुम हेळॆंदरस बॆसगॊंड ॥ 13 ॥
पुरजनव संतैसिदै दशशिरन तम्मन जीय गावळि
गरनु शिक्षिसिदै हसाद विभीषणन गृहकॆ
इरिसिदै कावलनु बल्लिद हरिचमूपर देवि सीतॆय
परिय नद्रिदैयॆनलु बिन्नह माडिदनु हनुम ॥ 14 ॥

नहीं तो मैं क्या मुँह लेकर उनसे कैसे वार्तालाप करूँ ? अगर वे मुझ पर प्रसन्न हो जायँ तो मैं समझूँ कि मेरे भाग्य खुले; अगर वे अप्रसन्न हुए तो मेरे जीवित रहने में क्या धरा है ? तभी मैं अग्निप्रवेश करूँगी ।" इस तरह कहते सीता की आँखें बरस पड़ीं । ११ "ये बातें आपके मुँह में शोभा नहीं पातीं (उचित नहीं हैं) । आपके बारे में (आपके कथनानुसार) निरासक्ति हो राक्षसों को मारने वे यहाँ तक क्यों आते ? यह मैं जानता हूँ कि आपके पति आपके ध्यान में आसक्त हैं । (आप ही की याद करते रहते हैं ।) आप (व्यर्थ की) चिंता और व्याकुलता त्यागिए । मुझे (अपने) राजा के यहाँ जाने की अनुमति प्रदान करेंगी ?" इस तरह कहने पर सीता ने हनुमान को बिदा किया । १२ निमिवंश रूपी सागर को उमड़ाने में समर्थ चन्द्र-सरीखे श्रीरामचन्द्र की पत्नी को प्रणाम कर वीरता के सागर-सरीखे हनुमान रघुरामचन्द्र के यहाँ आए । उन्होंने (हनुमान ने) नरनाटकविनोदी श्री लक्ष्मीपति (श्रीराम) के चरणों में सिर नवाया । "हे हनुमान ! तुम्हारे इस अत्यधिक उत्साह का कारण क्या है ?" इस प्रकार राम ने पूछा । १३ राम— "क्या रावण के भाई के पुरजनों को सांत्वना दी ?" हनुमान— "जी हाँ भगवन् !" राम— "दंगा करनेवालों को दंडित किया है न ?" हनुमान— "जी हाँ, आपकी दया से

अंदि निंदिन दिनकॆ तनुवति कंदिदुदु देवियर देवर
दॊंदु नामस्मरणॆ तप्पिसि कार्णॆनन्यवनु
संद संगरदलि दशास्यन कॊंद हृदननु हेळॆ हरुषव
नॊंदु भागव धरिसिदुदु सिरिवदन वंबिकॆय ॥ 15 ॥
देवियुत्तर कारियद संभावनॆय नीवरियॆ दुदॆ बळि-
का विदेहकुमारि कळुहिदळश्रुजल जडियॆ
देवरिद्दॆडॆ गॆन्न निम्म कृपावलंबन वॆंतुटॆंबुद
नावु बल्लॆवे यॆंदु बिन्नह माडिदनु हृदन ॥ 16 ॥
साकु बळलिदॆ कुळ्ळिरॆम गिन्नॆकॆ गत कार्य प्रसंग
व्याकुलतॆ यॆंदीक्षिसिदना शरण नाननव
साकदिरु चिंतॆयनु नडॆ नी कैकसॆय नंदनगॆ माडु नि-
राकुलितॆयिं दूर्ध्व देहिक विहित संस्कृतिय ॥ 17 ॥
बीळु कॊंडसुरेंद्र बंदु विशाल वैदिक विहितदिं दश
मौळियनु संस्करिसिदनु बळिकाहिताग्नियलि

सब कुछ कर सका।" राम— "विभीषण के घर की सुरक्षा के लिए समर्थ वानर दलपतियों को नियुक्त किया है न ? सीता की स्थितिगति जान ली है न ? इस प्रकार (राम से) पूछे जाने पर हनुमान ने निम्नांकित प्रकार निवेदन किया। १४ "उस दिन जो देखा था —उसकी अपेक्षा आज देखने पर लगा कि (सीता) देवी का शरीर अधिक कुम्हला (म्लान हो) गया है। प्रभु के नामस्मरण के सिवा उनमें और कुछ भी दिखायी नहीं दिया। ('सिर्फ़ आपके नाम की रट लगाये बैठी है)। इस समय हुए युद्ध में दशकंठ के मारे जाने का समाचार सुनाने पर माता सीताजी के श्रीमुख पर के एक हिस्से में हर्ष का भाव खिल उठा। १५ "देवी सीताजी के बारे में भविष्य में जो कुछ करना है— वह आप जानें। अंत में विदेह-राजकुमारी (देवी सीता) ने अश्रुपूर्ण आँखों से मुझे आपके यहाँ भेज दिया। आपकी करुणापूर्ण भावना को हम क्या जानें।" इस प्रकार वस्तुस्थिति का निवेदन हनुमान ने ज्यों का त्यों किया। १६ "तुम काफ़ी थक गये हो। अब थोड़ा सा विश्राम करो। बीती बात के लिए हम क्यों चिंतित हों ?" —इस तरह कहते राम ने भक्त विभीषण की ओर देखते हुए कहा— (अपनी) व्यथा को अब और अधिक बढ़ने न दो। तुम जाकर कैकसा के पुत्र रावण की अन्त्येष्टि-क्रिया को निश्चित होकर सुचारु रूप से करो। जाओ।" १७ राक्षसराजा विभीषण राम से बिदा लेकर जो आए तो वैदिक रीति से (वेदोक्त-पद्धति से) अहिताग्नि आह्वानित कर उसने दशकंठ का

बालकिय रौद्रगिदरु वह्निज्वालॆयलि मिक्कसुर रग्गद
बालॆयरु सह गमनदलि नीगिदरु निजतनुव ॥ 18 ॥
हॊत्तिसिद रग्नियनु बळिकॆंबत्तु योजनदगल दिळॆयलि
सत्त सुभटर मेलॆ नळिगळ नॊट्टि नीरसद
इत्तरुद कांजलिय ननिबर पुत्र मित्र ज्ञातिगळु स-
द्वृत्त वीर विभीषणासुर नॊडनॆ बळिकॆंद ॥ 19 ॥

ऐवत्तुमूरनॆय संधि

सूचनॆ— शरणननु पतिकरिसि लंकापुरद पट्टव कट्टि सीतॆय वरिसिदनु रघुनाथ नमवादिगळु नलिदाडॆ ।

ऎलॆ कुशनॆ केळादुदल्लि बळिक वैदिक विधियला दश
गळ सुरेंद्रजितु प्रमुख राक्षसर संस्कार
बलिद चिंतॆय मनद बॆदरगिन बॆळविगॆय भारणॆय करणद
लळुकु तैतंदा विभीषण नॆरगिदनु पदकॆ ॥ 1 ॥
कंड शरणागतन विभवा खंडलनु करणदलि काणि कॆ
गॊंडु पतिकरिसिदनु परम प्रियतरोक्तियलि

अंत्य-संस्कार किया। रावण की पत्नियां सती हुईं। (उस अग्नि-ज्वाला में उन पत्नियों ने प्राणार्पण किया।) अन्य राक्षस-स्त्रियों ने सहगमन कर अपना देह समर्पण किया। १८ मृत वीरों पर सूखे लक्कड़ों को जोड़कर अस्सी योजन विशाल धरती पर अग्नि प्रज्वलित की गयी। मृतकों के पुत्र, स्नेही, ज्ञातियों ने सच्चरित विभीषणासुर के साथ हाथ मिलाते हुए जल (-तिल)-तर्पण दिया। १९

तिरपनवीं संधि

सूचना— भक्त विभीषण को गौरव प्रदान कर, लंकानगरी का सिंहासन उसे प्रदान कर, राम ने सीता को वर लिया। तभी शिवजी आदि देवता खुशी के मारे नाच उठे।

सुनो कुश, वेदोक्त रीति से दशकंठ, इन्द्रजित् आदि प्रमुख राक्षसों के अंत्य-संस्कार संपन्न हुए। चिता से भयभीत हो सहमते-सहमते हुए आये विभीषण ने राम के चरणों में सिर नवाया। १ शरणागत को देख वैभवेन्द्र राम ने करुणा से ओत-प्रोत हो उसके दिये गये उपहार को स्वीकार करते अत्यंत प्रेमादरयुक्त वार्तालाप से उसे अनुग्रहीत किया।

चंडबल सुग्रीव जाम्बव गंडुगलि हनुमंतरनु मा-
र्तंड वंश ललाम करॆदितॆंदु नेमिसिद ॥ 2 ॥
ईत नम्मनु कंड दिनदलि मातनाडिदॆ वावुदनु ना
वीतगा मर्यादॆयलि पट्टाभिषेचनव
ख्यात वागियॆ माडुवदु विभवातिशय मिगॆ होगि नीवॆं
दातगळ बीळ्कॊडलु कैमुगिदॆंद नसुरेंद्र ॥ 3 ॥
अरसुतन कोसुगवॆ यण्णन हरण कंत्यव बगॆदने ना
नर चरित्रद नाटकव दिन्नेकॆ देवरिगॆ
परव पडॆववनैसॆ तानिह कॆरविगनला देवरी परि
करिणिसुवरे कष्टवृत्तियनॆंद नसुरेंद्र ॥ 4 ॥
देवरॊडॆयरु तोरुवी भुवनावळिगॆ राज्याभिलाषॆय
सेवकरिगीवुदु भवत्पद भक्ति भूतळकॆ
देवरॆन्ननु निलिसुवदु मत्ताव मातनु बॆसॆस बेडॆं
दा विभीषण नॆरगिदनु मगुळरस नंघ्रियलि ॥ 5 ॥

उसके बाद रविकुलतिलक राम ने भयंकर बलवान सुग्रीव, जाम्बव, वीराग्रेसर हनुमान वगैरहों को बुलाकर इस प्रकार आज्ञापित किया। २ "यह जिस दिन पहले-पहल हमारे पास जब आया था तब मैंने जो बातें इनसे कही थीं, तदनुसार औचित्य तथा आदरपूर्वक बड़ी धूमधाम के साथ इन्हें पट्टाभिषिक्त (सिंहासनारूढ़) करा दीजिए। तुम सब लोग (इस कार्य के निमित्त) अब जाइए।" —इस तरह आदेश देकर राम ने उनको भिजवा दिया। तब विभीषण ने हाथ जोड़ इस प्रकार कहा। ३ "मैंने राज्याधिकार पाने के लोभ के वशीभूत होकर ही बड़े भाई की मृत्यु चाही न? भगवन्! मानवाचरण के इस नाटक का अभिनय यथेष्ट हुआ। मैं मोक्ष की आकांक्षा रखता हूँ। मेरा अब इस लोक से कोई वास्ता नहीं। भगवन्! आप मुझे इस कष्टदायक कार्य की जिम्मेदारी क्योंकर सौंप रहे हैं?" इस प्रकार विभीषण ने कहा। ४ "इस दृश्यमान सारे जगत के, सभी लोकों के स्वामी तो आप ही हैं। राज्याधिकार की जो आस लगाए बैठे हैं उन्हीं को (यह) राज्य दीजिए। भगवन्, दयाकर आपके चरणों के भक्ति-साम्राज्य में मुझे थोड़ा सा स्थान दे देवें। अन्य किसी स्थान पर नियुक्त न करने की कृपा करें।" इस तरह कहते विभीषण ने श्रीराम के चरणों में सिर नवाया। ५ "हे विभीषण, 'रघुकुल के राजा झूठ नहीं बोलते; निन्दा

अँलॆ विभीषण केळिदॆं रघुकुलद रायरु तप्पि नुडियरु
हळिवु हॊरदिदु सिद्धनिनगिन्नॆकॆ मरुमातु
हॊळलिगभि मुखनागु मनदलि हलव नॆणिसदॆ मरळि मातनु
बळसिदरॆ नम्माणॆ होगॆंदरस बीळ्कॊट्ट ॥ 6 ॥
नगर सिंगारिसितु सुरपन नगरि गिम्मिगिलॆ नलु पल्लव
वगिद वॆत्तिदवगलदलि गुडितोरणादिगळु
अगरु कुंकुम गंधदलि मघमघिसिदवु वीदिगळु पट्टद
सॊगसिनखिळ द्रव्य संपादिसितु निमिषदलि ॥ 7 ॥
बळिक मंगळ वाद्य रभसद लिळॆय विबुधर निगममंत्रद
कळकळदलनिल सुत सुमित्रात्मजर हरकॆयलि
सुलभवादुदु पट्टकंडुदु हॊळलजन परिजन सुहृज्जन
नळिननयना राधकनना वर विभीषणन ॥ 8 ॥
हरुषमिगॆ मन्निसिदना रघुवरन तम्मन ब्रह्मपुत्रन
तरणितनुजन वायु वह्नि सुरेंद्रसुत सुतर
करि रथाश्व पदाति पुरजन वॆरसि कन्नडिकलश सहि तू-
वॆरॆय पतियॆडॆगा विभीषणदेव नडॆतंद ॥ 9 ॥

तो सह नहीं सकते; —यह तुमने सुना होगा न ? (जो कुछ मैंने कहा) यह सच है। अब तुम प्रत्युत्तर मत देना। पसोपेश या दुविधा में बिना पड़े सोच-विचार स्थगित कर नगरी को लौट चलो। प्रत्युत्तर दिया तो सौगंध हमारी। चुपके से चले जाना।" इस तरह कहकर राम ने विभीषण को बिदा किया। ६ देवेन्द्र की अमरावती की दुगुनी रीति से लंकानगरी सजायी गयी। कोंपलें लटकायी गयीं; नगर के हर स्थान में ध्वजारोहण के साथ-साथ बन्दनवारें झूलने लगीं। अगरु, कुंकुम तथा सुगंध द्रव्यों से गलियाँ खुशबू से भर गयीं। तुरन्त सिंहासनारोहण (राज्याभिषेक) के लिए आवश्यक सामग्रियाँ जुटायी गयीं। ७ तदनंतर मंगलवाद्यों के निनाद के मध्य ब्राह्मणों के वेदमंत्रों के उद्घोष के साथ-साथ सुग्रीव-लक्ष्मण के आशीर्वचनों-सहित विभीषण का राज्याभिषेक हुआ। लंकानगरी के लोक, कुटुम्बी-स्नेहियों ने आकर कमलाक्ष श्रीराम के भक्त विभीषण के दर्शन कर लिये। ८ विभीषण ने आनन्द के साथ लक्ष्मण, जांबव, सुग्रीव, मारुति (हनुमान), नील, अंगद आदियों का गौरव किया। हाथी, घोड़े, रथ, पैदल-सेना तथा पुरजनों के साथ आईना तथा कलशयुक्त हो पृथ्वीपति श्रीराम के यहाँ विभीषण पधारे। ९ विभीषण ने रघुकुलचक्रवर्ती के चरणों में सिर नवाकर तरह-

परिपरिय रत्नंगळनु परिपरिय दिव्य विभूषणंगळ
परिपरिय दिव्यांबरादि समस्त वस्तुगळ
करि वरूथ सुवाहनंगळ तरुणियर काणिकेयनित्तनु
चरण कानतनागि रघुकुल सार्वभौमंगे ॥ 10 ॥
शिरव सिरिहस्तदलि मेल्लने बरसेळेदु बिगियप्पि नुडिदनु
दरहसित मुखदिंद निजशरणंगे विनयदलि
धरेय वैभव सहित लंकापुरव नित्तेनु निनगे निनुप
चरणे बंदुदु पुरके कळुही काणिकेयनेंद ॥ 11 ॥
हलवु परियलि बेडिकोळे कैकोळदे तंद समस्त वस्तुव
कळुहि नगरके कैमुगिदु बळिकेंद नरसंगे
सलिस बेकेनगोंदु वरवनु सलुव सलुगेय भृत्यनादोडे
सलुगेयिदु तनगेनलु नुडि केळुवेवु नावेंद ॥ 12 ॥
आवकार्य निमित्त बिजयंगैवुदायितु पुरके देवर
दाव कार्य निमित्त जयिसिदिरी दशाननन
ई विवेक स्थितियनंतर्भावदलि बळिसिदिरि भृत्यन
भाववेनेंबुदनु चित्तैसिदिरि नीवेंद ॥ 13 ॥

तरह के रत्न, अनेक प्रकार के दिव्य आभूषण, कई प्रकार के दिव्य वस्त्र तथा समस्त प्रकार की वस्तुएँ, हाथी, घोड़े, रथ आदि श्रेष्ठ वाहन तथा युवतियाँ भेंटस्वरूप प्रदान कीं। १० राम ने अपने श्रीहस्तों से धीरे-धीरे विभीषण का सिर उठाकर उसका आलिंगन करते मुस्कुराते हुए अपने भक्त (विभीषण) को सम्बोधित कर— "इस सारी धरती के वैभव-सहित लंका नगरी मैंने तुझे दी है। यह तेरा सारा आदर-सत्कार मैंने स्वीकार किया है। यह भेंट जो चढ़ाई है —इस नगरी में भिजवा दो।" इस तरह विनयपूर्ण स्वर में (राम ने) कहा। ११ विभीषण के कई प्रकार प्रार्थना करने पर भी राम ने जो उपहार स्वीकार न किए तो अपने साथ लायी गयी सभी वस्तुओं को उस (विभीषण) ने लंका नगरी भिजवा दिया। तदनंतर राम के सम्मुख हाथ जोड़कर "अगर आप मुझे अपना निजी सेवक समझते हैं तो मुझे एक वरदान कृपा कर दीजिए। यह मैं आत्मीयता के कारण माँग रहा हूँ।" इस तरह विभीषण के पूछने पर, राम ने कहा, "कोई बात नहीं; सुनाओ।" १२ "किस उद्देश्य से प्रभु के श्रीचरणों ने इस नगरी को पावन बनाया; किस बहाने श्रीमान ने रावण को जीत लिया; —इनसे सम्बन्धित कार्य-कारणों के बारे में मन ही मन युक्त विचार-विमर्श आपने

अरिदेवाव् निन्नंतरंगद मर्रेय बिन्नह वेकें लोगरु
मुरिद मानस्थितिगें जांबव रविसुतादिगळु
ऊरुवुदे निनगेंनुत मानसदेरकवादरें कोंडु वा ना-
वरिवें वंगीकरण दिगितवनु महीसुतेय ॥ 14 ॥
अँनें हसादवेंनुत्त रघुनंदनन पदकभिनमिसि वीळ्कों
डनु महोत्सव दिद वंदनु तन्न पट्टणकें
धनपतिय दंडिगेंय लेंड बल दनुचरर चामरद छत्रद
घनतरद गडबडेंय कंचुकिगळ विडायियलि ॥ 15 ॥
गुडिग ळेंत्तिद वगलदलि कन्नडिय कळसद तोरणद वं-
गडगळेंसेंदवु केरिकेरियलिदु भास्करर
कुड्डु कुणिदाडिदवु हेमद तोंडहदुरु निस्साळ ततियलि
नुडिवडच्चरियेंनलु मिगें संभ्रमिसिता नगर ॥ 16 ॥
कुशनें केळै वळिक राक्षस वसुमतीश्वर नखिळ भुवन
प्रसर दधि देवतेंय नोंलियिदिगोंव तवकदलि
ओंसगें वरेंयनु होंय्सितन्नय शशिमुखिय रोंडगूडि भूसुर
विसर दोंग्गिनलैदिदनु वनवनु महीसुतेंय ॥ 17 ॥

किया ही होगा न ? इस सेवक के मन में क्या है वह भी आप ताड़ गये होंगे न ?" इस प्रकार विभीषण ने कहा। १३ "हाँ, हम समझ गये। तुम्हारे अंतस्थल का विचार यों गुप्त रीति से निवेदन करना कहाँ तक ठीक है ? अन्यों से किये गये अपमान को जाम्बव-सुग्रीव सहमत होगे (सह सकेंगे)। इस तरह की अगर तुम्हारी राय है तो अवश्य बुला ले आओ। भूमिसुता को स्वीकार करने की बात हम जानते हैं।" १४ "यह आपकी महान कृपा है।" इस तरह कहकर विभीषण राघव के श्रीचरणों को प्रणाम कर वहाँ से रवाना हो, बड़ी धूमधाम के साथ कुवेर की पालकी में जा बैठे; तभी दाएँ-बाएँ सेवकों ने छत्र धरकर चँवर डुलाया; कंचुकी गड़बड़ मचाने लगे। विभीषण बड़े वैभव के साथ लंकानगरी लौटे। १५ नगर में हर कहीं ध्वजाओं को (पूरी तरह) ऊपर उठाए उड़ाया जा रहा था। सूर्य-गली चन्द्र-गलियों में कलश तथा वन्दनवारों की मालाएँ सुशोभित थीं। सोने से मढ़े नगाड़ों के चमड़ों पर वादनदंड नृत्य करने लगे (नगाड़े बजने लगे)। आश्चर्यजनक वर्णनातीत रीति से सारी लंकानगरी धूमधाम से ओत-प्रोत रही। १६ सुनो कुश; तदनंतर राक्षसराज विभीषण समस्त लोकों की अधिदेवता सीता की अगुवानी की कातरता

इळिदु दंडिगेयनु सुललनावळि सहित मैयिक्कु तैतं-
दिळेय तनुजेय ललित पादपयोज युगगळलि
इळुहिदनु मस्तकव माया विलसदनुपम लक्ष्मि भुवना-
वळिय जननि जनार्दनन वल्लभे नमोयेनुत ॥ 18 ॥
डिंगरिग ना निमगे निम्मरसंगे किंकर नागि कृपे त-
न्नंगदलि नेलेगोळलि बळलदिरेम्म देसेयिंद
कंगळलि मुंगाणदग्रज हिंगिदनु नाव् निम्म पदप-
द्मंगळनु सारिदेवु सलहुवुदिन्न नीवेंद ॥ 19 ॥
नवदिरारण्यदलि सेरेयलि सवेदिरन्नबरेम्म पूर्वज
नव गुणंगळ मरेदु मेरेदवु निम्म सद्गुणव
भुवनदलि निम्मिद पुण्यश्रवण रारेले देविकेळ् नि-
म्मुवनु नेनेदवरेनु धन्यरो लोकदोळगेंद ॥ 20 ॥
करसरोजदिना निजेशन चरण शरणन मणिखचित बं-
धुर किरीटवनेत्ति केळै कलि विभीषणने
नरपतिगे निन्निद जयविस्तरणवादुदु निन्नवोलु भृ-
त्यरुगळिन्नारुंटु जगदोळगेंदळिदुमुखि ॥ 21 ॥

में (अधीरता में) मंगलवाद्य बजवाते (वाद्यघोष के साथ) अपनी पत्नियों के साथ ब्राह्मण-वृन्द सह अशोकवन में पहुँचे जहाँ सीताजी थीं। १७ पालकी से उतरकर अपनी पत्नियों के साथ प्रणाम करते हुए आकर, "हे मायाविलासिनी लक्ष्मीदेवी ! समस्त लोकों की माता, जनार्दन (श्रीविष्णु) की पत्नी ! तुम्हें प्रणाम है।" इस तरह कहते हुए भूमिजाया के सुन्दर चरण-कमलों में अपना माथा नवाया। १८ "आपके पति के सेवक होने के नाते मैं आपका भी सेवक ठहरा। मुझ पर दया कीजिए। हमारे कारण परेशान मत होइए। मेरे बड़े भाई भावी को समझने में असमर्थ होने के कारण विनष्ट हुए। मैं आपके श्रीचरणों की शरण आया हूँ। आप मेरी रक्षा करें।" इस तरह विभीषण ने प्रार्थना की। १९ "वनवास भुगतते गल गयीं तथा बन्धन में आप दुबली-पतली हो गयीं। मेरे भैया के दोषों को भुलाकर आपके सद्गुणों का गौरव तथा आदर करना चाहिए। देवीजी, इस लोक में आपसे बढ़कर पुण्यशाली कौन हैं? इस लोक में आपके स्मरण करनेवाले कितने धन्य हैं!" इस प्रकार विभीषण ने सीता की प्रशंसा की। २० अपने प्राणप्रिय पति के आत्मीय भक्त के रत्नजटित मनोहर मुकुट को सीता ने अपने कर-कमलों में उठाकर— "रे वीर विभीषण, सुनो। मेरे राजा की तेरी सहायता के कारण जीत हुई।

एतख्व नानी चराचर चेतनन सेवँगॆ सरोरुह
जात जनकंग प्रमेयंगंत रहितंगॆ
आतगारु सहायिगळु संप्रीति भक्तर मेलॆ निमगिदु
नीति तानॆनुतोडनॆ कैमुगि दॆंदनव निजॆगॆ ॥ 22 ॥
देवि निम्मनु तरलु निम्मय जीवितेशनु करॆदु बॆससिद
नाव संशय बेड ता होगॆंदु करुणदलि
नीवु बिजयंगैय बेकॆंदा विभीषण कै मुगियॆ रा-
जीव मुखि नॆनॆदॆद्दळा रघुराम चंद्रमन ॥ 23 ॥
करद कंबियला विभीषण नॆरविगर नॆडबलकॆ सारिस
लरसियरु कैगॊट्टु तंदरु राजमंदिरकॆ
करव मुगिदु विभीषणनु माधुरिय वचनद लंजुतळु कुत
शिरव नॊय्यनॆ बागि बिन्नैसिदनु जानकिगॆ ॥ 24 ॥
चित्तविसिदिरॆ देवियरॆ देवोत्तमनला देवरलि रा-
जोत्तमनल। रायरलि पुरुषरलि जगवड्रियॆ
उत्तमनला निम्मरस नीव् हॊत्त भारव मंगलवु नृप-
मत्तकाशिनि नीवु शुभकर वागबेकॆंद ॥ 25 ॥

तुम जैसे सेवक इस जगत में दुर्लभ हैं।" इस प्रकार सीता ने कहा। २१ "चराचर चैतन्यस्वरूपी, ब्रह्माजी के जनक, अप्रमेय, आद्यंत-रहित श्रीराम की सेवा करने की ताकत मुझमें कहाँ ? उस योग्य मैं कहाँ हूँ ? उनकी सहायता करने का दम कौन भर सकता है ? तुम तो भक्तप्रेमी हो। यही तो तुम लोगों की नीति है।" इस तरह कहते हाथ जोड़े विभीषण ने सीतादेवी जी से फिर यों निवेदन किया। २२ "देवी जी, आपको बुला लाने की आज्ञा आपके प्राणेश ने मुझे दी है। इसमें किसी प्रकार की शंका के लिए कोई स्थान नहीं। तुम्हें बुला लाने को दया कर मुझे समझाते प्रभु ने भेज दिया है। अतः कृपया आप (हमारे साथ) चलिए।" इस तरह कहते विभीषण ने फिर हाथ जोड़े। तभी चन्द्रमुखी सीता श्रीराम का स्मरण करते हुए उठ खड़ी हुईं। २३ विभीषण ने अपने हाथ के डंडे से लोगों की भीड़ को बाएँ-दाएँ ठेलकर रास्ता जो बनाया तो विभीषण की रानियाँ सीता का हाथ पकड़कर उन्हें राजमहल में लायीं। तब विभीषण ने हाथ जोड़ते, सहमते काँपते, सिर झुकाए मधुर वचनों से सीता से निवेदन किया। २४ "देवी जी, कृपया ध्यान से सुनें। आपके जीवनसर्वस्व भगवान राम देव-देवोत्तम हैं; श्रेष्ठ राजाओं में श्रेष्ठ राजा हैं। दुनिया भर जानती है कि वे पुरुषोत्तम हैं। आप तो अमंगलकारी स्थिति में हैं।

बेड जगदपहास्यवदु माताडि कॅडिसलदेकॆ सहजद
लाडिदनु रघुनाथ नानद बल्लॆ पूर्वदलि
कोडदीयंगदलि वैरि विभाड नंघ्रिय काबुदुचितवु
बेडिकोंबॆनु निन्न बंदुदु माडुवुपचार ॥ 26 ॥
हदन निदनानरिदु बिन्नैसिदॆनु देवरिगवर करुणा
स्पददले नेमवनु पडॆदॆनु देवि चित्तैसु
इदरॆ कोरतॆय नॆरतॆ तन्नदु विदित वैदिक लौकिककॆ जग-
वदुह दंतिरॆ चित्तगॊडबेकॆंदु कैमुगिद ॥ 27 ॥
ऎसॆ मत्तेनुचित वल्लॆनगीसु निर्बंधदलि नी बि-
न्नैसलेकनु भविसुवॆनु बंदायसव नॆनलु
दोष विदर्रॆ बंदुदादडॆ दासने निमगा नॆनुत्त वि-
भीषणनु कैमुगिदोडंबडिसिदनु देवियर ॥ 28 ॥
तरिसि मणि मंडि वगंदलि कुळ्ळिरिसि परिमळ तैलदलि ने-
वरिसिदरु सिरिमुडिय मज्जनवाय्तु मंगलद

अतः रानी जी, अब आप शुचितापूर्ण मंगलकारी वेष-भूषा बनावें।" इस प्रकार विभीषण ने कहा। २५ "नहीं नहीं; तुम्हारे कथनानुसार करने पर दुनिया मेरी हँसी-मज़ाक़ उड़ायेगी। बोलकर क्यों बिगाड़ूँ? राघव ने स्वाभाविक रीति से उस तरह तुमसे कहा है। पूर्व में वह मैं देख चुकी हूँ (भुगत चुकी हूँ)। बिना भयभीत हुए अबकी स्थिति-गति में ही शत्रुमर्दन श्रीराम के चरण-स्पर्श करने में भलाई है। मैं यह निवेदन करती हूँ। तुम्हारी औपचारिक बिनती तो हुई ही।" इस प्रकार सीता ने कहा। २६ "यह सब कुछ मैं जानता ही था; इसीलिए प्रभु से विशेष तौर पर मैंने निवेदन कर लिया था। उन्हीं की कृपा से आज्ञा भी मुझे मिली थी, देवी जी! इसकी न्यूनता पूर्ण करने की (दोष-निवारण करने की) ज़िम्मेदारी मेरी रही। जगत की निंदा से बचने के लिए वैदिक लौकिक रीति पर ध्यान देना चाहिए। (वैदिक-लौकिक रीति को अपनाना चाहिए।)" —इस प्रकार विभीषण ने हाथ जोड़कर सीता से निवेदन किया। २७ "ऐसी बात है तो मेरा 'न कहना' ठीक नहीं है। इतना ज़ोर देकर बिनती करने की क्या आवश्यकता है? जो कुछ (कष्ट) होगा मैं भुगत लूंगी।" इस प्रकार सीता के कहने पर— "इससे अगर कहीं कोई ग़लती (दोष उपस्थित) हो बैठे तो मैं आपका सेवक कहाँ रहा?" इस तरह विभीषण ने हाथ जोड़े सीता को राज़ी कर लिया। २८ रत्नजटित पीढ़े पर पवित्र निर्मल वस्त्र बिछाकर उस पर सीतादेवी को

सुरुचिरांबर गंधमाल्याभरणदिं दोप्पिदळु पूर्वद
सिरिय सडगरदलि सरागदोळा सरोजमुखि ॥ 29 ॥
नेरॆदराक्षण सकल सेवा तरुणियरु रतुनारतिय वि-
स्तरिसि बिजयंगॆसिदरु दंडिगॆगॆ देवियर
परिपरिय मणिगणद चित्रोत्करद दड्डियला विभीषण
नरमनॆय होरवंटळवनिजॆ नलियॆ पौरजन ॥ 30 ॥
तरुण केळै कूडितमरर तरुणियरु रूपातिशयदु-
ब्बरकॆ शतगुण दंगनॆयरु सहस्र संख्य्यॆयलि
स्मरन कूर्गणॆ यलगुगळु डावरिसिदवॊ जनमनवनॆनॆ के-
कर विलासद मुगुदॆयरु बळिसिदरु भामिनिय ॥ 31 ॥
होडकरिसुवुदु तिमिर तलॆविणि लॆडॆगळलि तत्तिमिर राशिय
नडिमगु चुवदु बॆळगु बिडदबलॆयर लोचनद
तडॆदुदा भुजपाश दॆडॆवॊग रडिगडिगॆ विटरुगळ कंगळ
नडॆयने वण्णिसुवॆना महिळा कदंबकद ॥ 32 ॥

बिठाकर सुगंधयुक्त तेल वालों में सँवारा गया। सीता को मंगल स्नान कराया गया। मनोहर वस्त्र, सुगंध द्रव्य, हार तथा आभूषणों से अलंकृत सीता— पूर्व में राजमहल की संपदा-वैभव में स्थित सीता की तरह प्रसन्न हो शोभासंपन्न हुई। २९ तभी राजमहल की समस्त परिचारिकाएँ आ जुटीं तथा रत्नजटित आरती उतारने के बाद उन्होंने सीता को पालकी में बिठाया। कई प्रकार के कीमती हीरे-जवाहरातों से कसीदाकारी किए गये परदों के बीच (आड़ में) बैठकर (पालकी में) सीता विभीषण के राजमहल से रवाना हुई। तभी यह सब देख लंका नगरी के पुरजन खुशी के मारे फूले न समाए। ३० हे युवा कुश, सुनो। तभी देवलोक की स्त्रियाँ तथा अत्यंत श्रेष्ठ रूपवतियों से सौ गुने बढ़कर सुन्दरियाँ हज़ारों की संख्या में आ जुटीं। ये तिरछी नज़र की स्त्रियाँ सीता को घेरे इस प्रकार चल रही थीं मानों मन्मथ के पैने बाणों को जनमानस पर चलाकर उन्हें घायल करना चाहती हों। ३१ उन सुन्दरियों के सिर के जूड़ों के चारों ओर फैले अँधेरे को उन सुन्दरियों के कटाक्षों की कांति ने परास्त कर दिया। कामुकों (कामवासना भरे) की आँखों की दृश्यावली (दृष्टि) को उन महिलाओं की बाहुओं की कांति ने क़ैद कर लिया। यह दृश्य वर्णनातीत रहा। ३२ (उन) युवतियों की जंघाओं के बोझ के कारण

ऊरु नितंबद भारकहिपन कोरळु मणिदुदु तोरमोलेगळ
भरद भारके बळुकिदवु दिग्दंति सोर्मुडिय
होरगे होडकरि सिदनु कूरुम नररे मदनन परिजनद नि-
ब्बरद निर्गमनवनु होगळुवेनेनद्भुतव ॥ 33 ॥
बरिसि तनिल ननंग लतेगळ परिमळवु बिडदमम तनु वि-
स्फुरित लावण्यांबुरुचि हिमरुचिय मैसिरिय
बरसेळे दुदुरु भाववमरर तरुणियर नीकरिसिता बं-
धुरद सोबगुरे जरेदवज हरिहरर राणियर ॥ 34 ॥
होळेहोळेव मणिकर्ण पूरद बेळगिडुव मूगुतिय मुत्तिन
विलस देकावळिय मणिमुद्रिकेय कंकणद
ललित चित्रांबरद वर मेखलेय रणित स्वनद नूपुर
दुलुहुगळ वरयुवतियरु बळसिदरु जानकिय ॥ 35 ॥
तुरग पुष्पवरूथ मदसिंधुरद लंदणदिद नारिय
रुरवणिसिदरु मिक्कु नडदुदु मुदे कालनडेय
परिपरिय श्रृंगार दंगनेयरुगळोप्पुव कलशकन्नडि
मुरज नर्तन रतुनदारतिगळ विडायियलि ॥ 36 ॥

आदिशेष का कंठ टेढ़ा हुआ; उभरे स्तनों के बोझ से दिग्गज डोलायमान हुए। झूल रहे जूड़ों के भार से कूर्म (कछुआ) विचलित हो उठा। बाप रे बाप! मन्मथ (कामदेव) के इस परिवार की गतिविधि के अद्भुत (आश्चर्यकारक रीति) का किन शब्दों में वर्णन करूं? ३३ इन युवतियों के कोमल अंगों की खूशबू ने मानों वायुदेव को निमंत्रण दिया; चमकते अंगों की सौंदर्यकांति ने चन्द्रमा की कलाओं को अपनी ओर आकर्षित किया। उनके नखरे भरे अंगों की गतिविधियों ने देवलोक की युवतियों को मानों धिक्कारा। उनकी मनोहर सुषमा ने ब्रह्मा-विष्णु-महेश की रानियों का उपहास किया (फटकारा)। ३४ चमचमाती (चमकती) हीरे की, कान की बालियाँ पहने, कांति बिखेर रहे (नाक के) नत्थ धारे, शोभा बिखेर रहे एक ही लड़ी के मोती के हार पहने, हीरे की अंगूठी तथा कंगनों को, मनोहर रंग-बिरंगे कपड़ों को, मधुर ध्वनियुक्त पैंजनियों को, करधनियों को, रुनझुन ध्वनिपूर्ण घुंघरुओं को पहने युवतियों ने सीता को चारों ओर से घेर लिया। ३५ घोड़े, पुष्परथ, मदमत्त हाथी तथा पालकियों में से स्त्रियाँ उतर आयीं। कई रीतियों से अलंकृत हो आरसी कलशों को हाथ में धारे युवतियाँ मृदंग बजाती हुई नर्तन कर रही युवतियाँ तथा रत्नोपशोभित आरती के थाल धारे युवतियाँ, बड़ी डील-डौल के साथ आगे-आगे पैदल चली जा

सारु सार्नडेयेंव कंबिय भारणेयलि विभीषणनु कै-
वारिगळ गडणदलि बंदनु मुंदे दंडिगेय
चारु चामरदातपत्रद लोरणेव सीगुरिय होदरिन
लूर होरवंटळु महीसुते गुज्जुगुरुकिनलि ॥ 37 ॥
कुशने केळै निम्मजननिय वसुमतीश्वर राघवन सर-
भसद संदरुशनव नोळ्पुत्सवद तवकदलि
वृष वरूथदि नुमे सहित शोभिसुव पंच ब्रह्म वक्त्रद
दशभुज़द परमेश बंदनु प्रमथगण सहित ॥ 38 ॥
ललित वदन चतुष्टयद कोमलित बाहु चतुष्टयद स-
म्मिळित श्रुतिमस्तकद वामदलेसेव भारतिय
विलसदंचेय लमर मुनिसंकुलद सौरंभाति शयदि
दिळिद नंबुज गर्भननुपम राजतेजदलि ॥ 39 ॥
वर तिलोत्तमे रंभेमेनकियर समेळदलमर पति चा-
मरद छत्रध्वज पताकानीक दुब्बरद
करिय कंधरदल्लि शचिसतिवेरसि वंदिजनंगळोग्गिन
बिरुदिनुग्गडणेयलि बंदनु देवगण सहित ॥ 40 ॥

रही थीं। ३६ 'जाओ, उस तरफ़ हटो।' इस प्रकार कहते, हाथ में दंड धारे विभीषण चारण-भाटों के साथ सीता की पालकी के अग्र भाग में थे। चँवर डुलाते आ रहे चामरधारी छत्रधारी झुंड के शोरगुल के साथ सीता लंकानगरी से बाहर निकलीं। ३७ सुनो कुश! तुम्हारी माँ तथा रघु-रामचन्द्र के इस संभ्रम (वैभव)-पूर्ण संदर्शन को, देखने के हेतु, बड़े उत्साह से वृषभ पर बैठे पार्वती-सहित पंचमुखी दशभुजाओं से युक्त पंचब्रह्म-स्वरूपी परमेश्वर (शिवजी) अपने प्रमथगणों के साथ आये। —इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि ने कुश-लव को समझाया। ३८ अत्यंत मनोहर चार मुखड़ों से तथा चार भुजाओं से शोभायमान वेदों को सिर के रूप में वहन (धारण) करनेवाले ब्रह्माजी साथ में शोभासंपन्न सरस्वती को लिये हंस पर बैठे देव-मुनियों के समूह के साथ अनुपम राजसी तेज से शोभायमान हो आ उपस्थित हुए। ३९ तिलोत्तमा, रंभा, मेनका आदियों के सम्मेलन को साथ लिये छत्र, ध्वज, पताकाओं से सुशोभित देवेन्द्र अपनी पत्नी शची को पार्श्व में ऐरावत (हाथी) पर, साथ लिये हुए आ पहुँचे। अग्र भाग में देवलोक के चारण-भाट उपाधियाँ ज़ोर-शोर के साथ बखानते आ रहे थे। देवगण देवेन्द्र को घेरे आ रहे थे। ४०

हौरद शोणच्छविय घन सुरुचिरद कायद सप्त जिह्वेय
वर शिरद्वय दनुपमांघ्रित्रयद केसुरिय
स्फुरित वक्त्रद वामभागद निरुपम स्वाहासतिय बं-
धुरद हुतवह नैदिदनु वसुगणद गडणदलि ॥ 41 ॥
काळमेघद तनुरुचिय दंष्ट्रळिगळ बाहुद्वयद सं-
स्थूल कायद कठिणदंडद करद भीषणव
तोळिगौकिद यमिय घन विकराळ सैरिभदेरिकेय लय-
काल नैदिदनखिळदूत परेत गण सहित ॥ 42 ॥
घन शरीरद काळिकेय कुडि मिनुगुगळ दाडॆगळ कडॆ गॆं-
पिन महोग्रविलोचनद गुजुरॆद्द तलॆनविर
मनुजवाहन दिद राक्षस वनितॆ सहित समस्त राक्षस
जन सहित नडॆतंदना राक्षस कुलाधीश ॥ 43 ॥
भरित भंगव्यक्त जलसीकरद कदंबद फेन पिंडो-
त्करद बहळावर्त बुद्बुददुरु गडावणेय
वर सरित्सागरद रत्नाभरण शोभॆय पाशधरनु-
ब्बरद गमनद लैदिदनु जलचरर गडणदलि ॥ 44 ॥
क्षिप्र गतिय कुरंगदुरु निगम प्रभावद भूरिचैत-
न्य प्रकर दगणित मरुद्गण दिषु शरासनद

लाल रंग के सुन्दर शरीरधारी, सात जिह्वावाले, दो सिर तथा प्रज्वलित (धगधगाती) लाल जिह्वा से युक्त मुखवाले अग्निदेव वाम पार्श्व में सती स्वाहा देवी को साथ लिये वसुगणों के साथ आ उपस्थित हुए। ४१ काले मेघ-सदृश देहकांति वाले, वक्र दाढ़ों से युक्त, दो भुजाओंवाले, स्थूल शरीर के, हाथ में भारी भयानक यमदंड धारण करनेवाले यमदेवता यमी को भुजाओं में उठाए भैंसे पर आरूढ़ हो अपने समस्त दूत और भूतगणों के साथ आए। ४२ काले रंग के शरीरवाले ज़बर्दस्त बिजली की चमक के दाढ़ों से युक्त, उग्र लाल-लाल आँखोंवाले, गुझे-गुझे बालोंवाले राक्षसकुल के अधिपति नैर्ऋति मनुष्य वाहन पर सवार हो अपनी राक्षस-पत्नी को साथ लिये राक्षसों के साथ आ उपस्थित हुए। ४३ भरकर फूट पड़नेवाले जलकणों के समूह से संपन्न, फेन और बुदबुदों से युक्त, असंख्य आवर्तों-प्रत्यावर्तों (भँवर-जालों से) के निर्घोषों से परिपूर्ण, नदी-सागरों के स्वामी वरुणदेव रत्नाभूषणसंपन्न जलचर-समूह के साथ आए। ४४ हिरन की तरह बहुत तेज, साँपों के लिए चेतनादायक, वेदों के प्रभाव से प्रतापशाली बने हुए, समस्त लोकों की संचालनास्वरूपी चेतनासंपन्न पंचरूपक के वायुदेव

सुप्रतापद सकल भुवन गतिप्रसिद्धिय पंचरूपक
दप्रभंजननैदिदनु निजपतिय गडणदलि ।। 45 ।।
वर भुजंगम सिद्ध विद्याधर निशाचर यक्षकुल किं-
पुरुष गुह्यक गरुड गंधर्वादि गणसहित
तुरग दुष्पर गतिय महदैश्वरियदत्यधिक प्रतापद
भरद भारवर्णेयलि बंदनु सखनुमापतिय ।। 46 ।।
तरुण केळै कुशनें हिंदण तरणिवंशद सोमवंशद
नरपतिगळिट्ट णिसितमर विमान वीथियलि
गुरुवसिष्ठनु वामदेवाद्यरुगळोप्पिद रबुज कुवलय
परम सखरेंसेंदरु सुताराग्रहद गडणदलि ।। 47 ।।
तुंबितंबर धन पताकाडंबरदि ननुपम वरूथक-
दंब वाहन निकर दिव्य विमान वीथियलि
तुंबुरर नारदर दिविजनितंबिनियर सुगीत रचना
डंबरद देखाळ मिगे रंजिसितु गगनदलि ।। 48 ।।
कळकळद काहुरद कंबिगळुलुहगळ पडियररर दिविजा
वळिगळोत्तोरोयलि जडिदुदु कूडे गगनतळ
हळुरें धिरु धिरु आपु मझ मंगळे महासतियादि माया
ललनें यवधारेंब दनिकेळिसितु रघुपतिय ।। 49 ।।

अत्यंत समर्थ बलशाली मरुत्गणों के साथ धनुर्बाण हाथ में धारे अपने स्वामी इन्द्रदेवता के समूह के साथ-साथ होते हुए आये । ४५ निशाचर, यक्ष, नाग, सिद्ध, किंपुरुष, विद्याधर, गुह्यक, गंधर्व, गरुड़ आदियों के साथ महान ऐश्वर्य संपदा के अधिपति, अत्यंत वीर, शिवजी-मित्र कुबेर चौकड़ी भर रहे उछल रहे घोड़े पर सवार हो वहाँ आ उपस्थित हुए । ४६ हे युवा कुश, सुनो । पूर्व में पैदा हो इस दुनिया से गुजर गये सूर्य तथा चन्द्रवंशों के राजे-महाराजे स्वर्ग से उतर आकर, देवताओं के विमानों की पंक्तियों में आ जुटे । गुरु वसिष्ठजी, वामदेवादि, सूर्य-चन्द्र, शुभ नक्षत्र, शुभ ग्रहों के साथ दिखायी दिये । ४७ असाधारण गति तथा ढंग के रथ और सवारियाँ, दिव्यविमानों की पंक्तियाँ अपने फड़फड़ाते ध्वजों के डील-डौल के साथ आकाश भर में भर गये । तुंबुर, नारद तथा देवता-स्त्रियों के अमोघ संगीत के वैभव का आधिक्य आकाश में प्रकट हुआ । ४८ कलकल निनाद के साथ बड़े संभ्रम से शोरगुल मचा रहे द्वारपालकों की तथा देवताओं की भीड़ आकाश को आतंकित करने लगी । 'वाह वाह ! भेष भेष ! धन्य धन्य ! वाह रे वाह ! क्या ही सुन्दर !' आदि उद्गारवाचकों से युक्त तथा मंगला,

मुसुकि बीळुव पुरवरद राक्षसर नॆरवियनवनि जॆयना
क्षिसुव तवकद तरुचरर नॆडबलद भागदलि
असबडिवुतसुरेंद्र नति सरभसद सौरंभदलि बरॆ कं-
डसुरहर मूगिनलि बॆरळिट्टॊलॆ दनवयवव ।। 50 ।।
तम्म नोडी बह विकारविदॆम्मदागलु बेकु नाचिकॆ
नॆम्मितै लेसागि नोडच्चरिय नीनॆनुत
चिम्मुवमरुष दग्निकणदलि बिम्मिनुद्रेक दलि सुरपन
मॊम्मननु करॆदिळुहि ता होगॆंदु नेमिसिद ।। 51 ।।
आर सिरिगिवळिनितु कडुसिंगारवनु कैकॊंडळिदिव
ळार नेमदलेरिदळु मणिमयद दंडिगॆय
वीर नोडै तम्म नॆम्मुवुदार नीयपहास मनकिदु
सेरुवुदॆ घाताळियंगवनोडु नीनॆंद ।। 52 ।।
इवळु कळुहदॆ बिडुवळे निन्नुवनु नम्मॆडॆ गडवियलि कप-
टवनु कैकॊंडॆ रळॆयिदु नीनॆनलु कॆडॆ नुडिदु
विविध माया रचनॆयलि नम्मुवनु कळुहिदळो विचारद
हवण नरियदॆ निन्न जरॆदॆनु तम्म तानॆंद ।। 53 ।।

महासती, आदिमायाशक्ति भो पराक ! आदि संबोधनों से भरे-पूरे शब्द व ध्वनियाँ रघुपति को सुनायी पड़ीं । ४९ आ-आकर मुकर पड़नेवाले लंका नगरी के राक्षससमूहों को, सीता के दर्शन के लिए उत्सुक वानरों को दाएँ-बाएँ (अपने हाथ के दंड से) ठेलते विभीषण जो बड़े डील-डौल के साथ शीघ्रता से जो बढ़े आ रहे थे —यह देख राम ने नाक पर उँगली धरी और वह (यह दृश्य देखने के लिए) एक ओर थोड़ा झुक गये । ५० "भाई लक्ष्मण, अब (जो सम्मुख) आ रहा विकार हमारा ही है । लज्जाके मारे गड़ा जा रहा हूँ । भाई, देखो न यह आश्चर्य !" इस तरह कहते क्रोधाग्नि की चिनगारियाँ उगलते उद्रिक्त हो अंगद को बुलाकर "सीता को (पालकी से) उतारकर बुला लाओ । जाओ (जल्दी) ।" इस तरह आज्ञा दी । ५१ "किसकी संपत्ति का उपभोग करते इसने इतना बड़ा भारी अलंकार कर लिया ? या अलंकृत होने को स्वीकार कर लिया ? किसकी आज्ञा से यह हीरे-जड़ी पालकी में बैठी ? हे वीर भाई मेरे, सुनो । इससे किसकी बदनामी होगी ? यह सब मैं कैसे सहन करूँ ? इन उपद्रवियों का दुराचार तो देखो सही ।" इस तरह राम ने कहा । ५२ "इसी ने तो तुम्हें भी मेरे पीछे-पीछे जंगल भगाया था न ? 'यह मायावी हिरन है' —इस प्रकार समझाने पर भी इसने तुम्हारी

ऒल्लॆ नॆन्नदॆ परर वैभवदलिल चित्तव बॆरसि कामुक
वल्लभॆ यरंदवनु मॆरॆ दॆम्मॆडॆगॆ नडॆतह्हुदु
ऒळिळतॆ नम्मन्वयकॆ भयविल्लदिह परियॆंतुटॊ ना-
वॆलिल यीपरि कंडुकेळिद कर्णय विल्लॆंद ॥ 54 ॥
हगरणव नोडनुज दड्डिय बिगुह नीक्षिसु मॆरॆदु बह दं-
डिगॆय कंडॆ केळिदै कंचुकिगळुग्गडव
नगॆय सुरिदळु नसगॆनुत नृप मॊगव तिरुहिदर्निंद्र तनुजन
मगनु नडॆतंदा विभीषण देव गिर्तॆंद ॥ 55 ॥
ऎलॆ विभीषणदेव रघुकुल तिलक नंदणदिद देविय
रिळिदु बरलॆंदॆन्न कळुहिदरॆंदु कर्णदलि
तिळुहलॆदॆ झल्लॆंदु चिंतॆय तळॆदु तानैतंदु करकु
ट्मळदिना निजशरणि बिन्नैसिदनु रघुपतिगॆ ॥ 56 ॥
देव तानपराधि भृत्यन सेवॆयैसिदु हलवु परियलि
देवियरु तावॊस्लॆ वॆंदरु वैभवोचितव

निंदा की। मुझे भी कई प्रकार के माया-विमोह में फँसाकर इसी ने भिजवाया। भाई लक्ष्मण, इसकी यह सब करतूत जाने बिना ही मैंने भी तुम्हारी निंदा की।" इस प्रकार राम ने कहा। ५३ मना न करते, अन्यों के वैभव पर अपने आपको लुटाते (समर्पित करते) एक कामुक स्त्री की तरह इस तरह धूमधाम के साथ हमारे यहाँ यों चले आने से क्या हमारे कुल-गौरव को कलंकित न करेगा? निर्भय होने की रीति न जाने कैसी रहती है? हमने कहीं भी हुई इस प्रकार की घटना के बारे में न सुना, न देखा। ५४ "भाई लक्ष्मण, इस व्यर्थ की बात पर थोड़ा सा ग़ौर कर देखो। पालकी में पर्दे कैसे लगे हैं? धूमधाम के साथ आती पालकी तो देखी न? कंचुकियों से हो रही उपाधियों की घोषणा तो सुन रहे हो न? हमें (सीता ने) हँसी-मज़ाक़ का पात्र बनाया।" इस तरह कहते राम ने मुँह मोड़ लिया (मुँह घृणा से फिरा लिया।) इस तरफ़, अंगद ने पधार कर विभीषणदेव से यों कहा। ५५ "हे विभीषण, 'देवी जी पालकी से उतरकर पैदल चली आवें' इस प्रकार रघुकुलतिलक ने कहला भेजा है।" —(इस प्रकार) अंगद ने विभीषण के कान में कहा। यह सुन विभीषण की छाती धक से रह गयी। चिंतित (व्याकुल) हो विभीषण ने राम के पास आकर हाथ जोड़े यों विनती की। ५६ "भगवन, अपराध मेरा है। यह आपके चरण-सेवक की अकिंचन सेवा है। देवी जी ने कई प्रकार से मुझे समझाते हुए

देवरलि मुळिसाद रोम्मिगे सावेनेंदोडबडिसि तंदेनु
कावुदन्नपराध कृत्यव मरॆदु नीवॆंद ।। 57 ।।
अॆले विभीषणदेव लोकावळिय मॆच्चिसि नडॆवुदे हॆं
गळिगॆ लक्षण भुवनदलि सुव्रतॆय रवरीग
हळुवदलि सॆरॆविडिदु रक्कस नॆळॆदु तंदंदिनितु शोभा
कलित वैभव विद्दुदे नी हेळु तनगॆंद ।। 58 ।।
आरु नोडरु कंगुरुडने वीर रावण नंदिनिंदे
नोरणिसिते लज्जॆयंगीकरण वंगदलि
होरदिरु नी होगु डॊंबिन कारणवदेनिळुहि ता परि
वार नोडलि मरळि बिन्नह बेड निनगॆंद ।। 59 ।।
परकिसुवरॆ पतिव्रतॆयराचरणॆ सुजनरि गरिय बहुदु-
र्वरॆय दुर्जनरुगळ मॆच्चिस बारदिदु सिद्ध
इरळॆ मारिसिकॊंडु काशिय पुरदॊळॆम्मन्वयद पार्थिव
नरसि नैषध नरसियिरळे चैद्यनगरियलि ।। 60 ।।

इस प्रकार के वैभव के लिए मना कर दिया था। तब मैंने उनसे यही कहा था कि प्रभु अगर नाराज हो जायँ तो मैं अपने प्राणों को एकदम त्याग दूंगा। देवी जी को मनवाकर यों मैं ही बुला ले आया। मेरे इस अपराध को क्षमा करते हुए रक्षा करें।" इस प्रकार विभीषण ने प्रार्थना की। ५७ "हे विभीषणदेव, लोक-मर्यादा की रक्षा करते हुए आचरण करने में ही स्त्रियों की शोभा बढ़ती है; दुनिया में ऐसी स्त्रियाँ ही पतिव्रता कहलाती है। अरण्य में क़ैद कर राक्षस जब खींचे लिये जा रहा था, तब यह सब वैभव, धूमधाम कहाँ थी? तू मुझे बता दे।" इस प्रकार राम ने कहा। ५८ "कौन नहीं देख पाता? उस दिन का रावण क्या (आज) अन्धा है? आज ही वह लज्जा से इतनी आवृत कैसे हुई? व्यर्थ की यह बकवाद बन्द करो। जाओ। स्वाँग से (आज) क्या प्रयोजन है? उसे (पालकी से) उतारकर लिवा ले आओ। सारा परिवार देखे। फिर, किसी प्रकार के तुम्हारे निवेदन की ज़रूरत नहीं।" इस तरह राम ने कहा। ५९ "सोच-विचार कर देखें तो पतिव्रताओं के आचरण को सहृदय सज्जन समझ सकते हैं। लेकिन इस धरती पर दुर्जनों को कैसे समझावें? कैसे प्रसन्न रखें? यह सत्य है। (पूर्व में) हमारे वंश की हरिश्चन्द्र की रानी ने काशी नगरी में अपने को बिकवाकर जीवन-यापन नहीं किया? नल की रानी ने चैद्य नगर में पति-विरह नहीं भुगता? ६० क्या वे लोक-निन्दा की शिकार बनीं? तुम क्यों दुखी

बंदुदेयवरिगॆ जनंगळ निंदॆ दुगुडवदेकॆ निनगि-
न्नोंदु निमिषदोळरियॆ बहुदाडिसिद मातिनलि
संदॆगव बिडु कालुनडॆयलि तंदुतोरिसु हलवुनुडि बे-
डॆंदु बीळ्कॊंड लळ्ळॆ वाहुत शरणनैतंद ॥ 61 ॥
तायॆ निम्मरसन निरूपक वायि तिळॆगवतरिसि रायर
रायनल्ला मेलॆ निम्मय जीवितेशनल
आ यशः करनाज्ञॆ निमगॆम गायतद फल सिद्धियॆनॆ जल
जायतेक्षणॆ धरॆगॆ दुम्मिक्किदळु दुगुडदलि ॥ 62 ॥
जयजयॆंदुदु कुट्मळित पाणियलि परमस्तोत्रवचनद
नियमदलि सनकादि सकल सुपर्व मुनिनिकर
भयभरित भक्तियलि सुर समुदय सरस्वति मुख्य सुरना-
रियरु विनमितराय्तु संदर्शनदलवनिजॆय ॥ 63 ॥
लोकमातॆ समस्त दिविजानीक पूजितॆ सुरनरोरग
लोक वंदितॆ विष्णु वल्लभॆ सकल गुणभरितॆ
एकनाथॆ पुराण पुण्यश्लोक पावन चरितॆ माया
श्रीकमलॆ नमोयॆनुत मैयिक्कितु सुरव्रात ॥ 64 ॥

होते हो ? मेरी बातों का परिणाम क्या होगा —यह क्षणार्ध में तुम्हीं को मालूम होगा। अतः सन्देह को त्यागो। पैदल हो लिवा लाते हुए सीता के दर्शन कराओ। इस समय किसी प्रकार के तर्क से कोई प्रयोजन नहीं।" इस तरह आज्ञापित कर विभीषण को राम ने जब भेजा तब वह भक्त काँपते हुए आया। ६१ "माताजी, भगवान (आपके राजा) राम की आज्ञा है। पालकी से कृपया उतरें। राम राजाधिराज हैं न ? तिस पर आपके प्राणेश हैं न ? उस कीर्तिमान की आज्ञा का पालन करना, हम दोनों के लिए अत्यंत फलदायक है।" इस तरह कहने पर सीता अत्यंत दुःखी हो धरती पर कूद पड़ी। ६२ सनकादि समस्त देव, मुनि-वृन्द ने हाथ जोड़ 'जय जय' कार करते स्तुति की। भयभक्तिपूर्ण भाव से देवसमूह तथा सरस्वती आदि प्रमुख देवता-नारियों ने सीता के दर्शन से लाभान्वित प्रणाम किया। ६३ "हे लोकमाता, समस्त देवगणों से पूजिता, देव-मानव-उरगों से प्रणाम पानेवाली, हे विष्णुपत्नी, सकलगुण-भरिता, एकैकस्वामिनी, प्राचीन काल से ही स्तुतिपात्र हे देवी, पवित्राचरण-संपन्ना, माया-लक्ष्मी ! तुम्हें अनंत प्रणाम है; स्वीकार हों।" इस तरह कहते देवताओं ने प्रणाम किया। ६४ "हे विभीषणदेव, राम की

नोवु मनदलि तागिदुद कंडे विभीषणदेव वररा-
जीव नेत्रन बगॆय बल्लॆनु निन्नदॆसॆयिंद
इ विकारव ननुकरिसिदॆनु भावलेसा गिरदु तनगि-
न्नाव हृदनिन्नेनु गतिमतियॆंदळिदुमुखी ॥ 65 ॥

हलव हंबलिसुत्त मनदॊळगळदु हॊय्वुत दुगुड भारद
लळुकु तंजुत सारिदळु सचराचरात्मकन
जलजभवसुत जलज सखसुत जलजनयनावरज रिदिरॆ
द्दिदळुहिदरु मस्तकवनंघ्रियॊळा पतिव्रतॆय ॥ 66 ॥

हॆंपळिद तनुलतॆय हरुषद सॊंपु सडलिद मुखद नोटद
गुंपुदॆगॆदक्षिगळ कोडियलॊगुव किरुवनिय
कंपिसुव करणं गळंजिकॆ जॊंपिसुव मानसद लज्जॆय
लंपिनंबुज वदनॆ मैयिक्किदळु निजपतिगॆ ॥ 67 ॥

बीळदनुकंपवु कटाक्षद लेळदधिक स्नेह करुणदॊ
ळाळदम रुषदान नदॊळभिमान मानसद
बाळिकॆ यॊळड मॊगद लनुजन मेलु नोट दॊळिदॆना नी
लाळकिय नीक्षिसदॆ नृपनरॆ गळिगॆ परियंत ॥ 68 ॥

वेदना को समझ गये हो न ? कमललोचन श्रीराम की मन की भावना मैं अच्छी तरह परखती हूँ। तुम्हारे कारण अलंकार के इस विकार की शिकार बनी। राम के अंतःकरण की विचारधारा मेरे प्रति अनुकूल नहीं दीख पड़ती। पता नहीं मेरी क्या स्थिति (दशा) भावी में होने जा रही है ? मेरी क्या दुर्गति होगी —कौन जाने ?" इस प्रकार सीता ने कहा ६५ कई रीतियों से मन ही मन घुलते, नापते (भावी का अन्दाजा लगाते) गुनते, दुःख-भार से सहमते काँपते सीता सचराचरात्मक राम के पास आयी। ब्रह्माजी के पुत्र जाम्बव, रविसुत सुग्रीव, कमलाक्ष के भाई लक्ष्मण —ये सभी उठ खड़े हुए तथा सीता के सम्मुख उन्होंने उस परिव्रता के श्रीचरणों में माथा नवाकर प्रणाम किया। ६६ सौंदर्य खोया कोमल शरीर, खुशी के सौंदर्य से वंचित मुखड़ा, गांभीर्य खोये नेत्रों के कोर से बाहर टपक रहे अश्रुकण, कँपती देह, भय से आवृत मन —इस प्रकार की स्थिति मे लज्जा से अलंकृत सीता ने पति के चरणों में सिर रख प्रणाम किया। ६७ सीता को देख राम करुणा से द्रवित नहीं हुए; प्रगाढ़ प्रेम का भाव भी उनकी आँखों की कोर में प्रकट नहीं हुआ; करुणा के त्यागे क्रोधसंतप्त मुखड़ा तथा गर्वीले भाव से ओत-प्रोत मन से राम मुँह मोड़ (मुखड़ा फिराए) भाई को निहारते सीता की ओर बिना देखे आधे घड़ी

देव देवाधीश सर्वगुणावलंबन वर चराचर
जीवरक्षक घन कृपाकर भक्त सुरधेनु
देव नरनाटकद माया श्रीवरनॆ चित्तैसु सीता
देवियर नुपचरिस बेकॆंदजनु कैमुगिद ॥ 69 ॥
नरनॆ नी नर सतियॆ जानकि तरुचररु मर्कटरॆ विश्वं-
भरॆय भारव तिद्दलोसुग जनन वार्त्तॆंब
परिय नावेनरियॆवे पतिकरिसु परम पतिव्रतॆय नि-
ष्ठुर विदेकॆलॆ राम निनगॆंदीश कैमुगिद ॥ 70 ॥
धरॆय भारव कळॆदॆ धरणीसुरर सलुहिदॆ हव्यकव्या-
ध्वरव नॆरॆ पालिसिदॆ दिविजावळिय रक्षिसिदॆ
नरचरित्रद नाटकव विस्तरिसिदुदु लेसायि तंगी-
करिसु सीतॆयनॆंदु मैयिक्किदनु सुरनाथ ॥ 71 ॥
उळिद देवव्रात भाळस्थळद मुकुळित पाणिपंकज
गळलि रामन बेडिकॊंडरु शरधि घोषदलि
हळिवु हॊद्दद काय दूष्या वळिग ळॆदद नित्यशुद्धॆय
ललित साध्विय वरिस बेकदभ्रमार्गदलि ॥ 72 ॥

तक वैसे ही खड़े थे। ६८ "भगवन्! हे देवाधीश! समस्त गुणों के आधारस्वरूपी प्रभो! चराचर-जीवरक्षक! हे करुणाकर! भक्तजन-कामधेनु! भगवन्! नररूपधारी नाटक के माया लक्ष्मीपति! दया करो। सीता का आदर करो!" इस प्रकार ब्रह्माजी ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की। ६९ "क्या तू केवल मानव है? जानकी केवल मानव-स्त्री है? ये वन्दर केवल वन्दर हैं? धरती का भार उतारने के लिए तेरा यह अवतार जो हुआ है—यह सत्य क्या मैं नहीं जानता? परमपतिव्रता इस स्त्री को स्वीकार करो। इस प्रकार इतना कठोर क्यों बने?" इस तरह कहते शिवजी ने हाथ जोड़े। ७० "धरती का भार उतारा; ब्राह्मणों की रक्षा की। देवयज्ञ, पितृयज्ञ आदि यागों की रक्षा की। देवताओं की रक्षा की। मानव-आचरण की नटना (नाटक) जो की, अच्छा ही हुआ। अब सीता को स्वीकार कीजिए।" इस तरह कहकर देवेन्द्र ने प्रणाम किया। ७१ आकाश में उपस्थित अन्य देवता अपने-अपने माथो पर हाथ जोड़े समुद्र के घोष की तरह ध्वनि करते पुकारते— "निंदातीत, कलंक-रहित देह के, नित्य शुद्धा साध्वी सीता को अपनावें" इस तरह —प्रार्थना करने लगे। ७२ वेदों ने पुकार-पुकारकर इसी प्रकार प्रार्थना की। उन धर्मशास्त्रों ने भी रघुपति

श्रुतिगळीपरि योरलिदवु क्रतुततिगळीपरि वाचि सिदवा
स्मृतिगळितेंदे निरंतर नुडिदवीपरिय
वितत निगमागम पुराण प्रततिगळु मोरेयिट्टवी सु-
व्रतेय नधिक पतिव्रतेय वरिसेंदु रघुपतिगे ॥ 73 ॥
अंगदरु बळिकेद्दु जांबव तरणितनुज विभीषणाद्यरु
मरेय बिडु मणिवेळगिनोळ गडगुवदे याकाश
अरियदे निन्नुवनु जगवेले सिरियरस कैविडिदु तेगे स-
च्चरितेयनु सुव्रतेय नेंदरु करुणभावदलि ॥ 74 ॥
एळिरै नीवेम्म दैवद मेले हायिकि होगळदिरि सा-
केळिलव माडदिरि नीवुचितोप भाषितद
मेलनेणकेय नरियदेम्म नृपाल वंशके कुंद होरिसुवु
दोल गार्तवे निमगे निम्मनुमानवेनेंद ॥ 75 ॥
स्त्रीये लोकदोळिवळु लोकद मायकातियरिवळ शिष्यरु
नोय नुडिदडवियलि नूकिदळिवळु लक्ष्मणन
मायदेरळेय नेवदलसुरर रायनलि संकेत नडेदुदु
दाय तप्पितु कडेयलिद नीवरियिरेयेंद ॥ 76 ॥

से इसी तरह निवेदन किया। वेद-शास्त्र-पुराण भी इसी प्रकार निवेदन करते गिड़गिड़ाए। सभी ने इसी प्रकार प्रार्थना की कि इस सुव्रता को, इस श्रेष्ठ पतिव्रता सीता को स्वीकार करो। ७३ तत्पश्चात् जाम्बव, सुग्रीव, विभीषणादियों ने उठकर राम के चरणों में गिरकर— "रहस्य को अब त्याग दो। रत्न की कांति में क्या आकाश छिप सकता है? क्या दुनिया तुझे नहीं जानती? हे लक्ष्मीपति, सच्चरित पतिव्रता का करुणापूर्ण रीति से हाथ धरकर उद्धार करो, स्वीकार करो। —इस प्रकार प्रार्थना की। ७४ "तुम सभी उठो। मुझे भगवान से ऊपर उठाकर (भगवान से श्रेष्ठ मानकर) यों प्रशंसा मत करो। तुम अपने भाषणों से, वचनों से मुझे लज्जित मत करो। भावी आलोचना क्या है —इसे जाने बिना हमारे राजवंश पर दोषारोपण थोपना क्या तुम्हारी सेवा के लिए यह शोभा देता है? तुम्हारा उद्देश्य क्या है? इस प्रकार राम ने पूछा। ७५ "क्या यह धरती पर की मामूली स्त्री है? लोक की मायाविनियाँ इसकी शिष्याएँ हैं। लक्ष्मण के मन को चुभनेवाली बातें कहकर इसने उसे जंगल में चले जाने को मजबूर किया। माया-हिरन की आड़ में राक्षस राजा के साथ रहस्यमय षड्यंत्र चलाया। लेकिन

इवळि गोसुग बंदु हगॆयनु तविसितिल्ल नरण्यननु ता-
निवनु कॊंदनु पूर्वदलि नम्मन्वयागतद
इवन कॊललॆंतॆंदॆवल्लदॆ विवशॆयादी सतिय हंवलि
नवरु नावस्लॆंम्म निर्बंधिसलु वेडॆंद ॥ 77 ॥
तप्पु हॊर्रदवॊलाव शपथव नॊप्पुगॊळलद माडुवॆनु दिट
तप्प संधिसितादडिल्लियॆ विसुड्डुवॆनु तनुव
ऒप्पुवुदु बिन्नह निद तानिप्पुरिय कामिनियॆ निनगॆ स-
मर्पिसिद तनुवादॊडलि वळिकॆंदळबुजाक्षि ॥ 78 ॥
देव नीनल्लदॆ यतःपरवावुदनु ता बल्लॆनादडॆ
देव ततियिदॆ दिव्य मुनिजनविदॆ समीपदलि
तावरॆय नॆंडिलिन सखवंशावळिय नृपरिदॆ परीक्षिसि
कावुदल्लि मेलॆनुत बिन्नैसिदळु सीतॆ ॥ 79 ॥
आदडग्निय हॊक्कु हॊरवंटी दिविजरनु मॆच्चिसिद मे-
लादडागलि भरळि मातॆम्मॊडनॆ बेडॆनलु
आदिमाया शक्ति वळिक हसादवॆनॆ कैमुगिदु भरत स-
हॊदरनु बिन्नहव माडिदनॆंद्दु रघुपतिगॆ ॥ 80 ॥

अन्त में दाँव उलट गया। यह तुम लोग नहीं जानते।" इस प्रकार राम ने कहा। ७६ "इसके कारण आकर हमने शत्रु की हत्या न की। पूर्व में इसने हमारे वंश के राजा अनरण्य की हत्या की थी। इसीलिए हम रावण की हत्या करने आए। इस निरंकुश स्त्री के मोहवश मैंने यह युद्ध नहीं किया। व्यर्थ ही मुझे मजबूर मत करो।" —इस प्रकार राम ने कहा। ७७ "मुझ पर मिथ्यारोप न लगे—इस रीति की, आपको पसंद पड़नेवाली, किसी भी तरह की सौगंध खाने को मैं तैयार हूँ; यह सत्य है। अगर मेरी ग़लती रही तो यहीं प्राणार्पण करूँगी। मेरी बिनती को स्वीकार कीजिए। क्या मैं कुलटा चरित्र की स्त्री हूँ? तुम्हें समर्पित देह अगर यही है तो स्वीकार करें।" इस प्रकार सीता राम से बिनती करने लगी। ७८ "हे मेरे स्वामी, अगर मैंने तुम्हारे सिवा और किसी को जाना-पहचाना है तो इसके लिए गवाह यह देवगण हैं; यही दिव्य मुनिवृन्द है; सूर्यवंश के राजा हैं। (हर तरह) परीक्षा कर मेरी रक्षा करना उत्तम मार्ग है।" इस प्रकार उसने बिनती की। ७९ "अगर ऐसी बात है तो अग्नि-प्रवेश करके बाहर आकर जब इन देवताओं को प्रसन्न करोगी तभी स्वीकृत हो सकोगी; तब तक अन्य किसी प्रकार के वार्तालाप के लिए गुंजाइश नहीं"; इस तरह राम ने कहा। आदिमाया

अरस चित्तै सौट्टिट सग्निय नरसिगोसुग हौगुवेनुरियनु
बेरसिदरें बिडि देवियर नुरियोळगे बेरसदिरें
वरिसि निम्म पतिव्रतेयनिदु निरुत सतिगन्याय वुळ्ळडे
यद्रि वरिन मोदलाद हदिनाल्वरुगळिवरेंद ॥ 81 ॥
तुंगबल नी नोट्टिट सग्निय नुंगदिद्दरें साकु निनगिद
नंग सति ता शुद्धयेंबुदनरिवें वाविदु
अंगविस लापरें धनंजय नंगुळलि ता हौक्कु होरवड
लंगविसिदिरें वनकें बिजयंगेय हेळेंद ॥ 82 ॥
देव चित्तैसरसि सीता देविगोसुग बेरे बेरव्
पावकन नुत्तरिसुवेवु निम्मडिगळिदिरिनलि
देव बेससेनु तेंद्दरा सुग्रीव जांबव वालिसुतना
पावमानि सुषेण नील गवादि नायकरु ॥ 83 ॥
अंजुवेवु नाव् निमगें निम्मभिरंजकव नाबल्लें नी सति
यंजुवडे बिडलंज दिर्दडे होगलि हुतवहन

शक्तिरूपिणी सीता ने कहा— 'जो आज्ञा।' तब लक्ष्मण ने उठकर हाथ जोड़ते रघुपति से निवेदन किया। ८० "हे मेरे राजा राम! सुनिए। अग्निकुंड प्रज्वलित कराएँ; सीता के वास्ते मैं उस अग्नि में प्रवेश करूँगा। (उसके बदले में अग्नि-प्रवेश करूँ।) अग्नि ने यदि मुझे जला दिया तो तब सीता को अग्नि-प्रवेश करने दीजिए। अग्नि ने यदि मेरा स्पर्श न किया तो पतिव्रता सीता को स्वीकार कीजिए। यह सत्य है। सीता-पति के साथ अगर कहीं अन्याय हुआ तो सूर्य तथा चौदह मनुओं को यह घटना मालूम होगी ही।" इस तरह लक्ष्मण ने कहा। ८१ हे उन्नत बलशाली लक्ष्मण, तू अग्नि का संग्रह कर (आग प्रज्वलित कर)। अग्नि सीता को न निगले— बस, इतना यथेष्ट है। हम इसका मतलब यही निकालेंगे कि हमारी सती साध्वी परिशुद्ध है। इसको क़बूल करने में अगर वह समर्थ है तो एक बार अग्नि में प्रवेश भर कर वह बाहर निकल आए। यह शर्त अगर उसे मंजूर नहीं तो उसे जंगल जाने के लिए कह दो।" इस प्रकार राम ने कहा। ८२ "सुनिए भगवन्; हम सभी रानी सीता के लिए अलग-अलग हो, आपके सम्मुख वैयक्तिक अग्नि-परीक्षा देने के लिए तैयार हैं, आज्ञा दीजिए।" इस तरह कहते सुग्रीव, जांबव, अंगद, हनुमान, सुषेण, नील, गव आदि वानरनायक उठ खड़े हुए। ८३ "मैं तुमसे भयभीत हूँ; तुम्हारी मनोकामना मैं भलीभाँति जानता हूँ। यह सती सीता अग्नि-प्रवेश से भयभीत है तो वह अग्नि-प्रवेश त्याग दे। अगर वह डरती नहीं

कंज भवभव मुख्य सकल समंजसरु कूगिदर्रे सरि मर
ळेंजलिन मातिल्ल नमगेंदरस नेमिसिद ॥ 84 ॥
केळिदै सौमित्रि मित्र कुलाळिगुपहति वारदंतिरॆ
बीळुवॆनु शुचियादरेळुवॆनग्नि कुंडदलि
मेलॆ मातिन्नेकॆ वंशविशाल वैभववॆन्नदैसलॆ
तूळिसग्निय नोट्टलिधन वेंदळिदुमुखि ॥ 85 ॥
तप्पदेंदवनिर्जय वचनव नोप्पु गोंडनु राम नुडिगळु
सोप्पुळागदॆ सुम्मनिर्दरु सुररु वानररु
अप्पु कणदुभयाक्षिगळ निम्मप्पननुजनु करॆदुवळिक स-
मर्पिसिदनी मातना लंकाधिनाथंगॆ ॥ 86 ॥
रचिसु कुंडवनग्निदेवर रुचि दिगंतव वॆळगलॆंबी
वचन मात्रकॆ कोटिसंख्येय सरिग रक्कसरु
प्रचुर तरवॆनॆ सीळिदरु वळिकचलॆयनु समचौकदलि शशि
रुचिय शिलॆगळ कंडरिसि कट्टिदरु कुंडदलि ॥ 87 ॥
तंदु बळिकोट्टिदरु परिमळ चंदनद नीरस कुजंगळ
नंदमिगॆ मध्यदलि सुरिदरु भार संख्येयलि

तो अग्नि-प्रवेश करे। ब्रह्मा, शिव आदि प्रमुख योग्य पुकारकर कहें तो यथेष्ट है। बार-बार वही कही कहना (दुहराना) जूठन है। इसके लिए मेरे पास समय नहीं।" इस प्रकार राम ने कहा। ८४ "सुना न लक्ष्मण ! मैं अग्नि-प्रवेश करूँगी ताकि रविवंशीय राजाओं की बदनामी न हो। परिशुद्ध रही तो (सुचारु रूप से) बाहर आ जाऊँगी। इससे बढ़कर और क्या कहूँ ? श्रेष्ठ वंशियों का वैभव मेरे जिम्मे है। आग प्रज्वलित करो। लकड़ियाँ चुनो।" इस तरह सीता ने कहा। ८५ "यह बिलकुल सच है" —इस तरह कहते राम ने सीता का अनुमोदन किया। देवता तथा वानर चुप्पी साधे खड़े थे। आँखों में अश्रुधारा भरे तुम्हारे पिता के भाई लक्ष्मण ने लंका के राजा विभीषण को बुलाकर इस प्रकार कहा। ८६ "यज्ञकुंड रचो। अग्नि-देवता की कांति आकाश तथा दिगंत को जगमगा दे।" इस प्रकार लक्ष्मण के कहते ही, (तुरंत) करोड़ों संख्या के समान बलशाली राक्षसों ने जमीन खोदकर सम-चौरस आकार में चन्द्रकांत शिलाओं को जोड़कर रखते सजाते हुए यज्ञकुंड रचा। ८७ श्रीगंध के, सुगंध भरे सूखे पेड़ों को लाकर, यज्ञकुंड में चुना गया। एक ताड़-वृक्ष की ऊँचाई के बराबर कई (मन) वजन के कर्पूर की वट्टियों को

ऒंदु ताळत्सेवदलि हळुकॊंदिदुत्तम कर्पुरवन-
ल्लिद मेलुरिगॊळिसि निलिसिदरनिल बांधवन ॥ 88 ॥
तुडुकि तंबरदुदिय शिखि हॊगॆ हॊडॆदु दभ्रद तारॆगळु कॆल
सिडिदु बिद्दवु कॆसुरिगळासुरद किडि सहित
मृडन वधु कम्मुच्चिदळु बॆदरॆडसि भारति वर विरंचिय
नडुवनप्पिद ळंजिसितु शिखि सुरवधूजनद ॥ 89 ॥
अळकुवरॆ सुव्रतॆयरग्निगॆ जलजभवभव हरिगळॆरॆगुव
रुळिदवर पाडॆनु पतिभजनानु चरितरिगॆ
बळिक कैमुगिदॆंदळरसंगॆलॆ नृपोत्तम निन्न सिरिपद
नळिनवल्लदॆ बल्लडॊळ कॊळलग्नि निजतनुव ॥ 90 ॥
अल्लदिर्दडॆ निम्म सिरिपद पल्लवव काणिसलि मुडिदी
मल्लिगॆय हूकंदिदरॆ कुंदिदरॆ मूगुतिय
सल्ललित बॆळगुट्ट सीरॆय कॆल्लॆ शिखि सॊंकिदरॆ निन्नव
ळल्ल जनकंगिळॆयमगळल्लॆंद ळिदुमुखि ॥ 91 ॥
अवधरिसु राजेंद्रकेळिन्नवळ निर्मळ शुचितनवनॆं
दवदिसुतॆ बलबंदळभ्रव चुंबिसुव शिखिय

कुंड के मध्य उँड़ेला गया। उसके बाद यज्ञकुंड प्रज्वलित किया गया। ८८ कुंड की ज्वाला आकाश के छोर तक पहुँची; धुआँ फैल गया। लाल-लाल ज्वाला की भयानक चिनगारियों सहित नक्षत्र छिटकने लगे। शिवजी की रानी ने आँखें मूंद लीं; घबरायी हुई सरस्वती ब्रह्माजी की कमर से लिपट गयीं। देवलोक की स्त्रियाँ इस आग से घबरा गयीं। ८९ सुव्रताएँ (पतिव्रताएँ) अग्नि से क्योंकर डरें? ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी पतिव्रताओं को प्रणाम करते हैं। तब अन्यों के बारे में क्या कहें? तत्पश्चात् सीता ने हाथ जोड़कर राम से कहा— "राजश्रेष्ठ आपके कमलकोमल श्रीचरणों के सिवा अन्य किसी का ध्यान अगर मैंने किया है तो यह अग्नि मुझे अपने में लील ले (निगल ले); विलीन कर देवे। ९० "अगर मैं ऐसी न रही (पतिव्रता रही) तो इन पावन आपके श्रीचरणों के दर्शन मुझे फिर से मिलें। मेरे जूड़े का, चमेली का यह फूल मुरझा जाय, नथ की कांति मलिन पड़े, पहनी (इस) साड़ी को कहीं आँच लगे, तो मैं आपकी भार्या न रही, जनक की भूमिजाया न रही।" —इस प्रकार सीता ने निवेदन किया। ९१ "कृपया ध्यान दें, हे राजश्रेष्ठ! इस मेरी परिशुद्धता-पवित्रता पर ग़ौर करें।" —इस तरह कहते सीता ने आकाश के चूम रहे अग्नि की प्रदक्षिणा की। आँख मूंदे शिवजी, ब्रह्माजी, देवेन्द्र, सूर्य आदि

अँवेय लीशंगज सुरेश्वर रविगळिगेवंदिसि धरित्री
धवगे कैमुगिदुरियोळगे धुम्मिक्किदळु सीते ॥ 92 ॥
हायेनुत हम्मैसिदनु रघुरायननुजनु पवनतनुजनु
बाय होय्दुकोळुत्त दोप्पने कॆडेदनवनियलि
तोयजप्रिय सूनु सहकपिनायकरु गोळिट्टरा का-
त्यायनी प्रमुखा मरियरोद्रलिदरु गगनदलि ॥ 93 ॥
सूसिदरु कंबनिय नंबर केश मोदलादवरु भोर्गरॆ
दासुरद शिखिधगधगिसिदुदु गगन दग्रदलि
दाशरथियांदोळदंत क्लेशभारद मणिद शिरदनि
मेष दृष्टियलिर्दे नीक्षिसुता धनंजयन ॥ 94 ॥
कुशने केळु पतिव्रतेयरिगे विषवमृत वहुदुरि हिमान्वित
रसवहुदु बलुहावु नेवळवहुदु बेंबिडदे
अँसगिदपवादंगळिवु तासिनवहुदिदु सिद्ध साकुव
शिशुविनवोलिर्दळु विदेहजे कैगळलि शिखिय ॥ 95 ॥
तेरॆगळब्बर वळिद घन सागरदवोलु लवकेळुसुर वा-
नर कदंबक विर्दुदै चित्रिसिद पुत्थळिय
इरविनंतिरॆ बळिक मेल्लने हरन तोडेयिंदिळिदु नेमव
धरिसि रामन बळिगॆ बंदळु गौरि हरुषदलि ॥ 96 ॥

देवताओं को प्रणाम कर पृथ्वीपति राम को हाथ जोड़े वन्दना कर अग्नि-कुंड में कूद पड़ी। ९२ 'हाय' कहकर लक्ष्मण मूर्च्छित हो गिर पड़े। हनुमान रोते-कलपते धड़ से धरती पर गिर पड़े। सूर्यसुत सुग्रीव, कपिनायक, रोने-धोने लगे। पार्वती आदि देवता-स्त्रियाँ आकाश में अत्यंत व्याकुल हो 'हाय-तोबा' मचाने लगीं। ९३ पार्वतीपति आदि देवताओं ने आँसू बहाए। आकाश को छूती ज्वालाएँ धू-धूकर जलने लगीं। दाशरथी श्रीराम डाँवांडोल मन की व्याकुलता लिये, सिर झुकाए टकटकी लगाकर अग्नि को देख रहे थे। ९४ सुनो कुश, पतिव्रताओं के लिए विष भी अमृत-सदृश है; ज्वाला तो हिमशीतल लगती है; विषैला सर्प कंठ-हार बन जाता है, किए अपराधों की वेदना दूर हो सुखी बनाती है, यह बिलकुल सच है। सीता अग्निदेवता के हाथ में पाले-पोसे शिशु-सदृश खड़ी थीं। —इस प्रकार वाल्मीकि ने वर्णन किया। ९५ लहरों के जोर मारने की स्थिति के शांत होने पर दिखायी पड़नेवाले महासागर-सदृश देव-वानर-समूह रंगीन गुड़ियाओं की तरह (स्तब्ध) खड़ा था। उसके बाद गौरी

नरचरित्रद नाटकद विस्तरणवति लेसाय्तु साक्षा-
त्परमपुरुषनु नीनु जानकि जगद जननियल
करॆदुको साकॆलिल परियंतर परीक्षिपॆ पुण्यचरितॆय
परम पातिव्रतॆयनॆंदरु गौरिदेवियरु ।। 97 ।।
बेडि कॊळले किनितु निमगॆ निरूढिसति शुचियादडनलन
बेडिकॊंबुदु काण बहुदंत्यदलि नीवॆमगॆ
आडिदुचित सुभाषितवु नॆरॆ काडदिरि नीवॆम्मनॆनॆ कै-
नीडि बारौ तंगिबायॆंदळु विदेहजॆय ।। 98 ।।
रविकुलेंद्रन चित्तवृत्तिय ह्वणऱिदु बळिक भवानिय
निवडिसिद नुडिगग्निदेवरु नडुगि देवियर
दिविजतति जययॆनलु तंदरु नवशरीरॆय घन विलास
प्रवर लावण्य प्रपूरॆय पूर्णगोमिनिय ।। 99 ।।
कुशनॆ केळ् पुटविट्ट मिसुनिय रसुमॆयंतिरॆ तनुप्रकाशवु
दॆसॆदॆसॆगॆ पर्विदुदु पसरिसितधिक सौभाग्य
हॊसपरिय हूदुऱुबिनलि ढाळिसुव मूगुति मूगिनलि बॆळु
वसनदंगदलोलॆ किवियलि मॆरॆदवा सतिय ।। 100 ।।

शिवजी की गोद से उतरकर स्वामी की आज्ञा से धीरे-धीरे राम के पास आयी। ९६ "तुम्हारा यह नर-नाटक का अभिनय बहुत ही सुन्दर रहा। तुम तो साक्षात् परमपुरुष हो, तो जानकी जगत की जननी है न ? पावन चरिता परम पतिव्रता की परीक्षा कहाँ तक करोगे ? बस हुआ। उसे बुला लो।" इस प्रकार गौरीदेवी ने राम से कहा। ९७ "तुम यहाँ तक (इतना) निवेदन क्यों कर रही हो ? तुम्हारी यह मुँह-लगी सती अगर इतनी पवित्र है तो अग्निदेव से प्रार्थना करो न ? अपने हमसे कहे गये श्रेष्ठ वचन की सत्यता अंत में देख सकोगी। यों व्यर्थ ही मुझे सताओ मत।" इस प्रकार राम के कहने पर गौरीदेवी ने हाथ बढ़ाकर वैदेही को पुकारा, "आ जा मेरी बहन आ जा।" ९८ रविकुल अधिपति के मनोधर्म को पहिचान कर गौरीदेवी ने निश्चित रीति से जो वचन कहे उससे अग्निदेव भयभीत हो, देवताओं के "जय-जयकार" के मध्य नूतन देह-कांति से लबालब भरी परिपूर्ण लक्ष्मिस्वरूपिणी सीतादेवी को ले आये। ९९ सुनो कुश, उज्ज्वल बनाए स्वर्णकांति-सदृश सीता की देहकांति जगमगाकर रोशनी बिखेर रही थी; उसका सौभाग्य सौ गुना बढ़ा। जूड़े में विनूतन प्रकार के फूल तथा नाक में चमचमाता नत्थ शोभायमान था; शरीर पर सफ़ेद साड़ी तथा कान की बालियों के कारण सीता शोभायमान

तायँ बंदौ वळलिदौ हिरिदायसवननु भविसिदोयें-
दाय ताक्षिय नप्पिकोंडरु गौरिदेवियरु
तायँ नी नरसतियँ लोकद तायलायँनु तक्षिगळ पा-
नीयवनु पाणियलि नेवरिसिदळु नेहदलि ॥ 101 ॥

इळिदु वृषभन नखिळ निगगावळि शिरोमणि शीतकर स-
ल्ललित मस्तकमणि नभोमणि कोटिसंकाश
जलजसंभव मुख्य दिविजावळि शिखामणि जननलय नि-
ष्कलित विमल ब्रह्म चूडारत्न नडेतंद ॥ 102 ॥

हॊगळु तिद्दवु वेद कोटिगळगणितामर कोटिकैगळ
मुगिदु जयर्येनु तिर्दुदीशन सुत्तुवळयदलि
युग महाप्रळयादि कोटिगळगलिकॆय परमेश परतर
निगम निर्मल तारक ब्रह्मवनु सारिदरु ॥ 103 ॥

सारिदरु कैमुगिदु सीता श्रीरमणननु कमलभव वृं-
दारकोत्तम मुख्यनाना देवकोटिगळु
वीर केळॅ कुशनॆ नररवतार वादरदेनु पूर्वद
गौरवद गरुवायि बिडुवदॆ लवनॆ केळॆंद ॥ 104 ॥

दीखी। १०० "आ तो गयी न माँ; काफ़ी परेशान हुई न ? बहुत बहुत कष्ट भुगते तुमने।" इस तरह कहते हुए विशाल-लोचना सीता को गौरी ने अपनी भुजाओं में (गाढ़ालिंगन में) कस लिया। "हे माता, तू क्या (केवल) मानव-स्त्री है ? जगन्माता जो ठहरी।" इस तरह कहते गौरी देवी ने बड़े प्यार से अपने हाथों से सीता के आँसू पोंछे। १०१ समस्त वेदों के शिरोमणि, चन्द्रमा को मस्तक पर धरनेवाले, करोड़ों सूर्यों की कांति से संपन्न, ब्रह्मादि देवताओं के शिरोमणि, जन्म-मृत्यु-विरहित, परब्रह्म चूड़ामणि शिवजी नन्दी की पीठ पर से उतर आए। १०२ करोड़ों वेद परब्रह्मस्वरूपी शिवजी की स्तुति कर रहे थे। शिवजी को घेरे खड़ा देवता-समूह हाथ जोड़े जय-जयकार कर रहा था। सभी करोड़ों-करोड़ों युग-प्रलयों के परे पहुँचे उत्तमोत्तम वेद-गोचर परिशुभ्र मोक्षदायक ब्रह्म जो हैं— ऐसे राम के नज़दीक पहुँचे। १०३ ब्रह्मादि विभिन्न प्रमुख-प्रमुख देवता हाथ जोड़े सीतापति के नज़दीक पहुँचे। सुनो वीर कुश; मानव अवतारी होने से क्या हुआ ? पूर्व की गौरव-महत्ता कैसे लुप्त हो सकती है। —इस प्रकार वाल्मीकि मुनि ने कहा। १०४ राम ने प्रसन्न मुख से अपने परमप्रिय

शिरव नसुबागिदनु नगॆमोगवॆरसि परम प्रिय महेशं
गुरुतर प्रेमदलि कुळ्ळिरियॆंदनबुजजन
करद सन्नॆय लमर चक्रेश्वरननुपचरिसिदनु मिक्किन
सुरर नीक्षिसि सुम्मनिर्दनु सुळिसदुत्तरव ॥ 105 ॥
एनि बंदिरि यॆंबबुध सन्मान संभृत विहित विनय गु-
णानु रागोक्तिगळु नम्मलि तोऱदादुदल
मानवेन्द्ररि गुचितवे लक्ष्मी निवास प्रौढियॆंद ग-
जानितंबिनियरस मॆल्लनॆ नुडिदनरसंगॆ ॥ 106 ॥
बंद हदननु बल्लॆ नॊप्पचि संदिहुदु संदेहवदु नि-
म्मिद हरियदु मरळि नीवॆंबुक्तियद नावु
अॆंदपॆनु नीव् केळि ना हरियॆंदु सीतादेवि सिरि ता
नॆंदु हेळुविरॆसले मनहॊगदु नमगॆंद ॥ 107 ॥
कुलजराव् रघुवंशदलि निष्कलुषराव् मार्गदलि लोकद
हळविगॊळगिहरिल्ल नगॆ गॆडॆ यहरुनावल्ल
इळॆय सुतॆ निर्मळॆय कल्मष ललित पुण्य चरित्रॆ सुव्रतॆ
कुलयशस्विनि यॆंबरॆसलॆयॆंदना राम ॥ 108 ॥

महेश्वर के सम्मुख अपना सिर थोड़ा सा ही नवाया; ब्रह्माजी को प्रेमाधिक्य से बैठने के लिए कहा। हाथ के इशारे से ही देवेन्द्र का आदर किया। अन्य देवताओं की ओर आँखों से देखकर राम कोई उत्तर दिए बिना मौन धारे हुए थे। १०५ तब पार्वतीरमण ने बड़ी ही धीमी आवाज़ में पूछा— "क्या कुशल-मंगल है ? किस कारण आने का कष्ट उठाया ?" इस तरह कुशल-मंगल-क्षेम समाचार सम्बन्धी प्रश्न पूछते गौरव करते विनय-संपन्न प्रीति-पुरस्सर वचन हमारे बारे में तुम्हारे श्रीमुख से नहीं निकले; हे लक्ष्मी-निलय, राजाओं के लिए इस प्रकार आचरण शोभा देता है ?" १०६ "तुम्हारे आगमन का उद्देश्य मैं जानता हूँ। लेकिन थोड़ी सी शंका है उसमें। उसका निवारण या समाधान तुमसे नहीं हो सकता। 'आप लौट चलें' —इस प्रकार मैं कैसे कह सकता हूँ ? फिर भी मैं जो कहता हूँ— सुनिए। मैं हरि हूँ तथा सीताजी लक्ष्मीदेवी हैं —इस प्रकार जो तुम्हारा कथन है —इसको मेरा मन नहीं मानता" —इस प्रकार राम ने कहा। १०७ हम (मैं) रघुवंश के श्रेष्ठ कुल में पैदा होनेवाले हैं। हम कलंक-रहित हैं। लोकाचार की दृष्टि में कभी निन्दाभाजन नहीं होनेवाले हैं, न कभी हँसी-मज़ाक़ के पात्र हैं ! हैं भूमिजाया को परिशुद्ध, दोष-रहित, पुण्याचरण करने

ऒप्पॆवावा मात सीतॆय नॊप्पुगॊळिसुव बुद्धि चित्तदॊ
ळिप्पुदादडॆ करॆदु कॊडि नम्मन्वयद नृपर
तप्पदवरॆम्मन्वयकॆ हळिवॊप्पुगॆयदु यॆंदु निम्मॊड
निप्पवर सरिसदलि नुडिदडॆ केळ्वॆ वावॆंद ॥ 109 ॥
ऎनलु नसुनगुता महेश्वर वनज भवनाननव नीक्षिस
लिनकुलद शशिकुलद रायर करसि कमलभव
मुनि वसिष्ठन बरिसि निम्मय जनपतिगॆ पूर्व क्षितीशर
मनुपरंपरॆयिद तोऱिसि तिळुहु नीनॆंद ॥ 110 ॥
नॆरॆदुदै बळिका वसिष्ठन करद सन्नॆयलुभय वंशद
नरपतिगळिद्दॆसॆयला रघुराम चंद्रमन
अरसनल्लिगॆ बळिक मुनि नडॆतरलु धिम्मनॆ निंदुगुरुविन
चरणकानत नागॆ नगुतितॆंदना मुनिप ॥ 111 ॥
राय केळै सकललोकद तायला भूजातॆ कीर्तिय
तायिवनॆ यॆंबुदनुमादेवियर केळॆनलु
आयिता मातंतिरलि कुलदापतिकॆय वरिवरवगॆळ
बाय वक्कणॆयुळ्ळडागलि नुडिसि नीवॆंद ॥ 112 ॥

वाली, पतिव्रता, पावन, कीर्तिशाली आदि-आदि कहते हैं न ? (इस तरह पुकारते हैं न ?) १०८ "मगर मैं ये बातें नहीं मानता। अगर तुम लोग सीता को स्वीकार कराना चाहते हो तो —यही विचार अगर तुम्हारे मन में है तो, हमारे वंश में हुए पूर्व के राजाओं को बुलाकर —तुम्हारे साथ रहनेवालों के सम्मुख उनसे यह कहलवाइए कि (सीता को स्वीकारने से) हमारा वंश निंदा-भाजन न बनेगा। वे इस प्रकार दृढ़ भाव से कहें तो, तभी मैं मानूंगा। (सीता को स्वीकार करूँगा।)" इस प्रकार राम ने कहा। १०९ राम की ये बातें सुनकर महेश्वर ने ब्रह्माजी की तरफ़ देखा। तभी ब्रह्माजी ने सूर्य तथा चन्द्रवंश के राजाओं को बुलाया। उसके बाद वसिष्ठ मुनि को निमंत्रित कर, "मनु से शुरू कर परम्परा से आगत पूर्व के (भूतपूर्व) राजाओं को इन्हें (श्रीराम को) दिखाते हुए समझा दो।" इस प्रकार ब्रह्मा ने कहा। ११० वसिष्ठ ने जब हाथ से इशारा किया तो दोनों वंशों के राजा आकर राम के दोनों पार्श्वों में खड़े हो गये। वसिष्ठ मुनि जब राम के सम्मुख आए तो राम झट से खड़े हुए तथा गुरु-चरणों की वन्दना की (गुरु के चरणों में झुके)। तब वसिष्ठ जी ने राम को सम्बोधित कर इस प्रकार कहा। १११ "हे राजा राम ! सुनो, भूमिजाया सीता समस्त लोकों की माता है; वह साक्षात् कीर्ति की खान है —इस

निदिरादडे तोरिसुवेनेळेंदु कैगोट्टादि पुरुषन
तंदु तोरिसिदनु पुरातन पार्थिवोत्तमर
इंदुकुलद पुरूरवनु बळिसंद नृपनायुःकुमारक
रिदवर नुडिगेळु सीतेय परिय नीनेंद ॥ 113 ॥
ईत कुरु राजेंद्र नी तोर्पात भरतनु यदु नृपोत्तम
नीत नहुषनु राम नोडितनु ययाति कण
ईत नळ मांधात नृप तानीत नग्गद कार्तवीर्य म-
हीतळाधिप रिवर नुडिगेळेंदना मुनिप ॥ 114 ॥
इदे सुधाकर वंशदवरव रुदित वचनद नंबदिरे नो-
डिदको निम्मन्वयद रायरु कोटिसंख्येयलि
विदित ववर सुवाक्य पद्धति हृदयकनुमत वहडे कैको-
बुदु जगन्मातेयनु सीतेय नेंदना मुनिप ॥ 115 ॥
मनु महीश्वर नीत नीतन तनुज कुक्षि विकुक्षिनृपनी
तनु नृपोत्तम नीत नीगिक्ष्वाकु भूपाल
जनपनीत दिळीप रघुवीतनु हरिश्चंद्र क्षितीश्वर
विनुत सगर भगीरथादि गळिवर केळेंद ॥ 116 ॥

बात का पता उमादेवी से पूछकर लगा लो।" इस तरह कहने पर राम ने कहा— "वह बात ठीक है; लेकिन इन बातों को रहने दीजिए। यहाँ उपस्थित ये राजा हमारे वंश के महान महिमावान राजा हैं। ये अपने मुँह से विवरण दें। तभी मान जाऊँ। इनसे कहलाइए तो सही।" ११२ "तो ठीक है। बताता हूँ। उठो।" इस तरह कहकर आदिपुरुष राम का हाथ धरे बुला लाकर पुरातन राजश्रेष्ठों को दिखाया।" यह चन्द्रवंश का पुरूरव है। उनके पार्श्व में जो खड़े हैं वे पुरूरव के पुत्र आयुकुमार हैं। सीता के बारे में उनकी बात पूछिए।" इस तरह वसिष्ठ ने कहा। ११३ "यह कुरु-राजेन्द्र हैं; यहाँ जो दीख पड़ रहे हैं— भरत हैं, यह यदुराज हैं, यह नहुष हैं; यह हैं ययाति। ये नळ तथा मांधाता राजा है। यह श्रेष्ठ कार्तवीर्य है। इन पृथ्वीपतियों की बातें सुनो।" इस तरह वसिष्ठ महर्षि ने कहा। ११४ "चन्द्रवंशीय इन राजाओं के कथन पर आपका विश्वास नहीं बैठता हो तो यह देखो— यहाँ हैं तुम्हारे वंश के असंख्यात (अनगिनत) राजा। उन्होंने अपने सद्वचनों से जो मार्ग प्रशस्त किया वह सुप्रसिद्ध है। अगर उनकी बातों पर विश्वास करो तो— सीता को स्वीकार करो।" इस तरह वसिष्ठ मुनि ने कहा। ११५ यह मनु चक्रवर्ती हैं और यह उनके पुत्र राजश्रेष्ठ इक्ष्वाकु हैं। यह इक्ष्वाकु

ईत ऋतुपर्णनु त्रिशंकु महीतळाधिपनीत नीत म-
हाति बलननरण्य नीत ककुत्स्थ भूपाल
ईत नोडी गंबरीश ख्यात निवनजनीत दशरथ
नीत निवरनुमतव नंगीकरिसु नीनेंद ॥ 117 ॥
बळिकलानंदाश्रुजल हेंक्कळिसि मैयिक्किदनु जनकं-
गिळिदु दिव्य विमानवनु दशरथ महीपाल
जल बांधव वंशदवनिप तिलक बा रघुराज वंशा-
वळि सरित्पति सोम बायेंदप्पिदनु मगन ॥ 118 ॥
तरुण केळ् संतुष्ट नादेंनु परम सत्य दृढव्रतकें सद्-
गुरु सुमाता पितृ सुपर्व मही सुरार्चनेंगें
अरि विजय विक्रमकें निन्नय तरुणियमल पतिव्रता स-
च्चरित मार्गकें लक्ष्मणन शुश्रूषेंगानेंद ॥ 119 ॥
मगनें नी नरने चतुर्दश जगद जनकनला परीक्षिसें
निगम सिद्धनला विचारिसें लोकरक्षणेंगें
युग युगंगळोळिळेंय भारव नुगिय लोसुग वेषवल्लदें
सोगसें निनगिदु परकें परतर वस्तु नीनेंद ॥ 120 ॥

के पुत्र कुक्षि हैं; यह कुक्षि के पुत्र विकुक्षि हैं; यह राजा दिलीप हैं; यह रघु हैं; यह हरिश्चन्द्र चक्रवर्ती हैं। यह सगर, भगीरथादि हैं। ११६ यह ऋतुपर्ण राजा हैं; यह त्रिशंकु राजा हैं; यह अत्यंत पराक्रमी अनरण्य हैं; यह ककुत्स्थ राजा हैं; यह देखो राजा अम्बरीश हैं; यह प्रख्यात अज राजा है। यह दशरथ हैं। इनकी राय स्वीकार करो। ११७ तदनंतर खुशी के मारे आँसू बहाते राम ने पिता के चरणों में प्रणाम किया। दशरथ महाराज दिव्य विमान से उतर आकर "हे सूर्यवंश के श्रेष्ठ राजा, आओ। हे रघुराज-वंशावली के (परम्परा के) समुद्र के लिए चन्द्र-सदृश मेरे पुत्र ! आओ।" इस तरह कहते उन्होंने पुत्र को भुजाओं में कस लिया। ११८ "हे युवा राम, सुनो। तुम्हारे श्रेष्ठ दृढ़ सत्यव्रत से, गुरु, पिता, माता, देवताओं तथा ब्राह्मणों की पूजा से, शत्रु को जीतने की तेरी वीरता से, तेरी सती साध्वी परिशुद्ध आचरण की पत्नी सीता के पातिव्रत्याचरण से, लक्ष्मण से की गयी सेवा-टहल से मैं अत्यंत प्रसन्न हुआ हूँ।" इस तरह दशरथ ने कहा। ११९ "बेटे, क्या तू सचमुच अपने को मानव समझे बैठा है ? तू चतुर्दश लोकों के पिता है न ? गौर कर देखें —वेदसिद्ध पुरुष है न तू ? युग-युगों से लोक-रक्षा के लिए तथा धरती का बोझ उतारने के लिए तूने अवतार धारण

आदरेंयु नरनाटकद संपाद कर लेसाय्तु जनकर्जे
यादि लक्ष्मिकणा परिग्रहिसेन्न मातिनलि
वेद वचन विदेंदु बगें हुसियादडी नुडि निम्म रघु वं-
शोदयद लुदुभविसिदव नल्लेंदना भूप ॥ 121 ॥
तायें बारौ तंगि नी हिरि दायसवननु भविसि नलुगिदें
रायरंगनेंयरलि नीनुत्तमेंयला जगर्के
वायुसख नुदरदलि होक्कबु जायताक्षियरुंटें निन्नवो
लायि तीसऱ मेलें जगदलि कीर्ति नमगेंद ॥ 122 ॥
बिक्कि बिरि बिरि दळुत सति मैयिक्कलवनीनाथ सेऱगिन
लुक्कुवंबक जलव तोंडेंदपसव्यदंकदलि
अक्करिन मोहदलि कंबनियिक्कु तिब्बर कुळ्ळिरिसि चर-
णक्कें नमिसिद लक्ष्मणन तेंगेंदप्पिदनु भूप ॥ 123 ॥
ऎंडद तोंडेयलि कुळ्ळिरिसि मैदडविदनु लक्ष्मणन सीतेंय
मुडिय नेवरिसिदनु मुंडाडिदनु रघुपतिय

का स्वाँग जो रचा है —क्या तेरे लिए प्रियकर बात है ? (मतलब— यह तुझे पसंद नहीं ।) श्रेष्ठातिश्रेष्ठ वस्तु (तत्त्व) तू है ।" इस तरह दशरथ ने कहा । १२० फिर भी यह तेरा नररूपधारण का नाटक (तथा उसका अभिनय) बड़ा सुन्दर रहा । उसका प्रकाशन भी खूब रहा । जानकी आदिलक्ष्मी है; मेरी बातों पर भरोसा करते उसे स्वीकार करो । इसे वेदवाक्य समझो । मेरी यह बात अगर झूठ रही तो मैं तुम्हारे रघुवंश में पैदा होनेवाला नहीं रहा ।" इस प्रकार दशरथ ने कहा । १२१ "आओ मेरी बेटी; तू तो कष्ट भुगत-भुगतकर कुम्हला गयी । दुनिया के राजाओं की पत्नियों में तू अत्यंत श्रेष्ठ रही । तेरी तरह अग्नि-परीक्षा देनेवाली कहीं कोई स्त्री है ? तिस पर, इस जगत में, तेरे कारण, हमारी कीर्ति में चार चाँद लगे ।" इस प्रकार दशरथ ने कहा । १२२ सीता फूट-फूटकर रोते जब प्रणाम करती है तो दशरथ की आँखें भर आयीं । कपड़े पर उन अश्रुओं को रोकते हुए मोहातिशय के कारण आँसू (अनिवार्य हों) बहाते बड़े प्यार से अपनी दाहिनी गोद में राम-सीता दोनों को बिठा लेते हैं । अपने चरणों में गिरे लक्ष्मण को उठाकर दशरथ ने बाँहों में भर लिया । १२३ दशरथ ने लक्ष्मण को बायीं गोद में बिठा लेकर बड़े प्यार से उसका शरीर सहलाया; सीता का सिर (सिर के बाल) सहलाया । रघुपति का खूब दुलार किया । "मेरे प्यारे बेटे, मन की यह कलंक-भावना त्यागो । शंका मत करो । सीता ने अपने आचरण

बिडु मगनॆ चित्तद कळंकनु हिडियदिरु संशयद सीतॆय
नडवळिगॆ संतुष्टमानस नादॆ नानॆंद ॥ 124 ॥
बळिकुमादेवियरु सीतॆय ललित हस्तांबुजवना रघु-
कुल शिरोमणियमल कर कमलदॊळु संघटिसि
नळिन भवसति सहित मुक्ताफलद सॆसॆय तळिदु दीपा-
वळिय सुळिसिदरॊलिदु हॊंदळिगॆगळ हंतियलि ॥ 125 ॥
मॊरॆदवाक्षण देव दुंदुभि परिमळद कुसुमंगळाक्षण
सुरिद वंगी करिसिदनु रघुनाथ नवनिजॆय
नरवधुग ळॊळगारु सीतास्मरणॆयनु माडलु पतिव्रतॆ
यरिगॆ ताय्वनॆ यहरलै कुशकेळिदॆयॆंद ॥ 126 ॥
देव नीनॆमगित्त वरवदु देवता वरवाय्तु नी मनु-
जाव तारद सॊगसनंगीकरिसि नडॆदुदकॆ
नावु कॊडुवॆवु वरव बेडॆंदा विरिंचि पुरारि पौलो-
मीवररु नुडियल्कॆ बळिकितॆंदना राम ॥ 127 ॥
कॊडुव वरवुंटादरॆळलि मडिद वानर रॆल्लरवरि-
द्दॆडॆय लिरलक्षय फलाळि सुधोपमान्वितद
मडुगळिरलि निजांग राजन दॊडनॆ सुखदिंदिप्प वरवनु
कॊडुवुदॆनॆ कॊट्टरु परब्रह्मा महेश्वररु ॥ 128 ॥

से मुझे अत्यंत प्रसन्न कर लिया है।" इस तरह दशरथ ने कहा। १४२ तत्पश्चात् पार्वतीदेवी ने सीता के कोमल हाथ को उठाकर रघुकुलशिरोमणि श्रीराम के पवित्र हाथ में रखा (धराया); ब्रह्माजी की रानी सरस्वती को साथ लिये मोती के अक्षत प्रक्षेपित करते (राम-सीता की) सोने की थाल में दीप धरकर आरती उतारी। १२५ तब देवताओं के नगाड़े बज उठे; सुगंधयुक्त फूल बरसे। रघुनाथ ने सीता को स्वीकार किया। मानव-स्त्रियों में जो सीता का स्मरण करते हैं, वे पतिव्रताओं के लिए माता के सदृश होती हैं। यह सत्य तुमने सुना न कुश! इस तरह वाल्मीकि ने वर्णन-विवरण दिया। १२६ "भगवान्! आपने जो वर मुझे दिया वह देवता-वर ही साबित हुआ। तूने मनुष्यावतार धारण कर इस तरह आचरण करने के कारण हम प्रसन्न होकर वरदान देना चाहते हैं। माँग लो।" इस प्रकार ब्रह्मा, ईश्वर, देवेन्द्रादियों ने कहा तो उनको सम्बोधित कर राम ने इस प्रकार कहा। १२७ "अगर आप वरदान देना चाहें तो वरदान दें (कि) युद्ध में मरे सभी वानर जीवित हो उठें; जहाँ-जहाँ वे विराजमान हों वहाँ-वहाँ अक्षय फल रहें (प्राप्त होते रहें); उन स्थानों में अमृत-

बळिविडिदु बंदोब्बरळिविन लुळियदंतिरे कपिगळेद्दरु
कळकळिके मिगे बेडिकोंडरु देवगण नृपन
कळुहिदनु कैमुगिदु कैरव जलज सख वंशद नृपाला-
वळियनय्यन नमिसि बीळ्कोट्टनु महीपाल ॥ 129 ॥
बैळगिदुदु नभविदु सूर्यर सुळिवु सुलभतेयाय्तु दिङ्मं-
डल गळुत्साहिसिदववनी देवि हरुषतेय
तळेदळंबो राशिमिगे हेक्कळिसिदुदु नेरे हेळलेनद
केळगु मेलण जगद सुम्मानद सगाढिकेय ॥ 130 ॥
परम पुण्य पतिव्रतेय सतियर शिरोमंडनेय तोरवेय
पुरवराधीश्वर नृकंठीरवनु हरुषदलि
वरिसिदनु सुग्रीव जांबव हरितनुज नळनील मोदला-
दरिगे नलवाय्तमल दंपतिगळ निरीक्षेयलि ॥ 131 ॥

समान जल भरे गहरे गड्ढे रहें (जो कभी न सूखें)। वह अपनी-अपनी भार्याओं के साथ सुखी रहें। (बस, यही वर दें।) इस प्रकार राम ने माँग लिया। ईश्वर, ब्रह्माजी, देवेन्द्र ने वह वरदान दे दिया। १२८ राम का साथ देने, सेना में सम्मिलित हो आनेवाले बन्दरों में सभी वानर मृत्यु-शिकार होने से बचकर जीवित हो उठे (सबके सब वानर जीवित हो उठे।) सब अत्यासक्ति से देवताओं ने राम से बिदा होने की आज्ञा माँग ली। राम ने सूर्यवंश (अपने पूर्वज) राजाओं को हाथ जोड़कर बिदा किया। पिता दशरथ को प्रणाम कर बिदा किया। १२९ तभी आकाश प्रकाशमान हुआ; सूर्य-चन्द्र का संचरण सुचारु बना; दिशाएँ उत्साह से भर गयीं; धरती माता अत्यंत प्रसन्न हुई; समुद्र उमड़ उठा। इस अद्भुत दृश्य का किन शब्दों में वर्णन करूँ? यह प्रसन्नता धरती के नीचे सातों लोकों तथा ऊपर के सातों लोकों तक फैल गयी। १३० परमपावन पतिव्रता स्त्रियों की मुकुटमणि-सदृश सीता को 'तोरवे' नगराधिपति नरसिंह अवतारी श्रीराम ने बड़ी प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया। इन अनुपम पति-पत्नियों (दंपत्ति) के पावन दर्शन से सुग्रीव, जाम्बव, अंगद, नल, नील आदियों को अत्यंत आनंद हुआ। १३१

ऐवत्तु नाल्कनेय संधि

सूचने— भुवनजन मुल्लसिसॆ निर्जर निवहवति परिणमिसॆ यतिमह भवन सहित सुरारि नंदिग्राम कॆतंद ।

केळिदै कुश बलिदुदनितऱ मेलॆ परमस्नेह सीतॆय
मेलॆ रघुनाथंगॆ मेलसुरेंद्र नैतंदु
श्री लतांगिय रमण नंघ्रिय मेलॆ मौळिय निळुहि कैमुगि
दोलगंबडदोय्य नितॆंदनु नयोक्तियलि ॥ 1 ॥
पुरकॆ बिजयंगैदु तन्नुपचरणॆयनु कैकॊंडु लंका-
पुरजनव संतैसि बिजयंगैय बेकॆनलु
अरस बळिकि तॆंद नम्मय भरत जननिय नेमदवधिय
वरुष तुंबद मुन्न नगर निवास विल्लॆंद ॥ 2 ॥
इनितु सत्कृति सालदे नम्मनुज लक्ष्मणदेव माडद
धनतरद परिचरिय नडॆदुदु नमगॆ निन्निंद
जननियर चिंतिसुव रुम्मळ वनुजरिगॆ बारिसुवुदिदिन
दिनदले नाव् तॆरळबेकॆंदसुररिपु नुडिद ॥ 3 ॥

चौवनवीं संधि

सूचना— जगत के लोगों ने संतोष की सांस ली; देवता-समूह अत्यंत हर्षित हुआ; श्रीराम पत्नी तथा भाई के साथ नंदीग्राम आए ।

सुनो कुश ! इसके बाद सीता से रघुनाथ का प्रेम अत्यधिक हुआ। तदनंतर विभीषण ने आकर श्रीलक्ष्मीरमण के चरण-कमलों में अपना मुकुट रख प्रणाम करते, हाथ जोड़े, राजसेवा के डीलडौल से शून्य अत्यंत विनम्र वचन कहे। १ "अपने श्रीचरणों के स्पर्श से लंकानगरी को पावन कर, हमारा आदरातिथ्य स्वीकार कर, लंकापुरवासियों को सांत्वना देकर उसके बाद रवाना होने का कष्ट उठावें।" इस प्रकार बिभीषण ने विनती की। "हमारी भरत की माता से आदेशित अवधि के वर्ष समाप्त होने के पहले मेरे लिए नगरवास वर्जित है।" इस प्रकार राम ने उत्तर दिया। २ "तुमने इतना जो कुछ सब कुछ किया यह क्या कम है ? जो सेवा मेरा भाई लक्ष्मण न कर सका उससे बढ़कर उत्तम (श्रेष्ठ) सेवा तुमने हमारी की है। अयोध्या नगरी में हमारी माताएँ हमारी प्रतीक्षा में चिंताग्रस्त हैं; भाई भी दुखी हैं। अतः आज ही हमको रवाना होना चाहिए।" इस प्रकार राम ने कहा। ३ उसके बाद विभीषण ने भोजन की सारी सामग्री मँगवा

तरिसिदनु बळिकखिळ भोज्यद निरुपमित साधन समग्रव
विरचिसितु मणिमंटपवु मयनिंद पाळयद
वर पुरोभागदलि नाना परिय संभ्रमदिद नेरे वि-
स्तरणदलि बिद्दूटवादुदु सकल कपिबलकॆ ॥ 4 ॥
अरसनाज्ञेयलखिळ दिव्यभरण सुगंध माल्यां-
बरदि नोप्पिदुदिन सुतादि समस्त कपिसेनॆ
तरिसि धनपन पुष्पकव मुंदिरिसि बिजयंगैवुदेंदनु
नरपतिगॆ कैमुगिदु लंकानाथ नोलिविनलि ॥ 5 ॥
गजगलिसिदुदु सोम सूर्यर निजद निरिगॆय लहरि यलि ना
कजर विमल विमानवगणित गुणकॆ मिगिलॆनिसि
रजत शैलवो मेण् सुधाब्धिय निजनिवासिय निळय वो नी-
रजभवन भवनवओ परीक्षिस लरियॆ नानॆंद ॥ 6 ॥
निळय विर्दवनंत सौधावळिगळिर्दव नंत कामित
फल समग्रद बहळ नंदनविर्द वॆडॆगॆडॆगॆ
जलभरित कासारविर्दवु ललित भोज्य समस्त ललना
वळि महौषधविर्दवमल विमान मध्यदलि ॥ 7 ॥
कटक सहितवॆ देवरी विस्फुट विमानारोहणकॆ सं-
घटिसुवदु चित्तवनु सेवॆयिदीग किंकरन

ली। शिबिर के सम्मुख रत्न-जड़ा मंडप मय ने निर्मित कर दिया। बड़े संभ्रम के साथ सारी वानर-सेना को (भारी) षड्रस भोजन खिलाया गया। ४ राम की आज्ञा से सारे दिव्य आभूषण, दिव्य सुगंधयुक्त पुष्पहार, कपड़े, आदियों से सुग्रीव सहित सारी कपिसेना शोभा-संपन्न हुई। कुबेर के पुष्पक विमान को सम्मुख उपस्थित कराकर विभीषण ने हाथ जोड़े, राम से कहा— "पधारिए प्रभो।" ५ देवताओं का वह पुष्पक विमान समस्त गुणों से इस प्रकार प्रकाशमान था —मानों चन्द्रमा तथा सूर्य सचमुच ही अपनी किरणें (उस विमान द्वारा) बिखेर रहे हों। वह मानों यों लग रहा था कि चाँदी का पहाड़ हो, अथवा क्षीरसागर में शयन कर रहे श्रीहरि का वैकुंठ हो, या ब्रह्माजी का भवन हो। परखने के लिए असंभव-सा हो पुष्पक विमान दिखायी पड़ा। ६ पुष्पक विमान के मध्य अनगिनत घर थे; ऊपर के मंजिल भी असंख्यक थे; वांछित संपूर्ण फलों को देनेवाले नंदनवन बीच-बीच में थे; मनमोहक भोजन-सामग्रियाँ थीं; पानी भरे सरोवर थे; स्त्रियाँ भी थीं, महान ओषधियाँ भी थी। ७ "सेना-सहित भगवान राम पुष्पक विमान पर आरूढ़ हों, यह मेरी अल्प सेवा है; अन्यथा

नटिस दिर लन्यवनु मनवुत्कटद कृपॆयिर लॆनगॆनुत सं-
पुटद करदलि बेडिकॊंडनु शरणनाळुदन ॥ 8 ॥
ऎसॆ मत्तॆनॆंदु नृपति सुवासिनिय कैविडिदु लंका-
धीश नुग्गडणॆ यलि बंदेरिदनु पुष्पकव
कीशपति जांबव सुषेणक केसरि प्रमुखादि बल भू-
मिशनाज्ञॆय लेरिदुदु कौबेर पुष्पकव ॥ 9 ॥
तॆरपु गॊट्टिर्दुदु कुबेरन मिरुप दिव्य विमान वैवरि
गरिय बारदु संदणिसि कुळ्ळिर्द कपिभटर
हॆरॆय मौळिय देव धनपति मरॆयॊगुव कालदलि करुणद
लरियॆ कॊट्ट विमानवदु सामान्यवल्लॆंद ॥ 10 ॥
शरण जन मस्तक मणिय निजकरतळद लाडिदवलै चा-
मर चतुर्दश भुवन भवन शरीर निर्दॆसॆय
मॊरॆव दुंदुभि रभसदलि पुष्करकॆ पुष्पक वडरि दुदु खे-
चररु जयजय यॆनलु झडितॆय जयद जोडियलि ॥ 11 ॥
कंडुदिल्लॆलॆ देव देवर कंडु बदुकिद शरणजनमणि
मंडनन पट्टणव तोरिस बेकु तनगॆनलु

न सोचें; मुझ पर दया करें।" इस तरह कहते, हाथ जोड़े विभीषण ने श्रीराम से प्रार्थना की। ८ "तथास्तु; अन्य मार्ग नहीं!" इस प्रकार कहते श्रीराम सुहागिन सती सीता का हाथ धरे पुष्पक विमान पर चढ़ रहे थे। लंकेश्वर बिभीषण राम की गुणावली तथा उपाधियों की घोषणा कर रहे थे। वानरपति सुग्रीव, जाम्बव, सुषेण, केसरि आदि प्रमुख नायकों की सेना राम की आज्ञा से कुबेर के (उस) पुष्पक विमान पर चढ़ी। ९ कुबेर के दिव्य विमान ने पाँचों को जगह दी। यह अंदाज़ा लगाना मुश्किल था कि सटकर (उसमें) कितने कपिवीर बैठे थे। कुबेर के शरणागत होने पर चन्द्रमौली (शिवजी ने) वह जो विमान कृपा बरसाते दिया था —वह मामूली नहीं था। —इस प्रकार वाल्मीकि मुनि ने लव-कुश को समझाया। १० भक्त-शिरोमणि विभीषण ने चतुर्दश लोकों को अपने में समा लेनेवाले श्रीराम के दोनों पार्श्वों में चँवर डुलाए। नगाड़े जब बज उठे तो वह पुष्पक विमान बड़े वेग से आकाश की ओर उड़ान भरने लगा। देवताओं ने ज़ोर-ज़ोर से जय-जयकार किया। ११ "भगवन, मैंने लंकानगरी नहीं देखी; आपके शरणागत हो बच गये भक्तप्रवर भक्तजन-विभूषण विभीषण की नगरी मुझे दिखाने की कृपा करें।" इस प्रकार सीता से प्रार्थित होने पर शिवजी के महान धनुष को तोड़नेवाले प्रचंडबाहु बलशाली

खंड परशु महोग्रतर कोदंड चंड निखंड बाहो-
द्दंडचंड पराक्रमवनु वैदेहिगिंतेंद ॥ 12 ॥
इदुकणा पूर्वदलि मयर्नित्रिदश वर्धकियिंद विस्तरि
सिदुदु नगर विदीग सेरितु राजराजंगे
सुदति केळ् बळिकाय्तु दायाद्यद विरोधद ला दशास्यं-
गिदऱ महिमेय होगळ लसदळ वेंदना राम ॥ 13 ॥
ई महागिरि दुर्गविदु ता व्योम केशनु गेलिद दुर्गद
कैमे गिम्मडि साध्यवादुदु दैवघटनेयलि
ई महाशरणंगे पररनु कामिसिद कमलजन कल्पद
सीमे परियंतबले नोडेंदरस तोऱिसिद ॥ 14 ॥
वळय वेळऱ कोटिचंद्रन बळसि तोरुव परिधियंतदे
निळयववे ताराग्रहंगळ बहळ तेजदलि
थळथळिसुतिदे राजग्रह तिंगळ सुधाकरनंते शोका-
कलित नंदनवदे कळंकिन धाति नंददलि ॥ 15 ॥
अगळु नोडी पुरिगे पूर्वद सगर रिंदादवुदि कपिगळु
बिगिद रिद नुप्परद मायासूत्र तंत्रदलि
मृग विलोचने केळु लंका नगर देरडने यरसु नम्मं-
घ्रिगळ दरुशनवाद ठाविदु नोडु नीनेंद ॥ 16 ॥

श्रीराम ने सीता को लंकानगरी दिखाते हुए इस प्रकार कहा। १२ "पूर्व में देवताओं के बढ़ई (विश्वकर्मा) मय द्वारा इस नगरी का निर्माण हुआ। यह कुबेर को प्राप्त हुई। सुनो सीता! तदनंतर दायादी कुटुंबियों के कलह के कारण यह लंका नगरी रावण ने हड़प ली। इसकी महिमा वर्णनातीत है।" इस प्रकार राम ने कहा। १३ "हे सीता, शिवजी की कैलास-रचना के दुगुने कौशल्य से, अन्यों के लिए अलक्ष्य यह महान पर्वत (पर बसा) दुर्ग ब्रह्मयुग के आखिर तक यह जो महा शिवभक्त को प्राप्त हुआ, देखो, वह एक दैवी चमत्कार ही है।" इस तरह कहते राम ने सीता को वह लंकादुर्ग दिखाया। १४ करोड़ों चन्द्रों के कांतिवलयों-सदृश इसको घेरे सात प्राकारों के (सात चारदीवारियों-सदृश) किले हैं। नक्षत्र तथा ग्रहों की तेजस्विता से यहाँ के महल सुशोभित हैं। पूर्णिमा के चन्द्रमा-सदृश राजमहल चमक रहा है। शोकपूर्ण अशोकवन चन्द्रमा पर के काले धब्बे के सदृश दिखायी पड़ रहा है। १५ "पूर्व में सगर के पुत्रों के कारण निर्मित यह सागर (समुद्र) लंकानगरी की खाई है। कपियों ने ऊँचे दर्जे के मायासूत्र-तंत्र (योजना) से इस समुद्र पर

ऒन्नॆ विभीषणदेव कैमुगि दिन कुलेंद्रगॆ बिन्नविसि-
दनु वनजलोचन चित्तविसु मुंदण युगंगळलि
मनुज गोचर वागदवोलि वननिधिय सेतुव विभागिपु
दॆनलु बिलु गोष्पिद मुक्कडियागि खंडिसिद ॥ 17 ॥
नडॆदु दुत्तर कागि गगनद सोडर सोबगिन वोलु पुष्पक
वॆडॆय लिर्दुदु कलिजटायुविनग्रजन विपिन
मडदि नोडिदु हिंदॆ रावण नोडनॆ हळचिद सूर्यसूतनु
हडद मगनग्रजन वनविदु कांतॆ केळॆंद ॥ 18 ॥
मुंदॆ नोडु स्वयंप्रभॆय निज मंदिरद मार्गद सरोवर
विदु मुखि केळिदरॊळिर्दुदु मूरुदिन वुळियॆ
संद मासव नॆम्मबल बिलदिंदिळिदु निनगोसुगवॆ नो-
डॆंदु तोरिसॆ मुंचिदुदु पुष्पक धनेश्वरन ॥ 19 ॥
इदु कणा किष्किंधवॆंबग्गद महागिरि दुर्गविदना
त्रिदश पति सुतनाळुतिर्दनु हलवु वत्सरव
सुदति यभिलाषॆयलि वैरव निदिरु गोंडनु तम्मनलि से-
रदॆ समीकद लळिदॆ वातननरसि केळॆंद ॥ 20 ॥

सेतु बाँधा। देखो सीता, लंकानगरी के दूसरे राजा ने (विभीषण ने) इसी स्थान पर हमारा चरण स्पर्श किया।" इस तरह कहते राम ने वह जगह दिखायी। १६ तब विभीषण ने हाथ जोड़ निवेदन किया, "सुनिए कमलाक्ष, समुद्र पर बँधे इस सेतु को इस प्रकार काट दीजिए कि भावी युगों में मानवों को यह गोचर न हो (दिखायी न पड़े)।" तभी राम ने धनुष की नोक से उस सेतु को तीन टुकड़ों में काटकर विभाजित कर दिया। १७ आकाश-दीप की तरह पुष्पक विमान उत्तर दिशा की ओर उड़ चला। पास में ही जटायु के बड़े भाई संपाति का वन दिखायी पड़ा। तब राम ने कहा— "हे सीते, इस तरफ़ देखो। पूर्व में रावण के साथ लड़नेवाले जटायु के बड़े भाई तथा सूर्य के सारथी अरुण के बड़े (प्रथम) बेटे संपाति का वन यही है।" १८ "हे चन्द्रमुखी, आगे की ओर देखो। स्वयंप्रभा के राजमहल की ओर ले जानेवाली राह रूपी सरोवर यही है। हमारी सेना तुमको ढूँढ़ते हुए आकर इसी में उतरकर (राह खोए) एक महीने तीन दिन कम अवधि तक के लिए इसी में फँस गयी थी।" इस तरह बताते हुए राम ने वह सरोवर दिखाया। इतने में कुबेर का पुष्पक विमान आगे उड़ चला। १९ "यह किष्किंधा नामक महान पहाड़ी दुर्ग है। इन्द्र के पुत्र वाली कई वर्षों तक इस पर शासन करते रहे। वाली

बळिक परमस्नेह भावव बळसिदनु नम्मॆडॆगॆ वैरिय
कॊलॆगॆ कैनॆरवादनी सुग्रीव नाजियलि
गॆलवु नलगाय्तीतनिं केळॆलॆ महीसुतॆयॆंब नुडियिं
दॊळगॆ बंदळु रुमॆ समस्त वधू कदंबदलि ॥ 21 ॥
कलश कन्नडि सहित शोभाकलित वैभव दिंदिदिर्गॊ
डळु महासंभ्रमदि नवनिजॆ सहित राघवन
इळिदु तॊडॆयिंदरस नाज्ञॆय लॊलवु मिगॆ वैदेहि रुमॆयनु
सॆळॆदु बिगियप्पिदळु परम स्नेह भावदलि ॥ 22 ॥
हिंदॆ सीता देवियरु बिसुटिंदि नाभरणगळ धरणी
नंदॆनॆगॆ काणिकॆय नित्तडिगॆ रगिदळु बळिक
कंद केळै कुशनॆ परमानंददलि रुमॆ तारॆयर मुद-
दिंद मन्निसि सत्करिसिदळु सीतॆ हरुषदलि ॥ 23 ॥
पुरकॆ बिजयंगैदु नम्मिम्बर कृतार्थर माडि भृत्यर
परम पूजॆय ननुकरिसि नीव् नाळिनुदयदलि
तॆरळुवदु बळिकॆंदु रविसुत कर युगंगळ मुगियला नृप
दरहसित वदनदलि नुडिदनु भानु तनुजंगॆ ॥ 24 ॥

ने स्त्री-लोभ में फँसकर वैर मोल लेते अपने भाई को (अलग) दूर रखा था। सुनो सीते, युद्ध में मैंने वाली की हत्या की।" इस तरह राम ने कहा। २० "तब से सुग्रीव हमारे परमस्नेही मित्र बने तथा (इस) युद्ध में उसने हमारी मदद की। सुनो, जानकी, इसके कारण हमारी विजय संभव हुई।" इस तरह राम सुना ही रहे थे कि इतने में रुमा समस्त सुन्दरियों के साथ श्रीराम-सीता के दर्शन-लाभ के निमित्त वहाँ आ पहुँची। २१ कलश आरसी के साथ रुमा वैभव तथा बड़ी धूम-धाम के साथ सीता-सहित श्री राघव की अगुवानी करती है। राम की आज्ञा लेकर, उसकी गोद से उतरकर सीता अत्यंत स्नेह-भाव से रुमा का आलिंगन करती है। २२ पूर्व में देवी सीता ने रावण के विमान पर से जो आभूषण फेंक दिए थे रुमा उन्हें सीता को समर्पित करते उसके चरणों में गिरती है। (चरण छूती है।) बेटे कुश, सुनो। सीता ने रुमा तथा तारा का हर्षोत्फुल्ल होकर गौरवपूर्ण आदरातिथ्य किया। २३ "कृपया, हमारी राजधानी पधारकर, हम अकिंचन सेवकों की पूजा स्वीकार करते हमें कृतार्थ कर कल सूर्योदय के समय रवाना होइए!" इस प्रकार कहते जब सुग्रीव ने हाथ जोड़े, तो राम के मुखड़े पर मुस्कुराहट चमक उठी तथा सुग्रीव से उन्होंने कहा। २४ "तुम्हारी तरह सेवा-पारयण,

आरु निन्नवोलीपरिय सत्कार सेवालंबरेनुप
चारवे नाव् मरॆय लहुदॆ जन्म जन्मदलि
आर दॆसॆयिंदिदिळिद लज्जॆ विहारिसितु कॊंडाडुवरॆ कै
वारिगळॊ नाव् साक्किदेकिन्नॆंदना राम ॥ 25 ॥
भरतनिंदिन दिनदॊळगॆ केसुरिय सप्तार्चियलि कायव
बॆरस दिरनिदु पूर्वसूचित सुप्रतिज्ञॆयलॆ
हिरिदु तृप्तिय नैदिदॆवु परिचरियदलि निन्निदलेंदा
दरिसि बळिक विमान नडॆदुदु मुंदॆ वहिलदलि ॥ 26 ॥
सीतॆ नोडी शैल विदु रविसूत तनुज जटायुविद्द नि-
केतनस्थळविदु कणायॆनॆ नोडि कंबनिय
आ तरळॆ नयनदलि हॊळकिसि मातनरसगॆंदळ मरवि-
घातदलि नॊंददर मेले नाय्तु खगपतिगॆ ॥ 27 ॥
अरसि केळ् घायदलि जीवव निरिसि कॊंडिर्दनुकणा नाव्
दरुशनव माडिद बळिक्कसुरेंद्र नुद्यमव
विरचिसुत हरणवनु बिडॆ संस्करिसिदॆवु वैदिक विधानद
लरिय बवरकॆ मेलॊ मनवनु तंदॆवावॆंद ॥ 28 ॥

इस तरह समर्पण-भाव-संपन्न सेवक दुर्लभ है। यह कोई औपचारिक कथन नहीं। हम तुम्हारी सेवाओं को जन्म-जन्मांतरों तक भुला नहीं सकते। किनके कारण हम अपमान के गर्त से बच गये! तारीफ़ का पुल बाँधनेवाले हम चारण-भाट थोड़े ही है! इतना जो कुछ तुमने किया वही बहुत हुआ। अब और इसकी जरूरत क्यों कर हुई?" इस प्रकार राम ने कहा। २५ "आज के दिन के समाप्त होने के पूर्व अगर हम नहीं पहुँचे तो भरत अग्नि में अपना प्राणार्पण किए बिना न रहेगा। यह प्रतिज्ञा उसने पूर्व में ही की है। तुम्हारी सेवाओं से हम पूरी तरह संतुष्ट हैं।" इस तरह कहते राम ने सुग्रीव का बड़े प्रेम से गौरवादर किया। उसके बाद पुष्पक विमान बड़े वेग से आगे की ओर बढ़ा। २६ "हे सीता, देखो। यह पर्वत तो अरुण के पुत्र जटायु का निवास-स्थान रहा।" इस प्रकार राम से बताए जाने पर सीता की आँखें भर आयीं तथा "राक्षस से लड़ते घायल होकर गिरने पर जटायु का क्या हुआ?" इस प्रकार उसने अपने पति से पूछा। २७ "सुनो रानी! घायल हुए जटायु के प्राण अब-तब में थे। हमको देखते ही राक्षसाधिपति के कार्यों का विवरण देकर उसने अपने प्राण त्याग दिए। हमने वैदिक विधि-विधान से जटायु का अंत्य-संस्कार निभाया। तभी शत्रु से लड़ने की हमने ठानी। इस

ऐसें मत्तेनॆनलु बंदुदु भासुरांबर यानवा वन-
वास दिदिरिन पंचवटिय पुराण पल्लवद
वासदॆडॆयिदॆ नोडु विपिन निवेशनवु नाविद्द विपुळ वि-
लास वळिदिदॆ सॊगसु सडिलिद सोमनंददलि ॥ 29 ॥
जनक सुतॆ नोडॆम्म मुन्निनमनॆय मुंदण मार्गविदॆ स-
ज्जनन सूक्तिय मुसुकि कॊंडिह कुजन संततिय
घनवचन निष्ठुरद वोलु संजनित कर्कश कंटकंगळ
वनविदॊत्तंबरिसि कॊंडिदॆ नोडु नीनॆंद ॥ 30 ॥
दानविल्लद धनपतिय सुम्मान दंतिदॆ विविध विद्या
दानविल्लद गुरुवरन गरुविकॆयलिदॆ नोडु
नीनु सलुहिद सुरभितरु सुमनोनु बद्ध लताळिगळु धन
हीन वोलिवॆ निळयविदु नळिनाक्षि नोडॆंद ॥ 31 ॥
वनितॆ नोडुत्तरद भागद वनविदंदिन वरुणमित्रन
तनयनाश्रम वदरिनुत्तर दटवि तन्मुनिय
अनुजनाश्रमवदॆ सुतीक्षण मुनिपनाश्रम वदरॆ मुंदण
वनवु शरभंगाश्रमवु तरळाक्षि नोडॆंद ॥ 32 ॥

तरह राम ने कहा। २८ "ठीक है न ? और क्या ?" इतना जब कह ही रहे थे, पुष्पक विमान उड़कर आगे बढ़ गया। "हमारे वनवास के समय की हमारी इस पंचवटी के निवास की यह झोंपड़ी तथा उसकी कोपलें मुरझा गयीं सी लग रही हैं। देखो न ? कलाहीन चन्द्रमा की भाँति इस प्रदेश की सुषमा विनष्ट हुई है।" इस तरह राम ने कहा। २९ "देखो जानकी ! सज्जन के नीतिपूर्ण वचन छिपाए हुए दुर्जन के निष्ठुर वचनों के सदृश हमारे निवास स्थान के घर के (झोपड़ी के) आगे का (यह) मार्ग कठोर कँटीले झुरमुटों से छिप गया है। है न ?" इस तरह राम ने कहा। ३० "इस निवास-स्थान के सम्मुख, तुमसे पाला-पोसा गया यह सुन्दर वृक्ष दान न करनेवाले (कंजूस) धनिक के हर्ष की तरह तथा शिष्य को विद्यादान न करनेवाले (कंजूस) गुरु की गरिमा-सदृश दिखायी पड़ रहा है; फूल खिलानेवाले बेल निर्गतिक (दरिद्र) की तरह दिखायी दे रहे हैं। देखो कमलाक्षी !" इस प्रकार राम ने कहा। ३१ "हे सीते ! देखो। वह उत्तर भाग का वन उस दिन का मित्रावरुण के पुत्र अगस्त्य का आश्रम है। उस आश्रम से उत्तर दिशा में जो वन है वह अगस्त्य मुनि के भाई का आश्रम है। उधर देखो, वह सुतीक्षण मुनि का आश्रम है। देख रही हो न ?" इस तरह राम ने

ई महाश्रम वीग नोडा सोम दत्तात्रेय विगड म-
हामुनिप दूर्वासननु पडेदत्रि मुनिवरन
सीमेयिदु मुंभागदलि तोर्पा महाद्रि यिदीग धातु
स्तोम रंजित चित्रकूट विदीग नोडेंद ॥ 33 ॥
काण बंदुदु बळिकला गीर्वाण पुष्पकदमलरुचि गी-
र्वाण स्रोतास्विनिय यमुना नदिय संगमद
वाणियनुपमवनद मध्य क्षोणियभिरजकद मुनिप
स्थाणु सुमनोराज गुरुनंदनन कंगळिगे ॥ 34 ॥
परम हरुषदलखिळ मुनिसंतरुग ळोग्गिनलिदिरु गोंडरु
सुरनरोरग लोकवंद्यन राघवेश्वरन
अरस चित्तैसिदु नम्मुप चरणेयनु कैकोंडु कावुदु
भरतननु वळिकेंदु भारद्वाज मुनि नुडिद ॥ 35 ॥
अँलें मुनीश्वर भरतननु कावोलुमेयिदिन दिवस काणद
डळिवनग्नियोळिरुवु संघटिसुवदें नमगेनलु
कळुहु संजीविनिय शैलव तळदु तंद महातिशय भुज
बलन नल्लिगेयल्लि नीविदरलु वेकेंद ॥ 36 ॥

कहा ३२ इस महान् आश्रम की ओर देखो। चन्द्र, दत्तात्रेय तथा प्रचंड मुनि दुर्वासा को पुत्रों के रूप में पानेवाले अत्रि महर्षि का आश्रम प्रदेश है। वह देखो। वह सामने दिखायी दे रहा महान् पर्वत जो है—वही चित्रकूट पर्वत है जो गेरुवे रंग के शिला-खंडों से, पत्थरों से आवृत हो चमक रहा है। देखा न ?" इस प्रकार राम ने कहा। ३३ तत्पश्चात् गंगा, यमुना नदियों के संगम के, सरस्वती नदी के मध्यवर्ती प्रदेश में स्थित बृहस्पत्याचार्य के पुत्र ऋषि-महेश्वर भरद्वाज जी को देवलोक के इस पुष्पक विमान का प्रकाश दिखायी दिया। ३४ अत्यधिक हर्ष के साथ, (अपने) ऋषि-समूह सहित भरद्वाज महर्षि ने स्वर्ग, मर्त्य, पाताल लोकों से वंदित राघवेश्वर की अगुवानी की। "सुनो राजन्, आज हमारा आदरातिथ्य स्वीकार करने के पश्चात्, जाकर (यात्रा कर) भरत से मिलना।" इस तरह भरद्वाज मुनि ने कहा। ३५ "हे परमपूज्य ऋषिवर, भरत को आज के दिन ही हमारे दर्शन न मिले तो वह निश्चित रूप से अग्नि में प्रवेश कर प्राण त्याग करेगा। अतः हमारा यहाँ रुकना कहाँ तक समीचीन है ?" इस प्रकार राम ने पूछा। "संजीवनी पर्वत को उठा लानेवाले महान बलशाली को वहाँ भेजो। आज के दिन तुम्हारा यहाँ रहना आवश्यक है।" इस तरह

आगलदके नेंदु नृपननु रागदलि बीळ्कोट्ट नग्गद
सागरोल्लंघनन भरतन बळिगॆ विनयदलि
आ गगनयानदि निळातळ कागि बिजयंगैदु होक्कनु
याग मंटपवनु सुराचारियन नंदनन ॥ 37 ॥
स्मरिसिदनु बळिका मुनिप सुर सुरभियनु सुळिदुदु समस्तै-
श्वरिय वादुदु कटकदळतॆंगॆ सकल कडॆगट्टु
वर सुभोजन गंधमाल्यांबर विभूषणदिद मिगॆ स-
त्करिसिदनु मुनि सकल सेनॆयनवनिपति सहित ॥ 38 ॥
अनितरॊळॆ बळिकंजना नंदननु नडॆतंदा शुशुक्षणि
य नृप दक्षिणवागि बह भरतक्षितीश्वरन
मनद भक्तिय कंडु लेसॆंदॆनुत हिडिदनु कय्य होगबे
डनलननु बंदनु भगीरथ वंशद रसॆंद ॥ 39 ॥
राम बंदनु सकल जगदभिरामबंदनु रिपुरणोत्सव
भीम बंदनु जानकिय नयनोत्पला नंद
सोम बंदनु बंधुजन सुप्रेम बंदनु सकल गुणगण
धाम बंदनु भरत चित्तैसॆंदना हनुम ॥ 40 ॥

भरद्वाज ने कहा। ३६ "तब तो ठीक है।" इस तरह कहते ऋषि की आज्ञा मानते राम ने सागर की उड़ान भरनेवाले हनुमान को खुशी से, भरत के पास भेज दिया। तदनंतर आकाशस्थित पुष्पक विमान से धरती पर उतर कर बृहस्पत्याचार्य के पुत्र भरद्वाज के यज्ञमंडप में प्रवेश किया। ३७ तब भरद्वाज मुनि ने देवलोक की कामधेनु का स्मरण किया। संपूर्ण ऐश्वर्य उसके साथ उतर आया। सेना की संख्या के अनुसार सभी के लिए शिविर निर्मित हुए। रुचिकर मिष्टान्न, भोजन, सुगंध, पुष्प, वस्त्र, आभूषण से राम-सहित समस्त सेना का सत्कार किया। ३८ इतने में आंजनेय (हनुमान) ने आकर (नन्दीग्राम) में अग्नि की परिक्रमा कर रहे राजा भरत की भक्ति देख— 'ठीक है' कहते हुए उनका हाथ पकड़ लिया।" आग में कूदो मत; भगीरथ-वंश के राजा राम आ गये हैं।" —इस प्रकार हनुमान ने कहा। ३९ "राम आ गए; सकल-लोक-सुन्दर राम आ गए; शत्रुओं से लड़ने में बलशाली राम आ गए; जानकी की आँखें रूपी नील कमलों को संतोष प्रदान करनेवाले चन्द्र आ गए; बन्धुजन-प्रिय आ गए; सकल गुणों के निवासस्थान आ गए; ध्यान दो भरत !" इस प्रकार हनुमान ने कहा। ४० "वह देखो,

अदे कुबेर विमान कैलासद वोलीक्षिसु पुष्पकद म-
ध्यद्लि बहळच्छत्र चामर ध्वज पताकेगळ
होदरिनलि होळे होळेव मणि पीठदलि कुळ्ळिदर्ति निन्नय
हृदयवल्लभ राघवेश्वर नीग नोडेंद ॥ 41 ॥
हनुमनेंबभिधानवेन्नदु मनदोळळि संशयवनक्षम
वनु निवारिसु नोडु दक्षिण दिगु विभागवनु
अेने निरीक्षिसे मेघगतियलि घनपथदो ळैतंदुदा पुर-
जनवु गुडिगट्टिदुदु गमनके राघवेश्वरन ॥ 42 ॥
चळगतिय चापळ तुरंगावळिय चटुळ ध्वनिय पक्षद
लुळिय पवनन मणिमयद चक्रगळ चीत्कृतिय
थळथळिप होंबेसेद सौधावळिय दिव्य विमान गगनदि
निळिदुदवनी तळके नंदिग्राम सीमेयलि ॥ 43 ॥

कैलास-सदृश दीख रहा कुबेर का विमान। उस पुष्पक के मध्य छत्र, चामर, ध्वज, पताका-समूहों के मध्य चमकते रत्न-पीठ में जो विराजमान हैं वे ही तुम्हारे हृदयेश्वर (प्रभु) राघवेश्वर हैं। उनको अब देख सकोगे।" इस प्रकार हनुमान ने कहा। ४१ "मेरा नाम है हनुमान! मन की आशंका दूर करो। जरा सम्हल जाओ (सब्र करो)। दक्षिण दिशा की ओर देखो।" इस प्रकार हनुमान ने कहा। तभी भरत ने जो देखा तो मेघ-सदृश अत्यंत गतिमान हो (वेग से) आकाश द्वारा विमान आया। राघवेश्वर का आगमन देख पुरजन अत्यंत हर्षित हुए। ४२ अत्यंत तेज चलनेवाले चंचल घोड़ों के खुरपुटों की ध्वनि, पंखों के कारण उठे जबर्दस्त हवा के झोंके, रत्नमय चक्रों की गड़गड़ाहट, सोने के ज़र से मढ़े ऊपरी मंजिल आदियों से युक्त वह दिव्य विमान नंदिग्राम की सीमा में आकाश से धरती पर उतरा। ४३

ऐवत्तैदनॆय संधि

सूचनॆ— राम राजाधीश रघुकुलराम परमेश्वरनु निमिकुल राजनंदनॆ सहित राज्यंगॆद नॊलविनलि।

मणिखचित जांबूनद मरुद्गणद कोटावळयदुरु भा-
रणॆय मखशालॆगळ मुगिलट्टणॆय गोपुरद
घृणि विकीर्ण सुरत्नमय केवणद कलशव्रजद केतन
गणद वर साकेत नगरव कंडुदखिळ जन ॥ 1 ॥
सीतॆ नोडु मदीय नृप साकेतपुरवनु नम्म मूवरु
मातॆयर संदरुशनवु नमगिदलॆयॆनुत
वीत रागद्वेष रहितन जातशत्रु बळिक्कसति सह-
जात सहिता वरविमानवनिळिद नॊलविनलि ॥ 2 ॥
मनद महदुत्सवदि मूवरु जननियरु गुरुमंत्रिगळु पुर-
जनवु बांधव जन सहित परिजनद गडणदलि
कनक दर्पण कलशदबला जनद तूर्यत्रयद नृपवा-
हनद सौरंभदलि भारत नृपालनैतंद ॥ 3 ॥
जलरुहाक्षन मूर्तियनु कंगळलमर्चि नृपाल पुष्पां-
जलि गॆंदरि मैयिक्किदनु भयभरित भक्तियलि

पचपनवीं संधि

सूचना— राजाधिराज, रघुकुल राजा, परमेश्वर ने निमिकुल-राजकुमारी के साथ संतोष से राज्य-शासन किया।

हीरे जड़े सोने के मंदिरों के, क़िलों के बरामदों के, क़िलों के ऊपर के बुर्जों के, कांति बिखेर रहे रत्न-जटित कलशों से युक्त, फहरते ध्वज-समूहों से सपन्न साकेत नगरी को सभी ने देखा। १ "देखो सीता, यह हमारी राजधानी साकेत नगरी है; हमें अपनी तीनों माताओं का दर्शन-लाभ आज मिलेगा न ?" इस तरह कहते प्रीति तथा द्वेष त्यागनेवाले अजात-शत्रु राम पत्नी तथा भाई के साथ खुशी-खुशी विमान से उतरे। २ तीनों माताओं, गुरुजनों, मंत्रिवर्यों, पुरजनों तथा बांधवों-सहित पारिवारिक लोगों के समूह के साथ स्वर्णकलश तथा आरसे धरे स्त्रियाँ तथा नृत्य-गीत-वाद्यों के सहित राजयोग्य परिवहनों (वाहनों) को साथ लिये राजा भरत बड़े संभ्रम के साथ (अगुवानी करने) आए। ३ कमलनयन राम की मूर्ति का आलिंगन आँखों ही आँखों करते हुए अंजली से फूलों को अर्पित करते हुए

बळिक राघवरायना कौसलॆ सुमित्रादेवि कैका-
ललनॆयरिगॆरगिदनु काणिकॆ यित्तु हरुषदलि ॥ 4 ॥
गुरुवसिष्ठन वामदेवन वरमुनिप जावालियंघ्रिगॆ
दरुशनव नीडिदनु विनमित नागि विनयदलि
भरत शत्रुघ्नरनु कंगळलुरुळुवश्रु कणालिगळ का-
हुरतॆयलि बिगिदप्पि बळिकितॆंदना राम ॥ 5 ॥
नलुगिदिरि हिरिदागि जडॆ वल्कल फलाशनदिंद विधि वे-
ळरॆ तन्निदादुदीयापत्तु निमगॆंदु
तलॆदडवि तन्ननुजरक्षिय जलव सॆरगिनॊळॊरसि सचिवर
बळिक काणिसि कॊंडु मन्निसिदनु नयोक्तियलि ॥ 6 ॥
केळिदै कुश निम्म मातॆय मेलणक्करुतनदि कौसलॆ
बीळुवंवक जलदिनंघ्रिगॆ नमिसिदंगनॆय
तोळुगळ हिडिदॆत्ति घनपुळ काळिगळ लप्पिदळु हरसिद
रेळिगॆय हरुषदलि मातॆयरूर्मिळापतिय ॥ 7 ॥
लवनॆ केळै बळिकला नालु वीरगाय्तु जटा विसर्जन
वविरळद संभ्रमदि मज्जन वाय्तु मंगळद

भयभक्ति-पूर्ण भाव से श्रीराम के चरणों को छूते उसने दंडवत प्रणाम किया। तदनंतर राघव राजा ने (राम ने) कौसल्या, कैकेयी, देवी सुमित्रा आदि के चरणों को प्रणाम कर हर्ष से भेंट चढ़ायी। ४ राम गुरु वसिष्ठ, वामदेव, जावाली आदियों के दर्शन कर उनके चरणों में नतमस्तक हुए। आँखों से अश्रुधारा बहा रहे भरत-शत्रुघ्न को खींचकर राम ने अपनी भुजाओं में भर लिया। फिर राम ने उनसे इस प्रकार कहा। ५ "जटा, गेरुए कपड़े, फलों का आहार इनके कारण काफ़ी दुबले-पतले हो गये हो। अन्य विधि-विधान होते हुए भी तुम्हें मेरे कारण ये कष्ट उठाने पड़े।" इस तरह कहते भाइयों के सिर सहलाते अपने कपड़ों के आँचल से उनके आँसू पोंछे। उसके बाद श्रीराम ने मंत्रिजनों को दर्शन देते उनका विनम्र वचनों से गौरव किया। ६ सुनो कुश, अश्रु बहाते हुए चरणों में नतमस्तक तुम्हारी माँ पर बड़े प्रेम से भुजाएँ धरे, उठाकर रोमांचित होते कौसल्या ने (सीता को) अंक में भर लिया। उर्मिला के पति को माताओं ने आनंदातिशय में आशीर्वाद दिए। ७ सुनो लव, तदनंतर राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न ने जटाओं को विसर्जित किया। निरंतर धूमधाम के साथ उनको मंगल स्नान कराया गया। तरह-तरह के रत्नाभूषणों को

विविध रत्नाभरणदलि नवनिवसनद लेपनदलमळो-
त्सवव ताळ्दरु मुनिगळाशीर्वाद घोषदलि ॥ 8 ॥
बंदुदाक्षण दशवरूथ स्यंदनवु रघुपतिगॆ दिविजर
दुंदुभिय निर्घोषदलि मुनिजनद हरुषदलि
संदणिय सौरंभदलि पूर्णेंदुमुखि सहितेरिदनु सुर-
वृंद जयजय वॆनलु मॊळगुव वाद्यघोषदलि ॥ 9 ॥
बळिक राघव रायनाज्ञॆय लिळिदु सुग्रीवादि सुभटा
वळिगळडरिदरिभ वरूथ सुघोटकावळिय
उळिदु कपिरूपकव नमरावळिय मुन्निन मूलमूर्तिय
तळॆदु वीर विभीषणासुर सहित नलविनलि ॥ 10 ॥
वर सुमंतक तुरगवनु चप्परिसिदनु सूतत्वदलि चा-
मरव निक्किद निद्दॆसॆयला भरत रघुपतिय
धरिसिदनु बॆळुगॊडॆय नूर्मिळॆ यरसना शत्रुघ्ननुरु बं
धुरद हडपद हॆगल लॆसॆदनु कुशनॆ केळॆद ॥ 11 ॥
मुंदॆ जीयवधारु धिरु भापॆंदु कैगंबिगळलुग्घड
दिद हनुमांगदरु कॊलसारिसिदरॆड बलन
मुंदॆ नर्तन वाद्य वंदिगळिद नोटक जनद संदणि
यिद बिजयं गैदु हॊक्कनु कौसलावतिय ॥ 12 ॥

धारण कर नये कपड़े पहने सुगंधयुक्त तेल को शरीर में मलकर चारों, मुनि जनों के आशीर्वचनों से हर्षित हुए। ८ उसी समय दशरथ का रथ राम के पास आया। देवताओं के बजाये गये नगाड़ों के रोर के मध्य ऋषि-मुनि जब हर्षित हो रहे थे तभी राम बड़ी धूमधाम के साथ सीता को साथ लिये रथ पर चढ़े। गाजे-बाजों के साथ देवताओं ने जोर-शोर से जय-जयकार किया। ९ उसके बाद राघवराय (श्रीराम) की आज्ञा से सुग्रीवादि वीरों ने पुष्पक विमान से उतर आकर हाथी, तथा रथ व श्रेष्ठ घोड़ों पर सवारी की। कपियों ने अपना कपिरूप त्यजकर देवरूप धारण कर वीर विभीषण के साथ खुशी-खुशी पदार्पण किया। १० सुमंत्र ने घोड़े की पीठ थपथपाकर सारथी का कार्य करते रथ का संचालन किया। भरत ने रघुपति के दोनों ओर (खड़े हो) चंवर डुलायी। लक्ष्मण ने श्वेत छत्र धरा। शत्रुघ्न ने पान-सुपारी भरे सुन्दर थैले को कंधे से लटका लिया। ११ अग्र (सामने के) भाग में "होशियार! राजाधिराज पधार रहे हैं!" इस प्रकार घोषणा करते लट्ठधारी हनुमान तथा अंगद ने लोगों को दाएं-बाएं सरकाते रास्ता बनाया। (जुलूस के) सामने नृत्य हुआ। बाजे बजे;

परिमळिसिदवु बीदि बीदि गळिरदें कुंकुम कारणॆय क-
स्तुरिय नवसारणॆय घनकर्पुरद मालिकॆय
परिमळिप पन्नीर चळॆयद भरित गुग्गुळ धूप धूमद
लररॆ पवना करुषणद परुठवद पाळियलि ॥ 13 ॥
थळथळिसिदवु मकर तोरणगळलि रन्नदकन्नडिगळु
ज्वलिसिदवु हॊंगळश ततियुप्परिगॆ यग्रदलि
तळितवगलकॆ गुडिगळुरॆ पडितळिसिदवु मणिमद पताका
वळि समीर विहारदलि रघुपतिय गमनदलि ॥ 14 ॥
कॆरि कॆरिय तळिगॆदंबुल दारतिय दूर्वाक्षतॆय सुर-
नारियर वारांगनॆयर सुनर्तना वळिय
भेरिशंख मृदंगघन कहळारवद लैतंदु हॊक्कनु
दार तेजोभद्र मणिमय राजमंदिरव ॥ 15 ॥
सुळिद वराति कर्पुरद प्रज्वलिप माणिक दीप्तिगळ पस्तु-
गळवॆगूळिन बळुवॆगळ लुप्पुगळ सूसिकॆय
कळकळदी ळॊप्पिदुदु पार्थिव निळयवर्लिल मेलॆ बीडिकॆ
गळिगॆ सुग्रीवादि बल बीळ् कॊंडुदोलविनलि ॥ 16 ॥

चारण-भाट प्रशस्ति बखानते चिल्लाए। प्रेक्षकों के झुंड के (भीड़ के) मध्य में से होते हुए जूलूस में आए राम ने कोसलावती नगरी में प्रवेश किया। १२ गली-गली कुंकुम से शोभा-संपन्न रेखाएँ खींचे, कस्तूरी से लीप-पोतकर कर्पूर की बुकनी से तरह-तरह की मालाकार आकृतियाँ बनाकर, खुशबूदार जल को छिड़काकर गुग्गुल के धूप का धुआँ फैलाया गया। इस सारे सुगंध को वहन करती हवा ने चारों ओर बहकर दिशाओं को खुशबूदार बना दिया। १३ राम जब आए तो कोसलावती नगरी की गली-गली में मछली के आकार में मकर, वन्दनवारों में रत्न के आरसे जगमगाये। महलों के मंजिलों के ऊपर स्वर्णकलश जगमगाये। हर कहीं ध्वजाएँ शोभायमान रहीं। रत्नध्वज हवा के झोंकों से फरफराए (फड़फड़ाये)। १४ हर गली में, आरती के थालों को, दूर्वा-अक्षतों को स्वीकार करते राम आगे बढ़े। देवता-स्त्रियाँ, वेश्याएँ नृत्य में लीन थीं। भेरी, शंख, मृदंग, तुरहियाँ बज रही थीं। इस प्रकार वैभव की उदार तेजस्विता से शोभायमान मंगलस्वरूपी राम ने रत्नरजित राजमहल में प्रवेश किया। १५ उतारी जा रहीं कर्पूर की आरतियों तथा प्रज्वलित माणिक्य-दीपों की कांति से, उतारे के (दीठ) कुंकुमादि मिश्रित अन्न तथा नमक को छिड़कने-कुचलने के कलकल (छट्-छट्) शब्दों से सारा राजमहल

विमलमति कुश केळिदै संभ्रमिसिदुदु वैशाख सित स-
प्तमिय दिन मूर्धाभिषेचनरचनें ; रघुपतिगें
अमरतति नेरेंदुदु वसिष्ठ प्रमुख रोंग्गाय्तुवधि सीमा
प्रमित पार्थिव निकर कूडितु पट्टकवनिपन ॥ 17 ॥
वर शुभोदय लग्नदलि शंकर विरंचि सुरेंद्र मुख्या-
मरर संदणि मिगिलु सुरनारियर संभ्रमद
सुर मुनींद्रर वेदघोषद लरसुतन दभिषेक मिगें वि-
स्तरिसिदुदु रामंगें सुग्रीवादिगळु नलियें ॥ 18 ॥
काणिकेय बळिकित्तर जगव पाणि वाणी नाथरा गी-
र्वाणपति धनपति हुताशन मुख्य दिगधिपरु
क्षोणियळतेय मिक्क राजश्रेणि परिपुर जनगळुत्तम
नाणॆयव नीडिदरु दरुशनकवनि जेश्वरन ॥ 19 ॥
बलदलीश्वर नेंडद लबुजजरोंलिदु मणिमय भद्रपीठं-
गळलि कुळ्ळिदरुभय पार्श्वद साल वीथियलि
बलमथन शिखि यम निशाचर जलधिपति पवमान धनपति
जलरुह प्रिय सोम भौमादिगळु रंजिसितु ॥ 20 ॥

शोभायमान रहा। तदनंतर सुग्रीवादि वीर राम की आज्ञा से अपने-अपने शिबिर में गये। १६ हे बुद्धिमान कुश, सुनो। वैशाख शुक्ल (सुदी) सप्तमी के दिन श्रीराम के सिंहासनारोहण के समारोह की धूमधाम शुरू हुई। राम के सिंहासनारोहण के निमित्त देवता (नगरी में) आ जुटे। वसिष्ठादि प्रमुख ऋषि-मुनि भी आये। राजाओं का समूह भी आ जुटा। १७ शुभलग्न, शुभमुहूर्त पर शिवजी, ब्रह्मा जी, देवेन्द्र वगैरः प्रमुख देवताओं के सम्मुख, देवता-स्त्रियों के संभ्रम-उत्साह के मध्य, देव-ऋषियों के वेद-घोष के साथ राम का राज्याभिषेक संपन्न हुआ। सुग्रीव आदियों ने खुशियाँ मनायी। १८ उसके बाद पिनाकपाणी शिवजी, ब्रह्मादियों ने तथा देवेन्द्र, कुबेर, अग्नि आदि प्रमुख दिक्पतियों ने राम को अपनी-अपनी भेंट समर्पित की। समस्त भूमंडल के राजाओं ने, परिजन, पुरवासियों ने राजा राम को श्रेष्ठ मुद्राएँ (सिक्के) समर्पित करते, नजराने अर्पण करते संदर्शन-भाग्य प्राप्त किया। १९ राजा राम के बाएँ पार्श्व में ब्रह्माजी, दाहिने पार्श्व में शिवजी, रत्न जड़े मंगल-पीठों पर विराजमान हुए। इन्द्र, अग्नि, यम, नैर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर, सूर्य, चन्द्र, कुज आदि श्रीराम के दोनों पार्श्वों में पंक्तिबद्ध हो बैठे। २० सनक, नारद, भृगु, भारद्वाज, मरीचि, मतंग, दुर्वासा, पुलस्त्य, विश्वावसु,

सनक नारद भृगु भरद्वाजनु मरीचि मतंग दुर्वा-
सनु पुलस्त्यनु विश्ववसु जमदग्नि जाबालि
विनुत विश्वामित्र मुनि जैमिनियगस्त्य मृकंडु कश्यप
रेनिप दिव्य मुनींद्ररेसेदरु हिंदे रघुपतिय ॥ 21 ॥
गुरु वसिष्ठनु वामदेवनु मेरेदरुभय सुपार्श्वदलि कि-
न्नररु सिद्धरु साध्य वसुगंधर्व देवगण
करयुगंगळ मुगिदु देवन सरिसदलि दूरदलि जय वि-
स्तरण वचन गळिद निंदिर्दरु सरागदलि ॥ 22 ॥
वीरभट सुग्रीव जांबव मारुतात्मज वानरेंद्र कु-
मार नील सुषेण नळ गज गंध मादनरु
सारतर सालेसेदुदा सुरपारिकांक्षिगळुभयदलि रघु-
वीर ननुजरु मेरेदरिदिरलि करद कंबिनलि ॥ 23 ॥
चारु चामर गळनु चिम्मिदरा रमाधीशंगे ललित
स्मेर वदनद ढाळिसुव कंगळ विलासदलि
तोर मोलेगळ तोळ होंगरिन भूरिभूषणद नुपमांबर
सार सौरभ देळ्गेयलि रंभादि नारियरु ॥ 24 ॥
अेसेदु दोलगवमम पूर्वददेसक किम्मिगिलागि बळि कू-
वेंशिय नर्तन चित्ररथन मृदंग मृदुसबुद

जमदग्नि, जाबालि, विश्वामित्र, जैमिनि, अगस्त्य, मृकंडु, कश्यप आदि दिव्य महर्षि रघुपति के पीठ पीछे विराजे । २१ राम के दोनों पार्श्वों में गुरु वसिष्ठ तथा वामदेव —ये दोनों खड़े रहे । किन्नर, सिद्ध, साध्य, वसु, गंधर्व तथा देवगण हाथ जोड़े रघुराम के सम्मुख दूरी पर खड़े हो संतोष के मारे जयघोष कर रहे थे । २२ राघव क दोनों पार्श्वों में वीर सुग्रीव, जाम्बव, हनुमान, अंगद, नील, गवाक्ष, सुषेण, नल, गज, गंधमादन आदि कतार में खड़े हुए । देव-मुनि दोनों पार्श्वों में थे ही । रघुवीर के भाई हाथ में दंड धारे सामने विराज रहे थे । २३ मधुर मुस्कान भरे मनोहर मुखड़ों की चमकती सुन्दर आँखों वाली, मोटे स्तनों की, कांति बिखेरती सुन्दर भुजाओं से संपन्न, सोने के आभूषण धारण करनेवाली, दिव्य वस्त्रों से अलंकृत रंभा आदि अप्सराएँ सुगंध छितराती हुई, रमापति को चँवर डुला रही थीं । २४ बाप रे बाप ! (इसके) पूर्व के वैभव के दुगुने से भी बढ़कर (वैभव से) राजा राम का दरबार सुशोभित रहा ! उर्वशी का नृत्य, चित्ररथ के मृदंग की मधुर ध्वनि,

होसपरिय गीतगळ गंधर्व सतियर तुंबुरन वीणेय
कौसरिकेय कळकळदि रंजिसिता सभास्थान ॥ 25 ॥
वाम दंकद मेलें सीतारामें रंजिसिदळु दिवौकस
भामिनिय रारतिय नलिदेंत्तिदरु सरिसदलि
भूभिजासुत केळगस्त्य महामुनीश्वर नखिळ सुमन-
स्तोम मध्यदलेंद्दु बिन्नैसिदनु रामंगे ॥ 26 ॥
आरु गॆल बारद जगत्रय वीरननु विबुधारियनु स-
त्क्रूरननु दुष्टन दुरात्मन गॆलिदु रक्षिसिदें
धारुणिय शिष्टरनु मुनिवृंदारकाम्नायवनु निनगि-
न्नारु सरि सुरनर भुजंगरोळेंदु मुनि नुडिद ॥ 27 ॥
देव नीनीगखिळ लोकव काव करुणिगळरस नीनी
गी विबुधर सुरक्षकनु नीनीग श्रुतिसिद्ध
देव देवरदेव लक्ष्मीदेवियरस महामहिम कलि
रावणांतकजीय बीळ्कॊडु सुरर नीनेंद ॥ 28 ॥
तरिसि दिव्य विभूषणांबर वर सुकुंकुम यक्ष कर्दम
दुरुतरातिथ्यादि सन्मानोक्तियलि बळिक

गंधर्व-स्त्रियों के नये गाने, तुंबुर का वीणावाद्य —इन सबके कलकल-निनाद से श्रीराम का सभा-मंडप चमक उठा। २५ श्रीराम की बायीं गोद में लक्ष्मीस्वरूपिणी सीता शोभा देने लगी। देवताओं की स्त्रियों ने श्रीराम-सीता की आरती उतारी। हे जानकी-पुत्र, सुनो। अगस्त्य महामुनि समस्त देवताओं के मध्य से (बीच में से) उठ आए तथा उन्होंने राम से यों निवेदन किया। २६ "जिसको जीतना जिस-किसी के लिए भी जो बिलकुल असाध्य था ऐसा, देवताओं के शत्रु, क्रूर, दुष्ट दुरात्मा जो त्रिलोक-वीर था उसको तो तुमने जीत लिया। धरती के सज्जनों की, ऋषियों की, देवताओं की तथा वेदों की रक्षा की। मानवों में, देवताओं में तथा नागों में तुम्हारी बराबरी कौन कर सकता है ?" इस प्रकार अगस्त्य मुनि ने कहा। २७ "राजन् (भगवन्) ! अब तुम समस्त लोकों के एक मात्र रक्षक करुणालुओं के राजा हो; अब तुम देवताओं के रक्षक हो; वेद-समर्थक हो; देवाधिदेव हो; लक्ष्मीदेवी के स्वामी हो; महामहिमा-संपन्न वीर रावणांतक हो; भगवन् ! अब देवताओं को बिदा करें।" इस प्रकार अगस्त्य ने कहा। २८ दिव्य आभूषण, दिव्य वस्त्र तथा कुंकुम, कर्पूर, केशर से बनाए सुगन्ध-द्रव्यों से अतिशय आदरातिथ्य सन्मान दे

हरन परमेष्ठिय पुरंदर वरुण वायु कुबेर मुख्यर
नुरुतर प्रेमदलि कळुहिदना रघुप्रभव ।। 29 ।।
हरॆंदु दोलग वंदिनिरुळलि करॆसि सुग्रीवादि भटरिगॆ
शरण जन सुरधेनु श्रुतिभूषण विभीषणगॆ
तरिसिदौतण दक्षतॆय विस्तरिसि कळुहिद नवर नल्लि
दरसुतनदतिशयद सौबगनु कुशनॆ केळॆंद ।। 30 ।।
बंदनाक्षण विश्वकर्मनु निदिरिसिदनु सौधगळ मणि
मंदिरगळ सुपाक शालावळिय वीथिगळ
कंद केळ् रावणगॆ सेवॆयनंदु माडुव सेवकरु नडॆ
तंदु माडितु सेवॆ गळना मंत्रणोत्सवद ।। 31 ।।
उदय मुखकाय्तखिळ कडॆगट्टु दधिशयनन वैभवकॆ ता-
निदिरि दावुदु कल्पतरु सुरधेनु सुरमणिय
सदमळद सौरंभदलि सॊंपॊदविता यॆंबंतॆ सॊगसा-
दुदु समस्त सुभक्ष भॊज्यादिगळ परिकरवु ।। 32 ।।
सॊगसिदवु सरसिगळु पालमॊसरुगळ सद्योघृतद रंजणि-
गॆगळ सालिळुहिदवु पान रसायनादिगळ
झगझगिप हॊंगॊप्परिगॆगळ बगॆ विराजिसितोगरद रा-
शिगळु रंजिसिदवु सुपक्वद भक्ष्य भारदलि ।। 33 ।।

(गौरव करते हुए) राम ने शिवजी, ब्रह्माजी, देवेन्द्र, वरुण, वायु, कुबेर वगैरह को प्रीत्यादर-युक्त भावना को प्रकट करते बिदा किया। २९ उस दिन की रात की सभा विसर्जित हुई। सुग्रीवादि वीरों को, भक्तजन कामधेनु वेद-विभूषण विभीषण को भोज पर बुलाकर अक्षत देकर बिदा किया। आगे चलकर राम ने कितने सुन्दर सुचारु रूप से राज्य का शासन किया —उसके बारे में सुनाता हूँ। सुनो कुश ! इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ३० उसी क्षण विश्वकर्मा ने उपस्थित हो मंजिलों से युक्त महल, रत्नभवन, रसोईघर तथा उनके बीच में समीचीन गलियों का निर्माण किया। बेटे कुश, सुनो। रावण की सेवा में (अब तक) रहे सेवकों ने आकर भोज के समारोह में उपस्थित हो कार्य-भार सँभालते समारोह को सफल बनाया। ३१ सुबह होते-होते सभी पड़ाव तैयार हुए। क्षीरसागर-वासी के वैभव के सम्मुख वह क्या है जो सहल न हो सके। कल्पवृक्ष, कामधेनु, स्पर्शमणियों के संभ्रम से मानों समृद्धि हुई हो— इस रीति से सभी प्रकार की भक्ष्य भोज्य सामग्रियाँ आ जुटीं। ३२ दूध तथा दही भरे तालाब राजित हुए; अभी-अभी तैयार किये गये घी के गोदाम

शाकगळ हॊंबेसळिगॆगळ संपाकगळ परमान्नगळ ना-
ना कटुक सम्मिश्रगुड सम्मिळित शिखरणॆय
कॆ करणॆगळ विविध फल रस पैकगळ परिमळगळलि सुर-
लोकदमरर बायनी इसितु बाणसिन भवन ॥ 34 ॥
आदुदीपरि विविध सरंभोदयदि दिव्यान्नपान म-
हादयांबुधि राघवेंद्रन राजभवनदलि
आदुदुदयद मेलॆ बळिकीरॆदु गळिगॆयॊळग्निहोत्रग-
ळादियाद समस्त सुरतर्पणद सौरंभ ॥ 35 ॥
करसिदनु बळिकरसनुचितोत्करदिना सुग्रीव जांबव
मरुत सुत नीलांगदादि समस्त कपिभटर
शरणु हॊक्क विभीषणाद्यर नुरुतर प्रेमदलि मणिमय
निरतिशय भवनंतराळकॆ भूमिजारमण ॥ 36 ॥
बलद लॆडॆयाग्रजकुमारगॆ बलिमुखर वैद्यगॆ वामद
वळयदलि भरतगॆ भरतानुजरिगिब्बरिगॆ
जलजबंधु सुतगॆ लंका ललनॆयरसंगाग्निसुत शत-
बलि गवाद्यरिगाद वॆडॆगळु सकल बलसहित ॥ 37 ॥

पंक्ति में सजाए गये। तरह-तरह की पेय वस्तुओं से तथा रसायनों से भरे सोने के जगमगाते गंगाल मन को मोहने लगे। तरह-तरह के अन्न के ढेर पकाकर तैयार किये गये पक्वान्नों के ढेर सारे आँखों को आकर्षित करने लगे। ३३ सोने की कड़ाहियों में भरे पके चावल, रसम, सांबार, वग़ैरह से, रुचिकर ढंग से बनायी खीर तथा तरह-तरह के तीखे व गुड़ से मिश्रित आम-रस से, निपुणता (कौशल्य) के साथ बनाये गये कई प्रकार के फलों के रसायनों के कारण रसोई की खुशबू रसोईघर से निकलकर देवताओं तक जो पहुँची तो उनके मुँह में पानी भर आया। (खूब ललचाए)। ३४ दयानिधि राघवेन्द्र के राजभवन में इस प्रकार बड़े संभ्रम के साथ दिव्य खान-पान तैयार हुए। सूर्योदय से लेकर दस घड़ी तक देवताओं को हविर्भाग (घी-युक्त अन्न की आहुतियाँ) समर्पण करने का अग्निहोम (होम वग़ैरः) आदि होते रहे। ३५ सुग्रीव, जम्बव, हनुमान, नील, अंगद आदि समस्त कपिवीरों को, अपनी शरण में आए विभीषण आदियों को उस श्रेष्ठरत्न भवन में बुलवा लिया। ३६ दाहिने पार्श्व में जांबव, वानरों के वैद्य सुषेण आदियों को भोजन परोसा गया। वाम पार्श्व में भरत, भरत के दो भाई लक्ष्मण-शत्रुघ्न के लिए जगह बनायी गयी (भोजन के लिए)। सुग्रीव, विभीषण, नील, शतबलि, गव वग़ैरह

होळॆव कालड्डणिगॆगळ थळथळिप हेमद साल हरियण
गळ सुवर्णद तट्टॆ बट्टलु गळ विलासदलि
कॊलस गतिगळ गिंडि सग्गळॆ गळलि दीपस्तंभरचना
वळिगळलि सालॆसॆदवा भवनांतराळदलि ॥ 38 ॥
हिरिदु किरिदिन मान मन्नणॆ यरिदु लक्ष्मणदेवनुचितो-
त्कर गळलि कुळ्ळिरिसिदनु कपि वाहिनीश्वरर
तरुणियरु सुळिदरु सुपाकोत्करद नाना भोज्य वस्तू-
त्करद करभांडगळ भारद बळुकु नडॆगळलि ॥ 39 ॥
इट्ट मुत्तिन तिलकगळ बॆळुवट्टॆगळ सिगरद मैगळ
वट्ट रत्नाभरणगळ नूपुरद झणरवद
बट्ट मॊलॆगळ ढाळिसुव कडॆदिट्टिगळ हंसॆगळ नडॆगळ
हॆट्टुगॆयरुण बडिसिदरु बहुविधद भक्ष्यगळ ॥ 40 ॥
कॊनॆ मूडिय हूदुरुबुगळ हॆंपिन विलासद हिणिल तिद्दिद
कॊनॆ युगुर मणिमुद्रिकॆय बॆर ळुगळ कंकणद
जनित झणरव दंगलतॆगळ तनिहॊगरु हॊरहॊम्मुवबला
जनगळुणबडिसिदरु नाना परिय पायसव ॥ 41 ॥

को उनकी सारी सेना-सहित भोजन के लिए बिठाया गया। ३७ चमक रहे तीन पैरवाले पीढ़ों पर जगमगाते सोने की थालियों में सोने की तश्तरी-वाटियों को एक पंक्ति में रखा गया। परोसनेवालों के आने-जाने की राह पर प्याले तथा जल-भरे बड़े-बड़े पात्र रखे गये। दीपस्तंभों को पंक्तियों में रखा गया। ३८ वानर-नायकों में छोटे-बड़ों का ध्यान रखते हुए उन-उनके स्थान तथा प्रतिष्ठा को स्मरण में रखते हुए लक्ष्मण ने उनको उनकी योग्यतानुसार स्थानों में बिठाया। रसोई के तरह-तरह के भोज्य सामग्रियों से भरे पंचपात्रों को हाथ में धरे युवतियाँ उन पात्रों के वज़न के कारण लचकती हुई, बल खाती हुई परोसने के लिए आयीं। ३९ माथे पर मोती का तिलक लगाए, सफ़ेद कपड़े (धोती) पहने, अपने सुन्दर अंगांगों को रत्नाभूषणों से सजाए, गोल-मटोल स्तनोंवाली सखियाँ पैरों के नूपरों की रुन-झुन ध्वनि के साथ हंस की चाल चलती हुईं (आकर) विविध प्रकार के भक्ष्य भोजन को परोसने लगीं। ४० फूलों के गजरों को जूड़ों में धारे, सुन्दर जूड़ोंवाली, सजाए नाखूनवाली, रत्न जड़े अँगूठियों को पहने हुईं, रुनझुनाते कंगनों की मधुर ध्वनि से युक्त, जिनकी अंग-कांति दमक रही थी —ऐसी सुन्दरियों ने कई प्रकार की खीर परोसी। ४१

औकि निरिगळ निरिकि मेलुद सोकुवेंळगिन लहरि गळलि व-
नौकसर नीक्षिसुत तोरिसुतंग विभ्रमव
नाकदबलेंयरिवर घन बिब्बोककोंणेयिल्लेंब सतियरु
शाकगळ बडिसिदरु षड्रसभरित भोज्यगळ ॥ 42 ॥
चीनि चित्रांबर विचित्र नवीन पळिगळ जीबिगळ परि-
धानगळ बोंबेंगळ पट्टावळिय चंद्रिकेंय
आनें मेंट्टिन हयहरिण पंचाननांचित दिव्यवस्त्रव
मानिनियरुट्टुण बडिसिदरु वानरेंद्ररिगें ॥ 43 ॥
अगलु हनुमंगिल्लदिरें कैमुगिदु मेंल्लनें मगध तनुजेंय
मगनु बिन्नह माडिदनु रघुनृपन कर्णदलि
अगलु बेरिन्नेकें जीवांशुगनला नम्मंतरंगद
लगलदिह नावातगेतरलुत्त राय् येंद ॥ 44 ॥
तरणिसुत तन्नंगनेंगें तन्नरसुतन कोलैसिदनु दश-
शिरन तम्मनु तन्न राज्यश्रीगें सारिदनु
तरुण केळ् हनुमंतनेतरु सिरिय बयसिदनेन बेडिद
नरवरिसदायसकें निदवनोंब्बनेयेंद ॥ 45 ॥

साड़ियों को चाँपकर धरे, आँचल को खींचकर ओढ़े— तिरछी नजरों से मानों स्पर्श कर रही हों, इस प्रकार वानरों को देखते हुए, अपने अंग-सौष्ठव को प्रदर्शित करते, इनके (अपने) अहं की बराबरी कोई नहीं कर सकता, इस प्रकार भाव-संपन्न स्वर्ग-सुन्दरियों ने षड्रससंपन्न मिष्ठान्न को परोसा। ४२ चीनांबर, तरह-तरह के रंगीन कपड़े, विभिन्न प्रकार के, नये, रेशम के कपड़े, जीबि नामक कपड़े, चित्र-कढ़ी ओढ़नियाँ, धारीदार, चाँदनी के रंग के हाथी, घोड़े, हिरन, शेर के चित्रों (के कारण) से जगमगा रहे कपड़ों को पहने स्त्रियों ने वानर-नायकों को भोजन परोसा। ४३ हनुमान के सामने भोजन की थाली का अभाव देखकर सुमित्रासुत लक्ष्मण ने हाथ जोड़े श्रीराम का ध्यान, कान में फुसफुसाकर कहते, इस ओर आकृष्ट कर दिया। तब राम ने कहा— "हनुमान के लिए अलग थाली की क्या जरूरत है? वह तो हमारे प्राणों के ही (अभिन्न) अंग हैं। हमारे अंतर्यामी हो स्थिर रूप से निवास करनेवाले उससे हम किसी तरह ग़ैर नहीं हैं।" ४४ "सुग्रीव अपनी पत्नी तथा अपने राज्य को पाने के उद्देश्य से हमारी सेवा में उपस्थित रहे। रावण का भाई विभीषण राज्य पाने के उद्देश्य से हमारी शरण आए। सुनो भाई; हनुमान ने कौन संपत्ति चाही? (अपने लिए) उसने क्या माँग लिया? किसी वस्तु की अपेक्षा न करते

सत्तवर नॆब्बिसिद नॆम्मुव नॆत्तिदनु मुद्रिकॆयनवनिजॆ
गित्तनंजदॆ कॊंदनगणित वसुर नंदनर
कित्तनगद वनव नाहुति गित्तनहितन पुरवनग्निगॆ
हॊत्त कॆलसक्क लसदवनिद नॊब्बनेयॆंद ॥ 46 ॥
हनुम नीनॆम्मॊडनॆ सहभोजनिग निदिदिरॆंद्दु करवनु
विनुत करपल्लवदि पिडितंदमल विष्टरद
कॊनॆयलीतन निलिसिदनु रवि तनुजवीर विभीषणाद्यरु
हनुम माडिद सुकृतवॆंतुटॊ यॆनुत बॆरगाय्तु ॥ 47 ॥
हनुमनिद्दनु सुम्मनापोशनद तुदिपरियंत सहभो-
जन कुपक्रमिसिदरु रघुराजेंद्र मॊदलाद
वनचराधिप रंतरदला हनुमनाळ्दन भुक्तशेषद
कनकपात्रॆय कॊंडु हाय्दनु गगन नदिगागि ॥ 48 ॥
सनक नप्पिदनल्लि नारद मुनिप नालिंगिसिद नमरर
जनप कैमुगिदॆरगिदनु हॊगळिदनु कमलभव

(किसी ओर उपेक्षा भी न करते) निष्काम, निष्कपट भाव से सेवा समर्पित करते परिश्रम करनेवाला वह अकेला ही है।" इस तरह राम ने कहा। ४५ "हनुमान ने मरे हुओं को जिलाया; मुझे संजीवनी प्रदान कर पुनर्जन्म दिया; तुम्हें भी। हमारी (मेरी) मुद्रांकित अँगूठी ले जाकर सीता को दी। अनगिनत संख्या में राक्षसों की, रावण के पुत्रों की हत्या की। श्रेष्ठ अशोकवन का सत्यानाश कर दिया, शत्रु की राजधानी को अग्नि के लिए आहुति दी। जो भी काम अपने जिम्मे लिया निरपेक्ष भाव से उसे पूरा कर देनेवाला एकमात्र यही (हनुमान) है।" इस प्रकार राम ने कहा। ४६ "हे हनुमान, तुम यहीं आ जाना; हमारे साथ ही बैठकर भोजन करने का अधिकार तुम्हारा है।" इस तरह कहते राम उठकर धाए तथा हनुमान को अपने कोमल हाथों से धरे बुला लाकर अपने पीठ (आसन) के कोर में उन्हें बिठाया। सुग्रीव वीर विभीषणादि आश्चर्य व्यक्त करते कहने लगे— "कितना महान पुण्यभाग (पुण्यशाली भाग्यवान्) है यह हनुमान!" ४७ भोजन के पहले तथा समाप्ति पर आचमन जल ग्रहण करने तक हनुमान चुप ही रहा। श्रीराम तथा वानरनायकों ने साथ बैठकर भोजन प्रारंभ किया। भोजन की समाप्ति पर हनुमान अपने स्वामी श्रीराम के भोजनोपरान्त बचे जूठन के सोने के पात्र को हाथ में लिये आकाशगंगा की ओर उछले। ४८ सनक मुनि ने हनुमान को भुजाओं में कस लिया। नारद मुनि ने आकर उनका आलिंगन कर लिया। देवेन्द्र

विनुत वैष्णव रोळगॆ नी गिगिलॆनुत हरकॊंडाडिदनु लय
जनिस दमरत्ववनु पडॆयॆंदतुळ हरुषदलि ॥ 49 ॥
उंडु कैदॊळॆ दिळिदना दोर्दंडबल हनुमंतना को-
दंड दीक्षाचार्य रघुकुल राय निद्दॆडॆगॆ
कंडु बॆरगायतखिळ वानर तंडवी निजभक्तियनु नाव्
कंडॆवी हनुमंतदेवन लॆंदु दखिळजन ॥ 50 ॥
गुणभरित रघुनाथ नारो गणॆय माडिद नखिळ वानर
गणसहित कैदॊळॆदु कैघटिकॆगळ संदणिसि
अणुग केळनु लेपनद सारणॆगळलि हूमालॆगळ भू-
षणगळलि कर्पुरद वीळॆय गळलि मन्निसिद ॥ 51 ॥
मनदणियॆ मणिभूषणाळिय निन सुताद्यरिगित्तु विलसित
विनुत दिव्यांबरगळलि मन्निसिद नुचितदलि
ऒनितु तन्नय बॆंबळिय बंदिनितु कपिसेनॆयनु सेना
जनवनुरॆ मन्निसिदनुडुगॊरॆयुचित वृत्तियलि ॥ 52 ॥
कळुहिदनु करुणदलि कलिगळ तिलक सुग्रीवादि सुभटा-
वळियनवरवरिह निवासंगळिगॆ विनयदलि

ने हाथ जोड़ हनुमान को प्रणाम किया। ब्रह्माजी ने खूब प्रशंसा की। "विष्णुभक्तों में तू सर्वोपरि है।" इस तरह शिवजी ने प्रशंसा की। "मृत्यु-रहित अमरत्व को प्राप्त कर।" इस तरह कहते अत्यंत हर्षित हो (शिव ने) वरदान दिया। ४९ महान भुजबलशाली हनुमान भोजन से निबटकर, हाथ-मुँह धो धनुर्विद्याव्रतनिष्ठ रघुकुल राजा श्रीराम के पास (आकाश-गंगा से) उतर आए। यह देख वानरसमूह ने दाँतों तले उँगली दबायी। समस्त लोगों ने यही कहा— "सच्ची भक्ति इस हनुमान देवता की ही है।" ५० सद्गुणसंपन्न सच्चरित श्रीराम ने (रघुनाथ ने) समस्त वानरों के साथ भोजन किया। हाथ धो लेने पर हाथों मे मलने सुगंध देकर, पिसे चन्दन को शरीर में मल लेने प्रदान कर, पुष्पमाला तथा आभूषणों को अलंकृत कर, कर्पूरमिश्रित ताम्बूल सेवन करने के लिए देते हुए राम ने सबको गौरव देते आदरातिथ्य किया। ५१ सुग्रीव आदियों को रत्न-जड़े आभूषण देते, दमकते दिव्य अस्त्रों को देते, योग्य रीति से (सबका) आदर-सत्कार किया। अपना अनुसरण करते आये प्रत्येक कपि का, उनकी योग्यता के अनुरूप (श्रीराम ने) सम्मान किया। ५२ "हमारे लिए काफ़ी खट चुके हो, थक भी गये हो। तुम्हारी सहायता से हमने शत्रु को जीत लिया; तुम्हारे ही कारण इस जगत में हम कीर्तिभाजन बने। इस तरह विनम्र भाव से

बळलिदिरि नम्मिद हगॆयनु गॆलिदॆवाव् निम्मिद कीर्तिय
गळिसिदॆवु जगदॊळगॆ निम्मिदधिक रारॆद ॥ 53 ॥
देव बळिक्कति हरुषमुखदलि पावमानिय करॆदु निन्नय
सेवॆगेतरॆ लुत्तरायिग ळावु हेळॆनुत
आ विरंचिय वैभववु कल्पानसानकॆ सललि भुवनज
नावळिगळुरॆ वंदिसलि गुरुवागु जगकॆंद ॥ 54 ॥
इरु सुरोरुग मर्त्य भुवनांतरगळलि मनबंद ठाविन
लिरु सुराद्रि प्रमुख नाना पर्वतंगळलि
इरु मदीय पुरांतरदलॆंदरस करुणास्पदद नेहद
निरतिशयदलि बीळुकॊट्टनु बेह किंकरन ॥ 55 ॥
जल जडियॆ कंगळलि करुणा जलधि यंघ्रिगॆ नमिसि विक्रम
जलधि कळुहिसि कॊंडना तरुवाय रक्कसर
कुलललामन करॆदु कैरव जलज सखरुळ्ळन्नबर बिड
दॊलिदु पालिसु लंकॆयनु सुखियागु होगॆंद ॥ 56 ॥
जडिव कंबनिगळलि रघुपति यडिगॆरॆगिदंगदन शिरवनु
तडवरिसि बारै बलीशनॆ बलिमुखाधीश

श्रीराम ने सुग्रीवादि वीरों की प्रशंसा करते करुणापूर्ण भाव से उनको अपने-अपने निवासस्थानों के लिए बिदा करते रवाना किया। ५३ तदनंतर, अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक हनुमान को बुलाकर— "तुम्हारी (निष्काम) सेवाओं का ऋण हम किस रीति से चुकाएँ; सो तो कहो। ब्रह्माजी का वैभव तुम्हें युग के अंत तक प्राप्त हो। जगत के लोक तेरी वन्दना करें। जगत के गुरु बनो।" इस तरह कहते हनुमान पर अनुग्रह किया। (वरदान दिया)। ५४ "देवलोक, पाताललोक, भूलोक —इनमें जहाँ कहीं चाहे, तुम रहो। मेरु (सुमेरु) पर्वतादि प्रमुख पर्वतों पर निवास करो। मेरी नगरी में निवास बनाओ।" इस प्रकार कहते श्रीराम ने करुणापूर्ण परम प्रेम से अपने प्यारे दुलारे सेवक को भिजवा दिया। ५५ आँखों भर आये अश्रु टपटप गिराते वीरता के सागर हनुमान ने करुणासागर श्रीराम के श्रीचरणों में प्रणाम कर उनसे आज्ञा ली; फिर (वहाँ से) रवाना हुए। इसके बाद राक्षसकुलतिलक विभीषण को बुलाकर— "आ चन्द्रार्क (यावत् सूर्य-चन्द्रमा रहे तावत्) लंकानगरी का पालन आनन्दपूर्वक करते रहो, सुखी रहो।" इस प्रकार श्रीराम ने कहा। ५६ आँसू बहाते अपने चरणों में गिरे अंगद का माथा सहलाते श्रीराम ने, "हे वानरराजवीर, आओ। यह देखो, यह अंगद हमारे आधीन किया गया हमारा ही पुत्र है। जब

पॊडवि निवगुळ्ळन्नबर कैविडिदु सलहॆंमगॊप्पिसिद कै
मॆडॆय कंदननॆंदु रविनंदनन बीळ्कॊट्ट ॥ 57 ॥
बीळुकॊंडुदु सकल वीरभटाळि मॊळगुव वाद्यरभसद
लॆळिगॆय हरुषदलि तम्तम्मखिळ पुरवरकॆ
मेलॆ मनुमॊदलाद पृथ्वीपालरिंद सहस्र मडियलि
पालिसिदनुर्वरॆय जनवनु सकल विभवदलि ॥ 58 ॥
ऎल्लि नोडिद डल्लि सौख्यद सल्ललित संपददमय सिरि
यॆल्लि नोडिदडल्लि धर्म सुकर्म मार्गमय
ऎल्लि नोडिदडल्लि बॆळसिन भुल्लवर्णय विलासमय रघु-
वल्लभन राष्ट्रदलि हेळुवदेनु तानॆंद ॥ 59 ॥
कळवनृत वन्याय कॊलॆंदळ वुळवु दुर्भय बाधॆ वंचनॆ
हळिवु हादर बंदि संकर जात्य धर्मगळु
सुळिय लरियवु रामराज्यद सुलभ तॆंगॆ सरियावुदै के-
ळॆलॆ कुशानुज केळु कुश नीनॆंदु मुनि नुडिद ॥ 60 ॥
नदि नदिय तीरदलि गृहसंपदवु सहित समस्त विभवा-
स्पद सहित सुक्षेत्र कन्या धेनुगळु सहित

तक तुम राज्य शासन करते रहो, इस हमारे पुत्र की देखभाल की जिम्मेदारी तुम्हारी रही। इसकी रक्षा करो।" इस प्रकार सुग्रीव से कहते हुए उसे बिदा किया। ५७ बड़े जोर-शोर से बजते गाजे-बाजों के साथ खुशी-खुशी समस्त वीर योद्धाओं ने अपनी-अपनी नगरी के लिए यात्रा की। पूर्व के (भूतपूर्व) मनु आदि राजाओं के हजारों गुने अधिक वैभव से राम ने भूमि (धरती) तथा प्रजाओं का पालन किया। ५८ राजा राम के राज्य में जहाँ कहीं भी देखें— सुख-सम्पदा से भरा वैभव ही दृष्टिगोचर होता था; जहाँ कहीं भी सत्कर्म मार्गावलम्बी धर्माचरण-निरत लोग दिखायी देते थे। हर कहीं समृद्धि से संपन्न उपजाऊ धरती की सुषमा दृष्टिगोचर होती। इसका वर्णन कहाँ तक करूँ? इस प्रकार वाल्मीकि ने कहा। ५९ असत्य (झूठ), प्रवंचना, अन्याय, हत्या, लूट-खसोट, दुष्टों से भय, हिंसा, धोखा, चोरी, निन्दा, व्यभिचार, शराब, वर्णसंकर जाति से सम्बन्धित अधर्म आदि रामराज्य में अपने को प्रकट करने में असमर्थ थे। हे लव-कुश! सुनो। रामराज्य की शोभा-संपदा की बराबरी कहाँ मिले? —इस तरह वाल्मीकि ने कहा। ६० निवास के लिए सुयोग्य घर, उपजाऊ खेती-बाड़ियाँ, बछड़े जनने की ताक़त से परिपूर्ण गौवें— आदि समस्त वैभवों से लबालब भरे ब्राह्मणों की बस्तियों को, श्रीराम ने, नदी के किनारे

मदन हर मधुवैरि दुर्गा सदनगळु सहितग्रहारव
पुदिद निळॆयलि रामननुपम नामनोलविनलि ॥ 61 ॥
पळुकिनलि सर्वेदमल भांडदॊळिळुहिदुज्वल दीपकद मै
बॆळगिनवोलंभोज संभूतांड मंडलव
ऒळगडॆय हॊरगडॆयलुरॆ प्रज्वलिसितग्गद कीर्तिरुचि रघु-
कुल ललामन रामचंद्रन राज्यदेळ्गयलि ॥ 62 ॥
कट्टिदनु युवराज राजित पट्टवनु भरतंगॆ सेना
पट्टवनु शत्रुघ्ननलि संधिसिद नुर्वरॆय
कट्टळॆय पालनॆय मिक्कॊड हुट्टिदगॆ नेमिसि निशाटघ
रट्ट तॊरवॆय राय नरहरि सलुहिदनु जगव ॥ 63 ॥
मंगळवु जगकाय्तु सुररिगॆ मंगळद्रुम फलित वायितु
मंगळवु नॆलॆगॊंड्दोदुव हेळ्वकेळ्वरिगॆ
संगडिसिदुदु सकल भक्त जनंगळिगॆ सुख राय तॊरवॆय
मंगळश्रीमूर्ति नरकेसरिय काव्यदलि ॥ 64 ॥
चारुतर कवि राजहंस कुमार वाल्मीकि प्रबंधद
सारमय रामायणव नादरिसि केळ्वरिगॆ
श्रीरमण निहपरद सुखसंपूरणव नॊलिदीवनॆंबुदु
धारुळियॊळिदु सिद्ध नबुवुदुळिदु मंशयव ॥ 65 ॥

निर्माण कर शिव, विष्णु, दुर्गाजी के मंदिरों को स्थापित किया। ६१ रघुकुलतिलक श्री रामचन्द्र के राज्योन्नति के साथ फैला कीर्तिकौमुदी रूपी प्रकाश स्फटिक-पात्र में जलाए हुए (जल रहे) उज्ज्वल दीपक की कांति के सदृश ब्रह्मांड-मंडल के भीतर-बाहर, सर्वत्र जगमगाया। (कीर्ति-का प्रकाश सर्वत्र फैल गया।) ६२ श्रीराम ने भरत का युवराज्याभिषेक संपन्न किया; सेनाधिपत्य शत्रुघ्न को दिया; राज्य के शासन-नियमों की रक्षा का आधिपत्य लक्ष्मण को सौंप दिया। इस प्रकार राक्षसों को पीस डालने में चक्की के सदृश विराज रहे तॊरवॆ के नरसिंह के अवतारस्वरूपी श्रीराम ने राज्य-भार सँभाला। (शासन किया।) ६३ जगत भर का मंगल-कल्याण हुआ। कल्पवृक्ष ने देवताओं को वांछित फल प्रदान किया। श्रीराम के पावन चरित्र को पढ़ने-सुनने तथा कहनेवालों का कल्याण हुआ। 'तॊरवॆ' के अधिपति मंगल श्रीमूर्ति नरसिंह के इस श्रीसंपन्न काव्य से समस्त भक्तजनों को मंगल-भाग्य प्राप्त हुआ। ६४ श्रेष्ठ कविराज हंस कुमार वाल्मीकि-विरचित अमृत-सदृश इस रामायण को जो भक्ति तथा गौरव के साथ सुनेगा, उनको लक्ष्मीपति श्री हरि इह-

शिवन नुडियिदु सरसिरुह संभवन मातिदु सुर मुनिपननु
भवद विश्रुत वाक्य विदु वाल्मीकि मुनिवरन
सविगोंडुव काव्यामृतार्णव दविरळद पानीयविदु त्रै-
भुवन रंजित पुंजवी रघुरामचंद्रकृति ।। 66 ।।
सरस वर्णक कविगळोळु भासुर कुमारव्यासनोब्बनु
परकिसुवडानोब्ब मगुळेणिसुवरे वर्णककॆ
वर कुमार व्यास नोब्बनु येरडनेय लानोब्ब मिक्किन
जरडुकविगळ लेक्किसुवने कुमार वाल्मीकि ।। 67 ।।
वरकुमार व्यासने बंधुरद भारतकृतिगे कर्तनु
निरुत रामायणकॆ सुकवि कुमार वाल्मीकि
दोरॆ विचारवदेनु पेळदि येरडु काव्यकॆ मिक्कशब्दा-
क्षर दरिद्रर बंध बंधुर रसविवर्जितर ।। 68 ।।

लोक तथा परलोक में पूर्ण सुख देकर संतोष प्रदान करेगा —यह इस जगत का (त्रिकालाबाधित) चिर सत्य है। संशय (शक) को त्यागकर इस बात पर विश्वास करें। ६५ यह (उक्त) कथन शिवजी का है; ब्रह्माजी का है, नारद का अनुभवसिद्ध कथन है। महर्षि वाल्मीकि के काव्यामृत सागर का यह परिशुद्ध पानीय वचनामृत है। तीनों लोकों को जगमगा देनेवाला, कांतिमय बनानेवाला एकमात्र प्रकाश (निश्चित रूप से) श्री रघुरामचन्द्र का काव्य ही है। ६६ वर्णक काव्यों के रसिक कवियों में रचना-समर्थ कवि हैं कुमार व्यासजी; वैसे तो परीक्षा कर देखें तो मैं भी उसी कोटि का हूं; वर्णक काव्य-रचना समर्थ कवियों की गणना पुनः एक बार करना चाहो तो सर्वप्रथम कवि ठहरेंगे एकमात्र कवि कुमार व्यास जी ही। दूसरा स्थान मेरा ही है —यह तो सुनिश्चित है। अन्य ऐरे-गैरे नत्थू खैरे कवि कुमार वाल्मीकि की दृष्टि में केवल नगण्य हैं। (मेरे सामने उनकी बिसात ही क्या है?) ६७ सुमनोहर भारत महाकाव्य के रचयिता श्रेष्ठ वर (आशु) कवि कुमार व्यास जी हैं। सत्यनिष्ठ रामायण (महा) कृति के कृतिकार (रचयिता) सुकवि कुमार वाल्मीकि जी हैं जो कुमार व्यास की बराबरी के दावेदार हैं। तब इस दिशा में सोच-विचार करने में कुछ रहता ही नहीं। इन दो (महा-) काव्यों की बराबरी में (तुलना में) अन्य शब्दाक्षर दरिद्रों की तथा रचना की गठन में शैथिल्य व रसहीन काव्य-कर्ताओं की चर्चा करना भी बेकार है। (अन्य कवि हम दोनों के सामने निकम्मे ठहरते है।) ६८ इस जगत में

धरॆयॊळग्गद राघवेंद्रन चरित शतकोटि प्रविस्तर
वर महा चारित्र रचना सुप्रबंधदलि
परम भक्तियॊ कावनॊंदक्षरव केळ्द नरंगॆ पातक
हरॆवुदॆंदु कुमाररिगॆ वाल्मीकि मुनिनुडिद ॥ 69 ॥
भव भवार्जित दुरित कोटिय तविसुवग्गद नाम सरसिज
भव भवेंद्राद्यखिळ पदवियनीव गुणनाम
शिवन नच्चिन नाम गिरिसंभवॆय नेमद नाम सुरनर
भुवन पावन नाम सीतापतिय सिरिनाम ॥ 70 ॥
ऒदॆवुदघ संहतिय तलॆदोऱिदडॆ दहिसुवुदॆंडर नौकिद
डदुहि बिसुडुवुदुन्मद प्रळय प्रपंचकव
मुदवनिहदलि कॊडुवुदच्युत पदव परदॊळगीवुदिदु निग-
मद रहस्य पुराण सिद्ध विदॆंदु मुनिनुडिद ॥ 71 ॥

॥ तॊरवॆ रामायण सम्पूर्ण ॥

(इस) श्रेष्ठ राघवेन्द्र श्रीराम की महिमा का वर्णन करनेवाले, विस्तार से (विशालतासंपन्न) भरे सौ करोड़ रामायणों के महान चरित्र काव्यों में से केवल एक अक्षर को परम श्रद्धा-भक्ति-भाव से जो सुनता है उस मानव के सारे पाप निःशेष हो जाते हैं; मिट जाते हैं। इस प्रकार वर्णन करते हुए महर्षि वाल्मीकि ने लव-कुश कुमारों को रामायण की महत्ता समझायी। ६९ श्री सीतापति का श्रीसंपदायुक्त यह पवित्र नाम जन्म-जन्मांतरों से इकट्ठे हुए करोड़ों पापों को विनष्ट करनेवाला पावन नाम है; ब्रह्मा, शिव, देवेन्द्रादि सकल (सारे) उपाधियों को प्रदान करनेवाला गुण-भरित नाम है। शिवजी का प्रीतिपात्र (प्रीति-प्राप्त) नाम है; पार्वती-व्रत में उच्चारित होनेवाला नाम है तथा सुर-नरलोकों को पुनीत बनानेवाला पावन नाम है। ७० राम-नाम पापसमूहों को भगा देता है; विघ्न उपस्थित हो जायँ तो उनको जलाकर भस्म कर देता है; मस्ती भरे विनाश-कार्य को धर दबोचकर फेक देता है; इहलोक में सन्तोष परलोक में विष्णु भगवान का सायुज्य (उपाधि) प्रदान कर देता है। यह वेद-रहस्य है; यह पुराणों से प्रतिपादित (त्रिकालाबाधित) सिद्धान्त है —इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि ने घोषणा की। ७१

॥ तॊरवॆ रामायण सम्पूर्ण ॥

(पृष्ठ ४० से आगे)

ताज़ी विज्ञप्ति

प्रकाशित हो चुके हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण ग्रन्थः—

१ गुजराती—गिरधर रामायण (रचनाकाल-१८३५ ई०) हिन्दी अनुवाद,
नागरी लिप्यन्तरण पृष्ठ संख्या १४६० मूल्य ८०·००

२ ,, प्रेमानन्द रसामृत—नागरी लिप्य० तथा
हिन्दी अनुवाद पृ० संख्या ४९६ मूल्य ४०·००

३ मलयाळम—अध्यात्म रामायण (एळुत्तच्छन् कृत) १५वीं शती हिन्दी
अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृ०सं० ७५२ मू० ६०·००

४ ,, —महाभारत-एळुत्तच्छन् (१५वीं शती) पृ० १२१६ मू०७०·००

५ बँगला— कृत्तिवास रामायण (पाँचकाण्ड)—१५वीं शती।
हिन्दी पद्या० सहित नागरी लिप्य० पृ० ६२४ मू० ४०·००

६ ,, कृत्तिवास लंकाकाण्ड— ,, गद्यानुवाद पृ० ४८८ मू० ३०·००

७ ,, ,, उत्तरकाण्ड ,, ,, पृ० ३२४ मूल्य २५·००

८ कश्मीरी—रामावतारचरित-प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत पृ०४८९ मू०२०·००

९ ,, ललद्यद—(नागरी) हिन्दी गद्य संस्कृत पद्यानु० पृ०१२० ,, १५·००

१० राजस्थानी—रुक्मिणी मंगल पदमभगत कृत। पृ० ३०० मू० २०·००

११ तमिळ— तिरुक्कुरळ-तिरुवळ्ळुवर कृत। २००० वर्ष से अधिक प्राचीन;
नागरी लिप्यन्तरण, गद्य-पद्य हिन्दी अनुवाद, पृ०३५२ मू०३०·००

१२ ,, कम्ब रामायण बालकाण्ड (९वीं शती) पृ०६५२ मूल्य ४०·००

१३ ,, ,, अयोध्या-अरण्य पृष्ठ १०२४ मूल्य ७०·००

१४ ,, ,, किष्किन्धा-सुन्दर ,, १०१६ मूल्य ७०·००

१५ ,, ,, युद्धकाण्ड पूर्वार्ध ,, १०१६ मूल्य ७०·००

१६ ,, ,, ,, उत्तरार्ध ,, ८४० मूल्य ७०·००

१७ ,, बारदियार् कविदैहळ्—(सुब्रह्मण्य भारती का साहित्य नागरी
लिप्य० एवं गद्य-पद्य हिन्दी अनु० पृ० ११०८ मूल्य १००·००

१८ कन्नड— रामचन्द्रचरित पुराणं, अभिनव पम्प विरचित (जैन-मतानुसार
रामचरित ११वीं शती) पृ० ६९० मूल्य ५०·००

१९ ,, तोरवे रामायण (कुमार वाल्मीकि कृत)
१४वीं शती पृष्ठ १४०८ मूल्य १००·००

२० तेलुगु— मोल्ल रामायण (१४वीं शती) पृ० ३०८ मूल्य ३०·००

२१ ,, रंगनाथ रामायण (१३वीं शती) पृ. १३३५ मू० ८०·००

२२ ,, श्री पोतन्न महाभागवतमु १-४ स्कन्ध पृ० ८५६ मूल्य ७०·००

२३ ,, ,, ,, ५-९ ,, पृ० ८२८ मूल्य ७०·००

२४ ,, ,, ,, १०-१२ स्कन्ध पृ० ९२० मूल्य ८०·००

२५ मराठी—श्रीरामविजय-श्रीधरकृत (१७वीं शती) पृ० १२२८ मू०७०·००

२६ ,, श्रीहरि-विजय (श्रीधर कृत) पृष्ठ १००४ मू० ७०·००

२७ फ़ारसी—सिर्रे अक्बर (दाराशिकोह कृत उपनिषद-व्या०)
प्रथम खण्ड (ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक,
माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तरीय, श्वेताश्वर) २८० मू० ३०.००
२८ उर्दू— शरीफ़ज़ाद: (मिर्ज़ा रुस्वा कृत) पृ० १३६ मूल्य १०.००
२९ ,, गुज़श्त: लखनऊ (मौ० शरर) पृ० ३१६ मूल्य २५.००
३० गुरमुखी—श्री गुरुग्रन्थ साहिब पहली सैंची पृ० ९६८ मूल्य ५०.००
३१ ,, ,, ,, दूसरी सैंची पृ० ९९२ मूल्य ५०.००
३२ ,, ,, ,, तीसरी सैंची पृ० ९६४ मूल्य ५०.००
३३ ,, ,, ,, चौथी सैंची पृ० ८०० मूल्य ५०.००
३४ ,, श्री दसम गुरुग्रन्थ साहिब प्रथम सैंची पृ० ८२० मू० ५०.००
३५ ,, ,, ,, ,, दूसरी सैंची पृ० ७०४ मू० ५०.००
३६ ,, ,, ,, ,, तीसरी सैंची पृ०७३६ मूल्य ५०.००
३७ ,, ,, ,, ,, चौथी सैंची मूल्य ५०.००
३८ ,, श्रीजपुजी सुखमनी साहब गुरमुखी पाठ तथा ख्वाज: दिलमुहम्मद
कृत उर्दू पद्यानुवाद—दोनों नागरी लिपि में; पृ०१६४मू० १५.००
३९ ,, सुखमनी साहिब मूल गुटका नागरी लिपि। मूल्य ४.००
४० सिन्धी— सामी, शाह, सचल की त्रिवेणी पृष्ठ ४१५ मू० ३०.००
४१ नेपाली—भानुभक्त रामायण पृ० ३४४ मूल्य ३०.००
४२ असमिया—माधवकंदली रामायण (१४वीं शती) पृ० ९४३ ,, ६०.००
४३ ओड़िआ—वैदेहीश-बिळास उपेन्द्रभञ्ज (१८वीं शती) पृ०१०००,, ७०.००
४४ ,, तुलसी-रामचरितमानस—ओड़िआ लिपि में मूलपाठ तथा
ओड़िआ गद्य-पद्य अनुवाद। पृ०सं० १४६४ मू० ७०.००
४५ संस्कृत—मानस-भारती रामचरितमानस-सहित
संस्कृत पंक्ति-अनुपंक्ति पद्यानुवाद। पृ० ७४० मू० ५०.००
४६ ,, अद्भुत रामायण हिन्दी अनुवाद सहित पृ० २४४ मूल्य २०.००

प्रचारित प्रकाशन (ल.कि.घ.)

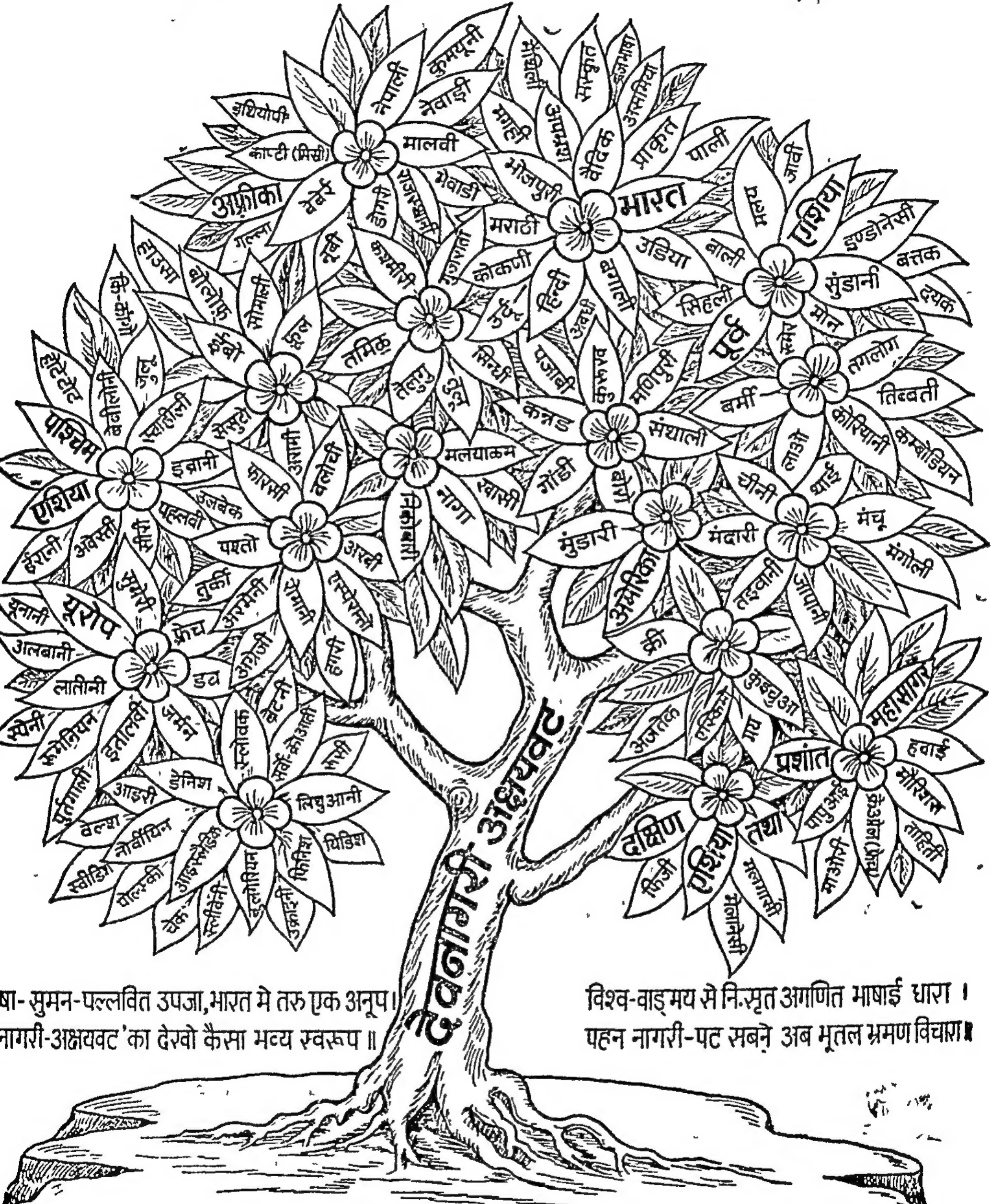
४७ अरबी क़ुर्आन शरीफ़ मूलपाठ अरबी तथा नागरी लिपि में
तथा हिन्दी अनुवाद सहित पृ० १०२४ मू० ५२.००
४८ ,, ,, केवल मूल; अरबी, नागरी दोनों लिपि में पृ०५२०मू० २६.००
४९ ,, ,, केवल हिन्दी अनुवाद पृ० ५३० मूल्य २६.००
५० ,, क़ौरानिक कोश (पठनक्रम) पृ० १९२ मूल्य १२.००
५१ ,, ज़ादे सफ़र (रियाज़ुस्सालिहीन) भाग १ पृ० ३३६ मू० १५.००
५२ ,, तफ़्सीर माजिदी पार: १ से ५ (क़ुर्आन शरीफ़) मौ० अब्दुल्
माजिद दर्याबादी का मूल, अनु० एवं भाष्य पृ० ५१२ मू. ५०.००
५३ ,, बुख़ारी शरीफ़ (हदीस, पार: १-५) पृ० ५८० मूल्य ५०.००
५४ बहुभाषाई— 'वाणी सरोवर' त्रैमासिक पत्र वार्षिक मूल्य १५.००

प्राप्ति-स्थान— भुवन वाणी ट्रस्ट, मौसम बाग (सीतापुर रोड), लखनऊ-२०

यन्त्रस्थ तथा कार्याधीन चल रहे सानुवाद लिप्यन्तरित ग्रंथ :–

		अनुमानित पृष्ठ
१	मैथिली—चन्द्रा झा रामायण सानुवाद	८००
२	मराठी—संत एकनाथ भावार्थ रामायण	३०००
३	ओड़िआ—जगमोहन बलरामदास रामायण	१०००
४	,, बिलंका रामायण	५००
५	फ़ारसी—सिर्रे अक्बर खण्ड–२-३	६००
६	,, मुल्ला मसीही रामायण	५००
७	नागरी उर्दू-हिन्दी—विश्वनागरी उर्दू-हिन्दी कोश	१२००
८	कन्नड—बत्तलेश्वर (कौशिक) रामायण	१०००
९	,, महाभारत कुमार व्यास कृत	१०००
१०	अरबी—बुखारी शरीफ़ पार: ६-३०	३०००
११	,, क़ौरानिक कोश वर्णानुक्रम (ल.कि.घ.)	३००
१२	,, तफ़सीर माजिदी— नागरी लिपि में क़ुर्आन का मूल पाठ व अनुबाद तथा वृहत् भाष्य पार: ६-३० (ल.कि.घ.)	६०००
१३	हिब्रू—बाइबिल् ओल्ड् टेस्टमेण्ट् } मूल हिब्रू, अरामी, ग्रीक, उनका तथा अंग्रेजी अनु० का नागरी-लिप्यन्तर तथा हिन्दी अनुवाद	३०००
१४	ग्रीक— ,, न्यू टेस्टमेण्ट् }	
५१	,, इलियड् (होमर कृत)	५००
१६	,, ऑडेसी (होमर कृत)	५००
१७	उर्दू—मर्सिय: मीर अनीस	१६००
१८	गुरमुखी—भाई गुरदासजी के कबित्त-सवैये	६००
१९	,, ,, ,, ,, वारां	१०००
२०	कोंकणी—ख्रीस्त पुराण (मूल तथा हिन्दी अनु०)	१०००
२१	संस्कृत—वाल्मीकि रामायण (मूल तथा हिन्दी पद्यानुवाद)	३०००
२२	,, महाभारत (एक लक्ष श्लोक) (मूल तथा हिन्दी पद्यानुवाद)	१५०००
२३	असमिया— शंकर घोषा (नागरी लिप्यन्तरण हिन्दी पद्यानुवाद)	६००
२४	मलयाळम्— तुल्ललगाथा ,,	२०००

भुवन ग्रन्थ-गाथा भुवन सन्त-वाणी



भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ

प्रतिष्ठाता – पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी